अग्रवालकुलभूषण अलीगढ़निवासि

बा० निरंजनप्रसाद गुप्तेन संगृहीता ।

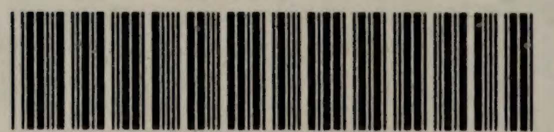
पारदसंहिता ।

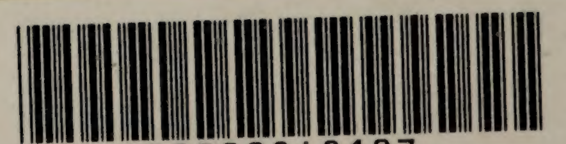
खेमराज श्रीकृष्णदास श्रेष्ठिना

मुम्बय्याम्

स्वकीये श्रीवेङ्कटेश्वर-स्टीम्-मुद्रणयन्त्रालये

मुद्रयित्वा प्रकाशिता ।


22500848116


22500848107

॥ श्रीहरये नमः ॥

पारदसंहिता ।

अग्रवालकुलभूषणअलीगढ़निवासी बा० निरंजनप्रसाद
गुप्तेन संगृहीता ।

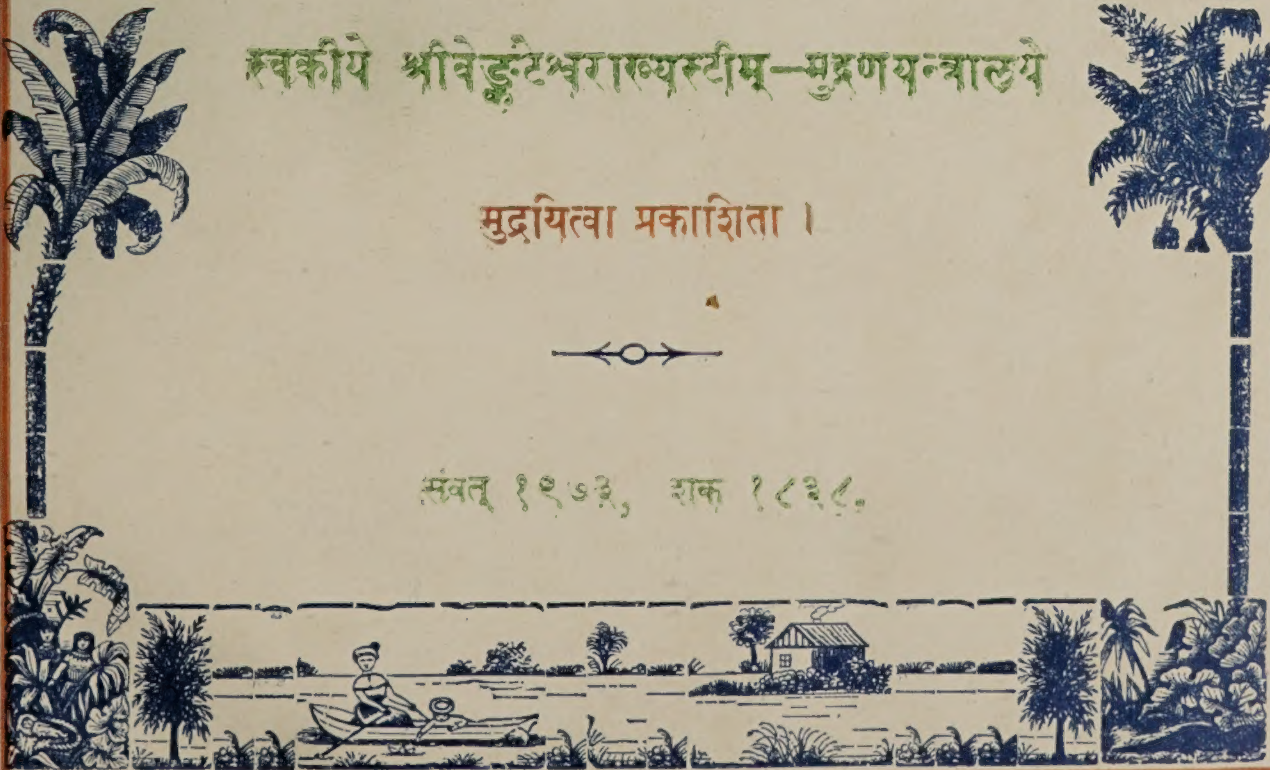
मरुदेशान्तर्गतजैसलमेरवास्तव्येन व्यासोपाह्वज्येष्ठमलकाव्यतीर्थेन
मनुष्यभाषायामनूदिता ।

सा च

क्षेमराज श्रीकृष्णदास श्रेष्ठिना

मुम्बय्याम्

(खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटालैन)



स्वकीये श्रीवेङ्कटेश्वराख्यस्टीम्-मुद्रणयन्त्रालये
मुद्रयित्वा प्रकाशिता ।

संवत् १९७३, शक १८३८.



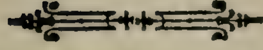
यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने बम्बई खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटलैन, निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें अपने लिये छापकर यहीं प्रकाशित किया.



अग्रवालकुलभूषण बाबू निरंजनप्रसादगुप्त.

श्रीगौरीशंकराभ्यां नमः।

भूमिका।



प्रियमित्रो ! इस समय महात्माओं, विद्वान् वैद्यों और गृहस्थोंसे प्रार्थना की जातीहै कि वे मेरे इस तुच्छ लेखपर एकबार अवश्य दृष्टि दें। सज्जनो ! इस बातको तो आप अवश्य जानतेही हैं कि, वर्तमान समयमें कला और विद्याओंमें कितना उलट फेर हो रहाहै, जिसके द्वारा प्रत्येक स्वतन्त्र राज्यके विद्वान् और धनाढ्य पुरुष अनेक प्रकारके सुख पा रहेहैं। इतना ही नहीं, प्रत्येक देशके राजालोग भी अपनी २ प्रजाको सुशिक्षित और धनी बनानेके लिये अनेक २ उपाय कररहेहैं। आप इसको ध्यानपूर्वक विचार देखिये कि, एक भारतवर्षके अतिरिक्त ऐसा कोई भी देश न होगा, जिस देशके मनुष्योंमें स्वदेशाभिमान मातृभूमिपर वत्सलता, ऐक्य और स्वदेशके प्रति भ्रातृभाव न हो, केवल यही हतभाग्य हिन्दुस्तान ही एक ऐसा देश है कि जिसके निवासियोंके मस्तिष्कमें इस हिस्ट्रीने ऐसा भाव भरदिया है कि न भारतवर्ष हमारा और न हम भारतवर्षके हम इन्ही भावोंके कारण इस विशालभारतवर्षमें उन्नतिके समस्त पदार्थोंके उपस्थित रहनेपर भी अपनी उन्नति नहीं करसक्ते। प्रत्येक देशमें छः ६ प्रकारकी प्रजा होसक्तीहै, धनाढ्य और दरिद्री, विद्वान, और मूर्ख, सुखी और दुःखी इनमें दरिद्री, मूर्ख और दुःखी ये तीनोंही देशका उद्धार करही नहीं सक्ते, विचारे सुखीजन अपनी विलासताके सामने देशोद्धारका विचार करें सो क्यों? अपने धनसे गर्वित होकर धनाढ्य पुरुष विदेशीय कम्पनियां तथा दरिद्री देशीभाइयों द्वारा व्याज पैदा कर अपनी आत्मा तथा देशको उद्धृत समझतेहैं। अब रहे विद्वान् वह अवश्य देशका उद्धार करसक्तेहैं परन्तु द्रव्यकी सहायताके विना अपने गालपर हाथ रखकर विचारतेही रहतेहैं। ऐसी अवस्थामें देशका उद्धार होना कठिन है। ठीक यही दशा हमारे भारतवर्षकी होरही है। यह प्राकृतिक नियम है कि किसी पदार्थके एक अवयवकी वृद्धिसे उसकी उन्नति नहीं समझी जाती, जैसे मनुष्यके किसी अंश (हाथ पैर आदि) की वृद्धिसे मनुष्यके शरीरकी उन्नति नहीं समझी जाती, प्रत्युत उसकी विकृतावस्थाही समझी जाती है। और यदि मनुष्यका प्रत्येक अंग पुष्ट होता जाय तो वह अत्यन्त दर्शनीय होजायगा। इसी नियमके अनुसार भारतवर्षका उद्धार प्रत्येक भारतीय प्रजाकी उन्नतिपर निर्भर है।

प्रियबन्धुगणो ! मैं आपके चित्तको उस उन्नति की ओर आकर्षित करना चाहता हूं कि जिससे संसारभरकी उन्नतियां स्वयं सिद्ध होजायँगी। भला उसका नाम क्या है ? लीजिये उसका नाम है "आरोग्योन्नति" एक फारसीके कविका कथन है कि 'एक तन्दुरुस्ती हजार निआमत' विना आरोग्योन्नतिके आप किसी प्रकारकी उन्नति नहीं करसक्ते। क्योंकि समस्त उन्नतियोंकी जड़ आरोग्योन्नति है इसीको चरकमें लिखा है कि–

धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम् ॥

अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इनकी उत्तम जड़ आरोग्य है। किन २ कारणोंसे आरोग्योन्नति होसक्ती है इसके जाननेके लिए आयुर्वेदशास्त्रका पढ़ना, पढ़ाना तथा आयुर्वेदीय औषधोंका प्रचार करना या कराना प्रत्येक भारतीय प्रजाका कर्तव्य है। और जिन सज्जनोंका ऐसा विचार है कि जब हमारे यहां सफाखानोंमें यूरूपियन दवाओंका प्रचार होरहा है तो आयुर्वेदीय दवाओंके प्रचारकी क्या आवश्यकता है ? क्योंकि हमको न काथ (काढ़ा) बनाना पड़ता न चूरन कूटना पड़ता और न अन्य किसी प्रकारका परिश्रम ही करना पड़ता, तो भला आपही बताइयेगा कि हम इस सरल प्रणालीको छोड़कर इस दुःखद चिकित्साप्रणालीका अनुसरण करें सो क्यों ? उन सत्पुरुषोंसे हम सविनय प्रार्थना करते हैं कि ऐ सभ्यपुरुषो! यह कब सम्भव होसक्ता है कि ईश्वर हमको भारतवर्षमें उत्पन्न कर हमारे उपयोगी पदार्थोंको युरूपमें पैदा करता इसी बातको पुष्ट करते हुए महर्षि. अग्निवेशजी महाराज चरकसंहितामें लिखते हैं कि–

यस्य देशस्य यो जन्तुस्तज्जं तस्यौषधं हितम् ॥

अर्थात् जिस देशके रहने वाले जो जीव हैं उनके लिये उसी देशमें पैदा हुआ औषध हितकारी होताहै तात्पर्य यह है कि अन्यदेशोंमें पैदा हुए औषध हमारे उपयोगी कभी सिद्ध नहीं होसक्ते। हां एक शंका आपलोगोंके हृदयमें अवश्य रहती होगी वह हम स्वयं आपलोगोंको सुनाये देतेहैं, आप इतने व्याकुल क्यों होतेहैं ? सुनिये साहब ! आप अपने मनमें यह अवश्य विचारतेही होंगे कि रसायनविद्याद्वारा जो औषध प्रस्तुत किये जातेहैं, वह किसप्रकार निर्गुण या हमारे अनुपयोगी सिद्ध हो सक्तेहैं। ठीक है, साहब ! हमभी इस बातको स्वीकार करतेहैं कि रसायनविद्या औद्भिज्ज आदि पदार्थोंके अंशोंको पृथक् २ करनेमें अत्यन्त उपयोगी है, परन्तु रुग्णशरीरमें उसकी क्रियाके निर्धारणार्थ रासायनिक युक्तियों द्वारा (या ज्ञानसे) सर्वथा शुभलक्षणकी प्रत्याशा नहीं होसक्ती। यहांतक कि चिकित्साके समय अनेक स्थलोंमें रासायनिक युक्तियोंद्वारा अनेक प्रकारके भ्रम उपस्थित होते हैं। जैसे मृत्पाण्डुरोगमें लौहका व्यवहार करना, लौह पाण्डुरोगका नाशक होनेपरभी परिपाकशक्तिको नष्ट करताहै। यह अवश्य स्वीकार करना होगा कि रसायनशास्त्र बहुविध घटना स्थलोंमें वास्तविक तत्त्वके निर्णय करनेके लिये यथा कथंचित् उपयुक्त होसक्ताहै, परन्तु रासायनिक विश्लेषणद्वारा कहीं भी औषधनिर्णय नहीं होसक्ता इसलिये आप समझगये होंगे कि रासायनिकक्रियाद्वारा बनाई गई विलायती दवाइयां हमारे उपयोगी नहींहैं इन क्षणिक सुखकारी औषधियोंका भयंकर परिणाम होताहै जैसे कुनैन बस अब अधिक लिखनेकी कोई आवश्यकता नहीं आप स्वयं विचार सक्ते हैं कि इन यूरूपियन दवाओंसे धन धर्म और नीरोगता नष्ट नहीं होती

तो क्या होताहै अतएव आप अपने धन धर्म और नीरोगताकी रक्षा करना चाहते हो तो आयुर्वेदीय दवाओंका सेवन कीजिये मेरे विचारसे परिश्रमकी अपेक्षा धन और धर्मकी रक्षा करना अत्यावश्यक है एवं धन तथा धर्मकी रक्षा होनेसे देशका उद्धार होगा ।

श्रीजगदीश्वर जगन्नियन्ता जगदुत्पादक सर्वशक्तिमान् परमकारुणिक सर्वहितकारी सच्चिदानन्द आनन्दकन्द यशोदानन्दन श्रीकृष्णचन्द्र हैं कि जिनकी कृपासे मैं इस ग्रंथकी भूमिकाको लिखनेके लिये आज उद्यत हुआहूं उनको कोटिशः धन्यवाद हैं। एक दिन बाबू निरंजनप्रसादजी साहब कासरोगसे पीडित होकर एक वैद्य साहबके पास गये और प्रार्थना की कि आप मुझको वह कासकर्तरीरस दीजिये कि जिसमें शुद्ध पारद हो परन्तु वह अपने वांछित रसको न पाकर और दुःखी हो घरको लौट आये और वह रात अनेक प्रकारके विचार करते २ बीतगई । दूसरे दिन सूर्योदय होतेही मनमें विचार करने लगे कि वह उच्च कोटिको प्राप्त हुआ हमारा वैद्यकशास्त्र जिसकी निष्पक्ष मिश्र फारिस और यूरूपियन लोगभी प्रशंसा करतेथे । वह आज इतनी निकृष्ट दशाको प्राप्त होगया है कि इतने बड़े नगरमें ऐसा साधारण रस भी उपलब्ध नहीं होता तो अन्यरसोंका कहनाही क्या है । मेरी समझमें इस अवनतिके ३ तीन कारण हैं ।

प्रथम कारण यह है कि जालिम बादशाहोंसे हमारे उत्तम २ ग्रन्थोंका जलाया जाना । दूसरा राजकीय आश्रयका न होना । तीसरा वैद्यराजाओंका शिक्षित और अनुभवी न होना (क्षमा कीजिये समस्त वैद्योंके लिये मैं ऐसा कहना ठीक नहीं समझताहूं परन्तु अधिकांशमें मेरा कहना असंभवभी न होगा) अर्थात् गुरुद्वारा संस्कृतभाषामें वैद्यकशास्त्रोंका अनभ्यास, औषधियोंका अपरिचय और दूसरों (जो कि वैद्य नहीं हैं या आजीविकार्थ जिन्होंने वैद्यकशास्त्रोंका अन्यान्यभाषाओंमें की हुई टीकाओंकी सहायतासे अनुवाद किया हो) के किये हुए भाषानुवादोंके भरोसेहीसे चिकित्साका आरम्भ करना इत्यादि कारण हैं ।

जबतक इन कारणोंको दूर नहीं किया जायगा तबतक आयुर्वेदका उद्धार न होगा । आयुर्वेदकी अवनतिके प्रथम कारणको दूर करनेके लिये यही उपाय ठीक होसक्ता है कि, प्राचीन २ पुस्तकोंका अन्वेषण करना तथा प्रकाशितकरना । तथा अवनतिके द्वितीयकारणको दूरकरनेके वास्ते गवर्नमेण्टसे प्रार्थना करना यही एक प्रबल उपाय प्रतीत होता है, परन्तु वह कुछ कष्टसाध्य है । क्योंकि न्यायशील गवर्नमेण्टके राज्यको अनुमान एक शताब्दीसे अधिक समय बीत गया होगा, परन्तु इस भारतीय हितकारक आयुर्वैदिक चिकित्साका कुछ भी उद्धार न किया, देखिये बनारस, कलकत्ता और लाहोर आदि प्रतिष्ठित २ नगरोंमें संस्कृत विद्याके अनेक विद्यालय हैं और उनमें प्रत्येक शास्त्रका पढ़ाना तथा उनकी परीक्षायें भी होना प्रचलित है । परन्तु बड़े शोकका विषय है कि उनमें न तो आयुर्वेदशास्त्र पढाया जाता और न उसकी परीक्षा ही होती है । बस अधिक दृष्टान्तोंकी कोई आवश्यकता नहीं हम अवश्य समझही गये हैं कि हमारी गवर्नमेण्टकी इच्छा इस शास्त्रके उद्धारकी होती, तो क्या इन विद्यालयोंमें यह विद्या न पढ़ाई जाती । विचार करनेसे प्रतीत होताहै कि इसमें भी हमारी गवर्नमेंटका कुछभी दोष नहीं है यदि दोष भी हैं तो हमारा क्योंकि हमने कभी भी उसविषयमें गवर्नमेंटसे प्रार्थना न की । इस लिये आयुर्वेदोद्धारणार्थ हमको स्वयं कटिबद्ध होना चाहिये और हमारी गवर्नमेंटको भी । अन्यथा इसका उद्धार होना दुःसाध्य है ।

अवनतिके तृतीय कारणको दूर करनेके लिये एक महान् आयुर्वेदीय विद्यालय तथा उसके अनेक शाखाविद्यालय खोलना, और उनमें प्राचीन शास्त्रानुसार औषध रचना अथवा औषधोंका नवीन २ आविष्कार करना, औषधपरिचय, और चिकित्साका अभ्यास इत्यादि प्रचार कराना उचित है ।

आयुर्वेदकी प्राचीनता ।

यह एक और भी विचारका स्थल है कि क्या अन्य चिकित्साशास्त्रोंकी अपेक्षा हमारा आयुर्वेद शास्त्र प्राचीन है ? इसको तो जगत्के सभी सभ्य जानतेही हैं कि यदि संसारमें सबसे प्रथम कोई पुस्तक लिखागयाहै तो वेदही लिखागया है इसकारण हमारा आयुर्वेदशास्त्र वेदोंके समान अनादि होनेके कारण नित्य और प्राचीन है, क्योंकि आयुर्वेद अथर्ववेदका उपवेद है प्राचीन अत्रिआदि महर्षियोंने वेदोंमेंसे निकाले हुए इस शास्त्रको अपने आचार्योंसे ग्रहण कियाहै । सबसे प्रथम जगत्पितामह ब्रह्माने वेदोंसे विशेषतः अथर्ववेदसे अपने नामकी संहिता बनाई । इसी बातको भावमिश्रने अपने बनाये हुए भावप्रकाशमें लिखा है कि—

विधातार्थर्वसर्वस्वमायुर्वेदं प्रकाशयन् । स्वनाम्ना संहितां चक्रे लक्षश्लोकमयीमृजुम् ॥

अर्थात् अथर्ववेदके सारभूत आयुर्वेदको प्रकाशित करते हुए ब्रह्माने अपने नामसे एक लक्ष श्लोकवाली सरल संहिता बनाई और आयुर्वेद अथर्ववेद है इसको सुश्रुतमें भी लिखा है—

इह खल्वायुर्वेदो नाम यदुपाङ्गमथर्ववेदस्य, इति ।

सारांश यह है कि आयुर्वेद अथर्ववेदका उपवेद है इसलिये आयुर्वेद अनादि और नित्य है क्योंकि, वेदोंकी नित्यता और अनादिता सर्वसंमत है ।

औषधं त्रिविधं प्रोक्तं दैवं मानवमासुरम् ॥

रसमानसे.

हमारे यहां दैव, मानुष और आसुर भेदसे औषध तीन प्रकारका वर्णन कियागया है । और इसी कारण वैद्य भी तीन प्रकारके कहेगये हैं—

१ जैसे एडेश (सूअरकी चर्बी) फेलबोनियम (बैलकी चर्बी)

रसवैद्यः स्मृतो वैद्यो मानुषो मूलिकादिभिः । अधमः क्षारदाहाभ्यामित्थं वैद्यस्त्रिधा मतः ॥
रसार्णव.

वैद्य उसको कहतेहैं कि जो रसादिकों के द्वारा चिकित्सा करता हो, अर्थात् वह वैद्य देव कहाताहै । जड़ी बूटियों द्वारा जो रोगोंको नाश करताहै उसको मानुप कहते हैं और जो क्षार (तेजाब आदि) तथा दाह (गरम किए हुये लोहेसे झुलसा देना) से चिकित्सा करतेहैं उनको अधम वैद्य कहते हैं। इस प्रकार तीन तरहके वैद्य होतेहैं।। तात्पर्य इसका यह है कि जैसे औषध तीन प्रकारके हैं वैसे वैद्य भी तीन प्रकारके हैं । अब यहां शंका होती है कि क्षार और दाहसे चिकित्सा करनेवाले की अधमसंज्ञा क्यों ? इस विषयपर गंभीर गवेषणा करनेसे यही ज्ञात होताहै कि जो वैदिक प्रक्रियासे चिकित्सा करतेथे उनको उत्तम और अन्यको असुर म्लेच्छ तथा अधम कहतेथे । इसी कारण क्षारादिसे चिकित्सा करनेवाले वैद्योंकी अधम संज्ञा होगई, क्योंकि वेदोंमें क्षार और दाहका प्रयोग नहीं है । ठीक है, परन्तु वेदानुकूल चिकित्सा करनेवाले वैद्योंमें देव और मानुष भेद कैसा ? सुनिये साहब ! वेदोंमें खनिज और औद्भिज्ज भेदसे दो प्रकारके औषध वर्णन कियेगये हैं । उनमेंसे जो खनिज पदार्थोंको प्रधान मानकर चिकित्सा करते हैं उनको देव कहते हैं । और जो वनस्पति आदिको प्रधान समझकर चिकित्सा करते हैं उनको मानुप कहते हैं । सारांश यह है कि औद्भिज्ज औषधियोंकी अपेक्षा खनिज (धातु, रसआदि) औषधियें उत्तम हैं । क्योंकि एक महात्माका कथन है कि—

अल्पमात्रोपयोगित्वादरुचेरप्रसंगतः । क्षिप्रमारोग्यकारित्वादौषधेभ्यो रसोधिकः ॥

अर्थात् औषधियें अधिक मात्रामें दीजाती हैं, स्वादको बिगाडती हैं और चिरकालमें फल देती हैं, परन्तु रसादिक (खनिज) अल्पमात्रामें दियेजातेहैं, अरुचिको उत्पन्न नहीं करते, तथा शीघ्र फल करनेवाले होतेहैं । इस लिये समस्त औषधियोंसे रस अधिक समझागया है । औद्भिज्ज औषधियोंकी अपेक्षा खनिज औषधियें उत्तम हैं इसको श्रीवाग्भटाचार्य भी अपने बनायेहुये रसरत्नसमुच्चयमें लिखते हैं कि—

काष्ठौषध्यो नागे नागो वङ्गेऽथ वङ्गमपि ताम्रे । शुल्वं तारे तारं कनके कनकमपि लीयते सूते ॥
रसरत्नसमुच्चय.

काष्ठादिक दवाइयां सीसेमें लीन होतीहैं सीसा बंगमें, बंग ताँबेमें ताँबा चांदीमें चांदी सुवर्णमें और सुवर्ण पारदमें लीन होताहै अर्थात् यह उत्तरोत्तर अधिक गुणकारक हैं । इसलिये रसशास्त्रके उद्धारके लिये कुछ उपाय कियाजाय तो अच्छा होगा । ऐसा विचारकर " पारदसंहिता " नामका ग्रंथरचना प्रारम्भ किया । यद्यपि उनके मनमें प्रथम यह विचार हुआ कि शास्त्रानुसार रसादिक बनाकर विज्ञापनद्वारा विक्रय करनेसे देशका अत्यन्त लाभ होगा, परन्तु महा महिमशाली कुछ विज्ञापन दाताओंके अविश्वासके कारण इस संकल्पको समाप्तकर ग्रंथकाही संग्रह किया । श्रीमान् बाबूसाहबने ग्रन्थके बनानेमें जिन २ शास्त्रोंका आश्रय लियाहै उनकी नामावली हम नीचे लिखते हैं। जिससे पुस्तक पढने वालोंको स्वयं ज्ञात होजायगा कि यह ग्रन्थ कितने गौरवका है और हमको इस ग्रन्थका गौरव दिखानेकी आवश्यकता भी न होगी।

जिनसे कुछ विषय उद्धृत किया गया है उनके नाम.

१ रसार्णव.	१९ रसरहस्य.	३७ क्षीरसिन्धु.
२ रसेन्द्रचिन्तामणि.	२० रसकामधेनु.	३८ टोडरानन्द.
३ रसरत्नाकर.	२१ रससारोद्धारपद्धति.	३९ निघण्टुराज.
४ रसरत्नसमुच्चय.	२२ रसपारिजात.	४० अजीर्णमंजरी.
५ रससार.	२३ रसेन्द्रकल्पद्रुम.	४१ अभिधानकामधेनु.
६ रसपद्धति.	२४ रसराजपद्धति.	४२ लोहपद्धति.
७ रसहृदय.	२५ रसराजशंकर.	४३ वैद्यकल्पद्रुम.
८ रसेन्द्रचूडामणि.	२६ रसप्रदीप.	४४ गोकर्ण.
९ रसवाग्भट.	२७ रससिन्धु.	४५ देवीयामल.
१० रसमार्तण्ड.	२८ रसालंकार.	४६ गन्धककल्प.
११ रसमञ्जरी.	२९ रसावतार.	४७ काकचण्डीश्वर.
१२ रससंकेतकलिका.	३० रसप्रकाशसुधाकर.	४८ योगसार.
१३ रसराजलक्ष्मी.	३१ रसदर्प्पण.	४९ धरणीधरसंहिता.
१४ रसचिन्तामणि.	३२ रसामृत.	५० वैद्यभास्करोदय.
१५ रसरत्नप्रदीप.	३३ रसप्रकाश.	५१ धातुरत्नमाला.
१६ रसायनसारसंग्रह.	३४ नागार्जुन.	५२ कल्पसार.
१७ रसरत्नदीपिका.	३५ पुरंदररहस्य.	५३ योगतरङ्गिणी.
१८ रसराजहंस.	३६ लोपपद्धति.	५४ भावप्रकाश.
		५५ शार्ङ्गधर.

ग्रन्थके बनानेका प्रयोजन ।

यह बात सबको विदित ही है कि मुसलमानोंके राज्यके समयमें उद्धत बादशाहोंसे हिन्दुओंके उत्तम २ ग्रन्थ हिमाममें जलवा दिये गये इसी कारण इस वर्तमान समयमें उत्तम ग्रंथोंका मिलना असम्भवसा होगया है । और जो कुछ उपलब्ध भी होते हैं वह खण्डित प्रतीत होते हैं । क्योंकि उनमें रसकी प्रक्रिया पूर्णतया वर्णन नहीं कीगई मालूम होती है । अत एव श्रीमान् बाबू निरंजन प्रसादजी वकीलने उत्कट परिश्रम और द्रव्यव्ययसे जगत्के लाभार्थ इस पारदसंहिताका संग्रह कर और मुझसे भाषानुवाद बनवाना आरम्भ कर दिया, परन्तु बड़े शोकका स्थल है कि जबतक भाषानुवादका प्रारम्भही हुआ था कि श्रीमान् बाबूसाहबका सन्निपातज्वरसे देहान्त होगया । सज्जनों यही एक भारतवर्षके मन्दभाग्यका लक्षण है कि जो २ इसके उद्धारके लिये उद्योग करते हैं वह सब प्रायः अल्पायु ही होते हैं । हम परमात्मासे प्रार्थना करते हैं कि हे परमात्मन् आप स्वर्गीय श्रीमान् बाबूसाहबकी आत्माको शान्ति प्रदान करो । बाबूजीकी मृत्युके पश्चात् उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अशर्फी देवीजी उनके जामाता श्रीमान् साहू रघुनन्दनशरणजी रईस ठाकुरद्वारेवाले श्रीमान् श्रीकृष्णदासजी (जोकि श्रीमती अशर्फी देवीजीके भतीजे हैं) बिसौलीवाले तथा बाबूसाहबके आम मुख्तआर मुं. चंपारामजी साहबने मुझको पुनः प्रोत्साहित कर इस ग्रन्थके भाषानुवादको समाप्त कराया । इस ग्रंथमें ६० अध्याय हैं जिनमें रसशालाका बनाना, रसशास्त्रकी उत्तमता, रसकी उत्पत्ति, रसके भेद, साधारणशोधन, अष्टसंस्कार, यन्त्रकल्पना, कोठी, पुट, खरल और मूषा आदिके बनानेका प्रकार, रससिद्धिके लिये सामग्रीका संग्रह करना, गंधकजारण, अभ्रकजारण, गर्भद्रुति, बाह्यद्रुति, जारण,सारण,क्रामण,वेध,भक्षणविधि, धातुभस्म, सत्त्वद्रुति, रसउपरसशोधन, भस्म, सत्त्व और उत्तमोत्तम रसोंका संग्रह तथा जडीबूटियोंका परिचय और भी अनेक प्रकरण अत्यन्त परिश्रमके साथ लिखेगये हैं ।

आयुर्वेदीय इतिहास ।

सम्प्रति हम जिन चरक, सुश्रुत, नागार्जुन, शिव, रावण, मन्थानभैरव, गोविन्द, नागबोधि, व्याडि, और माण्डव्य आदि वैद्यकाचार्योंके नाम सुनतेहैं और उनमेंसे कुछ महात्माओंके बनायेहुए निबन्ध भी हमारे दृष्टिगोचर होतेहैं, परन्तु बड़े शोकका स्थल है कि हमको उनके देश काल आदिके जाननेके विषयमें कुछ भी ज्ञान नहीं । ऐसा प्रतीत होताहै कि प्राचीन समयमें अपने जीवनचरित्रके लिखनेका प्रचारही न हो ? लिखेहुए भी नष्टभ्रष्ट होगये हों ? अथवा अपने पहिले बनायेहुए ग्रन्थोंमें कुछ इतिहास लिखकर अन्तके ग्रन्थोंमें केवल नाममात्रही लिखना उचित समझते हों ? इस विषयमें अनेक प्रकारकी कल्पनायें होसक्ती हैं, परन्तु निश्चय यही होसक्ताहै कि प्राचीन कालमें ग्रंथकार अपने इतिहासको लिखना उचित न समझते थे । यहांतक कि कितनेही ग्रंथोंमें कर्ताका नाममात्र भी उपलब्ध नहीं होता । इसका कारण जहांतक विचार कियागया यही हृद्गत होताहै कि संसारमात्रके उपकारी महर्षिगण इसलिये ग्रंथोंको नहीं बनाते थे कि हमारा यश हो, गौरव बढै, या द्रव्यकी प्राप्ति हो । प्रत्युत वह जो कुछ कार्य करते थे वह संसारमात्रके उपकारके लियेही करते थे । इसी कारणसे अपना इतिहास अथवा कहीं २ अपना नाममात्रही लिखना उचित न समझते थे । इन कठिनाइयोंसे प्राचीन आयुर्वेद शास्त्रका ठीक २ इतिहास जानना दुष्कर होगया है, परन्तु अन्वेषण करना मनुष्यका स्वाभाविक धर्म है क्योंकि जो ढूँढता रहता है, उसको कुछनकुछ मिलही जाताहै । जैसा कि कबीरदासने कहाहै—

" जिन खोजा तिन पाइयां गहरे पानी पैठ । "

परन्तु भूलजाना भी मनुष्यमात्रकी बुद्धिका धर्म है इसलिये मेरे विचारमें जो कुछ त्रुटि रहगई हो उसको विद्वान् लोग सुधारकर मुझे सूचित करेंगे कि जिससे दूसरी बार मुद्रित करनेमें शुद्ध करादीजाय ।

कर्ताका नाम.

१	रसार्णव		
२	रसेन्द्रचिन्तामणि	'रसश्च पवनश्चैव कर्मयोगो द्विधा मतः' इति रसार्णवे.	
३	रसरत्नाकर		
४	रसहृदय	काकचण्डेश्वरीतन्त्र,	तस्मात्किरातनृपतेः—विरचितवान् भट्टगोविन्दः
५	रसकामधेनु	रसार्णव, रसमार्तण्ड, रससार; रसरत्नाकर, रसचिन्तामणि, देवीयामल, रसहृदय, रसेन्द्रचूडामणि, रसवाग्भट, रसमंजरी, रससंकेतकलिका, निघंटुराज, रसराजलक्ष्मी, अजीर्णमंजरी, अभिधानकामधेनु, रसेन्द्रचिन्तामणि, रसपद्धति, रसामृत, लोहपद्धति, सोमनाथसंग्रह, वैद्यकल्पद्रुम, रसरत्नप्रदीप, रसायनसारसंग्रह, रसरत्नदीपिका, गोकर्ण, रसराजहंस, रसरहस्य.	शाकद्वीपवासी चूडामणि.

६	रससारोद्धारपद्धति	भावप्रकाश, रसमंजरी, रसराजलक्ष्मी, योगतरंगिणी, रसेन्द्रचिन्तामणि, रसरत्नसमुच्चय,	सम्पूर्ण होनेपरभी नाम नहीं है ।
७	रसराजलक्ष्मी	रसहृदय, देवीशास्त्र, काकचंडीश्वर तंत्र,	सर्वज्ञभट्ट
८	रसपारिजात		वीसालदेशके राजाका मन्त्री कोई कायस्थ
९	रसेन्द्रकल्पद्रुम	रसार्णव, रसरत्नसमुच्चय, रसमंगल, रसामृत, रसेन्द्रचिन्तामणि, रसवाग्भट, रसहृदय, संग्रहहृदय,	नीलकंठात्मज रामेश्वरभट्ट
१०	निघंटुरत्नाकर	काकचण्डीश्वर	
११	रसराजपद्धति	रसरत्नसमुच्चय, रसार्णव, रसमार्तण्ड, प्रश्नावतार, रससार, रसरत्नाकर, रसप्रकाश, रसहृदय, देवीयामल, रसमञ्जरी, रसराजलक्ष्मी, रसवाग्भट गन्धककल्प, रसचिन्तामणि.	राजा लक्ष्मणसिंह वैद्य जम्बूसे बनवाई म.रा. रनजीतसिंहजीकी आज्ञासे
१२	रसकल्पतरु	अपूर्ण होनेके कारण कुछ पता नहीं चलता	
१३	काकचण्डीश्वरतन्त्र	अन्यशास्त्र प्रमाणेन	
१४	रसराजशंकर	रसेन्द्रचिन्तामणि, रसरत्नाकर, रसवाग्भट	
१५	रसपद्धति	अपूर्ण	कर्ताका पता नहीं
१६	योगसार	”	”
१७	धरणीधरसंहिता	रसराजलक्ष्मी,रसप्रकाशसुधाकर,रसहृदय,टोडरानन्द, रसकामधेनु, रससार, रससिन्धु, रसप्रदीप, रसदर्पण,	ज्वालानन्दपुत्र धरणीधर
१८	रसप्रदीप	अपूर्ण	कर्ताका पता नहीं
१९	टोडरानन्द	रसराजलक्ष्मी, रससिन्धु, रसरत्नाकर, रसदर्पण, रसालंकार, रसार्णव, रसावतार, नागार्जुन, रससार, रसचिन्तामणि, रसप्रदीप, रसराजहंस, पुरंदररहस्य, रसरहस्य, लोपपद्धति, क्षीरसिन्धु,	महाराज टोडरमल बिरचित
२०	रससार	सिंहपाद, धीरदेव,	मोटजातीय—सहदेवाचार्य पौत्र-गोविन्दाचार्य सारस्वत अन्तर्वेदी समुत्पन्न.
२१	रसरत्नसमुच्चय	शिव, गोविन्द,व्याडि, चन्द्रसेन, शूरसेन, नरवाहन, नागार्जुन, गोमुख, यशोधन, रावण इत्यादि	वाग्भटाचार्य

ऊपर लिखे हुए चक्रके अनुसार तथा पुस्तकोंकी रचनायें देखनेसे जैसे ग्रन्थोंका पूर्वापर क्रम प्रतीत होताहै उसको हम आपलोगोंके अवलोकनार्थ नीचे लिखते हैं। कृपया विचारकर भूलको सुधार लेंगे।

१	रसार्णव	१४	रससार	२७	अजीर्णमंजरी
२	नागार्जुन	१५	रसचिन्तामणि	२८	रससंकेतकलिका
३	काकचण्डीश्वर	१६	रसप्रकाश	२९	रसामृत
४	रसेन्द्रचितामणि	१७	रसावतार	३०	पुरन्दररहस्य
५	रसरत्नाकर	१८	गन्धककल्प	३१	रसकामधेनु
६	रसहृदय	१९	रसराजपद्धति	३२	अभिधानकामधेनु
७	रसरत्नसमुच्चय	२०	रजराजहंस	३३	क्षीरसिन्धु
८	देवीयामल	२१	लोहपद्धति	३४	टोडरानन्द
९	रसमंजरी	२२	रसरहस्य	३५	रसपारिजात
१०	भावप्रकाश	२३	रसपद्धति	३६	रसराजशंकर
११	योगतरङ्गिणी	२४	निघण्टुरत्नाकर	३७	योगसार
१२	रसराजलक्ष्मी	२५	रसरत्नदीपिका	३८	रससिन्धु
१३	रससारोद्धारपद्धति	२६	रसमंगल	३९	रसप्रकाशसुधाकर
				४०	धरणीधरसंहिता

इस बातका पता लगाना अत्यन्त कठिन है कि, कौन ग्रन्थकर्ता किस समयमें और किस देशमें हुआ? निर्णयसागरयंत्रालयमें सर्वांगसुन्दर टीकासहित छपाहुआ वाग्भटका पुस्तक जिन्होंने देखा होगा वह अवश्य जानगये होंगे कि मिस्टर डा. कुण्टेजीकी बनाईहुई भूमिकामें यह स्पष्टतया दिखा दियागया है कि श्रीमान् वाग्भटाचार्य ईसाके सन्से अनुमान २०० दोसौ वर्ष पहिले हुए हैं अर्थात् जिस समय बौद्धोंका विकाश और वैदिक धर्मका ह्रास प्रारम्भ

होगया था, इससे यह सिद्ध होताहै कि वाग्भटसे पूर्वकी पुस्तकें अनुमान २१ सौ वर्षकी पुरानी हैं अर्थात् २१ इक्कीससौ वर्षसे पूर्वकी बनीहुई प्रतीत होती हैं। और टोडरानन्द को भी बनेहुए अनुमान ३५६ बरस हुए होंगे कारण कि (टोडरानन्दग्रंथ) टोडरमलका बनवाया हुआ था और टोडरमल बादशाह अकबरके समयमें हुआ था अकबरको हुए३५६ बरस हुए इसलिये टोडरानन्दसे पूर्वके ग्रन्थ ३५६ वर्षके पुराने हैं। इससे अधिक समयका पता लगना कठिन है। यदि कोई सज्जन जानते हों तो कृपाकर सूचना दें।

ग्रन्थकर्ताका परिचय।

श्रीमान् बाबू निरञ्जनप्रसादजी साहब, रायबद्रीप्रसादजी वकील वैश्य अग्रवालके कनिष्ठ पुत्र थे। आपका जन्म सम्वत् १९२२ श्रावण शुक्ल ५ का था। आपने ८ वर्षकी अवस्थामें हिन्दी और उर्दूभाषामें अच्छा अभ्यास करलिया था। फिर आपके पिताने चरक, शुक्रनीति, पंचदशी आदि अनेक शास्त्रोंके अनुवादक श्रीमान् महामहोपाध्याय पण्डित मिहिरचन्द्रजी द्वारा संस्कृतव्याकरणका प्रारम्भ कराया। यद्यपि समयानुसार राजभाषाका पढ़ाना आवश्यकीय-समझ गवर्नमेण्ट हाईस्कूल अलीगढ़में अंग्रेजी पढ़ाना आरम्भ करादिया था तथापि आपका संस्कृतपढना बनारहा इस प्रकार पढ़ते २ सन१८७९ में आप इन्ट्रेन्समें पास होगये उसके बाद सन्, १८८२ में आपने वकालतकी परीक्षा पास की और अलीगढके नामी वकीलोंमें आप प्रख्यात हुए। इस बीचमें आपको सन १८९७ में रसशास्त्रके उद्धारकी धुनि सूझी। बाबू साहिबने पुस्तकों द्वारा पारदका शोधन करना आरम्भ करदिया और करते २, १० वर्षके अन्दर स्वर्ण और अभ्रक जारणतक कार्य किया। अभ्रक जारण करते २ देहान्त होगया। यद्यपि इस कार्यमें आपको अत्यन्त कठिनाइयां पडती थीं तथापि आप उन सबको बडी सावधानीके साथ सहन करते थे। यहांतक कि आप सन१९०१ में विकालतका करना भी छोडकर इस पारदकेही काममें लगेरहते थे। पारद विषयमें आप इतने लग्न थे कि आपको अपने इष्टमित्रोंके साथ हास्य विनोद करना भी पारदसम्बन्धसे पृथक् न था.। इसका अनुभव अक्षरशः इस पुस्तकमें मिलादिया गया है। आशाहै उक्त बाबूसाहबका अनुभव कियागया यह पुस्तक संसारमात्रकी विशेषतः वैद्योंकी तो अत्यन्त उपकारी होगी।

उपसंहार।

जिस समय बाहिरसे रसग्रन्थ आनेलगे तो उनके प्रतिपंक्तिमें दश २ या १५ पन्द्रह २ अशुद्धियां देखकर बाबूसाहबने राजपूतानाके अन्तर्गत जैसलमेरके रहने वाले राजवैद्य तीर्थदासजीके पौत्र मुझ ज्येष्ठमल्ल व्यासको इन पुस्तकोंके शुद्धकरनेका काम सौंपा। मैंने भी अपनी बुद्ध्यनुसार काम समाप्त किया। बाबूसाहबके मरनेके बाद उनके सम्बन्धियोंने मुझसे ही इसका भाषानुवाद कराया तथा अकराबाद निवासी सुयोग्य तथा अपने पूर्ण विश्वासपात्र पण्डित गंगाप्रसाद (उपनाम) गौरीशंकरजीको अपना लेखक बनाया श्रीमान् वैश्यकुलभूषण सेठ खेमराजजी श्रीकृष्णदासजीको संसारके लाभार्थ केवल ५० पुस्तकें लेकर छापने तथा बेचनेका समस्त अधिकार देदिया।

भवदीय,

जैसलमेर निवासी-व्यास ज्येष्ठमल्ल काव्यतीर्थ.

हालनिवासी-अलीगढ



श्रीगणेशाय नमः ।

संक्षिप्त जीवनचरित्र ।



श्रीमान् बाबू निरंजनप्रसादजी साहब एक योग्य विद्वान् और देशोपकारक पुरुष थे। आपका जन्म संवत् १९२२ मिति श्रावण शुक्ला ५ के दिन वैश्यशिरोमणि अग्रवालजाति में हुआथा।

आपके पिता राय बद्रीप्रसादजी साहब किसी कारण देहली को छोड़कर अलीगढ में आये थे, वहां उन्होंने वकालत करना आरम्भ किया। आप की बुद्धि इतनी तीक्ष्ण थी कि वे अलीगढके समस्त वकीलों की श्रेणी में मुख्य समझे जाते थे। आपने संस्कृत भाषा की उन्नतिके लिये एक पाठशाला की स्थापना कराई। परन्तु वह एक व्यक्ति की न होने के कारण स्थायी न होसकी। इससे व्याकुल होकर आपने अपने द्रव्य से एक विशाल पाठशाला बनवाने की नींव डाली। और उसमें शामली जिला मुजफ्फरनगर के रहनेवाले महामहोपाध्याय पण्डित मिहिरचन्द्रजी को अध्यापक नियतकर विद्यार्थियों की छात्रवृत्ति का भी प्रबन्ध करदिया। आपने जितनी नींव डालीथी उतनी इमारत न बनी हुई देखकर और अपने शरीरको रोगग्रस्त समझ अपनी सम्पत्तिके चतुर्थांश के अनुमान द्रव्य पाठशाला को दान करदिया और उसका नाम धर्मसमाज पाठशाला रक्खा। अब इससमय पाठशाला एक बडे हाईस्कूल का काम देरही है। यदि दैव अनुकूल रहा तो शीघ्र ही कालेज हो जायगा। तदनन्तर इस असार संसार को ससार बनाकर आनन्दकन्द श्रीकृष्णचन्द्र की चरण सेवा के लिये श्रीवैकुण्ठस्थान को प्रस्थान किया।

राय बद्रीप्रसादजी के दो पुत्र थे उनमें बाबू निरंजन प्रसादजी छोटे थे। जब आप की अवस्था आठ वर्ष की थी तब संस्कृतका पढना आरम्भ किया और १६ वर्षतक आपका संस्कृत का अध्ययन निरन्तर चलता रहा। इस बीच म राजभाषा अंग्रेजी का भी पढ़ना आरम्भ करदिया, इसप्रकार संवत् १९३९में आपने वकालत पास करलिया। यद्यपि आप अंग्रेजी भाषा के ग्रेजुएट न थे परन्तु आप की योग्यता कुछ बहुत बढ़ी चढ़ी थी। पिताजी के समक्ष ही आप को विकालत से अच्छी आमदनी थी। और व्याज तथा जमीदारीसे भी आप को अच्छा लाभ होताथा।

इसप्रकार सांसारिक सुख भोगते हुए एक दिन आप के हृदयरूपी समुद्रमें इस हीन दशा को प्राप्तहुए रसशास्त्र को उन्नत करने के लिये इच्छातरङ्गें लहराने लगीं। " क्यों कि वे सोचते थे कि इस संसार में प्रायः समस्त पुरुष ऐसे हैं कि जो मरकर पुनर्जन्म लेते ही हैं। परन्तु जन्म लेना उसका ही सार्थक है कि जिसके पैदा होने से घर, वंश, जाति, तथा देश का उद्धार हो। इस बातको लेकर किसी कविने कहाहै कि—

स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्। परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते ॥

यदि मुझसे भारतवर्ष की सेवा न हुई तो बडी लज्जा की बात है। क्योंकि, सुभट कवि ने अपने बनाये हुए दूताङ्गद नाम के छायानाटकमें लिखाहै कि—

पितर्युपरते यस्तु नोद्वहेत्पैतृकीं धुरम्। तेन नैवोपदेष्टव्याः स्वस्य वंशस्य पूर्वजाः।

सुभटः।

जो मनुष्य पिता के मरनेपर अपने पिता के उठाए हुए भार को नहीं धारण करता है वह अपने पूर्वजों को उत्तम कोटिमें प्रकट नहीं करसकता। इत्यादि अनेक विचार करनेपर पारदशास्त्रपर कुछ लेख लिखना आरम्भ किया।

तदनन्तर पुस्तकों के अन्वेषण करने के लिये आपने काश्मीर यात्रा की। और वहां श्रीमान् काश्मीर, नरेश की सहायता से रसार्णव, रसरत्नसमुच्चय, रसरत्नाकर, रसराजपद्धति, रससार, योगसार, रसमानस, टोडरानन्द, वैद्यभास्करोदय, धातुरत्नमाला, कल्पसार, रसकामधेनु, रसरत्नप्रदीप, रसहृदय, रसराजलक्ष्मी, रसपारिजात, रसेन्द्रचिन्तामणि, रसचिन्तामणि, रसमार्तण्ड, प्रश्नावतार, धरणीधरसंहिता, रसकल्पतरु, रसराजशंकर, रसप्रदीप, काकचंडीश्वर तंत्र, ये संस्कृत पुस्तकें और सय्यदपहाड आदि हिन्दी पुस्तकों का संग्रह कर निजस्थान को लौट आये। यद्यपि बाबू साहब वकालत तथा गृहकार्य करते हुए पुस्तकसंशोधन करते थे परन्तु पुस्तकों के अत्यन्त अशुद्ध होने के कारण वह कार्य राजपूताने के रहनेवाले पण्डित जेष्ठमल्ल व्यास काव्यतीर्थ को सौंपागया। और उन्होंने उस कार्यको बडी योग्यता के साथ समाप्त किया।

रसशाला के बनवाने में कितना व्यय होता है इसको तो प्रत्येक मनुष्य भलीप्रकार जानते हैं परन्तु बाबू साहब ने व्यय को सहन करते हुए पूर्वोक्त पण्डितजी की सहायता से अभ्रकजारणके प्रारम्भ तक कार्य किया। इस अवसर पर अनेक वैद्य, महात्मा, नगरनिवासी तथा आसपास के मित्रगण पारदसम्बन्धी बात चीत करने के लिये आतेथे परन्तु बाबूसाहब को पारदकार्य सम्पादन करते हुए सब विघ्नरूप मालूम होतेथे। इसलिये आपने उन लोगों से मिलना ही छोडदिया। यहांतक कि वकालत के लिये न्यायालय का जाना भी छोडकर पारद के कार्य में मग्न होगये। और कार्य करतेहुए अग्रिम संस्कारों के लिये श्रीमान् बाबूसाहब ने श्रीवेङ्कटेश्वरसमाचारपत्र में एक विज्ञप्ति प्रकाशित की कि जो

महानुभाव रसग्रंथानुसार अभ्रकजारण आदि संस्कार करा सके हों तो मैं उनकी सेवाके लिये ५००० पांच हजार रुपया प्रदान करूंगा। यदि संस्कारयिताओं को मेरे स्थानपर आनेमें कठिनता समझपडती हो तो मैं स्वयं उनके स्थान पर जाने को उद्यत हूं। परन्तु बडे शोकके साथ लिखना पडताहै कि आपको इस भारतवर्षमें कोई भी ऐसा न मिला जो कि आपसे इस पारितोषिकको लेता। यद्यपि इस बातसे बाबू साहबका चित्त दुःखित सा होगया था तथापि उसकी अन्वेषणा करतेही गये।

संवत् १९६६ मिती आषाढ, शुक्ला १२ को आपको ज्वर आया और श्रावणकृष्णा ४ के दिन आप इस संसारको छोडकर श्रीवैकुण्ठपति के स्थानको प्रस्थान करगये। परमात्मा बाबू निरंजनप्रसादजी के आत्मा को शान्तिप्रदान करे। आपकी कन्या श्रीमान् साहू साहब ठाकुरद्वारेवालोंके पुत्र श्रीमान् रघुनन्दनशरणजीको व्याहीगई है। जोकि एक धनवान् और विद्वान् मनुष्य हैं। बाबू साहब के देहान्त के पश्चात् आपकी विवाहिता स्त्री श्रीमती अशर्फी देवीने बाबू साहबके संगृहीत और अनुभूत ग्रन्थको प्रकाशित करनेके लिये उक्त पण्डितजीसे टीका बनवाकर श्रीवेङ्कटेश्वरप्रेसके अध्यक्ष सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजीको इसके छापने विक्रय करने आदिका हक्क सदाके लिये सौंपदिया। इस कार्यमें बिसौलीवाले श्रीमान् लाला श्रीकृष्णदासजी तथा बाबू साहबके कार्यप्रबन्धक बा. चंपारामजीने भी श्रीमती अशर्फी देवीको बडी सहायता दी। यदि भारतवर्षमें ऐसे ऐसे देशोपकारक जन पैदा हों तो देशका अवश्य उद्धार होवे यही परमात्मा से हमारी प्रार्थना है।

बाबू श्रीकृष्णदासगुप्त-
अचलताल,
अलीगढ-सिटी.

धन्यवाद!!

स्वर्गीय बाबू निरंजनप्रसादजीकी धर्मपत्नी अशर्फी देवीजीको हम हार्दिक धन्यवाद देतेहैं कि आपने इस पुस्तकके पुनर्मुद्रण विक्रय इत्यादिका सर्वाधिकार सदाके लिये हमको देदिया है। उक्त बाबू साहबने अपना अधिक समय जो इस पारदसंहिताके बनानेमें लगाया था और जम्बू कश्मीर आदि देश देशान्तरोंसे ग्रन्थ संग्रह कर आयुर्वेद शास्त्रका गौरव बढानेमें यत्न किया था। उसकी पूर्ति उक्त स्वर्गीय बाबू साहबकी धर्मपत्नी आपने करके उक्त बाबू साहबके अर्द्धाङ्ग जीवित रहनेका प्रमाण देदिया। क्योंकि ग्रन्थ संग्रह करनेके पीछे भारतवर्षके वैद्योंके घरोंमें राजा महाराजाओंके पुस्तकालयोंमें पारदसंहिताके एकमात्र मुद्रित इस महान् ग्रन्थके रहनेसे जो उपकार होगा और इसके अनुभूत प्रयोगोंसे असाध्य रोगोंकी यन्त्रणाओंसे मुक्त होकर रोगी जो आशीर्वाद देंगे उसका फल आपकी ही इस लोकोपकारिणी बुद्धि और प्रकृतिसे स्वर्गीय बाबू साहब तक पहुंचेगा इसमें सन्देह नहीं।

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्ष बम्बई.



अथ पारदसंहिताभाषाटीकाविषयानुक्रमणिका।



अध्यायः ९.

अध्याय १७.

अध्याय १८.

अध्याय १९.

अध्याय २१.

अध्याय ३८.

अध्यायः ३९.

अध्याय ४२.

१ इस जगहके ४ पृष्ठ आखीरमें लगे हैं

अध्याय ५९.

अध्याय ६०.

इति श्रीपारदसंहिताविषयानुक्रमणिका समाप्ता।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

पारदसंहिता-

भाषाटीकासमेता।

प्रथमोऽध्यायः।

रसवंदना।

आधिव्याधिसमूहपाटनपटुर्दारिद्र्यविद्रावणो लोकद्विष्टजरापराक्रमहरः पापौघनिर्णाशकः। स्वेच्छाहारविहारसौख्यजननो दिव्याष्टसिद्धिप्रदः श्रीशंभोः करुणारसो रसवरस्तस्मै नमामो भुवि ॥ १ ॥ (ध.ध.सं.)

अर्थ-इस संसारमें जो अनेक आधि (मानसिक दुःख) और व्याधियों (देहके दुःख) के उखाडनेमेंचतुर, दारिद्रताको दूर करनेवाला, संसारका शत्रुरूप, जरा अवस्थाके पराक्रमको नष्ट करनेवाला, अत्यन्त पापोंका नाशकारक, अपनी इच्छासे किये हुए आहार विहारके सुखका देनेवाला, दिव्य आठ सिद्धियोंका दाता, श्रीमहादेवजीका सब रसोंमें उत्तम जो करुणारस है उसको हम नमस्कार करते हैं ॥ १ ॥

यः श्लेष्मानिलपित्तदोषशमनो रोगापहो मूर्छितः पंचत्वं च गतो ददाति विपुलं राज्यं चिरं जीवितम्। बद्धः खे गमनं करोत्यमरतां विद्याधरत्वं नृणां सोयं पातु सुरासुरेन्द्रनमितः श्रीसूतराजः प्रभुः ॥२॥ (ध. ध. सं-र. र. य.)

अर्थ-जो मूर्च्छित कियाहुआ पारद कफ, वात और पित्तको शान्तकारक और रोगोंको दूर करनेवाला होताहै और मराहुआ पारा बढे हुये राज्य और चिरकालतक जीवनको देताहै और बद्धपारद मनुष्योंको आकाशगति, देवतापन, विद्याधरपनको करताहै जिसको कि बडे२ देवता और दैत्य नमस्कार करतेहैं वो यह प्रभु श्रीसूतराज अर्थात् पारद हमारी रक्षा करे ॥ २ ॥

हरति सकलरोगान्मूर्छितो यो नराणां वितरति किल बद्धः खेचरत्वं जवेन। सकलसुरमुनीन्द्रैर्वन्दितं शंभुबीजं स जयति भवसिन्धोः पारदः पारदोयम् ॥ ३ ॥ (रसमंजरी)

अर्थ-जो मूर्छित हुआ पारद मनुष्योंके समस्त रोगोंको दूर करताहैं बँधाहुआ खेचरत्व (आकाशमें उड़ना) को शीघ्रही देताहै और जो सकल देवता और मुनीश्वरोंसे नमस्कार कियाहुआ श्रीमहादेवजीका वीर्य्यहै उस संसाररूपी समुद्रसे पार करनेवाले पारदका जय हो ॥३॥

रसमहिमा।

हतो हन्ति जराव्याधिं मूर्छितो व्याधिघातकः। बद्धः खेचरतां धत्ते कोऽन्यः सूतात्कृपाकरः ॥ ४ ॥ रसरत्नाकर-रसेन्द्रसारसंग्रह (र. रा. प. २ र. सा.प. १) (र. रत्ना.)

अर्थ-मराहुआ पारद बुढापेके दुःखों (विना समय केशोंका श्वेत होना त्वचामें झुर्रियोंका पडना इत्यादि) को नाश करताहै,मूर्च्छित पारद देहके रोगोंको दूर करताहैं और बँधाहुआ आकाश गतिको प्राप्त करताहै इस लिये पारदके विना कृपा करनेवाला और कोई दूसरा नहींहै ४॥

मूर्छितो हरति रुजो बंधनमुपलभ्य खे गतिं धत्ते। अमरी करोति सुमृतः कोन्यः करुणाकरः सूतात् ॥ ५ ॥

अर्थ-पारा मूर्च्छित होकर रोगोंको दूर करताहै और बंधनको प्राप्त होकर आकाशगतिको देताहै और स्वयं मराहुआ दूसरोंको अमर करताहै इसलिये पारदके सिवाय कृपा करनेवाला और कोई दूसरा नहीं है ॥ ५ ॥

सुरगुरुगोद्विजहिंसापापकलापोद्भवं किलासाध्यम्। चित्रं तदपि च शमयति यस्तस्मात्कः पवित्रतरः सूतात् ॥ ६ ॥ (र.रा. सु. र. सा. प. र.र. स. र. ह.)

अर्थ-जो अनेक देवता, गुरु, गौ, ब्राह्मणोंके हिंसारूप पापोंसे पैदा हुये असाध्यभी श्वेतकुष्ठको नाश करताहै उस पारदसे पवित्र और कौन है ॥ ६ ॥

तस्यास्ति स्वस्फुरतिः प्रादुर्भावः स शांकरः। कोऽपि कथमन्यथा किलासं विलसन्मात्राच्छमं नयति ॥ ७ ॥

अर्थ-क्योंकि उस पारदमें कोईभी श्रीशंकर संबंधी प्रादुर्भाव है अन्यथा विलासमात्रसे ही श्वेतकुष्ठको तत्क्षण नाश कैसे करसकताहै ॥ ७ ॥

१=दत्ते च खे गतिं बद्धः। २=श्वित्रं।

पारदोत्पत्ति ।

शैलेऽस्मिञ्शिवयोः प्रीत्या परस्परजिगीषया । संप्रवृत्ते च संभोगे त्रिलोकीक्षोभकारिणि ॥ ८ ॥ विनिवारयितुं वह्निः संभोगं प्रेषितः सुरैः । कांक्षमाणैस्तयोः पुत्रं तारकासुरमारकम् ॥९॥ कपोतरूपिणं प्राप्तं हिमवत्कंदरेऽनलम् । अपक्षिभावसंक्षुब्धं स्मरलीलाविलोकिनम् ॥ १० ॥ तं दृष्ट्वा लज्जितः शंभुर्विरतः सुरतात्तदा । प्रच्युतश्चरमो धातुर्गृहीतः शूलपाणिना ॥११॥ प्रक्षिप्ते वदने वह्नेर्गंगायामपि सोऽपतत् । बहिः क्षिप्तस्तया सोऽपि परिदंदह्यमानया ॥ १२ ॥ संजातास्तन्मलाधानाद्धातवः सिद्धिहेतवः । यावदग्निमुखाद्रेतो न्यपतद्भूरिसारतः ॥ १३ ॥ शतयोजननिम्नांस्तान्कृत्वा कूपांस्तु पञ्च च । तदाप्रभृति कूपस्थं तद्रेतः पंचधाऽभवत् ॥ १४ ॥ (र. र. स. ६-अनु. तरं.-र. रा. सुं.)

अर्थ-अब पारदकी उत्पत्तिको कहतेहैं-हिमालय पहाड़पर प्रीतिपूर्वक आपसमें एकदूसरेको जीतनेकी इच्छासे संसारभरको चलायमान करनेवाला श्रीमहादेव और पार्वतीजीका संभोग प्रारम्भ हुआ तब श्रीमहादेव और पार्वतीजीके ऐसा पुत्र हो जो तारकासुरको मारै, इस तरहसे चाहनेवाले देवताओंने संभोगको निवारण करानेके लिये अग्नि देवताको कबूतरका रूप बनाकर भेजा, जिसका मनुष्यके तुल्य चित्त चलायमान होगया है उस कपोतरूप कामदेवकी लीला देखनेवाले अग्निको देखकर श्रीमहादेवजी लज्जाको प्राप्त हुए और संभोग करनेसे शान्त होगये तब श्रीमहादेवजीने संभोगावस्थामें पतित हुए अपने वीर्य्यको लेकर अग्निके मुखमें डालदिया अग्नि देवताभी उस वीर्य्यके तेजके मारे जलता हुआ श्रीगंगाजीमें गिरपड़ा शिववीर्य्यसे जलतीहुई श्रीगंगाजीने भी उस अग्निदेवताको जलधारासे बाहर फेंकदिया अब श्रीमहादेवजीके वीर्य्यके मैलके रहनेसे सिद्धिके दाता धातु पैदा हुए और जब कि भारी होनेके कारण शिववीर्य्य सौ सौ योजनके गहरे पांचकुयें बनाकर अग्निके मुखसे पृथ्वीपर गिरा तबसे वह पारद पांच प्रकारका होगया ॥ ८-१४ ॥

पांच प्रकारके पारदके नाम और गुण ।

रसो रसेन्द्रः सूतश्च पारदो मिश्रकस्तथा । इति पंचविधो जातः क्षेत्रभेदेन शंभुजः ॥ ॥ १५ ॥ (र. र. स-र. रा. सुं०)

अर्थ-पृथक् पृथक् स्थान होनेके कारण पारद पांच प्रकारका होता है. जैसे कि, १ रस, २ रसेन्द्र, ३ सूत, ४ पारद और ५ मिश्रक ॥ १५ ॥

रस ।

रसो रक्तो विनिर्मुक्तः सर्वदोषै रसायनः । संजातास्त्रिदशास्तेन नीरुजा निर्जरामराः ॥ १६ ॥ (र. र. स-र. रा. सुं.)

अर्थ-रसनामका पारद लाल रंगका होताहै. सर्व प्रकारके दोषोंसे रहित और रसायन है उसी पारदके सेवनकरनेसे देवता राग, बुढ़ापा और मृत्युसे रहित होगये॥१६॥

रसेन्द्र ।

रसेन्द्रो दोषनिर्मुक्तः श्यावो रूक्षोऽतिनिर्मलः । रसायिनोऽभवंस्तेन नागा मृत्युजरोज्झिताः ॥१७॥ देवैर्नागैश्च तौ कूपौ पूरितौ मृद्भिरश्मभिः । तदा प्रभृति लोकानां तौ जातावतिदुर्लभौ ॥१८॥ (र.र.स.र.रा.सुं.)

अर्थ-रसेन्द्रनामका पारद स्वभावसेही निर्दोष, श्याव (काला पीला), रूखा और अत्यंत निर्मल होताहै उसी पारद भक्षणसे नागलोक बुढापा और मृत्युसे छूटगये हैं इस पारदको खाकर मनुष्य अजर अमर न होजायँ इसकारण देवता और नागलोकोंने उन दो कुओंको (जिनमें कि रस और रसेंद्रनामका पारा रहता था) मिट्टी और पत्थरसे भरदिया तबसे दोनों जातिके पारद मनुष्योंको दुर्लभ होगये ॥ १७ ॥ १८ ॥

सूत ।

ईषत्पीतश्च रूक्षाङ्गो दोषयुक्तश्च सूतकः । दशाष्टसंस्कृतैः सिद्धो देहं लोहं करोति सः ॥ १९ ॥ (र. र. स. र. रा. सुं.)

अर्थ--सूतनामका पारद कुछ पीला, रूखा और दोषोंसे मिलाहुआ होताहै जब कि सूतनामका पारद १८ संस्कारोंसे सिद्ध होता है तब देहको लोहेके समान बना देता है ॥१९॥

पारद ।

अथान्यकूपजः कोऽपि स चलः श्वेतवर्णवान् । पारदो विविधैर्योगैः सर्वरोगहरः स हि ॥ ॥ २० ॥ (र. र. स-र. रा. सुं.)

अर्थ-अब जो कि चौथे कुएँमें रहनेवाला पारा है उसको पारद कहते हैं वह चंचल और सफेद रंगका होताहै और अनेक प्रकारके प्रयोगोंसे समस्त रोगोंको नाश करताहै२०॥

मिश्रक ।

मयूरचन्द्रिकाच्छायः स रसो मिश्रको मतः। सोऽप्यष्टादशसंस्कारयुक्तश्चातीव सिद्धिदः ॥ २१ ॥ (र. र. स-र. रा. सुं.)

अर्थ-मिश्रक नामका पारद मोरके पर (पंख) कीसी रंगतका और रसदार होताहै वह भी १८ संस्कारोंसे सिद्ध कियाहुआ अनेक सिद्धियोंको देताहै ॥ २१ ॥

तीन प्रकारके पारदोंकी उत्तमता ।

त्रयः सूतादयः सूताः सर्वसिद्धिकरा अपि। निजकर्मविनिर्माणैः शक्तिमन्तोतिमात्रया

॥ २२ ॥ एतां रससमुत्पत्तिं यो जानाति स धार्मिकः । आयुरारोग्यसंतानं रससिद्धिं च विंदति॥२३॥(र.र.स-६ र.रा.सुं०)

अर्थ-अनेक प्रकारकी सिद्धिके देनेवाले तीनों सूतादिक (सूत, पारद, मिश्रक) अपने २ कर्मोंसे सिद्ध कियेहुए अत्यन्त शक्तिवाले होजातेहैं, जो इस रसोत्पत्तिको जानताहै वह धर्मात्मा आयु, आरोग्य, संतान और रससिद्धिको प्राप्त होताहै ॥ २२ ॥ २३ ॥

पारद ग्रहण करनेका प्रथम उपाय।

प्रथमे रजसि स्नातां हयारूढां स्वलंकृताम्। वीक्ष्यमाणां वधूं दृष्ट्वा जिघृक्षुः कूपगो रसः ॥२४॥ उद्गच्छति जवात्सापि तं दृष्ट्वायाति वेगतः। अनुगच्छति तां सूतः सीमानं योजनोन्मितम् ॥ २५ ॥ प्रत्यायाति ततः कूपं वेगतः शिवसंभवः। मार्गनिर्मितगर्तेषु स्थितं गृह्णन्ति पारदम् ॥ २६ ॥ (र.र.स.)

अर्थ-कुएंमेंका पारद; प्रथम मासिक धर्ममें स्नान की हुई (अर्थात् जो प्रथमही रजस्वला हुई हो) घोडेपर सवार सजीहुई और अपनेको देखतीहुई स्त्रीको देखकर उस स्त्रीको पकडनेकी इच्छासे बाहर निकल आता है, और वह स्त्रीभी वेगके साथ आतेहुए उस पारदको देखकर भाग जातीहै जब पारद सौ योजनतक उस स्त्रीके पीछे २ चलाजाताहै और फिर वेगसे अपन कुएंको लौट आता है, बस इसीतरह जो पारद मार्गके गढोंमें पडाहुआ रहजाताहै उसको मनुष्य ग्रहण करतेहैं ॥ २४-२६ ॥

पारद ग्रहण करनेका दूसरा उपाय।

पतितो दरदे देशे गौरवाद्वह्निवक्त्रतः। स रसो भूतले लीनस्तत्तद्देशनिवासिनः। तां मृदं पातनायंत्रे क्षिप्त्वा सूतं हरंति च ॥ ॥ २७ ॥ (र.र.स.)

अर्थ-भारी होनेके कारण श्रीमहादेवजीका वीर्य्य जो अग्निदेवताके मुखसे पृथ्वीपर गिरपडा था वह उस पृथ्वीमेंही मिलगया. अब उन उन देशोंके रहनेवाले उस मिट्टीको पातना यंत्र (यंत्राध्याय देखो) में रखकर पारदको निकाल लेतेहैं ॥ २७ ॥

रसनिरुक्ति।

रस्यतेऽमर्त्यमर्त्याद्यैर्भुक्तिमुक्तिप्रलिप्सुभिः। यतस्ततो रस इति प्रोच्यते पारदो बुधैः ॥ ॥ २८ ॥ (बृ० यो०)

अर्थ-भोग और मोक्षको चाहनेवाले देवता और दैत्यलोग इस पारदका रस चखतेहैं इसलिये पंडितजन पारदको रस कहतेहैं ॥ २८ ॥

दूसरी और तीसरी निरुक्ति।

रसनात्सर्वधातूनां रस इत्यभिधीयते । जरारुग्मृत्युनाशाय रस्यते वा रसो मतः ॥ २९ ॥ (र. सा. प.)

अर्थ-जो कि समस्त धातुओंको खाजाता है इससे पारदको रस कहते हैं अथवा जो बुढापा रोग और मृत्युके नाशके लिये चक्खाजाताहै इसलिये पारदको रस कहते हैं ॥ २९ ॥

रसेन्द्रकी निरुक्ति।

रसोपरसराजत्वाद्रसेन्द्र इति कीर्तितः।

अर्थ-रस और उपरसोंका राजा होनेसे पारदको रसेन्द्र कहते हैं.

सूतकी निरुक्ति।

देहलोहमयीं सिद्धिं सूतेऽतः सूतकः स्मृतः ॥ ३० ॥ (र. सा. प.)

अर्थ-जो पारद देह लोहकी सिद्धिको देताहै इससे उसको सूतक कहते हैं ॥ ३० ॥

पारदनिरुक्ति।

रोगपंकाब्धिमग्नानां पारदानां च पारदः।

अर्थ-रोगरूपी कीचडमें फसेहुए मनुष्योंको जो उस कीचडसे पारकर देताहै इसलिये पारेको पारद कहते हैं

मिश्रकनिरुक्ति।

सर्वधातुमयं तेजो मिश्रितं यत्र तिष्ठति। तस्मात्स मिश्रकः प्रोक्तो नानारूपफलप्रदः ॥ ३१ ॥ (र. सा. प. र. रा. सुं०)

अर्थ-जिसमें समस्त धातुओंका तेज मिला रहताहै इसलिये उस पारदको मिश्रक कहते हैं और वह नाना-प्रकारके फलोंको देताहै ॥ ३१ ॥

पारदनाम।

शिवबीजं सूतराजः पारदश्च रसेन्द्रकः। एतानि रसनामानि तथान्यानि शिवे यथा ॥ ३२ ॥ (र. स. मं.)

अर्थ-शिवबीज, सूतराज, पारद,रसेन्द्र ये पारेके नाम हैं और जो श्रीमहादेवजीके नामहैं वे भी पारेके नाम हैं॥३२॥

रसेन्द्रः पारदः सूतः सूतराजश्च सूतकः। शिवतेजो रसः सप्त नामान्येवं रसस्य तु ॥ ३३ ॥ (रसेन्द्र सा. सं.)

अर्थ-रसेन्द्र, पारद, सूत, सूतराज, सूतक, शिवतेज, रस ये सात पारदके नाम हैं ॥ ३३ ॥

पारदो रसधातुश्च रसेन्द्रश्च महारसः। चपलः शिववीर्यश्च रसः सूतः शिवाह्वयः ॥ ३४ ॥ (आयु० वि०-वाच० कृ०)

१=मृत्युवि। २=गर्त।

अर्थ-पारद, रसधातु, रसेन्द्र,महारस, चपल, शिववीर्य, रस, सूत, और जितने शिवके नाम हैं वे समस्त पारदके नाम हैं ॥ ३४ ॥

रसेन्द्रः पारदः सूतो हरजः सूतको रसः । मुकुन्दश्चेति नामानि ज्ञेयानि रसकर्मसु ॥ ॥ ३५ ॥ (शार्ङ्गध०)

अर्थ-रसेन्द्र, पारद, सूत, हरज, सूतक, रस और मुकुंद ये पारदके नाम रसकर्ममें समझने चाहिये ॥ ३५ ॥

रसेन्द्रः पारदः सूतो हरजः सूतको रसः । सूतराजो मुकुंदश्च शिववीर्यश्च पारदः ॥ ॥ ३६ ॥ महारसो रसराजः शंभुबीजश्च शंभुजः । रसेन्द्रराजो नाम्नासो मिश्रकः शिवसंभवः ॥ ३७ ॥ एतानि रसराजस्य नामान्युक्तानि तांत्रिकैः । नामैकं वा वदन्मर्त्यो मुच्यते पापकोटितः ॥ ३८ ॥

अर्थ-रसेन्द्र, पारद, सूत, हरज, सूतक, सूतराज, मुकुन्द, शिववीर्य, महारस, रसराज, शंभुबीज, रसेन्द्रराज, मिश्रक, शिवसंभव, ये सब तंत्रशास्त्र जाननेवालोंने पारदके नाम बताये हैं जो इन नामोंमेंसे एक नामको भी ले तो कोटि पापों से छूट जाताहै ॥ ३६-३८ ॥

दोहा-पारद कहि रस धातु कहि,
पुनि रसेन्द्र कहि नाम ।
नाम महारस चपल पुनि,
शिववीरज अभिराम ॥
शिवा नाम त्यों सूत भनि,
रस तैसेही जान ।
रस पारदके नाम नव,
कीने मुनिन प्रमान ॥
प्रथम नाम रस इन्द्र है,
दूजो पारद जान ।
सूतक तीजो हरज है,
चौथो नाम बखान ॥
रस है पंचम नाम अरु,
छठो मुकुन्द सु नाम ।
ये सब ही रस कर्ममें,
बहुधा आवत काम ॥
(वैद्यादर्श)

शिव नामसे पारदका ग्रहण क्यों होताहै ?

आत्मा वै पुत्रनामास्ति न्यायादीश्वरनामभिः । कीर्त्यते पार्वतीकांत इत्यादिभिरयं बुधैः ॥ ३९ ॥ (टो०नं०)

अर्थ-आत्मा पुत्रका नाम होता है इस न्यायके अनुसार पंडित लोग पारदको पार्वतीकान्त इत्यादिक श्रीमहादेवजीके नामोंसे वर्णन करते हैं ॥ ३९ ॥

सीमाबकी अकसाम् (उर्दू)

सीमाव चार किस्मके होते हैं-अव्वल सीमाव उरफी यानी मादनी, दोयम सीमाव तलक सफेद, सोयम सीमाव तलक स्याह, चहारम सीमाव कसरुल्वैज पहली और दूसरी किस्मके पर होतेहैं यानी आगपर रखनेसे उड़जाते हैं, तीसरी और चौथी किस्मके पर नहीं होते और आगपर साबित रहते हैं, सुफहा १३८ अकलीमिया

तशरीह मुतअल्लिक अकसाम सीमाव (उर्दू)

(१)-अव्वल सीमाव मादनी वे मेलका खालिस होना चाहिये जिसको हाथमें मलनेसे स्याही न पैदा हो (२)-दूसरा सीमाव तलकसफेद वह है जो कि अभरकसे निकाला जाता है और सीमाव मादनीके साथ मुनकिद करके तुकरः बनाया जाता है इसकी तरकीब रिसालः किबारियत अहमरकी साखी नं० ५९ व ६० में दर्ज है, (३)-सीमाव तलक स्याह वह है जो अभरक स्याहसे निकाला जाता है और सीमाव मादनीके साथ अकद करके तिला बनाया जाता है उसकी तरकीब रिसालः किबारियत अहमरकी साखी नं० ३० व ५४ लगायत ५८ में दर्ज है नं० (४)-सीमाव कसरुलवैज उसको कहतेहैं जो अंडोंके छिलकेसे निकाला जाता है इसकी तरकीब साखी नं० ५३ रिसालः मजकूरके दर्ज है (सफा १३८ अकलीमिया)

रसके भेद (जाति और वर्णद्वारा) ।

क्षेत्रभेदेन विज्ञेयं शिववीर्यं चतुर्विधम् । श्वेतं रक्तं तथा पीतं कृष्णं तत्तु भवेत्क्रमात् । ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रस्तु खलु जातितः ॥ ४० ॥ (आयु. वे.वि.वा.बृ-श. क.)

अर्थ-स्थानभेदसे पारद चार प्रकारका होता है श्वेत, लाल, पीला, काला और वही पारद यथाक्रमसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र जातिका होताहै ॥ ४० ॥

श्वेतारुणहरिद्राभकृष्णाः सूता द्विजादयः। देहे लोहे गदे पिष्ट्यां योज्या वा स्वस्व जातिषु ॥ ४१ ॥ (बृ० यो०)

अर्थ-श्वेत, लाल, पीले, काले, वर्ण वाले पारद ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र जातिके होते हैं, श्वेत और ब्राह्मण जातिका पारद देहकी सिद्धिमें, लाल और क्षत्रिय जातिका पारद लोहेमें (अर्थात् सोना चांदी बनानेमें) पीला वैश्यजातिका पारद रोगोंके नाश करनेमें, काला शूद्र वर्णका पारद पिष्टी (पिट्ठी) के काममें लगाना चाहिये अथवा ब्राह्मणोंमें ब्राह्मणजातिका, क्षत्रियोंमें क्षत्रियजातिका, वैश्योंमें वैश्यजातिका पारद और शूद्रोंमें शूद्र जातिके पारदका प्रयोग करना चाहिये ॥ ४१ ॥

जातिभेदसे पारदप्रयोग ।

ब्राह्मणः कल्प्यते कल्पे गुटिकायां च

१-पारा ।

बाहुजः। धातुवादे तथा वैश्यः शूद्रश्चेतरकर्मणि ॥ ४२ ॥ (नि०र०-यो०त०)

अर्थ-ब्राह्मणजातिका पारद कल्पमें (देहसिद्ध में) क्षत्रियजातिका गोली बनानेमें, वैश्य जातिका सोना चांदी बनानेमें और शूद्रजातिका पारद दूसरे कर्मोंमें ग्रहण करना चाहिये ॥ ४२ ॥

दूसरा प्रकार।

श्वेतः शस्तो रुजां नाशे रक्तः किल रसायनम्। धातुभेदे तु तत्पीतः खे गतौ कृष्ण एव च ॥ ४३ ॥ (आ.वे.वि-बा.बृ.-र.सा.प-र.स.क.)

अर्थ-श्वेत पारद रोगोंके नाश करनेमें अच्छा है. लाल पारद रसायन है पीला पारद धातुवादमें (सोना चांदी बनानेमें) अच्छा है खेचर गतिमें काला पारद लियागयाहै ॥ ४३ ॥

सीमावके रंग (उर्दू)

सीमाव अरफीके चार रंग होतेहैं दो जाहर, दो मकफी रंग जाहरी सफेद और स्याह है रंग मकफी सुर्ख और जर्द है जो बाद अमलके जाहर होतेहैं (सुफहा अकलीमियां १३९)

पारदके षड्विधफलका वर्णन।

त्वं माता सर्वभूतानां पिता चाहं सनातनः। द्वयोश्च यो रसो देवि महामैथुनसंभवः ॥ ॥ ४४ ॥ दर्शनात्स्पर्शनात्तस्य भक्षणात्स्मरणात्प्रिये। पूजनाद्रसदानाच्च दृश्यते षड्विधं फलम् ॥ ४५ ॥ (र.चिं.-नि.र.)

अर्थ-श्रीमहादेवजी कहतेहैं कि हे प्यारी पार्वती तुम सब जीवोंकी माता हो और मैं संपूर्ण जीवोंका सनातन पिता हूं हम दोनोंके प्रबल मैथुनसे पैदाहुआ जो रस है उसके दर्शनसे, स्पर्श (छूने) से, भक्षण करनेसे, स्मरण करनेसे, पूजा करनेसे और रसका दान करनेसे छःप्रकारका फल पैदा होताहै ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

रसदर्शनका फल।

केदारादीनि लिंगानि पृथिव्यां यानि कानिचित्। तानि दृष्ट्वा च यत्पुण्यं तत्पुण्यं रस दर्शनात ॥ ४६ ॥ (र.चि.वि.र.-र.सा.प.र.राय रसेश्वरदर्शन, रसेन्द्र.सा.सं.)

अर्थ-इस पृथ्वीपर केदारनाथसे लेकर जितने श्रीमहादेवजीके लिंग (प्रतिमा) हैं उन सबके दर्शन करनेसे जो पुण्य होताहै वह पुण्य केवल रसके दर्शन करनेसे मिलताहै ॥ ४६ ॥

रसके स्पर्श करनेका फल।

चन्दनागुरुकर्पूरकुंकुमान्तर्गतो रसः। मूर्छितः शिवपूजा सा शिवसान्निध्यसिद्धये ॥ ४७ ॥ (र. चि. नि. र. र. रा. य.-रसे.सा. सं.)

अर्थ-चन्दन, अगर, कर्पूर, केशर और कस्तूरीके भीतर स्थित जो मूर्छित पारद है वही शिवपूजा है और उसी से शिवके दर्शन होते हैं ॥ ४७ ॥

रसके भक्षण करनेका फल।

भक्षणात्परमेशानि हन्ति पापत्रयं रसः। दुर्लभं ब्रह्मविष्ण्वाद्यैः प्राप्यते परमं पदम् ॥ ॥ ४८ ॥ (र. चि. नि. र. सा. प. र. री. प. र. सार. सं.)

अर्थ-हे पार्वती ! जो पारदको भक्षण करताहै उसके मानसिक (मनके किये हुए) वाचनिक (वाणीके कियेहुए) कायिक (शरीरके कियेहुए) तीनों प्रकारके पापोंको रस नाश करताहै और जो पद ब्रह्मा, विष्णु, प्रभृति (वगैरः) को दुर्लभ है उस परम पदको रस भक्षण करनेवाला मनुष्य प्राप्त होताहै ॥ ४८ ॥

रस भक्षण करनेका दूसरा फल।

उदरे संस्थिते सूते यस्योत्क्रामति जीवितम्। स मुक्तो दुष्कृताद्धोरात्प्रयाति परमं पदम् ॥ ४९ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-उदरमें पारदके रहतेहुए जिस मनुष्यका प्राण निकल जाय तौ वह मनुष्य घोर पापोंसे छूटकर परम पदको प्राप्त होताहै ॥ ४९ ॥

रसके स्मरण करनेका फल।

हृद्योगकर्णिकान्तःस्थं रसेन्द्रंपरमेश्वरि। स्मरन् विमुच्यते पापैः सद्यो जन्मान्तरार्जितैः ॥५०॥ (र. सा. सं-र. रा. प.-र. चिं. नि. र.)

अर्थ-हे पार्वती जो मनुष्य हृत्कमलमें स्थित पारदका स्मरण करता है, वह अनेक जन्मके संचित पापों से तत्काल छूटजाता है ॥ ५० ॥

रसकी पूजा करनेका फल।

विधाय रसलिंगं यो भक्तियुक्तः समर्चयेत्। जगत्त्रितयलिंगानां पूजाफलमवाप्नुयात ॥ ५१ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-जो मनुष्य भक्तिसे रसलिङ्ग (पारदके महादेव) बनाकर पूजन करताहै वह तीनों लोकोंमें जितने शिवलिंग हैं उन सबकी पूजाके फलको प्राप्त होताहै ॥ ५१ ॥

१=यद्यपि कोशोंमें कल्प शब्दका अर्थ देहसिद्धि नहीं है तथापि रसशास्त्रमें देहसिद्धिका संकेत कल्प शब्द मानागया है। २=वादे।

१=कस्तूरी। २=तथा तापत्रयं हन्ति रोगान्दोषत्रयोद्भवान्। ३=हृद्व्योम वा तद्व्योम। ४=स्मरणान्मु।

रसकी पूजा करनेका दूसरा फल ।

स्वयंभूलिंगसाहस्रैर्यत्फलं सम्यगर्चनात् ।
तत्फलं कोटिगुणितं रसलिंगार्चनाद्भवेत् ॥
॥ ५२ ॥ (नि. र.–र. सा. प.–र. रा. प. रसे. सा. सं. रसे. क. द्रु.)

अर्थ–सहस्रों शिवलिंगोंकी पूजा करनेसे जो फल प्राप्त होता है उस फलसे कोटिगुना फल रसलिंग (पारदके महादेव) की पूजा करनेसे होताहै ॥ ५२ ॥

दर्शनाद्रसराजस्य ब्रह्महत्यां व्यपोहति ।
स्पर्शनान्नाशयेद्देवि गोहत्यां नात्र संशयः ।
किं पुनर्भक्षणाद्देवि प्राप्यते परमं पदम् ॥
॥ ५३ ॥ (र. रत्नाकर. र. सा. प०)

अर्थ–पारदका दर्शन करना ब्रह्महत्याको दूर करताहै और स्पर्श करना गोहत्याको नाश करता है इसमें संदेह नहींहै हे देवि ! उसके भक्षण करनेसे यदि परमपद प्राप्त हो तो आश्चर्य क्या ॥ ५३ ॥

पांच प्रकारकी रसपूजा ।

भक्षणं स्पर्शनं दानं ध्यानं च परिपूजनम् ।
पञ्चधा रसपूजोक्ता महापातकनाशिनी ॥
॥ ५४ ॥ (र.र.स.)

अर्थ–रसका भक्षण, स्पर्श, दान, ध्यान, परिपूजन (नैवेद्य) यह पांच प्रकारकी रसपूजा महापापोंको नाश करनेवाली कही है ॥ ५४ ॥

रसभक्षणफल ।

हन्ति भक्षणमात्रेण पूर्वजन्माघसंभवम् ।
रोगसंघमशेषाणां नराणां नात्र संशयः ॥
॥ ५५ ॥ (र. र. स.)

अर्थ–जो पारद सम्पूर्ण मनुष्योंके पूर्वजन्मके पापोंसे उत्पन्न हुए अनेक रोगोंको केवल भक्षण से ही नाश कर देता है इसमें संदेह नहीं ॥ ५५ ॥

रसस्पर्शका फल ।

पूर्वजन्मकृतं पापं सद्यो नश्यति देहिनाम् ।
सुगंधपिष्टसूतेन यदि शंभुर्विलेपितः ॥५६॥
(र. र. स)

अर्थ–जिन मनुष्योंने सुगंधित वस्तुओं के साथ पिसे हुए पारदसे शिवकी पूजा की है उनके पूर्व जन्म में किये पापोंको श्रीमहादेवजी शीघ्रही नाश करते हैं ॥ ५६ ॥

रसदान फल ।

रोगिभ्यो यो रसं दत्ते शुद्धिपाकसमन्वितम् । तुलादानाश्वमेधानां फलं प्राप्नोति शाश्वतम् ॥ ५७ ॥ (र.र.स.)

अर्थ–जो मनुष्य शुद्ध पाक (अर्थात् जो रस कच्चा न होय) से युक्त पारद को रोगियोंके लिये देता है वह निरंतर तुलादान और अश्वमेधों के फलको प्राप्त होता है॥५७॥

रसध्यानफल ।

सिद्धे रसे करिष्यामि निर्दारिद्र्यगदं जगत् ।
रसध्यानमिदं प्रोक्तं ब्रह्महत्यादि पापनुत् ॥
॥ ५८ ॥ (र. र. स.)

अर्थ–रसके सिद्ध होने पर मैं इस संसार को दारिद्र्य (कंगाली) और रोग रहित करूंगा यही रसकाध्यान है जो ब्रह्महत्यादि पापों का नाश करनेवाला है ॥ ५८ ॥

रसपरिपूजन (नैवेद्य) फल ।

अभ्रग्रासो हि सूतस्य नैवेद्यं परिकीर्तितम् ।
रसस्येत्यर्चनं कृत्वा प्राप्नुयात्क्रतुजं फलम् ॥
॥ ५९ ॥ (र. र. स.)

अर्थ–पारदको जो अभ्रकका ग्रास देना है उसीको पारदका नैवेद्य देना कहते हैं इस प्रकार जो रसकी पूजा करता है वह अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होताहै ॥ ५९ ॥

पारद भक्षणकी उत्तमता ।

यावन्न हरबीजं तु भक्षयेत्पारदं रसम् ।
तावत्तस्य कुतो मुक्तिः कुतः पिंडस्य धारणम् ॥ ६० ॥ (र. सा. सं–र. चिं.)

अर्थ–जबतक मनुष्य शिववीर्य्य पारदरसको नहीं भक्षण करता तबतक उसकी मुक्ति नहीं होती और वह अपने शरीरकी रक्षाभी नहीं करसक्ता ॥ ६० ॥

पारदसे अजरामरकी प्राप्ति ।

अचिराज्जायते देवि शरीरमजरामरम् ।
मनसश्च समाधानं रसयोगादवाप्यते ॥
॥ ६१ ॥ (र.चिं.–र. सा. सं.)

अर्थ–हे पार्वती ! रसभक्षणके योगसे मनुष्योंका शरीर थोडेही समयमें अजर अमर होजाता है और उनका मनभी शान्त होताहै ॥ ६१ ॥

पारद भक्षण करनेका उपाय ।

सत्त्वं च लभते देवि विज्ञानं ज्ञानपूर्वकम् ।
सत्यं मंत्राश्च सिध्यन्ति योऽश्नाति मृतसूतकम् ॥ ६२ ॥ (र.चिं.–र.सा. सं.)

अर्थ–हे पार्वती ! जो मनुष्य पारद भस्मको खाता है वह ज्ञान और विज्ञान सहित सतोगुणको प्राप्त होताहै. और उसके सिद्ध कियेहुए मंत्र सब सत्य होतेहैं ॥ ६२ ॥

पारदज्ञानका उपदेश ।

स्वदेहे खेचरत्वं च शिवत्वं येन लभ्यते ।
तादृशे तु रसज्ञाने नित्याभ्यासं कुरु प्रिये ॥ ६३ ॥ (र. चिं.)

अर्थ–हे प्यारी पार्वती ! जिस पारद भक्षण करनेसे अपने शरीरमें आकाशगति और शिवका रूप प्राप्त होताहै उस प्रकारके रसके जाननेमें तुम नित्य अभ्यास करो६३॥

यावन्न शक्तिपातस्तु न यावत्पाशकृंतनम्। तावत्तस्य कुतो बुद्धिर्जायते भस्मसूतके॥ ॥ ६४ ॥ (र. सा. सं.-र. सा. य.)

अर्थ-जबतक शक्तिपात अर्थात् शरीरमें निर्बलता न हो और जबतक मोहकी फाँसी न कटै तबतक पारद भस्मके विषयमें मनुष्यकी बुद्धि प्रवृत्त नहीं होती ॥ ६४ ॥

कर्मयोगेन देवेशि प्राप्यते पिंडधारणम्। रसश्च पवनश्चेति कर्मयोगो द्विधा मतः॥ ॥ ६५ ॥ मूर्च्छितो हरते व्याधिं मृतो जीवयति स्वयम्। बद्धः खेचरतां कुर्याद्रसो वायुश्च भैरवि ॥ ६६ ॥ (र.चिं.)

अर्थ-हे पार्वती ! मनुष्य कर्मयोगसे शरीरको धारण करते हैं वह कर्मयोग रसयोग और पवनयोगके भेदसे दो प्रकारका है मूर्छित हुआ पारा वायुके शरीरके रोगोंको दूर करताहै, और स्वयं मराहुआ दूसरोंको जीवित करताहै और हे पार्वती ! बंधाहुआ पारा आकाशगतिको देताहै ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

मोक्षके लिये यत्न करना मनुष्यमात्रका कर्तव्यहै और मोक्ष पारद भक्षणसेही होताहै।

सुकृतफलं तावदिदं सुकुले यज्जन्म धीश्च तत्रापि। साऽपि च सकलमहीतलतुलनफलाभूतलं च सुविधेयम् ॥ ६७ ॥ भूतलविधेयतायाः[२] फलमर्थास्ते च विविधभोगफलाः। भोगाश्च संति शरीरे तदनित्यमतो वृथा सकलम् ॥ ६८ ॥ इति धनशरीरभोगान्मत्वा नित्यान्सदैव यतनीयम्। मुक्तौ सा च ज्ञानात्तच्चाभ्यासात्स च स्थिरे देहे ॥ ६९ ॥ तत्स्थैर्ये न समर्थं रसायनं किमपि मूललोहादि। स्वयमस्थिरस्वभावं दाह्यं क्लेद्यं च शोष्यं च ॥ ७० ॥ (र. र. स.-र. हृ.)

अर्थ-अपने कियेहुए पुण्यका यही फल है कि श्रेष्ठ कुलमें जन्म लेना और उस जन्ममेंभी बुद्धिका होना और वह बुद्धिभी ऐसी होनी चाहिये कि जो सम्पूर्ण पृथिवीतलकी परीक्षा करनेवाली हो और पृथिवीतलभी श्रेष्ठ होना चाहिये पृथिवीतलकी श्रेष्ठताका कारण अर्थ (द्रव्य) है अर्थात् द्रव्यसेही पृथ्वीतल श्रेष्ठ होताहै और उन द्रव्योंसे अनेक प्रकारके भोग होतेहैं और वे भोग शरीरमें रहते हैं और वह शरीर अनित्य है इसलिये ये सब अनित्य हैं अतएव धन, शरीर, और भोगोंको अनित्य मानकर मोक्षके लिये उपाय करना चाहिये मोक्ष ज्ञानसे होताहै, ज्ञान अभ्याससे और वह अभ्यास देहके स्थिर रहनेपर होताहै. और देहके स्थिर करनेके लिये कोईभी जड़ी और धातु (सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा इत्यादिक) समर्थ नहीं है क्योंकि वे स्वयं (आप) अस्थिर स्वभाववाले, दाह, क्लेद, और सुखानेवाले हैं (इसलिये रसही केवल शरीरको स्थिर रखसकताहै) इसलिये पारद सबसे उत्तम है ॥ ६७-७० ॥

१ शक्तिपातसमये विचारणं प्राप्तमीश न करोषि कर्हिचित्। अद्य मां प्रति किमागतं यतः स्वप्रकाशनविधौ विलम्बसे ॥ (श्रीनगर) २ श्रेष्ठतायाः।

पारदमें धातुओंका लय।

अमृतत्वं हि भजन्ते हरमूर्तौ योगिनो यथा लीनाः। तद्वत्कवलितगगने रसराजे हेमलोहाद्याः ॥ ७१ ॥ (र.र.स.-हृ.)

अर्थ-जिसप्रकार शिवमूर्तिमें मग्न हुए योगिराज मोक्षको प्राप्त होतेहैं उसीप्रकार अभ्रक जारण कियेहुए पारदमें सुवर्ण आदि धातु लीन होजाते हैं इससे यह अभिप्राय ज्ञात होताहै कि अभ्रक जारण करनेपर चारण संस्कार होताहै। और पारदमें लीन कियेहुए सुवर्णादि धातुभी देहको स्थिर करसकतेहैं ॥ ७१ ॥

लयक्रमसे पारदकी ब्रह्मरूपता कहते हैं।

काष्ठौषध्यो नागे नागो वंगेऽथ वंगमपि शुल्बे। शुल्बं तारे तारं कनके कनकं च लीयते सूते ॥ ७२ ॥ परमात्मनीव सततं[१] भवति लयो यत्र सर्वसत्त्वानाम्। एकोऽसौ रसराजः शरीरमजरामरं कुरुते ॥ ७३ ॥ (र. र. स.-र. हृ.)

अर्थ-जड़ी और बूटियां सीसेमें लीन होजातीहैं सीसा वङ्ग (रांगे) में, वंग तांबेमें, तांबा चाँदीमें, चाँदी सोनेमें और सोना रस (पारद) में लीन होताहै जिसप्रकार परमात्मामें सकल सत्त्वों (जीवों) का लय होताहै उसीतरह जिस पारदमें भी समस्त सत्त्वोंका अर्थात् जड़ी बूटी, सुवर्ण आदि धातु और रस उपरसोंका लय होताहै वह एक रसराजही शरीरको अजर अमर करदेताहै (जिस प्रकार परमात्माको तटस्थ और स्वरूप लक्षणसे वर्णन करतेहैं इसप्रकार यहांपरभी पारद और ब्रह्मकी समानता निरूपण करनेके लिये पारदको भी तटस्थ और स्वरूप लक्षणसे वर्णन किया है, 'काष्ठौषध्यो नागे' इस श्लोकमें तटस्थलक्षण और परमात्मनीव इस श्लोक में स्वरूपलक्षण जानना चाहिये ॥ ७२-७३ ॥

पारद सेवनसे ब्रह्मपदकी प्राप्ति।

स्थिरदेहेऽभ्यासवशात्प्राप्य ज्ञानं गुणाष्टकोपेतम्। प्राप्नोति ब्रह्मपदं न पुनर्भववासजन्मदुःखानि ॥ ७४ ॥ (र. र. स.-र. हृ.)

अर्थ-पारद भक्षणसे जब देह स्थिर होजाय तब बारबार महावाक्यके विचारनेसे अष्टविध गुणों (बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म) से युक्त ज्ञानको प्राप्त होकर

१ नियतम्।

ब्रह्मपदको प्राप्त होताहै तदनंतर जन्म मरणके दुखको नहीं प्राप्त होता जहां (न पुनर्वनवासदुःखेन) ऐसा पाठ है वहां ऐसा अर्थ करना चाहिये कि केवल जंगलमें रहकर अनेक दुःख भोगनेसे देहकी स्थिरतारूप सिद्धि नहीं होती ॥७४॥

देहके स्थिर करनेकी आवश्यकता ।

नहि देहेन कथंचिद्व्याधिजरामरणदुःखविधुरेण । क्षणभंगुरेण सूक्ष्मं तद्ब्रह्मोपासितुं शक्यम् ॥ ७५ ॥ यज्जरया जर्जरितं कासश्वासादिविवशं च । योग्यं तन्न समाधौ प्रतिहतबुद्धींद्रियसरम् ॥ ७६॥ ब्रह्मादयो यतन्ते तस्मिन् दिव्यां तनुं समाश्रित्य । जीवन्मुक्ताश्चान्ये कल्पान्तस्थायिनो मुनयः ॥ ॥ ७७ ॥ तस्माज्जीवन्मुक्तिं समीहमानेन योगिना प्रथमम् । दिव्या तनुर्विधेया हरगौरीसृष्टिसंयोगात्॥७८॥(र.र.स.-र.हृ.)

अर्थ-मनुष्य व्याधि, जरा (बुढापा) और दुःखोंसे युक्त क्षणभंगुर (शीघ्र नाश होनेवाले) शरीरसे उस सूक्ष्म ब्रह्मकी उपासना नहीं करसकते क्योंकि दुःखित शरीरसे ब्रह्मकी क्या उपासना हो सकती है इसलिये देहके स्थिर रखनेकी आवश्यकता है, जो कि बुढापेसे जीर्ण होगयाहै-खाँसी आदि दुःखोंसे पीडित जिसकी बुद्धि और इंद्रियोंका फैलाव नष्ट होगयाहै ऐसे शरीरसे समाधि नहीं होसकती, कारण यह है कि ब्रह्मादिक देवताभी दिव्य शरीरको धारणकर परमात्माकी प्राप्तिके लिये उपाय करतेहैं, और एक एक कल्पतक जीवित रहनेवाले दूसरे मुनीश्वरभी जीवनमुक्त होगये इसकारण जीवनमुक्ति चाहनेवाले मनुष्योंको पारदभक्षणके योगसे शरीरको पहले स्थिर बनाना चाहिये ॥ ७५-७८ ॥

अजर अमर शरीरही कल्याणकारक है ।

आयतनं विद्यानां मूलं धर्मार्थकाममोक्षाणाम् । श्रेयः परं किमन्यच्छरीरमजरामरं विहायैकम् ॥७९॥ (र.र.स.-र.हृ.)

अर्थ-सम्पूर्ण विद्याओंका स्थान; धर्म, अर्थ, काम, मोक्षकी जड और परम कल्याणकारी केवल अजर अमर शरीरही है दूसरा नहीं ॥ ७९ ॥

सीमावको लोहेके वर्तनमें रखना चाहिये (उर्दू)

अगर सीमाव आहनमें रक्खा जावे तो उडने और जाय होने नहीं देता-(सफ़्हा अक़्लामियां ५४)

सीमावका बयान (उर्दू)

सीमाव इसको अरवीमें जीवक हिन्दीमें रस और पारा कहतेहैं सिंग्रफसे और मोटे मोटे अभरकके वरकोंसे, अंडोंके छिलकोंसे निकलताहै नहासपर लगानेसे उसको सफेद करताहै लेकिन सफेदी जाहर होजातीहै और तिला व नुकरः पर लगानेसे समाजाताहै और दूसरी हालतोंमें भी समाजाता है और उनको शिकनान करदेताहै तमाम धातोंको सिवाय लोहेके अपने साथ खमीर और मलगमा करसकताहै जिससे कि धातु मजकूर पिसनेके काबिल होजातीहै तमाम धातोंको खाली करता है- (सफ़ा अकलाभिया ५८)

1=वशमाप्तम् ।

पारदद्वारा देह स्थिर रहनेकी सिद्धि ।

पारदः सर्वरोगाणां जेता पुष्टिकरः स्मृतः । सुज्ञेन साधितः कुर्यात्संसिद्धिं देहलोहयोः ॥ ८० ॥ (शार्ङ्गधरसंहिता)

अर्थ-रसवैद्यका बनायाहुआ पारद सम्पूर्ण रोगोंको जीतनेवाला और शरीरको पुष्ट करनेवाला होताहै देहको स्थिर करताहै सुवर्ण और चांदीको भी वनाता है ॥ ८० ॥

अन्य औषधियोंकी अपेक्षा पारदमें अधिक गुण ।

सूते गुणानां शतकोटि वज्रे चाभ्रे सहस्रं कनके शतैकम् ॥ तारे गुणाशीति तदर्धकान्ते तीक्ष्णे चतुष्षष्टि रवौ तदर्धम् ॥८१॥ (र. र. ला०)

अर्थ-तांवेमें बत्तीस, कांतलोहेमें चालीस, तीक्ष्णलोहेमें चौसठ चांदीमें अस्सी, सोनेमें सौ, अभ्रक और हीरेमें हजार और पारदमें शतकोटि अर्थात् एक अर्व गुण हैं ८१॥

सम्पूर्ण औषधियोंसे पारद अधिक है ।

अल्पमात्रोपयोगित्वादरुचेरप्रसंगतः। क्षिप्रमारोग्यदायित्वाद्भेषजेभ्यो रसोऽधिकः ॥ ॥८२॥ (र.सा. प.र.रा.सु.रसेन्द्र.सा.सं.)

अर्थ-थोडी मात्रा देनेसे लाभकारी, अरुचिको नहीं करने वाला, और शीघ्रही आरोग्यकारक होनेसे पारद सम्पूर्ण औषधियोंसे अधिक है ॥

तात्पर्य्यार्थ-जो रोग औषधियोंसे नाश होताहै उसको साध्य कहते हैं और जो साध्यसे विरुद्धहो उसे असाध्य जानना चाहिये, और असाध्यभी दो प्रकारका है एक याप्य और दूसरा अप्रतिक्रिय अव विचार करना चाहिये कि साध्य रोगोंके नाश करनेके लिये औषधियोंका प्रयोग कियागयाहै असाध्य रोगोंके नाशके लिये नहीं पारद साध्य और असाध्य दोनोंको नाश करताहै ॥ ८२ ॥

असाध्येषु भेषजं सर्वमीरितं तत्त्ववेदिना॥ असाध्येष्वपि दातव्यो रसोऽतः श्रेष्ठ उच्यते ॥ ८३॥(र.सा.प-र.रा.सु. रसेन्द्र.सं.सा.)

अर्थ-प्रश्न-जो रोग पारद भक्षणसे नाश होजाय उसको असाध्य कैसे कह सक्ते हैं-?

उत्तर-(सूते गुणानां शत कोटि०) पारद में सौ करोड गुण हैं, इस लिये असाध्य रोगोंकोभी नाश करदे तो कुछ शंका नहीं क्योंकि पारद असाध्य रोगोंकाभी नाशक है, इसमें प्रमाण श्लोक ६ देखो-इसप्रकार पारद असाध्य रोगोंका नाश करता है तो अन्य औषधियोंसे श्रेष्ठही है ये बात सिद्ध होगई यह पारद योगका साधन; अनेक कार्योंका कर्ता और मुक्तिकाभी दाता है इन कारणोंसे पारद सम्पूर्ण औषधियोंहीसे नहीं किन्तु सम्पूर्ण पदार्थोंसे उत्तम है ॥ ८३ ॥

त्रिविध चिकित्सामें रसचिकित्साकी प्रधानता।

भैषज्यं त्रिविधं प्रोक्तं दैवं मानुषमासुरम्। रसचूर्णक्षारयोगैर्दैवमेषु वरं स्मृतम् ॥ ८४ ॥ (रसमानस)

अर्थ-दैव, मानुष और आसुर भेदसे औषधि तीन प्रकारकी होती हैं और वह क्रमसे रस, चूर्ण क्षारके योगोंसे की जाती हैं, अर्थात् रसके योगसे दैवी, चूर्ण के योगसे मानुषी और क्षारके योग से आसुरी औषधि कहलातीहै इन तीन प्रकारकी औषधियोंमें दैवी औषधि उत्तम है ॥ ८४ ॥

तीन प्रकारकी चिकित्सा।

रसादिभिर्या क्रियते चिकित्सा दैवीति सद्भिः परिकीर्तिता सा। सा मानुषी मंत्रहता सिफाद्यैः सा राक्षसी शस्त्रकृतादिभिर्या ॥ ८५ ॥ (र. रत्नाकर.)

अर्थ-जो रसादिकोंसे चिकित्सा की जाती है वह दैवी चिकित्सा (इलाज) कहलातीहै और जो मंत्र पढकर उखाडीहुई जड़ियोंसे चिकित्सा की जातीहै उसे मानुषी कहतेहैं और जो क्षारादिकोंसे की जाती है उसे आसुरी चिकित्सा कहतेहैं ॥ ८५ ॥

पारदज्ञानके विना चिकित्साकी निष्फलता।

यो न वेत्ति कृपाराशिं रसं हरिहरात्मकम्। वृथा चिकित्सां कुरुते स वैद्यो हास्यतां व्रजेत् ॥ ८६ ॥ (र. रा. सु-र. सा. प.-आयुर्वेदवि०)

अर्थ-जो वैद्य कृपाके समुद्र हरिहरस्वरूप पारदको नहीं जानता उसकी चिकित्सा निष्फल होतीहै और उस वैद्यकी हँसी होती है ॥ ८६ ॥

रसविद्याका अधिकारी।

रसविद्या पराविद्या त्रैलोक्येपि च दुर्लभा। मुक्तिभुक्तिकरी यस्मात्तस्माज्ज्ञेया गुणान्वितैः ॥ ८७ ॥ (र. चि. म.-र. सा. प.-र. से. सा. सं. नि. र.

१-भुक्तिमुक्ति करिष्यामि तस्माद्देया गुणाधिके-इत्यपि।

अर्थ-रसविद्या पराविद्या (ब्रह्मविद्या) है जिसका तीनों लोकोंमें प्राप्त करना दुर्लभ (कठिन) है क्योंकि वह विद्या मोक्ष और भोग देनेवाली है इसकारण गुणवान्को रसविद्या जाननी चाहिये ॥ ८७ ॥

रसविद्या गुप्त रखने योग्य है।

रसविद्या दृढं गोप्या मातृगुह्यमिव ध्रुवम्। भवेद्वीर्यवती गुप्ता निर्वीर्या तु प्रकाशनात् ॥ ॥ ८८ ॥ (टो. ड.नं.-र.सा.प. र. र.स.)

अर्थ-माताकी योनिके तुल्य रसविद्याको गुप्त रखना चाहिये क्योंकि गुप्त कीहुई रसविद्या वीर्य्यवती (बल देनेवाली) होतीहै और प्रकाशित करनेसे शक्तिरहित होजातीहै ॥ ८८ ॥

औषधिके वीर्य्यरहित होजानेका कारण।

न रोगिविदितं कार्यं बहुभिर्विदितं तथा ॥ रोगिभिर्बहुभिर्ज्ञातं भवेन्निर्वीर्यमौषधम् ॥ ॥ ८९ ॥ (र. सा. प.)

अर्थ-रोगीका जानाहुआ और अनेक मनुष्योंका जानाहुआ कार्य्य (औषधरूप) नहीं करना चाहिये क्योंकि रोगियों तथा अनेक मनुष्योंकी जानीहुई औषधि वीर्य्य रहित होती है अर्थात् उस औषधिमें गुण नहीं रहता ॥ ८९ ॥

रसवैद्यकी प्रधानता।

मुक्त्वैकं रसवैद्यं तु को लभेत महद्धनम् ॥ अन्यः पूजां च कीर्तिं च तृणकाष्ठौषधैः किल ॥ ९० ॥ (र. सा. प.)

अर्थ-केवल रसशास्त्रके जाननेवाला ही वैद्य पूजा कीर्ति और धनको प्राप्त होताहै और दूसरे वैद्य घासफूसकी औषधियोंसे इनको नहीं प्राप्त करसकते ॥ ९० ॥

रसवैद्यके सन्मुख रोगोंका न ठहरना।

किलासहल्लासबलासकासश्वासत्रिदोषादिगदाः पलादाः। तावद्बलं यांतु न यावदेव वैद्याधिराजो रसचक्रपाणिः॥९१॥(टो.नं.)

अर्थ-किलास (वनरफ), हल्लास (उबकाई), कफ, खांसी, श्वास और त्रिदोष आदि रोगपुंज तबतक बल रखतेहैं कि जबतक रसरूप चक्रको हाथमें लियेहुए वैद्योंका राजा सामने नहीं आताहै ॥ ९१ ॥

रससिद्धिवाले मनुष्यका लक्षण।

रससिद्धो भवेन्मर्त्यो दाता भोक्ता च पालकः। जरोन्मुक्तो जगत्पूज्यो दिव्यकांतिः सदा सुखी ॥ ९२ ॥ (र. सा. प.)

अर्थ-जिस मनुष्यको पारदकी सिद्धि होतीहै वह दानशील, भोक्ता, रक्षक, बुढापेसे छूटा हुआ, जगत्का पूज्य, सुन्दर और सदा सुखी होताहै ॥ ९२ ॥

रसकी निंदाका दोष ।

यश्च निंदति सूतेन्द्रं शंभोस्तेजः परात्परम् । स पतेन्नरके घोरे यावत्कल्पविकल्पना ॥ ॥ ९३ ॥ (र. रत्न. स. र. र. क.)

अर्थ-जो सर्वोत्तम शिवके तेज पारदकी निंदा करताहै वह कल्प और विकल्प पर्य्यंत घोर नरकोंमें पडताहै ॥ ९३ ॥

अन्यच्च ।

ब्रह्मज्ञानेन सो१ऽयुक्तो यः पापी रसनिंदकः । नहि त्राता भवेत्तस्य जन्मकोटिशतैरपि ॥ ९४ ॥ (र. चि.)

अर्थ-जो रसको निंदा करनेवाला पापी है उसको ब्रह्मज्ञान नहीं होताहै और कोटिजन्मोंसेभी मैं उसकी रक्षा कोई नहीं करसकता ॥ ९४ ॥

अन्यच्च ।

आलापं गात्रसंस्पर्शं यः कुर्याद्रसनिंदकैः । जातजन्मसहस्राणि स भवेद्दुःखपीडितः ॥ ॥ ९५ ॥ (र. चि.-नि. र.)

अर्थ-रसकी निंदा करनेवाले मनुष्यके साथ जो बातचीत करताहै अथवा जो रसनिंदकके शरीरको छूता है वह सहस्र जन्म पर्य्यंत दुःखी रहताहै ॥ ९५॥

रससिद्धोंके नाम ।

आदिमश्चन्द्रसेनश्च२ लंकेशश्च विशारदः । कपाली मत्तमांडव्यो भास्करः शूरसेनकः॥ ॥ ९६ ॥ रत्नकोषश्च शंभुश्च सात्त्विको नरवाहनः । इन्द्रदो३ गोमुखश्चैव कम्बलिर्व्याडिरेवच ॥ ९७ ॥ नानार्जुनः सुरानंदो नागबोधिर्यशोधनः । खंडः कापालिको ब्रह्मा गोविन्दो लम्पको हरिः । सप्तविंशतिसंख्याका रससिद्धिप्रदायकाः ॥ ९८ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-१ आदिम २ चन्द्रसेन ३ लंकेश (रावण) ४ विशारद ५ कपाली ६ मत्त ७ माण्डव्य ८ भास्कर ९ शूरसेन १० रत्नकोश ११ शम्भु १२ सात्त्विक १३ नरवाहन १४ इन्द्रद १५ गोमुख १६ कम्बलि १७ व्याडि १८ नागार्जुन १९ सुरानंद २० नागबोधि २१ यशोधन २२ खण्ड २३ कापालिक २४ ब्रह्मा २५ गोविन्द २६ लम्पक २७ हरि ये सत्ताईस महात्मा रसकी सिद्धि देनेवाले हैं ॥९६-९८॥

रसांकुशो भैरवश्च नंदी स्वच्छन्दभैरवः । मंथानभैरवश्चैव काकचंडीश्वरस्तथा ॥ ९९ ॥ महादेवो नरेन्द्रश्च रत्नाकरहरीश्वरौ । कोरंडकः सिद्धबुद्धः सिद्धपादश्च कंथडी ॥ १०० ॥ ऋष्यशृङ्गो वासुदेवः क्रियातंत्रसमुच्चयी४ । रसेन्द्रतिलकश्चैव भातुकर्मेरितस्तथा ॥ १०१ ॥ पूज्यपादश्च कावेरी नित्यनाथो निरंजनः । चर्पटो बिंदुनाथश्च प्रभुदेवश्च वल्लभः ॥ १०२ ॥ बालकिर्यजनामा च वोराचोली च टिंटिनी । व्यालाचार्यः सुबुद्धिश्च रत्नघोषः सुसेनकः ॥ ॥ १०३ ॥ इन्द्रधूमश्चागमश्च तथा कामारिरेव च । बाणासुरो मुनिश्रेष्ठः कपिलश्च बलिस्तथा ॥ १०४ ॥ इत्यादयो महासिद्धाः रसयोगप्रसादतः । जीवन्मुक्ताः प्रशांताश्च स्वेच्छारूपधराश्च ये ॥ १०५ ॥ भक्त्या स्मरणमात्रेण रससिद्धिप्रदायकाः । खंडयित्वा कालदंडे त्रिलोक्यां विचरंति ते १०६॥

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

अर्थ-२८ रसांकुश २९ भैरव ३० नन्दी ३१ स्वच्छन्द भैरव ३२ मंथानभैरव ३३ काकचंडीश्वर ३४ महादेव ३५ नरेन्द्र ३६ रत्नाकर ३७ हरीश्वर ३८ कोरण्डक ३९ सिद्धबुद्ध ४० सिद्धपाद ४१ कंथडी ४२ ऋष्यशृङ्ग ४३ अनेकशास्त्रोंका संचय करनेवाला वासुदेव, ४४ रसेन्द्रतिलक ४५ भातुकर्मा ४६ पूज्यपाद ४७ कावेरी ४८ नित्यनाथ ४९ निरंजन ५० चर्पट ५१ बिन्दुनाथ ५२ प्रभुदेव ५३ वल्लभ ५४ बालकि ५५ यजनामा ५६ वोराचोली ५७ टिंटिनी ५८ व्यालाचार्य ५९ सुबुद्धि ६० रत्नघोष ६१ सुसेनक ६२ इन्द्रधूम ६३ आगम ६४ कामारि ६५ बाणासुर ६६ सब मुनियोंमें श्रेष्ठ कपिल ६७ और बलि इत्यादि शान्तस्वरूप अपनी इच्छानुसार अपने स्वरूपको धारण करने वाले जो रससिद्ध रसयोगको कृपासे जीवन्मुक्त होगये हैं वे भक्तिपूर्वक स्मरण करनेसेही रस सिद्धके दाता हैं और कालदंडको तोड़कर संसारमें विचरते हैं ॥ ९९-१०६ ॥

इति श्रीजेसलमेरनिवासिपंडितमनुसुखदासात्मज व्यासज्येष्ठमलशर्मकृतायां रसराजसंहितायां भाषाटीकायां रसोत्पत्तिमाहात्म्यादिवर्णनं नाम प्रथमोऽध्यायः॥ १ ॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः २.

पारदके दोषोंकी उत्पत्तिका वर्णन ।

एवंभूतस्य सूतस्य मर्त्यमृत्युगदच्छिदः । प्रभावान्मानुषा जाता देवतुल्यबलायुषः ॥ ॥ १ ॥ तान्दृष्ट्वाभ्यर्थितो रुद्रः शक्रेण तदनंतरम् । दोषैश्च कंचुकीभिश्च रसराजो नियोजितः । तदाप्रभृति सूतोऽसा नैव सिध्यत्यसंस्कृतः ॥ २ ॥ (र. र. स. र. सा. प.-र. रा. सुं.)

१-संयुक्तो । २-आगदेवश्चन्द्रसेनो । ३-यत्तदेवश्च । ४-तांत्रिको ।

अर्थ-श्रीमहादेवजी और पार्वतीके संभोगसे पैदाहुये और मनुष्योंके मृत्युरूप रोगको नाश करनेवाले पारदके प्रभावसे मनुष्य देवताओंके समान बल और अवस्थावाले होगये तब इन्द्रने उन मनुष्योंको देवताओंके तुल्य बल और अवस्थावाले देखकर श्रीमहादेवजीकी प्रार्थना की तदनन्तर श्रीशिवजीने कंचुकादिक दोष उस पारदमें लगादिये तभीसे यह पारद विना संस्कार किये शुद्ध नहीं होता ॥ १॥ २ ॥

पंचविधदोषोंके नाम और उनके अवगुणोंका वर्णन।

मलदोषो भवेदेको द्वितीयो वह्निसंज्ञकः। भूमिदोषस्तृतीयः स्यादुन्मत्तश्च चतुर्थकः॥ ॥ ३ ॥ पंचमः शैलदोषश्च पंचदोषाः प्रकीर्तिताः। मूर्च्छयेन्मलसंयुक्तो बह्नियुक्तश्च दाहकृत्॥ ४॥ भूदोषात्तेजसां नाशोन्मत्तादुन्मत्तता भवेत्। शरीरजाड्यं गिरिणा पंच स्युः पंचदोषतः॥५॥ (र. रा. प.-टी. नं०)

अर्थ-पहिला मलदोष, दूसरा वह्निदोष, तीसरा भूमिदोष, चौथा उन्मत्तदोष, और पाँचवां शैलदोष ये पाँचों ही दोष पारदमें मानेगयेहैं मलदोषयुक्त पारद मनुष्यको बेहोश कर देता है, वह्निदोषयुक्त शरीरमें दाह, भूमिदोष युक्त तेजका नाश, उन्मत्तदोषयुक्त पारद मनुष्यको पागल. और गिरि (शैल) दोषयुक्त पारद शरीरको जकड़ देताहै ॥ ३-५ ॥

पांच दोषोंका वर्णन।

मलदोषो वह्निदोषो भूदोषोन्मत्तदोषकौ। शैलदोषश्च पंचैते दोषाः सूते समीरिताः॥ ॥ ६ ॥ (योगतरंगिणी)

अर्थ-मल,वह्नि, भूमि, उन्मत्त और शैल ये पांच दोष पारदमें कहेगये हैं ॥ ६ ॥

तत्रान्तरे।

मलमग्निर्विषं चैव गुरुता चापलं तथा। नैसर्गिकाः पंचदोषा रसविद्भिः प्रकीर्तिताः॥ ॥ ७ ॥ मलेन मूर्च्छा मरणं विषेण दाहोऽग्निना कष्टतरो हि देहे। शरीरजाड्यं गिरिणा तदा स्याच्चांचल्यतो वीर्यसृतिश्च पुंसाम्॥८(?)

अर्थ-पारदके ज्ञाताओंने मल, अग्नि, विष, गुरुता और चपलता ये पांच दोष पारदमें स्वाभाविक माने हैं, मल दोषसे मूर्छा, विषसे मौन, अग्निदोषसे शरीरमें अत्यन्त दुःखदायी दाह (जलन), शैल दोषसे शरीरका जिकड़ना और चंचल दोषसे मनुष्योंका वीर्य नाश होता है ॥

तात्पर्यार्थ-एक शास्त्रमें पारदके दोषोंके नाम १ मल २ वह्नि ३ भूमि ४ उन्मत्त ५ शैल येहैं और १ मल २अग्नि ३ विष ४ गुरुता ५ चपलता ये पारदके दोषों के नाम हैं, यद्यपि साधारण विचारसे दोनों ग्रन्थोंमें परस्पर विरोध पाया जाताहै क्योंकि दोनों ग्रन्थोंमें दोषोंके नाम समान नहीं हैं परन्तु गंभीर विचारसे दोनों ग्रन्थोंमें परस्पर विरोध प्रतीत नहीं होताहै जैसे शैल दोषके स्थानमें गुरुता, भूमि दोषकी जगह विषदोष और उन्मत्त दोषकी जगह चपलदोष मानागयाहै क्योंकि इनके कार्य एकसे हैं जैसे शैलदोषसे जडता तैसे गुरुतादोषसे भी जडता होती है इत्यादि उदाहरण समझने चाहिये ॥ ७ ॥ ८ ॥

१-संभवः इत्यपि (रा. रा. य.) । २ स्यात्तथोन्मत्तः-इत्यपि।

दश प्रकारके दोष और उनके अवगुणोंका वर्णन।

विषं बह्निर्मलं चेति दोषा नैसर्गिकास्त्रयः। रसे मरणसंतापमूर्छानां हेतवः क्रमात्॥ ९॥ भूमिजा गिरिजा वार्जा द्वे च वै नागवंगजे। कथिताः कंचुकाः सप्त रसदोषा दश स्मृताः॥ १० ॥ भूमिजा कुरुते कुष्ठं गिरिजा जाड्यमेव च। वारिजा वातसंघातं दोषा वै नागवंगजाः ॥११॥(ध.सं)

अर्थ-मृत्यु संताप और मूर्छाके देनेवाले विष, वह्नि और मल ये तीनों दोष पारदमें स्वाभाविक हैं पृथ्वी, पर्वत और जलसे पैदाहुई दो और सीसेसे और वंगसे पैदाहुई सात कंचुकी कहीगई हैं, इसप्रकार तीन दोष सात कंचुकी मिलाकर पारदमें दश दोष कहेगये हैं, पृथ्वीसे पैदा हुई कंचुकी कुष्ठरोग को, पर्वतसे पैदाहुई जडता (शरीरका जिकडना) को, जलसे पैदा हुई कंचुकी वात व्याधिको, नाग और वंगसे पैदा हुई कंचुकी अनेक रोगोंको करती है॥ ९-११ ॥

आठ प्रकारके दोषोंके नाम और उनके अवगुणोंका वर्णन।

नागो वंगोग्निचापल्यमसह्यश्च विषं गिरिः। मलं तथैते जानीयाद्दोषाश्चाष्टौ रसे स्थिताः॥ १२ ॥ जाड्यं कुष्ठं दाहवीर्यनाशौ मूर्छा तथैव च। मृत्युः स्फोटो रोगपुंजान्कुर्वन्त्येते क्रमान्नृणाम्॥१३॥ (ध.सं.)

अर्थ-पारदमें आठ दोषभी मानेगयेहैं और नाग, वंग, अग्नि, चांचल्य, असह्य, विष, गिरि और मलमें उनके नाम हैं और वे आठों दोष जडता, कोढ, दाह, वीर्य्यका नाश, मूर्छा, मृत्यु, विस्फोटक और अनेक प्रकारके रोगोंको करतहैं॥१२।१३॥

आठ दोषोंका वर्णन।

स्वाभाविकाः सन्त्यगुणा रसेऽस्मिन्नागाग्निवंगादिकनामधेयाः। नागाद्भवेयुर्गलगंडरोगाः कुष्ठं च वंगान्मरणं विषेण॥ ॥ १४ ॥ मलेन मूर्छा दहनेन दाहो वीर्यच्युतिः स्यादसकृच्चलत्वात्। स्यात्कंचुकाज्जाड्यमथोदराणि ततो विशुद्धोऽभिमतो रसेन्द्रः॥ १५ ॥ (योगतरंगिणी)

अर्थ-इस पारदमें नाग, अग्नि और वंगादिक नामवाले स्वाभाविक अवगुण होतेहैं नागदोषसे गलगंड रोग, वंगसे

कोढ, विषसे मृत्यु, मलसे मूर्छा, अग्निसे दाह, चंचलतासे वीर्यच्युति (अर्थात् वीर्यका स्खलित होजाना) और अन्य कंचुकियोंसे जडता और उदरविकार होताहै इसवास्ते पारद शुद्ध लेना इष्ट है ॥

विचार–जो कि योगतरंगिणीमें पारदमें आठ दोषोंका स्वाभाविक दोष निश्चय किया है वह ठीक नहीं क्योंकि अन्यान्य शास्त्रोंमें तीन दोषोंका ही स्वाभाविक माना है ॥ १४ ॥ १५ ॥

पारदके प्रधान तीन दोषोंका वर्णन ।

वह्निर्विषं मलश्चेति मुख्या[1] दोषास्त्रयो रसे । एते कुर्वन्ति संतापं मृतिं मूर्च्छां नृणां क्रमात् ॥ १६ ॥ (वाच. बृ०) अन्येऽपि कथिता दोषा भिषग्भिः पारदे यदि । तथाप्येते त्रयो दोषा हरणीया विशेषतः ॥ १७ ॥ (श. क.)

अर्थ–पारदमें वह्नि, विष और मल ये तीन प्रधान दोष माने हैं और वह मनुष्योंको संताप, मौत और मूर्छाको करतेहैं, यद्यपि वैद्योंने पारदमें औरभी दोष कहे हैं तथापि ये तीनों दोष विशेषकर दूर करने चाहिये ॥ १६ ॥ १७ ॥

तन्त्रान्तरे ।

मलशिखिविषनामानो रसस्य नैसर्गिकास्त्रयो दोषाः । मूर्छां मलेन कुरुते शिखिना दाहं विषेण मृत्युं च॥१८॥(यो. र.–नि. र.)

अर्थ–मल, वह्नि और विष ये तीनों पारदके स्वाभाविक दोष हैं, और वह पारदमलदोषसे मूर्छा, वह्नि दोषसे दाह और विषदोषसे मृत्युको करता है ॥ १८ ॥

अन्यच्च ।

विषं वह्निर्मलश्चेति दोषा नैसर्गिकास्त्रयः । रसे मरणसंतापमूर्छानां हेतवः क्रमात् ॥ ॥ १९ ॥ (र. र. रा. स.–र. सुं.–नि. र.)

अर्थ–विष, वह्नि, और मल ये तीनों दोष पारदमें स्वाभाविक दोष मानेगयेहैं और वे तीनों दोष मरण, संताप और मूर्छाके करनेवाले होतेहैं ॥ १९ ॥

अन्यच्च ।

मलेन मूर्छां दहनेन दाहं विषेण मृत्युं वितनोति सूतः । मलादिदोषत्रयमेतदत्र नैसर्गिकं शुद्धिमतोऽभिधास्ये ॥ २० ॥ (योगरत्नाकर– नि. र.-)

अर्थ–अशुद्ध पारद मलदोषसे मूर्छा, वह्निदोषसे दाह, और विषदोषसे मृत्युको करता है, पारदमें मल आदि तीन दोष स्वाभाविक हैं इससे उसकी शुद्धिको कहूंगा ॥ २० ॥

१–मुख्यतमाः-इत्यपि ।

पारेके सात प्रकारके दोषोंका वर्णन ।

मलो विषं वह्निगिरी चापल्यं च स्वभावजाः । दोषाः पंचाथ विज्ञेयौ नागवंगाबुपाधिजौ ॥ २१ ॥ (बृ. त.) तेषु नैसर्गिका दोषाः पंच तौ द्वावुपाधिजौ । इति दोषाः सप्त सूते कंचुका अपि सप्त च ॥२२॥ (बृ० यो० त०)

अर्थ–पारदमें मल, विष, वह्नि, गिरि और चापल्य ये पांचो दोष स्वाभाविक हैं और दो दोष नाग (सीसा) और वंग (रांगा) की उपाधिसे पैदा हुएहैं स्वाभाविक पांच दोष और बनावटी दो दोष इसप्रकार सात दोष पारदमें हैं और सात कंचुकोभी हैं ॥ २१ ॥ २२ ॥

औपाधिक दोषोंका वर्णन ।

मिलितो नागवंगाभ्यां क्षेत्रयोर्नागवंगयोः । अस्खलनादथवापापैर्वणिग्भिर्मेलितो रसः । ताभ्यां ततो रसे दोषौ द्वौ स्यातां नागवंगजौ ॥ २३ ॥ (बृ० यो०)

अर्थ–जब कि पारद, नाग (सीसा) और वंग (रांग) की खानमें गिरकर नाग और वंगसे मिलता है अथवा पसारी लोग अपने लाभके लिये पारेमें नाग और वंग मिला देतेहैं तब पारदमें नागदोष और वंगदोष पैदा होजातेहैं ॥ २३ ॥

सात दोषोंके अवगुणोंका वर्णन ।

मलेन मूर्छा मरणं विषेण दाहोऽग्निना भूमिभृता तु जाड्यम् । वीर्यक्षयश्चापलतोथ वंगात्कुष्ठानि नागाद्गलगंडरोगाः२४(बृ०यो०)

अर्थ–मलदोषसे मूर्छा, विषसे मृत्यु, अग्निसे दाह, शैलसे जड़ता, चापल्यदोषसे वीर्यनाश, वंगसे कोढ और नाग (सीसा) दोषसे गलगंड रोग होता है ॥ २४ ॥

आठ दोष और उनके अवगुणोंका वर्णन।

नागो वङ्गो मलो वह्निश्चाञ्चल्यं च विषं गिरिः । असह्यश्च महादोषा निसर्गाः पारदे स्थिताः ॥ २५ ॥ (रसेन्द्रसा.सं.–आयु० वे.वि०–र.रा.प.नि.र.)

अर्थ–किसी किसी तंत्रमें नाग, वंग, मल, वह्नि, चांचल्य, विष, गिरि और असह्य ये अष्टविध दोष पारदमें स्वाभाविक स्थित हैं ऐसा (रसेन्द्रसारसंग्रह) में लिखा है॥ २५॥

अन्यच्च ।

नागो वंगो मलो वह्निश्चाञ्चल्यं च विषं गिरिः । असह्याग्निर्महादोषा निसर्गाः पारदे स्थिताः ॥ २६ ॥ व्रणं कुष्ठं तथा जाड्यं

१–पतनात्-इत्यपि । २–तथा-इत्यपि ।

दाहं वीर्यस्य नाशनम्। मरणं जडतां स्फोटं कुर्वन्त्येते क्रमान्नृणाम् ॥२७॥ (रसेन्द्रसार-संग्रह-र.रा.सु)

अर्थ–नाग, वंग, मल, वह्नि, चांचल्य, विष, गिरि और असह्य ये दोष स्वभावसे ही पारदमें स्थित हैं व्रण, कोढ, जड़ता, दाह, वीर्य का नाश, मृत्यु और फोडे फुंसी को करते हैं ॥ २६॥२७ ॥

अन्यच्च ।

नागो वङ्गोऽग्निचांचल्यमसह्यत्वं विषं गिरिः। मलान्येते च विज्ञेया दोषाः पारदसंस्थिताः ॥ २८ ॥ जाड्यं कुष्ठं महादाहं वीर्यनाशं च मूर्च्छनाम्। मृत्युं स्फोटं रोगपुंजं कुर्वन्त्येते क्रमान्नृणाम् ॥२९॥ (र.मं)

अर्थ–नाग, वंग, अग्नि, चांचल्य, असह्य, विष, गिरि और मल ये आठ दोष पारदमें स्थित हैं ऐसा जानना और वे दोष जडता, कोढ, दाह, वीर्य्यनाश, मूर्छा, मृत्यु, फोडा और अनेक प्रकारके रोगोंको करते हैं ॥ २८ ॥ २९ ॥

अन्यच्च ।

नागो वंगोऽग्निचांचल्यमसह्याग्निर्विषं मलम्। गिरिश्चैते महादोषा रसेऽशुद्धे वदन्ति हि ॥ ॥ ३० ॥ अशुद्धो जाड्यतां कुष्ठं दाहं वीर्यप्रणाशनम्। मूर्च्छां स्फोटं च मृत्युं च क्रमात्कुर्यान्मले रसः ॥ ३१ ॥ (अनुपानतरं.)

अर्थ–नाग, वंग, अग्नि, चांचल्य, असह्य, विष, मल और गिरि ये आठ दोष अशुद्ध पारदमें हैं ऐसा विद्वान लोग कहतेहैं. क्योंकि अशुद्ध पारद जडता, कोढ, दाह, वीर्य्यका नाश, मूर्छा, फोडाऔर मृत्युको क्रमसे करताहै ॥ ३० ॥ ३१ ॥

अन्यच्च ।

नागो वंगो मलो वह्निश्चाञ्चल्यं च विषं गिरिः । असह्याग्निर्महादोषा निषिद्धाः पारदे स्थिताः ॥ ३२ ॥ जाड्यं गण्डस्तनौ नागात्कुष्ठं वङ्गाद्रुजो मलात्। वह्नेर्दाहो बीजनाशश्चांचल्यान्मरणं विषात्॥३३॥ गिरिः स्फोटो ह्यसह्याग्निदोषान्मोहश्च जायते । (रसरत्नाकर-नि. र.)

अर्थ–सीसा, वंग, मल वह्नि, चांचल्य, विष, गिरि और असह्याग्नि ये आठ दोष स्वभावसे ही पारदमें स्थित हैं नागसे शरीर में जडता और गलगंड वंगसे कोढ, मलसे अनेक रोग, अग्निसे दाह, चांचल्यसे वीर्य्य नाश, विषसे मरण, गिरिदोषसे फोडे असह्याग्नि दोषसे मोह पैदा होता है ॥ ३२॥ ३३ ॥

१–निसर्गतपा० इत्यपि ।

दोहा ।

पारदमें मलदोष है, अरु विष दोष बखान ।
वह्निदोष त्योंही कह्यो, और गिरित्व प्रमान॥
कह्यो दोष ते सर्म अरु, पुनि चंचलता जोय।
सप्तम अष्टम दोष भनि, नाग वंग है दोय ॥
पारद जो मलजुत भखैं, तबै मूर्च्छा होय ।
भखै सुजो विष दोषजुत, तबै मरणही जोय॥
वह्निदोषजुत रस भखै, होत कष्टतर देह ।
होते सर्मक दोष तें, दाहादिकको तेह ॥
पारदके गिरिदोष ते, उपजै जडता गात ।
चपलदोषसे होत है, वीरज क्षय उत्पात ॥
नागदोष ते षंढता, वंगदोष ते कुष्ट ।
याते पारद होत नहिं, शुद्ध कियेबिन तुष्ट ॥
आठ दोष हैं रसविषें, तिनमें तीन प्रधान ।
वह्निदोष विष दोष जुत, है मलदोष सुजान॥
सर्वदोष जो नामिटैं, तऊ दोष ये तीन ।
हरे बिना नहिं होत है, पारद शुद्ध प्रवीन ॥
(वैद्यादर्श.)

पारदकी सात कंचुकियोंके नाम ।

मृन्मयः कंचुकश्चैकोऽपरः पाषाणकंचुकः । तृतीयो जलजो ज्ञेयो द्वौ द्वौ स्तो नागवङ्गयोः । रसस्य कंचुकाः सप्त विज्ञेया रससागरे ॥ ३४ ॥ (टो. नं-र. रा. प.)

अर्थ–प्रथम मिट्टीका कंचुक, दूसरा पत्थरका, तीसरा जलका, वंगसे पैदा हुये दो कंचुक, (कपाली कालिका) नागसे पैदा हुये दो कंचुक (श्यामा और कापालिका) इस-प्रकार पारदमें सात कंचुक जानने चाहिये ॥ ३४ ॥

अन्यच्च ।

मृत्पाषाणजलाख्याश्च कालिकोपालिका तथा । श्यामा कापालिका चेति पारदे सप्त कंचुकाः॥ ३५॥ (यो. तं.-बृ.यो.र.सा.प.)

अर्थ–मिट्टी, पाषाण, और जल, इनसे पैदा हुये कंचुक कालिका, उपालिका, श्यामा, और कापालिका ये सात कंचुक पारदमें स्थित हैं ॥ ३५ ॥

अन्यच्च ।

पर्पटी पाटली भेदी द्रावी मलकरी तथा । अन्धकारी तथा ध्वांक्षी विज्ञेयाः सप्त कञ्चुकाः ॥ ३६ ॥ (रसेन्द्र. सा. सं.-आयु. वे. वि.-र. र. स.-र. रा सुं.)

अर्थ–पर्पटी, पाटली, भेदी, द्रावी, मलकरी, अन्धकारी और ध्वांक्षी ये सात पारदकी कंचुकियां हैं ॥ ३६ ॥

अन्यच्च ।

यौगिकौ नागवंगौ द्वौ तौ जाड्याध्मान-कुष्ठदौ । औपाधिकाः पुनश्चान्ये कीर्तिताः सप्त कंचुकाः ॥ ३७ ॥ (र. र. स.--र. रा. सुं--नि. र.)

अर्थ-जडता, आध्मान (अफरा) और कोढके देनेवाले नाग और वंगसे पैदा हुये ये और औपाधिक चार कंचुक और दूसरे तीन कंचुक इनको मिलाकर पारदमें सात कंचुक होतेहैं ॥ ३७ ॥

नाग और वंगमें स्थित कंचुकियोंका वर्णन ।

कापाली कालिका वंगे नागे श्यामा कपालिका ॥ ३८ ॥ (टो. नं.-र. रा. प.)

अर्थ-वंगमें कपाली और कालिका नामवाली कंचुकी और नागमें श्यामा और कापालिका नामवाली कंचुकी रहती हैं ॥ ३८ ॥

सप्तविधकंचुकके रूपोंका वर्णन ।

मृद्रूपश्चाश्मरूपश्च जलरूपः पयोनिभः । पंचवर्णः कृष्णवर्णस्तैलवर्णश्च कंचुकः ॥ ॥ ३९ ॥ (योगतरंगिणी-)

अर्थ-मृद्रूप, पाषाणरूप, जलरूप, दुग्धरूप पंचवर्ण कृष्णवर्ण और तैलवर्ण इस प्रकार सात रूपके कंचुक होतेहैं॥ ३९ ॥

कंचुकदोषवर्णन ।

पांडुर्मृदोऽश्मनो जाड्यं खालित्यं जलकंचुकात् । कपाल्या गजचर्माणि कालिकाया रुजोदरे ॥ ४० ॥ श्यामायास्तु प्रमेहाः स्युः कपाल्या जठराणि वै तस्मात्सर्व प्रयत्नेनः सूतः शोध्यो विजानता ॥ ४१ ॥ (बौद्धसर्वस्वात-बृ. यो. त.-र. सा. प.)

अर्थ-अशुद्ध पारद खानेवाले जीवोंके शरीरमें मिट्टीके कंचुकसे पाण्डुरोग, पाषाणके कंचुकसे जडता, जलकंचुकसे खालित्य (इन्द्रलुप्त), कपालीसे दाद खुजली इत्यादिक, कालिकासे शूल, श्यामासे प्रमेह, कापालिकासे उदर विकार होताहै इसलिये पंडित सम्पूर्ण यत्नोंसे पारदको शुद्ध करै ॥ ४० ॥ ४१ ॥

अन्यच्च ।

भूमिजाः कुर्वते कुष्ठं गिरिजा जाड्यमेव-च । वारिजा वातसंघातं दोषोऽघं नाग वंगयोः ॥ ४२ ॥ (र. र. स.--र. रा. सुं.)

अर्थ-भूमिसे उत्पन्न कंचुक कोढको, शैलज कंचुक जडताको जलजकंचुक वातव्याधिको, नाग वंगसे पैदा हुये चार कंचुक अनेक रोगोंको करते हैं ॥ ४२ ॥

१-श्मनस्त्वान्धं-इत्यपि ।

अन्यच्च ।

मृन्मयात्कंचुकात्कुष्ठं जाड्यं पाषाणदोषतः । बलीपलितखालित्यं वारिदोषात्प्रजायते ॥ ४३ ॥ दद्रुश्च गजचर्माणि करोत्येव कपालिका॥कामलां पांडुरागं च तथा कुष्ठं जलोदरम् ॥ ४४ ॥ प्रमेहं श्वेतकुष्ठं च कुरुते श्यामकंचुकः । मर्मच्छेदं वस्तिशूलं काली कुर्यादसंशयम् ॥ ४५ ॥ कपाली वीर्यहानिं च कुरुते तान्निवारयेत् । (योगतरंगिणी-टो. नं.--र. रा. प.)

अर्थ-मिट्टीके कंचुकसे कोढ, पाषाण कंचुकसे जडता और जल कंचुकसे त्वचा (खाल) में झुर्रियोंका पडना और बालोंकी सफेदी होतीहै, कपालिका दाद और गजचर्म अर्थात् छाजन, कामला, पाण्डुरोग, कोढ और जलोदरको करतीहै श्यामा कंचुक प्रमेह और श्वेत कोढको करताहै और काली मर्मस्थानका काटना तथा वस्तिशूल (मसानेका दर्द) को और कापाली वीर्य्यका नाश करतीहै इसलिये कंचुकियोंको दूर करना चाहिये ॥ ४३-४५ ॥

सीमावके उपविष यानी जहर (उर्दू)

सीमावमें सात जहर हैं, जो कि अयूबमें दाखिल हैं उनको सात हिजाब यानी पर्दे कहतेहैं यह सातों इल्लतें सीमावमें होतीहैं जबतक ये अयूब दूर नहीं किये जाते कोई अमल ठीक नहीं उतरता और यह सबब है कि जो शख्श नाकिस कुश्ता खाता है जहर मजकूर उसके बदनसे फूट निकलते हैं और बजाय नफेके जरर होताहै और बिलाखिर खानेवालेको हिलाक करदेताहै और अजसादकोभी सबग नहीं देता सातों जहरके नाम यह हैं-पहला नाग यानी सांपके मानिन्द दूसरा वंग यानी चरचरकी आवाज तीसरी अगिनि यानी सोजिश चौथा चंचलिया यानी हरकत अज्तरारी पांचवें अस्ततः यानी असवात छठा विष यानी जहर सातवां तन यानी जिस्म-सफा अकलीमिया १३९॥

पारदके दोष निवारण करनेकी आवश्यकता ।

दोषमुक्तो यदा सूतस्तदा मृत्युरुजापहः । साक्षादमृतमेवैष दोषयुक्तो रसो विषम् ॥ ४६ ॥ (र.मं.)

अर्थ-जब कि पारद सम्पूर्ण दोषोंसे रहित होताहै तब मृत्युरूप रोगोंका नाशक साक्षात् अमृतही है और दोषोंसे मिलाहुआ पारद विषके तुल्य है ॥ ४६ ॥

तंत्रान्तरे ।

तस्माद्रसस्य संशुद्धिं विदध्याद्भिषजां वरः। शुद्धोयममृतं साक्षाद्दोषयुक्तो रसो विषम् ॥४७॥ दोषहीनो यदा सूतस्तदा मृत्युजरापह ः ॥ (रसेन्द्र.सा.सं-र.रा.सुं.)

१ पृथवी-इत्यपि ।

अर्थ-दोषोंसे युक्त पारद विषतुल्य है और जब पारद दोषरहित शुद्ध होता है तब साक्षात् अमृतरूप होकर मृत्यु और बुढापेको दूर करताहै इसकारण उत्तम वैद्य पारदको शुद्ध करै ॥ ४७ ॥

अन्यच्च ।

संस्कारहीनं खलु सूतराजं यः सेवते तस्य करोति बाधाम् । देहस्य नाशं विविधं च कुष्ठं कष्टं च रोगाञ्जनयन्नराणाम् ॥ ४८ ॥ (रसमंजरी.)

इति श्रीअग्रवाल वैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसुतबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां पारद (रसराज) संहितायां द्वितीयोऽध्यायः ।

अर्थ-जो मनुष्य संस्कार रहित अर्थात् अशुद्ध पारदका भक्षण करताहै उस मनुष्यके शरीरमें वह अशुद्ध पारद दुःखको करताहै और देहका नाश, अनेक प्रकारका कोढ और मनुष्योंके कठिन रोगोंको पैदा करताहै ॥ ४८ ॥

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डित मनसुखदासात्मजव्यास ज्येष्ठमलशर्मकृतायां पारदसंहिताभाषाटीकायां रसदोषोत्पत्त्यादिवर्णनं नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अथ तृतीयोध्यायः ३.

अथ रसराजस्याष्टादशसंस्कारप्रकरणार्थं रसशाला सति विभवे कर्तव्या तां शालां विना रससिद्धिः सम्यङ् न जायतेऽतः शालारचनोच्यते ॥

अर्थ-यदि परमेश्वरने विशेष धन दिया होवे तो पारदके अठारह संस्कार करनेके लिये रसशाला बनानी चाहिये, क्योंकि रसशालाके विना पारदकी सिद्धि अच्छी तरहसे नहीं होती इसलिये रसशाला बनवानेकी विधिको वर्णन करते हैं ॥

रसशाला निर्माणविधि ।

आतंकरहिते देशे सर्वबाधाविवर्जिते । सर्वौषधियुते देशे मिष्टकूपसमन्विते ॥ १ ॥ मनोरमे धर्मराज्ये समृद्धे नगरे शुभे । पवित्रोपवने रम्ये भूपत्याज्ञासमन्विते ॥ ॥ २ ॥ सुविस्तीर्णे चतुर्द्वारे ह्येकद्वारेऽथवा दृढे । समानभूमिकादेशे कुड्यावरणसंयुत ॥ ३ ॥ तत्र शाला प्रकर्तव्या रससंस्कारसिद्धये । विस्तारे च तथा दीर्घे हस्तानां पंचविंशतिः ॥ ४ ॥ प्रमाणं कथितं तस्या भित्तिमानं करोन्मितम् । तत्र वै नव कोष्ठानि कर्तव्यानि समानि वै ॥ ५ ॥ तेषां मानं सप्तसप्त हस्तानां राजवैद्ययोः । बहिर्द्वाराणि शालायाः कर्तव्यानि च द्वादश। मध्यकोष्ठेपि द्वाराणि विधेयानि च द्वादश ॥ ६ ॥ एकमेकं तथा द्वारं कोणदिक्कोष्ठसंधिषु ॥ ७ ॥ कपाटार्गलयुक्तानि द्वाराणि सुदृढानि वै । ईशानात्षष्ठकोष्ठानां गोपनं धूममार्गयुक् ॥ मध्यकोष्ठोपरि पुनः कुर्याद्वाराणि द्वादश। तदुपरि गोपनं कार्यं वितानं परितस्तथा॥ ॥ ९ ॥ गोपनोपरि द्वाराणि सकपाटानि कारयेत् । कोष्ठभित्तिषु पात्राणां स्थापनार्थं च कारयेत् ॥ १० ॥ स्थानानि लघुदीर्घाणि परिलिप्तानि सर्वतः । शालायाः परितस्तस्याः स्थंडिलं कारयेत्समम् ॥ ११ ॥ तस्मादुदीच्यां प्राच्यां वा ह्यतिदीर्घं गृहं तथा । कुट्टनक्वथनाद्यर्थं स्थानानि तत्र कल्पयेत् ॥ १२ ॥ एतादृशीं सूतशालां संपाद्याथ विधानतः। प्रतिष्ठां कारयेत्तस्याः शिख्यादिदेवतार्चनम् ॥ १३ ॥ ब्राह्मणान्भोजयेत्तत्र सर्वस्थानेषु भक्तितः । कन्याश्च पूजयेत्तत्र वस्त्रालंकारभोजनैः॥ १४ ॥ शालायां पूर्वदिक्कोष्ठे स्थापयेद्रसनायकम् । वह्निकर्माणि चाग्नेये याम्ये पाषाणकर्म च ॥ १५ ॥ नैर्ऋते शस्त्रकर्माणि वारुणे क्षालनादिकम् । शोषणं वायुकोणे च वेधकर्मोत्तरे तथा ॥ ॥ १६ ॥ स्थापनं सिद्धवस्तूनां कुर्यादीशानकोणके। जपपूजादिकं मध्ये प्रोक्तस्थानेऽथवाचरेत्॥१७॥ (धं.सं.--र. रा. सुं--)

अर्थ-जो रोग रहित और सम्पूर्ण दुःखोंसे वर्जित हो, जिसमें अनेक औषधियां मिलती हों ऐसे देशमें, जहां मीठे जलका सुन्दर कूप हो और धर्मराज्य अर्थात् निष्पक्ष राजनीतिका प्रचार हो ऐसे श्रेष्ठ नगरके पास राजाकी आज्ञा लेकर एक बडा लंबा चौडा सुन्दर बगीचा बना हुवा हो उस बगीचेके चार दरवाजे हों या एक ही दृढ (मजबूत) दरवाजा हो जिसकी पृथ्वी समान हो अर्थात् ऊँची नीची न हो,और चारों ओर दीवारका परकोटा खिचाहुआ हो वहां रससिद्धिके लिये रसशाला बनानी चाहिये यह रसशाला पच्चीस हाथ लंबी हो और पच्चीस हाथ चौडी हो और उसकी भीतोंका आसार एक एक हाथ होना चाहिये, और २५ हाथकी लंबी चौडी रसशालाके बराबर (समकोण) नौ कोठे बनावे जिनकी लंबाई चौडाई सात सात हाथ हो, और बाहरसे उस रसशालाके १२ दर्वाजे हों और बीचके कोठेके भी १२ द्वार हों और एक एक दर्वाजा कोने और प्रत्येक दिशाके कोठेकी

संधिमें (अर्थात् एक कोठेसे दूसरे कोठेके मिलानकी भीतिमें) होना चाहिये, और जितने द्वार हों उतनेही चटखनीदार कपाट (किवाड) हों और ईशान दिशासे लेकर ६ कोठोंकी भीतोंमें धुआंरे (धुआं निकलनेकी जगह) सहित गोपन (रोशन्दान) बनावे, बीचके कोठेके १२ द्वार हों और उनके ऊपर रोशन्दान बडे लंबे चौडे बनावे, और जितने रोशन्दान बनवावै उन सबके ऊपर चौखटेदार किवाड भी बनवावे और पात्रोंके रखनेके लिये कोष्ठ (कमरों) की भीतोंमें अलमारियां बनवावे और छोटे बडे स्थानोंको चारों तरफसे लियेहुए रक्खे रसशालाके चौतरफा एक चौरस सुन्दर चबूतरा बनवाना चाहिये उस रसशालाके उत्तर या पूर्वकी ओर एक लंबा घर बनावे जिसमें औषधियोंके कूटने तथा औटानेके लिये स्थान बनेहों इसप्रकार विधिपूर्वक रसशालाको बनवाकर उसकी प्रतिष्ठा और अग्नि आदि देवताओंका पूजन करै, और उस शालाके सम्पूर्ण स्थानोंमें उत्तम भक्तिसे ब्राह्मणोंको भोजन करावै और कन्याओंको भोजन कराकर वस्त्र आभूषण और दक्षिणा देवे, रसशालाके पूर्व दिशाके कोठेमें रसनायक अर्थात् पारदको रक्खे अग्निकोणमें अग्निकर्म (तप्तखल्व इत्यादिक) रक्खे, दक्षिणकी ओर पाषाण कर्म (सिल, लोडी, खरलादिक) रक्खे, नैर्ऋत्यकोणमें शस्त्रकर्म, पश्चिममें पदार्थोंका क्षालन (धोना) वायुकोणमें चीजोंका सुखाना, उत्तरमें वेधकर्म और ईशानकोणमें सिद्ध हुई वस्तुओंको रक्खे और सब कोठोंके बीचके कोठेमें श्रीशिवजीका जप और पूजन करै ॥ १–१७ ॥

रससिद्धिके निमित्त सामग्रीका वर्णन ।

सत्त्वपातनकोष्ठ्यश्च जलद्रोण्योप्यनेकशः । चतुष्टयं भस्त्रिकाणां नलिका वंशधातुजाः॥ ॥ १८ ॥ मृदयोघोषशुल्वाश्मकुंडिकाश्चर्मकाष्ठजाः । कुंडिनी द्विविधा चैव लोहजा तृणजा तथा॥१९॥ पेषणी दृषदुद्भूता खल्वा नानाविधास्तथा । आयसास्तप्तखल्वार्थं मर्दकाश्च तथाविधाः ॥ २० ॥ चतुर्विधा चालनी स्याच्चर्मजा केशजा तथा । वंशजा धातुजा चेति सुवस्त्रं सूक्ष्मगालने ॥ २१ ॥ काष्ठमृद्वंशपात्राणि तुलास्तोलनकास्तथा । मूषा मृत्तुषतूलानि संपुटा विविधास्तथा॥ ॥ २२ ॥ उलूखलाश्च विविधा मुशलाश्चैव तद्विधाः । दीर्घाश्च लघवो दंशा अतिशुष्कं वनोपलम् ॥ २३ ॥ वनोपलस्य नामानि प्रोच्यंते कार्यसिद्धये । पिष्टकं छगणं छाणमुपलं चोत्पलं तथा ॥ ॥ २४ ॥ गिरिंडमुत्पलं शाठी संशुष्कं छगणाभिधम् । काषिका कुचिका सिद्धा गोला चैव गिरिंडिका ॥ २५ ॥ चषकं च कटोरी च वाटिका सूरिकास्तथा । कंचोली ग्राहिका चेति नामानि घगुणस्य वै ॥ २६ ॥ शालासंमार्जनीत्यादि रसपाकांतकर्मकृत् । तत्रोपयोगि यच्चान्यत्तत्सर्वं तत्र स्थापयेत् ॥ २७ ॥ रसांकुशा हि या विद्या तया संमार्ज्य धारयेत् । अन्यथा तद्गतं तेजः परिगृह्णाति भैरवः ॥ २८ ॥ एवं संपाद्य सामग्रीं रससंस्कारसाधिनीम् । रसलिंगार्चनं कुर्याद्येन सिद्धिर्निरंतरम् ॥२९॥ (ध.सं.)

अर्थ–सत्त्वपातनकी भट्ठियां, जलभरनेके अनेकपात्र,चार धौंकनियां, वांस या धातुकी बनीहुई नलिका, मिट्टी, लोहा, कांसा, पत्थर, तांबा, चर्म और काष्ठकी कुण्डिका (पथरोटे या कूंडियां) दो प्रकारकी डालियां एक लोहेकी और दूसरी तृणजा अर्थात् झाऊ, अरहर, वगैरहकी बनीहुई, पत्थरकी बनीहुई चक्की, अनेक प्रकारके खरल तप्तखल्वके निमित्त लोहेका खरल और लोहेकाही मूशला हो-चार प्रकारकी चलनी होनी चाहिये, १ चर्म (चमडे) की-२ बालों की बनीहुई ३ वांसकी ४ लोहा पीतलकी बनीहुई सूक्ष्म (महीन) पदार्थ छाननेके लिये बारीक कपडा, काठ मिट्टी और वांसके पात्र तराजू और बाट मूषा, चिकनी मिट्टी, तुष, रुई, अनेक प्रकारके संपुट, तरह तरहके ऊखल (ओखली) और मूशल, बडे और छोटे चिमटे, अत्यन्त सूखेहुए जंगली उपले जिनके नाम कार्यसिद्धिके निमित्त कहते हैं, पिष्टक, छगण, उपल, उत्पल, गिरिंड और उत्पल शाठी ये सूखेहुए उपलोंके नाम हैं. कहीं २ गोल और चपटे बनाये हुए कंडोंको भी गिरिंड कहते हैं. अब कटोरीके नाम कहतेहैं. चषक, कटोरी, वाटिका, सूरिका कंचोली और ग्राहिका ये कटोरी या प्यालेके नाम हैं. और शालाकी शुद्धिके लिये संमार्जिनी (झाडू) और जो जो पारद कर्मके उपयोगी पदार्थ हों उन सबको रसशालामें रखना चाहिए. और उन सब पदार्थोंको रसांकुशा विद्यासे पवित्र कर (छींटा देकर) ग्रहणकरना चाहिये क्योंकि ऐसा न करनेसे भैरव उन पदार्थोंके तेजको लेलेता है. इसप्रकार रस संस्कार करनेवाली सामग्रीको इकट्ठीकर रसलिंगकी पूजा करे जिससे कि विघ्न रहित पारदकी सिद्धि हो ॥ १८–२९ ॥

अथ रसलिंग रचना प्रकार ।

हेमरूपा महादेवी सूतरूपः सदाशिवः । उभयोर्योगजं लिंगं रसलिंगमितीरितम् ॥ ॥ ३० ॥ सुवर्णेन विना यच्च रसलिंगं विनिर्मितम् । केवलं पुण्यदं तत्र भुक्तिमुक्तिप्रदो नहि ॥ ३१ ॥ तस्मात्सदादौ कर्तव्या रसकर्मसु सिद्धये । रसलिंगेऽर्चना शंभोर्गौर्य्याश्च ध्यानपूर्विका ॥ ३२ ॥ कन्याग्निक्षुद्रा त्रिफला सर्षपो राजिका निशा । अष्टावशेषक्काथेन रसं मर्द्य दिन-

त्रयम् ॥ ३३ ॥ कांजिकेन तु प्रक्षाल्य शोष्य वस्त्रातपे रसम्। खल्वैकभागं कृत्वोर्द्ध स्खलितं ग्राहयेद्रसम् ॥ ३४ ॥ अवशिष्टं मलं त्याज्यं निर्मलं जायते रसः। निष्क-त्रयं हेमपत्रं तद्रसं नवनिष्कलम् ॥ ३५ ॥ अम्लेन मर्दयेद्यामं तेन लिंगं च कारयेत्। दोलायंत्रे सारनाले जंभीरस्थं दिनं पचेत् ॥ ॥ ३६ ॥ (ध. सं.)

अर्थ–सुवर्ण रूप श्रीमहादेवी और पारद रूप श्रीसदा-शिवजी इन दोनोंके योगसे बनाहुआ जो लिंग उसको रसलिंग कहते हैं॥ सुवर्णके विना जो रसलिंग बनायागया हो वह केवल पुण्यका दाता है भोग और मोक्षका दाता नहीं है, - लिये प्रथम रसकर्मकी सिद्धिके लिये श्रीशिवजी और पार्वती-का जिसमें ध्यान मुख्य हो ऐसी रसलिंगकी पूजा सदैव करनी चाहिये, घीग्वार, चित्रक, कटेरीकी जड, त्रिफला, सरसों, राई और हल्दी इनका अष्टावशेष काढ बनाकर तीन दिन पारदको खरल करे फिर कांजीसे धोकर कपडेसे पाछे और धूपमें सुखावे तदनंतर खरलके एक भागको ऊपर उठाकर फैलेहुये पारदको इकट्ठा करले और शेष मलको छोडदेवे अब तीन तोले स्वर्ण और इसीरीतिसे शुद्ध ९ तोले पारद इनको खटाईसे एक पहरतक मर्दन कर रसलिंग बनावे और जंभीरी-में रक्खे हुए पारदको कांजी सहित दोलायंत्रमें एकदिन पचावे॥ ३०—३६॥

अथ रसलिंगपूजाविधिः।

ईशानकोष्ठे लिंगं च सुमुहूर्ते च पूजयेत्। रसलिंगे सदा पूज्यौ पार्वतीपरमेश्वरौ ३७॥ करवीरैर्बिल्वपत्रैः पूजांते ध्यानमापठेत्। ॐअष्टादशभुजं शुभ्रं पंचवक्त्रं त्रिलोचनम् ॥ ॥ ३८ ॥ प्रेतारूढं[1] नीलकंठं ध्यायेद्वामे च पार्वतीम्। चतुर्भुजामेकवक्त्रामक्षमालांकुशे तथा ॥ ३९ ॥ वामे पाशाभये चैव दधतीं तप्तहेमभाम्। पीतवस्त्रां महादेवीं नाना-भूषणभूषिताम् ॥ ४० ॥ एवं ध्यात्वा पुष्प-पुंजं दद्यादंकुशया नरः। रसलिंगं चतुर्दिक्षु गौर्यावरणदेवताः ॥ ४१ ॥ नंदी भृंगी महाकाली कुलीरां पूर्वदिक्क्रमात्।पूजयेत्त-न्नाममंत्रैः प्रणवादिनमोन्तकैः ॥ ४२ ॥ एवं नित्यार्चनं तत्र कर्तव्यं रससिद्धये॥ (र.र.स.)

अर्थ–ईशान कोणमें शुभमुहूर्त देखकर रसलिंगकी जा करै और रसलिंगमें श्रीमहादेव और पार्वतीजीकी सदैव बेलपत्र और कनेरके फूलोंसे पूजा करे और पूजाके अन्तमें इस ध्यानको पढना चाहिये।

ध्यान–अठारह भुजावाले जिनका श्वेत शरीर है,पांच जिनके मुखहैं तीन जिनके नेत्र बैलकी सवारीवाले नीलकंठ श्रीमहादे-वजीका ध्यान करै, और श्रीशिवजीके वामभाग (बांईतरफ) में स्थित चार भुजावाली जिनके एक मुख है और रुद्राक्षकी माला धारण किये हुए हैं, बाँये हाथमें पाश और अभयको धारण करनेवाली हैं तप्त स्वर्णके तुल्य गौरवर्णवाली पीता-म्बर वस्त्र धारण किये हुए अनेक आभूषणोंसे सजीहुई श्री महादेवी पार्वतीका, इस प्रकार ध्यान करके श्रीशिव पार्वती-को पुष्पांजली चढावे और रसलिंगकी चारों दिशाओंमें नन्दी, भृंगी, महाकाली, और कुलीराको पूर्व दिशाके क्रमसे स्थापित कर उन उनके नामवाले मंत्रोंसे पूजन करे इस प्रकार उस रसशालामें रसकी सिद्धिके लिये नित्य पूजन करना चाहिए॥ ३७–४२॥

रसलिंगपूजाफल।

लिंगकोटिसहस्रस्य यत्फलं सम्यगर्चनात्। तत्फलं कोटिगुणितं रसलिंगार्चनाद्भवेत् ॥ ब्रह्महत्यासहस्राणि गोहत्यायाःशतानि च। तत्क्षणाद्विलयं यांति रसलिंगस्य दर्शनात्॥ स्पर्शनात्प्राप्यते मुक्तिरिति सत्यं शिवोदि-तम् ॥ ४४ ॥ (र. र. स.)

अर्थ–करोडों शिवलिंगोंके पूजनेसे जो फल होताहै उससे भी करोडगुना फल रसलिंगकी पूजा करनेसे होताहै. हजारों ब्रह्महत्याएं और सैकडों गोहत्याएं रसलिंगके दर्शन करतेही नष्ट होजातीहैं. और रसलिंगके स्पर्श करनेसे मुक्ति होतीहै यह श्रीमहादेवजीने कहाहै॥ ४३॥४४॥

अथ कोष्ठ लक्ष्मीपूजनविधि।

आग्नेय्यां श्रीस्वर्णमयीं कर्षमानां तदर्द्ध-काम्। तत्रावाह्य महालक्ष्मीं क्षीरेणास्नाप्य पूजयेत् ॥ ४५ ॥ ऐं श्रीं क्लीं सौं महालक्ष्म्यै नमो मंत्रवरेण वै। प्रत्यहं पूजयेदेवं गंधपुष्प-फलादिभिः ॥ ४६ ॥ आग्नेयकोष्ठे श्रीमूर्तिं सर्वदा परिरक्षयेत्। उक्तपूजां विना नैव सूतराजश्च सिध्यति (धं. सं०) ॥ ४७ ॥

अर्थ–एक तोले अथवा छः माशे स्वर्णकी प्रतिमा बना-कर अग्निकोणमें स्थापित करै और उस प्रतिमामें श्रीमहा-लक्ष्मीजीका आवाहन कर दुग्धसे स्नान करावै, 'ॐ ऐं श्रीं क्लीं सौं श्रीमहालक्ष्म्यै नमः' इस सर्वोत्तम मंत्रको पढकर सदैव गंधपुष्पादिकोंसे पूजन करै और अग्निकोणमें श्रीमहा-लक्ष्मीकी मूर्तिको भलीभांति रक्षित रक्खै क्योंकि पूर्वोक्त पूजनके विना पारद सिद्धि नहीं होतीहै ॥ ४५–४७ ॥

अथ यंत्रमें पारदपूजाका वर्णन।

अथ मध्यकोष्ठे यंत्रमध्ये पारदपूजामाह-परिलिते मध्यकोष्ठे कुर्याद्वेदीं द्विहस्तकाम्। सिन्दूरेण च तन्मध्ये षट्कोणं विलिखेत्ततः ४८

[1] १–वृषारू० इत्यपि।

॥ ४८ ॥ वृत्तं चाष्टदलं द्वंद्वं चतुष्पत्रं ततः परम् । भूपुरं परितो लेख्यं रससंस्कारकर्मणि ॥ ४९ ॥ तन्मध्ये लोहजं खल्वं पारदं तत्र निक्षिपेत् । पलानां शतकं वापि पंचाशत्पंचविंशतिः ॥ ५० ॥ अत्रायं विधिः-तत्रादौ पारदपात्रग्रहणे मंत्रः । ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमः । भवे भवेनाति भवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ॥ ५१ ॥ इति मंत्रेण पारदपात्रं स्वहस्ते कृत्वा नत्वा लोहखल्वे सूतं क्षिपेत तंत्रमंत्रः । ॐऐं श्रीं क्लीं सौं ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः सर्वतः शर्वसर्वेभ्यः सर्वान्तरेभ्यो नमस्तेअस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥ ५२ ॥ इति खल्वे पारदक्षेपस्तस्य पुना रसलिंगवत्पूजा कर्तव्या तत्रायमेव मंत्रः सर्वत्र रसकर्मणि रसपूजायां रसोपकरणसेचनादौ च ज्ञेयः।ततः षट्कोणेषु-वज्रवैक्रान्तवज्राभकांतपाषाणटंकणम् । भूनागः षट्सु कोणेषु ततश्चाष्टदलेषु वै ॥ ५३ ॥ गंधतालककासीसशिलाकंकुष्ठभूखगम् । राजावर्तं गैरिकं च पूजयेत्पूर्वतः क्रमात् ॥ ५४ ॥ रसकं विमला ताप्यं चपला तुत्थमंजनम् । हिंगुलं सस्यकं पूज्या द्वितीयेष्टदले त्वमी ॥ ५५ ॥ ततश्चतुःसु पत्रेषु पूजयेत्पूर्वतः क्रमात् । स्वर्णं रूप्यं पूर्वपत्रे दक्षिणे ताम्रसीसके ॥ ॥ ५६ ॥ पश्चिमे वंगकांतौ च ह्युत्तरे मुंडतीक्ष्णकौ । पूर्वोक्तेनैव मंत्रेण पूजयेत्क्रमतो भिषक् ॥ ५७ ॥ बिडं कांजिकयंत्राणि क्षाराम्ललवणानि च । कोष्ठीं मूषां वक्रनालीं तुषांगारवनोपलाः ॥ ५८ ॥ भस्त्रिका दंशकाश्चैव शिला खल्वा उलूखलम् । स्वर्णकारोपकरणं समस्तं तुलनानि च ॥ ॥ ५९ ॥ मृत्काष्ठधातुपात्राणि स्वस्वस्थानस्थितानि वै । प्रोक्षयेदुक्तमंत्रेण रससिद्धान्तमन्त्रतः ॥ ६० ॥

ॐ आगदेवाय नमः १ ॐ चन्द्रसेनाय नमः २ ॐ लंकेशाय नमः ३ ॐ विशारदायै नमः ४ ॐ मत्तदेवाय नमः५ ॐ मांडव्याय नमः ६ ॐ भास्कराय नमः ७ ॐ शूरकाय नमः ८ ॐ रत्नकोशाय नमः ९ ॐ शंभवे नमः १० ॐ तांत्रिकाय नमः ११ॐ नरवाहनाय नमः १२ ॐ इन्द्रगाय नमः१३ ॐ गोमुखाय नमः १४ ॐ कंबलये नमः १५ ॐ व्यालवे नमः १६ नागार्जुनाय नमः१७ॐ सुरानंदाय नमः१८ॐनागबोधये नमः १९ ॐ यशोधनाय नमः २० ॐ खंडाय नमः २१ ॐकापालिकाय नमः २२ ॐ ब्रह्मणे नमः २३ ॐ गोविन्दाय नमः २४ ॐ लंपटाय नमः २५ ॐ हरये नमः २६ॐ रसांकुशाय नमः२७ ॐ भैरवाय नमः २८ ॐ नंदिने नमः २९ ॐ स्वच्छन्दभैरवाय नमः ३० ॐ मंथानभैरवाय नमः ३१ ॐ काकचंडीश्वराय नमः ३२ ॐ ऋष्यशृंगाय नमः ३३ ॐ वासुदेवाय नमः ३४ ॐ क्रियातंत्रसमुच्चायै नमः ३५ ॐ रसेन्द्रतिलकाय नमः ३६ ॐ भालुकये नमः ३७ ॐ मेलिण्यै नमः ३८ ॐ महादेवाय नमः ३९ ॐ नरेन्द्राय नमः ४० ॐ रत्नाकराय नमः ४१ ॐ हरीश्वराय नमः ४२ ॐ कोरंटकाय नमः ४३ ॐ सिद्धिबुद्धाय नमः ४४ सिद्धपादाय नमः ४५ ॐ कंथडिने नमः ४६ ॐ पूज्यपादाय नमः ४७ ॐ कावेरिणे नमः ४८ ॐ नित्यनाथाय नमः ४९ ॐ निरंजनाय नमः ५० ॐ वर्पताय नमः ५१ ॐ विंडनाथाय नमः ५२ ॐ प्रभुदेवाय नमः ५३ ॐवल्लभाय नमः ५४ ॐ वालकये नमः ५५ ॐ यजनाम्ने नमः ५६ ॐ घोराचोलिनिने नमः ५७ ॐटिंटिनिने नमः ५८ ॐ व्यालाचार्याय नमः ५९ ॐ सुबुद्धये नमः ६० ॐ रत्नघोषाय नमः ६१ ॐ सुसेनकाय नमः ६२ ॐ इन्द्रधूमाय नमः ६३ ॐआगमाय नमः६४ॐ कामारये नमः ६५ ॐ बाणासुराय नमः ६६ ॐ कपिलाय नमः ६७ ॐ वलये नमः ६८ संपूज्य रससिद्धानां गंधपुष्पाक्षतैस्ततः । योगिनीकन्यका विप्रान् भोजयेच्चातिथींस्तथा ॥ ॥ ६१ ॥ (धं सं.)

अर्थ-अब बीचके कोठेमें यंत्र बनाकर उसमें पारदकी पूजाको कहतेहैं-लिपेहुये बीचके कोठेमें दो हाथ लंबी चौडी वेदी बनावे और वेदीके बीचमें षट्कोण यन्त्र लिखे दो गोलाकार अष्टदलयंत्र तदनंतर चतुर्दलयंत्रको लिखकर चारों तरफ रससंस्कारकी सिद्धिके लिये भूपुर लिखे वेदीके बीचमें

१-कर्मणे-इत्यपि ।

लोहेका खरल और उसमें सौ पल, पचास पल, अथवा पच्चीस पल पारदको स्थापित करै अब पारद स्थापनकी विधिको कहतेहैं. तहां (ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि०) यह मंत्र बोलकर पारदके पात्रको अपने हाथमें ग्रहण कर और नमस्कार करके लोहेके खरलमें पारदको रक्खे और जिससमय पारदको खरलमें रक्खे उसी समय (ॐ-ऐं, श्रीं, सौं अघोरेभ्योथ) यह मंत्र बोले जिसप्रकार रसलिंगकी पूजा कीजातीहै उसीप्रकार उस पारदकी भी पूजा करना चाहिये. इस रसकर्ममें जहां जहां पारदकी पूजा अथवा रसकर्मकी सामग्रीका मार्जन करना हो वहां वहां यही मंत्र बोलना चाहिये. तदनन्तर छओं कोणोंमें वज्र (हीरा) वैक्रान्त, वज्राभ्र (वज्रसंज्ञाका अभ्रक) कांत पाषाण (चुंबक पत्थर), सुहागा और भूनाग (वर्षाकालमें जो सर्पाकार जीव पैदा होताहै जिसको कैंचुआ या गिरौया कहतेहैं) उसका सत्त्व इनको स्थापित करै और गंधक, हरिताल, कसीस, मैनसिल, कंकुष्ट (उपरसभेद) भूखग (फिटकरी) राजावर्त (रेउटी या गोविन्दमणि) और गेरू इनकी पूर्वदिशादि क्रमसे अष्टदल यंत्रमें पूजा करे और अष्टदल यंत्रमें रसक (खपरिया) सोनामक्खी, रूपामक्खी, चपल (परिभाषा) नीलाथोथा, सुरमा, हिंगुल, और सस्यक ( ) को दूसरे अष्टदलमें स्थापित करै तदनंतर चतुर्दलयंत्रमें पूर्वदिशाके क्रमसे सुवर्ण और चांदीको पूर्वदिशाके पत्रमें, तांवा और सीसेको दक्षिणदिशाके पत्रमें, वंग और कांतको पश्चिमदिशाके पत्रमें, और मुंड तीक्ष्ण (लौह विशेष) को उत्तरदिशाके पत्रमें पूर्वोक्तमंत्रसे वैद्यराज पूजन करे। और बिड, कांजी, यंत्र, क्षार, अम्ल, लवण, कुठिया, मूषा, फूकनी, तुष, कौले, जंगली. उपले, भस्त्रिका (धोंकनी), चीमटा, सिललौढी, खरल, ऊखल, सुनारके शस्त्र, सम्पूर्ण बाट, मिट्टी, लकडी और धातु इनके पात्र जो अपने अपने स्थानपर रक्खे हुएहों उनको पूर्वोक्त मंत्र से प्रोक्षण (छिडकना) करे पश्चात् रससिद्धों को नमस्कार करै। १ आगदेवको नमस्कार हो २ चन्द्रसेनको नमस्कार हो ३ लंकेशको न० ४ विशारदको न० ५ मत्तदेवको नम० ६ मांडव्यको नम० ७ भास्करको नम० ८ शूकरको न० ९ रत्नकोषको न० १० शंभुको न० ११ तांत्रिकको न० १२ नरवाहनको न० १३ इन्द्रगको न० १४ गोमुखको नम० १५ कम्बलीको नम० १६ व्यालको नम० १७ नागार्जुनको न० १८ सुरानंदको नम० १९ नागबोधिको नम० २० यशोधनको नम० २१ खंडको नम० २२ कापालिकको न० २३ ब्रह्माको न० २४ गोविन्दको न० २५ लंपटको नम० २६ हरिको न० २७ रसांकुशको नम० २८ भैरवको न० २९ नंदीश्वरको न० ३० स्वच्छन्दभैरवको न० ३१ मन्थानभैरवको न० ३२ काकचंडीश्वरको नम० ३३ ऋष्यश्रृङ्गको नम० ३४ वासुदेवको न० ३५ क्रियातंत्रसमुच्चयको नम० ३६रसेंद्रतिलकको न०३७ भानुकर्माको नम० ३८मेलिणीको नम०३९ महादेवको न०४०नरेन्द्रको न०४१रत्नाकरको न० ४२ हरीश्वरको न० ४३ कोरटंकको न० ४४ सिद्धबुद्धको न० ४५ सिद्धपादको नम० ४६ कन्थडीको न० ४७ पूज्यपादको नम० ४८ कावेरीको न० ४९ नित्यनाथको न० ५० निरंजनको न० ५१ वर्पतको न० ५२ विडनाथको नम० ५३ प्रभुदेवको न० ५४ वल्लभको न० ५५ बालकको न० ५६ यजनामाको नम० ५७ घोराचोलीको न० ५८ टिंटिनीको न० ५९ व्यालाचार्यको न० ६० सुबुद्धिको नम० ६१ रत्नघोषको न० ६२ सुसेनकको न० ६३ इन्द्रधूमको न० ६४ आगमको न० ६५ कावेरीको नम० ६६ बाणासुरको न० ६७ कपिलको न० ६८ वलिको न० इसप्रकार चंदन पुष्प और अक्षतोंसे रससिद्धोंका पूजनकर योगिनीकन्यायें, ब्राह्मण और अभ्यागतों का पूजन करे ॥ ४८-६१ ॥

पूजनकी आवश्यकता।

इत्येवं सर्वसंभारयुक्तं कुर्याद्रसोत्सवम्। सर्वविघ्नप्रशांत्यर्थं सर्वेप्सितफलप्रदम्॥६२॥ अन्यथा योतिमूढात्मा संप्रदीक्षा क्रमाद्विना। कर्तुमिच्छति सूतस्य साधनं गुरुवर्जितः ॥ ६३ ॥ नासौ सिद्धिमवाप्नोति जन्मकोटिशतैरपि। तस्मात्सर्वप्रयत्नेन शास्त्रोक्तं कारयेत्क्रियाम् ॥६४॥ रसविद्या दृढं गोप्या गुह्याद्गुह्यतरा भुवि। भवेद्वीर्यवती गुप्ता निर्वीर्या च प्रकाशनात् ॥६५॥ नरोगिविदितं कार्यं बहुभिर्विदितं तथा। रोगिणा बहुभिर्ज्ञातं निर्वीर्यं मंत्रमौषधम् ॥ ॥ ६६ ॥ न क्रमेण विना शास्त्रं न शास्त्रेण विना क्रमः। शास्त्रं क्रमयुतं ज्ञात्वा यः करोति स सिद्धिभाक् ॥ ६७ ॥ एवं कृतक्रमो वैद्यो गणेशादीन्विसर्जयेत। खल्वस्थं पारदं नीत्वा पूर्वकोष्टेऽथ संविशेत॥६८॥ तत्राष्टादशसंस्कारान् कुर्याच्छास्त्रविधानतः। नृपाज्ञया समायुक्तः क्रियाभिज्ञो जितेन्द्रियः ॥ ६९ ॥

अर्थ-इसप्रकार जो सम्पूर्ण विघ्नोंके नाशके लिये अनेक वाञ्छित फलके देनेवाले सम्पूर्ण सामग्री युक्त रसके उत्सवको करै और जो गुरुरहित मूर्ख जन संप्रदायकी दीक्षा न लेकर इसके (पूर्वोक्त क्रमके) विपरीत क्रियासे पारद क्रियाको सिद्ध करना चाहताहै वह सौ जन्ममें भी पारद सिद्धिको नहीं प्राप्त होताहै, इस कारण सम्पूर्ण प्रयत्नोंसे शास्त्रोक्त क्रियाको करावे, संसारमें रसविद्याको अत्यन्त गुप्त रखना चाहिये क्योंकि गुप्तकीहुई रसविद्या फलदेती है और प्रकाश करनेसे निर्वीर्य होतीहै यही बात अन्य शास्त्रोंमें लिखी है, जिस औषधिकी क्रियाको रोगी जानता हो और बहुतसे लोक जानते हों उस क्रियाको न करै क्योंकि रोगी और अनेकजनोंका जाना मंत्र और औषधि

निर्वीर्य (शक्तिरहित) होजातेहैं, जिसमें क्रमरीति न हो वह शास्त्र नहीं और वह क्रम नहीं जो एक शास्त्रमें लिखाहुआ न हो इस कारण जो मनुष्य क्रमसे युक्त शास्त्रको जानकर पारदकर्म करता है उसको सिद्धि होती है ऐसे क्रमपूर्वक कार्य करनेवाला वैद्य गणेश आदि देवताओंको पूजनकर विसर्जन करे. और खरलमें से पारदको निकाल पूर्वके कोठेमें प्रवेश करे और वहां राजाकी आज्ञा लेकर इन्द्रियोंका जीतनेवाला और पारदकर्मका जाननेवाला वैद्य अष्टादश संस्कार करे ॥ ६२–६९ ॥

अथ रसेश्वरीमंत्रविधिः ।

ॐ अस्य श्रीरसेश्वरीमंत्रस्य महादेव ऋषिः पंक्तिश्छन्दः श्रीरसेश्वरी पार्वती देवता रसकर्मसिद्धये जपे विनियोगः ॥ बीजैः समस्तैश्च न्यासः । अथध्यानम्–अष्टादशभुजं शंभुं पंचवक्त्रं त्रिलोचनम् । प्रेतारूढं नीलकंठं ध्यायेद्वामे च पार्वतीम् ॥ ७० ॥ चतुर्भुजामेकवक्त्रामक्षमालांकुशे तथा ॥ वामे पाशाभये चैव दधतीं तप्तहेमभाम् ॥ ७१ ॥ पीतवस्त्रां महादेवीं नानाभूषणभूषिताम् ॥ रसेश्वरीं शंभुयुतां रससिद्धिप्रदां भजे॥७२॥ बाणीस्मरःपुनर्वाणी लज्जावाणीरितो मतः॥ पंचाक्षरो रसेश्वर्याः सर्वसिद्धिविधायकः॥ ॥ ७३ ॥ रसकर्मणि सर्वत्र शोधने साधने मृतौ ॥ अष्टोत्तरसहस्रं वै जपन्कर्म समारभेत (ध. सं.) ॥ ७४ ॥

अर्थ–(ॐ अस्य श्री) यहांसे लेकर (जपे विनियोगः) यहांतक मंत्रको पढकर जल छोडे और सम्पूर्ण बीजोंसे अंगन्यास करे तदनंतर ध्यान करै, अठारह भुजा श्वेत वर्ण पांच मुख तीन नेत्र प्रेतोंकी सवारीवाले नीलकंठ महादेवका ध्यान करै, चार भुजा और एक मुखको धारण करनेवाली जिसके दक्षिणहस्तमें रुद्राक्षमाला और अंकुश और वामहस्तमें पाश और अभयको धारणाकिए हुए तप्त सुवर्णके तुल्य जिसका गौर वर्ण हो पीताम्बर वस्त्रको धारण करनेवाली और अनेक आभूषणोंसे सजी हुई शिवजीकी मूर्तिके समीप रससिद्धिकी देनेवाली ऐसी महादेवी श्रीरसेश्वरीका श्रीमहादेवजीके बांई ओर ध्यान करै ॥ ७०–७४ ॥

रसांकुशविद्याप्रणवं कामराजं च शक्तिबीजं रक्षांकुशायै ॥ आज्ञेया विद्यां रसां कुशां प्रणम्य पूजयेद्देवीमिमां कुशविद्याम् ॥७६॥ अथ मंत्रः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं अष्टोत्तरपराफुट २ प्रकट प्रकट कुरु कुरु शमय शमय जात जात दह दह पानय पानय ॐ ह्रीं ह्रें ह्रौं ह्रूं अघोराय फट् इति अघोरमंत्रः (ध. सं.)

अघोरमंत्रः ।

अघोरेणैव मंत्रेण रसराजस्य पूजनम् ॥ ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ॥ सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते रुद्ररूपेभ्यः ॥ (र. रत्ना०–कामरत्न. रसेन्द्र. सा. सं.) पारदस्य पंचविधगतिस्तंभकः पारदस्थितिकारकः सिद्धिसावरमंत्रः प्रोच्यते ।

पारदकी पांचतरहकी गति रोकनेवाले सिद्धि सावर मंत्रका वर्णन ।

मंत्रॐपारापारा सहस्र धारा पारा राखे गुरू हमारा । बारा बरसकी कन्या आई पारा रहिवो ब्रह्मांड समाई । पाराहस्तेन चाले यती हनुमानकी दुहाई अर्जुनकी चकवाई श्रीराजा रामचन्द्रकी आन फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ॥

अस्य विधिः--यदा खल्वे पारदं निधाय तदुपरि एकविंशतिवारं मंत्रं पठेत प्रतिमंत्रान्ते फूत्कारं कुर्यात ॥ तथा सप्तवारं पठित्वा पारदोपरि जलं सिंचेत् । एवंकृते सिद्धिपारदो भवति अस्यापि एकादशशतमितं जपं ग्रहणे सूर्यसंक्रांतिपुण्यकाले कृष्णचतुर्दश्यां वा पुरश्चरणार्थं जपेत्[1]॥ (ध. सं.)

अर्थ–अब पारदकी पांच तरहकी गतिके रोकनेवाले सिद्धिसावर मंत्रको वर्णन करतेहैं–पारदको खरलमें रखकर उस परेपर इक्कीसवार इस ऊपर लिखे (ॐ पारापारा सहस्रधारा इत्यादि) सिद्धसावर मंत्रको पढे और प्रत्येक मंत्रकी समाप्तिपर पारदको फूंकता जाय इसीप्रकार सातवार मंत्रको पढकर पारदपर सातवार जल छिडके जो मनुष्य इस मंत्रको सिद्ध करना चाहे वह सूर्य्य चन्द्रमाके ग्रहणमें सूर्यकी संक्रांतिके पुण्यकालमें या कृष्णपक्षको चतुर्दशीके दिन पुरश्चरणके लिए एक २ हजार जप करै तौ यह मंत्र सिद्ध होता है ।

रसलिंगार्चनं नित्यं रसेश्वर्या जपं तथा । कुर्वन्रहस्ये धर्मात्मा रससिद्धो भवेन्नरः (ध. सं.) ॥ ७७ ॥

अर्थ–पूर्वोक्तरीतिसे पुरश्चरण करनेके पश्चात् एकान्त स्थानमें नित्य रसलिंगकी पूजा और रसेश्वरीका जप करताहुआ धर्मात्मा मनुष्य रससिद्ध होता है ॥ ७७ ॥

मंत्रदीक्षा मुहूर्त ।

अथ मंत्रदीक्षायां विद्वंराकल्पोक्तमासादिफलानि प्रोच्यंते–मेषेऽर्के च प्रतापः

[1] पुरश्चरणं कृत्वैवं जपं कुर्यादिति भावः ।

स्याद्वृषगे भास्करे सुखी ॥ मिथुनेऽर्के बंधुनाशो दुःखवान् कर्कटे रवौ ॥ ७८ ॥ सिंहे भानौ समृद्धिः स्यात्कन्याऽर्के च समृद्धयः। तुलार्के धनलाभः स्याद् वृश्चिकेऽर्के च कष्टवान् ॥ ७९ ॥ धनुष्यर्के च सौभाग्यं मकरेऽर्के धनी भवेत् ॥ आयुर्वृद्धिः कुंभगेऽर्के मीनेऽर्के राजवल्लभः ॥ ८० ॥ अश्विनी रोहिणी चार्द्रा तथा पुष्योत्तरात्रयम् । हस्तश्चित्रा स्वातिमैत्रे विशाखा च धनिष्ठिका॥ ॥ ८१ ॥ पुनर्वसू रेवती च प्रशस्ता मंत्रसंग्रहे ॥ पूर्णिमा पंचमी चैव द्वितीया सप्तमी तथा ॥ ८२ ॥ त्रयोदशी च दशमी प्रशस्ता मंत्रसंग्रहे ॥ तृतीया विहिता नित्यं षष्ठी सर्वत्र निंदिता ॥ ८३ ॥ द्वादश्यां मयि कर्तव्यं मंत्राणां ग्रहणं तथा ॥ मध्याह्नांतः शुभः कालो निषिद्धा रजनी तथा ॥ ८४ ॥ शुक्ले सर्वसमृद्धिः स्यात्कृष्णे तु मध्यमं फलम् ॥ सूर्यग्रहं विना प्रोक्ता मलमासे कदापि न ॥ ८५ ॥

अथ शिष्यशुभप्रदोपि सूर्यग्रहणकालस्तथापि मंत्रदातुरत्यंतानिष्टफलदत्वमाह–

महाभयचतुर्दश्यामुपरागेषु च द्वयोः ॥ मैत्रे किल भवेन्मंत्री दरिद्रः सप्तजन्मसु ॥ ८६॥ योगाश्च प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनः शुभः ॥ सुकर्मा च धृतिर्वृद्धिः ध्रुवः सिद्धिश्च हर्षणः ॥ ८७ ॥ वरीयांश्च शिवः सिद्धिर्ब्राह्मश्चैंद्रश्च षोडश ॥ मंत्राणां ग्रहणे श्रेष्ठाः कथितास्तंत्रकोविदैः ॥ ८८ ॥

अथ लग्नफलानि ।

मेषलग्नं तु शिष्याणां धनधान्यप्रदं भवेत्॥ वृषलग्ने तु मरणं युग्मे चापत्तिनाशनम् ॥ ॥ ८९ ॥ कर्कटे सर्वसिद्धिः स्यात्सिंहे मेधाविनाशनम् ॥ कन्यालग्ने महालक्ष्मीस्तुलायां सर्वसिद्धयः ॥ ९० ॥ वृश्चिके सर्वसिद्धिः स्याद्धनुर्ज्ञानविनाशनम् ॥ मकरः पुत्रदः प्रोक्तः कुंभे धनसमृद्धयः ॥ ९१ ॥ मीनलग्ने भवेद् दुःखमित्थं लग्नफलं प्रिये॥ एवं विचार्य मतिमान्मंत्रदीक्षां समाचरेत् (ध. सं.) ॥ ९२ ॥

अर्थ–अब मंत्रकी दीक्षा लेनेके लिये विद्वंवरा कल्पमें कहे हुए महीनोंके फलको कहते हैं, मेषकी संक्रांतिमें दीक्षा लेनेसे मनुष्यका प्रताप बढता है, और वृषकी संक्रांतिमें सुखी होता है, मिथुनकी संक्रांतिमें बंधुओंका नाश, कर्ककी संक्रान्तिमें दुःखी, सिंहकी संक्रान्तिमें समृद्धिवाला, कन्याकी संक्रान्तिमें भी समृद्धिवाला, तुलाकी संक्रांतिमें धनका लाभ, वृश्चिककी संक्रांतिमें कष्ट, धनकी संक्रांतिमें सौभाग्य, मकरकी संक्रांतिमें धनी, कुंभकी संक्रांतिमें दीर्घायु और मीनकी संक्रांतिमें दीक्षा लेनेसे राजालोगोंका प्यारा होताहै ॥ अश्विनी, रोहिणी, आर्द्रा, पुष्य, तीनों उत्तरा (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ, उत्तराभाद्रपद) हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, विशाखा, धनिष्ठा, पुनर्वसु, और रेवती ये नक्षत्र मंत्रकी दीक्षा लेनेमें शुभ हैं, तथा पौर्णमासी, पंचमी, द्वितीया, सप्तमी, त्रयोदशी दशमी, ये तिथि मंत्र लेनेमें शुभ हैं, और तृतीया तौ नित्य शुभ है, तथा षष्ठी (छठ) सब जगह निन्दित है कोई कोई कहते हैं कि द्वादशीको भी मंत्र लेना शुभ है, प्रातःकालसे मध्याह्न कालतक समय मंत्र लेनेमें शुभ है, रात्रिका समय तौ सर्वथा निषिद्ध (मना) है, यदि शुक्लपक्षमें मंत्र लिया जाय तौ अनेक आनंद होतेहैं, और कृष्णपक्षमें फल मध्यम होताहै, और सूर्यग्रहणके विना मलमासमें कदापि मंत्र नहीं लेना चाहिये ॥ ८५ ॥ यद्यपि ग्रहणकालमें मंत्र लेना शिष्यको अत्यन्त लाभ कारी है तथापि गुरुजी महाराजको उसका फल अच्छा नहीं होताहै, प्रमाण लिखते हैं. प्रमाण-जो गुरु चतुर्दशी या सूर्य, चन्द्रमाके ग्रहणमें शिष्यको मंत्र देता है उसको अत्यन्त भय होता है, और अनुराधा नक्षत्रमें मंत्र देनेसे सात जन्मतक दरिद्री होताहै । प्रीति, आयुष्मान,सौभाग्य, शोभन, शुभ, सुकर्मा, धृति, वृद्धि, ध्रुव, सिद्धि, हर्षण, वरीयान, शिव, सिद्धि, ब्राह्म और ऐन्द्र इन सोलह योगोंमें मंत्र ग्रहण करना पंडितोंने शुभ कहा है। अब लग्नोंके फलोंको कहते हैं–मेष लग्नमें मंत्रका दान शिष्योंको धन धान्यका देनेवाला होताहै, वृष लग्नमें मृत्युको, मिथुनमें दुःखका नाश, कर्क लग्नमें सम्पूर्ण सिद्धियोंको, सिंह लग्नमें बुद्धिके नाशको, कन्यामें बहुविध लक्ष्मीको, तुला और वृश्चिक लग्नमें समस्त सिद्धियोंको, धन लग्नमें ज्ञानके नाशक, मकर पुत्रके दानको, कुंभ लग्नमें धनकी वृद्धि, और मीनलग्नमें दुःख होता है, हे प्यारी पार्वती ! विद्वान् मनुष्य इसप्रकार लग्नके फलको विचार कर मंत्रदीक्षाको ग्रहण करैं ॥ ७८–९२ ॥

मंत्र ग्रहणका दूसरा प्रकार ।

अथ सर्वमंत्रग्रहणे गुरोरभावे कल्पान्तरोक्तप्रकारेणोपायविशेषो लिख्यते–

गुरोरभावे मंत्राणां ग्रहणे विधिरुच्यते । कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां दक्षिणामूर्तिसन्निधौ॥ ॥ ९३ ॥ लिखित्वा राजते पत्रे तालपत्रेऽथवा पुनः ॥ मंत्रं तं स्थंडिले स्थाप्य पूजयित्वा महेश्वरम् ॥ ९४ ॥ नैवेद्यं पायसं दत्त्वा दंडवत्प्रणिपत्य च । शतकृत्वः पठेन्मंत्रं दक्षिणामूर्तिसन्निधौ ॥ ९५ ॥ सर्वेषामेव मंत्राणामेवं ग्रहणमिष्यते ॥ (ध. सं.)

अर्थ–अब मंत्र ग्रहण करनेके समय जहां गुरु महाराज

नहीं मिलते हों वहांपर कल्पांतरके कहे हुए प्रकारसे मुख्य उपाय लिखते हैं-गुरुजीके नहीं मिलनेपर मंत्रग्रहण करनेके लिये विधि कहते हैं, कृष्णपक्षमें त्रयोदशीके दिन दक्षिणामूर्ति अर्थात् श्रीमहादेवजीके निकट चांदीके पत्र अथवा तालपत्रपर उस मंत्र (जिस मंत्रको लेना चाहे) को लिखकर वेदीपर रक्खे श्रीमहादेवजीकी पूजा कर दूधका बनाहुआ प्रसाद चढाकर और दंडवत् प्रणाम करके श्रीशिवजीकी मूर्तिके समक्ष उस मंत्रको सौवार पढे विना गुरुजीके सब मंत्रोंका ग्रहण करे । इसीप्रकार कहागया है ॥ ९३-९५ ॥

मंत्र ग्रहणका तीसरा प्रकार ।

नद्यास्तु सिंधुगामिन्यास्तीरे चोत्तरसंस्थिते ॥ स्थंडिलं कारयेत्तत्र शुचौ देशे शुभे दिने ॥ ९६ ॥ राजते तालपत्रे वा मंत्रं तत्र निधापयेत् ॥ आवाह्य भास्करं तत्र यथाविधि प्रपूजयेत् ॥ ९७ ॥ तत्सन्निधावष्टशतं पठेदेकमनाः सुधीः ॥ एवं गृहीतमंत्रः स्यादपूर्वोऽयं विधिःस्मृतः॥९८॥(ध.सं.)

अर्थ-उत्तम दिन देखकर समुद्रजानेवाली नदीके उत्तरकी तरफके किनारेपर श्रेष्ठस्थानमें वेदी बनावे और उस वेदीपर चांदी या तालके पत्रमें मंत्रको रक्खे वहांपर सूर्य्य देवताका आवाहन करके विधिपूर्वक पूजन करे और उस सूर्य्यदेवताके सामने विद्वान मनुष्य मनको एकाग्र करके एकसौ आठ वार पढे इस प्रकार करनेसे मनुष्य दीक्षित होजाता है, यह मंत्र लेनेकी एक नई विधि है ॥ ९६-९८ ॥

शालाया रचने हीना निर्धना सूतशोधनम् ॥ बांछंति प्रीत्यै तेषां वै प्रकारः प्रोच्यतेऽथवा ॥ ९९ ॥ श्रीशिव उवाच--सूतस्य साधनमतः शृणु पर्वतनंदिनि ॥ गुह्याद्गुह्यतरं कर्म वक्ष्ये त्वत्प्रियकाम्यया ॥ ॥ १०० ॥ पारदं साधयेद्धीमानेकान्ते गुह्यमेव हि ॥ न कस्यचित्प्रकथयेत्पारदं साधयाम्यहम् ॥ १०१ ॥ वने वा गृहकोणे वा ह्येकान्तस्थानमाचरेत ॥ तत्स्थानमुपलिप्यादौ पुनर्गोमयलेपनम् ॥ ॥ १०२ ॥ स्थानसंशोधनं कृत्वा गृहीत्वा शुद्धमार्जनीम् ॥ भूतापसर्पणं कुर्यादिति मंत्रेण बुद्धिमान् ॥ १०३ ॥ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ॥ ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥ ॥ १०४ ॥ मंत्रमुच्चारयेदेनं प्रदद्यान्मार्जनीं बुधः ॥ गोदुग्धं गोमये क्षिप्य पुनर्गोमयलेपनम् ॥१०५॥ पृथ्वि त्वया धृता लोकास्त्वं च वै विष्णुना धृता ॥ त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् १०६॥

इति मंत्रं समुच्चार्य आसनं तत्र कल्पयेत् ॥ तत्रोपविश्य गणपं जपेन्मृत्युंजयं तथा ॥ ॥ १०७ ॥ पारदस्य सुसिद्ध्यर्थमष्टोत्तरशतं जपेत् ॥ माला रुद्राक्षसंभूता तथैव च रसेश्वरीम् ॥ १०८ ॥ आदाय पारदं ताम्रे पात्रे निक्षिप्य पूजयेत् ॥ पाद्यार्घाचमनं स्नानं रक्तचन्दनमक्षतान् ॥ १०९ ॥ पुष्पं धूपं च दीपं च नैवेद्यान्तेम्बु दक्षिणाम् ॥ प्रदद्यान्मूलमंत्रेण मासमेकं बलिं तथा ॥ ११० ॥ अथ मूलमंत्रः-ॐ ह्वं हौं नमः॥ शिवाय शांतरूपाय अनाथाय नमो नमः ॥ अमूर्ताय नमस्तेऽस्तु व्योमरूपाय वै मनः ॥ १११ ॥ तेजसे च नमस्तेस्तु अनंताय नमोस्तु ते ॥ तेजोरूप नमस्तेऽस्तु सर्वगाय नमो नमः॥११२॥ ॐ अमृताय स्वाहा. ॐ अनाथाय स्वाहा ॐ शिवाय स्वाहा. ॐ व्योमव्यापिने स्वाहा.ॐ रुद्रतेजसे स्वाहा. ॐ जीवात्मने स्वाहा. ॐ भूः स्वाहा. ॐ भुवः स्वाहा. ॐ स्वः स्वाहा. ॥ मूलमंत्रेण सूतस्य पूजा कार्यैकमासि च॥ ततस्तुष्टो महादेवः स्वप्ने वदति साधकम् ॥११३॥ तव पारदसिद्धिश्च भविष्यति ममाज्ञया ॥ इति स्वप्नवरं लब्ध्वा रसकर्म समारभेत ॥ ११४ ॥ जितेन्द्रियो भूमिशायी शिवपूजापरायणः ॥ भक्ष्यभोजी नक्तभोजी कुर्यात्कर्माणि शास्त्रतः ॥ ११५ ॥ इति पारदशोधनमारणार्हस्थानकल्पने द्वितीयः प्रकारः ॥ (ध. सं.)

अर्थ-रसशालाके बनवानेमें असमर्थ जो निर्धनी मनुष्य पारदकी शुद्धिको चाहते हैं अब उनकी प्रीतिके लिये पारद शोधनके प्रकारको कहते हैं, श्रीमहादेवजी बोले, हे पार्वती ! अत्यन्त गुप्त पारद कर्मको मैं आपकी प्रसन्नताके लिये कहूंगा इसकारण तुम पारदके साधनको सुनो, बुद्धिमान् एकान्तस्थलमें पारदको गुप्त रीतिसे सिद्ध करै, मैं पारदको सिद्धकरता हूं इस प्रकार किसीको भी प्रख्यात न करै वनमें या घरके एक कोनेमें एकान्तस्थान करै प्रथम उस स्थानको चिकनी मिट्टीसे लीपकर फिर गोबर मिट्टीसे लिपवावे मार्जनी (बुहारी) से स्थानकी शुद्धि करके इस मंत्रसे भूतोंको अपसर्पण (हटाना) करै, जो भूत पृथ्वीपर ठहरे हुए हैं वे हट जाओ, और जो भूत विघ्नके करने वाले हैं वे भी शिवजीकी आज्ञासे नष्ट हो जावें. पंडित इस मंत्रको पढकर झाडू लगावे और गोबरम दूध मिलाकर फिर दूसरी वार चौका लगावे. हे पृथ्वी तुमने सम्पूर्ण संसारको धारण कियाहै और तुमको श्रीविष्णुभग-

वान्ने धारणाकिया इसलिये हे पृथ्वीदेवी तू मुझको धारण कर और मेरे आसनको पवित्र कर इस मंत्रको पढकर उस स्थानमें आसन बनावे और उस आसन पर बैठ कर श्रीगणपति तथा मृत्युंजयका जप करे। पारदकी उत्तम सिद्धिके लिये एकसौ आठ २ बार जप करै। माला रुद्राक्षकी लेनी चाहिये इसीप्रकार रसेश्वरीका भी जप करे पारदको लाकर और तांबेके पात्रमें रखकर पूजन करे पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, लाल चन्दन, अक्षत, फूल, धूप, दीप, नैवेद्य और दक्षिणाको मूलमंत्र पढ कर चढावै इस प्रकार एक मास तक पूजन करै मूलमंत्र इस प्रकारका जानना--ॐ ह्रूं ह्रीं नमः इत्यादि--शांतस्वरूप जिसका कोई मालिक न हो ऐसे श्रीशिवजीको नमस्कारहो निराकार स्वरूप आपको नमस्कार हो, आकाशरूप परमात्मा अनंत तेजवाले आपको नमस्कार हो. और अनन्त रूपवाले आपको नमस्कार हो, हे ज्योतिस्वरूप आपको नमस्कार हो और हे सर्वव्यापक शिव आपको नमस्कार हो॥ एक मास तक मूल मंत्रसे पारदकी पूजा करै फिर श्रीमहादेवजी प्रसन्न होकर स्वप्नावस्थामें साधकको यह वाक्य कहते हैं--मेरी आज्ञासे तेरे पारदकी सिद्धि होगी;इस प्रकार स्वप्नमें वरदानको पाकर रसकर्मका प्रारम्भ करै॥ इन्द्रियोंके जीतनेवाला जो कि पृथ्वी पर सोता हो श्रीशिवपूजनमें तत्पर हो, अपने भक्षण योग्य पदार्थोंका खानेवाला और रातको जो भोजन करै वह मनुष्य शास्त्ररीतिसे रसकर्मको करै॥ ९९-११५॥

पारदकर्मके प्रारम्भमें पूजनकी विधि।

कर्मारंभे रसेन्द्रस्य गणेशं गिरिजां हरम्॥ दिक्पालान्भैरवान् मातॄर्योगिन्यः पारदं ग्रहान्॥ ११६॥ एतांश्च रससिद्धांश्च प्रत्येकं पूजयेत्तथा॥ जितेन्द्रियः सूतसिद्धिं लभेच्च गुरुवाक्यतः (ध. सं.)॥ ११७॥

अर्थ-पारद कर्मके प्रारम्भमें श्रीगणेशजी, श्रीमहादेवजी, दिक्पाल, भैरव, षोडश मातृकायें, चौसठ योगिनी, पारद और नवग्रह,इनकी तथा रससिद्धोंकी भी पूजा करे, इन्द्रियोंको जीतनेवाला मनुष्य गुरुजीके वचनोंसे पारदकी सिद्धिको प्राप्त होताहै॥ ११६॥ ११७॥

अन्य तंत्रसे पूजनप्रकार।

नत्वा गुरुं भैरवकं कुमारिकां द्वैपायनं सिद्धमनुष्यदेवताः॥ अंतःसुनीलं बहिरुज्ज्वलं रसं निवेशयेत्खल्वतले शुभे दिने (ध. सं.)॥ ११८॥

अर्थ-गुरु, भैरव, कन्यायें, वेदव्यास, सिद्ध मनुष्य और देवताओंको नमस्कार करके और शुभ दिनमें भीतरसे नीले रंगवाला और बाहर प्रकाशरूप पारदको खरलमें रक्खे॥११८।

(मुहूर्तपूजन)

शुभेह्नि ढुंढिं परिचिन्त्य सम्यक् कुर्यात्कुमारीबटुकार्चनं च॥ विधाय रक्षां विधिमन्त्रपूतां कर्मारभेदस्य रसस्य तज्ज्ञः॥ ११९॥ (योगतरंगिणी)

अर्थ-रसशास्त्रके जाननेवाला वैद्य शुभदिनमें ढुंढि (गणेश जो कि श्रीकाशीजीमें प्रसिद्ध हैं)का अच्छी प्रकार ध्यान करके फिर कन्याएं तथा बटुककी पूजा करे विधिपूर्वक मंत्रसे पवित्र की हुई रक्षा बनाकर इस रसकर्मका प्रारम्भ करै ११९॥

रसशास्त्रके गुणका लक्षण।

रसेश्वरी महाविद्या रससिद्धैरुपासिता॥ तद्विद्या ग्रहणे शिष्यगुरुलक्षणमुच्यते॥ ॥ १२०॥ आचार्यो ज्ञानवान् दक्षो रसशास्त्रविशारदः॥ मंत्रसिद्धो महाधीरो निश्चलः शिववत्सलः॥ १२१॥ देवीभक्तः सदाचारो विष्णुयागपरायणः॥ सर्वाम्नायविशेषज्ञः कुशलो रसकर्मणि॥ ॥ १२२॥ गुरुभक्त्या लब्धविद्यः कृपालुः कृपणो न च॥ एवं लक्षणसंपन्नो रसविद्यागुरुर्भवेत्॥ १२३॥ (ध. सं.)

अर्थ--रसेश्वरी नामकी एक महाविद्याहै जिसकी रससिद्धोंने उपासना की है उस विद्याके ग्रहण करनेके लिये शिष्य और गुरुका लक्षण कहते हैं, आचार्य अर्थात् गुरु ज्ञानवान्, चतुर रसशास्त्रका पंडित, मंत्रके सिद्ध करनेवाला, महाधैर्यवान् और निश्चल हो, शिवजी जिसपर प्रसन्न हों, देवीका भक्त हो श्रेष्ठ आचरणवाला हो, विष्णुके यज्ञमें तत्पर हो, समस्त संप्रदायोंकी विशेषताको जानता हो, और रसकर्ममें चतुर हो, गुरुभक्तिसे विद्या पढी हुई हो, कृपालु हो और कृपण(कंजूस) न हो, इस प्रकारके जिस मनुष्यमें लक्षण हों वह रसविद्याका गुरु होताहै॥ १२०-१२३॥

अन्यच्च।

मंत्रसिद्धो महावीरो निश्चलः शिववत्सलः॥ देवीभक्तः सदा धीरो देवतायागतत्परः॥ १२४॥ सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः कुशलो रसकर्मणि॥ एतल्लक्षणसंयुक्तो रसविद्यागुरुर्भवेत्॥१२५॥(रसमंजरी.र.रा.सुं.)

अर्थ--जिसको मंत्र सिद्ध हो और बडावीरपुरुष हो जिसपर महादेवजी वत्सल हों देवीका भक्त हो धीरै हो और देवताका यज्ञ करनेवाला हो सम्पूर्ण शास्त्रोंके तत्त्वका ज्ञाता और रसकर्ममें चतुर हो इस प्रकार जिसमें लक्षण हों वह रसविद्याका गुरु होता है॥ १२४॥ १२५॥

शिष्यका लक्षण।

शिष्यो निजगुरोर्भक्तः सत्यवक्ता दृढव्रतः॥ निरालस्यः स्वधर्मज्ञो देव्याराधनतत्परः॥ १२६॥ (रसमंजरी. र. रा. सुं०)

अर्थ-शिष्य अपने गुरुका भक्त हो, सत्य बोलनेवाला हो, दृढ व्रत(अर्थात् जबतक फल प्राप्त न हो तबतक कार्यको

नहीं छोडनेवाला) हो, आलसी न हो अपने धर्मका ज्ञाता हो और जो देवीकी पूजा करनेवाला हो ॥ १२६ ॥

अन्यच्च ।

गुरुभक्ताः सदाचाराः सत्यवंतो दृढव्रताः ॥ निरालस्याश्च धर्मज्ञा सदाज्ञापरिपालकाः ॥ १२७ ॥ दंभमात्सर्यनिर्मुक्ता मंत्राराधनतत्पराः ॥ निंदाद्रोहविरहिताः शिष्याः स्युः सूतसिद्धये ॥ ॥ १२८ ॥ (ध. सं.)

अर्थ–गुरुके भक्त, श्रेष्ठ आचरणवाले, सत्यवक्ता, दृढव्रत, आलस्यरहित, धर्मके ज्ञाता, गुरुकी आज्ञाके पालन करनेवाले, कपट और मात्सर्य्य (पराई संपतको देखकर जलना) से रहित, मंत्रके सिद्ध करनेमें तत्पर, जिनमें निंदा और द्रोह बिलकुल नहीं है रससिद्धिके लिये ऐसे शिष्य होने चाहिये ॥ १२७॥ १२८ ॥

निषिद्धशिष्यके लक्षण ।

नास्तिका ये दुराचाराः सुविद्याचुम्बकाः परात् ॥ विद्यां ग्रहीतुमिच्छंति चौर्यच्छद्मबलोत्सवात् ॥ १२९ ॥ न तेषां सिद्ध्यते किंचिन्मणिमंत्रौषधादिकम् ॥ लोकेस्मिन्न सुखं तेषां परलोके गतिर्न च ॥१३०॥(ध.सं.)

अर्थ--नास्तिक यानी वेद शास्त्रको न माननेवाले जिनके आचरण नष्ट होगये हों और जो मनुष्य पराये मनुष्योंसे श्रेष्ठ विद्याओंके चुम्बक (अर्थात् हरेक मनुष्यसे थोडी २ विद्याको लेनेवाले) चोरी, छल और बलसे विद्याको ग्रहण करना चाहते हैं उनके मणिमंत्र और औषधि वगैरह सिद्ध नहीं होते-हैं, इस लोकमें उन मनुष्योंको सुख नहीं मिलता और परलोकमें श्रेष्ठ गति नहीं होती है ॥ १२९॥१३० ॥

उत्तम गुरु शिष्यके लक्षण ।

अध्यापयंति यदि दर्शयितुं क्षमन्ते सूतेन्द्रकर्म गुरवो गुरवस्त एव॥ शिष्यास्त एव रचयंति गुरोः पुरो ये शेषाः पुनस्तदुभयाभिनयं भजन्ते ॥ १३१ ॥ (रसेन्द्रचि०)

अर्थ–जो गुरु पारद कर्मको पढाते हैं और उसको करके दिखा भी सकते हैं वे ही सच्चे गुरु हैं और जो गुरुके प्रत्यक्ष पारद कर्मको सिद्ध करता है वही शिष्य है और बाकीके मनुष्य केवल गुरु शिष्यकी नकल करनेवाले हैं ॥ १३१ ॥

रसविद्या देनेका कारण ।

रसशास्त्रं प्रदातव्यं विप्राणां धर्महेतवे ॥ राज्ञे वैश्याय वृद्ध्यर्थं दास्यार्थमितरस्य च ॥ १३२ ॥ (र. सा. प.)

अर्थ–धर्म करनेके लिये ब्राह्मणोंको रसशास्त्र देना चाहिये राजा और वैश्योंको धन वृद्धिके लिये, और शूद्रोंको दास्यकर्म अर्थात् नौकरी (टहल) करनेके लिये देना चाहिये ॥१३२॥

गुरुसेवाके विना कर्म करनेका निषेध ।

गुरुसेवां विना कर्म यः कुर्यान्मूढचेतनः ॥ स याति निष्फलत्वं हि स्वप्नलब्धं यथा धनम् ॥ १३३ ॥ (र. रा. सुं.)

अर्थ–जो मूर्ख मनुष्य गुरुकी सेवाके विना पारद कर्मको करता है वह स्वप्नमें मिले हुए धनके समान निष्फलताको प्राप्त होताहै ॥ १३३ ॥

अन्यच्च ।

गुरुभक्तिं विना यो वै मणिमन्त्रौषधादितः॥सिद्धिमिच्छति मूढात्मा स विज्ञेयो हि जारजः ॥ १३४ ॥ कुर्वन्ति यदि मोहेन नाशयन्ति स्वकं धनम् ॥ इह लोके सुखं नास्ति परलोके तथैव च॥१३५॥ तस्माद्भक्तिबलादेव प्राप्य विद्यां सुतीर्थतः ॥ हस्तमस्तकयोगेन वरं लब्ध्वा प्रसाधयेत् ॥ १३६ ॥ (र. सा. प.)

अर्थ–जो मूर्ख गुरुभक्तिके विना रत्न, मंत्र औषधियोंसे सिद्धिको चाहते हैं उनको जारज(अपने पितासे पैदा न हुआ) जानना चाहिये, यदि मोहित होकर पारदकर्मको प्रारम्भ करते हैं तो वे अपने धनको नाश करते हैं और इस लोक और परलोकमें सुखको नहीं भोगते हैं इस कारण भक्तिके बलसे ही श्रेष्ठ गुरुसे विद्या प्राप्त कर हस्तमस्तकयोग (गुरुका प्रसन्न होकर शिष्यके मस्तक पर हाथ रखना) से वरदानको पाकर पारदकर्मको सिद्ध करै ॥ १३४–१३६ ॥

विद्या प्राप्त करनेके तीन प्रकारोंका वर्णन।

गुरुशुश्रूषया विद्या पुष्कलेन धनेन वा ॥ अथवा विद्यया विद्य चतुर्थं नैव कारणम् ॥ ॥ १३७ ॥ (र. रा. सुं.)

अर्थ--प्रथम गुरुकी सेवा करनेसे द्वितीय गुरुको धन देनेसे विद्या प्राप्त होतीहै और तीसरा विद्या प्राप्त करनेका कारण यह है कि एक विद्याको पढा कर दूसरी विद्याको पढना और चौथा विद्या प्राप्त करनेका उपाय कोई नहीं है ॥ १३७ ॥

गुरुकी प्रसन्नतासे कार्यकी सिद्धिका वर्णन ।

गुरौ तुष्टे शिवस्तुष्टः शिवे तुष्टे रसस्तथा ॥ रसे तुष्टे क्रियाः सर्वाः सिध्यन्ते नात्र संशयः ॥ १३८ ॥ (र. सा. प.)

अर्थ–श्रीगुरुजीके प्रसन्न होनेपर श्रीमहादेवजी प्रसन्न होतेहैं और श्रीशिवजीके प्रसन्न होनेसे पारद प्रसन्न होताहै और पारदके प्रसन्न होने पर समस्त क्रियायें सिद्ध होतीहैं ॥ १३८॥

१–शिष्यास्तु ते च र०इत्यपि ।

रससहायकका लक्षण ।

सहायाः सोद्यमास्तत्र यथा शिष्यास्ततोऽधिकाः ॥ कुलीनाः स्वामिभक्ताश्च कर्तव्या रसकर्मणि ॥ १३९ ॥ (ध. सं.)

अर्थ-रस कर्मकी सिद्धिके लिये सहायक शिष्योंसे भी अधिक उद्यम करनेवाले कुलीन और अपने स्वामीके भक्त होने चाहिये ॥ १३९ ॥

पारदकर्मकी सिद्धिके उपाय ।

अर्थाः सहाया निखिलं च शास्त्रं हस्तक्रिया कर्मणि कौशलं च । नित्योद्यमस्तत्परता च वह्निरेभिर्गुणैः सिध्यति सूतकेन्द्रः ॥ १४० ॥ (योगरत्नाकर)

अर्थ-द्रव्य,सहायक, सम्पूर्ण शास्त्रोंका संग्रह,हस्तक्रिया, कर्ममें चतुरता,नित्यप्रति उद्यम करना,पारद कर्ममें लगे रहना और अग्नि इन गुणोंसे पारद सिद्ध होताहै ॥ १४० ॥

पारदसिद्धिका लक्षण ।

रसशास्त्राणि सर्वाणि समालोक्य यथाक्रमम् । शास्त्रं क्रमयुतं ज्ञात्वा यः करोति स सिद्धिभाक् ॥ १४१ ॥ (र. सा. प.)

अर्थ-यथारीति सम्पूर्ण रसशास्त्रोंको देख और जिसमें रसके संस्कारोंको क्रमसे वर्णन किया हो ऐसे शास्त्रको जानकर जो मनुष्य कर्मको प्रारम्भ करता है वह सिद्ध होताहै ॥ १४१ ॥

रससिद्धिके साधन करनेवाले अधिकारियोंका वर्णन ।

सम्यक्साधनसोद्यमा गुरुयुता राजाज्ञयालङ्कृता नानाकर्मपराङ्मुखाः रसपराश्चाद्याजनैश्चार्थजः । मात्रायंत्रसुपाककर्मकुशलाः सर्वौषधीकोविदास्तेषां सिध्यति नान्यथा विधिबलाच्छ्रीपारदः पारदः ॥ ॥ १४२ ॥ (र. सा. प.)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबू निरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां तृतीयोऽध्यायः॥३॥

अर्थ-श्रेष्ठ साधन और उद्यमवाले जो कि गुरु करके सहित हों जिनको राजाकी आज्ञा हुई हो रसकर्मको छोड अन्य कर्मोंमें बहिर्मुख हों रसकर्ममें तत्पर और मात्रा, यंत्र और परिपाक कर्मोंमें कुशल हों और जो मनुष्य सम्पूर्ण औषधियोंके जाननेवाले हों उनके प्रारब्धके बलसे संसारके पार देनेवाला श्रीपारद सिद्ध होताहै ॥ १४२ ॥

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपंडित--मनसुखदासात्मजव्यास ज्येष्ठमलशर्मकृतायां पारदसंहितायां भाषाटीकायां रसशालादिवर्णनं नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

चतुर्थः परिभाषाध्यायः ४.

धन्वन्तरिभागका वर्णन ।

अर्धं सिद्धरसस्य तैलघृतयोर्लेहस्य भागोऽष्टमः संसिद्धाखिललोहचूर्णवटिकादीनां तथा सप्तमः॥ यो दीयेत भिषग्वराय गदिभिर्निर्दिश्य धन्वन्तरिं सर्वारोग्यसुखाप्तये निगदितो भागः स धन्वन्तरेः॥१॥(र.र.स.)

अर्थ-समस्त आरोग्य और सुखकी प्राप्तिके लिये धन्वंतरि भगवान्का नाम लेकर रोगी मनुष्योंसे सिद्ध रसका आधा हिस्सा तैल, घृत और लेह (चटनी) का आठवां हिस्सा सिद्ध किये हुए लोह (धातु) चूर्ण और गोलियोंका सातवां हिस्सा जो वैद्यराजको दिया जाताहै उसको धन्वंतरिका भाग कहते हैं ॥ १ ॥

रुद्रभागका वर्णन ।

भैषज्यक्रीतद्रव्यस्य भागोप्येकादशो हि यः। वणिग्भ्यो गृह्यते वैद्यै रुद्रभागः स उच्यते॥ ॥ २ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-वैद्य औषधिके बेचनेवाले (अत्तार)लोगोंसे विकी-हुई दवाइयोंके धनका जो ग्यारहवां भाग लेते हैं उसको रुद्रभाग कहते हैं ॥ २ ॥

भावनाविधि ।

दिवा दिवातपे शुष्कं रात्रौरात्रौ निवासयेत्। शुष्कं चूर्णीकृतं द्रव्यं सप्ताहं भावनाविधौ ॥ ३ ॥ द्रवेण यावता द्रव्यमेकीभूयार्द्रतां व्रजेत । द्रवप्रमाणं निर्दिष्टं भिषग्भिर्भावनाविधौ ॥ ४ ॥ भाव्यद्रव्यसमं क्काथं क्कथ्वाष्टगुणं जलम् । अष्टांशशेषितः क्काथो भाव्या तेनैव भावना॥५॥(भैषज्यरत्नावली)

अर्थ-सूखे हुए द्रव्यको पतले द्रवमें घोटकर दिनमें तौ धूपमें सुखावे और रातको ओसमें रक्खे,सुखाकर उस द्रव्यका चूर्ण करै इसी प्रकार सातदिन करै इसको भावना कहतेहैं सूखा पदार्थ जितने पतले पदार्थसे मिलकर गीला हो वैद्यलोगोंने भावना देनेकी विधिमें उतनाही पतला पदार्थ मिलाना कहाहै जहां काथसे भावना देनी हो वहां जिसको भावना दीजाय उस द्रव्यके समान काथ करनेकी वस्तु लेकर अठगुने पानीमें औटावे जब आठवां हिस्सा बाकी रहै तब काथ होताहै उससे भावना देने योग्य पदार्थको भावना देनी चाहिये ॥ ३–५ ॥

हिंगुलाकृष्टपारदका लक्षण ।

विद्याधराख्ययंत्रस्थादार्द्रकद्रावमर्दनात । समाकृष्टो रसो योऽसौ हिंगुलाकृष्ट उच्यते ॥ ६ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-हिंगुल (शिंग्रफ) को अदरकके रसमें घोट कर विद्याधरयंत्रसे जो पारद निकाला जाता है उसको हिंगुलाकृष्ट पारद कहतेहैं ॥६॥

कज्जलीका लक्षण।

धातुभिर्गंधकाद्यैश्च निर्द्रवैर्मर्दितो रसः। सुश्लक्ष्णः कज्जलाभोऽसौ कज्जली सा स्मृता बुधैः ॥ ७ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-जिसमें कि गीलापन न हो ऐसे गंधक आदि धातुओंके साथ घोटाहुआ जो पारद अत्यन्त चिकना कज्जलके समान हो उसको कज्जली कहते हैं ॥ ७ ॥

रसपंकका लक्षण।

सद्रवा मर्दिता सैव रसपंक इति स्मृतः॥८॥ (र. र. स.)

अर्थ-कज्जलीको पतले पदार्थोंके साथ घोटनेसे रसपंक संज्ञा होतीहै ॥ ८ ॥

पिष्टीका लक्षण।

अर्कांशतुल्याद्रसतोऽथ गंधान्निष्कार्धतुल्याच्चुटिशेभि? खल्वे। अर्कातपे तीव्रतरे विमर्द्योत्पिष्टी भवेत् सा नवनीतरूपा ॥ ९ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-पारदसे बारहवें हिस्सेकी बराबर या दो माशे गंधकसे खरलमें पारदको गेरकर तेज घाममें घोटता जावे तो मक्खनके समान पिष्टी होतीहै ॥ ९ ॥

पिष्टीका लक्षण।

खल्वे विमर्द्य गंधेन दुग्धेन सह पारदम्। पेषणात्पिष्टतां याति सा पिष्टीति मता परैः ॥ १० ॥ (र. र. स.)

अर्थ-खरलमें पारदको गंधकके साथ मर्दन कर फिर दूधके साथ घोटनेसे पारद चिकनाईको प्राप्त होताहै मनुष्य उसको पिष्टी कहते हैं ॥ १० ॥

पातनपिष्टीका लक्षण।

चतुर्थांशसुवर्णेन रसेन घृष्टपिष्टिका। भवेत्पातनपिष्टी सा रसस्योत्तमसिद्धिदा ११॥ (र. र. स.)

अर्थ-चतुर्थांश (चौथाई) सुवर्णके साथ पारदको मर्दन करनेसे जो पारदकी पिष्टी होतीहै उसको पारदकी उत्तम सिद्धि देनेवाली पातनपिष्टी कहतेहैं ॥ ११ ॥

नष्टपिष्टीका लक्षण।

स्वरूपस्य विनाशेन पिष्टत्वाद्बंधनं[1] हि तत्। विद्वद्भिर्निर्जितः[2] सूतो नष्टपिष्टिः स उच्यते ॥ १२ ॥ (र. र. स.-र. सा. प.)

१-पादनं हि० इत्यपि। २-जितसूतोसौ न० इत्यपि।

अर्थ-वैद्योंसे जीताहुआ अर्थात् प्रत्येक कार्यमें लानेयोग्य बनाया हुआ अन्य पदार्थोंके साथ घोटनेसे अपने रूपके अत्यन्त नाशके कारण जो बंधनावस्थामें स्थिति जो पारद है वह नष्टपिष्टी कहाताहै ॥ १२ ॥

अन्यच्च।

स्वरूपस्य विनाशेन पिष्टत्वापादनं रसे। विषाग्निवर्जितस्यापि नष्टपिष्टः स उच्यते॥ ॥ १३ ॥ (टो. नं., र. रा. प.)

अर्थ-अपने रूपके नाश द्वारा विष और अग्निके योगसे रहित पारदका जो सूक्ष्म चूर्ण करनाहै वह नष्टपिष्ट कहाताहै १३

उमायोनिका लक्षण।

गंधकेन समं सूतमूर्ध्वमायसपात्रके ॥ सजले पातितः सूत उमायोनिरिति स्मृतः॥ ॥ १४ ॥ (टो. नं.)

अर्थ-समभाग गंधक और पारेकी कज्जली बनाकर नीचेके पात्रमें रक्खे ऊपर जलसहित लोहेके पात्रमें जो पारद उडाया जाताहै वह उमायोनि कहलाताहै ॥ १४ ॥

बिडका लक्षण।

क्षारैरम्लैश्च गंधाद्यैर्मूत्रैश्च पटुभिस्तथा ॥ रसग्रासस्य जीर्णार्थं तद्बिडं परिकीर्तितम् ॥ १५ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-पारेमें ग्रास दी हुई अर्थात् खिलाई हुई चीजोंके जीर्ण (हजम) करनेके लिये क्षार, अम्लद्रव्य, (खट्टी चीजें) गंधक आदि पदार्थ, मूत्र (गोमूत्रादि) और लवणोंसे जो पदार्थ बनाया जाताहै उसको बिड कहतेहैं ॥ १५ ॥

धान्याभ्रका लक्षण।

चूर्णाभ्रं शालिसंयुक्तं वस्त्रबद्धं हि[1] कांजिके॥ निर्यातं मर्दनाद्वस्त्राद्धान्याभ्रमिति कथ्यते॥ ॥ १६ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-शुद्ध किये हुए अभ्रकका इमामदस्तेमें भली प्रकार चूर्ण कर और धानके साथ मिलाकर उसको उत्तम वस्त्र (टाट या कम्बल) में बांधकर कांजीमें रक्खे फिर कांजीमें मर्दन करनेसे जो अभ्रक बाहर निकलताहै उसको धान्याभ्र कहते हैं ॥ १६ ॥

सत्त्वका लक्षण।

क्षाराम्लद्रावकैर्युक्तं ध्मातमाकरकोष्ठके। यस्ततो निर्गतः सारः सत्त्वमित्यभिधीयते ॥ १७ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-जिसका सत्त्व निकालना हो उसको क्षार, अम्ल (खट्टे पदार्थ) और द्रावक अर्थात् गलाने योग्य पदार्थोंके साथ मिला टिकिया बना आकर कोष्ठक (कोठी) नामके यंत्रमें रखकर धोंकनेसे जो सार निकलता है उसको सत्त्व कहतेहैं ॥ १७ ॥

१-हि यत्-इत्यपि।

सत्त्वका अर्थ।

अभ्रादिसर्वधातूनां भवेदौषधयोगतः। ध्मातश्च निर्गतः सारः सत्त्व इत्यभिधीयते ॥ १८ ॥ (टी. नं.)

अर्थ-औषधियोंके योगसे अभ्रक आदि समस्त धातुओंको धोंककर जो सार निकाला जाताहै उसको सत्त्व कहतेहैं १८॥

द्रुतिका लक्षण।

निर्लेपत्वं द्रुतत्वं च तेजस्त्वं लघुता तथा। असंयोगश्च सूतेन पंचधा द्रुतिलक्षणम् ॥ ॥ १९ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-जिसका किसी द्रव्यपर लेप न होसके और पतलापन हो चमक हो हलकापन हो पारदके साथ भी नहीं मिलता हो ये पांचो द्रुतिके लक्षण हैं ॥ १९ ॥

अन्यच्च।

औषधाध्मानयोगेन लोहधात्वादिकं तथा। संतिष्ठते द्रवाकारं सा द्रुतिः परिकीर्तिता ॥ २० ॥ (र. र. स.)

अर्थ-औषधि और अग्निके संयोगके विना जिसप्रकारके पतले पदार्थका आकार होताहै उसीप्रकारसे जब धातु आदि ठहरने लगे तब उसको द्रुति कहते हैं ॥२०॥

बीजलक्षण।

शुद्धं स्वर्णं च रूप्यं च बीजमित्यभिधीयते ॥ २१ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-जब कि सुवर्ण और चांदी अत्यन्त शुद्ध होतेहैं तब उनकी बीज संज्ञा होतीहै ॥२१॥

वारितरका लक्षण।

मृतं तरति यत्तोये लोहं वारितरं हि तत् ॥ ॥ २२ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-शास्त्रकी प्रक्रियासे भस्म कियाहुआ जो लोह(धातु) जलपर तरने लगताहै उसको वारितर कहतेहैं ॥ २२ ॥

ऊनमका लक्षण।

तस्योपरि गुरुद्रव्यं धान्यं चोपनयेद्ध्रुवम्॥ हंसवत्तीर्यते वारिण्यूनमं परिकीर्तितम् ॥ ॥ २३ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-जलके भरेहुए कटोरेमें सिद्ध कियेहुए लोहभस्म (धातुभस्म) को बुरक उसके ऊपर गुरुद्रव्य (अर्थात् बृहत् परिमाणसे लेकर सूक्ष्म परिमाण तक जिसकी जलमें डूबनेकी शक्ति ठीक वैसीही बनी हुई हो) उसके सूक्ष्म टुकडे अथवा जौ गेहूं आदि धान्य छोड दो तौ वह भस्म इन पदार्थोंको अपने ऊपर धारण कर हंसके समान तैरने लगता है तब उसको ऊनम कहते हैं ॥ २३ ॥

रेखापूर्णका लक्षण।

अंगुष्ठतर्जनीघृष्टं यत्तद्रेखांतरे विशेत् ॥ मृतलोहं तदुद्दिष्टं रेखापूर्णाऽभिधानतः ॥ ॥ २४ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-जो धातुकी भस्म अँगूठा और तर्जनी (अँगूठेके पासकी उँगली) से घिसीहुई अँगूठे और उँगलीकी रेखाओंमें भर जाय उस भस्मको रेखापूर्ण नामसे कहतेहैं ॥२४॥

अपुनर्भवका लक्षण।

गुडगुञ्जासुखस्पर्शमध्वाज्यैः सह योजितम्। नाऽऽयाति प्रकृतिं ध्मानादपुनर्भव उच्यते॥ ॥ २५ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-जिस धातुकी भस्म होगईहो उसको गुड, चौंटली, सुहागा, शहद और घृत इनके साथ मिलाकर अग्निमें धोंकनेसे अपनी असली दशाको नहीं प्राप्त हो अर्थात् सोनेकी भस्मका सोना चांदीकी भस्मकी चांदी नहीं बने तब उसको अपुनर्भव कहतेहैं ॥ २५ ॥

अन्यच्च।

रौप्येण सह संयुक्तं ध्मातं रौप्येण चेल्लगेत्। तदा निरुत्थमित्युक्तं लोहं तदपुनर्भवम् ॥ ॥ २६ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-लोह (धातु) भस्मको चांदीके साथ मिला कर घरियामें रख अग्निके ऊपर धोंकनेसे जो यह भस्म चांदीके साथ गलजावे तौ उस अपुनर्भव लोहको निरुत्थ कहतेहैं २६॥

उत्थापनका लक्षण।

मृतस्य पुनरुद्भूतिः संप्रोक्तोत्थापनाख्यया ॥ ॥ २७ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-भस्म कियेहुए लोहादि धातुओंको पूर्वोक्त गुडादि द्रव्योंके साथ मिलाकर अग्निमें धोंकनेसे फिर अपने २ रूपको धारण करने लगै अर्थात् चांदीकी भस्मकी फिर चांदी बन जाय उसको उत्थापन कहते हैं ॥ २७ ॥

कृष्टीलक्षण।

रूप्यं वा जातरूपं वा रसगंधादिभिर्हतम्। समुत्थितं च बहुशः सा कृष्टी हेमतारयोः ॥२८॥ कृष्टीं क्षिपेत्सुवर्णान्तर्न वर्णो हीयते तया। स्वर्णकृष्ट्या कृतं बीजं रसस्य परिरंजनम् ॥ २९ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-पारा, गंधक, आदि धातुओंसे भस्म कीहुई चांदी अथवा सुवर्णको बारबार पूर्वोक्त गुड, गुंजादि, द्रव्योंसे उत्थापन कर फिर भस्म करे उसको हेमकृष्टी तथा तारकृष्टी कहते हैं ॥ अग्निमें डाल कर गलाये हुए सुवर्णमें उस कृष्टीको डालै और उसके डालनेसे सुवर्णका रंग नहीं बिगडे अर्थात् पूर्ववत् बना रहे तो वह स्वर्णकृष्टीका उत्तम लक्षण है; उस स्वर्णकृष्टिसे बना हुआ बीज पारदका रंजन (रंगना) करताहै॥

सिद्ध शुल्बनागका लक्षण।

माक्षिकेण हतं ताम्रं दशवारं समुत्थितम्।

तद्वद्विशुद्धं नागं हि द्वितयं तच्चतुष्पलम् ॥ ॥ ३० ॥ नीलांजनहतं भूयः सप्तवारं समुत्थितम् ॥ इति संसिद्धमेतद्धि शुल्बनागं प्रकीर्त्यते ॥ ३१ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-सोना मक्खीके साथ तांबेको भस्म करै फिर पूर्वोक्त गुडादि द्रव्योंके साथ उत्थापन करै इस प्रकार दशवार भस्म और उत्थापन करै इसी प्रकार शुद्ध कियाहुआ नाग (सीसा) ये दोनों चार पल अर्थात् दो पल तांबा और दो पल सीसा इन दोनोंको नीलांजन यानी तूतियाके साथ भस्म करके फिर गुडादि द्रव्योंमें मिला कर उत्थापन करै इस प्रकार सातबार भस्म और उत्थापन करनेसे सिद्ध शुल्बनाग कहाता है ॥ ३० ॥ ३१ ॥

शुल्बनागका गुण ।

साधितस्तेन सूतेन्द्रो वदने विधृतो नृणाम् । निहन्ति मासमात्रेण मेहव्यूहमशेषतः ॥ ॥ ३२ ॥ पथ्याशनस्य वर्षेण पलितं वलिभिः सह । गृध्रदृष्टिलसत्पुष्टिः सर्वारोग्यसमन्वितः ॥ ३३ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-इस शुल्बनागसे सिद्ध कियाहुआ पारद केवल एक मास पर्य्यंत मुखमें रखनेसे मनुष्योंके अनेक प्रकारके प्रमेहोंको नाश करताहै; अपने शरीरको हित देनेवाले पदार्थोंके सेवन करनेवाला मनुष्य यदि एक वर्ष पर्य्यंत इस सिद्ध पारदको सेवन करे तो वली (त्वचाका सुकडना) और पलित (श्वेतकेश) को नाश करता है और उसकी गीधके तुल्य दृष्टि दीप्यमान कान्ति और सम्पूर्ण आरोग्यसे संयुक्त होताहै ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

वरनागका लक्षण ।

तीक्ष्णं नीलांजनोपेतं ध्मातं हि बहुशो दृढम् । मृदु कृष्णं द्रुतद्रावं वरनागं तदुच्यते ॥ ३४ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-कान्त लोहेको तूतियाके साथ मिलाकर तेज अग्निसे बार २ धोंकते धोंकते जब वह कान्त लोहाका मल कृष्ण वर्णवाला और शीघ्र गलनेवाला होजावे तब उसको वरनाग कहते हैं ॥ ३४ ॥

चपलका लक्षण ।

त्रिंशत्पलमितं नागं भानुदुग्धेन मर्दितम् । विमर्द्य पुटयेत्तावद्यावत्कर्षावशेषितम् ॥ ३५ ॥ न तत्पुटसहस्रेण क्षयमायाति सर्वथा । चपलोयं समादिष्टो वार्तिकैर्नागसंभवः ॥ ३६ ॥ इत्थं हि चपलः कार्यो वंगस्यापि न संशयः । तत्स्पृष्टहस्तसंस्पृष्टः केवलो बध्यते रसः ॥ ३७ ॥ स रसो धातुवादेषु शस्यते न रसायने । अयं हि खर्वणाख्येन लोकनाथेन कीर्तितः ॥ ३८ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-तीसपल सीसेको अर्क (आक) के दूधसे घोटे और घोटकर तबतक पुट देता जावे कि जबतक एक तोला शेष रहे-शेष रहे एक तोले सीसेको चाहे हजार पुट क्यों न दिये जांय तौभी नष्ट नहीं होताहै बस इसीको वार्तिककारोंने नागसे पैदा हुआ चपल कहा है ॥ इसीप्रकार वंग (रांगा) का भी चपल बनाना चाहिये इसमें कोई संदेह नहींहै; केवल चपलके छुए हुए हाथसे पारदको स्पर्श किया जाय तौ पारद बद्ध होताहै परन्तु वह पारद धातुवादमें अर्थात् सोना चांदी बनानेमें उपयोगीहै रसायनमें नहीं है इस चपलकी विधिको खर्वण नाम महात्माने वर्णन किया है ॥ ३५-३८ ॥

धौताख्यरजका लक्षण ।

भूभुजंगशकृत्तोयैः प्रक्षाल्यापहृतं रजः । कृष्णवर्णं हि तत्प्रोक्तं धौताख्यं रसवादिभिः ॥ ३९ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-केंचुओंका मल (केंचुओंकी गुदासे निकली हुई मिट्टी) को जलसे धोकर रेत निकाले उस श्याम वर्णवाले रेतको धौताख्य रज कहते हैं ॥ ३९ ॥

धौतका लक्षण ।

विष्ठां भूनागसंभूतां प्रक्षाल्य बहुभिर्जलैः । समाहृत्य रजः कृत्स्नं धौतमित्यभिधीयते ॥ ॥ ४० ॥ (टी. नं०)

अर्थ-केंचुओंकी विष्ठाको जलसे अनेकबार धोकर काले रेतको निकाल कर रक्खे उसको धौत कहतेहैं ॥ ४० ॥

घोषाकृष्टका लक्षण ।

स्वल्पतालयुतं ताम्रं वंकनालेन ताडितम् । मुक्तरंगं हि तत्ताम्रं घोषाकृष्टमुदाहृतम् ॥ ॥ ४१ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-तांबेमें थोड़ीसी हरताल डालकर तबतक वंकनालसे धोंकता जावे जबतक कि रंग नष्ट होकर केवल ताम्रमात्र ही शेष रहे उसको घोषाकृष्ट कहतेहैं ॥ ४१ ॥

हेमरक्तीका लक्षण ।

ताम्रं तीक्ष्णसमायुक्तं द्रुतं निक्षिप्य भूरिशः। स गंधलकुचद्रावे निर्गतं वरलोहकम् ॥ तेन रक्तीकृतं स्वर्णं हेमरक्तीत्युदाहृतम् ॥ ॥ ४२ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-तांबेमें कांतिसार लोहा मिलाकर और अग्निमें डालकर गंधक और लकुच (बड़हर) के रसमें बारबार बुझा कर निकाले वह वरनाग कहाताहै उस वरनागसे लाल कियाहुआ जो स्वर्ण वह हेमरक्ती कहाताहै ॥ ४२ ॥

निक्षिप्ता सा द्रुते स्वर्णे वर्णोत्कर्षविधायिनी। तारस्य रंजनी चापि बीजरागविधायिनी॥

॥ ४३ ॥ एवमेव प्रकर्तव्या तारक्ती मनोहरा। रंजनी खलु रूप्यस्य बीजानामपि रंजनी ॥ ४४ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-गलायेहुए स्वर्णमें छोडीहुई यह हेमरक्ती स्वर्णका उत्तम रंग बनाती है चांदी तथा अन्य बीजोंको रंगनेवाली है, इसीप्रकार सुन्दर तारक्ती भी बनानी चाहिये क्योंकि वह चांदी तथा अन्य बीजों को भी रंगतीहै ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

चन्द्रार्कका लक्षण।

भागाः षोडश तारस्य तथा द्वादश भास्वतः। एकत्राऽऽवर्तितास्तेन चन्द्रार्कमिति कथ्यते॥ ॥ ४५ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-चांदी सोलह भाग और तांबा बारह भाग इन दोनोंको मिलाकर मूषा (घरिया) यंत्रमें रख अग्निमें धोंकनेसे जब गलकर चक्कर खाने लगे तब उसको अग्निसे बाहर निकाल ले बस इसीको चन्द्रार्क कहते हैं ॥४५॥

चन्द्रानलका लक्षण।

मृतेन वा बद्धरसेन चान्यल्लोहेन वा साधितमन्यलोहम्। सितं च पीतत्वमुपागतं तद्दलं हि चन्द्रानलतः प्रसिद्धम् ॥ ४६ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-मृत पारद अथवा बद्ध पारद या अन्य किसी लोहे (धातु) से सिद्ध किया हुआ लोह (धातु) सफेदी या पीली रंगतको प्राप्त होताहै तब उस पत्रको चन्द्रानल कहतेहैं॥

पिंजरीका लक्षण।

लोहं लोहान्तरं क्षिप्तं ध्मातं निर्वापितं द्रवे॥ पांडुपीतप्रभं जातं पिंजरीत्यभिधीयते ॥ ॥ ४७ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-अग्निके योगसे गले हुए धातुमें (बीजरूप) अन्य धातुको डाल कर फिर धोंकनेसे जो पीली प्रभा होतीहै उसको पिंजरी कहतेहैं ॥ ४७ ॥

द्वंद्वानका लक्षण।

द्रव्ययोर्मर्दनाध्मानाद् द्वंद्वानं परिकीर्तितम् ॥ ४८ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-मर्दन (घोटना) या अग्निमें धोंक कर गलानेसे जो दो द्रव्योंका (मेल) होताहै उसको द्वंद्वान (द्वंद्वं (दोनोंको) अनिति (जिवाताहै) कहतेहैं ॥ ४८ ॥

ढालनका लक्षण।

द्रुतद्रव्यस्य निक्षेपो द्रवे तड्ढालनं मतम्॥ ॥ ४९ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-अग्निमें गलाये हुए द्रव्यका किसी चीज पर ढाल कर यत्र बनाना हो उसको ढालन कहतेहैं ॥ ४९ ॥

निर्वापणका लक्षण।

साध्यलोहेऽन्यलोहं चेत्प्रक्षिप्तं वंकनालतः। निर्वापणं तु तत्प्रोक्तं वैद्यैर्निर्वाहणं खलु ॥ ॥ ५० ॥ क्षिपेन्निर्वापणं द्रव्यं निर्वाह्य समभागिकम्। आवाह्यं वापनीये च भागे दृष्टे च दृष्टवत् ॥ ५१ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-साधन करनेयोग्य लोहमें संस्कृत किये हुए लोहको डाल कर अग्निमें वंक नालसे धोंक कर गलावे उसको निर्वापण कहतेहैं ॥ ५० ॥ ५१ ॥

बीजका लक्षण।

निर्वापणविशेषेण तत्तद्वर्णं भवेद्यदा। मृदुलं चित्रसंस्कारं तद्बीजमिति कथ्यते ॥ ५२ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-धातुओंका मुख्य निर्वापण कर्मद्वारा जो जो वर्ण उत्पन्न होना कहाहै वही वर्ण जब लोहादि धातुओंमें उत्पन्न हो और कोमलता या मनोहरता हो जावे तब उसको बीज कहतेहैं ॥ ५२ ॥

उत्तरणका लक्षण।

इदमेव विनिर्दिष्टं वैद्यैरुत्तरणं खलु ॥५३॥ (र. र. स.)

अर्थ-वैद्य लोगोंने इसीको उत्तरण भी कहाहै ॥ ५३ ॥

ताडनका लक्षण।

संसृष्टलोहयोरेकलोहस्य परिनाशनम्। प्रध्माय वंकनालेन तत्ताडनमुदाहृतम् ॥५४ (र. र. स.)

अर्थ-मिले हुए दो धातुओंमेंसे किसी एक धातुको वंकनालसे धोंक कर जो नाश करनाहै उसको ताडन कहतेहैं ॥

भंजनीका लक्षण।

भागाद्द्रव्याधिकक्षेपमनुवर्णसुवर्णके। द्रवैर्वा वर्णिकाह्रासी भञ्जनी वादिभिर्मता ॥ ५५॥ (र. र. स.)

अर्थ-उत्तम वर्ण बनानेयोग्य सुवर्णमें जब अधिक भागसे हेमकृष्टी डाली जाती है तब द्रव पदार्थोंसे उसके वर्णका जो ह्रास (विनाश) किया जाताहै उसको भंजनी कहतेहैं॥

चुल्लकाका लक्षण।

पतङ्गीकल्कतो जाता लोहे तारे च हेमता। दिनानि कतिचित्स्थित्वा यात्यसौ चुल्लका मता ॥ ५६ ॥ (र. र. स.)

अर्थ- (पतंगी) रतन जोतके कल्कसे लोह तथा चांदीमें जो सुवर्णपना मालूम देने लगताहै यह कुछ दिन बीतने पर चला जाता है बस यही चुल्लका कहलातीहै ॥ ५६ ॥

आवाप प्रतीवापका लक्षण।

द्रुते द्रव्यान्तरक्षेपो लोहाद्यैः क्रियते हि यः। स आवापः प्रतीवापस्तदेवाच्छादनं मतम् ॥ ५७ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-अग्नि योगसे गले हुए धातुमें जो अन्य धातु डाला जाता है उसको आवाप प्रतीवाप और आच्छादन कहतेहैं॥

अभिषेकका लक्षण।

द्रुते वह्निस्थिते लोहे विरम्याष्टनिमेषकम्। सलिलस्य परिक्षेपः सोऽभिषेक इति स्मृतः ॥ ५८ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-अग्निमें रक्खा हुआ लोह (धातु) जब गल जाताहै तब उसको दो तथा चार पल तक अग्नि परही रख कर जो जल छिड़का जाताहै उसको अभिषेक कहतेहैं ५८

अन्यच्च।

वह्नितापितलोहानामौषधीभिः सुसाधिते। सलिले तु परिक्षेपः सोभिषेक इति स्मृतः॥ ॥ ५९ ॥ (टो. नं.)

अर्थ-अग्निमें तपाये हुए धातुओंको औषधियोंसे सिद्ध किये हुए जलमें बुझानेको अभिषेक कहतेहैं ॥५९॥

निर्वापका लक्षण।

तप्तस्याप्सु विनिक्षेपो निर्वापः स्तपनं च तत्॥ प्रतीवापादिकं कार्यं द्रुते लोहे सुनिर्मले ॥ ६० ॥ (र. र. स.)

अर्थ-निर्वाप उसको कहते हैं जो तपा तपा कर जलमें बुझाया जावे और उसीको स्तपन भी कहतेहैं। और निर्मल गलाये हुए लोहेमें प्रतीवापादि कर्म करना चाहिये ॥ ६०॥

प्रतीवापादिका अर्थ रसार्णवमें।

आवर्तिते तु लोहादौ प्रतीवापं प्रचक्ष्महे। प्रतीवापो निषेकश्च अभिषेकस्तथैव च ॥ ॥ ६१ ॥ प्रतीवापः पुरा योज्यो निषेकस्तदनंतरम्। क्षालनं तु प्रतीवापो निषेकं मज्जनं विदुः ॥ ६२ ॥ अभिषेकं तदिच्छंति स्तपनं क्रियते तु यः। उष्णेनैव हि कांक्षंति न शीतेन कदाचन ॥ ६३ ॥ (टो. नं.)

अर्थ-गल कर चक्कर खाते हुए धातुओंमें जो बीजका प्रक्षेप (डालना) करतेहैं उसको प्रतीवाप कहतेहैं प्रतीवाप, निषेक और अभिषेक ये तीन क्रियायें हैं। प्रतीवापको प्रथम करना चाहिये उसके पीछे निषेक कर्म तदनंतर अभिषेक करना चाहिये-क्षालनको प्रतीवाप और निषेकको मज्जन (निर्वाप) कहतेहैं; जो वैद्य स्तपन कर्मको करता है वही अभिषेक कर्मको भी करना चाहताहै इन कर्मोंको उष्ण पदार्थसे ही करना चाहतेहैं शीतल (ठंढे) पदार्थसे नहीं ॥

उद्घाटनका लक्षण।

सिद्धद्रव्यस्य सूतेन कालुष्यादिनिवारणम्। प्रकाशनं च वर्णस्य तदुद्घाटनमीरितम् ॥ ॥ ६४ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-सिद्ध किये द्रव्यकी मलिनताको पारदसे दूर करना और उत्तम,वर्णका प्रकाश करनाहो उसीको उद्घाटन कहतेहैं॥

शुद्धावर्तका लक्षण।

यदा हुताशो दीप्तार्चिः शुक्लोत्थानसमन्वितः। शुद्धावर्तस्तदा ज्ञेयः स कालः सत्त्वनिर्गमे ॥ ६५ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-जब अग्नि तेजशिखावाला सफेदलुक्के जिसमें निकलती हों तब शुद्धावर्त (असली ताउ) जानना और वही काल सत्त्वके निकलनेका है; अर्थात् जब अग्निमेंसे सफेद झलझलाती हुई लुकें निकलें तब समझ लेना चाहिये कि सत्त्व निकल गया ॥ ६५ ॥

बीजावर्तका लक्षण।

द्राव्यद्रव्यनिभा ज्वाला दृश्यते धमने यदा। द्रावस्योन्मुखता सेयं बीजावर्तः स उच्यते ॥ ६६ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-अग्निके धौंकनेके समय जिस द्रव्यको गलाना हो उस द्रव्यके समान ज्वाला निकलने लगे तब समझ लेना कि यह ज्वाला गलानेवाली हुई है बस इसीको बीजावर्त कहतेहैं॥

स्वांगशीतलका लक्षण।

वह्निस्थमेव शीतं यत्तदुक्तं स्वांगशीतलम्॥ ॥ ६७ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-अग्निके भीतर रक्खा हुआ अपने आप शीतल हो जाय तब उसको स्वांगशीतल कहतेहैं ॥ ६७ ॥

बहिःशीतलका लक्षण।

अग्नेराकृष्य शीतं यत्तद्बहिःशीतमीरितम्॥ ॥ ६८ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-किसी पदार्थको अग्निमें संतप्त कर फिर बाहर निकाल कर ठंढा करनेको बहिःशीतल कहतेहैं ॥ ६८ ॥

स्वेदनका लक्षण।

क्षाराम्लैरौषधैः सार्धं भांडं रुद्ध्वातियत्नतः। भूमौ निखन्यते यत्नात्स्वेदनं संप्रकीर्तितम् ॥ ६९ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-क्षार तथा अम्ल वर्गोक्त औषधियोंके साथ पारदको एक मजबूत बासनमें यत्नसे रखकर जो पृथ्वीमें गाड देना है उसको स्वेदन कहतेहैं ॥ ६९ ॥

संन्यासका लक्षण।

रसस्यौषधयुक्तस्य भांडरुद्धस्य यत्नतः। मंदाग्नियुतचुल्ल्यंतः क्षेपः संन्यास उच्यते॥ ॥ ७० ॥ (र. र. स.)

अर्थ-औषधियोंसे मिले हुए और यत्नपूर्वक दृढ बासनमें भरे हुए पारेका उस चूल्हे पर रखना जिसमें मंदाग्नि दी जाती हो उसको संन्यास कहतेहैं ॥७०॥

स्वेदसंन्यासका फल।

द्रावेतौ स्वेदसंन्यासौ रसराजस्य निश्चि-

तम्। गुणप्रभावजनकौ शीघ्रव्याप्तिकरौ तथा॥ ७१॥ (र. र. स.)

अर्थ-पारदके स्वेदन और संन्यास ये दोनों कर्म निश्चयसे पारदके गुण और प्रभावको पैदा करनेवाले और शीघ्र व्याप्त, (अन्यवस्तुमें फैलना) करनेवाले होतेहैं ॥७१॥

कालिनीका लक्षण और गुण।

कुंचिताग्रास्तु ये केशा या श्यामा पद्मलोचना। विस्तीर्णं जघनं यस्याः संकीर्णं हृदयं भवेत्॥ ७२॥ कृष्णपक्षे भवेद्यस्या युवत्याः पुष्पदर्शनम्। कालिनी सा समाख्याता उत्तमा च रसायने ॥७३॥ आलिंगने स्पर्शने च मैथुनालापयोरपि। सर्वरोगविनिर्मुक्तो वलीपलितवर्जितः॥ ७४॥ (रसार्णवात, टो. नं.)

अर्थ-जिस श्यामा स्त्रीके अगाडीके केश सुकडे हुए हों कमल सदृश नेत्र हों जिसका जघन (जांघ) लंबा चौडा हो और जिसका हृदय सुकडा हो और जिसको कृष्णपक्षमें पुष्पदर्शन (मासिकधर्म) हो उसको कालिनी कहतेहैं वह रसायन कर्ममें उत्तमहै उसके आलिंगन (चिपटाने) और स्पर्शन (छूने) में तथा मैथुन और आलाप (वातचीत) करनेमें जो आसक्त हो वह समस्त रोगोंसे छूट कर वलीपलितसे रहित होताहै ॥ ७२-७४॥

तस्कियापुट लक्षण (उर्दू)

तस्किया-जिसको पुट आफताबी (भावना) कहतेहैं यह है कि दवाको इसकदर शीरा या अर्कसे भिगोवे कि अजजाइ (पदार्थ) अच्छी तरह तर होजावे और उसको धूपमें सहक करते २ सुखावे फिर अर्क डालकर सहक करना शुरू करे यहां तक कि दो प्रहर दिनतक अर्क डाल कर खरल करता रहै और दो प्रहरके बाद धूपमें शाम तक रहने देवे कि जिसमें तपिशआफ्तावसे रतबत दवाईकी बिलकुल सूख जावे (अकलीमियां २४)

छलवेधकी क्रिया-वा-लक्षण (उर्दू) मुलगमा को छलवंध करना कहते हैं उसका तरीका यह है कि किसी जश्तमस्लत जैसे सुर्व या जस्त वगैरहको पिघलादे और जब जमनेके करीब हो तब पारा उसमें डालदे ख्वाह पारेको पानीके अंदर छोटे मुंहके बंद बर्तनमें रक्खे और जशद जिसका मुलगमा पारेसे करना मंजूरहै गुज करके पारेमें छोडदे और बर्तनका मुँह उसीवक्त बंद करदे इससे जश्व मजकूरका बुरादा (चूरा) काविल सहकके हो जायगा इसे तकलीसहुक्मा भी कहते हैं दवा इससे कुश्ता नहीं होती पीसनेके लायक हो जातीहै और यही गरज छलवंधसे है। (अकलीमियां ८२)॥

अयारके मुतल्लिक (वान (वा) वर्णके अर्थ) वा एतबार खरे या खोटे होनेके हुकमाइ हिन्दनें अवार-सोनेके बारह हिस्से फर्ज कियेहैं बारहे अयारका सोना कुन्दन या-बड और कामिलुल अयार कहाताहै इससे कम दर्जेका खराब रंगका और निकम्मा समझा जाताहै (अकलीमियां २५)

संधानका लक्षण।

द्रवेषु चिरकालस्थं द्रव्यं यत्सन्धितं भवेत्। आसवारिष्टभेदैस्तु प्रोच्यते भेषजोचितम् ॥ ७५॥ (आयुर्वेदवि.)

अर्थ-पतले पदार्थोंमें चिरकाल तक ठहरने योग्य जो पदार्थ मिला हुआ होताहै औषधिके योग्य उस पदार्थको आसव, अरिष्ट कहतेहैं ॥ ७५॥

तुषाम्बु लक्षण।

तुषाम्बु संधितं ज्ञेयमामैर्विदलितैर्यवैः॥ ॥ ७६॥ (आ. वे. वि.)

अर्थ-कच्चे और दले हुए यवोंका जो सिरका बनता है उसको तुषाम्बु कहतेहैं ॥ ७६॥

काञ्जिकका लक्षण।

संधितं धान्यमण्डादि काञ्जिकं कथ्यते जनैः॥ ७७॥ (आ. वे. वि.)

अर्थ-सडाये हुए धान्य (अन्न) और मंड (मांड) आदिको मनुष्य कांजी कहतेहैं ॥ ७७॥

आरनालका लक्षण।

आरनालंतु गोधूमैरामैः स्यान्निस्तुषीकृतैः॥ ७८॥ (आ. वे. वि.)

अर्थ-तुषरहित किये हुए कच्चे गेहुओंसे जो सिरका बनाया गया है उसीको आरनाल, कहतेहैं ॥ ७८॥

शुक्तका लक्षण।

कंदमूलफलादीनि सस्नेहलवणानि च। यत्र द्रवेऽभिषूयन्ते तच्छुक्तमभिधीयते ७९॥ (आ. वे. वि.)

[अभिषूयन्ते द्रवेणाप्लाव्य सन्धीयन्ते]

अर्थ-जिस पदार्थमें कंद, मूल, फल, तैल, और नोंन इनको पानीमें डालकर सडाये जातेहैं उसको शुक्त कहतेहैं७९

भवेत्पठितवारोयमध्यायो रसवादिनाम्। रसकर्मणि कुर्वाणो न स मुह्यति कुत्रचित् ॥ ८०॥ (र. र. स.)

इति श्रीअग्रवाल वैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

अर्थ-जो रसायनबनानेवाला वैद्य इस परिभाषा अध्यायको प्रतिदिन पढताहै वह रसकर्मको करताहुआ कभी मोहको नहीं प्राप्त होता ॥ ८०॥

इतिश्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनु-बाबू निरंजनप्रसाद संकलितायां-रसराजसंहितायां परिभाषावर्णनं नाम चतुर्थोऽध्यायः॥ ४॥

पंचमोऽध्याय ५.

अथ मागधमानपरिभाषा ।

न मानेन विना युक्तिर्द्रव्याणां जायते क्वचित् । अतः प्रयोगकार्यार्थं मानमत्रोच्यते मया ॥ १ ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-मान अर्थात् तोलके बिना कहीं भी द्रव्योंकी युक्ति ठीक नहीं होतीहै इसवास्ते प्रयोगकार्यके अर्थ भावमिश्र मानका वर्णन करैहैं ॥ १ ॥

मागध परिभाषाकी श्रेष्ठता ।

चरकस्य मतं वैद्यैराद्यैर्यस्मान्मतं ततः । विहाय सर्वमानानि मागधं मानमुच्यते ॥ ॥ २ ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-अर्थात् विना तुली औषधि लेनी अयोग्य है इसवास्ते तोल कहतेहैं और जिस कारणसे पहले वैद्योंने चरकजीका मत मानाहै इसीवास्ते सब प्रकारके मानोंको त्यागि मागध मानका वर्णन करतेहैं ॥ २ ॥

परिमाणका क्रम ।

त्रसरेणुर्बुधैः प्रोक्तस्त्रिंशता परमाणुभिः । त्रसरेणुस्तुपर्य्यायनाम्ना वंशी निगद्यते॥३॥ जालान्तरगतैः सूर्य्यकरैर्वंशी विलोक्यते। षड्वंशीभिर्मरीचिः स्यात्ताभिः षड्भिश्च राजिका ॥ ४ ॥ तिसृभी राजिकाभिश्च सर्षपः प्रोच्यते बुधैः । यवोष्टसर्षपैः प्रोक्तो गुंजा स्यातच्चतुष्टयम् ॥ ५ ॥ षड्भिस्तु रत्तिकाभिः स्यान्माषको हेमधान्यकौ । माषैश्चतुर्भिः शाणः स्याद्धरणः स निगद्यते ॥ ६ ॥ टङ्कः स एव कथितस्तद्द्वयं कोल उच्यते । क्षुद्रको वटकश्चैव द्रंक्षणः स निगद्यते ॥ ७ ॥ कोलद्वयं तु कर्षः स्यात्स प्रोक्तः पाणिमानिका । अक्षः पिचुः पाणितलं किंचित्पाणिश्च तिन्दुकम् ॥ ८ ॥ बिडालपदकं चैव तथा षोडशिका मता । करमध्यो हंसपदं सुवर्णं कवलग्रहः ॥ ९ ॥ उदुम्बरश्च पर्य्यायैः कर्षमेव निगद्यते । स्यात्कर्षाभ्यामर्द्धपलं शुक्तिरष्टमिका तथा॥ ॥ १० ॥ शुक्तिभ्यां च पलं ज्ञेयं मुष्टिराम्रं चतुर्थिका । प्रकुञ्चः षोडशी बिल्वं पलमेवात्र कीर्त्यते ॥ ११ ॥ पलाभ्यां प्रसृतिर्ज्ञेया प्रसतं च निगद्यते । प्रसृतिभ्यामञ्जलिः स्यात्कुडवोर्द्धशरावकः ॥ १२ ॥ अष्टमानं च स ज्ञेयः कुडवाभ्यां च मानिका ।शरावोऽष्टपलं तद्वज्ज्ञेयमत्र विचक्षणैः ॥ १३ ॥ शरावाभ्यां भवेत्प्रस्थः चतुष्प्रस्थस्तथाढकः। भाजनं कांस्यपात्रं च चतुष्षष्टिपलश्च सः ॥ ॥ १४ ॥ चतुर्भिराढकैर्द्रोणः कलशो नल्वणोऽर्मणः।उन्मानं च घटोराशिद्रोणपर्य्याय संज्ञितः ॥ १५ ॥ द्रोणाभ्यां सूर्प्पकुम्भौ च चतुष्षष्टिशरावकः । सूर्प्पाभ्यां च भवेद्द्रोणी वाहो गोणी च सा स्मृता ॥ १६ ॥ द्रोणीचतुष्टयं खारी कथिता सूक्ष्मबुद्धिभिः। चतुःसहस्रपलिका षण्णवत्यधिका च सा॥ ॥ १७ ॥ पलानां द्विसहस्रं च भार एकः प्रकीर्तितः ! तुला पलशतं ज्ञेयं सर्वत्रैवैष निश्चयः ॥ १८ ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-जो छिद्रमें सूर्य्यकी आभासे रजकण उडते दीख पडतेहैं उसके तीसवें भागको परमाणु कहतेहैं सो तीस परमाणुका एक त्रसरेणु होताहै इसीका पर्य्याय वंशी कहाताहै, छः वंशीकी एक मरीची होतीहै छः मरीचीकी एक राई होतीहै तीन राईकी एक सरसों होतीहै आठ सरसोंका एक यव होताहै चार यवोंकी एक रत्ती होतीहै छः रत्तीका एक माशा होताहै सोई हेम ओर धान्यक कहाताहै चार माशेका एक शाण होताहै वही धरण और टंक कहाताहै दो टंकका एक कोल होताहै वही क्षुद्रक वट द्रंक्षण कहाताहै दो कोलका एक कर्ष होताहै उसीको पाणिमानिका अक्ष, पिचु, पाणितल किंचित्पाणितिन्दुक, बिडालपदक, षोडशी, करमध्य, सुवर्ण, कवलग्रह, उदुम्बर, ऐसे कहकर बोलतेहैं अर्थात् पाणिमानिका आदि ये सब कर्षके पर्य्याय कहेहैं दो कर्षोंका अर्द्धपल होताहै और इसीको शुक्ति अष्टमिका कहते हैं दो शुक्तिका एक पल होताहै और इसीको मुष्टि, आम्र, चतुर्थिका, प्रकुञ्च, षोडशी, बिल्व, ऐसे कहते हैं ये सब पलके पर्याय कहाते हैं और दो पलकी एक प्रसृति होतीहै और इसीका पर्य्याय प्रसत कहाताहै और दो प्रसृतीकी एक अंजली होती है इसीको कुडव अर्द्धशराव अष्टमान कहते हैं और दो कुडवको एक मानिका होतीहै और शराव अष्टपल ये मानिकाके पर्य्याय हैं दो शरावका प्रस्थ होताहै और चार प्रस्थका आढक होताहै इसी आढकको भाजन कांस्यपात्र चतुःषष्टिपल इन नामोंसे भी बोलते हैं- और चार आढकोंका एक द्रोण कहाताहै इसी द्रोणको कलश, नल्वण, अर्मण, उन्मान, घट इन नामोंसे बोलतेहैं और दो द्रोणोंका सूर्प होताहै इसीको कुंभ चौसठी शराव इन नामोंसे बोलतेहैं और दो द्रोणोंका सूर्प होताहै इसीको कुंभ चौसठी शराव इन नामोंसे बोलते हैं-,और दो सूर्पकी द्रोणी होतीहै इसीको वाह व गोणी कहते हैं और चार द्रोणीकी एक खारी होतीहै अथात् चार हजार छानवे पलकी खारी संज्ञाहै और दो हजार पलको भार कहते हैं और सौपल अर्थात् चारसौ तोलेको तुला कहतेहैं ॥ ३—१८ ॥

माषटङ्काक्षबिल्वानि कुडवप्रस्थमाढकम् । राशिर्गोणीखारिकेति यथोत्तरचतुर्गुणम् ॥

॥ १९ ॥ मागधपरिभाषायां षड्रत्तिको माषश्चतुर्विंशतिरत्तिकः टङ्कः षण्णवतिरत्तिकः कर्षः अयं चरकसम्मतः सुश्रुतमते तु पंचरत्तिको माषो विंशतिरत्तिकः टङ्कः अशीतिरत्तिकः कर्षः अयमेव कलिङ्गपरिभाषायामपि यतः तत्राष्टरत्तिको माषो द्वात्रिंशद्रत्तिकः टङ्कः सार्द्धटङ्कद्वयमितः कर्षः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–माशेसे चौगुना टंक होताहै टंकसे चौगुना अक्ष होताहै अक्षसे चौगुना बिल्व होताहै बिल्वसे चौगुना कुडव होताहै कुडवसे चौगुना प्रस्थ प्रस्थसे चौगुना आढक-आढकसे चौगुना द्रोण–द्रोणसे चौगुनी गोणी होतीहै–गोणीसे चौगुनी खारी होती है ऐसे एकसे एक चौगुना होताहै और मागध परिभाषामें छः रत्तीका माशा होताहै और चौवीस रत्तीका टंक होताहै और छानवे रत्तीका कर्ष होताहै यह चरक मुनिका मतहै सुश्रुतजीके मतमें पांच रत्तीका माशा होताहै और वीस रत्तीका टंक कहाताहै अस्सी रत्तीका कर्ष कहाताहै कलिंग परिभाषामें आठ रत्तीका माशा होताहै और बत्तीस रत्तीका टंक होताहै और अढाई टङ्कका कर्ष होताहै ॥

गुंजादिमानमारभ्य यावत्स्यात्कुडवस्थितिः । द्रवार्द्रशुष्कद्रव्याणां तावन्मानं समं मतम् ॥ २० ॥ प्रस्थादिमानमारभ्य द्विगुणं तद्द्रवार्द्रयोः ॥ मानं तथा तुलायास्तु द्विगुणं न क्वचित्स्मृतम् ॥ २१ ॥ मृद्वृक्षवेणुलोहादेर्भांडं यच्चतुरंगुलम् । विस्तीर्णं च तथोच्चञ्च तन्मानं कुडवं वदेत्॥ ॥ २२ ॥ (भा. प्र.)

अर्थ–रत्तीसे लगाय सोलह तोले तक पानी आदिसे पतले किये हुए पदार्थ आली औषधि सूखी औषधि इन्होंके समान अर्थात् बराबर तोल लेना व सोलह तोलेसे लगायके चार सौ तोलों तक आली औषधि व पानी आदिसे पतले पदार्थ ये सूखी औषधिके–निस्वत दुगुने लेने उचित हैं चारसौ तोलोंसे ऊपर सूखी औषधि आली औषधि पतले पदार्थ इन्होंके समान तोल होतीहै अर्थात् ये सब समान लेने उचित हैं और चारि अंगुल लंबा चौडा ऊंचा समान वासन माटी वांस लोहादि कीसीका हो उसकी कुडव संज्ञाहै ॥ इति मागधमान ॥ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥

कलिङ्गमानम् ।

यतो मंदाग्नयो ह्रस्वा हीनसत्त्वा नराः कलौ । अतस्तु मात्रा तद्योग्या प्रोच्यते सुज्ञसम्मता ॥ २३ ॥ यवो द्वादशभिर्गौरसर्षपैः प्रोच्यते बुधैः । यवद्वयेन गुंजा स्यात त्रिगुञ्जो वल्ल उच्यते ॥ २४ ॥ माषो गुंजाभिरष्टाभिः सप्तभिर्वा भवेत्

क्वचित् । चतुर्भिर्माषकै शाणः स निष्कष्टंक एव च ॥ २५ ॥ गद्याणो माषकैः षड्भिः कर्षः स्याद्दशमाषिकः । चतुष्कर्षैः पलं प्रोक्तं दशशाणमितं बुधैः चतुष्पलैश्च कुडवःप्रस्थाद्याः पूर्ववन्मताः॥२६॥(भा०प्र०)

अर्थ–कलियुगमें मंद अग्निवाले हलके शरीरवाले बलहीन ऐसे मनुष्य होतेहैं इसवास्ते सज्जन वैद्योंका मतहै कि मात्रा रोगीको यथायोग्य देना-बारह गौर सरसोंका एक यव होताहै दो यवोंकी एक रत्ती होतीहै तीन रत्तियोंका वल्ल होताहै,आठ गुंजा तथा सात गुंजाका माशा होताहै चार माशेका शाण होताहै उसीको टंक व निष्क कहतेहैं,छः माशेका गद्याण होता है दश माशेका कर्ष होताहै चार कर्षका पल होताहै चारि पलोंका कुडव होताहै,प्रस्थ आदि सब तोल मागध मानके समान जानलेना ॥ २३–२६ ॥

औषधिकी मात्राका निर्णय ।

स्थितिर्नास्त्येव मात्रायाः कालमग्निं वयो बलम् ॥ २७ ॥ प्रकृतिं दोषदेशौ च दृष्ट्वा मात्रां प्रकल्पयेत् । नाल्पं हन्त्यौषधं व्याधिं यथाम्भोऽल्पं महानलम् । अतिमात्रं च दोषाय शस्योपस्थे बहूदकम् ॥ २८ ॥ इति रसराजसंहितायां मानपरिभाषा वर्णनं नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अर्थ–मात्राका कुछ प्रमाण स्थित नहीं किया समय, अवस्था, अग्नि, बल, प्रकृति, रोग, देश इन्होंको देखि विचारि वैद्य मात्राका प्रमाण करे. जैसे अल्प जल महा बढी हुई अग्निको बुझा नहीं सक्ता तैसे अल्प औषधि भी बढी हुई व्याधिको नाश नहीं कर सक्तीहै और जैसे बहुत ज्यादा पानी खेतीके अन्नको बिगारि देताहै तैसे अधिक औषधि भी दी हुई रोगमें दोषोंके उपजे रोगोंको बिगाड देतीहै इस वास्ते योग्य मात्रा औषधिकी देनी चाहिये ॥

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपंडितमनसुखदासात्मजव्यासज्ये-ष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया भाषाटीकायां मानपरि-भाषावर्णनं नाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अथ षष्ठोयन्त्राध्यायः ६.



समालोक्य समासेन रसशास्त्राण्यनेकशः। निरंजनप्रसादेन यंत्राध्यायो निरूप्यते ॥ १॥

अर्थ–मैं निरंजन प्रसाद संक्षेपसे अनेक शास्त्रोंको देखकर इस यंत्राध्यायको निरूपण करताहूं ॥ १ ॥

यंत्रनिरुक्ति ।

स्वेदादिकर्म निर्मातुं वार्तिकेन्द्रैः प्रयत्नतः । यंत्र्यते पारदो यस्मात्तस्माद्यंत्रमिति स्मृतम् ॥ २ ॥ (र. रा. सुं.,र. स.

अर्थ--स्वेदन आदि कर्म करनेके लिये जिससे यत्न पूर्वक पारद संकुचित किया जाय वार्तिककारोंने उसको यंत्र कहाहै॥

खल्वयंत्र दो प्रकारका कहाहै ।

खल्वयंत्रं द्विधा प्रोक्तं रसादिसुखमर्दने । निरुद्वारौ सुमसृणौ कार्यौ पुत्रिकया युतौ ॥ ३ ॥ (र. र. स.,र. रा. प.)

अर्थ--रसादिकोंके सुखपूर्वक मर्दन करनेके लिये दो प्रकारका खल्व (खरल) यंत्र कहाहै और वह यंत्र निरुद्वार (जिसमेंसे वस्तु बाहर न जाय) और चिकना तथा पुत्रिका (मूशला) से युक्त होना चाहिये ॥ ३ ॥

खल्व किसका होना चाहिये ।

खल्वयंत्रं त्रिधा प्रोक्तं मर्दनादिषु कर्मसु । पाषाणं दारुसंभूतं तृतीयं लोहसंभवम् ॥ ॥ ४ ॥ (टो. नं.)

अर्थ--मर्दन आदि तथा अन्य कार्योंमें खल्वयंत्र तीन प्रकारका कहा जाता है, पत्थर तथा लकडीका और तीसरा लोहेका बना हुआ होता है ॥ ४ ॥

अन्यच्च ।

खल्वं लोहमयं शस्तं पाषाणोष्णमथापि वा ॥ ५ ॥ (कामरत्न.) र. सा. प.)

अर्थ--खल्वयंत्र लोहेका अच्छा होताहै अथवा पत्थरका भी अच्छा होताहै ॥ ५ ॥

कैसे खल्वमें पारदको घोटना चाहिये ।

मृन्मये लोहपाषाणे अयस्कान्तमयेऽथवा६॥ पाषाणे स्फाटिके वाथ मुक्ताशुक्तिमयेऽथवा ॥ ७ ॥ कृते कान्तायसे खल्वे भवेत्कोटिगुणो रसः । स्फाटिके काचजे खल्वे सूतस्त्वेकगुणः स्मृतः ॥ ८ ॥ (ध. ध. सं.)

अर्थ--मिट्टीके खरलमें लोहे तथा पाषाण (पत्थर) के खरलमें,कान्ति सार लोहेके खरलमें अथवा बिल्लौरी पत्थरके खरलमें या मोतीकी सीपके खरलमें पारदका मर्दन करे यदि कान्ति लोहके खरलमें पारद मर्दन किया जाय तौ कोटिगुना पारद होताहै बिल्लौरी तथा काचके खरलमें पारद एकगुना उत्तम होताहै ॥ ६-८ ॥

खल्व किसका उत्तम होताहै ।

खल्वो लोहमयःश्रेष्ठस्तस्माच्छ्रेष्ठश्च सारजः॥ कान्तलोहभवस्तस्मान्मर्दकश्च यथाविधि ॥ ९ ॥ अभावे लोहखल्वस्य स्निग्धपाषाणजः शुभः ॥ तादृशः स्वच्छमसृणमर्दकेन समन्वितः ॥१०॥ (नि. रं.र.रा. सु. र. सा. प.)

अर्थ--लोहेका खरल अच्छा होताहै और उससे अच्छा कान्तिसार लोहेका खरल है और मूशल भी वैसाही कान्त लोहेका होना चाहिये जहां लोहेका खरल न मिलसके वहां चिकने पत्थरका खरल लेना चाहिये जो कि साथ चिकने वैसेही पत्थरके बने हुये मूसलसे संयुक्त हो इस बात पर विशेष ध्यान देना चाहिये कि जैसा खल्व हो उसी पदार्थका मूशलभी होना चाहिये ॥ ९ ॥ १० ॥

लोहखल्वके लक्षण ।

लोहखल्वे चतुष्पादे पिण्डिका च दशाङ्गुला । मुंडतीक्ष्णादिलोहानां खल्वस्तु मर्दकस्तथा ॥ ११ ॥ (ध. ध. सं.)

अर्थ--चार पाये वाले लोहेके खरलमें दश अंगुलका मूशल होना चाहिये मुण्ड और तीक्ष्ण आदि समस्त लोहोंका खरल तथा मूशल बनाने चाहिये ॥ ११ ॥

खल्वका लक्षण ।

उत्सेधेन दशाङ्गुलः खलु कलातुल्यांगुलायामवान् विस्तारेण दशांगुलो सुनिमितैर्निम्नस्तथैवांगुलैः । पाल्यां द्वयंगुलविस्तरश्च मसृणोऽतीवार्धचन्द्रोपमो घर्षो द्वादशकांगुलश्च तदयं खल्वो मतः सिद्धये ॥१२॥ (ध. ध. सं., र. रा. प.)

अस्मिन्पंचपलः सूतो मर्दनीयो विशुद्धये । तत्तदौचित्ययोगेन खल्वेष्वन्येषु योजयेत् १३ (ध. ध. सं, रस. चू., र. रा. प., टो. नं.)

अर्थ--जिसकी उंचाई १० अंगुल हो लंबाई १६ अंगुल हो चौडाई १० अंगुल और गहराई ६ अंगुल हो,किनारों में २ अंगुल चौडा और चिकना हो,आकार जिसका आधे चन्द्रमा के समानहो,मूशला जिसका । अंगुलका हो ऐसा खरल क्रियाकी सिद्धिके लिये कहाहै ॥ ऐसे खरलमें पांच पल पारदको घोटना चाहिये, वस इस रीतिके अनुसार पारदके प्रमाणसे खरल बनाकर पारदकी शुद्धि करनी चाहिये१२।१३

अन्यच्च ।

खल्वयोग्या शिला नीला श्यामा स्निग्धा दृढा गुरुः । षोडशांगुलकोत्सेधा नवांगुलकविस्तरा ॥ १४ ॥ चतुर्विंशांगुला दीर्घा घर्षणी द्वादशांगुला । खल्वप्रमाणं तज्ज्ञेयं श्रेष्ठं स्याद्रसकर्मणि ॥ १५ ॥ (र. र. स.)

अर्थ--जो पत्थर नीला या काला चिकना मजबूत और भारी हो वह पत्थर खरल बनाने योग्य होताहै सोलह अंगुल ऊंचा नौ अंगुल चौडा चौबीस अंगुल लंबा और बारह अंगुल लंबा जिसमें मूशलहो उसको खल्व कहतेहैं अथवा-बीस अंगुल लंबा दश अंगुल ऊंचा यह खल्व प्रमाण रस कर्ममें श्रेष्ठ जानना ॥ १४ ॥ १५ ॥

१ वस्थितैरित्यपि । २ लोत्र कथितः इत्यपि । ३ श्रेय इत्यपि । ४ मर्दने इत्यपि ।

वर्तुलखल्वका लक्षण।

द्वादशांगुलविस्तारः खल्वोतिमसृणो पलः। चतुरंगुलनिम्नश्च मध्येऽतिमसृणीकृतः १६॥ मर्दकश्चिपिटोधस्तात्सुग्राह्यश्च शिखोपरि। अयं हि वर्तुलः खल्वो मर्दनेऽतिसुखप्रदः॥ १७॥ (र. र. स., र. रा. प.)

अर्थ–जिस खरलका विस्तार १२ अंगुल हो अत्यन्त उत्तम और चिकना हो और चार अंगुल गहरा हो और बीचमें जिला किया हुआहो ओर मूशला जिसका भलीभांति पकडनेमें आवे तथा नीचेसे चपटा हो ऐसा गोल खरल घोटनेमें सुखदाई होताहै॥ १६॥ १७॥

अन्यच्च।

द्वादशांगुलविस्तारः खल्वो भवति वर्तुलः। चतुरंगुलनिम्नश्च मर्दकोऽष्टांगुलायतः॥१८॥ (टो. नं.)

अर्थ–बारह अंगुल चौडा चार अंगुल गहरा जिसका मूशला आठ अंगुल लंबा हो उसको गोल खरल कहतेहैं १८

तप्तखल्वका लक्षण।

लोहो नवांगुलः खल्वो निम्नत्वे च षडंगुलः। मर्दकोऽष्टांगुलश्चैव तप्तखल्वाभिधोप्ययम्॥ कृत्वा खल्वाकृतिं चुल्लीमंगारैः परिपूरिताम्॥ १९॥ तस्यां निवेश्य तं खल्वं पार्श्वे भस्त्रिकया धमेत्॥ तदन्तर्मर्दिता पिष्टिः क्षारैरम्लैश्च संयुता। प्रद्रवत्यतिवेगेन स्वेदिता नात्र संशयः॥ २०॥ (र.र. स., ध. ध. स.)

अर्थ–जो नौ अंगुल चौडा और छः अंगुल गहरा लोहेका खरल हो और मूशला जिसका आठ अंगुल लंबाहो उसको तप्तखल्व कहतेहैं॥ जिस प्रकार खल्व चूल्हे पर स्थितहोजावे वैसाही चूल्हा बनाकर अंगारोंसे भरदे उसपर खरलको स्थापित कर पासमें धोकनीसे धोकता जावे तौ उसके भीतर क्षार तथा अम्लसे मर्दन की हुई तथा स्वेदन कीहुई अत्यन्त शीघ्रही पिघल जातीहै इसमें संदेह नहीं है॥ १९॥ २०॥

तप्तखल्व किसका होना चाहिये।

लोहेन च भवेद्यस्तु तप्तखल्वः स उच्यते। कृतः कांतायसैासोयं भवेत्कोटिगुणो रसः॥ ॥ २१॥ (र. र. स.,र. रा. प., २ टो. नं.)

अर्थ–जो लोहेका खरल है उसको तप्तखल्व कहतेहैं और वही खरल यदि कांतलोहका बनाया जाय तो कोटिगुणा उत्तम है॥ २१॥

१ वरः इत्यपि। २ होऽष्टांगुलायतः इ०। ३ लोत्वेचा इ०। ४ खल्वार्श्वमायसः इत्यपि। ५ यसे खल्वे इत्यपि।

तप्तखल्वकी विधि।

अजाशकृत्तुषाग्निश्च भूगर्ते त्रितयं क्षिपेत्। तस्योपरि स्थितं खल्वं तप्तखल्वमितिस्मृतम्॥ २२॥ (र. सा.सं., ध. ध. सं., र. रत्नाक., यो. र. टो., आ. वे. वि., र. रा. प., र. सा. प., र., मं., कामरत्न.)

अर्थ–बकरीकी मेंगनी बाजरेके ऊपरका तुप और अग्नि इन तीनोंको धरतीके भीतर गढ़ा खोदकर रक्खे उस पर रक्खे हुए खरलको तप्तखल्व कहतेहैं॥ २२॥

मर्दकका लक्षण।

सुदृढं मर्दकं कार्यं चतुरंगुलकोटिकम्। सर्वलोहमयं शैलं चायस्कान्तमयं तथा॥ ॥ २३॥ (ध. सं.)

अर्थ–मूशला मजबूत और चार अंगुलके घेरका होना चाहिये, जो कि सप्त धातुका अथवा पहाड़ी पत्थरका या कान्तलोहका हो॥ २३॥

दोलायंत्र।

अथ द्रवेण भांडस्य पूरितार्धस्य तस्य च। मुखे तिर्य्यक्कृते दंडे रसं मूत्रेण लंबितम्॥ तं स्वेदयेज्जलगतं दोलायंत्रमिति स्मृतम्॥ २४॥ (टो. नं., ध. ध. सं.,)

अर्थ–प्रथम पतले पदार्थोंसे वासनको आधा भर कर उसके मुख पर तिरछी लकडी रखदे उसमें डोरा बांध पारदको ऐसा लटकावे कि वह जलमें डूब जाय फिर अग्नि देकर स्वेदन करे उसको दोलायंत्र कहतेहैं॥ २४॥

अन्यच्च।

कै कराह कै हांडी लेई। भरि किनारि पुनि पानी देई। तिरछी एक सांट धरवाय। तासों वस्त्र बांधि उरमाइ॥ पातालसों बांधे सोय। अधभर रहे ऐसी विधि होय। दोलायंत्र यह कह्यो बखानि। घटत नीरु दीजियो आनि॥

अन्यच्च।

द्रवद्रव्येण भांडस्य पूरितार्धोदरस्य च। मुखस्योभयतो द्वारद्वयं कृत्वा तयोः क्षिपेत्॥ २५॥ कांष्ठादित्रिगुणं दंडं तन्मध्ये रसपोटलीम्। बद्धा तु स्वेदयेदेतद्दोलायंत्रमिति स्मृतम्॥२६॥(र.रा. प.,र. र.स.)

१–क्षालयित्वा भुवि। खानयित्वा भुवि। खनित्वा भुवि भावयेत्। भूगर्भे इ०। २–पूर्वोक्त मर्दयेद्रसम्। तप्तखल्वमिदं स्मृतम्। तप्तखल्वं तदुच्यते। तप्त खल्वं जगुर्बुधाः खल्वं विनिर्दिशेत् इ०। ३–प्रयत्नतः इत्यपि। ४–तयोस्तुनिक्षिपेत्।

अर्थ-पतले पदार्थोंसे आधेभरे हुए बासनके मुखके दोनों तरफ़ छिद्र करके उनमें एक लकडी लगादेवे और उसमें रसकी पोटलीको बांध कर स्वेदन करे बस इसीको दोलायंत्र कहतेहैं ॥ २५॥ २६ ॥

अन्यच्च ।

निबद्धं सौषधं सूतं भूर्जे तत्रिगुणेम्बरे । रसपोटलिकां काष्ठे दृढं बद्ध्वा गुणेन हि॥ ॥२७॥संधानपूर्णकुम्भान्तः खावलंबनसंस्थिताम् । अधस्ताज्ज्वालयेदग्निं तत्तदुक्तक्रमेण हि ॥ दोलायंत्रमिदं प्रोक्तं स्वेदनाख्यं तदेव हि॥२८॥ (यो. त., र. रा. सुं., र. रा. म.)

अर्थ-प्रथम औषधि सहित भोजपत्रमें बंधे हुए पारदको तिल्लर किये हुए कपडेमें बांध देवे-उस पारदकी पोटलीको दृढ डोरेसे लकडीमें बांध कर कांजीसे भरे हुए गढेके भीतर बीचमें लटकी हुई पोटलीके नीचे यथोक्तक्रमसे अग्निको जलावे इसको दोलायंत्र या स्वेदन यंत्र कहतेहैं २७।२८

स्वेदनयंत्र ।

साम्बुस्थालीमुखे बद्धे वस्त्रे स्वेद्यं निधाय च । पिधाय पच्यते यत्र तद्यंत्रं स्वेदनं स्मृतम्॥२९॥(र. रा. प,.र. रा. सुं.,र.रा.महो.)

अर्थ-जिस पात्रमें स्वेदन करनाहो उसमें जलभर मुख पर कपडा बांध देवे और उसपर जिस पदार्थको स्वेदन करनाहो रखकर ऊपरसे शकोरा या हांडीसे मुख बंदकर अग्निसे पचावे उसको स्वेदन यंत्र कहतेहैं ॥ २९ ॥

कंदुकयंत्र वा स्वेदनयंत्र ।

स्थूलस्थाल्यां जलं क्षिप्त्वा वासो बद्धा मुखे दृढम् । तत्र स्वेद्यं विनिक्षिप्य तन्मुखं प्रपिधाय च ॥ ३०॥ अधस्ताज्ज्वालयेदग्निं यंत्रं तत्कंदुयंत्रकम् । स्वेदनीयंत्रमित्यन्ये प्राहुरन्ये मनीषिणः ॥ ३१ ॥ यद्वा स्थाल्यां जलं क्षिप्त्वा तृणं क्षिप्त्वा मुखोपरि । स्वेद्यद्रव्यं परिक्षिप्य पिधानं प्रविधाय च॥३२॥ अधस्ताज्ज्वालयेद्वह्निं यंत्रं तत्कंदुयंत्रकम्॥ ॥ ३३ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-एक मोटी हांडीमें जलभर और मुखपर कपडा बाँध देवे उसपर स्वेदन करनेयोग्य पदार्थको रख ऊपरसे हांडीका मुख बंदकर नीचेसे अग्नि जलावे तो उसको कंदुकयंत्र कहते हैं अथवा हांडीमें जलभर मुखपर घासभर देवे उसपर स्वेदन करने योग्य पदार्थको रख और मुखको बंदकर नीचेसे आंच जलावे उसको कंदुक यंत्र कहते हैं ॥३०-३३ ॥

१-पाक्यं निवेशयेत्-इत्यपि । २ यन्त्रस्वेदिनीयन्त्रमुच्यते-इत्यपि ।

नालजंत्र (उर्दू)

नालजंत्रको भावीजंत्र, चोयाजंत्र, टिकटीजंत्र भी कहतेहैं उसका बयान हो चुकाहै इसमें तीन शलाकोंकी टिकटी होती है उसपर जर्फ जिसको चोया देना मंजूरहो रखना चाहिये आग नरम देकर जोश न आने पावे अगर अहतियातन साप ज्यादा होजावे तो नालका मुंह खोलकर निकालदे ॥

(किताब अक्लीमियां)



विद्याधरयंत्र ।

अधःस्थाल्यां रसं क्षिप्त्वा निदध्यात्तन्मुखोपरि । स्थालीमूर्ध्वमुखीं सम्यङ् निरुध्य मृदमृत्स्नया ॥ ३४ ॥ ऊर्द्धस्थाल्यां जलं क्षिप्त्वा चुल्ल्यामारोप्य यत्नतः । अधस्ताज्ज्वालयेदग्निं यावत्प्रहरपंचकम् ॥ ३५ ॥ स्वांगशीतात्ततो यंत्रादृह्णीयाद्रसमुत्तमम् । विद्याधराभिधं यंत्रमेतत्तज्ज्ञैरुदाहृतम् ३६॥ (र.रा.म.,र.रा.सुं.,र. रा. प., यो. तं.)

अर्थ-नीचेकी हांडीमें पारदको रख उसके मुखपर दूसरी हांडी रखदे जिसका मुख ऊपरको हो अर्थात् सीधा हो और उसपर कपरौटी करके ऊपरकी हांडीमें जलभर तथा चूल्हेपर चढा नीचे पांच प्रहर अग्नि जलावे जब यंत्र अपने आप ठंढा होजाय तब उस उत्तम रसको निकाल लेवे, यंत्रके ज्ञाता मनुष्य इस यंत्रको विद्याधर यंत्र कहतेहैं ॥ ३४-३६ ॥

विद्याधर और पातनयंत्र ।

स्थालिकोपरि विन्यस्य स्थालीं सम्यग्निरोधयेत । स्थालीमूर्द्ध्नि जलं दत्त्वा वह्निं प्रज्वालयेदधः ॥ एतद्विद्याधरं यंत्रं पातनायंत्रमित्यपि ॥३७॥ (रसे.सा.सं.(र.र.स.)

अर्थ-हांडीके ऊपर हांडीको रखकर अच्छी तरह कपरौटी करै और ऊपरकी हांडीमें जलभर नीचेसे आंच लगावे इसको विद्याधर यंत्र और पातना यंत्रभी कहतेहैं ॥३७॥

विद्याधर और कोष्ठी यन्त्र ।

यन्त्रं विद्याधरं ज्ञेयं स्थालीद्वितयसंपुटात् ।

१-ऊर्ध्वस्थालीजलं क्षिप्त्वा-इत्यपि । २ हिंगुलाकृष्टिहेतवे-इत्यपि ।

चुल्लीं चतुर्मुखीं कृत्वा यन्त्रभाण्डं निवेशयेत् ॥ ३८ ॥ तत्रौषधं विनिक्षिप्य निरुन्ध्याद्भाण्डकाननम् । कोष्ठीयन्त्रमिदं नाम्ना तन्त्रज्ञैः परिकीर्तितम् ॥ ३९ ॥ (र. र. स.)

अर्थ–दो हाँडियोंके संपुटको विद्याधर यंत्र कहतेहैं चारों तरफ ज्वाला निकलनेवाले चूल्हेपर यंत्रके बासनको स्थापित करे और उसमें औषधको रखकर बासनके मुखको कपड़ा और मिट्टीसे बंद करदे उसको यंत्रज्ञोंने कोष्ठीयंत्र कहाहै ॥ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

डमरूयन्त्र ।

यंत्रं डमरुसंज्ञं स्यात्तत्स्थाल्योर्मुद्रिते मुखे ॥ ४० ॥ (र. रा. महो.)

अर्थ–दो हाँडियोंके मुखको घिस और मिलाकर ऊपरसे कपरौटी करदे उसको डमरूयंत्र कहतेहैं ॥४०॥

अन्यच्च ।

यत्र स्थाल्युपरि स्थालीं न्युब्जां दत्त्वा निरुध्यते । कृत्वालवालं तत्पृष्ठे केनाप्यत्रजलं क्षिपेत् ॥ ४१ ॥ अधस्ताज्ज्वालयेदग्निमूर्द्धगं रसमुद्धरेत । यन्त्रं डमरुकं त्वेतदूर्द्धपातनकारकम् ॥ ४२ ॥ (र. सा. प.)

अर्थ–जहां कि हांडीपर दूसरी उल्टी हांडी लगाकर दृढ कपरौटी करदे और उसकी पीठपर गोल कूडा बनाकर थोडा २ जल डालता जाय और नीचेसे आंच जलावे तदनंतर ऊपर उडकर लगे हुए पारदको निकाल लेवे इसको उर्ध्वपातन करनेवाला डमरूयंत्र कहतेहैं ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

अन्यच्च ।

यत्र स्थाल्युपरि स्थालिं न्युब्जां दत्त्वा निरुध्यते । यन्त्रं डमरुकाख्यं तद्रसभस्मकृते हितम् ॥ ४३ ॥ (र.र.स., र.रा.प.)

अर्थ–जहां हाँडोके ऊपर उलटी हाँडीको लगाकर मुख बंद किया जाताहै उसको डमरूयंत्र कहतेहैं ॥४३॥

अन्यच्च ।

द्वै हांडी लै मुख घिसि धरै । ता ऊपर द्वै मुद्रा करै । आगि देहु ज्यों ग्रन्थन कही । डौरू जन्त्र जानिये सही ॥ (रससागर.)

वलभीयन्त्र ।

यत्र लोहमये पात्रे पार्श्वयोर्वलयद्वयम् । तादृक् स्वल्पतरं पात्रं वलयप्रोतकोष्ठकम् ॥४४॥ पूर्वपात्रोपरि न्यस्य स्वल्पपात्रे परिक्षिपेत् । रसं सम्मूर्छितं स्थूलपात्रमापूर्य कांजिकैः ॥ ४५ ॥ द्वियामं स्वेदयेदेवं रसोत्थापनहेतवे । एतत्स्याद्वलभीयन्त्रं रसषाड्गुण्यकारणम् । सूक्ष्मकांतमये पात्रे रसः स्याद्गुणवत्तरः ॥ ४६ ॥ (र. र. स.)

अर्थ–लोहेके पात्रमें दोनों ओर एकएक कडा लगवावे और जैसा नीचेका पात्रहो वैसाही दूसरा छोटा पात्र जिसकी कोठीमें साकल लगी हुईहो बनवावे फिर बडे पात्रपर छोटे पात्रको रखकर दृढतासे साकल तथा कडोंमें बांधदे और छोटे पात्रमें मूर्छित रसको रखकर नीचेवाले बृहत्पात्रको कांजीसे भरकर रसके उत्थापनके लिये दो प्रहर निरंतर स्वेदन करै–यह रसके उत्तम गुणका देनेवाला बलभीयंत्र है यह यंत्र कान्तलोहका हो तो श्रेष्ठ है ॥४४—४६ ॥

पातनायंत्र ।

उपर्यापो ह्यधो वह्निर्मध्ये च रसपिष्टिका । क्रमादग्निर्विदध्यात्तत्पातनायंत्रमुच्यते ॥ ॥ ४७ ॥ (कामरत्न.)

अर्थ–नीचेके पात्रमें रसकी पिष्टी भर ऊपर ऐसे पात्रसे मुख बंद करै कि जिसमें पानी भरा हो और क्रमपूर्वक अग्निदे उसको पातनायंत्र कहतेहैं ॥४७॥

ऊर्ध्वपातनयंत्र ।

मृन्मयी स्थालिका कार्या चोच्छ्रिता तु षडंगुला । मुखे सप्तांगुलायामा परितस्त्रिशदंगुला ॥ ४८ ॥ इयन्माना द्वितीया तु कर्तव्या स्थालिका शुभा । क्षारद्वयं रामठं च तथा हि पटु पंचकम् ॥४९ ॥ अम्लवर्गेण संयुक्तं सूतकं चापि मर्दयेत् । लेपयेत्तेन कल्केन तलस्थास्थालिकातलम् ॥ ॥ ५० ॥ ऊर्ध्वस्थाली मुखे चास्या मुखं सम्यक् प्रवेशयेत । भसितं लवणेनैव मुद्रां तत्र प्रकारयेत् ॥ ५१ ॥ चुल्ल्यां स्थालीं निवेश्याथ धाम्याग्निं तत्र ज्वालयेत् । तस्योपरि जलं सिंचेच्चतुर्यामावधि कुरु ॥ ॥ ५२ ॥ स्वांगशीलतां ज्ञात्वा ग्राहयेदूर्ध्वगं रसम् । उर्ध्वपातनयंत्रोऽयं साधकैः परिकीर्तितः ॥ ५३ ॥ (र. प.)

अर्थ–मिट्टीकी हांडी इसप्रकार बनवानी चाहिये कि जो छः अंगुल ऊंची हो मुखकी चौडाई सात अंगुल हो तीस अंगुल जिसका घेरा हो और इसी प्रकार एक सुंदर दूसरी हांडी बनवानी फिर सज्जीखार, जवाखार, हींग तथा पाचों नोंन और पारदको अम्ल वर्गसे मर्दन करै तदनंतर उस कल्कसे नीचेकी हाँडीके तलेमें लेप करदे और ऊपरकी हांडीके मुखमें नीचेकी हाँडोके मुखको प्रवेश करदे फिर दूधमें पिसी राख और नोनसे मुद्रा करै तदनंतर यंत्रको चूल्हेपर रख नीचेसे आंच लगावे और ऊपरकी हांडीपर

पानीको सींचता रहे इसप्रकार चार प्रहर अग्नि लगावे जब अपने आप यंत्र शीतल होजाय तब ऊपर लगे हुए रसको ग्रहण करै बस इसीको पारद सिद्ध करने वालोंने ऊर्द्धपातनयंत्र कहाहै ॥ ४८–५३ ॥

अधःपातनयंत्र ।

अथोर्ध्वभाजने लिप्तस्थापितस्य जले सुधीः। दीप्तैर्वनोपलैः कुर्यादधःपातं प्रयत्नतः ॥ ॥ ५४ ॥ (र. र. स.)

अर्थ–ऊपर रक्खे हुए बासनके तलेमें रसकी पिष्टीक लेपकर और नीचेके पात्रमें जलभर दोनोंके मुखको कपरौटीसे बंदकर दे तदनंतर विद्वान् मनुष्य यत्नपूर्वक जलते हुए अरने कंडोंसे रसको अधःपातन करै ॥५४॥

अन्यच्च ।

पूर्वोक्तां स्थालिकां सम्यग् विपरीतां तु पङ्किले ॥ गर्ते तु स्थापितां भूमौ ज्वालयेन्मूर्ध्नि पावकम् ॥ ५५ ॥ यामत्रितयपर्यन्तमधः पतति पारदः । अधःपातनयंत्रोयं कीर्तितो रसवेदिना ॥ ५६ ॥ (र. प.)

अर्थ–कीचसे भरे हुए गढेमें एक हाँडीको रख और दूसरी हाँडीको(जिसके तलेपर रसकी पिष्टी लगायी गयी हो) उलटाकर नीचेकी हाँडीके मुखसे मुद्रित करै और ऊपरसे तीन प्रहरपर्य्यंत आंच जलावे तौ पारदका अधःपातन (नीचे गिरना) होताहै बस इसीको रसवेत्ताओंने अधःपातनयंत्र कहाहै ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

अन्यच्च ।

ऊर्ध्वभांडतलं लिप्तं रसकल्केन धीमता । अधोभाण्डमुखे तस्य मुखं सम्यक् प्रवेशयेत् ॥ ५७ ॥ कृत्वा डमरुवद्यंत्रं संधिं लिप्त्वा च पूर्ववत् । निधाय पंकिले गर्ते यंत्रं भूमिसमीकृतम् ॥ ५८ ॥ दीप्तैर्वनोपलैः कुर्यादधःपातनकं बुधः ॥५९॥ (र. प.)

अर्थ–पंडित ऊपरवाले बासनके तलको रसकल्कसे लिप्तकर उसके मुखको पानीभरे हुए नीचेके बासनके मुखमें घुसेड़ देवे और डमरूयंत्रके समान बनाकर दोनोंकी संधिको कपड़ा तथा मिट्टीसे लेप करे तदनंतर खाली बासनको कीचड़वाले गढेमें रख ऊपरसे धरतीको बराबर करदे और ऊपरसे तेज़ वनके कंडोंकी आंच देवे इसको अधःपातनयंत्र कहतेहैं ॥५७—५९॥

तिर्यक्पातनयंत्र ।

घटे रसं विनिक्षिप्य सजलं घटमन्यकम् । तिर्यङ्मुखं द्वयोः कृत्वा तन्मुखं रोधयेत्सुधीः ॥६० ॥ रसाधो ज्वालयेदग्निं यावत्सूतो जलं विशेत् । तिर्यक्पातनमित्युक्तं सिद्धैर्नागार्जुनादिभिः ॥ ६१ ॥ (र. रा. सु., र. सा. प.)

अर्थ–एक घड़ेमें रसको भरे तथा दूसरे घड़ेमें जलको भरे और उन दोनोंके मुखको टेढाकर कपरौटीसे बंद करदेवे और जिस, घड़ेमें पारद भरा था उसके नीचे तबतक आंच जलावे कि जबतक पारा जलमें प्रविष्ट न होजाय बस नागार्जुनादि सिद्धोंने इसीको तिर्य्यक्पातनयंत्र कहाहै६०।६१

अन्यच्च ।

क्षिपेद्रसं घटे दीर्घे नताधोनालसंयुते । तन्नालं निक्षिपेदन्यघटकुक्ष्यन्तरे खलु॥६२॥ तत्र रुद्धा मृदा सम्यग्वदने घटयोरधः । अधस्ताद्रसकुंभस्य ज्वालयेत्तीव्रपावकम् ॥ ॥६३॥इतरस्मिन्घटे तोयं प्रक्षिपेत्स्वादु शीतलम् ॥ तिर्य्यक्पातनमेतद्धि वार्त्तिकैरभिधीयते ॥ ६४ ॥ (र. र. स.,र. रा. प.)

अर्थ–जिस घडेकी गर्दन लंबी हो उस गर्दनके नीचे एक लंबी नाल लगी हो ऐसे घड़ेमें पारदको डालकर उस घडेकी नालको दूसरे घड़ेके पेटमें छेदकर लगा देवे तदनन्तर दोनों घड़ोंके मुख तथा अन्य संधियोंको कपरौटीसे बंदकर उस घड़ेके नीचे आंच जलावे कि जिसमें पारद भरा हुआ हो और दूसरे घड़ेमें प्रथमसेही मीठा और ठंढा जल भरा हुआ हो वार्तिककारोंने इस यंत्रको तिर्यक्पातनयंत्र कहाहै६२–६४

अन्यच्च ।

पूर्वोक्तैरौषधैः सार्द्धं रसराजं विमर्दितम् । दत्त्वा तिर्यग्घटे तस्य मुखमन्यघटानने ॥ ॥ ६५ ॥ क्षिप्त्वा तस्य तलच्छिद्रे नालिकां योजयेत्तु ॥ नालिकां जलपात्रस्थां कारयेच्च भिषग्वरः ॥ ६६ ॥ अधस्ताद्रसयंत्रस्य तीव्राग्निं तत्र ज्वालयेत् । यामद्वितयपर्यंतं तिर्यक्पातो भवेद्रसः ॥ ६७ ॥ (र. प.)

अर्थ–पहिले कही हुई औषधियोंसे मर्दन किये हुए पारदको तिरछे घटमें रख उसके मुखको खाली घड़ेके मुखपर रक्खे फिर उस घडेके तलेमें छेदकर एक नाली लगावे तदनंतर उस नालीके दूसरे मुखको जलसे परिपूर्ण घटमें प्रवेश करे और उस रसयंत्र (जिसमें पारा भरा हो) के नीचे दो प्रहर पर्य्यंत आंच जलावे तौ पारदका तिर्य्यक्पातन होताहै॥

अन्यच्च ।

और यंत्र यह सुनिये वीर। सो समुझै जाकी मति धीर । ऐसीही करि डौरू धरै । हांडी फूंखिजो टोंटी करै॥ लोहनारि गजभरिके लेई । लोहनारिमें टोंटी देई ॥ दूजो मुख जो नारिको करै। नीरभरी गागरिमें धरै॥

तुजक पतालहै याको नाम । याते होय सूतको काम ॥ (रससागर.)

पालिकायंत्र ।

चषकं वर्तुलं लौहं विनताग्रोर्ध्वदंडकम् । एतद्धि पालिकायंत्रं बलिजारणहेतवे॥६८॥ (र. र. स., र. रा. प.)

अर्थ–लोहेका गोल प्याला जिसके आगेसे नमा हुआ ऊपरको उठा हुआ डंडा हो उसे पालिकायन्त्र कहते हैं यह गन्धकके जारणमें काम आता है ॥ ६८॥

इष्टका यंत्र ।

मध्ये गर्तसमायुक्तामिष्टकां कारयेद्भिषक् । गर्ते चैव समास्थाय तस्यां सूतादिकं न्यसेत् ॥ ६९ ॥ दत्त्वोपरि शरावं च संधिं मृल्लवणैर्लिपेत् । तदूर्ध्वं सिकतां किंचिद्दद्यादेवं पुटं लघु ॥ ७० ॥ इष्टकायंत्रमेतद्धि जारयेद्गंधकादिकम् ॥ ७१ ॥ (र. रा. सुं.)

अर्थ–वैद्य ऐसी ईट बनावे जिसके बीचमें एक गड्ढा हो उसमें पारदको रख ऊपर शकोरेसे ढक संधिको राख और नोंनसे लीपदे तदनंतर ईटको गड्ढेमें रख ऊपरसे बालूरेत बिछादेवे फिर आरने कंडोंका लघु पुट देना चाहिये यह इष्टिकायंत्र गंधकादिको जारण करताहै ॥ ६९–७१ ॥

अन्यच्च ।

विधाय वर्तुलं गर्तं मल्लमत्र निधाय च । विनिधायेष्टिकां तत्र मध्यगर्तवतीं शुभाम् ७१ ॥ ७२ ॥ गर्तस्य परितः कुर्यात्पालिकामङ्गुलोच्छ्रयाम् । गर्ते सूतं विनिक्षिप्य गर्तास्ये वसनं क्षिपेत् ॥ ७३ ॥ निक्षिपेद्गंधकं तत्र पात्रेणास्यं निरुध्य च । पात्रपालिकयोर्मध्ये मृदा सम्यङ्निरुध्य च ॥ ७४ ॥ वनोपलैः पुटं देयं कपोताख्यं न चाधिकम् । इष्टिकायंत्रमेतत्स्याद्गन्धकं तेन जारयेत् ॥ ७५ ॥ (र. र. स.)

अर्थ–एक गोल गड्ढा खोदकर उसमें मल्ल(मलडा मिट्टीका एक गोलपात्र) को गाड देवे फिर उसमें ऐसी एक ईट रक्खे कि जिसके बीचमें एक गोलगड्ढा हो और उस गड्ढेके चारों तरफ एक एक अंगुलकी ऊंची पाली (मेड) बांधे तदनंतर उस ईटमें किये हुए गड्ढेमें पारदको रख फिर गड्ढेके मुखपर कपडा ढाँककर उसपर गंधकको रख ऊपर किसी पात्रसे गड्ढेका मुख बंदकर राखे और नोंनसे संधिका लेपकर वर्नी कंडोंसे आंच देवे और वह आंच कपोत पुटकी हो उससे अधिक न हो क्योंकि अधिक अग्निके लगनेसे पारदके क्षयकी सम्भावना है । यह इष्टिकायंत्र है इससे गंधक जारण करै ॥ ॥ ७२–७५ ॥

कच्छपयंत्र ।

नदीपयसि शरावोदरकुहरनिविष्टलोहसम्पुटगः । हरजो निरंतरमयं चरति गगनगन्धादिकं च ॥ ७६ ॥ (र. प.)

अर्थ–मिट्टीका एक लंबा चौडा शकोरा बनवावे उसके भीतर लोहेके संपुटको रक्खे तदनंतर उस संपुटमें स्थापित कियाहुआ पारद निरंतर अभ्रक और गंधक वगैरहको भक्षण करताहै अर्थात् अभ्रक और गंधक जारण होताहै ७६

अन्यच्च ।

खर्परं पृथुकं सम्यग् विस्तृतं तस्य मध्यतः । आलवालं ततः कृत्वा तन्मध्ये पारदं क्षिपेत ॥७७॥ ऊर्ध्वाधस्तु विडं दत्त्वा मल्लेनारुध्य यत्नतः । ऊर्ध्वं देयं पुटं तस्य यन्त्रं कच्छपसंज्ञकम् । जारणार्थं रसस्योक्तं गन्धादीनां विशेषतः ॥७८॥(टो.नं..,र.रा.सुं.)

अर्थ–प्रथम चपटा मिट्टीका खपडा लेना चाहिये तदनंतर खपडेके बीचमें विस्तृत थामला बनावे और उस थांमलेमें पारदको रक्खे पारदके ऊपर तथा नीचे विड देकर शकोरासे ढाकदे और संधि लेपकर ऊपरसे आंच जलावे पारदमें गंधक जारणके लिये यह कच्छपयंत्र कहाहै ॥ ७७ ॥ ७८ ॥

अन्यच्च ।

जलपूर्णे दृढं पात्रं सुविशालं समाहरेत् । तदन्तः खर्परं दद्यात्सुविस्तीर्णं नवं दृढम् ॥ ७९ ॥ बिडं दत्त्वा तदुपरि क्षिपेद्बीजभुजं रसम् । उपरिष्टाद्बिडं दत्त्वा ततो लोहकटोरिकाम् ॥ ८० ॥ अयस्कान्तमयीं वापि पित्तलीभूतविग्रहाम्¹ । उपरिष्टादधोवक्त्रां दत्त्वा सम्यग्विलेपयेत्॥८१॥ खटीं पटुं शिवां भक्तं सम्यङ्निष्पिष्य मुद्रयेत् ॥ उपरिष्टाद्वनोत्थानैरङ्गारैः खर्परं भवेत् ॥ ८२ ॥ (टो.नं., मे.रा.)

अर्थ–जलसे भरे हुए लंबे चौड़े एक दृढ पात्रको लेवे उसके भीतर नवीन और विस्तृत एक खपड़ेको रक्खे और ऊपर बिडको देकर बीजके खानेवाले पारदको स्थापित करै फिर उस पारद पर बिडको रक्खे तदनंतर लोहेकी कटोरी अथवा कान्तलोहकी बनी हुई कटोरी जो कि माँजते २ पीतलके समान होगई हो उसको ऊपरसे उलटा मुखकर रक्खे तदनंतर संधि लेप करे या खडिया नोन हर्र और राखको अच्छी तरह पीसकर मुद्रा करे ऊपरसे जंगली कंडोंकी आंचसे धोंके इसको कच्छपयंत्र कहते हैं ॥ ७९—८२ ॥

अन्यच्च ।

जलपूर्णपात्रमध्ये दत्त्वा धटखर्परं सुविस्ती-

१–धमेत-इत्यपि (मे. रा.)

णम् । तदुपरि बिडमध्यगतः स्थाप्यः सूतः कृतः कोष्ट्याम् ॥ ८३ ॥ लघुलोहकटोरिकया कृतषण्मृत्सन्धिलेपयाच्छाद्य । पूर्वोक्तघटखर्परमध्येऽङ्गारैः खदिरकोलभवैः ॥ ८४ ॥ स्वेदनतो मर्दनतः कच्छपयन्त्रस्थितो रसो जरति । अग्निबलेनैव ततो गर्भे द्रवन्ति सर्वसत्त्वानि ॥ ८५ ॥ (र. र. स.,र. रा. प.)

अर्थ-जलके भरे हुए पात्रसे एक लंबा चौड़ा घड़ेका खीपरा रख उसके वीचमें छोटीसी कोठी बनावे और उस कोठीमें प्रथम विड फिर पारदको रक्खे फिर जिसपर छः बार कपरौटी की हुई हो ऐसी हलकी लोहेकी कटोरीसे ढककर संधि लेप करै और ऊपरसे खैर और बेरके कोलोंकी अग्निसे स्वेदन करै तो कच्छपयंत्रमें स्थित पारद जारित होताहै और उस कच्छपयंत्रमें अग्निके बलसे सम्पूर्ण सत्त्व द्रव होते हैं ॥ ८३—८५ ॥

अन्यच्च ।

तुलाद्वयं जलाधारं मृत्तिकापात्रमाहरेत् । आगलं तं न्यसेद् भूमौ वारिणा पूरयेत्ततः ॥ ८६ ॥ तदास्ये खर्परं नूलं जले लग्नं न्यसेद् बुधः । सौधभूषणमादाय वारिणा पेषयेद्दृढम् ॥ ८७ ॥ तेन कुर्यात्तु तन्मध्ये भित्तिं च वलयाकृतिम् । रसगोलानुरूपां तां तन्मध्ये रसगोलकम् ॥ ८८ ॥ अष्टमांशबिडसंयुक्तं सग्रासं धारयेत्ततः । पृष्ठोपदेहयुक्तेन तनुना लोहोद्भवेन च ॥ ८९ ॥ शरावाकृतिपात्रेणच्छादयेद्रोधयेत्ततः । अङ्गारैः सन्धमेत्सूतो ग्रासं ग्रसति तत्क्षणात् ॥ ९० ॥ हेमतारसमावर्तो यावत्कालेन जायते । तावत्कालेन सूतेन्द्रे ग्रासो वै जीर्णतां व्रजेत ॥ ९१ ॥ अनेन कच्छपयन्त्रेण जारणं स्याद्यदृच्छया ॥ ९२ ॥ (र. प.)

अर्थ-दस सेर जल जिसमें आवे ऐसे मिट्टीके पात्रको उसके कंठ पर्यंत धरतीमें गाड जलसे भरदे फिर उसके मुखपर नये खपरेको इस तरह रक्खे कि जिसका तल पानीसे लगा रहे तदनंतर चूनेको पानीसे पीसकर महीन कर उस चूनेसे खीपरेके बीचमें कडेके समान उतना बडा थामला बनावे जितना कि रसका गोला हो और उसमें आठवाँ हिस्सा विडपारद तथा वह पदार्थ जिसका ग्रास दिया जाय रक्खे और जिसकी पीठपर मृत्तिकाका लेप किया हुआहो ऐसी लोहेकी बनी हुई पतली शकोरेकी आकृतिवाली कटोरीसे पारदको बंदकर मुद्रा करै फिर ऊपर कोयलोंसे धोंके तो पारद शीघ्रही ग्रासको ग्रस लेताहै जितने समयमें सुवर्ण और चांदीमें ताव लगताहै उतनेही समयतक पारदमें ग्रास जीर्ण होताहै इस कच्छप यंत्रसे इच्छापूर्वक जारण होताहै ॥

अन्यच्च ।

विस्तृतमुखामेकां हंडिकां जलेनापूर्य तन्मुखोपरि तज्जलमग्नपृष्टं कपालं संस्थाप्याथ तत्र कपालमध्ये पाषाणभस्मना जलपरिपेषितेन मेखलां चक्राकारां तेनैव परिलिप्तमध्यभागां कृत्वा तत्र सूताष्टमांशबिडस्यार्द्धं संस्थाप्य तदुपरि सूतस्य गोलं धृत्वा तदुपरि अष्टमांशबिडस्यावशिष्टार्धं दत्त्वा तद्गोलोपरि लघुलोहमयीं सूक्ष्मां मृद्वस्त्रलितां कटोरिकां दत्त्वा तत्संधिं जलपेषितभस्मना रुद्ध्वा तदुपरि सहस्राभ्यां परिलिप्य तदुपरि दीप्तांगारैः कपालं संपूर्य यावत्स्वर्णं द्रवति तावत्कालं कपालेंगाराणि स्थापयेत्पश्चादंगाराणि निःसारयेत् ततः शीतं विधाय सूतं तोलयेत् यदि सूतमानं पूर्णं स्यात् तदा कांजिकेन प्रक्षालयेत यद्याधिकं स्यात्तदा पुनर्बिडं दत्त्वा पूर्ववज्जारयेत् एवमेवाऽभ्रकसत्त्वं द्विगुणादिकं जारयेत् अथवा वनोपलचूर्णैः सतुषैः कपालं संपूर्यात् पूर्वोक्तविधिना ॥ (ध. सं.)

अर्थ-चौडे मुखकी एक हँडियाको जलसे भर उसके मुख पर ऐसे खीपराको रक्खे कि जिसकी पीठ हँडियाके पानीसे लगी हुई हो तदनंतर उस खीपरामें जलसे पिसे हुए चूनेसे गोल २ मेखला बनवावे जिसका मध्यभाग उसी पिसे हुए चूनेसे लिपा हुआहो उसमें पारदका आठवाँ हिस्सा विड लेकर उसके दो भाग करे उसमेंसे उस पारदके अष्टमांशका आधाभाग रख उसपर पारदका गोला स्थापित करदेवे फिर निम्बूका रस थोडासा निचोड ऊपरसे बचे हुए आधे विडका देकर जिसकी पीठपर कपरौटीकी हुई हो ऐसी पतली लोहेकी कटोरीको उस पारदके गोलेपर लगाके उसकी संधिका जलसे पिसे हुए राख और नोंनसे लेप करे और ऊपरसे कोयलोंकी इतनी आंच लगाता रहे कि जितनी देरमें स्वर्ण गलता हो. तदनंतर कोयलोंको निकाल स्वांग शीतल होनेसे पारदको निकाल कर तोले जब पारद तोलमें ठीक बैठे (अर्थात् वीड, वीज, तथा पारद इन तीनोंकी तोलमें केवल पारदकीही तोल रहे) तब कांजीसे धो डालना चाहिये यदि पूर्वोक्त रीतिके अनुसार अधिक पारद हो तो फिर बिड देकर जारण करे इस प्रकारही दूना तथा चौगुना अभ्रक सत्व जारण होताहै ॥

अथवा कोयलोंकी वजाय तुस मिले हुए अरनेकंडोंके चूरेसे पिरा भर पूर्वोक्त रीतिसे अग्नि लगावे ॥

दीपिकायंत्र।

कच्छपयंत्रांतर्गतमृन्मयपीठस्थदीपिकासंस्थः यस्मिन्निपतति सूतः प्रोक्तं तद्दीपिकायंत्रम्॥ ॥ ९३ ॥ (र. र. स.)

अर्थ–कच्छपयंत्रके भीतर मिट्टीके पीढे ऊपर दियेमें रखे हुए जिस पात्रमें पारा गिरताहै उसको दीपिकायन्त्र कहतेहैं।

सोमानलयंत्र।

ऊर्ध्वं वह्निरधश्चापो मध्ये तु रससंग्रहः। सोमानलमिदं प्रोक्तं जारयेद्गगनादिकम् ॥ ॥ ९४ ॥ (र. र. स.)

अर्थ–जिस यंत्रके ऊपर अग्नि तथा नीचे जल और बीचमें पारदकी सामग्री हो उसको सोमानल यंत्र कहाहै इस यंत्रमें अभ्रकादिका जारण होताहै ॥ ९४ ॥

अन्यच्च।

पुनि षट संपुट सात बखानि। यहै जुगति सबहीकी जानि ॥ करि लोहकी कराही ऐसी। गगरी नीरुमाइ उहि जैसी॥ चुंबककी जु लुहेंडी करै । बारबारभरि उलटिकै धरै॥ मुद्रा मैनकि कीजै गुनी। जैसी हो गुनिन पर सुनी॥ यहै यंत्र सोमानल नाम। आवै सो पारेके काम॥ (रससागर.)

जलयंत्र।

अधस्ताप उपर्यापो मध्ये तु रसगंधकौ । यदि स्यात्सुदृढा मुद्रा मंदभाग्योपि सिध्यति ॥ ९५ ॥ यदि कार्यमपो यंत्रं तदान्तर्मूषयान्वितम् । पूर्ववज्जारणा तत्र गंधकादेरपि स्मृता ॥ ९६ ॥ (बृ. यो.)

अर्थ–नीचे अग्नि ऊपर जल तथा बीचमें रस और गंधक हो बस इसीको जलयंत्र कहतेहैं अगर जलयंत्रकी मुद्रा दृढ हो तो मंदभाग्यकी भी सिद्धि होतीहै जलयंत्र बनाना हो तो यंत्रके भीतर मूषा बनवावे तदनंतर पूर्ववत् गंधक आदिकी जारण होतीहै ॥ ९५ ॥ ९६ ॥

अन्यच्च।

अथ सर्वप्रयोगयोग्यतया रसेन्द्रमारणाय शांभवीमुद्रामभिदध्मः–

अधस्ताप उपर्यापो मध्ये गंधकपारदौ ॥ ॥ ९७ ॥ यदि स्यात्सुदृढा मुद्रा मंदभाग्योपि सिध्यति । यदि कार्यमयोयंत्रं तदा तन्मृत्स्नया लिपेत ॥९८॥(रसेन्द्रचिं., र. सा. प., र. रा. सं.)

अर्थ–अब समस्त प्रयोगोंके योग्य होनेके कारण पारद मारणके लिये शाम्भवी मुद्राको कहतेहैं ॥

पारद और गंधकको संपुटके बीचमें रखकर ऊपर जल तथा नीचेसे अग्निको रक्खे तो उसको जलयंत्र कहतेहैं यदि इस यंत्रकी मुद्रा दृढ हो तो मन्दभाग्यको भी सिद्धि हो जातीहै यदि लोहेका यंत्र बनाया जाय तो मिट्टीका लेप करना चाहिये ॥ ९७ ॥ ९८ ॥

अन्यच्च।

अधस्तापो जलं तूर्ध्वं मध्ये तु रसगंधकौ । मैणमुद्राप्रयोगेण सद्यः कांचनमुत्तमम् ॥ ॥ ९९ ॥ (नि. र.)

अर्थ–नीचे आंच ऊपर जल और बीचमें पारद गंधक तथा मोमकी मुद्रा होतो शीघ्रही सोना होताहै अर्थात् पारद भस्म होताहै ॥ ९९ ॥

अन्यच्च।

उपर्यापस्तले तापो मध्ये च रसगन्धकौ। जलयन्त्रमिदं गोप्यं यन्त्रं श्रेष्ठं समीरितम् ॥ ॥ १०० ॥ अस्मिन्स्वर्णादिभूसत्त्वं गंधकादि च जारयेत् । कृत्वा लोहमयीं पात्रीमधोमुखसमन्वितम् ॥ १०१ ॥ मुखमध्ये क्षिपेद्द्रव्यं पात्रवक्त्रं निरोधयेत्। लोहचक्रिकया रुद्ध्वा तत्संधिं साधुलेपयेत् ॥१०२॥ तस्मिन्कोष्ठे क्षिपेदस्रे छागं लोहरजोन्वितम् । पुनः पुनश्च संशुष्के पुनरेभिश्च लेपयेत् ॥ १०३ ॥ लेहवत्कृतबब्बूलकाथेन परिमर्दितम्। जीर्णेष्टकारजःसूक्ष्मगुडचूर्णसमन्वितम् ॥ १०४ ॥ लेपयेत्खलु तत्प्रोक्तं दुर्भेद्यं सलिलैः खलु । खटिकं लोहकिट्टैश्च महिषीदुग्धमर्दितैः ॥ १०५ ॥ एतया मृत्स्नया रुद्धा न गन्तुं क्षमते रसः ॥ विदग्धवनिताप्रेम्णा बद्धः प्रौढः पुमानिव ॥ १०६ ॥ ततो जलं विनिक्षिप्य वह्निं प्रज्वालयेदधः। अथवा कारयेन्मूषापात्रलग्नामधोमुखीम् ॥ १०७ ॥ लोहानामनुरूपाश्च तन्मूषामुखरोधिनीम्। दत्त्वा चान्या तयोः संधिं विलेप्याजासृगादिभिः ॥१०८॥जलमूर्ध्व विनिक्षिप्य निःसंदेहं विपाचयेत्। जलयंत्रं तु बहुभिर्दिनैरेव हि जायते ॥ १०९ ॥ (र. रा. सुं.)

अर्थ–यंत्रके बीचमें पारद और गंधकको रखकर ऊपर जल भर नीचेसे आंच लगावे यह जलयंत्र सम्पूर्ण यंत्रोंमें श्रेष्ठ होनेके कारण गुप्त रखनेके योग्य है । इसी यंत्रमें स्वर्णादिभूसत्त्व तथा गंधकादिकको जारण करे इस यंत्रके निर्माण करनेकी यह रीति है कि प्रथम लोहेका एक ऐसा पात्र बनवावे जिसका मुख नीचेको हो और उसके मुखमें

जारणयोग्य पदार्थके साथ पारदको भर देवे फिर लोहेकी टिकियासे यंत्रके मुखको बन्दकर दोनोंकी संधिको युक्तिपूर्वक लेपन करे तदनंतर लोहेके चूरेको बकरेके खूनसे घोटकर उस यंत्र पर लेप करे जब वह लेप शुष्क होजाय तब उसपर फिर भी लेप करै इस प्रकार सातवार लेप करे इसके पश्चात् ऐसा बबूलका (पत्ता, फल, छाल) काथ करे कि वह काथ लेहीके समान होजाय उस काथसे पुरानी ईटका चूरा गुड और चूनेको घोटकर उस यंत्रपर लेप करे तो वह मुद्रा जलमें बिगडती नहीं है अगर खरिया मिट्टी लोहकी कीटको भैंसके दूधसे मर्दनकर लेप करे तो पारद चतुरास्त्रीके प्रेमसे बँधे हुए जवान मनुष्यकी तरह बाहर नहीं जा सकताहै फिर जल भरके नीचेसे आंच जलावे अथवा एक ऐसी मूषा बनावे कि जिसका तल यंत्रके तलसे मिला हो लोहेके पात्रसे मूषाके मुखको बांधकर दोनोंमें पूर्वोक्त लेपोंसे लेप करे और ऊपरसे जल डालकर नीचेसे निःशंक होकर आंच जलाकर पचावे यह जलयंत्र बहुतदिनोंमें सिद्ध होताहै ॥ १००-१०९ ॥

नाभियंत्र ।

मल्लमध्ये चरेद्गर्तं तत्र सूतं सगंधकम् । गर्तस्य परितः कुडयं प्रकुर्यादंगुलोच्छ्रितम् ॥ ॥ ११० ॥ ततश्चाऽऽच्छादयेत्सम्यग्गोस्तनाकारमूषयां । सम्यक् तोयमृदा रुद्धा सम्यग्यंत्रोच्यमानया ॥ १११॥ लेहवत्कृतबब्बूलक्काथेन परिमर्दितम् । जीर्णेष्टिका रजः सूक्ष्मं गुडचूर्णसमन्वितम् ॥ ११२ ॥ इयं हि जलमृत्प्रोक्ता दुर्भेद्या सलिलैः खलु । खटिकापटुकिट्टैश्च महिषीदुग्धमर्दितैः ॥११३॥ वह्निमृत्स्ना भवेद्घोरवह्नितापसहा खलु । एतया मृत्स्नया रुद्धो न गंतुं क्षमते रसः ॥ ॥ ११४॥ विदग्धवनिताप्रेम्णा रुद्धः प्रौढः पुमानिव । नंदी नागार्जुनश्चैव ब्रह्मज्योतिर्मुनीश्वरः ॥ ११५ ॥ वेत्ति श्रीसोमदेवश्च नापरः पृथिवीतले । ततो जलं विनिक्षिप्य वह्निं प्रज्वालयेदधः ॥ ११६ ॥ नाभियंत्रमिदं प्रोक्तं नंदिना सर्ववेदिना । अनेन जीर्यते सूतो निर्धूमः शुद्धगंधकः ॥ ११७ ॥ (र. र. स., र. रा. प.)

अर्थ-एक मलरेमें गड्ढा बनावे और उसमें पारे तथा गंधकको रक्खे गड्ढेके चारों तरफ एक एक अंगुल ऊंची पाली बांधे फिर ऐसी मूषासे मुख बंद करे कि जिसका आकार गायके स्तनके समान हो, जो जल यंत्रोंकी संधि लेप करनेमें योग्य हो ऐसी मिट्टीसे लेप करे वह मिट्टी इस प्रकार बनाई जातीहै; प्रथम लेहीके समान गाढे किये हुए काथसे पुरानी ईंटका महीन चूरा और चूनेके पीसनेसे तय्यार होतीहै यह जलमुद्रा पानीमें टूटती नहीं है अथवा खरिया मिट्टी, नोंन तथा लोहकीटको भैंसके दूधसे मर्दन करे तो यह मिट्टी दृढ हो जातीहै और इस मिट्टीसे रुकाहुआ पारा चतुरस्त्रीके प्रेमसे रुके हुए नौ जवानकी तरह बाहर नहीं जा सकता इस यंत्रको नंदी नागार्जुन ब्रह्मज्योति मुनीश्वर तथा श्रीसोमदेवही जानते हैं और नहीं, तदनंतर जलको ऊपरसे डालकर नीचेसे आंच जलावे इसको नंदीनामके मुनीश्वरने नाभियंत्र कहाहै इससे गंधक निर्धूम जारण होताहै ॥ ११०—११७ ॥

इक मुखिया यंत्र (जलयंत्र भेद)

करै लोहके तरे छेदोई । माँझ गाढकी नीपै कोई ॥ तर ऊपर दे ऐसे ताई । ढिग ढिग लोह एक ह्वै जाई॥आस पास ताऊपर जरै । ऐसी जुगति कराही करै ॥ मांझ छेद ता करें विचारी । सुजिनाके उनमान जु डारी ॥ वस्तमेलि तब पच्ची करै । तामें कील लोहकी धरै ॥ तब सुकराही चूल्हे बरै । अग्नि प्रजारि नीरसों भरै ॥ ज्यों ज्यों नीरजु सोखतु जाई । त्यों त्यों वामें और कराई ॥ इकमुखिया जंत्र है येहु । पुनि संपुट चारि गन सेहु ॥ (रससागर.)

अर्थ-लोहेके दो तवे बनावे, जो गहरे हों, उन दोनोंको मिला किनारोंको ताउ देकर चिपकादे फिर आस पास तवे जड कढाही बना ऊपर लिखे अनुसार काममें लावे ॥

ककूरमयंत्र (एक प्रकारका जलयंत्र जान पडताहै)

कूपा पहिले कहे बखानि । तैसे करै कराही बानि ॥ बडो छेद ता करै बनाई । जैसे तामें लेखनि माई ॥ बारह आंगुल कवियतुभनै । अस प्रमाण वा यंत्रहि गनै ॥ बारबार कूपमा हरेई ॥ टोंटी ह्वैके औषध देई । बहुरि कराही जलसों भरै । ज्यों ज्यों निघटै त्यों त्यों करै । या जंत्रै है ककूरम नाम । बहुत आगि पानी सों काम ॥ (रससागर-)

चौमुखिया यंत्र (जलयंत्रभेद)

ऐसे ही वे जारिये चारी । करै कराही माहिं विचारी ॥ पत्रनिकी करि चारि बनाई । जैसे नीरजु बहुत समाई ॥ पुनि तीनि संपुट बाखर भरै । पहलीसी विधि मुद्रा करै ॥ संख्या ता किरियामें कही । तैसी आगि दीजिये सही ॥ याको चौमुख भाषें गुनी । संपुट पांच पांचमुख भनी ॥ (रससागर.)

जारणायंत्र ।

रसोनकवसां भद्रे यत्नतो वस्त्रगालिताम् ॥ दापयेत्प्रचुरं यत्नादाप्लाव्य रसगंधकौ ॥ ११८ ॥ स्थालिकायां पिधायोर्ध्वं स्थालीमन्यां दृढां कुरु ॥ संधिं विलेपयेद्यत्नान्मृदा वस्त्रेण चैव हि॥ ११९ ॥ स्थाल्यंतरे कपोताख्यं पुटं कर्षाग्निना सदा ॥ यंत्रस्याधः करीषाग्निं दद्यात्तीव्राग्निमेव वा ॥ १२० ॥ एवं तु त्रिदिनं कुर्यात्ततो यंत्रं विमोचयेत् ॥ ततोदके तप्तचुल्ल्यां न कुर्याच्छीतलक्रियाम् ॥ १२१ ॥ न तत्र क्षीयेत सूतो नच गच्छति कुत्रचित् ॥ अनेन च क्रमेणैव कुर्याद्गंधकजारणाम् ॥ १२२ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-कपडेके छने हुए लहसनके रससे गंधक और पारदको खूब तर करके एक हंडियामें रक्खे और उसके ऊपर एक हांडीको स्थापित कर दोनोंके मुखकी संधिको कपडा और मिट्टीसे लेपकर हंडियाके ऊपर कर्सीकी आग्नि अथवा कंडोंकी तेज आंच देवे इसप्रकार तीन बार करे तब यंत्रको खोले गरम चूल्हे पर गरम जलसे यंत्रको शीतल न करे इस यंत्रमें पारदका क्षय नहीं होता और न कहीं जाताहै इस क्रमसे गंधक जारण करै ॥ ११८—१२२ ॥

तुलायंत्र ।

वृंताकाकारमूषे द्वे तयोः कुर्यादधः खलु । प्रादेशमात्रां नलिकां मृदा लिप्तां सुगाधिकाम् ॥१२३॥ तत्रैकस्यां क्षिपेत्सूतमन्यस्यां गंधचूर्णकम् ॥ निरुध्य मूषयोर्वक्त्रं वालुकायंत्रके क्षिपेत् ॥ १२४ ॥ गंधाधो ज्वालयेदग्निं तुलायंत्रमुदाहृतम् ॥ तालगंधाश्मताराणां जारणार्थमुदाहृतम् ॥ १२५ ॥ (टो. नं., र. र. स.)

अर्थ-लंबे और गोल बैंगनके आकारकी दो मूषा बनावे और उन दोनों मूषाओंके नीचे प्रादेशमात्र (एक वालिश्त) लंबी नली लगावे और नलीको मिट्टीसे चिकनी करे तदनंतर एक मूषामें पारद और दूसरीमें गंधकको स्थापित करे और दोनोंके मुखको बंदकर वालुकायंत्रमें रक्खे फिर गंधकके नीचे अग्निको जलावे वस इसीको तुलायंत्र कहतेहैं इस यंत्रसे हरताल गंधक और चांदीका जारण होताहै ॥ १२३—१२५॥

विचार-कहीं तारकी जगह सारका पाठ है सो ठीक नहीं क्योंकि तार बीज जारणके लिये ग्रहणहै और सारका जारण कहीं नहीं है ॥

अन्यच्च ।

लोहमूषाद्वयं कृत्वा द्वादशांगुलमानतः । ईषच्छिद्रान्वितामेकां तत्र गंधकसंयुताम् ॥ १२६ ॥ मूषायां रसयुक्तायामन्यस्यां तां प्रवेशयेत् । तोयं स्यात्सूतकस्याधः ऊर्ध्वाधो वह्निदीपनम् ॥ १२७ ॥ (र.र.स.)

अर्थ--बारह बारह अंगुलकी दो लोहेकी मूषा बनावे उनमेंसे एकमें छोटासा छेदकर गंधक भरे और दूसरी मूषाके भीतर पारा रखदेवे फिर संधिलेप करे जिसके भीतर गंधक रक्खा था उसके नीचे आंच लगावे तथा पारदवाली मूषाके नीचे जल रक्खे (जो इसे तुलायंत्र समझना ठीक है ऐसी इस ग्रंथकर्ताकी सम्मति है) ॥ १२६ ॥ १२७ ॥

अन्यच्च ।

मूषा नालान्विता ऊर्ध्ववक्त्रा स्याद्द्वादशांगुला । दृढां लोहमयीं कुर्यादनया सदृशीं पराम् ॥ १२८ ॥ एकस्यां निक्षिपेत्सूतमन्यस्यां गन्धकं समम् । सूतमूषामुखमध्ये गन्धमूषामुखं क्षिपेत् ॥ १२९ ॥ लिप्त्वा मृल्लवणैः सन्धिं गन्धकाधः पुटं ततः । रसस्याधो जलं स्थाप्य रसो गन्धं पिबेत्पलम् ॥ १३० ॥ जीर्णे गन्धे पुनर्गंधं सूततुल्यं प्रदापयेत् । इत्येवं षोडशगुणं गन्धं जार्यं पुनःपुनः ॥ १३१ ॥ जारितः सूतराजोऽयं वासनामुसितो भवेत् ॥ १३२ ॥ (र.प.)

अर्थ--नलीदार ऊंचे मुखवाली एक मूषा बनावे जिसका विस्तार बारह अंगुल हो और ऐसीही एक दूसरी मूषा बनावे फिर एकमें गंधक और दूसरीमें पारद भरदे यह पारद तथा गंधक समान भाग हो और दोनोंके मुखको मिलाकर मुद्रा करै । फिर गंधकके नीचे आंच जलावे तथा पारदके नीचे जल रक्खे तो पारद गंधकको पी जाताहै, जब गंधकको पारा पी जाय तब फिर भी उतना गंधक डालकर जारण करै इस प्रकार छःगुना गंधक जारण करे इस रीतिसे पारद बुभुक्षित होताहै ॥ १२८—१३२ ॥

कूपिकायंत्रम् ।

निरवधिनिर्पीडितमृदंबरादिपरिलिप्तामतिकठिनकाचघटीमग्रे वक्ष्यमाणप्रकारान्तररसगर्भिणीमधस्तर्जन्यंगुलितच्छिद्रायामनुरूपस्थालिकामारोप्य परितस्तां द्वित्र्यंगुलिद्वयांशेन लवणेन निरन्तरालीकरणपुरस्सरं सिकताभिरापूर्य वर्द्धमानक्रमारोपणीयं क्रमतस्त्रिचतुष्पञ्चवासराणि ज्वलनज्वालया पाचनीयमेकयंत्रम् ॥ १३३ ॥ (र. प.)

अर्थ-प्रथम कपडा तथा मिट्टीको निरंतर (लगातार) कूट कूटकर कठिन आतिशी शीशीमें लेप करे फिर उसमें आगे कही हुई विधिके अनुसार पारद आदि पदार्थोंको

भरकर उस शीशीको तर्जनी (अँगूठेके पासकी अँगुली) की बराबर पेंदेमें छेद की हुई ऐसी हँडियामें स्थापित करे जो कि अनुमानसे शीशी रखने योग्य हो । तदनंतर शीशीके आस पास दो दो तीन तीन अंगुल नोंन भर फिर वाल्रेत भरदेवे और उस हँडियाको भट्टीपर चढा क्रमसे तीन चार तथा पांच दिनतक अग्निकी ज्वालासे परिपाक करे यह एक प्रकारका कूपिकायंत्र हुआ ॥ १३३ ॥

अन्यच्च ।

काचताम्रयुता कूपी दृढा रम्याकृतिस्तथा। प्रलिप्य तूलमृत्स्नाभ्यां लेप्या शोष्या पुनः-पुनः ॥ १३४ ॥ इत्थं तु संस्कृता कूपी तत्र सूतं प्रवेशयेत । तन्मुखं मुद्रितं कृत्वा यंत्रे सिकताभिधे पचेत् ॥ १३५॥ अथवा पाटवे यंत्रे यंत्रे वाप्युभयात्मके । कूपिकायंत्रमुद्दिष्टं तदशोकगुणावहम् ॥ १३६ ॥ (र. प.)

अर्थ-काच तथा तांवेको मिलाकर सुन्दर आकृति (शकल) की शीशी बनावे और उस शीशीको कुटी हुई रुई और मिट्टीसे लीपकर सुखावे इस प्रकार कईवार लेप करे फिर उस कांचकी शीशीमें पारदको रक्खे और उसपर मुद्रा (ईटको घिस २ कर ऐसा डाट बनावे जो कि शीशेके मुखमें ठीक आती हो उसको वज्रमृत्तिकासे लेप दे) करे वालुकायंत्रमें पकावे अथवा लवणयंत्रमें तथा दोनोंमेंसे किसी यंत्रमें पकावे तो उसको प्रीतिरूप गुणके दाता कूपिकायंत्र कहतेहैं ॥ १३४—१३६ ॥

कवचीयंत्र ।

नातिह्रस्वां काचकूपीं न चातिमहतीं दृढाम् । वाससा कर्दमाक्तेन परिवृत्य समंततः ॥ १३७ ॥ संलिप्य मृदुमृत्स्नाभिः शोषयेद्भानुरश्मिना । निधाय भेषजं तत्र मुखमाच्छादयेत्ततः ॥ १३८ ॥ कठिन्या दृढया वापि पचेद्यंत्रे विधानतः। कवचीयंत्रमेतद्धि रसादिपचने मतम् ॥१३९॥ (र.रा.सुं.)

अर्थ-दृढ कांचकी शीशी जो कि न बहुत छोटी और न बहुत बडी हो उसको कपरौटीसे चारों ओर लपेटकर और कोमल चिकनी मिट्टीसे लीपकर सूर्यकी किरणोंसे सुखावे तदनंतर उस शीशीमें औषधको रखकर मुखपर खरियासे दृढ मुद्रा करे फिर विधिपूर्वक परिपाक करे तो इसको रसादिकोंके पचानेके लिये कवचीयंत्र कहतेहैं॥१३७–१३९॥

कवचीयंत्र यानी शीशी उतारनेके मुतल्लिक (उर्दू)

शीशे या जर्फ जिसमें दवाएं अकसीरीहैं उसको अव्वल खुला रखना चाहिये ताकि जुमलः रतूवत उसकी खुश्कहोजावे वल्कि मुनासिब है कि अव्वल उसका मुंह रुईसे वंद करदे जबतक बुखारका असर रुईपर पहुँचता रहे उस वक्त तक उसका मुँह खुला रहनेदे जब रतूवत शीशीके अन्दरसे निकल जावे उसमें मुहर सुलेमानी या दूसरा मजबूत मुद्रा लगावे ताकि अदविया वाहम चक्कर खाकर मुनकिद होजावें रतूवत जब जर्फसे निकल जातीहै तो जर्फ कम शकिस्त होताहै और अकसीर तय्यार हो जातीहै ॥ (अकलीमियाँ सफा २१)

वालुकायंत्र ।

भांडे वितस्तिगंभीरे मध्ये निहितकूपिके । कूपिकाकंठपर्यंतं वालुकाभिश्च पूरितम् १४० भेषजं कूपिकासंस्थं वह्नितो यत्र पच्यते । वालुकायंत्रमेतद्धि यत्रतत्र बुधैः स्मृतम् ॥ ॥ १४१ ॥ (र. रा. म., र. रा. सुं.)

अर्थ-एक बालिश्त गहरे बासनके बीचमें शीशीको रखकर इतना रेत भरे कि शीशीका गला रेतमें डूबजाय और दवाईको शीशीमें भर देवे फिर अग्निसे पकावे तो इसको मंत्रके जाननेवाले पंडितोंने वालुकायंत्र कहाहै ॥ १४० ॥ १४१ ॥

अन्यच्च ।

मांटीकी हांडी बडी, पक्की एक मंगाय ।
पैसा भरिये पेंदे विषै, तामें छेद कराय ॥
शीशी लीजै आतिशी,कपरौटी करि सान।
ताको धूप सुखायके, औषध भरे सुजान ॥
फिर शीशी हांडी विषे,नीके धरै जमाय ।
तब वा हांडीमें भरै, बालूरेत जमाय ॥
शीशीकी गर्दन रहै, बारूते निकसाय ।
शीशीको पेंदो सबै, बारूमें दबिजाय ॥
शीशी मुख मूंदे किते,किते न मूंदें जोय ।
यहै लेख अनुसार है, जानि लेहु सब कोय।
कह्यो तो ताको कीजिये, हांडी पेंदे छेद॥
विना कहे नहिं कीजिये,यहै मुनिनको भेद॥
ऐसी विधितें कीजिये, जंत्रवालुका नाम ।
नीचे आंच लगाइये, करलीजै बहु काम ॥
(वैद्यादर्श)

लवणयंत्र (वालुकायंत्रक्रियया)

एवं लवणनिक्षेपात्प्रोक्तं लवणयंत्रकम् । अन्तःकृतरसालेपात्ताम्रपात्रमुखस्य च ॥ ॥ १४२ ॥ लिप्त्वा मृल्लवणेनैव संधिभांडतलस्य च । तद्भांडं पटुनापूर्य क्षारैर्वा पूर्ववत्पचेत् । एवं लवणयन्त्रञ्च रसकर्मणि शस्यते ॥ १४३ ॥ (र.र.स.)

अर्थ-जिस प्रकार वालुकायंत्रमें रेत भरा जाताहै उसी प्रकार नोंनके भरनेसे लवणयंत्र कहलाताहै. अथवा तांबेके पात्रमें पारदका लेपकर मुखपर वासनकी पेंदी तथा तांबेके पात्रके मुखको मिट्टी नोंनसे लीप और उस वासनको नोंन

अथवा क्षारोंसे पूर्वके समान भर पकावे. इस प्रकार सिद्ध कियाहुआ लवणयंत्र रसकर्ममें श्रेष्ठ होताहै ॥१४२॥१४३॥

खारिकावालुकायन्त्र ।

सुनो गुनी अब दूजो भेद । नाँदमांह जो कीजै छेद । तामें शीशी सूधी धरै । पुनि यह शीशी साम्हर भरै । कहै खारिका यासों लोई । बारू भरै वालुका होई । (रससागर.)

वलीयंत्र ।

चूल्है करौ भलीविधि बानि । तापर नाँदी धरौ सुजानि ॥ सो भरजै साम्हर बटवाई । जैसे नोन सेर दश माई ॥ नोनु गाडिके वली धरै । गाडे कंठ लोन मुँह परै ॥ औषध जैसे पचवन कहे । वलीयंत्रमें ये गुन लहे ॥ (रससागर.)

कवचीयंत्र (एक प्रकारका लवणयंत्र)।

सरवा औषध धरै बनाई । सरवा हांडीमें होंधाई ॥ होई साम्हरि धरै बटाई । पारी मुद्रा करै बनाई ॥ कवचीयंत्र याको है नाम । सुनो सयाने लोग सकाम ॥ (रससागर.)

नालिकायंत्र ।

लोहनालगतं सूतं भांडे लवणपूरिते । निरुद्धं विपचेत्प्राग्वन्नलिकायन्त्रमीरितम् ॥ १४४ ॥ (र.र.स.,र.रा.प.)

अर्थ–लोहेकी नालीमें पारदको भरकर मुखपर दृढ मुद्रा करे तदनंतर नालीको नोंनसे भरी हुई हांडीमें रख अग्निसे परिपक करे इसको नलिकायंत्र कहतेहैं ॥ १४४ ॥

पुटयंत्र ।

शरावसम्पुटांतस्थं करीषेष्वग्निमानवित् । पचेच्चुल्ल्यां द्वियामं वा रसं तत्पुटयन्त्रकम् ॥ १४५ ॥ (र.र. स.)

अर्थ–अग्निके प्रमाणको जाननेवाला वैद्य पारदको दो शकोरोंमें भरकर कंडोंकी आंचमें अथवा चूल्हेपर चढ़ाकर पकावे तो इसको पुटयंत्र कहतेहैं ॥ १४५ ॥

भूधरयंत्र ।

वालुकागूढसर्वांगां गर्ते मूषां रसान्विताम्। दीप्तोपलैः संवृणुयाद्यंत्रं तद्भूधराह्वयम् ॥ ॥ १४६ ॥ (र.सा.सं., र.रा.म.)

अर्थ–मिट्टीकी मूषामें पारद भरकर गड्ढेमें रख ऊपरसे वालूरेत भरदेवे और उस रेतके ऊपर अरने कंडोंकी आंच देवे बस इसको भूधरयंत्र कहते हैं ॥ १४६ ॥

अन्यच्च ।

गाडौ औंडौ करै गज आधु । उतनो चकरौ कीजै साधु ॥ अंगुल आठ मेलिजे रेतु । यहै जानि भूधरको हेतु ॥ अंडा कुकरी खाली करै। कपरौटीकै तामें धरै ॥ टारि रेतको वरिया मांझ। जैसे गर्भ दुरावै बांझ ॥ ऊपर बारू अंगुरु द्वै । ऐसे मूंदे उत्तम है ॥ पांचसेर आरने मँगाई । अल्प आगि ता देइ बनाई ॥ यह मरजाद ग्रंथमें कही । भूधर नाम यंत्रको सही ॥ (रससागर.)

वलीयंत्र ।

यह कवि हाथमगाड करेई । मानो दरथूनीको देई ॥ बहे रेत भरजे निकुताई । तले महाऔषधि धरवाई ॥ ऊपर आग आरने भनी । जैसे रीति आंगी तर तनी॥ यहै जंत्र जु परै वली नाम । विन देखे यह होय न काम ॥ (रससागर.)

गर्भयंत्र ।

गर्भयंत्रं प्रवक्ष्यामि पिष्टिकाभस्मकारकम्॥ चतुरंगुलदीर्घा तु अंगुलोन्मितविस्तराम् ॥ ॥ १४७ ॥ मृन्मयीं सुदृढां मूषां वर्तुलं कारयेन्मुखम् । लवणस्य विंशतिर्भागा भाग एकस्तु गुग्गुलोः ॥ १४८ ॥ सुश्लक्ष्णं पेषयित्वा तु तोयं दत्त्वा पुनःपुनः । मूषालेपं दृढं कृत्वा लवणाद्यं मृदादिभिः ॥ १४९ ॥ कर्षे तुषाग्निना भूमौ स्वेदयेन्मृदुमानवित् । अहोरात्रं त्रिरात्रं वा रसेन्द्रो भस्मतां व्रजेत् ॥ १५० ॥ (र.रा.सुं.,र.र.स.,र.रा.प.)

अर्थ–अब मैं पारदकी पिष्टीके भस्म करनेवाले यंत्रको वर्णन करताहूं चार अंगुल लंबी और तीन अंगुल चौडी मिट्टीकी दृढ (मजबूत) मूषा (घरिया) बनावे उसका मुख गोल बनाना चाहिये । फिर बीसभाग नोंन और एकभाग गूगल इन दोनोंको जल देदेकर महीन पीस बार बार उस मूषापर लेप करे उस मूषामें पारद एक तोले रक्खा जाय फिर धरतीमें गड्ढा खोदकर उसमें मूषाको रख अग्निके प्रमाणका ज्ञाता वैद्य आठ प्रहर वा तीन दिन तक मंद मंद तुषाग्नि देवे तो पारद भस्म हो जाताहै इसको गर्भयंत्र कहतेहैं ॥ १४७–१५० ॥

ग्रस्तयंत्र ।

मूषां मूषोदराविष्टामाद्यन्तसमवर्तुलाम् । चिपिटा च तले प्रोक्ता ग्रस्तयंत्रं मनीषिभिः।

सूतेन्द्ररंधनार्थं हि रसविद्भिरुदीरितम् ॥ ॥ १५१ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-एक मूषाको दूसरी मूषामें रखकर चारों तरफसे बराबर गोल बनावे और पेंदेमें चपटी बनावे बस इस यंत्रको रसवेत्ता महर्षियोंने रससिद्धिके लिये ग्रस्तयंत्र कहाहै ॥ १५१ ॥

चक्रयंत्र ।

गर्तबाह्ये भवेद्रक्तो मध्ये गर्ते रसं कुरु । चक्रयंत्रमिदं सिद्धं बाह्ये गर्ते बृहत्पुटम् ॥ ॥ १५२ ॥ (र. रा. सुं.)

अर्थ-प्रथम एक छोटासा गड्ढा खोदे, फिर उसी गड्ढेके आसपास खाईके आकारका दूसरा गड्ढा खोदे तदनंतर बचिके गड्ढेमें पारद भरै और उस खाईवाले गड्ढेमें अग्नि जलावे इसको चक्रयंत्र कहतेहैं ॥ १५२ ॥

गजकूपयंत्र ।

और यंत्र औंडो गज दोय । ऊपर भीतर गज भरि होय ॥ पुनि चाकरौ चारि गज करै । इतनोही ऊपर तर धरै ॥ माटी भांति जु करै विचारि । मांझ अनौरी दीजै नारि । आसपास लेंडी परिजारि । साव-धान ह्वै गर्व विसारि । गर्भयंत्रकी औषधि धरै । बहुरि फेरि सब लेंडी करै ॥ गुनी आगि तब देइ बनाई । राख सानिकै दौ चुकराई । छवा छेद निकास कवि कहै । आगि सिसीवह जीवति रहै । याको नाम कहै गजकूप । यहै जुगति करि सकै जु भूप ॥ (रससागर.)

चौकीयंत्र ।

एक ईट काची करवाई । तापर औंधाधरै बनाई ॥ ता औंधाके टूटे छेद । माइछि गुरु या यहई भेद ॥ वहै ईट कोनेमें धरै । तामें वस्त पाचनी करै ॥ ठेंठी मुंहदे मुद्रा करै । फोरि ऊपरा तापर धरै ॥ करसी सेरु एक तब लेइ । ऐसी विधिके आगि करेय ॥ चौकीयंत्र कहै सब कोई । यामें पारो उत्तम होई ॥ (रससागर.)

वडवानलयंत्र ।

चूल्हेकी ढिग कोठी धरै । वा कोठी किव-लिनसों भरै ॥ सवर एक गज ताको करै । पवन वाहि कूपमुख धरै ॥ उतनियेपोली कीजै सोई । नवनि मांहि ताके मुख होई ॥ तिनहीसो धरि कोठी मांझ।कोठी धवैं कला इतलांझ॥तरहर आगि कराही जरै । आस पास जल कूपा भरै ॥ पारो कूपा माह करेई । नयनि माह ह्वै औषधि देई ॥ वड-वानल नाम यंत्रको कहै ॥ गुरुप्रसाद बिन कोइ न लहै । (रससागर.)

नागयंत्र ।

तवला एक नागको लेई । वस्त मेलि तामें रस देई ॥ अल्प आगि ता देइ सुजानि । नागयंत्र यह कहौं बखानि ॥ (रससागर.)

कनकसुन्दरीयंत्र ।

एक मूसि लागी आकार । ऊंची आंगुर पांच विचार ॥ तामें कनक कटोरी धरै । मुद्रा करि कपरौटी करै ॥ आगि कुकर पुट देइ बनाई । क्रिया सुगति करै गोराई॥ कनकसुन्दरी यंत्रहि नाम। याते होय रसा-यन काम ॥ (रससागर.)

मदनयंत्र ।

वस्तु पकावै चाहै जिती । लोह कराही मेलै तिती ॥ रसु दैकैही औटै ताहि । एक यंत्र पुनि ऐसो आहि॥ मदनयंत्र यह कहौ सुजान । रीझौ जाहि भूपपति मान ॥ (रससागर.)

हंसपाकयंत्र ।

खर्परं सिकतापूर्णं कृत्वा तस्योपरि न्यसेत् ॥ अपरं खर्परं तत्र शनैर्मृद्वग्निना पचेत् ॥१५३॥ पंचक्षारैस्तथा मूत्रैर्लवणं च बिडं ततः ॥ हंसपाकं समाख्यातं यंत्रं तद्वार्त्तिको-त्तमैः ॥१५४॥ (र.रा.सुं.,र.र.स.,र.रा.प)

अर्थ-वालू रेतसे भरा हुआ खिपरा लेना चाहिये और उसपर दूसरा खिपरा रख दोनोंकी संधिको दृढ लेप कर दे उसमें पारदको पंचक्षार नोंन तथा बिडके योगसे पकावे इसको वार्तिककारोंने हंसपाक यंत्र कहाहै ॥१५३॥१५४॥

विगर्भीनामयंत्र (एकप्रकारका वाटरबाथ)

शीशी एक उघारी लेई।गाठीके हाठीमेंदेई॥ घटी एक जु गागरि तनै।शीशीमें द्वै हांडी बनै॥ हांडी भरि जल कवियतु कहै। शीशी नारि उघारी रहै ॥ बराबरु करि जल तार सुकरेई । जैसो सोखे तैसो देई ॥ यही विगर्भी यंत्र गनेई । यासौं अपनो काज करेई (रससागर.)

नारीयंत्र।

सूधी एककराही चढै। तामें नीरु आगिसौं कढै॥ धातु नारियर बराबर भरै। सो ले वा पानीमें धरै॥ सात धातुमें कौनों होई। काढि जु नारियर कीजै लोई॥ नारी नाम यन्त्र यह कहौ। जैसे गुरुप्रसादते लहौ॥ (रससागर.)

चूनायंत्र।

संपुट एक लोहको करै। औषधि भरि चूनामें धरै॥ ऊपरते तु छिरकिये नीर। तामें आगी दे बलवीर॥ एक जुगति यह कही बखानि। चूनायन्त्र नाम यह जानि॥ (रससागर.)

चौरसागरयंत्र (चोवादेनेका यंत्र)

एक लुहेंडा औषधि करै। बूँद बूँद रस तामें परै॥ ज्यों ज्यों सोखै त्यों त्यों देई। चौरसागर नाम भनेई॥ (रससागर.)

धूपयंत्र (स्वर्णजारणोपयोगी)

विधायाष्टांगुलं पात्रं लौहमष्टांगुलोच्छ्रयम्। कंठाधो द्व्यंगुले देशे गलाधारे हि तत्र च॥ १५५॥ तिर्यग्लोहशलाकाश्च तन्वीं तिर्यग्विनिक्षिपेत्। तनूनि स्वर्णपत्राणि तासामुपरि विन्यसेत॥ १५६॥ पत्राधो निक्षिपेद्धूमं वक्ष्यमाणमिहैव हि। तत्पात्रं न्युब्जपात्रेण च्छादयेदपरेण हि॥॥ १५७॥ मृदा विलिप्य संधिं च वह्निं प्रज्वालयेदधः। तेन पत्राणि कृष्णानि हतान्युक्तविधानतः॥ १५८॥ रसाश्चरंति वेगेन द्रुतं गर्भे द्रवंति च। गन्धालकशिलानां हि कज्जल्या वा मृताहिना॥ १५९॥ धूपनं स्वर्णपत्राणां प्रथमं परिकीर्तितम्॥ तारार्थं तारपत्राणि मृतवंगेन धूपयेत्॥॥ १६०॥ धूपयेच्च यथायोग्यैरन्यैरुपरसैरपि। धूपयन्त्रमिदं प्रोक्तं जारणाद्रव्य साधने॥ १६१॥ (र.र.स.)

अर्थ—आठ अंगुल लंबा चौड़ा तथा ऊंचा लोहेका पात्र बनावे, उस पात्रके कंठके दो अंगुल नीचे पतली पतली लोहेकी सलाइयोंको तिरछी रक्खे और उनपर सोनेके पत्रोंके नीचे आगे कहे हुए धूयेंको लगावे, उसको एक उलटे पत्रसे ऐसा ढाँके कि धूआं बाहर न जाय फिर मिट्टीसे मुखकी मुद्रा कर नीचेसे आंच जलावे, इस क्रियासे मृत और कृष्णवर्णवाले स्वर्णके पत्रोंको पारद विधिपूर्वक शीघ्र चरताहै और वह स्वर्ण गर्भमें द्रव होताहै, अर्थात् शीघ्र गर्भद्रुति होतीहै। प्रथम गंधक, हरिताल और मैनसिलकी कज्जलीसे अथवा मृतनागसे स्वर्ण पत्रोंको धूपन करना चाहिये, चांदीके लिये चांदीके पत्रोंको मृत वंगसे धूआं देवे और भी योग्य योग्य उपरसोंसे धूपन करै। जारण द्रव्य (जिसको जारण किया जाय) को सिद्ध करनेवाले इस यंत्रको धूपयंत्र कहतेहैं॥ १५५–१६१॥

कोष्ठीका लक्षण।

सत्त्वानां पातनार्थाय पातितानां विशुद्धये। कोष्ठिका विविधाकारास्तासां लक्षणमुच्यते॥ १६२॥ (र.र.स.)

अर्थ—सत्त्व पातनके[1] लिये या पातन किये सत्त्वोंकी शुद्धिके लिये नानाप्रकारके कोष्ठिकायंत्र बनाने चाहिये, सो मैं उनके लक्षणोंको कहताहूं॥ १६२॥

अंगारकोष्ठीलक्षण।

राजहस्तसमुत्सेधा तदर्धायामविस्तरा। चतुरस्रा च कुडचेन वेष्टिता मृन्मयेन च॥॥ १६३॥ एकभित्तौ चरेद्द्वारं वितस्त्या भोग संयुतम्। द्वारं सार्धवितस्त्या च संमितं सुदृढं शुभम्॥ १६४॥ (र.र.स.)

अर्थ—एक राजहस्त (राजहस्त) ऊंची और आधे हाथ लंबी चौकोन भीत वनावे और उसको चिकनी मिट्टीसे लीपे फिर एक भीतमें एक बालिश्त या डेढ बालिश्त दृढ दरवाजा बनावे इसको अंगारकोष्ठी कहतेहैं॥ १६३॥ १६४॥

कोष्ठिकायंत्र।

षोडशांगुलविस्तीर्णं हस्तमात्रायतं समम्। धातुसत्त्वनिपातार्थं कोष्ठिकापरिकीर्तितम् वंशखादिरमाधूकबदरीदारुसंभवैः॥ १६५॥ परिपूर्णं दृढांगारैरधो वातेन कोष्ठके। मात्रया ज्वालमार्गेण ज्वालयेच्च हुताशनम्॥ १६६॥ (र. रा. सुं., र. र. स.)

अर्थ—धातुओंके सत्त्व पातनके लिये जो कोष्ठिका यंत्र बनाया जाताहै वह विस्तारमें सोलह अंगुल तथा चौडाईमें एक हाथ होना चाहिये, उसमें खैर, महुआ, तथा वेरकी लकडीके कोयलोंसे कोठीको भरकर नीचेसे धोंकनीके मार्गसे धोंकता जाय तो इसको कोष्ठिका यंत्र कहतेहैं॥ १६५॥ १६६॥

अंगारकोष्ठीलक्षण।

देहल्यधो विधातव्यं धमनाय यथोचितम्। प्रादेशप्रमिता भित्तिरुत्तरङ्गस्य चोर्ध्वतः॥॥ १६७॥ द्वारं चोपरि कर्तव्यं प्रादेशप्रमितं खलु। ततश्चेष्टकयाऽऽरुध्य द्वारसंधिं

[1] १–यन्त्रमिति शेषः।

विलिप्य च ॥ १६८ ॥ शिखित्रैस्तां समापूर्य धमेद्भस्त्राद्वयेन च । शिखित्रान्धमनद्रव्यमूर्ध्वद्वारेण निक्षिपेत् ॥ १६९॥ सत्त्वपातनगोलांश्च पश्चपश्च पुनःपुनः । भवेदङ्गारकोष्ठीयं खराणां सत्त्वपातनी ॥ १७० ॥ (र. र. स.)

अर्थ–एक हाथ लंबी ऊंची तथा चौडी कोठी बनानी चाहिये देहलीके नीचे धोंकनेके लिये मार्ग बनाना चाहिये उसी कोष्ठियंत्रको उत्तरकी ओर नीचेकी धरतीसे एक बालिश्त ऊंचा तथा उतनाही लंबा चौडा दरवाजा बनावे और ऊपरसे कूएँके समान एक गड्ढा बनावे जिसका छिद्र उत्तरकी ओर भीतके बीचमें किये हुए दरवाजेसे मिलाहो और उस गड्ढेके नीचे मिट्टीकी बनाई हुई एक जाली लगावे फिर उत्तरकी तरफके द्वारको ईट लगाकर मुद्रा करे तदनंतर कोयलोंसे कोठीको भर दे धोंकनियोंसे धोंके;जब कोयले तथा सत्त्व निकालने योग्य पदार्थोंको डालना हो तो ऊपरके द्वारसे डाले जिसका सत्त्वपातन करनाहो उसके पांच पांच गोले बार बार डाले तो यह अंगारकोठी कठिन पदार्थोंके भी सत्त्वको पातन करने वाली है ॥ १६७–१७० ॥

पातालकोष्ठिका ।

दृढभूमौ चरेद्गर्तं वितस्त्या संमितं शुभम्। वर्तुलं चाथ तन्मध्ये गर्तमन्यं प्रकल्पयेत् ॥ ॥ १७१॥ चतुरंगुलविस्तारं निम्नत्वेन समन्वितम् । गर्ताद्धरणिपर्यंतं तिर्यङ्नालसमन्वितम् ॥ १७२ ॥ किंचित् समुन्नतं बाह्यगर्ताभिमुखनिम्नगम् । मृच्चक्रीं पश्चरन्ध्राढ्यां गर्भगर्तोदरे क्षिपेत् ॥ १७३ ॥ आपूर्य कोकिलैः कोष्ठीं धमेदेकभस्त्रया । पातालकोष्ठिका ह्येषा मृदूनां सत्त्वपातनी॥१७४॥ (र. र. स.)

अर्थ–कडी पृथिवी पर एक बालिश्त भर सुन्दर गोल गड्ढा बनावे और उसी गड्ढेमें छोटा एक दूसरा और गड्ढा बनावे, जो कि विस्तार तथा निचाईमें चार चार अंगुल हो और उस नीचेके गड्ढे पर पांच मुखवाली मिट्टीकी चक्रिका (चकई) बनाकर रक्खे और बाहरसे एक ऐसी नलिका बनानी चाहिये जोकि धरतीसे लेकर ऊपरके गड्ढेमें पहुंच जाय और उस नलिकाका मुख नीचेको होय, फिर कोठीमें कोयलोंकोभर एक धोंकनीसे धोंके यह कोष्ठी कोमल पदार्थोंके सत्त्वको पातन करनेवाली है इसको पातालकोष्ठी कहते हैं ॥ १७१–१७४ ॥

वंकनालगारकोष्ठी ।

ध्मानसाध्यपदार्थानां नंदिना परिकीर्तिता। द्वादशांगुलनिम्ना या प्रादेशप्रमिता तथा ॥ १७५ ॥ चतुरंगुलतश्चोर्ध्वं वलयेन समन्विता। भूरिच्छिद्रवतीं चक्रीं वलयोपरि निक्षिपेत् ॥ १७६ ॥ शिखित्रांस्तत्र निक्षिप्य प्रधमेद्वङ्कनालतः । मूषामृद्भिर्विधातव्यमरत्निप्रमितं दृढम् ॥ १७७ ॥ अधोमुखं तु तद्वङ्के नालं पश्चाङ्गुलं खलु । वङ्कनालमिदं प्रोक्तं दृढं ध्मानाय कीर्तितम् । गारकोष्ठीयमाख्याता मृष्टलोहविनाशिनी ॥ १७८ ॥ (र.र.स.)

अर्थ–नंदी नामके सिद्धने धोंकने योग्य पदार्थोंके सत्त्व निकालनेके लिये जो कोष्ठी कही है उसको हम लिखते हैं । बारह अंगुल नीची कोठी बनावे, उस कोठीकी पृथिवीसे चार अंगुल ऊंचे एक कडा लगावे और उस कडे पर अनेक छेदवाली चक्रिका स्थापित करे तदनंतर ऊपरसे कोयलोंको रख वंकनालसे धोंके अरत्नि (अर्थात् कौनीसे लेकर कन्नी अँगुलियातक) लंबी मिट्टीकी मूषा बनावे, जिसका मुख नीचाहो, उसके मुखमें पांच अंगुलका नाल हो दृढ धोंकनेके लिये इसको वंकनाल कहतेहैं । यह शुद्ध धातुओंके सत्त्वको पातन करनेवाली गारकोष्ठी कही जातीहै ॥ १७५–१७८ ॥

झझरीयंत्र (सत्त्वपातनोपयोगी ।)

लाझन कैसी पिंडी करै । सत्तु काढिके औषध धरै । सतु काढै इहि भाँति बनाई । आगिखलाइतसौं जु धँवाई॥ एक मूसि माटीकी करै । दूजी मूसि मांझ ता धरै ॥ तामें नान्हे नान्हे छेद । करै गुनी जो जानै भेद ॥ जो सतपातन चाहै कियो । औषधि सो जु मूसिमें दियो ॥ धवेंखलाइतकिवलिनभरै । सतु चुवाइ तरहरिको परै ॥ यहै यन्त्र जु झझरी नाम। आवै सत काढनके काम ॥ औषध पाचन यन्त्र अपार । कछु कछु कहे जु सैदपहार॥ (रससागर)

बोतःमुरबूतकी तरकीब (उर्दू)

(सत्त्वपातन यन्त्र)

बोतः मरबूत. बोतःकी तहमें चन्दहन सूराख करके दूसरे बोतः या कुलिया पर इस्तरह रक्खे कि सूराख बोतः वालाकी कुल्हियाके मुँहके अन्दर हो और उसमें जिन अजसादको इस्तजाल करना मंजूर हो रख करके धोंकनीसे धोंके और कोयला चारों तरफ ढांकदे ताकि हरारत खूब असर करे दोनों बोतोंको गिले हिकमत करदेना चाहिये जसद मजकूर महलूल होकर बोतः जेरीनमें चला जायगा बोतः मजबूत होना चाहिये क्योंकि तेज आगकी जरूरत होती है सुफहा ५६ किताब अलजवाहर ।

मृदुद्रव्यविशोधिनी कोष्ठीका लक्षण।

कोष्ठी सिद्धरसादीनां विधानाय विधीयते ॥ १७९ ॥ द्वादशांगुलकोत्सेधा सा बुध्ने चतुरंगुला। तिर्यक् प्रधमना स्याच्च मृदुद्रव्यविशोधनी ॥ १८० ॥ (र.र. स.)

अर्थ–बारह अंगुल नीची और उसके नीचेका गड्ढा चार अंगुल गहरा हो तथा धोंकनेका मुख नीचा हो तो यह मृदुद्रव्यविशोधिनी नामकी कोष्ठी सिद्धरसोंके बनानेके लिये कही है॥ १७९॥ १८०॥

सारंगयंत्र (द्रुतउपयोगी)

और यन्त्र औंडो गज पांच। द्वै जानिये चाकरौ सांच ॥ महायन्त्र सो भरिये लादि। आली लेइ तुरतकी गादि ॥ यहै यन्त्र गजसारंग मानि। और यन्त्र अब कहौं बखानि॥ (रससागर)

चाहतअजीन (उर्दू)

(द्रुतिउपयोगी यन्त्र)

चाहतअजीनकी तसवीर एक गोल गड्ढा ज्यादःसे ज्यादः दो हाथ चौडा और तीन हाथ गहरा खोद कर चूनेसे गच करदे जिसमें दूसरी शै दवामें न मिल जावे बादहू दवाको किसी वर्तनमें रखकर ऊपरसे तश्त जो गड्ढेके दौरकी बराबर हो औंधा बंद करके ऊपरसे घोडे और गधेकी लीद चोटीदार भर कर बराबर करके दाबदे और हर हफ्ते ख्वाह पन्द्रहवें रोज लीद तबदील कर दिया करे और रोजाना चंदवार पेशाब और सर्दपानी ख्वाह सिर्फ गर्मपानी उसपर गिरा दिया करे और ऊपरसे कोई नाँद वगैरह ढांकदे चाहतअजीनमें दवा गर्मी और तरीकी मददसे परवर्दः की जातीहै जिसतरह मुर्ग़ी अंडेको सेव़ती है बेहतर यह है कि चाह मजकूरमें दवा रखनेके क़बल चाह मजकूरको लीदसे भरदे, ताकि जगह गर्म होजावे और दो चाह ताज़ीन बाहम मुत्तस्सिल बनावे तो और अच्छा है क्योंकि लीदके बदलनेके रोज़ जर्फ़ जब निकाला जावे वह सर्द न होने पावे और दवाके ज़र्फ़को अगर जस्तके जालीदार कठहरेके अन्दर रख दे तो और बेहतर है, क्योंकि लीद वगैरहसे ज़र्फ़ महफूज़ रहेगा, सिर्फ़ हरारत पहुंचती रहेगी। सुफ़हा अक़्लीमियाँ८९

आलातहलील (उर्दू) (द्रुतउपयोगी)।

आलातहलील–इसकी बहुतसी सूरतें हैं लेकिन सबसे आसान और जल्द हल करनेवाला तरीक़ हमाम आलेयाकाहै जिसको हमाम मारयः भी कहतेहैं उसकी तसवीर यह है, कि मटकी या देग संगीमें बैल या भैंसका ताज़ा गोबर भरदे और दवाका शीशा उसमें गाड़ दे इसतरहसे कि कहींसे शीशेका मुंह खुला न रहे और शीशेमें मुहर लगादे जिसमें रतूबत गोबरकी उसमें असर न करने पावे और मटके मज़कूरके नीचे नरम आग खुश्क लीदकी जलावे और रोज़ाना दो तीन बार गरम पानी गोबर मज़कूरमें गिरावे जिसमें सूखने न पावे तीस रोज या कम व जियादह दिनमें दवा महलूल हो जातीहै जितनी दवा लतीफ़ होतीहै उतनी जल्द महलूल हो जातीहै अगर कुल दवा महलूल न हुई हो तो जिसक़दर महलूल हुई हो उसको शीशेसे निकाल ले,मावकी फिर हल करनेके वास्ते दफ़न करदे ताकि तमाम दवा हल होजावे। सुफ़हा अकलीमियाँ ८७॥

गर्तवारियंत्र (द्रुतउपयोगी)

गज चाकरौ गज औंडो करै। नीचहु होय नीर नहिं झरै ॥ वह गाडो बारूसों भरै। गगरी एक माह जल परै ॥ जो चाहौ हलकाठो कियौ। सो सीसी भरि तामें दियो ॥ सीसीके मुख दीजै मैन। रेतु गाडियो लखै न कैन ॥ यहै जंत्र कहि जै गजवारि। यामें हल्ल होइ सब मारि॥ (रससागर.)

गजकुंभयंत्र।

गाढौ एक पौन गज करै। तामें कुंभ गाडिकै धरै ॥ ऊपर गाडि पाउ गज रहै। छाविलेइते कवियनु कहै ॥ ओंठ बाहिरे कविता भनै। जा मुख ऊपर औंधी बनै ॥ और नाद तब घरमें धरै। जामें डेढ़ कलश जल परै ॥ देइ नादमें लेंडी इत्ती। वा पानीमें बूडे जित्ती ॥ भीजी रहन देइ दिन एक। छानि लेइ जल यहै विवेक ॥ वह रस वा गागरिमें करै। तापर औंधा सूधौ धरै ॥ ऊपर लेंडी राखे एत्ती। वा औंधामें अमैहैं जेती ॥ वापर आगि रहै दिनमान। फिर फिर लेंडी देइ सुजान ॥ जब सोखे गागरिको नीर। तब करि नाद देइ बलवीर ॥ यह गजकुंभ यंत्रको नांउ। याकौ चहिजै उत्तम ठांउ ॥ (रससागर.)

आलातअकीद. (यानी अजजाइ महलूलको फिर मुञमिद करनेकी तरकीब) (उर्दू)

दवाई महलूलको शीशीमें रखकर उसको गिले हिकमत करदे और मुंह चूना व सफेदी बैजः मुर्गसे मजबूत बंद करदे और शीशीके अन्दाज पर जमीनमें गड्ढा खोदकर शीशी मजकूर उसमें रखकर मिट्टी डालदे और थोडा सा पानी उस मिट्टी पर छिडकदे और उसको दबादे इसतरह कि बोतल मजकूर टूट न जावे बादहू थोडा सा खुश्क गोबर या लीद उसपर रखकर आग जलावे जब सर्द हो जावे निकाल ले। सुफहा अकलीमियाँ ९०—९१ तक॥

कोठीयंत्र (एकप्रकारका तनूरहै)

गजपुट जेती कहै बखानि । पै रूमी सम और न जानि ॥ काठ एक जु द्वै गज करै । तरछीमें धरतीमें धरै ॥ तामें इंडु खैरको घालि । पाछे आगि देइ प्रज्वालि ॥ जब बरिकै वे होहि अंगार । कैला काढि बाहिरे डार ॥ तीन डीम मार्टीके करै । आले ता कोठीमें धरै ॥ गोली तीन कोठीसी करै । ता कोठी पर औषध धरै ॥ पुनि पहिना दीजै सरकाई । सँधि पहिनाकी मूंदि बनाई॥ पहिले काठ जु धरै अंगार । ते दीजै पहिनासों टार ॥ कोठीयंत्र या यंत्रको नाम । तहां करै जहां होइ न घाम ॥ (रससागर.)

लूमीयंत्र (एकप्रकारका तनूर) ।

गाढो गजभरि करै सवाँरि । तासों कहैं विहरकी नारि ॥ गाढेके मुंह पिहना देई । माटी सांधि मूँदि सब लेई ॥ पहि-नामांह थाहरो करौ । तापर एक सकोरा धरौ॥ढिग ढिग छेद करै ता तीनि।असिवर कैसी सुदरी कीनि ॥ पुनि वह कोठी लीजै पाटि । संधि मूंदि नीकीकै डाटि ॥ नारि सामुहो उत्तम करै । पहिना ऊपर कोठी तरै ॥ जिमि मुख मांझ सकोरा माई । पहिना ऊपर धरै बनाई ॥ जो कछु वस्तु चाहिजे करी । घालि सकोरी भी-तर धरी । लूमीयंत्र कहै संसारु । गुरुमुख विनु कोइ लहै न पारु ॥ (रससागर.)

पातालयंत्र ।

हस्तप्रमाणं निम्नं च गर्तं कृत्वा प्रयत्नतः । तस्मिन्भांडं च संस्थाप्य तथान्यं पात्रमाह-रेत् ॥ १८१ ॥ तस्मिन्नौषधवर्गं च दत्त्वान्यं च शरावकम् । मुखे संस्थाप्य च्छिद्राणि कृत्वा चैव शरावके ॥ १८२ ॥ शरावस-हितं पात्रं गर्तस्थे भाजने न्यसेत् । संधि-लेपं ततः कृत्वा गर्तमापूर्य मृत्स्नया॥१८३॥ पश्चादग्निं च प्रज्वाल्य स्वांगशीतं समुद्धरेत्। पश्चात्तत्पात्रमध्यस्थं पात्रं युक्त्या समाह-रेत् ॥१८४॥ तदधस्थं च तत्तैलं गृह्णीया-द्विधिपूर्वकम् । पातालाख्यमिदं यंत्रं भा-षितं शंभुना स्वयम् ॥ १८५ ॥ (रसराज-सुन्दर.)

अर्थ-एक हाथ गहरा गड्ढा खोदकर उसमें बडे मुखवाला पात्र रक्खे तथा और दूसरे बासनमें औषधियोंको भरकर ऐसा शकोरा रक्खे कि जिसके मुखमें छेद हो, फिर गड्ढेमें स्थापित किये हुए पात्रके मुखमें उस औषधिपूर्ण पात्रका मुख उलटा कर संधिलेप करदेवे, तदनंतर मिट्टीसे गड्ढेको भरकर ऊपरसे आंच जलावे तो अग्निद्वारा तैल अथवा अर्क खिंचकर नीचेके पात्रमें रह जाताहै युक्तिसे बाहर निकाल ले, बस इसको पातालयंत्र कहतेहैं इस यंत्रको श्रीमहादेव-जीने कहाहै ॥ १८१-१८५ ॥

अन्यच्च ।

और जंत्र गज औंडो होइ । डेढु चाकरौ जानों लोइ । तामें दर कीजै निकुताय । एके गजभरि औंडो आय ॥ तामें बासन धरै बनाय । जैसे धूम न वामें जाय ॥ ताके मुखमें सूधो देइ । औंधा टूटे छेद करेइ ॥ तापै धरै बाँसकी नारि । तरहर सँधि मूंदिये सम्हारि ॥ पुनि दारू भरि राखसों सानि । नरुबादरकी समसरि जानि ॥ नरु वाके मुख औंधो देइ । टूटो नरुवा बाम करेय॥ औंधाके टूँटमें छेद । यहै जानिये याको भेद ॥ औंधा पर धरि कुम्हे बनाइ । बाखरु भरिके छेदु कराइ॥ तापर धरै आरने टारि । इहै जुगतिकै देइ प्रजारि ॥ पातालयंत्र यहि जानों लोई । याकी जुगति ऐसी विधि होई ॥ और जंत्र हों कैहौं तैसे । गुरुप्रसादते देखे जैसे ॥ (रससागर.)

चाकीयंत्र (पातालयंत्रभेद)

गाडु एक चाकीको लेइ । पाड खोदिके दूर करेय ॥ बहुरि नागकी सीसी करै । वस्तु मेलि मुख झंझरी धरै॥ सीसी उलटी रोपे तहां । कीलको छेदु बन्यो है जहां ॥ ऊपर देइ आरने फोरि । चाकी जंत्र देहु जिनि खोरि ॥ चोवा आदि तेल जे रहै । सब काढनको यह विधि कहै ॥ (रस-सागर.)

ढेकीयन्त्र ।

भांडकंठादधश्छिद्रे वेणुनालं विनिक्षिपेत । कांस्यपात्रद्वयं कृत्वा संपुटं जलगर्भितम् ॥ ॥ १८६ ॥ नलिकास्ये ततो योज्या दृढं तत्रापि कारयेत् । युक्तद्रव्यैर्विनिक्षिप्तः पूर्वं तत्र घटे रसः ॥ १८७ ॥ अग्निना तापितो

नालात्तोये तस्मिन्पतत्यधः । यावदुष्णं भवेत्सर्वं भाजनं तावदेव हि ॥ जायते रससंधानं ढेकीयंत्रमितीरितम् ॥ १८८ ॥ (र. र. स., र. रा. प.)

अर्थ—जिस औषधिका रस खींचना हो उसको तथा जलको एक पात्रमें रखकर और उस पात्रके गलेमें छेदकर उसमें बांसकी नली लगावे तथा कांसेका संपुट वनाकर उसमें नलीके दूसरे हिस्सेको लगावे और उस संपुटको जलके भीतर रक्खे तथा औषधिवाले वासनके नीचे आग्नि जलावे तो वह रस भाफ वनकर उस नालीके द्वारा कांसीके पात्रमें आ जाता है रस आजानेकी यह परीक्षा है कि जब वासन उष्ण होजाय तब समझ जाना चाहिये कि अर्क निकल आयाहै, बस इसीको ढेकीयंत्र कहतेहैं ॥ १८६–१८८ ॥

नाडिकायंत्र (मिट्टीका भबका) ।

विनिधाय घटे द्रव्यं कनीयांसमधोमुखम् । घटमन्यं मुखे तस्य स्थापयित्वा द्वयोर्मुखम् ॥ १८९ ॥ मृदुमृद्भिः समालिप्य नाडिकां विनिवेशयेत् । यंत्रात्कुंडलितां भित्त्वा जलद्रोणीं महत्तमाम् ॥ १९० ॥ आधारभांडपर्यंतं ततश्चुल्ल्यां विधारयेत् । अधस्ताज्ज्वालयेद्वह्निं यावद्बाष्पो विशेदधः ॥ ॥ १९१ ॥ गृह्णीयादाधारगतं निर्मलं रसमुत्तमम् । नाडिकायंत्रमेतद्धि मुनिभिः परिकीर्तितम् ॥ १९२ ॥ (र. रा. सुं०)

अर्थ—एक घडेमें औषधि भरे और उसके मुखपर एक छोटासा दूसरा घडा उलटा रक्खे, दोनोंके मुखको मिट्टीसे लेस दे, फिर उस यंत्रमेंसे एक गोल नल लेकर दूसरे जलके पात्रमेंसे भी निकाल दूसरे आधारपात्रमें डाले अर्थात् जिसमें अर्क लेना हो उसमें लगादेवे फिर पूर्वोक्त यंत्रको चूल्हे पर चढा रख नचिसे अग्नि जलावे तो अग्निके ऊपरवाले घडेमें जो द्रव्य भराहै वह भाफरूप होकर नाली द्वारा जलके पात्रमें शीत तथा संग्रह होकर नीचेके पात्रमें आकर गिरताहै जबतक भाफ निकले तबतक नीचे अग्नि जलाता जाय और उसपात्रमें इकट्ठे हुए उत्तम निर्मल रसको ग्रहण करै, वस मुनीश्वरोंने इसको नाडिकायंत्र कहाहै ॥ १८९–१९२ ॥

ऊर्ध्वनालिकायंत्र (भबका) ।

भांडकंठादधश्छिद्रे वेणुनालं विनिक्षिपेत् । समानं करकां वापि भांडवक्त्रे निवेशयेत् ॥ १९४ ॥ संधिं लिप्त्वा च नालाग्रे काचभांडं निधापयेत । अधस्तात्प्रस्रवेद्बाष्पं टंकयंत्रमिति स्मृतम् ॥ १९५ ॥ (र.रा.सुं)

अर्थ—एक घडा लेकर उसके कंठके नीचे छेदकर नालीका मुख लगावे, और ऊपर घडेके मुखके आकारका शकोरा लगाकर घडेके मुखको वंदकर मुलतानीसे संधिका लेसदेवे और उस नालीके दूसरे मुखको शीशीके मुखमें लगाकर उस शीशीको पानीमें रख देवे, फिर इस यंत्रको भट्टीपर चढाय अग्नि लगावे तो भट्टीपर चढे हुए घडेमें जो औषधि भरी हुई है उसका अर्क खिंचकर दूसरे पानीमें रक्खे हुए काचके पात्रमें संचित हो जाताहै उसको ग्रहण करै बस इसीको टंकयंत्र भी कहते हैं ॥ १९४ ॥ १९५ ॥

तेजोयंत्र (भबका) ।

भांडे चार्द्धप्रमाणेन द्रव्यं स्थाप्यं प्रयत्नतः। तन्मुखं द्विनलीयंत्रं संस्थाप्यं च निरोधयेत् ॥ १९६ ॥ पश्चान्मंदानलं दत्त्वा जलं दत्त्वोर्ध्वपात्रके । तत्तप्तनलिकाद्वारा निःसार्य च पुनःपुनः ॥ १९७ ॥ नीचस्थनलिकावक्त्रे भांडं स्थाप्यं द्वितीयकम् । तस्मिन्नर्कश्च संधायी गृह्णीयात्तु विशेषतः ॥ १९८ ॥ तेजोयंत्रमिति ख्यातं तथान्यैर्लबकं मतम् ॥ १९९ ॥ (र. रा. सुं.)

अर्थ—एक बासनको लेकर उसमें आधा अर्क खींचने योग्य पदार्थोंको भरे, और उसके मुखपर दो नलीका यंत्र रखकर कपरौटी करै, पीछे मंदाग्नि देकर ऊपरके पात्रमें जलभरे और तपे हुए जलको नालीद्वारा निकाल देवे और दूसरा ताजा पानीभरे फिर नीचेका नलीके नीचे एक दूसरा पात्र रक्खे उसमें खास कर जो अर्क आताहै उसको ग्रहण करै, इसे तेजो यंत्र और कोई कोई लवकयंत्र भी कहतेहैं १९६–१९९

करंबीकयन्त्र ।

इक शीशी तौ गडही करै । तापर शीशी ओंधी धरै ॥ ऊपर काठि कोडरी होय। तासों टोंटी लागै लोय ॥ शंखद्राव तिहि टोंटी वहै । कलविसहू सो कवियतु कहै॥ (रससागर)

वारुणीयन्त्र (शराबका भबका)

ऊर्ध्वतोयसमायुक्तं जलद्रोणीविवर्जितम् । तोयसंवेष्टिताधारमृजुनाडीसमन्वितम् । यन्त्रं तद्वारुणीसंज्ञं सुरासाधनकर्मणि ॥ ॥ २०० ॥ (रसराजसुं०)

अर्थ—यंत्रके ऊपर जल हो और उसके पास जलकी कोठी नहीं हो, जिसकी नली पानीसे भीगीहुई हो तथा जिसकी नाली सूधी या लंबी हो, उसको सुरा (शराव) वनानेके लिये वारुणीयंत्र कहतेहैं ॥ २०० ॥

अन्यच्च ।

बीजद्रव्यं घटे दत्त्वा संछाद्यान्येन तन्मुखम् । मृदा मुखं विलिप्याथ नाडीं वंशादिसंभवाम् ॥२०१॥ यन्त्रादाधारगां कृत्वा

स्रावयेद्विधिना रसम् । वारुणीयन्त्रमेतद्धि सुरासंसाधने सुखम् ॥ २०२ ॥ (र.रा.सुं.)

अर्थ-यह भी एक प्रकारका सामान्य वारुणीयंत्र है-घडेमें बीज द्रव्य (लाहन) को डालकर ऊपरसे घडेके मुखको किसी शकोरेसे बंदकर कपरौटी करै, तथा बाँसकी सूधी नलीको लगाकर दूसरे बासन (जिसमें दारू खींचना हो) में नलीको लगादे और उस पात्रके चारों तरफ जल भर देवे तो अर्क खिंच आवेगा इसको वारुणीयंत्र कहतेहैं ॥ २०१ ॥ २०२ ॥

बकयन्त्र (शीशे का भबका)

दीर्घकण्ठकाचकुप्यां गिलयेत्काचभाण्डकम्। तिर्यक्कृत्वा पचेच्चुल्ल्यां बकयन्त्रमिदं स्मृतम् ॥ २०३ ॥ (र.रा. सुं.)

अर्थ-लंबी गर्दनकी काचकी शीशी लावे उसकी गर्दनको दूसरी काचकी शीशीके मुखमें प्रवेश करै तो उसको बकयंत्र कहतेहैं बडी शीशीको जिसमें द्रव्य भरा हुआहै उसे वालुकायंत्रमें रक्खे और दूसरीको जलमें रक्खे तो द्रव्यमेंसे रस निकल भाफरूप हो ऊपरकी छोटी शीशीमें इकट्ठा हो जाताहै उसको ग्रहण करै इसको बकयंत्र कहतेहैं ॥ २०३ ॥

ठेकीयन्त्र ।

औरो यन्त्र सुनो परवीन । कपरौटी करि शीशी तीन ॥ शीशी एक काखि कोरिये। दूजी नारि तामें मेलिये ॥ वाके मुखतर जो मुख देई । इहिविधि ठेकीयन्त्र करेई ॥ औंधी शीशी गाडी रहै । वह चूल्हेके ऊपर कहै ॥ ठेकीयन्त्र कहै यह जाति । शंखद्राव कीजै इहि भांति ॥ (रससागर)

नलनीयन्त्र ।

शीशीमें दे शीशी दोई । मुखमें मुखदे मूँदे कोई ॥ एकभरी इक रीती करै । भरी जु चूल्हे ऊपर धरै ॥ नलनीयन्त्र भांति इह करौ । और यन्त्र भाषौं तीसरौ ॥ (रससागर.)

गर्भयन्त्र ।

स्थूलभांडस्य गर्भे तु इष्टिकां स्थापयेत्ततः । पात्रं स्थाप्यं चेष्टिकोर्ध्वं द्रव्यं स्थूले च भाण्डके ॥ २०४ ॥ पश्चान्मुखे चान्यभाण्डं घटिकासदृशं ददेत् । संधिलेपं ततः कृत्वा जलं दत्त्वोर्ध्वपावके ॥ २०५ ॥ अग्निं प्रज्वालयेन्मन्दं तप्तं नीरं पुनस्त्यजेत् । पुनः शीतं जलं दत्त्वा तप्तं चेत्तरयजेत्पुनः॥२०६॥ एवं कृते चोर्ध्वभाण्डलग्ने तैलादिकं स्रवेत् । अन्तस्थे सूक्ष्मपात्रे च तच्च ग्राह्यं प्रयत्नतः ॥ २०७ ॥ गर्भयन्त्रमिदं ख्यातं सुगन्ध्यर्कादिसाधने ॥ २०८ ॥ (र.रा.सुं)

अर्थ--एक बडे घडेको चूल्हे पर चढाय उसकी पेंदीमें एक ईटका छोटा टुकडा रक्खे उसपर एक दूसरा छोटा पात्र अथवा चीनीका प्याला रक्खे फिर उसके आसपास औषधि भर देवे तदनंतर उस घडेके मुखपर एक हांडी रख उसमें पानी भर देवे दोनोंके मुखको मुलतानीसे बंद कर उसके नीचे मंदाग्नि जलावे जब जब ऊपरका पानी गर्म होजाय तब तब निकाल देवे और दूसरा शीतल जल भरदेवे इस प्रकार बार बार उष्ण जल निकालता रहे इसप्रकार करनेसे ऊपरके बासनमें जो तैल आदि लगताहै वह बासनमें रक्खे हुए कटोरेमें आ जाताहै उसको ग्रहण करना चाहिये यह गर्भयंत्र सुगंधित अर्क निकालनेके लिये उत्तम है ॥ २०४--२०८ ॥

घटयन्त्र ।

चतुष्प्रस्थजलाधारश्चतुरंगुलिकाननः । घटयन्त्रमिदं प्रोक्तं तदाप्यायनकं स्मृतम् ॥ ॥ २०९ ॥ (र.र.स., र.रा.प.) ।

अर्थ--जिस पात्रमें ४ सेर जल आवे और मुख चार अंगुल ऊंचा तथा चौंडा हो और उसका आकार गोल हो उसको घटयंत्र कहतेहैं और इसका दूसरा नाम आप्यायनयंत्र है ॥ २०९ ॥

स्थालीयन्त्र ।

स्थाल्यां ताम्रादि निक्षिप्य मल्लेनास्यं निरुध्य च । पच्यते स्थालिकाधस्तात्स्थालीयन्त्रमितीरितम् ॥ २१० ॥ (र.र.स.)

अर्थ-स्थाली (बटलोई हांडी इत्यादि) में तांबा आदि पदार्थको रखकर और उसके मुखको मलरेसे ढककर स्थालीके नीचे आंच जलाना चाहिये इसीको स्थालीयंत्र कहतेहैं ॥ २१० ॥

जरूफगिलीमें काच या शीशा भरनेकी तरकीब (उर्दू)

यहहै कि शीशे या काचको वारीक चक्कीमें पीसकर छान ले और दो हिस्से लेकर सुहागा सुनारी साईदमें जो एक हिस्साहो चावलको पछके हमराह मिलाकर मिट्टीके जर्फपर जो खामहो लपेट करके अवहमें कुम्भारोंके बदस्तूर पकावे ख्वाह आतिश तनूरमें हो जिसमें धुआँ निकल गयाहो रखदे ताकि काच मजकूर गुदाज होकर गिलाफकी तरह होजावे तरकीवसानीकी तरह आग देनेसे धूआँ जर्फमें लगकर खराब नहीं होता मिट्टी दिल्लीकी लेनी चाहिये जो बोतः बनानेमें मुतहम्मिल है बाजे सफेदी बैजा मुर्ग या खमीर गन्दुम जो बजाइ चावलके पेचके मिला-

कर अमल करते हैं और बाजे जर्फ सुहागा सुनारीको तनहाजमाद करके मजजिज करतेहैं । (सुफहा ५२ किताब अलजवाहर)

तरकीब बरतन पर चीनी फेरनेकी (उर्दू)

साफ शीशे या काचको बारीक बारीक चक्कीमें पीस-कर छानले और दो हिस्सा लेकर सुहागा सुनारी साईदःमें जो एक हिस्सा हो चावलकी पेच या सफेदी बैजःमुर्गके हमराह मिलाकर मिट्टीके जरूफपर जो खामहो लपेट करके धूपमें खुश्क करले और आतिश तनूरमें जिससे धुआं निकल गयाहो रखदे ताकि काच मजकूर गुदाज होकर गिलाफकी तरह चढ़ जावे और धूआं जरूफमें लगकर खराब न हो आतिश तनूर या भट्टीमें, चूंकि लकडियोंका खर्चा ज्यादह था लिहाजा कुम्हारोंके आवेमें जरूफ मजकूर रख-कर आग दिलवाये लेकिन् इसका नतीजा यह हुआ कि मसाला बिलकुल सोख्त होकर स्याह होगया और इस नाकामीकी वजहसे भट्टीमें शीशा गरके जरूफ मजकूर रख-वाये गये और मुताबिक ख्वाहशके जजाजी होगई कि अब इनमें बेतकल्लुफ अक्स चहरेका नजर आताहै और चिकनी शफ्फाफ और सुथरे हैं इसमें यह अमर खास तौरपर खयाल रखना चाहिये कि जरूफका लगाव जमीन या दीवारसे न हो और जिस जगहपर मजबूरन जमीन वगैरः से लगाव रखना पडे वहांपर किते आत अवरकके बिछा देना चाहिये वरनः जरूफ मजकूर जमीन या दीवारसे मलसिक होकर टूट जावेंगे और बगैर टूटे हुए इस भट्टीसे नहीं निकल सकेंगे लेकिन जिस जगह शीशःगरोंकी भट्टीहैं मुमकिन है वहां बतरीक जैल तनूर बनाकर आतिश तनूर देनेसे भी शीशा चढ सक्ताहै चुनांचि हकीम खलीलुद्दीनखां साहब मरहूम इलाहाबादी इस्तरहसे जजाजी जरूफ महज आसानीके खयालसे कम खर्चमें तैयारकर सकतेथे। चाहिये कि एक मदव्विर दीवार एक हाथ लंबी चौडी बांबीकी तरह बनाकर उसके चारों तरफ चार चार अंगुल सेराख मुहीतमें दीवारके करदे और जरूफ पर बतरीक मज-कूर काच फेर कर उसके अंदर रख दे बादहू एक बालिश्त और छः अंगुल याने पौने दो हाथ कुतरको गोल चारों तरफ और उसमें भी चार चार अंगुलके सूराख करदे इन दोनों दीवारोंके बसेतमें कोयला भरकर ऊपरसे छतकी तरह पाटदे और आग दे मगर आग पुख्तः कोय-लोंकी तेज होना लाजिम है वरनः जरूफ मुखल्लिहोंगे और मसाला सोख्त होजायगा–(सुफहा ७ अखबार अलकीमियाँ १६ । १० । १९०६)

मूषायन्त्र ।

मूषा हि क्रौंचिका प्रोक्ता कुमुदी कर-हाटिका । पाचनी वह्निमित्रा च रसवा-दिभिरिष्यते ॥ २११ ॥ (इति नामानि) मुष्णाति दोषान्मूषा या सा मूषेति निगद्यते ॥ (इति व्युत्पत्तिः) उपादानं भवेत्तस्या मृत्तिकालोहमेव च ॥२१२॥(इति कारणम्) मूषामुखविनिष्क्रांता वरमेकापि काकिणी । दुर्जनप्रणिपातेन धिग्लक्षमपि मानिनाम् ॥ २१३ ॥ मूषापिधानयो-र्बंधे बंधनं संधिलेपनम् । अंधूणं रंध्रणं चैव संश्लिष्टं संधिबंधनम् ॥ २१४ ॥ (र. र. स.)

अर्थ–मूषा (घरिया) क्रौञ्चिका, कुमुदी, करहाटिका, पाचिनी, वह्निमित्रा ये मूषाके नाम रसविद्याके ज्ञाताओंने कहेहैं, जो पदार्थोंके दोषोंको हर लेतीहै उसको मूषा कहतेहैं और उस मूषाका उपादान कारण लोह तथा मिट्टी है अर्थात् मूषा लोह तथा मिट्टीकी बनाई जातीहै. रसायनविद्यासे जीविका करनेवाले वैद्योंको मूषा (घरिया) के मुखसे निकली हुई एक कौडीका मिलना तो अच्छा है परन्तु दुष्ट मनुष्यके नमनेसे लक्ष रुपयेके मिलनेको भी धिक्कार है। दो मूषाओंके योगको बन्धन कहतेहैं और छेदोंको चिकना २ कर बंद करनेको संधिलेप कहतेहैं ॥ २११–२१४ ॥

सम्पुटमान ।

सम्पुटं सूततुल्यं स्याच्छास्त्रदृष्टेण कर्मणा ॥ ॥ २१५ ॥ (र. रत्नाकर.)

अर्थ–रसशास्त्रोक्त कर्मसे पारदके समान सम्पुट होना चाहिये ॥ २१५ ॥

मूषोपयोगी मृत्तिका ।

मृत्तिका पांडुरस्थूला शर्करा शोणपांडुरा । चिराध्मानसहा सा हि मूषार्थमतिशस्यते। तदभावे च वाल्मीकी कौलाली वा समी-र्यते ॥ २१६ ॥ या मृत्तिका दग्धतुषैः शणेन शिखित्रकैर्वा हयलिद्दिना च । लौहेन दंडेन च कुट्टिता सा साधारणा स्यात्खलु मूषिकार्थे ॥ २१७ ॥ श्वेताश्मान-स्तुषा दग्धाः शिखित्राशणखर्परैः । लिद्दि किट्टं कृष्णमृत्स्ना संयोज्या मूषिका मृदा ॥ ॥ २१८ ॥ (र. र. स.)

अर्थ–जो पीली मिट्टी हो अथवा लाल पीले रंगतका रेत हो और अग्निके योगको सहनेवाली हो वही मिट्टी मूषा बना-नेके योग्य होतीहै यदि ऐसी मृत्तिका नहीं मिलसके तो व-ल्मकि अर्थात् बमईकी मिट्टी या कुम्हारकी मिट्टी लेनी चाहि-ये अर्थात् जो मिट्टी तुष भस्म पटसन को ले और घोडोंकी लीद वगैरःको लोहेके हथोडेसे कूटकर बनाई जातीहै वह मू-षाके लिये साधारण मिट्टी होतीहै जिस मिट्टीकी मूषा बनानी हो उसमें सेलखरी जले हुए तुष, कोयले,पटसन,खिपरा, घो-डेकी लीद, लोहकीट, काली मिट्टी इतनी चीजें मिलानी चाहियें ॥२१६-२१८ ॥

मूषादिउपयोगी मिट्टी ।

चिक्कणा पिच्छिली गुर्वी कृष्णा मृत्सर्वपूजिता । पीता वा तद्गुणैर्युक्ता सिकतादिविवर्जिता ॥ २१९ ॥ (शैवालभक्ष, टो.नं.)

अर्थ-जो काली मिट्टी चिकनी और भारी हो वह सर्वोत्तम है या चिकनी तथा भारी पीली मिट्टी हो वह भी उत्तम है और रेतीली वगैरः वर्जित हैं ॥ २१९ ॥

तरीक साख्तन बोतः हिन्दी (उर्दू)

बोतः हिन्दी-वियार गिलकलां नीम आसार-गूगल यकदाम-अंगुष्टदो दाम नमक सांभर यक नीम दाम-पंवः कुहनः या पारचः कुहनः मिकदारी सरगींगावदान दके (सुफहा १२ किताव मुजरवात अकवरी)

तरकीब साख्तन बोतःयूनानी (उर्दू)

बातः यूनानी-गिलेकलां अंगुश्त, नमक सांभर-मूए सर आदमी-मूए बुजवर्ग ताम्बूल-पंवः कुहनः-या पार्चा कुहनः-पोस्तशाली विरियाँ-पोस्तशाली खाम । (सुफहा १२)

तरकीब बोतःमहबसान (उर्दू)

बोतः महवसान गिले कलां मुलतानी खरीवान चारपाई कुहनः भिकराजजर्द अंगुश्त मूए बुज, पंवःकोहनः । (सुफहा १२ किताव मुजरवात अकवरी)

वज्रमूषा ।

द्वौ भागौ तुषदग्धस्य चैका वल्मीकमृत्तिका । लौहकिट्टस्य भागैकं श्वेतपाषाणभागिकम् ॥२२०॥नरकेशं समं पश्च छागीक्षीरेण पेषयेत् । याममात्रं दृढं पश्चात्तेन मूषां प्रकल्पयेत् ॥ २२१ ॥ शोधयित्वा तुं[३] संलिप्य तत्कल्कैः संधिलेपनम् । वज्रमूषेयमाख्याता[४] सम्यक्पारदसाधिका[५] ॥२२२॥ (रसेन्द्र सा. सं.,र. रा. सुं.,र. रत्नाक., टो. नं.)

अर्थ-दो भाग तुष भस्म, एक भाग वल्मीक (वमई) की मिट्टी, एक भाग लोहेकी कीट, एक भाग सेलखरी,एक भाग मनुष्यके वाल इन पाँचोंको एक प्रहर वकरीके दूधसे घोटे फिर उसकी मूषा वनावे उसको घाममें सुखाकर फिर उसी मिट्टीके कल्कसे लहेसे, संधिका लेप करै वस यही पारद मारणके लिये वज्रमूषा कहीहै ॥ २२०-२२२ ॥

१-मुजरवात अकवरी उर्दूमें अंगुश्तकी जगह गुड लिखाहै (देखो सफा १६) इसी कितावमें दूसरे नुसखेमें अंगुश्तकी जगह पुरानी खिश्त ली है (सुफहा १६)

२-मुजरवात अकवरी उर्दूमें अंगुश्तकी जगह पुरानी ईंट और वर्ग ताम्बूलकी जगह पान लिखाहै । (देखो सुफहा १६)

३-रसं क्षिस्वा इत्यपि । ४ मूषा समाख्याता इत्यपि । ५ सूतस्य मारणे इत्यपि ।

अन्यच्च ।

वल्मीकीमृत्तिकाभागं गवास्थितुषभस्मनोः। भागं रसं समादाय वज्रमूषा विरच्यते२२३ (कामरत्न.)

अर्थ-वमईकी मिट्टी एक भाग गायकी हड्डी तथा तुषभस्म एक भागको पानीसे मिलाकर वज्रमूषा वनाई जातीहै॥

वज्रमूषादिउपयोगी मसाले ।

गारा दग्धा तुषं दग्धं दग्धा वल्मीकमृत्तिका । गजाश्वानां मलं दग्धं यावदाकृष्णतां गतम् ॥ २२४ ॥ पाषाणभेदी पत्राणि कृष्णमृत्सा समासमम् । वज्रवल्ल्या द्रवैर्मर्द्य दिनं चापेषयेदृढम् ॥ २२५ ॥ तेन कोष्ठीं बंकनालीं वज्रमूषां च कारयेत् ॥ २२६ ॥ (टो. नं.)

अर्थ-जली हुई गारमूषा, (गारमूषा आगे कही जायगी) तुषभस्म, जलाई हुई वल्मीक (वमई) की मिट्टी तथा जली हुई हाथी घोडेकी लीद (अग्नियोगसे जव ये कृष्ण वर्ण हो जायं तव इनको दग्ध हुआ जानना) पाषाणभेद, सन ये समस्त काली मिट्टीकी वरावर हों इनको वज्रवल्लीके रससे चार पहरतक खूव घोटता रहै और उसीसे कोठीयंत्र वंकनाल वज्रमूषा वनावे ॥ २२४-२२६ ॥

कपरौटीका लक्षण ।

काचकूपी लोहकूपश्चतुष्पंचनवांगुला । सप्तधा लेपिता शुष्का सैव कर्पटमृत्सया ॥ ॥ २२७ ॥ (टो. नं.)

अर्थ-चार अंगुल, पांच अंगुल तथा नौ अंगुल लम्बी काचकी शीशी हो या लोहेकी उसको सातवार लहेसर कर सुखावे वस इसीको कपरौटी कहतेहैं ॥ २२७ ॥

वज्रमूषा (रसबन्धनके लिये) ।

तुषं वस्त्रसमं दग्धं तत्पादांशा तु मृत्तिका । कुर्यात्पाषाणपादांशं वज्रवल्ह्या द्रवैर्दिनम्॥ ॥ २२८ ॥ मर्दयेत्कारयेन्मूषां वज्राख्यं रसबन्धने ॥ २२९ ॥ (टो. नं.)

अर्थ-तुषभस्म एक भाग, पुराना कपडा एक भाग,काली मिट्टी अर्द्धभाग और चौथाई सेलखरीका वज्रवल्ली के रससे चार प्रहर घोटे और उसीसे पारद वंधनके वास्ते वज्रमूषा वनावे ॥ २२८ ॥ २२९ ॥

वज्रमूषाविवरण (सत्त्वपातनके लिये)

मृदस्थिभागः शणलद्विभागौ भागश्च निर्दग्धतुषोपलादेः । किट्टार्धभागं परिखण्ड्य वज्रमूषां विदध्यात्खलु सत्त्वपाते ॥२३०॥ (र. र. स.)

अर्थ–तीन भाग काली मिट्टी, एक भाग पटसन, एक भाग लीद, एक भाग तुषभस्म, एक भाग सेलखरी, आधा भाग लोहेकी कीट इन सबको खूब कूटकर सत्त्वपातनके लिये मूषा बनावे ॥ २३० ॥

योगमूषा।

दग्धांगारतुषोपेता मृत्स्ना वल्मीकमृत्तिका। तत्तद्बिडसमायुक्ता तत्तद्बिडविलेपिता ॥ ॥ २३१ ॥ तया या पिहिता मूषा योगमूषेति कथ्यते। अनया साधितः सूतो जायते गुणवत्तरः ॥ २३२ ॥ (र. र. स.)

अर्थ–कोयले, तुषभस्म, बमईकी मिट्टी तथा जिनसे सूत जारण होताहै उन उन बिडोंसे युक्तकर मूषा बनावे और उन्हीं बिडोंसे मूषाको ल्हेस देवे तो उसको योगमूषा कहतेहैं इससे सिद्ध किया हुआ पारद अधिक गुणवाला होताहै ॥ २३१ ॥ २३२ ॥

क्रौंचिकाविवरण।

गारभूनागधौताभ्यां शणैर्दग्धतुषैरपि॥समैः समा च मूषा मृन्महिषीदुग्धमर्दिता ॥२३३॥ क्रौंचिका यंत्रमात्रं हि बहुधा परिकीर्तिता ॥ तया विरचिता मूषा वज्रद्रावणकोचिता ॥ २३४ ॥ (र. र. स.)

अर्थ–नाले, तालाव और दंदल प्रभृति स्थानोंकी चिकनी मिट्टी और केंचुओंकी मिट्टी (जो कि केंचुवोंको दबानेसे मिट्टी निकलतीहै) इन दोनोंकी बराबर सन और धानोंके तुषोंकी राख लेकर भैंसके दूधसे घोटे फिर उसकी यंत्रानुसार मूषा बनावे तो इससे हीरा भी गल जाताहै२३३॥२३४

गारमूषा।

दुग्धषड्गुणगाराढ्या किट्टाङ्गारशणान्विता॥ कृष्णमृद्भिः कृता मूषा गारमूषेत्युदाहृता ॥ २३५ ॥ यामयुग्मपरिध्मानान्नासौ द्रवति वह्निना ॥ (र. र. स.)

अर्थ–लोहेका कीट, कोयले और सन इनसे छः गुने (जो कि बरसातका जल किसी नदी, नाले, तालाव और दंदलमें जमा होकर जाताहै उसमें जो मिट्टी नीचे जमतीहै उसको गार कहतेहैं) लेकर कूटे और उसमें कार्योपयोगी चिकनी मिट्टी मिलाकर मूषा बनावे उसे गारमूषा कहतेहैं वह दो प्रहर तक अग्निको सहन करती है२३५॥

वरमूषाविवरण।

वज्राङ्गारतुषास्तुल्यास्तच्चतुर्गुणमृत्तिका ॥ गारा च मृत्तिका तुल्या सर्वैरेतैर्विनिर्मिता ॥ २३६ ॥ वरमूषेति निर्दिष्टा याममग्निं सहेत या ॥ २३७ ॥ (र. र. स.)

अर्थ–थूहरके कोयले धानके तुषोंकी राख इन दोनोंसे चौगुनी चिकनी मिट्टी और मिट्टीकी बराबर गारा इन सबको मिलाकर मूषा बनावे उसको वरमूषा कहतेहैं, वह एक प्रहरतक अग्नि सहन कर सकतीहै ॥ २३६ ॥ २३७ ॥

वर्णमूषाविवरण।

पाषाणरहिता रक्ता रक्तवर्णानुसाधिता ॥ मृत्स्नया साधिता मूषा क्षितिखेचरलेपिता ॥ २३८ ॥ वर्णमूषेति सा प्रोक्ता वर्णोत्कर्षे नियुज्यते ॥ २३९ ॥ (र. र. स.)

अर्थ–विना कंकरकी मिट्टीको कसूम, खैरसार, लाख, मजीठ, रतनजोत, लालचंदन, गुलदुपहरिया और कपूर कचरी इनके क्वाथ तथा रससे एक तथा दो दिन तक घोट मूषा बनावै और उसके सूखने पर सुहागेका लेप कर अग्निमें पकावे उसे वर्णमूषा कहतेहैं जब किसी धातुका उत्तम वर्ण करना हो तब इस मूषाका प्रयोग करना चाहिये २३८॥२३९

रूप्यमूषाविवरण।

एवं हि श्वेतवर्गेण रूप्यमूषा समीरिता ॥ ॥ २४० ॥ (र. र. स.)

अर्थ–इसीप्रकार श्वेतवर्ग तगर, कुडाकीछाल, कुन्द, सफेदचौंटनी, जीवन्ती और सफेद कमलकी जड इनके क्वाथ और रससे जो मूषा बनतीहै उसे रूप्यमूषा कहतेहैं (इससे ज्ञात होताहै कि वर्णमूषाका नाम सुवर्णमूषा है) ॥ २४० ॥

बिडमूषाविवरण।

तत्तद्भेदमृदोद्भूता तत्तद्बिडविलेपिता॥देहलोहार्थयोगार्थं बिडमूषेत्युदाहृता ॥ २४१॥ (र. र. स.)

अर्थ–जिस पृथ्वीमें जिस प्रकारका लवण हो उसकी मिट्टी मिट्टीसे बनीहुई हो और उसी बिडसे लिपी हुई हो इसमें वह पदार्थ सिद्ध करना चाहिये जो कि शरीरको लोहेके समान दृढ करता हो इसको बिडमूषा कहतेहैं ॥ २४१ ॥

तारशोधनभस्ममूषा।

तिलभस्मद्विभागं स्यादेकांशा च तथेष्टका। तत्कृता भस्ममूषैषा तारसंशोधने हिता ॥ ॥ २४२ ॥ (टो. नं.)

अर्थ–एक भाग ईंटका चूरा, दो भाग तिलभस्म इनसे बनी हुई मूषाको भस्ममूषा कहतेहैं यह मूषा चांदीकी शुद्धि करनेके लिये उत्तमहै ॥२४२॥

वृन्ताकमूषाविवरण।

वृन्ताकाकारमूषायां नालं द्वादशकांगुलम्। धत्तूरपुष्पवच्चोर्ध्वं सुदृढं श्लिष्टपुष्पवत् २४३॥ अष्टांगुलं च सच्छिद्रं सा स्याद्वृन्ताकमूषिका। अनया खर्परादीनां मृदूनां सत्त्वमाहरेत् ॥ २४४ ॥ (र. र. स.)

अर्थ–धतूरेके फूलके समान ऊंची तथा झुकडे हुए धतूरेके फूलके समान दृढ आठ तथा बारह अंगुल नालवाली जो मूषा होतीहै उसको वृन्ताक मूषाकहतेहैं इस मूषासे कोमल खर्पर आदि रसादिकके सत्त्वको निकालतेहैं॥२४३॥२४४॥

गोस्तनीमूषाविवरण ।

मूषा या गोस्तनाकारा शिखायुक्तपिधानिका । सत्त्वानां द्रावणे शुद्धौ मूषा सा गोस्तनी भवेत् ॥ २४५ ॥ (र. र. स.)

अर्थ–जो मूषा गौके स्तनके आकारवाली तथा जिसका ढकना चोटीदार हो वह गोस्तनी नामकी मूषा सत्त्वोंके पातन तथा शुद्धिमें उत्तमहै ॥ २४५॥

मल्लमूषाविवरण ।

अथ मूषा च कर्तव्या सुरभिस्तनसन्निभा । पिधानकसमायुक्ता किंचिदुन्नतमस्तका २४६ निर्दिष्टा मल्लमूषा सा मल्लद्वितयसंपुटात् । पर्पट्यादिरसादीनां स्वेदनाय प्रकीर्तिता ॥ ॥ २४७ ॥ (टो. नं.)

अर्थ–दो मलरा लेवे उनमें से एकके ऊपर मिट्टी लगा लगा कर गौके स्तनके आकारकी मूषा बनावे तथा जिसका कुछ ऊपरका भाग उठा हुआ हो ऐसा ढकना हो उसको मल्ल मूषा कहतेहैं इसका मल्लमूषा नाम रखनेका कारण यह है कि यह मूषा दो मलरोंके योगसे बनतीहै-वह पर्पटीआदि रसोंके स्वेदनके लिये श्रेष्ठ है ॥ २४६ ॥२४७ ॥

पक्वमूषाविवरण ।

कुलालभांडरूपा या दृढा च परिपाचिता । पक्वमूषेति सा प्रोक्ता पोटल्यादिविपाचने ॥ २४८ ॥ (र. र. स.)

अर्थ–कुम्हारके बासनके समान आकारकी जो दृढ पकाई गई है वह पोटली आदि पदार्थोंके निमित्त पक्वमूषा कही जाती है॥ २४८ ॥

अन्यच्च ।

कुलालभांडरूपा या दृढा च परिपाचिता । पक्वमूषेति संप्रोक्ता सा सर्वत्र विपाचने ॥ सैव क्षुद्रा मता मंदा गंभीरा सारणोचिता ॥ २४९ ॥ (टो. नं.)

अर्थ--जो कुम्हारके बासनकी सदृश आकृतिवाली और दृढ पकाई हुईहो उसको समस्त पदार्थोंके सिद्ध करनेके लिये पक्वमूषा कहतेहैं और वही मूषा छोटी और गहरी हो तो सारणके योग्य होती है ॥ २४९ ॥

गोलमूषाविवरण ।

निर्वक्त्रगोलकाकारा पुटनद्रव्यगर्भिणी । गोलमूषेति सा प्रोक्ता सत्वरद्रवरोधिनी ॥ ॥ २५० ॥ (र. र. स.)

अर्थ--संपुटमें द्रव्य रखकर ऊपरसे मुख रहित जो गोल आकार बनाया जाताहै उसको गोलमूषा कहतेहैं इसमें पदार्थ शीघ्रही बंद होजाताहै ॥ २५० ॥

महामूषाविवरण ।

तले या कूर्पराकारा क्रमादुपरिविस्तृता ॥ स्थूलवृन्ताकवत्स्थूला महामूषेत्यसौ स्मृता॥ ॥ २५१ ॥ (र. र. स.)

अर्थ--जो मूषा पेंदीमें कछुवेके समान चपटी तथा ऊपरको धीरे २ फैलती हुई हो और मोटे बैंगनके समान मोटी हो उसको महामूषा कहतेहैं ॥ २५१ ॥

मंडूकमूषाविवरण ।

सा चायोऽभ्रकसत्त्वादेः पुटाय द्रावणाय च ॥ मंडूकाकारमूषा या निम्नतायामविस्तरा ॥ २५२ ॥ षडंगुलप्रमाणेन मूषा मंडूकसंज्ञका ॥ भूमौ निखन्य तां मूषां दद्यात्पुटमथोपरि ॥ २५३ ॥ (र. र. स.)

अर्थ–जिसका गहराईमें विस्तार न हो तथा छः अंगुल जिसका प्रमाण हो ऐसी जो मूषा बनाई जातीहै उसको मंडूकमूषा कहतेहैं उस मूषाको धरतीमें गड्ढा खोदकर स्थापित करे ऊपरसे अग्नि जलावे तो वह मंडूक मूषा लोह तथा अभ्रकसत्त्वादिकोंके पुटके वास्ते या गलानेके वास्ते उत्तम है ॥ २५२ ॥ २५३ ॥

मुसलाख्यमूषाविवरण ।

मूषा या चिपिटा मूले वर्तुलाष्टांगुलोच्छ्रया॥ मूषा सा मुसलाख्या स्याच्चक्रिबद्धरसे हिता ॥ २५४ ॥ (र. र. स.)

अर्थ–जो मूषा जडमें चिपटी हो तथा ऊपरसे आठ अंगुल ऊंची और गोल हो वह मुसलाख्य नामवाली मूषा चक्रिबद्ध पारदके निर्माणार्थ उत्तम है ॥ २५४ ॥

रसनिगड ।

स्नुह्यर्कसम्भवं क्षीरं ब्रह्मबीजं च गुग्गुलुः ॥ सैन्धवं द्विगुणं मर्द्य निगडोयं महोत्तमः ॥ ॥ २५५ ॥ (रसेन्द्र सा. सं., र. चिं.)

अर्थ--थूहरका दूध, आकका दूध, ढाकके बीज, गूगल, और सेंधा नोंन इन सबको मिलाकर पारदसे दूना लेवे फिर मर्दन करे तो यह उत्तम निगड बनताहै ॥ २५५ ॥

निगडबनानेकी तरकीब (उर्दू)

गूगल, टेसूके बीज; और इन दोनोंके बराबर नमक सेंधा सबको थूहर और आकके दूधमें खरल करले इसको बडा निगड कहते हैं जिस घरियापर इसका लेप होगा उसमेंसे पारा न उडेगा । (सुफ्हाखजाना कीमिया-१६)

रसनिगड ।

स्नुह्यर्कसंभवं क्षीरं ब्रह्मबीजानि गुग्गुलुः ॥

सैंधवं द्विगुणं दत्त्वा मूषामध्ये रसं क्षिपेत्॥ ॥ २५६ ॥ मूषालेपे प्रदातव्यं दग्धशंखादिचूर्णकम् ॥ मूषां तस्य दृढं बद्धा लोहमृत्तिकया पुनः ॥ २५७ ॥ कारयेच्च सुधालेपं छायाशुष्कं च कारयेत् ॥ ह्युक्तो निगडबंधोयं पुत्रस्यापि न कथ्यते ॥२५८॥ (टो.न.)

अर्थ–थूहर तथा आकका दूध, ढाकके बीज, गूगल और सेंधानोन इन सबको पारदसे दूना लेकर मर्दन करे उस निगड तथा पारदको मूषामें रक्खे मूषाके लेपके लिये चूने आदिका प्रयोग करना चाहिये और लोहेके मैलसे पारदकी मूषाको दृढ बंदकर फिर चूनेका लेपकर छायामें सुखावे इस निगडबंधकी क्रियाको अपने पुत्रको भी नहीं कहना चाहिये ॥ २५६—२५८ ॥

अन्यच्च ।

स्नुह्यर्कसंभवं क्षीरं ब्रह्मबीजानि गुग्गुलुः॥ सैन्धवं द्विगुणं दत्त्वा मर्दयित्वा विचक्षणः ॥ २५९ ॥ पिष्टवेष्टनकं कृत्वा कल्केनानेन सुंदरि ॥ बिल्वप्रमाणां कुरुते मूषामतिदृढां शुभाम् ॥२६०॥ ऊर्ध्वाधो लवणं दत्त्वा मूषामध्ये रसं क्षिपेत् । मूषालेपं प्रदातव्यं दग्धशंखादिचूर्णकम्॥२६१॥मूषां तस्य दृढां बद्धा लोणमृत्तिकया पुनः। कारयेच्च सुधालेपं छायाशुष्कं तु कारयेत् ॥ २६२ ॥ तुषकरीषाग्निना भूमौ मृदुस्वेदं तु कारयेत् । अहोरात्रं त्रिरात्रं वा पुटं दत्त्वा प्रयत्नतः॥ ॥ २६३ ॥ एवं मूषा महेशानि रसस्य खोटतां नयेत् । शोध्यतां खदिरांगारै रसेन्द्रं खोटतां नयेत् । उक्तो निगडबन्धोयं पुत्रस्यापि न कथ्यते ॥ २६४ ॥ (नि.र.)

अर्थ–थूहर तथा आकका दूध, ढाकके बीज, गूगल और पारदकी अपेक्षा दूना सेंधा नोन मिलाकर मर्दन करे और हे प्यारी पार्वती ! इसी कल्कसे मूषाके बाहर लेप करे मूषा बेलके समान लंबी चौडी और दृढ होनी चाहिये । ऊपर और नीचे नोंन लगाकर घरियामें पारदको रक्खे और जलाये हुए शंखादिकके चूनेसे मूषापर लेप करना चाहिये पारदकी मूषाको नोंन और मिट्टीसे दृढ बांध कर अर्थात् लीप कर फिर चूनेका लेप करे और सुखावे तदनंतर तुषा तथा कर्सोकी आंचसे पृथ्वीपर दिनरात या तीन दिन कुक्कुट पुट देकर यत्नपूर्वक कोमल स्वेदन करे, हे पार्वती ! इस प्रकार मूषा पारदको खोट बनातीहै कि जब उसपर खैरके कोयले गलाये जायँ वह कहा हुआ निगडबंध पुत्रको भी न कहना चाहिये ॥ २५९--२६४ ॥

अन्यच्च ।

स्नुह्यर्कसम्भवं क्षीरं ब्रह्मबीजानि कोकिला। कनकस्य तु बीजानि लोहाष्टांशेन मर्दयेत् ॥ २६५ ॥ लवणं टंकणं क्षारं शिलातालकगन्धकम् । तथाम्लवेतसं ताप्यं हिंगुलं समभागकम् ॥ २६६ ॥ स्नुह्यर्कपयसा युक्तं पेषितं निगलोत्तमम् । पिष्टिका वेष्टयेच्चानेनैकेन निगलेन तु ॥ ॥ २६७ ॥ तेषां मूषागतं पक्कं खोटं कृत्वा तु वेधयेत् ॥ २६८ ॥ (नि. र.)

अर्थ–थूहरका दूध, आकका दूध, ढाकके बीज, कोयल, और धतूरेके बीज इनको अष्टमांश लोहेके साथ मर्दन करे फिर नोंन, सुहागा, यवक्षार, मैनसिल, हरताल, गंधक, अमलवेत, सोनामक्खी, और सिंग्रफको थूहर तथा आकके दूधसे घोटे तो यह उत्तम बनताहै । इस एकही निगडसे पारदकी पिष्टीको लपेटे और उनसे बनाई हुईमें रख परिपाक करे तो पारद खोट होताहै ॥ २६५–२६८ ॥

अन्यच्च ।

पलाशबीजं निर्यासं कोकिलोन्मत्तवारिणा। शूलिनीरससंयुक्तं पेषयेत्सैन्धवान्वितम् ॥ ॥ २६९ ॥ पिष्टकावेष्टनं कृत्वा निगडेन तु बन्धयेत् । मूषायां निगडे देवि लेपितं शिवशासनात् । रसस्य परिणामोयं महदग्नौ स्थिरो भवेत् ॥ २७० ॥ (नि.र.)

अर्थ–ढाकके बीज, ढाकका गोंद, कोयल और सेंधा नोंनको धतूरेके रस और शूलिनी (हींग) के रससे मर्दन करे और इसी निगडसे पारेकी पिष्टीको लपेट कर निगडयुक्त मूषामें बंद करे और मूषामें उसी निगडका लेपभी करे तो श्रीशिवजीकी आज्ञासे पारदका यह परिणाम होताहै कि वह पारद अग्निस्थायी हो जाताहै ॥ २६९ ॥ २७० ॥

अन्यच्च ।

द्वितीयं निगडं वक्ष्ये पिष्टिकास्तंभमुत्तमम् । द्विपदीरसमूत्रेण सैंधवाभ्रं च गुग्गुलुम् ॥ २७१ ॥ पिष्टिं संवेष्टय कल्केन मृदा तु पुनरष्टधा । तुषीकरीषाग्निना भूमौ मृदुस्वेदं तु कारयेत । अहोरात्रं त्रिरात्रं वा पूर्ववत्खोटतां व्रजेत ॥ २७२ ॥ (नि.र.)

अर्थ–अब मैं दूसरे निगडको कहताहूं जिससे कि पारदकी पिष्टीका उत्तम रूपसे बन्धन होताहै । सैंधव, अभ्रक तथा गूगलको बनबेरियाके रससे अथवा गोमूत्रसे घोटकर उस कल्कसे पारदकी पिष्टीपर लेप कर फिर मिट्टीसे आठबार लेप करे तदनंतर उस गोलेको भूधरयंत्रमें रखकर कर्सीकी आंचसे दिनरात या तीन दिनतक मृदु स्वेदन करे तो पारद खोट होताहै ॥ २७१ ॥ २७२ ॥

अन्यच्च ।

वाकुची ब्रह्मबीजानि गगनं विमला मणिः। सौवर्चलं सैंधवं च टंकणं गुग्गुलं तथा ॥ ॥ २७३ ॥ द्विपदीरजसा मूत्रं सुधान्तं च प्रमर्दयेत् । पिष्टीं संवेष्टच कल्केन पूर्ववत्खोटतां नयेत् ॥ २७४ ॥ (नि.र.)

अर्थ-बावची, ढाकके बीज, अभ्रक, सोनामक्खी, मोती, स्याहनोंन, सैंधव, सुहागा और चूना इनको स्त्रीके रजसे तथा गोमूत्रसे मर्दन करे फिर उसी कल्कसे पारदकी पिष्टीको लपेटकर पूर्वोक्त प्रक्रियासे मृदुस्वेदन करे तो पारद खोट होताहै ॥ २७३ ॥ २७४ ॥

अन्यच्च ।

अभ्रकं शतपत्रेण वज्रार्कक्षीरसीधुना । तापेन लोहकीटेन सिकतामृन्मयेन च ॥ ॥ २७५ ॥ एतैस्तु निगलैर्बद्धः पारदीयो महारसः। नातिक्रामति मर्यादां वेलामिव महोदधिः ॥ २७६ ॥ (नि.र.)

अर्थ-अभ्रकको कमलके रससे, थूहर और आकके दूधसे, कांजीसे, सोनामक्खीसे, लोहेकी कीटसे भस्म करे उससे बद्धहुआ पारद जिस प्रकार समुद्र अपनी मर्यादाको नहीं छोडता है उसी प्रकार अपनी जगहको नहीं छोडताहै अर्थात् उडता नहींहै ॥ २७५ ॥ २७६ ॥

निगडबनानेकी तरकीब (उर्दू.)

अबरक, नमक सेंधा, सोनामक्खी, वालूरेत, लोहेका मैल इनको आक और थूहरके दूधमें एक पहर खूब खरल करके रखले इसमेंसे भी पारा नहीं उड सकता (सुफहा खजाना कीमियाँ १६)

अन्यच्च ।

तैलार्कक्षीरवाराहीलांगल्या निगलोत्तमम् ॥ २७७ ॥ (नि.र.)

अर्थ-तिल, बाराहीकंद, लांगली, (कलिहारी या जलपीपल) को आकके दूधसे बांटे तो उत्तम निगड होताहै २७७

अन्यच्च ।

काकविड्ब्रह्मबीजानि कुक्कुटास्थीनि सुन्दरि । सामुद्रं सावरं चैव लवणं निगलोत्तमम् ॥ २७८ ॥(नि.र.)

अर्थ-कौवेकी बीट, ढाकके बीज मुर्गीके अंडोंकी सफेदी, समुद्रनोन साम्हर तथा सैंधवको घोटकर रखले तो उसका उत्तम निगड बनताहै ॥ २७८ ॥

अन्यच्च ।

स्वर्णभागं भवेदेकं द्विगुणं मृतभास्करम् । रसकं पञ्च भागाश्च षष्ठभागा निधौतमृत् ॥ ॥ २७९ ॥ आटरूषजले पिष्ट्वा संपुटं तेन कारयेत् । मूषां च रचयेत्सत्यं रसस्य निगडो भवेत् ॥ २८० ॥ वह्निमध्ये न गच्छेत पक्षच्छेदीव तिष्ठति । काचकूपी द्वितीयश्च तृतीयो लोहसंपुटः ॥ २८१ ॥ (टो.नं.)

अर्थ-एक भाग सोना, दो भाग ताम्रभस्म, पांच भाग रसक (रसखपरिया) और छः भाग धुली हुई मिट्टीको अडूसेके रसमें पीसकर उसका संपुट बनावे फिर उस मूषामें पारदको स्वेदन करे तो रसका निगड होताहै और वह पारद अग्निमें उडता नहींहै और परकटे हुएकी तरह रहताहै प्रथम मूषा द्वितीय काचकूपी (शीशी) और तीसरा लोहसंपुट करना चाहिये यह निगडयंत्र. कहाताहै ॥ २७९-२८१ ॥

अन्यच्च ।

सोना एक भाग, तांबा फूँका हुआ दो भाग, रसक पांच भाग, मुल्तानी छः भाग, सबको अडूसेके रसमें खरल करके घरिया बनाले इसमेंसे पारा उडता नहीं उसको निगड कहतेहैं ॥ (खजाना कीमियां.)

सर्व आग्नेयका निगड ।

सुंदररस, नीलाथोथा, मुश्ककपूर, सफेदा काशगरी यह चीज समभाग कुआरगंदलके रसमें खरल कर जिसपर लेप करके अग्निमें रक्खोगे सो सम (बराबर) वजन अग्नि सह होवेगा ॥ लेप तोले पर तोला तीन लेप करने एक सूखे तो दूसरा लेप तीन बेरमें सम वजन लेप करना ॥ (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

निगडबंध ।

शिका १०, लोहमयल १० तोले, पुराना गुड ५ तोले, गूंद दोवेवाली ५ तोले, सिकाते लोहा दोनोंको चूर्ण करना महीन करके रख छोडना । गुडते गूंद दोनोंको कडछी बिच पाके डालना, जब इकजान होजावे तब वह दोनों पादेणे पाके गोला बणाके कुट्टणा । निगडबंधोयं वरः ॥ (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

सर्वआग्नेयका निगड ।

शरपुंखकी खार, बणाकर शोरेके साथ रलाकर आग देणी शोरा सम वजन अग्नि सह निकलेगा उस शोरेको जिसके हेठ ऊपर देके आग दोगे सो अग्नि सह होवेगा॥ (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

मदनमुद्रा ।

सिक्यमाढकमादाय तत्षोडशगुणे जले । प्रक्षिप्यावर्तयेल्लोहे कटाहे चंडवह्निना २८२ यावत्तिष्ठेत्तदुपरि जलमंगुलपंचकम् । ततोन्यत्क्वथ्यमानं तु जलं तत्र गतं क्षिपेत्२८३॥ एवं पुनःपुनः कुर्याद्यावत्तज्जायते घनम् । मुद्रायोग्यमतिस्वल्पं गृह्णीयात्तत्प्रयत्नतः ॥ ॥ २८४ ॥ तेन मुद्रा विधातव्या जलयंत्रस्य साधकैः। न भिद्यते जलैरेषा वर्षेणापि कदाचन ॥ २८५ ॥ (बृ. योगतं.)

अर्थ–चार सेर मोमको सोलहगुने अर्थात् चौसठ सेर जलमें डालकर लोहेके कढावमें तेज अग्निसे औटावे जब उसके ऊपर पांच अंगुल जल बाकी रहे तब फिर और औटे हुए जलको ऊपरसे डाल देवे इस प्रकार बारंबार मोमके कठिन होने पर्यंत जल डालता रहे जब वह घन (कठिन) हो जाय तब मुद्रा देने योग्य अत्यंत स्वल्प उस मोमको लेकर उसके साधकजनोंको जलयंत्रकी मुद्रा करनी चाहिये यह ऐसी मुद्राहै कि एक वर्षमें भी जलमें नष्ट नहीं होती ॥ २८२–२८५ ॥

अन्यच्च ।

एककराही ऐसी लेई । तामें नीर कलश द्वै देई ॥ तापर मैनटकोरा धरै । तातर आगि बहुतसी बरै ॥ आठ पहर जो आग करेई । निघटै पानी तामें देई॥मैनटकोरा उत्तम होई । दसयें अंश बैठि है सोई ॥ तहतर लगै सुलीजो लोई । एक जु मैन ऐसी विधि होई ॥ (रससागर.)

अन्यच्च ।

ले पल पांच अलसिया तेल । मैनटकोरा द्वै पल मेल ॥ मैनकराही एसि पचाई । जैसे नहीं तेल बरिजाई ॥ मंदी आगि पहर दै चारि। होय मैन ता करछी टारि॥ जब जब चाहे मुद्रा कियो । तब तब नेक आंच धर लियो॥दुर्लभ मैन सकल संसार। प्रगट करै कहि सैद पहार ॥ मिथ्याकै जिन जानो गुनी । गुरुप्रसादते साँची भनी ॥ (रससागर.)

अन्यच्च ।

मैनटकोरा लीजै छानि । चूनो छिपका जयि बानि ॥ तबे लाख चावरी लेई । तीनो समकै जोखि करेई ॥ मेन चावरी कुहँडा धरै । तरहर आगि अलपसी करै॥ पिघल जाइ दोऊ छिन मांह । चूनो माह मिलै जै ताह ॥ चूनो मिलै जु मुद्रा करै। पुनि तेही छिन चूल्हे धरै ॥ पानी मेलि देइ ता आगि। नृपजनकी लागी ता भागि॥ (रससागर.)

अन्यच्च ।

औदुम्बरार्कवटदुग्धपलं पलं च लाक्षापलं पलचतुष्टयभूर्जपत्रम् ॥ संकुट्य सर्वमतसीफलतैलमिश्रं श्रीपारदस्य मरणे मदनाख्यमुद्रा ॥ २८६ ॥ (यो. चिं., र. रा. सुं.)

अर्थ–गूलरका दूध एक पल, आकका दूध एक पल, बडका दूध एक पल, लाख एक पल और भोजपत्र चार पल इन सबको अलसीके तेलमें मिलाकर कूटे तो पारद मारणके लिये उत्तम मदनाख्य मुद्रा होती है ॥ २८६ ॥

विचार–रसराज पद्धतिमें भोजपत्रकी जगह चुंबक लोहका गेरना लिखा है सो भी ठींक है क्योंकि इसीके आगेके श्लोकमें या भाषाके भी किसी किसी ग्रंथमें चुंबकका ग्रहण है

अन्यच्च ।

दूजो मैन सुनो रे लोई । औटि छानिकै लीजो कोई ॥ जोखै मैन होइ पल पांच । पाउ पाउ पल औषध सांच ॥ भोजपत्र पुनि चुंबक लेई । बांटि छानि ताहीमें देई ॥ पुनि वटदूध लेइ पल एक । औटि मिलैजे यहै विवेक ॥ पुनि अहिरन घन कूटे इसे । एक प्रहर जो जाने जिसे॥ इहि विधि छीर सात पुट देय । ऐसे मैनसिद्धि करि लेइ ॥ (रससागर.)

अन्यच्च ।

नागेन्द्र[1]सिक्थकमयोमलसर्जकाभिर्लाक्षा च चुम्बकमधूफलभूर्जपत्रम् ॥ संकुट्यमानमतसीफलतैलमिश्रं श्रीपारदस्य मरणे मदनाख्यमुद्रा ॥ २८७ ॥ (यो. चिं.)

अर्थ–नागेश्वर, लोहेका मैल, राल, लाख, चुम्बक, मधुफल और भोजपत्र इन सबको अलसोके तैलमें मिलाकर कूटे तो पारद मारणके लिये उत्तम मदनमुद्रा बनतीहै ॥ २८७॥

अन्यच्च ।

संजानितं सिक्थकिट्टं पलं शुभ्रोपलं पलम्। पलं सर्जरसं तैलेऽतसीजे भर्जयेत्त्रयम्२८८॥ भूर्जपत्ररजस्तत्र लोहकिट्टरजस्तथा । पृथक् षट् शाणतुलितं प्रक्षिपेत्सर्वमेकतः ॥२८९॥

---

१ यहां नागेन्द्र शब्दसे सीसेका बना हुआ सिंदूर लेना चाहिये ।

वज्रीक्षीरेण संमर्द्य गाढं तन्मदनोपमम् । मुद्रेयं मदनाख्या च जलयंत्रार्थमीरिता ॥ ॥ २९० ॥ (बृ. यो.)

अर्थ-जले हुये मोमकी कीट एक पल,सेलखरी एक पल, राल एकपल इन तीनोंको अलसीके तेलमें भूने फिर उसमें भोजपत्रका चूरा और लोहका चूरा ये पृथक् पृथक् दो दो तोले मिलावे तदनंतर इन सबको थूहरके दूधसे मोमके समान घोटे तो यह मदनाख्य मुद्राकी मुद्रा जलयंत्रके लिये उत्तम कहीहै ॥ २८८-२९० ॥

अन्यच्च ।

लोहचूर्ण २ तोले, चीनीमिट्टी २ तोले, पीपलकी लाख ५ तोले, आकका दूध ५ तोले, बोढका दूध ५ तोले, शूलरका दूध ५ तोले, कूटणा४ प्रहर वा जबतक सिक्थो पम होवे ॥ (जंबूसे प्राप्त पुस्तक) ।

अन्यच्च ।

षड्विंशभागलवणं चतुर्विंशतिरभ्रकम् ॥ शुक्तिर्द्वादश भागा च गृहीत्वैतद्भिषग्वरः॥ ॥ २९१ ॥ एतत्रयं जारयित्वा खोटबद्धं तु कारयेत् ॥ तत्खोटं पंचपलिकं द्विगुणं छागमांसकम् ॥ २९२॥ एतद्द्वयं भर्जयेत्तद्लसीतैलमध्यगम्॥ विधिना भर्जयेत्तावद्यावत्स्याद्गुडपाकवत् ॥२९३॥ पश्चादपरालस्य चूर्णं पंचपलान्वितम्॥ वज्रिक्षीरं दशपलं त्रयं सम्यक् प्रमर्दयेत ॥ २९४ ॥ तावल्लोहघनैः कृत्वा यावत्सिक्थकसन्निभम् ॥ एषा मदनमुद्रा च कथिता रसवादिभिः॥ ॥ २९५ ॥ (बृ. यो.)

अर्थ--नोन छब्बीस भाग, अभ्रक चौवीस भाग, सीप बारह भाग लेकर श्रेष्ठ वैद्य इन तीनोंको जलाकर खोट बद्ध करे वह खोट ५ पल, बकरेका मांस दस पल इन दोनोंको अलसीके तैलमें तबतक भूनता रहे कि जबतक उनकी चाशनी गुडके समान हो । फिर पांच पल रालका चूर्ण मिलाकर थूहरका दूध दस पल लेकर तीनोंको घोटे और लोहेके घन (हथोड़े) से ऐसा कूटे कि वह कूटते २ मोमके समान हो जावे बस इसी मुद्राको रस वादियोंने मदनमुद्रा कहीहै ॥ २९१—२९५ ॥

अन्यच्च ।

लोहसिंहाणजं चूर्णं पटगं कुडवद्वयम् ॥ लवणं तच्चतुर्थांशं तत्तुर्यांशं च सिक्थकम् ॥ ॥ २९६ ॥ दृढं छागयकृत्खंडरुधिरेण प्रमर्दितम् ॥ कालसीकरसेनैव लेपः स्याद्यंत्रसंधिके ॥ २९७ ॥ जलाग्नियोगतो नेयं भिद्यते मदनाभिधा ॥ मुद्रेयं वारियंत्रस्य कथिता रसवेदिभिः ॥ २९८ ॥ (बृ. यो.)

अर्थ-कपडछान किया हुआ लोहेके मैल का चूरा एक पाव, नोन एक छटांक और मोम सवा तोला इनको बकरेके जिगरके रक्तसे दृढ मर्दन करे फिर अलसीके रससे संधिपर लेप करे तो रस वादियोंने इसको मदनमुद्रा कहाहै । यह मदनमुद्रा. अग्नि और जलके योगसे भेदको नहीं प्राप्त होतीहै ॥ २९६-२९८ ॥

अन्यच्च ।

शुद्धांजननिभं किट्टं किट्टार्द्धां समितां कुरु॥ सुवर्णपुष्पनिर्यासं समितार्द्धं नियोजयेत् ॥ ॥ २९९ ॥ दक्षांडजजलद्रावैर्मर्दयित्वा दृढं भिषक् ॥ सर्वत्र मुखमुद्रेयं पुत्रस्यापि न कथ्यते ॥३००॥ एनां मुद्रामम्बुयंत्रसिद्ध्यर्थं दुर्लभां कुरु ॥ जलाग्नियोगतो नैव भिद्यतेऽसौ कथंचन ॥ ३०१ ॥ (बृ. यो.)

अर्थ--अंजनके समान कृष्णवर्ण लोहेकी काट (मैल) कीटसे आधी समिता (मैदा), मैदासे आधा सुवर्णपुष्पनिर्यास (ढाकका गोंद) लेवे फिर उनको मुर्गीके अंडोंके रससे खूब घोटकर सब स्थानपर मुखमुद्रा करै यह मुद्रा पुत्रको भी न कहनी चाहिये इस मुद्राको जल यंत्रके लिये सिद्ध करै अग्नि और जलके योगसे यह मुद्रा नष्ट नहीं होतीहै ॥ २९९-३०१ ॥

अन्यच्च ।

पलं बब्बूलनिर्यासं समितां तत्समां कुरु ॥ तयोस्तुल्यं लोहकिट्टं शुद्धसंजनसन्निभम् ॥ ॥३०२॥मुद्रां च वारियन्त्रस्य सिद्ध्यर्थं दुर्लभां कुरु।जलाग्नियोगतो नैव भिद्यतेऽत्र कदाचन । सूतराजो न संगच्छे प्रलयाग्निजवेन वै ॥ ३०३ ॥ (ध.सं.)

अथ-बबूलका गोंद एक पल, मैदा एक पल, दानाके तुल्य लोह मैल इन सबको मुर्गीके अंडोंके रससे घोटकर दुर्लभ मदनमुद्रा बना लेवे इस मुद्राका जल और अग्निके योगसे भेद नहीं होताहै और तीव्र अग्निके योगसे भी पारद कहीं नहीं जा सक्ता है ॥ ३०२ ॥ ३०३ ॥

सम्मति-दोनों मदन मुद्राओंमें शमिता शब्द है उसका अर्थ कोई कोई पंडित छींकरका गोंद कहतेहैं और कोई २ शमिताकी जगह समिता शब्दका पाठ सिद्ध करके समिताका अर्थ मैदा करतेहैं-अब विचारवान् पुरुष दोनों शब्दोंको विचारके अपना कार्य सिद्ध करें मेरी समझमें तो मैदा लेना ठीक है ॥

अन्यच्च ।

मंडूरचूर्णं विमलं मधूकैर्विमर्दितं किञ्चि-

दुमाम्बुसिक्तम् । विलेपितं यन्त्रविधौ ततस्तैर्न भिद्यते नैव च दह्यतेऽग्नौ ॥३०४॥ (बृ.यो.)

अर्थ—मंडूरभस्म और सोनामक्खीको मुलहठीके रससे घोटकर कुछ अलसीके रससे घोटे फिर यंत्रमें उसका लेप करै तो यह मुद्रा जलमें बिखरती नहीं और अग्निमें जलती नहींहै ॥ ३०४ ॥

हठमुद्रा ।

अब हठमुद्रा कहों बखानी । पारेकी विधि नीकी जानी ॥ माटीको जलयन्त्र जु करै । तब हठमुद्रा ऐसी धरै ॥ लोह सिंहासन कूटि कराई । कै करि दो वर लीजै राई ॥ कै गुरारको चूरण होई । इनमें एक लीजिये कोई ॥ अजा स्त्रोन सों सानि लगाई । तेही छिन दीजिये चढाई । आगि करै दे तातो नीर । यह हठमुद्रा जानो धीर ॥ चारि भाँति यह मुद्रा कही । जैसी गुरु ग्रंथनमें लही ॥ सबही ग्रन्थन कही न बात । चारि जातिमें अन अन भांत ॥ (रससागर)

जलमुद्रा ।

इन्द्रगोप बीरबहूटी इति प्रसिद्ध उनका पाताल यन्त्रसे तैल निकाल लेना उस तैलमें श्वेत संखिया मर्दन करना फिर केलेके खगोंकी अग्नि देणी शंखिया सिक्थोपम हो जायगा उसकी जलमुद्रा करणी (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

अन्यच्च ।

तूलं च कलिका चूर्णनिरम्बुक्षीरमर्दितम् । जलमुद्रेति कथिता कैश्चित्पारदवेदिभिः ॥ ३०५ ॥ (बृ.यो.)

अर्थ—सेमलकी कुछ खिली हुई डोंडी और चूनेको निपनियां दूधसे मर्दनकर मुद्रा करे तो इसको कुछ रस वैद्योंने जलमुद्रा कहाहै ॥ ३०५ ॥

जलमुद्राकी तरकीब (उर्दू)

अगर किसी मादनी चीजका रोगन निकालना हो तो दवाको कराहीमें रखकर ऊपरसे मोटे लवका कटोरा ढांकदे और पावभर (आर्द्रलहसोड़ा) को चारों तरफ डाल कर आगकी हरारतसे खुश्क करे बादहू पानी ऊपरसे भरदे उमदा जल मुद्रा होतीहै जलमुद्राकी जरूरत रोगन निकालनेमें अकसर पडतीहै यह मुहर न आगसे जलतीहै न उसपर पानीका असर होताहै (सुफहा अकलीमियाँ २११)

सुलेमानीमुद्रा ।

खाली राखै शीशी नारि । कपरौटी विन अंगुर चारि ॥ पुनि बाखर शीशीमें भरै । आसपास ता आगि जु करै ॥ जितनी विन कपरौटी कही । गाडे ऊपर राखे सही ॥ आसपास खैरकी आगि । अंगुर चारि चारि धरि लागि ॥ झपकि बीजना ऐसी आंच । शीशी मुँहको पिघले काच ॥ गहि जु सँडासी तामुख मोरि । ऐसी भांति साधिये जोरि ॥ ता ऊपर ओषधि औंधाई । धरतीहीमें जाइ सिराई ॥ तब मुखको कपरौटी करै । सूखनको जु छांहमें धरै ॥ मुद्रा यह सुलेमानी नाम । याते होइ भलो सब काम ॥ याते होइ जु रसको काज । यह मुद्रा कीन्ही तिहि काज ॥ (रससागर.)

भस्ममुद्रा ।

अतिस्वच्छं काष्ठं गृहीत्वा तुल्येन लवणचूर्णेन सह खल्वे सततं मर्दयेत् यावन्नवनीतवत् श्लक्ष्णं भवति तेन संधिमुखरोधादिकमतिदृढं भवति ॥ ३०६ ॥ (र.सा.प.)

अर्थ—अति उज्ज्वल लकडीकी भस्म एक भाग लवण एकभाग इन दोनोंको खरलमें डालकर निरंतर जलसे घोटता जावे और घोटते २ जब माखनके समान होजाय तब उससे मुद्रा करे तो संधि मुख दृढ बंद होताहै ॥ ३०६ ॥

पुटसंधिबंधकी क्रिया ।

वल्मीकमृत्तिका गारा लवणं लोहकिट्टकम्। श्वेतपाषाणकं चैव तत्सर्वं चूर्णयेत्समम् ॥ ३०७ ॥ सर्वतुल्यं तुषं दग्धं सर्वं तोयैर्विमर्दयेत् । मूषादिसंपुटं कुर्यात्सर्वसंधिप्रलेपनैः ॥ ३०८ ॥ (टो. नं.)

अर्थ—बमईकी मिट्टी, गारा, नोंन, लोहेकी कीट, खरिया ये सब तुल्यभाग लेने और सबकी बराबर जले हुए तुप लेकर सबको जलसे मर्दित करे इससे मूषादिकोंके मुखपर लेप करके सम्पुट बनावे ॥ ३०७ ॥ ३०८ ॥

संधिबंधनक्रिया ।

इष्टकाचूर्णभागैकं समभागा तु मृत्तिका । मूषादिबन्धः कर्तव्यो धमनाद्वज्रतां व्रजेत्- इति ॥ ३०९ ॥ (ध. सं.)

१-२ फर्वरी सन् १९०८ को सेमलकी मुंहमुंदी बिलकुल हरीकलियोंकी जिनकी शकल फलकासी थी कोई शकल फलकी न थी दूधमें पीस जल यंत्रपर लेप किया तो थोडीही देरमें खुश्क हो यंत्र फटगया (मुद्रा फट गई) इसमें कोई लहस या चिपक नथी (एकबार ऐसी कली से जिसमें फूल देखपडे मुकर्रर इम्तहान हो ।

अर्थ-एक भाग ईटका चूरा और उसकी बराबर बमईकी मिट्टी इन दोनोंको पीसकर मूषा वगैरहके बंधनको करे तो धौंकनेसे वज्रके तुल्य होताहै ॥ ३०९ ॥

सम्मति--जहां मिट्टीके कूटनेका प्रकरण आया है वहां चार प्रहर बराबर घोटना चाहिये क्योंकि जब मिट्टी चार प्रहर तक न घोटी जायगी तब तक मुख बंद करनेके लायक न होगी ॥

अन्यच्च ।

लोहकिट्टं तुषं दग्धं शुक्तिचूर्णं च शर्करा ॥ एतानि समभागानि तावद्भागेन मृत्तिका ॥ ३१० ॥ कर्पटेन समायुक्ता सा हि वज्रोपमा भवेत् ॥ ३११ ॥ (ध. सं.)

अर्थ-लोहेकी कीट, तुषभस्म, सीपका चूना, और शर्करा (शकर) इन सबको समान भाग लेकर इन सबकी बराबर मिट्टी लेवे और कुछ कपडा मिलाकर कूटे तो वह मिट्टी वज्रके समान होतीहै ॥ ३१० ॥ ३११ ॥

वज्रमुद्रा ।

स्निग्धं लोहरजः स्निग्धमयस्कांतरजः समम् । शाकं पक्वं च रुधिरं वज्रिक्षीरेण मर्दयेत् ॥ लेपनं तु प्रयत्नेन वज्रमुद्रा प्रजायते ॥ ३१२ ॥ (बृ. यो.)

अर्थ-लोहेका सूक्ष्म चूर्ण, चुम्बक पत्थरका चूर्ण, बकरेका जिगर और रक्त इनको थूहरके दूधसे मर्दन करे फिर संधि मुखपर लेप करे तो वज्रमुद्रा होजातीहै ॥ ३१२ ॥

वज्रमुद्रा (उर्दू)

मसाला यह है कि सिंदूर १ तोला, काश्तकारी सफेदा १ तोला, लोहेका मैल ६ माशे बकरीकी नलीमें या मुर्गके अंडेकी सफेदीमें रगडकर बनावे तो आग लगनेसे और मजबूत होगा दो आदमी बैठकर बनाव मुवक्किल बिगाड देंगे हवा न लगने पावे (सुफहा खजानाकीमियाँ ३५)

दो प्यालोंके जोड बंद करनेके लिये अजजाइ (उर्दू)

संधिलेप

दोनोंका मुहं सरेश या साहूज यानी चूने व सफेदी बैजः-मुर्ग व खाकस्तरी वस्ल कर दिया जाताहै ॥ (सुफहा अकलीमियाँ ९३)

शीशीकी डाटकी मुद्रा (उर्दू)

चूनः व सफेदी बैजःमुर्ग और गुड और गेहूंकी लेहीको बाहम मिलाकर वस्लकरदे ।(सुफहा किताब अकलीमियाँ?)

मुहरकी तरकीब (उर्दू)

मुहरका आसान और उमदा नुसखा यह है कि नमक लाहौरीको मुर्गीके अण्डेकी सफेदीमें खरल करके शीशेकी डाट पर अच्छीतरह थोपकर खुश्क करले ॥ (अलजवाहर)

कपरौटीकी क्रिया ।

खटिकालवणं माषचूर्णं गुडपुरौ तथा । अतसी च दृषच्चूर्णं मृल्लेपादिषु पूजितः ॥ ॥ ३१३ ॥ (टो. नं.)

अर्थ-खडिया, नोन, उर्दका चून, गुड, गूगल, अलसी और पत्थरका चूरा इनको पीसकर लेप बनावे तो यह लेप सब लेपोंमें उत्तम है ॥ ३१३ ॥

कठिन मुद्रा ।

खारी खरी और गुडगादि । वसै हीसा दीजिये लादि ॥ डौरू जंत्रहि लेउ करेई । यहै जु मुद्रा कठिन भनेई ॥ (रससागर)

कूपीआदिकी कपरौटीका मसाला ।

तुषं भागद्वयं ग्राह्यं भागैकं वस्त्रखण्डकम् ॥ मृदं तु त्रिगुणं कृत्वा जलं दत्त्वा प्रमर्दयेत् ॥ ३१४ ॥ नरकेशसमं किंचिद्दत्त्वा तावत्प्रकुट्टयेत् । यावत्सिक्थसमाभासं मृत्पिंडं जायते तदा ॥ ३१५ ॥ यथा न शुष्कतां याति तथा यत्नं समाचरेत् ॥ एवं सप्तदिनादूर्ध्वं मृदा योगे प्रयोजयेत् ॥ ॥३१६॥ कूपिकादिविलोपार्थं सर्वार्थं च भिषक्तमः ॥ ३१७ ॥ (टो.नं.)

अर्थ-तुषभस्म दो भाग, कपडा एक भाग इनसे तीनगुनी मिट्टीमें जल डालकर मर्दन करे फिर मनुष्यके केशोंको डालकर तबतक मर्दन करे कि जबतक वह मोमके समान हो जाय उसको गीले कपडेसे ढाककर रक्खे क्योंकि वह सूख न जाय इस प्रकार सातदिनके पश्चात् वैद्य शीशी आदिके लेपके लिये प्रयोग करे ॥ ३१४-३१७ ॥

वज्रमृत्तिका ।

दग्धतुषस्य भागैको मृद्भागत्रयमेव च । सकर्पटं टंकणं च वज्रमृत्स्नेति कथ्यते ॥ ॥ ३१८ ॥ (ध.सं.)

अर्थ-तुषभस्म एक भाग, मिट्टी तीन भाग, कुछ कपडा और सुहागा इनको कूटकर जो मिट्टी तय्यार की जातीहै उसको वज्रमृत्तिका कहतेहैं ॥३१८॥

वज्रमुद्रा ।

मुद्रा चारि भांतिकी गनी । जे कहिगये अचारज मुनी ॥ न्यारी न्यारी कहौं बखानि । जैसी जैसी कीजै बानि ॥ पाकी ईट पुरानी लेई । द्वै मुख घसिकै दीजै बनेई॥ वस्तर नवो मिंहींसो आनि।

शीशी सूख दीजिये बानि ॥ माटी बैठि गोका तबदेई । ऊपर कपरौटी जु करेई ॥ कपरौटी माटी वर येहु । एती वस्तु सबै मिलि देहु ॥ माटी तौ कुम्हारकी लेई । हाथ पोंछनी कुडेमें देई ॥ सो सूखी पल लेइ पचास । पीसि लेइ एक पलमास ॥ बान पुरानी ईट मँगाई । रुई परसनु सब देहु बनाई ॥ गुरु जु पुरानो सनको बीज । काचुगादि लिक एकत कीज ॥ आधु आधु पल लीजै साधु । अरु निखारि लीजै पलु आधु ॥ पाथर परजु काठ मोगरी । कूटै द्वै दिन रहै न घरी ॥ तब कपरौटी करै सुजान । मुद्रावज्र जु कही बखान ॥ सीसीकी कपरौटी तीन । तीनवस्त अरु लेपन तीनि ॥ (रससागर.)

छै अग्नियोंके नाम और लक्षण ।

धूमाग्निश्चैव मंदाग्निर्दीपाग्निर्मध्यमस्तथा । खराग्निश्च भटाग्निश्च तेषां वक्ष्याभि लक्षणम् ॥ ३१९ ॥ विज्वालो यो धूमशिखो धूमाग्निः स उदाहृतः । द्वाभ्यां तस्य चतुर्थभ्यां योग्निर्दीपाग्निरुच्यते ॥ ३२० ॥ चतुरांशेन तेनैव मंदाग्निः स प्रकीर्तितः । अर्द्धीकृताभ्यां द्वाभ्यां तु मध्यमाग्निरुदाहृतः ॥ ३२१ ॥ अर्द्धैस्तैः पंचभिः प्रोक्तः खराग्निः सर्वकर्मसु । मस्तकावधि पात्रस्य चतुर्दिक्षु क्रमेण च । प्रसरन्ति यदा ज्वालाः स भटाग्निरुदीरितः ॥ ३२२ ॥ (अर्कप्रकाश.)

अर्थ–अग्नि छः प्रकारकी है उनके नाम ये हैं धूमाग्नि १, मन्दाग्नि २, दीपाग्नि ३, मध्यमाग्नि ४, खराग्नि ५ और भटाग्नि ६ अब हम इनके लक्षणोंको कहेंगे–ज्वाला रहित जो धूमशिखा है उसको धूमाग्नि कहतेहैं धूमाग्निसे दूनी या चौगुनी अग्निको दीपाग्नि कहतेहैं दीपाग्निसे चौगुनी आंचको मंदाग्नि कहतेहैं ढाईगुनी मंदाग्निको मध्यमाग्नि कहतेहैं और ढाईगुनी मध्यमाग्निको खराग्नि कहतेहैं । जब पात्रकी चोटी तक ज्वाला चारों तरफ़ निकले तो उसे भटाग्नि कहतेहैं ॥ ३१९–३२२॥

पुटशब्दार्थ।

रसादिद्रव्यपाकानां प्रमाणज्ञापनं पुटम् । नेष्टान्यूनाधिकः पाकः सुपाकं हितमौषधम् ॥ ३२३ ॥ लोहादेरपुनर्भावो गुणाधिक्यं ततोऽग्रता । अनप्सु मज्जनं रेखा पूर्णता पुटतो भवेत् ॥ ३२४ ॥ पुटाद्ग्राव्णो लघुत्वं च शीघ्रव्याप्तिश्च दीपनम् । जारितादपि सूतेन्द्राल्लोहानामधिको गुणः ३२५ यथाऽऽत्मनि विशेद्वह्निर्बहिस्थः पुटयोगतः। चूर्णत्वाद्द्विगुणावाप्तिस्तथा लोहेषु निश्चितम् ॥ ३२६ ॥ (र. र. स., र. रा. प.)

अर्थ–रसादिकोंके प्रमाणके अनुसार पुट बनाना चाहिये और वह पुट न तो छोटा हो और न बडा हो क्योंकि, पुटके छोटे या वड़े होनेसे पाक ठीक नहीं होता और पाकका ठीक होना ही हित है । पुट देनेसे धातु जलमें डूबता नहीं हैं और अंगूठे तथा उंगलियोंकी रेखाओंमें प्रविष्ट हो जाताहै । पाषाणोंको पुट लगानेसे हलका शीघ्र व्यापी और दीपन होता है–भस्म किये हुए पारदसे धातुओंका गुण अधिक है जिसप्रकार वाहरकी अग्नि पुटके योगसे आत्मामें प्रविष्ट हो जातीहै ऐसे ही धातुओंमें चूर्ण होनेसे गुण दूना होताहै ३२३--३२६

महापुटलक्षण ।

निम्नविस्तरतः कुंडे द्विहस्ते चतुरस्रके । वन्योपलसहस्रेण पूरिते पुटनौषधम् ३२७॥ क्रौंच्यां रुद्धं प्रयत्नेन पिष्टिकोपरि निक्षिपेत् । वन्योपलसहस्रार्धं क्रौञ्चिकोपरि विन्यसेत् ॥ ३२८ ॥ वह्निं प्रज्वालयेत्तत्र महापुटमिदं स्मृतम् ॥ ३२९ ॥ (र. रा. प.)

अर्थ–दो हाथ लंबा चौडा और दो हाथ गहरा जिसमें कि एक हजार जंगली कंडे आजावें ऐसा कुंड बनवावे फिर दो शकोरोंमें औषधि रख ऊपरसे कपरौटी कर सुखाय उस गड्ढेमें रक्खे जिसके नीचे पांचसौ कंडा रख उसपर औषध रख फिर पांचसौ कंडा ऊपरसे रक्खे तदनंतर आंच लगादेवे स्वांगशीतल होनेपर औषधि निकाले तो इसको महापुट कहतेहैं ॥ ३२७--३२९ ॥

गजपुटलक्षण ।

राजहस्तप्रमाणेन चतुरस्रं च निम्नकम् । पूर्णं चोपलसाठीभिः कंठावध्यथ विन्यसेत ॥ ३३० ॥ विन्यसे त्कुमुदीं तत्र पुटनद्रव्यपूरिताम्॥ पूर्णच्छगणतोऽर्धानि गिरिण्डानि विनिक्षिपेत ॥ ३३१ ॥ एतद्गजपुटं प्रोक्तं महागुणविधायकम् ॥ ३३२ ॥ (र.र.स. र. रा. प.)

अर्थ–एक हाथ लंबा तथा एकही हाथ चौंडा और एकही हाथ गहरा चौकोन गडहा खोदकर कंठपर्यंत उपले भरदेवे उस पुटके बीचमें छोटी कुलियामें औषधिको रख कर आधे ऊपर आधे नीचे उपला भरदेवे तो इसको उत्तम गुणदाता गजपुट कहतेहैं ॥ ३३०--३३२ ॥

वाराहपुटलक्षण ।

इत्थं चारत्निके कुंडे पुटं वाराहमुच्यते॥३३३॥ (र. र. स,र. रा. प.)

अर्थ–इसी प्रकार अर्थात् गहराई तथा लंबाई चौडाईमें पौनहाथ हो उसके बीचमें औषधि रख ऊपर नीचे उपले रख आंच लगादेवे बस इसको वाराहपुट कहतेहैं ॥ ३३३ ॥

गजपुटप्रकार ।

सपादहस्तमानेन कुंडे निम्ने तथायते ॥ वनोपलसहस्रेण पूर्णे मध्ये विधारयेत् ॥ ॥ ३३४॥ पुटनद्रव्यसंयुक्तां कोष्ठिकां मुद्रितां मुखे ॥ अथार्धानि करंडानि चार्द्धान्युपरि निक्षिपेत् ॥ एतद्गजपुटं प्रोक्तं ख्यातं सर्वपुटोत्तमम् ॥ ३३५ ॥ (र.रा.म.)

अर्थ–मिट्टीकी कुठिया बनाकर उसमें औषधिभर मुखपर मुद्राकर सुखावे उसको सवा हाथ लंबे तथा चौडे और गहरे कुंडमें पांचसौ कंडे नीचे रखकर उसपर औषधि रख फिर पांचसौ कंडे ऊपरसे रखकर आंच लगावे यह गजपुट सब गजपुटोंमें उत्तम है ॥ ३३४ ॥ ३३५ ॥

सम्मति–मेरी समझमें यह महापुट आताहै क्योंकि महापुटमें एक हजार अरने कंडोंका लेख श्रीवाग्भट महाराजने अपने बनाये हुए रसरत्नसमुच्चयमें कियाहै ।

गजपुटके १३ भेद और१प्रकार।

गजपुटकी हैं तेरह जाति । न्यारी २ बरने ख्याति ॥ एक एक गज ओंडा होय।ये द्वे गज जु चाकरे सोय ॥ इह जंत्रहि जाने संसार । और जंत्र है विकट अपार ॥ एक एक गज ओंडो जानि।बडो आधगज कीजे बानि ॥ कूखिडंठ गजु मापी रहे।तरे आधु गज कवियनु कहे ॥ यहै यंत्र विधि शोधन कियो। और यंत्र अब सुनो बियो॥ (रस सागर.)

गजमौरयंत्र ।

तिरछो गजभरि करै सम्हारि । ओंडी धरै डेढ गज नारि ॥ तरहर नोंन बांटि बिछवाय।तापर शीशी धरे बनाय ॥ गाढै तै आधु गज छाडि । ऊपर गजु भरि लीजै डाडि । दे पिधान मुद्रिजे बनाय । जैसे सासन तरहर जाय । गरे गजभरि खाली रहै । लेंडी भरे पंच कवि कहै । दिनप्रति आगि देइ इह रीति । संख्याकी किरियामें प्रीति । या यंत्रे जु नाम गज मौर। गुरु विन यहि कर सके न और । (रससागर)

गजसंपुटयन्त्र ।

और यन्त्र ओंडो गज तीनि । पुनि चाकरो बराबरि कीन ॥ संपुटनाद धरै ता मांझ । भरै द्योस पर जोरे सांझ ॥ लीजै बीनि आरने कोई । चेंटी जीव न तामें होई ॥ या यन्त्रको गजसंपुट नाम । करै आरने न करै धाम ॥ (रससागर)

गजभर यंत्र ।

और यन्त्र कीजै गज चार । चारयो गज कीजै विस्तार ॥ तामें गजभरि गाडो करै । गर्भ खोदके मथना धरै ॥ ता मथनामें शीशी मेलि । ऊपर लेंडी भरै सकेलि ॥ शीशीको मुद्रा करि धरै । मथना बांधि लोनसों भरै ॥ मथना मूँदि दीजिये आगि । सोरह द्योस रातिदिन जागि ॥ बाखर किरिया कहिये ताम । है गजभँवर यन्त्रको नाम ॥ (रससागर)

कुक्कुटपुटलक्षण ।

पुटं भूमितले यत्तद्वितस्तिद्वितयोच्छ्रयम् । तावच्च तलविस्तीर्णं तत्स्यात्कुक्कुटकं पुटम् ॥ ३३६ ॥ (र. र. स., र. रा. प.)

अर्थ–पृथ्वीपर एक बालिश्त गहरे और उतनेही लंबे चौडे गड्ढेमें औषधि रखकर आंच लगावे तो उसको कुक्कुटपुट कहतेहैं ॥ ३३६ ॥

कपोतपुटलक्षण ।

यत्पुटं दीयते भूमावष्टसंख्यैर्वनोपलैः । बद्धसूतार्कभस्मार्थं कपोतपुटमुच्यते ॥ ॥ ३३७ ॥ (र.र.स.,–र,रा.प.)

अर्थ–जो कि बद्ध पारद और ताम्रभस्मके लिये पृथ्वीपर ही आठ अरने उपलोंकी जो अग्नि दी जातीहै उसको कपोत पुट कहतेहैं ॥ ३३७ ॥

गोबर तथा गोबरपुट लक्षण ।

गोष्ठान्तर्गोखुरक्षुण्णं शुष्कं चूर्णितगोमयम् । गोवरं तत्समादिष्टं वरिष्ठं रससाधने ॥ ३३८ ॥ गोवरैर्वा तुषैर्वापि पुटं यत्र प्रदीयते । तद्गोवरपुटं प्रोक्तं रसभस्मप्रसिद्धये ॥ ३३९ ॥ (र.र.स., र.रा.प.)

अर्थ–गौष्ठ (गौओंके चरनेका स्थान) में गाय बैलोंके पावोंसे खुदे हुए तथा सूखे हुए गोबरको शास्त्रमें गोमय कहतेहैं । और वह रस साधनके लिये श्रेष्ठ है। जहां उक्त संज्ञावाले गोबरसे या तुषोंसे पृथ्वीपर ही जो रसभस्मके लिये पुट दिया जाता है उसको गोबरपुट कहतेहैं (गोबरपुटके स्थानमें गोमयपुटका पाठ रखना उत्तम है)॥ ३३८ ॥ ३३९ ॥

भांडपुटलक्षण।

स्थूलभांडे तुषापूर्णे मध्ये मूषासमन्विते। वह्निना विहिते पाके तद्भांडपुटमुच्यते ॥ ॥ ३४० ॥ (र.र.स.,र.रा.प.,र.रा.सुं.)

अर्थ–एक बडे गगरेमें तुष भरकर बीचमें औषधि पूर्ण मूषा रख देवे और उसके नीचे अग्नि लगानेसे जब पाक ठीक होजाय तब स्वांग शीतल होने पर औषधि निकाले उसको भांडपुट (कुम्भपुट) कहते हैं ॥ ३४० ॥

भांडपुटस्वरूप।

बडी मथनियाके विषे, तुषपूरन भरिलेय। सम्पुट धरि अधबीचमें, फेरि अग्नि भरि-देय ॥ मथनी मुखको ढांकिकै, तापै दीजै वाम। कह्यो भाण्डपुटको मुनी यह स्व-रूप अभिराम ॥ (वैद्यादर्श)

वालुकापुट लक्षण।

अधस्तादुपरिष्टाच्च क्रौञ्चिकाऽऽच्छाद्यते खलु। वालुकाभिः प्रतप्ताभिर्यत्र तद्वालुका-पुटम् ॥ ३४१ ॥ (र.र.स.,र.रा.सुं.)

अर्थ–मूषाके ऊपर तथा नीचे बालूरेत भरकर जो पुट लगाया जावे उसको वालुकापुट कहतेहैं ॥ ३४१ ॥

भूधरपुटलक्षण।

वह्निमित्रां क्षितौ सम्यङ् निखन्याद्व्यङ्गु-लादधः। उपरिष्टात्पुटं यत्र पुटं तद्भूधराह्व-यम् ॥ ३४२ ॥ (र. र. स., र. रा. प., र. रा. सुं.)

अर्थ–पृथिवीमें दो अंगुलके नीचे वह्निमित्रा रखकर जो पुट बनाया जाताहै उसको भूधरपुट कहतेहैं ॥ ३४२ ॥

लावकपुटलक्षण।

ऊर्ध्वं षोडशिकामूत्रैस्तुषैर्वा गोवरैः पुटम्। यत्र तल्लावकाख्यं स्यात्सुमृदुद्रव्यसाधने ॥ ॥ ३४३ ॥ (र. रा. सुं.)

अर्थ–जिस पुटके ऊपर षोडशिकाका मूत्र, धानकी भुस अथवा गोवर रखके बनाया जाताहै उसको लावक पुट कहतेहैं ॥ ३४३ ॥

अनुक्तपुटलक्षण।

अनुक्तपुटमाने तु साध्यद्रव्यबलाबलात्। पुटं विज्ञाय दातव्यमूहापोहविचक्षणैः ॥३४४॥ (र. र. स., र. रा. प.)

अर्थ–जहां पुटका प्रमाण न हो वहां सिद्ध करनेयोग्य पदार्थका वल और अवल विचारकर विचारशील वैद्योंको पुट देना चाहिये ॥ ३४४ ॥

कुंभयंत्र (एक प्रकारका पुट)

एकमूसि लंबीसी करै। कंडाभरि गगरीमें धरै ॥ इह विधि गगरी करै बनाई। मांझ मूसि धरिये हरवाई ॥ कूखि छेद गागरि करवाई। कुंभयंत्र यह जानो राई ॥ (रस-सागर.)

नादीयंत्र (एक प्रकारका पुट)

नादी एक कुलालह तनी। गागरि नीरु माइ सो भनी ॥ मांह सकोरा औंधो धरै। वस्तमाह दै आधी करै ॥ हांडीमुद्रा कै मूंदै ताहि। नादीयंत्र नाम यह आहि ॥ (रससागर.)

छगणके नाम।

पिष्टकं छगणं छाणमुत्पलं चोपलं तथा। गिरिण्डोपलसाठी च वराटी छगणाभि-धाः ॥ ३४५ ॥ (र. र. स., र. रा. प.)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्र-सादसूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां यन्त्रनिरूपणं नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

अर्थ–पिष्टक, छगण, छाण, उत्पल, उपल, गिरिण्ड, उप-लसाठी तथा वराटी ये कंडोंके नाम हैं ॥ ३४५ ॥

जलमुद्रा सुर्वसे (उर्दू)

सनदेसी २ जुज रेज़ः रेज़ः नमूदः सुर्व एक जुज़ एक लाख चोटसे जलमुद्रा बनजातीहै अज़वियाज़ हकीम मुहम्म-दफतहयावखां सोहनपुरी।

मुतअल्लिक कवची जंतर यानी शीशी चन्द्रोदय वगैरःके मुतअल्लिक(उर्दू)

शीशी या ज़र्फ़ जिसमें दवाई अकसीरी है इसको अव्वल खुला रखना चाहिये, ताकि जुमले रतूबत इसकी खुश्क हो जावे मुनासिव है कि, पहले मुंह इसका रुईसे वंद करदे जवतक बुखारका असर रुईपर पहुंचता रहे उस वक्ततक उसका मुँह खुला रहने दे अकसीरी नुसखेमें रतूबत शीशीके अन्दरसे जब निकल जावे उसमें मजबूत मुद्रा ख्वाह मुहर सुलेमानी लगावे ताकि अदविया वाहम चक्कर खाकर मुनअ-क्किद होजाए। रतूवत जब ज़र्फ़से निकल जातीहै तो ज़र्फ़ कमशिकस्त होता है और अकसीर तय्यार होजातीहै(सुफहा २३ किताव अखवार अकलीमियाँ १६। ३। १९०५)

आतिश हुकमाई (उर्दू)

दवाको किसी वर्तनमें वंद करके आगमें दो सर्द होनेपर इसी कदर और आग देते जाओ इसी तरह उसवक्त तक अमल करो जिस क़दर कि उसके लिये लिखाहै–मस्लन डेढ़-सेर आंच पांच रोज तक लिखी है पस डेढ़सेर उपलोंकी आगमें दवाको रक्खो जव आंच सर्द हो जावे तव डेढ़सेर उपले और डाल दीजिये इसीतरह पांच रोजतक अमल करना चाहिये (सुफ़हा ३ अखवार अकलीमियाँ १। ६। १९०५)

आतिशहुकमा (उर्दू)

अगर गजपुटकी आग मुद्दत मजकूरः तक देना मंजूरहै तो इससे आतिशहुकमा मुराद है स्लाहफ़नमें इसी तरह है कि दवा बोता मुअम्मामें रखकर गोला यानी गड्ढ़ेमें रखकर मामूलन अगिनपुटदे जब सर्द हो जावे फिर इसी क़दर कर्सी या कंडे या भूभल भरकर इसी तरह आग देकर सर्द करे मामूली गजपुटमें जो एक हाथ मुकस्सर होता है अगर इसमें कंडे भरदिये जावें तो कमसे कम आठ पहर यानी एक दिन रात भर इसमें आग रहतीहै गर्ज यह कि इसी तरह आग मुकर्रर सिकर्रर कंडे भर भर कर दिया करे। ताकि मुद्दत मुअय्यनः पूरी हो जावे और दवाको इस अर्सेमें खोले नहीं न बोतासे निकाल कर देखे (सुफ़्हा २४ किताब अखबार अलकीमियाँ १६। ३। १९०५)

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मज-व्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया भाषा-टीकायां यंत्रनिरूपणं नाम षष्ठोऽध्यायः ॥६॥

अथ सप्तमो वर्गाध्यायः ७.

पंचमृत्तिका।

इष्टका गैरिका लोणं भस्म वल्मीकमृत्तिका। रसप्रयोगकुशलैः कीर्तिताः पंच मृत्तिकाः ॥ १ ॥ (र.र.स.)

अर्थ-पारदकर्ममें चतुर वैद्योंने ईट, गेरू, नोंन, राख और वल्मीक (बमई) की मिट्टी ये पांच मिट्टियां पारदकर्ममें उपयोगी कहीहैं ॥ १ ॥

अन्यच्च।

वल्मीकमृत्तिका धूमगैरिकं चेष्टिका खटी ॥ इत्येता मृत्तिकाः पंच प्रोक्तस्थाने प्रयोगिकाः ॥ २ ॥ (टो.नं.)

अर्थ-बमईकी मिट्टी, भाडका धूआं, गेरू, ईट, खरिया ये पांच मिट्टियां अपने अपने स्थानपर काममें लानी चाहिये२

धातुप्रकार।

सुवर्णं रजतं ताम्रं त्रपु सीसकमायसम् ॥ षडेतानि च लोहानि कृत्रिमौ कांस्यपित्तलौ ॥ ३॥ (र.र.स.,र.रा.प.)

अर्थ-सोना, चांदी, तांबा, रांग,सीसा और लोहा ये छः धातु असली हैं और कांसा और पीतल ये दोनों कृत्रिम (नकली) हैं॥ ३ ॥

विषवर्ग।

शृङ्गीकं कालकूटं च वत्सनाभं च सक्तुकम्। पित्तं च विषवर्गोऽयं सचरः[1] परिकीर्तितः ॥ ४॥ रसकर्मणि शस्तोयं तद्बंदेन[2] विधावपि अयुक्त्या सेवितश्चायं मारयत्येव निश्चितम् ॥ ५ ॥(र.र.स.,र.रा.प.)

अर्थ-सींगिया, कालकूट, वत्सनाभ और चर (सर्प विच्छू आदि) सहित पित्ता यह विषवर्ग है। यह विषवर्ग पारद कर्म तथा पारद बंधनमें भी उपयोगी होताहै और वह विना युक्तिसे अर्थात् अधिक मात्रा या विरुद्धानुपानके साथ सेवन कियाहुआ मनुष्योंको मारही देताहै इसमें संदेह नहीं॥४॥५॥

उपविषवर्ग।

लांगली विषमुष्टिश्च करवीरजयास्तथा ॥ नीलकः कनकोऽर्कश्च वर्गो ह्युपविषात्मकः ॥ ६ ॥ (र.र.स.)

अर्थ-लांगली (कलिहारी) कुचला, कन्हैर, जया (भाँग) नीलक (कचनोंन), धतूरा और आक इनको उपविष कहतेहैं ॥ ६ ॥

सम्मति-नीलकका अर्थ कोशोंमें कचनोंन कहा है परन्तु कचनोंनका उप विषोंमें कहीं भी लेख नहीं है इसलिये थूहरका वाची (सेहुण्ड) का पाठ होना उचित है ॥

अन्यच्च।

स्नुह्यर्कौ करवीरश्च धत्तूरो लांगली तथा ॥ पंचैवोपविषा मुख्याः रक्तवर्गमतः शृणु ॥ ७ ॥ (र.प.)

अर्थ-थूहर, आक, कन्नेर, धतूरा और कलिहारी ये पांच उपविष प्रधान माने गये हैं ॥ ७ ॥

पांचो नमकके नाम (उर्दू)

पांच नमक यह होना चाहिये १ सैंधा, २ सांभर, ३ खारी, ४ नमक सोंचर, ५ नमक पांगा जिसको हिन्दीमें अद्भुतलोन और पावालोन और फ़ारसीमें नमक नफ्ती कहते हैं (सुफ़्हा अकलीमियाँ १५२)

लवणपंचक।

सामुद्रं सैन्धवं काचं चुल्लिका च सुवर्च्चलम् मूलिका च नवक्षारा ज्ञेयं लवणपंचकम् ॥ ८ ॥ (कामरत्न)

अर्थ-समुद्रनोंन, सैंधव, कचलोन, खारीनोन, और काला नोंन ये लवण पंचक हैं ॥ ८ ॥

लवणषट्क।

लवणानि षडुच्यंते सामुद्रं सैंधवं बिडम्। सौवर्चलं रोमकं च चूलिका लवणं तथा ॥ ॥९ ॥ (र.र.स., र.रा.प.)

अर्थ-समुद्रनोंन, सैंधव, बिडनोंन, कालानोंन, रोमक (रूमदेशकी नदीसे पैदाहुआ) और खारी इन छहों नोंनोंको लवण पंचक कहतेहैं ॥ ९ ॥

लवणवर्ग।

लवणानि च कथ्यन्ते सामुद्रं सैन्धवं

१-सचरः इत्यपि। २ तद्बन्धन इत्यपि।

बिडम् । सौवर्चलं रोमकं च चूलिका लवणं तथा ॥ १० ॥ (रसेन्द्र-सा.सं.)

अर्थ-लवणोंको वर्णन करतेहैं सामुद्र, सैन्धव, बिडनोन, नोनस्याह, रोमक और खारीनोन ये छः लवणहैं ॥ १० ॥

क्षारद्वय ।

स्वर्जिका यावशूकश्च क्षारद्वयमुदाहृतम्। (कामरत्न.)

अर्थ-सज्जीखार और जवाखारको क्षारद्वय कहते हैं ॥

क्षारत्रय ।

त्रिक्षारष्टंकणक्षारो यवक्षारश्च स्वर्जिका ॥ ॥ ११ ॥ (कामरत्न)

अर्थ-सज्जीखार, जवाखार और सुहागेको क्षारत्रय अर्थात् तीन क्षार कहते हैं ॥ ११ ॥

अन्यच्च ।

क्षारत्रयं समाख्यातं यवसर्जिकटंकणम् । (र.र.स.)

अर्थ-सज्जीखार, जवाखार और सुहागेके फूलेको क्षारत्रय कहते हैं ॥

क्षाराष्टक ।

पलाशवज्रिशिखरिंचिचार्कतिलनालजाः । यवजः स्वर्जिका चेति क्षाराष्टकमुदाहृतम् ॥ १२ ॥ (र.रा.प.)

अर्थ-पलाश (ढाक), थूहर, ओंगा, इमली, तिलनाल, आक,जव और सज्जी इनके क्षारोंको क्षाराष्टक कहते हैं१२॥

वृक्षक्षार ।

तिलापामार्गकदलीपलाशाः शिग्रुपौंड्रकौ । मूलकार्द्रकचित्राश्च सर्वमन्तःपुटे पचेत् ॥ १३ ॥ समालोडच जलैर्बद्धा वस्त्रे ग्राह्यमधोजलम् । शोधयेत्पाचयेदग्नौ मृद्भाण्डेन तु तज्जलम् । ग्राह्यं क्षारावशेषं तु वृक्षक्षारमिदं स्मृतम् ॥ १४ ॥ (कामरत्न.)

अर्थ-तिल, ओंगा, केला, ढाक, सैंजना, पौंडा, मूली, अदरख और चीता इनमेंसे जिसका क्षार बनाना हो उसको सुखा किसी मिट्टीके पात्रमें भर ऊपरसे मुख बंद कर अग्निमें जलावे फिर उस राखको जलमें घोलकर एक टिकटीमें कपड़ा बांध उस जलको अनेक बार चुआकर साफ करले और उस जलको मिट्टीके पात्रमें डालकर चूल्हेपर रख नीचेसे अग्नि लगावे फिर जलके सूखने पर जो क्षार नीचे जमताहै उसको वृक्षोंका क्षार कहतेहैं ॥ १३ ॥ १४ ॥

श्वेत (शुक्ति) वर्ग ।

शंखशुक्तिवराटैश्च स्याच्चूर्णं शुक्लवर्गकः ॥ (र. प.)

अर्थ-शंख, सीप और कौड़ियों के चूर्णको श्वेतवर्ग कहते हैं ॥

अम्लपंचक ।

कोलदाडिमवृक्षाम्लचुल्लिकाचुक्रिकारसम्। पंचाम्लकं समुद्दिष्टं तच्चोक्तं चाम्लपंचकम् ॥ ॥ १५ ॥ (र. र. स., र. रा. प.)

अर्थ-कोल (बेर), अनार, वृक्षाम्ल (अम्लवेत),चुल्लिका और चूका इनको (पंचाम्ल) अम्लपंचक कहते हैं ॥१५ ॥

अम्लवर्ग ।

जम्बीरं नागरंगश्च मातुलुंगाम्लवेतसम् । चांगेरी चणशुक्रश्च अम्लवर्गः प्रकीर्तितः ॥ ॥ १६ ॥ (कामरत्न.)

अर्थ-जंभीरी, नारंगी, बिजौरा, अम्लवेत, चांगेरी(खट्टालौनिया) और चनेका खार इनको अम्लवर्ग कहतेहैं॥१६॥

अन्यच्च ।

अम्लवेतसजंबीरनिम्बुकं बीजपूरकम् । चाङ्गेरी चणकाम्लं च ह्यम्लिकं कोलदाडिमम् ॥ १७ ॥ अम्बष्ठा तिंतिणीकं च नारङ्गं रसपत्रिका । करवन्दं तथा चान्यदम्लवर्गः प्रकीर्तितः ॥ १८ ॥ (र.र.स.,र.रा.प.)

अर्थ-अमलवेत, जंभीरी, नींबू, बिजौरा, लौनिया, चनेके वृक्षकी खटाई, इमली, बेर, अनार, स्योनाक (जरस्क), नारंगी, खट्टापालख और करोंदा इनको भी अम्लवर्ग कहते हैं ॥ १७ ॥ १८ ॥

अम्लगण ।

अम्लवेतसजम्बीरलुङ्गाम्लचणकाम्लकाः । नागरङ्गन्तिन्तिडीकं चिञ्चापत्रश्च निम्बुकम् ॥ १९ ॥ चाङ्गेरी दाडिमश्चैव करमर्द तथैव च । एष चाम्लगणः प्रोक्तो वेतसाम्लसमायुतः ॥ २० ॥ (रसेन्द्र-सा. सं.)

अर्थ-अम्लवेत, जंभीरी, बिजौरा, चनेकी खटाई,नारंगी, तिंतिडीक (स्योनाक), इमली, निम्बू, अनार, खट्टीलौनिया और करोंदा इनको अम्लगण कहते हैं ॥ १९॥२०॥

चणकाम्ल और अम्लवेतप्रशंसा ।

चणकाम्लश्च सर्वेषामेक एव प्रशस्यते। अम्लवेतसमेकं वा सर्वेषामुत्तमोत्तमम्॥ रसादीनां विशुद्ध्यर्थं द्रावणे जारणे हितम्२१॥ (र. र. स., र. रा. प.)

---

१ मेरी रायमें यह शुक्तिवर्ग है शुक्लवर्ग नहीं है ।

अर्थ-सब खटाइयोंमें चनेकी खटाई उत्तम गिनी जातीहै या अम्लवेत ही समस्त खट्टे पदार्थों में उत्तम है रसादिकों की शुद्धि गलाने और जारण करनेमें भी उत्तम माना-गया है ॥ २१ ॥

मधुरत्रय ।

घृतं गुडो माक्षिकं च विज्ञेयं मधुरत्रयम् ॥ (र. र. स., र. रा. प.)

अर्थ-घी, गुड और शहद इन तीनोंको मधुरत्रय कहतेहैं॥

दुग्धवर्ग ।

हस्त्यश्ववनिताधेनुगर्दभीछागिकाविका । उष्ट्रिकोदुम्बराश्वत्थभानुन्यग्रोधतिल्वकम् ॥ ॥ २२ ॥ दुग्धिकास्तु गणं चैतत्तथैवोत्तमकण्ठिका । एषां दुग्धैर्विनिर्दिष्टो दुग्धवर्गो रसादिषु ॥ २३ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-हथिनी, घोडी, स्त्री, गौ, गधी, बकरी, भेड, ऊँटिनी, गूलर, पीपल, न्यग्रोध (बरगद), लोध, दुद्धी, थूहर यह दुग्धवर्ग है। कहीं २ कटेरीको भी इसी वर्गमें मानाहै रसादि कर्मोंमें जहां दुग्धवर्ग लिखाहो वहां इन पदार्थोंके दूधसे काम करना चाहिये ॥ २२ ॥ २३ ॥

मूत्रवर्ग ।

मूत्राणि हस्तिकरभमहिषीखरवाजिनाम् ॥ गोजावीनां स्त्रियां पुंसां मूत्रवर्ग उदाहृतः॥ ॥ २४ ॥ (र.र.स.,र.रा.प.)

अर्थ-हाथी, ऊँट, भैंस, गदहा, घोडा, गाय, बकरी, भेड, पुरुषोंके स्त्रियोंके मूत्रको मूत्रवर्ग कहते हैं ॥ २४ ॥

समालोचना-रसरत्नसमुच्चयमें (मूत्रवर्गउदाहृतः) इस पाठकी जगह(पुष्पबीजं तु योजयेत्) ऐसा जो पाठ है इसका अर्थ यह है कि स्त्रियोंके पुष्प अथवा पुरुषोंके वीर्यका प्रयोग करे। यद्यपि लौकिक व्यवहारमें मूत्रवर्गमें स्त्रियोंके रज तथा पुरुषोंके वीर्यका मूत्र शब्दसे ग्रहण होनेके कारण रज और वीर्यका पाठ मूत्रवर्गमें होना संभव हो सकताहै तथापि मेरी सम्मतिमें रसरत्नसमुच्चयका पाठ असंगत (अशुद्ध) है क्योंकि स्त्रियोंका रज तो शास्त्रोंमें अनेकस्थलोंमें उपयोगी लिखाहै परन्तु पुरुषोंका वीर्य औषधोपयोगी नहीं लिखाहै इस कारण रसेन्द्रसारसंग्रहका पाठही ठीकहै ॥

विड् (विष्ठा) गण ।

पारावतस्य चाषस्य कपोतस्य कलापिनः। गृध्रस्य कुक्कुटस्यापि विनिर्दिष्टो हि विड्गणः ॥ शोधनं सर्वलोहानां पुटनाल्लेपनात्खलु ॥ २५ ॥ (र.र.स.)

अर्थ-रसकर्ममें कबूतर, पपीहा, गीध, मोर और मुर्गा इनकी विष्टाको विड्वर्ग कहते हैं इन विष्टाओंके पुट देनेसे अथवा लेप करनेसे समस्त धातुओंकी निश्चय शुद्धि हो जातीहै ॥ २५ ॥

१ पुष्पबीजं तु योजयेत् इत्यपि ।

पुष्पबीज ।

गोजावीनां स्त्रियः पुंसां पुष्पं बीजं तु योजयेत् ॥ २६ ॥ (र.र.स.,र.रा.प.)

अर्थ-रसकर्ममें जहां रजशब्द या बीजशब्दका पाठ हो वहां क्रमसे स्त्रियोंके मासिकधर्मका रक्त और पुरुषोंके वीर्यका ग्रहण करना चाहिये ॥ २६ ॥

सम्मति-इस विषयमें भी मूत्र वर्गोक्तमें कीहुई समालोचना समझनी चाहिये ।

पित्तपञ्चक ।

नराश्वशिखिगोमत्स्यपित्तैः स्यात्पित्तपञ्चकम् ॥ २७ ॥ (र.मं.)

अर्थ-मनुष्य, घोडा, मोर, गौ और मत्स्य (मछली) इनके पित्तोंको पित्तपंचक कहतेहैं ॥ २७ ॥

पित्तवर्ग ।

पित्तं पञ्चविधं मत्स्यगवाश्वनरबर्हिजम् ॥ ॥ २८ ॥ (रसेन्द्रसा.सं.)

अर्थ-मत्स्य, गौ, घोडा, मनुष्य, और मयूरसे पैदा हुआ पांच प्रकारका पित्ता होता है ॥ २८ ॥

अन्यच्च ।

वाराहच्छागमाहिषमत्स्यमायूरपित्तकम् । पञ्चपित्तमिति ख्यातं सर्वेष्वेव हि कर्मसु ॥ ॥ २९ ॥ (रसेन्द्रसा.सं.)

अर्थ-इन समस्त रसादि कर्मोंमें सूअर, बकरा, भैंसा, मत्स्य, और मोर इनके पित्तेको पंचपित्त कहतेहैं ॥ २९ ॥

वसागण ।

जम्बूकमंडूकवसा वसा कच्छपसंभवा । कर्कोटी शिशुमारी च गोसूकरनरोद्भवाः॥ अजोष्ट्रखरमेषाणां महिषस्य वसा तथा ॥ ॥ ३० ॥ (र.र.स.,र.रा. प.)

अर्थ-गीदड और मेंढककी चर्बी तथा कछुवेसे पैदाहुई चर्बी, कर्कटाकी चर्बी, शिशुमारी (गोह जो अकसर बालकोंको पानीमें खींच लेताहै) की चर्बी तथा गौ, सूअर, और मनुष्यसे पैदाहुई चर्बी. बकरा, ऊंट, गदहा और मेंढा और भैंसेकी चर्बी इनको वसागण कहतेहैं ॥ ३० ॥

तैल ।

कंगुणीतुम्बिनीघोषाकरीरश्रीफलोद्भवम् ॥ कटुबीजार्कसिद्धार्थसोमराजीविभीतजम् ॥ ॥३१॥अतसीजं महाजालीनिम्बजं तिलजं तथा ॥ अपामार्गदेवदालीदंतीतुम्बरुविग्रहात्॥३२॥ अङ्कोलोन्मत्तभल्लातपलाशेभ्यस्तथैव च ॥ एतेभ्यस्तैलमादाय रसकर्मणि योजयेत् ॥ ३३ ॥ (र.र.स.)

अर्थ–कंगुनी (मालकंगनी या कंगई),तोंबी, घोषा (सौंफ या मोथा), कन्हैर और नारियलसे पैदा हुए तैलको तथा पीपल, आक, सरसों, सोमराजी (बावची) और बहेडेसे पैदा हुए तैलको, अलसीका तैल, महाजाली (घियातोरई) और नीमका तैल तथा तिलके तैलको और ओंगा, देवदाली (सोनैया वन्दाल), दन्ती (दतोन), तूंबा, अंकोल, धतूरा, भिलावा और ढाक इनसे तैलको निकाल कर रसके कर्ममें लाना चाहिये ॥ ३१—३३ ॥

क्षार, अम्ल, विष,तैलका उपयोग।

क्षाराः सर्वे मलं हन्युरम्लं शोधनजारणम्॥ मान्द्यं विषाणि निघ्नन्ति स्नैग्ध्यं स्नेहं प्रकुर्वते ॥ ३४ ॥ (र.र.स.)

अर्थ–समस्त क्षार मैलको नाश करते हैं और अम्ल पदार्थ रसादिकोंका शोधन और जारण करतेहैं विषशक्तिको बढातेहैं और स्नेह चिकनाईको पैदा करते हैं ॥ ३४ ॥

शोधनीयगण ।

काचटंकणशिग्राभिः शोधनीयो गणो मतः॥ सत्त्वानां बद्धसूतस्य लोहानां मलनाशनः ॥ ६९ ॥ (र.र.स.,र.प.)

अर्थ–काच, सुहागा और शिग्रा (मोतीकी सीप) ओंसे शोधनगण कहते हैं और वह शोधनगण सत्त्वबद्ध पारद तथा समस्त धातुओंके मलका नाश करनेवाला है ॥ ३५ ॥

लोहकाठिन्य नाशनवर्ग ।

कापाली कंगुणध्वंसी रसवादिभिरुच्यते ॥ महिषीमेषशृङ्गोत्थकलिंगो धवबीजयुक् ॥ शशास्थीनि च योगोयं लोहकाठिन्यनाशनः ॥ ३६ ॥ (र.र.स.)

अर्थ–भैंस और मेढेके सींगके भीतरी रवे, धौंके बीज और खरगोशकी हड्डियां यह वर्ग लोहके कडापनको नाश करताहै ३६

द्रावकपंचक ।

गुंजाटंकणमध्वाज्यगुडा द्रावकपञ्चकाः ॥ ३७ ॥ (रसेन्द्रसा.सं.)

अर्थ–चौंटनी, सोहागा, शहद, घी और गुड ये पांच द्रावक अर्थात् धातुओंके गलानेवाले पदार्थ कहे गयेहैं ॥ ३७ ॥

अन्यच्च ।

गुडगुग्गुलुगुंजाज्यसारघैष्टंकणान्वितैः ॥ दुर्द्रावाखिललोहादेर्द्रावणाय गणो मतः ॥ ३८ ॥ र.र.स.

अर्थ–गुड, गूगल, चौटनी, घी, शहद और सुहागा ये द्रावकगण अतिकठिन लोहोंको भी गलानेवालाहै ॥ ३८ ॥

मित्रपंचक ।

मध्वाज्यं टंकणं गुंजा गुडः स्यान्मित्रपञ्चकम् ॥ ३९ ॥ (र.प.)

अर्थ--शहद, घी, सुहागा, चौंटनी और गुड यह मित्रपंचक है यानी मृतधातुओंके मिलानेवाला पदार्थहै ॥ ३९ ॥

अन्यच्च ।

मधुघृतगुग्गुलु गुंजा टंकणमेतत्तु पञ्चकं मित्रम्। मेलयति सत्त्वधातूनंगाराग्नौ तु धमनेन ॥ ॥ ४० ॥ (र.सा.प.)

अर्थ–शहद, घृत, गूगल, चौटनी और सुहागा यह मित्रपंचक कहाता है । यह अंगारोंको अग्निपर रखकर धोंकनेसे समस्त सत्त्व और धातुओंको मिला देता है ॥ ४० ॥

श्वेतवर्ग ।

तगरः कुटजः कुन्दो गुञ्जा जीवन्तिका तथा । सिताम्भोरुहकन्दश्च श्वेतवर्ग उदाहृतः ॥ ४१ ॥ (र.र.स.)

अर्थ–तगर, कुटज (इन्द्रजौका वृक्ष), कुन्द, चौंटनी, जीवन्तिका, (जिसका गुजरातमें शाक होता है) तथा श्वेत कमल और कमलकंद इनको श्वेतवर्ग कहते हैं ॥ ४१ ॥

कृष्णवर्ग।

कदली कारवल्ली च त्रिफला नीलिका नलः । पंकः कासीसबालाम्रं कृष्णवर्ग उदाहृतः ॥ ४२ ॥ (र.र.स.)

अर्थ–केला, करेला, त्रिफला, नील, नल (नरसल), कीचड, कसीस और आम इनको कृष्णवर्ग कहते हैं ॥ ४२ ॥

पीतवर्ग ।

किंशुकः कर्णिकारश्च हरिद्राद्वितयं तथा । पीतवर्गोयमादिष्टो रसराजस्य कर्मणि ॥ ॥ ४३ ॥ (र.र.प.)

अर्थ–ढाकके फूल, कर्णिकार, (गेंदेका फूल) हल्दी तथा दारुहल्दी रसराजके कर्ममें इसको पीतवर्ग कहते हैं ॥ ४३ ॥

अन्यच्च ।

कुंकुमं किंशुकनिशापतङ्गमदयन्तिकाः । पीतवर्गोयमुद्दिष्टः श्वेतवर्गमतः शृणु ॥ ॥ ४४ ॥ (र.प.)

अर्थ–केसर, ढाकके फूल, दोनों हल्दी, पतंग (रतनजोतिं), मदयन्ती इनको पीतवर्ग कहतेहैं ॥ ४४ ॥

रक्तवर्ग ।

कुसुंभं खदिरो लाक्षा मञ्जिष्ठा रक्तचन्दनम् । अक्षीवबन्धुजीवश्च तथा कर्पूरगन्धिनी । माक्षिकं चेति विज्ञेयो रक्तवर्गोतिरञ्जनः ॥ ४५ ॥ (र.र.स.)

अर्थ–कसूमके फूल,कत्था, लाख, मजीठ, गुलदुपहरिया, लालचन्दन, अक्षीव (सेंहजनका वृक्ष), बंधुजीव (दुपहरियाके फूलका वृक्ष), कर्पूरगन्धिनी (कपूरकचरी) ये रक्त वर्ग अत्यन्त रंगनेवाला है ॥ ४५ ॥

अन्यच्च ।

मञ्जिष्ठा कुंकुमं लाक्षा दाडिमं रक्तचन्दनम् । बन्धूकं करवीरं च रक्तवर्गोयमीरितः ॥ ४६ ॥ (र.प.)

अर्थ-मजीठ, कसूम, लाख, अनारके फूल, लालचन्दन, गुलदुपहरिया, लालकनैर यह रक्तवर्ग कहाताहै ॥ ४६ ॥

रक्तवर्गादिप्रयोग ।

रक्तवर्गादिवर्गैश्च द्रव्यं सञ्जारणात्मकम् । भावनीयं प्रयत्नेन तादृग्रागाप्तये खलु ॥ ॥ ४७ ॥ (र.र.स.)

अर्थ-जिस द्रव्यको जारण करना हो उसी द्रव्यको रक्तवर्ग आदि वर्गोंसे सावधानीसे भावना देनी चाहिये जिससे मन चाहे रंगकी प्राप्ति होजाय ॥ ४७ ॥

माहिष और छागलपंचक ।

महिषाम्बु दधि क्षीरं साभिवारं शकृद्रसः॥ तत्पंचमाहिषं ज्ञेयं तद्वच्छागलपंचकम् ॥ ॥ ४८ ॥ (र.रा.प.)

अर्थ-भैंसका मूत्र, दधि, दुग्ध, घृत और गोवरका रस इसीको माहिषपंचक कहते हैं । इसीप्रकार छागपंचक भी जानना चाहिये ॥ ४८ ॥

किस कर्ममें कौन इंधन ग्राह्य है ।

द्रावणे सत्त्वपाते च माधूकाः खादिराः शुभाः दुद्रावे वंशजास्ते तु स्वेदने बादराः शुभाः ॥ ४९ ॥ (र.र.स.)

अर्थ-धातुओंके गलाने या सत्त्वपातनमें महुवेके तथा खैरके कोयले श्रेष्ठ हैं और स्वेदनमें बेरकी लकड़ीके कोयले उत्तम होते हैं ॥ ४९ ॥

दिव्यौषधिगण ।

गजकर्णी शंखपुष्पी रुदंती काकतुण्डिका ॥ हंसपादी व्याघ्रनखी चांडाली क्षीरकंदकम् ॥ ५० ॥ वंध्या कर्कोटकी रंभा गोजिह्वा कोकिलाक्षकः ॥ शाकवृक्षो हेमवल्ली पातालगरुडी शमी ॥ ५१ ॥ कटुतुंबी वज्रलता शूरणं वनशूरणम् । मेषशृंगी चक्रमर्दो जलकुंभी शतावरी ॥५२॥ गुंजा कोशातकी नीली आखुपर्णी त्रिपर्णिका॥कुक्कुटी कृष्णतुलसी पुंखा श्वेतापराजिता ॥ ५३ ॥ गुडूची लांगली ब्राह्मी चाङ्गेरी पद्मचारिणी अजामारी काकमाची देवदालीन्द्रवारुणी॥५४॥

अर्थ-गजकर्णी (हाथीचक), शंखाहूली, रुदन्ती (उसको कहते हैं जिसके पत्ते चनेके पत्तोंके समान होते हैं), चौटनी, हंसपादी (लालरंगकी छुई मुई), व्याघ्रनखी, चांडाली (लिंगिनी पंचगुरिया), क्षीरकंद (दूधविदारी), बांझ ककोडी, केला, वनगोभी, तालमखाना, शाकवृक्ष (सगुनवृक्ष), हेमवल्ली (पीलीजूही), पातालगरुडी (छिरहता), शमी (छोंकर), कडवी तूंबी, वज्रलता (हुडसंकरी), जमींकंद, जंगली जमोकंद, मेढासिंगी, चक्रमर्द (पमार), जलकुंभी, सतावर, श्वेतचौंटनी, तोरई, नील, मूषाकर्णी (उस कंदका नाम है जिसके तीन तीन पत्ते होते हैं), कुक्कुटी (सेमरका वृक्ष), श्यामतुलसी, शरपुंखा, सफेद फूलवाली कोयल, गिलोय, कलिहारी, ब्राह्मी, चांगेरी, (खदा लौनिया), पद्मचारिणी (गेंदेका वृक्ष), अजामारी, काकमाची (मकोय, केवैया), देवदाली (बिंदाल), इन्द्रवारुणी (इन्द्रायन) ॥ ५०-५४ ॥

काकजंघा शिखिशिखा सर्पाक्षी नागवल्लिका ॥ मत्स्याक्षी कृष्णधत्तूरो बला नागबला जया ॥ ५५ ॥ मुंडी महाबला भृंगी त्रिविधं चित्रकं निशा ॥ मूर्वा काचाननः कन्या पेटिका समवर्तकः ॥ ५६ ॥ विष्णुक्रान्ता कारवल्ली वाकुची सिन्धुवारिका। स्वर्णपुष्पी खंडजीरी मंजिष्ठा पीलुकं वचा ॥ ५७ ॥ स्नुही रक्तस्नुही बिल्वः कार्पासः कंगुनी तथा ॥ पालाशं कोलबीजं च मेघनादार्कसर्षपाः ॥ ५८ ॥ ब्रह्मदंडी महाराष्ट्री श्वेतरक्ता पुनर्नवा । उदुम्बरः सोमलता कुम्भी पुष्करमूलकम् ॥ ५९ ॥

अर्थ-काकजंघा (मसी), शिखिशिखा (मोरशिखा), सर्पाक्षी (सरहटी), नागवल्लिका (नागरवेल), मत्स्याक्षी (मछेछी), काला धतूरा, बला (खिरैंटी), नागबला (गंगेरन), जया (अग्निमन्थ), मुण्डी, महाबला (सहदेवी), भृंगी (अतीस या वरगद), तीन प्रकारका चीता, हल्दी, मूर्वा, काचानन, घीग्वार, पेटिका (पेटारीका वृक्ष), समवर्तक, विष्णुक्रान्ता (कोयल), करेला, बाकुची, सिंधुवारिका, स्वर्णपुष्पी (पीले फूलकी केतकी, खण्डजीरी, मजीठ, पीलू, वच, थूहर, लालथूहर, बेल, कपास, कगई, ढाक, बेरकी मींग, चौलाई, आक, सरसों, ब्रह्मदंडी, महाराष्ट्री (जलपीपल) सफेद या लाल फूलकी सीठ, गूलर,सोमलता कुम्भी (पाढरवृक्ष), पोहकरमूल ॥ ५५-५९ ॥

तिलपर्णी कृष्णजीरा वृश्चिका वनकोलिका । करंजोऽग्निधमनी च बृहती भूमिपाटली ॥ ६० ॥ यवचिंचेन्द्रबल्ली च मर्कटी वनराजिका । अपामार्गो भूकदम्बो विषपुष्पेकवीरिका ॥ ६१ ॥ गोरम्भा बदरी जाती मूसली सहदेविका । एरंडं सैन्धवं शुंठी पथ्या मंडूकपर्णिका॥६२॥मर्ववो बालकं हिंगु लक्ष्मणा हस्तिचारिणी॥ क्षीरवृक्षाश्च सर्वे ते तथा नानाविधौषधी ॥ ६३ ॥ दिव्यौषधिगणः ख्यातो

रसराजस्य साधने। व्यस्तं वाथ समस्तं वा यथालाभं प्रजायते ॥ ६४ ॥ तीव्रगंधख-रस्पर्शैर्विविधैस्तु वनोद्भवैः । मर्दनात्स्वेद-नात्सूतो म्रियते बध्यतेऽपि वा ॥६५॥(र.प.)

अर्थ–तिलपर्णी (लालचंदन), स्याहजीरा, वृश्चिका (विछुआघास), वनकोलिका (झरबेरिया), कंजा, अग्निधमनी, वडी कटेरी, भूमिपाटली, इन्द्रवल्ली, मर्कटी (कैंचके बीज), जंगली राई, औंगा, भूकदम्ब (जिसको बंगालमें कसिम कहते हैं), विषपुष्पी (नीलकमल), एकवीरिका एकलकण्ठो (गुजराती भाषा),बेर, जायफल, दोनों मूशली, सहदेवी, एरण्ड (अंडौआ), सैंधव, साठ, हर्रे, मण्डूकपर्णिका (ब्राह्मीभेद), मरवा,नेत्रवाला, हींग, लक्ष्मणा (लक्ष्मणाकंद), हस्तिचारिणी (बडाकंजा),ये दूधवाले वृक्ष तथा और उत्तम उत्तम औषधियां रसराजके साधनमें दिव्यौषधिगण कहाहै इनमेंसे थोडीसी वा समस्त जितनी मिलसके उनका प्रयोग करे जिन औषधियोंकी तीव्र गंधहो अथवा स्पर्श करनेमें जो खरखरीहो ऐसी अनेक जंगली जडियोंके साथ मर्दन करनेसे या स्वेदन करनेसे पारद मृत अथवा बद्ध होजाता है ॥ ६०–६५ ॥

अन्यच्च ।

सर्पाक्षी क्षीरिणी बंध्या मीनाक्षी शंखपुष्पिका । काकजंघा शिखिशिखा ब्रह्मदंडयाखुपर्णिका ॥ ६६ ॥ वर्षाभूः कंचुकी दूर्वा सैरीयोत्पलशिंबिका । शतावरी वज्रलता वज्रकंदाग्निकर्णिका ॥ ६७ ॥ मंडूकपर्णी पाताली चित्रकग्रीष्मसुन्दरा । काकमाची महाराष्ट्री हरिद्रा तिलपर्णिका६८॥ श्वेतार्कशिग्रुधत्तूरं मृगदूर्वा रसांकुशा। रंभारक्तालुनिर्गुंडीलज्जालुसुरदारिकाः ॥ ६९ ॥ जाती जयंती श्रीदेवी भूकदंबः कुसुंभकः। कोशातकी नीरकणा लांगली कटुतुंबिका ॥ ७० ॥ चक्रमर्दोऽमृताकंदः सूर्यावर्तेषु पुंखिका । बाराही हस्तिशुंडी च अपामार्गः कुमारिका ॥ ७१ ॥ ईश्वरी बृहती वृद्धी विदारी कृष्णसारिवा । लक्ष्मणा तुलसी दंडी गोजिह्वा चापराजिता ॥ अष्टाष्टकगुणो ह्येष भिन्नोप्यस्ति क्वचित्क्वचित् ७२॥ (ध. ध. प.)

अर्थ–सर्पाक्षी (सरहटी), क्षीरिणी (दुद्धी), वन्ध्या (बाँझ ककोडा), मीनाक्षी (मछेछी), शंखाहूली, काकजंघा (मसी), शिखिशिखा (मयूरशिखा), ब्रह्मदंडी, आखुपर्णी (मूसाकर्णी), सांठ, कंचुकी (अगर), दूब, सैरीय (कटसरैया), उत्पल (कमल), शिम्बिका (बनमूंग), शतावर, वज्रलता (हडसंघारी), वज्रकंद (शकरकंद) अग्निकर्णिका, मंडूकपर्णी (ब्राह्मीका भेद), पाताली (छिरहिटा), चीता, ग्रीष्मसुंदरा (गूमाका शाक), काकमांची (मकोय केवैया), महाराष्ट्री (जलपीपर), हल्दी, तिलपर्णिका (लालचंदन), श्वेतआक, सैंजना, धतूरा, मृगदूर्वा, रसांकुशा, केला, निर्गुंडी, लज्जालु (छुईमुई), सुरदालिका, जायफल, जयंती (जैतपुष्पवृक्ष), श्रीदेवी, भूकदम्ब (जिसको बंगलामें कसम कहते हैं), कसूम, तोरई, जलपीपल, कडवी तोरई, कलिहारी, पमार, अमृताकंद, सूर्यावर्त (हुलहुल), शरपुंखा, वाराहीकंद, हस्तिशुंडी (हाथीशुण्डी), औंगा, घीकुमारि, ईश्वरी (शिवलिंगी), बृहती (वडीकटेरी), वृद्धी (अष्टवर्गके भीतरकी एक औषधि), विदारीकंद, कालीसर, लक्ष्मणा (लक्ष्मणकंद), तुलसी, दतौन, वनगोभी, कोयल ये आठ आठ चीजोंका गण कहीं २ पृथक् भी काममें आता है । इनको दिव्यौषधिगण कहते हैं ॥ ६६–७२ ॥

नियामकवर्ग ।

सर्पाक्षी वन्यकर्कोटी कंचुकी यमचिञ्चिका शतावरी शंखपुष्पी शरपुंखा पुनर्नवा॥७३॥ मंडूकपर्णी मत्स्याक्षी ब्रह्मदंडी शिखण्डिनी। अनंता काकजंघा च काकमाची कपोतिका ॥ ७४ ॥ विष्णुक्रांता सहचरा सहदेवी महाबला । बला नागबला मूर्वा चक्रमर्दः करञ्जकः ॥ ७५ ॥ पाठा तामलकी नीली जालिनी पद्मचारिणी । घंटा त्रिकंटा गोजिह्वा कोकिलाक्षो घनध्वनिः ॥ आखुपर्णी क्षीरिणी च त्रपुषी मेषशृङ्गिका ॥७६॥ कृष्णवर्णा च तुलसी सिंहिका गिरिकर्णिका । एता नियामकौषध्यः पुष्पमूलदलान्विताः ॥ ७७ ॥ (रसेन्द्रसा. सं.)

अर्थ--सर्पाक्षी (सरहटी), बनकरेला,कंचुकी (अगर), घोंघची, शतावर, शंखाहूली, सरफोंका, सांठ, मण्डूकपर्णी (ब्राह्मीभेद), मत्स्याक्षी (मछेछी), ब्रह्मदंडी, शिखंडिनी, जुही, अनंता (गौरीसर), काकजंघा (मसी), काकमाची (मकोय केवैया), कपोतिका, विष्णुक्रांता (कोयल), सहचरा (पीयाबांसा), सहदेवी (पीले फूलका दंडोतपल), महाबला (सहदेवी), बला (खरैटी), नागबला (गंगेरन), मूर्वा, चक्रमर्द (पमार), कंजा, पाढल, तामलकी (भुईआंवला चित्रकूट देशमें प्रसिद्ध), नीली (नील), जालिनी (नेनुआ तोरई), पद्मचारिणी (गेंदेका फूल), घण्टा (कठपाडर), त्रिकण्टा (तिधारा), गोजिह्वा (वनगोभी), कोकिलाक्ष (तालमखाना), घनध्वनि (नागरमोथा), आखुपर्णी (मूषाकर्णी), क्षीरिणी (दुद्धी), त्रपुषी (खीरा), मेढासिंगी, काली तुलसी, सिंहिका (कटेरी), गिरिकर्णिका (सफेद किणहीवृक्ष), फूल, जड और पत्तों सहित ये वृक्ष नियामक औषधियोंके नामसे कहातेहैं ॥ ७३–७७ ॥

अन्यच्च ।

नियामकास्ततो वक्ष्ये सूतमारणकर्मणि । सर्पाक्षी क्षीरिणी बन्ध्या मत्स्याक्षी शरपुंखिका ॥ ७८ ॥ काकजंघा शिखिशिखा ब्रह्मदंड्याखुपर्णिका । वर्षाभूः कञ्चुकी मूर्वा पटुकोत्पलचिञ्चिका ॥ ७९ ॥ शतावरी वज्रलता वज्रकंदा त्रिकर्णिका । मंडूकपर्णी पाटाली चित्रको ग्रीष्मसुन्दरः ८०॥ काकमाची महाराष्ट्री हरिद्रा तिलपर्णिका। श्वेतार्कशिग्रुधुस्तूरमृगदूर्वा हरीतकी ॥८१॥ गुडूची मूशली पुंखा भृंगराड्रक्तचित्रकम् । तगरं सूरणं मुंडी मलङ्कापोतकोकिलम् ॥ ॥ ८२ ॥ सैन्धवं श्वेतवर्षाभूः साम्बरं हिंगुमाक्षिकम् । विष्णुक्रान्ता सोमवल्ली व्रणघ्नी यक्षलोचनम् ॥ ८३ ॥ व्याघ्रपादी हंसपादी वृश्चिकाली कुरण्टकम् । स्वयम्भूकुसुमं कुश्वी हस्तिशुंडीन्द्रवारुणी ॥ बीजान्यहस्करस्याऽपि सर्व्वत्रैते नियामकाः ॥ ८४ ॥ (र. र.)

अर्थ-अब पारदके मारनेके लिये नियामक औषधियोंको कहतेहैं सर्पाक्षी (सरहटी), क्षीरिणी (दुद्धी), बन्ध्या (वांझककोडा), मत्स्याक्षी (मछेछी), सरफोंका, काकजंघा (मसी), शिखिशिखा (मयूरशिखा), ब्रह्मदंडी,आखुपर्णी (मूसाकर्णी), सांठ, कंचुकी (अगर), मूर्वा, पटुका, कमल, इमली, शतावर, वज्रलता (हडसंघारी), वज्रकंदा (शकरकंद), त्रिकर्णिका, मंडूकपर्णी (ब्राह्मीभेद), पाटाली, चीता, ग्रीष्मसुंदर (गूमाका शाक), काकमाची (मकोय केवैया), महाराष्ट्री (जलपीपर), हल्दी, तिलपर्णिका (लालचन्दन), सफेद आक, सैंजना, धतूरा, दूब, हर्र, गिलोय, मूबली, सरफोंका, भाँगरा, लालचीता, तगर, जमोकंद, मुंडी, कबूतर और कोयलका मल, सैधानोंन, सफेद साठ, सामर, हींग, शहद, विष्णुक्रान्ता (कोयल), सोमवल्ली, व्रणघ्नी (घावपत्ता), यक्षलोचन (लोहवान), व्याघ्रपादी (गर्जाफल), हंसपदी (लाल रंगका लज्जालु), वृश्चिकाली (विछुआघास), कुण्डक (पीली कटसरैया), स्वयम्भू (माषपर्णी), कसूम, कुश्वी (घुघची), हस्तिशुंडी, इन्द्रवारुणी (इन्द्रायन) और आकके बीज ये सर्वत्र नियामक माने गयेहैं ॥ ७८-८४ ॥

एताः समस्ता व्यस्ता वा देया ह्यष्टदशाधिकाः । मारणे मूर्च्छने बद्धे रसस्यैतानि योजयेत् ॥ ८५ ॥ अप्रसूतगवां मूत्रैः पिष्ट्वा पूर्वनियामकाः । तद्द्रवैर्मर्दयेत्सूतं यथापूर्वोदितं क्रमात् ॥ ८६ ॥ (र. रत्नाकर.)

अर्थ-पारदके मारण. मूर्च्छन तथा बद्ध करनेमें पृथक् २ या समस्त अठारहसे अधिक इन औषधियोंको काममें लाना चाहिये । प्रथम विना व्याई गौओंके मूत्रसे नियामक औषधियोंको पीसकर उनके रसोंसे स्थान २ पर कहे हुए क्रमपूर्वक पारेको मर्दन करे ॥ ८५ ॥ ८६ ॥

दिव्यौषधियोंके नाम ।

सोमवल्ली १, जलपद्मिनी २, अजगरी ३, गोनसी ४, त्रिजटा ५, ईश्वरी ६, भूतकेशी ७, कृष्णवल्ली ८, रुद्रवंती ९, सर्वरा १०, वाराहीकंद ११, अश्वत्थपत्री १२, अम्लपत्री १३, चकोरनासा १४, अशोकनाम्नी १५, पुन्नागपत्रिका १६, नागनी १७, क्षेत्री १८, संवरी १९, देवीलता २०, वज्रवल्ली २१, चित्रक २२, कालपर्णी २३, नीलोत्पली २४, रजनी २५, पलासतिलका २६, सिंहिका २७, गोष्ठाङ्गी २८, खदिरपत्री २९, तृणज्योति ३०, रक्तवल्ली ३१, ब्रह्मदंडी ३२, मधुतृष्णा ३३, पद्मकंदा ३४, हेमदंडी ३५, विजया ३६, अजया ३७, जया ३८, तली ३९, श्रीनाम्नी ४०, कीटमारी ४१, तुंबिका ४२, कटुतुंबी ४३, मयूरशिखा ४४, हेमलता ४५,आसुरी४६, सप्तपर्णी ४७, गोमारी ४८, पीतक्षीरा ४९, व्याघ्रपादलता ५०, धनुर्वल्ली ५१, त्रिशूली ५२, त्रिदंडी ५३, शृंगा ५४, वज्रनामवल्ली ५५, महावल्ली ५६, रक्तकंदवती ५७, बिल्वदला ५८, रोहिणी ५९, बिल्वतंकी ६०, गोरोचना ६१, कंदपत्रिका ६२, विशल्या ६३, कंदक्षीरी ६४ (र. रा. सु.)

औषधिग्रहणस्थाननिर्णय ।

वल्मीककूपतरुतलरथ्यादेवालयश्मशानेषु। जाता विधिनापि हिता ओषध्यः सिद्धिदा न स्युः ॥ ८७ ॥ (र. स. शं.)

इति श्रीअग्रवालवैश्यकुलावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां वर्गनिरूपणं नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अर्थ-वमई, कूआ, वृक्षके नीचेका स्थान, सड़क, देवता का मंदिर, और श्मशानोंमें दैवयोगसे उत्पन्न हुई औषधियां चाहें जितनीही क्यों न हित हों तथापि वे सिद्धिके देनेवाली नहीं हैं ॥ ८७ ॥

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मज-व्यास-ज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया भाषाटीकायां वर्गनिरूपणं नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अथाष्टमोऽध्यायः ८.

रसारम्भमें प्रार्थनाश्लोक ।

एकदन्तं शिवं गौरीं वाणीं धन्वन्तरिं गुरुम् । प्रणौमि सूतराजस्य संस्काराणां सुसिद्धये ॥ १ ॥

अर्थ–मैं पारदके संस्कारोंकी सिद्धिके लिये श्रीगणेशजी, महादेवजी, पार्वती, सरस्वती और गुरु श्रीधन्वंतरिजीको नमस्कार करता हूं ॥ १ ॥

रससंस्कारकी आवश्यकता ।

तस्य हि साधनविधौ सुधियां प्रतिकर्मनिर्मलाः प्रथमम् । अष्टादश संस्कारा विज्ञातव्याः प्रयत्नेन ॥ २ ॥ (रसदर्शन) युक्तं द्वादशभिर्दोषैर्यश्च हन्याद्रसेश्वरम् । ब्रह्महत्यादिकं पापं लभते स पदेपदे ॥ ३॥ मुक्तं द्वादशभिर्दोषैर्यस्तु हन्याच्छिवात्मकम् । ऐहिके तु स पूज्यः स्यात्परत्र स्वर्गतो भवेत ॥ ४ ॥ (र.रा.प.)

अर्थ–संस्कारोंसे अतिशुद्ध कियेहुए पारदकी सेवासे मनुष्य जीवन्मुक्त होताहै और वह पारदकी सेवा विना संस्कारोंके किये सफल नहीं होती इसलिये प्रथम पारदसंस्कारोंको ही यत्नपूर्वक गुरुपरम्परासे जानना उचित है, जो मनुष्य बारह दोषोंसे युक्त पारदको भस्म करता है वह एक एक पदपर ब्रह्महत्यादि पापको प्राप्त होताहै और जो द्वादश दोषोंसे रहित पारदको भस्म करताहै वह इस लोकमें पूजनीय होताहै और मरनेके वाद स्वर्गको प्राप्त होताहै ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥

सीमावकी स्लाहकी जरूरत (उर्दू)

सामावमें सफेदी कसरत रतूवतकी वजहसे है जब उसकी अस्लाह होकर एतदालपर आजाताहै तो अजसादको नुकरः करसकताहै और अजसामसे तमाम अमराज बलगमी मस्लन फालिज व लकवः व सरअ व सकतः वगैरः हजारों अमराज जो खराबीकी वजहसे पैदा होतेहैं दफै करताहै और स्याही पारेमें जो कसरत अहतिराककी वजहसे है जब मौतदिल होजातीहै तो पारा मज़कूर अजसादको तिला करसकता है और तमाम अमराज बदनी जो अहतिराक खून व गलवः सौदाकी वजहसे आरिज होतेहैं मस्लन जजाम व बुर्स व सिलदिक वगैरः उनको जाइल करताहै और सैकडों अजीब गरीब कवाइद उससे सरजद होतेहैं, दोनों और इस्तख्वाँमें मजबूती आतीहै कुव्वत बाहकी कसरत होतीहै और इनजमादमनी और नऊजमें शिद्दत होतीहै भूख बढजातीहै बालोंमें स्याही आँखोंमें रोशनी हवासवदनमें तरक्की होतीहै गरज कि जिस कदर सीमावका एतदालकवी होगा कवाइदमें ज्यादती होगी इस किताबकी हिदायतों पर अमल करके उसको मुइत ही कियाजाताहै कुव्वत मुनफैला यानी कवूलित खवासकी तासीर इसमें पैदा होतीहै लिहाजा जैसी आलावूटियोंमें अमलकीमियाई करके तादील सीमावमें पैदा की जावेगी वैसे ही उससे खास्से (गुण) जाहर होंगे (सुफहा अकलीमियाँ १३८)

१ सुखमेधते-इत्यपि ।

अष्टसंस्कारोंके नाम ।

स्वेदनमर्दनमूर्छनोत्थापनपातनरोधननियमनदीपनानीत्यष्टौ संस्काराः ॥ (र.प.)

अर्थ–स्वेदन १, मर्दन २, मूर्छन ३, उत्थापन ४, पातन ५, रोधन ६, नियमन ७ और दीपन ८ ये पारदके शुद्धिके लिये आठ संस्कार कहेहैं ॥

अन्यच्च ।

स्वेदनं मर्दनं चैव मूर्च्छनोत्थापनं तथा ॥ ॥ ५ ॥ पातनं रोधनं चैव नियामनमतः परम् ॥ दीपनश्चेति संस्काराः सूतस्याष्टौ प्रकीर्तिताः ॥ ६ ॥ (र.सा.सं.)

अर्थ–स्वेदन १, मर्दन २, मूर्छन ३, उत्थापन ४, पातन ५, रोधन ६, नियामन ७ और दीपन ८ ये पारदके आठ संस्कार कहेह ॥ ५ ॥ ६ ॥

अन्यच्च ।

स्वेदामर्दनमूर्च्छनोत्थितिरतः पातोपि भेदान्वितो रोधः संयमनं प्रदीपनमिति स्पष्टाष्टधा संस्कृतिः ॥ अस्याः सर्वरसोपयोगिकतया त्वन्यो न विन्यस्यते ग्रन्थेस्मिन्प्रकृतोपयोगविरहाद्विस्तारभीत्याथवा ॥७॥ इत्यष्टौ सूतसंस्काराः समा द्रव्ये रसायने ॥ शेषा द्रव्योपयोगित्वान्न ते वैद्योपयोगिनः ॥८॥ इत्यष्टौ सूतसंस्काराः समा द्रव्ये रसायने । कार्यास्ते प्रथमं शेषा नोक्ता द्रव्योपयोगिनः ॥ ९ ॥ (र.र.स., नि.र.,र.रा.सुं.,र.सा.प.)

अर्थ–स्वेदन, मर्दन, मूर्च्छन, उत्थापन, अनेक प्रकारका पातन, रोधन इन संस्कारोंको ही लिखते हैं और अन्य संस्कारोंको रसादिकोंके उपयोगी न होनेके कारण अथवा शास्त्र बढनेके कारण हम इस रसरत्नसमुचय ग्रंथमें नहीं रखतेहैं ये आठों संस्कार रस (चन्द्रोदयादि) और रसायनके तुल्य उपयोगी हैं और शेष दश संस्कार केवल रसायनके ही उपयोगीहैं इसलिये वे दश संस्कार वैद्योंके उपयोगी नहीं हैं । इसी बातका समर्थन करते हुए रसरत्नसमुच्चय ग्रंथमें कहाहै कि ये आठो संस्कार रस और रसायन बनानेके लिये समान उपयोगीहैं । इस लिये प्रथम इन आठ संस्कारोंका करना उचित कहाहै और दूसरे संस्कारोंको नहीं कहाहै ॥७—९॥

अष्टसंस्कारप्रयोजन ।

सूतस्यैते तु संस्काराः कथिता देहकर्मणि। तथा च दश संस्कारा; देहलोहकराः स्मृताः ॥ १० ॥ (ध. सं.)

अर्थ–शरीरके नीरोग रखनेके लिये ये आठ संस्कार पारदके कहेहैं और शेष दश संस्कार रसायन (सोना, चांदी बनाने) के लिये कहे गयेहैं ॥ १० ॥

अष्टसंस्कारफल ।

स्वेदनादिनवकर्मसंस्कृतः सप्तकंचुकविवर्जितो भवेत् । अष्टमांशमवशिष्यते तदा शुद्धसूत इति कथ्यते तदा ॥ ११ ॥ (र. रा. सुं०, र. रा. शं.)

अर्थ–स्वेदन आद नव कर्मोंसे संस्कृत कियाहुआ पारद सप्तकंचुक दोषोंसे रहित होजाताहै और शुद्ध हुए पारेकी यह परीक्षाहै कि, जितना पारदका घान शोधनके लिये गेरा हो उसमेंसे आठवाँ हिस्सा शोधते २ रहजाय: तब समझना चाहिये कि, पारद शुद्ध होगया ॥ ११ ॥

सम्मति–इस लेखसे यह विदित होताहै कि, इस ग्रंथके कर्तोने यह समझा कि, सात दोष दूर होनेपर सात भाग पारद भी नष्ट होजायगा और अवशिष्ट एक भाग शुद्ध होगा परंतु अनुभवसे यह बात ठीक नहीं निकली ॥

पारदसंस्कारके अठारह नाम ।

अष्टादशैव संस्कारा ऊनविंशतिकाः क्वचित् ॥ सम्प्रोक्ता रसराजस्य वसुसंख्याः क्वचिन्मताः॥१२॥ (र.रा.सुं., र. र. स, र. रा. शं, नि. र.)

अर्थ–पारदके अठारह ही संस्कार हैं और किसी जगह उन्नीस संस्कार कहेहैं और कहीं २ आठ संस्कारही माने गयेहैं ॥ १२ ॥

पारदके अठारह संस्कारोंके नाम ।

स्यात्स्वेदनं तदनुमर्दनमूर्च्छनं च स्यादुत्थितिः पतनरोधनियामनानि । संदीपनं गगनभक्षणमानमत्र संचारणं तदनुगर्भगतिर्द्रुतिश्च ॥ १३ ॥ बाह्यद्रुतिः सूतकजारणा स्याद्रागस्तथा सारणकर्म पश्चात् । संक्रामणं वेधविधिः शरीरयोगस्तथाष्टादशधात्र कर्म ॥ १४ ॥ (र. रा. सुं., र. र. स., र. रा. शं., नि. र.)

अर्थ–स्वेदन१, मर्दन२, मूर्च्छन३, उत्थिति४, पातन५, रोध६, नियामन७, संदीपन८, गगनभक्षण (अभ्रजारण) का प्रमाण९, चारण१०, गर्भद्रुति११, बाह्यद्रुति १२, पारदजारण१३, राग१४, सारण१५, संक्रामण१६, वेध १७ और शरीरयोग (पारदभक्षण) १८ ये अठारह पारदके संस्कारहैं ॥ ॥ १३ ॥ १४ ॥

१–बुधैः-इत्यपि ।

अन्यच्च ।

स्वेदन १ मर्दन २ मूर्छा ३ त्थापन ४ पातन ५ निरोधन ६ नियमांश्च ७ । दीपन ८ गगनग्रासन ९ प्रमाण १० मथचारणाविधानं च ११ ॥ १५ ॥ गर्भद्रुति १२ बाह्यद्रुति १३ जारण १४ रसरागसारणं चैव १५ । क्रामण १६ वेधौ १७ भक्षण १८ मष्टादशविधमिति रसकर्म ॥ १६ ॥ (ध. ध. सं., र. क., वा. बृ.)

अर्थ–स्वेदन१, मर्दन२, मूर्च्छन३, उत्थापन४, पातन५, निरोधन६, नियमन७, दीपन८, गगनग्रासप्रमाण९, चारण१०, गर्भद्रुति११, बाह्यद्रुति१२, जारण१३, रसराग१४, सारण१५ क्रामण१६, वेध १७ और भक्षण १८ ये अठारह प्रकारका रसकर्म है ॥ १५ ॥ १६ ॥

सम्मति–अवश्य ही–यहां ग्रास और मान दो संस्कार भूलसे माने गये किन्तु ग्रासमान (अर्थात् बुभुक्षित) एक ही संस्कार है और राग सारण यह एक संस्कार भूलसे माना गया–राग और सारण २ संस्कार अलग हैं ।

अन्यच्च ।

मर्दनं स्वेदनं चैव मूर्च्छोत्थापनपातनम् । बोधनं च ततो ग्रासोदीपनं चाभ्रभक्षणम् ॥ प्रमाणं चारणं युक्त्या गर्भद्रुतिबहिर्द्रुती । जारणं रसरागोपि चात्र सारणमेव च ॥ क्रामणं वेधनं भक्ष्यं चैतेऽष्टादशधा क्रमात्॥ ॥ १८ ॥ (र.पा.)

अर्थ–स्वेदन, मर्दन, मूर्च्छन, उत्थापन, पातन, बोधन, नियमन, दीपन, अभ्रकभक्षण, प्रमाण, चारण, गर्भद्रुति, बाह्यद्रुति, जारण, रसराग, सारण, क्रामण, वेधन और भक्षण, पारदके ये अठारह संस्कार क्रमसे कहेहैं ॥ १७ ॥ १८ ॥

अन्यच्च ।

स्वेदनमर्दनमूर्च्छनोत्थापनपातबोधाख्या । नियमश्च दीपनमथ ग्रासप्रमाणमथ चारणाविधानम् ॥ १९ ॥ गर्भद्रुतिबाह्यद्रुतिजारणरसरागसारणं चैव । क्रामणवेधनभक्षणमष्टादश कर्मसमुदायाः ॥ २० ॥ (र.प.)

अर्थ–स्वेदन १, मर्दन २, मूर्च्छन ३, उत्थापन ४, पातन ५, बोधन ६, नियमन ७, दीपन ८, ग्रासप्रमाण ९, चारण १०, गर्भद्रुति ११, बाह्यद्रुति १२, जारण १३, रसराग १४, सारण १५, क्रामण १६, वेधन १७ और भक्षण १८, ये अठारह संस्कार पारदके हैं ॥ १९ ॥ २० ॥

१ बोधन-इत्यपि ।

पारदके उन्नीससंस्कारोंके नाम ।

स्वेदनमर्दनमूर्च्छनोत्थापनपातनबोधननियमनसंदीपनानुवासनगगनादिग्रासप्रमाणचारणगर्भद्रुतिबाह्यद्रुतियोगजारणरञ्जनसारणक्रामणवेधनभक्षणाख्या ऊनविंशतिसंस्काराः । सूतसिद्धिदा भवन्ति दीपनान्ता अष्टौ संस्कारा वा देहसिद्धिदा भवन्ति ॥ (र.रा.सुं.,र.रा.शं०)

पारदके बीससंस्कारोंके नाम ।

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन सूतः शोध्यो विजानता । तत्साधकाः प्रकथ्यंते संस्काराः किल विंशतिः ॥ २१ ॥ (बृ.यो.,र.चिं.)

अर्थ-पारदमें दोष मिले हुए हैं इस कारण यत्नपूर्वक विद्वान् पारदका शोधन करे इसलिये पारदकी शुद्धिके साधक बीस संस्कारोंको कहते हैं ॥ २१ ॥

पटसारण १ संमर्दन २ मूर्च्छन ३ मुत्थापन ४ स्वेदौ ५ । पातन ६ बोधन ७ नियमन ८ दीपन ९ मुखकरण १० जारण ११ सबिड १२ मानम् १३ ॥२२॥ गर्भद्रुतयो १४ रञ्जन १५ मथवेधनं १६ बहिर्द्रुतयः १७ ॥ सारण १८ मपि च क्रामण १९ मारण २० मिति सूतसंस्काराः ॥ २३ ॥ (बृ.यो. शिवागम)

अर्थ-पटसारण १, संमर्दन २, मूर्च्छन ३, उत्थापन ४, स्वेदन ५, पातन ६, बोधन ७, नियमन ८, दीपन ९, मुखीकरण १०, जारण ११, विड १२, मान १३, गर्भद्रुति १४, रंजन १५, वेधन १६, बाह्यद्रुति १७, सारण १८, क्रामण १९, मारण २० ये बीस संस्कार पारदके हैं ॥ २२ ॥ २३ ॥

पारदके अन्तिम दशसंस्कारोंके नाम ।

ग्रासप्रमाणचारणगर्भद्रुतिबाह्यद्रुतिजारणरससारणमारणक्रामणवेधनभक्षणानीति दश संस्कारा आमयदेहलोहेषु करणीया एव ॥ (र.प.)

अर्थ-ग्रासप्रमाण १, चारण २, गर्भद्रुति ३, बाह्यद्रुति ४, जारण ५, रसरंजन ६, सारण ७, क्रामण ८, वेधन ९, भक्षण ये दश संस्कार रोगोंके नाशके लिये वाजीकरणके लिये और सोना, चांदी इत्यादि बनानेके लिये करने चाहिये ॥

स्वेदनलक्षण ।

क्षाराम्लैरौषधैर्वापि दोलायंत्रे स्थितस्य हि । पाचनं स्वेदनाख्यं स्यान्मलशैथिल्यकारकम् ॥ २४ ॥ (र. र. स., र. रा. प., र. सा. प.)

अर्थ-पारदको दोलायंत्रमें रखकर क्षार तथा अम्ल (खट्टी) औषधियोंसे पकावे तो इसके मलका नाश करनेवाला स्वेदनसंस्कार कहतेहैं ॥ २४ ॥

मर्दनलक्षण ।

उदितैरौषधैः सार्धं सर्वाम्लैः कांजिकैरपि । पेषणं मर्दनाख्यं स्याद्बहिर्मलविनाशनम् ॥ २५ ॥ (र. र. स., र. रा. प., र. सा. प.)

अर्थ-कही हुई औषधियोंसे सम्पूर्ण खट्टे पदार्थोंसे अथवा काजीसे पारदके घोंटनेको मर्दन कहतेहैं और वह मर्दन बाहरके मलका नाश करनेवाला है ॥ २५ ॥

मूर्छनलक्षण ।

मर्दनोदिष्टभैषज्यैर्नष्टपिष्टत्वकारकम् । तन्मूर्च्छनं हि वंगादिभुजकंचुकनाशनम् ॥२६॥ (र. र. स., र. रा. प., र. सा. प०)

अर्थ-मर्दन संस्कारमें कहीहुई औषधियोंसे जो पारदका नष्टपिष्टी होजाना यानी औषधियोंके साथ मिलजाना उसको मूर्छन कहतेहैं और वह मूर्च्छन वंग तथा नाग आदि कंचुकोंको नाश करताहै ॥ २६ ॥

उत्थापनलक्षण ।

स्वेदातपादियोगेन स्वरूपापादनं हि यत् । तदुत्थापनमित्युक्तं मूर्छाव्यापत्तिनाशनम् ॥ ॥ २७ ॥(र. र. स., र. रा. प., र सा. प.)

अर्थ-मूर्छित पारदका स्वेदन आतप (घाम) आदि उपायोंसे जो अपने रूपमें लाना अर्थात् तरल पारदकी दशामें लाना उसको उत्थापन कहतेहैं और वह उत्थापन मूर्छावस्थाकी व्यापत्तिको नाश करताहै ॥ २७ ॥

पातनलक्षण ।

उक्तौषधैर्मर्दितपारदस्य यंत्रस्थितस्योर्ध्वमधश्च तिर्यक् । निर्यातनं पातनसंज्ञमुक्तं वंगादि संपर्कजकंचुकघ्नम् ॥ २८ ॥ (र. र. स., र. रा. प., र. सा. प.)

अर्थ-अपने अपने स्थलपर कहीहुई औषधियोंसे मर्दन किये हुए पारदको यंत्रमें रखकर जो ऊपर नीचे या तिरछा निकालना है उसे पातन कहतेहैं और इस पातनसंस्कारके करनेसे वंग नागादिके मेलसे पैदा हुये कंचुकको नाश करताहै ॥ २८ ॥

रोधनलक्षण ।

जलसैन्धवयुक्तस्य रसस्य दिवसत्रयम् । स्थितिरास्थापिनी कुम्भे योऽसौ रोधनमुच्यते ॥ २९ ॥ (र. र. स., र. रा. प.)

अर्थ-जलमें सैंधव लवणको छोडकर एक घडेमें भरदेवे फिर पारदको तीन दिवसतक उस घडेमें स्थापित करे तो इसे रोधन (बोधन) संस्कार कहतेहैं ॥ २९ ॥

नियमनलक्षण ।

रोधनाल्लब्धवीर्यस्य चपलत्वनिवृत्तये । क्रियते पारदे स्वेदः प्रोक्तं नियमनं हि तत्॥३०॥ (र. र. स., र. रा. प.)

अर्थ—रोधनसंस्कारसे पारदको एक प्रकारकी चपलता, रूप वीर्यकी प्राप्ति होतीहै उस चपलताकी निवृत्तिके लिये जो पारदमें स्वेदन किया जाताहै उसको नियमन कहतेहैं ॥ ३० ॥

दीपनलक्षण ।

धातुपाषाणमूलाद्यैः संयुक्तो घटमध्यजः । ग्रासार्थं त्रिदिनं स्वेदो दीपनं तन्मतं बुधैः॥ ॥ ३१ ॥ (र. र. स., र. रा. प.)

अर्थ—जब पारदको ग्रास देना हो तब धातु, पाषाण (खनिजपदार्थ) और कन्दमूलादि पदार्थोंसे युक्तकर एक घडेमें भर ऊपरसे औषधियोंका रस भरदेवे फिर तीन दिवसतक स्वेदनकरे तो उसको वैद्यलोग दीपनसंस्कार कहतेहैं ३१॥

रसकी पांच गति ।

जलगो जलरूपेण त्वरितो हंसगो भवेत् । मलगो मलरूपेण सधूमो धूमगो भवेत् ३२॥ अन्या जीवगतिर्दैवी जीवोण्डादिव निष्क्रमेत् । स तांश्च जीवयेज्जीवांस्तेन जीवो रसः स्मृतः ॥३३॥ चतस्रो गतयो दृश्या अदृश्या पंचमी गतिः ॥ मंत्रध्यानादिना तस्य रुध्यते पंचमी गतिः ॥३४॥(र.र.स.)

अर्थ—यदि पारदका जलमें संस्कार करे तो जलरूप होकर नष्ट होजाताहै अर्थात् जलके ऊपर सूक्ष्मरूपमें आकर बह जाताहै और जो हंसगः (सूर्यके प्रकाशमें) संस्कार कियाजाय तो सूर्यकी तेजीसे भाप बनकर उड जाताहै यदि किसी पदार्थके साथ शुद्ध कियाजावे तो उस पदार्थकी मैलके द्वारा निकलजाताहै अथवा किसी यंत्रके द्वारा शोधाजाय तो धूमेके रूपमें परिणत होकर निकलजाताहै जिस प्रकार अंडेमेंसे जीव निकलताहै और उसके निकलनेकी कोई गति नहीं मालूम होती इसी प्रकार पारदकी भी पांचवीं दैवी जीवगतिहै इनमें चारों दशाओंको तो वैद्य देख सकताहै और पांचवीं दशा अदृश्य है इस लिये वह पांचवीं गति मंत्रध्यानादिसे रोकी जातीहै ॥ ३२–३४ ॥

इति भिन्नगतित्वाच्च सूतराजस्य दुर्लभः । संस्कारस्तस्य भिषजा निपुणेन तु रक्षयेत् ॥ ३५ ॥ (र. र. स.)

अर्थ—इस तरह नानाप्रकारकी दशाओंके होनेसे पारदका संस्कार दुर्लभ है अत एव वैद्य निपुणतासे उसका संस्कार करें ॥ ३५ ॥

१ पांचवीं जीवगति है वह ऐसी है जैसे देहसे जीव निकल जाताहै (इसी गतिसे पारद मेरे पातनमें निकल गया) २ न विधीयते-इत्यपि ।

संस्कारमें सावधानीकी आवश्यकता ।

तस्मात्सूतविधानार्थं सहायैर्निपुणैर्युतः । सर्वोपस्करमादाय रसकर्म समारभेत ॥ ॥ ३६ ॥ (र. र. स.,नि. र.)

अर्थ—इस कारण विद्वान् पारद सिद्धिके लिये चतुर सहायकोंके साथ सम्पूर्ण सामग्रीको लेकर पारदकर्मको प्रारम्भ करै ॥ ३६ ॥

मुहूर्त ।

सुमुहूर्ते सुनक्षत्रे सानुकूलग्रहे दिने । गुरूपदिष्टः कुर्वीत रसकर्म यथाविधि ॥ ३७ ॥ (र. प.)

अर्थ—जिस दिन श्रेष्ठ मुहूर्त, श्रेष्ठ नक्षत्र और अपने अनुकूल ग्रह हों उस दिन गुरुकी आज्ञा लेकर विधिसे रसकर्मको करै ॥ ३७ ॥

उत्तरायणगे सूर्ये रसकर्मारभेद्बुधः । शुभेऽह्नि शुभनक्षत्रे ताराचन्द्रबलेःतथा ॥३८ ॥ (टी० नं.)

अर्थ—जब कि, सूर्य्य उत्तरायणमें हो तब शुभ मुहूर्त, शुभ नक्षत्र तथा गुरु और चन्द्रमाके बलमें रसकर्मका प्रारम्भ करै ॥ ३८ ॥

अन्यच्च ।

शुभेहनि प्रकर्तव्य आरंभो रसशोधने । एकांते सद्मनि पुरोभ्यर्च्यार्याढुंढिभैरवान्॥ ॥ ३९ ॥ (बृ. यो. नि. र.)

अर्थ—श्रेष्ठ दिनमें अपने सम्मुख देवी, गणेश और भैरवको पूजनकर एकान्त स्थलमें रसशोधनका आरम्भ करै ३९॥

रसकर्मारंभ ।

शुभेह्नि विष्णुम्परिचिन्त्य कुर्यात्सम्यक्कुमारीबटुकार्चनं च । सुलौहपाषाणसमुद्भवेऽस्मिन्दृढे च वेदाङ्गुलिगर्भमात्रे ॥ ४० ॥ सुतप्तखल्ले निजमंत्रयुक्तां विधाय रक्षां स्थिरसारबुद्धिः । अनन्यचित्तः शिवभक्तियुक्तः समाचरेत्कर्म रसस्य तज्ज्ञः ॥ ४१ ॥ (रसेन्द्रसारसं.)

अर्थ—सारवस्तुओंमें जिसकी बुद्धि लगीहुईहै और जिसका चित्त पारदसे अन्यत्र कहीं नहीं लगा हुआहै ऐसा श्रीशिवका भक्त पारदकर्मका ज्ञाता वैद्य शुभ दिनमें श्रीढुण्ढिका चिन्तन करके और कुमारी तथा भैरवका पूजनकर उत्तम लोहा तथा पत्थरके बने हुए तप्त खल्लमें पारदको स्थापित करै। फिर उसकी अपने मंत्रसे रक्षा कर पारदकर्मको प्रारम्भ करै ॥ ४० ॥ ४१ ॥

१ दोपनिवृत्त्यर्थम्-इत्यपि । २ णैभिषक्-इत्यपि ।

संस्कारार्थ ग्राह्य पारदलक्षण ।

अन्तःसुनीलो बहिरुज्ज्वलो यो मध्याह्नसूर्यप्रतिमप्रकाशः । शस्तोथ धूम्रः परिपाण्डुरश्च चित्रो न योज्यो रसकर्मसिद्ध्यै४२॥ (ध. सं., र. सा. प., आ. वे. वि.,र.मं., र. सा. सं., यो. त., यो. र. नि..र., र. रा. सुं., र. रा. प.)

अर्थ–संस्कार करनेके लिये कैसा पारद लेना और कैसा नहीं लेना चाहिये इसलिये प्रमाण कहतेहैं भीतरसे उत्तम नीली रंगतका और बाहरसे उज्ज्वल जिसकी चमक मध्याह्नके सूर्य्यके समान हो ऐसा पारद ग्रहण करना चाहिये और जो (कृष्ण लोहित) धूम्र अथवा रंगबिरंगा हो उस पारदको रसकर्ममें ग्रहण नहीं करना चाहिये ॥ ४२ ॥

संस्कारार्थ अग्राह्य पारदलक्षण ।

आरजीर्णं विजानीयात्सूतकं पित्तकोपनम् । श्वेतं च विविधं युक्तं गुरुभाजनभेदिनम् ४३ श्लेष्माणं नागजीर्णं च पारदं प्राणहारणम् । सर्वरूपधरं सांद्रं मलिनं शीतकल्पितम् ४४ जीर्णे च रसके यत्र रसेन्द्रे सान्निपातकम् । रसेन्द्रं वर्जयेद्यत्नादीदृशं साञ्जनं गुरुम् ॥ म्रियंते जंतवः सर्वे भक्षणादपरीक्षणात्४५॥

अर्थ–श्वेत पारद चिकना पित्तको कोपित करनेवाला, भारी, पात्रको भक्षण करनेवालाहै और उसमें पीतल जीर्ण हुआ समझना चाहिये । श्लेष्माको बढानेवाला जो कि, सीसेको भक्षण कियेहुए है और अनेक रंगतका हो,गाढा हो और जो अत्यंत ठंढा हो वह पारद प्राणोंको नाश करनेवालाहै । जिस पारदमें खपरिया मिलाहुआहो उसका रंग अनेक प्रकारका होताहै इस कारण रंगबिरंगे, घन और गुरु पारदका परित्याग करै क्यों कि, ऐसे पारदके सेवनसे जीव मृत्युको प्राप्त होतेहैं ॥ ४३–४५ ॥

ईदृशः पारदोतःसुनील इत्यादिशुभलक्षणयुक्तोपि सघनश्चेत्तदा तमपि वर्जयेदित्यर्थः ॥ (ध. ध. सं., र. रा. प.)

अर्थ–इन प्रमाणोंसे ज्ञात होताहै कि, जो पारद भारी हो वह उत्तम वर्णका भी ग्रहण करने योग्य नहींहै ।

वंग, नाग, पीतल रसक (जसद) से जीर्णपारद प्रयोगमें अग्राह्य ।

आकृष्णश्चपलो रूक्षः कपिलःकालिकावृतः। वंगसंश्लेष्मदोषेण रसेन्द्रो वातलः स्मृतः४६ (र. चि., र. रा. प.)

अर्थ–जिस पारदमें वंग मिलाया गयाहै वह पारद चारों तरफ काला, चपल, रूखा, पीला, कालिकादोषसे मिलाहुआ और वातको बढानेवाला होताहै ॥ ४६ ॥

तथा ।

आपीतकपिलश्चैव कृष्णराजिकया वृतः । आरजीर्णं विजानीयात्सूतकं पित्तकोपनम् ॥ ४७ ॥ (र. चि., र. रा. प.)

अर्थ–चारों तरफ दीपककी जोतके समान पीला काली लकीरोंसे युक्त पारदको पीतल भक्षण कियाहुआ जाने और वह पित्तको कोपित करताहै ॥ ४७ ॥

तथा च ।

श्वेतं च विद्धि सुस्निग्धं गुरुभाजनभेदिनम् । श्लेष्माणं नागजीर्णं च पारदं प्राणहारिणम् ॥ ४८ ॥ (र.चि.,र.रा.प.)

अर्थ–जिस पारदने सीसेका भक्षण किया हो उसको श्वेत, चिकना, भारी, कफका वर्द्धक और प्राणोंका नाशक जानना चाहिये ॥ ४८ ॥

सर्वरूपधरं सांद्रमतिशीतमकल्पितम् । जीर्णेपि रसकं यस्य रसेन्द्रं सान्निपातकम् ॥ ॥ ४९ ॥ (र.चिं.,र.रा.प.)

अर्थ–जिस पारदमें खपरिया जारित हो उसको विचित्र रंगतका गाढा अत्यन्त ठंडा और सन्निपातका पैदा करनेवाला जाने ॥ ४९ ॥

रसेन्द्रं वर्जयेद्यत्नादीदृशं च घनं गुरुम् । म्रियन्ते जन्तवः सर्वे भक्षणादपरीक्षणात ॥ ॥ ५० ॥ (र. चिं.,र.रा.प.)

अर्थ–विना परीक्षा कियेहुए पारदके भक्षण करनेसे जीवोंकी मृत्यु होतीहै इसलिये भारी और गाढे पारदको भक्षण न करे ॥ ५० ॥

सीमावखालिसकी जरूरत (उर्दू)

सीमाव बाजारी जो एमाल कीमियाईमें काम आताहै वह असली होना चाहिये क्योंकि सुरमा या सीसेकी खाक इसमें अकसर आमेज होतीहै उमदा होनेकी अलामत यह है कि कपडेमें छाननेसे कपडा स्याह न हो और हथेलीपर रगडनेसे स्याही न पैदा हो (सुफहा अकलीमियाँ १३६)

पारदलक्षण ।

स च मुख्यो रसेन्द्रोस्ति नीलोन्तर्बहिरुज्ज्वलः । चित्रो धूम्रः पांडुरस्तु निंदितः सप्तकंचुकैः ॥ ५१ ॥ (रसमानस.)

अर्थ–अनेक प्रकारके पारदोंमें जो बाहरसे उज्ज्वल और भीतर नीला हो वह उत्तम है और रंगबिरंगा धूम्रवर्ण (काला और लाल) पांडुर (श्वेत और पीत) और सात कंचुकोंसे युक्त पारद ग्रहण करना निन्दित है ॥ ५१ ॥

संस्कारके निमित्त पारदका प्रमाण ।

द्वे सहस्रे पलानां तु सहस्रं शतमेव वा । अष्टाविंशत्पलान्येव दशपञ्चैकमेव वा ॥

पलार्द्धेनैव कर्तव्यः संस्कारः सूतकस्य च ॥ ५२ ॥ (र.र.स.,ध.सं.,र.रा.प.)

अर्थ-अब रसार्णवसे पारद शोधनके लिये रसके प्रमाणको कहतेहैं. दो हजार पल, एक हजार पल, सौ पल, अट्ठाईस पल, दश पल, पांच पल, एक पल, या अर्धपलसे भी पारदका संस्कार करना चाहिये ॥ ५२ ॥

अन्यच्च ।

रसो ग्राह्यः सुनक्षत्रे पलानां शतमात्रकम् । पञ्चाशत्पञ्चविंशद्वा द्वादशं चैकमेव वा ॥ ॥ ५३ ॥ पलादूनं न कर्तव्यं रससंस्कारमुत्तमम् ॥ बहुप्रयाससाध्यत्वात्फलं स्वल्पतया भवेत् ॥५४॥ (र.रत्नाक.,र.मं.,र.सा.सं.,र.रा.सुं.,र.रा.प.,नि.र.टी.)

अर्थ-पारदके संस्कारकी सिद्धिके लिये उत्तम नक्षत्र देखकर सौ पल, पचास पल, बीस पल, दश पल, पांच पल अथवा एक पलही पारद ग्रहण करना चाहिये । एक पलसे न्यून पारदका संस्कार नहीं करे कारण कि, परिश्रमकी अपेक्षा फल अत्यन्त ही कम होताहै ॥ ५३ ॥ ५४ ॥

अन्यच्च ।

शतं पंचाशतं वापि पंचविंशद्दशैव च । पञ्चैकं वा पलं चैव पलार्द्धं कर्षमेव च॥५५॥ कर्षान्न्यूनो न कर्त्तव्यो रससंस्कार उत्तमः । प्रयोगेषु च सर्वेषु यथालाभं प्रकल्पयेत् ॥ ॥ ५६ ॥ (रसेन्द्रसा. सं., र. रा. सुं.)

अर्थ-संस्कारके लिये सौ पल, पारद हो पचास पल, हो पच्चीस पल, दस पल, पांच पल, एक पल, आधा पल, अथवा एक ही कर्ष (तोला) पारद हो, एक तोलेसे न्यून पारदका संस्कार करना ठीक नहीं है फिर संस्कृत (संस्कार किये हुए)पारदका सब जगह प्रयोग करना चाहिये ५५॥५६

अन्यच्च ।

पलादूनस्य सूतस्य शतपल्यधिकस्य च । न संस्कारः प्रकर्तव्यः संस्कारः स्यात्ततोऽपरः॥ ५७ ॥ (यो. र., बृ. यो.,नि.र.)

अर्थ-एक पलसे न्यून (कम) तथा सौ पलसे अधिक पारदका संस्कार नहीं करना चाहिये यदि सौ पलसे अधिक पारद हो, तो उसका पृथक् संस्कार करना उचित है ॥५७ ॥

कांजीकी विधि ।

राई लै द्वै सेर अरु, चार सेर लै नोन । एक सेर हरदीसहित, पीस मिहीं एकोन॥ आठ सेर मण तोलके, गरम नीर करि सोइ । तामें भली प्रकारते, भिषजन देइ भिजोइ ॥ फिर ऐसी विधि कीजिये, तीन दिना उपरंत । उरद बडा ताके विषै, दै भिजोय गुणवंत ॥ एक पसेरी उरदकी, दार धोय पिसवाय । सुंदर सरसों तेलमें, ताके बरा बनाय ॥ बरा भिजोये पैं जबै, तीन दिवस ह्वै जाय । पारदके शोधन अरथ, यह कांजी जु बताय ॥ (वैद्यादर्श.)

सम्मति-मेरी समझमें यह कांजी पारदके काममें नहीं आसकती कारण कि, जिसमें तैलका संयोग है वह चिकनाईकी वजहसे पारदके मलको काट नहीं सकती इस लिये स्नेहरहित पदार्थों (राईको छोडकर) की कांजी होनी चाहिये ॥

साधारणकांजिकसाधन कांजिकलक्षण ।

सन्धितं धान्यमण्डादि काञ्जिकं कथ्यते जनैः ।

अर्थ-मुख बंदकर किसी पात्रमें रक्खेहुए धान्य और मंडादिकको मनुष्य कांजी कहतेहैं ॥

तुलामितं षष्टिकतण्डुलञ्च प्रगृह्य चात्र विधिवद्विधाय । द्रोणेऽम्भसि क्षिप्तमथ त्रियामास्तत्सप्त रक्षेत्पिहितं प्रयत्नात् ५८॥ ततस्तु कल्कं सकलं निरस्यात्तत्कांजिकं कथ्यत आरनालम्॥तद्भेदि तीक्ष्णं लघु पाचनं च दाहज्वरघ्नं कफवातनाशि ॥ ५९ ॥ (आ. वे. वि.)

अर्थ-पांच सेर साँठीचावलको लेकर एक मन पानीमें विधिपूर्वक डालकर ऊपरसे मुख बंदकर तीन दिनतक यत्नसे रक्षा करे तदनंतर उसमेंसे कल्कको निकाल लेवे बस इसीको ही कांजी कहतेहैं यह कांजी दस्तावर, तीक्ष्ण, हल्की, पाचन, दाहज्वरको नाश करनेवाली और कफको भी नाश करनेवाली है ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

साधारणधान्याम्लसाधन ।

प्रस्थं षष्टिकधान्यस्य नीरप्रस्थद्वये क्षिपेत् । आधारभांडं संरुध्य भूमेर्गर्भे निधापयेत् ॥ ॥ ६० ॥ पक्षादथ समुद्धृत्य वस्त्रपूतञ्च कारयेत् । ततो जातरसं योज्यं धान्याम्लं सर्वकर्म्मसु । धान्याम्लं शालिचूर्णाच्च कोद्रवादिकृतं भवेत् ॥ ६१ ॥ (आ. वे. वि.)

अर्थ-एक सेर चावल तथा दो सेर जलको चिकने घडेमें भरकर ऊपरसे मुखबंदकर धरतीमें गाड देवे १५ दिनके पश्चात् निकालकर कपडेसे छानलेवे तो सम्पूर्ण कार्योंमें देनेयोग्य उस निकलेहुए रसको धान्याम्ल कहतेहैं और धान्याम्ल चावलोंका चूर्ण तथा कोदों आदि धानसे भी बनताहै ॥ ६० ॥ ६१ ॥

१ रसराजं समादाय-इत्यपि । २ संस्कारविधिसिद्धये-इत्यपि ।

सम्मति-वैद्यकमें धान्याम्ल कैसे बनताहै इस बातके दिखानेको यह लिखा, पर जब साधारण धान्याम्लकी क्रियाको जाने तब पारदकर्म संबंधी धान्याम्लको ठीक बनासके ।

पारदोपयोगी धान्याम्ल ।

नानाधान्यैर्यथाप्राप्तैस्तुषवर्जैर्जलान्वितैः । मृद्भांडं पूरितं रक्षेद्यावदम्लत्वमाप्नुयात् ॥ ॥ ६२ ॥ तन्मध्ये भृंगराण्मुण्डी विष्णुक्रांता पुनर्नवा । मीनाक्षी चैव सर्पाक्षी सहदेवी शतावरी ॥ ६३ ॥ त्रिफला गिरिकर्णी च हंसपादी च चित्रकम् ॥ समूलं कुट्टयित्वा तु यथालाभं विनिक्षिपेत् ॥ ॥ ६४ ॥ पूर्वाम्लभाण्डमध्ये तु धान्याम्लकमिदं स्मृतम् । स्वेदनादिषु सर्वत्र रसराजस्य योजयेत् ॥ अत्यम्लमारनालं वा तदभावे प्रयोजयेत् ॥ ६५ ॥ (वै.क.,र.रा. सुं.,र.सा.प.,बृ.यो.,र.रा.प.,बाचबृ.श.क.)

अर्थ--अनेक प्रकारके धान्य जितने मिलसकें उनके ऊपरके छिलकोंको दूरकर एक चिकने घडेमें डालकर ऊपरसे जल भरदेवे फिर उसका मुख बंदकर तबतक धरतीमें गडा रहनेदेवे जबतक कि, उसमें अच्छीतरहसे खट्टापन न आजावे तदनंतर उस कांजीके वर्तनमें जलभंगरा, मुंडी, कोयल, सांठकी जड, मछैछी, सर्पाक्षी (नागफणी), सहदेवी, शतावर, त्रिफला, गिरिकर्णी (जवासा), हंसपादी (लालरंगका लज्जालु), चीता इनमेंसे जो जो जितने २ मिलसकें उनको मूलसहित कूटकर भरदेवे तो उस पूर्वोक्त कांजीको धान्याम्ल कहतेहैं । उसको पारदके स्वेदनादि संस्कारके लिये प्रयुक्त करै अगर यह धान्याम्ल नहीं मिलै तो खट्टे आरनालका प्रयोग करे ॥ ६२--६५ ॥

धान्याम्ल ।

सर्वधान्याम्लसन्धानं तुषवर्ज्यं तु कारयेत् । ततस्तत्रैव सन्धाने निक्षिपेदोषधीरिमाः ६६ गिरिकर्णी च मीनाक्षी सहदेवी पुनर्नवा । उरगा त्रिफला क्रान्ता लघुपर्णी शतावरी॥ ॥ ६७ ॥ तेन युक्तं रसं स्विन्नं त्रिदिनं मृदु वह्निना । दोलायन्त्रेण तीव्रेण मर्दयित्वा पुनः पुनः ॥ ६८ ॥ (धं.ध.संहिता)

अर्थ--प्रथम तुषरहित सम्पूर्ण धानोंका संधान बनावे फिर उसमें गिरिकर्णी (श्वेतहर्मल),मीनाक्षी(गोरखपान), सहदेवी, सांठी, त्रिफला, विष्णुक्रान्ता, मूर्वा, शतावर इन औषधियोंको यथालाभ डाले । फिर उसमें पारदको कोमल अग्निसे तीन दिवसतक दोलायंत्रसे स्वेदन करै ॥ ६६--६८ ॥

कांजी बनानेकी तरकीब (उर्दू)

चाँवलको सिरकः तुर्शमुकत्तर या दहीके पानीमें जिसको अरबीमें माइउलराइब कहतेहैं खूब पकावे जिसमें गलकर चावलका पेट फटजावे बादहू उसको घोटकर छानले और शीशेमें रखकर चालीस रोजतक धूपमें रहनेदे निहायत उमदा सिरकः काबिल एमाल कीमियाँ होजावेगा । सुफहा (किताब अकलीमियाँ ९९)

पटसारण ।

चतुर्गुणेन वस्त्रेण बद्धा संगालितो रसः । विमुक्तो नागवंगाभ्यां जायते पटसारितः॥ ॥ ६९ ॥ (बृ.यो.)

अर्थ--चौलर कियेहुए कपडेमें पारदको बांधकर (कमसे कम २१ बार) छाने तो इस पटसारण क्रियासे पारद नागवंगके दोषसे मुक्त होताहै ॥ ६९ ॥

स्वेदनसंस्कारविधि ।

लहसन राई पीसिकै, द्वै वरिया बनवाय। पहिली वरियाके विषै, पारद देइ धराय ॥ दूजी वरिया लेइकै, वरियापै चुपकाय । गोला सो करि च्यारि तह, कपरा विषै बँधाय ॥ हँडियामें कांजी भरै गोला दे लटकाय । दोलयन्त्रकीसी तरह, नीचे अग्नि जराय ॥ मन्द मन्द स्वेदन करै, या विधि निसदिन तीन । संस्कार स्वेदन यहै, वर्णन कियो प्रवीन ॥ (वैद्यादर्श)

अन्यच्च ।

रसं चतुर्गुणे वस्त्रे दिनं दोलागतं पचेत् । बराव्योषाग्निकन्याक्ते काञ्जिके स्वेदनं त्विदम् ॥ ७० ॥ (रसेन्द्रसार सं.)

अर्थ--त्रिफला, त्रिकुटा, घीग्वार और चीतेके लेप कियहुए चौलर कपडेमें पारदको बांधकर कांजीमें रखकर दोलायंत्रद्वारा पकावे तो इसको स्वेदन कहतेहैं ॥ ७० ॥

अन्यच्च ।

दिनं व्योषवराबह्निकन्याकल्के सकांजिके । रसं चतुर्गुणे वस्त्रे बद्धा दोलाभिधे पचेत् ॥ ॥ ७१ ॥ (र.रा.प.टिप्पणी)

अर्थ--त्रिकुटा, त्रिफला, चित्रक और घीकुमारीके कल्कसे लेप कियेहुए चौलर कपडेमें पारदको बांधकर और उसको कांजीमें रख दोलायंत्रसे पकावे तो इसको स्वेदन कहतेहैं७१

अन्यच्च ।

त्र्यूषणं लवणासूर्य्यौ चित्रकार्द्रकमूलकम् । क्षिप्त्वा सूतो मुहुः स्वेद्यः कांजिकेन दिनत्रयम् ॥ ७२ ॥ (र. र. स., र. रा. सुं., र. रा. शं., र. सा. प., नि. र., र.रा.प.)

अर्थ--सोंठ, मिर्च, पीपल, सेंधानोन, राई, चित्रक, अदरख और मूली इनको पीसकर कपडेपर लेप करे । फिर लेप कियेहुए उस कपडेमें पारदको बांधकर दोलायंत्रद्वारा कांजीसे तीन दिन स्वेदन करे ॥ ७२ ॥

अन्यच्च ।

आसुरि पटुकटुकत्रयचित्रार्द्रकमूलकैः कलांशैश्च । सूतस्य तु कांजिकेन तु त्रिदिनं मृदुवह्निना स्वेदः ॥ ७३ ॥ (ध. ध. सं., रसेन्द्रक.)

अर्थ--राई, सेंधानोन, सोंठ, मिर्च, पीपल, चित्रक, अदरख और मूली इनको पारदसे पोडशांश लेकर और कांजीसे पीसकर लेप कियेहुए कपडेमें पारदको बांधकर मृदु अग्नि देकर कांजीमें तीन दिन स्वेदन करे ॥ ७३ ॥

अन्यच्च ।

मूलकानलसिंधूत्थत्र्यूषणार्द्रकराजिकाः । रसस्य षोडशांशेन द्रव्यं युंज्यात्पृथक्पृथक् ॥ ७४ ॥ द्रव्येष्वनुक्तमानेषु मतं मानमितं बुधैः । पटावृतेषु चैतेषु सूतं प्रक्षिप्य कांजिके ॥ ७५ ॥ स्वेदयेद्दिनमेकं च दोलायंत्रेण बुद्धिमान् । स्वेदात्तीव्रो भवेत्सूतो मर्दनाच्च सुनिर्मलः ॥ ७६ ॥ (ध. ध. सं., र. रा. प.)

अर्थ--मूली, चित्रक, सैंधव, सोंठ, मिर्च, पीपल, अदरख और राई इनको पारदसे षोडशांश पृथक् २ ग्रहण करे ॥ जहां द्रव्योंका प्रमाण निश्चित नहीं किया हो वहां षोडशांश लेना चाहिये फिर इन औषधियोंसे लेप किये हुए चौलर कपडेमें पारदको बांधकर और कांजीमें डालकर पंडितजन दोलायंत्रसे एक दिनतक स्वेदन करे स्वेदन करनेसे पारद तीक्ष्ण होताहै और मर्दनसे निर्मल होताहै ॥ ७४--७६ ॥

अन्यच्च ।

त्र्यूषणं लवणं राजीरजनीत्रिफलार्द्रकम् । महाबला नागबला मेघनादः पुनर्नवा७७॥ मेषशृंगी चित्रकं च नवसारं समंसमम् । रसस्य षोडशांशेन सर्वं युंज्यात्पृथक् पृथक् ॥ ७८ ॥ एतत्समस्तं व्यस्तं वा पूर्वाम्लेनैव पेषयेत् । प्रलिप्तेन कल्केन वस्त्रमंगुलमात्रकम् ॥ ७९ ॥ तन्मध्ये निक्षिपेत्सूतं बद्ध्वा तत्रिदिनं पचेत् । दोलायंत्रेम्लसंयुक्ते जायते स्वेदितो रसः ॥ ८० ॥ (वैद्यक. द्रु., र.रा. सुं., र. रा. प., र. रा. शं.)

अर्थ--सोंठ, मिर्च, पीपल, सैंधव, राई, हल्दी, त्रिफला, अदरख, महाबला (सहदेवी), नागबला (गंगेरन), चौराई, सोंठकी जड, मेढासिंगी, चित्रक और नवसार इन सबको पृथक् २ पारदसे षोडशांश (सोलहवां हिस्सा) ले इनमेंसे जो कमती वढती हो या समस्त हों उन सबको पूर्वोक्त कांजीसे पीसे फिर उससे कपडेपर एक एक अंगुल मोटा लेप करे । तदनंतर चौलर कियेहुए उस कपडेमें पारदको बांधकर खट्टी वस्तुसे युक्त दोलायंत्रमें तीन दिवसपर्य्यंत पचावे तो पारदका स्वेदन संस्कार होताहै ॥ ७७--८० ॥

१ त्रिफलार्द्रकचित्रकैस्तुरीयांशैः । २ एकाशीतिगुणेम्ले दोलायन्त्रे दिनत्रयं स्वेदः । ३ पूर्वोक्तेषु च द्रव्येषु--इत्यपि ।

अन्यच्च ।

राजिका चित्रकं हिंगु लवणं व्योषसंयुतम् । सूतपादमिदं सर्वं स्वर्जिकाक्षारसंयुतम् ॥ ॥ ८१ ॥ शिग्रुपत्ररसेनैव पिष्ट्वा कुंडलिकाकृतिम् । कुर्य्याद्भूर्जदले सम्यगथवा कदलीदले ॥ ८२॥ संपके सदृढे वापि वस्त्रखंडे चतुर्गुणे । रसं मध्ये विनिक्षिप्य बध्नीयात्तस्य पोटलीम् ॥ ८३ ॥ क्षाराम्लमूत्रवर्गेण स्वेदयेच्च दिनत्रयम् । तथा स्वेदः प्रकर्तव्यो मज्जिता पोटली तथा ॥ ८४॥ मृण्मयस्यैव भाण्डस्य तलस्पर्शो भवेन्न च । दोलायंत्रेण संस्वेदः कर्तव्यो मृदु वह्निना ॥ ८५ ॥ (ध. सं.)

अर्थ--राई, चीतेकी छाल, हींग, सोंठ, मिर्च, पीपल और सज्जीखार ये सब पारदसे चौथाई भाग हों इनको सेंजनेके पत्तोंके रससे घोटकर भोजपत्र अथवा केलेके पत्तेपर कुंडलके समान गोल टिकिया बनावे फिर गाढे चिकने चौलर कपडेमें उस टिकियाकी पोटली बांधे तदनंतर क्षार अम्लवर्ग और मूत्रवर्गसे तीन दिवसपर्यंत स्वेदन करे । स्वेदन करनेको यह विधि है कि, पारदकी पोटली रसके भीतर डूबी रहे और पात्रके पेंदेसे चिपटी हुई न रहे और दोलायंत्रद्वारा कोमल अग्नि देना चाहिये ॥ ८१--८५ ॥

अन्यच्च ।

ततश्च स्वेदनं कुर्याद्यथावत्तु शुभे दिने । सूतस्य स्वेदनं कार्यं दोलायंत्रेण वार्तिकैः॥ ॥ ८६ ॥ क्षारौ चाम्लेन सहितौ तथा च पटुपंचकम् । त्रिकुटा त्रिफला चैव चित्रकेन समन्वितम् ॥ ८७ ॥ पुष्पकाशीससौराष्ट्रीसर्वाण्येव तु मर्दयेत् । औषधानि समांशानि रसादष्टमभागतः ॥ ८८ ॥ अंधमूषा कृता तेषां तन्मध्ये पारदं क्षिपेत । त्रिगुणेन सुवस्त्रेण भूर्जपत्रेण वेष्टयेत् ॥ ८९ ॥ त्रिगुणेन च सूत्रेण बद्ध्वा तु रसपोटलीम् । लंबायमानां भांडे तु तुषिवारिप्रपूरिते ॥ ९० ॥ त्रिदिनं स्वेदयेत्सम्यक् स्वेदनं तदुदीरितम् ॥ ९१ ॥ (ध. ध. सं.)

अर्थ--अब शुभ दिनमें विधिपूर्वक स्वेदनसंस्कार करे और वैद्य दोलायंत्रसे पारदका स्वेदन करे. सज्जीक्षार, यवक्षार, जंबीरीका रस, पाँचों नोंन, सोंठ, मिर्च, पीपल, त्रिफला, चित्रक, पुष्पकासीस (पीलाकसीस), खडिया मिट्टी इन

१ तन्मध्ये रसमादाय वध्नीयात्पोटलीं शुभाम्--इत्यपि ।

सबको पारदसे आठवां हिस्सा लेकर महीन पीस लेवे तदनंतर उसकी अंधमूषा बनाकर उसमें पारदको रक्खे और उसको तिह्लर भोजपत्रमें लपेटकर फिर तिह्लर कपडेमें बांध कांजीसे भरे हुए घडेमें उस पोटलीको लटकाकर तीनदिन लगातार पारदका पाचन करे तो इसको स्वेदन कहते हैं। यह स्वेदनकी दूसरी क्रियाहै ॥ ८६-९१ ॥

अन्यच्च ।

कार्पासपत्रनिर्यासैः स्विन्नस्त्रिकटुकान्विते। सप्तकंचुकनिर्मुक्तः सप्ताहाज्जायते रसः ॥ ॥९२॥स्वेदनं मर्दनं त्वंते क्षालनं तप्तकांजिकैः ॥९३॥ (ध. सं.,रस.क. द्रु., रसार्णव.)

अर्थ-सोंठ, मिर्च, पीपलसे मिले हुए कपासके पत्तोंके रसमें पारदको स्वेदन करे तो पारद सात दिवसमें ही सात कंचुकोंसे रहित हो जाताहै इसे स्वेदन कहतेहैं और मर्दनके अंतमें तपाई हुई कांजीसे धोडालना चाहिये ॥९२॥ ९३ ॥

अथ स्वेदनकर्मकी परिभाषा ।

रसस्य षोडशांशेन द्रव्यं युंज्यात्पृथक्-पृथक् । द्रव्येष्वनुक्तमानेषु मतं मानमिदं बुधैः ॥ ९४ ॥ त्रिदिनं स्वेदने प्रोक्तमेकैकं च निरन्तरम् । स्वेदयेद्रसराजं तु नातितीक्ष्णेन वह्निना ॥ ९५ ॥ (र. सा. प., नि. र., र. रा. प.)

अर्थ-पारदके स्वेदन करनेमें जहां औषधियोंका मान नहीं लिखा है वहां पारदसे प्रत्येक औषधिका षोडशांश ग्रहण करना चाहिये यह पंडितोंका मत है जहां स्वेदन करनेका समय निर्धारित न हो वहां तीन दिन स्वेदन करै अथवा तीन दिन स्वेदन न करसके तो निरंतर एकही दिन स्वेदन करे और स्वेदन करनेमें तीव्राग्नि नहीं देना किन्तु मंदाग्नि देना उचितहै ॥ ९४ ॥ ९५ ॥

स्वेदनसंस्कार ।

अथातः स्वेदनं वक्ष्ये यथा तीव्रो भवेद्रसः। आयसे मृन्मये पात्रे स्वेदस्तत्र विधीयते ॥ ॥ ९६ ॥ दिव्यौषधिकषायाम्लैः शिग्रुमूलैः सराजिकैः । लवणत्रिकटुक्षारैर्विषोपविषमूत्रकैः ॥ ९७ ॥ कलांशमानः कर्तव्यो मृद्वग्निस्वेदने विधिः। एकविंशद्दिने चैव जायते सोऽतितीव्रकः ॥ ९८ ॥ (र. प.)

अर्थ-अब जिस प्रकार पारद तेज होजाय उस स्वेदन संस्कारको कहता हूँ दिव्यौषधियोंका कषाय (काढा) अम्लवर्ग सेंजनेकी जड इन सबका पारदसे पृथक् २ सोलहवां हिस्सा लेकर मंदाग्निसे इक्कीस दिन स्वेदन करै तो पारद अत्यन्त तीव्र होताहै ॥ ९६-९८ ॥

स्वेदनकी अवधि ।

स्वेदनादिक्रिया कार्या गुणाधिक्याय पंडितैः । एकादिसप्तपर्य्यंतं स्वल्परोगेऽथवा सकृत् ॥ ९९ ॥ (र. सा. प.)

अर्थ-पंडितोंको चाहिये कि, पारदके गुणकी अधिकताके लिये एकवारसे लेकर सातवारतक स्वेदन करै यदि रोग स्वल्पही होवे तो एकही वार स्वेदन करै ॥ ९९ ॥ इति स्वेदनसंस्कार ।

अथ मर्दनसंस्कार ।

एवं कृते स्वेदने तु मर्दनं कारयेत्ततः । तथा प्रक्षालनं कार्यं यथा न क्षीयते रसः॥ ॥ १०० ॥ (ध. सं.)

अर्थ-इस प्रकार स्वेदन संस्कारको करके फिर मर्दन संस्कारको करै और स्वेदनके पीछे जो कांजीसे क्षालन करते हैं उसको बडी सावधानीसे करना चाहिये क्योंकि उसमें पारदका क्षय अधिक होताहै ॥ १०० ॥

मर्दन-दोहा ।

लीजै चूनाकी कली, बहुरि ईंटको चूर । दधि गुड सैंधेलवण जुत, रस घोटै भरिपूर ॥ तीन दिवसपर्य्यंत लों, फिर कांजीते धोय । इस पारदको शुद्ध करि, सकल दोष दे खोय ॥ (वैद्यादर्श.)

अन्यच्च ।

निशेष्टिकाधूमरजोम्लपिष्टो विकंचुकः स्याद्दिवसेन सोर्णः ॥ १०१ ॥ (यो. तं.)

अर्थ-ऊन, हल्दी, ईंटका चूरा, घरका धूआँ इनके साथ पारदको जंभीरीके रससे घोटे तो पारद कंचुकरहित होताहै ॥ १०१ ॥

अन्यच्च ।

इष्टिकाचूर्णचूर्णाभ्यामादौ मर्द्यो रसस्ततः। दध्ना गुडेन सिंधूत्थराजिकागृहधूमकैः ॥ ॥ १०२ ॥ (वै. क., वा. बृ. श.क., र. र. स., र. रा. प.)

अर्थ-प्रथम ईंटका चूरा और चूनेसे पारदको मर्दन करै तदनंतर सैंधव, राई, गुड, घरका धूआँ और दहीके साथ मर्दन करै ॥ १०२ ॥

गृहधूमेष्टिकाचूर्णं तथा दधिगुडान्वितम् । लवणासुरिसंयुक्तं क्षिप्त्वा सूतं विमर्दयेत्॥ ॥ १०३ ॥ षोडशांशं तु तद्द्रव्यं सूतमानान्नियोजयेत् । सूतं क्षिप्त्वा समं तेन दिनानि त्रीणि मर्दयेत् ॥१०४॥ जीर्णाभ्रकं तथा बीजजीर्णसूतं तथैव च । नैर्मल्यार्थं हि सूतस्य खल्वे धृत्वा तु मर्दयेत् ॥ १०५ ॥ गृह्णाति निर्मलो रागान् ग्रासेग्रासे विम-

१ भ्रबीजजीर्णं वा ग्रासेग्रासे पुनःपुनः । इत्यपि ।

र्दितः। मर्दनाख्यं हि यत्कर्म तत्सूते गुणकृद्भवेत् ॥ १०६ ॥ (र. रा. शं., नि. र., र. र. स., र. रा. सुं., ध. सं., र. रा. प.)

अर्थ-घरका धूआं, ईटकाचूरा, दही, गुड, सैंधव और राई इनको पारदके साथ तीन दिन मर्दन करै यहां जितना पारद हो उसका सोलहवां हिस्सा प्रत्येक औषधिका लेना ठीक है। और जिस पारेमें अभ्रक जीर्ण किया हो या बीज (सोना चांदी) का जारण किया हो उसको निर्मल करनेके लिये पारदको खरलमें डालकर मर्दन करे तो प्रत्येक ग्रासके अंतमें निर्मल हुआ पारद उत्तम वर्णको प्राप्त करताहै यह मर्दन संस्कार पारदमें उत्तम गुणको देताहै ॥ १०३-१०६ ॥

अन्यच्च ।

गुडदग्धोर्णालवणैर्मंदिरधूमेष्टिकासुरीसहितैः ॥ रसषोडशांशमानैः सकांजिकैर्मर्दनं त्रिदिनम्॥१०७॥(ध. ध. सं.,रसे.कल्प.)

अर्थ-गुड, ऊनकी राख, सैंधव, घरका धूआं, ईटका चूरा और राई इनमेंसे प्रत्येक औषधिका पारदसे सोलहवां हिस्सा लेकर कांजीके साथ तीन दिवसतक पारदका मर्दन करै १०७

अन्यच्च ।

गृहधूमेष्टिकाजाजीदग्धोर्णागुडसैन्धवैः। सकाञ्जिकैः षोडशांशैर्मर्दनं त्रिदिनं शुभम् ॥ ॥ १०८ ॥ (रसेन्द्रसारसं.)

अर्थ--घरका धूआं, ईटका चूरा, राई, ऊनकी भस्म, गुड, सैन्धव ये प्रत्येक पारदसे सोलहवां हिस्सा लेकर कांजीके साथ पारदको तीन दिवसतक मर्दन करे ॥ १०८ ॥

अन्यच्च ।

धूमसारगुडव्योषरजनीश्वेतसर्षपैः । इष्टिकाकांजिकोर्णाभिस्त्रिदिनं मर्दनं ततः १०९ निर्मलो जायते सत्यमात्मभावं प्रकाशयेत ॥ ११० ॥ (र. प., नि. र.)

अर्थ--भाडका धूआं, गुड, सोंठ, मिर्च, पीपल, हल्दी, सफेद सरसों, ईटका चूरा, कांजी और ऊनसे पारदको तीन दिवसतक मर्दन करे तो निर्मल हुआ पारद अपने भावको प्रकाश करताहै ॥ १०९ ॥ ११० ॥

अन्यच्च ।

रक्तेष्टिकानिशाधूमसारोर्णाभस्मचूर्णकैः । जंबीरद्रवसंयुक्तैर्मुहुर्मर्द्यो दिनत्रयम्॥१११॥ दिनैकं वापि सूतः स्यान्मर्दनान्निर्मलः परम्। ऊर्ध्वपातनयंत्रेण गृह्णीयाच्च पुनःपुनः॥ पट्टसारणतो वापि क्षालनाद्वारनालतः ११२॥ (र.रा. सुं.,र. रा. शं., र. रा. प.,नि.र.)

अर्थ--लाल ईटका चूरा, हल्दी, भाडका धूआँ, ऊनकी भस्म और चूनेको जंभीरीके रसमें डालकर पारदको तीन दिवसतक बार बार मर्दन करे अथवा एक दिवसतक ही मर्दन करे तो पारद निर्मल होताहै और बार २ ऊर्ध्व पातनयंत्रसे पातनद्वारा ग्रहण करे कपडेसे छानलेवे अथवा अम्लपदार्थसे धोना चाहिये मर्दन करनेके पश्चात् पृथक् करनेके लिये यह क्रिया उत्तम है ॥ १११ ॥ ११२ ॥

अन्यच्च ।

पटवः पंच चूर्णोर्णासेष्टिकागृहधूमकम् । क्षारत्रयं कांजिकं च कलांशेन सह क्षिपेत् ॥ ११३ ॥ जंबीराद्यम्लयोगेन मर्दयेत्तं दिनत्रयम् । स्वाभाविकत्रिदोषस्य शांत्यर्थं मूर्च्छयेद्रसम् ॥ ११४ ॥ (र. प.)

अर्थ-पाचों नोन, चूना, ऊन, ईटका चूरा, घरका धूआं, तीनों क्षार (जवाखार, सज्जीक्षार, सुहांगा) और कांजी इनमेंसे प्रत्येक औषधि का षोडशांश लेकर जंभीरी आदि अम्लपदार्थोंसे तीन दिवसतक मर्दन करे तो पारदके स्वाभाविक तीन दोष (विष, वह्नि और मल) नाशको प्राप्त होतेहैं ॥ ११३ ॥ ११४ ॥

सम्मति-यद्यपि पाठमें मूर्च्छन कहाहै किन्तु रसपद्धतिने इसको मर्दन ही मानाहै और सब पुस्तकोंके मिलानेसे मर्दन ही निश्चय होताहै 'मूर्च्छयेत्' का अर्थ यहां यह है कि उपरोक्त मर्दन कर आगे मूर्च्छन करे।

अन्यच्च ।

पंचपटुक्षारत्रयचूर्णोर्णाभस्मचुल्लिधूमतो मृदितः। सिद्धार्थराजिकारजनीष्टिकागुडव्योषतोऽम्लतास्त्रिदिनम् ॥ ११५॥ (र.प.)

अर्थ--पांचो नोन, सुहागा, जवाखार, सज्जीखार, चूना, ऊनकी राख, चूल्हेका धूआं, सरसों, राई,हल्दी, ईटका चूरा, गुड, त्रिकुटा और खटाई इनसे तीन दिवसतक पारदको मर्दन करे॥ ११५ ॥

अन्यच्च ।

प्रक्षाल्य कांजिकैः सूतं तस्मादादाय मर्दयेत् । गृहधूमेष्टिकाचूर्णं दग्धोर्णा लवणं गुडम् ॥ ११६ ॥ राजिका त्रिफला कन्या चित्रकं बृहती कणा। बंध्या कर्कोटकी चैव व्यस्तं वाथ समस्तकम् ॥ ११७ ॥ क्वाथयेदारनालेन मर्द्यमर्द्यं त्र्यहं रसम् । प्रक्षाल्य कांजिकेनैव तमादाय विमूर्छयेत् ॥ ११८ ॥ (र. प.)

अर्थ-स्वेदनकर्मके पश्चात् पारदको कांजीसे धोकर ग्रहण करे। तदनंतर घरका धूआं, ईटका चूरा, ऊनकी राख, सैंधानोंन, गुड, राई, त्रिफला, घीकुमारी, चित्रक, कटेरीकी जड, पीपल और बांझककोडा अलग २ या एकसाथ क्वाथ करके अम्लवर्गके साथ पारदको तीन दिवसतक मर्दन करे फिर कांजीसे ही धोकर मूर्छन करै ॥ ११६-११८ ॥

अन्यच्च ।

कुमारिकाचित्रकरक्तसर्षपैः कृतैः कषायैर्बृ-

हृतीविमिश्रितैः। फलत्रिकेणापि विमर्दितो रसो दिनत्रयं सर्वमलैर्विमुच्यते ॥ ॥ ११९ ॥ (वै.क.द्रु.,वाच.बृ.,र.रा.सुं., नि.र.,श.क.)

अर्थ–घीकुमारी, चित्रक, लालसरसों, कटेरीकी जड और त्रिफला इनके किये हुए काथसे तीन दिवसपर्य्यंत मर्दन कियाहुआ पारद सम्पूर्णमलोंसे मुक्त होजाताहै ॥ ११९ ॥

विचार–वाचस्पत्यबृहदभिधान, शब्दकल्पद्रुम इन ग्रंथोंमें इस संस्कारको केवल मर्दनही माना है परन्तु रसराजसुन्दर तथा निघंटुरत्नाकरवालेने मूर्च्छनसंस्कार माना है और उसका पाठ इसप्रकार है "फलत्रयं चित्रकसर्षपानां कुमारिकन्याबृहतीकषायैः। दिनत्रयं मर्दितसूतकस्तु विमुच्यते पंचमलादिदोषैः॥"

अन्यच्च।

घिवकुमार चित्रक बहुरि,लजै सरसों रक्त। बडीकटेरीके सहित, त्रिफला लीजै फक्त॥ ये समान सब तोलिके, काढा अष्टम अंस। तीनि दिवस या क्वाथते, पारद घोटि प्रशंस॥ (वैद्यादर्श.)

अन्यच्च।

स्नुह्यर्कोन्मत्तकन्याभिस्त्रिफलायाश्चित्रकेण च। लवणेन समं सूतं मर्दयेन्मूर्छनौषधैः॥ ॥ १२० ॥ (र.प.)

अर्थ–थूहरका दूध, आकका दूध, घीकुमारी, त्रिफला, चित्रक और नोन इन औषधियोंके साथ पारदको मर्दन करे॥ १२०॥

अन्यच्च।

क्षाराम्लैर्लवणैर्मूत्रैर्विषैरुपविषैस्तथा। दिव्यौषधिसमूहेन मर्दयेद्दिवसत्रयम् ॥ ॥ १२१ ॥ पारदस्य कलांशेन भेषजेन प्रमर्दयेत् ॥ १२२ ॥ (टो.नं.,ध.ध.सं.,र.रा.सुं.)

अर्थ–क्षार, अम्ल, लवण, मूत्र, विष, उपविष और दिव्यौषधि पारदसे पृथक् २ षोडशांश लियेहुए इन पदार्थोंसे पारदको तीन दिवसतक मर्दन करे॥ १२१॥ १२२॥

प्रत्येकसंस्कारान्तमें मर्दन।

दिनैकं मर्दयेत्सूतं कुमारीसम्भवैर्द्रवैः। तथा चित्रकजैः क्वाथैर्मर्दयेदेकवासरम् ॥ काकमाचीरसैस्तद्वद्दिनमेकं च मर्दयेत्। त्रिफलायास्तथा क्वाथे रसो मर्द्यः प्रयत्नतः॥ १२४ ॥ ततस्तेभ्यः पृथक्कुर्यात्सूतं प्रक्षाल्य कांजिकैः। भवेदेकैकसंस्कारस्यान्ते सुदृढमर्दनम् ॥ १२५ ॥ मर्दितं स्थापयेद्घर्मे यावच्छुष्कतरो भवेत्। तक्रेण कांजिकेनाथ सूक्तेनोष्णोदकेन वा॥ १२६॥ ततः सर्वं समानीय क्षालयेदतिबुद्धिमान्। तथा प्रयत्नं कुर्वीत यथा न क्षीयते रसः॥ ॥ १२७ ॥ (ध.सं.,टो.नं.)

अर्थ–प्रत्येक संस्कारके अंतमें मर्दनके विधानको कहतेहैं। पारदको घीकुमारीके रससे एक दिन मर्दन करै अथवा चित्रकके काथसे मर्दन करे या काकमाची (मकोय, केवैया) के रससे एक दिन मर्दन करे अथवा त्रिफलाके रससे यत्नपूर्वक एकदिवस मर्दन करे फिर उन औषधियोंसे पारदको कांजीसे धोकर ग्रहण करे इसी बातको शास्त्रकारोंने भी कहाहै जैसे प्रत्येक संस्कारके अंतमें पारदको दृढ मर्दन करै और मर्दन कियेहुए पारदको घाममें सुखालेवे। फिर मट्ठा, कांजी, सिरका या गरम जलसेही धो डालना चाहिये लेकिन धोनेके समय पारद क्षय न हो ऐसा विचार अवश्य करना चाहिये॥ १२३–१२७॥

विधि–प्रथम कोई संस्कार करके उसके पीछे घीकुमारी आदि चार चीजोंसे चार दिनतक मर्दन कर फिर कांजी वगैरहसे धो डालना उचित है यह मेरी सम्मति है।

तप्तखल्वमें मर्दन करना।

युक्तं सर्वस्य सूतस्य तप्तखल्वे विमर्दनम् ॥ ॥ १२८ ॥(र. मं., कामरत्न., र. रा. प.)

अर्थ–समस्त प्रकारके पारदका तप्तखल्वमें मर्दन करना चाहिये अन्यथा फलकी सिद्धि नहीं होतीहै॥ १२८॥

मर्दनके लिये औषधिका मान तथा तप्तखल्वमें मर्दनकी आज्ञा।

पारदात्षोडशांशं तु मिलित्वा सकलं भिषक्। चूर्णं प्रदेयं च पलं मर्दने तप्तखल्वके॥ ॥ १२९ ॥ (योगर.)

अर्थ–जहां पारदके विषयमें कोई औषधियोंका प्रमाण नहीं लिखाहो वहां सम्पूर्ण औषधियोंको पारदसे सोलहवां हिस्सा लेना चाहिये और सोलह पल पारदमें एक पल औषधिचूर्ण डालना उचित है और उसको तप्तखल्वमें मर्दन करै॥ १२९॥

मर्दनोपयोगी उपदेश।

भिषग्विमर्दयेच्चूर्णे मिलित्वा षोडशांशतः। प्रमर्द्योष्णारनालेन क्षालयेत्काचभाजने॥ १३०॥ उष्ण एव रसः कार्यः शीतं सर्वात्मना त्यजेत्। शीते च बहवो दोषाः षंढाद्याः संभवंति हि। दृढं प्रमर्दयेत्सूतं रक्षितं द्वित्रिसेवकैः॥१३१॥(टो. नं.)

अर्थ–पारदको षोडशांश औषधिचूर्णके साथ मर्दन कर काचके पात्रमें उष्ण आरनालसे धोडाले पारदको उष्णपदार्थोंसे मर्दन, स्वेदन या क्षालन करे शीतकर्मको सर्वथा

त्यागदे क्योंकि शीतकर्ममें बहुतसे षंढादि दोष हैं, दो तीन नौकर रखकर अत्यन्त दृढ मर्दन करावे ॥ १३०॥ १३१ ॥

मर्दन और मूर्च्छन ।

विशालांकोलचूर्णेन वंगदोषं विमुंचति । राजवृक्षो मलं हंति पावको हंति पावकम् ॥ १३२ ॥ चांचल्यं कृष्णधत्तूरस्त्रिफला विषनाशिनी । कटुत्रयं गिरिं हन्ति असह्याग्निं त्रिकंटकः ॥ १३३ ॥ प्रतिदोषं कलांशेन तत्र सूतं सकांजिकम् । सुवस्त्रगालितं खल्वे सूतं क्षिप्त्वा विमर्दयेत ॥ ॥ १३४ ॥ उद्धृत्य चारनालेन मृद्भांडे क्षालयेत्सुधीः ॥ सर्वदोषविनिर्मुक्तः सर्वकंचुकवर्जितः ॥ १३५ ॥ जायते शुद्धसूतोऽयं योजयेद्रसकर्मसु ॥ १३६ ॥ (र. रा. सुं.)

अर्थ-पारदको इन्द्रायनके फल तथा अंकोलके चूर्णके साथ घोटनेसे वंगदोष नष्ट होताहै। अमलतास पारदके मलको नाश करताहै, चित्रक अग्निदोषको, कालाधतूरा चंचलदोषको और त्रिफला विषदोषको नाश करनेवाला है। त्रिकुटा गिरिदोषको, गोखरूका काथ असह्य (अग्निको न सहनेवाला) दोषको नाश करताहै । प्रत्येक दोषके नाश करनेके लिये पारदसे औषधिका सोलहवां हिस्सा लेकर और उसको कपडेमें छानकर तथा खरलमें पारद और दवाईको डालकर कांजीके साथ मर्दन करे तदनंतर पारदको निकालकर आरनाल अर्थात् कांजीसे धोडाले तो पारद सम्पूर्ण दोष तथा कंचुकोंसे मुक्त होकर अतिशुद्ध होताहै और उसको रसके कर्ममें प्रयोग करे तो कुछ दोष नहींहै ॥ १३२-१३६ ॥

विधि-प्रथम पारदको एक पदार्थके साथ मर्दन कर सायंकालको धोडाले फिर दूसरेदिन दूसरे पदार्थके साथ घोटे इसप्रकार आठदिनतक घोट २ कर नवम दिन तप्तकांजीसे धोकर सुखालेवे फिर जिस रसमें पारद डालनेका काम पडे वहां पारेको डालदेवे तो अवगुण नहीं करताहै ।

मर्दन और मूर्च्छन ।

इष्टिकारजनीचूर्णैः षोडशांशं रसस्य च । मर्दयेत्तं तथा खल्वे जम्बीरोत्थद्रवैर्दिनम् ॥ ॥ १३७ ॥ कांजिकैः क्षालयेत्सूतं नागदोषं विमुंचति । विशालांकोलचूर्णेन वंगदोषं विमुञ्चति ॥ १३८ ॥ राजवृक्षो मलं हंति पावको हंति पावकम् । चांचल्यं कृष्णधत्तूरस्त्रिफला विषनाशिनी ॥ १३९ ॥ कटुत्रयं गिरिं हन्ति प्रसह्याग्निं त्रिकंटकः । प्रतिदोषं पलांशेन तत्र सूतं सकांजिकम् ॥ ॥ १४० ॥ सुवस्त्रगालितं खल्वे सूतं क्षिप्त्वा विमर्दयेत । प्रत्येकं प्रत्यहं यत्नात्सप्तवारं विमर्दयेत् ॥१४१ ॥ उद्धृत्य चारनालेन मृद्भाण्डे क्षालयेत्सुधीः । सर्वदोषविनिर्मुक्तः सर्वकंचुकवर्जितः । जायते शुद्धसूतोऽयं योजयेद्रसकर्मसु ॥ १४२ ॥ (रसमं., आयुर्वे.वि.,र.रा.प.)

अर्थ-ईटका चूरा, हल्दी और चूना इनको पारदसे षोडशांश लेकर जंभीरीके रससे एकदिन घोटकर कांजीसे धोडाले तो पारद नागदोषसे रहित होताहै । इन्द्रायनका फल तथा अङ्कोलफलके चूर्णके साथ वंगदोषको, अमलतासका गूदा पारदके मलको, तथा चित्रकका काथ अग्निदोषको, काले धतूरेका रस चंचलताको,त्रिफलाका काथ विषदोषको, कटुत्रय (सोंठ, मिर्च, पीपल,) गिरिदोषको और गोखरूका काढा असह्य (अग्निको न सहनेवाला) दोषको नाश करता है । प्रत्येक दोषके दूर करनेके लिये पारदसे षोडशांश औषधिको कूट कपर छानकर फिर पारदको कांजोके साथ खरलमें मर्दन करे । पारदको प्रत्येक औषधिके साथ सात२ बार मर्दन करे फिर मिट्टीके वर्त्तनमें कांजीसे धोकर रखले तो पारद समस्त दोष तथा सबकंचुकोंसे रहित होकर अत्यन्त शुद्ध होताहै और उस पारदको रसकर्ममें डालना उचित है ॥ १३७-१४२ ॥

अन्यच्च ।

इष्टकारजनीचूर्णे षोडशांशे रसस्य तु । मर्दयेत्तत्खल्वे तु जम्बीरोत्थैर्द्रवैर्दिनम् ॥ ॥ १४३ ॥ कांजिकैः क्षालयेत्सूतं नागदोषं विमुंचति । विशालांकोलचूर्णेन वंगदोषं विशोधयेत् ॥ १४४ ॥ राजवृक्षस्य मूलेन सकन्येन मलं हरेत् । चित्रमूलस्य चूर्णेन सकन्येनाग्निनाशनम् ॥ १४५ ॥ कृष्णधत्तूरकद्रावैश्चांचल्यं विनिवर्त्तते । त्रिफलाकन्यकाद्रावैर्विषदोषं विमुंचति ॥ कटुत्रयं गिरिं हन्ति असह्याग्निं त्रिकंटकः । प्रतिदोषं कलांशेन तत्र चूर्णं सकन्यकम् ॥ १४७ ॥ सवस्त्रगालितं सूतं खल्वे क्षिप्त्वा यथाक्रमम् । प्रत्येकं प्रत्यहं यत्नात्सप्तरात्रं विमर्दयेत् ॥ १४८ ॥ उद्धृत्य चारनालेन मृद्भाण्डे क्षालयेत्सुधीः । सर्वदोषविनिर्मुक्तः सप्तकंचुकवर्जितः । जायते शुद्धसूतोऽयं योजयेद्वैद्यकर्मणि ॥ ॥ १४९ ॥ (र.सा.प.)

अर्थ-षोडशांश ईंट और हल्दीका चूरा तथा पारदको तप्तखल्वमें डालकर जंभीरीके रससे एक दिन मर्दन करे फिर पारदको कांजीसे धोवे तो नागदोष नष्ट होताहै । इन्द्रायनका फल तथा अंकोलके चूर्णके साथ मर्दनसे पारदका वंगदोष दूर होताहै ॥ अमलतासकी जड तथा घीकुमारीके रसके साथ मर्दन करनेसे पारदका मलदोष जाता रहताहै। घीकु-

मारि और चित्रकके साथ मर्दन करनेसे अग्निदोषका नाश होताहै। श्यामधतूरेके रससे चांचल्यदोषकी निवृत्ति होतीहै। घीकुमारिका रस तथा त्रिफलाके साथ मर्दन करनेसे पारदका विषदोष जाता रहताहै। सोंठ, मिर्च, तथा पीपल, गिरिदोषको दूर करतेहैं। गोखरू तथा घीकुमारीका रस असह्याग्निको नाश करताहै। प्रत्येक दोष दूर करनेके लिये पारदसे षोडशांश औषधिको कूट पीस कपरछान कर प्रत्येक औषधिके साथ सात दिन मर्दन करे और घुटाई तप्त खल्वमें दिनभर होतीरहे फिर कांजीसे धोडाले तो पारद समस्त दोष तथा कंचुकोंसे रहित अत्यन्त शुद्ध होताहै और उसको पारदकर्ममें लगाना चाहिये॥ १४३–१४९॥

मर्दन और मूर्च्छन।

अथातः संप्रवक्ष्यामि दोषाष्टकनिवारणम्। इष्टकारजनीचूर्णैः षोडशांशं रसस्य तु। मर्दयेत्तप्तखल्वे तं जम्बीरोत्थद्रवैर्दिनम्॥ ॥ १५०॥ खल्वं लोहमयं वाथ पाषाणोत्थमथापि वा॥ काञ्जिकैः क्षालयेत्सूतं नागदोषस्य शांतये॥ १५१॥ विशालाङ्कोलचूर्णेन वङ्गदोषं विनाशयेत्। राजवृक्षो मलं हंति चित्रकं वह्निदूषणम्॥ ॥ १५२॥ चाञ्चल्यं कृष्णधत्तूरैस्त्रिफला विषनाशनम्। कटुत्रयं गिरिं हंति असह्याग्निं त्रिकंटकः॥ १५३॥ प्रतिदोषं कलांशेन तत्र चूर्णं सकन्यकम्। सुवस्त्रगालितं सूतं खल्वे क्षिप्त्वा यथाक्रमम्॥ १५४॥ प्रत्येकं प्रत्यहं यत्नात्सप्तरात्रं विमर्दयेत्॥ उद्धृत्योष्णारनालेन मृद्भांडे क्षालयेत्सुधीः॥१५५॥ सर्वदोषविनिर्मुक्तः सप्तकंचुकवर्जितः। जायते शुद्धसूतोऽयं युज्यते वैद्यकर्मणि॥ ॥ १५६॥ (र. र. क., र.रा. शं.,नि.र.)

अर्थ–अब आठदोषोंकी निवृत्तिको कहतेहैं--पारदसे षोडशांश ईटका चूरा, हल्दी और चूनेके साथ पारदको जंभीरीके रससे एकदिन तप्त खल्वमें मर्दन करे और वह तप्तखल्व लोहा अथवा पत्थरका होना उचित है। फिर कांजीसे धोवे तो पारदका नागदोष दूर होताहै। इन्द्रायनके फल तथा अंकोलसे वंगदोषका नाश होताहै। अमलतास मलदोषको नष्ट करताहै। चित्रक अग्निदोषको शान्त करताहै। कालेधतूरेके रसके साथ घोटनेसे चांचल्यदोष दूर होताहै। त्रिफलासे विषदोषकी हानि होतीहै। त्रिकुटा गिरिदोषको भक्षण करनेवाली है और गोखरू असह्याग्निको नाश करताहै। प्रत्येक दोषके दूरकरनेके लिये पारदसे षोडशांश इन औषधियोंको लेकर और कूट पीसकर कपरछान करे तदनंतर पारदको प्रत्येक औषधिके साथ सातदिनतक मर्दन करे और घुटाई दिनभर होती रहे फिर गरम कांजीसे पारदको धोडाले तो पारद सम्पूर्ण दोष तथा कंचुकोंसे रहित होकर अत्यन्त शुद्ध होताहै और उसका चिकित्सामें प्रयोग करना उपयोगी होताहै॥ १५०—१५६॥

१ दोषं विमुंचति–इत्यपि।

अन्यच्च।

रक्तेष्टिकानिशाधूमसारोर्णाभस्मचूर्णकैः। जम्बीरद्रवसंयुक्तैर्नागदोषापनुत्तये॥१५७॥ विशालांकोलमूलानां रजसा कांजिकेन च॥ शनैः शनैः स्वहस्तेन वङ्गदोषविमुक्तये॥ ॥ १५८॥ राजवृक्षस्य मूलोत्थचूर्णेन सह कन्यया॥ मलदोषापनुत्त्यर्थं चित्रको वह्निदूषणम्॥ १५९॥ चांचल्यं कृष्णधत्तूरो गिरिं हन्ति कटुत्रयम्। त्रिफला विषनाशाय कन्यका सप्तकंचुकान्१६०॥(यो.र.,नि.र.)

अर्थ--नागदोष दूर करनेके लिये वैद्यराज जंभीरीके रसके साथ मिले हुए लालईटका चूरा हल्दी घरका धूआं, ऊनकी भस्म, और चूनेके साथ पारदको घोटे इन्द्रायन और अंकालका जडका चूर्ण तथा पारदको कांजीके साथ घोटनेसे वंगदोष दूर होताहै। घीकुमारि तथा अमलतासकी जडके चूरेके साथ घोटनेसे मलदोषको नाश करताहै। एवं चित्रक वह्निदोषको, काला धतूरा चांचल्यदोषको, त्रिकुटा गिरिदोषको नाश करती है। त्रिफला विषदोषको तथा घीकुमारि सातों कंचुकोंको नाश करतीहै॥ १५७–१६०॥

सम्मति–योगरत्नाकरने इसको पृथक् २ कहे मर्दन और मूर्च्छन दोनोंसे भिन्न दिया है, जिससे आशय यही निकलताहै कि इस क्रियामें मर्दन और मूर्च्छन दोनों मिलेहैं।

अन्यच्च।

रक्तेष्टिकानिशाधूमसारोर्णाचुल्लिभस्मकैः॥ सजम्बीरद्रवैर्मर्द्यो नागवंगोपशांतये॥ ॥ १६१॥ राजवृक्षस्य मूलस्य चूर्णेन सह कन्यया। मलदोषापनुत्त्यर्थं मर्दयेत्पारदं भिषक्॥ १६२॥ कृष्णधत्तूरजद्रावैश्चांचल्यविनिवृत्तये। त्रिफलाकन्यकातोयैर्विषदोषापनुत्तये॥ १६३॥ चित्रकस्य तु चूर्णेन सकन्येनाग्निशांतये। आरनालेन चोष्णेन क्षालयेत्प्रतिमर्दनम्॥ १६४॥ रसं तत्र प्रयातं तु शोषयित्वोर्ध्वपातनात्। गृहीत्वा प्रक्षिपेत्सूते स्यादेवं पारदः शुचिः॥ ॥ १६५॥ पारदात्षोडशांशं तु मिलित्वा सकलैर्भिषक्। चूर्णं प्रदेयं चपलं मर्दने तप्तखल्वके॥ १६६॥ अजाशकृत्तुषाग्निं च खनित्वा भूमिमावपेत्। तस्योपरिस्थितं खल्वं तप्तखल्वं जगुर्बुधाः। एतन्मर्दनमाख्यातं रससंशुद्धये बुधैः१६७॥(बृ.यो.)

अर्थ-प्रथम नाग तथा वंगदोष दूरकरनेके लिये लालईंटका चूरा, हल्दी, धूमसार और ऊनकी भस्म इन औषधियों तथा पारेको खरलमें डालकर जँभीरीके रससे मर्दन करै। वैद्य घीकुवारसहित अमलतासकी जडके चूरेसे पारदको मल दोषकी शांतिके लिये मर्दन करै। चांचल्यताकी निवृत्तिके- लिये कालेधतूरेके रससे मर्दन करे। विषदोषकी शांतिके लिये त्रिफला तथा घीकुमारीसे घोटे।गिरिदोष दूर करनेके लिये त्रिकुटा और घीकुमारीके रससे मर्दन करे। और अग्निदोष की शांतिके वास्ते घीगुवारसहित चित्रकके चूर्णके साथ पारद को घोटे और प्रत्येक मर्दनके पीछे गरमकांजीसे धोना चाहिये जो पारद इस मर्दनमें क्षय हुआ हो तो उस पदार्थको सुखाकर ऊर्ध्वपातनयंत्रसे उडाकर पारदमें मिलादेवे तो पारद शुद्ध होताहै। सोलह पल पारदमें मिलीहुई औषधियोंका एक पल डालकर तप्त खल्वमें मर्दन करे। तप्त खल्वका लक्षण यह है धरतीमें गढा खोदकर बकरीकी मेंगनी तथा तुंबों को भर ऊपरसे अग्नि जलावे उसपर खरलको रख दवाईको घोटे तो उसको तप्तखल्व कहतेहैं। रसकी शुद्धिके निमित्त यह मर्दन संस्कार कहाहै॥ १६१--१६७॥

अन्यच्च।

संपूज्य श्रीगुरुं कन्यां बटुकं च गणाधिपम्। योगिनीः क्षेत्रपालांश्च चतुर्थी बलिपूर्वकम्। ॥१६८॥सूतं हरस्यनिलये सुमुहूर्ते विधोर्बले। खल्वे पाषाणजे लौहे सुदृढे सारसम्भवे॥ ॥ १६९॥ तादृशस्वच्छमसृणं चतुरंगुलमर्द्दके निक्षिप्य सिद्धमंत्रेण रक्षितं द्वित्रिसेवकैः॥ १७०॥ भिषग्विमर्दयेच्चूर्णैर्मिलित्वा षोडशांशतः। सूतस्य गालितैर्वस्त्रैर्वक्ष्यमाणद्रवादिभिः॥ १७१॥ मर्दयेन्मूर्च्छयेत्सूतं पुनरुत्थाप्य सप्तशः। नागो वंगो मलं वह्निश्चाञ्चल्यं च विषं गिरिः१७२ असह्याग्निर्महादोषा निसर्गात्पारदे स्थिताः॥ रक्तेष्टिकानिशाधूमसारोर्णाभस्मतुम्बिकैः॥ ॥ १७३॥ जम्बीरद्रवसंयुक्तैर्नागदोषापनुत्तये। राजवृक्षस्य मूलस्य चूर्णेन सह कन्यया॥ १७४॥ मलदोषापनुत्त्यर्थं मर्दनोत्थापने शुभे। कृष्णधुत्तूरकद्रावैश्चाञ्चल्यविनिवृत्तये॥ १७५॥ विशालांकोलचूर्णेन वंगदोषविशुद्धये। त्रिफलाकन्यकातोयैर्विषदोषोपशांतये॥ १७६॥ गिरिदोषे त्रिकटुना कन्यातोयेन यत्नतः। चित्रकस्य च चूर्णेन सकन्येनाग्निनाशनम्॥१७७॥ आरनालेन चोष्णेन प्रतिदोषं विशोधयेत्। एवं संशोधितः सूतः सप्तकंचुकवर्जितः॥१७८॥

(र. चिं., र. रा. शं.)

अर्थ-श्रीगुरुमहाराज, कन्या, भैरव, गणेश, योगिनी और क्षेत्रपालोंको बलिदान देकर श्रीमहादेवजीके मंदिरमें और शुभमुहूर्तमें लोह अथवा पत्थरके दृढखरलमें सिद्धमंत्र पढकर पारदको स्थापित करे और दो अथवा तीन सेवकोंसे उसकी रक्षा करे।फिर पारदसे षोडशांश लीहुई औषधियोंकोकूट पीस और कपरछानकर आगे कहेहुए द्रवपदार्थोंसे पारदको मर्दन करे अथवा मूर्च्छित करे फिर सातवार उत्थापन करे क्योंकि, पारदमें नाग, वंग, मल, वह्नि, चाञ्चल्य,विष, गिरि और असह्याग्नि ये महादोष ठहरेहुए हैं। लालईंटका चूरा, हल्दी, धूमसार, ऊनकी भस्म और तुंबी इनके चूर्णमें जंभीरीका रस मिलाकर पारदको घोटे तो नागदोष दूर होताहै। अमलतासकी जडके चूर्णके साथ पारदका मर्दन करनेसे मलदोष जातारहता है। चांचल्य दूरकरनेके लिये काले धतूरे के रससे घोटे। वंगदोषकी निवृत्तिके लिये इन्द्रायन तथा अंकोलके चूर्णसे घोटे विषदोष निवारणके लिये त्रिफला तथा घीकुमारके साथ घोटे।गिरिदोष दूर करनेके लिये त्रिकुटा और गुवारपट्ठेके साथ मर्दन करे। तथा अग्निदोष दूर करनेके लिये चित्रकके चूर्णके साथ मर्दन करे और प्रत्येक मर्दनके पश्चात् गरमकांजीसे धोना चाहिये। इसप्रकार शुद्ध कियाहुआ पारद सातकंचुकोंसे रहित होजाताहै॥ १६८-१७८॥

सम्मति-पूर्वोक्त सातक्रियायें कुछ २ अंतर होनेपर भी प्रायः एकसोही प्रतीत होतीहैं। विशेषकर रसेन्द्रचिंतामणिसे उद्धृत अंतिम क्रियाही अत्युत्तम है। यद्यपि वह तो ग्रंथकारोंने इन कियायोंको मर्दन संस्कारमें ही लिखाहै परन्तु सर्वरसग्रंथोंमें प्राचीन होनेके कारण शिरोमणि रसेन्द्रचिंतामणि ग्रंथ तथा उसके अनुसार चलनेवाले योगरत्नाकर और रसराजशंकरने भी इस क्रियाको मर्दन और मूर्च्छन इन दोनों क्रियाओंके करनेवाली मानी है। वास्तवमें इस क्रियाके करनेसे मर्दन और मूर्च्छन ये दोनों संस्कार होजातेहैं अथवा मर्दनद्वारा भी मूर्च्छनसंस्कार होताहै इसलिये इसको मूर्च्छनसंस्कार मानाजाय तो भी कुछ दोषकी बात नहीं है।

मूर्च्छनका रूप और फल।

तच्च मूर्च्छनं द्विविधं मर्दनकृतं किन्नरयन्त्रकृतं च तत्र मर्दनकृतस्य लक्षणमाह। कज्जलाभो यदा सूतो विहाय घनचापलम्। दृश्यतेऽसौ तद ज्ञेयो मूर्च्छितः सूतराड् बुधैः॥ १७९॥ (धं.ध.सं.)

अर्थ-मूर्च्छनसंस्कार दो प्रकारका है-एक मर्दनद्वारा और दूसरा किन्नरयंत्रद्वारा (देखो यंत्राध्याय)-तहां मर्दनद्वारा कियेहुए मूर्च्छनका लक्षण कहतेहैं। पारा घन और चपलताको छोडकर कज्जलके समान सूक्ष्म होताहै तब पंडितजन उस पारदको मूर्च्छित कहतेहैं॥ १७९॥

मूर्च्छन।

मलशिखिविषाभिधाना रसस्य नैसर्गिकास्त्रयो दोषाः। मूर्च्छा मलेन कुरुते

१ मूलेन मर्दयेत्-इत्यपि।

शिखिना दाहं विषेण मृत्युं च ॥ १८० ॥ गृहकन्या हरति मलं त्रिफलाग्नि चित्रकश्च विषम् । तस्मादेभिर्मिश्रैर्वारान्सप्त मूर्च्छयेत्सूतम् ॥ १८१ ॥ (धं.ध.सं.,रा.क.)

अर्थ–मल, शिखि (अग्नि) और विष ये तीनों पारदके स्वाभाविक दोष हैं । मलदोष मूर्छाको, वह्निदोष दाहको तथा विषदोष मृत्युको करताहै और उनके नाश करनेवाली घीकुमारि, त्रिफला तथा चित्रकका मूल ये औषधि हैं इस कारण इन तीनों औषधियोंको मिलाकर सातवार पारदका मूर्च्छन करे (आयुर्वेदविज्ञानमें इसको मुख्य दोषका नाशक कहाहै) ॥ १८० ॥ १८१ ॥

अन्यच्च ।

मलं विषं तथा वह्निर्दोषा नैसर्गिकास्त्रयः । मरणं दाहमोहौ च यथासंख्यं प्रजायते ॥ १८२ ॥ कुमारीत्रिफलावह्निजटामर्दितमूर्च्छितः । प्रकाशते स्वरूपं च रसः परमदुर्लभः ॥ १८३ ॥ (र. द., टो. नं., ध. सं.)

अर्थ–मल, विष और वह्नि ये पारदके स्वाभाविक दोष हैं, और वे क्रमसे मृत्यु, दाह और मोहको करतेहैं अत एव कुमारी, त्रिफला और चित्रकमूलके साथ घोटनेसे मूर्च्छितहुआ पारद अपने स्वरूपको प्रकाश करताहै और वह रस परम दुर्लभ होताहै ॥ १८२ ॥ १८३ ॥

सम्मति–यहांपर यथासंख्यसे दोषोंका गुण ठीक नहीं लिखागया क्योंकि अनेक ग्रंथोंके संवादसे (मलसे मूर्छा विषसे मौत और वह्निसे दाह होताहै) ऐसा निश्चय हुआहै ।

अन्यच्च ।

वरावह्निकुमारीभिः सप्तधा मूर्च्छितोरसः। पात्यः पातनयन्त्रेण मूर्च्छितो भवति ध्रुवम्॥ ॥ १८४ ॥ (र.सा.सं)

अर्थ–त्रिफला, चित्रक और घीकुमारीसे सातवार मर्दन कियेहुए पारदको ऊर्ध्वपातनयंत्रसे उडावे तो पारद मूर्च्छित होताहै ॥ १८४ ॥

अन्यच्च ।

वायसीव्योषकन्यार्कपयोवह्नियुतं रसम् । मर्दनान्मूर्छयेत्सूतमथवा मर्दनौषधैः ॥१८५॥ (र. प.)

अर्थ–वायसी (कठूमर या कौआठोडी), सोंठ, मिरच, पीपल, घीगुवार, आकका दूध और चित्रकके साथ अथवा और मर्दनकी औषधियोंके साथ मर्दन करनेसे पारदको मूर्च्छित करे ॥ १८५ ॥

अन्यच्च ।

त्र्यूषणं त्रिफला वन्ध्याकन्दक्षुद्राद्वयान्वितैः । चित्रकोर्णानिशाक्षारकन्यार्ककनकद्रवैः ॥ १८६ ॥ सूतं कृतेन क्वाथेन वारान्सप्त विमर्दयेत् । इत्थं स मूर्छितः सूतो जह्यात्सप्तापि कंचुकान् ॥ १८७ ॥(नि.र., शं. क., यो. र., आयु. वि., र. रा. प., वाच. बृ., वै. क., बृ. यो.)

अर्थ–त्रिकुटा, त्रिफला, वांझककोडा,दोनों कटेरी चित्रक, ऊन, हल्दी,क्षार (यवक्षार), घीग्वार, आकके पत्तोंका रस तथा धतूरेके पत्तोंका रस इनमेंसे रसोंके व अन्य औषधियोंके काढेके साथ पारदको सातवार मर्दन करे । इसप्रकार मूर्च्छित कियाहुआ पारद सातों कंचुकोंको छोडदेताहै।।१८६।।१८७।।

अन्यच्च ।

छप्पै–सुंठी पीपरि मरिच आँवरा हरड विभीतक । बांझ ककोडीमूल कटेरी द्वै पुनि चित्रक ॥ भेडीकें लै ऊन और जवखार प्रथम धर । काढा अष्टम अंश सबनके जुदे २ कर ॥ पुन एक एक काढाविषे क्रमतें पारद धोय दिय । दिन तीन तीन परियंतलों फिर कांजीते धोय लिय ॥ दोहा–फेर धतूरा रसविषे,तीन दिवस परियंत। घीकुमार रस घोटि पुनि, तीन दिवस परियंत ॥ या विधि मर्दन कर्मते, होय मूर्छित सूत । सप्त कंचुकी हू तजे, लिखी सु करि अनुभूत ॥ (वैद्यादर्श.)

अन्यच्च ।

स्वर्जिका यावशूकश्च तथा च पटुपंचकम् । अम्लौषधानि सर्वाणि सूतेन सह मर्दयेत्॥ ॥ १८८ ॥ खल्वे दिनत्रयं तावद्यावन्नष्टत्वमाप्नुयात् । स्वरूपस्य विनाशेन मूर्च्छनं तदिहोच्यते ॥ निर्मलत्वमवाप्नोति ग्रंथिभेदश्च जायते ॥ १८९ ॥ (ध. सं.)

अर्थ–सज्जीखार, जवाखार, पांचों नोंन और सम्पूर्ण अम्ल औषधियोंको पारदके साथ खरलमें डालकर तीन दिवसतक ऐसा घोटे कि घोटते २ पारद नष्ट पिष्ट होजाय बस इसीको मूर्च्छन संस्कार कहतेहैं । यहांपर मूर्च्छनका यह लक्षण है कि पारद अपने स्वरूपमें स्थित न हो । और किसी प्रकारकी गांठभी नरहकर निर्मल होजाय१८८।।१८९

किन्नरयंत्रद्वारा मूर्च्छनसंस्कार ।

मूर्च्छनं रसराजस्य कर्तव्यं वेदिभिः सदा । विषैस्त्रिफलया पूर्वं बृहत्योपविषैस्तथा १९० कर्कोटीक्षीरकंदेभ्यश्चित्रेण गृहकन्यया । एतेन चाथ संमर्द्य याममेकं तु पारदः ॥ ॥ १९१ ॥ ततस्तं किन्नरे यंत्रे यामं दीपा-

ग्निना पचेत । शीतं कृत्वा रसं यंत्रादुद्धरे-न्मूर्च्छितो भवेत् ॥ १९२ ॥ (रससार., ध. ध. सं.)

अर्थ-अब किन्नरयंत्रद्वारा मूर्च्छनको कहतेहैं । रसज्ञाता-ओंको पारदका मूर्च्छन अवश्य करना चाहिये । विष, उप-विष, त्रिफला, कटेरीकी जड बाँझककोडा, क्षीरकंद, चित्रक और घीग्वार इन समस्त औषधियोंसे एक प्रहरतक पारदको घोटे फिर उसको किन्नरयंत्रमें एक प्रहरतक दीपाग्निसे पचावे शीतल होनेपर यंत्रसे पारदको निकाले तो मूर्च्छित होताहै ॥ १९०--१९२ ॥

उत्थापनलक्षण ।

मृतस्य पुनरुद्भूतिस्तत्प्रोक्तोत्थापनक्रिया ॥१९३ ॥ (टो.नं.)

अर्थ-मृत यानी मूर्च्छित पारदके अपने स्वरूपमें प्राप्त होनेको उत्थापनक्रिया कहतेहैं ॥ १९३ ॥

अन्यच्च ।

तत्रादौ मर्दनेन मूर्च्छितस्योत्थापनविधिः प्रोच्यते-

अथोत्थापनकं कर्म पारदस्य भिष-ग्वरैः । करणीयं प्रयत्नेन रसशास्त्रस्य वर्त्मना ॥ १९४ ॥ दोलायन्त्रेण तत्स्वेद्यं पूर्ववद्दिवसत्रयम् । सूर्यातपे मर्दितोऽसौ दिनमेकं शिलातले । उत्थापनं भवेत्सम्यङ् मूर्च्छादोषविनाशनम् ॥ १९५ ॥ (ध. ध. सं., र. रा. सुं., र. रा. प., टो. नं.)

अर्थ-अब मर्दनद्वारा मूर्च्छित किये हुए पारदकी उत्थाप नक्रियाको कहतेहैं । वैद्य रसशास्त्रके मार्गसे पारदके उत्थापन कर्मको अत्यन्त यत्नपूर्वक करे । पूर्व (पहले स्वेदन) के तुल्य दोलायंत्रद्वारा तीन दिनतक पारदको स्वेदन करे फिर सूर्यकी तेजीसे एक दिन खरलमें घोटे तो मूर्छन दोषके नाश करने-वाला उत्थापन संस्कार अच्छी तरहसे होताहै॥१९४॥१९५॥

उत्थापनसंस्कार ।

ततस्तत्तेन खल्वेन चाम्लेनोत्थापयेद्रसम् । क्षारा मुखकराः सर्वे ह्यम्लाः सर्वे प्रबो-धकाः ॥ १९६ ॥ (ध.ध.सं.,र.रा.सुं., र. रा.प.,टो.नं.)

अर्थ-पारदको तप्तखल्वमें डालकर अम्लवर्गसे मर्दन करे क्योंकि सब क्षार मुखके कर्ता हैं अर्थात् पारदको बुभुक्षित करतेहैं और सब अम्ल बोधक हैं ॥ १९६ ॥

उत्थापन ।

तत उत्थापयेत्सूतमातपे निम्बुकार्दितम् । उत्थापनं विशिष्टन्तु चूर्णं पातनयन्त्रके । धृत्वोर्ध्वभांडे संलग्नं संग्रहेत्पारदं भिषक् ॥ १९७ ॥ (यो.र.,र.रा.शं.,बृ.यो.,र.सा. प.,नि.र., र.चिं.,र.रा.सुं.)

अर्थ-वैद्य मूर्च्छनके बाद पारदको नींबूके रससे भिगोकर निकाले और उत्थापनसे बचेहुए पारदके चूर्णको पातनयंत्रमें रखकर ऊपरके बासनमें लगेहुए पारदको ग्रहण करे तो पारद शुद्ध होताहै ॥ १९७ ॥

अन्यच्च ।

अस्माद्विरेकात्संशुद्धो रसः पात्यस्ततः परम् । उद्धृतः कांजिकाक्राथात्पूतिदोषनि-वृत्तये ॥१९८॥ (र.र.स.,र.रा.सुं.,र.रा.शं)

अर्थ-मूर्च्छित कियेहुए पारदको कांजीसे धोकर दुर्गंधि दूर करनेके लिये पातनयंत्रद्वारा पातन करे तो पारद शुद्ध होताहै ॥ १९८ ॥

अन्यच्च ।

आरनालेन चोष्णेन क्षालयेत्प्रतिमर्दनम् । रसं तत्रप्रयातं तु शोषयित्वाऽथ पातयेत् ॥ गृहीत्वा प्रक्षिपेत्सूते स्यादेवं पारदः शुचिः ॥१९९ ॥ (यो. र.)

अर्थ-मूर्च्छन संस्कारमें प्रत्येक मर्दनके बाद गरमकांजीके साथ पारदको धोवे फिर चूरेमें मिले अवशेष पारदको घा-ममें सुखाकर पातन करे और उसको पूर्व धोकर निकालेहुए पारदमें मिलादेवे तो पारद शुद्ध होताहै ॥ १९९ ॥

अन्यच्च ।

मर्दयेत्कन्यकाद्रावैश्चूर्णितै रात्रिपादिकैः । पातयेत्पातनायंत्रे इत्युत्थापनमीरितम्२०० (रसेन्द्रसारसं.)

अर्थ-पारदसे चौथाई हिस्सा हलदीका चूरा तथा पारदको घीकुमारीके रससे मर्दन करे । तदनंतर पातनयंत्रसे पातन करे बस इसीको उत्थापनक्रिया कहतेहैं ॥ २०० ॥

अन्यच्च ।

प्रक्षाल्य काञ्जिकैस्साम्लैस्तमादाय विमर्द-येत् । प्रक्षाल्य कांजिकेनैव तमादाय वि-मूर्च्छयेत ॥ २०१ ॥ जलैः सक्षारनालैर्वा क्षालनादुत्थितो भवेत । अथवा पातनायंत्रे पातनादुत्थितो भवेत् ॥ २०२ ॥ (र. रा. शं., नि. र., र. सा. प.)

अर्थ-अम्लवर्गसहित कांजीसे पारदको धोकर मर्दनोक्त औषधियोंसे मर्दन करे । फिर कांजीसेही धोकर मूर्च्छित करे । तदनंतर जल तथा गरम कांजीसे पारदको धोवे तो उत्थापनसंस्कार होताहै ॥ २०१ ॥ २०२ ॥

किन्नरयंत्रद्वारा मूर्छितपारदका उत्थापन।

किन्नरयंत्रेण मूर्छितस्योत्थापनविधिः–
रसस्योत्थापनं कार्यं विधिस्तस्य निरूप्यते। अमूर्छितस्तदा देयः कलांशो मूर्छिते रसे॥ ॥ २०३ ॥ सिंधूत्थटंकणाभ्यां च मर्दयेन्मधुसंयुतम्। दोलायंत्रे ततः स्वेद्यः क्षाराम्ललवणैः सह ॥ २०४ ॥ दिनैकेनोत्थितः सूतस्तं प्रकुर्याच्चतुर्गुणम्।पुनरुत्थापनं कुर्यादेवं कुर्यात्पुनःपुनः ॥२०५॥ (ध. सं.)

अर्थ–अब किन्नरयंत्रद्वारा मूर्छित कियेहुए पारदके उत्थापनसंस्कारको कहतेहैं। मूर्छनके बाद पारदका उत्थापनसंस्कार करना उचित है,इस कारण उत्थापनकी विधिको कहतेहैं। मूर्छित पारदमें विना मूर्छित कियेहुए पारदका सोलहवां हिस्सा डालकर सैंधानोंन और शहदके साथ मर्दन करे। तदनंतर क्षार अम्लवर्ग और लवणके साथ पारदको दोलायंत्रमें एक दिनतक स्वेदन करे तो पारद उत्थित होताहै इसप्रकार वार २ पातन करे ॥ २०३--२०५ ॥

शेषदोषहारी स्वेदन।

स्विन्नो वराद्यैरथ दोलिकायां दिनं मलाद्यै रहितस्त्रिभिः स्यात् ॥ २०६॥ (यो. त.)

अर्थ–पारदको त्रिफलाके काथमें दोलायंत्रद्वारा एक दिन स्वेदन करे तो पारद मलादि तीन दोषों (मल, वह्नि, विष) से रहित होताहै ॥ २०६ ॥

उत्थापनानन्तर स्वेदन।

रसं चतुर्गुणे वस्त्रे बद्ध्वा दोलाकृतं पचेत्। दिनं व्योषवरावह्निकन्याकल्के सकांजिके॥ दोषशेषापनुत्त्यर्थमिदं स्वेदनमुच्यते॥२०७॥ (आ. वे. वि., र. रा. शं., र. रा. सुं.)

अर्थ–पारदको चौलर कपडेमें बांधकर त्रिकुटा, त्रिफला, चित्रकका काथ, घीगुवारका रस और कांजी इनमें एक एक दिवसपर्य्यंत दोलायंत्रद्वारा शेष दोष दूर करनेके लिये पचावे तो इसको स्वेदन कहतेहैं ॥ २०७ ॥

अन्यच्च।

रसं चतुर्गुणे वस्त्रे सरसोनशरावके। नियंत्र्य दोलायंत्रे तु प्रकल्प्य दिवसं पचेत् ॥ ॥ २०८ ॥ सव्योषत्रिफलावह्निकन्याकल्के तुषाम्बुनि। शेषदोषापनुत्त्यर्थमिदं स्वेदनमीरितम् ॥ २०९ ॥ (र.रा. शं., बृ. यो., नि. र.)

अर्थ–एक शराव अर्थात् आठपल लहसनमें रखकर फिर चौलर कपडेमें बांध त्रिकुटा, त्रिफला, चित्रक, घीग्वारका गूदा और कांजी इनमें एक दिन दोलायंत्रद्वारा शेष दोषोंके दूर करनेके लिये स्वेदन करे ॥ २०८ ॥ २०९ ॥

पातनसंख्या।

अथातः पातनाख्यः पंचमः संस्कारः स च त्रिविधः–अधः पातनोर्ध्वपातनतिर्यक्पातनभेदात् उक्तं च रसहृदये–
अध ऊर्ध्वं तथा तिर्यक्पातस्त्रिविध उच्यते। यत्र तिष्ठति सूतेन्द्रो वह्निस्तत्रान्यथा जलम् ॥ २१० ॥ (ध. सं.)

अर्थ–अब पातन नामका पांचवां संस्कार है और वह पातन अधःपातन ऊर्ध्वपातन और तिर्य्यक्पातन इन भेदोंसे तीनप्रकारका है और यही बात रसहृदयमें लिखी है। अधःपातन, ऊर्ध्वपातन और तिर्यक्पातन इन भेदोंसे पातन तीनप्रकारका है। जहां पारद स्थित है उसके नीचे अग्नि जलावे और जहां पारदका ग्रहणहै वहाँ जल रक्खाजाय ॥ २१० ॥

रसप्रकाशसुधाकरे–
पातनं हि महाकर्म कथयामि सविस्तरम्। त्रिधा पातनमित्युक्तं रसदोषविनाशनम् ॥ ॥२११ ॥ ऊर्ध्वपातस्त्वधःपातस्तिर्यक्पातः क्रमेण हि ॥ २१२ ॥ (ध. सं.)

अर्थ–रसप्रकाशसुधाकरमें भी यही लिखा है कि इसके आगे महाकर्म पातन संस्कारको विस्तारपूर्वक कहताहूं। रसदोष दूर करनेके लिये पातन तीनप्रकारका कहाहै और उनके नाम क्रमसे ये हैं ऊर्ध्वपातन, अधःपातन और तिर्य्यक्पातन ॥ २११ ॥ २१२ ॥

पातनफल।

मिश्रितौ चेद्रसे नागवंगौ विक्रयहेतुना। ताभ्यां स्यात्कृत्रिमो दोषस्तन्मुक्तिः पातनत्रयात् ॥ २१३ ॥ (ध. सं., र. रा. शं., रसेन्द्रचिं., नि. र., टो.)

अर्थ–यदि बेचनेके कारण पारदमें सीसा या रांग मिलादिया है तो उनसे पारदमें कृत्रिमदोष पैदा होताहै और वह दोष तीन पातनसंस्कारोंसे छूटताहै ॥ २१३ ॥

सीमावकी तसईदमें छः आमूरका खासकर लिहाज रखना चाहिये (उर्दू)

अव्वल-यह कि दोनों प्यालोंके वस्ल यानी जोडतक शौहला आगका पहुंचे, ताकि हरारतका नफज हो, हालां कि तमाम अहलसिनाइतने इसके बरखिलाफ लिखा है लेकिन तजरुबेसे खासतौरपर यह बात खुली है, सिवाय तसईद सीमावके दूसरी अरवाहकी तसईदमें अगर आगका शौहला प्यालोंके जोडतक न पहुंचे तो बेहतरहै, सर्द होनेके बाद जोडको खोले, क्योंकि भापसे कतई परहेज करना चाहिये।

दोयम–सहक और खरल करनेमें मुवालगा करना चाहिये।

सोयम--नीचेका जर्फ मुस्तह और ऊपरका मुखरूती होना चाहिये।

चहारम--रफ्तः रफ्तः आग तेज करना चाहिये लेकिन बहुत तेज आँच न हो।

पंजुम–सीमावकी तसईदमें तसईदका जर्फ जिस कदर ऊँचा हो, बेहतर है अफलातूनने ज्यादहसे ज्यादह नौ बालिश्ततक लिखा है मगर यहां दो बालिश्तसे ज्यादह ऊँचा

होना चाहिये और दूसरी अरवाहकी तसईदमें बहुत ऊँचा जर्फ गैरजरूरी है।

शशुम-पानीका लगाड आलात तसईदमें न हो, बाजवक्त नफूज करके अन्दर गिरताहै और सीमावको उडनेसे बाज रखताहै (सुफहा अकलीमियाँ ८५)

हिदायत मुताल्लिक तसईद सीमाव बजरिये डौंरू जंतर (उर्दू)

तजरुबेसे यह साबित हुआ है कि हांडी वगैरहमें पानीका लगाड न होना चाहिये, जैसा कि बाज किताबोंमें तहरीर है, क्योंकि पानीके लगाडसे अकसर पानी मजकूर मसामातसे नफूज करके पारा वगैर:में मिलजाताहै और पारा अच्छी तरह तसईद नहीं होने पाता, खाली और बे लगाव पानीके बखूबी तसईद होताहै (सुफहा अकलीमियां १४१-१४२)

हिदायत मुतल्लिक तसईद सीमाव और पारेका कम होजाना (उर्दू)

मुतरज्जिमने जरूफगिली बनवाकर उसमें तसईद सीमावका अमल किया और कोई तरद्दुद नहीं पडा बल्कि बहुत आसानी हुई, अलबत्तः मिट्टीके बर्तनमें पारा जज्ब होकर कमकरूर होजाताहै (सुफहा अकलीमियां १४४)

पातनसंस्कारताम्रद्वारा ।

ताम्रेण पिष्टिकां कृत्वा पातयेदूर्ध्वभाजने । बंगनागौ परित्यज्य शुद्धो भवति सूतकः । शुल्बेन पातयेत्पिष्टिं त्रिधोर्ध्वं सप्तधा त्वधः ॥ २१४ ॥ (र. र. स., र. रा. सुं., रसेन्द्रक.)

अर्थ-पारदमें तांबा मिलाकर पिष्टी बनावे फिर उसको डमरूयंत्रमें रखकर ऊर्ध्वपातन करे तो पारद नाग और वंगके दोषोंको छोडकर शुद्ध होताहै । पातन करनेके समय इस बातको याद रखना चाहिये कि जिसमें पातन किया जाय वह ताम्रका पात्र और ऊपरका पात्र मिट्टीका हो इसप्रकार तीन बार ऊर्ध्वपातन और सातबार अधःपातन करना चाहये ॥ २१४ ॥

पातनसंस्कार ।

हरिद्राकोलशंपाककुमारीत्रिफलाग्निभिः । तंडुलीयकवर्षाभूहिंगुसैंधवमाक्षिकैः॥२१५॥ पिष्टं रसं सलवणैः सर्पाक्ष्यादिभिरेव वा । पातयेदथवा देवि ब्रह्मग्रीयक्षलोचनैः॥२१६ इत्थं ह्यधोर्ध्वपातेन पातितोऽसौ यदा भवेत्। तदा रसायने योग्यो भवेद्द्रव्यविशेषतः॥२१७॥ (र. र. स., र. रा. प.)

अर्थ-हलदी, अंकोल, अमलतास, घीग्वार, त्रिफला, चित्रक, चौलाई, वर्षाभू (सांठी),हींग और सेंधानोंन इनसे अथवा लवणसहित सर्पाक्षी आदिके रससे अथवा ब्रह्मघ्नी (घीग्वार) यक्षलोचनके साथ पारदको घोटकर जब पातन करे तो पारद विशेषकर रसायनके योग्य होताहै २१५--२१७

ऊर्ध्वपातन ताम्रद्वारा ।

पुनः पिष्टी प्रकर्तव्या दत्त्वाम्लं ताम्रसंयुतम् । तं पिंडं तलभांडस्थमूर्ध्वभांडेन रोधयेत् ॥ २१८ ॥ संधिं मृत्कर्पटैर्लिप्य चुल्लीमारोपयेत्ततः । शनैर्वह्निं दहेद्यत्नादूर्ध्वभांडे जलं क्षिपेत् ॥ २१९ ॥ कृत्वालवालं पंकेन त्रियामात्सूतमुद्धरेत्॥२२०॥ (ध. सं.)

अर्थ-अब ऊर्ध्वपातनकी क्रियाको कहतेहैं पारेमें तांबा डालकर अम्लवर्गसे घोटते २ पिष्टी बनावे और उस पिष्टीको एक हांडीके तलेमें रखकर ऊपरसे हांडीको लगाकर कपरौटी करदे फिर उसको चूल्हेपर चढाकर यत्नपूर्वक धीरे २ आंच जलावे और ऊपरके बासनमें मिट्टीसे आलवाल (कोडुआ) बनाकर जल भरदेवे तो तीनप्रहरमें पारा निकल आताहै ॥ २१८-२२० ॥

सम्मति-जहां ताम्रके साथ पारदकी पिष्टी की जाय वहां पारदमें ताम्रका चौथाही हिस्सा लेना उचित है-

ऊर्ध्वपातन ।

भागास्त्रयो रसस्यार्कचूर्णमंशं सनिम्बुकम् । एतत्संमर्दयेत्तावद्यावदायाति पिंडताम्२२१ तलपिण्डं तलभाण्डस्थमूर्ध्वभाण्डे जलं क्षिपेत् । संमुद्र्याग्निमधस्तस्य चतुर्यामं प्रबोधयेत्। युक्तोर्ध्वभाण्डसंलग्नं गृह्णीयात्पारदं शुभम् ॥ २२२ ॥ (बृ.यो.)

अर्थ-तीन भाग पारा और एक भाग तांबेका चूर्ण इनको नींबूके रससे घोटते २ पिंड बनावे और उस पिंडको नीचेके बासनमें रखकर ऊपरके पात्रमें जल भर देवे, फिर उन दोनों पात्रोंकी संधिको कपरौटीसे लेप कर नीचेसे चार पहरतक अग्नि जलावे, तदनंतर ऊपरके पात्रमें लगेहुए श्रेष्ठ पारदको ग्रहण करे ॥ २२१ ॥ २२२ ॥

अन्यच्च ।

भागास्त्रयो रसस्यार्कभागमेकं विमर्दयेत् । जंबीरद्रवयोगेन यावदायाति पिण्डताम् ॥ ॥ २२३ ॥ तत्पिण्डं तलभांडस्थमूर्ध्वभांडे जलं क्षिपेत् । कृत्वालवालकेनापि ततः सूतं समुद्धरेत् । ऊर्ध्वपातनमित्युक्तं भिषग्भिः सूतसाधने ॥ २२४ (र.रा.सुं.) भागास्त्रयो रसस्यार्कचूर्णवंशं सनिंबुजम् । मर्दयेच्छ्रावयोगेन यावदायाति पिंडताम् ॥ ॥ २२५ ॥ तत्पिण्डं तलभांडस्थमूर्ध्वभांडे जलं क्षिपन् । कृत्वालवालं केनापि ततः सूतं समुद्धरेत् ॥ २२६ ॥ ऊर्ध्वम्पातनमित्युक्तं भिषग्भिः सूतशोधने।ससूतभांडवदनमन्यादिग्गतिभांडकम् ॥ २२७ ॥ तथा संधिर्द्वयोः कार्यः पातनत्रययंत्रके ॥ २२८॥ (रसेन्द्रचिं०)

भागास्त्रयो रसस्यार्कभागमेकं विमर्दयेत् । जम्बीरद्रवयोगेन यावदायाति पिंडताम्

१ त्र्यंशेनोर्ध्वं निपातयेत्-इत्यपि ।

१=द्विलति भां० इत्यपि ।

॥ २२९ ॥ तत्पिंडं तलभांडस्थमूर्ध्वभांडे जलं क्षिपेत् । कृत्वालवालं केनापि ततः सूतं समुद्धरेत् । ऊर्ध्वपातनमित्युक्तं भिषग्भिः सूतशोधने ॥२३०॥ (रसेन्द्रसा.सं.) पादेन वा त्रिभागेन दशांशेनाथ वा रसात्। ताम्रचूर्णं समादाय पिष्टिं कृत्वाथ पातयेत्॥ २३१ ॥ सूताधिक्याद्यदा नैव-पिष्टी साधु प्रजायते। तदा विनिक्षिपेत्तुत्थं संप्रदायपरायणः ॥ २३२ ॥(टो.नं.,र.प.) संरुध्यभांडद्वयगर्भमध्ये पिष्टिं ततः सम्पुट-मव्रणान्तम्।निवेश्य चुल्ल्यां सुशनैः प्रदीप-प्रमाणमस्याथ तले विदध्यात् ॥ २३३ ॥ अग्निं शिरस्थस्य जलार्द्रमेकं वस्त्रं क्षिपेदल्प-मनुष्णमेवम्। वारत्रये नोरगवंगसंज्ञौ नस्तः प्रदिष्टौ ह्ययमूर्ध्वपातः ॥ २३४ ॥ (रसार्णवात्, टो.,ध.सं.)

तत्र्यंशताम्रेण विमर्द्य सूतं जंबीरनीरेण ततः प्रगाढम्। संरुध्य भांडद्वयगर्भमध्ये पिष्टिं ततः सम्पुटमव्रणं तत् ॥ ३३५ ॥ निवेश्य चुल्ल्यान्तु शनैः प्रदीपप्रमाण-मग्निं च तले प्रदध्यात । ततः शिरस्थस्य जलार्द्रमेकं। वस्त्रे क्षिपेदल्पमनुष्णमेव ॥ ॥ २३६ ॥ वारत्रयेणोरगवंगसंज्ञौ नस्तः प्रदिष्टौ ह्ययमूर्ध्वपातः ॥ २३७॥ (यो.त.)

अर्थ—पारदसे चौथाई, तिहाई, नवांश या दशांश ताम्रचूर्णको निंबू अथवा जंभीरीके रससे घोटकर पिष्टी बनावे फिर उस पिष्टीको एक हांडीमें रखकर ऊपरसे दूसरी हांडीका मुख मिलावे और उन दोनोंके मुखको कपरौटीसे ऐसा बंद करे कि किसीप्रकारका छिद्र उसमें न रहे (किसी २ जगह ऐसा लेख है कि नीचेकी हांडीके मुख पर ऊपरकी हांडीका पेंदा रख संधिलेप करे) फिर ऊपरकी हांडीके पेंदेमें आलवाल (थामला) बनाकर जलसे भराहुआ कपडा रक्खे फिर तीन पहर या चार पहर धीरे २ आंच जलावे तदनंतर ऊपरके पात्रमें स्थित पारदको युक्तिद्वारा ग्रहण करले तो पारद शुद्ध होताहै। वैद्योंने पारदकी शुद्धिके लिये इसको ऊर्ध्वपातन संस्कार कहाहै संधिलेपमें इस बातका विशेष ध्यान रखना चाहिये कि, ऊपरके पात्रका मुख नीचेके पात्रके मुखमें आजाय और लेप करनेपर किसी प्रकारका छिद्र न रहे और यदि नवांश तथा दशांश ताम्रके साथ पिष्टि न हो तो गुरुरीतिसे थोडासा तूतिया डालना उचित है ॥ २२३–२३७ ॥

अन्यच्च ।

काकमाची जया ब्राह्मी चाङ्गेरी रक्तचित्र-कम्। अंकोलो राजवृक्षश्च तिलपर्णी कुमारिका ॥ २३८ ॥ मंडूकी चित्रकं पाठा काकजंघा शतावरी। भूपाटली देवदाली निर्गुंडी गिरिकर्णिका ॥ २३९ ॥ शंखपुष्पार्द्रकं भृंगी गोजिह्वा क्षीरकंदकम् । नीली चासां समस्तानां व्यस्तानां वा द्रवैर्दिनम् ॥ २४० ॥ ताम्रपादयुतं सूतं मर्दयेदम्लकैः सह । तत्पिष्टिं पातयेद्यंत्र ऊर्ध्वपातनके पुनः ॥ २४१ ॥ आदाय मर्दयेद्यावत्ताम्रचूर्णेन संयुतम् । पातयेन्मर्दयेच्चैव ताम्रं दत्त्वा पुनःपुनः ॥ २४२ ॥ इत्येवं सप्तधा कुर्यान्मर्द्दनं पातनं क्रमात । ऊर्ध्वलग्नं समादाय अधःपातेन पातयेत् ॥ ॥ २४३ ॥ (र. प.)

अर्थ—काकमाची (मकोय केवैया) जया (अग्निमन्थ), ब्राह्मी, चांगेरी, लालचीता, अंकोल, अमलतास, तिलपर्णी (लालचंदन), घीगुवार, मंडूकी (हुलहुल), चित्रक, बाढल, काकजंघा, (मसी) शतावर, भूपाटली (भुईपाढल दक्षिणीभाषा), देवदाली (बिंदाल), निर्गुंडी, गिरिकर्णिका (विष्णुक्रांता), शंखाहुली, अदरख, भंगरा, वनगोभी, क्षीरकंद (विदारीकंद) और नीली (नील) इन समस्त अथवा एकएक औषधियोंके रससे और अम्ल पदार्थोंसे तीन भाग पारद और एक भाग ताँबेको एक दिन घोटे फिर उस पिष्टीको पातनयंत्रमें उडाकर पारा निकाल लेवे। तदनंतर उसी पारेको तांबेके साथ घोटकर फिर पातन करे। इसप्रकार सातवार पातन करे । ऊर्ध्वपातनके पश्चात् अधःपातन करे ॥ २३८–२४३ ॥

अन्यच्च ।

मयूरग्रीवताप्याभ्यां नष्टपिष्टीकृतस्य च । यंत्रे विद्याधरे कुर्याद्रसेन्द्रस्योर्ध्वपातनम् ॥ ॥ २४४ ॥ (वै. क., र. रा. शं., आयु. वे. वि., वाच., बृ. नि. र.)

अर्थ—पारा तीन भाग तूतिया और सोनामक्खी दोनों मिलाकर एक भाग लेकर खरलमें डालकर घीग्वारके रससे इतना घोटे कि पारद औषधियोंसे पृथक् न दीखे अर्थात् पारदको नष्ट पिष्टी होजाय फिर विद्याधर यंत्रमें पारदको उडालेवे तो पारद सर्वदोषोंसे रहित और शुद्ध होताहै ॥ २४४ ॥

अन्यच्च ।

अथेह विशदं सूतं काकिनीरजसा दिनम् । मर्दयेत्सततं गाढमूर्ध्वपातनहेतवे ॥ २४५ ॥ स्याद्भृंगशृंगवेराभ्यां हरिद्रामार्कवार्द्रकैः । उत्थापनावशिष्टं तु पात्यं पातनयंत्रके ॥ ॥ २४६ ॥ (र. प.)

अर्थ—अब बहुतसा पारद लेकर काकिनीके रससे पारदको एक दिवसतक दृढ मर्दन कर ऊर्ध्वपातनयंत्रसे उडालेवे और उडानेसे जो शेष रहा पारद है उसको भांगरा और अदरख अथवा हल्दी भंगरा और अदरखके साथ घोटकर फिर पातनयंत्रसे उडालेवे तो पारा विशेष शुद्ध होताहै२४५॥२४६

समालोचना—ऊपरके पाठको रसपद्धतिकारने रसमंजरीका बताकर लिखाहै हमने रसमंजरीकी कई–प्रतियां देखीं

परन्तु यह पाठ किसी पुस्तकमें नहीं देखागया अतएव रसपद्धतिकारका कथन भ्रममूलक है ॥

ऊर्ध्वपातन क्षारद्वारा ।

ऊर्द्धपातनयंत्रस्य लक्षणं तदिहोच्यते । मृन्मयी स्थालिका कार्या चोच्छ्रिता स्यात्षडंगुला ॥ २४७ ॥ मुखे सप्तांगुलायामा परितस्त्रिंशदंगुला । इयन्माना द्वितीया च कर्तव्या स्थालिका शुभा ॥ २४८ ॥ क्षारद्वयं रामठं च तथा वै पटुपंचकम् ।अम्लवर्गेण संयुक्तं सूतकं च विमर्दयेत ॥ २४९ ॥ लेपयेत्तेन कल्केन ह्यधस्थां स्थालिकां शुभाम् । उपरिस्थामधोवक्त्रां संपुटं तत्र कारयेत ॥ २५० ॥ मर्शितं लवणेनैव मुद्रां तत्र प्रकारयेत् । चुल्ल्यां स्थालीं निवेश्याथ धान्याग्निं तत्र धापयेत् ॥ २५१ ॥ तस्योपरि जलं सिंचेच्चतुर्यामावधिं कुरु । स्वांगशीतलतां ज्ञात्वा चोर्ध्वगं ग्राहयेद्रसम् ॥२५२॥ ऊर्ध्वपातनकं यंत्रमेतदेव हि कीर्तितम् ॥ ॥ २५३ ॥ (ध. सं.)

अर्थ-अब ऊर्ध्वपातनयंत्रको कहतेहैं । छः अंगुल ऊंचा मिट्टीका पात्र बनवावे जिसका मुख सात अंगुल चौडा हो और जिसका घिराव तीस अंगुल हो । इसीप्रकारको दूसरी हांडी बनवावे फिर दोनों खार (जवाखार, सज्जीखार) हींग और पांचो नोंन और पारदको अम्लवर्गके साथ मर्दन करे । फिर उसी कल्कसे नीचेकी हांडीमें लेपकर ऊपरसे दूसरी हांडीके मुखको मिलाकर कपरौटी करदेवे । तदनंतर चूह्लेपर हांडीको चढाकर चार पहर दीपाग्नि दे और ऊपरकी हांडीके पेंदेपर जल छिडकताजाय । स्वांगशीतल होनेपर ऊपरकी हांडीमें लगे हुए पारदको ग्रहण करे । बस इसीको पातनयंत्र कहाहै ॥ २४७ ॥ २५३ ॥

जैसे--दोहा ।

सुन्दर हँडिया लेइ द्वै, तिनमें हिंगुल पाय। नीचेकी हांडीविषे, पारा धरै जमाय ॥ पारा ऊपर दाबिके, सैंधोनोंन भरेय । हांडी लेके दूसरी, हांडीपै धरदेय ॥ दोनों हाँडी मुख घिसै, नीके संधि मिलाय । दृढ मुद्रा करवायके, दीजे धूप सुखाय॥ चूल्हेपर धरि जंत्र यह, नीचे अगिन लगाइ । ऊपरकी हांडीविषे, पानी च्वावत जाय॥ तीछन अग्नि जराइये, तीन प्रहर परमान। नवरस उडि ऊरध लगै, हँडियाविषै सुजान॥ ऊरधकी हाँडीविषे,पारा लग्यो सु होइ। ताहि जतनसों पोंछिके, लेइ भिषक जन लोय ॥ संस्कार यह जानियो, ऊरधपातन नाम । याते पाराहोत सब, दोषरहित अभिराम ॥

वार्तिक-एक डमरू प्रति मासा अथवामासा शुद्ध पारद धरनो लवणपारदते चौगुणों और जा डमरूमें मासा पारद होय तामें आंच प्रहर तीनकी देनी और मासा वारेमें चार प्रहर आंच देनी इति संकेतः । सर्व दोष नागवंगादि प्रभृति ॥ (वैद्यादर्श.)

अधःपातन ।

भागत्रयं रसस्यार्कचूर्णं पादांशसंयुतम् । दत्त्वाम्लं मर्दयेत्तावद्यावत्पिष्टी प्रजायते२५४ यदा न जायते पिष्टी किंचित्तुत्थं तदा क्षिपेत् । कटाहं नूतनं कृत्वा तस्याधो लेपयेद्रसम् ॥ २५५ ॥ द्विगुणेन सुवस्त्रेण जुटयेद्बुध्नकादयः । वस्त्रान्तानि मृदा लिप्त्वा जलस्थाल्युपरि न्यसेत् ॥ २५६ ॥ स्थालीकटाहयोः संधिं लेपयेत्सुदृढं मृदा । कटाहोपरि कर्तव्यमुपलाग्निप्रदीपनम् ॥ २५७ ॥ जलमध्ये रसो याति शुल्बं तिष्ठति बुध्नके । शुल्बाद्रसो रसात्ताम्रपातनेन पृथक्कृतम् ॥ ॥ २५८ ॥ ससूतभांडवदनमन्यद्विलतिभांडकम् । तथा संधिर्द्वयोः कार्यः पातनत्रययंत्रके ॥ २५९ ॥ जलस्थाने कांजिकं च दापयेन्नात्र संशयः ॥ २६० ॥ (टो. नं., ध. सं.)

अर्थ-ऊर्ध्वपातनके बाद अधःपातन संस्कारको करे इस लिये टोडरानंदका प्रमाण देतेहैं । तीनभाग पारद एक भाग तांबेका चूर्ण इन दोनोंको अम्लवर्गसे इतना मर्दन करे कि, दोनोंकी खूब पिष्टी होजाय अगर पिष्टी उत्तम न हो तो गुरुरीतिसे तूतिया मिलाकर पिष्टी बनावे । अब अधःपातनकी विधिको वर्णन करतेहैं । एक बडा और नया कडाह (लोहेकी बडी कडाही) बनावे और उसके पेंदेमें उस पिष्टीका लेप करे । फिर पारदकी पिष्टीके नीचे दुहर कपडा बांधदे । तदनंतर कपडके किनारोंको मिट्टीसे लेपकर कडाहसे मिलाकर दृढ चिपटादेवे और कढाईके ऊपर कंडोंको आंच जलावे और कढाईके नीचे जलका पात्र रखदेवे तो पारद नीचे रक्खेहुए जलके पात्रमें आजायगा । इसप्रकार ताम्रसे पारदका तथा पारदसे ताम्रका पातन करे । जलके स्थानमें कांजी देना उचित है । तीन वार,सात वार या इक्कीस वार पातन करे । अथवा तीन वार ऊर्ध्वपातन और सात वार अधःपातन करे ॥ २५४–२६० ॥

अधःपातन क्षारद्वारा ।

मृन्मयी स्थालिका कार्या चोच्छ्रिता तु षडंगुला ।मुखे सप्तांगुलायामा परितस्त्रिंशदंगुला ॥ २६१ ॥ इयन्मिता द्वितीया च कर्तव्या स्थालिका शुभा । क्षारद्वयं रामठं च तथैव पटुपंचकम् ॥ २६२ ॥ अम्लवर्गेण संयुक्तं सूतकं परिमर्दयेत् । लेपयेत्तेन कल्के-

न चोर्ध्वस्थाल्यंतरं बुधः ॥ २६३ ॥ अधोमुखीं सकल्कां तु कृत्वा डमरुकं चरेत् । गर्ते तु पंकिले स्थाप्यं कौ दद्यान्मूर्ध्नि पावकम् । यामत्रितयपर्यंतमधः पतति पारदः॥ ॥ २६४ ॥ (ध. सं.)

अर्थ-छः अंगुल ऊँची मिट्टीकी हंडिया बनवावे जिसका मुख सात अंगुल चौडा और जिसका घिराव तीस अंगुल हो बस इसीप्रकारकी एक दूसरी हाँडी और बनवानी चाहिये । तदनंतर सज्जीखार, जवाखार, हींग, पांचोनोंन और पारद इनको अम्लवर्गसे मर्दन करे । फिर उसी कल्कसे ऊपरकी हँडियाको ल्हेसदे और उसका नीचा मुख करके दूसरी जलसे पूर्ण हँडियाके मुखसे मुख मिलाकर कपरौटीकर डमरू यंत्र बनवावे और नीचेकी हँडियाको कीचडवाले गढेमें रखकर ऊपरकी हँडिया (जिसके पेंदेमें पारदका लेप किया गया है) पर तीन प्रहर बराबर आंच लगाना चाहिये तो पारदका अधःपातन होताहै ॥ २६१--२६४ ॥

समालोचना--इसी धरणीधर संहिताके रचयिताने ऊर्ध्वपातनसंस्कारके प्रकरणमें इस क्रियाको लिखाहै और वहाँ धरणीधर संहिताकार इसी क्रियाका पाठ परिवर्तन कर रसप्रकार सुधाकरके नामसे लिखाहै और क्रिया भी ठीक नहीं मालूम होती क्योंकि, विना किसी रुकावटके ऊपरकी हांडीमें लगाईहुई पारदकी पिष्टी अग्निके योगसे सूखकर नीचेकी हांडीमें गिरपडैगी । इसलिये यह अधःपातनकी क्रिया धरणीधर संहिताकारकी अनुभूत नहीं है । मेरी समझमें तो गोल नलिकाके समान मिट्टीका पात्र बनवावे जिसका मुख दोनों तरफ खुलाहुआ और ग्यारह अंगुलके अनुमान चौडा हो उसको नीचेकी जलभरीहुई अथवा कीचडमें रखीहुई हांडीमें रखकर ऊपर लोहेकी जाली लगाकर ऊपरसे पारदका लेप कोहुई हांडीका मुख लगाकर यंत्र चढावे तो अधःपातन ठीक होगा ।

अन्यच्च ।

फलत्रयाग्न्यासुरिसिग्रुसिन्धुजैः कुर्वन्तिसूतं भृशनष्टपिष्टिकम् । तेनैव भांडस्य पिधानपात्रकं लिंपेदधस्तात्तदधः स्थितेऽपि ॥ ॥२६५॥ जलं क्षिपेत्तत्र पिधानभांडकादुपर्यथाग्निं ज्वलयेद्यथाधः।सूतः पतेन्नूनमथोर्ध्वपातस्तद्वैपरीत्येन भवेद्रसस्य ॥ २६६ ॥ वह्निं खदिरसारेण मध्यं यामद्वयं कुरु । (टो. नं.)

अर्थ-चित्रक, त्रिफला, राई, सैंजना और नोंन इनसे पारदकी नष्टपिष्टी करे फिर हांडीके ढकनेपर उस पिष्टीका लेप कर नीचेकी हांडीमें जल भरदेवे और ऊपरके ढकनेपर आंच जलावे तो पारदका अधःपातन होताहै । यदि इस यंत्रको उलटा करें अर्थात् नीचेकी हांडीमें पारद और ऊपरकी हांडीमें जल रख नीचे आँच जलावें तो पारदका ऊर्ध्वपातन होताहै ॥ २६५ ॥ २६६ ॥

अन्यच्च ।

त्रिफला राजिका शिग्रु व्योषं लवणचित्रकम् । सूततुल्यं तु तत्सर्वं कांजिकं मर्दयेद्दिनम् ॥ २६७ ॥ तेन लेप्यमूर्ध्वभांडं देयं तत्र पुटं लघु । अधःपातनयंत्रेण पातितं तत्समुद्धरेत् ॥ २६८ ॥ (र. प.)

अर्थ-त्रिफला, राई, सैंजना, सोंठ, मिर्च, पीपल, सैंधव और चित्रक ये पारदसे बराबर लेकर कांजीके साथ एक दिन मर्दन करे उससे ऊपर के बासनपर लेपकर लघु पुट देवे फिर इस अधःपातनसे पातितपारदको ग्रहण करै२६७॥२६८

अन्यच्च ।

त्रिफलाशिग्रुशिखिभिर्लवणासुरिसंयुतैः । नष्टपिष्टं रसं कृत्वा लेपयेदूर्ध्वभाजनम् ॥ ॥ २६९ ॥ ततो दीप्तैरधःपातमुपलैस्तत्र कारयेत् । यंत्रे भूधरसंज्ञे तु ततः सूतो विशुध्यति ॥ २७० ॥ (आ. वे. वि., वै. क. द्रु., र. र. स., ध. ध. सं.)

अर्थ-त्रिफला, सैंजना, चित्रक, लवण, राई इनसे पारदकी नष्ट पिष्टी कर ऊपरके बासनमें लेप कर फिर भूधर यंत्रमें जलेहुये उपलोंसे अधःपातन करै तौ पारद शुद्ध होताहै ॥ २६९ ॥ २७० ॥

अन्यच्च ।

त्रिफलाशिग्रुशिखिभिर्लवणासुरिसंयुतैः । नष्टपिष्टं रसं कृत्वा लेपयेदूर्ध्वभांडके ॥ ॥ २७१ ॥ ऊर्ध्वभांडोदरं लिप्त्वा चाधोभांडे जलं क्षिपेत् । संधिलेपं द्वयोः कृत्वा तद्यंत्रं भुवि पूरयेत ॥ २७२ ॥ उपरिष्टात्पुटे दत्ते जले पतति पारदः । अधःपातनमित्युक्तं सिद्धाद्यैः सूतकर्मणि ॥ २७३ ॥ (र. रा. सुं., र. रा. शं., र. रा. प., र. सा. प., नि. र.)

अर्थ-त्रिफला, सैंजना, चित्रक, सैंधव, राई इनसे पारदकी नष्टपिष्टी कर ऊपरके बासनमें लेप करै और नीचेके बासनमें जल भरदेवे फिर दोनोंकी संधिको कपरौटीसे ल्हेसकर यन्त्रको धरतीमें गाड देवे और ऊपरसे आंच जलादे तौ पारद जलमें गिरजाताहै सिद्धोंने इसीको अधःपातन कहाहै ॥ २७१--२७३ ॥

अन्यच्च ।

नवनीताभ्रकं[1] सूतं घृष्ट्वा जम्बाम्भसा दिनम् । वानरीशिग्रुशिखिभिः सैन्धवासुरिसंयुतैः ॥ २७४ ॥ नष्टपिष्टं रसं कृत्वा लेपयेदूर्द्धभाण्डकम् । ऊर्द्धभाण्डोदरं लिप्त्वाऽधोभाण्डं जलसंयुतम्॥ २७५ ॥ संधिलेपं द्वयोः कृत्वा तद्यन्त्रं भुवि पूरयेत् । उपरिष्टात्पुटे दत्ते जले पतति पारदः । अधःपातनमित्युक्तं सिद्धाद्यैः सूतकर्मणि ॥ ॥ २७६ ॥ (नि. र., रसेन्द्रचि., रसेन्द्रसा., र. रा. शं., बृ. यो.)

१ यहां केवल नवनीतका अर्थ नोनियागंधक है-अभ्रकसे अभ्र और लेना।

अर्थ-नोनियां गंधक, अभ्रक, कौंच, सैंजना, चित्रक, सैंधव और राई इनसे पारदको पीसै फिर पारद नष्टपिष्ट (अर्थात् एकजीव) जानकर ऊपरके वासनपर लेप करै और नीचेके पात्रमें जलभर और दोनोकी संधिको कपरौटीसे दृढ ल्हेसकर फिर उस यंत्रको धरतीमें गाढदेवे तदनंतर ऊपर अग्निकी पुट देवै तौ पारदका अधःपातन होताहै बस इसीको अधःपातन यंत्र कहाहै ॥ २७४--२७६ ॥

सम्मति-अनेक ग्रंथोंमें 'अधोभांडे जलं क्षिपेत्' ऐसा पाठ है इस पाठसे यह बात सिद्ध होतीहै कि संपुटके नीचेके पात्रमें जल भरदेवे यह बात गुरुसंप्रदायसे विरुद्ध है क्योंकि पारदकर्ममें शैत्य पदार्थोंका प्रयोग करना उचित नहीं है क्योंकि जल शीतगुणसे युक्त है और शीतपदार्थोंमें पारदको रखनेसे अनेक षण्ढादिक दोष पैदा होतेहैं "शीते च बहवो दोषाः षण्ढाद्याः सम्भवन्ति हि" टो० नं०पृ०नं- श्लो० १३१ ऐसा शास्त्र कारोंने लिखाहै इसलिये जब जब भूधरयंत्रद्वारा अधःपातन करे तब २ नीचेके पात्रको जल वा कीचडमें रक्खे ऐसा सम्पूर्ण अधःपातनकर्मोंमें जानना चाहिये ऐसा रसरा०प०, र०सा०प०की टिप्पणीमें लिखाहै और तिर्यक् पातनमें भी घडेमें किसी जलसे भरीहुई नांदमें रखना चाहिये और घडेमें जल भरना उचित नहींहै ॥

तिर्य्यक्पातन।

घटे रसं विनिक्षिप्य सजलं घटमन्यकम्। तिर्य्यङ्मुखं द्वयोः कृत्वा तन्मुखं रोधयेत्सुधीः ॥ २७७ ॥ रसाधो ज्वालयेदग्निं यावत्सूतो जलं विशेत्। तिर्य्यक्पातनमित्युक्तं सिद्धैर्नागार्जुनादिभिः ॥ २७८ ॥ (आ.वे.वि., रसेन्द्रसा.सं., र.रा.प., ध.सं., बृ.यो., नि.र.)

अर्थ-एक घडेमें पारद और दूसरेमें जल भरदेवे और तिरछे घिसे हुए दोनों घडोंके मुखको मिलाकर संधिपर कपरौटी करे। तदनंतर जिस घडेमें पारद हो उसके नीचे आंच जलावे तो पारद जलमें प्रविष्ट होजायगा। बस इसीको नागार्जुन आदिसिद्धोंने तिर्य्यक्पातन यंत्र कहाहै ॥ ॥ २७७ ॥ २७८ ॥

अन्यच्च।

घटे रसं विनिक्षिप्य सजलं घटमन्यकम्। तिर्यङ्मुखं द्वयोः कृत्वा तन्मुखं रोधयेत्सुधीः ॥२७९॥ रसाधो ज्वालयेदग्निं यावत्सूतो जलं विशेत्। तिर्यक्पातनमित्युक्तं सिद्धैर्नागार्जुनादिभिः ॥ २८० ॥ (टो. नां द., रसार्णव., ध.सं.)

अर्थ-एक बडा घडा लेकर उसमें पारद भरदे और उसी प्रकार दूसरे घडेमें जल भरदे फिर तिरछे रखकर दोनोंके मुखको मिला कपरौटीसे बंद करदेवे और पारेवाले घडेके नीचे आंच जलावे जब तक कि पारद उडकर जलवाले पात्रमें न आजावे इसको नागार्जुनादिसिद्ध तिर्य्यकपातनसंस्कार कहतेहैं ॥ २७९ ॥ २८० ॥

मिश्रितौ चेन्नागवंगौ रसे विक्रयहेतुना। ताभ्यां स्यात्कृत्रिमो दोषस्तन्मुक्तिः पातनाश्रयात् ॥ २८१ ॥ एवं सुसंस्कृतः सूतः पातनावधि यत्नतः। सर्वदोषविनिर्मुक्तो जायते नात्र संशयः ॥ २८२ ॥ (र.रा.सुं., नि.र., र.चिं., ध.सं., र.सा.प.)

अर्थ-रेचनेके लिये पारदमें जो नाग और वंग मिलाये गयेहैं उनसे पारदमें एक प्रकारका कृत्रिम दोष पैदा होताहै, वह दोष पातनसे दूर होताहै। इस प्रकार पातन तक यत्नपूर्वक संस्कृत पारद दोषोंसे रहित होताहै इसमें सन्देह नहींहै ॥ २८१ ॥ २८२ ॥

अन्यच्च।

धान्याभ्रं च रसं तुल्यं मर्दयेदारनालकैः। नष्टपिष्टस्तु तत्पात्यस्तिर्यग्यन्त्रे दृढाग्निना ॥२८३ ॥ (र.रत्नाकर, र.प.)

अर्थ-पारदके तुल्य धान्याभ्रको लेकर कांजीसे पीसै जबतक पारदकी नष्टपिष्टी नहीं होजाय तब तक तिर्यक्यंत्रद्वारा पारदका पातन करे ॥ २८३ ॥

अन्यच्च।

अथवा दीपकयन्त्रे निपातितः सर्वदोषनिर्मुक्तः। तिर्यक्पातनविधिना निपातितः सूतराजस्तु ॥ २८४ ॥ श्लक्ष्णीकृतमभ्रदलं रसेन्द्रयुक्तं तथारनालेन। खल्वे दत्त्वा मृदितं यावन्नष्टतामेति ॥ २८५ ॥ कुर्यात्तिर्यक्पातं पातितसूतः क्रमेण दृढवह्नौ। संस्वेद्यः पात्योऽसौ न पतति यावद्दृढश्चाग्नौ ॥ २८६ ॥ तदासौ शुद्ध्यते सूतः कर्मकारी भवेद्ध्रुवम्। (र.र.स.)

अर्थ-अथवा तिर्यक्यंत्रकी विधिसे तिर्य्यक्यंत्रद्वारा पतित पारद सम्पूर्ण दोषोंसे मुक्त होताहै। अभ्रकका धान्याभ्र कर उसका एक भाग तथा पारद एक भाग इन दोनोंको खरलमें डालकर इतना घोटे कि घोटते २ पारदकी नष्टपिष्टी होजाय। तदनंतर तिर्य्यक्पातनद्वारा पारदका पातन करे तो पारद जलमें पतित होताहै। इसप्रकार दृढाग्निके देनेपर भी पारद न उडे तो अच्छीप्रकार स्वेदन करना चाहिये तो पारद समस्त कर्मोपयोगी शुद्ध होताहै ॥ २८४-२८६ ॥

रोधन।

एवं कदर्थितः सूतः षण्ढत्वमधिगच्छति। तन्मुक्तयेऽस्य क्रियते रोधनं कथ्यते हि तत् ॥ २८७ ॥ (र.चिं., र.रा.सुं., र.रा.शं., बृ.यो., र.रा.प, र.सा.प., नि.र.)

अर्थ-इसप्रकार मर्दन, मूर्च्छन और पातनसंस्कारोंसे दूषित कियाहुआ पारद षण्ढत्वदोष (नपुंसकता) को प्राप्त होताहै। उस नपुंसकताको दूर करनेके लिये पारदका बोधनसंस्कार कहतेहैं ॥ २८७ ॥

१-कर्तव्यबोधनं तद्यथोच्यते। इत्यपि।

शोधनावश्यकता ।

मर्दनैर्मूर्छनैः पातैर्मरणांतो भवेद्रसः ॥ शक्त्युत्कर्षाय बोध्योऽसौ गुरुदर्शितवर्त्मना ॥ २८८ ॥ (र. प., नि. र., र. स. प.)

अर्थ–मर्दन, मूर्च्छन और पातनसे पारदके मृत्युकी अवस्था निकट आजातीहै । इसलिये पारदशक्तिकी उत्कर्षता करनेके निमित्त गुरुदेवके दिखाये हुए मार्गसे पारदका बोधन करे ॥ २८८ ॥

अन्यच्च ।

कदर्थनेनैव नपुंसकत्वं प्रादुर्भवेदस्य रसस्य पश्चात् । बलप्रकर्षाय च दोलिकायां स्वेद्यो जले सैंधवचूर्णगर्भे ॥ २८९ ॥ (र. सा. प., नि. र.)

अर्थ–मर्दनादिसंस्कारोंके पश्चात् पारदमें एक प्रकारकी नपुंसकता पैदा होतीहै अतएव पारदके बल बढानेके लिये सैंधवचूर्णमें दोलायंत्रद्वारा पारदका स्वेदन करे ॥ २८९ ॥

जैसे–दोहा ।

कर्ममर्दनादिकनकी, कदर्थताको पाय । षंढ होतहै सूत सो, फेर बली ह्वै जाय ॥ संस्कार बोधन किये, सो अब कहत विधान । करि स्वेदनवत पोटरी, पारद धरि गुनवान ॥ वह पुटरी हांडीविषे, दोलयंत्रकी रीत । लकरीतें लटकायकै, राखै विद्याधीत ॥ सैंधोनोन समेत जल, हांडीमें भरिलेय । मंद वह्नि चौपैहरी, ताके तर करि देय॥ फिर पारद सबजतनतें, पुटरीतें जु निकारि । संस्कार बोधन यहै, कियो मुनिन निरधार ॥ (वैद्यादर्श ।)

अन्यच्च ।

छागमूत्राणि संगृह्य वानरी च बलात्रयम्॥ क्षाराम्लेन समायुक्तं कान्ते च स्वेदयेद्रसम् ॥ २९० ॥ एकविंशदिने पूर्णे शुद्धो भवति पारदः॥रेतस्वी जायते सूतःषण्ढत्वं नश्यति ध्रुवम् ॥ २९१ ॥ (र. प.)

अर्थ–कौंचके बीज, तीनों बला (बला, नागबला, महाबला), बकरीका मूत्र, क्षार और अम्लवर्गसे पारदको लोहेके पात्रमें इक्कीसदिवसतक स्वेदन करे तो पारद तेजस्वी और नपुंसकत्वदोषरहित होताहै ॥ २९० ॥ २९१ ॥

अन्यच्च ।

एवं कदर्थितः सूतो षंढो भवति निश्चितम्[1]॥ बह्वौषधिकषायेण स्वेदितः स बली भवेत् ॥ ॥ २९२ ॥ (नि. र.,श.क., र.प., वै.क.द्रु., र. रा. शं., वाच. बृ.)

[1] षंढभावं प्रयाति हि । इत्यपि ।

अर्थ–इसप्रकार कदर्थित पारद निश्चय नपुंसक होताहै इसलिये पारदको ब्राह्मीके[1] काढेसे स्वेदन करे तो पारद बली होताहै ॥ २९२ ॥

अन्यच्च ।

राजिका चित्रकं हिंगु लवणं व्योषसंयुतम्॥ सूतपादमितं सर्वं स्वर्ज्जिकाक्षारसंयुतम् ॥ ॥ २९३ ॥ शिग्रुपत्ररसेनैव पिष्ट्वा कुंडलिकाकृतिम् ॥ कुर्याद्भूर्जदले सम्यगथवा कदलीदले ॥ २९४ ॥ सुघने सुदृढे वापि वस्त्रखण्डे चतुर्गुणे।तन्मध्ये रसमादाय बध्नीयात्पोटलीं शुभाम् ॥ २९५ ॥ क्षाराम्लमूत्रवर्गेण स्वेदयेद्दिवसत्रयम् । वीर्यवाञ्जायते सूतः षण्ढभावो विनश्यति ॥ २९६ ॥ (र.प.)

अर्थ–राई, चित्रक, हींग, नोंन, सोंठ, मिर्च, पीपल, सज्जीक्षार इन सबका पारदसे चौथाई भाग लेकर सैंजनेके रससे पीसकर भोजपत्रपर अथवा केलेके पत्तेपर गोल टिकिया बनावे । फिर चिकने दृढ चौलर कपडेमें पारदकी पोटली बांधे । तदनंतर क्षार अम्लवर्ग तथा मूत्रवर्गसे तीन दिन स्वेदन करे तो पारद षण्ढ (नपुंसक) भावको छोडकर वीर्य्यवान् होताहै ॥ २९३–२९६ ॥

अन्यच्च ।

अथातः संप्रवक्ष्यामि वीर्यवाञ्जायते रसः । आदाय शिग्रुमूलानि राजिकाञ्यूषणानि च २९७ ॥ आरनालेन संपिष्य कुर्यात्पिंडस्य कुहडीम् । नवसारकलांशेन दत्त्वा सूतं विमर्दयेत् ॥ २९८ ॥ चतुर्गुणेन वस्त्रेण बध्नीयात्तस्य पोटलीम् । निंबुकस्य रसं क्षिप्त्वा जंबीररससंयुतम् ॥ २९९ ॥ चूर्णजं स्वर्जिकावारि चिंचाद्रावं च कांजिकम् । स्थालीमध्ये क्षिपेत्तं च कंठे काष्ठं विमुच्यते ॥३००॥ काष्ठे च पोटलीं बद्ध्वा कांजिकं या स्पृशेद्यथा । द्वारे च मल्लकं दत्त्वा ज्वलेदग्निमहर्निशम् ॥ ३०१ ॥ कांजिकं च क्षिपेत्तत्र क्षीणेक्षीणे पुनःपुनः । प्रत्यहं नूतनं पिंडं कुर्यात्तेनैव कुहडीम् ॥ ॥ ३०२ ॥ नवसाररसे क्षिप्त्वा बध्नीयात्पोटलीं ततः । दोलास्वेदः प्रकर्तव्य एकविंशदिनावधिः ॥ ३०३ ॥ स्वेदितः सूतराजस्तु ततो बलमवाप्नुयात् ॥३०४॥(र.प.)

अर्थ–अब मैं उस विधिको कहताहूं जिससे पारद वीर्य्यवान् होताहै । सैंजनेकी मूली, राई, त्रिकुटा इनको कांजीसे पीसकर एक मलसिया बनावे फिर षोडशांश नौसादरको पारेमें डालकर घोटे, तदनंतर उस पारदको औषधियोंकी बनीहुई मलसियामें रखकर चौलर कपडेमें पोटली बांधे । फिर

[1] वैद्यकल्पद्रुमका टीकाकार बह्वौषधिका अर्थ ब्राह्मी लिखता है ।

नींबूका रस जंभीरीका रस, चूना, सज्जीक्षार इमलीका रस और कांजी इनको एक घडामें भरदेवे और घडेके मुखपर टेढी लकडी लगाकर उसमें रसकी पोटलीको इसप्रकार लटकावे कि वह कांजीसे स्पर्श करती हो और घडेके मुखपर ढक्कन लगाकर रातदिन आंच जलावे रसके क्षीण होनेपर कांजीको बार २ डालता जाय। प्रतिदिन नवसादरके साथ पारदको खरल करे। तथा पूर्वोक्त औषधियोंकी नई २ मलसिया बनाकर पोटली बांधे। इसप्रकार इक्कीस दिन तक स्वेदन करे तो इस स्वेदनसे पारद बलवान् होता है ॥ २९७--३०४ ॥

अन्यच्च।

दिक्पलं सैंधवं चूर्ण जलं प्रस्थत्रयं तथा। धारयेद्घटमध्ये च सूतकं दोषवर्जितम् ३०५ रुद्ध्वा तस्य मुखं सम्यङ् मर्दितं मृत्स्नया कुरु। निर्वाते निर्जने देशे धारयेद्दिवसत्रयम्। अनेनैव प्रकारेण रोधनं कुरु वैद्यराट् ॥ ३०६ ॥ (ध. सं.)

अर्थ-तीन सेर जलमें दस तोले सैंधव नमक घोलकर एक घडेमें भरदेवे उस घडेमें पारद रख सकोरेसे मुख बंदकर कपरौटी करे और उसको तीन दिवसतक जहां वायु न लगै ऐसे निर्जनस्थानमें रक्खे वैद्य इसीप्रकार पारदका बोधनसंस्कार करे ॥ ३०५ ॥ ३०६ ॥

अन्यच्च।

लवणेनाम्लपिष्टेन हंडिकांतर्गतं रसम्। आच्छाद्याम्लजलं किंचित्क्षिप्त्वा स्रावेण रोधयेत् ॥ ३०७॥ ऊर्ध्वं लघु पुटं देयं लब्धश्वासो भवेद्रसः[1] ॥ ३०८ ॥ (रसेन्द्र. चि., र. रा. शं., बृ. यो., र. रा. प, नि. र.)

अर्थ-एक हांडीमें पारदको रखकर और उसके ऊपर निंबूआदिसे पिसेहुए नोंनको रक्खे। तदनंतर ऊपरसे कुछ जल डालकर सकोरासे हांडीका मुख बंदकर कपरौटी कर देवे फिर ऊपरसे लघुपुटकी अग्नि जलावे तो पारद बलिष्ठ होताहै ॥ ३०७ ॥ ३०८ ॥

अन्यच्च।

सूरणेनाम्लपिष्टेन हंडिकान्तर्गतं रसम्। आच्छाद्याथ जलं किंचिद्दत्त्वा पात्रेण रोधयेत् ॥ ऊर्ध्वं लघुपुटं देयं लब्धश्वासो भवेद्रसः ॥ ३०९ ॥ (र. प.)

अर्थ-हँडीके भीतर पारदको अम्लवर्गसे पिसेहुए जमींकंदसे वन्द करे फिर ऊपरसे कुछ और जल डालकर और शरावसे ढककर कपरौटी करे ऊपरसे लघुपुटकी आंच लगावे तो पारद जीवित होताहै ॥ ३०९ ॥

अन्यच्च।

अथवा कूपिकामध्ये[1] सूतं सैंधवसंयुतम्। भूगर्भे च ततः स्थाप्य एकविंशदिनावधि ॥ ॥ ३१० ॥ (ध. सं.)

अर्थ-अथवा काचकी शीशीमें सैंधानमक और पारदको भरकर धरतीमें इक्कीस दिनतक गाडदेवे तो पारद वीर्यवान् होताहै ॥ ३१० ॥

अन्यच्च।

अथ सूतं समुद्धृत्य काचकुप्यां विनिक्षिपेत्। रक्ताम्लेनाथ संपूर्य द्वारे मुद्रां प्रदापयेत् ॥ ३११ ॥ स्थापयेद्भूधरे यंत्रे स्वेदयेद्दिनसप्तकम्। स्वांगशीतं समुद्धृत्य कषायैः स्वेदयेत्पुनः ॥३१२॥ (ध. सं., टो. नं.)

अर्थ-अब पारदको पातनसे लेकर काचकी शीशीमें रक्खे और ऊपरसे सिरका या अम्लवर्गका रस डालकर कपरौटी करदे फिर भूधरयंत्रमें रखकर सातदिनतक स्वेदन करे तदनंतर स्वांगशीतल होनेपर तीक्ष्णकषायोंसे स्वेदन करे ॥ ३११ ॥ ३१२ ॥

अन्यच्च।

काचकूपीं मृदा लिप्य तन्मध्ये च रसं क्षिपेत्[2] ॥ कलांशटंकणं दत्त्वा मध्ये किंचित्प्रदीयते ॥ ३१३ ॥ द्वारे मुद्रा प्रकर्तव्या वज्रमुद्रिकया दृढा। भूगर्भे कूपिकां स्थाप्य सिकतया गर्भपूरणम्॥३१४॥ करीषाग्निः प्रकर्तव्य एकविंशतिवारकम्।अयं निरोधनो नाम वह्नेरत्यन्तकारकः ॥३१५ ॥ (ध. सं.)

अर्थ-कपरौटी की हुई शीशीमें पारदको रखकर उसमें षोडशांश सुहागा डाले फिर वज्रमिट्टीसे शीशीके मुखपर मुद्रा करे और उसको धरतीमें गाडकर ऊपरसे वालू रेत भरदे और उसपर इक्कीसवार कंडोंकी अग्नि जलावे यह निरोधननामका संस्कार पारदको बुभुक्षित करताहै३१३-३१५

अन्यच्च।

उत्तराशाभवस्थूलरक्तसैंधवलोष्टकः। तद्गर्भे रंध्रकं कृत्वा सूतं तत्र विनिक्षिपेत् ॥ ॥ ३१७ ॥ ततस्तु चाणकं क्षारं दत्त्वा चोपरि नैम्बुकम्। रसं प्रक्षिप्य दातव्यं तादृक्सैंधवखाटकम् ॥ ३१८ ॥ गर्त्तं कृत्वा धरागर्भे दत्त्वा सैंधवसम्पुटम्। धूलिमष्टांगुलं दत्त्वा करीषाग्निं च सप्तकम् ॥ ३१९॥ वह्निं प्रज्वाल्य तद् ग्राह्यं क्षालयेत्कांजिकेन च।अयं नियमनो नाम संस्कारो गदितो बुधैः ३२०॥

---

[1] प्राप्तपुंस्त्वो रसो भवेत्–इत्यपि। लब्धपुंस्त्वो भवेद्रसः–इत्यपि।

१ यहां कुछ पाठ अवश्य रहगयाहै जिसका अर्थ यह होताहै "लवण और अम्लकाच कूपीमें डाले"।

२ यहां भी कुछ पाठ अवश्य रहगयाहै जिसका अर्थ यह होताहै-कि "लवण और अम्ल काचकूपीमें भरे"।

अभावे चणकक्षारस्यार्प्पयन्नवसादरम्। स्वर्जिका वा प्रदातव्या न्यूनमित्याह भास्करः ॥ ३२१ ॥ (र. रा. शं., बृ. यो., र. रा. प., नि. र., र. रा. सुं.)

अर्थ–उत्तरकी दिशामें लाल रंगके सैंधेनोनका पाषाण होताहै उस पत्थरके बीचमें एक गड्ढा करके पारा भरदेवे तदनंतर उसी लाल सैंधवके पाषाणसे बनाये हुए ढक्कनसे मुख बंद कर धरतीमें गड्ढा खोदकर उसमें पारद भरेहुए सैंधवके पाषाणको स्थापित कर ऊपरसे आठ २ अंगुल रेत विछादेवे फिर उस मिट्टीपर सात दिनपर्य्यंत (अथवा दसदिनतक) करसीकी आंच जलाकर पारदको निकाल कांजीसे धोडाले पंडित इसीको नियमनसंस्कार कहतेहैं जहां चनाखार नहीं मिलसकताहै वहां नौसादर डालना उचितहै या थोडीसी सज्जी ही डालदेनी चाहिये ॥ ३१७–३२१ ॥

अन्यच्च।

रक्तसैन्धवघोटेन मूषाद्वंद्वं प्रकल्पयेत्। तत्संपुटे रसं क्षिप्त्वा नवसारं सनिम्बुकम् ३२२॥ तत्संपुटं प्रयत्नेन लेपयेत्संधिमुत्तमम्। वज्रमृत्स्नासमादाय वेष्टयेत्तत्प्रयत्नतः ॥३२३॥ छायाशुष्कं च तत्कृत्वा भूगर्भे स्थापयेत्ततः। अष्टांगुलप्रमाणेन मूषार्द्धं तत्र पूरणम् ३२४॥ त्रिसप्तदिनपर्यंतं करीषाग्निं च कारयेत्। दिनेदिने प्रकर्तव्या मूषा सैन्धवनूतना ३२५ स्वेदयेत्तत्प्रयत्नेन भूगर्भे स्थापयेत्ततः। अथवा कूपिकामध्ये सूतं सैन्धवसंयुतम् ३२६ (ध. सं.)

अर्थ–लालसैंधेनोनके पाषाणकी दो मूषा बनावे उनके सम्पुटमें पारद नौसादर और नींबूके रसको भरकर यत्नपूर्वक दोनोंके संपुटको करे और वज्रमिट्टीसे दोनों सम्पुटोंको अच्छीप्रकार ल्हेस दे फिर छायामें सुखाकर और भूधरयंत्रमें रखकर ऊपरसे आठ आठ अंगुल रेत विछादे तदनंतर सात दिवस पर्य्यंत करसीकी आंच जलावे प्रतिदिन नवीन सैंधवकी मूषा बनाकर भूधरयंत्रमें स्वेदन करे ॥ ३२२–३२६ ॥

अन्यच्च।

सृष्टयम्बुजनिरोधेन ततो मुखकरो रसः। स्वेदनादिवशात्सूतो वीर्यं प्राप्नोत्यनुत्तमम् ॥ ३२७ ॥ (र. र. स.)

अर्थ–सृष्टयम्बुज (स्त्रीका रज या मूत्र अथवा गोमूत्र) से पारदका रोधन संस्कार करे तौ पारदके मुख होताहै और स्वेदनसे पारद उत्तम वीर्य्यको प्राप्त होताहै ॥ ३२७ ॥

अन्यच्च।

मर्दनमूर्च्छनपातैः कदर्थितो मंदवीर्य्यत्वम्। सृष्टयम्बुजैर्निरोधं लब्ध्वा प्रायो न षंढः स्यात् ॥ ३२८ ॥ (टो. नं.)

अर्थ–मर्दन, मूर्छन और पातनसे निर्बल किया हुआ पारा हीनवीर्य होताहै और उसी पारदका यदि सृष्टयम्बुजसे रोधन कियाजाय तो पंढभावको छोड देताहै ॥ ३२८ ॥

अन्यच्च।

काचकूप्यादिके सूतो मग्नः सृष्टयम्बुजेन हि। पूरयेत्त्रिदिनं भूम्यां षंढभावं विमुंचति ॥ ३२९ ॥ (र. सा. प.)

अर्थ–एक काचकी शीशीमें पारद तथा स्त्रीके आर्तवको भरे फिर एक हाथ गहरी धरतीमें उस पारदसहित शीशीको गाडदेवे और इसीप्रकार तीन दिनतक गडीरहे तो पारद पण्ढभावको छोडदेताहै ॥ ३२९ ॥

अन्यच्च।

विश्वामित्रकपाले वा काचकूप्यामथापि वा। सृष्टयम्बुजं विनिःक्षिप्य तत्र तन्मज्जनावधि ॥ ३३० ॥ पूरयेत्त्रिदिनं[1] भूम्यां राजहस्तप्रमाणतः। अनेन सूतराजोयं[2] षण्ढभावं विमुञ्चति ॥ ३३१ ॥ (र. चिं. म., र. सा. सं., र. रा. सुं., र. रा. शं., बृ. यो. त.)

अर्थ–नारियलके भीतरकी गिरीको निकालकर खाली कियेहुए उस पात्रमें अथवा काचकी शीशीमें पारदके डूबने योग्य स्त्रीके मासिकधर्मसे पैदाहुए रक्तसहित पारदको भरदेवे फिर धरतीमें सवा हाथ (अथवा जहांतक नीचे हवा न पहुंचती हो) गड्ढा खोदकर उस शीशीको गाडदेवे तो इस क्रियासे पारद पण्ढभावको छोडदेताहै ॥ ३३० ॥ ३३१ ॥

सृष्टयम्बुजरूप।

गोजाविनरनारीणां मूत्रं शुक्रं च शोणितम्। सृष्टयम्बुजाः समाख्याताः षंढदोषविनाशकाः ॥ ३३२ ॥ (ध. सं.)

अर्थ–गौ, बकरी, भेड, मनुष्य और स्त्री इनके मूत्र वीर्य और रक्तको सृष्टयम्बुज कहतेहैं। और वे सृष्टयम्बुज[3] पण्ढदोषके नाशक हैं ॥ ३३२ ॥

नियमनफल।

अधुना कथयिष्यामि रसनियमनकर्म च॥ यत्कृते चपलत्वं हि रसराजस्य शाम्यति॥ ॥ ३३३ ॥ (ध. सं.)

अर्थ–अब मैं पारदके उस नियमनसंस्कारको कहूंगा कि जिसके करनेसे पारदकी चपलता शान्त होतीहै ॥ ३३३ ॥

नियमनसंस्कार।

अतः परं नियमनं वक्ष्यामि पारदस्य हि। जलसैंधवयुक्तश्च घटस्थो यो रसोत्तमः॥ ॥ ३३४ ॥ कर्कोटी लशुनं नागं मार्कवं चिंचिका पटुः। एभिस्त्रिदिनं स्वेदाद्वीर्यवाञ्जायते रसः ॥ ३३५ ॥ (ध.सं.)

अर्थ–इसके आगे पारदके नियमनसंस्कारको कहूंगा। जिस पारदको जल और सैंधवसे भरेहुए घडेमें रक्खा था उस पारदको वांझककोडा, लहसन नागफणी, जलभांगरा,

[1] स्थापयेत्त्रि० इ०। [2] एवं कृतः सूतराजः। इ०।
[3] रसराजपद्धतिमें सृष्टयम्बुजका अर्थ लवण किया है।

इमली और नोंन इनसे तीन दिनतक स्वेदन करे तो पारद वीर्यवान् होताहै ॥ ३३५ ॥

अन्यच्च ।

इति लब्धवीर्यः सम्यक् चपलोसौ नियम्यते तदनु । फणिलशुनाम्बुजमार्कवकर्कोटीचिंचिकास्वेदात् ॥ ३३६॥ (रसहृदय, ध. सं.,र.रा. प.)

अर्थ-निरोधनसंस्कारसे पारद वीर्यवान् होताहै परन्तु चपलता दूर नहीं होती इस कारण चपलता दूर करनेके लिये रोधनके पश्चात् नागफणी, लहसन, नोंन, भांगरा, वांझककोडा और इमलीके काथके साथ तीन दिन स्वेदन करे ॥ ३३६ ॥

अन्यच्च ।

नियम्योऽसौ ततः सम्यक् चपलत्वनिवृत्तये। कर्कोटीफणिनेत्राभ्यां वृश्चिकाम्बुजमार्कवम् । समं कृत्वाऽऽरनालेन स्वेदयेच्च दिनत्रयम् ॥ ३३७ ॥ (र.र.स.)

अर्थ--रोधन (बोधन) के बाद पारद चपलता दूर करनेके लिये वांझककोडा, नागफणी, बिछुआघास, नोंन, भांगरा और कांजी इनके साथ तीन दिनतक स्वेदन करे३३७

अन्यच्च ।

कर्कोटीकम्बुकीवह्निसर्पाक्ष्यम्बुजमार्कवैः । दिनत्रयं चारनालैः स्वेदश्चापल्यशांतये ॥ ॥ ३३८ ॥ (टो. नं., ध. सं.)

अर्थ-वांझककोडा, असगंध, चित्रक, सर्पाक्षी (सरहटी), नोंन और भांगराको कांजीमें मिलाकर फिर उसमें पारदको तीन दिवसतक स्वेदन करे तो चपलता शीघ्रही शान्त होतीहै ॥ ३३८ ॥

अन्यच्च ।

सर्पाक्षी चिंचिकावन्ध्याभृङ्गाब्दकनकाम्बुभिः । दिनं संस्वेदितः सूतो नियमात्स्थिरतां व्रजेत् ॥ ३३९ ॥ (र.रा.सुं.,बृ.यो., आ.वे.वि.,र.रा.प.,र.सा.प.,नि.र.)

अर्थ-सर्पाक्षी (सरहटी), इमली, बांझककोडा, भंगरा, नागरमोथा, धतूरा, नोंन इन सबको कांजीमें पीसे। फिर उसमें एक दिवस पारदको स्वेदन करे तो इस नियमसे पारद स्थिर होताहै ॥ ३३९ ॥

अन्यच्च ।

सर्पाक्षीचिंचिकावन्ध्याभृङ्गाब्दैः स्वेदितो बली । निरस्तषंढभावोऽसौ जायते हि रसोत्तमः ॥३४०॥(र.रा.शं.,र.रा.प.,नि.र.)

अर्थ-सरहटी, इमली, बांझककोडा, भंगरा, नागरमोथा, इनके काथसे स्वेदन करे तो पारद बली और षण्ढभावको छोडकर सब रसोंमें उत्तम होताहै ॥ ३४० ॥

नियमन और दीपन ।

वन्ध्याहिनेत्राम्बुजमार्कवाणां सतिक्तकानां दिवसं प्रपके । स्विन्नस्थिरत्वं लभते-ग्नितोये सकाञ्जिके दीप्तियुतोऽतितीक्ष्णः ॥ ॥ ३४१ ॥ (यो.त.,र.र.प.)

अर्थ--बांझककोडा, नागफणी, नोंन, भंगरा और इमलीके काथमें स्वेदन करनेसे पारदमें स्थिरता प्राप्त होतीहै तथा चित्रकका काथ और कांजीमें स्वेदन करनेसे पारद अति तीक्ष्ण और दीप्त होताहै ॥ ३४१ ॥

अन्यच्च ।

सर्पाक्षी वृश्चिकाली च वन्ध्या कर्कोटिराजिके । कन्याकनकधत्तूरभृङ्गाब्जकनकाम्बुभिः । दिनं संस्वेदितः सूतो नियमात्स्थिरतां व्रजेत् ॥ ३४२ ॥ (र.प.)

अर्थ-सर्पाक्षी (सरहटी, सरफोंका), असगंध, बांझककोडा, राई, घीग्वार, पलास, धतूरा, भंगरा, नागरमोथा, कनक (कालीयक) और नोन इनमें जिनका रस निकले उनका रस तथा औरोंका काथ लेकर एक दिन स्वेदन करे इस नियमनसे पारेकी स्थिरता होतीहै ॥ ३४२ ॥

अन्यच्च ।

कर्कोटी क्षीरकन्दं च सर्पाक्षी यवचित्रकम् । पटुं निम्बुं भृङ्गराजं व्यस्तं वाथ समस्तकम् ॥ ३४३ ॥ कल्कयेदारनालेन तद्द्रावैः पाचयेद्रसम् । दिनं नियमनेयन्त्रे तमादायाथ दीपयेत ॥ ३४४ ॥ (र.प.)

अर्थ-बांझककोडा, क्षीरकंद, सरफोंका, इमली, नोन, निंबू और भांगरा इन सबको अथवा जितनी मिलें उनको कांजीसे पीसे और उसी रसमें पारदको एक दिन नियमन यंत्रमें पकाकर फिर दीपनसंस्कार करे ॥ ३४३ ॥ ३४४ ॥

जसे-दोहा ।

लेय देवदाली सहित, अमली सैंधो नोन । दूबगठीली निंबदल, करिये भँगराकोंन ॥ फिर मकोय करिके सहित, कन्दविलाई आन । ये औषध समभाग ले, पारद सम गुनवान ॥ कांजीतें फिरि पीसिकैं, कपरा चौतह लेय । अंगुरभर तापै भिषक, कपरौटी करिदेय ॥ ता कपराको घाममें, अधसूको करवाय । पारद धरि ताके विषे, पुटरी ले बँधवाय ॥ पुटरीते पीसी गई, ते सब औषधि लाय । करते मथिके नीरमें, घोरे भिषक बनाय ॥ धुरचो तौ वह नीर सब, हांडीमें भरवाय । डोल जंत्रवत पोटरी, पारदकी लटकाय ॥

१-शास्त्रकार इसको बोधन मानताहै परन्तु यह नियम न है ऐसा हमारा विचार है ।

१ इस शास्त्रकारने कंचुकी हरणेसे लेकर यहां तकके कर्मसे शुद्धि मानी है।

मंद आंच तरतर करै, एक दिवस परियंत। ता पुटरीते सूत फिर,ले निकास बुधवंत॥ संस्कार नियमन यहै, भाष्यो मुनि जन लोय । सूत न यातैं उडिसकै, अग्निस्थाई होय ॥ (वैद्यादर्श)

अन्यच्च ।

मेघनादरसैरेवं सर्पनेत्राररसैरपि। मार्कवाद्रि-श्चिंचिकाद्रिर्मूषाकरणिकारसैः॥ वंध्याकंद-रसैश्चैव पीतवर्णरसैस्तथा ॥ ३४५ ॥ लांग-लीकहंसपादीरसैश्चामलकीरसैः । मास-त्रयस्य पाकेन रसो वह्निसहो भवेत् ॥३४६॥

अर्थ-नागरमोथेका रस, गंधनाकुलीका रस, जलभंगरेका रस, इमलीका रस, मूसाकन्नीका रस, वंध्याकंदका रस, पीयावांसाका रस, कलिहारीका रस, लाललज्जालूका रस, और आँवलेका रस इन रसोंसे तीनमास पर्यंत पाराको शुद्ध करनेसे अग्निको सहने लगता है ॥ ३४५ ॥ ३४६ ॥

नियमन कियेहुये पारदके लक्षण ।

शुद्धं तलस्तंभगतं नियामकनियोजितम् । नियामिते प्रयात्येव तथा धूमगतिः प्रिये । कणिकाजालरहितो बुद्बुदस्थायिवर्जि-तः ॥ ३४७ ॥ (र. प.)

अर्थ-हे प्रिये ! शुद्ध किया, तलस्तंभमें प्राप्त हुआ,नियामकका योजित किया पारा नियमन करनेमें चला ही जाता है और तैसे ही धूमगतिवाला हुआ कणिकाजालसे रहित एवं बुद्बुदस्थायीसे वर्जित होजाता है ॥ ३४७ ॥

दीपन ।

भूखगटंकणमरिचैर्लवणासुरिकांजिकैस्त्रि-दिनम् । स्वेदेन दीपितोऽसौ ग्रासार्थी जायते सूतः ॥ ३४८ ॥ (ध. सं., र. क. द्रु., र. रा. प.)

अर्थ-फिटकरी, कसीस, सुहागा, मिरच, नोन, राईऔर कांजीसे पारदको तीन दिन स्वेदन करे तो दीपित हुआ यह पारद ग्रासार्थी (बुभुक्षित) होताहै ॥ ३४८ ॥

जैसे-दोहा ।

मरिच सुहागा केंचुआ, राई सैंधोनोंन । पीसें सहँजनबीज जुत, नींबूरस एकोंन ॥ फिर पारामें डारि सब, नींबूरसके संग । तीन दिवस परियंतलों, घोटकरै इकअंग॥ फिर चौतह कपराविषैं, येही औषधि लेय। नींबूरस पीसी भई, तिन्हें लेप करिदेय ॥ फिर पारा ता वस्त्रमें, धरि बांधे सुज्ञान ॥ पुटरी करिके घामके,विषै सुकाय सुजान॥ तब वह पुटरी लेयके, हांडीमें लटकाय । डोलजंत्रकीसी तरैं, फिर कांजी भरवाय॥ मंद आंचतें तीन दिन, स्वेदन करिये तास। संस्कार दीपन सु इम,कीनों मुनिन प्रकाश॥ यातें पारद होतहै, अतिभूखो गुनवान । अब अनुवासन कर्मकी, विधि सब सुनो सुजान ॥ (वैद्यादर्श ।)

अन्यच्च ।

मरिचैर्भूखगयुक्तैर्लवणासुरिशिग्रुटंकणोपेतैः । काञ्जिकयुक्तैस्त्रिदिनं ग्रासार्थी जायते स्वेदात् ॥ ३४९ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-मिरच, फिटकरी, कसीस, नोंन, राई, सैंजनेकी मूली और सुहागा इनको कांजीमें पीसे फिर उसी कांजीमें पारेको तीन दिनतक स्वेदन करे तो पारद बुभुक्षित होताहै ॥ ३४९ ॥

अन्यच्च ।

अथेदानीं प्रवक्ष्यामि रसराजस्य दीपनम्। बुभुक्षा व्यापकत्वं च येन कृत्वा प्रजायते॥ ॥ ३५० ॥ राजिका लवणोपेता मरिचैः शिग्रुटंकणैः। काशीशसंयुता कांक्षी कांजिकेन समन्वितैः ॥ ३५१ ॥ दिनानि त्रीणि संस्वेद्य पश्चात्क्षारेण मर्दयेत् । अनेनैव प्रकारेण दीपनं जायते ध्रुवम् ॥ ३५२ ॥

अर्थ-अब मैं रसराजके उस दीपन नामके संस्कारको कहताहूं कि जिसके करनेसे पारद बुभुक्षित होताहै । राई, मिर्च, सैंजना, सुहागा, कसीस और फिटकरीको कांजीमें पीसे फिर उसमें पारदको तीनदिन स्वेदन करके पश्चात् क्षारवर्गसे मर्दन करे। इसप्रकारसे पारदका दीपन-संस्कार होताहै ॥ ३५०-३५२ ॥

दीपनफल ।

तीव्रत्वं वेगकारित्वं व्यापकत्वं बुभुक्षितम् । निर्मलत्वं विशेषेण कृते दीपनकर्मणि ॥ ३५३ ॥ (र. प्र. सु.)

अर्थ-दीपन संस्कार कियेहुए पारदका यह लक्षण है कि, पारद तीव्र वेगकारी, व्यापक, बुभुक्षित और विशेषकर निर्मल होताहै ॥ ३५३ ॥

दीपन ।

काशीशं पंचलवणं राजिका मरिचानि च। भूशिग्रुबीजमेकत्र टंकणेन समन्वितम् ३५४ आलोडय कांजिके दोलायंत्रे पाकादिनैस्त्रिभिः । दीपनं जायते सम्यक्सूतराजस्य जारणे ॥ ३५५ ॥ (र. सा. सं., र.रा.शं., र. रा. सुं., नि. र., र. चिं., बृ. यो. त., आ. वे. वि., र. सा. प.)

अर्थ-हीराकसीस, पाँचोंनोंन, राई, मिर्च, फिटकरी, सैंजनेके बीज और सुहागेको कांजीमें घोलकर दोलायंत्रद्वारा तीन दिनतक पारदको स्वेदन करे तो पारदका दीपन संस्कार होताहै ॥ ३५४ ॥ ३५५ ॥

अन्यच्च ।

क्षौद्रांशं लवणक्षारं भूखगोषणशिग्रुभिः । राजिकाटंकणयुतैरारनालैर्दिनत्रयम् ॥ स्वेदनाद्दीपितो देवि ग्रासार्थी जायते रसः ॥ ॥ ३५६ ॥ (रसार्णव, र. प.)

अर्थ-सैन्धव, सज्जीक्षार, फिटकिरी, कसीस, मिरच, सैंजनेके बीज, राई और सुहागेसे मिलीहुई कांजीमें पारदको तीन दिन स्वेदन करनेसे पारद दीपित तथा बुभुक्षित होताहै ॥ ३५६ ॥

अन्यच्च ।

त्रिक्षारसिंधुखगभूशिखिशिग्रुराजीतीक्ष्णाम्लवेतससुरैर्लवणोषणाम्लैः ॥ नेपालताम्रदलशोषितमारनाले साम्लासवाम्लपुटितं रसदीपनं तत् ॥ ३५७ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-जवाखार, सज्जीखार, सुहागा, कसीस, चित्रक, सैंजनेके फल, राई,चव, अमलवेत, सैंधव, मिर्चे, अम्लवर्ग तथा नेपालके तांबेसे बुझाइ हुई कांजी और सुरा (मदिरा) के नीचे जमेहुए मसालेमें पारदको पुट देवे तो दीपनसंस्कार होताहै ॥ ३५७ ॥

अन्यच्च ।

स्वेदयेदासवाम्लेन वीर्यतेजःप्रवृद्धये । यथोपयोगः स्वेद्यः स्यान्मूलिकानां रसेषु च ॥ ३५८ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-अथवा वीर्य्य और तेजकी वृद्धिके लिये पारदको आसवाम्ल (खट्टे आसव) में स्वेदन करे । और जहां पारदका जैसा उपयोग हो वैसा ही सर्पाक्षी (र. र. स. पृ. ९१ का लेख देखो) इत्यादि औषधियोंके रसमें स्वेदन करे ॥ ३५८ ॥

अन्यच्च ।

त्रिक्षारं पंचलवणं भूखगं शिग्रुमूलकम् । स्वर्णपुष्पी च काशीशं मरिचं राजिका मधु ॥ ३५९ ॥ क्षीरकंदं जया कन्या विजया गिरिकर्णिका । काकजंघा शंखपुष्पी पातालगरुडी कणा ॥ ३६० ॥ वंध्या कर्कोटकी वह्निर्व्यस्तं वाथ समस्तकम् । पेषयेदम्लवर्गेण तेनैव मर्दयेद्दिनम् ॥ ३६१ ॥ दिनान्ते बंधयेद्वस्त्रे दोलायंत्रे त्र्यहं पचेत् । पूर्वद्रावैर्घटे पूर्णे पूर्णं ग्रासार्थि जायते ॥ ॥ ३६२ ॥ (र. प.)

अर्थ-त्रिक्षार (सुहागा, जवाखार, सज्जीखार), पांचोनोंन, फिटकिरी कसीस, सैंजनेकी जड,स्वर्णपुष्पी, केतकी, मिरच, शहद, क्षीरकंद (विदारी), अग्निमंथ, घीग्वार, जयन्ती, गिरिकर्णिका (विष्णुक्रान्ता), काकजंघा (मसी, कौआठोडी), शंखाहुली, पातालगरुड़ी (छिरहिटा),पीपल, वांझककोड़ा चित्रक इनको यथालाभ लेकर पारदके साथ एकदिन कांजीमें पीसे फिर वस्त्रमें पोटली बांधकर पूर्वोक्त औषधियोंके रसोंसे भरेहुए घड़ेमें दोलायंत्रद्वारा तीन दिवसतक पचावे तो पारद बुभुक्षित होताहै ॥ ३५९-३६२ ॥

अन्यच्च ।

लवणं राजिका हिंगु कन्या क्षारचतुष्टयम् । त्र्यूषणं लशुनं चैव मातुलुंगरसाप्लुतम् ॥ ॥ ३६३ ॥ पिंडिमध्ये रसं कृत्वा स्वेदयेत्सप्तधा पुनः । अनुद्गारी भवेत्तेन ग्रासो जीर्णोपि जीर्यति ॥३६४॥ अनेनैव भवेच्छुद्धः सर्वदोषविवर्जितः । निश्चलः स्वच्छरूपश्च कांजिकादिविशोधितः ॥ ३६५ ॥ क्षाराः सर्वे मलं घ्नंति लवणं ग्रंथिभेदनम् । स्वेदोप्यजीर्णतां हंति षंढत्वं पटुकाम्लकम्३६६॥ (टो. नं., ध. सं.)

अर्थ-नोंन, राई, हींग, घीग्वार, क्षारचतुष्टय (सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, तिलखार), सोंठ, मिरच, पीपल और लहसन इनको बिजौराके रसमें पीसकर एक पिंडी बनावे । फिर उसमें पारदको रखकर सातबार स्वेदन करे तो पारद दीप्त होताहै और खाया हुआ ग्रास भी जीर्ण होताहै इस क्रियासे पारद सम्पूर्ण दोषोंसे रहित होकर शुद्ध होताहै विशेषकर कांजी आदिसे शोधित पारद निश्चल और स्थिर होताहै । समस्त प्रकारके क्षार पारेके मलको नाश करतेहैं । नोंन पारदके ग्रन्थिभेदको करताहै स्वेदन भी पारदके अजीर्णको हरताहै और नोंन तथा अम्लवर्ग पारदकी नपुंसकताको नाश करतेहैं ॥ ३६३-३६६ ॥

अन्यच्च ।

रामठं पंचलवणं तथा क्षारचतुष्टयम् । त्रिकटुं शृंगवेरं च मातुलुंगं रसाप्लुतम् ३६७॥ पिंडमध्ये रसं दत्त्वा स्वेदयेत्सप्त वासरान् । सारनाले तु मृद्भाण्डे ग्रासार्थी जायते ध्रुवम् ॥ ३६८ ॥ (कामरत्न.)

अर्थ-हींग, पांचोनोंन, सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, तिलका खार, सोंठ,मिर्च, पीपल और अदरख इनको बिजौरेके रससे पीसे फिर उस पिंडमें पारदको रखकर सात दिन कांजीके पात्रमें स्वेदन करे तो पारद निश्चय ही बुभुक्षित होताहै ॥ ३६७ ॥ ३६८ ॥

अन्यच्च ।

स्वेदनं रसराजस्य क्षाराम्लविषगंधकैः । बीजपूरकमादाय वृंतमुत्सृज्य कारयेत्३६९ तन्मध्ये च क्षिपेत्सूतं कलांशक्षारसंयुतम् । द्वारं निरुध्य यत्नेन वस्त्रमध्ये निबंधयेत् ॥ ॥ ३७० ॥ दोलास्वेदः प्रकर्तव्य एकविंशदिनावधि । दिनेदिने प्रकर्तव्यं नूतनं बीजपूरकम् ॥ ३७१ ॥ लेलिहानो हि धातूंश्च पीड्यमानो बुभुक्षया । अमुनैव प्रकर्तव्यं रसराजस्य दीपनम् ॥ ३७२ ॥ त्र्यहं सप्तदिनं चाथ चतुर्दशैकविंशतिः । संस्काराः

सूतराजे तु क्रमात्क्रमतरं वरम् ॥ ३७३ ॥ (ध. सं.)

अर्थ–बिजौराको लेकर उसके पीछेके वृंत (डांठुरा) को उखाड देवे फिर उस बिजौरेमें षोडशांश क्षार सहित पारदको डालकर ऊपरसे उसी बिजौरेके डांठुरेको, तदनंतर उस बिजौरेको कपडेमें बांधकर इक्कीस दिन पर्य्यंत स्वेदन करे प्रतिदिन बिजौरा नया बदल देना चाहिये। इस रीतिसे जो पारदका दीपन किया जाय तो भूखसे घबराया हुआ पारद सब धातुओंको खाजाताहै । और इसप्रकार अनुक्रमसे तीन दिन, सात दिन, चौदह दिन और इक्कीस दिन पारदके संस्कार श्रेष्ठ कहेहैं ॥ ३६९–३७३ ॥

अन्यच्च ।

अथवा चित्रकद्रावैः काञ्जिके त्रिदिनं पचेत् ततः सपावकद्रावैः स्विन्नः स्यादतिदीप्तवान् ॥ ३७४ ॥ अथवा चित्रकद्रावैः काञ्जिकेन दिनं पचेत् । दीपनं जायते तस्य रसराजस्य चोत्तमम् ॥ ३७५ ॥ (वै. क. द्रु., र. चिं., बृ. यो., आ. वे. वि., र. रा. प., र. सा. प., र. रा. शं, नि. र.)

अर्थ–अथवा चित्रकका रस तथा कांजीमें पारदको तीन दिन स्वेदन करे तो पारा दीप्त होताहै । इसी प्रक्रियाको वैद्यकल्पद्रुम, रसराजशंकर, रसपद्धति, और निघंटुरत्नाकरवालेने भी कहाहै ॥ ३७४ ॥ ३७५ ॥

अनुवासनसंस्कार ।

दीपितं रसराजं तु जंबीररससंयुतम् । दिनैकं धारयेद्धर्मे मृत्पात्रे वा शिलोद्भवे ॥ ॥ ३७६ ॥ (र.रा.सुं., र.चिं.)

अर्थ–दीपनसंस्कारके बाद पारदको पत्थर या मिट्टीके पात्रमें स्थित जंभीरीके रसमें रखकर एक दिन घाममें रक्खे तो अनुवासन नामका नवम संस्कार होताहै ऐसा किसीने मानाहै ॥ ३७६ ॥

जैसे–दोहा ।

निम्बूरस जम्बीररस, दोऊ लेय मिलाय । चीनीके प्याला विषै, धरि पारद भरवाय । वह प्याला धरि घाममें, तीनदिवस परिमान । संस्कार नवमो सु यह, है अनुवासन जान ॥ (वैद्यादर्श ।)

अनुवासनको किसीकिसीने रोधनका भेद ही माना है ।

अन्येषां मते तु अनुवासनस्यापि रोधनभेदत्वादष्टावेव संस्काराः ॥ (र.प.)

अर्थ–औरोंके मतसे अनुवासनको भी रोधनान्तर्गत माननेसे आठ ही संस्कार होतेहैं ॥

संस्कारोंकी प्रणाली दीपन अनुवासनकी क्रिया ।

उक्तौषधिरसैर्वस्त्रे दोलायन्त्रे विपाचयेत् । अवशिष्टरसैः पश्चान्मर्दयेत्पातयेदपि ॥ ॥ ३७७ ॥ मर्दनाख्यं हि यत्कर्म तत्सूते गुणकृद्भवेत् । पुनर्विमर्दयेत्तस्माच्चतुर्दशदिनान्यमुम् ॥ ३७८ ॥ इत्थं पातनया नपुंसकममुं यत्नेन रुद्धांबरे सिन्धुत्र्यूषणमूलकार्द्रहुतभुग्राज्यादिकल्कान्विते । भांडे कांजिकपूरिते दृढतरे भव्ये शुभे वासरे दोलायन्त्रविधानविच्त्रिदिवसं मन्दाग्निना स्वेदयेत् ॥ ३७९ ॥ स्वेदनदीपनतोऽसौ ग्रासार्थी जायते सूतः । दीपितमन सत जम्बीराम्लेन धारयेद्धर्मे ॥ ३८० ॥ दिनमनुवासनमेवं नवमं संस्कारमिच्छन्ति ॥ ॥ ३८१ ॥ (र.रा.सुं.)

अर्थ–पारदको पूर्वोक्त औषधियों (जलभांगरा, लौनियां, गोमा और जलपीपल) के रसोंमें दोलायंत्रद्वारा पाचन करे। और स्वेदन करनेसे बचेहुए रसोंके साथ मर्दन कर पातन करे । मर्दन संस्कार पारदमें गुणकारी है इस कारण चौदह दिन बार २ मर्दन करे इसप्रकार पातनके बाद सैंधव, सोंठ, मिरच, मूली अदरख, चित्रक और राई आदिके कल्कसे लियेहुए कपडेमें बांधकर कांजीके घडेमें शुभ दिन देखकर दोलायंत्रद्वारा तीन दिनतक मंदाग्निसे स्वेदन करै । इस स्वेदनद्वारा पारा बुभुक्षित होताहै । और दीपित कियेहुए इस पारदको जंभीरीके रसमें डालकर एकदिन घाममें रक्खे तो इसको नवां अनुवासन संस्कार कहतेहैं ॥ ३७७–३८१ ॥

नवसंस्कारमें पारदका अष्टमांश रहना ।

स्वेदनादिनवकर्मसंस्कृतः सप्तकंचुकविवर्जितो भवेत् ॥ अष्टमांशमवशिष्यते सदा शुद्धसूत इति कथ्यते तदा ॥ ॥ ३८२ ॥ (र.रा.सुं.)

अर्थ–एक सेर पारा शोधनकी क्रियाओंसे शुद्ध कियाहुआ जब आध पाव बाकी रहजाय तब और जब एक सेर पारद स्वेदनादि नव संस्कारोंसे संस्कृत किया हुआ आधसेर बाकी रहजाय तब उसको सात कंचुकोंसे रहित और शुद्ध समझना चाहिये ॥ ३८२ ॥

शुद्धिमें पारदका अष्टमांश रहना ।

यदा सम्यक् शोधितो रसराजोऽष्टमांशोऽवशिष्यते । तदा सप्तकंचुकोज्झितः शुद्धरसराजो ज्ञातव्यः । यथा पूर्वं स्थितस्तादृशोस्ति सप्तकंचुकसम्बन्धिनस्सप्तभागा गच्छन्ति सप्तकञ्चुकास्सप्तावरणानि शिवशापाज्जातानि तद्विमुक्ततया शुद्धरसराजो बुधैरुच्यते ॥ (र. प.)

अर्थ–जब शुद्ध करते २ पारद अष्टमांश बाकी रहजाय तब सात कंचुकोंसे रहित अति शुद्ध पारद होताहै । क्योंकि सात कंचुकोंसे सात भाग होतेहैं। वे स्वेदनादि नव संस्कारों से नष्ट होजातेहैं इस कारण आठवाँ हिस्सा ही बाकी रहता है । सातकंचुक और सात आवरण श्रीशिवजीकी आज्ञासे

पारदमें पैदा हुएहैं उनसे रहित पारदको पंडितलोग शुद्ध कहतेहैं ॥

नवसंस्कारोंका फल अर्थात् अग्नि-स्थाई होजाना ।

स्वाभाविकद्रवत्वे सति वह्निनातुच्छिद्यमानत्वं मूर्तिबद्धत्वम् ॥ बन्धनन्तु नियमनान्तैः संस्कारैर्भवति ॥ (र. सा. प.)

इति श्रीअग्रवालवैश्यकुलावतंसबाबूनिरंजनप्रसादवकीलसंकलितायां रसराजसंहितायामष्टसंस्कारविधिवर्णनं नामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

अर्थ–जैसी पारदकी वास्तविक द्रवता (पतलापन) है वैसी द्रवता पारदमें हो और अग्नि लगानेपर पारद उडे नहीं तो उसको मूर्तिबद्ध पारद कहतेहैं । और बंधन स्वेदनसे लेकर नियमनान्तसंस्कारोंसे होतीहै ।

सम्मति–ऊपर लिखाहुआ पाठ रसेन्द्रचिंतामणि ग्रंथकारने संस्कार प्रारम्भ होनेसे पहले ही लिखकर फिर संस्कारोंको कहाहै तदनंतर जारणका विषय लिखाहै इससे यह स्पष्ट विदित होताहै कि इन नौ संस्कारोंसे पारा अग्निस्थाई होताहै और उसकी मूर्तिबद्ध संज्ञा है और इसी बातको रससारोद्धार पद्धतिका निर्माता भी समर्थन (ताईद) करताहै ॥

इति श्रीरसराजसंहितायां व्यासज्येष्ठमल्लकृतभाषाविवृतियुतायामष्टसंस्कारविधिवर्णनं नामाष्टमोऽध्यायः॥ ८ ॥

अथ नवमोऽध्यायः ९.

अष्टसंस्कारसंबंधी अनुभूत कर्म ।

पारदकर्मके आरम्भमें एक वैद्यके आगमनका वर्णन ।

ता० २८।१२।१९०३ आज वैद्यराज शामको ४ बजेके समय पधारे । ता० २९ दोपहरको बातचीत हुई कि किस रीतिसे पारद शुद्ध होगा, लियाकत बहुत थोडीहै कुछकर्म जानतेहैं मगर लाचारीके लिये बहुत मुनासिब समझे गये । ता० ३० सिर्फ दोपहरको कुछ जडी बूटीकी बातचीत हुई और सिंग्रफ वगैरः तलाश कराया गया कांजीका सामान मँगवाया गया ।

ता० ३१ आज ३ सेर १३ छटांक सिंग्रफ आया कांजीमें पानी डाला गया, विडके लिये मूली आई, गंधकके नमूने आये और आज सुबहही अभ्रक और दो मुलाजिम वैद्यजीके पास सत निकालनेके लिये भेजदिये गये मगर वैद्यजी वैद्यकल्पद्रुम देखाकरें अभ्रकका काम आरम्भ नहीं किया।

१।१।१९०४ आज वैद्यराजने अभ्रकको गौके दूधमें बुझाव देनेके लिये अभ्रकको आंचपर चढाया और आप ११ बजे बाजारको घूमने चले गये ३–४ बजे शामको लौटे फिर गपशप करते रहे । ५ बजे बाद अभ्रकको आंचपरसे उतार १ सेर दूध उसमें डाल दिया और १ सेर आप पी गये ।

२।१ आज वैद्यराजने अपने नातीको हाथरस भेजा अपने बडे लडकेको बुलानेके लिये जो आकर सिंग्रफसे पारा निकालेगा और यहां पर केवल अभ्रक कुटता रहा–वैद्यराजने कोई कर्म नहीं किया–शहरमें किसीका इलाज करनेको गये थे

३।१ आज वैद्यराज सुबहसेही शहरको चले गये यहां तक कि अभ्रक भी कूटनेको निकाल कर नहीं देगये मालूम होताहै कि हमारे कामका कुछभी ख्याल नहींहै–दोपहरको आकर अभ्रक कूटनेको दिया गया और जडी जो सुखाकर कांजीमें डालनेको दी गईथीं वहभी दोपहर बाद सुखलाई गई–आज वैद्यराजका नाती आगया और उसने आकर कहाकि वैद्यराजके लडके कल आवेंगे ।

४।१ आज दिन भरमें वैद्यराजने सिर्फ अभ्रकमें चौलाईका रस डलवाया और कुछ नहीं किया ।

५।१ आज वैद्यराज पारेका काम न कर सकनेकी वजहसे भाग गये ।

हिंगुलसे पारद निष्कासनका अनुभव ।

ता० ४।१।१९०४ को रूमी सिंग्रफको जो पुराना पडा हुआ था खट्टेके रसमें घोटा गया चूंकि रस अधिक पडगया था और सिंग्रफ सूखा नहीं था अतएव--

आज ता० ५।३ को फिर घोटा गया और दोपहर बाद जब सिंग्रफ करीब २ खुश्क होगया था उसको दो हांडीके डौरूयंत्रमें भरकर जोडपर कपरौटी करदी गई ।

ता०८।१ को करीब दोपहरके उस डौरूयंत्रको आंच दी गई–ठंढा होजानेपर खोला गया तो आधेके करीब पारा ऊपर उडगयाथा ।

ता० ९।१को सिंग्रफके शेष चूर्णको खाली बारीक पीसकर फिर डौरूयंत्रसे ३ प्रहरकी आंच दीगई तो बाकी पारा भी उडगया तोलनेसे यह पारा कुल ३ छटांक हुआ ।

उपरोक्त क्रियाका पुनः अनुभव ।

(१) ता० १०।१।१९०४ को ऽ॥ सेर उत्तम सिंग्रफ रूमीको करीब दो पहरके खट्टे और जंभीरीके रसमें खरल कियागया लेकिन न सूखनेके कारण यंत्रमें बंद न किया । (आज गिरधारीलाल वैद्यने आकर मुलतानीको मूंजकी रस्सीके खुलेहुए वानसे मला तो मुलतानी बहुत जल्द मिलगई)

(१) ता० ११।१ आज उक्त सिंग्रफको जो करीब २ सूखगया था थोडा घोटकर डौरूयंत्रमें बंद करके कपरौटी करदी गई और हांडीके नीचे लेहा लगादियागया । यह हांडी वही हैं जिनमें पहले सिंग्रफ उडाया जाचुकाहै ववजह देर होजानेके आज यंत्र चूल्हेपर नहीं चढायागया ।

(२) आज १ सेर सिंग्रफ रूमी और लेकर उसको नीबूके रसमें घोटागया (आज २ और हांडी जो गिरधारीलाल वैद्यने भेजी थीं उनको घिसकर उनका मुँह मिलायागया)

(१) ता० १२।४ आज उक्त ऽ॥ सेर सिंग्रफको आंच दीगई १० बजेसे ६ बजेतक । ६ बजे हांडी चटकगई इस-

---

१ यह कर्म केवल अनुभवके लिये किया गयाथा, इसीसे साबित हुआ कि यदि यत्नपूर्वक पारेको उडायाजाय तो कठिनाई न होगी । हांडी कम पकी होनी चाहिये और आंच बंद मकानमें अच्छे चूल्हेपर प्रथम मंद फिर मध्य फिर तीक्ष्ण देनी चाहिये और ऊपर मोटा कपडा तोलियेके समान हरवक्त भीगा हुआ रखना चाहिये और नीचेकी हांडीका पेट बडा होना चाहिये ।

वास्ते उसके नीचेसे आंच निकालदीगई (हांडी जो गिरधारीलालने भेजीथी उनमें एक हांडीपरसे धोतरकी तह मुलतानीसे चढादीगई)

(१) ता० १३।१ के सुबहको डौरू जो रातको चटक गयाथा खोला गया तो ९॥ तोले पारा निकला और बहुत सा पारा सिंग्रफमें रहगया (चटकजानेसे कुछ माल खारिज नहीं हुआ) (एक नई बात देखीगई कि चटखी हांडीके पेंदेमें एक गोलआकार ◯ चक्रमें कुछ सिंग्रफ चिपटाहुआ रहगया उसको छुटायागया तो वह नम निकला उसकी गोलीसी बंधतीथी यह न मालूम हुआ कि कौन चीज पिघलकर तर होगई थी।)

(२) ता० १४।१ आज सबेरे उक्त १ सेर सिंग्रफको ९ बजेसे रातके ८ बजेतक ११ घंटे आंच दीगई।

ता० १५।१ को खोला तो १५ तोले पारा निकला। आंच बहुत थोडी लगतीहै इस कारण पारा अच्छी तरह नहीं उडता अत एव आज चूल्हा बडा बनाया गया और इसतरह पर कि आंच सब तरफ जलती रहे (आज ऽ॥ सेर सिंग्रफ) सात नीबुओंके रसमें घोटा गया।

१६।१ चूंकि आज चूल्हा सूखा नहीं था इस कारण कर्म बंद रहा (कलका ऽ॥ सेर सिंग्रफ ही कुछ देर घोटा गया)

(१×२) ता, १७।१ को ऽ॥ सेर सिंग्रफ+१ सेर सिंग्रफको (जिसमेंसे ९॥ तोले व १५ तोले पारा निकल चुका था) फिर सूखा घोट आज सुबह १० बजेसे शाम के ८ बजे तक आंच दी गई तो २६ तोले पारा और निकला अभी और पारा बाकी है।

अबकी बार आंच भी तेज दीगई, चूल्हा भी बडा था, हांडी पर ३ कपरौटी थीं, ऊपरकी हांडी बडी थी और उसपर गोबर रक्खा गया और पानीका भीगा कपडाभी रक्खागया।

(३) ता० २०।१ को १ सेर सिंग्रफ और लेकर नीबूके रसमें खूब घोट कर और सुखाकर ता० २१।१ को ११ घंटे आंच दीगई तो १५ तोले पारा निकला।

(१+२) ता० २२।१ को उपरोक्त ऽ१॥ सेर सिंग्रफको जिसको दोबार आंच दी जा चुकी थी और जिसमेंसे ५०॥ तोले पारा निकल चुकाथा सूखाही करीब १ घंटे घोटा गया बादको आज ता० २३।१ को कुछ कम ४ प्रहरकी आंच दीगई तो २२॥ तोले पारा और निकला।

(३) ता० २३।१ को उपरोक्त १ सेर सिंग्रफको जिसमें से १५ तोले पारा निकल चुका था उसको सूखाही इकट्ठा घोट कर ४ प्रहरकी आंच दीगई तो१७॥ तोले पारा निकला।

ता० २५।१ को (१+२+३) उक्त ऽ॥ सेर+ १ सेर+१ सेर सिंग्रफको जिसमेंसे (५०॥+२२॥+१५+१७॥=१०५॥ तोले पारा निकलचुका था उसको सूखा ही थोडा घोट कर ४ प्रहरके करीब आंच दीगई तो ३१॥ तोले पारा और निकला आंच आज पूरी दीगई यानी ३ मामूली लकडियोंकी।

(४) २६।१ को ऽ॥= ढाईपाव सिंग्रफ और लेकर उसको सात नीबूके रसमें करीब १ प्रहरके घोटकर और सुखाकर दूसरे दिन डौरूमें ८॥ बजे सबेरेसे आंच दीगई ४ बजे शामके हांडी चटकनेकी आवाज हुई जिसके कारण आंच बंद करदी गई—खोला गया तो १२॥ तोले पारा निकला और बहुत सा पारा बाकी रह गया आजके कर्मसे अनुभव हुआ कि, ७ घंटेकी आंच किसी तरह काफी नहींहै, ४ प्रहरकी आंच होना चाहिये और चूंकि कल पारा अधिक निकला था उससे अनुभव हुआ कि ज्यादः माल रखने और करीब ४ प्रहरके आंच देने और आंच भी तेज अर्थात् ३ पतले चहलेकी देनेसे पारा ठीक निकलताहै--आज जो हांडी चटकी थी उसको साफ करके देखा गया तो मालूम हुआ कि उसके पेंदेमें बाल पडगया था किन्तु पारा उस ओर जारी नहीं हुआ था और न कुछ हानि हुई थी इससे फिर भी अनुभव होताहै कि अगर हांडी चटकने पर आंच बंदकर दी जावे तो पारदके एकदम निकल जानेका भय उडानेमें नहींहै लेकिन हांडी नीचेकी हो। आज हांडीको आंच अवश्य चार या पांच लकडीकी दीगई थी और कपरौटी सिर्फ ३ ही की थी। हांडी तोडनेसे यह भी पाया गया कि हांडीके नीचे पेंदेमें करीब आधी मुटाई तक श्यामता आगई थी गालिबन यहांतक पारा प्रवेश कर गया था।

(५) २९।१ ऽ॥= ढाईपाव सिंग्रफ और लेकर उसको ७ नीबूके रसमें करीब दो प्रहर खरलकर सुखा ३ लकड़ियोंकी करीब ४ प्रहर आंच दी गई, खोलनेपर १८॥ तोले पारा निकला।

२९।१ (१+२+३+४+५) ऽ॥ सेर+१ सेर+१ सेर १+ऽ॥=ढाई पाव+ऽ॥= ढाईपाव ऽ३॥। सेर सिंग्रफ जिसमेंसे १४९॥ तोले पारा निकल चुका था उसको सूखा घोट कर करीब ४ प्रहरके आंच दीगई तो २३ तोला पारा निकला।

३१।१ (१+२+३×४×५) ऽ॥ सेर ×१ सेर ×१ सेर +ऽ॥=ढाई पाव ×ऽ॥=ढाई पाव=ऽ३॥। सेर सिंग्रफ जिसमेंसे १९१ तोले पारा निकल चुका था उसे फिर सूखा घोटकर ×० आंच दीगई तो २४॥ तोले पारा निकला अबकी बार बहुत सूक्ष्म पारा शेष रह गया अर्थात् जो कुछ शेष रहा चूर्णकी दशामें रहा चकतीकी सूरत न रही कुल वजन पारेका २१५ तोले ६ माशे अर्थात् २ सेर ११ छ० ६ माशे हुआ ६ तोले पीछेसे और निकला यानी ३॥। सेर सिंग्रफमेंसे सब २ सेर १२ छ० १ तोले ६ माशे पारा निकला और पहले सिंग्रफमेंसे ३ छटांक निकला था।

कुल २ सेर १५ छटांक १ तोले ६ माशे हुआ।

अब शेष सिंग्रफके चूर्णको जिसमेंसे ऽ२॥≡ सेर १॥ तोले पारा निकल आया था फिर ३ प्रहरकी आंच दीगई तो ६ तोले पारा और निकला। अब पारा बाकी नहीं रहा। चूर्ण जो शेष रहा उसकी सूरत सफेद कत्थेकीसी होगई और वजनमें १ छटांक हुआ लेकिन इसमेंसे जो मैला ९ माशे था उसको पृथक् कर लिया गया, उत्तम स्वच्छ ९ माशेकी शीशीमें रक्खा गया और मध्यम ३॥ तोलेको अलग रक्खा गया।

ॐ शिवाय नमः।

स्वेदनसंस्कार।

संस्कार अध्यायके ७२ से ७६ वें श्लोकतककी क्रियासे।

आज ४ फर्वरी सन् १९०४ बृहस्पति वार फाल्गुन वदी तीजको २०० तोले पारद हिंगुलाकृष्टको स्वेदनमें डाल

।) आने गजकी मारकीन १ गजको चार तहकर और उसमें ढाई ढाई छटांक सोंठ,मिरच, पीपल, चीता, राई, सैंधानोंन, अदरख, मूली इन ८ चीजोंको कूट छान कांजीमें उसने उसकी ओखरी सी बना उसको कपडे चौतहमें रख उसमें पारा भरा तो पारा ओखरीके नीचे निकल गया-लाचार पारे और दवाकी लुगदीको चौतह कपडेमें बाँध उसकी पोटली बनाई गई-पोटली बहुत बडी हुई चकोतरेकी बराबर और हांडीका मुंह छोटा था-इसलिये चौथाईके करीब लुगदी निकाल पोटली बांध सनकी सुतलीसे बांसकी खपचमें लटका एक हांडीमें जो गोल थी और जिसमें १८ सेर कांजी आई बीचो बीच लटका दोला यंत्र किया गया ऊपर हांडीके सरवा ढका गया। जो सब लुगदी रखते तो विलांद भर चौडे मुंहकी २५ सेर पानी वाली हांडीकी जरूरत होती।

(१० बजेके करीब जब पारदको स्वेदनके लिये लेकर चले तो पैर टेढा पडनेसे कमरेकी सिढी परसे गिरते गिरते बच गये श्रीशंकरने रक्षाकी नहीं तो बडी चोट आती।)

१२ बजे दोपहरसे इसके नीचे मंद आंच दी गई। कांजी कम होने पर दो दफे कांजी शामतक डालनी पडी--जब२ कांजी कम हुई और डालते रहे। इतवारके १२ बजे तक अर्थात् तीन दिन रात निरंतर आंच दी गई। बादमें कुछ ठंडा होने पर पोटली निकाल खोलागया तो पारा नीचे था और लुगदी ऊपर, हां कुछ रवे पारेके जो लुगदीमें मिला दियेथे (मिलाना तो चाहा था कि सबही मिलजावें पर मिला नहीं था) दोलायंत्र करते वक्त वह कांजीके अंदरभी थोडेसे मौजूद थे -पारेको जो खुद अलहदा कपडेमें छानकर तोला गया तो ऽ२। =॥ दो सेर साढे छः छटाक निकला,लुगदीको उसी गरम कांजीसे धोया गया और नितारा गया तो पारेके बारीक रेजे इकट्ठे हुए इनको छाना गया तो भी ये बाहम इकट्ठे नहीं हुए फिर इनको चीनीकी रकाबीमें सुखा दिया गया तो सबेरे वह रवे हिलानेसे आपसमें मिलगये तोलनेसे यह छटांक भर बैठे अर्थात् स्वेदनमें आधी छटांक पारा छीज गया बाकी रहा ऽ२। ≡।

स्वेदनका अनुभव।

१–द्रव वस्तु जिसमें स्वेदन हो, मैंने कांजीमें किया सो ठीक ही था। औरका अनुभव करनेपर दूसरा हाल ज्ञात हो सक्ताहै। कांजी २०० तोले पारदके स्वेदनके लिये मन भर तो चाहिये जितना जल आदिमें चढाया जाताहै उतनाही और तीन दिनमें जलानेकी वजहसे डालना पडताहै।

२–औषधी जिनके संग स्वेदनहो। आठ वस्तु जो मैंने लीं वह साधारण रीतिसे बहुतसे मतोंसे ग्राह्य हैं किन्तु मैंने मूलीको पीसकर डाला था उसका रसही औषधियोंमें डाला जाता तो ठीक होता और सब औषधी निहायत बारीक कपरछान होनी चाहिये। इन औषधियोंको स्वेदनमें डालनेके लिये मतान्तर बहुतहैं।

१ कांजीमें डालना, २ पोटलीमें डालना, ३ कपडे पर लेप करना, ४ गोला बना उसमें पारा रखना, ५ मूषा बना उसमें पारा रखना किन्तु नागबला आदिके प्रयोगमें अर्थात किसी लसदार वस्तुमें तो मूषा बनना संभव है और इन औषधियोंसे मूषा बनना असंभव है। और गोला बनाकर पारा भरना तो सर्वथा असंभव है क्योंकि पारा भारी होनेसे उसे भेद जाताहै। लेपभी गफ कपडेपर ठीक नहीं होसक्ता और फिरफिरेपर किया भी जावे तो गीलेमें पारा निकल जायगा और सूखने पर लेप तडक जायगा।

पोटली बांधना संभवही है, किन्तु पोटलीमें जब वह औषधियां पारदसे पृथक् रहती हैं तो कांजीमें इन औषधियों के डालनेमें भी कुछ हानि नहीं जान पडती और सुगमता अधिक है। यदि पाटलीसे लाभ हो तो इतना हो सकता है कि कांजीमें डालनेसे औषधीका रस सब कांजीमें मिल जायगा और पोटलीमें रहनेसे उसका रस प्रथम पारेपर गिरेगा फिर जलमें मिलैगा।

३–दोलायंत्र,हांडी स्वेदनके लिये चौडे मुंहकी होनी चाहिये जिसमें बडी पोटली आजावे। और चूंकि पोटली बडी होती है इसलिये हांडीका पेटभी बडा होना चाहिये। २०० तोले के लिये २५ सेर जलकी हांडी योग्य है इसके मुंहपर एक सरवा ढका रहना चाहिये और हांडीके किनारे खांद उसमें बांसकी खपच्च रख उसमें रस्सीका छींका लटका उसमें पोटली रखनी चाहिये।

४–आंच इसके नीचे बहुत मंदी दीपक अग्निके समान लगनी चाहिये।

५–धोनेमें गरम कांजीसे धोनेसे पारा कम छीजता है (ठंडे जलसे धोना मना है और उससे पारा छीजता भी अधिक है)

मर्दनसंस्कार।

(अष्टम संस्काराध्यायश्लोक १३४ से १५६ श्लोककी क्रियासे)

तारीख १० फरवरी सन् १९०४ फागुन वदी ९ बुधवार १० बजेसे तप्त खल्व द्वारा मर्दन संस्कार प्रारम्भ-रसरत्नाकर की क्रियासे।

पुरानी पक्की ककैया ईटका चूरा और हल्दी समान भाग मिला कर दोनों मिलकर सोलहवां अंश अर्थात् ढाई छटाँकको खरलमें डाल उसमें जंभीरीका रस, नींबूका रस और बिजोरेका रस डाल और पारद १९७)॥ तोले डालकर रातके ७ बजे तक मर्दन किया गया रस कम होने पर और डाला जाता रहा। जंभीरी १० ही मिलीं। वहभी सूखी सिर्फ पाव भरसे कम रस निकला–३ बिजौरोंमें कोई १ तोलाही रस निकला (कारण कुऋतु होनेसे ताजी बिजौरे न मिले थे) लाचार नीबूका रस काममें लाया गया।

तप्त खल्वके लिये १ लंबा चूल्हा बनाकर जो इस आकारका था और जो चार या पांच अंगुल ऊंचा था और जिसमें ४ अंगुल नीचे गढा भी कर लिया था उसपर लोहेका खरल रख नीचे बकरीकी मेंगनी और गेहूंके भूसेकी आंच जलाई गई खरल इतना गर्म रक्खा गया जिसमें हाथसे खरल छू सकें–और जिसका मूसला भी गरम मालूम होता था।

ता० ११ फर्वरी बृहस्पति वार आज प्रातः ९ बजेसे मर्दन आरम्भ होकर रातके ७ बजे तक किया गया ८ बजेसे आरम्भ होकर रातके ८ बजेतक कर्म चलता है किन्तु वास्तवमें १० घंटे ही मर्दन होताहै।

ता० १२ फर्वरी आजभी ८ बजेसे रातके ७ बजेतक तप्त खल्वमें मर्दन हुआ। इन तीन दिनके मर्दनमें ५ सेर नीबू जो गिनतीमें १२० थे उनका रस पड गया।

ता० १३ फर्वरी आज खरलसे पारद जुदा किया गया। पारद स्वयं जुदाहो था वह तौला गया तौ २।=)हुआ और जो रवे लुगदीमें मिलेथे उनको निकालनेके लिये सब लुगदीको तप्त काँजीमें घोल नितारा और धोया गया तो १ छटांक पारा और निकला कुछ बहुत सूक्ष्म रवे रह गये उनको रकाबीमें सुखादिया गया तो वह भी इकट्ठे होगये–सब पाराऽ२॥ सेरमें १ तोला कम हुआ।

स्वेदनकी तोलमें कुछ गडबड होगई होगी अबकी बार दो दफे तोला गया तो १ तोला कम २॥ सेर पारा बैठा।

मर्दनका अनुभव।

१–इष्टिका और रजनी (हल्दी) के चूर्ण मिलकर पारदसे १६ वाँ अंश होनाही ठीक है। पाठसे भी ऐसाही अर्थ निश्चय होताहै और यही उचित भी जान पडा। पृथक् २ लेनेसे पारदकी अपेक्षा बहुत अधिक प्रमाण होजाता है। मैंने पहले पृथक् २ सोलहवां अंश लिया।

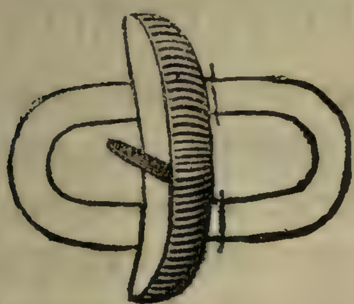
२–इन रसोंमें घोटनेमें नींबूका रस इतना डाला गया जिससे कढीसी होगई कम डालनेसे हाथ ठीक नहीं चलसकता था और पीछे तौ इसमें इतना लस होगया था कि विना रस डाले मूसला चिपटाही जाता था। हां, जो प्रथमसे ही इतना कम रस डाला जाता कि चूर्ण सूखासा ही रहता तो शायद घुट सकता। कम रस डालनेसे कोई लाभ भी नहीं जान पडता।

३–खल्व जो मेरे यहां है वह २०० तोलेके योग्य ही आकारका है अर्थात् वडा लोहेका खरल १० गिरह लंबा. ४ गिरह चौडा–२८ गिरह गहरा वजनी नौकाके आकारका है–(आकार ⊂⊃)





चुल्ल्युपरिस्थित खल्व आकार



४–तप्त खल्वकी क्रियाके निमित्त जो चूल्हा बनाया गया वह ठीक ही था।

५–अग्निभी भूसे और मेंगनीकी ठीक पडती है। आदिमें मेंगनी भूसेके सहारे जलती हैं पीछे चूल्हा गरम होनेपर ठीक जलने लगती हैं।

६–श्रीशंकर–स्वामीकी कृपासे पारद अबतक छीजता भी बहुतही कम है। (पहले जो परीक्षाके लिये कर्म किया गया था उसमें बहुत छीजता था) दो कारण इसमें जान पडते हैं (अ) पारद हिंगुलाकृष्ट होनेसे शुद्ध है इसलिये मैल कम निकलता है–(क) गरमकांजीसे धोनेसे पारा पृथक् होजाता है। पहली बार शीतल जलसे धोया गयाथा इसलिये पृथक् नहीं होता था–(ख) तीसरा कारण और भी होसकता है कि खरलका कुछ अंश पारदमें मिल गया हो क्योंकि गौरसे देखनेसे खरलमें वारीक बारीक गढे दीख पडे।

ॐशिवाय नमः।

२ मर्दनमूर्च्छन–(अंकोलमें)

१५।२।०४ ता० १५ फर्वरी फागुन वदी १४ सोमवार १२ बजे दो पहरसे १९९ तोले पारदको अंकोलकी जडकी छालके सूखे हुए चूर्ण १। छटांक और सूखे फरकेंदुएके गूदेके चूर्ण (जिसमेंसे छिलका और बीज निकाल दियेथे) १। छटांकके साथ घीग्वारके पाठेके गूदेके रस सहित हलके तप्त खल्वमें ८ बजे तक अर्थात् ८ घंटे घोटा गया–२॥ सेरके १६ घीग्वारके पट्ठोंका रस पडा।

अनुभव।

१–चूर्ण बारीक होना चाहिये–कपरछान हो तो अच्छा है मोटा चूर्ण खरलमें बारीक मुश्किलसे होताहै।

२–घीग्वारका रसही डालना चाहिये गूदा घोटनेमें ठीक नहीं आता।

ता० १६।२ सबेरेके ८ बजेसे रातके ७ बजे तक पारदका तप्त खल्वमें मर्दन किया गया। ८ घीग्वारके पट्ठोंका रस डालागया–किन्तु आज खरल कम गरम रक्खा गया–क्योंकि दवा गाढी गाढी थी कहीं जल न जावे–दवा और पारद खूब घोटनेमें आवे इस कारण दवा गाढी रक्खी गई।

शामतक सब पारद औषधोमें मिल गया–आशा है कि भलीभांति मूर्च्छित होजावेगा। जय श्रीशंकर स्वामीकी।

१७। २ सबेरे देखा तो खरलमें करीब आठवें हिस्सेके पारा पृथक् होगया था ८ बजेसे रातके ८ बजे तक १२ घंटे घोटा गया। तीसरे पहर दवा गाढी होजानेसे करीब एक चौथाईके पारा जुदा होगया। फिर रस डाल घोटनेसे सब. पारद लीन होगया। साबित हुआ कि रबडीसा गाढा घुटना ठीक है ज्यादे गाढा होना ठीक नहीं ज्यादा गाढा होने पर पारद पृथक् भी होताहै और घोटनेमें पारद उछटता भी है।

१८। २ आज सबेरेके ९ बजेसे रातके ८ बजे तक ११ घंटे घोटा गया और घीग्वारका रस खूब डाला गया, जिससे रबडीसा पतला रहा और खरल भी ठीक गर्म रक्खा गया। सबेरे इस ख्यालसे कि पारद भलीभांति लीन नहीं होता। २ तोले अंकोलका चूर्ण और डाला गया, शामको देखा गया तो पारद बिलकुल लीन होगया था, अर्थात् औषधिमें मिल गया था छोटे छोटे रवे होकर।

१९। २ आज सबेरेके ८ बजेसे रातके ८ बजे तक १२ घंटे पारा तप्त खल्वमें घोटा गया। घीग्वारका रस खूब डाला गया, खरल भी ठीक गरम रक्खा गया, पारद अब जरूर लीन होगया किन्तु गौरसे देखनेसे बहुत बारीक रवे जरूर दीखते थे. यदि पारद कम होता और औषधि अधिक हो तो कुछ अधिक मूर्च्छन होनेकी आशा होसकती है।

२०। २ को भी इसी प्रकार घीग्वारका रस डाल १२ घंटे घुटाई की।

२१। २ आज भी पारेका सबेरे ८ बजेसे रातके ८ बजे तक १२ घंटे मर्दन किया गया आज सातवां दिन

था, आज दो पहर तक रस डाला गया बादको रस डालना बंद रक्खा गया । रस न पडनेसे औषधि गाढी होती गई और पारा छुटता गया ।

निष्कासन ।

२२।२आज सबेरे उस पारेको जो खरलमें जुदा होगया था निकाल लिया गया और दवाको धूपमें घोटा और सुखाया गया । सुखाकर घोटा गया तो शामके ३ बजे तक २। सेर और १। तोले पारा निकल आया, बाकी सफूफ जो ७छटाँक था सूखा रह गया, इसमेंसे पारद निकालनेके लिये इसको डौरूयंत्रमें बंद किया गया ।

२३ । २ आज सबेरे ८ बजेसे रातके ८ बजे तक १२ घंटे डौरूयंत्रको आंच दी गई, ऊपर गोबर और भीगा कपडा रक्खा गया ।

२४ । २ आज डौरूयंत्र खोला गया–१५॥ तोले पारद निकला, नीचेकी हांडीमें बाल पड गया था लेकिन कुछ हानि नहीं हुई इस हांडी पर ४ कपरौटी मुलतानी शीरा पडी हुईकी कीगई थी ।

कुल पारद ऽ२।≈ और १॥। तोले हुआ यानी १९६॥। तोले हुआ । मूर्च्छनमें डाला गया था १९९ तोले घटा २। तोले ।

तीसरा मर्दन मूर्च्छन । (अमलतासमें)

२४ । २ आज १२ बजेसे मर्दन प्रारम्भ हुआ ।

१९६॥। तोले पारदको २॥ छटांक अमलतासकी फलीके गूदेके साथ घीग्वारके रससे ८ बजे राततक घोटा गया तो पारद सब मिल गया, तप्त खल्वमें ।

२५।२आज भी पारदको सबेरे ८बजेसे रातके ८ बजे तक घोटा गया,पारद सब लीन होगया इस अमलतासमें पारद अंकोलसे अधिक लीन हुआ अर्थात् अंकोलकी अपेक्षा अमलतासमें पारदके परमाणु अधिक सूक्ष्म होगये । पारद लीन तो हुआ लेकिन औषधि थोडी होनेसे पारदका रूप नष्ट नहीं हुआ सफेदी चमकती रही २६ । २७ । २८ । २ को बिसौली चले जानेके कारण काम बंद रहा ।

२९ । २ आज ९ बजेसे रातके ८ बजे तक मर्दन हुआ, तप्तखल्वमें रूप नष्ट न होनेके कारण २ छटांक गूदा अमलतासकी फलीका और डाला गया तो पारद कुछ अधिक लय हुआ ।

अनुभव ।

$\frac{1}{16}$ की जगह $\frac{1}{8}$ औषध डालनी योग्य–अवश्य अवश्य;

१ । ३ आज ८बजेसे शामके ६बजे तक पारद तप्तखल्वमें घोटा गया, एक नौकर बीमार होजानेसे काम कम चला । पहले २४×२९ को अरक बहुत पडा अब कम खिपता है औषधिकी मात्राभी अब पूरी थी । पारद लीन तो हुआ किन्तु रूप नष्ट नहीं हुआ ।

२ । ३ आज धूल अर्थात् होलीकी वजहसे काम बंद रहा ।

३ । ३ आज ८॥ बजेसे ६॥ बजे तक पारद तप्तखल्वमें घोटा गया मुरली नौकरके बीमार होजानेसे काम कम चला।

४ । ४ आज ८॥ बजेसे ७ बजे रात तक पारदका मर्दन हुआ, पारा मिल अवश्य गया लेकिन अदृष्ट नहीं हुआ । बाबू हनूमानप्रसाद साहबने कहा कि मैंने जो अंकोलकी जडके काढेमें मर्दन कराया था तो अदृष्ट होगया था ।

५ । ३ आज ८ बजेसे रातके ७॥ बजेतक मर्दन हुआ, पारा मिल गया अर्थात् बारीक २ रवे होगये किन्तु अदृष्ट नहीं हुआ ।

निष्कासन ।

६ । ३ आज पारदको ८ बजेसे १० बजे तक तप्त खरलमें घोटा गया चूंकि सात दिनतक पूरे होगये थे इस लिये आज रस न डाला गया । रस न डालनेसे पारद १० बजे पर दवासे पृथक् होगया । फिर भट्टीपरसे खरलको उतार घोटा गया धूप न थी इसलिये फिर आंचकी गर्मीसे खरलको कुछ गर्मकर घोटा गया । शामके ३ बजे तक करीब २। सेरके पारा निकल आया बाकी दवामें गया । दवा चमचोडसी होकर रह गई ।

इस दवाको जो कुछ गीली थी और बादल होनेकी बजहसे सूख न सकी थी डौरूयंत्रमें बंदकर दिया गया ।

७।३ को ९॥ बजेसे डौरूयन्त्रको आंच दीगई रातके ९॥ बजे तक ।

८।३ को डौरूयन्त्र खोला गया तो १५। तोले - निकला । कुल पारा मिलाकर तोला ऽ२। ≈ सेर हुआ यानी १९५तोले हुआ और डाला गया था १९६॥। तोले अर्थात्१॥।तोले घटा कुछ पारा अवश्य चूर्णमें मिला रहगया उसको निकालना चाहिये । आज डौरू खोलते समय कुछ पारेके रवे एक तरफ कपरौटीकी पट्टी पर मिले जिससे साबित हुआ कि दर्जे हांडीकी ठीक नहीं मिली या हांडी उठानेमें ऊपरकी हांडी पकड कर उठाया गया जिससे दरज पडगई ।

आयन्दः खयाल रखा जावे हांडीमें बाल पड गया । बाकी सफूफको फिर उडाया गया तो ७ माशे पारा और निकला सब हुआ १९५॥ तोले और डाला गया था१९६॥। तोले बस १। तोले घटा ।

चौथामर्दन (चीतेमें)

९।३ आज १९५ तोले पारदको २॥ छटांक चीतेके बारीक चूर्णके संग घीग्वारका रस डाल तप्तखल्वमें ८ बजे प्रातःकालसे रात्रिके ८ बजे तक घोटा गया । रस खूब डाला गया किन्तु पारद बिलकुल पृथक् ही रहा । चीता फूली चीज होनेसे सोलहवां अंश ही अर्थात् २॥ छटांक ही काफी था ।

१०।३–८ बजे सवेरेसे ७ बजे तक घुटा तप्तखल्वमें अरक खूब पडा पारद बिलकुल पृथक् रहा ।

११ । ३=० १२।३=+० आज ७ माशे पारा जो सफूफमें से और निकला था आज खरलमें डाल दिया गया ।

पारद चीतेसे बिलकुल नहीं मिलता इससे सिद्ध हुआ कि यह कर्म मूर्छित नहीं है केवल मर्दन है ।

१३।३=+०

१४।३=+०

१५।३=+०

१६।३ आज कुछ देर तप्त खरलमें पारद घोटा गया, फिर धूपमें घोटा गया तो आधी छटांक कम दो सेर पारद जुदा

होगया, बाकी चूर्णमें मिला रहा। उसको डौरूयन्त्रमें बन्द कर दिया गया। चूर्णका वजन ११ छटांक था।

१७।३ को ८॥ बजेसे डौरूयन्त्र चढाया गया और ९॥ बजे रात तक आंच लगी। १८।३ को ७ छटांक पारा निकला कुल पारा २ सेर ६॥ छटांक हुआ।

पांचवाँमर्दन (धतूरेमें)।

१८।३ को १२ बजे दोपहरसे १९२॥ तोले पारदको १२॥ तोले धतूरेके बीजोंके चूर्णके साथ घीग्वारके रससे तप्त खरलमें घोटा गया रातके ८ बजे तक।

१९।३–८ बजे सबेरेसे ७॥ बजे राततक मर्दन हुआ।

२०।३=+०

२१।३=+० आज १। छटांक धतूरेके बीजोंका चूर्ण और डाला गया।

२२।३=७ बजे सबेरेसे ७ बजे तक मर्दन हुआ।

२३।३=६ बजेसे ६ बजे तक मर्दन हुआ।

२४।३=७ बजेसे ७ बजे तक मर्दन हुआ।

२५।३ आज ७ बजेसे पारदका तप्त खल्वमें मर्दन हुआ १० बजेसे अधिक गाढा होने पर धूपमें मर्दन हुआ, जब खूब गाढा होगया तो पारद कुछ लुगदीमें मिला (पहले तप्त खल्वमें पतला पतला घुटनेसे इस धतूरेमें पारद बिलकुल नहीं मिला था) फिर ३ बजे पर चूर्ण सूख जानेपर पारद पृथक् होगया जो तौलमें (२। सेर १॥ तोला हुआ) अर्थात् १८१॥ तोले।

२६।३=डौरूयन्त्रसे ४ प्रहरकी आंच दीगई (आज मुरलीके पहरेमें गोबर जो हांडीपर था उसमें आग लग गई)

२७।३–८॥। तोले पारद निकला डौरूयन्त्रमेंसे सब पारद कांजीसे धोया गया १९०। तोले हुआ रखा गया था १९२॥ तोले २। तोले घटा।

छठामर्दन (त्रिफलामें)।

२७।३=१९१ तोला (ठीक तौल) पारदको २॥ छटांक त्रिफलाचूर्णसे घीग्वारके रससे ४॥ बजे शामसे ७ बजे तक घोटा गया।

२८।३=७ बजेसे ५ बजे तक घोटा गया गाढागाढा।

२९।३=७ बजेसे ७ बजेतक घोटागया गाढागाढा।

३०।३=+०

३१।३=७ बजेसे ७ बजे तक घोटा गया आज १। छटांक त्रिफला उसमें और डाला गया अबकी बार त्रिफलाके मर्दनमें पारद बिलकुल पृथक् रहा।

१।४=७ बजेसे ७ बजे तक मर्दन हुआ।

आज खरलमें पारद परसे दवा हटानेसे पारदपर सफेद कांचली नजर पड़ी जब उगलीसे उस कांचलीको हटाया गया तो टूट कर ऐसी जुदी होगई जैसे कलईकी नाद जब रक्खी रहे और कलई नीचे बैठ जावे तब उसके पानीके ऊपर एक कांचलीसी पड़ जातीहै, लेकिन दूसरी अप्रेलमें देखनेसे कैंचलीकी रंगत पहले दवा हटनेपर थोड़ीजगहमें कुछ ऊंदीसी दिखाई पड़ी बाकी सफेद ही थी २।४= ७ बजेसे ७ बजे तक पारद घोटा गया।

३।४=आज७बजेसें ७बजे तक पारद घोटा गया।७दिन

४।४आज खरलको धूपमें घोटा गया और सुखाया गया तो २सेर५॥छ० =१८७॥तोले पारद पृथक् होगया बाकी चूर्णमें रहा। चूर्णको डौरूयंत्रमें बंद किया गया।

५।४को डौरूको ३प्रहरकी आंच दीगई।

६।४पारद डौरूयंत्रको ४॥तोले निकला। कुल पारद १९२तोले हुआ इकट्ठी तोल करनेसे पारद ठीक ऽ२।=सेर हुआ यानी१९०तोले हुआ इसको गर्म कांजीसे धोया गया और कपड़ेसे छाना गया फिर तोल की गई तो १९२तोले हुआ।

७।४–काम कन्हैयालाल नौकरकी बीमारीकी वजहसे बंद रहा। अबकी मरतबे कन्हैयालालने कहा कि ५० रुपये १० तोले पारेके गिरधारीलाल वैद्य बनवारी (वह भी पारेके काममें नौकर था) को देतेथे इसलिये पारेमें शुबहा पडा रंगत ठीक रही। कपडे पर स्याही भी न थी। तोलमें थोडा शक पडा और पूंछ पारेमें रहती थी यह एक बडे शककी बात थी लेकिन मुमकिन है कि खरलका लोहा मिलनेसे ऐसा हुआ हो, क्योंकि अबकी बार त्रिफलामें खटाईका योग होनेसे लोहका अधिक योग पारेमें आना मुमकिन है।

सातवाँ मर्दन (त्रिकुटामें)।

१०।४आजऽ२सेर६छटांक२)भर=१९२तोले पारदको २॥ छटांक त्रिकुटामें घीग्वारके रससे तप्तखल्वमें ९बजेसे ७बजे तक बरामदेमें घोटा गया ११।४।०७बजेसे७बजेतक घोटा गया। त्रिफलामें घुटनेमें पारदपर कांचलीसी दीख पड़ी थी आज कल नहीं दीखती-इससे खयाल होताहै कि त्रिफलामें खटाई होनेसे पारदने खरलसे लोहेका अधिक अंश चाटा वही कांचली रूप दृष्ट पडता था और शायद इसी वजहसे तोलभी बढी हो पर फिर तोला तो अभी तक अधिक है इसलिये अंश लोहका मौजूद है तो काचली कहां गई(उत्तर) मुमकिन है कि जो अंश पारदमें लय होगया वह अदृष्ट होगया जो उस वक्त घोटतेमें नया लोहा खरलसे आता हो वह जब तक पारदमें लीन न होताहो उस समय तक ऊपर दीखता हो किन्तु पारदकी तोल बढनेसे लोहका ग्रसित होना सिद्ध होताहै लय होना नहीं।

१२।४ आज ७ बजेसे रातके ७ बजेतक घुटाई हुई।

१३।४=७ बजेसे ७ बजेतक घुटाई हुई, आज १। छटांक त्रिकुटा और डाला गया।

१४।४=७ बजेसे ७ बजे तक मर्दन हुआ।

१५।४=७ बजेसे ७ बजेतक मर्दन।

१६।४=७ बजेसे ६ बजेतक मर्दन हुआ (इस त्रिकुटाके मर्दनमें भी पारा पृथक् ही रहा)।

१७।४=आज पारदको खरलसे पृथक् कर लिया गया प्रायः सब पारा स्वयं पृथक् होगया था लुगदीको सुखाकर घोटनेसे २ तोलेके लगभग पारा और निकला सब पारा करीब ऽ२ सेर ६ छटांकके निकल आया। चूर्णको डौरूयंत्रमें बंद करदिया गया।

१८।४ आज डौरूको ९ बजेसे आंच दीगई ४ बजेतक फिर ६ बजे ठंढा कर काम बंद करदिया गया।

१९।४ डौरूसे कोई १। तोले पारा निकला कुल पारा १९१ तोले हुआ जो १ तोले घटा वह छीजन है मेल हो तो ज्यादः घटै। कुल पारेको कांजीसे धोया गया। पारदमें पूंछ

अब भी दिखाई पडती थी छाननेसे कपडे पर स्याही नहीं थी।

आठवाँ मर्दन (गोखरूमें)।

१९।४–आज ऽ२।≈+१तोले पारद≈१९१ तोलेको२॥ छटांक गोखरूके चूर्णसे घीग्वारके रससे तप्तखल्वमें ४बजे शामसे ७बजेतक घोटा गया।

२०।४ आज६॥बजेसे६॥बजेतक मर्दन हुआ।

२१।४आज६॥बजेसे ६॥बजेतक मर्दन हुआ।

२२।४आज ६॥बजेसे ६॥बजेकत मर्दन हुआ।

२३।४आज ६॥बजेसे ६॥बजेतक मर्दन हुआ।

२४। ४ आज ७ वजेसे ७ बजेतक मर्दन हुआ।

२५ ।४ आज धूपसे खुश्क कर घोट पारद निकाला गया तौ १८९ तोले हुआ।

२६। ४ डौरूसे बाकी सफूफ उडाया गया तो २ तोले पारा निकला।

२७। ४ सब पारा १९१ तोले हुआ।

एक बरतनसे दूसरे बरतनमें करने पर पारेमें पूंछ जरूर रहतीहै अबतक छाननेमें जब २ तोलेके करीब पारा बाकी रह जाता है तब उसके निचोडनेसे उसके संग कुछ मैल छनकर नीचे पारेपर दीखने लगता है इससे जान पडताहै कि पारेका मैल पीछे रह जाताहै और शुद्ध पारा पहले छन जाताहै। अगर इस पिछले भागको अलग करदिया जाय तो अच्छा हो।

ॐशिवाय नमः।

मूर्च्छनसंस्कार।

(अष्ट–संस्काराध्यायके श्लोक १८६ से१८७की क्रियासे)

त्र्यूषणं त्रिफला बंध्याकंदैः क्षुद्राद्वयान्वितैः।
चित्रकेण निशाक्षारकन्यार्ककनकद्रवैः॥
सूतं च तेन यूषेण वारान्सप्ताभिमर्दयेत्॥
इत्थं मूर्च्छितः (योगरत्नाकर वैद्यकल्पद्रुम)।

त्रिकुटा १॥ छटांक, त्रिफला १॥ छ० (ककोडेकी जड नहीं मिली) कटेरी एकही तरहकी मिली वह हरी १॥ छ० चीता १॥ छ०, हल्दी १॥ छ० इनको ३ सेर पानीमें औटाया गया। तीन पाव पानी रह गया तब छान लिया गया। घीग्वारका रस १ छ०, आकके पत्तोंका रस १ छ०, धतूरेका रस १ छ०, कटेरीका रस १ छ० लिया गया और यवक्षार १ तोला २७।४।०४,

पहले १९१ तोले पारदका १ छटांक धतूरेके रसमें २ घंटे घोटा गया तो बिंदु पृथक् २ होगये। फिर आकके पत्तोंका रस डाला गया तो पारा इकट्ठा होगया इसमें भी ३ घंटे घुटा फिर कटेरीका रस डाला गया तो इसमें फिर पारेके विंदु पृथक् २ होगये इसमें भी ३ घंटे पारद घुटा। अर्थात् आज ८ घंटे पारद शीतखल्वमें धतूरे, आक, कटेरीके रसमें घुटा।

२८।४।०४ आज ६ बजेसे १२ बजेतक ठंढे खरलमें पारद उपरोक्त काढेमें घुटा और १२ बजेसे ६ बजेतक तप्तखल्वमें पूर्वोक्त काढेमें घुटा। आज पारद काढेसे पृथक् ही रहा। ३ बजे पारदमें १ तोले जवाखार भी डाला गया।

१–कोर्णानि० इत्यपि।

२९।४। आज पारद ६ बजेसे ६ बजेतक घोटा गया और उसमें घीग्वारका रस और कटेरीका रस डाला गया। तप्तखल्वमें घोटा गया किन्तु पारद पृथक् ही रहा चिन्ता हुई किं मूर्च्छन कैसे हो।

३०। ४ कर्म बंद रहा, मूर्च्छनके लिये काढा और बनाया गया।

१।५ पारदको खरलसे धूपमें सुखाकर पृथक् किया गया तो २।=ऽ+ २ भर हुआ अर्थात् १८७ तोले हुआ, रक्खा गया था १९१ तोले, ४ तोले पारा दवामें रह गया यह चूर्ण बिलकुल काला बुरादासा रहा इसलिये इसमें जो ४ तोले पारद है उसको मूर्च्छन कहसकते हैं, किन्तु इसमें कुछ रवे पारेके करीब १ तोलाके पृथक् होंगे यह सफूफ जुदा रख दिया गया।

2nd part दूसराभाग।

३०। ४ पौन पौन छटांक त्रिकुटा, त्रिफला, चीता, हल्दीका चूर्णको यानी ३ छटांक सब मिलाकर चूर्णको तीन पाव घीग्वारके रस, आधसेर आकके पत्तोंके रस, और डेढ पाव कटेरीके रस और आधपाव काले धतूरेके रसमें अर्थात् सब १॥। सेर रसोंमें रातभर भिगोकर ता० १।५ को सबेरे पहर भर आंच दी गई और औटतेमें १ छटांक आकके जडकी छालकी लुगदी और १ छटांक धतूरेके पत्तोंकी लुगदी और २ तोले जवाखार भी डाला गया गाढी कढीसी होजानेपर उतार लिया गया। ३ बजे शामके इस कढीमेंसे आधीको खरलमें डालकर उसमें १। तोले भेडके उनकी राख डालकर आध सेर पारा डाला गया तो घोटनेसे वह पारा रवे रवे होकर मिल गया।

२।५–पारा खरलका बदस्तूर मिला हुआ था उसमें ऽ। पारा और डाला गया तो १ घंटेमें वह भी वैसाही मिल गया, फिर इसको शामके ६ बजेतक खूब घोटा गया शामतक घोटनेसे पारा बहुत बारीक रवे होकर मिल गया। आज ऽ॥। तीन पाव पारा शीतखल्वमें १२ घंटे घुटा।

३।५। आजभी ६ वजेसे ६ बजेतक मर्दन हुआ ठंढे खरलमें आवश्यकतापर अर्थात् अधिक गाढा होनेपर काढा जो रक्खा था उसमें आकका दूध मिलाकर मर्दन हुआ, ठंढे खरलमें ३–४ बार डाला गया–और गाढा कढीसा घोटा गया। अब पारा खूब मिल गया यहां तक कि बहुत गौरसे देखनेसे यह जान पडताहै कि औषधिमें पारेके बारीक परमाणु मौजूद हैं।

४।५ आजभी पारद ६ बजेसे ६ बजेतक मर्दन किया गया, आज केवल एकवार प्रातःकाल इसमें बचा हुआ काथ डाला गया, आज पारद वास्तवमें लीन होगया यहां तक कि अब गौर करनेसे भी पारा नहीं दीखता हां कहीं २ शुबहा पडताहै कि पारेके बहुत सूक्ष्म अणु हैं। बस यही मूर्च्छन कहा जा सकता है। जय श्रीशंकरस्वामीकी

अनुभव।

मूर्च्छनके लिये पारदसे चतुर्थांश औषधिके प्रयोगकी आवश्यकता है वहभी काढा बनाकर डाली जावे और काढेसे केवल जल न लिया जावे किन्तु सब औषधी विना छाने डाल दी जावें। इस खरलमें ३ पाव पारा और३ छटांक औषधिका काथही एक दफे घुट सकता है। मूर्च्छनके लिये

लसदार वस्तुकी आवश्यकता है आकका रस कम पडना चाहिये उसमें लसभी नहीं है और वह पारदको बखेरता भी नहीं है दूध डाला जाय तो और भी अच्छा।

५।५। आज ६ बजेसे १० बजेतक पारदको घोटा फिर ज्यादः गाढा और खुश्क होजानेसे घोटना बंद होगया फिर इस खरलको धूपमें रख दिया गया। धूप आज। बदलीकी वजहसे कम रही इसलिये दवा सूखी नहीं।

६–५ को इस दवाको धूपमें सुखाकर सूखा घोटा गया तो करीब तीन छटांकके पारा जुदा हुआ १५ छटाँक सफूफ बच रहा।

७–५ को फिर इस दवाको पीसा गया तो १ छटांक पारा और निकला सब ४ छटांक हुआ जो सफूफ बचा उसमें ता०।१।५ वाला चूर्ण भी मिला दिया गया।

3rd part तीसरा भाग।

आज त्रिकुटा, त्रिफला, चीता, हल्दी का चूर्ण १२ तोले, कटेरीकी जड सूखी २॥ तोले, आकके जडकी लुगदी १छटांक, धतूरेके पत्तोंकी लुगदी २ छटांकको धतूरेका रस २ छटांक, कटेरीका रस ६ छटांक और आकका ८ छटांक (सब १ सेर रस) में भिगो दिया गया।

६।५।आज ऊपर भीगी हुई दवामें कटेरीके फलकी लुगदी २॥तोले, धतूरेके बीज सूखे पिसेहुए२॥तोले,घीग्वारका रसऽ॥। तीन पाव,आकका रसऽ।=्डेढ पाव और डालकर २ घंटे औटाया गया। दो पहर बाद इस काढे वा लुगदी मेंसे आधेके करीब खरलमें डालकर उसमें १ सेर पारद डाला गया और थोड़ी देर मर्दन हुआ।

७।५ आज शीतखल्वमें ६॥ बजेसे ६॥ बजे तक १२ घण्टे पारहका मर्दन हुआ आज ९ बजे तक सब पारा दवामें दाखिल होगया था और शामतक पारेके रवे बारीक होगये थे आज ४॥ बजे इसमें (जवाखार न मिलनेकी वजहसे) १ तोला मूलीका क्षार डाला गया और थोडा घीग्वारका रस भी डाला गया।

८।५–आज ६॥ बजेसे ६॥ बजे तक पारदका मर्दन हुआ आज सवेरे खरलमें ९ छटांक पारा जो बचा हुआ था डाल दिया गया इस खयालसे कि थोडेसेके लिये और घान डालना पडेगा और डालनेसे यह तजुरबा भी होजायगा कि एक बारमें कितना मूर्च्छन इस खरलमें होसकता है, आज ३ घण्टे घुटने पर पारा खरलमें मिल गया शामतक पारदके रवे बारीक हो गये।

९।५ आजभी पारद ६ बजेसे ६ बजे तक शीत खल्वमें घोटा गया, घीग्वारका थोडा रस डाला गया आज पारदके रवे इतने बारीक होगये थे कि गौरके बाद नजर आते थे।

१०।५ आज पारद ६॥से६॥ बजे तक घुटा थोडा घीग्वारका रस डाला गया अब पारद नजर नहीं आता।

११।५ आज पारदको थोडा तप्तखल्वमें घोट कर खुश्क किया और फिर शामतक धूपमें सुखाया, जब दवाके टुकडे बिखरने माफिक होगये तो खरलमें घोटे गये घोटनेसे ८॥ छटांक पारा जुदा होगया।

अनुभव।

बिलकुल सुखाकर घोटनेसे पहले दवा जब बिखरने लायक खुश्क होजावे तब पारा घोटकर जुदा कर लेना मुनासिब जान पड़ताहै पीछे सुखाकर फिर निकाले।

१२।५आज फिर कलवाले सफूफको जो कुछ और सूख गया था लेकिन नम तौ था थोड़ा २ घोटा गया तौ डेढ पाव पारा और निकला, फिर बाकी सफूफको सुखादिया।

1st & 2nd part पहला व दूसराहिस्सा।

पहले दूसरे टुकड़ेके मूर्छनके सफूफको १बोतल नींबूका रस डालकर २घंटे घोटा गया, फिर५घंटे धूपमें रक्खा गया बादको ३ घंटे तप्तखल्वमें घोटा गया।

१३।५आजभी पारदको कुछ तप्त खल्वसे सुखाया-धूप आज बादलकी वजहसे कम रही।

१४।५ आजभी तप्त खल्वसे दवाको सुखा कर बारीक किया गया तौ १ छटांक पारद और निकला।

अनुभव।

नींबूके रसमें घोटनेसे ३–४दिनकी मेहनतसे सिरफ १ छटांक पारा निकला इसलिये उड़ाकरही निकालना ठीक है, अगर नींबूमें घोटनेकी आवश्यता समझी जावे तो निकालनेके बाद घोट लिया जावे।

फिर इसी पहले और दूसर टुकडेको नींबूसे घोटा था डौरूयन्त्रमें बन्द कर दिया गया।

१५।५ आज डौरूयन्त्रको ७ बजेसे ७ बजे तक आंच दी गई। १६।५+६॥ छटांक पारा निकला।

3rd part तीसराभाग।

तीसरे भागके सफूफ (चूर्ण) आज डौरूमें बन्द कर दिया गया।

१७।५ आज ७ बजेसे ५ बजे तक आंच दी गई ७ बजे तक कोयलोंकी आंच रही। १८।५। ९ छटांक पारा निकला।

१८।५–१+२ part में डाला गया–८+४+१=१३छटांक
निकला ३+१+६॥=११॥ छटांक
बाकी १॥ छटांक
३ part में डाला गया १६+९=ऽ१॥ सेर
निकला ८॥+६+९=ऽ१।≡॥ सेर
बाकी १॥ छटांक

सब पारा था१९१तोले ॥ मौजूद कुल ऽ२≡बाकी३छ० १ तोले लेकिन सब मिलाकर तोलनेसे बैठा—ऽ२।सेर–पस बाकी है २ छटांक १ तोले।

१८।५–दोनों डौरूको राखको मिलाकर खरलमें बारीक पीसा गया तो उसमें पारा दिखाई नहीं दिया। फिर जंभीरीका रस ऽ। पावभर डाला जिससे दवा कढीसी होगई २ घंटे तप्तखल्वमें घोट तप्तखल्वमें छोडदिया गया११ बजे, ३ बजे देखनेसे दवा माजूनसे गाढी होगई थी और पारेके रवे दीख पडे और कुछ थोडासा पारा बीचमें आगया दवाको मूसलेसे दबादबाकर कुछ पारा इकट्ठा कर जुदा कर लिया गया। फिर खरलको १ घंटे भर धूपमें रक्खा गया तो दवा बिखरने लगी। रवे पारेके नजर पड़तेथे पर इकट्ठे नहीं होते लिहाजा दवाको सुखा दिया गया।

अनुभव ।

पारा जब किसी चीजमें अदृश्य होजावे तो उसको निंबूसे पतला कर पहर भर घोट कुछ पतलाही रहे धूपमें रख देनेसे पारा कुछ इकट्ठा हो जाताहै कुछ अपने रूपको ग्रहण कर रवे रवे होजाता है, खुश्क होनेपर सब रवे तो इकट्ठे नहीं होते, मगर नजर पडने लगतेहैं ।

१९ । ५ दवाको डौरूकर ३ पहर आंच दीगई तो ४ तोले पारा निकला १ तोला पहले धूपमें निकला था ।

२० । ५ कुल पारा तोलनेसे ऽ२।– हुआ यानी ६ तोले घट गया ।

1st part द्वितीय मूर्छन ।

२० । ५–३ छटांक त्रिकुटा, ३ छटांक त्रिफला, २॥छटांक ककोडेकी जड जो कासिमपुर (तहसील सिकंदराराऊ) से आई, २॥ छटांक चीता, २॥ छटांक हल्दी सबको पृथक् २ कूटकर तारकी चलनीसे छानकर मिला दिये गये । इस चूर्णमेंसे चौथाई चूर्णको अर्थात् ३ छटांक चूर्णको ९ छटांक घीग्वारका रस, ८ छटांक आकके पत्तोंका रस, ७ छटांक कटेरीके पंचांगके रसमें शामको भिगो दिया गया और $\frac{3}{2}$ छटांक आककी जडकी लुगदी, आधी छटांक कटेरीके फलकी लुगदी, $\frac{3}{2}$ छटांक धतूरेके बीज भी डाले गये ।

२१ । ५–आज पूर्वोक्त औषधिको २ घंटे औटाया गया और इसमें २ छटांक धतूरेके पत्तोंका रस भी डाला गया ज्यादे पत्ते न मिले १० बजे इस काढेको गाढा कढीसा होनेपर उतार खरलमें डाल उसमें ऽ१ =+ १ तोले पारा डाला गया, १२ बजे उसमें १॥ तोले ऊनकी राख, १ तोला मूलीका खार भी डाला गया, शामके ४ बजे तक घोटते रहनेपर भी पारा पहलेकी तरह नहीं मिला शामतक घुटा ।

२२ । ५ आज ७ बजे सबेरेसे पारद घोटा गया । तप्तखल्वमें घीग्वारका रस डाला गया, परन्तु पारा न मिला लाचार ४ बजे शामके पारा निकाल लिया गया तीन पावसे कुछ ज्यादे हुआ ।

अबकी बार पारद लीन न होनेके कारण तीन होसकतेहैं ।

(१) नींबूसे उत्थापन खरलसे किया गया था पर उस खरलको धोया नहीं गया मुमकिन है खटाईका अंश खरलमें रहनेसे दवाकी आकर्षण शक्ति जाती रही ।

(२) तहकीकातसे मालूम हुआ कि अबकी बार कन्हैयालालने कटेरी आदिका रस निकालनेमें जल डाल दिया ।

(३) दवामें एक नई चीज भी पडी यानी ककोडेकी जड जो कासिमपुरसे आई ।

२३ ।५ आज दवा धूपसे सुखाकर पारद जुदा किया गया तो सब मिलकर १५ छ० १ तोले हुआ डाला गया था साढे अठारह छटांक यानी दवामें रह गया ३॥ छ० यह बिलकुल काला सफूफ बना इसको डौरूमें बंद किया गया ।

२४ । ५ आज डौरूको आंच दी गई ।

२५ । ५ आज डौरू खोला गया तो एक नई बात निकली यानी हांडीके अन्दर नमी थी इसको धूपमें सुखानेको दो पहर तक रक्खा, लेकिन दोपहर बाद ३ घंटे ठंढेमें रहनेसे नमी बदस्तूर मौजूद थी मालूम होताहै कि कोई खार पारेके संग उड गया वह आज पुरवाई हवासे शीतल है । कुछ पारा इधर उधरसे हांडीसे पोंछकर निकाला जो ११ तोले हुआ, घंटे भर फिर धूपमें रखकर नमी कम होनेपर और पारा निकला, पर नमी और चिपकाटकी वजहसे बीचका पारा नहीं छुटा इसके चिपकाट दूर करनेके लिये नीबूका रस हांडीमें डाला तो चिपकाट जाता रहा रससे धोधोकर हांडी तोडकर पारा निकाला गया ।

एक कारण और भी चिपकाट नमीका होसकता है यह कि अबकी दफे डौरूके नीचे रातको कोयले नहीं रहे और बार रहतेथे इस वजहसे गर्मी हांडीको नहीं लगती रही, इस वजहसे ऊपरकी हांडीपर जो गोबर पानी था उसकी तरी खुश्क न हुई अन्दर असर कर गई ।

कुल पारा डौरूसे २॥ छटांक + १ + भर निकला + १५ छटांक १) भर पहले निकला । कुल हुआ १७॥ छ० २) भर । डाला गया था १८ छ० १) भर यानी १॥) भर कम होगया ।

इस क्रियामें जो २॥ छटांक १ तोले पारा मूर्च्छन होगया था और जो उडाकर डौरूसे निकाला गया उसीको मूर्च्छन माना गया और वह जुदा रख दिया गया ।

2nd part द्वितीय मूर्च्छन ।

२६।५–त्रिकुटा, त्रिफला, ककोडेकी जड, चीता, निशा, का सफूफ३ छटांक, ऊनकी भस्म १। तोले, घीग्वारका रस १० छटांक, आकका रस १० छटांक, धतूरेका रस १॥ छटांक, कटेरीकी जडकी लुगदी $\frac{3}{2}$ छटांक, कटेरीका रस ९ छटांक–(रस इसलिये डाल दिया कि सर्वांग डालनेसे कांटे काढेमें रह जाते थे और पिसना मुश्किल था) धतूरेके बीज $\frac{3}{2}$ छटांक, धतूरेके पत्ते $\frac{3}{2}$ छटांक (ये पत्ते इसलिये डाले गये कि रस कम मिलसका था) इन सबको इकट्ठा कर रातको हांडीमें भिगो दिया गया सबेरे पहर भर औटाकर गाढा होनेपर उतार लिया गया ।

४ बजे शामके इसमें पारा डाला गया १५ छटांक १) भर घोटनेसे यह पारा दवामें नहीं मिला दवा पतली रबडीसी थी इसलिये और औटाकर गाढी की गई ।

२७।५ खरलमें की पतली दवा ऊपरसे जुदा कर रकाबीमें रक्खी गई इसमें कुछ पारा भी मिला था और बाकी दवा और पारेमें गाढी दवा जो गाढी माजून या खमीरासी थी डालकर घोटी गई तो २ घंटेमें सब पारा मिल गया (आगेसे ध्यान रक्खा जावे) आज ठंढे खरलमें ७ बजेसे ७ बजेतक मर्दन हुआ पारा शामतक करीब२ अदृश्य होगया।

२८ । ५ आज भी ६॥ बजेसे ६॥ बजे तक पारदका मर्दन शीत खल्वमें हुआ सबेरे ७ बजे इसमें सज्जीक्षार अर्थात् सोडा $\frac{1}{2}$ छटांक डाला गया, आज पारा बिलकुल अदृश्य होगया जो दवा पतली जुदा करली थी वह सब आज खरलमें पड गई ।

२९ । ५ आज ७ बजेसे ६ बजेतक पारेका मर्दन हुआ । घीग्वारका रस गाढा होने पर डाला गया शामके ३ घंटे खरल तप्तभी किया गया ।

३० । ५ आज १ पहर तप्तखल्वमें पारद घोटा गया अधिक २ गाढा होते जानेपर पारद छूटता गया वह जुदा कर दोपहरको खरल धूपमें रख दिया गया ३–४ बजे घोट कर और पारद निकला अभी दवा गीली हीहै सब पारा १३॥ छटांक निकला था १५ छटांक १) भर इसलिये २ छटांक ३॥) भर दवामें और रहा फिर दवाको बिल-

कुल खुश्क कर बारीक पीस लिया खूब सूखनेपर इसमेंसे और पारा नहीं निकला इसको डौरूमें बंद करदिया गया ।

३१ । ५ डौरूको ३ प्रहर आंच दी गई ।

१।६ डौरू खोला गया आध पाव १) भर हुआ सब पारा मिलाकर तोला गया तो १४ छटांक ३॥ रुपये भर हुआ और 2nd part में डाला गया १५ छटांक १) भर पस २॥) भर कम हुआ ।

और दोनों 1st & 2nn part मूर्च्छनमें डाला गया–ऽ१=१) भर और सब दोनोंका हुआ १सेर १ छटांक२ रुपये भर पस ४ रुपयेभर कम होगया दोनों पार्टमें ।

3rd part of द्वितीय मूर्च्छन ।

१।६।०४–त्र्यूषण, त्रिफला, वन्ध्याकंद, चित्रक, निशाका ३ छटांक, ऊर्णभस्म १॥ तोला, सज्जीक्षार २॥ तोला, कन्यारस ९ छ०, आकका रस ११॥ छटांक कनकरस ४ छटांक, बीज ½ छटांक, कटेरीकी जड ½ छ० रस ९ छटांक इनको मिलाकर रखा दिया गया ।

२।६ पहर भरके करीब आज दवाको औटाकर गाढा होनेपर उतार लिया गया दो पहर १२ बजे इसमें ऽ१=+४) भर पारा डाला गया और शीतखल्वमें घोटा गया २ बजेतक पारा थोडा मिला सब नहीं मिला २ बजेसे ५ बजेतक तप्तखरलमें घोटा गया पर वही दशा रही ।

३ । ६ आज ७ बजेसे ११ बजे तक और ३ बजेसे ७ बजेतक पारेका शीत खरलमें मर्दन किया आज गाढा होनेपर घीग्वारका रस भी डाला गया और धतूरेका रस भी डाला गया कुछ ऊनभस्म भी बुरकी गई किन्तु पारा कुछ थोडासा और बाकी मिला बाकी वैसाही पृथक् रहा ७॥ छटांक जुदा रहा ।

४ । ६ आज इस ७॥ छटांक पारदको जुदा कर लिया गया और यह समझा गया कि औषधि केवल अवशेष ११ छटांक पारदको ही ग्रहण कर सकतीहै, पस इसीको घोटा गया और जरूरत पर घीग्वारका रस भी डाला गया पारेका शीतखरलमें ७ बजेसे ६ बजेतक मर्दन हुआ ।

५ । ६ आज तप्त खल्वमें पारदका ७ बजेसे ६ बजेतक मर्दन हुआ घीग्वारका रसभी डाला गया किन्तु इस थोडेसे पारदका भी अबकी बार पूर्ण मूर्च्छन नहीं हुआ कुछ रवे दीखते रहे यह बात ठीक समझमें न आई कि अबकी बार ठीक मूर्च्छन न होनेकी क्या वजह हुई हालां कि यह छठी कोशिश है ।

६ । ६ आज पारदको तप्त खल्वमें ४ घंटे घोटागया गाढा होजानेपर पारा निकल आया फिर ५ घंटे धूपमें सुखाकर घोटा गया तो कुछ पारा और निकला सब ७॥ छटांक हुआ ।

७।६ आज पारेके चूर्णको जो बिलकुल सूख गया था बारीक पीसा गया तो २ तोला पारा और निकला आदमी कम होनेसे आगे काम न चला ।

१५ । ६ आज इसके चूर्णका डौरू चढाया गया ।

१६ । ६ इस डौरूको खोला तो जैसा एक बार पहले हुआथा वैसाही अबके भी हुआ अर्थात् ऊपरकी हांडीमें पानीकी तरी ज्याद: पहुंच जानेसे पारा हांडीसे सब नहीं छुटा चिपकाट पैदा होगया था ।

२॥ छटांक पारा तो निकल आया और कुछ चिपटा रह गया फिर हांडीको धूपमें रख दिया तो सूखकर बाकी पारा और निकला सब पारा ७॥ छटांक + ७॥ छटांक +२) + २॥ छटांक + १) भर=१८ छ० हुआ । डाला गया था १८ छ० + ४) भर, कम हुआ ४) भर ।

4th Partचौथा हिस्सा ।

१०।५–उपरोक्त दवाका चूर्ण ३ छटांक आकका रस ४ छटांक, कटेरीका रस १० छटांक, धतूरेका रस ४ छटांक, घीग्वारका रस १२ छटांक, लुगदी आकके जडकी ½ छटांक, धतूरेके पत्तोंकी लुगदी ½ छटांक, कटेरीकी लुगदी ½ छटांक, धतूरेके बीज ½ छटांक सबको रातको भिगो दिया गया सबेरे औटाकर खूब गाढा होनेपर उतार खरलमें डाल घोटागया (दो पहर होजानेसे छुट्टी होगई) ४ बजे शामको इसमें ७॥ छटांक पारा जो शेष अमूर्च्छित रहा था डाल कर शीत खरलमें घोटागया तो १ घंटेमें पारद औषधिमें मिल गया, ७ बजेतक पारदका मर्दन कराया गया ।

११।६–शीत खल्वमें पारदका ७ बजेसे ७ बजेतक मर्दन हुआ, घीग्वारका रस भी डाला गया पारद लीन तो हुआ पर अदृष्ट नहीं हुआ ।

१२।६ आज भी ७ बजेसे ७ बजेतक शीत खल्वमें पारदका मर्दन हुआ ५ बजे इसमें १॥ तोले सज्जी पीसकर डाली गई घीग्वारका रस भी पडता रहा आज पारद पूरी तरह मूर्च्छन होगया अर्थात् अदृष्ट होगया ।

१३।६ आजभी पारदका तप्त खरलमें मर्दन हुआ १२ घंटे आज प्रातः इसमें ७॥ छटांक २ रुपये भर पारा जो 3rd part मूर्च्छनमें निकला था इस कारणसे खल्वमें डाल दिया गया कि वह भली प्रकार मूर्च्छन न हुआ था यह मिलतो शीघ्रही गया किन्तु अदृष्ट नहीं हुआ ।

१४ । ६ आज तप्त खल्वसे सुखाकर औषधिसे १० छटांक पारा पृथक् हुआ और फिर धूपसे सुखाकर २ छ० पारा पृथक् हुआ ।

१६ । ६–4th part की औषधि चूर्णको डौरूमें ३ प्रहरकी आंच दी गई ।

१७ । ६–खोलनेसे ३॥ छटांक पारा निकला ।

सब पारा १० छटांक+छ०+३॥ छ०=१५॥ छटांक निकला और डाला गया था ७॥छ+७॥+२) भर=१५+२) भर अर्थात् कुछ घटी न पडी पर अबकी तोल ठीक न थी।

3rd & 4th part में डाला गया था–)१=४) भर
और सब हुआ ऽ१=+२) भर
अर्थात् २) भर कम हुआ–
से छ० रु०

कुल पारेकी तोल अब	१–१–२	1st & 2nd part
	१–२–२	3rd & 4th part
	२–३–४	

पर इकट्ठा तोलनेसे २ सेर ३ छटांक ३॥ रुपये भर हुई=१६०+१५+३॥१७८॥ तोले पहाड चले जानेसे आगे काम बंद रहा ।

ॐशिवायनमः ।

पारदका तृतीय मूर्च्छन ।

(त्र्यूषणं त्रिफलावंध्या) की रीतिसे ।

सोंठ, मिरच, पीपल, हर्ड, बहेडा, आंवला, चित्रक, निशा, सब आधी आधी छटांक अर्थात् ४ छटांकको घीग्वारका रस ८ छटांक, आकका रस ७ छटांक, धतूरेका रस ७ छटांक, कटेरीका रस ७ छटांकमें भिगो दिया ।

२४।८ आज इसमें कटेरीके फलकी लुगदी ½ छटांक, आककी जडकी लुगदी ½ छटांक, और धतूरेके कच्चे फलकी लुगदी १॥ छटांक डाल कर औटाया गया ३ घंटे खूब गाढा रबडीसे भी ज्याद: गाढा होजानेपर उतार ठंडा कर थोडी देर खरलमें घोटा गया ४ बजे शाम इस दवामेंसे ½ दवामें थोडा पारा डाल घोटागया तो ६ बजेतक १ सेर पारा मिल गया ।

२५।८ आज ८ बजे ¾ बची हुई दवा खरलमें और डाली गई और काले धतूरेके कच्चे फलोंके बीजकी लुगदी ½ छटांक और डाली गई ९॥ बजेतक घुटनेके बाद ४ छटांक + १) भर पारा और १॥ तोले ऊनकी राख और १। तोले जवाखार और डालागया ११ बजेतक घुटने पर पारा मिलगया ११॥ बजे सल्नोकी वजहसे छुट्टी होगई ।

२६।८-आज ८ बजेसे ६ बजेतक पारा घुटा शीत खल्वमें बहुत ही बारीक रवे होगये थे ।

२७ । ८ आज ७ बजेसे ६: बजे तक पारा घुटा दोपहर गर्म खरलमें और बादको ठंडे खरलमें गरम खरलमें घोटनेसे खरलके किनारोंपर जो दवा खुश्की पकडती थी उसमें पारेके रवे पड जाते थे इस खयालसे दो पहर बाद गरम खरल न रक्खा गया दो पहरतक जो रवे पारेके पडगये थे वह वैसेही रहे ।

२८ । ८ आज ७ बजेसे ६ बजे तक पारा शीतखल्वमें घुटा सब पारा यद्यपि पूर्ण अदृष्ट नहीं हुआ परन्तु करीब २ होगया किन्तु जो रवे कल मोटे हो गये थे वह वैसेही रहे ।

२९ । ८-आज दवा गाढी होजानेसे पारा छूटने लगा खरलको गरम कर घोटनेसे)१=सेर पारा जुदा होगया १२ बजेतक फिर घोटना बंद करना पडा ज्याद: गाढा होजानेसे हाथ नहीं चलता था लाचार धूपमें सुखाया गया शामतकऽ-छटांक पारा और निकल आया ।

३० । ८ आज पारेको सुखाकर घोटनेसे चूर्ण होगया आज पारा बहुत थोडा निकला कुल पारा वजन कर ऽ१ ≡ सेर २ पैसे भर कम हुआ अर्थात् सवा या डेढ छटांक पारा दवामें रह गया । अबकी बार पारा अदृष्ट नहीं हुआ ।

तृतीय मूर्च्छनका । 2nd Part

३०।८ आज रस निकाले गये ।

३१।८ आज त्र्यूपण, त्रिफलादिके ४ छटांक चूर्ण को और कटेरीके फलकी लुगदी१छटांक जडकी लुगदी१छटांक धतूरेके कच्चे फलोंके बीजोंकी लुगदी १ छटांक, आकके जडकी लुगदी ½ छटांक घीग्वारका रस ११ छटांक, आकका रस ८ छटांक, धतूरेके पत्तोंका रस ८ छटांकमें मिला पहर भर औटाया गया और आज ४ बजे दवा तय्यार की हुई में आधी छटांक कम एकसेर पारा डाल कर घोटा गया शामके ६ बजे तक सब पारा मिल गया ।

१।९ आज ७ बजेसे ६ बजे तक पारेका ठण्डे खरलमें मर्दन हुआ पारा मिल गया पर बारीक रवे मौजूद रहे यानी अदृष्ट नहीं हुआ । आज १॥ तोले ऊनकी राख पारेमें डाली गई ।

२।९ आज ७ बजेसे ६ बजे तक शीत खरलमें मर्दन हुआ १। तोले जवाखार डाला गया ऽ= आध पाव घीग्वारका रस भी डाला गया पारा अदृष्ट आज भी न हुआ ।

३।९ आज भी ७ बजेसे ६ बजे तक शीतमर्दन हुआ घीग्वारका रस २ छ० पडा अदृष्ट आज भी न हुआ ।

४।९ आज पारा ४ बजे तक गरम खरलमें घोटा गया शामको गाढा होजानेसे कुछ पारा जुदा होगया ।

५।९ आज खरलको धूपमें सुखा पारद जुदा किया गया कुल पारा १२॥ छटांक हुआ ३ छटांक पारा दवामें मिला रह गया ।

अनुभव ।

अबकी बार दोनों Parts में पारा मिल तो शीघ्र गया और रवे भी बहुत बारीक । हो गये मगर अदृष्ट दोनों बार नहीं हुआ । जहां तक खयाल होता है "पारा ज्यादा पडता है" केवल ऽ॥। पाव पारा इस खरलमें भलीभांति मूर्च्छन हो सक्ता है मगर १० मई वाले मूर्च्छनमें १॥ सेर पारा करीब २ मूर्च्छन होगया था (निश्चय थोडा पारा डालनेसे अच्छा मूर्च्छन होता है)

इस क्रियासे मूर्च्छन करनेसे निम्न लिखित बातोंका खयाल रहे ।

(१) कटेरीका रस और (जड और बीजकी) लुगदी भी डाली जावे पत्ते और डण्डोंमें कांटे होते हैं इसलिये उसका रसही ले सकते हैं (कटेरी एक प्रकारकी मिली दूसरीकी तलाश होनी चाहिये)

(२) आकका दूध लेना चाहिये रस बहुत पतला और कम पकड वाला होता है कुछ जडकी छालकी लुगदी भी ले सकते हैं (अवश्य दूध लेना चाहिये)

(३) धतूरेके पत्तोंका रस फलकी लुगदी लेनी चाहिये ।

(४) कुल औषधियोंका काढा इन रसोंमें बनाना चाहिये जल न मिलने पावे ।

(५) ऊन और जवाखार पीछे खरलमें डालना गालिबन ठीक होगा ।

(६) काढा खूब गाढा रबडीसे भी ज्याद: गाढा होना चाहिये पतला ज्याद: रहनेसे पारेको ग्रसता नहीं है ।

(७) पारद खरलमें थोडा खिपता २ डालना चाहिये और दवा ठण्डी होने पर पारा डाला जावे ।

(८) शीत खरलमें घोटना ठीक होगा पारा मिल जाने पर यदि चाहो गरम खरलमें घोट सकते हो पर गर्म घोटते समय दवाको पतली रक्खो ज्याद: सूख जानेसे पारेके रवे किनारों पर पैदा होजाते है ।

६।९ आज दोनों parts के चूर्णके डौरूमें बन्द कर ३ पहरकी आंच दी गई ।

७।९ आज डौरू खोलनेसे ३॥ छटांक पारा निकला और डौरूकी ऊपरकी हांडी गीली निकलनेसे कुछ पारा उसमें लगा रह गया नीचेकी हांडीमें भी पारा उड़कर ऊपर की तरफ इधर उधर किसी चिकटी हुई चीजके साथ लगा हुआ रहगया । कदाचित् जवाखारका ही यह असर हो ऊपरकी हांडीमें कुछ तराई अधिक पहुंचनेसे भी सील रहना मुमकिन है हांडियोंको धूपमें रख दिया गया और जो कुछ

पारा खुश्क होने पर निकला वह मिला दिया गया कुल पारा तोलेनसे २ सेर ३ छटांक २ रुपये भर हुआ, और था २ सेर ३ छ० ३॥ रुपये भर सो १॥ रुपये भर पारा अभी और बाकी है। ऊपरकी हांडीमें कुछ बाकी नहीं रहा नीचेकी हांडीसे पारा नहीं छूटा चिकट गया इसलिये उस को नीबूके रससे धोकर पारा छुटाया गया फिर उस पारे और रसको धूपमें सुखाकर पारा जुदा किया तो कुछ कम तोले भर निकला कुछ रवे बूंदेमें मिले रह गये । अब कुल पारा २ सेर ३ छ० ३ रुपये भर समझना चाहिये ।

७।९ आज उक्त पारदको गरम मट्टेमें खूब मलकर धोय गया।

चतुर्थमूर्च्छन ।

(अष्ट संस्काराध्यायके श्लोक १८८ से १८९ श्लोककी क्रियासे)

८।९=८ से १० तक ३ दिन–ऽ। पावभर+३॥ तोले पारेको सज्जी, जवाखार, खारीनोन, साम्हरनोन, सैंधानोन, कालानोन, नींबूका रस इमलीसे घोटा गया शीत खल्वमें १॥ दिन फिर गरम खरलमें फिर दो तोले हींग डालकर घोटा मगर पारा मिला नहीं लाचार रह।

११ । ९ को पारा जुदा किया गया तो गाढा होनेपर पौने चार छटांक पारा निकला फिर दवाको धूपमें सुखाया गया तो १॥ तोले पारा और निकला बाकी दवामें रह गया इकट्ठा तोलनेसे पारा ऽ। पावभर हुआ ३॥ तोले पारा दवामें बाकी रहा यह दवा आगे खरलसे मिलादी गई ।

११ । ९ आज १॥। सेर ३ छटांक पारेको सज्जी २ छटांक, सैन्धव २ छटांक, खारी २ छटांक, कालानोंन २ छटांक, साम्हर २ छ० नमकमें नींबू और इमलीका रस डाल शीतखरलमें ३॥। बजेसे घोटा गया ६ बजेतक ।

१२ । ९ आज ६ बजेसे ६ बजेतक घुटाई हुई नीबूका रस और डाला गया दो पहर तक शीत खरलमें,दोपहर बाद तप्तखरलमें मर्दन हुआ शामको पहले हिस्सेकी दवाका सूखा चूर्ण भी इसीमें डाल दिया गया ।

१३ । ९ आज भी पारा तप्त खरलमें ६ बजेसे ६ बजेतक घुटा रस नींबूका और पडा ।

१४ । ९ आज दो पहरतक तप्त खरलमें पारा घुटनेके बाद दवा गाढी होजानेसे आधपाव कम दोसेर पारा निकला पहला था ऽ। पावभर सब हुआ ऽ२=

१५ । ९ आज ३) रुपये भर पारा सूखी दवामेंसे और निकला सब २ सेर+२छ०+३रुपये भर हुआ यानी १ छटांक दवामें रह गया ।

१६ । ९ आज डौरुयंत्रसे को ३ प्रहरकी आंच दी गई ।

१७ । ९ आज डौरू खोलनेसे १ छ० पारा और निकला लेकिन कुल इकट्ठा तोलनेसे पारा २ सेर ३ छटांक ही बैठा यानी ३) रुपये भर कम हुआ,लेकिन् दवामें खफीफ पारा रह गया और कुछ बादल होनेकी वजह और कुछ नमकका प्रयोग होनेकी वजहसे सील पैदा होजानेसे निकालनेमें छीज गया ।

१८ । ९ आज कलके डौरूकी निकली राखको फिर डौरूमें चढाया गया और तीन प्रहरकी आंच दी गई तो ॥) भर पारा और निकला सब पारा २ सेर ३ छ० ॥) भर हुआ अर्थात् २॥) भर घट गया ।

२० । ९ आज मुर्ली नौकर छुट्टी लेगया ।

अनुभव साधारण मूर्छन ।

२२ । ९ हरड, बहेडा, आंवला, चीता,सबका चूर्ण आधी आधी छटांक यानी सब आधपावको ऽ१। – सेर घीग्वारके रसमें रातको भिगो सवेरे पहर भरके करीब औटा कर रबडीसा होजानेपर उतार लिया गया । कुछ मोटा दीखनेसे खरलमें घोटा गया ३ घंटे ।

२३ । ९ आज खरलमें ऽ। पावभर पारा हिंगुलोत्थ डाला गया डालतेही आध घंटेमें मिलगया ६ घंटे घुटनेमें प्रायः नष्टपिष्टी होगया देखनेसे भी रवे नहीं दीखते हां, बहुत गौरके बाद बहुत बारीक रवे बहुत रोशनीमें दीखते थे।

२४ । ९ आज भी पारा ७–८ घंटे घुटा शीतखल्वमें रवे कुछ और बारीक होगये किन्तु बहुत गौरसे फिर भी दीखतेहैं ।

२५।९ आज भी ७–८ घंटे घुटाई हुई आज पारद मेरी समझमें नष्टपिष्टी होगया था किन्तु रामेश्वरानंद राजवैद्यने खरलमेंसे किंचित् औषधि पोरुवेपर लेकर उँगली और अँगूठेसे मसली तो उँगलीपर पारेके परिमाणु दीख पडे और उन्होंने कहा कि अभी मूर्च्छनमें कसर है मेरी रायमें उनका कहना ठीक है और अबतक जितने मूर्च्छन हुए हैं उनमें कोई मूर्च्छन इससे अधिक नहीं हुआ अर्थात् पूर्ण मूर्च्छन नहीं हुआ किन्तु इससे अधिक होनेकी आशा भी नहींहै ।

२६ । ९ आज भी पारा दिनभर ११ घंटे खरलमें घुटा जरूरत पर घीग्वारका रस पडता रहा किन्तु अधिक मूर्च्छन न हुआ शुद्धीके मूर्च्छनमें इससे अधिक मूर्च्छन होना संभव नहीं दीखता ।

२७ । ९ आज सुखाकर पारा निकाला गया २॥ छटांक निकला बाकी दवाको सुखा डौरूयंत्रमें भर दिया ।

२८ । ९ आज डौरूको ३ प्रहरकी आंच दी गई ।

२९ । ९ आज डौरूसे १॥ छटांक पारा निकला सब ऽ। पाव भर पारा निकल आया इतनाही डाला था ।

नक्शा मर्दन संस्कार ।

नम्बर.	तारीख.	तोलपारदजो रक्खागया.	नामऔषधिजिनके साथमर्दनकियागया	तोलऔषधि.	नामद्रवजिसकेसाथघुटा.	तोलद्रव.	खल्व प्रकार.	समय मर्दन.	तोलपारदजो निकला.	तोलपारा जोघटा.	विशेष वार्ता ।
१ मर्दन.	१०।२।०४	१९७)॥तो.	इष्टिकाचूर्ण+हल्दी	१।+१।छटांक =२॥छटांक	जम्बीरीनींबू बिजौरा–	५ सेर नींबुओंका रस.	तप्तखल्व	९ घंटे	+	+	ये मर्दनसंस्कार रसरत्नाकरकी क्रियासे किया गया– इष्टिकाचूर्ण+रजनी दोनों मिलाकर पारदसे षोडशांश डाली गई थीं–
	११।२।०४	+	+	+	॥		॥	१० घंटे	+	+	कर्म ८ बजेसे ८बजेतक १२घंटे चलताहै किन्तु वास्तवमें १० घंटे ही मर्दन होताहै–
	१२।२।०४	+	+	+	॥		॥	११ घंटे	+	+	
	१३।२।०४	+	+	+	+	+	+	+	१तोलाकम	ऽ२॥सेर+	
२	१५।२।०४	१९९तोले	अंकोलकेजडकीछाल फरफेंदुएकागूदा	१।+१।=२॥ छटांक	घीग्वार कारस	+२॥पट्ठों-का रस	तप्तखल्व	८ घंटे	+		
	१६।२।०४	+	+	+	॥	८पट्ठोंका रस	अल्पतप्त खल्व	११ घंटे	+		आज खरल इस कारण अल्प तप्त रक्खा गया कि दवा गाढी थी कहीं जल न जावे और गाढी इस कारण रक्खी कि पारद और औषधि घोटनेमें खूब आवें ।
	१७।२।०४	+	+	+	॥	॥	॥	१२ घंटे	+		दवा ज्यों ज्यों गाढी होती जाती थी पारा जुदा होता जाता था–जब फिर रस डालनेसे पतली दवा होजाती थी तौ पुनः पारा मिल जाता था इसवास्ते रवडी सा गाढा घुटना ठीकहै
	१८।२।०४	+	अंकोलका चूर्ण	२ तोले	॥	॥	॥	११ घंटे	+		इस खयालसे कि पारद भलीभांति लीन नहीं होता २ तोले अंकोलका चूर्ण और डाल दिया गया ।
	१९।२।०४	+	+	+	॥	॥	तप्तखल्व	१२ घंटे	+		पारद अब जरूर लीन होगया किन्तु गौरसे देखनेसे बहुत बारीक २ रवे जरूर दीखते थे यदि पारद कमहो और औषधि अधिक हो तो कुछ अधिक मूर्च्छन होनेकी आशा होसकती है ।
	२०।२।०४	+	+	+	॥	॥	॥	१२ घंटे	+		आज सातवां दिन था–दो पहर तक रस डाला गया ।
	२१।२।०४	+	+	+	॥	॥	॥	१२ घंटे	+		
	२४।२।०४	+	+	+	॥	॥	॥	+	१९६।॥तोले पातन द्वारा निष्कासित	२।तोले	पारदका निष्कासन डौरूयंत्र द्वारा किया गया ।
३	२४।२।०४	१९६।॥तोले	अमलतासकी फलीकागूदा	२॥छटांक	घीग्वारका रस	॥	तप्तखल्व	८ घंटे			
	२५।२।०४	+	+	+	॥	॥	॥	१२ घंटे	+	+	इस अमलतासमें पारद अंकोलसे अधिक लीन हुआ ।
	२६+२७+२८	+	+	+	॥	॥	॥	+	+	+	विसौली जानेके कारण काम बंद रहा ।
	२९।२।०४	+	अमलतासकी फलीकागूदा	२ छटांक	॥	॥	॥	११ घंटे	+	+	पारदका रूप भलीभांति नष्ट होनेके कारण अमलतासकी फलीका २ छटांक गूदा और डाल दिया गया–तौ पारद कुछ अधिक लय हुआ–१/१६ की जगह १/२ औषधि डालनी योग्य है ।
	१।३।०४	+	+	+	+	+	+	१० घंटे	+	+	एक नोकर बीमार होजानेसे काम कम चला–रसभी अधिक न पडा–औषधिकी मात्रा पूरी थी पारद लीन तो हुआ किन्तु रूप नष्ट नहीं हुआ ।

नंबर. मर्दन.	तारीख.	तोलपारदजो रक्खागया.	नामऔषधिजिनके साथमर्दनकियागया	तोलऔषधि.	नामद्रवजिस केसाथघुटा.	तोलद्रव	खल्व प्रकार.	समय मर्दन.	तोलपारदजो निकला.	तोलपारद जोघटा.	विशेषवार्ता ।
	२।३।०४	+	+	+	+	+	+	+	+	+	धूल यानी होलीकी वजहसे काम बंद रहा ।
	३।३।०४	+	+	+	॥	॥	॥	१० घंटे	+	+	नोकर बीमार होजानेसे काम कम चला ।
	४।३।०४	+	+	+	॥	+	॥	११॥ घंटे	+	+	पारा मिल जरूर गया किन्तु अदृश्य नहीं हुआ जो बड़े भ्राता बाबू हनूमानप्रसाद साहबने कहा कि मैंने जो अंकोलकी जडके काढेमें मर्दन किया था तो पारा मिलकर अदृश्य होगया था ।
	५।३।०४	+	+	+	॥	+	॥	११॥ घंटे	+	+	
	६।३।०४	+	+	+	+	+		३ घंटे	१९५॥तोले	१।तोले	खरलमें स्वतः पृथक् होनेसे शेष रहा पारद डेरू द्वारा पातनकर निकाल लिया जाता था।
४	९।३।०४	१९५तोले	चीतेका चूर्ण	२॥छटांक	घीग्वारकारस		तप्तखल्व	१२ घंटे			पारद दवासे बिलकुल पृथक् रहा रस खूब पडा ।
	१०।३।०४	+	+	+	॥		॥	११ घंटे			पारद पृथक् रहा–रस खूब पडा ।
	११।३।०४	+	+	+	॥		॥	११ घंटे			
	१२।३।०४	७मासे	+	+	॥		॥	११ घंटे			आज जो ७ माशे पारा डाला गया था वह पातनके निकले चूर्णमें निकला था । पारद चीतेमें बिलकुल नहीं मिलता इससे सिद्ध हुआ कि यह कर्म मूर्च्छन नहीहै केवल मर्दन है ।
	१३+१४+१५	+	+	+	॥		॥	३३ घंटे			
	१६।३।०४	+	+	+	+		+	३ घंटे	१९२)॥तोले	३तोले	
५	१८।३।०४	१९२॥तोले	कालेधतूरेकेबीजोंका चूर्ण	२॥छटांक	घीग्वारकारस		तप्त खल्व	८ घंटे			
	१९+२०	+	+	+	॥		॥	२३ घंटे			
	२१।३।०४	+	कालेधतूरेकेबीजोंका चूर्ण	१।छटांक	॥		॥	११॥घंटे			पारद औषधिमें न मिला इसवास्ते आज १। छटाक धतूरबीज चूर्ण और डाल दिया किन्तु तब भी न मिला ।
	२२+२३+२४	+	+	+	॥		॥	३६ घंटे			
	२५।३।०४	+	+	+	+		+	८ घंटे			
	२७।३।०४	+	+	+	+		+	+	१९०।तोले	२।तोले	
६	२७।३।०४	१९१तोला	त्रिफलाचूर्ण	२॥छटांक	घीग्वारकारस	+	तप्तखल्व	२॥ घंटे			
	२८+२९+३०	+	+	+	॥	+	॥	३६ घंटे			
	३१।३।०४	+	त्रिफलाचूर्ण	१।छटांक	॥	+	॥	१२ घंटे			इस त्रिफलाके मर्दनमें पारद बिलकुल पृथक् रहा ।
	१+२+३अप्रेल	+	+	+	॥	+	॥	३६ घंटे			ता० १ आज खरलमें पारद परसे दवा हटानेसे पारद पर सफेद कांचली नजर पडी जब उंगलीसे उस कांचलीको हटाया तो टूट कर ऐसे जुदी होगई जैसे कलईकी नाद रक्खी रहने पर इसके पानीके ऊपर एक कांचलीसी पड जाती है ।
	४।४।०४	+	+	+	+	+	+	३ घंटे			

नंबर मर्दन४	तारीख	तोलपारदजो रक्खागया	नामऔषधिजिनके साथ मर्दनकियागया	तोलऔषधि	नामद्रवजिसके साथघुटा	तोलद्रव	खल्वप्रकार	समयमर्दन	तोलपारदजो निकला	तोलपारा जोघटा	विशेषवार्ता।
	६।४।०४	+	+	+	+	+	+	+	१९२ तोले		गरम कांजीसे धो कपड़ेमें छान तोलने पर भी तोलमें वढा-अवकी दफे कन्हैयालालने कहा कि ५० रुपये आधपाव पारेके गिरधारी लाल वैद्य बनवारीको (जो पारेके काममें अर्थात् घोटने पीसने वालोंमें नोकर था) देते थे–इसलिये पारेमें शुवहा पडा रंगत ठीक रही. कपड़े पर स्याही भी न थी तोलमें थोडा शक पडा और पूंछ पारेमें रहती थी–यह एक बड़े शंकाकी बात थी लेकिन मुमकिन है कि खरलका लोहा मिलजानेसे ऐसा हुआ हो क्योंकि अवकी वार त्रिफलामें खटाईका योग होनेसे लोहका अधिक योग पारेमें आना मुमकिन है ।
७	१०।४।०४	१९२ तोला	त्रिकुटाचूर्ण	२॥ छटांक	घीग्वारका रस	+	तप्तखल्व	१० घंटे			
	११।४।०४	+	+	+	॥	+	॥	१२ घंटे			
	१२+१३+१४ +१५+१६		त्रिकुटाचूर्ण ता. १३ में	१॥ छटांक	॥	+	॥	६० घंटे			
	१९।४।०४	+	+	+	+	+	+	+	१९१तोले	१तोले	त्रिफलामें घुटनेसे पारद पर कांचली सी दीख पडी थी आजकल नहीं दीख पडती इससे खयाल होता है कि त्रिफलामें खटाई होनेसे पारदने लोहेसे अधिक अंश चाटा वही कांचलीरूप दृष्टि पडता था और शायद इसी वजहसे तौल भी वढी हो पर फिर तोला तो अभी तक अधिक है इस लिये अंश लोहका मौजूद है तो कांचली कहां गई (उत्तर) मुमकिन है जो अंश पारदमें लय होगया वह अदृश्य हो गया जो उस समय घोटनेमें नया लोहा खरलसे आता हो वह जब तक पारदमें लीन न होता हो उस समय तक ऊपर दीख पडता हो किन्तु पारदकी तौल वढनेसे लोहका ग्रसित होना सिद्ध होता है लय होना नहीं।
८	१९।४।०४	१९१ तोला	गोखरुका चूर्ण	२॥ छटांक	घीग्वारका रस	+	तप्तखल्व	३ घंटे			
	२०+२१+२२ २३+२४=५दिन	+	+	+	॥	+	॥	६० घंटे			
	२५।४।०४	+	+	+	+	+	+	+	१९१तोले	+	एक वर्तनसे दूसरे बर्तनमें करनेसे पारेमें पूंछ जरूर रहती है अवतक छाननेमें जब २ तोलेके करीव पारा बाकी रह जाता है तव उसके निचोडनेसे उसके सङ्ग कुछ मैल छन कर नीचे पारे पर दीखने लगता है इससे जान पडता है कि पारेका मैल पीछे रह जाता है और शुद्ध पारा पहले छन जाता है अगर पिछले भागको अलग करा दिया जाय तो अच्छा हो ।

ॐ शिवाय नमः ।

नक्शा मूर्च्छन संस्कार–(यो. र., वै. क.) ।

त्र्यूषणत्रिफलावन्ध्याकन्दैः क्षुद्राद्वयान्वितैः । चित्रकेण निशाक्षारकन्यार्ककनकद्रवैः ॥ सूतं किं तेन यूषेण वारान्सप्ताभिमर्दयेत् ॥

नं०	तारीख	तोलपारद जोरक्खागया	नामऔषधिजिनके साथघोटा गया	तोलऔषधि	नामद्रवजिसके साथघुटा	तोलद्रव	खल्व प्रकार	समयमर्दन	तोलपारद जोनिकला	तोलपारद जोघटा	विशेष वार्ता.
१			त्रिकुटा–त्रिफला कटेरी–चीता–हल्दी यवक्षार	प्रत्येक१॥छ० सब७॥छ० १ तोले	त्रिकुटा–त्रिफला–कटेरीचीता–हल्दी का क्वाथ	ऽ॥।					त्रिकुटा आदि औषधियोंका काढा चतुर्थावशेष अर्थात् ३ सेर पानीका ऽ॥। आज तय्यार कर लिया गया किन्तु आज काममें नहीं आया।
	२७।४।०४	१९१ तोले			(घी ग्वारका) अर्कपत्रकाधतूरे काकटेरीकारस	प्रत्येक१छ. सबऽ।	शीतखल्व	८घण्टे			पहले उक्त पारदको १ छ० धतूरेके रसमें २ घण्टे घोटा गया तो बिन्दु पृथक् २ होगये फिर आकके पत्तोंका रस डाला गया तो पारा इकट्ठा होगया इसमें भी ३ घण्टे घुटा फिर कटेरीका रस डाला गया तो इसमें फिर बिंदु पृथक् २ होगये इसमें भी ३ घण्टे घुटा घीग्वारके रसमें आज न घुटा ।
	२८।४।०४	॥	यवक्षार	१ तोले	उपरोक्तक्वाथ		शीत तप्तखल्व	१२घण्टे			आज उपरोक्त काढेके साथ ६ घण्टे शीतखल्वमें और ६ घण्टे तप्तखल्वमें घुटा पारा काढेसे पृथक् रहा ३ बजे पर १ तोले जवाखार भी डाला गया ।
	२९।४।०४	॥			(घीग्वारका) कटेरीका रस	+		१२घण्टे			पारद पृथक् रहा चिन्ता हुई कि मूर्च्छन कैसे हो।
	३०।४।०४		+	+							काम वन्द रहा मूर्च्छनके लिये काढा और बनाया गया।
	१।५।०४	॥	+	+	+	+	+	+	१९७तोले	४ तोले १ सफूफमें मिला रहगया	४ तो० पारा सफूफमें मिला रह गया उस सफूफको अलग रख दिया ।
११२	[illegible]।५।०४	४०तोले	भेडकेऊनकी राख	१। तोले	क्वाथ	+	+	+	+		यह क्वाथ उपरोक्त औषधियोंका इस प्रकार तय्यार किया गया कि पौन पौन छटाक त्रिकुटा त्रिफला चीता हल्दी इनका चूर्ण यानी सब मिलाकर ३ छ० चूर्णको ऽ॥। घीग्वारके रस ऽ॥ सेर आकके पत्तोंका रस ऽ।= कटेरीके रस और ऽ= काले धतूरेके रस अर्थात् सब ऽ१॥। सेर रसमें रात भर भिगो दूसरे दिन पहर भर आंच दी गई और औटतेमें १ छ० आककी जडकी छालकी लुगदी और १ छ० धतूरेके पत्तोंकी लुगदी और २ तोले जवाखार भी डाला गया गाढी कढीसी होजाने पर उतार लिया गया। इस क्वाथमें १। तोले भेडके ऊनकी राख डाली गई रवे रवे होकर पारा मिल गया।
	२।५।०४	२०तोले	+	+	धीग्वारका रस आकका दूध	+	शीतखल्व	१२घण्टे	+		ता० २ [illegible] खरलका बदस्तूर मिला हुआ था उसमें पाव भर पारा और डाला गया तो ६ घण्टेमें वह भी वैसाही मिल गया ।

	३।५।०४	।	+	+	उक्तक्वाथ+ घीग्वारकारस	+	शीतखल्व	१२घण्टे		अरूरत पर यानी ज्यादा गाढा होने पर काढा जो रक्खा था उसमें आकका दूध मिला कर ३-४ वार डाला गाढा २ कढीसा घोटा गया अब पारा सब मिल गया यहां तक कि बहुत गौरसे देखनेसे यह जान पडता है कि दवामें पारेके वारीक २ रवे मौजूद हैं।
	४।५।०४	+	।	+	उक्तक्वाथ	+	॥	१२घण्टे	+	आज सिरफ १ दफे सवेरे बचा हुआ क्वाथ डाला गया पारद आज वास्तवमें लीन होगया यहां तक कि अब गौर करनेसे भी पारा नहीं दीखता हां, कहीं २ शुवहा पडता है कि पारेके बहुत सूक्ष्म अणु हैं बस यही मूर्छन कहा जा सकता है जय श्रीशङ्कर स्वामीकी।
	५।५।०४	+	+	+	+	+	॥	४ घण्टे	२०तोले २ } ४०तोले सफूफमें मिलारहा	**अनुभव**-मूर्छनके लिये पारदसे चतुर्थांश औषधिके प्रयोगकी आवश्यकता है वह भी काढा कर डाली जावे और काढेसे केवल जल न लिया जावे किन्तु सब औषधी विना छाने डाल दी जावें इस खरलमें जिसका आकार पहले लिख चुके हैं ३ पाव पारा और ३ छटांक औषधिका क्वाथही एक दफे घुट सकता है मूर्छनके लिये लसदार औषधिकी आवश्यकता है आकका रस कम पडना चाहिये उसमें लस भी नहीं है और वह पारदको वखेरता भी नहीं है दूध डाला जाय तो और भी अच्छा।
११३	६।५।०४	८०तोले	+	+	क्वाथ	+	शीतखल्व	२ घण्टे	+	यह क्वाथ इस प्रकार तय्यार किया गया त्रिफला त्रिकुटा चीता, हल्दीका चूर्ण १२ तोले कटेरीकी जड सूखी २॥ तोले आककी जडकी लुगदी १ छ० धतूरेके पत्तोंकी लुगदी आधपाव इनको धतूरेका रस ऽ= कटेरीका रस ऽ।= आकका रस ऽ॥ में भिगो दिया दूसरे दिन उन भीगी हुई दवाओंमें कटेरीके फलकी लुगदी २॥ तोले धतूरके बीज सूखे पिसे हुए २॥ तोले घीग्वारका रस ऽ॥। आकका रस ऽ।= और डालकर २ घण्टे औटाया गया।
	७।५।०४	+	मूलीखार	१तोले	घीग्वारकारस	+	शीतखल्व	१२घण्टे	+	आज ९ वजे तक सब पारा दवामें मिल गया था और शाम तक पारेके रवे वारीक हो गये थे आज ४॥ वजे इसमें (जवाखार न मिलनेकी वजहसे) १ तोला मूलीका क्षार डाला गया।
	८।५।०४	४५तोले	+	+	॥	+	॥	१२घण्टे	+	आज खरलमें जो ९ छ० पारा बचा हुआ था डाल दिया गया इस खयालसे कि थोडेसेके लिये और घान डालना पड़ेगा और डालनेसे यह तजरुबा भी हो जायगा कि एक दफेमें कितना मूर्छन इस खरलमें हो सकता है आज ३ घण्टे घुटने पर पारा खरलमें मिल गया शाम तक पारदके रवे वारीक होगये आज पारदके रवे इतने वारीक होगये थे कि गौरके वाद दीखते थे।
	९।५।०४	+	+	+	॥	+	॥	१२घण्टे	+	अव पारद दृष्टि नहीं पडता।
	१०।५।०४	+	+	+	॥	+	॥	१२घण्टे	+	ता० ११+१२ को पारदको थोडा तप्त खल्वमें घोट खुश्क कर दवाके टुकडे विखरने माफिक होजाने पर घोट पहले दिन८॥छ० और दूसरे दिन ६छ. पारा निकला वाकी चूर्णमें मिला रहगया।
	११+१२।४	+	+	+	+	+	+	+	१४॥छ० ३ } ५२॥तोले सफूफमेंरहा	**अनुभव**-विलकुल सुखा कर घोटनेसे पहले जब दवा विखरनें लायक खुश्क हो जावे तब पारा घोट कर जुदा लेना मुनासिब जान पडता है पीछे सुखाकर फिर निकाले।

पारदसंस्कार पुनः आरम्भ।

३१।१०।०४–पारदसंस्कार जो रामेश्वरानंदजी वैद्य मुम्बईके आनेसे और चन्द्रोदय और गंधक जारणके अनुभव प्रयोग करनेसे बंद होगया था पुनः आरम्भ हुआ। पारदका मकोयमें मर्दन आजतक कभी नहीं हुआ था और मकोयमें मर्दन करना ध० सं० साधारण शोधन क्रिया सप्त सागरसे अवश्य जान पडा।

३१।१०–इसलिये आज पारदको तप्त खरलमें मकोयके रससे घोटा गया पारद २ सेर ३ छटांक था॥) भर तोल पहले लिखेसे कम बैठी गालिबन यह सन्दूकके उठानेसे पारा सन्दूकमें गिर गया)।

१।११–आज भी पारद तप्तखरलमें मकोयरससे घुटा।

२।११–आज भी गाढा होजानेपर २ सेर $\frac{1}{2}$ छटांक पारा पृथक् होगया।

३।११–आज खरलको धूपमें सुखाया गया तो १॥ छटांक पारा और निकला बाकी सफूफ ३॥ छटांक रहा जिसमें १ छटांक पारा है पर यह पारा भी मूर्छित न था बारीक बारीक रवेथे जो संग्रह नहीं होसकते।

४।११–३॥ छटांक उपरोक्त चूर्णको डौरूमें बंद कर दिया।

५।११–सवेरे ८ बजेसे आंच दीगई ९ बजेतक तो २॥ तोले पारा निकला। पर आंच मंदी दीगई इसलिये गालिबन कुछ पारा रह गया टिकिया बाकी कुछ सख्त थी इससे भी पारेका रहजाना सावित होताहै सब पारा २ सेर ३ छटांकसे कुछ कम था।

पातन[1] संस्कार।

(अष्टसंस्काराध्यायके श्लोक २१५ से २१७ श्लोकतककी क्रियासे)

हरिद्रांकोलशंपाककुमारीत्रिफलाग्निभिः।
तण्डुलीयकवर्षाभूहिंगुसैंधवमाक्षिकैः॥
(रसरत्नसमुच्चय)

हल्दी, अंकोलकी जडकी छालकी लुगदी, अमलतासका गूदा, हरड, बहेडा, आंवला, चीता, चौलाईकी लुगदी, सांठकी लुगदी, हींग सब समान भाग सूखी चीजोंको कपरछानकर गोली चीजोंकी लुगदी बना, घीग्वारका रस डाल तप्तखरलमें घोटा गया सब पारा २ सेर ३ छटांक डाला गया। ३ दिन तक तप्तखरलमें पारा घुटता रहा घीग्वार रस पडता रहा मगर पारा जुदा ही रहा।

११।११ को पारा लाचार जुदा कर लिया गया तो२ सेर जुदा निकल आया बाकीको तप्तखरलमें घोटा गया तो गाढा होनेपर जो ३ छटांक पारा खरलमें मोटे २ रवोंमें था वह खरलकी दवामें मिल गया तब तो और ३ छटांक पारा फिर डाला गया वह भी मिलगया ३ छटांक और डाला गया फिर ३ छटांक पारा तप्तखल्वमें डाला गया यह भी मिलगया अब १५ छटांक पारा दवामें मिला हुआहै रवे भी बहुत बारीक हैं।

अनुभव।

मूर्च्छनके लिये आवश्यकता है कि दवा बारीक हो और किसी ल्हसदार चीजके साथ औटाई जाकर या घुटकर उनमें कुछ लस पैदा होगया हो, और खूब गाढी हो जो पारेको बखेर सके अबकी मरतबे गाढा गाढा घोटा गया था पर खूब गाढा जबतक न हुआ कुछ नतीजा न निकला यह भी जरूरी है कि पारा थोडा थाडा कई दफेमें डाला जावे।

१३।११ आज दिनभर तप्तखरलमें पारेको घोटा गया रवे बारीक खूब होगये पर अदृष्ट नहीं कह सकते रस घीग्वार भी डाला गया।

१४।११ आज रस डालना बंद रक्खा गया दोपहर तक तप्तखरलमें घुटा फिर ज्यादा गाढा होजानेसे पारेके रवे इकट्ठे होने लगे लाचार घोटना बंद कर धूपमें सुखाया गया धूप आज कम थी।

१५।११ बराबर धूपमें सूखा धूप बहुत कम रही।

१६।११ आजभी सूखा धूप कुछ लगी।

१७।११ आज दवा करीब २ सूख गई मंगोडी सी तोड़ ली गई थीं पारेके रवे चमकते थे १४ तोले पारा जुदा होकर खरलके नीचे था उसको जुदा रख लिया गया बाकी दवा १। सेर हुई उसमेंसे आधी यानी १० छटांक डौरूमें बंद कर दी गई (कुल १५ छटांक पारा दवामें था अब १२ छटांक १ तोला होगा)

१८। ११ आज डौरूको ३ छटांककी आंच दीगई और आधी बची हुई दवाको दूसरे डौरूमें बंद कर दिया गया।

१९। ११ आज दूसरे डौरूको आंच दी गई ३ प्रहर और पहला डौरू खोला गया तौ ३॥ छटांक पारा और २ छटांक दवा निकली।

२०। ११ आज दूसरा डौरू खोला गया तो ४ छटांक पारा और २ छटांक दवा निकली दोनों दफेका पारा ७छटांक २ रुपये भर है और दोनों दफेकी दवा २१ तोले है आज उक्त २१ तोले दवाको और पहले ५। ११ की राखको जिसमें कुछ पारा रह गया था और जो ७ तोले थी सबको मिलाकर डौरूमें बंद कर दिया गया।

२१। ११ आज डौरूको आंच दी गई ३ प्रहरकी।

२२।११ आज डौरूसे३) भर पारा निकला,कुल पारा उडा हुआ ७ छटांक २) भर + ३) भर= ८ छटांक है और विना उड़ा १ + ६ छ० है यानी कुल पारा १॥।= सेर है ५ छटांक घटा जिसमें १ छटांक छीजन हो तौ भी ४ छटांक चोरी गया।

अर्थात् ५ छटांक पारा चोरी गया (गालिबन चोरी गया या कदाचित्)

अबकी बार कंडेकी आँचसे खरल तप्त किया गया था इस कारणसे किसी समयमें अग्नि अधिक लग जानेसे पारा उड गया।

आगेके लिये इंतजाम।

(१) शास्त्रोक्त विधिसे विरुद्ध जहांतक हो न चलो तुषाग्निकी जगह कंडे देनेसे नुकसान हुआ।
(२) अब पारद थोडा रह गयाहै. आगे कर्म बहुत सावधानीसे और खुद अपनी निगरानीमें कराओ।
(३) पारेको हर समय तालेमें बंद रक्खो और ताली अपने पास रक्खो।
(४) पारेको धूपमें सुखानेके लिये शीशेके संदूकमें बंद करके रक्खो।

[1] पातन संस्कारके पूर्व, उत्थापनसंस्कारके लिखनेकी आवश्यकता थी परन्तु प्रत्येक मूर्च्छनसंस्कारके साथ उत्थापन होनेसे पृथक् नहीं लिखा गया।

(५) पारेकी हांडी रातको चूल्हेही पर रक्खी रहे तो वहां एक आदमी हिफाजतके लिये सोवे ।

2nd Part.

२५।११ हल्दी १/२ छटांक-अंकोल १/२ छटांक-अमलतास १ छ०-हर्ड १/२ छ०-बहेडा १/२ छ०-आँवला १/२ छ०-चीता १/४ छ०=सांठकी लुगदी १ छ०-हींग १/२ छ०-सैंधानोंन १/२ छ०-शहद १ छटांक-चौलाईका रस ३ छटांक-घीग्वारका रस १६ छटांक सबको मिलाकर औटाया गया-गाढा होने पर उतार लिया गया-गाढा माजूनसा होगया ।

२६।११ आज उपरोक्त औषधको खरलमें डाल ६ छटांक पारा डाला गया-और एक ही नोंकर होनेसे केवल ५ घंटे घुटा-पारा डालते समय थोडा थोडा डाला गया और आध घंटेमें दवामें मिलगया-शाम तक रवे बारीक होगये-आज आवश्यकता पर थोडा २ घीग्वारका रसभी डाला गया-पारा मिलजानेके बाद भूसे और मेंगनीसे खरल तप्त भी किया गया ।

२७।११ आज भी तप्त खरलमें रस डाल डाल कर ६ घंटे पारा घुटा । (२८।११ +)

२९।११ आज दो नोकर (एक नत्था नोकर और रखा गया) होजानेसे पारा ९ घंटे तप्त खल्वमें ।

३०।११ आज दोपहर तक तप्त खरलमें घोट गाढा होजाने पर खरलमें ज्यादे खुश्क न कर खरलमें दो पहरसे धूपमें रख दिया गया ।

१।१२ आज दिनभर खरल धूपमें सूखा ।

२।१२ आज १० बजे तक धूपमें खरल सूखा-फिर दवा खरलसे चीनीके बर्तनमें निकाल ली गई खरल खूब खुरच लिया दो पहर बाद दवा चीनीके बर्तनमें सूखी ।

३।१२ आज भी दवा सूखी अब खुश्क होगई ।

४।१२ आज इस दवामेंसे १।=भर पारा जो जुदा होगया था निकाल कर बडे पारदके समूहमें डाल दिया गया, बाकी दवाको हांडीमें भर अपने सामने कपरौटी करादी गई ।

५।१२ आज डौरूको ८ बजेसे ६ बजे तक आंच दी गई।

६।१२ सबेरे डौरू अपने सामने उतारा और खोला जोडपर कपरौटी ज्यादे चौडी पट्टीकी करदेनेसे फूल गई थी एक तरफ अन्दर खोलते समय हांडीकी संधि भी एक तरफसे खाली निकली उसमेंसे कुछ पारा कपरौटीकी पट्टीपर आगया था पर ज्याद: उडा नहीं मालूम पडा नीचेकी हाँडीमें बिलकुल पारा नहीं निकला (पहले दोनों दफे पारा कुछ नीचेकी हांडीमें भी मिलता था जो ऊपरसे गिरजाता होगा अबके सम्हाल कर देखनेसे नहीं गिरा) दवा २ छटांक निकली ऊपरकी हांडीमें ५॥ छटांक पारा निकला १।= भर पहिले खरलमेंसे निकल आयाथा केवल १= भर पारा कम बैठा दवामें थोडी चमक अभी है शायद थोडा पारा इसमें हो।

८।१२ और ११-१२ इस राखको और 1st part की राखको मिला नींबूके रसमें घोट सुख डौरूमें बंद कर३प्रहरकी आंच दी गई तो नाममात्रको भी पारा डौरू खोलने पर न निकला इससे सिद्ध हुआ कि इन राखोंसे कुछ पारा नहीं रहा।

3rd Part

१ । १२-हल्दी १/२ छटांक, अंकोल १/२ छटांक, अमलतास १/२ छटांक, हर्ड १/२ छटांक, बहेडा १/२ छटांक, आँवला १/२ छटांक, चीता १/४ छटांक, सांठकी लुगदी १ छटांक, हींग १/२ छ०, सैंधव १/२ छ०,-शहद १ छ०, चौलाईका रस ५ छ०, घीग्वारका रस १६ छ०, सबको भिगो दिया गया ।

२ । १२ आज इसको औटाया गया खूब गाढा माजून कढीसी होजानेपर उतार लिया गया दोपहर बाद दवाको खरलमें डाल १ घंटे खूब घोटा गया ।

३ । १२ आज औषधको तप्तखरलमें डाल १ घंटा घोट ६ छटांक पारा डाला गया थोडा २ पहले तो कुछ मिला फिर जुदा होगया यह खयाल कर कि दवा गाढी है घीग्वारका रस और डाला गया तोभी कुछ नतीजा न निकला लाचार पारा जुदा कर लिया गया मगर जो थोडा बाकी रहा वह भी न मिला ।

४ । १२ आज दोपहर तक ठंढे खरलमें पारद घोटा गया परन्तु कुछ नतीजा न हुआ फिर धतूरेके पत्तोंका रस डाल (१० तोले और कुछ लुगदी भी) घोटनेसे कुछ पारा मिल गया ।

५ । १२ कामबंद (दूसरे काम डौरूमें रहे)

६।१२आज फिर जो पारा निकाला था वह डालकर और धतूरेका रस डाल ठंढे खरलमें ३ घंटे पारा घोटा गया पारा मिलगया पर रवे मोटे रहे।

७।१२-आज ८ बजेसे ५ बजे तक पाराघुटा पहले तप्त खरलमें घुटना शुरू हुआ तो १० बजेतक पारेके रवे इकट्ठे होकर आधेसे अधिक पारा जुदा होगया- दवा ज्याद: गाढ़ी नहीं हुई सिर्फ तप्त खरलकी गरमीसे ही जुदा होगया फिर खरल ठंढा कर घोटा गया तो पारा मिलगया २ ब जे तक । ५ बजे देखा तौ रवे खूब मिल गये ।

अनुभव ।

2nd part में पारा जल्दी मिला था और उस समय भी शीत खल्वमें आदिमें पारा डाला गया था इस बार गर्म खल्वमें पारा डाला गया पर कुछ थोड़ा मिलकर फिर जुदा होगया और आज तो साफ़ ही जाहिर हुआ कि गर्म खरलमें मिला हुआ पारा भी छुटकर पृथक् होगया और ठंढे खरलमें छुटा हुआ मिलगया इसलिये मूर्छन शीत खरलहीमें होना चाहिये । और शास्त्रकारोंने भी लिखाहै कि तप्तखल्व द्वारा उत्थापन करै इससे भी यही बात सिद्ध होतीहै ।

८।१२ आज८बजेसे५बजे तक शीत खरलमें पारा घुटा आज अदृष्ट होगया रवे बहुतही बारीक होगये ।

९।१२ आज खरल धूपमें सुखाया गया ।

१०।१२+०

११।१२+०

१२।१२+०

१०।१२ ता० में बची हुई राखका डौरू किया गया था उसकी संधि कपरौटोसे पहले मुलतानीसे बंद करदी गई थी वह बहुत ठीक रही-आगे हमेशह कपरौटीसे पहले संधि मुलतानीसे बंद हो और कपरौटीकी पट्टी बहुत चौडी न हो ।

१३।१२ आज शाम तक सुखाकर दवाको डौरूमें भर मुलतानीसे संधि बंद कर कपरौटी अपने सामने करा दी।॥) भर पारा दवामेंसे छुट गया वह पृथक् कर लिया गया ।

१४।१२आज डौरूको ४ प्रहरकी आंच दीगई ।

१५।१२ आज डौरू खोला गया तो खोलतेमें मालूम हुआ कि हांडियोंकी संधिके बीच पारेके रवे मौजूद थे और कुछ रवे कपरौटी पर आगये थे । पारा तोला गया तौ ४ छटांक ३) भर हुआ डाला गया था ६छटांक पहले खरलमेंसे छुट गया था ।।।) भर यानी ३० भरमेंसे २३।।। भर हुआ ६।)भर घट गया अफसोस अवश्य हण्डियोंका जोड़ न मिलनेसे यह नुकसान हुआ । और मुमकिन है कि 1st part क नुकसानकी भी वजह यही हो । जोड हाँडियोंके बहुत साफ कराकर खुद अपने हाथसे मिलाओ वरन काम बंद रक्खो ।

4th Part

१३।१२हल्दी $\frac{?}{२}$ छटांक, अंकोल $\frac{१}{२}$ छटांक,अमलतास $\frac{१}{२}$ छ०,हरड $\frac{१}{२}$ छ०,बहेडा $\frac{१}{२}$ छ,०आंवला $\frac{१}{२}$ छ०,हींग $\frac{१}{२}$ छ०, सैंधव $\frac{१}{२}$ छटांक, घीग्वारका रस १ सेर, चौलाईका रस ४ छटांक, सांठके पत्तोंकी लुगदी १ छ०. शहद १ छटांक शामको सबको मिला रख दिया गया ।

१४।१२ आज दवा औटाई गई दोपहर तक और दोपहर बाद खरलमें डाल घोटी गई ।

१५।१२ आज दोपहरसे पारा डाला गया २७॥ तोले= ५॥ छटांक- और शीत खरलमें घुटा ।

१६।१२ आज शीत खरलमें ९ घंटे पारद घुटा पर मिला नहीं । ७।१२को जो यह निर्णय किया था कि शीत खरलमें पारा मिल जाताहै आज गलत साबित हुआ ।

१७।१२ आज धतूरेके पत्तोंका रस एक छटांक डाल पारा घोटा गया तो तीसरे पहर तक $\frac{३}{४}$ मिलगया, तीसरे पहर थोडी ही छटांक भरके क़रीब धतूरेके पत्तोंकी लुगदी भी डाली गई शामतक सब पारा मिलगया कोई तोले भर रह गया ।

१८।१२आज सबेरे फिर शीत खरलमें पारा घुटना आरम्भ हुआ घंटे भरमें पारा फिर जुदा होगया (वास्तवमें मूर्छनकी क्रिया अभी समझमें नहीं आई) फिर धतूरेके पत्तोंका रस डालना आरम्भ किया पर कुछ फल न निकला।शामतक घुटा।

१९ । १२ आज फिर सबेरेसे शामतक पारा तप्त खरलमें घोटा और अमलतासको घीग्वारके रसमें घोलकर डाला पर कुछ नतीजा नहीं हुआ । आज९घंटे घुटा ।

२०।१२ आज थोड़ी देर घोटनेके बाद लाचार हो पारा जुदा कर लिया गया २४॥ रुपये भर हुआ बाकी दवाको खरल समेत धूपमें रख दिया गया ।

२१।१२ आज खरल धूपमें सूखा ।

२२।१२+०आज खरलमेंसे दवा निकाल ताशमें सुखा दी २३+२४+२५+२६++०+०

२७।२८+२९+३०–को मथुरा चले जानेके कारण काम बंद रहा ।

३१।१२आज दवाको डौरूमें बंद किया इस समय१) भर पारा पृथक् हुआ निकला । २४।।) भर पहले निकला था कुल २५।।) भर निकल आया–२) भर बाकी रहा कपरौटी अपने हाथसे की ।

१।१ आज डौरूको आंच पर चढाया गया । घण्टे भर आंच लगनेके बाद जाकर देखा तो दवाकी बू हांडीसे तेज निकल रही थी ।:शुबहा होनेसे गौर किया तो हांडीके जोड पर कपरौटी पसीज रही थी और गौर किया तो मालूम हुआ कि एक तरफ कपरौटी फूलभी आई थी दराज खुली जान हांडी उतार ली गई ।

अनुभव ।

कपरौटी खूब उमदा उमदा घुली हुई मुलतानी शीरा पडी हुईसे अपने हाथसे की थी फिर भी दर्ज खुल गई कारण इसका यह जान पडता है कि जाडेका मौसम होनेसे कपरौटी रातमें सूखती नहीं गीली रहनेसे चूल्हेपर भापके जोरसे खुल जातीहै, पस आगेसे कपरौटी खूब सूख जाने पर आंच दी जावे । गालिबन इसी नुक्सकी वजहसे दराज खुलकर पारा निकल जाताहै और चोरीका शुबहा होता है ।

१ । १ आज शामको फिर अपने सामने कपरौटी करा दी ता० ३+३ को कपरौटी बादल होनेकी वजहसे सूखती ही रही ।

४ । १ को ८ बजेसे ६ बजेतक आंच दी ।

५ । १ को खोला गया तो १) भर पारा निकला २५।।) भर पहले निकला था । सब २६।।) भर हुआ ?) भर छीज गया ।

5th part

२२ । १२ हल्दी, अंकोल,अमलतास,हर्ड, बहेडा,आंवला, चीता, हींग, सैंधव आधी आधी छटांक, घीग्वारका रस १२ छटांक, चौलाईका रस ४छटांक, सौंठकी लुगदी१ छटांकको आज ४बजे शामको मिलाया गया गाढा कढीसा हुआ फिर हांडीमें भरकर १० कंडोंके दहरे पर जब आंच लग गई १ घंटा औटा कर उतार लिया गया गाढी माजूमसी होगई ।

२३ । १२ आज सबेरे ८ बजे दवा हांडीसे निकाल ठंढे खरलमें डाल पाव घंटे घोट उसमें आधी छटांक शुद्ध सोनामक्खी डाल ५ मिनट घोटकर उसमें ४९ तोले पारा थोडा २ कर डाला गया १५ मिनटमें सब पारा मिलगया।। जय शंकर जय शंकर जय । शंकर ।।

अनुभव ।

इतना शीघ्र मिलनेका कारण ।

(१) शहदका न पडना जिससे दवा चिकनी होजाती है।

(२) सोनामक्खीका पडना ।

(३) सूक्ष्म कारण दवामें रसका बहुत न पडकर वाजिबी पडना जिससे दवा बहुत न फूलकर बेअसर न हुई ।

(४) दवाका पारेसे पेश्तर खरलमें बहुत न घुटकर बहुत चिपटा नहीं जाना ।

आज ९ बजेसे ५ बजेतक (बीचमें २ घंटेकी छुट्टी) ६ घंटे तक पारा शीत खरलमें घुटा घीग्वारका रस भी पडा ।

२४ । १२ आज घीग्वारका रस डाल डाल ८ बजेसे ५ बजेतक ९ घंटे पारा निरंतर तप्तखरलमें घुटा रवे बारीक हो गये हैं । (२५ । १२ +० +०)

२६ । १२ +० +० रवे बहुत बारीक होगये ।

२७ । १२ आज दोपहर तक विना रस तप्त खरलमें घोट छोड दिया ।

२८ । २९ । ३० मथुरा जानेसे ३० तारीख तक काम बंद रहा घरमें खरल सूखता रहा ।

३१ । १२ खरल धूपमें सूखा ।

१ । १+२ ।१बादल होनेसे धूप नहीं निकली।

३+४+५+६+७ खरल धूपमें सुखाया गया ।

८ । १ आज दवाको हांडीमें जो सबसे बडी थी भरा गया (भरते समय १ छटांक पारा जुदा होगया यानी ४४ तोले पारा दवामें है) हांडी खूब घिसली थी मगर फिर भी गौरसे देखनेसे जान पडा कि संधि खुली है उस संधिको "स्नुह्यर्कसंभवं क्षीरं ब्रह्मबीजं च गुग्गुलः । सैंधवं द्विगुणं मर्द्य निगडोयं महत्तमः ॥" इस निगडसे बंद कर और एक पट्टी भी इसी निगडसे चढा रख दिया ।

९ । १ आज हांडीकी संधि पर ४ पट्टी मुलतानीकी जिसमें मैदाकी लेंही मिली हुई थी गजीके नये कपडेसे चढाई गई २ दफे में और डौरू सुखाया गया ।

१० । १ आज भी डौरू सूखता रहा ।

११ । १ आज डौरूको नई भट्टी पर ४ पहरकी आंच दी गई ।

१२ । १ डौरू खोला गया तो ऊपरकी हांडीमें ३॥ छटांक और नीचे हांडीमें जो ऊपरकी हांडी होमेंसे गिर पडा था ३ छटांक सब ६॥ छटांक३२॥ रुपये भर पारा निकला था. ४४ भर यानी ११॥) भर पारा और बाकी रहा ।

अनुभव ।

अबकी बार जो वज्रमुद्रा की उसमें कोई बडा लाभ नहीं हुआ क्योंकि हांडीखोलने पर मालूम हुआ कि वज्रमुद्रा जलकर हांडीकी संधि खुलकर पारा कपडेकी पट्टीको तोडकर दूसरी तहतक आगया था किन्तु मुलतानीकी मजबूत पट्टीने पारेको आगे जानेसे रोक दिया था । जो दवा बची थी उसको और दो दफेकी पहली राखको आज हांडीमें भर ४ कपरौटीसे बंदकर दिया गया कपरौटो मजबूत गजीसे लेंही पडी मुलतानीसे दो दफेमें करी गई ।

१३ । १ आज हांडीको ३ पहर आंच दी गई ।

१४ । १ डौरू खोला गया तो दराज खूब बंद निकली वज्रमुद्राकी दराजसे यह दराज अच्छी रही पारा २॥) भर +१ पैसे भर निकला ।

पारा डाला गया था ९ छटांक ४) भर-और निकला (६॥ छटांक+$\frac{3}{2}$ छ०+१ पैसे भर)=७ छटांक+॥) भर= अर्थात्१ छ० ३॥) भर घटा-इतने पारे घटनेका स्पष्ट कारण नहीं जान पडता ।

पातनके ५ भागोंका नकशा ।

तारीख	तोलपारदजो डाला गया		तोलपारदजो जुदा होगया		तोलपारदजो उडकर निक.		तोल पारद जो घटा		कैबारमें उडा	विशेष वार्ता ।
	छ.	तो.	छ.	तो.	छ.	तो.	छ.	तो.		
	१५	४	२	४	८		५		तीनबार	अवश्य संधि खराब होनेसे निकल गया चोरीकाभी शुबहा हुआ ।
	छ.६	०	०	१॥)	५	२॥)	०	१)	एकबार	
	६	०	०	।॥)	४	३)	१	१।)	एकबार	फिर यह नुकसान ढीला कपरौटीसे ही हुआ या चोरी मुमकिन है ।
	५	२॥)	५	॥)	०	१)	०	१)	एकवार	अबकी बार मूर्छन न हुआ था यह खराबी पडी ।
	९	४)	१	०	७	॥)	१	३॥)	दोबार	अबकी बार इतना नुकसान होनेकी वजह न मालूम हुई ।

मीजानसे
छ. तो.
१-९--२
+०-१-।) पीछेसे पातित
१-१०-२।)

बाकी रस विना उडा १ छ. १) तोले=पीछे यह भी पातित होकर ५।) भर रह गया ।

नतीजा पातनकी प्रथम क्रियाका ।

१ सेर १० छ० २। भर पारा पातित है और १ छ० १ तोले पारा विना पातित है इस पातनमें ८ छ०+२) भर घट गया यह घटी बहुत ज्याद: हुई और या तो इसमेंसे कुछ चोरी हुआ या हांडीकी संधिमेंसे निकल गया या तप्तखल्वमेंसे उडगया ।

१७ । १ आज उक्त १ सेर १० छटांक २।) भर पारेको अम्ल मठेसे धो डाला गया (पीछे तजरुबेसे मालूम हुआ कि तेज आंच लगजानेसे यह पारा नुकसान हुआ)

९ । २ हल्दी, अंकोल आदि पाव पाव छटांक चीजोंको आधपाव रस चौलाई और डेढ पाव रस घीग्वारमें डाल औटाकर हमेशाके नियमानुसार शीत खल्वमें घोट ६) भर अपातित पारद ३ बजे डाला गया तो मुशकिलसे घंटे भरमें मिला वजह यह हुई कि सोनामक्खी डालना भूल गये थे ४॥ बजे पाव छटांक मक्खी डाली गई तो फौरन ठीक मिल गया ।

१० । २ आज दोपहर तक शीत खरलमें घुटता रहा गाढा होजाने पर दो पहर बाद सुखा दिया गया चीनीके बर्तनमें खूब अच्छा र्च्छन होगया । दवा अधिक और पारा न्यून होने पूर्ण मूर्च्छन हुआ ।

११ । २ और १२ । २ दोदिन सूखने पर खूब खुश्क होगया ।

१३ । २ आज दवाको जिसने पारा बिलकुल नहीं छोडा था हांडीमें भर जोडके ऊपर खरियासे खूब संधि बंद कर एक पट्टी गजीकी और दूसरी मारकीनकी चढाई गई ।

१४+१५+१६ दो कपरौटी जोड पर और कर सुखा-
१७ । २ को ३ प्रहरकी आंच दी गई ।

१८ । २ आज खोला गया तो पारा जोड पर नहीं था. बल्कि ऊपर हाँडीके पेंदे पर था कारण यह मालूम होताहै कि अबकी दफे गोबरके बीचमें जगह ज्याद: रख कर पानीकी तराई खूब रक्खी गई लेकिन हांडी खोलने पर गीली निकली इसलिये धूपसे दोपहर तक सुखाकर पारा निकाला गया तोलमें ५।) भर हुआ। अबकी बार छीजन कम हुई जिससे सिद्ध है कि हांडीकी संधि और तप्त खरलसेही पारा उडताह ।

दूसरा पातन । 1st part

१६ । १ । १९०५–हल्दी, अंकोलके जडकी छाल, अमलतासका गूदा, हर्ड, बहेडा, आंवला, चीता सब आधी आधी छटांक, घीग्वारका रस तीन पाव, चौलाईका रस पावभर, सांठके पत्तोंकी लुगदी १ छटांक, हींग ½ छटांक, सैंधानोंन ½ छटांक सबको मिलाकर कण्डोंकी आंचपर औटाकर गाढा माजूनसा औटानेपर उतार लिया गया ।

१७ । १ आज १० बजे इस दवाको खरलमें डालकर इसमें ½ छटांक शुद्ध सोनामक्खी डालकर आध घंटे घोटा गया बादको इसमें ८ छटांक पातित पारा थोडा २ डाला गया जो ½ घंटेमें मिलगया दो पहरसे खरलके नीचे तुषाग्नि भी दी गई शामतक पारेका मर्दन हुआ ।

१८ । १ आज ८ बजेसे ५ बजे शामतक पारद तप्त खरलमें घीग्वारका रस डाल २, ३ प्रहर घोटागया ।

१९ । १ आज ७ घंटे पारद तप्त खरलमें घुटा रस घीग्वार डालकर शामको खरल कुछ ज्याद: तेज होगया था।

२० । १ आजभी ६ घंटे पारद तप्त खरलमें घुटा रस घीग्वार डालकर पारा मूर्च्छन होगया ।

२१ । १ आज रस विना डाले तप्त खरलमें पारद घुटा ३ घंटे फिर शीशेके बकसमें बंदकर धूपमें सूखा धूप कम थी ।

२२ । २३ । १ धूपमें सूखा पर धूप कम थी या न थी शीशेके बकसमें बंद सूखा बहुत सी भाप उड उडकर शीशे पर पानी बनजाती थी वह पोंछ दी जाती थी दिनमें ३–४ बार ।

२४ । १ आज भी धूपमें सूखा आज खरलमेंसे निकाल चीनीके बर्तनमें किया गया शीशेके बकसमें बंदही सूखताहै।

२५–२६–२७–२८।१ पारा चीनीके वर्तनमें सूखता रहा शीशेके बकसमें ।

२९।१ आज शीशेके बकसको देखनेसे मालूम हुआ कि शीशे पर कुछ सफेद २ चीज जमी है गौर किया तौ मालूम हुआ कि पारा उड़कर जमा है थरमामीटर लगाकर देखा तो शीशेके बकसके अन्दर १२२ फ. की गरमी थी किन्तु बाहर धूपमें सिर्फ ९८ फ. की गर्मी थी-और छतके नीचे ६८ फ. ही थी । बडा तअज्जुब है कि इतनी हल्की गर्मीमें पारा उड़ गया फिर तप्त खरलमें भी अवश्य उडता होगा यही पारदकी अदृश्य गति कही जा सकतीहै यह तजरुबा करना चाहिये कि खालिस पारा भी इतनी गरमीसे उड़ता है या कि दवामें घुटा हुआ ही पानीकी भापके संग उडताहै ।

३०।१ आज दवा सूख गई उसमें से ½ छटांक पारा जुदा होगया बाकी जो दवा रही उसको तोला गया तो १३ छटांक १ तोले हुई (पारा ८ छटांक और सूखी दवा ५ छटांक थी अर्थात् १३ छटांक डाली गई थी सांठकी लुगदी १ छटांक डाली गई थी १) भर वजन उसका बढ़ा होगा बाकी रसोंका वजन बढा उतना जितना कि(पारा ½ छ. जुदा होगया) इस दवामेंसे आधी दवा डेढ़ पाव आधी छटांक १ पैसे भरको हांडीमें बंद कर उसपर(टोडरानंदोक्त) खरिया १ छटांक, नोन १ तोला गुड १ तोले, अलसी १ तोले को खूब बारीक पानी डालके पीसा गया और उससे हांडी-की संधि बंदकर ऊपर लेही पड़ी मुलतानीसे कपरौटी नई गजीके कपड़ेसे ४ तह चढ़ा सुखा दिया गया ।

३१।१ आज हांडी सूखती रही ।

१।२ आज ८ बजे सवेरेसे ६ बजेतक आंच दी गई ।

२।२ आज हांडी अपने सामने खुलवाई गई खोलनेमें कप-रौटीकी दो तहतक कोई खराबी नहीं निकली ३ और ४ तह पर हांडीके एक तरफ़ पारेके रवे दीख पडे हांडी खुलने पर मालूम हुआ कि उस तरफ़ हांडीका जोड आपसमें ठीक नहीं मिला था खरियासे जो दर्ज बंद की गई थी उसने कुछ पकड़ अवश्य की और जहाँ दर्ज कम थी और खरिया जहां ठीक बैठ गई थी वहां दरज खूब बंद रही । पारा तोलनेसे २ छटांक हुआ हालाँकि (८ छटांक डाला गया था उसमेंसे आधी छटांक छुटगया बाकी ७॥ छटांक दवामें था उसमें आधी दवा भरीगई थी जिसमें) ३॥। छटांक पारा होना चाहिये इस हिसाबसे १॥। छटांक घटा अफसोस ! ! वह संधिमेंसे निकला या तप्त खरलसे उड़ गया या धूपमेंसे उड़ गया दवामें बाकी नहीं रहा दवा १॥ छटांक है ।

२।२ आज बाकी आधी दवाको ६॥ छटांक १ पैसे भर थी हांडीमें भर उस हाँडी और ऊपरकी हांडीके मुँह पर जुदा जुदा खरिया पतली २ लगा दोनों हांडी मिला दवा दी गई और रिगड दीगई तो आपसमें ऐसी वस्ल होगई, कि छुटानेसे न छूटी फिर दोनों हांडियोंकी दज पर भी खरिया खूब चढ़ा सुखा दी गई फिर ४ कपरौटी कर दीगई ।

३।२ हांडी सूखती रही ।

४।२ को ८ बजेसे ६ बजे तक पातन किया गया ।

५।२ आज डौरू खोला गया तो दराज खूब बंद थी पर कहीं २ बाल पड़ गया था पारा केवल १ छटांक ३ पैसे भर निकला दवा १ पैसा कम १॥ छटांक निकली अबकी बार नुकसानका कुछ ठीक नहीं रहा हांडियोंके बीचमें खरिया लगानेसे कुछ फायदा नहीं हुआ बल्कि नुकसान हुआ उसकी वजहसे कुछ दराज रह गई पहली दफै ज्याद: और अबकी मरतबे पारा कम वहनेसे साबित हुआ कि हांडीसे जरूर निकल जाताहै इस आध सेरके पातनमें आधी छटांक खरलसे जुदा होगया और ३ छ० ३ पैसे भर उड़कर निकला यानी ४ छटांक १॥ पैसेभर अर्थात आधेसे अधिक उडगया ।

2nd part

२२।१ आज हरिद्रा, अंकोलकी जड़की छाल, अमल-तासका गूदा, त्रिफला, चीता, हींग सैंधव, प्रत्येक आधी छटांक हर एकके चूर्णको और सांठके पत्तोंकी लुगदी १ छटांकको ३ छटांक चौलाईके रस और १२ छटांक

घीग्वारके रसमें मिला हांडी भर कंडोंके दहरे पर खटका कर माजून सा कर उतार लिया ।

२३।१ आज दवाको खरलमें डाल उसमें ½ छटांक शुद्ध सोनामक्खीका चूर्ण डाला ½ घंटे घोट दोपहरके २ बजे उसमें आधसेर पारा थोड़ा २ डाला गया १५ मिनटमें मिलगया फिर तप्त खरलमें घीग्वारका रस डाल घोटा गया ५ बजेतक ।

२४।१ आज ८ बजेसे ५ बजे तक ३ प्रहर तप्त खरलमें घीग्वारका रस डाल पारा घोटा गया। (२५।१ +)

२६।१ आज दो पहर तक विना रस डाले तप्त खल्वमें और १ बजे बाद धूपमें बैठ कर पारा घुटा ४ बजे तक खूब गाढा होने पर छोड़ दिया गया ।

२७+२८।१ पारा खरलमें धूपमें सूखा किया- खुला ।

२९+३०।१ पारा चीनीके बर्तनमें शीशेके वकसमें सूखा किया ।

१+२+३।२ को सूख गया था इस लिये कटोरेमें रक्खा रहा ।

४।२=१३ छटांक दवा हुई और २ पैसे भर पारा जुदा हो गया उस पारेको जुदा रखदिया और १३ छटांक दवाको बडी हांडीमें भर खरिया जोडोंके बीचमें और बाहर लगा धूपमें रखा दिया ३ घंटे सूखनेपर फिर खरिया चढाई गई २घंटे सूखनेपर २कपरौटी मामूली गजीकी कर दी गई और सुखा दी गई सब काम अपने सामने हुआ पर कपरौटी अपने सामने नहीं हुई ।

५ । २ आज दो कपरौटी कैचीकी खूब गफ।)।।गजकी मारकीनकी की गई ।

६ । २ आज दो कपरौटी और भी उसी मारकीनकी की गई ।

७। २ आज ८ बजेसे ६ बजे तक आंच दी गई ।

८ । २ आज हांडी खोली गई तो मारकीनकी ४ तह तक पारा नहीं दीख पडा गजीकी कपरौटीके ऊपर पारेके रवे थे इसलिये आगेसे मारकीनकी कपरौटी होनी चाहिये। कपरौटीके अन्दर खरिया खूब जम रहीथी लेकिन उसमें दराज भी थी हांडी लने पर रवे हांडियोंके जोडोंमें भर गयेथे यह खराबी खरियाको हांडीके बीचमें लगानेसे हुई । आगेसे हांडियोंके बीचमें कोई चीज न लगाकर खरिया बाहरसे जोडोंपर लगाई जाया करे।

पारा २।। छटांक ऊपरकी हांडीमें और कुछ कम नीचेकी हांडीमें निकला कुल तोलनेपर १पैसे कम४।। छटांक हुआ और था २ पैसे कम ८ छटांक यानी ३ छटांक+ ३।। पैसे भर घट गया । पहले आध सेरमेंसे ४ छटांक १।। पैसे भर घट गया दवा तोलमें ३ [illegible]ंक १ पैसे भर हुई इसमें रवे पारेके कहीं २ चमकते थे ।

अनुभव ।

चूंकि अबके दूसरे पातनमें ३ बार उडानेमें नीचे मुताबिक पारा बैठा अर्थात् वजनमें अन्तर रहा इससे स्पष्ट सिद्ध है कि पारा हांडियोंके जोडमेंसे जरूर उड़ताहै इसका भी इंतजाम अवश्य होना चाहिये ।

१ बार	२ छटांकभर
२ बार	१ छटांक ३ पैसेभर
३ बार (२)	४।। छटांकभर

१८ । २ तोलने पर पारा इस समय १ पैसा भर कम ११ छटांक पारा एक बार पातित २ पैसे भर (२२ । २) १· रुपया भर कम ८ छटांक पारा दो बार पातित है अर्थात् १ सेर २ छटांक ४।। भर है ।

२२ । २ जो दवा पातनकी हांडियोंमेंसे निकली थी और ठीक जली न थी उसको (१२।। छ० को) डौरूयंत्रमें बंद कर ३ प्रहरकी आंच दी गई तो २ पैसे भर पारा निकला और दवा ११ छटांक रही अभी तोल दवाकी अधिक है इसलिये शायद पारा और हो गालिबन तेज आंच देनी चाहिये थी एक बार और डौरू करो ।

चूंकि पातनमें बहुत नुकसान हुआ इसलिय इस पारदका पातन बंद कर दूसरे-पारदका पातनसे अनुभव किया गया ।

पातनका अनुभव हिंगुलोत्थ पारदपर ।

१० । २ आज उपरोक्त हरिद्रा, अंकोल इत्यादि पाव पाव छटांक चीजें और घीग्वारका रस ऽ।। सेर और चौलाई न मिली और सांठ आधी छटांकको मिला औटा दिया गया ।

११ । २ औषधको शीत खरलमें डाल घोट पाव छटांक सोनामक्खी डाल १७) रुपये भर पारा हिंगुलोत्थ डाला गया जल्दीही मिल गया ९ बजेसे शामके ५ बजे तक शीत खरलमें धूपमें घुटता रहा खूब मिल गया ।

१२ । २ आज भी धूपमें ८ बजेसे ५ बजेतक घुटा रस भी पडा बहुत अच्छा मूर्छन हुआ इतनी औषधिमें इतनाही पारद ठीकहै अर्थात् पाव छटांक सब चीजें हों तो १५ तोला पारद ठीक होगा (जितना पारद हो उससे ३ तिगुनी औषधिका हिसाब बैठता है) परन्तु बहुत अधि[illegible] गाढा (ऐसा कि दोनों हाथोंसे जोर लगाने पर घुटता था) होजानेसे पारेके रवे चमक आये ।

१३ । १४ । १५ । २ चीनीके बर्तनमें सूखा (१४-१५ को धूप न निकली)

१६ । २ चूंकि रक्खा रक्खा सूख गया लिहाजा आज हांडीमें बंद कर डौरू कर दिया ।) भर पारा छूट गया (जो ज्याद: गाढा होने तक न घुटता तो पारा न छूटता) दवा १ पैसा कम ६ छटांक हुई हांडीके ऊपर जोड पर खूब खरियाकी दवा लगाकर १ कपरौटी गजीकी दूसरी मारकीनकी करदी गई ।

१७ । २ आज दो कपरौटी और कर दी गई ।

१९ । २ आज हांडीको ३प्रहरकी आंच दी गई पानीभी ऊपर खूब रक्खा गया ।

२० । २ आज हांडी खोली गई तो नीचेकी हांडीमें पारा नहीं था दवा६।।)भर निकली ऊपरकी हांडीमें पारा था और हांडियोंके जोड पर बहुतसा पारा बीचमें आ गया था पारा सब ९ तोले निकला और ।) भर पहले निकला था १७) भर यानी ७।।।) भर कम होगया ।

अबकी दफे तप्त खरलमें नहीं घोटा गया फिर भी बहुत ज्याद: घट गया जिससे जाहिर है कि हांडियोंमेंसेही उड जाताहै तप्त खरलमेंसे उडता होगा तो इतनाही नहीं जरूर हांडियोंके दर्ज न मिलनेसे यह नुकशान होताहै क्योंकि जब दराजोंमें पारा मिला तभी नुकसान बहुत हुआ दराज मिलनेक

बंदोवस्त अवश्य कर्तव्य है चूंकि हांडियोंमें पातन करनेसे पारा बहुत छीजताहै बहुत बार सब तरहका यत्न कर तजरुवा होचुका और बहुत पारा छीजचुका पस आगे ऊर्ध्व-पातन बंद किया गया (हा अगरेजी रिटार्ट (भवका) मँगा उससे पातनका अनुभव करो । किन्तु यह बात समझमें न आई कि मर्दन संस्कारोंमें उत्थापनके निमित्त जो २४।२।०४ और ८। ३।०४+१८+३।०४+२७।३।०४को न पातन किये गये उनमें अधिक कमी क्यों न हुई और मूर्छन कर्मके पातनमें कमी पडी जो १७। ५+१८। ५ को हुआ नीचे लिखा नकशा देखो ।

इतना समझमें आया कि हांडियाँ ठीक घिसी न गई और उनमें दराज रही इसी वजहसे पारा निकल गया पहले हांडी उमदा घिसी गई अफीमीके हाथसे ।

नक्शा मर्दनमूर्छनान्तर्गत पातनका ।

कर्म	तारीख	पारा जो उड-कर निकला	पारा	विशेष वार्ता ।
मर्दन	८।३।१९०४	१५।)		
	१८।३।०४	३५)		
	२७।३।०४	८॥)		
		४॥)		
		१।)		
		२)		
		६६॥।)	९)	
मूर्च्छन First	१६।५।०४	३२॥)		
	१८।५।०४	४५)		
	१९।५।०४	४)		
		८१॥)	६)	
मूर्च्छन 2nd		१३॥)	१॥)	
		११)	२॥)	
		१३॥)	४)	
		१७॥)	+	
		५५॥)	८)	
मूर्च्छन 3rd	७।९।०४	१८)	॥)	
मूर्च्छन Fourth	१७।९।०४	६)	२॥)	
मकोयमर्दन	५।११	२॥)	१)	
मुर्च्छनका अनु०दूसरे पारद२० तोले पर	२९।९	७॥)	+	

पुनः पातनका अनुभव गंधकसे ।

गंधक पाव भरको पाव भर घीमें गलाकर सेर भर दूधमें बुझाकर शुद्ध कर लिया गया । बादको गर्म पानीसे धो कप-डेसे पोंछ साफ कर लिया गया ।

४।३।०५ आज ३ तोले गंधक और ३१॥ तोले पारे बा-जारीको (जो जाहिरा साफ था और जिसको कपडेमें ४ बार छान लिया था) तप्त खल्वमें डाल जंभीरीके रसके साथ घोटा गया ४ घंटे पारा बहुत कम मिला ।

५।३ आज दिन भर (९ घंटे) तप्त खरलमें मर्दन हुआ दिन भरमें आध सेर रस पड गयाहोगा दो पहर तक क-रीब २ सब पारा मिल गया था शामको किनारों पर रवे जरूर थे और मिला हुआ था ।

६।३ आज सबेरे खरलको अपने सामने घोटकर देखा तो गाढी दवा होगई थी दबाकर घोटते ही पारा छुटने लगा दोपहर तक १३।॥) पारा छूट गया और बाकी दवाकी पीठी सी होगई उसको खरलमेंसे निकाल रकाबीमें सुखा दिया गया आज खरलको गरम नहीं किया गया ।

७।३ इस शुबहासे कि गंधकमें चिकनाई रहगई इससे पारा नहीं मिला आज गंधकको खरलमें डाल गरम पानीसे खूब धोया १३।॥) भर उक्त पारेको तप्त खरलमें डाल १॥) तोले गंधक डाल कांजी डाल २ कर घोटा गया पतला रहने पर पारा कुछ मिलता था गाढा होनेपर छूटने लगता था ।

८।३ आज उक्त पारेमें १॥) तोले गंधक की बुरकी देदे-कर घोटा गया शामतक मगर वही हाल रहा शामको प-तली दवा थी और पारा कुछ मिला हुआ था ।

९।३ खरलकी दवा पतली थी मगर और न घोट वैसाही धूपमें सुखा दिया । दोपहरको गाढा होनेपर ८॥) तोले पारा छूट गया बाकी दवाको खरलमेंसे निकाल चीनीकी रका-बीमें रख दिया गया सूखनेको ।

पहली दफे ३) गंधकमें १७॥) भर पारा मिला ।

दूसरीबार ३) गंधकमें ५) भर पारा मिला ।

१०–११–१२–१३।२ को यह दवा सूखती रही ८।३की दवा तो ११।३ ही तक खुश्क होगई मगर ९।३ वाली दवा १३ ता० तक भी पूरी खुश्क नहीं हुई ।

१९।३ दवा बराबर सूखती रही मगर आजतक नरमही रही धूप भी उमदा नहीं थी कभी २ बादल होजाता था एक दिन खूब बारिश भी हुई थी लाचार आज दो हांडी चकले पर घिस खूब दराज मिला मुलतानीसे सांस बंद कर १गजो-की और १ मारकीनकी कपरौटी कर दी गई ।

२०।३ आज डौरूको ३ पहरकी आंच दी गई ।

२१।३ को धूलकी वजहसे काम बंद रहा ।

२२।३ आज डौरूको खोला गया तो देखनेसे बहुत थोडे रवे ऊपरकी हांडीमें नजर आते थे मगर कुल हांडी नीलगूं (नीली) रंगतसे रंगी हुई थी जब हांडीको चाकूसे खुरचा गया तो राखकी शकलमें एक चीज निकली जो इकट्ठा करनेसे और दबाये जानेसे पारेके रवे होती गई । आखिरकार ९॥) भर पारा और९) भर राख रहगई अभी पारा इस राखमें अवश्य है क्योंकि राख बहुत भारी है कुछ खफीफ पारा नीचेकी जली हुई दवाकी छूंछमें भी होसकता है क्योंकि रंगतसे ऐसाही जान पडा और तोल भी उसकी ५॥) भर है ।

उक्त ९) भर राखको नींबूके रससे घोटा गया तो ३) भर पारा और निकला सब पारा १२॥) भर हुआ नीचेकी हांडीको खुरचनेसे कहीं २ रंगत सुरख पड गई मिसल सिंग्रफके जिससे साबित है कि उस जगह पारद मूर्छित होकर सिन्दूर बन गया ।

अनुभव ।

पहले जब चन्द्रोदयके अनुभवके समय नाल कच्ची रह जानेसे उस कच्ची गंधक मिले पारेको जो मूर्च्छित दशामें था उत्थापनके लिये उडाया गया था तब भी हांडीमें ऐसीही रंगत होगई थी पर उसको सिर्फ कागजसे रगड कर छोड दिया था (देखो ता० १७।१०।१९०४ में) इसलिये उस समय कुछ पारा हाथ नहीं आया यदि चाकूसे खुरच कर अबकी तरह अमल किया जाता तो अवश्य कुछ पारद हाथ लगता-गंधकसे मूर्च्छित कर उडानेमें पारा गंधक दोनों उडतेहैं और इसी कारणसे पारद ऊपरकी हाँडीमें भी रेतकी शकलमें जम जाता है ।

२४।३ अब ६) भर राख बची और कुछ ऊपर ५ भर नीचेकी राख थी सब ११) भरको फिर डौरूमें बंद कर दिया गया नींबूके रसमें घोट कर ।

२७।३ आज ३ प्रहरकी आंच दी गई ।

२८।३ आज खोला गया तो राखसी ऊपरकी हांडीमें निकली जिसमें सूक्ष्म रवे भी थे मलनेसे १॥) पारा निकला फिर राख धोकर ।) भर और निकला सब १॥।) भर हुआ नीचेकी राख ७) भर निकली ।

पहले पारा १२॥)+१॥।) भर हुआ यानी १४।) भर हुआ, था २२॥।) भर घटा ८॥) भर बहुत घटा यह नुकसान कुछ इस कारणसे भी हुआ कि गंधकसे पारद मिलकर हांडीमें चिपट जाता है छुटता मुश्किलसे है । हर तरहके पातनमें हानि बहुत होतीहै अंगरेजी रिटौर्टसे अनुभव कर देखो ।

लहसनमें मर्दनका अनुभव ।

१०।३ जो हिंगुलोत्थ पारा २० । २ का हरिद्रांकोलके पातनसे निकला था उसको आज ९) भरको १) भर सैंधव डाल लहसनके पाव भर रसमें (जो आधसेर लहसनमें निकला) थोडा २ रस डाल तप्त खरलमें ८ बजेसे २ बजेतक घोटा गया सब ड। रस खुश्क होकर खूब गाढा लाट सा होगया और आगे हाथ न चला बडी भारी चिपक पैदा होगई ७) भर पारा जुदा होगया २ तोले दवामें मिला रह गया उस खरलको धूपमें सुखा दिया गया ।

११।३ आज खरल धूपमें सूखता रहा शामको किनारों पर खुश्क होजाता था बीचमें कुछ गीला था किन्तु बडी चिपक और सख्ती थी बडी मुश्किलसे खुरच कर इकट्ठा किया गया मगर खरलमें ही रक्खा रहा ।

१२।३ दूसरे दिन सवेरे जो देखा तो खरलमें दवा पसीज गई थी लाचार जिस कदर निकल सकी निकाल लाटसी चिपकती हुई रकाबीमें निकाल सुखा दी और बाकी खरल सुखा दिया शामको खरल सूख गया था उसको खुरच कर साफ कर लिया गया और उसी रकाबीमें शामिल कर दिया गया १३।२ तक पहली लाटसी दवा नहीं सूखी बहुत गीली थी ।

२२।३ तक यह दवा सूखी नहीं चमचोड ही रही लाटसी ४॥) भर थी ।

२४।३ लाचार आज डौरूमें बंद कर दी गई हांडी छोटी २ चकलेपर घिसी हुई थी कपरौटी मुलतानीकी दो की गई एक गजीकी दूसरी मारकीन की ।

२५।३ आज डौरूको ३ प्रहरकी आंच दी गई ।

२६।३ आज खोला गया तो १≈) भर पारा निकला कुल पारा तोलने पर ८≈) भर हुआ-डाला गया था ९) भर घटा ॥।≈) भर ।

पुनः पातनका अनुभव ।

२।४ मामूली पारेको गन्धकसे घोट ऊर्ध्व पातन किया गया था १४॥) भर था और अधःपातन किया गया था नवनीताभ्रसे ३) भर था सब १७॥) इस १७॥ तोले पारेको हरिद्रांकोलशंपाक सब $\frac{1}{4}$ छटांक, दवा डालकर सौंठकी लुगदी $\frac{1}{2}$ छटांक. चौलाईका रस १२ छ० घीग्वारका रस यथावश्यकता डाल (बिना औटाये) शीत खरलमें घोटा गया २ घण्टे ।

३।४ आज ५ घण्टे घुटा ।

४।४ आज भी घुटा ।

५।४ आज भी घुटा फिर कपरौटी कर हांडीमें बन्द कर दिया गया ।

१६।४ आज डौरूको आंच दी गई ३ प्रहरकी ।

१७।४ आज खोला गया तो ७॥ तोले निकला था १७॥ तोले यानी १० तोले घट गया संधि उमदा बन्द निकली हांडी खूब घिसी गई कपरौटी ठीक हुई सिवाय इसके कि भट्टीमें तेज आंच लग जाती हो और तो कोई बात समझमें नहीं आती (दवाकी राख ७। तोले निकली)

आगे २६।४ के अनुभवसे सिद्ध हुआ कि आंच मन्दी लगनेसे पारा ठीक उतरा इसलिये जरूर यह नुकसान तेज आंचसे ही हुआ ।

लहसनमें मर्दन ।

१७।४=७॥ तोले पारेको ५) भर लहसनके रसमें जो पावभरमें निकला १) भर नमक डाल घोटा गया ३ बजेसे ६ बजे तक ५) भर अर्क शामको औरपडा शीत खरलमें घुटा ।

१८।४=१०) भर लहसनका रस और डाल कर शाम तक घुटा ४ बजे तक फिर गाढा हो गया २।) भर पारा जुदा होगया ।

१९।२०।४ को धूपमें सूखता रहा ।

२१।४ आज खरलमेंसे छुटाया गया तो १=) भर पारा और निकला बाकी दवामें मिला रह गया ४।=) तोले दवा चमचोड थी ।

२५।४ आज ४।=) भर दवाको डौरूमें बन्द कर दिया गया कपरौटी दोनों मारकीनकी की गई ।

२६।४ आज डौरूको ७ बजेसे ५ बजे तक हलकी आंच दी गई जो पहलेसे आधीसे भी कम थी एक मशालकी आंचके बराबर होगी ।

२७।४ आज डौरू खोला गया तो ३।=) भर पारा निकला ऊपरकी हांडीमें नीचेकी हांडीमें केवल दवाकी राखमें २।=) भर कपरौटी पर या हांडीकी दराज पर कहीं पारा न था ।

फल-कुल पारा ७॥) था निकला (२।)+१=) +३।= =६॥।) यानी ॥।) भर घटा जो छीजन कही जा सकती है यह उमदगी अवश्य आंच कम देनेसे हुई जबसे भट्टी बनी तबसे आंच तेज लगी इसीसे इतना कसीर (अधिक)

नुकसान हुआ आयन्द: आंच मन्दी लगै कपरौटी दोनों कैंचीकी मारकीनकी हों हांडी चकले पर घिसी जावे ।

१०।३ से २७।४ तकका सिद्ध पारद एक शीशीमें एकत्र भर दिया गया।

पुनः पातनका अनुभव ।

अबकीवार २७।४ को जान पडा कि अग्नि तेज लगनेसे ही पारद क्षय होता था मन्द अग्निसे नहीं होता इस बातका पूरा निश्चय करनेको पुनः तजुरवा शुरू किया जाता है।

२८।४ हरिद्रांकोलादि सव चीज आधी आधी छटांक सौंठकी लुगदी १ छ० चौलाईका रस ३ छटांक, घीग्वारका रस ८ छटांक सबको आज मिलाकर खरलमें ओसमें रख दिया।

२९।४ आज इसमें पाव भर+३ पैसे भर पारा थोडा २ डाल कर घोटा गया घण्टे भरमें सव मिल गया ६ या ७ घण्टे घुटा दो दफे रस घीग्वार और पडा शीत खरलमें घुटा ।

३०।१+१।५ को भी शीत खरलमें ६६ घण्टे घुटा।

२।३ को धूपमें सूखता रहा ।

४।५ को पीस डाला गया ।

५।५ तोला गया तो ३ पैसे कम १० छटांक दवा हुई इसमेंसे आधी दवाको डौरूमें बन्द कर मारकीनकी कपरौटी की गई सूख जाने पर दूसरी भी मारकीनकी कपरौटी की गई ।

६।५ आज डौरूको मन्दी आंच पतली चीरी हुई एक दो लकडीकी दी गई ७ वजेसे ५वजे तक ।

७।५ आज डौरू खोला गया तो २ छटांक और १ धेले भर हुआ कुल पारा पाव भर ३ पैसे भर था जिसमेंसे आधी दवा डाली गई सो आधपाव और १॥ पैसे भर पारा था इस हिसाबसे केवल १ पैसे भर पारा छीजा जय श्रीशंकरस्वामीकी। पारा सब ऊपरकी हांडीमें ही मिला दवाकी राख ६॥) भर हुई । अब निश्चय होगया कि तीव्र अग्निहीसे पारा उड जाता था मन्द अग्नि ही देना चाहिये

पुनः पातनका अनुभव अंगरेजी तरीकेके मुंबईसे मँगाये रिटोर्ट द्वारा ।

८ से १२ । ५–(१) सिद्ध हुआ कि इन रिटोर्टमें लैम्पकी पूरी आंच देनेपर भी इतनी गर्मी पैदा नहीं होती जो पारा नली द्वारा दूसरे पात्रमें जासके किन्तु पारा थोडा तो उडकर रिटोर्टके गोलभागमें ही रह गया और पारेका अधिक भाग उडाही नहीं ।

(२) यह भी निश्चय हुआ कि लैम्पकी आंचको रिटोर्ट भलीभांति सह सक्ताहै।

(३) यह भी सावित हुआ कि रिटोर्टसे काम लेनेमें रिसीवर (पहुँचानेवाला) के साथ रिटोर्टको रवरकी नली द्वारा मिला नहीं सकते मिलानेसे रवर और डाट निकल जाती है रिटोर्ट और रिसीवरका मेल खुलाही रहने देना चाहिये जो पारा उडकर रिटोर्टके ऊपर वा नीचे भागमें मिला उसको लकडी और कपडा और पानीद्वारा निकाला गया तो मुश्किलसे निकला वह भी सव नहीं तोलनेसे १॥ पैसा कम छटांक भर हुआ धेले भर रिटोर्टमें लगा भी रह गया इससे सिद्ध हुआ कि पारा करीव करीव छुट तो गया पर उडकर नलीके बाहर न आसका और न शीशेमें ऊपर ठीक ठहर सका और रिटोर्ट नीचेसे खुरदरा होगया गालिबन आंचसे दोदिन बाद देखनेसे रिटोर्ट चटका हुआ भी मालूम पडा । पारा जो रिटोर्टसे निकला वह गाढासा था और उसपर जालीसी पडी हुई थी बहुत छानने और साफ करनेसे दूर हुई ।

१४ । ५ उसी चौथाई दवाको फिर दूसरे डौरूमें बंद कर हलकी आंचसे उडाया गया तो १ छ० भर ।) कम पारा निकला था दवामें १ छ० पौन पैसे भर यानी १ पैसे भर घटा । जय श्रीशंकरस्वामीकी ।

७–१२–१४ मई तीनों वारका निकाला पारा मिलकर इकट्ठा कर दिया गया तो १९) भर हुआ ।

तीनवार ऊर्ध्वपातन (२७ । ४–७ । ५–१४।५) कर निश्चय होगया कि मंद अग्निसे १०)–१०) भर पारा तीन प्रहरमें उड सकताहै और इस प्रकार अधिक नहीं छीजता। जय जय जय जय श्रीशंकरस्वामीकी ।

अधःपातन संस्कार ।

अष्ट संस्काराध्यायके २७४ श्लोक से २७६ तककी क्रियासे ।

नवनीताभ्रकं सूतं घृष्ट्वा जृम्भावसादिनम् । वानरीशिग्रुशिखिभिर्लवणासुरिसंयुतैः ॥ नष्टपिष्टिरसं कृत्वा०

१३।३।१९०५ गंधक नोनिया ६ माशे, अभ्रक चूर्ण ६ माशे, कैंच १ तोला, सँहजनेके जड़की छाल १ तोला, चीता १ तोला, नमक सैंधा १ तोला, राई १ तोला, साधारण पारद ६ तोलेको शीत खरलमें नींबूके रसके साथ घोटा गया ४ बजेसे ६ बजेतक पारा खूब मिल गया ।

१४।३ आज आठ बजेसे ५ बजे तक शीत खरलमें नींबूका रस डाल डाल घोटागया । सब आधी बोतल रस पड़ा । पारा बिलकुल नष्टपिष्टी होगया पूर्ण मूर्छन यही हुआ ।

१५।३ एक हांडीके मुंहकी ढकन नुमा ३ सेंनकें लेकर घिस घिसकर हांडीके मुखसे मिलती हुई कर उन सेंनकोंमें यह पारेकी पिष्टी लेप दी गई पहलीमें कम दूसरीमें ज्याद: तीसरीमें और ज्यादह और सुखा दी गई । १६–१७ता० तक सूखती रही ।

१७।३ को हांडीके गलेमें बांसकी खपचके घेरे पर झीना कपड़ा चढा उसको हांडीके गलेमें फँसा दिया हांडीमें पहलेसे कांजी ⅔ भागमें भरदी थी हांडीके ऊपर पारा भरि सैंनक उलटी करके रख दीगई और दोनोंकी दराज मुलतानीसे बंदकर कपरौटी कर सुखा दी गई ।

१८।३ आज उस हांडीको गढ़ेमें गाड जमीनसे ६ अंगुल नीचा रख २ अंगुल रेत भर ऊपर एक बिलंद ऊंचा दहरा लगा दिया गया ऐसे कई दहरे ५–६ शाम तक लगते रहे ।

१९।३ आज हांडीको निकाल खोला तो बहुत थोरा ⅓ पारा कांजीमें मिला और ज्याद: ⅔ हांडीकी गर्दनमें लगा हुआ

मिला लेकिन कुल पारा ६ माशे हुआ रकाबी वह थी जिसमें सबसे कम दवा लेपी गई थी दवाकी राख १ तोले निकली।

२२।३ आज दूसरी रकाबीको जिसमें सबसे अधिक दवा लेपी गयी थी हांडी पर उलटा रख कपरौटी करदी गई कांजी भर दी थी $\frac{3}{4}$ **Part** में कपडा लगा दिया गया।

२३।३ आज दिनभर दहरेकी आँच दी गई गढेमें हांडी रख ऊपर वालू रख ऊपर कंडे रख कर।

२४।३ आज खोला गया तो सैनककी दवा कुछ चटक कर कपडे पर गिर गई थी और हांडी खोलतेमें कपड़ा और कुछ दवा हांडीमें गिर गया था लेकिन निकल आया पारा बहुत थोडा कांजीमें मिला बाकी हांडीके किनारों पर था कुल पारा १॥) निकला दवाकी खाक २।=) भर निकली।

२५।३ तीसरी सैनकको उसी तरह कपरौटी कर (मगर हांडी अबकी दफे कांजीसे भर दी गई थी) आज आंच दी गई तो १) पारा निकला राख १।) भर निकली अबकी दफे भी पारा कांजीमें बहुत कम निकला किनारे जो खाली थे उन्हीं पर मिला हांडी सिरफ४-५अंगुल खाली थी इससे अधिक भरना ना मुमकिन है। सब दवा-मेंसे पारा ३) भर निकला था ६) भर आधा हाथ आया अबकी दफे चटकी हुई सैनक चढाई गई थी वह उसी जगहसे बडी आवाजसे चटकी थी आगेसे टूटी चीज काम-में न ली जावे।

२८। ३=को ३॥) भर राखको जो तीनों दफेकी थी आज डौरूमें बंद कर दिया गया। ठीक मुलतानीसे।

३१। ३ आज ३ प्रहरकी आंच दीगई।

१। ४ आज डौरू खोला गया तो ऊपरकी हांडीमें कुछ सफेद सी चीज जमी थी मगर उसमें कुछ पारा न था नीचेकी हांडीमें २॥) भर गुलाबी रंगकी राख निकली इससे साबित हुआ कि पारा जो कुछ था वह पहले ही अधःपातनमें उड गया था मगर छीज गया हाथ नहीं आया।

अधःपातनकी क्रियाका पुनः अनुभव।

१६।५ "नवनीताभ्रक" गंधक १) भर, अभ्रक १) भर, कैंचके बीज १) भर, सँहजनेकी जड १) भर, चीता १) सैंधव १) भर, राई १) को जंभीरीके रससे घोट उसमें थोडा २ कर १२) भर पारा डाला गया और घोटा गया तो पारा मिल गया।

१७। ५ आज ७ भर पारा और डाला गया तो दो प्रहरतक ठीक नहीं मिला दोपहरको सँहजना, चीता, राई, १)-१) भर और डाले गये फिर भी अच्छा मूर्छन नहीं हुआ।

१८।५ आज घोटा गया तो सामान्य मूर्छन होगया एक एक रुपये भर दवामें १५) भर पारेका मूर्छन होसकता है। दोप-हर बाद इस दवामेंसे आधी दवा तो सुखा दी गई और आधी एक हांडीके पेंदेमें लेप दी गई (इस हांडीपर कपरौटी कर दी गई)।

१९।५ यह हांडी धूपमें सूखती रही।

२०।५ आज इस हांडीको दूसरी हांडीके साथ डौरू कर दिया गया दो कपरौटी कैंचीकी मारकीनकी की गई मुलतानीसे।

२१।५ इस डौरूकी आज इस प्रकार आंच दीगई कि (अपनी बुद्धिसे) एक पानीभरी नादमें एक हांडी मूढेके तौर पर रखदीगई उसको पानीसे भरदिया गया कि जिससे वह हांडी तैर न आवे। फिर उस हांडीके ऊपर डौरू इस रीतिसे रक्खा गया कि खाली हांडी नीचे रही और पारे-वाली हांडी उलटी ऊपर रही नादका जल डौरूकी संधिसे नीचा रहा ऊपरकी हांडी पर एक परात लोहेकी बीचसे पेंदा काट कर रक्खी गई और उस परातमें ४ कंडोंकी आंच दीगई यह आंच ८ बजेसे ६ बजेतक बारंबार दीजाती रही दोपहर कुछ विक्षेप भी हुआ आंच आधे घंटेमें ठंढी पड़ जाती थी पानी नांदका गरम नहीं हुआ।

२२। ५ आज डौरू खोला गया तो ऊपरकी हांडीकी बगलमें विशेष पारा मिला, कुछ पारा पेंदेमें भी मिला वह लेपमेंसे उबलकर वहीं रहगया था नीचेकी हांडीके किनारों पर बहुत थोडा पारा मिला (नीचेकी हांडीमें कुछ पानी मिला १) भर होगा यह पानी नांदके पानीमेंसे हांडीमें प्रवेश करगया होगा क्योंकि यहांकी मिट्टी वर्तन बनाने लायक चिकनी और मजबूत नहीं होती) कुल पारा १छ० २ पैसेभर हुआ अभी और पारा दवामें मिला रहगया आंच कम लगी आगे आंच ज्यादा दीजावे।

२२। ५ आजही उस हांडीको जिसमेंसे पारा निकला था फिर डौरू कर दिया गया।

२३। ५ आज फिर पहली तरह आंच दीगई मगर कुछ तेज यानी मामूली रीतिसे परात भरकर।

२४। ५ आज डौरू खोलनेसे बहुत थोडा, ऊपरकी हांडीके किनारों पर और ज्यादातर नीचेकी हांडीके किनारों पर पारा मिला सब पारा २ पैसेभर निकला राख ४॥)भर निकली। पहले पारा निकला था १ छटांक २ पैसे भर सब मिल कर १ छटांक ४ पैसे भर हुआ होना चाहिये था $\frac{१९}{२}$) भर अर्थात् ९॥) और हुआ ७।) भर यानी २।) भर कम होगया यह कमी फिर ज्याद:है पूरा तजुरबा इस-का बाकी आधी दवाके उडनेपर होगा।

२४। ५ आज बाकी आधी दवाको डौरूमें बंद कर दिया गया ऊर्ध्वपातनके लिये।

२५। ५ आज ३ प्रहरकी आंच दीगई।

२६। ५ आज खोला गया तो ७।= भर पारा निकला राख ६) भर निकली पारा सब ऊपरकी हांडीमें निकला। कुल पारा मिला कर तोलनेसे १४॥=) भर हुआ इस हिसाबसे ४।= भर पारा घटा। नवनीताभ्रक क्रियाद्वारा अधःपातन और ऊर्ध्वपातन दोनों तरहसे करीब २ एक-हीसा नतीजा निकला यानी २।)-२।) भर घटा यह भी घटी ज्याद:है। यानी $\frac{४॥}{१९}$=$\frac{१}{४}$ के करीब-इस तरह एक बारके पातनमें चौथाई छीज जावेगा। यह सब पारे जो पातित किये गये इकट्ठे कर दिये गये २९) भर हुए।

ॐशिवाय नमः ।

संस्कृतपारदका संस्कार पुनः प्रारम्भ ।

पातन ।

२९।५ सोमवारको 'हरिद्रांकोलशंपाक' क्रियासे१बार पातित पारदका (अर्थात् पारेके उस भागको जिसका दूसरा पातन नहीं हुआ था) जो ११ छ०+१।) भर था, उसका दूसरा पातन प्रारम्भ किया । हलदी, अंकोलके जडकी छाल, अमलतास,हर्ड, बहेडा, आंवला, चीता, हींग, सैंधव, सोनामक्खी सब आधी आधी छटांक, साँठकी लुगदी १ छटांक, चौलाईका रस ६ छटांक, घीग्वारका रस ६ छ० डालकर शीत खरलमें घंटे भर घोट उसमें पातित पारद पाव भर थोडा २ कर डालागया तो घंटेभरमें सब मिल गया फिर आध पाव और डाला गया तो वहभी मिल गया आज पारा २ घंटे घुटा ।

३०।५ आज घीग्वारका रस डाल डाल ८ घंटे पारा घुटा शीत खरलमें ।

३१।५ को १ घंटे घोटकर सायामें सूखनेको छोड दिया ।

१।६ देखनेसे मालूम हुआ कि दवा नरमहै अतएव आज ३घंटे फिर घोटा गया जब हाथ रुकने लगा तब बंद करादिया।

२।६ आज शीशेके बकसमें खरल धूपमें सूखता रहा ।

३।४।६ को खरलसे निकाल चीनीके बर्तनमें रख शीशेके बकसमें बंदकर बरामदेके पत्थरपर सूखता रहा बीचमें हाथसे तोड छोटा २ करदिया गयाथा ।

५।६ आज इसको लोहेके इमामदस्तेमें कूट दलियासा कर दिया गया १॥) पारा जुदा होगया बाकी १॥) कम ६ छटांक पारा दवामें मिला रहा यह दवा चीनीके कटोरेमें कर के रख दी गई क्योंकि नत्था नोकर छुट्टीपर जानेवालाथा कुल दवा ११ छ० २ पैसे भर थी ।

१४।६ आज इस दवाके बराबरके टुकडे कर यानी ५॥ छटांक १ पैसे भर एक डौरूमें और इतनीही दूसरे डौरूमें बंदकर दी गई डौरू दोनों नयेथे जोड खूब चकलेपर घिसकर मिलादिया गया था कपरौटी कैंचीकी मारकीनकी एक ९ बजे मेरे सामने और एक दोपहर बाद नत्था नौकरने क दी ।

१५।६ आज हांडीको आंच देना आरम्भ किया तो तेज खुशबू फैली इस खयालसे कि डौरू टूट तो नहीं उसको आंचसे उतार दूसरा डौरू रखदिया गया ८ बजे इस डौरूसे भी वैसीही गंध निकली तब यह खयाल करके कि दोनों डौरू टूटे नहीं होसकते आंच दी ज ती रही आज ६ बजे शामतक दी गई मंदी आंच पतली डेढ लकडी की लग. ।

१६।६—आज डौरू खोला गया तो ऊपरकी हांडीमें १ छटांक पारा निकला और नीचेकी हांडीमें१॥ छ०पारा निकला सब पारा २॥ छटांकमेंसे ।) कम हुआ और पारा ६ छटांक १॥)=छटांक ३॥।)=२ छ. ४।) निकला २ छटांक २। छ. घटा २) राख १॥ छ. रही थोडा २ बहुत होगा ।

१६।६ जो डौरू १५ तारीखको घंटेभर पीछे ही उतारकर रखदिया गया था उसको आज खोला गया तो उसमें कोई खराबी नहीं दीख पडी कुछ पारेके रवे ऊपर उडकर पहुंचे थे और नीचेकी हांडीमें दवामें पारेकी रंगत और डलियांसी पैदा हुईथीं इस डौरूको फिर ज्योंका त्यों बंद कर दिया गया ।

१७।६ आज इस डौरूको ६॥ बजेसे ५ बजेतक मंदी आंच दीगई मगर पहलेसे कुछ तेज बबूलकी अंगूठेसी पतली डंडियोंकी आंच दीगई ।

१८।६ आज डौरू खोला गया तो कुछ कम १ छटांक पारा ऊपरकी हांडीमें और कुछ कम १॥ छ. नीचेकी हांडीमें निकला सब पारा २ छ.२) भर हुआ और था $\frac{६छ. १॥}{२}$ = ३ छ. ।॥) भर लिहाजा २।) छ. घटा—राख १॥) छटांकहै ।

2nd part

२।६ हरिद्रांकोल क्रियासे सब आधी आधी छटांक और सब चीज उपरोक्त २९।५ के अनुसार ले मिला घंटे भर घोटी गई ।

३।६ आज इसमें ५ छ. और २ पैसे भर पारा डाला गया तो शीघ्रही मिलगया ६ घंटे घुटा शीत खरलमें घीग्वारका रस पडा ।

४।६ आज ७ घंटे घुटा—घीग्वारका रस पडा ।

५।६+६ घंटे घुटा—गाढा होजानेसे छोड दिया खूब मूर्च्छन होगया ।

६।६ से यह दवा खरलमें सूखती रही शीशेके बकसमें तालेमें बंद । नत्थाके व्याहकी वजहसे काम बंद रहा ।

१८।६ को आधी दवाको जो ५॥ छ. थी डौरूमें बंद कर दिया गया ।

१९।६ को ७ बजेसे ५ बजेतक मंद अग्नि दीगई बबूलकी डंडियोंकी दिनभर एकसी ।

२०।६ आज डौरू खोला गया तो ऊपरकी हांडीमें १ छ. +१॥) भर और नीचेकी हांडीमें १ छ. ।) भर पारा निकला कुल पारा २ छटांक ३ पैसे भर हुआ डाला गया था ५ छ. +२ पैसे=२॥ छ. २ पैसेभर २॥ पैसे भर घटा ।

२०।. आज बाकी आधी दवाको दूसरे डौरूमें बंद कर दिया गया ।

२१।६ आज डौरूको ७ बजेसे ५ बजे तक मंदाग्नि (जिसको मशलकी अग्नि कहना उचित होगा) बबूलकी डंडीकी दीगई ।

२२।६ डौरू खोलनेसे ऊपरकी हांडीमें १ छ. और नीचेकीमें १ छ. ३ पैसे भर पारा निकला नीचेकी हांडीकी गर्दन पर कुछ रवेथे और बहुतसा यानी करीब १ छटांक पारा एकत्र नीचेकी हांडीमें मिला ४ दफेके पातनमें भी ऐसाही हुआ अर्थात् नीचेकी हांडीमें बहुतसा पारा एकत्र मिलता रहा गालिबन खयाल यह है कि ऊपर नीचेकी हांडी समान होनेसे पारा ऊपरकी हांडीमें ठहर नहीं सकता नीचे गिर जाता है । हांडी जो ४ बार काममें लीगई वह इतनी बडी थी जिनमें ५ सेर पानी आजाता था और इनमें तीन तीन छटांकके करीब पारा चढाया गया आगेसे ऐसे हिसाब रहे तो ठीक होगा कि नीचेकी हांडी तो इसी अन्दाजसे रहे लेकिन ऊपरकी हांडी



दुगुनी बडी हो अर्थात् प्रत्येक छटांक पारेके लिये नीचेकी

१ हिंगुलोत्थ पारदपर आदिके ४ संस्कारकर रखदिया पुनः बीचमें बाजारी पारेपर पातनका अनुभव करके पुनः ४ संस्कारोंसे संस्कृत पारदपर पातन करना आरम्भ करदिया ।

हांडी १॥ सेर पानीवाली हो और ऊपरकी हांडी ३ सेर पानीवाली हो यानी ५ छटांक पारेके लिये ७॥ सेर पानीकी नीचेकी हांडी और १५ सेर पानीकी ऊपरकी हांडी हो दोनों हांडियां चपटी हों खडे किनारेकी हों छोटी हांडीमें पारेकी भाप एकत्र न होकर नीचे गिर पडती है और कुछ बाहर भी निकल जाती है (देखो २८ जूनके थोडे पातनकी कामयाबीको) पारा मिलाकर तोलनेसे २ छ० ३ पैसे भर हुआ डाला गया २ छ० ५॥ पैसे भर यानी पैसे भर घटा ठीक इतनाही पहले घटा था राख १॥ छटांक थी।

२४।६ चारों दफेकी राखको इकट्ठा कर पातन किया तो ॥) भरपारा और निकला।

२८ ।६=१॥) भर पारा जो छुटकर बाकी रहगया था उसे फिर दवामें घोट मूर्च्छन कर पातन किया तो १॥) भर निकला।

पातनका अनुभव ।

(१) हांडीका रूप मानादि ऊपर कह चुके हैं तदनुसार ग्रहण करै ।

(२) हांडीकी संधि चकले पर घिसकर मिलाई जावे और नीचेकी हांडी पर चार चार कपरौटी कर ली जावें।

(३)दवा भरकर डौरूके जोडकी संधि (वज्रमुद्रासे न कर) कैंचीकी मारकीन और मुलतानीसे की जावे जो एक बारमें दोहरी आजावे इसके सूखजाने पर दूसरी ऐसी ही पट्टी और चढा दी जावे।

(४) डौरूके जोडकी पट्टी खूब सूख जाने पर डौरू आंच पर चढाया जावे ।

(५) आंच बबूलकी डंडीकी मन्दी मन्दी अर्थात् एक मसालकी बराबर दी जावे तीव्र अग्नि बहुत हानिकारक है तीव्र अग्निहीसे दोबारके पातनमें आधा पारा उडगया ।

(६) पातनके समयपर ऊपरकी हांडीपर गोबरका घिरोला बांध बीचमें खाली रख मोटा चौहरा कपडा डाल खूब पानीसे तर रक्खा जावे ।

(७) यह अभी पूर्ण निश्चय नहीं हुआ है कि थोडा २ पातन करनेमें छीजन अधिक होगी या कम क्योंकि तोले दो तोले छीजना एक बारमें सामान्य बात है यदि छटांक छटांकमें २ तोले छीजे तो भी बहुत ही होता है ।

(८) २८ जूनके १॥ तोलेके पातनमें छीजन बिलकुल न जानेसे निश्चय होताहै कि थोडा २ ही पातन ठीक है क्योंकि जगह पूरी मिलनेसे पारेकी भाप अच्छी तरह जमा होसकी उडी नहीं ।

(९) यह बातभी विचारणीयहै कि पहले साधारण पारदके परमाणु स्थूल होनेसे वह कम छीजताथा अब पारदके शुद्ध होजानेसे परमाणु सूक्ष्म होगये होंगे इस कारण उनका क्षय होना अधिक संभव है ।

नकशा पातनका ।

जो ११ छटांक ॥) भर पारद १ वार पातितको पुनः पातन करनेसे हुआ ।

तारीख पातन	पारा जो डालागया	पारा जो छुट गया	पारा जो ऊपरकी हांडीमें मिला	पारा जो नीचेकी हांडीमें मिला	कुलपारा दोनों हांडियोंका	घटी	विशेप वार्ता ।
१६।६।०५	२ छ. ५)	।।।)	१ छ.	१ छ. २)	२ छ. २।)	–२)	
१८।६	२ छ. ५)	।।।)	१ छ. से कम	१ छ. ।)	२ छ. २)	–२)	इसबार अग्नि कुछ तेज लग गई
२०।६	२ छ. ३)	+	१ छ. १॥)	१ छ. १॥)	२ छ. १।।।)	–१।)	
२२।६	२ छ. ३)	+	१ छ. ।)	१ छ. +१)	२ छ. १।।।)	–१।)	
	११छ. १)	१॥)	४+१॥)	५ छ. +१)	९ छ. २।।।)	-६।।।)	

२४।६ चारों दफेकी राखको पुनः पातन किया तो ॥) पारा और निकला–

२८।६ १॥) + १॥) + १॥) +

११छ.१) ९ छ.४।।।) १छ.१)

२८।६।१९०५ समग्र तोलनेसे पातित पारा १ सेर १ छटांक ३) भर हुआ–

जय श्रीशंकर स्वामीकी।

प्रथम प्रकारसे बोधन संस्कार ।

(संस्काराध्याय श्लोक ३०५ से ३०६ तककी क्रियासे)

दिक्पलं सैंधवं चूर्णं जलप्रस्थत्रयं तथा। धारयेद्घटमध्ये च सूतकं दोषवर्जितम् ॥ रुद्ध्वा तस्य मुखं सम्यङ् मर्दितं मृत्स्नया कुरु। निर्वाते निर्जने देशे धारयेद्दिवसत्रयम् ॥ (ध. सं. प. ३०)

२९ । ६ की शामको एक घडेमें (जिसमें१२ सेर पानी आता था) ६॥ सेर पानी और १ सेर सैंधानोंन डाल और सब पाराडाल शकोरेसे मुंह ढक मुलतानी और कपरौटीसे दर्जबंद कर दी गई और घडेको चीनीकी नाँदमें रख ऊपरवाले खानेमें रख ताला लगा दिया।

३ । ७–४ दिन बाद आज सवेरे घडा मँगवाया गया तो घडेके ऊपरके आधे भागपर सफेदी छागई थी और घडा बरफकी तरह नजर आता था वास्तवमें लवण घडेके बाहर निकल कर जम गया था जो कहीं कहीं सफेद परतोंमें छूट सकता था । घडा खोल पारा तोला गया तो१ सेर१छ० ३॥ रुपयेभरही हुआ अर्थात् ठीक हुआ । आगे नतथा नोकरके भाईके मरजानेसे काम बंद रहा।

२२। ७ संस्कृत पारेपर सोनेका वरक डालकर देखा

गया तो वरक तुरंत पारेमें जज्ब होगया किन्तु दूसरे पारेपर जो हिंगुलाकृष्ट और दो बार पातित था डालकर देखा गया तो वहांभी यही दशा थी और करीब २ यही दशाकेम्पूकोंसे आये पारदपर दीख पडी इससे ज्ञात हुआ कि पारद षंढही है।

दूसरे प्रकारसे बोधन।

(संस्काराध्याय श्लोक २८२ की क्रियासे)

कदर्थनेनैव नपुंसकत्वं प्रादुर्भवेदस्य रसस्य पश्चात्। बलप्रकर्षाय च दोलिकायां स्वेद्यो जले सैंधवचूर्णगर्भे॥ (र. चिं. ११)

२३। ७=उक्त१ सेर १ छ०३ रुपये भर पारेको कैंचीकी मार्कीनकी (एक तहकी पोटलीमें बांधा गया किन्तु झटका लगनेसे पारेके रवे कुछ नीचे निकल गये इसलिये) दो तहकी पोटलीमें बांध पोटलीको सूतकी सींक बराबर मोटी डोरसे बांधकर एक मटकेमें जिसमें २५ सेर पानी आता २० सेर पानी भर ३ सेर सैंधा नमक डाल उसमें लटका दिया गया और मटकेको भट्टी पर ७ बजेसे रख मंदाग्नि देना आरम्भ किया ८ बजे मटका चटक गया लाचार आंच बंद कर दी गई पर दोला उसी प्रकार स्थित रहने दिया गया शामको ४ बजे ठंढा होजानेके कारण पारदकी पोटली निकाल लीगई मटके पर लेहा वा कपरौटी न थी इस कारण और ३ मटके मंगवाकर १ पर लेहा चिकनी मिट्टीका जिसमें एक तह कपडेकी भी थी लगाया गया, बाकी २ हांडियोंपर मुलतानीसे दो दो कपरौटी कर दी गई पीछे उन दो हांडियोंमेंसे एक पर तीसरी कपरौटी और कर दी।

२४। ७ आज लेहा लगी हांडीमें वही पानी लौट और जितना पानी पहली हांडी पीगई थी उतना पानी और डाल और ऽ॥ सेर नमक और डाल ७ बजेसे अग्नि दी गई ८ बजेके करीब यह हांडीभी चटक गई तुरंत दूसरी हांडी कपरौटी करी बदल कर अग्नि जारी रक्खी गई। २ बजे यह हांडी भी कुछ चटकी लेकिन नत्थाने वहीं थोडा कपडा और मुलतानी लगा काम जारी रक्खा। अवश्य यह बडी मटकी खराब मट्टीकी बनीहै जो अग्नि नहीं सह सकती दोलायंत्रके लियेभी उत्तम मट्टीके बर्तन तय्यार कराने चाहिये।

७ बजे शाम तक यह काम जारी रक्खा एक घडेमें ५ सेर जल और ऽ॥ सेर नमकभर रख छोडा था जब पानीकी जरूरत हुई उसमेंसे पडता रहा दिनभरमें ४ सेर पानी पड गया रातको ७ बजे आंच बंद करदी गई १० बजे रातको देखा तो खूब गरम था सवेरे ६ बजे देखा तो कुछ गुनगुना अवतक भी था।

२५। ७ आज ७ बजेसे फिर उसी मटकीके नीचे आंच जलाई गई आधसेर नोंन और डाल दिया गया। (नमक हांडीको भेदकर वाहर आगया है) घडेमें १ सेर पानी पहला बचा था और १ सेर पानी और ऽ। पावभर नमक और डाल रख छोडा उसमेंसे पानी पडता रहा रातके सात बजेतक आंच दीगई वादको आंच बंदकर भट्टीपरही छोड दिया प्रातःकालतक पानी गुनगुना था।

२६। ७ (आज सवेरे देखा गया तो मटकीपर नमक बहुत निकल आया था) इस मटकीको बदलकर नई ३ कपरौटी करी मटकी चढाई गई (खाली हुई मटकीको देखा तो नमकने कपरौटीको हांडीसे जुदा कर दिया था, जरासे इशारेसे कुल कपरौटी हांडीसे जुदी छूट पडी और हांडी और कपरौटीके बीचमें नमककी चौअन्नी भर मोटी तह जमगई थी) पानी जो पुरानी हांडीका था वह कुछ मैला दीख पडा इसलिये ताजा पानी २० सेर भरा गया ३ सेर नमक सैंधा डाला गया फिर वही पारेकी पोटली उसमें उपरोक्त रीतिसे डाल ७॥ बजेसे आंच बहुत मंदी आरम्भ की१०बजे देखा तो पानी हांडीका केवल इतना गर्म हुआ था जिससे हाथ जलता न था। लिहाजा कुछ आंच और बढा दी (चूंकि हांडी बडी होतीहै पानी भी बहुत होताहै इसलिये पातनसे कुछ अधिक आंच ठीक पडतीहै) ३ बजे यह हांडी भी चटक गई और टपकने लगी लिहाजा फौरन बदलकर वही हांडी जो आज सवेरे बदल दी थी और जिस पर इस समय कपरौटी न थी पर हांडी सावुत थी भट्टीपर रख दीगई और पानी लौट दिया गया और४सेर पानी और¾ सेर नमक १ घडेमें गरम कर हांडीमें और डाल दिया गया. (क्योंकि लौटतेमें कुछ पानी गिरगया था और कुछ पानी जल चुकाथा)यह भी इंतजाम कर दिया गया था कि दोलायंत्रकी खपचके किनारोंसे रस्सी बांध छतके कडेमें लटका दिया था ताकि एकाएक हांडी टूट जानेसे पारदकी पोटली जमीनपर वा भट्टीमें न गिर अधर रहजावे।



विशेषबात—यह आगेके लिये बडी जरूरी है कि स्वेदनके लिये खूब दृढ मिट्टीके बरतन बनवाकर कहीं वाहरसे मँग-वाये जावें और यदि चीनी करीके तली बडी मिल सकें तो उनसे काम लिया जावे क्योंकि मिट्टीके बर्तन कुछ मैल मिट्टी छोडकर पानीको गदला कर देतेहैं यदि मिट्टीके ही बर्तन हों तो मजबूत मिट्टीके हों कपरौटी भी हो और बहुत-से तय्यार रक्खे जावें क्योंकि क्षार, नमक आदि उनको जल्दी खराब कर देते हैं इतने पारेके लिये २० सेरकी मटकी कुछ बडी थी १५ सेरके घडेमें भी काम हो सकता है।

आज रातके ७ बजे तक आंच दी गई ९ बजे देखा तो खूब गरम था भाप उठती थी रातभर भट्टीपरही रहा सवेरे-तक पानी गुनगुना था।

२७। ७ आज पारेकी पोटली निकाल खोली गई तो पहली तहमें ही सब पारा मिलगया पानी जुदा कर तोलनेसे १ सेर १ छ० ३) भर पारा पूरा उतरा। पारेको चीनीके ताशमें घुमानेसे पूंछ रहती थी और ज्यादः ढालू बरतनमें

करनेसे वह पूँछ निचुडकर पारा निकल जाता था और कुछ सफेदसी चीज पीछे रह जातीथी गालिबन यह नींबू और नमकका अंश है ।

इस पारेको जंभीरीके रससे धोया गया अर्थात् चीनीके ताशमें डाल हाथसे मला गया तो पारेके रवे रवेसे होगये फिर रसको निकाल पारदको ताशमें रख कपडेसे ढक धूपमें रख दिया आज थोडी देर यानी दो तीन घंटेही धूप लगी सब पारा सूखा नहीं ।

२८ । ८ आज पारेको धूपमें सुखा जुदा किया तो १ सेर १ छ० २।।) भर पारा जुदा होगया ताश सील जानेसे कुछ पारा उसमें लगा रह गया फिर धूपमें सुखा खुरच खुरचकर मुश्किलसे ६ माशे पारा निकाला नींबू और नमकका अंश जो पारेके साथ लगा रहगया था वह ताशमें चमचोड हो जमगया था इसलिये पारेको नहीं छोडता था गालिबन थोडे नींबूके रससे धोनेसे यह नतीजा हुआ जो बहुतसी कांजीसे धोया जाता तो यह खराबी न पडती ।

सब पारेको निकाल बरतनमें हिलानेसे पूंछ बहुतसी मालूम पडी और उसपर मैल स्याही भी दीख पडी बडा सन्देह हुआ फिर पारेको चार तह मलमलमें दो बार छाना तो पूंछ रफै होगई कपडे पर देखनेसे स्याही दीख पडी पहले पारा कपडेपर स्याही न देता था अब नींबू और नमकका अंश जो पारेमें रहा उसीकी स्याही कपडेपर आई और इसी अंशकी वजहसे पारेमें पूँछ रहती थी जब कपडेमें छाननेसे यह अंश निकल गया तो पारा साफ होगया और पूंछ बंद होगई । आगे कांजीसे धोनेका इंतजाम किया जावे पारा १ सेर १ छ० ३ रुपये भर है ।

तीसरे प्रकारसे बोधन साधारण पारदपर ।

यह क्रिया कठिन होनेसे पहले दूसरे पारेपर इसका अनुभव आरम्भ किया गया ।

२९ । ७–साधारण पारद जो 'हरिद्रांकोल' क्रियासे एकबार ऊर्ध्व पातित और फिर नवनीताभ्रक क्रियासे आधा ऊर्ध्व और आधा अधःपातित हो चुका था (अर्थात् मामूली पारा जिसके २ पातन होचुके थे) १४॥=) भर (२८ । ४ से २६ । ५ तक) और हिंगुलोत्थ पारद जो हरिद्रांकोल क्रियासे १ बार पातित होचुका था और फिर लहसनमें घुट चुका था १४।=) भर सब २९) भरको एक सैंधेनमककी ओखलीमें जो ६ सेर भारी थी और जिसके बीचमें २। इंच गहरा २॥। इंच चौडा गढा था और जिस ओखलीकी किनारी १॥। इंच मोटी थी और जिसका तला २ इंच मोटा था उसमें उक्त २९ तोले पारा भर (पहले आधा पारा भरा तो सब ओखलीमें न फैला इसलिये इतना भरना पडा) २ तोले नौसादरका चूर्ण डाल २ तोले नींबूका रस ऊपरसे डाल ऊपरसे नमककी डाट लगा डाटकी किनारी पर मुलतानीसे दराज बंद कर एक गढेमें जो १५ इंच चौडा और १२ इंच गहरा था २ इंच गंगारज डाल उसपर वह नमककी ओखरी रख ऊपरसे और रज डाली गई । रज थोडी होनेसे काम आगे न चला और रेत प्रभूलालके बागके पाससे मँगवाया गया और गीला होनेसे सुखा दिया गया ।

१ इसको वृहत् योगतरंगिणी, रसराजशंकर, रसराजपद्धति आदि ग्रंथोंमें नियमन माना है ।

३० । ७ आज ओखलीको निकाल कर देखा तो नींबूके रसने कोई खराबी ओखलीमें नहीं डाली थी ओखली बदस्तूर मौजूद थी लिहाजा फिर डाटको मुलतानीसे बंदकर गढेमें रख नीचे और बराबरमें मामूली रेत दे ऊपर गंगारज देदी गई १२ इंच गहरा गढा था जिसमें १॥ इंच रेत देकर ओखली रक्खी ४॥ इंच मोटी ओखली थी ६ इंच ऊपर रेत रहा सबसे ऊपर ऽ॥। गोबरके चूरेकी आंच दीगई ८ बजे सबेरेसे तीन तीन पाव चूरेकी आंच हर घंटे दीगई शामके ७ बजेतक १२ दफे आंच दीगई ९ सेर सूखे गोबर का चूरा जला १ घंटेमें आंच झीनी पड जातीथी उसी समय दूसरी आंच गोबरके चूरेकी रख दी जाती थी ।

३१ । ७ आज सबेरे ७ बजे देखा गया तो राख थोडी गरम थी राख हटा रेत देखा गया तो खूब गर्म था मगर हाथ जलता नहीं था रेत नीचे तक गरम निकला, सैंधवका डेला भी गरम था रेत हटा डेला निकाल खोला गया तो उसमें आधेके करीब नींबूका रस मौजूद था और नौसादर रेतकी तरह नजर आता था अर्थात् नींबूके रसमें हल नहीं हुआ था पारा निकाल तोला गया तो २९ तोले पूरा मौजूद था कुछ छीजन नहीं गई ओखलीमें कोई खराबी नहीं आई थी केवल जहां तहां नींबूका रस भरा था वहांतक चौडाईमें एक रुपयेकी मोटाईकी बराबर खांचासा पड गया था ।

मेरी रायमें इसी ओखलीमें ७ दिन कर्म चल सकता है किन्तु रस और नौसादर रोज नया दिया जावे आंच भी इतनी काफी समझनी चाहिये ।

उपरोक्त क्रियाका पुनः अनुभव ।

३१।७।०५–फिर इस पारदको उसी प्रकार उसी ओखलीमें भर २ तोले नौसादर डाल १ छटांक नींबूका रस डाल बंदकर भूधरयंत्रमें धर १० बजेसे ७ बजेतक एक एक सेर कण्डोंकी ८ आंच दीगई कोई १। घंटेमें दूसरी आंच लगती थी थोडे गेहूं रेतमें डाल दियेथे ।

१।८ आज सबेरे ७ बजे खोला गया तो रेत कलसे अधिक तप्त था हाथसे न निकालकर शकोरेसे रेत निकाला गया सैंधवका डेला भी खूब गुनगुना था गेहूं जो रेतमें डाले गये थे वह बिलकुल ज्योंके त्यों निकले इससे ज्ञात होताहै कि आंचकी गरमी यद्यपि पारेको काफी हो पर गेहुओंको जला या भून न सकी । तोलमें पारा ठीक बैठा–नींबूका रस ४ तोले निकला नौसादर १ तोला निकला ।

उपरोक्त क्रियाका तीसरीबार अनुभव ।

१।८ आज सबेरे फिर उसी पारेको उसी ओखलीमें भर १ तोला नौसादर ढाल १ छटांक नींबूका रस डाल बंद कर भूधरयंत्रमें धर १। सेर कंडोंकी आंच दीगई ९॥ बजेसे ७ बजेतक ८ आंच लगीं ।

२।८ आज सबेरे ७ बजे खोला गया तो राख भी गरम थी बालू खूब गरम थी लवणका डेला भी गरम था पारा तोलनेसे २८॥=) भर हुआ यह पारेकी ।=) भरकी कमी तीन दिनकी छीजनमें गई नींबूका रस१ छटांक हुआ ओखलीमें जहां तक नींबूका रस पडताथा वहां तक खांचा पड़ गया था ।

उपरोक्त क्रियाका चौथी बार अनुभव संस्कृतपारदपर ।

(अर्थात् संस्कृत पारदका पुनः बोधन संस्कार रसराज सुन्दरकी क्रियासे)

उत्तराशाभवः स्थूलो रक्तसैंधवलोष्टकः ।
तद्गर्भे रंध्रकं कृत्वा सूतं तत्र विनिक्षिपेत् ॥
ततस्तु चणकक्षारं दत्त्वा चोपरि नैम्बुकम् ।
रसं क्षिप्त्वाथ दातव्यं तादृक्सैंधवखोटकम्॥
गर्तं कृत्वा धरागर्भे दत्त्वा सैंधवसंयुतम् ।
धूलिमष्टांगुलं दत्त्वा कारीषं दिनसप्तकम् ॥
वह्निं प्रज्वाल्य तद्ग्राह्यं क्षालयेत् कांजिकेनतु।
अयं निरोधनन्नाम संस्कारो गदितो बुधैः ॥
अभावे चणकक्षारस्यापर्यन्नेवसादरम् ।
(रसराजसुन्दर–३३)

२।८ सैंधवके डेलेमें खुदी ओखरी (जिसकी तोल ऊपरकी डाटके अलावां ८ सेर गहराई २॥ इंच, चौड़ाई ऊपर १॥। इंच, नीचे ३ इंच थी किनारे ओखलीके २ इंच से ३ इंच तक मोटे थे ओखरीकी तहकी मोटाई२ इंच थी) में उक्त १ सेर १ छटांक३) रुपये भर पारेको भर १)नौसादर उडा हुआ भर १ छटांक जंभीरीका रस डाला गया तो ओखलीकी एक तरफसे रस निकलने लगा टेढ़ा किया तो पारा भी निकलने लगा अतएव सबको चीनीके बर्तनमें लौट लिया । (इस नमकके डेलेपै एक परत था जो दूसरे परतसे छुटगया और दराजमेंसे रास्ता होगया आगे ऐसे डेले काममें आवें जिनमें परत न हों)। और दूसरी ओखरीमें भरा गया तो उसमेंसे भी जहां परत था वहांसे निकल गया लाचार इस समय मुहूर्त ठीक न समझ काम बंद रक्खा गया ।

३।८ आज एक तीसरी नमककी ओखलीमें (जो ११सेर भारी ओखरीकी गहराई ३ इंच चौड़ाई ४ इंच थी, मुँह चौडा ३ इंच था, डाट ३ इंच मोटी थी तहकी मुटाई ३ इंच थी और जिसमें १ रस नींबूका रात भर भरा रक्खा रहा था और निकला नहीं था) १ सेर १ छ० ३) रुपये भर संस्कृत पारद भर२)रुपये भर नौसादर उड़ा हुआ डाल ½ छटांक नींबूका रस और डाल डाट लगा मुलतानीसे बंदकर भूधरयंत्रमें रख एक अंगुल रेत नीचे दो वा३ अंगुल इधर उधर ओखलीके ऊपर ८ अंगुल लेकिन डाटके ऊपर ५ अंगुल था १ सेर कंडोंकी आंच ७। बजे दीगई आगे घंटे घंटेमें आंच लगती रही शामके ७ बजेतक १२ आंच लगीं ।

४।८ आज सवेरे ७ बजे खोला तो रेत खूब गरम था खोलनेपर संपुट ठीक निकला । पारा तोलने पर १ सेर १ छटांक ३ रुपये भर हुआ ।

दूसरी बार ।

४।८ आज पुनः उसी ओखलीमें पारा भर २ तोले नौसादर बाजारी जो धुले कपडेके सदृश श्वेत था डाल २ छटांक नींबूका रस डाल,डाट लगा, भूधरयन्त्रमें रख एक एक सेरकी आंच ८॥ बजेसे आरम्भ की ७॥ बजे तक १२ आंचें दी गईं । राख निकाली नहीं जाती दहरेके ऊपर दहरा लगा दिया जाता है ।

५।८ आज सवेरे खोलते समय मालूम हुआ कि गढेका रेत डेलेकी एक तरफ गीला है शुबहा हुआ कि डेला रिसगया अहतियातसे निकाल खोला गया तो पारा और रस मौजूद था गालिबन गरमीसे रस उबलकर थोडासा डाटके जोडमें होकर निकल गया होगा पारा तोलने पर पूरा १ सेर १ छटांक ३ रुपये भर उतरा ।

तीसरी बार ।

५।८ उसी नमककी ओखलीमें (जांच कर कि रसरिसता तो नहीं) फिर पारा भर २ तोले नौसादर डाल १॥ छटांक रस जम्भीरी और नींबूका मिला हुआ डाल डाट लगा भूधरयन्त्रमें ९॥ बजेसे आंच सेर सेर भरकी दी गई ६॥ बजे तक १० आंच लगीं ।

६।८ आज खोला गया तो १॥ छ० रस निकला पारा पूरा हुआ डेलेके एक तरफ कुछ खांचासा है उसमें कुछ रेत चिपट गया था इससे फिर डेला रिसनेका शुबहा हुआ पर कोई बात ठीक समझमें नहीं आई तोल रस और रसराजकी पूरी होगई नौसादर अलबत्तः १) भर है ।

चौथी बार ।

६।८ आज पारेको फिर उसी ओखलीमें भर २ तोले नौसादर डाल १॥ छटांक नींबू और जम्भीरीका ताजा रस डाल डाट बन्दकर भूधरयन्त्रमें ८॥ बजेसे आंच दीगई ७ बजे तक ११ आंच लगीं एक एक सेरकी आंच काफी लगती है क्योंकि नौसादर उड़कर डाटके किनारों पर जम जाता है और डेला प्रातःकालके समय भी गरम निकलताहै।

७।८ आज सवेरे निकाला गया पारा पूराही है किन्तु कुछ ठण्ढी खिचने लगी थी चढानेसे एक अठन्नी आगे चढ गई यह कमी थोडी २ चार दिनकी छीजनसे हुई ।

पांचवीं बार ।

७।८ आज फिर उसी ओखलीमें उक्त पारा और १॥ तोले नौसादर १॥ छ० रस नींबू और जम्भीरी भर भूधरयन्त्रमें रख ८॥ बजेसे एक एक सेरकी आंच आरम्भ की ७ बजे तक ११ आंच लगीं ।

८।८ आज खोला गया तो पारा ठीक उतनाही अर्थात् १ सेर १ छ० २॥ तोले हुआ ।

छठी बार ।

८।८ आज फिर उसी ओखरीमें उपरोक्त रीतिसे उक्त पारद रक्खा गया ८॥ बजेसे ६॥ बजे तक ११ आंच लगीं

९।८ आज सवेरे निकालने पर पारा पूरा १ सेर १ छटांक २॥ रुपये भर हुआ ।

सातवीं बार ।

९।८ आज फिर उसी ओखलीमें उक्त पारेको भर २ तोले नौसादर ३ छ० जम्भीरीका रस डाल (रस इसलिये अधिक डाला गया कि ओखरीमें गड्ढा ज्यादः गहरा होगया था) ८॥ बजेसे आंच लगी ७॥ बजे तक ११ आंच लगीं ।

१०।८ आज सवेरे निकालने पर पारा पूरा १ सेर १ छ० २॥ रुपये भर हुआ ।

आठवीं बार।

१०।८ आज ओखली बदल दी गई ७ दिन काममें आनेसे ओखरीमें इधर उधर खांचा एकएक अंगुल बढ गया था (लेकिन मुंह ठीक रहा था और तला ठीक रहा था) खांचा बढ जानेसे दल कम रह गया था और सात दिन भी होचुके थे इसलिये ओखरी बदल दी गई दूसरी ओखरी जो खूब सुर्ख नमककी थी और २२ सेर भारी थी मुंह पर २ इञ्च चौडी नीचे ३। इञ्च चौडी गहरी ३ इञ्च, मुटाई ४ इञ्च तलेके नीचेकी मुटाई ४ इञ्च थी उसमें १ सेर १ छटांक २॥ रुपये भर पारा भर २ तोले नौसादर डाल २ छटांक नींबू और जम्भीरीका रस डाल, डाट लगा (जो ऊपरसे ५॥ इञ्च चौडी थी और जो १॥ इञ्च मुंहके इधर उधर चढी रहती थी और १॥ इञ्च मोटी थी) मुलतानीसे दराज बन्द कर भूधरयन्त्रमें धर रेत भर डेलेसे ८ अंगुल ऊंचा रेतकर (डाटसे ६॥ अंगुल ऊंचा रहा) १०॥ बजेसे आंच देना आरम्भ किया। पहली ३ आंच १। सेरकी आगे एकएक सेरकी दी गई ८ आंच लगीं।

११।८ आज सवेरे खोलनेसे डेला नमकका गरम था पारा निकाल तोला तो पूरा १ सेर १ छ० २॥ रुपये भर हुआ।

नवींबार।

११।८ आज फिर उसी ओखलीमें रख २ तोले नौसादर २ छ० नीबूका रस डाल बन्दकर भूधरयन्त्रमें ८ वजेसे एकएक सेरकी आंच दी गई ७ बजे तक १२ आंच लगीं।

१२।८ आज खोलने पर डेला खूब गर्म निकला पारा निकाल तोला तो पूरा १ सेर १ छ० २॥ रुपये भर हुआ।

दशवीं बार।

१२।८ आज फिर उपरोक्त विधिसे उसी ओखलीमें पारा भर १२ आंच एकएक सेरकी दी गई।

१३।८ आज पारा निकालने पर पारा पूरा १ सेर १ छ० २॥ रुपये भर हुआ।

ग्यारहवीं बार।

१३।९ आज फिर उसी प्रकार ९। वजेसे ऽ१= सेरकी आंच लगी ११ आंच लगीं।

१४।८ आज रेत देखा तो इतना गर्म था जो हाथ नहीं रक्खा जाता था पारा पूरा उतरा।

बारहवीं बार।

१४।८आज फिर उसी प्रकार रख दिया गया नौसादर आज एकही तोला डाला इस खयालसे कि लवणका असर कम पड़ता होगा अब गढ़ा नमकमें इधर उधरको बढगयाहै४।इंचहोगयाहै डाटके नीचे भी कुछ खांचासा पड गयाहै- आज ८बजेसे १।सेरकी आंच दीगई शामके ७ बजे तक १०आंच लगीं।

१५।८आज निकाला तो पारा ठीक निकला,इतनी आंच कुछ हानिकारक नहीं हुई।

तेहरवीं बार।

१५।८आज फिर उसी ओखलीमें उपरोक्त विधिसे उक्त १सेर १ छ० २॥ रुपये भर पारदको भर,२तोले नौसादर और ३ छटांक रस जंभीरी डाल-घर (गढा) बड़ा होगया था इस लिये रस बढ़ा दिया बंद कर ८॥ बजेसे ७बजेतक एकएक सेरकी ११ आंच लगीं।

१६।८आज पारा ठीक निकला नौसादर उड़कर डाटके इधर उधर खांचेमें जम जाताहै।

चौदहवीं बार।

१६।८आज फिर उक्त१सेर१छ० २॥ रुपये भर पारदको उपरोक्त विधिसे उसी ओखलीमें भर,२तोले नौसादर ३ छ० रस जंभीरी डाल बंदकर भूधरमें उपरोक्त रीतिसे रख ८॥ बजेसे ७ बजेतक सवासवा सेरकी ९ आंच लगीं।

१७।८आज सवेरे खोला गया तो रेत खूब गरम निकला हाथ नहीं रक्खा जाता था डेला भी जादा गरम था मगर कोई खरावी नहीं हुई थी लिहाजा१।सेरकी आँच ज्यादह न थी इतने बड़े डेलेको इतनीही आँच देना मुनासिब है पारा निकाल तौला तो ठीक हुआ खांचा चारों तरफ़ ज्यादा होगया है३।इंच असली चौड़ाई थी अव ४॥। इंच होगई है अर्थात्१॥इंच बढगया है लेकिन जितने ऊंचे तक पारा उठा उतने ऊंचे तक खाँचा बढा नहीं न तलीमें कोई विकार हुआ क्योंकि तली भी पारेसे ढकी रही डाटके नीचे मुंहकी चौड़ाई उतनीही रही मगर डाटके जोड़पर जहां मुलतानी गलती थी वहां नीवू और नौसादरका असर मुलतानीके साथ नमकपर पड़कर खाँचासा पड़गया है।

पन्द्रहवीं बार।

१७।८ आज फिर उसी ओखरीमें उक्त १ सेर १ छ०२॥ रुपये भर पारा भर २ तोले नौसादर ३छ० रस जंभीरी भर बंदकर भूधरमें ८॥ बजेसे ७ बजेतक सवासवा सेरकी ९ आंच लगीं।

१८।८ आज पारा निकाला तो ठीक निकला डेला खूब गर्म था।

सोलहवीं बार।

१९।८ आज फिर उसी तरह उक्त पारद रक्खा गया और ९वजेसे ७ बजेतक ९ आंच सवासवा सेरकी दीगई।

१९।८ आज खोलने पर पारा पूरा १ सेर१ छ०२॥ रुपय भर हुआ।

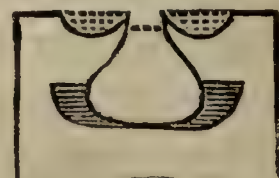
सत्तरहवीं बार।

१९।८आज फिर उपरोक्त विधिसे उक्त १सेर१छ०२॥रुपये भर पारदको रख ९आंच सवासवा सेरकी दीगई।

२०।८आज पारा निकाल तोला तो पूरा हुआ।

अठारहवीं बार।

२०।८आज नमककी ओखलीको आधा इंच गहरा और करांया गया इसलिये कि इधर उधर तो नीवू और नमकके असरसे खांचा बढ़गया था मगर नीचे तहमें कोई असर नहीं पड़ा था ऊपरभी जो नुकतोंका निशानवाला खांचा



पड़गयाथा उसीके मुताबिक वीचमेंसे छठवाँ कर हमवार

करादियागया और फिर उसी प्रकार उक्त पारा और २तोले नौसादर ३छ०रसजंभीरी डालकर बंदकर ९।बजेसे ७ बजे-तक ८ आंच सवासवा सेरकी दीगई २१। ८ आज पारा निकाल तोला तो पूरा १ सेर १ छ० २॥ रुपये भर हुआ।

उन्नीसवीं बार।

२१।८ आज फिर उक्त पारदको उपरोक्त विधिसे रख ८॥ बजेसे सवासवा सेरकी ९ आंच लगीं।

२२।८ आज पारा निकाल तोला तो पूरा निकला।

बीसवीं बार।

२२।८ आज फिर उपरोक्त रीतिसे पारदको रख सवा-सवा सेरकी ९ आँचें दीगईं।

२३।८ आज पारा निकाल तोला तो पूरा हुआ।

इक्कीसवीं बार।

२३।८ आज फिर उसी तरह पारा रक्खा गया और ८ बजेसे ७ बजेतक सवासवा सेरकी आंच दीगई।

२४।८ आज ठीक निकला तोल पारेकी अब ठीक ठीक १ सेर १ छटांक २ भर है पहले शोधन संस्कारके आरम्भमें तोल १ सेर १ छ० ३) भर थी यानी १)भर घटा (१ सेर १ छटांक २) भर पारदहै)

(जय श्रीशंकर स्वामीकी बोधन बहुतही बढ़िया हुआ)।

ॐ शिवाय नमः।

नियमनसंस्कार।

(अष्ट संस्काराध्यायके ३३४ से ३३५ तकके श्लोककी क्रिया)

कर्कोटी लशुनं नागं मार्कवं चिंचिका पटुः एभिस्त्रि दिवसैःस्वेदाद्वीर्य्यवाञ्जायते रसः। इति लब्धवीर्य्यःसम्यक् चपलोसौ नियम्यते तदनु। फणिलशुनाम्बुजमार्कवकर्कोटीचिंचिकास्वेदात्॥ (ध. स.)।

३०।८।१९०५–वनककोडेकी बेल, पत्ता, फल, फूल, ६॥ सेरका रस १ सेर।

नागफनी.................. ४ सेरका रस १॥ सेर

भांगरा.....................२ सेरका रस १=सेर

लहसन कांजीमें भिगो रस निकाला१ सेरका रसऽ।सेर

इमली पकी हुईका गाढा पन्ना.........ऽ= का १ सेर

ये रस ४ आदमियोंने दिनभरमें निकाले...ऽ५=सेर।

३१।८ लहसनका रस आज सवेरे निकाला गया सब मिला कर ५ सेर रस और १० तोले लवण एक कपरौटी करी हांडीमें जिसका पेट कम चौडा था और गरदन ऊंची थी भरकर (हांडी इतने रससे भरगई सिरफ किनारेसे ३ अंगुल खाली रही) उस हांडीमें एकतहकी कैंचीकी मारकीनकी पोटलीमें उक्त १ सेर १ छ० २ तोले पारेको बांध दोलायंत्रकी विधिसे लटका कर पोटली (हांडीकी तहसे २ अंगुल ऊंची रही) हांडीको सरवेसे ढक–९॥ बजेसे मंद अग्नि दीगई ६॥ बजे रात भर तक रातके८बजे और१० बजे और भी आंचका दहरा देदिया १० बजे राततक खूब गर्म था सवेरे ६ बजे भी गुनगुना था दिनमें ककोडेका रस ऽ॥=और भांगरेका रस ऽ॥=और लहसनका रस १$\frac{3}{2}$ छटांक इमलीके पत्तोंका रस ६॥ छटांक सब मिलाकर १॥। सेर रस पडा।

१।९ आज सवेरे ७ बजेसे फिर आंच आरम्भ कर दी गई रस हांडीका घटकर पोटलीकी ऊपरकी गांठतक रहगया था इसलिये ८ छटांक रस ककोडेका और डाला गया बादको आवश्यकतापर नागफनीका १० छटांक, भांगरेका ६ छटांक, लहसनका ऽ१–सेर और इमलीका (फल और पत्तों दोनों का) १० छटांक नोन २ छ० आज पडा रातके १० बजे तक आंच जलाई गई आज दो दिनमें लहसनका रस ऽ१॥= सेर और बाकी सब चीजोंका रस२ सेर २ छटांक पड चुका।

२।९ आज हांडीके नीचे जो गाद बैठ गई थी उसको निकाल दिया गया और रस रहने दिया ७ बजेसे आंच आरम्भ की २ छटांक नोन और १ सेर ६ छ० ककोडेका रस, १२ छटांक नागफनी १२ छ० भांगरे का इमलीका पन्ना और पत्तोंका रस १२ छ०, लहसनका रस ऽ॥ सेर–सब ऽ४=सेर रस पडा रातको १० बजेतक आंच लगी इन तीन दिनोंमें १४। सेर रस पडा।

३।९ आज पारेको तीन दिन होजानेसे हांडीसे निकाल पोटलीसे खोल कांजीसे धोया गया तो १ सेर १ छटांक २) भर पारा पूरा हुआ। जय श्रीशंकरस्वामीकी।

नियमनका दूसरा प्रकार।

(अष्ट संस्काराध्यायके श्लोक३४५ से ३४६तककी क्रियासे)

मेघनादरसैरेवं सर्पनेत्ररसैरपि। मार्कवाद्भिश्चिंचिकाद्भिः मूषाकरणिकारसैः। वंध्याकंदरसैश्चैव पीतवर्णरसैस्तथा। लांगलीकहंसपादीरसश्चामलकीरसैः॥ मासत्रयस्य पाकेन रसोवह्निसहो भवेत् (र. रा. ल.)

१ चौलाई, २ नागफनी, ३ भांगरा, ४ मोथा, ५ इमली, ६ मूषाकर्णी, ७ बांझककोडा, ८ हल्दी, ९ जलपीपल (वा-कोच वा कलिहारी), १० छुईमुई, ११ आंवला इनके रसमें ३ मास पकानेसे पारद अग्निको सहने वाला होजाताहै।

३।९ आज (१) चौलाईका रस ८ छटांक, (२) नागफनीका ८ छ०, (३) भांगरेका ८ छटांक, (४) (मोथा हरा नहीं था), (५) इमलीके फलका काढा ८ छटांक,(६) (७) बांझ ककोडेका रस ८ छटांक, (८) (हल्दी हरी नहीं मिली) (९) जलपीपलका रस ८ छ०, (१०) (११) आंवलेका काढा ८ छटांक, (हल्दी, नागरमोथेकी जगह धतूरेका रस ८ छटांक) और लहसनका रस २ सेर सब ६ सेर रस आज निकाला।

४।९ आज उक्त ६ सेर रसमेंसे ५ सेर रस एक कपरौटी करी हांडीमें भर (जो गर्दनतक भरगई) उसमें उक्त १सेर १ छ० २ रुपये भर पारा एकतह कैंचीकी मारकीनकी पोटलीमें बांध दोलायंत्रके प्रकारसे लटका ९ बजेसे आंच दीगई पीछेसे १ सेर रस बचा हुआ और आज निकाला हुआ छुईमुईका रस ८ छ० मूषाकर्णीका ८ छटांक सब ३ सेर रस शामतक और पडा। फिर ककोडा, नागफनी, भांगरा, चौलाई, मूषाकर्णी, छुईमुई, जलपीपर, आमला, इमली, धतूरा इन १० औषधियोंका आधआध सेर रस निकाल इकट्ठा कर दिया गया ५ सेर हुआ यह शामसे पडा काम रातभर चलता रहा सवेरे तक २॥ सेर रस पडा।

५।९ आज भी आंच बराबर जारी रही शामतक बचा हुआ २॥ सेर रस पडा फिर उपरोक्त १० औषधियोंका रस पाव पाव भर निकाल २॥ सेर हुआ शामसे सबेरे तक रातभरमें पडगया रातदिन काम चला।

६।९ आज भी रातादिन काम चला और उपरोक्त १०औ-षधियोंमेंसे छुईमुई छोड (मिली नहीं थी) बाकी ९ चीजोंका आधआध सेर रस निकाला गया सब ४॥ सेर हुआ उसमेंसे आधा दिनमें पडगया और आधा रातमें।

७।९ आज तीन दिन होगये इसलिये और रस नहीं पडा हांडी भरी हुई थी उसीमें आंच दीगई १२ बजे दिनतक आंच लगी शामको ४ बजे निकाल तोला गया तो पूरा उतरा अर्थात् १ सेर १ छटांक २ रुपयेभर।

दूसरे प्रकारसे नियमन समाप्त। जय श्रीशंकर स्वामीकी। इस क्रियामें. ६+१+५+२॥+४॥=१९=सेर रस पडा।

नियमनका तीसरा प्रकार।

स्वेच्छा गृहीत नियामक औषधियोंसे दो प्रकारसे नियमन होचुका परन्तु उग्र औषधियोंसे हुआ रसायन औषधियोंका प्रयोग कम हुआ इसलिये "रसार्णवमें" कही हुई नियामक वर्गसे नीचे औषधियां छांटकर फिर नियमन आरम्भ किया-

७।९ रस निकाले ६॥ सेर।

८।९ आज भी रस निकाले ८॥। सेर सब १५। सेर जिनका प्रमाण निम्नलिखितहै-

भांगरेका रस १॥। सेर, आंवलेका काढा १ सेर, मिसी या काकजंघाका रस, १सेर मकोयका रस १२ छटांक, नीली और सफेद धनत्तरका ६ छटांक, सांठका १॥. सेर, गोभीका १ सेर, पियावांसेका १। सेर, गेंदेका १ सेर, कंवीका १॥ सेर, सितम्वरका १ सेर, मछेछीका ६ छटांक, ब्रह्म-डंडीका २॥ छटांक, जल पीपलका ८ छटांक, धतूरेका १० छटांक, ककोडेकी जडका१सेर वस१५।सेर रस निकला।

इन सब रसोंमेंसे ८ सेर रस हांडीमें भर (यह हांडी पहली हांडियोंसे बडी थी और ८ सेर रससे भरी ३ अंगुल खाली रही) दोलायंत्रकी विधिसे ९ बजे दिनसे आंच दी गई दिनरात काम चला ४ सेर रस दिनमें और पडा और ३। सेर रस रातमें पडा सब १५। सेर रस समाप्त होगया।

९।९ आज भी आंच जलती रही गोभीका रस १० छटांक, इमलीका काढा ८ छ०, आमलेका काढा ८ छ०, पियावांसेका रस ८ छ०,सितावरका काढा८ छ०, कंवीका रस १ सेर, तालमखानेकी जडका स्वरस १॥ सेर, धतूरेका रस ८ छटांक, जलपीपलका १० छटांक, सब ६। सेर रस निकले। यह रस सबेरेसे दिनभर और रात-भरमें पडगये। रात दिन आंच दीगई।

१०।९ चूंकि यह तीसरा नियमन अपनी रायसे किया गया था इसलिये इसको वहुत दिनतक करना उचित न समझ आज यानी दो दिन पीछे ही बंद करना उचित समझा पर हांडीमें रस वहुत था इसलिये इसको और रस डाले विनाही दोपहर १२ बजेतक आंच दीगई फिर बंद करदी गई इस नियमनके तृतीय प्रकारमें सब २१॥ सेर रस पडा। तीसरे पहर पारा निकाल तोला गया तो ठीक १ सेर १ छ०२) भर हुआ। जय श्रीशंकरस्वामीकी।

११।९ आज गरम कांजीसे पारदको धोया गया तो तोल ठीक १ सेर १ छ० २) भर बैठा।

इति श्रीजैसलमेरनिवासि पं० मनसुखदासात्मजव्यास-ज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहितायां भाषाटीकायां स्वानुभूताष्टसंस्कारसंबन्धिपारदकर्मवर्णनं नाम नवमोऽध्यायः॥ ९॥

बुभुक्षिती करण वा मुखीकरणा ध्याय १०.

शुद्ध और बुभुक्षित पारदकी महिमा।

दोषैर्विहीनं विहितं रसेन्द्रं सुशोधितं स्वेद नमर्दनाद्यैः॥ यदौषधीनां मुखजातदिव्यं दारिद्र्यरोगाखिलहारि दिव्यम्॥ १॥ (र. पा.)

अर्थ-स्वेदन मर्दन आदि संस्कारोंसे विधिपूर्वक शुद्ध किया हुआ इसी कारण दोषोंसे रहित और औषधियोंसे जिसका मुख होगयाहै ऐसा पारद सम्पूर्ण दरिद्रता रूपी रोगोंका नाश करता है॥ १॥

अन्यच्च।

धातून्मुखे समुत्पन्ने यदा भुंक्ते रसोऽखिलान्॥ तदा मृत्युदरिद्राणां भयं नैव भृशं भवेत्॥ २॥ (र. पा.)

अर्थ--मुख उत्पन्न होनेपर पारद जब समस्त धातुओंको भक्षण करजाताहै तब मृत्यु और दरिद्रताका लेशमात्र भी भय नहीं होताहै॥ २॥

मुखीकरण दीपन।

वस्तुतस्तु दीपनस्यापरपर्य्यायो मुखकरणमिति न पृथक् संस्कारः तत्साधकान्यूनविंशतिकर्माणीति नियमभंगात॥ ३॥ (र. रा. शं.)

अर्थ-मुखीकरण, पारदका कोई भिन्न संस्कार नहींहै क्यों कि, मुखीकरण दीपनका ही दूसरा नाम है। यदि दीपनका दूसरा नाम मुखीकरण न मानाजाय तो उन्नीस संस्कारोंके नियमका भंग होताहै ऐसा उन लोगोंका मत है जो पारद सिद्धिके दाता उन्नीस संस्कारोंको मानते हैं जैसे (रसराज शंकर प्रभृति)॥ ३॥

बुभुक्षितीकरण।

सहस्रनिम्बूफलतोयघृष्टो रसो भवेद्वह्निसमप्रभावः॥ ४॥ (टो.नं)

अर्थ-एक हजार नींबूके रसमें घोटनेसे पारद अग्निके समान प्रभाववाला होता है अर्थात् बुभुक्षित पारा होता है॥

अन्यच्च ।

सहस्रनिंबूफलनीरघृष्टो रसो भवेद्वह्निसमप्रभावः । समस्तरोगक्षयकृत्प्रभूतवर्णायुषी संविदधाति पुंसाम् ॥ ५ ॥ (र. प.)

अर्थ–एक हजार नींबूके रसमें घोटा हुआ पारद समस्त रोगोंका नाशक और अग्निके समान प्रभाववाला होता है और वह पारा मनुष्योंके उत्तम वर्ण और आयुको बढाता है ॥ ५ ॥

अन्यच्च ।

सहस्रनिंबूफलतोयघृष्टो रसो भवेद्वह्निसमप्रभावः । सव्योषराजीलवणस्सचित्रः सरामठो विंशतिवासराणि ॥ ६ ॥ (यो.त., र.चिं.,र.रा.शं.,र.रा.सुं.,नि.र.)

अर्थ–सोंठ, मिर्च, पीपल, राई, सैंधव और चित्रक इन सबको मिलाकर पारदके षोडशांशके तुल्य ग्रहण करे फिर प्रतिदिन पचास नंबूके रससे २० दिन तक घोटे तो एक सहस्र नींबूके रसकी घुटाई पूरी होजातीहै, बस इस क्रियासे पारा बुभुक्षित होताहै (निघण्टुरत्नाकरने इस क्रियाको अनुवासन संस्कार माना है और रसराजशंकरने दीपन और वस्तुतः यह दीपन ही है ऐसा हमारा मत है) ॥ ६ ॥

मुखीकरण ।

अथवा सपटुक्षारनवसारकटुत्रिकैः ॥ रसोनशिग्रुराजीभिरुदक्खल्वेऽम्लकांजिकात् ७॥ (रसमानस०)

अर्थ–अथवा सैंधव, जवाखार, नौसादर, सोंठ, मिर्च पीपल, लहसन, सैंजना, राई और कांजीसे पारदको त खल्वमें घोटे तो पारदका मुखीकरण होताहै ॥ ७ ॥

अन्यच्च ।

अथवा त्रिकटुक्षारौ राजीलवणपंचकम् ॥ रसोनं नवसारश्च शिग्रुश्चैकत्र चूर्णितैः॥८॥ समांशैः पारदादेतैर्जंबीरस्य द्रवेण च ॥ निंबूतोयैः कांजिकैर्वा तप्तखल्वे विमर्दयेत् ॥ अहोरात्रत्रयेण स्याद्रसे धातुचरं मुखम् ॥ ९ ॥ (धं. सं., र. रा. शं., र.रा. सुं., शार्ङ्गधर, यो. त., र. सा. प.)

अर्थ– अथवा सोंठ, मिर्च, पीपल, जवाखार, राई, पांचों नोंन, लहसन, नवसादर और सैंजना इनका चूर्ण कर पारदके तुल्य ग्रहण करना चाहिये फिर जंभीरीके रसमें अथवा नींबूके रसमें या कांजीके रसमें तीन दिन रात तप्तखल्वमें मर्दन करे तो पारदके धातुओंको खानेवाला मुख होताहै ॥ ८ ॥ ९ ॥

अन्यच्च ।

द्वौ क्षारौ त्रिकटुश्चापि राजिका नवसादरम् । हुताशनश्च शिग्रुश्च रसोनः पटुपंचकम् ॥ १० ॥ रसात्समांशकैरेभिर्मर्दयेन्निम्बुकद्रवैः । जंबीरस्वरसैर्वापि कांजिकैर्वा प्रयत्नतः ॥ ११ ॥ तुषवह्निस्थके खल्वे अहोरात्रैस्त्रिभिर्भवेत् । बुभुक्षितो रसो बाले सर्वधातुचरो भवेत् ॥ १२ ॥ (अनुपानतरंगिणी)

अर्थ–जवाखार, सज्जीखार, सोंठ, मिर्च, पीपल, राई, नवसादर,चित्रक, सैंजना, लहसन और पांचोंनोंन इन सबको पारदके समान लेकर नींबूके रससे अथवा जंभीरीके रससे या कांजीसे पारदको तीन दिन तक तप्त खल्वमें मर्दन करे तो हे पार्वतीजी ! पारेके धातुओंको खानेवाला मुख होताहै ॥ १०–१२ ॥

सुगमप्रकारसें सिद्ध रसका मुखकरण ।

जवाखार पुनि त्रिकुटा लेय । पंच लवण साजीहू देय ॥ सँहजन लहसन जुत नवसार । ये सब सम पीसे निरधार॥यहचूरण पारदसम लीजै।निंबूरसमें मर्दन कीजै॥तथा जँभीरीरस घुटवाय । अथवा काँजीनीर पिसाय ॥ या प्रकारतें घोटिये, उष्ण खल्वके मांहि । तीन अहोनिसलों गुनी, रस भूखो ह्वै जाय ॥ या विधि पाराके विषै, मुख प्रगटत है आय । तब स्वर्णादिक धातु सब, भलीतरेंते खाय ॥ (वैद्यादर्श पृष्ठनं० १२)

मुखीकरण ।

सास्यो रसः स्यात्पटुशिग्रुतुत्थैः सराजिकैः सोषणकैस्त्रिरात्रम् ॥ पिष्टस्तथा स्विन्नतनुः सुवर्णमुख्यानयं खादति सर्वधातून्॥ १३॥ (यो. त., र.रा. सुं., यो. र, बृ. यो.)

अर्थ–पारदका नोंन, सैंजना, राई, सोंठ, मिरच, पपिलके साथ तीन रात पीसे और स्वेदन करे तो पारा सुवर्ण आदि समस्त धातुओंको खाजाता है ॥ १३ ॥

अन्यच्च ।

कर्पूरसदृशं श्वेतं खल्वे शोषय[1] तत्पुनः । क्षारैर्लवणसाम्लैश्च बिडैस्तीक्ष्णैर्मुखार्थतः ॥ १४ ॥ (र.प.)

अर्थ–कपूरके समान श्वेत पारदको मुख करनेके लिये अम्लसहित तीक्ष्ण बिडोंसे अथवा लवण और क्षारोंसे शोधन करे (स्वेदन करे) ॥ १४ ॥

अन्यच्च ।

अथवा षड्बिन्दुकीटैश्च रसो मर्द्यस्त्रिवासरम् ॥ लवणाम्लैर्मुखं तस्य जायते धातुभक्षकम् ॥ १५ ॥ (बृ.यो.,यो.र.,र.रा. सुं.,नि.र.)

१ शोधय–इत्यपि ।

अर्थ-षड्बिन्दुनामका कीडा,नोन और खटाईके साथ तीन दिन मर्दन कियेहुए पारदके धातुओंके खानेवाला मुख होताहै ॥ १५ ॥

सम्मति-पारदसे षोडशांश षड्बिन्दुकीटको लेकर नोंन तथा अम्लवर्गसे पांच दिवसतक दो दो घडीके अंतरसे मर्दन करे तो पारा धातुभक्षक होताहै यदि इस प्रकार नहीं किया जायगा तो नहीं होगा। ऐसी प्रक्रिया शिवागम नामके शास्त्र-लिखी है।

षड्बिन्दुकीटकी परीक्षा-यह कीडा वर्षा ऋतुमें दो तीन अंगुलका लंबा और मोटे शरीरका होताहै और मोटे मोटे ६ पाँव होतेहैं और इसके शरीरके दोनों ओर तीन तीन बूंदें होतीहैं इसकी परीक्षा रियासत जैसलमेर राजपूतानेके राज-वैद्य व्यासमलजीदासजी शास्त्रीसे सुनी थी।

अन्यच्च ।

कुमार्याः करवीरस्योन्मत्तस्यापि त्रिसत-धा ॥ प्रत्येकं भावितः सूतो विधत्ते मुख-मुत्तमम् ॥ १६ ॥ (र.पा.)

अर्थ- घीग्वार, कन्हेर, धतूरा इनमेंसे प्रत्येकके रससे इक्कीस बार भावना दियाहुआ पारद उत्तम मुखको धारण करता है ॥ १६ ॥

मुखीकरणके लिये विषोपविषमें घोटनेकी आज्ञा ।

वार्तिक-दीपन अनुवासन संस्कारसे पारा बहुत भूखो होतहै परन्तु गंधकको खाय नहीं सकैहै जब पारामें मुख होय कहा असनसामर्थ्य होय तब गंधकको खाय और हू धातुनकों खाय ताते पारामें मुख होयबे निमित्त विष उपविषमें घोटै (वैद्यादर्श पृष्ठ नं० १२)

अन्यच्च ।

विषोपविषकैर्मर्द्यः प्रत्येकं दिनसप्तकम् । मुखं च जायते सूते बलं वह्निश्च वर्द्धते ॥ १७॥ (र.रा.सुं.)

अर्थ-पारदको ७ दिवसपर्यंत विष और उपविषोंसे मर्दन करे तो पारेमें मुख होताहै बल और वह्नि भी बढतीहै॥१७॥

अन्यच्च ।

विषैरुपविषैः सोथ सुमुखो जायते स्थिरः । अपक्वधातुग्रसनस्तीक्ष्णाग्निः सर्वकार्यकृत् ॥ १८ ॥ ॥ (र.मानस.)

अर्थ-विष और उपविषोंके साथ मर्दन किया हुआ पारद स्थिर, बुभुक्षित, अपक्व (कच्चा), धातुओंका भक्षण-कर्ता और तीक्ष्णाग्निवाला पारद समस्त कार्योंके उपयोगी होताहै ॥ १८ ॥

अन्यच्च ।

अर्कसीहुंडधत्तूरलांगलीकरवीरकाः ॥ गुंजाहिफेना चेत्येताः सप्तोपविषजातयः १९ एतैर्विमर्दितः सूतश्छिन्नपक्षः प्रजायते। मुखं च जायते तस्य धातूंश्च ग्रसते द्रुतम् ॥ २०॥ (यो. चिं, नि. र, र. रा. सुं.)

अर्थ-आक, धतूरा, थूहर, कलिहारी, कनेर, चौंटनी और अफीम ये सात जातिके उपविषहैं इनसे मर्दन कियाहुआ पारद पक्षरहित होजाता है और उसके मुख होकर समस्त धातुओंको शीघ्रही खाजाताहै ॥ १९ ॥ २० ॥

नवविष ।

कालकूटो वत्सनाभः शृंगिकश्च प्रदीपनः ॥ हालाहलो ब्रह्मपुत्रो हारिद्रः सक्तुकस्तथा ॥ सौराष्ट्रिक इति प्रोक्ता विषभेदा अमी नव ॥ २१ ॥ (र. रा. सुं.)

अर्थ-कालकूट, वत्सनाभ, सींगिया, प्रदीपन, हालाहल, ब्रह्मपुत्र, हारिद्र, सक्तुक और सौराष्ट्रिक ये नौ प्रकारके विष हैं ॥ २१ ॥

विशोपविष ।

शृङ्गको वत्सनाभश्च कालकूटः प्रदीपनः ॥ सौराष्ट्रिको ब्रह्मपुत्रो हारिद्रः सक्तुक-स्तथा ॥ २२ ॥ हालाहलइति प्रोक्ता विष-भेदा अमी नव ॥ अर्को वज्री तथोन्मत्तो लांगली हयमारकः ॥ २३ ॥ गुंजाहिफेन-मित्येते भेदाश्चोपविषस्य हि ॥ एतैः संम-र्दितः सूतश्छिन्नपक्षो भवेद् ध्रुवम् ॥ बुभुक्षा जायते चास्य धातूनन्यांश्चरत्यपि ॥ २४ ॥ (अनु. तर., ध. सं, र. रा. शं.,शार्ङ्गधर.)

अर्थ-सींगिया, वत्सनाभ, कालकूट, प्रदीपन, सौराष्ट्रिक, ब्रह्मपुत्र, हारिद्रक,सक्तुक और हालाहल ये तो विष हैं तथा आक, थूहर, धतूरा, कलिहारी, कनेर, चौंटनी और अफीम ये सात उपविष हैं इन सबसे तीन दिवसतक तप्तखल्वमें मर्दन कियाहुआ पारा पक्षरहित होकर बुभुक्षित होताहै इसी कारण समस्त धातुओंको खाजाताहै ॥ २२-२४ ॥

विषभेद कथन एलाछंद ।

कालकूट औ वत्सनाभ शृंगिक विष जानों। बहुरि प्रदीपक नाम फेरि हालाहल मानों॥ ब्रह्मपुत्र हारिद्र फेरि सक्तुक विष लीजै। सौराष्ट्रिक जु सभेद भेद इम नवहु कहीजै॥

दोहा ।

पृथक् पृथक् इन विषनमें, पारद घोटि सुजान । सब न मिलैं तो एक ही, विषै घोटि गुनवान॥ जो विष एक हि लेय तो, शृंगी विष गुनवंत । काढा करि रस घो-टिये, सात दिवस परियंत ॥

उपविषकथन-बरवैछंद ।

अर्कछीर अरु थूहरछीर मँगाय। रसधतूर

कलिहारीरस पुनि लाय। अश्वमारजडरस पुनि चिरमी क्राथ । त्यों अफीम गनि लीजै इनके साथ । सात कहे ये उपविष पृथक् मंगाय। तीन तीन दिन इन मधिरस घुटवाय।

दोहा-या विधि विष उपविष विषें, जब पारद घुटिजाय। छिन्न पक्ष है जाय तब, मुख ताकें प्रगटाय ॥ मुख प्रगटै तब होत है, धातुग्रसनसामर्थ्य । अग्निस्थाई होत इम, सिद्ध करै बहु अर्थ (वैद्यादर्श१२)

अथ सौम्य अष्टविषोंका पृथक् २ लक्षण।

सक्तुक विषलक्षण ।

चित्रित उतपन कमलवत, जाकी आभा जान।पिसै सक्तुसों होय सो,सक्तुक विष पहिचान ॥

मुस्तक विषलक्षण ।

ह्रस्ववेग रोगहि हरे,मोथा आकृत होय। मुस्तकाविष ताकों कहैं, मुनिजन गुनिजन लोय ॥

कूर्मविष(दार्वीकविष)लक्षण ।

कच्छप आकृति होय सो, कूरम विष है नाम । होय सर्पके फण जु सम,दार्वीक जु गुनिधाम ॥

सैकतविषलक्षण।

स्थूल सुसूक्षम कणसहित, श्वेत पीत आभास।रोमरहित सैकत जु विष,करै ज्वरादिक नाश॥

वत्सनाभिविषलक्षण ।

गोथनके सम होत अरु,तैसोही आकार॥ पंचम अंगुरते नहीं,दीरघ अधिक निहार॥ वत्सनाभि लक्षण यहै, वरन्यो बुध जन लोय । श्वेत रंगमें होत के,पीतरंगको होय॥

शृंगीविषलक्षण ।

शृंगीविष गोशृंगवत, सोहू है परकार। श्वेत होतहै रंग अरु,हरित रंग निरधार॥(वैद्यादर्शपृष्ठनं० २७)

विषोंमें घोटनेसे दोष ।

वार्त्तिक-तुमऐसो लिखो जो सात दिनमें घोटे सो परंपरा ग्रंथनकी प्रणालिकानुसार तो ठीक है परन्तु पारदकों बहुत विषसों घोटे ताको चन्द्रोदय बनावे सो चन्द्रोदय गर्मी बहुत करतहै सुकुमार मनुष्यों- को गरम औषधी हित नहीं आवैहै बहुत गर्मीके खायेते भूख नहीं बधैहै सो तातें सात दिन विषतैं न घोटे जो कदाचित् घोटे तो एक दिवस घोटे और उपविषनमे लिखे प्रमान घोटे उपविषके घोटेतें नियमन संस्कार होतहै तातें पारा अग्निसह होतहै और दीपन हूं संस्कार पारेमें होतहै जातें पारा भूखो होतहै और पारदमें मुख होतहै तब गंधकादि धातूनको खातहै इति वादगर्वित भावार्थ (वैद्यादर्श पृष्ठ नं० १२)

शृंगीकविषशोधन।

महिषीगोबरमूतमें,शृंगी विष औटाय।एक प्रहरकी आंच करि, फेरि नीरधुलवाय पीछे घाम सुखाइये, सब योगनमें डार । विषशोधन ऐसे करै कह्यो जु प्रथम प्रकार।अथवा छेरीदूधमें बाँधि पोटरी डार। एक प्रहर औटायके, नीर धोय निरधार॥ इति उभयरीत्या विषशोधन (वैद्यादर्श पृ० नं० १३)

बुभुक्षितीकरण ।

वज्रकंटकवज्राग्रं विद्धमष्टांगुलं मृदा । विलिप्य गोविशामग्नौ[1] पुटितं तत्र शोषितम् ॥ २५ ॥ त्र्यहं वज्रे विनिक्षिप्तो ग्रासार्थी जायते रसः। ग्रसते गंधहेमादि वज्रसत्त्वादिकं क्षणात॥२६॥ (र. चिं.,नि.र.,र.रा.शं.)

अर्थ--कांटेदार थूहरकी दृढ शाखामें आठ अंगुलके प्रमाणका छेद करके उसमें पारा (गंधक) भरकर मिट्टीसे लेप करे फिर अग्निसे पुट दे इसप्रकार तीनदिनतक थूहरके छेदमें भरकर रखनेसे पारेमें स्वर्णके ग्रासकी शक्ति उत्पन्न होतीहै और मुहूर्तमें ही गंधक, सुवर्ण और अभ्रकसत्त्वका ग्रास करताहै । मूर्च्छाध्यायमें कहे हुए षड्गुणगंधकसे जारित पिष्टीमेंसे उत्पन्न हुआ पारद खरलमें रक्षित होनेपर भूखा होकर अभ्रक, सुवर्ण और धातुका ग्रास करलेताहै । अनेक वैद्य इन दोनों रीतियोंका व्यवहार किया करतेहैं ॥२५॥२६॥

अन्यच्च ।

मूर्च्छाऽध्यायोक्तषड्गुणबलिजीर्णः पिष्टिकोत्थितरसः खल्वेऽत्यन्तबुभुक्षितो घनहेमवज्रादि त्वरितमेव ग्रसतीति प्रकारः ॥२७॥ एतत्प्रक्रियाद्वयमपि कृत्वा व्यवहरंत्यन्ये- (र. चिं.)

अर्थ--मूर्च्छाध्यायमें कहाहुआ षड्गुण गंधकजारित पारा तथा पारद और गंधककी पिष्टीद्वारा निष्कासित पारद खरलमें अभ्रक सुवर्ण वज्र आदि धातुओंको शीघ्र ही ग्रसलेताहै

१ वलिं गोप्य विशत्यग्नौ-इत्यपि ।

कुछ वैद्य एक ही क्रियासे बुभुक्षित करते हैं और अन्य वैद्य दोनों क्रियाओंसे बुभुक्षित करते हैं ॥ २७ ॥

अन्यच्च ।

संस्थाप्य गोमयं भस्म पक्वमूषां तदोपरि ॥ तन्मध्ये कटुतुम्ब्युत्थं तैलं दत्त्वा रसं क्षिपेत् ॥ २८ ॥ काकमाची द्रवं देयं तैलतुल्यं पुनःपुनः ॥ गंधकं व्रीहिमात्रं तु क्षिप्त्वा तां च निरोधयेत् ॥ २९ ॥ (तत्पृष्ठे श्रावकं देयं पूर्णं चावह्निखर्परम् ॥) स्वांगशीतलतां ज्ञात्वा जीर्णतैलं च गंधकम् । काकमाचीद्रवं चाग्निं दत्त्वादत्त्वा तु जारयेत् ॥ ३० ॥ मूषाधो गोमयं सार्द्धं दत्त्वा चोर्ध्वं च पावकम् । षड्गुणं गंधकं जार्यं सूतस्यैवं मुखं भवेत् ॥ ३१ ॥ (र.रा. शं., र. रत्नाकर, नि. र.)

अर्थ-पृथ्वीपर गोबर रखकर ऊपरसे पक्क मूषा पक्की घरियाको रक्खे उसमें कडवी तूंबीके तैलको भरकर पारेको डालदेवे फिर उसी तैलमें काकमाची (कवैया, मकोय) के रसको भरदेवे और चावलके समान गंधकको डालकर मुखपर सकोरा रख मुद्रा करे फिर ऊपरवाले सकोरेमें आंच रक्खे जब गंधक तथा तैल जलाहुआ ज्ञात होजाय तब स्वांगशीतल होनेपर खोललेवे इसी प्रकार तूंबी तथा मकोयका रस देदेकर गंधक जारण करे प्रक्रियामें गोबरको नीचे रक्खे और मूषापर धरेहुए सकोरे या खिपडेमें आंच रखदेवे और इसी प्रकार षड्गुण गंधक जारण करे तो पारदके मुख होताहै ॥ २८-३१ ॥

अन्यच्च ।

नदीशुक्तिपुटान्तःस्थे सप्तरात्रं च पारदे । गंधकं च चतुर्थांशं जारयेद्यावदिच्छया ॥ ॥ ३२ ॥ (र. पा.)

अर्थ-पारदसे चौथाई गंधक लेकर नदीसे पैदा हुई सीपमें भरकर सम्पुट करे फिर उसको सात दिवसतक अपनी इच्छानुसार जारण करे तो पारा बुभुक्षित होताहै ३२॥

बिडद्वारा बुभुक्षितीकरण ।

कदलीकंदवर्षाभूशिग्रुवन्ध्यापटोलिका । देवदाली च सूर्याख्यरसैरेषां विभावयेत् ॥ ॥ ३३ ॥ बिडानीशतशोवारं रसराजस्य जारणम् । पश्चादम्लैः परिघृष्टो रसराजाय दापयेत् ॥ ३४ ॥ समांशैश्च बिडैर्जीर्णैः सूतास्यं संप्रजायते । हेमादिधातून्भुंक्ते स मुखेनापि न संशयः ॥ ३५ ॥ (र. पा.)

अर्थ-पारदके जारण करनेवाले बिडोंको केलेकी जड, सांठ, सैंजना, बांझककोडा, पटोलिका (सफेद फूलकी तोरई), देवदाली (बंदाल) और आक इनके रसोंसे सौबार भावना दे फिर अम्लवर्ग घोटे उस बिडको पारदसे तुल्य लेकर तप्तखल्वमें जीर्णकरे बस इस क्रियासे पारद बुभुक्षित होकर स्वर्णादि धातुओंको सुखपूर्वक खाजाताहै॥ ३३-३५॥

मुखीकरण ।

हरितालोत्तमतैलेन गंधकेन विषेण च । त्रिदिनं मर्दितः सूतो रज्यते कुरुते मुखम् ॥ ३६॥ गोमयाग्नौ तु मूषायां विपक्वो दिवसत्रयम् । हेमादिधातून्वै भुंक्ते गंधकं च विशेषतः ॥ ३७ ॥ (र. पा.)

अर्थ-हरितालका उत्तम तैल, गंधक या विषके साथ पारदको तीन दिनतक मर्दन कर फिर पक्क मूषामें रखकर तीन दिवसतक कंडोंकी आंचमें पकावे तो पारद बुभुक्षित होकर स्वर्ण आदि समस्त धातुओंको खाजाताहै और विशेषकर गंधकको तो खा ही जाताहै ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

बुभुक्षितीकरण ।

आम्रवल्ल्या रसेनापि सिद्धगंधसमं रसम् । मर्दितं सर्वलोहानि भुंक्ते जीवेन्न च क्षयः ॥ ॥ ३८ ॥ (र. पा.)

अर्थ-अथवा आम्रवल्लीके रससे पारदके तुल्य गंधकको पीसकर गोमयाग्निमें जारण करे तो पारद बुभुक्षित होताहै ॥ ३८ ॥

बुभुक्षितीकरण गंधकजारणसे ।

संसर्पितः सैंधवकोटरे भृशं विधाय पिष्टिं सिकतासु तापितः । विशुद्धगंधादिभिरीषदग्निना समस्तमश्नात्यशनीयमीशजः ॥ ॥ ३९ ॥ (र. चिं., र.रा. शं.)

अर्थ-शुद्ध गंधकके साथ पारदकी पिष्टी बनाकर गढा कियेहुए सैंधवके ढेलेमें भर वालुकायंत्रमें मंदाग्निसे पकावे तो पारद भक्ष्य पदार्थोंको अच्छीतरहसे खाजाताहै॥ ३९॥

यातुधानमुखीकरण ।

ताप्यसत्त्वं कलांशेन स्वर्णतो द्विगुणेन वा॥ चुल्ल्यामायसखल्वेन तप्तेनाथ विमर्दयेत् ४० युक्त्या रसं च चुक्रेण क्षारेण चणकस्य हि। चूलिकालवणेनाथ स्वर्जिकालवणेन वै ४१॥ जंबीरपूरकजलैर्मर्दयेदेकविंशतिम्॥ बासरान् याममेकं हि प्रत्येकं च विमर्दयेत् ॥ ४२ ॥ यातुधानमुखं सम्यग् यात्येवं हि न संशयः॥ द्वितीयो दीपनस्यैवं प्रकारः कथितो मया ॥ ४३ ॥ (धन्वंतरिसंहिता.)

१ कोष्ठकमें बंध कियाहुआ पाठ निघण्टुरत्नाकरमें नहीं है।

२-अर्थमें शंकाहै मुखीकरणके विषयमें ग्रंथकारने यह श्लोक दियाहै किन्तु गन्धक जारणहै गंधक जारणसे भी मुख होताहै।

३-पूर्वोक्तगंधकबिडम्-इत्यपि।

१-बिडका जीर्ण होना तप्तखल्वमें भी संभव है क्योंकि तप्त खल्वमें गंधकका जारण होताहै।

१-इसका ऐसा अर्थ समझमें आताहै कि, आम्रवल्लीके रससे मर्दन कियाहुआ समानगंधकयुक्त पारद सम्पूर्ण लोहोंको सुखपूर्वक खाजाताहै (संपुटमें वा कच्छपमें अग्नि देनेसे) और क्षय नहीं होता।

अर्थ—सोनेसे दूना अथवा वरावर सोनामक्खीका सत्त्व लेकर तप्त खल्वमें चूकेके रस या चनेके खारसे अथवा सज्जीके खारसे यद्वा, जम्भीरीके रससे इक्कीस दिन तक एक एक पहर पाराको मर्दन करे तो पारदके मुख होताहै इसमें सन्देह नहीं है। यह दीपनकाही एक दूसरा प्रकार मैंने कहा है ॥ ४०–४३ ॥

मुखीकरण ग्रास देकर ।

मुखस्योत्पादनं कर्म प्रकाशादीपनस्य हि॥ कथयामि समासेन यथावद्रससाधनम्॥४४॥ अष्टादशांशभागेन कनकेन च सूतकः ॥ निंबूरसेन संमर्द्यो वासरैकमतः परम्॥४५॥ क्षारैश्च लवणैरम्लैः स्वेदितः कांजिकेन च ॥ क्षालितः कांजिकेनैव वक्त्रं भोक्तुं प्रजायते ॥ ४६ ॥

(धं धं सं–)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां बुभुक्षितीकरणं वा मुखीकरणं नाम दशमोऽध्यायः॥१०॥

अर्थ—रसकी सिद्धि होने योग्य मुखीकरण कर्मको कहताहूँ इसी कर्मको रसप्रकाश ग्रन्थमें दीपन कहा है प्रथम पारदमें सुवर्णका अठारहवां हिस्सा डाल कर नींबूके रसमें एक दिन घोटे तथा क्षार लवण, अम्लपदार्थ और कांजीसे स्वेदन करे फिर कांजीसे ही धो डाले तो धातुओंके खानेके लिये पारदके मुख होता है ॥ ४४–४६ ॥

इति श्रीजैसलमेर निवासि पं० मनसुखदासात्मज व्यासज्येष्ठमलकृतायां रसराजसंहिताया भाषाटीकायां बुभुक्षितीकरणं वा मुखीकरणं नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

स्वानुभूतबुभुक्षितीकरणाध्यायः ११

बुभुक्षितीकरण (थूहरमें)।

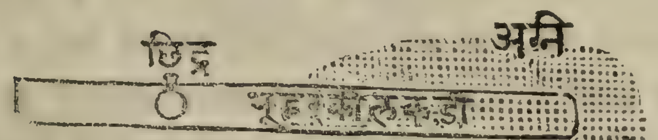
इस शंकासे कि, षड्गुण बलिजारणसे पारद उत्तम बुभुक्षित हुआहै वा नहीं और इस अभिप्रायसे भी कि, रसेन्द्रचिंतामणिमें जो कहाहै कि, "एतत्प्रक्रियाद्वयमपि कृत्वा व्यवहरन्त्यन्ये" वह भी कर्म पूरा कर लियाजावे षड्गुण बलिजारित उत्थापित पारदके (जो सब १२ तोले ८ माशे २ रत्ती था और जिसमेंसे५ तोले स्वर्ण जारणके लिये पहले लियाजाचुका था) अवशेष भाग ७ तोले ८ माशे २ रत्तीको रसेन्द्रचिंतामणिमें कही हुई (वज्रकंटक वज्राभ्र इत्यादि) क्रियासे बुभुक्षित करना आरम्भकिया ।

१–पहले एकवार इस क्रियाका अनुभव साधारण पारदपर करलियागया जिसको विस्तार भयसे न लिखागया ।

थूहरमें बुभुक्षितीकरणकी क्रियाका १ अनुभव ।

आज ता० २५।९।०७ को १५ गिरह लंबी और करीब २॥ वा ३ इंच मोटी कांटेदार थूहरकी हरी लकडीके ऊपरकी तरफ ८ अंगुल छोडकर बरमेंसे आधी दूरतक छेदकर और कीलसे कुछ गूदा निकाल थोडी जगह पोली बनाली उस खाली जगहमें ७ तोले८ माशे २ रत्ती संस्कृत षड्गुण बलिजारित पारद भर थूहरकीही डाट लगा ८ अंगुल चौडी कपरौटी कर सुखादिया ।

ता० २६ को छिद्रके पास ७–८अंगुल छोड नीचेकी तरफ प्रथम ३ आंच दो दो सेरकी फिर २ आंच १॥ सेर १। सेरकी फिर ३ आंच एक एक सेरकी अर्थात् सब ८ आंच दीगई ।



ता० २७ को देखा तो पारे भरे छिद्रसे आठ अंगुलके फासलेतक लकडी जल गई थी पारेको निकाला तो पूरा निकल आया । पारेपर कोई विकार नहीं दीखपडा और ये शंका रहगई कि, पारे तक गर्मी भलीभांति पहुंचती है वा नहीं ।

दूसरी आंच ।

ता० २७ को करीब १२ गिरह लंबी और करीब २॥वा ३ इंच मोटी थूहरकी लकडीके ऊपरकी तरफ ४ अंगुल छोड पूर्वोक्त विधिसे छिद्रकर उक्त ७ तोले ८ मा० २ र० पारद भर थूहरकीही डाट लगा कपरौटीकर सुखालिया ।

ता० २८ को छिद्रके पास ६ अंगुल छोड़ नीचेकी तरफ ऽ२ सेर ऽ१॥ सेर ऽ१। सेर की ४ आंच और एक एक सेरकी ६ कुल १० आंच १२ घंटेमें दीगई और अंतिम आंचपर कपरौटी किये भागको भी भूभलसे ढकदिया आंच ठंढी होजानेपर रातके ९ बजे लकडीको निकाल अलग रखदिया ।

ता० २९ के सवेरे देखा तो पारे भरे छिद्रसे ६ अंगुलके फासलेतक लकडी जल गई पारेको निकाल तोला तो ७तोले ८ माशे हुआ २ रत्ती कम होगया और पारेके ऊपरी भागपर कुछ श्यामता आगई थी इससे ज्ञात होता था कि, आज अग्निका कुछ असर पारेपर पडा छाननेसे यह श्यामता कपडेपर रहगई और पारा साफ होगया ।

सम्मति–इस शंकासे कि, इस क्रियामें पारेको पूरी अग्नि पहुंचती है या नहीं आज एक दूसरी थूहरकी लकडीमें छेद कर और उस छेदको खुलारख लकडीको उपरोक्त विधिसे आंच देनी आरम्भ की तीन चार आंच लगनेतक छिद्रमें कोई ऊष्मा नहीं प्रतीत हुआ किन्तु जब छिद्रके ४ अंगुल दूरीतक अग्निका असर पहुंचगया तब छेदमें उंगली देनेसे साधारण ऊष्मा प्रतीत हुआ इससे यह शंका हुई कि, क्रिया जो की जाती है वह ठीक नहीं क्योंकि, लंबीलकडी लेकर नीचेकी तरफसे आंच देनेसे लकडीके अंदरके गूदेका रस छिद्रकी ओरको नहीं दौडता, किन्तु गूदा पोला पोला होनेसे रस जहांका तहां शुष्क होजाताहै । अतएव जंबूसे आई हुई भा-

षाकी पुस्तकमें लिखी करीलकी लकडीकी क्रियाके अनुसार जो यहां पर इस श्लोकके यह अर्थ लगायेहैं (कि, एक लंबी लकडीमें ऊपरकी तरफ ८ अंगुल छोडकर छेद करके नीचे-की तरफसे अग्नि दीजाय) सो अनुभवसे ठीक सिद्ध नहीं हुए। अब ऐसे अर्थ ठीक समझमें आतेहैं कि ८ अंगुलका ही टुकडा लिया जावे और उसके बीचमें छेद कर पारा भर सबपर कपरौटी कर उसको अग्नि दीजावे और प्रगट अग्नि देनेमें पारदके उडनेकी शंका है अतएव भूधरसे अग्नि देना उचित होगा।

थूहरमें बुभुक्षितीकरण।

(अग्नि देनेका प्रकार बदलकर भूधरमें)

सम्मति–निम्न क्रियाका अनुभव साधारण पारदपर दो बार किया गया पहली बारमें लकडीके ऊपर ४ अंगुल रेत रक्खागया और एक एक सेरकी डेढ डेढ घंटे बाद ८ आंच दी तो लकडीके ऊपरकी तरफकी छाल सूखगई थी और गूदा उसीज गया था। अग्नि तीव्र करनेके लिये दूसरी बारमें केवल दो अंगुल रेत ऊपर रख एक एक सेरकी घंटे घंटे भर पीछे ९ आंच दीगई तो लकडीका ऊपरी भाग झुलसगया था और अन्दरका गूदा शुष्क होगयाथा। पारेकी तोल पूरी रही थी। श्लोकमें "तत्र शोषितम्" पाठ है इस लिये इतनी अग्नि ठीक समझी गई और इसीके अनुसार आगे कर्म कियागया। आगे जो क्रिया लिखी जायगी उसीके अनुसार अनुभव हुआ था इसलिये अनुभवको सविस्तर नहीं लिखागया।

तीसरी आंच।

आज ता० ३।१०।७ को ९ अंगुल लम्बी और २॥ इञ्च मोटी थूहरकी लकडीके बीचमें गर्त कर पूर्वोक्त७तोले८माशे षडगुण बलिजारित पारद भर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० ४ को १२ अंगुल लम्बे चौडे और गहरे गढेमें गंगारज भर लकडीको इस प्रकार रक्खा कि दो अंगुल रेत लकडीके ऊपर रहा बादको एक एक सेरकी आंच ११ बजेसे हर घण्टे पर दीगई ७ बजे तक ९ आंच लगीं।

ता० ५ को सबेरे निकाला तो लकडी ऊपरकी तरफ जलसी गई थी अन्दरका गूदा सूख गया था पारेको निकाल तोला तो पूरा ७ तोले ८ माशे निकल आया।

चौथी आंच।

ता० ५।१० को ९ अंगुल लम्बी और ३ इञ्चसे कुछ अधिक मोटी थूहरकी लकडीके बीचमें गर्त कर पूर्वोक्त ७ तोले ८ माशे पारद भर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० ६ को उसी गडहेमें इस प्रकार रक्खा जो २ अंगुल रेत ऊपर रहा ११ बजेसे एकएक सेरकी आंच हर घण्टे पर दी गई ७ बजे तक ९ आंच लगीं।

ता० ७ के सबेरे निकाला तो लकडी ऊपरकी ओर झुलस गई थी अन्दरका गूदा उसीज गया था, पारेको निकाल तोला तो १ रत्ती कम ७ तोले ८ माशे निकला।

पांचवीं आंच।

ता०७ को ९ अगुल लम्बी और ३ इञ्चसे कुछ अधिक मोटी थूहरकी लकड़ीके बीचमें गर्त कर पूर्वोक्त १ रत्ती कम ७ तोले ८ माशे पारदको भर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० ८ को उसी गढेमें इस प्रकार रक्खा जो २ अंगुल रेत ऊपर रहा बादको ७ बजेसे ६ बजे शाम तक १२ आंच दी गई।

ता० ९ के सबेरे निकाला तो लकडी ऊपरकी तरफ जलगई थी अन्दरका गूदा सूख गया था कहीं २ कुछकुछ गीला भी रहगया था पारेको निकाल तोला तो ७ तोले ७ माशे ४ रत्ती हुआ।

पारद अग्निस्थाई।

माइआतके अंजमादका दर्जा (उर्दू)

नाम माएह	शोरा	सिरका	दूध	पानी	रोगनजैत	सीमाव	रोगन.
दर्जासफरके ऊपर	२६	२८	३०	३२	३६	३९	५०

(सुफहा किताब अकलीमियां ३९)

माइआतके जोश देनेका दर्जा (उर्दू)

नाम माएह	पानी	तेजाब शोरा	रोगन जैतून	तेजाब गंधक	सीमाव
दर्जा	२१२	२१०	६००	६१०	६६२

(सुफहा किताब अकलीमियां ३९)

आंचपर रखनेसे सीमावकी हालत (उर्दू)

सीमाव व नौसादर उड़जातेहैं और कसरत दहनियतकी वजहसे जलते नहीं लेकिन जब कायमुल्नार होजातेहैं तो आगपर पिघलतेहैं और जलते भी नहीं यही हाल गंधक और हरतालका है कि, पाक होजानेके बाद आगपर पकते हैं और उडतेहैं लेकिन अगर पाक नहीं होते तो सोख्त होजातेहैं। (सुफहा अक़लीमियाँ ७९)

सीमाव कायमुल्नारके दर्जे (उर्दू)

लेकिन वाजः हो कि, कायमुल्नारके तीन दर्जेहैं–अव्वल नारतश्विया बतवखका। दूसरा नारतसईदका। तीसरा नारअजावतका सीमाव अगर ६६२ डिगरीकी हरारतपर जो सीमावके जोशखानेका दर्जा है कायम आगपर रहे वही सीमाव अकसीरके काममें आसकेगा।

(सुफ़हा २८ अखबार अलकीमियाँ १६।५।१९८५)

और भी (उर्दू)

जब पारा तजुरबेमें ६६२ डिगरीकी हरारततक कायमुल्नार रहता है तो फिर वह आगसे नहीं उड़सकता ।

(सुफ़हा अकलीमियाँ १६१)

कीमियाई सीमाव वह है जो कायमुल्नार है (उर्दू)

सीमाव कीमियाई इस्तरहका हो, कि उसमें कुव्वत फरारा बाकी न हो और आगपर कायमहो ।

(सुफ़हा अक़लीमियाँ ७९)

और भी (उर्दू)

सीमाव तहनशीन निर्धूम फ़ीनफसा अकसीर है एक रत्ती सीमाव मजकूर लेकर तोला भर कलईपर तरह करे नुकरा होजावेगी ।

(सुफ़हा अकलीमियाँ ११०)

सीमावके कायमुलनार होनेकी जरूरत(उर्दू)

एमाल अकसीरमें अरवाहका कायमुलनार होना जरूरियातसे है वरनः अकसीर कामिल न बनेगी और जुमला अरवाहमें सीमावका कायमुल्नार होना सख्त मुश्किल है अगर सीमाव कायमुल्नार होजावे तो गोया निस्फ़ अकसीर बनगई इसलिये कि, कुश्ता, खाल, गुटका बाद इसके व आसानी बनसकताहै लेकिन अकसीरी खासे उस वक्त जाहर होंगे जब बूटीसे कायमुल्नार हो और बूटी भी एमाल अकसीरके काममें लाई जाती हो ।

(सुफहा अकलीमियाँ १६०)

नुकता कयाम सीमाव (उर्दू)

अहलफनके नजदीक सीमावमें सात हिस्से रतूबतहै– जिस बूटीमें दश हिस्से खुश्की होगी समझलेना चाहिये कि यह बूटी सीमावको कायम करनेवालीहै और इसकी शनाख्त यह है कि, बूटी तेज होगी और तेज बूटीमें खुश्कीका होना जरूरी तसलीम कियागया है। मस्लन कुटकी, पीपल, मिर्च स्याह और मिर्च खुरासानी, करनफल, मेंढासिंगी वगैरः वगैरः जैलकी तलख बूटियोंमें भी पारा मुंजमिद और कायम होजाताहै । नाली, पित्तपापडा, जलनींब, हुलहुल सफ़ेद, नीम, मिसीघास, जलकमनी, गोवीतलख, बकाइन, कंदश, रोगन चाकसू, रोगन पलास एक साहब नाजरुल कीमियाँ तहरीर फर्मातेहैं कि शीरानीममें सीमाव कायम करके देखागयाहै । सीमाव बिलकुल कायम होजाताहै । (सुफहा अखबार अलकीमियाँ १।१२।१९०६)

सीमावको कायमुल्नार करनेकी तरकीब बजरिये लकडी करील (उर्दू)

सीमाव बाजारसे लाकर उसको पहले किसी तरकीब मारूफसे साफ करलें बादहू एक करीरकी लकड़ी जो एक या डेढ गजके तूलमें हो और मुटाईमें भी खासा हो इसके एकतरफ खोदकर उसमें सीमाव मुसफ्फा डालें और खिलाको बुरादा करीरसे भरदें उसके ऊपर गिले हिकमत करके दूसरी तरफ आंचदें और गले हिकमतवाले जर्फको जिस तरफ कि सीमाव रक्खा हुआहै बालूरेगमें दबाए रक्खें ताकि धुआं बंद रहे जब लकड़ी जल जलकर करीब गिले हिकमतके पहुंच जावे फौरन आगसे अलहदा करें और दर्मियानसे सीमाव निकाल लें यह सीमाव बिलकुल कायमुन्नार होगा । ख्वाह सौ मनकी आंचमें देदें हरगिज फरार न होगा । (सुफहा अखबार अलकीमियाँ १६।१२।१९०६)

तरकीब कायमुल्नार करदन सीमाव बजरिये चोयाअर्क बेंगनजगली (फार्सी)

अगर जीवकरा दरशीर बादंजान दश्ती खारदार चारपास सहक कुनद व चहारबार वर आतिश नरम निहादः चोवहदिहद कायमुल्नार गर्दद । (अजगुलशन हिकमत नुसखा कलमी बाबू प्यारेलाल बरौठा)

उकद सीमाव बजरिये चोया गीदर तमाकू (उर्दू)

तोला पारा किसी मिट्टीके बर्तनमें डालकर आगपर रक्खो उसपर गीदड तम्माकूका अर्क बजरिये चोया पावभर जज्ब कर दो फिर सादे पानीसे धोकर पारा निकाललो जो गाढा होगया होगा उसपर फिर पावभर और अर्क जज्बकराओ अब वह सख्त होजायगा । (सुफहा १६ अखबार अलकीमियाँ ८। २। १९०९)

पारा कायमुल्नार करनेकी तरकीब बजरिये चोया अर्क कसोंदी-(उर्दूः)

कसोंदी एक दरख्त मशहूरहै जिसके वर्ग मुशाबः वर्ग तिमरहिन्दीके होतेहैं और कंद उस दरख्तका बकदर आदम या उससे कुछ कमोबेश होताहै जायका तलख अगर उसके पत्तोंका पानी डेढ सेरके करीब निकालकर किसी कडछी आहनीमें सीमाव एक तोलापर कडछी देगदावपर रखकर थोडा थोडा चोया देवें और वह तमाम पानी जज्बकर दियाजावे सीमाव मुतहर्रिक कायमुल्नार होजायगा ख्वाह कितनी ही ज्यादः आंचमें उस सीमावको रक्खें आगपरसे फरार न होगा । (सुफहा किताब इसराहल कीमियां २९)

तरकीब सीमाव कायमुल्नार बजरिये चोयाअर्क आकाशबेल व अर्क दुधी खुर्द–(उर्दू)

सीमाव १० तोले, अर्क आकाशबेलसुर्ख, अर्क दुधीखुर्द नीमआसार (जिसका फूल सफेद हो) अव्वल अर्क आकाशबेलका चोवा दियाजावे । जब अर्कआकाशबेल खतम होजावे तो पारा संबुलमसका होजावेगा बादहू इसपर अर्क दुधीखुर्दका बजरिये चोहा खतम करें सीमाव कायमुल्नार है और कारामद है । (सुफहा अखबार अलकीमियाँ १ व १६ । ११ । १९०६)

सीमाव नीमकायम बजरिये चोया जडी केतकी (उर्दू)

मुझको जिसतरहका कायमुलनार पारा बूटियोंके जरिये मालूम है हदिया नाजरीन करताहूं गो वह पूरा पूरा कायमुल्नार तो नहीं लेकिन फिर भी बहुत अच्छा है कि कुठालीमें डालकर कोयलोंमें रखदो । कुठाली सुर्ख होजावेगी

और पारा मौजूद होगा । अलवत्ता ज्यादः आंच नहीं सहार सकता तरीका यह है वूटी हाथीचिंघाड जिसको देशी केवडा भी कहतेहैं उसके पत्ते बहुत लंबे लंबे घीग्वारकी तरह होतेहैं हरेक पत्तेकी नोंकपर सख्त काँटा होताहै पत्ता इस शकल (⌒) का होताहै। अलगरज पत्तोंको कूट-कर अर्क निकाल लें और उस अर्कमें दूधक हजार दाने कूट-कर दुवारा अर्क मुकत्तर करलें पस पारेको लोहेके कडछेमें डालकर उस अर्कका चोया दें, पारा कायम होजावेगा दो तोला पाराके लिये एक सेर अर्क हाथीचिंघार पावभर दूधक हजार दाने काफी है। (सुफहा १६-१७ अखबार अलकीमियाँ २४ । १ । १९०९)

सीमावको गैर मुनक्किद और लरजां कायमुल्नार बनानेकी तरकीब बजरिये चोयाअर्क शाहतरा व अर्कसिर्स (उर्दू)

मुजर्रिवः हकीम संगेजखां मुदर्रिस डीनस हाईस्कूल रावलपिंडी जो उन्होंने बजवाब मेरे इस्तफसारके अखबार अलकीमियाँ मजरिया १५ जून सन् १९०५ ईसवीमें तहरीर फर्माई । पारेके कुश्तेके वास्ते वारहा उन्होंने सीमावको बजरिये बूटी शाहतरा (पित्तपापडा सुर्खवर्गके) इस्तरह कायमुल्नार कियाहै कि, तोलाभर सीमाव बाजारीको करछः आहनीमें रखकर दस तोले आवशाहतरामें चोया दिया और नीचे बेरीकी लकडीकी चरागकी तरह आंच दी बाद उसके १० तोले आवसिर्सका लेकर उस सीमाव मअमूलापर चोया दिया ६६२ डिगरीतक कायमुल्नार होगया इस नुसखेमें तरद्दुद यहहै कि,सिर्सकी पत्तीसे शीरा नहीं निकलता क्योंकि, बिलकुल बेरतूबत होतीहै इसके बाबत हकीम साहब मौसूफने लिखाहै कि, सिर्सका शीरा सख्त मिहनतसे निकलताहै और सिवाय माह जेठ वैसाखके और जमानेमें निकल आताहै अलबत्ता खास बात यह है कि, शीरा फौरन सूखता जाताहै निकलते ही अमलचोयेका होताजाए अगर सिर्सका अर्क निकालनेमें तरद्दुद हो तरोटक घास जो, किनारे किनारे गिरहदार जमीनपर विछी हुई खोखली होतीहै और जो दूबकी किस्मसे है और उसको बेलिया दूब कहतेहैं दस तोला उसका अर्क इस्तेमाल कियाजावे । शाहतरा जब रसीदः होजाताहै तब पत्तेमें सुर्खी आतीहै । (सुफहा अकलीमियाँ १६१)

कायम करना पारेका चोयाशाहतरा या चोया सिर्ससे हकीम संगेजखां मुदर्रिस डेन्स हाईस्कूल सदर रावलपिंडी (उर्दू)

बजवाब मौलवी हसीनुद्दीन अहमद साहब सेक्रेटरी केमीकल सोसाइटी तहरीर फर्मातेहैं कि, यह मैंने वारहा वराय कुश्तापारा पारेको वजरिये बूटी शाहतरा (पापडा) के पानीमें इस तरीकेसे कायमुल्नार कियाहै कि, दस तोला पानी पापडा और एक तोला सीमाव बाजारी लेकर एक करछः आहनीमें तय्यारखामको रक्खा नीचे आतिश सराजी वजरिये लकडी बेरी दी और पानी शाहतराका चोया दिया और खतम किया । सीमाव कायमुल्नार होगया और इसीमामूली पारेपर सिर्सके दस तोले पानीका चोया देकर ६६२ डिगरीतक पारा कायमुल्नार होसकताहै मुजर्रिलमुजर्रिब है मगर मुतहर्रिक होगा (सुफहा ५ अखबार अलकीमियाँ १६ । ६ । १९०५)

सीमाव कायमुल्नार बजरिये अर्क-शाहतरा व सिर्स (उर्दू)

४० तोले अर्क शाहतरा मुरव्विकका एक तोला सीमाव मुसफ्फाकर्दे आहनीमें रखकर चोयादे फिर इसके बाद बीस तोला अर्कवर्ग सिर्सका चोयादें अगर सिर्स स्याह दस्तयाव हो तो फिर अकसीर आताहै वरना मामूली सिर्सका चोया देकर अमल तमामहुआ सीमाव ६६२ डिगरीतक तय्यारहै और यह नुसखा किसी पर्चः अलकीमियाँ ही का है मगर इसका तजरुबा होचुका, है (शाहतसव्वरहुसेन) (सुफहा १७ अखबार अलकीमियाँ ८ । ३ । १९०९)

सीमावको कायममुल्नार बनानेकी तरकीब बजरिये पुट अर्कपत्ता आक सफेद (बादहू धतूरमें अकद या अकसीर) (उर्दू)

मुदार सफेद फूलके पीले पत्तोंके अर्कमें २१ मर्तवः पारा हलकरनेमें जज्ब हो तो कायमुल्नार होताहै इसके बाद स्याह धतूरेके पत्तोंके अर्कमें पारा पकायाजावे तो काफी दवाकीहै। (सुफहा १५ अखबार अलकीमियाँ १६।१२।१९०६)

तरकीब सीमाव कामुल्नार (मयतरकीब कुश्ता) बजरिये अर्क अस्पन्द व अर्क बिसखपरा (उर्दू)

एक खुदा रसीदः फकीरने बतलाया अर्क अस्पन्द (हरमल सफेदगुल) में सीमाव दो रोज खरल कियाजावे और फिर दो पहर चोया दियाजावे बादहू बूटी अटसट (बिसखपरा) जिसको मुलतानकी तरफ दसाभी कहतेहैं शीरा एक सेरमें सीमाव मजकूर डालकर आगपर पकायाजावे जब पानी पावभर रहजावे तब उतार लियाजावे सीमावका हाथसे गोला बन जावेगा । यह गोला आगपरसे फरार न होगा। बादहू इस गुटकाको बूटी नकछिकनीके नुगदेमें देकर गिलेहिकमत करके पाचक दश्तीमें आग दीजावे सीमाव शिगुप्तः व कलनग होगा ।

(अखबार अलकीमियाँ १।१।१९०७)

सीमावको कायमुल्नार करनेकी तरकीब बजरिये चोया अर्क बथुआ कीमियाई (उर्दू)

लेकिन कीमियाई सुर्ख बथुआ व रंग सुर्ख और कडवा

१ अखबार अलकीमियां १६ फर्वरी सन् १९०७ सुफहा १३ पर दर्ज है कि स्पन्दके चोया और सहकसे $\frac{23}{662}$ दर्जेतक सामान कायमुल्नार होनेका तजरुबा होचुका है मुमकिन है कि ज्यादः अमल करने से और ज्यादः नतीजा निकले यह सीमाव गाढा नहीं होगा अपनी शकलमें रहेगा ।

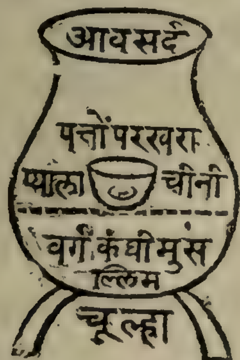
होताहै और पत्तियां गोल और पुरआब कंगूरादार पोदीनाके बराबर दरख्त बालिश्त भरसे कम व वेश होताहै और फूल भी सुर्ख होताहै यह कामयाब है अगर यह मिलजावे तो सीमावको कायमुल्नार और गाढा और अकसीर करताहै यानी अगर इसके अर्कमें सीमावको सिर्फ दो तीन चोयादे गाढा होजावेगा और चार बार और चोया दे तो खील यानी शिगुफ्त: होजायगा और एक रत्ती सौ तोले को अकसीर करदेगा। (सुफहा अकलीमियां २०८)

सीमावको कायमुल्नार करनेकी तरकीब बजरिये अर्क कंघी (उर्दू)

केनी यानी गरहथी या कंघी खुर्द या कलां जो मुमकिन हो लाकर शीरा निकाले और सीमावको उसके शीरेमें एक रोज सहक करके पहरभरतक चोयादे सख्त गाढा होजायगा यह तजरुबातसे ओलिया अल्लाहके है इस लिये कि, गाढा और कायममुल्नार सीमाव दस्तयाव होना मुश्किल अमरहै इस तरकीबसे सीमाव गलीज और कायमुल्नार होकर खुद अकसीर होजाताहै अगर शिगुफ्त: करे तो नूरअली नूरकलंग यानी अकसीर आजम होजायगा और चावल खानेसे सालभर कोई मर्ज न पैदा होगा। (सुफहा अकलीमियाँ २२८)

तरकीब निकालने अर्क कंघीको मुतल्लिक सीमावकायम (उर्दू)

अर्क निकालनेकी तरकीब यहहै कि, वर्ग कंघीको लाकर निस्फतक देगेमें भरे और उसके ऊपर चीनीका प्याला रखदे और मुँह देगका सरपोश मिसीसे ढककर बन्द करदे और मुंहको आटेसे बंदकरके कि भाप न निकलने पावे और पोशमें सर्द पानी भरदे और आहिस्ता आहिस्ता आंच करता रहे ऊपरका पानी जब गर्म होजावे बदल दिया करे सातबार पानीको बदले शीराकंघीका प्यालेमें मुकत्तर होगा आखिर में आगतेज मिस्ल खिचडी तमाम अर्क निकल आवेगा तस्वीर भवका मजकूरकी यह है। जोड सरपोशका गिलेहिकमत शुद:है (सफा अकलीमियाँ २२८)



इस तरीकेसे हरखुश्कसे खुश्क:वर्गताज:का अर्क निकलआताहै।

सीमाव कायमुल्नार बजरिये अर्क कंघी (उर्दू)

यकम अक्तूबर सन् १९०६ ई० के अखवार अलकीमियांमें सराहत मजहूलुलइस्मबूटीके लिये कि जिससे सीमाव कायमुल्नार हो जाता है तवज्जह दिलाई गई थी

१–शीरावर्ग कंघीका मामूली तौरपर नहीं निकलसक्ता लिहाज: आगे उसकी तरकीब दर्ज कीगई है।

२–यह दोनोंवातें अभरकजारणेसे पैदा होतीहै जिसको हमारे शास्त्रकारोंने मुकद्दम मानाहै

आज उस बूटीके मुतअल्लिक जनाव मुहम्मद हवीबुल्लाह साहव लाइनदार लकडी अमृतसर कटरा शेरसिंहसे तहरीर फर्माते हैं कि अव्वल बूटी कंघी जर्द गिले हिकमतका अर्क हस्वतशरीह किताव अकलीमियाँ हिस्सा अव्वल निकाला जावे फिर उस अर्कको जदीदवर्ग बूटी मजकूरमें डालकर घोट कर निचोड लिया जावे यह अफशुर्द: गलीज सवज जर्दी माइल होगा इस अर्कमें कम अजकम चार पहर कामिल और जियादहसे जियादह छः पहर सीमाव बाजारी खरल किया जावे मगर खरल उमदा हो बादहू कामिल दो पहर अर्क मजकूरका चोया बतरीक इन्दराज किताव अकलीमियाँ दिया जावे गुटका कायमुल्नार और नरास होगा।

(अखबार अलकीमियाँ १।१।१९०७ सुफा ८)

तरकीब सीमाव कायम बजरिये अर्क कंघी (उर्दू)

हालमें जनाब मौलवी मुहम्मद हवीबुल्लाह साहब मुतवतन मौजा शेखभट्टी डाकखाना अजनाला जिला अमृतसरने अर्क कंघी (शाना) का हम्मामारिय:के तरीकेसे बमूजिब तरकीब मुन्दरज: सफा २२१ अकलीमियाँ शरह अलकीमियाँके अर्क निकाला क्योंकि इस बूटीका अर्क मामूलन नहीं निकल सकता है अर्क बदस्तूर बरंग सफेद निकला चूँकि मेरी रायमें वर्ग कंघी जर्द गुलमजकूरमें मिस कीमियाई है क्योंकि, इसका शीरा सुर्ख तीरा निकलता है इस वजहसे सीमाव इससे मुनक्किद हो सकता है लेकिन अर्क मजकूर जो बतवसुत हम्माम मारिय:के निकला वह सफेद मुकत्तर था लिहाजा वादीउलनजरमें जुजवमिसका इसमें शामिल नहीं था विनाइ अलिया मगरी अलिया मौसूफको हिदायत की गई कि अर्क सफेद मुकत्तर मजकूरको जदीदवर्ग कंघीमें मिलाकर बारीक कूटकर इसका शीरा बदस्तूर निचोडकर निकाललेवे और इससे सीमावको सहक करें और चोया दें जैसा कि सुफा २२८ किताब अकलीमियाँ मजकूरमें लिखा है उस पर अमल करनेसे ऐसा अर्क भी निकल आया जिसमें मिस कीमियाई शामिल है और सीमावको खरल करने और चोया देनेसे इसने कायमुल्नार बनाया अलहम्दुल्लाह अलीजालक इल्म कीमियाईमें महज मामूली बूटीके जरिये सीमावको कायमुल्नार करना ख्वाह गुटका बनाना जैसा मुश्किल है वह माहरफन और शाइक तजरुबासे मुखफी नहीं क्योंकि इसके तमाम एमाल कीमियाईके आसान और सरीअउल इन्तनाज हो जाते हैं अब कमेटीमें नमूना सीमाव कायम मजकूरका मँगवाया गया है ताकि काइदा कीमियाईकी रूसे भी इसको जांच लिया जावे कि आया वह ६६२ डिगरी थरमामीटरकी हरारत तक कायम है या नहीं मूमीअल्लाहके इस तजरुबेसे यह नतीजा भी साबित हुआ कि नुसखा मुन्दर्ज सुफा २२६ के बमूजिब अमल करनेसे भी सीमाव कायमुल्नार हो सकता है और हर मेम्बर अंजुमनके वास्ते यह जरीन उसूल जाहर होगया कि हर खुश्क बूटीका अर्क अगर निकालना मद्द नजर है तो हम्माम मारिय:के तरकिसे अर्क निकालकर उसे अर्क मुकत्तर बरंग

सफेदको जदीद बूटीमें मिलाकर खुश्कसे खुश्क बूटीका अर्क निकल सकता है और एमाल कीमियाईमें लाया जा सकता है और सुफहा २२६ किताब अकलीमियाँ सतर १४ की इबारत मुजमुलका यही मतलब है क्योंकि पानी निकालकर शीरा निकालनेमें शीरा मजकूर किसी अमल कीमियाईमें कारामद नहीं होताहै।

(सुफा ६ अखबार अलकीमियाँ १। ब१६।११।१९०६)

सम्मति-अखबार अलकीमियाँ मुवर्रिख: १६।२।१९०७ के सुफहा १३ पर दर्ज है कि, आमद: नमूनेका तजरुबा किया गया तो सीमाव सिर्फ $\frac{२१०}{६२२}$ दर्जे तक कायमुल्नार साबित हुआ यह सीमाव कदरे गाढा भी था। उम्मीद कि, अग ज्यादह अर्से तक चोया और सहकका अमल जारी रक्खा जावे यहांतक कि, सीमाव अकद हो जावे तो जरूर पूरा कायमुल्नार हो जावेगा।

सीमावको कायमुल्नार करनेकी तरकीब बजरिये कंघी (उर्दू)

ग्रंथीको अरबीमें सत्तउलफोल फार्सीमें शाना और हिन्दीमें कंघी कहते हैं। दो किस्मकी होती है एक सफेद गुल दूसरी जर्दगुल अगर आखिर उलजिकरका शीरा जोश करके निकाले और सीमावको उसमें सहक करे और दिनको धूपमें और रातको जमीनमें दफन करके ऊपरसे आग जलावे इस्तरहसे कि तहजमीनमें थोडी हरारत पहुंचती रहे तो सीमाव चंद अमलमें कायमुलनार होजाताहै इसका दरख्त दो गजतक ऊंचा होताहै और जर्द सफेद दो गजतक फूल होताहै कुवांके बीज उसका तुख्म होताहै। (सुफहा अकलीमियाँ २२६)

अगर सफेदगुल दस्तयाब हो तो एक तोला अर्क उसका पांच तोले सीमावमें डाल खुलीहुई बोतेमें आगपर रक्खे नुकरा फूटक हो जायगा। दो रत्ती फूटक मजकूर मिस गुदाख्त: पर तरह करे तिला होजायगा। मुतारिजिम-बाज किताबोंमें ग्रंथी जुदा गाना जडी मानी गईहै।

सीमावको कायमुल्नार व मुसफ्फा करनेकी तरकीब बजरिये पुटआफ्ताबी व चोया बूटी मुतहद्दिद-(उर्दू)

अमलशमशी या कमरीके वास्ते सीमावको मुसफ्फा और साबित आगपर रख करना चाहिये और एकसौबीस पुट आफ्ताबी शीरा नाई तलखका दे अगर शीराबूटी मजकूर मैस्सर न हो तो जो शायद किसंत का जिसको चूक भी कहतेहैं लेकिन दो प्रहर दिनतक सहक कर और दो पहरसे शामतक खुश्क करे इसी तरहसे एक सौबीस पुट जोशाँयंद: मजकूर मजकूरमें दे। बाद उसके आठ पहर चोया शीरा: रामपीपल यानी बकनका और इसीतरह आठपहर चोया शीरा गोमाका दे और ब्यालीस रोज शीरा जकूममें तर रक्खे मगर हर हफ्तेमें शीरा ताजा बदलता रहे कायमुलनार भी होजायगा बाद उसके सोना या चांदी बनानेके अमलमें काममें लावे। (सुफहा अकलीमियाँ१५९)

सीमावको कायमुल्नार और बादहू कुश्ता करनेकी तरकीब बजरिये अर्कधतूरा स्याह (उर्दू)

अव्वल सीमावको एक रोज पुटआफ्ताबी अर्कवर्ग धतूर स्याहमें और एक रोज चोयाअर्क मजकूरसे दियाकरे। यहांतक कि वह कायमुलनार होजावे बाद उसके कुंबंदीमें धतूरा स्याह मजकूरकी रखकर गिले हिकमत करके गजपुटकी आग देकर, फूंकदे उस वक्त अलबत्त: कुश्ता हो जायगा मगर यह अमल मुतरिज्जमके तजरुबेमें नहीं आयाहै बल्कि जुबानी एक मुतहक्किकके सुनागयाहै इस कुश्तेसे चांदी बन सकतीहै अगर एक चुटकी तोलेभर कलई पर तरह कियाजावे। (सुफहा अकलीमियाँ २१४)

सीमावको कायमुल्नार करनेकी तरकीब बजरिये धतूरा जर्दगुलके फलमें ३० आंच (उर्दू)

अकसीर कमरीसमर धतूरा जर्दगुल जिसका फूल तोरईके-मुसन्निफ ते से दाल खे बे से मुतरिज्जम दाल हे ते वाउ रे हे -फूलसे मुशावा होताहै बडाफल लेकर सर उसका काटकर अन्दरसे खाली करके उसमें सीमाव भरदे उसके ऊपर सलगूद: जो फल मजकूरको खाली करनेके वक्त निकलाहै पुर करदे और अगर जरूरत हो तो दूसरे फलसे निकालकर कूटकर भरदे बादहू सरपोश उसीकी तराशाका बंद करके थोडा कपडा लपेट दे और जर्द मिट्टीमें थोडी सी रुई मिलाकर खूब कूटकर उससे गिले हिकमत करदे और बडे उपलेको कुरदकरे फल मजकूर उसपर रखदे और सवासेर कटीहुई कर्सी उसके चारों तरफ रखकर आगदे और खुद बखुद सर्द होनेसे बादहू निकाल कर दूसरे फलमें इसी तरह अमल करे हत्ता कि तीस मर्तब: तीस फलोंकी नौबत पहुँचे। मगर हरबार पावभर कर्सी ज्याद: करता जावे चालीस मर्तबेमें दस सेर कर्सीकी नौबत आवेगी और सीमाव कायमुल्नार होजायगा बादहू मिसके पत्तर कंटक वेधी बनावे और सीमाव मजकूरको हाथसे मले हत्ताकि पत्तरोंकी बातनमें सीमाव नफूज करजाए। बादहू पत्तरोंको एक शकोरेमें रखकर दूसरा शकोरा उसपर ढांककर मुअम्माकरले और तीन सेर उपले या सूखी लकडीमें रखकर आगदे चांदी होजायगी और यह कुलियाहै। (सुफहा अकलीमियाँ२६७)

विचार-अखबार अलकीमियाँ १। ५। १९०६ सुफहा ५ में मुन्दर्जहै कि महाराज बनारसके बागवाँकै बनारसमें धतूरा जर्दगुल मौजूदहै और नीजकिला बाके मुकाम कपिलमें मौजूद है।

पारद अग्निस्थाई महदी और बस्मेसे १४ आंचमें-

मेंदी सवासेर कच्चा बसमा १। सेर कच्चा. दोनों दवाई कुटी हुई रातको सेर पक्के पानीमें भिगो छोडनी प्रातःकाल जोश देकर पानी निकाल लेना उस पानीमें पारा १० तोले पाकर खरल करना १ दिन भर रातको सब नुगदी लेकर उसमें खरल कियाहुआ पारा रख कर १२ बारासेर पक्के

गोहेकी खुली आग देनी प्रातःकाल पारा निकाल कर तोल लेना बराबर निकलेगा ऐसे प्रतिदिन १४ दिन आग देनी अग्निसह पारद होवेगा–(जंबूसे प्राप्त पुस्तक–)

पारद स्थिर बडके दूधसे शीशीमें १आंच।

पारा कायम इस्तरह करना चाहिये पारा ४ तोले, वट-का दुग्ध २० तोले, दोनोंको खरल करना और इमाम दस्तेमें पाकर खूब कूटना अनवरत ४ पहर फिर उसको शीशीमें पाकर वालुकायंत्रमें आग देनी मीठी दुग्ध जल जायगा और पारा स्थिर होजायगा। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

सीमावको कायमुल्नार करनेवाली बूटियों और अजजाइकी फहारिस्त (उर्दू)

१	२	३	४	५	६
भिलावां	वेखकनेर सफेद	तुख्मढाक	तेजाववैजामुर्ग	रोगनतुख्मधतूरा	घूंघची (सुफहा अकलीमियाँ) २०६

सीमाव कायम बजरिये चोयाशीर गाय वगैरः (उर्दू)

बकरी, गाय ऊँटनी भेड हरेकका दूध सेरभर ५ तोले [illegible]रेपर अलग अलग चोया दो आगपर, पारा कायम होगा (सुफहा १६ अखबार अलकीमियाँ ८।२।१९०९)

(उर्दू)

तुख्म ढाक–यहांभी रोगनसे मुराद है क्योंकि रोगन तुख्ममें सहक करते करते अव्वल सीमाव मस्काकी तरह होताहै बादहू रफ्तः रफ्तः आग देनेसे कायम होताहै। रोगन वलादरसे भी सीमाव सहक करते करते मसका होजाता है। (सुफहा अकलीमियाँ २०८)

कायम कर्दन सीमाव–बजरिये रोगन सरफोका (फार्सी)

कायम नमूदन सीमाव–बिगीरन्द रोगन सरफोका व सीमाव हमचन्दवः व हरदोरा वाहम साइते हलकुनन्द व दरबोतए गिली अन्दाजन्द बादहू बिगीरन्द बोताः आहनी व ओरा अजनमक सांभर पुर साजन्द बदरमियान ईनमक आँ बोतए गिली निहन्द पस सरपोश आहनी वाला दिहन्द बोतः आहनी निहन्द ववायदकी शिकम् सरपोश नीज अज नमक सांभर पुर बाशद यानी तहवबाला बोतः गिली कि दर बोतः आहनी अस्त हमः नमक बाशद पसता शश पास आतिश दीपकदिहन्द ववकार बरंग तरीक रोगन कशीदन सरफोंका आंनस्त कि सरफोकः राअजन बर्ग व बेस गिरफ्तः दर शीशः अन्दाजन्द व आँशीशः रामौहर वलेप दिहन्द व बतरीक डोलजंत्र रोगन ओ बिवस्तानंद। (सुफहा ७ मुजरवात अकबरी फार्सी–)

पारद स्थिर कसूमके तेलसे।

फकवाडेके पत्रोंसे कुसुंभेका तेल निकालना पारदको कायम करताहै। (जंवूसे प्राप्त पुस्तक–)

सीमाव कायम बजरिये रोगन अजवाइन (उर्दू)

हरमल २ तोला अजवाइन देशी अजवाइन खुरासानी अजवाइन दल हरेक डेढ पाव सबका तैल निकाललो इसमें पाराको खरल करके तरिबया दो जब सब तेल जज्ब हो जावेगा पारा शुद्ध होजावेगा। (सुफहा १६ अखबार अलकीमियाँ ८।२।१४०९)

सीमाव कायम बजरियः घूंवची व रोगन तारा मुराद जैतून (उर्दू)

एक आहनी करछीमें ५ तोला घूंवची सफेदका सफूफ निस्फ तले निस्फ ऊपर दर्मियान एक तोला पारा रखकर ऊपर ५ तोला तारःमीरांका तेल और ५ तोले रोगन जैतून डालकर तले आग जलादो जब दो पहरके बाद अजखुद आग लगकर सब कुछ सडजावे तब पारा निकाल लो जो कुछ होगा। (सुफहा १६ अखबार अलकी-मियाँ ८।२।१९०२)

पारद स्थिर कर्पूरादि तैलसे।

मुशकपूर १, सज्जी १, शोरा २, नवसादर ३, सुहागा ४, फिटकरी ५, "प्रत्येकं निंबूरसेन मर्दितं कर्पूरोपरिलिप्तं शुष्के लेपान्तरं क्रमेण शुष्केषु सर्वेषु कोकिलाग्नौ मंदंमंदं धमेत्, दग्धेषु सर्वेषु कर्पूरम्" तिजाब फारूकीसे लेपकर "पाचे निधाय आतपे खरे निदध्यात्। तैलं भवेत् अनेन पारदगन्धकसिंग्रफास्थिरं भवेत्।" (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

विचार–कुछ गलतीहै ऐसा जान पडताहै कि ५ चीजोंसे तेजाब फारूकी बना उसके योगसे धूपमें कपूरका तेल बना उससे पारा अग्निस्थाई करे।

सीमाव कायम बजरिये नमक व मिर्च स्याह (उर्दू)

एक सेर नमक, एक सेर काली मिर्च, हरदो बारीक पीसकर दर्मियान पावभर पारा देकर वर्तनका मुँह बंद करके पहले दिन ४ प्रहर, दूसरे दिन २ प्रहर, तीसरे दिन एक प्रहर आगदो मगर आग चरागकी बत्तीकी हो स्वच्छ हो। (अखबार अलकीमियाँ ८।२।१९०९)

सीमाव कायम करनेकी तरकीब नमक कायमसे (उर्दू)

नमक लाहोरी हस्वख्वाहिश लेकर उसका दसवां हिस्सा जवदुलजर ("समंदरझाग) नमकमें शामिल करके किसी लोहेके बोतेमें डालकर कोयलोंको सख्त तेज आगमें गलावे जब गल जावे तो ठंढा करके वजन करे, जिस कदर असली वजन अव्वलसे कम हो उस कमीको ताजा और जवदुलजरसे रफे करे यानी समंदरझाग और मिलावे मस-

ठन कुल दस तोला अव्वलमें था बाद गलानेके सात तोला रहगया तो ३ तोला समंदरझाग और मिलाकर फिर गलायें इसी तरह यहांतक अमल करे कि अपने असली वजन १० तोले पर पूरा उतरे बादहू सीमाव मसअद हम वजन नमक कायम दोनोंको मिलाकर बैजः मुर्गकी जर्दीके तेलमें दिनमें तमाम तसकिया और रातको तश्विया चन्दबार इसी तरह अमल करनेसे सीमाव कायम होगा । एक तोलाको तीस तोला कलईपर तरहकरें कमर खालिस होगा । अगर इसको एक चावल मुनासिब बदरकःके साथ मरीज तपेदिकको खिलावें तो निहायत नाफः है । (सुफहा १३ अखबार अलकीमियाँ १६ । ६ । १९०५)

सीमाव कायमुल्नार बजरिये नमक आर्क (उर्दू)

अगर आकके नमकमें हमवजन सीमावको शामिल करके मदारके मुकत्तर रसमें दिनमें तश्किया और रातको नरम तश्विया देते चलेजावें इक्कीस तश्वियोंके बाद सीमाव कायमुल्नार होजाताहै जो अमल अकसीरके काम आताहै । (सुफहा ४ अखबार अलकीमियाँ १ । २ । १९०७)

तरकीब सीमाव कायमुल्नार सज्जीसे (उर्दू)

सज्जीके नमकसे पारा कायमुल्नार जरूर होताहै मगर उलमाइ अकसीर मग़रबीका इसपर अजमाइहै सेरों और मनों पारा सज्जीके नमक (सोडा) से जरूर क़ायम होताहै मगर तादात नमक और तवख़की मालूम नहीं है तरकीब यह है सज्जीका नमक पानीमें घोलकर सीमावको उसी पानीमें पकाना शुरू करो जब पानी जलजाये और पानी डालो फिर और फिर और डालो और ज़र्फ़ किसी धातुका हो आखिरकार ज़रूर पारा कायमुल्नार होगा मुझे याद आताहै कि, यह तरकीब मेरे किसी व तन कीहै और कामयाब हुए (सुफ़हा नं० १४ अखबार अलकीमियाँ १। ६ । १९०७)

स्थिर पारद सज्जीसे ।

पांच तोले लोटाखार १ तोले पारा बोते बिचहेठ ऊपर खार रसके पारे दे सेर पक्का गोहेदी आग देनी फिर दूसरी सवासेरकी, तीसरी डेढसेरकी, चौथी पौने दो सेरकी पांचवीं दो सेर पकेकी, फिर ढाई सेरकी, फिर साढेचार सेरकी, फिर पांच सेरकी पर बोता निर्धूम अंगारोंमें रखना यदि कुछ कसर हो तो और भी देदेनीं ऐसा पारा स्थिर होजायगा निश्चय । (जंबूसे प्राप्त पुस्तक ।)

तरकीब सीमाव कायम बजरिये चूना (फारसी)

कि अव्वल सीमावरा बिशोयन्द व बाअलक़मः साख्तः व दरपार्चः पेचीदः दरखानः चूनापुजाँ विपुजन्द वक्ते कि चूना अजतूंबरायद दरवः निहन्द आबवराँ विपाशन्द कि बूदबुखार अजाँ ज़ाइदशवद तमाम चूना शिगुफ्तः गर्दद सीमावरा अजांबेरूं वरआबुर्दः हमचुनीं तादह दवाजदः वार अमल आदत कुनन्द सीमाव हरगिज़ अज़ आतिश गुरेजाँ नशवद हमचुनीं कि विरीत बज़रनेखव उकाब बसम्बुल बइमलाह हमः कायम मेशवद अम्मा गुदाज आँ न बाशद चूइ आँरा वा आवहा अव्वैज़ व बाहरह तश्मीअ कुनद चंदाँ कि वर सुफहाजारी शवद व गवासकुनद पस हल व अकद नमूदः अमल कुनन्द काबिल तरह बाशद ई अस्त तदबीर हजरत उस्तादे खैरुल्लाहशाह साहब हक्कानी रहमतुल्लाह अलेहः (सुफहा १०किताब इसरारुल कीमियाँ)

सीमाव कायम -बजरिये चूना (उर्दू)

पारा २५ तोले एक डबीज और गफ कपडेमें पोटली बनाकर एक सेर अनबुझे चूनेके दर्मियानदेकर ऊपर कदरे पानी डालदें जब चूना सर्द हो पोटली निकाल ल फिर और चूनामें इसीतरह अमल करें इसी तरह ११ बार करे पारा स्वच्छ होजावेगा (सुफहा १६ अखबार अलकीमियाँ ८ । २ । १९०९)

सीमाव कायमुल्नार-चूनासे (उर्दू)

सीमावको बिला अकद किये चूना आबनारसीदःमें देकर ऊपर पानी छिडकें सीमाव मुतहर्रिक कायमुल्नार होजायगा इसकी मुफस्सिल तरकीब मुलाहिजा हो (सुफहा ५ अखबार अलकीमियाँ १।१ । १९०९)

पारद कायम चूने और बालिकामूत्रसे ।

पारा अनबुज्ञ चूना पारेके हेठ ऊपर देके ऊपरसे लडकियोंका मूत्रपाते रहना मूत्र ४ अंगुल ऊपर रहे कढ जाय तो और पांणा जोश देना गोली होजायगी और कायम होगा (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

पारद कायम, शहद सुहागे और नौसादरसे ।

पारा तथा शहद तोला तोला लेकर दोनोंको खूब खरल करना फिर गोलीबनाकर रखनी फिर नौशादर६माशे सुहागा म। दोनोंको पीस बोते बिच पारेदे हेठ ऊपर रखकर बंद करके ऊपरो त्रय कपरमिट्टी करके खूब सुखाकर भूभलविच नरम आंच देनी सरद होवे तो निकालना कायम होगा । (जंबूसे प्राप्त पुस्तक) ।

सीमाव कायमुल्नार मुतहर्रिक रोगन नौसादरसे (उर्दू)

नौसादरका तेल निकालनेकी तरकीब यहहै कि नौसादर १० तोले चूना आबनारसीदः पांच सेरमें देकर एक मिट्टीके बर्तनमें बंदकरके पन्द्रह सेरकी आंच दे–जब सर्द होजावे निकालें फिर उसे एक खुले बर्तनमें दाखिल करके चहारचन्द पानी दाखिल करदें चौथे रोज मुकत्तर लेकर पकावें जब तमाम पानी जल जावेगा तो नौसादर तेल होजावेगा । (सुफहा ५ अखबार अलकीमियाँ १६ । १२ । १९०७)

अव्वल सीमावको पहले ईटके बुरादेमें एक पहरतक खरल करें ताकदहू स्याह केचलेसे स्याह होजावे बादहू नौशादरके तेल दो तोलेमें नरम नरम आंचपर एक घंटेतक लगावटदें इस कदर अमलसे सीमाव मुतहर्रिक कायमुल्नार होजावेगा ।

चूना और नौसादर स्थिरसे पारदको स्थिर तदनंतर भस्म ।

कुक्कुटांडका चूना बनाना कुक्कुटांडके चूनेमें बराबर नौसादर मिलाकर खरल करना फिर उसको आग देना बट्टीगोहेकी और वहांसे निकालकर तोलना जितना घटजाय उतना और नौसादर पाकर पूर्ववत् खरल कर आग देना एवं जबतक नौसादर बराबर उतरे जब नौसादर घटनेसे रहजावे तब फिर उनके साथ समभाग पारा पाकर आग देना उसीतरह जब पारा घटनेसे रहजावे तब फिर शंखियेकी फुलावट देनी (जंबूसे प्राप्त पुस्तक ।)

सीमाव कायम करनेकी तरकीब बजरिये अर्क नौसादर व चूना कलसवैजा मुर्ग व बाल (उर्दू)

सीमाव मुसफ्फाशुदःको प्याले चीनीमें डालकर अगर सफेद अर्कका चोया दिया जायगा तो वह सीमाव आलादर्जेका कायमुल्नार होजाताहै मेरा तजरुबा शुदःअर्क यह है । कलसवैजः मुर्ग २ जुज, नौसादर २ जुज, आबचूना ३ जुज बोलसभयान ४ जुज, मूएआदम ६ जुज, तरकीब यह है कि बालोंको अच्छीतरह चिकनाईसे साफ करलेवे और मिकराजसे बहुत बारीक कतरलेवे फिर सब अजजाइको मिलाकर शीशीमें डालकर बंद करलेवें बादहू गजपुट गढा जमीनमें खोदकर उसमें लीद अस्पताजा भरकर शीशीको दर्मियानमें रखकर गढेको बंद करदें बीसरोजके बाद निकालकर कुरेअंबीकमें डालकर जो काचका होगा बतरीक मारूफ अर्क कशीद करें जबतक सफेद अर्क आतारहे उसको अलाहदा रक्खें । (सुफहा ५ अखबार अलकीमियाँ १६ । ६ । १९०७)

सीमाव कायमुल्नार करनेकी मुजर्रिबतरकीब बजरिये गंधक कायम (उर्दू)

गंधक आँवलासार हस्बजरूरत लेकर लोहेकी एक कटाहीमें डालें और चूल्हेपर रखकर नीचे नरम आंचदें और अर्क सत्यानाशी बूटी या अर्क पनवाड जिसको तरूठः कहतेहैं डालते जायें इसीतरह २४ प्रहरके चोयेमें गंधक कायम होजायगा मगर ख्याल रहे कि, बाद १२ पहर आगेकी जरासी डली आगपर डालकर देखें अगर गंधकका शौला बंद होकर आगको सर्द करदे तो उतार लेवें अगर ज्यादः पकजायगी सन्द होजायगी इससे अमल बराबर नहीं होता इसके बाद सुहागेको अर्क कंघीमें कायम करें और इसीकी कुठाली बनाकर सीमाव मुसफ्फा कुठाली मजकूरमें भरदें ऊपर उसके गंधक कायम शुदः इसकदर डाले कि, सीमाव नजर न आवे फिर कोयलोंपर पाँच या दस मिनट रक्खें जब गंधक तेल होकर बहने लगेगी तो सीमाव कायमुल्नार गुलाबी रंगका खंजर होजायगा उस वक्त आगसे अलहदा करके निकाललें । (मुहम्मद अबदुल हफीज आमिल हकीम अलव जी ल कुश्ता) (सुफहा ११ अखबार अलकीमियाँ १६।६।१९०५)

तदबीर गलीज कर्दन सीमाव वा अभ्रकसफेद बियारद अभ्रक सफेद व धनाव सफेद साजद वआँ (फार्सी) ।

दुहनावरा व सीमाव बाबतर्व पुख्तः यकजाकर्दः सहक कुनद ब दरडौरू जंतर आतिश दिहद सीमाव बुरीदःबाला गीरद ब कलस अभ्रक बाई मांद हमींतरीक हफ्त अमल कुनंद सीमाव गलीज गर्दद बदर वजन दहदबाजदह पांजदह तलकदिहंद जियादह गरां कुनन्द अजहमः औलाबुवद यानी अगर सीमाव यकसर बाशद सफेद तलक यकब नीमसेर दरहर अमल । (सुफहा ११ छोटी कितबियानुसखा सिद्धरसकिताब जवाहर उलसिनात)

सीमावको बिछिया घात करनेकी तरकीब बजरिये अभ्रक (उर्दू)

सीमाव ख्वाह तनहाहो या मयगंधकके मगर सिर्फ सीमावके हमवजन अभ्रक स्याह दुहनावकी कुई मिलाकर कांजी या सिरका मुकत्तर या अर्कलैमूंमें बदस्तूर सहक करे यानी सुबहसे दोपहरतक खरल करे और दो पहरसे शामतक धूपमें सुखलावे बादहू डौरू जंतर या सुराही या शीशीगर्दन दराज या दो प्यालोंमें तसईदकरे ताकि सीमाव अभ्रकसे जुदा होकर शीशाके अतराफमें चस्पा न हो जावे यह सहक और तसईद सातबार करे हर अमलमें कुछ सीमाव तसईद और कुछ तहनशीन होताजायगा सातवीं बार बिलकुल तहनशीन होजायगा । (सुफहा अकलीमियाँ १४९)

मुतरजिम—तहनशीन सीमाव जो अभ्रकके साथ रहजाताहै वह खुश्क सहक करके मुँहसे आहिस्ता आहिस्ता फूकता रहे जिस्में अभ्रक उडजाये और सीमाव बवजह गरानी वजनके रहजावे ।

यदि न स्यादभ्रसत्त्वं वज्रकाभ्रकचूर्णिताम्।
यमचिंचाम्लपुटितां पिष्टिकां कारयेद्रसे १॥
संधानाम्लादियोगेन चणकाम्लप्रयोगतः ।
तुत्थसंपर्कतो व्योमचूर्णपिष्टी भवेद्रसः ॥
एवं युक्त्या रसं यंत्रे प्रोत्पात्य स्थैर्यमानयेत्
(रसराजलक्ष्मीः–)

अर्थ—यदि अभ्रकसत्त्व न मिलसके तो वज्राभ्रकके चूरको तुल्यभाग पारदमें गेर तप्तखल्वद्वारा यमचिंचाके रससे अथवा चनेके क्षारका योग और धान्याम्लकके योगसे पिष्टी करै अथवा कुछ तूतिया मिलाकर कांजीसे घोटे तो अभ्रक पारदकी पिष्टी होजायगी ॥ १ ॥ २ ॥

सीमावको कायमुल्नार करनेकी तरकीब बजरियः कुश्ता अभ्रक ।

खाकिस्तर अभ्रक सीमावको कायमुल्नार करती है तरकीब यह है कि खाकिस्तर मुन्दर्जः जैल छः माशे सीमाव एक तोले एक जगह खरलमें डालकर तमाम दिन रगडाई करें फिर दोनोंको शिकोरेमें डालकर आंचदेदें जब आंचसे

१ अंजनाभ्रकचूर्णितम्–इत्यपि ।

बाहर निकालें कैफियत मालूम होगी। (सुफहा१० किताब अखबार अलकीमियाँ)

तरकीब खाकिस्तर अभ्रक, नमक लाहौरी ३ माशे, नमक शोरमकडा १ तोला, कफेदरिया ३ माशे, अभ्रक स्याह १ तोला इन सबको बारीक पीसकर अर्क आकाशबेलमें जो करीबन आधपावके हो और अर्क लेमूं २ तोला इसमें शामिल करके अदविया मजकूरको उसमें खरल करें टिकिया बना कलवगिलीमें मुंह बंद करके सात सेरकी आंचदें। सर्द होनेके बाद जो खाक बरांमद हो उसको अहतियातसे रखलें।

पारदको अभ्रक भस्मसे कायम।

(अभ्रक किलस तोला ४, पारद एक वेरी उडायाहुआ तोला ४) जराबंद तहवील और जौखार दोनोंको पीसकर सिरकेमें भेवकर जोश देवे। पांच वा छः उबालें आवें फिर रुई रखकर नितारलेवे उसमें किलस कुश्ता अभ्र पारदको खरलकर शीशीमें पाकर सत तश्विये देवे सिद्धमताभ्रे रंगे (कुस्ता अभ्र)६० तोले पर एक तोला पावे। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

पारद स्थिर कसीस ओंगाक्षार शोरा नौसादरके जलसे।

अपामार्गक्षार१तोला, शोरा३माशे, नौसादर ३माशे, लूण ३माशे, काहीश्वेत (कासीसश्वेत) ३ माशे, चारों चीज अपामार्गके क्षारके रसबीच खरल करनी ४ घडी फिर सब चीजोंको कडछेमें पाके सुखालेनीयां फिर ठंढे स्थान पर रखनी जल होजायगा उस जलनाल पारद खरल करना स्थिर होजायगा। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

सीमाव कायमुल्नार करनेकी तरकीब बजरिये चोया अर्क लोहा नौसादर (उर्दू)।

जनाव सालिगराम साहव ठेकेदार खरीदार अलकीमियाँ कोटकपूरः इलाका रियासत फरीद कोटसे तहरीर फर्माते हैं कि, बोलतिल्फ नीम आसार नौसादर एक सेर शाही लोहचून एक सेर शाही-बोलमजकूर में दो रोजतक पडा रहनेदें वादहू नितारकर अजजाइ मस्तूराको बोतः आहनीमें एक सेर शाही सीमाव डालकर साफ पानीका चोया देवें बादहू बर्ग तंबूलके पानीका चोयादें सीमाव कायमुल्नार होजायगा आबसादह और आबबर्ग तंबूलका जुदा जुदा वजन एक एक पाव भरका होना चाहिये। (बजाइ बोल सिरका लेसकतेहैं) (सुफहा अखबार अलकीमियाँ १।१६।११।१९०६

उकद सीमाव बजरिये हलफौलाद (उर्दू)।

चार रतल खट्टे अनारके पानीमें आधारतल बुरादा फौलाद डालकर धूपमें रखदो जब चन्द रोजमें फौलाद हलहोजावे तब आधापाव पारा करछीमें डालकर इस अर्कका चोया दो वह सख्त उकद होजायगा। (सुफहा १६अखबार अलकीमियाँ ८।२।१९०९)

सीमाव नीमकायम बजरियेफौलाद (उर्दू)

एक आहनी करछेमें एक तोला बुरादा जदीद (पका लोहा या फौलाद) बिछाकर उसपर ९ माशे सफूफ गंधक बिछावे उसपर २ तोले पारा वा आहिस्तगी तमाम रखकर उसपर एकतोला सफूफ गंधक ढकदें ऊपर बुरादा जदीद एक तोला देकर रोगन जैतून इस कदर डालें कि, तमाम अदवियासे दो अंगुल ऊपर रहे कच्छेके नीचे नरम नरम आग जलावें जब तेल सूखकर दवाओंके बराबर आजावे तब आंच तेज करदें कि दवाओंके अन्दर आग लगजावे जब सब अदविसा जल जावे तब पारा अन्दरसे निकाललें जो कदेर गाढा होगया होगा यह भी इस कदर कायमुल्नार होताहै कि, कुठालीमें डालकर कोयलोंकी आंचमें रखदें कुठाली सुर्ख हो जावेगी मगर पारा नहीं उडेगा मेरा जाती तजरुबाहै। (सुफहा १७अखबार अलकीमियाँ२४।१।१९०९)

बूटीसे शिलाजीत स्थिर उससे पारद स्थिर

"ऊषरभूमौ मेथीसदृशपत्रा अम्लरसा औषधिर्भवति तत्पत्रैः श्वेतशिलाजतु स्थिरा भवति तत्र च पारदः स्थिरो भवति सन्नरसास्त्रौषधि" (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

पारद स्थिर नीलेथोथेके तैलसे।

नीलाथोथा कुक्कुटांडकी पीतिमासे खरल करना और लिइम दाब छोडना सब तैल होजायगा वह तैल पारेको स्थिर करताहै। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

पारदको अग्निस्थाई करना संखियेसे।

पारेको निआजबोके रसमें खरल करके उसीके रसमें काढना फिर शंखिया जर्द बराबर वजन लेकर पारेके हेठ ऊपर देके बोतेमें बंदकर बीस प्रहर नरम आगमें रखना स्थिर कायम होजायगा। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

पारा कायमुल्नार बजरिये बोतः बीट कबूतर व अर्कटेसू (उर्दू)

जनाव मुहम्मदबखश साहव जमादार तोपखाना रियासत खैरपुर सिन्धसे तहरीर फर्माते हैं कि, पैखाल कबूतर सहराईसे पचास बोतः तय्यार किये जावें इस तरकीबसे तीन पाव गुलेटेसूके पानीमें पैखाल कबूतरको खरलकरें फिर पचास बोतः तय्यार करके हरबोतेमें सीमाव १० तोले यकेबाद दीगरे दाखिल करें इसी तरह पचासवें बोते तक अमल करते हुए सीमाव कायमुल्नार हो जायगा गुलेटेसूके पानी निकालनेकी तरकीब यह है गुलेटेसूको पानीमें दाखिल करके आग पर जोश दें पानी बकदर हाजत काफी है। (सुफहा नं० ४ अखबार अलकीमियाँ १।६।१९०७)

सीमाव कायम सुर्मासे (उर्दू)

सुर्मा स्याह १ तोलापारा१ तोला शोरा कलमी २ तोला रोगन कुञ्जद १ सेर अंगारों पर रख कर देखो जब शोरा उड जाय पारा कायम होजावेगा।

(अज वियाज हकीम मुहम्मद फतहयाबखां सोहनपुरी)

सीमाव कायमुल्नार बजरिये अजसाद अदना (उर्दू)

मिस जस्त कलई सुर्ब हरएक ५ तोले इनको लेकर एक कुठालीमें डाल कर चर्ख देकर कालिबमें डिबियेकी शकल जरगरसे तय्यार करालेवें और सरपोश भी

इन्हीं चार अंशियाका तय्यार करा लेवें जब यह डिबिया और सरपोश तय्यार हो जावे तो एक माशा शोरा, २ माशे सुहागा, एक माशा मुश्क काफूर, एक माशे संम्मुलफार सफेद, हर चहार अदविया खूब खुश्क खरल २ घण्टे करके फिर रसलेमू डालकर दो घण्टे खरल करके इसके रकीस जमाद इस डिबिया और सरपोशके अन्दर करके इस डिबियामें सीमाव एक तोला अब्बकर ऊपर सरपोश देकर कदरे गिले हिकमत करके अखगरोंकी बहुत नरम आगमें या गरम तेज भूभलमें रातको दफन कर रक्खें शुबह निकालें तो सीमाव गिरहशुदः और कायमुल्नार पाओगे ख्वाह कितनी मर्तबः चर्ख दो सुर्वकी तरह कुठालीमें चक्कर लगाता रहेगा जब सर्द होगा तो फिर गिरह होजावेगा और अगर कुछ एक मर्तबः कमी रही तो दूसरी दफे: फिर डिबियामें रखकर नरम अखगरों-की आगमें दफन करदो जरूरही उमदा कायमुल्नार हो जावेगा तजरुबाशुदः चन्दमर्तबः का मेरा है अगर कायम न हो तो जिस कदर आपका खर्च हो मैं दूँगा मगर म शर्त नहीं करता कि जिस मतलबके वास्ते हकीम साहब सीमाव कायमुल्नारके ख्वाहां हैं इस मतलबमें काम देगा या नहीं हां कायमुल्नार जरूर होजावेगा अगर न हो तो अखबार अलकीमियांकी मारफत लिखो हरजानः वक्त और खर्च जिस कदर होगा मैं देनेका जिम्मेदारहूँ।

(सुफहा २० व २१ अखबार अलकीमियाँ २४।१।१९०९)

सीमाव कायमुल्नार (उ)

ढाई पाव पारा लेकर रुईसे एक कूंडेमें डालकर खूब साफ करे रुई साफ होजावेगी और एक बडे कराहमें डालकर एक कटोरा आहनी सितह बराबर करके सीसासे जलमुद्रा करके कराहको खूब पानीसे भरदें और २ मन लोहा भी डालदें तीन रोज तक बराबर आग जलावें पारा तमाम कायमुल्नार होजावेगा।

(अज वियाज हकीम मुहम्मदफतहयाबखां सोहनपुरी)

तरकीब रोगन सीमाव कायमुल्नार(उर्दू)

सीमावको सिल्फरिक एसिड यानी गन्धकके तेजाबमें डालकर धीसी आंच पर गर्म करें तेजाव जज्ब होकर सीमावका सफूफ बनजावेगा फिर उसको हम वजन तेजाबके साथ इसी तरह गर्म करें मगर पहलेसे जरा ज्यादा आंच दें और उसके धूएँसे मुँह और नाकको बचायें जब फिर तेजाब खुश्क हो जावे तब और हमवजन तेजाब डालकर फिर आग दें मगर दोनों वक्तोंसे ज्यादा तेज हो उस वक्त भी सीमाव जमजावेगा बादहू और तेजाब डालकर आग दें उस वक्त कितनी भी आगदो जमता नहीं तेलकी तरह गाढा जमा रहता है और ऐसा कायमुल्नार व तेज होता है कि उसको कितनीही आग दो उडता नहीं इसी तरहसे दूसरी धातुओंका भी तेल निकालना मंजूर हो तो बनालो। (सुफहा ७९ किताब कुरतैजातहजारी)

सीमावको कायमुल्नार करनेके मुतल्लिक हिदायतें (उर्दू)

मुतारज्जम मुसन्निफ रहमतुल्लाह अलियाने सिर्फ फहारिस्त अजजाइ मुजक्करकी लिखीहै और तरकीब कोई बयान नहीं की इन अजजाइमेंन्मुनकर्दन भी और मुस्तरकन भी ऐमाल जैल करनेसे सीमाव रफ्तः रफ्तः कायमुल्नार होजाताहै–अव्वल सीमावको किसी जुज्वके शीरा या रोगनमें बतरीक पुट आफ्तावीके सहककरे बादहू शीराका इन अजजाइमेंसे जिसका मुमकिन हो चोया दे अगर सिर्फ रोगन भी हो तो चोया दे अगर सिर्फ रोगन भी हो तो सिर्फ खरल करतारहे यहांतक कि, सीमाव मसका होकर कायमुल्नार होजावे–दोयम सीमावको अजजाइ मजकूरमेंसे जिस जिसमें मुमकिन हो बतरीक मजकूर खरल करके बादहू खुश्क होनेके तसईद करे यह अमल खरल और तसईदका यहां तक करे कि, कायमुल्नार होकर सीमाव तहनशीन होजावे–सोयम सीमावको अजजाइ मजकूराके साथ सहक बतरीक मजकूर इस कदरकरे कि, बिलकुल मसकह और रेजः रेजः खाककी तरह होजावे बाद उसके बोतःमुअम्मामें रखकर रफ्तः रफ्तः तदरीजी आग भडकाकी इसी तरह दे कि अव्वल रोज भूभल गरममें गिले हिकमत करके सुखलाकर बोतः मजकूरको रक्खे उसके बाद एक कंडेके बुरादेकी आग दे जिसका वजन आध पाव हो बादहू पावभर बादहू डेढःपाव बादहू आध सेर आधसेर बुरादा पाचक दस्तीकी आग दे इसी तरहसे रफ्तःरफ्तः आग बढाता जावे अगर वजन सीमावका कुछ कम होजावे उसको पूरा करके बदस्तूर सहक करके आग दियाकरे कायमुल्नार और कुश्ता हो जायगा।

चहारम सीमावको बदस्तूर सहकबलेग करके बतरीक वालूजंतरके आगदे यानी आतिशी शीशीमें रखकर मुँह बंद करदे बादहू गिले हिकमत करके मजबूत और गिले हिकमत शुदह हांडीमें रखदे और इसमें वालू इस कदर भरदे कि आतिशी बोतल मजकूर छुपजावे और नीचे तदरीजी आंचकरे यानी अव्वल दीपक अग्नि दे बादहू भात अग्नि दे और आखिरको गोश्त अग्नि दे दूसरे रोज आग देनेके पहले सहक बदस्तूर कर लिया करे यहांतक कि, कायम होजावे।

पंजुम अजजाइ मजकूरके शीरेमें जो अजजाइ खुश्कका जोश देकर निकाला गयाहो और तरका बदस्तूर मअरूफ निकाला हो बतरीक डाल जंतरके पकावे इस तरह भी कायमुल्नार होजाताहै मगर ज्यादः अर्सा लगताहै–(सुफहा अकलीमियाँ २०६)

पुनः पारद अग्निस्थाई।

यदि न स्यादभ्रसत्त्वमंजनाभ्रकचूर्णितम्। यमचिंचाम्लपुटितं पिष्टिकां कारयेद्रसे॥ ॥ १ ॥ संधानाम्लादियोगेन चणकाम्लप्रयोगतः। तुत्थसंपर्कतो व्योमचूर्णैः पिष्टीभवेद्रसः। एवं युक्त्या रसं यंत्रे प्रोत्पात्य स्थैर्यमानयेत्॥ २॥ (१७।१०।८)

ता० १७ को ५ तोले कैनका साधारण शुद्ध पारद आर १ तोले उत्तम कृष्णधान्याभ्रकको लोहखलमें डाल प्रथम २ तोले इमलीका ५ तोले गाढापन्ना डाल (५ तोलेसे कम पन्ना डालनेसे अभ्रक घोटने लायक आर्द्र न हुआ)

घोटा । फिर नींबू विजौरा जंभीरीके दो दो तोले रससे बने ६ तोले द्रवमेंसे थोडा थोडा डाल गाढा गाढा घोटते रहे १॥ घंटे घुटाई की ५ तोले इमलीका पन्ना, ४ तोले नींबू आदिका द्रव कुल ९ तोले पडा।

ता०१८ को बचा २ तोले नींबू आदिका द्रव डाला और फिर कवल जंभीरीका सात तोले रस डाल २घंटे घुटाई की कुल ९ तोले रस पडा । पारा अभीतक पृथक् रहा।

ता० १९ को जंभीरी रस डालडाल ६ घंटे घुटाई की १० तोले रस पडा । सायंकालको देखा तो अधिक अंश पारदका अभ्रकमें मिलगया था किन्तु कुछ रवे बाजरेसे बाकी भी थे. नष्टपिष्टी होनेकी आशा हुई ।

ता० २० को अभ्रकप्रमाण थोडा जान ६ माशे धान्याभ्रक और डाल और जंभीरीसे रस डाल २ घोटा शामतक ६॥, घंटे घुटाई हुई ८ तोले रस पडा । आज पारा कुछ और मिला अब बहुत थोडे कण राई राईसे बाकी रह गयेहैं, जो खल्वकी तलीमें भली प्रकार दीखतेहैं । और सब मिलगया किन्तु जो मिलाहै उसके भी सूक्ष्म सूक्ष्म कण दीखतेहैं अदृश्य नहीं हुयेहैं ।

ता० २१ को ६ माशे धान्याभ्रक और डाल घुटाई की शामको देखा तो पारेके जो सूक्ष्म रवे दवामें मिले खरलकी बगलियोंसे लगे दीखतेथे सो अब न दीखतेथे किन्तु तलीमें अब भी दीखते थे । शामतक ७ घंटे घुटाई हुई १३ तोले रस पडा।

ता० २२ को ३ माशे पिसे तूतियेकी चुटकी दे रस डाल घोटा तूतिया पडचुकनेपर पारेके बडे बडे रवे बन अधिक अंश पारेका इकट्ठा होने लगा इस समय पिष्टी कुछ पतली भी थी पिष्टीके कुछ गाढे होनेपर देखा तो पारद मिलकर अपनी पहली हालतपर फिर आगया तभी ३ माशे पिसा तूतिया और डाल दिया घुटाई होती रहनेके बाद शामको देखा तो पारेका कहीं कोई बारीक रवा दखिता था बरने सब मिलगया था । शामतक ७ घंटे घुटाई हुई ८ तोले रस पडा पिष्टी गाढी होगई।

ता० २३ को उस पिष्टीको खरलसे खुरच आकके पत्तेपर रखलिया जो पिष्टी खरलके किनारोंपर लग खुश्क होगई थी उसके खुरचनेमें पारेके छोटे छोटे रवे अलग होगये किन्तु उन सबको उस पिष्टीके ऊपर जमादिया और धूपमें सूखनेको रखदिया ।

ता० ३१ को सूखजानेपर तोला तो १० तोले ७ माशे हुई । उसको दहलीके बने लोहेके डौरूमें रख जोडपर भस्ममुद्रा लगा बंदकर कपरौटीकर सुखादिया ।

ता० ५ को चूल्हेपर ८ बजेसे मृदु, मध्य, तीव्राग्नि दीगई रातके १२ बजेतक अर्थात् १६ घंटे ।

ता० ७ के सबेरे खोला तो ऊपरके पात्रमें लगा ४ तोले २ माशे पारा निकला ४॥ तोले जली दवा रहगई ।

पारद अग्निस्थायी दूसरा वान ।

ता० २५ । १० । ०८ को चिर्मिटियोंकी २॥ तोले दालको मलसेमें जिसमें करीब सेरभर पानी आता था प्रथम आधसेर पानीमें ८ बजेसे अग्निपर चढाया वह पानी खतम होचला किन्तु दाल बिलकुल न गली तो उतनाही पानी और डालदिया इस प्रकार ५ वारमें जब २॥ सेर पानी पडा और दाल तबभी न गली दो तीन बार मलसा ऊपरतक भरभरदिया । शामके ५॥ बजे दालको निकाल उंगलीसे मला तो दाल गल तो गई थी, किन्तु मिली न थी अत एव उसे उतार ठंढाकर दालको मथ छानलिया करीब १० छटांकके काढा तय्यार हुआ ।

ता० २५ को ५ तोले कैनका साधारण शुद्ध पारद और २॥ तोले उत्तम कृष्णधान्याभ्रक दोनोंको लोहखल्वमें डाल उपरोक्त १० छटांक काढेके साथ ४ घंटे घुटाई की १ घंटे बाद देखा तो पारा अभ्रकमें बिलकुल मिलाहुआ मालूम हुआ किन्तु जब शामको देखा तो खरलकी तलीमें पारेके रवे दीखपडे अतएव ६ माशे तूतिया डाल घोटा तो कोई विशेष अंतर न दीखपडा ।

ता० २६ को सबेरे पिष्टी कुछ कडी होगई थी अत एव थोडा ही घोटनेसे अधिक भाग पारेका इकट्ठा हो अभ्रकसे पृथक् होगया बादको जंभीरीरसके साथ ५ घंटे घुटाई की १० तोले रस पडा पारा कलकासा फिर मिलगया रवे अब भी थे ।

ता० २७ को जंभीरीरसके साथ ६ घंटे घुटाईहुई १५ तोले रस पडा ।

२८ को जंभीरी रसके साथ ७॥ बजेसे घुटाई आरम्भ हुई ११ बजे देखा तो बहुतसा पारा खल्वमें पृथक् दीखनेलगा, इसका कारण पिष्टीमें कुछ गाढापन आयाहुआ समझ थोडा थोडा रस डाल पिष्टीको पतला किया तो ज्यों ज्यों पिष्टी पतली होती गई पारा पृथक् होतागया यहांतक कि, प्रायः सभी पारा खल्वकी तलीमें इकट्ठा होगया । अत एव शामतक और रस न डाल घुटाई करतेरहे फिर पिष्टीमें जब दुबारा गाढापन आनेलगा तो पारा मिलनेलगा और शामतक सब मिलगया जिससे सिद्ध हुआ कि, जब अभ्रपिष्टी नियमसे अधिक पतली होजातीहै या अधिक गाढी होजाती है या जब अभ्रकका अधिक अंश खल्वकी बगलियोंपर चढजाताहै तब पारद पृथक् होजाताहै आज १० घंटे घुटाई हुई १९ तोले रस पडा ।

ता० २९ को सबेरे देखा तो पारद करीब २ मिलाहुआ था इस परीक्षाके लिये कि, ठीक तौरपर घुटाई करनेसे पारद निरंतर मिला हुआ रहसक्ताहै वा नहीं अपने, रसक्रियाके परिचारक पंडित गौरीशंकरकी निगरानीमें २ घंटे घुटाई और कराई ये घुटाई थोडा थोडा रसदे हलके हाथसे इस प्रकार कीगई कि, अभ्रक अधिक पतला या गाढा न होकर खूब गाढी लेहीसा घुटतारहा और ये भी सावधानी की कि, जहांतक हो पिष्टी पेंदेमें ही रहे इधर उधर न चढने पावे, तो पारद भली भांति निरंतर मिलारहा आज ३ तोले रस और पडा बादको उस पिष्टीको खरलसे खुरच आकके पत्तेपर रख धूपमें सुखादिया ।

ता० ९ को सूखी पिष्टीको तोला तो १३॥ तोले हुई उसको उक्त लोहेके डौरूमें भर संधिपर भस्ममुद्रा लगा बंदकर कपरौटी कर सुखादिया–

ता० ११ को ८ बजेसे १० बजे राततक १४ घंटे मृदु, मध्य, तीव्राग्नि दीगई बादको जैसेका तैसा डौरूको रक्खा छोडदिया–

ता० १२ को खोला तो अधिक अंश पारेका ऊपरके पात्रमें था और ऊपरका गिराहुआ कुछ नीचेके पात्रमें भी था दोनों पात्रोंमेंसे कपडेसे पोंछ पारेको निकाल छान तोला तो ४ तोले ५ माशे हुआ जली दवा ६ तोले २ माशे निकली।

पारद अग्निस्थायी पहले और दूसरे घानकी अवशेष भस्मका पुनःपातन।

ता. १३।११।०८ को उक्त दोनों बारके पातनसे निकले १० तोले ८ आठ माशे अभ्रकको बारीक पीस उक्त लोहेके डौरूमें भर उपरोक्त विधिसे बंद करदिया।

ता. १४ को ८ बजेसे रातके १० बजेतक १४ घंटे अग्नि दी।

ता. १५ को खोला तो ऊपरके पात्रके पेंदेमें लगाहुआ १॥ माशे पारा निकला राख ९ तोले रही। ऊपरके डौरूको देखा तो उसके चारों तरफ चिपकदार चीजमें मिला पारा चिपटा हुआ था। उसको गरम पानीसे धो नितारा तो ४ रत्ती पारा और निकला अर्थात् २ माशे पारा निकला।

पारद अग्निस्थायी (दूसरा पातन)

ता. १६।११।०८ को उक्त पहले, दूसरे और तीसरे पातनके निकले ८ तोले ९ माशे पारद और ८ तोले ९ माशे ही उत्तम कृष्णधान्याभ्रक दोनोंको लोहखल्वमें डाल कांजी नं० १ (जो पारसालकी बनी रक्खी थी) के साथ घोटना आरम्भ किया आज ३/४ घंटे घुटाई हुई ३/४ बोतल कांजी पडी। पारद अभ्रकसे पृथक् रहा।

ता. १७ को ८ बजेसे घुटाई आरम्भ हुई ९ बजे देखा तो सब पारा अभ्रकमें मिलाहुआ था केवल रवे चमकते थे ४ बजेतक ये रवे बहुत ही सूक्ष्म होगये जो खसके दानेसे भी बहुत छोटेथे आज ७॥ घंटे घुटाईहुई ३/४ बोतल कांजी पडी।

ता. १८ को ७॥ बजेसे कांजी डाल घोटना आरम्भ किया १० बजे देखा तो अभ्रक फूलकर फैनकी शकलका होगया था और पारा अदृष्ट था। ९ बजेसे ११ बजेतक झागरहे दोपहरकी छुट्टीमें रक्खे रहनेपर झाग बैठगये फिर २ बजेसे ५ बजेतक कांजी डाल डाल धूपमें घोटना आरम्भ किया। फिर झाग नहीं आये। शामको पिष्टी बना रख दी। अबकी बार पारा बिलकुल नष्टपिष्टी होगया। कुल कांजी आधी बोतल पडी।

ता. १९ को पिष्टी इकट्ठी सूखती रही।

ता. २० को पिष्टीको तोड बखेरकर सुखादिया। बखेरनेपर भी पारा अदृष्ट था।

सम्मति–जान पडताहै कि सधान उत्तम होनेसे अबकी वार अभ्रक और पारदकी उत्तम पिष्टी बनगई।

ता. २१ के सबेरे दलियासा कर सुखादिया पारा अदृश्य था।

ता. २२ को ३ बजे तोला तो १९ तोले हुआ डौरूमें बद करदिया।

ता. २३ को आंच दी ८ बजेसे १० बजे राततक।

ता. २४ को खोला तो ७ तोले २ माशे पारा निकला और १ तोले ५ माशे पारे और अभ्रककी चीकटसी राख निकली जिसमें दबानेसे पारा दीखता था ९ तोले राख सादा निकली। सब जोड १७ तोले ७ माशे हुआ और था (८ तोले ९ माशे। ८ तोले ९ मा.) १७ तोले ६ माशे अभी तोल तो पूरी है यदि पारद हाथ आजावे तो कोई हरज नहीं है।

ता. २५ इस कुल राख और चीकटको फिर डौरूमें बंद करादिया।

ता. २६ को ४ प्रहरकी आंच दी।

ता. २७ को खोला तो ८ माशे ४ रत्ती पारा और निकला और ५ मा. ४ र. चीकट नीकली जिसमें पारा अभी दबानेसे खूब चमकता था और जो बिलकुल चीकटसी थी सब पारा ७ तोले १० मा० ४ रत्ती हुआ। अभी १० मा. ४ र. पारा और चाहिये राख ९ तोले निकली।

चीकटको पानीमें घोल धोया तो २माशे पारा और निकला राखको धोनेसे कुछ पारा न निकला सब पारा ८ तो०४ र० हुआ। इकट्ठी तोल ८ तोले थी, था ८ तोले ९ माशे, घटा ९ माशे।

पारद अग्निस्थायी (तीसरा पातन)

ता० २८।११।०८ को ८ तोले पारद और ८ तोले धान्याभ्रकको कांजीसे ४ घंटे घोटा मिलगया खसखससे रवे दीखते है।

ता० २९ को ७ घंटे घुटा सबेरे धूपमें घोटनेपर ११ बजे फूलगया फिर बैठगया शामतक रवे बारीक २ दीखते ही रहे।

ता० ३० को सबेरेतक रवे दीखतेथे इस लिये कुछ गाढ घोटा तो घुटाईमें दवा अच्छी तरह आई। रवे दो पहरतक गायब होगये फिर कुछ पतला कर धूपमें घोटा तो फिर फूल गया। ३ बजे अब पूर्ण रूपसे नष्टपिष्टीहै शामतक घुटा शामको बहुत ही फूल रहाथा इकट्ठा करदिया।

ता० १।१२ को इकट्ठा खरलमें सूखा दोपहरको तोडा तो बडी फुसफुसी पिष्टी थी।

ता० २ को खूब बखेर सुखा दिया।

ता० ३ को दो पहरके ३ बजे डौरूमें बन्द करादिया तोल १७ तोले थी।

ता० ४ को ८ बजेसे रातके ९ बजे तक आंच दी।

ता० ५ को खोला तो ६ तोले ९ माशे पारा निकला और १ तोले ३ माशे चीकट और ८ तोले राख निकली, सब १६ तोले डौरूको धोया तो१॥माशे पारा और निकला। फिर इस ८ तोले राख और १ तोले ३ माशे चीकटको फिर बंद करदिया।

ता० ११ को ८ बजेसे रातके ८ बजेतक आंच दी।

ता० १२ को खोला तो ८ माशे पारा निकला २ माशे चीकट निकली ८॥ तोले राख निकली सब पारा ७ तोले ६॥ माशे हुआ, था ८ तोले, घटा ५॥ माशे।

ता० १४।१२ को इसवार और पहली वार दोनोकी १९ तोले राखको लवणयुक्त जम्भीरीक रसमें दोलाकर १२ घंटे अग्नि दी।

ता० १५ को निकाला तो कुछ पारद पृथक् न था फिर इस राखको सुखा रख दिया प्रश्न–कांजी अम्ल है

उसीमें मर्दित हुएको जम्भीरी रसमें जो अम्ल ही है दोला किया गया क्या क्षार अर्थात् गोमूत्रमें दोला करना हित होता ।

पारद अग्निस्थायी (चौथा पातन)

ता० १६ । १२ । ०८ को ७ तोले ६ माशे ४ रत्ती पारदको ४ तोले अभ्रकके साथ (जिसको पहले दिन चिर्मिटीके कांजिकयुक्त स्वरससे ३ घण्टे घोटा था) कांजी डाल२ घोटा शामतक ७ घण्टे घुटा पारा मिलगया पर नष्टपिष्टी नहीं हुआ ।

ता० १७ को ९ बजेसे अभ्रक फूल गया दो पहरको खूब फूला था और पारा नष्टपिष्टी भी होगया शामतक ७ घण्टे घुटा फूला ही रहा कांजी आधी बोतल पडी ।

ता० १८ को १० बजेतक घोटा विना कांजीके गाढा होनेपर फूलना कम होता गया १० बजे इकट्ठाकर सुखा दिया–ता० २० के दोपहर तक सूखा ।

ता० २० को खरलमें पीसा तो २ तोले पारा छुट गया बाकी १२ तोले चूर्ण रहा उसको डौरूमें बन्द करदिया ।

ता० २१ को ४ प्रहर आंच दी ।

ता० २२ को खोला तो ४ तोले ९ माशे पारा निकला कुछ चीकट निकली ५ तोले राख निकली पारेको कांजीसे धोडाला और चीकटको भी कांजीसे धोया तो ४ माशे पारा और निकला चीकटकी सूखी राख १० माशे रहगई सब पारा ७ तोले १ माशे सब राख ५ तोले १ माशे ।

पारद अग्निस्थायी (पांचवाँ पातन)

ता० २३ । १२ । ०८ को ७ तोले १ माशे पारेको ५ तोले धान्याभ्रक सहित सिरकेसे घोटना आरम्भ किया ३ घण्टे घुटा पारा मिलतो गया नष्टपिष्टी नहीं हुआ ।

ता० २४ । २५ । २६ के १० बजे दिनतक घुटा $\frac{3}{4}$ बोतल सिरका पडा पारद नष्टपिष्टी होनेमें कुछ कसर रही, समान अभ्रक होनेसे नष्टपिष्टी होजाता अभ्रक किसी समय फूला नहीं जिससे जानपडा कि फुलानेका गुण कांजीमेंही है ।

ता० २६ के दो पहरसे सूखता रहा ।

ता० २८ को सूखनेपर घोटा तो २ तोले ८ माशे पारा जुदा होगया बाकी ११ तोले राख रही उसको डौरूमें बंद करदिया ।

ता० २९ को ८ बजेसे आंच दी ९॥ बजे नीचेके पात्रके बन्द की संधिमें होकर बाष्पद्वारा पिघली हुई चीकटसी निकलने लगी अत एव डौरूको उतार ठंढाकर खोल देखा तो एक जगह सांस था उसको फिर भस्ममुद्रासे बन्दकर डौरू बन्द करदिया ।

ता० ३० को ४ प्रहर आंच दीगई ।

ता० ३१ को खोला तो ४ तोले पारा निकला और था ४ तो० ५ माशे, घटा ५ माशे, राख ६ तोले निकली इकट्ठी तोल पारेकी ६ तोले ७॥ माशे है ।

चौथे और पाचवें डौरूकी निकली ११ तोले१माशे राखको खरलमें पीस डौरूमें बन्द करदिया ।

ता० १।१।०९ को १० घंटे आंच दी ।

ता० २ को खोला तो ६ माशे पारा और निकला राख ११ तोले निकली चीकटको धो सुखाया तो ३ रत्ती पारा और निकला सब पारा ७ तोले १ माशे ७ रत्ती हुआ ।

पारद अग्निस्थायी (छठा पातन)

ता० २।१।०९ को ७ तोले १ माशे ७ रत्ती पारद और ७ तोले १ माशे ७ र० ही धान्याभ्रक दोनोंको मूलीकी जडके रसमें ११ बजेसे घोटना आरम्भ किया १५ मिनट घोटनेसे पारेके मिलकर केवल बाजरेसे रवे दीखने लगे शामतक ये रवे और बारीक होकर खसखससे होगये शामतक ४ घंटे घुटाई हुई ४॥ छ० मूलीका रस पडा ।

ता० ३ को ८ बजेसे घोटा शामतक पारा करीब २ अदृश्य होगया था आज ७ घंटे घुटाई हुई २छटांक रस पडा।

ता० ५ को धूपमें सूखनेको रखदिया ।

ता० ७ को खरलसे खुर्चागया तो कठिन खुर्चा ।

ता० ९ को पीसागया तो १ ता० १०॥ माशे पारा पृथक् होगया ।

ता० १० को फिर सूखता रहा ।

ता० ११ को वर्षाकी सर्दीसे सीला समझ खल्वको आंचपर तपा थोडा और पीसा तो० ३ मा० ५ रत्ती पारा और पृथक् होगया अर्थात् सब २ तोले २ माशे १ रत्ती पारा पृथक् हुआ बाकी १५ तोले चूर्ण रहा उसको डौरूमें बंद करदिया ।

ता० १२ को ८ बजेसे रातके ८ बजेतक १२ घंटे आंचदी।

ता० १३ को खोला तो ४ तो० ४ माशे ६ रत्ती पारा निकला पारद मिश्रित चीकट ७ माशे ६ रत्ती और सादा राख ९ तोले रही, चीकटको धोया तो १ मा० पारा और निकला चीकटकी राख ४ माशे ३ रत्ती रहगई, डौरूको धोया तो उसमेंसे भी ३ रत्ती पारा निकला अर्थात् सब ६ तोले ८ माशे २ रत्ती पारा मिला, ५ मा० ५ र० घटा ।

पारद अग्निस्थायी (सातवां पातन)

ता० १५।१।०९ को उक्त ६ तोले ८ माशे २ रत्ती पारा और ९ तोले ४ माशे ३ र० उपरोक्त राख और चीकट सबको कांजी नं० १ के साथ ९ बजेसे घोटा १५–२० मिनटमें करीब २ सब पारा मिलकर रवे चमकने लगे शामको देखा तो अभ्रक कुछ फूला हुआ दीखने लगा, आज ६ घंटे घुटाई हुई $\frac{1}{3}$ बोतल कांजी पडी ।

ता० १६ को कांजी डाल शामतक ६ घंटे घोटागया ११ बजे अभ्रक खूब फूल गया था और पारद नष्टपिष्टी होगया था किन्तु तलीमें कुछ रवे पारेके चमकते थे शामको देखा तो अभ्रक और भी अधिक फूलाहुआ था जैसा पहले कभी नहीं फूला और पारा पूर्ण रूपसे नष्टपिष्टी था कोई रवा कहीं नहीं था ।

सम्मति–इससे पहले मूलीके रसमें मर्दन करनेसे अभ्रक फूला न था अत एव ये समझकर कि पारद अभ्रकका भली भांति मेलन होनेसे अभ्रकके सत्त्वको पारदने ग्रहण नहीं किया और अभ्रसित्त्व अभ्रकमें विद्यमान है अत एव उसी अभ्रकभस्मसे पुनः कांजीद्वारा मर्दन किया गया और आशानुसार अबकी वार अभ्रक खूब फूला और पारद नष्टपिष्टी भी हुआ ।

शंका–क्या अबका पातन करनेके बाद पुनः कांजीसे मर्दन किया जावे तो फिर भी यह अभ्रभस्म फूलेगी।

ता० १७ को सबेरे देखा तो अभ्रक कलकासा ही फूला हुआ था फिर घोटनेपर अधिक गाढा होनेपर झाग बैठगये दो पहरतक पिष्टीसी होजानेपर सूखनेको रख दिया अभीतक उसने पारेको नहीं छोडाहै ।

ता० २२ को खूब सूखजानेपर पीसा तो १ तो० २ मा० ४ र० पारा पृथक् होगया शेष १६ तोले भस्मको डौरूमें बंदकरदिया ।

ता० २३ को १२ घंटे आंच दी ।

ता० २४ को खोला तो ४ तोले ८ माशे ४ रत्ती पारा निकला पारद मिश्रित चीकट ८ माशे और सादा राख ९ तोले निकली । चीकटको और डौरूको धोया तो ६ रत्ती पारा और निकला । चीकटकी धुली राख ६ माशे रहगई अर्थात् सब ५ तोले ११ माशे ६ रत्ती पारा हाथलगा–८मा० ४ र० घटा ।

ता० २६ को उक्त ९ तोले ६ माशे राख और चीकटको फिर डौरूमें बंदकरदिया ।

ता० २७ को ८ बजेसे शामके ६ बजे तक १० घंटे आंच दी ।

ता० २८ को खोला तो ७ माशे पारा और निकला अर्थात् दोनों बारमें ६ तोले ६ मा० ६ र० पारा हाथलगा, १ माशे ४ रत्ती घटा राख ९ तोले रही ।

१ सम्मति–उपरोक्त शंकानिवारणार्थ इस७ वें पातनसे निकली अभ्रभस्मको ६ घंटे कांजी नं० १ से घोटागया परन्तु तनक भी फुलावट न आई ।

२सम्मति–इस समयतक ७ बारके पातनमें ३ तोले ५मा० २रत्ती पारा घटा किन्तु पश्चात् पारद गंधकके पातनमें जानपडा कि डौरू सांस देता है, इस लिये सिद्ध होगया कि इस घटीका मुख्य कारण पारदका डौरूकी सांसद्वारा उडजाना है ।

चिर्मिटीसे भावित अभ्र ।

ता० ९ । ९ । ०९ को ऽ॥ सेर कृष्णधान्याभ्रकम चिर्मिटीके कांजिकयुक्त ६ छटांक रस (जो चिर्मिटीके वृक्षोंकी कुट्टीकर धो स्वतः रस न निकल सकनेके कारण कांजी डाल २ निकालागया) की भावनादे २ घंटे घोटा–इस ६ छ० रससे अभ्रक ठीक पतला न हुआ।

ता० १० को १० छटांक कांजी और डाली जिससे अभ्रक कढीसा घुटने लगा ७ घंटे घुटा ।

ता० १२ को ८ बजेसे १२ बजेतक और घोट सुखानेको रखदिया ।

दूसरी भावना ।

ता० १३ । १ । ०९ को ऽ॥। चिर्मिटीके पंचांगको ऽ॥। कांजिकयुक्त कूटपीस छान निकाले ऽ॥। रसकी दूसरी भावना दे ७ घंटे घोट रखदिया ।

ता० १४ को सूखता रहा ।

ता० १५ को ४ घंटे और घोट सुखानेको रखदिया ।

तीसरी भावना ।

ता० १६ । १ । ०९ कोऽ॥= चिर्मिटीके पंचाङ्गका कूटपीस छानऽ॥= कांजिकयोगसे निकले ऽ॥= रसकी तीसरी भावना दे ६ घंटे घोटा ।

ता० १७ को थोडीदेर घोट सूखनेको रखदिया ।

ता० २५ को खूब सूखजानेपर पीस चलनीमें छान बोतलोंमें भर दिया । तोलमें १० छ० १॥ तोले हुआ अर्थात् ११॥ तोले तोल बढगई ।

पारद अग्निस्थायी (अठवाँ पातन)

ता० ३० । १ । ०९ को उक्त ६ तोले ६ मा० ६ र० पारद और ६ तो० ६ मा० ६ र० चिर्मिटीसे भावित उक्त कृष्णधान्याभ्रक दोनोंको कांजी नं० १ के साथ १० बजेसे मर्दनकरना आरम्भ किया १२ बजे देखा तो पारद मिलगया था किन्तु कहीं कहीं बडे बडे रवे दीखतेथे शामतक ये रवे और बारीक होगये किन्तु और बारकी भांति अभ्रक फूला नहीं आज ५ घंटे घुटाई हुई $\frac{१}{३}$ बोतल कांजी पडी ।

ता० ३१ को कांजी डाल ८ बजेसे घुटाई आरम्भ की शामतक ७ घंटे घुटा पारा नष्टपिष्टी होगया अभ्रक फूला नहीं जिसका कारण अधिक शीतका पडना या अभ्रकका चिर्मिटीसे भावित होना होसकताहै ।

ता० १।२को २बजेसे घोटा(जरा कडा घोटा) ३बजे देखा तो अभ्रकमें कुछ फुलावट मालूम हुई शामतक औरअधिक फूला पारा इसबार बहुतही भलीभांति नष्टपिष्टी हुआ आज ३ घंटे घुटाई हुई ।

ता० २ को धूपमें बैठकर घोटागया धूप अच्छी थी तो दो पहरतक खूब फूलगया अब फूलनेमें कोई कमी न रही आज ७ घंटे घुटाई की दो पहर पीछे शामतक गाढा होकर अभ्रक बैठगया ।

ता० ३ को सुखादिया कुछ सूखने पर पारेके छोटे छोटे रवे चमकने लगे ।

ता० ५ को उसके छोटे छोटे टुकडे करदिये और सूखता रहा ।

ता० ८ को खरलसे खुरच पुडिया बांध रखदिया जो तो तोलमें १५॥ तोले था डौरूके दुरुस्त न होनेसे काम बंद रहा ।

ता० १३ । ३ को उक्त १५॥ तोले दवाके चूर्णको डौरूके बंदकी संधिमें पीतलकी झाल लगवा बंदकर कपरौटी कर सुखादिया ।

ता० १४ को आंच दी तो १ घंटे बाद ऊपरके पात्रके बंदकी संधिमें हो बाष्प निकलनेके कारण उतार ठंढाकर खोलडाला । दवाके लोट पोट होनेसे १ तोले ८ माशे ३ रत्ती पारा पृथक होगया और १२ तोले ४ माशे औषधि चूर्ण रहगया १ तोले ५ माशे ५ रत्ती तोल घटी ।

ता० २० को डौरूको दुरुस्त करा उक्त १२ तोले ४ माशे दवाको फिर डौरूमें बंदकर कपरौटी कर सुखादिया ।

ता० २१ को ४ पहर अग्निदे डौरूको ज्योंकात्यों रक्खा छोडदिया ।

ता० २२ को खोला तो नीचेका पात्र सूखा हुआ था किन्तु ऊपरके पात्रमें बिलकुल चीकट ही जमरही थी जिसमें बहुत भाग पारदका मिश्रित था २ तोले १०

माशे पारद स्वतः पृथक् होगया बाकी चीकटमें मिला रहा अतएव चीकटको गर्म पानीसे धोया तो १ तोले १ माशे ७ रत्ती पारा और निकला अर्थात् पहले पृथक् हुए १ तो० ८ मा० ३ र० पारद समेत सब ५ तोले ८ माशे २ रत्ती पारा हाथ लगा १० माशे ४ रत्ती घटा चीकट धुली सूखी १ तोले और राख ६ तोले रही ।

ता० २३ को उक्त ७ तोले राख और चीकटको सुखाकर फिर डौरूमें बन्दकर दिया गया ।

ता० २९ को १० घण्टे आंचदे ज्योंकात्यों डौरूको छोड दिया अवकाश न मिलनेसे दूसरे दिन न खोला गया ।

ता० १ । ४ को खोला तो ३ माशे २ रत्ती पारा और निकला अर्थात् पहली और अबकी बार सब ५ तोले ११ माशे ४ रत्ती पारद हाथ लगा ७ माशे २ रत्ती घटा चीकट १ माशे और राख ७ तोले रही ।

उत्थापन उद्योग ।

ता० २ । ४ । ०९ को पारदका अधिक अंश क्षय हुआ समझ इस शंकासे कि कदाचित् कुछ अंश पारेका नीचेकी भस्ममें मिला रहजाता हो उक्त ७ तोले भस्मको तप्त खल्वमें पानीके साथ २ घण्टे मर्दनकर नितार सुखानेको रखदिया ।

ता० ३ को खरलके बीचसे राखको हटा देखा तो ज्वार-सा एक रवा पारेका दीखपड़ा जिससे सिद्धहुआ कि राखमें अभी पारा और है अतएव आज फिर इसी प्रकार उस राखको २ घंटे तप्त खल्वमें और घोट ठहरा नितार सुखा तलीमें देखा तो बाजरेसा एक रवा और निकला-दोनों बारमें १ रत्ती पारा निकला ।

ता० ४ को उक्त राखको डौरूमें भर करीब१॥ सेर जल डाल मंदाग्निसे १ घंटे औटा जैसेका तैसा छोड़दिया ।

ता० ५ को पानी नितार सुखा हाथोंसे मीड़ बारीक कर तस्तरीमें ढलकाया तो एक रवा बाजरेसा और निकला अर्थात् अब सब पारा ५ तो० ११ माशे ५ रत्ती हुआ इकट्ठी तोल पारेकी ५ तोले ११ माशे ४ रत्ती हुई राख ५ तोले रही ।

सम्मति-इस उत्थापन उद्योगसे यद्यपि केवल १ रत्ती पारा निकला किन्तु यह विदित हुआ कि दो बार पातनमें भी कुछ पारा शेष रहजाताहै ।

चिर्मिटीकी काँजी ।

ता० १६ ।२।०९को चिर्मिटीकी २ सेर दालको १मन १४ सेर पानीसे भरे देगमें डाल भट्टीपर ९॥ बजेसे सामान्य अग्निसे औटाना आरम्भ किया दालकी तरह उबलती रही ७॥ बजे शामको देखा तो दाल फूलगई थी और हाथसे अच्छीतरह मिड़जाती थी अतएव लकड़ी निकाल कौलेभरी भट्टीपर रक्खा छोड़दिया ।

ता० १७ को इस काथको जो करीब आधेके अवशेष रहा था ३ भागकर ३ कैनोंमें भरदिया और उस फूलीहुई दालके भी ३ भागकर तीनों कैनोंमें डाल मुख बंद कर कपरौटीकर धूपमें रखदिया-२० दिन बीतनेपर ।

ता० ८।३ को खोल देखा दाल साबित ही थी और लिटमसपेपर डाला तो नीलेसे सुर्ख होगया । इससे जान-पड़ा कि खटाई तो आगई फिर दालको पानीसे पृथक्कर मलकर फिर मिला भरदिया और कपरौटी करदी ।

ता० ४।४ तक रक्खा रहा ।

ता० ५ को १ कैनको नितार छान डाला तो ऊपर हलकी फुई निकली और नीचे खड़ीसी गाद जो साफीमें छन न सकी करीब १॥ सेरके निकली उसे पृथककर कैनको धो उसमें कांजीको भर कपरौटी करदी ।

ता० २५ को उक्तशेष रही दो कैनोंको छान एक कैनमें दोनोंकी कांजी और एकमें गाद भर मुख बंद कर कपरौटी करदी-अर्थात् अब दो कैनोंमें उत्तम कांजी और १ कैनमें गादहै ।

पारद अग्निस्थायी नववाँ पातन ।

ता० ३।४।०९ को उक्त ५ तोले ११ माशे ४ रत्ती पारद और ५ तोले ११ माशे ४ रत्ती ही वे भावित उत्तम कृष्ण-धान्याभ्रक दोनोंको चिर्मिटीकी कांजी (जिसके बनानेकी विधि पीछे लिखी है) के साथ ४ बजेसे मर्दन किया करीब १ घंटे घोटनेसे पारा रवे रूपमें मिलगया । ६ बजेतक २ घंटे घुटाई हुइ $\frac{1}{2}$ बोतल कांजी पडी ।

ता० ४ को ७ बजेसे धूपमें बैठ घोटना आरम्भ किया-११ बजेतक पारा भली भांति मिलगया किन्तु अभ्रक फूला नहीं अत एव २ बजेसे कांजी नं०१के साथ घुटाई की अभ्रक अब भी नहीं फूला आज ८ घंटे घुटाई ई $\frac{3}{4}$ बोतल चिर्मिटीकी कांजी और $\frac{1}{4}$ बातल नं० १ की कांजी पडी ।

ता० ५ को ७ बजेसे नं०१ की कांजी डाल धूपमें घुटाई आरम्भ की१० बजेसे अभ्रक फूलनेलगा पारा बिलकुल नष्ट-पिष्टी होगया-२ बजेसे फिर चिर्मिटीकी कांजीके साथ ६ बजेतक घुटाईकी इस कांजिके पडनेसे भी अभ्रक फूलारहा आज ८ घंटे घुटाई हुई $\frac{1}{4}$ बोतल नं० १की कांजी और $\frac{1}{2}$ बोतल चिर्मिटीकी कांजी पडी ।

ता० ६ को विना कांजी डाले १ घंटे घोट फेन रूपमें ही सुखादिया ।

ता० ७ को सूखता रहा ।

ता० ८ को उसका दलियासा कर तोला तो १४ तोले हुआ बादको उसे डौरूमें वंद कर कपरौटीकर सुखादिया ।

ता० ९ को १६ घंटे आंचदे ज्योंकात्यों चूल्हेपर रक्खा छोडदिया ।

ता० १० को खोला तो इस बार ऊपरके पात्रमें चीकट बहुत थी जिसमें अधिकांश पारद मिश्रित था पारदके पृथक् करनेपर ३ तोले ११ माशे ४ रत्ती पारा स्वतः पृथक् होगया बाकी चीकटमें मिला रहा चीकटको गर्म पानीसे धोया तो ११ माशे पारद और निकला अर्थात् ४ तोले १० माशे ४ रत्ती पारा निकला-१ तोले १ मा० चीकटमें और राखमें मिला रहगया । चीकट ६ माशे और अवशेष भस्म ७॥ तोले रही शेष चीकट न धूपमें सूखती थी न गर्म पानीमें घुलती थी ता० १५ को उक्त ८ तोले चीकट और राखको मिला पीस सुखा भस्ममुद्रासे वंद कर कपरौटी कर सुखादिया ।

ता० २५ को १२ घंटे आंच दे जैसेका तैसा डौरूको चूल्हेपर रक्खा छोडदिया ।

ता० २६ को खोलातो ऊपरके पात्रमें पतली चीकट जम रही थी जिसमें पारद मिश्रित था स्वतः पारद कुछ भी पृथक् न होसका–चीकटको निकाल गर्म पानीसे धोया तो ३ रत्ती पारा पृथक् हुआ अर्थात् पहली और अबकी बार सब ४ तोले १० माशे ७ रत्ती पारा हाथ लगा १ तोला ५ रत्ती घटा चीकटको जिसमें कुछ पारेका अंश था सुखा तोला तो २ माशे ३ रत्ती हुई और सादा राख ७ तोले हुई।

उत्थापन उद्योग।

इस शंकासे कि कदाचित् पारदका कुछ, अंश अग्नि-स्थायी हो- डौरूमें ऊपरको न जा नीचेकी भस्म हीमें मिला रहजाता हो उक्त ७ तोले राखको बडी कढाईमें करीब १५ सेर पानीमें घोल ४ घण्टे ऐसी अग्नि दी जिससे पानी खौलता रहा बादको भट्टीपर ही रक्खा छोड दिया ३ घण्टे बाद ठहरा हुआ पानी नितार नीचे-की राखमें देखा तो सरसोंकी बराबर एक रवा पारेका निकला (जो अग्नि स्थायी न था) सूखी राख ६॥ तोले रही।

सम्मति–दो बार उत्थापन उद्योग हो चुका दोनों बार रत्ती आध रत्तीसे अधिक पारा न निकला इस लिये आगेसे उत्थापन उद्योग करना वृथा है।

ता० १० को खरलको धो पानी ठहरा नितार सुखाया तो ५ रत्ती पारा उसमें निकला इस प्रकार अब सब पारा ४ तोले ११ माशे ५ रत्ती है।

चिर्मिटीकी कांजीसे भावित अभ्र।

ता० ३।५।९ को कांजिक युक्त चिर्मिटीके रससे भावित उक्त ९ छ० अभ्रमें (जिसका नोट पत्र पर है और जो १० छ० १॥ तोलेका खर्च होकर ९ छटांक रहगया था) १ बोतल अर्थात् ऽ॥। चिर्मिटीकी कांजी-की जिसके बनानेकी विधि पीछे पत्र पर लिखी है, भावना दे ३ घण्टे घोट सुखा दिया।

ता० ४ को ऽ।= कांजीकी दूसरी भावना दे ४ घण्टे घोट सुखा दिया ता०५कोऽ॥कांजीकी तीसरी भावना दे४घंटे घोट सुखादिया अर्थात् इस ९ छटांक अभ्रमें १ सेर १० छटांक चिर्मिटीकी ३ भावना दे ११ घण्टे घुटाई की।

ता० ६ को सूखता रहा।

ता० ७ को सूखजाने पर खुरच पीस चलनीमें छान तोला तो ९ छ० १ तोला हुआ जिसे बोतलोंमें भर रख दिया।

सम्मति–"यमचिंचिकाम्लपुटितम्" इसका अर्थ धान्याम्लके अनुसार चिर्मिटीकी कांजी ही होसकताहै पहले यमचिंचिका और अम्ल दो पदार्थ पृथक् २ समझ कांजिक युक्त चिर्मिटीके रससे अभ्रको भावना दीगई थी अब दूसरा अर्थ चिर्मिटीकी कांजी समझमें आने पर उससे भावना दी गई।

पारदअग्निस्थायी।
दूसरे भागका पहला पातन।

ता० ११।५।९ को १० तोले नया साधारण शुद्ध पारद और १० तोले ही चिर्मिटीकी कांजीसे भावित उक्त धान्या-भ्र दोनोंको ८ बजेसे कांजी नं० १ के साथ घोटना आरम्भ किया करीब १० मिनट घोटनेसे पारा रवे रूपमें मिलगया ३ बजे देखा तो पारा बिलकुल अदृश्य था आज ५ घण्टे घुटाई हुई $\frac{1}{2}$ बातल कांजी पडी।

ता० १२ को कांजी डाल ७ बजेसे घुटाई की १० बजे देखा तो अभ्रमें कुछ २ फुलावट मालूम होती थी शामके ५ बजे बाद अभ्र फूलाहुआ देखा और पारद भलीभांति नष्टपिष्टी था आज ८ घण्टे घुटाई हुई $\frac{1}{2}$ बोतल कांजी पडी।

ता०१३ को कांजी डाल७ बजेसे घुटाई की अभ्रक फूला रहा शामके ६ बजे तक खूब फूल कर फैनकी शकल का होगया था फिर और रस न डाल फैन रूपही सुखानेको रख दिया आज ८घण्टे घुटाई हुई $\frac{1}{2}$ बोतल कांजी पडी।

ता० १४–१५–१६ को सूखता रहा।

ता० १७ को सूखजाने पर पीसा तो कुछ भी पारा पृथक् न हुआ तोला तो २२ तोले हुआ जिसको शीशीमें भर रख दिया।

सम्मति–इस बार पीसने पर भी पारा कुछभी पृथक् न हुआ इससे पहले जब जब सूखने पर पिष्टी पीसी गई तब तब कुछ न कुछ पारा छूट गया इससे सिद्ध हुआ कि अभ्र पारदके पूर्ण आलिंगनके लिये अभ्रका यमचिंचिकाम्लसे भावित होना आवश्यक है यमचिंचिकाम्लका अर्थ चिर्मि-टीकी कांजीही है क्योंकि चिर्मिटीके स्वरससे भावित अभ्र कांजी नं० १ के साथ घुटने पर भी पारदको ऐसा आलिंगन न करता था।

इति श्रीजैसलमेरनिवासि पं० मनसुखदासात्मजव्यास ज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया भाषाटीकायां स्वानुभूत–बुभुक्षितीकरणं पारदाग्निस्थायि-करणवर्णनं नामैकादशोऽध्यायः ॥११॥

गगनग्रासमानाध्यायः १२.

गणाधिपं शिवं गौरीं लक्ष्मीं नारायणं गुरुम्। श्रीव्यासं दक्षिणामूर्तिसूतसिद्धि-गणं रसम् ॥ १ ॥ प्रणम्य शेषसंस्कारा-न्देहलोहकरान्भृशम्। गगनग्रासमानामा-दीन्[1] वक्ष्येहं पारदस्य हि ॥ २ ॥ (ध.सं.)

अर्थ–श्रीगणेशजी, श्रीमहादेव, पार्वती और लक्ष्मी नारायणजी गुरु वेदव्यास दक्षिणामूर्ति पारदकी सिद्धि करनेवालोंके समूह और पारदको नमस्कार कर मैं पारदके गगनग्रास आदि देह तथा लोहकी सिद्धिके करनेवाले शेष संस्कारोंको वर्णन करताहूं॥ १ ॥ २ ॥

गगनग्रासलक्षण।

इयन्मानस्य सूतस्य भोज्यद्रव्यात्मिका मतिः। इयतीत्युच्यते यासौ ग्रासमानं समीरितम् ॥३॥ (र. र. स.)

1 मानादीन्० इत्यपि।

अर्थ-कितने पारेके लिये कितना भक्षण योग्य पदार्थ देना चाहिये इस प्रकार जो विचार किया जाताहै उसको ग्रासमान संस्कार कहतेहैं ॥ ३ ॥

नवम ग्रासमानसंस्कार ।

यद्यपि मानकर्म गगनग्रासान्तरभूतमेव तथापि पूर्वाचार्यैर्भिन्नतया गणना कृता तस्मान्मयाप्यष्टादशसंख्यापूर्त्यर्थं लिख्यते- अथ मानं प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वा कर्मकृद्भवेत्।चतुःषष्ट्यंशतो बीजं पारदान्मुखकारकम्॥४॥पश्चाद्द्वात्रिंशभागेन दातव्यं बीज मुत्तमम् । ततः षोडशभागेन बीजस्य कवलं न्यसेत् ॥५॥ रसादष्टमभागेन दातव्यं बीज मुत्तमम् । चतुर्थेनार्धभागेन ग्रासमेवं प्रदीयते॥६॥ तथा च समभागेन ग्रासेनैव सुसाधयेत् । बिडेन षोडशांशेन क्षुधितो जायते रसः॥७॥यदा जीर्णो भवेद्ग्रासपातितश्च बिडेन हि ॥ ८ ॥ (ध. सं. पत्र ४५)

अर्थ-यद्यपि अभ्रक ग्रासमान अभ्रकजारण संस्कारके अन्तर्गत ही है तथापि पहले वैद्योंने इस अभ्रमानको पृथक् लिखाहै इस लिये मैं भी अठारह संस्कारोंको पूरा करनेके लिये अभ्रकग्रासमानको पृथक् लिखताहूं ।

अब मैं अभ्रकग्रासमानको कहताहूं-वैद्य इस मानको जानकर पारदका कर्म श्रेष्ठ रीतिसे करसकताहै । पारदमें बीजका चौसठवां हिस्सा जारण करे तो पारदके मुख होताहै फिर बत्तीसवें हिस्सेका उत्तम बीज जारणकरे तदनंतर सोलहवें हिस्सेके बीजका ग्रासदेवे और उसके पीछे आठवें हिस्से बीजका जारण करे फिर चार भागसे तदनंतर दोभागसे ग्रास देवे इसके पश्चात् पारदके समभाग ग्रासको जारण करे और प्रतिसंस्कारमें षोडशांश बिड देना चाहिये जब बिडसे पचाया हुआ ग्रास जीर्ण होताहै व पारा बुभुक्षित होताहै ॥ ४-८ ॥

ग्रासका मान ।

चतुःषष्ट्यंशकः पूर्वो द्वात्रिंशांशो द्वितीयकः । तृतीयः षोडशांशस्तु चतुर्थोऽष्टांश एव च ॥ ९ ॥ अन्यदुज्जरित्वा न लिखितम् (र. चिं., नि. र,र. रा. शं., बृ. यो.)

अर्थ-पहला ग्रास चौसठवें हिस्सेका होताहै और दूसरा बत्तीसवें हिस्सेका तीसरा षोडशांशका और चौथा ग्रास अष्टमांशका होताहै (और कठिनताके कारण तीन ग्रासोंको हमने नहीं लिखाहै) ॥ ९ ॥

सम्मति-यह रसेन्द्रचिन्तामणिका वाक्य है इससे यह स्पष्ट प्रतीत होताहै कि चारग्रासतक ही अभ्रसत्त्व वा बीजका जारण करना उचित है आगे नहीं क्योंकि उनका जारण कठिनहै ।

मतान्तरसे ग्रासकी संख्या और मान ।

भगवद्गोविन्दपादास्तु कलांशमेव ग्रासं लिखन्ति यथा-पंचभिरेभिर्ग्रासैर्घनसत्त्वं जारयित्वादौ । गर्भद्रावे निपुणो जरयति बीजं कलांशेन ॥ १० ॥ तन्मते चतुःषष्टिचत्वारिंशत्त्रिंशद्विंशतिषोडशांशाः पञ्चग्रासाः । (र. चिं., नि. र., र. रा. शं, बृ. यो., र. रा. प.)

अर्थ-भगवतगोविन्दपादने तो अपने ग्रंथमें षोडशांश ग्रासकाही प्रमाण इस प्रकार लिखाहै कि, प्रथम पांच ग्रासोंसे अभ्रकसत्त्वको जारण करके फिर गर्भद्रुतिमें निपुण (चतुर) वैद्य षोडशांशसे स्वर्णको जारण करे बस इनके मतमें चौंसठवाँ, चालीसवाँ, तीसवाँ, बीसवाँ, और सोलहवाँ इस प्रकार पांच ग्रास समझने चाहिये ॥ १० ॥

अभ्रजारित पारदलक्षण ।

चतुःषष्ट्यंशकाद्ग्रासाद्दंडधारी भवेद्रसः । जलौकावद्द्वितीये तु तृतीये काकविट्समः॥ ग्रासेन च चतुर्थेन दधिमंडसमो भवेत ११॥ (र. सा. प.)

अर्थ-चौंसठवें हिस्सेके जारण करनेसे पारद दंडधारी होताहै और द्वितीय ग्रासमें जोंकके समान तीसरे ग्रासमें कौवेकी बीटके समान और चौथे ग्रासमें दधिमंडके समान होताहै ॥ ११ ॥

ग्रासानन्तर पारददशाका वर्णन ।

चतुःषष्ट्यंशकग्रासात्कुंडधारी[2] भवेद्रसः । जतुका च द्वितीये तु ग्रासयोगे सुरेश्वरि ॥ ग्रासेन तु तृतीयेन काकविष्ठासमो भवेत । ग्रासेन तु चतुर्थेन दधिमंडसमो भवेत् १३ (र.चिं.,नि.र.,र.रा.शं., बृ.यो.)

अर्थ-चौसठवें हिस्सेके जारण करनेसे पारद दंडधारी होताहै और हे पार्वती ! दूसरे ग्रासमें जोंकके समान तीसरे ग्रासमें कौवेकी बीटके समान और चौथे ग्रासमें दहीके समान होता है ॥ १२ ॥ १३ ॥

अन्यच्च ।

चतुःषष्ट्यंशके जीर्णे दंडधारी भवेद्रसः । चत्वारिंशद्विभागेश्च ग्रासैः स्यात्पायसाकृतिः ॥ १४ ॥ जलौकाभिस्त्रिंशांशैर्विंशांशैर्विप्लुतो रसः । छेदी च षोडशांशैः स्याद्दधिवद्द्वादशांशतः ॥ अष्टांशैर्नवनीताभः पादांशैर्बध्यते रसः ॥ १५ ॥ (र.प.)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां गगनग्रासमानवर्णनं नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

---

१ अर्थात् अभ्रग्रासके पीछे स्वर्णका पहला ग्रास ही $\frac{1}{16}$ देऔर इतने ही देता चलाजाय । २--दंडधारी-इत्यपि ।

अर्थ–चौसठवें हिस्सेके जारण करनेसे पारद दंडधारी होता है, चालीसवें हिस्सेके जारण करनेसे खीरके समान होताहै, और तीसवें हिस्सेके जारण करनेसे जोंकके समान होताहै तथा बीसवें हिस्सेसे पारा विप्लुत, षोडशांशके जारण करनेसे पक्षच्छेदी, द्वादशांशके जारणसे दधिके समान अष्टमांशके जारणसे मक्खनके तुल्य और चौथाईसे पारद बद्ध होताहै ॥ १६ ॥

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपंडितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहितायां भाषाटीकायां गगनग्रासमानवर्णनं नाम द्वादशोऽध्यायः॥१२॥

बीजसाधनाध्यायः १३.

पारदवंदना ।

विश्वबीजं सदा नित्यं वन्दे सूतमिहामरम्। रोगदारिद्र्यतमसामर्कं वै नाशने स्थितम्॥ ॥ १ ॥ (र. पा.)

अर्थ–नित्य अविनाशी संसारका कारणरूप रोग और दारिद्र्यरूपी अन्धकारके नाश करनेके लिये सूर्य्यके समान अवस्थित पारदको मैं नमस्कार करता हूं ॥ १ ॥

बीजकी सिद्धि किये बिना केवल शुद्ध लोहादि जारण करनेमें दोष ।

आरोटलोहजीर्णः स्यात्पतंगी पारदेश्वरः । तद्विद्धो न लभेल्लोहः स्थिरदेहः कदाचन॥ तस्माद्बीजं प्रयुंजीत परिभाषोक्तलक्षणम् २ (रसांकुशात् टो. नं.)

अर्थ–अशुद्ध लोहसे जारित पारद पतङ्गी नामका होताहै और उस पारदसे विद्ध लोहा सुवर्ण नहीं होताहै तथा उसके भक्षणसे देह कभी स्थिर नहीं होताहै इस कारण परिभाषामें जिसके लक्षण कहे हैं ऐसे बीजका जारण करना चाहिये ॥ २ ॥

स्वर्णबीजसाधन ।

ताम्रं सुमारितं कृत्वा सुवर्णं च सुमारितम् । मूषायां मित्रवर्गेण पुनरुज्जीवयेत्ततः ॥ ३ ॥ एकीकृत्वा चाधरोर्ध्वं ताप्यं दत्त्वा समं भवेत्।अंधयित्वा हेमशेषमेवमेव विधेः शतम् ॥ ४ ॥ वारां स्तदुत्तमं बीजं पंचाशन्मध्यमं स्मृतम् । अधमस्तत्र यस्त्रिंशद्दश चैवाधमाधमम् ॥ ५ ॥ महारसेषु सर्वेषु सत्यं शतगुणं भवेत् । लोहभस्म यवासिद्धं रसानां ये महारसान् ॥६॥ संप्रदायविदा साक्षाच्छतमेवावपेद् बुधः। सर्वथैवाप्यशक्तश्चेत्सप्तवारं मृतोत्थितम् ॥ ७ ॥ अन्यथा सर्वथा सिद्धिर्नभवत्येव निश्चितम् ॥ ८ ॥ (रससिद्धान्तात् टो. नं.)

अर्थ–वैद्यराज प्रथम श्रेष्ठ ताम्रकी भस्म करे और इसी प्रकार सुवर्णकी भी भस्म बनावे फिर प्रत्येक भस्ममें मित्र पञ्चकको मिलाकर दोनोंको जीवित करे और फिर दोनोंको ही मिलाकर ऊपर और नीचे सोनामक्खी रक्खे और जब तक ताम्र नष्ट होकर केवल स्वर्ण ही रहजाय तवतक धोंकता ही रहे इस प्रकार सौ बार धोंके तो उत्तम बीज सिद्ध होता है और पचास बार करनेसे मध्यम बीज तेतीस बार करनेसे अधम बीज और दस बार करनेसे अधमसे भी अधम बीज सिद्ध होताहै । सौबार सिद्ध किया हुआ बीज समस्त महारसोंके लिये उपयोगी होताहै और जो सौबार बीजके सिद्धि करनेमें शक्ति न हो तो सात बार ही धातुको भस्म कर जिलावे अगर इस प्रकार जो बीजकी सिद्धिको नहीं करेगा उसको पारदकी सिद्धि नहीं होगी इसमें सन्देह नहीं ॥ ३–८ ॥

कल्पित स्वर्णबीज ।

कुनटीहतकरिणा वा रविणा वा ताप्यगंधकहतेन। दरदनिहतासिना वा त्रिर्व्यूढं हेम तद्बीजम् ॥ ९ ॥ (र. प.)

अर्थ–कुनटी (मैनसिल) आकका दूध अथवा स्वर्णमाक्षिक या गन्धक तथा सिंगरफसे भस्म किये हुए स्वर्णको जो तीनबार फिर जीवित करके फिर भस्म करे तो वह स्वर्णबीज होताहै ॥ ९ ॥

नुसखः तखमीर जुहुब (उर्दू)

सुफ्हा १८ किताब अकलीमियाँमें जो नुसखः खलासका लिखा है और जिसके अजजाइ हस्बजैल हैं, जाज जर्द मुसफ्फा (फिटकिरी पीली) गिले सिरसशबी (मुलतानी मिट्टी), नमक तुआम इस नुसखेमें तखमीज जुहुबका खास्सः है लिहाजा इसकी तौजीह और इस पर अमल करना कायदःसे खाली न होगा । जाज जर्द मुसफ्फासे मुराद जर्द कसीस है जिसके तस्कियेका तरीका यह है कि इसको चहार चन्द पानीमें खूब पीस डाले यहांतक कि वह पानीमें घुल मिलजावे बाद अजाँ पानीको बजरिये बत्तीके मुकत्तर करले और इस मुकत्तरको आगपर खुश्क करले गिले सरशवीसे मुराद मुलतानी मिट्टी है जो जर्द रंगकी मिट्टी होतीहै । नमक तुआमसे मुराद नमक सांभर या नमक लाहौरी है बजन अजजाइका अकलीमियामें मौजूद है चाहिये कि तिला खालिसको पत्र वारीक बनाकर कूजः तखलीसमें तहबतह हरसह अदवियः मजकूरके साथ रखकर चौवीस घंटे तेज आंच देनी चाहिये । यानी जिस वक्त आगपर रक्खें उस वक्त दूसरे रोज उतारें पहली बार कुछ बजन तिलाका कम होजाताहै बाद इसके वजन कम नहीं होता और सातवें अमलके बाद वशर्तें कि आग बतरीकवाला दी जावे तरह होने लगता है दस बारके अमलमें तोलाभर सोना तोलाभर चांदीको सवग देता है इसके बाद भी अगर बदस्तूर चौवीस२घंटेतक आग देताजावे तो इसकी सवागी बढती जाती है यहां तक कि अगर पचास मर्तबः यह अमल करे तो एक हिस्सा जुहुब मजकूरका आठगुना नुकरःको तिला करता है और अगर सौ मर्तबः इसी-

तरह आग दे तो एक हिस्सागुना नुकरःको रंग देताहै और अगर डेढ सौ बार मुताबिक इन्दराज सदर आगदे तो एक हिस्सा पैंतीस हिस्से नुकरःको तिला करता है और अगर दोसौ बार मिसरहवाला दे तो एक हिस्सा साठ हिस्सेको और अगर ढाईसौबार आग दे तो एक हिस्सा सौ हिस्सेको और अगर तीनसौ बार आगदे तो तिलाइ मजकूर तुख्म अकसीर होजाता है यानी जिस नुकरःको रंगताहै अगर इसी रंगीन नुकरःको दूसरे जदीद नुकरे पर तरह किया-जावे तो नुकरः जदीद तिला होजावेगा । (हसी-नुद्दीन अहमद सेक्रेटरी अखबार अलकीमियाँ। १६ । ३ । व १ । ४ । १९०७ सुफहा)

तारबीज ।

वंगाभ्रं वाहयेत्तारे गुणानि द्वादशानि च । एतद्बीजं समे जीर्णे शतवेधी भवेद्रसः ॥१०॥ (र. चिं, र. रा. शं, बृ. यो.)

अर्थ–एक भाग चांदीमें बारह भाग वंग और अभ्रक-सत्त्वको गलाकर मिलावे तो फिर सम भागसे इस बीजको पारदमें जारित करे तो यह पारा शतवेधी होताहै ॥ १० ॥

स्वर्णबीज ।

नागाभ्रं वाहयेद्धेम्नि द्वादशानि गुणानि च । प्रतिबीजमिदं श्रेष्ठं पारदस्य निबंध-नम् ॥११॥ (र. चिं., र. रा. शं., बृ. यो.)

अर्थ–इसी प्रकार स्वर्णमें नाग (सीसा) और अभ्रक सत्त्वके मिलानेसे जो बीज तय्यार होताहै उसके साथ पार-दका जारण करनेसे पारा बद्ध होताहै ॥ ११ ॥

कुटिलं विमला तीक्ष्णं समचूर्णं प्रकल्प-येत् । पुटितं पंचवारन्तु तारे वाह्यं शनै-र्धमेत् । यावद्दशगुणं तत्तु तारबीजं भवेच्छु-भम् ॥१२॥ (र. चिं., र. रा. शं., बृ.यो.)

अर्थ–अब रौप्य बीजका वर्णन करते हैं कि कुटिल, (रसराज शंकरमें इसका अर्थ वंग लिखा है) रूपामाखी, लोह (फौलाद) इनको सम भाग लेकर पांच बार पुट देवे फिर चांदीको मन्दाग्निमें गलाकर धीरे २ उस चूर्णको डालता जावे यहांतक कि, उसमें दसगुणा चूर्ण मिलजाय तो वह बीज उत्तम होताहै ॥ १२ ॥

सत्त्वं तालोद्भवं वङ्गं समं कृत्वा तु धाम-येत् । तच्चूर्णं वाहयेत्तारे गुणान्येव हि षोडशः ॥ १३ ॥ प्रतिबीजमिदं श्रेष्ठं सूत-कस्य निबंधनम् । चारणात सारणाच्चैव सहस्रांशेन विध्यति ॥ १४ ॥ (र. चिं.,र. रा. शं., बृ. यो.)

अर्थ–हरितालका सत्त्व तथा वंगको सम भाग लेकर अग्निपर रखकर धोंके फिर उसी चूर्णको सोलह गुना लेकर गलाई हुई चांदीमें धीरे २ मिला देवे तो यह प्रतिबीज पार-दके बंधनमें श्रेष्ठ है इसके जारणसे तथा सारणसे पारा सहस्रवेधी होताहै ॥ १३ ॥ १४ ॥

१ 'सारणात्' ही पाठ सब जगह मिला यह ठीक ही है इसकी जगह 'जारणात्' पाठ बनाने योग्य नहीं।

बीज साधन सुवर्ण रजत ताम्र तीनोंसे ।

सुवर्णं रजतं ताम्रं घर्षणाच्चूर्णतां गतम् । हिंगुलं च रसं तालं सौवीरं च लवंगकम्॥ ॥ १५ ॥ अष्टानां समभागानां लवंग-काथयोगतः । खल्वमर्दनसूक्ष्माणां च क्रिका च सुशोषिता ॥ १६ ॥ मृत्संपुटे रोधयित्वा संपुटं च सुशोषितम् । पुटो गजपुटस्तस्य क्राथमर्दनयोगतः ॥ १७ ॥ पुटनं मर्दनं ताषद्यावत्सुश्वेतभस्मना । अस्याथ जारणा कार्या सुवर्णे जारणे कृते॥ ॥ १८ ॥ (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

अर्थ–स्वर्णचूर्ण, रजतचूर्ण, हिंगुल, पारा, हरता-ल, सुरमा, तांबेका रेत और लौंग इन आठ औषधियोंको सम भाग लेकर खरलमें काथसे घोटे फिर उसकी टिकिया बनाकर सुखावे उन टिकियोंको मिट्टीके संपुटमें रख कपरौटीकर सुखालेवे तदनंतर गजपुटमें फूंके इसप्रकार जबतक उसकी श्वेत भस्म न होजाय तबतक काथ के योगसे टिकिया बना बनाकर गजपुटमें देताजावे अबस्वर्ण जारणके पश्चात् इसका जारण करना चाहिये१५-१८

नागबीज ।

माक्षिकेण हतं ताम्रं नागं वै रंजयेन्मुहुः ॥ तं नागं वाहयेद्बीजे द्विषोडशगुणानि च ॥ १९ ॥ बीजं त्विदं वरं श्रेष्ठं नागबीजं प्रकीर्तितम् ॥ समचारितमात्रेण सहस्रांशेन विध्यति॥ २० ॥ (र.चिं,र.रा.शं,बृ.यो.)

अर्थ–सोनामक्खीके साथ भस्म कियाहुआ ताँबा वंगको रंगताहै और उस बत्तीस गुने ताम्रको जो बीजमें वाहित (अग्निमें रखकर धोंकनेसे ताम्र न रहे और बीजमात्र ही शेष रहे) करे तो वह उत्तम बीज नागबीजके नामसे कह-लाया जाताहै इस बीजका सम भाग जारण करनेसे पारद सहस्रवेधी होताहै कहीं २ ऐसा भी लेख है कि केवल रत्ती मात्र ही बीजके जारणसे पारा सहस्रवेधी होताहै॥१९॥२०॥

वंगभस्म वा वंगबीज ।

कली पीसके जैसे शोरे और संखिये दी चुटकी कलीको देनी भस्म होजाय तब फिर मौलहियात देकर सजीव करनी फिर पूर्ववत् मारनी इसतरह वारंवार करनेसे कली बहुत उत्तम बनती है । खुद भी ताम्रको रंगतीहै (जंबूसे प्राप्त पुस्तकका पृष्ठ १९)

बीजरंजनार्थ तैल ।

मंजिष्ठाकिंशुकं चैव खादिरं रक्तचन्दनम् ॥ करवीरं देवदारु शरलो रजनीद्वयम् ॥२१॥

अन्यानि रक्तपुष्पाणि पिष्ट्वा लाक्षारसेन तु ॥
तैलं विपाचयेत्तेन कुर्याद्बीजादिरंजनम् ॥२२॥
(र. चिं., र. रा. शं., बृ. यो., र. र.)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां बीजसाधनवर्णनं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३॥

अर्थ–अब रंजन तथा जारणके लिये तैलको कहतेहैं मँजीठ,ढाकके फूल, खैरसार, लाल चंदन, दोनों कनेरोंके फूल, देवदारु, धूप, सरल, दोनों हल्दी और अनेक प्रकारके लाल फूलोंको पीसकर लाक्षाके रससे तैलका परिपाक करे तो यह बीजादिकोंको रंग देताहै ॥ २१ ॥ २२ ॥

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया भाषाटीकायां बीजसाधनवर्णनं नामत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

बिडसाधनाध्यायः १४.

बिडके अर्थ ।

कांचनादिग्रसने तीव्रबुभुक्षाकराणि द्रव्याणि बिडानि कथ्यंते ॥ (र. सा. प.)

अर्थ–सुवर्णआदिके ग्रासके लिये जो तीव्र क्षुधा करनेवाले द्रव्य हैं उनको बिड कहतेहैं ॥

बिडबीज जारणके लिये ।

गंधकं शंखचूर्णं वा गोमूत्रैः शतभावितम् ।
बिडोयं जारणे श्रेष्ठो बीजानां द्रावणे हितः ॥ १ ॥ (कामरत्न)

अर्थ–गंधक और शंखचूर्णको समान भाग लेकर गोमूत्रसे सौ बार भावना देवे तो यह बिड जारणके लिये अथवा बीजोंके द्रावणके लिये अत्यन्त ही उत्तम है ॥ १ ॥

अन्यच्च ।

मूलकार्द्रकचित्राणां क्षारैर्गोमूत्रगालितः ।
गंधकैः शतशो भाव्यो बिडोयं जारणे मतः ॥ २ ॥ (र. रा. सुं.)

अर्थ–मूली अदरख तथा चित्रकके क्षारोंको गोमूत्रमें गलावे फिर गंधकमें उस रसकी सौ बार भावना देवे तो यह बिड जारणके लिये उत्तम है ॥ २ ॥

अन्यच्च ।

मूलकार्द्रकवह्नीनां क्षारं गोमूत्रगालितम् ।
वस्त्रपूतं द्रवं ग्राह्यं गंधकं तेन भावयेत् ॥
शतवारं खरे घर्मे बिडोयं हेमजारणे ॥३॥
(र. चिं., नि. र., बृ. यो., र. रा. शं., सिद्धलक्ष्मीश्वरतंत्र, का. र.)

अर्थ–मूली, अदरख, तथा चित्रक (चीता) के क्षारोंको गोमूत्रमें गलावे फिर उसको कपडेसे छानकर गंधकको सौ बार तेज घाममें भावना देवे तो यह बिड स्वर्णजारणके लिये उत्तम है ॥ ३ ॥

बिड ।

वैद्यदर्पणात्–अथ यंत्रं विनाभ्रकादिबीजजारणार्थं प्रधानबिडप्रकारान्तरमुच्यते–
मूलिकार्द्रकचित्राणां क्षारैर्गोमूत्रगालितैः ।
गंधकः शतशो भाव्यो बिडोयं जारणे मतः४

अस्यार्थः–मूलिका आर्द्रकं चित्रकं चैतानि समानि प्रत्येकं द्रोणद्वयपरिमितानि संशोष्य भस्म कृत्वा गोमूत्रे घोलयित्वा वस्त्रगालितं च कृत्वा पात्रे त्रिदिनं चतुर्दिनं वा स्थापयेत् ततस्तेन गोमूत्रेण पलाष्टकसैंधवलवणं शुद्धगंधकं वा पाषाणखल्वे मर्दयेत् गाढं कृत्वा तेनैव गोमूत्रेण स्वल न खल्वे प्रक्षाल्य पुनर्मर्दयेदेवं पूर्ववच्छतवारं तदधिकं वा कुर्यात् ततः संशोष्य काचकूप्यां स्थापयेत् अस्य बिडसंज्ञा ज्ञेया ।

अयं बिडः सूतस्याष्टमांशतया पारदेन सह खल्वे मर्दितोत्यन्तक्षुधावाँश्च जायते अत एवाभ्रकसत्त्वं स्वर्णं वा तारं वा माक्षिकादिसत्त्वं वा द्रवी कृत्वा पारदाभ्यन्तरे पारदरूपं करोति तदनंतरबीजं द्रवीभूतं पारदः खादति तस्मात्सर्वबिडेभ्यः प्रधानोयं बिड इति । (ध. सं.)

अर्थ–अब विना यंत्रके अभ्रकादि बीजजारणके लिये बिड बनानेकी प्रधान रीतिको कहते हैं । मूली अदरख और चीता इनमेंसे प्रत्येकको दो दो मन लेकर और सुखाकर भस्म करले फिर गोमूत्रमें घोलकर कपडेसे छान लेवे और उसको तीन तथा चार दिवस तक उसी पात्र (जिसमें छाना हो) में रक्खा रहने देवे तदनंतर उस गोमूत्रसे आठ पल सैंधव लवण अथवा गंधकको पत्थरके खरलमें ऐसा मर्दन करे कि वह ठीक तौरसे गाढा होजाय फिर सुखा लेवे प्रत्येक भावनाके समय यदि खरलको धोना हो तो उसी गोमूत्रसे धोवे इस प्रकार सौ बार भावना देवे । फिर उसको सुखाकर शीशीमें भर रक्खे हेमजारणके लिये यह उत्तम बिड है । इस बिडका आठवां हिस्सा लेकर पारदके साथ मर्दनकरे तो पारा अत्यन्त क्षुधावान होताहै और इसी कारण अभ्रसत्त्व, स्वर्ण, चांदी तथा माक्षिकसत्त्वको पारदके गर्भमें ही पारद रूप करताहै तदनंतर द्रवीभूत बीजको पारद खाजाता है इसकारण यह समस्त बिडोंमें उत्तम बिड है४॥

अन्यच्च ।

कन्याहयारिधत्तूरद्रवैर्भाव्यन्तु गंधकम् ॥
शतवारं खरे घर्मे बिडोयं हेमजारणे ॥ ५॥
(कामरत्न)

अर्थ-घीग्वारका रस धतूरेका रस तथा कनेरका रस इनसे गन्धकको तेज घाममें सौ भावना देवे तो यह विड स्वर्ण जारणके लिये उत्तम है ॥ ५ ॥

बिड अभ्रक जारणके लिये ।

सैंधवं गंधकं तुल्यं ताम्रवल्लीद्रवैः प्लुतम् ॥ अनेन बिडयोगेन गगनं ग्रसते रसः ॥ ६ ॥ (र. प.)

अर्थ-गन्धक और सैंधव लवणको समान लेकर मँजीठके रससे भावना देवे तो इस विडके योगसे पारद अभ्रकको ग्रस लेता है ॥ ६ ॥

बिड जारणके लिये ।

निदग्धशंखचूर्णन्तु रविक्षीरशतप्लुतम् ॥ षड्बिन्दुकीटसंयुक्तो बिडे देयः सुजारणे॥७॥ (टो. नं.)

अर्थ-शंखकी भस्म तथा षड्बिन्दु कीटको आकके दूधसे सौ भावना देवे तो जारणके लिये उत्तम विड होताहै ॥ ७॥

बिड सर्वलोहजारणकेलिये ।

गोमूत्रैर्गंधकं घर्मे शतवारं विभावयेत् ॥ शिग्रुमूलद्रवैस्तद्वद् दग्धं शंखं विभावयेत् ॥ ८ ॥ एतद्गंधकशंखाभ्यां समांशैर्बिड सैंधवैः ॥ एतैर्विमर्दितः सूतो ग्रसते सर्वलोहकम् ॥ ९ ॥ (र. चिं, नि. र.)

अर्थ-गंधकमें गोमूत्रकी सौ भावना देवे तथा शंखभस्मको भी सैंजनेकी जडके रससे सौ भावना देवे फिर इन गंधक, शंखचूर्ण और सैंधवका समान भाग लेकर पारदको मर्दन करे तो पारा सब धातुओंको खाजाताहै ॥ ८ ॥ ९ ॥

पुरंदर बिड ।

शंखबाँटिके चूनो करै, दश पल जोखि खरलमें धरै॥ सौ पल लेइ आँवरासार, चूने सों पीसे इकसार ॥ गाय मूतसों सौ पुट देइ, सुखै सुखैकै खरल करेइ ॥ इह बिड नाम पुरंदर कहिये । यासे स्वर्णजारणा भइये ॥ (रससागर)

बिड स्वर्ण जारणके लिये ।

टंकणं शतधा भाव्यं द्रावैः पालाशवृक्षजैः॥ बिडो वह्निमुखो नाम हितोऽयं सर्वजारणे ॥ १० ॥ (र. चिं., नि. र.)

अर्थ-सुहागेको ढाकके काढेकी सौ भावना देवे तो यह वह्निमुख नामक बिड सम्पूर्ण जारणाओंके लिये हित है १०॥

बिड सत्त्व जारणके लिये ।

भावयेन्नैचलं क्षारं देवदालीफलद्रवैः ॥ एकविंशतिवारन्तु बिडोयं सत्त्वजारणे ॥ ११ ॥ (र. चिं., नि. र.,र. प.)

अर्थ-समुद्रफलको क्षारको देवदाली (बंदाल) के फलके रससे इक्कीस बार भावना दे तो यह बिड सत्त्वजारणके लिये श्रेष्ठ है ॥ ११ ॥

हेम जारणके लिये तीव्रानल बिड ।

देवदालीशिखिबीजगुंजासैंधवटङ्कणैः ॥ समांशं निचुलक्षारमम्लवर्गेण सप्तधा॥१२॥ कोशातकीदलरसैर्भावयेदिनसप्तकम् ॥ तीव्रानलो बिडो नाम्ना विहितो हेमजारणे॥ ॥ १३ ॥ (र. प.)

अर्थ-बंदाल, अजवाइन, चौंटनी, सैंधव और सुहागा इनके बराबर समुद्रफलका क्षार लेकर अम्लवर्गकी ७ भावना देवे और ७ भावना तोरईके पत्तोंके रसकी देवे तो यह तीव्रानल नामका विड स्वर्णजारणके लिये हित होताहै१२॥१३

बिड जारणके लिये ।

काशीसं लवणं सिंधुं सौवर्चलसुराष्ट्रिके ॥ गंधकेन समं कृत्वा बिडोयं जारणे मतः ॥ १४ ॥ (ध. सं.)

अर्थ-कसीस, त्रिकुटा,सैंधव, सांचर नोंन, सौराष्ट्रिक इन सबको गन्धककी बराबर लेकर गोमूत्रकी भावना देवे तो यह विडजारणके लिये श्रेष्ठ है ॥ १४ ॥

उग्र बिड बनानेकी क्रिया ।

सौवर्चलकटुत्रयकांक्षीकासीसगंधकैश्चबिडैः॥ शिग्रोरसशतभाव्यैस्ताम्रदलान्यपिहि जारयंति ॥ १५ ॥ (ध. स.)

अर्थ-सांचर नोंन, सोंठ, मिर्च, पीपल, फिटकिरी, हीराकसीस, और गन्धक इनको सैंजनेके रसकी सौ भावना देवे तो यह बिड ताम्रपत्रोंका भी जारण करदेता है और स्वर्णादि धातुओंका जारण करे तो इसमें सन्देह ही क्या है ॥ १५ ॥

सर्वलोहजारणके लिये बिड ।

त्रिक्षारं पंचलवणनवसारं कटु त्रयम् ॥ इन्द्रगोपं घनं शिग्रु सूरणं नवसूरणम् ॥ १६ ॥ भावयेदम्लवर्गेण त्रिदिनं चातपे खरे ॥ अनेन मर्दितः सूतो भक्षयेदष्टलोहकम् ॥ १७ ॥ (र. प.)

अर्थ-सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, पांचौनोंन नौसादर, त्रिकुटा, बीरबहूटी, अभ्रक, सैंजना, जमीकन्द, और जङ्गली जमीकन्द इनको तीन दिनतक तेज घाममें अम्लवर्गसे भावना दे फिर इसके साथ मर्दन किया हुआ पारद आठ प्रकारके लोहोंको खाजाता है ॥१६॥१७ ॥

सर्व लोहजारणकेलिये ज्वालामुख बिड ।

त्रिक्षारं गंधकं तालं भूनागं नवसारकम् ॥ सैंधवं च समं चूर्णं मूत्रवर्गैर्दिनं पचेत् ॥ ज्वालामुखो बिडो नाम्ना हितः सर्वत्र जारणे ॥ १८ ॥ (र. प.)

अर्थ–सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, गन्धक, हरताल, केचुआ, नौसादर और सैंधवको मूत्रवर्गसे एक दिवस पर्यन्त पचावे तो यह ज्वालामुख नाम बिड समस्त जारणाओंमें हित है ॥ १८ ॥

हेम जारणकेलिये बिड ।

त्रिक्षारं पंचलवणं शंखं तालं मनःशिला ॥ दिनैकमम्लवर्गेण पक्वं स्याद्धेमजारणे ॥१९॥ (र. प.)

अर्थ–सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, पांचों नोंन, शंखचूर्ण, हरताल और मैनसिल इनको एक दिनतक अम्लवर्गसे मर्दन करे तो यह बिड हेमजारणके अत्यन्त उपयोगी है ॥ १९ ॥

बिड बनानेकी दूसरी क्रिया जारणके लिये ।

कदलीपलाशतिलनिचुलकनकक्षुरदालिवास्तुके रंजः । वर्षाभूवृषमोक्षकसहितः क्षारो यथालाभम् ॥ २० ॥ (ध. सं.)

अर्थ–केला, ढाक, तिल, वेत, धतूरा, देवदालि, वथुआ, कंजा, सांठ, अडूसा और मोक्षक (घण्टापाढल) इन सम्पूर्ण दवाओंके पंचांगको लेकर सुखावे फिर जलाकर गोमूत्रमें भिगोकर कपडेसे छानले तदनंतर उस जलको लोहेकी कढाईमें रखकर अग्निसे तबतक परिपाक करे कि जबतक उस खारमें शीघ्र २ नाश होनेवाले बुदबुदा न आने लगें । फिर उसीमें त्रिकुटा, हींग, गन्धक, जवाखार, सज्जीक्षार, सुहागा, छः प्रकारका नोंन, गोपीचन्दन इनके चूर्णको डाले इसके बाद इन सबको मिलाकर धानके ढेरमें सात दिवसतक रखकर और फिर उसको निकालकर काचकी शीशीमें भर देवे तो यह बिड रसादिके जारणमें उत्तम है ॥ २० ॥

बिडबनानेकी तीसरी क्रिया ।

ये पूर्वोक्ताः कदलीपलाशादिवृक्षास्तेषां क्षाराणि निंबूजंबीरनीरैः संभावितानि भवेयुश्चेत् तदा बिडवत् कार्यकराणि भवन्तीति सुगममिति (ध.सं.)

अर्थ–अब बिड बनानेकी और विधिको कहतेहैं कि, पूर्वोक्त केला और ढाक आदि वृक्षोंके क्षार यदि निंबू तथा जंभीरीके रससे भावित किये हुए हों तो वे बिडके समानकार्य करनेवाले होतेहैं और यह ऐसा ही करना हमारी सम्मतिमें उचित है ॥

अन्यच्च ।

वास्तूकैरंडकदली देवदाली पुनर्नवा ॥ वासापलाशनिचुलतिलकांचनमोक्षकाः ॥ ॥२१॥सर्वांगखंडशश्छिन्नं नातिशुष्कं शिलातले॥दग्धं कांडं तिलानां च पश्चाङ्गं मूलकस्य च ॥ २२ ॥ प्लावयेन्मूत्रवर्गेण जलं तस्मात्परिस्रुतम् ॥ लोहपात्रे पचेद्यंत्रे हंसपाकाग्निमानवित् ॥२३॥ बाष्पाणां बुद्बुदानां च बहूनामुद्गमो यदा ॥ तदा काशीशसौराष्ट्रीक्षारत्रयकटुत्रयम् ॥२४॥ गंधकं च सितो हिंगुर्लवणानि च षट् तथा ॥ एषां चूर्णं क्षिपेद्देवि लोहसंपुटमध्यतः ॥ २५ ॥ सप्ताहं भूगतं पश्चाद् धार्यस्तु प्रचुरो बिडः ॥ अत्र सकलक्षारैश्च साम्यं तिलकांडानां नित्यनाथपादा लिखंति ॥२६॥ (र.चिं.,नि.र.)

अर्थ–उपरोक्त श्लोकोंका यही अर्थ है जो कि बीसवें श्लोकका अर्थहै विशेष बात यह है कि इस बिड बनानेके विषयमें नित्यनाथ लिखतेहैं कि सबके तुल्य तिलकी डंडी लेनी चाहिये ॥ २१–२६ ॥

वडवानल बिड स्वर्णादिलोहसत्त्व चारणकेलिये[1] ।

शंखचूर्णं रविक्षीरैरातपे भावयेद्दिनम् ॥ तद्वज्जंबीरजद्रावैर्दिनैकं धूमसारकम् ॥२७॥ सौवर्चलमजामूत्रैर्भाव्यं यामचतुष्टयम्॥कंटकारीं च संभाव्यं दिनैकं नरमूत्रकैः ॥ २८ ॥ स्वर्जिक्षारं तिंतिडीकं काशीशश्च शिलाजतुः ॥ जंबीरोत्थद्रवैर्भाव्यं पृथक्कयामचतुष्टयम् ॥ २९ ॥ निस्तुषं जयपालं च मूलकानां द्रवैर्दिनम् ॥ सैंधवं टंकणं गुंजां दिनं शिग्रुजटांभसाः ॥ ३० ॥ एतत्सर्वं समांश तु मर्द्य जंबीरजद्रवैः॥तत्सर्वं रक्षयेद्यत्नाद्बिडोऽयं वडवानलः ॥ ३१ ॥ अनेन मर्दितः सूतः संस्थितस्तप्तखल्वके । स्वर्णादिसर्वलोहानि सत्त्वानि ग्रसते क्षणात् ३२॥ (र.सा.प,र.चि.,नि.र.,र.रा.शं,आ.नि.र. रत्ना., र. रा. प.)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां बिडसाधनं नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

---

१ अंतिम पंक्तिके पढनेसे मालूम पडताहै कि बिडका प्रयोग चारणके निमित्त होताहै जारण जुदा करना होगा । जारणक्रियामेंभी बिडका प्रयोग कच्छपयंत्रमें करतेहैं (तप्त खल्वमें चारण । दोलायंत्र वा कच्छपयंत्रसे जारण होताहै) ।

अर्थ-अब मैं उत्तम वैद्यके बनाने योग्य विडको कहताहूं कि शंखके चूर्णको आकके दूधसे एक दिनतक तेजघाममें भावना देवे और इसी प्रकार धूमसारको भी जंभीरीके रससे एक दिन भावना देवे। तथा सांचरनोंनको एक दिवस गोमूत्रसे भावना देवे। और नौसादरको एक दिवसतक कटेरीके काथकी भावना देवे। तथा सज्जीके खारको तंतडीक (डांसरया) के रससे एक दिन भावना देवे। कसीस और शिलाजीतको जंभीरीके रससे चार चार प्रहर भावित करे। तथा तुषरहित जमालगोटेको मूलीके रससे भावित करे। सैंधव,सुहागा और चौंटनीको सैंजनेकी मूलीके रससे एक दिन भावना देवे। तदनंतर इन सबको जंभीरीके रससे मर्दन कर गोली बनालेवे तो यह वडवानल नामका विड सिद्ध होताहै इसके साथ तप्तखल्वमें मर्दन कियाहुआ पारद स्वर्णादि धातु तथा सम्पूर्ण सत्त्वोंको ग्रसताहै ॥ २७–३२ ॥

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्ये- ष्ठमलकृतायां रसराजसंहिताया भाषाटीकायां विडसा- धनं नाम चतुर्दशोध्यायः ॥१४॥

चारणसंस्काराध्यायः १५.

चारणलक्षण।

रसस्य जठरे ग्रासक्षेपणं चारणा मता। (र. र. स.)

अर्थ-पारदके भीतर ग्रास देनेको चारणा कहतेहैं ।

चारणसंस्कारका रूप।

घनसहितस्वर्णताराादिधातूनां तथा रसोपरसानां बीजभूतानां सूतराजो चारणाग्रासदानादस्य संस्कारस्य चारणैव संज्ञा प्रसिद्धा जाता ॥ (ध. सं०)

अर्थ-अब चारण नामके पारदके संस्कारको वर्णन करते हैं कि, पारदको चारणा (भक्षण) के लिये जो अभ्रक, स्वर्ण, चांदी प्रभृति धातुओंका अथवा बीजरूप रस तथा उपरसोंका ग्रास दियाजाताहै इस कारण इस संस्कारका नाम चारण प्रसिद्ध होगयाहै ॥

चारणके भेद।

अत्र चारणाख्ये कर्मण्यपि निर्मुखसमुखा महायोगाः सन्ति तथाहि-

अभ्रकजीर्णो बलवान्भवति रसस्तस्य चारणे प्रोक्ताः। संधानवासनौषधिभिर्निर्मुखसमुखा महायोगाः ॥ १ ॥ (ध. सं.)

अर्थ-इस चारण संस्कारमें निर्मुख और समुख आदि अनेक महायोग हैं यही बात धरणीधरसंहितामें लिखी है कि अभ्रक जीर्ण होनेसे पारद बलवान होताहै इस कारण अभ्रक चारणके लिये संधान तथा वासनाके योग्य औषधियोंसे निर्मुख और समुख आदि अनेक गुण देनेवाले महायोग कहेगयेहैं ॥ १ ॥

वासनौषधि।

वासनौषध्यस्तु गगनग्रासकथने कथितास्तास्तु यथालाभतो ग्राह्याः,इति वासनौषध्यः (ध. सं.)

अर्थ-वासनौषधियां गगनग्रासके प्रकरणमें कही गई हैं वे यथालाभ ग्रहण करनी चाहिये।

चारणोपयोगी संधानकी क्रिया।

सर्वधान्यानि निक्षिप्य चारनालं तु कारयेत् । सपत्रमूलं संकुट्य ह्यौषधीस्तत्र निक्षिपेत् ॥ २ ॥ क्षितिकासीससामुद्रसिन्धुत्र्यूषणराजिकैः । संयुक्तं कारयेत्तं तु साम्ले सप्ताहसंस्थितम् ॥ ३ ॥ तत्रारनालसंयुक्तं ताम्रभांडं तु संधयेत । संधानं जायते त्वेवं योज्यं सर्वत्र चारणे॥४॥(ध.सं.

अर्थ-अब अभ्रक चारणके निमित्त संधानको कहतेहैं। समस्त प्रकारके तुषरहित अन्नोंको, जलमें डालकर कांजी बनावे। फिर आगे कही हुई जडसहित औषधियोंको कूटकर उस कांजीमें डालदेवे। फिर फिटकिरी, हीरा कसीस, समुद्रनोंन, सैंधव, सोंठ, मिर्च, पीपल और राई इनको औषधिसहित कांजीके घडेमें रखकर गरम स्थानमें सात दिवसतक रक्खे और इन समस्त चीजोंको तामेके पात्रमें रखकर उसका मुख वंद करदेवे तो यह संधान समस्त चारणसंस्कारोंके उपयोगी होवेगा ॥२–४॥

अन्यच्च।

संधानकप्रकारोयमुच्यते जारणे हितः। शिग्रुं च वज्रकंदं च सूरणं मीनचित्रकम्॥५॥ तंडुली विषनाली च वर्षाभूर्यवचिंचिका। मुसली क्षीरकंदश्च कंदं वै वत्सनाभकम् ॥ ॥ ६ ॥ सर्वधान्यभवैः कुर्यात्तंडुलैस्तुषतोयकम् । प्रक्षाल्य चाष्टगुणिते जले सम्यक्प्रतापिते ॥ ७ ॥ सम्यग्बुद्बुदिते दद्यात्तंडुलांश्च यवादिकान् । सम्यग्गते विनिष्पन्ने ह्यन्नं संगाल्ययत्नतः ॥ ८ ॥ तन्मंडं प्रक्षिपेत्तोये तुषे सर्वप्रसाधिते । अत्रं किंचित्ततो दत्त्वा खरे घर्मे निधापयेत्॥९॥ एवं सप्तदिनस्यांते चात्यम्लं भवति ध्रुवम्। प्रागुक्तमौषधीवर्गं दद्यात्तत्र विचूर्णयेत् ॥ ॥१०॥पुनः संधारयेद्धर्मे दिनसप्तकमीदृशम्। ततस्तु योजयेत्सूते जारणादिक्रमेण वै॥११॥ लोहभाजनयोगेषु लोहशुद्धिर्दृढानले । इति संधानयोगोयं जारणेति गुणावहः ॥ ॥ १२ ॥ प्रकाशितः सम्प्रदायक्रमप्राप्तः शिवोदितः ॥ १३ ॥ (र. प.)

अर्थ-अब जारणोपयोगी संधानके क्रमको कहतेहैं-सैंजनेकी जड़ शकरकंद, जमीकंद, मैछली, चित्रक, चौलाई,

विषनाली(कमलतन्तु), विषखपरा, इमली, मूसली, क्षीरविदारी, वत्सनाग और तुष रहित समस्त प्रकारके अन्न या चावलोंसे कांजी बनावे कांजी बनानेकी यह विधि है-कि प्रथम चावलोंसे चौसठगुना पानी लेकर औटावे जब कि जलमें आधनके समान उफान आजावे तब तो जौ इत्यादि तथा चावलोंको धोकर उस पानीमें डालदेवे और अन्नके गलनेपर मांडको निकाल उसी तुषोदकमें मिलादेवे कुछ थोड़ासा और भी अन्न डालकर तीव्र घाममें रक्खे इस प्रकार सात दिवसके बाद वह संधान अम्ल होजाताहै। तदनंतर पूर्वोक्त औषधियोंको कूटकर उनके चूर्णको उसी संधानमें भरकर सात दिनतक फिर तेज घाममें स्थापित करे फिर उसको जारणके क्रमसे पारदके काममें लावे धातुओंके वासनोंपर लगाके अग्निमें धोंके तो धातुओंकी शुद्धि होतीहै। इस प्रकार यह संधानका योग जारणके लिये अत्यन्त गुणदायक है और श्रीमहादेवजीका कहाहुआ मुझको गुरुसंप्रदायसे प्राप्त हुआहै ॥ ५-१३ ॥

शुक्त।

मधुगुडकांजिकमस्तुप्रविभागाः स्युर्यथोत्तरं द्विगुणाः। त्रिदिनानि धान्यराशौ स्थापितमिदमुच्यते शुक्तम् ॥ १४ ॥ (र. प.)

अर्थ-शहद एक भाग, गुड दो भाग, कांजी चार भाग, दहीका तोड आठ भाग इन सब को तीन दिवसतक नाजके ढेरमें गाड़देवे तो यह उत्तम शुक्त (सिरका) बनजायगा ॥ १४ ॥

जारणोपयोगी अष्ट महौषधि।

व्याघ्री सिंही तथा वज्री कौमारी लांगली ततः। अभिमानाग्निधमनी हंसपादी तथैव च। महौषध्यः प्रयोक्तव्या अष्टावेताश्च जारणे ॥ १५ ॥ (र. रा. प.)

अर्थ-व्याघ्री (कटेरी), सिंही (अडूसा), वज्री (हडसंहारी), कौमारी (वाराहीकंद), लांगली (कलिहारी), अभिमाना, अग्निधमनी और हंसपादी (लाल रंगकी लजवंती) इन आठों महौषधियोंका प्रयोग जारणके लिये उपयोगी है ॥ १५ ॥

जारणोपयोगी सिद्धमूली।

व्याघ्रपादी हंसपादी कदल्यंघ्रिकुमारिका॥ मंडूकी चाग्निधमनी विख्याता सिद्धमूलिका ॥ १६ ॥ एता व्यस्ताः समस्ता वा प्रोक्तस्थाने प्रयोजयेत् ॥ १७ ॥ (र. प.)

अर्थ-व्याघ्रपादी (विकंकत वृक्ष), हंसपादी (लज्जालु), केलाअंघ्री, घीग्वार, मंडूकी(ब्राह्मीघास), अग्निधमनी ये सिद्धि जड़िये हैं और यथालाभ इनका प्रयोग करे। १६॥ १७॥

सम्मति-पूर्व दोनों श्लोकोंमें कही हुई औषधियोंका स्वरस तथा काथ उपयोगी होताहै।

अभ्रक जारणके भेद।

तच्चिविधम्-पत्रचूर्णजारणं सत्त्वजारणं द्रुति जारणं चेति। (र. प.)

अर्थ-अभ्रकजारण तीनप्रकारका है- पत्रचूर्णजारण, सत्त्वजारण अथवा द्रुतिजारण।

अभ्रकसत्त्व पर्याय।

केचित्त्वेवं वदन्ति स्म अभ्रकसत्त्वस्वर्णमाक्षिकसत्त्वयोरभावे कृष्णवज्राभ्रं मारितं निश्चंद्रिकं शुद्धस्वर्णमाक्षिकं मारितं तत्तत्सत्त्वस्थाने देयमिति (ध. सं. ४४)

अर्थ-कुछ बुद्धिमानोंने ऐसा भी कहाहै कि, अभ्रकसत्त्वके अभावमें भस्म कियेहुये श्यामवज्राभ्रकका प्रयोग तथा माक्षिकसत्त्वके अभावमें सोनामाखीकी भस्मका प्रयोग करना चाहिये ॥

अभ्रकपत्रजारणार्थअभ्रचूर्णक्रिया।

अर्कक्षारैस्तु धान्याभ्रं दिनं मर्द्य दिनानि च कपोताख्ये पुटे पच्यादेवं वारचतुष्टयम् १८ त्रिधा च मूलकद्रावैरंभाकंदद्रवैस्त्रिधा। अपामार्गः काकमाची मीनाक्षी मुनिभृंगराट् ॥ १९ ॥ पुनर्नवा मेघनादो वातारिश्चित्रकस्तथा। क्रमादेषां द्रवैरेव मर्दने पुटपाचने ॥२०॥ एकैकेनैव वारेण द्रवं दत्त्वाथ भावयेत्।शतावरी तालमूली रसश्च कदलीयकम् ॥२१॥ अर्कं पुनर्नवा शिग्रु यवचिंचा ह्यनुक्रमात्। प्रतिद्रवैर्दिनैकैकं भावितं चारणे हितम् ॥ २२ ॥ (र. प.)

अर्थ-जारणके लिये अभ्रकके पत्तोंका चूर्ण इस प्रकार करना चाहिये। धान्याभ्रको आकके दूधसे मर्दन कर कपोतपुटमें भस्मकरे इस तरह चार पुट लगावे। तीन पुट मूलीके रसके और तीन पुट केलेकी जडके रसके पुट देवे फिर ओंगा, मकोय, मछेछी, अगस्त, भांगरा, सांठ, चौलाई एरणु, चित्रक इनके एक बार पुट देकर भस्म करे तदनंतर सतावर तालमखानेकेलेका रस, और सांठ, सैंजना, यवचिंचा (इमली) का रस दे देकर भावना देवे तो यह चूर्ण जारणक्रमके लिये अत्यन्त हितकारी है ॥१८-२२॥

अन्यच्च।

अर्कक्षीरेण धान्याभ्रं यामं पिष्ट्वा तथा धमेत। कपोताख्ये पुटे पच्यात्पुनर्मर्द्य पुनः पचेत् ॥ २३ ॥ एवं विंशपुटैः पक्वं तदभ्रं षोडशांशकम्। जारयेत्पारदे ग्रासं शतधा पूर्वभावितम् ॥ २४ ॥ (र. प.)

अर्थ-अब अभ्रकजारणके लिये अभ्रकचूर्णकी दूसरी विधि कहतेहैं-धान्याभ्रको आकके दूधमें पीसकर कोयलोंकी अग्निमें धौंकना फिर इसी प्रकार आकके दूधमें घोट घोटकर बीस पुट देवे तो अभ्रककी भस्म होगी फिर पूर्वोक्त (पहले श्लोकमें कही हुई) औषधियोंकी सौ भावना देवे तदनंतर उसके षोडशांशका पारदमें ग्रास देवे ॥२३॥२४॥

अभ्रकजारणके लिये अभ्रको भावित-करनेकी क्रिया ।

यवाख्या कदली शिग्रु चिंचाफलपुनर्नवा । शतमूलीरसैरभ्रं भावितं मुनिसंख्यया २५॥ तद्ग्रासं रसराजोऽसौ सुखं भुंक्ते वरे मुखे । संजाते देहसिद्ध्यर्थं धातुसिद्ध्यर्थमेव हि ॥ ॥ २६ ॥ (र. पा.)

अर्थ–जवाखार, केला, सैंजना, इमली, सांठ, सतावर इनके रससे सात सात वार अभ्रकको भावना देवे तो उस अभ्रकचूर्णको मुख होनेपर पारद अच्छीतरह खाताहै और उससे देह तथा धातुकी सिद्धि अच्छी प्रकार होगी २५॥२६

अथ निर्मुख अभ्रक चारण प्रयोग कहतेहैं ।

निश्चन्द्रकं हि गगनं क्षाराम्लैर्भावितं तथा रुचिरैः । सृष्टित्रयनीरकणातुंबरुसम्मर्दितं चरति ॥ २७ ॥

अर्थ–अब निर्मुख अभ्रकजारणके प्रयोगको कृष्णवज्राभ्रक (जोकि विना जलाये चौलाई और बथुआके रसके साथ मर्दन करनेसे निश्चन्द्र होगया हो) को अत्यन्त स्वच्छ सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, ओंगेका क्षार इत्यादि क्षारोंसे तथा अम्लवेतस (नींबूका भेद), जंभीरी, बिजौरा, नारंगी, चणकाम्ल, करोंदा इन अम्लवर्गसे भावित करे तथा गाय, बकरी, भेड, नै और नारीका शुक्र और शोणित जलपीपल और तुंवरू (जिसका मुख फटाहुआ और आकृति काली मिर्चके समान होतीहै) से मर्दन करे तो उस अभ्रकको पारद खाजाताहै ॥ २७ ॥

चणकाम्ल और अम्लवेतकी उत्तमता ।

चणकाम्लं च सर्वेषामेकमेव प्रशस्यते । अम्लवेतसमेकं वा सर्वेषामुत्तमोत्तमम् ॥२८॥

अर्थ–समस्त प्रकारके अम्लोंमें चणकाम्ल (चनेकी खटाई) श्रेष्ठ है तथा अम्लवेत (एक प्रकारका निंबू जैपुरमें प्रसिद्ध है) सब अम्लोंमें उत्तमोत्तम है ॥ २८ ॥

निर्मुखे गगन चारण क्रिया ।

धान्याभ्रमम्लवर्गेण दोलायंत्रे त्र्यहं पचेत् । स्नुहीक्षीरैस्ततो मर्द्य यामैकं चांधितं धमेत् ॥ २९ ॥ कपोताख्यपुटैकेन तमादाय विमर्दयेत् । मूलकं कदलीकंदं मीनाक्षी काकमाचिका ॥ ३० ॥ मुनिरार्द्रकवर्षाभूर्मेघनादापमार्गकम् । एरंडश्च द्रवैरेषां पृथग्देयं पुटं क्रमात ॥ ३१॥ दोलायंत्रे ततः पच्याद्वज्रक्षीरैर्दिनावधि । नवसारं च काशीशं वचानिंबं सुचूर्णितम् ॥ ३२ ॥ अभ्रकात्षोडशांशेन प्रत्येकं मिश्रयेत्ततः । मर्दयेत्ताम्रखल्वे तच्चणकाम्लारनालकैः ॥ ३३ ॥ नवसारैरारनालेन लेपयेत्तत्र निक्षिपेत् । पारदं शोधितं चाभ्रं चणकाम्लं च कांजिकम् ॥ ३४ ॥ मृद्वग्निना पचेच्चुल्ल्यां रसश्चरति तत्क्षणात । जारयेत्पर्वयोगेन ततश्चार्य च जारयेत् ॥ आसां युक्तिर्यथापूर्वं सेयं निर्मुखजारणे ॥ ३५ ॥ (र. प.)

अर्थ–धान्याभ्रको अम्लवर्गसे तीन दिवसतक दोलायंत्रमें पचावे फिर थूहरके दूधसे एक प्रहर मर्दनकर अंधमूषामें रखकर धौंकना तदनंतर एक कपोतपुट लगाकर निकाल लेवे इसके बाद मूली, केलेकी जड, मछैछी, मकोय, अगस्तिया, अदरख, सांठ, चौलाई, ओंगा और एरण्ड इनके द्रवसे अभ्रकको क्रमपूर्वक देना चाहिये फिर एक दिवसतक थूहर और कसीसको अभ्रकसे षोडशांश लेकर अभ्रकके साथ मिलावे और चणकाम्ल तथा कांजीसे ताम्रके खरलमें मर्दन करे । तदनंतर नौसादरसे लिये हुए पात्रमें शुद्ध पारद तथा अभ्रक चणकाम्ल तथा कांजीको मृदु अग्निसे पचावे तो पारा अभ्रकको चरताहै फिर पूर्व योगसे जारण करे और फिर चारण तथा जारण करे यह निर्मुख जारणकी युक्ति है ॥ २९–३५ ॥

निर्मुखअभ्रचारणकेलिये अभ्रसाधन ।

मूत्राम्लक्षारकासीसचित्रकाक्षीकटुत्रयम् । जारणौषधिकाषायं तक्रोधसमन्वितम् ॥ ॥ ३६ ॥ सप्ताहं ताम्रजे पात्रे धृत्वा वस्त्रेण गालयेत् । भावयेदभ्रचूर्णादि तत्त्र्यहं भूधरे पचेत् ॥ ३७ ॥ एवं सप्तपुटं देयं भावयित्वा पुनः पुनः । धान्याभ्रमभ्रसत्त्वं वा तत्पुटितं चारयेद्रसे ॥ ३८ ॥ सूतेन्द्रो जीर्यते क्षिप्रं यथान्नं जठरानलः । निर्मुखो ग्रसते बीजं दोलायां शतधा रसः ॥ ३९ ॥ एषामन्यतमं चूर्णं समादाय क्रियां चरेत् । पूर्वप्रोक्ताभिषेका ये तेषामन्यतमेन च ॥ शतधा भावितं चूर्णं रससारोक्तक्रमेण वा ॥ ४० ॥ (र. प.)

अथ–गोमूत्र, अम्लपदार्थ, सज्जीखार, जवाखार, हीराकसीस, चित्रक, फिटकिरी, त्रिकुटा, जारणौषधियोंका काथ, मठा, पठानी लोध इन सबको १ दिवस तक ताम्रके पात्रमें रखकर छानलेवे और उसीसे अभ्रकके चूर्णकी भावना देकर भूधरयंत्रमें पचावे इस प्रकार ७ बार भावना दे देकर पुट देवे । पुट दिये हुए धान्याभ्रक तथा अभ्रसत्वको रसमें चारण करे तो पारदमें अभ्रक शीघ्र ही जारित होताहै जिस प्रकार जठरानलमें अन्न पचताहै इसी प्रकार दोलायंत्रमें सौ तरहसे पारद बीजको खाजाताहै अथवा इनमेंसे किसी चूर्णको लेकर चारण क्रिया करे । अथवा जो जो पूर्व अभिषेक कहे हैं उनमेंसे किसीके साथ सौ वार भावित कियाहुआ चूर्ण वा रससारकी क्रियासे सिद्धकिया अभ्रचूर्ण जारणके लिये उत्तम होजाहै ॥ ३६–४० ॥)

चारणकेलिये विशेष कांजी।

सतुत्थटंकणस्वर्जिपटुताम्रे त्र्यहोषितम्। कांजिकं भावितन्तत्तु गधाद्यं चरति क्षणात् ॥ ४१ ॥ (र. चिं., नि. र., र. रा. शं.)

अर्थ—नीलाथोथा, सुहागा, सज्जीक्षार, सैंधव और कांजी इनको ताम्रके पात्रमें तीन दिनतक रक्खे फिर उससे भावित कियेहुए गंधकादिको पारद शीघ्र ही चरताहै ॥ ४१ ॥

अभिषेक।

क्षारत्रयं पंचपटुकांक्षीकासीसगंधकम् ॥ माक्षिकं चाम्लसंयुक्तं ताम्रपात्रे तु सारयेत् ॥ ४२ ॥ एतच्चाभिषवं दिव्यं कारयित्वा विचक्षणः ॥ जारणार्थं तु बीजानां वज्राणां च विशेषतः ॥ ४३ ॥ तस्मिन्नावर्तितं नागं वंगं वा सुरवंदिते ॥ निषेचयेच्छतवारं न रसायनकर्मणि ॥ ४४ ॥ अनेन चारणावस्तु भावयेत्तद्विचक्षणः ॥ (र. प.)

अर्थ—सुहागा, सज्जीखार, जवाखार, पांचो नोन, फिटकिरी, कसीस, गंधक, सोनामाखी और आरनालको ताँबेके पात्रमें रखकर विद्वान् वैद्य बीजोंके जारणके लिये और विशेषकर वज्रजारणके लिये इनकी कांजी बनवावे, हे पार्वति उस कांजीमें नाग तथा वंगको गला गलाकर सौ वार बुझावे यह कर्म रसायनके वास्ते न करे और धातुवादके लिये करे और विद्वान् इससे चारणकी वस्तुओंको भावना देवे ॥४२–४४॥

अन्यच्च।

त्रिक्षारं पंचलवणं कांक्षीकासीसगंधकम् ॥ माक्षिकं कांजिकैर्युक्तं ताम्रपात्रे दिनत्रयम् ॥ ४५ ॥ स्थितं घर्मे पलं तस्मिन्द्रुतं नागं विनिक्षिपेत् ॥ तारस्य कर्मणि वंगं शतवारं निषेचयेत् ॥ ४६ ॥ तद्द्रवं ताम्रपात्रस्थमभिषेकं विदुर्बुधाः ॥ अनेन चारणावस्तु शतवारं विभावयेत् ॥ ४७ ॥ द्वंद्वितं व्योमसत्त्वं च बीजानि विविधानि च। नागं च वज्रबीजं च भावितं चारयेद्रसे ॥ ॥ ४८ ॥ संस्कृतो नागवंगाभ्यां सर्वधातुपतिर्बुधैः। स श्रेष्ठो धातुवादेषु नेष्टः प्रोक्तो रसायने ॥ ४९ ॥ (र. प., र. रत्ना.)

अर्थ—तीनों क्षार (सज्जीक्षार, यवक्षार, सुहागा) पांचो नोन, फिटकरी, कसीस, गंधक, और सोनामाखी इनको कांजीके साथ तांबेके पात्रमें तीन दिवसतक घाममें रक्खा रहनेदे उसमें एक पल नाग जलाकर बुझादेवे और जो चांदी बनाना हो तो वंगके सौ बुझाव देवे फिर उसे ताँबेके पात्रमें रक्खें तो उसको पंडित लोग अभिषेक कहतेहैं अभ्रकसत्त्व अनेक प्रकारके बीज नाग और वज्रबीज को उस अभिषेकसे भावना देकर पारदमें चारण करे और पंडितोंसे नागवंगके साथ संस्कार कियाहुआ स्वर्ण धातुवादमें श्रेष्ठ है और रसायनके लिये श्रेष्ठ नही है ॥४५–४९॥

अन्यच्च।

सम्यगावर्तितं नागं पलैकं काञ्जिके क्षिपेत्। पलानां शतमात्रे तु शतवारं द्रुतं द्रुतम् ॥ ॥ ५० ॥ अनेन काञ्जिकेनैव शतवारं विभावयेत्। यत्किंचिच्चारणावस्तु ततस्तच्चारयेद्रसे ॥ अभिषेकोऽयमाख्यातः कथितो मतिमतां वरैः ॥ ५१ ॥ (र. प.)

अर्थ—एक पल नाग (सीसे) को अच्छी प्रकार गलाकर कांजीमें डालदेवे यदि सौ पल सीसा होवे तो सौ बार सीसेको गलागलाकर बुझावदेवे इसी (जिसमें बुझाव दिया गयाहै) कांजीमें जो कुछ चारणकी वस्तु हैं उनको सौ बार भावना देवे फिर रसमें चारण करे बुद्धिमानोंने इसको अभिषेक कहाहै ॥ ५० ॥ ५१ ॥

निर्मुख[1] गगनचारणके लिये अभ्रसत्त्व साधन।

रसरत्नाकरोक्तं वा त्रिक्षाराद्यभिषेचनम्। शतधा भावयेत्तेन तत्सत्त्वं चरति क्षणात् ॥ ॥ ५२ ॥ इत्थं संसाधितं सत्त्वं पूर्ववच्चाभिमंत्रितम्। विधाय प्रार्थनां पश्चाद्ग्रासं मंत्रेण चारयेत् ॥ ५३ ॥ (र. प.)

अर्थ—रसरत्नाकर तथा त्रिक्षार आदि जो अभिषेचन हैं उनसे अभ्रकसत्त्वको सौ बार भावना देवे इस भावना दियेहुये अभ्रसत्त्वको मंत्रोंसे अभिमंत्रित कर और ईश्वरकी प्रार्थना कर फिर मंत्र पढ पारदको ग्रास देवे ॥ ५२ ॥ ५३ ॥

गगनकी निर्मुख चारण क्रिया।

तिलपर्णीरसं नीत्वा गगनं तेन भावयेत्। मर्दनाज्जायते पिष्टी नात्र कार्या विचारणा ॥ ५४ ॥ (ध. सं.)

अर्थ—तिलपर्णीके रसको निकालकर उससे अभ्रकको भावना देवे तो उस भावना दिये हुए अभ्रक तथा पारदके मर्दन करनेसे पिष्टी तय्यार होती है इसमें जरा भी विचार करना उचित नहीं है ॥ ५४ ॥

अन्यच्च।

मुंडीनिर्यासके नागं बहुशस्तं निषेचयेत् ॥ तेनाभ्रकं तु संयोज्य भूयोभूयः पुटे दहेत् ॥ ॥ ५५ ॥ चित्रकार्द्रकमूलानामेकैकेन तु सप्तधा ॥ स्त्रावितं वा प्रयत्नेन गंधकाभ्रकचूर्णकम् ॥ ५६ ॥ नागं मुंडीरसाक्तं रसलुंगाभ्रभावितम् ॥ षोडशांशेन दातव्यं दोलायंत्रे चरेद्रसः ॥ ५७ ॥ (ध. सं.)

अर्थ—मुंडीके स्वरसमें सीसेको गला गलाकर कई बार बुझाव देवे और उसी रससे पारदको भावना देकर बार बार गजपुटमें फूंक देवे और चित्रक अदरख तथा मूलीके

[1] यद्यपि पाठमें निर्मुख वा समुख का पता नहींहै परन्तु विचारसे निर्मुख ही जानपडताहै (ग्रंथकार)

रससे सात सात भावना देवे तो गन्धक और अभ्रक आदिका चूर्णग्रास देनेके योग्य होताहै। अथवा जिस मुंडीके रसमें नागका बुझाव दिया गया हो उससे भावित तथा बिजौरेके रससे भावित अभ्रकका पारदमें षोडशांशका ग्रास देवे तो उस ग्रासको पारद दोला यन्त्रमें चर जाताहै ॥ ५५--५७ ॥

अन्यच्च ।

सोमवल्लीरसे पिष्ट्वा क्षपयेच्च पुटत्रयम् ॥ सोमवल्लीरसेनैव सप्त वारांश्च भावयेत् ॥ ॥ ५८ ॥ गगनं म्रियते भांडे रसेन सह संयुतम् ॥ मलं सितेषुपुंखाया गव्यक्षीरेण घर्षयेत् ॥ ५९ ॥ कल्केन मेलयेत्सूतं गगनं तदधोर्ध्वगम् ॥ स्थापयेद्रवितापे तु निर्मुखं ग्रसते क्षणात् ॥ ६० ॥ जायते पिष्टिका शीघ्रं नात्र कार्या विचारणा ॥६१॥ (ध.सं.)

अर्थ–सोमवल्लीके रसको निकालकर उसमें सीसेके तीन बुझाव देवे उसी रससे अभ्रकको भावना देकर सात बार गजपुट देवे प्रत्येक पुटमें सोमवल्लीके रससे भावित अभ्रकको बासनमें भरकर ऊपरसे फिर सोमवल्लीका रस भर देवे अथवा सफेद सरफोखेकी जड़को गायके दूधसे पीसे फिर पारदके नीचे तथा ऊपर अभ्रकको रखकर उस दूधसे बासनको भर देवे और उसको तेज घाममें रक्खे तो निर्मुख भी पारा अभ्रकको शीघ्र खाजाताहै और उसकी पिष्टी शीघ्र हो जाती है इसमें सन्देह नहीं है ॥५८--६१॥

निर्मुख चारणकेलिये सूतसंस्कार ।

अथवा तप्तखल्वे तु भूलतासंयुतो रसः ॥ मर्दयेत्रिदिनं पश्चात्पात्यं पातनयंत्रके ॥ संस्कारेण ह्यनेनैव निर्मुखश्चरति ध्रुवम् ॥ ॥ ६२ ॥ (र. प.)

अर्थ–अथवा भूलताका रस और पारदको तप्त खल्वमें तीन दिवसतक घोटे फिर पातनयन्त्रमें पातन करे इसी संस्कारसे निर्मुख पारद अभ्रकको शीघ्र खा जाताहै ॥ ६२ ॥

बिडयोगसे तप्तखल्वद्वारा निर्मुख स्वर्णादिचारण ।

अथवा बिडयोगेन शिखिपित्तेन लेपितम् ॥ चरेत्सुवर्णं रसराट् तप्तखल्वे यथासुखम् ॥ ॥ ६३ ॥ (रसमंजरी)

अर्थ–अथवा बिडयुक्त मोरके पित्तेसे लेप किये हुए सुवर्णके पत्रको पारद तप्त खल्वमें शीघ्रही खाजाता है॥६३॥

समुखमें अभ्रचारण ।

त्रुटिशो दत्त्वा मृदितं सोष्णो खल्वेऽभ्रहेमलोहादि ॥ चरति रसेन्द्रः क्षितिखगवेतसजम्बीरबीजपूराद्यैः ॥ ६४ ॥ (र.चिं.,नि. र., र. रा. शं, र. सा. प.)

अर्थ–जिस पारदके मुख होगया है उसको तप्त खल्वमें गेर कर अभ्रक, सुवर्ण और लोहा इनमेंसे जिसका जारण करना हो उसको थोडा २ गेरकर मर्दन करे और मर्दनके समय फिटकिरी, सुहागा और जम्बीरीका रस भी थोडा २ डालता जावे तो पारद उन धातुओंको अवश्य ही चरलेगा ॥ ६४ ॥

समुखगगनचारणक्रिया ।

अथातः समुखचारणाविधिर्यथा तत्रादौ स्वेदनकर्मोक्तसंधानं कुर्यात् तथाहि–स्वर्ज्जीक्षितिखगटंकणलावण्यान्वितमर्कवाजेन।त्रिदिनं पर्युषितमारनालं गगनादिक भावने शस्तम् ॥ ६५ ॥ (ध, सं)

अर्थ–अब समुख चारणा विधिको कहते हैं कि, प्रथम स्वेदन संस्कारकी रीतिसे कांजी को बनावे जैसे कि राई,नोंन, त्रिकुटा, चित्रक, अदरख,मूली, धान ये सब सम भाग लेकर और कूटकर बीस गुने पानीमें डालकर तीन दिनतक या पांच दिवसतक रखकर फिर उसमें सज्जी, फिटकिरी, कसीस, सुहागा और नोन ये सब संधान से षोडशांश लेकर और पीसकर कांजीमें मिलावे फिर उसको तीन दिवसतक स्थापित करे उस कांजीसे अभ्रक आदिको तीन बार तथा सात बार भावना देवे क्योंकि इस बातको शास्त्रकारोंने भी लिखा है जैसे कि सज्जीखार, फिटकिरी, कसीस, सुहागा, नोंन और कांजीको तीन दिवसतक ताँबेके पात्रमें स्थापित करे तो यह अभ्रकादि की भावना देनेमें उत्तम कांजी मानी गईहै ॥६५॥

समुखगगनचारणक्रिया ।

गगनरसोपरसामृतलोहरसायसादिचूर्णानि ॥ सर्वमनेन हि भाव्यं यत्किंचिच्चारणावस्तु ॥ ६६ ॥ (धं.सं.)

अर्थ–भावना देनेयोग्य अभ्र आदिकोंका वर्णन करतेहैं–कि वज्राभ्रक, महारस (हिंगुल, सोनामाखी, रूपामाखी, शिलाजीत, चपला, चुंबक, वैक्रान्त, रसखपरिया) उपरस (सुरमा, गंधक, मैनसिल, हरिताल, गेरू, फिटकिरी, कसीस) सींगिया और बिना भस्म कियेहुये स्वर्णादि धातु इनके चूर्ण तथा अन्य जो कुछ चारणकी वस्तु हैं वे सब इसी कांजीसे भावना देनेयोग्य हैं ॥ ६६ ॥

सम्मति–इस श्लोकमें रसशब्दका पाठ दोस्थलमें आयाहै उससे यह बात समझना चाहिये कि औरोंकी अपेक्षा रस और उपरसोंको दूनी भावना देनी शास्त्रकारको संमत है।

समुखगगनचारणक्रिया ।

त्रुटिशो दत्त्वा मृदितं सारे खल्वेऽभ्रहेमलोहादि ॥ चरति रसेन्द्रः क्षितिखगवेतसजम्बीरबीजपूराम्लैः ॥ ६७ ॥ (ध.सं.)

अर्थ--जिसका मूसला लोहेका हो ऐसे लोहके खल्वमें संस्कृत पारदको डाल उसमें पूर्वोक्त कांजीसे भावित अभ्र तथा स्वर्णादिको थोडा २ डालकर फिर फिटकिरी, कसीस, अम्लवेत (निम्बूविशेष),बिजौरा, और जँभीरी इनके साथ मर्दन करनेसे पारा ग्रासको चरताहै ॥ ६७ ॥

सम्मति–इस बातपर पूर्ण ध्यान देना चाहिये कि स्वर्णकी क्रियामें नागका चारण तथा चांदीकी क्रियामें वंगका चारण

करे और देहसिद्धिके लिये नाग और बंगका चारण सर्वथा नहीं करना चाहिये।

समुखमें गगनचारण।

अथ रसरत्नाकरे घनपत्रचूर्णचाररणाच्यते–
अथातः समुखे सूत पूर्वाभ्रं षोडशांशकम्॥ दत्त्वा मर्द्य तप्तखल्वे सिद्धमूलीद्रवैर्दिनम्॥ ॥ ६८ ॥ ततस्तं चारणायंत्रे जंबीररससंयुते ॥ घर्मे धार्य दिनैकन्तु चरत्येव न संशयः ॥ ६९ ॥ (र.प.)

अर्थ–अब रत्नाकरमें कही हुई अभ्रक चूर्णकी चारणाको वर्णन करतेहैं प्रथम बुभुक्षित पारदमें पहले सिद्ध किये हुये (अर्थात् इसी चारणा प्रकरणमें जो र. प. की रीतिसे अभ्रक भस्म वा चूर्णका विधान किया गया है) अभ्रकके षोडशांशको डालकर सिद्धौषधियोंके साथ तप्तखल्वमें एक दिन मर्दन करे फिर उसको जंभीरीके रससे भरेहुये चारण यंत्रमें एक दिन रक्खे तो पारा अभ्रकको खाजाताहै ॥ ६८ ॥ ६९ ॥

वासनामुखचारणक्रिया।

अथ समुखचारणान्तभूतं वासनामुखचारणं दर्शयन्नाह–
तैलादिकतप्तरसे हाटकतारादिगोलकमुखेन । चरति घनं रसराजो हेमादिभिरेति पिंडत्वम् ॥७० ॥
तैलादयः के तत्राह तैलानि वसाः मूत्राणि रजः शुक्रं च तैलानि यथा–
कंगुनी तुंबिनी घोषा करंजः श्रीफलोद्भवम् । कटुवातारिसिद्धार्थः सोमराजीविभीतकम् ॥ ७१ ॥ अतसीजं महाकाली निम्बजं तिलजं तथा । अपामार्गं देवदालीदंतीतुंबुरुविग्रहम् ॥ ७२ ॥ अंकोलोन्मत्तभल्लातफलानां तैलमीरितम् ॥
वसा यथा–
जलौकोदर्दुरवसा वसा कच्छपसंभवा॥ ॥७३॥ कुक्कुटीशिशुमारीजा गोसूकरनरोद्भवा । अजोष्ट्रखरमेषाणां महिषस्य तथा वसा ॥ ७४ ॥
मूत्ररजः शुक्राणि यथा–
मूत्राणि हस्तिवृषभमहिषीखरवाजिनाम् । स्त्रियाः पुंसस्तथा मूत्रं पुष्पं बीजं तु योजयेत् ॥ ७५ ॥ (ध. सं.)

अर्थ–अब समुख चारणान्तर्भूत वासनामुख चारणको कहतेहैं–चौलर कपडेमें पारदसे षोडशांशका आधा अभ्रक बिछाकर ऊपरसे पारदको रक्खे और उसके ऊपर फिर बचे हुए षोडशांशके आधे अभ्रकको डालकर और ऊपरसे षोडशांशका आधा बिड डालकर उसकी पोटली बनालेवे उस पोटलीको तैलके दोलायंत्रमें मंदाग्निसे पचावे तो वह पारद गोलक मुखसे सोना चांदी और अभ्रक वगैरःको चर लेताहै और स्वर्ण आदिके चारणसे पारद गाढा होजाताहै मालकांगनी, कडवी तोंबी, सोंफ,कंजेकी मींग,श्रीफल(वेल, गोला), कटु (राई), एरंड, सरसों, बावची, बहेडा, अलसी, महाकाली (एक प्रकारकी लता), नीम, तिल, ओंगा, बंदाल, दंती, धनियां, अंकोल, धतूरा और भिलावा इनका तैल इस चारणमें लेना उचित है तथा जोंक, मंडूक, कछुवा, मुर्गी, शिशुमारी (घडियाल), गाय, शूकर, मनुष्य, बकरा, ऊंट, गदहा, मेंढा और भैंसा इनकी चर्वी लेनी चाहिये। और हाथी, बैल, भैंस, खर और घोडोंका मूत्र स्त्री और पुरुषका मूत्र रज और वीर्य लेना चाहिये ॥ ७०–७५ ॥

गगनके वासनामुखचारणका प्रकारान्तर।

अथ समुखचारणान्तर्भूतायां वासनामुखचारणायां प्रकारान्तरेण घनचारण दर्शयन्नाह–
अथवा माक्षिकं गगनं (कृष्णवज्राभ्रकम्) तथाम्लेन पुटितं भावितं यत् पटु (सैंधव लवणम्) तदेतत्त्रयं समभागं जंबीरनीरेण यामैकं मर्दयित्वा चक्रिकां कृत्वा शरावसंपुटे धृत्वा पक्वं (लघुपुटवह्निना पुटितम्) कृत्वा तद्गगनं सूतमानाच्चतुःषष्टचंशकं पारदेन सहाम्लरसेन मर्दयित्वा गोलकं विधाय चतुर्गुणवस्त्रेण पोटलीं कृत्वा पूर्वोक्ततैलयंत्रेण स्वेदयेत् ततश्च तप्ततैलादिना तप्तपारदो माक्षिकसंयोगात् घनं शीघ्रमेव चरति ग्रसतीति भावः। (ध. सं.)

अर्थ–अथवा सोनामाखी अभ्रक तथा अम्लसे भावित सैंधा नोंन इन तीनोंको जंबीरीके रससे एक प्रहर मर्दनकर टिकिया बना शकोरेमें रखकर मंदाग्निसे पकालेवे उस अभ्रकको पारदसे चौसठवां हिस्सा लेकर अम्लरसके साथ घोटकर गोला बनावे उस गोलेकी चौलर कपडेमें पोटली बांधकर पूर्वोक्त तैलके दोलायंत्रमें स्वेदन करे उसके बाद तप्त तैलादिकोंसे तप्त हुआ पारद सोनामाखीके योगसे अभ्रकको शीघ्र ही चर लेताहै ॥ (४।११।१०)

गगनके वासनामुखचारणका शुकपिच्छाख्य प्रकारान्तर।

अथ संमुखं चारणान्तर्भूतवासनामुखचारणायां शुकपिच्छाख्यसंधानेन रससिद्धोपदिष्टचारणाप्रकारान्तरं दर्शयन्नाह–

१–अभ्रं–धान्याभ्रं वा पूर्वोक्तविधिना साधितम् अभ्रभस्म।

१–मेरी रायमें यहां 'निर्मुखम्'–पाठ होना चाहिये।

अन्ये स्वच्छं कृत्वा शुकपिच्छमुखेन चारयन्ति घनम् । सिद्धोपदेशविधिनाऽसितग्रासेन शुष्केण ॥ ७६ ॥ भस्मचाराश्च शुष्काश्च क्षाराश्च लवणानि च । आलोडच चाम्लवर्गेण शुल्वभांडे निधापयेत ॥ ७७ ॥ यावच्च शुकपिच्छाभमभ्रकं तेन भावयेत् । ग्रसते तत्क्षणात्सूतो गोलकस्तु विधीयते ॥ ॥ ७८ ॥ (ध. सं.)

अर्थ-अब समुखचारणके अन्तर्भूत वासनामुख चारणामें शुकपिच्छ नामके संधानसे उस चारणाके प्रकरणको कहतेहैं कि, जिसको रससिद्धोंने कहा है-रसकर्मके ज्ञाता आठ संस्कारोंसे शुद्धकर या सिंग्रफमेंसे निकले हुएको साफ कर उसमें शुक पिच्छ नामके संधानसे भावित अभ्रकको पूर्वोक्त तैलादि और शुक पिच्छ संधानसे युक्त दोलायन्त्रमें चराते हैं । केवल शुक पिच्छ संधानसे नहीं चराते हैं यह चारणा जब होतीहै कि जब सिद्धोंके उपदेशसे पारद ग्रासको खालेवे । अब शुकपिच्छ नाम संधानको कहते हैं कि अनेक प्रकारके क्षार तथा लवणोंको अम्ल वर्गोंके रसमें घोलकर तवतक ताम्रपात्रमें रक्खे कि जबतक वह तोतेके परके समान हरा न होजावे फिर उससे अभ्रकको भावित करे तो पारा उसको शीघ्र खाजाताहै और उसका गोला भी बनजाताहै ॥ ७६-७८ ॥

तीक्ष्ण चारण जारण ।

क्रामति तीक्ष्णेन रसस्तीक्ष्णेन जीर्यते ग्रासः ॥ हेम्नो योनिस्तीक्ष्णं रागान् गृह्णाति तीक्ष्णेन ॥ ७९ ॥ तदपि च दरदेन हतं कृत्वा वामाक्षिकेण रविसहितम् ॥ वासितमपि वासनया घनवच्चार्यं च जार्यं च ॥ ॥ ८० ॥ (र.रा.प.,र.रा.शं.,र. चिं.)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां चारणसंस्कारवर्णनं नाम पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

अर्थ-तीक्ष्णसे पारदमें क्रामण शक्ति बढतीहै ग्रास जीर्ण होताहै और तीक्ष्ण ही स्वर्णकी योनि है और तीक्ष्णसे पारद रंगतदार होताहै और वह तीक्ष्ण भी सिंग्रफसे भस्म किया हुआ हो या सोनामाखी और आकके दूधसे भस्म किया हुआ हो और वासनासे वासित हो उसको अभ्रकको तरह चारण वा जारण करे ॥ ७९ ॥ ८० ॥

इति श्रीजेसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया भाषाटीकायां चारणसंस्कारवर्णनं नाम पञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

गर्भद्रुतिसंस्काराध्यायः १६.

गर्भद्रुतिलक्षण ।

ग्रस्तस्य द्रावणं गर्भे गर्भद्रुतिरुदाहृता ॥ (र. र. स.)

अर्थ-ग्रास दिये हुएका जो गर्भमेंही गलाना हो उसको गर्भद्रुति कहतेहैं ॥

अन्यच्च ।

वह्निव्यतिरेकेपि रसग्रासी कृतानां लोहानां द्रवत्वं गर्भद्रुतिः । गर्भद्रुतिमंतरेण जारणैव न स्यात ॥ (र.चिं.,र.रा.शं, बृ.यो.)

अर्थ-ग्रास दियेहुए समस्त धातुओंका अग्निसंयोगके विना ही जो द्रव होताहै उसको गर्भद्रुति कहतह जो कि उसको गर्भद्रुतिके विना जारण नहीं होताहै ॥

गर्भद्रुतिका प्रयोजन ।

गर्भद्रुत्या रहितो ग्रासश्च जीर्णोपि नैकतां याति । एकीभावेन विना न जीर्यते न सा कार्या ॥ १ ॥ (ध. सं., र. प.)

अर्थ-अब गर्भद्रुतिके प्रयोजनको कहतेहैं । कि जारणसंस्कारकी रीतिसे खिलाया हुआ भी ग्रास गर्भद्रुतिके विना पारदरूप नहीं होताहै और जबतक पारद तथा ग्रासका एक रूप न हो तबतक ग्रास नहीं होता । इसलिये गर्भद्रुति अवश्य करना चाहिये ॥ १ ॥

केवल अभ्रकजारणका निषेध ।

केवलाभ्रकसत्त्वं हि न ग्रसत्येव पारदः । तस्माल्लोहान्तरार्पितो युक्तं वा धातुसत्त्वकः। अभ्रकं जारयेत्सिद्ध्यै केवलेन तु सिध्यति ॥ २ ॥ (र. रा. सुं., र. प.)

अर्थ-पारद केवल अभ्रकसत्त्वको नहीं ग्रसताहै इस कारण वैद्यवर अन्यधातुसे मिलेहुए या स्वर्णमाक्षिकसे मिले हुए अभ्रकका जारण करे तो सिद्धि होतीहै और केवल अभ्रकसे नहीं ॥ २ ॥

गर्भद्रावी होनेके निमित्त अभ्रकसत्त्वके साथ ताप्यसत्त्वका मेल करे।

व्योमसत्त्वं समांशेन ताप्यसत्त्वेन संयुतम् । साकल्येन चरेदेवि गर्भद्रावी भवेद्रसः॥३॥ (र. चिं., निघं. र.,र. रा. शं. बृ. यो.)

१ केवलमभ्रकसत्त्वं ग्रसते यस्मान्न सर्वाङ्गम्॥ (र.प.)

२ नोट-यहां ऐसा जानपडताहै कि गर्भद्रुतिके निमित्त ताप्यसत्त्वका प्रयोग कहा अब स्वर्ण और अभ्रसत्त्वकी भी गर्भद्रुतिके अर्थ आज्ञा देताहै. और यह भी कहताहै कि हेमके लिये हेम और तारके लिये तारका प्रयोग करे ।

३-तप्तखल्वे रचयेद्देवि-मेरी सम्मतिमें नि. र. का पाठ हो तो ऐसा हो 'तप्तखल्वे चरेद्देवि'

एवं हेमाभ्रताराभ्राद्यः स्वस्वरिपुणा निर्व्यूढाः। प्रयोजनमवलोक्य प्रयोज्याः॥ (र. चिं., बृ. यो.)

अर्थ–पारदके तुल्य अभ्रकसत्त्व और सोनामाखीके सत्त्वको लेकर बिडके साथ मर्दन करे तो पारा समस्त ग्रासको खाजाताहै और गर्भद्रावी होताहै। इसप्रकार जहां जिसका प्रयोजन हो वहां अपने अपने शत्रुसे निर्व्यूढ हेमाभ्र या ताराभ्रका प्रयोग करना चाहिये॥ ३॥

अभ्रकगर्भद्रुतिप्रकार।

(वास्तवमें गर्भद्रुतिके निमित्त अभ्रकका साधन है)

खसत्त्व ताप्यसत्त्वं तु तुल्यं संचूर्ण्य भावयेत्। त्रिदिनं च पुटेत्पश्चाद्रससारोक्तविधानतः॥ ४॥ त्रिदिनं भावयित्वादौ ततः पुटनमाचरेत्। एवं सप्तपुटं दत्त्वा तत्सत्त्वं चरति क्षणात्॥ ५॥ (र. प.)

अर्थ–अभ्रकसत्त्व तथा सोनामाखीके सत्त्वको तुल्य लेकर चूर्ण करे फिर उसको रससारकी कहीहुई विधिसे तीन दिवसतक भावना देकर पुट देवे प्रति पुटमें तीन दिवसतक भावना देनी चाहिए। इसप्रकार सात पुट देवे तो उस सत्त्वको पारद शीघ्र ही खाजाताहै॥४॥ ५॥

अभ्रसत्त्वके गर्भद्रावी होनेके निमित्त ताम्र और माक्षिकका मेल करे।

कमलघनमाक्षिकाणां चूर्णं समभागयोजनमिति॥ तच्छुद्धाभ्रं शीघ्रं चरति रसेन्द्रो द्रवति गर्भे च॥ ६॥ (र. चिं., र. प.)

अर्थ–समभाग एकत्रित किये हुए ताम्र अभ्रक और सोनामाखी ये पारदमें शीघ्र ही मिल जाते हैं और वह पारद शुद्ध अभ्रकको शीघ्र खाजाता है और वह अभ्रक पारदके गर्भमें द्रव भी शीघ्र होताहै॥ ६॥

गगनगर्भद्रुति।

अथ गर्भद्रुतिकर्म चारणं गुणवर्द्धनम्॥ कथयामि यथा तस्य रसराजस्य सिद्धिदम्॥ ७॥ ताप्यसत्त्वाभ्रसत्त्वं च घोषाकृष्टं च ताम्रकम्॥ समभागानि सर्वाणि ध्मापयेत् खदिराग्निना॥ ८॥ भस्त्रिकाद्वितयेनैव यावदभ्रकशेषकम्॥ तदभ्रसत्त्वं सूतस्य चारणं समभागिकम्॥ ९॥ अनेनैव प्रकारेण त्रिगुणं जारितं रसे॥ गर्भद्रुतेर्जारणं हि कथितं भिषगुत्तमैः॥ १०॥ (ध. सं.)

अर्थ–गुणके बढानेवाले जिसमें गर्भद्रुतिका कर्म विद्यमान है और जो पारदकी सिद्धिका दाता है मैं उस चारणकर्मको कहता हूँ कि प्रथम स्वर्णमाक्षिक सत्त्व,अभ्रक सत्त्व और घोषा (पीतल) से निकला हुआ ताम्र इन सबको समभाग लेकर खैरकी लकडीमें दो भस्त्राओं (धोकनियों) से तबतक धोंके कि जबतक सब पदार्थ जलकर केवल अभ्रक सत्त्व मात्र ही शेष रहजाय। उस अभ्रकके सत्त्वके पारदका समभाग लेकर चरावे इस प्रकार तिगुना अभ्रक सत्त्व पारदमें जारित करे तो उसको उत्तम वैद्योंने गर्भद्रुतिका जारण कहा है॥ ७–१०॥

सम्मति–प्रथम अभ्रक सत्त्वको पारदसे चौसठवां हिस्सा लेकर खरलमें डाल नींबू और जम्भीरीके रससे मर्दन कर गोला बनावे उसको गोमूत्र तथा कटुतैलके यन्त्रमें स्वेदन करे इस प्रकार करनेसे अभ्र सत्त्व पारदके गर्भमें पारद रूप होजाता है इसीको गर्भद्रुति कहते हैं। और अभ्रकसत्त्व, माक्षिक सत्त्व और घोषाकृष्ट ताम्र इन तीनोंको एक घरिया में रखकर धोंकनेसे जो अभ्रसत्त्व शेष रहताहै वह उत्तम बीज होताहै। और उस बीजकी पारदमें उत्तम द्रुति होती है इसलिये ध. सं. में इसीको प्रधान माना है॥

निर्मुखजारणोपयोगीऔरभस्मोपयोगी महाद्रव।

नवसारयवक्षारस्फटिकादिभिरेष काचबकयंत्रैः॥बहुधा त्यजति स्वसत्त्वं तद्धि महाद्रावकं नाम॥ ११॥ तस्मिन्निमग्नममृतं बीजं घनसत्त्वमम्लयोगेन॥ ग्रसति रसेन्द्रो गर्भे द्रवति दुरापोयमुपदेशः॥ १२॥ उपरसरसलोहान् पत्थरभान्यपि तत्र तत्क्षणमृतानि॥पुटभावनसंयोगैर्व्याधिहराणीति सकलशास्त्रार्थः॥ १३॥ (रसमानस.)

अर्थ–नौसादर, जवाखार, फिटकिरी इनको पानीमें घोलकर सत्त्वको निकाले उसे महाद्राव (तेजाव) कहते हैं। उसमें स्थित ताम्रके बीजका अथवा अभ्रक सत्त्वको पारद अम्लयोगसे खाजाताहै। तथा वह बीज और अभ्रक सत्त्व गर्भमें द्रव होजाताहै यह उपदेश अत्यन्त गुप्तरूपसे लिखा है आगे भस्म लिखतेहैं कठिन कठिन उपरस, रस और धातु इनके पुट देनेसे ही भस्म होजाते हैं। और पुट भावनाओंसे व्याधिके नाश करनेवाले भी होते हैं यह समस्त शास्त्रोंका अर्थ है॥ ११–१३॥

सम्मति–इस गर्भद्रुतिके प्रकरणमें स्वर्ण, चांदी, ताम्र, नाग और वंग इनमेंसे किसी एक बीजकी गर्भद्रुति करना आवश्यक है। और स्वर्णके बीजकी गर्भद्रुति करना तो अत्यन्त आवश्यकीय है ऐसा सिद्धोंने कहा है॥

स्वर्णगर्भद्रुतिकी आवश्यकता और स्वर्णद्रुतिका समय।

अत्र गर्भद्रुतिकर्मणि स्वर्णद्रुतिजारणमावश्यकतया करणीयमिति वक्रोक्त्या प्रोच्यते–

अभ्रकचारणमादौ गर्भद्रुतिचारणं च हेम्नोंते॥ यो जानाति न वादी वृथैव सार्थक्षयं कुरुते॥ १४॥ (र. रा. प०)

अर्थ–इस गर्भद्रुति कर्ममें स्वर्णकी द्रुतिका जारण

१–निपुणको ठीक कर 'रूपेण' बनायाहै। पाठ. 'रिपुणा' भी मिला है–हस्तलि–स. टी. दोनोंमें और ऐसेही ठीक जानपडता है।

२ वास्तवमें द्रुतिके लिये अभ्रकबीजका साधन है।

अवश्य करना चाहिये इस बातको वक्रोक्तिसे कहतेहैं कि रसशास्त्रके नहीं जाननेवाला जो वैद्य प्रथम अभ्रकजारणको नहीं जानताहै और उसके पश्चात् स्वर्णकी गर्भद्रुतिके जारणको नहीं जानताहै वह अपने धनको निष्फलही खर्च करताहै इसलिये वैद्यको समझकर काम करना चाहिये॥१४॥

गर्भद्रावी होनेके लिये बीजोंके संस्कारकी क्रिया।

शिलया निहतं नागं ताप्यं वा सिंधुना हतम्। ताभ्यां तु मारितं बीजं सूतके द्रवति क्षणात्। शुद्धं सुवर्णं रूप्यं वा बीजमित्यभिधीयते ॥ १५ ॥ (र. चिं., नि. र.,र. रा. शं., बृ. यो.,र. रा. प.)

अर्थ-मैनसिलसे माराहुआ नाग तथा सुहागेसे भस्म कियाहुआ ताप्य (सोनामाखी) और उन दोनोंसे सिद्ध कियाहुआ जो बीज है वह पारदमें शीघ्र द्रव होताहै अर्थात् उसकी शीघ्र गर्भद्रुति होतीहै शुद्ध स्वर्ण तथा चांदीको बीज कहतेहैं ॥ १५ ॥

अन्यच्च ।

बीजानां संस्कारः कर्तव्यस्ताप्यसत्त्वसंयोगात्। तेन द्रवंति गर्भे रसराजस्याम्लवर्गयोगेन ॥ १६ ॥ (र. चिं., नि. र., र. रा. शं., बृ. यो.)

अर्थ-ताप्यसत्त्व (सोनामाखीका सत्त्व) के संयोगसे समस्त बीजोंका संस्कार करना उचित है क्योंकि, ऐसा करनेसे वे बीज अम्लवर्गके योगसे पारदके गर्भमें ही द्रव होतेहैं ॥ १६ ॥

द्रुतिके लिये स्वर्ण बीजका साधन।

अथ स्वर्णजारणयंत्रं विना द्रुतिकरणे प्रकारांतरमाह--

शुद्धं माक्षिकचूर्णं निर्व्यूढं यच्छत गुणं हेम्नि। तद्धेम चरति सूतो द्रवति च गर्भे रसस्य तुल्यांशम् ॥ १७ ॥ (ध. सं.)

अर्थ-स्वर्णजारणके यंत्रके विना जिसप्रकार गर्भद्रुति होतीहै उस प्रकारको कहतेहैं। जिस सुवर्णमें सौगुने शुद्ध सोनामाखीका चूर्ण मिलाया जाताहै उस सुवर्णको पारद समान भागसे चरताहै और वह गर्भमेंही द्रव होताहै॥१७॥

अन्यच्च ।

निर्व्यूढं गंधकाश्मशतगुणसंख्यं तथोत्तमे हेम्नि। सूते च भवति पिष्टिर्द्रवति हि गर्भे न विस्मयः कार्यः ॥१८ ॥ (ध. सं.)

अर्थ-उत्तम सुवर्णमें थोडा २ गंधक डालकर अग्निद्वारा मिलावे तो उस सुवर्णकी पारदके साथ उत्तम पिष्टी होतीहै और गर्भमेंही द्रुत होजाताहै इसमें सन्देह नहींहै ॥ १८ ॥

अन्यच्च ।

अथवा तालकसत्त्वं शिलाया वा तच्च हेम्नि निर्व्यूढम्। शतगुणमथमूषायां जरति रसो द्रवति गर्भे च ॥ १९ ॥ (धं. सं.)

अर्थ-अथवा हरतालका सत्त्व या मैनसिलका सत्त्व सोनेमें सौगुना अग्निद्वारा मिलावे फिर उसको पारदके साथ मिलाकर मूषामें जारण करे तो गर्भद्रुति होगी ॥ १९ ॥

अन्यच्च ।

अथवा शतनिर्व्यूढं रसकवरं शुद्धहेम्नि वरबीजम्। जरति रसेन्द्रे शीघ्रं द्रवति च गर्भे न संदेहः ॥ २० ॥ (ध. सं.)

अर्थ-अथवा सुवर्णमें सौबार जस्तको मिलावे तो वह उत्तम बीज होताहै और वह पारदसे शीघ्रही द्रव होजाताहै ॥ २० ॥

द्रुतिके लिये स्वर्णका महाबीजसाधन।

समगर्भद्रुतिकरणं हेम्नो वक्ष्याम्यहं परं योगम्। भ्रामकसस्यकचूर्णं शतनिर्व्यूढं महाबीजम् ॥ २१ ॥

अथास्य बीजवरस्य गर्भद्रुतिकरणप्रकारान्तरं श्लोकत्रयात्मककुलकेनाह--

अथवा गंधकधूमं तालकधूमं शिलाह्वरसकस्य ॥ दत्त्वाऽधोमुखमूषां दीर्घतमां खर्परस्याद्ध ॥ २२ ॥ ऊर्ध्वे लग्ना पिष्टी सुदृढा तु यथा तथा हि कर्तव्या ॥ दत्त्वा खर्परपृष्ठे दैत्येन्द्रं दाहयेत्तदनु ॥ २३ ॥ स्तोकं स्तोकं दत्त्वा कर्षाग्नौ धारयेन्मृदा लिप्ताम्॥ गर्भे द्रवति हि बीजं म्रियते च तथाधिके दाहे ॥ २४ ॥ (ध. सं.)

अथ-दस अंगुल लंबी और डेढ अंगुल चौडी मूषा बनवावे फिर सम भाग उत्तम बीजसहित पारदकी अम्लयोगसे पिष्टी बनावे और सोनामाखीकी मूषाके पेंदेमें उस पिष्टीको दृढ लगाना चाहिये तदनंतर मिट्टीके खिपडेमें गंधक, हरताल, मैनसिल, या खपरियाको थोडा थोडा डाले और उस खिपडेको जलतेहुए अंगारोंपर रखकर और उसके ऊपर उस मूषाको उलटा मुख कर खडी करदे इसप्रकार पांच तथा सातवार थोडा थोडा गंधक आदि डाले और प्रथम रक्खे हुये गंधकादिकोंको निकालदे इसके बाद मूषाके मुखपर खिपडेका टुकडा लगाकर और कपरौटीकर निर्धूम कंडोंकी आंचमें तपावे इसप्रकार करनेसे बीजकी गर्भद्रुति होतीहै और वह बीज जारित होताहै। यदि इस मूषामें अग्नि अधिक दीजावेगी तो बीज तथा पारद इन दोनोंकी भस्म होजायगी इसमें संदेह नहीं है ॥ २१--२४ ॥

द्रुतिके निमित्त स्वणपत्रोंको धूपित करना।

लवणं देवीस्वरससुतमहिपत्रं विचूर्णितं शिलया॥ तत्पुटात्रितयात्सुमृतं स्थापयेदय-

स्पात्रे ॥ २५ ॥ विहितार्द्धांगुलनिम्ना स्फुटविकटकटोरिका मुखाधारा ॥ तस्योपर्यपि देया कटोरिका द्व्यंगुलोत्सेधा ॥ २६ ॥ विहितच्छिद्रत्रितया शस्ता चतुरंगुलादूर्ध्वम् ॥ छिद्रेषु खलु शलाका योज्यान्यत्र हेमपात्राणि ॥ २७ ॥ संस्थाप्य विधूप्यंते यंत्राधस्तात्प्रदीपयेदग्निम् ॥ मधूपोपलेपमात्रात्संति कृष्णानि हेमपत्राणि ॥ २८ ॥ तान्यग्नितापितानि च पश्चाद्यंत्रे मृतानि धूमेन ॥ पाचितहेमविधानाच्चरति रसेन्द्रो द्रवति गर्भे च ॥ २९ ॥ (ध. सं-)

अर्थ-प्रथम एक उत्तम शिलापर सैंधानोंन रखकर फिर उसको ब्राह्मीके रससे भिगोकर खूब घोटे और उसी शिलापर उस नोंनको तथा अहिपत्र (नागफनी) को मिलाकर पीसे फिर उन दोनोंको लोहेके संपुटमें रखकर लघुपुट देवे। इसप्रकार तीन पुट देनेसे लवणकी उत्तम भस्म होतीहै उस भस्मको फिर ब्राह्मीके रससे भिगोकर ऐसी मूषा बनावे कि जो चार अंगुल ऊँची हो और जिसके नीचेके मुखपर आधआध अंगुलकी परिधि (हद) हो और उस परिधि सहित मुखको एक लोहेके पात्रपर रखकर फिर उसमें समभाग सिंग्रफसहित सोनामक्खीके चूरेको अथवा केवल गंधकको ही डालकर उसके मुखके ऊपर एक ऐसी मूषा बनाकर रक्खे जो कि, दो अंगुल उस मूषाके मुखके भीतर रक्खीहुई हो और दो अंगुल बाहर खडी हो और जिसके मुखपर तीन छिद्रहों और तीनोंही छिद्रोंमें तीन लोहेकी सलाइयां रक्खीहुई हों और उनपर तपायेहुए स्वर्णके कंटकवेधी पत्र रखकर ऊपरसे दूसरी मूषासे बंद कर देवे। तदनंतर लोहपात्रके नीचे तेज आंच लगावे तो अग्निके तापसे उठेहुए धुवेंसे स्वर्णके पत्र कालेरंगके होजायंगे। इसप्रकार वारवार इसी क्रियाको करतारहे जवतक कि स्वर्णके पत्र उत्तमतासे मृत न होजांय (अर्थात् पिसने योग्य न होजांय) फिर स्वर्णकी क्रियासे ग्रास देवे तो पारा उसको शीघ्र चरताहै और स्वर्ण भी पारदके गर्भमें शीघ्र द्रव होताहै ॥ २५-२९ ॥

तारवंगादिगर्भद्रुतिक्रिया।

एवं तारं नागं वंगं रसकं च सजलगंधकेन लिप्तं केवलगंधकचूर्णधूमेन सुपक्वं च कृत्वा पश्चाद्द्रुतिकर्मणि योजयेदिति-

अत्र स्वर्णमाक्षिकचूर्णो विशेषः पूर्वं रक्तवर्गे माक्षिकं त्रिदिनं भावयित्वा पश्चाद्दरदेन सह संयोज्य धूपो देयः ॥ (ध. सं.)

अर्थ-इसी प्रकार गंधकको पानीसे पीसकर चांदी, सीसा रांग और जसद आदिके पत्रोंपर लेप करे। फिर इनको केवल गंधकके धूएँसे पकाकर द्रुतिकर्मके लिये काममें लावे और यहांपर सोनामाखीके चूर्ण करनेमें इतनी विशेष बात है कि उस सोनामाखीके चूर्णको तीन दिवसतक रक्तवर्गमें भावना देवे। फिर सिंग्रफके साथ मिलाकर धूप देवे।

१-रसकं जसदमिति प्रसिद्धम्।

तारवंगादिगर्भद्रुतिक्रिया।

रक्तवर्गो यथा-

दाडिमं किंशुकं चैव बंधूकं च कुसुंभकम् ॥ समांजिष्ठो हरिद्राया लाक्षारससमन्वितः ॥ ॥ ३० ॥ रक्तचन्दनसंयुक्तो रक्तवर्ग उदाहृतः ॥ ३१ ॥

अर्थ-अव रक्तवर्गको कहतेहैं। कि अनार, टेसूके फूल, बन्धूक (गुलदुपहरियाका फूल) केसर, मंजीठ, हल्दी, लाखका रंग और लालचंदन इनको रक्तवर्ग कहतेहैं ॥ ३० ॥ ३१ ॥

सुमृतस्य स्वर्णस्य तारस्य नागादेश्च गर्भद्रुतिजारणं च घोषाकृष्टताम्रवत कर्तव्यमिति बोध्यम्। किं च समभागादिकदरदस्य गंधकस्य च भागः स्वर्णादिसम एव तन्मध्यत एव लेपो धूमश्च देयः ॥ (ध.सं.)

अर्थ-अच्छीप्रकार भस्म कियेहुए स्वर्ण चांदीकी तथा सीसे आदिकोंकी गर्भद्रुतिका जारण पीतलसे निकालेहुए ताम्रकी तरह होताहै ऐसा जानना। और स्वर्णआदिके समान ही धूप योग्य गंधकादिको ग्रहण करना चाहिये। और उसी गंधकमेंसे लेप और धूवां देना चाहिये।

नागबीजसाधन।

अथेदानीं यंत्रं विना नागद्रुतिप्रकारमुच्यते-

रसदरदाभ्रकताप्यं विमलमृतं शुल्वलोहपट्टिका ॥ स्नुह्यर्कदुग्धपिष्टं कंकुष्ठशिलायुतं नागम् ॥ ३२ ॥ (ध.सं.)

अर्थ-अव यंत्रके विना नाग (सीसे) की गर्भद्रुतिके प्रकारको कहतेहैं। कि पारा, हिंगुल, कृष्णाभ्रक, सोनामाखी, विमल (उपरसविशेष) और लोहा, तांबा इनको आकके दूधसे घोटकर गोला बनावे और इसीतरह कंकुष्ठ (हरितालके तुल्य पीत तथा हरिद्वर्णपाषाणभेद इसको कोई मुर्दासन भी कहतेहैं) और मैनसिलको भी अर्कदुग्धमें घोटकर गोला बनावे। इन आठोंको पृथक् २ लघुपुटमें सिद्ध करे फिर इन आठोंका भाग नागके समान लेना चाहिये। उस नागकी घोषाकृष्ट तांबेके समान द्रुति होतीहै ॥ ३२ ॥

वंगबीजसाधन।

अभ्रकतालकशंखरससहितं यत्पुनःपुनः पुटितम्। बिंबाक्षारविमिश्रं वंगं निर्जीवतां याति ॥ ३३ ॥ (धं.सं.)

अर्थ-वंगको इमलीके क्षारमें पीसकर उसके ऊपर नीचे अभ्रक, हरिताल, शंख और पारेको रखकर संपुटमें रखकर तवतक लघुपुट लगावे कि जवतक वह वंग निर्जीव न होजाय। फिर उस वंगका घोषाकृष्ट ताम्रकी तरह ग्रास देवे तो उसकी गर्भद्रुति होतीहै ॥ ३३ ॥

नाग और वंगकी गर्भद्रुति।

अथ संताननागस्य वंगस्य च द्रुतिप्रसंगात्

नागवंगयोः समयोरेकीकृत्य एतदुक्तचिंचाक्षारान्वितस्य मिलितनागवंगयुग्मस्याध ऊर्ध्वं चाभ्रकतालशंखपारदैतच्चतुष्टयं दत्त्वा भक्षणार्थमत्यद्भुतगुणकारणमिलितं नागं वंगं च मारयेत् । युग्मस्य गर्भद्रुतिर्न भवति तथा च वंगं नागं पृथक्पृथगेव वृत्त्यर्थं मारयेदिति द्योतयन्नाह-

युग्मं विधानपुटितं म्रियते निरुत्थतां गतो नागः ॥ वंगं च सर्वकर्मसु नियुज्यते तदपि गतजीवम् ॥ ३४ ॥ (ध.सं.)

अर्थ-प्रथम समभाग सीसा तथा रांगको गलाकर इमलीके क्षारके साथ घोट र मिलावे । फिर उसके ऊपर नीचे अभ्रक, शंख, पारा, हरि लको रखकर और उसका संपुट बनाकर लघुपुटमें फूंकदेवे । इस रीतिसे जबतक मिलेहुए सीसे और रांगकी निरुत्थ भस्म नहीं हो तबतक पुट लगाताही जाय तो यह मिलित (जोडे) की भस्म अद्भुत चमत्कारके करनेवाली होतीहै इसमें कोई संदेह नहींहै । आर जो द्रुतिके लिए सीसे और रांगकी भस्म मिलावे तो भिन्न २ पदार्थोंकी बनावे न कि मिलेहुए नागवंगकी क्योंकि मिलेहुए पदार्थोंकी द्रुति नहीं होतीहै । इसी बातको स्पष्ट करनेके लिये इस ध. सं.-बनानेवाला कहताहै कि जिसको विधिपूर्वक पुट लगाई जातीहै उस युग्म (सीसे और रांगका जोड़ा) की निरुत्थ भस्म होजातीहै और उसको सम्पूर्ण कामोंमें लाना चाहिये ॥ ३४ ॥

स्वर्णगर्भद्रुतिक्रिया बिडयोगसे ।

अथ पारदस्य स्वर्णादिधातोश्च तुल्यभागश्च बिडयोगेन करीषाग्नितप्तलोहखल्वे जंबीरनीरेण पिष्टीं कृत्वा पुनर्बिडेन तां पिष्टीं परितो लिप्य दीर्घमूषायंत्रेण त्रिवारतापनेन स्वर्णादीनां रत्नानां च केचिद्गर्भद्रुतिं कुर्वंति अतस्तत्प्रकारमाह-

गंधको हरितालश्च कृष्णांजनशिलाजतु । हिंगुलं रसकं चैव वैक्रान्तं स्वर्णमाक्षिकम् ॥ ३५ ॥ लवणत्रयं क्षारयुग्मं जंबीरीरसगैरिके । सर्वे समानभागाः स्युर्माक्षिकं च द्विभागकम् ॥ ३६ ॥ एषां श्लक्ष्णं कृतं चूर्णं बिड इत्युच्यते बुधैः । गर्भद्रुतौ च बीजानां द्रावणे जारणे मतः ॥ ३७ ॥ (ध. सं.)

अर्थ-तप्तखल्वयंत्रमें पारदके समान स्वर्णादिधातुओंको डालकर जंबीरीके रससे घोट पिष्टी बनावे और उस पिष्टीको चारों तरफसे बिडसे लपेटकर एक लम्बी मूषामें रखकर तीन वार तपावे फिर उस सुवर्णआदि धातु तथा रत्नोंकी गर्भद्रुति करतेहैं ऐसा कुछ आदमियोंका कथन है । उस क्रियाको विधिपूर्वक कहतेहैं । प्रथम बिडके प्रकारको कहतेहैं । कि गंधक, हरताल, काला सुर्मा, शिलाजीत, सिंगरफ, वैक्रान्त (लालरंगका हीरा), वैक्रान्तके अभावमें वज्रसूमिका चूर्ण, सोनामाखी, सैंधानोंन, साम्हर, सोंचरनोन, जवाखार, सज्जीखार, आकका दूध, जंभीरीका रस, और गेहूं इनको महीन पीसकर चूर्ण बनावे तो उसको बिड कहतेहैं । इस बिडकी दवाओंमें सब दवा बराबर लेना चाहिये, परन्तु सोनामाखीके दो भाग लेना उचित है यह बिडबीजोंकी गर्भद्रुति तथा जारणमें हित है ॥ ३५-३७ ॥

सम्मति-पूर्वोक्तरीतिसे बिडको बनाकर एक काचके वासनमें रखले फिर जिस बीजका जारण करना हो उसको रक्तवर्गमें बुझाव देकर उसको पारदके समान ग्रहण करे । तदनंतर तप्तखल्वमें डालकर जंभीरीके रससे बीज पारद तथा बिडको घोटकर पिष्टी बनावे और उस पिष्टीपर बिडको लपेटकर एक अंधमूषामें रक्खे और उसके मुखको बंदकर कपरौटी करे । फिर उसको करसी (कंडोंके छोटे टुकड़े) की आंचमें तपावे इस प्रकार तीनबार करनेपर सुवर्णआदि धातु तथा हीरा वगैरः रत्न गर्भमेंही द्रुत और जारित भी होतेहैं ।

हीरेकी गर्भद्रुति करनेके लिये कुछ विशेष बातका ध्यान रखना चाहिए-कि हीरेको रक्तवर्गमें सौ बार भावना देवे तो वह हीरा समभाग पारदके गर्भमें द्रव तथा जारित होताहै । यदि पिछत्तरबार भावित किया गया हो तो पौन भागसे, पचासबार भावित हो तो आधेभागसे और पचीस बार भावित हो तो चतुर्थ भागसे द्रुत तथा जारित होताहै । परन्तु सोनामाखीके सत्त्वका सुवर्णके साथ चौथाई आधा या समभाग किसीका जारण करनेसे पारदकी ताराकृष्ट संज्ञा होतीहै उस ताराकृष्टको यदि चांदीके पत्रोंपर लगाकर अग्निमें तपावे तो पूर्ण वर्णका सुवर्ण होताहै यह रहस्य छिपाने योग्य है ।

गर्भद्रुतिपरीक्षा ।

रससमतां यदि जातो वस्त्राद्गलितोऽधिकश्च तुलनायाम् । ग्रासो द्रुतः स गर्भे दत्त्वाऽसौ जीर्यते क्षिप्रम् ॥ ३८ ॥ (ध.सं.)

अर्थ-ग्रास दियाहुआ पदार्थ जब पारदके समान रूपवाला होजाय तब चौलर कपडेमें छान लेवे फिर उस छनेहुए पारेको तराजूमें रखकर तोले । यदि पूर्व लियेहुए पारेसे उस छनेहुए पारेका वजन अधिक हो तो ऐसा समझना चाहिये कि गर्भद्रुति होगईहै । फिर उसको तप्तखल्वमें अम्लवर्गद्वारा घोटे तो उसका शीघ्र जारण होताहै ॥ ३८ ॥

द्रुत ग्रासकी निशोपकरणक्रिया जारण ।

इति गदितां गर्भद्रुतिमभिषवयोगेन चाम्लवर्गेण । स्वेदनविधिना ज्ञात्वा मृदितां तप्ते तु खल्वतले ॥ ३९ ॥ (ध. सं.)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां गर्भद्रुतिप्रकरणं नाम षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

अर्थ—इस प्रकार अम्लवर्ग या सिरकेके साथ जो गर्भद्रुतिका प्रकार लिखा है उसको स्वेदनविधिसे जानकर फिर तप्तखल्वमें घोटे तो बीजका जारण होताहै ॥ ३९ ॥

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मज-व्यास-ज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहितायां भाषाटीकायां गर्भद्रुतिप्रकरणं नाम षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

बाह्यद्रुतिसंस्काराध्यायः १७.

बाह्यद्रुतिलक्षण।

बहिरेव द्रुतीकृत्य घनसत्त्वादिकं खलु ॥ जारणाय रसेन्द्रस्य सा बाह्यद्रुतिरुच्यते ॥ ॥ १ ॥ (र.र.स.)

अर्थ—इस प्रकार अभ्रक जारणके लिये कठिन पदार्थ और अभ्रक सत्त्वादिकी बाहिरकी ही द्रुति करे बस इसीको बाह्यद्रुति कहतेहैं ॥ १ ॥

बाह्यद्रुतिफल।

बाह्यद्रुतयो वक्ष्यन्ते। एतास्तु केवलमारोटमेव मिलितानि बध्नंति फलमस्य कल्पप्रमितमायुः। किं पूर्वोक्तग्रासक्रमजारिताः पूर्वोक्तफलप्रदा भवन्ति ॥ २ ॥ (र. चिं., र. रा. शं., बृ. यो.)

अर्थ—अब बाह्यद्रुतियोंको कहते हैं। आरोटसे मिलीहुई ये द्रुतियां पारदको बद्ध करती हैं और एक कल्पपर्यंत जीवित रहना इस बद्धपारदके भक्षणका फल है और यदि पूर्वोक्त ग्रास जारित पारदको द्रुतिसे बद्ध कियाजावे तो उत्तम फल होताहै ॥ २ ॥

द्रुतिकी दुःसाध्यता।

द्रुतयोऽपि न सिध्यन्ति शास्त्रे दृष्टा अपि ध्रुवम्। विना शंभोः प्रसादेन न सिध्यन्ति कदाचन ॥ ३ ॥ (र. रा. शं.)

अर्थ—शास्त्रमें देखीहुइ भी द्रुतियें श्रीमहादेवजीकी कृपाके विना सिद्ध नहीं होतीहैं ॥ ३ ॥

अन्यच्च।

यद्यपि बाह्यद्रुतिः रसनिबंधेषु प्रोक्ता तथाऽपि पार्वतीश्वरः कृपां विना कलौ न सिध्यति अत एव रसकर्मविशारदैः सम्यक्तया न कथिता यन्मया श्रीगौरीशंकरकृपया रससिद्धानां प्रसादतः श्रीगुरूणामनुकंपया च किंचित् विज्ञातं बाह्यद्रुतिकर्म तदिह प्रोच्यते तदपि तेषां कृपां विना न निर्विघ्नं समाप्तिं गच्छति ॥ ४ ॥ (ध. सं.

अर्थ—यद्यपि अनेक रसग्रंथोंमें बाह्यद्रुतिका वर्णन किया गयाहै तथापि कलियुगमें श्रीमहादेवजीकी कृपाके विना वह द्रुति सिद्ध नहीं होतीहै इसलिये चतुर रसवादियोंने उन द्रुतियोंका वर्णन नहीं किया और मैंने श्रीमहादेवजी रससिद्ध तथा श्रीगुरुदेवजी इनकी कृपासे जो कुछ बाह्यद्रुतिका कर्म जानाहै उसको मैं यहांपर कहताहूं वह काम भी उन गुरुदेवोंकी कृपाके विना समाप्त नहीं होगा ॥ ४ ॥

अभ्रकबाह्यद्रुतिक्रिया।

अर्थात अभ्रकसत्त्वस्य वारंवारं सत्त्वनिष्कासनं द्रुतिः चतुःसेटकमितं श्वेताभ्रकं चूर्णितं कृत्वा मूलिकारसेनाष्टयामं भावयित्वा पुनः सतुषं कृत्वोर्णवस्त्रे बद्धा सजलपात्रे त्रिदिनं निमग्नं कृत्वा धान्याभ्रं कुर्यात ततो धान्याभ्रकतुल्यं साबणनाम्ना प्रसिद्धं वस्त्रप्रक्षालनकं तत्र मेलयित्वा मर्दयेत् ततस्तदभ्रकं लोहपात्रे क्षिप्त्वा व्रणदातेजाब इतिनाम्ना प्रसिद्धं द्रवरूपं चतुःसेटकमितं तत्र दत्त्वा मंदाग्निना पाचयेत् पादावशिष्टे द्रवे सति अग्नेस्तदुत्तार्य प्रत्येकं षट्त्रिंशटंकमितं गुडं घृतं क्षुद्रमीनं च शर्करा नवटंका मधु सप्तदशटंकमितं गुग्गुलु अष्टादशटंकमितं विशुष्कपलमष्टादशटंकमितं तथा एतत्सप्तकं कुट्टयित्वा तदाभ्रके क्षिपेत् ततः पाषाणकुंडे घोटयित्वा पिंडत्रयं कृत्वा संशोष्य अग्निधान्या पिंडत्रयं कोकिलमध्यस्थं कृत्वा भस्त्रया सह ध्मापनेनाभ्रकसत्त्वं फटिकातुल्याभं निःसरति ततः पुनस्तत्पूर्वोक्तगुडादिसप्तकं कुट्टयित्वा पूर्वं निर्गताभ्रकसत्त्वेन सह घोटयित्वा पुनः पिंडत्रयं कृत्वा संशोष्य पूर्ववत् ध्मापनेन पुनरभ्रकसत्त्वं रंगाभं निःसरति ततः पुनस्तत्पूर्वोक्तगुडादिसप्तकं कुट्टयित्वा वंगाभाभ्रकसत्त्वेन सह घोटयित्वा पिंडत्रयं कृत्वा संशोष्य पूर्ववत् ध्मापनेन दधिनिभमभ्रकसत्त्वं सदार्द्रमेव तिष्ठति इयमभ्रकबाह्यद्रुतिः सूतं विना या द्रुतिः कथ्यते एषाऽति धन्या न वाच्या कस्यचित ॥ ५ ॥ (ध.सं.)

अर्थ—चार सेर सफेद अभ्रकका चूरा करके आठ प्रहर मूलीके रसमें भिगोय और उसमें धानके तुष मिलाकर फिर कमलके टुकडेमें बांध कर जल भरीहुई नादमें तीन दिवसतक डूबा रक्खे। फिर बाहर निकाले तदनन्तर कमलके टुकडोंमें भरे हुए अभ्रकको उस पानीमें मले तो वह अभ्रक चूर्ण चूर्ण होकर जलमें आजावेगा, तब पानीको नितारकर नीचे जमे हुए अभ्रकको निकाल लेवे। इसको धान्याभ्रक कहते हैं। तब धान्याभ्रकके तुल्य कपडे धोनेका साबुन लेकर दोनोंको मिलादेवे फिर उसको लोहेके पात्र

में रखकर ऊपरसे चार सेर तेजाब डालकर मंदाग्निसे पंचावे इसके बाद अग्निसे उतार लेवे। फिर छत्तीस टंक गुड, छत्तीस टंक घी, छत्तीस टंक छोटी मछली, नौ टंक शक्कर, सत्रह टंक शहद, अठारह टंक गूगल, अठारह टंक सूखा हुआ मांस, इन सातोंको कूटकर अभ्रकमें मिलादेवे फिर पत्थरकी कुण्डीमें घोटकर तीन पिंडा बना सुखाकर कोयलोंसे भरी अगीठीमें रखकर धौंकनीसे धोंके तो फिटकिरीके समान अभ्रकका सत्त्व निकलता है तदनन्तर पूर्वोक्त गुडादि सात पदार्थोंको घोट कर फिर उसको पहले निकले हुए अभ्रक सत्त्वके साथ घोटकर तीन पिंड बनाकर और सुखाकर पहलेके समान अग्निमें धोंके तौ अभ्रक सत्त्व रांगके समान निकलता है। फिर उसी अभ्रकसत्त्वमें कुटे हुए गुड आदि सात पदार्थोंको मिलाकर तीन गोले बनावे और उनको सुखाकर पहलेके समान कोयलोंकी अँगीठीमें धोंके तो दहीके समान अभ्रक सत्त्व निकलता है और यह हमेशा गीलाही रहता है इसको अभ्रककी बाह्यद्रुति कहते हैं। जो पारदके विना अभ्रककी द्रुति कीजाती है वह धन्य और गुप्त रखनी चाहिये ॥ ५ ॥

विचार--एक दिन मूलीके रसमें सफेद अभ्रकको भिजोकर कंबलकी थैलीमें भरे यदि अभ्रक सेरभर होतो उसमें पावभर धानकी भूसी मिलाकर तीन दिन रात परातमें भिगोवे चौथे दिन उसी परातमें उस थैलीको मले। ऐसा करनेसे अभ्रकके छोटे छोटे टुकडे होकर पानीमें आवें तब नितार पानीको निकाल डाले पानीके भीतर जो धान्याभ्रक है उसको ले और उसकी बराबर साबुन मिलाकर एक खरलमें घोटे पश्चात् कढाईमें डाल साबुनका तेजाब २ सेर डाले तीनोंको मंदाग्निसे जलावे जब आधसेर तेजाब बाकी रहे तब उतार ले और फिर इसमें ३६ टंक शहद १७ टंक छोटी मछली, ३६ टंक खर्गोशका मांस, ९ टंक खांड, ३६ टंक गुड, १८ टंक गूगल, १८ टंक अंडीका चोवा इन सबको कूट पीसकर मिलावे और तीन गोले बना सुखावे पश्चात् तीनोंको अँगीठीमें रख नीचे ऊपर कोयलादे वंकनाल धोंकनीसे धोंके। अभ्रकका सत्त्व ज्वारकी सदृश निकाल उसमें पूर्वोक्त मसाला डाल एक खर्गोश मारकर डाले फिर सबको घोटकर गोला बनावे फिर पूर्वोक्त रीतिसे दूसरी बार रांगके समान निकले अभ्रक सत्त्व निकाल ले। इसी प्रकार तीसरा मसाला डालकर वंकनालसे धोंक दहीसा द्रवीभूत सत्त्व निकाल लेवे। तीसरी वारका निकाला हुआ सत्त्व सर्वदा पतला रहताहै जमता नहीं है इसको बाह्यद्रुति कहते हैं। यह पारेके सम्बन्ध विना द्रवीभूत है ॥ ऐसी संमति है।

अभ्रबाह्यद्रुतिकी क्रिया तथा बद्धत्व।

(अभ्रकसत्त्वको वज्रवल्लीके योगसे मूषामें धोंकनेसे द्रुति-)

बाह्यद्रुतिविधानं च कथ्यते गुरुमार्गतः। अभ्रसत्त्वं हि मूषायां वज्रवल्लीरसेन हि ॥६॥ सौवर्चलेन सध्मातं रसरूपं प्रजायते। अभ्रद्रुतेश्च सूतस्य समांशैर्मेलने कृते ॥ ७ ॥ तेन बद्धत्वमायाति बाह्यद्रुतिरियं मता। गुरोः प्रसादात्सततं महाभैरववंदनात् ॥ शिवयोरर्चनादेव सिध्यति बाह्यगा द्रुतिः ॥ ८ ॥ (ध. सं.)

अर्थ--अब बाह्यद्रुतिके विधानको गुरुजीके बताये हुये मार्गसे कहताहूं-अभ्रसत्त्वमें सांचरनोन डालकर हडसंकरीके रससे घोट मूषामें डालकर धोंके तौ अभ्रकके सत्त्वको द्रुति होगी उस द्रुतिके तुल्य पारदको लेकर घोटे तो पारद बद्ध होताहै, इसको बाह्यद्रुति कहते हैं, यह बाह्यद्रुति गुरुसेवा महाभैरवकी पूजा तथा श्रीमहादेव और पार्वतीजीकी कृपासे सिद्ध होतीहै ६-॥ ८ ॥

अभ्रकद्रुति।

स्वरसेन वज्रवल्ल्याः पिष्टं सौवर्चलान्वितं गगनम् ॥ पक्वं शरावसम्पुटे बहुवारं भवति रसरूपम् ॥ ९ ॥ (र.रा.सुं.)

अर्थ--अभ्रकमें सांचरनोंन डालकर वज्रवल्ली (हडसंघारी) के रससें भावना देवे फिर शरावसंपुटमें रखकर गजपुटमें फूंके इसप्रकार कई बार पुट देनेसे अभ्रककी द्रुति होजायगी ॥ ९ ॥

अभ्रकसत्त्वकी चूर्णपरिवापसे द्रुति।

निजरसपरिभावनेन कंचुकिकंदोत्थचूर्णपरिवापात्। द्रुतिमास्तेऽभ्रकसत्त्वं तथैव सर्वाणि लोहानि ॥ १० ॥ (र.रा.सुं.)

अर्थ--क्षीरकंचुकीके कंदको अपने रसकी भावना देकर चूर्ण करलेवे फिर अभ्रकसत्त्वको तपाकर उस चूर्णका बुरका (प्रक्षेप) देवे तो अभ्रकसत्त्वकी द्रुति होतीहै ॥ १० ॥

अभ्रसत्त्वको कांजीके सौ पुट देने और हर बार घरियामें औटानेसे द्रुति।

चौ०-खाटी कांजी तंदुलनीर।अभ्रकका सतु खरै वीर ॥ एक याम जो अतिमरदेय। पुनि घरियामें दे औटेय ॥ ऐसी सौ पुट देय बनाय। तबही सत्तदुरत हैजाय॥(रससागर.)

अभ्रक महलूल करनेकी तरकीब।

नौआदीगर-अभ्रकको किसी जर्फ(पात्र)में रखकर कांजीमें तीन रोजतक तर करे।महलूल होकर पानीकी तरह होजायगी[1] कांजी बनानेकी तरकीब यह है कि चावलको सिरकः तुर्शमें या दहीके पानीमें खूब पकावे जिसमें गलकर उनका पेट फटजाय बाद उसको घोटकर छानले और शीशेमें चालीस दिनतक धूपमें रहनेदे निहायतः उमदा सिरकः कीमियाई होजायगा। (सुफहा अकलीमियां १०१.)

१-पाठान्तर-घी ३६ टंक, मधु १७ टंक, खांड ९ टंक, गुड ३६ टंक, गूगल १८ टंक, भेडकारोम १८ टंक, छोटी मछली सूखी ३६ टंक, एक खरहा जिवह किया हुआ।

१-नोट यह द्रुति नहींहै पानी है-(मे. स.)।

श्वेत धान्याभ्रको भावना दे तीन बार अंधमूषामें धोंकनेसे द्रुति।

श्वेताभ्रकं च संचूर्ण्य गोमूत्रेण तु भावयेत्॥ कदलीफलसंयुक्तं भावयेत्तद्विचक्षणः॥ ११॥ धमेदंधाख्यमूषायां त्रिवारं च पुनःपुनः॥ द्रुतिर्भवति वज्रस्य नात्र कार्या विचारणा॥ अनेनैव प्रकारेण द्रुतिं कुर्यात्सुशोभनाम् ॥ ॥ १२ ॥ (र.रा.सुं.)

अर्थ–सफेद अभ्रकका चूर्ण कर गोमूत्रकी भावना देवे और उसको पंडित; केलेके कंदके रससे भावना देवे तदनंतर अंधमूषामें रख दो तीन बार खूब धोंके तो अभ्रककी द्रुति होजायगी इसमें विचार करना उचित नहीं है ॥११॥१२॥

अभ्रद्रुति धान्याभ्रकको भावितकर अंधमूषामें धोंकनेसे द्रुति।

अभ्रकं नरतैलेन भावितं च सुचूर्णितम् ॥ गोपेन्द्रलेपिता मूषा धमनाद्द्रुतिमाप्नुयात्॥ ॥ १३ ॥ (र. रा. सुं.)

अर्थ–धान्याभ्रकको नरमूत्र (शोरा) से भावना देकर चूर्ण करे। फिर वीरबहूटियोंको पीसकर लेप कीहुई मूषामें रखकर अग्निमें धोंके तो अभ्रककी द्रुति होतीहै ॥ १३ ॥

अभ्रकद्रुति-अंधमूषामें।

कर्कोडीफलचूर्णं तु मित्रपंचकसंयुतम् ॥ तत्तुल्यं चैव धान्याभ्रमम्लैर्मर्द्य दिनावधि॥ ॥ १४ ॥ अंधमूषागतं ध्मातं तद्द्रुतिर्भवति ध्रुवम् ॥ १५ ॥ (र. रा. सुं.)

अर्थ–बांझककोडेके फलका चूर्ण और शहद, घी, गूगल, सुहागा इनके तुल्य धान्याभ्रकको मिलाकर तीन दिनतक पीसे फिर उसको अंधमूषामें रखकर कोयलोंमें धोंके तो अभ्रककी पारदके समान तरलद्रुति होतीहै ॥ १४॥१५॥

धान्याभ्रको अंधमूषामें धोंकनेसे द्रुति।

श्याम बार मानसके लेय। तिलीतिलसों बाँटि देय ॥ अब्यों भैंसिको गोबर आनि। ताको रस ले वस्तरछानि ॥ गोबररस धनाव पुनि तेल। सानि एक घरियामें मेलि॥ अंधमूसिमें धवैं सुजान। एक दुरत सिद्ध विधिजान॥ (रस-सागर)

और।

लेहु सिलाजित करमा अस्त। मेष सिंग कारि दूजी वस्त ॥ ये औषधि धनावकारि एक। अंधमूसिमें यहै विवेक॥ निकसे दुरति जु संशय नहीं। रसरतनाकरते यह कहीं ॥ (रसरत्नाकर.)

औरभी।

गीदरतें दूजे रिसुकाय। बक्कल गुठली दूब बटाय ॥ मत भीजे सुरही को लाय। बहुरि सुकैके पुनि बटवाय ॥ सौ पुट देय सुखै सौ बार। तब यह औषधि जानै सार ॥ समाधान औषधिको एक। औंधि मूसिमें यहै विवेक॥ कै ढिढ मूसि धवत जो रहै। निकसै दुरत पंच कवि कहै ॥ (रस.सागर)

दुरत अभ्रक स्याह बजारियः इन्द्रायन व रोगन पलास (उर्दू)

ताजा इन्द्रायन (तमह) बहुतसे लेकर उसको रेजः रेजः करलें और एक देगमें डालकर थोडीसी आंच देकर निकाल लें और इन्हें कूटकर पानी निकाललें। इस पानीमें चार प्रहरतक अभ्रकस्याह धनावको पकावें और निकालकर खुश्क कर लें फिर एक लकडी दरख्त पलास (ढाक) की जो लंबाईमें एक हाथके बराबर हो लें और इसमें सूराख करके अबरक मजकूरको इसमें डालदें। अजजाय मुस्तखरजःसे खूब मजबूतीसे बंद करें और एक गढेमें उपलों, लकडी ढाक और कोयलोंमें बंद आंच दें। सर्द होनेपर अभ्रकको उसमेंसे निकालें और चार प्रहरतक रोगन तुखम पलासमें खरल करके दो शकोरों (कूजः गिली) में बंद और मजबूत गिलेहिकमत करके सख्त आंच दें पारा उसमेंसे निकल आवेगा। तौजीह– इसतरह पारा निकालनेके लिये कम अजकम आध पाव अभ्रकपर अमल करना चाहिये क्योंकि इस अभ्रकसे खुसूसन इस तरकीबसे पारा बहुत कम निकलताहै। इन्द्रायन (तमः) से पानी बहुत कम निकलताहै और बाजवक्त निकलताही नहीं इसवास्ते इस तरकीबका जिकर कियागयाहै जिसके जरिये पानी न देनेवाली बूटियोंसे पानी निकालाजाताहै तमों (इन्द्रायन) को इसतरह आंच देनेसे इसके माई अजजाय किसी कदर असली सूरत अख्तियार करलेतेहैं। पस बहुत ज्यादह आंच नहीं देनी चाहिये कि वह माई अजजाय अवखरातकी सूरतमें इससे निकलही जावे और फिर इनसे बिलकुल पानी निकले ही नहीं बल्कि इस कदर आंच काफीहै जिससे इसके माई अजजाइ अपनी असली सूरतपर आसकें और जिसवक्त इनसे अबखरात निकलने शुरू होवें उस वक्त उन्हें उतार लेना चाहिये और कूटकर इनसे पानी हासिल करना चाहिये। ढाककी लकडीमें सूराख करके इसमें अभ्रकके भरनेका जिकर है मगर इस अमरको जाहर नहीं कियागया कि किस सिमतसे और कितना गहरा सूराख निकालना चाहिये। पस आम कायदेको मद नजररखे हुए इसमें सूराख लंबाईकी तरफसे निकालना चाहिये और निस्फसे इस कदर ज्यादः गहरा हो कि अगर इसमें निस्फ अबरक अगर भराजावे तो निस्फकी बराबर होजावे पस जब अभ्रक इसमें भरचुकें और जो बूरा वगैरः इस सूराखके निकालते वक्त इससे निकलाहै वही इस बाकी मांदा सूराखके खलामें भर देना चाहिये और अजजाइ मुस्तखरजःसे यही बूरा मुराद है और बहुतरजोंसे इसे भरना चाहिये। बल्कि मुनासिब है कि इसे कूट कूटकर भरें। आग देनेके बाद

लकडी कोयलेकी सूरतमें होगी जो राख होनेके करीब हो पस इसमेंसे अहतियातसे अभ्रक निकाल लेना चाहिये जो सुर्ख रंग लियेहुए होगा। आगका अंदाजः कोई लिखा नहीं गया सिर्फ एक गढेमें आग देना लिखाहै चूंकि हिन्दुओंका आम कायदः है कि अगर किसी जगह इस किस्मकी आग हो देनी और उसका वजन न लिखा हो तो समझना चाहिये कि वह गजपुटकी आग है और गजपुटकी आग आम तअवीरके लिहाजसे इस गढेकी आगको कहतेहैं। जो एक हाथ लंबा चौडा और गहरा हो इसवास्ते इस जगह गजपुटकी आगही देनी चाहिये चुनांचः इस अमरकी तो जीह महलूल अलइस्ममें भी करदीगई है और इसीके मुताबिक कामयाबशुदः अस्हाबनेभी आग दीहै रोगनतुख्मपलासके बीजोंको जो कोबकर पातालजंत्र (शीशीमअकूस) के जरिये रोगन निकाललेना चाहिये और उसमें उस अभ्रकको खरल करके दो मिट्टीके हमवार लवकूजोंमें बंद करके और बहुत मजबूत गिलेहिकमत करके आंच देना चाहिये असलवियाज (काफी) सिर्फ सख्त आंचका जिकर है मगर इसकी तौजीह नहीं कि किसतरहकी आंच। आंच गढेकी ही होनी चाहिये और खूब तेज हो और कम अजकम छः पहर आंच दी जावे इसतरह कि अगर पहली आंच खतम होजावे तौ और ईंधन डाल दें आंच सिर्फ उपलोंकी मुनासिब नहीं उपलों लकडी और कोयलों खिल्तमिल्तशुदःसे देनी चाहिये पारा अतराफकूंजःमें या कूजःके निचले हिस्सेमें चमटा होगा सियाल नहीं होगा। बहुत ज्यादा गाढा होगा। सफेद स्याही मायल रंग होगा अहतियातसे रखलें। इस अमलमें सिर्फ दो बूटियोंसे काम लियागयाहै, एक इन्द्रायन (तमःहै) इसके पानीमें खरल करने और ढाककी लकडीमें बंद करके आग देनेसे मतलब यह है कि ऐसे दर्जःतक पहुंचाया जावे और उसकी असल कसाफतको दूर करके रूहको लताफत बखशी जावे। यह अमर हासिल करनेके बाद रोगन तुख्मपलाससे खरल कियागयाहै। कि पारा दूसरे अजजाइ अबरकसे अलहदा होनेके काबिल होजावे। इसलिये इस वक्त खरल करनेमें जिसकदर मुबालग कियाजावे उसी कदर कम है। अगर्चः साहबेनुसखेने चार पहरका खरल काफी लिखाहै, मगर जरूरत इस अमरकी है कि कम अजकम आठ पहर खरल कियाजावे ताकि आंच अगर कम भी दीजावे तो पारा अलहदा होजावे और दूसरा ज्यादः मिकदारमें निकले। पस, जिस कदर खरल इस रोगनमें ज्यादः होगा उसीकदर इस पारेके निकलनेमें आसानी होगी और जियादः भी निकलेगा। खरल बहरहाल मुतवातिर होना चाहिये। यह काफी नहीं कि दवा खरलमें डाले रक्खे। ख्वाह खरल कम हो जरूरत मुतवातिर खरल की है और जिसकदर जियादः हो उतनाही कम है कुछ इस खरलके फेलसे कुछ इस तेलके, इसमें नाफिज और इससे यकजान होनेकी वजहसे और खरलकी हरारतसे अभ्रकमें पारेके मुतफर्रिक अजजाइ किसीकदर मुजतमः होजाते हैं और पारा आगपर अबरकके दीगर अजजाइसे अलहदा होजाता है। अलावह इसके इसमें खरल करनेसे यह भी मनशा है कि पारा पूरीतरह कायमुल्नार होजावे। और अगर कुछ इसमें खामी बाकी है तो वह जाती रहे क्योंकि रोगन तुख्मपलास व जातखुद आम पारेको कायमुल्नार करनेकी खासियत रखता है और इस गरजके वास्ते मुसल्लिमः बूटी है। पस, मेरे दोस्त! अगर कुछ काम करना चाहतेहैं तो फौरन इसके दरपै होजावे यकीनी अमल है और तजरुबः शुदः है। इस पारेको आगे काममें लानेकी तरकीब बिलकुल आसान है और यकीन है कि जो असहाब इस पारेको निकाल लेंगे वह बहुत जल्द मंजिल मकसूदतक पहुंच जावेंगे। अगली तरकीब फिर कभी अर्ज होगी जो असल किताबमें मौजूद है (एडीटर)

(सुफहा ६५५, अखबार अलकीमियाँ लाहौर. २४।२।१९०९)

अभ्रकके महलूल करनेकी तरकीब (उर्दू) धोंकनेसे द्रुति।

अभरकको अव्वल बोतःमें रखकर धोंके, ताकि आगकी तरह सुर्ख होजाय बाद उसके हलजूं पीसकर उसपर छिडके हल होजावेगी मुतरज्जिम हलजूं हिन्दीमें शंखको कहतेहैं जो बडी कौडीकी एक किस्म है (सुफहा अकलीमियाँ १०१)

धान्याभ्रकको केलीकी जड़में रख उपलोंकी आँचसे द्रुति।

धान्याभ्रकं च गोमांसमभ्रपादं च सैंधवम् ॥ स्नुह्यर्कपयसा द्रावैर्मुनिजैर्मर्दयेत्र्यहम् १६॥ तद्गोलं कदलीकंदे क्षिप्त्वा बाह्ये मृदा लिपेत् ॥ करीषाग्नौ त्र्यहं पाच्यं द्रुतिर्भवति निर्मला ॥ १७ ॥ (र. रा. सुं.)

अर्थ-धान्याभ्रक और इसीकी बराबर गोमांस अभ्रकका चतुर्थांश सैंधव इनको थूहर, आक तथा अगस्तियाके रसमें तीन दिन घोटकर गोला बनाय केलाके कंदमें रख कपरौटीकर आरनेकंडोंकी तीन दिनतक आंच देवे तो अभ्रकद्रुति उत्तम होतीहै ॥ १६ ॥ १७ ॥

धान्याभ्रकको चाकीयंत्रसे द्रुति।

और जुगति यह सुनियो लोय। जैसी गुरुग्रंथनमें होय ॥ जइले गाडि कसौंदी यान। ये ताको रस लीजै छान ॥ पुनि धनाव दीजै पुट सात। सुकै सुकै बाँटिये सुसात ॥ चाकीजंत्र पचाय जु लेय। होय दुरति नाहीं संदेह ॥ (र.रत्ना०, र०सागर.)

और।

पुनि अभ्रक अरु सूरन लेय। दोऊ खररि कलशमें देय ॥ चाकीयंत्र देय ता आगि। निकसै दुरति करमगति लागि ॥ (र.रत्ना०, रससागर.)

१-गालिबनसत लेना चाहिये.

धान्याभ्रकको घडेमें औटानेसे द्रुति ।

लेहु मँगाय सरी चौराई।धूरे ऊपर होत बुवाई ॥ सोरँधिसकै जिन हांडीमांय । ऐसे चरवा देइ चढाय ॥ काटि चौरई नीर पखारि । दै धनाव ऊपर पल चारि॥ पारी मुँह दै लेहु पचाय। चारि पहर ज्यों आगि बराय ॥ जो शुभ करम होय कवि कहै । दुरति निकासिकै हांडी रहै ॥ (र.सागर.)

सीमावतलककी द्रुति (फारसी)

सीमाव अजतलक व तलकराव पारस अवरक गोयन्द विगीरन्द सुवूएफर्द गिली व बऽत्रपुरकुनद आँसुवूएरा दरदेग गिलीहिन्द व बालाए दहन सुवूए पारचः बरबन्दन्द व बालाई पारचः वर्ग कौंच बगुस्तरन्द व बालाई वर्ग अबरकहिन्द व बालाइ अवरकनीज वर्ग कौंच गुजारन्द पस आँदगेरा बेरदगदान हिन्द व आतिश्रदिहन्द तमाम सीमाव अन्दरून सुवूए पुर आब फरूख्वाहन्द चकीद । (सफा ५ किताब गुजरीबातअकबरी)

अभ्रककी स्वेदन यंत्रसे द्रुति ।

अभ्रकसे पारा निकालनेके लिये मिट्टीका छोटा बासन ले और उसे पानीसे भरकर एक बडे बासनमें रक्खे और उस छोटे बासनके मुखपर कपडा बांध सफेद अभ्रक ले कौंचके पत्ते ऊपर नीचे रख बीचमें अभ्रक रक्खे और बडे बासनको चूल्हेपर रख आग देनेसे पारा स्वयं निकलकर पानीवाले पात्रमें गिरजायगा ॥ (अखबार भारतरक्षक.)

अभ्रकद्रुति कौंचपत्रसे ।

झुलनी बूटी पंजाबमें होतीहै जो हाथमें लगनेसे जलन पैदा करतीहै । एक हांडीमें नीचे अभ्रक रखकर ऊपर झुलनी भरकर आंच देनेसे अभ्रककी द्रुति होजातीहै ॥ (कश्मीरयात्रामें श्रीनगरनिवासी नव्वाबखांसे प्राप्त.)

धान्याभ्रककी दोलायंत्रसे द्रुति ।

पीडर जल कुम्हीको आनि।अमलवेत अरु हींग बखानि ॥जवाखार साजी जु सुहाग। एकएक पल ले सब भाग॥ अरु लोनी जु चनाकी आन। एकै पल लीजै जु सुजान॥ बहुरि धनाव आठ पल लेय।औषधि सहित खरलमें देय ॥ देदे ग्वारि खरलिये इसे। चारि पहर ज्यों लागे जिसे॥ पुनि दो वर वस्तरमें मेलि ।कांजीसों कटाह भरि ठेलि॥ जंत्रडोलिका लेय पचाय । आठ पहर जो आगि बराय॥ गुरुप्रसादते कविजन कहै। रसरतनाकरको मत यहै ॥ जो यह जुगति करेगो गुनी । दुरति होय ग्रंथनमें सुनी ॥ मनसिल गंधक अरु हरताल । इहविधि दुरति करै करतार ॥ (रससागर.)

धान्याभ्रकी पृथ्वीमें गाढकर द्रुति ।

अगस्तिपत्रनिर्यासैर्मर्दितं धान्यकाभ्रकम् । सूरणोदरमध्ये तु निक्षिप्तं लेपितं मृदा ॥ गोष्ठभूमौ खनित्वा तु हस्तमात्रे हि पूरितम् ॥ १८॥ मासान्निष्कासितं तत्तु जायते पारदोत्तमम् स तेन मर्दितः सूतो वधमायाति तत्क्षणात् । भक्षणात्कुरुते तत्तु रुग्जरामृत्युनाशनम् ॥ १९ ॥ (र. रा. सुं.)

अर्थ–अगस्ति वृक्ष (हथिया वृक्ष) के पत्तोंके रससे धान्याभ्रकको घोट कर गोला बनाय बीचमें गढा किये हुए जमीकन्दमें गाडदेवे उसपर कपरौटी करे । फिर गायोंके बांधनेकी जगह एक हाथ गहरा गढा खोदकर अभ्रक भरे हुए जमीकन्दको उस गढेमें डालकर ऊपरसे मिट्टी भर देवें और एक मासके पीछे निकाले तो अभ्रककी पारदके समान उत्तम द्रुति होतीहै और उसके साथ मर्दन करनेसे पारद उसी क्षण बंधनको प्राप्त होता है । और भक्षण करनेसे रोग बुढापा और मृत्युको नाश करता है ॥ १८॥१९॥

धान्याभ्रकी धूपसे द्रुति ।

उरद सेर ले सेर धनावि । दोऊ थैली भरिजै दावि ॥ थैली डोलाजंत्र पचाइ । चारि पहर ज्यों आगि बराइ ॥ बहुरि खररि पानीमें लेइ । अभ्रकमें अगिया रस देइ ॥ रसु धनाव लै सीसी भरै । दै मुंह रुई घाममें धरै ॥ द्वै दिन लौं राखिये प्रमाना । दुरत होइ जो सुनो सुजाना ॥ (र. रत्ना., र. सागर.)

और ।

पेठो एक बडो सो आनि । मुँहकी जैना रेत नवानि ॥ मांहि बीस पल देइ धनाव। ताकी चकती ता मुख दाब ॥ ताहि नादिमें धरै बनाय । ऊपर नादि और औंधाय ॥ मांझ राखिये डांडो तिसौ । लटकै नहीं कुम्हेडो जिसौ ॥ दिन चारीस धरयो सो रहै। धूप रहे यों कविजन कहै॥ सो सरिहै देहु जिन डारि । निकसै दुरति सु लेहु पखारि॥ गगन दुरत दुर्लभ संसार। प्रगट कहै यों सैदपहार ॥ (र. रत्ना., रससागर.)

वार्त्तिक ।

अभ्रक श्वेत वा श्यामके पत्र लेकर खट्टे अनारमें खोतरके भरदेणे और बंद करदेणा फिर धूपमें रख छोडने हल द्रवित हो जाणगे । मक्खन जैसा होजायगा । (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

और ।

बीज बकाइन भाँडे मेल । जंत्र पताल काढि जे तेल ॥ लेप गगन पत्रनिकों करै । तैले पत्र कठौती धरै ॥ छांह सुकै ते छप्पन जाम । पुनि चौवीस पहर धरि घाम ॥ एक द्रुरति निकसै यह रीति । ग्रीषम ऋतु सूरजकी प्रीति ॥ (रससागर.)

और भी ।

अभ्रकके जु पत्रकै धरै । पुनि वर दूध लेप दिन करै ॥ पुनि पुनि सो लै दीजै घाम । भयो मैनसों सीझे काम ॥ (र. रत्ना., र. सागर.)

अन्यच्च ।

शुद्धकृष्णाभ्रपत्राणि पीलुतैलेन लेपयेत । घर्मे शोष्याणि सप्ताहं लिप्त्वालिप्त्वा पुनःपुनः ॥ २० ॥ मर्दितं चाम्लवर्गेण तद्वच्छोष्याणि चाथ वै । स्नुह्यर्कार्जुनवह्नीनां कटुतुंब्या समाहरेत ॥ २१ ॥ क्षारक्षारत्रयं चैतदष्टकं चूर्णितं समम् ॥ वज्रकंदं क्षीरकंदं बृहतीकंटकारिका ॥२२॥ वनवृंताकमेतेषां द्रवैर्भाव्यं दिनत्रयम् ॥ अनेकक्षारकल्केन पूर्वपत्राणि लेपयेत ॥ ॥ २३ ॥ आतपे कांस्यपात्रे च स्थालीलेप्यं पुनः पुनः ॥ एवं दिनत्रयं कुर्याद्द्रुतिर्भवति निर्मला ॥ २४ ॥ (र. रा. सुं.)

अर्थ-शुद्ध काले अभ्रकके पत्रोंपर पीलूके तैलका लेप कर धूपमें सुखावे इसप्रकार सात भावना देवे । फिर अम्लवर्गमें सातवार घोटकर घाममें सुखावे इसके बाद थूहर, आक, अर्जुन, चित्रक, कडवीतूंबी तथा सज्जीखार, जवाखार और सुहागा इन आठ चीजोंको समान भाग लेकर वज्रकंद,क्षीरकंद, बडीकटेरी, जंगलीबेंगन इनके रसमें पूर्वोक्त क्षारादि आठ चीजोंके चूर्णको घोटे पीछे इस लेपको अभ्रकके पत्रोंपर चढाय सुखावे । इसप्रकार तीन लेप करे कांसेकी थालीमें डालकर सुखावे तो पारदकी द्रुति अवश्य होतीहै ॥ २०-२४ ॥

अन्यच्च ।

उमादंडविमर्देन गगनं द्रवति स्फुटम् ॥ (काकचंडेश्वर, टी. नं.)

अर्थ-उमा (हल्दी या अलसी) की लकडी या पंचाङ्गके रससे अभ्रकको भावना देकर लीदमें गाढदेवे तो अभ्रककी द्रुति होगी ॥

और ।

अभ्रकपत्र अग्निमें तपाके लोटा सज्जके पाणीमें तीनबार बुझावे फिर महीन कर धोकर कपडछान करै फिर इस अभ्रकको द्रुतिकार्यमें लगावे ॥

और भी ।

कलीचूना १ सेर,सज्जीखरी १ सेर, दोनों पीसकर सज्जी पहले अग्निमें तपालेवे फिर चौसठसेर पानीमें म१ावे दोनों चीजें तीन दिन भिगोवे (भिजारक्खे) बाद नितारलेवे उसमें उतनीही दोनों चीजें फिर पावे फिर नितारै एवं आठबार करै यह हल्ल तितना होवे उतना नौसादर जल पादेवे इससे अभ्रक खरल करै दो पहर फिर तशविया देवे एवं आठबार खरल और तशोया देवे मोमिया होवेगा फिर शीशीमें पाकर लिदमें दब्बछड्डे दो महिने फिर निकालकर नरमभूभलमें रक्खे शीशीके मुखपर नमदेकी टाकी रक्खै टाकी भीजजावे तो निचोडे भिजणें रहे तो हल(द्रुति) होगया ॥ (जंबूसे प्राप्त पुस्तक.)

अभ्रकद्रुति और द्रुतियोगसे चन्द्रोदय । अभ्रकसे पारद निष्कासन ।

पुराना सिरका ऊखका सेर चारि लेइ एक पाव पुराणा चाँवल मिहीं धोइकर उस सिरकामें डारै दोनोंकूं एकही हांडीमें डारिके पकावे करछलीसे चलाया करै जबताई वह चांवल पक पकके हल्ल होजायं तब सबकूं कपरामें छानिलेइ खूदा दूर करके एक सीसीमें डारै तेह सीसीको मुँह मूंदिके इकईस दिन अथवा पचास दिन ताई लीदमें गाडिराखै सब अभ्रकको पारो होइजाय पाछे बाकी जो होइ अभ्रक करि पानी तहको पारा करिबेकूं उही सीसीकूं घाममें रोज राखै जबताई सब पानी सूखिके पारा होइ एहीभांति अभ्रकको पारो निकासिये ।

अभ्रकके पाराको जो कोऊ कहै काइमुल्नार सो मिथ्या एहीभांति है मैं निकासा है और आगे परख राखाहै आगपर नाहीं

१ मँगवावे ।

ठहरातहै इस अभ्रककर पारा पैसा दोइ भर ले और सोधा गंधक पैसा दोइ भर लेइ और सिंग्रफके पारासे चन्द्रोदय बना-होइ सोभी पैसा दोइ भर लेइ तीनऊकूं सिरकासे एक घड़ी घोटे छोटी सीसीमें डारिके आंच छह पहर मध्यम देइ हांडीके तरे छेद न करै चारि आंगुर पहिले ऊंची बारू डारे हांडीमेंते पर सीसी राखे फिर हांडीके मुँहताई बारुडारे तब आंच दे सी-सीका मुँह खुला रहे आधीरत्ती लोंग और आधीरत्ती इह चन्द्रोदय खाइ भूख बहुत होइ इसमें संदेह नाहीं अनुभूत है एही भांति कर चन्द्रोदय दुर्लभ है जब अभ्रक कर पारा होइ तब यह सिद्ध होइ सो पारा अभ्रकका केऊ निकासे नाहीं जा-नत। यद्यपि निकासिबेकी तरह बहुत हैं परन्तु इह तरह भली है और तरहमें संदेह है इस तरहसे संदेह नाहीं, खामखाँ पारा निकास्या करहि-इस तरहसे यह चन्द्रोदय सब लेइ इसमें एक मासा सोनेकर तबक डारै, एक मासा नौसादर डारै,एक घडी तीनोंको सुखा घोटै,दोइ पियालामें राखि संधि लेप करि अढाई घरी सिरकी करि आंच देइ इसी भाँति छह आंच देइ हर बेर सोनेकर तबक मासा भरि और हर बेर नौसादर मासा भरि डारिके तिस उपरांत इही रसकूं एक सी-सीमें डारै तिहमें पैसा चारि भरि सिरका तुंद डारै वह सिरका जो चालीस दिनमें सिद्ध भया सोई डारै. वह सीसी घाममें इक्कीस दिनताईं राखिछोडै, जब हल्ल हो-इके पानी होइजाय कुछ तरैछट तले न र-हे तब भौरेंकेते आंचपर धरै तब पानी सू-खिजाय डरासा होइ तब एक तोला तांबा टघराइके एक रत्ती यह डोर सोना होइ यह क्रिया शेख इनाइतुल्ला हरमालकी है, तिसमें अभ्रकका पारा निकासना अनुभू-त है और उस पाराका चन्द्रोदय भी अनु-भूत है,सोना अनुभूत नाहीं। (भा.प्र.पं. कुं. १७।१२।१०)

हल अबरकसे सीमाव कायमु-ल्नार करनेकी तरकीब(उर्दू)

वाजः हो कि सीमाव अबरकसे जो निकलताहै वह खुदही कायमुल्नार होताहै और उसको सीमाव बाजारीके साथ लुआवसवद यानी घीगवारका मिलाकर सहक करे तो उसको भी कायमुल्नार (अग्निस्थायी) करताहै और मिस (तांबा) पर तरह करनेसे उसको भी चांदी करताहै। (सुफहा ६१ किताब अलजवाहर.)

अभ्रक द्रुतिके फवायद (उर्दू)

मुतरिज्जिम सीमाव अबरक स्याहको सीमाव बाजारीके साथ मुनकिद करनेसे अकसीर आजमतिला (सोना) की और सीमाव अबरक सफेदको सीमाव बाजारीमें मुनकिद करनेसे अकसीर आजमनुकरा (चांदी) की होतीहै. तर-कीब इनकी साखी नं० ५७ व ६० में मुन्दर्ज हैं, व साखी नं० ३० व नं० ५४ लगायत ६० में मुख्तलिफ नुसखे अभ्रकसे सीमाव निकालनेके हैं सुफहा अकलीमियां ७४(३१।१।११)

अभ्रकद्रुतिकी शकल खवास और फवायद (उर्दू)

सीमावअभ्रक हिन्दीमें उसको द्रुत कहतेहैं इसकी अला-मत यह है कि सीमाव बाजारीसे जियादह गाढा होताहै और उसमें सफेदी स्याही माइल होती है लेकिन बिलकुल स्याह नहीं होता सीमाव उरफीसे यकजात मुश्किलसे होताहै और सीमाव उरफी अलहदा और सीमाव अबरक अल-हदा रहताहै मगर समिाव अबरकका कायमुल्नार होताहै और जब सीमाव उरफीसे यकजात होजावे तो उसको भी कायमुल्नार (अग्निस्थायी) करदेताहै, और ऐसा सीमाव यकजात शुद, अकसीर आजम होताहै। (सुफहा अक-लीमियाँ ७४)

अभ्रकको महलूल करनेकी तरकीब उर्दू (गालिबनद्रुति समझाहै)

अभ्रकको महलूव यानी धनाव करनेके मेडक गोश्तेमें खरल करे जर्र: जर्र: होजायँगे बादहू साफ करके निकालले और लोहेके जर्फमें पीसे हल होजायगी अगर उस अबरकको पानीमें फिटकिरी और नौसादरके सहक करके तसईद करे तो सुर्खरंगकी मसअद होगी। (सुफहा अकलीमियाँ १०१)

हल अभ्रककी तरकीब (उर्दू)

औराक अबरकके तीन तोला लेकर छः तोले शीरगाड जर्द ताजः में जोहनोज गर्म हो असामाश करे कि रेजः रेजः मैदेकी तरह होजावे बाद उसके बदस्तूर मजकूर चाह हलमें रखकर बाद महलूल होनेके काममें लावे। (सुफहा किताब अलजवाहर ६२)

अभ्रकद्रुति-अव्वल छूनेके पानीमें घोट पुट दे कुश्ता तय्यार करके बादहू चाहहलमें (फारसी)

दरहल करदन तलक कि दरीं किताब दरवाजे अअमल दरकार बुवद बिलजरूर गुफ्तह शवद अगर्चे ई अमल बातो अअसतफाना ई फकीर तजरुमा आवुर्दः बुदायवूदः आँस्त कि बियारन्द तलक स्याह महलूव कि दरबाब दोयम गुफ्त. शुदः बावकली खमीर कुनन्द वदरकूजः करदः सरश बगिल हिकमत इस्तवार कुनन्द चूँ खुश्क शवद दरे कूजः कूजःगराँ बवादरबेठीचूनापजां निहन्द कि आतिश तेज बाशद बहतर चुनीं तखरार नुमायन्द ता मुकइसे गरदद मानिंद

सफेदाज चूंवर जुबान अवशवद सकल जाहर न गरदद व विदानस्त मुकल्लिस शुदः दरशीशः करद सरशः अस्तवार कुनन्द दौरे हलनिहन्द ताबिस्त व हफ्त रोज कि दर सदरगुफ्तः शुदः व बाद अज मुद्दत वर आवुर्दः दरकूजः फकाजे सरशराव काफूर बिगीरन्द व जंजीर आहन दर तजूरकरम मअल्लिक बियावेजन्द तमाम शब व सवाहश बर आरन्द बजरमान खुदा ताला व मिसल व मानन्द चूँ शीर सफेद व रोशन कि अज सीमावकानी फर्क न तवा करदद हरजा कि हल तलक जिकर रफ्तः बाशद आंजाकार फरमायन्द। (सुफहा २१-२२ किताब जवाहर उउलसिनात)

अबरकको महलूल करने और उससे सीमाव निकालनेकी तरकीब चाह हलसे द्रुति (उर्दू)

अव्वल अभ्रकको धनाव करे इस तरह कि अभ्रकको गरम करके कूट डाले बादहू उसको थैलीमें भरदे और उसके बराबर छुहारेकी गुठली या विल्लौरके रेजे डालकर पानीसे भिगोदे और जोर जोरसे खूब हाथसे मले दहीकी तरह सफेद सफेद जर्रात निकलेंगे जो पानीके ऊपर तैरते रहें उनको फेंकदे और जो अबरक तहनशीन होजावे उसको खुश्क करे और बन्द कूजेमें रखकर शीशःगरों या कुम्हारोंकी मिट्टीमें रख दे तीन रोजके बाद निकाले, यह अवरकके जर्रात सफेदहकी तरह होंगे उनको खरलमें सहक करे और शीशीमें रखकर मुँह बन्द करके सत्ताईस दिनतक चाहहलमें बतरीक मारूफ रक्खे और हर तीसरे दिन लीद ताजः बदलता रहे बाद सत्ताईस दिनके निकाल कर दूसरे कूजेमें रखकर उसका मुँह काफूरसे मसरूद करके लोहेके तारमें बांधकर तनूरमें नानबाईके रातभर लटका दे सुबहको निकाल ले, अल्लह तअलाके फजलसे करमसे कूजः मजकूरमें दूध सफेदकी तरह सीमाव रोशन और साफ बरामद होगा और असली सीमावसे कोई फर्क नहीं होगा जहां जहां अभ्रक महलूलका जिकर इस किताबमें है उसीसे काम निकाले। (सुफहा ६० किताब अलजवाहर।)

बीरबहूटीको महलूल करनेकी तरकीब (उर्दू)

बीरबहूटीको एक जर्फमें रक्खे और नौसादर[1] घिसकर उसपर छिडकदे सुर्ख पानी होजायगी यह हल सीमावको दूसरे चन्द एमालके बाद मुनक्कद करता है और बाद तुसखः जात कीमियांमें काम आता है-(सुफहा अकलीमियां १०२।)

स्वर्णद्रुति।

चूर्णं सुरेन्द्रगोपानां देवदालीफलद्रवैः। भावितं सदृशं भस्म करोति जलवद्द्रुतिम्॥ (र. रा. सुं.)

अर्थ-बीरबहूटियोंके चूर्णको देवदालीके फलोंके रससे भावना देवे फिर उसकी सुवर्णभस्ममें भावना देवे फिर उस भावना दीहुई स्वर्णभस्मको घरियामें रखकर धोंके तो सुवर्णकी द्रुति होतीहै॥ २५॥

अन्यच्च।

मंडूकास्थिवसाटंकहयलालेन्द्रगोपकैः। प्रतिवापेन कनकं सुचिरं तिष्ठति द्रवम् ॥२६॥ (र. रा. सुं.)

अर्थ-मेडककी हड्डी तथा वसा, सुहागा, घोडेके मुखकी लार और बीरबहूटी इनका चूर्ण बनावे फिर स्वर्णको गलाकर उसमें पूर्वोक्त चूर्णका बुरका देवे तो स्वर्णकी द्रुति होतीहै॥ २६॥

सोने और रूपेकी द्रुति।

शतधा नरमूत्रेण भावयेद्देवदालिकाम्। तच्चूर्णवापमात्रेण द्रुतिः स्यात्स्वर्णतारयोः॥ २७॥ (र. रा. सुं.)

अर्थ-देवदाली (बन्दाल) को सौवार नरमूत्र (सोरा) की भावना देकर चूर्ण बनालेवे फिर सुवर्ण तथा चांदीमेंसे जिसकी द्रुति करना हो उसको गलाकर पूर्वोक्त चूर्णका बुरका देवे तो वह धातु पारदके समान द्रव होताहै॥२७॥

लोहद्रावण।

तीक्ष्णचूर्णं तु सप्ताहं पक्त्वा धात्रीफलद्रवैः। लोलितं भावयेद् घर्मे क्षीरकंदद्रवैः पुनः॥ ॥ २८॥ सप्ताहं भावितं सम्यक् ध्मावसंपुटके ततः। धमितं द्रवतां याति चिरं तिष्ठति सूतवत्॥ २९॥ (र. रा. सुं.)

अर्थ-शुद्ध लोहेके चूर्णको आमलेके रसमें सात दिन पकाकर घाममें सुखालेवे फिर क्षीरकंदके रसमें सात दिन भिगोकर घाममें सुखाकर मूषामें रक्खे फिर अग्निमें रखकर धोंके तो वह बहुत दिनतक पारदके समान द्रवरूप होताहै॥ २८॥ २९॥

अन्यच्च।

देवदाल्या रसैर्भाव्यं गंधकं दिनसप्तकम्। तेन प्रवापमात्रेण लोहास्तिष्ठंति सूतवत्॥ ॥ ३०॥ (र. रा. सुं.)

अर्थ--देवदालीके फलके रससे गंधकको सात भावना देकर चूर्ण करे फिर जिस लोहे (धातु)की द्रुति बनानी हो उसको गलाकर उसमें पूर्वोक्त भावना दियेहुए गंधकके चूरेकी बुरकी देवे तो वह धातु पारदके समान रसरूप होकर ठहर जायगा॥ ३०॥

अन्यच्च।

तीक्ष्णमारणयोगेन कांतसारणमिष्यते। शुद्धिश्च तादृशी ज्ञेया स्वसत्त्वस्य तथैव हि॥ ३१॥ (र. रा. सुं.)

अर्थ--जिस प्रकार तीक्ष्ण (फौलाद) का मारण कहाहै उसी प्रकार कान्तलोहेका भी मारण जानना चाहिये और फौलादकेही तुल्य शुद्धि तथा सत्त्वपातनकी विधि भी जाननी चाहिये॥ ३१॥

---

[1] अगर बजाइ चूनेके एमोनियासे काम लिया जावे तो।

लोहद्रुतिक्रियानंतर बुद्धक्रिया।

त्रिटंकमभ्रसत्त्वजारितपारदमष्टसंस्कारैः संस्कृतपारदं वा त्रीणि खल्वे मर्दयेत्, एकीभूते सति पश्चात् काचकुप्यां मृद्वस्त्रसुलिप्तायां तं सूतं क्षिप्त्वा कोकिलाग्नौ तापयेत् तेन सूतो बद्धो भवति तं बद्धसूतं टंकैकं द्राविते रंगे सेटकमिते क्षिपेत् तद्रंगं टंकमितं सेटकमिते द्रावितताम्रे क्षिपेत् तत्ताम्रं सेटकद्रावितघोषे क्षिपेत् तत्सेटकघोषं पूर्णवर्णसुवर्णं भवति विद्याभाग्यवशात्फलतीत्यलम् ॥ ३२ ॥ (ध. सं.)

अर्थ–तीनटंक अभ्रकसत्त्वद्रुति, तीनटंक लोहसत्त्वद्रुति, और तीनटंक शुद्धपारा इन तीनोंको खरलमें डालकर घोटे जब भलीभांति घुट जाय तब घरियामें रखकर धोंके तो पारा बद्ध होता है। एकसेर गलेहुए रांगमें एकटंक उस बद्ध पारदको डाले और उस एकटंक रांगको गलेहुए एकसेर तांबेमें डाले और उसमेंसे एकटंक तांबेको गलेहुए पीतलमें डालदेवे तो वह पीतल स्वर्ण होताहै यह बात विद्या और भाग्यके वशसे होतीहै ॥ ३२ ॥

लोहद्रुतिक्रिया।

अत्रादौ तीक्ष्णलोहखंडानि मधुशैवलक्षारटंकणैः प्रत्येकं समांशकैः परिलिप्य दृढमूषायां तानि निक्षिप्याष्टघटीमितं कोकिलाग्नौ भस्त्रिकया मंदंमंदं ध्मापयेत्, ततः स्वांगशीतानि ज्ञात्वा तीक्ष्णलोहमयरेत्या रेतितं कृत्वा तन्मध्यचतुर्विंशतिटंकमितं तीक्ष्णचूर्णं त्रिटंकसैंधवलवणं च खल्वे निंबूरसेन मर्दयेत् यदि गाढं भवेत्तदातितप्तजलं तत्र खल्वे क्षिप्त्वा घोलयेत् ततस्तत्र तीक्ष्णचूर्णे त्रिटंकं नवसादरं क्षिपेत् शीते सति जलं निःसारयेत् एवं त्रिवारं क्षालयित्वा निंबूरसेन मर्दयेत् ततो गोलकं कृत्वा काचमयपात्रे धृत्वा आतपे प्रहरद्वयं शोषयेत् ततः काचपात्राद्गोलं निष्कास्य पुनः खल्वे क्षिप्त्वा सचूर्णत्रिटंकनवसादरं तत्र दत्त्वा निंबूरसेन मर्दयित्वा गोलं कृत्वा काचपात्रे धृत्वा पुनः प्रहरत्रयं शोषयेत् ततः पुनस्तद्गोलं खल्वे कृत्वा सचूर्णं तत्र त्रिटंकनवसादरं त्रिटंकहिंगुलं च क्षिप्त्वा निंबूरसेन संमर्द्य गाढीभूतं पुनः काचपात्रे धृत्वा दाडिमाम्लफलरसैः काचपात्रं पूरयित्वा मुखमाच्छाद्य रहसि मासमेकं स्थापयेत्, परन्तु अम्लदाडिमफलरसं स्वल्पं स्वल्पं प्रतिदिनं क्षेपणीयं लोहं परिमग्नं यथा स्यात्तथा, ततस्तल्लोहं पारदवद्द्रवभूतं सत्तिष्ठतीति लोहवाह्यद्रुतिः सिद्धा। इति लोहबाह्यद्रुतिः। तथा चातिरहस्यतरमप्रकाश्यं द्विजदेवभक्तजनेषु पुण्यकर्मतत्परब्राह्मणेषु मत्सरेर्ष्यादंभलोभहीनेषु जितेन्द्रियवर्गेषु ईश्वराज्ञया देयम्। यत्कर्म तन्मयाप्रोक्तं तेन श्रीसांबः प्रीयताम् ॥३३॥ (ध.सं.)

अर्थ–प्रथम शहद, संखिया और सुहागा इन तीनोंको समभाग लेकर पीस लेवे फिर उससे फौलादके टुकडोंपर लेपकर एक बडी घरियामें रख पिघलनेतक धीरे २ कोयलोंकी आंचमें धोंके शीतल होनेपर चौबीसटंक उसमेंसे निकालकर रेतसे रितवा लेवे फिर तीन टंक निमक डालकर नींबूके रससे घोटे और घोटते घोटते जब गाढा होजाय तौ गरमपानी डालकर घोल देवे और ठंढा होनेपर उस पानीको निकाल देवे फिर उसमें ३ टंक नौसादर डालकर गरम पानीसे घोटे शीतल होनेपर पानी निकाल लेवे इस प्रकार तीनवार धोवे फिर निम्बूके रससे घोटकर गोला बनाकर काचके पात्रमें रख घाममें दोप्रहरतक सुखावे फिर काचके पात्रसे गोलाको निकालकर उसमें तीनटंक नौसादर डाल निम्बूके रससे घोटे तदनन्तर गोला बनाकर काचके पात्रमें रख घाममें दोपहरतक सुखावे फिर उसको पीसकर तीनटंक नौसादर और तीनटंक शिंगरफ डालकर निंबूके रसमें घोटे जब सूखजाय तब गोला बनाकर और काचके पात्रमें खट्टे अनारके रससे उस प्यालेको भर देवे और उसके मुखको भी बंद कर एकमासतक एकान्तमें रक्खै परन्तु प्रतिदिन उस प्यालेमें थोडा २ खट्टे अनारका रस डालता रहे कि जिससे वह गोला रसमें डूबाहुआ हो तो वह लोहा पारदके समान द्रव होकर रहता है यह लेख अत्यन्त रहस्य अर्थात् छुपाने योग्य है इसको उत्तम मनुष्योंके लिये बतावे ॥३३॥

ताम्रद्रुति।

लवणक्षारमूत्राणि क्षाराश्चौषधसंभवाः।
एषां क्षारसमस्तेषामौषधीकंदसंभवाः ॥ ॥ ३४ ॥ यच्चान्यद्द्रावकं कल्पफलत्रयकटुत्रयम्। कुलत्थक्काथतोयं च सर्वं मृद्वग्निना पचेत् ॥ ३५ ॥ गालयेद्वस्त्रयोगेन पुनः पाकं च कारयेत्। तेनैव भावयेच्चैवं शुद्धं शुल्वस्य चूर्णकम् ॥ ३६ ॥ एकविंशतिवारांश्च भावयित्वा विशोषयेत्। लादिमध्ये तु भूगर्भे धान्यराशौ च भास्करे ॥ ३७ ॥
सप्ताहं धारयेत्तं तु दोलायां चैव स्वेदयेत्।
एकविंशदिने जाते शुल्बस्यैव द्रुतिर्भवेत् ॥
द्रुतिर्भवति शुल्बस्य रसरूपा च निर्मला ॥
॥ ३८ ॥ (र.रा.सुं.)

अर्थ–सब प्रकारके नोंन, सम्पूर्ण मूत्रोंके खार, औषधियोंके खार और इन सबके समान अनेक प्रकारके कन्दोंके खार और द्रवकारक पदार्थ त्रिफला, त्रिकुटा, इन सबको

१–त्रीणि–पारदद्रुति, लोहद्रुति, अभ्रद्रुति, (यह निश्चय ही है भाषा पुस्तकोंसे)।

कुलथीके काढेमें मंदाग्निसे पचावे पीछे वस्त्रमें छानकर पक्क करे जब गाढा होजाय तब शुद्ध तांबेके चूर्णमें भावना देवे ऐसे २१ वार पुट देकर सुखा लेवे पीछे लीदमें, धरतीमें, धानोंके ढेरमें और धूपमें सात २ दिन रखकर पूर्वोक्त दोला यन्त्रमें स्वेदन करे ऐसे इक्कीस दिन करनेसे ताम्रकी पारदके समान निर्मल द्रुति होती है ॥ ३८ ॥

हल सुरब व अबरक (उर्दू)

तरकीब यह है कि दसहिस्सा सुरब महलूल जिसको आब सज्जीमें हल किया हो और पांच हिस्सा तलक स्याह जिसको सज्जीकी चाशनी देकर गुदाज किया हो दोनों अज जायको इकट्ठा करके आब सज्जी डाल डालकर सहकबलेग करे कि खूब दोनों आमेज होकर एकजात होजावें बादहू मोटी गजीके कपडेमें डालकर जवान और ताकतदार आदमी जोरजोरसे निचोडे कि साफ होकर निकल जावे अल्लाहके फजलसे सीमाव बहार आवेगा और गिरह असरवकी खुल जावेगी इस सीमाव मसनई और मअदनी सीमावसे कोई फर्क नहीं हर काममें आता है और रोशन व नूरानी होता है अगर मुरवारीद जर्दको इसमें मलें तो मुनव्वर करता है (सुफहा ५९ किताब अलजवाहर)

हलसुरब व अभ्रक ।

तरकीब यह है कि दसहिस्से सुरब महलूल जिसको आव सज्जीमें हलकियाहो और पांच हिस्सा तलक स्याह जिसको सज्जीकी चाशनी देकर गुदाज किया हो दोनों अजजायको इकट्ठा करके आवे सज्जी डाल डालकर सहक वलेग करे कि खूब दोनों आमेज होकर एक जात होंजावें बादको मोटे गजीके कपडेमें डालकर जवान और ताकतदार आदमी जोरजोरसे निचोडे कि साफ होकर निकल आवै अल्लाहके फजलसे सीमाव बाहर आवेगा और गिरह असरवकी खुल जायगी इस सीमाव मसनई और सीमाव मअदनीसे कोई फर्क नहीं हरकाममें आताहै और रोशन नूरानी होता है अगर मुरवारीद जर्दको इसमें मलै तो मुनव्वर करता है । (किताब अलजवाहर)

सिक्केसे पारा बनाना ।

हरताल वरकी आला किस्म चार तोले, शोरा कलमी चार तोले, चूना आवनारसीद: चार तोले इन सबको इस कदर पानीमें भिगोकर धूपमें रख दे कि पानी चार अंगुल ऊँचा रहे तीन चार रोजकी धूपमें जब कि इस कदर हरारत बढ जावे कि पर मुर्गको वह पानी जला देवे तब पानी को मुकत्तर करे और सिक्केको दस पन्द्रह दफे गलाकर उसमें गोता दे जब सिक्केमेंसे किसी कदर हुवावसे निकलने लगे तब एक चीनीकी रकावीमें हवाके सामने रख दे थोडी देरमें सिक्केकी गिरह खुल जावेगी और मिसल सीमावके लरजां होजावेगा यह सीमाव कायमुल्नार होगा आगपर रखनेसे फरार न होगा । (अखबार अलकीमियाँ १ अक्तूबर सन् १९०६)

१ आबसज्जीसे मुराद सज्जीका तेजाब है जो अङ्गरेजी दूकानातसे खरीद किया हुआ मिलता है ।

अकसीर अहसाद व अहसाम सुरब व वंगके हलकरने यानी पारा बनानेकी तरकीब ।

जरनंज ३ तोला, शोरा कलमी ३ तोला, और खार ३ तोला, चूनाकली ३ तोला, गन्धक आँवलासार ३ तोले इस सबको जुदागानः बारीक पीसकर एककद: चीनीमें डाल कर इस कदर पानी दाखिल करें कि अदवियातसे पांच अंगुलतक ऊंचा रहे तीन चार रोजतक तेज धूपमें रक्खे जब इस कदर तेज धूपमें रक्खें जब इसकदर हिद्दत पैदा होजाय कि परे मुर्ग डालनेसे सोख्त होजाता है मुकत्तर लेकर सुरब व कलई हम वजन गलाकर मुकत्तर मजकूरमें बुझा देवें जब पच्चीस गोत: तक नौबत पहुँचे फिर एक चीनीकी रकाबीमें डाल कर हवामें रख दे पांच चार मिनटके बाद वह सुरब व कलई सीमाव हो जायगा असल सीमाव और इसमें कुछ फर्क न होगा यह मसनई सीमाव २ तोले मुतहर्रिक कायममुल्नार है और बाजारी समिाव आग परसे फरार हो जाता है बस अगर फर्क है तो इसी कदर है अजांबाद इस मसनूई सीमावको चम्पाके फूलोंमें खरल करे थोडी देरबाद पारा बस्त: होजायगा हर चहार अजवाइन चारचार तोलाको कूटपीस कर अकद मजकूरके जेरुबाला देकर चार सेर आंच रेशमान दें कुश्ता बरंग सफेद होगा यह कुश्ता वडा अजीब व गरीब है इस कुश्तेकी चन्दही खुराकसे वे औलादके बफजलहू तअला औलाद नरीन: होजातीहै । (सुफहा ८ व ९ अखबार-किताबअलकीमियाँ) २ । २ । ११ ।

सिक्केके सीमावका कुश्ता (उर्दू)

दो गज तूलमें एक मोटीसी लकडी पलासकी लेकर उसके सर पर इस कदर खफीर करें कि जिसमें एक सेर हल्दी समा सके एक तोला सीमावके नीचे ऊपर हल्दी एक सेर देकर इसीचकमें बंद करके और फिर उसको खूब गिले हिकमत करके दो मन पाचक दस्तीकी आंच दें जब सर्द होजावे तो निकालले सीमाव सिगुफत: शुद: बरामद होगा । (सुफहा१३अखबार अलकीमियां१।१०।१९०६)

संगजराहत द्रुति ।

संगजराहत पाहन होय । अजा छीरसों बाँटो सोय ॥ बहुरि छिरहंटाको पुट देय। एक पहर जो खरर करेय ॥ पुनि संपुट तामेके मेलि। आगि पहर द्वै दीजै ठेलि॥ चूल्हे ऊपर पेना चढ़े। तामें धरिकै कविजन कढ़े॥ इनका द्रुति होइ इह रीति। जानें करि सतगुरुकी प्रीति ॥ (रससागर.)

सप्तधातुद्रावण ।

पीतमंडूकगर्ले तु चूर्णितं टंकणं क्षिपेत्। रुद्ध्वा भांडे क्षिपेद्भूमौ त्रिसप्ताहं समुद्धरेत्॥ ॥ ३९ ॥ तत्समस्तं विचूर्ण्याथ द्रुते लोहे

प्रवापयेत् । तिष्ठंति रसरूपाणि सर्वलोहानि नान्यथा ॥ ४० ॥ (र. रा. सुं.)

अर्थ—पीले मेडकके पेटमें सुहागेका चूर्ण भर एकपात्रमें रखकर मुख बंद कर देवे फिर धरतीमें २१ दिन गाडनेके बाद निकालकर चूर्ण बना रक्खे तदनंतर जिस लोहेको (धातुको) द्रव करना हो उसको गलाकर उसमें पहले बनायेहुए चूर्णको डाले तो वह लोह पानीके समान पतला होकर रहजाता है ॥ ४० ॥

लोहद्रावकारक देवदाली गन्धक।

देवदालीरसो गंधं पाषाणेन समन्वितम् । द्रावयेत्सर्वलोहानि पारदस्यापि बंधकृत ॥ ॥ ४१ ॥ (औषधिकल्पलता.)

अर्थ—बन्दालके रससे गंधकको सौबार द्रावित करे तो वह चूर्ण समस्त धातुओंको द्रव करताहै और पारदका बांधनेवाला होताहै ॥ ४१ ॥

सत्त्वद्रावक ।

देवदालीरसं गृह्य श्वेतसिद्धार्थसंयुतम् । रिंगणीयासमायुक्तं गुटिकां कारयेद् बुधः॥ द्रावयेत्सर्वसत्त्वानि पारदं चैव शुद्धयति ॥ ॥ ४२ ॥ (औषधिकल्पलता.)

अर्थ—सफेद सरसों, कटेरीकी जड इन दोनोंको बंदालके रसमें घोटकर गोली बनावे फिर जिस सत्त्वको जारण करना हो उसको अग्निमें धोंकते २ तेज होजानेपर उन गोलियोंको डाले तो सब सत्त्व द्रव होजातेहैं॥ ४२ ॥

हरितालद्रुति ।

हरतारै जु पांच पल लेय । बकरी छीर सात पुट देय ॥ पानी अरंडी तिनपुट देय। तीनों समान खरर करेय ॥ तीनों पुटदे ग्वारिके सही । यहै खररिकी संख्या कही ॥ नेकसो दुरत हरतार जु रहै।सीसी घालि पंच कवि कहै ॥ यहै खररिकी संख्या कहै । नेक साधु हरतार जु रहै ॥ मुद्रा कारि पुनि दीजे आगि । आठौ प्रहर अहर्निश जागि ॥ दे मत अगिनि जुसे लेइ उतारि । पुनि तातेही लेइ पखारि ॥ होय दुरति हरतारहि गनौ । रसरतनाकरते हौं भनौ ॥ (र. रत्ना., र. सागर.)

पाषाणद्रुति ।

और पाहन जेते सेत । तिनके दुरति होय यह हेत ॥ पाथर बांटि कपरछन कीन । अजादूध भिजवै दिन तीन ॥ तापाछे जु छिरहटा आनि । पाननके रस पाहन सानि ॥ तब हांडी भरि लेय चढ़ाय।चारि प्रहर ज्यों आगि बराइ ॥ हांडीके मुँह मूंदै लोय । पाहन दुरति इसीविधि होइ ॥ (र. रत्नाकर, र. सागर.)

हीराकी द्रुति ।

वज्रवल्ल्यंतरस्थं च कृत्वा वज्रं निरुत्थितम्। अम्लभांडगतं स्वेद्यं सप्ताहाद्द्रवतां व्रजेत ॥ ॥ ४३ ॥ (र. रा. सुं.)

अर्थ—हीरेको वज्रवल्ली (हडसंधारी) की लुगदीमें रखकर गजपुटद्वारा निरुत्थ भस्म करलेवे फिर उसको अम्लवर्गमें स्वेदन करे तो पारदके समान हीरेकी द्रुति होतीहै ॥ ४३ ॥

मोतीकी द्रुति ।

मुक्ताफलानि सप्ताहं वेतसाम्लेन भावयेत् । जंबीरोदरमध्ये तु धान्यराशौ निधापयेत ॥ ४४ ॥ पुटपाकेन तच्चूर्णं द्रवते सलिलं यथा ॥कुरुते योगराजोऽयं रत्नानां द्रावणं शुभम् ॥ ४५ ॥ (र. रा. सुं०)

अर्थ—मोतियोंको सात दिवसतक अम्लवेतके रसकी भावना देकर जँभीरीके भीतर भरकर धानके ढेरमें गाढ देवे फिर उसमेंसे निकाल कर पुटपाक करे तो मोतीका चूर्ण जलके समान द्रव होजाताहै ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

हल मुरवारीद (उर्दू) मोतीकी द्रुति-धूपमें (अम्लयोगसे)

छोटे छोटे मोती पाक व साफ लाकर धोवे और चौडे मुँहकी शीशीमें अर्क लैमूं बिजौरा और शीरः लैमूं कागजी और अर्क लहसन और प्याजका उसपर डाले कि मोती मजकूर उसमें डूब जायें और मुहँ शीशीका बंद करके धूपमें रखदे और हररोज देखता जावे जब कुल अर्क जज्ब होजावे और अर्क मजीद डालदिया करें सतरह या २१ दिनतकमें मोती हल होजायँगे (सुफहा १३ किताब अलजवाहर.)

मोतीकी द्रुति-चाह हलमें (अम्लयोगसे) हल मुरवारीद (उर्दू)

अव्वल मुरवारीदको शीरः लैमूंमें पीसकर शीशेमें रक्खे और उसपरसे शीरः मजकूर इस कदर डाले कि मोती छिप जावें और शीशीका मुँह बंद करके किसी जर्फमें जिसमें सिरकः निस्फतक भराहुआ हो मौअल्लिक लटकाकर घोडेकी लीदमें गाडदे चौदह दिनमें महलूल होजायगा (सुफहा ९ किताब अलजवाहर.)

औरभी

इस तरकीबको अकसर हुक्माइइमगारवहने बयान किया है—छोटे छोटे मोती जो सफेद और बुर्राक हों लाकर उनको पहले नमकके पानीमें चंद मर्तबः धोवे बाद उसके मोठे पानीसे धोकर शीशेमें जिसका मुंह चौडा हो रखकर अर्क लैमूं विजौरेका उसपर डाले और मुँहपर शीशेकी डाट लगाकर मुहर करदे कि हवा और खाकका असर न पहुंचे और दोहफ्तेतक चाह हलमें दफन करे अगर हल न हुईहो तो सतरह दिन ख्वाह इकीसदिनतक दफन रहने दे मोमकी तरह नरम होजायगा बादहू चीनीके प्यालेमें निकालकर

साफ पानीसे धोवे जिसमें लेमूंका असर न रहे और मुसफ्फा होजाए। (सुफहा १५ किताब अलजवाहर)

औरभी।

छोटेछोटे सच्चे आवदार सफेद मोती एकहिस्सा सदफ (सीपी) सफेद मोटे दल्दार एकहिस्सा लेकर अव्वल मोतियोंको धोडाले जैसा कि ऊपर जिकर कियागयाहै बादहू शीशेके खरलमें सदफ और मोतीको इस कदर सहक करे कि चिपकने लगे बाद उसके किसी शीशी जजाजीमें जिसका काग भी शीशेका हो रखकर पावभर ताजः लैमूं बिजौरः के मगज़ तुख्मको कूटकर सफेद बारीक कपडेमें छानकर अर्क उसका शीशी मजकूरमें इसकदर डाले कि चार अंगुल अर्क मोती और सीपीके ऊपर रहे बाद उसके डाट लगाकर माष (उर्द) के आटे और लाहौरी नमकसे मुहर करके सुखाकर चाहहलमें इक्कीस दिनतक दफन करे और हर तीसरेदिन गरम पानी लीदपर छिडका करे और मुँह चाहका किसी नांदसे बंद करदे और इक्कीसदिनके बाद आहिस्तगीसे शीशीको निकालले और डाटको खोले मोती और सीपी महलूल होगई होंगी मगर जो चीज अर्कके ऊपर जाकर किसी तरह फैली होगी वह मोतीका महलूल होगा और जो चीज तहनशीन होगी वह सदफ हल शुदः होगी मोती हलशुदःको चांदीके चंमचसे उतार ले (सुफहा किताब अलजवाहर ११)

हल मुरवारीद-(उर्दू)

छोटे छोटे मोती पाकीजः और सफेद लाकर पहले नमकके पानीसे चन्द मरतबे धोवे बाद उसके एकरात नौसादर मअदनी महलूलमें भिगोवे नौसादरको इसतरह महलूल करे कि अव्वल बैजः मुर्गको लेकर उसको पानीमें डाले इतनी देरतक कि उसकी सफेदी व जर्दी अन्दरूनी जम जावे बादहू पानीसे निकालकर छिलका दूर करे और थोडा मुँह तराश डाले कि जर्दी वासानी उससे निकल जावे और सफेदी बैजेकी बोतः के हमशकल रहजावे बादहू नौसादर मुसफ्फा पाकीजःको बारीक पीसकर बोतः बैजः मजकूरमें रखदे और तराशीदः सफेदीसे ढांककर थोडी सी तरमिट्टी उसके मुँहपर रखकर बंद करदे और रातभर शबनम (ओस) में इस तरह रक्खे कि नीचे बोतःके तश्तपराज आब रहे और उस पानीमेंभी थोडासा नौसादर पीसकर मिलादे शुबहको नौसादर मजकूर पानीकी तरह हल होजायगा उसको शीशेके खरलमें निकालकर दानेहाय मुरवारीदको रातभर उसमें तर रक्खे शुबहको निकालकर कूट डाले और फिर छिलकेमें बदस्तूर भरकर मुरवारीद शस्तःको उसके अन्दर रखदे और अर्क लैमूं बिजौरेका बकदर जरूरत और डालकर छिलकेमें भरदे और दूसरे छिलकेको ढाँककर नई गजीके कपडेको उसपर लपेटकर तागे या तारसे मजबूत कस दे और एक गढा गजभरका खोदकर उसमें घोडेकी तर व खुश्क मिलीहुई लीद भरदे और लैमूं मजकूर उसमें दफन करदे और गढेके ऊपर कोई जर्फ औंधा ढाँककर किनारोंपर मिट्टी डालदे छः रोजके बाद खोदे और निकाले सब मोती महलूल होगये होंगे आहिस्तःसे बजरियः चांदी या शीशः या चीनीके चंमचके उतारे (सुफहा ७ किताब अलजवाहर)

फवायद हल मुरवारीद (उर्दू)

अरस्तातालीसने कहाहै कि मुरवारीद महलूल जब पानीकी तरह महलूल होजाताहै तो मबरूस जिसके इलाजसे अतवा आजिज हों एकबारसे लेकर तीनबार अगर बुरस लगावे तो जिल्द हमरंग बदन असली होजाती है और मुरवारीद गैर महलूल मजजूमको नाफेही उसके हल करनेके कई तरीकः हैं। (सुफहा ९ किताब अलजवाहर)

मुरवारीद महलूलका खवास (उर्दू)

सीमावको मुनकिद यानी गुटका करना और किबरियतको तखलीस करना मुरवारीद महलूलके खवाससे है ॥ (सुफहा ५३ अकलीमियाँ)

सदफसे मुरवारीद बनानेकी तरकीब सदफको हल करना (उर्दू)

धोईहुई साफ सफेदरंगकी सदफ जो मोटी और दल्दार हो छोटेछोटे सच्चे मोतियोंके साथ मिलाकर खूब कूटे और शीशेमें रखकर अर्क लैमूं बिजौरह यानी अतरज या अर्क लैमूं कागजी इस कदर डाले कि अजजाइ मजकूर उसमें छुपजावें और दो हफ्तः या तीन हफ्तःतक नमदार सरगीनमें दफन करदे ताकि कुल महलूल होजावें बादहू कवाम करके गाढा करे उसके बाद सीमावको नमक और फिटकिरी मसावीके साथ तसईद करे जब तसईद सफेदरंगका हो जो कईबारकी तसईदमें होगा उसवक्त मुरवारीदके हमवजन मिलावे सीमाव मजकूर मुनअकिद होकर उससे मिलजावेगा क्योंकि यह मुरवारीद महलूलके खवाससे है। (सुफहा अकलीमियाँ ५२)

आम चीजोंकी द्रुतिकी क्रिया बजरिये खुम (उर्दू)

एक खुम यानी मठोर (मटका) सरफराख और ऊँचा ले जिसका तूल ढाईगज शरई और अर्ज पौनगज शरईसे कम न हो और खुमके अन्दर निस्फसे जाइद सिरकः निहायत तुंद व तुर्श भर दे और जिस दवाको तहलील मंजूर हो उसको शीशेमें रखकर खुममें सिरकःके ऊपर कंदीलकी तरह दो अंगुलके फासलेसे लटका दे और बोतलकतानके कपडेसे लपेट दे और खुमके ऊपर मुहर सारूज यानी बे बुझाहुआ चूना सफेदी बैजःमुर्ग गुड निशास्तःकी लगावे और चारों तरफ उसके घोडेकी लीद और कबूतरकी बीट दोनों मिलाकर एक गढेमें भरकर उसमें दफन करदे और शुबह व शाम गर्मपानी उसपर छिडका करे बाजे एक हफ्तेमें और बाजे दो हफ्तेमें और बाजे चालीस दिनमें हल होजातेहैं ॥ (सुफहा अकलीमियाँ ८८)

चाह हलकी तरकीब (उर्दू)

दो चाहहल बनावे और दोनों करीब करीब हों और दोनोंके दरमियानमें इतना बडा सूराख करदे कि अन्दरहीअन्दर मोती या दवा जिसका हल मंजूर है एक चाहमें मिनकतल किया जासके जिसतरह शीशागरोंकी भट्ठीमें होताहै और लीद अस्प ताजा कबूतरकी बीटमें मिलाकर चाहमें भरदे दो चाह बनाने और उसके दरमियानमें अन्दरूनी रास्ता रखनेकी गरज यह है कि मोती या दवा दूसरे

चाहमें मुन्तकिल करनेके वक्त हवा न लगने पावे और दूसरे चाहमें जो ताजा लीदमें भरागया हो मोती मजकूर रखदिया जासके चालीस रोज ज्यादःसे ज्यादः हल करनेकी मियाद है और हफ्तःवार लीद वगैरःको तवदील करना चाहिये और जबतक महलूल न हो अमल तदफीनकी जारी रक्खे। (सुफहा किताब अलजवाहर ६९, ता० ३।२।११)

हिदायत मुतअल्लिक चाह हल (उर्दू)

चाह हल इस मुआमिलेमें यह अमर काबिललिहाज है कि चाह मजकूर पुख्तः होना चाहिये और लीदपर गरम पानी या पेशाव गर्मीके दिनोंमें डाल दिया करें दिनमें एकबार या दोबार ऊपरसे कोई नांद या मटकेका निस्फ हिस्सा जेरीन ढांक दियाजावे और चारोंतरफ सिर्फ जोडके मुकामपर मिट्टीसे इस तरह बराबर कर दे कि कोई सूराख खुला न रहे गहराई चाहकी एक गजकी और दौरका कुतर निस्फगजका हो। (सुफहा ६९ का हासिया किताब अलजवाहर)

द्रुतिके मुतअल्लिक (उर्दू)

वाजः हो कि हलमें यह बात काबिल याद रखनेके है कि जिस कदर कसरतसे सहक कियाजावेगा हल अच्छा होगा अकसीरके हल करनेके वास्ते लवनुलअजरः या तेजाब या माइउलहाद वगैरः दूसरे पानीकी इमदादकी जरूरत है वरनः अकसीर हलमें कामयाबी नहीं होती। (सुफहा ९० अकलीमियां)

पारदहल।

सज्जी हिस्सा १, शोरा हिस्सा१, पाणी रतल १, भिन्न २ भिगाणे फिर नितारके इकट्ठे कर भांडेमें पाकर जोश देवे आधा रहे तौ उतार लेवे फिर सज्जी तथा शोरा रतल पाणीमें भिगोकर नितारकर उसमें पाना फिर आगपर पाया पाणी सुखाना इसीतरह पन्द्रहबार सुखाना फिर पारा एक रतल उडाके वह पारा प्यालेमें वा शीशीमें पाकर पंजदिरम अक्षय नमक पाकर बंद करके हिलाना जब लवण जलरूप होजावे तब लवण और पाणा पाराभी पाणीरूप होजावेगा ऊपरला पाणी नितारकर अलग करे पारा हेठ रहेगा यह पारेका हलहै। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

पारदद्रुति लवणद्रुतिके द्वारा।

लवणकी द्रुति करणी हो तो इस अक्षय लवणको नवसादरके हलनाल खरलकर शीशीमें पाकर तशविया देवे एवं बहुबारं-जब नरम होवे तब शीशीमें वा प्यालेमें पाकर जलपात्रमें रखकर मंदमंद अग्निकी भाप देवे जबतक द्रवित होवे द्रवित उतार लेवे उस द्रवित नाल अद्रवितको खरलकर फिर भाप देवे फिर द्रवित उतारकर पूर्वद्रवितमें रक्खे एवं पुनः पुनः जबतक सब द्रवित होवे।

लवण द्रुतिसे पारदद्रुति यथा पारद ६ बार उडाया हो या शीशीमें पाकर उसमें द्रुत लवण पाकर हिलावे फिर उसको लिदमें दबा छोडे सातदिन वा चौदह दिन पारदद्रुति होवेगी। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

पारदद्रुतिसे रजतकर योग।

१ तोला द्रुत पारा७० तोले पारेपर पाकर खरल करे तौ वह गिरा होवेगा. वह गिरा १ तोला ७० तोले पारेपर पाकर खरल करे तौ वह भी कली जैसा होवेगा उसको खोलना हो तो उसमें १ तोला चांदी पाके सहित सुहागा घृतपाके दशबार गालणा सब रजत होवे॥ (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

अक्षयलवण।

लवणशीशा १२ तोले पीसकर कुज्जीमें पाकर मुखबंद करके २० सेर गोहेकी आग देवे फिर निकालके पीसके फिर पूर्ववत आग देवे एवं बारबार जबतक घटे नहीं अक्षय लवण भया. (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

अनेकद्रुतिमेलापन।

कृष्णागरुनाभिसिलेरसोनसितरामठैरिमा द्रुतयः॥ सोष्णा मिलन्ति मर्द्याः श्रीकुसुमपलासबीजरसैः॥४६॥ (र. रा. सुं.)

अर्थ-कालीअगर, कस्तूरी, मैनसिल, लहसन, सफेद हींग, तथा लोंग और ढाकके बीजोंका तैल गरम किये हुए इन सब चीजोंसे अग्निपर या तेज घाममें घोटे तो यह सब द्रुतियें आसपासमें मिल जायँगी॥ ४६॥

अथ नागद्रुतिः।

ता० ५। १२। ०७ को ४ तोले पीली हरताल, ४ तोले कलमी शोरा, ४ तोले वेबुझा चूना तीनोंको पीस मिला ४॥ छ० पानीमें भिगो चौडे मुंहकी शीशीमें भर शीशिका मुँह कपडेसे बांध धूपमें रखदिया। रातको गर्म जगहमें रक्खागया।

ता० ६ के सबेरे देखा तौ शीशीके अन्दर छोटे छोटे अंकुरसे दीख पडे पानी थोडा समझ आधी छ०के करीव पानी और मिला बोतलको धूपमें रखदिया।

---

१ इन चीजोंको चीनीके कटोरेमें रख पानी डालकर चलाया तो कुछ खदर नदर नहीं हुई ५-७ मिनट बाद शीशी भरदिया तो शीशी गरम होनेलगी थोडी देरमें खूब गर्म होगई टूटनेके भयसे फिर कटोरेमें ही लौटलिया दो घंटे बाद शीशीमें भरदिया।

ता० ७ को बोतलमें कलकेसे अंकुर न दीखपडे बोतल धूपमें रक्खी गई। चूंकि किताबमें लिखा थाँ कि ये पानी जब मुर्गेके परको जलादेवे तब ठीक समझना इसवास्ते आजता० ८ को शीशीमें मुरगेका पर भिगोया तो बिलकुल न जला और न कुछ और बात पैदा हुई।

ता० ९ को बोतल धूपमें रक्खीगई। रातको चूल्हेकी गर्मीमें रखदी।

ता० ११ को फिर मुरगेका पर डाला किन्तु कुछ नतीजा न निकला।

ता० ११ को उपरोक्त तीनों दवा यानी हरताल, शोरा और चूना १-१ तोले पीस बोतलमें और डालदीं और बोतल धूपमें रखदी।

ता० १२ आज भी बोतलमें पर डाला किन्तु कुछ नतीजा न निकला।

दूसरा उद्योग।

कई दिन बीत जानेपर भी उपरोक्त तेजाबमें जब वांछित तीव्रता उत्पन्न न होनेका कारण विचारा गया तो समझ पडा कि शीशीका मुंह केवल कपडेसे बंधा रहनेके कारण बाष्पनिकलते रहनेसे तेजाबमें तीव्रता न उत्पन्न हुई अत एव ता० १३ को एक डाटदार शीशीमें पावभर जल भर ४ तोले शोरा कलमी, ४ तोले चूना बेबुझा तीनोंको पीस मिला भरदिया और शीशीको डाट लगादी शीशीको गरम होता देख ठंडे पानीमें रखदिया जिससे उसकी ऊष्मा शान्त होगई।

ता० १४ से शीशी नित्यप्रति धूपमें रक्खी गई।

ता० १८ को शीशीमें मुरगेका पर डाला तौ न जला।

कार्यमें सफलता न देख दोनों बारकी दवाका मेल।

ता० २० को दोनों शीशियोंका मसाला एक डाटदार बोतलमें भर रखदिया और बोतलको हररोज धूपमें रखना जारी रक्खा।

ता० २२।१२ को बोतलके जलमें फिर शोरेकीसी कलमें दीखपडी।

ता० २५ जनवरीको उक्त बोतलमेंसे ऊपरका पानी नितार लिया जो तोलमें ३॥ छटांक हुआ। बादको २ छटांक सीसेको कलछीमें डाल कडाधोंक १४ वार उस पानीमें बुझाया। हर बुझाउपर तोल उसकी नीचेके नकशेके अनुसार घटती गई।

नकशा।

नं० बुझाउ	तोल सीसा.
१	१० तोले
२	७ तोले ८ मा०
३	५ तोले ७ मा०
४	४ तोले ४ मा०
५	३ तोले ५ मा०
६	३ तोले ३ मा०
७	३ तोले०
८	२ तोले ५ मा०
९	१ तोले ९ मा०
१०	१ तोले ६ माशे
११	१ तोले ३ मा०
१२	१ तोले०
१३	९ माशे
१४	८ माशे

अंतमें ८ माशे सीसा और ४ तोले उसका मैल कुल पीलीसी रंगतका रहगया। इस ८ माशे सीसेको चीनीकी रकाबीमें रख हवामें रखते रहे किन्तु और कुछ नतीजा न निकला।

सम्मति-पहलीबार सीसा सुगमतासे पिघलगया था बुझाउके बाद दुबारा बहुत देरमें कडी आंच करनेपर गला और आगे भी कडीही आंच देनी पडी अब कभी ठंडी आंचमें देरतक धोंकतेथे तौ मैल बहुत रहजाताथा और पिघले सीसेकी तोल बहुत घटजाती थी। सबसे अच्छा गलाउ जिसमें छीजन कम होतीथी. इसप्रकार हुआ कि लोहेकी कलछी या घरियाको पहले खूबगर्भ करलिया और फिर उसमें सीसा डाल जल्दीसे कडी आंच दे पिघला लिया। आगेसे ऐसाही कियाजावे।

नागद्रुति।

ता० १७ १२।०७ को १ छटाक कृष्णाभ्रकके चूर्णमें २॥ छटांक सज्जी मिला एक बड़ी घरियामें भर भट्ठीकी कडी आंचसे गलादिया २ घंटेमें जब अभ्रक गलकर नीचे बैठगया तब घरियाको उतार ठंढा करलिया।

ता० १८ को घरियासे निकाला तो जमाहुआ कठिन पत्थरसा ११ तोले ३ माशे वजन निकला अर्थात् कुल १७॥ तोले, ६ तोले ३ माशे कम हुआ।

ता० १९ को उक्त दवामेंसे ९ माशे नमूनेके लिये निकाल बाकीको पीसा तो कठिन पिसा और तोलमें १० तोले ३ माशे रही ३ माशे छीजन गई।

मदनमुद्रा (सय्याद पहाडकी क्रियासे)

ता० ३०।८।०७ को २ छटांक मोम छानाहुआ और ५ छटांक अलसीके तेलको ६ घंटे बहुत मंद और ६ घंटे ऐसी मन्द आंचसे जिससे तेलमें धुआं उठता रहा कढाईमें औटाया रातको कढाई चूल्हेपर ही रक्खी रही।

ता० ३१ को सवेरे देखा तो ठीक कडा न था मोमसाही था अतएव ७ से १०॥ बजेतक ३॥ घंटे फिर औटाया तो १० वजे खूब झाग उठनेलगे उनको चलातेगये तो आधघंटेहीमें एकदम कडाही झागोंसे भरगई और वह लोथडासा होगया किसी चीजपर चिपटता न था आंच अधिक समय तक लगगई जिस समय झाग उठनेलगे थे उसी समय उतार लेना था कि चीचड न होता किन्तु जमजाता और फिर पिघलानेसे पिघल सकता।

उपरोक्त क्रियाका दूसरीबार अनुभव।

ता० २०।९।०७ को ७॥ तोले छाना हुआ मोम और १९ तोले अलसीके तेलको लोहेकी कडाहीमें ऐसी सामान्य आंच दीगई जिससे कडाहीमें हलका धुआं निकलता रहा। बाद ८ घंटेके कडाहीमें झाग आनेलगे और थोडी देरके बाद सब तेल ज्वारबराबरके झागोंसे ढकगया उस वक्त लोहेकी कलछीसे चलातेरहे और देखते रहे तो १०-१५ मिनटमेंही कलछीसे गिरते हुए तेलमें घनता दीखपडी

अर्थात् तेलकी धाराके पिछले भागका स्वरूप गुडकी लाटकासा दीखपडा । तुरंत कड़ाहीको उतार लिया (यदि कड़ाही थोडी देर भी और रहती तो क्रिया पहलीहीकी तरह खराब होजाती । झाग उठनेके समय सावधानीकी आवश्यकता है क्योंकि फिर थोडीही देरमें पाक सिद्ध होजाता है) और इस भयसे कि गर्म कड़ाहीमें रक्खे रहनेसे पाक तेज न होजावे थोडेसे गर्म गर्मकोही लाखके अमृतबानमें भरदिया तो २-१ मिनटके बादही उसमेंसे झागस्वरूप उबलकर बहुतसा भाग बह गया । यदि उसमेंसे न लौटते तो वेग इतना तीव्र था कि प्रायः बहुतसा भाग निकलकर कुछ थोडासाही रहजाता । अतएव बाकीको खुली सैनकमें भरा तो उसमेंसे उबला नहीं केवल थोडेसे झाग दिये ।

सम्मति-झाग उठनेका कारण ओक्साइडेशनका आरम्भ होजाना बाबू ईश्वरदास जापानी (भारतवासी एक वैश्य महाशय जो जापान जाकर काचका काम और कैमिस्ट्री विद्या सीखकर आये थे)-के अनुभवसे मुद्राकी निष्फलता (२९।९।०७)

ता० २९ सितंबरको जलयन्त्रमें इसकी मुद्रा कर ऊपर जल भर नीचे अग्नि दीनी थोडीही देरमें मुद्रा फूलगई और जल अन्दर प्रवेश करगया ।

मदनमुद्राका दूसरा प्रकार ।

ता० ९।१२।०७ को, २ रुपये भावके १ सेर ६ छ० मोमको जो छान साफ करनेपर १। सेर रहा था । एक बडी कड़ाहीमें जिसमें मनभरके करीब पानी आता था डाल २० सेर पानी भर बडे चूल्हेपर रख १० बजेसे तेज आंच बालनी आरम्भ की पानी बीचमें उबलता रहा । १२ बजेसे आंच खूब तेज करदी जिससे सब कढाईका पानी उबलने लगा । २ बजेपर कढाईमें ४ अंगुल पानी रहजाने और मोम कढीसा गाढा होकर खदकने लगनेपर १८ सेर पानी और डालदिया । शामके ६ बजे पर जब फिर ३ अंगुल पानी रहगया और मोमकी पहलीहीसी हालत होगई तब १८ सेर पानी फिर डाला इसी तरह चार चार घंटे बाद रातके १० बजे २ बजे और सबेरेके ६ बजे १८-१८ सेर पानी डाला । ता० १० को १० बजे ३ अंगुल पानी रहजानेपर फिर १८ सेर पानी डाला और २ बजेपर १८ सेर पानी कड़ाहीमें और डालदिया । ३॥ बजे कढाईमें थरमामेटर डाला तो १०० डिग्री तक गर्मी थी १०० डिग्रीपर पानी उबलने लगता है ।

४ बजे ६ सेर पानी गरम करके डालागया इस बार गर्म पानी डालनेसे मोम जमकर ऊपर नहीं आया ६ बजेतक आंच देकर १०॥ प्रहर होजानेपर काम बंद करदिया और चूल्हेसे कोयले निकाल कढाईको जैसेका तैसा रक्खा छोड दिया, किन्तु थोडेसे कोयलोंसे सबेरेतक गर्मी रही ।

ता० ११ को देखा तो कढाईमें ऊपर मोम जमाहुआ था और नीचे पानी था सय्यद पहाडके लेखानुसार तलीमें कोई चीज नहीं बैठी थी, कड़ाहीसे मोम पृथक् कर उसका पानी निचोड धूपमें सुखादिया ।

ता० १४ को सूखजानेपर तोला तो १ सेर २ छटांक हुआ २ छटांक छीजगया । ये काम १०॥ प्रहर चला जिसमें २० सेर पानी तो आदिहीमें मोमके साथ डालागया था बादको ८ बारमें ३ मन १२ सेर पानी और डाला यानी कुल ३ मन ३२ सेर पानी पडा जिसमेंसे अखीरमें १५ सेरके करीब बच भी रहा ।

उक्त मोममेंसे १ छटांक मोमको करछीमें पिघलाया तो पिघलगया ठंडा होनेपर साधारण मोमसे रंगमें कुछ काला और तोडनेमें कुछ करारा मालूम हुआ ।

अनुभव ।

ता० १७ को जलयंत्रपर उक्त मोमकी मुद्रा कर यंत्रमें पानी भर नीचे आंच जलाई तो पानीके गरम होतेही मोम पिघलगया और पानी यंत्रके अन्दर प्रवेश करगया ।

सम्मति-ऐसा समझ पडताहै कि जल घटनेपर ठंडा पानी डालना ठीक न हुआ सर्वदा खौलताहुआ पानी डालना योग्य था । जिसका कुछ पता-ग्रंथोंसे लगताहै ।

ता० २९ फर्वरीको ८ बजे लोहेकी कढाईमें १८ सर पानी भर करीब १ घंटेके तेज आंच लाल खूब खौलजानेपर उस पानीमें उक्त १ सेर २ छ० मोमको डालदिया और तीव्राग्नि देना आरम्भ किया । मोम डालतेही पिघलकर पानीके ऊपर आगया और पानीके साथ खोलने लगा और पानीके अन्दर जाता और बाहर आता दीखपडा[१] १० बजेतक आधा पानी जल चुकनेपर ९ सेर गर्म पानी और डालदिया बादको जितना पानी अन्दाजसे घटतागया उतना १ सेरके कटोरेसे खूब गर्म पानी डालडाल पूरा करतेरहे । रातके १२ बजेतक २ मन ३२ सेर पानी और पडा अर्थात् कुल ३ मन १९ सेर पानी हुआ-१५ घंटे आंच दे रातके १२ बजे काम बंद करदिया और कढाईको गर्म चूल्हेपर रक्खी छोडदिया ।

ता० १ मार्चके सवेरे देखा तो कुल मोम पानीके ऊपर जमगया था जिसको निकाल पानी निचोड धूपमें सुखा दिया (अबकीबार मोम नीचे न बैठा)

मदनमुद्रा ।

ता० १९।१२।०७ को २ तोले मदनमुद्राका मोम और २ तोले साफ कीहुई लाख (जिसे इसतरह साफ किया था कि २ छ० लाखको हलकी टुकरीकी थैलीमें भर कोयलोंकी आंचपर दूरसे पिघलाया तो जितनी लाख पिघलपिघलकर थैलीके बाहर आतीगई उसीको छुरीसे छुटा छुटाकर अलग रखतेगये । इसतरह २ छ० लाखमें ३॥ तोले हाथ लगी) को कलछीमें पिघला २ तोले चूना पिसाहुआ उसमें डालदिया (प्रथम तो पिघलकर लाख और मोमही भलीभांति नहीं मिलेथे किन्तु चूना डालनेसे और कंकडीसी पडगई) और जलयंत्रपर उसकी मुद्रा गर्मगर्मकीही करदीगई । ठंडा होनेपर यंत्रमें पानी भरा तो दरदरी मुद्रासे ठीक संधिबंद न होसकनेके कारण अन्दर पानी जाता मालूम हुआ बादको १ घंटे मंदाग्नि दीगई तो मुद्रा एकतरफसे कुछ फूलगई और पानी अन्दर प्रवेश करगया ।

---

१ पानी जब सूखनेपर आता था तब तो खदकने लगताथा और जब उसमें पानी और डालाजाता था तब ठंडा होकर कुल मोम पेव सीसा हो पानीके ऊपर तैर आता था और जब गर्म होकर उबलने लगता था तब कुछ मोम पानीमें मिलजाता था और कुछ ऊपर झाग रूपमें रहता था ।

पुनः ता० २६ को मदनमुद्राका १॥ तोले मोम, १॥ तोले साफ कीहुई पिसीलाख,१॥ तोले पिसा चूना ले प्रथम मोमको पिघलाकर उसमें लाख डाल लाखके भी पिघल जानेपर (लाख पिघलकर इसबार भी भलीभांति मोममें नहीं मिली) थोडा थोडा कर चूना डालदिया और लकडीसे चलाते गये। चूना मिल जानेपर गर्मगर्मकीही जलयंत्रपर मुद्रा कर लोहेकी शलाखसे घोटदिया जिससे खरखराहट जातारहा बादको यंत्रमें पानी भरा तो उसवक्त पानी अन्दर जाता न मालूम हुआ किन्तु जब उसके नीचे आंच दी तो मुद्रा फूलगई और पानी अन्दर प्रवेश करगया।

जलमुद्रा।

ता० ४।२।०९ को पुरानी ईटका चूर्ण १ छ०, कलइ १ छ०, गुड १ छ० पहली दोनों चीजोंको कूट पीस छान बारीक कर गुडको बबूलके काथमें (जो ऽ।= बबूलकी छालको २ सेर पानीमें औटा ऽ। तय्यार कियागया था) घोल उस काथसे साथ उक्त दोनों औषधियोंको २-२॥ घंटे घोट जलयंत्रपर मुद्रा करदीगई।



ता० ५ के सबेरे देखा तो सब ओरसे मुद्रा चटकगई थी अतएव उसपर और मुद्रा लगा चिकना ठीक कर यंत्रमें पानी भर भट्टीपर आंच दी तो उस समय पानी अन्दर न गया किन्तु जब करीब ½ घंटे अग्नि लगचुकी तब एक दो जगहसे बबूले उठने लगे अर्थात् पानी प्रवेश होने लगा। अतएव उतार फिर दुबारा मुद्रासे बंद कर उसी समय पानी भर भट्टीपर चढाया तो थोडी देरमें बडे-बडे बबूले निकलने लगे और नीचेकी भापके जोरसे रकाबी ढीली होगई और पानी अन्दर प्रवेश कर गया अतएव फिर बंद कर भट्टीपर चढा भापका जोर रोकनेके लिये रकाबीपर भारी लोहेका बांट रखदिया किन्तु पानी तब भी न रुका,जिसका कारण यह ज्ञात हुआ कि रकाबी हलकी थी और सब ओरसे ठीक न बैठती थी संधि रहजाती थी और उसी संधिको अन्दरसे बाष्प खोल पानीके अन्दर जानेका मार्ग बना देती थी।

सम्मति-यन्त्र ठीक न होनेके कारण यह निश्चय न हुआ कि वे जलमुद्रा ठीक है वा नहीं। अतएव भारी और सच्चे किनारेका जलयंत्र बनवाया जाय तब उसमें इस जलमुद्राकी पुनः परीक्षा कीजावे। ये जलमुद्रा सुगम और आशाप्रद अवश्य है। जलयंत्रके ऊपर कटोरीके कस जानेका भी प्रबंध रहे।

कृष्णधान्याभ्र।

हाथरससे आये ।=) सेरके भावके ६ सेर कृष्णाभ्रको (जिसके किसीकिसी ढिम्मेमें श्वेत पत्थर मिल रहा था) उत्तम, मध्यम, दो भागोंमें विभक्त कर अर्थात् जो स्वच्छ चमकदार कृष्णवर्णका था उसे उत्तम और जो लालामी लिये मिट्टी मिले वर्णका था उसे मध्यम रक्खा। पश्चात् दोनोंको भागोंसे पत्थर इत्यादि पृथक कर अलग अलग दोनोंके हाथोंसे छोटे छोटे पत्र कर इमाम दस्तेमें कूट लोहेकी चलनीमें छान तोला तो ४ सेर २ छ० उत्तम और १ सेर २ छ० मध्यम कुल ५। सेर अभ्रचूर्ण तय्यार हुआ-१२ छ० छीज गया। फिर उस उत्तम मध्यम दोनों प्रकारके अभ्रचूर्णको पृथक पृथक कम्बलकी दो थैलियोंमें भर एक एक रात पानीमें भिगो दूसरे दिन मथ छान ऊपरसे पानी नितार सुखा हाथोंसे मीड तारोंकी चलनीमें छाना और अवशेषको पुनः इसी तरह किया तो ३ सेर १२ छ० उत्तम और १ सेर २॥ छ० मध्यम धन्याभ्र तैयार हुआ। ५ छ० और छीज गया। (३०।३।०९)

धान्याभ्रमें भावना।

उक्त ३ सेर १२ छ० उत्तम अभ्रकको ककरोंदेके समान रससे भावित कर ५ घण्टे घोट और उक्त १ सेर २॥ छ० अध्यम अभ्रको द्विगुण रससे भावित कर १० घण्टे घोट सुखा मीड तारोंकी चलनीमें छान डाला। तोलमें पूरा ३ सेर १२ छटांक उत्तम और १ सेर ३ छटांक मध्यम हुआ।

धान्याभ्रमें विशेष भावना।

(१) उक्त ३ सेर १२ छ० उत्तम अभ्रमेंसे १ सेरको पुनः ३ सेर ककरोंदेके स्वरसकी और भावनादे ६ दिनमें ३६ घण्टे घोट सुखा दिया अर्थात् इसमें सब चतुर्गुण रसकी भावना लगी-(यह अभ्रद्रुति उद्योगमें काममें लिया गया।)

(२) उक्त अवशेष २ सेर १२ छ० आम अभ्रमेंसे १ सेरको २ सेर ककरोंदेके स्वरसकी भावना दे ८ घण्टे घुटाई कर सुखा दिया। सूख जानेपर मीडचलनीमें छान तोला तो १ सेर १ छ० हुआ अर्थात् इसमें सब द्विगुण रसकी भावना लगी (यह अभ्र हकीम फतहयाबखांकी सत्त्व पातनकी क्रियामें काममें लिया गया)।

अभ्रद्रुति उद्योग।

हकीम फतहयाबखां मोहनपुरा जिला बुलन्दशहर द्वारा १७।४।०९

ता० १७ को उक्त नं० १ के १ सेर कृष्णधान्याभ्रमें (जिसको ककरोंदेके चौगुने रसकी भावना लग चुकी थी) १॥ सेर सिरका अंगूरी डाल रबडीसा पतला कर ७ घंटे घुटाई की—

ता० १८ को बिना और सिरका डाले ७ घंटे घुटाई की।

ता० १९ को ३ छ० सिरका डाल ५ घंटे घुटाई की।

ता० २० को ३ छ० सिरका डाल ७ घंटे घुटाई की।

ता० २१ को ३ छ० सिरका डाल ७ घंटे घुटाई की।

ता० २२ को ३ छ० सिरका डाल ७ घंटे घुटाई की।

ता० २३ को घुटाईके लायक काफी पतला समझ और सिरका न डाल ७ घण्टे घुटाई की और दो पहरको धूपमें रख दिया।

ता० २४ को ७ घंटे घुटाई की।

ता० २५ को देखा तो कुछ फूला हुआ मालूम हुआ अतएव धूपमें बैठ ४ घंटे घोटा गाढा होजानेसे हाथ रुकनेके कारण घुटाई बन्द कर सुखा दिया।

ता० २७ को १ घण्टे घोट गुडी तोड सुखा दिया गया।

ता० ३।५ को भलीभांति सूख जानेपर तोला तो १ सेर ३ छ० हुआ बादको बोतलोंमें भर दिया गया । इस १ सेर धान्याभ्रमें (जिसको चतुर्गुण ककरोंदेके रसकी भावना लग चुकी थी) २। सेर सिरका १० दिनमें १९ प्रहर मर्दन द्वारा शोषण किया गया ।

अभ्रद्रुति उद्योग ।

(पंडित कुलमणि शास्त्री द्वारा ३० । ६ । ०७)

तारीख ३० जूनको एक हांडीमें ड४। सेर तिवर्षा सिरका भर ३ सेरके भावके पावभर चांवल डाल औटा एक घण्टे बाद खूब हल होजानेपर उतार ठंडा कर मथ छान डाला जिससे गाढा मांड निकला बादको एक बडे शीशेमें भर १४॥ छ० कृष्णाभ्र (जिसके छोटे छोटे पत्र कर लिये गये थे) डाल खूब मिला (गाढी रबडी सा होगया) शीशेका मुख बन्द कर ३ कपरौटी कर करीब १ गज गहरे लीदसे भरे गढेमें गाढ दिया गया ।

४० दिन बाद ता० १०अगस्तको शीशेको गढेसे निकाला तो लीदकी गर्मीसे शीशासे खूब गर्म होरहा था अभ्रक नीचे बैठ गयाथा सिरका ऊपर था जितना शीशा गाढते समय खाली था उतना ही अब मिला कुछ सूखा नहीं। खोल कर करछीसे अभ्रकको निकाल उंगलीसे टटोला तो कुछ नरम हुआ था किन्तु उसमें सख्त मौजूद थी हल नहीं हुआ था । इसवास्ते उसे छान सिरकेको शीशेमें भरलिया ये तोलमें १ सेर १० छ० था और अभ्रकको पानीसे धो धूपमें सुखा तोला तो करीब १३ छटांक था ।

अपनी बुद्धिसे पुनः उद्योग ।

उसी अभ्रकको कूट हाथोंसे मीड चलनीमें छान रेतसा करलिया ये तोलमें इस समय १२ छटांक रहा जिसमेंसे १ छटांक मोटा अलग करदिया बाकी ११ छटांक अभ्रकको फिर उसी १ सेर १० छ० सिरकेमें भिगो मिलादिया । (१५।८।०७)

ता० १६ को उसमें १। सेरके करीब नयासिरका और मिला उसी पहले शीशेसें भर डाटलगा मुंहपर कपरौटी करदी (ये शीशा पेंदीसे ८ अंगुल ऊंचा भरागया) बादको उसी पहले गढेमें आधागोबर भर बीचमें शीशेको रख ऊपरसे और गोबर गढेके मुंहतक भर बंद करदिया ।

४० दिन बाद ता० २६ । ९ । ०७ को उक्त बोतलको निकाला तो बोतल गर्म थी किन्तु पहलीसी गरम न थी क्योंकि लीदसे गोबरमें ऊष्मा कम होती है और अबकी बार गोबर दियागया था सिरका कुछ सूखा न मालूम पडा क्योंकि बोतल ८ अंगुल ऊंची ही भर रही थी इसको ३–४ बार पानी डाल २ नितारा और फिर सुखाया तो ७ छटांक २ तोले मोटा अभ्रक और ३ छटांक दो तोले बारीक कुल १० छटांक ४ तोले अभ्रक हाथ लगा १ तोले छीजगया ।

सम्मति–जानपडताहै कि अभ्रकचूर्णकी केवल सिरकेके योगसे और लीद गर्त में द्रुति होना कठिन है । अभ्रक सत्त्वकी हो तौ हो । अभ्रकका सत्त्वही द्रुति होनेयोग्य है इसका समर्थन पुस्तकोंसे होताहै और हकीम सहसबानने भी किया ।

द्रुतिके निमित्त सिरकेका तीव्र सिरका बनानेका उद्योग ।

ता० २६ को १ सेर १० छटांक तिवर्षे सिरकेको तामचीनीके ढक्कनदार कटोरेमें पौन छटांक चांवल डाल मंदाग्निसे औटाया २ घंटेमें चावल खूब हल होजानेपर उतार मथकर छानडाला । करीब १ तोले चावलोंका फोक निकला बाकी सब सिरकेमें मिलगये । ये सिरका थोडा गाढा होगया और तोलमें १ सेर ३॥ छ० रहा । दो बोतलोंमें भर रखदिया । जब धूप निकलती थी तब धूपमें रक्खा जाताथा । (२६ । ८ । ०७)

४०दिन बाद ता०९।१०को सिरकेको जो नितर आया था नितार एक नई बोतलमें भरलिया जो आधी बोतल होगा (इस नितरे सिरकेमें कुछ तीव्रता न जानपडी) और बाकी बचेको छान १ बोतलमें भरदिया । छाननेमें कुछ फोक निकला ।

ता० १० को लोहेकी तिपाईमें कपडा बांध सिरकेको टपकाना चाहा तो न टपका फिर इसवास्ते दो बोतलोंमें भर डाट लगा अलमारीमें रखदिया कि बगैर हिलेडुले नीचे बैठजाय और ऊपरसे सिरका नितर आवे ।

ता० १८।१०तक बोतलोंमें गाद न बैठी फिर इसको कटोरेमें भर बत्ती लगा नितारा चाहा तोभी न टपका देखा तो गाढा बहुत था इस कारण न टपकता था लाचार फेंकदिया।

सम्मति–अनुभवसे ज्ञात हुआ कि इस चावलकी क्रियासे सिरकेमें कुछ विशेष तेजी न आई, उलटी यह हानि हुई कि सिरकेका बहुतसा भाग गाढा होगया और वह फेंक देना पडा ।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्ये-ष्ठमलकृतायां रसराजसंहितायां भाषाटीकायां बाह्यद्रुति–नागद्रुतिसंस्कारवर्णनं नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

जारणकर्माऽध्यायः १८.

जारणावश्यकता ।

यस्त्वेवं विधिमासाद्य जारणाक्रमवर्जितम्॥
सूतकं मारयेत्तेन मारितं सकलं जगत् ॥
न भवेत्तस्य संसिद्धी रसे वाथ रसायने ॥
॥ १ ॥ (टो.नं.)

अर्थ–जिसमें जारणका काम नहीं है ऐसी क्रियासे जो वैद्य पारदकी भस्म करतेहैं वे समस्त जगत्के मारनेका उपाय करतेहैं और उस वैद्यकी रस और रसायन बनानेमें सिद्धि नहीं होतीहै ॥ १ ॥

गंधकजारणविना पारदसाधननिषेध ।

गुरुं शास्त्रं परित्यज्य विना जारितगंधका-
त ॥ रसं मारति दुर्मेधास्तं शपेत्परमेश्वरः॥
॥ २ ॥ (र.रा.सुं.,र.सा.प.)

अर्थ–गुरु और शास्त्रके मार्गको छोडकर विना गंधक जारण किये जो निर्बुद्धि वैद्य पारदको सिद्ध करताहै उसको श्रीमहादेवजी शाप देतेहैं ॥ २ ॥

गंध और बीज जारणआवश्यकता ।

अजीर्णं चाप्यबीजं वा यः सूतं घातयेन्नरः॥ ब्रह्महा स दुराचारी मम द्रोही महेश्वरि ॥ ॥ ३ ॥ (र. प.)

अर्थ–गंधक आदिसे जीर्ण नहीं कियेहुए अथवा नहीं बीज जारण कियेहुए पारदको जो वैद्य भस्म करताहै हे पार्वती वह वैद्य ब्रह्महत्यारा, दुराचारी और मेरा शत्रु होताहै ॥ ३ ॥

अन्यच्च ।

अजीर्णं चाप्यबीजं च सूतकं यस्तु घातयेत ॥ ब्रह्महा स दुराचारी मम द्रोही महेश्वरि ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन जारितं मारयेद्रसम् ॥ ४ ॥ (र.मं.,नि.र.,र.सा.प.)

अर्थ–हे पार्वती जिसमें बीज और गंधादि नहीं जारण कियेगयेहैं ऐसे पारदको जो वैद्य भस्म करताहै वह ब्रह्महत्यारा, दुराचारी और मेरा शत्रु होताहै ॥ ४ ॥

हेम और गंधजारणकी आवश्यकता ।

अजारयन्तः परिहेमगन्धं वांछन्ति सूतात्फलमप्युदारम् । क्षेत्रादनुप्तादपि शस्यजातं कृषीवलास्ते भिषजश्च मन्दाः ॥ ५ ॥ (र. चिं., नि. र., र. रा. शं., बृ. यो., र.रा. प., र. सा. प.)

अर्थ–जो वैद्य सुवर्ण और गंधकके जारण किये विना पारदसे उत्तम फलको चाहतेहैं तथा जो किसान विना बोये खेतसे बहुतसे अन्नको चाहतेहैं वे वैद्य और वे किसान दोनोंही मूर्ख हैं ॥ ५ ॥

बीजजारणकी आवश्यकता ।

रसे रसायने चापि यावद्बीजं न जारयेत् । तावद्वृथा द्रव्यहानिं करोति ब्रह्महा भिषक् ॥ ६ ॥ (टो. नं.)

अर्थ–जबतक रस और रसायनके लिये बीजका जारण नहीं करे तबतक वैद्य अपने धनको व्यर्थही व्यय करताहै और ब्रह्महत्यारा कहाताहै ॥ ६ ॥

गगनग्रासकी आवश्यकता ।

यद्यपि गंधकजारणांतेन कर्मणा सूतो दलकर्मवर्णवृद्धितारकृष्णीकरणादिकर्मकरणे समर्थो भवति तथाऽपि गगनग्रासं विना पारदस्य बलवत्त्वं वेधकशक्तिः पक्षच्छेदश्च न संभवत्यतो गगनग्रासादिसंस्काराः कर्तव्याः ॥ ७ ॥ (ध. सं.)

अर्थ–यद्यपि गंधक जारणान्त कर्मसे पारद दलकर्म, वर्णवृद्धि तथा तारकृष्टि आदि कर्म करनेके योग्य होताहै तथापि अभ्रकजारके विना पारदमें बलवेधशक्ति और पक्षच्छेदन होताहै इसलिये गगनग्रास आदि संस्कार करने चाहिये॥७॥

अभ्रजारणकी आवश्यकता ।

घनरहितबीजजारणसंप्राप्तिदलादिसिद्धिकृतकृत्याः । कृपणः प्राप्य समुद्रं वराटिकालाभसन्तुष्टः ॥ ८ ॥ (र.चिं.,नि.र.,र. रा. शं., बृ. यो.,र.रा. सुं.,र.सा.प.)

अर्थ–जो वैद्य अभ्रक जारणके विनाही केवल बीजजारण करनेसे जो सिद्धि मिलतीहै उससे जो वैद्य ऐसे कृतार्थ होजातेहैं जैसे कि दरिद्री लोक समुद्रके पास जाकर केवल कौडीके मिलनेसेही संतुष्ट होजातेहैं सो मूर्ख हैं ॥ ८ ॥

गंधकजारणफल ।

गंधकात्परतो नास्ति रसेषूपरसेषु च । एकोपि हेमसंयुक्तः स्नेहरागकरः क्षणात् ९॥ (र. प.)

अर्थ–रस और उपरसोंमें गंधकके समान और कोई पदार्थ नहींहै क्योंकि सुवर्णसे मिलाहुआ अकेला गंधकही पारदमें चिकनाई तथा रंगतको शीघ्र पैदा करताहै ॥ ९ ॥

षड्गुणान्तगंधकजारणफल ।

गंधजारितसूतस्य फलमुक्तं शिवागमे । तुल्ये तु गंधके जीर्णे शुद्धाच्छतगुणो रसः ॥१०॥ द्विगुणे गंधके जीर्णे सर्वथा सर्वकुष्ठहा । त्रिगुणे गंधके जीर्णे सर्वषांढ्यविनाशनः ॥ ॥ ११ ॥ चतुर्गुणे तत्र जीर्णे बलीपलितनाशनः । गंधे पंचगुणे जीर्णे क्षयक्षयकरो रसः ॥ १२ ॥ षड्गुणे गंधके जीर्णे सर्वरोगहरो भवेत । अवश्यमित्युवाचेदं देवीं श्रीभैरवः स्वयम् ॥ १३ ॥ (बृ. यो., र. रा. सुं., र. सा. प., नि. र., र. रा. शं.)

अर्थ–गंधक जारण कियेहुए पारदका फल इसप्रकार शिवागमशास्त्रमें लिखाहै कि पारदके समान गंधक जारण करनेसे पारद शुद्ध पारदसे सौगुना श्रेष्ठ होताहै, दुगुना गंधक जारण कियाहुआ पारद सम्पूर्ण कुष्ठरोगोंको नाश करताहै, और तिगुना गंधक जारण करनेसे समस्त नपुंसकताका ध्वंस करताहै, तथा चौगुना गंधक जारणसे पारा त्वचामें झुर्री तथा सफेद केशोंको दूर करताहै और पांचगुने गंधकके जारणसे पारद क्षयरोगका नाशक होताहै, तथा ६ गुने गंधकके जारणसे पारा सर्व रोगका हंता होताहै इसमें कोई संदेह नहीं है क्योंकि यह वात श्रीमहादेवजीने पार्वतीको अपने मुखसे कही है यह गुण पारदका है ऐसा रससारपद्धतिमें लिखा है ॥ १०–१३ ॥

अन्यच्च ।

समांशे गंधके जीर्णे शुद्धाच्छतगुणो रसः । गंधके द्विगुणे जीर्णे सर्वकुष्ठनिषूदनः ॥ ॥ १४ ॥ गंधके त्रिगुणे जीर्णे जाड्यहा

---

१ बीजजारणके अनंतर अभ्रकका जारण कियेविनाही जो केवल बीजजारणसे संतुष्ट होजातेहैं–ऐसा अर्थ होगा । २ इदं फलं मूर्छितस्यैव इ. (र. सा. प.).

रस उत्तमः । जीर्णे चतुर्गुणे गंधे वलीपलितजिद्रसः ॥ १५ ॥ गंधे बाणगुणे जीर्णे क्षयक्षयकरः शिवः । गंधे रसगुणे जीर्णे सर्वान्तकप्रणाशकः ॥ १६ ॥ सत्यंसत्यं शिवो देवीमुवाच स्वप्रियामये । त्वां वदाम्यरविंदाक्षि हिताय जगतामपि॥ ॥ १७ ॥ (अनुपानतरंगिणी.)

अर्थ–पारदकी बराबर गंधक जारणकरनेसे पारा शुद्ध पारदसे सौगुना अधिक गुणदाताहै, द्विगुणगंधक जारणसे सर्व कुष्ठोंको दूर करताहै, त्रिगुण जारणसे सर्व व्याधियोंको, चतुर्गुण जारणसे वलीपलितको, पंचगुण जारणसे क्षयरोगको और छः गुण गंधक जारणसे पारद सर्व रोगोंको नाश कर्ता है । हे प्यारी ! सम्पूर्ण जगत्के कल्याणके लिये श्रीमहादेवजीने पार्वतीको कहाहै वही मैं तुमसे कहताहूं ॥ १४–१७ ॥

अन्यच्च ।

समे गंधे तु रोगघ्नो द्विगुणे राजयक्ष्मनुत । जीर्णे तु त्रिगुणे गंधे कामिनीदर्पनाशनः ॥ ॥ १८ ॥ चतुर्गुणे तु तेजस्वी सर्वशास्त्रविशारदः । भवेत्पंचगुणे सिद्धः षड्गुणे मृत्युनाशनः ॥ १९ ॥ (यो. र०, र. रा. सुं., बृ.यो०, र. रा.प., र. सा.प., नि.र., र.चिं.)

अर्थ–समभाग गंधकजीर्णसे पारा रोगघ्न द्विगुणजीर्णसे क्षयरोगका नाश कर्ता त्रिगुण गंधकके जीर्णसे स्त्रीके दर्पका नाशक तथा चौगुना गंधक जीर्णसे तेजस्वी तथा मनुष्यको सर्वशास्त्रोंका ज्ञाता बनाताहै, पंचगुणसे पारद सिद्ध होताहै और षड्गुण गंधक जारणसे पारा मृत्युका नाश करनेवाला होताहै ॥ १८ ॥ १९ ॥

षड्गुणो रोगघ्न इति यदुक्तं तद्बहिर्धूम एवावगन्तव्यम् । तत्र गंधस्य समग्रजारणाभावात्स्वर्णादिपिष्टिकायामपि रीतिरियम् ॥ २० ॥ (र. चिं.)

अर्थ–छःगुना गंधक जारण करनेसे पारद सबरोगोंका नाशक है ऐसा पाठ किसीकिसी पुस्तकमें है सो वह फल बाहिर्धूमकाही समझना चाहिये क्योंकि बहिर्धूममें समस्त गंधकका जारण नहीं होताहै और यही रीति स्वर्णादिकोंके जारणमें समझनी चाहिये ॥ २० ॥

शतगुणजारणफल ।

अंतर्धूमविपाचितशतगुणगंधेन रंजितः सूतः। स भवेत् सहस्रवेधी तारे ताम्रे भुजङ्गे च ॥ २१ ॥ (र. चिं., र. रा. शं., र. रा. सुं, बृ. यो., र. रा. प., र. सा. प.)

अर्थ–सौगुने गंधकसे अंतर्धूमद्वारा पचाया हुआ पारा रंजित (रंगाहुआ) होताहै और वह चांदी, तांबा और रॉंगेमें सहस्रवेधी होताहै ॥ २१ ॥

सम्मति–यह क्रिया सोना चांदी बनानेके विषयमें आतीहै और षड्गुण गंधक जारणसे सब रसादिक बनतेहैं इसलिये वही पारा समस्त वैद्योंके उपयोगी है । मेरी समझमें इसी संमतिको समस्त वैद्य भी पसंद करेंगे और षड्गुण गंधक जारण किये विना कोई कार्य नहीं करना चाहिये यह बात सर्वसंमत है ॥ २१ ॥

शत और सहस्रगुण गंधक जारणफल ।

जीर्णे शतगुणे गंधे शतवेधी भवेद्रसः । सहस्रगुणिते जीर्णे सहस्रांशेन वेधयेत् ॥ ॥ २२ ॥ (र. सा. प., नि. र., र. रा. शं., र. रा. सुं.)

अर्थ–जिस पारदमें सौगुना गंधक जारण कियाजाय वह शतवेधी होताहै और जिसमें हजारगुना गंधक जारण कियाजाय वह सहस्रवेधी होताहै ॥ २२ ॥

अन्यच्च ।

जीर्णे शतगुणे सम्यक्सहस्रांशेन विध्यति। सहस्रगुणिते जीर्णे लक्षवेधी न संशयः २३ (र. प.)

अर्थ–और रसपद्धतिमें तो ऐसा लिखा है कि शतगुण गन्धक जारणसे पारद सहस्रवेधी होताहै और हजार गुना गन्धक जारण करनेसे लक्षवेधी होताहै इसमें सन्देह नहीं ॥ २३ ॥

पिष्टी बनाकर, भूधरादिद्वारा गंधक जारणफल दशगुणसे वेधकफल और वेधविधान ।

दशगुणं जारयेद्गंधं पिष्टिकां वेधयेद्ध्रुवम् । कल्कहेमीं तया तारं क्रमेण वेष्टयेद्बुधः ॥ ॥ २४ ॥ ध्मातं तदंधमूषायां कनकं भवति शोभनम् । तद्धेम जायते दिव्यं दिव्याभरणभूषिते ॥ २५ ॥ शतगुणं जारयेद्गंधं सहस्रांशेन वेधयेत । सहस्रं जारयेद्गंधं लक्षवेधं करोति सः ॥ २६ ॥ जारितो लक्षसंख्यां च कोटिवेधं करोत्यसौ । एवं वेधाधिको देवि रसकर्म करोति सः ॥ २७ ॥ असंख्याता कृता येन जारणा विधिरुत्तमः । नादवेधी भवेत्तस्य रुद्रतुल्यो न संशयः ॥ ॥ २८ ॥ क्षपिता मुखमध्ये तु खेचरत्वं च जायते । इच्छाचारी भवेत्सोपि क्रीडते स चराचरम् ॥ २९ ॥ इच्छारूपं भवेत्तस्य त्रैलोक्यं गोचरं भवेत् । खाद्यते न च कालेन बाध्यते न च कर्मणा ॥ ३० ॥ अच्छेद्यो वज्रशस्त्रेण वज्रदेहोभिजायते । येन केन प्रकारेण गंधको जारितो यदि ॥ ३१ ॥ नान्यथा जारितं सिद्धिर्विना गंधकसूतयोः। पक्षच्छेदे समर्थः स्याद्रंजने बंधने तथा ॥ ॥ ३२ ॥ क्रमेण वेधयेत्सूतो यथा जारित-

१ इदं फलं मारणपक्षे तु इ० (र. सा. प.)

२ शतगुण–पाठान्तर कई पुस्तकोंसे और यही ठीक भी जानपड़ताहै सहस्रगुण–नि०र०मेंहै किन्तु यह छन्दविरुद्ध और युक्तिविरुद्ध है।

गंधकः । तादृशो हि गुणः सूतो यथा जारितगंधकः ॥ ३३ ॥ (यो. सा.)

अर्थ-पारद और गन्धककी पिष्टी बनाकर वेधकर्मके लिये दशगुना गन्धक जारण करे। फिर उसी स्वर्ण और पारदके कल्कसे चांदीके पत्रोंको लपेट अन्धमूषामें धोंके तो उसका निश्चय सोना होताहै और उसी स्वर्णके उत्तम गहने होतेहैं । पारद सौगुने गन्धक जारणसे लक्षवेधी होता है और लक्षगुण जारणसे कोटिवेधी होताहै । इस प्रकार हे पार्वति ! जो अधिक वेधके करनेवाला है वही पारद रसकर्मको करता है और जिस मनुष्यने उत्तमरीतिसे अधिक जारणा की है उसका पारद नादवेधी होताहै और वह श्रीशिवके समान होताहै । अनेक बार जारित पारेकी गोलीको मुखमें रखनेसे मनुष्य खेचरत्वको प्राप्त होताहै और वह चराचर सृष्टिके साथ खेल करता हुआ इच्छा पूर्वक विचरता है क्योंकि वह अपने रूपको इच्छानुसार धारण कर सकता है और उसकी दृष्टिमें तीनों लोक झलकते हैं और उसको काल नहीं खाता है अपने किये हुए कर्म भी दुःख नहीं देते हैं और वज्रके समान देह होनेके कारण वज्रके समान शस्त्रसे भी नहीं कट सकता है चाहे जिस प्रकार गन्धकका जारण करे परन्तु विना गन्धक जारणके गुण नहीं होता क्योंकि गन्धक जारणसे पारदके पक्ष नाश होतेहैं और क्रमसे रंजन, बन्धन तथा वेधनके भी योग्य होताहै जैसा जैसा पारदमें जारण किया जायगा वैसा वैसा अधिक गुण होगा ॥ २४--३३ ॥

पिष्टीकी क्रिया और भूधरसे गंधक जारणक्रिया और उसके भक्षणका फल ।

अथातः संप्रवक्ष्यामि पिष्टिकावेधमुत्तमम् । एवं यावत्सूतकं च गंधकं नवमांशतः॥३४॥ खल्वमध्ये ददेत्सूते स्तोकं स्तोकं च गंधकम् । गंधसूतकृतां पिष्टीं कर्पटे तां सुबंधयेत् ॥ ३५ ॥ स्मरेत्सदाशिवं देवं पाषाणे न तु मोदयेत् । निक्षिपेत्तु यदा गंधमूर्ध्वाधः परिकल्पयेत् ॥ ३६ ॥ निक्षिप्तमंधमूषायां भूधरेण तु पाचयेत् । एतया क्रियया सूते षड्गुणं जारयेद्ध्रुवम् ॥ ३७ ॥ पुनःपुनः क्रमेणैव दशगुणं पाचयेदपि । पूर्वजारितगंधस्य विधिरेवं वरानने ॥३८॥ अथवा ताम्रपात्रे च स्तोकं स्तोकं च सूतकम् । गंधकं स्तोकमेकं च करांगुल्या च मर्दयेत्॥३९॥नवनीतसमं पिंडं जायते वरपिष्टिका॥दत्त्वा लघुपुटं पश्चाद्धेमपत्राणि मेलयेत्॥४०॥अथवा मधुसंयुक्तां भक्षयेत्तां सुपिष्टिकाम् ॥ षण्मासस्य प्रयोगेण दिव्यदेहोभिजायते ॥ ४१ ॥ संवत्सरप्रयोगेण जीवेद्वर्षसहस्रकम् ॥ तस्य मूत्रपुरीषेण शुल्वं भवति कांचनम् ॥ ४२ ॥ (योगसार.)

अर्थ-अब मैं उत्तम पिष्टिकावेधको वर्णन करताहूं । प्रथम पारदको खरलमें डाल पारेसे नवमभाग लियेहुए गंधकको थोडा २ डालकर घोटे फिर उसगंधक और पारदकी पिष्टीको कपडेमें बाँधदेवे और उस पिष्टीको पत्थरके खरलमें न पीसे तदनंतर श्रीशिवजीका ध्यान करताहुआ वैद्य अंधमूषामें सबसे नीचे गंधक उसके ऊपर पारदपिष्टी और फिर उसके ऊपर गंधक रखकर और मुद्रा कर भूधरयंत्रमें पचावे इसप्रकार विद्वान् वैद्य षड्गुणगंधक जारण करे और इसीप्रकार दशगुणगंधकको भी जारणकरे जैसे कि षड्गुण जारण कियागया था । अथवा पारद तथा थोडेसे गंधकको तांबेके पात्रमें डालकर अंगुलीसे मर्दन करे और मर्दन करते करते जब मक्खनके समान पिष्टी होजाय तब बंद करे उसके बाद लघुपुट देकर सोनेके पत्रोंको ल्हेसदे । अथवा जो मनुष्य उस पिष्टीको शहदमें मिलाकर ६ मासतक भक्षण करे उसकी देह दिव्य (उत्तम) होजातीहै यदि एक वर्षतक जो इसका सेवन करे तो एक सहस्र वर्षतक जीवित रहे और उसके मूत्रसे तांबेका सोना होताहै ॥ ३४-४२ ॥

सम्मति-इस जारणके फलमें गंधक जारणकी जो क्रिया लिखीगईहै उसका यह मतलब है कि पूर्वोक्त जारणफलसे इससे क्रियाका विशेष संबंध है ।

तुलायंत्रद्वारा गंधकजारणफल ।

तुलायंत्रगतं सूतं गंधकं धूमरंजितम्।तारे ताम्रे तथा नागे सहस्रांशेन वेधयेत् ॥ ४३ ॥ षड्गुणे च द्विरावृत्ते सूतो जारितगंधकः ॥ धूम्रजारितयोगेन जरादारिद्र्यनाशनः ॥ ॥ ४४ ॥ (योगसार.)

अर्थ-तुलायंत्रमें गंधकके धुएँसे रँगाहुआ पारा, चांदी, तांबा तथा सीसेको सहस्रांशसे वेधताहै । अथवा धूम्रयोगसे (तुलायंत्रसे) बारहगुना गंधक जारित पारा बुढापे अथवा दरिद्रताको नाश करताहै ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

गंधक और अभ्रक जारणमहत्त्व । अथ रससिंधु ।

देव्या रजो भवेद्गन्धो धातुः शुक्रमथाभ्रकम्॥ आलिंगने समर्थौ द्वौ प्रियत्वाच्छिवरेतसः ॥ ४५ ॥ आश्लेषादेतयोः सूतो न वेत्ति मृतिजं भयम् ॥ शिवशक्तिसमायोगे प्राप्यते परमं पदम् ॥ ४६ ॥ (टो.नं.,ध. सं.,र.रा.सुं.)

अर्थ-गंधक श्रीपार्वतीका रज है और अभ्रक श्रीब्रह्मदेवजीका वीर्य है ये दोनों प्रिय होनेसे शिववीर्य (पारद) के साथ मिलनेमें समर्थ हैं और इन दोनोंके साथ मेल होनेके कारण पारद अपनी मौतकी भी शंका नहीं करताहै तथा शिवशक्ति (पारद-गंधक) योगसे परमपद प्राप्त होताहै ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

१ इसका संबंध ऊपर कहेहुये वेधकर्मसे है आशय यह है कि दसगुण जारण जारित पारदपिष्टीमें स्वर्णपत्र मिला कल्क बना उससे तारपत्रोंको लेप वेध करे ।

षड्गुणगंधकजारणकीआवश्यकता ।

षड्गुणे गंधके जीर्णे रसो भवति रोगहा ॥ तस्माद्गंधस्तु शुद्धो हि जीर्येत रसरेतसि ॥ ॥ ४७ ॥ (ध. सं., र. रा. सुं.)

अर्थ--षड्गुण गंधक जारणसे पारद रोगोंके नाश करनेवाला होताहै इस कारण पारदमें शुद्धगंधकका जारण करना उचित है ॥ ४७ ॥

गंधाभ्रजारणफल ।

देव्या रजोद्भवो गंधो धातुः शुक्रं तथाभ्रकम् । आलिंगने समर्थौ द्वौ प्रियत्वाच्छिवरेतसः ॥ ४८ ॥ शिवशक्तिसमायोगात्प्राप्यते परमं पदम् । यथा स्याज्जारणा बह्वी तथा स्याद्गुणदो रसः ॥ ४९ ॥ (नि. र., र. चिं., र. रा. शं.,र. सा. प.)

अर्थ--पार्वतीके रजसे पैदा हुआ गंधक और ब्रह्माके वीर्य्यसे पैदा हुआ अभ्रक है अतएव ये दोनों प्रिय होनेके कारण पारदके साथ मिलनेके योग्य हैं और शिवशक्ति (पारा--गंधक) के योगसे परम पद प्राप्त होताहै जितना २ अधिक गंधक जारण होगा उतनाही पारद अधिक गुणवान् होगा ॥ ४८ ॥ ४९ ॥

गंधाभ्रजारणफल ।

देव्या रजो भवेद्गंधो धातुः शुक्रं तथाभ्रकम्॥ आलिंगने समर्थौ द्वौ प्रियत्वाच्छिवरेतसः॥ ॥ ५० ॥ शिवशक्तिसमायोगात्प्राप्यते परमं पदम् ॥ तस्माद्गंधं विशुद्धं स्याज्जीर्यते शिवरेतसि ॥ ५१ ॥ यथा स्याज्जारणा बह्वी तथा स्याद्गुणदो रसः ॥ मृत्यूपमृत्युनाशार्थं पारदः शिववद्भवेत् ॥ ५२॥ ये गुणाः पारदे देवि गंधकेऽभ्रे च ते गुणाः ॥ षड्गुण गंधके जीर्णे रसो भवति रोगहा ॥ ५३ ॥ (र.प.)

अर्थ--श्रीपार्वतीका रज, गंधक और ब्रह्माका वीर्य अभ्रक है ये दोनो प्यारे होनेसे पारदमें मिलने योग्य हैं और शिव शक्ति अर्थात् पारद और गंधकके योगसे परमपद प्राप्त होता है इस कारण शुद्धगंधकका हो पारदमें जारण करे और मृत्यु तथा उपमृत्यु (अकालमृत्यु) के नाश करनेके लिये पारद ही श्रीशिवके समान है पारदमें जितनी अधिक अधिक गंधककी जारणा होगी उतनाही पारेमें गुण अधिक होताहै जो गुण पारदमें हैं वे गुण गंधक तथा अभ्रकमें होतेहैं । षड्गुण गंधकके जारणसे पारद रोगोंका नाशक होताहै ॥५०-५३॥

रसायन और धातुवाददोनोंके उपयोगी अभ्रकका ज़ारण ।

संप्रत्युभयोरेव प्राधान्येन जारणोच्यते यथा- (र. चिं., र. रा. शं.)

अर्थ--रसायन तथा धातुवाद इन दोनोंकी प्राधान्यतासे अब हम जारणक्रियाको कहते हैं ।

अभ्रकजारणफल ।

अभ्रकस्तव बीजं तु मम बीजं तु पारदः ॥ अनयोर्मेलनं देवि मृत्युदारिद्र्यनाशनम् ॥ ॥ ५४ ॥ (र. द., नि. र.)

अर्थ--हे पार्वति!तुम्हारा रज अभ्रक तथा मेरा वीर्य पारद है इन दोनोंका जो मेल है वही मृत्यु तथा दरिद्रताका नाश करता है ॥ ५४ ॥

एक अभ्रसत्त्व ही पारेका पक्षच्छेद करसकताहै ।

विनैकमभ्रसत्त्वं नान्यो रसपक्षकर्तनेसमर्थः ॥ तेन निरुद्धप्रसरो नियम्यते बध्यते च सुखम् ॥५५॥ (र चिं., नि. र., र. रा. शं, बृ. यो., र. सा. प., र. रा.प, र. प.)

अर्थ--केवल अभ्रसत्त्वको छोडकर और कोई पदार्थ पारदके पक्ष काटनेमें समर्थ नहीं है इसलिये अभ्रकसत्त्वके जारण करनेसे वेगरहित पारद सहजमें ही नियमित और बद्ध होता है ॥ ५५ ॥

पक्षच्छेदके विना रसबंध असंभव ।

पक्षच्छेदमकृत्वा रसबंधं कर्तुमीहते यश्च ॥ बीजैरेव हि स जडो वाञ्छत्यजितेन्द्रियो मोक्षम् ॥ ५६ ॥ (र.प.)

अर्थ--जैसे इन्द्रियोंको नहीं जीतकर मनुष्य मोक्षको चाहते हैं वैसे ही जो वैद्य पारदके पक्ष काटनेके विना केवल बीजोंसेही पारदको बद्ध करना चाहता है वह मूर्ख समझा जाता है ॥ ५६ ॥

छिन्नपक्षलक्षण ।

नाधः पतति न चोर्द्धे तिष्ठति यंत्रे भवेन्नचोद्गारी ॥ अभ्रकजीर्णस्तु रसश्छिन्नपक्षस्तु विज्ञेयः ॥ ५७ ॥ (र. प.)

अर्थ--जो पारा नीचे नहीं गिरताहो और ऊपरको उडता न हो और यन्त्रमेंही ठहरा हुआ हो तथा किसी पदार्थके उद्गार करनेवाला न हो या स्थिर हो उस अभ्रकजीर्ण पारदको छिन्नपक्ष समझना चाहिये ॥ ५७ ॥

अभ्रकजीर्णरसलक्षण ।

कपिलोऽथ निरुद्गारी विप्लुषभावं स मुंचते सूतः ॥ निष्कंपो गतिरहितो विज्ञातव्योऽभ्रजीर्णस्तु ॥ ५८ ॥ (ध. सं.)

अर्थ--जो पारद धूंवेकीसी रंगतका हो और जो चंचलभावको छोड देता हो तथा स्थिर स्वभाव, कम्प रहित, गति (उर्ध्वाधः इत्यादि) रहित हो उसको अभ्रजारित पारद कहते हैं ॥५८ ॥

सम्मति--यहांपर इस वातको याद रखना चाहिये कि रसरत्नसमुच्चयमें निष्कम्प मृत पारदका लक्षण वताया है और यहां अभ्रकजीर्णका लक्षण माना है आगे विचारणीय है ।

चंचलपारदका अभ्रकजारणविना बद्ध ।

अग्राह्यो निर्लेपः सूक्ष्मगतिर्व्यापकः क्षयो बीजः । यावद्विशति न योनौ न तावद्बंधाश्रितो भवति ॥ ५९ ॥ (र. प.)

अर्थ-जो बीज अग्राह्य (ग्रहणके योग्य न हो) निर्लेप (जो किसीसे निर्लिप्त नहीं हुआ हो) सूक्ष्मगतिवाला व्यापक अक्षय है वह भी यानिमें विना प्रवेश हुए बन्धनको नहीं प्राप्त होताहै ॥ ५९ ॥

अभ्रकके पांचग्रासके अनंतर ही बीजजारणकी आज्ञा ।

पंचभिरभिर्ग्रासैर्वनसत्त्वं जारयित्वादौ । गर्भद्रावी निपुणो जरयति बीजं कलांशेन ॥ ६० ॥ (र. प.)

अर्थ-गर्भद्रुतिमें निपुण वैद्य प्रथम अभ्रकसत्त्वका जारण करे तदनंतर षोडशांशसे सुवर्णका जारण करे॥६०॥

सम्मति--यहांपर पंचग्रासका प्रमाण चौसठ, चालीस, तीस, बीस तथा सोलह ऐसा है ।

अभ्रजारणफल (अभ्रजारणसे पारदका बंधन सुगम होजाताहै)

स्वल्पमप्यभ्रकं सूतो यदि गृह्णाति चेत्सुखम्। बध्यते स्वगृहे क्षेत्रे यथा चोरोऽतिचश्चलः ॥ ॥ ६१ ॥ (र. पा.)

अर्थ-जिसप्रकार अपने घरके खेतमें अति चंचल चोर बंधाईमें आसकता है तैसे थोडा ही अभ्रकजारण करनेसे पारद सुख पूर्वक बद्ध होजाताहै ॥ ६१ ॥

द्विगुणसत्त्व जारणफल ।

यदि सूताद्द्विगुणेऽभ्रसत्त्वे जीर्णे सति तदा पारदः। छिन्नपक्षो भवति तथाग्निसंयोगान्न गच्छतीति भावः ॥ (ध. सं.)

अर्थ-जब पारदसे दूने अभ्रसत्त्वका जारण होता है तब पारा पक्षरहित होताहै और अग्निके योगसे नहीं जाता है ।

समादिअभ्रकजारणफल ।

अभ्रके द्विगुणे जीर्णे धूमत्वं नैव गच्छति । जीर्णे दशगुणे ग्रासे गतिस्तस्य न विद्यते ॥ ॥ ६२ ॥ उत्पत्योत्पत्य सूतेन्द्रो मूषायां पतति ध्रुवम् । जारितेष्टगुणे ग्रासे कम्पते च मुहुर्मुहुः ॥ ६३ ॥ बाह्ये चोत्पत्य नोयाति स्थितिः स्थानेषु दृश्यते । जीर्णे चाष्टगुणे व्योम्नि धाम्यो भवति पारदः ॥ ॥ ६४ ॥ श्वेता च बहुधा छाया व्योमजीर्णे च दृश्यते । निष्कंपो निर्गतिस्तस्य धमनाज्जीर्यते रसः॥६५॥अष्टकाष्टगुणे जीर्णे महाबलमवाप्नुयात् । लेपेन तारपत्रेषु करोति दश वर्णकम् ॥ ६६ ॥ (र. प.)

अर्थ-द्विगुण अभ्रक जारण करने पर पारद धूवेंके रूपमें होकर नहीं जाताहै और चौगुने अभ्रसत्त्व जारण करने पर पारदकी गति नष्ट होजाती है तथा पारा उड उडकर मूषामें ही रह जाताहै और षड्गुण अभ्रसत्त्व जारणसे पारद बार बार कांपता है और बाहर उडकर नहीं जाता और वह अपने स्थानपर ही ठहराहुआ मालूम होता है और अठगुने अभ्रसत्त्वके जारण करनेसे पारा अग्निसे धोंकने योग्य होजाता है और अभ्रसत्त्वके जीर्ण होनेसे पारदकी छाया अकसर सफेद मालूम होतीहै तथा पारदको धोंकनेसे निष्कम्प और गतिरहित होजाता है और सोलहगुने सत्त्वके जारणसे पारा अत्यन्त बलिष्ठ होताहै और उसी पारदका चांदीके पत्रोंपर लेप करनेसे दसवर्णका सुवर्ण होताहै ॥ ॥ ६२-६६ ॥

समादि अभ्रजीर्णके दर्जे ।

समजीर्णे भवेद्बालो यौवनश्च चतुर्गुणम् ॥ वृद्धः षोडशजीर्णे च तदा कर्म पृथक् पृथक् ॥ ६७ ॥ कुमारो रोगदमने तरुणो देहरक्षणे ॥ वृद्धो बिध्यति लोहानि सर्वं ज्ञात्वा चरेत्क्रियाम् ॥ ६८ ॥ (टो. नं.)

अर्थ-पारदतुल्य अभ्रसत्त्वके पारद दंडधारी होताहै और दूसरा नाम कल है यह किंचित् कार्य करनेवाला होताहै जिस पारदमें तुल्यभाग अभ्रसत्त्वका जारण होताहै उसको बालपारद तथा चतुर्गुण जारितको युवा और षोडशगुण जारितपारदको वृद्ध कहतेहैं । और उनके कर्म पृथक् २ हैं । बाल पारद रोगोंको हरताहै और तरुण पारद देहका रक्षक है तथा वृद्ध पारद समस्त धातुओंको वेधताहै इसकारण सब बातोंको जानकर पारदकर्म करे ॥ ६७ ॥ ६८ ॥

स्वर्णजारण फल ।

रसपावकयोर्वैरं सख्यं पावकस्वर्णयोः ॥ अतिमैत्री तयोरस्ति स्वर्णसंयोगतस्ततः ॥ ॥ ६९ ॥ (र. प.)

अर्थ-पारद और अग्निकी परस्पर शत्रुता है तथा अग्नि और स्वर्णकी परस्पर मित्रता है इस कारण स्वर्ण और पारदके योगसे पारद तथा अग्निकी अतिमित्रता होतीहै ॥ ६९॥

स्वर्णजारितपारदके गुण ।

सुवर्णं राजतस्पर्शात्सर्वधातून्विनिश्चितम् ॥ कुरुते लीलया सूतः कोटिबेधे स्थितः सदा ॥ ७० ॥ (र. पा.)

अर्थ-स्वर्णजारितके कारण कोटिवेधमें स्थित पारद सहजमेंही समस्त धातुओंको सुवर्ण करताहै ॥ ७० ॥

गंध, अभ्र, हेमादिजारणके फलोंकी संख्या ।

[1]शुद्धगंधे तु जीर्णेषु शुद्धाच्छतगुणाऽधिकः ॥ षड्गुणे गंधके जीर्णे रसो भवति रोगहा ॥ ॥ ७१ ॥ अवश्यमित्युवाचेदं देवीं श्रीभैरवः

१ हस्तलिखित योगतरंगिणी-शुद्ध अर्थात् अष्टसंस्कारके अनंतर गंधकजारण कहाता है और ऐसाही इस श्लोकसे सिद्ध है ।

स्वयम् ॥ तस्माच्छतगुणो व्योमसत्त्वे जीर्णे तु तत्समे ॥ ७२ ॥ ताप्यखर्परतालादिसत्त्वे जीर्णे गुणावहः॥ हेम्नि जीर्णे सहस्रैकगुणसंघप्रदायकः ॥ ७३ ॥ (र. चिं., नि. र., र. रा. सुं., र. रा. शं., र. सा. प.)

अर्थ–शुद्ध गंधकके जीर्ण होनेपर पारद शुद्धपारदसे सौगुना अधिक होताहै और षड्गुण गंधक जीर्ण होनेपर पारा रोगोंको नाश करताहै यह श्रीमहादेवजीने पार्वतीको कहाहै इसप्रकार शतगुण गंधक जारण किया हुआ पारद तथा समभाग अभ्रक जारण किया हुआ पारा ये दोनों तुल्यगुणके हैं सोनामक्खी खपरिया और हरताल आदिके सत्व जीर्ण होनेपर पारद गुणदाता होता है और सुवर्ण जारण होनेपर एक सहस्रगुणके देनेवाला होता है। इसी श्लोकसे यह बात सिद्ध होती है। कि आठ संस्कारोंके बाद गंधक जारणका प्रयोग लिखा है यही बात मेरी सम्मतिमें ठीक है ॥ ७१—७३ ॥

किस निमित्त किसका जारण करे।

एवं च संस्कारैः संशोधितस्य सूतस्य जारणं विना मारणं सर्वथा निषिद्धं जारणं तु मुखं विना न संभवति तस्मात्सूतस्यादौ सम्यक्तया शोधनं कृत्वा पश्चान्मुखं कुर्यात्तदनंतरं सुवर्णं सुवर्णक्रियार्थं तारं रजतक्रियार्थं स्वर्णं तारं वा बलवत्सूतकरणार्थं गंधकं तु बलवत्त्वरोगहारित्वकरणार्थं च जारयेदिति ॥ (ध. सं.)

अर्थ–जारणसंस्कारके विना संस्कारोंसे शुद्ध कियेहुए पारदका मारण करना उचित नहीं है और बुभुक्षितीकरणके विना जारण नहीं होसक्ता है। इसलिये प्रथम उत्तम रीतिसे पारदको शुद्ध कर उसके मुख करे तदनंतर स्वर्ण बनानेके लिये स्वर्णका जारण तथा चांदी बनानेके लिये चांदीका जारण या पारदमें बल पहुंचानेके लिये सोना और चांदी दोनोंका जारण अथवा बल बढाने या रोग नाश करनेवाली शक्ति बढानेके लिये गधक जारण करे ॥

किस कर्ममें किस रंगका अभ्र लेना चाहिये।

रक्तं पीतं च हेमार्थे कृष्णं हेमशरीरयोः ॥ तारकर्म्मणि तच्छुक्लं कांचकीटक् सदा त्यजेत्॥ ७४ ॥ (र. चिं., नि. र., र.रा., शं., बृ. यो., र. सा. प.)

अर्थ–स्वर्ण बनानेके लिये लाल और पीले रंगका अभ्रक जारण करे स्वर्णका बनाना और शरीरकी रक्षाके लिये कृष्णाभ्रकका जारण करे और चांदी बनानेके लिये श्वेत अभ्रकका जारण करे। स्वर्ण बनानेके लिये श्वेताभ्रकका जारण कदापि न करे ॥ ७४ ॥

१–'कांचने तु' पाठान्तर निघण्टुरत्नाकरका टीकाकार कहता है कि श्वेत अभ्रकको चांदीके निमित्त वर्ते सोनेके लिये कदापि नहीं इस अर्थमें 'कांचने तु' पाठ अच्छा बनता है।

वर्णभेदसे अभ्रकजारणफल।

कृष्णाभ्रके न बलवान् शितरागैर्युज्यते रसेन्द्रस्तु ॥ श्वेते रक्तैः पीतैर्विद्धद्भिर्वर्णतो ज्ञेयः ॥ ७५ ॥ (ध. सं.)

अर्थ–कृष्णाभ्रक जारणसे कृष्णवर्णका श्वेताभ्रकसे श्वेतवर्णका रक्ताभ्रसे लालवर्णका तथा पीताभ्रसे पीतवर्णका पारद होताहै। परन्तु यह सदा स्मरण रखना चाहिये कि किसी रंगतके जारण करनेसे पारद बलवान अवश्य ही होता है ॥ ७५ ॥

स्वर्ण और चाँदीके उपयोगी पृथक् जारणका वर्णन।

कृष्णाभ्रकं सुवर्णं वा यथाशक्त्या प्रजारयेत् ॥ पूर्ववत्क्रमयोगेन फलं स्यादुभयोः समम् ॥ ७६ ॥ अनेनैव प्रकारेण तारं वा श्वेतमभ्रकम् ॥ जारयेत्तु यथाशक्त्या तारकर्मणि शस्यते ॥ ७७ ॥ (र. रा. प.)

अर्थ–पारदमें कृष्णाभ्रक तथा स्वर्णका यथाशक्ति जारण करे और उन दोनोंके जारणका फल है और इसीप्रकार चांदी तथा श्वेताभ्रको जारण करे तो वह जारण चांदी बनानेके लिये उत्तम है ॥ ७६ ॥ ७७ ॥

किसनिमित्त किसका जारण करे।

कृष्णाभ्रं सुवर्णं वा जारयेद्धेमकर्मणि ॥ रजतं श्वेतमभ्रं वा तज्जार्यं तारकर्मणि ॥ ॥ ७८ ॥ कर्तव्यं सूतराजे तु तद्वद्भवति कांचनम् ॥ श्वेतेन जायते श्वेतं यथा बीजं तथांकुरः ॥ ७९ ॥ (र. रा. प.)

अर्थ–सुवर्ण बनानेके लिये सुवर्ण तथा कृष्णाभ्रकका जारण करे चांदी बनानेके लिये चांदी तथा श्वेताभ्रकका जारण करे तो सोना और चांदी प्रस्तुत होते हैं सुवर्ण जारणसे सुवर्ण, रजत जारणसे रजत (चांदी) होती है अर्थात् जिस प्रकारका बीज डालेंगे वैसाही अंकुर पैदा होता है ॥ ७८ ॥ ७९ ॥

भिन्नधातुओंके जारणका पृथक् २ फल।

कुटिले बलमत्यधिकं रागस्तीक्ष्णे च पन्नगे स्नेहः ॥ रागस्नेहबलानि तु कमले नित्यं प्रशंसंति ॥ ८० ॥ बलमास्तेभ्रकसत्त्वे जारणरागाः प्रतिष्ठितास्तीक्ष्णे ॥ बन्धश्च सारलोहे क्रामणमथ नागबंगगतम् ॥८१ ॥ (र. चिं., नि. र., र. रा. शं., बृ. यो., र. रा. प.)

अर्थ–कुटिल के जारण करने पर पारदमें बल अधिक होता है कांतके जारणसे राग (रंगत) और पन्नग (सीसे) के जारणसे स्नेह पैदा होताहै और कमल (ताम्बा) के जारण करनेमें राग स्नेह और बल ये नित्य

ठहरे हुए हैं अर्थात् अभ्रसत्त्वजारणमें बल, तीक्ष्ण जारणमें क्रामण ठहरा हुआ है ॥ ८० ॥ ८१ ॥

तीक्ष्णलोहजारणका फल ।

क्रामति तीक्ष्णेन रसस्तीक्ष्णेन च जीर्यते ग्रासः ॥ हेम्नो योनिस्तीक्ष्णं रागान्गृह्णाति तीक्ष्णेन ॥ ८२ ॥ तदपि च दरदेन हतं कृत्वा वा माक्षिकेण रविसहितम्॥ वासितमपि वासनया घनवञ्चार्यं च जार्यं च ॥ ॥ ८३ ॥ (र. चिं., नि. र., र. रा. शं., बृ. यो., र. रा. प.)

अर्थ-कान्त जारणसे पारद क्रामण और बुभुक्षित होता है सोनेकी योनि कान्त है इस लिये तीक्ष्ण (कान्त)जारणसे पारद उत्तम रंगतको ग्रहण करता है और जो कान्त पारदमें जारित कियाजाय उसको सिंगरफ और आकके दूधसे भस्म कियाहुआ हो अथवा सोना मक्खी और अर्क दुग्धके साथ भस्म कियाहुआ हो और वह भस्म वासना देनेयोग्य पदार्थोंमें वासित कियागया हो उसको खिलाना तथा जारित करना चाहिये ॥ ८२ ॥ ८३ ॥

संपूर्ण लोहोंके जारणसे पारद बद्ध होजाताहै ।

सर्वैरेभिर्लोहैर्माक्षिकमृदितैर्द्रुतैस्तथा गर्भे ॥ बिडयोगेन च जीर्णे रसराजो बन्धमुपयाति ॥ ८४ ॥ निर्बीजं समजीर्णे पादोने षोडशांशे तु ॥ अर्द्धेन पादकनकं पादेनैकेन तुल्यकनकं च ॥ ८५ ॥ समादिजीर्णस्य सारणायोग्यत्वं शतादिवेधकत्वं च ॥ इतो न्यूनजीर्णस्य पत्रलेपाधिकार एव ॥ ८६ ॥ उच्यते च समजीर्णश्चायं शतवेधी द्विगुणजीर्णः, सहस्रवेधी एवं लक्षायुतकोटिवेधी अनुसर्तव्यः । चतुःषष्टिगुणजीर्णस्तु धूमस्पर्शावलोकशब्दतोऽपि विध्यति ॥ (र. चि., नि. र.,र. रा. शं, बृ. यो., र. रा. प.)

अर्थ-इन समस्त धातुओंको सोनामक्खीके साथ घोटकर पारदको खिलावे तौ वे धातु पारदके गर्भमें ही द्रुत होकर बिडके योगसे जब जारित होतेहैं तब पारद बंधनको प्राप्त होताहै । जिस पारदमें बीजका जारण नहीं किया हो वह समभाग कांतके जारणसे बद्ध होताहै और जिसमें षोडशांश बीजका जारण किया हो वह तीन भागके जारणसे बद्ध होताहै और जो चौथाई बीज (सोना) से जारित हो वह आधे कांतके जारणसे बद्ध होताहै तथा जिसमें तुल्य भागका बीज जारित किया हो वह चतुर्थभागके जारणसे बद्ध होताहै । समभाग आदि कांतके जारणसे पारदमें क्रामणशक्ति उत्पन्न होती है और सौगुनेसे भी अधिक वेधशक्ति होती है और इससे न्यून जारित पारदका तो पत्रोंपर लेपकाही अधिकार है । अर्थात् वह लेपद्वारा ही सोना चांदी बनासक्ताहै और कहा भी है कि कांतके समभागसे जीर्ण पारद शतवेधी द्विगुण जीर्णसे सहस्रवेधी इसी प्रकार लक्षवेधी दशलक्षवेधी और कोटिवेधीका अनुसंधान करना चाहिये और चौसठ गुने जीर्णसे तो धूमवेधी, स्पर्शवेधी, अवलोकवेधी. और शब्दवेधी भी होते हैं ॥ ८४--८६ ॥

१ यहां लोहेसे सप्तधातु समझ पडतेहैं ।

२ यहांपर 'अयं' के स्थानमें अयः पाठ जानपडताहै,क्योंकि पारदके बंधन और वेधक होनेमें लोहाही कहागयाहै (वा 'अयं' शब्दसे बाह्य द्रुतयः का इशारा है क्योंकि बाह्यद्रुतिकथनानंतर ही यह पाठ है)

अभ्र और स्वर्णजारणसे पारदबद्ध होजाताहै और दोनोंका वेधक होताहै ।

एवं द्विगुणाद्यमभ्रकजारणं कृत्वा यदि पूर्वं स्वर्णादिजारणं न कृतं चेत्तदातः परं कच्छपयंत्रेणैव स्वर्णं रजतादिकं वा जारयेत् (तत्प्रकारस्तुगर्भद्रुतिप्रकरणोक्तो ज्ञेयः)ततः सिद्धपारदो भवति बद्धश्च जायते । एतत्सिद्धिपारदफलं प्रोच्यते- मृतमुत्थापयेन्मर्त्यं पारदो लग्नमात्रतः ॥ निहंति सकलान्रोगान्सूतः शीघ्रं न संशयः॥ ॥ ८७ ॥ (ध. सं.)

अर्थ-इसप्रकार दूने अभ्रआदिको जारण करके फिर कच्छपयंत्रद्वारा सुवर्ण तथा चांदीका जारण करे । यदि अभ्रकजारणसे पूर्व स्वर्णका जारण नहीं किया हो तौ इस प्रकार पारद शुद्ध और बद्ध होताहै इसप्रकार सिद्ध पारदका यह लक्षण है कि एवं सिद्ध कियाहुआ पारद स्पर्शमात्रसे ही मृतमनुष्यको जीवित करदेताहै और पारद सम्पूर्ण रोगोंको शीघ्र ही नाश करदेताहै इसमें संदेह नहीं है ॥ ८७ ॥

रसबंधनप्रशंसा ।

रसबंध एव धन्यः प्रारम्भे यस्य सततमिति करुणा ॥ सेत्स्यति रसे करिष्ये महीमहं निर्जरामरणाम् ॥ ८८ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-वह रसबंधन ही धन्य है जिसके प्रारम्भ करनेके समय चित्तमें ऐसा भान होताहै कि रससिद्ध होनेपर इस सम्पूर्ण पृथिवीको मैं नीरोग (तन्दुरुस्त) और बुढापेरहित करदूंगा ॥ ८८ ॥

जारितपारदभक्षणकी महिमा ।

विपिनौषधिपाकसिद्धमेतद्घृततैलाद्यपि दुर्निवारवीर्यम् ॥ किमयं पुनरीश्वराङ्गजन्मा घनजांबूनदचन्द्रभानुजीर्णः॥ ८९ ॥ (र. चि., नि. र., र. रा. शं, र. रा. सुं., र. सा. प.)

अर्थ-जंगली जडियोंके साथ सिद्ध कियेहुये घृततैलादिभी दुर्निवार्यवीर्य (जिनका गुण रुक नहीं सक्ता हो) होतेहैं तो फिर अभ्रक, स्वर्ण, चांदी और ताम्रजीर्ण पारद (जो कि श्रीशिवजीके अंगसे पैदाहुयेहैं) का वीर्य कैसे रुकसक्ता है ॥ ८९ ॥

हेमादिजीर्णसूतभक्षण फल।

हेमजीर्णो भस्मसूतो रुद्रत्वं भक्षितो ददेत्॥ विष्णुत्वं तारजीर्णस्तु ब्रह्मत्वं भास्करेण तु ॥ ९० ॥ तीक्ष्णजीर्णो धनाध्यक्षं सूर्यत्वं चापि तालकैः । राजरेण शशांकत्वममरत्वं च रोहणे । सामान्येन तु तीक्ष्णेन शक्रत्वमाप्नुयान्नरः ॥ ९१ ॥ (र. चिं.)

अर्थ–सुवर्णजीर्ण पारदभस्मके भक्षण करनेसे मनुष्य रुद्ररूपको प्राप्त होताहै और चांदीसे जीर्ण पारदभस्मके सेवनसे विष्णुरूपको प्राप्त होताहै, ताम्रजीर्ण पारदके सेवनसे ब्रह्मरूपको, कान्तजीर्ण पारदके सेवनसे कुबेरपनको और हरितालजीर्ण पारदभस्मके सेवनसे सूर्यरूपको, राजलोहसे जारित पारदभस्मके सेवनसे चन्द्ररूपको रोहणलोहसे जारित पारदभस्मके सेवनसे अमरपनको और सामान्य लोहके साथ जारित पारदभस्मके सेवनसे मनुष्य इन्द्ररूपको प्राप्त होताहै ॥ ९० ॥ ९१ ॥

जारणके रूप अर्थात् जारणाके ३ भाग।

ग्रासस्य चारणं गर्भे द्रावणं जारणं तथा । इति त्रिरूपा निर्दिष्टा जारणा वरवार्तिकैः । ग्रासः पिंडः परीणामस्तिस्रश्चाख्याः पराः पुनः ॥ ९२ ॥ (र. र. स.)

अर्थ–ग्रासका चारण, गर्भद्रावण, और जारण इसप्रकार श्रेष्ठ वार्तिककारोंने तीनप्रकारकी जारणा कहीहै और प्राचीन समयमें तो इनके ग्रास, पिंड और परीणाम ये तीन नाम हैं ॥ ९२ ॥

जारणारूप।

एषा चारणा त्रिविधास्ति (निर्मुखत्वेन, समुखत्वेन, वासनामुखत्वेन वा) घनस्य ग्रसनं ग्रासचारणा प्रथमा, पिष्टीरूपरसेन सहाभ्रकादेर्मेलनं पिष्टीचारणा द्वितीया, रसस्य गर्भे रसरूपं गगनं तिष्ठतीति चाचारणा तृतीया इयं या गर्भचारणा सैव गर्भद्रुतिः कथ्यते । उक्तं च रसरत्नप्रकाशे–अर्थगर्भद्रुतिकं संचारणं गुणवर्द्धनं कथयामि यथा तस्य रसराजस्य सिद्धिदमिति । (ध. सं.)

अर्थ–निर्मुखत्व, समुखत्व और वासनामुखत्व इनमेंसे किसीके द्वारा जारण कीजाय तो वह जारणा तीनप्रकारकी होतीहै उन तीनों जारणाओंमें प्रथम जारणाका नाम ग्रासजारणा है जिसमें कि अभ्रकका ग्रास दियाजाताहै । दूसरी जारणाका नाम पिष्टीजारण है जिसमें कि पिष्टीरूप रस पारदके साथ अभ्रकआदिका मेल होताहै । और तीसरी जारणाका नाम गर्भजारण है जिसमें कि पारदके भीतर अभ्रक पारदरूप होकर ठहरताहै और इस गर्भजारणकोही गर्भद्रुति कहतेहैं क्योंकि रसरत्नप्रकाशमें भी यही कहाहै कि अब मैं गुणके बढानेवाले और रसराजकी सिद्धिके दाता गर्भद्रुति नामके संचारणको कहताहूं ।

सम्मति–जारणा चाहे निर्मुखसे हो सन्मुखसे हो या वासनामुखसे हो परन्तु प्रत्येक जारणामें चारण, गर्भद्रुति, और जारणा ये तीनों भाग तो अवश्यही करना पडताहै ।

जारणाके भेद ।

समुखा निर्मुखा चेति जारणा द्विविधा पुनः ॥ ९३ ॥ (र. र. स.)

अर्थ–अथवा और भी जारणके दो भेद हैं एक निर्मुख और दूसरा समुख ॥ ९३ ॥

जारणके तीन भेद ।

निर्मुखं समुखं चैव वासनामुखमेव च ॥ जारणा त्रिविधा ज्ञेया द्रष्टव्या रसशास्त्रके॥ ॥ ९४ ॥ (टो. नं., र. रा. सं.)

अर्थ–रसशास्त्रमें निर्मुख, संमुख और वासनामुख इन भेदोंसे वासना तीनप्रकारकी मानीगई है ॥ ९४ ॥

सम्मति–प्रथमरसरत्नसमुच्चयमें निर्मुख और समुखभेदसे दोप्रकारकी जारणा कहीहै और टोडरानंदमें वासनामुखभेद बताकर तीनप्रकारकी कही अब यहांपर यह बात समझना चाहिये कि वासनामुखका समुखमें अन्तर्भाव होना उचितहै इसप्रकार मेरी समझमें तो जारणा निर्मुख १ समुख २ वासनामुख३ यातुधानमुख४और राक्षसवक्त्रवान५ इन भेदोंसे पांचप्रकारसे होनी चाहिये और उनमें चारणद्रुति और जारण ये तीनों कार्य करना उचित हैं ॥

मुखलक्षण ।

चतुःषष्ट्यंशतो बीजप्रक्षेपो मुखमुच्यते । एवंकृते रसो ग्रासलोलुपो मुखवान्भवेत् ॥ कठिनान्यपि लोहानि क्षमो भवति भक्षितुम् ॥ ९५ ॥ (र. र. स.)

अर्थ–चौसठवें हिस्सेबीजके जारणसे पारदके मुख होताहै इसभांति करनेपर पारा ग्रास लेनेमें लोलुप होताहै और यह कठिन लोहोंके भक्षण करनेके लिये समर्थ होताहै ॥ ९५ ॥

समुखलक्षण ।

इयं हि समुखा प्रोक्ता जारणा, मृगचारिणा ॥ (र. र. स.)

अर्थ–और इसीकोही समुख जारण कहतेहैं ॥

निर्मुखजारणलक्षण ।

निर्मुखा जारणा प्रोक्ता बीजादानेन भागतः ॥ ९६ ॥ (र. र. स.)

अर्थ–और जिसमें विना रीतिके बीजका जारण कियाजाय उसको निर्मुखजारणा कहतेहैं ॥ ९६ ॥

द्वितीयनिर्मुखजारणालक्षण ।

सूतः खल्वे घृष्टो दिव्यौषधिभिः सनिर्मुखश्चरति ॥ दिव्यौषध्यो अग्रे वक्ष्यमाणाः । (ध. सं.)

अर्थ-दिव्यौषधि (जो औषधिवर्गमें लिखीगई हैं) से खरलमें घोटा हुआ पारद निर्मुखही धातुओंको चर-लेताहै इसको निर्मुखचारणा कहतेहैं ॥

समुखजारणालक्षण ।

सास्यो रसः स्यात्पुटशिग्रुतुत्थसराजिकैः सोषणकैस्त्रिरात्रम् । पिष्टस्ततः स्विन्नतनुः सुवर्णमुख्यांश्च वै खादति सर्वधातून् ॥९७॥

अर्थ--सैंधव,सैंजना,राई,त्रिकुटा इनके साथ तीनदिवसतक पारदको घीग्वारका रस डाल घोटे तदनंतर स्वेदन करे तो पारद मुखवाला होकर सुवर्णआदिधातुओंको खाताहै इसीको समुखजारणा कहतेहैं ॥ ९७ ॥

अथ वासनामुखजारणालक्षण ।

अम्लवर्गेण संयुक्तं यथालाभेन मर्दयेत् । अभ्रकादीनि चरति स उक्तो वासनामुखः॥ ॥ ९८ ॥ (ध. सं.)

अर्थ--पारदको यथालाभ अम्लवर्गसे मर्दन करे तो पारा अभ्रआदिको खाजाताहै बस इसीको वासनामुख जारण कहतेहैं ॥ ९८ ॥

राक्षसवक्त्रवान्का लक्षण ।

दिव्यौषधिसमायोगात्स्थितः प्रकटकोष्ठिषु। भुंजीताऽखिललोहाद्यं योऽसौ राक्षसवक्त्र-वान् ॥ ९९ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-जो पारद दिव्यौषधिके योगसे तीव्राग्निवाली कोठियोंमें स्थित होकर समस्त धातुओंको खाजाताहै उसको राक्षसवक्त्र (मुख) वान् कहतेहैं ॥ ९९ ॥

जारणाके २ प्रकार बाल व वृद्ध (रसार्णवसे)

जारणा द्विविधा बालजारणा मृदुपातना। अन्या तु खोटबद्धेन धातुभिर्वृद्धजारणा ॥ ॥ १०० ॥ (र. प.)

अर्थ--जिसमें मृदुपातन हो उसको बालजारणा कहतेहैं और जारणा दो प्रकारकी है एक बालजारण और दूसरी धातुओंके साथ वृद्धजारणा । अब जिसमें मृदुपाचन हो उसको बालजारणा और जिसमें खोटवृद्धके साथ जारणा हो उसको वृद्धजारणा कहतेहैं ॥ १०० ॥

अन्यच्च ।

अथ जारणा सा च गालनपातनव्यतिरे-केण घनहेमादिग्रासपूर्वकपूर्वावस्थाप्रतिप-न्नत्वं सा द्विविधा बालजारणावृद्धजारणा-भेदात, समुखनिर्मुखवासनामुखभेदादेकैका त्रिविधा । समुखा बालजारणा, निर्मुखा बालजारणा, वासनामुखबालजारणा एवं वृद्धजारणा त्रिविधेति, षड्जारणा,तत्राभ्र-जारणा, सत्त्वजारणा, पत्रजारणाभेदाद्वि-विधा । (जंबूसे प्राप्त पुस्तक पृ. ३९)

अर्थ--अब जारणको कहते हैं । अभ्रक और सुवर्णादिके ग्रास देनेपर गलाने और पातनके विना ही जो पारद अपनी पूर्वावस्था (पहलीही हालत) को प्राप्त होजाय उसको जारण कहते हैं, और वह जारणा बालजारणा और वृद्धजारणाके भेदसे दो प्रकारकी है । फिर भी निर्मुख समुख और वास-नामुखके भेदसे एकएक जारणा तीनतीन प्रकारकी है उसके भेद नीचेके यन्त्र (नकशे) में लिखेहुए हैं सो देखलीजिये और अभ्रकजारणा भी सत्त्वजारणा और पत्रजारणाभेदसे दो प्रकारकी है ॥

जारणा ।

बालजारणा ।	वृद्धजारणा ।
समुखबालजारणा ।	समुखवृद्धजारणा ।
निर्मुखबालजारणा ।	निर्मुखवृद्धजारणा ।
वासनामुखबालजारणा ।	वासनामुखवृद्धजारणा ।

जारणाक्रम ।

गंधकजारणामादौ कुर्यादथ जारणं सुव-र्णस्य । जलधरसत्त्वस्य ततो जारणमथ सर्वलोहानाम् ॥ १०१ ॥ (बृ. यो., र.रा. शं., र. सा. प., नि. र.)

अर्थ--प्रथमगंधकका जारण करे तदनन्तर स्वर्णका जारण और फिर अभ्रसत्त्वका जारण करे ॥ १०१ ॥

धातुवादके निमित्त आदिमें अभ्र अंतमें हेम जारणकी आवश्यकता ।

अभ्रकजारणमादौ गर्भद्रुतिजारणं च हेम्नोंऽते[1] । यो जानाति न वादी वृथैव सोऽ-र्थक्षयं कुरुते ॥ १०२ ॥ (र. चिं., नि.र., र. रा. शं., र. रा. सुं., बृ. यो., र. रा. प.)

अर्थ--सुवर्णजारणके अन्तमें प्रथम अभ्रकजारण फिर गर्भद्रुति और तदनंतर जारणको करे इस बातको जो पारद-वादी नहीं जानता है वह अपने धनको व्यर्थ ही खोता है । यह अर्थ केवल रसायन बनानेवालोंके पक्षमें है और धातु-वादी जो वैद्य हैं उनके मतमें प्रथम अभ्रकजारण तदनन्तर स्वर्णजारण करना उचित है ऐसी सर्वशास्त्रानुसार मुझ टीकाकारकी भी सम्मति है ॥ १०२ ॥

गगनग्राससमय ।

अत्र केचिदभ्रकजारणात् प्राक् सुवर्णरजत-जारणं कुर्वंति, पक्षद्वयेपि न काचिद्धानिः फलसाम्यात् परन्तु सुवर्णताराभ्रकानामत्र बीजसंज्ञा स्वर्णक्रियायां स्वर्णं तारक्रि-यायां रजतमिति विवेकः ॥ (ध. सं.)

१ इस श्लोकका अर्थ करते समय इस श्लोकका भी ध्यान "हे- श्लो० 'पञ्चभिरेभिर्ग्रासैर्घनसत्त्वं जारयित्वादौ । गर्भद्रावे निपुणो जर-यति बीजं कलांशेन' (र. चिं.) किन्तु १ श्लो० यह भी है-'गन्धस्य जारणमादौ कुर्य्यादथ जारणं सुवर्णस्य । जलधरसत्त्वस्य ततो जारण मथ सर्वलोहानाम्' (र. रा. शं.)

शुद्धं स्वर्णं च रूप्यं च बीजमित्यभिधीयते ॥ (र. र. स.)

अर्थ-अब जारणके विषयमें कुछ विचार कियाजाता है कि कुछ वैद्योंकी यह सम्मति है कि अभ्रकजारणसे पहले स्वर्ण और चांदी आदिका जारण करना चाहिये और अत्यन्तही कम वैद्योंको यह सम्मति है कि पूर्व अभ्रकजारण करके फिर स्वर्णादिका जारण करना उचित है। ग्रन्थकारकी सम्मति यह है कि फलकी ममताके कारण दोनों पक्षोंमें भी हानि नहीं है यहांपर स्वर्ण चांदी और अभ्रककी बीज संज्ञा है। यदि स्वर्णकी क्रिया हो तो स्वर्णका बीज और जो चांदीकी क्रिया हो तो चांदीका बीज जारण करना चाहिये ऐसा विचार करना उचित है।

जारणाक्रम।

आदौ अभ्रकजारणं, ततो गंधकजारणम् सुवर्णजारणं पश्चान्नवसार बिडान्वितम्। सत्तरसजारणमंते कुमारिकारसमर्दनं सर्वजारणेषु कार्य्यम् ॥ (जंबूसे प्राप्त पुस्तक पृष्ठ ३७)

अर्थ-प्रथम अभ्रकजारण उसके बाद गंधकजारण तदनंतर नौसादर और बिडसे जारण करे। प्रत्येक जारणके अन्तमें घीग्वारके रससे पारदका मर्दन करे यह उत्तम जारणाका क्रम है॥

सम्मति-खादकके लिये गंधजारणानन्तर स्वर्णजारण काफी समझा गया है देह और लोह वेधके निमित्त पहले गन्धकजारण करे। फिर अभ्रकके क्रमसे ५ ग्रासोंका जारण अवश्य करे।

"विना गंधेन ये मर्त्याः कुर्वते धातुजारणम् ॥ न क्षुधा जायते सूते जीर्यंते धातवो पि न ॥ तस्माद्गंधं पुरा जार्यं सूते वह्निविवर्धनम् ॥" "पंचभिरेभिर्ग्रासैर्घनसत्त्वं जारयित्वादौ। गर्भद्रावी निपुणो जरयति बीजं कलांशेन ॥"

बालजारणाक्रम।

गगनं जारयेदादौ सर्वसत्त्वमतः परम् ॥ ततो माक्षिकसत्त्वं च सुवर्णं तदनंतरम् ॥ ॥ १०३ ॥ गर्भे संद्रावयित्वा तु ततो बाह्यद्रुतिं द्रवेत ॥ सितं सितेन द्रव्येण रक्तं रक्तेन रंजयेत ॥ सारणं क्रामणं ज्ञात्वा ततो वेधं प्रयोजयेत् ॥ १०४ ॥ (र. प.)

अर्थ-प्रथम अभ्रकका जारण कर फिर समस्त सत्त्वोंको जारण करे उसके बाद सोनामक्खीके सत्त्वका जारण करे तदनंतर स्वर्णकी गर्भद्रुति करके फिर बाह्यद्रुति करे यदि पारदको लालरंगतका बनाना हो तो लालद्रव्यसे रंजित करे और श्वेत रंगतका पारद बनाना हो तो श्वेत पदार्थोंसे रंजित करे सारण तथा क्रामणको जानकर फिर बेधका प्रयोग करना चाहिये॥ १०३ ॥ १०४ ॥

वृद्धजारणाक्रम।

गंधकं जारयेत्पूर्वं यंत्रे कच्छपसंज्ञके ॥ पश्चात्तु जारयेद्धेम व्योमप्रभृति यद्भवेत् ॥ ॥ १०५ ॥ पश्चाच्छयामादिकाः सर्वे जार्यंते रत्नसंचयाः ॥ क्रामणं विद्यते सर्वं जारणास्तु न संशयः॥१०६॥ विना गंधेन ये मर्त्याः कुर्वते धातुजारणम्॥न क्षुधा जायते सूते जीर्यंते धातवोऽपि न ॥१०७॥ तस्माद्गंधं पुरा जार्यं सूते वह्निविवर्धनम् ॥१०८॥ (र. प.)

अर्थ-प्रथम कच्छपयन्त्रसे गन्धकका जारण करे फिर स्वर्ण और अभ्रकका करे तदनन्तर अनेक रत्नोंका जारण करे क्योंकि सम्पूर्ण क्रामण जारणमें स्थित हैं जो वैद्य गन्धकके विना (धातु) स्वर्ण आदिका जारण करते हैं उनका पारा बुभुक्षित नहीं होताहै और धातु भी जीर्ण नहीं होतेहैं इस कारण प्रथम गन्धक जारणसे पारदकी अग्नि तीव्र होतीहै ॥ १०५-१०८ ॥

जारणमाहात्म्य।

जारणस्य विशालाक्षि शृणु माहात्म्यमुत्तमम् ॥ सर्वपापप्रनष्टे हि प्राप्यते सूतजारणम् ॥ १०९ ॥ तस्मिन्प्राप्ते हि विज्ञानं प्राप्यते मुक्तिलक्षणम् ॥ यथा सूर्य्योदये प्राप्ते प्रकाशं प्राप्यते जनैः ॥ ११० ॥ (अनुपानतरंगिणी)

अर्थ-हे बडे नेत्रवाली पार्वती ! अब तुम जारणके माहात्म्यको सुनो समस्त पापोंके नाश होनेपर रसजारण प्राप्त होता है। और रस जारणके प्राप्त होने पर विज्ञानरूप मुक्ति प्राप्त होतीहै जैसे कि मनुष्योंको सूर्य्योदय होनेपर प्रकाशका लाभ होताहै वैसेही जारणा होने पर विज्ञानरूप मुक्ति प्राप्त होतीहै॥ १०९॥११० ॥

अन्यच्च।

सर्वपापक्षये जाते प्राप्यते रसजारणा ॥ तत्प्राप्तौ प्राप्तमेव स्याद् विज्ञानं मुक्तिलक्षणम् ॥ १११ ॥ (र. चिं., नि. र., र.रा. शं., बृ. यो., र. रा. सुं., र. सा. प.)

अर्थ-समस्त पापोंके नाश होनेपर रसकी जारणा प्राप्त होती है और जारणाके प्राप्त होने पर विज्ञानरूप मुक्ति प्राप्त होती है ॥ १११ ॥

अन्यच्च।

मोक्षाभिव्यंजकं देवि जारणा साधकस्य तु॥ यावन्न जीर्य्यते सूतस्तावत्तु न च तिष्ठति ॥ ११२ ॥ (र. प.)

अर्थ-हे देवि ! जारणाही पारद साधनके मोक्षको जतानेवाली है और जबतक पारद जारित न हो तबतक स्थिर नहीं होता है ॥ ११२ ॥

अन्यच्च ।

मोक्षाभिव्यंजकं देवि जारणा साधकस्य तु ॥ खल्वस्तु पिण्डिका देवि रसेन्द्रो लिङ्ग मुच्यते ॥ मर्द्दनं बंधनं चैव ग्रासं पूजा विधीयते ॥ ११३ ॥ (र. चि., नि. र., र. रा. शं., र. सा. प.)

अर्थ-हे प्यारी पार्वती ! पारदजारण ही साधकको मुक्तिका दिखानेवाला है खल्वस्तु [1] (अभ्र+गन्ध) जलहरी रूप है और पारद शिवलिंग रूप है तथा मर्दन बन्धन और ग्रास ये उनकी पूजा है ॥ ११३ ॥

अग्निपर पारेको रखनेका माहात्म्य ।

यावद्दिनानि वह्निस्थो जारणे धार्यते रसः। तावद्वर्षसहस्राणि शिवलोके महीयते ११४ दिनमेकं रसेन्द्रस्य यो ददाति हुताशनम्। द्रवंति तस्य पापानि कुर्वन्नपि न लिप्यते॥ ॥११५॥ (र.चिं.,नि.र.,र.रा.शं., बृ.यो., र.रा.सुं.,र.रा.प.,यो. र.)

अर्थ-जारणके लिये जितने दिन पारदको अग्निमें रक्खे साधक उतनेही हजार वर्षतक शिवलोकमें निवास करताहै और जो मनुष्य एकदिन अग्निमें पारदको स्थापित करे तो उसके पाप नाशको प्राप्त होतेहैं और कर्मोंको करता हुआभी कर्मोंसे लिप्त नहीं होताहै ॥ ११४ ॥ ११५ ॥

अन्यच्च ।

यावद्दस्राणि वह्निस्थं रक्षयेत्पारदं प्रिये । तावद्वर्षसहस्रांतं शम्भुलोके महीयते११६॥ वह्निस्थं रक्षयेद्यो वै घस्रैकं पारदं प्रिये । तस्य पापानि नश्यंति कुर्वन्नन्यैर्न लिप्यते॥ (अनुपानतरंगिणी.)

अर्थ-हे पार्वती ! जितने दिवसतक जो पारदकी अग्निमें रक्षा करे तो वह उतने हजार वर्षतक शिवलोकमें पूजनीय होताहै और हे प्यारी जो वैद्य एक दिन भी पारदको अग्निमें रक्खे तो उसके पाप नष्ट होतेहैं और अन्य कर्मोंसे लिप्त भी नहीं होते हैं ॥ ११६ ॥ ११७ ॥

सर्वजारणाकी आदि कर्तव्यता (रसचिंतामणिसे)

तोलकानां शतं सूतं पूर्वमादाय सद्दिने । स्थापयेद्दन्तिदन्तस्य भाजने सुदृढे शनैः ॥ ॥ ११८ ॥ चंपकस्याथ पुष्पाणि जातिपुष्पाणि यानि च । शतपत्रीभवान्यत्र पुन्नागकुसुमानि च ॥ ११९ ॥ बिल्वस्य नव पत्राणि पाटलासुमनानि च । बकुलस्य च रम्याणि यथालाभं प्रकल्पयेत् ॥ १२० ॥ बहूनि निर्मलान्यत्र गुह्यस्थाने मनोहरे । सुलेपिते पवित्रे च शिवं तत्र शिवासमम् ॥ ॥ १२१ ॥ स्थापयेद्भैरवं देवं ब्रह्माणं हरिमर्चयेत् । शंखमर्दलनिर्घोषैरुत्सवं तत्र कारयेत ॥ १२२ ॥ बहुमंगलगीतेन तांश्च संतोषयेत्सुधीः । दानं समानं कर्तव्यं वक्तव्यं बहु मंगलम् ॥ १२३ ॥ पश्चात्तत्र परे खल्वे तदा कर्म प्रसाधयेत । एकभुक्तं ब्रह्मचर्यं भूमिशायी सदा भवेत ॥ १२४ ॥ शिवपूजापरो नित्यं रससेवापरायणः । शुचिवासास्समातिष्ठेच्छिवहोमपरो भवेत् ॥ १२५ ॥ योगिनः पूजयेन्नित्यं नित्यं मंत्रपरो भवेत् । अनया कुरुते रीत्या नित्यं हि रसजारणम् ॥ १२६ ॥ विनानेन न कर्तव्यं जारणाकर्म सूतके । नो कर्म जायते प्रान्ते न रसः सिद्धिमेति च ॥ १२७ ॥ नो विघ्नानि निवर्तंते रसकर्महराणि च । अत एव हि नो याति जारणासिद्धिमुत्तमाम् ॥ १२८ ॥ दूषणं शास्त्रकारस्य प्रयच्छन्ति मनीषणः।दूषणं रसराजस्य महात्मानो न जानते ॥ १२९ ॥ अनेन विधिना सूतं लालयंति हि ये जनाः । ते मर्त्यास्सिद्धिमाप्स्यन्ति ऐहिकीं पारमार्थिकीम् ॥ १३० ॥ सुदिने रसराजस्य कृत्वा पूजां यथोदिताम् । तर्पयेद्योगिनीचक्रं मध्ये भैरवदेशिकान् ॥ ततो हि रसराजस्य जारणाचरणं चरेत ॥ १३१ ॥ (र. प.)

अर्थ-श्रेष्ठ दिनमें सौ तोले पारदको लेकर उत्तम दृढ वासनमें रक्खे फिर चंपा, चमेली, गेंदा, पुन्नाग, बिल्वपत्र, पाटला (पाढल), बकुल (मौलसिरी) इनके फूलोंको यथालाभ ग्रहण करे और एकान्तस्थानको लीपकर श्रीशिव तथा पार्वती, ब्रह्मा विष्णु, और श्रीभैरवजीकी मूर्तिको स्थापित करे फिर शंख और झालर बजावे अनेक प्रकारके गीतोंसे देवताओंको प्रसन्न करे और अनेक प्रकारके दान भी करे तदनंतर दूसरे खरलमें पारदको रखकर कर्मका प्रारम्भ करे साधकजन एकवार भोजन तथा पृथ्वीपर शयन करे शिवभक्त पारदसेवाका करनेवाला शुद्ध वस्त्रधारी शिवका हवन करे और नित्यप्रति योगनियोंकी पूजा करे इस रीतिसे नित्य रस जारणको करे,जो इस रीतिसे जारण नहीं करता है वहपारदकी सिद्धिको नहीं प्राप्त होताहै और पारद कर्मके हरनेवाले विघ्न भी दूर नहीं होते हैं इसीलिये जारणाकी सिद्धि नहीं होतीहै और वे शास्त्रकारको वृथाही दूषण लगाते हैं क्योंकि वे रसराजके दूषणको नहीं जानते हैं इस रीतिसे जो वैद्य पारदको प्रसन्न करतेहैं वे इस लोककी तथा परलोककी सिद्धिको प्राप्त होतेहैं श्रेष्ठदिनमें पारदकी पूजाकर चौंसठ योगिनियोंको तृप्त करे और बीच २में भैरवकी पूजा करे तब रसराजकी चारणा और जारणा करे॥ ॥ ११८-१३१ ॥

[1] 'खवस्तु पिंडिका देवि' (नि० र०) इस टीकाकारने वस्तुका अर्थ गन्धक किया है ।

अथ जारणाक्रम ।

जारणं वस्तु चादाय शुद्धभूमौ निधाय च । अष्टोत्तरशतेनापि जारणे तत्प्रयोजयेत् ॥ १३२ ॥
अथात्र मंत्रः–ॐ ह्रां ह्रा ह्रूं ह्र ह्रा ह्रः फट् रसेश्वराय सर्वसत्त्वोपचाराय ग्रासं गृह्ण २ स्वाहा ॥ १३३ ॥
अनेन मंत्रराजेन चारणा वस्तु मंत्रयेत् ॥ ग्रासदानात्मिका या च शिवेनोक्ता रसार्णवे ॥ प्रार्थना सा तु कर्तव्या धीमता साधकेन तु ॥ १३४ ॥

अर्थ–समस्त जारण की चीजोंको शुद्ध स्थानपर रख ॐह्रांह्रींह्रूंह्रैंह्रौंह्रः फट् रसेश्वराय सर्वसत्त्वोपचाराय ग्रासं गृह्ण २ स्वाहा इस मंत्रको १०८ वार पढकर अभिमंत्रित करे और रसाणर्वमें ग्रास देनेके समय जो शिवजीने प्रार्थना की है उसको पारदका साधक वैद्य करे ॥ १३२–१३४ ॥

अथ प्रार्थना ।

सर्वसत्त्वोपकाराय भगवंस्त्वदनुज्ञया । जारणां कर्तुमिच्छामि ग्रासं ग्रस मम प्रभो ॥ १३५ ॥ कुरुष्वेति शिवेनोक्तं भावयेच्च सुबुद्धिमान् ॥ ततो रससुखे ग्रासमर्पयेन्मंत्रमुच्चरन् ॥ १३६ ॥

अथ मंत्रोयम् ।

ॐ नमोमृतलोहाय परामृतरसोद्भवाय हुं स्वाहा (र. प.)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां जारणकर्मनिरूपणं नामाष्टादशोऽध्यायः ॥१८॥

अर्थ–हे भगवन् ! समस्त जीवोंके उपकाराथ मैं जारणा संस्कार करना चाहता हूं सो हे नाथ इस ग्रासको ग्रहण करो ऐसा कह पारदमें ग्रास देवे ॥ १३५ ॥ १३६ ॥

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपंडितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया भाषाटीकायां जारणकर्मनिरूपणं नामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

अथ जारणसंस्काराध्यायः १९.

पारदवंदना ।

प्रसीद पारद शीघ्रं साधकानां सुसेवित । दारिद्र्याधिरुजानां च नाशिने भवते नमः ॥ १ ॥ (र. पा.)

अर्थ–भली प्रकार सेवा कियेहुए हे पारद तुम पारद सिद्धिकरनेवालोंपर शीघ्र प्रसन्न हो और दरिद्रता मानसिक और शारीरिक दुःखोंके नाश करनेवाले आपको नमस्कार है ॥ १ ॥

जारणालक्षण ।

जारणा हि पातनगालनव्यतिरेकेण घनहेमादिग्रासपूर्वकपूर्वावस्थापन्नत्वम् ॥ २ ॥ (र. चिं., बृ. यो., र. सा. प.)

अर्थ--अभ्रक और स्वर्णादि धातुओंके ग्रास जीर्ण होनेके पश्चात् पातन और गालन (छानना) के विना जो पारद अपनी यहभी अवस्थाको प्राप्तहो उसको जारणा कहतेह ॥ २ ॥

अन्यच्च ।

द्रुतग्रासपरीणामो बिडयंत्रादियोगतः । जारणेत्युच्यते तस्याः प्रकाराः संति कोटिशः ॥ ३ ॥ (र. र. स.)

अर्थ--बिड और यंत्रादिकों के योगसे जो द्रुतग्रासका परिणाम है उसको जारण कहतेहैं और उस जारणके कोटिशः प्रकार हैं ॥ ३ ॥

ग्रासमान और उनके जारणका प्रकार (रससारसे)

चतुःषष्टचंशभागेन ग्रासयुग्मं प्रदीयते । चत्वारिंशद्विभागेन दद्याद्ग्रासचतुष्टयम् ॥ ॥ ४ ॥ त्रिंशांशकेन षड्ग्रासानष्टौ विंशांशकेन च । एतांश्चतुर्विधान्ग्रासान्स्वेदयोगेन जीर्यति ॥ ५ ॥ दशग्रासान् कलांशेन श्रीशिवाय समर्पयेत् । अर्कांशैर्द्वादश ग्रासानष्टांशैश्च चतुर्दशान् ॥ ६ ॥ चक्रे वा वालुकायंत्रे कूपके नैव जारयेत् । दीयते षोडश ग्रासाः पादांशैः पुटयोगतः ॥ ७ ॥ (र. प.)

अर्थ--चौसठवें भागके दो ग्रास, चौवालीसवें भागके ४ चारग्रास तीसवें भागके दस ग्रास बारहवें भागके बारह ग्रास और आठवें भागके चौदह ग्रासोंको चक्रयंत्रमें वालुकायंत्रमें अथवा कूपिका यंत्रमें जारण करे और चतुर्थभागके सोलह ग्रासोंको पुटयोगसे देना चाहिये ॥ ४–७ ॥

ग्रासके अनंतर दोलायंत्रको छोड कच्छपयंत्रसे जारण करे ।

क्रमेणानेन दोलायां जार्य ग्रासचतुष्टयम् । ततः कच्छपयंत्रेण ज्वलने जारयेद्रसम् ॥ ८ ॥ (र. चिं., नि. र., र. रा. शं., बृ. यो.)

अर्थ–इस क्रमसे चारग्रासतक दोलायंत्रमें पारदका जारण करे और तदनंतर कच्छपयंत्रसे पारदका जारण करे ॥ ८ ॥

१–गर्भद्रुति होनेपर गालनसे पृथक् हो ही नहींसक्ता।

२–चतुष्टयम्–से यह आशय है कि चारग्रासतक–अर्थात् १६, ३२, $\frac{1}{16}$, $\frac{1}{32}$, $\frac{1}{16}$, $\frac{1}{8}$ तक तो दोलायंत्रमें जारण करे इससे अधिक (अर्थात् $\frac{1}{4}$,–) मानवाला ग्रास कच्छपमें जारण करे।

गर्भद्रवित अभ्रसत्त्व और बीजोंके जारणकी क्रिया दोलायंत्रसे ।

पटुम्लक्षारगोमूत्रस्नुहीक्षीरप्रलेपिते । बहिश्च बद्धे वस्त्रेण भूर्जे ग्रासं निवेशितम् ॥९॥ क्षारारनालमूत्रेषु स्वेदयेत्त्रिदिनं भिषक् । उष्णेनैवारनालेन क्षालयेज्जारितं रसम् १० (रस. चिं. हस्तलिखित)

अर्थ--जिस पारदमें बीजका ग्रास दियाहुआ है उसको सैंधव अम्लवर्ग जवाखार सज्जीखार गोमूत्रको थूहरके दूधमें घोटकर भोजपत्रपर लेपकरे फिर उस भोजपत्रमें ग्रास दियेहुये पारदको रखकर कपडेसे पोटली बनावे और उस पोटलीको जवाखार कांजी और गोमूत्रोंमें वैद्य तीन दिवसतक स्वेदन करे और इसबातका ध्यान रखना चाहिये कि जारित रसको उष्णकांजीसे धोना चाहिये ॥ ९ ॥ १० ॥

सिद्धमतसे हेमजारण ।

सग्रासं पंचषड्ग्रासैर्यत्र क्षारैर्विमर्दयेत्॥सूतकात्षोडशांशेन गंधेनाष्टांशकेन वा ॥ ११॥ ततो विमर्द्य जंबीररसे वा कांजिकेऽथवा॥ दोलापाको विधातव्यो दोलायंत्रमिदं स्मृतम् ॥ १२ ॥ (र. चिं-,नि.र.,र. रा. शं.,बृ.यो.)

अर्थ--पांचवें भाग अथवा छठेभाग जवाखारसे जिसको ग्रास दियागयाहै ऐसेपारदको मर्दन करे अथवा पारदसे षोडशांश या अष्टांश गंधकको लेकर पारदके साथ मर्दन करे फिर जंभीरी अथवा कांजीमें दोलापाक करना चाहिये बस इसीको दोलायंत्र कहतेहैं ॥ ११ ॥ १२ ॥

जारणक्रिया ।

जंबीरपूरकचाङ्गेरीवेतसाम्लसंयोगात्॥क्षारा भवंति सुतरां गर्भद्रुतिजारणे शस्ताः ॥ ॥ १३ ॥ (र. चिं.,नि. र.)

अर्थ--जंभीरी, बिजौरा, चूका, अम्लवेत और अम्लवर्गके योगसे समस्त क्षार गर्भद्रुति जारणके निमित्त उत्तम होतेहैं अर्थात् जहां गर्भद्रुति जारण करनेके लिये क्षारका प्रयोग करना हो तो उस क्षारको जंभीरी, बिजौरा, चूका, अम्लवेत अथवा किसी अम्लवर्गकी भावना देनी चाहिये १३

कच्छपयंत्रद्वारा स्वर्णजारण ।

श्वद्धृताम्बुपात्रस्थखर्परच्छिद्रसंस्थिता।पक्वमूषातले तस्यां रसोष्टांशबिडावृतः ॥१४॥ संरुद्धो लोहपात्र्याथ ध्मातो ग्रसति कांचनम् ॥ वालुकोपरि पुटो युक्त्या महामुद्रया च निर्वहः ॥ १५ ॥ (र. चिं., र. रा. शं., र. रा. प., नि. र., र. प.)

अर्थ--प्रथम मिट्टीका एक कूंडा बनाकर पानीसे भरदेवे और उसपर एक दूसरा ऐसा खपरा रक्खे जो कि पानीसे स्पर्श करताहुआ हो उसके बीचमें छेदकर पक्वमूषाको रक्खे और उसमें बीजसहित पारदको रखकर ऊपर नीचे अष्टमांश बिडको रखदेवे तदनंतर लोहेको कटोरीसे मुद्रा देकर कोयलोंसे धोंके तो पारा सुवर्णको खाजाताहै अथवा दृढमुद्रा लगाकर ऊपरसे वालूरेत भर कुक्कुटपुट लगावे तो स्वर्णजारण होगा ॥ १४ ॥ १५ ॥

स्वर्णजारण बिडयोगसे कच्छपयंत्रद्वारा ।

शश्वद्धृताम्बुपात्रस्थशरावच्छिद्रसंयुतः ॥ पक्वमूषां न्यसेच्छिद्रे जलस्पर्शकरीं दृढाम्॥ ॥ १६ ॥ तस्यां पक्वकुमुदिन्यां रसोष्टांशबिडावृतः ॥संरुद्धो लोहपात्र्याथो मुद्रितो दृढमुद्रया ॥ १७ ॥ तदूर्द्ध वालुकां दद्यादष्टांगुलमितां ततः ॥ हठात्तदुपरि ध्मातो रसस्तद्गर्भसंस्थितः ॥ मयूरमायुना लिप्तं कांचनं ग्रसति ध्रुवम् ॥ १८ ॥ (र. प.)

अर्थ--पानीसे भरेहुये कूंडेपर छेदवाला शकोरा रखदेवे और उस छिद्रमें ऐसी पक्वमूषाको रक्खे कि जिसका पेंदा जलको स्पर्श करताहुआ हो उस मूषामें अष्टमांश बिडसहित पारदको रखकर लोहेकी कटोरीसे दृढ मुद्रा करदेवे । फिर उसपर आठ आठ अंगुल वालूरेत भरकर हठाग्निदेवे तो गर्भमें ठहराहुआ पारद मोरके पित्तेसे लेपकियेहुए सुवर्णको शीघ्र खाजाताहै ॥ १६–१८ ॥

अन्यच्च ।

सच्छिद्रं सलिलापूर्णभांडवक्त्रे शरावकम् ॥ दत्त्वा छिद्रे पक्वमूषा देया नीरावियोगिनी॥ ॥ १९॥ तस्यां बिडावृतः सूतो देयो लोहावृते मुखे ॥ तदुपरि वालुकां दत्त्वा दृढां मुद्रां च कारयेत ॥ २० ॥ शनैर्ध्मातो ग्रसत्येष कांचनं सूक्ष्मतां गतम् ॥ स्वल्पं सपित्ततापात्क शनैर्दद्यं समावधि॥देहार्थं धातुवादार्थं प्रयच्छन्त्यल्पबुद्धयः॥२१॥ (योगतरंगिनी, बृ. यो. त., र. रा. शं., र. रा. प.)

अर्थ–इसका अर्थ ऊपरकी क्रियाके अनुसार समझना चाहिये ।

कच्छपयंत्रद्वारा जारण ।

कुंडाम्भसि लोहमये सबिडं सग्रासमीशजं पात्रे । अतिचिपिटलोहपात्र्या पिधाय संलिप्य वह्निना योज्यम्[2] ॥ २२ ॥(र.चिं., नि. र., र. रा. शं-, बृ. यो.)

---

१ पाठान्तरम्–'ग्रासपंचकषड्ग्रासैर्यवक्षारैर्विमर्दयेत्।सूतं तु षोडशांशेन गंधकाष्टांशकेन वा' (नि. र.,र. रा. शं.) पुनः शुद्ध यूं होगा 'सग्रासं पंचषड्भागैस्त्रिभिःक्षारैर्विमर्दयेत् । सूतकात्षोडशांशेन गंधेसाष्टांशकेन वा (अथवा) षड्भागयवक्षारै रसंग्रासे विमर्दयेत् । पुनः व्या. ज्ये. म.– बृहद्योगतरंगिणीका पाठबहुत है उत्तम उसका पाठ यह है इससे भी उत्तम व्याकरणसे शुद्ध यह होगा–'सग्रासं पंचषड्भागयवक्षारेण मर्दयेत्। सग्रासपंचषड्भागैर्यवक्षारैर्विमर्दयेत्॥सूतं तत्षोडशांशेन गंधेनष्टांशकेन वा'

१–मूषार्द्धं वालुकां दद्यान्मुद्रां कृत्वा दृढां ततः इ. (र. रा. प.)

२ योज्य इत्यपि ।

अर्थ–जल भरे हुए कूंडेमें जो लोहेका पात्र रक्खा हुआ है उसमें बिड तथा ग्रास सहित पारदको अत्यन्त चिपटी लोहेकी कटोरीसे ढक और मुद्राकर ऊपरसे अग्नि लगावे तो स्वर्णका जारण होगा ॥ २२ ॥

स्वर्णजारणमें यंत्रकी आवश्यकता ।

सोमानलयंत्रे सुवर्णजारणं दोलायंत्रे वा ॥ ॥ २३ ॥ (र. प.)

अर्थ–सोमानलयन्त्र (जो कि यंत्राध्यायमें कहा गया है) में अथवा दोलायंत्रमें भी सुवर्णका जारण होता है॥२३

कल्पितबीजजारण ।

एवं कल्पितबीजजारणम् ॥ २४॥ (र.प.)

अर्थ–इसी प्रकार कल्पित बीजका भी जारण होता है ॥ २४ ॥

सम्मति–ऊपरका पाठ स्वर्ण जारणके बाद लिखा हुआ है इस लिये यह बात स्पष्ट प्रतीत होती है कि साधारण वर्ण बीजवत् कल्पित (बनावटी) बीजका भी जारण होगा ।

चारित गगनका जारण दोलायंत्रसे ।

चारितं बंधयेद्वस्त्रे दोलायंत्रे दिनं पचेत् ॥ सिद्धमूलीद्रवैर्युक्ते कांजिके जीर्यते फलम् ॥ २५ ॥ अजीर्णं चेत्पचेद्यंत्रे कच्छपाख्ये दिनावधि ॥ अष्टमांशं बिडं दत्त्वा जारयेन्नात्र संशयः ॥ अनेन क्रमयोगेन चार्यं जार्यं पुनःपुनः ॥ २६ ॥ (र. प.)

अर्थ–अभ्रक खाये हुए पारदको पोटलीमें बांधकर सिद्ध जडियोंके रससे मिली हुई कांजीमें दोला यंत्र द्वारा एक दिवसतक पचावे तो अभ्रकका जारण होता है, यदि इस क्रियाके करने पर भी अभ्रक जीर्ण न हो तो फिर कच्छप यंत्र द्वारा एक दिन परिपाक करे कच्छप यंत्रमें यदि जारण करना हो तो अष्टमांश विड देकर जारण करे इसी क्रमसे चारण तदनंतर जारण करना चाहिये ॥ २५ ॥ २६ ॥

अभ्रकका दोलायंत्रसे जारण ।

त्रिक्षारं पंचलवणमम्लवर्गं स्नुहीपयः ॥ गोमूत्रैर्लोडयेत्सर्वं तेन वस्त्रं घनं लिपेत् ॥ ॥ २७ ॥ तन्मध्ये चारितं सूतं बद्धा भूर्जेन वेष्टयेत ॥ सिद्धमूलद्रवं दत्त्वा दोलायंत्रे त्र्यहं पचेत् ॥ २८ ॥ तमुद्धृत्यारनालेन क्षालयेल्लोहभाजने ॥ वस्त्रपूतं ततः कृत्वा साम्लपात्रे विमर्दयेत् ॥ २९ ॥ हस्तेनैव भवेद्यावच्छुष्कं तत्पारदं पुनः ॥ चतुर्गुणेन वस्त्रेण गालयेन्निर्मलो रसः ॥३०॥ अजीर्णे तु पुनर्मर्द्यमम्लं दत्त्वा दिनावधि ॥ दोलायां स्वेदयेत्तद्वद्द्रवेज्जीर्णं न संशयः ॥ ३१ ॥ (र. प.)

अर्थ–सुहागा, जवाखार, सज्जीखार, पांचोनोन, अम्लवर्ग और थूहरके दूधको गोमूत्रमें घोटकर कपडे पर गाढा२ लेप करे उसमें ग्रास दिये हुए पारदको बांधकर ऊपरसे भोजपत्र बांधे फिर सिद्ध जडियोंका रस देकर दोलायंत्र द्वारा तीन दिनतक पचावे और पके हुए पारदको निकाल कर लोहेके पात्रमें छानलेवे फिर छने हुए पारदको थोडी सी खटाई डालकर हाथसेही तबतक मर्दन करे कि जबतक पारा अच्छी तरह सूख न जाय फिर चौलर कपडेमें छाने तो पारद निर्मल होता है इस क्रियाके करनेपर भी यदि ग्रास जीर्ण नहीं होय तो फिर खट्टा रस देकर एक दिनतक मर्दन कर दोलायंत्रमें एक दिन पकावे तो ग्रास जीर्ण होगा इसमें सन्देह नहीं है ॥ २७–३१ ॥

अभ्रजारण जलयंत्रसे ।

अथेदानीं प्रवक्ष्यामि भक्षणं चाभ्रकस्य हि । करोति विधिना येन लोहानां चैव सूतराट् ॥ ३२ ॥ जलयंत्रस्य योगेन बिडेन सहितो रसः ॥ भक्षयत्येव चाभ्रस्य कवलानि न संशयः ॥ ३३ ॥ ततो हि जलयंत्रस्य लक्षणं कथ्यते मया । सवृत्तलोहपात्रं च जलधाराढकत्रयम्॥३४॥ तन्मध्ये तु दृढं सम्यक् कर्तव्यं लोहसंपुटम् लोहसंपुटमध्ये तु निक्षिपेच्छुद्धपारदम्॥३५॥ बिडेन सहितं चैव षोडशांशेन यत्नतः । चतुःषष्ट्यंशकं चाभ्रसत्त्वं संपुटके न्यसेत् ॥ ॥ ३६ ॥ संपुटं रोधयेत्पश्चाद्दृढया मीनमुद्रया । वज्रमुद्रिकया वापि संधिरोधं तु कारयेत् ॥ ३७ ॥ चुल्ल्यां निवेश्य तद्यंत्रं जलेनोक्तेन पूरितम् । क्रमादग्निः प्रकर्तव्यो दिनं सार्द्धद्वयं तथा ॥ ३८ ॥ एवंकृते ग्रासमानं भक्षयेन्नात्र संशयः । अनेनैव प्रकारेण षड्ग्रासान् जारयेत्सुधीः ॥ ३९ ॥ भक्षिते चाभ्रसत्त्वे वै सर्वकार्येषु सिद्धिदः । जायते सूतराजो वै सत्यं गुरुवचो यथा ॥ ॥ ४० ॥ (ध. सं.)

अर्थ–अब मैं अभ्रककी उसग्रास भक्षण विधिको कहताहूं कि जिससे पारद सम्पूर्ण धातुओंको खाजाताहै जल यंत्रद्वारा बिडसहित पारद अभ्रकके समस्त ग्रासोंको खाजाताहै इसमें कुछ संदेह नहीं है, इसलिये मैं जलयंत्रके लक्षणको कहताहूं जिसमें ३ आढक जल आताहो ऐसा एक उत्तम लोहेका कढाव बनावे, उस कढावके बीचमें लोहेका संपुट तय्यार करावे, तदनंतर उस संपुटमें पारद, पारदसे षोडशांश बिड और चौसठवां भाग अभ्रसत्त्वका लेकर रक्खेवे फिर उस सम्पुटको मीनमुद्रासे अथवा वज्रमुद्रासे मुद्रितकर चूल्हेपर चढाय और जलसे भरकर मन्द, मध्य,

---

१ यह पाठ स्वर्णजारणान्तर लिखा है जिससे यह आशय निकला कि साधारण बीज वा कल्पितबीजका जारण होगा ।२ घनम् इत्यपि ।

३ सिद्धमूलीका वर्णन चारण संस्कारमें हुआ है ।

और तीव्राग्निके योगसे ढाई दिनतक अग्नि देवे इसक्रियासे पारद अभ्रकसत्त्व प्रभृतिको खाजाताहै इसमें संदेह नहीं है इसीरीतिसे पारदके छहों ग्रासोंका वैद्य जारण करे अभ्रसत्त्व जीर्ण होनेपर पारदको समस्त कार्योंमें लावे तो पारद गुरुके वचनोंकी तरह कामको सत्यही करताहै ॥ ३२-४० ॥

महाद्राव ।

वृषश्चित्रमपामार्गं चिंचा कुष्माण्डनाडिका स्नुही तालस्य पुष्पश्च वर्षाभूर्वेतसं तथा ॥ ४१ ॥ एतेषां क्षारमाहृत्य लिम्पाकस्वरसेन च । क्षालयित्वा क्षारतोयं वस्त्रपूतश्च कारयेत् ॥ ४२ ॥ चण्डातपेन संशोष्य ग्राह्यं तद्द्रवणोचितम् । एतस्य द्विपलं ग्राह्यं यवक्षारं पलद्वयम् ॥४३॥ स्फटिकारिपलं चैव नरसारपलं तथा । पलार्द्धं सैंधवं ग्राह्यं टंकणं तोलकद्वयम् ॥४४॥ कासीसं तोलकं चैव मुद्राशंखं च तोलकम् । दारुमोचं कर्षकश्च तोलं समुद्रफेनकम् ॥ ४५ ॥ सर्वमेकत्र संचूर्ण्य बकयंत्रेण साधयेत्। महाद्रावकमेतद्धि योज्यश्च रसजारणे ॥ ४६ ॥ (शब्दकल्पद्रुम.)

अर्थ-अडूसा, चीता, ओंगा, इमली, पेठा, थूहर, प्रपौंडरीक, सांठ और अम्लवेत इनके क्षारको निकालकर और जंभीरीके रससे घोलकर छानलेवे और उसको तेज घाममें सुखाकर द्रावणके योग्य बनालेवे तदनन्तर इस क्षारको दो पल, जवाखार दोपल, फिटकिरी एकपल, नौसादर एक पल, सैंधव आधापल सुहागा दो तोले, कसीस एक तोला, शंख एक तोला, दारुमुच (एक प्रकारका स्थावर विष है) एक तोला और समुद्रफेन एक तोला, इन सबको एक जगह चूर्णकर बक यंत्रसे द्राव खींचलेवे इस द्रावको रसजारणके निमित्त काममें लावे ॥ ४१-४६ ॥

अन्यच्च ।

शुद्धं कांचनमाक्षिकं मृदुतरं कांस्याभिधेयस्तथा सिंधूत्थं विमलं रसाञ्जनवरं फेनं स्रवन्तीपतेः॥ क्षारौ सर्जिकसम्भवौ सुविमलौ भागास्त्वमीषां समाः सप्तानां सदृशन्तु टङ्कणमिह त्वर्द्धो नृसारः स्मृतः ४७॥ तत्तुल्या स्फटिकारिका त्रिसदृशः शुद्धो यवस्याग्रजः कासीसद्वितयं यवाग्रजसमं सञ्चूर्ण्य सर्वं न्यसेत् ॥ पात्रे काचमये मृदम्बरवृते सोऽयं महाद्रावको नो वक्तुं प्रभवेदमुष्य नितरां सम्यग् गुणं भूतले ॥ ॥ ४८ ॥ (श. क. द्रु.)

अर्थ--शुद्ध और कोमल स्वर्णमाक्षिक, नीलाथोथा, सेंधानोन, रसौत, समुद्रफेन, जवाखार, सज्जीखार, इन सबको समानभाग लेवे और इन सातों चीजोंके समान सुहागा सुहागेका आधा नौसादर और नौसादरके तुल्य फिटकिरी इस सुहागा, नौसादर और फिटकरी इन तीनोंके समान जवाखार और जवाखारके तुल्य दोनों प्रकारके कसीस इन सबको चूर्णकर शीशीमें (जिसपर कपरौटी कीहुई हो) डालकर पातालयंत्रमें चोवा खींचलेवे तो यह उत्तमद्राव बनताहै इसके गुणको संसारभरमें कोई भी वर्णन नहीं करसकताहै ॥ ४७ ॥ ४८ ॥

ग्रासजीर्णपरीक्षा ।

चतुर्गुणेन वस्त्रेण पीडितो यदि निःसरेत्॥ ग्रासं जीर्णं विजानीयादजीर्णस्त्वन्यथा भवेत् ॥ ४९ ॥ (टो. नं.)

अर्थ-चौलर कपडेमें डालकर दबानेसे पारा बाहर निकल जावे तो समझना चाहिये कि ग्रास जीर्ण होगया यदि न निकले तो ग्रास नहीं जीर्णहुआ समझना चाहिये ॥ ४९ ॥

सम्मति--ऊपरलिखीहुई क्रियामें संदेह है क्यों कि गर्भद्रुति ग्रास तथा बाह्यद्रुतिग्रास कपडेमें छाननेसे छनताहै।[1]

ग्रासजीर्णकी परीक्षा अजीर्णनाशन ।

अजीर्णनाशाय सुभूर्जपत्रे स्वेद्यस्त्रिरात्रं पटुकांजिकेऽथ॥ मात्राधिकश्चेत्समतामुपैति यावन्न तावद्ग्रसनाधिकारी॥५०॥ (यो.तं.)

अर्थ-अजीर्णनाश करनेकेलिये पारदको भोजपत्रमें बांधकर लवण और कांजीमें बराबर तीनरात स्वेदनकरे फिर निकालकर तोलेसे यदि वजन अधिकहो तो फिर स्वेदन करते करते जब पारद अपने पहले वजनके तुल्यहोजाय तब ग्रासका अधिकारी होताहै ॥ ५० ॥

अजीर्णनाशन ।

रसाजीर्ण समुत्पन्ने बिडैर्गोमूत्रसंयुतैः॥स्वेदनीयो रसो भूयो दिनैकं सूतजारणे ॥५१॥ (र. पा.)

अर्थ-जारणअवस्थामें पारदको यदि अजीर्ण होगयाहो तो गोमूत्रमें विड मिलाकर एकदिवसतक स्वेदनकरे तो अजीर्ण नाश होताहै ॥ ५१ ॥

अन्यच्च ।

अजीर्णे पातयेत्पिष्टिं[2] स्वेदयेन्मर्दयेत्तथा ॥ वसनाम्लप्रयोगेण[3] जीर्णे ग्रासं प्रदापयेत् ॥ ॥ ५२ ॥ (रसदर्पणात्, टो. नं.)

अर्थ-यदि पारदको अजीर्ण होगया हो तो पिष्टी बनाकर पातनकरे अथवा अम्लपदार्थके योगसे स्वेदनकरे या मर्दनकरे तो इस प्रकार जीर्ण होनेपर फिर ग्रासको देवे ॥ ५२ ॥

ग्रासजीर्णान्ते मर्दन[4] ।

इष्टिका गुडदग्धोर्णा गृहधूमं च राजिका ॥ सैंधवेन युतं सर्वं षोडशांशं रसस्य तु ॥५३॥

---

१ यह पाठ शंकित है क्यों कि गर्भद्रुति ग्रास और बाह्यद्रुति ग्रास छाननेसे छनजायगा। २ पिंडमित्यपि । ३ रसस्याम्लस्य-योगेनेत्यपि । ४ देखो रसरत्नसमुच्चय ९० मर्दनसंकार ।

सर्वधान्याम्लसंयुक्तं पारदं मर्दयेत्ततः ॥ दत्त्वा ततोऽम्लवर्गेण दोलायंत्रे दिनं पचेत्॥ ॥ ५४ ॥ जीर्णे ग्रासे त्विदं कुर्याद्रागग्राही भवेद्रसः ॥ अग्रे ग्रासप्रमाणाद्यं पूर्वोक्तं क्रमतश्चरेत् ॥ ५५ ॥ (र. प.)

अर्थ–ईटका चूरा,गुड,ऊनकी भस्म,घरका धूवां राई,और सैंधव इनसबको पारदसे षोडशांश लेकर पारदके साथ धान्याम्लसे मर्दन करे, तदनंतर अम्लवर्गमें दोलायंत्रद्वारा एकदिवसतक स्वेदनकरे तो ग्रास जीर्ण होकर पारद उत्तम रंगका होताहै । इसी प्रकार आगे भी क्रमसे ग्रासोंको जीर्ण करे ॥ ५३–५५ ॥

जारण संस्कारोपयोगी तेजाबशोरा सज्जीद्राव ।

लोटा सज्जी पानीमें भिगो छोडनी लकडीसे हिलाते रहना चौथेदिन नितारकर कढाईमें पकालेना वह सज्जी और शोरा कलमी मिलाके पकालेना यह दोनों चीजें लोहताम्र आदि धातुको जल्दी गलादेती हैं ॥ (जंबूसे प्राप्तपुस्तक)

तेजाब फारूकी बनानेकी तरकीब (उर्दू)

शोरा एकहिस्सा, नौसादर कानी चहारम हिस्सा, फिटकिरी निस्फ हिस्सा, तीनों दवाएं बाहम खरल करके कुएअंबीक(भवका)में रखकर तसईद करे तेजाब उससे मुकत्तर होगा और ऐसा तेजहोगा कि अगर छुरी उसमें डाले तो गुदाज होकर सिर्फ दिस्ता हाथमें रहजावेगा अमल इसतरह करे कि दोपहरतक मौआतदिल आंच करे, कुरेसे जब धूवां वरंग सफेद निकलना शुरू होगा तो थोडीदेरमें अंबीक गर्म होजावेगी, जब तेजाब निकलचुके उतारले इस तेजाबसे तमाम अजसाद सिवाय सोनेके महलूल होजातेहैं, इस तेजावमें बहुतसे खवास हैं मिनजुमल: उनकी यह है कि जिस शखसको बुरंस या वहकहो उसपर रंग तबदील होजावेगा अगर मुकर्रर मले तो बिलकुल जाइल होजाताहै और अगर जखम पडजावे तो मोमरोगन लगानेसे सेहत होतीहै, दर्द दानको जाइल करताहै, और तुहालको नाफः है, अगर बीस तोला नुकरः इसमें डाले महलूल होकर १८ तोला निकलतीहै और दो तोला सोना अलहदा होजाताहै, लेकिन यह अमल यानी सोना जुदा करनां निहायत मुश्किल है, हर शखस उसपर कादर नहीं होसक्ता । सुफहा ६५ किताब अलजवाहर (१३ । ११ । १)

महाद्राव ।

यवक्षारस्य भागौ द्वौ स्फटिकारिस्त्रयो मताः। एकीकृत्य प्रपिष्यापि मूत्रैर्वत्सतरीभवैः५६शुष्कं कृत्वा क्षिपेत्पात्रे सैसके वस्त्रलेपिते । अन्यसीसकपात्रन्तु द्विमुखं मेलयेद्बुधः५७॥वृद्धवैद्योपदेशेन पचेत्पात्रस्थमौषधम् । ततो ज्वालाधतः स्थाप्यं पात्रान्यं लभते रसम् ॥५८॥ (शब्दकल्पद्रुम)

१ ग्रासयेदित्यपि ।

अर्थ–जवाखार दो भाग और तीन भाग फिटकिरी इन दोनोंको छोटी बछिया (बछिया जो कि घास न खातीहो) के मूत्रसे पीसकर सुखालेवे उस चूर्णको कपरोटी कीहुई शीशीमें रख चूल्हेपर चढावे और सीसीके मुखको दूसरे शीशेके पात्रमें कर कपरौटी करदे कि जिससे खाली पात्रमें भी हवा न निकले फिर वृद्धवैद्योंकी आज्ञानुसार अग्निलगावे तो नीचेके पात्रमें जो रस निकलेगा उसको शीशीमें भररक्खे । इसे महाद्रावनामका तेजाब कहतेहैं ॥ ५६–५८ ॥

सम्मति–प्रथम शीशीको सूर्यके तेजमें उष्णकर और चूल्हेपर चढाय ऐसी मन्दाग्नि देवे कि उस शीशीसे पसीनासा आतारहै अधिक अग्नि न लगे ॥

तरकीब तेजाबमाइफारूक (फारसी)

दरतकतीर माइफारूक कि वह तरीन हमें तेजाब हाइ व तुंद व गुजन्द वराय हाजत बिगीरवजाक दो जुजव शोरः कलमी दो जुज व खुरकरा तफतीर कुन हरकिरा ख्वाही हलकुन अज अजसाद व अजमाद व अरमाहै.व अनफास व इमलाह गुजार अजी जूद हल शवद खास बुरादः मिस गिरफ्तः जीवक महलूल बर ओरेख्तः तवगकुनद सीमाइ शव महलूल कमर खालिश बुदह आयद जहात मईशत मईशत काफीस्त आसान अजी नेस्त (सफा ६ किताव इसरार अलकीमियां)

शोरादि तेजाब ।

शोरा १० तोले, श्वेतकाही २० तोले, लाल काही १ तोला, इनको पीसकर तेजाब निकाल लेना । (जंबूसे प्राप्त पुस्तक.)

तेजाब शोरा बनानेकी तरकीब (उर्दू)

शोरा सेरभर फिटकिरी, हीरा कसीस, हरएक आधसेर तूतियाए गुजराती आधपाव सबको बाहम पीसकर बजरिये दा घडोंके जिनका मुँह छोटाहो तेजाब निकाले दवा वाले घडेको टेढा करके दूसरे घडेसे कुछ ऊंचा रक्खे और उसका मुंह सींकोंसे बंद करके खाली घडेको जरा नीचे रक्खे और दोनोंके मुंहको गिलेहिकमत करके खाली घडेको पानीमें बकदर निस्फके डुबोए रक्खे और दवा वाले घडेको चूल्हेपर रखकर आंच रफ्तः रफ्तः दे, ताकि पानी खाम न निकले और आंच तेज भी न हो, वरनः दवा जलजावेगी और तेजाबमें जलीहुई बू आवेगी (सुफहा किताब अकलीमिया ३०)।

शंखद्रावविधि ।

सैंधौ सोरा अरु फिटकरी । पुनि कसीस ले चौथी करी ॥ नलिनीजंत्र काढिके लेहु शंखद्राव खैबेको येहु ॥ (र. सार., रससागर.)

तेजाबकी तरकीब (उर्दू)

शोरा बारह हिस्सा,नमक संग तीन हिस्सा,कसीस तीन हिस्सा, (तनकनार सुहागा) एक हिस्सा,सिंगरफ एक हिस्सा,मुताबिक तेजाब फारूकीके कशीद करे, अकसर जगहपर काम आता

है। इसतरह नमकका तेजाब भी निकलसक्ताहै जिसमें सोना महलूल होजाता है। अंगरेजोंमें इसको म्यूरेटिक एसिड कहते हैं अजजाइ यह हैं फिटकिरी नमक सांभर सुफहा ६६ किताब अलजवाहर एकारेजिया जिस्में सोना गलजाता है।

Nitric Acid—शोरेका तेजाब- } makes
3 part Hydrocloric Acid- } Aquara:Jia
नमकका तेजाब-1 part }

(बाबू ईश्वरदास जापानी।)

शंखद्राव।

सैंधो ले साजीको लोन। अरु फिटकरी लीजिये कौन॥ अरु थूथो कसीसको ल्याय। पुनि नौसादर लेहु मँगाय॥ ढेकी यंत्र जु काढन कह्यो। गुरुप्रसादते ग्रंथन लह्यो॥ आठों सूर रक्तकी छही। जांहि याहि सन कविजन कही॥ वावटि पंच गुल्म लेजाय। जो रोगी संजमसे खाय॥ जो पथ रहै तो औषध सार। गुरुप्रसाद कहि सैद पहार॥ (रससार.,रससागर।)

अन्यच्च।

चना खारु मूरीको नोंन। नीलकंठ तामें सब कोन॥ नलिनी जंत्र चुवावे ताम। शंखद्राव जानेको नाम। याते जो कीजे सो होय। जो इहविधि कै जाने कोय॥ (रससागर.)

अन्यच्च।

चनाखारु मूरीको नोंन। लीलकंठ तामें सबकोन॥ पैगामी जु सबीरा सेत। जवाखार गुजराती हेत॥ ढेकीजंत्र जु लेइ चुवाय। छरके भांति नीर ह्वै जाय॥ येही औषदि अरु संखिया। शंखद्राव यह ग्रंथनि किया॥ जावाइवै फेरि चुवाय। लोहद्राव होय बुरी बलाय॥ एसे शंखद्राव हैं घने। तें सब परें कौनपे गने (र. सा., बडा., र. सा.)

अन्यच्च।

लै दोऊ फटकरी कसीस। सैंधा सोंचर लौन गुनीस॥ दोऊ नौसादर कचलौन। जवाखार अरु मोखा सोन॥ पुनि सांभरि साजीको लौन। चूनो सीसी पीसिके कोन। सोचर सोना अरु संखिया। गंधक पांह सुहागसुलिया॥ मनसिल अरु मुरदा सिंगाल। अरु थूथो तबकी हरताल॥ बहुरि सिलाजित सोध्यो आनि। खार सचोरा लेहु सुजान॥ उबले इन खारिनको लोन। इनमें एकन भूले कोन॥ आझाझारो विषखापरो। ढाक चौराई पीपर खरो॥ अररूसो वह अरु वनसटी। जुगल कटाई नीकी बटी॥ भेडा विट मरोहि सुपवारु। रम्भा कुंदन अरु देव दारु॥ पीरी बांसो अरु जीडरी। उमरि और आमिली करी॥ तिली पिजरो अरहु बखानि। लमाडि बेलि कुम्हेंडे जानि॥ वाखरु लौन लेहु समतूल। पैके वस्तन जाना कौल॥ (र.. बडा., र. सा.)

तेजाबगन्धककी तरकीब।

तेजाब गन्धकका जिसको अंगरेजीमें सलफ्यरिक एसिड कहते हैं इसतरह निकाला जाता है कि गंधक एक हिस्सा नौसादर निस्फ हिस्सा लेकर अव्वल नौसादरको बकरीके मसाने (फूंकनी) में साफ करके मुंह उसका तागेसे बांधकर खिचडीमें दमपुख्तके वक्त घंटेभर रहने दे, नौसादर मजकूर हल होजायगा, बाद इसको नौसादर महलूल हो गंधकमें मिलाकर घिसकर गोली बांधे और बजरिये पतालजंत्रमें आतिशी शीशीके चारों तरफ रेग रखकर आग देना चाहिये ताकि जल न जावे और भवकेकी तरहअक गंधकका भी निकलता रहे। सूरत उसकी यह है कि एक प्याला चीनीका जिसके पेंदेमें तीन सूराख हों जस्त या लोहेके तारसे बांधकर लकडीमें लटका दे और उसके नीचे एक प्लेट टेढी करके रक्खे और प्लेटके ऊपर प्यालें आहनीमें गन्धक भरे और तीन फलीतोंमें गन्धक मजकूर लगाकर रोशन करदे जिसमें गंधक जलनेलगे और उसका धुवां चीनीके प्यालेमें लगकर अर्क होकर प्लेटमेंआवे इस अमलके वक्त यह लिहाज रक्खे कि हुवाब न हो। (सुफहा अकलीमिया ६०।१४।११।१०)

तेजाब जो सोनेपर हलका असर करताहै।

SulphuricAcid—गन्धकका तेजाब।
Accetic—सिरकेमें ज्यादः पायाजाता है।
Lactic Acic—दहीमें ज्यादः मिलता है।

(बाबू ईश्वरदास जापानी।)

पारदसिद्धीबंधक।

पारद ४ तोले, इष्टिकाचूर्णमें मर्दन दोपहर पानरस, इन्द्रजीत बूटीका रस निंबूरस तुलसी रसमें दो दो प्रहर खरल करके वस्त्रसे निकालना समुद्रलवण २० तोले डालकर खरल ४ प्रहर हंडिकाडमरूयंत्रेणोर्ध्वपातनं ४ प्रहरचतुष्टयमपरिलग्नं गृह्णीयात्। शोरा ४० तोले, फिटकिरी २० तोले, हीराकसीस[1]१०तोले,इनका तेजाब निकाल कर पूर्वोक्त पारदमें २ तोले तेजाब डालकर खरल करना २ प्रहर फिर शीशीमें रखकर बालुकायंत्रमें पकाना ६ प्रहर ऐसे ६ शीशे पकाने अथवा सत पकाने, सिद्ध

१ मेरी रायमें इसके साथ स्वर्ण वा अभ्रसत्त्व और डालना चाहिये।

होजायगा (रक्तवर्णताम्रोपरि रजतोपरि वा तोलेकोरत्तिकाचतुर्थांश पाणायहदी तुलसी पानरस जंबीररस इन्द्रजीतरस ।) (जंबूसे प्राप्तपुस्तक,)

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहितायां भाषाटीकायां जारणसंस्कारनिरूपणं नामैकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

गंधकजारणाध्यायः २०.



पारदउपासना ।

स जयति रसराजो मृत्युशंकाऽपहारी सकलगुणनिधानः कायकल्पाधिकारी ॥ वलिपलितविनाशं सेवनाद्वीर्यवृद्धिं स्थिरमपि कुरुते यः कामिनीनां प्रसंगे ॥ ॥ १ ॥ (रसरत्नाकर.)

अर्थ–जो स्त्रीसंगमें वीर्यको स्थिर करताहै, सेवनसे वीर्यकी वृद्धिको करताहै और बलीपलितका नाश करता है उस मृत्युकी शंकाके नाश करनेवाले समस्त गुणोंके खजाने श्रीपारदकी जय हो ॥ १ ॥

षड्गुणगंधकजारणावश्यकता।

अथाष्टसंस्कारैः संशोधिते सूते हिंगुना कृष्ट्यादिना वा संशोधिते सूतराजे षड्गुणगंधकजारणाख्यकर्माऽकृत्वैव यस्तं मारयति सोऽत्युग्रपापी भवति तस्माद्दीपनकर्मांते षड्गुणगंधकजारणमावश्यकतया करणीयम्। उक्तं च रसराजहंसे–

इत्थं संदीपितः सूतो विद्युत्कोटिसमप्रभः। यस्त्वेवं विधिमासाद्य जारणाक्रमवर्जितः ॥ ॥ २ ॥ सूतकं मारयेत्तेन मारितं सकलं जगत् ॥ न भवेत्तस्य संसिद्धी रसे वाथ रसायने ॥ कर्तव्यं कच्छपाद्यैश्च जारणाक्रमनुत्तमम् ॥ ३ ॥

अर्थ–आठ संस्कारोंसे सिद्ध कियेहुये पारदको अथवा हिंगुलादिसे निकाले हुये पारेको, षड्गुणजारण किये विना जो मनुष्य उसका भस्म करताहै वह महापापी होताहै इस लिये दीपन कर्मके पश्चात् षड्गुण गंधकजारण अवश्य करना चाहिये यही बात रसराजहंसमें लिखीहै । इस प्रकार दीपित पारद कोटिविद्युत (विजली) के समान कान्तिवाला होताहै और जो इस तरहके पारदको गंधकजारणके विना मारताहै उसने मानो समस्त जगत्को मारदिया और उसकी रस तथा रसायनमें सिद्धि नहीं होती इस कारण कच्छपादि यंत्रोंसे गंधकजारण अवश्य करना चाहिये ॥ २ ॥ ३ ॥

गंधकजारित पारदगुण ।

मलकंचुकपरिमुक्तः पूतः षड्गुणगंधकजारितसूतः॥ निजसेवकजननूतनकल्पः सुरतविधौ दलितोत्तमतल्पः ॥ ४ ॥ (योगतरंगिणी.)

अर्थ–मल तथा कंचुकोंसे रहित, पवित्र तथा जिसमें षड्गुण (छः गुना) गंधक जारण कियाहुआ हो ऐसा पारद अपने सेवन (पारदके सेवन) करनेवाले मनुष्योंके नवीन शरीरका दाता तथा संभोगावस्थामें दृढपलंगको तोडनेवाला होताहै ॥ ४ ॥

गंधकजारण आवश्यकता ।

गुरुशास्त्रं परित्यज्य यो वै जारितगंधकम् ॥ रसं निर्माति दुर्मेधाः शपेत्तं परमेश्वरः[1] ॥ ५ ॥ (र. रा. शं., नि. र.)

अर्थ–जो मूर्ख गुरु और शास्त्रकी रीतिको छोडकर विना गंधकजारण किये रस (पारद) को बनाताहै उसको श्रीमहादेवजी शाप देतेहैं ॥ ५ ॥

शुद्ध गंधकजारण आदेश ।

षड्गुणे गंधके जीर्णे रसो भवति रोगहा ॥ तस्माद्गंधं सुशुद्धं हि जीर्यते रसरेतसि ॥ ॥ ६ ॥ (टो. नं.)

अर्थ–षड्गुण गंधक जारण करनेपर पारद रोगोंका नाश करनेवाला होताहै इस लिये शुद्ध गंधकको पारेमें जारण करे ॥ ६ ॥

गंधकजारणके भेद ।

तत्र गंधकजारणा अन्तर्धूमबहिर्धूमभेदेन द्विविधा । (र. शं.)

अर्थ–अन्तर्धूम और वहिर्धूमके भेदसे गंधकजारण दो प्रकारका है ॥

षड्गुण गंधकजारण खल्वद्वारा बहिर्धूम ।

तप्तखल्वे रसं क्षिप्त्वा अधश्चुल्ल्यास्तुषाग्निभिः । स्तोकंस्तोकं क्षिपेद्गंधमेवं वै षड्गुणं चरेत ॥ ७ ॥ (योगरत्नाकर.)

अर्थ–तप्त खल्वमें पारदको डालकर नीचेके चूल्हेमें आँच डालकर पारदमें थोडा थोडा गंधक डाले तो गंधकजारण अवश्य होगा ॥ ७ ॥

गंधकजारणहंडिकायंत्रसे बहिर्धूम ।

अथवा हंडिकायंत्रेण षड्गुणगंधकजारणं कुर्यात–तदुक्तं वैद्यदर्पणे–

१ शिव–इत्यपि ।

मृद्वंगारास्थिते पात्रे मृन्मये शुद्धसूतकम् ।
निक्षिप्य तप्ते सूते तु क्षिपेदुपरि गंधकम्॥८॥
नीरेण हंसपद्याश्च भावितं सम्प्रदाहयेत् ।
त्रिबलं गंधके जीर्णे गंधं दद्यात्पुनःपुनः॥९॥
एवं षड्गुणगंधस्य जारणं हंडिकाऽभिधे ।
एवं कृत्वा सूतराजं योजयेत्सर्वकर्मसु॥१०॥
(ध. सं.)

अर्थ—अथवा हंडिकायंत्रसे षड्गुण गंधकजारण करे—यही बात वैद्यदर्पणमें लिखी है—कोमल अंगारोंपर रक्खे हुए मिट्टीके पात्रमें पारदको डाले और जब वह पारद तपजाय तब उसपर हंसराजके रससे (या अमलतासके रससे) भावना दियेहुए समभाग गंधकको भस्म करे इस प्रकार हंडिकायंत्रमें षड्गुण गंधक जारण करे फिर उसका समस्त कार्योंमें व्यवहार करे ॥ ८–१० ॥

शिवशक्तियंत्रद्वारा गंधकजारण-बहिर्धूम ।

चूल्हो एक कराही दोई । एकु पारो एकु बाखरु होई ॥ ज्यों ज्यों जल बाखरको जरै। त्यों त्यों जल औषधको करै॥शिवअरु शक्ति यंत्रको जानि । रसरत्नाकर कही बखानि ॥ (रससागर.)

खर्परद्वारा गंधकजारण—बहिर्धूम ।

अथ रसजारणं तत्र सामान्यतः षड्गुण-बलिजारणम् ॥

ससूतमल्पकं भांडं वालुकायंत्रके न्यसेत् ।
षड्गुणं गंधकं तत्र क्षिपेदल्पाल्पकं शनैः ११॥
द्रवीभूतं बलिं ज्ञात्वा शीघ्रमुत्तार्य यत्नतः।
स्वांगशीते दृढे गंधे स्फोटयित्वा नयेद्र-
सम् ॥ १२ ॥ सर्वरोगहरः सूतो हरः पाप-
हरो यथा । पतिप्राणप्रिये कांते यत्ते हरि-
हरार्चने ॥ १३ ॥ (अनुपानतरंगिणी.) ।

अर्थ—अब रसजारणको कहतेहैं और उस जारणमें भी साधारण रीतिसे षड्गुण गंधकजारणको कहतेहैं—पारद सहित छोटेसे मिट्टीके वासनको वालुकायंत्रपर रक्खे और उस तपेहुये पारदमें छगुने लिये गंधकमेंसे थोडा २ डालता जावे। गंधकका क्षय जान कर यन्त्रको उतार लेवे और स्वांग शीतल होनेपर उस पात्रको तोडकर पारदको निकाललेवे वह पारद समस्त रोगोंको नाश करताहै जैसे श्रीमहादेवजी समस्त पापोंको नाश करतेहैं वैसे ही वह पारद सब रोगोंको नाश करताहै ॥ ११–१३ ॥

अन्यच्च ।

सूतप्रमाणं सिकताख्ययंत्रे दत्त्वा बलिं मृद्वेष्टितेऽल्पभांडे[1] । तैलावशेषे[2] तु रसं निदध्यान्निमग्नार्धकायं[3] प्रविलोक्य भूयः ॥ १४ ॥ आषड्गुणं गंधकमल्पमल्पं क्षिपेदसौ जीर्णबलिर्बली[4] स्यात् । रसेषु सर्वेषु नियोजितोऽयमसंशयं हन्ति गदं जवेन ॥१५॥ (र.रा. शं., बृ. यो.)

अर्थ—सिकतायंत्र (वालुकायंत्र) में मिट्टीकी बनाई हुई छोटीसी मलसियाको गाडकर उसमें पारदके सम भाग लिये हुए गंधकको डाल कर यंत्रके नीचे अग्नि जलावे और उस गंधकके पिघलनेपर पारदको डालदेवे और धीरे धीरे गंधकके जलनेपर जब पारा आधा खुलजाय तब फिर ऊपरसे गंधक डालदेवे इस प्रकार षड्गुण गंधकजारण करनेसे जो पारद सिद्ध होताहै वह समस्त रसोंमें डालने योग्य और निःसंदेह रोगोंको नाश करताहै ॥ १४ ॥ १५ ॥

गंधकजारण कूपीद्वारा ।

काचकुंपकमध्यस्थं पारदं गंधकं कुरु ॥
तत्कुंपं सार्षपे तैले अग्निसंतपने कुरु ॥१६॥
अनेन विधिना सूतः प्रत्यहं ग्राससंयुतः ॥
जरत्यष्टगुणं गंधं हेमाकारो भवेद्ध्रुवम् ॥
॥ १७ ॥ (र. पा.)

अर्थ—कांचकी बनाई हुई आतिशी शीशीमें सम भाग पारद तथा गंधकको डालकर ऊपरसे सरसोंका तैल भर देवे और फिर उस शीशीको अग्निपर रख कर तपावे इस प्रकार प्रतिदिन ग्राससे युक्त पारद अष्ट गुणगंधकको जारण करताहै और पारदका रंग सुवर्णके समान होताहै इसमें कुछ संदेह नहीं है ॥ १६ ॥ १७ ॥

षड्गुण गंधकजारणके लिये यंत्र-मान क्रम ।

इष्टिकायंत्रयोगेन मूषायां वापि कुंपकैः ॥
लवणोत्तममूषायां काच्छपे चापि खर्परे ॥
॥ १८ ॥ रसं गंधकसंयुक्तं स्थापयित्वा यथोत्तरम् ॥ पादांशे क्रमतो दत्त्वा जारणीया सुधीमता॥षड्गुणे गंधके भुक्ते रसो भवति रोगहा ॥ १९ ॥ (र. पा.)

अर्थ—इष्टिका यंत्र, मूषा, आतिशीशीशी, लवणोत्तम मूषा, कच्छप यंत्र, अथवा खर्पर यंत्रमें गंधक और पारदको एक दूसरेके ऊपर रखकर जारण करे इस रीतिसे षड्गुण गंधकजारण किया हुआ पारद रोगका नाश करनेवाला होताहै ॥ १८ ॥ १९ ॥

---

१ तैलभाण्डे, इत्यपि । २ तैलावशेषमित्यपि । ३ नियुंज्यादित्यपि । ४ मासार्धकोऽयमित्यपि । ५ बलीयानित्यपि ।

मूषाद्वारा गंधकजारण अन्तर्धूम।

मूषायामत्र लिप्तायां चतुःषष्ट्यंशकादिना॥ विधिना गंधकं दत्त्वा भूधरे तं पुटेल्लघु॥ इत्थं संदीपितः सूतो विद्युत्कोटिसमप्रभः॥ ॥ २० ॥ (टो. नं०, र. रा. हंसात.)

अर्थ--खरियासे लिपी हुई मूषामें पारदको रख कर उसमें चौंसठवां भाग गंधक डालकर भूधर यंत्रमें और ऊपरसे लघु पुट देवे इसी प्रकार दीपित कियाहुआ पारद कोटि विद्युत्के समान कांतिवाला होताहै, इस क्रियाके उत्तम होनेमें कोई संदेह नहीं है ॥ २० ॥

गंधकजारण मूषाद्वारा।

आरोटकसमगंधकचूर्णं तुल्यं निरुद्धमूषायाम् ॥ सुविगर्तायां मूषां तां क्षिप्त्वाष्टांगुलाधस्तात् ॥ २१ ॥ आपूर्य वालुकाभिस्तं गर्तं भूसमीकृत्य ॥ प्रज्वाल्योपरि वह्निं त्रिदिनं मूषां समुद्धृत्य॥जीर्णे तु गंधकेऽस्मिन् पुनस्तु क्षेप्योऽनया रीत्या ॥ २२ ॥ (र. रा. सुं.)

अर्थ--आरोटसंज्ञक पारदके तुल्य गंधक चूर्णको गहरी मूषा (घरिया) में रखकर ऊपरसे आठ २ अंगुल वालूरेत भर देवे और उस रेतपर तीन दिनतक अग्नि जलाकर स्वांग शीतल होनेपर मूषाको निकाल लेवे और मूषाको खोल कर देखे कि गंधक जीर्ण हुआहै या नहीं, यदि गंधक जीर्ण होगया हो तो फिर इसी रीतिसे गंधक जारण करे ॥ ॥ २१ ॥ २२ ॥

लोहसंपुटद्वारा गंधकजारण अन्तर्धूम।

सूते गंधं रसैकांशं निक्षिप्य मृदुखल्वगे ॥ तावत्संकुट्टयेत्पिंडं भवेद्वा ताम्रपात्रगे ॥ ॥ २३ ॥ तत्तुल्यं गंधकं दत्त्वा रुद्ध्वा तल्लोहसंपुटे ॥ पुटयेद्भूधरे यंत्रे यावज्जीर्यति गंधकः ॥ २४ ॥ एवं पुनःपुनः कुर्याद्यावज्जीर्यति षड्गुणः ॥ २५ ॥ (बृ. यो., र. रा. श., नि. र.)

अर्थ--चिकने खरलमें या तांबेके पात्रमें पारद और पारदसे चौथाई गंधकका चूर्ण मिलाकर जबतक उसका गोला नहींबने तबतक घोटता जावे फिर उसके समान गंधकको ऊपर नीचे देकर लोहेके पात्रमें रखकर मुद्रा करे तदनंतर भूधर यंत्रमें गंधक जीर्ण होनेपर अग्नि लगातारहे इस प्रकार षड्गुण गंधक जारण करे ॥ २३--२५ ॥

१ एवं पुनःपुनर्गन्धो दातव्यः षड्गुणो बुधैः--इत्यपि।

लोहसंपुटद्वारा भूधरयंत्रसे गंधकजारणअन्तर्धूम।

अष्टाङ्गुलमितं गर्तं निम्नं च निखनेद्भुवि॥ द्वादशांगुलविस्तारं पूरयेद्व्यंगुलं पुनः ॥ ॥ २६ ॥ वालुकाभिस्तदुपरि शुद्धेशबलिगर्भिणीम् ॥लोहमूषां निरुद्ध्यास्यां निधाय सिकतोपरि ॥ २७ ॥ पूरयेद्वालुकाभिस्तं गर्तं भूमिसमीकृतम् ॥ तदूर्ध्वं ज्वालयेदग्निं त्रिदिनं चोद्धरेत्ततः ॥ २८ ॥ जीर्णे गंधे पुनर्गंधं तत्र सूतसमं क्षिपेत् ॥ अनेन विधिना भूयो भूधरे बलिजारणम् ॥ २९ ॥ (र.प.)

अर्थ--पृथ्वीमें आठ अंगुल गहरा और बारह अंगुल चौडा गडहा खोद कर दो दो अंगुल रेत बिछादेवे फिर लोहेकी घरियामें सम भाग पारद और गंधकको भर और कपरौटी कर उस रेतपर रखदेवे उसपर बालूरेत भरकर गढेको धरतीके बराबर करदेवे उसके ऊपर तीन दिवस तक अग्निको जलाकर उस घरियाको निकाले जो गंधक जीर्ण होगया हो तो फिर पारेके समान गंधक लेकर पूर्वोक्त विधिसे गंधक जारण करे ॥ २६--२९ ॥

गंधकजारण इष्टिकायंत्रसे।

मृदुमृदारचितामसृणेष्टिकामुपरि गर्तवरेण च संयुताम् ॥ रसवरं दशशाणमितं हि तत्सशुकपिच्छवरेण निधापयेत् ॥ ३० ॥ सकलचूर्णकृतं च सुरार्तकं गलितनिंबुफलोद्भवकेन वै॥छदततं च शरावरेण तन्मृदुतयाशु मृदा परिमुद्रितम्॥३१॥तदनुकुक्कुटपुटो हि दीयते ह्युपलकेन :वनोद्भवकेन वै ॥ विधिविदा भिषजा ह्यमुना कृतो विमलषड्गुणगंधकमश्नुते ॥ ३२ ॥ स च शरीरकरोपि चलोद्धृकृत् सकलसिद्धिकरः परमो भवेत ॥ तद्गुणं हि युतं परिवार्यते रसवरः खलु हेमकरो भवेत॥ ३३ ॥ (रसप्रकाशसुधाकर.)

अर्थ जो कि कोमल मिट्टीसे बनाई गई हो और जिसके ऊपर सुन्दर गढा हो ऐसी चिकनी ईटको बनावे फिर उसके गढेमें ढाई तोले पारा डाल कर ऊपरसे उतना ही शुद्ध आँवलासार गंधक डाल देवे तदनंतर उन दोनोंको नींबूके रससे तर करके मुद्राकरे फिर उस इष्टिकायंत्रको भूधरयंत्रमें रख जंगली कंडोंका कुक्कुटपुट देवे इस प्रकार पारद षड्गुण गंधकको खाजाता है और वह षड्गुण जीर्ण पारद शरीरको नीरोग करनेवाला रसायन और समस्त सिद्धियोंका करनेवाला होताहै और वह सुवर्ण बनानेवाला पारा अनेक गुणोंसे युक्त है ॥ ३०--३३॥

गन्धकजारण वा (रसमूर्च्छन) इष्टिकायंत्रसे ।

इष्टिकायां सुपक्कायां सुखातं चतुरङ्गुलम् ॥ कृत्वा काचेन संलिप्तं तस्यान्तः पिष्टिकां क्षिपेत् ॥ ३४ ॥ निंबूद्रवार्द्रो गंधोऽस्य देयो मूर्ध्नि द्विकार्षिकः ॥ मुखं संरुद्ध्य शुष्केथ दद्याल्लावपुटं ततः ॥ ३५ ॥ शीते तस्योपरि पुनः पुटं देयं ततोऽधिकम् ॥ एवं द्वित्रिचतुःकार्या यावज्जीर्यति षड्गुणः ॥ ३६ ॥ मूर्च्छितो विधिनानेन भवत्येव रसेश्वरः ॥ ॥ ३७ ॥ (यो. तरंगिणी.)

अर्थ--सुन्दर पकी हुई ईटमें चार अंगुल गढा खोदकर और उसको काचसे लीपकर (अर्थात् जिसपर काचका रोगन हो) उसमें पारेकी पिष्टीको रक्खे और उस पिष्टीपर नींबूके रससे तर कियेहुये द्विगुणित गंधकको रख मुखपर मुद्रा करे और उसके सूखनेपर भूधरयंत्रमें रख ऊपरसे लावक पुट देवे उस पुटके शांत होनेपर फिर पुट देवे इस प्रकार तीन चार पुट देवे तो गंधक जीर्ण होगा एवं गंधक जीर्ण होनेपर फिर गंधक डालकर पूर्वोक्त विधिसे जारण करे।इस प्रकार षड्गुण गंधक जारण करे तो पारा मूर्छित होताहै ॥ ३४--३७ ॥

गंधकजारण गौरीयंत्रसे ।

अथवा गौरीयंत्रेण गंधकजारणं कुर्यात् तदुक्तं टोडरानंदे--

गौरीयंत्रं प्रवक्ष्यामि सुखदं जारणाविधौ ॥ अष्टांगुलोच्छ्रयां कृत्वा चतुरस्त्रां समेष्टिकाम् ॥ ३८ ॥ तत्रेष्टिकाया मध्येथ कुर्याद्गर्त्तं तु वर्तुलम् ॥ गर्तस्य परितः कृत्वा मेखलां त्वंगुलोच्छ्रिताम् ॥३९॥ गर्तं लिप्त्वा शुक्तिभस्म पेषयित्वा जलेन वै ॥ श्लक्ष्णवस्त्रकृतां पिष्टीं रसपिष्टीविधानतः ॥ ४० ॥ तां पिष्टीं लिप्तगर्ते च निक्षिपेच्च प्रमाणतः। तस्योपरि वलेश्चूर्णं पिष्टीपादमितं न्यसेत् ॥ ४१ ॥ दत्त्वा खर्परचक्रीं च संधिं लिप्त्या विशोष्य च॥ऊर्ध्वं हयक्षुराकारं पुटं दद्याल्लघूपलैः ॥ ४२ ॥ शीते पुटे बलौ जीर्णे पुनस्तद्वद्बलिं न्यसेत् । रुध्यात्पुटं पुनर्दद्याद्यथा स्यात्षड्गुणावधि ॥ ४३ ॥ बालसूर्यनिभः साक्षात्खेटीभवति सूतकः । अस्यैव चेष्टिकायंत्रं कथयन्ति भिषग्वराः ॥ ४४ ॥ (ध. सं.)

अर्थ-गौरीयंत्रसे गंधक जारण करना चाहिये वही बात टोडरानन्दमें कही है कि अब हम जारणके लिये सुखके दाता गौरी यंत्रको कहते हैं प्रथम ८ अंगुल ऊंची तथा आठ ही अंगुल चौडी चौकोन ईटको वनवाकर फिर उसके बीचो बीचमें सुन्दर गोल गढा बनावे और उस गढेके चारों ओर एक एक अंगुल ऊंची मेखला (पाली) बनावे तदनन्तर उस गढेको जलसे पीसे हुए सीपके चूनेसे लीप कर फिर रस पिष्टीके विधानसे की हुई पारेकी पिष्टीको उस गढेमें रक्खे और पिष्टीका चौथाई गंधक चूर्णको उस पिष्टी पर रख ऊपरसे खिपडा ढांक कपरौटी करे फिर उसपर घोडेके खुरके समान लघु पुट देवे । पुटके शीतल होने और गंधकके जीर्ण होनेपर फिर गंधकको जीर्ण करे तो नवीन सूर्यके समान कान्तिवाला साक्षात् पारद खेटी नामका होताहै ॥ ३८-४४ ॥

गौरीयंत्रउपयोगीवार्ता ।

गंधकस्य क्षयो नास्ति न रसस्य क्षयो भवेत् । क्षयो ड्यं तमविज्ञाय यंत्रे विक्रियते क्रिया ॥ ४५ ॥ सम्यग्यंत्रपरिज्ञानात्किंचित्सूतक्षयो भवेत । यदि गंधस्तु निर्गच्छेत्तदार्धांशक्षयो भवेत् ॥ ४६ ॥ यंत्रालक्ष्ये विधिं तस्य चतुर्थांशक्षयो भवेत् । वह्निलक्ष्यमविज्ञाय रसस्यार्ध्वक्षयो भवेत् ॥ अथवा सर्वशो हानिर्जायते च ध्रुवं वचः॥४७॥ (टो. नं.)

अर्थ-पारदका क्षय नहीं होता और न गंधकका क्षय होता इस वास्ते जो क्षय पदार्थ है उसको नहीं जान करके जो यंत्रमें क्रिया की जाती है वह विकृत होजाती है यंत्रको ठीक जाननेसे पारदका कुछ क्षय होताहै और जब उसमेंसे गंधककी सुगंध आने लगे तो पारदका आधा क्षय होता है यंत्रके लक्ष्य न होनेपर पारेका चतुर्थांश क्षय होताहै और अग्नि लक्ष्यके विना पारदका अर्धांश क्षय होताहै । अथवा सम्पूर्ण पारदका क्षय होताहै ऐसा भी कोई कहते हैं ॥ ४५-४७ ॥

इष्टिकासे गन्धक जारण भूककरनकला करनेकी तरकीब जिसको षटगुन गन्धक जारण कहते हैं (उर्दू)

एक ईटमें गढा गोल वनाकर गंधक मुसफ्फा सीमावके हम वजन ऊपर नीचे गढे मजकूरमें रखकर दूसरी ईटसे उसको ढांक दे लेकिन अव्वल ईटोंको इस तरह घिसकर हमवार करले कि शिगाफ न रहे और लव वलव रखकर जोडपर मुहर और गिले हिकमत करदे ताकि भाप गंधक और सीमावकी न निकलने पावे और खिश्तवालाईके ऊपर चहार तह कपडा भिगोकर रख दे और नीचेसे पावभर कुटी हुई विनुए कंडेकी आग दे सर्द होनेके बाद निकालले वादहू फिर गंधक मुसफ्फा सीमाव मजकूरसे दुचंद लाकर ऊपर नीचे सीमावके खिश्त मजकूरमें वदस्तूर रखकर गिले हिकमत करके आधसेर करसी जंगली में आग दे बाद सर्द होनेके सिवारा तीन गुना गंधक मुसफ्फा बतरीक मजकूर सीमाव मजकूरके ऊपर नीचे रखकर आग दे और हरबार ऐसा वस्ल करे कि भाप न निकलने पावे यह

सीमाव सिंगरफी रंगका होजायगा। (सुफहा अकलीमियाँ १४८)

गंधकजारणकुंजलयंत्रद्वारा (इष्टिकायंत्रका भेद)

साजी ईट जुदेइ मँगाइ। वाही घसिके पेटु बनाइ॥ माझ दुहूनके कीजे डौरु। जैसे संपुट माइ जु औरु॥ वस्त पावनी संपुट करे। सो संपुट ईटनिमें धरे॥ कपरौटी अतिकरे दृढ़ाइ। जब सूखे तब देइ चढाइ॥ बडो यंत्र यह विधिना कियो। या सम और न जानो बियो॥ संपुट एक काचको करै। कपरौटीके सूखत धरे॥ करि कुंडल मलुरीठ बनाई। चोरेहीमें देइ चढाई॥ कुंजल नाम यंत्रको कहै। गुरुप्रसादते कवियनु लहै॥ अलप आगि याहीसे कही। संपुट वस्तु जाइ जो रही॥ (रससागर.)

कनककुंडरीयंत्र (इष्टिकायंत्र भेद)

एक ईट चूल्हेपर धरे। ऊपर ताहि अंगीठी करे॥ पुनि तापर बेली औंधाई। ज्यों अंगरो इकु तामें जाई॥ पुनि हठमुद्रा कीजे गुनी। जैसे रसरतनाकर सुनी॥ जंत्रहि कनककुंडरी नाम। येते धातुनिको विश्राम॥ (रससागर)

गंधकजारण गौरीयंत्रसे (जारणार्थ गंधकसाधन है)

काशीशं चैव सौराष्ट्री स्वर्जीक्षारोजमोदकम्। शिग्रुतोयेन संयुक्तं कृत्वा भाव्यमनेन वै॥ सप्ताहं चूर्णितं गंधं गौरीयंत्रेण जारयेत्॥ ४८॥ (र. प.)

अर्थ हीराकसीस, सौराष्ट्री (फिटकरी), सज्जीका खार और अजमोद इनके चूर्णको सेंजनेके रसमें धोले फिर उस पानीसे सात दिवसतक गंधकके चूर्णको भावना देकर गौरीयंत्रमें जारण करे॥ ४८॥

गंधकशोधन।

तप्तं तप्तं शतधा पलांडुरसे निषिक्तमंते च पंचधा सजलम्। दुग्धे निषिक्तं गंधकमष्टगुणं शतगुणं वा जारयेत्॥ (जंबूसे प्राप्त-पुस्तक.)

अर्थ–गंधकको गला गलाकर प्याजके रसमें सौ वार बुझावे तदनंतर आधे पानीवाले दूधमें पाँच वार बुझावे फिर उस गंधकको अष्ट गुण जारण करे॥ ४८॥

गंधकजारणके बाद पारेको असली हालतपर लानेका तरीकः।

इष्टिकायंत्रसे रफ्तः रफ्तः छहगुनी गंधक पारेमें पिलावे बाद उसके शीरः घीग्वारसे तीन रोज खरल करे और बजारिये डौरूजंत्र मजकूरके पारेको तसईद करले (सुफहा अकलीमियाँ १४८)

गंधकजारण सम्मतिसिकता भूधर वा कच्छपयंत्रसे।

समशकलद्वयात्मकलोहसंपुटकेन सिकतायंत्रमध्ये भूधरे वेति त्रिलोचनः॥
कूर्मयंत्रे रसे गंधं षड्गुणं जारयेद् बुधः। इत्यन्ये॥४९॥
अत्र पक्षे[1] रागस्तथा न स्यात्तेनादौ पंचगुणं जारयित्वा शेषं कूपिकादौ जारयितव्यश्च स रागः साधुः स्यात्॥ ५०॥ (र. चिं. हस्तलिखित., र. रा. शं.)

अर्थ–त्रिलोचन वैद्यकी यह सम्मति है कि जिसमें दो बराबर लोहेकी कटोरियोंका संपुट हो ऐसे सिकता यंत्रमें या भूधर यंत्रमें गंधकजारण करे और कुछ वैद्योंकी यह सम्मति है कि कच्छप यंत्रद्वारा पारदमें षड्गुण गंधकजारण करे कच्छपयंत्रमें गंधकजारणद्वारा उत्तम राग नहीं होता इस कारण प्रथम कच्छपयंत्रद्वारा पांच गुने गंधकको जारण करे फिर वालुका यंत्रमें कूपिका द्वारा जारण करे तो उत्तम राग (रंगत) होताहै॥ ४९॥५०॥

गंधकजारण कच्छपयंत्र।

अथ गंधकजारणं कच्छपयंत्रेणोच्यते तदुक्तं देवीयामले।

जलकूर्मप्रकारोयमधुना वक्ष्यते स्फुटम्। देर्घ्यादधः स्थालिकाया मानं स्याद्द्वादशांगुलम्॥ ५१॥ षोडशांगुलविस्तारां चतुः कीलयुतां मुखे। जलेनापूर्य तां स्थालीं निखनेद्भूमिमध्यतः॥ ५२॥ उपरिष्टाच्छरावं च साम्बुकुंडपिधानकम्। मध्ये मेखलया युक्तं दद्यात्तत्कीलमध्यतः॥ ५३॥ शरावपिष्टभागं च जलमग्नं यथा भवेत्। लिस्वा च मेखलामध्यं शुक्तिकाभस्मना-

---

[1] अत्रपक्षे–का अर्थ कूपिकोदरे वा कच्छपिकोदरे पाठपर निर्भर है यदि कूपिकोदरे पाठ ठीक हो तो यह अर्थ होगा कि कच्छपयंत्रमें राग ठीक नहीं होता कूपिकोदरसे जारण करे या कच्छपिकोदरे पाठ ठीक है तो यह अर्थ होगा कि सिकतायंत्र वा मूधर यंत्र वा भूधर यंत्रस्थित कूपीमें राग अच्छा नहीं हो। पीछे कच्छप यंत्रसे जारण करे।

म्बुना ॥ ५४ ॥ तन्मध्ये पारदं क्षिप्त्वा शोधितं शोभने दिने । रसस्योपरि गंधस्य रजो दद्यात्समांशकम् ॥ ५५ ॥ तस्योपरि शरावं च मृन्मयं कांतिलोहजम् । रीतिजं वायसं दत्त्वा कर्तव्यं संधिमुद्रणम् ॥ ५६ ॥ खटीं शिवां पटं भक्तं सम्यङ्निष्पेष्य मुद्रयेत् । तस्योपरि पुटं दद्याच्चतुर्भिर्गोमयोपलैः ॥ ५७ ॥ एवं पुनः पुनर्गंधं षड्गुणं जारयेद्बुधः । गंधे जीर्णे भवेत्सूतस्तीक्ष्णाग्निः सर्वकर्मकृत् ॥ ५८ ॥ (ध. सं.)

अर्थ-अब कच्छपयंत्रद्वारा गंधक जारणको कहते हैं यह देवीयामलमें लिखाहै ।

अब जलकूर्म (कच्छपयंत्र) का प्रकार कहतेहैं कि नीचेकी थालीके उँचाईका प्रमाण बारह अंगुल हो और विस्तार सोलह अंगुलका हो और जिसके मुखपर चार कीले गढी हुई हो उस स्थाली (कूडे) को जलसे भर धरतीमें गाड देवे फिर उसपर जल सहित कूंडेके ढकनेवाले शकोरेको रख देवे जिसके बीचमें गोल २ मेखला यानी पाली लगी हुई हो और उस शकोरेको पीठ पानीसे मिली हुई हो । तदनंतर सीपके चूनेसे उस मेखलाको लीपकर फिर उसमें शुद्ध पारदको रख कर ऊपरसे समभाग गंधकका चूर्ण डाल देवे और उसके ऊपर कोरा या लोहे की विलिया अथवा पीतलकी कटोरी रखकर मुखपर मुद्रा करे । मुद्रा करनेके लिये खडिया, हर्र, नोंन और राख इन चीजोंको लेना चाहिये फिर उस मुद्रापर चार उपलोंकी आंच देवे इस प्रकार बार २ गंधक डालकर जारण करे गंधक जीर्ण होनेपर पारद बुभुक्षित और समस्त कामका कर्ता होताहै ॥ ५१-५८ ॥

अन्यच्च ।

मृत्कुंडे निक्षिपेन्नीरं तन्मध्ये च शरावकम् । मृत्कुंडे च पिधानाभं मध्ये मेखलया युतम् ॥ ५९ ॥ क्षिप्त्वा च मेखलामध्ये संशुद्धं रसमुत्तमम् ॥ रसस्योपरि गन्धस्य रजो दद्यात्समांशकम् ॥ ६० ॥ दत्त्वोपरि शरावं च भस्ममुद्रां प्रदापयेत् ॥ तस्योपरि पुटं दद्याच्चतुर्भिर्गोमयोपलैः ॥ ६१ ॥ एवं पुनः पुनर्गंधं षड्गुणं जीर्यते बुधैः ॥ गंधे जीर्णे भवेत्सूतस्तीक्ष्णाग्निः सर्वकर्मसु ॥ ६२ ॥ (यो. र., र. सा. प., नि. र., र. रा. शं., शार्ङ्गधर, यो. त.)

अर्थ-मिट्टीके कूण्डेमें जल भर देवे उसके ऊपर ऐसा कूंडा ढक देवे कि जिसमें मेखला बनाई गई हो फिर उस मेंखलामें शुद्ध पारदको रखकर ऊपरसे पारेके समान ही गंधकका चूर्ण डाल देवे तदनंतर उस मेखलाके मुखपर शकोरा रख भस्मसे मुद्राकर देवे और मुद्रापर चार उपलोंका पुट देवे इस प्रकार बार २ पुट देकर षड्गुण गंधकको जारण करे इस रीतिसे षड्गुण गंधक जारण किया हुआ पारद बुभुक्षित और समस्त कर्मोंमें उपयोगी होताहै ॥ ५९-६२ ॥

१ लिखेच्च मेखलामध्ये स्वर्णेनात्र रसं क्षिपेत् । यो. त.

षड्गुण रसजारण कच्छप यंत्रसे ।

प्रक्षिप्य तोयं मृत्कुंडे तस्योपरि शरावकम् ॥ सचूर्णं मेखलायुक्तं स्थापयेत्तस्य चान्तरे ॥ ॥ ६३ ॥ रसं क्षिप्त्वा गंधकस्य रजस्तस्योपरि क्षिपेत् ॥ लघीयसीं भस्ममुद्रां ततः कुर्याद्भिषग्वरः ॥ ६४ ॥ अरण्योपलकैः सम्यक् चतुर्भिः पुटमाचरेत् ॥ एवं पुनः पुनर्गन्धं दत्त्वा दत्त्वा भिषग्वरः ॥ कुर्वीत रसराजस्य सम्यक् षड्गुणजारणम् ॥ ६५ ॥ (रसमंजरी.)

अर्थ-मिट्टीके कूंडेमें पानी भरकर फिर उसके ऊपर मेखलायुक्त और चूनेसे लिपे हुये शकोरेको रक्खे तदनंतर उस मेखलामें पारदको रख कर ऊपरसे गंधकके चूर्णको बिछा देवे और उसके मुखको शकोरे से ढक कर मुंद्रा कर देवे इसके बाद चार जंगली कंडोंकी पुट लगावे इस प्रकार बार २ गंधक देकर वैद्यवर पारदमें षड्गुण गंधक जारण करे ॥ ६३-६५ ॥

गडुकायंत्रसे गन्धक जारण वा कच्छपयंत्रसे ।

आकंठकलशं भूमौ निखाय जलसम्भृतम् ॥ शरावस्तन्मुखे स्थाप्यो मध्यच्छिद्रसमन्वितः ॥ ६६ ॥ नीरावियोगिनीं तत्र च्छिद्रे काचविलेपिताम् ॥ मृन्मूषां स्थापयेत्तस्यामूर्ध्वाधस्तुल्यगंधकम् ॥ ६७ ॥ रसं निक्षिप्य तस्योर्ध्वं शरावेण विमुद्रयेत् ॥ वन्योपलाग्निं तस्योर्ध्वं ज्वालयेद्गुरुमार्गतः ॥ ६८ ॥ स्वांगशीतं समुद्धृत्य पुनस्तुर्यांशगंधकम् ॥ दत्त्वा पूर्वक्रमेणैव जारयेत्षड्गुणं बलिम् ॥ षड्गुणे गंधके जीर्णे स्याद्रसः सर्वरोगहा ॥ ६९ ॥ (बृ. यो.; र. रा. शं., र. रा. प., नि. र.)

अर्थ-जलसे भरे हुए घडेको गलेतक धरतीमें गाढकर फिर उसके मुखपर बीचमें छेद किये हुए शकोरेको रख देवे और उस छिद्रके ऊपर जलसे मिली हुई और काचसे लिप्त मिट्टीकी मूषाको रक्खे तदनंतर उसमें पारदको रख और ऊपर नीचे सम भाग गंधकचूर्णको रख कर और सकोरासे ढककर मुद्राकर देवे और गुरु देवकी बताई हुई क्रियासे उसपर जंगली कंडोंकी आंच लगावे स्वांग शीतळ होनेपर पारेको निकाल और सम भाग गंधक मिलाकर पूर्वोक्त क्रियासे जारण करे इस प्रकार षड्गुण गंधक जारण करनेपर पारद समस्त रोगोंका नाश करनेवाला होताहै ६६-६९

गंधकजारण कच्छपयंत्रसे पारदको अतिबुभुक्षितकरणार्थं षड्गुण गंधकजारण।

चौपाई।

इक हंडियामें पानी भरिये। ताऊपर इक कुंडा धरिये॥ फिर चूना पानीसों सानै। कुंडामध्य मैंड इक ठानै॥ मड विषै पारद धरिदेय। ताऊपर गंधक रज लेइ॥ अतिपतरी लोहेकी करिये। तापै एक कटोरी धरिये॥ औंधी करे कटोरी आछे। मुद्रवज्र देइ दृढ पाछे॥ उपरा जंगलके मँगवाइ। ऊपर अंगुर आठ भराइ॥ कुक्कुटपुट है याको नाम। तापै वह्नि धरै गुनि धाम॥ राख होइ उपरा जरिजाय। तब पारदको लैनिकसाय॥ या प्रकारते बारंबार। षट्बिरियां गंधकदे जार॥ या विधि कच्छप यंत्रप्रकार। कह्यो सुमुनिजन कर निरधार॥

दोहा।

पारा लै द्वै करष भर, गंधक चूर समान।
कुंडाको पेंदो रहै, लग्यो नीरतें जान॥

वज्रमुद्राकथन।

नोंन राखको पीसिके, चारों तरफ लगाय
यहै वज्रमुद्रा कही, जानो पंडित राय॥
इस गंधक पारद विषे, जब षटगुन जरिजाय॥ तब अति तीक्षणता विषे, अग्नि भली प्रगटाय। सर्व कर्मकृत होत अरु, सब धातुनको खाय॥ इम पारद शोधन सुविधि, सुगमहि देइ बताय॥ (वैद्यादर्श.)

गंधकजारण कच्छपयंत्रसे।

गंधक पारा सम भाग और तैल नौसादर ६ माशे पानीमें रखकर आग लावणी। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक.)

गंधकजारण सोमानलयंत्रसे।

मेघनादवचाहिंगुलशुनैर्मर्दयेद्रसम्। नष्टपिष्टन्तु तद्गोलं हिंगुना वेष्टयेद्बहिः॥ ७०॥ पचेल्लवणयंत्रस्थं दिनैकं चंडवह्निना। ऊर्ध्वलग्नं समादाय दृढवस्त्रेण वेष्टयेत्॥ ७१॥ ऊर्ध्वाधो गंधकं तुल्यं दत्त्वा सौम्यानले पचेत्। जीर्णे गंधे पुनर्देयं षड्भिर्वारैः समं समम्॥७२॥ षड्गुणे गंधके जीर्णे मूर्च्छितो रोगहा भवेत्॥ ७३॥ (रसमंजरी., र. रा. शं., र. रत्नाकर., र. सा. प.)

अर्थ–चौलाईकी जड, वच, हींग, और लहसनसे पारदको घोटे और घोटते २ जब पारद नष्टपिष्ट होजाय तब उसका गोला बना कर बाहरसे हींगका लेप करे फिर उसको लवणयन्त्रद्वारा एक दिवसतक तीव्र अग्निसे पकावे तदनंतर ऊपर लगेहुए पारदको निकाल कर दृढ वस्त्रसे बांध लेवे और उसके ऊपर नीचे सम भाग गंधकको देकर सोमानल यंत्रमें पकावे गंधकके जीर्ण होनेपर फिर गंधकको देकर पकावे। इस प्रकार छः वार सम भागका गंधक देना चाहिये क्योंकि षड्गुणगन्धकके जीर्ण होनेपर पारा मूर्छित और रोगोंका नाश करनेवाला होता है॥ ७०--७३॥

गंधकजारण नाभियंत्रसे।

पूर्वोक्तनाभियंत्रेण गंधकं जारयेद्बुधः।
अन्तर्धूमविपक्वोत्र सूतराजोतिरंजितः ७४॥
(र. प.)

अर्थ–बुद्धिमान् वैद्य पूर्वोक्त नाभियंत्रसे गंधकको जारण करे क्योंकि अन्तर्धूमद्वारा पकाया हुआ पारद उत्तम रंगवाला होता है॥ ७४॥

तुलायंत्रसे गंधकजारण।

अथातः शुद्धसूतस्य जारयेत्पूर्वभावितम्[1]।
गंधकं तु तुलायंत्रे पश्चात्सर्वं ग्रसत्यलम्॥
॥ ७५॥ (र. प.)

अर्थ--अब शुद्ध कियेहुये पारदपर पहली औषधियों (कसीस, फिटकिरी, सज्जीखार, अजमोद, सैंजनेके रसयुक्त) से भावना दियेहुये गंधकको तुलायंत्रमें जारण करे तो पारा समस्त पदार्थोंको खानेवाला होजाताहै॥७५॥

अन्तर्धूम गंधकजारण कूपीद्वारा।

गंधकं सूक्ष्मचूर्णं तु सप्तधा बृहतीद्रवैः। भावयेच्चाथ वृन्ताकरसेनैव तु सप्तधा॥ ७६॥ पलैकं पारदं शुद्धं काचकूप्यन्तरे क्षिपेत्। कर्षैकं भावितं गंधं कर्पूरं माषमात्रकम्॥ ॥ ७७॥ क्षिप्त्वा तत्र मुखं रुद्ध्वा मृदा कूपीं विलेपयेत॥ दीपाग्निना दिनं पच्यान्मुखमुद्घाटयेत्पुनः॥ ७८॥ जीर्णे गंधे च कर्पूरं दत्त्वा तद्वत्पुनः पुनः। एवं शतगुणं गंधं जीर्णं च जायते रसे॥ ७९॥ (र. प.)

अर्थ--गंधकका सूक्ष्मचूर्ण बनाकर कटेरीकी जडके रससे तथा बैंगनके रससे सात सात वार भावना देवे

---

१ पूर्वभावितका संबंध इस पूर्वोक्त श्लोकसे है "काशीसं चैव सौराष्ट्री स्वर्ज्जीक्षारोऽजमोदकम्। शिग्रुतोयेन संयुक्तं कृत्वा भाव्यमनेन वै। सप्ताहं चूर्णितं गंधं गौरीयंत्रेण जारयेत्॥"

२ कशीसे आदिका द्राव बनाकर क्यों न गंधकमें भावना दीजावे।

फिर शीशीमें ४ तोले पारा डाल कर और ऊपरसे ४ तो० भावना दियाहुआ गंधक तथा दो माशे कर्पूर डालकर खिपडा इत्यादिसे मुख बंदकी हुई शीशीके मुखपर मिट्टीसे कपरौटी करदेवे और शीशीपर भी कपरौटी करदेवे फिर दीपाग्निसे एक दिन वालुका यंत्रमें पकाकर फिर मुखको खोल देवे गंधकके जीर्ण होनेपर पुनः कर्पूर और गंधकको डाल कर जीर्ण करे इस प्रकार पारदमें सौगुण गंधक जीर्ण होताहै ॥ ७६–७९ ॥

अन्तर्धूम गंधक जारण कूपीद्वारा ।

निरवधिनिपीडितमृदम्बरादिपरिलिप्तामतिकठिनकाचघटीमग्रे वक्ष्यमाणप्रकारां रसगर्भिणीमधस्तर्जन्यंगुलिप्रमाणितच्छिद्रायामनुरूपस्थालिकायामारोप्योपरितस्तां द्वित्र्यंगुलिमितेन निरंतरालीकरणपुरःसरं सिकताभिरापूर्य वर्द्धमानक्रमारोपयेत क्रमतश्च त्रिचतुराणि पंचषाणि वासराणि ज्वलनज्वालया पाचनीयमित्येकं यंत्रम् ॥ ८० ॥ (र. चिं., र. रा. शं., बृ. यो.)

अर्थ--कपडा डालकर निरंतर कुटी हुई मिट्टी तथा कपडोंसे कूपीपर सात परत लगावे और कूपीके सूखनेपर पारा और गंधक भर देवे फिर उस कूपीको ऐसी हांडीमें रक्खे कि जो शीशीके रखने योग्य और जिसके पेंदेमें तर्जनीके समान छेद कियाहुआ हो तदनंतर उस शीशीके चारों तरफ तीन तीन अंगुल रेत भर कर ढकनेसे ढाक देवे फिर तीन चार या पांच दिवसतक विधिपूर्वक अग्निदेता रहे यह एक प्रकारका यंत्र कहा गयाहै ॥ ८० ॥

अन्तर्धूम गन्धकजारण कूपीद्वारा ।

हस्तैकप्रमाणवसुधान्तर्निखातां प्राग्वत् काचवटीं नातिचिपिटमुखीं नात्युच्चमुखीं मसीभाजनप्रायां खर्परचक्रिकया काचचक्रिकया वा निरुद्धवदनविवरां मृन्मयीं वा निधाय करीषैरुपरि पुटो देयः ॥ ८१ ॥ र. चिं., बृ. यो.)

अर्थ--वालुकायत्रंमें कहीहुई रीतिके अनुसार सात बार कपरौटी कीहुई शीशीमें पूर्ववत् पारा और गंधक भर कर उसका मुख खपरियाकी चकतीसे या काचकी चकतीसे बंद करे शीशीका मुख अधिक चपटा या अधिक ऊंचा न हो अथवा दावातके समान हो फिर धरतीमें हाथ भर गढा खोदकर शीशीको रख दे ऊपरसे कंडोंके खादका पुट देना चाहिये ॥ ८१ ॥

कज्जलीकोविना समान २ गन्धकजारणोपदेश ।

अत्र कज्जली करणमन्तरेण केवलं गंधकमपि साम्येन जारयन्ति ॥ ८२ ॥ (र. चिं., र. रा. शं., बृ. यो.)

अर्थ–पूर्वोक्त दोनों यंत्रोंमें विना कज्जलीके गंधकको सम भागसे जारण करना चाहिये अनेक विद्वानोंका ऐसा मतहै ॥ ८२ ॥

षड्गुण बलिजारणसे रस सिंदूर संपादन ।

कूपीकोटरमागतं रससमं गन्धं तुलायां विभुं विज्ञाय ज्वलनक्रमेण सिकतायंत्रे शनैः पाचयेत । वारंवारमनेन वह्निविधिना गंधक्षयं साधयेत् सिंदूराद्युचितोऽनुभूय भणितः कर्मक्रमोयं मया ॥ ८३ ॥ (र.चिं., नि. र., र. रा. शं., बृ. यो., आ.वि., र. रा. प., र. सा. प.)

अर्थ–वजनमें पारदके सम भाग गंधकको आतिशी शीशीमें भरकर वालुकायंत्रमें मंद, मध्यम और तीक्ष्णाग्निसे पाक करे इस रीतिसे बार बार गंधकका जारण करे रस सिंदूर आदि पदार्थोंके बनाने योग्य इस कर्मको मैंने अपने अनुभवसे कहा है ॥ ८३ ॥

सम्मति–रस सिंदूर बनानेके लिये जो शीशी चढाई जावे उसके मुखपर ईटकी टिकिया लगाकर मुद्राकरे और बालुका यंत्रमें रखकर चार प्रहरकी आंच देवे इस प्रकार वार वार गंधकका जारण करे यदि शीशी दृढ न हो तो तो दूसरी शीशी लेनी चाहिये और जो रस सिंदूर हो जाय तो ऊर्ध्वपातन यंत्र द्वारा पारदको निकाल लेवे ।

मूर्च्छनके लिये कज्जली ।

त्रिगुणमिह रसेन्द्रमेकमंशं कनकपयोधरतारपंकजानाम् । रसगुणबलिभिर्विधाय पिष्टिं रचय निरंतरमंबुभिः कुमार्याः॥८४॥ (र. चिं., र. रा. शं, बृ. यो.)

अर्थ–तीन भाग पारा, एक भाग सुवर्ण, चांदी, अभ्रक, पंकज और छःभाग गंधक इन सबको मिलाकर घीग्वारके रसमें पीस कर पिष्टी बनावे ॥ ८४ ॥

आषड्गुणमधरोत्तरसमादिबलिजारणे तु योज्येयम् । योगे पिष्टी पाच्या कज्जलिकार्थे च जारणार्थे च ॥ ८५ ॥ (र. चिं., र. रा. शं.)

अर्थ–साधारण कज्जली करण इन दोनोंमें समान गंधकसे लेकर षड्गुण गंधकके प्रयोगोंमें रस गंधककी कज्जली कर २ डालनी चाहिये यह प्रकार अधोयंत्रसे ही सिद्ध होता है ऊर्ध्व यंत्रसे नहीं ॥ ८५ ॥

१ इसका आशय यह जानपडता है कि जो कज्जली करेंगे तो षड्गुणतक जितना चाहे गंधक डाल सक्तेहैं किन्तु विना कज्जलीके समानसे अधिक गंधक एक वार न डालना ।

गंधकजारणमें नागादिकी पिष्टी धातु उपयोगी है।

नागादिशुल्बादिभिरत्र पिष्टीर्व्यादेषु योगेषु च निक्षिपंति ॥ ८६ ॥ (र. चिं.)

अर्थ-सीसा और तांबा आदि धातुओंकी करी हुई पिष्टी सोना चांदी बनानेके अर्थमें उपयोगी होती है ॥८६॥

गन्धकजारणके लिये कूपी।

काचमृत्तिकयोः कूपी हेमायःसारयोः क्वचित् । कीलालाद्यैः कृतो लेपः खटिकालवणादिकः ॥ ८७ ॥ (र.चिं., र.रा.शं.)

अर्थ-कहीं २ काच और खडियाकी बनी हुई या सोना तथा लोहेके साथ बनी हुई शीशी पर क्रमशः रक्त और सारका तथा खडिया और नोनका लेप करना चाहिये ॥ ८७ ॥

ग्रस्त धातु वा केवल पारदको मूर्च्छन करे।

ग्रस्तधातुममुं सूतं केवलं वा पुनःपुनः । मूर्च्छयेत्षड्गुणैर्गंधैः क्रमात् कच्छपयंत्रके ॥ रोगहर्ता भवेदेव मित्युवाच शिवां हरः ८८ (रसमानस.)

अर्थ-धातुका ग्रास दिये हुए अथवा केवल ही पारदको षड्गुण गंधकसे कच्छप यंत्र द्वारा वार वार जारण करे तो वह पारद रोग हर्ता होता है ऐसा श्रीमहादेवजीने पार्वतीको कहा है ॥ ८८ ॥

एक मतसे बीजजारणान्तर गन्धकजारण आदेश।

आदौ संजारयेद्बीजं पश्चाद्गंधं च जारयेत्॥ ॥ ८९ ॥ (टो. नं.)

अर्थ-प्रथम बीजका जारण करे पीछे गंधकका जारण करे ॥ ८९ ॥

[बी]जजारणानन्तर गन्धकजारणक्रिया (भूधर यन्त्रसे)

गंधकं जारयेद्धीमान् रक्तचित्रकभावितम् । अंकोलतैलतो वापि रक्तवर्णेन वा तथा ॥ ॥ ९० ॥ किंशुकातैलतो वापि हेमभृंगरसेन वा । काचमारीरसेनापि ह्यथवा वणिकारसैः ॥ ९१ ॥ चूलिकालवणोपेतं यंत्रे भूधरसंज्ञके । निर्माय गोस्तनाकारं वज्रमूषां दशांगुलम् ॥ ९२ ॥ अर्धपक्वां पटुक्षारस्नुहीदुग्धार्कदुग्धतः । विषाम्लवल्लतां संशुष्कां तत्र सूतं निवेशयेत् ॥ ९३ ॥ धरण्यामवटं कृत्वा वितास्तिद्वयमानतः । तत्र मूषां प्रतिष्ठाप्य रसयुक्तां ततः क्षिपेत् ॥ ९४ ॥ गंधकं राजिकामात्रं प्रागुक्तौषधभावितम् । अपिधाय पिधायाथ पुटं दद्यादरण्यजैः ॥ ९५ ॥ शनैः कुक्कुटसंज्ञं च स्वांगशीते ततः क्षिपेत् । राजिकाद्वयमानेन गंधकं पूर्ववन्मतम् ॥ ९६ ॥ इत्थं द्वित्रिचतुःपंचक्रमेण परिवर्धयेत् ॥ यथा गंधो न निर्यातिधूमो वापि कथंचन ॥९७॥ एवं प्रवर्धयेत्तावद्यावत्स्यात्षोडशांशकम् । न बर्द्धते ततः पश्चाद्वर्धितं न गुणावहम्॥९८॥ रसस्य मारकत्वाच्च वर्द्धनं परिवर्जयेत् । एवं युक्त्या गंधकं हि जारयेत्षड्गुणं प्रिये॥९९॥ (टो. नं.)

अर्थ-चूलिका लवणसे युक्त और लाल चीता, अंकोलका तैल, ढाकके बीजोंका तैल, धतूरेका तैल, भांगरेका रस, काकमाचीका रस और बंदालका रस इनमेंसे किसीसे भावना दियेहुए गंधकको जारण करे। नोन, राख, थूहरका दूध, आकका दूध, इनसे बनाकर सुखाईहुई दस अंगुल गौके स्तनके आकारवाली और आधी पकीहुई वज्रमूषाको बनाकर उसमें पारदको रक्खे फिर धरतीमें दो बालिश्त गढा खोद कर पारदसे भरी हुई उस मूषाको गाड देवे और ऊपरसे राईकी बराबर गंधक डालदेवे फिर ढकनेसे ढककर ऊपरसे बालूरेत भर कर जंगली कंडोंकी कुक्कुटपुट देवे स्वांग शीतल होनेपर निकालकर पूर्वोक्त रीतिसे दो राईकी बराबर गंधक जारण करे इसी प्रकार तीन चार और पांच राईके क्रमसे गंधक बढाता जावे और इस प्रकार गंधकका जारण करे कि उस गंधकका धूवां बाहर नहीं जावे एवं षोडश गुण गंधकतक जारण करे सोलह गुने गंधकसे अधिक गंधकका जारण नहीं करे क्योंकि यह गंधक पारेका मारनेवाला है हे प्यारी पार्वती इसी प्रकार षड्गुणका भी जारण समझ लेना चाहिये ॥ ९०--९९ ॥

गन्धक जारणसे अकसीर खुर्दनी व कीमियाई (उर्दू)

अकसीर आजमतिला बनानेका तरीकः सेर भर तुख्मपलास यानी ढाकेका रोगन निकालकर उसमें सीमाव मुसफ्फा चालीस माशेको सहक करना शुरू करे यहांतक

१ बुभुक्षिती करणके अनन्तर ग्रन्थकारने यह पाठ दिया है जिससे यह जान पडता है कि ग्रस्तका आशय चारितसे है जारितसे नहीं वा पिष्टीसे होगा।

२ यहां यह समझ पडता है कि बुभुक्षिती करणके लिये गंधक जारण प्रथम करे किन्तु चन्द्रोदयादि गंधबंधसे प्रथम बीज जारण कर ले।

३ यह क्रिया रंजनोपयोगी जान पडतीहै।

कि सीमाव मजकूर मसकः होजावे उसके बाद गंधक मुदब्विर मजकूरः नुसेखः हाजा चार माशे लेकर सीमावमें मिलाकर कजली करले बादहू उसको बोतः मुअम्मामें रखकर मअमूलन गिले हिकमत करके बाद खुश्क होनेके जमीनके अन्दर दफन करे इस्तरह कि बोतेके ऊपर दो अंगुल मिट्टीरहे उसके ऊपर सवासेर कंडोंकी आग जलावे सर्द होनेके बाद फिर सवासेर पाचक दस्तीकी आग जलावे इस्तरहसे चार बार सवासवासेरकी आगजलावे ताकि कुल पांच सेर कंडे जलकर राख होजावें यह एक बार अमल हुआ बादहू दवाको बोतेसे निकाल कर गन्धक मुदब्विर मजकूर हवाला चार माशे फिर मिलाकर रोगन पलासमें सहक करके बोतः मुअम्मामें दस्तूर रख कर सवा सवासेरकी चार बार आगदे रोगन पलासकी मिकदार इतनी होना चाहिये कि दवा उसमें चख होजावे गरज इसी तरहसे दवाई अकसीरीको निकाल कर गंधक मुदब्विर चार माशे मिलाकर रोगन पलासमें सहक करके चार बार सवासेरकी आग जंगली उपलोंकी दियाकरे इस्तरहके चालीस अमलमें अकसीर कामिल होजावेगी इस अमलमें चालीस माशे सीमावमें चौगुनी यानी १६० माशे गंधक मुदब्विर मजकूर और पाँचमन पुख्तः पाचक दस्ती सर्फ होतेहैं अकसीरका रंग जर्द होता है तरह करनेका तरीका, यह है कि तोले भर अकसीरको सौ तोले सुरवपर गुदाज करके तरह करे जो जर्द और शिकनान होजावेगा बादहू एक तोला सुरव मजकूर लेकर सौ तोले मिस गुदाख्तः पर तरह करे इनशा अल्लाः कलवुल एन आलीडल एन करेगा और खानेसे कुव्वत शबाब होगी जौफ पीरी जाइल होजाये। (सुफहा अकलीमियाँ २४४)

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया भाषाटीकायां गंधकजारणं नाम विंशोध्यायः ॥ २० ॥

चन्द्रोदयका अनुभव।

३०।९ उपरोक्त हिंगुलोत्थ और १ वार करेगये साधारण मूर्छितसे शुद्ध ऽ। पावभर पारेमेंसे ८ तोले पारेको लोहेके स्वच्छ खरलमें डाल उसमें १ तोले सोनेके वरक थोडे २ डाल घोटा गया तो घंटे भरमें सब वर्क पारेमें मिलगये और पारा सफेद ही रहा और गाढा कर्दम सा होगया उसमें (घृतमें गला दूधमें डाल) शुद्ध करी हुई आँवला सार गंधक (जिसकी चिकनाई कपडेसे पोंछली थी) १६ तोले डाल कर घोटा गया।

१।१० आज दिन भर कज्जली सूखी घुटती रही।

२।१० आज दोपहर तक सूखी कज्जली घुटती रही, खूब बारीक काजल सी होजाने पर पहर दोपहरको घीग्वारका रस डाल घोटी गई।

३।१० आज दोपहर तक घीग्वारके रसकी कज्जली घुटी दोपहरको गाढा होजाने पर सुखा दीगई।

४।१० आज यह औषधि सूखती रही।

५।१० आज दोपहर तक यह औषधि सूखती रही, दोपहर बाद इस औषधिको खूब सूख जानेपर तोला गया तो ८+१+१६=२५) भर ठीक हुई, पहलेसे एक अंगरेजी आतिशी शीशीको जो ४ इंच चौडी थी उसपर कुम्हारके यहांकी मिट्टीमें घोडेकी लीद सानकर कूट कपरौटी ७ दफे की गई, कभी कभी कुछ मुलतानी भी लगाई गई, इस शीशीकी डाट पक्की ईटकी बनाईगई, घिसकर चिकनी करली गई, यह डाट ३ अंगुल लंबी होगी ७ कपरौटी करी हुई आतिशी शीशीमें २५) रुपये भर दवा भरकर उसपर ईटकी डाट लगा उसकी संधिको नामेके साथ कुटी हुई मट्टीसे बंद किया गया और सुखा दिया गया।

६।१० दूसरे दिन शीशीकी डाट और गर्दनपर उसी नामेसे मिली मिट्टीसे एकलंबी कपडेकी पट्टीको जो ४ अंगुल चौडी होगी सानकर कपरौटीकी गई यानी तीन चार लपेट लगाये गये और उस पट्टीको डाटके ऊपर लौटभी दिया गया जिससे सब डाट ढक गई, दोपहर बाद इसी तरहकी एक कपरौटी डाट पर और करदी गई।

७।१० उपरोक्त शीशी आज प्रातःकालसे वालुका यंत्रमें चढाई गई। वालुकायंत्र-एक रोगनी यानी चीनी किया हुआ चौडे मुंहका मिट्टीका बडा तोला (जिसकी ८ इंच गहराई १३ इंच चौडाई १० इंच मुँह चौडा था) लेकर उसके पेंदेके बीचमें एक गोल छेद जिसमें बडी उङ्गली चली जावे बढइसे कराकर उस छेदके चारों ओर तोलेके अन्दरकी तरफ गूदड और कुटी मिट्टीकी बत्ती सी बनाकर एक घिरोली बना दीगई जो सबसे पतली उङ्गलीके पौरुवेके बराबर ऊंची होगी-इस घिरोलीके बीचमें एक खपरेकी लंबी ठीकरी रख कर दवा दीगई--जिससे वह घिरोलीकी उँचाईके अन्तरगतही रही-फिर इस घिरोलीके ऊपर शीशी रखकर तोलेमें छनी हुई गंगारेणुका और कूएकी रज भरदी गई तोलेकी गर्दन तक, नतीजा यह रहा कि शीशीके पेंदेका बीच नीचेसे अधेलेकी बराबर खुला रहा-(उसछिद्रके बीचमें भी एक लंबी ठीकरी दो टुकडेकर-तीरही और शीशीके नीचे एक अंगुलसे शुरू होकर २ अंगुल तक बालू रही, शीशीके इधर उधर चार चार अंगुल बालू होगी, शीशीकी गर्दन जितनी सीधीथी वह सब खुली रही।

इस वालुकायंत्र अर्थात् तोलेकी एक छोटीसी भट्टी पर चढाया गया इस तरह कि भट्टीके ऊपर ५ गुम्मा ईटके अद्धे रख कर उन पर तोला रक्खा गया ताकि आंच तोलेके चारों तरफ निकल सके आज ७ बजेसे हलकी आंच शुरू हुई रातको कुछ बढाई गई।

८।१० आज दिनको आंच कुछ थोडी बढाई गई, रातको पूरी आंच कर दीगई, यानी इतनी आंच दीजाती थी जिसकी लोय चारों तरफ निकलती थीं तोलेके पेंदके उँचाई

१-गंधक मुदब्विरकी तरकीब आधसेर गंधक आंवलासारको शीरः घीग्वारमें सात बार बादहू शीरः लहसन खालिसमें सात बार इस्तंजालकरे बादहू चार चार पहर घीग्वार और सुर्ख प्याजके अर्क दोला यंत्रसे स्वेदन करे और सात सात दिनतक दोनों चीजोंमें स्वेदन करता रहे और सरपोशको गिले हिकमत करदे कि भाप न निकले।

२-गन्धक मुदब्विरका नुसखः तूल तवील अलहदा दर्ज है (सुफह २४३ पर)

तक, अब तक गर्दनकी तरफसे कोई गंधकका धूम्र निकलता नहीं दीख पडा।

९।१० को बराबर आंच दीगई, गंधक किसी समय निकलता नहीं दीख पडा।

११।१० आज शामतक आंच दीगई, ६ बजेतक आंच दिनको दोपहरके समय कुछ हलकी रक्खी जाती थी रातको विशेष करदी जाती थी।

(७–८–९–१०–$\frac{११}{२}$) यानी (३६ प्रहर आंच देकर बंद की गई) रातको आंच बंद की गई यंत्र भट्टीपरही रक्खा रहा।

१२।१० सुबह यंत्र भट्टीसे नीचे उतार लिया गया, शामको ३ बजे शीशी तोडी गई तो शीशी की गर्दनके ऊपरी भागमें १॥ तोला गंधक अर्धजलित विशेष पीला कुछ काला निकला नीचे पेंदेमें नीचेकी तरफ जला हुआ गंधक सोना काली रंगतका ७॥ तोले निकला इस जलेहुए गंधकके ऊपर शीशीके मध्य भागसे गिरा हुआ १३॥ तोला ऊपरसे सुरख रंगका पारद गंधक निकला जो खसखसी रस सिंदूरकी आकृतिका था अन्दर तोडनेसे सुरखी नामकी थी पीलापन था–३ माशे शीशीमें भी लगा रह गया होगा, सब तोल २२॥ तोला हुई, रक्खा गया था २५ तोले अर्थात् २॥ तोले केवल जला–कारण इसका कम आंच लगना कहागया, लकडी गोली थी सबसे नीचे पेंदे पर स्वर्णकी रंगत चमकती थी।

३६ प्रहरकी आंचमें सिरफ २ तोले गंधकका वजन घटना याद रखने लायक है।

भांगसे पारेके मूर्च्छनका अनुभव।

स्वामी रामेश्वरानंदजीने कहा कि भंगसे मूर्च्छन होताहै, इसलिये उन्हीके द्वारा कराया गया।

२ तोले पुराने रक्खे हुए शुद्ध पारेको, भांगको कूंडीमें भिगो उसका थोडा २ रस डालकर ता० $\frac{२०।३०}{९}+\frac{१।०२}{१०}=$ ४ दिन बडे खरलमें घोटा गया तो पहले तो पारद उसमें लीन हुआ जानपडा किन्तु तीसरे दिन गोली बनने लायक गाढा होनेपर पारा जुदा होचला–चौथे दिन जब दवाकी बत्तीसी बनने लगी तो आधेके करीब पारा पृथक् होगया खूब सुखा देने पर ।।=) भर पारा पृथक् था और २) भर पारे औषधिका वजन था इस औषधिको एक मटकेमें रख शकोरेसे ढक सेर भर कंडोंके दहरे पर रख दिया तो फूंककर केवल ६ माशे रह गई। इससे इतनाहीं सिद्ध हुआ कि ३ दिनके परिश्रमसे २) मेंसे केवल अर्द्धांश पारा मूंर्च्छन रूप हुआ। यह कर्म पारद शोधनके उपयोगी नहीं कहा जासक्ता।

चन्द्रोदयका दूसरा अनुभव।

२२।१०–१३॥ तोले सुरखी मायल पारद गंधकको जो पहले शीशीमेंसे निकलता था लेकर २॥ तोले शुद्ध गंधक और डालकर १६ तोलेको सूखा खरलमें घोटा गया। (इस १६ तोलेमें ८ तोले पारा (जो प्रथम डाला गया था) और ८ तोले गंधक समझना चाहिये) एक हिन्दुस्तानी आतिशी शीशीमें जिसपर ७ कपरौटी करली गईथीं और जो पहली शीशीसे आधी होगी, और ऊंची कमथी बलकि चपटी थी ऊक्त १६ तोले वजनको भर ईटकी डाटसे बंदकर डाट पर भी कपरौटी कर, सुखा पहली शीशीके अनुसार ही बालू भरे तोलेमें (तोला (अर्थात् मिट्टीका खमडा) पहलाही था दो कपरौटी उसपर नई करली गई थीं) रखकर भट्टीपर चढा दिया।

१५।१० के सबेरेसे अग्नि दीगई मृदु, दोपहरके ४ बजे पीछेसे मध्य रातको ८ बजेसे तेज आंच दीगई (तेज आंच ३ वा ४ लकडी बबूलकी थी चारों तरफ पूरी झरें निकलती थीं)

१६।१०–सबेरे ४ बजे शीशी तौलेसे उछल कर बाहर आपडी, कारण यह हुआ कि शीशी पिघल गई नीचेसे छिद्र होगया झरबेरीके बेरके बराबर, उसमेंसे गंधक पारद नीचे निकला होगा, उसने शीशीको फेंक दिया।

स्वामीजीने उस शीशीके छिद्रपर गीली मिट्टी रखवादी, पर मेरी रायमें इस मिट्टीसे निकलनेवाली भाप रुकी न होगी। शीशीको तोडकर देखा गया तो गंधक शीशीकी गर्दनमें भरा हुआ था पिघलकर जम गया था, रंगत काली पीली थी तोलमें ३॥ तोले था, सिंम्रफकीसी आकृतिमें किन्तु काली और सुर्ख मिश्रित रंगका गंधक और पारा शीशीके पेटमें और गर्दनमें मौजूद था, तोलमें ७॥ तोले था, कुछ इस परे गंधकमेंसे शीशीकी गर्दनमें स्थित गंधकमें भी घुस गया था जिसका कारण यह मालूम होताहै कि शीशी टूटनेसे पारा एक दम ऊपरको उठकर गर्दनमें घुस गया।

स्वामीजीने कहा कि देशी शीशी अकसर गल जातीहै अंगरेजी मजबूत होतीहै जो देशी शीशीमें ताम्रका भाग विशेष डलवाया जाय तो अधिक मजबूत होजातीहै। सब वजन शीशीसे निकली वस्तुका ११ तोले था, जिसमें स्वामीजीके मतसे ८ तोले पारा और ३ तोले गंधक था, मेरी रायमें उसमें ४ तोले पारा ७ तोले गंधक होगा।

पारद निष्कासन।

१७।१० आज उक्त ११ तोले वजनमेंसे १ तोला गंधक फेंक दिया गया, बाकी पीसकर तोला तो १० तोले था नींबूके रसमें घोट टिकिया बना सुखा दिया गया। फिर डौरू यंत्रमें ४ प्रहरकी आंच दे उडाया गया। खोलने पर ५ पैसेभर काली चीज ऊपरकी हांडीके खुरचनेसे निकली। १ पैसेभर सुर्ख गंधककी भस्म पेंदेमें निकली(हांडीकी संधि स्वामीजीके समझमें उत्तम रीतिसे की गई थी) यानी १० तोलमेंसे इस समय ३ तोले ही वजन रह गया यातो गंधकका ही भाग इस १० तोले में था सो जलगया, अथवा पारा गंधक मिले हुए उडकर हांडीमें लिहस गये और छुट न सके, अथवा पारा डौरूयंत्रमेंसे संधि द्वारा निकल गया ५ पैसे भर जो काली चीज निकली उसमें पारा नजर नहीं आता था, उसको खूब नीबूमें घोट धूपमें रक्खा गया तो पारेके कण दीख पडे दुवारा फिर नीबूके रसमें भिगो धूपमें रक्खा गया तो वैसाही रहा। इसको इष्टिका यंत्रमें आंच दीगई तो तोल कुछ घटी पर कुछ नतीजा न निकला, लाचार फेंक दिया, दर असल पारा इसमें बहुतही कम था।

स्वर्णभस्म करना व उत्थापन ।

पहली बारकी चन्द्रोदयकी क्रियामें जो शीशीके पेंदेमें गंधक और स्वर्णकी काले रंगकी ७॥ तोले जली हुई चीज निकली थी उसमेंसे २ तोले को काचके टुकडे पर थोडा थोडा रख कोयलोंपर रक्खा गया तौ गंधक जलकर उडगई और १ तोला बाकी रहा (सुरखीमायल)

३॥ तोले बाकी बचेको कचनारकी छालके काढेमें घोट टिकिया बना सुखा शराब संपुटमें रख ५ सेर आरने कंडों की आंच दीगई तौ काल रंगकी टिकिया १=) भर निकली । यानी सब ७॥ तोलेका जलकर २=) भर रहा। इसमें १) भर स्वर्ण और बाकी गंधक, पारा, घीकुमारीका अंश समझना चाहिये ।

उत्थापन ।

इस २=) भर भस्ममेंसे ।) भरको शहद सुहागा घी मिलाकर घरियामें रख धोंका गया तो उसमेंसे ९ रत्ती स्वर्ण निकला ।

भस्मीकरण ।

बाकी १॥।=) भरको खूब बारीक पीस कचनारके काढेमें घोट टिकिया बना सुखा संपुटकर ५ सेर कंडों की आंच दीगई तो १॥=) भर निकला दुवारा फिर इस को कचनारके काढेमें घोट ७ सेरकी आंच दी गई तो १॥) भर निकला, रंग सुर्खी मायल है। फिर तिवारा ।॥) भर गंधक शुद्ध मिला कचनारके काढेमें घोट ५ सेर कंड़ोंकी आंच दीगई तो १॥) भरही निकला रंगत सुर्ख टिकिया मुलायम थी, फिर चौथीबार ।॥) भर गंधक मिला कचनारमें घोट १० सेर कंडोंकी आंच दीगई तो १॥) भर ही निकला, मगर ज्यादा आंच लग जानेसे आधी टिकिया जलकर कठिन और काली होगई, स्वर्णभस्ममें ५ सेर कंडोंसे अधिक आंच देना मुनासिब नहींहै, जो टिकिया मोटी होनेसे कच्ची निकले तो आंच न बढाकर एककी जगह दो टिकिया दो संपुटमें रक्खो ।

पांचवीं बार ।॥) भर गंधक मिला कचनार काथसे घोट ५ सेर कंडोंकी आंच दीगई टिकिया खूब चौडी बनाकर, तौ टिकिया खूब खस्ता निकली रंगत थोडी सुर्खी मायलथी। तोल १॥) भरथी ।

छठीबार सिर्फ कचनारके काढेमें घोट ४ सेर कंडोंकी आंच दीगई तो १॥) तोले निकली रंगत कम सुरख थी ।

७ वीं बार ३॥ सेरकंडे १॥) भर निकला, रंगत उमदा सुर्ख थी ।

८ वीं बार २॥ सेर कंडोंकी आंच दीगई पीसनेसे रंगत सुर्ख थी, पर सोनेकी रंगतके रवे बहुतसे चमकतेथे, लिहाजा यह ठीक नहीं फुका इसको फिर फूकना चाहिये या जिलाना चाहिये-चूंकि तोल कुश्तेकी सोनेके वज़नसे बढ गई थी और रवे चमकते थे बस इस खयालसे कि इसमें जाने क्या चीज़ मिलगई सोना जिलाना ही ठीक समझा गया ।

१८।२-शहद, सुहागा, घी, डालकर न्यारियेसे धुकवाया गया तौ ९ आनेभर सोना निकला लेकिन रंगत सफेदी माइल थी और सोना फूटग होगया था पहला सोना जो शीशीमेंसे निकलनेके वाद निकाला गया था वह फूटक नहीं था इसलिये खयाल होताहै कि गंधकसे फूटक होगया ।

चन्द्रोदयका तृतीय अनुभव दत्तमे टिरिया मेडिकाकी क्रियासे ।

१७।१०।०४-८तोले हिंगुलोत्थ एकवार साधारण मूर्छित किया हुआ पारा १६ तोले शुद्ध गंधकको २ दिन घोट सुसूक्ष्म कज्जली बना ७ कपरौटीकी हुई आतिशी शीशीमें भर पूर्वोक्त विधिसे वालुकायंत्रमें बढ़ाया गया किन्तु डाट मुखपर रखदी गई संधिबंद नहीं की गईथी ।

२१।१०—आज ६ बजे सवेरेसे ९ बजेतक मंद, १२ तक मृदु, अनंतर साधारण तीव्र आंच दीगई ९ बजे शीशी कुछ गरम हुई, १२ बजे कुछ खुशबू और डाटपर गंधककी रंगत आने लगी और शीशीकी गर्दनमें तार डालनेसे मालूम हुआ कि गंधक कुछ गर्दनके इधर उधर चढाहै ३ बजे तक इस दशामें कुछ अंतर न दीख पड़ा, ३ बजेसे आंच पूरी तीव्र करदी गई-३॥ बजे शीशीमेंसे खूब धूआं निकला और ५ मिनटमें शीशीके मुखसे नीली ज्वाला निकलने लगी जो एक बालिश्तसे भी ऊंची होगी, ५ मिनटमें वह ज्वाला कम पड़गई फिरभी शीशीके मुखसे लौ निकलती रही और कुछ गंधक गर्दनसे नीचे बह कर आती थी उससे नीचे तक ज्वाला जलती थी रंगत ज्वालाकी नीलीथी इस समय कुछ आंच मंदी करदी गई कि गंधक तीव्र वेगसे न जल-जाय, पौन घंटे तक गंधक जलती रही फिर बंद होगई, जिसका कारण या तौ अग्निकी मंदता या गंधककी क्षयता होसक्ती है, आंच बंद होजाने पर ५॥ बजे तार डालकर देखा गया तौ गंधक शीशीकी नालमें पिघला हुआ मौजूद था, अनंतर आंच तीव्र की गई परन्तु फिर गंधक न जली ६ बजे तार डाला गया तौ शीशीका मुख बंद था तार केवल १ अंगुल अन्दर गया, खुद जोर देकर देखा गया तौ भी तार अन्दर न गया, किसी चीज़से खूबबंद था ६॥ बजे तक आंच दीगई, न तौ फिर गंधक जला न धुआं निकला, तार डालनेसे शीशीके मुखपर कठोरता और खुश्की जान पड़ी यह विचारा कि समय पूर्ण होगया, और गंधक जलगई आंच बंदकरदी गई रात्रिभर शीशी भट्ठी परही रही ।

२२।१० शीशी ठंडी होगई थी तोड़ कर देखा गया तौ गर्दनके ऊपरके भागमें ३॥। भर अर्ध जलित गंधक काले पीले रंगकी, उसके नीचे बीच गर्दनमें ४॥।= भर कुछ पारद अंशसे मिश्रित गंधक सुर्खीमाइल काले रंगकी निकली उसके नीचे गर्दनके निचले भागमें ४ भर गंधकसे मिश्रित सुरखी मायल काले रंगका निकला, गर्दनसे नीचे शीशीके ऊपर भागमें केवल मूर्छित पारा ३॥= भर निकला इसकी रंगत सिंग्रफकी सी थी लकीर करनेसे खूब सुरखी निकलती थी तलेमें शीशीके थोडी सी राख गंधककी निकली ।

नताजा यह जान पडा-कि ८+१६ भर गंधक पारद-मेंसे १६ भर मालरहा, यानी आधी गंधक जली, तरकीब जो दत्तमेटिरियाने लिखीहै ठीकहीहै यह गंधकका कम जलना हमारी क्रियाकी कचाई थी गंधक जलने पर हमने आंच डारकर कम करदी थी, और पहलेभी आंचके तीव्र

करनेमें बहुत देरकी थी, मेरी रायमें १ प्रहर मंद आंच देकर दूसरे प्रहरमें मध्यम अग्नि देनी चाहिये। और तीसरे पहरसे पूरी तीव्र अग्नि कर देनी चाहिये और चौथे पहरके अन्तमें शीशी उतार लेनी चाहिये।

चन्द्रोदयका चतुर्थ अनुभव।

२३।१०- ४।।।=) भर पारद अंशसे मिश्रित गंधक ४) भर गन्धकसे मिश्रित पारदको जो तृतीय अनुभवमेंसे निकला था। खूब घोट एक छोटी आतिशी शीशीमें जिसपर ७ कपरौटी थीं भर छोटे तौलेमें वालुका यन्त्रपर धरा।

२४।१०-७ बजे सबेरेसे आंच दीगई १० बजे तक शीशी गरम हुई १२ बजे सलाई डालकर देखा गया तो पारद गंधक पिघली हुई दशामें मिले हुए थे और शीशी भर रही थी ३ बजे गंधक शीशीकी गर्दनमें आगया था परन्तु पिघला हुआ था ४।। बजे शीशीका मुख गंधकने रोकदिया सलाई अन्दर न गई ६ बजे तक आंच और दीगई गंधक शीशीके मुखसे जौभर नीचे तक आकर रह गया न ऊंचा सरका न जला गंधक न जलनेका कारण यह मालूम होता है कि पहले शीशीमें जल चुकनेकी वजहसे गंधक कमजोर होगई थी।

२५।१०-शीशीको देखा गया तौ शीशी पिघल कर ऊपरको सुकड गई थी पर कपरौटी शीशीके आकारकी ही क़ायम थी, शीशी तोडी गई तो गर्दनमें ऊपर १।। भर गंधक अर्द्ध जालित, बीचमें २=) भर गंधक पारद मिश्रित नीचे २।।।=) भर पारद गंधक मिश्रित, सबसे नीचे कुछ गर्दनमें कुछ बोतलमें १।।।=) भर पारद मूर्छित जिसकी रंगत कुछ काली थी निकला सब तोले ८।=) भर थी रक्खा गया था ८।।।=) भर, सिर्फ ।।) भर जला, ३ प्रहरकी आंचमें भी केवल ।।) भर जलना आश्चर्यहै, इसमें ज्ञान होताहै कि अन्तर्धूममें गंधकका क्षय कठिनहै, बहिर्धूममें गंधक शिखारूपसे जलकर ही क्षय हो सकेगा और तरह नहीं।

शीशी आतिशी मामूली काम न देगी, १ पिघल कर फूट गई, १ सुकड गई इसलिये अंगरेजी आतिशी शीशी लेना ठीक होगा, या सारोंकी शीशी बनवाई जावें।

गंधक जारणका अनुभव बहिर्धूम।

स्वामी रामेश्वरानंद द्वारा रसेन्द्र चिंता मणिमें कहे बहिर्धूम जारणकी क्रियासे"सूतप्रमाणं सिकताख्ययंत्रे दत्त्वा बलिं मृद्धटतैलपात्रे ॥ तैलावरूपेऽत्र रसं निदध्यान्मग्नार्द्धकायं प्रविलोक्य भूयः" ॥

१०।१० वालुका यंत्रमें स्थित एक छोटेसे चीनी केर मलसेमें तैल और गंधकको मिलाकर चटाया तौ तैल जल गया और गंधक रहगया तैलावशेषका अर्थ होताहै कि तेलबाकी रहे, इससे सिद्ध हुआ कि पाठ अशुद्धहै, तैलावरूपे ही होना चाहिये।

११।१० आज उसी वालुकायंत्रमें उसी छोटे मलसेको रख उसमें १ तोले गंधकका चूर्ण डाल आंच दीगई तो घंटे भरमें गंधक तेलरूप होगई फिर उसमें पारा १ तोले डालदिया गया ९ बजे सबेरेसे १२ बजे तक आंच देने पर गंधक थोडा ही क्षय हुआ मग्नार्द्धकाय नहीं हुआ १२ बजे अनंतर घंटे घंटे भर पीछे २-२ माशे गंधक डाला गया तो शामके ६ बजेतक १ तोला गंधक क्षय हुआ। अर्थात् सबेरेसे शामतक १ तोला १। तोला गंधक क्षय हुआ होगा।

वालुकायंत्र १ तोला मिट्टीका था जिसमें सूक्ष्म वालूही रक्खी गई थी. यानी मलसेके नीचे कोई अंगुल भर ही वालू होगी,चूल्हे पर रख कर दो तीन लकडियोंकी आंच बराबर दीगई, शामतक २० सेर लकडी जली होंगी इससे सिद्धहुआ कि बहिर्धूम गंधकजारणमें भी जो वालुका यंत्रसे होगा देर लगेगी, किन्तु हो सक्ताहै अधिक पारेके गंधक जारणमें खूब चौडा वालूका वर्तन लेकर उसमें चौडे पेंदेकी रकाबी रखना ठीक होगा।

६ बजे एक लंबी कीलसे चलाकर देखा गया तो पारा बीचमें कुछ घन रूप था और ऊपर काली गाढी गंधक थी, तजुरबेके लिये आंच खूब तेजकी गई तौ गंधकमें आंच लगगई, इसको शराव (सकोरे) से ढक दिया तो अग्नि बुझ गई, यंत्र उतार लिया गया।

१२।१० सबेरे देखा गया तो पारा गंधकमें मिला हुआ रांगकीसी आकृति कठिन होगया था, शायद वालुका यंत्रमें स्थित दशामें कीलसे चलानेसे गंधकमें मिल गया हो, फिर इस पारे गंधकको नीबूके रससे घोटा गया तो ६ माशे पारा पृथक होगया बाकी पारा मूर्छित रूपमेंही था, पारा क्षय नहीं हुआ।

इष्टिकायंत्रसे गंधकजारणका अनुभव।

१२। कुदेरनाथके यहां बनी खांचेदार ईटमें अर्थात् इष्टिकाके गढेमें चीनी वर्तनके टुकडे भुनासुहागा चूनाकलई सब समान भाग खरलमें जलके साथ घोट लेप कर सूखाकर १।। तोले पारा डाल ऊपरसे १।। तोला गंधक चूर्ण डाल कर उलटा शकोरा ईटके मुखपर ठीक लगा कर, कुम्हारकी मिट्टी मुलतानी, रुई कूटकर उससे दरज बंदकी गई और सुखादी गई घंटे भर सूखनेसे दराज खुलगई उस दराजको चीनी, चूने, सुहागेसे बंदकर फिर सुखाया गया कपडेसे ढककर तो संधि नहीं खुली इस ईटके ऊपर सेर सेर भर कंडोंके ४ पुट लगाये गये।

१३।१० आज ईट खोली गई तो गंधक केवल पिघला हुआ मिला, जला नहीं पारा नीचे विद्यमान था।

(२) दुबारा फिर ईटको सकोरेसे बंदकर, ईटको २ हिस्से जमीनमें गाड कर (गढेमें पानीभी छिडक लियाथा) एक भाग खुला रख ५ सेर आरने कंडोंकी आंच दीगई, खोलने पर गंधक बिलकुल न मिला, अर्थात् जल गया पारा सफेद चमकता हुआ बहुत साफ १।। तोले पूरा मौजूद था, यह पुट ४-५ घंटेमें ठंडा हुआ था ईटमें कुछ दर्ज पडगई थी ईट बहुत मोटी और गढा बहुत बडाहै इस कारणसे ५ सेरका पुट लगा। शायद इससे कमसे भी काम चलजावे उसका अनुभव फिर होना चाहिये वालुकायंत्रमें गंधक निःशेष अग्नि जल उठनेपर भी नहीं हुआथा, और गंधक और पारेको शकोरोंमें रख कोयलोंको ऊपर नीचे रख गंधकमें अग्नि

पैदा की गई,तो गंधक जल तो गया किन्तु निःशेष नहीं हुआ इसलिये दोनों क्रिया (वालुका और शकोरा) में गंधकका मैल सा रह जानेसे पारा मैला रहा पर इष्टिकायंत्रमें गंधक निःशेष होजानेसे पारा बडा स्वच्छ निकला इससे इष्टिकायंत्रद्वारा गंधक जारण उत्तम कहा जा सकताहै ।

(३) २८ । १० चन्द्रोदयके द्वितीय अनुभवसे निकले २=) भर गंधक पारदको पीस कर इष्टिकायंत्रमें रख ४ सेर कंडोंकी आंच दीगई तो १।) भर निकला रंगत थोडी सुरख थी ।

(४) और २।।।=) भर गंधक पारदको आंच दी गई तो १।।।) भर निकला रंगत विशेष सुरख थी । इन दोनोंमेंसे जो गंधक था वह जल गया केवल पारद ही अब समझना चाहिये क्योंकि तोल मिलानेसे पारद ही पूरा बैठता है इष्टिकायंत्रसे पारद गंधक पृथक् २ भी अच्छी तरहसे जारण हुए थे और मूर्च्छित रूपमें भी जो अबकी बार परीक्षा की गई तो बहुत अच्छा नतीजा निकला था ।

(५) उपरोक्त नं० ३ + ४ को मिला कर फिर इष्टिकायंत्रमें आंच दीगई तो दोनों उडगये कारण यह कि गंधक पहलेही क्षीण होचुका था । आयन्द्रः यह भी खयाल रक्खा जावे कि गंधक क्षय होजानेसे पारद उड सकताहै,

(६) १ तोला पारा १ तोला गंधककी कजली कर इष्टिकायंत्रमें आंच दीगई तो नतीजा ठीक नहीं हुआ ।

इष्टिकायंत्रद्वारा गंधकजारणका पुनः अनुभव ।

२७ । २ । ०६ उक्त प्रकारके इष्टिकायंत्रके गर्तके बीचमें पारद पिष्टी ५।।।) भर (जिसके बनानेकी विधि पीछे लिखीहै) रख उसके ऊपर जंभीरीके रसमें पिसी गंधक १।।) भरकी पिष्टीसी रख ऊपर शकोरा ढक संधिको भस्ममुद्रासे बंद कर दिया गया ।

भस्ममुद्राप्रकार ।

कारीषभस्मलवणांबु वज्रमुद्रा प्रकीर्तिता ।

मैंने लकडीकी राख ली थी १।।) रुपयेभर और उतना ही सैंधा नमक डाल खरलमें पानीके साथ खूब घोटा गया इसीसे मुद्रा की गई, यह क्रिया भी मुद्राकी उत्तम रही ।

२८ । २ जमीनमें गड्ढाकर इष्टिकायंत्र रख जो जमीनसे ३ अंगुल या १ इंचके करीब नीचा रहा होगा । ऊपर ३ अंगुल रेत भर आध आधसेर कंडोंकी आंचें ५ दी गई शामको ठंढा होनेपर निकाला तो मालूम हुआ कि आंचका असर नहीं पडा गंधक बिलकुल नहीं जला ।

१ ।३ आज पुनः इष्टिकायंत्रको बंद कर उसी प्रकार रख सेर सेर भरकी ६ आंच दीगई घंटे घंटे भर पीछे ।

२ । ३ आज निकालकर देखा गया तो गंधक पिघल गया था जला नहीं ।

२ । ३ आज पुनः बंद कर उसी तरह सेर सेर भरकी ६ आंचें दी गई मगर इष्टिकायंत्रके गढेको ऊंचा करनेके लिये गढेमें रेत भर ऊपरसे मिट्टीका चिराग अर्थात् मोटा दीवला रख उसपर पिष्टी रक्खी और दीवला इस तरह लगाया गया कि जिससे गढेकी निचाई खांचा छोडकर १।।।इंच और खांचा समेत २। इंच रही थी ऊपरके शकोरे समेत कुल फासला २।। इंच होगा ।

३ । ३ आज निकाल कर देखागया तो गंधक जल- गया था, कुछ छूंछ बाकी थी और नीचे रखी पारेकी पिष्टी ज्योंकी त्यों थी ।

३ । ३ आज फिर बंद कर डेढ डेढ सेरकी ४ आंचें दीगई ।

४ । ३ आज खोलकर देखागया तो गंधककी छूंछ बिलकुल जली हुई मौजूद थी, जो तोलमें ९ माशे हुई और पारद पिष्टीमेंसे कुछ पारद जुदा होगया था कुछ पिष्टी दबानेसे छुटगया कुल पारा २।) भर छुटगया बाकी पिष्टी भी रेतसी होगई जो तोलमे ३=) भर थी इससे जाना गया कि अबकी बार कुछ अंश पिष्टीके अन्तर्गत गंधकका भी जलगया और जो रहा वह भी निर्जीव होगया । कलतककी आंच ठीक थी आजकी विशेष अग्निसे पिष्टीसे पारद छुटगया ।

४ । ३ आज फिर ३=) भरको बंद कर दिया गया ।

५ । ३ आज सवा सवा सेरकी ४ आंचें दीगई ।

६ । ३ खोलकर देखागया तो ।) भर पारा जुदा होगया था और२।=) भर रेतसा सुर्ख हिरमिचीसा रहगया था ।।) भर तोल कम होगई ।

६ । ३ आज फिर २।=) भरको बंद करदिया, अनु- भवके लिये ।

७ । ३ आज उसी तरह १।।–१।। सेरकी ४ आंचें दीगई ।

८ । ३ खोलकर देखा तो २=) भर हुआ जैसा रेतसा था वैसा ही रहा अनुभवसे मालूम हुआ कि–

(१) इष्टिकायंत्रका गढा गहरा ज्यादः है खांचा $\frac{4}{8}$ इंच है, इसके अलावा सिर्फ १ $\frac{1}{4}$ इंच और, गढा काफी होगा, $\frac{3}{8}$ इंच ऊपरके शकोरेकी गहराई (खांचेके $\frac{4}{8}$ इंचको मिनहा करके रहती है) सब मिलकर २ इंच फासिला रह जावेगा, यही ठीक होगा, हद २।। इंचतक होसकताहै जैसा कि अबके अनुभवमें रक्खा गया था ।

(२) और इसके लिये सेर या सेरकी ४ आंचें काफी होंगी ।

(३) एक इंच रेत गढेमें ईटके ऊपर रहना चाहिये ।

(४) मुद्रा–भस्म मुद्रा ही ठीक है जैसे की गई थी ।

(५) पिष्टी जैसे बनाई थी वैसेही ठीक है ।

गंधकजारणका तीसरी बार अनुभव ।

९ । ३ । ०६ साधारण शुद्ध पारदको (जो २६ ।५। ०५ को पातित होकर एक शीशीमें रखा था २९ तोले) १० तोले लेकर तप्त खरलमें घोटा गया (खरल इतना तप्त था जिससे हाथ न जले) और थोडी थोडी शुद्ध गंधक पिसीहुईकी चुटकी दीगई तो २। घंटेमें ।।–) भर $=\frac{1}{16}$ गंधक पडचुकनेपर पारेकी पिष्टी मक्खनसी होगई ।

पहली बार जो पिष्टी २६ । २ को कीगई थी उससे यह नरम थी, तोल १०।) भर हुई।

इष्टिकायंत्रमें जिसम खांचा+ $\frac{4}{8}$ इंच खाचा+ $\frac{10}{8}$ इंच गढा+ $\frac{2}{8}$ इंच ढकनकी ऊँचाई८सब मिलकर २ इंचका फासिला था उसमें पिष्टी रखकर ऊपरसे २तोल गंधककी पिष्टी जो जँभीरीके रसमें घोटकर बनाईगई थी खूब जमाकर ऊपर शकोरेसे मुंह बंद कर भस्म मुद्रासे (जो लकडीकी राख और समान सैंधवसे जलके साथ घोट बनाई गई थी) संधि बंद कर सुखा दियागया।

१०। ३ आज इष्टिकायंत्रको गढेमें रख ऊपर एक इंच रेतदे सवा सवासेर आरने कंडोंकी ५ आंच दीगई, घंटे घंटेभर पीछे तीसरे पहर खोलागया तो गंधक जलकर काली पडगई थी और बजाय कटोरी ढक्कन नुमा होनेके सीधी रोटीसी होगई थी और तोलमें २) भरकी जगह १=) भर रहगई थी, टिकिया तोडनेसे ऊपर बिलकुल काली और नीचे करीब आधीके कुछ सुरखी मायलकाली थी। आंचपर रखनेसे थोडा धुआं और कुछ लौभी देती थी, जिससे माळूम होतीहै कि गंधकमें अभी कुछ जान बाकी है।

पारदपिष्टीकी गंधक भी कुछ जलगई क्योंकि अब पिष्टी नरम नहीं रही आगे आंच इससे कम होनी चाहिये।

११।३ आज फिर २ तोले गंधकको जंभीरीमें घोट पारद पिष्टीपर ढक बंद कर सुखा दिया गया। (दोपहर बाद होलीकी छुट्टी रही)

१२।३ आज उसी तरह १ आंच १ सेरकी और ३ आंच सँवा सवासेरकी दीगई (दोपहरसे छुट्टी रही)

१३।३ आज खोलागया तो गंधक पहलेसे कुछ अधिक जलीहुई १–) भर निकली आगे गंधक इससे कम जलनी चाहिये, इस बार पहलेसे थोडी आगमें ज्याद: जलनेका कारण यह माळूम होताहै कि बंद करे पीछे १ दिनतक रक्खे रहनेसे जँभीरीका रस खुश्क होगया हो इससे आंचका असर अधिक पहुंचा। आगेसे आंच उसी दिन लगे और इतनी ही लगे।

पारदपिष्टी ऊपरसे कुछ जलीसी जानपडी थी इस लिये शुबहा हुआ कि पारद उडकर घट तो नहीं गया, इस कारण पिष्टीको निकाल तोलागया तो १०।) भर हुई। इतनी ही रक्खी थी इससे ज्ञातहुआ कि पारद क्षय नहीं हुआ लेकिन निकालनेमें पिष्टी टूटगई पिष्टीकी दशा कहीं कुछ ढिम्मासा और कुछ मिट्टीसी थी, पिष्टीमें देखनेसे कहीं कहीं पारा छुटाहुआ मिला सब पारा ।।) भर या १) भर पिष्टीसे पृथक् होगया होगा। आगेसे पिष्टीमें या तो गंधक अधिक पडे या आंच कम लगे।

१३।३ आज फिर पिष्टीके ढेले और रेत और घुटे पारदको यन्त्रमें रख ऊपरसे ६ माशे पिसी गंधकसे ढक एकसा कर ऊपरसे जंभीरीमें घुटी २।।) तोले गंधककी टिकिया ढक बंदकर १ सेरकी एक आंच और १। सेरकी ३ आंचें दीगई।

१४।३ आज खोलागया तो गंधक ।।।≡) भर निकली और अन्य दिनसे ज्याद: जलीहुई थी शायद गर्मी बढती जाती है इससे आंच अधिक असर करती है आगेसे आंच और कम दीजानी चाहिये।

१४।३ आज फिर ३ तोले गंधककी पिष्टी जंभीरी रससे बना ऊपरसे रख बंद कर १ आंच ऽ।।। की और फिर ३ आंचें सेर सेरभरकी दीगई।

१५।३ आज खोलागया तो १०।।) भर पारा कुछ ढेलेसे कुछ चूरासा कुछ पारेके रवे निकले ।। –) भर गंधक जलाहुआ निकला, गरमी बढनेसे आंच और लगनी चाहिये।

इस पारदपिष्टीमें समान गंधक जारण होचुका और पिष्टीमें अधिक अग्नि लगजानेसे पिष्टी टूट गई है इस लिये इसको यही छोड दियागया १०।।) भर है।

इष्टिकायंत्रद्वारा गंधक जारणका अनुभव चौथी बार।

१५।३।०६ साधारण शुद्ध पारद (२९ तोलेमेंसे जिसमें से पहले भी ९।३ को १० तोले लियागया था) मेंसे फिर१० तोले पारद लेकर शुद्ध गंधक पिसी हुईकी चुटकी दे दे तप्त खरलमें घोटागया दृढतासे दो आदमियों द्वारा निरंतर तौ २। घंटेमें ।।।) भर गंधक पडकर पिष्टी तय्यार होगई यह पिष्टी पहली पिष्टीसे कुछ कडी थी और ठीक थी आगेसे इतनी ही गंधक पडनी चाहिये। पिष्टीका पूरा अनुभव होगया। पिष्टीकी तोल १०।।) भर हुई।

१६।३ आज इष्टिकायंत्रको साफकर, शकोरे बदल, सीपकी कलईसे लेपकर, पारद पिष्टीको रख, ऊपरसे जँभीरीके रसमें पिसी २।।) भर शुद्ध गंधक रख शकोरेसे ढक उपरोक्त रीतिसे बनी भस्ममुद्रासे बंदकर आध आधसेर की ४ आंच दीगई । थपे कंडोंकी घंटे घंटे भर पीछे (घंटेभरतक आध सेरकी आंच ठहरती है यह मैंने खुद देखा) इष्टिकायंत्रके गढेमें रख १ इंच रेतदे पहली तरहसे ही आंच दी गई थी।

१७।३ आज खोलकर देखागया तो ३ भाग गंधक ऊपर जलकर कोयला होगई थी और चौथाईके करीब नीचे कच्ची रहगई थी अबकी बार आंच कुछ कम रही आगेसे आरने कंडोंकी आध आध सेरकी ५ आंचें दीजावें । छुटानेसे काली गंधक आसानीसे छुटकर निकल आई और तोलमें ।।।) भर हुई नीचेकी पीली गंधक छुटानेसे नहीं छुटी आर जोरसे छुटानेसे उसकी डलीके संग पारदपिष्टीका अंश भी चिपटाहुआ आता था इस लिये नहीं छुटाई,पारदपिष्टी नीचे ठीक थी उसमेंसे पारदके रवे नहीं छुटे थे जैसे कि पहले अधिक आंच लगजानेसे छुटजाते थे।

यंत्रपर भस्ममुद्रा बडी दृढ रहती है कहीं संधि नहीं पडती न मकानमें जहां आंच दीजाती है गंधकके जलनेकी गंध आती है इससे गंधकका अन्तर्धूम जारण होना सिद्ध है।

(१)

१७।३ आज फिर २।।) भर गंधकको जँभीरीके रसमें घोट ऊपर दे--संपुटकर ९–९ छटांककी ५। आंचें दीगईआरने कंडोंकी ।

१८।३ आज खोलकर देखागया तो गंधक ठीक जलगई थी तोलमें १।≈) भर निकली (कुछ गंधक जो पहले

पुटमें बाकी रहगई थी अबकी बारमें छुटगई इस कारण तोल अधिक हुई) किन्तु एकतरफ कोई ॥) भर पारा छुटा हुआ मिला जो जुदा कर लियागया ५ आंचें ज्यादे रहीं ४ ही काफी होंगीं ।

(२)

१८।३ आज फिर २॥) भर गंधकको उसी प्रकार ९–९ छटांककी ४ आंचें दीगई ।

१९।३ आज देखा गया तो गंधक ठीक जलीथी १ –) भर तोलमें हुई–जो सब काली पडगई थी–यह आंचें ठीक रहीं आरने कंडोंकी ।

(३)

१९।३ आज फिर २॥) भर गंधक निम्बूद्रवार्द्रको उसी प्रकार ४ आंचें दीगई ९–९ छटाककी आरने कंडोंकी ।

२०।३ आज खोलागया तो गंधक सब जलगया ॥–) भर हुआ आज गंधक निःशेष जलगया–आगे आंच कुछ कम करनी चाहिये–अब पारद पिष्टी कालीसी पडगई है ।

(४)

२०।३ आज फिर २॥) भर गंधक निम्बूद्रवार्द्रदे आध आधसेरकी ४ आंचें दीगई २१।३ आज निकालकर देखा तो गंधक कम जली थी १ –) भर तोलमें हुई–कारण इसका कुछ आंचमें कमी–कुछ बादलका होना–कुछ वायु तीव्र चलना–कुछ रस नीबूका अधिक पड जाना हुआ ।

(५)

२१।३ आज फिर २॥) भर गंधक निंबूद्रवार्द्र दीगई ९--९ छटांककी ४ आंचें दीगई २२।३ को ॥ – भर गंधक निकली–यह ठीक जलीथी–और यह आंच ठीक थी किन्तु आजकल मेघ और वायुहै--अधिक ऊष्मामें आध सेरकी आंच ही ठीक होगी ।

(६)

२२।३ आज फिर २॥) भर गंधक दीगई ९--९ छटांककी ४ आंच दीगई २३।३ आज गंधक ।॥) भर निकला । यह ठीक निश्चय नहीं हुआ कि कभी ॥) भर और कभी १) भर गंधक क्यों निकलताहै ।

(७)

२३।३ आज फिर २॥) भर गंधक दीगई–दस दस छटांककी ४ आंचें दीगई--२४।३ आज गंधक ॥≡ भर निकला मगर कुछ रवे पारेके भी जो ।) भर होगा छुट गये थे–कल वर्षा भी होती रही थी ठंढ भी थी फिर भी यह आंच तेज रही आगेसे १० छटांककी आंच हरगिज न दीजावे ।

(८)

२४।३ आज फिर २॥) भर गंधक दीगई ८–८ छटांककी ५ आंचें दीगई २५।३ खोला गया तो ॥) भर गंधक निकली जो बिलकुल काली और जली हुई थी कुछ पारा आज भी छुटगया जो –) भर होगा । आंच यह भी अधिक रही आगे ४ आंचसे ज्यादः न दीजावें और ९ छटांकसे ज्यादः और ८ छटांकसे कम आंच न दीजावे ।

(९)

२५।३ आज २॥) भर गंधक दे ९–९ छटांककी दो आंचें और ८–८ छटांक की दो आंचें दीगई ।

२६।३ आज खोलागया तो गंधक ॥) से कम बिलकुल जलीहुई निकली कुछ पारा छुट भी गया । अब भी अग्नि अधिक रही ।

(१०)

चूंकि ढाईगुनी गंधक जारित होचुकी इस लिये इसको यही खतम कियागया पिष्टी निकालकर तोली गई तो १०) भर हुई ॥) भर पारा हुआ जो बीचमें निकला था सब १०॥) भर मौजूद था इतना ही रक्खा गया था । रंगत इसकी काली थी सुरखी नहीं थी हिंगुल इससे बनेगा या नहीं इसमें संशय है पहले भी अधिक अग्नि देनेसे बना था।

फल ।

इस प्रकारके यंत्रके ऊपर १ अंगुल रेत रहना ठीक है और ऊपर आध सेरकी ४ आंच ठीक है इसमें २॥) भर गंधक जलजातीहै गंधक जलनेपर $\frac{१}{३}$ वजनमें रहजाती है ।

इष्टिकायन्त्रद्वारा गन्धकजारणसंस्कृत पारदपर ।

२८।३।०६ चैत्रसुदी बुधवार १६) भर संस्कृत पारदको १) भर शुद्ध गंधक चूर्णके साथ थोडा २ गंधक डाल तप्त खल्वमें घोटागया तो २। घंटेमें पिष्टी होगई १६।॥) भर पिष्टीकी तोल हुई ।

२९।३ इष्टिकायंत्रमें पहलेकी भांति मोटा चराग (गढा छोटा करनेके लिये) लगा भस्ममुद्रासे संधि बंद कर दीगई गहराई खांचा छोडकर (पहलेसे कुछ ज्यादा) १॥ इंच रही । इसमें पारदपिष्टी सीधी रखकर ( ) ऊपरसे ४ तोले (एक बारकी शुद्ध) गंधक जंभीरीके रसमें घोटे ऊपर रख दीगई कुछ थोडासा रस और भी टपकादिया । ऊपरसे शराबसे बंद कर भस्ममुद्रा कर दीगई ४ घंटे सूखनेके बाद गड्ढेमें रख ऊपर १ इंच रेत दे आध आध सेरकी ४ आंचें दीगई घंटे घंटेभर पीछे ।

३० । ३ आज खोलकर देखा गया तो कुछ अंश गंधकका जलकर काला पडगया और फूल गया था जो तोलमें ।॥=) भर हुआ और करीब आधेके गंधक पिघलकर पीला जमाहुआ रहगया । कुछ तो गहराई गड्ढेकी ज्यादः थी, कुछ गंधककी तोल ज्यादः थी कुछ रस जंभीरी ज्यादः पडा इससे गंधक ठीक न जला ।

[१ (४ तोले)]

३०-३१ । ३ आज फिर ३ तोले गंधक उसी प्रकारदे (१॥ या २ भर पहला भी रह गया था) बंद कर आठ आठ छटांककी ५ आंचें दीगई तो खोलनेपर ३ तोले गंधक ऊपरका तो करीब २ जलगया था और पहला गंधक तोले भर बाकी होगा । गंधक तोलमें १।=) भर निकला यह पूरा जला नहीं था । आगे आंच अधिक लगे ।

[२ (३ तोले)]

३१-१ । ४ आज फिर ४ तोले गंधक नीबूद्रवार्द्र उसी प्रकारदे (१) भर पहला भी रहगया था) बंद कर ९-९ छटांककी ५ आंचें दीगई तो गंधक सब जलकर पारद पिष्टीसे बिलकुल जुदा होगया । अबकी बार गंधक निःशेष जलगया और तोलमें ।=) भर रहगया पारद पिष्टी

ज्योंकी त्यों रही गंधक जलकर बिलकुल काली और हाथके मलनेसे कडी राखसी होगई थी। पहली दोनों बारकी गंधक कच्ची रहगई थी जो जलकर छुटगया था उसमें भी पीलापन रहा था।

[३ (४ तोले)]

१-२।४ आज फिर ४) भर गंधक दीगई और ९-९ छटांककी ४ आंचें दीगई तो गंधक ठीक जला हुआ ।=) भर निकला यह आंच ठीक रही।

[४ (४ तोले)]

२-३।४ आज फिर उसी तरह ४ तोले गंधक दीगई और ९-९ छटांककी४ आंचें दीगई! खोलनेपर गंधक चौथाईके करीब ऊपर जलाहुआ मिला बाकी ३/४ के करीब बिलकुल बेजला पीला पिघलकर जमाहुआ मिला। समझमें नहीं आया आज क्या हुआ। गालिबन नोकरोंकी बेअहतियातीसे आंच ठीक नहीं लगती रेत जो गढेपर दियाजाताहै उसकी खराबी शकोरे मोटे पतलेकी खराबी होजाती है।

[५ (४ तोले)]

३-४।४ आज बाकी बची गंधकके ऊपर १) भर गंधक और देकर ९-९ छटांककी ४ आंचें दीगई खोलनेपर सब गंधक जलगई सिर्फ ।) भर काली जलीहुई मिली।

[६ (१ तोले)]

४।४ आज फिर ४) भर गन्धक दे ९-९ छटांककी ४ आंचें दीगई। खोलनेपर आधी गंधक जली जो =)॥ भर हुई बाकी ज्योंकी त्यों पीली बेजली मौजूद रही (जहांतक समझमें आता है इस न जलनेका कारण यह है कि गंधकको निकलनेका मौका नहीं मिलता है तब बेजली रहजाती है)

५-६ तारीखको सिकंदरे जानेके कारण काम बंद रहा।

[७ (४ तोले)]

७।४ आज फिर (कुछ गंधक पहला बाकी था इस लिये) २) भर गंधक और दे ९-९ छटांककी ४ आंचें दीगई खोलनेपर ॥) भर गंधक निकली आज बहुतसा हिस्सा गंधकका बिलकुल जलगया था और थोडी गंधक ज्यादः कच्ची पीली रहगई थी।

[८ (२ तोले)]

८।४ आज फिर ४) भर गंधक उसी प्रकार निम्बूद्रवार्द्र दे ९-९ छटांककी ४ आंचें दीगई तो गंधक बिलकुल निःशेष जलगया। एक काली तबकीसी चमकदार बिलकुल जुदा निकली। जो तोलमें =) भर हुई। इष्टिकायंत्रको साफ करनेमें पारदपिष्टी भी निकल पडी नीचे कुछ रवे पारेके भी थे पारदपिष्टी तोलमें १६।॥) भरके करीब थी इतनी ही रक्खी थी अबकी दफे कुछ आंच ज्यादः लगी।

[९ (४ तोले)]

८।४ दूसरा भाग और आरम्भ करदिया गया २० तोले पारद संस्कृतको १=) भर शुद्ध और सँहजनेके रससे भावित गंधक थोडा २ दे तप्त खल्वमें दो आदमियों द्वारा दृढतासे घोटा गया तो मामूली समय २ घंटे बीतजानेपर पिष्टी न बनी फिर विचारागया तो खरलकी गर्मी कुछ कम पाई-उस गर्मीको इतना बढाया कि हाथ न जलनेपावे और खूब कडी घुटाई कराई तब पिष्टी बनी और वह पिष्टी कडी अधिक होगई तब २) भर पारद और मिलाकर पिष्टी ठीक कीगई अबकी बार पिष्टी देरसे बननेके ये कारण जान पडे-

(१) पारद और बारसे अधिक था और शास्त्रमें पहर भर ही लिखाहै पहरभरमें ही अबकी पिष्टी बनी पहले थोडे पारदका जल्दी काम होजाता था।

(२) खल्व पूर्ण तप्त नहीं रक्खा गया पूरा गर्म रखना बहुत आवश्यक है।

(३) अबकी बार गंधक जल्दी २ डाल दीगई जिससे वह ठीक खरलमें इधर उधर रही मर्दनमें ठीक न आई। गंधक बहुत थोडी २ पडनी चाहिये।

पिष्टी तोलमें २१=) भर हुई और १) भर चूरासा जुदा हुआ सब २२=) भर हुआ—होना चाहिये था२३=) भर इसलिये अबकी बार १) भर पारद अवश्य छीजगया पिष्टी ठीक नहीं बनी इस लिये फिर घोटी जावे।

९।४ आज फिर पिष्टीको तप्त खल्वमें घोटा गया तो पारद पिष्टीसे छुटकर जुदा होगया पारद ९॥) भर हुआ-और १२॥) भर कज्जली हुई सब २२) भर हुआ यानी पारेका वजन रहा १।) भर गंधकका वजन छीज गया मालूम हुआ कि एक बार ही पिष्टी तय्यार होसक्तीहै दुबारा नहीं यह पारद संस्कृत पारदमें मिला दियागया।

कज्जलीको आगे १०।४+११।४ में इष्टिका यंत्र में आंच दीगई अधिक कड़ा हो. जानेसे आगे आंच देना बंद रहा १३।) भर तोले इस कज्जलीके ढिम्मेकी होगई वह जुदा रखदिया गया इस १३।) भर में २।-) भर गंधक इष्टिकायंत्र जारणसे मिलकर सब तोल १५॥) भर होगई.

उपरोक्त कज्जलीसे पारदका उत्थापन

बहुत दिन रक्खी रहनेके बाद आज ता० ३।२।१९०९. को उक्त १५ तोले ६ माशे संस्कृत पारद गंधककी कज्जली को (जिसमें १२॥) तोलेके करीब पारा और ३ तोले के करीब गंधक था) लोह खल्वमें बारीक पीस लोहेके डौरूमें (जो देहलीसे बनवाकर मंगाया गया था) भर भस्म मुद्रासे बंद कर कपरोटीकर सुखादिया ता० ४-२ को ८ बजेसे मंदाग्नि देना आरम्भ किया डौरूके ऊपर भीगा कपडा डाला गया ४ बजे डौरूकी मिलानकी संधिमें हो-पिघला हुआ गंधक निकलने लगा जिसकी बूंद आंचपर लौ और गंध देती थी अतः एव काम बंद कर डौरूको उतार रखदिया।

ता० ५ को खोला तो बडी कठिनतासे खुला। खुलजाने पर देखा तो डौरूके मिलानकी संधिमें पीले रंगका गंधक जमकर चारों तरफ भरगया था और इसी कारण जिकडगया था। ऊपरके पात्रमें पृथक् रूपसे कुछ भी पारा न था किन्तु मूर्छित पारद काले रंगका जमा हुआ था और नीचेके पात्रमें १४ तो० १ मा० कज्जलीका चूर्ण मौजूद था। डौरूके किनारोंपरसे खुरच निकाललिया जो तोलमें ३ माशे १ रत्ती हुआ। ऊपरके डौरूमें जो पदार्थ उडकर लगा था उसको वैसा ही रहने दिया। और नीचेके डौरूमें जो चूर्ण निकला उसको जोंकातों फिर भर डौरूको बंद कर दिया।

ता० ७ को ८ बजेसे अग्नि देना आरम्भ किया ३॥ बजेपर ऊपरके डौरूके बंद की संधिमें हो गंधक निकलनेका चिह्न द्रवरूपमें दीखपडा जो थोडी देर बाद सूखगया किन्तु गंधककी गंध आती रही। रातके १० बजेतक अर्थात् १४ घंटे अग्नि दे डौरूको ज्योंका त्यों चूल्हेपर रक्खा छोडदिया।

ता० ८ को खोला तो (पहलो सी ही कठिनतासे खुला) डौरूके मिलानकी संधिमें पहलीवारकासा ही पीले रंगकी गधक भराहुआ था, जिसको खुरच तोला तौ ३माशे हुआ ऊपरके पात्रकी पेंदीमें कुछ पृथक् रूपमें पारा अबकी बार भी न था केवल५ माशे ४ रत्ती मूर्च्छित पारद गधंक जमाहुआ था जिसकी रङ्गत नीचे काली और ऊपर से कुछ पीलाई लिये थी नीचेके पात्रकी पेंदीमें एक ओरको काले रंगकी चमकदार गंधक पारदकी कज्जली ऊपरसे बहकर जमगई थी जो तोलमें ४ माशे ३ रत्ती थी और १२ तोले ८ मा० अवशेष गंधक पारदका चूर्ण मौजूद था अर्थात् सब १४ तोले वजन निकला १॥ तोले घटा।

अब इस भांति १४ तोले पदार्थ मौजूद है—

(१) नीचेके पात्रका अवशेष पारद कज्जली चूर्ण १२ तोले... ... ... ८ मासे
(२) नीचेके पात्रमें बहकर आई पारदपर्पटी. ४मा.३र.
(३) ऊपरके पात्रमें उडकर लगी गंधक जिसमें पारदका बहुत थोड़ा ही अंश होगा...५ मा. ४ र.
(४) डौरूके जोडसे दो बारमें निकली केवल गंधक... ... ... ६ मा. १ र
जोड १४ तोले

दूसरी आंच।

ता० ३ को उक्त १३ तोले ६ माशे ७ रत्ती पारद गंध कको (जिसमें १२ तोले ८ माशे नीचेके पात्रका अवशेष पारद कज्जलीचूर्ण ४ माशे ३ रत्ती नीचेके पात्रमें बहकर आई पारद पर्पटी ५ मा. ४ रं. ऊपरके पात्रमें उडकर लगी गंधक थी।)डौरूमें भर भस्ममुद्रासे बंद कर कपरौटी कर सुखादिया।

ता० ४। ५ को ६ बजेसे रातके १० बजेतक मृदु मध्यमाग्नि दे डौरूको ज्योंका त्यों चूल्हेपर रक्खा छोडदिया।

ता० ५ को डौरूको खोला तो ऊपरके पात्रकी पेंदीमें थोडासा पारद गंधक जम रहा था जिसको ज्योंकात्यों जम रहने दिया पात्रकी रंगत काली होरही थी पारद निज रूपमें बिलकुल पृथक् न हुआ नीचेके पात्रमें १२ तोले ६ माशे अवशेष पारद गंधकका चूर्ण था।

तीसरी आंच।

ता० ५ को उक्त १२ तोले ६ माशे पारद गंधकके चूर्णको डौरूमें (जिसके ऊपरके बडे पात्रको नीचे और नीचेके छोटे पात्रको ऊपर बदल दिया था) भर भस्ममुद्रासे बंद कर कपरौटी कर सुखादिया।

ता० ६ को ६बजेसे रातके १० बजेतक १६ घण्टे आंच दे डौरूको ज्योंकात्यों चूल्हेपर रक्खा छोडदिया।

ता० ७ को खोला तो ऊपरके पात्रमें इधर उधर श्यामता थी और ऊपरके पेंदेमें सुनहरी झलकयुक्त सफेद रंगत थी पारद निज रूपमें कुछ भी न दीखपडा ऊपरके डौरूको खुरच देखा तो जानपडा कि पारद गंधक डौरूमें सब ओर कृष्ण हिंगुल रूपमें जमा हुआ है जिसे ज्योंकात्यों रहने दिया नीचेके पात्रमें ११ तोले ६ माशे पारद गंधकका चूर्ण शेष रहा।

चौथी आंच।

ता० ७ को उक्त ११ तोले ६ माशे पारद गंधकके चूर्ण को डौरूमें (जिसके छोटे पात्रको फिर नीचे और बडेको ऊपर करलिया था) भर भस्ममुद्रासे बंद कर कपरौटी कर सुखादिया।

ता० ८ को ७ बजेसे १० वजे राततक १५ घंटे आंच दे रातको काम बंद रक्खा।

ता० ९ को फिर ७ वजे सबेरेसे १० बजे राततक १५ घंटे आंच दी।

ता० १० को ७ बजे सबेरेसे १० बजे राततक १५ घंटे आंच दी अर्थात् ३ दिनमें १५ प्रहर आंच लगी।

ता० ११ को खोला तो ऊपरके पात्रमें श्यामता थी पारद निज रूपमें कुछ न दीखता था किन्तु पात्रकी पेंदीके खुरचनेसे ६ रत्ती पारा निकला इधर उधर थोडा खुरचा तो और पारा छुटता न देखा अत एव बाकी डौरूको इधर उधर और न खुरचा नीचेके पात्रमें १० तोले ८ माशे पारद गंधकका चूर्ण शेष रहा जिसमें कडी २ पपडियांसी पडगई थीं जिससे जानपडता था कि अब गंधकका अंश कम रहगया है।

पांचवीं आंच।

ता० ११ को उक्त १० तोले ८ माशे पारद गंधकके चूर्णको कुछ पपडी पडजानेके कारण बारीक पीस डौरूमें भर भस्ममुद्रासे बंद कर कपरौटी कर सुखादिया।

ता० १५ को ६ बजेसे निरंतर मृदु मध्यमाग्नि देना आरम्भ किया।

ता० १८ के सुबह ६ बजेतक अर्थात् ३ दिनरात निरंतर अग्नि दे डौरूको ज्योंकात्यों रक्खा छोडदिया। ३ बजे खोला तो करीब १॥ तोलेके पारा स्वतः पृथक् हुआ नीचेके पात्रमें निकला ऊपरके पात्रके पेंदेके खुरचनेसे जो करीब १ तोले राख निकली उसके मलनेपर करीब ६ माशेके पारा निकला और ५ माशे ४ रत्ती बारीक चिकनी भारी राख रही। नीचेके पात्रमें अवशेष चूर्ण ७ तोले १ माशे रहा। ऊपर नीचेके पात्रके खुरचनेसे ऊपरके पात्रमेंसे ३ माशे ४ रत्ती पपडियोंकासा चूरा निकला और नीचेके पात्रमेंसे १ माशे ४ रत्ती दरदरी कत्थई रंगकीसी राख निकली अर्थात् सब २ तोले २ रत्ती पारा और ७ तोले ११ माशे ४ रत्ती चूर्ण मिलाकर ९ तो० ११ मा० ६ र० वजन हाथ लगा ८ माशे २ रत्ती घटा।

विचार—आदिमें पारद गंधक १५ तोले ६ माशे था जिसमें १२॥ तोले पारदका अनुमान कियागया था अबतक केवल २ तोले १ माशे पारा हाथ आया है और ७ तोले ११ माशे ४ रत्ती चूर्ण शेष है, दोनों मिलाकर १० तोले

करीब हुआ इसके अतिरिक्त केवल ६ माशे १ रत्ती गंधकका चूर्ण और है अत एव जानपडता है कि २-३ तोले पारा अवश्य क्षय होगया ।

लोहेका डौरू है जो भस्ममुद्रासे और कपरौटीसे बंद किया जाता है इसलिये इसके सिवाय और कुछ नहीं खयाल किया जासक्ता कि पारद जीवगतिसे लोहेमें प्रवेश करगया ।

छठी आंच ।

आदिमें पारद गंधक १५॥ तोले था जिसमें १२॥ तोले पारदका अनुमान कियागया था किन्तु अबतक ५ प्रहर आंच लगचुकनेपर केवल २ तोले १ माशे ही पारा हाथ लगा जिससे सिद्ध हुआ कि गंधक पारदको अबतक नहीं छोडता अत एव उक्त ७ तोले ११ माशे ४ रत्ती पारद गंधकके चूर्णको पीस डौरूमें भर अंगरेजी कैमिस्ट्रीके अनुसार ५ तोले वे बुझे चूनेके झरबेरके बराबर छोटे छोटे टुकडे उक्त चूर्णमें ऊपर बिछादिये गये इस लिये कि गंधक पारदको छोड चूनेमें मिलजावे ।

आज ता० १९ को फिर भस्ममुद्रासे बंद कर कपरौटी कर सुखादिया ।

ता० २० को ६ बजेसे रातके ९ बजेतक मृदु मध्यमाग्नि दे डौरूको ज्योंका त्यों रक्खा छोडदिया ।

ता० २१ को खोला तो ११ माशे ३ रत्ती पारा स्वतः पृथक् हुआ नीचेके पात्रके चूर्णमें मिला निकला ऊपरके पात्रकी तली खुरचनेसे निकली ९ रत्ती राखके मलनेसे ५ रत्ती पारा और निकला ४ रत्ती उक्त राख रहगई नीचेके पात्रका अवशेष चूर्ण ४ तोले २ मा० ६ रत्ती रहा चूनेको जो तोडनेमें कठिन होगया था तोला तो ७ तोले ४ मा० हुआ अर्थात् २ तो ४ माशे बढगया । इस भांति सब १ तोले पारा ४ तोले २ माशे ६ रत्ती अवशेष चूर्ण २ तोले ४ माशे चूनेकी वृद्धि सब ७ तोले ६ माशे ६ रत्ती वजन हाथ आया-रक्खा गया था ७ तोले ११॥ माशे घटा ५ माशे।

सातवीं आंच ।

ता० २२ को उक्त ४ तोले २ माशे ६ रत्ती गंधक पारदके चूर्णको डौरूमें बिछा उसपर उक्त ७ तोले ४ माशे चूना जिसके चनेसे टुकडे करालिये थे बिछा भस्ममुद्रासे बंद कर कपरौटी कर सुखादिया ।

ता० २३ को६ बजेसे रातके ८बजेतक १४ घंटे आंच दे डौरूको ज्योंकात्यों चूल्हेपर रक्खा छोडदिया ।

ता० २४ को खोला तो १० माशे ५ रत्ती पारा स्वतः पृथक् हुआ नीचेके पात्रकी राखमें मिलाहुआ निकला । नीचेके पात्रका अवशेष चूर्ण २ तोले २ माशे हुआ । चूनेको तोला तो ११ माशे बढगया । इस प्रकार १० माशे ५ रत्ती पारा, २ तोले २ माशे शेष चूर्ण, ३ तोले ३ माशे चूनेकी वृद्धि सब ६ तोले ३ माशे ५ रत्ती वजन हाथ आया । रक्खा गया था ६ तो० ६ मा० ६ र० । घटा ३ माशे १ रत्ती ।

आठवीं आंच ।

ता० २४ को उक्त २ तोले २ माशे गंधक पारदके चूर्णको डौरूमें बिछा उसपर उक्त ८ तोले ३ माशे चूनेके कुछ और छोटे २ टुकडे कर बिछा भस्ममुद्रासे बंद कर कपरौटी कर सुखादिया ।

ता० २५ को ६ बजेसे निरंतर मृदु मध्यमाग्नि देना आरम्भ किया और अबकी बार डौरूके ऊपर भीगा कपडा रक्खा ।

ता० २७ के सबेरे ६ बजेतक अर्थात् २ दिनरात अग्नि दे डौरूको ज्योंकात्यों छोडदिया गया । ३ बजे खोला तो स्वतः पृथक् हुआ पारद कुछ न निकला ऊपरके पात्रके खुरचनेसे १ तोले ६ माशे ७ रत्ती राख निकली जिसके मलनेपर १ तोले १ माशे ५ रत्ती पारा निकला । ५ माशे २ रत्ती राख रहगई नीचेके पात्रका अवशेष चूर्ण २ तोले ८ माशे हुआ । चूनेको तोला तो ५, तो० ४ माशे हुआ । इस भांति १ तो० १ मा० ५ र० पारा, ५ माशे २ र० राख, २ तो० ८ माशे अवशेष चूर्ण, ४ माशे चूनेकी वृद्धि, सब ४ तोले ६ माशे ७ रत्ती वजन निकला और रक्खा गया था ५ तोले ५ माशे घटा १० माशे ५ रत्ती

ता० २८ को उक्त डौरूको और डौरूके पेंदेसे निकली ५ माशे २ रत्ती राखको नींबूरससे धो सुखा पारा निकाला तो एक दो बाजरासाँ रवा निकला । सूखी राख १० माशे हुई जिसे उक्त अवशेष २ तो० ८ माशे चूर्णमें मिला दियागया ।

नववीं आंच ।

ता० ३० को उक्त ३ तोले ६ माशे अवशेष चूर्ण और ५ तोले ४ माशे चूना कुल ८ तोले १० माशे वजनको (जिसमें ५ तोले चूनेके वजनको काटकर ३ तोले १० माशे (वा ३ तोले ४ माशे ६ रत्ती) पारद गंधकका चूर्ण समझना चाहिये) उपरोक्त रीतिसे डौरूमें बिछा भस्ममुद्रासे बंद कर कपरौटी कर सुखादिया ।

ता० ।१=५ को६ बजेसे रातके ९ बजेतक१५ घंटे आंच दे डौरूको ज्योंका त्यों छोडदिया ।

ता० २।५ को खोला तो स्वतः पृथक् पारद कुछ न था, ऊपरके पात्रकी पेंदी खुरचनेसे ७ माशे ७ रत्ती राख निकली । जिसके मलनेपर ६ माशे ३ रत्ती पारा निकला, १ माशे ४ रत्ती राख रहगई । नीचेके पात्रमें अवशेष चूर्ण ३ तोले ७ माशे और चूना ५ तोले ४ माशे निकला । अर्थात् कुल वजन ८ तोले ६ माशे ७ रत्ती निकला। रक्खागया था ८ तोले १० माशे घटा ३ माशे १ रत्ती ।

दशवीं आंच ।

ता० २।६ को उक्त १ माशे ४ रत्ती राख, ३ तोले ७ माशे अवशेष चूर्ण और ४ तोले ४ माशे चूना सब ८ तोले ४ रत्ती वजनको (जिसमें ३ तोले ४ रत्ती वा २ तोले ७ माशे २ रत्ती पारद गंधकका वजनहै) मिला पीस डौरूमें भर भस्ममुद्रासे बंद कर कपरौटी कर सुखादिया ।

ता० ३ को ६ बजेसे रातके ९ बजेतक १५ घंटे आंच दे डौरूको छोडदिया ।

ता० ४ को खोला तो स्वतः पृथक् पारद कुछ न निकला । ऊपरके पात्रकी पेंदी खुरचनेसे ९ रत्ती राख

निकली जिसके मलनेपर ५ रत्ती पारा निकला और ४ रत्ती राख रहगई । नीचेके चूना मिश्रित पारद गंधकके चूर्णके मलनेसे १ तोले पारा निकला अवशेष चूनामिश्रित चूर्ण ६ तोले १० माशे रहा। इस भांति सब १ तोले ५ रत्ती पारा ४ रत्ती राख ६ तोले १० माशे अवशेष चूनामिश्रित चूर्ण मिलाकर सब ७ तोले ११ माशे १ रत्ती वजन हाथ लगा रक्खागया था ८ तोले ४ रत्ती घटा १ माशे ३ रत्ती चूनेके वजनको छोड १ तोले ५ माशे २ रत्ती पारद गंधकका वजन है इस ६ तोले १० माशे ४ रत्ती अवशेष चूर्णको पानीमें घोल रकाबीमें रख धूपमें सुखादिया ।

ता० ५ । ६ को उसका पानी सूखजाने पर नीचे जमी चूनामिश्रित पारद गंधककी मोटी पापडीको तोडा तो उसमें जहां तहां ४–६ पारेके रवे चमकते थे गीला समझ और सूखने दिया ।

ता० ६ को उस चूर्णकी पापडीको तोड मला तो ४–६ राईसे रवे पारेके निकले जिन्हें पृथक् करलिया और उस चूर्णको फिर सुखादिया ।

ता० ९ को उक्त चूर्णको तोला तो ७ तोले ५ माशे ४ रत्ती हुआ अर्थात् ७ माशे अधिक हुआ जिसका कारण कदाचित् पहली तोलका अंतर होगा ।

ग्यारहवीं आंच ।

ता० ९ । ६ को उक्त ७ तोले ५ माशे ४ रत्ती चूना मिश्रित चूर्णको डौरूमें भर भस्ममुद्रासे बंद कर कपरौटी कर सुखादिया ।

ता० १० को ६ बजेसे रातके ९ बजेतक १५ घंटे आंच दे डौरूको ज्यों का त्यों छोडदिया ।

ता० ११ को खोला तो स्वतः पृथक् पारद कुछ न निकला किन्तु नीचेके चूना मिश्रित चूर्णके मलनेसे ५ माशे ४ रत्ती पारा निकला रक्खा गया था ७ तोले ५ माशे ४ रत्ती घटा १ माशे ४ रत्ती डौरूके खुरचनेसे ऊपरके पात्रमें १ माशे ३ रत्ती और नीचेके पात्रमें ३मा० ६ र० सब ५ मा १ र० और निकली जिसे उक्त चूर्णमें मिलादेनेसे ७ तोले ३मा० ५र० वजन होगया ।

ता० १२ को उक्त डौरूको नीबूके रससे खूब घोटा-गया और चूंकि नवीं और दसवीं आंचके उपरांत डौरू खोलते समय पारद विशेषकर ऊपरको न उड नीचेके पात्रमेंही अधिक मिलता समझ इस शंकासे कि कदाचित चूर्णके बारीक और भारी होनेसे पारद चूर्णको पार न कर ऊपरको नजा नीचे ही रहजाता हो आगेके पातनके निमित्त उस घोटनके रसमें उक्त ७ तो० ३ मा० ५ रत्ती चूर्णको घोल छोटी छोटी गोलियां बना धूपमें सुखादीं ताकि पारदको ऊपर उडनेका अवकाश मिले ।

ता० १४ को उक्त गोलियोंको सूखजानेपर तोला तो ७ तोले ७ माशे हुई अर्थात् ३ मा० ३ र० तोल बढी (यह तोल शायद डौरूके धोनेसे कुछ राखके निकलनेसे बढगई होगी)

बारहवीं आंच ।

ता० १४ । ६ को उक्त ७ तोले ७ माशे गोलियोंको (जिनमें १० माशे २ र०के अनुमान पारद गंधक रहताहै) डौरूमें भर भस्ममुद्रासे बंद कर कपरौटी कर सुखादिया ।

ता० १५ को ६ बजेसे रातके ९ बजेतक १५ घंटे आंच दीगई ।

ता० १६ को खोल ऊपरके पात्रके पेंदेको खुरचा तो ४ माशे १ रत्ती राख निकली जिसके मलनेपर ३ मा० ५ र० पारा निकला और ४ रत्ती राख रहगई अवशेष चूर्णकी गोलियां ६ तोले ११ माशे रहीं अर्थात् सब ७ तोले ३ माशे १ रत्ती वजन निकला रक्खागया था ७ तोले ७ माशे घटा ३ माशे ७ रत्ती । शेष ६ तोले ११ माशे ४ रत्ती चूर्णमेंसे ५ तोले चूनेका वजन घटाकर १ तोले ११ माशे ४ रत्ती वजन रहताहै किन्तु हिसाबसे २ मा० ६ रत्ती ही आताहै । इस प्रकार इस १५॥ तोले गंधक पारदमेंसे जिसमें १२॥ तोलेके करीब पारद या १२ आंच देनेसे ७ तो०५ मा० ३र० पारा निकला जिसका सूक्ष्म विवरण प्रगट करनेके लिये नीचे नकशा दियागयहै ।

नक्शा.

तारीख	न०आंच	समय आंच	चूर्ण जो रक्खा गया.	१ पारा जो निकला	२ चूर्ण जो निकला	३ चूनेकी वृद्धि.	जोड ३ का	घटी	विशेषवार्ता–
३–७।५।०९	१	घंटे २२	तो०१५ मा०६	+	तोले १४	+	+	तो०१मा०६	प्रथम बार डौरूको बंद कर ८ घंटे आंच देनेके पश्चात् डौरूके बंदकी संधिमें हो गंधक निकलने लगा था अत एव उसे दुबारा बंद कर चढाया.
३।५।०९	२	घंटे १६	तो० १३मा०६ र० ७	+	तो०१२ मा०६	+	+	तो०१र०७	
५।५।०९	३	घंटे १६	तो०१२ मा०६	+	तो०११ मा०६	+	+	तो०१	इस बार डौरूमें जमे पारद गंधकादिको खुरचा गया. इस बार भी डौरू खुरचा न गया.
७–८–९।०९ ३ दिन	४	घंटे ४५	तो०११ मा०६	र०६	तो०१० मा०८	+	+	मा०९र०२	इस बार ३ दिन १५–१५ घंटे आच दीगई रातमें काम बंद रहा खोलनेपर डौरू न सुखा.
११–१२–१३ ३ दिनरात	५	घंटे ७२	तो०१० मा०८	तो०२ र.२	तो०७मा०११र.४	+	+	मा०८र०२	इस बार ३ दिनरात निरंतर आंच दीगई.
१९।५।०९	६	घंटे १५	तो०७मा०११र.४ (५तो० चूरा)	तो० १	तो०४मा०२र०६	तो०२मा०४	तो.७मा.६र.६	मा०४र०६	
२२।५।०९	७	घंटे १४	तो०६ मा०६र०६	मा०१०र०५	तो० २ मा० २	तो०३मा०३	तो.६मा.३र.५	मा०३र०१	डौरू ऊपर न खुरचा गया.
२४।५।०९	८	घंटे ४८	तो०५ मा०५	तो०१मा०१ र० ५	तो०३मा०१र०२	मा० ४	तो.४मा.६र.७	र०१०र०५	इस बार २ दिन रात निरंतर आंच दीगई डौरू खुरचा गया और धोया गया.
३०।५।०९	९	घंटे १५	तो०३मा०५र०२ ४–६०ख. ३–१०	मा०६र०३	तो०३मा०८र०४ ८–३ तो०३र०४ निकल गया	+	तो.३मा.६र.७	मा०३र०१	यहांतक चूनेकी पृथक तोल हुई आगेसे चूर्ण और चूना पीस मिलादिये गये,
२।६।०९	१०	घंटे १५	तो०३ र०४ (५ तो० चूना)	तो०१ र०५	तो०१मा०१०र.४ (५ चूना)	+	तो०२मा०११ र०१	मा०१र०३	इस बार पारद अधिक निकलनेका कारण यह प्रतीत होताहै कि अबतक चूनेकी.
’।६।०९	११	घंटे १५	तो०२मा०५र०४ (५ तो०चूना)	मा०५र०४	तो०१मा०१०र.४ (५ तो०चूना)		मा०र०	१–४	डेलियां रक्खी जातीथीं– परन्तु इस बार चूर्ण+चूना बारीक पीस मिलादिये गये.
१४।६।०९	१२	घंटे १५	तो०२ मा०७ (५ तो०चूना)	मा०३र०५	+	+	+	+	कोई चीज ठीक तोली न गई.
			जोड़ परेका	तो.७मा.५र.३					

(९ । ४ (*a*) आज) फिर ४) भर गंधक देकर (पहलेसे चलते हुये पारदको) नो नो छटांककी ४ आंचें दीगई तो गंधक ठीक जलाहुआ ॥) भर निकला यह आंच ठीक रही । (१० $\frac{४}{३४}$)

१० । ४ (*a*) आज फिर ४) भर गंधक भावित (गंधकको धतूरके रसमें पुनः शुद्धकर सैंजनेके रसमें ३ भावना दीगई) देकर ९-९ छटांककी ४ आंचें दीगइ ता गंधक जलाहुआ कुछ खाकी रंगका १।=) भर निकला (११ $\frac{४}{३८}$)

(ए) दूसरे इष्टिका यंत्रमें १२॥) भर पारद कज्जलीजो ९ । ४ को तयार हुई थी रख ऊपर थोडी सूखी गंधकबुरक ऊपरसे शुद्ध गंधक ३) भरकी पिष्टी दे बंद कर आठ आठ छटांक की ४ आंचें दीगई तो गंधक बिलकुल जलाहुआ बहुत थोडा निकला लेकिन गंधक जलीहुई निकालनेमें यह दिक्कत हुई कि कुछ अंश कज्जलीका उसमें चिपटा चला आताथा मुश्किलसे जलाहुआ गंधक जुदाकिया । (१ $\frac{३}{३}$) ११ । ४ (ए) ४) भर गंधक भावित दीगई और ९-९ छटांककी आंचें दीगइ गंधक ठीक जलाहुआ ॥।=) भर निकला । (१२ $\frac{४}{४२}$)

(*a*) ३) भर गंधककी पिष्टी १) भर गंधक सूखा बीचमें देकर आठ आठ छटांककी ४ आंचें दीगई तो १≡) भर गंधक जलाहुआ निकला नीचे २।-) भर गंधक कुछ भारी ओर निकला जिसमें पारद अंश मिला रहनेका संदेह है नीचे खूब जमाहुआ हिंगुलसा कठिन लेकिन काला पारेका ढिम्मा निकला जो तोलमें १३।) भर हुआ सब १३।)+२।-)=१५॥-) हुआ ।

अनुभव ।

विदित हुआ कि पिष्टी रखनेसे पारद कडा नहीं होता कज्जली रखनेसे पारद नीचेको सरक कडा होजाताहै कठिन होजानेसे इसको यहीं रोकदिया (२ $\frac{४}{७}$)

१२ । ४ (*a*) ४) भर भावित गंधक दीगई आंच ९-९ छटांककी ४ गंधक जलाहुआ ॥≡ भर निकला (१३ $\frac{४}{४६}$)

१३।४	(*a*)	४ तोले	+ +	॥≡) भर निकली-	१४$\frac{४}{५०}$	भावित गंधक
१४।४	(*a*)	४ तोले	+ +	॥।) भर निकली-	१५$\frac{४}{५४}$	केवल शुद्धगंधक दीगई
१५।४	(*a*)	४ तोले	+ +	॥) भर निकली-	१६$\frac{४}{५८}$	+
१६।४	(*a*)	४ तोले	+ +	।≡) भर निकली-	१७$\frac{४}{६२}$	+
१७।४	(*a*)	४ तोले	+ +	॥≡) भर निकली-	१८$\frac{४}{६६}$	भावितगंधक थी
१८।४	(*a*)	४ तोले	+ +	॥≡) भर निकली-	१९$\frac{४}{७०}$	भावितगंधक

हवा आजकल तेज चलती है इस लिये आंच कम बैठतीहै।

तीसरा भाग ।

(*a*)

१८ । ४ तप्त खल्वमें २०) भर संस्कृत पारद डाल थोडा बहुत थोडा थोडा शुद्ध गंधक (भावित नहीं) डाल डालकर निरंतर दो आदमियों द्वारा घोटागया तो २॥ घंटेमें १=) भर गंधक पडचुकनेपर बहुत उत्तम पहले सब दफेसे अच्छी खूब चिकनी कजली पिष्टी तय्यार होगई तोलमें २०॥।=) भर हुई यानी पारद और गंधक दोनोंकी तोलसे केवल ।) भर कम हुआ ।

१९ । ४ (*a*) ४ तोले शुद्ध गंधक निम्बूद्रवार्द्र दे ९-९ छटांककी ५ आंचें दीगई तौ ।) भर गंधक खूब जलाहुआ निकला यह आंच ठीक रही आगे जाकर यहीं आंच अधिक पडी ($\frac{४}{७४}$ । २० आंच)

५ तोले भावित गंधक निंबूद्रवार्द्र दे नो नो छटांककी ४ आंचें दीगई तौ २।=) भर गंधक अर्द्धजलित निकला इस नई २०) भर पिष्टीको एक नये इष्टिकायंत्रमें जिसका (ए) आकार ठीक चलते हुये यंत्रोंकासा करालिया था और सिपीकी कलईसे लेपलिया था रखकर उसी प्रकार आंच दीगई ५) तोले गंधकके लिये ४ आंच बहुत थोडीहै यंत्र इतने पारदके लिये ठीक है ।) १ $\frac{४}{४}$)

२० । ४ (*a*) ४ तोले शुद्ध गंधक बिजौरेके रसमें घुटी देकर ऊपरसे २।) भर अर्द्धजलित गंधक जो कल (*c*) मेंसे निकली थी रखकर ९-९ छटांककी ५ आंचें दीगई तो १॥) भर जलाहुआ गंधक निकला (२१ $\frac{३१}{७८}$)

(*c*) ५) तोले भावित गंधक बिजौरेके रसमें घोट ९-९ छटांककी ५ आंचें दीगई तौ १॥।) भर जलाहुआ गंधक निकला । २ $\frac{५}{६}$

२१ । ४ (*a*) ४) तोले शुद्ध गंधक बिजौरेके रसमें घुटी देकर ९-९ छटांककी ५ आंचें दीगई तो ।) भर गंधक बिलकुल जलाहुआ निकला और १ माशे पारा छुटकर पिष्टीके ऊपर मोटे मोटे रवोंमें मिला कल भी कुछ रवे पारेके चमकतेथे यह अग्नि अधिक है । गंधक निशेष जलनेपर अवश्य हानि पहुँचतीहै ८ छटांककी ४ आंच ही ४ तोले गंधकको काफीहै ।

[२२ आंच ४ + ७८ तोले]

(*a*) ५ तोले भावित गंधक बिजौरेसे घोट दे ९,९ छटांककी ५ आंच दीगई तो जलाहुआ गंधक १। भर निकला । यह आंच ठीक रही । (पिष्टी पारदकी कुछ फूल गई) चतुर्थांश गंधक बाकी रहजानाही ठीक है ।

३ आंच ५+९ गंधक ।

(*a*)२२।४ तोले शुद्ध गंधक बिजोरेके रसमें घोट दे ८,८

छटांककी ५ आंच दीगई तो बिलकुल जलाहुआ ।) भर गंधक निकला । आज भी एक आध रवा पारेका चलका अवश्य आज भी आंचें ज्यादः रहीं । गंधक निःशेष न होकर पंचमांश ही बाकी रहजाना ठीक होताहै और इसके वास्ते ४ तोले गंधकमें ९ छटांककी ४ आंचें + ५ तोलेमें ९ छटांककी ५ आंचें ठीक होतीहैं । शुद्ध गंधकसे, भावित गंधक अधिक अग्नि चाहती है ।

(२३ आंच ८२ + ४ गंधक)

(*a*) ५तोले भावित गंधक बिजौरेके रसमें पिसा देकर ९,९ छटांककी ५ आंचें दीगई तो १।=) भर जलाहुआ हुआ गंधक निकला । यह आंच ठीक रही ।

(४ आंच १४+५ गंधक)

२३।४ (*a*) ४ तोले शुद्धगंधक बिजौरेके रसमें पिसी दे ९,९ छटांककी ३ आंच दी गई तो ≡) भर गंधक निकला और २ रवे पारेके बाजरेके बराबर निकले । आज भी आंच ज्यादः रही ।

(२४ आंच ८६+४ गंधक)

(*c*) ५ तोले गंधक (२ वार भावित ३ तोले शुद्ध) को बिजौरेके रसमें घोट ९–९ छटांक की ५ आंचें दीगई तो ॥≡) भर गंधक खूब जलाहुआ निकला चूंकि आज कुछ गंधक विना भावना दिया हुआ भी पडा इस लिये यह आंच कुछ ज्यादः रही (शुद्ध गंधक भावित गंधककी बराबर अग्नि नहीं सहता)

(५ आंचें १९+५ गंध)

२४ । ४ बीमार होजाने मुलाजिमसे आज काम बंद रहा ।

२५ । ४ (*a*) ४ तोले शुद्ध गंधक बिजौरेके रसमें घोट देकर ८, ८ छटांककी ४ आंचें दीगई तो कुछ गंधक जलनेसे बाकी रहगया । कुछ गंधक चिपटाहुआ भी रह-गया आंच कम पहुंची आज कुछ शकोरे भारी थे आजभी न जाने क्यूं कुछ रवे पारेके जुदा मिले ।

(२५ आंच ९०+४ गंध)

(*c*) ५ तोले शुद्ध गंधक बिजौरेके रसमें घोट देकर ८, ८ छटांककी ५ आंचें दीगई ठीक जलाहुआ गंधक ॥–) भर निकला यह आंच ठीक रही ।

(६ आंच २४+५ गंध)

२६।४ (*a*) भर शुद्ध गंधक बिजौरेमें घोट ऊपर दे ८,८ छटांककी ५ आंच दीगई दूसरे दिन खोलनेपर ≡) भर गंधक बिलकुल जलाहुआ निकला और कुछ रवे पारेके भी मिले ।

(२६ आंच ९४ + ४ तो०गंधक)

आज इस (*a*) के तोले पारदमें ९८ तोले गंधक अर्थात् ६ गुनेसे २ तोले अधिक जारण होचुका इस लिये इसको यहीं समाप्त किया गया इष्टिकायंत्रसे निकालनेपर कुछ पिष्टी निकली कुछ चूर्ण सा निकला,कुछ पारेके रवे भी निकले । तोलनेपर कुल पारा जो इसमेंसे अवतक निकला था ।)॥ भर हुआ १२॥।≈) भर पिष्टी हुई ४॥) भर पिष्टी आदिका चूर्ण हुआ,सब तोल १७॥≈) भर हुई पिष्टी जो रक्खी गई थी वह १६॥।) भर थी इससे ज्ञात हुआ कि पारद क्षय नहीं हुआ थोडा ही हुआ । पिष्टी खूब खस्ता ही रही. कज्जलीकी तरह कडी नहीं हुई ।

२६।४ (*a*) भर शुद्ध गंधक बिजौरेके रससे घोट दे आठ आठ छटांककी ५ आंचें दीगई तो ।–) भर जला-हुआ गंधक निकला । और ।) भर पारा छुटाहुआ मिला यह आंच अधिक लगी गरमी बढजाने और वायु बंद रह-नेसे इतनी अग्निका सहन न हुआ यह पारा जुदा रख लियागया ।

(आंच–२९ + ५ तो० गंधक)

२७।४(*c*)५) भर शुद्ध गंधक बिजौरेके रससे घोट दे आठ आठ छटांककी ४ आंचें दीगई तो आज गंधक बिल-कुल अर्द्ध जलित पीला रहगया समझमें न आया कि आज आंच इतनी कम क्यूं रही ५ आंच कल ज्यादः रही थीं ४ आंच आज कम रहीं ।

(८ आंच ३४+५ तो० गंधक)

२८ । ४ (*c*) कलकी गंधक कच्ची रहगई थी । इस लिये उसीके ऊपर २ तोले गंधक बिजौरेके रससे घोट दे ८, ८ छटांककी ४ आंचें दीगई तो बिलकुल जला हुआ गंधक ॥।) भर निकला (यह दो दिनकी ७ भर गंधकका जलन है) और कुछ रवे पारेके भी जुदा मिले । पारा छुट-नेका कारण समझमें नहीं आया ।

(९ आंच ३९+२ तो गंधक)

२९ । ४ (*c*) ५) भर शुद्ध गंधक बिजौरेके रसमें घोट ८, ८ छटांककी ४ आंचें दीगई तो जलाहुआ गंधक ।=) भर निकला । बहुत थोडे रवे पारेके मिले अग्नि अधिक रही ।

(१० आंच ४१+५ गंधक)

३० । ४ । १९०६ (*c*) ५ तोले (शुद्ध और मकोयके रससे ३ वार भावित) गंधक बिजौरेके रससे घोट दे ८,८ छटांककी ४ आंचें दीगई तौ २।) भर कुछ कम जला गंधक निकला । भावित गंधक अधिक आंच चाहता है ।

(११ आंच ४६+५ तो० गंधक)

१।५ (*c*) ५ तोले (शुद्ध भावित) गंधक बिजौरेसे घोट दे आठ आठ छ० की ५ आंचें दीगई तो (कलसे कुछ ज्यादे जलागंधक) लेकिन पूरा न जला गंधक २।) भर निकला ।

(१२ आंच ५१+५ तो० गंधक)

२।५ (*c*) ५ तोले शुद्ध भावित गंधक बिजौरेके रससे घोट दे आठ आठ छटांककी ४ और ९ छटांककी १ आंच दीगई तो १॥।) भर गंधक निकला, अभी गंधक पूरा नहीं जलता आंच कम है ।

(१३ आंच ५६+५तोले गंधक)

३।५ (*c*) ५ तोले शुद्ध और भावित गंधक बिजौरेके रससे घोट दे आठ आठ छ० की ३ आंच और ९, ९ छ० की २ आंचें दीगई तो १॥।) भर गंधक निकला अभी पूरा नहीं जला ।

(१४ आंच ६१+५ तोले गंधक)

४ । ५ (*c*) ५ तोले शुद्ध और भावित गंधक बिजौ-रेके रससे घोट दे ९, ९ छ० की ५ आंचें दीगई तो१॥≈) भर गंधक करीब करीब जलाहुआ निकला ।

(१५ आंच ६६+५ तोले गंधक)

५ । ५ (*c*) ५ तोले (शुद्ध और भावित) गंधक

बिजौरेके रससे घोट दे ९; ९ छटांककी ५ आंच दीगई तो १॥≡) भर निकला जलाहुआ कुछ रवे भी नजर पडे बहुत कम ।

(१६ आंच ७१+५ गंधक)

६ । ५ (८) ५ तोले शुद्ध और भावित गंधक बिजौरेके रससे घोट ९, ९ छटांककी ५ आंचें दीगई तो १॥=) भर गंधक जला निकला कुछ सूक्ष्म रवे पारेके दीख पडे ।

(१७ आंच ७६+५ तोले गंधक)

७ । ५ (८) ५ तोले शुद्ध और भावित गंधक बिजौरेके रससे घोट दे ९, ९ छ० की ३ आंच और ८, ८ छटांककी २ आंच दी तो १॥।) भर जलाहुआ निकला ।

(१८ आंच ८१+५ तोले गंधक)

८ से १३ मईतक नोकरोंकी छुट्टीके कारण काम बंद रहा ।

१४ । ५ (८) ५ तोले (शुद्ध और धतूरेके रससे ४ बार भावित) गंधक बिजौरेके रससे घोट देकर ९,९ छटांककी ५ आंचें दीगई तो १॥ तोले जलाहुआ गंधक निकला कुछ रवे पारेके भी मिले, किनारोंपर रवे जब कभी मिलते हैं किनारोंपर जहां पिष्टीकी ऊपरवाली चमडी टुटी होतीहै वहीं मिलतेहैं ।

(१९ आंच ८६+५ तोले गंधक)

१५ । ५ (८) ५ तोले शुद्ध ❀ भावित गंधक बिजौरे रससे दे । इष्टिकायंत्रमें नौ नौ छ० की ५ आंचें दीगई१॥) भर गंधक जलाहुआ निकला ।

(२० आंच ९१+५ तो० गंधक)

१६।५(८)५तोले शुद्ध❀भावित गंधक बिजौरेके रसमें घोट दे इष्टिका यंत्रमें ९, ९ छ० की ५ आंच दीगई १॥=) भर गंधक निकला ।

(२१ आंच ९६+५ तो० गंधक)

१७ । ५ (८) ५ तोले शुद्ध भावित गंधक बिजौरेके रसमें घोट दे ९, ९ छ० की ५ आंचें दीगई तो १॥=) भर गंधक जला निकला । आज कुछ रवे पारेके मिले यह रवे वहीं मिलतेहैं जहां पिष्टीकी चमडी टूट जातीहै ।

(२२ आंच १०१+५ तोले गंधक)

१८ । ५ (८) ❀ ❀ ❀ १॥-) भर गंधका रवे कुछ आज भी मिले ।

(२३ आंच १०६+५ तो० गंधक)

१९ । ५ (८) ❀ ❀ ❀ १॥=) भर गंधक निकला ।

(२४) आंच १११+५ तो० गंधक)

२० । ५ (८) ❀ ❀ ❀ १॥=) भर निकला

(२५ आंच ११६+५ तोले गंधक)

सब १२१ तोले गंधक अर्थात् (२०+६=१२०) षड्गुण जारित होगया चूंकि इस पिष्टीमें ६ गुनी गंधक जारण होगई । इस लिये इसको इष्टिका यंत्रसे निकाल लियागया निकालनेपर पिष्टीके नीचे कुछ पारा पृथक् २ लगा हुआ मिला पिष्टी खस्ताथी तोल २०॥।=) भर हुई । तोल रखी भी २०॥।=) भर थी ठीक जितनी रक्खी थी उतनी ही निकली ।

ॐ शिवाय नमः ।

षडगुण बलिजारित हिंगुलसे पारदका उत्थापन।

१९ । ५ । १९०७ वैशाख सुदि गंगा सप्तमी इतवार आज इष्टिकायंत्रमें जिस पारद पिष्टी षड्गुण वलिजारित होचुकाथा, (२६ । ४ । १९०६ को) और पिष्टीमें १६)भर पारा डाला गया था । और जिसपिष्टीसे ।-) भर पारा जारण कर्मके अन्तर्गत छुटगया था और जिस पिष्टीकी तोल अब १७=) भर थी । और जो इस समय लाली मायल खाकी रंगकी थी । उक्त १७=) भर पिष्टीको जो अब पिष्टी न रही थी किन्तु फुसफुसी मिट्टीसी होगई थी लोह खल्वमें डाल जंभीरीरस १०) भरके अन्दाज डाल घोटा २ वा ३ घंटे तो गाढा होनेपर कुछ पारा छुटगया फिर खल्वको शीशेके बकसमें रख दो पहरके समय धूपमें रखदिया । खल्व अत्यन्त तप्त होगया हाथसे छुआ न जाता था । किन्तु पारद और नहीं छुटा । दुबारा फिर १०) रुपये भरके करीब जंभीरी रस डाल घोटा तो गाढा होनेपर फिर पहलेके ही बराबर पारा छुटा । तदनंतर फिर उसी समय और रस डाल घोटा तिबारा गाढा होनेपर बहुत थोडा पारा छुटा । सब पारा मैलासा था और एकदिन रक्खा रहनेपर ऊपरसे बिलकुल काली ताम्रवर्णी कज्जलीसे आच्छादित होगया तीन बार गाढे कपडेसे छाननेपर कुछ राखसी जुदा होजानेपर बहुत स्वच्छ श्वेत वर्णका ३=) भर पारा हुआ (यह पारा घुमानेसे पूंछ छोडताथा यद्यपि पूंछ उज्ज्वल थी शायद नीबूरसके संसर्गसे हो पातनद्वारा उत्थापितमें आशा है कि पूंछ न रहैगी) और १४ तोले १० माशे सूखा पिष्टीका चूर्ण बचा खूब सूख जानेपर तीसरे दिन तोला गया था ।

१९ । ७ को इस १४ तोले १० मासेमेंसे ५ तोले चूर्णको रोगनी कोरी हांडियोंमें जिनके किनारे घिसलिये गयेथे और जिनपर दो कपरौटी कर लीगई थीं और जो बहुत चपटी थी । ऊंची ४ इंच अन्दर अन्दर चौडी ८॥ इंच अन्दर अन्दर थीं भर बाहरी किनारे भस्म मुद्रासे बंदकर ऊपरसे मारकीन और मुलतानीसे जोडकी दो हरी कपरौटी कर सुखादिया ।

१६ । ७ को १ प्रहर मंद और ३ प्रहर साधारण अग्नि दी चूल्हेपर और ऊपर ८ तह कपडा खूब भीगा निरंतर डाला । रातको खाली चूल्हेपर रक्खा रहा ।

१७ । ७ डौरू खोला तो संधि ठीक निकली । किन्तु अन्दर नीचेकी हांडीमें तलेमें जो सुरखी मायल राख थी वह छूनेसे गीली चिकटसी निकली । छुटानेपर १ तो० २ माशे हुई । कुछ हांडीमें लगी भी रहगई २ तोले १ मा० २ रत्ती पारा ऊपरकी हांडीमें छुटानेसे निकला कुछ पारा ऊपरकी हांडीकी गर्दनमें और कुछ पारा नीचेकी हांडीकी गर्दनमें लगा भी रहगया । जो छुट न सका

शायद पानीसे छुट सकता		५ माशे	५ रत्ती	काली राख भी पोंछनकी निकली।
इस तरह	२ तोले	१ माशे	२ रत्ती	पारा
		५ माशे	५ रत्ती	काली राख भारी।
	१ तोले	२ माशे	०	सुरखी मायल चूर्ण
सब	३ तोले	८ माशे	७ रत्ती	वजन निकला
बाकी	१ तोले	३ माशे	१ रत्ती	छीजन गई। किन्तु इसमेंसे कुछ अंश हांडियोंमें चिपका भी मौजूद है।

१७।७ उन्हीं रोगनी हांडीमें पूर्ववत् २ कपरौटी करके पहले डौरूसे निकली १ तोले २ माशे गुलाबी चूर्ण ५ माशे ५ रत्ती काला चूर्ण सब १ तोले ७ मा. ५ र. पहले डौरूसे निकली दवाको और ५ तोले पारद पिष्टीके चूर्णको भर पूर्वोक्त क्रियासे डौरूकर भस्म मुद्रा कर २ कपरौटी कर सुखादिया।

१८।७ आज ४ प्रहरकी पूर्णाग्नि दीगई अर्थात् पहलेसे ड्योढी सवाई और भीगा कपडा निरन्तर डाला।

१९।७ आज डौरू खोला तो ३ तोले ९ माशे पारा निकला। २ माशे ३ रत्ती काला चूर्ण १ तोले ८ माशे गुलाबी चूर्ण निकला। सब ५ तोले ७ माशे ३ रत्ती निकला (था ६ तोले ८ माशे ५ रत्ती) घटा १ तो० २ रत्ती। नीचेकी हांडीमें जितने भागमें आंचकी लौ लगी थी उतनेमें पारद न था किन्तु ठीक बीचमें कुछ सुरख हिंगुल और अधिक गुलाबी चूर्ण रक्खा था हिंगुल नीचे चिपटा-हुआ था और गुलाबी चूर्ण उसके ऊपर फैलाहुआ था हांडीकी आधी गर्दन गुलाबी रंगकी थी और ऊपरी आधी कालेरंगकी जिससे ज्ञात होता था कि जहांतक पूरी आंच लगतीहै वहांतक रंग सुर्ख हो जाताहै जहां कम आंच पहुँचती है वहां रंग कच्चीगंधककी वजहसे काला रहताहै। इसलिये अग्नि नीचेकी हांडीके किनारोंतक जानी चाहिये। अर्थात् पारद पातनमें तीव्राग्निकी आवश्यकताहै ऊपरकी हांडीमें रंग कृष्ण था और कुछ अंश पारदका छुटनेसे रह गया था।

१९।७ उन्हीं रोगनी हांडियोंपर फिर कपरौटी कर दूसरे डौरूसे निकला १ तो० ८ माशे गुलाबी चूर्ण (जो हवा लगनेसे सीलगया था। गालिबन नीबूके क्षार योगका कारण है) और २ मा० ३ रत्ती काला चूर्ण और ५ तोले पारदपिष्टीका चूर्ण (असलमें ४ तोले १० माशे होना चाहिये था) सब ६ तोले १० मा० ३ र० को पहली ही तरहसे बंद कर डौरू करदिया। सूखनेको रख दिया किन्तु धूप नहीं थी।

२०।७ आज ४ प्रहरकी तीव्राग्नि दीगई अर्थात् दूसरी बारसे भी तेज भीगा कपडा निरंतर डाला।

२१।७ आज खोलकर देखा तो नीचेकी हांडीमें पारा बिलकुल न था। ऊपरकी हांडीके किनारोंपर भी न था। नीचेकी हांडीमें हिंगुल भी बहुत कम था। हलकी गुलाबी सफेद राख जो २ तोले १ मा० निकली। ऊपरकी हांडीसे ३ तोले ३ माशे पारा और २ मा० १ रत्ती छाननकी राख काली निकली अबकी बार पारा सब उडगया फिर भी तोल कम बैठी।

२२-२३-२४।७। १९०७ को यह शंका कर इस २ तोले १ माशे गुलाबी और ३ मा० १ रत्ती काली राख फिर उसी डौरूमें भर ३ प्रहर आंच दी तो ४ माशे ५ रत्ती पारा और निकला और १॥ तोले राख गुलाबी निकली।

२४-२५-२६।७ इस १॥ तोले राखको फिर पातन किया तो ४ प्रहरकी अग्निसे केवल १ माशे ४ रत्ती पारा निकला १=) भर गुलाबी राख निकली।

फल।

पारद उत्थापनका १६) भर पारा पिष्टी करनेको डाला जो पिष्टी १६।॥) भर हुई गंधक जारणानंतर १७।=) पिष्टी हुई। गंधकजारणमें ।)॥ भर पारा निकल आया था। उत्थापनके समय पिष्टीकी तोल १७=) भर मिली (शायद १७ तोले २ माशे हो)।

पारद ३=) भर खल्वमें घोटनेसे निकला २ तो० १ मा० पहले पातनमें, ३ तो० १ मा० दूसरे पातनमें, ३ तो० ३ माशे तीसरे पातनमें, ४ माशे ५ रत्ती चौथे और १ माशे ४ रत्ती पाँचवें पातनमें, सब १२ तोले ८॥ माशे पारद हुआ।

फिर इकट्ठा तोलनेपर ३=)+९)८ रत्ती+६ मा० १ रत्ती हुआ इस ९)८ रत्ती पारदको छान चीनीके बर्तनमें घुमाया तो बहुत लंबी पूंछ छोडता था। चार चार छः छः अंगुलकी लंबी सर्पाकारसी बनजातीथी। मेरी रायमें तो पारदमें कोई पदार्थ गंधकजारणसे मिलकर पारदको कुछ घन करदेताहै। यह पूंछ एक नहीं दो दो चार चारतक रहजाती थीं।

इन दोनों पारदको मिला छान तोला तो १२=) ४ रत्ती+६ माशे १ रत्ती हुआ (।) भर पहले भी निकल आया था इस लिये १२।=) ४ रत्ती+६ मा० १ रत्ती समझो) जो इकट्ठा तोलनेपर १२ तोले ८ माशे २ रत्ती हुआ। इस हिसाबसे १६) भरमेंसे ३॥)। भरके करीब छीजन गई। अर्थात् पंचमांशसे कुछ कम सा (साधारण शुद्ध पारद १०) भरमें २॥ गुण गंधकजारित किया था उस पारदके उत्थापनमें १॥।) भर छीजन गई थी जो पंचमांशसे कम होतीहै) इष्टिकायंत्रमें षडगुण बलि जारित अष्ट संस्कारयुक्त पारदकी इकट्ठी तोल छान कर फिर की गई तो १२ तोले ८ माशे २ रत्ती भर हुई।

३१।७।०७ ईस १७=) भर पिष्टीके ५ बार पातनमें बची १।=) भर तलस्थ गंधकादिको शराव संपुटमें बंद कर ५ सेरकी अग्निदी तो ६ माशे गहरी सुरख रंगकी एक हलकी चीज निकली। इसको पारद गंधकसे उत्पन्न हिंगुलका भेद कहसक्ते हैं। इसको एक शीशीमें बंद कर रख दिया। किन्तु हिंगुलसे इसमें यह भेद है कि हिंगुल भारी होताहै और यह हलकी है।

गन्धकपिष्टीका अनुभव।

दशनिष्कं शुद्धसूतं निष्कैकं शुद्धगन्धकम्। स्तोकंस्तोकं क्षिपेत्खल्वे मर्द्दनाथ कुट्टयेत् ॥ याममात्राद्भवेत्पिष्टी गंधपिष्टिर्निगद्यते ॥

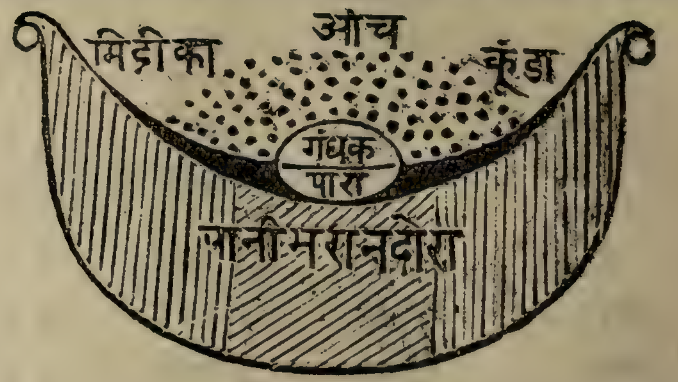
२६। ५। १९०६ सोमवार ४॥) भर बाजारी पारेको (५-७ बार कपडेमें छान लियागया था) लोहेके तप्त खल्वमें डाल थोडी २ गंधकचूर्णकी थोडी २ चुटकी दे घोटागया तो दो घंटे खूब निरन्तर दो आदमियों द्वारा घोटनेसे और खरल इतना गर्म रखनेसे कि जिससे हाथ न जले और ।=) भर गंधक पडचुकनेपर पारा और गंधक मिलकर पिष्टीसी होगई। कुछ और –) भर गन्धक डाल और अधिक घोटनेसे सख्ती आने लगी फिर दो तीन बारमें २)भर पारा और डाला तो पिष्टीमें तुरंत मिलगया और पिष्टी नरम होगई। सब ६॥) भर पारा पडा और ॥) भर गंधक पडी पिष्टीकी गोली बांध लीगई। तोलमें गोली ५॥।) भर हुई। कुछ चूरासा खरलमेंसे निकला ।) भर होगा। कुछ खरलमें लगा रहगया। शायद कुछ तोलमें गडबड होगयी होगी या कुछ छीज गयाहो यह क्रिया पिष्टीकी बढिया रही। जय श्रीशंकर स्वामीकी।

नं० १ कच्छपयंत्र।

गंधक जारणका अनुभव कच्छपयंत्रद्वारा (कूंडेमें)

१। ५। ०६ एक कूंडा ऐसा बना कि जिसके पेंदेमें गढा खांचेदार था। उसमें ५ तोले पारा रख ऊपरसे ५ तोले गंधकका चूर्ण रख ऊपरसे सकोरेसे ढक भस्ममुद्रासे बंदकर उस कूंडेको एक जल भरे नदोरेके ऊपर रख कूंडेके ऊपर पाव पावभर की १० आंचें दीगई ५ घंटेमें खोलने पर गंधक पिघलाहुआ पूरा ५ तोले मिला। कुछ भी नहीं जला आंच कम रही।

१ इस तजरुबेके लिये कि जारित गंधकको पुनः पुटद्वारा जारित करनेसे क्या दशा रहती है। इष्टिकायंत्रके जारणसे निकली जली काली गंधकमेंसे २ तोलेको शराव संपुटमें बंद कर ५ सेरकी आंच दीगई तो १मा० ३ रत्ती खाकी मटेलीसी राख निकली। इस अनुभवसे सिद्ध हुआ कि पिष्टी पातनसे बची वस्तुको अग्निपुट देनेसे जो रक्त भस्म उत्पन्न हुईहै वह केवल गंधक नहीं होसक्ती फिर क्या है मेरी सम्मतिमें ३ माशे पारा १ माशे गंधक १ माशे जभीरीरसका क्षार १ माशे लोह खल्वसे खुरचे गये लोहका अंश यही वस्तु इसमें होसक्तीहै।



५। ५। आंचें फिर बंदकर आध आध सेरकी ९ आंचें दीगई तो २ तोले गंधक जला।

६। ५ आज फिर २ तोले गंधक डाल तीन तीन पावकी ४ आंचें दीगई तो २॥ तोले गंधक जला।

७। ५ आज फिर २॥ तोले गंधक डाल ढाईढाई पावकी ८ आंचें दीगई तो भी २॥ तोले गंधक जला। आंच कम है आगेसे सेर सेर भरकी ६ आंचें देकर देखो। और शकोरेकी जगह लोहेकी कटोरी रक्खो।

१६। ५ आज फिर गंधक पूरा कर अर्थात् १ छ० पारा १ छ० गंधकको (दूसरे कूंडेमें) कच्छपयंत्रमें सेर सेर भर की ३ आंचें दीगई। कूंडा चटक जानेसे आगेका काम बंद रहा। खोलनेपर केवल १ पैसे भर गंधक कम हुआ।

१७। ५ आज फिर इसीको बंद कर सेर सेर भरकी ६ आंचें दीगई तो ६ माशे और जला यानी कुल २ तोले गंधक जला आज देखा तो मालुम हुआ कि कूंडा जो १७। ५ से काममें आया उसमें संधि होनेसे नीचेका पानी अंदर आजाताहै। गालिबन इसी वजहसे काम ठीक नहीं हुआ।

नं० २ कच्छपयंत्र।

उपरोक्त क्रियाका दूसरी बार अनुभव (कूंडेमें)

ता० २२।५।७ को ८॥ तोले पारे और गंधकके ढिम्मेको (जिसमें ५ तोले पारा और अवशेष गंधक था यह ढिम्मा उपरोक्त नं० १कच्छपयंत्रमें इससे सालभर पहले अनुभव करते समय उत्पन्न हुआ था) मिट्टीके खांचेदार कूंडेमें रख लोह कटोरीसे ढक ३ भाग सैंधव और १ भाग राखसे बनी भस्ममुद्रासे बंद कर दियागया।

ता० २३ को कूंडेको पानी भरी नांदके ऊपर रख ६॥ बजेसे १२॥ बजेतक पाव पावभर आरने कंडोंकी ८ आंचें दीगई।

ता० २४ को निकाल कर तोला तो ८।=) भर वजन मिला =) भर छीजन गई।

सम्मति–अग्नि कम होनेके शिवाय और कोई त्रुटि नहीं जानपडती। लोह कटोरिका केवल १ इंच गहरी थी और ६ इंच चौडी थी।

नं० ३ कच्छपयंत्र।

उपरोक्त क्रियाका तीसरी बार अनुभव (कूंडेमें)

ता० २४।५।७ को उपरोक्त ८।=) भर गंधक पारदमें

=) भर शुद्ध हिंगुलोत्थ पारद और मिला पूरा ८।। तोले उसको पीस बारीक कर कच्छप यन्त्रमें रख ३ तोले राख ३ तोले लवणसे बनी भस्ममुद्रासे उपरोक्त विधिसे बंद कर धूपमें सुखानेको रखदिया ।

ता० २५ को भी सूखा किया कुछ सूक्ष्म दरज पडगई थी वह फिर बंद कर दीगई ता० २६ को ऽ।। सेरकी आंच देना आरम्भ किया पहली ही आंचमें कूँडा चटकगया इस लिये उतार लिया ।

सम्मति–कूंडेकी मिट्टी अच्छी नहीं है और न अच्छी कमाई गईहै ।

नं. ४ कच्छपयंत्र ।

उपरोक्त क्रियाका चौथीबार अनुभव (कूंडेमें)

ता० २६ । ५ । ७ की शामके ४ बजे दूसरा नया कूंडा ले उसमें उपरोक्त ८।। तोले पारद गंधक रख उपरोक्त विधिकी भस्समुद्रासे (जिसमें चटके हुए पहले कंडेसे छुटाई भस्मसुद्रा भी डाल दीगई थी) लोह कटोरिकासे बंदकर धूपमें सूखनेको रखदिया ।

ता० २७ को उपरोक्त रीतिसे पानी भरी नाँदपर कूंडेको इस प्रकार रक्खा कि पेंदी २ अंगुल पानीमें भीगी रही ७ बजेसे ६ बजेतक अर्थात् ११ घंटे १३ आंचें दीं इन आंचोंमें पहली ऽ। की दूसरी ऽ।= की बाकी सब आध आध सेरकी लगीं २ दफे बीचमें पानी बदलागया यह कूंडा भी पहली ही आंचसे चटक गया था । किन्तु फिर अधिक न चटका । रातको यंत्र ज्योंका त्यों नाँदपर रक्खा रहने दिया ।

ता० २८ को देखा तो यंत्रकी कटोरीकी दरजोंपर बहुत तरी थी । अतएव उसे प सुखाकर खोला तो दवाका ढिम्मा अपने रूपमें मौजूद था और वजनमें ८ तो० था ।

सम्मति–कूंडे खराब हैं चटकतेहैं कटोरी शायद मोटी हो पानी बदलनेकी आवश्यकता नहीं अग्नि और बढाकर देखो । रातको कूंडा पानीसे पृथक् करदिया जावे ।

नं० ५ कच्छपयंत्र ।

उपरोक्त क्रियाका पांचवीं बार अनुभव (कूंडेमें)

ता० २९ । ५ । ७ को उपरोक्त ८ तोले पारद गंधकको उसी कूंडे और कटोरीमें भस्ममुद्रासे बंदकर सुखा दिया ।

ता० ३० को धूपमें सूखता रहा ।

ता० ३१ को प्रथम पावभरकी आंच दीगई आंचके सुलगते ही पहली दर्जपरसे कूंडा और चटक या और अन्दर दवातके पानी पहुंचगया इस वास्ते काम ंद रहा और कूंडेको धूपमें सुखा खोलकर दवा निका ली जो ८ तोले हुई ।

सम्मति–आगेसे कूंडेपर कपरौटी होनी चाहिये ।

नं. ६ कच्छपयंत्र ।

उपरोक्त क्रियाका छठी बार अनुभव (कूंडेमें)

ता०३।६।७ को उपरोक्त ५ तोले औषधिको ऐसे कूंडेमें (जिसके अन्दर बाहर पेंदीको छोड किनारों पर दोनों तरफ ६९ अंगुल मोटी कपरौटी टुकरीकी की गई थी और ऊपरकी पेंदीमें खरियाका लेप कर दिया था) रख लोह कटोरिकासे (जो पहली कटोरीसे हलकी चद्दरकी बनी थी) ढक भस्ममुद्रासे संधि बंद कर धूपमें सुखा दिया गया।

ता० ४ को पहली आंचऽ। पावभरकी दूसरी आध सेरकी तीसरी तीन पावकी और ८ आंचें एक एक सेरकी दीगई ये कूंडा भी पहली ही आंचसे चटकगया और पानीका तरीका असर जरूर अन्दर पहुंचगया होगा किन्तु नोकरोंके खबर न देनेसे काम बंद न रक्खागया सब आंचोंके लगनेके बाद कूंडी खाली नाँदपर रखा दियागया ।

ता० ५ को खोला गया तो उक्त औषधिका ढिम्मा ७ तोले ७ माशे हुआ और ५ माशे इस ढिम्मेके नीचे राखसी अलग निकली अर्थात् जो ८ तोले वजन था वह पूरा निकल आया ।

सम्मति–आगेसे आंच आध सेरसे आरम्भ कीजाय और डेढ सेरतक लगे अवश्य पानी अन्दर जानेकी शंका होतीहै कूंडे कपरौटी करनेपरभी चटक ही जातेहैं यह बडी खराबी है

नं. ७ कच्छपयंत्र.

उपरोक्त क्रियाका सातवीं बार अनुभव (कूंडेमें)

ता० ५।६।७ को उक्त ७ तोले ७ माशे पारद गंधक और ५माशे राख कुल ८ तोले वजनको कपरौटी कियेगये कूंडेमें रख लोहकटोरीसे ढक भस्ममुद्रासे संधि बंद कर धूपमें सूखनेको रख दिया ।

ता० ६ को कूंडेके चार चार अंगुल किनारोंपर दूसरी कपरौटी और कीगई और सुखादिया ।

ता० ७ को कूंडा सूखतारहा ।

ता० ८ को पहली आध सेरकी आंचदेनेसे कूंडा चटकगया और दरार कटोरीके अन्दरतक चलीगई जिससे पानी अवश्य अन्दर जाता लिहाजा कामबंद करदियागया ।

सम्मति–कूंडाके चटक जानेसे ही अबतक अनुभव ठीक न होसका ।

नं. ८ कच्छपयंत्र ।

उपरोक्त क्रियाका आठवीं बार अनुभव (तामचीनीके पात्रमें)

ता० ८।६।७ को उक्त ८तोले पारद गंधकको तामचीनीके कूंडेमें रख बडी लोहकटोरीसे ढक भस्ममुद्रासे संधि बंद कर धूपमें सुखादिया ।

ता० ९ को इस चीनीके पात्रको जलभरी नाँदपर तैराकर तीन तीन पावकी ११ आंचें देकर जैसेका तैसा रक्खा

छोडदिया (तामचीनीके पात्रमें और कंडोंके बीचमें पेंदारहित लोहेकी परातका घेरा भी रखदिया था अग्नि तामचीनीके पात्रको न छुए)।

ता० १० को खोला तो ढिम्मा अपने रूपमें ६। तोले मिला और उस ढिम्मेके नीचे गंधककी पापडी १। तोले मिली अर्थात् कुल ७॥ तोले वजन मिला ६ माशे घटा।

सम्मति-इस प्रकार यंत्रका निर्माण तो अच्छा रहा यदि कामदे किन्तु एक दोष तामचीनीके कूंडेमें है कि उसका पेंदा सपाट है बीचमें ढालू नहीं इस कारण पारद बीचमें ठहर नहीं सकता।

नं. ९ कच्छपयंत्र।

उपरोक्त क्रियाका नवीं बार अनुभव (तामचीनीके पात्रमें)

ता० १०।६।७ को उक्त ६। तोलेका काले रंगका ढिम्मा और १। तोले गंधककी पापडी कुल ७॥ तोले वजनको बारीक पीस पूर्वोक्त तामचीनीके कूंडेमें पूर्वोक्त विधिसे बंद कर दियागया।

ता० ११ को कूंडेको पानीभरी नाँदपर तैरा एक एक सेरकी १२ आंचें दीं बादको जैसेका तैसा रक्खा छोडदिया।

ता० १२ को खोला गया तो ढिम्मा तामचीनीके कूंडेसे चिपटाहुआ मिला। चाकूसे खुरच ढिम्मेको छुटाया तो उसके नीचेकी तरफ पिघले हुए गंधकका अंश दिखाईदिया और तोलमें ७। तोले हुआ ३ माशे घटा।

सम्मति-अभीतक गंधकका क्षय ठीक नहीं होता या अग्नि कम है या समय कम है। पीछे साबित हुआ कि पानी अधिक था।

नं० १० कच्छपयंत्र।

उपरोक्त क्रियाका दशवीं बार अनुभव (तामचीनीके पात्रमें)

ता० १५।६।७ को पूर्वोक्त गंधक पारदका ढिम्मा ७। तोले और हिंगुलोत्थ पारद १० माशे और हिंगुल पातनसे बचा चूर्ण वा राख १ तोले और दाग खाया हुआ दानेदार गंधक १ तोले उक्त तामचीनीके कूंडेमें इसतरहसे रक्खेगये कि ७। तोलेवाले ढिम्मेको और हिंगुलोत्थ पारदकी १ तोले राख दोनोंको पीस कूंडेमें बिछालिया उसके ऊपर बीचमें हिंगलोत्थ १० माशे पारा रख १ तोले पिसा गंधक ऊपर बुरका दियागया इसतरह कुल १० तोले १ माशे वजन रख लोहकटोरीसे ढक भस्ममुद्रासे संधि बंद कर धूपमें सुखादिया।

ता० १६ को यंत्रको नाँदपर तैरा सवा सवासेरकी १२ आंचें दीगई बादका पानी बहुत गर्म हो होकर चौथी पांचवीं आगतक सेर तीन पाव घटजाता था इस वास्ते जितना घटता था दो एक बारमें उतना ही और डालदिया जाता था पश्चात् आंच बंद कर यंत्रको ज्योंका त्यों नाँदपर तैरा छोडदिया।

ता० १७ को खोलागया तो ढिम्मा कूंडेसे चिपकाहुआ मिला। ऊपर बुरके गये गंधकका रूप जला दृष्टि पडा। पारा भी जले गंधकसे ढका मिला। उक्त ढिम्में और पारदको तोला तो कुल (१० तोले १ माशेमें) ९ तोले ८ माशे वजन निकला ५ माशे घटगया।

सम्मति-१। सेरकी १२ आंचोंसे भी कोई नतीजा नहीं हुआ ऊपरकी लोह कटोरी कुछ भारी अवश्य है और कोई बात समझमें नहीं आती पीछे साबित हुआ कि पानी अधिक था।

नं. ११ कच्छपयंत्र।

उपरोक्त क्रियाका ग्यारहवीं बार अनुभव (कूंडेमें)

ता० १७।६।७ को ५ तोले पारद और ५ तोले दाग खायाहुआ दानेदार पिसाहुआ गंधक मिट्टीके कूंडेमें इस्तरह रक्खेगये कि पहले पारा रख उसके चारों तरफ और ऊपर गंधक ढकदिया और बहुत हल्की लोहकटोरीसे ढक भस्ममुद्रासे संधि बंद कर धूपमें रख दिया।

ता० १८ को चूंकि आंचसे कुंडे चटक जातेथे उसके बचावके वास्ते दो घेरे लोहेके चार पांच अंगुल चौडे लगा दिये और इनमें जो संधि रहगई वह बालूसे भरदी गई इन घेरोंके लगानेसे कूंडा करीब ३ अंगुलके खाली रहा और पेंदेमें केवल कटोरी दीखती रही।

ता० १९ को ३ आचें पावभर आध सेर तीन पावकी दीगई, तीसरी आंचकी राख कूंडेसे निकालते समय राखमें गंधकका अंश दृष्टिपडा इस कारण काम बंद कर कुंडेको ठंढाकर खोला तो गंधक पिघलकर पापडीसा होगया था और उसके नीचे पारा अपने रूपमें मौजूद था कुंडेके अन्दर तरी आगई थी इस कारण धूपमें सुखा पारे गंधकको तोला तो ८ तोले १० माशे मिला १ तोले २ माशे छीजन गई।

सम्मति--कारण गंधक निकल आनेका यह जानपडा कि कटोरीके नीचे मुद्राका मसाला लगाना भूल गये केवल ऊपरसे लगादिया था।

नं० १२ कच्छपयंत्र।

उपरोक्त क्रियाका बारहवीं बार अनुभव (कूण्डेमें)

ता० २०।६।७ को उक्त ८ तोले १० माशे पारे गंधकको और समान गंधक जारितको ११ माशे चूर्णको सब ९ तोले ९ माशेको उसी कूडेमें ऐसे रक्खा जिससे तरल पारद गंधकसे ढकारहा। बादको लोहकटोरीसे ढक भस्ममुद्रासे संधि बंदकर सुखा उपरोक्त विधिसे लोहेके दो घेरे लगा बालू भर रखदिया।

ता० २१ को पानी भरी नाँदपर कूंडेको रख पावभर, आध सेर, तीन पाव, सेरभरकी ४ आंच और सवा सवासेरकी ७ सब ११ आँचें दे पानीकी नाँदसे कूंडेको उतार खाली नाँदपर छोडदिया।

ता० २२ को खोलागया तो कूंडेके खांचेमें पानीका अंश दृष्टिपडा गंधक पिघल कर हलकी पापडीसा होगया था उसके नीचे पारा मौजूद था कुछ अंश पारेका गंधकमें

समा गया था तोला तो (९ तोले ९ माशे वजनमें) ८ तोले वजन हाथलगा १॥ तोले। छीजन गई।

सम्मति–बालू भरनेसे कूंडोंका चटकना बन्द होगया। किन्तु पानीका अंश अन्दर पहुंच जाता है इसका भी उपाय करना चाहिये।

नं० १३ कच्छपयंत्र।

उपरोक्त क्रियाका तेरहवीं बार अनुभव (कूंडेमें)

ता० २५। ६। ७। को ८। तोले पारद गन्धकको उपरोक्त विधिसे कूंडेमें रख लोह कटोरीसे ढक भस्ममुद्रासे संधि बन्द कर धूपमें सुखा दिया। इस बार कूंडेके बाहर १ छटांक अंडीके तेलमें आधी छटांक मोम मिला आंचपर गर्म कर लेप करदिया ताकि पानीका असर अन्दर न पहुँचै अन्दर लोहेके घेरे और बालू रक्खी गई।

ता० २६ को यह यंत्र रक्खा रहा।

ता० २७ को पानी भरी नाँदपर रख पावभरसे १ सेर तककी ४ आंचें और सवा सवा सेरकी ८ आंचें सब १२ आंचें दे कंडेको खाली नाँदपर रख दिया। ता० २८ को खोला गया तो गंधक पिघलकर फैल गया था और काले रंगका होगया था पारा गंधकके नीचे ढकरहा था। खुरच कर निकाला तो कुल ७। तोले वजन हाथ लगा १ तोले घटा। कूंडेमें इस बार भी कुछ तरी आगई थी इस वास्ते उक्त औषधिको धूपमें सुखा फिर तोला तो कुछ अंतर न मालूम हुआ।

सम्मति–अबकी बार पहलेसे भी गंधक कम जला कारण समझमें नहीं आया।

नं० १४ कच्छपयंत्र।

उपरोक्त क्रियाका चौदहवीं बार अनुभव (कूंडेमें) टबमें रखकर।

ता० ३०। ६। ७। को उक्त ७। तोले पारद गंधकको उपरोक्त विधिसे गर्म अंडीके तेलमें मिले मोम गेरूसे पेंदेमें लिये कूंडेमें रख लोह कटोरीसे ढक भस्ममुद्रासे संधि बन्द कर धूपमें सुखा दिया।

ता० १। ७ को कूंडेको पानी भरे टबमें छोटी लोहेकी तिपाई पर रख एक अंगुल कूंडेकी पेंदी तक पानी रख कूंडेमें लोहेके घेरे लगा बालू भर पावभर आधसेर तीन पावकी आंच और सेर सेरभरकी ९ सब १२ आंचें दे कूंडेको पानीसे जुदा कर रख दिया। इस बार टबका पानी अधिक गर्म नहीं हुआ। नवीं आंच पर पानीकी घटी मिकदार पूरी करदीं।

ता० २ को खोला गया तो गंधक पिघला न था जैसेका तैसा रक्खा था। नीचे पारा मौजूद था। तोलमें गंधक पारद ७ तोले हुआ। ३ माशे छीज गया।

सम्मति–जल विशेष होनेसे शीतलता अधिक रही इस कारण गंधक नहीं जला। अब कारण समझमें आया।

नं. १५ कच्छपयंत्र।

उपरोक्त क्रियाका पन्द्रहवीं बार अनुभव छोटे नँदोरमें (कूडमें)

ता० २। ७। ७ को ७ तोले गंधक पारदमें ३ तोले दानेदार दागखाया गंधक डाल पीस मोम अंडीके तेल गेरूसे पेंदेमें लेप किये गये कूंडेमें उपरोक्त विधिसे रख लोहकटोरीसे ढक भस्ममुद्रासे संधि बन्द कर धूपमें सुखा दिया।

ता० ३ को लोहेके घेरे और बालू रख ऐसे छोटे पानी भरे नँदोरे पर कूंडेको रक्खा जो एक अंगुल पेंदा भीगा और ५ अंगुल कूंडा नाँदसे बाहर रहा। पश्चात् पावभर, आध सेर, तीन पाव सेर भरकी ४ आंचें और सवा सवा सेरकी ५ कुल ९ आंचें दीगई। नवीं आंचपर कूंडा दो तीन जगहसे चटक गया। दर्ज कटोरीतक पहुँच गई परन्तु नीचेके मोमके लेपने अन्दर पानी नहीं आने दिया। आगे काम न चलाया, खोला गया तो गंधक पिघल कर फैल गया था रंगत काली थी पारा नीचे ढकरहा था। खुरच कर तोला तो पारा १० माशे निज रूपमें और पारद गंधक मिश्रित ६ तोले १० माशे था। सब गंधक पारद ७ तोले ८ माशे २ तोले ४ माशे घटगया।

सम्मति–अबकी फल सबसे अच्छा हुआ यदि कूंडा न चटकता तो पूरा गंधक जीर्ण होजाता यह सफलता पानी कम होनेसे हुई। अधिक पानी गर्म न होकर कूंडेके पेंदेको इतना शीतल रखता था जिससे गंधक जीर्ण नहीं होसकता था। कूंडा १७ इञ्च चौडा था, नँदोरा जिसमें पानी था वह बाहर १४ इञ्च और अन्दर १२ इञ्च चौडा था इस लिये कुंडा नँदोरे पर ढकनेसे ५,५ अंगुल चारों तरफ निकला रहा। पानी नँदोरेमें ६ इञ्च गहरा भरा था। तोलमें ८ सेर था २ इञ्च नँदोरा कूंडा रखनेसे खाली होगया था।

नं० १६ कच्छपयंत्र।

उपरोक्त क्रियाका सोलहवीं बार अनुभव (कूंडेमें छोटे नँदोरेमें)

ता० ४। ७। ७ को उक्त ७ तोले ८ माशे पारद गन्धकको नये कपरौटी करे और गर्म अंडीके तेलमें पडे मोंम गेरूसे पेंदेमें लिपे कूंडेमें उपरोक्त विधिसे रख भस्म-मुद्रासे संधि बंद कर (चूंकि धूपमें सुखानेको नीचेका लेप पिघलकर टपकने लगता था इस वास्ते) सीरकमें सुखा-दिया। और बालू और घेरे लगादिये।

ता० ५ को ८ सेर पानीसे भरे छोटे नंदोरेपर कूंडेको रख १ अंगुल पेंदी भीगी रख ऽ। पावभर ऽ॥ सेरकी २ आंच और तीन तीन पावकी १२ कुल १४ आंचें दे कुंडेको उतार खाली नाँदपर रखदिया।

ता० ६ को खोलागया तो अन्दर पारद गंधक ज्यों का त्यों रक्खारहा पिघलातक न था।

कारण कि आंच १। सेरकी जगह ऽ॥। की दीगई।

सम्मति–अबकी बार यह भी निश्चय होगया कि ८ सेर जलवाले नँदोरेपर रक्खे कूंडेके लिये तीन पावकी आंच कम है १। सेरकी ही चाहिये।

नं. १७ कच्छपयन्त्र ।

उपरोक्त क्रियाका सत्तरहवीं बार अनुभव (कूंडेमें)

ता० ६।७।७ को उपरोक्त पारद गंधकको जो पिघलातक न था कूंडेसे जुदा न कर जैसेका तैसाही बंद कर सुखादिया।

ता० ७ को ८ सेर पानी आनेवाले उसी नँदोरेपर कूंडेको फिर रख सदाकी रीतिसे रेतभर ऽ॥ सेर ऽ।॥ तीन पावकी २ आंचें और १। सेरकी १२ सब १४ आंचें दे कूंडेको पानीकी नाँदसे अलगकर रखदिया इतने समयमें एकवार १॥ सेरके अन्दाज नँदोरेमें पानी डालनेकी आवश्यकता हुई जो गर्म कर डालागया ।

ता० ८ को खोलागया तो गंधक पारद अब भी जैसेका तैसा रक्खा रहा पिघला नहीं कूंडा चटका मिला तोलमें गन्धक ६ तोले २ माशे और पारद निजरूपमें ९ माशे कुल गन्धक पारद ६ तोले ११ माशे हुआ ९ माशे घटा।

सम्मति-अबकी वार सफलता अवश्य होती किन्तु कूंडा चटकगया जिससे क्रिया निष्फल गई । यह दोष कूंडेका है ।

नं० १८ कच्छपयन्त्र ।

उपरोक्त क्रियाका अठारहवीं बार अनुभव (तामचीनीकी रकाबीमें)

ता० ६।७।७ को २॥ तोले पारद और २॥ तोले दानेदार दागखाई हुई पिसी गन्धक कुल ५ तोले वजनको तामचीनीकी तश्तरीके बीचमें गंधककी घरिया सी बना उसमें पारा रख थोडी गंधक ऊपर डाल उँगलीसे ठीक कर लोहकटोरीसे ढक भस्ममुद्रा कर धूपमें सुखादिया ।

ता० ७ को तामचीनीके बडे कटोरेमें २॥ सेर पानी भर उसपर इस यंत्रको रखऽ। पावभर डेढ पावकी २ आंचें और आध आध सेरकी १३ कुल १५ आंच दे कटोरेसे कूंडा उतार अलग रखदिया । इस कटोरेमें ४।५ दफे आध आध या पौन पौन पावके अन्दाज गर्म पानी डालागया ।

ता० ८ को खोलागया तो गंधक जलीहुई मिली पारा गन्धकसे ढका और कुछ प्रत्यक्ष होकर भस्ममुद्रासे लगामिला तोलमें पारद निजरूपमें २ तोले ३ माशे और गंधक ६ माशे कुल पारद गंधक ६ माशे कुल पारद गंधक २ तोले ९ माशे निकला २ तोले ३ माशे घटा पारद कुछ भस्ममुद्रासे जाकर लगजानेसे छीजगया ।

(१) सम्मति-अबकी वार पूर्ण गंधक जलकर पूरी सफलता होगई । और सफलताके कारण भी निश्चय होगये । वह यह हैं कि अग्नि इतनी तीव्र जो पारद गंधकको आधार पात्रको भली भांति गर्म कर सके नीचे जल भी अधिक न हो जो गर्म न होसके किन्तु केवल इतना ही हो खूब गर्म होजावे चूंकि जलका, इवेपोरेटिंगपोइन्ट, नीचाहै और गंधकका ऊंचा और पारदका और भी ऊंचा इस कारण जल गर्म होकर हानि नहीं करसक्ता गर्मसे गर्म जल भी पारदको उडनेसे रोकनेके लिये समर्थ होगा । घट अवश्य जाताहै सो बार २ डालकर उसकी पूर्ति होसक्तीहै ।

(२) सम्मति-यह तामचीनीके यंत्र बहुत ठीक होते यदि इन रकाबियोंके पेंदे ऊपरको उठे न होते, ऊपरको उठे होनेसे पारद किनारोंकी तरफको वह जाताहै ।

नं० १९ कच्छपयंत्र ।

उपरोक्त क्रियाका उन्नीसवीं बार अनुभव (कूँडेमें छोटे नँदोरेमें)

ता० ८।७।७ को १६ वें अनुभवके ६ तोले ११ माशे पारद गंधकको मोम गेरूसे पेंदेमें लेप कियेगये नये कूंडेमें उपरोक्त विधिसे रख लोहकटोरीसे ढक भस्ममुद्रासे बंद कर सुखादिया।

ता० ९ को कूंडेमें लोहेके घेरे लगा बालू भर ८ सेर पानी भरे नँदोरेपर रख ऽ॥ सेर ऽ१ सेरकी २ आंचें और १। सेरकी६कुल८ आंचें देनेसे कूंडा चटकगया। दर्ज कटोरी तक पहुंच गई पानी कूंडेके अन्दर आगया एक तरफसे भस्ममुद्रा भी उखडगई थी इस वास्ते आगे काम न चलाया गया खोलागया तो पारद गंधक ज्योंका त्यों वे पिघला रक्खारहा जहांसे भस्ममुद्रा उखड गई थी वहांसे गंधकके उडजानेका चिह्न दीखपडा । तोलनेपर ४ तोले ९ माशे गंधक और ७ माशे पारद निज रूपमें सब गंधक पारद ५ तोले ४ माशे निकला १ तोले ७ माशे घटा बडे कूंडे जितने बनेथे सब टूटचुके ।

नं० २० कच्छपयंत्र ।

उपरोक्त क्रियाका बीसवीं बार अनुभव (मिट्टीकी सैनक)

ता० १० । ७ । ७ को तामचीनीकी तश्तरीमें किये गये १७ वीं बारके अनुभवसे बचे २ तोले ३ माशे पारे और ६ माशे गंधकमें ३ माशे पारद और २ तोले गंधक और मिला पारद गंधक ढाई २ तोले कर उसको मिट्टीकी बडी सैनकमें (जो १० इंच चौडी और ३ इंच गहरी थी तोलमें १ सेर १०छ० थी नीचे जिसके मोम गेरूका लेप करदिया गया था) रख ऊपर हलकी लोहकटोरी ढक भस्ममुद्राकर सुखादिया ।

ता० ११ को उपरोक्त सैनकको तामचीनीके ऽ२॥ सेर पानी भरे कटोरेपर रख प्रथम आंच पावभरकी दी तो सैनक चटक गई इस वास्ते काम बंद कर दियागया । खोला तो गंधक पिघलाहुआ मिला । पारद गंधकसे ढकरहा था, तोलनेसे गंधक १ तो० ५ मा० और पारद निज रूपमें २ तो० ४ माशे कुल ४ तोले ९ मा० वजन रहा । ३ मा० छीजन गई ।

सम्मति-चटक जानेका एक कारण यह भी होसक्ताहै कि अबकी वार लोहेका घेरा और बालू नहीं रक्खी थी ।

नं० २१ कच्छपयंत्र ।

उपरोक्त क्रियाका इक्कीसवीं बार अनुभव (सैनकमें)

ता० १२ । ७ । ७ को उक्त २ तोले ५ माशे गंधक और

२ तोले ४ माशे पारद कुल ४ तोले ९ मा० पारद गंधकको पहलीसी ही सैनकमें (जिसकी पेंदीमें मोम आदिका लेप कियागया था और जिसके किनारोंसे अन्दरकी ओर चार चार अंगुल कपरौटी करदी गई थी और ठीक किनारेपर १ पट्टी कसकर लगाई थी) उपरोक्त विधिसे रख लोह-कटोरीसे ढक भस्ममुद्रा कर सुखादिया।

ता० १३ को सैनकको एक पात्रमें जिसमें ऽ३।≈ सेर पानी आता था रख लोहेका एक घेरा अन्दर लगा बालूभर पावभर ऽ॥ सेरकी २ और तीन तीन पावकी १० कुल १२ आंचें दे पानीके पात्रसे यंत्रको उतार अलग रख दिया। इतने समयमें दो तीन वार गर्म जल डालागया।

ता० १४ को खोलागया तो गंधक पिघलकर फैलकर बिलकुल जलगई थी पारा उससे ढकरहा था तोला गया तो गंधक ८ माशे और पारद निज रूपमें २ तोले ३ माशे कुल गंधक पारद २ तोले ११ माशे निकला १ तोले ९ माशे घटा।

सम्मति–अबकी बार भी पूर्ण गंधक जलगया और पूर्ण सफलता होगई किन्तु २ माशे पारद भी घटताहै। कुछ रवे पारदके गंधकमें होंगे पर फिर भी १ माशे पारदका तो क्षय अवश्य हुआ। १७ वीं बारमें भी पूर्ण सफलता होने-पर ३माशे पारद घटा था यह पारदका क्षय विचारणीयहै।

सफलताका नतीजा।

(१४ वीं बार) बडे कूंडेमें ८ सेर पानी नीचे रख ऽ१। सेरकी ७ आंचोंमें ५ तोलेमें से २ तोले ४ माशे गंधक जला।

(१७ वीं बार) तामचीनीकी रकाबीमें ऽ२। सेर पानी नीचे रख आध आध सेर की १४ आंचोंसे २॥ तोलेमेंसे २ तोले ३ माशे गंधक जला।

(२० वीं बार) मिट्टीकी कूंडेनुमा सैनकमें जो तोलमें १ सेर १० छ० भारी थीऽ३।≈ सेर पानी नीचे रख तीन तीन पावकी ११ आंचोंसे २ तोले ६ माशेमेंसे १॥। तोले गंधक जला।

नं० २२ कच्छपयंत्र।

उपरोक्त क्रियाका बाइसवीं बार अनुभव (सैनकमें)

ता० २१ । ७ । ७ को पूर्वोक्त २ तोले ३ माशे पारदमें ३ माशे पारद और उक्त ८ माशे गंधकमें १ तो० १० मा० गंधक और मिला दोनोंको पूरा ढाई ढाई तोलेकर पहली ही सैनकमें उपरोक्त विधिसे बंद कर ऽ। पावभर आधसेरकी २ आंचें और तीन तीन पावकी ८ कुल १० आंचें दीं तो गंधक जलाहुआ मिला। पारा गंधकसे ढक रहा था पारा निज रूपमें २ तोले४ माशे मिला और पारदमिश्रित गंधक ३ माशे ३ रत्ती और जला हुआ गंधक १० माशे हुआ इस जले गंधकमें पारा न था।

सम्मति–मेरी समझमें अबकी बार गंधक भी जलगया और पारा भी क्षय नहीं हुआ।

नं० २३ कच्छपयंत्र।

उपरोक्तक्रियाका तेईसवीं बार अनुभव (सैनकमें)

ता० २४।७।७ को उक्त २ तोले ४ माशे पारद और ३ माशे ३ रत्ती पारदमिश्रित गंधकमें २॥ तोले गंधक और दे सब ५ तोले १॥ माशेको उसी सैनकमें उपरोक्त विधिसे बंद कर पावभरकी १ आंच और आध आधसेरकी १६ कुल १७ आंचेंदीं १२ घंटेमें तो गंधक जला मिला पारा गंधकसे ढक रहा था। पारा निजरूपमें २ तोले ३ माशे निकला। पारद मिश्रित जला गंधक ७ माशे और नीचेके खुरचनकी राख ६ माशे निकली।

सम्मति–अबकी बार यह भेद रहा कि जो गंधक जला-हुआ ऊपर था उस सबमें पारदमिश्रित था और इस कारणसे यह कुछ कठिन था। और हिंगुल बनजानेका रूप जानपडता था।

प्रश्न–क्या कोमल आंच कच्छपमें विशेष गुणकारी होगी।

नं० २४ कच्छपयंत्र।

उपरोक्त क्रियाका चौबीसवीं बार अनुभव (सैनकमें)

ता० २७।७।०७ को उपरोक्त २ तोले ३ माशे पारद और ७ माशे पारद गंधक और ६ माशे नीचेके खुरचनमें १॥ तोले नया गंधक और दे सब ४ तोले १० माशेको उसी सैनकमें उपरोक्त विधिसे बंद कर १२ घंटेमें ऽ। की १ और आध आधसेरकी १६ सब १७ आंचें दीगई ता० २८ को खोलागया तो पारद निजरूपमें २ तोले और पारदमिश्रित जला गंधक १ तोले २ माशे और पारदके नीचेकी राख ७ माशे निकली।

नं० २५ कच्छपयंत्र।

उपरोक्त क्रियाका पच्चीसवीं बार अनुभव (लोहपात्रमें)

ता० ३०।७।०७ को पूर्वोक्त सोलहवें कच्छपसे निकले १५ तोले १॥ माशे पारद गंधकमेंसे १ तोले १ माशे पारद और ९ तोले पारद गंधक सब १० तोले १ माशेको जिसमें $\frac{11\frac{1}{2}}{15}$ भाग पारा था नये लोहेके कच्छपयंत्रमें भस्ममुद्रासे बंदकर ३॥ सेर जलसे भरे चीनीके तसलेपर रख १२ घंटेमें पावभरकी १ और आध आध सेरकी १५ कुल १६ आंचें दीं तो गंधक ज्योंकात्यों बेपिघला रक्खा रहा।

नं० २६ कच्छपयंत्र।

उपरोक्त क्रियाका छब्बीसवीं बार अनुभव (लोहपात्रमें)

ता० २।८।०७ को पूर्वोक्त गंधक पारदको जो पिघला-तक न था लोहेके पात्रसे जुदा न कर ज्योंका त्यों भस्म-मुद्रासे बंद कर पूर्ववत् जल भरे पात्रपर रख ऽ॥ सेरकी १ और ऽ॥। की १५ सब १६ आंचें दीं तो गंधककी ढेरीसी ज्योंकी त्यों बनी रही किन्तु उसके ऊपरी भागपर कुछ सफेदी और कठिनता आगई थी पारद निज रूपमें १०

माशे और पारद गंधक ९ तोले ३ माशे कुल १० तोले १ माशे पूरा निकल आया ।

सम्मति-आगे और अधिक आंच दीजावे ।

नं० २७ कच्छपयंत्र ।

उपरोक्त क्रियाका सत्ताईसवीं बार अनुभव (सैनकमें)

ता० ३।८।०७ को पूर्वोक्त तेईसवें कच्छपसे निकले २ तोले पारद और १ तोले २ मा० पारदमिश्रित गंधक और ७ माशे पारदके नीचेकी राखमें १। तोले नया गंधक और दे पूरा ५ तोले कर उसी सैनकमें उपरोक्त विधिसे बंदकर ऽ। की १ आंच और डेढ पावकी ३ (जो नोकरकी असावधानीसे ऽ॥= की जगह लगगई) और ऽ॥= की ११ कुल १६ आंचें दीं तो पारद निज रूपमें १ तोले ८ माशे और गंधक पारद १ तोले ५ माशे निकला जो कुछ कडा भी था । और कुछ अंश नीचे सैनकमें लगारहगया जिसको खुरचना उचित न समझा यह अनुमानमें ६ माशे होगा । सब ३ तोले ८ माशे समझना चाहिये १। तोलेके करीब गंधक क्षयहुआ ।

सम्मति-गंधक पूरा नहीं जलता अग्नि या समय कम है ।

नं० २८ कच्छपयंत्र ।

उपरोक्त क्रियाका अट्ठाईसवीं बार अनुभव (सैनकमें)

ता० ५।८।०७ को पूर्वोक्त १ तोले ८ माशे पारद और १ तोले ५ माशे पारद गंधकमें ६ माशे नया गंधक और दे कुल ३ तोले ७ माशेको उसी सैनकमें उपरोक्त विधिसे बंद कर पावभर ऽ॥ सेरकी २ और ढाई ढाई पावकी १५ कुल १७ आंच दी तो पारद निज रूपमें १ तोले ६ माशे और पारदमिश्रित जला गंधक १ तोले ७ माशे निकला । कुल वजन ३ तोले १ माशे निकला । रक्खागया था ३ तोले १ माशे पुराना और ६ माशे नया अत एव ६ माशे नये गंधकका वजन ही छीजा देखनेसे आज सैनक चटकी मिली ।

सम्मति-मेरी समझमें ढाई पावकी आंचसे कम और तीन पावकी आंचसे अधिक देना ठीक नहीं ।

नं० २९ कच्छपयंत्र ।

उपरोक्त क्रियाका उन्तीसवीं बार अनुभव (लोहपात्रमें)

ता० ५।८।०७ को उपरोक्त २५ वीं क्रियाका १० माशे पारद और ९ तोले ३ माशे पारद गंधक कुल १० तोले १ माशेको लोहेके कच्छपमें रख भस्ममुद्रासे बंदकर उसी जलभरे पात्रपर रख ऽ॥ सेरकी १ आंच और सेर सेरभरकी १६ आंचें कुल १७ आंचें दीं तो पारद निज रूपमें ६ माशे और पारद गंधक ९ तोले ७ माशे अर्थात् पूरा १० तोले १ माशे निकल आया ।

सम्मति-तोलमें अन्तर अबकी वार भी न पडा या तो अग्नि कम है (जल ता अधिक है नहीं) और या यह कारण है कि गंधक जला हुआ कम अंशमें है इस लिये क्षय नहीं होता, नया गंधक देकर देखाजावे ।

नं० ३० कच्छपयंत्र ।

उपरोक्त क्रियाका तीसवीं बार अनुभव (लोहपात्रमें)

ता० ६।८।०७ को पूर्वोक्त ६ माशे पारद और ९ तोले ७ माशे पारद गंधकमें (नवे और सोलहवें कच्छपसे निकले १५ तोले १॥ माशे पारद गंधकमेंसे बचा) ५ तोले पारद गंधक और मिलादिया अर्थात् नवें और सोलहवें कच्छपका सब १५ तोले ७॥ मा० पारा यहां लेलियागया । (इसमें ११॥ तोले पारा और ३ तोले ७॥ माशे गंधक है) और इसमें २॥ तोले नया गंधक और दे सब१७तोले७माशे को लोहेके कच्छपयंत्रमें बंदकर उसी जलभरे पात्रपर रख १२ घंटेमें ऽ॥ सेर ऽ॥। तीन पाव ऽ१ सेर की ३ और सवा सवा सेरकी १५ कुल १८ आंचें दीं तो पारद निज रूपमें ६ माशे और पारद गंधक १६ तोले ९ माशे निकला अर्थात् (१७ तोले ७ माशेमें) १७ तोले ३ माशे वजन निकला ४ माशे घटा ।

सम्मति-गंधकका क्षय अब भी नहीं हुआ आंच बढाई जावे ऽ॥। ऽ१ ऽ१। ऽ१॥ की दीजावे ।

नं० ३१ कच्छपयंत्र ।

उपरोक्त क्रियाका इकतीसवीं बार अनुभव (लोहपात्रमें)

ता० ११।८।०७ को पूर्वोक्त ६ माशे पारद और १६ तोले ९ माशे पारद गंधक यानी १७ तोले ३ माशे में २ तोले ९ माशे नया गंधक और मिला पूरा २० तोले कर (इसमें ११॥ तोले पारद और ३॥ तोले पुराना और ५ तोले नया गंधक है) लोहेके कच्छपमें बंद कर उसी जल भरे पात्रपर रख १२ घंटेमें ऽ॥। ऽ१ ऽ१। ऽ१॥ सेरकी ४ और पौने दो दो सेरकी १० कुल १४ आंच दीं तो पारद निज रूपमें ५ माशे और पारद गंधक १९ तोले ४ माशे निकला अर्थात् (२० तोलेमें) १९ तोले ९ माशे निकला । ३ माशे घटा ।

सम्मति-गंधकके क्षय न होनेका कारण फिर समझमें नहीं आया अग्नि तीव्र है । थोडी और अधिक कीजावे ।

नं० ३२ कच्छपयंत्र ।

उपरोक्त क्रियाका बत्तीसवीं बार अनुभव (लोहपात्रमें)

ता० १४।८।०७ को पूर्वोक्त ५ माशे पारद और १९ तोले ४ माशे पारद गंधक कुल १९ तो० ९ माशेको लोहेके कच्छपमें बंद कर उसी पानीभरे पात्रपर रख १२ घंटेमें ऽ१ सेर ऽ१। सेर ऽ१॥ सेर ऽ१॥। सेरकी ४ और दो दो सेरकी ७ कुल ११ आंचें दीं तो पारद निज रूपमें ४॥ माशे और पारद गंधक १९ तोले ३॥ माशे कुल (१९ तोले ९ माशेमें) १९ तोले ८ माशे निकला अर्थात् सब निकल आया १ माशे तोलका अन्तर समझना चाहिये ।

नं० ३३ कच्छपयंत्र ।

उपरोक्त क्रियाका तेंतीसवीं बार अनुभव (लोहपात्रमें)

ता० २० से २३ । ८ । ०७ तक ४॥ माशे पारद और १९ तोले ३॥ माशे पारद गंधक कुल १९ तोले ८ माशेको लोहेके कच्छपमें रख हलकी नई कटोरीसे ढक भस्ममुद्रा कर छोटे कूंडेपर जिसमें २॥। सेर जल भरा जाता था रख १२ घंटेमें ऽ१ ऽ१। ऽ१॥ की ३ पौने दो दो सेरकी ३ और दो दो सेरकी ७ कुल १३ आंचें दीं । हर घंटेमें १बार पानी गरम डालना पडा खोला तो पारद निजरूपमें ४ माशे और पारद गंधक १८ तोले ८ माशे अर्थात् कुल १९ तोले निकला ८ माशे घटा ।

सम्मति–गंधक क्षय नहीं होता पानी इससे कम नहीं होसकता कटोरी हलकी करदीगई अत एव अग्नि तीव्र करनेको कोयलेकी अग्नि दीजावे ।

नं० ३४ कच्छपयंत्र ।

उपरोक्त क्रियाका चौंतीसवीं बार अनुभव (लोहपात्रमें)

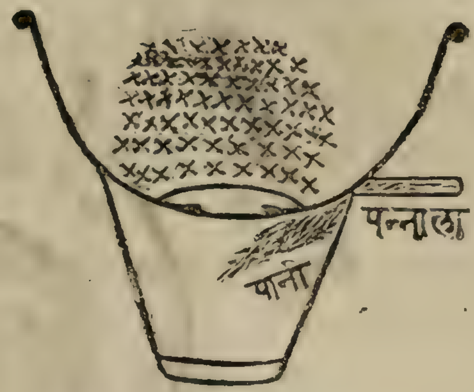
ता० २५ से २७ । ८ । ०७ तक पूर्वोक्त ४ माशे पारद और १८ तोले ६ माशे पारद गंधक (यह १८ तोले ८ माशे था पीसनेसे २ माशे खरलमें छीज गया) कुल १८ तोले १० माशेको लोहेके कच्छपमें रख हलकी लोहकटोरीसे ढक भस्ममुद्रा कर बालटीपर (जिसमें ८॥सेर पानी आता था और बाल्टी कम चौडी होनेसे जिसमें केवल कच्छपकी कटोरीकी बराबर नीचेका पेंदा भीगती थी) रख पाव पावभर कोयलोंकी ३ आंचें और डेढ डेढ पावकी ६ कुल ९ आंचें दीं हर आंच पर दो बार गर्म पानी डालना पडा । खोला तो पारद निजरूपमें २ माशे और पारद गंधक १८ तोले निकला ८ माशे घटा ।

सम्मति–कोयले वढायेजावें और जल्दी जल्दी आंच दीजावे आधसेर कोयलोंकी आंच हर घंटेपर लगनी चाहिये ।

नं ३५ कच्छपयंत्र ।

उपरोक्त क्रियाका पैंतीसवीं बार अनुभव (लोहपात्रमें)

ता० २८ से ३० । ८ । ०७ तक पूर्वोक्त २ माशे पारद और १८ तोले पारद गंधकको लोहेके कच्छपमें रख हलकी लोहकटोरीसे ढक भस्ममुद्रा कर उसी जलभरी बालटीपर (जिसमें इस बार किनारेपर एक पनाला करीब ८ अंगुल लंबा इस वास्ते लगायागया था कि पानी कम होजानेपर उसमें होकर पानी अन्दर पहुंचजाय और कच्छप बालटीसे उठाना न पडे) रख पाव पावभर कोयलोंकी ३ आंचें और ऽ।= की १ और आध आधसेरकी ११ कुल १५ आंचें ५ प्रहरमें दीगईं बादको जैसेका तैसा पानीपर रक्खा छोडदिया सबेरे देखा तो कुछ गर्म था और पानी पेंदेसे हटगया था इस लिये दो पहरको खोला तो १॥ माशे पारद और १७ तोले ४ माशे गंधक पारद निकला ८॥ माशे घटा ।



नं० ३६ कच्छपयंत्र ।

उपरोक्त क्रियाका छत्तीसवीं बार अनुभव (लोहपात्रमें)

ता० ३१ से २ । ९ । ०७ तक पूर्वोक्त १७ तोले ४ माशे पारद गंधक और १॥ माशे पारदको लोहेके कच्छपमें रख हलकी लोहकटोरीसे ढक भस्ममुद्रा कर उसी बाल्टीपर (जिसमें इस बार मिट्टीभर ४ अंगुल खाली रख केवल ४। सेर पानी भरागया था) रख ७ बजे ऽ॥ सेरकी फिर ८ बजेसे ऽ॥। की आंच हर घंटेपर लगाई गई । ६ बजेतक सब १२ आंचें लगीं तो पारद गंधक १७ तोले १ माशे निकला ४॥ माशे घटा ।

सम्मति–अग्नि पूरी दीगई फिर भी गंधकका क्षय नहीं हुआ न अग्नि कम है न जल अधिक है । समझमें नहीं आता कि क्या कर्तव्यहै ।

पारद उत्थापन ।

कच्छपयंत्रसे निकले पारद गंधकका डौरू द्वारा पातन प्रथम बार ।

ता० १९ से २३ । ९ । ०७ तक २७ वें कच्छपका ३ तोले १ माशे और पैंतीसवें कच्छपका १७ तोले १ माशे कुल २० तोले २ माशेको जिसमें १४ तोले पारा और ६ तोलेके करीब गंधक है (किन्तु वास्तवमें सब ३५ तोलेके करीब गंधक पडा था जिसमें से ६ तोले रह गयाहै) रोगनी हांडियोंमें रख डौरू कर भस्म मुद्रासे बंदकर कपरौटी कर सुखादिया दो दिन रक्खा रहा ।

ता० २२ को भट्टीपर १ प्रहर मंदाग्नि और ३ प्रहर समाग्नि दी ऊपर भीगा कपड़ा डालागया बादको चूल्हेपर रक्खा छोडदिया ।

ता० २३ को सबेरे खोलागया तो ऊपरकी तमाम हांडीमें उडाहुआ काले रंगका गंधयुक्त मूर्छित पारद लगरहा था (क्रिस्टलरूपमें) यह ऊपर काला था और नीचे श्वेतसा था इसको निकाला तो ३ तो० १ मा. हुआ इसमेंसे पारा न निकल सकता था नीचेकी हांडीमें ६ तोले ५ माशे दवा ढिम्मेकी शकलकी काले रंगकी थी पानी ऊपर नीचेकी हांडियोंकी कुल दवा १२ तोले ४ माशे निकली ७ तोले ९ माशे छीजन गई गंधक विद्यमान रहनेसे इसमें पारेका कुछ भी अंश पृथक् हाथ न लगा और न प्रत्यक्ष रूपमें दीखपडा ।

उपरोक्त पारद गन्धकका द्वितीय बार पातन ।

ता० २४ । ९ । ०७ को पूर्वोक्त १२ तोले ४ माशे पारद

गंधकको पीस उन्हीं हांडियोंमें फिर डौरू कर भस्ममुद्रासे बंद कर कपरौटी कर सुखा दिया ।

ता० २५ को ६ बजेसे समाग्नि दी--३बजे खुद जाकर देखा तो गंधककी गंध आनेकी शंका हुई इस वास्ते डौरू चटक जानेकी शंकासे ३ बजे काम बंद कर दिया और हांडीको उतार लिया ।

ता० २६ के सबेरे खोल देखागया तो हांडी चटकी न थी ऊपरकी हांडीमें २ तो० ११ माशे गंधकयुक्त पारद निकला (इसका रंग प्रथम बारकी भांति काला न था श्वेतता लिये था) जिसमें पारेके परमाणु दीखते थे किन्तु पृथक् न होसका नीचेकी हांडीमें ६ तोले ४ माशे ललाई लिये काली दवा मिली यानी कुल ९ तोले ३ माशे वजन निकला । ३ तोले १ माशे छीजगया ।

सम्मति–६ तोले गंधककी जगह १० तोले १० माशे तोल घटचुकी फिर भी पारा पृथक् नहीं हुआ ।

शंका–क्या बंद यंत्रमें गंधक विद्यमान रहते भी पारा उडताहै और खुलेमें नहीं ।

अनुमानसे समाधान–अवश्य उडताहै नहीं उडता तो शीशीमें गंधयुक्त पारदकी नाल उडकर न जमती ।

उपरोक्त पारद गंधकका तीसरी बार पातन ।

ता० २६।९।०७ को पूर्वोक्त ९ तोले ३ माशे पारद गंधकको पहली भांति फिर डौरूमें बंद कर दिया ।

ता० २९ को पहली ४ प्रहरकी अग्नि दी ।

ता० ३० के सबेरे खोला तो ऊपरकी हांडीमें बेसनी रंगकी भस्ममें मिले पारदके रवे दीखपडे जो इकट्ठा करनेपर ३ तोले हुए । ६ माशे पारद नीचेकी हांडियोंमें निकला दोनों हांडियोंका पारा तोलमें ३ तो० ६ मा० हुआ और नीचेकी हाँडीका चूर्ण (जो श्वेततायुक्त ताम्र वर्णकासा था) ४ तोले ३ माशे और पारा छाननेसे निकला ४॥ माशे कुल ४ तोले ७॥ माशे चूर्ण निकला (९ तोले ३ माशे वजनमें) ८ तोले १॥ माशे हाथ लगा–१ तोले १॥ माशे छीजगया ।

सम्मति--गंधकयुक्त पारदके पातनमें पहली बार पारद गंधकका अंश अधिक रहनेसे कालेरूपमें उडकर जमा था और बहुतसा भाग बेउडाही रहगया होगा दुबारा पातनमें गंधकका अंश कम रहनेसे श्यामता घट कर सफेदी आई । तीसरी बार गंधक बहुत कम रहजानेसे पीतता दीख पडी अर्थात् जबतक ऊपरकी हांडीमें श्याम रहै जानलो कि गंधकका क्षय नहीं हुआ--गंधकका क्षय होनेपर क्रमसे सफेदी और पीतता उत्पन्न होती है (अनुमान है कि अंतमें रक्तता होती होगी)

उपरोक्त पारद गंधकका चौथी बार पातन ।

ता० ३।१०।०७ को पूर्वोक्त ४ तोले ७॥ माशे दवाको पहली ही भांति डौरूमें बंद कर दिया ।

ता० ८ को ४ प्रहर सामान्य अग्नि भट्टीपर दी ।

ता० ९ को खोला तो (ऊपरकी हांडीमें पारेके रवे दीख पडते थे और बहुत हलकी पीली झलकयुक्त श्वेत भस्मसी हांडीपर छाई हुई थी) ८ माशे पारा ऊपरकी हांडीमें निकला--नीचेकी हांडीमें ३ तोले ९ माशे हलके कत्थई रंगकी राख निकली नीचेकी हांडीमें पारा बिलकुल नहीं था ४ तोले ७॥ माशेमेंसे ४ तोले ५ माशे हाथ आया २॥ माशे छीजन गई ।

उपरोक्त पारद गंधकका पाँचवीं बार पातन ।

ता० ११।१०।०७ को पूर्वोक्त ३ तोले ९ माशे पारद गंधकको पहली ही भांति डौरूमें बंद करदिया ।

ता० १२ को ७ बजेसे रातके ९ बजेतक भट्ठीपर समाग्नि दीगई ऊपर भीगा कपडा डालागया बादको जैसेका तैसा रक्खा छोडदिया ।

ता० १३ के सबेरे खोला तो २॥ माशे पारा और २ रत्ती कम ३ तोले ६ माशे हलके कत्थई रंगकी राख निकली ।

सम्मति--इस २ रत्ती कम ३॥ तोले राखमेंसे आधी यानी १ रत्ती कम १ तोले ९ माशे राखको मोटे मिट्टीके चिरागोंके किनारे घिसे संपुटमें भर भस्ममुद्रा कर कपरौटी सुखादिया । फिर ता० १७ को ५ सेर कंडोंकी आंच दीगई तो १ तोले ४ माशे राख करीब २ पहले से ही रंगकी निकल आई--जो खुरखुरी और कत्थई रंगकी थी--यह बात निश्चय करने योग्य है कि जब पारद और गंधक दोनों आग्नेयहैं तो फिर यह क्या चीज बाकी रहगई ।

जौनपुरकी अलकीमियां कमेटीके बने पातनयन्त्र अर्थात् चीनीफिरे मिट्टीके डौरूद्वारा पारद उत्थापनका अनुभव (प्रथम भाग)

ता० २० । ५ । ०७ को बाजारी पारेका इष्टिका यंत्रसे गंधक जारणके अनुभवमें उत्पन्न हिंगलू १ तोले ११ माशेको चीनी फिरे पातनयंत्रमें रख दो भाग सैंधव और एक भाग राखसे बनी भस्ममुद्रासे संधि बंद कर ऊपरसे मारकीनकी २ कपरौटी करदी गई, और यंत्र सूखनेको रख दिया गया ।

ता० २१ । २२ को फुर्सत न मिलनेकी वजहसे यंत्र रक्खा रहा और सूखता रहा ।

ता० २३ को ७ बजेसे ३ बजेतक उँगलीसी पतली बबूलकी डंडियोंकी ऐसी मंदाग्नि दीगई जो पेंदेमें ही लगी और ऊपर भीगा कपडा रक्खा गया, बादको आंच अलग कर जैसेका तैसा गर्म चूल्हे पर रक्खा रहने दिया ।

ता० २४ को खोला गया तो ।।≈) ४ रत्ती पारा और १ तोले राख निकली ८ रत्ती छीजन गई, पारा कुछ ऊपरके पात्रमें और कुछ नीचेके पात्रकी गर्दनमें लगा हुआ मिला ।

विचार–अग्नि मंद रही, कुछ विशेष होनी चाहिये थी । यद्यपि यंत्रकी संधि बहुत ढीली और अनमिल थी किन्तु

इस भस्ममुद्राके कारण पारा संधिसे बाहर निकला न दीख पडा, अनुभव आशा जनक है।

उपरोक्त क्रियाका दूसरीबार अनुभव (द्वितीय भाग)

ता० २५ । ५ ।०७ को हकीम मुहम्मद यूसफ साहबकी चोयेकी क्रियाका जो पारा जडियोंमें मिला रहगया था उस ५॥। तोलेको पीस बारीक कर पातनयंत्रमें रख केवल पानी और गोंदके पानीके साथ घुटे नमकके कुश्तेसे दोनों पात्रोंको जोड धूपमें रख दिया, ७ बजेसे ३ बजेतक सुखाया बादको मुलतानीकी कपरौटी कर फिर धूपमें सूखनेको रख दिया।

ता० २६ को १ प्रहर मंदाग्नि जो पेंदेमेंही लगी और ३ प्रहर कुछ अधिक अग्नि दी बादको आंच बंद कर यंत्रको ज्योंका त्यों गर्म चूल्हे पर रक्खा रहने दिया।

ता० २७ को पानी डाल २ जोड खोलना चाहा परन्तु न छूट सका तो उक्त यंत्रको पानी भरी नाँदमें रात भर पडा रहने दिया।

ता० २८ के शुबहको पानीसे निकाल खोला तो जल्द खुल गया थोडासा पानी यंत्रके अन्दर चला गया था, अतएव पानी निचोड सुखा पारेको छुटा तोला तो १-) भर निकला, ऊपरके डौरूमें अधिक और नीचेके डौरूकी गर्दनमें थोडा था, नीचेके पात्रमें जो भीगा ढिम्मासा मिला उसको भी सुखा तौला तो १॥ तोले हुआ, इसमें पारद बहुत थोडा हो तो हो।

विचार--नमकके कुश्तेकी (निष्केवल) मुद्रा अधिक कडी होजाती है, बाहरी जोड पर हो तो हो भीतर कभी न करनी चाहिये, यह यंत्र जोडपर खांचेदार था और इसमें खांचेके भीतर भी भस्ममुद्रा दीगई थी, भीतर पानी न पहुँचनेसे कठिनतासे खुली। यह मुद्रा खराब संधियोंमें भी पारदको रोकती है।

उपरोक्त क्रियाका तीसरीबार अनुभव।

ता० ३० । ५ ।०७ को खांचेदार छोटे डौरूमें चोयेवाले पारेका १ तोले ७ माशे सफूफ और १॥ तोले पहले डौरूकी बची राख कुल ३ तोले १ माशे वजन रख साधारण नमकमें मिली तिहाई भाग राखसे बनी भस्ममुद्रासे अन्दर बाहर बंद कर दिया गया, और १ घंटे भर सूखने पर २ कपरौटी टुकरीकी कर दीगई।

ता० ३१ को यह यंत्र धूपमें सूखता रहा।

ता० १ । ६ को खोला गया तो संधिपर पानी डालकर खुलगया, ऊपरके पात्रमें ७ माशे पारा मिला कुछ दो चार रवे नीचेके पात्रकी गर्दनमें मिले १ तो० ९ मा० राख निकली, अर्थात् ३ तोले १ माशे वजनमें कुल २ तोले ४ माशे वजन मिला ९ माशे छीजन गई।

सम्मति--नमकके कुश्तेकी मुद्रा खोलनेमें कठिनता करती है और साधारण नमककी मुद्रा सरलतासे खुल जाती है और काम वैसा ही देती है इस कारण खांचेदार जोडोंमें तो अवश्य साधारण लवणमुद्रा ही करनी चाहिये।

उपरोक्त क्रियाका चौथीबार अनुभव (तृतीय भाग)

ता० ३० । ५ ।०७ को साधारण मध्य शुद्ध पारदकी इष्टिकायंत्रमें समान गंधक जारणसे उत्पन्न ($\frac{११}{२}$) ५॥ तोले पिष्टी (जिसमें ५ तोले पारद था) को पीस जौनपुर वाले विना खांचेके बडे डौरूमें बंद कर दिया गया, इस डौरूके किनारोंपर भी काच फिरा था इस लिये वे घिसे न गये और उनके बीचमें जो मोटी संधि रहती थी वह नमकके कुश्ते और समान अंश राखसे बनी भस्ममुद्रासे अन्दर बाहर बंद कर टुकरीकी दो कपरौटी कर दी गई।

ता० ३१ को यह यंत्र धूपमें सुखा दियागया।

ता० १।६ को यंत्र रक्खा रहा।

ता०२ को १ प्रहर मंदाग्नि और ३ प्रहर समाग्नि दीगई।

ता० ३ को यह यंत्र संधिपर पानी डालकर खोला गया तो शीघ्र खुल गया, ऊपरके पात्रमें २ तोले ८ माशे पारा और नीचेके पात्रमें ३ माशे यानी कुल २ तो० ११ मा० पारा निकला, १ तोले ५ माशे राख निकली १ तो० २मा० छीजन गई।

विचार--विना खांचेपर यह कुश्ते नमककी मुद्रा भी ठीक है, छीजन बहुत ज्यादः गई कुछ पारेके रवे यंत्रके अन्दर कांचके सूक्ष्म गड्ढोंमें भी समाये रहगये।

उपरोक्त क्रियाका पाँचवीं बार अनुभव।

ता० ३०।५।०७ मईको साधारण शुद्ध पारदका इष्टिका यंत्रमें समान गंधक जारणसे उत्पन्न ५॥ तोले पिष्टीको जिसमें ५ तोले पारद था पीस बाजारी काच फिरी हांडियोंमें जिनके किनारे काच बहुत कम फिरे होनेके कारण चकलेपर घिस लियेगये थे (यद्यपि घिसनेसे निःसंधि होगयेथे किन्तु किनारोंकी चौडाई कम ही थी) रख बे सांस मिला केवल बाहरसे नमकके कुश्ते और लकडीकी राख समान अंशसे बनी भस्ममुद्रासे जिसमें गोंद न पड़ा था बंद कर टुकरीकी २ कपरौटी कर दीगई।

ता० ३१ को धूपमें सूखता रहा।

ता०१।२।३ को यह यंत्र रक्खा रहा।

ता० ४ को १ प्रहर मंदाग्नि और ३ प्रहर समाग्नि दी ऊपर भीगा कपडा रक्खागया, बादको जैसेका तैसा चूल्हेपर रक्खा रहनेदिया।

ता०५को खोलागया तो ऊपरकी हांडीमें ३। तोले पारा मिला दो एक रवे पारेके नीचेकी हांडीमें ६ माशे राख निकली, १॥। तोले छीजन गई।

(छीजन इसमें भी बहुत ज्यादः गई, दोनों हांडियोंमें काला रंग चढ गया, केवल पेंदेमें जहां अग्नि लगती थी वहां काला रंग न था।अवश्य गंधकका अंश ही काला रंग है, और मुमकिन है कि इसमें कुछ पारदका अंश भी हो)

ता० ७ को इन हांडियोंको धोया और धोवनके पानीको नितारा तो काली राख मिली जिसको सुखाया तो कुछ रवे

पारेके दीखपडे, इन हांडियोंके अन्दर फिरा काच चिकना नहीं है, इसी कारणसे यह रवे पारेके रहजाते हैं।

उपरोक्त क्रियाका छठी बार अनुभव।

ता०८।६।०७ को जौनपुरवाले बड़े डौरूसे निकली १ तोले ५ माशे राख और बाजारी हांडियोंके डौरूसे निकली ६ माशे राख और इन दोनों डौरूओंके धोनेसे निकली ३ माशे राख कुल २ तोले २ माशे वजनको जौनपुरवाले खांचेदार छोटे डौरूमें रख भस्ममुद्रासे संधि बंद कर धूपमें सुखादिया।

ता०९को११ घंटे मंदाग्नि दे चूल्हेपर रक्खा रहने दिया।

ता० १० को संधिपर पानी डाल खोला गया तो ऊपरके पात्रमें ११ माशे पारा और नीचेकेमें १ माशे कुल १ तोले पारा मिला और नीचेके पात्रमें ११ माशे राख निकली ३ माशे छीजन गई अभी पारा और है।

विचार-इन डौरूओंमें मंदाग्निसे पारा ठीक नहीं उड़ता तीव्राग्नि देनी चाहिये, कारण यह कि पेंदे कम चौड़े और उँचाई ज्यादः है यह आकार डौरूका हांडीसे अधिक लाभ दाई नहीं।

असंतोष दाईफल-अर्थात् १० तोले पारदसे बनी पिष्टीकी भस्मके पातनमें ७ तोले १० माशे पारद हाथ आया ३ माशे और भी निकलनेयोग्य रहगया, तो भी २ तो० ६ मा० अर्थात् चतुर्थांश क्षय हुआ।

उपरोक्त क्रिया सातवीं बार अनुभव (चतुर्थ भाग)

ता० १०।६।०७ को साधारण शुद्ध पारदमें ढाई गुनी गंधक जारणसे इष्टिका यंत्रमें उत्पन्न पिष्टीके ढिम्मेको जो तोलमें १०॥) भरथा बारीक पीस उसका आधा ५।) रुपयेभरको काच फिरी बाजारी हांडियोंमें (जिनके किनारे आज थोडे और घिस लिये थे) रख वेसांस दर्ज मिला नमकके कुश्ते और नमककी राख समान अंशसे बनी भस्ममुद्रासे संधि बंद कर दो कपरौटी कर धूपमें सुखादिया।

ता० ११ को १२ घंटे मंद और समाग्नि दीगई और यंत्रके ऊपर आठ दस तहका भीगा कपडा डालते रहे, बादको जैसेका तैसा चूल्हेपर रक्खा छोडदिया।

ता० १२ को यंत्रकी संधिपर पानी डाल खोलागया तो (ऊपरकी हांडीमें ३॥। तोले पारा निकला, और नीचेकी हांडीमें १॥। तोले राख यानी कुल ४॥ तोले वजनमिला ९ माशे छीजन गई ऊपरकी हांडीमेंसे ५ माशे पारा जो छिद्रोंमें भर गया था वह बुर्शसे छुटानेसे मिला था।)

उपरोक्त क्रियाका आठवीं बार अनुभव।

ता० १०।६।०७। जूनको साधारण शुद्ध पारदमें ढाई गुनी गंधक जारणसे इष्टिकायंत्र में उत्पन्न पिष्टीके ढिम्मेको जो तोलमें १०॥) भर था बारीक पीस उसका आधा ५।) भर जौनपुरवाले डौरूमें रख डौरूकर नमकके कुश्ते और नमककी राखसमान अंशसे बनी भस्ममुद्रासे भीतर बाहर संधि बंदकर मोटे कपडेकी दो कपरौटी कर धूपमें सुखादिया।

ता० ११।१२ को यह यंत्र धूपमें सूखता रहा।

ता० १३ को १ पहर मंदाग्नि और ३ प्रहर पूर्णाग्नि दीगई और ऊपर आठ दसतह का भीगा कपडा डाला गया बादको जैसेका तैसा चूल्हेपर रक्खा छोडदिया।

ता० १४ को खोलागया तो ऊपरके पात्रमें ३॥। तोले पारा और नीचेके पात्रमें ५ माशे यानी कुल ४ तोले २ माशे पारा और नीचेकी हांडीमें ५ माशे राख निकली इस तरह कुल ४ तोले ७ माशे वजन हाथ लगा ७ माशे छीजन गई तीव्र अग्नि और ऊपर खूब शीतलता देनेसे अधिक लाभ हुआ फिर भी पंचमांश छीजन गई।

(तीव्र अग्नि और ऊपर खूब शीतलता देनेसे अधिक लाभ हुआ फिर भी पंचमांश छीजन गई)

उपरोक्त क्रियाका नववीं बार अनुभव।

ता० १५।६।०७ को सातवें और आठवें पातनसे निकली प्रथम बार १ तोले ९ माशे दूसरी बार ५ माशे कुल २ तोले २ माशे राखको जौनपुरी छोटे डौरूमें रख भस्म मुद्रासे संधि बंद कर दो कपरौटी कर सूखनेको रख दिया।

ता० १७ को खोला गया तो पारा ऊपरके पात्रमें रवे रूपमें मिला और नीचेके पात्रमें जो पारा मिला वह अपने रूपमें मिला यह ऊपरकेमेंसे गिरपडा होगा, दोनों पात्रोंका पारा तोलमें १ तोले ४ माशे हुआ, ऊपर नीचेके पात्रोंके पारा छाननेसे जो राख निकली वह ३ माशे हुई, कुल १ तो. ७ मा. वजन मिला ७ माशे छीजन गई।

फल १०) भर पारेकी १०॥) भर पिष्टीके पातनमें (जो तीन बार करना पडा) ३॥।) + ४≡)१।-)=८।)भर पारा मिला १॥।) भर पारा छीजगया।

बिडप्रयोगका अनुभव दोलायंत्रसे।

ता० २६।१२।०८ को चक्रवर्ती औषधालयके सिंग्रफ़से निकले ८ तोले पारेको १ तोले बिडके साथ थोडा बिड डाल तप्त लोह खल्वमें घोटा मिलता न देख जंभीरी रस डाल २ घोटना आरम्भ किया, जंभीरीरससे झाग उठे, पारा कुछ मिला।

ता० २६।२७ दोनों दिन ८,८ घंटे घुटा, जंभीरी रस $\frac{3}{4}$ बोतल पडा।

ता० २८ को धूपमें बिना रस डाल घोटा, गाढा होनेपर ३ तो० ६ माशे ३ रत्ती पारा पृथक् होगया बाकी गाढी चीकटको गाढे कपडेपर रखलिया और बाकीको धोकर उसी कपडेपर डालदिया, बिना रसके छुटना मुश्किल था।

ता० २९ को कलका पृथक् हुआ ३ तोले ६ माशे ३ रत्ती पारा भी उसी कपडेमें रख पोटली बांध दी।

ता० ४।१।९ को ४ सेर गोमूत्रसे पूरित हांडीमें दो लाकर ९ बजेसे मंदाग्नि देनी आरम्भकी दिनरात काम चला।

ता० ६ की रातको ८ बजे काम बंद करदिया, अर्थात् २॥ दिन काम चला हांडीको भट्ठीपर रक्खी रहनेदिया, सब ४+१०॥ सेर गोमूत्र पडा।

ता० ७ के सबेरे खोला तो ३ तोले ११ माशे पारा कपडेपर एकत्र मिला बाकी बिडमें मिलाहुआ था बिडको गर्म पानीसे धो नितार सुखाया तो २ तो० ९ माशे ३ रत्ती पारा और निकला अर्थात् ६ तोले ८ माशे ३ रत्ती पारा और निकला, १ तो० ३ मा० ५ र० दवामें मिला रहगया बिडकी धुली राख८ मा०६र० निकली जो चिकनी काली कज्जली रूप थी हांडीसे गोमूत्र निकाल देखा तो उसके पेंदेमें कढीसी गाद जम रहीथी उसको रकाबीमें निकाल सुखाया तो कोई रवा पारेका न दीख पडा अतएव उसे धो सुखादिया जो बहुत बारीक और कंजई रंगकी थी और तोलमें ४॥ तोले थी ।

सम्मति–यह दोला भली भांति पारदके पृथक् करनेमें समर्थ न हुआ क्या मूत्रको छोड अम्लमें दोला करना अधिक उपकारी होता ।

ता० १३ को उक्त काली और कत्थई दोनों प्रकारकी भस्मोंमेंसे पृथक् २ चार चार माशे भस्मको लोहेकी रकाबीमें रख शीशेके ढक्कनसे ढक स्प्रिट लैम्पकी २०, २० मिनट दोनोंको आंच दी तो दोनोंमेंसे पारा उडकर शीशीके ढक्कनपर जमा किन्तु काली भस्ममेंसे अधिक उडा, अत एव इन दोनों भस्मोंको जो तोलमें ५ तोले २ मा० थी लोहेके डौरूमें भर बंद करदिया ।

ता० १४ को ८ बजेसे रातके ८ बजेतक १२ घंटे आंच दी, डौरूपर भीगा कपडा न डालागया ।

ता० १५ को खोला तो ४ माशे ७ रत्ती पारा निकला, अर्थात् सब ७ तो० १ माशे २ रत्ती पारा हाथ लगा, १० माशे ६ रत्ती घटगया, राख ४ तोले ३ माशे रहगई ।

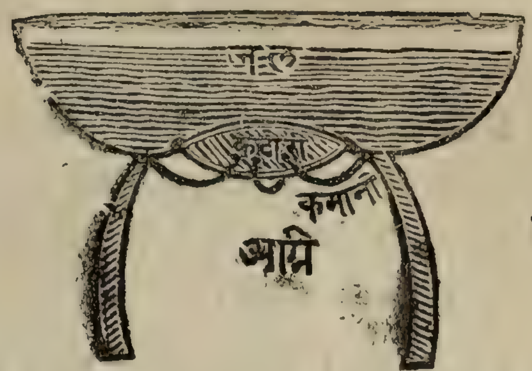
बिडप्रयोगका अनुभव (जलयंत्रसे)

ता० १५।१।०९ को उक्त बिड दोलासे निकले ७ तोले १ माशे २ रत्ती पारद और १ तोले बिड दोनोंको लोह-खल्वमें बूंद बूंद जंभीरी रस डाल गाढा गाढा घोटा, १५, २० मिनटमें पारा मिलगया २ घंटे घुटा करीब ७ माशे जंभीरी रस पडा ।

ता० १६ को सबेरे विना रस डाल घोटा तो गाढा होने-पर पारेके रवे इकट्ठे होने लगे और २,२॥ घंटेमें ३ तोले १० माशे ६ रत्ती पारा पृथक् होगया बाकी ३ तो० २ माशे ४ रत्ती बिडमें मिलारहा, इस पारदमिश्रित बिडको खरलसे खुरच टिकिया सी बना आकके पत्तेपर रख लिया जिसमें बहुत सूक्ष्म कण दीख पडते थे फिर उस पृथक् हुए ३ तोले १० माशे ६ रत्ती पारेको १ तोले बिडके साथ जंभीरीरस डाल २ घंटे घोटा, फिर पतला ही खरलसे खुरच पहली ही पिष्टीपर जमा सुखादिया ।

ता०१७ को ४ बजेतक सूखा बादको ज्योंका त्यों जल-यंत्रकी कटोरीमें रख कटोरीके किनारोंपर अन्दर बाहर भस्ममुद्रा लगा यंत्रको बंद कर कमानियोंसे कसदिया ।

जलयंत्र.



ता० १८ को उक्त यंत्रमें पानीभर भट्टीपर रख ९ बजेसे मंदाग्नि देना आरम्भ किया जिसके जलकी गर्मी पहले दिन ६० नं० तक, दूसरे दिन ७० तक, तीसरे दिन ७५ तक रही ।

ता० २१ को ११ बजे अर्थात् ३ दिनरात काम चला-कर बन्दकर यंत्रको जैसेका तैसा भट्टीपर रक्खा छोडदिया।

ता० २२ को खोला तो यंत्रके ऊपरके पेंदेमें पारद-मिश्रित श्वेतभस्म छाई हुई थी जिसमें पारेके बडे २ रवे दीखते थे नीचेकी रकाबीमें केवल जली हुई टिकिया जो बहुत हलकी होगई थी ज्योंकी त्यों रक्खी थी जिसके आसपास सिंदूर वर्णकी आभा थी जो सब रकाबीमें फैलकर उसके किनारोंतक भस्ममुद्राके अन्दर प्रवेशकर गई थी, यंत्रके पेंदेसे उस श्वेत भस्मयुक्त पारदको खुरच छान तोला तो० ६ तोले ५ माशे पारा निकला८ मा० २ र० घटा, और छनी हुई राख जो भारी थी ६ माशे ६ रत्ती रही, नीचेकी रकाबीकी टिकिया १ तो० ७ माशे ५ रत्ती थी जो मटैले रंगकी थी और जिसमें पारा बिलकुल न दीखता था किन्तु जब इसमेंसे थोडीसीको पीस लोहेकी रकाबीपर रख शीशेके ढक्कनसे ढक २० मिनट स्प्रिटलैम्प-की आंच दी तो ढक्कनपर बहुत हलकी सफेदी जमी उसे पोंछा तो पारेके सूक्ष्म परमाणु दीखे जिससे सिद्ध हुआ कि इसमें भी थोडा पारा अवश्य है अत एव पारद पृथक करनेके लिये ता० ३१ । १ को उक्त नीचे और ऊपरकी २ तो० १ मा० (१० रत्ती छीज गया) राखको पीस उसी प्रकार जलयंत्रकी रकाबीमें (जो पहली रकाबीसे ½ इंच कम गहरी और हलकी थी और जिसके लगानेसे यंत्रमें १॥। इंच ऊंचा अवकाश रहता था और २०॥ छ० गंधक आती थी) (पहली रकाबी योगसे यंत्रके पेंदेमें २। इंच ऊंचा अवकाश रहता था और उसमें २४॥ छटांक दाने-दार गंधक समाती थी) रख भस्ममुद्रासे (जो दो दो तोले खरिया नोन, लोहकीटको बारीक पीस भैंसके दूधके साथ घोट तय्यार कीगई थी) बंद कर सुखादिया ।

ता० १ । २ को ९ बजेसे भट्टीपर अग्नि देना आरम्भ किया (जिसके जलकी गर्मी ९ बजेसे १२ बजेतक ६० नं० तक १२ से ४ तक ७५ नं० तक ४ से ८ तक ८० नं. तक और ८ से १२ तक ९० तक रही) और रात्रिके १२ बजेतक अर्थात् ५ प्रहर अग्नि दी ता. २ को खोला तो यंत्रके ऊपरके पेंदेमें श्वेत और मटैले रंगकी रवेदार भस्म छाई हुई थी । एक ओरके किनारेपर कत्थई रंग था जिसपर बबूलोंकेसे चिह्न दीखतेथे नीचेकी रकाबीमें केवल पिसी हुई दवाकी कठिन टिकिया थी । ऊपरकी कुल राख-को खुरचा तो नीचेसे काले रंगकी निकली और तोलमें ६

माशे ३ रत्ती हुई नीचेकी टिकिया १ तोले ५ माशे ६ रत्ती थी अर्थात् दोनों भस्म २ तोले १ रत्ती हुई ७ रत्ती वजन घटा ।

ता. ३ को ऊपर नीचेकी दोनों भस्मोंमेंसे चुटकीसे थोडी थोडी दहकते हुये कोयलोंपर पृथक् २ डाली तो नीचे भस्म न शीघ्र जलती और न धूआं देती थी और ऊपर शीघ्र जलकर धूआं देने लगती थी ।

ता. ९ को ऊपरकी भस्मको जो ५ माशे ६ रत्ती रहगई थी थोडी थोडी कर लोहेकी रकाबी पर रख शीशेके ढक्कनसे ढक ७-८ वार १५-१५ मिनट स्प्रिट लैम्पकी आंच दी तो १ मा. ६ र. पारा और निकला १ मा. ६ र. राख शेष रही । अर्थात् सब पारा ६ तो. ६ मा. ६ र. हाथ लगा ६ मा. ४ र. घट गया । बादको इस भस्मसे पारद निःशेष न हुआ समझ १ घंटे स्प्रिटकी और तीव्राग्नि दी तो शीशेके ढक्कनपर श्वेत काफूरी रंगत छा गई जिस्में उज्वल चमकदार श्वेत कजलें थीं अर्थात् भस्ममें पारद विद्यमान होनेसे रस कपूर तय्यार होगया जो तोलमें १ माशे हुआ ।

(१) सम्मति-अबकी वार जलकी गर्मी ९० डिग्रीतक पहुंची जिससे कोई हानि नहीं पहुंची इससे अधिक होना संभव नहीं अत एव ९० डिगरीतक ही आगे अग्नि दीजावे ।

(२)-सम्मति-अबकी बार केवल नई भस्ममुद्राकी परीक्षाके लिये और शेष पारदको भस्मसे पृथक् करनेके लिये कर्म कियागया ये भस्ममुद्रा अवश्य पहली भस्ममुद्रासे दृढ प्रतीत हुई किन्तु १६ घंटेके थोडेसे समयमें गंधक जलकर पारद पृथक न हुआ मूर्छित रूपमें दोनों ऊपर जा जमे आगे यही मुद्रा काममें लीजावे और समय ७दिन कर दिया जावे ।

शंका—क्या यंत्रका अवकाश अब भी अधिक है और थोडा करना चाहिये ।

जलयंत्रद्वारा ।

बिडप्रयोगका (उपरोक्त क्रिया का) दूसरी बार अनुभव ।

ता० १० । २ । ०७ को उक्त ६ तोले ६ मा० ६ र० पारद और १ तोले ७ माशे ४ रत्ती बिड दोनोंको बूंद बूंद जँभीरीरसके साथ १० बजेसे घोटना आरम्भ किया-१५-२० मिनटमें पारा मिलगया फिर रस डाल १॥ घंटे और घोटनेसे पारा छुटने लगा २ बजे खुश्की आजानेसे और और अधिक पारा इकट्ठा होता समझ थोडा रस डाल घोटा तो पारा फिर मिलगया किन्तु जब फिर गाढा हुआ तो ५ तोले २ माशे ३ रत्ती पारा छुटगया बाकी १ तो० ४ मा० ३ र० बिडमें मिलारहा इस पारदमिश्रित बिडको खरलसे खुरच आकके पत्तेपर रख लिया जिसमें पारेके रवे दीखते रहे ।

ता० १२ को उस पृथक् हुये ५ तो० २ मा० ३ र० पारेको १ तोले बिडके साथ जँभीरीरस डाल १ घंटे घोट पतला ही खरलसे खुरच उसी पहली पिष्टीपर जमा सुखादिया ।

ता० १७ को सूखजानेपर अर्कपत्र सहित पिष्टीको तोला तो ९ तोले ३ माशे हुई बादको उसे ज्योंका त्यों जलयंत्रकी कटोरीमें रख यंत्रके खांचेमें और कटोरीके किनारोंपर अन्दर बाहर उक्त भस्ममुद्रा कर यंत्रको बंद कर कमानियोंसे कस सुखादिया ।

ता० २१ को यंत्रमें पानीभर भट्टीपर ९॥ बजेसे अग्नि देना आरम्भ किया जिसके जलकी गर्मी निम्न लिखित नकशेके अनुसार रही पानीकी घटी मिकदार उष्ण जलडाल पूरी कीजातीथी ।

नक्शा ।

तारीख	घंटा	नं०गर्मी	विशेष वार्ता.
२१।२।०९	९॥बजे	+	कर्मारम्भ ।
	१०॥बजे	५५नं.	
	११॥बजे	६४नं.	
	२ बजे	७७नं.	
	५ बजे	८०नं.	
	७ बजे	८१नं.	
	८ बजे	७५नं.	
	९बजेरात	७७नं.	
	१०बजे	७४नं.	
२२।२।०९	८बजे	८७नं.	
	९बजे	९४नं.	
	१०॥बजे	८५नं.	
	२ बजे	९२नं.	
	३॥बजे	९२नं.	
	८बजेरात	९०नं.	
	९ बजे	९२नं.	
२३।२।०९	८ बजे	९३नं.	
	९॥बजे	९४नं.	
	१०॥बजे	९३नं.	
	२ बजे	९५नं.	
	३॥बजे	९५नं.	
	५ बजे	९२नं.	
	८बजेरात	८८नं.	
	९ बजे	९२नं.	
२४।२।०९	८ बजे	९०नं.	
	९ बजे	८९नं.	
	१० बजे	९३नं.	
	११ बजे	९०नं.	
	२ बजे	८९नं.	
	३॥बजे	९१नं.	
	५ बजे	९२नं.	
	९बजेरात	८९नं.	
२५।२।०९	८ बजे	९०नं.	
	१०॥बजे	९०नं.	
	२ बजे	९३नं.	
	३॥बजे	९४नं.	

	४ बजे	८८नं.	इस समय स्वयं जाकर देखा तो पानीकी संसनाहटके सिवाय खिचरीके खदकनेकासा शब्द यंत्रसे आरहा था अग्नि तीव्र करदेनेपर यह शब्द और बढगया ऐसा शब्द पहले मुझे कभी नहीं सुनपडाथा । शंका हुई कि यह शब्द काहेका था ।
	८ बजे	९२नं.	
	९ बजे	९१नं.	
२६।२।०९	८ बजे	९५नं.	
	१०॥बजे	९३नं.	
	११ बजे	९३नं.	कामबंद

ता० २६ को ११ बजेतक ५ दिनरात अर्थात् ४० प्रहर काम चला बंद कर यंत्रको कोयले भरी भट्टीपर रक्खा छोडदिया ।

ता० २७ को देखा तो यंत्रमें ऊपर पानीके भीतर तलीमें बहुतसा लवण बैठगया था जिसको ज्योंका त्यों रहने दिया यंत्रको भट्टीसे उठाया तो अग्निवेगसे कमानियोंके पृथक् होजानेके कारण कटोरी पृथक् होगई खुलजानेपर पानी फेंक उलटाकर देखा तो यंत्रके ऊपरके पेंदेमें अर्थात् यंत्रके उस हिस्सेमें जिससे कटोरी ढक रही थी खाकी वस्तु छारही थी जिसके भीतर भली भांति पारा जम रहा था जिसको पृथक किया तो ५ तोले ११ माशे पारा और २ मा० ७ रत्ती पारदमिश्रित राख निकली नीचेकी रकाबीमें केवल जली हुई १ तोले ११ माशेकी टिकिया निकली जिसके नीचे थोडा लवणसदृश श्वेत पदार्थ जमा हुआ था जिसको रस कपूर कहना संभव है टिकियाको तोडा तो नीचे और बीचमें कत्थई रंगकी थी और ऊपरकी तरफको एक तिहाई टिकिया काले रंगकी अध जली थी जिससे सिद्ध हुआ कि आंच अबकी बार भी पूरी न लगी आगेसे टिकिया पेडेकी भांतिकी मोटी न बना पतली चंदिया सी बना रक्खीजावे नीचेकी रकाबीके खुरचनेसे १० माशे जले लोहेके पत्र पृथक् होगये ऊपरके पेंदेकी उक्त २ माशे ७ रत्ती राखको धोया तो ३ रत्ती पारा और निकला अर्थात् सब ५ तोले ११ माशे ३ रत्ती हाथ लगा ७ माशे ३ रत्ती घटा धुली राख १ माशे ३ र० रह गई ।

ता० १ । ३ को उक्त ता० २५ । २ की यंत्रमें खदकनेके शब्दकी शंका निवारणार्थ यंत्रमें पानी भर भट्टीपर चढा ९५ नं. की आंच दी तो पहलासा ही खदकनेका शब्द फिर सुन पडा जिससे ज्ञात हुआ कि कई दिनतक पानीके जलनेसे उत्पन्न हुआ मलरूप लवण जब यंत्रकी पेंदीमें एकत्र होजाता है तब उसके खदकनेसे यह शब्द उत्पन्न होने लगता है ।

सम्मति–(१) आगेसे जलयंत्रका पेंदा बहुत ही मोटा होना चाहिये ।

(२) भस्ममुद्रा भी ठीक काम देती है और इसके योगसे भी अधोमुख जलयंत्र चलाया जासक्ताहै ।

(३) कमानियोंका लगाना ठीक नहीं ये अग्निके योगसे ढीली पडजाती हैं–कोई और प्रकार तवेके कसनेका निकालना चाहिये ।

(४) अग्नि ९५ नं० के लगभग रखनी चाहिये और समय अग्निका कमसे कम ७ दिन होना चाहिये ।

(५) पारद कज्जली इत्यादिको इकट्ठा न रख यंत्रके पेंदेमें फैलाकर बिछा देना चाहिये ।

(६) यंत्रके अवकाशकी ऊंचाई और कमकर १॥। इंच की जगह १॥ इंच रखनी चाहिये ।

ता० ४।३ को उक्त यंत्रके ऊपरके पेंदेकी धुली भस्म १ मा० ३ र० और नीचेकी टिकिया १ तोले ११ माशे कुल २ तोले ३ रत्तीको बारीक पीस जौनपुरी डौरूमें भर भस्ममुद्रा लगा कपरौटी कर सुखादिया ।

ता० ९ को ४ प्रहर अग्नि दी ।

ता० १० को खोलनेपर ४ रत्ती पारा निकला और १ तो० १० मा० ४ र० राख निकली छीजन कुछ नहीं गई किन्तु पारा बहुत कम निकला ।

ता० १५ को उक्त १ तो० १० माशे ४ रत्ती राखको पीस ६ तोले पानीमें घोल फिल्टर कर स्वच्छ नितारलिया ।

ता० १६ को गर्म बालूपर रख सुखाया तो १० माशे ५ रत्ती क्षारश्वेत उत्तम रंगका तय्यार होगया फिल्टरसे निकली राख सूखकर ९ माशे रही ।

अनुभव जलयंत्र नीचे कटोरी लगा भस्ममुद्राप्रयोगसे ।

ता० १६ । ६ ।०८ को ५ तोले शंकित पारद और ५ तोले बेशुधी पिसी आँवला सार गंधकको लोहनिर्मित जलयंत्र (जिसमें कटोरी ऊपरसे न ढक नीचे लगाई थी और जो अधर रहनेके कारण लोहेकी कमानियोंसे कसकर ठहरा दी जाती थी) की कटोरीमें इस प्रकार रख दिया कि प्रथम आधी गंधक रक्खी उसमें गढाकर गढेमें पारा रख ऊपरसे बाकी गंधक डाल पारेको ढकदिया और कटोरीके किनारों पर अन्दर बाहर भस्ममुद्रा (जो ३ तोले लकडीकी भस्म और ४ तोले नोनसे बनाई गई थी) लगा कटोरीके खांचेमें जमा कमानियों से कसदिया और फिर दर्जोंपर भस्ममुद्राकर सुखादिया ।

ता० १७ । ७ को उक्त यंत्रको भट्टी पर रख ऊपर पानी भर ७ बजेसे मंदाग्नि देना आरम्भकिया जिसके जलकी गर्मी निम्न लिखित नकशेके अनुसार रही २ बजेपर पानी की घटी मिकदार करीब १॥ सेर पानी डाल पूरी करदी गई ४–४ घंटे बाद करीब सेर डेढ सेर के पानी डालते रहे ।

ता० २० तक ३॥ दिन रात काम चलाकर रातके १० बजे पर आंच बंदकर यंत्रको जैसे का तैसा रक्खा छोडदिया ।

ता० २१ को खोला तो अधिकांश पारद गंधक नीचेकी रकाबीसे उडकर ऊपरयंत्रके पेंदेपर जालगे थे सबसे ऊपर पीत गंधककी तहसी थी उसके नीचे गंधक पारदकी काले रंगकी बूंदेंसी थीं और यंत्रमें ठीक बीचमें अग्नि न लगनेके कारण एक ओरका गंधक जलकर काला होगया था बाकी और तरफका पीत कृष्ण रंगतका था नीचेकी रकाबीके बीचमें

श्वेत और आसपास श्याम रंगकी पापडी जम रही थीं ऊपर जमे हुये पारद गंधकको खुरच तोला तो ९ तोले १ माशे हुआ और नीचेकी रकाबीको खुरचा तो ११ माशे राख निकली अर्थात् पारद गंधकका पूरा वजन निकला ।

सम्मति-इस वार गंधक जला नहीं बहुत थोडा जो श्वेत होगया था उसीको कुछ जला कह सक्तेहैं आगे अग्निका समय और प्रमाण दोनों वढाकर देखा जाय जलकी गर्मी अवकी वार ५० से ७० तक रही आगे १ दिन ५०, १ दिन ६०, २ दिन ७०, २ दिन ७५, १ दिन ८० डिग्रीतक रक्खी जावे और ७ दिन आंच दीजावे ।

नक्शा जलकी गर्मीका ।

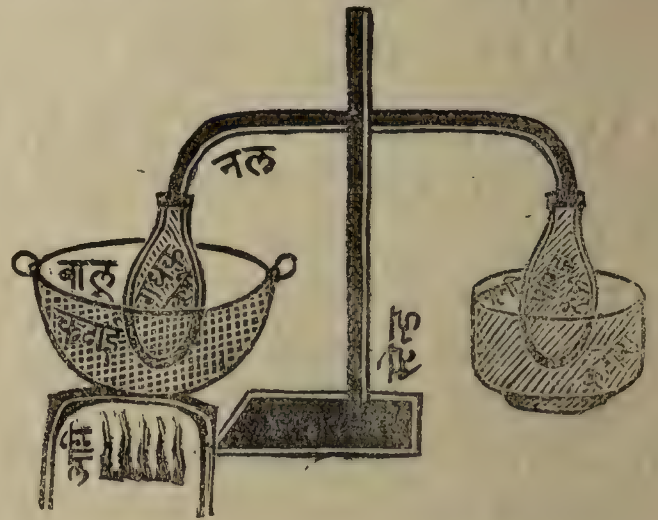
तारीख	घंटा	नं. गर्मी	विशेष वार्ता-
१७।७।०८	७ बजे		अग्नि देना आरम्भ किया-
"	४ बजेशाम	४८ नं.	
"	६॥ बजे	५२ नं.	
तारीख	घंटा	नं. गर्मी	विशेषवार्ता
१८।७।०८	७ बजे	५४ नं.	
	९ बजे	५० नं.	
	११ बजे	५२ नं.	
	३ बजे	६२ नं.	
	५ बजे	६२ नं.	
	६॥ बजे	६० नं.	
१९।७।०८	७ बजेसवेरे	५३ नं.	
	८ बजे	६४ नं.	
	९ बजे	६७ नं.	
	१० बजे	६८ नं.	
	११ बजे	६५ नं.	
	२ बजे	६४ नं.	
	३ बजे	६७ नं.	
	४ बजे	६४ नं.	
	६ बजे	६८ नं.	
	१०बजेरात	६४ नं.	
२०।७।०८	५बजेसबेरे	६५ नं.	
	७ बजे	६७ नं.	
	९ बजे	६९ नं.	
	१० बजे	६७ नं.	
	११ बजे	७० नं.	
	२ बजे	६५ नं.	
	३ बजे	७० नं.	
	४ बजे	६९ नं.	
	६ बजे	६७ नं.	
	१० बजे	६७ नं.	कामबंद

नं० १ तुलायंत्र ।

गंधकजारण तुलायंत्रद्वारा (भट्टी पर वालुकायंत्रमें)

आज ता० २८।९।०७ को तुलायंत्रकी छोटी कूपीमें ५ तोले कैनका शुद्ध पारद और बडी कूपीमें दाग खाई दानेदार शुद्ध ५ तोले गंधक भर पारेवाली कूपीकी संधियोंपर मदनमुद्रा और गंधक वाली कूपीकी संधियोंपर भस्ममुद्रा लगादी, कूपियों और नालके जोडोंपर कपरौटी कर दी गई ।

ता० १४ । १० को उक्त यंत्रको अंगरेजी स्टेन्डके द्वारा इस प्रकार स्थित किया कि गंधकवाली कूपी भट्टीपर लोहेकी कढाईके बीचमें लटकी रही (कढाईको वालूसे भरदिया सब कूपी बालसे दबगई) और दूसरी कूपी पारदवाली पानी भरे कटोरेमें लटकी रही कढाई और कटोरेके बीचमें एक ईट रखदी इस लिये कि अग्निकी लपट कटोरेसे न लगे बादको कढाईके नीचे ७॥ बजेसे मध्यमाग्नि बालनी आरम्भ करदी कटोरेका पानी कभी २ बदल दिया गया ।



ता० १५ को सवेरे देखा तो पारदवाली कूपी बिलकुल गरम न थी उसके ऊपरका नलका भाग भी गुनगुना ही होगा गंधकवाली कूपीके ऊपरका नलका भाग भी थोडा ही गर्मथा, कढाईका रेत ऊपरसे केवल इतना गर्म था हाथको बुरा न लगे, अत एव अग्नि कम समझ ८ वजेसे अग्नि तीव्र करदी अर्थात् एक मोटी लकडीकी आंच जिसकी झर कढाईकी सब तरफको निकलती थीं देना आरम्भ की, ३ बजे देखा तो सबेरेसे इस समय कुछ अधिक गर्मी थी किन्तु पारद कूपी इस समय भी गरम न थी अब उतना जल गुनगुना था, पारदका ऊपरी नल हलका गर्म था, गंधकके ऊपरका नल भी इतना गरम था जिससे हाथ जलता न था रेतको भी ऊपर छूनेसे हाथ न जलता था, थरमामेटर रेतमें डाल कर देखा तो२६०तक तो धीरे २ बढा फिर एक दम भाग कर अन्तिम भागतक पहुंच गया निकाल दूसरी बार रक्खा तो फिर वैसा ही हुआ । इससे ज्ञात हुआ कि अन्दर अग्नि पूरी लग रहीहै ।

ता० १६ के ८ बजे सबेरेतक काम चला बादको आंच बंद कर यंत्रको ज्योंकात्यों रक्खा छोडदिया ।

ता० १७ को निकाला तो बालू बहुत कम गर्म थी कूपीके अन्दर गंधक पिघलकर जमगया था जो निकल न सका, लोहेकी बडी कीलसे कुरेद कुरेद कर निकाला तो मालूम हुआ कि गंधकका बहुत थोडासा ऊपरी भाग काला होगया था और नीचे पीली रंगत मौजूद थी जिससे ज्ञात होता था कि गंधकका बहुत कम अंश जला, पारेको निकाल तोला तो पूरा५तोले निकल आया,किन्तु पारेपर कुछ श्यामता दीख पडती थी जो अवश्य गंधकके प्रभावसे उत्पन्न हुई होगी छाननेसे यह श्यामता दूर होगई बाद इसके इस १६प्रहरकी अग्निसे कढाईका पेंदा तैकर नीचेकी तरफ झूल आया था।

सम्मति—यह निश्चय न हुआ कि गंधकसे बाष्प भलीभांति उत्पन्न होकर पारदतक पहुँची या नहीं । पीछे और कियेहुए कर्मसे सिद्ध हुआ कि इस बालुकायंत्रकी क्रियासे थोडी बाष्प पैदा होकर पारदतक पहुंची ।

नं० २ तुलायंत्र ।

उपरोक्त क्रियाका दूसरी बार अनुभव (भट्टीपर बालुकायंत्रमें)

ता० २२ । १० । ०७ को उक्त ५ तोले पारदको चौडे मुखकी छोटी शीशीमें भर उक्त यंत्रकी पारदवाली कूपीकी जगह लगा कपरौटी कर दी, और गंधकवाली कूपीको अपनी जगहपर ज्योंकात्यों लगा कपरौटी कर दी बादको अंगरेजी स्टेन्डद्वारा पूर्वोक्त प्रकारसे बालुका भरी कढाईमें रख गंधककी कूपीको भट्टीपर आंच देना आरम्भ किया और पारदवाली शीशी जल भरे कटोरेमें पहली भांति लटका दी गई, ८ बजेसे पूर्ण अग्नि देना आरम्भ किया।

ता० २३के सबेरे ७ बजेतक देखा तो पारदकी शीशीमें भाप वगैरः का कुछ लक्षण दिखाई न दिया, शीशीके अन्दरकी रंगत बिलकुल सफेद रही अत एव (पीछे किये कर्मसे निश्चय हुआ कि गंधककी भापकी रंगत बहुत हलकी होतीहै और वह शीशीमें दीख नहीं पडती किन्तु उसका असर पारेपर पडनेसे पारेपर श्यामता आजातीहै उसीसे बाष्प पहुंचना ज्ञात होताहै) आंच बंद कर कढाईको ज्योंकीत्यों रक्खी छोडदिया, दो पहरको यंत्र उतार लिया; शामको खोला तो गंधककी कूपी नालसे जिकड गई थी कूपीके मुँहपर कालोंछसी आगई थी, कूपीमेंसे लोहेकी कीलसे खुरच कर गंधकको निकाला ते ऊपर श्यामता लिये हलकी पीत रंगका गंधक ३ तोले१माशे निकला । गंधककी तोल और गंधककी रंगतसे ज्ञात होत था कि आधा अंश गंधकका जलगया ।

सम्मति—दो बार इस क्रियाके करनेसे निश्चय हुअ कि इस प्रकार भट्टीपर रक्खे बालुकायंत्रमें गंधकजारणके लिये पूरी गर्मी नहीं उत्पन्न होसकती ।

नं० ३ तुलायंत्र ।

उपरोक्त क्रियाका तीसरी बार अनुभव (अग्निपुटमें)

ता० २४।१०।०७ को उक्त यंत्रम पारदवाली शीशी तो जैसीकी तैसी लगी रही और गंधकवाली कूपीसे निकले ३ तोले १ माशे गंधकमें १ तोले ११ माशे नया गंधक और मिला पूरा ५ तोले कर उसी कूपीमें भर कूपीकी संधियोंपर भस्ममुद्रा कर पूर्वोक्त विधिसे नलमें लगा कपरौटी कर सुखादिया ।

ता० २९ को उक्त यंत्रको स्टेन्डद्वारा इस प्रकार स्थित किया कि गंधकवाली कूपी कढाईके पेंदेसे २ अंगुल ऊंची रही, पारदवाली शीशी जल भरे कटोरेमें लटकी रही, फिर कढाईके अन्दर १ सेर कंडोंकी आग दीगई (कूपीका मुख कंडोंसे ऊपर रहा) आंचके दहक जानेपर गंधक कूपीके मुखपर जलती दीखपडी, दूसरी आंच १ सेरकी उसी तरह फिर दी तो कूपीके मुखपर भी जलती गंधक दीखपडी और शीशीमें भी पिघली गंधक टपकनेलगी इस वास्ते काम बंद कर दियागया ।

ता० ३० को खोला तो पारदकी शीशीमें ऊपर पीला गंधक जमाहुआ था और नीचे पारद था, पारद तोलमें ६ रत्ती कम ५ तोले हुआ और गंधक १ तोले १० माशे निकला, गंधककी कूपीसे १ तोले गंधक श्यामता लिये निकला।

सम्मति—इस क्रियासे गंधकको अग्नि अधिक लगन सिद्ध हुआ ।

नं० ४ तुलायंत्र ।

उपरोक्त क्रियाका चौथी बार अनुभव (बालुकाभरे नलकेमें रख बाहर अग्निपुट)

ता० ३१।१०।७ को उपरोक्त ६ रत्ती कम ५ तोले पारदको नई शीशीमें भर उक्त यंत्रकी नालके मुखपर लगा कपरौटी कर दी और पूर्वोक्त पारदवाली शीशीसे निकले १ तोले १० माशे गंधक और गंधकवाली कूपीसे निकले १ तोले कुल २ तोले १० माशे गंधकमें २ तो० २ मा० गंधक और मिला पूरा ५ तोले कर उसी कूपीमें भर कूपीकी संधियोंपर भस्ममुद्रा कर नालके मुखपर भस्ममुद्रायोगसे लगा कपरौटी कर सुखादिया ।

ता० १।११ को उक्त यंत्रको स्टेन्डद्वारा कढाईमें इस प्रकार स्थित किया कि गंधककी कूपी १ अंगुल ऊंची रही, बादको एक टीनका घेरा जो करीब एक बालिस्त लंबा और करीब ४ इंच चौडा जिसका मुख होगा कूपीके ऊपर चढादिया और उसमें बालूभर दी तमाम कूपी बालूमें दबगई, पारदवाली शीशी पानी भरे कटोरेमें लटकी रही, बादको ९ बजेसे एक एक सेर कंडोंकी आंच हर घंटेपर दी गई तीसरी आंचपर पारेकी शीशीमें केवल पारेके ऊपर श्यामता दीख पडी शीशीकी रंगत साफ रही, आंचकी गर्मीसे स्टेन्डसे पारदकी शीशीकी तरफ नलका सीधा भाग गुनगुना था और झुकाहुआ भाग उससे भी कम नाममात्रको गुनगुना हुआ था, और स्टेन्डसे गंधककी कूपीकी तरफका नलका भाग इतना गर्म था जो छूनेसे हाथ जलता था, शामतक ९ आंचें दीगई बादको यंत्र जैसेका तैसा छोड दिया गया ।

ता० २ को खोला तो पारदकी शीशीमें श्याम रंगका चिकना पसेवसा निकला कपडेमें छाननेसे कपडा भीगा और चिकना होगया और श्यामता पारेकी दूर होगई छना पारा ४ तोले ११ माशे निकला, गंधककी कूपीको खोल गंधकको निकाला तो ३ तोले ९ माशे गंधक कलछौंई रंगतकी निकली ।

सम्मति—अबतक की हुई सब क्रियाओंसे यह क्रिया कुछ ठीक पडी ।

नं० ५ तुलायंत्र ।

उपरोक्त क्रियाका पांचवीं बार अनुभव ।

ता० २।११।०७ को उपरोक्त ४ तोले ११ माशे पारेमें

५ तोले पारद और मिला ९ तोले ११ माशेको उसी शीशीमें भर शीशीको उक्तयंत्रकी नालमें लगा कपरौटी कर दी, और गंधकवाली कूपीमें ५ तोले नया गंधक भर नालके मुखपर लगा भस्ममुद्रा कर कपरौटी कर दी।

ता० ३ को पूर्वोक्त विधिसे उक्त यंत्रको स्टेन्डद्वारा कढाईमें स्थित कर टीनका खोल कूपीपर लगा बालू भर दी, और पारदवाली शीशी जलभरे कटोरेमें लटका दी, कटोरे और कढाईके बीचमें ईंट लगा दी ताकि कटोरेतक गर्मी न पहुंचे, बादको ८ बजेसे एक एक सेरकी आंच हर घंटेपर दीगई, दूसरी तीसरी आंचपर पारदपर कालोंछ छागई यंत्रके नलकेमें पहले दिनसे आज सब तरफको गर्मी अधिक थी किन्तु कटोरेका जल ठंढा था जिसके बदलनेकी आवश्यकता न थी, रातके १० बजेतक १५ आंचें लगीं बादको यंत्र जैसेका तैसा रक्खा छोडदिया।

ता० ४ को यंत्रमें पुनः अग्नि दी किन्तु नलको गरमी अधिक पहुँचानेके लिये उक्त यंत्रके नलकेको इस प्रकार स्टेन्डमें कसा कि नलका $\frac{1}{3}$ भाग स्टेन्डसे शीशीकी तरफ रहा बाकी $\frac{2}{3}$ भाग नलका गंधक कूपीकी तरफ कढाईमें रहा अर्थात् अग्निकी तरफ नलका भाग अधिक रक्खा बादको ९ बजेसे एक एक सेरकी आंच हर घंटेपर दीगई, इस बार नल और दफेसे अधिक गर्म हुआ स्टेन्डसे गंधककी तरफका नल छुआ नहीं जासकता था क्यूंकि उसपर पानीकी बूंद छुन्न होजाती थी स्टेन्डसे पारेकी तरफका नल जहांतक सीधा था वह भी खूब गर्म था जिसको थोडी देरतक ही छूसकते थे शीशीके ऊपरका मुडाहुआ भाग हलका गर्म था शीशी ठंढी थी रातके ९ बजेतक १३ आंचें लगीं बादको यंत्र जैसेका तैसा रक्खा छोडदिया इन दो दिनोंमें सब २८ आंचें लगीं।

ता० ५ को खोला तो पारदपर कालोंछ छारही थी और पसेवसा भी शीशीमें मौजूद था पारदको निकाल छांनों तो ये श्यामता कपडे पर आगई और कपडा भीगासा होगया पारेको तोला तो ९ तोले १० माशे ४ रत्ती हुआ४रत्ती छीज गया और गंधकको निकला तो ४ तोले ५ माशे गंधक श्यामता लिये निकली, ७ माशे कम हुई।

सम्मति–अबकी बारकी क्रिया सर्वोत्तम रही, अबतक ये निश्चय होचुका है कि–

(१) भट्टी पर रक्खे बालुकामें गंधक जारणके लिये पूरी गर्मी नहीं पैदा होसकती।

(२) बिना बालूके केवल कंडोंके पुटसे गंधक अधिक उबाल खा शीशीमें टपकने लगता है।

(३) अतएव बालूसे भरे घेरेमें रक्खी गंधक कूपीको ही कंडोंकी १ सेरकी आंच देना उचित है।

(४) यह भी निश्चय हुआ कि गंधककी बाष्प शीशीको नहीं तोडती।

(५) गंधककी बाष्पका रंग बहुत हलका होताहै जो शीशीमें दिखाई नहीं देता किन्तु पारदपरें श्यामता पैदा करता है।

(६) नलका $\frac{2}{3}$ भाग आंचकी तरफ रखनेसे अच्छी गर्मी पैदा होतीहै (बीचमें ईंट अवश्य रक्खी जावे) किन्तु यह निश्चय होना बाकी है कि नलकी लम्बाई ज्यादः तो नहीं है जिससे गंधककी बाष्प वहांतक जाते अपने असरके पूरे वेगको न करसके इस लिये दूसरा कम लम्बा नल बनवा कर इसी पांचवीं बारकी क्रियाके अनुसार पुनः अनुभव करना चाहिये यह भी ध्यान रहे कि २८ घंटेमें ७ माशे गंधक जला है, अतएव अबकी बार कमसे कम ४८ घण्टे और अधिकसे अधिक ७२ घण्टे निरंतर काम चले।

नं० ६ तुलायन्त्र।

उपरोक्त क्रियाका छठी बार अनुभव।

ता० १।१।०७ को १० तोले पारेको (जिसमें ४।। तोले पांचवें अनुभवका बचा हुआ ३ माशे कैनका और ५ तोले चक्रवर्ती औषधालयका सिंग्रफका निकला हुआ था) शीशीमें भर और ५ तोले दानेदार दाग खाई हुई गंधकको कूपीमें भर भस्ममुद्रा कर दोनोंको उक्त यंत्रकी नालमें जो पहली नालसे पतली और करीब ४ अंगुलके छोटी तय्यार कराई गई थी (पहली नाल १३ इञ्च लम्बी थी और ३,३ इञ्च दोनों ओरको झुक रही थी, सब १८ इञ्चके करीब थी) लगा कपरौटी कर दी।

ता० २ को उक्त यंत्रके नलकेको स्टेण्डमें इस प्रकार कसा कि नलका $\frac{1}{3}$ भाग स्टेन्डसे शीशीकी तरफ और $\frac{2}{3}$ भाग गंधक कूपीकी तरफ रहा और पहली बारके अनुसार शीशीको जलके पात्रमें स्थितकर और कूपीको बालू भरे घेरेमें स्थित कर घेरेके चारों तरफ ८।। बजेसे एक एक सेरकी आंच हर घण्टे पर देनी आरम्भ की, तीसरी आंचके बाद पारदपर श्यामता दीख पडी, ११ बजे देखा तो कूपीकी तरफको आधी नलमें इतनी गर्मी थी जो पानीकी बूंद छुन्न होजाती थी और शीशीकी तरफ नल कमसे कम तप्त था, ५ बजे तक नलकी ऊष्मा कुछ और भी अधिक होगई थी, रातके ९।। बजे तक १४ आंचें दी गई बादको यंत्र जैसेका तैसा छोड दिया।

ता० ३ के सबेरे खोला तो शीशीमें पारेके ऊपर थोडासा बाष्पका जल था और स्याही पहलेसे बहुत कम दीख पडी पारेको निकाल तोला तो पूरा १० तोले हुआ छानने पर भी पारेकी पूरी तोल रही, गंधकको निकाला तो अधजली गंधक ४ तोले निकली, १ तोले घटी।

सम्मति–नलके छोटा करनेसे कुछ हानि लाभ न जान पडा अब पूरी परीक्षा करनेको ३ दिन निरंतर अग्नि दीजावे और जाडा अधिक होनेके कारण १ सेरकी जगह १८ छटांककी आंचें दीजावें।

नं० ७ तुलायन्त्र।

उपरोक्त क्रियाका सांतवीं बार अनुभव।

ता० ४ को पूर्वोक्त १०तोले पारदमें५ तोले पारद चक्रवर्ती औषधालयका सिंग्रफका निकाला हुआ और मिला पूरा १५ तोले कर शीशीमें भर दिया, और ७।। तोले दानेदार दाग खाई हुई गंधक कूपीमें भर (जिससे आधी कूपी भरी) कूपी पर भस्ममुद्रा कर दोनोंको यन्त्रकी नालमें लगा कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० ५ को उपरोक्त विधिसे यंत्रके नलकेको कस शीशीको जलभरे कटोरेमें और कूपीको बालू भरे घेरेमें स्थितकर ९ बजेसे १८,१८ छटांककी आंच एक एक घण्टे

बाद देना आरम्भ किया, दूसरी आंच लग जानेके बाद ११ बजे देखा तो शीशीमें पिघली हुई गंधकका ढिम्मा दीख पडा इसवास्ते काम बंद कर दिया, २ बजे खोला तो शीशीमें ३ रत्ती कम १५ तोले पारा निकला और १ तोले १ माशे २ रत्ती श्यामरंगका गंधकका ढिम्मा निकला, और कूपीमें ५ तोले २ माशे अधजली गंधक कृष्णतायुक्त निकली, २ माशे २ रत्ती गंधक शीशीके तरफके तलके छिद्रमें भी निकली, इस तरह कुल ६ तोले ५ माशे ४ रत्ती गंधक निकली, १ तोले ४ रत्ती घटगई।

सम्मति–अबकी बार आंच अधिक लग गई कुछ तो कंडोंकी तोल ही बढा दीगई थी कुछ साबूत आरने कंडे लगा देनेसे आंच एक दम प्रज्वलित होकर तीव्र होजाती थी कुछ नल भी अबकी बार जहांतक नीचा हो सकता था कसा गया था और बालू भी टीनके नलकेमें ऊपर तक भरी गई थी इन सब कारणोंसे अग्नि अधिक बैठ गंधक पिघल कर शीशीमें आगई।

नं० ८ तुलायंत्र।

उपरोक्त क्रियाका आठवीं बार अनुभव।

ता०६।१।८को उक्त ३ रत्ती कम १५ तोले पारदको शीशीमें भर और ७॥ तोले गंधकको (जिसमें ५ तोले बाजारी बगैर शुधी और २॥ तोले घरकी शुधी दानेदार दागखाई हुई थी) कूपीमें भर पूर्वोक्त प्रकारसे नलमें लगा सुखादिया।

ता० ७ को इस विधिसे यंत्रको कसा कि कूपीकी तरफका नल घेरेसे १ अंगुल ऊँचा रहा और घेरेमें बालू भी वहींतक भरी गई जहांतक कूपीका मुख था कढाईमें कंडोंके छोटे २ टुकडे जो दो दो अंगुल मोटेथे लगाये कटोरेमें पानी वहींतक भरा जिससे शीशीका उतना भाग डूबा जितनेमें पारा था बादको ९ बजेसे एक एक सेरकी आंच हर घंटेपर देनी आरम्भ की तीसरी आंच लगजानेके बाद ११॥ बजे देखा तो पारेपर बिलकुल श्यामता न थी लेकिन ५ आंचें लगचुकनेपर २ बजे जब देखा तो पारेपर गाढी श्यामता दीखपडी और शीशीकी रंगत साफ रही इस समय नलमें इतनी गर्मी थी जिसे हाथसे नहीं छूसकते थे किन्तु पानी डालनेसे और बारकी तरह बूंद छुन्न कहींपर न होती थी।

ता० ८ आज सवेरे देखा तो पारेपर श्यामता कुछ अधिक थी किन्तु नल कलसे इतना कम तप्त था जिसे खूब छूसक्तेथे शायद रातकी सर्दीका कारण हो ११॥ बजेपर नलकेको इतना गर्म पाया कि जो पानीकी बूंद छुन्न होने लगी इससे यह बात मालूम होती है कि शायद कढाईकी आंच बल उठी हो शामको सामान्य हालत थी।

ता० ९ के सवेरे ८ बजे देखा तो नलमें कल शामकीसी ही ऊष्मा पाई गई शामको भी ऊष्मा वैसी ही थी।

ता० १० को ९ बजेतक ३ दिन पूरे होजाने और १२ आंचें लग चुकनेपर काम बंद कर दिया और यंत्रको जैसे-कातैसा रक्खा छोडदिया ३ बजे खोला तो पारेपर श्याम रंगका जल फैल रहा था पारदको छाना तो यह श्यामता कपडेपर आगई छना पारा पूरा तोलमें ३ रत्ती कम १५ तोले हुआ गंधक कूपीको खोला तो उसमें अधजली गंधक ६ तोले ४ माशे निकली १ तोले २ माशे घटी।

सम्मति–७२ आंचें लगनेपर भी केवल १ तोले २ माशे गंधक क्षय होना संतोषदायक नहीं है आंच बहुत हलकी भी नहीं कही जासकती क्योंकि १६ छ० की थी और १८ छटाँककी आंचसे गंधक उबलगया था और इसी क्रियामें भी पांचवीं आंचपर पारदपर पूरी श्यामता आगई थी जिससे गंधककी बाष्प बनना सिद्ध है फिर भी कमवृद्धि नियमानुसार अधिक २ अग्नि दे अनुभव करना चाहिये।

नं० ९ तुलायंत्र।

उपरोक्त क्रियाका नवीं बार अनुभव।

ता० ११।१।०८ को १४ तोले १० माशे पारदको (यह पारद पिछले तुलायंत्रसे३रत्ती कम१५तोले निकला था इस बारके तुलायंत्रके बंद करते समय १ माशे ५ रत्ती और गिरगया इस वास्ते १४ तोले १० माशे शेष रहा) शीशीमें भर और उसी पिछले ८ वें अनुभवकी निकली ६ तोले ४ माशे गंधकको जिसकी पीतिमा बहुत फीकी पडगई थी कूपीमें भर पूर्वोक्त प्रकारसे नालमें लगा कपरौटी कर सुखादिया।

ता० १२ को उपरोक्त विधिसे यंत्रके नलकेको कस शीशीको जलके कटोरेमें और कूपीको बालूभरे घेरेमें स्थित कर ७ बजेसे हर घंटेपर आंच देना आरम्भ किया जिसका नकशा नीचे दिया गया है।

नकशा।

तारीख	घंटा	तोलकंडा	पारेकी रंगत	विशेष वार्ता।
१२।१।०८	७	१ सेर १ छ०टूटेकंडे	सफेद	७ बजेसे १२ बजेतक आंचकी १ सेर १ छ०
	१२	१ सेर २ छ०टूटेकंडे	सफेद ऊपर किंचित बाष्पबिन्दु	१२ से ३ तक ४ आंचें १ सेर २ छ०
	४	१ सेर ३ छ०		४ से ५ तक २ आंचें १ सेर ३ छ०
	६	१ सेर ४ छ०		६ से ८ तक ३ आंचें १ सेर ४ छ०
	९	१ सेर ५ छ०	अल्पश्यामता१२बजेपर	९ से ८ तक १२ आंचें १ सेर ५ छ०
१३।१।०८	९	१ सेर ६ छ०		९ से ११ तक ३ आंचें १ सेर ६ छ०
	१२	१ सेर ८ छ०		१२ से १ तक २ आंचें १ सेर ७ छ०

तारीख	घंटा	तोलकंडा	पारेकी रंगत	विशेष वार्ता।
	२	१ सेर ८ छ०		½ घंटेबाद आग झीनी पडनेपर १२ छ० कंडे साबूत और लगादिये और आगेभी इसीतरह
	२॥	१२ छ०		
	३॥	२ सेर साबूत		
	४	आरनेकंडे१२छ०		
	५	२ सेर		
	५॥	१२ छ०		
	६॥	२ सेर		
	७	१२ छ०	श्यामतापर थोडा बादामी रंगका द्रव	
	८	२ सेर		
	८॥	१२ छ०		
	९॥	२ सेर		
	१०	१२ छ०		
	११	२ सेर		
	११॥	१२ छ०		
	१२॥	२ सेर		
	१	१२ छटाक		
	२	२ सेर		
	२॥	१२ छटांक		
	३॥	२ सेर		
	४	१२ छटांक		
	५	२ सेर		
	५॥	१२ छटांक		कुल ४२ आंचें

११ बजेतक १ सेर१छ० की ४ आंचें लगचुकनेतक पारेकी रंगत बिलकुल श्वेत रही ५ वीं आंचके बाद जब देखा तो पारेपर सूक्ष्म बिन्दु दीखपडे किन्तु श्यामता बिलकुल न थी ऊपरके नकशेके अनुसार १। सेरकी आंच लगनेसे भी रातके ९ बजेतक श्यामता न दीखपडी–अतएव ९ बजेसे १ सेर ५ छ० की आंच कर दी गई तो १२ बजेपर कुछ श्यामताका लक्षण दीखपडा।

ता० १३ के सबेरे ८ बजे देखा तो थोडी ही श्यामता थी कुछ विशेष न थी शामके ३॥बजेसे टीनके घेरेमें ऊपरतक बालूभर २ सेर १२ छ० की आंच १॥–१॥ घंटे बाद इस तरह देना आरम्भ किया कि प्रथम २ सेर साबूत आरने कंडोंकी आंच दीजाती थी जिससे कढाई इतनी भर जाती थी कि घेरा भी ढक जाता था १।२ घंटे बाद जब ऊपरकी कुछ आंच झीनी पडजाती थी तभी १२ छटांक साबूत कंडे उसीके ऊपर और रखदिये जातेथे (आंच खूब वलती रहती थी) रातके ७ बजेतक शीशीमें सबेरे ही कीसी श्यामता रही ८ बजेपर उस श्यामताके ऊपर एक चौडी बूंद सफेद रंगकी दीखपडी १० बजे देखा तो पारे पर श्यामता अधिक होगई थी और कुछ मटैला जल भी छागया था शीशीमें मटैले रंगकी लकीरें सी दीखती थीं जो अवश्य द्रव रूपमें गंधक बह आनेसे पैदा हुई होंगी रातमें काम उसी तरह चलता रहा ६ बजे सबेरेतक ४२ आंचें लगीं बादको काम बंद कर दियागया।

ता० १४ के सबेरेके ८ बजे देखा तो शीशीमें पिघलेहुए गंधकका ढिम्मा दीख पडा शीशीको खोला तो २ रत्ती कम १४ तोले १० माशे पारद निकला और ३ तोले ३ माशे अर्धजलित गंधकका ढिम्मा कलछोंई रंगतका निकला कूपीको खोला तो उसमें १ तो० ५ माशे २ र० गंधक बिलकुल जली काली रंगतकी निकली अर्थात् ६ तोले ४ माशे गंधकमें ४ तोले ८ माशे २ रत्ती गंधक निकली १ तोले ७ माशे ६ रत्ती घटी किन्तु ७ माशे नलके अन्दर भी पिघला बहा हुआ लगा रहगया होगा अतएव केवल १ तोले वास्तवमें क्षय हुआ।

सम्मति–चौथी बारसे नवीं बारतकके अनुभवोंसे सिद्ध हुआ कि बालू भरे नलकेमें स्थित कूपीको जाडेके मौसममें आदिमें १ सेर आरने कंडों हीकी अग्नि हर घंटे देना उचित है अधिक अर्थात् १८ छ० की अग्निसे भी गंधक उबल कर पारदपर पहुंचजाताहै किन्तु ६ घंटे अग्नि लगनेके बाद हर घंटेपर १ छटांककी आंच बढाना उचित है यहांतक कि २२ घंटेमें २ सेरतक आंच पहुंच जावे. इससे आगे आंच न बढानी चाहिये नहीं तो गंधक उबल कर पारदपर फिर पहुंच जायगा यह भी ध्यान रहे कि गंधक उबलनेसे पहले किसी मटीले रंगके द्रवकी कुछ बूंदें पारेपर दीख पडती हैं ऐसा होनेपर आंच कुछ घटा देनी चाहिये कि उलबनेका भय न रहे–आगे २ सेरकी ही आंच सवा सवा घंटेपर १४ घंटे और लगनी चाहिये–बस ३६ घंटे ही आंच देना काफीहै इतने ही समयमें जितना गंधक जलसकताहै जलजायगा (७२ आंचतक देकर देखागया तो गंधक अधिक क्षय न हुआ) यह शंका भी है कि लोह और शीशेसे निर्मित यंत्रमें सर्वतः निरुद्ध हुआ गंधक सब नहीं जलसकता केवल

उतना ही जलैगा जितना कि यंत्रके अन्दरकी वायुकी, उज्जनगैस, जला सक्तीहै।

(२) सम्मति–अबतक पारदकी शीशी जलभरे पात्रमें स्थितकी जाती थी और बीचमें ईंट रख गर्मी रोक दी जाती थी अतएव पारद बहुत ठंढा रहता था एक बार ऐसा भी करना चाहिये कि बीचमें ईंट न रक्खी जावे जिससे जलका पात्र गर्म होकर पारद भी कुछ गर्म रहै–और चूंकि जलका बौइलिंग पौइन्ट बहुत नीचा है अत एव पारदको हानि होनेकी शंका नहीं।

नं. १० तुलायंत्र।

उपरोक्त क्रियाका दशवीं बार (अनुभव)

ता० १।३।०८ को उपरोक्त ६४ तोले ९ माशे ६ रत्ती पारदको शीशीमें भर और ५ तोले गंधक बाजारी नई बडी कूपीमें (जिसमें ७ छ० दानेदार गंधक समाती थी) भर पूर्वोक्त प्रकारसे नालमें लगा कपरौटी कर सुखादिया।

ता० २ को उपरोक्त विधिसे यंत्रके नलकेको कस शीशीको जलभरे कटोरेमें और कूपीको बालूभरे घेरेमें (यह घेरा ४॥ इंच चौडा और ७॥ इंच ऊंचा नया मोटी चद्दरका बनवाया गयाथा) तहसे ३ अंगुल ऊंचा स्थित कर २ बजेसे निम्न लिखित नकशेके अनुसार टूटे आरने कंडोंकी आंच हर घंटेपर देना आरंभ किया।

नकशा।

तारीख	घंटा	तोलकंडा	पारेकी रंगत	विशेषवार्ता–
२।३।०८	२ बजे	१ सेर	सफेद	
”	३ बजे	१ सेर	”	किंचितबाष्पविन्दु
२।३।०८	४ बजे	१ सर		
	५ बजे	१ सेर		
	६ बजे	१ सेर		
	७ बजेरात	१ सेर		
	८ बजे	१ सेर		
	९ बजे	१ सेर		
	१० बजे	१ सेर१छ.		
	११ बजे	१ सेर१छ.		
	१२ बजे	१ सेर२छ.		
	१ बजे	१ सेर२छ.		
	२ बजे	१ सेर२छ.		
	३ बजे	१ सेर२छ.		
	४ बजे	१ सेर३छ.		
	५ बजे	१ सेर४छ.		
३।३।०८	६ बजे	१ सेर५छ.		
	७ बजे	१ सेर६छ.		
	८ बजे	१ सेर७छ.		
	९ बजे	१ सेर८छ.		
	१० बजे	१ सेर९छ.		
	११ बजे	१ सेर१०छ.		
	१२ बजे	१ सेर११छ.		कुल २३ आंच

जलके कटोरे और कढाईके बीच जो ईंट लगाई जाती थी सो इस बार नहीं लगाई गई।

ता० ३ के १२ बजे देखा तो नल और कूपीके जोडपर गंधक निकल रहा था अर्थात् नीली लौदी खपडी यंत्रको निकालना चाहा तो नल अलग निकल आया और कूपीमेंसे नीली लौ खूब निकलने लगी और नलमेंसे भी थोडी नीली लौ निकली और कुछ बूंदे टपकीं और कुछ पीले रंगका गैस नलमेंसे निकलतारहा गाढे गैसके ठंढा होकर जमनेसे ही यह बूंदें जमीहोंगी--कूपीका और बकला जोड ढीला था उसके चुस्त करनेके लिये कपडा और मुलतानी लगाई गई थी कपडेके जलजानेपर यह खराबी पैदा हुई आगेसे कूपी और नलका जोड ऐसा बनना चाहिये जो स्वयं चुस्त हो और उसकी सांस भस्ममुद्रासे बंद करनी चाहिये और उसके ऊपर कपरौटी करनी चाहिये।

सम्मति--अबकी बार यंत्र टूट जानेसे यह ज्ञात होगया कि इस मोटे नलके और मोटी कूपीमें भी १ सेर ११ छ० तककी आंच हर घंटे देना गंधकके जलने के लिये बहुत काफी है एक शंका अवश्य रहतीहै कि क्या नलके और छोटा करनेकी आवश्यकताहै।

ता० ४ को कूपीसे गंधकको निकाल तोला तो ५ माशे ५ रत्ती गंधक अधजली निकली।

नं० ११ तुलायंत्र।

उपरोक्त क्रियाका ग्यारहवीं बार अनुभव।

ता० ४।३।०८ को उक्त १४ तोले ९ माशे ६ रत्ती पारदको छान उसी शीशीमें भर और ७॥ तोले बेशुधी आँवलासार गंधकको उसी कूपीमें भर पूर्वोक्त प्रकारसे दोनोंको नालमें लगा कूपीकी दर्जपर और कूपी और नालके जोडपर (जो रेत कर स्वयं चुस्त करलिया था) भस्ममुद्रा कर कपरौटी कर सुखादिया=ता० ५ को रक्खारहा।

ता० ६ को उपरोक्त विधिसे यंत्रके नलकेको कस शीशीको जलभरे कटोरेमें और कूपीको बालू भरे घेरेमें तहसे १॥ अंगुल ऊंचा कस २ बजेसे हर घंटेपर निम्न लिखित नकशेके अनुसार आंच देना आरंभ किया–ईंट अबकी बार भी बीचमें रखना मौकूफ रक्खा था।

नकशा।

तारीख	घंटा	तोलकण्डा	पारेकी रंगत	विशेषवार्ता-
६।३।०८	२ बजे	१ सेर	सफेद	
	३ बजे	१ सेर		
	४ बजे	१ सेर		
	५ बजे	१ सेर		
	६ बजे	१ सेर		
	७ बजे	१ सेर		
	८ बजे	१ सेर१छ.		
	९ बजे	१ सेर२छ.		
	१० बजे	१ सेर३छ.		१०॥बजे पारेपर कुछ श्यामताका लक्षण दीखपडा–
	११ बजे	१ सेर४छ.		
	१२ बजे	१ सेर५छ.		
	१ बजे	१ सेर६छ.		
	२ बजे	१ सेर७छ.		
	३ बजे	१ सेर८छ.		

तारीख	घंटा	तोलकंडा	पारेकी रंगत	विशेष वार्ता
६।३।०८	४ बजे	१ सेर८छ.		
	५ बजे	१ सेर८छ.		
	६ बजे	१ सेर८छ.		
	७ बजे	१ सेर८छ.		
	८ बजे	१ सेर८छ.		
	९ बजे	१ सेर८छ.		
	१० बजे	१ सेर८छ.		
	११ बजे	१ सेर८छ.		कुल २२ आचें

ता०७को ११ बजे देखा तो गंधक कूपीपर घेरेमें बालूके अन्दर धुआं उठता दीखपडा थोडी बालूको निकाला तो कूपीके मुखसे जहां कपरौटी हो रही थी १॥ अंगुल नीचे दोनों दरजोंपर गंधक जलता दीखपडा इस वास्ते काम बंद करदिया ठंडा होजानेपर खोला तो ७ तोले ३ माशे गंधक जिसकी रंगत कुछ फीकी पडगई थी निकला शीशीमें देखनेसे पारेपर हलकी श्यामता थी किन्तु लौटनेपर वह पारेमें मिलगई।

सम्मति-इससे यह सिद्ध होगया कि १॥ सेरकी आंचसे भी गंधकके जलानेवाली गर्मी पैदा होजातीहै।

नं० १२ तुलायंत्र।

उपरोक्त क्रियाका बारहवीं बार अनुभव।

ता० १२।४।०८ को उपरोक्त १४ तोले ९ माशे ६ रत्ती पारदको जो छाननेपर १४ तोले ९ माशे २ रत्ती रह-गया था शीशीमें भर और ७ तोले वेशुधी आँवलासार गंधकको दूसरी बडी कूपीमें भर पूर्वोक्त प्रकारसे नई नाल-में (जो अबकी बार छोटी अर्थात् ८ अंगुल लंबी बनवाई गई थी) लगा कूपीकी दरजपर और नाल और कूपीके जोडपर भस्ममुद्रा कर कपरौटीकर सुखादिया।

ता० १३ को उपरोक्त विधिसे यंत्रके नलकेको कस शीशीको जलभरे कटोरेमें और कूपीको बालू भरे घेरेमें तहसे ३ अंगुल ऊंचा कस ८ बजेसे हरघंटेपर निम्न लिखित नकशेके अनुसार आंच देना आरम्भ किया।

नक्शा।

तारीख	घंटा	तोलकंडा	पारेकी रंगत	विशेष वार्ता।
१३।४।०८	८ बजे	१२ छ. आवे टूटे कंडे	सफेद	कर्मारम्भ
	९ बजे	१३ छ.		
१३।४।०८	१० बजे	१४ छ.	सफेद-ऊपर कुछ बाष्पबिन्दु	
	११ बजे	१५ छ.		
	१२ बजे	१६ छ.	अल्पश्यामता	
	१ बजे	१ सेर १ छ.		१ बजेसे ३ बजेतक ३ आंच १ सेर १ छ. की दीगई.
	४ बजे	१ सेर २ छ.		४ बजे शामसे दूसरे दिन १० बजेतक १९ आंचें १ सेर २ छ. की दीगई-
१४।४।०८	११ बजे	१ सेर ३ छ.		
	१२ बजे	१ सेर ३ छ.		
	१ बजे	१ सेर ४ छ.	गाढीश्यामता	
	२ बजे	१ सेर ५ छ.		
	३ बजे	१ सेर ५ छ.		
	४ बजे	१ सेर ६ छ.		४ बजेसे दूसरेदिन ६ बजेतक १५ आंच १ सेर ६ छ. की दीगई-
१५।४।०८	७ बजे	१ सेर ७ छ.		
१५।४।०८	८ बजे	१ सेर ८ छ.		८ बजेसे रातके ७ बजेतक १२ आंच १ सेर ८ छ. की दीगई ७ बजे रातके शीशीमें गंधककी डली देखपडी-
	८ बजेरात	६ छटांक		८ बजे रातसे दूसरे दिन १० बजेतक १५ आंच ६ छटांक-
१६।४।०८	१० बजे			काम बंद-कुल ६३ आंच लगीं-

ईट इस बार भी न लगाई किन्तु लोहेका तवा लगाया गया तीसरी आंचपर पारेपर कुछ बाष्प बिन्दु और पांचवीं आंचपर अल्प श्यामता दीखपडी १२ छ. से १ सेर २ छ० तककी आंच दीगई।

ता० १४ को पारेपरकी श्यामता कुछ गहरी होगई और शीशीकी रंगत धूंधरीसी पडगई थी आंच १ सेर ३ छ० से १ सेर ६ छ० तक बढाई गई।

ता. १५ को १ सेर ७ छ. से १ सेर ८ छ. तककी आचें लगीं रातके ७ बजे देखा तो शीशीमें पीत रंगकी गंधककी डली दीखपडी अत एव काम बंद न कर आंच घटाकर ६ छ. की कर दीगई।

ता. १६ को ३ दिन रात होजाने और ६३ आंचें लग-चुकनेपर १० बजे दिनके काम बंद कर दिया और यंत्रको जैसेका तैसा रक्खा छोडदिया शामको खोलागया तो

शीशीमें पारेपर श्यामता अधिक थी और बहुत छोटी गंधककी डली उसमें पडी थी कपडेमें छाननेसे पारेकी श्यामता कपडेपर आगई तोलनेपर १४ तोले ८ माशे हुआ १ माशे २ रत्ती छीजगया पारेपरकी गंधककी डली २ रत्ती थी कूपीमेंसे गंधकको खुरच निकाला तो ५ तोले १ माशे गंधक पीत रंगकी निकली १ तोले १० माशे ६ रत्ती घटी।

सम्मति–पुनः इसी सबबसे छोटे नलवाले यंत्रमें निकला हुआ सब पारा और ७ तोले गंधक भर शीशीस्थित जलभरे पात्रको बीचमें तवालगानेके विना कढाईसे मिलाकर रक्खो ताकि पानी खूब गर्म होतारहे और यह शंका कि कदाचित् जल शीतल रहनेसे गंधक न जलता हो निवृत्त होजावे और आंच पहले दिन १२ छटांकसे आरम्भ कर हर दूसरे घंटेपर १ छटांक बढाकर १ सेर तक कर दीजाय। दूसरे दिन हर तीसरे घंटेपर १ छटांक बढाकर १ सेर ३ छ० तक कर दीजाय। तीसरे दिन भी हर तीसरे घंटेपर १ छ० बढाकर १ सेर ६ छ० की कर दीजाय इससे अधिक हरगिज नहीं क्योंकि १ सेर ८ छ० की अग्निसे इस छोटे नलवाले यंत्रमें गंधक पारेपर टपकने लगता है शीशीकी गर्दनतक जलका पात्र भरारहे और हर आंचपर जितना जल कम होजाय उतना और मिला दियाजाय।

नं० १३ तुलायंत्र।

उपरोक्त क्रियाका तेरहवीं बार अनुभव।

ता० २४को १३ तोले ९माशे४रत्ती पारदको (जो पिछले तुलायंत्रके १४ तोले ८ मा० निकला था किन्तु बंद किये हुए तुलायंत्रके गिरजानेसे शीशीका१०माशे पारा कूपीकी गंधकमें मिलगया जो पृथक् न होसका अत एव १३ तोले ९ माशे ४ रत्ती रहगया) शीशीमें भर और ६ तोले ४ माशे बेशुधी आँवलासार गंधकको कूपीमें भर पूर्वोक्त प्रकारसे उसी छोटे नालमें लगा कूपीकी दर्जेपर और नाल और कूपीके जोडपर भस्ममुद्रा कर कपरौटी कर सुखादिया।

ता० २५ को रक्खा रहा।

ता० २६ को उपरोक्त विधिसे यंत्रके नलकेको कस शीशीको जलभरे कटोरेमें (जो पानीमें गर्दनतक डूबी रक्खी थी) और कूपीको वालू भरे घेरेमें तहसे ३ अंगुल ऊंचा कस ८ बजेसे निम्न लिखित नकशेके अनुसार आंच देना आरम्भ किया।

नक्शा।

तारीख	घंटा	तोलकण्डा	पारेकी रंगत	विशेष वार्ता–
२६।४।०८	८ बजे	१२ छ० टूटे आरनेकंडे	सफेद	
	९ बजे	१२ छ०		
	१० बजे	१३ छ०	बाष्पबिन्दु	
	११ बजे	१३ छ०		
	१२ बजे	१४ छ०		
	२ बजे	१५ छ०		
	३ बजे	१५ छ०	गहरी श्यामता	
	४ बजे	१ सेर		४ बजे शामसे दूसरे दिन ६ बजे तक १५ आंच १ सेरकी–
२७।४।०८	७ बजे	१ सेर १ छ०		
	८ बजे	१ सेर १ छ०		
	९ बजे	१ सेर १ छ०		
	१० बजे	१ सेर २ छ०		
	११ बजे	१ सेर २ छ०		
	१ बजे	१ सेर ३ छ०		१ बजे दिनसे दूसरे दिन ५ बजेतक १७ आंच १ सेर ३ छटांक–
२८।४।०८	६ बजे	१ सेर ४ छ०		
	७ बजे	१ सेर ४ छ०		
	८ बजे	१ सेर ४ छ०		
	९ बजे	१ सेर ५ छ०		
	१० बजे	१ सेर ५ छ०		
	११ बजे	१ सेर ५ छ०		
	१२ बजे	१ सेर ६ छ०	४॥बजे शामके शीशीमें गंधक दीख पडी	१२ बजे दिनसे ४ बजे शामतक ५ आंच १ सेर २६ छ०
	५ बजेशाम	१ सेर ४ छ०		५ बजे शामसे १२ बजे राततक ८ आंच १ सेर ४ छ०
	१ बजे रात	१ सेर ५ छ०		
	२ बजे रात	१ सेर.५ छ०		
	३ बजे रात	१ सेर ६ छ०		३ बजे रातसे दूसरे दिन १० बजे ८ आंच १ सेर ६ छ०की लगी–
२९।४।०८	१० बजे दिन			काम बंद ७५ आंचें लगीं–

इस बार कडाई और यंत्रके बीचमें लोहेका तवा न लगाया गया जिससे कटोरेका पानी इतना गर्म होने लगा जिसमें देर तक उँगली नहीं डाले रह सकते थे जितना पानी अन्दाजसे कम होजाता था और डाल देते थे तीसरी आंच पर पारे पर कुछ बाष्प बिन्दु और आठवीं आंच पर गहरी श्यामता दीख पडी ।

ता० २८ को ४॥ बजे देखा तो शीशीमें छोटी २ गंधककी २ डली पीत रंगकी दीख पडीं अत एव आंच घटा कर १ सेर ४ छटांककी कर दी गई जिससे गंधकका आना बंद होगया और बादको रातके १ बजे और २ बजे १ सेर ५ छ०की आंच लगा कर ३ बजेसे फिर १ सेर ६ छटांककी कर दीगई और इस ठंडे समयमें आंच बढा देनेसे भी गंधक फिर न टपका ।

ता० २९ के ७ बजे देखा तो शीशीमें और अधिक गंधक न आई थी १० बजे दिनके ३ दिन रात बीत चुकने पर काम बंद कर दिया और यंत्रको जैसाका तैसा रक्खा छोड दिया ।

ता० ३० को खोला तो शीशीमें पारेपर अधिक श्यामता थी । थोडा गंधक तो कल शीशीमें दीखता था अब खोलते समय यंत्रकी नालमें जमाहुआ और थोडा शीशीमें गिर-गया । पारेको निकाल विना छाने तोला तो १३ तोले ९ माशे हुआ ४ रत्ती छीजगया और छानकर तोला तो पारेकी श्यामता कपडेपर आगई और तोलमें ४ रत्ती और छीज-कर १३ तो० ८ माशे ४ रत्ती रहगया पारेपरका गंधक १ माशे ५ रत्ती पीत रंगका निकला कूपीमेंसे गंधकको खुरच निकाला तो ७ माशे ३ रत्ती गंधक कूपी और नालके मुखपर चिपटा हुआ मिला जो बिलकुल काली रंगतका जलाहुआ था और २ तोले ३ माशे ५ रत्ती गंधक पीतश्याम रंगतका बीचमें निकला और १ तोले ३ माशे ३ रत्ती, कम पीत अधिक श्याम रंगतका अधजला गंधक नीचे तलीमें निकला इसतरह कुल ६ तोले ४ माशे गंधकमेंसे ४ तोले ४ माशे गंधक निकला २ तोले घटा उक्त चारों मेलके गंधकको आंचपर डाल जलाया तो चारों तरहका पिघल लौंदे जलनेलगा । किन्तु जो नाल और कूपीके मुखका काली रंगतका था वह जलता तो था किन्तु पिघ-लता कम था ।

सम्मति—आगेसे आंच १२ छ० से आरम्भ कर पहले दिन सेर भरतक बढाईजावे दूसरे दिन रातको १८ छ० बढाई जावे । तीसरे दिन रातको १। सेरतक बढाईजावे । इससे अधिक आंच न बढाईजावे और दिनको १० बजेसे ५ बजेतक घटाकर १२ छ० की ही आंचें दीजावें इसतरह ४ दिनमें काम चले और शीशीकी जगह कूपी लगाई जावे।

नं. १४ तुलायंत्र ।

उपरोक्त क्रियाका चौदहवीं बार अनुभव ।

ता० २०।५।०८ को उक्त १३ तोले ८ माशे ४ रत्ती पारदको लोहकूपीमें भर और ७ तोले बेशुधी आंवलासार गंधकको दूसरी कूपीमें भर पूर्वोक्त प्रकारसे उसी छोटी नालमें लगा पारदवाली कूपीके केवल नाल और कूपीके जोडपर भस्ममुद्रा और गंधकवाली कूपीकी दर्जपर और कूपी और नालके जोडपर भस्ममुद्रा कर कपरौटी कर सुखादिया ।

ता० २८ को उपरोक्त विधिसे यंत्रके नलकेको स्टेन्डमें कस पारदवाली कूपीको जल भरे पात्रमें (कूपी जलमें ¾ भाग डूबी रही) और गंधकवालीको बालू भरे घरम तहसे २ अंगुल ऊंचा । स्थित कर ४ बजे शामसे हर घंटेपर निम्न लिखित नकशेके अनुसार आंच देना आ-रम्भ किया ।

तारीख	घंटा	तोलकंडा	विशेषवार्ता—
२८।५।०८	४ बजेशाम	१२ छ.	
	५ बजे	१२ छ.	
	६ बजे	१३ छ.	
	७ बजे	१३ छ.	
	८ बजे	१४ छ.	
	९ बजे	१५ छ.	
	१० बजे	१ सेर	१० बजे रातसे दूसरे दिन शामके ६ बजेतक २१ आंच १
२९।५।०८	७ बजेशाम	१ सेर १ छ.	
	८ बजे	१ सेर १ छ.	
	९ बजे	१ सेर १ छ.	
	१० बजे	१ सेर २ छ.	१० बजे रातसे दूसरे दिन शामके ६ बजेतक २१ आंच १ सेर २ छ.
३०।५।०८	७ बजे शाम	१ सेर ३ छ.	
	८ बजे	१ सेर ३ छ.	
	९ बजे	१ सेर ३ छ.	
	१० बजेरात	१ सेर ४ छ.	१० बजे रातसे दूसरे दिन ९ बजे दिनतक १२ आंच १ सेर ४ छ.
३१।५।०८	१० बजेदिन	१ सेर २ छ.	दुपहरीकी गर्मीके खयालसे आंच घटा कर १० बजे दिनसे शामके ७ बजेतक १० आंच १ सेर २ छ. की दीगई—
	८ बजेरात	१ सेर ३ छ.	
	९ बजे	१ सेर ४ छ.	९ बजे रातसे ४ बजे सबेरेतक ७ आंच १ सेर ४ छटांक.
	५ बजे		काम बंद.

इस बार कढाई और कटोरेके बीचमें तवा न लगाया-गया कटोरेका पानी इतना गर्म रहता था जिसमें देरतक उँगली न डाले रहसकते थे। हर दूसरे घंटेपर पानीकी घटी मिकदार २–२॥ छ० पानी डाल पूरी करनी पडती थी ये काम ३॥ दिन रात चला।

ता० ३१ के सवेरे ५ बजे काम बंद कर यंत्रको जैसेका तैसा रक्खा छोडदिया।

ता० १।६ को खोला तो पारदकी कूपीमें पारेपर करीब २ तोलेके श्याम रंगका जल मिला जिसमें श्याम रंगतकी गंधककी दो डली पडी थीं पारेको पानीसे पृथक् कर सुखा छान तोला तो १३ तोले ८ माशे हुआ ४ रत्ती छीजगया पारेपरकी गंधककी डली ४ रत्ती हुई। कूपीसे गंधकको खुरच तोला तो ६ तोले ५ माशे गंधक पीत हरित रंगकी कूपीमें ऊपरकी और २ माशे जली गंधक श्याम रंगकी कूपीमें नीचेकी अर्थात् ७ तोले गंधकमेंसे कुल ६ तोले ७॥ माशे गंधक निकली ४॥ माशे घटी।

(१) सम्मति--इस शंकासे कि पारद कूपीमें जो जल निकला वह बाहरसे कूपीके अन्दर तो नहीं चलागया कूपीको उपरोक्त प्रकारसे ही २--३ दिन जलमें स्थित रक्खा किन्तु कूपीके अन्दर जल न मिला इस लिये यह निश्चय नहीं हुआ कि ये जल कैसे उत्पन्न हुआ आगे क्रियामें किसी मसालेसे पारद कूपीके बाहरी जोड पर मुद्रा अवश्य करनी चाहिये।

(२) सम्मति—अबकी बार अग्निका समय भी३॥दिन रात कम न था और अग्निकाप्रमाण भी कम न था क्योंकि ४ रत्ती गंधक पारेपर जो टपकी फिर भी गंधककी तोल केवल ४॥ माशे घटी इसालिये ये विचारने योग्य है कि अथवा अग्निका समय १४ वा २१ दिनतक बढाया जाय या क्या मेरी रायमें लोह संपुटमें अवरुद्ध गंधक वाष्पते जारण करनेको अग्निमंद और समय बहुत अधिक होना चाहिये।

गंधक जारणका अनुभव संपुटद्वारा (भूधरयंत्रमें)

ता० २९।११।०७ को २॥ तोले दानेदार दागखाई पिसी गंधक और २॥ तोले पारद कुल ५ तोलेको मिट्टीके किनारे घिसे शकोरोंके संपुटमें (जो हलके चपटे विना पेंदीके ४ इंच चौडे १ इंच गहरे (सर्वांग) थे, इस तरह रक्खा कि नीचे ऊपर गंधक और बीचमें पारद रहा बादको संपुटकी दरजोंपर और ऊपर नीचे कपरौटीकर सुखादिया।



(सम्पुट)

ता० ३ को १२—१२ अंगुल लंबे चौडे और १२ ही अंगुल गहरे गढहेमें बालूभर बालूमें २॥। अंगुल नीचे संपुटको दवा ८॥ बजेसे दो दो घंटे बाद सवा सवा सेरकी आंच देना आरम्भ किया।

ता० ३।१२ के शामके ४ बजेतक रातदिन इसी तरहसे आंच दीगई २ रात और ३ दिनमें सब २८ आंच लगी।

ता० ३ को खोला तो ऊपर जली हुई गंधक काले रंगकी बीचमें पारा और नीचे पारद गंधकसे बनी जली पिष्टी सी निकली तोलमें २ तोले ४ माशे ३ रत्ती पारद निजरूपमें और ६ माशे गंधक जली हुई और ६ रत्ती पिष्टी निकली यानी (५ तोले वजनमें) २ तोले ११ माशे १ रत्ती वजन मिला २ तोले ७ रत्ती घटा। जहांतक समझमें आता है पारद क्षय नहीं हुआ।

२ तोले ४ माशे ३ रत्ती पारद निजरूपमें मौजूदहै।

४ रत्ती पिष्टीमें समझना चाहिये।

१ माशे० जली गंधकमें अवश्य मिला हुआहै।

२ तोले ५ माशे ७ रत्ती जोड पारदका होताहै इस लिये एक आध रत्ती छीजन होगी।

सम्मति—इस क्रियामें यद्यपि ३ दिन निरंतर अग्नि देनी पडती है परन्तु गंधकका जारण बहुत अच्छा होताहै केवल एक ही दोष अबकी बार रहा वह यह कि १ माशेके करीब पारा जली हुई गंधकमें मिलगया जिससे पृथक् करना कठिन है अनुमान होताहै कि यदि पूरे ३ दिन रात अग्नि दी जाती तो गंधक पूर्णतः जल जाती और गंधककी निःसत्त्व राख में पारा मिला न रहजाता यह भी संभव है कि किसी अम्ल रससे गंधकको आर्द्र कर देनेसे शेष जली गंधकमें पारद न मिलता–एक बार पुनः इसी क्रियाको पूरे ३ दिन रात करके देखो।

गंधकजारणका अनुभव सम्पुटद्वारा (भूधरयंत्रमें) अकलीमियांकी क्रियासे।

ता० ५।१२।०७ को ३ तोले ४ माशे पारदको (जो सरबंद कैनका था मर्दनसे सो साधारण शुद्ध था और जिसमें तुल्ययंत्रसे गंधकजारणका अनुभव हुआ था) लोहके खल्वमें डाल उसमें ढाक तेल दो दो चार चार बूंद डाल ८॥ बजेसे मर्दन करना आरम्भकिया मर्दन करते ही पारेके बाजरेसे रवे होने लगे दो घंटे बाद ये रवे और छोटे होगये और ज्यों ज्यों मर्दन हुआ त्यों त्यों ये छोटे होते गये शामके४बजे देखा तो पारेके रवे बहुत कम दीखते थे और एक प्रकारकी पतली पिष्टीसी बनगई थी आज ७ घंटे घुटाई कीगई२ माशे तेल पडा होगा।

ता० ६ को १ माशेके करीब ढाकका तेल और डाल ८ बजेसे ११॥ बजेतक ३॥ घंटे घुटाई की तो पारद नष्ट-पिष्टी होगया फिर २ बजेपर ४ माशे दानेदार गंधक पीस खरलमें डाल घोटा तो पारा इकट्ठाहोने लगा बादको बूंद बूंदकर २ माशे तेल डाल ४ बजेसे फिर घुटाई की तो पारा फिर न मिला अत एव उसको पृथक् कर तोला तो १ तो० ८ मा० ४ र० हुआ १ तो० ७मा० ४ र० गंधकमें मिला-रहकर फुसफुसी पिष्टीसी बनगई जिसकी टिकिया न बन-सकी इस दवाको जो तोलमें १ तो० ११ मा० ४ र० थी चीनी फिरे छोटे संपुटमें रख कपरौटी कर सुखादिया।

सम्मति–गंधक एक बार डाल दीगई यदि थोडी २ डाल घोटा जाता तो शायद पारा पृथक् न होता।

ता० ८ को १२–१२ अंगुल लंबे चोडे और १२ अंगुल गहरे गढेमें बालूभर बालूमें ३ अंगुल नीचे उक्त संपुटको रख ९॥ बजेसे दो दो घंटे बाद सवा सवासेर कंडोंकी आंच देना आरम्भकिया ३॥ बजे तक ४ आंच दीगई।

ता० ९ को संपुटको निकाला तो संपुटके ऊपरके शकोरेपर कालोंछ आगई थी थोडी कपरौटी जलगई खोला तो दवा जैसीकी तैसी रक्खी थी तोलनेपर १ तोले ११ माशे हुई ४ रत्ती घटी ।

सम्मति-आगे ३ अंगुलकी जगह सिर्फ २ अंगुल रेत ऊपर रक्खा जाय और ६ आंच दीजाय ।

उपरोक्त क्रियाका दूसरी बार अनुभव (भूधरयंत्रमें)

ता० ११।१२।७ को पूर्वोक्त १ तोले ११ माशे दवाको उसी सम्पुटमें रख कपरौटी कर सुखादिया ।

ता० १२ को उसी १२-१२ अंगुल लंबे चौडे बालूभरे गढेमें २ अंगुल नीचा संपुटको दबा ९ बजेसे सवा सवासेर कंडोंकी दो दो घंटेबाद आंच देना आरम्भ किया । ७ बजे तक ६ आंच दीगई ।

ता० १३ को संपुटको निकाला तो उसके ऊपरकी सब कपरौटी जलगई थी । दवाके रंगमें कुछ फर्क न था । तोलनेपर १ तो० १० माशे २ रत्ती हुई १६ रत्ती घटी ।

सम्मति-अनुमान होताहै कि संपुट गहरे और पेंदीदार शकोरोंका कियागया इसी कारणसे अग्निका प्रभाव ठीक न पडा । गंधक जारण नहीं हुआ । आगेसे विना पेंदीके चपटे शकोरोंसे संपुटकर पुनः ६ आंच दो ।

उपरोक्त क्रियाका तीसरी बार अनुभव (भूधरयंत्रमें)

ता० १४ । १२ । ०७ को पूर्वोक्त १ तोले १० माशे २ रत्ती दवाको बिना पेंदीके चपटे शकोरेके सम्पुटमें बंद कर कपरौटी कर सुखा दिया ।

ता० १५ को उसी १२-१२ अंगुल लंबे चौडे बालूसे भरे गड्ढेमें २ अंगुल नीचा संपुटको दबा ८॥ बजेसे सवा सवासेर कंडोंकी दो दो घंटेबाद आंच देना आरम्भकिया ६॥ बजेतक ६ आंच दीगई ।

ता० १६ को संपुटको निकाला तो उसकी कपरौटी तौ जलगई थी किन्तु खोलनेपर दवा ज्योंकी त्यों पूरी १तोले१० माशे २ रत्ती निकली ।

सम्मति-२ घंटेतक आंच ठहरती नहीं और जाडा बहुत पडताहै अत एव डेढ डेढ घंटे बाद दहरा दियाजावे ।

उपरोक्त क्रियाका चौथी बार अनुभव (भूधरयंत्रमें)

ता० १६ । १२ । ०७ को पूर्वोक्त १ तोले १० माशे २ रत्ती दवाको उसी संपुटमें रख कपरौटी कर सुखादिया ।

ता० १७ को उसी बालू भरे गढेमें २ अंगुल नीचा संपुटको दबा८॥ बजेसे सवा सवासेर कंडोंकी डेढ डेढ घंटे बाद आंच देना आरम्भकिया ४ बजेतक ६ आचें दीगई ।

ता० १८ को निकाल दवाको तोला तो १ तोले १० माशे हुई २ रत्ती घटी ।

सम्मति-आगे १। सेरकी जगह डेढ सेरकी आंच और १॥ घंटेकी जगह १। घंटे में आंच दो और ६ की जगह १२ आंच दो ।

उपरोक्त क्रियाका पाचवीं बार अनुभव (भूधरयंत्रमें)

ता० १९ । १२ । ०७ को उक्त १ तोले १० माशे दवाको उसी सम्पुटमें रख कपरौटी कर सुखादिया ।

ता० २० को रेतसे भरे १२ अंगुल चौडे गोल गढेमें उसी प्रकार दो अंगुल नीचा संपुटको रख ८ बजेसे डेढ डेढसेरकी आंच सवा सवाघंटे बाद दी रातके ९॥। बजेतक सब १२ आंच लगीं ।

ता० २१ को खोला तो दवा ज्योंकी त्यों १ तोले १० माशे निकली ।

सम्मति-आंच १। सेरकी जगह १॥ सेरकी करदी और तादातमें भी ४ से १२ तक बढादी किन्तु गंधकजारण नहीं हुआ । इससे अनुमान होताहै कि अधिक शीत पडनेके कारण गंधक जारण ठीक नहीं होता । पीछे ज्ञात हुआ कि गीले गढेमें आंच दीगई थी अनुमान होताहै कि यही कारण गंधक न जलनेका हुआ ।

उपरोक्त क्रियाका छठी बार अनुभव (भूधरयंत्रमें)

ता० २३ । १२ । ०७ को पूर्वोक्त १ तोले ८ माशे ४ रत्ती पारेमें (जो प्रथम अनुभवमें खरलमें गंधक डालते समय इकट्ठा हुआ पृथक् कर लियागयाथा)१ तोले७ माशे ४ रत्ती पारद (जिसपर तुलायंत्रमें गंधक जारणका अनुभव कियागया था) और मिला पूरा ३ तोले ४ माशे कर लोह खल्वमें डाल ढाक तैल दो दो चार चार बूंद डाल ९॥ बजेसे धूपमें मर्दन करना आरम्भ किया । ३ बजेपर पारदके नष्टपिष्टी होजानेपर खल्वमें ४ माशे पिसा गंधक इसतरह डाला कि चुकटीसे थोडा थोडा गंधक बिखरवां डालते गये और घोटते गये और थोडा थोडा तेल भी डालते गये जिससे पिष्टीमें खुश्की न आने पाई । इस क्रियासे गंधक मिलगया और पारा पूर्ववत् पृथक् न हुआ किन्तु थोडी देर और घुटनेपर कुछ खुश्की आनेसे पारेके रवे पृथक् होनेलगे इस लिये और न घोट तर पिष्टीकी ही टिकिया बना संपुटमें रख कपरौटी कर दीगई (११ माशे तैल पडा)

ता० २४ को संपुट रक्खा रहा ।

ता० २५ को उसी बालूभरे गढेमें १। अंगुल नीचा संपुटको रख ९ बजेसे सवा सवासेरकी आंच एक एक घंटे बाद दीगई । रातके ८ बजेतक १२ आंच लगीं ।

ता० २६ के सवेरे संपुटको निकाल खोला तो अन्दर टिकिया ज्योंकी त्यों निकली ऊपर कुछ जल गई थी । तोलनेपर १ तोले ११ माशे ३ रत्ती हुई । १ तो० ८ माशे ५ रत्ती घटी अर्थात् गंधककी तोलके सिवाय १ तो० ४ मा० ५ रत्ती पारा भी उडगया । अग्नि अधिक लगगई सेर सेरभरकी आंच घंटे या सवा घंटे पीछे जाडेके दिनोंमें लगनी चाहिये और संपुट २ वा २॥ अंगुल नीचा रेतमें रहनाचाहिये ।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यास-ज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहितायां भाषाटीकायां गंधकजारणं नामैकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

समुदायेन गगनजारणाध्यायः२२.



अभ्रसत्त्वजारणकी आद्योपान्तक्रिया।

अथाभ्रकसत्त्वादिबीजजारणप्रकारो लिख्यते केवलाभ्रकसत्त्वं हि न ग्रसत्येव पारदः ॥ तस्माल्लोहान्तरोपेतं युक्तं वा धातुतत्त्वके ॥ १ ॥

अर्थ-पारद केवल अभ्रसत्त्वको नहीं खाताहै इस लिये अन्य किसी धातुके साथ मिलहुये अथवा सोनामक्खीके सत्त्वके साथ मिले हुये अभ्रकसत्त्वका जारण करे ॥ १ ॥

प्रथमं पाषाणखल्वे सूतं निधाय सूतादष्टमांशं बिडं दत्त्वा जंबीरनिंबूनीरेण दिनमेकं मर्दयेत । ततस्तस्मिन् सूतमानाच्चतुःषष्ट्यंशमितमभ्रकसत्त्वं सार्षपतैलमयूरपित्ताभ्यां स्वहस्तयोरेव स्पर्शितं कृत्वा तत्सत्त्वं गोलं धृत्वा कांजिकैर्वस्त्रवर्त्या तं गोलं प्रक्षालयेत् (प्रस्वेदयेत्) क्षालनात्पारदक्षयो यथा न स्यात्तथा विधेयः । ततः सूतं चतुर्गुणवस्त्रे धृत्वा निष्पीडयेत् । शिक्थशेषश्चेत्तदा ग्रासो न सम्यग् जीर्णः । अशेषश्चेत्तदा सम्यग्ग्रासो जीर्णः । इति परीक्ष्य अजीर्णे तु पुनः शिक्थं सूते क्षिप्त्वा तं सूतं पूर्ववत्स्वेदयेत् अभ्रकसत्त्वमाक्षिकसत्त्वजीर्णः सूतो दंढधारी भवति । सूते क्षिप्त्वा निंबूरसेन वा तदभावे जंबीररसेन वा दिनमेकं पुनः पुनर्मर्दयेत् । ततः स्वर्णमाक्षिकसत्त्वं सूताच्चतुःषष्ट्यंशमितं मधुयुतं च सूते क्षिप्त्वा निम्ब्वादिनीरेण दिनमेकं संमर्द्य गाढं ज्ञात्वा गोलं कुर्यात। ततः सार्द्धनिष्कं सैंधवं सार्द्धनिष्कं यवक्षारं च निंबुरसगोमूत्राभ्यां संमर्द्य भूर्जपत्रं वा चतुर्गुणवस्त्रं लिप्त्वा संशोष्य अस्मिन् गोलं नीत्वा मृन्मयपात्रे च वस्त्रोपरि अजीर्णे तु न भवति इत्यपि परीक्षान्तरम् एतद्दत्तग्रासादधिकात् पंच ग्रासान् दद्यात् । अथायं क्रमेण प्रथमग्रासे द्वात्रिंशद्भागेन सत्त्वं देयं, द्वितीयं ग्रासेऽष्टमांशेन सत्त्वं देयं, चतुर्थग्रासे तु चतुर्थांशेन सत्त्वं देयं, पंचमग्रासे च पारदतुल्यं सत्त्वं देयं तथा च षड् ग्रासा दत्ता भवंति षट्सु ग्रासेषु प्रत्येकं सूताष्टमांश एव बिडः प्रक्षेपणीयः एवं कृते गगनग्रासाख्यसंस्कारो भवति सूतस्य (ध. सं.)

अर्थ-प्रथम पत्थरके खरलमें पारदको रख और पारदसे अष्टमांश बिडको डालकर जंभीरी और नींबूके रससे एक दिन घोटे फिर उसमें पारदकी तोलसे चौसठवें भाग अभ्रसत्त्वको सरसोंके तैल और मोरके पित्तेसे चिकना कर फिर उसको पारदमें डालकर नींबूके रससे अथवा जंभीरीके रससे एक दिन बारबार मर्दन करे इसके बाद चौसठवां भाग सोनामक्खीका सत्त्व और शहदको पारदमें डालकर नींबू आदिके रसोंसे एकदिन घोटे और उसको गाढा जान कर गोला बनालेवे फिर डेढ तोला सैंधानोन और डेढतोला जवाखार इन दोनोंको नींबूके रस और गोमूत्रसे घोटकर उससे भोजपत्र या चौलर कपडेको लीप कर और सुखा कर फिर उसगोलेको मिट्टीके पात्रमें कपडेपर रखदेवे। फिर कपडेकी बत्तीको कांजीमें भिगोकर स्वेदनकर धोवे उस पारदको ऐसा धोवे कि जिससे पारदका क्षय नहीं हो फिर पारदको चौलर कपडेमें बांधकर निचोडे । यदि उसमें कुछ गाद रह गई हो तो ग्रास भली भांति जीर्ण नहीं हुआ ऐसा समझना चाहिये और जो गाद न रही हो तो ग्रासजीर्ण हुआ समझना चाहिये यदि जीर्ण नहीं हुआ हो तो फिर पहलेके समान स्वेदन करे । इस प्रकार अभ्रक सत्त्व और माक्षिक सत्वके जीर्णसे पारद दंडधारी नहीं होताहै यह ग्रास जीर्ण तथा अजीर्णकी परीक्षा कहीहै इस ग्रासके अतिरिक्त पांच ग्रास और देवे उसका यह क्रम है प्रथम ग्रासमें बत्तीस भाग सत्व, द्वितीय ग्रासमें षोडशभागसत्व, और पंचग्रासमें पारदके समान सत्व देना चाहिये इस प्रकार पूर्वग्रास सहित ६ ग्रास होतेहैं और प्रत्येक ग्रासमें पारेसे अष्टमांश बिड डालना चाहिये । ऐसा करनेपर गगनग्रासाख्य संस्कार होताहै ।

सम्मति-प्रथम पारेमें बिड डालकर मर्दन करना दूसरे उसमें अभ्रक सत्व डालकर घोटना, तीसरे स्वर्ण माक्षिक सत्व डाल कर घोटना, चौथे उसको वस्त्रमें गोला बनाकर स्वेदन करना, पांचवें ग्रास जीर्ण हुआ या नहीं जीर्णहुआ ऐसी परीक्षा करना, छठे ग्रासके नहीं जीर्ण होने पर पुनः स्वेदन करना इस प्रकार समस्त ग्रासोंमें ६ क्रियायें क्रमशः अवश्य करना चाहिये ।

अभ्रकजारणकी कच्छपके पीछे खुली-मूषामें जारणकी क्रिया।

बाजे वैद्य कच्छपयंत्रसे पारेमें दूनेअभ्रक सत्वादिकको डालकर जलातेहैं और जो शेष रहताहै उसको साक्षात् भट्टीकी अग्निमें धोंक जलाकर राख करतेहैं और पूर्वोक्त गोलेको पक्की घडियोंमें रख गोलेके ऊपर नीचे बिड दे घडियाको नींबूके रससे भर देते हैं और घरियाका मुख बंदकर भट्टीमें धोंकतेहैं तब पारेका द्विगुण सत्वादिक कच्छपयंत्रमें जलाते हैं तब पारा उडनेका भय नहीं रहता इससे साक्षात अग्निके संयोगसे बाकी द्विगुणसे अधिक सत्त्वादिक जलावे तो कुछ चिन्ता नहीं (रसराजसुन्दर प्र. खं. पूर्वभाग)

अभ्रजारण ।

प्रथम पारेमें उसका अष्टमांश बिड डाले यानी पारा ८ टंक हो तो एक टंक बिड डाले और जंभीरीके रसमें १ दिन घोटे। पश्चात् चौसठवां हिस्सा यानी ४ रत्ती अभ्रकसत्त्व डाले। फिर जंभीरीके रसमें १ दिन घोटे (परन्तु यह याद रहे कि प्रथम अभ्रकसत्त्वको तब जंभीरीके रसमें घोटे जब पहले उस अभ्रसत्त्वको मोरका पित्ता और सरसोंका तेल हाथसे मललेवे अथवा सोनामाखीका सत्त्व और शहद मिलाकर मलले सोनामाखीका सत्त्व अभ्रकसत्त्वके समान यानी ४ रत्ती लेना) एक गोला करे। तत्पश्चात् सैंधानमक और जवाखार दोनोंको धेलाधेला भर लेकर नींबूके रस और गोमूत्रमें खूब घोटे जब गाढा हो तब चार तह कपडेपर लेप करे और जब खूब सूख जाय तब उसमें उस गोलेको रक्खे २ और सूतसे बांधकर दोलायंत्रकी भांति एक हांडीमें सैंधानमक, जवाखार, कांजी, कागजी नींबूका रस, गोमूत्र डालकर तीन दिन स्वेदन करै.जानना चाहिये कि, जब अभ्रकसत्त्व सोनामाखीके सत्त्वमें मिले तब पारा अभ्रकसत्त्वको भली भांति ग्रसै और दोनों सत्त्व न मिलें तो नहीं ग्रसे याते अभ्रकसत्त्वकी बराबर सोनामाखीका सत्त्व मिलावे पीछे जारणकरे। जब इसप्रकार स्वेदन करचुके तब उस गोलाको निकाल लेवे फिर इस गोलाको कांजीके पानीसे धोकर इससे पारा निकाल लेवे और कपडेमें डालकर खूब मले परन्तु ऐसे मले कि पारा घटने न पावे। जब मलते मलते निर्मलहोजाय तब चार लड कपडेमें डालकर निचोड लेवे पीछे पारेको तौले जो जाने कि केवल पारा रहगया है अभ्रसत्त्व बाकी नहीं रहा तो जानना कि पारा अभ्रकसत्त्वको खागया और पारा तोलमें अधिक होवे तो जाने कि पारेमें अभ्रक जीर्ण नहीं हुआ। जब अभ्रकसत्त्व पारेमें जीर्ण होजाय तब पारा दंडधारी (अथवा जीवधारी) होवे और यदि जीर्ण न हो तो दंडधारी न होवे तब उस पारेको भोजपत्रमें बांधकर दोलायंत्रकी भांति लटकाय कांजीका पानी भरे और पावभर सैंधानमक डाले तीन दिन स्वेदनकरे तब पारेका अजीर्ण दूर हो। (रसराजसुन्दर पू. भा. प्र. खं.)

अभ्रसत्त्वजारणक्रिया आद्योपान्तदोला (कच्छपयंत्रसे)

अथ जारणकं कर्म कथयामि सुविस्तरात्। अभ्रकं तत्सत्त्वं च समं कृत्वा तु संधमेत् ॥ २ ॥ अभ्रकशेषं भवेद्यच्च तत्सत्त्वं जारयेद्रसे। एवं वै नागवंगाभ्यां घनसत्त्वं हि साधयेत् ॥ ३ ॥ धातुवादविधानेन लोहकृद्देहकृन्न हि। नागं वंगं महाघोरौ न सेव्यौ हि निरंतरम् ॥ ४ ॥ साधितं घनसत्त्वं तदिति रंजनसंनिभम्। बुभुक्षितरसस्यास्ये निक्षिप्तं वल्लमात्रकम् ॥ ५ ॥ रसगद्याणकं तुर्यभागैश्चैव प्रकाशितम्। ताम्रपात्रस्थमम्लं वै सैंधवेन समन्वितम् ॥ ६ ॥ क्षारेण सहितं वापि मर्दितं त्रिदिनावधि। जातं तुत्थसमं नीलं कल्कं तत्प्रोच्यते खलु ॥७॥ कल्केनानेन सहितं सूतकं च विमर्दयेत्। दिनत्रयं तप्तखल्वे धौतो यस्माच्च कांजिकैः ॥ ८ ॥ स्थापितं काचपात्रे तु तदूर्ध्वाधो बिडं न्यसेत्। रसस्याष्टमभागेन संपुटं कारयेद् बुधः ॥९ ॥ भूर्जपत्रैर्मुखं रुंध्यात्सूत्रेणैव तु वेष्टयेत्। संपुटं वाससा वेष्ट्य दोलायां स्वेदयेत्ततः ॥ १० ॥ गोमूत्रेणाम्लवर्गेण कांजिकेन दिनं दिनम्। अस्य पात्रेऽस्य लोहस्य पात्रे काचमयेऽथ वा॥११॥ उष्णकांजिकतोयेन क्षालयित्वा रसं ततः। दृढे चतुर्गुणे वस्त्रे क्षिप्त्वा निष्पीडयेद्रसम्१२ निपतेदथ मृत्पात्रे सर्वोऽपि यदि पारदः। तदाभ्रं जरितं सम्यक् पुनरेवं तु कारयेत् ॥ ॥ १३ ॥ ग्रासमानं पुनर्देयमभ्रबीजमनुत्तमम्। दद्यादेवं चतुर्ग्रासं विना कच्छपयंत्रतः ॥ १४ ॥ अष्टग्रासेन संचार्य जारयेद्गुरुमार्गतः।एवं कृते समं चाभ्रं सूतकं जीर्यते ध्रुवम् ॥१५॥ स्वहस्तेन कृतं सम्यग्जारणं न श्रुतं मया ॥ १६ ॥ (ध. सं.)

अर्थ-अब जारण कर्मका विस्तार पूर्वक कहते हैं कि सुवर्ण माक्षिक सत्त्व और अभ्रकको समभाग लेकर कोयलोंकी अग्निमें धोंके और धोंकते धोंकते जब सुवर्ण माक्षिक सत्त्व जलकर अभ्रक मात्रही शेष रहजाय तब उसको पारेमें जारण करे इसी प्रकार नाग तथा वंगसे अभ्रक सत्त्वको सिद्ध करे और धातुवादकी विधिसे सिद्ध किया हुआ सत्त्व धातुके बनाने वाला होता है और शरीरको

उत्तम बनानेवाला नहीं है । नाग और वंग ये दोनों धातु भयंकर हैं इस लिये निरंतर सेवन योग्य नहीं हैं और उनसे सिद्ध किया हुआ अभ्रक सत्त्व रंजन योग्य होता है । यह अभ्रक सत्त्व दो प्रकारका होता है । पहिला नाग संस्कृताभ्रक और दूसरा वंगसंस्कृताभ्रक । अब अभ्रक संस्कारके उपयोगी नाग और वंगके बनानेकी प्रक्रियाको बताते हैं प्रथम नाग (सीसे) को अग्निमें गलावे फिर नागके समान भाग लिये हुए मैनसिलको थोडा २ डालकर धोंकता जावे तो नागका भस्म होता है और इसी प्रकार वंगको भी अग्निमें गलाकर वंगतुल्य हरितालका थोडा २ बुरका देकर आंचमें धोंके तौ वंगभस्म होताहै अब हमको नागसंस्कृताभ्रक बनाना हो तो अभ्रक (या सत्त्व) नागभस्मके तुल्य लेकर अग्निमें रखकर धोंके और जब अभ्रकमात्र शेष रहजाय तब निकाल लेवे तो यह नागसंस्कृताभ्रक बीज सिद्ध होगया और जो वंगसंस्कृताभ्रक बनाना है तो नागसंस्कृताभ्रक बीजकी रीतिसे बनालेवे पूर्वोक्तरीतिसे सिद्ध किये हुये तीन रत्ती अभ्रक सत्त्वको एक तोले पारेमें जीर्ण करे तो रंजन होताहै अथवा चतुर्थांश अभ्रक सत्त्व जीर्ण होनेपर पारदका रंजन होताहै तांबेके पात्रमें अम्लवर्गमेंसे किसीएक खट्टे पदार्थका रस डालकर उसमें कुछ सैंधानोंन तथा जवाखार मिलादेवे फिर उनको तीन दिवस तक तांबेके मूसलासे घोटे तो यह एक प्रकारका कल्क बनजायगा फिर इस कल्कके बराबर पारा लेवे और पारेसे चौसठवां हिस्सा अभ्रक लेवे फिर इन तीनोंको अम्लरससे तीनदिन तप्तखल्वमें मर्दन कर गरम कांजीसे धो लेवे तदनंतर उस धोये हुये पारेको काचकी शीशीमें रख उसके ऊपर नीचे अष्टमांश बिडको रखकर भोजपत्रसे बंदकर सूत लपेट देवे फिर उसके ऊपर कपडा लपेट दोलायंत्रद्वारा एकदिन गोमूत्रसे एकदिन अम्लवर्गसे और एकदिवस कांजीसे स्वेदन करे। इसके पश्चात् लोहेके या काचके पात्रमें गरम कांजीसे धोकर चौलर कपडेमें छान लेवे यह छना हुआ पारा पहले डाले हुये पारेके वजनके समान हो तो ऐसा समझना चाहिये कि अभ्रक जीर्ण होगया फिर इसी प्रकारसेही अभ्रक जीर्ण करे अभ्रकके प्रथम ग्रासमें चौसठवां हिस्सा, दूसरे ग्रासमें बत्तीसवां हिस्सा, तीसरे ग्रासमें सोलहवां हिस्सा और चौथे ग्रासमें आठवां हिस्सा दोलायंत्रद्वारा जारण करे । पंचमादि ग्रासोंका दोलायंत्रद्वारा जारण नहीं होता इसलिये शेष चार ग्रासोंको कच्छपयंत्रद्वारा आगे कहीहुई रीतिसे जारण करे। प्रथम ग्रासमें पारा और पारेके तुल्य कल्क तथा पारदसे अष्टमांश अभ्रकबीज, दूसरे ग्रासमें पारा पारदके तुल्य कल्क और पारदसे चौथाई अभ्रकबीज, तीसरे ग्रासमें पारा पारेके तुल्य कल्क और पारदसे आधा अभ्रबीज और चौथे ग्रासमें पारा पारेके तुल्य कल्क और पारदके समान अभ्रकबीज लेवे इनको तप्तखल्वमें नींबू या जंभीरी आदिके रससे घोटकर गोलाबनावे और पारेसे अष्टमांश बिडको लेकर उसगोलेके चारों तरफ लगा कर कच्छपयंत्रद्वारा जारण करे इसप्रकार दूना, तिगुना और चौगुना अभ्रक बीज जारण करे यहक्रिया हमारे हाथसे कीहुई है केवल सुनीहुई नहीं है यह बात धरणीधरसंहिता के बनानेवालेने अपने ग्रंथमें स्वयं लिखा है ॥ २—१६ ॥

गगनभक्षणकी सुगम क्रिया (मूषाद्वारा).

अथाभ्रकसत्त्वजारणे प्रकारान्तरं सुगमं बहुवैद्यैरनुभूतं लिख्यते-

शुद्धस्थाने लिप्तभूमावेकान्ते जनवर्जिते । स्थाप्यार्द्रगोमयं तत्र पक्वां मूषां च मृन्मयीम् ॥ १७ ॥ षडंगुलायगंभीरां लोहजां वापि विन्यसेत् । मूषायां पूर्ववद्गोलं कृत्वा धृत्वा बिडं क्षिपेत् ॥ १८ ॥ गोलस्याधस्तथोर्ध्वं च सूतादष्टमभागतः । ततो निंबादिनीरेण मूषार्धे परिपूरयेत् ॥ १९ ॥ तस्योपर्यंगारदीप्तं पात्रं लोहं च मृन्मयम् । यावत्सत्त्वं द्रवीभूयात्तावत्पात्रस्य धारणम् ॥ २० ॥ ततश्च पारदं नीत्वा तुलया तोलनं चरेत् । नाधिके पूर्वमाने तु कुर्यादेवं पुनः पुनः ॥ २१ ॥ एकद्वित्रिचतुष्पंचषड्गुणं सत्त्वजारणम् । सूते सत्त्वं षोडशांशमत्र देयं न चान्यथा ॥ २२ ॥ अतिगुप्तप्रकारोयं सुलभो वैद्यसम्मतः । क्रियाकौशल्ययुक्तेन भिषजायं विधीयते ॥ २३ ॥ (ध. सं.)

अर्थ—अब हम जिसको अनेक वैद्योंने अनुभव किया है ऐसे अभ्रक सत्वजारणके सुगम उपायको लिखतेहैं एकान्त शुद्धस्थानमें लिपी हुई पृथ्वीपर गीले गोबरको रख फिर उसमें छः अंगुल लंबी लोहेकी या मिट्टीकी घरिया रखदेवे और उस घरियामें पूर्वोक्त रीतिसे गोला बनाकर भरदेवे और उसके ऊपर नीचे पारदसे अष्टमांश बिड देकर उस घरियाका आधा हिस्सा नींबू तथा जंभीरीके रससे भरदेवे फिर घरियाके ऊपर अंगारोंसे भराहुआ मिट्टी तथा लोहेका पात्र रख देवे कि जिससे अभ्रक सत्व द्रव होजावे और सत्त्वके द्रव होनेपर उस अग्नि पात्रको उतार लेवे फिर उस पारदको गरम कांजीसे धोकर तराजूमें तोल लेवे पारदका भार औषधि रहित केवल पारदके तुल्यहो तो सत्व जीर्ण होगया समझना चाहिये यदि अधिक हो तो फिरभी यही क्रिया करे इस रीतिसे पारदमें षोडशांश सत्त्वका ग्रास देकर समभाग, दूना, तिगुना, चौगुना, पचगुना, तथा छगुना सत्वजारण करे[1] वैद्योंके मानने योग्य और सुलभ यह गुप्त अभ्रक सत्व जारणप्रकार पारद क्रिया कुशलवैद्यराजने अपने अनुभवसे लिखीहै ॥ १७–२३ ॥

औरभी ।

पृथ्वीमें गोबर रखकर उसमें ६ अंगुल गहरी पक्की घरिया रख उसमें गोलेको रक्खे उसके ऊपर नीचे बिड धरके जंभीरीके रससे आधी घरियाको भरदे और

---

१ [1]/[16] सत्वका देना इस सुगम क्रियाके संबंधसे ठीकहै किन्तु कच्छपादिमें इससे अधिक ग्रास दिये जातेहैं ।

मुख बंद कर ऊपर अंगारोंका भरा खिपरा रक्खे जबतक सत्त्व न पिघले पश्चात् पारेको निकाल तोले जो पारा वजनमें बराबर हो तो फिर इसीप्रकार सत्त्वको डालकर अग्नि दे । जब पारेका दूना सत्व जल जाय तब साक्षात अग्निसंयोगसे त्रिगुण, चतुर्गुण, पंचगुण, षड्गुण, सत्त्वादिक जारण करे । (हरबार पारेका षोडशांश सत्त्वादिक डाले और जलावे) तिसके उपरान्त बाह्यद्रुतिके योगसे अभ्रकसत्त्वको पारेमें जलावे । (रसराजसुन्दर प्र० खं० पूर्वभाग)

धान्याभ्रकचारण और जारण ।

अथ रसरत्नाकरे घनपत्रचूर्णचारणोच्यते-
अथातः समुखे सूते पूर्वाभ्रं षोडशांशकम् । दत्त्वा मर्द्यं तप्तखल्वे सिद्धमूलीद्रवैर्दिनम् ॥ ततस्तं चारणायंत्रे जम्बीररससंयुते । घर्मे धार्यं दिनैकन्तु चरत्येव न संशयः॥ २५ ॥

अर्थ-प्रथम बुभुक्षित पारदमें पारदसे षोडशांश चारणयोग्य अभ्रक चूर्णको मिलाकर सिद्धमूलियोंके रसके साथ एक दिवसतक तप्त खल्वमें घोटे, फिर उसको जंभीरीके रसके साथ एक दिवसतक तप्तखल्वमें, फिर उसको जंभीरीके रससे भरेहुए चारणयंत्रमें रखकर एकदिन घाममें रक्खे रहै तो चारण होताहै इसमें संदेह नहीं है॥२४॥२५॥

अथ तत्रैव जारणा-

चारितं बंधयेद्वस्त्रे दोलायंत्रे दिनं पचेत् । सिद्धमूलीद्रवैर्युक्ते कांजिके जीर्यते फलम् ॥ ॥ २६ ॥ अजीर्णं चेत्पचेद्यंत्रे कच्छपाख्ये दिनावधि । अष्टमांशबिडं दत्त्वा जारयेन्नात्र संशयः । अनेन क्रमयोगेन चार्यं जार्यं पुनः पुनः ॥ २७ ॥ (र. रा. प.)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायामभ्रकजारणं नामद्वाविंशतितमोऽध्यायः ॥ २२ ॥

अर्थ-खाये हुए पारेको कपडेमें बांधकर सिद्धमूलियोंके रससे युक्त कांजीमें दोलायंत्रद्वारा एकदिवसतक पचावे तो अभ्रक जीर्ण होगा यदि अभ्रक जीर्ण नहीं हुआहो तो फिर उसको कच्छपयंत्रमें अष्टमांश बिड मिलाकर एकदिन जारण करे इसमें संदेह नहीं है इसी क्रमसे बारबार चारण और जारण करना चाहिये ॥ २६ ॥ २७ ॥

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपंडितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया भाषाटीकायामभ्रकजारणं नामद्वाविंशतितमोध्यायः ॥२२॥

स्वर्णजारणाऽध्याय २३.



स्वर्णजारण कटोरेमें ।

भूखो पारो दस पल लेय । कुंदन तबक तासुमें देय ॥ चीनीको जु सकोरा धरे । तामें निंबुआको रस करे ॥ निंबुआको रस दे पल एक । ढाकि रहै निस यहै विवेक ॥ बहुरचो सरवा लीजे छान । उतनेहि तबक औरहे आनि ॥ नीबूको रस बहुरचो देय । आठ पहर ज्यों धरो रहेय॥ ऐसो कुंदन तोलों देय । जोलों पारो समसरिलेय ॥ के कहुं होय अजीरन ताहि । तो दिन देय मंदोवो वाहि ॥ जब जाने सु बराबर चरे । बोझ न होय जोखके धरे ॥ (रससागर.)

बुभुक्षित करके स्वर्ण खिलानेकी द्वितीय क्रिया धूपमें तप्त खल्वमें मर्दन फिर दोलामें जारण ।

एतदेव रसं यत्नाज्जम्बीरद्रवसंयुतम् । दिनैकं धारयेद्धम मृत्पात्रे वा भृतो भवेत् ॥१॥ ग्रासं तत्रैव दातव्यं स्वर्णं शुद्धं शनैः शनैः। चतुष्षष्ट्यादितुल्यांशं देयं जीर्णे च चालयेत ॥ २ ॥ चतुष्षष्ट्यंशकं चादौ द्वात्रिंशतदनंतरम् ॥ पुनर्विंशतमं ग्राह्यं द्विरष्टं द्वादशं क्रमात् ॥ ३ ॥ अष्टमांशं चतुर्थं वाप्यर्द्धं चैव समांशकम् ॥ प्रतिग्रासे तप्तखल्वे दिनमम्लेन मर्दयेत् ॥ ४ ॥ तं क्षिपेच्चारणायंत्रे जंबीरनीरसंयुतम् ॥ तद्यंत्रं धारयेद्धर्मे दिनं स्याज्जारितो रसः ॥ ५ ॥ तं छागक्षीरगोमूत्रस्तुह्यर्कक्षीराम्ललेपिते ॥ दृढवस्त्रे बहिर्बद्धा मृद्धटे स्वेदयेद्बुधः ॥६॥ कांजिकाक्षारमूत्रैर्वा दोलायंत्रे त्वहर्निशम्॥ तमुद्धृतं रसं देवि खल्वे संशोधयेत्क्षणात् ॥ ७ ॥ संमर्द्य पूर्ववत्खल्वे यंत्रे लिप्तपुटे पुनः ॥ क्रमेणानेन देवेशि त्रिभिर्ग्रासैः प्रजीर्यते ॥८॥ यावत्तेन यदा तस्मात्तावत्तेन विमर्दयेत॥प्रतिग्रासं तप्तखल्वे यथा शक्त्या च चारयेत ॥ तं जीर्णं मारयेत्सूतं मारणं कथ्यते द्रवैः ॥ ९ ॥ (कामरत्न.)

अर्थ-मिट्टीके पात्रमें जंभीरीके रसके साथ इस बुभुक्षित पारदको एकदिन घाममें रक्खे और उसीमें शुद्धस्वर्णका धीरे धीरे ग्रास देवे और ग्रास जीर्ण होनेपर फिर सुवर्णका ग्रास देवे प्रथम चौसठवां भाग, फिर बत्तीसवां भाग, तदनंतर बीसवां भाग, फिर सोलहवां भाग, तदनंतर बारहवां भाग, आठवां भाग, चतुर्थांश, अर्द्धभाग और फिर तुल्यभाग सुवर्णका लेकर ग्रास देवे प्रत्येक ग्रास देनेके समय जंभीरी आदि खट्टे पदार्थके रसमें एक दिवसतक तप्त खल्वद्वारा मर्दन करे फिर उसको जंभीरीके रसमें सुवर्णसहित एक दिनतक घाममें रक्खे तो पारदग्रासको खाजाताहै और बकरीका दूध गोमूत्र थूहरका दूध आकका दूध और अम्लपदार्थोंसे लेप कियेहुए दृढ कपडेमें उस पारदको बांधकर कांजी, क्षार और गोमूत्रोंसे मिट्टीके दोलायंत्रद्वारा तीनदिवसतक स्वेदन करे। हे पार्वती उस रसको निकालकर सुखालेवे फिर खरलमें डालकर पहलेकी तरह तप्तखल्वमें मर्दन कर बकरीके दूध वगैरेसे लेप कियेहुए कपडेमें बांधकर दोलायंत्रमें स्वेदन करे तो तीन ग्रासोंसे पारद उत्तम होताहै। प्रत्येक ग्रासमें तप्तखल्वद्वारा जहां जितना जिससे मर्दन लिखाहै उतना उससे मर्दन करे तो यथावत् ग्रास जीर्ण होजायंगे इसमें संदेह नहींहै ॥ २-९ ॥

स्वर्णादि चारण और जारण क्रिया दोलायंत्रसे।

चतुःषष्टयंशकं हेमपत्रं मायूरमायुना। विलिप्तं तप्तखल्वस्थे रसे दत्त्वा विमर्दयेत् १०॥ दिनं जंबीरतोयेन ग्रासेग्रासे त्वयं विधिः। शनैः संस्वेदयेद्भूर्जे बद्धा संपुटकाञ्जिके ११ भांडके त्रिदिनं सूतं जीर्णस्वर्णं समुद्धरेत्। अधिके तोलने तत्र पुनः स्वेद्यः समावधि १२ द्वात्रिंशत्षोडशाष्टांशक्रमेण वसु जारयेत्॥ रूप्यादिषु स सत्त्वेषु विधिरेवंविधः स्मृतः॥ ॥ १३ ॥ चुल्लिकालवणं गंधमभावे शिखिपित्ततः ॥ १४ ॥ (नि. र., र. रा. शं., बृ. यो., र. प., र. चिं.)

अर्थ-पारदसे चौसठवें हिस्सेके सुवर्णके पत्र लेकर मोरके पित्तेसे लेप कर फिर उस सुवर्णको तप्त खल्वमें डाल पारदके साथ जंभीरीके रससे एक दिवसतक मर्दन करे यह क्रिया प्रत्येक ग्रासके आरम्भमें करना चाहिये फिर उस ग्रास दिये हुए पारेको भोजपत्रमें बांधकर लवण सहित कांजीसे तीन दिनतक स्वेदन करे फिर निकाल कर तोले यदि तोलमें अधिक हो तो फिर स्वेदन करे इस प्रकार दोलायंत्रमें द्वात्रिंशांश षोडशांश और अष्टमांश तकही जारण करे यही क्रिया अभ्रसत्वादि तथा चांदी आदिके जारणकी है जहां मोरका पित्ता नहीं मिलता है वहांपर चुल्लिका लवण (नौसादर) तथा गंधकके द्वारा ग्रास देना चाहिये १०-१४

सुवर्णजारणके लिये बिड।

नवसादर-सुहागा-सौराष्ट्रीत्रयाणांमूर्द्धपातनं सप्तधा तद्योगेन सुवर्णजारणं (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

अर्थ-नौसादर, सुहागा, सूरतीमिट्टी, इन तीनोंको सात बार उडाकर फिर उससे सुवर्णका जारण करे॥

गंधक जारण वा मुखीकरण।

संस्थाप्य गोमयं भूमौ पक्वमूषां तथोपरि। तन्मध्ये कटुतुम्ब्युत्थं तैलं दत्त्वा रसं क्षिपेत्॥ ॥ १५ ॥ काकमाचीरसं देयं तैलतुल्यं ततः पुनः। गंधकं व्रीहिमात्रं च क्षिप्त्वा तच्च निरोधयेत् ॥ १६ ॥ तत्पृष्ठे पावकं देयं पूर्णं वा वह्निखर्परम्। स्वांगशीतलतां ज्ञात्वा जीर्णे तैले च गंधकम् ॥ १७ ॥ काकमाचीद्रवं चाग्नौ दत्त्वा दत्त्वा च जारयेत्। मूषाधो गोमयं चात्र दत्त्वा चोर्द्धश्च पावकम् ॥ १८ ॥ षड्गुणं गंधकं जार्य्य सूतस्यैवं मुखं भवेत्। तत्सूतं मर्दयेन्नीरैः जम्बीरोत्थैः पुनः पुनः ॥ १९ ॥ षोडशांशं शुद्धहेमपत्रं सूतेषु निःक्षिपेत। शिखिपित्तेन संपिष्टं तैलैश्च सर्षपोद्भवैः ॥ २० ॥ लिप्त्वा हेम क्षिपेत्सूतं यामं जंबीरजैर्द्रवैः ॥ २१ ॥ पूरयेद्रोधयेच्चाग्निं दत्त्वा यंत्रे च जारयेत्। ग्रासे ग्रासे च तन्मर्द्यं जंबीराणां द्रवैर्दृढम्॥ ॥ २२ ॥ मूलिका लवणं गंधमभावे पित्ततैलयोः। पिष्ट्वा जंबीरनीरेण हेमपत्रं प्रलेपयेत् ॥ २३ ॥ (रसरत्नाकर.)

अर्थ-पृथ्वी पर गोबर रखकर ऊपरसे पक्वमूषाको रक्खे फिर उस मूषामें कडवी तूंबीका तैल तथा पारद और तैलकी बराबर काकमाची (मकोय, कवैया) का रस और चावलकी बराबर गंधक डालकर मुख बंद करे ऊपर केवल अग्नि अथवा खिपरेमें रख कर अग्नि लगावे स्वांग शीतल होनेपर फिर गंधककाकमाचीका रस कडवी तूंबी रस डाल डाल कर जारण करे पक्वमूषाके नीचे गोबर अवश्य रखना चाहिये इस प्रकार षड्गुण गंधक जारण करे तो पारदके मुख होता है। उस बुभुक्षित पारदको बार बार जंभीरीके रससे मर्दन करे प्रथम चौसठवां भाग, फिर बत्तीसवां, फिर सोलहवां इस प्रकार सुवर्णका ग्रास देवे जिस सुवर्णके पत्रका ग्रास देना हो उसको मोरका पित्ता तथा सरसोंके तैलसे लीपकर फिर पूर्वके समान जंभीरीके रससे मर्दन कर मूषामें भरदेवे फिर कपरौटीकर बालुका या भूधर यन्त्र द्वारा जारण करे प्रत्येक ग्रासके समय जंभीरीके रससे दृढ मर्दन करना चाहिये जहां मोरका पित्ता तथा तैल नहीं मिले तो चुल्लिका लवण और गन्धकको जंभीरीके रससे घोट कर सुवर्णके पत्रों पर लेप करे॥ १५-२३ ॥

बीजजारण समुदायसे।

तप्तखल्वे रसं दत्त्वा खदिरांगारतापिते। चतुःषष्टयंशकं सूताद्वीजं सूते नियोजयेत ॥ २४ ॥ संधानकाम्लं लवणं चूल्लिका

लवणेन च । दीपनीदीपितं सूतं मर्दयेन्मर्द्केन वै ॥ २५ ॥ ऊर्ध्वाधश्च बिडं दत्त्वा यंत्रे भैरवसंज्ञके । बिडं सूतादष्टमांशमितं पश्चाद्दिनत्रयम्[१] ॥ २६ ॥ प्रक्षिप्य मर्दयेत्सम्यक् संप्रदायपरायणः । चतुर्थेऽह्नि रसं प्रोक्ष्य कांजिके क्षालयेत्पुनः ॥ २७ ॥ पूर्ववदापयेद्बीजमेवं वारचतुष्टयम् । दत्त्वा पलांशं जीर्येत दोलायामथ जारयेत्॥२८॥ अथवा कथ्यते यंत्रं जारयेद्बीजमुत्तमम् । ततः परं गंधकं च जारयेत्तत्तु पूर्वतः ॥२९॥ सबीजं सूतकं कृत्वा जारयेत्षड्गुणं बलिम्। एवं युक्त्या गंधकं च जारयेत्षड्गुणं बुधः ॥ ३० ॥ (टो. नं.)

अर्थ-खैरके कोयलोंसे तपेहुये तप्तखल्वमें पारदको डालकर चौसठवें हिस्सेका बीजडाले फिर कांजी, अम्लवर्ग और चूलिका लवणके साथ घोटेसे घोटे फिर पारेसे आठवां हिस्सा बिड लेकर उस पारदके ऊपर नीचे रखदेवे और उसको भैरव यंत्रमें तीन दिनतक पचावे फिर गुरुपरंपरासे जंभीरीके रससे घोटे तदनंतर चौथेदिन उसको कांजीसे छिडककर धोडाले इसीतरह फिर चारमास देवे षोडशांशतक दोलायंत्रमें बीजका जारणकरे इसके बाद कच्छपयंत्र द्वारा बीजका जारणकरे फिर पूर्वके समान गंधकका जारणकरे पारदमें बीज मिलाकर षड्गुण गंधक जारण करे॥२४-३०॥

अबुभुक्षितपारदमें बिडयोगसे स्वर्ण जारणकी क्रिया ।

अथवा निर्मुखं सूतं बिडयोगेन मारयेत् । अनेन मर्दयेत्सूतं ग्रसते तप्तखल्के ॥ ३१ ॥ स्वर्णाभ्रसर्वलोहानि यथेष्टानि च जारयेत् ॥ ३२ ॥ (र. र.)

अर्थ-अथवा निर्मुखपारदको बिडके योगसे जारण करे, ग्रासदेनेके लिये पारदको बिडके साथ तप्तखल्वमें मर्दन करे जो इच्छापूर्वक समस्त धातुओंको जारण करे ॥३१॥३२॥

स्वर्णजारण बिडयोगसे कच्छपयंत्रद्वारा ।

शश्वद्भृताम्बुपात्रस्थशरावच्छिद्रसंस्थिता। पक्वमूषाजले तस्यां रसोष्टांशबिडान्वितः ॥ ३३ ॥ संरुद्धो लोहया पात्र्या मुद्रितो दृढमुद्रया । वालुकां तदुपर्यष्टांगुलमानां विनिक्षिपेत ॥ ३४ ॥ दृढात्तदुपरि ध्मातो रसस्तद्गर्भसंस्थितः । मायूरमायुना लितं कांचनं ग्रसति क्षणात ॥ ३५ ॥ (बृ. यो., र.रा.शं., र.रा.प., नि.र.)

अर्थ-निरंतर जल भरे हुए पात्रमें स्थित शकोरेमें जल मिलीहुई पक्वमूषाको रक्खे और उसमें अष्टमांश बिडसहित पारदको लोहेकी कटोरीसे दृढ मुद्रा देकर ऊपरसे आठ आठ अंगुल बालूरेत बिछा देवे और उसपर दृढाग्नि देवे तो उसके भीतर रक्खाहुआ पारद मोरके पित्तेसे लिप्त सुवर्णके पत्रोंको खाजाता है इसमें संदेह नहीं है ॥ ३३-३५ ॥

हेमजारणपर्यंतही रसायनप्रयोगमें आवश्यकता है ।

इयत्येवरसायनत्वपर्यवसितिः किन्तु वादस्य प्राधान्यम् ॥ (र.चिं., रा.रा.शं.)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां स्वर्णजारणं नाम त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

अर्थ-शरीरोपयोगी रसायनके लिये इतनाही संस्कार यानी स्वर्णजारण पर्य्यंत कर्म करना काफी है और इसमें धातुवादकी प्रधानता नहीं है ।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपंडितमनसुखदासात्मजव्यास-
ज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया भाषाटी-
कायां स्वर्णजारणं नाम त्रयोविंशोऽ-
ध्यायः ॥ २३ ॥

स्वानुभूतस्वर्णजारणाध्यायः२४.

ॐ शिवाय नमः।

स्वर्ण जारणके लिये संधानसाधन चारणाध्यायमें रक्खी र. प. से उद्धृत संधानक्रिया ।

संधानकप्रकारोयमुच्यते जारणे हितः । शिग्रुं च वज्रकंदं च सूरणं मीनचित्रकम् ॥ ॥ ५ ॥

ता० २० मईसन १९०७ को गेहूं २ सेर, जौ २ सेर चावलसाठी १ सेर, चावल पसई १ सेर, चावल लाल १ सेर, चना १ सेर, उर्द १ सेर, मूंग १ सेर, मोंठ १ सेर, मसूड १ सेर, खुरथी १ सेर, अरहर १ सेर, मक्का १ सेर, ज्वार १ सेर, बाजरा १ सेर, चैना १ सेर, कंगनी १ सेर, ससा १ सेर, राई १ सेर सब २१ सेर, नाजको छान, फटक, दल उसमेंसे दो मटकोंमें सवा पांच पांच सेर भर और एक एक मन पानी भर पांच पांच सेरके अंदाज खाली छोड सैनकोंसे मुख बंद कर कपरौटी कर मटकोंको मटकोंसे सवाये गहरे गडहोंमें गाडदिया, चमेलीके तल्लेमें ।

---

१ यहां एक लाइन रहगई है, जिसका आशय यह होना चाहिये फिर अम्लयुक्त खल्वमें जारण करे ।

२ इसका आशय ऐसा जान पडता है कि $\frac{१}{१६}$ वां अंश तक दोला यंत्रमें जारण करे तदनंतर कच्छपमें ।

ता० २२ को इसी तरह और दो मटके उपरोक्त विधिसे भर उसीतरह गडहोंमें गाडदिये गये।

दूसरा भाग।

आज ता० ५ जूनको १५ दिन बीत जानेपर मटके निकाल लिये और कोठेमें रखदिये और कैनोंके इंतजामकी वजहसे और काम न चला।

ता ६ जूनको चारों मटकोंका जल टुकरीकी सार्फासे लोहेके कढाउमें छाना गया किसी किसी मटकेमें कुछ फुई के झाग थे वह उतार कर फेंकदिये गये पानी सफेद बेसनी रंगका निकला। ऊपर पतला नीचे कुछ गाढा। अन्न फूलाहुआ स्वच्छ बेसनीरंगका निकला गलासडा न था और जो मोटा अन्न था वह भली भांति हलभी नहीं हुआथा मटके ५ सेरके करीब पानीके पहलेभी खाली रक्खे गयेथे चार पांच सेरके करीब और सूखा गया इसलिये तिहाइके करीब खाली मिले दो मटकोंमेंसे जो जल निकला वह पांच कैनोंमें आया बाकी दो मटकोंका जल तीन कैन और एक मटकेमें भर लियागया सबजल २॥ मन होगा पृथ्वीसे मटके निकालनेपर बडी दुर्गंध आतीथी और जिस मकानमें रक्खे गयेथे उसके चारों तरफ दुर्गंध फैलीरही छानतेसमय कुछ विशेष दुर्गंध न जान पडी चखनेपर स्वादु खट्टा न था इसलिये इसको तुषाम्बु कहनाही ठीक है कांजी नहीं ३ सेर दले हुये चावल और १ सेर उर्दकी दाल लोहेकी कढाईमें ३२ सेर पानी डाल खौल जानेपर उनको डालदिया डेढ घंटेके करीब औटाया बादको ११ बजे गाढा होता जान आंच निकाल चूल्हेपर रक्खा छोडदिया तीन बजे देखा तो गाढा अधिक था और अन्न अच्छी तरह हल नहीं हुआ था इसलिये २४ सेर पानी और डाल एक घंटे भरके करीब औटा उतार लिया। ठंढाकर मलकर छाना तो २६ सेर मांड निकला।

ता० ७ को २६ सेर मांडको सब तुषाम्बुमें मिला छान फिर आठो कैनोंमें भर प्रत्येक कैनमें एक एक छटांक चावल डाल कैनोंके ढकने लगा कपरौटीकर धूपमें रखदिया। प्रत्येक कैनमें ११ सेरके अंदाज जल आता है लिहाजा दो दो अंगुल खाली रखकर आध २ सेर पानी आनेकी गुंजाइश और रक्खी गई थी। इन कैनोंसे बचा तुषाम्बु एक मटकेमें भर उसमें भी आधपाव चावल डाल मुंह ढक कपरौटी कर कोठेमें रखदिया।

तीसरा भाग।

ता० १४ जूनको ७ दिन बाद उक्त आठों कैनोंको खोलागया तो किसी कैनमें फुई वगैरः नहीं निकली नीचे चांवल गलेहुये निकले। चखनेसे कांजी खट्टी मालूम हुई अत एव आठो कैनोंका और मटकेका जल पृथक् २ छान ज्योंका त्यों जिसका तिसमें भर प्रत्येक कैनमें सींगिया १॥ तोले, सैंजनेकी जड २ तोले, चीता २ तोले, विषखपरा २ तोले, चौलाई २ तोले, मछैछी २ तोले, मूसली सफेद २ तोले, इमली १॥ तोले, जमींकंद ३ तोले, इनमेंसे इमलीका पन्ना बना डालागया और जमींकंद हरा पीसकर डाला बाकी सब औषधियां सुखा चूर्णकर डालीगई,इसतरह प्रत्येक कैन में १७॥ तोले वजन और मटकेमें द्विगुण प्रमाणसे कुछ अधिक यानी ४० तोलेके करीब वजन डाल ढकनोंसे सबके मुंह ढक कपरौटी कर धूपमें रखदीगई ये कैनें दो दो अंगुलके अंदाज खाली भरीगई थीं और मटका आधा भरा था।

ता० २४ को १० दिन बाद आठों कैनों और मटकेको खोल छान डाला तो मसाला गलगयाथा जायका खूब खट्टा होगया था जिसका तिसमें भरदियागया नितारनेकी गरजसे फिर मुंह बंदकर कपरौटीकर धूपमें ही रक्खा रहने दिया कैनें सब भरी हुई और मटका आधा है।

चौथा भाग।

ता० ४ जूलाईको आठों कैनोंमेंसे ६ कैन नितार २ कर छान ५ कैन भरलीं मटकेको नितार छान एक कैनमें अलग भर लिया और मटके और ६ कैनोंकी गादको एक कैनमें भरदिया २ कैन हिलजानेसे नितर न सका वह अभी वैसे ही रख दीं।

ता० ८ को २ कैन बेछनी और एक कैन गादकीको नितार कर छान १॥ कैन भरली और इन तीनोंकी गादको १ कैनमें भरलिया। इस प्रकार ८ कैन और १ मटकेसे संधान की ७॥ कैन तय्यार हुई जो मुँह बंदकर कपरौटी कर रखदी, पीछे आधी कैन ४ बोतलोंमें भर दीं।

संधान जो फोकसे तय्यार हुआ।

(नं० १)आज ता० ६ को पहले चारों मटकोंसे निकले अन्नको आधा आधा दो मटकोंमें भर पानी डाल दिया और ७ जूनको मांडके छाननेसे निकले अंदाजमें ६ सेरके करीब चावलोंको आधा आधा दोनों मटकों में डाल मुँह ढक कपरौटी कर पहले मटकोंकी जगह फिर गाड दियेगये।

ता० १६ जूनको १० दिन बाद दोनों मटके निकाल खोले गये—इनमें फुई वगैरः कुछ नहीं निकली नीचे गला अन्न निकला बादको दोनों मटकोंका जल छान एक मटकेमें भरदिया।

(नं० २) ता० १७ को उक्त मटकेमें १ सेर चावल और ऽ। पावभर राई डाल मुँह ढक कपरौटी कर धूपमें रख दिया।

(नं० ३) ता० २४ को ७ दिन बाद ८ कैन और एक मटकेके छाननेमें जो ऽ४। सेर मसाला निकला वह इस मटकेमें डाल ज्योंका त्यों मुख बंद धूपमें रक्खा रहने दिया।

ता० १० जुलाईको उक्त मटकेको खोलागया यह मटका सूख कर एक बालिश्त कम होगया था और इसमें मसाला गलगया था इसको छान खूंदा फेंक दिया।

(नं० ४) ता० १० जुलाईको इस मटकेके जलको उसीमें भर दिया और असली मटके और आठोंकैनोंकी बची गादसे भरी १ कैनको इसी मटकेमें डाल दिया और मुँह ढक कपरौटी कर धूपमें रक्खा रहने दिया यह मटका इस समय करीब एक बालिश्तके खाली रहा।

(नं० ५) ता० १७ को खोल नितार छान १॥ कैन भर ली मटकेमें जो गाद बची उसको नितारनेके वास्ते कोठेमें रख दिया।

धान्याम्ल।

३१।१२।०३ गेहूं, जौ, चना, मक्का, ज्वार, बाजरा, समा, कँगनी, चैना, साठी, पसई, बासपती, अरहर, उर्द,

मूंग, मोंठ, मसूर, मटर, खुर्ती (कुलथी) रमास, तिल, अलसी, कर्र, सब पाव पाव भर सरसों, राई, आध आध, सेर सब ७ सेर हुई फटक और दलकर एक मटकेमें पौन मटके पानीमें भिगोदीगई ।

२ । १ को इस कांजीमें ऽ=आध पाव मुंडी सूखीऽ=आध पाव भांगरा सूखा पाव पाव भर त्रिफला, चीता, सितावर कूटकर और डाली गई ।

५ । १ को इसमें लाल सांठ, मछैछी, कोयल (जोहरी मँगवाई गई थी और वैद्यराजने कहा कि यदि ऐसी ही कांजीमें डाल दोगे तो कांजी सडजायगी) सूखी हुई और डालीगई ।

१० । १ को देखागया तो कांजी थोडी खट्टी होगई थी ।

२० । १ के करीब देखा तो पानी मटकेमें घटगया था और पानी डाला गया ।

४ । २ को जब कांजीका पानी स्वेदनके लिये लिया गया तो मालूम हुआ कि पानी थोडा रहा और आधा मटका फूली हुई दवाई और नाजसे भर गया था । जितना सामान इस एक मटकेमें डालागया था वह दो मटकोंको काफी होता ।

2nd Part

३ । २ को और कांजी दूसरे मटकेमें डाली गई जिसमें गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, मक्का, कंगनी, चैना, साठी, पसाई, उर्द, मूंग, मोंठ, मसूर, मटर, खुर्ती, रमास, तिल, अलसी, पाव पाव भर सरसों राई आध आध सेर सब ५॥। सेर और त्रिफला चीता पाव पाव सितावर आध पाव डाली गई ।

४ । २ को पहली कांजी कम पडनेसे पहले मटकेके छूंछ नाजको इस मटकेमें मिलाकर आधा नाज और $\frac{3}{4}$ हिस्से पानी पुराने मटकेमें करदियागया इस लिये कि जल्दी खट्टा होजावे और आधे नाजको $\frac{1}{4}$ पानीको नये मटकेमें रहने दिया और ताजे पानीसे ऊपरतक मटका भर दिया ।

3rd Part.

२० । ३ के करीब फिर और नई कांजी डाली गई ।

4th Part.

६ । ८ । ०५ आज निम्न लिखित ४॥ सेर नाजको एक मटकेमें भर मटकेके मुँहतक १ मन ८ सेर पानी भर दिया । १ लाल चावल, २ पसईके चावल, ३ साठीके चावल, ४ बासमती, ५ गेहूं, ६ जौ, ७ अरहर ८ चना, ९ उर्द, १० मूंग, ११ मसूड, १२ मोंठ, १३ खुरती, १४ ज्वार, १५ बाजरा, १६ चैना, १७ कँगनी, १८ समा, १९ सरसों, २० राई सब आध आध सेर जिसका १० सेर होता किन्तु छान फटक कर ९ सेर बैठा । इसमेंसे आधा डालागया ।

७ । ८ आज मटकेको बहुत भरा देख उसमेंसे ८ सेर पानी दूसरे मटकेमें भर १ सेर कांजीका सामान उसमें मिला दिया गया ।

९ । ८ मटकेमें फिर भी पानी ज्यादा देख मटकीकी धान्य मटकेमें और डाल दीगई ।

१० । ८ आज मटकेका मुँह कपड मिट्टीसे बंद कर दियागया ।

२० । ८ आज १५ दिन होगये मटकेको खोल सब कांजी मटके और मटकीकी छान मटकेमें भर दीगई और त्रिफला, चीता, मुंडी, सितावर, एक एक छ० कूट कर डाल दीगई मछैछी, छुईमुई, सौंठ, सहदेई, हरी पीस कर एक एक छटाँक डाल दीगई ।

२१ । ८ आज उसमें भांगरा, कोयल काली, नागफनी हरी एक एक छटांक पीसकर डाल दीगई और मुँह बंद कर दियागया ।

२४ । ८ आज ३॥ सेर नाज कांजीसे बचेहुये को २१ सेर पानीमें भिगो दियागया एक मटकीमें ।

३१ । ८ यह खट्टा होगया था लिहाजा छान कर बडे मटकेमें ही शामिल कर दियागया ।

5th Part.

५ । ९ चावल साठी, पसई, लाल चावल, गेहूं, जौ, चना, अरहर, उर्द, मूंग, मोठ, मसूर, खुर्ती, ज्वार, बाजरा, चैना, कँगनी, समा, सरसों, राई, ये १९ नाज आध आध सेर लीगई सब $\frac{19}{2}$=९॥ सेर होते दल फटक कर ९ सेर बैठे इसमेंसे ६ सेर एक नये मटकेमें भर ३८ सेर पानी डाल मटकेका मुँह बंद कर जमीनमें गाड दियागया बाकी ३ सेर एक मटकामें भर १९ सेर पानी डाल मुँह बंद कर रख दियागया ।

२० । ९ आज मटकेको जमीनसे निकालागया तो कांजी मामूली खट्टी निकली फुई न थी और कांजी साफ थी रंग उजला था छान कर फिर मटकेमें भर दी गई । दूसरी मटकी जो बाहर ही रक्खी रही थी उसमें फुई आगई थी और बू भी ज्यादः थी उसको भी छानकर पुरानी कांजीमें शामिल कर दियागया ।

अनुभव ।

जमीनमें गाढना ठीक है आगेसे ऐसा ही कियाजावे ।

२९ । ९ आज कांजीके मटकेमें त्रिफला १० तो०, चीता ६ तो०, सितावर ९ तो०, मुंडी १० तो०, सहदेई २ तो०, मछैछी ४ तो०, सांठ ४ तो०, कोयल ४ तो०, भांगरा २ तो०, सब १० छटांक १ तो० वजन डाल जमीनमें गाडदियागया ।

१७ । १० आज मटकेको जमीनसे निकाल छान कर फिर भर रख दियागया ।

३० । ९ आज ८ सेर चावल तीन चार तरहके और आध सेर राई और ३६ सेर पानी एक मटकेमें भर जमीनमें गाडदियागया ।

१७ । १० आज मटका खोल छान त्रिफला ५ छ०, चीता ३ छ०, सितावर ३ छटांक, मुंडी ३ छटाँक डालकर जमीन हीमें रख दिया ।

१९ । १० आज सहदेई १॥ छ०, भांगरा १॥ छटाँक, मछैछी १॥ छटाँक, सांठ १ छटाँक, कोयल १ छ०, मुंडी १॥ छटाक, चीता १। छ०, ये दवा सूखी कुटी डाली गई ।

२० । १० आज मटका जमीनमें गाडदियागया ।

१ । ११ आज मटका जमीनमें निकाल छान लियागया कांजी १८ सेरके करीब रहगई ।

ॐ शिवाय नमः।

स्वर्णचारण और जारण।

(रसेन्द्रचिंतामणिकी दोलाकी क्रियासे)

चतुःषष्ट्यंशकं हेमपत्रं मायूरमायुना।

तारीख २।३।९।०७ को ५ तोले षड्गुण बलिजारित संस्कृत पारदको तप्त खल्वमें जंभीरीके रसमें ५ प्रहर मर्दन कियागया। पौन बोतल रस खर्च हुआ सायंकालको पृथक् कर लिया और प्रातःकालको तोला तो १ रत्ती कम ५ तोले हुआ।

ता० ४। ९ उपरोक्त १ रत्ती कम ५ तोले पारदको तप्तखल्वमें डाल थोडा २ जंभीरीरससे १ माशे सोनेके कुन्दनके दो दो अंगुलके टुकडे कर उन टुकडोंको जंभीरीरससे आर्द्र ३ माशे नौसादर सत्त्वमें लपेट थोडे थोडे डाल ग्रास दियेगये और सायंकालतक जंभीरीरस डाल २ घोटा गया। तदनंतर खरलसे पृथक् कर रसयुक्त रख दियागया। प्रातःकाल रससे पृथक् कर तोला तो ५ तोले ७ रत्ती हुआ। पारदके नीचेके अंशमें स्वर्णकी गाढी पिष्टीसी दीखपडती थी।

ता० ५।९।५ तोले ७ रत्ती सुवर्णयुक्त पारदको भोजपत्रमें बांध जारणके लिये तय्यार कियेहुए संधानमें दोला यंत्रकी विधिसे ९ बजे दिनसे स्वेदन आरम्भ किया रातदिन स्वेदन चला ४॥ सेर संधान आदिमें दोलामें भरा गया और उसमें १ छटांक सैंधव लवण डालागया। सायंकालतक ३ बोतल संधान और १ छटांक नोन और डालागया। ४ बोतल संधान रातको और पडा।

ता० ६।९ आज सबेरे ८ बजे मालूम हुआ कि पारद भोजपत्र फटजानेसे निकलगया। दोलायंत्रको उतार पारदको पृथक् किया तो ५ तोले ७ रत्ती पूरा पारद निकल आया और दोलाकी हांडीके अंदरका पेंदा बिलकुल साफ मिला कांजीकी कोई गाद नहीं बैठी थी। कैंचीकी मारकीन पर थूहरका दूध जिसमें गोमूत्र और थोडा बिजौरेका रस मिलालिया था, लेपकर उसमें पारदको बांध पुनः उसी कांजीमें दोलायंत्र कर दियागया। दूसरे दिन ८ बजेतक स्वेदन होता रहा। ऽ=आध पाव नोन और ८ बोतल संधान और डालागया। ये क्रिया दो रातदिन अर्थात् १६ प्रहर चली और ऽ। पाव भर नोन और ४॥ सेर+१५ बोतल अर्थात् १६ सेर कांजी खर्च हुई जिसमें कुछ कम ४ सेर कांजी बच भी रही।

ता० ७।९ को ८ बजे सबेरे पारदको निकाल तोला तो ५ तोले ७ रत्ती मौजूद था शीशीमें बंद कर रख दियागया।

ता० ११।९ उपरोक्त पारदको शीशीमेंसे नितार कर तोला तो ४। तोले पारा नितर आया उसको कैंचीकी मारकीनमें छाना तो केवल ४ रत्ती पिष्टी रहगई, शेष ४ रत्ती कम ४। तोले पारा छन कर तरल रूप रहगया। नितारनेसे बचे बाकी ९ माशे ७ रत्तीमें जो गाढा था छाननेसे निकली उपरोक्त ४ रत्ती पिष्टी मिला उसी मारकीनमें छाना तो ३ माशेकी गोली बांधन लायक कठिन पिष्टी रहगई जो बिलकुल श्वेत रंगकी और दरदरीसी थी, बाकी ७ माशे ४ रत्ती पारा छनकर तरल रूप होगया अर्थात् ४ तोले १० माशे तरल पारद और ३ माशे स्वर्ण और पारदकी कठिन पिष्टी मिली इससे ज्ञात हुआ कि चारणमें ३ प्रहरके मर्दनसे और दोलामें २ दिनके जारणसे स्वर्ण पारदमें मिलातक नहीं। किन्तु जितने पारदको स्वर्ण पकड सका उतनेको पकडकर नीचे बैठगया। यह भी ज्ञात हुआ कि १ भाग स्वर्ण २ भाग पारदको पकड सकताहै, किन्तु पिष्टी फुस फुसी और दरदरी रहतीहै।

पुनः मर्दन।

ता० १३।९ उक्त ३ माशेकी पिष्टीसे पृथक् हुये ४ तोले १० माशे पारदको ८ बजेसे तप्तखल्वमें जंभीरीका रस डाल डाल मर्दन आरम्भ किया ९ बजेपर २ माशे जवाखार और १२ बजेपर २ माशे सज्जीखार भी डाले। ६ बजे शामतक मर्दन कियागया पौन बोतलके अन्दाज रस खर्च हुआ। बादको रस सहित पारेको खरलसे निकाल तामचीनीके कटोरेमें रख दिया।

पुनः चारण।

ता० १४।९ को सबेरे रससे पारेको पृथक् कर तोला तो १ रत्ती कम ४ तोले १० माशे था ८ बजेसे उक्त पारदको तप्तखल्वमें, रख नींबू जंभीरी, बिजौरेका मिश्रित रस थोडा २ डाल मर्दन करना आरम्भ किया और साथ साथही पूर्वोक्त सुवर्णयुक्त ३ माशेकी पिष्टीको (जिसको जंभीरीके रसमें १ माशे नौसादर और १ माशे गंधकके साथ दूसरे शीतखल्वमें घोटलिया था) दो दो चार चार रत्तीग्रास देना आरम्भ किया। ९ बजेतक सब पिष्टी डाल दी पिष्टीके ग्रास देते समय पिष्टी पारदमें भली भांति प्रवेश न करती थी किन्तु पारदके ऊपर जो जंभीरी आदिका रस था उसपर फैलजाती थी अर्थात् पिष्टीमें जो गंधकका हलका भाग था वह रसके ऊपर तैर जाता था। यदि पिष्टीकी जगह केवल स्वर्णके पत्र होते तो शायद ऐसा न होता, या रस बहुत थोडा होता तो ऐसा न होता। सायंकालके ६ बजेतक यानी १० घंटेतक काम चला। पौन बोतल] यानी ऽ॥ सेरके करीब रस पडे। बादको रससहित पारदको खरलसे निकाल तामचीनीके कटोरेमें ढककर रख दिया।

चारणफल।

ता० १५।९ के सबेरे रससे पारेको पृथक् कर तोला तो ५ तोले ३ रत्ती पारा हुआ ५ रत्ती घटा, जो शायद गंधकमें मिला रहगया हो। ऊपर कहागया है कि पारदको पिष्टीके ग्रास देते समय पिष्टी पारदमें भलीप्रकार प्रवेश न कर रसपर फैल जाती थी। शामतक घोटनेपर भी पिष्टीका कुछ अंश रसोंमें मिला हुआ पाया गया। अनुमान होताहै कि गंधक रसोंकी आर्द्रताके कारण पारदसे पृथक् रहा और संभव है कि पिष्टीके पारदका वह अंश जो गंधकने चर लिया हो, गंधकके साथ रहगया हो, खल्वस्थ पारदमें न मिला हो और उस पिष्टीके पारदके साथ कुछ स्वर्णका अंश भी पृथक् रहजाना संभव है किन्तु स्वर्णका एक अच्छा भाग पारदमें अवश्य मिला क्योंकि ३ माशे पिष्टीमेंसे २ माशे ३ रत्ती पारदमें मिलकर तोल बढ गई।

इसके अलावह पारदके नीचे भागमें स्वर्णसे उत्पन्न हुई घनता जैसी कि पहले चारणमें हुई थी दीखपडी । चारण समाप्त कर पृथक् किये गये जंभीरी आदि रसको तामचीनी के कटोरेमें ढककर रखदिया ।

ता० १५ को नितारा तो थोडा नितरा और नीचे कोई चीज बैठी हुई पाई गई जो अवश्य गंधादि होगी (इस नितरे हुए रसमेंसे थोडी चूनेकी पक्की जमीनपर गिर पडी तो फदकने लगा) सब रस नितार देनेके बाद अवशेषको सुखाया तो चमचोडसा होगया । अत एव जंभीरी रसके भागको दूर करनेके लिये उसे कई बार धो नितार सुखाया तो १॥ माशे निकला । इसको मिट्टीकी प्यालीमें रख आंच पर रखदिया तो गंधक लौ देकर जलनेलगा । जब जलना बंद होगया और उतार लिया तोलमें ३॥ रत्ती हुआ जो कुछ काला और ललोए रंगका था । अनुमान होताहै कि ये सुवर्णका अंश बाकी है ।

पुनः जारण ।

ता० १६ । ९ आज उपरोक्त ५ तोले ३ रत्ती ग्रासयुक्त पारदको एक वस्त्रमें (जिसपर सैंधव, जवाखार, सज्जी, सुहागा, ढाक, ओंगा, इमलीके क्षार और थोडे बिजौरेके रस और गोमूत्रसे युक्त थूहरके दूधका लेप करदियागया था) बांध ४॥ सेर साधित संधान और ऽ।= सैंधवसे पूरित हांडीमें दोलायंत्र कर ९ बजेसे स्वेदन आरम्भ किया । सायं कालतक १½ बोतल और रात्रिभरमें २½ बोतल संधानपडा ।

ता० १७ । ९ की शामतक ३। बोतल संधानपडा (दूसरी कैन जिसमेंसे पहली बार थोडा ही संधान खर्च हुआ था अब खतम होगई) रात्रेमें पहले जारणके दोलासे निकले संधानमेंसे २½ बोतल पडी ।

ता० १८ । ९ को २ बोतल उसी बचे संधानकी आंच ६ बजे तक पडी फिर तीसरी कैन खोल उसकी १½ बोतल रातके ३ बजेतक पडी । ३ बजेके बाद संधान डालना बंद करदिया ।

ता० १९ के सबेरे ९ बजेतक आंच दीगई अर्थात् ३दिन निरंतर दोलामें जारण हुआ फिर चूल्हेपर ही रक्खा छोड दिया । सायंकाल ३ बजे खोला तो साफीपर पारेके नीचेके भागमें एक घनरूप टिकियासी दीखपडी जिसमेंसे तंतुरूप बहुतसी किरणें बिखरी हुई थीं । अनुमान होता है कि स्वर्ण और पारदके वास्तविक मेलसे ये तंतु उत्पन्न हुये थे । पारदके छाननेपर १ रत्ती कम ४ तोले १० माशे पारद छनकर पृथक् होगया और २ माशे ५ रत्ती पिष्टी रहगई । चारणके समय भी तरल पारद १ रत्ती कम ४ तोले १० माशे ही था और उतना ही अब हाथ आया । किन्तु चारणके समय पिष्टी ३ माशे थी अब २ माशे ५ रत्ती रह गई । ये कमी चारणसंस्कारमेंही हुई (जिसका संकेत चारण क्रिया में दिया गयाहै) जारणमें नहीं । क्योंकि चारणके अनंतर पारद और पिष्टीको इकट्ठी तोल ५ तोले ३ रत्ती थी और अब ५ तोले ५ रत्ती होती है (इस २ रत्ती बढतीका कारण तोलका फर्क होगा) तरल पारद पृथक् और पिष्टी पृथक् रख दीगई । इस जारण क्रियामें ३ दिन रातमें ४॥ सेर + १२। बोतल कांजी खर्च हुई जो अनुमानमें १४ सेर होगी किन्तु इसमेंसे ३ सेरके करीब कांजी बच भी रही वह अलग रखदी ।

पुनः स्वर्णचारण ।

ता० २४ । १० । ०७ को उपरोक्त ४ तोले ९ माशे७ र. पारदको तप्त खल्वमें डाल जंभीरीरस और ३ माशे नौसादर उडेहुएके साथ ८ बजेसे घोटना आरम्भ किया शामके ६ बजेपर घुटाई बंद कर रससहित पारदको कटोरेमें भर रखदिया ।

ता० २५ को उपरोक्त पारदको जंभीरीरससे पृथक् कर और नये गरम जंभीरीरससे धो तप्तखल्वमें स्थापित किया और २ माशे ५ रत्ती उपरोक्त स्वर्ण और पारद पिष्टीमें १ माशे गंधक और १ माशे नौसादर सत्त्व मिला खल्वमें थोडा घोट चूर्णसा कर उस चूर्णका ग्रास देना आरम्भ किया और दस बीस बूंद जंभीरीरस डालना आरम्भ किया (अधिक रस इस लिये नहीं डाला कि उपरोक्त चूर्णरसपर तैरकर पारदके संग घुटाईमें न आता) १ घंटेके अन्दर सब चूर्ण डालदिया और उसके अनंतर ३-४ तोले रस दे देकर घोटते रहे । कभी कभी ६–७ तोले रस भी एकदम डाला । शामके ५ बजे घुटाई बंद कर रससहित पारदको कटोरेमें भर रखदिया ।

चारण फल ।

ता० २६ को रससे पारेको पृथक् कर तप्त जंभीरीरससे धो तोला तो ५ तोले हुआ ४ रत्ती वजन रसमें मिला रहगया । इस अवशेष रसमें और पानी डाल ३–४ बार नितार सुखाया तो कालाचूर्ण ७ रत्ती हुआ । फिर ७ रत्ती वजनको आतिशी प्यालीमें रख स्प्रिटलैम्पकी आंच दी तो गंधक धूंआं देकर जलने लगा । निर्धूम होजानेपर उतार तोला तो २ रत्ती वजन काले रंगका हाथ लगा (जिससे ज्ञात हुआ कि चारण में डालागया गंधक पारदसे पृथक् रहताहै और गंधकके साथ कुछ भाग स्वर्णका भी रहजाता होगा) (इस दो दिनके मर्दन में १ बोतल रस खर्च हुआ) और पारदको नितार करदेखा तो नीचे कुछ घन भाग दीखपडा ।

जारण ।

ता० २६ को थोडा थूहर दुग्ध, व सोंठ, चीता, मूलीके क्षारयुक्त गोमूत्र व थोडा जंभीरीरस बिजौरारस और सैंधव लवण ले सबको मिला एक कपडेपर बहुत हलका लेप कर उक्त ५ तोले पारदको उसमें बांध ५ सेर जंभीरीरससे पूरित हांडीमें दोला करदिया । और ५ छ० सैंधव और ५ छ० कलमी शोरा पीसकर हांडीमें डालदिये । पश्चात् १० बजेसे मंदाग्नि देना आरम्भ किया १२ बजे देखा तो अग्नि कुछ तेज होजानेसे हांडीका रस उबल रहा था और अन्दरका मसाला फटासा होकर हांडीके किनारोंपर आलगा था अत एव अग्नि पूर्ववत् मंद कर दीगई । ३ बजेपर १ तोला जवाखार अंगरेजी थोडा २ कर डाला गया जिसके डालते ही झागोंसे हांडी भर गई ½ बोतल रस जंभीरी दिनमें और एक बोतल रातमें पडा ।

ता० २७ को ३ तोले जवाखार अंगरेजी एक एक प्रहर बाद डालागया २½ बोतल रस रातदिनमें पडा ।

ता० २८ को १॥ तोले जवाखार अंगरेजी और डाला और २ बोतल रस रातदिनमें और पडा ।

ता० २९ को ८ बजे आंच बंद करदी गई और हांडीको भट्टीपर रक्खा छोडदिया दो पहर पीछे ३ बजे दोलासे पृथक् कर खोला तो कपडा जीर्ण होगया था जरा दबानेसे फटजाता था। पारा निकाल गर्म जंभीरीरससे धो तोला तो पूरा ५ तोले निकल आया। और कपडेसे छाननेपर कुछ और पिष्टी न निकली। ये काम ३ दिन रात चला जिसमें ५ सेर जंभीरीरस आदिमें हांडीमें भरागया और ६ बोतल और ऊपरसे पडा। कुल १०। सेरके करीब रस खर्च हुआ जिसमेंसे ४ सेर ६ छटांक रस बच भी रहा (चूंकि रसमें ५ छटांक नोन और ५ छ० शोरा डालागया था और १ छटांक जवाखार अंगरेजी भी पडा इसवास्ते रसकी तोल ऽ३॥। सेर समझनी चाहिये) शोरा डालनेसे झाग नहीं उठे जवाखारसे झाग उठतेथे।

स्वर्णजारण मर्दन।

आज ता० ९।११।०७ को बिजौरेसे दीपित (अर्थात् जो १।९।०७ को अष्ट संस्कारयुक्त पारद बिजौरेसे दीपित कियागया था) १५ तोले १० माशे ४ रत्ती पारदमेंसे ५ तोले पारद ले तप्तखल्वमें जंभीरीरसके साथ ८ बजेसे मर्दन करना आरम्भ किया १२ बजे सोंठ, चीता, मूलीके क्षारयुक्त गोमूत्र दोबारमें करीब २ तोलेके डालागया जिससे झाग उठे ५॥ बजे शामके घुटाई बंद कर रस-सहित पारदको कटोरेमें भर रखदिया। सवेरे पारदको जंभीरीरससे पृथक् कर नये गरम जंभीरीरससे धो तोला तो पूरा ५ तोले हुआ (पौन बोतल रस पडा)

चारण।

आज ता० १० को १०॥ बजेपर उक्त पारदको ताम-चीनीके कटोरेमें रख १ तोले जंभीरीरस डाल दो रत्ती सोनेके वरकोंका थोडा थोडा ग्रास देना आरम्भ किया। पारेपर रस अधिक होजानेसे वरक रसपर तैरजाने और पारदसे पृथक् रहनेके कारण पारदने सुवर्णको न ग्रसा अत एव रसको आधा निकाल डाला जिससे बीच पारेपर रस न रहा। बादको उसी प्रकार फिर ग्रास दिया तो पारद वरकोंको अपनी ओर खींचकर तुरंत ग्रसनेलगा। इस तरह दो रत्ती सुवर्णका एक ग्रास दे पारदको शीशेके बक-समें रख धूपमें रख दिया। आध घंटे बाद अर्थात् ११ बजे उसी तरह दूसरा ग्रास दिया। थोडारससूखजानेसे दो-चारबूंद रस ओर पारेके कटोरेमें डालदिया और फिर उसी प्रकारधूपमें रखदिया ११॥बजे ४रत्ती का१ ग्रास और दिया और ३–४ माशे रस और डाल धूपमें रखदिया। इस-तरह १ माशे सोनेके, वरकोंके ३ ग्रास दियेगये और शाम-तक धूपमें रक्खा रहा। ग्रास देतेसमय पारा वरकोंको खींचता था और कुछ अपनी तहसे ऊंचा वरकोंपर चढ-जाता था। और उस समय रंगत पारेकी खूब चमकदार सफेद होजाती थी। ग्रास खाते ही पारदपर कुछ ऊंचे नीचे रवेसे दीख पडते थे जिसको अंगरेजी साइन्सके अनु-सार यह कह सकतेहैं कि जितना पारद स्वर्णके परमाणु-ओंसे मिलकर संयुक्त रूपमें होजाता था वह कण रूपमें पारदके ऊपर ऊंचा नीचा दीखता था। उपरोक्त ३ ग्रास देनेके समय कुछ चूनेकीसी फुटक कटोरेमें दीखपडी और दूसरे दिन कटोरेसे पारदको निकालनेके पीछे जंभीरीरसके नीचे कुछ बैठी हुई वही चूनेकीसी फुटकें मिलीं। अनु-मानसे रत्तीभर होंगी जिनको इस शंकासे कि क्या यह स्वर्ण जनित साल्ट (नमक) बनगया अनुभव करनेके लिये पृथक् कर लियागया। (जिसकी ता० २०।१।०८ को बाबूईश्वरदासद्वारा इसकी Analysis कराई गई तो यह केवल चूना साबित हुआ सोना या पारा न था) ता० ११ के सबेरे पारेके रससे पृथक् किया तो तोलमें यह ५ तोले १ माशेसे कुछ ही कम हुआ। यानी १ माशे सोना और ५ तोले पारद मिलकर पूरी तोल हुई। बादको तामचीनीकी रकाबीमें पारेको रख ४ तोले जंभीरी रस और ३ माशे नौसादर उडा हुआ उसमें डाल शीशेके बकसमें रख ८ बजेसे धूपमें रखदिया। शामतक धूपमें रक्खारहा।

ता० १२ को तप्त खल्वमें (जो इस बार तुषाग्निकी जगह कंडोंके छोटे छोटे टुकडोंकी अग्निसे ऐसा गर्म रक्खा था कि जिसे देरतक न छूसकते थे और गरम होनेसे खरलकी मूसलीपर कपडा बांधकर घुटाई करनी पडी थी) जंभीरीरसके साथ ८ बजेसे ११ बजे तक १ प्रहर निरंतर कठोर मर्दन किया (अबकी बार मर्दन करते समय पारा खरलमें और मूसलीकी तलीमें जहां जहां चिपटता था अनुमान होता है कि अधिक तप्त खल्वमें निरंतर तीव्र मर्दनसे स्वर्ण द्रव होनेके कारण ही यह बात पैदा हुई हो)

मूषा द्वारा जारण।

ता० १२ हीको ५ अंगुल गहरे और ७ अंगुल चौडे तामचीनीके कटोरेमें खल्वसे निकले जंभीरीरस सहित पारदको भर उसमें इतना रस और भरा जिससे आधा कटोरा भर गया। बादको लोहेकी परातमें करीब २॥ सेरके गोबर भर उसमें उस कटोरेको खूब जमा कर करीब ३ अंगुलके गाड दिया। बादको लोहेकी छोटी रकाबीमें खूब दहकते कंडोंके अंगारे भर कटोरेके ऊपर रकाबीको रख दिया कटोरे पर रकाबी कटोरा ऐसा। गर्म होने लगा कि जिसे छू न सकते थे। जब रकाबीकी आंच झीनी पड जाती थी तभी उसी तरहकी दूसरी रकाबी जो अंगारे भर कर पहलेसे तय्यार करली जाती थी तुरंत उस कटोरे पर रख दी जाती थी कटोरेकी गर्मीसे थोडा गोबर भी ऊपर सूख गया था। ये पहली आंच ११। बजे लगी इसी तरह आध आध घंटे बाद आंच लगती रहीं। रातके ९ बजे तक २१ आंच लगीं बादको रस सहित पारदके कटोरेको ज्योंका त्यों रख दिया। सवेरे पारदको रससे पृथक् कर तोला तो ५ तोले ६ रत्ती हुआ २ रत्ती या तो जारण होगया या छीजगया। पारदसे निकले रसको निंतारा तो उसमें पारद वगैरःका कुछ पता न लगा।

पुनः मर्दन।

ता० १३ को उक्त पारदको कसींसे तप्त किये गये खल्वमें रख कांजी और ३ माशे नौसादर उडे हुएके साथ १२ बजेसे ४ बजे तक निरंतर कठोर मर्दन किया। बीच बीचमें अम्लवर्ग भी जो नींबू जंभीरी, बिजौरा, नारंगी,

इमली, दाडिम(अनार),वसन्ती, (यह एक ६ पत्तोंकी ❀ बूटी होती है जिसको फारसीवाले खटकल बूटी कहते हैं सरसोंके फूलकेसे रंगका इसपर भी पीला फूल आता है। खानेमें यह बूटी खट्टी होती है) सबके समान रस मिला कर बनाया गया था चार २ छः २ माशे कर ४-५ तोलेके करीब डाला गया ४ बजे घुटाई बंद कर कांजीसे पारदको पृथक् कर लिया इस समय स्वर्ण और पारद परस्पर खूब मिश्रित थे।

दोलामें जारण।

ता० १३ हीको काला नोन, समुद्रनोन, सैंधा नोन, खारी नोन, सांभर, और कच नोन प्रत्येक साढे सात सात माशे सब तोल ३ तोले ९ माशे और जवाखार, सज्जी, सुहागा सब तोले क्षार सब ३ तोले ९ माशेको १॥ तोले गोमूत्र व थूहरदुग्ध और ६ माशे उपरोक्त अम्लवर्गके साथ घोट कर उसका १ बालिश्त लम्बे चौडे भोजपत्र पर आध अंगुल मोटा लेपकर उस भोजपत्रमें उक्त पारदको रख नीचे कैंचीकी मारकीन लगा पोटली बांध ली । और उस पोटलीको एक हांडीमें जिसमें३ सेर मूत्र(यानी गायका मूत्र १सेर, भैंसका ऽ॥ सेर, बकरीकाऽ।सेर, भेंडकाऽ।॥,घोडेका ऽ। सेर, ऊँटका ऽ। सेर) और २ सेर कांजी भरी गई विदित हो कि उक्त मूत्रोंमें कांजी मिलानेसे इतने झाग उठे कि करीब ८ अंगुलके हांडी खाली रहते भी एक साथ खिचडीकी तरह उबल कर हांडीको खाली करते २ पाव भरके अंदाज वजन निकल गया और पीछेसे चार नोन सैंधा, सांभर, खारी, समुद्र नोन एक एक छटांक और ३ क्षार-सज्जी सुहागा जवाखार भी एक एक छटांक डाले गये फिर दोला कर दिया गया (लवण और क्षार डालते समय झाग न उठे) पश्चात् हांडीको भट्ठी पर रख ४॥ बजे शामसे मंदाग्नि दीगई पहले दो पहर तक मन्द आंचसे भी हांडीमें बहुत झाग उठे और उबाल आये रातको १ बोतल कांजी पडी।

ता० १४ आज सबेरे देखा तो हांडी आधीके करीब खाली दीख पडी इस कारण कांजी और भर कर हांडी पूरे नाप तक भर दी बादको गाय और घोडेका मूत्र डालते रहे। १० बजे पर १० माशे ओंगेका क्षार, २॥ तोले केलेका, ६माशे ढाकका, १ तोले २माशे इसलीका पृथक्२ डाले गये। किसी क्षारने झाग नहीं दिये शाम तक सब ३ बोतल कांजी और १ सेर गोमूत्र और ऽ।॥ घोडेका मूत्र पडा। रातको ऽ। पाव भर गोमूत्र और आधी बोतल कांजी पडी।

ता० १५ आज ऽ१ =सेर गोमूत्र और १ सेर भैंसका मूत्र और १ सेर ऊँटका, ऽ। =डेढ पाव बकरीका मूत्र और ½ बोतल कांजी दिनरातमें पडी।

ता० १६ आज ऽ। =डेढ पाव कांजी और ऽ॥ सेर गोमूत्र पडा शामके ५ बजे आंच बन्द कर हांडीको ज्योंकी त्यों भट्टीपर रक्खी छोड दिया।

ता० १७ के सबेरे खोला तो भोजपत्र तो बिलकुल गल ही गया था लेकिन कपडा नहीं गला। पारा कुछ भोजपत्रमें था बाकी भोजपत्रके नीचे कपडेमें पारेको उँगलीसे टटोला तो कुछ कंकरसी चुभती हुई चीज उसमें मालूम हुई उसको पारेसे पृथक् कर देखा तो वह स्वर्ण और पारदसे बना कंकर सा था जिसमें खूब उभरी हुई सुइयां सी दीख पडती थीं। पारेको निकाल गरम कांजीसे धो नितारा तो ४ तो० ९ मा० ६ रत्ती तरल रूपमें पृथक् होगया और २ मा० २ र. घनरूप पृथक् होगया। उपरोक्त तरल रूपको छाननेसे २ रत्ती पिष्टी निकली और ४ तो० ९ मा० ४ र. स्वच्छ तरल रहगया वह २ रत्ती पिष्टी २ माशे २ रत्ती घनभागमें मिला दीगई। और कुल १ मा० ४ रत्तीको छाना तो १ माशे ७ रत्ती पिष्टी निकली और ५ रत्ती पारा निकला (ध्यान देना चाहिये कि सबसे पहले जारणमें १ माशा स्वर्ण ही रहनेसे ३ माशे पिष्टी बनी थी)जो उपरोक्त पारदमें मिला दिया गया अखीर तोल पिष्टीकी १ माशे ७ रत्ती और पारदकी४तो० ११माशाहै इन दोनोंकी तोल मिलाकर ५तोले ७रत्ती हुई जारणसे पहले५तोले६रत्ती ही पारद रक्खा गया था इस वक्त १ रत्ती तोल बढ गई। ये काम ३ दिनरात चला जिसमें कुल ६ सेर कांजी और (गायका ३।॥= सेरभैंसका ऽ१॥ सेर बकरीका ऽ॥= ढाई पाव भेड़का ऽ॥ तीन पाव घोडेका ऽ१ सेर ऊंटका १। सेर सब) ९ सेर मूत्र कुल १५ सेर वजन पडा जिसमें करीब ऽ३॥ सेर के बच भी रहा (इसमें ऽ। लवण और ऽ। क्षार भी पडे)

५ स्वर्णजारण।

मर्दन।

आज ता० २६ को बिजौरेसे दीपित पारद (जिसको पहले स्वर्णका ग्रास दिया गया था) ४ तोले ११ माशेमें ४ माशे बिजौरेसे दीपित पारद और मिला ५। तोले कर तप्त खल्वमें जंभीरी रस और २ माशे नौसादर उडेहुयेके साथ ८॥ बजेसे मर्दन करना आरम्भकिया शामके ६ बजे रससहित पारदको रखदिया (पौन बोतल रस खर्च हुआ)

ता० २७ को काम बंद रहा।

चारण।

ता० २८ को पारेको रससे पृथक् कर नये गरम जंभीरी रससे धो तोला तो २ रत्ती कम ५। तोले हुआ २ रत्ती छीज गया बादको कर्सीसे किये तप्त खल्वमें पारदको रख दो दो बूंद जंभीरीरस डाल ९। बजेसे मर्दन करना आरम्भ किया और साथ साथ ही १ माशे कुंदनके एक एक अंगुल लंबे टुकडोंको जंभीरी रसमें घुटे १ मा० गंधक और १ माशे नौसादर सत्त्वसे लेपकर ग्रास देना आरम्भ किया प्रथम एक एक दो दो टुकडोंका ग्रास दिया और पीछे पांच पांच सात सात टुकडे इकट्ठे भी डाल दिये ग्रास देते समय पारद कुंदनको सोनेके वरकोंकी तरह शीघ्र न ग्रसता था और गंधक नौसादरका जिन पत्रों पर लेप किया था वह थोडा रस रहने पर भी पारदमें भली भांति न मिलते थे और थोडा भी रस अधिक रहनेपर तो बिलकुल ही न मिलते थे १। घंटे तक थोडा २ रस डाल ग्रास देते रहे। बीचमें कुछ नौसादरद्राव भी डाला १०॥ बजे सबग्रास दे चुकनेपर जंभीरी रस अच्छी तरहसे डाल और नौसादरद्राव और डाल और खल्वको अधिक तप्त कर घोटना आरम्भ किय १२ बजेके करीब कुंदनके टुकडे पारदसे पृथक न दीखपडे

शामके ५ बजेतक मर्दन जारी रहा। ५ बजे रसको पृथक् कर पारेको धीरे धीरे खल्वसे गिराया तो पीछे कुछ घन भाग रह गया जिससे ज्ञात हुआ कि गर्भद्रुति नहीं हुई। खल्वकी गरमी ४ ५ सी. यानी ११२ फ. डी. थी– फिर पारेको चीनीके प्यालेमें कर जंभीरी रस न्यून भाग और नौसादरद्राव अधिकांश डाल ढक कर रखदिया।

ता० २९ के सबेरे देखा तो पारेपर श्यामता आगई थी। द्रावसे पृथक् कर पारदको नितारा तो नीचे रेवेदार चीज दीख पडी जिससे ज्ञात हुआ कि स्वर्ण पारदमें भली भांति नहीं मिला बादको तप्त खल्वमें नये जंभीरी रसके साथ ८। बजेसे निरंतर कठोर मर्दन करना आरम्भ किया कलका पारदसे निकला नौसाद-रद्राव भी खरलमें डाल दिया (खरल इतना गर्म रक्खा गया जिसे छू न सके थे थरमामेटरका पारा ६५ तक चढता था) ११॥ बजे पारदको कटोरेमें नितारा तो बहुत कम घन भाग दीखपडा और जो कुछ भी घन भाग था वह बहुत कम दरदरा मालूम होता था बादको फिर पारदको उतने ही तप्त खल्वमें नये जंभोरी रसके साथ उसी प्रकार मर्दन किया (पारदके निकलनेके पहले रसको भी खरलमें डालदिया) १। बजेपर पारदको खरलसे निकाल धो नितार तोला तो ५ तोले ३ माशे ६ रत्ती था यानी चारणकी तोलके अनुसार पूरा हुआ (अबकी बार खरल ८५ तक गर्म रक्खा गया इस विशेष तप्तखल्वमें मर्दन करनेसे कोई विशेष लाभ नहीं हुआ) पारदको नितारनेपर पहलीसी ही थोडीसी रेवेदार पिष्टी दीखपडी।

दोलामें जारण।

आज ता० २९ को काला नोन,समुद्र नोन, खारी नोन, सांभर और कच लोन छै छै माशे सब नोन ३ तोले और त्रिक्षार अर्थात् सज्जी, सुहागा, जवाखार एक एक तोले सब ६ तोले वजनको ३माशे गोमूत्र और १ तोलेके करीब थूहर दुग्ध और थोडेसे अम्ल वर्ग (जौ, नींबू, जंभीरी, बिजौरा, नारंगी, इमली, दाडिम, बसंती, सबके समान रस मिलाकर बनाया गया था) के साथ घोट कैचीकी दुहरी मारकीनपर उसका दोरूपेभर मोटा लेप कर दिया और उस लेपित वस्त्रमें उक्त पारदको रख पोटली बांध दी फिर २ सेर गोमूत्र १ सेर कांजी और बिजौरेके दीपनमें इसी पारदके दोलासे निकले १ सेर जंभीरीरस कुल ४ सेर द्रवसे पूरित हांडीमें ३ छटांक सज्जीक्षार और १ छ० सज्जी ४ छ० सुहागा। (सुहागा चौकीका काममें लाया जाता था) ४ छ० जवाखार (जिसमें २ छ० अंगरेजी १ छ० देशी बाजारी और १ छ० घरका था) कुल १२ छ० वजन डाल दोला कर दिया (इस बार गोमूत्रमें कांजी मिलाते समय थोडेसे ही झाग उठे किन्तु जंभीरीरस डालनेपर अधिक झाग उठे दो वारमें आध आध पाव रस डाला तो झाग तो उठे किन्तु विशेष तीव्रता न थी फिर एक दम रस डाल देनेसे इस जोरसे झाग उठे कि उबल कर आध सेरके करीब पदार्थ हांडीसे निकल गया) और ४ बजेसे बहुत मंदाग्नि दी रातके ७ बजे देखा तो थरमामेटरमें ५५ तक गर्मी मालूम होती थी। दोलाको अग्नि ता०२के शामके ६ बजेतक दी गई और नीचे लिखे नकशेके मुताबिक रस और मूत्र पडे नकशेके अखीर खानेमें दोलाके जलकी गरमी थरमामेटरके सैन्टीग्रेटके दर्जेकी दिखाई गई है।

नकशा।

तारीख	गोमूत्र	कांजी	जंभीरीरस	गरमी	विशेष वार्ता
२९	२ सेर	१ सेर	१.सेर		प्रथम भरेगये
रात	+	+	१ बोतल	७५	
३०दिन	+	१ सेर	+	६५	
रात	ऽ॥सेर	+	+	५५	
१दिन	+	+	ऽ॥सेर	६५	
रात		+	ऽ॥सेर	६५	
२दिन	ऽ॥सेर	+	+	६५	
मीजान	मीजान	मीजान	मीजान	+	
३दिन	३सेर	२सेर	ऽ२॥।सेर		

जोड तीनोंका
७॥। सेर

ये काम ३ दिनरात चला जिसमें आदिसे अंततक ३ सेर गोमूत्र, २ सेर कांजी, २॥। सेर जंभीरीरस, कुल ७॥। सेरद्रव पडे जिसमेंसे ३॥ सेरके करीब अखीरमें बच भी रहा।

ता० २। १२ के शामके ५॥ बजे आंच बंद कर हां-डीको ज्योंकी त्यों भट्टीपर रक्खी छोडदिया।

ता० ३ के सबेरे खोल पारेको निकाल गरम कांजीसे धो नितार तरल रूप और घन सब पारदको पृथक २ कर दिया घन रूपको छाननेसे ३ माशे ३ रत्ती पिष्टी निकली और तरल पारदके छाननेसे कुछ पिष्टी न निकली छना पारद तोलमें ५ तोले ३ रत्ती हुआ किन्तु पारद पिष्टीकी इकट्ठी तोल ५ तो० ३ मा० ४ रत्ती ही हुई यानी २ रत्ती और छीजगया।

विचार–यह बात विचारणीय है कि इससे पहले जार-णमें पिष्टीकी तोल १ मा० ७ रत्ती हुई थी। अबकी बार ३ माशे ३ र० हुई इस अंतरका क्या कारण है क्या अबकी बार अधिक मंदाग्नि देनेसे पारद स्वर्णसे पृथक् नहीं हुआ।

६ सिद्धमत दोलासे स्वर्ण जारण।

सग्रासं पंचषड्भागैर्यवक्षारैर्विमर्दयेत्। सूत-कात्षोडशांशेन गंधेनाष्टांशकेन वा ॥ ततो विमर्द्य जंबीररसे वा कांजिकेऽथवा। दोलापाको विधातव्यो दोलायंत्रमिदं स्मृतम् ॥

मर्दन।

ता० १५ को ४ तोले ९ माशे ५ रत्ती संस्कृत षड्गुण बलिजारित पारदको (जिसमें ३ बार स्वर्णग्रास दिया जाचुका था) सामान्य तप्त खल्वमें जंभीरीरस और २ माशे नौसादर उडाये हुयेके साथ ८ बजेसे निरंतर मर्दन करना आरम्भ किया शामके ६ बजे घुटाई बंदकर रससहित पारदको तामचीनीके कटोरेमें भर कर रखदिया आज १० घंटे घुटाई हुई पौन पौन बोतल रसजंभीरी खर्च हुआ।

चारण ।

ता० १६ को पारेको रससे पृथक् कर मध्य खल्वमें डाल बहुत थोडे जंभीरी रसके साथ ८ बजेसे मर्दन करना आरम्भ किया १५ मिनट बाद नं० १ स्वर्णजारणसे निकली २ मा० ३ रत्ती पिष्टीको १ माशे नौसादर सत्वमें सूखा मिला ग्रास देदिया जोडालते ही पारेमें मिलगई और फिर थोडा थोडा जंभीरी रस डाल घोटते रहे ३ बजे तक ७ घंटे मर्दन होचुकनेपर पारेको रससे पृथक् कर गर्म जंभीरीरससे धो शीत खल्वमें थोडा २ अंगरेजी जवाखार डाल ४ बजेसे सूखा घोटना आरम्भ किया शामके ६ बजेतक ३ छटांक जवाखार पडचुकनेपर घुटाई बंद कर ज्योंकात्यों खरलको रखदिया।

ता० १७ को ३ बजेसे ५ बजेतक फिर घोटा।

ता० १८ को धूलकी छुट्टी रही।

ता० १९ १ छ० जवाखार और डाल ३ घंटे घुटा।

ता० २० को १ छटांक जवाखार और डाल ६ घंटे घुटा पारा अदृश्य होगया।

ता० २१ को ४ माशे गंधक पीस थोडी २ डाल ६ घंटे घोटा।

ता० २२ को४घंटे घोटा अब सबकी रंगत खाकी होगई है

जारण।

ता० १ अप्रेलको खरलसे पृथक् कर दुहरी कैंचीकी मारकीनमें पोटली बांध ४ सेर कांजीसे पूरित हांडीमें दोला करदिया. और चूंकि कांजीमें जवाखार पडनेसे झाग उठते हैं और उबाल आता है इस वास्ते तरतमें हांडीको रख प्रथम ३ घंटे धूपमें रक्खा तो झाग न उठे बादको २ बजेसे भट्टीपर मंदाग्नि देना आरम्भ किया। ४ बजे देखा तो कांजीपर प्रथम सफेद मलाईसी पडकर झाग उठने लगे और करीब २ आध घंटे रहकर लोप होगये रातमें ३॥ बोतल कांजी और पडी।

ता० २ को दिनमें २॥ बोतल और रातमें ३ बोतल कांजी पडी।

ता० ३ को ९ बजे दोलामें थरमामेटर डाला तो ९५नं. की गर्मी मिली आज दिनमें ३ बोतल और रातमें भी ३ बोतल कांजी पडी।

ता० ४ के दो पहरके १२ बजेतक २ बोतल कांजी और पडी १२ बजेपर काम बंद करदिया तीन दिनरात निरंतर अग्नि दीगई और कुल १४ बोतल कांजी पडी हांडीको ज्योंकी त्यों भट्टीपर रक्खी छोडदिया शामको उसमेंसे पोटलीको निकाल अलग कटोरेमें रखदिया।

ता० ५ को खोला तो संधान निचुडकर कटोरेमें आगया था पोटलीके अंदर केवलसंधान मिश्रित काले रंगकी गाढी पिष्टीसी रहगई थी पारद निज रूपमें बिलकुल न दीखपडा अत एव उस सबको कपडे परसे अलग कर उसमें करीब २ छटांक नीबूका रसमिला कटोरेमें भर शीशेके बकसमें रख धूपमें रखदिया और लकडीसे कभी २ चलाते रहे।

ता० ६ को धूपमें रक्खा रहा।

ता० ७ को नितार रस पृथक् कर धूपमें सूखनेको रखदिया।

ता० ८+९ को भी सूखता रहा।

ता० १० को देखा तो सूखकर ढिम्मासा बनगया था तोडनेसे उसमें पारेके रवे दीखतेथे।

ता०११को तोला तो ४ तोले ११ माशे हुआ(पारद और स्वर्णकी तोल ५ तोले थी) दोलासे निकले संधानको नितार और इस शंकासे कि इसमें स्वर्ण पारद मिलाहुआ है बोतलोंमें भर रख दिया और नीचेकी गादको सोख्ते कागजमें छान धूपमें सुखादिया जो सूखनेपर १ तोले ५ माशे हुई इसमेंसे ४ माशेको चीनीकी प्यालीमें रख शीशेके ढकनसे ढक स्प्रिटकी आंचदी तो बडी दुर्गंध आनेलगी और शीशेका ढकन धूम्रवर्णके बाष्प जलसे रंगगया ढकनपर पारेका कुछ लक्षण दिखाई न दिया २ घंटे बाद आंचसे उतार ठंढाकर दवाको तोला तो २ मा० ६ र. रहगई बादको इस २ माशे ६ रत्ती दवाको बारीक पीस उसी प्रकार फिर २॥ बजे से तेज आंच दी-शामके ५॥ बजे उतार देखा तो दवा बिलकुल जलगई सी मालूम होती थी और ढकनपर वही धूम्र वर्ण बाष्प जल जमगया था पारेका कोई चिह्न न दीखपडा अत एव दवाको जो तोलमें २ माशे रह गई थी इस शंकासे कि इसमें स्वर्ण विद्यमान है उपरोक्त विना आंच खाई हुई दवामें मिला रखदिया।

सूक्ष्म वृत्तान्त।

इस क्रियामें पारा ४ तोले ९ माशे ४ रत्ती स्वर्ण पारद पिष्टी २ मा ३ र. गंधक. ४ माशे जवाखार अंगरेजी ५ छ० कांजी प्रथम बार-४सेर सब कांजी १५ सेर

मर्दन २ मा. नौसादर + जंभीरीरससे सामान्य तप्त खल्वमें १० घंटे।

मर्दन स्वर्णपिष्टी + १ माशे नौसादरसहित मध्य तप्त खल्वमें ७ घंटे।

मर्दन सग्रास पारदका ५ छ. जवाखार सहित १३ घंटे (५ दिनमें)

मर्दन का गंधकमिला १० घंटे (२ दिनमें)

स्वेदन तीनदिनरात

शंका-क्या कांजी कमखट्टीथी? या क्या कांजीकी विद्यमान तोल ८४ सेरसे कमथी ?

		मर्दन.		चारण.					जारण.							
तारीख	नंबर		मसाला	समय	वस्तु	यंत्र	रस	मसाला	यंत्र	द्रव	क्षारादिक	पारद लक्षण	पारद तोल जोलीगई	पारद जो पीछे रहा	पिष्टी जो निकली	विशेषवार्ता
२।९।०७	१	जंभीरीरस	+	५ प्रहर	१ मा०कुंदन	तप्तखल्व	जंभीरी	३ मा० नौसादर सत्व	दोला	संधान	४ छ० सैंधव	+	५ तोले षड्गुण वलि जारितपारद	४ तोले १० मा०	३ माशे	१ भाग स्वर्ण २ भाग पारदको पकड सक्ताहै—
१३।९।०७	२	जंभीरीरस	२ मा० य० क्षा० २ मा० स० क्षा०	१० घंटे	३ मा० पिष्टी उक्त नं०१ की	तप्तखल्व	नी०जंभीरीरस	१ मा० नौसादर १ मा० गंधक	दोला	संधान	६ छ० सैंधव	+	उपरोक्त ४ तो० १० मा०	४ तो०९मा० ७ र०	२ मा० ५ र० पिष्टी	
२४।१०।०७	३	जंभीरीरस	३ मा०नौसादर	१० घंटे	२ मा० ५ रत्ती जो उपरोक्त नं० २ के जारणसे निकला	तप्तखल्व	जंभीरीरस	१ मा० नौसादर १ मा० गंधक	दोला	जंभीरीरस	५ छ० सैंधव ५ छ० शोरा ५ छ० यवक्षार अंगरेजी	+	उपरोक्त ४ तो० ९ मा ७ र०	४तो०९ मा० २ र० पारा अलग रखदिया	२ मा० ३र०पिष्टी अलग रखदी	
९।११।०७	४	जंभीरीरस	सोंठ, चीता, मूलीके क्षारयुत गोमूत्र २ तो०	९॥ घंटे	१ मा०सोनेके वरक	१ धूपसे तप्तभूषा १ अधिक तप्तखल्व	जंभीरीरस	३ मा० नौसादर	मूषा	जभीरीरस		+	बिजौरेसे दीपित ५ तो० पारद			
	४/२	२ कांजी	३ मा० नौसादर ५तोला अम्लवर्ग	४ घंटे					दोला	९ सेर मूत्र ६ सेर कांजी	४ लवण ऽ। क्षारत्रय ऽ=क्षार- औंगा १० मा० केला२॥ तो०ढाक ६ मा०,इमली१--	+		४ तो० ११ मा० पारद	१ मा० ७र०पिष्टी अलग रखदी	
२६।११।०७	५	जंभीरीरस	२ मा० नौसादर	१४ घंटे २ दिनमें	१ मा० कुंदन	अधिक तप्तखल्व	जंभीरीरस नौसादर द्राव	१ मा० गंधक १ मा० नौसादर सत्व	दोला	१ सेर कांजी २ सेर गोमूत्र १ सेर जंभीरीरस	सज्जीक्षार ऽ≥-- सज्जी ऽ-।सुहागा ऽ।जवाखारदेशी ऽ=जवाखार अंग० ऽ≥	+	५। तोले पारद			उपरोक्त ४ तो० ११ मा. पारदमें४ मा० बिजौरेसे दीपित पारद और मिला ५। तो.करलिया दोलाकी मंदाग्नि ७५ छ० से अधिक नथी
१५।३।०८	६	जंभीरीरस	२ मा० नौसादर	१० घंटे	उक्त नं० ३ की २ मा० ३ र० पिष्टी	मध्य तप्तखल्व	जंभीरीरस	१ मा० नौसादरसत्व जवाखार अं० ऽ। ४ मा० गंधक	दोला	१५ सेर कांजी	+	+	४ तोले ९ मा० ५ र०३ वार स्वर्ण	५ तोले स्वर्ण पारद		

इति श्रीरसराजसंहितायां भाषाटीकायां चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥

रंजनसंस्काराध्यायः २५.

पारदवंदना ।

विश्वेशबीजं रसराजसूतं मृत्य्वादिरोगाधिदरिद्रजानाम् । जरावलीनां निधनाय नित्यं भोगाय मोक्षाय सुखाय वन्दे ॥ १ ॥ (र. पा.)

अर्थ-मृत्यु आदि रोग दरिद्रतासे पैदाहुये दुःख तथा बुढापेके नाशके लिये भोग मोक्ष और सुखके लिये शिवजीके वीर्य श्रीरसराज पारदको मैं नित्य प्रति नमस्कार करताहूं ॥ १ ॥

रंजनलक्षण ।

सुसिद्धबीजधात्वादिजारणेन रसस्य हि । पीतादिरागजननं रंजनं परिकीर्तितम् ॥ ॥ २ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-भली प्रकार सिद्ध कियेहुये बीज और धातु आदिके जारणसे पारदके पीत आदि वर्णके पैदा होनेको रंजन कहतेहैं ॥ २ ॥

रसरागसंस्कार ।

तत्रादौ रसरागाख्यश्चतुर्दशसंस्कारस्यायमर्थः रसस्य रागः स्वर्णरजतताम्रतीक्ष्णकान्तान्यतमप्रजारणा ॥ ३ ॥ (ध. सं.)

अर्थ-यहांसे आगे जो पारदके कर्म कहेंगे उनको केवल वेधके लिये ही जानना चाहिये वहांपर प्रथम रसराग नामका चौदहवां संस्कार है उसका यह अर्थ है कि सोना, चांदी, तांबा, फौलाद, और कांत लोहमेंसे किसी एकके जारण करनेसे पीत आदि वर्ण विशेषका सिद्ध करना ॥३॥

रसरागसारणाख्यसंस्कारः ।

तस्य रसरागकरणस्य ताम्रपात्रस्थमम्लमित्यादिनोक्तताम्रकल्केन सहाभ्रकसत्त्वजारणयैव [1]निष्पत्तिर्जाता पुना रसरागकरणं पिष्टपेषण (व्यर्थ) मस्ति तथापि रसरागविधानज्ञापनाय किंचित्प्रोच्यते ॥ ॥ ४ ॥ (ध. सं.)

अर्थ-यद्यपि जहां समुदायसे अभ्रक जारण कहाहै वहां पर (ताम्रपात्रस्थमलं)इत्यादि श्लोकसे कही हुई ताम्रकल्कके साथ अभ्रकसत्त्वके जारणकी क्रियासे ही रसराग (पारेमें रंगका आजाना) की सिद्धि होजातीहै फिर रसराग संस्कारका करना व्यर्थहै तो भी रसरागकी विधिके जाननेके लिये फिर कुछ रसराग संस्कारवर्णन किया जाताहै ॥ ४ ॥

अभ्रकजारणाद्रसे बलाधिक्यं जायते तीक्ष्णजारणाद्रसे रागाधिक्यं जायते नागजारणाद्रसे स्नेहाधिक्यं जायते॥५॥(ध. सं.)

१अभ्रकजारणसमुदायमें ध. सं०के मतसे कहे अभ्रकजारणमें ताम्र कल्कयुक्त अभ्रकका जारण कहाहै उसका हवाला देताहै ।

अर्थ-अभ्रकजारणसे पारदमें अधिक बल होताहै, फौलादके जारणसे उत्तम रंग आता है और नागके जारणसे पारेमें स्नेह अधिक होताहै ॥ ५ ॥

रसरागक्रिया ।

माक्षिकेण तु कनकं च मृतं रसकतालयुतं पटुसहितं तत्पक्वं हंडिकायां यावदिंद्रगोपनिभम्।अथैतच्चूर्णेन सूतरंजनं तत्फलं चाह— तच्चूर्णं सूतवरे त्रिगुणं चीर्णं हि जीर्णं तु॥ द्रुतहेमनिभः सूतो रञ्जति लोहानि सर्वाणि ॥ ६ ॥ (ध. सं.)

अर्थ-द्विगुण वा त्रिगुण सोना माखीसे भस्म कियाहुआ सुवर्ण और उसीके तुल्य खपरिया हरिताल तथा संधानोन इन सबको मिलाकर लवण यंत्रद्वारा हांडीमें परिपक करे तो वह भस्म बीरबहूटीके समान लाल वर्णकी होगी फिर उसका चूर्ण बनाकर खलेवे तदनंतर संस्कारोंसे शुद्ध कियेहुये पारेमें पूर्वोक्त तिगुने चूर्णको खिलावे और जारणकरे तो वह पारद गलाये हुये सुवर्णके समान वर्ण होकर सब धातुओंको रंगताहै ॥ ६ ॥

रंजनक्रिया ।

केवलं निर्मलं ताम्रं वापितं दरदेन तु । कुरुते त्रिगुणे जीर्णे लाक्षारसनिभो रसः ॥ ॥ ७ ॥ (र. चिं., र. रा. शं., बृ. यो.)

अर्थ-तांबेको गला कर शिंग्रफका चूर्ण थोडा २ डाले उस तांबेके तिगुने चूर्णको पारदमें जारण करे तो वह पारद लाखके रंगकासा होताहै ॥ ७ ॥

अन्यच्च ।

गंधकेन हतं नागं जारयेत्कमलोदरे । एतस्य त्रिगुणे जीर्णे लाक्षाभो जायते रसः॥८॥ एतत्तु नागसंधानं न रसायनकर्मणि ॥९॥ (र. चिं., बृ. यो.)

अर्थ-गंधकसे भस्म कियाहुआ सीसा और उस नागके साथ भस्म कियाहुआ तिगुना तांबा जब पारदमें प्रथम गंधकके साथ नाग (सीसे)को भस्म करे और उससे तांबेको भस्म करे उस तांबेको पारदमें तिगुना जारण करे तो वह पारद लाखके रसके समान लाल रंगवाला होताहै यह योग धातुवाद (सोना चांदी बनाना) के लिये है और रसायनके लिये नहींहै ॥ ८-९ ॥

बीजकी अवधि ।

किंवा यथोक्तसिद्धबीजोपरि त्रिगुणताम्रोत्तरे नान्यद्बीजम् ॥ १० ॥ (र.रा.शं.,र.चिं.)

अर्थ-अथवा यथोक्त सिद्ध बीजोंके जारण करनेके उपरांत जब तिगुना ताम्रजारित होजाय तब और बीजजारण नहीं करना चाहिये ॥ १० ॥

१ ताम्र-स्वयं निश्चयानंतर र. रा.शं. में कमलोदरे ताम्रे इति टीका ।

स्वर्णबीज ।

समजीर्ण स्वतंत्रेणैव रंजयति-कुनटीहतकरिणा वा रविणा वा ताप्यगंधकहतेन ॥ दरदनिहत असिना वा निर्व्यूढं हेम तद्बीजम् ॥

ताम्रबीज ।

बलिना व्यूढं केवलमार्कमपि-ताम्रतद्बीजम् ॥ ११ ॥ (र. चिं., र. रा. शं., बृ. यो.)

अर्थ-कुनटी (मैनसिल) के साथ भस्म कियेहुए सीसेके साथ या सोनामक्खी वा गंधकके साथ भस्म कियेहुए तांबेसे अथवा हिंगुलके साथ मारेहुए लोहेसे तीनबार व्यूढ कियाहुआ सुवर्ण बीज होताहै उसको समभाग जारण करे स्वतंत्रतासे पारदको रंगताहै ॥ ११ ॥

रंजन (रसरहस्यसे)

रामठं मुसलीकंदं लांगलं रक्तचित्रकम् । मूषालेपनमात्रेण रसो भवति कुंकुमम् १२॥ (टो. नं.)

अर्थ-हींग, मूसली, कलिहारी और लाल चीता इनका मूषामें लेप करके पारदको धोंके तो वह पारा केसरके समान लाल वर्णका होताहै ॥ १२ ॥

अन्यच्च ।

रसं खर्परके कृत्वा अधो वह्निः प्रताप्यते । निंबूकद्रवसंमिश्रं भूनागतरुजे द्रवे ॥१३॥ प्रदद्यात्सूतकाश्चोतं बहुशः संप्रदायवित् । जायेतारुणपीताभो नित्यमेव महौषधात् ॥ १४ ॥ अतिस्निग्धच्छविः सूतोऽरुणरूपो महाबली । यथा यथा ग्रसेद्ग्रासो भूनामद्रवसंयुतः॥ तथा तथा भवेत्सूतो दाडिमीकुसुमच्छविः ॥ १५ ॥ (टो. नं.)

अर्थ-मिट्टीके खिपरेमें पारेको डालकर नीचेसे अग्नि जलावे फिर उस पारदपर निंबूके रससे मिले हुए भूनाग (केंचुओं) के नवीन नवीन (ताजे) रसका चोवा डालता जावे तो इस महौषधिसे पारदका रंग लाल और पीला होजाताहै और लाल रूपका पारद चिकना और बली होताहै जैसे २ भूनागके रससे युक्त निंबूके रससे ग्रास जीर्ण होताहै अर्थात् चोवा भस्म होता जाता है तैसेही पारदका रंग अनारके फूलके समान लाल होता जाताहै ॥ १३-१५ ॥

कंकुष्ठादिगण ।

कंकुष्ठं हरितालं च गंधकं दरदं शिला । माक्षिकं सैंधवं तुल्यं नवसारं तथाभ्रकम् ॥ ॥ १६ ॥ सौवीरं गैरिकं काचं राजावर्तं विषत्रयम्[1] । प्रवालं यावकं पिंडं सिंदूरं सरसांजनम् ॥ १७ ॥ समुद्रफलकर्पूरं पीतकासीसवेतसम् । खर्परं किंशुकं रक्तं तापिका नूतनां नयेत् ॥ १८ ॥ कृत्वा चूर्णं कालिनीनां रजसा परिभावयेत । जपादाडिमबंधूकहेमपुष्परसैस्तथा ॥ १९ ॥ चांगेरिकाहस्तिशुंडीधूसरैः स्वरसैस्तथा । निशामुनिरसेनापि पंच पंच च भावनाः ॥ ॥ २० ॥ शृंगीविषेण च तथा दुग्धिकाक्षतजेन च । कुंडलीगणिकार्योत्थपुष्पेणैव च भावना ॥ २१ ॥ कंकुष्ठादिगणो ह्येष रसचिंतामणौ स्थितः । रक्तिकादशकं दद्याद्रसे खल्वनिवेशिते ॥ २२ ॥ कर्मणोनन्तरं पूर्वं निम्बूकद्रवमिश्रितम् । एवं रागयुतः सम्यक् प्रोज्ज्वलो निश्चलस्तरम् ॥ ॥ २३ ॥ सर्वकर्मसहः श्रीमान् वह्निस्थायी स्थिरप्रभः । हेमाभ्रतत्त्वप्रभृति ग्रसते निःप्रयासतः ॥२४॥ यद्यदारभते कर्म तत्तदेव करस्थितम् । अनेन सदृशं नास्ति रसरागकरः परः ॥ २५ ॥ असौ रक्तगणः साक्षात् क्षुद्बोधोतीव शोभितः । अवश्यं पीतनं शास्याद्वह्निं बुद्बुदयन् व्रजेत ॥ २६ ॥ (र. चिं., टो. नं.)

अर्थ-कंकुष्ठ (मुरदासंग), हरिताल, सिंग्रफ, मैनसिल, सोनामक्खी, सैंधानोंन नौसादर, अभ्रक, सौवीर, गेरू, काच (कचलोन) राजावर्त, तीनों विष (संखिया, सींगिया, कुचला,) मूंगा, जौका चून, सिंदूर, समुद्रफल, कपूर, पीले रंगका कसीस, वेत, रसखपरिया, ढाकके फूल, अनारके फूल इनका चूर्ण बनाकर फिर उनको कालिनी (इसका लक्षण परिभाषामें लिखा है) के रज अर्थात् मासिक धर्मके रक्तसे भावना देवे और जपा (गुडहर), अनार गुलदुपहरिया, और धतूरा इनके फूलोंके रससे भावना देवे तथा लौनिया और हाथी शुंडीके फूलोंके रससे भावना देवे और हलदी अगस्तके फूलोंका रस इन सबसे पांच पांच बार भावना देवे तथा सींगियाके काथसे दुद्धीके दूधसे कुण्डली (कचनार) गणकारी (मदनमादनी एक प्रकारका फूल) इनके फूलोंके रससे पांच पांच भावना देवे यह कंकुष्ठादिगण रसेंद्रचिन्तामणिमें वर्णन किया गयाहै खरलमें पारेको डालकर दश रत्ती पूर्वोक्त चूर्ण और नीम्बूके रसके साथ घोटे प्रत्येक कर्मके बाद पारदको नीबूके रसमें रक्खे तो पारद अत्यन्त निश्चल उत्तम रंगवाला सब कर्मोंके सहनेवाला अग्निस्थाई होता है और वह पारद हेम तथा अभ्रक सत्त्वकी द्रुतिको विना परिश्रमके ग्रस लेता है और इस पारदसे जो जो कर्म किये जाते हैं सब शीघ्र होजाते हैं इस रक्त गणके अतिरिक्त और दूसरा कोई भी रसराग करनेवाला पदार्थ नहीं है यह गण पारदकी भूखको साक्षात् बढाता है ॥१६-२६॥

[1] 'व्यूढं'का अर्थ हतं जानपडता है किन्तु संशय है ।

रंजन (गंध, खग, नवसादर तैलसे)

तैले नियमितं तप्ते तत्तु संस्थापितं पुनः । गंधखगनवसाराणां त्रयाणां शुष्कमर्दनात् ॥ ऐक्यमापादयित्वा त मृन्मये कोकिलोपरि । ऐक्यं संपादयित्वा तु सुतप्तं चीनपात्रगम् ॥ ॥ २८ ॥ तिर्यक्संस्थापितं वायोः स्रवेत्तैलं नियोजयेत् । रसे संस्थापितं तप्ते स्वल्पं स्वल्पं यथा पचेत् । रसाद्दशगुणं तेन रंजितो जायते रसः ॥ २९ ॥ (जंबूसे प्राप्त पुस्तक०)

अर्थ-तपे हुए तैलमें नियामन संस्कार किये हुए पारदको रक्खे और गंधक, फिटकिरी, नवसादर इन तीनोंको सूखा ही पीसकर खिपडेमें रख और कोयलोंकी आंचमें रख गलाकर सबको एक करलेवे फिर उस पारद सहित तैलके पात्रको टेढा करके तैल निकाल लेवे तदनंतर उसमें गंधक फिटकिरी और नौसादरके किये हुए चूर्णको थोडा डाल कर पकावे इस प्रकार दशगुणा पकानेसे पारद रंजित होता है ॥ २७-२९ ॥

रंजन ।

पारदं शुद्धमादाय तैलसर्षपजं तथा । स्थालिकायां सुसंतप्ते तैले वस्त्रगतं रसम् ॥३०॥ दोलायंत्रेण संपक्वं जले संस्थापयेत्ततः । रसनामहदीपत्रौ समभागौ पेषितौ चिरम् । जले संयोजितौ पात्रे दीर्घास्ये तत्रनिक्षिपेत् ॥३१॥रंजितं तस्य रागेण पुनस्तैलेन लंबयेत् ॥ ३२ ॥एवं तच्छतधा पक्वं शतधा रंजितं तथा।तदा तज्जारणायोगे रसरागं नियोजयेत् ॥ ३३ ॥ (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

अर्थ-शुद्ध सरसोंका तैल लेकर और हांडीमें डालकर गरम करे फिर पारद (जो अग्निस्थाई हो) को कपडेमें बाँधकर दोलायंत्रद्वारा पकाकर जल (गरम) में डालदेवे तदनंतर रासन तथा महदीके सम भाग लियेहुए पत्तोंको पीसकर और समान जलमें घोलकर लंबे मुखवाले बासनमें डाल देवे फिर पारदको तैलमें पकाकर उस जल (रासन और महदीके पत्तोंसे बनेहुए) में सौवार बुझाव देवे तो पारद रंजित होताहै तब उस पारदको जारणामें उपयुक्त करे ॥ ३०-३३ ॥

---

१ खग कसीस (वा) माक्षिक यह शंका कि खग कदाचित् नवसादर (डकाव) वाची तो नहीं है, यहां निवृत्त होती है नवसादरके पृथक् कहनेसे खग कसीसवाची भी नहीं है यह शंका पहले ही निम्न लिखित जारण श्लोकसे निवृत्त होचुकी है । क्षारक्षोणीरुहाणां जारण संस्कारोक्त जिसमें कसीस, नरसार, पक्षि तीनों शब्द कहे हैं ।

चांदीमें रंजनकी आवश्यकता नहींहै ।

तारकर्मण्यस्य न तथा प्रयोगो दृश्यते ॥ ॥ ३४ ॥ (र. चि., र. रा. शं., बृ. यो.)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां पारदरंजनं नाम पंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

अर्थ-चांदी बनानेके योगमें रंजनकर्मकी आवश्यकता नहींहै ॥ ३४ ॥

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपंडितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया भाषाटीकायां पारदरंजनं नाम पञ्चविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

सारणसंस्काराध्यायः २६.

सारणलक्षण ।

सूते सतैलयंत्रस्थे स्वर्णादिक्षेपणं हि यत् । वेधाधिक्यकरं लोहे सारणा सा प्रकीर्तिता ॥ १ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-तैलसहित यंत्रमें रक्खे हुए पारदमें जो सुवर्ण आदि को डालकर जारण करना या धातुमें अधिक वेध करनेवाले संस्कारको सारण संस्कार कहतेहैं ॥ १ ॥

अन्यच्च ।

तस्य रागस्य ताम्रादिषु प्रायणम् ॥ २ ॥ (ध. सं.)

अर्थ-रंजित पारदका ताम्र आदि धातुओंमें जो पिलानाहै उसको सारण कहतेहैं ॥ २ ॥

सारणक्रिया ।

अथेदानीं प्रवक्ष्यामि वेधवृद्धेश्च कारणम् । महद्वृद्धिकरं यस्मात्सारणं सर्वकर्मणाम् ॥ ॥ ३ ॥ धूर्तपुष्पसमाकारा मूषाष्टांगुलदीर्घिका । मुखे सुविस्तृता कार्या चतुरंगुलसंमिता ॥ ४ ॥ मृन्मया सा विशुष्का च मध्येति मसृणीकृता । अन्या पिधानिका मूषा सुनिम्ना छिद्रसंयुता ॥ ५ ॥ शुद्धं सुजारितं सूतं मूषामध्ये निधापयेत् । मत्स्यकच्छपमंडूकजलौकामेषशूकराः ॥ ६ ॥ एकीकृत्य वसामेषां पचेत्तैलं च मारणम् । भूनागविट् तथा क्षौद्रं वायसानां पुरीषकम् ॥ ७ ॥ तथैव शलभादीनां महिषीकर्णयोर्मलम् । रसस्य षोडशांशेन

चैतेषां कल्कमाचरेत् ॥ ८ ॥ पटेनगालितं कृत्वा तैलमध्ये नियोजयेत् । सारणार्थं कृतं तैलं मूषामध्ये निधापयेत् ॥ ९ ॥ जीवं च कल्कमिश्रं हि कृत्वा मूषोपरि न्यसेत्।पिधानद्वितयेनैव मूषावक्त्रं निरुंधयेत् ॥ १० ॥ भस्मना लवणेनैव मूषायुग्मं निरुन्धयेत् । भूमिकायांस्त्रिभागं हि खनित्वा वसुधां क्षिपेत् ॥ ११ ॥ तदूर्ध्वं ध्मापयेदग्निं दृढांगारैः खराग्निना । एवं तु जारितं बीजं रसमध्ये पतत्यलम् ॥ १२ ॥ बंधमायाति सूतेन्द्रः सारितो गुणवान् भवेत । प्रथमं जारितश्चैव सारितः सर्वसिद्धिदः॥१३॥ न जारितः सारितश्च करो वेधकरो भवेत । गुरूपदेशतां दृष्टं सारणं कर्म चोत्तमम् । हस्तेन भवयोगेन कृतं सम्यक् श्रुतं नहि ॥ १४ ॥ (ध. सं.)

अर्थ-अब सारण कर्मको कहतेहैं अब हम वेध संस्कारकी वृद्धिके कारणको कहेंगे क्योंकि समस्त कर्मोंकी वृद्धिका देनेवाला सारण कर्महै धतूरेके फूलके समान आठ अंगुल लंबी जिसका मुख चार अंगुल चौडा हो मिट्टीकी बनीहुई बीचमें अत्यन्त चिकनी हो और उसी मिट्टीका बनाहुआ चिकना तथा गहरा छेदवाला ढकना हो उस मूषामें शुद्ध जारित (बीजजारित) पारदको रख देवे फिर मछली, कछवा, मेंडक, जोंक, मेंढा, सूकर, इनकी चर्बीको इकट्ठी कर सारण तैलको पकावे और भूनाग (केंचुओं) की विष्टा शहद और कौएकी बीट, तथा शलभ (टीडी) की बीट और भैंसके कानका मैल इन प्रत्येकको पारदसे षोडशांश लेकर कल्क बनावे उस कल्कको कपडेमें छानकर तैलमें डालदेवे सारणसंस्कारके लिये कियेहुए इस तैलको मूषामें पारेके ऊपर भरदेवे तथा उस तैलके ऊपर पूर्वोक्त कल्कमें बीज (सोनावगैरः) को रस ढकनेसे ढाक नोंन तथा राखसे संधिको लेहसदेवै तदनंतर तीन भाग मूषाको धरतीमें गाडकर ऊपरसे कोयलोंकी आंचसे तेज धोंके इस प्रकार जारित बीज पारदमें गिरपडताहै तो पारद बंधनको प्राप्त होताहै एवं सारित पारद गुणवान् होताहै प्रथम जारित करे फिर सारित करे तो पारद अधिक गुणवान् होताहै तथा जो पारद न तो जारित किया हुआ हो और न सारित कियाहुआ हो तो वह वेधशक्तिसे रहित होताहै यह सारण कर्म गुरुके उपदेशसे स्वयं अपने हाथोंके द्वारा किया है केवल सुनाही नहीहै ॥ ३-१४ ॥

सारणा तैल ।

द्विपलं तिलतैलं स्यात्तत्तुल्याजवसा तथा । विधिना साधितं तैलं सारणात्तैलमुच्यते॥ ॥ १५ ॥ (र. प.)

अर्थ-दोपल बकरेकी चर्बी और दो ही पल तिलका तैल हो इन दोनोंको चूल्हेपर चढाय मंदाग्निसे ऐसा पकावे कि वे दोनों मिलकर एक होजावें बस इसीको सारणतैल कहते हैं ॥ १५ ॥

अन्यच्च ।

द्विगुणे रक्तपुष्पाणां रक्तपीतगणस्य च । क्वाथे चतुर्गुणं क्षीरं तैलमेकं सुरेश्वरि॥१६॥ ज्योतिष्मतीकरंजाख्यकटुतुम्बीसमुद्भवम् । पाटलाकाकतुंडयाह्वमहाराष्ट्रीरसैः पृथक् ॥ ॥ १७ ॥ भेकशूकरमेषाहिमत्स्यकूर्मजलौकसाम् । वसया चैकया युक्तं षोडशांशौ सुपेषितैः ॥ १८ ॥ भूलतामलमाक्षीकद्वन्द्वमेलाख्यकौषधैः । पाचितं गालितं चैव सारणातैलमुच्यते ॥ १९ ॥ (र. चिं.)

अर्थ-लाल फूलोंका पीतगण तथा रक्तगणोंके दूने काथमें एक भाग तैल और तैलसे चौगुना दूध डाले फिर मालकाँगनी और कंजेकी मींग और कडवी तुंबीके बीज, पाढल, कौवाटोढी और गजपीपल इनके प्रत्येकके रसको थोडा २ डालदेवे और तैलसे षोडशांश २ मेढक, शूकर, मेंढा, बकरा, मछली, कछुआ, और अनेक जलवासियोंकी चर्बीको तैलके समान लेकर डालदेवे और केंचुएकी मिट्टी शहद और जोडेकी मिलानेवाली औषधियें इन सबको तैलसे षोडशांश २ लेकर पीसकर तैलमें डाल कर पकावे फिर छानकर रख लेवे तो यह सारण तैल कहलाता है॥१६-१९

प्रकारान्तरसे सारण ।

सूते सतैलपात्रस्थे स्वर्णादिक्षेपणं हि यत् । वेधादिकारकं लोके सारणा सा प्रकीर्तिता ॥ २० ॥ (ध. सं.)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां सारणसंस्कारकथनं नाम षड्विंशोऽध्यायः॥ २६ ॥

अर्थ-अब और प्रकारके सारण संस्कारको कहते हैं-तैल सहित पात्रमें रक्खे हुये पारदमें जो सोने आदिका डालना है उसको लोकमें सारण संस्कार कहतेहैं ॥ २० ॥

भावार्थ-बकरीकी चर्बी ८ तोले, तिलका तैल ८ तोले इन दोनोंको मिलाकर एक पात्रमें रक्खे फिर उस पात्रको दो घडीतक अंगारोंपर रख और उतारकर छान लेवे यह सारण नामका तैल तय्यार होगया । अब एक मूषामें थोडा सा सारण तैल डाल कर उसी पात्रमें जारण पर्यन्त संस्कार कियेहुये पारदको डाले फिर अन्य मूषामें सुवर्ण और कुछ कलमी शोरेको डाल और गलाकर सारण तैलमें रक्खे हुये पारदमें डालदेवे फिर पारदसे अष्टमांश लियेहुये बिडके दो भाग करके एक भागको सूक्ष्म लोहेकी कटोरीमें रख और उसपर स्वर्णमिले हुये पारेको रख ऊपरसे जँभीरी या नीबूके रसको देकर फिर उसपर बिड डालकर दूसरी लोहेकी कटोरीसे ढक भस्ममुद्रासे मुद्रित करे तदनंतर अंगारोंसे भरे हुये

१ ऊर्णाटंकणगिरिज महिषीकर्णाक्षिमलइन्द्रगोपककैटकाः इति द्वन्द्वमेलापकौषधानि (र चिं., नि. र., बृ., यो., र-प)

अर्थ-ऊन, सुहागा, शिलाजीत, भैसकी आखोंका मैल वीरबहूटी केकडा ये द्वन्द्व मेलापक औषधियें हैं ।

खिपडेमें रख सुवर्णको गलावे फिर पारदसे अष्टमांश विड और सुवर्णयुक्त पारदको खरलमें डाल कर निम्बू या जंभीरीके रससे घोटकर गोला बनाय फिर पारदसे आधे बिडको बिडके ऊपर नीचे रख कर कच्छप यंत्रसे जारण करे और उसके जीर्ण होनेकी परीक्षा तोलनेसे करलेवे तात्पर्य यह है कि जितना पारद प्रथम सारणतैलमें डाला था उतना ही जारण करनेपर तोलनेमें उतर आवे तो समझना चाहिये कि स्वर्ण जीर्ण होगया पारेकी तोलसे भार अधिक हो तो जीर्ण नहीं हुआ समझना इसी प्रकार पारदसे दूने सुवर्णको कच्छपयंत्र द्वारा जारण करे इसकी क्रिया पूर्वोक्त समभाग सुवर्ण जारणके तुल्य समझनी चाहिये और ऐसे ही त्रिगुण सुवर्णको जारण करे सम भाग सुवर्णसे जारितकिया हुआ पारद सारित होता है और द्विगुण जारित कियाहुआ अनुसारित तथा त्रिगुण जारित किया हुआ प्रतिसारित कहाताहै—सारित पारद शतवेधी और द्विगुणजारित पारद सहस्रवेधी तथा त्रिगुण जारित (लक्षवेधी होताहै कछु मनुष्योंकी यह सम्मतिहै कि सारित पारद (सम भाग स्वर्ण जारित) सहस्रवेधी अनुसारित पारद (द्विगुण स्वर्ण जारित पारद) दस सहस्रवेधी तथा प्रतिसारित (त्रिगुण स्वर्ण जारित पारद) लक्षवेधी होताहै ।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहितायां भाषाटीकायां सारणसंस्कारकथनं नाम षड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

क्रामणसंस्काराऽध्यायः २७.

क्रामणाख्य सोलह संस्कार(क्रामणलक्षण)

कात्स्र्न्येन (पूर्णतया) ताम्रादिधातुषु सूतस्य प्रवेशकारकं क्रामणम् ॥१॥ (ध.सं.)

अर्थ—अब यहांसे क्रामण नामका सोलहवां संस्कार वर्णन करते हैं तहाँ प्रथम क्रामणके लक्षणको कहते हैं जिस विधिसे पारद तांबे आदि धातुओंमें पूर्ण रीतिसे प्रवेश करजावे तो उसको क्रामण संस्कार कहते हैं ॥ १ ॥

क्रामणके द्रव्य ।

तीक्ष्णं दरदेन हतं शुल्वं वा ताप्यमारितं विधिना ॥ क्रामणमेतत्कथितं कांतमुखं कांतमाक्षिके वापि ॥ २ ॥ ध. सं.)

अर्थ—सिंग्रफसे मारा हुआ तीक्ष्ण (फौलाद) तथा सोना मक्खीसे भस्म किया हुआ तांवा और सुवर्ण माक्षिकके साथ भस्म किये हुये कान्त आदि समस्त लोह इन तीनोंको क्रामण कहते हैं ॥ २ ॥

क्रामण ।

शिलया निहतो नागो वंगं वा तालकेन शुद्धेन ॥ क्रमशः पीते शुक्के क्रामणमेतद्धि संदिष्टम् ॥ ३ ॥ (र. चिं, र.रा.शं.बृ. यो.)

१ पीते स्वर्णे इत्यादि । शुक्के—रूप्ये इ. र.रा. शं० ।

अर्थ—मैनसिलसे भस्म किया हुआ नाग (सीसा) और शुद्ध हरितालसे भस्म किया हुआ वंग ये दोनों सुवर्ण तथा चांदीके बनानेमें क्रामण कहे हैं ॥ ३ ॥

प्रकारान्तर क्रामण ।

अथ शुद्धमनःशिलामारितो नागः शुद्धतालेन मारितं वंगं मनुष्यरुधिरं काकविष्टा महिषीकर्णनेत्रमलं नारीदुग्धं हिंगुलमित्यादिमनुष्यरुधिरादीनां व्यवायीसंज्ञापि ॥ ४ ॥

अर्थ—अब अन्य प्रकारसे क्रामणको कहते हैं शुद्ध कीहुई मैनसिलसे भस्म किया हुआ नाग (सीसा), अशुद्ध हरितालसे भस्म किया हुआ वंग, मनुष्यका रक्त, कौवेकी बीट, भैंसके कान और नेत्रोंका मल, स्त्रीका दुग्ध तथा हिंगुल ये क्रामण तथा व्यवायी औषधि हैं ॥ ४ ॥

बलवानपि सूतो योगात्संविशति लोहानि॥ सिद्धैर्योगवरैर्नो विशति क्रामणे रहितः॥५॥ शिलया निहतो नागो वंगस्तालेन शुद्धेन॥ क्रामण पीते शुक्के क्रामणमेतत्समुद्दिष्टम् ॥ ६ ॥ (धं. सं.)

अर्थ—सारणान्त संस्कारोंसे संस्कृत किया हुआ भी पारद क्रामण तथा व्यवायी औषधियोंके योगसे समस्त लोहोंमें प्रविष्ट होता है। यदि क्रामण औषधियोंसे रहित हो तो वह पारद अनेक सिद्ध योगोंसे भी धातुओंमें प्रवेश नहीं होताहै मैनसिलसे मारा हुआ सीसा तथा हरितालसे मारा हुआ रांग, सोना और चांदीके बनानेमें क्रामण मानाहै ॥ ५ ॥ ६ ॥

सम्मति—रसायन जाननेवाले महात्माओंका यह मतहै कि मनुष्यके रक्तसे, भैंसके कान तथा आंखोंके मलसे, स्त्रीके दूधसे, या कौवेकी बीटसे, पारदको घोट कर गले हुए तांबे तथा रांगमें डाल देवे तो सोना तथा चांदी हो जाती है अथवा तांबेके सूक्ष्म सूक्ष्म पत्रों पर पारद सहित क्रामण तथा व्यवायी औषधियोंसे लेपकर तपावे तो भी पारद वेधके करनेवाला होता है अर्थात् सोना बन जाताहै ।

क्रामणके द्रव्य ।

अथान्यानि क्रामणद्रव्याणि तंत्रान्तरोक्तानि यथा—

टंकणकुनटीरामठभूमिलतासंयुतं महारुधिरम् । क्रामणमेतत्कथितं लेपे क्षेपे सदा योज्यम् ॥ ७ ॥ (ध. सं.)

अर्थ—और भी क्रामण पदार्थ अन्य पदार्थोंमें लिखे हैं जैसे कि सुहागा, मैनसिल, रामठ (हींग), केंचुआ इन सबको मनुष्यके खूनसे भावना देकर चूर्ण करलेवे तो यह क्रामण लेप तथा क्षेपमें ग्रहण करने योग्यहै ॥ ७ ॥

क्रामण ।

विषश्च दरदश्चैव नृरक्तं कांतखर्परौ । इन्द्रगोपस्तु कुनटी मासिकं काकविड् भवेत् ॥ ॥८॥ माहिषीणां कर्णमलं स्त्रीदुग्धं टंकणेन

च । पात्यान्येव समांशानि कृत्वा द्रव्याणि मर्दयेत् ॥ ९ ॥ कस्त्वमेतदधश्चोर्ध्वं मध्ये सूतं निधाय च । काचचूर्णं ततो दत्त्वा वांधमूषागतं धमेत् ॥ १०॥ अनेन क्रामणेनैव पारदं क्रामयेत् क्षणात । इदं क्रामणकं श्रेष्ठं नंदराजेन भाषितम् ॥ ११ ॥ ताप्यसत्त्वं तथा नागं शुद्धक्रामणकं सदा । बीजानि पारदस्यापि क्रामणानि न संशयः ॥ १२ ॥ (ध. सं.)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां क्रामणसंस्कारोपवर्णनं नाम सप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥

अर्थ–सींगिया, हिंगुल, मनुष्यका रक्त, चुंबक, रस खपरिया, वीरवहुट्टी, मैनसिल,कौआकी बीट, (कौवेकी अवस्था एक महीनेकी हो तो उत्तम) भैंसोंके कानोंका तथा आखोंका मल, सुहागा इन सबको स्त्रीके दूधमें घोट कर कल्क वनावे तदनंतर कल्कके बीचमें पारदको रख कर उसके ऊपर पिसेहुये काचके चूरेको रक्खे (यह विधि अंध मूषामें करनी चाहिये अर्थात् अंधमूषामें थोडासा कल्क रक्खे फिर पारेको उसके बाद कल्कको और कल्कके ऊपर पिसेहुये काचेके चूरेको रक्खे) अंधमूषायंत्रद्वारा धोंके फिर इस क्रामणसे पारदको सिद्ध करे यह क्रामण नंदराजका कहाहुआहै सोनामाखीका सत्त्व और सीसा ये सदा क्रामण कहेहैं और जो बीजहैं वेभी पारदके क्रामण करनेवालेहैं अंधमूषा यंत्राध्यायमें लिखी हुईहै उसके अनुसार बनाना चाहिये ॥८–१२ ॥

सत्तरहवां संस्कार क्रामण (उर्दू)

सत्तरहवां संस्कार क्रामण यह है–फिटकिरीको तीन बार बकरीके पित्तोंमें तर करके और धूपमें सुखा कर सत निकाले और बीरबहुट्टी, बछनाग, कान्तलोहा, आदमीका खून, थूहरका दूध, रसक, सिंग्रफ रूपी साफ सबको सारथः के तेलमें खरल करले उसको क्रामण कहते हैं क्रामणको भी द० संस्कार करते वक्त डाले या उसपर लेप करदे । (खजानः कीमियाँ)

इति श्रीजैसलमेरनिवासि पण्डित मनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया भाषाटीकायां क्रामणसंस्कारवर्णनं नाम सप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥

वेधकर्मसंस्काराध्यायः २८.

पारदकी वेधक शक्ति ।

शतसहस्रलक्षाणां कोटिधूम्रादिवेधनम् । शब्दवेधं च धातूनां कुरुते साधितो रसः ॥ १ ॥ (र. पारि.)

अर्थ–सिद्ध किया हुआ रस सौगुने, हजार गुने, लाख गुने, तथा करोड गुने, वेधको और धूमवेध, शव्दवेधको भी करता है ॥ १ ॥

वेधलक्षण ।

व्यवायिभेषजोपेतो द्रव्ये क्षितो रसः खलु। वेध इत्युच्यते तज्ज्ञैः स चानेकविधः स्मृतः ॥ लेपः क्षेपश्च कुंतश्च धूमाख्यः शब्दसंज्ञकः ॥ २ ॥ (र. र. स.)

अर्थ–किसी द्रव्यमें व्यवायी औषधियोंके साथ जो पारदको मिलाना है उसको विद्वान लोग वेधकर्म कहते हैं और यह वेध कर्म लेप, क्षेप, कुन्त, धूम और शव्द इन नामास पांच प्रकारका है ॥ २ ॥

लेपवेधलक्षण ।

लेपनं कुरुते लोहं स्वर्णं वा रजतं तथा । लेपवेधः स विज्ञेयः पुटमत्र च सौकरम्॥३॥ (र. र. स.)

अर्थ–लेप करके पुट देनेसे धातुओंका सोना तथा चांदी बन जाताहै उसको लेपवेध कहते हैं और पुट शब्दसे यहां शूकर पुटका ग्रहण है ॥ ३ ॥

अन्यच्च ।

सूक्ष्माणि ताम्रपत्राणि कलधौतभवानि च। कल्केन लेपितान्येव ध्मापयेदन्धमूषया ४॥ शीतीभूतं तदुत्तार्य लेपवेधः स कथ्यते ५॥ (ध. सं.)

अर्थ–कंटक वेधी तांबे तथा चांदीके पत्रोंको कल्कसे लेपकर अन्ध मूषामें रखकर धोंके और ठण्ढा होने पर उतार लेवे उसको लेपवेध कहते हैं ॥ ४ ॥ ५ ॥

क्षेपवेधलक्षण ।

प्रक्षेपणं द्रुते लोहे वेधः स्यात्क्षेपसंज्ञितम् ॥ ॥ ६ ॥ (र. र. स.)

अर्थ–किसी लोहेको गलाकर फिर उसमें क्रामण संस्कार किये हुए पारदका प्रक्षेप करे उसको रसायनके जाननेवाले विद्वज्जन क्षेपवेध कहते हैं ॥ ६ ॥

कुंतवेधलक्षण ।

संदंशधृतसूतेन द्रुतद्रव्याहतिश्च या । सुवर्णत्वादिकरणं कुंतवेधः स उच्यते ॥ ७ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-जिस पात्रमें पारद रक्खा हो उसको सँडासीसे पकड कर उसमें गले हुए धातुको डाल देवे, इससे जो सुवर्ण आदि बनाया जाता है उसको कुन्तवेध कहते हैं॥७॥

अन्यच्च ।

नागं वङ्गं द्रावयित्वा ताम्रं चैव तथापरम्। पारदोऽन्यतमे पात्रे द्राविते संनियोजयेत्॥ कथ्यते कुंतवेधः स वेधकर्मविशारदैः ॥८॥ (ध. सं.)

अर्थ-सीसा, बंग, तांबा तथा अन्य किसी धातुको गला देवे उनमेंसे किसी एकके पात्रमें पारदको डालदेवे उसको कुन्तवेध कहते हैं ॥ ८ ॥

तरहकरना उर्दू (वेध वा कुंतवेध)

पिघली हुई धातुमें दवा अक्सीरीको कागजकी पुडियामें या दूसरे तरीकासे डालकर उसको किसी लकडी वगैरःसे चलावे ताकि धातुं गुदाजशुदः के हर जुजमें अकसीर मजकूर नफज करजावे । (अकलीमियां.)

धूमवेधलक्षण ।

वह्नौ धूमायमानेन्तःप्रक्षिप्तरसधूमतः । स्वर्णाद्यापादनं लोहे धूमवेधः स ईरितः॥९॥ (र. र. स.)

अर्थ-किसी सहायक औषधिमें अग्नि रख देवे जब धूआं निकलने लगे तब उसमें पारद डाल देवे उसके धूंएंसे धातुओंका जो सुवर्ण बनाताहै उसे धूमवेध कहतेहैं ॥ ९ ॥

धूमस्पर्शेन जायन्ते धातवो हेमरूपताम् । कलधौताद्यः सर्वे धूमवेधः स कथ्यते१०॥ (ध. सं.)

अर्थ-चांदी प्रभृति समस्त धातुओंका धूंवेके योगसे जो सुवर्ण वनानाहै उसको धूमवेध कहतेहै ॥ १० ॥

शब्दवेध ।

मुखस्थितरसेनाल्पलोहस्य धमनात्खलु । स्वर्णरूप्यत्वजननं शब्दवेधः स उच्यते११॥ (र. र. स.)

अर्थ-प्रथम जिसधातुका सुवर्ण बनाना हो उसे गलावे और जब वह गलजावे तब मुखमें पारदको रख कर फूंकनीसे धोंके तो सोना और चांदी होगी उसे शब्दवेध कहतेहैं ॥ ११ ॥

उद्घाटन ।

सिद्धद्रव्यः सूतेन कालुष्यादिनिवारणम् । प्रकाशनं च वर्णस्य तदुद्घाटनमीरितम् ॥ ॥ १२ ॥ (रसरत्नसमु०)

अर्थ-सिद्ध पदार्थमें जो मलिनता रही हो उसको दूर करनेकी अभिलाषासे उसमें जो पारद मिलाते हैं कि जिससे मैल दूर होजाय और साफ वर्ण होजाय उसे उद्घाटन कहते हैं ॥ १२ ॥

स्वेदन ।

क्षाराम्लैरौषधैः सार्धं भाण्डं रुद्ध्वातियत्नतः । भूमौ निखन्यते यत्नात् स्वेदनं संप्रकीर्तितम् ॥ १३ ॥ (रसरत्नसमु०)

अर्थ-क्षार और खटाईको मटकामें भर देवे और जिसको शुद्ध करना हो उसे भी भरकर मुख बन्द कर धरतीमें गाड देवे तो उसको भी स्वेदन कहतेहैं ॥ १३ ॥

वेधकर्म ।

अथ वेधविधानं हि कथयामि सुविस्तरम्। यस्य विज्ञानमात्रेण वेधज्ञो जायते नरः ॥ ॥ १४ ॥ धूर्ततैलमहेःफेनं कंगुणीतैलमेवच । भृङ्गतैलं विषं चैव तैलं जातीफलोद्भवम् ॥ १५ ॥ हयमारशिखातैलमब्धिशोषकतैलकम् । एतान्यन्यानि तैलानि व्यवायकरणानि च ॥१६॥ संस्कारैः संस्कृतः सूतः समस्तैलव्र्यवायिना । यामैकं मर्दितं सम्यक् पारदो वेधकृद्भवेत॥१७॥ (ध.सं.)

अर्थ-अब मैं उस वेधकी क्रियाको कहताहूं कि जिसके जाननेसे ही मनुष्य वेधज्ञ होजाताहै,धतूरेका तैल,खसका तैल, कंगुनीका तैल, जलभांगरेके बीजोंका तैल, सींगियेका तैल, जायफलका, कन्हेरका, कन्हेरकी जडका, समुद्रशोषका, ये तैल तथा अन्य क्रामण तैलोंको ग्रहण करे फिर संस्कारोंसे संस्कृत पारदको पूर्वोक्त क्रामण तैलसे एक प्रहरतक मर्दन करे तो पारद वेधकृत् होताहै ॥ १४-१७ ॥

लेपवेधाधिकारी पारदसे वेध करनेकी क्रिया ।

अत्यम्लितमुद्वर्तिततारादिष्टादिपत्रमतिशुद्धम् । आलिप्य रसेन ततः क्रमेण लिप्तं पुटेषु विश्रान्तम् ॥ १८ ॥ अर्द्धेन मिश्रयित्वा हेम्ना श्रेष्ठेन तद्दलं पुटितम् । क्षितिखगपटुरक्तमृदा वर्णपुटोयं ततो देयः॥१९॥ (र. चिं.,नि. र., र. रा. शं., बृ. यो.,)

अर्थ-अत्यन्त अम्ल वर्गमें मर्दित कर शुद्ध कियेहुए इसी लिये अत्यन्त शुद्ध चांदी तथा तांबेके पत्रोंपर पारद (जो लेप करनेयोग्य होगया है) का लेप कर पुट देवे फिर उस चांदी तथा तांबेके पत्रोंमें आधा भाग सोना मिल कर और पत्र बना कर पुटदेवे तदनंतर फिटकिरी, कासीस, नोंन, और गेरू इनके लेपसे इन पत्रोंपर लेप करके कोयलोंकी आंचमें तपावे तो वह उत्तम वर्णवाला सुवर्ण होताहै ॥ १८ ॥ १९ ॥

---

१ क्रामण संस्कारमें, व्यवायी क्रामणका पर्याय कहाहै वहां देखो ।
२ पुटः प्रायेण चुल्लिकाधस्तादस्य ।

दंड वा कुन्तवेधकी क्रिया।

चत्वारः प्रतिवापाः सलाक्षया मत्स्यपित्तभावितया॥ तारे वा शुल्बे वा तारारिष्टेऽथवा कृष्टौ ॥ २० ॥ तदनु क्रामणंमृदितः सिक्थकपरिवेष्टितो देयः ॥ अतिविद्रुते च तस्मिन् वेध्योऽसौ दण्डवेधेन ॥ २१ ॥

तदनुसिद्धतैलेनाप्लाव्य भस्मावच्छादनपूर्वकमवतार्य स्वाङ्गशैत्यपर्यंतमपेक्षितव्यमिति–

विद्धं रसेन यद्द्रव्यं पक्षाहं स्थापयेद्भुवि ॥ तत आनीय नगरे विक्रीणीत विचक्षणः ॥ २२ ॥ (र. चिं., र.रा. शं.,बृ. यो.)

अर्थ–मत्स्यपित्तसे भावना दीहुई लाखके चांदी तांबे तारारिष्ट तथा कृष्टिमें चार प्रतिवाप देने चाहिये तदनंतर अच्छी प्रकार उन पदार्थोंके गलानेपर क्रामण[1] तैलसे मर्दन किये हुये पारदको मोममें लपेट कर दंडवेधकी क्रियासे डाल देवे फिर राखसे ढककर ऊपर सिद्ध तैलसे तर करके उतार लेवे और स्वांग शीतल होनेपर उसकी रक्षा करतारहे जो धातु पारदसे वेधा गया हो उसको पन्द्रह दिवसतक धरतीमें गाडे और निकाल कर फिर नगरमें बेचनेको जावे यह काम विद्वानोंका है ॥ २०–२२ ॥

वेध जिसका कियाजाय वह धातु।

अष्टानवतिभागं च रूप्यमेकं च हाटकम्॥ सूतेकेन च वेधः स्याच्छतांशविधिरीरितः ॥ २३ ॥ चन्द्रस्यैकोनपंचाशत्तथा शुद्धस्य भास्वतः ॥ वह्निरेकः शंभुरेकः शतांशविधिरीरितः॥२४॥द्वावेव रजतयोनिताम्रयोनित्वेनोपचर्यते ॥(र.चिं.,र.रा.शं.,बृ.यो.,)

अर्थ–अट्ठानवे भाग चांदी और एक भाग स्वर्णको एक भाग पारेसे वेध करे तो उसको शतांश विधि कहतेहैं उनचास भाग चांदी और उनचास भाग तांबा और एक भाग सोना इनको एक भाग पारदसे वेध करे तो उसको वैद्य शतांश विधि कहतेहैं ये दोनों शतांश विधि रौप्ययोनि तथा ताम्रयोनिके नामसे प्रसिद्ध हैं ॥ २३ ॥ २४ ॥

सत्रहवां संस्कार वेध।

अब उस वेधको इस्तौरसे करना चाहिये ९८ हिस्सा चांदी साफ और एक हिस्सा सोना और एक हिस्सा वेध और एक हिस्सा क्रामक डालकर चर्ख दे उस वक्त बहुत बढका उमदा सोना बनजायगा उसको रीलसन वेध कहतेहैं और अगर पारेको हजार बार गंधक जारन किया हो तो वह हजार हिस्सेतक वेधेगा। (खजानः कीमियाँ)

जितना अधिक बीज जारन होगा उतनी ही अधिक वेध शक्ति जानो।

एवं सहस्रवेधादयो जारणबीजवशादनुसर्तव्याः ॥ २५ ॥ (बृ. यो., र. रा. शं.)

अर्थ–इसी प्रकार जारित बीजके अनुसार सहस्र वेध आदि पारद भी समझने चाहिये ॥ २५ ॥

पहले लोहपर परीक्षा कर पीछे देहपर प्रयोग करे।

लोहबन्धस्त्वया देवि यदुक्तं परमीशतः। तं देहबंधमाचक्ष्व येन स्यात्खेचरी गतिः॥ ॥ २६ ॥ यथा लोहे तथा देहे कर्तव्यः सूतकः सता। समानं कुरुते देवि प्रत्ययं देहलोहयोः। पूर्वं लोहे परीक्षेत पश्चाद्देहे प्रयोजयेत ॥ २७ ॥ (रसेश्वरदर्शन.)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां वेधकर्मसंस्कारवर्णनं नामाष्टाविंशोऽध्यायः॥२८॥

अर्थ–पार्वतीजी कहती हैं कि हे महेश्वर आपने लोहवेधको वर्णन किया अब उस देहवेधको वर्णन करो कि जिससे खेचरी गति होतीहै श्रीमहादेवजी कहने लगे कि हे पार्वती सज्जन पुरुष जिस प्रकार सोने चांदी बनानेके लिये पारा बनाताहै उसी प्रकार देह सिद्धिके लिये भी बनावे क्योंकि उत्तम रीतिसे सिद्ध किया हुआ पारद देह (रसायन) और लोह (सोना चांदीका बनाना) में समान विश्वासका करनेवाला होताहै अर्थात् धातुओंको सोना बनाताहै और देहको सुन्दर बनाताहै यही बात शास्त्रमें लिखीहै कि सिद्ध किये हुये पारदकी प्रथम लोहपर परीक्षा करे फिर अपने शरीरमें प्रयोग करे ॥ २६ ॥ २७ ॥

इति श्रीवेधकर्मसंस्कारवर्णनं नामाष्टाविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥

वेधकर्माध्यायः २९.

उत्तम वेधक प्रयोग विचारणीय लक्षप्रद।

कनकस्य रसेनैव रसमूर्च्छा प्रजायते। चूलिकालवणेनैव सर्वलोहानि जारयेत् ॥ ॥ १ ॥ कंटकारीरसेनैव सर्वकर्माणि कारयेत ॥ गंधकेन युतः सूतः सर्वरोगं निवारयेत ॥ २ ॥ (योगसार.)

---

[1] यहां क्रामण पाठ ठीक होगा क्योंकि क्रामणका अर्थ यहां नाग या वंगभस्म (देखो क्रामण संस्कार) हो सक्ताहै।

अर्थ-धतूरेके रससे पारद मूर्च्छित होताहै, खारी नोंनके साथ समस्त धातुओंको खाजाताहै, कटेरीकी जडके रससे समस्त कर्मोंको करताहै, और गंधकके योगसे समस्त रोगोंको नाश कर सकताहै ॥ १ ॥ २ ॥

ढाकतैलयोगसे वेधक पारद गंधककल्क पलाशबीजकल्प ।

तस्य बीजस्य यत्तैलं गंधकेन सुमर्दितम् । पारदं तेन कल्केन द्वात्रिंशत्कांचनं भवेत् ॥ ॥ ३ ॥ (औषधिकल्पलता.)

अर्थ-ढाकके तैलसे पारद गंधकको पीसकर अग्नि दे जलयंत्रमें ताँबेके पत्रोंपर लेप करै फिर ३२ बार गजपुट देवे तो सुवर्ण होगा ॥ ३ ॥

रससिंदूरको गंधकतैलसे मिलाकर तारपत्रपर लेपकर सोना बनानेकी क्रिया ।

रसं शुद्धं तथा शुद्धं गंधकं चैव तत्समम् । उभयस्य तु पादांशं नवसारं क्षिपेद्बुधः ॥ ॥ ४ ॥ आदाय चूर्णयेत् खल्वे मर्दितं दिवसत्रयम् । तच्चूर्णं काचकूप्यां तु क्षिपेद्भांडे च सैकते ॥ ५ ॥ वेष्टीभूतकृता देया विलिता वस्त्रमृत्स्नया। रंध्रं कृत्वा नवे भांडे भाडान्ते कूपिकां क्षिपेत् ॥ ६ ॥ तद्भांडेऽधोमानमात्रं लवणं पूरितं क्षिपेत्।तस्योपरि सैकतं चापूर्य्य वक्त्रं निरोधयेत् ॥ ७ ॥ विशोष्य वालुकायंत्रे प्रवेश्य च भिषग्वरः ॥ सिन्दूरं भवति क्षिप्रं पारदं कुंकुमप्रभम् ॥ ॥ ८ ॥ गंधकस्य तु तैलेन योजयेत्तारपत्रके॥ पुटत्रयाद्भवेत्स्वर्णमिति सिद्धैः सुनिश्चितम् ॥ ९ ॥ (काकचंडेश्वर-पृष्ठ नं. ११)

अर्थ-शुद्ध पारद पांच तोले ५, शुद्ध गंधक पांच तोले५ और नौसादर २॥ ढाई तोले इन तीनोंको खरलमें डाल तीन दिनतक घोटे फिर कपरौटी कीहुई शीशी (आतसी) में भर कर इस प्रकार वालुकायंत्रमें धरै कि हांडीके पेंदेमें छेद करै उस पर शीशी धरै फिर आधी हांडी भर कर पीसा नोंन फिर मुखतक बालूरेत भरदेवे और अग्नि लगावे अर्थात् एक दिनरातकी मन्द मध्य और तीक्ष्ण अग्नि लगावे तो सिन्दूरके समान रससिन्दूर होगा उसको गंधकके तैलके साथ पीस चांदीपत्रों पर लेप कर पुट (गजपुट) देवे इस प्रकार तीन पुट देनेसे सोना होजायगा इसमें सन्देह नहीं हैं ॥ ४-९ ॥

रससिन्दूर बनाकर टंकण तैलयोगसे वेधक ।

पारदस्य पलं ग्राह्यं शुद्धस्य विधिपूर्वकम् ॥ पिष्टं बद्धाथ वस्त्रेण पूर्ववच्च यथाक्रमम् ॥ अधरोत्तरगंधेन क्षिपेत्तन्मूषकोदरे ॥ श्वेतकुक्कुटरक्तेन टंकणक्षारवारिणा॥११॥रुद्धा वक्रं विशोष्याथ लिप्त्वा कर्पासमृत्स्नया वालुकापूर्णभांडेन चुल्ल्यग्नौ पाचयेत्सुधीः ॥ १२ ॥ यामाष्टौ जायते नूनं सिन्दूरारुणसन्निभम् ॥ स्वांगशीतलमादाय करण्डे विनिवेशयेत ॥ १३ ॥ शुभेऽह्नि वल्लमात्रस्य सेवनात्सकलामयान् ॥ जयेदाशु रसेन्द्रोयं विष्णुचक्रमिवासुरान् ॥ १४ ॥ लिप्त्वा टंकणतैलेन दत्त्वाग्नौ दुम्बरस्य च ॥ अल्पाग्नौ पाचयेच्छीघ्रं सुवर्णं जायते ध्रुवम् ॥ ॥ १५ ॥ जयापुष्पं समादाय रसं निष्कास्य यत्नतः ॥ विनिक्षिपेद्गले ताम्रे सुवर्णं जायते ध्रुवम् ॥ १६ ॥ (काकचंडीश्वरीतंत्र पृष्ठ नं १२)

अर्थ-प्रथम एक पल पारदको सुहागेके पानीसे घोटे फिर सफेद मुर्गेके रक्तसे घोटे इसके समान गंधकको लेवे फिर मूषामें कुछ गंधकको नीचे रक्खे और ऊपर पारा फिर गंधक देवे तदनन्तर मूषाके मुखको मूषा की ही मिट्टीसे बंद कर बालुकायंत्रमें रख आठ प्रहरतक अग्नि लगावे तो सिन्दूरके समान लाल वर्णका रससिन्दूर प्रस्तुत होगा, उसका तीनरत्ती सेवन करनेसे समस्त रोग दूर होतेहैं, अथवा इस रससिन्दूरको सुहागेके तैलमें पीसकर ताँबेके पत्रोंपर लेपकर थोडीसी आंचमें पकावे तो सुवर्ण होगा ॥ १०-१६ ॥

वेधक अंकोलतैलसे पारद अभ्रकका द्वंद्वकर ताम्रका सोना (अंकोल बीजकल्प)

तत्तैलमर्दितं सूतं घटद्वंद्वमवाप्नुयात् । तन्निष्कमात्रं विन्यस्तं ताम्रं च कनकं भवेत् ॥ १७ ॥ (औषधिकल्पलता.)

अर्थ-अंकोलके बीजोंसे पारदको मर्दन करै उसमेंसे चार माशे लेकर एक तोले गले हुए ताँबेमें गेरै तो सुवर्ण होजायगा ॥ १७ ॥

पारद और अभ्रकसे रांग आदिकी चांदी ।

बूटी लज्जालूके रसमें पारा १, पीत[1] अबरख १, कंकुष्ठी सेंधा १ तीनों धातु खलै पहर पांच ५ मासा १ सेर रांगाकी पाराकी सीसामें डारै तो रूपा होताहै ।

सुवर्णकर पहेली ।

गरुड भुजंग समकर सूता । पार्वती रस मेलो पूता ॥ रगडत रगडत होवे खार । कांचन होत ना लागे बार । जंगाल सिक्का

[1] यहां पीत अभ्रकका सत्त्व वा द्रुति लेना योग्य होगा ।

पारा गंधक रगडना बहुत-(जंबूसे प्राप्त पुस्तक.)

पारा, गंधक, सोना, सीसा, बूटी जग्यचंचली।

पात फूल मसुरीके अस-पहुप लाल पातम कुछ छोटे,लेकर रस तोला १ हिरण्य गंध तोला १ पारा १ सीस १ बातीलेपि आंच देइ तो हिरण्यं भवति। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक.)

पारद भस्मको कोटिवेधी करनेकी क्रिया।

मृतरसपलमेकं पंचनागं तु देयं कनकबलविमिश्रं ध्मातसूतावशेषम् ॥ विजयति शतवारं चैवमेव प्रकारं भवति स रसराजः कोटिवेधी क्रमेण ॥१८॥ (नि.र.)

अर्थ-पारद (जो कि बद्ध हो) की भस्म एक पल, नागेश्वर (जो कि किसी धातु और मैनसिल आदिके योगसे भस्म नहीं किया गया हो अर्थात् केवल जडीके योगसे फुका हो) पांच पल, सुवर्ण १ एक पल इन तीनोंको मिलाकर प्रकट मूषामें रख धोंकता जावे जबतक नाग और सोना न जल जावे तबतक धोंकता जावे जब कि पारद मात्र ही शेष रहे तब उतार लेवे इस प्रकार सौ दफै करै तो सहस्र वेधी पारद सिद्ध होजायगा ॥ १८ ॥

अकसीर तिलाई बजरियः गोली सीमाव व तिला (उर्दू)

सोना यानी तिला एक हिस्सा और पारा चार हिस्सा मगर मुसफ्फा हो दोनोंको सहक करे ताकि गोली होजावे फिर गोलीमें एक सूराख करके डोरा पिरोदे और एक पतली लकडीमें बांध कर देगगिलीमें लटकादे हांडीके तलेसे न टकरे किसी कदर ऊंचा रहे फिर गंधक डालकर चूल्हेपर सवार करके नरम नरम आंच करे जब वह गंधक यानी आँवलासार जलजावे उसे दूर करके और गंधक डाले इसी गंधकका धुआं निकलते निकलते गोली सीमावकी मिस्ल शिंजर्फके सुर्ख होजावेगी पस निगाह रक्खे फिर कसीस सुर्ख और सबज फिटकिरी हम वजन लेकर तेजाब कशीद करे मिस्ल खूनके सुर्ख निकलेगा फिर इससे एक हिस्सा और जर्दी बैजा मुर्ग तीन हिस्सा लेकर तेजाबको जर्दीपर डाले और रहने दे। जब एकजान जर्दी और तेजाब होजावे तो फिर तेजाब खींचे यह भी मिस्ल शिंग्रफके सुर्ख निकलेगा। पस तेजाबसे कदरे गोली मजकूरा बालाको सहक करके एक दिन बराबर और एक दिन नरम आंचसे तश्वियादे फिर उसको कदरे तेजाबसे दिन भर सहक करे और दूसरे दिनभर सहक करे और दूसरे दिन तश्विया करके और इस्तरह तश्किया और तश्विया करे, ताकि गोली पारा कायमुल्नार होजावे। पस चांदीका पतरा गरम करके कदरे उसी दवासे डाले अगर पिघल जावे और धुवां न दे पस अकसीर है वक्त जरूरत बारह माशे कजिये पर एक माशे तरह करें। वफज्लह खुदा उमदा तिला होगा (सुफहा १०अखबार अलकीमियाँ १६।१०।१९०६)

सीमाव और तिलासे अकसीर तिलाई (उर्दू)

नुसखा यह है अगर्चः यह नुसखा फार्सीमें था लेकिन उर्दू तर्जुमा करके लिखताहूं। आज गंधक जंगार हम वजन लेकर कुराअंबीक आतिशीमें अर्क निकाले। वर्कतिला तोला पारा मुसफ्फा चार तोला लेकर दोनोंको खरलमें डालकर सहक करे। खरल घिसनेवाला न हो जबकि उकद होजावे खरलसे निकाल कर लोहेकी कर्छीमें रखकर नरम आगपर तश्मिया करे यहांतक कि पारा और तिलामें तमीज न होसके। बिलकुल एक जात होजावें। आग इस कदर हो कि पारा सोनेसे अलहदा होजावे बादहू अर्क जो ऊपर लिखाहै तीन रोज तक थोडा थोडा डालकर खरल करे। बाद तीन रोजके एक शबकर्छी आहनीमें रख कर नरम भूभलपर तश्मिया करे। इस तरीकेसे तीन रोज खरल करे उसी अर्कमें और एक शब तश्मिया गरजे कि बीस मर्तबः तश्मिया होगा दो माहमें यह नुसखा तय्यार होगा इसका रंग मिस्ल सिंग्रफ सुर्ख होगा। इस शिंग्रफमेंसे दो हिस्सा लेकर बीस हिस्सा चांदीपर तरह करें पांच हिस्सा पूरे बाद नदावके बरामद होंगे खालिस शमस होगा (हाफिज रहीमबखश जबलपुर महल्ला ओमतीका पुल) (अखबार अलकीमियाँ १६।४।१९०७ सुफहा १४)

नुसखा अकसीरी तिलाई बजरियः कुश्तै उकद सीमाव व तिला(उर्दू)

सीमाव ६ माशेमें अगर तिला खालिस ६ माशे गलाकर डालदिया जावे तो हर दोका उकद होगा। उस उकदपर अफयून मिसरी ६ माशेका जमाद करके कोकनार यानी पोस्त सबज दस तोलेके नुगदेमें उकद मजकूर देकर एक मूली दो सेर पुख्तःको तराश कर उकद मयनुगदेके उसमें देकर खूब मजबूत कपरौटी कर और चार साइततक नरम आंचमें देदें इसी तरह तीन बार अमल करनेसे सीमाव व तिला कुश्ता होगा बादहू मिस एक तोला गलाकर कुश्ता तिलामेंसे एक विरंज तरह करें मिस यानी तांबेका कुश्ता होगा। इस कुश्ता अव्वल मिसमेंसे अगर एक तोला दूसरे तांबेपर एक विरंजकी मिकदार तरह करें वह भी कुश्ता होगा दूसरे दर्जेके कुश्ता मिसमेंसे अगर एक विरंज और एक तोला तांबेको चर्ख दे कि तरह करें वह भी कुश्ता होगा इस्तरह सात दर्जे तक एक एक विरंज कुश्ता दरकुश्ता करता चलाजावेगा सातवें दर्जेके कुश्ते मिसमेंसे अगर एक चावल मिसखालिसपर तरह करें कुदरत खुदाको इसका आमिल मशाहदा करेगा (सुफहा २१ किताब इसरारुल कीमियाँ २१)

नौसादरका तैल बना उससे पारद अग्निस्थायी कर उसमें $\frac{1}{4}$ स्वर्ण खिला वेधक करता है।

नौसादर लेकर सैंधव लवण महीन पीसकर नौसा-

दरके हेठ ऊपर दाब देके डमरूयंत्र करके १। पहर नीचे अग्नि देनी नरम, मध्य सवा पहर उपरि लग्नसत्त्व लेना नौसादर ५ तोले, लून१ पाव, सर्जतैल१५तोले, लोटासज्जी भिगो देनी (नौसादरसे त्रिगुण) उसका पानी नितार कर पकाना यह सर्जसत्त्व भया इस सर्जसत्त्वको चीनीके प्यालेमें रखकर निंबू निचोडते जाना जबतक तैल ना बने। जब तैल बनजाय तब सर्जतैलमें नौसादर सत्त्व मिलाकर पातालयंत्रसे दोनोंका तैल निकाल लेना रजतकर योग है । यह तैल पारद यथेष्ट लेकर उसमें दो बिंदु पावे पारद स्थिर होजायगा। चक्र खाजायगा इस स्थिर पारदके तोलेको२ माशे सोनेके वा चांदीके वर्क खिला देवे फिर वह पारद४तोले ताम्रपर १रत्ती पाना दोनों काम देगा । (जंबूसे प्राप्त पुस्तक.)

नौसादरसे शोरा, उससे गंधक, उससे पारा कायम कियाहै उससे वेधक योग ।

नौसादर१२तोले लेके२४तोले चूना अनुबुज्ज लेकर खरल करना खूब फिर मिट्टीदे हुक्के बिच पाके १आनी बिच चढाना आनीबिचों कडके सिक्का रूप होजावेगा कुट्टके पाणी बिच पाणा चूणा हेठ बैठजायगा नौसादर पानी बिच घुलजायगा कढाई बिच डालके पकालेना नौशादर कायम होजायगा । फिर शोरा कलमी लेकर टिंडमें तहबतह खट्टी बेरी दे पत्तरे तेरे दीदेके हेठ आगबालणी उपरों पत्तर पादे जारणा ।चरख खाजायगा ३हिस्से इस शोरेदे१हिस्सा कच्चा शोरा पाके खरल करना ।इस शोरेदे बराबर नौशादर पाके खरल करना या पक्के दोनों बिच २ तोले कचलूण पाके खरल करना खुश्क फिर बडे कडछे बिच पाके खाली नाल धोंकना खूब खूब चरख खाये जब खूब चरख खारहे तब उतार लेणा फिर कुट्टके मुश्कपूरका तैल मलके कढाईसें पाके आग बालणी तेल होजायगा तेल शीशी बिच पारखणा फिर छोटे लुहाडेमें पाके गंधक पादैणी ३प्रहर मंदाग्नि बालणी गंधक कायम होजायगी। तेल फिर पाकर रखणा फिर वह गंधक माशा तोले पारेपर पाणी बोते बिच पारा कायम होजायगा। उस पारेको तांबेपर मलके आग बिच पकाणा चांदी होजायगी अथवा पारा मलके उसपर मनशिल, सिंग्रफ, गंधककी चुटकी देणी ताँबा पीसक होजायगा उसको ताम्रपर वा रजतपर सुटो सुवर्ण होजायगा ।

कर्पूर तैल ।

मुश्क काफूर और बिरोजा सम भाग शीशेमें पाके धूपमें रखना तैल होजायगा (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

अकसीर तिलाई रोगन नौसादरसे सीमाव को कायम करके हरताल कायम व नौसादर कायमसे तय्यार कीहै (उर्दू)

नं०१-नौसादरका तेल निकालनेकी तरकीब यह है नौसादर १०तोलेको चूना आबनारसीदः पांच सेरमें देकर एक मिट्टीके वर्त्तनमें बंद करके पन्द्रह सेरकी आंच दें जब सर्द होजाय निकाललें फिर उसे एकखुले वर्त्तनमें दाखिल करके चहार चंद पानी दाखिल करदें चौथे रोज मुकत्तर लेकर पकावें जब तमाम पानी जल जायगा तो नौसादर तैल होजायगा ।

नं०२-अव्वल सीमावको पहले ईटके बुरादेमें एक पहरतक खरल करे ताकि वह स्याह कजलीसे साफ होजावे बादहू नौसादरके तेल दो तोलेमें नरम नरम आंचपर एक घंटेतक लगावटदें इस कदर अमलसे मुतहर्रिक कायमुलनार होजावेगा बादहू सीमाव मुजहर्रिक कायमुलनारको अपने मुंहके लब (थूक) के साथ डेढ घंटेतक खरल करें तमाम सीमाव नापिदीद और खाक होजायगा बादहू खाक शुदः सीमावको एक मिट्टीके वर्त्तनमें डालकर उसमें करीबन आध सेर अर्क घीग्वार दाखिल करदें वर्त्तनका मुंह गिले हिकमत करके पन्द्रह सेर पुख्तः पाचककी आंच देदें जब सर्द होजावे निकाल लें।सीमाव व रंग आस्मानी किसी कदर सफेदी लिये हुये कुश्ता होकर बरामद होगा ।

नं०३-यह कुश्ता सीमाव तवई दुनियांमें तनहाही अकसीरका काम देताहै दो चावल वजनवालाई या मस्कामें रखकर जेलके मरीजोंको एक हफ्ते अशरेतक खिलाएं बहुक्म खुदा मरीज तन्दुरुस्त हो जातेहैं वह यह है सुरअत रिक्कत,जिरियान, नामर्दी२ भूक न लगना वगैरः, नामर्दको २१ खुराकमें मर्द बनादेताहै ।

नं० ४-हूहव खवास नफ्स हरताल वरकी एक तोलेकी सालमडली लेकर बरंग नीमके पानी पचीस तोलेमें किसी मिट्टीके बर्तनमें भिगोदें और धूपमें रखदें जब तमाम पानी खुश्क होजावे हरतालको अलहदा करके दो कपरमिट करें जब कपरमिट खुश्क होजावे भूसी चावल ४० तो० की आंच दें मगर हवासे बचाकर जब सर्द होजावे निकाल लें हरताल चर्ख खाकर बरंग सुर्ख किसी कदर स्याही माइल बरामद होगी । २ यह हरताल चर्ख खुर्दः मरीज जिरियानको एक चावल बराबर रोजाना बालाई या मस्कामें खिलाना अकसीर हुक्म रखती है। पुराने बुखार व खांसीका तीन खुराकमें कलकुम्मा होजाताहै। मरीज दमाको हलुआमें रखकर देना ४ खुराकमें कामिल शफा होतीहै अगर एलुआमें खिलावें उम्र भर बवासीर नहीं होती ।

न०५-नफ्स-नौसादर चार तोला लेकर आध सेर पुख्तः (४० तोले) सफेदा काशगरीके दर्मियान देकर एकतावा आहनीपर रखकर चूल्हेपर रखदें नीचे नरम नरम आंच रोशन करे जब कहींसे सफेदा शिगाफ दे फौरन और सफेदा उस शिगाफ शुदः जगहपर डालदेना चाहिये। जब तमाम सफेदा सुर्ख होजावे आँच बंद कर दें और दर्मियानसे नौसादर निकाललें यह नौसादर सुर्ख शहाबके मानिन्द कायमुलनार होकर निकलेगा । अब हमारे पास नफ्स व रुह व जसद हर एक कायम शुदः मौजूद हैं सिर्फ तरकीब व तहलीलकी जरूरतहै ताकि हर सह यकजान होकर उनमें खासियत अकसीरकी पैदा होजाए ।

नं०६-तरकीबव तहलील कुश्ता सीमाव एक तोला,हडताल चर्खखुर्दः एक तोला, नौसादर सुर्ख कायमशुदः एक तोला हरसहको रोगन बैजा या अलीट के तेलमें दिनमें

---

१ इस कुश्तेको अहतियातसे अभी महफूज रक्खे ।

२ इस नुसखेके मुतअल्लिक जिस साहबने कुछ अदबियाज समझी हो वह वजरियः खत किताबत समझ सक्ताहै ।

(सुफहा ४-५ अखबार अलकीमियाँ १६ । ९ । १९०७)

और हकीम मुहम्मद फतहयावखां साहबने बयान किया कि अलीट रोगन अलसीको कहतेहैं ।

तस्किया और रातको नरम तश्विया दें तस्किया और तश्वियाका सात दफै अमलसे अकसीर तय्यार होजायगी बस बाकै होसकेगी।

नुसखा--अकसीर शमसीबजरियः नौसादर मूमिया--सीमाव कायमुल्नार शिजर्फ मूमिया सुर्ब व कलई तय्यार शुदः (उर्दू)

नौसादर देशी २० तोले सिरका अंगूरी १० तोले हर दोको खरलमें डालकर सहक करके कुर्स बनालें फिर प्याज नर्गिस २० तोले नुगदा बनाकर उसमें कुर्स मजकूर रखकर बारीक कपडा मलमलमें पोटली बनावें उसपर तीन तोले कच्चा सूत लपेट कर गिलोला बनाकर रखलेवें। बादहू हांडी गिलीकलांमें मुअल्लिक गिलोलाको लटका कर सरपोशसे बंद करके चूल्हेपर रखकर एक पहरतक नरम नरम आग जलावें।याद रहे कि हांडीमें पानी वगैरः कुछ नहीं होगा जब एक पहर पूरा हो तो फिर सर्द होनेके बाद नौसादरको निकालकर खरलमें डालकर सिरका अंगूरी १० तोलेमें सहक करके कुर्स बनाकर पियाज नर्गिस १० तोलेकी नुगदीमें रखकर बदस्तूर अव्वल एक प्रहरकी आंच देवे। इसी तरह सिरका अंगूरमें सहक करके ७ मर्तबे तक हांडी खालीमें बंद करके आग देना होगा। बाद सम्मुल फार सफेद २ तोले, मगज जमालगोटा २ तोले नौसादर तय्यार शुदः हरसह मिलाकर सहक करके कुर्स बनालेवें मगर सिरका न डालें बदस्तूर अव्वल २० तोले प्याज नरगिसमें देकर खाली हांडीमें एक प्रहरकी आंच देवें जब कि सर्द हो तो निकाल कर खरलमें डाल कर सम्मुल फार २ तोले, मगज जमालगोटा २ तोले मय नौसादर मजकूरः सहक करके कुर्स बनाकर नुगदा नर्गिसमें देकर कपडा बारीकमें बांधकर ३ तोले कच्चा सूत लपेट कर मौअल्लिक हांडीमें लटकाकर एक पहरतक आंच देवें यह अमल भी ७ मर्तबः पूरा करना होगा याद रहे कि हर मर्तबः सम्मुल फार व जमालगोटा व नर्गिस जदीद लेना चाहिये बस इस अमलसे सब अशियाए बशकल मोम होजायँगी। निशानी उसकी कि अगर एक सुर्ख मोमका एक तोला लोहेको लगाकर आग देवें तो लोहा कुश्ता होजावेगा तो बेहतर समझें वरनः दुबारा सम्मुल फार व जमालगोटा मिलाकर पकालेवें ताकि मुकम्मिल होजावे। अगर तय्यार हो तो फिर सीमाव मुसफ्फा २ तोले मोम तय्यार शुदः ६ माशे रोगन बिलावर ३ माशे खरलमें डालकर सहक करके दो प्याला चीनी खुर्दमें बंद करके रेग जंतरमें दोपहरतक नरम नरम आगदेवें जबकि सर्द हो तो निकाल कर दुबारह खरलमें डालकर सहक करके दोप्याले चीनी खुर्दमें बन्द-करके रेग जंतरमें दो पहरतक नरम नरम आग देवें जब कि सर्द हो तो निकाल कर दोबारह खरलमें डालकर मोम तय्यार शुदः ६ माशे रोगन बिलावर ३ माशे सहक करके बदस्तूर अव्वल प्याला चीनीमें बन्द करके दोपहर तक रेग जंतरमें पकावें यह अमल १२ मर्तबः तक पूरा करें सीमाव आला दर्जेका कायमुल्नार होगा उसको हिफाजतसे रक्खें फिर जंजफर रूमी दो तोले मोम नौसादर व सम्मुलफार वगैरः ६ माशे रोगन बिलावर ३ माशे हरसहको सहक करके बदस्तूर सीमाव कायमुल्नारके प्याले खुर्दमें बन्द करके रेग जंतरमें दो पहरतक पकावें इसी तरह जंजफरमें जदीद मोम नौसादर व रोगन बिलावर मिलाकर प्याला चीनीमें दो दो पहर तक रेग जंतरमें पकाना होगा यह अमल भी बारह मर्तबः तक पूरा करें तो जंजफर मूमिया होजायगा यह भी हिफाजतसे रक्खें बाद कलई ५ तोले, सुर्ब ५ तोले, सीमाव खाम ५ माशे, नौसादर खाम १० माशे पहले कलई व सुर्ब व सीमावको आग पर रखकर उकद करें फिर उकदको खरलमें डालकर उसमें नौसादर डालदें और एक तोला सिरका अंगूरी डाल कर सहक करके कुर्स बनाकर कूजः गिलीमें बन्द करके नीमसेर पाचकदस्तीकी आग देवें जब कि सर्द हो तो खरलमें डालकर सीमाव खाम ५ माशे, नौसादर १० माशे, सिरका एक तोला मिलाकर सहक करके कुर्स बना कर कूजेमें बन्द करके नीमसेर आग देवें इस्तरह सात मर्तबः अमल करें मगर याद रहे कि हर अमलमें सीमाव ५ माशे और नौसादर १० माशे, सिरका एक तोला मिलाकर आग देना होगा बाद सात अमलके यह भी हिफाजतसे रख लेवें फिर सीमाव कायमुल्नार तय्यार शुदः एक तोला, जंजफर मूमिया शुदः एक तोला, सुर्ब व कलई तय्यार शुदः ८ तोले खरलमें डालकर हमराह रोगन जमालगोटा ४ तोलेकी २४ प्रहरतक सहक करें बाद आतशी शीशी गिले हिकमत शुदःमें डालकर मुंह शीशीका कांच कागसे बन्द करके संधी विरंज व नमकसे बन्द करके फिर मटका गिलीकलांमें पूरी दो मनरेत डालकर दर्मियानमें शीशीको रख कर चूल्हे पर रक्खें और बारह पहर तक औसत दर्जेकी आग जलावें याद रहे कि लकडी बेरकी लेनी होगी जब कि सर्द हो तो निकालकर मुलाहिजा फर्मावें इन्शाअल्लाह अकसीर बरंग जाफरान तय्यार होगी सुफहा नं ११–१२ अखबार अलकीमियां १६।५। १९०७

सम्मति–यह नुसखा गुरु गोरखनाथ जोगीका है जो शखस अमल करे उसपर फर्ज है कि बाद तय्यारी पहले अमलमेंसे सवामन पुख्तःका रोट बनाकर उसपर फातिया हजरतअली करम अल्लाह वजहकी दिलाकर फिर अपने काममें लावें वर्नः बजाय फायदेके उलटा नुकसान होगा आयन्दे अख्तियार है और साथ उसके यह भी अर्ज है कि जंजफर मोमिया इसी तरकीबका सिर्फ एक सुर्ख खिलानेसे नामर्द जवान मर्द होजाता है मेरा तजरुबा शुदः है तय्यार करके ले।

अकसीर शमस बजरियः कुश्ता सीमाव मुसफ्फा व मुश्तही व गलीज उमदा काबिल तजरुबा (फार्सी)

हजरत हाजी वदी उद्दीन मुहम्मद खुशहाली जो बा कमालबुजुर्ग औलिया अल्लाह और तारकीन दुनियासे हुए हैं वह अपनी तसनीफ मुआलमुल्तिजारव मतबूआ बम्बई सुफहा १७ पर एक नुसखा शमसीको जबान फार्सीमें तहरीर फर्माते हैं। शमस अज खिदमत हजरत हबूयाफ्तः बियारद सीमाव गलीज कायमुल्नार कि दरप्यालः मसी

दाश्तः चूदह दादह बाशन्द व गलीज कर्दः बाशन्द या हर नौआ कि कर्दः बाशन्द अमादास बाशद लोबन्द न बाशद व अकर लोबन्द बाशद दर तूतिया सवज कर्दह बाशद व साबित नमूदः बाशद बिगीरद यकदाम पुख्तः बवियारद नमक संग साईदः शश आसार व बाव लेमूं बया तदतिज खमीर कर्दः दर चकरः जमीन निस्फ दाश्तः व दरां यक चकरा मिस्ल प्यालः कर्दः बरूए नमक निस्फ दाश्तः बालाई दे सीमाब बिदारद अमा सिन्धः बाशद करसनः मुसफ्फा वसाबित बाशद बादहू नमक दीकर कि निस्फ मांद औरा नीज खमीर कर्दः बालाई दे बिदारद व बालाई नमक मजकूर अन्द करेक बिपोशद अव्वल रोज आतिश दो आसार पाचक बालाई दे बिसोजद व दोयमरोज पंज आसार पाचक दस्ती बिसोजद व सोयम रोज दहआसार व चहारमरोज बिस्त आसार व पंजम रोजसी आसार शशमरोज एक मन हफ्तमरोज एक मन दहआसार बाला यानी सवामनरा आतिश गजपुट दिहद बादहू खूब सर्द कुनद बर आरद सीमाव मिस्ल खाक सफेद शिगुफ्तः बरायद मुजर्रिब अस्त बादहू यक बिरंज अजीं सीमाव पीर सदसालारा खुर्दन दिहद नौजवान शवद दहआसार तुआम बिखुरद व शहवत वेदह शवद कि वे जनयकसाइत नमांद व यक हुव्वावर यकदाम मिस तरहदिहद खुद अकसीर गर्दद वआँमिसरा बर यकदाम मिस दीगर तरह दिहद आँ तेज अकसीर गर्दद व अजाँ मिस बर मिस दीगर दहद आँ तेज कलनक गर्दद व हमचुना बर सद व हर मिस अकसीर बाशद बजाइ खुद व आँफरार यक-दाम अकसीर आजम बजाइ खुद बिमाँद मकर हयूं कि यकहुव्वः अजब मिरफ्तः बूद आँकदर कमबूद इल्लायक दाम असल कनक बजाइ खुद बिमाँद व सद दामदीगर नीज अकसीर बाशद ईजा बदल नजर कुनद व बतमाम तफहस दरयावद कि चः नियामत याफ्तः बाशद व चिः कंज बरदाश्तः बाशद कि तमाम कुञ्ज शाहानः दरबगल ईबबजन यकदाम बाशद व अज मिस सदम बर सस वा नुकरा तरह दिहद शम्स कामिल गर्दनद मुजर्रिब अस्त अमा फरार कायमुल्नार मुसफ्फा गुर्सनः औलाबदस्त आर बादहू सरई कार बरदारता साजगा गर्दद वास्लाम बाला-कराम एअजीजमें उवास्तम कि बर किताब सबूत व गलीज न नवीसम अम्मां बद तरीन व खलहेच न दीदम न बावदाँ आँरा नीज व कलम आबुर्दः दरीं किताब वा सूरतदज कर-देम चूं दरयाबी दरयावी दरजहां फिसाद व खराबी न कुनी ता व मिसल कारूँ मर्दूद दरगाह इलाही न शबी ईराविसाज व वअमल आरद व उलमायान आमिल व फुकरायान मुतवक्किल बिरसाँ व वेबगान व यतमिन रा खिदमत कुन व व अरवाह आँ हजरत सह दर काइनात व हर शवज जुमा उर्समे कर्दः बाश ता सहादत दारीन जहान बराइ खुद बरदारी मनाकि न कर्दम नफस खुदरा अजमू कर्दम कि सय्याद मुनकव्वुर अस्त बरनफसे खुद जबर व कहर कर्दम व फुकरा अख्तियार कर्दम् ताकि बर मजीद न शवद अजमुतावअत मुश्ताक न गर्दद ज्यादः चिः निगारद व स्लाम (सुफहा अखबार अलकीमियाँ १।१२।१९०६)

तरकीब गलीज कर्दन सीमाव लोबन्द व गैर लोबन्द कायम साबित व कायमुल्नार व मुसफ्फा व मुनका व गुर्सनः बियारद सीमाव वा खिश्त पुख्तः सरल कुनद बादहू तसईद कर्दः बिगीरद बादहू दर किबरियत महलूल सहक कर्दः तसईद कुनद मुसफ्फा शवद बादहू वा नौसादर व बछनाग व राई सहककर्दः चहार पास व शश्तः बिगीरद हमचुनां हफ्तबार या सहबार अमल कुनद बाहूदर बैजा खाली अन्दाख्तः व बालाएआँ मलहउलबोल पर कर्दः दरसरकीन अस्पताजा दरजमीन दफन कुनद बादहू बिस्तरोज बर आरद मुतहल्ल शुदः बाशद व अगर जेर देगदान बिस्तरोज दफन कुनद अकद व कायम गर्दद व पस वास्लाम व आगर आँहल रा आतिश बिदारद अम्मा दर कटोरी मिसदाश्तः आतिश दिहद व कलाइआँ नमक मजकूर नरम व आबी दिहद गलीज गर्दद व कायमुल्नार तलखुलबोल बियारद बोल सिबियां दहसाला हफ्त आसार दरकढाई अन्दाख्तः या दरतगार बिजोशानद आँचिः कफ बालाइ अबुरायद गिरफ्तः बर आबुर्द ताकि तमाम शवद बादहू दर आफ्ताब खुश्क कुनद नमक गर्दद बादहू हमीं नमकरा निगहदाद व दर-वक्त हाजत फारारा दर प्यालः मिसीदाश्तः बर आतिश बिदारद व बालाइआँ अजीं नमक दादः बिरवद ताकि वस्तः गर्दद गलीज व कायमुल्नार बाशद बरगीरद व बकार बन्दद (सुफा अखबार अलकीमियाँ १।१२।१९०६)

उर्दू तर्जुमा।

सीमाव गलीज और कायमुल्नार ख्वाह किसी तरकीबसे कियागया हो मगर नदरस हो तो बन्द न हो और अगर लोबन्द हो तो तूतिया सवजसे कियागया हो एक दिरम पुख्तः ले कि नमक संग छः सेर जो आब लेमू या तुरंजके पानीमें खमीर करलिया हो पहले जमीन खोदकर एक गढासा बना लेवे फिर उसमें निस्फ नमक मिस्ल सूरत कदः रखकर उसमें सीमाव मजकूरः रक्खे बादहू निस्फ बक़ाया नमक सीमावके ऊपर देकर मुह बंद करदें और बादहू रेगबालू की तह देकर छिपावें अव्वल रोज दो सेर पाचक दस्तीकी आगदें दूसरे दिन पंजसेर तीसरे दिन दससेर चहारम रोज बीससेर पंजमरोज तीस सेर छठे दिन एक मन सातवें रोज सवामनकी आंचदें जब बिलकुल सर्द होजावे बअहतियात तमाम सीमावको निकाललें सीमाव कुश्ता होकर बरंग सफेद बरामद होगा अगर इस सीमावमेंसे एक चावल खुराक किसी सद साल बूढेको दियाजावे वह जवान होजावेगा दससेरतक अनाजको हजम कर सकेगा और कुव्वत वाह इस दर्जे होगी कि बिदून जनके एकसाइत न रहसकेगा अगर रत्तीभर एक दिरम मिस पर तरह करे वह मिस अकसीर होगा मिस अकसीर शुदःमेंसे एक हुव्वः दूसरे मिसपर तरह करें तो उसे कलनक करदेगा इसी तरह एक सौ दर्जेतक इसी तरकीब व अमलसे यह जदीद ताँबा अकसीर होता चलाजावेगा सौवें दर्जेकी अकसीरमेंसे मिस या नुकरःपर तरह करदें शमस कामिल होगा मेरी ख्वाहिश थी कि इस नुसखेको दर्ज किताब न कियाजावे। फिर यह समझ कर कि छिपाना नुसखेका वखूलमें दाखिल है इस लिये लिख दियागया और तरकीब गलीज और कायम करने सीमावकी भी दर्ज कीगई जो शख्स इस नुसखेपर कादिर होजावे उसे खबरदार रहना चाहिये कि वह कोरून

की तरह मांदः दरगाह न होजावे बल्कि गुरबा और मसाकीन व बेवागानकी व मुहुताजानकी खबरगीरी रक्खे। (सुफहा ७ अखबार अलकीमियाँ १ । १२ । १९०६ ।)

उर्दू तर्जुमा गुजिश्तः अशाइतसे आगे।

तर्कीब गलीज़ करने सीमाव लोवन्द व गैर लोवन्द व कायम साबित व कायमुल्नार व मुसफ्फा व मुनक्का व गुर्सनः अव्वल सीमावको लेकर पुरानी ईटमें खरल करे फिर तसईद करे यानी जौहर उडादे अलावाद गंधकके महलूलमें सहक करके तसईद करे सीमाव मुसफ्फा होजावेगा इसके बाद नौसादर और बछनाग और राईमें जुदा जुदा खरल करलें इसी तरह सात बातें वार अमल करके एक खाली बैजा मुर्गमें बंद करदे और बकाया खाली बैजा मुर्गको तलखुल बोलसे पुर करके मुंह बंद करदें फिर घोडे की ताजी लीदमें जमीनके नीचे दफन करदें बीस रोजके बाद निकालें सीमावपर टूटेहुए निकलेगा अगर इसी सीमाव मुतहल्ल शुदःको चूल्हेके नीचे दफन करदें और बीस रोजके बाद निकालें उकद कायमुल्नार होकर बरामद होगा।

तरकीब तलखुलबोल।

दो सालः बचोंका बोल सातसेरके करीब लेकर कढाईमें डालकर आगपर पकावें वक्त जोश जो झाग आवे उसको लेकर अलहदा करते जावें जब झागका आना बंद होजावे तो नीचे उतारकर खुश्क करलें लेकिन धूपमें पस जिस कदर नमक बरामद होगा उसे अहतियातसे शीशीमें महफूज रक्खें वक्त हाजत सीमावको तांबेकी प्यालीमें रखकर आगपर रक्खें और ऊपर उसके इसी नमकसे एक तह देकर अमल करे सीमाव गलीज और कायमुल्नार होजाता है फिर इस सीमाव गलीज बकायमको काममें लावें (सुफहा ७ अखबार अलकीमियां १६ । १२ । १९०६)

नुसखा कमरी सीमावको मुसफ्फा कायमुल्नार व सुर्ख बनाकर उससे सीमावकी चांदी बनानेकी तरकीब (उर्दू)

(१) सीमाव ५ तोलेको खरलमें डालकर हमराह शीर मदार २० तोले सहक करे हत्ताकि सख्त होजावे बाद कूटें सीमाव मुसफ्फा शुदः निकलेगा।

(२) फिर फूफल एक सेर लेकर उसको कूटकर ५सेर पानीमें भिगो दे और तीन रोजके बाद चूल्हेपर रख कर नरम नरम आग जलावें जब कि तीसरा हिस्सा पानी रहे तो नीचे उतार कर मुकत्तर करलेवें फिर सीमाव मुसफ्फा शुदःको प्यालाचीनी गिले हिकमतकी हुईमें डालकर वह प्याला रेतमें रखदे जो पहलीसी ही तवागिलीमें डाल कर चूल्हेपर रक्खा होगा बादहू बेरकी लकडी लेकर उसकी नरम नरम आग जलावें और मुकत्तरका चोवः देते जावें जब कि तमाम पानी जज्ब होजावे तो प्यालेको नीचे उतार कर सीमाव निकाल कर खरलमें डालें जो कायमुल्नार होगा।

(३) रोगन बैजा मुर्ग करकनाथसे सहक बलेग करें लेकिन याद रहे कि बजाय दिस्ता पत्थरके चोब नारजीलसे सहक करना होगा ८ पहर खरल होनेके बाद सीमावको बारीक कपडा मलमल नं० २५ में बांधकर पोटली बनालेवें और एक रोज शीरमदारमें तर रक्खें फिर एक रोज रोगन कितानमें भिगो रक्खें बाद हांडी गिली गिले हिकमत शुद्धःमें तीन सेर पानी नारजीलका डालकर चूल्हापर रखकर पोटली बतरीक डोल जंतर लगाकर नरम नरम आग जलावें जबकि सब पानी सोख्तः हो तो नीचे उतार कर सर्द होनेके बाद मुलाहिजा फर्मावें सीमाव व रंग सुर्ख दानेदार बरामद होगा बादहू सीमाव मजकूर एक तोला सीमाव खाम १२ तोला खरलमें डालकर हमराह अर्क लैमूंके सहक करें एक घंटेमें कुल सीमाव बस्ता होजावेगा सबको जमा करके एक एक तोलेकी कुर्स बनालेवें और एक रोज सायेमें रक्खें बादमें जौहर नौसादर ८ तोले मकस बैना ८ तोला हमराह शीरमदार ८ तोलेके सहक करके नुगदा बनालें फिर कूजागिलीमें निस्फ नुगदा डालकर इसपर कुर्स सीमाव बराबर रखदें और बाकी निस्फको ऊपर डालकर बंद करें गिले हिकमत करनेके बाद खुश्क होने दें फिर एक सेर पाचक दस्तीकी अखगर आगमें रखदें जबकि सर्द हो तो निकाल कर कुठालीमें डालकर जेरुबाला सुहागा १ तोला, कुश्ता सम्मुलफार एक तोला देकर चर्ख देवें इन्शा अल्लाह खालिश नुकरा बरामद होगा जो बाजारी खुशीसे कबूल करते हैं। (अखबार अलकीमियां १ । ६ । १९०७)

अकसीर नुकरई बजरियः सीमाव कायम सम्मुलफार वगैरः कायम (उर्दू ।

सम्मुलफार सफेद दो तोला, सुहागा दो तोला, शोरा कलमी दो तोला, नौसादर दो तोला इन सबको जूदकोब करके एक कूजागिलीमें बंद करके मजबूत गिले हिकमत करके खुश्क करलें और दस सेर पाचककी आगदें सब अशियाइ चर्खखाकर और और कायम होकर पकेबर दीगरे दो टिकिया होकर तहनशीन होजावेंगी जब सर्द होजावे तो निकाललें सबसे ऊपर बरंग सफेद सुहागा वगैरःकी टिकी होगी इसको अलहदा करले और नीचे दर्ज रंगलिये हुये सम्मुलफार कायम शुदःकी टिकी होगी इसको अलाहदा रक्खे[1] सीमाव बाजारसे लाकर इसको पहले किसी तरकीब मारूफसे करले बादहू एक करीरकी लकडी जो एक या डेढ गजकी तूलमें हो और मुटाईमें भी खासी हो उसके एक तरफ खोद कर उसमें सीमाव मुसफ्फा डालें और खिलाको बुरादा करीरसे भरदें उसके ऊपर गिले हिकमत करके दूसरी तरफ आंचदें और गिले हिकमतवाले जर्फको जिस तरफ कि सीमाव रक्खाहुआ है बालूरेगमें दवाए रक्खें ताकि धूआं बंद रहे जब लकडी जल जल कर करीब गिले हिकमतके पहुंच जावे फौरन

१ कुश्ता सम्मुलफार चाहे किसी तरकीबसे तय्यार किया गयाहो काम आसक्ताहै।

आगसे अलहदा करलें और दर्मियानसे सीमाव निकाललें यह सीमाव बिलकुल कायमुल्नार होगा ख्वाहे सौमनकी आंचमें देदें हरगिज फरार न होगा सम्मुलफार कायम १ तोला सुहागा शोरा वगैरः कायम १ तोला सीमाव कायम १ तोला इन हरसह अजजाइको लैमूंके पानीमें बारह पहर खरल करके नरम भूभलका तश्विया दें अक-सीर तय्यार होजावेगी एक माशा दो तोलेपर तरहकरें तो कुदरत खुदाका जलवा नुमायां होगा । (सुफहा ९ अखवार अलकीमियां १६ । १२ । १९०६)

सीमाव और नुकरासे अकसीर नुकरई (उर्दू)

सीमाव मुसफ्फामें बारह पहर चोया सहदेई बूटीका दे फिर तीन रोजतक शीराकवाईमें स्याहमें जिसको हिन्दीमें गीदडदाख कहतेहैं हररोज चार चार पहर खरल करे बादहू वर्क नुकरा हम वजन उसके लेकर शीरा हुलहुल जर्द गुलमें चार प्रहरतक सहक करे फिर उसका कटोरा बनाकर नाल जंतरमें रक्खे हर किस्मके जंतरोंका वयान शेख सुलमान मंडवीके रिसाले हफ्त कोकवमेंहै और कटोरी मजकूरके चारों तरफ खारी नमक रखदे फिर शीरालैमू कागजी और हुलहुल जर्द गुलके शीरामें चार चार पहर अलहदा अलहदा कटोरी मजकूरको चोयादे अब यह कटोरा कलस यानी चूनाकी तरहले पीसक होजायगा उस्को इक्कीस पुट आफ्ताबीलंकी यानी छाल बेख नींबके इक्कीस दिनतक बदस्तूरदे बाद उसके हम-वजन कलसके वर्क नुकरा मिलाकर सहक करके गोली बांधे और फिर बारह पहरतक चोया शीरा लैमूंका दे अकसीर होजायगा एक तोला कलईको गुदाज करके एक हुव्वाः इस अकसीरसे तरहसे करे नुकरा होजावेगा इन्शा अल्लाह ताला (सुफहा २७८ किताव अलकीमियां)

इख्तलाफात अलकीमियांमें मातुलुंग यानी लैमू बिजौरेका चोया बजाय आववेख नीबके लिखाहै और बाज दीगर हफ अहवावमें बजाइ सहदेईके वकन और बजाय हुलहुल जर्दके हलैला जर्द और बजाइ कवाई स्याहके पोई तलख मुन्दर्ज है लेकिन अजजाइ जो तीनमें अख्तियात किये गयेहैं वह वा एतबार कसरतके हैं क्योंकि इस नुसखेके तजरुवे करनेकी इत्त-ला किसी मेम्बरने नहीं दी और न सदर मुकाम पर अंजु-मनके उसका तजरुवा हुआ (सफहा २५८ किताव अलकी-मियाँ)

अग्निस्थायी पारद चांदीयोग एक प्रकारसे चांदीका जारणहै ।

काही १ तोला, फिटकिरी १ तोला, शीशाल्लून १ तोला, शोरा १ तोला, मुश्क कपूर ६ माशे, नौसादर ६ माशे, चांदी बुरादा ४ तोले, पारा ८ तोले आठौ चीज खरल करना । १ बोतल सिरका अंगूरी सुखाणा जब खिपजावे तब पानी ठंडा पाके घोलके कढाहीमे पाके पकाणा जब थोडा पानी रहजावे तब उतार कर और पानी पाकर धोणा धोकर सब दवाई निकाल देणी चांदी पारा निकाल कर तोल लेनी फिर खरलमें पाकर पूर्वोक्त दवाई नई पाकर खरल करना ऐसे तीन बोतल सिरका तीनबेरमें खिपाणा यह पारद अग्निसह है (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

फौलाद योगसे वेधक पारद (एक प्रकारके लोहजारणका पर्याय है)

हरे फौलादसे द्विगुण नौसादर पाके सिरकेमें खरल क-रके चुल्हीमें दाबणा ४० दिन फिर वहांसे रक्त वर्ण निक-लेगा (पारा गंधक) प्रथम पारा फौलाद सम दोनों चीजें सिरकेमें खरल कर गंधक दोनोंके सम पाके खरल करना फिर आतिशी शीशीमे पाके कपडमिट्टी करके चूल्हेमे मूंद रख छोडना बीस रोज फिर कडवे गंधक पूर्ववत् पाक पूर्व-वत २ बोज एवं वारंवार वेधकृद्भवेत्(जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

नुसखा अकसीर अजसीमाव व मिस खरा तीन (फार्सी)

वायद कि वियारद खरूस सफेद रंग व ओंखरूस रा दर कफसे निगाह दारद व हर रोज कि करम खरातीन कि दर जबान हिन्दी आँरा कैचुआ गोयन्द हुमारामें खुरा-नद वाशन्द बताकीद नुमायद कि बगैर अज करम खरा-तीन चीजें दीगर न खुरद व बाद अज पंज अज शशमाह आँ मुर्ग रा बिकुश्तन्द दर सगदान आँखरोस पारा मिसमें बरायद कि आँ मिसरा कटोरी बिसाजद बाद अजां बिया-रद सीमाव हुमांकदर कि दर आँ कटोरी पुर शवद वक्तेकि खिचडी विपजन्द दरवक्त दमखुर्दम आँ कटोरी पुर सीमा-वरा दरदेग खिचडीमें गुजारद मुजर्रिव अस्त देखो पहेली किस्तम सुफहा २० सप्तसागर उर्दू (सुफहा ५५ किताव हाशिया जवाहर उलसिनात)

पारद बंधनवेधक पारदको भूनाग ताम्रकी कटोरीमें पकाकर ।

भूनागताम्रचषके निधाय सूतं कृशानुयोगेन ॥ तत्ताम्रजया दर्व्या प्रचालयेदाशु दुर्गतो यत्नात् ॥ १ ॥ नामाद्रुमफलनिवहे सहस्रशः कुक्कुटाख्यपुटपक्कम् ॥ बद्धं तन्माषमितं तोलकमितशुल्बवेधकं भवति॥ ॥ २ ॥ (काकचंडीश्वरीतंत्र.)

अर्थ-गिंडोवोंके ताँबेके प्यालेमें पारेको रखकर नीचे आग सुलगादे. उसी ताँबेकी कडछलसे वडी सावधानतासे उसे चलाता रहे, फिर उसे अनेक प्रकारके पेड और फलों-पर कुकुटपुटसे पकावे, जब वह बंधजाव तव एक माशा वह तोलेभर शुल्वका वेधक होताहै ॥ १ ॥ २ ॥

नुसखा अकसीर तूतियासे मुसफ्फा और सुर्ख तांबा बना उसको पारेमें आमेज कियाहै (उर्दू)

जिस कदर चाहे तूतियाको लेकर बारीक पीसले और कुशादः मुँह शीशेको गिले हिकमत करके इसमें भर दे और इसमें रोगन बेदअंजीर (अंडे) इस कदर डाले कि तूतियाके चार अंगुश्त ऊँचा रहे फिर इस शीशेको दो सार बकरीकी मेंगनीकी आगपर रक्खे जब रोगन खुश्क होजावे तो आगसे उतार कर सर्द करले और फिर पीसले और फिर दूसरे शीशेमें भर कर इस कदर उसपर शहद डाले जो तूतियाको ढांपले फिर दुबारा आगपर रक्खे जिसवक्त शहद भी खुश्क होजावे तो नीचे उतारले सर्द होनेके बाद तूतियाके हम वजन नमक लाहौरी मिलाकर पीसे और पानी डाल डाल कर साफ करे जब कि पानीमें शोरियत न रहे तो खुश्क करके खूब पीस डाले और मुखमरातसे तश्विया करे जिसवक्त सुर्ख मानिन्द शिंग्रफके होजावे उस वक्त हम बजन तूतियाके पारा साफ किया हुआ मिलावे और रोगन बैजा मुर्ग और नौसादर महलूलमें तशम्मअ करे तो तूतिया तय्यार है अब एक हिस्सा मिस और दो हिस्सा नुकराको बाहम मिलाकर गलावे जिसवक्त खूब चर्ख आनेको हो तो इस मुरक्कब तय्यार शुदःसे नीम जुज्व इसमें डालदें और कुदरत खुदाका मुलाहिजा फर्मावे (सुफहा २९ किताब अखबार अलकीमियाँ पन्द्रहरोजा १६।३।१९०५)

तरकीब रोगन बैजा।

अब हम रोगन बैजा मुर्ग बयान करते हैं जो अहल सितनकी ईजाद है जिस कदर चाहे बैजा लेकर उनको पानीमें खूब जोश देवे तीन चार जोशके बाद उनको नीचे उतार कर उनका पोस्त दूर करे और फकत जर्दी लेवे इस जर्दीको किसी कर्छी आहनीमें डालकर आगपर रक्खें जब जलनेके नजदीक उसपर तीन माशे नौसादर डाले और किसी चीजसे हिलाते जावे इसतरह मर्तबः बमर्तबः तीन माशे नौसादर डालना होगा गर्ज २३ अदद बैजा हों तो दो तोले तक नौसादर चर्ब करे सब तेल निकलकर बरंग सुर्खी माइल कर्छीमें जमा होजायगा किसी कपडेमें छान कर शीशामें निगाह रक्खे बस यही रोगन बैजा है खासकर बहुत उस्ताद लोग इसी तरकीबको पसंद करते हैं।

तरकीब नौसादर महलूल।

नौसादर महलूलकी तरकीब यहहै कि नौसादर एक हिस्सा नमक इन्दरानी निस्फ हिस्सा दोनों मिलाकर सलाया करें बादहू एक हांडीमें डालकर तीन मर्तबः तसईद करे तो नौसादर सफेद और साफ होजावेगा फिर दुबारा हांडी गिलेमें डालदे और गढा दोगज गहरा और गजभर चौडा नमनाक जमीनमें खोद कर इस गढेको लीदअस्पसे निस्फतक भरकर और वह हांडी इसमें रख कर बाकी गढा लीदसे भरदें और मिट्टी डालकर बंद करदें एक हफ्तेके बाद खोल कर देखे तो नौसादर मिस्ल पानीके होजावेगा इस वक्त कपडेमें छान कर शीशामें बंद रक्खें और वक्त जरूरत काममें लावें।

अग्निस्थायी पारदमें जस्त और गंधकयोगसे वेधक एकप्रकारका जस्तका जारणहै (स्वर्णकर योग)

पारा कायम दो तोले,जस्त२तोले, गंधक ६तोले तीनोंको निंबूके रसमें खरल करना दो पहर सुखाकर आतिशी शीशीमें पाकर ४ प्रहर आग दे फिर खरल फिर आग फिर खरल फिर आग ऐसे वारंवार करना जब दवाई रक्त वर्णकी होजावे तो फिर ताम्रपर रजतपर सुटना (स्वर्णकर्म)।

जस्तशोधन।

जस्त डालके नौसादरकी चुटकी देनी जस्त शुद्ध हो जायगा वह जस्तपाणा।

गंधकशोधन।

गंधक ढालके दुग्ध बिच पाणा ७ वार और दुग्ध बदलते जाणा गंधक शुद्ध होजाताहै वह गंधक पाणा।

पारदबंधन।

पारा कायम इसतरह करना पारा ४ तोले बोढका दुग्ध २० तोले दोनोंको खरल करना और इमामदस्तेमें पाकर खूब कूटना अनवरत ४ प्रहर फिर उसको शीशीमें डालकर बालुकायंत्रमें आग देनी मीठी दुग्ध जलजायगा और पारा स्थिर होजायगा। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

रोंगन सीमावकी तरकीब (उर्दू)

चूना संगी आठ हिस्सा, नौसादर मसअद १० हिस्सा दोनों बारीक पीसकर दो कटोरियोंके दर्मियान जिनको गिलेहिकमत करलियाहो सेर भर पाचक दस्तोके बुरादेकी आग दे बादहू फिर दो हिस्सा नौसादर इसमें मिलाकर दुबारा बदस्तूर आग दे इसी तरह हर बार दो हिस्सा नौसादर इजाफा करके आग दियाकरे यहांतक कि नौसादर चूनेसे दुगुना होजावे बादहू शीशी आतिशीमें रख कर मजबूत गिले हिकमत करके गिलखन यानी भाडमें दफन करे बाद पन्द्रह दिनके निकाले तेजाब महलूल होजावेगा बादहू संखिया सफेद एक हिस्सा लेकर तेजाब मजकूरमें खरल करके और फिर बदस्तूर गिले हिकमत करके भाडमें दफन करे बारहदिनके बाद निकाल कर एक हिस्सा सीमाव लेकर उस महलूलमें इस कदर सहक करे कि यकजान होजावे कमसे कम एक पहरतक सहक करना चाहिये जबतक सीमावमें महलूल जज्ब न होजावे और सीमाव शफ होजावे बादहू उसको शीशीमें रखकर बदस्तूर गिले खवमें दफन करदे बारह दिनके बाद निकाले कुल सीमाव रोगनकी तरह होजावेगा यह रोगन जुजामवर्स, बजअ मुफासिल, सिल तपेहाइ मजसिना, दमा, खांसी, कोहना, कुव्वतवाह, इमसाक, लफूजके वास्ते हमराह बदरकाके अजीमुलतफा है और कहतेहैं कि मिस और कलईपर भी काम देताहै लेकिन हनोज इसका तजरुवा नहीं हुआहै (हुसीनुद्दीन अहमद सेक्रेटरीकैमिकल सोसाइटी अज जौनपुर) (सुफहा नंबर २९ व ३० अखबार अलकीमियां।१६।५।१९०५)

अकसीर शमसी आहनका रोगन तय्यार कियाहै (उर्दू)

जज्जाज (फिटकिरी) एक हिस्सा, सोहनमक्खी एक हिस्सा, जौहर नौसादर एक हिस्सा, बुरादा आहन, ७हिस्सा, तरनेख बरकी एक हिस्सा,गंधक एक हिस्सा इन जुमले अजजाको जुदागाना बारीक पीसकर सबके हमवजन शोरा कल्मी शामिल करके तमामको कुंजदके मुकत्तर या दर्फके पानीसे चार प्रहर खरल करके एक बैजा मुर्ग खालीमें बंद करके खोल बैजा बतौर सरपोश ऊपर देकर उसमुर्गीके नीचे रक्खे जिसके नीचे अंडेहों जब वह बच्चे निकालले उस बैजाको अलहदा करले दरियानसे महलूल पानी बरामद होगा इस पानी हलशुद:को किसी कुलिया रोगनीमें डालकर और मुंह कुलियाका बंद करके नरम आंचदे वह पानी बस्ता होकर एक जिस्म होजायगा इस मुजस्सिम बस्त:शुद: पानीके जेरुवाला अस्तख्वाबकर बारीक करके देगचीमें रक्खे किसी कदर लहम देगचोमें डालदेना चाहिये चार पहरतक देगचीके नीचे आग जलावे बाद चार प्रहर आग सर्द करके जब देगची खोल कर देखे तो सुर्ख रंगका रोगन बरामद होगा उसको कमाल अहतियातसे शीशीमें डाल रक्खे. बसौका जरूरत रोगनमेंसे कर्स रसासपर चन्द नुकता लगाकर पारद जोगी गुठालीमें उसास बंद करके आंच देदें फिर आंचसे अलहदा करके सर्द पानीमें बुझावदें जरे खालिस दस्तयाव होगा (सुफहा २७–२८ किजाव अखवार अलकीमियां १६।३।१९०५)

अकसीर शमसी बमजिब साखी २६ शिंजर्फको लोहा और सोना देकर मुरत्तिब कियाहै (उर्दू)

हमारे मुअज्जिज दोस्त सय्यद लताफतहुसेन साहब रजवी शहदी रईस बरेलीने उसूल मगरबीसे साखी नं; २६ किताब अलकोमियांके तजरुबेके वक्त षंढ शिंग्रफको इस्तरह कुशादा करके अकसीर आजम बनायाहै कि शिंग्रफ कांयमुल्नारसे चहारम बुरादा जर और बुरादा जरके हम वजन बुरादा आहन खाम लेकर तेजाब फारूकीमें महलूल किया हत्ताकि रंग उसका मिस्ल खूनके होगया बादहू इस महलूलको शिंग्रक मजकूरमें मिलाकर खफीफ तश्विया भूभलमें दिया बादहू इसमें सम्मुलफार नौशादर छठा हिस्सा मिलाकर रोगन मूए इन्सान और रोगन जर्दी बैजा मुर्गमें तश्किया देकर मुसम्मा किया यहांतक कि कुल दवा मजकूर सुफहापर रवां हुये बादहू अकद करके एक हुव्वा एक हुव्वा दवाई मजकूरका तोले भर नुकरापर वहालत चर्ख तरहकिया जरखालिस नं० अव्वल होगया (हसीनुद्दीन अहमद) (सुफहा ९ व १० किताब अखबार अलकीमियां १६।३।१९०५)

शिंग्रफकी भस्मसे चांदीका सोना एक प्रकारके तेजाबसे काम लेता है ।

शोरा कलमी १ तोला, जर्दकाही १ तोला, लोटा सज्जी १ तोला, नौसादर १ तोला, लोहचूर्ण १ तोला, फिटकिरी १ तोला, सुहागा १ तो०, आतिशी शीशेमें निंबूका रस आध सेर पक्का पाकर पूर्वोक्त सातों चीजें पृथक् २ पीसकर रसमें मिलादे क्रमसे एक मिलजाय तो दूसरी पाणी फिर शीशी धूपमें रख छोडनी जबतक आध सेर कच्चा रहै फिर बालादी गुच्छी रखके रस निकाल लेना आधसेर कच्चा निकलेगा फिर शिंग्रफ तोले तोले लेकर लोहेकी प्यालीमें रखकर कोयले आध सेर कच्चा लाके चोया देना सिंग्रफ काला होगा फिर नागफणी दी जड २ सेर कची लेकर उकरके सिंग्रफ रखके ऊपरसे उसीकी टाँकी देके मेंथरे घोटके लेप करना सुखाकर टोये विच पंज सेर पक्के गोहेकी आग देणी, कायम होवेगा, तोले चांदी पर १ रत्ती द्रवित पर पाणा ३ माशे सोना भी मिला देणा । (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक.)

जातुलरगूहके मानी (उर्दू)

आँवलासार और चूना आवनारसीद: हमवजन लेकर दोनोंको मिलाकर मसावी पानीसे पकावे और नीचे उतार ले जब कुल अजजा तहनशीन होजाएं तो नितारले,इसीका नाम जातुलरगूह है यह पानी सोमावको सुर्ख रंगकी तरफ लानेके लिये कार आमद है और मुख्तलिफ तरकीबोंसे भी पानी सीमावको मुतहर्रिक कायमुल्नार भी करता है । (सुफहा ८ अखबार अलकीमियाँ १ । ६ । १९०५)

रजत कर उत्तम योग-बंगकी चांदी । सर्प लवण योग ।

८ सेर पक्के लवण सावर लेके पीसके लगोड भाडेमें पादैणा फिर एक सर्प स्याह जहरी पा दैणा, उपरों आधा लवण बाकी पा देणा उस भांडेदा मुंह खोलणा सप सारा पाणी होकर लवणमें मिल जायगा जेकर उपरों आधा लवण बाकी पादैणा फिर उस भांडे दा मुँह बंद करके ४० रोज अरूडी विच दब छोडना इकतालीसवें रोज हवाड बचाकर सर्प बडा जहरी न हो तो लवण वीच ६ माशे गंधक ६ माशे पारा रला देणा फिर मिट्टी दी कढाई चढाके उसमें कलीसेर कच्चा चा ढेक आग बालणी जब कली खूब फूल जाय तब काठदी कड़ी नाल उसमें वह लवण पापक्का पादैणा हवाढ बचाके आग परही कली जम जायगी । (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

इति श्रीजैसलमेरनिवासिव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराज संहितायां भाषाटीकायां वेधकर्मकथनं नामैकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २९॥

शोधनाध्यायः ३०

पारदके शोधनकी आवश्यकता ।

जयेदयं संहितयाप्यजेयान्गदान्महापातकजान्क्षणेन । शुद्धस्ततः शोधनमस्य कार्यमार्यैरशुद्धो न सुखाय सूतः ॥ १ ॥ (योगतरङ्गिणी[१] १.)

१–कुरुडी घूरा पूरनसिंहने बताया ।

अर्थ-शुद्ध कियाहुआ यह पारद नित्य सेवन करनेसे अजेय (असाध्य) महापापोंसे पैदा हुए रोगोंको शीघ्र ही नाश करताहै। इस लिये पारदका शोधन करना चाहिये अशुद्ध पारद सुखके लिये नहीं होताहै ॥ १ ॥

शोधनकी आवश्यकता।

सूतोऽशुद्धतया गुणं न कुरुते कुष्ठाग्निमान्द्यक्रिमीन्। छर्द्यरोचकजाड्यदाहमरणं धत्ते नृणां सेवनात्॥ २॥ (योगरत्नाकर ७७)

अर्थ-अशुद्ध पारद सेवन करनेसे गुण नहीं करता प्रत्युत मनुष्योंके कोढ, अग्निमान्द्य, कृमि, वमन, अरोचक, जडता, दाह और मृत्यु इनको करताहै ॥ २ ॥

शोधनकी आवश्यकता।

दोषहीनो यदा सूतस्तदा मृत्युजरापहः। साक्षादमृतमप्येष दोषयुक्तो रसो विषम्॥ तस्माद्दोषविशुद्ध्यर्थं रसशुद्धिर्विधीयते॥ ॥ ३ ॥ (रसरत्नाकरः १६०, नि. र. ६.)

अर्थ-जब पारद दोषरहित होताहै तब मृत्यु और बुढापेको दूर करताहै और वह साक्षात् अमृत ही है। दोषोंसे मिलाहुआ पारद विष होताहै। इस लिये पारेके दोषोंको दूर करनेके वास्ते पारद शुद्धि कही जातीहै ॥ ३ ॥

पूर्वं दोषा रसेन्द्रस्य ये च प्रोक्ता मनीषिभिः। अतस्तेषां प्रशान्त्यर्थं प्रोच्यते कर्म साम्प्रतम्॥ ४ ॥ (योगरत्नाकरः ७, नि. र. ६)

अर्थ-महात्माओंने पहिले जो दोष पारदमें कहेहैं, उनकी शान्तिके लिये अब शोधन कर्मको कहतेहैं ॥ ४ ॥

रसशोधनमुहूर्त।

सुदिने शुभनक्षत्रे रसशोधनमारभेत्॥ ५॥ (रसरत्नसमुच्चयः ९०)

अर्थ-रसराजवैद्य शुभ दिन और शुभ नक्षत्रमें पारदके शोधनका प्रारम्भ करे ॥ ५ ॥

रसशोधनमुहूर्त।

शुभेऽहनि प्रकर्तव्य आरम्भो रसशोधने। एकान्ते धामनि शुभे पुराभ्यर्च्यो हि भैरवः॥६॥ (योगरत्नाकरः ७७)

अर्थ-शुभ दिनमें रसशोधनका आरम्भ करना चाहिये और प्रथम एकान्त स्थानमें श्रीभैरवजीकी पूजा करनी चाहिये ॥ ६ ॥

रसशोधनारम्भः।

नत्वा गुरुं भैरवकन्यकाबटून् द्विपाननं सिद्धमनुष्यलक्षितम्। अन्तः सुनीलं बहिरुज्ज्वलं रसं निवेशयेत्खल्वतले शुभे दिने॥ ॥ ७ ॥ (टोडरानन्दः)

अर्थ-बटुक भैरव कन्या श्रीगणेशजी सिद्ध पुरुष और श्रीगुरुदेवको नमस्कार कर शुभ दिनमें भीतरसे नीले वर्णका बाहिरसे उज्ज्वल वर्णवाले पारदको खरलमें डाले ॥ ७ ॥

पारदकी दो प्रकारसे शुद्धि।

शुद्धिरिति सा च द्विविधा प्रोक्ता उक्तं हि-व्याधौ रसायने चैव द्विविधा सा प्रकीर्तिता। या शुद्धिः कथिता व्याधौ सा नेष्टा हि रसायने॥ रसायने तु या शुद्धिः सा व्याधावपि कीर्तिता ॥९॥ (रसेन्द्रसारसं. ४, र. रा. सुं. १८)

अर्थ-पारदकी शुद्धि दो प्रकारकी कही गई है, उसको कहते हैं व्याधि और रसायनमें अलग २ दो प्रकारकी शुद्धि कहीहै तिसमें व्याधिके लिये जो शुद्धि कहीहै सो रसायनमें नेष्ट है और रसायनमें जो शुद्धि कही है वह व्याधिमेंभी लेनी कहीहै ॥ ८ ॥९ ॥

शोधन और संस्कारमेंभेद।

शोधनं दोषहरणं संस्कारश्च बलतेजसोऽभिवर्द्धनम्॥ १० ॥ (ध. सं. २३)

अर्थ-दोषोंके नाश करनेको शोधन कहतेहैं और संस्कार पारद केवल तेजको बढाताहै ॥ १० ॥

पारदशोधनार्थ औषधिमान।

सूते पादमितं सर्वं प्रक्षिपेच्छोधनौषधम्। अष्टमांशं पुनः केपि कथयन्ति मनीषिणः॥ ॥ ११ ॥ (योगतरङ्गिणी ५३)

अर्थ-पारदमें शोधन करनेयोग्य सब औषधिको पारदसे चौथाई लेकर डाले और कुछ पंडितोंका यह मत है कि पारदसे षोडशांश औषधि लेना चाहिये ॥ ११ ॥

अथ मर्दनप्रकार।

उष्ण एव रसः कार्यः शीतं सर्वात्मना त्यजेत्। शीते च बहवो दोषाः षण्ढाद्याः संभवन्ति च॥ १२ ॥ (रसमञ्जरी ४)

अर्थ-पारदको गरम २ ही मर्दन करे और ठंढा तो सर्वथा ही वर्जित है। क्योंकि ठंढ पारदके मर्दन करनेसे षण्ढ आदि दोष पैदा होतेहैं ॥ १२ ॥

नौआदीगर सीमावको मुसफ्फा और पाक करनेकी तरकीब

(उर्दू)

सीमावको अर्क कटाई खुर्दमें और अर्क दूधके उपतादःमें जिसको दुधीखुर्द मफरूश कहतेहैं मसावी सीमावके हरेक बूटीका अर्क लेकर कमसे कम पहर भर सहक करे पाक होजायगा (सुफहा अकलीमियाँ १६२)

अथ शोधन।

कुमारीत्रिफलाव्योषचित्रकं निम्बुकं रसम्। दिनैकं मर्दितं धृत्वा शुद्धो भवति पारदः ॥ १३ ॥

अर्थ-त्रिफला सोंठ मिरच पीपल चित्रक इनको पारदसे षोडशांश अथवा चतुर्थांश लेकर निम्बू और घीगुवारके रसमें एक दिन घोटकर रख देवे तो पारद शुद्ध होताहै ॥ १३ ॥

मर्दनसंस्कार।

चौपाई-घीकुमार त्रिफला त्रिकुटा ले ॥ चित्रक अरु नींबू रसहूदे ॥ घोट तीन दिन रस करि शुद्ध ॥ सकल काजमें देय प्रबुद्ध ॥ (वैद्यादर्श १०)

मतान्तरसे शोधन।

दिनैकं मर्दयेत्सूतं कुमारीसंभवैर्द्रवैः। तथा चित्रकजैः क्राथैर्मर्दयेदेकवासरम् ॥ काकमाचीरसैस्तद्वद्दिनमेकं तु मर्दयेत१४॥ (रसेन्द्रसारसंग्रह ७)

अर्थ-पारदको तप्त खल्वमें घीकुमार (गुवारपट्ठा) के रससे एक दिन खरल करे इसी प्रकार चित्रकके काढसे भी एक दिनतक मर्दन करे और तैसे ही काकमाची (मकोय+कवैया) के रससे एक दिन मर्दन करे ॥ १४ ॥

दोहा-घीकुमाररस घोटिके, एक दिवस पर्यन्त। घोटे चित्रक क्राथ पुनि, एकहि दिन निश्चिन्त॥ फिर मकोयको क्राथ अरु, त्रिफला क्वाथ कराय। एक एक दिन इन विषे, पारदको घोटवाय ॥ तब काँजीके नीरते, पाराको ले धोय। भलीभांति फिर खरलमें, धरे भिषक जन लोय॥पारेते आधो तहां, सैंधो नोन डराय। तब नींबू रस एक दिन, घोटे निपुन बनाय ॥ पुन राई लहसन विषे, एक एक दिन घोट। नवसादरमें घोटि पुन, चार महर इक जोट ॥ ता पाछे कांजी विषे,पारदको घुटवाय। कांजी हीते धोय पुनि, पारद दिव्य कराय ॥ (वैद्यादर्श १०)

शोधन।

कुमारी चित्रकं व्याधिर्मूलकांकुलयवारिणा। पृथक् पृथक् चतुर्यामं मर्दयेत्सर्वकर्मसु ॥ १५ ॥

अर्थ-घीकुवार, नागरमोथा, व्याधिमूलक (मकोय) इनके क्राथमें पारदको पृथक् २ चार प्रहरतक घुटानेसे वह पारा सब कामके लिये योग्य होताहै ॥ १५ ॥

शोधनविधि।

कुमारिकाचित्रकरक्तसर्षपैः कृतैः कषायैर्बृहतीविमिश्रितैः। फलत्रिकेणाऽपि विमर्दितो रसो दिनत्रयं सर्वमलैर्विमुच्यते॥१६॥ (रसराज २९, आ. वि. ३०६, र. रा. प. ३०, वै. क. ४४, र. सा. प. ९)

अर्थ-चित्रक लाल सरसों कटेरीकी जड और त्रिफला इनके क्राथ तथा घीकुमारके रसके साथ तीन दिनतक घोटा हुआ पारा समस्त दोषोंसे छूट जाताहै ॥ १६ ॥

पारदशोधन।

फलत्रयं चित्रकसर्षपाणां कुमारिकन्याबृहतीकषायैः। दिनत्रयं मर्दितसूतकस्तु विमुच्यते पंचमलादिदोषैः ॥ १७ ॥ (रसमञ्जरी ३, रसराजसुन्दर २८, टो०४)

अर्थ-इसका अर्थ पहलेके समानहै ॥ १७ ॥

शोधन।

कन्याग्निक्षुद्रात्रिफलाः सर्षपो राजिका निशा। अष्टावशेषक्राथेन रसं मर्द्य दिनत्रयम् ॥ १८ ॥कांजिकेन तु प्रक्षाल्य शोष्यवस्त्रातपे रसम्। खल्वैकभागं कृत्वोर्द्ध्व वलितं ग्राहयेद्रसम् ॥ अवशिष्टं मलं त्याज्यं निर्मलो जायते रसः ॥ १९ ॥ (ध. सं. ११)

अर्थ-घीकुमार, चित्रक, कटेरीकी जड, सोंठ, मिरच, पीपल, लाल सरसों राई और हलदी इनके अष्टावशेष काढेसे पारदको तीन दिनतक मर्दन करे फिर उसको कांजीसे धोकर कपडेसे पूंछ घाममें सुखावे तदनन्तर खरलके एक भागको ऊंचाकर इकट्ठे हुए पारेको ग्रहण कर लेवे और बचे हुए मैलको छोड देवे तो पारद अतिनिर्मल होताहै ॥ १८ ॥ १९ ॥

शोधन।

फलत्रयं चित्रकं च क्षुद्रा च कृष्णसर्षपाः। कुमारिका च बृहती अंकोलं राजवृक्षकः॥ ॥ २० ॥ विमर्द्य क्राथैनैतेषां त्रिदिनं च दृढं रसम्। आरनालेन तूष्णेन क्षालयेत्काच भाजने ॥ २१ ॥ ततो निम्बूसहस्रस्य रसैर्घर्मे त्र्यहं रसम्। स्थापयेत्तेन हंसः स्यात्संस्कारार्हश्च जायते ॥ २२ ॥ (ध. सं. २३)

अर्थ-त्रिफला, चित्रक, कटेरीकी जड, काली सरसों, घीगुवार, अंकोल, अमलतास इनके काढेसे तीन दिनतक पारेको मर्दन कर गरम कांजीसे काचके बासनमें धोवे। फिर हजार नीबूके रसमें पारेको डालकर तीन दिनतक घाम में रक्खे तो पारा हंसके सदृश शुद्ध होताहै ॥२०-२२ ॥

सीमावको मुसफ्फा करनेकी तरकीब (उर्दू)

नौआदीगर सीमाव चार तोले लेकर दो तोले चूना[1] और दो तोले सज्जीमें पहर भरतक खरल करे और धोकर काममें लावे (तुफहा अकलीमियाँ ९४)

मतान्तर !

निशेष्टकाधूमरजोऽम्लपिष्टो विकंचुकः स्या द्दिवसेन सोर्णः । वरारनालानलकल्पकाभिः सत्र्यूषणाभिर्मृदितस्तु सूतः ॥ २३ ॥ (रसेन्द्रसारसङ्ग्रहः ६, हस्तलिखितयोगतरङ्गिणी.)

अर्थ–पारेसे अष्टमांश हलदी, ईंटका चूरा, धूमसार और ऊन इनको लेकर नीबू या जँभीरीके रससे एक दिवसतक मर्दन करे तो पारा शुद्ध होगा अर्थात् कंचुकीरहित होगा । अथवा त्रिफला, चीता, सोंठ, मिरच, पीपल, कांजी और घीगुवारके रसमें एक दिनतक घोटे तो पारद शुद्ध होगा ॥ २३ ॥

सीमावके मुसफ्फा और पाक करनेकी तरकीब (उर्दू)

अव्वल सीमावको खिश्त कौहनः नीमपुख्तः में अर्कलैमूं कागजी मिलाकर तमाम दिन सहक करे बादहू दूसरे रोज उस काजलसे जो भडभूजः या भटियारेके छप्परमें होताहै अर्कलैमूं मिलाकर दिन भर खरल करे तीसरे रोज राईमें अर्कलैमूं मिलाकर तमाम दिन घिसे और हरबार धोकर दूसरे रोज खरल कियाकरे और अगर धोतेवक्त सफेदी सीमावके पानीके ऊपर तैर आवे तो थोडासा दूसरा मीठा पानी उसपर छिडके जिस्में सफेदी नीचे बैठ जावे अगर तीनों अजजाइ बाहम मिलाकर तीन रोजतक बराबर खरल करे तो भी जाइज है ॥ (तुफहा अकलीमियाँ ९४)

मुख्यदोषहरशोधनविधि ।

गृहकन्या हरति मलं त्रिफलाग्निं चित्रको विषं हन्ति । तस्मादेभिर्मिश्रैर्वारान्संमूर्च्छयेत्सप्त ॥ २४ ॥ (वैद्यकल्पद्रुमः ४४, आयुर्वेदविज्ञानम् ३०६)

अर्थ--घीकुवार पारेके मलको हरताहै, त्रिफला अग्निदोषको और चित्रक विषदोषको हरताहै, इस लिये इन तीनों वस्तुओंसे पारदको सात २ बार मर्दन करे तो पारेके मल अग्नि और विष ये तीनों दोष दूर होतेहैं ॥ २४ ॥

शोधनविधि ।

अंकोलेन विषं हन्ति पावकं हन्ति चित्रकैः॥ राजवृक्षैर्मलं हन्ति कुमारी सप्त कंचुकान्॥ ॥ २५ ॥ (योगचिन्तामणिः १५१)

1 चूना बगैर बुझा होना चाहिये ।

अर्थ–रसशास्त्रके ज्ञाता वैद्य अंकोलसे विषदोषको नाश करते हैं, चीतेकी छालसे अग्निदोषको नाश करते हैं, अमलतासमे मलदोषको और घीगुवारसे सातों दोषोंको दूर करते हैं ॥ २५ ॥

शोधन ।

आरग्वधो हन्ति मलं प्रयत्नात्कुमारिका सप्त हि कंचुकांश्च । अंकोलमूलं च विषं निहन्याद्रसस्य वह्निं किल पावकश्च ॥२६॥ प्रत्येकं सप्तवारं च मर्दितः पारदो भवेत् । तदा विशुद्धतां याति सर्वयोगार्हितो भवेत् ॥ २७ ॥ (योगरत्नाकरः ७६ नि.र.२६)

अर्थ–उपाय करनेसे अमलवेत मलदोषको नाश करता है, घीगुवार सातों कंचुकोंको विध्वंस करता है, अंकोलकी जड विषको उखेडती है और चित्रक अग्निदोषका नाशक है । इसलिये इनमेंसे एक २ औषधिके साथ पारदको सात २ बार मर्दन करे तो पारेकी विशेष शुद्धि होती है और वह पारद समस्त योगोंमें मिलाने योग्य होता है ॥२६॥२७॥

पारदके मुख्यदोषका परिहारकथन ।

पारद घोटे प्रथम ही, अमलतास रस डार । पारदके मलदोषको, एक दिनामें टार ॥ फिर चित्रक रस डालके, एक दिना खरलाय । पारददोष नसाइये,रस नीको ह्वै जाय ॥ पारदमें विषदोष है, ताको हरन उपाय ॥ रस अंकोल मंगायके, एक दिना घुटवाय ॥ या पारदके देहमें, सात कंचुकी होय । घियकुमारिरस घोटके, सबै दूर करि सोय ॥ साधारणविधिते जहां, कीयो चाहे शुद्ध । मुख्य दोषत्रय टारिके, सब ठां देय प्रबुद्ध ॥ (वैद्यादर्श.)

अष्टदोषोंका पृथक् २ शोधन ।

खल्वे पाषाणजे लौहे सुदृढे सारसम्भवे ॥ तादृशः स्वच्छमसृणः चतुरंगुलमर्दकः ॥ ॥ २८ ॥ निक्षिप्य सिद्धमंत्रेण रक्षितं द्वित्रसेवकैः । भिषग्विमर्दयेच्चूर्णैर्मिलित्वा षोडशांशतः ॥ २९ ॥ सूतस्य गालितैर्वक्ष्ये- वक्ष्यमाणद्रवादिभिः । मर्दयेन्मूर्छयेत्सूतं पुनरुत्थाय सप्तशः ॥ ३० ॥ रक्तेष्टिकानिशाधूमसारोर्णाभस्मतुम्बकैः । जम्बीरद्रवसंयुक्तैर्नागदोषापनुत्तये ॥३१॥ राजवृक्षस्य मूलेन मर्दयेत्सह कन्यया । मलदोषापनुत्त्यर्थं मर्दनोत्थापने शुभे ॥ ३२ ॥ कृष्णधुत्तूरकद्रावैश्चाञ्चल्यविनिवृत्तये । त्रिफला कन्यकातोयैर्विषदोषोपशान्तये ॥ ३३ ॥ गिरिदोषे त्रिकटुना कन्यातोयेन यत्नतः ॥

चित्रकस्य तु चूर्णेन सकन्येनाग्निनाशनम् ॥ ॥३४॥आरनालेन चोष्णेन प्रतिदोषं विशोधयेत्।एवं संशोधितः सूतः सप्तकंचुकवर्जितः ॥ ३५ ॥ उत्थापनावशिष्टं तु चूर्णं पातनयंत्रके । धृत्वोर्द्धभाण्डे संलग्नं संहरेत्पारदं भिषक् ॥ ३६ ॥ (रसेन्द्रचिन्तामणिः९, नि.र.११)

अर्थ-चिकना और साफ चार अंगुलका जिसका घोटा हो ऐसे पत्थरके या लोहेके सुन्दर खरलमें सिद्ध मंत्रको पढकर दो तीन नौकरोंसे रक्षा किये हुए पारदको रखकर कपडेसे छाने हुए पारदसे षोडशांश औषधियोंको लेकर आगे कही हुई पतली चीजोंके साथ मर्दन करे। इसका क्रम यहहै कि प्रथम मर्दन और मूर्छन करे फिर उत्थापन करे। लाल ईटका चूरा हलदी धूमसार ऊनकी राख कडवी तुम्बी इनको नीबूके रसके साथ मल दोषकी शान्तिके लिये मर्दन करे कारण कि मलदोषको दूर करनेके लिये मर्दन और उत्थापन अच्छे समझे गये हैं। चञ्चल दोषके नाशके लिये काले धतूरेके रससे पारेको मर्दन करे। सोंठ मिरच पीपल और घीगुवारका रस इनके साथ मर्दन करनेसे गिरिदोष दूर होता है, त्रिफला और घीगुवारके रसके साथ मर्दन करनेसे विष दोष शान्त होता है। घीगुवारके रसके साथ चित्रकके चूर्णसे मर्दन करे तो पारेका अग्नि दोष दूर होता है । प्रत्येक दोषके दूर करनेके लिये गरम २ कांजीसे धोना चाहिये इस प्रकार शुद्ध कियाहुआ पारा सातों कंचुकोंसे रहित होताहै । उत्थापनसे बचे हुए पदार्थको पातनायंत्रसे उडालेवे और इस प्रकार ऊपरके बासनमें लगेहुए पारेको बुद्धिमान् वैद्य निकाल लेवे॥२८-३६॥

मतान्तर।

राजवृक्षस्य मूलेन मर्दयेत्सह कन्यया । मल दोषापनुत्त्यर्थं मर्दनोत्थापने शुभे ॥ ३७ ॥ चित्रकस्य च चूर्णेन सकन्येनाग्निनाशनम्। दिनानि सप्त सम्पिष्टो वज्रीक्षीरेण पारदः ॥ ३८ ॥ स्वर्जिकाक्षारयुक्तेन भूमिदोषो विनश्यति । क्षेत्रदोषं त्यजेद्देवि गोकर्णरसमूर्च्छितः ॥ ३९ ॥ सप्तवारं काकमाच्या गतदेहं विमर्दयेत् । पातयेत्सप्तवारं च गिरिदोषं त्यजेद्रसः ॥ ४० ॥ त्रिफलाकन्यकातोयैर्विषदोषोपशान्तये । कृष्णधत्तूरकद्रावैश्चांचल्यविनिवृत्तये ॥ ४१ ॥ मर्दनोत्थापने कुर्यात्सूतराजस्य चासकृत् ॥ (रसपद्धतिः २७)

अर्थ-मलदोषको नाश करनेके लिये अमलतासकी जड तथा घीकुवारके रसके साथ पारदको मर्दन करे चीता और घीगुवारके रसके साथ मर्दन करनेसे पारदका अग्निदोष दूर होताहै । सज्जीका खार तथा थूहरका दूध इनसे सात दिनतक घोटा हुआ पारद भूमिदोषसे रहित होताहै गोकण्ट (गोखरू) के रससे मूर्छित कियाहुआ पारद हे देवि क्षेत्र दोषको छोडदेताहै । काकमाची (मकोय,कवैया) के रससे पारदको सातबार मर्दन करे तो मूर्छित होताहै । फिर उसको सात ही बार पातन करे तो पारदका गिरिदोष नष्ट होताहै विषदोषकी शान्तिके लिये त्रिफला और घीगुवारके रसके साथ मर्दन करे । तथा चांचल्य दोषकी निवृत्तिके लिये काले धतूरेके रसके साथ घोटे प्रत्येक घोटनेके बाद पारदका पातन करना उचित है ॥ ३७-४१ ॥

मतान्तर।

सोर्णनिशेष्टिकाधूमजम्बीराम्बुभिरादिनम्॥ मर्दितः कांजिकैर्धौतो नागदोषं विमुञ्चति ॥ ४२ ॥ विशालाङ्कोलचूर्णेन वंगदोषं विमुञ्चति । राजवृक्षो मलं हन्ति चित्रको वह्निदूषणम् ॥ ४३ ॥ चांचल्यं कृष्णधूस्तूरस्त्रिफला विषनाशिनी। कटुत्रयं गिरिं हंति प्रसह्याग्निं त्रिकण्टकः ॥ ४४ ॥ प्रतिदोषं कलांशेन तत्तच्चूर्णं सकन्यकम् । उद्धृत्योष्णारनालेन मृत्पात्रे क्षालयेत्सुधीः ॥ ४५ ॥ एवं संशोधितः सूतः सप्तकंचुकवर्जितः ॥ (रसेन्द्रसारसङ्ग्रहः ५)

अर्थ-ऊनकी राख हलदी ईटका चूरा धूमसार और जंभीरीका रस इनके साथ अग्निनं(सात दिनतक)मर्दन कर गरम कांजीसे धोवे तो पारदका नागदोष दूर होताहै इन्द्रायन अंकोलका चूर्ण और घीगुवारका रस इनके साथ मर्दन करनेसे वंगदोष नष्ट होताहै अमलतासकी फलीका गूदा मलदोषको दूर करताहै चित्रक अग्निदोषको काले धतूरेका रस अग्निदोषको त्रिफला विषदोषको सोंठ मिरच पीपल गिरिदोषको गोखरू असह्याग्निको नाश करताहै प्रत्येक दोषको दूर करनेके लिये उस २ दोषकी नाशक औषधीको पारदसे षोडशांश लेकर घीगुवारके रसके साथ सात २ दिनतक मर्दन करे फिर मिट्टीके पात्रमें निकाल कर गरम कांजीसे धोवे इस प्रकार शुद्ध कियाहुआ पारद सातों कंचुकोंसे रहित होताहै ॥ ४२-४५ ॥

मृन्मयः कञ्चुकश्चैकोऽपरः पाषाणकंचुकः॥ तृतीयो जलजो ज्ञेयो द्वौ द्वौ तौ नागवंगजौ ॥ ४६॥ रसे तु कंचुकाः सप्त विज्ञेया रसकोविदैः ॥ जलमृन्मयपाषाणनाशने सप्तकैस्त्रिभिः ॥ ४७ ॥ वज्रकन्दार्कपालाशकषायेण विमर्दयेत् ॥ चित्रकक्वाथसंघर्षात्कपाली याति वंगजा ॥ ४८ ॥ वज्रकन्दरसेनैव याति वंगजकालिका ॥ कटुतुम्बीरसेनैव श्यामा नश्यति नागजा ॥ राजिकाक्वाथतो याति नागजा च कपालिका ॥ ४९ ॥ (ध. सं. २३)

अर्थ-एक मृन्मयकंचुक, दूसरा पाषाण कंचुक, तीसरा जलजकंचुक और दो २ नाग और वंगसे पैदाहुए चार कंचुक

इस प्रकार पारदमें सात कंचुक कहेहैं । तहां जलज कंचुक, मृन्मय कंचुक और तीसरा पाषाण कंचुक इन तीनोंके नाश करनेके लिये थूहरका दूध, आकका दूध और ढाकका काढा इनसे पारदको सात२वार मर्दन करे । चित्रकके काथके साथ मर्दनसे वंगसे पैदाहुआ कापाली नामका कंचुक नष्ट होताहै शकरगज (काबुलकी तरफ पैदा हुआ एक प्रकारका कन्द)के रससे घोटा हुआ पारद वंगज कालिका नामके कंचुकसे रहित होताहै । कडवी तूंबीके रससे घोटाहुआ पारा नाग (सीसे) से पैदा हुए श्यामा नामके कंचुकसे छूटजाताहै और राईके काथके साथ घोटनेसे पारदका सीसेसे पैदाहुआ कपालिका नामका कंचुक नष्ट होताहै इस रीतिसे सातों कंचुकोंसे रहित पारा होताहै ॥४६–४९॥

कंचुकिनाशन ।

एकेनैव रसोनस्य रसः सिध्येद्रसेन च ॥ ॥ ५० ॥ (रसपद्धतिः २८)

अर्थ–एक ही लहसनके रससे सात दिनतक घोटा हुआ पारद सातों कंचुकोंसे रहित होताहै ॥ ५० ॥

रससार ।

दिनानि सप्त सम्पिष्टो वज्रीक्षीरेण पारदः स्वर्जिकाक्षारयुक्तेन भूमिदोषो विनश्यति ॥ ५१ ॥ टंकणक्षारसंयुक्तमर्कक्षीरं नियोजयेत । सप्ताहं मर्दयेत्सूतमश्मकंचुकनाशनम् ॥ ५२ ॥ चित्रकद्रवसंपिष्टष्टंकणेन समन्वितः । कपालीवंगसम्भूता नश्यत्येव न संशयः ॥ वज्रकन्दरसेनैव नवसाररसेन च ॥ ५३ ॥ वंगदोषसमुद्भूता कालिका नश्यति ध्रुवम् ॥ टंकणेन कलांशेन कटुतुम्बीरसेन च॥५४॥ दिनानि सप्त संघृष्टो नागश्यामा व्यपोहति ॥ ५५ ॥ बीजककाथसंघृष्टो निम्बूफलरसेन च।कपाली नागसंभूता नश्यत्येव न संशयः॥५६॥ (रसपद्धतिः २९)

अर्थ–सज्जीखारसे मिले हुए थूहरके दूधसे सात दिनतक घोटा हुआ पारा भूमिदोषसे रहित होताहै । और सातदिनतक ही सुहागा और आकके दूधके साथ घोटनेसे पाषाणकंचुकका नाश होताहै तथा सुहागा और चित्रकके काथसे घोटनेसे वंगसे उत्पन्न कपाली नष्ट होतीहै। वज्रकन्द (शकरगज) के साथ घोटनेसे वंग दोषसे उत्पन्न कालिकादोप दूर होताहै । षोडशांश सुहागा और कडवी तूँबीके रसके साथ सात दिनतक घोटनेसे नागकी श्यामा नामकी कंचुकी दूर होतीहै, बिजौरेका रस तथा नींबूका रस इनके साथ घोटनेसे पारदकी नागसम्भूत कपाली नष्ट होतीहै ॥ ५१–५६ ॥

अथ युगपत्सप्तकंचुकहरण ।

कर्पासपत्रनिर्यासे स्विन्नस्त्रिकटुकान्वितः । सप्तकंचुकनिर्मुक्तः सप्ताहाज्जायते रसः॥५७॥ (रसपद्धतिः ३०)

अर्थ–सोंठ, मिरच और पीपलको कपासके पत्तोंके रसमें घोले फिर उसमें पारदको सात दिनतक स्वेदन करे तो सातों कंचुकोंसे रहित होताहै, ॥ ५७ ॥

मर्दनद्वारा शोधन ।

आश्रयाशरसना सुरदाली स्मारणी गजबला शृंगाली । धावनी रजनिवह्निकुमारी मर्दनाद्भवति दोषविदारी ॥ ५८ ॥ (टोडरानन्दः)

अर्थ–चित्रक, रास्ना, देवदाली (बंदाल,) स्राविका (सरसों), गंगेरन, विदारीकंद, धाविनी (कटेरी), हलदी घीगुवार इनके साथ सात दिनतक घोटनेसे पारद दोषरहित होताहै ॥ ५८ ॥

मतान्तर ।

जयन्त्या वर्द्धमानस्य चार्द्रकस्य रसेन च। वायस्या चानुपूर्व्यैवं मर्दनं रसशोधनम् ॥ ॥ ५९ ॥ एषां प्रत्येकशस्तावन्मर्दयेत्स्वरसेन च । यावच्च शुष्कतां याति सप्तवारं विचक्षणः ॥ ६० ॥ उद्धृत्योष्णारनालेन मृद्भाण्डे क्षालयेत्सुधीः। सर्वदोषविनिर्मुक्तः सप्तकंचुकवर्जितः ॥ जायते शुद्धसूतोऽयं युज्यते सर्वकर्मसु ॥ ६१ ॥ (रसेन्द्रसारसंग्रहः ६)

अर्थ–जयन्ती (अगेथु), वर्द्धमान (एरण्ड), अदरक, कौवाठोडी इनमेंसे प्रत्येकके रसके साथ सात दिवसतक पारदको घोटे यदि रस सूख जावे तो वही रस डाल देवे फिर मिट्टीके पात्रमें रखकर उष्ण कांजीसे धोडाले तो पारद सब दोषोंसे मुक्त होताहै और शुद्ध हुए पारदको सबकर्मोंमें लावे ॥ ५९–६१ ॥

सीमावको मुसफ्फा करनेकी तरकीब बजरियः तसईद (उर्दू)

नौआदीगर सीमाव दो दामको अर्क लेमू कागजीमें सहक करे बादहू शकोरेमें रखकर चार पांच लैमूका अर्क उसमें डालकर कोयलेकी आगपर जोश दे यहांतक कि कुछ अर्क लैमूका सीमाव मजकूरमें जलनेसे रहजावे बादहू उतारकर सर्दकरे निगाह रक्खे अगर बाद उसके डौरू जंत्रमें तसईद करे तो आला दर्जेका होजायगा मुतरिज्जम दामसे मुराद वहलूवीहै जो एक तोला ८ माशेकी होतीहै (मु० अकली० ९५)

पातनद्वारा शोधन।

कुमार्याश्च निशाचूर्णैर्दिनं सूतं विमर्दयेत् । पातयेत्पातनायंत्रे सम्यक् शुद्धो भवेद्रसः॥ ॥ ६२ ॥ (कामरत्नम् २९३, रसरत्नाकरः १६१, रसमञ्जरी ४, वै. कल्प., नि. र.

२४, रसे. सार. ६, र. रा. शं. ४, र. रा. प., २४ वा. बृ. ६, र. सा. प. ८)

अर्थ-पारदसे अष्टमांश हलदीको डालकर घीगुवारके रसके साथ एक दिन घोटे फिर पातनायंत्रमें उडाकर रखलेवें तो पारद अत्यन्त शुद्ध होताहै ॥ ६२ ॥

मतान्तर ।

विधिमेनं परित्यज्य मार्कवार्कहरिद्रया । उद्धाताद्यवशिष्टं च चूर्णं पातनयंत्रके॥६३॥ अतोऽर्द्धभाण्डसंलग्नं संग्रहेत्पारदं बुधः । रसकर्मणि सर्वत्र योगराजेषु योजयेत् ६४॥ (ध. सं. ३५)

अर्थ-यदि एक तोले पारद होतो ६ माशे आकके जडकी छाल और ६ माशे हलदीका चूर्ण इन दोनोंको मिलाके घीगुवारके रसमें घोटे और पारेको निकाल लेवे बचेहुए चूर्णको पातनायंत्रमें उडालेवे उस रसको समस्त कामोंमें लावे ॥ ६३ ॥ ६४ ॥

पातनद्वारा शोधन ।

कपोतविट्धूमसारराजिकाभिर्विमर्दितः । उत्थितः पातनायन्त्रेऽग्निना शुध्यति पारदः ॥ ६५ ॥ (रसमानसः)

अर्थ-कबूतरकी बीट धूमसार और राई इनके साथ पारदको मर्दन कर फिर अग्निसे उध्र्णपातन करे तो पारद शुद्ध होताहै ॥ ६५ ॥

पातनद्वारा शोधन ।

श्रीखण्डं देवदारुं च काकतुण्डीजयाद्रवैः। कर्कोटीमुसलीकन्याद्रवं दत्वा विमर्दयेत् ॥ दिनैकं पातयेत्पश्चात्तच्छुद्धं च नियोजयेत् ॥ ६६ ॥ (रसमञ्जरी ४, र. रत्ना. १६१, र. रा. शं. ४, र. रा. प. २४, नि. र. २५ रसेन्द्रसारसंग्रह ६)

अर्थ-श्रीखण्ड (चन्दन), देवदार, कौआठोडी, जयन्ती, वांझककोडा, सफेद मूसली और घीगुवार इनके साथ पारदको एक दिवसतक मर्दन कर फिर पातनायंत्रमें पातन कर पारदको निकाल लेवे और सबकामोंमें लावे६६॥

अमलसानी सीमावके मुश्तही करनेकी तरकीब (जिसको बुभुक्षितीकरण स्लाहमें जोगियों कहतेहै)

अर्थ-मजकूरःवाला एमाल तसईदके बाद सीमावको गुरसिना करना चाहिये इस्तरहसे कि संदल सुर्ख, देवदारु, कागठुठी, शीरागुल, गुडहल, वडहल, शीराककोर, शीरा मूसली स्याह या सफेद, शीरा, घीग्वार इनमेंसे जो जो दस्तयाब हों तीन रोजतक पुट आफ्तावी दे यानी दो पहर तक खरल करे और दो पहरसे शामतक खुश्क करे (और अगर जौहरा ताऊस मिलसके और उसमें सहक करें तो दूसरे अजजाइमें खरल करनेकी जरूरत नहींहै (सुफहा अकलीमियाँ १४५)

विचार-यह तरकीब शुद्धिकीहै अलबत्ता जौहरा ताऊस में सहक करना तरकीब मुश्तही करनेकी है मुमकिन है कि अव्वल शुद्धि और बादहू मुश्तकी करन यह दोनों यकजाय कियागया हो और तहरीरमें गलती हो ।

शोधन ।

सूतः शोध्यो निशायां मरिचनिचयके पिष्टके चेष्टिकायां धूमे सम्पाकतोयेऽप्यधितुलसि विषे सूरणे शिग्रुपाके॥वज्रीदुग्धेऽर्कदुग्धे हुतभुजि लशुने चापि पालाशपङ्के सोर्द्धाधः पातने वै लशुनपटुमतिः स्वेदयेत्कांजिके च ॥६७॥दिनद्वयं दिनद्वयं प्रमर्दयेद्रसाधिपम्। समीरितौषधिं प्रति प्रहृष्टमानसोभिषक्॥ ६८ ॥ (योगतरङ्गिणी ९३)

अर्थ-हलदी, काली मिरच, ईटका चूरा, धूमसार, अमलतासका रस, तुलसीपत्रका रस, जमीकन्द, सैंजना, सेहुंडका दूध, आकका दूध, चित्रक, लहशुन और ढाकका काथ इनमें एक एक दिन घोट कर ऊर्ध्वपातन करे और फिर एक २ दिन घोटकर अधःपातन करे । इसके बाद लहशुन और लवणयुक्त कांजीमें स्वेदन करे तो पारद शुद्ध होताहै ॥ ६७॥६८ ॥

संक्षिप्तशोधन ।

एतावतस्तु संस्कारान्कर्तुं सूतस्य न क्षमैः । तान्मुख्यान्कियतः कृत्वा संग्राह्यो रोगनुत्तये ॥ ६९ ॥ (र. सा. प. ९)

अर्थ-जो मनुष्य पारदके इन संस्कारोंको नहीं कर सक्ते हैं वे जन उन कुछ मुख्य संस्कारोंको (स्वेदन, मर्दन, ऊर्ध्वपातन) करके रोगोंकी निवृत्तिके लिये पारदको ग्रहण करें ॥ ६९ ॥

सम्मति-रससारपद्धतिकारने स्वेदन, मर्दन और ऊर्ध्वपातन इनको ही मुख्य संस्कार कहाहै यथा-"एतावदप्यशक्तः कर्तुं सूतस्य शोधनं मनुजः ॥ स्वेदनमर्दनमूर्ध्वपातनमेतत्त्रयं कुर्यात् " ।

सूतःक्षाराम्लमूत्रैर्वसनपरिवृतः स्वेदितोऽष्टौ च यामान्कन्यावह्न्यर्कदुग्धैस्त्रिफलजलयुतैर्मर्दितः सप्तवारान्॥पादांशार्केण युक्तः सममगनयुतस्तुत्थताप्येन च स्यादूर्ध्वं पात्यस्त्रिवारं भवति च सततं सर्वदोषैर्विमुक्तः ॥ ॥७०॥ (टोडरानन्दः ९ रसेन्द्रकल्पद्रुमः६)

अर्थ–प्रथम पारदको वस्त्रमें लपेट क्षार, अम्ल (निम्बू वगैरह) और गोमूत्र इनमें आठ प्रहरतक स्वेदन करे फिर घीगुवारका रस, थूहरका दूध, आकका दूधऔर त्रिफलाका जल इनके साथ सात बार मर्दन करे। तदनन्तर पारदमें चौथाई ताम्र मिलावे अथवा समभाग अभ्रक मिलावे या नीलाथोथा अथवा सोनामक्खी मिलावे फिर ऊर्ध्वपातन यंत्रमें पातन करे इस प्रकार तीन बार पातन करे तो पारद सब दोषोंसे रहित होताहै ॥ ७० ॥

एतावतस्तु संस्कारान् कर्तुं सूतस्य न क्षमैः ॥ तान्मुख्यान्कियतः कृत्वा समर्थो रोगनुत्तये ॥ ७१ ॥ दग्धोर्णा गृहधूमसाररजनीरक्तेष्टिकाकांजिकैः पिष्ट्वा व्योषकुमारिकानलवरानिम्बूद्रवैर्वासरम् ॥ व्योषाद्यम्बुनि दोलया रचितया स्विन्नं सुताम्रांघ्रियुक् पिष्टं भाण्डतलाज्जलाश्रयगतं सूतं समभ्युद्धरेत् ॥ ७२ ॥ लवणसलिलदोलायंत्रमध्ये दिनैकं भुजगनयनवंध्याभृंगकल्कान्तरस्थम् ॥ तदनुदहनतोये कांजिके स्वेदितः स्यात्सपटुमरिचशिग्रूण्युत्तमः श्रीरसेन्द्रः ॥ ७३ ॥ शतांशमुत्तमं हेम सूतास्सूते बिडावृतम् । चारयित्वाथ संस्वेद्य रसं जीर्णबलिं हरेत् ॥ ७४ ॥ (बृहद्योगतरङ्गिणी, १२०)

अर्थ–जो मनुष्य इन अठारह संस्कारोंको नहीं करसकतेहैं वे कुछ इन मुख्य संस्कारोंको करके रोगोंको दूर करनेके लिये समर्थ होतेहैं। ऊनकी भस्म, धूमसार, हलदी, लाल ईटका चूरा और कांजी इनके एक दिन अथवा सोंठ, मिरच, पीपल, चित्रक, त्रिफला और नींबूका रस इनके साथ भी एक दिन मर्दन कर फिर पूर्वोक्त सोंठ आदि पदार्थोंसे युक्त नींबूके रसमें स्वेदन कर चौथाई ताँबेके साथ घोट अधःपातन या तिर्यक्पातन करे। सर्पाक्षी बांझककोडा और जलभंगरा इनके कल्क (पिट्ठी) में पारेको रखकर नोंनके पानीमें दोलायंत्रद्वारा एक दिन स्वेदन करे उसके बाद नोंन, मिरच, सैंजना और चित्रक इनको पीसकर कांजीमें मिलावे फिर उसी कांजीमें पारेको स्वेदन करे तो पारद उत्तम होताहै। पारदसे सौवां हिस्सा सुवर्ण मिलावे और उसमें बिड भी डालदेवे फिर उसको स्वेदन करे सुवर्ण जारित पारदको निकाल लेवे ॥ ७१–७४ ॥

रसोनराजिके पिष्ट्वा मूषायुग्मं प्रकल्पयेत् ॥ तत्र सूतं सुसंरुध्य स्वेदयेत्कांजिकैस्त्र्यहम् ततः कुमारिकानीरैर्मर्दयेद्वासरं रसम् ॥ चित्रकस्वरसैः पश्चाद्वासरं मर्दयेत्ततः ॥ ॥ ७६ ॥ काकमाचीद्रवैर्घस्रं वराकाथैस्ततो दिनम् ॥ ततस्तेभ्यः समुद्धृत्य रसं प्रक्षाल्य कांजिकैः ॥ ७७ ॥ ततः खल्वे विनिक्षिप्य तदर्धं सैन्धवान्वितम् ॥ दिनैकं निम्बुनीरेण मर्दयेदपि वल्लभे ॥ ७८ ॥ ततः सूतसमानेतान्गृहीत्वा नवसादरम् । राजिकां च रसोनं च प्रिये चैतैस्तुषाम्बुना ॥ ७९ ॥ संमर्द्य चक्रिकां कृत्वा शोषयित्वा प्रलेपयेत् ॥ हिंगुना शोषयेत्पश्चादूर्ध्वपातनके न्यसेत्॥८०॥तां चक्रिकामधःस्थाल्यां पूरयेल्लवणेन हि । अधःस्थाल्यां ततो मुद्रां दत्त्वा दृढतराम्बुधः ॥ ८१ ॥ विशोष्य स्थापयेच्चुल्ल्यामधो वह्निं त्रियामकम् । दत्त्वा तीक्ष्णमुपर्यम्बु निस्सिञ्चेत्सुप्रयत्नतः॥८२॥ स्वांगशीतं समुद्घाट्य तिर्यक्कृत्वा प्रयत्नतः ॥ अथोर्ध्वभांडसंलग्नं गृह्णीयाद्रसमुत्तमम् ॥ ८३ ॥ पश्चाद्बलप्रकर्षाय स्वेदयेद्दोलयंत्रके । सिन्धूत्थचूर्णगर्भस्थं वस्त्रे बद्धोत्तमो रसः॥८४॥ (अनुपानतरङ्गिणी ७४)

अर्थ–लहशन और राईको पीसकर दो घरिया बनावे उसमें पारदको अच्छीतरह बांधकर कांजीमें तीन दिनतक स्वेदन करे फिर घीगुवारके रसमें एक दिनतक घोटतारहै। उसके बाद चित्रकके स्वरसमें एक दिन मर्दन करे। फिर उसके बाद एक दिन मकोयके रसमें, एक दिन त्रिफलाके रसमें घोटे। तदनन्तर खरलमेंसे पारेको कांजीसे धोकर पारेसे आधा भाग सैंधानोंन और पारदको खरलमें डाल एक दिवसतक निम्बूके रससे घोटे फिर पारदके समान ही नौसादर राई और लहशन इन तीनोंको लेकर पारेके साथ कांजीसे पीस गोल टिकिया बनाकर और सुखाकर हींगसे लेप करदेवे उस टिकियाको नीचेके बासनमें रख ऊपरसे हांडी गलाकर मुद्रा करलेवे और सुखाकर चूल्हेपर रख तीन प्रहरतक तेज अग्निदेवे और ऊपरकी हांडीपर जलको सींचता रहै, जब अपने आप ठंढा होजावे तब खोल कर और टेढा कर अतियत्नसे ऊपरके बासनसे उत्तम पारदको निकाल लेवे फिर उसी पारदके बल बढानेके लिये सैंधानोंनके चूर्णमें रख कपडेमें पोटली बांध दोलायन्त्रमें स्वेदन करे ॥ ७५–८४ ॥

शोधन।

एकेन लशुनेनैव शुद्धो भवति पारदः[1] समं सप्तदिनं पिष्टो दोषकंचुकिवर्जितः ॥ ॥ ८५ ॥ (ध.सं.२८)

अर्थ–पारदको तप्त खल्वमें डालकर लहशुनके रससे सात दिन तक बराबर घोटता रहे तो पारद दोष और कंचुकोंसे रहित होकर शुद्ध होताहै ॥ ८५ ॥

मतान्तर।

एकेन लशुनेनैव तप्तखल्वे स्थितः सदा ॥ सप्तसप्त दिनं पिष्टः शुद्धो भवति सूतकः ॥ ॥ ८६ ॥ (टोडरानन्दः)

अर्थ–पारदको तप्तखल्वमें डालकर लहशुनके रससे इक्कीस दिन तक घोटता रहे तो पारद शुद्ध होताहै ॥८६॥

१ शुद्धो भवति पारदः-इत्यपि।

मतान्तर ।

एकेन लशुनेनापि शुद्धो भवति पारदः ॥ तप्तखल्वे मासमेकं पिष्टो लवणसंयुतः ॥ ॥ ८७ ॥ (योगतरंगिणी ५३,र.रा.सुं. ३५, र.रा.शं.४रस.प.९)

अर्थ–पारदको तप्तखल्वमें डालकर केवल नोन और लहशुनके रससे एक मास पर्यन्त लगातार घोटता रहै तो पारद अत्यन्त शुद्ध होता है ॥ ८७ ॥

शोधन ।

रसोनमर्दितः सूतो नागवल्लीदले स्थितः॥ सर्वदोषविनिर्मुक्तो योज्यः स्याद्रसकर्मसु॥ ॥ ८८ ॥ (रसेन्द्रसारसंग्रहः)

अर्थ–पारदको तप्त खल्वमें डालकर लहशुनके रसके साथ घोटे फिर उसका गोला बनाय नागरवेलके पानमें रख कमसे कम एक प्रहर स्वेदन करे तो पारद शुद्ध होताहै और उसको समस्त रसकर्ममें उपयुक्त करे ॥ ८८ ॥

शोधन ।

रसस्य दशमांशं तु गंधं दत्त्वा प्रयत्नतः ॥ जम्बीरोत्थद्रवं यामं पात्यं पातनयंत्रके ॥ ॥ ८९ ॥ पुनर्मर्द्यं पुनः पात्यं सप्तवारं विशुद्धये ॥ युक्तं सर्वस्य सूतस्य तप्तखल्वे विमर्दनम् ॥९०॥ (रसमञ्जरी४,कामरत्न२९४, र.रा.प.२६, रसेन्द्रसारसंग्रह६)

अर्थ–पारदमें दशमांश गंधकको मिलाकर जंभीरीके रससे एक प्रहर तक घोट कर ऊर्ध्वपातनयंत्रमें उडालेवे फिर मर्दन करना और पातन करना इस प्रकार सात बार पातन करे तो पारद शुद्ध होताहै जिस २ स्थलपर पारदका मर्दन लिखा है वहांपर तप्त खल्वद्वारा मर्दन समझना चाहिये ॥ ८९ ॥ ९० ॥

भूगर्तेऽजशकृत्तुषानलपुटैः संस्थापिते लोहजे खल्वे जंभलकांजिकेन बलिना सार्द्धं दशांशेन सः ॥ संमर्द्यः परिपातयंत्रविधिना निष्कासितः सप्तधा शुद्धः पारदकर्मठैर्निगदितो वैद्यैरवद्येतरैः ॥ ९१ ॥ (रसराजसुंदर ३५,नि.र. २४,र.सा.प.९)

अर्थ–धरतीमें गड्ढा खोदकर बकरीकी मेंगनी और भुसकी अग्निपर रक्खे हुए लोहेके खरलमें दशांश गंधकके साथ पारदको रखकर घोटे फिर ऊर्ध्वपातन यंत्रद्वारा उडाकर ग्रहण कर लेवे इसप्रकार सात बार करे तो पारद सर्वोत्तम शुद्ध होताहै ऐसा शास्त्रोंमें लिखा है ॥ ९१ ॥

हिदायत मुतअल्लिक सीमाव मय-गंधक (उर्दू)

गंधक और सीमाव मुसावी मिलाकर घोटकर बजरिये डौरूजंतरके तसईद कियाजावे तो इस अमलसे गंधक भी तसईद होतीहै और पारा भी जंतरमजकूरको अच्छी तरह कपडेसे साफ करके तसईद शुदाऽको निकालले और पारेके जर्रारको कपडेसे छानकर और दबादबाकर अलहदा करले। (सुफहा अकलीमियां १४२)

शुद्ध पारदके अभावमें दरदाकृष्ट-पारदग्रहण ।

शुद्धं रसेन्द्रं युंजीत सर्वकर्मसु सत्फलम् । दरदाकृष्टमथ वा नाशुद्धं योजयेत्क्वचित्॥९२॥ (रसमानस १)

अर्थ–सम्पूर्ण कर्मोंमें शुद्ध पारदका ही प्रयोग करे तो अच्छा फल होताहै अथवा जहां शुद्ध पारद नहीं मिले वहां शिंगरफ.से निकाले हुए पारेको लेना चाहिये अशुद्ध पारदका कहीं भी प्रयोग नकरे ॥ ९२ ॥

हिङ्गुलाकृष्ट पारदविधि ।

निम्बूरसेन संपिष्य प्रहरं दरदं दृढम् । उर्द्ध्वपातनयंत्रेण संग्राह्यो निर्मलो रसः ॥ ९३ ॥ (योगरत्नाकर७७,र.रा.शं.४)

अर्थ–हिंगुल (शिंगरफ) को नींबूके रससे पारदको एक प्रहरतक दृढतासे घोटकर डमरूयंत्रमें उडालेवे तो पारद निर्मल होजाताहै ॥ ९३ ॥

हिंगलाकृष्टपारदशोधन ।

निम्बूरसैर्निम्बपत्ररसैर्वा याममात्रकम् । पिष्ट्वा दरदमूर्ध्वं च पातयेत्सूतयुक्तितः ॥ ततः शुद्धतरं तस्मान्नीत्वा कार्येषु योजयेत ॥ ९४ ॥ (रसराज ३२, र. रा. सुं. ३५, शार्ङ्गधर ३०८, नि. र. २८)

अर्थ–नीबूके रससे या नीमके पत्तोंके रससे शिंगरफको एक प्रहरतक घोट ऊर्द्धपातन यंत्रमें उडालेवे फिर उस शुद्ध पारदको निकाल सब कामोंमें लावे ॥ ९४ ॥

सिंगरफसे पारद निष्कासनविधि। दोहा ।

साधारणपारदविषे, संस्कार करवाय । सिंगरफके पारदविषे, पारो तथा निकसाय ॥ १ ॥ सिंगरफको पारद कहो,कौन रीतितैं होय । ताकी विधि कर्तव्यता, सबै कहतहैं सोय ॥ २ ॥ या प्रसंग ही में कहूं, डमरू दोलायंत्र । गंधक विष शोधन कहूं, और बालुकाजंत्र ॥ ३ ॥ सिंगरफ सुंदर द्वै पहर, नींबूरस पिसवाय । निंबपातरस डारिके, अथवा ले खरलाय ॥४॥

निम्बपातरस ना कढै, तब जलदेय कढाय। ताके जवा बनायके, दीजै धूप सुखाय ॥ ॥ ५ ॥ फिर द्वै हांडी लेयके, नीके मुख घिसलेय। नीचेकी हांडी विषे, जवा फेर धरिदेय ॥ ६ ॥ कपरा माटी घोरिके, संधि बंद करलेय। ताको धूपसुखायके, चूल्हेपै धरिदेय ॥ ७ ॥ बार बार भिजोयके, कपरा ले बुधिवान। ऊपरकी हांडी विषे, फेरत रहै निदान ॥ ८ ॥ शिंगरफको परमान है, षट पैसा भर देय। तीन प्रहर ताकी तरे, मध्यम आंच करेय ॥ ९ ॥ या विधि डमरू जंत्रते, पारद लेय उडाय। उडनहार जे वस्तुते, या हमें उडवाय ॥ ॥ १० ॥ स्वांगशीत होवे जबै, हांडी पृथक कराय। पारद ऊपर जो लग्यो, ताहि पोंछ निकसाय ११ ॥ (वैद्यादर्श १३)

शिंग्रफकी तसईद (पाराकुश्तःको शिंग्रफसे जिन्दः निकालनेकी तरकीब (उर्दू)

शिंग्रफको अर्क लैमूंमें एक प्रहरतक खरल करे और दो जर्फ गिली के लबोंको पत्थरपर घिस कर हमवार करदे ताकि उससे सांस और भाप वगैरः न निकल सके बादहू जर्फ मजकूरको गिले हिकमत करके आगपर रखदे जल्द खालिस जानिबवाला तसईद होजायगा। सुफहा अकलीमियां १००)

हिंगुलाकृष्टरस।

दरदं तण्डुलस्थूलं कृत्वा मृत्पात्रके त्रिदिनम् ॥ भाव्यं जम्बीररसैश्चाङ्गेर्या वा रसैर्बहुधा ॥ ९५ ॥ ततश्च जम्बीरवारिणा चाङ्गेर्य्या रसेन परिप्लुतम्। कृत्वा स्थालीमध्ये निधाय तदुपरि कठिनी घृष्टम् ९६ उत्तानं चारुशरावं तत्र वारंवारं जलं देयम्। उष्णे हेयं तथैव तदूर्ध्वपातनेन निर्मलः सूतः ॥ ९७ ॥ (रसेन्द्रसारसंग्रह ९)

अर्थ–शिंगरफके चावले समान टुकडे करके मिट्टीके पात्रमें रख तीन दिवसतक जंभीरीके रससे या चूकाके रससे अनेकबार भावना देवे फिर जंभीरी या चूकाके रसमें तर करके हांडीमें रक्खे और उसपर दूसरी हांडीको रक्खे जिसका मुख ऊपरको हो दोनों हांडियोंके मुखको कपरौटीसे बंदकरदे और ऊपरकी हांडीमें वारवार पानी भरता रहै अर्थात् जब पानी गरम होजावे तब निकाल कर ठंढा पानी भर देवे इस प्रकार जो ऊपर की हांडीके पेंदमें जो पारद लगजाय उसको निकाल लेवे और आस पास जो मिट्टी लगाई जाती है. उसको भी कपडेमें छान कर बार बार पानी या कांजीमें धोडाले इस प्रकार निकले हुए शुद्ध पारदको सब कामोंमें लावे ॥ ९५–९७ ॥

हिंगुलाकृष्टपारदविधि।

अथवा हिंगुलात्सूतं ग्राहयेत्तन्निगद्यते। पारिभद्ररसैः पेष्यं हिंगुलं याममात्रकम् ॥ ॥ ९८ ॥ जम्बीराणां द्रवैर्वाथ पात्यं पातनयंत्रके। तं सूतं योजयेद्योगे सप्तकंचुकवर्जितम् ॥ ९९ ॥ (कामरत्न २९३, रसदर्पण, टी. १७)

अर्थ–अथवा सिंगरफसे पारदके निकालनेकी रीतिको कहतेहैं कि नीमके पत्तोंके रससे या जंभीरीके रससे सिंगरफको एक प्रहरतक मर्दन करे फिर पातनयंत्रसे पारदको निकाल लेवे उन सातों कंचुकोंसे रहित पारेको सब कामोंमें लावे ॥ ९८ ॥ ९९ ॥

मतान्तर।

पारिभद्ररसैः पेष्यं हिंगुलं याममात्रकम्। जम्बीराणां रसैर्वाथ पात्यं पातनयंत्रके ॥ ॥ १०० ॥ तं सूतं योजयेद्योगे सप्तकंचुकवर्जितम्। संशुद्धिमन्तरेणापि शुद्धोयं रसकर्मणि ॥ १०१ ॥ (रसेन्द्रसारसंग्रहः १०, रसरत्नाकर १६२, नि. र. २८)

अर्थ–नीमके पत्तोंका रस या जंभीरीके रससे सिंगरफको एक प्रहरतक घोट कर डमरू यंत्रमें उडालेवे उन सातों कंचुकोंसे रहित पारदको समस्त योगोंमें वर्ते क्योंकि यह पारद शुद्धिकर्मके विना ही रसकर्ममें शुद्ध मानागयाहै ॥ १०० ॥ १०१ ॥

मतान्तर।

दरदं निम्बुनीरेण दिनमेकं विमर्दयेत्। ऊर्द्ध्वपातनके यंत्रे वह्निं दत्त्वा त्रियामकम् ॥ ॥ १०२ ॥ स्वांगशीते समुद्घाट्य ह्यूर्ध्वलग्नं रसं नयेत्। पुनर्निम्बस्य निम्बोर्वा रसैर्यामं विमर्दितः ॥ कंचुकैर्नागवंगाद्यैर्मुक्तः स्यात्पारदोत्तमः ॥ १०३ ॥ (अनुपानतरङ्गिणी ७४)

अर्थ–सिंगरफको नीबूके रसमें एक दिनतक घोटे फिर डमरू यंत्रमें रखकर तीन प्रहरकी मृदु मध्य और तीक्ष्ण अग्नि देवे स्वांग शीतल होनेपर ऊपर लगेहुए पारदको निकाले फिर नीम या नीबूके रसमें एक प्रहरतक घोटे तो पारद नाग आदि कंचुकोंसे रहित होकर उत्तम शुद्ध होताहै ॥ १०२ ॥ १०३ ॥

मतान्तर।

अथवा ग्राहयेत्सूतं दरदात्तन्निगद्यते। कंचु-

कैर्नागवंगाद्यैर्विमुक्तो रसकर्मणि ॥ हिंगुलाकृष्टसूतस्तु जीर्णगंधसमो गुणैः ॥१०४॥ (र. रा. शं. ४, नि. र. २८)

अर्थ-अथवा पारदको सिंगरफमेंसे निकाले तो नाग, वंग आदि सब कंचुकोंसे रहित होताहै । हिंगुलसे निकाला हुआ पारद गंधकजारित पारदके समान होताहै ॥ १०४ ॥

सम्मति-उपयुक्त क्रिया रसराज शंकरकी है और निघंटुरत्नाकरवालेने भी उसीसे लियाहै कारण कि, जैसी अधूरी क्रिया रसराजशंकरमें लिखी है वैसीही निघण्टुरत्नाकरमें भी लिखीहै इसकी पूरी क्रिया इस ग्रंथमें रससारपद्धतिसे गृहीत कर आगे लिखतेहैं ।

हिंगुलसे रसाकृष्टि ।

अथवा ग्राहयेत्सूतं दरदात्तं निगद्यते । निम्बूरसेन संपिष्य प्रहरं दरदाद्दृढम् ॥ ॥ १०५ ॥ निम्बपत्ररसैर्वापि जम्बीराद्भिरथापि वा । ऊर्ध्वपातनयंत्रेण तद्ग्राह्यो निर्मलो रसः ॥ १०६ ॥ कंचुकैर्नागवंगाद्यैर्विमुक्तो रसकर्मणि । हिंगुलाकृष्टसूतस्तु जीर्णगंधसमो गुणैः ॥ १०७ ॥ (वाग्भटः, र. सा. प.)

अर्थ-अथवा सिंगरफसे पारदके निकालनेकी युक्तिको वर्णन करतेहैं कि हिंगुलको एक प्रहरतक नींबूके रससे नीमके पत्तोंके रससे खूब घोटे फिर ऊर्ध्वपातनयंत्रमें रख निर्मल पारदको ग्रहण करलेवे तो पारद नाग, वंग आदि कंचुकोंसे रहित हुआ रसकर्मके योग्य होताहै हिंगुलसे निकला हुआ पारद गंधकजीर्ण पारदके गुणोंके तुल्य होताहै ॥ १०५-१०७ ॥

हिंगुलाकृष्टरसकी शुद्धि ।

अथवा दरदाकृष्टं स्विन्नं लवणाम्बुभाजिदोलायाम् । रसमादाय यथेच्छं कर्तव्यस्तेन भेषजो योगः ॥ १०८ ॥ (योगरत्नाकरः ७७, नि. र. २९, र. रा. शं., रस. सा. प. ९)

अर्थ-अथवा हिंगुलसे निकले हुए पारदको नोंनके पानीसे भरे हुए दोलायंत्रमें स्वेदन कर निकाल लेवे वैद्य उसका सब औषधियोंका प्रयोग करे ॥ १०८ ॥

मतान्तर ।

योज्यः साम्बुपुटो स्विन्नः पूर्वाभावे भिषग्वरैः ॥ १०९ ॥ (योगतरङ्गिणी ५६)

अर्थ-जलमें घुलेहुए नोंनको दोलायंत्रमें भरकर पारदको स्वेदन करे तो पारा शुद्ध होताहै यह क्रिया हिंगुलाकृष्ट पारदके नहीं मिलनेपर वैद्योंको करनी चाहिये ॥ १०९ ॥

रसकी हिंगुलाकृष्टविधि ।

अथवा हिंगुलात्सूतं ग्राहयेत्तन्निगद्यते । जम्बीरनिम्बुनीरेण मर्दितो हिंगुलो दिनम् ॥ ११० ॥ ऊर्ध्वपातनयंत्रेण ग्राह्यः स्यान्निर्मलो रसः । कंचुकैर्नागवंगाद्यैर्निर्मुक्तो रसकर्मणि । विना कर्माष्टकेनैव सूतोऽयं सर्वकर्मकृत ॥ १११ ॥ (रसेन्द्रसारसंग्रहः ८, र. रा. सुं. ३४)

अर्थ-अथवा सिंगरफसे पारदके निकालनेको कहतेहैं । कि सिंगरफको नींबू या जंभीरीके रससे एक दिन मर्दन करे फिर ऊर्ध्वपातनयंत्रमें रखकर उडालेवे तो वह पारद नाग, वंग आदि कंचुकोंसे रहित होकर रसकर्मके योग्य होताहै तथा आठ संस्कारोंके विना कियेहुए भी समस्त कर्मके उपयोगी होताहै ॥ ११० ॥ १११ ॥

सम्मति-सिंगरफसे निकले हुए पारदका कदर्थन होताहै और कदर्थनसे पारदमें नपुंसकता पैदा होतीहै उस नपुंसकताके दूरकरनेके लिये और अधिक बल पैदा करनेके वास्ते सैंधव सहित जलभरेहुए दोलायंत्रमें स्वेदन करे अथवा बांझककोडा सर्पाक्षी साम्हर भंगरा नीम इनको कांजीमें घोल कर देवे फिर उसमें पारदको एक दिवसतक स्वेदन करे तो पारद नपुंसकतासे रहित होताहै यही बात रसरत्नप्रदीपमें लिखीहै "पातैस्त्रिभिः सूतकदर्थनं वै भवेत्तथा हिंगुलकृष्टतोपि ॥ कदर्थनेनैव नपुंसकत्वमेवं भवेदस्य रसस्य पश्चात् ॥ १ ॥ बलप्रकर्षाय च दोलिकायां स्वेद्यो जले सैंधवचूर्णगर्भे॥ वंध्या हिनेत्रांबुजमार्कवाणां सतिक्तकानां दिवसं द्रवैक्ये ॥ २ ॥"

दरदाकृष्टरसकी शोधनावश्यकता ।

रसगंधकसंभूतं हिंगुलं प्रोच्यते बुधैः । तस्मात्सूतं च यद्ग्राह्यं शोध्यं तदपि सूतवत् ॥ ११२ ॥ (टो. १७, र. रा. सुं. ६६)

अर्थ-पण्डित मनुष्य सिंगरफका पारद और गंधकसे बना हुआ कहतेहैं इस लिये सिंगरफसे जो पारद निकाला जाताहै उसको साधारण पारदके समान शुद्ध करना चाहिये ॥ ११२ ॥

सिंग्रफसे सीमाव निकालनेकी अफ्ताबी तरकीब (उर्दू)

दूसरा तरीका अफ्ताबी यहहै कि शिंग्रफको किसी मछलीके पित्तेमें अच्छीतरह सहक करे बादहू अर्कलेमूंमें सहक करे और किसी बर्तन आहनी ख्वाह चीनी ख्वाह शीशःमें रखकर धूपमें टेढा करके सूराखके मुकाबिल रक्खे सीमाव सिंग्रफसे जुदा होजायगा ।(सुफहा अकलीमियां१०१)

शिंग्रफसे बगैर आंचके सीमाव निकालनेकी तरकीब (उर्दू)

अगर शिंग्रफ आब गलेगलमें[1] खरल करके फिर शिंग्र-

1-गलगल पंजाबीमें अमलवेतको कहतेहैं ।

फको गलगलमें डाल कर गर्म जगहमें रक्खें तो पारा निकल आवेगा (सुफहा ७२ कुश्तैजात हजारी)

रोहू मछलीका प्रभाव पारद पर (उर्दू)

सीमावको पित्तारोहूमें सहक करनेसे सफाई बहुत जल्द होती है और अगर सहक वलेग किया जावे तो मुनअकिद होसकता है। (सुफहा किताव अलकीमियां ५१)

सीमावके परोंके नाम (उर्दू)

सीमावके परोंके नाम हस्वजैल हैं–१ धूम यानी धूआं २ कंप यानी लरजिश, ३ चर यानी खुरिश, ४ अचर यानी गैर खुरिश, ५ ऊप यानी तेजी, ६ कोप यानी गुस्सा, ७ संचार यानी गवासी। और हर एक पर एक एक जसद और एक एक सितारेसे मनसूब है जो पर कि तिला व नुकरः या शम्स या कमरसे मन्सूब हैं वह बदस्तूर हर असलमें रहने देना चाहिये क्योंकि तिला व नुकरा खुद पाक हैं। लिहाजा इनसे मन्सूबः पर भी पाक हैं। बाकी पांच पर पांचों अजसादके वास्ते मौहर्रिक हैं इनके बाकी रहनेसे न अकसीर सीमाव अजसादके रहनेके काम आती है। और न खानेमें कोई नफा रखती है। अगर अकसीर तिला बनाना मंजूरहै तो पक्षाघात यानी अनल रावअके बाद धूम, कंप, चर और कोपको दूर करे और अचर, उप, सञ्चारको रहने दे। अगर चांदी बनानेकी ख्वाहिश है तो धूम, कंप, चर, उपको दूर करे। और कोप, चर, संचारको बाकी रक्खे। अगर गुटका बनाना मकसूद है तो धूम, कंप, चर, संचारको दूर करे। और अचर, उप, कोपको निगाह रक्खे। अगर खाने और कुव्वत बदनके वास्ते इस्तैमाल करना मंजूर होतो कंप, अचर, कोपको दूर करे। और धूम, चर, उपको रहनेसे अगर इन उसूलको बे समझे बूझे अमल करेगा तो हरगिज दुरुस्त न होगा और अमल बातिल होजायगा। (सुफहा अकलीमियां १५०-१५१)

शङ्का–ठीक समझमें नहीं आता कि परोंसे मुरादकों चलीसे है या गतीसे है या अभ्रक जारणमें जो अग्निपर रखनेसे पारदकी दशा होती है उससे मुराद है।

खानेके वास्ते सीमावसे केंचली मुखालिफ दूर करनेकी तरकीब (उर्दू)

सीमावको १ ईट, २ राई, ३ जौहरा ताऊस या जौहरा मेष, ४ शीरा दरख्त आकमें बदस्तूर खरल करे। (सुफहा अकलीमियां १५८)

अमल खालिस सीमावसे केंचली मुखालिफ दूर करने और केंचली मुवाफिक इस्तवार करनेकीतरकीब (जिसको स्तलाह हुक्मामें मुतफिकउल अमल कहते हैं। उर्दू)

१ खिश्त जर्द.
२ शीरा चौलाई.
३ आब नमक.
४ आब चूना.
५ आब सज्जी.
६ शीरा केवांच.
७ शीरा बेखकौआठोढी
८ शीरा धतूरा स्याह.
९ शीरा मुलहठी.
१० शीरा पतालगरुडी.
११ शीरा बकम.
१२ शीरा बकाई स्याह.

पहली तदबीर अमल शमसीके वास्ते केंचली मुखालिफ सीमावसे दूर करनेकी यह है कि, अशियाय जलमें दो पहरतक खुश्क करे बाद उसके आठ प्रहर शीरा गोमाका चोया दे जिसमें खरल करनेसे खराब केंचलियाँ जो दूर होगई हैं फिर न ऊद कर आवें और मुवाफिक केंचली बाकी कायम रहें क्योंकि मुमकिन है कि किसी मुखालिफ बूटीमें खरल करने या चोया देनेसे केंचली मतलूबः जायः होजावें और अमल नातमाम रहे। (सुफहा अकलीमियां १५१)

अमल कमरीके वास्ते सीमावसे केंचली मुखालिफ दूर करनेकी तरकीब (उर्दू)

मुफस्सिलः जैल अजजाइ बूटियोंमें सहक करे सहक बतौर पुट आफ्तबीके देना चाहिये सीमाव कमरी होजायगा!

१ शीरा सँहजना.
२ शीरा भाँगरा.
३ आब बेखनीब.
४ कांजी.
५ सिरकः तुर्शमुकत्तर.
६ माइडल खालह.
७ लेनुलगदरा.
८ वर्गतंबूल.
९ ईट.

चाहिये कि सीमाव मजकूरको शीरा सँहजनेमें बेख सँहजनेके डंडेसे खरल करे और शीरा भांगरा और कांजी और सिरकः तुर्शमें अलहदा अलहदा बेखनीबके डंडेसे खरल करे माइ उल हवालिदसे[1] वह तेजाब मुराद है जो अंडोंके छिलकों और नौसादरको महलूल करके बनाया जाताहै और इन दोनों की तरकीबें बाब अव्वलमें तकतीर व तकलीसके बयानमें लिखी जा चुकी हैं और ईटमें अर्क वर्गतम्बूल मिलाकर सहक करे सहक करनेके बाद शीरा गोमाका आठ पहर चोयादे ताकि केंचली मुखालिफका असर न रहे और केंचली मुवाफिकका असर जाइल न हो। (सुफहा अकलीमियां १५४–१५५)

---

१ मुतरज्जिम–माइउल खालिहद तेजाब शोरा वगैरः को कहतेहैं लेनुलगदरासे यहांपर मुराद उस पानीसे है कि जो मुर्दार संग और नमक सज्जीसे बनाया जाताहै।

गुटका बनानेके वास्ते सीमावसे कैंचली मुखालिफ दूर करनेकी तरकीब (उर्दू)

बुरादः खिश्त नीम पुख्तःमें कांजी या सिरकः मुकत्तर या अर्क वर्ग तम्बूल डाल डालकर दरख्त नींबके डंडेसे या सँहजनेकी जडसे या जकूम बेखार यानी छीमियांथूहरकी नरम फलीसे जोदरख्त मजकूरःबालामें केलाकी फली की तरह लगीहोतीहै खरल करे और खरल बदस्तूर दो पहर दिनतक करे और दोपहरसे शामतक धूपमें खुश्क करे और दूसरी बूटीके शीरा और दूसरी लकडीके दिस्तेसे खरल न करे इस वास्ते कि अमल ठीक उतरे या नहीं यानी जिस कैंचली को बाकी रखना मंजूर है वह मुमकिनहै कि दूसरी लकडीमें खरल करनेसे दूर होजावे। (सुफहा अकलीमियाँ १५६)

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डित मनसुखदासात्मजव्यास-ज्येष्ठमलकृतायां रसराजसंहिताया भाषाटीकायां साधारणशोधनं नाम त्रिंशोऽध्यायः ॥३०॥

अथ पारदमारणाध्यायः ३१.

अथ पारदभस्मके गुण ।

यावन्न हरबीजं तु भक्षयेत्पारदं मृतम् । तावत्तस्य कुतो मुक्तिर्भोगाद्रोगाद्भवादपि ॥ १ ॥ (रसराजसुंदर.)

अर्थ-मनुष्य जबतक भस्म किये हुए शिवबीज पारदको नहीं खाताहै तबतक भोग रोग और संसार या जन्ममरणसे उस मनुष्यको मुक्ति (छुटकारा) नहीं होतीहै ॥ १ ॥

अथ मृतपारदलक्षण ।

अतेजा अगुरुः शुभ्रो लोहहाऽचंचलो रसः॥ यदा नावर्त्तयेद्वह्नौ नोर्ध्वं गच्छेत्तदा मृतः॥ ॥ २ ॥ (रसराजशंकर)

अर्थ-जब कि पारद चमकरहित हो हलका हो सफेद हो धातुओंका खानेवाला और चंचलतारहित होकर आंचमें चक्कर न खावे और उडे भी नहीं तब पारदको मराहुआ समझना चाहिये ॥ २ ॥

दूसरा लक्षण ।

अगुरुरतेजाः शुभ्रो वह्निस्थायी स्थिरो धूमः ॥ हेमादिधातुभोक्ता तत्कर्ता स्यान्मृतः सूतः ॥ ३ ॥ (निघण्टुरत्नाकर.)

अर्थ-जो पारद भारी व चमकीला न हो आंचमें न उडनेवाला चंचलतारहित सुवर्ण आदि धातुओंका खानेवाला या सुवर्ण आदि धातुओंका करनेवाला हो उसको मृत पारद कहतेहैं ॥ ३ ॥

सीमावके मुस्तः कुश्ताकी शनाख्त (उर्दू)

आला शनाख्त कुश्ता पुख्तः सीमावकी यहहै कि वह अकसीर अजसाद हो " जो रंगी माया वही रंगी काया" इसी बजहसे मशहूर मसल है ऐसी हालतमें जो मिकदार अजसादपर तरह करनेकी मुअय्यनहै नहीं कदर खुराक होतीहै । नं० १ । कुश्ते अरबाहुके असूमन और कुश्ते सीमावका खुसूसन आगपर कायमुल्नार होताहै और धुआं नहीं देता अगर यह भी न हो तो हरगिज न खाना चाहिये नं० २ । कुश्ताके खाते ही उसका सुरी नफा जाहर होताहै और भूख लगतीहै और उसके बाद नऊज और कुव्वत बाह पैदा होती अगर यह बात जाहर न हो और मुफर्रत भी न हो तो जानना चाहिये कि कुश्ता के जौहर सोख्त होगये और अगर मुफर्रत हो तो नीमपुख्तहकी दलीलहै । (सुफहा ३०२ किताब अलकीमियाँ)

रसभस्म रखनेके लिये पात्र ।

वंशे वा माहिषे शृंगे स्थापयेत्साधितं रसम् ॥ ४ ॥ (रसेन्द्रचिन्तामणि.)

अर्थ-जब विधिपूर्वक पारद सिद्ध होजाय तब उसको बांसकी नलीमें या साफ कियेहुए भैंसके सींगमें रखना चाहिये ॥ ४ ॥

सम्मति-पहले समयमें काचकी अथवा चीनीकी शीशियां नहीं मिलसकती थीं इस लिये रसेन्द्र चिन्तामणि कारने शीशियोंका नाम नहीं लिखा परन्तु आजकल काच की शीशियां बहुत मिलतीहैं इस वास्ते उनमेंही सिद्ध रसादिकोंको रखना चाहिये ।

अकसीर सीमाव नाकिसकी तासीर (फार्सी)

(षंढ पारद प्रभाव)

वा इस्तैमाल सीमावे कि बाद अज खुर्दन ओहेच खासियत जाहर न गर्दद चुनांचः खुश्की गुलू व खारिश दस्त दस्तहा वकमी इश्तहा सिवाइ अजीदीगर मुतलक तासीर जाहर न गर्दद न गर्मी व न इश्तहा पसाविद्यनन्द कि हेच मसालह बदीं नमान्दः बहमः सोख्तः शुदः अस्तः तासीर नमेबख्शद । (सुफहा ११ छोटी किताब या किताब जवाहर उलसिनात नुसखेमेंसिद्ध रस)

सीमावके कुश्ता नीमपुख्तः खानेके नतायज (उर्दू)

खानमें अहतिराक पैदा होताहै बदनका रंग नहासी होजाताहै जजामी कैफियत तारी होतीहै आवलावदनसे और चहरे और जिस्ममें बरस होजाताहै अगर आरजी इलाजसे सेहत भी हुई तो बाज औकात फैकडा नाकिस होजाताहै और सिल व नफत उलदमके अवारिज नाहक होतेहैं लिहाजा जैलके मुजर्रिब और फौरी इलाज लिखे जाते हैं । (सुफहा ३०४ किताब अलकीमियाँ ।)

खाम कुश्ता सीमावके जिस्मसे खारिज करनेकी तरकीब (उर्दू)

नौआदीगर पचांग दरख्त नील मुसह्लिमको लेकर टुकडे टुकडे करके पानीमें जोशदे बादहू छानकर आधे आधे घंटे के बाद एक एक प्याला मिलावे सीमाव पेशाबकी राहसे वह जावेगा मुजर्रब है । (सुफहा ३०२ किताब अलकीमियां)

खास कुश्ता सीमावको जिस्मसे खारिज करनेकी तरकीब (उर्दू)

नौआदीगर । शीरा वर्गसिसी जिसको कागजुंखा कहतेहैं निकालकर तीन तोलेसे लेकर आधपावतक सात आठ स्याह मिर्च मिलाकर । आध पाव पानी शामिल करके छानले बादहू पिलादे चौदह दिनमें सेहत होजातीहै और अगर जल्द जाहर पुर असर अहतिराक खूनका हो रोगनतुख्म कुदूइ तलखकी मालिश करे सेहत कामिल हो जायगी (सुफहा ३०३ किताब अलकीमियां)

सीमावको बदनसे खारिज करनेकी तरकीब (फार्सी)

तदवीर कसेकि जीवक खुर्दः वाशद. व वसब आंशकाक व जराहात हमरसीदः वाशद, ओं अस्त कि विगीरन्द शीरः हव्वुलकतन मिकदार, यक आसार व वरक सिकः काई कि ग्राही अस्त हिन्दी दरआंमालीदः साफकर्दः सहरोज वियाशामन्द व मेगोयन्द कि ईदवा अखराज मेतुमायन्द सीमावरा अज मवरबोल बहुमचुनी शस्तन दस्तोपाइ और आवाव मजवूख पोस्त दरख्त पीपल कि पंज, आसार आंरा दरदह आसार आव विजोशानन्द ता विनस्फ रसद व गुफ्तः अन्द कि ईतदबीर जहत बाद फूरंग नीजनाफः अस्त । (सुफहा २४१ किताब जिल्द दायमकरा वा दीनकबीर)

सदोष पारदमारणका निषेध ।

युक्तं द्वादशभिर्दोषैर्यश्च हन्याद्रसेश्वरम् ॥ ब्रह्महत्यादिका हत्या भवेत्तस्य पदे पदे॥५॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ-जो वैद्य या साधारण जन बारह दोषोंसे संयुक्त पारदको भस्म करताहै उसको एक २ पेंगपर ब्रह्महत्यादिक हत्या होतीहैं ॥ ५ ॥

अन्यच्च ।

सदोषो भस्मितो येन योजितं योगकर्मणि ॥स भिषक् पतते नरके यावच्चन्द्रदिवाकरौ ॥ ६ ॥ (रसराजसुन्दर., नि. र.)

अर्थ-जिस मनुष्यने दोषसहित पारदको भस्म कियाहै और बनाकर रसादिकोंमें भी प्रयोग किया हो वह मनुष्य सूर्य चंद्रमाकी स्थिति पर्यन्त नरकमें पडताहै ॥ ६ ॥

निर्दोष पारद मारणकी आज्ञा ।

मुक्तं द्वादशभिर्दोषैर्यस्तु हन्याच्छिवात्मजम् ॥ ऐहिके स तु पूज्यः स्यात्परत्र स्वर्गतो भवेत् ॥ गुणप्रच्छादकाः सप्त कंचुकाः पारदे मताः ॥ ७ ॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ-जो मनुष्य बारह दोषोंसे रहित पाराको भस्म करता है वह इस लोकमें पूजनीय होताहै और मृत्युके पश्चात् स्वर्ग लोकको जाताहै, पारद शुद्ध करनेका कारण यह है कि पारेमें स्वयं गुणके नाशक सात कंचुक माने गयेहैं ॥ ७॥

अशुद्ध और अबीज पारद मारणका निषेध (शिवागमसे)

योऽशुद्धं घातयेत्सूतं निर्बीजं वाथ मानवः ॥ ब्रह्महा स दुराचारी मम द्रोही महेश्वरि ॥ ८ ॥

अर्थ-जो वैद्य अशुद्ध या बीजरहित पारदको भस्म करताहै हे पार्वती वह दुष्ट ब्रह्महत्यारा मेरा शत्रु होताहै॥८॥

पारदमारण निषेध।

गुरुशास्त्रे परित्यज्य विना जारितगंधकात् ॥ रसं निर्माति दुर्मेधाः शपेत्तं परमेश्वरः ॥ ९ ॥ (बृहद्योगतरङ्गिणी नि. र.)

अर्थ-जो निर्बुद्धी लोग गुरु तथा शास्त्रकी प्रक्रियाको छोडकर और गंधकजारण न करके पारदकी भस्म करताहै उसको श्रीमहादेव जी शाप देते हैं ॥ ९ ॥

सुवर्णयुक्त पारदकी आज्ञा ।

औषधीघातितः सूतो यदा भूयो न जीवति ॥ न तु क्रामति लोहेषु न च: कुर्याद्रसायनम् ॥ १० ॥ तस्मात्सुवर्णादियुतं मारयेद्रसभैरवम् ॥ ११ ॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ-औषधियों द्वारा मारा हुआ पारद फिर जीवित नहीं होताहै और वह धातुओंमें प्रवेश नहीं करता रसायनका कर्ता भी नहीं होताहै इस लिये सुवर्णसंयुत पारदको भस्म करनाही उचितहै ॥ १०॥११॥

जडीद्वारा मारेहुये पारेके गुण ।

मूलिकामारितः सूतो जारणाक्रमवर्जितः॥ न क्रमेद्देहलोहाभ्यां रोगहर्ता भवेद्ध्रुवम् ॥ ॥ १२ ॥ (रसरत्नाकर., टो. नं.)

अर्थ-जारणक्रमको छोड कर केवल जडियोंसे पारदको मारते हैं तो वह पारद केवल देह और धातुमें प्रवेश न होकर रोगोंको ही नाश करताहै ॥ १२ ॥

दूसरा प्रमाण ।

रसौषधीमृतः सूतो गंधकादिविवर्जितः ॥

न देहे नैव लोहे स क्रमते किन्तु रोगहा ॥ १३ ॥ (रसमानस.)

अर्थ-गंधकादिकोंसे रहित पारदको केवल जडीसे ही भस्म करे तो वह पारद देह तथा लोहमें प्रवेश नहीं करताहै किंतु रोगोंका नाशक अवश्यहै ॥ १३ ॥

पारेका मारण नहीं होताहै किन्तु महामूर्च्छा होतीहै ।

निर्जीवत्वं गतः सूतः कथं जीवं ददाति सः ॥ निर्जीवेन तु निर्जीवः कथं जीवति शंकरः ॥ १४ ॥ परस्य हरते कालं कालिकारहितस्तथा ॥ अष्टानां चैव लोहानां मलं शमयति क्षणात् ॥१५॥महामूर्च्छागतं सूतं को वापि कथयेन्मृतम् ॥ दिव्यौषधिरसैनैव जायते नष्टचेतनः ॥ कालिकारहितश्चापि आधिं व्याधिं विनाशयेत् ॥ ॥ १६ ॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ-जो पारद स्वयं मरा हुवाहै वह फिर कैसे जीवित कर सकताहै क्योंकि हे शिवजी महाराज निर्जीव पारदसे जीवित नहीं हो सकताहै शिवजी बोले कि हे पार्वती जिस प्रकार पारद आठ रोगोंके मैलको शीघ्रही नाश देताहै उसी प्रकार कालिका दोषसे रहित कियाहुआ पारद काल को भी हरलेताहै, महामूर्च्छामें प्राप्त हुए पारदको मरा हुआ कौन कह सकताहै कारण उसका यहहै कि पारद दिव्यौषधियोंके योगसे चैतन्य रहित होजाताहै, और कालिका रहित पारद आधि (मनके रोग) व्याधि (शरीरके रोग) को नाश करताहै ॥ १४-१६ ॥

भस्मके वर्ण ।

श्वेतं रक्तं तथा पीतं कृष्णं चेति चतुर्विधम्॥ सूतभस्म प्रयोक्तव्यं यथा व्याध्यनुपानतः ॥ १७ ॥ (आयुर्वेदविज्ञान.)

अर्थ-सफेद लाल पीली तथा काली इस प्रकार चार तरहकी पारदभस्मको रोगोंके अनुपानके साथ देना चाहिये ॥ १७ ॥

औरभी ।

श्वेतं रक्तं तथा पीतं कृष्णं चेति चतुर्विधम्॥ लक्षणं भस्म सूतस्य श्रेष्ठं स्यादुत्तरोत्तरम् (रसरत्नाकर., रसेन्द्रसारसंग्रह.)

अर्थ-सफेद लाल पीली और काली इस तरह चार प्रकारकी पारेकी भस्म है इसमें एक दूसरेसे अधिक २ गुणवालीहै ॥ १८ ॥

अथ मारकवर्ग ।

ब्रह्मदण्डी मेघनादश्चित्रकं कटुतुम्बिका । वज्रवल्ली बला कन्या त्रिकंटार्कं स्नुहीपयः ॥ १९ ॥ कन्दो रम्भा च निर्गुंडी लज्जा जाती जयन्तिका । विष्णुक्रान्ता हस्तिशुण्डी दद्रुघ्नो भृंगराट् पटुः ॥ २० ॥ गुडूची लांगली नीरकणा काली महोरगा । काकमाची च दन्ती च एताः पारदमारकाः ॥ २१ ॥ व्यस्ताः समस्ता वा सर्वा देया ह्यष्टदशाधिकाः । उक्तस्थाने प्रयोक्तव्या रसराजस्य सिद्धये ॥ २२ ॥ (कामरत्न.)

अर्थ-ब्रह्मदण्डी, चौलाई, चित्रक, कडवीतोंबी, हडसंहारी, खरेटी, घीगुवार, गोखरू, आक, सेहुंडका दूध, जमीकन्द, केलेकी जड, निर्गुण्डी, छुईमुई, जायफल, जयन्तिका (हलदी), कोयल, हाथीशुण्डा, पवांड, भंगरा, करेला, गिलोय, कलिहारी या गंगारिया, जलपीपल, काली (बिछुआ घास), तगर, मकोय, दतोन, ये पारदेश्वरको मारनेवाली औषधियें हैं इन सबको या पृथक् २ जिस स्थानमें कहा हो पारदकी सिद्धिके लिये देना चाहिये ये सब दवाई अट्ठाईसहैं ॥ १९-२२ ॥

रसमारकवर्ग ।

अस्मिन्प्रकरणे वक्ष्ये शुद्धसूतस्य मारकाः । औषध्यस्ताः समस्ता वा व्यस्ता वा सिद्धसम्मताः ॥ २३॥ गंधं विनापि याः सूतं घ्नन्त्येव कृपया गुरोः। मेघनादो वचा वल्ली देवदाली च चित्रकम् ॥ २४॥ बला शुण्डी जयन्ती च कर्कोटी च पुनर्नवा । कटुतुम्बी कन्दरम्भा लशुनं गजशुण्डिका ॥ २५ ॥ कोशातक्यमृताकन्दकन्यकाचक्रमर्दकम् । सूर्यावर्तः काकमाची गुंजा निर्गुण्डिका तथा ॥ २६ ॥ लांगली सहदेवी च गोक्षुरं काकतुण्डिका । जाती लज्जालुपटुके हंसपादभृंगराजकम् ॥ २७ ॥ ब्रह्मबीजं च भूधात्री नागवल्ली वरी तथा । स्नुह्यर्कदुग्धं तुलसी धत्तूरो गिरिकर्णिका । गोपालीकोठकाद्याश्च सन्त्यन्याश्च महौषधीः॥२८॥ (रसमानस.)

अर्थ-अब मैं यहांपर शुद्ध पारदके मारनेवाली औषधियोंको कहूंगा वे औषधियें पारदमारनेके लिये पृथक् २ अथवा समस्त मिलाकर सिद्धसम्मत हैं जो कि गंधकके विना ही गुरुकी कृपासे पारदको मारती हैं, चौलाई, हडसंहारी, देवदाली (बन्दाल),चित्रक,खरेटी,सोंठ, जयन्ती, ककोडा, सांठकी जड,कडुवी तोंबी, केलेका कंद, लहशन, हाथीशुण्डा, गलकातोरई, गिलोय, जमीकन्द, घीगुवार, पमार, सूर्यावर्त (एक प्रकारका शाक) मकोय, चौंटनी, निर्गुण्डी, कलिहारी, सहदेवी, गोखरू, कौआठोडी, जायफल, छुईमुई, करेला, हंसराज, भंगरा, ढाकके बीज, भुंई-

१ महौषध्यस्तथेतराः ।२ सूर्यावर्तको हुलहुल कहतेहैं।

आमला, पान, त्रिफला, थूहर और आकका दूध, तुलसी, धतूरा, कोयल, कालोसर, अंकोल इनसे और भी कई महौषधिये हैं ॥ २३–२८ ॥

मारक वर्ग ।

अथैता मूलिका वक्ष्ये शुद्धसूतस्य मारणे । ब्रह्मदण्डी बला शुण्ठी कटुतुम्ब्यर्धचान्द्रिका ॥ २९ ॥ विषमुष्टयर्कलाक्षाश्च गोक्षुरः काकतुण्डिका । वज्रवल्ली मेघनादश्चित्रकस्तृणमुस्तिका ॥ ३० ॥ कन्या चण्डालिका कन्दसर्पाक्षी शरपुंखिका । बस्ता रक्तांगनिर्गुण्डी लज्जालुर्देवदालिका ॥३१॥ जाती जयन्ती वाराही भूकदम्बकुरण्टकम् । कोषातकी नीरकणा लांगली सहदेविका ॥ ३२ ॥ चक्रमर्दोऽमृता कन्दं काकमाची रविप्रिया । विष्णुक्रान्ता हस्तिशुण्डी स्नुक्पयो भृंगराट् पटुः । इत्येता मूलिकाः ख्याता योज्याः पारदमारकाः ॥ ३३ ॥ (रसरत्नाकर.)

अर्थ–अब हम शुद्ध पारदके मारनेके लिये जडियोंको कहते हैं ब्रह्मदंडी, खरेटी, सोंठ, कडवी तोंबी, कनफोडा, कुचला, आक, लाख, गोखरू, कौआठोडी, हडसंहारी, चौलाई, चीता, तृणमुस्तिका, वीगुवार, चंडालकंद, सर्पाक्षी, सरफोंका, वस्ता, कबीला, निर्गुण्डी, छुईमुई, बंदाल, जायफल, जयन्ती, वाराहीकन्द, अजमान, पीली कटसरैया, गलकातोरई, जलपीपल, कलिहारी, सहदेवी, पसार, जमीकंद, मकोय, हुलहुल, विष्णुक्रान्ता, हाथीशुंडा, थूहरका दूध, भंगरा, करेला । ये जडियें पारदके मारनेवाली कहीहैं ॥ २९–३३ ॥

अथ मारकवर्ग ।

घनवचचित्रकगोक्षुराः कटुतुम्बी दन्तिका जाती । सर्पाक्षी शरपुंखा कन्या चाण्डालिकाकन्दम् ॥ ३४॥ विषमुष्टिवज्रवल्ल्यौ लज्जालुर्देवदालिकालाक्षा । सहदेवी नीरकणा निर्गुंडी चक्रलांगलिके ॥३५॥मानकश्चन्द्ररेखा रविभक्ता काकमाचिका चार्कः । विष्णुक्रान्ता वायसतुण्डी वज्री बला च शुण्ठी च ॥ ३६ ॥ कोषातकी जयन्ती वाराही हस्तिशुण्डिका रम्भा । मत्स्याक्षी यमचिञ्चा द्वे हरिद्रे पुनर्नवाद्वितयम् ॥ ॥३७॥धुस्तूरकाकजंघा शतावरी कंचुकी च धन्या च । तिलभेकपर्णिके च दूर्वा मूर्वा हरीतकी तुलसी ॥ ३८ ॥ गोकण्टकाखुपर्ण्यौ कर्कोटी बन्धुवर्णलता च । मूषली हिंगुगुडूची शिग्रुगिरिकर्णिका महाराष्ट्री ॥ ॥ ३९ ॥ मार्कवसैंधवसरणी सोमलता श्वेतसर्षपो लशुनम् । हंसपदी व्याघ्रपदी किंशुकभल्लातकेन्द्रवारुणिकाः ॥ ४० ॥ सर्वं चार्द्धांशं वा अष्टादशाधिका वापि द्रव्यम् । रसमारणमूर्च्छादौ च युक्तिज्ञैर्विधिवदुपयोज्यम् ॥ ४१॥(रसेन्द्रसारसंग्रह.)

अर्थ–नागरमोथा, वच, चीता, गोखरू, कडुवी तोंबी, दतोन, जायफल, सर्पाक्षी, शरपुंखा, वीगुवार, चंडालकंद, कुचला, हडसंहारी, छुईमुई, बंदाल, लाख, सहदेवी, जलपीपल, निर्गुंडी, पमार, कलिहारी, मानकंद (जैपुरके अजायब घरमें है) वावची, हुलहुल, मकोय, आक, विष्णुक्रान्ता, कौआठोढी, थूहर, खरेटी, सोंठ, गलकातोरई, वरना, वाराहीकन्द, हाथीशुण्डा, केला, मछेछी, चौंटनी, दोनों हलदी, सांठ, धतूरा, काकजंघा (मसी), शतावर, कंचुकी (अगर),आमले, तिलपर्णी, मापपर्णी, दूब, मूर्वा, हर्र, तुलसी, मूषाकर्णी, करेला, बन्धुपुष्पलता (विजैसार) मूसली, हींग, गिलोय, सैंजना, सफेद कणही वृक्ष, महाराष्ट्री (जलपीपल), सैंधव, भंगरा, प्रसारणी (खीप), सोमलता, सफेद सरसों, लहशन, हंसराज, कटेरी, ढाक, भिलावाँ, फरफेदुआ इन सबको या इनमेंसे आधी अथवा अठारह दवाओंसे अधिक दवाएँ रसमारण अथवा रसमूर्च्छनके लिये वैद्योंको काममें लाना चाहिये ॥ ३४–४१ ॥

पारदभस्म ।

पक्वार्कपत्रस्वरसैश्चोवकं प्रहरत्रयम् । दीपाग्निना भवेद्भस्म सूतराजस्य चोत्तमम् ॥ ॥ ४२ ॥ (निघंटुरत्नाकरः)

अर्थ–शुद्ध पारदको कढाई या खिपरेमें रख नीचेसे आंच दीपककी लगाता रहै और ऊपरसे पकेहुए आकके पत्तोंका रस थोडा २ चुवाता रहै इस प्रकार तीन प्रहरतक चोवा देकर दीपाग्नि देवे तो पारदकी भस्म होजायगी ॥ ४२ ॥

पारदभस्म ।

कंटकारीकाकमाचीकृष्णधत्तूरकै रसैः । दिनं रसं विमर्द्याथ नवस्थाल्यां विनिक्षिपेत् ॥४३॥ पटुनापूर्य तन्मूर्ध्नि कुरु तोयाश्रितां पराम्।दहेद्दीपाग्निनाधःस्था भस्म यात्यूर्ध्वभांडके ॥ ४४ ॥ (निघंटुरत्नाकर.)

अर्थ–कटेरी, मकोय, काला धतूरा, इनके रसोंसे एक दिवसतक पारदको मर्दनकर नवीन हांडीमें भर देवे और उसपर नोंन साम्हर (पिसा हुआ) भरदेवे और उस हांडीपर दूसरी हांडी रख कपरौटी करे और ऊपरकी हांडीमें पानी भर नीचेकी हांडीमें दीपाग्नि लगावे तो भस्म ऊपरकी हांडीके तलेमें लग जायगी ॥ ४३॥४४ ॥

पारदभस्म ।

एकविंशतिपलं सूतं शुद्धं खल्वे विनिक्षिपेत्। मर्दयेत्कनकतैलेन एकविंशदिनावधि ॥

॥ ४५ ॥ देवदालीरसेनैव भावनार्धशतानि च । क्षिप्त्वा विषपलं तत्र दृढहस्तैर्विमर्दयेत् ॥ ४६ ॥ धारयेड्डमरूयंत्रे लौहे कवचशेखरे । मासार्धं ज्वालयेद्वह्निमूर्ध्वस्थं वारिशीतलम् ॥ ४७ ॥ ऊर्ध्वं लग्नं मृतं सूतं स्वांगशीतं समुद्धरेत् । वल्लमात्रमितं देयं जरामृत्युं लिहन्हरेत् ॥ ४८ ॥ मोहगणादिकं सर्वं ज्वराणां पांडुकामलाम् । वातादि सर्वरोगाणां निहन्ता नात्र संशयः ॥ ४९ ॥ देहसिद्धिर्भवेन्नृणां कामसिद्धिर्भवेत्ततः । अत्यन्तं रमते नारीः कामिनीप्राणवल्लभः ॥ ५० ॥ (निघंटुरत्नाकर.)

अर्थ-२१ इक्कीस पल शुद्ध पारदको खरलमें डाल कर इक्कीस ही दिवसतक धतूरेके तैलसे मर्दन करे और बंदालके रसकी पचास भावना देवे फिर उसमें एक पल सिंगिया डाल खूब घोटे और लोहेके बने हुए डमरूयंत्रमें रख पंद्रह १५ दिनतक आग लगावे और ऊपर ठंढा पानी रक्खे इस प्रकार रखनेसे जब स्वांग शीतल होजाय तब ऊपर लगेहुए पारदको निकाल तीन रत्ती सेवन करे तो यह भस्म जरा और मृत्युको नाश करताहै प्रमेह आदि समस्त रोगोंको ज्वर कामला और समस्त वात रोगोंको नाश करताहै इसमें सन्देह नहीं है प्रथम तो मनुष्योंकी देहसिद्धि होतीहै फिर कामदेवकी वृद्धि होती है स्त्रियोंके प्राणका प्यारा स्त्रियोंके साथ अत्यन्त ही रमण करताहै ॥४५-५०

पारदभस्म ।

शुद्धसूतपलान्यष्टौ वत्सनाभं तदर्धकम् । मर्दयेत्स्वर्णतैलेन रक्तकर्पासकद्रवैः ॥ ५१ ॥ घनकन्दो वज्रवल्ली देवदाली सचित्रकैः । बला शुण्ठी चन्द्रवल्ली तृणमुस्ता जयन्तिका ॥ ५२ ॥ विषमुष्टिर्ब्रह्मदंडी सर्पाक्षी शरपुंखिका । तुम्बी चण्डालिका कन्दः कर्कंधूः कन्द एव च ॥ ५३ ॥ कुड्मलस्य भवः कन्दः क्षीरकन्दा हरिप्रिया । हस्तिशुण्डाऽमृताकन्दा कन्या वाराहकन्दका ॥ ॥ ५४ ॥ कोशातकी चक्रमर्दः काकमाची रविप्रिया । रम्भा गुंजा च निर्गुण्डी सहदेवी च लांगली ॥ ५५ ॥ काकतुण्डी गोक्षुरकं जाती लज्जावती पटुः । आखुकर्णी हंसपादी मृगस्तुह्यर्कधीपयः ॥ ५६॥ ब्रह्मबीजं तु भूधात्री नागवल्ली तथैव च । शतावरी च धत्तूरो विषवल्ली गणेरिका ॥ ॥ ५७ ॥ श्वेतां कालं शिखिशिवे सस्यघ्नगिरिकर्णिका । गोलिका ज्वालवदना गोपालानां च कर्कटी ॥ ५८॥पृथक सप्त[1]न्विदं भाव्यं गोलकं कारयेद्बुधः । निक्षिपेड्डमरूयंत्रे लौहे कवचशेखरे ॥ ५९ ॥ मासार्द्धं ज्वालयेद्वह्निमूर्ध्वस्थं वारि शीतलम् ॥ सोमनाथरसं बद्धं स्वांगशीतं समुद्धरेत ॥ ६० ॥ कुमारीं भैरवं विप्रं पूजयेदिष्टदेवतम् ॥ धन्वन्तरिर्गणेशश्च संपूज्यश्च महेश्वरः ॥ ६१ ॥ गुंजार्धं च प्रदातव्यं स्मृत्वा च गुरुदेवताः ॥ सर्वव्याधिविनिर्मुक्तो जरामृत्यू लिहन्हरेत ॥ ६२ ॥ कान्तिपुष्टिकरं श्रेष्ठं वृद्धोपि तरुणायते॥ वाजीकृतो महाकामी सर्वकार्यक्षमं शिवम्॥६३॥ देहे लौहे भवेत्सिद्धिर्वायुतुल्यबलप्रदः ॥ सत्यं वीर्य्यसमं कामं कामयेत्कामिनीशतम् ॥ ६४ ॥ बुद्धिं ज्ञानं महाप्रज्ञामायुर्वृद्धिकरं परम्॥महासूतश्च विख्यातो रसवेधी स उच्यते ॥ ६५ ॥ (निघंटुरत्नाकर.)

अर्थ-शुद्ध पारद आठ पल और चार पल सींगिया इन दोनोंको धतूरेके तैलसे नर्मावनके रससे फिर नागरमोथा, जमीकन्द, हडसंहारी, वंदाल, चीता, खरेटी, सोंठ, सोमलता, तृणमुस्ता, हलदी, कुचला, ब्रह्मदंडी, सर्पाक्षी सरफोंका), कडवी तोंबी; चंडालकंद बेर, क्षीरकन्द, तुलसी, हाथीशुंडा, गिलोय, घीगुवारी, वाराहीकन्द गलकातोरई, पमार, मकोय, हुलहुल, केला, चौंटनी, निर्गुंडी, सहदेवी, लांगली (कलिहारी), कौवाठोडी, गोखरू, जायफल, छुईमुई, करेला, मूषाकर्णी, हंसपदी, थूहर, आकका दूध, ढाक, भुंई आमले, पान, सतावर, धतूरा, इन्द्रायन, सफेद अंकोल, मोरपंखी, विष्णुक्रान्ता, गोलिका, बालमखीरा, इन सबकी सात २ वार भावना देकर गोला बनालेवे फिर लोहेके बनेहुए डमरूयंत्रमें रख पन्द्रह दिनतक आंच जलावे और ऊपर जल रक्खे तो सिद्धहुए सोमनाथ नामके रसको स्वांगशीतल होनेपर उतारलेवे फिर कुमारी भैरव ब्राह्मण तथा इष्टदेवता धन्वन्तरि, गणेश और महादेवजी इनकी पूजा कर चार चावलकी बराबर इस रसको देना चाहिये जो मनुष्य जरा और मृत्युको जीतना चाहे तो इस रसको चाटे यह रसराज कान्ति तथा पुष्टिको करताहै और इसके सेवनसे बूढा भी जवान होजाताहै, जो कामी पुरुष वाजीकरणके लिये खावे तो समस्त कामोंके करने योग्य होताहै, रसायन तथा धातुवादमें सिद्धि होतीहै वायुके समान बलका दाताहै, और सौ स्त्रियोंसे संभोग करसकताहै बुद्धि, ज्ञान, आयु इनकी वृद्धिको करताहै यह महासूत रस वेधी कहाताहै ॥ ५१-६५ ॥

पारदभस्मकी विधि ।

गोपालकर्कटीतोयैर्मर्दितः संपुटे स्थितः । ऊर्ध्वपातनयोगेन सूतो भस्मत्वमाप्नुयात्॥ ॥ ६६ ॥ (निघण्टुरत्नाकर.)

अर्थ-शुद्ध पारदको गोपाल काकडीके रससे मर्दन कर संपुटमें रख ऊर्ध्व पातनयंत्रसे उडालेवे तो पाराकी भस्म होजायगी ॥ ६६ ॥

[1] वारान् सप्त ।

तथा च ।

पलाशबीजं रक्तं च जम्बीराम्लेन सूतकम् ।
सजीवं मर्दितं यन्त्रे पाचितं म्रियते ध्रुवम्॥
॥ ६७॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–सबजीव नामके पारेमें समान भाग ढाकके बीज डाल कर संतरेके रसमें घोटे और संपुटमें रख बालुका-यंत्रमें पकाव तो पारा मर जायगा ॥ ६७ ॥

तथा च ।

लज्जालुरससंपिष्टो बहुशः पारदो भवेत् ।
नष्टपिष्टो विधातव्यो मूषिकामध्यसंस्थितः
तद्रसैश्च पुनः सम्यक् म्रियते पुटपाकतः ॥
॥ ६८ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–लज्जालू अर्थात् छुईमुईके रसमें बार बार घोट-नेसे पारा नष्टपिष्ट होजाताहै फिर नष्ट पिष्ट हुए पारेको मूषामें रख बालुकायंत्रमें पकावे तो पारा मर जायगा ६८

सीमावको कायमुलनार करनेकी तरकीब बजरिये लजालू बजरिये अगिनपुट (उर्दू)

लजालूसे कायमुल्नार करनेका यह तरीकाहै कि सीमा-बको अर्कबूटी लजालू मजकूरसे बतौर पुट आफ्तावी सहक करके सफीफ खूमलमें अग्निपुट दे बादहू शीरा या अर्क बूटी मजकूरमें सहक करके आधपाव कर्सीसे आग देना शुरू करे और बढाता जाय रफ्तः २ सीमाव कायम होता जाताहै क्योंकि नदरीजी आँच सीमावके कायमुल्नार कर नेके वास्ते बडा आला दर्जेका गुणहै गो कि सीमाव इस किस्मके अमल हरबार तश्चिया करनेसे कम होता जाताहै लेकिन बिलाखिर कायमुल्नार ऐसा होजाताहै कि फिर नहीं उड सकता (सुफहा अकलीमियां २०३ का हाशिया)

पारेके कुश्ता करनेकी तरकीब (उर्दू)

पञ्चाङ्गी–बरबरी लंगी इनके अर्कमें तीन रोज चारों संस्कार किये हुए पारेको खरल करके वज्रमूषामें बंद करके लघु पुटकी आंचमें रख कर खाक करले और खाय तो भूख बढजाय ताकत आये हर बीमारीसे नजात पाय । (सुफहा ८ खजाना कीमियां)

तरकीब कुश्ता सीमाव पांच अंगुलबूटीके पत्तीपंजिया दस्तकी तरह होतीहै और तोरईकी तरह बेल चढती है (उर्दू)

पत्तीकी पुस्तकी जानिब रुएं होतेहैं जड इसकी अदरक-की तरह होतीहै उसकी जडको कूट कर अर्क निचोडे और उसके गुटका सीमाव निरासको उसकी सफलमें रख कर ऊपर नीचे सफलसे गुटकाको छिपावे इसतरहसे कि दर्मियानमें उसके गुटका रहे बादहू बोतःमें रखकर अर्क बूटी मजकूरका उसमें भरदे और बोतःको मुअम्मा करके ढाई सेर कंडोंमें आगदे गुटका मजकूर कलशकी तरह होजायगा दो रत्ती लेकर तोलाभर कलई गुदाख्तः पर तरह करे नुकरः होजावेगी हिन्दीमें इस बूटीको हगोल कहतेहैं और झाडियों और जंगलोंमें होतीहै लोग इसको खातेहैं जब पककर सुर्ख होजाताहै तो मीठा होजाताहै लेकिन जानवर उसका पक-नेके कब्ल ही खाजातेहैं और उसके बेल और पत्ते वगैरः से बहुत उलफत रखतेहैं(सुफहा अकलीमियां२६४)

पारद भस्म ।

देवदाली हंसपदी यमचिञ्चा पुनर्नवा ।
एभिः सूतो विमृष्टव्यो,पुटनान्म्रियते ध्रुवम्॥
॥ ६९ ॥ (रसेन्द्रसारसंग्रह., र. सा. प.)

अर्थ–बंदाल, हंसराज, यमचिञ्चा और सांठ इनके रससे पारदको घोट कर बालुकायंत्रमें पकावे तो पारदकी भस्म होगी इसमें सन्देह नहीं है ॥ ६९ ॥

कुश्ता सीमाव बजरियः बूटी पांच अंगुल (उर्दू)

तरकीब नं० २ । अगर सीमावको दो पहर बूटी मज-कूरके शीरेमें खरल करे तो कायमुल्नार होताहै । मुतरजिम यह बूटी कंदूरीकी बूटीसे बहुत ज्यादह मुशाबः है मुमकिन है कि वही हो या उसीकी कोई किस्म हो मुहम्मद या-सीनखाँ साहब मुतवतन पूना मकान नं० १११४को इस बूटीका तजरुबा हुआहै और वह उसको कंदूरीतलख कहते थे जिस तरीकेसे इन्होंने आजमाया और बूटीसे जो अला-मतें बरवक्तशरीफ आवरी जौनपुरके बयान की वह तह-रीर की जाती है । कीमियाइ कंदूरीका फल मीठी कंदूरीसे छोटा करीब निस्फके समर नींबके बराबर या किसी कदर बडा होताहै नोंककी सिम्त फलमें ऊपरके हिस्सेमें झुर्रियां पडी होतीहैं और इस पजमुर्दह हिस्सेमें बीज नहीं होताहै पुख्तः होनेपर नीचेका निस्फ हिस्सा सुर्ख रंग और ऊपरका निस्फ हिस्सा सब्ज रहताहै तमाम पंचांग दरख्तके एलु-एकी तरह कडवे होतेहैं हिंगाम तजरुबा अर्क बर्ग कंदूरी तलख कीमियाईका लेकर और फूलके बर्तनमें सीमावको रख कर इस कदर डाला कि छिपगया और नीचे जकूमके कोयलोंकी आग रक्खे जिसको फूंकते जाते थे आधे घंटेके बाद उतार लिया नुकरा खालिस था मजीद तजरुबा इस बूटीपर अगर कियाजावे तो नये खवास मालूम होसक्तेहैं दक्खनकी जानिब इसके दरख्त कसीरुल वजूद होतेहैं मगर कंदूरी तलखका दरख्त तलाशसे मिलताहै । (सुफहा अक-लीमियां २६४)

अकसीर बजरियः सीमाव बद्ध ।

काले भाँगरेके पत्तोंकी लुगदीमें पारा रख कर मिट्टीके बर्तनमें रख कर हलकी आग दो और ऊपरसे अर्क काले भाँगरेका डालते जाओ गोली बनजावेगी फिर उस गोलीपर दुबारा यही अमल करो अकसीर होजावेगी । (सुफहा खजाना कीमियां ३२)

अन्यच्च ।

श्वेतांकोलजटानीरैः सूतो मर्द्यो दिनत्रयम्। पुटितश्चांधमूषायां सूतो भस्मत्वमाप्नुयात् ॥ ७० ॥ प्रत्यहं रक्तिकापंच भक्षयेन्मधुसर्पिषा । को वा तस्य गुणान्वक्तुं भुवि शक्नोति मानवः ॥ ७१ ॥ (रसमंजरी. रसे. सा. सं., रस. पारि.)

अर्थ-सफेद अंकोलकी जडके रससे पारदको तीन दिवसतक दृढ मर्दन करे अन्धमूषामें रख बालुकायंत्रमें पकावे तो पारदकी भस्म होगी, इस भस्मको प्रतिदिन पांच रत्ती घृत और शहदके साथ भक्षण करे तो इसके गुणोंको धरतीपर कौन वर्णन कर सकता है ॥ ७०॥७१ ॥

कुश्ता सीमाव (अर्क पुष्प-योग) (उर्दू)

अगर दरख्त आकके फूलोंमें सीमावको सहक बलेग करे और ऊपर नीचे नमक रखकर आठ सेर कंडोंमें फूंक दे तो सीमाव कुश्ता और खाक होजावे । (सुफहा अकलीमियां १५८)

कुश्ता सीमाव (उर्दू)

सीमाव दो तोला ले और खारदार थूहर मोटे पत्तोंवालेके फूलोंमें जो अददमें एक सौ हों खरल करें इस तरह चालीस रोज तक करें टिकिया बनाकर दो महीने खुश्क होनेदें बाद अजां छुरीसे रेजः रेजः करके एक कूजेमें डालें और गिले हिकमत करके एक मन उपला सहराईकी आंचदें सफेद कुश्ता बरामद होगा खुराक एक चावल मुनासिब अदवियामें तमाम अमराज व जमिना खवीशा मिस्ल जजाम आतिशक और हर एक किस्मके जख्मों और औजाअ मुफासिल और मुरक्किबः मुख्तलिफः पत्तोंमें सरीज उल नफा है । (सुफहा ६१ मुजरबात फीरोजी)

सोना बनानेकी तरकीब बजरियः कुश्ता सीमाव (उर्दू)

एक तोला पारा आगपर चढाके पहले तिपत्तीका रस सेर भर डालो फिर बावचीका अर्क सेर भर डालो चार पहर मंदी आग दो कुश्ता होजावेगा बारह तोला तांबाको सोना बनावेगा । (सुफहा खजाना कीमियां ३३)

गालिबन कुश्ता सीमाव अकसीरी (उर्दू)

अकसीर तिला अर्क कडवी योईमें

मुसलिफ ले बे खे ये ए खे ये
मुतराजेम काफ डे वाव ये ये वाव ये

डेढ पहर तक सीमावको खरल करके बोतेमें रक्खे और दूसरा बोतः उसपर रख कर अंधमूषा करके तीन चार सेर कर्सीमें आग देकर निकालले इस तरह सात बार खरल करके सात ही बार आग देकर उतार ले अकसीर होजायगा बादहू एक रत्ती लेकर एक तोला मिस गुदाज शुदः पर तरह करे तिला होजायगा । (सुफहा अकलीमियाँ २२४)

अन्यच्च ।

अप्रसूतगवां मूत्रैः पेषयेदुक्तमूलिकाः । तद्द्रवैर्मर्दयेत्सूतं यावल्लीनत्वमाप्नुयात् ॥ भूधराख्ये पुटे पाच्यं दशधा भस्म तद्भवेत्। द्रवैः पुनः पुनर्मर्द्य एवं भस्म भवेद्रसः॥७३॥ (रसमानसः)

अर्थ-विना व्याई हुई बछियाके मूत्रसे मारकर वर्गमें कही हुई औषधियोंको घोटे उस पतले पदार्थसे नष्ट पिष्ट पर्यन्त पारदको घोटता जावे और भूधरपुटमें पकावे इस प्रकार दस बार करनेसे पारा भस्म होताहै ॥ ७२॥७३॥

खरमञ्जरिबीजान्वितपुष्करबीजैः सुचूर्णितैः कल्कम् । कृत्वा सूतं पुटयेद्दृढमूषायां भवेद्भस्म ॥ ७४ ॥ (रसरत्नसमुच्चय. र. रा. शं., नि. र.)

ओंगाके बीज और कमलके बीज इन दोनोंको पीस गोला बनावे उस गोलेमें पारेको रक्खे और उसी गोलेको अंधमूषामें रख कपरौटी कर (कुक्कुटपुटमें) पकावे तो पारेकी भस्म होजायगी ॥ ७४ ॥

कुश्ता सीमावकी तरकीब (उर्दू)

पारेको सात दिन छोटी दूधीके अर्कमें खरल करो फिर सात दिन बडी दूधीके अर्कमें खरल करो फिर सात दिन तक छिकनीके अर्कमें खरल करो फिर टिकिया बनाकर कपडा लपेटकर वनकरेलाकी जडका लुगदा छटांक भर पारा भर आध सेर लगाना फिर हंडियामें भर कर कपरौटी करके दो फुट मुकबकी आग दो निहायत उमदा कुश्ता होजावेगा । (सुफहा खजानः कीमियां ३८)

रुद्रवंतीसे अकसीर आजम बनानेकी तरकीब (उर्दू)

अकसीर आजम मुफर्रिद बूटीसे अकसीर आजम इस तरह बनती है कि सीमावको पावभर लेकर उसको मुसफ्फा करे और रुद्रवंती जिसमें सुर्ख गिरह भी हों (यह सुर्ख गुल होते हैं) लेकर कोल्हूके जरियेसे बगैर पानीकी आमेजिशके शीरः निकाले कोल्हू लकडीका होना चाहिये शीरः मजकूरसे सीमावको मुसलिस बराबर दिनरात इस तरहसे सहक करे कि खरल करनेका सिलसिला मुनकतह न हो साठ दिन रात यानी चार सौ अस्सी पहरतक बराबर सहक करता रहे बाद अख्ताम मुद्दत मजकूरहके धूपमें रखकर उसको मुअम्मा करके गिल हिकमत मुतहकिम करे और अच्छी तरह उसको खुश्क करे बादहू अव्वल रोज सेर भर कंडोंकी आग बतौर भडकाके करे यानी चारों तरफ कंडे जमा कर बीचमें दवा रक्खे दूसरे रोज

दो सेरकी तीसरे रोज तीन सेरकी इस तरह इक्कीस सेर कंडोंकी आग दे अब दवा तय्यार होगई यह अकसीर कलईको चांदी और मिसपर तरह करनेसे उसको शमस करती है तरह करनेकी मिकदार इस वजहसे नहीं मौअय्यन है कि यह अकसीरके तय्यार होनेके बाद वकदर कुव्वत अकसीरके मुअय्यन हो सकती है बाद तजरुबेके मिकदार तरहको मुकर्रर करे खानेके वास्ते भी यह अकसीर नामर्दको मर्द बनाती है मुसन्निफ असबाब शाहीने इस तरीकेको नज्म किया है और आजमूदः है । (सुफहा अकलीमियां २३०)

अन्यच्च ।

अपामार्गस्य बीजानि तथैरण्डस्य चूर्णयेत्॥ तच्चूर्णं पारदे देयं मूषायामधरोत्तरम् ॥ रुद्ध्वा लघुपुटैः पच्याच्चतुर्भिर्भस्मतां व्रजेत ॥ ७५ ॥ (रसरत्नाकर., रसरत्नसमुच्चय., र. रा. शं., र. रा. सुं., नि. र.)

अर्थ—ओंगाके बीज तथा एरंडके बीज इन दोनोंको समान भाग लेकर पीसलेवे उस चूर्णको मूषामें पारदके ऊपर नीचें बिछाकर और कपरोटी कर कुक्कुट पुट देवे इस प्रकार चारपुट देनेसे पारदकी भस्म होगी ॥ ७५ ॥

अन्यच्च ।

अपामार्गस्य बीजानां मूषायुग्मं प्रकल्पयेत्॥ तत्संपुटे न्यसेत्सूतं मलयूदुग्धमिश्रितम् ॥ द्रोणपुष्पीप्रसूनानि विडङ्गमरिमेदकः ॥ एतच्चूर्णमधोर्ध्वे च दत्त्वा मुद्रां प्रकल्पयेत्॥ ॥ ७७ ॥ तं गोलं मुद्रयेत्सम्यक् मृन्मूषासम्पुटे सुधीः ॥ मुद्रां दत्त्वा शोषयित्वा ततो गजपुटे पचेत् ॥ एवमेकपुटेनैव जायते सूतभस्मकम् ॥७८॥ (योगरत्नाकर.,र.रा.शं., वै. क. , र. सा. प. , नि. र., शार्ङ्गधर.)

अर्थ—ओंगाके बीजोंको दो मूषा बनावे उस संपुटमें कठूमरके दूधसे पीसे हुए पारदको रख देवे और उस पारेके ऊपर नीचे गोमाके फूल वायविडंग, और बदबूदार कत्थेका चूर्ण रख मुद्रा करे उस गोलेको मूषासंपुटमें रख मुद्राकर सुखालेवे और गजपुटमें फूंकलेवे इस प्रकार एक ही पुटमें पारदकी भस्म होगी ॥ ७६—७८ ॥

रस मारण ।

बीज अपामारगके लावे । तिनको जलतें मिहिं पिसवावे॥पिट्ठीकी द्वै घरिया करिये । इक घरियामें पारा धरिये ॥ दूध कठूमरको मँगवाय । ता घरियामें दे भरवाय । दूसरि घरियाको चिपटाय । गोला करिके संधि मिलाय ॥ इक सरवा माटीको लेय । तामें वह गोला धरिदेय ॥ खदिर होय दुरगंध समेत। ताकी त्वचि ले बुद्धि निकेत ॥ त्वचि समानले गोमाफूल। अरु बिडंग दे तासमतूल।इनको चूरण मिहिं पिसवाय । भिषजन देय जुदो धरवाय ॥ फिर माटीको सरवा लीजै । आधो चूरन तामें दीजै । चूरन पै गोला वह धरै । आधो चूरन तापै करै ॥

दोहा—इनको चूरन लीजिये, गोला सब दबजाय । दूसर सरवा लेयके औंधे दे चिपकाय ॥ कपरौटी ऊपर करे, नीके संधि मिलाय । संपुट धूपसुखायके, गजपुटमें धरवाय ॥ आठपहर पर्यन्तलों, देके आगिन लगाय । एकहि गजपुटमें सुफिर, सूत भस्म ह्वै जाय ॥ सकल चिकित्सा कर्ममें,यथायोग अनुपान। रत्तीदैके द्वैरती, देखि बलाबल ज्ञान ॥ (वैद्यादर्श.)

पारद भस्म ।

काष्ठोदुम्बरिकादुग्धैर्मर्दयेत्पारदं दृढम् ॥ अपामार्गस्य बीजानां मूषायुग्मं विमुद्रयेत ॥ ७९ ॥ द्रोणपुष्पीप्रसूनानां विडंगमरिमेदयोः ॥ कल्कैर्मूषां विलिप्यैव परितोंगुलमात्रकम् ॥ ८० ॥ तद्गोलं मृन्मये न्यस्य मूषायुग्मं विमुद्रयेत्॥मृद्वस्त्रैः शोष्य नागाह्वे पाचयेच्च पुटे रसम्॥ भस्मीभूतो रसो नेयो योज्यः स्यात्सर्वकर्मसु ॥ ८१ ॥ (अनुपानतरङ्गिणी.)

अर्थ—प्रथम पारदको कठूमरके दूधमें मर्दन करे फिर ओंगाके बीजोंको पीस दो घरिया बनावे एक घरियामें पारदको रख दूसरी घरियाको जोड देवे और ऊपरसे गोमाके फूल वायविडंग तथा दुर्गन्धित कत्था इनके कल्कसे एक २ अंगुल लेपकरे उस गोलेको सकोरोंमें रख कपरौटी कर और सुखाय गजपुटमें फूंक देवे तो पारदकी भस्म होजायगी उस भस्मको समस्त कर्मोंमें देदेना ही उचित है ॥ ७९–८१ ॥

कुश्ता सीमावकी तरकीब (उर्दू)

मामूली भंगसे कुश्ता सीमावका इस्तरह होताहै कि सीमाव गूलरके दूधसे दो घंटेसहक करे और भंगको दूधमें हल करके लुबदीकी घरिया बनाकर सीमावका गोला उसमें रख कर दूसरी लुबदीसे बंद करके गिले हिकमत करके खुश्क करे जब खुश्क होजाय ९ सेर उपलोंकी भूभलमें आगदे सीमाव कुश्ता होजाताहै और यह कुश्ता कलईको नुकरा करताहै इसका तजरुवा अवतक नहीं हुआहै तजरुवा तलवहै । (सुफहा अकलीमियां)

बूटी लजालूसे सीमावको अकसीर बनानेका तरीका (उर्दू)

दो तोले सीमाव शमसीको दो तोले शीर गूलरमें घंटे डेढ घंटे तक खरल करे ताकि गोलासा उसका बंध जावे बादहू सवा बालिश्त या कमावेश एक मोटा ताजा डंडा दरख्त पीपलकी शाखका लेकर लंबाईमें डंडोके गोल सूराख ऐसा करदे कि आरपार नहो और उसमें छटांक भर लुगदी लजालूइ सुर्ख गुलकी जो साये पडकर मुरझा जाताहै भर कर ऊपर सीमावका गोला मजकूर हवाला रखदे और उसके उसपर दूसरी छटांक भर लुगदी लजालू मजकूरकी रखकर बुरादा जो सूराख करनेके वक्त बरामद हुआ था भरकर डाट दूसरी पीपलकी लकडीकी लगाकर तीन चार बार गिले हिकमत ऊपरसे करदे और हर बार। गिले हिकमतको खुश्क करलिया करे बादहू बोस सेर खानगी कंडोंमें बतौर गजपुटके फूंक दे सर्द होने पर अहतियातसे निकाले और कागजपर कुल राख वगैरः गिरादे इसी फिजूल राख स्याहमें कुश्ता सीमाव मिलेगा जाए न होने पावे आहिस्ता२ फूक मारकर सिर्फ पत्तोंकी राख उडादे बकिया राख वजनी सफेद मिस्ल चूनाके होतीहै वही सीमावका कुश्ताहै उसको निकालले एक रत्ती इस कुश्तेका तोलेभर भिस मुसफ्फा उल अव्लको तिलाए आला करताहै अगर बाजारी मिस पर तरह किया जावे तो उसको मिस्ल नैपाली सोनेके रंगता है लेकिन फूटक पन सख्तगी बाकी रहतीहै जो उन तरीकों से जिनको दीबाचेमें बयान किया गया है दूरकी जातीहै । मुहम्मद यासीनखां साहब मुतवतन पूनाका तजरुबाहै मुतरिज्जमकी रायहै कि सीमाव पहले लरजां कायमुल्नार करलेना चाहिये । सीमाव इसी बूटीके शीरेमें अव्वल तस्फिया व तश्विया करके कायमुल्नार हो सक्ताहै और दूसरी तरहसे कायम किया हुआभी काम देताहै (सुफहा अकलीमियां २१२

अन्यच्च ।

काष्ठोदुम्बरिकाया दुग्धेन सुभावितो हिंगुः । मर्दनपुटनविधानात् सूतं भस्मीकरोत्येव ॥ ८२ ॥ (रसरत्नसमुच्चय., र. रा. शं., नि. र.)

अर्थ–हींगको कठूमरके दूधसे पीस घरिया बनावे और उसीके दूधसे पारदको घोटे घरियामें धर दोनों घरियाओंका मुख बंद करदेवे और फिर सकोरामें रख कपरौटी कर गजपुटमें फूंक देवे तो पारद भस्म होगा ॥ ८२ ॥

पारेके कुश्ता करनेकी तरकीब बजरियः कठगूलर (उर्दू).

पारद गूलरके दूध और हींगमें मिलाकर चार पहर खूब खरल करके गोला बनाले और बदस्तूर मजकूर आंचदे कुश्ता होजावेगा। (सुफहा १० खजानः कीमियां ।)

अन्यच्च ।

मलयूदुग्धसंमिश्रं रसराजं विमर्दयेत् । तद्दुग्धमिश्रहिङ्गोश्च मूषायुग्मे विमुद्रयेत् ॥ ८३ ॥ तां मूषां मृन्मये रुद्ध्वा मूषायुग्मं तु वेष्टयेत् । मृद्वस्त्रैः सप्तभिः पश्चाच्छोषयेदातपे भृशम् ॥ ८४ ॥ पुटेन्मृदुपुटे यत्नाद्रसो भस्मत्वमाप्नुयात् । नवयौवनसौन्दर्यभूषणे मदिरेक्षणे ॥ ८५ ॥ (अनुपानतरङ्गिणी.)

अर्थ–प्रथम कठूमरके दूधसे पारदको घोटे फिर कठूमरके ही दूधसे हींगको पीस दो घरिया बनाव एकघरियामें घुटेहुए पारेकी गोली रख ऊपरसे दूसरी घरियाको ढांक कपरोटी करे तदनन्तर उस गोलेको सकोरामें रख सुखा२ कर सात बार कपरौटी करे फिर मृदुपुटमें फूंक देवे तो पारद भस्म होगा हे नवीन अवस्थावाली प्यारी । उसको समस्त रोगोंमें दे देना चाहिये ॥ ८३–८५ ॥

पारदमारण दोहा ।

दूध कठूमरके विषे, हींग मिहीं पिसवाय। द्वै घरिया ताकी करै, सुन्दर सुलफ बनाय ॥ फेर कठूमर दूधमें, पारद शुद्धघुटाय। गोली करि पुनि हींगकी, घरिया बीच धराय ॥ तापर घरिया दूसरी, औंधी दे चिपटाय। गोलासो करिके सुलफ, कपरौटी करवाय ॥ गोला कपरौटासहित, मांटी सम्पुट मांहि । पुनि धरि कपरौटी करै, गजपुट दीजै ताहि ॥ एकहि गजपुट आगतैं, याही विधिते होत । कारजसाधकके सबहि, पारदते सिध होत ॥ (वैद्यादर्श.)

अन्यच्च ।

नागवल्लीरसैः पिष्टः कर्कोटीकन्दगर्भगः । मृन्मूषासम्पुटे पक्वो रसो यात्येव भस्मताम् ॥ ८६ ॥ (वैद्यकल्पद्रुम., अनु. तर., नि. र., र. रा.शं., शार्ङ्गधर.,आ.वे. वि., र. सा. प., श. क.)

अर्थ–बंगला पानोंके रससे पारदको खूब मर्दन कर गोली बनावे फिर उस गोलीको ककोडामें रख ऊपर नीचे माटीके सरवासे ढांक कपराटी करदवे और उस सम्पुटको गजपुटमें फूंक देवे तो वह भस्म समस्त कर्मोंमें देने योग्य योगवाही होता है ॥ ८६ ॥

अन्यच्च ।

भुजंगवल्लीनीरेण मर्दयेत्पारदं दृढम् । कर्कोटीकन्दमूषायां सम्पुटस्थं पुटद्गजे ॥ तद्भस्म योगवाहि स्यात्सर्वकर्मसु योजयेत् ॥ ८७ ॥ (रसमञ्जरी., रसेन्द्रसारसंग्रह., र. रा. सु.)

अर्थ-इसका भी अर्थ ऊपरकी क्रियाके अनुसार ही जानना चाहिये केवल अधिक पाठ भेद होनेके कारण श्लोक लिखा है ॥ ८७ ॥

अन्यच्च।

काष्ठोदुम्बरजैः क्षीरैः सितां हिंगुं विभावयेत्। सप्तवारं प्रयत्नेन शोष्यं पेष्यं पुनः पुनः ॥ ८८ ॥ काष्ठोदुम्बरपंचांगैः कषायं षोडशांशकम्। हत्वा तेन पुनर्मर्द्य हिंगुं वंगं रसेश्वरम् ॥ ८९ ॥ क्षिप्त्वा निरुध्य मूषायां भूधराख्ये पुटे पचेत्। अष्टधा म्रियते सूतो देयं हिंगुपुटे पुटे ॥ ९० ॥ (रसरत्नाकर.)

अर्थ-कठूमरके दूधसे सफेद हींगको सुखा सुखाकर सात बार भावना देवे, फिर कठूमरके पंचांगका क्वाथ बनाकर फिर हींगकी भावना देवे और वंग तथा पारदको सम भाग लेकर घोटे और हींगको मूषामें रख गजपुटमें पकावे तो आठ बारमें पारद भस्म होगा प्रतिपुटमें हींगकी मूषा देनी चाहिये ॥ ८८-९० ॥

अन्यच्च।

कटुतुम्ब्युद्भवे कन्दे गर्भे नारीपयःप्लुते। सप्तधा म्रियते सूतः स्वेदितो गोमयाग्निना ॥ ९१ ॥ (रसरत्नाकर.,र. र. स., र. रा. शं., र. रा. सुं., र. सा. प.)

अर्थ-कडवी तोम्बीको लेकर बीचमें टांकी लगाके उसमें पारा भरदेवे और ऊपरसे स्त्रीका इतना दूध भर देवे कि पारा दूधमें डूब जावे फिर उसी तोम्बी के टुकडेसे बन्दकर कपरौटी करे। फिर पांच तथा सात कंडोंकी आंचमें भुरता कर लेवे इस प्रकार सात वार करनेसे पारदकी भस्म होजायगी ॥ ९१ ॥

अन्यच्च।

कृष्णधत्तूरतैलेन सूतो मर्द्यो द्वियामकम्। दिनैकं तं पचेद्यंत्रे कच्छपाख्ये न संशयः ॥ मृतः सूतो भवेत्सद्यः सर्वरोगेषु योजयेत् ॥ ९२ ॥ (कामरत्न, र. रा. सुं.)

अर्थ-काले धतूरेके तैलसे या नियामक वर्गसे एक दिवसतक पारेको मर्दन करे फिर कच्छप यंत्रमें रखकर पकावे तो पारदकी भस्म होगी इसमें सन्देह नहीं है। यह समस्त रोगोंमें देने योग्य है ॥ ९२ ॥

अन्यच्च।

देवदालीं हरिक्रान्तामारनालेन पेषयेत्। सप्तधा सूतकं तेन कुर्यान्मर्दितमुत्थितम् ॥ ॥ ९३ ॥ तं सूतं खर्परे कुर्याद्दत्त्वादत्त्वा तु तद्द्रवम्। चुल्ल्युपरि च पचेद्वह्नौ भस्म स्याद्रुणोपमम् ॥ ९४ ॥ वल्लमात्रमिदं देयं योगोक्तं रोगनाशनम्। बलं वीर्यं तथा पुष्टिं कुर्याद्बहुतरां क्षुधाम् ॥ ९५ ॥ (रसरत्नाकर., र. र. स., नि. र.)

अर्थ-बन्दाल तथा विष्णुक्रान्ताको कांजीसे पीसे फिर उसी द्रवसे पारेको मर्दन कर ऊर्ध्व पातनसे उडा लेवे उस पारदको खिपरेमें रख कांजीमें पिसे हुए बंदाल और विष्णुक्रांताके द्रवसे चार पहर तक चूल्हे पर चढाय आंच देवे तो पारदकी लाल रंगतकी भस्म होजायगी। उसको तीन रत्ती सेवन करे तो बल वीर्य तथा पुष्टि और अधिक क्षुधाको करता है ॥ ९३-९५ ॥

पारेका कुश्ता करनेकी तरकीब (खर्परद्वारा-देवदालीयोग) (उर्दू)

देवदाली यानी बिन्दाल विष्णुक्रांता यानी धनन्तर इनमें थोडा पानी कांजीका डाल कर अर्क निकालले और उसमें सात बार पारा खरल करे और सुखावे फिर पारेको कोरे ठीकरेमें चूल्हे पर चढाकर चार पहर आंच दे और बह अर्क टपकता रहे कुश्ता होजावेगा। (सुफहा १० खजाना कीमियां)

मकरध्वजविधि।

लै दूधौर स्यामके पान। तिनको कूट लेहु रस छान ॥ तब पल चारक पारो लेहु। वा रसकी पुट ताको देहु ॥ खरल घालिके देहु बनाय। पुनिले पारो सरवा ताय ॥ सरवा ढांकि जु संपुट करै। कपरोटी करि सूकन धरै ॥ लै आरने तीस पल गुनी। दे गजपुट जो गुरुपै सुनी ॥ ऐसी पुट दीजै गन तीस। पारो सिद्ध करै जगदीस ॥ खाये बढै सहस गुन काम। मकरध्वज या रसको नाम ॥ रोग सकल मानसके जाय। जो प्राणी संयमसे खाय ॥ (रससागर.)

वारिजरसविधि।

जलकुम्भीरस काढै कोय। पारो खररि आठ दिन होय ॥ आठहि द्यौस छीकनी कही। मरदन करै सो रसको सही॥पारो बँधि माखनसो होय। तब शीशीमें मेले लोय ॥ जंत्रबालुका लेहु पचाय। चारि पहर ज्यों आगि बराय॥ पारो उडि लागे गो नार। तरहर कछू रहेगी छार ॥ पारो काढि खरलमें करै। छार होय सो न्यारो धरै ॥ पुनि वेही रस खरले गुनी। जैसी जुगति जु पूरब सुनी ॥ ऐसी सीसीकी

विधि सात । भस्म होय सब सांची बात॥ बंग सोखि तारको करै । सब आपदा गुनीकी हरै ॥ खायेते गुन करै अपार । वारिज अमृत कह्यो संसार ॥ (बडा रससागर.)

पारद लघु भस्म विधि ।

जा पारेमें दोष न होय। सो पल बीस लीजिये सोय ॥ खरल अफोय मूलीके नीर। बीस दिना इक लग बलवीर ॥ सीसी घालि वालुका धरै । बारह पहर आगि तब करै ॥ सीतल हो तब लीजे फोरि । वेही रस पुनि खारि बहोरि ॥ संख्या सबै पाछिली जानि । खररि आगि यों कही बखानि ॥ ऐसी सीसीकी विधि सात । गुनजाने या रसके खात ॥ भस्म सूत लघु जानो लोय । अंतरके जिन जानो कोय ॥ जे गुन सब दीरघके कहै । ते गुन सब या लघुमें लहै ॥ (बडारससागर.)

अन्यच्च ।

छागमूत्रे घटे सूतं कर्षमात्रं तुषाग्निना । शोषितं खादिरेणाथ दारुणा घट्टयेत्पचेत् स भस्मभावमाप्नोति सर्वयोगोपकारकम् ॥ ९६ ॥ निघंटुरत्नाकर.)

अर्थ-एक घडेभर बकरेके मूत्रमें एक तोले पारेको रख तुसोंकी आंचसे सुखावे फिर कत्थेकी लकडीसे आंच परही घोटे और गजपुटमें फूंक देवे तो पारद भस्म होगा ॥ ९६ ॥

अन्यच्च ।

रसं गंधकतैलेन द्विगुणेन विमर्दयेत् ॥ दिनैकं वाथ सर्पाक्षीविष्णुक्रान्तातिभृंगजैः ॥ ९७ ॥ त्र्यहं विमर्दयेद्वावैस्त्रिशघट्टमहापुटे । इत्येवमष्टधा पाच्यं रसो भस्मीभवेद् ध्रुवम् ॥ ९८ ॥ (रसरत्नाकर.)

अर्थ-पारदको द्विगुणित गंधकतैलसे एक दिवसतक मर्दन करे फिर सर्पाक्षी विष्णुक्रान्ता और भंगराके रससे एक दिवसतक मर्दन करे फिर महापुटमें फूंके तो इसप्रकार आठ वार करनेसे पारद भस्म होगा इसमें संदेह नहीं है ॥ ९७॥९८ ॥

अन्यच्च ।

शुद्धसूतसमं गंधं वटक्षीरैर्विमर्दयेत् ॥ पाचयेन्मृत्तिकापात्रे वटकाष्ठैर्विचालयेत् ॥९९॥ लघ्वग्निना दिनं पाच्यं भस्म सूतं भवेद् ध्रुवम्॥ द्विगुञ्जं नागपत्रेण पुष्टिमग्निं च वर्धयेत् ॥ १०० ॥ (योगचिन्तामणि.। योगरत्ना.)

अर्थ-पारा, गंधक इन दोनोंको समान भाग लेकर वडके दूधसे मर्दन करे फिर मिट्टीके पात्रमें रख वडकी ही लकडीसे घोटे और नीचेसे एक दिवसतक हलकी हलकी आंच लगावे तो पारद निश्चय भस्म होगा उस भस्मको दो रत्ती पानके साथ भक्षण करे तो पुष्टाई और अग्निको बढाताहै ॥ ९९ ॥ १०० ॥

अन्यच्च ।

सूतार्धं गंधकं दत्त्वा लोहपात्रे विनिक्षिपेत्॥ वह्निं प्रज्वालयेन्मन्दं स्नुह्यर्कक्षीरमाहरेत् ॥ १०१ ॥ चालयेत्खदिरदंडेन क्षीरं दत्त्वा पुनः पुनः ॥ अग्निं यामाष्टकं दद्याज्जायते सूतभस्मकम् ॥ १०२ ॥ गुंजामात्रं प्रदातव्यं यथारोगानुपानतः ॥ योजयेत्सर्वरोगेषु योगेषु च रसायनम् ॥ कान्तिः पुष्टिर्बलं वीर्यं जायते चाग्निदीपनम् ॥ १०३ ॥ (निघंटुरत्नाकर.)

अर्थ-पारा और पारदसे आधा गंधक दोनोंको लोहेकी कढाईमें डाल कर नीचेसे मन्द मन्द आंच लगावे ऊपरसे थूहर और आकका दूध चुवाता रहै तथा खैरकी लकड़ीसे घोटता जावे इस प्रकार आठ प्रहरतक आंच लगावे तो पारद भस्म होगा इसको रोगके अनुसार समस्तरोगोंमें देवे क्योंकि यह रसायनहै इससे कान्ति बढती है और शरीर हृष्टपुष्ट होकर बलवान् होताहै ॥ १०१—१०३ ॥

अन्यच्च ।

द्विपलं शुद्धसूतं तु सूतार्द्धं शुद्धगंधकम् ॥ कन्यानीरेण संमर्द्य दिनमेकं निरन्तरम् ॥ रुद्ध्वा तद् भूधरे यंत्रे दिनैकं मारयेत्स्फुटम्॥ १०४(रसमंजरी रसेन्द्रसारसंग्रह,रसरत्नाकर)

अर्थ--दो पल शुद्ध पारा और उससे आधा भाग शुद्ध आमलासार गंधक इन दोनोंकी कजली कर घीगुवारके रससे एक दिनतक घोटता जावे फिर भूधरयंत्रमें एक दिन तक पकावे तो पारदकी भस्म होगी ॥ १०४ ॥

अन्यच्च ।

अङ्कोलस्य शिफावारिपिष्टं खल्वे विमर्दयेत् ॥ १०५ ॥ सूतं गंधकसंयुक्तं दिनान्ते तं निरोधयेत् ॥ पुटयेद् भूधरे यंत्रे दिनान्ते स मृतो भवेत ॥ १०६ ॥ (रसरत्नसमुच्चय., र. रा. शं., र. सा. प., र. रत्ना., नि. र.)

अर्थ-पारा और गंधकको समान लेकर खरलमें डालकर अंकालको जडके रससे एक दिवसतक घोटे फिर

कपरौटी कर एकही दिनतक भूधरयंत्रमें पकावे तो पारद भस्म होगा ॥ १०५ ॥ १०६ ॥

अन्यच्च।

स्तोकं स्तोकं गंधकं सूतराजं दत्त्वा दत्त्वा ताम्रपात्रे निघृष्टम् ॥ शीघ्रं पिष्टी जायते सा द्विगंधान्मन्दं पच्याद् भूधरे भस्मसूतः ॥ ॥ १०७ ॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ—ताँबेके पात्रमें पारदको रख थोडा २ सा गंधक देदेकर घोटताजावे और इस प्रकार द्विगुणित (दूना) गंधक घोटनेके समयमें डालदेवे फिर भूधरयंत्रमें मन्दाग्निसे पकावे तो पारदकी भस्म होगी ॥ १०७ ॥

वलीपलितारिपुरसविधि।

गंधक पारो सम कै आनि। फूल अगस्तियाको रस छानि ॥ घालि खरल पुट दीजै सात। सुकै सुकैके नीको घात ॥ बारह प्रहर बालुका आग। इह विधि पारो दीजै दाग। फेर बहुरि पुटबीसक देय। पुनि जलजंत्र मांहि धरदेय ॥ चौंसठि पहर आगकी वानि। घटते दीजै तातो पानि। पारो कली होय बरबारो। खैर बेरि धो तातरवारो ॥ वलीपलितरिपु रसको नाम। वृद्ध हि चढै सहसगुन काम ॥ विषमज्वर अरु अवर विकार। पांडु रोग घटि हैं निरधार ॥ जो मंडल भरि खाय निवाह। इतने दोष न व्यापै तांह ॥ (रससागर बडा.)

हेमविधि।

पारो गंधक समकै लेय। दश दश पान दोऊ जानेय ॥ याकौं खरैं यह अवरेखि। पारेकी सम कुचला पेखि ॥ वह जल लीजै अष्टविशेख। यासों खरैं बहुरो रेख ॥ अरु जैपाल कुचला सम लेय। इन हीं को पुनि काथ करेय ॥ यहै काथ खरलै ता माहिं। बूंद बूंदकै सुखवै ताहि ॥ पुनि आनिजै चौलाई लाल। याहुको रस पारेमें घाल ॥ द्वै दिन घालि खरल घस लेय। राति दिवस अतिही भरदेय ॥ धरि जलयंत्र अगिन अतिकरै। चौंसठि पहर खैरकी जरै ॥ याको नाम हेमरसजानि। चढै शरीर कनककी बानि ॥ मंडल एक खाइगो भूप। ताको एक कामको रूप। जो नर याको साधन करै। वह बनिताके दर्पहि हरै ॥ गुल्म पंच चौरासी वाय। सन्निपात तेरह अरु कुष्ठ नसाय। निर्दोषल ह्वै जीवै सोय। जौलों आयु तासुकी होय ॥ तरुन हि बढै सहस गुन काम। वृद्धखाय हो तरुनसमान ॥ (रससागर. । बडारससागर.)

तलभस्म।

सूतश्चतुष्पलमितः समशुद्धगंधः स्याद्धूमसारपिचुरेक इदं क्रमेण ॥ सम्मर्दयेद्विमलदाडिमपुष्पतोयैर्धस्रं विमिश्र्य सितसोमलमाषकेण ॥ १०८ ॥ एतन्निधाय सकलं जलयंत्रमध्ये संमुद्य सन्धिमुदितेन पुरा क्रमेण ॥ आपूर्य यंत्रमुदकेन दिनानि चाष्टौ वह्निं क्रमेण तदधो विदधीत विद्वान् ॥ पश्चात्ततो जलमुदस्य रसं तलस्थमादाय भाजन वरे च भिषङ् निदध्यात ॥ संपूज्य शम्भुगिरिजां गिरिजातनूजं दद्याच्छुभेऽहनि रसं वरमेकगुंजम् ॥ ११० ॥ ताम्बूलिकादलयुतं ससितं पयोतु पीत्वाम्लमाषलवणे रहितं सदन्नम् ॥ अद्यात्कियन्त्यपि दिनानि ततो यथेच्छं भक्ष्यं भजेदथ नरो विगतामयः स्यात् ॥ १११ ॥ (बृहद्योगतरङ्गिणी। र. रा. शं., र. सा. प.)

अर्थ—पांच पल शुद्ध पारद और पांच ही पल गंधक और एक तोला धूमसार इन सबको क्रमसे मर्दन कर फिर एक मासा संखियाको मिलाय अनारके फूलोंके रससे एक दिनतक मर्दन करे इनको जलयंत्रमें रख पूर्व कहेहुए क्रमसे सन्धिको मुद्राकर यंत्रको जलसे भर देवे और उसके नीचे आठ दिवसतक अग्नि लगावे फिर जलको निकाल पेंदेमें जमेंहुए पारदभस्मको निकाल श्रेष्ठ पात्रमें भर देवे तदनन्तर सेवनकर्ता मनुष्य गौरी और गणेशको पूज श्रेष्ठ दिनमें एक रत्ती रस पानके साथ सेवन कर पीछेसे मीठा दूध पीवे और खटाई, उडद, नोनरहित पदार्थोंको नित्य खावे फिर कुछ दिनों बाद यथेच्छ (मनमाना) भोजन करै तो मनुष्य नीरोग होगा ॥ १०८–१११ ॥

अन्यच्च।

धूमसारं रसं तुवरीं गंधकं नवसादरम् ॥ यामैकं मर्दयेदम्लैर्भागं कृत्वा समं समम् ॥ ॥ ११२ ॥ काचकूप्यां विनिक्षिप्य तां च मृद्वस्त्रमुद्रया ॥ विलिप्य परितो वक्रे मुद्रां दत्त्वा विशोषयेत् ॥ ११३ ॥ अधः सच्छिद्र पिठरीमध्ये कूपिं निवेशयेत् ॥ पिठरीं वालुकापूरैः भृत्वा च कूपिकागलम् ॥ ॥ ११४ ॥ निवेश्य चुल्ल्यां तदधो वह्निं कुर्याच्छनैः शनैः ॥ तस्मादप्यधिकं किंचित्पा-

वकं ज्वालयेत्क्रमात् ॥ ११५॥ एवं द्वादशभिर्यामैर्म्रियते सूतकोत्तमः ॥ स्फोटयेत्स्वांगशीतं तन्मूर्ध्वगं गन्धकं त्यजेत् ॥ ११६ ॥ अधःस्थं च मृतं सूतं गृह्णीयात्पारदं मृतम्॥ यथोचितानुपानेन सर्वकर्मसु योजयेत् ॥ ॥ ११७ ॥ (वैद्यकल्पद्रुम. र. रा. शं., शार्ङ्गधर. आ. वे. वि., यो. त., वाच., बृह., र. सा. प. , नि. र.)

अर्थ-धूमसार, पारद, गोपीचन्दन, गंधक और नवसादर इन सबको समान भाग लेकर एक पहर खटाईसे मर्दन कर काचकी शीशीमें भर देवे और उस शीशीपर कपरौटी कर मुखपर मुद्रालगाय सुखावे जिस हांडीके तलेमें छेद कियाहुआ हो उसमें शीशीको रख शीशीकी नारतक बालूरेत भर देनी चाहिये फिर उस यंत्रको चूल्हेपर चढाय धीरे २ आंच लगावे तदनन्तर कुछ पूर्वसे अधिक आंच जलावे इस प्रकार बारह प्रहरतक अग्नि जलावे तो पारेकी उत्तम भस्म होगी स्वांगशीतल होनेपर शीशीको फोड ऊपर लगेहुए गंधकको छोड देवे और नीचे जमेहुए मृत पारदको निकाल लेवे और योग्य अनुपानसे समस्त रोगोंमें देना चाहिये ॥ ११२-११७ ॥

पारदमारण ।

शुद्धसूतं द्वयं गंधं त्रयं स्फटिकसैंधवम् ॥ चतुर्थं स्वमलं भागं वत्सनाभं च पंचमम् ॥ ॥११८॥सूतार्द्धं चैव कर्पूरं सर्वं खल्वे विमर्दयेत् ॥ भावनामर्कदुग्धस्य स्नुहीदुग्धस्य वै तथा ॥ ११९ ॥ यंत्रे च लवणे सूतमूर्द्धस्थाल्या मुखं लिपेत्॥अग्निं यामाष्टकं दत्त्वा दद्याच्च जलपातनम् ॥ १२०॥ ऊर्द्धं स्थाल्यां रसं सिद्धं योजयेत्सर्वकर्मणि ॥ भक्षणे देहसिद्धिः स्याद्देवदानवदुर्लभा ॥ १२१ ॥ (निघंटुरत्नाकर.)

अर्थ-पारा और आमलासार गंधक दो दो भाग फिटकिरी और सैंधव तीन २ भाग संखिया ४ चार भाग सींगिया पांच भाग पारदसे आधा भाग कपूर इन सबको खरलमें डाल मर्दन करे फिर आक तथा थूहरके दूधकी एक एक भावना देवे उसका गोला बनाय लवणयंत्रमें रख ऊपरसे दूसरी हांडीका मुख दाब कपरौटी करै और आठ प्रहरतक आंच लगावे ऊपरकी हांडीके पेंदेमें जल छिडकता रहे स्वांगशीतल होनेपर ऊपर लगेहुए पारदको निकाल सब कामोंमें लावे इसके सेवनसे देहकी वह सिद्धि होतीहै जो कि देवता व दानवोंको भी दुर्लभ है ॥ ११८-१२१ ॥

रसभस्म ।

शुद्धसूतसमं गंधं सोमलं च तदर्धकम्॥ सोमलार्द्धं विषं क्षिप्त्वा हिंगुस्फटिकगैरिकम्॥ ॥ १२२॥ सामुद्रलवणं चैव सर्वतुल्यं विनिक्षिपेत्॥ कांजिकेन पुटं दद्यात्पुटित्वा चैन्द्रवारुणीम् ॥ १२३ ॥ स्थाल्यामुत्थापनं कृत्वा अग्निं यामाष्टकं ददेत् ॥ स्वांगशीतं समुद्धृत्य भस्म सूतोद्धपातनम् ॥ १२४ ॥ योजयेत्सर्वरोगेषु कुर्याद्बहुतरां क्षुधाम् ॥ पुष्टिदो वर्धते कामो युज्यते रक्तिकाद्वयम् ॥ १२५ ॥ (रसराजसुन्दर., नि. र.)

अर्थ-शुद्धपारद और गंधक समान भाग और गंधकसे आधा संखिया संखियेसे आधा सींगिया हींग फिटकरी और गेरू इन सबके समान सैंधानोंन लेकर कांजीसे पीसे फिर इन्द्रवारुणी (फरफेंदुआ) के रससे भावना देवे तदनन्तर डमरूयंत्रमें रख आठ प्रहरकी आंच देवे स्वांगशीतल होनेपर हांडीको निकाल ऊपर लगे हुए पारदभस्मको समस्तरोगोंमें देवे तो अत्यन्त क्षुधाकारक पुष्टिका दाता और कामशक्तिका वर्द्धक है इसकी मात्रा दो रत्तीकी है ॥ १२२-१२५ ॥

अन्यच्च ।

वटक्षीरेण सूताभ्रौ मर्दयेत् प्रहरत्रयम् ॥ पाचयेत्तस्य काष्ठेन भस्मीभवति तद्रसः ॥ ॥ १२६ ॥ (रसरत्नसमुच्चय., र. रा. शं., र. रा. सुं., र. सा. प., नि. र.)

अर्थ-पारद तथा अभ्रक भस्मको बडके दूधसे तीन प्रहरतक घोटे फिर उसको खिपरमें रख तीन ही प्रहरतक बडकी ही लकडीसे घोटताहुआ चूल्हेपर आंच दे तो पारदभस्म होगा ॥ १२६ ॥

कृष्णभस्म ।

धान्याभ्रकं सूततुल्यं मर्दयेन्मारकद्रवैः ॥ दिनैकं तेन कल्केन पुटं लिप्त्वाथ वर्तिकाम् ॥ १२७ ॥ कृत्वैरंडस्य तैलेन विलेप्य च पुनः पुनः ॥ प्रज्वाल्य तामधःपात्रे सतैलः पारदः पतेत् ॥ १२८ ॥ दिनैकं भूधरे पक्त्वा भस्मीभवति नान्यथा ॥ योजितो रसयोगेन तत्तद्रोगहरो भवेत् ॥ विशेषान्मेहपाण्ड्वर्तिक्षयकासादिकाञ्जयेत् ॥ १२९ ॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ-धान्याभ्रकको पारदके समान लेकर मारकवर्गमें कहीहुई औषधियोंके रससे एक दिवसतक मर्दन करे फिर उसी कल्कसे कपडेपर लेपकर बत्ती बनावे और उस बत्तीको अंडीके तैलमें भिगोयकर आंच जलावे उस बत्तीका मुख नीचा रक्खे उसमेंसे जो तैलके साथ पारद नीचा टपके उसको लेकर एक दिनतक भूधरयंत्रमें पकावे तो पारद भस्म होगा ॥१२७-१२९ ॥

अथ नीलकण्ठरसविधि।

लेय गगन तर सूत सुहाग। ये लीजें तीनों सम भाग ॥रस ग्वारिके खररि दिन तीन। सुके भस्म सीसीमें कीन ॥ बीस पहर बालुका बारि। खैर अकेलो चूल्हे डार। नीलकंठ रस यह जानिजै। राजा रायको यही मानिजै॥ पारो अग्निजीत पै होय। सतकी संगत रहिये सोय ॥बिन सोधेसो डूबे दाम। अरु गुन जाय गुनीको काम॥ यों सोधे पारेको धरे। निहचै सो ऐसो गुनकरे। नरके देह जिती है बलाय। यारसके खायेते जाय॥ या रसको बल इतो विचार। नर भोगवे अखारे चार॥ जुर अंकुश सब जुरको जानि। नीलकंठ रस कह्यो बखानि॥ (रससागरबडा.)

अथ मुनिवल्लभ रसविधि।

कायम सूत तीस पल लेय। दुरत एक पल तामें देय। रस तमोरिया ताको देय। चार पहर जो खरर करेय॥ खररत तबै एक ह्वै जाय। तब मुद्राकर सीसी नाय। आग प्रहर बारहकी सुनी। चढती चढती कीज्यो गुनी॥ गुरु ग्रंथनमें कहिगये मनों। ताते गुन न बखानत बनों। कायाकल्प ऋद्धिको दानि। इतनेमें ही लीज्यो जानि॥ मुनिवल्लभ रस जानो येह। याते सब भागै सन्देह। अधिक कौन परगटकै कहे। करमतणी गति लागी वहे॥ (रससागर., बडारससागर.)

पारद भस्म।

स्वर्णादष्टगुणं सूतं लोहपात्रे विनिक्षिपेत्। गंधकं च कलाभागं स्तोकं स्तोकं विनिक्षिपेत् ॥ देवदालीविष्णुक्रान्ताद्रवं दद्यात्पुनः पुनः। मृदं च ज्वालयेद्वह्निं यावद्गंधकजारणम् ॥ सूतभस्म तु जायेत सर्वरोगापहारकम्। बलीपलितकं हन्ति विद्यापुष्टिकरं परम् ॥ १३१ ॥ (निघण्टुरत्नाकर.)

अर्थ–सुवर्णसे आठ गुना पारद लेकर लोहेकी कडाहीमें रख चूल्हेपर चढाय मन्दाग्नि देवे और सोलह भाग शुद्ध गंधक लेकर थोडा २ बुरकाता जाय और ऊपरसे बंदालका रस तथा विष्णुक्रान्ताका रस चुवातारहै और कडाहीके नीचे तबतक मन्दाग्नि देवे जबतक कि गंधक जारण नहो, तो वह रस समस्त रोगोंका नाशक पारदभस्म बलीपलितको नाश करताहै विद्याकी पुष्टिका करने वालाहै ॥ १३० ॥ १३१ ॥

अथ कंचन रसविधि।

पारो पीत लेय पल चार। कुन्दन तबक माहिं दे डार ॥ लीजे पारे समके हेम। बढे कनक चंचलते प्रेम ॥ नीर खररिके चांदी करे। पलक छांहमें सूखन धरे ॥ पुनि गंधकके लेय पल पांच। खररि ग्वारिमें राखै सांच ॥ तब चांदी ऊपर लिपटाय। सरवा जंत्र मांहि धरवाय। मुद्रा करि कपरौटी एक। आगि कुकुर पुट यहै विवेक ॥ सोई गंधक बहुरचो लेय। ग्वारिबाटिका लेप करेय। गंधकसौं बीसा सौ बार। लेपै चांदी इह अनुसार ॥ जब चांदी पीली ह्वै जाय। तब रस भयो जानिये राय ॥ चांदी छोलि रतीभर लेय। फिरत तार तोलेमें देय ॥ जब कुन्दन होय बारह बानि। तो पुट दीजे यहै सुजान। खायेते बाढै अतिकाम। कंचन रस या रसको नाम ॥ एक बरस भरि साधै कोय। कायाकल्प तासुकी होय। अग्नि बरै नहिं बुझिहै नीर। यों बजरंगी होय शरीर ॥ पूरस रोग सबै तजि जाहिं। नयनहु कोऊ चपै न ताहिं। भोग भोगवै चिरा समान। थंभन कहा बखाने आनि ॥ बायकष्ट जित्ते सनिपात। सात दिनाके खाये जात। या पारे विधि जाने सोय। याते भलो न दीसै कोय ॥ (रससागरबडा.)

कुश्ता सीमाव (उर्दू)

अर्क गुंचा चमेली डेढ पाव सीमाव एक दाममें खरल करके जज्ब करे और टिकिया बनाकर खुश्क करके बोतः नुकरामें रख कर और गिलेहिकमत करके दो तीन जंगली उपलोंकी हवासे बचाकर आंचदे शिगुफ्तः बरामद होगा खुराक एक चावल तमाम अमराज मुजमनः मायूसः खुसूसन जिरियान सीलान सुलासुलबौल कुव्वतबाह तौलीदमनीमें अकसीर है और कमी किसी मर्जमें खता नहीं गया मुजर्रिब है (मुजर्रिबातफीरोजी)

कुश्तासीमाव (उर्दू)

सीमाव मुसफ्फा एक तोले कलईके साथ गिरह करके रोगन जर्दमें सर्द करे और तेजबल नीमको बकरके एक कपडे पर बिछावें और उसमें वह गिरह रक्खें और मजबूतीसे लपेटकर चीथडोंसे कपरौटी करे रातके वक्त दो सेर उपलोंमें हवासे बचा कर आग दे सुबहके वक्त निकालें कलई पिघलकर नीचे बैठी होगी और सीमाव शिग्गुफ्तः अलहदा होगा खुराक ज्यादःसे ज्यादह एक चावल तक कुव्वत बाहके वास्ते मामूल व मुजर्रिब राकिमुलहर्फ। (सुफहा ६० मुजरिबात फीरोज)

अथवनितारमणरसविधि ।

लीजै शिलाजीत पच अंग । षोडश अंश काटिजै रंग ॥ ता रससों पारो भरदेय । चौंसठि पहर न छेव करेय ॥ पारो बैठि जाय इह रीति । खायजाय वनिता सों प्रीति ॥ वनितारमन नाम रस येह । एक रती पानानिसों देह ॥ याकी ठानि करैगो कोय । अगिनजीत ये पारो होय॥ (रसरत्नाकर.)

अथ राक्षसरसविधि ।

फूल बबूर कूटि रस छान । सूत खररि दिन सात सुजान । सीसी अगिन बालुका कही । एक प्रहर ज्यों जानों सही ॥ गाढि घूटि पुन पारो होय। पुनि वाही रस खरले सोय । ऐसी शीशी तेरह करै । पारो नीरस होयके मरै ॥ सूत भसम अति उज्ज्वल होय । बहुरि खरलमें दीजै सोय॥दवा पलके जानो अनुमान । तब पलभरि विष देय सुजान ॥ तामें नौरटंक दश चार । सो राखे अरु घाले नार । तब काढेमें मर्दन करै । सब सोखे जल सीसी भरै ॥ बारह पहर जु अगिन करेय । बहुर्यो फेरि खरलमें देय । उतनोंही विष ओटन धरै । ऐसी सौ शीशी गिन करै ॥ रस राक्षस यह जानो गुनी । ऐसी बंगसेनमें सुनी । कैसे भसम होय जो सूत । सौ पुट विषकी देओ धूत ॥ सौ शीशीमें घटे न एक । गुनन होय सच यहै विवेक । संज्ञा गई जासुकी होय । अतिही गुन है सुनो रे लोय ॥ चावर एक देय ता खान । अब ताको गुन सुनो सुजान । आँखिन सूझे दरश मयंक । उपजै छुधा अग्निके झंक ॥ बलीपलित नासै छिनमात । श्रवण सुनै चैंटी खररात । एक पहरमें ऐसी होय । बीसहु नार अघाय न सोय ॥ सन्नि तेरह चौरासी वात ।कुष्ठ रोग सब तजिके जात । अरस रोग अरु मृगी अपार । सबै सिराते उदर विकार ॥ पीनस अरु भाजै गलगंड । व्योची दाद गुल्म बलगंड ॥ कास श्वास अरु क्षई नसाय । चय नासूर भगंदर जाय ॥ पक्षाघात जाय कवि कहै । कफ संग्रहनी नेक न रहै । रोग सकल भाजैं बलवानै । यह रस वज्र तासुको मानै॥ मंडल भर जो प्रानी खाय। तो बगुलासे भोर उडाय ॥ एक बरस जो साधै कोय । कायाकल्प तासुकी होय ॥ पानी मांहि न डूबे सोय । अग्नि न बरे अचंभो होय॥ श्वास एकदश बदले जाहि । इहविधि बढे दशगुनी वाहि ॥ होय शुद्ध मन उपजै ज्ञान । लागै तब धनीसौं ध्यान॥ कौन सके सब गुनहि बखान । रस राक्षस अंमृत सम जान ॥ (रसरत्नाकर. । रससागरबडा)

पारदभस्म ।

व्यालस्य गरले सूतं मर्दयेत्सप्तवासरम् । शम्भुनालकृते यंत्रे तन्मध्ये तद्रसंक्षिपेत् ॥ ॥१३२॥ वह्निं प्रज्वालयेद्गाढं वारिणा चोर्ध्वशीतलम् । यामद्वादशकं चैव सुसिद्धो जायते रसः ॥ १३३ ॥ शुल्बेगंधार्धकं देयं गुंजैकं पर्वतानपि । देहे लोहे भवेत्सिद्धिः कामयेत्कामिनीशतम् ॥ १३४ ॥ तिलमात्रं प्रदातव्यं सर्वरोगान्नियच्छति । सेवनाज्जायते सिद्धिरायुर्वृद्धिश्चिरंतनी ॥ १३५ ॥ (निघंटुरत्नाकर । र. रा. सुं.)

अर्थ-प्रथम पारदको सर्पके गरलमें सातदिनतक खरल करे पीछे उस पारदको शम्भुनालसे किये हुए यंत्रमें डाल देवे और उस यंत्रको ऊपरसे तो जलसे ठंढा रक्खे और नीचेसे बारह पहरतक तेज अग्नि जलावे ऐसे करनेसे पारद सिद्ध होजाता है । पीछे उसको तांबेके पात्रमें डाल कर आधा गंधक खपावे । पीछे इसमेंसे १ रत्ती पारद देनेसे पर्वतमात्र लोहेकी और शरीरकी सिद्धि होजाती है अर्थात् लोहेको तो सुवर्ण कर देता है और शरीरमें ऐसी पुष्टि करदेता है कि पुरुष सौ स्त्रियोंसे संभोग कर सकता है । और इसके तिलमात्रके ही सेवनसे मनुष्योंके सम्पूर्ण रोग नष्ट होजाते हैं और चिरकालवाली आयुकी वृद्धि होजाती है ॥ १३२-१३५ ॥

कुश्ता सीमाव (चिमगादर में)
(उर्दू)

वूकलमून यानी आफ्ताव पुरस्तको जिन्दः पकडे और जितना पारा उसके पेटमें डालसके डालें और मुँह और मुकद बंद करके चारतोला फिटकिरीका उसपर जमाद करें और चीथडोंको मिट्टीमें लतपत करके उसपर लपेटें और एक भिसीया आहनी संपुटमें रखकर ऊपर लोहेके तारसे खूब मजबूतीसे लपेटदें और खूब मजबूतीसे कपरौटी करके एक कूजेमें जिसके नीचे सूराख किया गया हो रक्खें और हवासे बचाकर दोमन सेरगीन सहराईसे आंच दें शिगुफ्तः बरामद होगा । खुराक ज्यादःसे ज्यादः निस्फरत्ती तमाम अमराजके वास्ते अकसीर है और जजावके वास्ते अजीवुल असर है कि चालीस रोजमें

१ सप्तवार विभावयेत् इत्यपि ।

इसके पुराने पोस्तको उतार कर नया असली रंगका पोस्त पैदा करदेता है इस हालतमें मुमकिन है दस्त भी आवें मुजरिब है। (सुफहा ६० व ६१ मुजर्रिबात फीरोजी)

सम्मति—केशव कोल कमश्मीरीने इस तरकीबको निहायत मुजरिब बतलाया और कहा कि इसमें संपुट लोहेके जरूरत नहीं है न तारकी न कूजेकी इसतरह आग दीगई तो कुश्ता होगया उसमेंसे सिर्फ खफीफ पैसेपर एकतरफ मलकर दूसरा वैसा ऊपर रखकर आंचमें धोंके तौ बगैर चर्ख खाये दोनों तिला होजायंगे।

पारदभस्म।

कुम्भीं समूलामुद्धृत्य गोमूत्रेण सुपेषयेत्। तद्द्रवैर्मर्दयेत्सूतं दिनैकं कान्तसम्पुटे॥१३६॥ लिप्त्वा नियामका देया ऊर्ध्वं चाधस्तदन्ध्रयेत्। मृदग्निना दिनैकन्तु पचेच्चुल्ल्यां मृतो भवेत्॥ १३७॥ (रसरत्नाकर.)

अर्थ—यहांसे आगे सबीज पारदके भस्म करनेकी विधिका वर्णन है कुम्भीको जड सहित उखाड गोमूत्रसे पीसे उससे पारदको एक दिवस तक घोटकर लोहेके सम्पुटमें लेप करदेवे और उस सम्पुटके नीचे और ऊँचे दोनों तरफ नियामक औषधियोंका कल्क लगाकर सम्पुटको बंद करदेवे और चूल्हेपर मन्दाग्निसे बालुकायंत्र द्वारा पकावें एक दिवसतक तो पारदकी भस्म होगी॥ १३६॥ १३७॥

अथ पारदभस्मविधि।

शाकवृक्षस्य पक्वानि फलान्यादाय शोषयेत्॥ पेषयेदर्कदुग्धेन तेन मूषां प्रलेपयेत्॥ १३८॥ आदिप्रसूतगोजातजरायुश्चूर्णपूरितः। तन्मध्ये सूतकं रुद्ध्वा ध्मातो भस्मत्वमाप्नुयात॥१३९॥ (रसरत्नाकर.)

अर्थ—शाकवृक्षके पकेहुए फलोंको लेकर और सुखाकर पीस लेवे फिर उस फलोंके चूर्णको आकके दूधसे पीस दोमूषा (घरिया) बनावे उस घरियामें प्रथम ब्याईहुई गायकी जेरके चूर्णको भर और उसमें पारदको रखकर कोयलोंमें धोंके तो पारदकी भस्म होगी॥१३८॥ १३९॥

अन्यच्च।

कर्कोटी काकमाची च कंचुकी काकतुम्बिका। काकजंघा काकतुण्डी काकिनी काकमंजरी॥ १४०॥ पिष्ट्वैता वज्रमूषान्तर्लेपं कृत्वा रसं क्षिपेत्॥ मर्दितं दिनमेकं तु तैरेवार्द्रोत्थितै रसैः॥ १४१॥ रुद्ध्वाथ भूधरे पच्यादष्टवारं पुनः पुनः। मर्दयेल्लिप्तमूषां तां रुद्ध्वा ध्मातो मृतो भवेत्॥ १४२॥ (रसरत्नाकर.)

अर्थ—बांझककोडा, मकोय, कडवीतूंबी इनको पीसकर वज्रमूषामें लेप करदेवे तदनन्तर लेप कीहुई मूषामें पूर्वोक्त औषधियोंके रससे एकदिनतक मर्दन किये हुए पारदको रखकर मुख बंदकर भूधरयंत्रमें इसीप्रकार आठबार कोयलोंमें पकावे तो पारद भस्म होगा॥ १४०–१४२॥

अन्यच्च।

गोघृतं गंधकं सूतं पिष्ट्वा पिण्डीं प्रकल्पयेत्। कुमारीदलमध्यस्थं कृत्वा सूत्रेण वेष्टयेत्॥ १४३॥ तं कान्तसम्पुटे रुद्ध्वा त्रिभिर्लघुपुटैः पचेत्। ततो ध्माते भवेद्भस्म चान्धमूषागतो रसः॥ १४४॥ (रसरत्नाकर.)

अर्थ—पारद तथा गंधकको समान भाग लेकर कजली करे उस कजलीको घृतसे घोटकर गोला बनालेवे उस गोलेको घीगुवारके गूदेमें रख ऊपरसे सूत लपेट देवे फिर उसको कान्तलोहेके सम्पुटमें रख तीन लघुपुटोंसे पकावे तदनन्तर कोयलोंमें धोंककर निकाल लेवे तो पारदका भस्म होगा॥ १४३॥ १४४॥

अन्यच्च।

रसो नियामकैर्मर्द्यो दृढं यामचतुष्टयम्॥ द्विगुणैर्गंधतैलैश्च पचेन्मृद्वग्निना शनैः॥ १४५॥ यावत्खोटो भवेत्तावद्रोधयेल्लोहसंपुटे॥ हरीतकीजले पिष्ट्वा लोहकिट्टेन मूषिकाम्॥ १४६॥ कृत्वा तन्मध्यतः क्षिप्त्वा सम्पुटं चान्धयेत्पुनः। तस्योर्द्ध्वे स्रावकाकारं हृत्वा नागं द्रुतं क्षिपेत्॥ १४७॥ कठिनेन धमेत्तावद्यावन्नागो द्रुतो भवेत्॥ न धमेच्च पुनस्तावद्यावत्कठिनतां व्रजेत्॥ एवं पुनःपुनर्ध्मातस्त्रियामैर्म्रियते रसः॥ १४८॥ (रसरत्नाकर.)

अर्थ—पारदको चारप्रहरतक नियामक औषधियोंसे दृढ मर्दन करे फिर पारदसे दूने गंधक तेलसे लोहेके पात्रमें बंधकर तबतक मन्दाग्निसे पकावे जबतक वह खोट न होजाय फिर लोहेकी कीटको हरेंके पानीसे पीस घरिया बनावे खोट बनेहुए पारदको उसमें रख लोहसम्पुटमें रख देवे। पीछे उस पारदके ऊपर शीशेको इस वजेसे रक्खे कि वह झिरकर पारदमें चलाजाय और जबतक कठिन न होजाय तबतक उसको धोंके ऐसे वारवार धमायाहुवा पारद तीन प्रहरमें मृत होजाताहै॥ १४५–१४८॥

अन्यच्च।

उन्मत्तविजयार्के वा कांजिके सूतधावने। हालाहलेन तुल्येन दरदोत्थं विमर्दयेत्॥ नष्टपिष्टं तु तज्ज्ञात्वा भावयेत्पद्मिनीदलैः। गोधूमराशौ संस्थाप्य मासमेकं ततः पुनः॥१५०॥ निष्कास्य क्षालयित्वा तमहिफे-

नेन मर्दयेत् । कुर्याच्च पूर्ववत्पश्चान्नवसारेण मर्दयेत ॥ १५१ ॥ कमलस्य रसेनापि कृष्णोन्मत्तरसेन च । हिंगुना गंधपाषाणसत्त्वेनाथ विमर्द्य च ॥ १५२ ॥ षण्मासान्ततः स्थाप्यः सूरणस्योदरे रसः । एवं वर्षेण सिद्धः स्याद्रसराट् च स्वयं मतः ॥ ॥१५३॥दृश्यते चूर्णसंकाशो जीवनाख्यो रसोत्तमः।एवं गुंजा वा द्विगुंजं दृष्ट्वा दोषबलाबलम् ॥ १५४ ॥ दृष्टौषधबलं देयस्तेन सोऽर्करसोत्तमः । देयो गुणो न चेतेच्चेत्तं ब्रह्मापि न चेतयेत् ॥ १५५ ॥ (अर्कप्रकाशः)

अर्थ-सिंगरिफसे निकाले हुए पारेको धतूरा और भांग के रसमें घोट २ कर धो लेवे फिर कांजीमें घोटकर धोवे तदनन्तर पारेके समान भाग हालाहल विषको लेकर दोनोंको पीसे फिर पारा तथा विषको एक जीव हुआ जानकर कमोदनीके रसकी भावना देवे गोला बनाय गेहूंनके ढेरमें एक मास तक रखदेवे फिर उस ढेरमेंसे निकाल समभाग अफीमके संग घोट कमलिनीके पत्तोंके रससे भावना देकर गोला बनाय पहिलेके समान एक मासतक गेहूंनके ढेरमें रक्खे और इसी प्रकार समभाग नौसादरके साथ घोटकर कमलके रस, धतूरा, हींग और बैरोजाके साथ मर्दनकर गोला बनाय जमीकंदके भीतर रख छः मासतक पडा रहने देवे इस प्रकार एक वर्षमें यह रसराज सिद्ध होताहै और चूर्णके समान होजाता है इसको एक रत्ती दोरत्ती रोगका बलाबल जान औषध देवे तो यह रस मनुष्यको शीघ्र चेतन करता है यदि इस रससे चेतन न होवे तो उसको ब्रह्मा भी चेतन नहीं करसकता है इसको जीवनरस कहतेहैं ॥ १४९-१५५ ॥

अथ गोरखनाथी पारद भस्मविधि ।

मल्लिकाव्याघ्रकदलीकाकमाचीरसेन च । स्वर्णभण्डीरभृंगार आरग्वधरसेन च ॥ ॥ १५६ ॥ कन्याभल्लातपत्रोत्थरसेन परिमर्दयेत् । इष्टिकाकांजिकेनापि त्रिफलाक्वथितेन च ॥ १५७ ॥ कंटालिकादेवदालीवह्निगोक्षुरकेण च । वज्र्यर्कजेन दुग्धेन शकुलाक्षरसेन च ॥ १५८ ॥ त्र्यूषणोत्थकषायेण कीटषट्बिन्दुलेन च । चिंचिकालशुनोत्थेन दुग्धिकाया रसेन च ॥ १५९ ॥ सितपर्णीमूषपर्णीलांगलीस्वरसेन च। हिंगुलं च शिलागंधं हिंगुसौवर्चलैः पृथक्१६०॥ कांजिकेन समं पिष्ट्वा यामं यामं पृथक् पृथक् । मर्दयेच्च तथा यामं महाशंखेन मर्दयेत् ॥१६१॥ पलषट्कमितं सूतं बहुशो निम्बुकेन च । रसेन मर्दयेत्तापे भाव्यते च पुनः पुनः ॥ १६२ ॥ दृढं तापीद्वयं नीत्वा समां सममुखां ततः । अधस्ताद्याभवेत्तापी पर्णचूर्णेन लिप्यते ॥ १६३ ॥ पुनः पंचमृदो देया मृन्मध्ये लघुगर्तिका । तन्मध्ये लिंबिका पत्र धत्तूरदलमध्यगम् ॥ १६४ ॥ विरच्य मूषिकां गाढीं तस्मिन्गर्ते निवेशयेत् । तस्यां रसं विनिक्षिप्य शिम्बीपत्र रसो रसे ॥ १६५ ॥ दीयते सेटकमितेसूक्ष्मच्छिद्रा शराविका । तत्पार्श्वे खर्परी देया निर्दोषा नूतना ततः ॥१६६॥ तापिकामानयेच्चान्यां कन्यकाद्रवलेपिताम् । ततो नौसादरेणोक्तामेकतः कुरु तद्द्वयम् ॥ १६७ ॥ सिंधिलेपं ततः कृत्वा सुशुष्कां चुल्लिसंस्थिताम् । यथाग्निरुद्धवेच्चानुदीक्षितार्थः समंततः ॥ १६८ ॥ यामषोडशकं यावन्मंदमध्यक्रमेण च । तदा निष्पद्यते भस्म सूतकं शृणुयादृशम्॥१६९॥ हीरकद्युतिसंकाशं प्रमाणं हीरकाकृतिम् । क्वचित्पर्पटिकाभासं गलद्रूप्यनिभं क्वचित् ॥ १७० ॥ पिंडरूपमिदं साक्षाद्दृश्यते दृष्टिसौख्यदम् । भक्षयेद्रक्तिकामेका मरिचेन समं रसम् ॥ १७१ ॥ गुडेनावध्य मतिमान् ज्वरनाशाय तं पुरा । मन्देऽग्नौ वाथ हृद्रोगे दद्याल्लोणीरसेन च ॥ १७२ ॥ अम्लपित्ते प्रदातव्यं विमलासत्त्वसंयुतम् । बल्यं वाजीकरं मेध्यं बलोत्साहकरं परम् ॥ एतस्मान्नापरं भद्रं विद्यते रसभस्मतः ॥१७३ ॥ (टोडरानन्द)

अर्थ--मोतिया, लालअंड, केला, मकोय, पीलाभंगरा, चौलाई, अमलतास, घीगुवार,भिलावोंके पत्तोंका रस इनके साथ पारदको एक २ प्रहरतक घोटे तथा ईटका चूर्ण और कांजीके संग त्रिफलाका काथ, कटेरी,बंदाल, चित्रक, गोखरू इनका काथ और थूहर और अर्कदुग्ध, श्वेतदूबका रस, सोंठ, मिरच, पीपलका काथ, षट्बिन्दुलकीट, रमली, लहशनका रस, दुद्धीका रस, सौंफ, मूषाकानी, कलिहारी इनका स्वरस हींगुल, हींग, और स्याहनोन इनको कांजीके साथ एक २ प्रहर तक पारेको घोटे और इसीप्रकार एक प्रहर तक महाशंखके साथ मर्दन करे इस प्रकार शोधित पारदका छः पल लेकर नींबूके रसके साथ तीव्र घाममें बार २ भावना देवे, फिर दो गहरी कटोरी बनवावे जिस कटोरीको नीचे रखना हो उसको पानके रससे लीप देवे फिर उसमें पंचमृत्तिकाको रख छोटासा गढा बनावे उसमें शिम्बीके पत्तोंका रस डाल घरियाको रख देवे उस घरियामें पारदको रख ऊपरसे शिम्बीके पत्तोंका रस निचोड देवे और घरियाके ऊपर इतना बडा सकोरा रक्खे कि, जिसमें कमसे कम एक सेर रस आवे और उस सको

रेके पेंदेमें छोटासा छिद्र हो और सकोरेपर खिपरा रखदेवे। तदनन्तर दूसरी कटोरीको ऊपरसे रख देवे दोनोंके मुखको नौसादरसे जोड मुद्रा करै। फिर चूल्हेपर चढाय सोलह प्रहर तक मन्द, मध्य और तीक्ष्ण क्रमसे अग्नि देवै स्वांगशीतल होनेपर खोलकर देखे तो आप लोगोंको कहीं हीरेके वर्णके समान रंगवाला, कहीं पपडीके समान और कहीं गलतीहुई चांदीके रंगवाला रस दीखेगा एक रत्ती इस रसको मिरच सातके साथ पीसकर गुडमें लपेट ज्वर आनेसे पूर्व खावे तो ज्वर नहीं आवेगा। मन्दाग्निमें और हृदयके रोगोंमें नोनियाके रसमें मिलाय देवै। और अम्लपित्तपर विमला सत्त्वके साथ सेवन करै। मधुके साथ यह रस बल और उत्साहको कर्ता है तथा वाजीकरण है इससे उत्तम और कोई नहीं ॥ १५६--१७३ ॥

सर्वलोहमारणोपयोगी रसभस्म।

उत्तरावारुणीदुग्धैः सर्पाक्षिजरसैस्तथा। हंसपादरसैस्तद्वद्वज्र्यर्कपयसा सह ॥१७४॥ ब्रह्ममूलरसैस्तद्वत्कपिकच्छूशिफारसैः। विष्णुक्रान्ताषडंगोत्थरसैः पौनर्नवैस्तथा १७५ यवचिंचा देवदाली कंचुकी पाठिका वरी। रसैः प्रमर्दयेत्सूतं भिषग्दशदिनावधि ॥ ॥ १७६॥ तत्कल्कगोलकं कृत्वा यंत्रे सोमानले पचेत्। एकविंशदिनं यावदग्निं संज्वालयेदधः ॥१७७॥ यंत्रादुत्तारयेत्सूतं भस्मीभूतं सुपांडुरम्। तस्मै तत्सारयेल्लोहं सुवर्णाद्यमसंशयम्। लेपेन पुटयोगेन सर्वलोहानि मारयेत् ॥ १७८ ॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ-इन्द्रायनका दूध, सर्पाक्षीका रस, हंसराजका रस इसीप्रकार थूहर और आकका दूध, कौचकी जडका रस, विष्णुक्रान्ताके षडंगका रस, सांठका रस, चौंटनीका क्वाथ, बंदालका रस, अगरका रस, पाढलका रस, त्रिफलाका क्वाथ, इनसे पारदको दस दिवसतक घोटता रहे उसका गोला बनाय सोमानलयंत्रमें पकावे और इक्कीस दिनतक अग्नि देता रहे सफेद हुए पारदकी भस्मको उतार लेवे उससे सुवर्णादि धातु उत्पन्न होतेहैं इसके लेप या पुट देनेसे समस्त धातु भस्म होतेहैं ॥ १७४–१७८ ॥

कुश्ताके रखनेका बर्तन।

अकसीरको पानीमें भीगने न दे और हवाई रतूबतमें महफूज रक्खे बरनः नाकिस होजावेगी बेहतर है कि चीनी या शीशेके जरूफमें या नारियलके डिब्बेमें भरकर रखछोडे (सुफहा अकलीमिया २३)

पारदकी सिद्ध भस्म।

पारद, गंधक समभाग लेवे, अश्वत्थ, न्यग्रोध (वड), गूगल, पिलखन इन चारों वृक्षोंके दूधोंसे कजलीको चारदिनतक खरल करना फिर मिट्टीके वासनमें रख नीचे दीपाग्नि देना एक प्रहरतक वडकी लकडीसे घोटता रहे तो पारदभस्म सिद्ध होगी। (जंबूसे प्राप्त भाषापुस्तक)

बेधक पारा।

पारा और आमलासारगंधकको समान भाग लेकर चालीस दिनतक चीढके तैलमें अथवा देवदारुके तैलमें खरल करना फिर एकरोज छाणोंकी आग देणी शीशीमें पाकर फिर तांबा वा चांदीके एक तोलेमें एकरत्ती पारा पाणा तो सुवर्ण होगा। (जंबूसे प्राप्त भाषापुस्तक)

पारदभस्म।

लोटका सज्जीसवासेर पक्का लाहोरी दडर करके पानीमें भेवना आठ पहर भीजी रहै फिर पाणी आधपा उतारके १ एक तोला आमलासार खरल करना दो घडीभर पाणी ऊपरो नितारके कपडेसे पाणी पृथक् करके उस आंवलेसारको कुंजीमें रखकर मुँह बंद करके भूभल बिचनरच आग देणी एवं बार २ करना जबतक गंधक निर्धूम होवे फिर कंगण खारमें इसीतरह करना तबतक जब गंधक कोलेपर रक्खाहुआ तैल होजावे फिर उस गंधकसे एक रत्ती लेकर तोला पारा खरल करना खाक होवे। (जंबूसे प्राप्त भाषापुस्तक)

पारदभस्म।

बोड (वड), अर्क (आक), इटसिट (बिसखपरा), कार गंदल (घीगुवार), हाथीशुंडी, बणा (बनकपास), लेहलीसण (सन), सहस्रदाणी (हजारदाना), छत्री दाधक, नाग फणी थोहर इन दवाइयोंका रस तथा दूध पारदसे चौगुना २ लेकर खरल करना फिर अणवुज्ज चूना पंच बट्टी लेकर छाणकर घडे बीच आधा पाकर ऊपर गोली रखकर उपरो बाकी चूना पाकर घडेदा मुहमांहके आटेसे बंद करदे पहरभर पाणीमें रखना फिर सतकपडमाटी करके सुखाकर गजपुट देणी ६४ चौसठ प्रहर पीछे निकाल लेणा पारद खिल (खील) होजावेगा उसको ताम्र वा कलीपर चढावे (जम्बूसे प्राप्त भाषापुस्तक)

पाराभस्म।

पारा तोला १ जावित्री माशे ३ खरल करके गुटिका शोरे बिच आंच देनी। और पालकरसमें ये गुटिका करना।

शोरे कायमकीः क्रिया।

गंदा वैरोजा लेकर हांडीमें पाणी पाकर उसके मुखपर कपडा बन्दकर ऊपर गंदा वैरोजा पाकर हेठ आग बालणी वैरोजा पिघलकर पाणीमें पड जायगा पकाडा पीसक होजायगा ५ तोले शोरेपर २॥ तोले वैरोजेदा सत्त आग ऊपर रखकर पाणा शोरा कायम होजायगा। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक।)

कुश्तासीमाव बजरियः शोराकायम (उर्दू)

पारा एक तोलाको एकबर्तनमें रक्खे और उसके ऊपर शोराकायम एक छटांक डालकर दूसरा बर्तन ऊपर रखकर

थेडेसे कोयलोंकी आग देवे कुश्ता होजावेगा (सुफहा ६० किताब कुदतैजातहजारी)

कुश्ता व सीमाव अव्वल नौसादरसे सीमावको कायमुल्नार करके बादहू कुश्ता (उर्दू)

१--नौसादरका तेल निकालनेकी तरकीब यह है नौसादर १० तो० को चूना आबनारसीदः पांचसेरमें देकर एक मिट्टीके बर्तनमें बंद करके पन्द्रहसेरकी आंच दे जब सर्द होजाये निकालले फिर उसे एक खुले बर्तनमें दाखिल करके चहारचंद पानी दाखिल करदे चौथे रोज मुकत्तर लेकर पकावे जब तमाम पानी जल जायगा तो नौसादर तेल होजायगा ।

२--अव्वल सीमावको पोली ईटके बुरादेमें एक पहरतक खरल करे ताकि वह स्याह कजलीसे साफ होजावे बादहू नौसादरके तेल दो तोलेमें नरम नरम आंचपर एक घंटेतक लगावट दे इस कदर अमलसे सीमाव मुतहर्रिक कायमुल्नार होजावेगा बादहू सीमाव मुतहर्रिक कायमुल्नारको अपने मुंहके लब (थूक) के साथ डेढघंटेतक खरल करे तमाम सीमाव नापिदीद और खाक होजावेगा बादहू खाक शुदः सीमावको एक मिट्टीके बर्तनमें डालकर उसमें करीबन आधसेर अर्कघीग्वार दाखिल करदे बर्तनका मुँह गिले हिकमत करके पन्द्रह सेर पुख्तः पाचककी आग दे जब सर्द होजावे निकाल ले सीमाव बरंग आसमानी किसीकदर सफेदी लियेहुए कुश्ता होकर बरामद होगा ।

३--यह कुश्ता सीमाव तभी दुनियामें अकसीरका काम देता है दो चावल वजन बालाई या मस्कःमें रखकर जैलके मरीजोंको एक हफ्ते अशरेतक खिलाये बहुक्म खुदामरीज तन्दुरुस्त होजाते हैं वह यह हैं सरअत, रिक्कत जिरियान, नामर्दी, भूख न लगना वगैरः वगैरः नामर्दको इक्कीस खुराकमें मर्द बनादेता है (सुफहा४--५ अखवार अलकीमियाँ १६।९।१९०७)

पारदभस्म (वेधक) सर्दसे ।

कालेफणी सांपमें पारा भरकर एक मिट्टीके बर्तनमें रख गजभरके गढेमें आधा गोबर भर खुले मैदानमें आषाढमें उस बर्तनको रख ऊपर गोबर डालता रहे वर्षाभर जब फिर जेठ आवे तब आग लगादे पारदभस्मवेधी तय्यार होगा (पं० ऋषीरामजी जंबूवालेने बताया)

औरभी ।

कृष्णसर्पमें पारद भरकर एक हाँडीमें पाकर गर्तमें नीचे ताजा गोमय भर बीच हांडी धर ऊपर फिर गोमय पाता रहै गर्तको खूब भरदे चारमास पडारहा जब ऊपर गोहा सूख जाय तब और सूखे गोहे ऊपर लगाकर आग देवे शीतल होनेपर निकाले वह ताम्रको सुवर्ण करताहै (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

कुश्ता सीमाव चिमगादरमें (फार्सी)

बियारन्द सीमाव दो दाम व सहचहारखरी दरपार्चः साफ नुमायन्द पसबाशीरः तुलसीदरजर्फ गिली वा अंगुश्त विमालन्द ताकि सीमाव दानः दानः शवद बादहू बिगीरन्द चिमगद्दर कलां नर व कर आँव रीशमां बिबन्दन्द दरहलक आबेजन्द पस दहन ओरा बिदोजद तासीमाव बरन उफ्तद । बादहू आँरा दरहम गिरफ्तः गर्द ओबगिले हिकमत दरगीरद चुनां चः बरतमामी चिमगद्दर गिलबाशद व अज हेच तरफ खाली न बाशद पस आँरा खुश्कसाजद दरआफ्ताब बचूं खुश्क शवद दरदेग गिलीहिन्द व बसरपोश दरपोशद गिर्द आँ मुहकिम कुनद बगिले हिकमत बदर चकर गज दरगज बातिश पाचक दस्ती बिसोजद ता अस्तख्वां हाइचिमगद्दर आँखा किस्तर शवद बई दर पंच॰ रोज बदर यक हफ्तः में शवद बचूं आतिश कमशवद दीगर अफरोजद ताकि हमः गोश्त व पोस्त वअस्तख्वां सोख्तः खाकिस्तर गर्दद पस अज देग बर आबुर्दःगुल दूरकर्दः खाकिस्तररा दरजाइ महफूज बिदारन्द बमिसरा गुदाख्तः कदरे अजई अकसीर बहुए रजद तिलागर्दद बरकलई नीज अन्दाजद शायद कि ईनहम चीजे बिशवद (सुफहा ४ किताब मुजर्रिबात अकबरीफार्सी व सुफहा ७ उर्दू)

कुश्ता सीमाव व हरताल अकसीर अजसाद व अकसीर अजसाम बगलेमें (उर्दू)

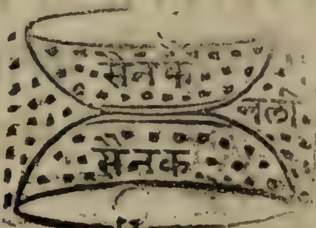
हरताल तबकी तीन तोला, सीमाव मुसफ्फा तीन तोला दोनोंका अर्क संभालूमें दोपहरतक खरल करे । बाद अजाँ अर्क पोस्त दरख्त सिरसमें बदस्तूर दोपहरतक खरल करके टिकिया बनाकर हिफाजतसे रखले । बगला मशहूर एक जानवर है नौ अदद ले और अस्तख्वां सबको साफ करके खुश्क करे बारीक सुरमेकी तरह पीसे इस मैदेको शीर आंकमें तीन मर्तबः तर व खुश्क करके इसीसे खमीर करे और एक कटोरी बोतेकी सूरतमें इससे बना ले खुश्क करके शीर आकसे पुर करले सायेमें पडा रहने दे । हत्ताकि खुश्क होजावे । इसी तरह सात पुट दे टिकिया अव्वलको इसी कटोरीमें रखकर इसीतरह सात मर्तबः शीर आकको धूपमें या सायेमें खुश्क करले एक और कटोरा लोहेसे बनावे जो कटोरा अव्वलसे बडा हो उसको अन्दर बाहर नमक सांभरसे जो शीर आकसे खमीर किया गया हो लेप कर दे । कटोरीको इसमें रखकर हर खाली जगहको नमक सांभरवाले खमीरसे इस तरह भर दे । कि कोई खाली जगह न रहे एक गिली मटकीमें जो बहुत मोटा हो बल्कि बेहतर यह है कि खुद सिफारिशसे खूब मजबूत और मोटा तय्यार करावे । इस मटकीमें तीन अंगुल बलन्द खाकिस्तर चोबपलास नीचे बिछावे । डिब्बा आहनी मजकूरको इस पर रख दे खाकिस्तर मजकूर इर्दगिर्द और ऊपर खूब जोरसे देदे और खूब दबावे । हत्ताकि मटकीकी गर्दन तक आजावे अगर चोब पलासकी खाकिस्तर दस्तयाब न होसके तो पीपलकी भी काम दे जायगी । मटकीको सरपोश देकर मुहर करे और सब पर खूब गिले हिकमत करके मुनासिब चूल्हे पर सवार करे । मगर तमाम अमलमें बावजू होना जरूरी है या कम अजकम पाक व साफ तौ जरूर हो । चोब पलाससे आंचदे

नरमसे शुरू करे दमबदम आंच बढाते जावें आखिरको आंच बहुत तेज होनी चाहिये सोलह पहरतक आंच देना चाहिये चूल्हे पर ही सर्द वस खुदाका फज्ल है मगर याद रहे कि खूब अहतियातसे तमाम खाकको ऊपरसें हटावे और जीवक बजरनेख अकसीर शुदःको निकाल कर हिफाजतसे रक्खे। अशद जरूरतके वक्त एक बहल्ली मिसमुनक्काको बोतःमें पिघलावे और अकसीर मजकूरसे एक खराखाशकी बराबर इस पर तरह करे और कुदरत खुदा मुलाहिजा फर्मावे मगर अकसीरको मौममें लपेटकर तरह करे उस वक्त जब कि खूब चर्ख आजावे वरनः नाकिस रहजावेगा। खानेके काममें खुराक एक चावलसे भी कम वर्ग तंबूलमें एक आदमीके वास्ते एकही खुराक तमाम उम्र काफी है मगर खिलानेमें अहतियात करनी चाहिये। आदमीका मिजाज देखकर खिलावे एक चावल इस्तहातक खूराक है इन्तशार इस कदर होताहै कि बाज वक्त जानका खौफ पैदा होजाता है और नीज दीगरन नुकसानका अहतमाल है। गरजे कि तबियत समझदार और होशियार तजरुबेकार होना जरूरी है और वह बगलेकी हड्डीवाली कटोरी भी पीसकर हिफाजतसे रखले एक रत्ती खुराक है जैकुल नफस, बवासीर, जलोदर, वायुगोला, झूला वगैरः, अमराज व मुजमनःमें अकसीर आजम है तमाम हुआ नुसखा देखो (रिसालह इसरार सीदरी सुफहा ५३ ता ५६)

नाजरीन ऊपरका नुसखा आपने पढ लिया है यह रिसालः इसरार सेदरीका नुसखा है। एक साहब मुहम्मद अलमिखां सरहदी तहरीर फर्माते हैं कि इस नुसखेको मैंने बनाया वाकई सही साबित हुआ और यह भी तहरीर फर्माते हैं कि भिलावेके तेलमें शामिल करके यह अकसीर दो खुराक मैंने खाली है सफेद बाल गिरकर आब स्याह निकल आये हैं और जिस्मानी ताकतका यह हालहै जैसा कि आलम जवानीमें था हरवक्त खेलकूदको तबियत चाहती है जिस कदर गिजा खाता हूं सब हजम होजाती है कबजका नमूद तक नहीं रहा। रंग बदन मिस्ल फूल गुलाबके निखरता चला आरहा है वगैरः वगैरः (सुफहा ३-४ अखबार अलकीमियां १६।६।१९०७)

पारदभस्म बगलेसे।

पक्षी बगला जिसके बाजूके पर स्याह हों उसको इसतरह मारे कि उसके बाजूकी हड्डी न टूटजावे। फिर उसके दोनों बाजूकी हड्डी यानी नली निकाल ले बेहतर हो कि दो पक्षियोंसे चार अदद नली निकाल ले। नलीको एक तरफसे तराश कर उसके अन्दर सुईसे सूराख करे। लंबाईमें फिर उनमें पारा भर दे और उनका मुँह अंडेकी जर्दी व चूनेसे बंद करदे। बादको एक सैनक नीचे औंधी रख उसपर वह नली रख दूसरी सैनक सीधी रख दे और गोबरके चूरेसे दोनों सैनकोंको ढक बहुत हलकी



आंच दे। कपोतपुट सर्द होनेके बाद निकाले। पारद भस्म निकलेगी। एक चावल इसमेंसे मांसके अन्दर रख नामर्दको खिलादे और जबतक उसको दो तीन दस्त न आवें खाना और पानी न दे ६ घंटेके करीब दस्त होगा जिसमें झिल्लीसी निकलेगी। इस हालतमें गर्मी बहुत मालूम होगी इस वास्ते सरपर खूब मशकसे पानी डाले बाद दस्त आनेके जो मर्जी आवे खाय निहायत दर्जेकी बाह पैदा होजायगी। (कश्मीरयात्रामें प्राप्त)

कुश्ता सीमाव बजारियः नली बगला (उर्दू)

पारा एक तोला नली बगलाके दर्मियान इस तरीकेसे रक्खे कि निस्फ नलीसे गूदा निकालकर पारा डाले और फिर निकला हुआ गूदा डालकर कपरौटी करके दो प्यालोंके दर्मियान रखकर थोडीसी कोयलोंकी आग देवे बवक्त सर्द होनेके पारा कुश्ता शुदः निकाल ले (सुफहा ६० किताब कुश्तैजात हजारी)

सीमावका कुश्ता माजूनमें (उर्दू)

माजून फिलासिफया दो तोले गुलकन्द आला दो तोले दोनोंको लतपत करके लुगदा बनाले अजवाइनके पानीमें सीमाव २ माशेको एकदिन खरल करे। लुगदा मजकूरमें देकर एकसेर रेशमानकी आग दे सीमाव कुश्ता होकर निकलेगा। हवासे बचकर आंच दे. बाजदफे थोडी भी बे अहतियाती अमलमें आनेसे अमल बातिल होजाता है। (सुफहा १४ अखबार अलकीमियां १६।६।१९०७)

कुश्ता सीमाव (उर्दू)

नकछिकनी जो कीमियाई बूटी है सीमाव उससे कुश्ता होजाता है। (सुफहा २८१ किताब अकलीमियां)

कुश्ता सीमाव बजारियः केला (उर्दू)

एक जड केला जो तूलमें एक फुटसे कम न हो लेवें और इसमें निस्फ तक सूराख करके सीमाव एक तोले डालकर बरामद शुदः गूदा डालकर रस्सी सनसे खूब मजबूत करके गिलेहिकमत करके करीब दस सेर पुख्तःकी आग देवे इन्शाअल्लाह कुश्ता होगा यह मेरे दोस्तका मुजर्रिब है। (सुफहा ६० किताब कुश्तैजात हजारी)

कुश्ता सीमाव मूलीमें (उर्दू)

सफेदमूली जो वजनमें सेरभरके करीब हो लेकर दर्मियानसे काटकर चाकूसे खोदकर एक तोला सीमाव डालकर फिर वही गूदा जो खोदनेसे निकला था डालकर अच्छीतरह संपुट करके बल्कि कपरौटी करके तेज गर्म भाडकी बालूमें दवा दो सुबहको निकाल लो उमदा कुश्ता होजावेगा इसके बंद करनेकी हिकमत चाहिये वरनः निकल जावेगा। (सुफहा ५७ किताब कुश्तैजातहजारी)

पारदकी भस्म (वा चांदी नींबूमें)

कागजीनीबू बीच १ तोला पारा पाकर कपडमिट्टी करके दोपाथी बिच आग दैंणी फिर चौक १ तोला, कुठ १ तोला दोनोंको पीसकर दो ठिका बनाके उनके बीच बोते बिच पाथके गोहोंकी आग दैणी फूल जायगा सिद्ध भया नहीं तो चांदी बण गई (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

कुश्ता सीमाव बजरियः बेलफल (उर्दू)

एक पल बेलका गोंद निष्फके करीब निकालकर दर्मियान पारा डालकर फिर बाकी गूंद डालकर कपरौटी करके आग करीब गजपुटके देवे कुश्ता होजायगा। (सुफहा ६० किताब कुश्तैजात हजारी)

कुश्तासीमाव बजरियः करेला (उर्दू)

एक अदद करेला बडा जर्दरंगका लेकर उसमें सूराख करले दर्मियान दो तोला सीमाव रखकर मुँह बंद करके कपरौटी करे और बकरी या भेडोंकी मेंगनियोंकी दो थापियां बडी होवें। फिर थापियोंके अन्दर गढा खोदकर १½ सेर पुख्तः एरंड डालकर दर्मियान करेलाकपरौटी शुदः दूसरी थापी ऊपर रखकर कपरौटी करके आग करीब २० सेर पाचकदस्तीकी गढामें देवे बाद सर्द होनेके निकाल ले। (सुफहा ५९ किताब कुश्तैजात हजारी)

पारदभस्म मिर्चसे ।

एक ताजा सुर्ख मिर्चमें पारा भरकर उसके सूराखको डोरेसे बांध दिया जावे ऊपरसे पारा भर ताजा सुर्ख मिर्च पीसकर गिलोला बना दिया जावे कपरौटीकर दस सेरकी आंच दीजावे भस्म होजायगी । (कश्मीरयात्रामें प्राप्त)

कुश्तासीमाव रामपत्तीसे खरलकर हंसराजकी लुगदीमें कुश्ता (उर्दू)

रामपत्ता ६ माशे एक तोला हंसराज एक तोला सीमाबको रामपत्तीमें हल करके हंसराजका लुगदा करके कपरौटी करके दो सेर उपलोंकी आग देवे । अज मुहम्मद अलीखां वल्द चौधरी शेरखां मरहूमनियामेज (सुफहा ५८ किताब कुश्तैजात हजारी)

कुश्तासीमाव बजरियः तुलसी (उर्दू)

एक तोला सीमाव लेकर कामिल एक प्रहरतक अर्क वर्गतुलसी मुकत्तरमें खरल करके दो सिप्पियोंको डोरेसे बाँधकर तीन दफे खुश्क करके पांच सेर धानके भुसमें हवासे बचाकर आग देवे पारा कुश्ता होजावेगा। (सुफहा ६० किताब कुश्तैजात हजारी)

कुश्तासीमाव रतनजोतसे (उर्दू)

बूटी रतनजोतके एकपाव अर्कमें एक तोला सीमाव खरल करके एक मिट्टीकी कूजियामें बंद करके गिलेहिकमत करके निस्फ सेर उपलोंकी आग देदो मेरा मुजर्रब है मगर बाज दफे उडभी जाताहै। (सुफहा ५७ किताब कुश्तैजातहजारी ।)

कुश्तासीमाव चिरचिटेसे टिकिया बनाकर (फार्सी)

कुश्तासीमाव जो महोवियोंको जानै है दरवेश साहब कसमिया फर्माते थे कि यह खिलाफ नहीं है ।

बिगीरन्द सीमाव मुसफ्फा असली व आँरादर अर्क चिरचिटा सबज सहयोम खरल साजन्द चूँकर्स शब्द दरदो उपला कि हर व वजन यकसेर बाशद दर उपलः गार करदः व वर्गनोब फर्शकर्दः दर्मियानकर्स निहादः व बालायश वर्ग मजकूर निहादह उपला दोयम निहादह लब बंद कर्दह आतिश दिहन्द व उपला मजकूर अजमुश्क बुज स्याह यकरंग तय्यार करे आलादर्जेका होगा खुराक वास्ते मभी व मुगल्लिज व मुश्तही एक चावल मुवाफिक बदरकः जैसा कि मिजाज हो अकसीर है। (सुफहा १० अखबार अलकीमियाँ १। ११। १९०७)

पारदकी जडीसे गोली बना स्थिर कर भस्म करना ।

बृहतीकंटकारिकारसेन मर्दनात् पारदस्य गुटिका कार्य्या सा गुटिका ब्रह्मदंडीरसे पाचनीया तेन पारदगुटिका स्थिरा भवति ततः सेर कच्चागोहे वा तुषमें अग्नि दैणी पारदभस्म जायते । (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

पारदभस्मकी बूटीसे गोली बांधना (बूटीसे भस्म)

कामरसबूटीमें पारेकी गोली बनजायगी उस गोलीको शरपुष्प, जंजूलीदेरुमें और कामरसबूटी इन तीनोंकी लुगदी बनाके गोली रखके आग देनेसे पारा फुल होजायगा कलीपर चलैगा । (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

कुश्तासीमाव गोभीमें गोली बना अनारमें कुश्ता (उर्दू)

गोभीके अर्कमें तीन तोला सीमाव दो रोजतक खरल करनेसे पारा मुनअकिद होजायगा बादहू एक ताजा अनार खाममें शिगाफ करके उकद सीमाव उसमें रखकर बाद गिले हिकमत मजबूत तीन सेरको आंच दीजावे सीमाव बरंग सफेद कुश्ता होगा । (सुफहा नं० ४ अखबार अलकीमियाँ १५। ५। १९०७)

पारदभस्मकी तिधारेसे गोली बना (घीग्वारसे भस्म)

दो तोले पारदको सेहुंडके दूधमें तीन चार दिन तर रखनेसे गोली बनजाती है उसको पावभर घीग्वारके लुगदेमें

---

१ यह अकरर धानके खेतोंमें पैदा होतीहै बरसातमें।

रखकर आंच देनेसे भस्म होजाता है । पारदको तिधारा थूहरके दूधमें घोटकर धोडाले फिर घोटे इसतरह करनेसे तीन दिनमें गोली बंधजावेगी (कश्मीरयात्रामें जंबूनिवासी पं० सायीदासजीसे प्राप्त)

कुश्तासीमाव सहदेवी सफेद गुलके चोयासे मसका बना उसकी लुबदीमें कुश्ता (उर्दू)

सहदेवी सफेदगुलकी मतलब है जिससे सीमाव इसतरह कुश्ता होजाताहै कि अव्वल उसके अर्कका चोया दे यहांतक कि, मसका होजाय । बाद उसके इसीकी लुबदीमें रखकर पांचसर कंडोंमें फूंक दे कुश्ता होजायगा छोटी सहदेई मुराद नहींहै (सुफहा २७९ किताब अलकीमियाँ)

पारद्भस्म जडीसे गोली बना ।

(अर्क) (छत्रिका दुग्धिका) दुग्धाभ्यां सपुत्राभ्यां गुटिकां संपाद्य लोहसम्पुटे ससंभ्रिकार्गलफणिकाफलमध्यनिहितगुलिकां दत्त्वा हस्तपुटं दद्यात् सिद्धं रसभस्म वंगे योज्यम् ।

वंगशोधन ।

नवसादर, सुहागा, फिटकिरी, सुधाचूर्ण, सैंधव पंचभिर्वंगशोधनम् । कालीवरैंकडपंचांगोर्के ततं तत्तमर्कपत्रं दत्त्वा धमेदिति । एवं गयदापुष्पार्केऽपि कृष्णधत्तूरपत्रपुष्पाभ्यां सार्कदुग्धाभ्यां वा गुटिका कार्या (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

कुश्तासीमाव कीमियाई (उर्दू)

सीमावको चारयोम बुरादः खिश्त पुख्तःमें सहक करके गर्म पानीसे धोकर साफ करके चार दिन तक भाँगरे स्याह गुल मामूलीमें और चार योम शीरः बिजौराबूटीमें सहक किया बादहू दोनों शीरा मसावी मिलाकर तीन दिन बराबर दोनों शीरोंके चोया दे बाद उसके दर्मियान दो चिराग गिलीके रखकर और ऊपरसे तलछट मजकूरः बूटियोंका डालकर मुअम्मा किया और खूब गिले हिकमत करके खुश्क करलिया और बारह सेर कंडोंमें भडकाकी आँच दे इस अकसीरको एक रत्ती लेकर तोलाभर कलईपर तरह करके चांदी बनाया दोनों बूटियाँ नैनीतालपर बकसरत पैदा होती हैं (सुफहा २७३ किताब अलकीमियां)

पारदभस्म जडीसे जलयंत्रमें ।

घग्गरबेलके पंचांगके रससे खरल दिन पारदसे चतुर्गुण रसमें खरल करणा फिर विष्णुक्रान्ता रसमें खरल करना फिर जलयंत्रमें अग्निदेणी भस्म होवेगी वेधक लक्ष्मणा रससे खरल करना जो हाथ आवे तो नहीं तो नहीं। घग्गरबेल श्वेत, पीत, रक्त, कृष्ण ऐसी चार प्रकारकी होतीहै (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

पारद्भस्म जसदयोग ।

लोटा सज्जी आधसेर फिटकिरी आधसेर, काही आधसेर, नौसादर आधसेर, कालीमिर्च [1] सेर आध आधसेर पक्का १० सेर पाणी २॥ बाकी उसमें ३१ बार डालेना ८ तोले जस्त गलागलाकर १२ पारा सिंग्रफसे निकाला हुआ उस पारेको निंबूके रसमें खरल करलेना फिर दोनाका टिक्की बनालेनी उसके हेठ ऊपर सीपदा चूना डंडे थूहरके दुग्धसे तर कियाहुआ देके नरम नरम अग्नि तवतक देनी जबतक फुल होजाय फिर काममें लगाओ (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

पारद्भस्म जस्तयोगसे (वेधक ताम्रका सोना)

जस्तदी डब्बी आठ तोले, पारा आठ ताले, मँहदी दे पाणीमें खरल करके धो छोडना फिर पारा डब्बीमें पाकर उपरों महँदीदा पाणी भर देना उस डिब्बीको पेठेमें देकर बंदकर ऊपरों भूरेदी टाकीसे तीन कपडमाटी करके सुखाकरा गजपुट देणी खिल होजायगी उसको ताम्रपर पाणा (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

कुश्ता सीमाव बजरियः रांग (उर्दू)

सीमाव दो तोले, कलई दो तोले, रोगन सरसों ८ तोलेको किसी कच्ची आहनीमें डाले और इसमें सीमाव डाले और ऊपर कलई डाल देवे । जब पारा और कलईकी गिरह बनजावे तब तेजबलको खूब बारीक करके गिरह मजकूरके नीचे ऊपर देकर कपडा करीब दो सेरके लपेट लपेट महफूज जगहमें रखकर आग लगावे बवक्त सर्द होनेके निकालले कलई अलहदा पडी रहैगी और सीमाव कुश्ता होजावेगा । (सुफहा ५९ किताब कुश्तैजात हजारी)

कुश्ता सीमाव बजरियः रांग ।

सीमाव दो तोला, कलई दो तोला, पहले कलईको पिघलाकर पारा शामिल करके वर्गदरख्त झुंडके एक पाव नुगदेके दर्मियान रखकर कपरौटी करके आग देदेवे । करीब तीनसेरके मगर गढामें कलई अलहदा होजावेगी और सीमाव कुश्ता होजावेगा (सुफहा ५९ किताब कुश्तैजात हजारी)

कुश्तासीमाव बजरियः रांग (उर्दू)

पहले कलईकी दो कटोरियां बनावे इसमें महँदी या भंगको अच्छी तरह बारीक करके निस्फ डाले और इसमें एक तोला पारा डालकर बाकी निस्फ महँदी या भंग डाले बादहू हर दो कटोरियोंको आमेज करके एक उपला कलामें रखकर उसके ऊपर दूसरा उपला रखकर लब बंद करके गढामें महफूज जगह आग देदेवे । सीमाव फूल होजायगा और कलई नीचे बैठ जावेगी । (सुफहा ५९ किताब कुश्तैजात हजारी)

---
[1] सब चीजें आध आध सेर लेनी ।

पारद फुल्ल पारदभस्म चांदीयोग ।

पारद यथेष्ट शुद्ध, काष्ठक, तारे मीरेदातैल, हुसन यूसफ़का तैल काष्ठकसे गुटिका पारदकी बनानी । फिर तारे मीरेदे तैलमें पकानी फिर हुसन यूसफके तैलमें भिगोकर कुठालीमें रखकर भत्रासे धोंकना पारद फुल होजायगा वङ्गमें योजना करना । (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

पारदभस्मवेधक शंखियायोग ।

रत्तक कुट्टके पाणीमें भिगो छोडनी फिर उस पाणीमें रत्तक समेत पारा खरल करना गोली बन जायगी ।

शंखिया अम्मीरस वा चोवा १ तोलेको ५ तोले इसके गोलीपर लेपकरके मृतपात्रमें २ सेर कन्डेकी आग देनी तोले त्रामेपर १२ रत्ती श्वेत होवे (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

पारद भस्म शंखिया गन्धक आदिके तैलसे ।

शंखिया, श्वेत नौसादर, लोटा सज्जी तीनों समभाग दृडर करके कांस्यपात्र दोमें कणक दे आटे नालमुद्रित करके सुखाके रखना धोबियोंकी खुबमें लटका देना चार पहरमें तेल होगा उस तेलसे धारण करना ।

ततः मृन्मयी कूपिका कार्य्या तस्या अंतःशोरेदी भावना कार्य्या तस्यां पारदं यथेष्टपरिमाणं निधाय पूर्व तैलबिंदुं निक्षिप्य संमुद्य स्वल्पो वह्नितापो विधेयः। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक.)

पारद भस्म शंखिया आदिके तैलसे तेजाबसे बेधक ।

१ शंखिया गन्धक, नौसादर गंधक, आँवलासार,सुहागा, शोरा सबको दरड करके तेजाब करलेना फिर उस तेजाबमें आतिशी शीशीमें पाकर २१ दिन धूपमें रखना पारा फिर सतकपडमाटी करके सात सेर गोहेकी पुटदेनी सिद्ध भया उस पारेको ताम्र वा कलीपर पाणा तोले पर १ रत्ती (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

कुश्ता सीमाव बजरियः तेजाब गन्धक मयफवायद (उर्दू)

तेजाव गन्धक ४ तोले, सीमाव मुसफ्फा१ तोला दोनोंको लोहे चीनीकी प्यालीमें दाखिल करके कोयलेको आंचपर रख दे और आप जरा फासले पर रहे क्योंकि इसका धुआं मुजिर है जब तमाम तेजाब जलकर सीमावको खाक करदेवे उस वक्त आगसे अलहदा करके व अहतियात कुश्ता सीमावको शीशीमें रख छोडे । एक विरंज कुश्ता सीमावको एक माशे खील फिटकिरीमें शामिल करके मरीज सुजाक कुरहको दे इन्शा अल्लाह दो तीन खुराकमें ही आराम होजाता है । (सुफहा १३ अखवार अलकीमियां १६।९।१९०७)

सीमावको नुकराका चारण करा गोली बना उससे कुश्ता अकसीरी कमरी (उर्दू)

कपडासंगति लेकर चनेकी ओसमें इक्कीस रोजतक तर करके रक्खे और नमक बनाले चार तोला सीमाव इसमें खरल करे एक माशा नौसादर और तीन माशा वर्क नुकरा मिलाकर बाहम खरल करे सीमाव बस्ता होजावेगा । जामा मजकूरकी थैली बनाकर उसमें पारा अकद शुदाको लपेटे और एक हांडीमें ५ सेर नमक संग बारीक पीसकर भरे दर्मियान नमकके थैली मजकूरा रखकर ऊपरसे और पावसेर नमक भरदे और गिले हिकमत करके चौबीस पहर बराबर आग देवे सर्द होनेपर निकाले सीमाव शिगुफ्तः होगा । एकजुज अजाँवर एक तोला अजजेर जोशीदह अंदाजन्द कमर ख्वाहद बूंद (अजव्याज हकीममुहम्मद फतहयाबखां सोहनपुरी ।)

सीमावका कुश्ता अकसीरी बजरियः तेजाब कसीस (उर्दू)

शोराकलमी २॥ सेर, फिटकिरी सुर्ख १। सेर, कसीस २ तोला, हरताल तबकिया २ तोले, दोमटकोंमें डौरूजंतर बनाकर तेजाब खींचो और वार दीगर उसमें डालकर कसीस हडताल तबकिया फिर दो और फिर डौरू जंतरमें खींचो तेजाब खिच आवेगा । पारा कदर हाजत तेजाबमें खरल करो कुश्ता होजावेगा शीशी आतिशी कपरौटी करके सीमाव डालकर अर्क जलनीब जर्द डालकर (काह) (कागमेस) से मुँह बंद करके बालुकाजंतरमें आग लगा दो नीचे पारेके आतिश हो चारपहर आग दो खुश्क होनेपर फिर तेजावमें डाल खरल करो और अर्कजलनीब भरकर फिर बालुकाजंतरमें पकाओ सात दफै पकानेसे कुश्ता अकसीरी होजावेगा मुजर्रिबअस्त । (अजबियाज हकीम मुहम्मद फतहयाबखां सोहनपुरी)

सीमावका कुश्ता अकसीरी (फार्सी)

बियारद नीमदस सीमाव अन्दा दर एक लैमूं सुर्ख कागजी दाखिल कुनद सरओ मुहकिम बन्दद दरमुकाम कि मर्दुम शाशह कुनद आँजा दफन कुनद तानः रोज बाद कशीदः दरयक लैमूं दीगर हमचूं कुनद बादहू सहवारा दरेक लैमूं हमचुनीं कुनद नः रोजनः रोज जुमलै २७ रोज पसबियारद यकबैजा मुर्ग खाली कर्दः दरआँ सीमाव बस्तः निहादह अजअर्क बूटी कावरी पुर कुनद पस हश्त या हफ्त छेप कुनद सीमाव दरू अदाख्तः पस खुम बन्द कुनद दर दो सेर पाचक दस्ती आतिश दिहद इन्शा अल्लाहताला शिगुफ्तः शवद पस बियारद दो टिकिया कलई बिदाद मिकदार नखूद अज अकसीर मजकूरह अन्दाजंद ता नुकरा खालिस शवद मुजर्रिब अस्त (अज बियाज हकीम मुहम्मद फतहयाब खां सोहनपुरी)

अदबियानामालूम बराइयक तौला हकसम । सफेद

गोमची ६ माशे। दूध सफेद आक १ तोला। दूध तिधारा १ तोला। सुहागा तेलिया कदर हाजत जेरूवाला निहन्द व पाचक दस्ती बकदर सहपाउ अगर अशयाइ नामालूम ज्यादह शवद ज्यादह कुनद बादजान फिलजात मकरूल मिस्लई कुश्ता सीमाव तिलाकुनद (कुश्ता फल्लुस दरअ-र्कमकोह दर (अजवियाजहकीममुहम्मदफतहयाबखां-सोहनपुरी)

कुश्ता सीमाव भैंसके सींगमें (उर्दू)

पारेका कुश्ता नरजामूशके सींगमें कपरौटी शुदःमें एक वैरागीको करते देखा है और उसमें पैसेको सफेद कुश्ता करता भी कई वार देखागया था। (अजवियाज हकीम मुहम्मद फतहयाबखां सोहनपुरी)

कुश्ता सीमाव (फार्सी)

वियारद नीमआसार चूना व शाख जामूश कि दराँ कुंजद जेरुबाला मसका कायम निहादह बालाइश लेप ईक-दर कर्दः दर सहमन चोबआतिश दिहद बाद अजसर्द शुदन विरंज खुराक ववेधक सादक अज। (अजवियाज हकीम मुहम्मद फतहयावखाँ सोहनपुरी)

कुश्ता पारा (उर्द)

नमक लाहौरीकी डली लेकर बशकल कुठाली बनाकर उसमें गोली सीमाव रक्खे और ऊपरसे उसी नमककी दूसरी कुठाली रखकर गिलाफ बनाकर आग अतरनीमें आतिश दो पहर देवे पारा कुश्ता होजावेगा। (अजवियाज हकीम मुहम्मद फतहयावखाँ सोहनपुरी)

शिगुफ्त यानी कुश्ता सीमाव (फार्सी)

अर्क गुलनागफन ऽ। (सीमाव) मुसफ्फा १ तोला खरल कर्दः हबूब साजन्द फज्लहू जानवर २ असोर दरजर्फे पुरं नमूदह दर्मियान हुबसीमाव निहादह बाज फजलहू मजकूरः पुरसाजन्द विगीर जर्फरा गिले हिकमत नमूदह दरगोशः सहराई ७ आसार आतिश दिहन्द शिगुफ्तख्वाहद बूद फकीरे कामिल। (अजनियाज हकीम मुहम्मद फतहयाबखां सोहनपुरी)

कुश्ता पारा बजरियः नील (उर्दू)

अर्कवर्गनील एकसेर एकतोला पारेपर चोया दो फिर ५ तोले वसमाके नुगदेमें रखकर खूब गिलेहिकमत करके अढाईसेर आरने उपलोंकी आग दो सफेद कुश्ता हो। जजामको एक रत्ती अकसीर है। (सुफहा १३ अखबार अलकीमियाँ २४ फर्वरी सन् १९०९)

सीमावका कुश्ता-बजरियः बोतः हींग व तुख्म चिरचिटा (उर्दू)

हीराहींग दरजः अव्वल आधपाव लाकर अंजीरके दूधसे गूंदकर ढकनदार बोतः बनालो उसमें एकतोलो पारा बंद करके सुखालो। फिर चिरचिटाके बीजोंका आटा आध-सेर अंजीरके दूधसे खमीर करके इस बोतेके ऊपर चढादो और उसपर गिलेहिकमत करो। मगर पतला लेप करो और सिर्फ खरियामिट्टी। तब ३ सेर पाचक सहराईमें आग देदो पारा शिगुफ्तः काबिल अमल निकलेगा। (सुफहा १६ अखबार अलकीमियाँ ८।२।१९०९)

पारे कुश्ता बजरियः बिच्छू बूटी (उर्दू)

बिछुआबूटीके अर्कमें ४६ वडी पारेको खरल करे तो नीमकायम मसका हो उसपर अंगूरी शरावका चोया दो खील होगा। (सुफहा१६अखबार अलकीमियाँ८।२।१९०९)

पारदभस्म घीग्वारसे।

तोलकद्वयमादाय पारदं शुद्धमुत्तमम्। घृतकौमारिकाद्रावैस्तोलकद्वयसम्मितैः॥ ॥ १ ॥ मर्दयेत् खल्वके यावच्छुष्कतां याति पारदः। पुनर्देयः पुनर्मर्द्यः शुष्क याते पुनस्तथा॥ २ ॥ एवं षष्टिपुटैः सम्यग् मर्दयित्वा ततः परम्। काचकुप्यां विनि-क्षिप्य तत्सर्वन्तु विचक्षणः॥ मुखं रुद्ध्वा ततो धीमान्वालुकायंत्रमध्यतः॥ ३ ॥ क्षिप्त्वार्कप्रहरैः पाच्यैः खरमध्याल्पव-ह्निकैः॥ भस्म तज्जायते सूतं देहलोहानि वेधयेत्॥ ४॥(काकचंडीश्वरी तंत्र)

अर्थ-दो तोले शुद्ध पारदको खरलमें डाल दोही तोले घीगुवारका रस डालकर घोटे जब रस सूख जावे तब उतनाही रस डाल देवे इस प्रकार। साठ भावना देवे फिर उसको काचकी शीशीमें भर और मुखपर वज्रमुद्रा करे तदनन्तर उस शीशीको बालुकायंत्रमें रख १२ बारह प्रहरतक तेज, मध्य और मन्द क्रमसे अग्नि लगावे तो देह और लोहको वेधनेवाली अर्थात् देहको सुवर्णके समान गौरवर्ण करनेवाली भस्म होतीहै॥ १-४॥

पारदभस्मवेधक सूरणयोग।

पारदः प्रथमतः सूरणकंदरसेन यामचतुष्टयं मर्दनीयः पश्चात्सूरणकंदगर्ते स्थापनीयः नकच्छिकनीमुपर्यधो दत्त्वा तदनंतरं गज-पुटे मध्याग्निनाऽऽरण्यगोमयैः पाचये-त्सिद्ध्यति तंडुलमात्रं तोलकमात्रे शुल्बे॥ (काकचंडीश्वरीतंत्र)

अर्थ-प्रथम पारदको जमीकन्दके रससे मर्दन करे फिर जमीकन्दमें गढा खोद नकछिकनी भरदेवे उसपर पारा और पारेपर फिर नकछिकनी भरदेवे। तदनन्तर जमी-कन्दके टुकडेसे गढेके मुँहको बन्द कर गजपुटमें जंगली कंडोंकी आँच देवे तो पारदभस्म होगी। इस भस्मको एक तोले ताँबेमें एक चावलभर डाले तो सोना होगा।

उपदंशनाशक पारदभस्म ।

पारद (हिंगुलोत्थ) को झटेलाके रस और पत्तीमें घोटकर गोली बनाले सुखाकर चिरचिटा (वाल्दार चिपकनेवाला अपामार्ग नहीं) की लुगदीमें रखकर कपरौटी कर फूंकदे २० सेर कंडोंमें इसमेंसे चावल भरकी गोली त्रह्मीसे बनाकर दूधके साथ रात्रिको खावे कठोर उपदंशनाशक है। (अलमोडेवाले पंथजीका वतलाया)

कुश्तासीमाव (उर्दू)

रेवन्दचीनीको खूब वारीक पीसकर अर्कगोभीमें खरल करके एक कुठाली बनावे और दर्मियानमें हवूबसीमाव रखकर ऊपर रेवन्दचीनीके मूष बनाकर रक्खे । ऽ। सेर उपले सहराईमें आग दे। (अजावियाज हकीम मुहम्मद फतहयाबखाँ सोहनपुरी)

कुश्तासीमाव केलेमें (उर्दू)

सीमावको अर्क खट्टआवूटीमें खरल कर गोली बनालो करीब १०गिरहके केला मयजडके लो हर दो तरफसे सपाट करो और दर्मियानमें कावाक करके गोली पारेको रक्खो और अर्क चूकाभर कर नीचे ऊपर गस्राह मजकूरः भी देदो और हर दो तरफ गट्टी सपाटपर जमाकर हफ्त कपरौटी करो और गजपुटकी आंच दो कुश्ता हो जावेगा। (अजवियाज हकीम मुहम्मद फतहयाबखाँ सोहनपुरी)

सीमावकायमुल्नारका कुश्ता (उर्दू)

सीमाव कायमुल्नारको अर्क लैमूंमें खरल करके मग्ज जमालगोटा ऽ= की कुठाली तय्यार करो। उसमें पारा १ तोला हरकदर भरकर ऊपरसे दूसरी कुठाली जमालगोटा मजकूरःकी जमाकर गोला बनालो और उसपर नीलेरंगके कपडेकी चीर लपेट दो गेंद बनालो महफूज जगहमें आग दिखलाकर रख दो तीसरे यौम निकालो। पारा फूटक होकर रहजावेगा मिस्लन फूल । मगर आधपाव तेल सरसफ(ऽ१। सेर) का छवटाभी कपरौटीपर लगादो । (अजवियाज हकीम मुहम्मद फतहयाबखाँ सोहनपुरी)

पारेका कुश्ता अकसीरी (उर्दू)

एक बेल ताजामें पारा हस्वमनशा भरकर मुह बन्द करके फिर एक पेठेके अन्दर बेलको रखकर ऊपरसे मूँगका आटा भरदे और कूएमें ६ महीने तक दाबे रक्खे इन्शा अल्लाह पारा कुश्ता कायमुल्नार होजावेगा दो रत्ती एक तोला रांगमें काफी है। (अजवियाज हकीम मुहम्मद फतह्याबखां सोहनपुरी)

कुश्तासीमाव (उर्दू)

सफेद ढाक जिसके पत्तेकी जडपर कांटा होताहै उसमें दो कावाक करदो एक कावाकमें पारा हस्व मनशा और दूसरेमें शिंग्रफ हस्व मनशा भरकर उसके खूदेसे बन्द करके इर्दगिर्द उपले सहराई लगादो और आग लगादो बाद तीन रोजके निकालो पारा शिगुफ्त शिंग्रफ शिगुफ्त अलहदा अलहदा होजावेगा काममें लाओ मुजर्रिब है। (अजवियाज हकीम मुहम्मद फतह्याबखां सोहनपुरी)

कुश्ता सीमाव रांगके मेलसे तेज बलमें मयफवायद इस्तैमाल। (उर्दू)

पारा एक तोला, कलई एक तोला, एक करछीमें दो चार तोला सरसोंका तेल डालकर दर्मियानमें पारा रखदे कलईको अलहदा पिघला कर पारेके ऊपर डालदे दोनों मिल जायंगे । तेज बलकी एक पाव छालका सफूफ करके दर्मियान इन दोनोंके डलीको रखकर ऊपर साफ कपडा तीन बेर लपेट दे एक महफूज जगहमें हवासे बचाकर आग लगादेवे सर्द होने पर निकाल लेवे पारा अलहदा फूल जायगा कलई अलहदा वैसीही रहैगी । आहिस्ता२ अहतियातसे निकाल लेवे निहायत मुकव्वी वाह है जिरियानको मुफीद बल्कि अकसीर है। एक छुारा लेकर उसको चीर कर गुठली निकाल डाले और एक रत्ती कुश्ता पारा इसमें डालकर धागेसे बांधकर गायके दूधमें लटकावे कि दूधका खोवा होजावे । बाद अजां कुश्ता निकालकर बताशेमें रखकर खालेवे इसी तरह इक्किसरोज तक यह अमल करनेसे नामर्द भी मर्द होजाता है। (वैशोपकारक-लाहोर) । (सुफहा नं० ५ अखबार अलकीमियां १ । ६ । १९०५)

तरकीब कुश्तापारा (उर्दू)

चीनीके फूलोंका रस निकालकर सीमाव१तोला पर चोया देवे नीचे नरम नरम आंच रक्खे । बाद चार पहरके चोया बन्द करदे बादहू हरचहार अजवाइन ८ तोले। चीनीके फूल ८ तोले। हर दोको सबज महदीके पानीमें घोटकर लुगदा तय्यार करलेवें । सीमाव चोयाशुदःको दर्मियान देकर मजबूतीके साथ ऊपर एक सेर पुख्तः सफेद धज्जियां लपेट कर हवासे बचाकर आंच दें। जब सर्द हो जावे निकाल लें। सीमाव कुश्ता शुदः बरामद होगा । मुजर्रिबुल मुजर्रिब है। (अखबार अलकीमियां १६ । ५ । १९०५)

पहेली कुश्ता सीमाव (उर्दू)

सफेद फूल पतला पान। वह बूटी है रावों रान ॥ तीन बूंदसे पारा मरे। काहेको जोगी मारा फिरे ॥

(सुफहा ५ अखबार अलकीमियां १।१।१९०५)

सूतभस्म ।

कृष्णधत्तूरतैलेन सूतो मर्द्यो नियामकैः ।
दिनैकं तत्पचेद्यंत्रे कच्छपाख्ये न संशयः ॥
मृतः सूतो भवेत्सद्यस्तत्तद्योगेषु योजयेत् ॥
॥ ९ ॥ (भाषा पुस्तक पं० कुलमणि)

---

१ गालिवन मुराद खून हैजसे होगी !

अर्थ-सिद्ध सूत टाँक चारि लेइ स्याह धतूराके तेलसे एकदिन घोटे और एकदिन नियामक औषधिसे घोटे। नियामक औषधि यह है बंदाल, सफेदफूलका आक, तत्तेका दूध, कबूतरकी बीट, हंसपदी, इंद्रवारुणी इत्यादिक नियामक हैं पारेको उडने नहीं देते। बंद करतेहैं एकएक दिन इन औषधियोंसे घोटिके एक गोला बनारिके कच्छप-यंत्रमें राखिके अग्नि देइ पारा मरइ निःसंदेह इह मारण सबीज निर्बीज पारद साधारण है ॥ ५ ॥

पारदभस्म बिल्वपत्ररसमें घोट गजपुटमें।

बाबू किशोरीलालजीके सुसर भोलाप्रसादजीके मुनीम मोहनलालजीसे मालूम हुआ कि पारदको बिल्वपत्रके रसमें घोट भलीभांति नष्टपिष्टी होनेपर संपुट कर गजपुटमें फूंकनेसे भस्म होजाती है। वह आजकल पारदको विल्वपत्रके रसमें घोटरहे हैं। ये शंका कि बिल्वपत्रसे रस नहीं निकलता ठीक नहीं। श्रावण भादोंमें बेलपत्रको कूटनेसे रस निकलता है और ऋतुओंमें सुर्ता करनेसे रस निकल सकताहै।

पारदभस्म लालमिर्चमें।

एक ताजी लालमिर्चमें पारा भरकर उसके छिद्रको डोरेसे बांधदिया जावे ऊपरसे पावभर ताजीमीर्च पीसकर लुगदी बना दी जावे कपरौटीकर दसेरेकी आंच दीजावे भस्म होजायगा। (कश्मीरयात्रामें नयाबखांसे प्राप्त)

पारदभस्म नकछिकनीमें घोट पेठेमें रख।

मेरठके एक मास्टरसे मालूम हुआ कि नकछिकनीके रसमें लगभग दो महीनेतक घोटनेपर जब पारद पूर्णरूपसे अदृश्य होगया तब उसको पेठेमें भर ऊपर मोटी कपरौटीकर ऊथले नदोरेमें रख महागजपुट अर्थात् गजभर लंबे चौडे पुटमें आग दीगई तो कपरौटीके अन्दर खंगररूपमें पारदभस्म मिली जिसकी तोल पारदके समान रही इस भस्मका नमूना कुछ मुझे भी दिया इसको घरियामें रख स्प्रिटलैम्पकी घंटेभर आंच दीगई किन्तु उडी नहीं। और तवेपर रखकर दो घंटे कडी आंच दीगई तो भी न तोल घटी न रंग बदला।

इस क्रियासे यह लक्ष ग्रहण करने योग्य है कि मारकवर्गकी जडियाँ पारदको उसी दशामें भस्म कर सकती है कि जब वह भलीभांति नष्टपिष्टी होजाय।

इति श्रीजैसलमेर निवासि पं० मनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहितायां भाषाटीकायां पारदभस्मवर्णनं नामैकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥

स्वानुभूतपारदभस्माध्याय३२.

पारद भस्मका अनुभव।

३० । ९ । १९०५ आज ताम्रचीनीके प्यालेमें १॥ तोले तेजाव गंधकमें १ तोले पारा डाल कोयलेकी मंदी आंच दीगई तो १॥ घंटेमें ।) भर पारा तो कच्चा रहगया उसे जुदा करलिया बाकी पारेका कुश्ता होगया सफेद रंगका तोलमें १) भर हुआ इसमें ॥।) भर पारा रहा और बाकी ।) भर गंधक वा ओक्सीजन मिलगई।

अनुभव पारदभस्म (चोयेसे)

पक्वार्कपत्रस्वरसैश्चोवकैः प्रहरत्रयम्।

२० । २ । ०७ पारा ६॥ तोले लेकर एक बहुत छोटी कढाईमें जो कटोरेके बराबर होगी रखकर नीचे अंगुष्ठ समान मोटी पहियेकी दो वा तीन लकडियोंकी अग्नि बालनी आरम्भ की और तत्क्षण श्वेत अर्कपत्रोंका स्वरस उस पारेके ऊपर रुईके फोयेसे चुआना आरम्भ करदिया। किन्तु पारेके रवे उछटकर इधर उधर कढाईमें पडनेलगे इनके निवारणार्थ अधिक रस देकर पारेको ढकदिया तब पारा स्थिर रहा फिर भी स्वरसके सूखनेपर ऐसा होता था कि उस आच्छादित रसमेंसे किसी एक दो ओरको भाप निकलने लगती थी और उस भाप ही द्वारा पारेके उडनेका भ्रम होता था। क्योंकि कभी २ जिस तरफसे भाप निकलती थी उसी तरफको कढाईमें पारेमेंसे उडे परमाणु दृष्टि आते थे। अतएव इस कारणके निवृत्ति करनेके अर्थ जहांसे भाप निकलती थी वहां स्वरस निचोडदिया जाता था जिससे वह भाप बंद होजाती थी। ३ प्रहरतक इसी प्रकार थोडा २ आकका रस कढाईमें चुआतेरहे और मंद मंद अग्नि जलातेरहे। बाद ३ प्रहरके रस निचोडना तो बंद कर दिया और थोडी देरतक उसी प्रकार अग्नि जलातेरहे ताकि ऊपरका रस सूखजाय। जब रस सूखगया और संगरसा होगया तब नीचेकी अग्निको ठंढा करके उसी कोयले भरे चूल्हेपर उस कढाईको रक्खा रहनेदिया। रातभर कढाई रक्खी रही प्रातःकाल उस जले रसको अलग करके देखा तो बीचमें पारा अपने रूपमें मौजूद था। मगर कुछ चमकीला और साफ प्रतीत हुआ तोलमें करीब ४ तोले निकला बाकी उस जले रसमें मिलाहुआ रहगया। मिश्रित भाग डमरूद्वारा पातन कर निकाला तो १० माशे और भी हाथ लगा कुल ४ तोले १० माशे हाथलगा बाकी अर्थात् १ तोले ८ माशे उडगया। इस चोयेकी क्रियामें हमारा ऽ२। सेर आकका स्वरस लगा और ऽ५॥। सेर लकडी पहियेकी जली।

उपरोक्त क्रियाका पुनः अनुभव।

११ । ६ । ०७ उसी पहले बचेहुए ४॥। =) भर पारेको कटोरेकी बराबर कढाईमें डालकर नीचे स्प्रिटलैम्पकी अग्नि देनी आरम्भ की और साथ साथ ही आकके पत्तोंका स्वरस रुईके फोयेसे चुआना आरम्भ करदिया। और आककी ही लकडीसे उस पारेको चलाते रहे। स्प्रिटलैम्पकी गर्मीसे भी पारा चटखनेलगा इसलिये लैम्प बहुत मंदा रक्खा। रस पहला जैसा नहीं डाला सिर्फ पारेके ऊपर दो चार बूंद डाल दीं और इतना ठहरगये

कि जब तक पहला रस सूखजाय और पारा गर्मीसे तडपनेलगे ज्योंही गर्मीसे पारा तडपता था तडपनेके समीप होता था रसकी दो चार बूंद डालकर लकडीसे चलादेते थे। इस हिसावसे हमको ५ वा ७ मिनट बाद रस चुआनेकी आवश्यकता होती थी। इस क्रियासे हमने ८ घंटेतक एकसी ही स्प्रिटलैम्पकी अग्नि दी और इन ८घंटोंमें२छटांक आकका रस खर्च हुआ और सिर्फ एकबारका भरा लैम्पका तेल जला बाद ८ घंटेके कढाईको उतार कर उसमेंसे पारा निकाल कर और पानीसे धोकर साफ किया और तोला तो ४॥ॢ)॥ भर हुआ अर्थात् –)॥ भर उडगया। पारा अपने रूपमें ही रहा कोई विकृती नहीं हुई।

पारद भस्म चोयेसे।

पारदं लोहपात्रस्थदुग्धे सेंहुडके स्थितम्।
अर्ककाष्ठस्य चाग्निं च संचयेद्यामदिङ्मितम्॥

ता० २३ को उपरोक्त आकका चोया दिये हुए ४ तोले ९ माशे २ रत्ती पारदको कटोरेके समान लोहेकी छोटी कढाईमें रख ७॥वजेसे स्प्रिट लैम्पकी आंच दी और सेंहुड के दूधका पारेपर चोया देना आरम्भ किया। ९ बजेतक लैम्पको मंदमंद जलाया बादको कुछ तेज करदिया पहले डाले चोयेका सनसनाहट जब बंद होजाता था तब दूसरी बार डाला जाता था। चार पांच घंटे बाद चोया देतेदेते पारेके ऊपर गाढा दूध जमकर ऐसा कठिन होगया था कि लकडीसे हटानेसे पारदसे अलग न होता था। और सख्ती आजानेसे पारदके ऊपरी भागपर अग्निका असर कम पंहुचता था बीच कढाईमें चोया देनेसे बहुत देरतक ज्योंकात्यों दूध उसी जगह रक्खा रहता था इसलिये लैम्पको और तीव्र करदिया गया। और बार अर्क पत्रादिकोंके चोयेसे पारद थोडी ही अधिक गर्मीसे चटकने लगताथा इस बार इस दूधने पारेको तीक्ष्णाग्निसेभी बिलकुल नहीं चटकनेदिया ४ बजेपर स्प्रिट निबट जानेपर कढाईको चूल्हेपर रखकर आककी पतली लकडियोंकी मंदाग्नि दी और ६ बजेपर बचेहुए आधी छटांकके करीब दूधको एकसाथ कढाईमें डालदिया और आंच कुछ और तेज कर दी यद्यपि इन लकडियोंकी आंच लैम्पकी आंचसे कई गुना तेज थी किन्तु पारा अब भी नहीं चटकता था १० मिनटतक चोया बंद रहा और अग्नि जलती रही। कढाई खूब गर्म होरही थी भाप कढाईसे निकल रही थी दूध भी सूखचुका था इसवास्ते नत्था नोकरने हाथमें जलती लकडी ले देखना चाहा कि अचानक कढाईमें ऊपर आंच लग गई। आंच बुझानेके लिये कढाईको पानी भरे गढेमें रख दिया। आग बुझचुकनेपर कढाईको पानीसे अलग कर रखदिया। ये काम ११ घंटे चला ५ छटांक ३॥ तोले दूध पडा। ८॥ घंटेमें १॥ लैम्प स्प्रिट और २॥ घंटेमें १। सेरके करीब आककी लकडी खर्च हुई।

ता० २४ के सबेरे कढाईको देखा तो चोयेका दूध किनारोंपर जलाहुआ श्याम रंगका और बीचमें अधजला दीखपडा। थोडा पारा जले पदार्थसे पृथक् नीचे था बाकी सब परमाणु रूपसे चोयेमें मिलगया था। पृथक् पारदको तोला तो ४ माशे ७ रत्ती हुआ। बाकी पारद मिश्रित ढिम्मेके छोटे छोटे टुकडे कर धूपमें रखदिया।

ता० २९.तक सूखकर २ मा. ५ र. पारा और निकल आया।

ता० २। १० तक सूखनेपर यह चूर्ण ३ तोले १ माशे ४ रत्ती रहगया।

उत्थापन उद्योग।

इस ३ तोले १ माशे ४रत्ती पारदमिश्रित दवाको जौनपुरी डौरूमें बंदकर भस्ममुद्रा और कपरौटी कर ११ घंटे आंच दी तो १ मा० ६ रत्ती पारा निकला और १ तोले ५ माशे ५ रत्ती राख नीचे निकली इस राखको ३ आंच शराब संपुटमें ७ सेर ७ सेर और १० सेरकी दीगई तो स्याही दूर होकर खाकी सफेद रंगत होगई तोलमें ५ माशे रही।

१–सम्मति–चोया देनेयोग्य वस्तुओंमें थूहरका दूध उत्तम ज्ञांत होताहै क्योंकि यह गाढा और लसदार होनेसे पारदको ऊपरसे वेष्टित करलेताहै और उडने वा चटकने नहीं देता। इससे आशा है कि शास्त्रोक्त १० प्रहरपर्य्यंत अग्नि देनेसे भस्म होजावे। चोया इसका बीचमें कम सूखताहै इस लिये बीचमें थोडा किनारोंपर अधिक दियाजावे ताकि किनारोंकी तरफसे पारा उड न जावे। और अग्निलैम्पकी ही उचित है क्योंकि एकसी लगती है। आककी लकडियोंकी अग्निभी लकडी पोली होनेके कारण तीव्र नहीं होती परन्तु उसका एकसा रखना कठिन है अधिक सावधानी चाहिये। यह भी बहुत आवश्यकहै कि अग्नि तीव्र न दीजावे कि जिससे पारा परमाणुओंमें भिन्न २ होकर दवामें न मिले किन्तु साधारण अग्नि ऐसी दीजावे कि पारा जहांका तहां स्थिररहा आवे। और पारेके ऊपर जो चोयेका वेष्टनरूप जमे उसको कदापि तोडना न चाहिये किन्तु जमने देना चाहिये उससे पारदकी स्थिति जहांकी तहां बनी रहेगी तोडनेसे पारा छिन्न भिन्न होकर दवामें मिलकर खराब होताहै। मेरी समझमें पारेका भस्म करनेवाला चोया नहीं किन्तु अग्निहै। चोया पारेको अग्निपर रोकनेके लिये है।

२–सम्मति–सेंहुडका दुग्ध निकालते समय सावधानीसे काम करना चाहिये तुरंत हाथ मुह धोडालना चाहिये नत्था नोकरके मुंहपर दूधके छीटे गिरजानेसे सफेद मरोरीसी फुंसियां और सूजन पैदा होगई। जिसको गोले और काफूरको पानीमें मिलाकर लेप करनेसे फायदा हुआ।

पारदको चोया।

ता० १९। ३। ०९ को २० तोले सिंग्रफके पातनसे १३ तोले पारा निकालागया और फिर उसको ढाईढाई छटांक कृष्ण तुलसी, कृष्ण धतूरे, और आंवलेके रसका चोया रकावीमें रख पुचारेद्वारा हकीम मुहम्मदयूसफ साहबकी क्रियासे दियागया। जो १२ तोले शेष रहा (बहुत दिनोंतक शीशीमें रक्खा रहनेपर पारदपर काली कांचलीसी आगई थी जो छाननेसे दूर होगई)

ता० १९ को उपरोक्त १२ तोले पारदको पुनः लोहेकी छोटी कढाईमें रख १० बजेसे स्प्रिटलैम्पकी आंच देनी आरम्भकी और साथ साथ ही श्वेतार्कके पीत पत्रोंके स्वरसका जो सोख्तेमें छान लियागया था चोयादेना आरम्भ-

किया। पारा जबतक कढाईमें रस कम होनेसे खुला रहा तबतक अधिक कांपता रहा। जब रस पडते पडते पारा रससे ढकगया तब कांपना कुछ कम होगया किन्तु तब भी जब चोया देनेमें देर होजाती थी तो पारा कांपने लगता था और जब उसपर रस डालदेतेथे तो तडपना वंद होजाता था। रातके १० वजेतक अर्थात् ४ प्रहरतक ८ छटांक रस पडचुकनेपर काम वंद करदिया।

ता० २० को पारेके ऊपरसे रसकी मलाईसी पृथक् कर पारेको निकाला तो ११ तोले ७ माशे अलग निकल आया बाकी कढाईकी तलीमें फैल रवे रूपमें रसमें मिला रहगया अतएव गर्म पानीसे धो रसको नितार पारा निकाल लिया जो तोलमें ५ माशे हुआ अर्थात् सब पारा पूरा १२ तोले निकल आया।

सम्मति—अबकी चोया देनेकी क्रिया ठीक रही। आगेसे इसी प्रकारसे ही चोयादिया जाय। अर्थात्।

नं० (१) हलकी लोहेकी कढाईमें रख स्प्रिटलैम्पकी ही आंच देनी चाहिये क्योंकि यह एकसी और ठीक लगसकती है।

नं० (२) स्प्रिटलैम्पकी अग्नि भी आदिमें वहुत कोमल और मध्यमें कोमल ही देनी चाहिये जिससे पारा उछटने न पावे।

नं० (३) बीचमें चोयेकी मलाईको छोडना या हटाना न चाहिये।

पारदको चोया।

ता० २।४।०९ को उक्त १२ तोले पारेको छोटी कढाईमें रख उपरोक्त प्रकारसे स्प्रिटलैम्पकी कोमल आंच पर १० बजेसे वसंती, नीमकी कोंपल, मूली, तीनोंके दो दो छटांक स्वरसका चोया दियागया जो ६ बजेतक ८ घंटेमें समाप्त हुआ।

ता० ३ को पारेके ऊपरसे मलाईको पृथक् कर पारेको निकाला तो अधिक पारा स्वतः ही पृथक् होगया थोडा जो मलाईमें परमाणु रूपमें मिलगया था उसे गर्म पानीसे धो निकाललिया तोलनेपर पूरा १२ तोले निकल आया।

पारदको चोया।

ता० ५।४।०९ को उक्त १२ तोले पारेको छोटी कढाईमें रख उपरोक्त प्रकारसे स्प्रिटलैम्पकी कोमल आंचपर २ बजेसे सोख्तेमें छने मकोयके २ छटांक और कटेरीके १ छटांक स्वरसका चोयादिया जो ६ वजेतक समाप्त हुआ।

ता० ६ को पारेके ऊपरसे मलाई हटा १ छटांक कटेरीके रसका चोया और दिया जो १॥ घंटेमें समाप्त हुआ। तदनंतर पारदको पृथक् किया ११ तोले ९ माशे स्वतः निकलआया बाकीको धोकर निकाला तो ३ माशे और निकला अर्थात् पूरा १२ तोले निकलआया।

पारदको चोया।

ता० ७।४।०९ को उक्त १२ तोले पारेको उपरोक्त प्रकारसे दूधी, अमरवेल, बैंगनके २–२ छटांक स्वरसका (जो सोख्तेमें छान लियेगयेथे) चोया १० बजेसे दिया जो ६॥ बजेतक समाप्त हुआ।

ता० ८ को पारेको निकाला तो ११ तोले १० माशे ४ रत्ती पारा स्वतः निकलआया। बाकीको गर्म पानीसे धोया तो १ माशे ४ रत्ती निकला। अर्थात् सब पूरा १२ तोले निकलआया।

पारदको चोया।

ता० ८।४।०९ को उक्त १२ तोले पारेको उपरोक्त प्रकारसे तमाखू, केला, तुलसी, के २–२ छटांक स्वरसका चोया दियागया जो १० बजेसे ६॥ बजेतक समाप्त हुआ।

ता० ९ को पारेको निकाला तो ११ तोले ५ माशे पारा स्वतः निकल आया बाकीको गर्म पानीसे धोकर निकाला तो ७ माशे और निकल आया। अर्थात् सब पूरा १२ तोले निकल आया।

तम्बाकूपत्तोंमें स्वतः स्वरस खूब निकला।

पारदको चोया।

ता० २६ ४।०९ को उक्त १२ तोले पारेका उपरोक्त विधिसे स्प्रिटकी कोमल आंचपर मेँहदी बेरके पत्ते, और नींबूके २–२ छटांक रसका चोया दिया जो ३ बजेसे ८॥ बजेतक समाप्त हुआ।

ता० २७ को पारेको निकाला तो ११ तोले पारा स्वतः पृथक् होगया। बाकीको गर्म पानीसे धो निकाला तो ११ माशे और निकला। अर्थात् सब ११ तोले ११ माशे निकला १ माशे घटा।

पारदको चोया।

ता० २७ ४।०९ को उक्त ११ तोले ११ माशे पारेको उपरोक्त विधिसे स्प्रिटलैम्पकी कोमल आंचपर वनतुलसी और बबूलके २–२ छटांक रस और मुंडीके २ छटांक काथका (जो ऽ= सूखी मुंडीको ऽ।= पानीमें औटा ऽ=- पानी शेष रख तय्यार किया था) चोया दिया जो २॥। बजेसे ८ बजेतक समाप्त हुआ।

ता० २८ को देखा तो ऊपर जमी मलाईके नीचे रसभर रहा था कारण यह कि आदिमें नोकरोंने अधिक रस चोया दिया जो आजतक सामान्य रीतिसे सूख न सका। अत एव सब पारेको गर्म पानीसे धोकर निकलनापडा जो तोलमें ११ तोले १० माशे हुआ। १ माशे घट गया।

पारदको चोया।

ता० २९ ४।०९ को उक्त ११ तोले १० माशे पारेको उपरोक्त विधिसे आधी आधी छटांक नकछिकनी, भंग और रीठाके २–२ छटांक द्रवका (अर्थात् नकछिकनी और भंगको पानीमें पीस लिया और रीठोंकी गुठली निकाल ऽ॥ सेर पानीमें औटा ऽ=- काथ तय्यार करलिया गया) चोयादिया जो १० बजेसे ६॥ बजेतक समाप्त हुआ।

ता० ३० को पारेको निकाला तो ११ तोले ७ माशे ४ रत्ती पारा स्वतः पृथक होगया बाकी चोयेमें मिलेको धोकर

निकाला तो २ माशे ४ रत्ती और निकला अर्थात् पूरा ११ तोले १० माशे निकल आया।

पारदको चोया।

ता० ३०।४।०९ को उक्त ११ तोले १० माशे पारेको उपरोक्त विधिसे हल्दी, तुख्मरेहा, तुख्म वालंगाके २-२ छटांक द्रवका (अर्थात् हल्दीके २ छटांक जौकुटचूर्णको १ सेर पानीमें औटा २ छ० काथ तय्यार कर लिया और २ तोले तुखम रेहां और १ तोले तुखम वालंगाको पहले दिन शामको ३-३ छटांक पानीमें भिगो दूसरे दिन मथ छानडाला। अधिक ल्वावदार होनेके कारण वस्त्रमें अच्छीतरह छनसके तव पीसकर कुछ ल्वाव और छान लियागया) चोया दिया जो ११ बजेसे ६ बजेतक समाप्त हुआ ल्वाबदार द्रवकी मलाई पारेपर चमचोड पडी।

ता० १।५ को पारेको निकाला तो ११ तोले ७ माशे पारा स्वतः पृथक होगया बाकी चोयेमें और कुछ ऊपरकी चिमचोड मलाईमें मिलेहुयेको गर्म पानीसे धोकर निकाला तो २ माशे ३ रत्ती और निकला। पारद मिश्रित मलाईको सुखा उंगलियोंसे मीडा तो ३ रत्ती पारा उसमें निकला। अर्थात् सब ११ तोले ९ माशे ६ रत्ती निकला २ रत्ती छीजगया।

पारदको चोया।

ता० २।५।०९को उक्त११तोले ९ माशे ६ रत्ती पारदको उपरोक्त विधिसे ईसवगोल, और पोस्तके छिलकोंके २-२ छटांक द्रवका (अर्थात् १ तोले ईसवगोलको ३ छटांक पानीमें और ३ तोले पोस्तके छिलकोंके छोटे छोटे टुकडोंको ४ छटांक पानीमें पहले दिन पृथक् पृथक् भिगो दूसरे दिन मथछान २-२ छ० द्रव तय्यार कर लिया) चोयादिया जो ९ वजेसे १॥ वजेतक समाप्त हुआ।

ता० ३ को पारेको निकाला तो ११ तोले ६ माशे स्वतः पृथक् होगया बाकी चोयेमें मिलेको पानीसे धो निकाला तो ३ माशे ६ रत्ती और निकला अर्थात् सब पूरा ११ तोले ९ माशे ६ रत्ती निकल आया।

पारदको चोया।

ता० २।५।०९ को उक्त ११ तोले ९ माशे ६ रत्ती पारदको उपरोक्त विधिसे आधी आधी छ० चाकसू और बारतंगके पहले दिन पानीमें भिगो दूसरे दिन मथ छान२-२ छ० तय्यार किये द्रवका चोया दिया जो ८ वजेसे २ बजेतक समाप्त हुआ। चाकसूके चोयेसे पारेके ऊपर कुछ मजबूत मलाई पडनी आरम्भ हुई जो पारेको कुछ कुछ पकडती थी।

ता० ३ को पारेको निकाला तो ११ तोले ६ माशे पारा स्वतः पृथक् होगया बाकी चोयेमें मिलेको गर्म पानीसे धोकर निकाला तो ३ माशे और निकला अर्थात सब ११ तोले ९ माशे पारा निकल आया। ६ रत्ती घटा।

पारदको चोया।

ता० १३।६।०९ को उक्त ११ तोले ७ माशे ६ रत्ती पारेको उपरोक्त विधिसे पुष्पकेतकी और विषखपरेके ४-४ छटांक मुकत्तर रसका चोया दिया जो ८ बजेसे रातके ८ बजेतक १२ घंटेमें समाप्तहुआ।

ता० १४ को पारेको निकाला तो ११ तोले ५ माशे ४ रत्ती पारा स्वतः पृथक् होगया बाकीको विषखपरेके रससे धो निकाला तो १ माशे १ रत्ती और निकला। अर्थात् सब ११ तोले ६ माशे ६ रत्ती पारा निकला। १ मा० ? र० घटा।

पारेको चोया।

ता० १४।६।०९ को उक्त ११ तोले ६ माशे ५ रत्ती पारेको लोहेके खरलमें डाल-२॥ तोले श्वेत आकके मुकत्तर रसके साथ (जिसमें षोडशांश अर्थात् २ माशे आकका क्षार पडा था) ७ बजेसे थोडा २ रस डाल घोटना आरम्भ किया। घुटाई आरम्भ होतेही पारा रसमें मिलने लगा और १ घंटे घोटनेसे सब पारा मिलकर पिष्टीसा होगया। ११ बजेतक ४ घंटे घुटाईकर खरलको धूपमें रख-दिया। ३ बजे देखा तो पारा उसी पिष्टीकेसे रूपमें सूख गया था जिसको थोडा घोटनेसे बहुतसा पारा पृथक् होगया। पश्चात् उस सबको छोटी कढाईमें रख खरलको उसी आकके रससे धो उसी कढाईमें कर उपरोक्त विधिसे उसी क्षार मिश्रित आकके ३॥ छटांक रसका (जिसमें १ तो० २ मा० क्षार समझना चाहिये) ४ घंटे चोवादिया।

ता० १५ को पारेको निकाला तो ३ तोले ११ माशे पारा स्वतः पृथक् होगया बाकीको आकके गर्म रससे धोया तो वही पिष्टीके रूपमें नीचे बैठगया जिसको सुखा हिलाया तो ७ तोले १ माशे पारा और निकला। अर्थात् दोनों-बारमें ११ तोले पारा निकला (जिसे विषखपरेके रसमें डाल बोतलमें भर रखदिया) ६ माशे ५ रत्ती पिष्टी और नितारके पानीमें मिलारहा। जिसको सुखा मींडनेसे दो एक बाजरेसे रवे निकले बाकी पिष्टीमें मिला दीखता रहा किन्तु इस रीतिसे निकल न सका तब उस पिष्टीको और नितारके पानीको सुखा दुबारा गर्म पानीसे धोया तो २ मा० ४ र० पारा और निकला। अर्थात् सब ११ तोले २ माशे ४ रत्ती पारा निकला। बाकी ४ माशे १ रत्ती न निकलसका।

पारेको चोया।

ता० १६।६।०९ को उक्त ११ तोले २ माशे ४ रत्ती पारेको विषखपरेके रससे निकाल उपरोक्त रीतिसे जल-पिप्पलीके ४ छटांक मुकत्तर रसका चोया दियागया। जो ६॥ बजेसे ११ बजेतक ५॥ घंटेमें समाप्त हुआ।

ता० १७ को पारेको निकाला तो १० तोले ९ माशे ४ रत्ती पारा स्वतः पृथक् होगया बाकीको गर्म पानीसे धोकर निकाला तो ५ माशे और निकला अर्थात् पूरा ११ तोले २ माशे ४ रत्ती निकल आया जिसे विषखपरेके रसमें डाल धूपमें रखदिया करते रहे।

सम्मति-आज चोया समाप्त होगया इस लिये पारेको वस्त्रमें छान चीनीके बर्तनमें हिला झुला देखा तो बहुतसी पूंछ छोडता था जिससे जानपडा कि जडीसे कोई अंश इसमें अवश्य मिलगया। किन्तु यह पारा अग्निस्थायी नहीं हुआ।

चोयेकी जडियोंकी सूची।

२० तोले सिंग्रफसे निकले १३ तोले पारेको निम्न लिखित ३४ बूंटियोंके ५ सेर ५ छटांक रसका १५ बारमें ३५ पहर चोया दियागया। अंतमें ११ तोले १ माशे २ रत्ती पारा रहा।

१ कृष्ण तुलसी २ कृष्ण धत्तूर ३ आँवला ४ श्वेतार्क ५ वसंती ६ नीमकी कोंपल ७ मूली ८ मकोय ९ कटेरी १० दूधी ११ अमरबेल १२ वेंगन १३ तम्वाकू १४ केला १५ हरी तुलसी १६ महँदी १७ वेरके पत्ते १८ नींवू १९ वनतुलसी २० वबूल २१ मुंडी सूखी २२ नकछिकनी सूखी २३ भंग सूखी २४ रीठा सूखा २५ हल्दी २६ तुख्म रेहां २७ तुख्मवालंगा २८ ईसवगोल २९ पोस्तके छिलके ३० चाकसू ३१ वारतंग ३२ पुष्पकेतकी। ३३ विषखपरा। ३४ जलीपिप्पली।

अनुभव हिंगुलभस्म।

ता० २८। १२।०६ को ॥।≡) आने भरकी शिंग्रफकी डली पर दो तोले अंडीकी मिंगीको जो अन्दाजन ४ माशे नींबूके रसमें जो करीव ८ या १० मिनटके खरल कीगई थी और अपने तेल और नींबूके रससे अवलेहसी होगई थी लपेट ऽ१ सेर मींगअंडीकी पिसी हुईका गोला बनाकर उस पूर्वोक्त संलिप्त शिंग्रफकी डलीको उसमें रक्खा और उस गोलेको कढाईमें रखकर चूल्हेके नीचे आग बालनी आरम्भकी। २० मिनट तक तेज आंच बलती रही। बीस मिनटके अन्दर उस गोलेकी यह दशा होगई कि नीचेकी आंचकी गर्मीसे पिघलकर कढाईमें नीचेको बैठने लगा। अर्थात् ऊँचाई करीव १ अंगुलके रहगई बाकीका तेल निकलकर उस गोलेके चारों तरफ जडमें भरगया २० मिनटके वाद उस कढाईमें भी आग लगादी। जिससे ऊपर कढाईमें तेज आग जलने लगी और १० मिनट बाद सब गोलेमें लग गई कढाईके नीचे भी वैसीही आग बालते रहे। यह दृश्य ठीक २५ मिनट तक रहा बादको कढाईमेंकी आग एक साथ वन्द होगई और उपरोक्त गोली की भस्म जो जलजाने पर भी पिघले हुए गोलेकीसी ही शकलकी बनी रही थी बुझे हुए कोयलोंकी तरहसे चटकने लगी बस कढाईकी आंच बुझते ही नीचेकी भी आंच ठंडी कर दीगई और कढाईको चूल्हेसे उतार लिया गया। ठंढा होनेपर शिंग्रफकी डलीको उसमेंसे निकाला तो उस पर सुर्खीकी जगह स्याही आगई और वजनमें ≈) भर घट गई अर्थात् ॥।–) भर रहगई। बादको दो बडे कंडोंमें जो वजनमें दो सेरके करीव होंगे सरवेके वरावर गोल गढे खोदकर और एक सेर पिसे हुए तिलोंके लुगदेमें उस डलीको रखकर दोनों पहलुओंसे उन कंडोंको लगा दिया और आंच देदी। ठंढा होनेपर जो राखके अन्दर सिंग्रफ तलाश किया तो पता न लगा अर्थात् सव उडगया इस तरकीवसे हमने दो बार किया किन्तु दोनों बार यही दशा हुई। (अखबार अलकीमियाँ १।१२।१९०६)

सम्मति–ऐसी तरकीवोंसे सफलताकी बहुत कम आशा है किन्तु इस क्रियामें दो वातका संशय होसकताहै।

(१) दो तोले मींगका जमाद करना लिखा है कदाचित् उसमें कुछ अन्तर रहाहो।

(२) अग्निशायद अधिक लगी। यह भी याद रहे कि अखबारमें लिखाथा कि शिंग्रफ कायमुल्नार (अग्निस्थायी) निकलेगा मगर सब उड गया।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मज-
व्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया
भाषाटीकायां स्वानुभूतपारदभस्मवर्णनं
नाम द्वात्रिंशोऽध्यायः॥ ३२ ॥

सुवर्णयोगमूर्छितचन्द्रोदयाध्यायः ३३

सुवर्णयोगसे मूर्छितरूप चन्द्रोदयादिकोंकी विधि।

सूततुल्यं मृतं हेम द्वाभ्यां तुल्यं च गन्धकम्। रविक्षीरैर्दिनम्मर्द्यमन्धयेद्भूधरे पचेत् ॥ पुटेकेन भवेत्सिद्धिर्मूर्छितः सर्वरोगहा ॥ १ ॥ (रसरत्नाकरहस्तलिखित)

अर्थ–शुद्ध पारदके समान सुवर्णकी भस्म और इन दोनोंके तुल्य शुद्ध गंधक इन तीनोंकी कजलीकर अन्धमूषामें रख भूधरपुटमें पकावे तो एकही पुटमें सिद्धि होती है, और सब रोगोंको नाशकरनेवाला पारद मूर्छित होताहै॥ १॥

सम्मति–प्रथम पारद तथा सुवर्णभस्मको खरल करे, फिर थोडा थोडा गंधक डालकर कजली करनी चाहिये, इसी प्रकार धातुके साथ पारदकी कजली करना उचित है॥

चन्द्रोदयकी दूसरी विधि।

पलद्वयं सुवर्णस्य सूतस्याष्टौ च मर्दयेत्॥ एकीभूते च गंधस्य पलं षोडशिकं क्षिपेत ॥ २ ॥ शोणकार्पासकुसुमैः कन्याद्भिर्मर्दयेत्पृथक् ॥ काचकूप्यां च संरुध्य वालुकायंत्रगं त्र्यहम् ॥ ३ ॥ पचेत्सिद्धो रसः स स्याच्छ्रेष्ठश्चन्द्रोदयाभिधः॥ जातीफलं सकर्पूरं लवंगं मरिचानि च ॥ ॥ ४॥ पृथग्रससमानि स्युः कस्तूरी रसदिग्लवा ॥ माषोऽस्य भक्ष्यः पर्णेन जरारोगविनाशनः॥ ५॥ सुप्रभातं तदाभ्यासाद्विषं च विषवारि च॥ सर्वे प्रशममायान्ति शीघ्रमेव न संशयः ॥ ६ ॥ केचिच्चतुर्गुणान्याहुः कर्पूरादीनि तद्रसात्॥ ७ ॥ (रसराजसुन्दर.)

अर्थ–प्रथम चारपल सुवर्ण तथा आठपल पारद इन दोनोंको मर्दन करे इनके एक जीव होनेपर सोलह पल

गंधकको धीरे २ मिलाकर कजली करे फिर नर्माकपासके फूलोंके रससे तथा घीकुमारीके रससे पृथक् २ मर्दन करे उस कजलीको काचकी शीशीमें भरकर वालुकायंत्रमें तीन दिनतक पकावे तो यह चन्द्रोदयनामका उत्तम रसराज सिद्ध होताहै । जायफल, कपूर, लौंग, कालीमिरच ये सब पृथक् २ पारदके समानभाग लेना चाहिये और कस्तूरी पारेसे दशमांश लेना, इन सबका एक मासा पानके साथ खावे तो बुढापा और रोगों का नाश करताहै, इसका प्रातःकाल सेवन करनेसे विष तथा विषैला पानीका पैदाहुआ रोग शीघ्रही नष्ट होजातेहैं कुछ २ विद्वानोंकी सम्मति है कि, पारेसे कपूर आदि पदार्थोंको चौगुना लेना चाहिये ॥ २–७ ॥

मुख्यचन्द्रोदयकथन ।

दोहा–सुन्दर सोनेके बरक, पैसा चार प्रमान। सोलह पैसा भर निपुन, पारद सोध्यो सान ॥ दोनोंकी कजरी करे, सुन्दररीति घुटाय । फिर पैसा बत्तीसभर, गंधक शुद्ध मँगाय ॥ तीनोंको एकत्रकर, कजरी करै घिसाय । नंदनवनके फूलरस, एकादिना खरलाय ॥ एकदिना पुनि खरलकर, घी कुमारिरस डार । कजली वह सूके जबै, शीशी भरे सुधार॥फिर सीसी मुख मूंदिये, गुड चूना जु लगाय । चार प्रहर फिर आंचदे, स्वांग शीत उतराय ॥ फिर वह शीशी फोरके, नीके जतन रखाय । लाल कटोरीसी लगै, सीसी गरदन आय ॥ ताहि छरीसों छीलिये नेक न छीजन देय । मुख्य चन्द्रोदय यहै, या विधिसे कर लेय ॥ लौंग मिरच अरु जायफल, रती दो भर लेय । रत्तीभर फिर तोलके, चन्द्रोदय रस देय ॥ पोते चावल तीनभर, कस्तूरी जु मिलाय । पानन संग दीजै तथा, मधुके संग चटाय ॥ याके खाये अंगमें, काम बहुत बढ़जात । बार सुफेद न होयँगे, अरु सब रोग नसात ॥ विष पानीके दोषको, यहै नसावत जान । मुख्यसु चन्द्रोदय कह्यो, बहुत गुननकी खान ॥(वैद्यादर्श.)

अथ चन्द्रोदय रस विधि ।

पलं मृदु स्वर्णदलं रसेन्द्रं पलाष्टकं गन्धकषोडशांशम् ॥ शोणैस्तु कार्पासभवैः प्रसूनैः सर्वं विमर्द्याथ कुमारिकाद्भिः ॥ ८ ॥तत्काचकुम्भे निहितं सुगाढे मृत्कर्पटाभ्यां दिवसत्रयं च ॥ पचेत्क्रमाग्नौ सिकताख्ययंत्रे ततो रजः पल्लवरागरम्यम् ॥ ९ ॥ निगृह्य चैतस्य पलं पलानि चत्वारि कर्पूररजस्तथैव ॥ जातीफलं शोषणमिन्द्रपुष्पं कस्तूरिकाया इह शाण एव ॥ १० ॥ चन्द्रोदयोयं कथितोस्य माषो भक्ष्यो हि वल्लीदलमध्यवर्ती ॥ मदोन्मदानां प्रमदाशतानां गर्वाधिकत्वं श्लथयत्यकाण्डे ॥ ११ ॥ घृतं घनीभूतमतीव दुग्धं मृदूनि मांसानि च मंडकानि ॥ माषान्नपिष्टानि भवन्ति पथ्यान्यानन्ददायीन्यपराणि चात्र ॥ १२ ॥ वलीपलितनाशनस्तनुभृतां वयःस्तम्भनः । समस्तगदखण्डनः प्रचुररोगपंचाननः॥ गृहे न रसराजको भवति यस्य चन्द्रोदयः । स पंचशरदर्पितो मृगदृशां कथं वल्लभः ॥ ॥ १३ ॥ (योगचिन्तामणिः, वाजीकरण कल्पद्रुमः)

अर्थ–कोमल सुवर्णके वर्क एक पल, शुद्ध पारद आठ पल और सोलह पल शुद्ध गंधक लेवे प्रथम पारद और सुवर्णको पीसे फिर गंधक संग कजली करे उसको एकदिन नर्मावनके फूलोंके रसकी भावना दे फिर एक दिन घीकुवारके रसकी भावना देकर कपरौटीसे दृढ कीहुई काचकी शीशीमें भर वालुकायंत्रमें तीन दिवसतक क्रमाग्नि देवे तदनन्तर स्वांग शीतल होनेपर रक्तवर्ण पारदको निकाल लेवे, उस चन्द्रोदयरसका १ पल, कपूर चार पल, जायफल चार पल, सोंठ चार पल, लौंग चार पल और कस्तूरी चार माशे इन सबको पीस एक माशा पानके साथ नित्य प्रातःकाल खावे तो मदोन्मत्त सौ स्त्रियोंके मदको दूर करताहै चन्द्रोदयके सेवनके समय घी, खूब औटा हुआ दूध, हलके मांस (हिरन प्रभृतिका) मांड, उडदकी पिट्ठीके बने हुए पदार्थ अथवा अन्य आनन्ददायक पदार्थ भी यहां पथ्य हैं । यह चन्द्रोदयरस वलीपलितका नाशक मनुष्योंके आयुष्यका वर्द्धक, समस्तरोगोंका नाशकर्ता जिसके घरमें नहीं है, वह कामदेवके बाणोंसे दुःखी हुई स्त्रियोंका वल्लभ कैसे होसक्ताहै ॥ ८—१३ ॥

दोहा ।

सुन्दर सोनेके वरक, एक टकाभर आन । सोध्यो पारद लीजिये, आठ टका परमान॥ पाराते गंधक दुगुण, शुद्ध आमलासार । तीनोंको धरि खरलमें, कजरी कर निरधार ॥ नन्दनवनके फूलको, रस कजरीमें देय । दिवस निरन्तर तीनलों बार२ खरलेय ॥ ॥ ग्वारपटाके रसविषे, घोंटे त्यों दिन तीन । सूकजाय तब आतसी, सीसी भरे प्रवीन ॥ कपरौटी करिदीजिये, सीसी के चहुँ ओर । मुखपै मुद्रा देयके, धूप सुखावै जोर॥फेरि बालुकाजंत्रमें,सीसी धरे जमाय । सीसी गरदनलों भरे, बारू रेत भराय ॥ चूल्हेपै धरि यंत्र तब, नीचे अग्नि जराय । पहिले मृदु मध्य जु पुनि, फिर

तीक्ष्ण करवाय॥ याविधिसे बत्तिस पहर, इक लग अग्नि लगाय । आपहि शीतल होय तब, सीसी ले निकलाय॥ शीशीको फोरेसु जब, भिषजन सहित उमंग। चन्द्रोदय रस लेय तब, अरुण हींगलू रंग ॥ भीमसेन कर्पूर अरु, जातीफल जु लवंग । समुद्र शोष मृगमदसाहित, चूरन करिसम संग ॥ चन्द्रोदय रत्ती प्रमित, चूरन माषा दोय । मधुते चाटे नित्य तो, तनमें अति गुन होय ॥ औटो पय मिश्री सहित, माफिक रुचि अनुमान । पुष्टिवस्तु औरहु भषै, आमिष आदि सुजान ॥ या प्रकार सेवन करे, काम बढे अति देह। रमन करे नारीनते, निसदिन सहित सनेह ॥ मिटे नपुंसकता तुरत, चन्द्रोदयते मित्त । बीरज क्रम क्रमते अधिक, बढिबो करे सुनित्त॥ श्वास छई मन्दा अगिन, कोष्ठ बंध हरि लेय। जुदे जुदे अनुपानते, सब रोगनपै देय ॥ (वैद्यादर्श.)

शास्त्रान्तरसे गुण विशेष लिखते हैं ।

रतिकाले रतांते वा पुनः सेव्यो रसोत्तमः। कृत्रिमं स्थावरविषं जंगमं विषवारि च ॥ न विकाराय भवति साधकेन्द्रस्य वत्सरात् ॥ १४ ॥ मृत्युंजयो यथाभ्यासान्मृत्युं जयति देहिनाम् ॥ तथायं साधकेन्द्रस्य जरामरणनाशनः ॥ शास्त्रान्तरेऽस्य मकरध्वजो नामापि कथ्यते ॥ १५ ॥ (रसेन्द्रचिन्तामणिः.)

अर्थ-मैथुनके समय अथवा मैथुनके पश्चात् इस चन्द्रोदयरसको सेवन करे तो एक सालतक सेवन करनेवाले मनुष्यके देहमें कृत्रिमविष, स्थावरविष, जंगमविष, तथा जहरी पानी कभीभी असर नहीं करताहै, जिस प्रकार मृत्युंजयरस सेवन करनेसे मनुष्योंके मृत्युकोभी जीतलेताहै उसीप्रकार चन्द्रोदयभी बुढापा और मृत्युको नाश करताहै,चन्द्रोदयको अन्यशास्त्रोंमें मकरध्वजभी कहते हैं । ऐसा रसेन्द्रचिन्तामणिमें लिखाहै ॥ १४ ॥ १५ ॥

अन्यच्च ।

स्वर्णादष्टगुणं सूतं सूताद्विगुणगंधकम् ॥ रक्तकार्पासकुसुमैः कुमार्य्यद्भिर्विमर्दयेत् ॥१६॥शुष्कं काचघटीं रुद्ध्वा वालुकायंत्रगं हठात् ॥ भस्म कुर्याद्रसेन्द्रस्य नवार्ककिरणोपमम् ॥ १७ ॥ भागोऽस्य भागाश्चत्वारः कर्पूरस्य तु शोभनाः ॥ लवंगं मरिचं जातीफलं कर्पूरमात्रया ॥ १८ ॥ मेलयेन्मृगनाभिं च षण्मासप्रमितं बुधः ॥ श्लक्ष्णपिष्टो रसो नाम जायते मकरध्वजः ॥ १९ ॥ वल्लं वल्लद्वयं वाथ ताम्बूलीदलसंयुतम् ॥ भक्षयेन्मधुरं स्निग्धं मृदु मांसमवातलम् ॥ २० ॥ शृतशीतं सितायुक्तं दुग्धं गोभवमाज्यकम् ॥ मध्वाद्यं मिष्टमपरं मद्यानि विविधानि च ॥ २१ ॥ ददात्यग्निबलं पुंसां वलीपलितनाशनः॥मेधायुःकामजननः कामोद्दीपनकृन्महान् ॥ २२ ॥ अभ्यासात्सादकः स्त्रीणां शतं जयति नित्यशः ॥ रतिकाले रतान्ते च पुनः सेव्यो रसोत्तमः ॥ २३ ॥ विषवारि स्थावरं च जंगमं कृत्रिमं विषम् ॥ न विकाराय भवति वत्सरात्साधकस्य तु ॥ २४ ॥ मृत्युंजयो यथाभ्यासान्मृत्युं जयति देहिनः ॥ तथायं साधकेन्द्रस्य जरामरणनाशनः॥२५॥ (वाजीकरणकल्पद्रुमः.)

अर्थ-एक भाग सुवर्ण और सुवर्णसे अष्टगुण पारद, पारदसे दूना शुद्ध गंधक इन तीनोंकी कजली कर लाल कपासके फूलोंके रससे और घीकुवारके रससे पृथक् २ दो दिवस तक मर्दन करे, सूखनेपर काचकी शीशीमें भर मुखमुद्रा कर बालुकायंत्रमें हठाग्नि देवै तो नवीन सूर्यके समान किरणोंवाला पारदका उत्तम भस्म बनजायगा इसका एक भाग, चारभाग कपूरके, लौंग, मिरच और जायफल ये प्रत्येक चार २ भाग, कस्तूरी छः माशे इन सबको एकत्र कर और सूक्ष्म पीसकर चूर्ण करे इसको एक माशा नित्य सेवन करे अथवा तीन रत्ती या छः रत्ती पकेहुए पानमें खावे चिकनाहट लियेहुए मधुर पदार्थ, वातको नहीं बढानेवाला कोमल मांस, गरमकर फिर ठंढा कियाहुआ मिश्रीसहित दूध, गायका घृत, अन्यभी शहदसे लेकर मीठे पदार्थ, अनेक प्रकारके मद्य इनको अच्छीप्रकार भक्षण करे ऐसे सेवन करनेसे पुरुषोंके अग्नि बलको देताहै, मेधा, आयु और कान्तिका दाता कामका अत्यन्तही उत्पादक है और अभ्यास करनेसे नित्य सौ १०० स्त्रियोंको जीतताहै, मैथुनके समय अथवा मैथुनके अन्तमें इस रसको फिर सेवन करना चाहिये । जहरीला पानी, स्थावर विष, जंगम विष और कृत्रिम विष रससेवक मनुष्यको विकार नहीं पैदा करते हैं । जिस प्रकार मृत्युंजय सेवन करनेवाले मनुष्योंके मृत्युको जीतलेताहै उसी प्रकार चन्द्रोदय सेवन करनेवालेके बुढापे और मृत्युको रसचन्द्रोदय नष्ट करताहै । इसको शास्त्रमें मकरध्वज कहते हैं ॥ १६-२५ ॥

सम्मति-रसचन्द्रोदयकी सेवनविधिमें भागशब्दसे एक पलका अर्थ ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि प्रथम कहेहुए विधानोंमें एक पल रस और चार २ पल अन्य पदार्थ कस्तूरी दशमांश, इसरीतिसे यहांपरभी दशमांशही कस्तूरी लेना उचित था परन्तु शास्त्रकारने स्वयं कस्तूरीको छः माशे लिखा है, इससे लेलेनेमें भी कोई दोष नहीं है ।

मकरध्वजरस (चन्द्रोदय ३शीशी) उर्दू।

वर्क तिला या बुरादाजिला एक माशे, सीमाव दश माशे, गंधक दो माशे तीनों चीजें गुलकपास सुर्खमें दो रोज बतौर पुट आल्फावीके सहक करे, बादहू दोदिनतक शीराघीकुवारमें उसीतरहसे खरल करे बादहू खूब खुश्क करके शीशामें गिलेहिकमत करके बालूजंतरमें रक्खे और चौबीस पहरतक नरम व गरम आंच दे यानी ८ पहर नरम आंच दे बाद उसके रफ्तः रफ्तः तेज आंच दे इसीतरह तीन शीशीमें अव्वल सहक दोनों बूटियोंसे करके बदस्तूर आंचदे बादहू निकालकर सीमावसे पाँचवां हिस्सा यानी ढाई ढाई माशे सीमाव खास और मारक शीशा और गूगर्द जुमलः अजजाइ मुसफ्फा करके शहदमें खरल करके और कदर दोरत्तीके गोली बनावे और हररोज दोहफ्तेतक एक-एक गोली खावे और जमाइसे परहेज करे । खास्सा यह है कि सालभरतक कुव्वत हरकिस्मकी कायम हो और तमाम जिस्ममें शनावकी कैफियत पैदा हो इसको चटकुला कहतेहैं क्यों कि थोडी मिहनतमें तय्यार होजाताहै। (सुफहा२९५ किताब अलकीमियाँ)

चन्द्रोदयरसविधि ।

पलभर पात सुनेरी तनौ । यारो तहां आठपल गनौ ॥ पारे सम ले आमलासार। ग्वारि खररि दिन तीन अपार ॥ सुकै बालुकायंत्र चढाय । बारह प्रहर जु आग कराय ॥ शीतल करि तब लेई उतार । बहुर्यो फोरि खरलमें डार ॥ पुनि गंधक पारो सम लेय । रसकारीके खरल करेय॥ सीसीविषे चढावे तिसै । पहिली जुगति कहीहै जिसै ॥ सोरह बार जु गंधक देय । सोरह शीशी अग्निकरेय ॥ अनूपान या रसको येहु । त्रिफला त्रिकुटा त्रिजटा लेहु॥ चतुर्जातको लीजै लोय । एक एक पारेसम होय ॥ नागबेल रस बांधो वरी । पारो रत्ती परे सो करी ॥ अनूपान महिषी को छीर । साऊं साय सुनो बलवीर । अजाके होय अखारे सात।सो पूछे या रसकी बात॥ वृद्ध खाय है तरुन समान । तरुणही बाढे काम सुजान ॥जोबन तनमन चाहै हस्यौ । चन्द्रोदय रस ताको कह्यौ ॥ और रोगजो याते जाय । जो रोगी यारसको खाय ॥ नाशै पंच कुष्ठ जै कहै । मंडल व्योंची खादिन रहै ॥ कास श्वास जु रहे न अन्त। सन्निपात जेते छिनवंत ॥उदररोग चौरासी वाय।या रसके खायेते जाय ॥पंच अपस्मारी पक्षाघात । या रसके खाये ते जात॥मिरगी बाररोग सब जाय।अपस्मारके काजै खाय॥

अन्यच्च ।

सुसूक्ष्मं रेतितं कृत्वा सुवर्णं शुक्तिमात्रकम्॥ पारदं शोधितं सम्यग् दद्यात्पलचतुष्टयम् ॥ २६ ॥ सुशोधितं गंधकं च प्रदेयं कुडवद्वयम् ॥ कार्पासपुष्पवृन्तोत्थरसे मर्द्य दिनद्वयम् ॥ २७ ॥ ततः कन्यारसेनैव भावयित्वा विनिक्षिपेत् ॥ कर्षार्धं रेतितं नागं ततो यन्त्रं प्रकल्पयेत् ॥ २८ ॥ अष्टादशांगुलोत्सेधं विस्तारेण षडंगुलम्॥ सुचिक्कणं सुवृत्तं च संपुटं रचयेत्तथा ॥ २९ ॥ यथोर्ध्वसंपुटस्याधः संपुटार्धं प्रसेद्दृढम् ॥ सत्कुलालेन रचितं सुपक्वं ताम्रसन्निभम् ॥ ३० ॥ मध्ये काचप्रलितं च रसमारणकर्मसु ॥ अधः संपुटखंडेषु रसचूर्णं नियोजयेत् ॥ ३१ ॥ किंचिद्दोषं परित्यज्य मुखे देया पिधानिका ॥ काचभस्मसमं कृत्वा भस्मना सह पेषयेत् ॥ ३२ ॥ तेनैव मुद्रयित्वाथ सम्पुटं कारयेत्ततः ॥ सन्धियुक्तं ततः खण्डं मृच्चैलेन प्रयोजयेत् ॥३३॥ सन्धि त्यक्त्वा ऊर्ध्वखण्डं जलमुद्रां प्रलेपयेत् ॥ शुद्धांजननिभं किट्टं किट्टार्धं संमितां कुरु ॥ ३४॥ सुवर्णपुष्पनिर्यासं संमितार्धं नियोजयेत् ॥ दक्षाण्डजद्रवेनैव मर्दयित्वा दृढं भिषक् ॥ ३५ ॥ सर्वथा मुखमुद्रेयं पुत्रस्यापि न कथ्यते ॥ तथापि रचयेद्यन्त्रं पारंपर्योपदेशतः ॥ ३६ ॥ सम्पुटस्य यथा सन्धिर्जलमध्ये न तिष्ठति ॥ विरच्यैवं प्रकारेण यंत्रभैरवसंज्ञकः ॥ ३७ ॥ यंत्रसोमानलो नाम क्वचिदुक्तः सुगोपितः ॥ यंत्रराज इति क्वापि योज्यः परमदुर्लभः ॥ ३८ ॥ रसस्य निगडः साक्षादनेन प्रपचेद्रसम्॥ शनैःशनैर्मन्दवह्निर्भिषग्दिनचतुष्टयम् ॥ ३९ ॥ ततः प्रवालसंकाशं रसं ग्राह्यं सुधोपमम् ॥ यदि किंचिच्च तिष्ठेत यंत्रराजस्य सन्धिगम्॥४०॥ ततोर्धगंधकं दत्त्वा काचकुप्यां पुनः क्षिपेत॥ स्वाङ्गशीतं समादाय नवपल्लवसन्निभम्४१॥ सूक्ष्मचूर्णरसं कृत्वा रक्षेत्स्वर्णकरंडके ॥ जातीफलं लवंगं च कंकोलं जातिपत्रिका ॥ ४२ ॥ मस्तंगीकर्षमात्रं स्यात्कस्तूरी कर्षमात्रिका ॥ तदर्धं पक्वकर्पूरं तथार्ककरहाटकम् ॥ ४३ ॥ समुद्रशोषजफलं समभागं विचूर्णयेत् ॥ माषमात्रं रसं नित्यं चूर्णमेतद्द्विमाषकम् ॥ ४४ ॥ मिश्रयित्वा

भक्षयेच्च शृणु पथ्यमतः परम् ॥ प्रथमं मृदुमासं च सघृतांधः सुशीलयेत् ॥ ४५ ॥ अतः परं बहुविधं मांसभक्ष्यं प्रकल्पयेत् ॥ मंडकाबटकांश्चैव पक्वान्नं दुग्धसंयुतम् ॥ ॥४६॥ भोजयेद्रमयेद्बालां कामां चित्तगतां तथा ॥ सर्वधातुक्षयं कासं मन्दाग्निं ग्रहणीं गदम् ॥ ४७ ॥ श्लेष्मामयान्बहुविधान्प्रमेहान्विंशतिं जयेत् ॥ अपस्मारं तथा ग्रन्थिं हृद्रोगं पाण्डु दुर्जयम् ॥ ॥ ४८ ॥ अरुचिं शोफरोगांश्च प्रमेहपिडकाञ्जयेत् ॥ जीर्णज्वरं प्रलोपाख्यं सामवातं गुदामयम् ॥ ॥ ४९ ॥ मेहशूलगरश्वासाञ्जयेदाशु उरःक्षतम् ॥ बालानां च प्रदातव्यं मात्राभेदेन सर्वथा ॥ ५० ॥ कृशानां च परां पुष्टिं वीर्याढ्यं कुरुते भृशम् ॥ तिमिरं च जयेदाशु रसायनमनुत्तमम् ॥ ५१ ॥ स्त्रीणां प्रकान्तिजननं वलीपालितनाशनम् ॥ रक्तनीलं सितं पीतं मेचकं जलसन्निभम् ॥ ५२ ॥ शुक्रस्रावं कटीशूलं नाशयेच्च किमद्भुतम् ॥ कक्षापुटिमते प्रोक्तो रसः परमदुर्लभः ॥ स्वानुभूतश्चात्र मया लेखितः संप्रदायतः ॥ ॥ ५३ ॥ (टोडरानन्द.)

अथ–अत्यन्त सूक्ष्म पिसे हुए सुवर्णका एक पल, शुद्ध पारद दो पल और शुद्ध आमलासार गन्धक८ आठ पल इन तीनोंकी कजली करे फिर कपासके फूलोंकी कलियोंके रससे तीन दिवसतक दृढ घोटे फिर घीकुवारके रससे दो दिन भावना देकर ६ छः माशे सीसा डाल देवे फिर अठारह अंगुल ऊँचा, छः अंगुल चौडा और चिकना तथा गोल ऐसा संपुटयंत्र बनावे जो कि नीचेके संपुटमें ऊंचेके सम्पुटका आधा हिस्सा आजावे तथा जिसके पैंदेमें काच गलाकर लगाया हुआ हो अब नीचेके सम्पुटमें पारदकी कजली धरे कुछ पोल कर छोडे मुखपर ढकनी कर देवे और आगे कही हुई क्रियासे मुद्रा करे, काच तथा राखको समान भाग लेकर खूब पीसै उसीसे मुद्रा कर संपुट बनावे फिर सन्धिवाले खंडको कपरोटीसे बन्द करे, ऊपरके खंडको जलमुद्रासे लीपे, जलमुद्रा इस प्रकार प्रस्तुत होती है दीपकके नीचेकी कीट और कीटसे आधा मैदा, तथा मैदासे आधा एलुवा लेकर मुर्गीके अण्डेके रससे खूब घोटे इसको जलमुद्रा कहते हैं। इसको अपने पुत्रके वास्ते भी नहीं कहना चाहिये तथापि परंपरा उपदेशसे इस यंत्रको बनाना अत्यावश्यक है, यंत्र ऐसा बनावे कि जिसकी सन्धि जलके बीच खुलने नहीं पावे तो इसको यंत्रभैरव कहते हैं और कहीं २ इसको सोमावलनामका यन्त्र भी कहाहै, यह यंत्रराज पारदका साक्षात् कैद करनेवाला है इससे वैद्य धीरे २ चार दिन तक मन्द मन्द आंच लगावे तब मूंगाके समान अमृततुल्य पारदको निकाल लेवे और यदि उस यन्त्रराजकी सन्धियोंमें कुछ पारद रह भी गया होवे तो आधा गन्धक फिर देकर काचकी शीशीमें रख वालुका यंत्र द्वारा पकालेवे स्वांगशीतल होनेपर रक्तवर्ण रसको निकाल लेवे इस प्रकार प्रस्तुत हुए इस रसको सूक्ष्म पीसकर सुवर्णके पात्रमें रक्खे फिर जायफल, लौंग, कंकोल, जावित्री एक कर्ष, मस्तंगी, कस्तूरी एक माशा, उससे आधा कपूर, कपूरसे आधा धतूरा तथा समुद्रफेन इन सबको एक २ तोला लेकर सूक्ष्म पीसलेवे इस चूर्णका दोमाशा तथा एक उर्दकी समान रसको मिलाकर शहदके साथ खावे अब हम इसके पथ्यको कहते हैं उसे सुनो। प्रथम घृतमें सेके हुए कोमल मांसको सेवन करे फिर इसके पश्चात् अनेक प्रकारके मांसोंको भक्षण करे,माडे,वडे, अनेक प्रकारके पकान्न इनका भोजन करे फिर अपने मनको प्रसन्न करनेवाली स्त्रीसे कामनापूर्वक रमण करे वह रस सब प्रकारके धातुक्षय, कास, मन्दाग्नि, संग्रहणी, कफजन्यरोग, वीस तरहके प्रमेह, मृगीरोग, गांठ, हृद्रोग और कठिन पांडुरोग, अरोचकता, शोथ (सूजन), प्रमेह, पिडिका, जीर्णज्वर, प्रलेपक (जो कि प्रायः क्षयरोगके साथ २ रहनेवाला एक प्रकारका विषमज्वर जिसको अंग्रेजीमें हेक्टिस (HECTIC) कहते हैं गठिया, गुदाके रोग, शुक्रक्षरण, शूल, विष, श्वास, उरःक्षत शीघ्र ही नाश करता है और बालकोंको भी उनकी अवस्था नुसार मात्राकी कल्पना करनी चाहिये। कृश अर्थात् दुर्बल मनुष्योंकी पुष्टि तथा वीर्यवान् बनानेके लिये एकही पदार्थ है, यह रसायन तिमिररोगको भी नाश करताहै, स्त्रियोंकी कान्तिको बढाताहै, वली (बुढापेमें त्वचाका ढीला होना) पलित (बालोंका सफेद होना) का नाशक है तथा लाल, पीला, सफेद, नीला और कालेवर्णके वीर्यपातको कमरके शूलको भी नाश करताहै। इसमें कुछ भी आश्चर्यकी बात नहीं है, इस रसको श्रीकक्षापुटि महाराजने वर्णन किया है और मैंने स्वयं अनुभव करके अपने बनायेहुए इस पुस्तकमें रीत्यनुसार लिखाहै इसमें सन्देह नहीं है २६-५३॥

मृगांकविधि।

भूखा पारा दसपल लेय। कुन्दनतबक तासुमें देय॥ चीनीको जु सकोराधरे। तामें निंबुवांको रस धरे॥ निंबुवाको रस दे पल एक। ढाकि रहै निसि यहै विवेक॥ बहुरयो सर्वा लीजे छानि। उतने तबक और दे आनि॥ नीबूको रस बहुरयो देय। जों लों पारो समसरि लेय॥ कै कहु होय अजीरन ताहि। तो दिन दोइ जिमावे ताहि॥ जब जानै सुबरानर चरै। बोझनहोय जोखिके धरै॥ तबै तबक पारे सम देय। कुन्दनपारो खरल करेय॥ निंबुवा रससों खरलै गुनी। यह मैं गुरु अपनेसे सुनी॥ तब ऐसी विधि चांदी करै। सूखनको जु छांहमें धरै॥ ले गंधक सोध्यो पल सात। ग्वारि खररिये ऐसी बात॥ वा चांदी तर ऊपर देय। गंधकको गोलाकै लेय॥ वाहि एक-

दिन सुकवे छांह । पुनि ले धरे कढाई मांह ॥ ऊपर ढांकि लोहिडी याहि । मुद्रा मैन कीजिये ताहि ॥ धरि जलयंत्र आगि अतिकरै । चौसठपहर रातिदिन करै॥पुनि सिरायके लीजे लोय । लीलांबर बैठिये सोय॥यह मृगांक रस जानो गुनी। यों कहिगये अचारज मुनी ॥ कै यह करै जोगी अवधूत । कै करिहैं राजाको पूत ॥ यह निश्चय करि जानो सोय । यासम और न दीखे कोय ॥ बहुत हौस बनितनसे होय । यह रस खानि बूंझिये सोय ॥ बल वीरज अरु थंभन करै । रोगशरीर आपदा हरै । जितने रोग किये करतार । या खायेते जाहिं असार ॥ याके गुनकी संख्या जान । है निहचैके सुनो सुजान ॥ और बातको कहै बढाय । सातों धात बेधि है राय ॥ कनकसूत गुन इते अथाह । कहांलों कहों सुनो नरनाह ॥ (रससागर.)

वैक्रान्तबद्ध (पारदशिवागमसे)

सुवर्णस्य सुवर्णस्य तोलैकं रेतितस्य च । कर्षं च शुद्धवैक्रान्तं रसं षोडशकार्षिकम् ॥ ॥ ५४ ॥ शरावमात्रं गंधस्य खल्वमध्ये विचूर्णयेत् । हस्तिकर्ण्यश्वकर्णोत्थरसं दत्त्वा दिनद्वयम् ॥ ५५ ॥ कृष्णधत्तूरकर्पासदलोत्थेन रसेन च । सुशोधितं रेतितं च नागं दत्त्वाऽथ तोलकम् ॥ ५६ ॥ कुमारीस्वरसेनैव मर्दयेच्च दिनद्वयम् । सप्तमृच्चैलसंलिप्ते काचकुम्भे क्षिपेद्रसम् ॥ ५७ ॥ तन्मुखे खटिकां दत्त्वा लेपयेत्सप्तधा मृदा । मृत्कर्पटविधानार्थं परिभाषां विलोकयेत् ॥ ॥ ५८ ॥ संस्थाप्य बालुकायंत्रे पचेद्दिनचतुष्टयम् । शनैः शनैः प्रदातव्यो वीतिहोत्रो भिषक्तमैः ॥ ५९ ॥ स्वांगशीतो रसो ग्राह्यो यथारोगानुपानतः । दापयेत्सर्वरोगाणां विनिहन्ता न संशयः॥ ६० ॥ जातीफलं जातिपत्रं कुंकुमं सलवंगकम् । कंकोलार्ककरं चैव स्वस्थे स्यादनुपानकम्॥ ॥ ६१ ॥ अतीव कान्तिजननमतीवोत्साहवर्द्धनम् । अतीव कामवृद्धिं च वह्निवृद्धिं करोति च ॥ ६२ ॥ शोषं क्षयं राजरोगं प्रमेहं विषमज्वरम् । प्रलापकमजीर्णं च तथा मन्दज्वरं जयेत् ॥ ६३ ॥ वृद्धानां कान्तिजननं पुत्रदं श्रीकरं परम् । ओजोवृद्धिकरं श्रेष्ठं महावातविनाशनम् ॥ ६४ ॥ श्लेष्मामयप्रशमनं कर्मजव्याधिनाशनम् । वैक्रान्तबद्धसूतोऽयं बृंहणे परमो मतः ॥ ॥ ६५ ॥ (टोडरानन्द.)

इति श्रीअग्रवालवैश्यावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां सुवर्णमूर्च्छितचन्द्रोदयवर्णनं नाम त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३३ ॥

अर्थ-रेतीसे रेतकर चूर्ण कियेहुए उत्तम रंगके सुवर्णका एक तोला और एक ही तोला शुद्धवैक्रान्त, तथा सोलह तोले पारद और गंधक चौसठ तोले लेकर खरलमें डालके घोटे फिर हस्तिकर्णी (एकतरहका ढाक) अश्वकर्णी (शालवृक्ष) इनके फूलोंके रससे दो दिवसतक घोटे इसीप्रकार काले धत्तूरेके रससे और कपासके फूलोंके रससे भी घोटे तदनन्तर एक तोला रेतेहुए शुद्ध सीसेको डाल घीगुवारके रससे दो दिवसतक घोट सात कपरोटी कीहुई काचकी शीशीमें सब पारदको रखकर मुखपर खडियाकी टिकिया लगाय सातबार मिट्टीसे लेप देवे कपरोटी करनेकी क्रिया परिभाषाध्यायमें देखलेनी चाहिये फिर शीशीको बालुकायंत्रमें रख चार दिनतक पकावे और वैद्यराजको धीरे धीरे अग्नि लगाना आवश्यक है, स्वांगशीतल होनेपर रसको निकाल लेवे फिर यथा अनुपान अनेक रोगोंको नाश करताहै इसमें किंचित् भी सन्देह नहीं है । जायफल, जावित्री, केसर, लौंग, कंकोल, अकरकरा इनके संग नीरोगदशामें भक्षण करे तो कान्ति, उत्साह, कामकी वृद्धि तथा अग्निकी वृद्धि इनको अत्यन्तही करतीहै । शोषरोग, क्षय (जिसको अंग्रेजीमें थाइसिस कहतेहैं) प्रमेह, विषमज्वर, प्रलापक, अजीर्ण तथा जीर्णज्वरको जीत लेताहै। वृद्ध मनुष्य जो इस रसको खावे तो लक्ष्मी तथा पुत्रको प्राप्त होताहै । ओज (रसादि सात धातुओंसे पैदाहुआ एकप्रकारका धातुविशेष) की वृद्धिका करनेवाला, तथा महावातका नाशक, कफ तथा कर्मसे पैदाहुए रोगोंको नाश करताहै । यह वैक्रान्तबद्ध पारद बृंहण (वीर्यके बढाने) में परमोत्तम मानागयाहै ॥ ५४-६५ ॥

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया भाषाटीकायां सुवर्णमूर्च्छितचन्द्रोदयादिवर्णनंनाम त्रयस्त्रिंशोध्यायः ॥३३॥

अथ प्रयोगीयाध्यायः ३४.

भस्मसूतं द्विधा गंधं क्षणं कन्याम्बुमर्दितम् ॥ रुद्ध्वा लघुपुटे पच्याल्लेहयेन्मधुसर्पिषा ॥ १ ॥ निष्कमात्रं जरामृत्यू हन्ति गंधामृतो रसः ॥ समूलं भृंगराजं तु च्छायाशुष्कं विचूर्णयेत् ॥ २ ॥ तत्समं

त्रिफलाचूर्णं सर्वतुल्या सिता भवेत् ॥ पलैकं भक्षयेच्चानु वर्षान्मृत्युजरापहः ॥३॥ (रसेन्द्रचिन्तामणि. र. रा. शं.)

अर्थ–पारदभस्ममें द्विगुणगंधक डालकर उसको घीकुवारके रससे क्षणमात्र मर्दन करे, फिर लघुपुटमें रखकर पकालेवे, फिर इस गंधामृत रसको ४ मासे प्रमाण लेकर शहद और घृत मिलाकर नित्य चाटे तो वृद्धता और मृत्युको नष्ट करता है। और जडसमेत जलभंगराको छायाशुष्क करके उसका चूर्ण बनावे पीछे इसके बराबरही त्रिफलाका चूर्ण इसमें मिलावे और सबके बराबर मिसरी मिलावे पश्चात् पूर्वोक्तरीतिसे पारदभस्मको चाटकर ऊपरसे ४ तोला यह चूर्ण खावे, ऐसे १ वर्ष पर्यंत सेवन करनेसे मृत्यु और वृद्धताको नष्ट करता है ॥ १–३ ॥

हिरण्यगर्भरस।

अथ सूतस्य शुद्धस्य मूर्च्छितस्याऽप्ययं विधिः ॥ सूततुल्यं घृतं जीर्णं द्वाभ्यां तुल्यं च गंधकम् ॥ ४ ॥ रविक्षीरैर्दिनं मर्द्यमन्धयित्वा तु भूधरे ॥ पुटैकेन भवेत्सिद्धो रसो हैरण्यगर्भकः ॥ ५ ॥ (रसरत्नाकर.) ॥

अर्थ–पारदके समान पुराना घृत और इन दोनोंके समान ही गंधक इन तीनोंको पीस आकके दूधमें एकदिवसतक घोटे फिर अन्धमूषामें रख भूधरयंत्रमें पकावे तो एकही पुटसे हिरण्यगर्भ नामका रस सिद्ध होताहै ॥ ४ ॥ ५ ॥

चिरञ्जीवित्वकल्प।

रसभस्म गुडूच्याश्च सत्त्वमेकत्र तद्द्वयम् ॥ क्रियते शाल्मलीसत्त्वे तद्द्वयं परिभाव्य च ॥ ६ ॥ पंचाशद्भावनास्तापे शाल्मलीसत्त्वकस्य च ॥ टंकद्वयमिदं चूर्णं यदि गृह्णाति तत्कचित ॥ ७॥ शाल्मलीसत्त्वमनु च चतुस्तोलं पिबेद्दिने ॥ दिने प्रभातसमये तीक्ष्णाम्लं परिवर्जयेत् ॥ ८ ॥ दुग्धभक्ताशनः शान्तो भूमिशायी जितेन्द्रियः ॥ त्रिमासादूर्ध्वतः केशाः कालालिकुलसन्निभाः ॥ ९ ॥ अजरामरं शरीरं वयस्तम्भो महामतिः ॥ एवं कल्पो विधातव्यो चिरंजीवितुमिच्छता ॥ १० ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–पारदभस्म (चंद्रोदयादि) और सत्तगिलोय इन दोनोंको एकत्रकर सेमलके दूधसे भावना देकर घाममें सुखा लेवे इसप्रकार पचास भावना देवे इस चूर्णमेंसे दो टंक (आठ माशे) लेकर ऊपरसे चार तोले सेमलका रस प्रातःकालके समय पीवे और कालीमिरच तथा खटाईका परित्याग करे, दूध, भातका भोजन करे, शांत हो, धरतीपर सोवे, इन्द्रियोंको जीते तो तीनमासमें ही बालभौरोंके समान काले होजातेहैं। शरीर अजर अमर होताहै। अवस्था तथा बुद्धिको बढानेवाला होताहै। जो मनुष्य बहुत दिवसतक जीवित रहनेकी इच्छा करता हो तो इसप्रकार कल्प करना चाहिये ॥ ६–१० ॥

अथ योगवाही रसविधि।

भागा रसस्य चत्वारो गंधकश्चाष्टभागिकः॥ सैंधवस्य च भागौ द्वौ श्वेताजयन्तिकाद्रवैः ॥ ११ ॥ मर्दितं त्रीण्यहान्यस्य गोलकं कुरु शोषय ॥ ततमूषां जले क्षिप्त्वा गृहाण रसभस्मकम् ॥ १२ ॥ संस्कृत्य कंटकाद्यैश्च यथेष्टं विनियोजयेत् ॥ योगवाही रसोऽयं च प्रयोज्यः सर्वकर्मसु ॥१३॥ (रसपारिजात.)

अर्थ–पारद चार भाग, गंधक आठ भाग, सैन्धव दो भाग इन तीनोंको सफेद जयन्तीके रसमें तीन दिवसतक मर्दन कर गोला बनाय सुखालेवे फिर तप्त मूषामें रख कोयलोंकी आंचमें धौंके जब लाल होजावे तब जलमें डाल रसको निकाल लेवे और उसको समस्त कर्मोंमें योजित करे इसको योगवाही रस कहते हैं ॥ ११–१३ ॥

हेमसुन्दररस।

मृतसूतस्य पादांशं हेमभस्म प्रकल्पयेत् ॥ क्षीराज्यमधुना मिश्रं माषैकं कांस्यपात्रके ॥ १४ ॥ लेहयेन्मासषट्कं वै जरामृत्युविनाशनः ॥ बाकुचीचूर्णकर्षैकं धात्रीफलरसप्लुतम् ॥ अनुपानं लिहेन्नित्यं स रसो हेमसुन्दरः ॥ १५ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–पारद भस्म (चन्द्रोदयादि) के चार भाग, एक भाग सुवर्णकी भस्म इन दोनोंको घोटलेवे फिर इसका एक माशा (आजकल कलियुगमें एक रत्ती लेना चाहिये) दूध, घी और शहदके साथ कांसेके पात्रमें छः मासतक खावे तो बुढापा तथा मृत्युका भी नाश करता है। तदनन्तर बावचीके एक तोले (कलियुगमें चारमाशे) चूर्णको आमलेके रसमें मिलाकर चाटे यह इसका अनुपान है इसको हेमसुन्दररस कहते हैं ॥ १४ ॥ १५ ॥

अमृतार्णवरस।

सूतभस्म चतुर्भागं लोहभस्म तथाष्टकम् ॥ मेघभस्म च षड्भागं शुद्धगंधस्य पंचकम् ॥ ॥ १६ ॥ भावयेत्त्रिफलाक्राथैस्ततसर्वं भृंगजद्रवैः ॥ शिग्रुवह्निकटुक्याथ सप्तधा भावयेत्पृथक् ॥ १७ ॥ सर्वतुल्या कणा योज्या गुडैर्मिश्रं पुरातनैः ॥ निष्कमात्रं सदा खादे-

ज्जरामृत्युं निहन्त्यलम् ॥ १८ ॥ ब्रह्मायुः स्याच्चतुर्मासे रसोऽयममृतार्णवः ॥ तिल-कोरंडपत्राणि गुडेन भक्षयेदनु ॥ १९ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-पारदभस्म चारभाग, लोहभस्म आठभाग, अभ्रक-भस्म छः भाग, शुद्धगंधक पांचभाग इन सबको सातवार त्रिफलाके काथकी भावना देवे फिर भंगरा, सैंजना, चित्र-कक्काथ, कडुकीका काथ इनसे सात २ बार भावना देवे और इन सबकी बराबर पीपल छोटी लेना इन सबोंको पुराने गुडके संग मिलाकर चारमाशे सदा खावे तो जरा और मृत्युको नाश करताहै यदि चारमासतक इस रसको खावे तो ब्रह्माके तुल्य अवस्थावाला होताहै । इसका नाम अमृतार्णव है तिल तथा कटसरैया (कटेरी) के पत्ता गुडके संग खावे बस यही इस रसका अनुपानहै १६-१९॥

अथ चतुर्मुखरसविधि ।

रसगंधकलौहाभ्रं समं सूतांघ्रि हेम च ॥ सर्वान्खल्वतले क्षिप्त्वा कन्यास्वरसमर्दि-तम् ॥ २० ॥ एरण्डपत्रैरावेष्टय धान्यराशौ दिनत्रयम् ॥ संस्थाप्य च तदुद्धृत्य संचूर्ण्य-मतिसुन्दरम् ॥ २१ ॥ तद्यथाग्निबलं खादे-त्त्रिफलामधुसंयुतम् ॥ एतद्रसायनवरं वलीपलितनाशनम् ॥ २२ ॥ क्षयमेकाद-शविधं कासं पंचविधं तथा ॥ कुष्ठमष्टाद-शविधं पांडुरोगान्प्रमेहकान् ॥ २३ ॥ शूलं कासं च हिक्कां च मन्दाग्निं चाम्लपित्त-कम् ॥ व्रणान्सर्वान्पक्षघातं विसर्पं विद्रधिं तथा ॥ २४ ॥ अपस्मारं ग्रहोन्मादान्सर्वा-र्शांसि त्वगामयान् ॥ क्रमेण शीलिते हन्ति वृक्षानिन्द्राशनिर्यथा ॥ २५ ॥ पौष्टिकं बल्यमायुष्यं पुत्रप्रसवकारणम् ॥ चतुर्मु-खेन देवेन कृष्णात्रेयेण सूचितम् ॥ २६ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-शुद्ध पारद अथवा पारदभस्म एकभाग, गंधक एकभाग, लोहभस्म एकभाग,अभ्रक एकभाग और पारदसे चौथाई सुवर्णभस्म इन सबको खरलमें डाल घीकुवा-रके रससे घोट गोला बनावे फिर सुखाकर एरण्डके पत्तोंसे लपेट तीनदिवसतक धानके ढेरमें रक्खे, तदनन्तर धानके ढेरमेंसे निकाल पीसकर अग्निबलके अनुसार त्रिफला तथा शहदके साथ खावे तो यह उत्तम रसायन क्षय, पांचप्रका-रके कास, अठारह प्रकारके कोढ, पांडु, प्रमेह, शूल, श्वास, हिक्का (हिचकी), मन्दाग्नि, अम्लपित्त, व्रण, पक्षाघात विसर्प, विद्रधि,मृगीरोग, ग्रहोन्माद,समस्तप्रकारके बवासीर, त्वचाके रोग इनको क्रमक्रमसे नाश करताहै, जैसे इन्द्रका वज्र वृक्षोंको नाश करदेताहै इसी प्रकार यह रस भी सेवन करनेसे क्रम २ से रोगोंको नाश करताहै यह रस पुष्टिका-रक, बल तथा आयुष्यका दाता, पुत्रका पैदा करनेवाला है। इसको श्रीब्रह्माजीने स्वयं अपने मुखसे श्रीआत्रेयजीको कहाहै ॥ २०-२६ ॥

त्रिनेत्ररसविधि ।

रसगंधकताम्राणि सिन्दुवाररसैर्दिनम् ॥ मर्दयेदातपे पश्चाद्वालुकायंत्रमध्यगम् ॥ ॥ २७ ॥ रुद्ध्वा मूषागतं यामत्रयं तीव्रा-ग्निना पचेत् ॥तद्गुञ्जा सर्वरोगेषु पर्णखंडि-कया पुनः ॥ दातव्या देहसिद्ध्यर्थं पुष्टि-वीर्यबलाय च ॥ २८ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-पारद,गंधक और ताम्र इन तीनोंको निर्गुंडीके रससे एकदिवसतक घोटे फिर मूषामें रख वालुकायंत्रद्वारा तीन प्रहरतक तीव्र अग्नि लगावे इस रसकी एकरत्ती लेकर पानके टुकडेके साथ देहकी सिद्धिके लिये खावे तो बलको बढाताहै पुष्टिको करताहै ॥ २७ ॥ २८ ॥

सम्मति-इस रसमें पारद शब्दसे पारदभस्म चन्द्रोदय अथवा रससिन्दूर लेना चाहिये, गंधक तीनबार शुद्धकिया-हुआ लेना तथा तांबेकी भस्म लेना चाहिये ।

अथ दरदेशरसविधि ।

पंचपलं दरदं पलमेकं शुद्धवलिं मृदुवह्निग-तायाम् ॥ कज्जलिकां विरचय्य तु तालं माषमितं विनियोज्य च कूप्याम् ॥ २९ ॥ विपचेत्सिकतासु दिनं दहनैस्तदनु स्वत एव हिमं च हरेत ॥ दरदेश इतिक्षयनाश-करो भवतीह रसः सकलामयजित् ॥३० ॥ (बृहद्योगतरङ्गिणी.)

अर्थ-पांचपल सिंगरफ, एक पल शुद्ध आमलासार गंधक इन दोनोंकी कजली बनाकर और एक माशे हरतालको मिला काचकी शीशीमें भरदेवे, फिर बालुकायंत्रमें रख एक दिवसतक आंच लगावे स्वांगशीतल होनेपर निकाल लेवे इसको दरदेशरस कहते हैं । यह रस क्षय रोगका नाशक है और अनुपानानुसार अनेक रोगोंका नाश करत है ॥ २९ ॥ ३० ॥

अथ साधारणपारदसेवनविधि ।

प्रातरेव पुरतो विरेचनं तद्दिनोपवसनं वि-धाय च ॥ तत्परेऽहनि च पथ्यसेवनं तत्परेऽ-हनि रसेन्द्रसेवनम् ॥ ३१ ॥ (रसेन्द्र-सारसंग्रह.)

अर्थ-अब पारदके सेवनकी विधिको कहते हैं कि प्रथम प्रातःकाल दस्त करानेवाली दवाईका सेवन करे और उसी दिन लंघन भी करलेवे और उसके दूसरे दिन पथ्यका सेवन करे अर्थात् हलका भोजन करे फिर उसके दूसरे दिन पारदका सेवन करे ॥ ३१ ॥

सम्मति-पारदका सेवन दो प्रकारका होताहै एक

तो रसायन (नीरोगशरीरमें बलकी विशेष वृद्धि) के लिये और दूसरे रोगनाशनके लिये, जहां रोगके नाशार्थ पारदका सेवन किया जावे वहां तो आवश्यकतानुसार वमन, विरेचन कराने चाहियें और आवश्यकता न हो तो न करावे और यदि रसायनके लिये खावे तो ऊपर लिखी हुई विधिके अनुसार सेवन करे ।

पारदप्रयोग।

विना गंधकसंयोगाद्रसः प्रायो न युज्यते॥ उक्ते पारदमात्रे तु सिन्दूरं प्रायशो मतम् ॥ ॥ ३२ ॥ (आयुर्वेदविज्ञान.)

अर्थ–जहां गंधकका प्रयोग नहींहै वहां अकसर पारदका प्रयोग नहीं होताहै और जहां केवल पारदका ही नाम आया है वहांपर बहुधा रससिन्दूरहीका ग्रहण करना चाहिये ॥ ३२ ॥

अनुपानोपदेश।

अनुपानं तु दातव्यं ज्ञात्वा रोगादिकं भिषक् ॥ ३३ ॥ (रसेन्द्रसारसंग्रह.)

अर्थ–वैद्यको चाहिये कि रोगीके रोग, देश और कालको देखकर अनुपानकी कल्पना करनी चाहिये ॥ ३३ ॥

अन्यच्च।

यस्य रोगस्य यो योगस्तेनैव सह योजयेत्॥ रसेन्द्रो हरते रोगान्नरकुंजरवाजिनाम् ॥ ॥३४॥ (रसमञ्जरी., वै. क., र. रा. शं., आ. वे. वि., बृह. यो०, श. क., र. सा. प.)

अर्थ–जिस रोगका जो योग वर्णन किया है उसके साथ ही प्रयोग करे तो वह पारद मनुष्य, हाथी तथा घोडोंके रोगोंको शीघ्रही नाश करता है ॥ ३४ ॥

रसके अनुपान।

पित्ते शर्करयाऽमलेन सहसा वाते च कृष्णासखं दद्याच्छ्लेष्माणि शृंगवेरसहितं जम्बीरजेन ज्वरे । रक्तोत्थे मधुना प्रवाररुधिरे स्यान्मेघनादोदकैर्दद्याच्चाथ कृतातिसारविकृतौ रोगारिसंज्ञो रसः ॥ ३५ ॥ (रसराजसुंदर., नि. र.)

अर्थ–यह रोगारिनामका रस पित्तके रोगोंमें खांड तथा आमलेके साथ, वातज रोगोंमें पीपलके साथ, कफजन्य रोगोंमें अदरखके साथ, अजीर्णज्वरमें जंभीरीके रसके साथ, रक्तविकारमें शहदके संग, स्त्रियोंके रक्तप्रवाहमें चौलाईके रसके संग और रक्तातिसारमें भी चौलाईके साथ खावे ॥ ३५ ॥

अन्यच्च।

गुडेन सूतं मरिचाज्ययुक्तं स्निग्धं च भोज्यं दधिभुक्सदैव ॥ नवप्रतिश्यायहरं च सत्यकं शुण्ठीशृतं दुष्टकफस्य नाशनम् ॥ ॥ ३६ ॥ चूर्णीकृतां माषविदारियष्टिकां सशर्करां सूततृणेन युक्ताम् ॥ प्रमथ्य दुग्धेन पिबेन्निरन्तरं स्त्रीणां शतं कामयते स कामी ॥ ३७ ॥ मुक्ताऽमृताचन्दनधान्यवीरणशुण्ठीसहायं मधुशर्करान्वितम् ॥ लिहन्प्रभाते विनिहन्ति युक्तं कासं च श्वासं कफरक्तपित्तम् ॥ ३८ ॥ प्रातर्निपीतो मधुना रसेन्द्रः सवारितः स्थौल्यमहो निहन्ति ॥ भक्तश्च मण्डं पिबतश्च सूतो कोष्ठं हरेत्स्थौल्यचिरोत्थभूतम् ॥ ३९ ॥ (निघण्टुरत्नाकर.)

अर्थ–गुड, मिरच स्याह और घृत इनके साथ पारदको खाकर नित्यप्रति चिकना भोजन तथा दहीको खावे तो नवीन जुखामको हरता है शुण्ठीके काथके साथ कफको दूर करताहै माषपर्णी, विदारीकन्द, मुलहठी इनका चूर्ण और मिश्री इनके संग एकचावलकी बराबर पारदको मिलाय फँकी लगावे और ऊपरसे दूध पीवे तो वह कामी मनुष्य सौ स्त्रियोंसे रमण करताहै । मोती, गिलोय (सत्तगिलोय), चन्दन सफेद, धनियाँ, खस और सोंठ इनमें घृत तथा शहद मिलाकर पारदको प्रातःकाल चाटे तो कास, श्वास, कफ, रक्त, पित्तको नाश करताहै तथा प्रातःकाल ही शहद और पानीके साथ सेवन करे तो स्थौल्य (मेदके बढने) को दूर करताहै भातके मांडके साथ पीयाहुआ पारद पुराने कोढको नाश करताहै इसमें सन्देह नहींहै ॥ ३६–३९ ॥

वैद्यजीवनसे उक्तानुक्तरसोंके प्रयोगका अनुपान।

शूले हिंगुघृतान्वितं मधुयुता कृष्णा पुराणज्वरे पित्ते साज्यरसोनकः कफरुजि क्षौद्रान्वितं त्र्यूषणम् । शीते व्याललतादलं समरिचं मेहे वरा सामला दोषाणां त्रितयेऽनुपानमुदितं सक्षौद्रमार्द्रोदकम् ॥ ४० ॥ मघवा पर्पटकं ज्वरे ग्रहिण्यां मथितं हेम गरे वमीषु लाजा । कुटजोतिसृतौ वृषोस्रपित्ते गुदकीलेषु नतं कृमौ कृमिघ्नम् ॥४१॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–औरभी जिनके अनुपान कहेहों या न कहेहों उनके अनुपान वैद्यजीवनमें इस प्रकार कहेहैं कि शूलरोगमें घृत और हींगके साथ, पुरानेज्वरमें शहद पीपलके साथ, पित्तरोगमें घृत और लशुनके साथ, कफरोगमें शहद

तथा सोंठ, मिरच, पीपलके साथ, वातरोगमें मिरच और पानके संग, प्रमेहरोगमें त्रिफलाके संग और सन्निपातज्वरमें शहद, अदरकके रसके साथ देवे। नागरमोथा तथा पटोलपत्रके साथ ज्वरमें, मठाके संग संग्रहणीमें, वमनमें खीलोंके साथ अतिसारमें कढाकी छालके संग,रक्तपित्तमें अडूसेके रसके साथ,कृमिरोगमें वायविडंगके साथ खावे ॥ ॥ ४० ॥ ४१ ॥

यथा जलगतं तैलं तत्क्षणादेव सर्पति ॥ एवमौषधमङ्गेषु प्रसर्पत्यनुपानतः ॥ ४२ ॥ पिप्पली मधुना सार्द्धं वातमेहं हिनस्ति च ॥ त्रिफला शर्करासार्द्धं पित्तमेहहरा स्मृता ४३ पिप्पली मरिचं शुण्ठी भार्ङ्गी च मधुना सह। कासश्वासप्रशमनः शूलस्य च विनाशनः ॥ ॥ ४४ ॥ हरिद्रा शर्करासार्द्धं रुधिरस्य विकारनुत् ॥ त्र्यूषणं त्रिफला वासा कामला पांडुरोगहृत् ॥ ४५ ॥ पिप्पली चित्रकं पथ्या तथा सौवर्चलं क्षिपेत् ॥ अग्निमान्द्यबद्धकोष्ठहृद्व्यथानाशनं परम् ॥ ४६ ॥ शिलाजतु तथैला च सितोपलसमन्वितम् ॥ मूत्रकृच्छ्रे प्रशस्तोऽयं सत्यं नागार्जुनोदितम् ॥ ४७ ॥ लवंगं कुंकुमं पत्रीं हिंगुलं करहाटिकम् ॥ पिप्पली विजया चैव समानीमानि कारयेत् ॥ ४८ ॥ कर्पूरमहिफेनं च भागाद्भागार्धकं क्षिपेत्॥ सर्वमेकत्र संमर्द्य धातुवृद्धौ प्रदापयेत् ॥ ४९ ॥ सौवर्चलं लवंगं च भूनिम्बश्च हरीतकी ॥ अस्यानुपानयोगेन सर्वज्वरविनाशनः ॥ ५० ॥ तथा रेचकरः प्रोक्तः सौवर्चलफलत्रिकः ॥ लवंगं कुंकुमं चैव दरदेन च संयुतः ॥ ५१ ॥ ताम्बूलेन समं भक्ष्यो धातुवृद्धिकरः परः ॥ विदारीचूर्णयोगेन धातुवृद्धिकरो मतः ॥ ५२ ॥ विजयादीप्यसंयुक्तो वमनस्य विकारनुत् ॥ सौवर्चलं हरिद्रा च विजया दीप्यकस्तथा ॥ ५३ ॥ अनेनोदरपीडां च सद्योजातां विनाशयेत् ॥ चतुर्वल्लं पलाशस्य बीजाच्च द्विगुणं गुडः ॥ ५४ ॥ अस्यानुपानयोगेन कृमिदोषविनाशनः ॥ अहिफेनं लवंगं च दरदं विजया तथा ॥ ५५ ॥ अस्यानुपानतः सद्यः सर्वातीसारनाशनः ॥ सौवर्चलेन दीप्येन चाग्निमांद्यहरः परः ॥ ५६ ॥ क्षुद्बोधजनकश्चैव सिद्धनागेश्वरोदितम् ॥ गुडूचीसत्त्वयोगेन सर्वपुष्टिकरः स्मृतः ॥ ५७ ॥ युक्तानुपानसहितः सर्वान्रोगान्विनाशयेत् ॥ (योगरत्नाकर., र. रा. सु., नि. र.)

अर्थ-जिस प्रकार तैलकी एक बूंद जलमें डालनेसे शीघ्रही फैल जातीहै इसी प्रकार औषध अनुपानके द्वारा समस्त अंगोंमें प्रवेश करजाताहै। यह रस पीपल और शहदके साथ वातज प्रमेहको नाश करताहै, त्रिफला और शहदके संग पित्तज प्रमेहको दूर करताहै, पीपल, मिरच, सोंठ और भारंगी इनका चूर्ण तथा शहदके साथ सेवन करनेसे खांसी, श्वास, शूलको नाश करताहै, हलदी और शकरके साथ सेवन करनेसे रक्तविकारको नाश करताहै, सोंठ, मिरच, पीपल, हर्र, बहेडा, आमला और अडूसा इनके संग भक्षण करनेसे रसराज पांडुरोगको नाश करताहै, पीपल, चित्रक (चीता), हर्र और काले नोंनके संग खानेसे मन्दाग्नि, कोष्ठबद्ध और हृदयकी पीडाको शान्त करताहै सिलाजीत, छोटी इलायची और मिश्री इनके साथ देनेसे घोर मूत्रकृच्छ्रको जीतताहै यह सत्यवचन श्रीनागार्जुनका कहाहुआ है। लौंग, केसर, जायपत्री, सिंगरफ, सुवर्ण, पीपल, भांग इन सबको समानभाग लेवे प्रत्येकभागका चौथाईभाग कपूर और अफीम डालदेवे इन सबको एकत्र कूट पीसकर रसके साथ धातुवृद्धिके लिये देदेवे। काला नोंन, लौंग, चिरायता, हर्र इनके साथ पारदका सेवन करनेसे समस्त ज्वरोंका नाश करताहै। काला नोंन और त्रिफलाके संग देनेसे दस्तावर होताहै, लौंग, केसर, सिंगरफ तथा पानके साथ अत्यन्त धातुवृद्धिको करताहै, विदारीकन्दके चूर्णके संग भी धातुवर्द्धक है। भांग, अजमायनके साथ वमन रोगको हरताहै। कालानोंन, हलदी, भांग और अजमोद इनके साथ तत्काल पैदा हुई उदरपीडाको नाश करता है। १२ बारह रत्ती ढाकके बीज और चौबीस रत्ती गुड इस अनुपानके साथ कृमिदोषको नाश करताहै अफीम, लौंग, सिंगरफ और भांग इनके साथ अनेकप्रकारके अतीसारोंको नाश करताहै अजमोद और काले नोंनके साथ मन्दाग्निको मिटाताहै और भूखका बढानेवाला है यह सिद्ध नागेश्वरका कथन है। सत्तगिलोयके साथ देनेसे पुष्टिकारक है अथवा अनेक योग्य अनुपानोंके साथ अनेक रोगोंको नाश करदेताहै इसमें सन्देह नहीं है ॥ ४२-५७ ॥

रस अनुपान।

गुंजैकमानमारभ्य चतुर्गुंजावधिं नरः ॥ रसराजं प्रिये युक्त्या भक्षयेदनुपानतः॥५८॥ घृतवह्निजचूर्णेन मगधामधुनाऽथवा ॥ मधूच्छिष्टघृताभ्यां वा सर्वरोगेषु योजयेत्५९॥ पित्ते क्षीरसितायुक्तं पिप्पल्याथ समीरणे ॥ श्लेष्मण्यार्द्रकजैर्नीरैर्ज्वरैर्जम्बीरजद्रवैः ६०॥ मधुना रक्तविकृतौ दध्नाऽतीसारके गदे ॥ समतोयशृतं दुग्धं पीत्वा पश्चात्सितायुतम् ॥ ६१ ॥ रक्तातीसारके देयं मेघनादभवै रसैः ॥ प्रतिश्याये कफे दुष्टे गुडसर्पिर्मरीचकैः ॥६२॥ पथ्येऽन्नं सदधि स्निग्धं कवोष्णं भोजने हितम् ॥ हितमालिंगनं ते स्याद्यथा मे मदनज्वरे ॥ ६३ ॥ वीर्यवृद्धौ तथा स्तम्भे माषकूष्मांडयष्टिजैः ॥ चूर्णैर्दुग्धसितायुक्तैर्मधुसार्पियुतैस्तु वा ॥ ६४ ॥

तृतीयके ज्वरे पित्ते भ्रमे मधुसितायुतम् ॥ जग्ध्वा मेघामृतारक्तधान्याकजलजं पिबेत् ॥ ६५ ॥ क्वाथं कमलभूकान्तातुल्यशीले मनोहरे ॥ सुखी स्यात्ते रतावास्यचुम्बनेन यथा त्वहम् ॥ ६६ ॥ रक्तपित्ते कफे कासे श्वासे क्वाथेन सेवयेत् ॥ द्राक्षा वासा शिवानाम्भो पथ्ययुक्तो वरांगने ॥ ६७ ॥ मेदोगदे शालिमुण्डैर्वाम्बुमाक्षिकसंयुतम्॥ भजेद्गजास्यतुल्योऽपि स्थूलः कृशतरो भवेत् ॥ ६८ ॥ नष्टपुष्पे रक्तगुल्मे शिवे शस्त्राभिधे गदे ॥ क्वाथे कृष्णतिलोत्थे तु भार्ङ्गीत्रिकटुहिंगुजैः ॥ ६९ ॥ चूर्णैस्तु सगुडैर्युक्ते रसभूतिर्निषेविता ॥ सुखदा त्वं यथा राज्ञौ प्रिये शृंगारसंयुता ॥ ७० ॥ (अनुपानतरङ्गिणी.)

अर्थ–हे प्यारीजी ! बुद्धिमान् मनुष्य उत्तमयुक्तिसे और योग्य, अनुपानके संग एकरत्तीसे लेकर चाररत्तीतक रसराज या पारदभस्मादिका सेवन करै, घृतवल्लीके चूर्णके साथ पीपल और शहदके साथ, घी और शहदके साथ समस्त रोगोंमें रसराजका प्रयोग करे। पित्तजरोगोंमें घी, दूधके साथ सेवन करे। वातजरोगोंमें पीपलके साथ और कफजन्यरोगोंमें अदरखके रसके संग सेवन करे। ज्वरमें जंभीरिके रसके संग सेवन करे। रक्तविकारमें शहदके संग अतीसारमें दहीके साथ और पीछेसे समभाग जल और दूधको औटाकर दूधमात्र शेष रहनेपर मिश्री मिलाकर पीवे। रक्तातीसारमें चौलाईके रसके साथ, प्रतिश्यायमें कफमें गुड, घी और मिरचके संग खावे और पथ्यमें कुछ गरम दही भात खावे और कामज्वरमें स्त्रीका आलिंगन करना ही अनुपान है, वीर्यवृद्धिके लिये उरद पेठा और मुलहठीके चूर्णको दूध, मिश्रीके साथ या घृत, शहदके साथ सेवन करे। तिजारीमें, पित्तज्वरमें, भ्रममें शहद या मिश्रीके साथ खाकर ऊपरसे नागरमोथा, गिलोय, लाल चंदन, धनियां और खशके क्वाथको पीवे। हे स्त्री ! पथ्यसे रहनेवाला मनुष्य मुनक्का, अडूसा और हर्रके क्वाथके संग रसभस्मको खावे, मेदरोगमें सांठीचावलोंके मांडके साथ या जल, शहदके साथ सेवन करे तो हाथीके समान भी मोटा आदमी अत्यन्त ही दुर्बल होजाताहै, हे पार्वती ! जिसका पुष्प (रज) नष्ट होगया हो या रक्तगुल्म होगया हो या शूलरोग होगया हो तो वहांपर काले तिलोंके क्वाथके साथ खावे और मनुष्यको भारंगी, त्रिकुटा, हींग, गुड इनके साथ सेवन कियाहुआ रसभस्म रात्रिमें कासश्वासादि रोगोंसे ऐसा सुख देताहै जैसा कि हे पार्वती! तू शृंगारयुक्त मुझको सुख देतीहै ॥ ५८–७० ॥

अथ साधारण अनुपान।

कैराताम्बुदपर्प्पटं ज्वरगदे तक्रं ग्रहिण्यामथाऽतीसारे कुटजः कृमौ कृमिरिपुर्दुर्नामकेरुष्करम् ॥ पांडौ किट्टमथ क्षये गिरिजतुः श्वासे तु भार्ङ्ग्यौषधं मेहे त्वामलकं क्षये तृषि जलं संतप्तहेमांचितम् ॥ ७१ ॥ शूले हिंगु करंजमामपवने तैलं रुवोर्मूत्रयुक् ॥ श्रेष्ठा प्लीह्नि कणा विषे शुकतरुः कासे तु कंठालिका ॥ वातव्याधिषु गुग्गुलुश्च विहितः स्याद्रक्तपित्ते वृषोऽपस्मारे तु वचा सवागथ गरे हेमोदरे रेचनम् ॥ ७२ ॥ वातास्रे च गुडूचिकार्दितगदे माषेंडरी मेदसि क्षौद्राम्भः प्रदरे तिरीटमरुचौ लुंगो व्रणेऽग्न्याः पुरम् ॥ शाके मद्यमथाम्लपित्तरुजि तु द्राक्षाऽथ कृच्छ्रे वरी कूष्माण्डाम्बुदृगामये तु त्रिफलोन्मादे पुराणं घृतम् ॥ ७३ ॥ कुष्ठे खादिरसारवार्य्यथ पयो निद्राक्षये माहिषं श्वित्रे वाकुचिजं त्वजीर्णरुजि तु स्वापामयोपोषणम् ॥ छर्दौ लाजमधूर्ध्वजत्रुविकृतौ नस्यं सतीक्ष्णौषधं शूले पार्श्वभवे तु पुष्करजटा मूर्च्छासु शीतो विधिः ॥ ७४ ॥ कार्श्ये मांसरसोऽश्मरीषु गिरिभिद् गुल्मेषु सेतुत्वचा ॥ माक्षोऽस्रस्य तु विद्रधौ जतुरसेर्हिध्मासु नस्यं हितम् ॥ दाहे शीतविधिर्भगन्दरगदे तुर्वीलताश्वास्थिनी घृष्टे रासभलोहितैः स्वरगदे मध्वन्वितं पौष्करम् ॥ ॥ ७५ ॥ (रससारपद्धति.)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां प्रयोगादिवर्णनं नाम चतुस्त्रिंशोऽध्यायः॥ ३४॥

अर्थ–ज्वररोगमें चिरायता, नागरमोथा और पित्तपापडेका अनुपान। संग्रहणीमें मठा, अतीसारमें कुडाकी छाल, कृमिरोगमें वायविडंग, बवासीरमें भिलावे, पांडुरोगमें लोहकिट्ट, क्षयरोगमें सिलाजीत, श्वासमें भारंगी, प्रमेहमें आमले, प्यासमें सुवर्णका बुझाहुआ पानी, शूलरोगमें हींग, आमवातमें करंजुवा मूत्रकृच्छ्रमें अंडीका तैल, प्लीहामें पीपल, विषमें ढाकके फूल, कासरोगमें कंठालिकाके साथ, वातव्याधिमें गूगल, रक्तपित्तमें अडूसा, मृगीरोगमें बच, उदररोगमें कबीला, वातरक्तमें गिलोय, मेद रोगमें शहद, अर्दित (लकवा) में इमरतीके साथ, प्रदररोगमें लोध, अरुचिमें बिजोरा, आंचसे जलेहुए फोडेपर गूगल, पकनेमें मद्य, अम्लपित्तमें मुनक्का, मूत्रकृच्छ्रमें त्रिफला, नेत्ररोगमें पेठे का रस, उन्मादरोगमें त्रिफला और पुराना घृत, कोढमें खैरसारका क्वाथ, अनिद्रामें भैंसका दूध, श्वेत कोंढमें बावची, वमनमें खीलें और शहद, ठोंडीसे ऊपरके रोगोंमें मिरचके साथ नस्य, पसलीके दर्दमें पोकरमूल, मूर्छामें शीतल क्रिया, कार्श्यरोगमें

मांसरस, पथरीके रोगमें पाषाणभेद, गुल्मरोग (बायगोला) में बरनाकी छाल, दाहमें शीतलविधि, भगंदरमें घोडेकी हड्डीको गधेके रक्तसे पीसकर लगावे, स्वरभंगमें शहद और पौकरमूल, इन अनुपानोंके साथ. पारदभस्म या चन्द्रोदयादि सेवन करना चाहिये ॥ ७१-७५ ॥

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपंडितमनसुखदासात्मजव्यास-ज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया भाषाटीकायां प्रयोगादिवर्णनं नाम चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३४ ॥

पारदमूर्च्छिताध्यायः ३५.

मूर्च्छना जारणा इत्यनर्थान्तरं प्रायः । (रससारपद्धति.)

अर्थ-मूर्च्छना तथा जारणा ये दोनों परस्पर पर्यायवाचक शब्द हैं, अर्थात् जारणको मूर्च्छना कहते हैं और मूर्च्छनाको जारणा कहते हैं ।

अथ मूर्च्छनालक्षण ।

तत्र अव्यभिचरितव्याधिघातकत्वं मूर्च्छना । (आयुर्वेदविज्ञान., रससारपद्धति., र. चिं.)

अर्थ-व्यभिचाररहित रोगके नाश करनेको मूर्च्छना कहतेहैं, अर्थात् जो पदार्थ रोगादि प्रबल कारणसे न रुककर निरन्तर व्याधिका नाश करनेवाला हो उसको मूर्च्छना ही कहते हैं ।

अथ मूर्च्छनाभेद ।

तत्प्रकारा बहुविधाः सन्ति, तत्र निर्गन्धसगन्धभेदेन द्विविधा मूर्च्छना ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-मूर्च्छना अनेक प्रकारकी होती हैं, उनमें प्रायः मूर्च्छनाके निर्गन्ध और सगंध ये दो प्रधान भेद हैं ॥

निर्गन्धमूर्च्छनालक्षण ।

तत्र निर्गन्धा तु विषाद्यौषधिभिरेकरूपा योगीश्वरादिगम्याऽस्ति ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-विष आदि औषधियोंके साथ जो पारदकी मूर्च्छना की जातीहै उसको निर्गन्ध मूर्च्छना कहतेहैं और उसको केवल योगीश्वर ही करसक्तेहैं । अर्थात् जो मनुष्य चित्तको एकाग्र करके रसप्रक्रियाका अन्वेषण करतेहैं वेही निर्गन्ध (गंधकरहित) मूर्च्छनाको करसकतेहैं ॥

सगंधमूर्च्छनाभेद ।

सगन्धा तु बहिर्धूमान्तर्धूमनिर्धूमभेदात्त्रिविधाः । तत्र षड्गुणगन्धकजारणा साधीयसीति निगद्यते ॥ सा तु स्वेदनादिसंस्कारा शुद्धस्य सूतस्य कार्या ॥ (रससारपद्धति., र. चिं., र. रा. शं.)

अर्थ-बहिर्धूम, अन्तर्धूम, और निर्धूम भेदसे सगन्धजारणा तीन प्रकारकी हैं, वहां षड्गुणगंधकजारणकी रीति अत्यन्त सरल है इसी कारण उसको लिखते हैं और वह गन्धकजारण स्वेदनादि संस्कारोंसें शुद्ध कियेहुए पारदकी करनी चाहिये ॥

दो प्रकारकी पारदभस्म ।

सूतभस्म द्विधा ज्ञेयमूर्द्धगं तलभस्म च॥१॥ (वृद्धयोगतरङ्गिणी., र. रा. सुं.)

अर्थ-पारदकी भस्म दो प्रकारकी कहीहै एक ऊर्ध्वग और दूसरी तलभस्म ॥ १ ॥

सम्मति-रससिन्दूरादिको ऊर्ध्वग भस्म तथा रसमानस ग्रंथमें ३२ बत्तीस शीशियोंद्वारा जो शीशीके नीचे भस्म रह जातीहै उसको तलभस्म कहतेहैं ।

तथा च ।

सूतभस्म द्विधा ज्ञेयमूर्ध्वगं तलभस्म च॥ऊर्ध्वं सिन्दूरकर्पूररसावन्यदधो भवेत् ॥ २ ॥ (रसराजशंकर.,र. रा. सुं.)

अर्थ-ऊर्ध्वग और तलभस्म इन भेदोंसे पारद भस्म दो प्रकारकी है, रससिन्दूर तथा रसकपूरको ऊर्ध्वग भस्म और इससे अन्यको तलभस्म कहतेहैं ॥ २ ॥

षड्गुण गन्धकजारणकी आवश्यकता।

रसगुणबलिजारणं विनायं न खलु रुजां हरणक्षमो रसेन्द्रः ॥ न जलदकलधौतपाकहीनः स्पृशति रसायनतामिति प्रतिज्ञा॥ ॥ ३ ॥ (रसेन्द्रचिन्तामणि., नि. र., र. रा. शं., बृ. यो., र. रा. सुं.,र. रा. प., र. सा. प.)

अर्थ-यह पारद षड्गुणगंधकजारणके विना रोगोंके नाश करनेके लिये समर्थ नहीं होताहै (अर्थात् छः गुना गन्धकजारण कियाहुआ पारद रोगनाशक होताहै) और अभ्रक तथा स्वर्ण जारणके विना (अर्थात् जिसमें स्वर्ण तथा अभ्रक जारण न किया हो) पारद रसायन करनेयोग्य नहीं होताहै यह एक प्रकारकी ग्रन्थकारोंकी प्रतिज्ञा है ॥ ३ ॥

मूर्च्छनोपयोगि पारद ।

तत्तत्तन्त्रनिगदितदेवतापरिचरणस्मरणान्तरम्। तत्तच्छोधनप्रक्रियाभिर्बह्वीभिः परिशुद्धानां रसेन्द्राणां तणारणिमणिजन्य-

वह्निन्यायेन तारतम्यमवलोक्यमानैः सूक्ष्ममतिभिः "पलार्द्धेनापि संस्कारः कर्तव्यः" इति वचनात् व्यावहारिकतोलकद्वयप्रमाणेनापि परिशुद्धो रसो मूर्च्छयितव्यः। (रसेन्द्रचिन्तामणि.)

अर्थ-उन २ तन्त्रोंमें कहेहुए देवताओंकी पूजा और स्मरण करनेके बाद अनेक शोधनकी प्रक्रियाओंसे शुद्ध कियेहुए पारदोंकी तृणारणिमणिजन्यवह्निन्यायसे तारतम्यको देखतेहुए विचारवानोंको व्यावहारिक दो तोलेंके प्रमाणसे शुद्ध कियेहुए पारेको भी मूर्च्छित करना चाहिये और इसी बातको रसार्णवमें भी लिखाहै।

अथातः शुद्धसूतस्य मूर्च्छनाविधिरुच्यते॥ ॥ ४ ॥ (रसरत्नाकर.)

अर्थ-अब हम शुद्ध कियेहुए पारदकी मूर्च्छनाविधिको वर्णन करतेहैं। इससे यह बात सिद्ध होतीहै कि जिस पारदका हम मूर्च्छन संस्कार करें उसको प्रथम शुद्ध ही करलेवें ॥ ४ ॥

मूर्च्छन।

कुरण्टकरसैर्भाव्यमातपे भावयेद्रसम् । लताकरञ्जपत्रैर्वा अंगुष्ठेन विमर्दयेत ॥ दिनैकं मूर्च्छिता सम्यक् सर्वरोगेषु योजयेत ॥ ५ ॥ (रसरत्नाकर.)

अर्थ-पीले फूलकी कटेरीकी जडके रससे पारदको एक दिवसतक घाममें मर्दन करे अथवा वेलदार करञ्जके पत्तोंके रससे एक दिन अँगूठेसे मर्दन करे तो पारद अच्छी प्रकार मूर्च्छित होताहै और उस मूर्च्छितका सब रोगोंमें प्रयोग करे ॥ ५ ॥

सम्मति-इसको निर्गन्ध मूर्च्छना कहतेहैं क्योंकि यह औषधि जडीद्वारा मूर्च्छित कियागयाहै ॥

निर्गन्धमूर्च्छनविधि।

कुरण्टकाम्बुसंयोगादातपे मर्दयेद्रसम् । म्रियतेऽसौ ततः सूतः सर्वकर्मणि साधयेत्॥६॥(टोडरानन्द.,रसराजसुन्दर., नि.र.)

अर्थ-पीले फूलकी कटेरीकी जडसे पारदको घाममें घोटे तो पारद मृत होताहै और उसको सब कामोंमें लावे॥ ६ ॥

मूर्च्छनं रसरत्नाकरे।

मेषशृङ्गी कृष्णधूर्तो बला श्वेतापराजिता। कन्याग्निस्त्रिफला चैव सर्पाक्षी सूरणं वचा॥ ॥ ७॥गोजिह्वा लांगली तालं लांगूली क्षीरकन्दकम्। राजिका काकमाची च रविक्षीरं च कांचनम् ॥८॥ व्यस्तानां वा समस्तानां द्रवैरेषां विमर्दयेत् । यामैकं रसराजं तु मूषायां सन्निरोधयेत् ॥ ९ ॥ पुटैकेन पचेत्तत्तु भूधरे चाथ मर्दयेत् । पूर्वद्रावैर्यथापूर्वं रुद्धारुद्धा विपाचयेत् । इत्येवं सप्तधा कुर्याज्जायते मूर्च्छितो रसः॥ १०॥ (रसपद्धति.)

अर्थ-मेढासींगी, कालाधतूरा, खरेटी, सफेदकोयल, घीकुमारी, चित्रक, त्रिफला, सर्पाक्षी, जमकिंद, वच, गोभी, कलिहारी, क्षीरकंद, राई, मकोय, आकका दूध, कचनार इन समस्त अथवा भिन्न औषधियोंके रसोंसे पारदको एक प्रहर मर्दन करे फिर मूषा (घरिया) में रख कर भूधरयंत्रमें पकावे फिर इसी प्रकार पूर्वोक्त रसोंसे घोटकर भूधरयंत्रमें पकावे इस प्रकार सातबार पकावे तो पारद मूर्च्छित होगा ॥ ७-१० ॥

मूर्च्छन।

कृत्वा षडंगुलां मूषां सुपक्कां मृन्मयीं दृढाम् । मूषागर्भं विलेप्याथ मूलैर्बहुलपत्रकैः ॥ ११ ॥ तन्मध्ये सूतकं क्षिप्त्वा मूषा पूर्य्या तु तद्द्रवैः । रुद्धा सलवणैर्यन्त्रैश्चुल्ल्यां दीप्ताग्निना पचेत् ॥ १२ ॥ सप्ताहान्ते समुद्धृत्य यवमात्रं ज्वरापहम् ॥ ॥ १३ ॥ (रत्नाकर.)

अर्थ-मिट्टीकी छः अंगुल घरिया बनाकर अग्निमें पकालेवे और मूषाके भीतर सँहजनेके मूलोंके रससे अथवा प्याजके रससे लेप करे फिर उस मूषामें पारदको रख ऊपरसे उसी (जिससे मूषाके भीतर लेप किया हो) रससे मूषाको भरदेवे और उसको लवणयंत्रमें रखकर मन्दाग्निसे पकावे सात दिवसके बाद निकालकर एक रत्ती देवे तो ज्वर दूर होजाय ॥ ११-१३ ॥

मूर्च्छन।

सद्योजातस्य बालस्य विष्ठां पालाशबीजकम् ॥ चांडालीरुधिरं सूतं सूतपादं च टङ्कणम् ॥ १४ ॥ जयन्त्या मर्दयेद्द्रावैर्दिनैकं तत्तु गोलकम् ॥ पिष्टया सहदेव्याथ लेपयेत्ताम्रसम्पुटम् ॥ १५ ॥ तन्मध्ये गोलकं क्षिप्त्वा द्वियामं स्वेदयेल्लघु।वालुकायंत्रमध्ये तु समुद्धृत्य पुनःपुनः ॥ १६ ॥ चित्रकैः सहदेव्या च गंधकैर्लेपयेद्बहिः । सम्पुटं बन्धयेद्वस्त्रे मृदालिप्य च शोषयेत ॥१७॥ तद्रुद्धा अन्धमूषायां ध्माते सम्पुटमाहरेत् । सूक्ष्मचूर्णं हरेद्रोगान् योगवाहो महारसः ॥ १८॥ (रसरत्नाकर.)

अर्थ-उसी समय उत्पन्न हुए बालककी विष्ठा, ढाकके बीज, स्त्रीका रज और पारद, पारदसे चौथाई सुहागा इन सबको एक दिवसतक जयन्ती (अरणी) के रससे घोटके गोला बनावे और पिसी हुई सहदेवीसे ताम्रसम्पुटम

लेपकर और गोलेको रख दो प्रहरतक वालुकायंत्रमें बार बार हलकी आंचसे स्वेदन करे, तदनन्तर गंधक और चित्रकको सहदेवीके रसमें पीस सम्पुटके बाहिर लेप करे और सम्पुटको कपडेमें बांध मिट्टीका लेपकर सुखालेवे उस गोलेको अन्धमूषामें रख कर धोंके और उसके लाल होनेपर सम्पुटको निकाललेवे तदनन्तर सम्पुटमें रक्खे हुए पदार्थका चूर्ण कर अनुपानके अनुसार देवे तो यह रस परम योगवाही है ॥ १४-१८ ॥

मूर्च्छन (रसकपूर) ।

काशीशं सैंधवं सूतं तुल्यं तुल्यं विमर्दयेत्॥ काशीशस्यास्य भागेन दातव्या फुल्लतूरिका ॥ १९ ॥ स्तोकंस्तोकं क्षिपेत्खल्वे यामत्रयं च मूर्च्छयेत् ॥ प्रत्येकं शतनिष्कं स्यादूनं नैवाधिकं भवेत् ॥ २० ॥ स्थालीसम्पुटयंत्रेण दिनं चण्डाग्निना पचेत् । उर्द्धलग्नं ततश्चुल्ल्यां मूर्च्छितं चाहरेद्रसम् ॥ २१ ॥ (रसरत्नाकर.)

अर्थ-हीराकसीस, सैंधानोन और पारद इनको समान भाग लेकर मर्दन करे कसीससे आधा भाग फिटकिरी लेकर खरलमें थोडा डालकर तीन प्रहरतक घोटे तो पारद मूर्च्छित होता है इनमेंसे प्रत्येक पदार्थको सौ २ निष्क लेना चाहिये अर्थात् तैंतीस तोलेसे कम और अधिक भी न होना चाहिये स्थालीसम्पुटयंत्र (अर्थात् एक थालीमें यह समस्त पदार्थ रख कर ऊपरसे लोहेका कटोरा रख कपरोटी करदेवे) में रख एक दिन तक तेज आंच लगावे ऊपर लगे हुए मूर्च्छित पारदको निकाल कर रख लेवे ॥ १९-२१ ॥

सम्मति-मेरी सम्मतिसे यह रसकपूरकी ही एक प्रकारकी प्रक्रिया है क्योंकि इसी प्रक्रियामें कुछ नौसादरका योगकर योगचिन्तामणि ग्रंथकारने रसकर्पूर बनाया है ।

रसकर्पूरविधि ।

पारदः स्फटिका चैव हीराकासीसमेव च॥ सैंधवं समभागं वै विंशांशं नवसादरम् ॥ २२ ॥ खल्वे विमर्द्य सर्वाणि कुमारीरसभावना॥ क्रमवृद्धाग्निना पक्वो रसः कर्पूरसंज्ञकः ॥ २३ ॥ (योगचिन्तामणि.)

अर्थ-पारद, फिटकिरी, हीराकसीस ओर सैंधानोन ये सब सम भाग हो और नवसादर वीसवां भाग इन सबको खरलमें डाल कर कुमारीरसकी भावना देवे फिर स्थालिकायंत्रमें मन्द मध्य और तीक्ष्ण अग्निद्वारा पकावे तो यह रसकपूर सिद्ध होगा ॥ २२ ॥ २३ ॥

अन्यच्च ।

टंकणं मधु लाक्षा च ऊर्णा गुञ्जायुतो रसः॥ मर्दयेद्भृङ्गजैर्द्रावैर्दिनैकं वा धमेत्पुनः ॥२४॥ ध्मातो भस्मत्वमायाति शुद्धः कर्पूरसन्निभः ॥ (रसमञ्जरी., रसेन्द्रसारसंग्रह., का. र.)

अर्थ-सुहागा, शहद, लाख, ऊन और चौंटनी ये सब पारदसे पृथक् २ षोडशांश लेकर जलभंगराके रससे एक दिवसतक घोटे फिर अंधमूषामें रख धोंके तो शुद्ध कर्पूरके समान भस्म होती है । इसको कामरत्नकारने भस्म और अन्योंने रसकपूर माना है ॥ २४ ॥

रसकपूरविधि ।

स्फटिका खटिका लवणं च समं वनमृद्गलदिष्टरजोगिरिजम् ॥ तलभाण्डधृतं घटकोदरगो रसराजवरो डमरूपिहितः ॥ ॥ २५ ॥ तलखर्परिकाविहितः पिहितो निहितो सकलामयनाशकरः ॥ रतिभोगपुरन्दरसुन्दरमंदिरमन्दरकन्दरियुक् मुदितः ॥ २६ ॥ घनसारतुषारसमुक्तलतामृतराशिशशांककलाधवलः ॥ कदलीनवकंदकलाकुलिगो मृगनाभिसचन्दनकुंकुमयुक् ॥ ॥ २७ ॥ सममेललवंगपुरान्वितः सुखयति चानुदिनं त्वशितः ॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ-फिटकिरी, खडियामाटी, नोंन, वमईकी माटी, ईटका चूरा, गेरू इन सबको समान भाग लेकर घोट लेवे फिर हांडीके तलेमें कुछ अर्थात् आधा दवाइयोंका पिसाहुआ चूर्ण रख ऊपरसे पारेको रख फिर दवाइयोंका चूर्ण डालदेवे इस प्रकार डमरूयंत्रमें रख चार प्रहरकी अग्नि देवे तो ऊपरकी हांडीके तलेमें पपडीके रूपमें जमाहुआ रसकपूर वनजाताहै वह समस्त रोगोंका नाश करता है और यह रस पारद, वर्फ, मोतीनकी वेल, अमृतका ढेर और चन्द्रमाकी कलाके समान सफेद होताहै उसको केलेके नवीन कन्दमें (जडमें) रक्खे फिर कस्तूरी, चन्दन, केसर, इलायची छोटी, लौंग, गूगल इनमेंसे समस्त अथवा व्यस्तके योगमें देनेसे यह रस प्रतिदिवस सुखको देता है ऐसा अनेक ग्रंथोंमें लिखा है ॥ २५-२७ ॥

अन्यच्च ।

खटीष्टचगैरिका वल्मी मृत्तिका सैन्धवं समम्॥ भागद्वयमितं श्लक्ष्णं रसं भागद्वयं स्मृतम् ॥ ॥ २८॥ हण्डिकायां विनिक्षिप्य पार्श्वेपार्श्वे च खर्परान् । दत्त्वाथ हण्डिकां रुद्धा द्विरष्टप्रहरं पचेत् ॥ मृतसूतं च गृह्णीयाच्छुद्धकर्पूरसन्निभम् ॥ ३९ ॥ (रसमञ्जरी.)

अर्थ-खडिया, ईटका चूरा, गैरु, वमईकी माटी, सैंधानोंन ये सब सम भाग लेवे और इन सबके तुल्य पारद लेवे फिर इन सबको महीन पीस हांडीके भीतर रक्खे और ऊपरसे आसपास खिपरे रखता जावे फिर हांडीका मुख

बन्द कर सोलह प्रहरकी आंच देवे और स्वांगशीतल होने पर शुद्ध कपूरके माफिक मृत पारदको ग्रहण करलेवे ॥ २८ ॥ २९ ॥

अन्यच्च ।

खटीष्टगैरिकावल्मीमृत्तिकासैंधवं समम्॥ भागद्वयमिदं श्लक्ष्णं रसो भागद्वयं तथा ॥ ॥ ३० ॥ संमर्द्य चैकतः कृत्वा बाढं सरसमौषधम् ॥ हिंडिकायां विनिक्षिप्य पार्श्वेपार्श्वे च खर्पटान् ॥ ३१ ॥ अन्यां च हिंडिकां दत्त्वा प्रकुर्यात्संधिरोधनम् । यामषोडशपर्यंतं वह्निं कुर्यादहर्निशम्॥ अधऊर्द्धे रसं तस्माल्लग्नं शीतं तमानयेत् ॥ ३२ ॥ कर्पूरपुलकाकारं बलदं दृष्टिसौख्यदम् ॥ ॥ ३३॥ पुष्ट्यारोग्यप्रदं श्रेष्ठं कमनीयं सुखावहम् ॥ महाप्रमेहशमनं मत्तेभबलकारकम् ॥ ३४ ॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ-खडिया, ईटका चूरा, गेरू, वमईकी माटी, सैंधानोंन ये सब समान लेवे, इन सबकी बराबर पारा लेवे और सबको एकत्र कर खरल करे फिर हांडीमें भर कर आस पास खिपरे लगादेवे और ऊपरसे दूसरी हांडीका मुख लगाकर कपरौटीसे संधिको बंद करदेवे तदनन्तर सोलह प्रहरतक बराबर आंच देवे और ऊपर और नीचे लगेहुए रसकपूरको निकाल लेवे वह रसकपूर कपूरके समान श्वेत होता है बलका दाता नेत्रोंके सुखको देता है पुष्टि आरोग्य सुन्दरता और सुखका दाता है तथा घोर प्रमेह (सूजाक) को शान्त करता है और मस्तहाथीके समान बलको देता है ॥ ३०-३४ ॥

अन्यच्च ।

तत्र पारदसंक्षिप्तशोधनं कर्त्तव्यम्-

शुद्धसूतसमं कुर्यात्प्रत्येकं गैरिकं सुधीः ॥ इष्टिकां खटिकां तद्वत् स्फटिकां सिन्धुजन्म च ॥ ३५ ॥ वल्मीकं क्षारलवणं भाण्डरंजनमृत्तिकाम् । सर्वाण्येतानि संचूर्ण्य शुद्धवस्त्रेण शोधयेत् ॥ ३६ ॥ एभिश्चूर्णैर्युतं सूतं स्थालीमध्ये परिक्षिपेत् । तस्याः स्थाल्या मुखे स्थालीमपरां धारयेत्समाम्॥ ॥३७॥ सवस्त्रकुट्टितमृदा मुद्रयेदुभयोर्मुखम्। संशोष्य मुद्रयेद्भूयो भूयः संशोष्य मुद्रयेत् ॥ ३८ ॥ सम्यग्विशोष्य तां मुद्रां स्थालीं चुल्ल्यां विधारयेत । अग्निं निरन्तरं दद्याद्यावद्दिनचतुष्टयम् ॥ ३९ ॥ अङ्गारोपरि तद्यंत्रं रक्षेद्यत्नादहर्निशम् । शनैरुद्घाटयेद्यन्त्रमूर्द्धस्थालीगतं रसम् ॥ कर्पूरवत्सुविमलं गृह्णीयाद्गुणवत्तरम् ॥ ४० ॥ तदेवकुसुमचन्दनकस्तूरीकुंकुमैर्युतं योग्यम्। खादन् हरति फिरंगं व्याधिं सोपद्रवं सपदि ॥ ४१ ॥ विन्दति वह्नेर्दीप्तिं पुष्टिं वीर्य्यं बलं विपुलम् ॥ रमयति रमणीशतकं रसकर्पूरसेवकः सततम् ॥ ४२ ॥ (वैद्यकल्पद्रुम., र. रा. शं., र. रा. सुं., आ. वि.)

अर्थ-प्रथम साधारण शोधनाध्यायमें कहे हुए किसी साधारण शोधन प्रकारसे पारदका शोधन करना चाहिये, फिर शुद्ध पारदके तुल्य गेरू, ईटका चूरा, खडिया, फिटकिरी सैंधवनोंन, वमईकी माटी, खारी नोंन, मिट्टीके बासनोंके रंगनेकी माटी इन सबको पीस कपडेमें छान लेवे फिर इस चूर्णके संग पारेको एक प्रहरतक घोटे और उस चूर्णको एक हांडीमें रख ऊपरसे दूसरी हांडीके मुखको गला देवे फिर वस्त्रसहित कुटीहुई मिट्टीसे दोनों हांडिनके मुखको बंद कर सुखादेवे और सुखाकर फिर मुद्रा करे इस प्रकार सात कपरौटी करे मुद्राको अच्छी तरहसे सुखाकर चूल्हेपर चढाय चार दिवसतक निरंतर अग्नि देवे अग्नि देनेके बाद उन्हीं अंगारोंपर उस यंत्रको रक्खा देवे जब स्वांग शीतल होजावे तब धीरे २ उस यंत्रको खोल उत्तम गुणवान् कपूरके समान श्वेत वर्णवाले उस रसकपूरको ग्रहण करे जोकि ऊपरकी हांडीके तलेमें लगाहुआ हो, लौंग, चंदन सफेद, कस्तूरी और केसरके साथ खायाहुआ वह रसकपूर उपद्रव सहित फिरंग (आतशक) को दूर करताहै, अग्निको दीप्त तथा वीर्यपुष्टिको करताहै और रसकपूरका सेवन करनेवाला एक ही पुरुष सौ स्त्रियोंसे निरन्तर सम्भोग करताहै । ऐसा अनेक ग्रंथोंमें लिखा है ॥ ३५-४२ ॥

सम्मति-यद्यपि अनेक पुस्तकोंकी टिप्पणीमें इसकी मात्रा एक रत्तीकी लिखी है तथापि हमारी समझमें एक या दो चावलसे अधिक मात्रा देना उचित नहीं क्योंकि अधिक मात्रासे अनेक प्रकारके रोगोंको पैदा करताहै यह हमारा अनुभव है ।

अन्यच्च ।

संक्षेपाद्धि रसं पूर्वं शोधयेच्छुद्धमानसः ॥ पश्चाच्छुद्धेन प्रत्येकं तुल्यं कृत्वा रसेन हि ॥ ४३ ॥ गैरिकं खटिकामिष्टीं सौराष्ट्रीं सैंधवं तथा ॥ टंकणं क्षारलवणं मृत्स्नाचूर्णं सुसूक्ष्मकम् ॥ ४४ ॥ एतच्चूर्णान्वितं सूतं यामैकं मर्दयेत्ततः ॥ ऊर्द्धपातनके यंत्रे वह्निं दद्याच्छनैःशनैः ॥ ४५ ॥ अहोरात्रैश्चतुर्भिश्च ततो वै स्वांगशीतलम् ॥ उद्घाट्योर्द्धविलग्नं वै रसं कर्पूरसंज्ञकम् ॥ ४६ ॥ गृहीत्वा सर्वरोगघ्नं बलबुद्धिविवर्द्धनम् ॥ वृन्ताकशतकैः शुद्धं भक्षितं गुणवत्तरम् ॥ ४७ ॥ कस्तूरिकाचन्दनदेवपुष्पैः सकुंकुमैरब्जविलोचनो यः । कर्पूरकं पारदसम्भवं ना निषेवयन्संजयते फिरंगम् ॥ ४८ ॥ सोपद्रवं

बिन्दति चाग्निदीप्तिं वीर्यं बलं पुष्टिमदीर्घकालात्॥ स्त्रीणां समूहं रमयेत्प्रिये त्वं मया रमस्वाद्य निषेवितं मे ॥ ४९ ॥ (अनुपानतरङ्गिणी.)

अथ--मनुष्य शुद्ध मन होकर प्रथम साधारण शोधनाध्यायकी रीतिसे पारदको शुद्ध करे उसी शुद्ध कियेहुए पारेके तुल्य गेरू,खडिया, ईंटका चूर्ण, सौराष्ट्री (फिटकरी) और सैंधव, सुहागा, खारी नोंन, बमईकी माटी इनके सूक्ष्म चूर्णके साथ पारेको एक प्रहरतक मर्दन करे ऊर्द्ध पातनयंत्रमें (जैसा कि ऊपरकी क्रियामें विधान कहा गयाहै) रख चारदिन राततक धीरे २ आंच देवे फिर स्वांग शीतल होनेपर यंत्रको उघाड ऊपर लगे हुए रसकपूरको निकाललेवे और उसको सौ १०० वैंगनोंमें एक २ कर भुरता करे तो वह शुद्ध समस्त रोगोंका नाशक बल बुद्धिका वर्धक अत्यन्त गुणवान् होताहै । जो कमल तुल्य नेत्रवाला मनुष्य कस्तूरी, केसर, चंदन, लौंग इनके साथ पारदसे उत्पन्न हुए रसकपूरको खाताहै वह उपद्रवयुक्त फिरंग रोग (आतशक) से विजय पाता है ॥ अग्निकी दीप्ति वीर्य बल और पुष्टिको शीघ्र ही प्राप्त होताहै और अनेक स्त्रियोंसे रमण करताहै । हे प्यारी ! मैंनेभी आजही रसकपूर खायाहै सो तू मेरे साथ रमण कर ॥ ४३-४९ ॥

अन्यच्च ।

यंत्रे सुसिद्धे डमरूसमाख्ये निधाय सूतस्य पलानि पंच । वल्मीकमृत्स्नाखटिकेष्टिकाणां सगैरिकाणां तुवरीयुतानाम् ॥ ५० ॥ ससैंधवानां समभागिकानां चूर्णाढकं चोपरितो निदध्यात् । अम्लेन दध्ना महिषीभवेन पिष्टं रसोनस्य शरावमेकम् ॥ ५१ ॥ समक्रमेणात्र निधाय खण्डैराच्छादयेत्खर्परजैर्विसन्धिः ॥ चूर्णप्रलिप्तोदरमूर्द्धभाण्डं संस्थाप्य संमुद्रय दृढं सुचुल्ल्याम् ॥ ५२ ॥ प्रज्वालयेद्वाह्निमधः क्रमेण संस्थाप्य यंत्रोपरि वस्त्रमार्द्रम् ॥ वह्निं प्रदद्यादिनषट्कमत्र तत्स्वांगशीतं परिगृह्य बुद्ध्या ॥ ५३ ॥ तद्द्रोणपुष्पीपयसा प्रपिष्टं कूप्यां निदध्यान्नवसादरं च । कर्षप्रमाणं प्रहरत्रयं च वह्निं प्रदद्यादथ शीतलांगीम् ॥ ५४ ॥ निष्कास्य कूपीं सिकताख्ययंत्रादास्फोटच कण्ठस्थमसुं प्रगृह्यात् । कर्पूरनामा रसनायकोयं वल्लः पुराणेन गुडेन भक्तः ॥ ५५ ॥ निर्वातभाजा सरुजा च पथ्यशीलेन कुष्ठामयनाशनः स्यात् ॥ फिरंगकरिकेसरी सकलकुष्ठदावानलोऽखिलव्रणविनाशकृद्व्रणजगर्तपूर्तिप्रदः । सुवर्णसमवर्णकृद्बलहुताशतेजस्करः समस्तगदतस्करो रसपतिः स कर्पूरकः ॥ ५६ ॥ (योगतरङ्गिणी.)

अर्थ-जगत् प्रसिद्ध डमरूयंत्रमें पांच पल पारदको रख कर ऊपरसे बमईकी माटी, खडिया, ईंटका चूरा, गेरू, फिटकिरी, सैंधव सम भाग लिएहुये इन सबका चार सेर चूर्ण लेकर रख देवे फिर ऊपरसे भैंसके खट्टे दहीसे प्याजको पीस कर अनुमान पावभरके रखदेवे और उसपर सीधे सीधे खिपरोंको रक्खे कि जिससे सन्धि न रहै फिर ऊपरकी हांडीके भीतरके तलेमें चूनेसे पोतकर दोनों हांडीके मुखको मिलाय अच्छी प्रकार कपरोटी करदेवे चूल्हेपर चढाय और ऊपरकी हांडीपर गीला वस्त्र रख मन्द, मध्य और तीक्ष्ण क्रमसे छः दिनरात बराबर आंच लगावे और अग्निके अपने आप शीतल होनेपर बुद्धिमानीसे निकाललेवे, इसके पश्चात् द्रोणपुष्पी अर्थात् गोमाके रससे काचकी शीशीको भर एक तोला नवसादर और पूर्वोक्त पारद भस्मको डाल देवे और सिकतायंत्र अर्थात् बालुकायंत्रसे शीशीको निकाल और फोडकर गलेमें चिपटे हुए इस रसको निकाल लेवे तो यह रसकपूर प्रस्तुत होजायगा जो रोगी निर्वात स्थानमें रहकर पथ्य करता हुआ तीन रत्ती इसको पुराने गुडके संग सेवन करे तो कुष्ठ आदिरोगोंका नाश होताहै । तथा यह फिरंगरूपी हाथीके मारनेके वास्ते सिंह, समस्त कोढरूप वनके जलानेके लिये अग्नि, समस्त व्रणोंको नाशके करनेवाला, घावको भरनेवाला तथा शरीरको सुवर्णके तुल्य करनेवाला, अग्निके समान तेजका कर्ता और समस्तरोगोंको चुरानेवाला यह सम्पूर्ण रसोंका पति रसकपूर है ॥ ५०-५६ ॥

अन्यच्च ।

गैरिकतुवरीखटिकासैंधवगडकजं रजः कुडवम् ॥ प्रत्येकं दृढहंड्यामाधाय तस्योपरीशजः स्थाप्यः ॥ ५७ ॥ कुडवमितोथ तदूर्द्धं देया हंडी तदास्य पातमुखी ॥ अथ तत्सन्धौ मुद्रां कृत्वा तदधो हुताशनो ज्वाल्यः ॥५८॥ अर्भणषट्कप्रमितैर्दारुभिरतुनातिदुर्बलस्थूलैः ॥ अग्निं क्रमेण दद्याद्गुरुदर्शितवर्त्मना द्युनिशम् ॥ ५९ ॥ उत्तार्य च तद्यंत्रवराद्युक्त्या कर्पूरसन्निभं सूतम्॥ आदाय काचकुम्भे निधाय नवसादरं दद्यात् ॥ ६० ॥ संमुद्य चाथ काष्ठैर्धर्मणसम्मितैः पचेच्चुल्ल्याम्॥ चुल्ल्यां डमरुकमध्यं वितस्तिचतुरंगुलावकाशं तु ॥ ६१ ॥ कर्तव्यं क्रमदहनं तदधः प्रज्वालयेन्मध्यम्। शशिधवलमुपरिलग्नं युक्त्या संगृह्य रक्षयेद्यत्नात् ॥ ६२ ॥ वल्लं वा वल्लार्धं जीर्णेन गुडेन रोगिणे दद्यात् । दुग्धोदनं तु पथ्यं देयं तस्मै च ताम्बूलम् ॥ हरति समस्तान्रोगान्कर्पूराख्यो रसो नृणाम् ॥ ६३ ॥ फिरंगगजकेसरी सकलकुष्ठदावानलोऽखिलव्रणविनाशकृद्व्रणजगर्तपूर्तिप्रदः । सुवर्णसमवर्णकृद्बलहुताशतेजस्करः समस्तग-

दतस्करो रसपतिः स कर्पूरकः ॥ ६४ ॥ (योगतरङ्गिणी, बृ. योग., र. रा. शं., र. सा. प.)

अर्थ-गेरू, फिटकरी, खडिया, सैंधानोंन, साम्हर इनमेंसे प्रत्येकका एक २ कुडव लेवे इसमेंसे आधे चूर्णको हांडीमें बिछाकर ऊपर एक कुडव अर्थात् आध सेर पारा रक्खे और बचे हुए चूरेको ऊपर रख देवे फिर दूसरी हांडीके मुखसे मुखको मिलाकर कपरोटी करके सन्धि बन्द करदेवे और नीचेसे न मोटी फटी हुई और न पतली कटी हुई ऐसी छः ६ मन लकडीनसे गुरुके बताएहुये मन्द, मध्य और तीक्ष्ण क्रमसे अग्नि देवे यह अग्नि दिनरात बराबर देनी । तदनन्तर यंत्रको उतार और युक्तिसे रसकपूरको निकाल काचकी आतशी शीशीमें भर कर पारेसे चतुर्थांश नवसादर डालदेवे और वज्रमुद्रा देकर डेढ मन लकडीसे चूल्हेपर पकावे चुल्हे और हांडीकी बीचमें एक बालिश्तका फासला हो और मंद, मध्य, तीक्ष्ण क्रमसे अग्नि देनी चाहिये तो चंद्रमाके समान श्वेत शीशीके गलेमें लगेहुए रसकपूरको निकाल अच्छीतरह काचकी शीशीमें भर कर रखदेवे फिर उसमेंसे तीन रत्ती या डेढ रत्ती निकाल पुराने गुडके साथ रोगीको देवे और ऊपरसे दूध भात खिलाकर पान खिलादेवे तो यह रसकपूर मनुष्योंके समस्त रोगोंको हरताहै और फल पूर्वोक्त रसकपूरके समान जानना ॥ ५७-६४ ॥

अन्यच्च ।

पिष्टं पांशुपटुप्रगाढममलं वज्र्यम्बुना नैकशः सूतं धातुगतं खटीकवलितं तं सम्पुटे रोधयेत ॥ अन्तस्थं लवणस्य तस्य च तले प्रज्वाल्य वह्निं हठाद्धस्रं ग्राह्यमथेन्दुकुन्दधवलं भस्मोपरिस्थं शनैः ॥ ६५ ॥ तद्वल्लद्वितयं लवंगसहितं प्रातः प्रभुक्तं नृणामूर्ध्वं रेचयति द्वियाममसकृत्पेयं जलं शीतलम् ॥ एतद्धन्ति च वत्सरावधि विषं षाण्मासिकं मासिकं शैलोत्थं गरलं मृगेन्द्रकुटिलोद्भूतं च तात्कालिकम् ॥ ६६ ॥ (रसमञ्जरी., यो. त., रसेन्द्रसा., र. रा. सुं.)

अर्थ-रेहवां नोंन और साम्हर तथा पारेको थूहरके दूधमें पीस लोहेके पात्रमें रख खडिया माटीसे सन्धिलेप कर लवणयंत्रमें रख नीचेसे तीक्ष्ण एक दिनरात अग्नि लगावे तो सम्पुटमें स्थित भस्मके ऊपर चन्द्रमा तथा कुंदके समान लगीहुई भस्मको धीरे २ निकाललेवे। उसमेंसे ६ छः रत्ती लौंगके साथ प्रातःकाल खावे तो दो प्रहरतक वमन होवे तदनन्तर शीतजल पीवे तो यह रस सालभरके छः महीनेके, तीन मासके और एक मासके विषको दूर करताहै पर्वतीय विष तथा सिंहके नखोंका विष जो कि शीघ्र उत्पन्न हुआ हो तत्काल नाश करताहै ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

अन्यच्च ।

पक्वेष्टिका च सौराष्ट्री वल्मीकस्यापि मृत्तिका ॥ सैंधवं गैरिकं चेति निर्दिष्टाः पंच मृत्तिकाः ॥ ६७ ॥ ताभिः संमर्द्य बहुशः सूतमेकीकृतं क्षिपेत् ॥ मृत्स्थाल्यां खर्पराद्रुद्धा डमरूयंत्रगं पचेत् ॥ ६८ ॥ ऊर्ध्वलग्नश्च यः सूतः अधस्तात्प्रच्युतश्च यः॥ तं गृहीत्वा पुनस्तद्वत्ताभिरेव विमर्दयेत् ॥ काचकूप्यां क्षिपेद्रुद्धा वालुकायंत्रगं पचेत् ॥ ॥ ६९ ॥ एवं वारत्रयं पक्वः सिद्धो भवति पारदः ॥ न कुर्यादास्यपाकादीन् रसः कर्पूरसंज्ञकः । भुक्तः करोत्यभीष्टानि योज्यः सर्वत्र कर्मसु ॥ ७० ॥ (रसमानस.)

अर्थ-पकी हुई ईंटका चूरा, फिटकिरी, बमईकी माटी, सैंधानोंन, गेरू यह पांच प्रकारकी माटी कहीहै । इनसे पारदको खूब मर्दन कर एकरूप करलेवे फिर मिट्टीकी हांडीमें रख और आस पास खिपरे रख ऊपरसे दूसरी हांडीका मुख लगाय कपरोटी देकर चार प्रहरकी आंचदेवे और हांडीपर गीला कपडा रक्खे तदनन्तर ऊपर लगे हुए या नीचे गिरेहुए पारेको निकाल लेवे फिर इसी पारेको काचकी शीशीमें भर मुखमुद्रा दे बालुकायंत्रमें पकावे इस प्रकार तीन बार पकावे तो पारद सिद्ध होताहै और मुखपाकको भी नहीं करताहै तथा खायाहुआ यह रसकपूर सब कर्मोंमें प्रयोग करनेयोग्य मन वांछित फलको प्राप्त करताहै ॥ ६७-७० ॥

रसकपूरविधि ।

पारो गंधक अरु फटकरी।ले सोध्यो चारों सम करी ॥ खररि ग्वारसों कजरी करे। मुद्राकर चूल्हेपै धरे ॥ आग देउ द्वै दिन द्वै राति। ऊपर लगै चंद्रकी भांति ॥ तब सो लेहु खरलिजै ग्वारि। अग्नि वालुका दे जाम चारि ॥ उड लागै कपूर रस होय। इह विधि गुनी कीजिये लोय ॥ चित्र रोगते यों गरिजाय । निबरेसो मंडलभर खाय ॥ मंडल बाहिरी दादुन घात । ते छूटे मंडलके खात ॥ अरु जेते ये रक्तविकार। याके खाये जात असार॥ (रससागर बडा.)

सर्वरोगहरी कर्पूरक्रिया ।

मार्कवाम्बुसितसैंधवमिश्रः कूपिकोदरगतः सिकतायाम्॥पाचितो यदि मुहुर्मुहुरित्थं बन्धमिच्छति तदैष रसःसः ॥ ७१॥ (रसेन्द्रचिन्तामणि.)

अर्थ-कुकुरभांगरेका रस और सैंधेनोंनके साथ पीस और काचकी शीशीमें भर वालुकायंत्रमें वार २ पचावे तो पारद बंधनको प्राप्त होताहै यदि शुद्ध पारद न मिलसके तो सिंगरफ ही मिलाना चाहिए, प्रथम गुडकी पाल बांधकर वीचमें हिंगुलको रख ऊपरसे नोंनको भरदेवे॥७१॥

खोटबद्ध रसकपूर ।

शुद्धसूतसमं तुत्थं घनक्काथेन सप्तधा । भावयित्वा न्यसेत्कूप्यां मुखे मुद्रां च कारयेत्॥ ॥ ७२ ॥ बालुकायंत्रमध्ये तु यामार्धं ज्वालयेदधः॥ रसकर्पूरविख्यातः खोटबद्धो भवेद्रसः ॥ ७३ ॥ (योगतरङ्गिणी.)

अर्थ-शुद्ध पारदके समान शुद्ध तूतियाको लेकर नागरमोथेके काथसे सात वार भावना देवे फिर काचकी शीशीमें भर मुखमुद्रा करके वालुकायंत्रमें डेढ प्रहरतक पकावे तो यह खोटवद्ध रस कपूर सिद्ध होजायगा ॥७२॥७३॥

रसकपूरसेवनविधि ।

लिख्यतेऽस्य ततः सम्यक् प्राशने विधिरुत्तमः ॥ अनेन विधिना खादन् मुखपाकं न विन्दति ॥ ७४ ॥ गोधूमचूर्णं सन्नीय विदध्यात्सूक्ष्मकूपिकाम् ॥ तन्मध्ये निक्षिपेत्सूतं चतुर्गुंजमितं भिषक् ॥ ७५ ॥ ततस्तद्गुटिकां कुर्याद्यथा नो दृश्यते बहिः ॥ सूक्ष्मचूर्णं लवंगस्य तां वटीमवधूलयेत्॥७६॥ दन्तस्पर्शो यथा न स्यात्तथा तामम्भसा गिलेत ॥ ताम्बूलं भक्षयेत्पश्चाच्छाकाम्ललवणं त्यजेत ॥ श्रममातपमध्वानं विशेषात्स्त्रीनिषेवणम् ॥ ७७ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-अब रसकपूरके भक्षणके लिये उत्तम विधिको वर्णन करतेहैं । इस प्रकारसे खाताहुआ मनुष्य मुखपाकको प्राप्त नहीं होताहै । प्रथम गेहूंके चूनको मांडकर लोई बनालेवे और उसको शीशी बनाकर चार रत्ती (कलियुगमें १ रत्ती) रसकपूर भरदेवे फिर गोली बनाय लौंगके चूरेमें लपेट लेवे जिस प्रकार दांत न लगे इस प्रकार जलके सहारे निगलजावे और ऊपरसे पान खालेवे शाक, खटाई, नोंन, परिश्रम, घाम तथा रास्तेका चलना और विशेषकर स्त्रीसंगको छोडदेवे ॥ ७४-७७ ॥

विधिहीन सेवित रसकपूरके दोष।

सेवितोऽविधिना कुष्ठं सन्धिवातं कफादिकम् । रसः कर्पूरकः कुर्यात्तस्माद्यत्नेन सेवयेत ॥ ७८ ॥ (अनुपानतरंगिणी, र. रा. सुं.)

अर्थ-विधि रहित सेवन कियाहुआ रसकपूर कोढ गठिया और कफ आदि अनेक रोगोंको करताहै इस लिये अत्यन्त यत्नके साथ रसकपूरको सेवन करे ॥ ७८ ॥

रसकपूरदोषनिवारण ।

महिषीशकृतो नीरं धान्याकं वासितायुतम् ॥ पिबन्नीरेण मुक्तः स्याद्रसकर्पूरजैर्गदैः ॥ ७९ ॥ (अनुपानतरंगिणी, र. रा. सुं.)

अर्थ-मिश्रीसहित भैंसके गोवरका रस अथवा धनियाँ इनको पानीमें घोटकर पीवे तो रसकपूरके दोषसे उत्पन्न हुए रोग दूर होतेहैं ॥ ७९ ॥

सगन्धमूर्च्छन प्रकरण ।

गन्धकेन रसं प्राज्ञः सुदृढं मर्दयेद्भिषक् ॥ कज्जलाभो यदा सूतो विहाय घनचापलम् ॥ ८० ॥ दृश्यतेऽसौ तदा ज्ञेयो मूर्च्छितो रसकोविदैः ॥ असौ रोगचयं हन्यादनुपानस्य योगतः ॥ ८१ ॥ (रसेन्द्रसारसंग्रह.)

अर्थ-विद्वान् वैद्य शुद्ध गंधकके साथ खूब मर्दन करे जब कि पारद घनता और चपलताको छोड कज्जलके समान दीखने लगे तब रसायन शास्त्रके ज्ञाताओंको जानना चाहिये कि पारद मूर्च्छित होगया है और यह पारद अपने अपने अनुपानके साथ अनेक रोगोंका नाश करताहै ॥ ८० ॥ ८१ ॥

अन्यच्च ।

शुद्धं रसं गन्धकं च समं सम्मर्दयेद्दिनम् ॥ निश्चन्द्रं कज्जलीभूतं ततो योगेषु योजयेत् ॥ ८२ ॥ (आयुर्वेदविज्ञान.)

अर्थ-शुद्ध पारद और गंधकको समान भाग लेकर एक दिवसतक मर्दन करे जब कि पारद चमकरहित कज्जलके समान होजावे तब उस मूर्च्छित पारदको प्रयोगोंमें लावे ॥ ८२ ॥

अन्यच्च ।

सूतं गंधकसंयुक्तं कुमारीरसमर्दितम्॥कृष्णवर्णं भवेद्भस्म देवानामपि दुर्लभम् ॥ ८३ ॥ (रसराजसुन्दर., नि. र.)

अर्थ-गंधकसहित पारदको घीगुवारके रसमें घोटे तो देवताओंको भी दुर्लभ कृष्णवर्ण पारदकी भस्म (कज्जली) होतीहै ॥ ८३ ॥

अन्यच्च ।

शुद्धं सूतं तथा गन्धं खल्वे तावद्विमर्दयेत्॥ सूतं न दृश्यते यावत्किन्तु कज्जलवद्भवेत्॥ ॥ ८४ ॥ एषा कज्जलिका ख्याता बृंहिणी वीर्यवर्द्धिनी । नानानुपानयोगेन सर्वव्याधिविनाशिनी॥ ८५ ॥(रससारपद्धति.)

अर्थ-शुद्ध पारद तथा गंधकको खरलमें डाल तबतक मर्दन करे कि जबतक कि पारद न दीख कर काजलके समान होजाय। यह कज्जली रसायन, वीर्यके बढानेवाली, अनेक अनुपानोंके साथ समस्त रोगोंको नाश करनेवाली होतीहै ॥ ८४ ॥ ८५ ॥

अन्यच्च।

धुस्तूरकद्रवैर्मर्द्यं दिनं गंधं ससूतकम् ॥ दिनैकमन्धमूषायां भूधरे मूर्च्छितो भवेत् ॥ ८६ ॥ (रसरत्नाकर.)

अर्थ-पारद तथा गंधकको धतूरेके रससे एक दिवसतक मर्दन करे फिर अन्धमूषामें रख भूधरयंत्रमें पकावे तो पारद मूर्च्छित होताहै ॥ ८६ ॥

अन्यच्च।

शुद्धसूतं द्विधा गंधं सूतार्धं सैंधवं क्षिपेत् ॥ द्रवैः सितजयन्त्याश्च मर्दयेद्दिवसत्रयम् ॥ ८७ ॥ कृत्वा गोलं च संशोष्य क्षिप्त्वा मूषां निरुन्धयेत्। शोषयित्वा धमेत्किंचित्सुततां तां जले क्षिपेत् ॥ ८८ ॥ तस्माद्रसं समुद्धृत्य त्रिकंटरसभावितम् ॥ योजयेत्सर्वरोगेषु धमेद्वा भूधरे पचेत् ॥ ८९ ॥ (रसरत्नाकर.)

अर्थ-शुद्ध पारद १ भाग, शुद्ध गंधक दो भाग, सैंधव आधा भाग इन सबको सफेद फूलकी जयन्तीके रससे तीन दिवसतक मर्दन करे और उसका गोला बनाकर सुखालेवे और मूषामें रख मुखमुद्रा कर सुखावे फिर कोयलोंमें रख कुछ धोंके जब खूब तपजावे तब निकाल पानीमें डाल देवे, तदनन्तर मूषामेंसे इसको निकाल गोखरूके रसकी भावना देवे और फिर समस्त कामोंमें लावे इस क्रियामें मूषाको कोयलोंमें धोंके अथवा भूधरयंत्रमें रख कर पकावे ॥ ८७-८९ ॥

अन्यच्च।

रसार्धं गन्धकं मर्द्यं घृतैर्युक्तं तु गोलकम् ॥ कृत्वा तं बंधयेद्वस्त्रे दोलायंत्रगतं पचेत् ॥ ९० ॥ गोमूत्रान्तः कृतं यामं नरमूत्रैर्दिनत्रयम् ॥ शोषयेच्च पुनर्वस्त्रे बद्धा वेष्टयं मृदा लिपेत् ॥ ९१ ॥ शुष्कं निरुन्ध्य मूषायां ततस्तुषाग्निना पचेत् ॥ ऊर्ध्वभागमधः कृत्वा अधोभागं च उर्द्धगम् ॥ ९२ ॥ इत्यादिपरिवर्तेन स्वेदयेद्दिवसत्रयम् ॥ पश्चादुद्धृत्य तं सूतं योगवाहं रुजापहम् ॥ ९३ ॥ (रसरत्नाकर.)

अर्थ-पारदसे आधा भाग गंधक लेकर घृतके संग घोटकर गोला बनावे और उसको कपडेमें बांध दोलायंत्रमें पकावे एक प्रहरतक गोमूत्रमें रक्खे फिर तीन दिनतक सेरेके जलके साथ घोटे और सुखाकर कपडेमें बांध कपरौटी करे फिर सुखाकर मूषामें रक्खे फिर तुषोंकी अग्निसे पकावे तदनन्तर दूसरी बार ऊपरके बासनको नीचा करे इस प्रकार उलट पलट कर तीन बार स्वेदन करे फिर उसमेंसे रसको निकाल कर समस्त रोगोंको नाश करनेके लिये प्रयोगोंमें लावे ॥ ९०-९३ ॥

पीतरस।

रसं गधं समं दत्त्वा हस्तिशुण्डीद्रवैर्दृढम् ॥ भूधात्रिकारसैर्मर्द्य दिनमेकं निरंतरम् ॥ ९४ ॥ विशुष्कं बालुकायंत्रे मूषायां सन्निरोधयेत् ॥ दिनमेकं पचेदग्नौ मन्दंमन्दं निशावधि ॥ ९५ ॥ एवं निष्पाद्यते पीतः सूतराजश्च गृह्यते ॥ क्षुद्बोधं कुरुते पूर्वमुद्रादीन् विनाशयेत् ॥ वातपित्तकफोद्भूतान्रोगान्सर्वान्व्यपोहति ॥ ९६ ॥ (आयुर्वेदविज्ञान.)

अर्थ-रस और गंधकको समान भाग लेकर हाथीशुंडीके रससे मर्दन करे फिर भूईआमलेके रससे एक दिवसतक मर्दन करे और सूखनेपर मूषामें रख एक दिनराततक धीरे २ बालुकायंत्रमें पकावे तो पीली रंगतका पारद भस्म होता है इसके सेवनसे प्रथम भूक लगे फिर उदर (पेट) के रोगोंको नाश करता है तथा वात, पित्त और कफसे उत्पन्न हुए रोगोंको दूर करता है ॥ ९४-९६ ॥

अन्यच्च।

मर्दयेद्रसगन्धौ च हस्तिशुण्डीद्रवैर्दिनम् ॥ भूधात्रिकारसैः पिष्ट्वा पर्यन्तं दिनसप्ततः ॥ ९७ ॥ विघृष्य बालुकायंत्रे मूषायां सन्निरोधयेत् ॥ दिनमेकं प्रदायाग्निं मन्दंमन्दं निशावधि ॥ ९८ ॥ एवं निष्पाद्यते शीतः पीतः सूतस्तु गृह्यते ॥ पर्णखण्डे न तद्गुंजां भक्षयेत्सततं हिताम् ॥ ९९ ॥ क्षुद्बोधं कुरुते पूर्वमुदराणि विनाशयेत् ॥ हृदयोत्साहजननः सुरूपतनयप्रदः ॥१००॥ बलप्रदः सदा देहे जरानाशनतत्परः ॥ ज्वराणां नाशने श्रेष्ठस्तद्वच्छ्री सुखिकारकः ॥ १०१ ॥ अङ्गभंगादिकं दोषं सर्वं नाशयति क्षणात् ॥ एतस्मान्नापरः सूतो रसात्सर्वाङ्गसुन्दरात ॥ १०२ ॥ (रसेन्द्रसारसंग्रह., र. रा. सुं.)

अर्थ-इसकी प्रक्रिया पूर्वोक्त पीतरस (सर्वांगसुन्दर) की प्रक्रियाके समान है अनुपानाविशेषके कारण भिन्न पाठ लिखागया है ॥ ९७-१०२ ॥

अन्यच्च।

रसगंधौ समौ कृत्वा हस्तिशुण्डीद्रवैर्भृशम् ॥ भूधात्रिकारसैस्तद्वत्पर्यन्तं दिनसप्तकम् ॥१०३॥ विघृष्य बालुकायंत्रे मूषायां विनिवेशयेत् ॥ दिनमेकं भवेदग्निर्मंदंमंदं

निशावधि१०४॥एवं निष्पाद्यते पीतः शीतः सूतः सुगृह्यते ॥ पर्णखण्डेन तद्गुंजा भक्ष्यते श्रूयतामिह ॥ १०५ ॥ क्षुद्बोधं कुरुते पूर्वमुदराणि विनाशयेत ॥ ज्वराणां नाशने श्रेष्ठस्तनुश्रीवृद्धिकारकः ॥ १०६ ॥ हृदयोत्साहजननः सुरूपतनयप्रदः ॥ बलप्रदः सदा देहे जरानाशनतत्परः ॥१०७ ॥ अंगभंगादिकं दोषं सर्वं नाशयति क्षणात्॥पुराणगुडयोगेन ज्वरनाशाय युज्यते ॥ १०८ ॥ अरुचौ सह पिप्पल्या समं मोचरसेन तम्॥ ग्रहण्यां तमतीसारे समं बिल्वेन शस्यते ॥ १०९ फलत्रकाथेन तं साकं पांडुरोगे नियुज्यते ॥ भार्ङ्गीकाथेन तं साकं कासे श्वासे प्रयोजयेत् ॥ एतस्मान्नापरः सूतो रसः सर्वाङ्गसुन्दरात् ॥ ११० ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-इसकी क्रिया पूर्वोक्त पीत रसके तुल्य समझना चाहिये परन्तु इसमें जो विशेष अनुपान दिये हैं इस वास्ते भिन्नही लिखा है, वे ये हैं कि पानके टुकडेके साथ खानेसे प्रथम क्षुधाको बढाकर उदर रोगोंका नाश करता है, ज्वरोंके नाश करनेमें श्रेष्ठ शरीरकी शोभाके बढानेवाला है, दिलको ताकत देता है, रूपवान् पुत्रका दाता, बलके देनेवाला और देहमें बुढापेका दूर करनेवाला है । तथा अंगभंग आदि दोषोंको शीघ्रही दूर करता है और पुराने गुडके साथ देनेसे पुराने ज्वरको नाश करता है, अरुचिरोगमें छोटी पीपलके साथ, संग्रहणीमें मोचरसके साथ और अतीसार (दस्तोंकी बीमारी) में बेलगिरीके साथ, त्रिफलाके काथके संग पांडुरोगको और भारंगीके काथके साथ कास श्वासको नाश करता है इस सर्वांग सुन्दर रससे परे और कोई रस उत्तम नहीं है ऐसा जानना चाहिये ॥ ॥ १०३-११० ॥

अन्यच्च ।

भूधात्रीहस्तिशुण्डिभ्यां रसं गन्धं च मर्दयेत् ॥ काचकूप्यां चतुर्यामं पक्वपीतो रसो भवेत् ॥ १११ ॥ (रसराजसुन्दर.)

अर्थ-भूईआमला और हाथीशुंडीके रससे पारद तथा गंधककी कजलीको घोटकर काचकी शीशीमें चार प्रहरतक पकावे तो पीत रंगका रस होता है ॥ १११ ॥

सम्मति-मेरी समझमें सर्वांगसुन्दर यानी पीतरसकी अधूरी क्रिया है क्योंकि ऊपर कहेहुए पीतरस अर्थात् सर्वांग सुन्दरकी क्रिया यथावत् मिलती है ॥

रससिन्दूरविधि ।

पक्वमूषागतं सूतं गंधकं चाधरोत्तरम् ॥तुल्यं सुचूर्णितं कृत्वा काकमाचीद्रवं पुनः ॥ ॥ ११२ ॥ द्वाभ्यां चतुर्गुणं देयं द्रवमूषां निरुध्य च ॥ पाचयेद्वालुकायंत्रे क्रमवृद्धाग्निना दिनम् ॥ आरक्तं जायते भस्म सर्वयोगेषु योजयेत् ॥ ११३ ॥ (रसमंजरी.)

अर्थ-प्रथम पारदके समान गंधकका चूरा कर पक्व मूषामें आधा नीचे तथा आधा ऊपर और बीचमें पारदको रख कर पारे गंधकसे दूना मकोय (काकमाची) का रस भरके मुखपर मुद्रा करदेवे फिर बालुकायंत्रमें मंद, मध्य और तीक्ष्ण क्रमसे एक दिनतक अग्नि लगावे तो लाल रंगकी भस्म होती है और उसको समस्त कामोंमें लावे ॥ ११२॥११३ ॥

अन्यच्च ।

गंधकेन समः सूतो निर्गुंडीरसमर्दितः ॥ पाचितो वालुकायंत्रे रक्तं भस्म प्रजायते ॥ ॥ ११४ ॥ (रसमंजरी.)

अर्थ-गंधकके तुल्य भाग पारदको ले कजली करे फिर निर्गुंडीके रससे मर्दन कर वालुकायंत्रमें पकावे तो पारदकी भस्म लाल वर्णकी होगी ॥ ११४ ॥

अन्यप्रकार ।

सूतार्द्धं गंधकं शुद्धं माक्षिकोद्भूतसत्त्वकम् ॥ गंधतुल्यं विमर्द्याथ दिनं निर्गुंडिकाद्रवैः ॥ ॥ ११५ ॥ स्थापयेद्वालुकायंत्रे काचकूप्यां विपाचयेत् ॥ अंधमूषागतं वाथ वालुकायंत्रके दिनम् ॥ पक्वं संजायते भस्म दाडिमीकुसुमोपमम् ॥ ११६ ॥ (रसमंजरी.)

अर्थ-पारद एक भाग स्वर्णमाक्षिकसत्त्व एक भाग तथा गंधक आधा भाग इन सबको निर्गुंडीके रससे एक दिनतक खरल करे फिर काचकी शीशीमें भर वालुकायंत्रमें अथवा अन्धमूषामें भर कर वालुकायंत्रमें पकावे तो पारदकी भस्म अनारके फूलके समान लाल होजाती है॥११५॥११६॥

अन्यच्च ।

रसाद्विगुणितं गंधं समं वा वालुकाभिधे ॥ जायते रससिन्दूरोऽग्निना द्वादशयामतः ॥ ॥ ११७ ॥ पलमात्ररसस्येयं क्रियोक्ता बहुधा मया । अतः परं प्रकर्तव्यं सन्नकेन विवर्जनम् ॥ ११८ ॥ (रसमानस.)

अर्थ-पारेसे दूना अथवा सम भाग गंधकको लेकर वालुकायंत्रमें बारह प्रहरतक पकावे तो रससिन्दूर बनता है । यह क्रिया हमने एक पल पारेकी कही है यदि अधिक पारदका रससिन्दूर बनाना होवे तो अधिक अग्निका प्रयोग करे ॥ ११७॥११८ ॥

अन्यच्च ।

शुद्धसूतं समं गंधं कज्जलीं कारयेत्तयोः ॥ काचकूप्यां सप्तमृद्भिस्तन्मध्ये निक्षिपेद्रसम् ॥ ११९ ॥ धारयेत्सिकतायंत्रे वह्निं प्रज्वालयेच्छनैः ॥ पुनः शलाकया कुर्याद्यामषोडशमानतः ॥ १२० ॥ स्वांगशीतं समुद्धृत्य सूतमाणिक्यवद्रसम् ॥ गंधकं च पुनर्दद्यात्कुर्यात्षड्गुणजारणम् ॥ १२१ ॥ जायते भस्म सूताख्यं सर्वयोगोपकारकम् ॥ जायते सिद्धदो नूनं सर्वप्रत्ययकारकम् ॥ ॥ १२२ ॥ (निघण्टुरत्नाकर.)

अथ–शुद्ध पारद तथा गंधकको समान भाग लेकर उन दोनोंकी कजली करे और सात बार कपरोटी कीहुई काचकी शीशीमें भरदेवे उसको बालुकायंत्रमें रख धीरे २ आंच लगावे, गंधकसे शीशीका मुख रुकनेपर लोहेकी शलाकासे खोलदे, इस प्रकार सोलह यामतक अग्नि लगावे और स्वांगशीतल होनेपर रस माणिक्यके समान निकालके फिर गंधक देकर जारण करे इस प्रकार षड्गुणगंधक जारण करे तो पारदभस्म (रससिन्दूर) सर्वयोगोंके उपकारी प्रत्यक्ष फलका दाता सिद्ध होगा ॥ ॥ ११९–१२२ ॥

रससिन्दूर बनानेकी तरकीब (उर्दू)।

सिन्दूररस बनानेकी तरकीब यह है कि सीमाव मुसफ्फा बीस दाम पुख्तः (३ तोले ५ माशे) गंधक मुसफ्फा बीस दाम पुख्तः लेकर बारह पहरतक शीरह घीग्वारमें खरल करे और शीशीको गिलहिकमत करके मुहपर मुहर लगादे और वालूजंतरमें दस प्रहरतक नरम और गरम आंच दे जो सीमाव गर्दनमें शीशीके जमा हो उसको निकालले, आंच नरम व गरमसे मुराद यह है कि अचल छः प्रहरतक नरम आंच हो बाद अजाँ रफ्तः रफ्तः तेज आंच करके आतिशामियानः (भाप आंगन) करे यह रस अनवाइव अकसाम जजाम व फसाद खून और तपेदिकको मुफीद है बारहा इस नुसखेका तजरुबः हुआहै । (सुफहा २४५ अंकलीमियाँ) ॥

सिन्दूररस ।

शुद्धसूतं तदर्धं तु शुद्धगंधकमेव हि ॥ तयोः कज्जलिकां कुर्यादिनमेकं विमर्दयेत् ॥ ॥ १२३ ॥ मृत्कर्पटैर्विलिप्तायां कूप्यां कज्जलिकां क्षिपेत् । वालुकायंत्रगां पश्चाद्यावद्दिनचतुष्टयम् ॥ गृह्णीयादूर्ध्वसंलग्नं सिन्दूरसदृशं रसम् ॥ १२४ ॥ (रसराजशंकर., र. सा. प., नि. र.)

अर्थ–शुद्ध पारदके अर्ध भाग गंधकको ले कजली करे फिर कपरोटी कीहुई उस शीशीमें कजलीको भर वालुकायंत्रमें चार दिनरात पकावे फिर ऊपर लगेहुए सिन्दूरके समान रसको ग्रहण कर लेवे ॥ १२३ ॥ १२४ ॥

अन्यच्च ।

शुद्धं गन्धं रसाच्छुद्धादर्धभागं विमिश्रयेत् ॥ तयोः कज्जलिकां कृत्वा काचकूप्यां विनिक्षिपेत ॥ १२५ ॥ मृद्वस्त्रैः कुट्टितैः कूपीं लेपयेच्छोषयेत्ततः ॥ स्थापयेद्वालुकायंत्रे वह्निं दद्याच्छनैःशनैः ॥ १२६ ॥ चतुर्घस्रावधिं पश्चात् स्वांगशीतां हि कूपिकाम् । स्फोटयेदूर्ध्वसंलग्नं सिन्दूराह्वं रसं नयेत् ॥ ॥ १२७॥ (अनुपानतरंगिणी.)

अर्थ–शुद्ध कियेहुए पारदसे आधा भाग शुद्ध गन्धकको लेकर उन दोनोंकी कजली करे फिर उस कजलीको कपडा और माटीको एक साथ कूट कर लेप कीहुई काचकी शीशीमें भरदेवे फिर वालुकायंत्रमें रख धीरे धीरे अर्थात् दो दो लकडीकी आंच चार दिवसतक देवे और स्वांगशीतल होनेपर शीशीको तोड ऊपर लगेहुए सिन्दूर नामके रसको निकाललेवे ॥ १२५–१२७ ॥

अन्यच्च ।

शुद्धसूतस्य गृह्णीयाद्भिषग्भागचतुष्टयम् ॥ शुद्धगन्धस्य भागैकं तावत्कृत्रिमगंधकम् ॥ अथवा पारदस्यार्धं शुद्धगंधकमेव हि १२८॥ तयोः कज्जलिकां कृत्वा दिनमेकं विमर्दयेत् ॥ १२९ ॥ मृत्तिकां वाससा सार्धं कुट्टयेदतियत्नतः ॥ तथा वारत्रयं सम्यक्काचकूपीं प्रलेपयेत् ॥ १३० ॥ मृत्तिकां शोषयित्वा तु कूप्यां कज्जलिकां क्षिपेत् ॥ तां कूपीं वालुकायंत्रे स्थापयित्वा रसं पचेत् ॥ ॥ १३१ ॥ अग्निं निरंतरं दद्याद्यावद्दिनचतुष्टयम् ॥ गृह्णीयादूर्ध्वसंलग्नं सिन्दूरसदृशं रसम् ॥ १३२ ॥ (वैद्यकल्पद्रुम, आयुर्वेदविज्ञान.)

अर्थ–शुद्ध कियाहुआ पारा ४ चार भाग, शुद्ध गंधक एक भाग, गंधक कृत्रिम (नोंनिया) एक भाग अथवा शुद्ध आमलासारही दो भाग लेना चाहिये फिर उन दोनोंकी कजली कर एक दिवसतक मर्दन करे । कपडेके साथ माटी (खडिया) को खूब पीसे और उसीसे शीशीपर तीन बार कपरोटी करे फिर उस शीशीमें कजलीको भरे तदनन्तर शीशीको वालुकायंत्रमें रख निरन्तर चार दिवसतक धीरे २ आंच लगावे स्वांग शीतल होनेपर ऊपर लगेहुए रससिन्दूरको उतार लेवे ॥ १२८–१३२ ॥

अन्यच्च ।

सूतकं च समादाय द्विगुणं गंधकं क्षिपेत् ।

ततश्च कज्जलीं कृत्वा काचकूप्यां निधापयेत् ॥ १३३ ॥ मृन्मयीं मुद्रिकां दत्त्वा नन्दसंख्याप्रमाणतः॥पृथग्भाण्डे तु संस्थाप्य वालुकार्द्धप्रमाणतः ॥ १३४ ॥ मध्ये च कूपिकां कृत्वा मुखे मुद्रां च कारयेत् ॥ द्वात्रिंशद्याममग्निश्च स्वांगशीतोऽवतार्यते ॥ १३५ ॥ रससिन्दूरनामायं भास्करेण विनिर्मितः ॥ गुंजायुग्मं सदा ग्राह्यं नागवल्लीदलैः सह ॥ १३६॥ (योगचिन्तामणि., निघण्टुरत्नाकर.)

अर्थ-एक भाग पारद तथा दो भाग गन्धक लेकर खरलमें डाल कजली करे फिर उस कजलीको काचकी शीशीमें भरकर शीशीपर नौ कपरोटी करे और वालुकायंत्रमें रख मुखपर मुद्रा करदेवे फिर बत्तीस प्रहरतक अग्नि लगावे जब अपने आप शीशी ठंढी हो जाय तब उतार लेवे तो यह रससिन्दूर नामका रस प्रस्तुत होता है इसको भास्कर नामके पंडितने बनाया था, दो रत्ती रससिन्दूरको पानके संग खावे तो अनेक गुणकर्त्ता होता है ॥ १३३-१३६ ॥

षड्गुणगन्धकजारण ।

हिंगुलोत्थरसं भागं षड्भागं शुद्धगन्धकम्॥ खल्वमध्ये विनिक्षिप्य कुमारीरसमर्दितम् ॥ १३७ ॥ काचकूप्यां विनिक्षिप्य बालुकायन्त्रगे पचेत् ॥ पाचयेत्सप्तरात्राणि सिन्दूरं भवति ध्रुवम् ॥ १३८ ॥ वल्लमात्रं प्रयुंजीत मधुना लेहयेत्परम् ॥ स्तम्भनं लिंगवृद्धिं च वीर्यवृद्धिं बलान्वितम्॥१३९॥ तेजस्त्वं पुष्टिकारित्वं महामत्तगजेन्द्रवत् ॥ षंढत्वं बन्ध्यारोगत्वमन्यादीन् सर्वरोगजित् ॥ १४० ॥ दिनमेकं शतस्त्रीणां रमते तृप्तिवीर्यवान् ॥ निरन्तरं मनोल्लासं रतिप्रेम्णा सनातनः ॥ १४१ ॥ शतानि पंच षट्केन रोगाणां नाशको भवेत् ॥ षड्गुणो गंधको नाम विश्वामित्रेण निर्म्मितः १४२॥ (रसराजसुन्दर., नि. र.)

अर्थ-हिंगुलसे निकालाहुआ पारद एक भाग, शुद्ध आमलासार गन्धक ६ छः भाग इन दोनोंको घीकुवारके रसमें घोट कपरोटी कीहुई काचकी आतशी शीशीमें भर बालुकायंत्रमें रख नीचेसे सात दिनरात बराबर आंच लगावे तो निश्चय रससिन्दूर बनेगा, फिर इसमेंसे तीन रत्ती शहदके संग खावे तो वीर्यके स्तम्भन, लिंगवृद्धि, वीर्यवृद्धि, तेज तथा मस्तहाथीके समान पुष्ट करता है और एकही दिनमें सौ स्त्रियोंसे रमण करता है । रोगोंको नाश करता है, यह षड्गुण नामका गंधक श्रीविश्वामित्रने कहा (अर्थात् यह षड्गुणगंधक जारित पारद है) ॥ ॥ १३७-१४२ ॥

अन्यच्च ।

पलमात्रं रसं शुद्धं तावन्मात्रं तु गंधकम् ॥ विधिवत्कज्जलीं कृत्वा न्यग्रोधांकुरवारिणा ॥ १४३ ॥ भावनात्रितयं दत्त्वा स्थालीमध्ये निधापयेत् ॥ विरच्य कवचीयंत्रं वालुकाभिः प्रपूरयेत् ॥ १४४ ॥ दद्यात्तदनुमन्दाग्निं भिषग्यामचतुष्टयम् ॥ जायते रससिन्दूरं तरुणादित्यसन्निभम् ॥ १४५ ॥ अनुपानविशेषेण करोति विविधान्गुणान् ॥ क्षयकुष्ठमरुत्प्लीहमेहघ्नं पाण्डुनाशनम् १४६ नागार्जुनेन कथितं योगानां योगमुत्तमम्॥ (योगरत्नाकर., रसमं., नि.र.,योगसार.)

अर्थ-एक पल शुद्ध पारद और उतनाही शुद्ध गन्धक इन दोनोंको विधिपूर्वक कजली कर बडजटाके काथकी तीन भावना देकर शीशीमें भर देवे और उसको वालुकायंत्रमें रख वैद्य चार प्रहरकी मन्दाग्नि देवे तो प्रातःकालकी ललिमाकी तरह रक्तवर्णका रस सिन्दूर बनता है । विशेष अनुपानके संग अनेक रोग क्षय, कोढ, वात, तिल्ली, प्रमेह और पाण्डु रोगको नाश करता है । यह योग समस्त योगोंमें उत्तम योग है ऐसा श्रीनागार्जुन महाराजने कहा है इसमें सन्देह नहीं है ॥ १४३-१४६ ॥

अन्यच्च ।

गंधकं धूमसारं च शुद्धं सूतं समं समम् ॥ यामैकं मर्दयेत्खल्वे काचकूप्यां निवेशयेत्॥ ॥ १४७ ॥ रुद्ध्वा द्वादशयामेषु वालुकायंत्रगं पचेत् ॥ स्फोटयेत्स्वांगशीतांतमूर्ध्वगं गंधकं त्यजेत् ॥ अधःस्थं मृतसूतं च सर्वयोगेषु योजयेत् ॥ १४८ ॥ (रसमंजरी., रसरत्नाकर.)

अर्थ-शुद्ध गंधक, भाडका धूआँ और शुद्ध पारद इन तीनोंको तुल्य भाग लेकर और एक प्रहरतक मर्दन कर काचकी शीशीमें भर देवे और मुखपर मुद्रा कर बालुका यंत्रमें बारह प्रहरतक पकावे स्वांग शीतल होनेपर शीशीको तोड ऊपर लगेहुए गंधकका परित्याग कर नीचेके रससिन्दूरको ग्रहण करे इसको फिर समस्त कामोंमें लावे ॥ ॥ १४७ ॥ १४८ ॥

अन्यच्च ।

गंधकं नवसारश्च शुद्धं सूतं समं त्रयम्॥यामैकं चूर्णयेत्खल्वे काचकूप्यां विनिक्षिपेत् ॥ ॥१४९॥रुद्ध्वा द्वादशयामांतं बालुकायंत्रगं पचेत ॥ स्फोटयेत्स्वांगशीतांतमूर्ध्वगं गंधकं त्यजेत् ॥ १५० ॥ रक्तभस्मा रसो योगवाही स्यात्सर्वरोगहृत ॥ १५१ ॥ (रसराजसुन्दर.)

अर्थ-इस पाठमें कही हुई क्रिया उपरोक्त रससिन्दूरकी क्रियासे अत्यन्त ही मिलीहुई है, केवल धूमसारके स्थानमें नवसारका पाठ है इस वास्ते अर्थ पूर्वके समान है ॥ ॥ १४९-१५१ ॥

अन्यच्च ।

कूपी सप्तमृदंशुकैः परिवृता शुष्कात्र गन्धेश्वरौ तुल्यौ तौ नवसारपादकलितौ संमर्द्य तस्यां न्यसेत् ॥ सा यंत्रे सिकताख्यके तलबिले पक्त्वार्कयामं हिमं भित्त्वा कुंकुमपिंजरं रसवरं भस्माददेद्वैद्यराट् ॥ १५२ ॥ पाके रुद्धं मुखं कूप्यां नवसारेण जायते ॥ ततः शलाकया कुर्यात्कूपिकानाशशान्तये ॥ १५३ ॥ अनेन विधिना पाका यावन्तोऽस्य भवन्ति हि॥ तावन्तोपि गुणोत्कर्षा जायन्ते रसभस्मनः ॥१५४॥ (र. रा. शं., र. सा. प., नि. र.)

अर्थ-आतशी शीशीपर सुखा २ कर सात कपरोटी करे फिर पारा एक भाग, गंधक एक भाग, पारदसे चतुर्थांश नौसादर इन तीनोंको घोटकर शीशीमें भरदेवे फिर एक हांडीके तलेमें छेद कर उस छेदपर दिवला रख कर कपरौटी कीहुई शीशी रक्खे फिर वालुकारेतसे भर कर बारह प्रहरतक निरन्तर अग्नि देवे शीतल होनेपर केसरके समान वर्णवाले रससिन्दूरको वैद्यराज इस तरह निकालले कि, जैसे उसमें काचका हिस्सा न जावे, यदि पाकके समय नौसादरसे शीशीका मुख बंद होजाय तो शीशीके भीतर वारवार लोहेकी सलाई गेरता रहै इस प्रकार जितने पाक इस पारदके हों उतना ही पारदमें अधिक गुण होताहै ॥ ॥ १५२-१५४ ॥

सम्मति-प्रत्येक वैद्यको ध्यान रखना चाहिये कि जब पारदमें गंधक जारण करे तब शुद्ध गन्धक तथा पारद लेकर कजली करे, फिर शीशीमें भर लेखानुसार आंच देवे, प्रथम ही पाकमें रससिन्दूर ही प्रस्तुत होजाताहै इस वास्ते पुनः जारणार्थ उस रससिन्दूरमेंसे हिंगुलके सदृश ही पारा निकाल लेवे, फिर निकलेहुए पारदके तुल्य ही गंधक लेकर जारण करे, इस प्रकार चिकित्साके लिये अर्थात् भक्षणके लिये षड्गुण गंधक जारण करे और रसायनके लिये जितने पाक होसकें अर्थात् जितने गुण गंधक जारण होसके उतना ही श्रेष्ठ गुणवान् पारा होताहै ॥

अन्यच्च ।

पारदं गन्धकं तुल्यं गंधार्द्धं नवसादरम् । कज्जलीं चित्रकक्काथैस्तथोन्मत्तदलाम्बुना ॥ १५५ ॥ कुमारीस्वरसैर्घस्त्रं पृथक्कृत्वा विमर्दयेत् ॥ काचकूप्यां विनिस्थाप्य लेपयेत्कूपिकां प्रिये॥ १५६ ॥ तद्विधानं प्रवक्ष्यामि तच्छृणुत्वं समाहिता ॥ खटिकां लोहकिट्टं च चूर्णयेद्वस्त्रगालितम् ॥ १५७ ॥ लोहकिट्टचतुर्थांशं चूर्णं गोधूमसम्भवम् ॥ दिनैकं मर्दयेत्सर्वं सवस्त्रं लेपयेच्च ताम्१५८॥ कूपिकां शोषयेत्पश्चाल्लेपयेच्छोषयेत्ततः ॥ सप्तवारं प्रलिप्यैवं शोषयेत्तां निधापयेत् ॥ १५९ ॥ वालुकायंत्रके दद्यादग्निं यामचतुष्टयम् ।स्वांगशीतां तु संस्फोटय चोर्ध्वलग्नं रसं नयेत् ॥ १६० ॥ सुरक्तं रससिन्दूरं ख्यातं वैद्यवरैः प्रिये ॥ अनुपानयुतं दत्तं रोगजालविनाशनम् ॥ १६१ ॥ (अनुपानतरङ्गिणी.)

अर्थ-पारद एक भाग गन्धक एक भाग और आधा भाग नवसादर इन तीनोंको खरलमें डाल चित्रकके काथसे या धतूरेके पत्तोंके रससे कजली करे फिर एक दिवसतक घीगुवारके रससे घोट काचकी शीशीमें भर शीशीपर कपरौटी करे हे प्यारी अब मैं कपरौटी करनेकी क्रियाको कहताहूं तुम सावधान होकर सुनो प्रथम खडिया लोहेकी कीट इनको पीस कर कपडछिन करे और लोहेकी कीटसे चौथाई गेहूंका चून मिलावे इन सबको एक दिन मर्दन कर कपडेके साथ शीशीपर लेपकर सुखावे इस प्रकार सात बार सुखा सुखाकर लेप करे तदनन्तर शीशीको वालुकायंत्रमें रख चार प्रहरकी आंच देवे स्वांग शीतल होनेपर शीशीको फोड ऊपर लगेहुए रसको निकाल लेवे हे प्यारी वैद्यलोग इस रक्तभस्मको रससिन्दूर कहतेहैं अनुपानके संग देनेसे यह समस्त रोगोंको नाश करताहै ॥ १५५-१६१ ॥

रससिन्दूर (उर्दू)

पारा गंधक बराबर नौसादर इनकी चौथाई लेकर लैमूंके अर्कमें पहरभर खरल करले फिर ककडीके अर्कमें एक प्रहर, सुर्ख कपासके अर्कमें एक पहर खरल करके आतिशी शीशीमें डालकर डाट लगादे और सात तह कपरमिट्टीकी चढाकर सुखावे फिर मिट्टीके कूंडेमें रेत छना हुआ भरके उसमें शीशा गाढदे । मगर मुंह शीशेका निकला रहे और उसके नीचे चार पहर धीमी और चार प्रहर कुछ तेज और चार पहर खूब तेज आंच करे बाद सर्द होनेके निकालले सुर्ख कुश्ता निहायत उमदा हरकामका होजायगा । इसको रससिंदूर कहते हैं, निहायत मुकव्वी है। (सुफहा खजानः कीमियां)

रससिन्दूर (उर्दू)।

पारा साफ गंधक बराबर, एककी चौथाई नौसादर सबको बराबर ले और सुर्ख कपास दोनोंके अर्कमें जुदा जुदा तीन रोज खरल करके सुखाके आतिशी शीशीमें भरके मुँह बंद करके सात तह कपरमिट्टीकी चढाकर वालूजंतरी कूंडका मजबूत ले और उसमें पिसाहुआ नमक निस्फ कूंडतक भर कर शीशः रख कर उसके ऊपर वालूरेत छनाहुआ भरदे । और मुंह शीशेका निकला रक्खे और चूल्हेपर बारह पहर आंच दे,इसके बाद पारद सुर्ख होजा-

यगा इसे रससिन्दूर कहते हैं। इसे गंधकके तेलमें मिलाकर चांदीके पत्तरोंपर लेप करके तपावे तीसरे लेप और तपावके बाद सोना वनजावेगा। (सुफहा किताब खजानः कीमियां ११)

अन्यच्च ।

सूतः पंचपलः स्वदोषरहितस्तत्तुल्यभागो बलिर्द्वौ टंकौ नवसारपादकलितौ संमर्द्य कूप्यां न्यसेत्। तां यन्त्रे सिकताख्यके तलबिले पक्त्वार्कयामं हितं भित्त्वा कुंकुमपिंजरं रसवरं भस्मादृदेद्वैद्यराट् ॥ १६२ ॥ वाते सक्षौद्रपिप्पल्यपि च कफरुजि त्र्यूषणं साग्निचूर्णं पित्ते सैलासिता स्याद् व्रणवति बृहतीनागराद्रामृताम्बु। पुष्टौ साज्यत्रियामा हरनयनफला शाल्मलीपुष्पवृन्तं किं वा कान्ताललाटाभरणरसपतेः स्यादनूपानमेतत् ॥ १६३ ॥ (योगरत्नाकर., योगतरंगिणी., र. रा. सुं., र. रा. शं.)

अर्थ-रसरत्नाकरमें लिखाहै कि पारदमें तीन दोष स्वाभाविक हैं जैसे विष, वह्नि और मल इन तीनों दोषोंसे रहित अथवा साधारण क्रियासे शोधित पारद पांच पल और उसीके तुल्य भाग गंधक और आठ माशे नौसादर इन तीनोंकी खूब कजलीकर कपरौटी कीहुई आतसी शीशीमें भरदेवे, फिर उस शीशीको नीचे छेद किये हुए बालुकायंत्रमें १२ बारह प्रहरतक आंच लगावे तदनन्तर उस शीशीको फोड बुद्धिमान् वैद्य केशरके समान रसोमें उत्तम पारद भस्मको निकाल लेवे। वातके रोगोंमें पीपल और शहदके संग, कफके रोगोंमें सोंठ, मिरच, पीपल और चीतेका चूर्ण इनके साथ, पित्तज रोगोंमें छोटी इलायची और मिश्रीके संग तथा क्षत (घाव) रोगमें कटेरी, सोंठ, गीली गिलोयके जलके संग और पुष्टिके लिये घृत, हलदी, त्रिफला और सेमलके फूलोंके डाठुरोंके साथ यह कान्ताललाटाभरणरसके अनुपान जानने। योगतरंगिणीके मतसे एक तोला फिटकरी और गेरनी तथा अग्नि १२ बारह प्रहरकी देनी ॥ १६२ ॥ १६३ ॥

अन्यच्च ।

नागार्जुनीति विख्याता दुग्धिका क्षितिमण्डले ॥ तया विमर्दयेत्सूतं दिनमेकं निरन्तरम् ॥ १६४ ॥ काचमाच्यापि कर्तव्यं मर्दनं दोषशान्तये ॥ पारदं दशटङ्कं स्याद्दशटंकं च गंधकम् ॥ १६५ ॥ नवसारं च पादं स्यात्त्रयमेकत्र मर्दयेत् ॥ काचस्य कूपके कृत्वा मुखं तस्य निरुध्यते ॥ १६६॥ अष्टयामावधिर्यावत्तावत्सूतः प्रपच्यते॥ एवं निष्पद्यते साक्षादरुणादित्यसन्निभः॥१६७॥ अरुणो भस्मसूताख्यः सर्वकार्यार्थसाधकः॥ प्रवालकोमलच्छायो नृणामत्यन्तवल्लभः ॥ १६८ ॥ भक्षयेद्रक्तिकाः पंच मरिचेन समं रसम् ॥ क्षुद्बोधकारकः प्रायः सद्यः कामाग्निदीपकः ॥ १६९ ॥ ज्वरं प्रमेहं कासं च नाशयेदनुपानतः ॥ येषुयेषु प्रयोक्तव्यो रसो रोगेषु सत्वरम् ॥ १७० ॥ तांश्च तान्नाशयेच्छीघ्रं समर्थो रसपार्थिवः॥१७१॥ (टोडरानन्द., र. रा. शं., र. सा. प., नि. र.)

अर्थ-इस पृथ्वीपर नागार्जुनी नामकी दुद्धी है उसके साथ एक दिनतक पारदको मर्दन करे तथा दोषकी शान्तिके लिये मकोयके रससे मर्दन करे इस प्रकार शुद्ध कियाहुआ पारा दश टंक, शुद्ध गंधक दश टंक, दो टंक नौसादर इन तीनोंको एक साथ मर्दन कर काचकी शीशीमें रख मुख बंद करदेवे और आठ पहरतक पाक करे इस प्रकार पाक करनेसे पारद लाल रंगका होजायगा, यह समस्त कार्यों के सिद्ध करनेवाला है, इसकी पांच रत्ती काली मिरचके संग खावे तो प्रायः भूखको लगाकर कामाग्निको दीप्त करताहै । ज्वर, प्रमेह, कासको अपने अपने अनुपानसे नाश करताहै । जिन २ रोगोंमें यह दिया जाताहै उन २ रोगोंको शीघ्रही नाश करताहै ॥ १६४-१७१ ॥

अन्यच्च ।

पलद्वयं शुद्धरसं पलार्धं शुद्धगंधकम् ॥ कर्षार्धं नवसारं च जम्बीरेण विमर्दयेत् ॥ १७२ ॥ काचकूप्यां क्षिपेच्चैव सप्तधा मृदुकर्पटैः॥ विलेप्य काचकूपीं तामातपे शोषयेद्दृढम् ॥ १७३ ॥ सच्छिद्रभांडे कूपीं तां सिकतायंत्रके न्यसेत् ॥ कूपिकां कंठमानेन पूजयेदिष्टदेवताः ॥ १७४ ॥ पंच पूज्याः कुमार्यश्च ततश्चुल्ल्यां निधापयेत्॥ पचेद्यामाष्टकं चैव कूपिकां च क्षणेक्षणे ॥ १७५ ॥ संशोध्य पाचयेद्यंत्रे स्वांगशीतं समुद्धरेत् ॥ ग्राह्यं च दरदाकारं देवदानवदुर्लभम्॥१७६॥ सेवयेद्रोगनाशाय तत्तद्रोगानुपानतः ॥ वल्लं वा वल्लयुग्मं वा कणया मधुना सह ॥ १७७ ॥ सेवितं कामिनीकामं दर्शयेद्रतिकौतुकम् ॥ वीर्यबंधकरं शीघ्रं योषामद्विनाशनम् ॥ १७८ ॥ सिन्दूरं हरवीर्यसम्भवमिदं रूक्षाग्निमान्द्यापहं यक्ष्मादिक्षयपाण्डुशोफमुदरं गुल्मप्रमेहापहम् । शूलप्लीहविनाशनं ज्वरहरं दुष्टव्रणान्नाशयेदर्शांसि ग्रहणीभगंदरहरं छर्दित्रिदोषापहम् ॥ १७९ ॥ (योगरत्नाकर., नि. र.)

अर्थ-शुद्ध पारद ८ आठ तोले, शुद्ध गन्धक ४ चार

तोले, नौसादर ६ माशे इन तीनोंकी कजली कर नींबूके रससे घोटे सात बार सुखा २ कर कपरौटी कीहुई शीशीमें भर पेंदेमें छेद कियेहुए सिकतायंत्र (वालुकायंत्र) में रख कर रेतसे गलेतक भर देवे तदनन्तर इष्टदेवता तथा पांच कन्याओंका पूजन करके यंत्रको चूल्हेपर चढाय आठ प्रहरतक पकावे और शीशीको क्षण २ भरमें सँभालता रहे और स्वांगशीतल होनेपर देवता और दैत्योंको दुर्लभ सिंगरफके समान रससिन्दूरको निकाल लेवे, अपने २ अनुपानके साथ रोगोंके नाशके लिये सेवन करे तीन अथवा छः रत्ती पीपल और शहदके साथ सेवन कियाहुआ स्त्रियोंको सम्भोगावस्थामें आश्चर्यका पैदा करनेवाला होताहै, वीर्यको रोकनेवाला और स्त्रियोंके मदका विध्वंसकारी है। यह पारदसे प्रस्तुत कियाहुआ रससिन्दूर शरीरके रूखापनको तथा अग्निमान्द्यको नाश करताहै। राजरोग, क्षय (शुक्रक्षय), पांडु, उदर, गुल्म, प्रमेह, शूल, प्लीहा, ज्वर, व्रण (घाव), ववासीर, संग्रहणी, भगंदर, वमन और त्रिदोषको दूर करताहै ॥ १७२–१७९ ॥

रससिन्दूर (उर्दू)

तासरा तरकीब यह है बराबर गंधक पारा ले और ८ माशे नौसादर और लाल नरमेके फूलोंके अर्कमें तीन रोज खरल करके एक रोज घीकुवारके अर्कमें खरल करके सुखाके पक्की आतिशी शीशीमें रख कर सात तह गिले हिकमत करके वालूजन्तरमें तीन रात बराबर मुवाफिक आंच दे ठंडी होनेदे। फिर निकालले पारा सुर्ख खाक होजावेगा इसके खानेसे भी वही नफा होगा और दूसरा नफा इसमें यह है कि बडेबडे मर्जोंमें इसे जुदाजुदा तौरसे खिलावे बफज्लहू ताला फौरन मर्ज दूर हो और तन्दुरुस्त खाए तो कभी बुढापा न आनेपावे उसके जुदा जुदा खिलानेकी तरकीब खादककितावसे मालूम होजावेगी (सुफहा खजानः)

अन्यच्च।

सूतः पंचपलः किंवा तत्तुर्यांशोत्र गंधकः ॥ द्वौ टंकौ नवसारस्य कर्षा च तुवरी भवेत् ॥ १८० ॥ वह्निं शनैःशनैः कुर्यात्त्रिदिनं सिकताभिधे ॥ ऊर्ध्वगः कूपिकानाले सिन्दूराभो भवेद्रसः ॥ १८१ ॥ उक्तयोगेन योक्तव्यः केवलो वानुपानतः ॥ १८२ ॥ (रसमानस.)

अर्थ–पांच पल पारद और उसका चौथाई गंधक, आठ माशे नौसादर, एक तोले फिटकिरी इन सबकी कजली कर आतशी शीशीमें भरदेवे और वालुकायंत्रद्वारा तीन दिवसतक धीरे २ पकावे नालके ऊपर लगे हुए रससिन्दूरको निकाल लेवे पूर्वोक्त योगके साथ अथवा रोगानुसार अनुपानसे अनेक रोगोंका नाश करनेवाला है ॥ १८०–१८२ ॥

अन्यच्च।

पृथक्समं समं कृत्वा पारदं गंधकं तथा ॥ नवसारं धूमसारं स्फटिकं याममात्रकम् ॥ ॥ १८३ ॥ निम्बूरसेन संमर्द्य काचकूप्यां निवेशयेत् ॥ मुखे पाषाणखटिकां दत्त्वा मुद्रां प्रलेपयेत् ॥ १८४ ॥ सप्तभिर्मृत्तिकावस्त्रैः पृथक् संशोध्य वेष्टयेत्॥ सच्छिद्रायां मृदः स्थाल्यां कूपिकां तां निवेशयेत् ॥ ॥ १८५ ॥ पूरयेत्सिकतापूरैरागलं मतिमान् भिषग्॥ निवेश्य चुल्ल्यां दहनं मन्दमध्यखरक्रमात् ॥ १८६ ॥ प्रज्वाल्य द्वादशं यामं स्वांगशीतं समुद्धरेत् ॥ स्फोटयित्वा पुनः कूपीमूर्द्धलग्नं बलिं त्यजेत् ॥ अधःस्थरससिन्दूरं सर्वरोगेषु योजयेत् ॥ ॥ १८७ ॥ (रसेन्द्रसारसंग्रह., रसमंजरी, टी. नं.)

अर्थ–पारद और गंधक इन दोनोंको समान भाग लेवे और पारदसे चौथाई नौसादर, भाडका धूँआ और फिटकिरी इन सबको एकत्र कर और निंबूके रससे मर्दन कर शीशीमें भरदेवे शीशीके मुखपर पत्थरके टुकडेको रख मुद्रा करे फिर शीशीपर सुखा२ कर कपरौटी करे तदनन्तर पेंदेमें छिद्रवाले वालुकायंत्रमें रख कर मन्द, मध्य और तीव्र क्रमसे बारह प्रहरतक आंच देवे स्वांग शीत होनेपर शीशीको तोड ऊपर लगेहुए गंधकके टुकडोंको छोड उनके नीचे लगेहुए रससिन्दूरको ग्रहण करे और फिर समस्त रोगोंमें देदेवे ॥ १८३–१८७ ॥

तलभस्मविधान।

नवसादर अरु धूमसा, अरु फिटकिरी विचार। गंधक पारा शुद्ध ये, सब सम भाग निहार ॥ किते भिषक गृहधूमसा, एवजसीसा लेत। और और ग्रंथनविषे, बरन्यो युक्तिसमेत ॥ ये पांचो पीसै मिहीं अध अध पाव तुलाय । जंभीरी रसमें तथा, नींबूरस घुटवाय ॥ शीशीके भीतर सुभरि, मुखमुद्रा करवाय। तब कपरौटी जतनसों, चहूं ओर चिपटाय ॥ सीसी घाम सुकायके, हांडीमें धरदेय। हांडीके पेंदे विषे, छेद एक करलेय ॥ छेद रुपैयाके सम, सुन्दर वर्तुल होय। तापै लम्बी ठीकरी, घिसकै धरि गुनिलोय ॥ तापै माटी सानिके, मैड करे जु बनाय । ठिकरीके दोऊ तरफ, छेद सन्धि रहजाय ॥ शीशी धर ता मेंडपै, बारूरेत भराय । शीशी नालीरसरहे, बारूते निकसाय ॥ हांडी चूल्हेपै धरे, नीचै करे कृसान। चार प्रहर पर्यंतलों, मन्दहि मन्द प्रमान॥ फिर क्रमते बढती करे, ज्वाला बढताहि जाय। आठ

पहर उद्भट अगिन, देय निरन्तर पाय ॥ स्वांग शीत है जाइ तब, सीसा फोर निकार । ऊपर जो गंधक लगे, ताहितजै निरधार ॥ नीचे मृत पारद रहै, अरुन कटोरी रूप । सब योगनमें देय यह, तब तल भस्म अनूप ॥ यथा उचित अनुपानते, सब रोगनपै देय । एक रती के द्वै रती, देख बलाबल सेय ॥ (वैद्यादर्शभाषाग्रन्थ.)

अन्यच्च ।

भागो रसस्य त्रय एव भागा गंधस्य माषं पवनाशनस्य॥सम्मर्द्य गाढं सकलं सुभाण्डे तां कज्जलीं काचघटे निदध्यात् ॥ १८८ ॥ संरुध्य मृत्कर्पटकैर्घटीं तां मुखे सचूर्णां खटिकां च दत्त्वा । क्रमाग्निना त्रीणि दिनानि पक्त्वा तां वालुकायंत्रगतां च पच्यात् ॥ १८९ ॥ बन्धूकपुष्पारुणमीशजस्य भस्म प्रयोज्यं सकलामयेषु । निजानुपानैर्मरणं जरां च हन्त्यस्य वल्लः क्रमसेवनेन ॥१९०॥ (रसेन्द्र. सं., र. रा. श., रसमंजरी, यो. र., योगत., र. सा. प., नि. र.)

अर्थ-एक भाग पारद, तीन भाग गंधक (यहां भाग शब्दसे कर्ष लेना चाहिये) सीसा एक माशा इन सबको महीन पीसकर काचकी शीशीमें भरदेवे और कपरौटी भी करदेवे शीशीके मुखपर चूना और खडियासे मुद्रा करलेवे फिर वालुकायंत्रमें रख तीन दिवसतक मन्द, मध्य और तीक्ष्ण क्रमसे अग्नि लगावे तो पारदकी भस्म गुलदोपहरियेके समान होजायगी इसको अपने २ अनुपानोंके साथ देनेसे समस्त रोगोंको नाश करताहै और तीन रत्ती सेवन कियाहुआ रससिन्दूर मरण और जरावस्था (बुढापा) को भी नाश करताहै ॥ १८८-१९० ॥

सम्मति-यहांपर भाग शब्दसे तीन कर्षका ग्रहण करना चाहिये ऐसा हमारे प्रपितामह राजवैद्य व्यास हरिभजनरायजीका भी कहना था और वृद्ध वैद्योंकी भी यही आज्ञा है और 'पवनाशनस्य' इसके अर्थसे सीसेका ग्रहण करतेहैं सो हमारी समझमें ठीक नहीं क्योंकि यहां धातुवादका प्रयोजन नहीं है केवल खायके ही लिये औषधि बनानेका प्रयोजन है इसवास्ते रससारपद्धतिमें जो 'पवनाशनस्य' इसके स्थानमें 'नवसादरस्य' ऐसा पाठ लिखाहै सो सीसेके एवजमें नौसादर डालना चाहिये । अब कितनेक वैद्य शीशीका मुख बंद करके और कितनेक मुखको खोल करके पाक करतेहैं इसमें जैसी अपने गुरुप्रणाली हो वैसाही करना चाहिये ॥

हिंगुलसे रससिन्दूर बनानेकी विधि ।

रसमन्तरेण पिष्टाभ्यां हिंगुलगंधाभ्यामपि सिन्दूरं संपाद्यम् ॥

अर्थ-यदि पारद उत्तम नहीं मिले तो केवल हिंगुल और गंधकसेही रससिन्दूर बनाना चाहिये ॥

रससिन्दूरके गुण ।

निखिलक्षयभक्षणदक्षतरं व्रणकुष्ठभगन्दरमेहहरम् । बलदीधितिशुक्रसमृद्धिकरं रसभस्म समस्तगदापहरम् ॥ १९१ ॥ (योगतरङ्गिणी.)

अर्थ-यह रसभस्म अर्थात् रससिन्दूर अनेक प्रकारके क्षयोंका नाश करताहै और व्रण, कोढ, भगन्दर तथा प्रमेहको नाश करताहै । बल, तेज, वीर्यवृद्धि इनका करनेवाला है ॥ १९१ ॥

अन्यच्च ।

हरति रससिन्दूरं कासश्वासाग्निमान्द्यमेहगदान् । रक्तविकारं कृच्छ्रज्वरादिरोगान्यथानुपानयुतम् ॥ १९२ ॥ (अनुपानतरंगिणी)

अर्थ--यथायोग्य अनुपानसे मिलाहुआ रससिन्दूर कास, श्वास, अग्निमान्द्य, प्रमेह, रक्तविकार, मूत्रकृच्छ्र और ज्वरआदि रोगोंको नाश करताहै ॥ १९२ ॥

अन्यच्च ।

सिन्दूराख्यः सूतो वरया प्रातर्भुक्तो घृतमधुवरया । वितरति तरुणिमरूपमुदारं वृद्धस्यापि विमोहितदारम् ॥ १९३ ॥ (योगतरङ्गिणी.)

अर्थ-जो मनुष्य त्रिफला, घृत और शहदके संग रससिन्दूरको प्रातःकाल सेवन करे तो वृद्धावस्थामें भी स्त्रियोंको मोहित करनेवाले रूपको प्राप्त होताहै ॥ १९३ ॥

अन्यच्च ।

गुंजादिमानमारभ्य चतुर्गुंजावधि प्रिये । दद्यात्कालवयोवह्निदेशान्दृष्ट्वामयं बलम् ॥ ॥ १९४ ॥ पिप्पलीमधुसंयुक्तं वातमेहं वरांगने ॥ सितोपलावरायुक्तं पित्तमेहनिवारणम् ॥ १९५ ॥ भार्ङ्गीत्र्यूषणमाक्षीकैः कसनश्वासशूलनुत् ॥ सितारात्रिसमायुक्तं रक्तदोषं विनाशयेत ॥ १९६ ॥ कामलापांडुमन्दाग्नीन्वरात्र्यूषणयुग्जयेत् ॥ यथा विष्णुः श्रिया युक्तो हृदिस्थो भक्तपातकान् ॥ ॥ १९७ ॥ हृद्रोगं बद्धकोष्ठं च वह्निमान्द्यादिकान्गदान् ॥ जयेच्चित्रकपांचालीशिवासौवर्चलान्वितम् ॥ १९८ ॥ शिलाजतुसितैलाभिर्मूत्रकृच्छ्रापत्तुद्भवेत ॥ सौवर्चल-

वरायुक्तं रेचयेन्नवयौवने ॥ १९९ ॥ जातीपत्रीलवंगाम्बुभंगापिप्पलिकुंकुमैः॥ कर्पूरेण च संयुक्तं धातुवृद्धिकरं परम् ॥ २०० ॥ लवंगरुच्यकशिवायुक्तं सर्वज्वरापहम् ॥ प्रिये भंगाजमोदाभ्यां छर्दिरोगप्रणाशनम् ॥ २०१ ॥ लवंगकुंकुमयुते नागवल्लीदलोद्भवे ॥ वीटके वापि कूष्मांडचूर्णे स्याद्धातुवर्द्धनम् ॥ २०२ ॥ गुडपर्पटसंयुक्तं कृमीन् कोष्ठगताञ्जयेत् ॥ लवंगभंगाफूकैश्च सर्वातीसारनुत्प्रिये ॥ २०३ ॥ दीप्यसौवर्चलोपेतं वह्निमान्द्यापहं परम् ॥ पौष्टिकेप्यमृतासत्त्वसंयुतं पुष्टिकारकम् ॥ २०४ ॥ वातं माक्षिकपांचालीचूर्णयुक्तं विनिर्जयेत् ॥ सितोपलायुतं पित्तं जयेदम्बुजलोचने ॥ ॥ २०५ ॥ त्रिकटुत्रियुतं हन्यात् कफरोगं सुदारुणम् । अन्यान् रोगान् जयेद्युक्त्या यथायोग्यानुपानकैः ॥ २०६ ॥ पथ्यं पारदवत्सर्वं सेवयेद्वै हरिं स्मरन् । नवकंजविशालाक्षि प्रिये पीनपयोधरे ॥ २०७ ॥ अनुपानतरङ्गिणी.)

अर्थ-हे प्यारी! वैद्य देश, काल, रोग और अवस्थाको देख कर एक रत्तीसे लेकर चार रत्तीतक इस रससिन्दूरको खानेके लिये रोगीको देवे। हे स्त्री! शहद और पीपलके साथ सेवनसे वातप्रमेहको, मिश्री तथा त्रिफलाके साथ पित्तमेहको, भारंगी, सोंठ, मिरच, पीपल और शहदके साथ खांसी श्वास दर्दको नाश करता है तथा हलदी और मिश्रीके साथ सेवन करनेसे रक्तदोषको दूर करता है आर त्रिफला, सोंठ, मिरच, पीपल इनके संग देनेसे कामला, पाण्डु तथा मन्दाग्निका इस प्रकार नाश करता है कि जैसे लक्ष्मीसे संयुक्त श्रीविष्णु भगवान् भक्तोंके हृदयमें ठहरे हुए भक्तोंके पापोंको नाश करदेते हैं। तथा चीतेकी छाल, पांचाली, हर्र, सोंचरनोंन इनसे युक्त रससिन्दूर हृद्रोग, कोष्ठबद्ध, मन्दाग्नि आदि रोगोंको जडसे उखाड देता है। तथा सिलाजीत, मिश्री,इलायची छोटी इनके संग देनेसे यह रस मूत्रकृच्छ्रको दूर करनेवाला होता है। सोंचरनोंन और त्रिफलाके साथ देनेसे दस्तावर होजाता है। जायफल, लौंग, अफीम, भांग, पीपल, केसर तथा कपूरके साथ मिलाहुआ अत्यन्त धातुकी वृद्धिके करनेवाला है। लौंग, सोंचरनोंन, हर्र इनसे संयुक्त यह रस सम्पूर्ण ज्वरोंका नाश करता है और हे प्रिये! भांग तथा अजमोदके साथ वमन (उलटी) रोगको दूर कर्ता है। लौंग तथा केसरसे संयुक्त पानके बीडेमें अथवा पैठेके चूर्णमें देनेसे धातुका वर्द्धक है। गुड तथा पलोटके साथ कृमिरोगका हन्ता है। लौंग, भांग तथा अफीमके साथ अतीसारको दूर करता है। अजमोदा और काले नोंनके साथ मन्दाग्निको हरता है और पुष्टिके लिये सत्तगिलोयके साथ देना चाहिये। पांचाली और शहदके साथ वातको, मिश्रीके साथ पित्तरोगको, हे प्यारी! यह रस अवश्य जीतता है। तथा सोंठ, मिरच, पीपलके साथ बढेहुए कफरोगको नाश करता है तथा अपने अपने अनुपानके साथ अनेक रोगोंको भी नाश करता है। हे पीनस्तनी! नवीन कमलवत् विशालनेत्रवाले श्रीहरिको याद करताहुआ इसका सेवन करे और पथ्यप्रभृति पारदके समान समझने चाहियें॥ १९४-२०७॥

अन्यच्च।

रससिन्दूरमशुद्धाद्रसाद्धि जातं पारवद्रोगान्। कुर्य्याच्चैतच्छान्त्यै घृतमरिचरजः पिबेत्सप्तदिनम् ॥ २०८ ॥ (अनुपानतरङ्गिणी.)

अर्थ-अशुद्ध पारदसे बनाहुआ रससिन्दूर अशुद्ध पारद भक्षणके समानही रोगोंको पैदा करता है इस वास्ते उन रोगोंकी शान्तिके अर्थ घृत तथा पिसीहुई काली मिरचको ७ दिनतक पीवे॥ २०८॥

अन्यच्च।

ये क्षीणा गतवीर्याश्च कथं सीदंति ते नराः। ईश्वरेण त्विदं प्रोक्तं हरगौरीरसायनम् ॥२०९॥रसभागो भवेदेको द्विगुणो गंधको मतः ॥ खल्वे कज्जलसंकाशं काचकूप्यां क्षिपेत्सुधीः ॥ २१० ॥ खर्परे वालुकापूर्णे स्थापयेत्तत्र कूपिकाम् ॥ इष्टिकां च मुखे दत्त्वा कृत्वा कर्प्पटमृत्तिकाम् ॥ २११ ॥ सप्तविंशतियामैश्च त्रिभिः कूपैर्विपाचयेत्॥ पश्चादूर्ध्वं समायातं रसं ज्ञात्वा विचक्षणः ॥ २१२ ॥ हंसपादसमं वर्णं निष्पन्नं रसमादिशेत् ॥ गुंजायुग्मं प्रदातव्यं सितादुग्धानुपानतः ॥ २१३ ॥ प्रमेहश्वासकासेषु षंढे क्षीणेऽल्पवीर्यके ॥ हरगौरीरसं देयं सर्वरोगप्रशान्तये ॥ २१४ ॥ (योगचिन्तामणि., र. रा. सु., नि. र.)

अर्थ-जो मनुष्य क्षीण (रस रक्त और मांसादिसे रहित) और वीर्यसे रहित हैं वे मनुष्य क्यों दुःख पारहेहैं कारण कि उनके लिये परमात्माने इन हरगौरी रसको बनायाहै॥ इसके बनानेकी क्रिया यों है कि एक भाग पारद (शुद्ध कियाहुआ) और दो भाग गन्धक इन दोनोंकी कजली कर काचकी शीशीमें भरदेवे और उस शीशीको रेतसे भरेहुए खिपरेमें रख मुखपर ईटका टुकडा लगाय मुद्रा करदेवे और सत्ताईस प्रहरतक अग्नि देवे इस प्रकार तीन बार शीशीमें (बदल २ कर) पाक करे। उसके पश्चात् पारदको नलीमें आयाहुआ जानकर वैद्य यह निश्चय करलेय कि अब यह रस हंसके पैरके समान लाल वर्णवाला रससिन्दूर सिद्ध होगयाहै इसकी दो रत्ती मात्रा मिश्री तथा दूधके साथ देना चाहिये। प्रमेह, श्वास, कास, षंढता क्षय, अल्पवीर्यवालेको तथा अनेक रोगोंमें यह हरगौरि

नामका रसराज अवश्य देना चाहिये ऐसा योगचिन्तामणि ग्रन्थमें उत्तम प्रयोग लिखा है ॥ २०९-२१४ ॥

सम्मति—हमारी समझमें यह हरगौरीरस भी एक प्रकारका रस सिन्दूर ही होना चाहिये संग्रहकारने इसको इस वास्ते पृथक् लिखा है कि यह तीन शीशियों द्वारा उतारागया है और कुछ विशेषता नहींहै ॥

रससिन्दूर तहनशीन तलभस्म (उर्दू)

सिन्दूररससे सिंग्रफ कीमियाई मुराद है जिसका तरीका अव्वल अकसीरतिलाके शुरूमें तहरीर हुआहै यानी अव्वल सीमाबको छः बार तसईद करे बाद उस्के मुश्त ही और मुन्तकिक उल अमल करे । बाद उसके मुसारी समिावके गंधक मुसफ्फा मिलाकर शीरः घीग्वारका डालकर सहक करताजावे और बारह पहर यानी तीन दिन सहक करके तसईद करे यह सीमाव बरंग सुर्ख होजाताहै । और अगर इस्तरह सहक करनेका और आगदेनेका बजरिये आतिशी शीशी मजकूरके अमल मुकर्रर करता रहे तो चंद अमलमें सीमाव तहनशीन होजाताहै । और तनहा अकसीरका काम देताहै चुनांचः कुश्तः सीमाव मुन्दर्जः सुफहा १९५ किताव अलकीमियाँ जिसको बाजमेम्बरान अंजुमनने तजरुबा करके कामयाबी हासिल की है वह भी सिन्दूर रस है जिस्में बारबार गंधक देकर हरबार चार चार पहर आग देनेमें इजाफा किया है और यहांतक कि छत्तीस प्रहरकी आगकी नौवत पहुंची है आखरमें तनहा सीमावको सहक करके तीस पहर आग देकर तहनशीन कियाहै और उससे रंगने और खुराक दोनोंका काम लियाहै चुनांचः पूरी शरै और तरीक अमल रिसाला अकसीर असकरकी शरैमें मुन्दर्ज होगा अगर संजरे खुदाहै—खुलासा यह है कि जिस्तरह साबिकमें बयान होचुकाहै कि सीमावको षड्गुन गंधक जारन करे यानी बजरिये ईटाजंतरके छःगुनी गंधक पिलावे इस अमल सिन्दूररसमें कुल ऐमाल तो बदस्तूर होतेहैं और बजाय ईटा जंत्रके शीशी आतिशीमें बालूजंत्र करके सीमाव तसईद कियाजाताहै । (सुफहा अकलीमियां २४६)

कामदेवरसविधि (पारदरस गंध हरताताल्योग मूर्छित तीन शीशी) ।

पारा गंधक अरु हरतार । गंधक लेहु आवलासार ॥ तीनों चारि चारि पल लेय पुनि मर्दन रसग्वारि करेय ॥ बहुत खरर दीजै दिन तीनि।तापाछे सीसीमें कीनि ॥ बारह पहर पचावे गुनी । अगिनि जु जंत्र वालुका सुनी॥ पुनि रस ग्वारि खररि यह रीति । मरदत जांहि तीन दिन बीति ॥ सुकै बहुरि जलजंत्रहि धरै । आगि पहर बारहकी करै॥कामदेव या रसको नाम।यह आवे खंडितके काम ॥ जो यह रस मंडल भरि खाय।पुरुष होय वो सुनि ज्यों राय॥ स्त्रीके दश दोषहिंको हरै।वंध्या खाइ सुगर्भहि धरै ॥ और रोग जे भाजैं घने । ते सब परैं कौन पै गने ॥ (रससागर बडा.)

भास्कररस एक प्रकारका मूर्च्छित पारद ।

गंधकस्य पलं चैकं सूतकस्य पलार्धकम् ॥ खल्वे कज्जलिकां कृत्वा मूषायां विनियोजयेत ॥ २१५ ॥ जीविनी चन्द्रवल्ली च अधोर्ध्वं परिलेपयेत् ॥ पक्वमूषां च संस्थाप्य सिक्तायंत्रे नियोजयेत ॥ २१६ ॥ प्रज्वाल्य वह्निं यामैकं स्वांगशीतं तु कारयेत् ॥ तरुणादित्यसंकाशो जायते रसभास्करः ॥ ॥ २१७ ॥ गुंजायुग्मप्रमाणेन लेहयेन्मधुसर्पिषा ॥ मासत्रयप्रयोगेण क्षयं कासं निवारयेत् ॥ २१८ ॥ मंडूरयोगसंयुक्तं पांडुरोगं विनाशयेत ॥ पांडुरीपांडुरोगे च नाशयेद्विषमज्वरम् ॥ २१९ ॥ महिषाक्षकसंयुक्तो हरेत्कुष्ठान्यनेकशः ॥ कूष्मांडविधिना युक्तो वृद्धोपि तरुणायते ॥ २२० ॥ एतद्रसायनं देवि जरादारिद्र्यनाशनम् ॥ नानाव्याधिहरं दिव्यं रसायनमिदं शुभम् ॥ २२१ ॥ (योगसार.)

अर्थ–एक पल गंधक और आधा पल पारद इनकी कजली बनाकर मूषा (घरिया) में रक्खे और उस पिट्ठीपर जीवनी और चन्द्रवल्लीके कल्कका ऊपर नीचे लेप करे उस पक्वमूषाको सिकतायंत्र (वालुकायंत्र) में रखदेवे और एक प्रहरतक अग्नि लगावे स्वांगशीतल होनेपर निकाल लेवे तो वह नवीन सूर्यके समान रंगवाला रसभास्कर प्रस्तुत होताहै । दो चोंटनीके प्रमाणसे तीन मासतक खावे तो कास और क्षयरोग नष्ट होताहै मंडूरके साथ देनेसे पांडुरोग तथा पांडुरीरोग और विषमज्वर दूर होताहै, भैंसागूगलके साथ कोढको हरताहै, पेठापाकके साथ खानेसे वृद्ध भी तरुण होताहै हे पार्वती यह दरिद्रता और अनेक प्रकारके रोगोंको नाश करताहै ॥ २१५-२२१ ॥

हरितालसत्त्वसे पारदका तलस्थाई करना ।

हरितालसे अर्द्ध एरंडवीज मज्जा पाकर खरल करके सत्त्वपातन करना । फिर सिरकेसे खरल करके सत्त्वपातन करना । फिर कार गंधदलमें खरल करके सत्त्वपातन करना । फिर मधुसे खरल करके पारदसत्त्व पाकर खरल करके सप्तमवार अष्टप्रहर अग्नि देणी अधस्थाई सत्त्व होजायगा ।

पारदसत्त्व।

पारद समभाग, काली काही, खडियामिट्टी, धूमसार इन तीनोंमें खरल करना। एक एकमें प्रहर प्रहर खरल करना। एकमें पहर खरल करके दूसरी पाणी। फिर प्रहर खरल करके तीसरी पाणी। फिर पहर खरल करके डमरूयंत्रमें ऊर्ध्व सत्त्वपातन करना। इस पारदसत्त्वको हरितालसत्त्वमें पाणा। हरितालसत्त्वसे तुर्यांश पारदसत्त्व पाकर मधुसे खरल करना। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक.)

हरितालसत्त्व और रसकपूरको अग्निस्थाई करनेकी क्रिया।

हरितालसे अर्द्ध एरंडबीज मज्जा पाकर खरल करके सत्त्वपातन करना। फिर सिरकेसे खरल करके सत्त्वपातन करना। फिर कारगंदलमें खरल करके सत्त्वपातन करना। वार चार फिर मधुसे खरल करके सत्त्वपातन करना। फिर पारदसत्त्व पाकर खरल करके सप्तमवार अष्ट प्रहर अग्नि देणी। अधस्थाई सत्त्व होजायगा। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

हरगौरीरस विधि (पारदरस–गंधक हरतालयोग मूर्छित ३ शीशी)

पारो शुद्ध पांच पल लेय। पांचो सत हरतारहि देय॥ पांचो गंधक आँवलासार। एकतके ज़ु खरलमें डारि॥ खररि ग्यारि रस सीसी भरै। बारह पहर बालुका धरै॥ शीतलके उतारि सो लेइ। ऐसी सीसी सात करेइ॥ हरगौरी रस जानो येह। इतने रोग जाइँ सो देह॥ आमवात अरु कम्मर खाय। रकत विकार एको न रहाय॥ अर्शी रोग भाजे बल होय। जो यह विधि कै जाने कोय॥ सोध्यो पारो गंधक शुद्ध। यहै जानि जो याकी बुद्धि॥ (रसरत्नाकर., रससागर बडा.)

श्रीवल्लभरस (पारद गंधक हरतालसे सिद्ध रस मूर्छित) सूक्ष्म जलयंत्र-दीपकाग्नि।

तबकसो हरतार हि बीन। पारो गंधक समकै तीनि॥ चारचो चारि टंक सो लेय। सूकी कजरी बांटि करेय॥ कांसेकी थारीमें करै। ऊपर उलटी बेली धरै॥ ताहि मैनकी मुद्रा करै। ता थारी ताते जल भरै॥ दृढ बाती कपराकी करै। तेल चारि पल दीपक भरै॥ थारी चूल्हे देइ चढाइ। तातनु दीपक धरिये आइ॥ जिह ठा थारी औषधि भरी। दीया ज्योति तिही ठां करी॥ आंच घरी द्वै कीजे लोइ। इतने मांझ महासिधि होइ॥ जो यह लेय होय ता भाग। आध रतीसों बेधनाग॥ कीना चढ चांदी है जाई। तौ थंभनके काजै खाइ॥ याको श्रीवल्लभ रस जानि। रसरतनागर कही बखानि॥ आन श्रीति कवि देखी ताह। भाखी सो ग्रंथनिकी छांह॥ (रससागर, रससागर बडा.)

कुनटीरस–(पारद रस मनसिल हरतालयोगमूर्छित ३ शीशी)

मनसिल पारो अरु हरतार। एक एक पल तीन्यों भार॥ बांटि निचोर धतूरे पात। खरलै तीन द्यौस अरु राति॥ सीसी घालि बालुका धरै। अगिनि पहर बारहकी करै॥ ऐसी सीसी तीनि चढ़ाय। तब मानस या रसको खाय॥ रस कुनटी यह जानों लोइ। खंडितते अतिनीको होइ॥ न्हायेंते बंध्या जन खाय। बालक होइ दोष मिटि जाय॥ (रससागर.,बडा रससागर.)

निषिद्धभी सोमलयुक्त पारदक्रियाकथन।

है निषिद्ध तोहू कहत शिष्य बोधके अर्थ। सोमल जुत पारदक्रिया जानों बुद्धि समर्थ॥ सोध्यो पारद पंच भरता सम सोमल जान। नवसादरको लीजिये पैसा एक प्रमान॥ आठ पहर इन सबनको अर्क दूध खरलाय। रविकी धूप सुकायके डमरूजंत्र धराय॥ दोय पहरकी आंच दे पारा लेय उडाय। फिर पाराको जतनसों भिषजन ले तुलवाइ॥ तोलमांहि पारा कढै तासों दूनो लेय। दंती बीज छिलाइके सोधे तामें देय॥ दंतीके रस षर लिये दिना सात परमान। आंच देय डमरूविषे धरि द्वै पहर सुजान॥ पारा उडि ऊरध लगे ताहि लेइ निकराय। तामें पैसा दोय भरि सोमल देइ मिलाय। नवसादर पैसा भरचो ताहीमें दे डारि। सूखे ही फिर घोटिये दोय पहर निरधारि॥ छोटीसी सीसीविषैं फिर सबही भरि लेइ। नवसादरको पीसिके सीसी मुखमूंदेइ॥ जंत्र बालुकामांहि पुनि सीसीको धरवाय। हांडीके पेंदेविषे छेदन कबहुँ कराय।

हांडीमें बालू भरै अंगुर चार प्रमान । बारूपै सीसी धरै विधिसों वैद्य सुजान ॥ फिरि बारू भरि दीजिये हांडी मुखपर-यंत । चूल्हेपै धरि अगिनि दे सोरह पहर निचंत ॥ आपहि सीतल होय जब सीसी फोर निकार । सोमल जुत पारद क्रिया याविधि करै तयार ॥ एकरतीकी मात्रा क्षुधा अधिक करि देत । रुग उपदंश फिरंगको निहँचैही हरि लेत ॥ मेटै रक्त विकारको शोथ करै सबगात । लोचनमें बहु भांतिके करै रोग उत्पात ॥ फूटिजात है देह सब झोला मारी जात । नसफूलै जब कंठकी तब जलपान रुकात ॥ सोमलको सेवन किये इतने होत विकार । याते सदभिषजन नहीं याकौ करत प्रचार बहुधा गुजराती भिषकू गुनसुचमत्कृत जान । पारदजुत सोमल भस्म राखत निकट निदान ॥ संमलहू राखत नहीं सद भिषजनके गोत । कुबुध भिषगके वासते या सम और न होत ॥ (वैद्यादर्श.)

सुधानिधिरस-(पारदरस गंधकयोग-मूर्छित वा भस्म वा बद्ध)

भौंआमिली कुकरदौ आनि । एकतके रस लीजै छानि ॥ सूत पंच पल खपरा धरै । बीस पहर ज्यों चोवा करै ॥ ता पाछे जु खरलमें देइ । वाही रससों खरल करेइ ॥ गंधक माहिं देय पल एक । द्वै दिन खरलै यहै विवेक ॥ आगि पहर बारहकी कही । जंत्र बालुका जानो सही । सीतलकै उतारिजै ताहि । रस जु सुधानिधि जानों याहि ॥ खाये ते कांती अति होय । बल बीरज हि बढावै सोय ॥ और बहुत गुन करै अपार । जे दुर्लभ सब ही संसार॥ (र. सा., बडा रससागर.)

रजतकरयोग-(चांदीयोगसे पारदकी तलभस्म वेधक)

पारा कायम १ तोला, रूपरस १ तोला, रसकपूर १ तोला, तीनोंको काकमांचीके रसमें खरल करना फिर शीशी विच पाके वालुकायंत्रमें ४ प्रहर आग देनी फिर ऊर्ध्व लग्न अधस्थलग्न दोनोंको फिर खरल करना फिर अग्नि देनी एवं बारबार करना । जब तलस्थ होजावे उसको बंगपर सुटणा रजत करयोग है । (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

हरिताल चांदीयोगसे पारदकी तलभस्म (वेधक)

हरिताल यथेष्ट लेकर एरंडतैलसे खरल करना ४ प्रहर फिर शीशेमें पाकर ६ प्रहर आग देनी ऊर्ध्वपातन होजायगा, ऊर्ध्वलग्नको लेकर ऊर्ध्वलग्न सत्त्वजेकर दश तोले होवे तो उस्में ५ तोले पारद पाणा और १ तोला रजत पाणा, ऐसे १६ तोलेको खरल करना पूर्वोक्त नवसादर[1] तैलमें फिर द्वितीय शीशेमें ऊर्ध्वपातन करना फिर ऊर्ध्वलग्न और अधस्थ दोनों लेकर खरल करना फिर पातन एवं बारबार जब सब तलस्थ होजावे तब सिद्धि भया ताम्रपर योजनकरना । (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

मधूरस-सीमावकी तल भस्म, संखिया मंसिल, सोनामक्खी और सेंजर्फके हमराह (उर्दू)

सिन्दूररस[2]-सीमावको खिश्त नीम पुख्तः (ईट अधपकी) में खरल करके धोए बादहू नमकके साथ बाद हू राईमें सहक करके धोए बादहू बजरिये तसईद व तखनीकके जहर और अयूबसे पाक करे बाद उसके नामुवाफिक कैंचलीको दूर करे बादहू मुखकरन खुर्द व कलांकरे बादहू पक्षाघात करे बादहू शीरा चौलाई और शीरावेख यानी भंग और शीरा लहसन और शीरा कीवाई स्याह जिसको हिन्दीमें गीदडदाख कहते हैं और शीरावर्ग धतूरा स्याह और नमक संग और शीरा घीग्वारमें अलहदा अलहदा एक एक पुट आफ्ताबीदे यानी दो पहर दिनतक धूपमें खरल करे खुश्क करे बादहू तीन दिनतक दवाएँ मसहूकः को खुश्क करले सूखनेके बाद उसको वारीक कर डाले जिस्में लौंदहमें सीमाव जमा न रहे उसके बाद सीमावसे दुचन्द अंगूजः यानी भंगको शीरा घीग्वारके हमराह पीसकर ऊपर डाले प्याले या हांडीमें लेप करे और नीचेवाले प्याले या हांडीमें पहले थोडी राख छनी हुई बिछाकर उसके ऊपर नमक पिसाहुआ फर्श करके सीमाव मजकूरको रखदे और हींग लगेहुये जर्फको ऊपरसे औंधा ढांकदे और जोडको मजबूत बंद करके गिले हिकमत करदे और सुखलाकर चूल्हेपर इस्तरह रक्खे कि नीचेके जर्फका पेंदा चूल्हेके अन्दर आजावे बादहू उसके नीचे सुबहसे शामतक औसत दर्जेकी आंच करे जिसमें सीमाव मसअद होए यानी नीचेसे उडकर अतराफजर्फ और सरपोशमें चस्पाँ होजावे बाद उसके शीरा केवाइस्याहमें और शीरावेख मुश्ककमें जो वेजकाहमर्क और दूबकी होती है और शीरा हंसपगी तीन दिनतक बतौर पुटआफ्ताबीके खरल करके गरम पानी या कांजीसे धोकर निकालले तब दो ईटें लेकर उनको इस्तरहपर घिसे कि लबसे लब मिलकर हमवार

---

१ नवसादर तैलक्रिया इसी पत्रवाली लिखीगई है और नौसादरतैल प्रकरणमें रक्खीगई है ।

२ इसी नुसखेमें मुतअद्दित गलतियां इस किस्मकी हैं जिनसे किताब बनानेवालेकी कम लियाकत जाहर होतीहै मस्लन पक्षाघातके बाद उडाना नामुमकिनहै गंधक जारणका तरीका बिलकुल गलतहै ।

होजावें और नीचेवाली ईटमें ओखलीनुमा गडहा करदे और सीमावको ऊपर नीचे गंधक मुसफ्फासे पोशीदःकरके ओखली मजकूरमें भरकर दूसरी ईट ले बंद करके लवबलव करदे और जोडके ऊपर मजबूत गिलेहिकमत करदे इसतरह कि धुआं उससे बाहर न निकलसके और ऊपरवाली ईटपर चार तह कपडा भिगोकर रखदे और खिश्तजेरीनके नीचे पावभर उपला जंगलीकी कर्सीकी आगदे जब ईट ठंडी होजावे ईटोंको खोले और दुबारा सीमावसे दूनी गंधकमुसफ्फा ऊपर नीचे सीमावके बदस्तूर रक्खे और गिले हिकमत करके सुखाकर दुचन्द कर्सी उपला जंगलीकी यानी आधसेरकी आगदे, बार सोम सहचन्द गंधक मुसफ्फा सीमावके ऊपर नीचे रखकर तीन पाव कर्सीकी आगदे मगर सीमाव बदस्तूर वहीं रहे और छः गुनी गंधक उसमें मिल जावे इस अमलको जोगी खटगुन गंधक जारन कहते हैं इससे सीमाव सिंग्रफी रंगका सुर्ख होजाताहै अब इस सीमाव सिंग्रफीको फिर शीरा घीग्वारमें एक दिन एक पुट आफ्ताबी खरल करके उसके बाद सम्मुलफार सोनमाखी शिंग्रफ रूमी, मेनसिल चारों मुसफ्फा और सीमावके वजन से बकदर निस्फके हों लेकर शीरा, किवांई स्याहमें एक दिन एक पुट आफ्ताबी मुताबिक काइदे मुहीनाके सहक करे उसके बाद अच्छी तरह सुखलाकर शीशा आतिशीमें भरकर मुहर करके गिले हिकमत मजबूत करे बादहू वजरिये बालू जंतरके जिसको बालुका जंतरभी कहते हैं बत्तीस पहरतक नरम व गरम आंचदे यानी सोलह पहरतक दीपक अगिनि जिसको दीयाबातीकी अगिनि कहते हैं और सोलह पहर भात अगिनिकी तरह चार लकडीकी आंच करे जब आग देनेसे फरागत होजाए एक हफ्तःतक उसी जगह ठंडीहोनेदे उसके बाद निकालले और फिर शीरा कटाई खुर्दमें ऊंट कटाराकी जडके दिस्तेसे तीन रोजतक तीन पुट आफ्ताबीदे लेकिन चारोंपाघर मजकूर अजसर नौजदीद मिलाकर तब खरल करे और बदस्तूर साबिक शीशः आतिशीमें रख कर सर व मुहर करके बत्तीस पहर उसी तरह नरम और गरम आगदे सर्द होनेके बाद बार सोम फिर पाखरहाइ यानी संखिया सोनामक्खी यानी शिंजर्फरूमी मेनसिल बवजन मजकूर मिलाकर शीरा ऊंटकटारासे तीन दिनतक मामूलन खरल करके शीशेमें रख कर गिले हिकमत और मुहर करके बालूजंत्रमें रक्खे और तीस पहर आगदे इन्शा अल्लाहताला इस मर्तबः तहनशीन होजावेगा बाद उसके दूजः लेकर एक तोला कलई या मिसपर तरह करे तो नुकरः होजाइ इस अकसीरको एक चाँवल बराबर दो सेर हलवामें मिलाकर तीन चार आदमी खाते हैं खवास अगर इसके तहरीर हो तो कलाम तवील होजायगा खानेके बाद खुदही मालूम होसक्ता है मुख्तसिर यह है कि तमाम अमराज बादी और खूनी मस्लन बवासीर वज्अुला व रअशा व फाजिल व सरै व सकता व खारिश व दाद व बाद फरंग व जजाम व बुर्स व छीप स्तसफार व तपेदिल व सिल व हर किस्मके तपकुहनः व मुजम्मनः वगैरः दफै होजावेंगे अगर तीन रोज खावेगा तो एक हफ्तेमें कायाकल्प होजावेगा उम्र ज्यादः होगी रोशनी चश्म और ज्यादती शहवत होगी और इश्तहाग़ालिब होगी और गर्मी और कुव्वत बदन हदसे जायद होगी इन्शाअल्लाहताला। (सफा २९८ किताब अलकीमियां)।

नुसखा सिद्धरस। सीमावपर अबरकका असर डाल गंधकमुसफ्फा हरताल कायम व नौसादर मुसफ्फाके हमराह तलभस्म (फार्सी)।

सीमावरा अजाँ खासियतबख्श दानन्द कि हरतरकी कि अज खुर्दन सीमाव दरबदन हासिल आयदजूद तनज्जुल नकुनद ख्वाहइश्तहा ख्वाह कुव्वत व अगरजूद बरतरफ गर्दद पस आसार मसालः ओ ख्वाहद बूद अस्लवाइद कि सीमाव व कमाल रसद व अगर बकिये व कमाल नरसीद वाशद यस आँसीमाव न बायद खुर्द व वास्तैमाल सीमावे कि बाद अजखुर्दन ओहेच खासियत जाहर न गर्दद चुनांचः खुश्की गुलू व खारिशे दस्तहा व कमी इश्तहा सिवाय अजीं दीगर मुतलक तासीर जाहर न गर्दद न गर्मी व न इश्तहा पसबिदानंद कि हेच मसाला बिदीं नमादः बहमे सोख्तः शुदःअस्त तासीर नमेवख्शद व सीमाव कि औलाअस्तगुफ्तः ख्वाहद शुद कि बआँ सिफातमें शवद बहबमें कारहास्त आयदा आँनस्तबिदांकि रतूवत सीमाव व एतराकरा कि बासिल साजद गूगर्द अस्त यानी अलख।

गूगर्द आंवलासार मुसफ्फा बजरनेख कायम।

तस्फिया गंधक, बिसानीद चहुल बनह जोहरे रोहूदादः दो नीम आसार गंधकराहमी तौर हर कदर ज्यादः बाशद ज्यादः कुनन्द बादहू सह कदर आफ्ताब कुनन्द बदर चमचः नुकरः गुदाज दिहन्द व बिस्तुयककुर्त दर शारहेलहसन अन्दाजद दरजोश हफ्तम शीरा ताजा कुनद बादहू बिस्तुयक कुर्त दरशीरऐ लहसन अन्दाजद दरजोश हफ्तमशीरः ताजा कुनद बाद बिस्तुयककुर्त दरशीरः घीग्वार अन्दाजद वशिस्तव ६४ चहार पुट सहककर्दः अजशीरः अगिया दिहन्द व बिस्तपुट अजशीरः जकूमई हरदो मुरत्तिब गर्दद व सफेद रंग बुबदतस्फिया व तदबीर कायम जरनेख बवादहू बियारद जरतेनेख व यकहफ्तः दर आवचूना सदफी व यक हफ्तः दरआवसाज़ी डोलजंतर कुनद व यकहफ्तः दररोगन कुंजद बादहू शीरआक सहककुनद व अगर यक पाव हरताल बाशद यकसेर व यकपाव नमक हर्मीतरीक हरचहार नमक अव्वल नमक चरचरः बादहू नमक पलास व नमक उर्द सहनमक बन्दाल जर्दय कजाकर्दः कर्स हरताल दरदेग गिलीं निहन्द हर चहार नमक यगान यगान व बर्ग आक जेरबाला दादह विनिहद व बालाए आँ हर चहार नमक मजकूर दादः अम्मादेग हमूंकदर बाशद कि पुरन शवद वसर पोशीदः दरगिले गेरू दशाजदह पास आतिश दिहद तहनशीन ख्वाहद शुद फर्स हमचू नुकरः बाद शिकनान तदबीर गलोजकर्दन सीमाव बा अभरक बादहू बियारद अभ्रक सफेद दहनाव सफेद साजद बआं दह नाव व

सीमाव नवाब तुरवपुख्तः यकजा करदः सहक कुनद बदर डौरू जंतर आतिश दिहद सीमाव परीदः बाला गीरद व कलस अभ्रक पाईमाद हमीं तरीक हफ्त अमल कुनद सीमाव गलीज गर्दद व दरवजन दहदवाजदह गर्दद अज अव्वल कि जौहर तलक कि दाखिल शुदः बाशद गरानी आं मालूम गर्दद अम्माअगर सीमाव दह पांजदह तलकदहद ज्यादः गरां कुनद अजहमे औला बुवद यानी अगर सीमाव यकसर बाशद सफेदतलक यकब नहमसेर दरहसर अमल बादहू आँसीमावरा वाँ गूगर्दमामूल सहक कुनद हर दो बराबर अव्वल वा अर्कगूमा व बादहू वा अर्कवदनः व वाजअर्क रामबल व अर्कधतूरः स्याह या हर किस्म कि बाशद हफ्तहफ्त पुट दिहद दर आफ्ताब सहक कर्दः हमूकदर कि सीमाव अस्त आं हरताल मामूल वा नौसादर मुसफ्फा व रोगन तुख्म धतूरा अन्दाख्तः यकहफ्तः सहक कुनद व दरबोतः मुअम्मा कि अज चरक आहन बतलक सफेद व लोह चून व गिल वा वती मार अन्दाख्तः व मैदा खिश्त अन्दाख्तः वा सफेदी वैजः खमीर साख्तः बाशद बोतः साजद व दराँ अन्दाख्तः दर गजपुट वा बशकल वकरीनीम मन अन्दाख्तः जेरुवाला आतिशदिहद बादहू कि सर्द शवद बर आवुर्दः वाशीरः अरन्ड सुर्ख यकहफ्तः सहक कुनद बीदहू दरशीशः गिलेहिकमत करदः चहार वास आतिश नर्म दिहद लेकिन हमूकदर कि दर आतिश दादन दर अव्वल ताकीद कर्दः बूदन्द हमूकदर दरसर्दकर्दन ताकीद कुनद व इल्लाअमल कि बूदः बाशदजाले गर्ददः व बाज यक हफ्तः सहककर्दः दरशीरा बेख नीम कि चकानीद गिरफ्तः बाशद बाजदर शीशः अन्दाख्तः यकरोज व यकशव आतिशदिहद अन्दक तेज बादहू यकहफ्तः वाशीरः रंचः कुनद सहक व शांजदह पास पास आतिश दहद व वाजदरशीरः पलास यक हफ्तः सहक कुनद सीवदो पास आतिश दिहद बाज यक हफ्तः दरशीरः हंसपगोंकिलां कि विसियार वहमसें रसद अम्मा खुर्दकम वहम में रसद व कलांआँ बाशद किवरबर्ग ओपरम बाशद व सुर्ख वशीरः ओ सुर्ख वबर्ग ओ वतर्ज पाइ वत मबाशद सहककर्दः दरदेग कवची जंतर करदः शस्तुचहार पास आतिश दहद बाद अजसर्द शुदन बरआरद वदरजर्फ दन्दानकवल व वा दरकाचः निगाहदारद व अगर नदर हेचजर्फ न माँद जानौए शवद व रंगई सुर्ख बाशद चूँ विसानीद जर्द बुवद व मौजहाजनद ईसीमाव रा वाजी कुंकुम रस गोयन्द व वाजे सिद्ध रस व ई सीमावरा बाद अज इन्सराम रसीदन वदस्त बिगीरद व अगर विगीरद अन्दक चराखः बदस्त गिरफ्तन व खुर्दन यक खासियतदारद-(अलख सुफहा ११ छोटी कितबियाकिताब जवाहर उलसिनात)

बेधरस एक किस्मका रससिन्दूर तलभस्म-७शीशी (उर्दू)

स्लाह सीमावका तरीका. जिसके खानेसे तमाम वमारियां जाइल होकर वदन कवी होताहै और बूढा जवान होताहै ।

वेधरस सीमाव जिसको शिंग्रफसे निकाला हो और दो रोजतक खिश्तनीमरख्तः मेंआबना रसीदःमें खरल कियाहो बादहू तीन रोजतक राईमें सहक करके डौरू जंतरमें तसईद कियाहो तीन तोला ले और गंधक मुसफ्फा जिसको इक्कीस बार गायके दूधमें स्तंजाल किया हो स्तंजालसे मुराद धूम जंतर है जो इस तरहसे अमलमें लावे कि दूध सेरभर को हांडीमें रख कर उसके मुँहको बारीक कपडेसे बांधे और गंधकको करछः आहिनीसे आगसे पिघलाकर कपडेके ऊपर डाले जिसमें गंधक छनकर दूधमें गिरे इसी तरह इक्कीस बार छानलिया हो ख्वाह गंधकको बारीक करके कपडेके ऊपर फैलादे और हांडीके किनारे गंधकके चारों तरफ मिट्टी या आटेकी दीवारकी तरह गोल हलका बांध कर लोहेका तवा उसपर रखदे और कोयलाकी आग तवेके ऊपर रखदे जिसमें गंधक मजकूर गुदाज होकर दूधमें गिरे इक्कीस बार अमल करे तीन तोला ले और सुमस्याह जिसको जहर तेलिया भी कहतेहैं तीन तोला तीनों अजजाइको इक्कीस जौहरः ताऊसम खरल करके तीन रोजतक धूपमें रक्खे अगर मोरके पित्ते हाथ न लगें तो मुर्गके पित्तेमें खरल करे लेकिन मोरके पित्ते सबसे आला हैं बाद तीन रोजके शीरा बेख ककोहरमें जिसको हिन्दीमें खिकसा कहतेहैं चार पहरतक खरल करे बादहू शीरा बर्ग तंवूल सबजमें चार पहरतक सहक करे बाद उसके खुश्क करके शीशी आतिशीमें रख कर गिलेहिकमत करके हांडीमें रेग भरकर उसके दरमियानमें बतौर बालूजंतरके रक्खे और बारह पहरतक इस तरीकेसे नरम व गरम आग दे कि चार पहर दिनको दीपक अगिन बादहू चार प्रहर आगको भात अगिन फिर दूसरे दिन चार पहरतक गोश्त अगिनकी तरह आग दे जब खुद बखुद सर्द होजावे उतारले कुछ दवा तो शीशेमें तह नशीन होजायगी और कुछ उडकर शीशेके गलेमें चस्पाँ मिलेगी बादहू कुलदवाको इकट्ठा करके गंधक मुसफ्फा और जहर स्याह पहले वजनसे निस्फ यानी डेढडेढ तोला चाररोजतक शीरःअनारतुर्शमें पुट आफ्ताबी दे यानी दो पहर दिनतक खरल और दोपहरसे शामतक खुश्क कियाकर इस्तरहके चार पुट हुये फिर बतरीक मजकूरःबाला शीशः गिलेहिकमतशुदःमें रख कर बालूजंत्रमें धरे और बारह पहरतक बदस्तूर नरम व गरम आंच दे इस तरकीबको तीन बार करे यानी हरबार गंधक मुसफ्फा और जहर स्याह डेढ डेढ तोला जदीद दाखिल करके शीरः अनार तुर्शमें चार पुट आफ्ताबी देकर बारह पहरतक नरम व गरम आंच दियाकरे कुल चार शीशः हुए बादहू गंधक मुसफ्फा हमवजन सीमावके और सुमस्याह चहारम हिस्सा यानी ९ माशे डालकर एक रोज अर्क जोहरा कटाईखुर्दमें दो पहर दिनतक सहक करके दो पहरसे शामतक धूपमें रक्खे इसी तरह एक दिन शीरा घीग्वारमें पुट आफ्ताबी देकर बालूजंतरमें बदस्तूर रखकर बारह पहरतक बदस्तूर आंच दे इस अमलको मुकर्रर करे यानी दोनों बूटियोंके शीरेमें बदस्तूर पुट अफ्ताबी देकर बारह प्रहरतक आंच बालूजंतरमें दे कुल छः शीशे हुए सातवें शीशेमें इस्तरह अमल करे कि आकके दूधमें दवाको मुसल्सिल दो दिन बदस्तूर खरल करके सुखादे इस मर्तबः गंधक और सुमस्याह न मिले और खुश्क होनेके बाद शीशःमें रक्खे और गिले हिकमत करके

बालूजंत्रमें रख कर बारह पहरतक बतरीक मामूल व मजकूर आगदे सातवीं शीशीमें पारा तहनशीन होजायगा अगर कुल तहनशीन होजाए तो फिर आंच देनेकी जरूरत नहीं है अगर कुछ तसईद हुआहो तो दवाई जैलमें मिलाकर एक रत्तीका चौथाई खावे और अगर तहनशीन हुआहो तो एक हिस्साको दो हिस्सा करके खावे बदर बदरकः जिस्में गोली बनाकर खाई जातीहै हस्बजैल है । जाफरान, लौंग, अकरकरा, खासियत यहहै कि जितना चाहे खाना खावे हजम होकर जरूर बदन होजायगा और भूखमें खानेसे अगर खाना भी न खावेगा तो भी सेरी रहेगी और इस कदर कुव्वतबाह गालिब होगी और इतना इमसाक पैदा होगा कि दस औरतोंसे भी आसूदगी न होगी और गर्मीके जमानेमें खूनकी और सर्दीके मौसममें गरमी मालूम होगी इस सीमावमें असर यहहै कि जबतक एक लहमा खाना न खालेने भूख मालूम नहीं होती अगर एक हफ्तेतक खावे तो दो सालतक यही कैफियत रहतीहै और अगर छः महीनेतक खावे तो कायाकल्प अजसर नौ कुव्वत सीमावकी ऊद करे और हमेशह कुव्वत हेजदहसालकी रहे समस्याहकी तफसीरमें भी इख्तलाफ है बाज किताबोंमें समस्याह लिखाहै और बाजमें जहर तेलिया लेकिन सही जहर तेलिया है अगर्चः संखिया स्याह लियाजावे तो भी नुक्स नहीं है लेकिन जहरतेलिया इसमें आलाहै याद रखना चाहिये कि बगैर मुदब्बिर करनेके उसको हरगिज न डाले वरनः मुजर्रतका एतमालहै समस्याहके मुदब्बिर करनेकी तरकीब जहरकी गिरहें लेकर एक दिनरात गायके पेशाबमें तरकरे और निकाल कर काममें लावे नौआदीगर जहर पीस तेलियाको पोटलीमें बाँध कर हांडीके अंदर जिस्में पानी हो इसतरह लटकादे कि पेंदीसे न लगने पावे और आधे घंटेतक पकावे ख्वाह दूधमें जोश देकर काममें लावे । (सुफहा२९४ किताब अलकीमियां)

तरकीब कुश्ता सीमाव ।

(अव्वल सीमावको कायमुल्नार कियाहै बादहू सात बार गंधक (शीशीमें जारन कर तल भस्म बनातेहैं)

कुचला दो सेर लेकर पच्चीस सेर सादा पानीमें डालकर किसी कढाईमें दे गदानपर रक्खे और नीचे आंच रोशन करे जब आठ सेर पानी बाकी रहजाय तब उतार ले पानी आठ सेरको अहतियातसे रक्खें कुचला मामूलीको कूट पीस कर बारीक करे और उसके हमराह सज्जी पावसेर पुख्तः शोरा व कलई पावसेर पुख्तः नौसादर आध पाव पीस कर हरशः शामिल करलें बादहू उस तमाम एक जातशुदःके तेतीस हिस्सा करके रख छोडे एक हिस्सा कढाईके बेरूं हिस्सेके नीचली जगहपर जो आंचकी तरफहै जमाद करदें दरमियान कढाईके एक तोला सीमाव और नीचे ऊपर, दाल चिकना एक तोला, रस कपूर एक तोला, संमुलफार सफेद १ तोला, कूट पीस कर बिछादें आठ सेर पानी कुचलेमेंसे एक पाव पानी कढाईमें डालदें और नीचे आग जलाकर पानी खुश्क करें जब पानी खुश्क होजाय एक एक पावभर दूध मादः गाव उसी वक्त कढाईमें डालकर और आंच जलानी शुरू करें जब दूध खुश्क होजाये कढाईको देगदानसे नीचे उतार कर दूसरे हिस्सका कढाईके नीचे जमाद कर और दर्मियानसे सीमाव जिस कदर बरामद हो निकालले दुबारा बदस्तूर साविक सम्मुल फार सफेद एक तोला, दारचिकना एक तोला, रस कपूर १ तोला ताजा लेकर खूब बारीक पीस कर सीमाव बरामद शुदःके जेरुवाला कढाईमें रख कर पावसेर पानी कुचला दरमियान डाल कर नीचे आंच जलानी शुरू करें जब तमाम पानी जज्ब होजावे फिर पावभर शीर मादह गाव कढाईमें डाल कर खुश्क करें बादहू कढाईको आंचसे अलहदा करके दरमियानसे सीमाव निकाललें हरदफैके अमलमें सीमाव ज्यादतीपर बरामद होगा हर बार कुचला व लोटा सज्जी वगैरःका जमाद कढाईके नीचे करते जायें और सम्मुलफार, दारचिकना, रस कपूर एक एक तोला ताजा लेकर सीमाव बरामद शुदःके जेरुवाला देकर पावभर आवकुचला खुश्क होनेके बाद पावभर शीर मादः गाव जज्ब करते चलेजावें यहांतक तीसवीं दफै तीस हिस्से जमादके तमाम होजावें हर दफै पावभरके हिसाबसे आब कुचला जो आठ सेर था सर्फ होजावेगा और आठ सेर ही दूध खर्च होगा । सम्मुल फार सफेद ३२ तोला, दार चिकना ३२ तोला, रस कपूर ३२ तोला यह कुल ९५ तोलेका खर्च सर्फ है और तीसवीं दफैकी पकावटके बाद करीबन २५ तोलेके निकलेगा यह सीमाव मुतहर्रिक कायमुल्नार कहलाताहै सीमाव मुतहर्रिक कायमुल्नार मजकूर पांच तोलेको तीन रोजतक राईके अर्कमें खरल करे और एक रोज बसाह (अटसट) बूटीके अर्कमें खरलकर बादहू एक रोज गोमा बूटीके पानीमें बचारहदें फिर एक दिन कुँवार गंदलका चोया देवे अजांबाद गंधक आँवलासारको चालीस गोता अर्क प्याजमें देकर साफ करलें हम वजन सीमाव मामूला गंधक साफ शुदःको बाहमी मिलाकर कजली करे फिर एक रोजतक अर्क कुँवारमें खूब खरल करके किसी शीशी आतिशीमें डाल कर और मुहर सुलैमानी करके बारह पहर बालूजंतरकी आंच दे बाद सर्द होनेके निकाल कर बदस्तूर कुँवारमें एक दिन खरल करके दूसरी शीशीमें बतरीक मजकूर अव्वल सोल्हा पहर आंचदे अलहाजुल कयास इसी तरह सात आंचतकदे और हर आंच यकेबाद दीगरे चार पहर ज्यादः करते जाएँ यहांतक कि सातवीं आँच छत्तीस पहरकी हो हर दफै सीमावके हमवजन गंधक शामिल करके जो अर्क प्याजमें साफ की गईहै अर्क कुँवारमें खरल करनेके बाद आंच देनी चाहिये इस कुश्तेका रंग सुर्ख होगा खूराक एक सुर्खका चहारम हिस्सा दो हफ्तेके स्तैमालसे ताजीस्त कुव्वत कम न होगी एक रातमें हमेशह अगर सात औरतोंसे जमाइ किया जावे ताकत बदस्तूर कायम रहतीहै मुगल्लिजमनी होनेमें बेनजीरहै इमसाककी हद नहीं रहती दौरान अमल दवाई परहेज जायदज जहूरीहै अगर बराबर लगातार इस कुश्तेको दो माहतक खाया जावे बशरते कि इस अर्सेमें और जसे महामत मुकीजावे तो उसके पेशाबमें सीमाव कायमुल्नार होताहै और उस सीमावको ख्वाह किसी तरकीबसे नमक कायमके साथ नौसादरके तेलमें तसकिया और तमश्विया देनेसे खासियत अकसीरकी उसमें पैदा होजातीहै, यह नुसखा साधू बृजागर संन्यासीने जो मेरे दोस्तहैं इस रार अलकीमियांमें दर्ज करानेके लिये मुझे इनायत फर्मायाहै जो हदियः नाजरीनहै । (सुफहा २२ किताब इसरार अलकीमियाँ)

पारदका मूर्च्छितरूपभस्मकरणार्थ रससिंदूरादि विधिकथन (भाषा)।

दोहा-पारा लीजे आठ पल, भलो बुभुक्षित शुद्ध । शुद्ध आंवरासार ले, इतनो गंधक शुद्ध॥ गंधक पारा एक दिन, सूखे ही खरलाय ।गंगक्रिया गोमा जु रस,पुनि द्वै दिन घुटवाय ॥ दोऊ रसको एक करि, सकै जो त्यों त्यों डार । ऐसे द्वै दिन घोटिके, सीसी भरे सम्हार ॥ पहले वा सीसी विषे, द्वै कपरौटी देय । तब सीसीकों घामके, विषे निपुन धरिदेय ॥ सीसी वह सूकै जबै, हांडीमें धरवाय । हांडीके पेंदे विषे छेद जु करै बनाय॥छेद् वहै चौडो निपुन,रुपया बरोबर होय।तापे लंबी ठीकरी घिसिके धरि गुनलेइ ॥ ठिकराके दोऊ तरफ, छेद संधि रहिजाय।तापर माटी सानिकै,मैंडजुकरै बनाय ॥तापर सीसी राखिकै,बारूरेत भराय। सीसी गर्दन राखिये, बारूतें निकसाय ॥ हांडी चूल्हे पै धरै, नीचे अगिनबराय । द्वै लकडीकी दीजिये,आठ पहर लगवाय॥चार पहर धीमी करै, तेज पहर करि च्यार । स्वाँगसीत होवे जबै, तब यह लेय उतार॥ वह सीसीको फोरके, चांदी ले निकसाइ। राख लगी चांदी विषे, ताकों दूर कराय॥ फिर चांदी वह लेइकै; खरल माँहि घुटवाय । गंगक्रिया गोमा दुहूं, इनके रस डरवाय ॥ एक दिनालग घोटिये, ये दोनों रस डार।फिर सीसी सूकै जबै, पूरब विधि निरधार ॥पहली जो सीसी भरै,वाही जंत्र धराय। वैसेही बारू भरै,वैसें आंच लगाय ॥ चारि पहर लों दीजिये,द्वै लकरीकी आंच। तासों गंधक सब जरै, चांदी निकसै सांच॥ अब गंधकके जरनकी, कहत परीक्षा सोइ। डेढ पहर बीतें तबै,या विधि करिये जोइ॥ एक सींकको लेयके, शीशी भीतर डार । सींकजरी निकसै तबै,गंधक जरयो विचार॥ गंधकते लिपटी भई, सींक बहिर निकसाय। तब निहचै करि जानियो,गंधक जरयो न जाय ॥ गंधक जरयो जो होय तो, सीसी लेइ उतारि। गंधक जरयो न होयतो, ज्योंकी त्यों निरधारि ॥ जबलग गंधक छीन है, तब लग आंच लगाय । गंधक छीन जु होय तब, सीसी ले उतराय ॥ तब सीसीको फोरिके, चांदी लेइ निकार। राख कछू लगती रहै, ताकों छील बिडार॥ फिर चांदीको तोलिये, जो पूरी उतराय । गोमा गंगक्रिया दुहूँ, इनके रस घुटवाय॥ इक दिन घोटि सुखायकें, सीसीमें भरि लेय । वाही बालूजंत्रते, मंद आंच फिर देय ॥ तातें पैसा दोय भर, गंधक जाइ जराइ । यह प्रमाण अब औरहू,कछुक देत समझाय ॥ गंधक पैसा भर जरै, पहर आँच कर तेज । धेला भर ही जरतहै,पहर करै निस्तेज ॥ गंधक अधिकी जरतहै, तेज आंचसों जान । गंधक थोरी ही जरै मंद आंचते मान ॥ जब गंधक आधो जरै सीसी लेइ उतार। सीसीको फिर फोरिके, चांदी लेइ निकार ॥ राख लगी चांदी विषै ताहि दूरि करि देय । नीके खरल पिसाइके, बकनी सी करिलेय॥

सोरठा ।

एक अधेला भार, फिर विषचूरन लीजिये।
खरल करै निरधार, चूरन धर चांदीविषे॥

दोहा ।

पारद चाँदी घोटिके, सीसीमें भरि लेइ ।
त्योंही बालूजंत्रमें, पूरब विधि धरदेय ॥

सोरठा ।

मंद तेज नहिं होय, चार पहरकी आंच देइ । बाकी रहै न कोय, गंधक सब याते जरै ॥ सीसी लेइ उतार, स्वांग सीत है जाइ तब । पारद भस्म निकार, सीसीको फिर फोरके ॥ चांदी होइ निकोर, या विषके संजोगसे । चांदीको दे छोड, गंधककी जो राख सब॥फेर छुरीसों छील, रही सही जो राख है । करै कछू नहिं ढील, पुनि चांदीको तोलिये ॥ तो चन्द्रोदय सांच, जो चांदी पूरी कढै। पुनि दीपक दे आँच,जो चांदी बढती कढै॥ चार पहर गुनरास, दीपक आंच लगाइये। उज्ज्वल चन्द्र प्रकास,तो चन्द्रोदय रस बनै॥

दोहा-गुरुप्रसादते होतहै,यों पारदकी भस्म। चूकै तो कोरा रहै, हाथ न आवै भस्म ॥ यह चन्द्रोदय भस्मको,तोला भर तुलवाय। तोला भरही लोंगदे, घरी चारि खरलाय॥ द्वै रत्तीकी मात्रा, खैबेको नितदेय ।तांबूल अनुपानसे, रोग सबै हरिलेय ॥ याके

खाये देहमें, भूख तुरत बढिजाय । रोग-अजीरन ना रहै, ताही समै पलाय ॥ कुष्ठबंध बहुमूत्रता, मूर्च्छा हिचकी सोय । कांति करे बलको करै, कामदेह अतिहोय॥ स्त्री प्रसूत सनिपातअरु, और वमन हरिलेय। देही सीतल जो परे, ताहि गरम करिदेय॥ खांसी स्वास फिरंग रुग, अरु उपदंश विकार । अरुच रोगहूको हरे, ज्वर आठो निरधार ॥ ज्वर आवे मिटजाइ फिर, अरुचि देह रहिजाय । यह असाध्य रुग अरुचिहै यातें प्रान नशाय॥सोहू यातें मिटतहै, ऐसो यहै अनूप । चन्द्रोदय रस नाम है, यातें रीझे भूप ॥ (वैद्यादर्श.)

रससिंदूर (गंधक हमवजन व नौसादर $\frac{1}{80}$ हिस्सा आग १२ पहर फारसी)

दरकुश्तन सीमाव साजद वियारन्द शीशः गर्दनदराज कि गर्दनश बारीक वे शिकमश फराख व आँरावगिले हिकमत उस्तवार कुनन्द व नीमसेर जीवक खालिस मुत्तहरकरदः अजपर्चः गुजरानीदः वावोलवसिरकातुंद अगर बहम नरसदप सनमें शवद व दरोगन जैतून व अगर व हम न रसद दर-रोगन कनान कि आँरा अलसी गोयन्द हरवके अर्जी दोचन्द वर सीमाव विरेजन्द कि चहार अंगुश्त बरवाला बरामद व बर आतिश नरम व मुलाइम जोशदिहन्द चूँ अन्दक तरावत नुमायन्द सीमाव खुश्क गेरू व बवाजबोल रेजन्द बजोश दिहन्द बनौअ मजकूरः चुनीसह मर्तबः तकरार नुमायन्द व अरतंज फारिगशबन्द अजपर्चः गुजरानीदः वानीमसेर करीत आसकरदः कुजुलशवद दरआँशीशः कुनन्द व नीमतोला नशासद पैकानी व आँखुमकरदः बवाज नाको साईदः दरशीशः मजकूरकुनन्द व दहनशीशःरा पारः कागज व नमक व खाकस्तर मुहर स्तुवारकुनन्द व खुश्क-साजन्द वसदर देगकुनन्द व अन्दक यकता चहार अंगुश्त अज सरशीशः विगुजरद व नवाए देग वादेगदाँ वर-नियाइद वजेरदेग आतिश नर्म नर्म करदः आतिश तुआम न चुनां कुनन्द तादवाजदः पास कियक लहजा शौला नमीरद चूं सर्द शवदवेरूं आरन्द व शीशः विशिकिश्तः जीवक कुश्ता विसितानंद अर्जी सीमावहुवः बरवर्गतम्बूल विखुरद व बर बालाइ आँदोवीरावर्ग विखुरन्द व अजतुरशी परहेज नुमायन्द हेच इल्लत गिर्द व ओनगर्दद व हुकमा वा नबाए जीवक व हरजहमते बनोए मेदिहन्द अम्मा-उश्च अजतहारव मालूमई नस्तवियारन्द कवावचीन व अकरकरा व मूसली स्याह व सफेद व भूफळी व वसवासः व तुख्म उटंगन व तुख्मकोंच, करनफल, इलायचीदाना, व जाफरान, व मस्तंगी, व जौज बवा अज हर एक तोला कोफ्तःवेख्तः व यक तोला सीमाव वियामीरन्द व हम-चन्दाँ अस्ल खालिश ववजन दो माशः गिलोलः साजन्द बहर सुबह निहारयके अजाँ विखुरन्द वक्त शाम अम्मा दरसेरमा तनावुल शाम बादहाइ मुखालिफ विरवद व कुव्वतवाह ज्याद: गर्दद: व रंग सुर्ख शवद अगर पीर-खुरंद जवॉन शवद बइस्तहा गालिब आयन्द चन्दाँ कि खुराक दो सह आदम खुरद । (किताव जवाहर उलसि-नात सुफहा ३२)

सीमाव मूर्च्छित गंधकसे भूधरमें (उर्दू)

सीमाव दो तोला, आँवलासार गंधक ३ तोला दोनोंको बाहम खूब तरह खरल करे बादहू लुआब वीग्वारमें दो दिन खरल करे फिर चमडेको सात तह करके पारेको पोटलीकी तरह बांधे और एक गढा खोदकर तीन अंगुश्तरेत उसपर बिछावे और पोटली रखदेवे बादहू इस कदर और रेत डालकर दो दिन बराबर जंगली उपलोंकी आग जलातेरहें बवक्त सर्द होनेके निकाललें । (सुफहा ५८ किताब कुश्ताजातहजारी)

पारद चूर्ण बबूल फूलसे ।

बबूलक अधखिले फूलोंमें पारा घोटनेसे फौरन कजली होजातीहै । (तजरुवा भाई साहबरता हनूमानप्रसाद)

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यास-ज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहितायां भाषाटीकायां पारद-मूर्च्छितीकरणंनाम पञ्चत्रिंशोध्यायः॥ ३५ ॥

मूर्च्छितबद्धाध्यायः ३६.

अवस्थाभेदसे पारदसंज्ञा ।

दोषहीनो रसो ब्रह्मा मूर्च्छितस्तु जनार्दनः॥ मारितो रुद्ररूपी स्याद्बद्धः साक्षात्सदाशिवः ॥ १ ॥ र. चि. ४, र. सा.२, र. क. २, र. सा. प. ३, र. र. १५७ ॥

अर्थ–दोषरहित पारद ब्रह्माका रूप है और मूर्च्छित पारद विष्णुका रूप है, भस्म कियाहुआ पारा शिवरूप होता है तथा बद्ध हुआ पारा साक्षात् श्रीशिवरूप होता है ॥ १ ॥

पारदकी मूर्च्छनादि तीन दशाओंका फल।

शुद्धचा विशुद्धोऽथ सुजीर्णगंधो बह्निप्रभः कांचनभुग्गदघ्नः ॥ वदन्ति चैनं त्रिविधं सुबद्धं संमूर्छितं चापि मृतं रसेन्द्रम् ॥ २ ॥ (योगतरङ्गिणी. ॥५४ ॥)

अर्थ–शोधन क्रियासे शुद्ध कियाहुआ तथा गंधक जारण कियाहुआ बुभुक्षित और सुवर्णको खानेवाला पारद रोगोंका नाशक होता है और इसी पारदको बद्ध, मूर्च्छित और मतभेदसे तीनप्रकारका कहते हैं ॥ २ ॥

मूर्छादिदशाओंका फल ।

मूर्च्छो प्रपन्नो हरते च रोगान् बद्धस्तथा

खेचरतां ददाति ॥ मृतो मृतिं नाशयति प्रकर्षाज्जीयाद्रसेन्द्रोऽगणितप्रभावः ॥ ३ ॥ (योगतरंगिणी ५४)

अर्थ-मूर्च्छाको प्राप्त हुआ पारद रोगोंको नाश करता है मराहुआ मृत्युको नाश करता है और बद्धपारद आकाशगतिको देता है इसप्रकार अनेक प्रभाववाले पारदकी जय हो ॥ ३ ॥

तथा च ।

मूर्च्छितो हरते व्याधीन्बद्धः खेचरसिद्धिदः ॥ सर्वसिद्धिकरो लोके निरुत्थो देहसिद्धिदः ॥ ४ ॥ (शब्दकल्पद्रुम १२०)

अर्थ-मूर्च्छित पारद रोगोंको हरता है, बद्ध कियाहुआ आकाशगतिका दाता है तथा मृत पारद सब सिद्धिको देता है और निरुत्थ (अर्थात् जो किसी प्रकारही अपने रूपमें न आसके) पारा देहकी सिद्धिको देता है ॥ ४ ॥

तथा च ।

मारितं देहसिद्ध्यर्थं मूर्च्छितं व्याधिनाशनम् ॥ रसभस्म क्वचिद्रोगे देहार्थे मूर्च्छितं क्वचित् ॥ ५ ॥ बद्धं द्वाभ्यां प्रयुंजीत शास्त्रदृष्टेन कर्मणा ॥ (रसरत्नाकर १७३)

अर्थ-देहकी सिद्धिके लिये मारेहुए पारेका तथा रोगोंके नाशके लिये मूर्च्छित पारदका प्रयोग करे।कहीं२मारेहुए पारेका रोगोंके नाशके लिये तथा मूर्च्छितका देह सिद्धिके लिये भी प्रयोग करते हैं । शास्त्रीय कर्मका द्रष्टा वैद्य दोनोंही सिद्धियोंके लिये अर्थात् देहसिद्धि और रोगनाशक सिद्धि इनके लिये बद्ध पारेका प्रयोग करता है ॥ ५ ॥

मूर्छित पारदका लक्षण ।

कज्जलाभो यदा सूतो विहाय घनचापलम् ॥ मूर्छितः स तदा ज्ञेयो नानारसगतः क्वचित् ॥ ६ ॥ (रसरत्नाकर १७२)

अर्थ-जब पारद घन और चपलताको छोडकर कज्जलके समान अनेक रस या वर्ण (रंग) व्यापी होजाय तब पारद मूर्च्छित कहाता है ॥ ६ ॥

कज्जलाभो यदा सूतो विहाय घनचापले। दृश्यतेऽसौ तदा ज्ञेयो मूर्छितः सुतरां बुधैः ॥ ७ ॥ (रसदर्पण. टोडरानन्द २७, रसमंजरी १०)

अर्थ-जब पारद घन और चपलताको छोडकर काजरके समान दीखने लगे तब पारदको पंडितजन मूर्च्छितहुआ समझें ॥ ७ ॥

तथा च ।

नानावर्णो भवेत्सूतो विहाय घनचापले ॥ लक्षणं दृश्यते यस्य मूर्छितं तं वदन्ति हि॥

अर्थ-जब पारद घन और चपलताको छोडकर अनेक वर्णवाला होता है इसप्रकारके जिसके लक्षण हों उस पारदको रसकर्मके ज्ञाता वैद्य मूर्च्छित पारद कहते हैं ॥ ८ ॥

मूर्छितलक्षण ।

गौरवं घनता यस्मिन् तेजस्वित्वं च दृश्यते॥ सोऽयं विमूर्च्छितः सूतो विज्ञेयो नैव वह्निना ॥ ९ ॥ (रसेन्द्रसारसंग्रह ९)

अर्थ-जिस पारदमें भारीपन कठिनाई और चमक दीखतीहै उसको मूर्च्छित पारद समझना चाहिये अर्थात् जिसमें गुरुता कठिनता और चमक न हो उसको मूर्च्छित पारद कहते हैं ॥ ९ ॥

सम्मति-मेरी रायसे यह बद्ध पारदका लक्षण होसकताहै क्योंकि यह पूर्वोक्त अनेक मूर्च्छित पारदके लक्षणोंसे विरुद्ध है और रसेन्द्रसारसंग्रहकारने स्वयं इन्हीं लक्षणोंको बद्धके लक्षणमें लिखाहै ॥

बद्धलक्षण ।

यस्मिन्गुरुतारुणता तेजस्वित्वं च दृश्यते सूते॥ दृढशिखिमध्ये तिष्ठेद् बद्धः सूतोऽमृतोपमो ज्ञेयः ॥१०॥ (रसेन्द्रसारसंग्रह.)

अर्थ-जिस पारदमें भारीपन, ललाई और चमकीलापन दीखताहो और तीक्ष्ण अग्निमेंभी उड नहीं सक्ताहो उसको बद्धपारद कहते हैं और वह अमृतके तुल्य होताहै ॥ १० ॥

मतान्तर ।

माधुर्य्यगौरवोपेतस्तेजसा भास्करोपमः ॥ वह्निमध्ये यदा तिष्ठेत्तदा बद्धस्य लक्षणम् ॥ ११ ॥ (रसरत्नाकर १७२)

अर्थ-जो पारद माधुर्य्य तथा गुरुतासे युक्त हो और तेजमें सूर्यके समान चमकीला हो और जब अग्निस्थायी होजावे तब उसको बद्धपारद कहते हैं ॥ ११ ॥

मतान्तर ।

अक्षयी च लघुद्रावी तेजस्वी निर्मलो गुरुः स्फुटनं पुनरावृत्तौ बद्धसूतस्य लक्षणम् ॥ ॥ १२ ॥ (रसमंजरी १०, वाच. बृह. ७, नि. र. ७)

अर्थ-अक्षयी (जो अग्निपर राखनेसे न उडे) शीघ्रही द्रव होजावे, चमकीलापन, स्वच्छ, भारी और दुबारा बद्ध करनेमें खील २ होना इत्यादि बद्ध पारदके लक्षण हैं॥१२॥

मृतपारदलक्षण ।

अगुरुरतेजाः शुभ्रो वह्निस्थायी स्थिरो धूमः ॥ हेमादिधातुभोक्ता तत्कर्ता स्यान्मृतः सूतः ॥ १३ ॥ (बृहद्योगतरंगिणी.)

१२२., र. रा. शं. १४, र. सा. प. १४, नि. र. २८)

अर्थ-जो पारद हलका हो, तेजरहित हो, सफेद हो, अग्निमें स्थिर और धूमरहित हो, हेमआदि धातुओंका खानेवाला हो और उन्हीं हेमादि धातुओंका बनानेवाला हो ऐसे पारदको मृत पारद कहते हैं ॥ १३ ॥

मृतपारदलक्षण ।

अतेजा अगुरुः शुभ्रो लोहहा चंचलो रसः । यदा नावर्तयेद्वह्नौ नोर्ध्वं गच्छेत्तदा मृतः ॥ १४ ॥ (रसराजसुन्दर ८९, र. रा. शं. १४, रस. सा. प. १४, नि. र. २८)

अर्थ-तेज (चमक) और गुरुतासे रहित हो, श्वेत हो, लोह (धातु) का खानेवाला और चंचलतासे रहित पारद जब अग्निमें नहीं चक्कड खाताहै और उडताभी नहीं है तब उसको मृतपारद कहते हैं ॥ १४ ॥

मतान्तर ।

आर्द्रत्वं च घनत्वं च तेजो गौरवचापलम् ॥ यस्यैतानि न दृश्यन्ते तं विद्यान्मृतसूतकम् ॥ १९ ॥ (रसमंजरी १०, वा. बृ. ७))

अर्थ-गीलापन, कठोरता, चपलता, चमक और गुरुता ये लक्षण जिस पारदके न हों उसको मृत पारद कहते हैं ॥ १५ ॥

तथा च ।

द्रवघनगुरुचंचलता तेजस्वित्वं च दृश्यते यत्र । तं मृतसूतं विद्यान्नैकः सर्वत्र वर्णनियमोऽस्ति ॥ १६ ॥ (रसेन्द्रसार संग्रह ९,)

अर्थ-गीलापन, कठोरता, चंचलता और चमक ये लक्षण जिसमें नहीं दीखते हों उसको मृतपारद कहते हैं और वर्णका नियम सबजगह एकसा नहीं है ॥ १६ ॥

तथा च ।

चांचल्यमद्रितेजस्त्वं द्रवत्वं गौरवाणि च । सूतस्य पंच नश्यन्ति बद्धस्यापि मृतस्य च ॥ १७ ॥ (नि. रत्ना. १८)

अर्थ-चंचलता, घनता, चमकीलापन, गीलापन और गुरुता ये पांचों लक्षण मृत और बद्धपारदके नहीं होतेहैं १७

पारदकी चारदशाओंके नाम फल और लक्षण ।

दो०-सोधितपारदको कहैं,मुनि जन ब्रह्मस्वरूप।जो है पारद मूर्च्छित,सोहु जनार्दन रूप ॥ मारित पारद रुद्र है, बद्ध सदाशिव जोय । या प्रकार रसराजकी, चारि अवस्था होय ॥ जो चन्द्रोदय आदि दै, जानो रस सिंदूर । यह मूर्च्छित विधिसों करै, सकल रोगको दूर॥ बद्ध वहै रसराज सों,जानो गुटिकाकार। सो खेचर गतिको करै, जानो क्षुधा अपार ॥ जरा हरै पारद मृतक, वरण्यों सुधा समान । को करुणाकर भुवि विषे, पारदसम गुणवान ॥ अनूपान जो रोगपै, ताही करके देय । नर कुंजर पुनि तुरगके, सकलरोग हरि लेय ॥ (वैद्यादर्श ९)

रसकी तीनदशाओंकी सूक्ष्म विधि ।

मारयेज्जारितं सूतं गंधकेनैव मूर्छयेत ॥ बद्धः स्याद्द्रुतिसत्त्वास्यां रसस्यैवं त्रिधा गतिः ॥१८ ॥ (रसरत्नाकर. १५८)

अर्थ-विद्वान् मनुष्य गंधक जारित पारदको मारे और गंधक जारणसे पारेको मूर्च्छित करे, द्रुति और सत्त्वसे पारद बद्ध होता है इसप्रकार पारदकी तीन गतिहैं ॥ १८॥

चारप्रकारके बद्ध ।

पोटः खोटो जलौका च भस्म चापि चतुर्थकम् ॥ बन्धश्चतुर्विधो ज्ञेयः सूतस्य भिषगुत्तमैः ॥१९॥ पोटः पर्पटिकाबन्धः पिष्टिबन्धस्तु खोटकः॥जलौका पंकबंधः स्याद्भस्म भस्मनिभं भवेत् ॥ २० ॥ (र. रा. शं.)

अर्थ-पोट, खोट, जलौका और भस्म इसप्रकार चार तरहका पारदका बद्ध होताहै । पपडीके समान बनेहुए पारेको पोट कहतेहैं, पिष्टीबद्धको खोट कहतेहैं, कीचडके समान बनेहुएको जलौकाबद्ध कहतेहैं और भस्मके रूपमें बनेहुए पारेको भस्मबद्ध कहतेहैं ॥ १९॥ २० ॥

पच्चीसरसबंधोंका वर्णन ।

पंचविंशतिसंख्याकान् रसबंधनान्प्रचक्ष्महे ॥ येनयेन हि चांचल्यं दुर्ग्रहत्वं च नश्यति ॥ २१ ॥ रसराजस्य संप्रोक्तो बंधनार्थो हि वार्तिकः॥ हटारोटौ तथा भासः क्रियाहीनश्च पिष्टिका ॥ २२ ॥ क्षारः खोटश्च पोटश्च कल्कबंधश्च कज्जलिः ॥सजीवश्चैव निर्जीवो निर्बीजश्च सबीजकः॥ २३ ॥ शृङ्खलाद्रुतिबन्धौ च बालकश्च कुमारकः तरुणश्च तथा वृद्धो मूर्तिबद्धस्तथापरः ॥ जलबंधोऽग्निबंधश्च सुसंस्कृतकृताभिधः ॥ महाबंधाभिधश्चेति पंचविंशतिरीरिताः॥ ॥ २५॥केचिद्वदन्ति षड्विंशो जल्काबंध-

संज्ञकः ॥ स तावन्नेष्यते देहे स्त्रीणां द्रावे प्रशस्यते ॥ २६ ॥ (रसरत्नसमुच्चय ९२, र. रा. शं ११, र. रा. सुं ५८.)

अर्थ-जिसप्रकार पारदकी चंचलता और दुर्ग्रहता (पकडाईमें न आना) नष्ट होजावे इसलिये विद्वानोंने बद्ध, कारक पदार्थोंसे पारदका बंधन कहाहै। उन पच्चीस रसबंधोंको हम वर्णन करतेहैं हट १, आरोट २, आभास ३, क्रियाहीन ४, पिष्टीका ५, क्षार ६, खोट ७, पोट ८, कल्कबंध ९, कज्जलि १०, सजीव ११, निर्जीव १२, सबीज १३, निर्बीज १४, शृंखलाबंद १५, द्रुतिबंध १६, बालक १७, कुमारक १८, तरुण १९, वृद्ध २०, मूर्तिबद्ध २१, जलबंध २२, अग्निबंध २३, संस्कृतकृत २४, और महाबंध॥ २५, इसप्रकार पच्चीस बंध कहेहैं कुछ मनुष्य जलौका बद्धको भी बंधोंमें मानकर छव्वीस प्रकारके बंध कहतेहैं परन्तु बहुत जनोंकी यह सम्मति है कि जलौकाबंध नामका बंध शरीरके पोषणके लिये नहीं कहाहै किन्तु स्त्रियोंके द्रावण करनेके लिये प्रयोग कियागया है इसवास्ते यह बंधोंमें नहीं होना चाहिये ॥ २१-२६ ॥

हठ अशुद्धरसलक्षण ।

हठो रसः स विज्ञेयः सम्यक्शुद्धिविवर्जितः ॥ स सेवितो नृणां कुर्यान्मृत्युं व्याधिसमुद्भतम् ॥ २७ ॥ (रसरत्नसमुच्चय ९३, र. सा. प. १२)

अर्थ-जो पारद अच्छीप्रकार शुद्ध नहीं कियागया हो उसको हठरस कहतेहैं और सेवन कियाहुआ वह हठरस मनुष्योंके मृत्यु और भयंकर व्याधिको करताहै ॥ २७ ॥

आरोटशुद्धरसलक्षण ।

सुशोधितो रसः सम्यगारोट इति कथ्यते। स क्षेत्रीकरणे श्रेष्ठः शनैर्व्याधिविनाशनः ॥ २८ ॥ (रसरत्नसमुच्चय ९३, र. रा. शं. ११, र. रा. सुं. ५८, र. सा. प. १२)

अर्थ-सम्पूर्णरीतिसे शुद्ध कियाहुआ पारद आरोट नामसे कहाताहै वह क्षेत्रीकरण (जो रसायनसेवनसे पूर्व अभ्रकप्रभृतिका सेवनकरने) के लिये श्रेष्ठहै और सेवनकरनेसे धीरे २ रोगोंका नाश करताहै ॥ २८ ॥

मतान्तर ।

सुशोधितो रसः सम्यग्युक्तो योगेन केनचित् । आरोटसंज्ञया ख्यातो स क्षेत्रीकरणे मतः ॥ २९ ॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ-अच्छीप्रकार शुद्ध कियाहुआ तथा किसी रसायनिकयोगसे युक्तकियाहुआ पारा आरोटनामसे कहाताहै और क्षेत्रीकरणके लिये उत्तम मानागयाहै ॥ २९ ॥

आरोटसंज्ञां लभते ह्येकवारं मृतस्तु यः । न तेन जीवकर्म स्यान्न तथा व्याधिनाशनः ॥ ३० ॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ-जो पारद एकबार माराहुआहै उसको आरोट कहतेहैं। उससे क्षेत्रीकरण नहीं होताहै तथा रोगोंका नाश भी नहीं होताहै ॥ ३० ॥

आभासरसलक्षण ।

पुटितो यो रसो याति योगं मुक्त्वा स्वभावताम् । भावितो धातुमूलाद्यैराभासो गुणवैकृते ॥ ३१ ॥ (रसरत्नसमुच्चय., र. रा. शं. ११, र. रा. सुं. ५९, र. सा. प. १२)

अर्थ-पुटके देनेसे जो पारद पुट दियेहुए योगको छोडकर फिर अपने रूपमें प्राप्त होताहै और उसीमें फिर धातु तथा जडी प्रभृतिकी भावना दीजावे तो उसको आभासरस कहतेहैं वह रस अवगुणके लिये होताहै ॥ ३१ ॥

क्रियाहीनरसलक्षण ।

असंशोधितलोहाद्यैः साधितो यो रसात्तमः । क्रियाहीनः स विज्ञेयो विक्रियां यात्यपथ्यतः ॥ ३२ ॥ (रसरत्नसमुच्चयः ९३, र. रा. शं. ११, र. रा. सुं. ५९, र. सा. प. १२)

अर्थ-नहीं शुद्धकिये लोहादिधातुओंसे सिद्ध कियाहुआ पारद क्रियाहीन कहाताहै वह पथ्य न करनेसे विकारको प्राप्त होताहै ॥ ३२ ॥

पिष्टीबन्धरसलक्षण ।

तीव्रातपे गाढतरं विमर्द्य पिष्टी भवेत्सा नवनीतरूपा ॥ ख्यातः स सूतः किल पिष्टिबद्धः संदीपनं पाचनकृद्विशेषात ॥ ॥ ३३ ॥ (रसरत्नसमुच्चय ८३, र. रा. शं. ११)

अर्थ-पारद तथा गंधकको खरलमें डालकर तेजघाममें खूब घोटे तो पारदकी मक्खनके समान पिष्टी होतीहै,उसको पिष्टीबंध कहतेहैं । उस पिष्टीबन्धके सेवनसे अग्निकी वृद्धि होतीहै और अत्यन्त पाचन कर्ताहै ॥ ३३ ॥

क्षारबद्धरसलक्षण ।

शंखशुक्तिवराटाद्यैर्योऽसौ संसाधितो रसः ॥ क्षारबद्धः परं दीप्तिपुष्टिकृच्छूलनाशनः ॥ ३४ ॥ (रसरत्नसमुच्चय ९३, र. रा. शं., र. रा. सुं., र. सा. प.)

अर्थ-शंख मोती सीप और कौडी वगैरह पदार्थोंके साथ जो पारदसिद्ध कियाजाताहै उसको क्षारबद्ध कहतेहैं वह क्षारबद्ध अत्यन्त दीपन पुष्टिकारक और शूलका नाश करनेवाला है ॥ ३४ ॥

खोटबद्धलक्षण ७।

बंधो यः खोटतां याति ध्मातो ध्मातः क्षयं व्रजेत् ॥ खोटबद्धः स विज्ञेयः शीघ्रं सर्वगदापहः ॥ ३५ ॥ (रसरत्नस०)

अर्थ—जो पारद बंधनेयोग्य जडियोंके योगसे गोली बनजाय और बारबार धोंकनेसे घटताजावे उसको खोटबद्ध कहतेहैं और शीघ्रही समस्त रोगोंको नाशकरताहै ॥ ३५ ॥

पोटबद्धलक्षण ८।

द्रुतकज्जलिका मोचापत्रेषु चिपिटीकृता। स पोटः पर्पटी सैव बालाद्यखिलरोगनुत् ॥ ॥ ३६ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.,र. रा. शं., र. रा. सुं., टो. २७)

अर्थ—पारद और गंधककी कजलीको लोहेकी कढाईमें डालकर तपावे तो उसका रस अर्थात् पानीसमान पतला पदार्थ होजायगा उसको गौके गीलेगोबर पर रक्खेहुए केलेके पत्तेपर डालदेवे और ऊपरसे केलेके पत्तेको रख और उसपर फिर गोबरको रखकर दवावे स्वांगशीतल होनेपर निकाललेवे उसे पोट या पर्पटिका बद्ध कहतेहैं । उस पर्पटीको पीस अनुपानके साथ सेवन करे तो बालक और वृद्ध वगैरहके रोगोंको शीघ्र ही नाश करताहै ॥ ३६ ॥

कल्कबंधका लक्षण ९।

स्वेदाद्यैः साधितः सूतः पंकत्वंसमुपागतः॥ कल्कबद्धः स विज्ञेयो योगोक्तफलदायकः ॥ ३७ ॥ (रसरत्नमुच्चय., ॥ र. रा. शं. र. रा. सुं.)

अर्थ—स्वेदन आदि संस्कारोंसे जो पारद पंक (कीचड) के समान होजाताहै, उसको पङ्कवद्ध कहते हैं, वह पृथक् २ योगोंके साथ फलका दाताहै ॥ ३७ ॥

कज्जलीबंध लक्षण १०।

कज्जलीरसगन्धोत्था सुश्लक्ष्णा कज्जलोपमा॥ तत्तद्योगेन संयुक्ता कज्जलीबन्ध उच्यते ॥ ३८ ॥ (र. र. स.)

अर्थ—पारे और गंधकको खरलमें डालके घोटे तो अत्यन्त चिकनी तथा काजरके समान काली कंजली होती है उस कजलीका प्रधान २ औषधियोंद्वारा मेलकरनेसे कज्जलीबंध होजाताहै ॥ ३८ ॥

सजीवरसलक्षण ११।

भस्मीकृतो गच्छति वह्नियोगाद्रसः सजीवः स खलुप्रदिष्टः ॥ संसेवितोऽसौ न करोति भस्म कार्यं जराव्याधिविनाशनं च ॥ ३९ ॥ (रसरत्नसमुच्चय., र. रा. शं. र. सा. प.)

अर्थ—भस्म कियाहुआ जो पारद अग्नियोगसे उडजावे उसको सजीव रस कहते हैं, और उस पारदके खानेसे पारदभस्मके समान गुण नहीं होते बुढापा तथा रोगोंका नाश भी नहीं होताहै ॥ ३९ ॥

निर्जीवरसलक्षण १२।

जीर्णाभ्रको वा परिजीर्णगंधो भस्मीकृतश्चाखिललोहमौलिः ॥ निर्जीवनामा खलु भस्मसूतो निःशेषरोगान्विनिहन्ति वेगात् ॥ ४० ॥ (रसरत्नसमुच्चय., र. रा. शं. र. रा. सुं.)

अर्थ—अभ्रकजारण कियेहुए अथवा गंधकजारण किये हुए जो पारद की भस्म हो जाय तो समस्त धातुओंसे उस पारदभस्मका गुण उत्तमोत्तम है वह भस्म कियाहुआ निर्जीव नामका पारद शीघ्र ही समस्त रोगोंको नाश कर देताहै ॥ ४० ॥

निर्बीजरसलक्षण १३।

रसस्तु पादांशसुवर्णजीर्णः पिष्टीकृतो गंधकयोगतश्च ॥ तुल्यांशगंधैः पुटितः क्रमेण निर्बीजनामा सकलामयघ्नः ॥ ४१ ॥ (रसरत्नसमुच्चय., र. रा. शं., र. रा. सुं., टोड.)

अर्थ—चौथाईभाग सुवर्ण जारित कियेहुए पारदकी गंधकके योगसे पिट्ठी बनावे और क्रमसे तुल्यगंधकके साथ पुट दिया हुआ समस्त रोगोंका नाशक निर्बीजनामका पारद सिद्ध होताहै ॥ ४१ ॥

बीजबद्धलक्षण १४।

पिष्टीकृतैरभ्रकसत्त्वहेमताराऽर्ककान्तैः परिजारितो यः ॥ हतस्ततः षड्गुणगंधकेन स बीजबद्धो विपुलप्रभावः ॥ ४२ ॥ (रसरत्नसमुच्चय., र. रा. शं., र. रा. सुं., टोड., ॥ रसमञ्जरी.) ॥

अर्थ—अभ्रकसत्त्व, सुवर्ण, चांदी, ताँबा और कान्तलोह इनमेंसे किसीको पारदके समानभाग लेकर पिट्ठी बनावे तदनन्तर वीजजारणरीतिसे जारण करे फिर उसको छः गुने गंधकके साथ भस्मकरे तो उसको बीजबद्ध पारद कहते हैं वह अत्यन्त प्रभाववाला होताहै अर्थात् समस्त रोगोंमें निःशंक देनेयोग्य है ॥ ४२ ॥

शृंखलाबद्धलक्षण १५।

वज्रादिनिहतः सूतो हतसूतसमोऽपरः शृंखलाबद्धसूतस्तु देहलोहविधायकः ॥ चित्रप्रभावो वेगेन व्याप्तिं जानाति शङ्करः

॥ ४३ ॥ (रसरत्नसमुच्चय., र. रा.शं., र. रा. सुं.)

अर्थ-हीराप्रभृति रत्नोंसे सिद्ध कीहुई पारदकी भस्म तथा जडीबूटियोंसे कीहुई पारदभस्म इनदोनोंको समानभाग लेकर घोटलेवे तो श्रृंखलाबद्ध रस सिद्धहोकर देहको दृढकरनेवाला होताहै इस पारदमें ऐसी विलक्षण शक्ति है जो कि औषधिको शरीरके सर्वत्रस्थानमें फैलादेताहै (इसके विशेषगुण शिवसंहितामें लिखेहै) ४३ ॥

द्रुतिबद्धरसलक्षण १६ ।

युक्तोऽपि बाह्यद्रुतिभिश्च सूतो बद्धं गतो वा भसितस्वरूपः ॥ सराजिकापादमितो निहन्ति दुःसाध्यरोगान्द्रुतिबद्धनामा४४॥ (रसरत्नसमुच्चय., ॥ र. रा. शं.,॥र.रा.सुं.

अर्थ-परिभाषाध्यायमें कहीहुई विधिसे द्रुतिकर पीछे किसी औषधिद्वारा जो पारदका बंधन करना है उसको द्रुतिबद्ध कहते हैं चौथाई राईकी बराबर द्रुतिबद्ध पारदके खानेसे दुःसाध्य (जिसकी चिकित्सा कठिनता होतीहो) रोगोंको नाश करताहै ॥ ४४ ॥

बालरसलक्षण १७ ।

समाभ्रजीर्णः शिवजस्तुबालः स सेवितो योगयुतो जवेन ॥ रसायनो भाविगदापहश्च सोपद्रवारिष्टगदान्निहन्ति ॥४५॥ (रसरत्नसमुच्चय., र. रा. शं., र. रा. सुं.,र. सा. प.)

अर्थ-पारदमें समानभाग अभ्रकको जारण करे तो वह बालरस सिद्ध होताहै, सेवन कियाहुआ यह बालरसनामक रसायन उपद्रव तथा अरिष्ट (मृत्युके लक्षण) सहित होनेपर रोगोंको नाश करताहै ॥ ४५ ॥

कुमाररसलक्षण १८ ।

हराद्भवो यो द्विगुणाभ्रजीर्णः स स्यात्कुमारोऽमिततन्दुलोऽसौ ॥ त्रिसप्तरात्रैः खलु पापरोगसंघातघाती च रसायनं च ॥४६ ॥ (रस रत्नसमु., र. रा. शं.,र. रा. सुं., र. सा. प.)

अर्थ-पारदसे दूना अभ्रक लेकर जारणविधिसे जारण करे तो इसको कुमाररस कहतेहैं वह कुमाररस इक्कीस दिवसतक सेवन कियाजावे तो पापरूप रोगोंका नाश करनेवाला और रसायन है ॥ ४६ ॥

तरुणरसलक्षण १९ ।

चतुर्गुणव्योमकृताशनो यो रसायनाग्र्यस्तरुणाभिधानः ॥ स सप्तरात्रात्सकलामयघ्नो रसायनो वीर्यबलप्रदाता ॥ ४७ ॥ (र. र. समु., र रा. शं., र. सा. प. , र. रा. सुं.)

अर्थ-पारदसे चौगुना अभ्रक लेकर जारणविधिसे जारण करे तो उसको तरुणबंधनाम रस कहतेहैं उसका इक्कीस दिवसतक सेवन करनेसे समस्तरोगोंका नाश करनेवाला रसायन और वीर्य तथा बलका दाता होताहै ॥ ४७ ॥

वृद्धरसलक्षण २० ।

यस्याभ्रकं षड्गुणितं हि जीर्णं प्राप्ताग्निसख्यं स हि वृद्धनामा ॥ देहे च लोहे च नियोजनीयः शिवादृते कोऽस्य गुणान्प्रवक्ति ॥ ॥ ४८॥(र. र. समु.,र.रा.शं.,र. रा. सुं., र.सा. प.)

अर्थ-जिसको अभ्रकसे मित्रता प्राप्तहुईहै अर्थात् अग्निमें डालनेसे न उडे और जिसमें छःगुना जारण कियाहो उसको वृद्धनामका रस कहतेहैं । उसका प्रयोग शरीरके लिये तथा रसायनके लिये अवश्य करना चाहिये इसके गुणोंको श्रीमहादेवजीके सिवाय और कोई नहीं कहसकताहै ॥ ४८ ॥

मूर्तिबद्धलक्षण २१ ।

यो दिव्यमूलिकाभिश्च कृतोऽत्यग्निसहो रसः ॥ विनाऽभ्रजारणात्स स्यान्मूर्तिबद्धो महारसः ॥ ४९ ॥ अयं हि जीर्यमाणस्तु नाग्निना क्षीयते रसः ॥ योजितः सर्वयोगेषु निरौपम्यफलप्रदः ॥ ५० ॥ (र. र.स., र. रा. शं., र. रा. सुं., र. सा. प.)

अर्थ-जो पारद अभ्रक जारण करनेके विनाही केवल जडीबूटियोंसे ही अग्निसह (अग्निमें रखनेसे न उडनेवाला) हो जाय उसको मूर्तिबद्धरस कहते हैं और इसको कितनीबार अग्निमें तपावे तो भी क्षय नहीं होता है इसको योगसे अद्भुतफल प्राप्त होता है ॥ ४९ ॥ ५० ॥

जलबंधलक्षण २२ ।

शिलातोयमुखैस्तोयैर्बद्धोऽसौ जलबंधवान्॥ स राजरोगमृत्युघ्नः कल्पोक्तफलदायकः ॥ ॥ ५१ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-शिलाजीत आदि द्रवपदार्थोंके साथ बंधाहुआ पारद जलबंधनामसे प्रसिद्ध है जरा (बुढापा), राजरोग तथा मृत्युका भी नाश करनेवाला है और कल्पमें कहेहुए फलको भी देता है ॥ ५१ ॥

अग्निबद्धरसलक्षण २३ ।

केवलो लोहयुक्तो वा ध्मातः स्याद्गुटिकाकृतिः । अक्षीणश्चाग्निबद्धोऽसौ खेचरत्वादिकृत्स हि ॥ ५२ ॥ (र. र. समु.,र रा. शं., र. रा. सुं.)

अर्थ-केवलपारद अथवा पारदमें किसी लोह (धातु) को डालकर धोंकाजावे तो पारदकी गोलीके समान

आकृति होजाती है और क्षय भी नहीं होता उसको अग्नि बद्ध रस कहते हैं, वह खेचरत्व आदि गतिको करता है ॥ ५२ ॥

संस्कृतकृतलक्षण २४।

विष्णुक्रान्ताशशिलताकुम्भीकनकमूलकैः॥ विशालानागिनीकन्दव्याघ्रपादीकुरुण्टकैः ॥ ५३ ॥ वृश्चिकालीभशुण्डिभ्यां हंसपाद्या महासुरैः ॥ अप्रसूतगवां मूत्रैः पिष्टं वालुकके पचेत् ॥ ५४ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)॥

अर्थ-विष्णुक्रान्ता (कोयल), शशिप्रभा (बावची), कुम्भी (जलकुम्भी), धतूरा, मूली, इन्द्रायण, नागिनीकन्द (नागदमनीका कन्द),व्याघ्रपादी (कटेरी), पीयाबांसा, बिछुआघास, हाथीशुण्डा, लालरंगका लज्जालू, राई, इन सबको समभाग लेकर अप्रसूता (जो व्याई न हो और जिसके प्रथम ही गर्भ रहाहो) गायनके मूत्रोंसे पीस मूषा बनावे फिर उसमें पारदको रख मुखबंध करे, तदनन्तर वालुकायंत्रमें रख पकालेवे । फिर पारदके तुल्य सातों ही धातुओंको लेकर पूर्वोक्त औषधियोंके रसमें घोट गोला बनावे, पाछे बालुकायंत्रमें पकावे इसप्रकार अन्य २ यंत्रोंसे भी पारदकी मूर्च्छा होसकती है इसका नाम सुसंस्कृत रक्खा है ॥ ५३ ॥ ५४ ॥

महाबन्धरसलक्षण २५।

हेम्ना वा रजतेन वा सहचरो ध्मातो व्रजत्येकतामक्षीणो निबिडो गुरुश्च गुटिकाऽऽकारोऽतिदीर्घोज्ज्वलः । चूर्णत्वं पटुवत्प्रयाति निहतो घृष्टो न मुञ्चेन्मलं निर्गन्धो द्रवति क्षणात्स हि महाबन्धाभिधानो रसः ॥ ५५ ॥ (र. र. समु., र. रा. शं., र. रा. सुं., र. सा. प.)

अर्थ-सोने तथा चांदीके साथ धोंकनेसे उडे नहीं बल्कि उसमें मिलजाय, अग्निमें डालनेसे उडेनहीं, अत्यन्त सूक्ष्म औषधिसे बंधनको प्राप्त होजाय, भारीवजन हो, गोलीकासा गोल आकार हो, चमकीलास्वरूप हो, भस्मकरनेसे नोंनके समान चूरा चूरासा होजाय, घिसनेसे मैला न हो, जिसमें किसीप्रकारकी गंध नहीं आती हो और आंचमें रखकर तपानेसे शीघ्र ही पारदके समान पतला होजाय, उसको महाबन्ध रस कहते हैं ॥ ५५ ॥

अथ पोटखोटादिप्रकार।

अन्यमते-चत्वार एव बन्धास्तेऽधो लिखितप्रकारेण वर्ण्यंते । यथा (र. रा. शं.)

अर्थ-औरोंके मतमें चार प्रकारके ही बंध हैं, वे नीचे लिखेहुए प्रकारसे वर्णन किये जातेहैं जैसे-

पोटः खोटो जलौका च भस्म चापि चतुर्विधम् ॥ बंधश्चतुर्विधो ज्ञेयः सूतस्य भिषगुत्तमैः ॥ ५६ ॥ पोटः पर्पटिकाबंधः पिष्टीबंधस्तु खोटकः ॥ जलौकाः पङ्कबंधः स्याद्भस्म भस्मनिभं भवेत् ॥ ५७ ॥ बृ. यो., र. रा. शं., र. रा. सुं.)

अर्थ-१ पोट, २ खोट, ३ जलौका और ४ भस्म इस प्रकार उत्तम २ वैद्योंने ४ चार तरहके बंध कहेहैं, इन चार प्रकारके बंधोंमें जो पारद पपडीके समान होताहै उसको पोटबद्ध कहतेहैं और जो पिष्ठीके समान होताहै उसको खोटबद्ध कहतेहैं कीचडके समान बनेहुए पारेको जलौकाबंध और भस्मके समान बनेहुए पारेको भस्मबंध कहतेहैं ॥ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

पर्पटी (पोट) बद्धविधान।

लोहपात्रेऽथवा ताम्रे पलैकं शुद्धगंधकम् ॥ मृद्वग्निना द्रुते तस्मिच्छुद्ध सूतपलत्रयम् ॥ ॥ ५८ ॥ क्षिप्त्वाथ चालयेत्किञ्चिल्लोहदर्व्या पुनः पुनः ॥ गोमये, कदलीपत्रं तस्योपरि च ढालयेत् ॥ ५९ ॥ इत्येवं गंधबद्धं च सर्वरोगेषु योजयेत ॥ (रसमंजरी., र. र., आ. वे. वि.)

अर्थ-लोहके पात्रमें (कडछीवगैरहमें) अथवा ताँबेके पात्रमें एकपल शुद्ध गंधकका डालकर मन्दाग्निसे गलावे फिर उस गलेहुए गंधकमें तीन पल शुद्ध पारदको डालकर लोहेकी कडछीसे बार २ चलाताजावे तदनन्तर गोबरके ऊपर रक्खेहुए केलेके पत्तेपर उस गंधक पारदकी कज्जली ढालदेवे इस प्रकार सिद्धहुए गंधबद्धको सब रोगोंमें देदेवे तो श्रेष्ठहै ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

रसपर्पटीबंधे भावप्रकाशमें।

रसशुद्धं विधायादौ विधिनान्यतमेन च ॥ जयापत्ररसेनाथ वर्द्धमानरसेन वा ॥ ॥ ६० ॥ भृंगराजरसेनापि काकमाच्या रसेनच ॥ रसे शोध्यं प्रयत्नेन तत्समं शोधयेद्बलिम् ॥ ६१ ॥ भृंगराजरसैः पिष्ट्वा शोधयेदर्करश्मिभिः ॥ सप्तधा वा त्रिधा वापि पश्चाच्चूर्णं तु कारयेत् ॥६२ ॥ चूर्णयित्वा रसं तेन रसेन सह मर्दयेत् ॥ नष्टसूतं यदा चूर्णं भवेत्कज्जलसन्निभम् ॥ ६३ ॥ निर्धूमैर्बदराङ्गारैर्द्रवीकुर्यात्प्रयत्नतः ॥ ततस्तं महिषीविष्ठास्थापिते कदलीदले ॥ ६४ ॥ निक्षिप्य तदुपर्यन्यत्पत्रं दत्त्वा प्रपीडयेत् ॥ शीतलां तां ततो यत्नात्समुद्धृत्य विचूर्णयेत् ॥ ६५ ॥ एवं सिद्धा भवेद्व्याधिघातिनी रसपर्पटी ॥ जराधिव्याधिभिर्व्याप्तं विश्वं दृष्ट्वा पुरा हरः॥ ६६ ॥ चकार कृपया युक्तः

सुधावद्रसपर्पटी ॥ रक्तिकासम्मितां ताव-द्भृष्टजीरकसंयुताम् ॥ गुंजार्द्धभृष्टहिंग्वा तां भक्षयेद्रसपर्पटीम् ॥ ६७ ॥ रोगानुरूपभैषज्यैरपि तां भक्षयेत्सदा ॥ पिबेत्तदनु पानीयं शीतलं चुलकत्रयम् ॥ ६८ ॥ प्रत्यहं वर्द्धयेत्तस्या एकैकां रक्तिकां भिषक् ॥ नाधिकां दशगुंजातो भक्षयेत्तां कदाचन ॥ ६९ ॥ एकादश दिनारम्भात्तां तथैवापकर्षयेत् ॥ एवमेतां समश्नीयान्नरो विंशतिवासरान् ॥ ॥ ७० ॥ शिवं गुरुं तथा विप्रान्पूजयित्वा प्रणम्य च ॥ श्रद्धया भक्षयेदेतां क्षीरमांसरसौदनः ॥ ७१ ॥ ज्वरं च गृहिणी चापि तथातीसारमेव च ॥ कामलां पाण्डुरोगं च शूलं प्लीहजलोदरम् ॥ ७२ ॥ एवमादीन् गदान्हत्वा हृष्टपुष्टश्च वीर्यवान् ॥ जीवेद्वर्षशतं साग्रं वलीपलितवर्जितः ॥ ७३ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-अरणीके पत्तोंका रस, एरण्डके पत्तोंका रस, जलभंगरेके पत्तोंका रस अथवा मकोयके पत्तोंका रस इनमेंसे किसीएकके रससे विधिपूर्वक पारदको शुद्ध करे और पारदके समान गंधकको लेकर भँगराके रसमें घोट सूर्यके तेजसे सुखालेवे इसीप्रकार सातभावना देवे फिर उसका चूरा बनालेवे तदनन्तर उस पारदके साथ शुद्धगंधकको घोटकर कजली बनावे (फिर घीसे चिकनी कीहुई करछीमें कजलीको रखकर) निधूर्म (सुलगेहुए (बेरीके अंगारोंपर उस करछीको रखकर कजलीको गलावे जब वह खूब गलजावे तब भैंसके गोबरपर रक्खेहुए केलेके पत्तेपर गलीहुई कजलीको ढालदेवे फिर ऊपरसे केलेका पत्ता-रखकर और उसपर भैंसका गोवर रख दावदेवे और जब वह ठंढा होजाय तब निकालकर पीसलेवे तो इसप्रकार रोगोंका नाशकरनेवाली रसपर्पटी सिद्ध होती है । पहिले समयमें श्रीकृपालु महादेवजीने बुढापा और रोग आदिकसे घिरेहुए संसारको देखकर अमृतके समान इस रसपर्पटीको सिद्ध कियाहै । प्रथम एकरत्ती रसपर्पटीको भुनाहुआ एक रत्ती जीरासफेद तथा आधीरत्ती भुनीहुई हींग इन दोनोंके साथ खावे अथवा रोगके अनुसार औषधिके साथ (अनुपानके साथ) नित्य भक्षण करे और उसके पीछे तीन चुल्लू ठंढा जल पीवे । इसप्रकार नित्यप्रति एक २ रत्तीको बढाताहुआ दसरत्तीतक बढावे दसरत्तीसे अधिक भक्षण करना उचित नहीं है और ग्यारहवें दिनसे फिर इसी प्रकार ही घटाताजावे, इसरीतिसे मनुष्य बीसदिवसतक इस रसपर्पटीको खावे,रसपर्पटी भक्षणके प्रथमदिनमें श्रीशिवजी, गुरुदेव और ब्राह्मण इनको पूजकर और प्रणामकर दूध और माँसरसके साथ सिद्ध कियेहुए भातको खानेवाला मनुष्य श्रद्धासे इस रसपर्पटीको खावे तो ज्वर, ग्रहिणी, अतिसार, कमला, पाण्डुशूल, प्लीहा, और जलोदर इत्यादि रोगोंकोनाश कर मनुष्यको हृष्टपुष्ट और वीर्यवान् बनातीहै और विधिपूर्वक रसपर्पटीके खानेवाला मनुष्य एकसौ आठ तथा एकसौबीस वर्षतक नीरोगता पूर्वक जीवित रहताहै ॥ ६०-७३ ॥

जलौकाबंधः ।

मुनिपत्ररसश्चैव शाल्मलीकृतवारि च ॥ जातीमूलस्य तोयं च शिंशपातोयमेव च ॥ ७४ ॥ श्लेष्मातकफलं चैव त्रिफला चूर्णमेव च ॥ कोकिलाक्षस्य चूर्णं च पारदं मर्द्दयेद् बुधः ॥७५॥ जलौका जायते दिव्या रामाजनमनोहरा ॥ सा योज्या कामकाले तु कामयेत्कामिनी स्वयम् ॥ सद्यस्खलनमाप्नोति दुःसहा परितोऽङ्गना ॥ ७६ ॥ (रसराजशंकर.)

अर्थ-अगस्तके पत्तोंका रस, सैमलकी छालका काथ, चमेलीकी जडका रस, लहसोडा (मारवाडीमें गूंदा), त्रिफलाका चूर्ण, और बहेडेका चूर्ण इनके साथ शुद्ध पारदको मर्दन करे फिर उसकी जोंकके समान लंबी बत्ती बनावे तो वह जलौकाबद्ध रस होताहै स्त्रियोंको अत्यन्त आनन्दकी दाता वह जलौका कामदेवके समय मदनमन्दिरमें स्थापित करे तो वह स्त्री शीघ्र च्युत होती है ७४-७६

जलौकापरिमाण ।

बालमध्यमवृद्धास्तु योनिर्विज्ञायते क्रमात॥ नीरसानामपि नृणां योषा या संगमोत्सुका ॥ ७७ ॥ बाल्ये चाष्टांगुला योनौ यौवने च दशांगुला॥ द्वादशैव प्रगल्भानां जलौका त्रिविधा मता ॥ ७८ ॥ (रसराजशंकरः ॥ (निघंटुरत्नाकर.)

अर्थ-स्त्रीजननेन्द्रिय बाल, मध्यम और वृद्धा इन भेदोंसे तीन प्रकारकी है जो स्त्री नीरस मनुष्योंके संगमसे सुखको चाहती है वह बाल्यावस्थामें आठ अंगुल, जवानीमें दस अंगुल और जवानीके बाद बारह अंगुलकी जलौका लेवे इस प्रकार जलौका तीनप्रकारकी हैं ॥ ७७ ॥ ७८ ॥

गंधकबद्धलक्षण ।

अथवा गंधपिष्टीनां वस्त्रे बद्धा च गन्धकम्॥ तुल्यं दत्त्वा निरुध्याथ संपुटे लोहजे दृढे ॥ ७९ ॥ पुटयेद्भूधरे तावद् यावज्जीर्यति गंधकम् ॥ एवं पुनः पुनर्देयं यावद्गंधस्तु षड्गुणम् ॥इत्येवं गंधके बद्धः सूतः स्यात्सर्वरोगहा ॥ ८० ॥ (रसरत्नाकर.)

अर्थ-अथवा गंधकके साथ कीहुई पारेकी पिट्ठीके समान गंधकको लेकर और कपडेमें बांध लोहेके पात्रमें रख तब तक भूधरयंत्रमें रक्खे कि जबतक गंधक जारण होजाय इस प्रकार तुल्यगंधकको बार २ देकर षड्गुण गंधकजारण करे तो उसको गंधकबद्ध कहते हैं वह सब रोगोंका नाश करताहै ॥ ७९ ॥ ८० ॥

गंधबद्धलक्षण।

मूषाजम्बीरविस्तारा दैर्घ्येण षोडशांगुला॥ अपक्का सुदृढा कार्या सिकताभाण्डगध्यगा ॥ ८१ ॥ त्रिभागवालुकालग्ना पादांशेन बहिःस्थिता ॥ पलैकं चूर्णितं गंधं मूषामध्ये विनिक्षिपेत् ॥ ८२ ॥ शुद्धसूतपलं पश्चात्क्षिपेद्गंधपलं ततः ॥ भाण्डमारोपयेच्चुल्ल्यां मूषामाच्छाद्य यत्नतः॥८३॥मन्दाग्निना पचेत्तावद्यावन्निर्धूमितां व्रजेत् ॥ गन्धधूमे गते पूर्य्या काकमाचीद्रवैस्तुषां ॥ ८४ ॥ पूर्वे जीर्णे पुनः पूर्य्या नागवल्लीदलद्रवैः॥ जीर्णे धुस्तूरकद्रावैः पूरयित्वा पुनः पचेत् ॥ ८५ ॥ यावज्जीर्यति तद्द्वयं काकमाच्यादिभिः पुनः ॥ दत्त्वा दत्त्वा पचेत् तद्वद्धुस्तूरादिक्रमाद्रसम् ॥८६॥ भित्त्वा मूषां समादाय जराव्याधिहरो रसः ॥ योजयेद्गंधबद्धोयं योगवाहेषु सर्वतः ॥ ८७ ॥ (रसरत्नाकर.)

पाठान्तर।

सुवृत्तव्यङ्गुलाकारा दीर्घे स्यात्षोडशांगुला मृन्मये सम्पुटे पक्का मूषा जम्बीरसन्निभा ॥ ॥ ८८ ॥ कारयेद्वालुकां भांडे यावतो द्वादशांगुलम् ॥ चुल्ल्यामारोप्य तद्भाण्डमधो मन्दाग्निना पचेत् ॥ ८९ ॥ पलैकं चूर्णितं गंधं मूषामध्ये विनिक्षिपेत ॥ ॥ शुद्धसूतपलं पश्चात्ततो गन्धपलं क्षिपेत् ॥ ९०॥ आच्छाद्य पाचयेत्तावद्यावन्निर्धूमगंधकम्॥ काकमाच्या द्रवैः पूर्य सम्पुटं चाथ पाचयेत्॥ जीर्णद्रावे पुनः पूर्य नागवल्ल्या दलद्रवैः ॥ तज्जीर्णे कनकद्रावैर्मेघनादद्रवैः पुनः ॥९२॥एवं पुनः पुनर्देयं यावज्जीर्यति गंधकम् ॥ स्वभावशीतलं ज्ञात्वा भित्त्वा सम्पुटमाहरेत् ॥ गंधकजीर्णबद्धोयं सर्वरोगहरो रसः ॥ ९३ ॥ (हस्तलिखितरसरत्नाकर.)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां मूर्च्छितबद्धोपवर्णनं नाम षट्त्रिंशोऽध्यायः ३६।

अर्थ–जंभीरीके समान गोल, दो अंगुल चौडी और सोलह अंगुल लम्बी मिट्टीकी मूषा (घरिया) बनाकर पकालेवे और उस मूषाको वालुकायंत्रमें बारह अंगुल रेतमें गाड देवे। और चारअंगुल खुली रहनेदेवे फिर उसमें एक पल शुद्ध कियाहुआ गंधक डालदेवे और उतनाही यानी गंधकके समानही शुद्धपारदको डाले उसपर फिर एकपल गंधक डालदेवे तदनन्तर हांडीके मुखपर ढकना ढकदेवे जब कि गंधक धूवां न देवे। अर्थात् जलने लगे तब उसमें मकोयका रस भरदेवे, जब मकोयका रस जलकर सम्पुटमेंसे आंच जलनेलगे तब पानोंका रस डालकर सम्पुट भरदेवे उसके जलनेपर धतूरेका रस और धतूरेके रसके जलनेपर चौलाई (मारवाडमें चंदेला कहते हैं) का रस डाले इस प्रकार बारबार रस डालता जावे कि जबतक गंधक जीर्ण न हो, गन्धक जीर्ण होनेपर स्वांग शीतल जानके सम्पुटको तोड पारदको निकाललेवे तो यह समस्त रोगोंका नाशक गंधबद्धरस सिद्ध होता है इसको बुद्धिमान् वैद्य अपनी इच्छासे अनुपानके अनुसार अनेकप्रकारके रोगोंमें देसकते हैं ॥ ८१–९३ ॥

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपंडितमनसुखदासात्मजव्यास-ज्येष्ठमलकृतायां रसराजसंहितायां भाषाटीकायां मूर्च्छितबद्धोपवर्णनं नाम षट्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥

गुटिकाध्यायः ३७.



दूसरे प्रकारसे पारदबंधन। सलक्षण-(चतुष्षष्टिवनौषधियें)

अचिंत्यमौषधीवीर्यं रसराजस्य बंधने ॥ क्रियामंत्रविधानेन सबीजो बध्यते रसः ॥ ॥ १ ॥ तृणगुल्मलतावल्लीवृक्षैः सह वनस्पतिः ॥ षड्विधस्तु रसौषध्यो लक्षणेनावलोकयेत् ॥ २ ॥ सोमवल्ली द्विधा ज्ञेया श्वेता रक्ता च कंदका ॥ रसो रक्तो भवेत्तस्याः तिथिसंख्यादला च सा ॥ ३ ॥ तानि शुक्लकृष्णपक्षे जायन्ते च पतन्ति च॥ कृष्णपक्षे क्षयात्सापि वल्ली भवति केवला॥ ॥ ४ ॥ पूर्णिमायां ग्रहीतव्या रसबंधे रसायने ॥ जलजा पद्मिनी दिव्या वने तद्रूपधारिणी ॥ ५ ॥ तथान्याजगरी नाम मंडलैश्च विचित्रिता ॥ अजगराकृतिर्वल्ली स्वल्पपत्रपयस्विनी ॥ ६ ॥ गोनसी गोनसाकारा सा क्षीरा रसबंधिनी ॥ रुदन्ती चणकाकारा स्रवतीतोयबिंदुका ॥ ७ ॥ औषधी सर्वरा नाम स्नुहिपत्रा कपिप्रिया॥ सक्षीरा किंच दुर्भागा जायते च शिलातले ॥ ८ ॥ वाराहीकंदलोम्नी च वल्ली मागतपत्रिका ॥ अश्वत्थपत्री सक्षीरा वल्ली सा जातकी स्मृता ॥ ९ ॥ अम्लपत्री भवेदम्ला वासनातिविसर्पिणी ॥ चकोरनाकं वास-

पत्री सपत्री च पयस्विनी ॥ १० ॥ अशोक नामा सा क्षीरा लता च शोकसन्निभा ॥ पुन्नागपत्रिका वल्ली सुगंधक्षीरिणी भवेत् ॥ ॥ ११ ॥ नागिनी नागसक्षीरा सर्पा वा सर्पसन्निभा ॥ वक्षारोहा भवेद्वल्ली रसराजस्य बंधिनी ॥ १२ ॥ छत्राकारा च सा वल्ली सक्षीरैकत्रकन्दका ॥ क्षत्रिनामेति विख्याता रसबंधमहाबला ॥ १३ ॥ संबरी नामतो ज्ञेया पीतक्षीरा वनोद्भवा ॥ नात्युच्चगुल्मजातिश्च नन्दिकापत्रसन्निभा ॥ मूलक्षीरफलैः पुष्पैः क्षणात्सूतकबंधिनी ॥ वालुकीयंत्रसदृशी पीतक्षीरा सकोमला ॥ ॥ १५ ॥ देवनाम्नी लता सा च रसबंधे महौषधी ॥ वज्रवल्ली सपुष्पा च स्नुहीपत्रपयस्विनी ॥ १६ ॥

अर्थ-रसराजके बंधनके लिये और औषधियोंका प्रभाव अचिन्तनीय है इसलिये पारदबंधनार्थ क्रिया और मन्त्रोंको प्रयोग करै, तृण, गुल्म, लता, वल्ली, वृक्ष और वनस्पति इन भेदोंसे रसौषधिधियें छः ६प्रकारकी हैं उनको वैद्य लक्षणानुसार देखलेवे । (१) सोमवल्ली नामकी औषधि श्वेत और रक्त भेदसे दो प्रकारकी होतीहै और वह एक प्रकारका कन्द होताहै जिसके तोडनेसे लालरंगका रस निकलताहै और उसके पत्ते थोडे ही होतेहैं वे पत्ते शुक्ल पक्षमें उत्पन्न होतेहैं कृष्ण पक्षमें पत्ते झडजातेहैं अथवा कृष्णपक्षमें जो औषधि घटती हो उसको भी सोमवल्ली कहतेहैं उसको पारदबंधन और रसायनके लिये पौर्णमासीके दिन ग्रहण करना चाहिये । (२) जंगलमें पद्मिनीके समान रूपवाली जो औषधि है उसको जलजा पद्मिनी कहतेहैं । (३) और अनेक प्रकारके मंडलोंसे चित्रित जिसके थोडे पत्र और दूध अधिक हो अजगरके समान आकार हो उसको आजगरी नामकी बूटी कहतेहैं । संग्रहकारका कहनाहै कि मैंने काश्मीरमें अमरनाथके रास्तेपर महागुन्स पर्वत है वहां गुन्स और महागुस नामकी दो बूटी हैं कश्मीरकी भाषामें गुन्स अजगरको कहतेहैं । (४) अधिक दूधवाली रसबंधनके योग्य गोनसा नामकी जडी है जिसका आकार सर्पके समान होताहै जिसका आकार चनेके वृक्षकासा हो और उसमेंसे पानीकी बूंदें झरती हों उसको रुद्रन्ती (रुद्रदन्ती) कहतेहैं । जिसके पत्ते थूहरके पत्तोंके समान हों उसे सवर्ण नामकी बूटी कहतेहैं वह वानरोंको अत्यन्त प्रिय होतीहै । और दुर्भगा नामकी औषधि चट्टानोंकी जगह उत्पन्न होतीहै और दूधदार होतीहै । जिसके पत्ते अगस्त्य वृक्षके समान हों उसे वराहीकन्दलोम्नी नामकी बूटी कहतेहैं । अश्वत्थपत्री नामकी वह बूंटी होतीहै जो दूधवाली और साजातकी हो । जो फैलनेवाली खट्टी गंध जिसमें आती हो जिसके पत्ते चकोरके नाकके समान हों या विना पत्तेकी हो और दूधवाली हो उसको अम्लपत्री जडी कहते हैं । (५) अशोक वृक्षके समान जो दूधवाली औषधि हो उसको अशोकपत्री कहतेहैं । जिसमें सुगन्धित दूध निकलता हो उसको पुन्नागपत्री कहते हैं । जो सर्पके तुल्य हो उसे नागिनी या सर्पा कहते हैं । वृक्षारोहा नामकी बेल पारदका बंधन करनेवाली होतीहै । जिसका आकार छतरीके समान हो और जिसका शरीर कन्दरूप हो दूध जिसमें अधिक हो उसको छत्रीनामकी जडी कहतेहैं वह रसबंधन करनेमें अत्यन्त बलवती है । संवरीनामकी वह जडी होतीहै जो कि जंगली छोटी जातिका पोदा होताहो और जिसके पत्ते नन्दिकाके समान होतेहैं जिसके फल दूध और फूलोंसे पारद बद्ध होताहै । बालुकीके समान पत्तोंवाली कोमल और पीले दूधवाली हो रसबंधन करनेवाली देवी नामकी जडीहै । जिसके पत्ते थूहरके समान और दूधदार हो उसे वज्रवल्ली कहतेहैं ॥ १-१६ ॥

चित्रकौ कृष्णरक्तौ च क्षीरं कृष्णं करोति यः ॥ कृष्णास्तु गोपनाख्यातौ शुद्धौ द्वौ रसबंधने ॥ १७ ॥ नराजत्कृष्णपुष्पी च ईषद्रक्तफला लता ॥ कालपर्णी भवेद्वल्ली मुकुटे पर्वतस्य च॥१८॥ पालाशतिलका नाम पत्रैः पालाशसन्निभा कंदे पीतरसं मुंचेद्रसराजस्य बंधने ॥ १९ ॥ नीलोत्पलसमाकारा नीलोत्पाली च पर्वते॥ रजनी सा हरित्पत्रा क्षीरत्कौमारिकंदका॥ ॥ २० ॥ सिंहिका नाम विख्याता श्वेतपुष्पा पयस्विनी ॥ कुलत्थपत्रवत्पत्रा क्षीरपत्रा च मेदिनी ॥ २१ ॥ गजदंताकृतिः कंदा क्षिप्रक्षीरा लता भवेत् ॥ महौषधिजपापुष्पा क्षीरस्नेही चतुर्दला ॥ २२ ॥ गोकर्णपुत्रा गोष्ठांगी कंदक्षीरा नगोद्भवा ॥ त्रिफली रक्तमाला च नाम्ना खदिरपत्रिका ॥ २३ ॥ पत्रैर्हरिद्रसंकाशा रसं रक्तं विमुश्चति ॥ तृणकंदवतोज्योतिज्योतीरूपा निशामुखे ॥ २४ ॥ ज्वलन्ति पर्वतैस्तैस्तु ते सर्वे रसबंधकाः ॥ मंजिष्ठा रसबंधं च रक्तवल्ली विसर्पिणी ॥ २५ ॥ ब्रह्मदंडी भवेज्ज्येष्ठी क्षीरकंदरसौषधी ॥ त्रिलोहवेष्टितं मूलं वक्त्रस्थं पाययेन्नरः॥ २६ ॥ कीटमारी भवेद्वल्ली शिग्रुबीजा पयस्विनी ॥ तुम्बिका तुम्बसदृशा सक्षीरा तरुगामिनी ॥ २७ ॥ कटुतुंबी भवेदन्या सक्षीरा भूमिगर्भिका ॥ मयूरस्य शिखानाम्नी ज्ञातव्या रसबंधिनी ॥ २८ ॥ मूलकाकारकापत्रा रक्तक्षीरा सपीतका ॥ नाम्ना हेमलता दिव्या पीतपुष्पा महौषधिः ॥ २९ ॥ सासुरी तुम्बिका पुष्पी पत्रैः पंचांगुलैः समा ॥ सप्तच्छदसमैः पत्रैः सप्तपर्णी भवेल्लता ॥ ३० ॥ गोमारी

नाम विख्याता सक्षीरा खड्गपत्रिका ॥ पीतक्षीरा भवेद्दिव्या रसराजस्य बंधका ३१॥

अर्थ–चित्रक एक औषधि है जो कि दो प्रकारकी होतीहै एक काली और दूसरी लाल वह दूधका(संग औटानेसे)काला करतीहै काले चीतेको गोपन कहतेहैं वह दोनों प्रकारका भी चित्रक पारद बंधनमें श्रेष्ठ है। कालपर्णी नामकी पर्वतोंके शिखरोंपर होतीहै जिसके फूल चमकरहित और काली होतीहै। जिसके पत्ते ढाकके समान होतेहैं और जिसके कन्दमें पीला रस निकलताहै वह पारद बंधनके करनेवाली, पालाशतिलका नामकी जडीहै। नीलकमलके समान पर्वतोंपर जो जडी उत्पन्न होतीहै उसे नीलोत्पाली कहते हैं। रजनी नामकी वह जडीहै जो कि हरे पत्तोंवाली हो और जिसकी जडमें कंद हो। सफेद फूलवाली दूधदार हो, कुलथीके पत्तोंके समान जिसके पत्ते हों और पत्तोंमें भी दूध हो, दस्तावर हो उसको सिंहिका कहतेहैं। जिसका कन्द हाथी दाँतके समान श्वेत और मोटा हो, थोडी ही चोट लगनेसे शीघ्र दूध टपक आवे उसे क्षिप्रक्षीरा जडी कहतेहैं। जिसके फूल गुडहरके समान हों और प्रत्येक डांडीमें चार २ पत्ते हों, जिसके दूधमें चिकनाहट हो उसको महौषधि कहतेहैं जिसके पत्ते गायके कानके समान, कन्दमें दूध और पर्वतमें उत्पन्न हो उसको गोष्ठाङ्गी कहतेहैं। जिसके मिले हुऐ तीन फल हों और लाल वर्ण हो, पत्ते पीले २ से हों और रस जिसका लाल निकलता हो उसको खदिरपत्रिका कहतेहैं। पर्वतपर उत्पन्न हुई जो औषधियें सायंकालके समय दीपकके समान जलतीहैं उसको तृणकन्द कहतेहैं (कोई २ वैद्य इसको संजीवनी बूटी कहतेहैं) फैलनेवाली जो लाल बेल होतीहै उसको मंजिष्ठा कहतेहैं वह रसको बांधतीहै (६) ब्रह्मदण्डी ज्येष्ठी (मुलहठी) और क्षीरकन्द ये तीनों रसौषधियें हैं। जिसके पत्ते सैंजनेके समान हों और दूधदार हो उसको कीटभारी कहतेहैं। दूधदार पेडोंपर चढनेवाली तूंबीके समान जो जडी होतीहै उसको तुम्बिका कहतेहैं। धरतीपर फैलनेवाली कडवी तूंबी होतीहै उसे कटुतुम्बिका कहतेहैं। रसको बांधनेवाली एक मयूरशिखा भी होतीहै। जिसके मूलीके समान पत्ते लाल रंगका रस या पीलाईयुक्त लाल रस और फूल पीले हों उसको हेमलता कहतेहैं। जिसके फूल राई या तूंबीके समान हों और बराबर पांच अंगुलके सात २ पत्ते हों उसको सप्तपर्णी कहतेहैं जिसके पत्ते तलवारके समान हों दूधदार हो उसको गोमारी कहतेहैं यदि वह पीले दूधकी हो तो अत्यन्त रसबंधक होतीहै ॥ १७–३१ ॥

व्याघ्रपादलता वल्ली सक्षीरा रक्तपुष्पिका॥ धनुकुस्तुंबरीरूपा क्षीरिणी पीतपुष्पिका ॥ ३२ ॥ दिव्यौषधिमहावीर्या त्रिशूली नातिसर्पिणी ॥ त्रिदंडी रक्तपत्रा च त्रिपत्रा सा लता भवेत ॥३३॥ शृंगाकारा भवेच्छृंगा पीतपुष्पा पयस्विनी ॥ समरिचसमाकीला क्षीरिणी कंदसंयुता ॥३४॥ वज्रनामसमाख्याता क्षीरिणी कंदवत्यपि ॥ रक्तपर्णी सिता चैव दिव्यौषधिमहाबला ॥ ३५ ॥ करवीरदला पुष्पा रक्तकंदावली भवेत् ॥ पीतमस्तककंदाभा मस्तरूपा पयस्विनी ॥ ३६ ॥ रक्तक्षीरा भवेत्सा च वल्ली बिल्वदला शुभा ॥ समरूपा भवेद्वल्ली रोहिणी रसबंधिनी ॥ ३७ ॥ बिल्वातकी भवेद्वल्ली ज्योतिष्पत्रा पयस्विनी ॥ गोरोचनारूपक्षीरा वल्ली गोरोचनप्रभा ॥ ३८ ॥ स्वल्पासकंदपुष्पा सा लता कंदैकपत्रिका ॥ स्वल्पाकारा विशल्या च त्रिपत्रा कंदवर्जिता ॥ ३९ ॥ कंदक्षीरा नगोद्भूता शीघ्रक्षीराल्पमोचिनी ॥ चतुःषष्टिसमाख्याता औषध्यः सुरपूजिताः ॥ ४० ॥ शुभे दिने सुनक्षत्रे बलिपूजाविधानतः ॥ क्षेत्ररक्षा प्रकर्तव्या अघोराद्यैर्दिशस्तथा ॥ ४१ ॥ शक्तिबीजोऽथ वा घोरो गृहिणी प्राप्तियोगतः ॥ याः काश्चिन्मुनिभिः प्रोक्ता औषध्यश्च सहस्रकम् ॥ ताभिर्युक्तैस्तु विज्ञेयं तत्त्वज्ञैः रसबंधनम् ॥ ४२ ॥ (निघंटुरत्नाकर.)

अर्थ–व्याघ्रपाद लता उसको कहतेहैं कि जिसके फूल लाल दूधदार और जड सिंहके पंजेके समान हो जिसके फूल पीले हों दूधदार और अत्यन्त फैलनेवाली न हो उसको त्रिशूली जडी कहते हैं। जिस बेलके लाल तीन २ पत्ते हों उसको त्रिदण्डी कहतेहैं। सींगके आकारकी पीले फूलवाली जो दूधदार बेल होतीहै उसे शृंगा जडी कहतेहैं। जिसका कन्द दूधदार और मिरचके समान हो उसे कीलाबूटी कहतेहैं। जिसमें दूध हो और कन्द भी हो उसको वज्री कहते हैं। अत्यन्त बलकारक एक प्रकारकी श्वेत लताको रक्तपर्णी कहते हैं। जिसके फूल और फल कन्हेरके समान और कन्द जिसका लाल हो उसको वली कहतेहैं। जिसका कन्द पीला और मस्तकके समान हो उसे मस्तकन्दा कहतेहैं वही मस्तकन्दा बेल लाल दूधवाली और बेलके समान पत्तेवाली हो तो उत्तम होतीहै। समान रूपवाली जो बेल होतीहै उसको रोहिणी नामकी बूटी कहतेहैं। जिसके पत्ते रतनजोतके समान हों उसे बिल्बान्तकी कहतेहैं। जिसका दूध चांदीके समान श्वेत हो रंग जिसका गोरोचनके समान हो उसको गोरोचना बूटी कहतेहैं। जिसके कन्द और फूल छोटे हों एक २ ही पत्ता हो उसको लताकन्द कहतेहैं। जिसके कन्द न हो तीन २ पत्ते निकलते हों छोटा पोदा हो उसे विशल्या कहतेहैं। ये चौसठ औषधियें देवताओंके भी पूज्य हैं शुभ दिन और शुभ नक्षत्रमें वलीपूजाके अनुसार क्षेत्रकी रक्षा करनी चाहिये फिर अघोर मंत्रोंसे दिशाओंकी रक्षा करे ऋषियोंने और २ जो सहस्रों औषधियें वर्णन की हैं उनके योगसे भी पारदका बंधन होताहै ऐसा जानना चाहिये ॥ ॥ ३२–४२ ॥

गोली सीमाव बजरिये बूटी (उर्दू)

सीमाव जिस कदर मुनासिब समझो अर्क खिरनी बूटी के साथ कामिल चार चार घंटेतक खरल करो । बादहू दूध अंजीर बकदर अन्दाजा डालकर खरल करो गोली बनजावेगी । (सुफहा ६६ किताब कुश्तैजात हजारी)

रसबंधकवर्ग ।

रम्भावीरस्नुही चैव क्षीरकञ्चुकिरेव च । दिनारिश्चैव गोरंभा मीनाक्षी काकमाचिका ॥ एभिस्तु मर्दितः सूतः पुनर्जन्म न विद्यते ॥ ४३ ॥ (यो. र., नि. र.)

अर्थ—केलेका रस आक थूहर क्षीरकंचुकी दीनारि गोरम्भा मछैछी मकोय इनके साथ मर्दन करनेसे पारदका पुनर्जन्म नहीं होता अर्थात् पारद महामूर्च्छित होता है ॥ ४३ ॥

सीमावको जडीमें नष्टपिष्टी (उर्दू)

अगर सीमावको केलाके पानीमें खरल कियाजावे तौ नेस्तनाबूद होजाता है । (सुफहा ५७ किताब कुश्तैजात-हजारी) ।

मुत अल्लिक कायमुल्नार गुटिका (उर्दू)

मुतरज्जिम यह तजरुबा हुआ है कि हर बूटी कमरी अमूमन सीमावको करते हैं और हर बूटी शमसी सीमावको कायमुल्नार करते हैं इसी उसूलके लिहाजसे नकछिकनी सफेद गुलसे सीमाव गुटिका होजाता है और कुश्ता नुकरा जो बूटी मजकूरसे बनता है वह जाजबआब सीमाव भी हो सकता है और नकछिकनी स्याह गुलसे अकसीर सीमाव शमसी बनती है जिसका तरीका ऊपर बयान होचुका है । (सुफहा अकलीमियाँ २१६)

गोली सीमाव बजरिये जडी (उर्दू)

अबनी बूटी यानी आब खटकलमें करीब चार पांच घंटे खरल करनेसे गोली बनजाती है । (सुफहा ६२ किताब कुश्तैजात हजारी)

आबलहसनमें अगर पारा खरल कियाजावे तो गालिबन गोली बनजावेगी करीब एक घंटेतक । मगर आबप्याजमें भी चन्द अर्से खरल करनेसे गोली बनजाती है । (सुफहा ६५ किताब कुश्तैजात हजारी)

गोली सीमाव बजरियःपान (उर्दू)

पान बंगला दो सद अदद सीमाव एक तोले खरल करें गोली होगी । (सुफहा ६३ किताब कुश्तेजात हजारी)

उकद सीमाव बजरिये तुलसी स्याह (उर्दू)

पारा जिस कदर मुनासिब समझो अर्क बूटी स्याम तुलसीके साथ कामिल दो घंटेतक खरल करो बादहू एक मोटे कपडेमें डाल कर निचोडो ताकि जाइद पारा निकल जावे गरज कि अर्क लेमूंमें भी खरल करे यानी कपडेमें डालनेसे पहले । (सुफहा ६६ कुश्तैजात हजारी)

उकद सीमाव–बजरिये तुलसी स्याह (उर्दू)

सीमाव एक पावको अर्क स्याम तुलसीमें इस कदर खरल करे कि मिस्ल दही होजावे । फिर शोरा एक पावको पानी निस्फ सेरमें गर्म करे बादहू पारेको गिलास सांचेमें डाल कर शोराके पानीमें डालदें । पांच मिनिटतक पकावे फिर सांचेसे गिलास निकाल कर ३ मर्तबः अर्क लेमूंमें गर्म करके बुझावें । (सुफहा ६५ किताब कुश्तैजात हजारी)

गुटिका जडीसे (मुश्तमः)

पारा ३ सेतपुहुपके रसमें खरलै दिन ७ दूसरे तीसरे धोआ करे तब गोली बांधे गोहूंकी रासमें धरे मास १ तब निकारिके पीतरकती बूटीमें खरल करे दिन ३ तो सिद्ध होइ ।

गुटिका सीमाव बजरिये जडी (उर्दू)

सीमावको कटाई खुर्दमें सहक करनेसे सफाई भी आती है और गाढा भी होताहै । सीमाव दुधी खुर्दमें सहक करनेसे गाढा और मुसफ्फा हो जाताहै और बिलाखिर गोला बंधजाता है । (सुफहा अकलीमियाँ १६३)

गुटिका बनानेकी तरकीब बजरिये दुधी यानी नागार्जुनी (उर्दू)

मुस्तलिफ किताबोंमें मसलन अतमामुल हविस, महाभारत, अबजारवखुशहालीमें लिखाहै कि दुधीखुर्द जिसको नागार्जुनी भी कहते हैं लेकर उसकी लुबादीमें सीमावको बंदकरदे गिलेहिकमत करके आगदे तो गुटिका कायमुल्नार तय्यार होतीहै और अगर खरल करके बालू जंतरमें आगदे ता अकशीर होजातीहै । अगर दुधीके शीरेमें सीमावको पकावे तौ गाढा होजाता बादहू भफलीमें पकाकर सुहागा देकर आगदे और अकसीर बनावे इस तरकीबको साहब खुशहालीने लिखाहै । (सुफहा अकलीमिया १६३ का हाशियाँ)

गुटिका बनानेकी तरकीब बजरिये दुधी (उर्दू)

दुधी बूटीको लाकर उसको कूटे और तरीकी हालतमें बोतः बनावे और सीमाव तोलाभर लेकर उसमें डाले और दुधी कुटी हुईसे मुंह बोतेका बंद करदे मतलब यह है कि दुधीके गोलेके अन्दर सीमाव रहे बाद उसके खुश्क करे और बैजः मुर्ग लाकर उसमें आलायश निकाल डाले और उसके अन्दर दुधीका बोतः रखकर दूसरा टुकडा बैजेका ऊपरसे बंद करके गिले हिकमत करदे और खूब मुस्तह कम करके एक हफ्तेतक रहनेसे जब गिले हिकमत

---

१ महजना मुकम्मिल तरकीब दर्ज है चन्दवार तजरुबेमें नाकामयाबी रही ।

बिलकुल खुश्क होजावे उसको कोयले कंडेकी आग होनी चाहिये बल्कि भूभलकी आगमें दफन करे चन्द पहरतक दफन रहनेदेना कि दुधीका बोतः अन्दरूनी सोख्त होजावे। बाद आग सर्द होनेके निकाल कर सीमाव बस्तःको मुंहमें रक्खे इमसाक होगी और जबतक तुर्शी न खायगा फारिग न होगा। (सुफहा किताब अलजवाहर उर्दू १२०)

गुटिका बनानेकी तरकीब बजरिये शीरा-दुधी व शीरा धतूरा (उर्दू)

जांक बारहा तजरुबेमें सही उतरी है। सीमाव लाकर सात दिनतक तेजाब सावूनमें रक्खे बाद उसके पुख्तः ईटमें खरल करे बाद उसके एक दिन शीरा घीग्वारमें सहक करे। ताकि स्याही बिलकुल जाइल होजावे और सितारेकी तरह चमकने लगे बाद उसके शीरा दुधी खुर्दका नौ हिस्सा और शीरा धतूरे स्याहका एक हिस्सा खरलमें डाल कर सीमावमें सहक करना शुरू करे ताआंकि सीमाव उसमें गाढा होजावे। बादहू आरदमाश लाकर उसको अच्छी-तरह गूंदे और कूटे ताकि खूब चिपकने लगे और लस-दार सख्त होजावे। उस आरद माशमें एक गढा कुलि-याकी तरह बनाकर सीमाव मजकूर और शीरजनको डाल कर मुँह उसका आटेसे बंद करके खूब खुश्क करे कि पत्थ-रकी तरह सख्त होजावे। आटेका लेप मोटा मोटा होना मुनासिब है और उसके ऊपर तीनबार मोटी मोटी गिले हिकमत करके हर बार उसको भी खिलादे बादहू उसको भूभलमें दफन करे और इतनी देर रक्खे कि आटा दर्मि-यानमें सोख्त होजावे। बादहू उसको फौरन गर्म गर्म निकाल कर पानीमें डालदे कि ऊपरकी मिट्टी फटजावे। उसवक्त सीमाव मुनअक्किदको निकालले आला दर्जेकी गुटिका होजावेगी। इन्शाअल्लाह मुजर्रिब व आजमूदह है। (सुफहा किताब अलजवाहर १२१–देखो नुसखा फार्सी ३४ नं० २)

गुटिका सीमाव बजरिये अमरबेल (उर्दू)

गवरूल यानी आकाशबेलके पानीमें इस्तरह गोली करे यानी पहले निस्फ सेर पानी लेकर कढाईमें डालकर पानी आगपर खुश्क करे। बादहू फिर सेर पानी लेकर इसी तरह करे सीमावकी गोली बनजावेगी। (सुफहा ६२ किताब कुश्तैजातहजारी)

गुटिका बनानेकी तरकीब–बजरिये नमक व जडी भाँगरा व मिस्सी (उर्दू)

सीमाव आठ फल्लूस लाकर कढाई आहनीमें रखकर मशक भर पानी और पाव भर नमक डाल कर तीन पहर आग दे इस्तरह कि आधा पानी रहजावे। बादहू पानी निकाल कर शीरा भांगरा स्याह उसमें डालकर पकावे जब दो तीन तोला रह जाय निकाल कर छः गोलियां बनावे और सुईसे सूराख करके करछीमें डालकर हर एक गोलीमें दो फल्लूस शीरः मिसी (कागझनकाह) का डाले थोडी देर आगपर रक्खे सख्त होजायगा और उमदा गुटिका होगी। जो आदमी दोनों हाथमें मलेगा निहायत शहवत होगी और जिस कदर दूध खायगा हजम होजायगा अगर मुहमें रखकर पियादह पा चलेगा माँदह न होगा। (सुफहा किताब अलजवाहर ११८)

गुटिका इमसाक बनानेकी तरकीब बजरिये विसखपरा व धतूरा स्याह (उर्दू)

विषखपरा यानी गिद्धपरना लाकर कूट कर बोतः बनावे और तोलाभर सीमाव उसमें डाल कर बोतःको बोतः आहनीमें रख कर नीचेसे चरागकी आगदे और ऊपरसे चोया अर्क धतूरा स्याहका टपकादे। जब मुन-क्किद होजावे तो रख छोडे और मुबाशिरतके वक्त मुँहमें रहे जबतक मुँहसे बाहर न निकलेगा इमसाक होगा। (हसीनुद्दीनअहमद हाशिया सुफहा किताब अल-जवाहर १२२)

सीमाव मुंजमिद करनेकी तरकीब ब-जरिये कटाई सफेद गुल जिसका जीरा भी सफेद हो (उर्दू)

तरकीब दोयम अगर सीमावको शिकोरेमें रख कर चार पहर बराबर चोया शीरा बूटी मजकूरका दे और शिकोरेके नीचे मुलाइम आग देतारहे और बूटी कटाई सफेद गुल की लकडीसे आहिस्ता आहिस्ता हिलाता रहे तो सीमाव मुंजमिद होजायगा और कलईके वास्ते अकसीर होगा। अलामत कटाई सफेद गुल जिसके अन्दरका जीरा सफेद हो कीमियाई है अगर कलई गुदाख्तःमें तोला भर इसका अर्क डाले नुकरा हो जायगा। (सुफहा अकलीमियाँ २६५)

गुटिका बनानेकी तरकीब (उर्दू)

नये जायफलमें पारा भरके मुंह उसका अफयूनसे बंद करदे और चारों तरफ अफयून लगादे। फिर काले धतूरेके फलमें रखकर सात तह कपरमिट्टी चढाकर धूपमें सुखादे। फिर चौथाई प्रस्थ (२ सेर) वजन खानगी उपले एक घडेमें भरकर उस धतूरेके फलको उसमें रख-कर आग दे जब ठंडी होजाय जायफल धतूरेसे निकालकर दूसरे धतूरेके फलमें रख कर बदस्तूर आग दे। इसी तरह सौ आंच दे। हर रोज नया धतूरेका फल नया ले और पाव वजन (यानी २ सेरकी चौथाई ½ सेर)हर सहजंगली बढाताजाय सौ रोज बाद गुटिका बनजावेगी यह हर धातुको बदल देताहै और पास रखनेसे आदमी तेजस्वी होजाताहै। (सुफहा १४ खजाना कीमियाँ)

गुटिका बनानेकी तरकीब बूटीसे (उर्दू)

ततलौकी जिसको हिन्दीमें कटज्वर भी कहते हैं और जो सिरेके पास पतली होतीहै जब दरख्तमें लगी हो दो हिस्से सिरेके पाससे छोड कर उसमें तोला भर पारा भर दे और शिगाफ उसीके छिलकेसे बन्द करके ऊपरसे मोम

लगा दे। और हत्तुल इमकान मगजमें उसके हाथ न लगने पावे। तेतीस दिनतक उसमें पारा मजकूर रहने दे और फौरन डालकर बन्द करदे ताकि हवाके असरसे सडने न पावे। बाद अय्याम मजकूरके जब तितलौकी मजकूर पकजावे तोडकर सायेमें खुश्क करे और एक कपरौटी मुकम्मिल कपडे पर बालू लगाकर करदे। और दस बारह कंडोंकी आग लगावे आग भुडकाकी तरह हो और तितलौकी मजकूरका रुख सूरजकी तरफ रक्खे। बादहू सर्द होनेके निकाल ले सीमाव गुटिका होकर अकसीरका काम देगा। (सुफहा अकलीमियाँ २१३)

गुटिका सीमाव बजरिये बूटी (उर्दू)

बूटी चहार सिटगिरहके एक पाव नुगदेमें सीमाव डालकर आग करीब ३ सेरके देवे गोली उमदा बनजावेगी। अजमुहम्मद स्माइल पबलिक डिसपरी चीडयाला। (सुफहा ६२ किताब कुश्तैजात हजारी)

उकद सीमाव माखा बूटी (उर्द)

उकद सीमाव इसतरह होजाताहै कि चार पत्तियां भाँगरा स्याह नर यानी माखा नर स्याहका लेकर एक सर्द कोयलेमें गढा करके सीमाव खालिस मुसफ्फा जो सिरका शबनम नखूद ख्वाह मामूली सिरका मुकत्तरमें साफ करलिया गया हो ऊपर नीचे दो दो पत्तियां रक्खे, और उनके दर्मियानमें सीमाव मजकूर रहे बादहू कोयला मजकूरको कोयलेकी आगके अन्दर रखदे और पंखेसे धोंके और दरजकी राहसे देखतारहे। सीमाव थोडी देर लरजा रहताहै बादहू सुर्ख होकर जमजाताहै सर्द पानी कोयलापर डालकर उतारले। ऐसा उकद होताहै कि वजन बदस्तूर और साफ और शफ्फाफ होताहै पत्तीजल जातीहै और उकदसे चिपक जातीहै उसको चाकूसे खुरच डाले। (सुफहा अकलीमियाँ २७२)

और भी (उर्द)

अलामत भांगरा स्याह गुलको दकन यानी गुजरात वगोगन व खानदेश वगैरःमें स्याह माखा कहतेहैं। नर और मादा दो किस्मका होताहै हिन्दीमें स्याह भांगरा कहतेहैं (यह स्तलाह साधुओंकी है मामूली भांगरा स्याह दूसरा है) हुलिया उसका यह है कि पत्तः अंगरेजी रुपयेकी बराबर बलकि किसी कदर बडा पीपलके पत्तेके मुशाबः मगर उससे बहुत छोटा होताहै और उसीके पत्तेकी तरह नोक छोटी बडी निकली होती है इसकी बडी अलामत यह है कि पत्तेकी कोरपर चारों तरफ खफीफ सुर्खी होती है और रंग व रेश भी पत्तेका सुर्ख होताहै और एक हाथसे ऊँचा दरख्त नहीं होता। पत्ता इसका न बहुत मोटा न बारीक अकसर उन जगहों पर होताहै जहां नहर या पानी खुश्क होकर किसी जगह तरी बाकी रहे। डंडी दरख्तकी स्याही माइल होताहै और यही अलामत नर होनेकी है क्योंकि मादाकी डंडी सुर्ख होती है और दरख्त लंबा होता है। मादेमें खासा है कि इससे सीमाव फरार नहीं होसकता जबतक कि उसका असर हत्ता कि राखतक बाकी रहे ख्वाह कितनी ही तेज आग दी जावे लेकिन कोई काम मादा माखा कीमियाईसे नहीं निकलता। यहां तक कि सीमाव मुनकिद भी नहीं होसकता और जब पत्ती मजकूरका असर जाइल होता है तौ सीमाव मजकूर मफरूर होजाता है। (सुफहा अकलीमियाँ २७२)

रसबंधन मूलिकाबद्ध।

राजिकाफलिनीकंदतुलसीरसचित्रकैः ॥
मूषालेपस्तु कर्तव्यः। क्षणार्धे बद्धसूतकः ॥
॥४४॥ (यो. त.)

अर्थ–राई, फलिनीकन्द (जमीकन्द), तुलसीका रस और चित्रक इनसे घरियामें लेप कर एक क्षणतक अग्निमें रक्खे तो पारद बद्ध होगा ॥ ४४ ॥

गुटिका बनानेकी तरकीब(उर्दू)

आँवला, अंजा[1] यानी दूध बकरीका जुदा जुदा कुचल कर अर्क निकाले फिर लोहेके बर्तनमें पहले बूटीका अर्क सातबार लेप करे और सुखाले फिर दूसरी बूटीका अर्क इसी तरह तीसरे अर्क इसीतरह तीनोंके अर्कमें तीन तोले पारा थोडासा खरल करके उस लोहेके वर्तनमें डालकर गोल मुँहके चूल्हे पर चढावे और मुवाफिककी आंच लगावे और उन बूटियोंका अर्क डालताजावे और नये अनारकी जडसे पारेको हिलाना चाहिये। पहर भरमें पारा मक्खन सा होजायगा। फिर उस पारेको आँवलेके अर्कमें खरल करले जब खूब मिल जावे गोली बनाकर कपडेमें लपेट कर मटकेमें आँवलेका अर्क भरके मुअल्लिक लटका दे और पहर भर धीमी आंच दे। फिर दूसरे आंवलेके अर्कमें इसी तरह डेढ पहर आग दे। अगर पारा गोली बनानेके लायक होगया हो निकाल ले वरन तीसरे रोज इसी तरह दो पहर आंच दे जबतक गोली बनानेके लायक न हो तो हर रोज निस्फ (पहर) बढाकर आंच दे जब गोली बनाले नाजमें कपडे समेत दबा दे दो चार रोजमें गुटिका बन जावेगी मुँहमें रखनेसे जमीनपरसे ऊंचा चलने लगे और दूधमें जोश करते वक्त डाल लेवे इन्तहाकी ताकत हो। (सुफहा १२ खजाना कीमियाँ)

उकद सीमाव (उर्दू)

सीमाव लेंमू कागजीके शीरेमें अगर सौ पुट तसकिया व तश्विया किया जावे तो मुनअक्दि होजाता है। बादहू थोडे अमलमें मुकल्लिस होकर अकसीर तिलाका खास्सा जाहर करता है। (सुफहा अकलीमियाँ २०९)।

मूलिकाबद्ध।

निंबूरसेन संमिश्रमेकीकुर्याद्रसेन तम् ॥
पारदं खल्वके कृत्वा सौभाग्यं च तदर्धकम् ॥ ४५ ॥

१–अजा गलत है अगर अजिया ह तो भंग, अगर अजहा है तो कौंच, अगर अजागर है तो भांगरा, अगर अजाजी है तो खट्टा गूलर, अगर उज्ञटा है तो भूमी आंवलासे मुराद है।

मर्दयेत्सर्वमेकत्र दिनं पंचावधिस्तदा ॥ माषप्रमाणगुटिकाः कर्तव्याः शुष्कतां गताः ॥ ४६ ॥ काष्ठभाजनमध्यस्था माषचूर्णेन वेष्टिताः ॥ इष्टिचूर्णेन चालोड्याः पुनः शोष्याः सुधीमता ॥४७ ॥ अधोरक्षां ददात्यादौ पुनरंगारकानथ ॥ क्रमेण वटिकां क्षिप्त्वा धाम्यमानाः शनैःशनैः ॥ ४८ ॥ अनेन विधिना सूतो ध्मातो रक्षान्तरालगः॥ निःसृत्य वटिकाभ्योऽसौ भवत्यतिसितप्रभः ॥ ४९ ॥ सर्वोपि कनकरूपः स्यादपूर्वो जलयोगतः ॥ पोटस्तु जायते ध्मातः पारदः शुक्रसंनिभः ॥ ५० ॥ अयं मूलिकमाबद्धपारदो मुखरोगहृत् ॥ न जरापि बलं कुर्यान्न कालः कलयत्यमुम् ॥५१॥ (टो.नं.)

अर्थ–पारदसे आधा सुहागा इन दोनोंको खरलमें रख नींबूके रससे पांच दिनतक घोटे उनकी उरदके समान गोलियां बनाके सुखालेवे लकडीके पात्रमें रस उरदकी पिट्ठीसे लपेट देवे। उसपर ईटका चूरा लपेट कर सुखालेवे। नीचे राख ऊपर गोली फिर राख फिर गोली इस प्रकार रख अग्निमें धोंके तो उन गोलियोंमेंसे निकलकर पारद अत्यन्त श्वेतरूप हुआ राखसे बाहर निकल आताहै और वे समस्त गोलियां जलके योगसे सुवर्णके समान रूपवाली होजायँगी उस पारदको पोटबद्ध कहतेहैं। अब जो इसको खाताहै उसका बुढापा और काल कुछ भी नहीं करताहै ॥ ४५–५१ ॥

गुटिका सीमाव बजरिये रोगन अलसी (उर्दू)

सीमाव अलसीके तेलके साथ पकानेसे भी जमजाताहै इसकी भी जो चीज चाहो सो बनालो अगर ज्याद: सख्त करना मंजूर हो तो चन्द दिन लेमूके पानीमें रखदो सख्त होजावेगा। (सुफहा ६४ किताब कुरतैजात हजारी)

गुटिका सीमाव बजरियः रोगन जैतून (उर्दू)

जितना दिल चाहे उतना सीमाव लेकर लोहेकी कढाईमें रोगन जैतूनके साथ धीमी आंचपर जोशदे और उसके धूंएसे मुंह और नाकको बचाए क्योंकि मोहलिक है। जब रोगन सूखजाए और डालें (या लकडीका तेजाव डाले इससे सीमाव मरताहै) फिर उसको निकालकर जो चाहे बनालेवे यह पारा इतना सख्त होजाताहै कि हथोडाभी खाजाताहै। (सुफहा ६४ किताब कुरतैजात हजारी)

गुटिका बनानेकी तरकीब बजरियः बैजः (उर्दू)

सीमाव खालिसको लाकर हजार अस्पंद सोख्तनीमें तीन रोजतक सहक करे कि बिलकुल स्याह होजावे बाद उसके शीरा लैमूंसे धोए ताकि मैल दूर होकर सितारेकी तरह चमकदार होजाए। बाद उसके अंडा लाकर बकदर एक सर्सोंके सूराख करके सफेदी और जर्दीको रफ्तः रफ्तः उस सूराखके जरियेसे गिरादे और बैजाको खाली करके और सूराखके चारों तरफ मोमका घेरा बनाकर उस घेरेमें सीमाव मजकूर रक्खे ताकि थोडा थोडा सूराखके रास्तेसे बैजेके अन्दर चलाजावे और गिरै नहीं बाद उसके सूराखको अंडेके छिलकेमें सफेदी लगाकर उसीसे बंद करदे और सुखलादे। बादहू लहसन लाकर जवे जवे छीलकर दोनों कोने जवेके काट डाले और कूट कर महीन करल लहसन अगर अठारह हिस्सा हो तो माशका आटा दो हिस्सा उसमें मिलाए और खूब दोनोंको कूटे। बाद उसके अंडेपर एक तह उसके बतौर गिले हिकमतके चारों तरफ हसबार लगादे और धूपमें सुखलादे और खुश्क करे। इसी तरह सात बार गिले हिकमत लहसन और माशके आटेकी करे हर बार खुश्क करे उसीके ऊपरसे तार लोहेका लपेटे और कडवा तेल आधामन इतने बडे जर्फमें रक्खे कि जोश खाकर निकल न सके और बैजा मुर्ग मजकूरका तारके जरियेसे तेलमें लटका कर डाले। जंतर गरकी करे लेकिन जर्फके पेंदेसे बैजः मजकूर दो अंगुल ऊंचा रहे और आग जलाना शुरू करे। आठ पहरके बाद आगको खुद बखुद सर्द होने दे बादहू सीमावको गिले हिकमतोंके अन्दरसे निकाले मुनअकिद तो होगा लेकिन सख्त न होगा। कपडेमें बांध कर तीन रोज वशव मुँहमें रक्खे बाद उसके घडेमें सर्द पानीके अन्दर डाले उकद कामिल होजायगा और उमदा किस्मकी गुटिका होगी इन्शा अल्लाहताला (सुफहा किताब अलजवाहर १२२–१२३ देखो नुसखा फार्सी सुफहा नं ३५–४४)

रजोबद्ध रसबंधन।

पुष्पितमनोजमंदिरमध्ये सूतो नियंत्रितो युक्त्या ॥ बद्धो भवति कियद्भिर्दिवसैः पुष्पप्रभावेण ॥ ५२॥ (यो. र., र. रा.शं०, र. सा. प., नि. र०)

अर्थ–जिस समय स्त्रीको मासिकधर्म हो उस समय स्त्रीकी योनिमें किसी युक्तिसे पारदको रख देवे तो रजके प्रभावसे वह पारद बद्ध होताहै ॥ ५२ ॥

कालिनीलक्षण बंधनोपयोगी।

यस्याः स्युः कुटिलाः केशाः श्यामांगी रक्तलोचना ॥ अश्वत्थपत्रसदृशो गुह्यदेशो विराजितः ॥ ५३ ॥ कृष्णपक्षे पुष्पवती सा नारी कालिनी मता ॥ तस्या देयं त्रिसप्ताहं गंधकं घृतसंयुतम् ॥ ५४ ॥ तद्रजसा रसं सम्यङ् मर्दयेदुक्तकर्मसु ॥ बंधनार्थं विशेषेण सूतकस्य प्रयोजयेत् ॥ ५५ ॥ (टो. नं.)

अर्थ-जिस स्त्रीके केश घुंघराले हों, शरीर श्याम हो, लाल २ नेत्र हों और जिसकी योनि पीपलके पत्तेके समान हो कृष्ण पक्षमें रजोधर्म हो उसको कालिनी कहते हैं। उस स्त्रीको मासिक धर्मसे पूर्व सात दिनतक घृतयुक्त गंधक खिलावे उसके रजसे रसायन काममें मर्दन करावे और विशेष कर पारद बंधनके काममें लावे॥५३-५५॥

कायम उकद सीमाव बजरिये नमक खास तैयार करदः (उर्दू)

दीगर नौशादर ६ माशे फिटकिरी ६ माशे इन हरदोको जुदागाना बारीक पीसकर आपुसमें मिलाले सात अदद टुकडा कुंवारके चार चार अंगुलके लेकर और उसको छीलकर एक बर्तन चीनीमें एक बाद दीगरे तहबतह रक्खे और हर टुकडे कुआरपर हरदो अदविया थोडा थोडा डालदे। एक शवानः रोजतक उसही जर्फ चीनीमें उसको रहनेदे बादहू एक शवानः रोजके कुवारके गूदेका सब पानी होजायगा । वह पानी किसी आहनी तवापर जिसमें पानी ठहर सके पकाले वह एक किस्मका नमक होजायगा उस नमकको खरलमें डालकर दरमियान तीन माशे सीमाव डाले और उस तरीकेसे खरल करे कि दिस्ता सिर्फ सीमावपर ही रहे । खरलके साथ न घिसने पावे आधे घंटेतक इसी तरह आहिस्तः आहिस्तः दिस्ता सीमावपर चलाते रहें बाद आध घंटेके सीमावको खरलसे अलहदा करले नमकको खरलसे निकालकर एक बोतः गिलीमें निस्फ नमक डालकर ऊपर उसके सीमाव मजकूरह तीन माशे रख कर फिर बाकी मांदा नमक निस्फ सीमावके ऊपर डालदे । बाकी हिस्सा खिला बोतःको कोयलोंकी खाकिश्तरसे पुर करके खूब कोयलोंकी आंचमें धोंके एक आध घंटेके बाद बोतेको आंचसे अलहदा करके जब बोतःको खोल कर देखेंगे वह सीमाव बसूरत तुकरः जमाहुआ निकलेगा। (सुफहा २८ किताब इसरारुलकीमियाँ)

रसबंधन गंधद्वारा ।

बलाब्दरवभूधात्रीसस्यघ्नीजिह्विकाम्बुभिः॥ मर्दितस्तुर्यभावेन गंधकेन समन्वितः॥५६॥ वेष्टितो हिंगुना फल्गु क्षीराक्तेन दधित्थजे॥ चूर्णगर्भे प्रदेयोऽयमन्तर्लवणमीशजः ॥ ५७ ॥ प्रध्मातः शनकैर्बद्धो रसो भवति नान्यथा ॥ वक्रस्थो वपुषः स्थैर्यं करोत्यखिलरोगजित् ॥ ५८ ॥ (यो. त.)

अर्थ-खरेटी, नागरमोथा, आकका दूध, भुँईआमला, सस्यघ्नी और वनगोभी इनके रससे एक तोले गंधक और चार तोले पारद इन दोनोंको घोट गोला बनावे उसको गूलरके दूधसे पिसीहुई हींगसे लीपदेवे फिर हींगसे लिपटे हुए गोलेको बेलगिरीके चूर्णसे लपेट देवे। तदनन्तर उस गोलेको लवणयंत्रमें रख धोंके तो पारद बद्ध हो जायगा इसमें सन्देह नहीं है उसको मुखमें रखनेसे शरीर स्थिर होताहै और समस्त रोगोंको जीतताहै ॥ ५६-५८ ॥

गोली सीमाव बजरियः तूतिया (उर्दू)

पारा और तूतिया हम वजन लेकर एक छोटे बर्तनमें आग पर लगावे एक घंटेके बाद गोली बन जावेगी। (सुफहा किताब कुश्तैजातहजारी)

संमति-महज पारा और तूतिया आगपर पकानेसे पारा उडजायगा लिहाजा पानी शामिल करना चाहिये । तरकीब नामुकम्मिल दर्ज हुई है नीज हम वजन तूतिया काफी नहीं । तजरुबेसे साबित हुआहै ।

पारद कटोरा तुत्थयोगसे ।

सजले तुत्थकैः सूतं कटाहे पाचितं मनाक्॥ घृष्टं च वह्निसंयोगाद्बद्धं भवति यामतः ॥ ॥ ५९ ॥ कृता कटोरिका तस्य भंगानीरे निशिस्थिता ! चन्द्रांशुना दृढा सा स्याद्विषदोषापनोदिनी ॥ तत्रस्थनीरपानेन दुग्धपानेन वा भवेत् ॥ ६०॥ (रसमानस.)

अर्थ-तीन तोले नीले थोथेमें एक तोले पारदको रखनीचेसे अग्नि देवे और थोडासा पानी भी डाल देवे और धीरेसे घोटता जावे इस प्रकार एक प्रहर भर करनेसे पारा बद्ध होताहै। उसकी कटोरी बनाकर भांगके रसमें एक रातभर चन्द्रमाकी रोशनीमें रखदेवे तो विषदोषके नाश करनेवाली कटोरी होती है उसमें जल अथवा दूध भरकर पीवे तो विष दूर होताहै ॥ ५९ ॥ ६० ॥

पारदगुटिका तुत्थयोगसे ।

पारा तूतिआसेत ४ मन भरि पानीमें अवटे तब करछीसे चलाए जाए पारा गोली बांधे तब धरि राखे कच्चा दूध नित पिआवै पीवत पीवत दश मन दूध एक रातमें पीवे तब भैंसीके गोवरमें राखे मास ३ तो मुख होइ मुखमें डारे तो दस सहस्र कोस उडैनेकी सामर्थ्य होइ। सोधै राखै अवर स्त्री साथ रहै भोग न करै जब ताई सिद्धि न होइ नव मासमें सिद्धि होइ ।

रसबंधन तुत्थबद्ध ।

लोहपात्रे जले पूर्णे तन्मध्ये पारदं क्षिपेत् ॥ पारदाष्टगुणं तुत्थं स्तोकं स्तोकं विनिक्षिपेत॥ ६१ ॥वह्निप्रज्वालयेद्गाढं गालयित्वा पुनः पुनः ॥ तं सूतं जायते मूर्च्छा गोलकं कारयेद्बुधः ॥ ६२॥ बंधयेद्गोलकं वस्त्रे स्वेदयेद्दंतिकांजले ॥ वारं पंचाशतः प्रोक्तं दोलायंत्रे दृढं भवेत् ॥ ६३ ॥ खेचरे चोदरे क्षिप्त्वा एवं पिष्टेन लेपयेत् ॥ पुनर्लेपे कृते सप्त मृतकर्पटसंज्ञकैः ॥ ६४ ॥ गजाख्यं

---

१ तुत्थक पारदसे डयोढा होना चाहिये अनुभवसे सिद्ध हुआ।

२ नवमासमें सिद्ध होइ इसका आशय यह जानपडताहै कि नव मास मुखमें रखनेसे सामर्थ्य हो ।

३ दंतिका-रुद्रदंतिका इत्यर्थः ।

ज्वालयेद्वह्निं स्वांगशीतं समुद्धरेत् ॥ तत्रस्था गुटिका ग्राह्या सर्वसिद्धिमवाप्नुयात् ॥ ६५ ॥ (नि. र.)

अर्थ–लोहेकी कढाईमें जल भरकर पारद डाल देवे और पारदसे आठगुणे नीले थोथेको थोडा २ डालताजावे नीचेसे दृढ अग्नि लगाता रहै। घडी २ के पीछे छानता रहै फिर उस मूर्च्छित हुए पारेकी गोली बनाय कपडेमें बांध रुद्रदन्तीके रसमें पचास बार स्वेदन करै। फिर किसी पक्षीके उदरमें रख जौंके चूनका एक २ अंगुल लेप करै लेप सूखनेपर फिर दूसरा लेप कर ऊपर सात कपरौटी करै। तदनन्तर गजपुट देवे स्वांगशीतल होनेपर निकाल भीतरसे गोलीको निकाल लेवे वह समस्त सिद्धिकी दाता है ॥ ६१–६५ ॥

सम्मति–मेरी समझमें तो पक्षीके स्थानमें मुर्गेके अंडेमें रखना चाहिये।

कटोरा सीमाव बजरियः तूतिया (उर्दू)

अव्वल बीस तोले तूतिया खूब बारीक करके पीसलो इसमेंसे निस्फ तूतिया लोहेकी कढाईमें पतला पतला बिछाओ और उसपर सीमाव २० तोले डालकर बाकी सादा तूतिया भी ऊपर डालदो और एक प्याला आहनी या मिट्टीका या किसी और किस्मका लेकर ढाँपदो और प्याला इस कदर बडा हो कि कुल तूतिया और सीमाव बखूबी ढकजावे और प्यालेके किनारे आरदगंदम या आरदमाश या किसी और चीजसे जो मुनासिब हो बंद करदो ताकि उसमें पानी दाखिल न होसके और जिस वक्त खुश्क होजावे कढाईको पानीसे भरकर चूल्हेपर रक्खें और प्यालेके ऊपर कोई वजनदार चीज रक्खे ताकि भाफसे जो ऊपरको जाती है प्याला उखड न जाय और अमल खराब होजावे? फिर कढाईके नीचेके पहले थोडी थोडी आंच जलावे और फिर आहिस्ता २ बढाते जावे। जिस वक्त तमाम पानी खुश्क होजावे कढाईको उतार लेवे बवक्त सर्द होनेके सीमाव वगैरः निकाल लेवे और फिर उसको पानीसे धोकर साफ करे। यहांतक कि पानीका रंग असली होजावे सीमाव मक्खनकी तरह होगा। फिर उसको एक गाढे कपडेमें डालकर निचोडे जो सीमाव कपडेमें रहजावे उसको अलहदा रखले और जो नीचे गिरजावे उसको दुबारा तरकीब मजकूर वालाके मुताबिक करे। गरजे कि जबतक लायक जमानेके न होवे इसी तरह अमल करते जावे। फिर मक्खन शुदः सीमावको फिर एक मिट्टीके प्याले या गिलासमें अन्दरकी तरफ जमावे और अहतियात रहे कि किसी जगह मोटी और किसी जगह पतली न हो हमवार हो। फिर इसमें अर्कलैमूं अर्कतुलसी खानगी या जंगली या खटकल बूटीका भरकर तीन रोज रहने दे अगर अर्क कम होजावे तो और डाल देवे। चौथे या पांचवें रोज और अर्क अलहदा करके प्यालेको ठंडे पानीमें चार पांच घण्टे रहनेदे इस अर्सेमें मिट्टीका बर्तन पानीमें घुल जावेगा और बर्तन सीमावका अलहदा होजावेगा साफ व हिफाजत रक्खे मेरा खुद आजमूदः है। (सुफहा ६३ कुश्तैजात हजारी)

गुटिका बनानेकी तरकीब बजरिये नीला थोथा (उर्दू)

सीमाव सवा तोला लेकर बतरीक मजकूरह बाला स्याही दूर करके सवा तोला तूतिया ए सबज (नीलाथोथा) मिलाकर दोनोंको खरल करके और गोली बनावे बादहू थोडासा रोगन लेकर हाथमें मले और गोलामें भी मले बाद उसके ईंट पुख्तः लाकर उसमें ओखलीनुमा गढा बनावे और उसमें सीमावकी गोली रखकर तीन रोजतक अर्कबर्ग धतूरेमें डालकर धूपमें रखदे। बादहू बैजः मुर्ग लाकर उसको एक पोटलीमें बांधे और गोली सीमाव मजकूरको उस अंडेमें डालकर पोटलीको किसी जर्फमें लटका कर सात सेर भैंसका दूध उसमें भरदे और बतौर डोलजंतर भापीके उसमें भापदे और मुँह जंतरका बन्द करदे कि भाप न निकलसके। सुबहसे शामतक या शामसे सुबह तक बारह घण्टे तक सख्त आग दे कि उबलने न पावे। बादहू उसको चूल्हेपर बदस्तूर रहनेदे जब खुद बखुद सर्द होजावे निकाल कर रख छोडे। एक कटोरेमें दूध भरकर गुटिकाको पोटलीमें बांध कर उसमें डाल दे थोडी देरके बाद दूध पीजावे और गुटिकाको पोटलीके मुँहमें रख कर मुवाशरत करे जबतक गुटिका मजकूर मुँहमें रहेगा इमसाक होगा और जब मुँहसे बाहर निकालेगा फरागत होगी आजमूदः है (सुफहा किताब अलजवाहर १९)

गुटिका सीमाव बजरियः संगरासख (फार्सी)

उकद जीवक जहत इमसाक व तकवियत बाहकवीउल असर अस्त सनत आँबिगीरन्द भिकदार हश्त मसकाल जीवक राउ वा कद्रे सिरका कोहना कि दरहावन आहनी खूब बसालन्द कि मुजमिल शवद पस सह मिसकाल नमक हिन्दी कोफ्तः दरआँ दाखिल नुमायन्द बखूब बिमालन्द अनगाह दरजर्फ आहनी कि अजसिरकः अंगूरी खूब पुरकर्दः बाशंद रेख्तः बर आतिश गुदाजन्द व सहमिसकाल रूसख्तज सलामः करदः अन्दक अन्दक बिखुरद व सीमाव दिहन्द व दिस्तह आहन दरहम बिसानीदं तावस्तः शवद पस अज आतिश फरोगीरन्द व बआब सर्द बिशोयन्द ताचर्क ओजाइलशवद व अज पारचः सफेद मसका महकिम बियफशरानन्द अंगाह गिलोल साजन्द बदर वसत आँसूराखे कुनन्द व रेशमाने अजआँ सूराख बिगुजारन्द व यकशब दर्मियान आवलेमूं बिगुजारन्द ता मोहकिम शवद मुंजमिद गर्दद पस आँरा दर्मियान रोगन तातूरह कि हिन्दी धतूरा नामन्द बिजोशानन्द व तायकसाल गाहे दर्मियान शीरगाहेव दर्मियान रोगनवगाहे दरदेग तुआम वगाहे दर्मियान आबेवर्ग ग्याही अजगयाहाई मुनासिब बयन्दारन्द व हमेशह दरदस्त मेमालीदः बाशंद चन्दां कि मतजूली व हमचूं आईना गर्दद व शकाफ नुमायद व मुतलक कुदरत दरजिस्म आँनमान्द अंगाह बजहत इमसाक मनीअस्त हिंगाम मकारबतदर दहन निगाह दारन्द बे भिसल अस्त। (सुफहा २३८ किताब जिल्द दोयम करावांदीन कबीर)

रसबंधन भूलताबद्ध ।

भूलतां शिखिरीमूलवारिणा मर्दयेद्दृढम्॥ तन्मूषां लेपयेन्मध्ये तन्मध्ये निक्षिपेद्रसम् ॥ ६६ ॥ पंचटंकप्रमाणं तां मूषामंगारके क्षिपेत् ॥ एवं बद्धो भवेत्सूतो मषांतःस्थो दृढो भवेत् ॥ ६७ ॥ मुखमध्यगतस्तिष्ठेन्मुखरोगविनाशनः ॥ शरीरे क्रामिते सूते जरापलितजिन्नरः ॥ ६८ ॥ स्तंभयेच्छस्त्रसंघातं कामोत्पादनकारकः ॥ पुनर्नवं वपुः कुर्यात्साधकस्य न संशयः ॥ अतिकामो भवेन्मर्त्यो वलीपलितनाशनः ॥ ६९ ॥ (बृ. यो., नि., र., र. रा. शं., र. सा. प.)

अर्थ-भुँईआमला और अपामार्गकी जडसे पारदको मर्दन करे और उसीकी घरिया बनाकर उन्हीके रससे घरियाको लीपकर पांचटंकभर पारद उसमें रखदेवे और अँगारोंपर रख धोंके तो पारद घरियामें ही बद्ध होजायगा उसको मुखमें धरे तो मुखरोग दूर होताहै कामदेवको उत्पन्न करनेवाला शरीरको नवीन बनानेवाला होताहै इसके खानेसे मनुष्य अत्यन्त कामी और वलीपलितसे रहित होताहै ॥ ६६–६९ ॥

उकदसीमाव जरियः मिसहरताल (उर्दू)

अगरमिस हरतालको निकाल कर कटोरा बनावे और उसमें सीमाव भर कर आगपर रक्खे तो मुनअकिद होजायगा उस वक्त उसको अगर मिस मुसफ्फा कमरीमें तरह करेगा तो नुकरःहोजायगा।(सुफहा अकलीमियाँ १९१)

गुटिका बनानेकी तरकीब बजारियः तांबा (उर्दू)

सीमाव सवातोला लेकर ईटके कोहनेमें खरल करके साफ करले जब सफेद होजावे और स्याही बिलकुल न रहे उस वक्त शीरः धीगुवारमें सहक बलेग करे । बाद उसके तांबा चारमाशे लेकर खूब सुर्ख करे और उसी टुकडेको लेकर सीमावमें डालकर चलावे बाद उसके सीमाव मजकूरको कपडेमें पोटली बनाकर निचोडे जितना कपडेमें रह जावे उसी कपडेमें रहनेदे और जिस कदर छन कर गिर पडे उसमें बदस्तूर तांबेको सुर्ख करके चलावे और फिर निचोडे यह अमल इस कदर करे कि सीमाव मजकूर बिलकुल कपडेमें रहजावे । बाद उसके गोली बनाकर कपडेमें पोटली बांधकर निगाह रक्खे (बादहू नमकशोर निस्फ मन लाकर ठीकरेमें रक्खे और दो तीन बार विरियां करे । यहांतक कि बिलकुल स्याह होजावे उसको शीशी आतिशीमें भरदे) बाद उसके एक मिट्टीकी हांडी गर्दनदराज जमीनमें गाढकर उसके अन्दर एक प्याला रखदे और हांडीपर घडा निस्फ तराश कर औंधा कर रखदे इस्तरह कि मुँह घडेका हांडीके मुंहपर रहे और हांडीका मुंह घडेसे ढकजावे बादहू शीशी औंधी करके गर्दन शीशीको घडेके मुँहसे निकालदे ताकि गर्दन हांडीके अन्दर और प्याला अन्दरूनीके ऊपर रहे । बाद उसके सब जोडोंपर गिलेहिकमत करके घडेमें बालू इस्तरह भरदे कि शीशीके चारों तरफ पाँच छः अंगुल बालू रहे बाद उसके बाकी घडेका टुकडा जोडदे और चारों तरफसे सख्त आगदे नमक शोरका रोगन होकर प्याले अन्दरूनीमें जमा होगा। जब कुल रोगन टपकचुके एक हांडीमें रख कर पोटलीको जिसमें सीमाव बँधाहुआ तागा बांध कर हांडीमें लटकादे ताकि रोगनमें पोटली गर्क होजावे और आग औसतदर्जेकी जलावे । यहांतक कि तमाम रोगन गुटिकामें जज्ब होजावे। बाद उसके ढाई सेर तुख्म धतूराको दलकर बतरीक मजकूरबाला रोगन निकाले और उस रोगनमें गुटिकाको डालकर आहिस्ता आहिस्ता आंचदे और गुटिकामें रोगन मजकूर जज्ब करे । बाद उसके ढाई सेर घूंघची सुर्खका रोगन बतरकीब मजकूर खींचे और बजरिये डोलजंतर मजकूरके गुटिकाको पिलावे । बाद उसके छुरेकी गुठलीका रोगन खींचे और उसीतरह डोल जंतर गर्की करके गुटिकेमें जज्ब करे बाद उसके तुख्म तएवरका रोगन निकाल कर बदस्तूर गुटिकाको डोल जंतर करे बाद उसके लावे खाल कोहनः बकदर एक तोलाके और उसको पानीमें भिगोकर नरम करे बाद उसके गुटिकाको उसमें लपेटे। बाद उसके सेरभर गोश्त हलवानका पीसकर गुटिकाको उसके दर्मियानमें रख कर गोला बनावे और गोलेपर तागा लपेट कर पानीमें डोल जंतर गरकी करके चार प्रहरतक आगदे बाद उसके पांच सेर दूध लाकर कढाईमें डालकर गुटिकाको उसमें डालदे ताकि तमाम दूध उसमें जज्ब होजावे । अब तय्यार होगया जब काममें लाना मंजूरहो एक दिरम सीमाव खाम गुटिकाको खिलावे और बारीक कपडेमें लपेटकर तागामें पोटली बांध कर गर्दनमें लटकादे और सुहबतके वक्त उसको मुँहमें रखले जबतक मुँहमें रहेगा इनजाल न होगा जब फारिग होना मंजूर हो मुँहसे बाहर निकाले जबतक मुँहसे बाहर न निकालेगा खलास न होगा । अगर उसपर फारिग नहो तो थोडी सी तुर्शी रखले फारिग होजावेगा मुजर्रिब है । (सुफहा किताब अलजवाहर ११५–११८)

१ इस तरकीबके देखनेसे यकीन होताहै कि भूनाग ताम्रकी कटोरीमें जरूर पारा कायम होगा।

प्याला सीमाव-(उर्दू) मुश्तवः ।

सीमावको नमक और पानीसे मुकर्रर सिकर्रर सगवूल करे और उसका छठा हिस्सा रूह तूतिया, खालिस शीरा, जौज माइल सफेद, और आब मुलहठीमें एक दिनतक खरल करे और जिस कालिबमें चाहे तय्यार करे और प्याला मयशीरा, जौज माइल और शीरा हब्बुलकतनमें पकावे चमकीला और मजबूत निकलेगा । हस्व जरूरत गरम गरम दूध या अर्कयात माइउल्लहम वगैरः इसमें डालकर चालीस रोजतक पीए और कुदरत खुदाका मुलाहिजा फर्मावे (सुफहा ६२ मुजरवात फीरोज़ी)

गोली सीमाव-बजरियः कलई (उर्दू)

पारा और कलई हमवजन लेकर बजरिये लैमूंके अर्कके दो घंटे खरल करके गोली बनावे । (सुफहा ६६ किताब नुसखः जात हजारी)

कटोरा सीमाव बजरियः कलई (उर्दू) तजरुबाशुदः ।

कलई २ छटांकको पहले किसी लोहेके वर्तनमें कोयलोंकी आगमें गरम करे जब पिघलनेको हो तब पारा तीन छटांक डालदे बाद दो तीन मिनटके गिलासके सांचेमें डालदेवे और सांचेको बुझावें गिलास तय्यार होजावेगा । (सुफहा ६५ किताब कुश्तैजात हजारी)

गुटिका नामवंगभस्मद्वारा ।

समुद्रफलचूर्णेन नागवंगौ विमिश्रितौ ॥ म्रियेतां सर्वमेहघ्नौ भवेतां देहपुष्टिदौ ॥ ॥ ७० ॥ तत्स्पष्टहस्तसंस्पृष्टकेवलो बध्यते रसः ॥ स रसो धातुवादेषु शस्यते च रसायने ॥ ७१ ॥ (रसमानस)

अर्थ-समुद्रफलके चूर्णसे नागवंगको घोटकर भस्म करे वे प्रमेहको नाश करनेवाले और शरीरके पुष्ट करनेवालेहैं उनसे हाथोंको मल फिर पारदको छूवे तो पारद बद्ध होताहै । वह बद्ध पारद सोना चांदी बनानेमें उत्तम है और रसायनोपयोगी नहीं है ॥ ७० ॥ ७१ ॥

गुटिका बनानेकी तरकीब बजरियः संगवसरी (उर्दू) मुश्तवः ।

मुँहमें रखनेसे बहुत नाफः है और हार मिजाज वालेको दाफै तिश्नगी है और इमसाक करताहै तजरुबा हुआहै सीमाव एक हिस्सा संगवसरी यक हिस्सा अव्वल संगवसरीको गुदाज करके सीमावको उसमें मिलाकर गोली बांधे और मुर्गीको निगलावे और आधे दिनतक रहनेदे । बाद उसके मुर्गीको जिवह कर गुटिकाको निकालले और हाजतके वक्त काममें । मुँहमें रखनेसे नफा जाहर होताहै । (सुफहा किताब अलजवाहर १२४-१२५)

गुटिका बनानेकी तरकीब बजरियः जस्त (उर्दू)

सीमाव तोलाभर, अर्क लैमूं कागजी दो तोलाको जस्तके प्यालेमें रखकर नीचेसे चरागकी आगदे जब अर्क खुश्क होजावे कपडेमें बांध कर गोली बांधे इस गोलीको मुँहमें रखनेसे इमसाक होताहै (सुफहा किताब अलजवाहर११२)

तरकीब प्याला पारा बजरियः जस्त (उर्दू)

पारा मुसफ्फा ६ तोले बुरादा जस्त १० तोले दोनोंको एक दिन मुलहठीके काढ और एक दिन आबवर्ग धतूरामें खरल करे तो मुस्कः होजावेगा फिर उसको प्याले खाममें तरकीव मजकूरहसे जमाद करके रक्खे और प्याला बनाले। यह प्याला जरा नरम होताहै सख्त करना हो तो आब धतूरा व मतवूख पम्वः दानेमें पकाकर सख्त करसक्ते हैं । (सुफहा १० अखवार देशोपकारक ४ । ७ । १९०६)

सम्मति-तजरुबेसे यह तरकीब गलत साबित हुई सफूफसा तय्यार हुआ न कि गोली । मुकर्रर बजाइ डोढेके चहारम हिस्सा जस्त लिया गया तो कामियाबी हुई ।

रसबंधन तारबद्ध ।

वसति गिरिगुहायां नैव सिंहो न नागो न च भवति खगेन्द्रो जातपक्षद्वयेन ॥ अरुणकिरणवर्णो दृश्यते चांबरस्थः सकलजनप्रसिद्धस्तेन बद्धो रसेन्द्रः ॥ ७२ ॥ (टी. नं.)

अर्थ-पर्वतोंकी गुफामें रहताहै परन्तु वह हाथी या सिंह नहींहै, और इसके पक्ष दो हैं परन्तु पक्षी नहीं है, आकाश अर्थात् बीचमें रहनेवाला है और जिसकी रंगत लाल चमकीली है इसको सब मनुष्य जानतेहैं कि जिससे पारा बद्ध होताहै ॥ ७२ ॥

सम्मति-यद्यपि संग्रहकर्ताने इसमें वर्णित पदार्थको चांदी मानाहै[1] परन्तु (अरुणकिरणवर्णः) इस विशेषणसे स्त्रीका रजही प्रतीत होताहै और योनिके द्वारके दोनों किनारोंको पक्षता है इस अर्थमें रसकामधेनुकी सम्मति भी है ॥

गोली सीमाव बजरियः चांदी ।

पारा[2] दो तोला, बुरादा ९ माशे बजरियः अर्कलैमूं बाहम खरल दो पहर करे गोली बनजावेगी ।(सुफहा ६६नुसखे जात हजारी)

कटोरा सीमाव बजरियः नुकरा (उर्दू)

पारा ३ छटाकको बुरादा चांदी १ छटांकके साथ बजरियः अर्कलैमूं खरल करे जब एक जान होजावे तब खरलसे निकालकर हाथको अर्कतुलसी मल कर गिलास बनावे और किसी ठंडी जगहमें रखदे बाद एक घंटेके सख्त गिलास बन जावेगा । (सुफहा ६५ किताब कुश्तैजात हजारी)

प्याला सीमाव (उर्दू)

सीमावको नमक और पानीसे मुकर्रर सिकर्रर मगवूल करे और उसका छठा हिस्सा बुरादा नुकरा, खालिस शीरा, जोज माइल सफेद और आब मुलहठीमें एक दिनतक खरल करे और जिस कालिबमें चाहे तय्यार करे । और प्याला मय कालिब शीरा जोनमाइल और शोरा

---

१ चन्द्र अर्थात् चांदी समझमें आतीहै किन्तु रसकामधेनुने इसको रज मानाहै और वही ठीक है।

२ तजरुबेसे सही साबित हुआ वजन नुकरा $\frac{1}{2}$ही ठीकहै मैंने$\frac{1}{2}$ सेभी गोली बनाई बनगई मगर सख्ती पूरीके लिये $\frac{3}{4}$ ही ठीक है।

हव्वुल कजनमें पकावे चमकीला और मजबूत निकलेगा सलातीनके लायक होजावेगा । हस्बजरूरत गरम गरम दूध या अर्कयात या माइउललहममें डालकर चालीस रोजतक पीये और कुदरत खुदाका मुलाहिजा फर्मावे । (सुफहा ६२ मुजरबात फ़ीरोजी)

पारदगुटिका रौप्ययोगसे ।

पारा ६ रूपाको चूरन २ पानके रसमें खलैं दिन ७ गोलीके धानके रासमध्ये राखे मास ३ चीकरा बूटीके रसमें खली दिन २२ तब धानमध्ये राखे तो सिद्धि होई इसमें दूध भात भोजन करे मास ३ तो सिद्धि होइ ।

पारदगुटिका रौप्ययोगसे ।

प्रथम पारा और ईटको सोधै दिन ३ पारा १ रूपाके चूरन १ पानके रसमें खलै दिन २१ गोलीके धानके रासिम धै राखे मास १ तव निकासि मुखमें डारै तो सहस्र कोस उडैकै सामर्थ्य राखे शिवके वचन प्रमान हैं ।

गोली सीमाव कायमुल्नार बजरियः नुकरा (उर्दू)

चांदीके कुश्तेमें पारेकी गोली बनाकर धतूरे स्याहके फलमें इस गोलीको भरकर ऊपर मिट्टीका पतला लेप करदे और आगमें भुलभुलाले कि धतूरा पककर बिलकुल खुश्क होजावे मगर जल न जावे । पस बाद अंजा गोलीको फलके अन्दरसे निकालकर किसी पत्थर पर ऊंचेसे छोडदे । फिर उसको इकट्ठा करके गोली बनाले और धतूरेके अन्दर भर कर इसी तरह आंचपर भुलभुलाले इसी तरह ११ बार करे गोली कायमुल्नार होजावेगी । इसको चर्ख देले कमर बरामद होगा । अगर इसको फुलाले तो आगे काम देगी । (सुफहा १७ अखवार अलकीमियाँ ८ । ४ । १९०९)

सीमाव गोली बनानेकी तरकीब (उर्दू)

सीमाव एक हिस्सा बुरादा नुकरा एक हिस्सा बदस्तूर सहक करके गोली बांधकर सफेद मुर्गको खिलाकर रातभर रहनेदे बादहू जिवह करके गुटका निकालकर काममें लावे इमसाक और तिश्नगी और तलवासा को नफा करताहै । (सुफहा किताब अलजवाहर १२६-१२७)

गुटिका पारा (रसबंधन-तार वा ताम्र-योग) (उर्दू)

पारेको कढाईमें डालकर आगपर रक्खे और आव पोस्तका चोया देते रहें और नीमकी लकडीसे जिसके मुँहमें पैसा या अठन्नी लगाई गई हो हिलाते जावें थोडी देरमें गिरहके लायक होजावेगा । सर्द करके गिरह बनाले और गुलाबमें एक प्रहर जोश देकर स्तैमालमें लावे पहले की तरह काम देताहै लेकिन तासीरमें उससे कम है । (सुफहा ६२ मुजरिबातफीरोजी)

गोली सीमाव बजरियः कुश्ता नुकरा (उर्दू)

पारेकी हर एक चांदीके कुश्तेके साथ मुनासिव मिकदारसे गोली बनजातीहै बशरते कि चांदीका कुश्ता बजरिये बूटी हो । (सुफहा ६६ किताव कुश्तैजात हजारी)

तरकीब गोली पारा बजरियः कुश्ता नुकरः (उर्दू)

पारा मुसफ्फा एक तोले, कुश्ता चांदी ६ माशे दोनोंको लहसनका पानी डालकर तमाम रोज खरल करे जिससे शामतक गोली बंधजावेगी फिर एक पोस्त बैजः मुर्ग जिसकी सफेदी व जर्दी दूर करनेके वास्ते थोडा हिस्सा तोडा गया हो लेकर उसमें आवलहसन भरदे और दरम्यान वह डेढ तोलेकी गोली डालकर दूसरा पोस्त बैजःमुर्ग ऊपर देकर आरदमाशको रस लहसनमें गूंदकर बारबार लेप करे (यानी एक लेप खुश्क होजावे दूसरा लेप करे इस्तरहसे चार) फिर एक आरद गंदुम पानीमें गूंदे हुएका लेप करदे फिर एक बर्तनमें सरसोंका तेल भरकर आगपर रक्खे और इस गोलीको इस तेलमें लटकादे इस्तरह कि तहको न लगे फिर दर्मियानी आंचपर पकावे । आठ पहर बादहू सर्द होनेपर निकाल कर गोलीको दो घंटे रोगन धतूरामें नरम आंचपर पकावे फिर निकाल कर पानी सर्दमें दो एक दिन रख छोडै यह गोली पारा पहले बयान तमाम गोलियोंसे ज्यादा मुफीदहै यह गोली बहुत आला है अजहद मुकव्वी वाहव मुमसिक है मुँहमें रखतेहैं दूधमें लटका कर भी पीतेहैं अगर रोगन धतूरेमें पकानेके बाद रोगन कुचला, रोगन भांग, रोगन मालकांगनीमेंभी पकालें तो अजवस मुफीद है । कहते हैं कि उसको जर्दी बैजःमुर्गमें भी पकावे तो अजब असर होताहै । कि (सुफहा १० देशोपकारक अखबार ४।७।१९०६)

गुटिका बनानेकी तरकीब बजरियः तिला व नुकरा (उर्दू)

इस गुटिकाको मुँहमें रखनेसे कुव्वतवाह और इमसाक होगा और दर्दसर और तिश्नगीको जाइल करेगा और तिश्नगी नफसको मुफीद है और मुंह और तालूकी खुश्कीको नाफःहै बुरादा तिलाई सुर्ख खालिस दो हिस्सा बुरादा नुकरा एक हिस्सा सीमाव एक हिस्सा तीनोंको यकजा करके अच्छी तरह सहक करे और गोली बांधले और ओटेमें मिलाकर स्याह मुर्गी या स्याह कौवेको निगलादे और एक रात दिन मुसल्सिल निगाह रक्खे बाद उसके जिबह करके गोली निकाल ले और सर्द पानीसे खूब धोवे और जरूरतके वक्त मुँहमें रखे मुजर्रिव है इन्शा अल्लाह ताला खूब काम देगी । (सुफहा किताब अलजवाहर १२४)

गुटिका बनानेकी तरकीब बजरियः तिला (उर्दू)

जवतक मुँहमें रहेगा मैदेको कवी करेगा प्यास न मालूम होगी इमसाक होगा और दर्दसर जाइल होजायगा

१ अनुभवसे ३ भाग पारेमें १ भाग चांदी ही ठीक सिद्ध हुई ।

और तलूसा और खुश्की दहनको भी मुफीद होगी। सीमाव एक हिस्सा, तिलाइ सुर्ख एक हिस्सा बुरादा करके गोली बनावे दो रोजके बाद मैदाकी गोलीमें रखकर कबूतरको खिलावे बाद तीन दिन रातके उसको जिबह करके और धोकर जरूरतके वक्त मुँहमें रक्खे। (सुफहा किताब अलजवाहर १२३-१२४)

हुब सीमाव और तकवियत एजाइ रिहाव अदील अस्त नुसखः (फार्सी)

विगीरन्द सीमाव साफ व पाकीजः शशमाशः व तिलाइ वर्क कि आँरा व जबान हिन्दी पना गोयन्द कि बिसियार खालिस मेंबाशद चहार माशः हरदोरा कदरे आब अन्दाख्तः सहक कुनन्द तामसकः शवद पसहुव बस्तः यक साइत निगाहदारन्द कि अन्दके सख्त शवद अंगाह अज सोजन सूराख कर्दः रिश्तः बजबूत रेशमदराँ अन्दाजन्द व बजाइ मजबूत निगाहदारन्द दर्मियान हफ्तः अशरा खूब महकुम व सख्त मिस्ल गोली बन्दूक ख्वाहदशुद पस आँगोलीरादर आबन्द शीरअन्दाजन्द बचोबे बरसर आवन्द गुजाश्तः सरारिश्तः बचोब बः बंदन्द कि हुब सीमाव दर शीरगर्कमाँद व अजतह आवन्द अन्दके बलन्द बाशँद व शीर रा जोशदहन्द हरगाह शीर तय्यार शवद गोलीरा बैरू कशन्द साफकर्दः निगाह दारन्द व शीरा विनोशन्द बाद ओमत चन्दरोज कुव्वत तमाम हासिल आयद बई यक गोली ता सदसाल किफायद कुनद व चीजे अजाँकमन शवद बहरगाह ख्वाहन्द कि तिला अनगोगी बैरूंकशन्द गोलीरा दरबोतः गुजाश्तः कदरेतंकार अन्दाख्तः चर्ख दिहन्द सीमाव परान शवद बतिला चर्ख खुर्दः व वजन खुद बैरूं आयद। (सुफहा ८०७ किताब शफाइ उल अबदान)

गुटिका बनानेकी तरकीब तिलासे (उर्दू)

सोनेके पत्तर एक निश्क यानी चार माशे, पारा साफ एक निश्क इन दोनोंको सरफोंके और जँभीरीके अर्कमें दस रोज खरल करके गोला बनाकर पोटली बांध कर मटकेमें गाडका दूध भर करके मौअल्हिक लटकादे फिर दो दिन रात तेज आंचदे दूध कम होजावे तो और डालदे जब सोलह पहर आंच लग जावे निकालले गुटिका बन जावेगी। (अगर गोली निहायत सख्त बनाई हो तो बराबर वजन लेना भी शायद दुरुस्त होगा) उसको हस्तकेसरी कहते हैं। मुँहमें रक्खे बुढापा दूर हो उम्रदराज हो। (सुफहा १३ खजाना कीमियाँ)

रसबंधन (हिरण्यगर्भगुटिका) स्वर्णबद्ध।

उत्कृत्य मूलं विषजं विदध्याद्गर्भेस्य सूतं कनकांशपिष्टम् ॥ संवेष्टयेत्कोलभवेन तन्तुमांसेन पश्चाद्विपचेद्द्वियामम् ॥ ७३ ॥ धत्तूरबीजोद्भवतैलगर्भे संबद्धतां याति मुखस्थितोयम् ॥ संभोगकाले दृढतां करोति वीर्यस्य दुग्धं भजतां नराणाम् ॥ ७४ ॥ (रसरत्नप्रदीप., यो. त.)

अर्थ-बच्छनागको जडसमेत उखाडकर उसका कल्क बनावे और उस्के बीचमें सुवर्णके संग पिसेहुए पारेको रक्खे पश्चात् उस्को सूअरके मांसमें एकमहीना रखकर दो प्रहरतक पकावे। फिर धतूरेके बीजोंके तेलमें उस्को रखकर संबद्ध करे अर्थात् गोली करे संभोगकालमें यह मुखमें रक्खीहुई गोली वीर्यको दृढ करती है। परंतु इसको मुखमें दबाकर मनुष्योंको ऊपरसे दूध पीना चाहिये ॥७३॥७४॥

गुटका बनानेकी तरकीब-बजरियः नुकरा आहन शिंजर्फ-मारकशीशा (उर्दू)

इसका हिन्दीमें प्रभामारी कहते हैं मुँहमें रखनेसे बहुत नफा करताहै और इमसाक होताहै मैदाको गर्म और हज्मको कवी करताहै खट्टी डकारें फौरन दूर होजाती हैं, सीमाव दो हिस्सा बुरादा नुकरा निस्फ हिस्सा बुरादा आहन निस्फ हिस्सा शिंजर्फरूमी निस्फ हिस्सा व यक दांग मारक शीशाइ जौहवी (सोनामक्खी) एक हिस्सा एक दांग सबको इकट्ठा करके थोडासा पानी मिलाकर सहक करे और गोली बांधले और ईटमें गढा करके थोडासा पानी मिलाकर सहक करे और गोली बांधले और ईटमें गढाकरके उसमें दुधीबूटी के बर्ग रख कर उसपर गोली मजकूर को रख कर ऊपरसे दुधी मजकूरसे पोशीदह करके मुंह बंद करके गिले हिकमत करदे जब खुश्क होजावे नरम आग यानी भूभलमें दफन करे सर्द होनेके बाद जब सीमाव मजकूरको निकाल कर सर्द पानीमें डालदे और हाजतके वक्त काममें लावे जबतक मकसूद हासिल हो। (सुफहा किताब अलजवाहर १२५)

रसबंधन लोहद्रुतिबद्ध।

कंचुकीकीटचूर्णेन मृतलोहं च भावयेत ॥ देवदालिरसेनैव ध्मातं सद्द्रुतितं जयेत् ७५॥ द्रुतिभिर्मर्दितः सूतो बद्धमायाति तत्क्षणात ॥ भक्षणात्कुरुते नृणां रुग्जरामृत्युनाशनम् ॥ ७६ ॥ (नि. र.)

अर्थ-लोहेकी भस्ममें सर्पके मांसको (जो लोहेके समान हो) मिलाकर बंदालके रससे घोटे फिर कोयलोंकी आंचमें रख धोंके तो लोहेकी द्रुति होगी, उस द्रुतिसे पारदको घोटे तो उसी क्षण पारद बद्ध होगा इस बद्ध पारदके भक्षणसे रोग, वृद्धता और मृत्यु भी नष्ट होताहै ॥ ७५ ॥ ७६ ॥

रसबंधन गगन सत्त्वबद्ध।

सूतं गगनसत्त्वं च समभागेन मर्दयेत् ॥ तत्क्षणं जायते बद्धो गोलं कृत्वा भिषग्वरैः ॥ ७७ ॥ खेचरे चोदरे क्षिप्त्वा एवं पिष्टेन लेपयेत् ॥ सप्तभिर्मृत्तिकाभिश्च तत्क्षणं वेष्टयेद् बुधः ॥ ७८ ॥ गोमयेन च संलेप्यं गजाख्यं पुटयेद्भिषक् ॥ तत्रस्था गुटिका ग्राह्या मुखे धृत्वा च खेचरे ॥७९ ॥ अदृश्यं जायते सिद्धिः स्पर्शनाद्व्याधिनाशनम् ॥ कंदर्पो जायते कामी वायुतुल्यो बलप्रदः ॥

॥ ८० ॥ अन्योन्यं जायते सिद्धिः शुल्बं भवति कांचनम् ॥ शस्त्राग्नीनां भयं नास्ति दिव्यदेहा भवंति हि ॥ ८१ ॥ (नि. र.).

अर्थ-पारद और अभ्रक सत्त्वको समान भाग लेकर मर्दन करे तो पारा शीघ्र बद्ध होगा उसका गोला बनाकर मुर्गीके अंडेमें भरदेवे उसपर जौके चूनका एक २ अंगुल लेप कर सात कपरौटी करै । फिर गोबरसे लीप गजपुट देवे स्वांगशीतल होनेपर गोलीको निकाल पक्षीके मुखमें धरे तो पक्षी अदृश्य होजायगा । यह कामदेवको उत्पन्न करतीहै वायुके समान बलको देतीहै और इससे ताँबा सुवर्ण होताहै और जो इसको खातेहैं उनकी देहको शस्त्र और अग्निका भय नहीं होताहै ॥ ७७-८१ ॥

गुटिका बनानेकी तरकीब गगनसत्त्व वा द्रुतिबद्ध (उर्दू)

पारा साफ अबरखकी द्रुति दोनोंको बरावर लेकर खूब खरल करे गोला बनजावेगा फिर चीलको चीरकर उसमें रखकर जौके आटेसे खूब बंद करदे । फिर सात तह कपरमिट्टी चढाकर सुखाकर उसपर गोबर चढादे और सुखादे फिर एक गज मुरव्वा गहरा गढा खोद कर उसमें जंगली उपले भरकर उसके बीचमें रख कर आगदे जब सर्द हो निकालले गुटिका बनजावेगी । मुंहमें रक्खे तो जमीनसे ऊँचा चले और गाइब हो और हाथमें रक्खे तो बीमारियां दूर हों और दूधमें डालकर गरम करके पिये तो वाहवे इन्तहा होगी और ताकत हवाकीसी बदनमें आयेगी । (सुफहा १४ खजानः कीमियां)

अभ्रद्रुतिबद्ध ।

सूतं द्रुतिसमं कृत्वा षोडशांशेन काञ्चनम् ॥ धमेत्प्रकटमूषायां रसेन्द्रो बंधमाप्नुयात् ॥ ८२ ॥ राजिकार्द्धार्द्धमानेन पर्वतानपि वेधयेत् ॥ यथा लोहं तथा देहं भिद्यते नात्र संशयः ॥ ८३ ॥ इत्यभ्रद्रुतिसंसिद्धं रसायनमुदाहृतम् ॥ विना शम्भोः प्रसादेन न सिध्यति कदाचन ॥ ८४ ॥ (नि. र., रसमानस.)

अर्थ-पारद १६ सोलह तोले, अभ्रकद्रुति १ एक तोला लेकर घोटे फिर मूषामें रख अग्निमें धोंकै तो पारद बद्ध होगा वह बद्ध पारद एक राईभर भी ढेरके ढेर ताँबेको वेधताहै और वह जिस प्रकार धातुका सुवर्ण बनाताहै उसी प्रकार शरीरको भी सुवर्णके समान कर देताहै ॥ ॥ ८२-८४ ॥

रसबंधन वैक्रान्तबद्ध ।

अथ वा गंधपिष्टी सा क्षीरकंदोदरे क्षिपेत् ॥ व्याघ्रीकंदे सूरणे च गुडशुद्धद्रवे तथा ॥ ८५ ॥अर्धार्धं भस्म वैक्रान्तं दत्त्वा निष्कार्धमात्रकम् ॥ ततः कन्दस्य मज्जाया मुखं रुद्ध्वा लिपेन्मृदा ॥ ८६ ॥ लेपत्र्यंगुलमात्रं तु सर्वतः शोष्य गोलकम् ॥ पाचयेद्भूधरे यंत्रे कुक्कुटाभेष्टधा पुटेत् ॥ ८७ ॥ पूर्वकंदो यथापूर्वं लेप्यं शोष्यं सुसंपचेत ॥ द्वित्रैर्वनोत्पलैरेव बद्धः स्याद्रक्तवर्णकः ॥ नाम्ना वैक्रान्तबद्धोयं जरामृत्युरुजापहः ॥ ॥ ८८ ॥ (र. रत्नाकर ह. लि.)

अर्थ-पारद और गंधककी पिष्टीको क्षीरकन्द, व्याघ्रीकन्द अथवा जमीकन्दमें रखकर पिष्टी ऊपर नीचे वैक्रान्तकी भस्मको रखदेवे (यहांपर यह अवश्य विचारना चाहिये कि यदि पिष्टी १ कर्ष हो तो वैक्रान्त भस्म आधा निष्क लेलेना) फिर उसी कन्दके टुकडेसे छेदको बंदकर तीन २ अंगुल मिट्टीका लेपकरैं फिर गोलेको सुखाय भूधर यंत्रमें आठ बार कुक्कुट पुट देवे पूर्व पुटमें जो कन्द लिया हो वही कन्द फिर भी लेना चाहिये और दो तीन जंगली कंडोंकी आंच देनी चाहिये तो पारद लाल रंगका बद्ध होगा यह बद्ध पारद वैक्रान्त कहाताहै ॥ ८५-८८ ॥

रसबंधन वैक्रान्तबद्ध ।

कटुतुंब्युद्भवे कन्दे वन्ध्यायाः क्षीरकंदके ॥ अपक्वैकं समादाय तद्गर्भे पिण्डिका ततः ॥ ॥ ८९ ॥ दशनिष्कं शुद्धसूतं निष्कैकं शुद्धगंधकम् ॥ स्तोकं स्तोकं क्षिपेद्धंधं पाषाणे तु च कुट्टयेत ॥९०॥ याममात्रे भवेत्पिंडी रक्तकंदे विनिक्षिपेत ॥ अधोर्द्ध्वे भस्मवैक्रान्तं दत्त्वा निष्कार्द्धमात्रकम् ॥ ९१ ॥ ततः कंदस्य मज्जाभिमुखं बद्ध्वा मृदा दृढम् ॥ लिप्तमंगुलमानेन सर्व्वतः शोष्य गोलकम् ॥ ॥ ९२ ॥ पाचयेद्भूधरे यंत्रे ततोद्धृत्य पुनः पचेत् ॥ ऊर्ध्वभागमधः कुर्य्यादित्येवं परिवर्तयेत ॥ ९३ ॥ क्रमेण चालयेदूर्ध्वं बहिर्युग्मोत्पलैः पचेत् ॥ ततो भिन्नस्तु संग्राह्यः बद्धः स्याद्दाडिमोपमः ॥ नाम्ना वैक्रान्तबद्धोयं सर्वरोगेषु योजयेत् ॥ ९४ ॥ (र. रत्ना.,)

अर्थ-कटुतुम्बी, बांझ ककोडा या क्षीरकन्द इनमेंसे किसी एक कच्चे कन्दको लेकर उसमें छेद करै फिर दस तोले पारा और एक तोला गंधक लेकर धीरे २ घोटे तो एक प्रहरमें पिष्टी होजायगी, उसको ऊपर कहे हुए किसी कन्दमें रख ऊपर नीचे आधा निष्क वैक्रान्तभस्म रखदेवे फिर उसी कन्दके छुकलेसे गड्ढेका मुख बन्द करदेवे और एक २ अंगुल मिट्टीका लेपकर सुखालेवे और भूधरयंत्रमें पचावे फिर निकाल कर पुनः पाचन करै परन्तु प्रथम पिष्टीका जो भाग नीचेको था उसे ऊपर करदेवे । भूधर यंत्रमें दो जंगली

कंडोंकी आंच देना चाहिये। जब पारद अनारके तुल्य लाल होजाय तब सम्पुटको तोड बद्ध पारदको निकाल लेवे। इसको वैक्रान्तबद्ध कहतेहैं यह समस्त रोगोंमें देने योग्य है ॥ ८९-९४ ॥

रसबंधन (स्मरसुंदरीगुटिका) वज्रहेमादिबद्ध।

वज्रहेमाभ्रकं ताप्यं कांतं सूतं समं समम् ॥ मर्द्यं जंबीरकैर्द्रावैर्दिनं खल्वे ततः पुनः ॥ ९५ ॥ ब्रह्मवृक्षस्य बीजानि कर्पासास्थीनि राजिका ॥ वंध्या च जनयित्री च पिष्टं तन्मध्यगं कुरु ॥ ९६ ॥ पूर्ववन्मर्दितं गोलं लघुसप्तपुटैः पचेत् ॥ ततो गजपुटं दद्यान्मुखं रुद्धा धमेद्धठात् ॥ ॥ ९७ ॥ तद्गोलं धारयेद्वक्त्रे शस्त्रस्तंभकरं भवेत् ॥ ताम्रपात्रे पुनर्वेष्ट्य मुखस्थं सर्वशत्रुजित् ॥ ९८ ॥ हन्ति रोगं जरां मृत्युं गुटिका स्मरसुन्दरी ॥ सर्वेषां मुक्तयोगानां कुंभकर्णं स्मरेद्यदि ॥ अपातं सुमुखं शत्रुसमूहं संनिवारयेत् ॥ ९९ (नागार्जुन.)

अर्थ-हीरा, सुवर्ण, अभ्रक, सोनामक्खी, कान्तिसार और पारद इन सबको समान भाग लेकर खरलमें जँभीरीके रससे एक दिनतक मर्दन करै फिर ढाकके बीज, बनोलेकी मींग, राई, बांझककोडा और जनयित्री इनको पीसकर गोला बनावे उस गोलेमें उस औषधिके गोलेको रखकर सात लघुपुट देवे। फिर गजपुटमें रख देवे। तदनन्तर मूपामें रख धोंके उस सिद्ध गोलेको मुखमें रक्खे तो शस्त्रको थांभ देताहै यह स्मरसुन्दरी गुटिका रोग जरा मृत्युको नाश करतीहै ॥ ९५-९९ ॥

गुटिका बनानेकी तरकीब-हीरेसे (उर्दू)

पारा बराबर का सोना खाया हुआ और उसका सोलहवां हिस्सा हीरेका कुश्ता दोनोंको आकाशबेलके अर्कमें खरल करे फिर उन दोनोंका दसवां हिस्सा कान्त लोहा और सुहागा खूब बारीक खरल करे। फिर सबको मिलाकर अंधमूषा यानी घरियामें धरकर कोयलों की आंचपर रखकर धोंकनीसे खूब धोंके गुटिका बनजायगी। इसकी खासियत यह है कि मुहमें रखनेसे बुढापा दूर होताहै और लडाईमें फतह और हर अज्वतवाना मजबूत होजाताहै और पास रखनेसे मुफलिसी दूर होतीहै और हर दिल अजीज होताहै खुसूसन औरतोंका इस गुटिकाको सिरोगरी कहतेहैं (सुफहा १२-१३ खजाना कीमियां)

रसबंधन (खेचरीगुटिका) धतूरबद्ध।

रसटंकत्रयं शुद्धं कृष्णधत्तूरबीजजे ॥ तैले पलद्वये खल्वे मर्दितं दिनसप्त च ॥ १०० ॥ तावद्यावद्भवेत्तस्य जलौकारूपमुत्तमम् ॥ माषान्नपिष्टकेनादौ दृढसूत्रेण वेष्टयेत् ॥ ॥ १०१ ॥ वर्तिं कृत्वा ततो गाढं शोषयेद्रविणा च तम् ॥ दशशीर्षमिते तैले सर्षपस्य विपाचयेत् ॥ १०२ ॥ तैलक्षयो भवेत्तावद्यावत्तामवतार्य वै ॥ स्निग्धच्छायां निशायां च शनैः सिद्धां च तां नयेत् ॥ १०३ दुग्धेनापूर्यते कुंभः शुभस्तत्र निवेशयेत् ॥ विशोष्य सकलं दुग्धं गुटिका यदि तिष्ठति ॥ १०४ ॥ बर्करस्य मुखे पश्चाद्गुटिकां तां प्रयच्छति ॥ प्रविष्टा तन्मुखस्यान्ते ज्वलमाने च तद्धृदि ॥ १०५ ॥ व्याकुलं कुरुते कामं देहस्वास्थ्यं न तस्य वै ॥ उदरस्था यदा भूयात्तदासौ म्रियते पशुः ॥ १०६ ॥ स्वकीयवदने पश्चाद्धृत्वा शुभ्रां निरामयः॥ योजनानां शतं गच्छेदप्रयासेन साधकः ॥ ॥ १०७ ॥ अन्येऽपि बहवो रोगा मुखस्था दंतघातिनः ॥ जिह्वातालुगता एते कंठस्था शालुकादयः ॥ १०८ ॥ उपजिह्वाद्विजिह्वास्यादधिजिह्वासुदारुणा ॥ सप्तपुष्टिषु ये मध्ये हृद्रोगा पीनसादयः ॥ तांस्तान् विनाशयत्येषा गुटिका नाम खेचरी ॥१०९ (र. रा. शं., र. सा. प., नि. र.)

अर्थ-तीन टंक शुद्ध पारदको धतूरेके बीजोंके दो तोले तेलमें सात दिनतक मर्दन करै और जबतक उसका रूप जोंकके समान हो तबतक मर्दन करै उसको जो कि जोंकके समान लंबी बत्तीसी हो। उरदकी पिट्ठीमें रख कच्चे सूतसे बांध देवे और घाममें सुखा लेवे उस गोलेको दस सेर सरसोंके तैलमें पकावे जब तैल जल जाय तब उतार लेवै। फिर रात्रिमें छायादार स्थानमें सिद्ध गोलीको निकाल दूधके भरेहुए घडे में रखदेवे जब दूध सूखजावे तब गोलीको निकाल बकरेके मुखमें रक्खे। जब वह गोली उस बकरेके मुखमें जायगी तभीसे उसको हृदय कामाग्निसे प्रज्वलित होजाताहै और जब वह गोली पेटमें चली जायगी तब वह बकरा मरजायगा इसके बाद उस गोलीको अपने मुखमें रक्खे तो विनाही परिश्रम किये सौ योजन चला जाताहै और भी बहुतसे मुखमें रहनेवाले रोग और दाँतोंके रोग नष्ट होते हैं जिह्वा तालु शालु आदिक कण्ठके रोग तथा उपजिह्वा द्विजिह्वा हृद्रोग और पीनस आदिक रोगोंको यह खेचरी गुटिका नाश करती है ॥ १००-१०९ ॥

गुटिका बनानेकी तरकीब बजरियः रोगन धतूरा। (उर्दू)

पारा साफ तीन टंक काले धतूरेके तेलमें सात दिन खरल करे तेल दो पली डाले और खूब खरल करे सात रोज बाद मिस्ल जोंकके होजावेगा। उर्दके आटेकी गोलीमें रखकर चारों तरफ मजबूत सूत लपेटदे फिर उसपर

उर्दके आटेका मोटा लेप करके सुखाके दस सेर तेल सरसोंका लेकर उसमें पकाले जब सब जल जाय बर्तनको सर्द जगह रखदे और बाद सर्द होनेके गोलेसे बाहर निकालकर दूधके मटकेमें डाल कर आंच दे जब दूध खुश्क होजावे निकाल ले गोली बँध गई तो गुटका बन गया, नहीं फिर पकावे जब गोली बँध जावे रख छोडे। मुँहमें रखनेसे सब बीमारियां दूर हों और एक दम चार सौ कोस चला जावे थकान न मालूम हो और सौ औरतोंसे सोहबत करे कुव्वत कम न हो और कोई हथियार जिस्मपर कारगर न हो इसको खेचरी कहते हैं। (सुफहा १५ खजानः कीमियां।)

रसबंधन (विषबद्ध मुस्तवा।

रस कनकतैलेन मर्दयेद्दिनसप्तकम् ॥ विषग्रंथिं समुत्कृत्य सार्धं गंधाभ्रकत्रयम् ॥ ॥ ११० ॥ हेमतैले विनिक्षेप्यं मूषायां रोधयेन्मुखम् ॥ सप्तभिर्मृत्तिकाभिश्च वेष्टयित्वा च शोषयेत् ॥१११ ॥ तत्क्षणाद्वेष्टयेत्सूत्रे मृत्कर्पटसप्तकम् ॥ गोमयेनाथ संलेप्यं तं गोलं पूजयेद्भिषक् ॥ ११२ ॥ हस्तत्रयमितं गर्तं शोषकृत्पिंडपूरितम् ॥ तन्मध्ये निक्षिपेद्गोलं दग्ध्वा शांतं समुद्धरेत् ॥ ११३ ॥ तत्रस्था गुटिका ग्राह्या दिव्यकौतुकदायिनी ॥ सा रोगे मुखनिक्षिप्ता रमते शोकनाशिनी ॥ यावत्सा गुटिका ग्राह्या तावन्न द्रवते नरः ॥ ११४ ॥ (नि. र.)

अर्थ-पारदको सात दिनतक धतूरेके तैलमें घोटे फिर सींगियाकी गांठमें छेद कर पारद भरदेवे और ऊपर नीचे साढे तीन गुना गन्धक रख देवे और विषके टुकडेसे मुखको बन्द करै। फिर एक घरियामें कटेरीका तैल भर घरियाके मुखको बंद कर सुखा २ कर सात कपरौटी करै उसपर सूत लपेट कर फिर सात कपरौटी करै उस गोलेको गोवरसे लीपकर वैद्य पूजन करै। फिर तीन हाथ लंबा चौडा गड्ढा खुदवाकर सूखे हुवे जंगली कण्डोंसे भरकर बीचमें गोलेको रख अग्नि लगावे स्वांगशीतल होनेपर निकाल लेवे उसमेंसे उत्तम कौतुक (आश्चर्य) देनेवाली गोलीको निकाललेवे । उस शोकविनाशिनी गोलीको मुखमें रखनेसे खूब रमण करता है और जबतक गोली मुखमें रहेगी तबतक वीर्यपात न होगा॥११०-११४॥

गुटिका पारा (रसबंधनविषसे) उर्दू।

पारेको नमक लाहौरी और पानीमें मुकर्रर सिकर्रर धोवे और शीरा बर्ग तंबूलमें एक पहर खरल करके बीश एक कितैमें निस्फतक खाली करके डाले और अंजजाइ मुतखरज:से बन्द करले एक बर्तनमें गोश्त बुजगाला तीन पाव, पानी एक पाव डालकर वह बीश उसमें छोड कर

१ अगर कामयाबी न हो तो बुरादा नुकरा शामिल करो। दरअसल बुरादा तिलाकी जरूरत है। देखो सुफहा ४१ गोली बजरियःतिला।

मुंहको खूब मजबूतीसे बन्द करें और शामके वक्त चूल्हे पर सवार करे और नरम आंच जलावे और अलस्सवाहमें चार पहर गुजरनेपर चूल्हेसे नीचे उतार ले गुटका बरामद होगा। एक प्रहर गुलाबमें जोश देकर काममें लावे कुव्वत वाह इमसाक व इन्तशारमें बेनजीर है दूधमें रखकर जोश देकर पिया करे और कुदरत खुदाका मुलाहिजा फर्मावे। (सुफहा ६२ मुजरबातफीरोजी)

गुटिका बनानेकी तरकीब (रसबंधन ब्रह्मांडगुटिका विषयोग) उर्दू

पारा साफ तप्त यानी गरम खरलमें नागबेल यानी पानके अर्कमें सात रोज खरल करे फिर कांजीके पानीसे धोकर पारा निकालले फिर एक कर्षभर पारा वशकंदमें भरके सूअरके गोश्तका उसपर लेपकर बीस पल धतूरेके तेलमें वशकंदको पकाले जब पकजाइ कुछ सदकादे और दवाको निकालले। यह गुटका बनगया जबतक मुँहमें रहेगा जमा इसे फारिग न होगा और बुड्ढा हो जवान होजावेगा। सुस्त हो किसी फेलसे या बीमारीसे सब कामके लायक होगा। इस गुटकाको ब्रह्मांडगुटिका कहतेहैं । (सुफहा १३ खजानः कीमियां)

रसबन्धन (ब्रह्मांडगुटिका) विषबद्ध।

नागवल्लीदलद्रावैः सप्ताहं सिद्धपारदम् ॥ मर्दयेत्तप्तखल्वेन काञ्जिकैः क्षालयेत्ततः ॥ ॥ ११५ ॥ तं गर्भे विषकंदस्य क्षिपेन्निष्कचतुष्टयम् ॥ विषेण तन्मुखं रुद्ध्वा स्थूलवाराहमांसजे ॥ ११६ ॥ पिंडवर्गे निरुध्याथ मुखं सूत्रेण बन्धयेत् ॥ सन्ध्याकाले बलिं दत्त्वा कुक्कुटं मदिरायतम् ॥ ११७॥ ततश्चुल्ल्यां लोहपात्रे तैले धत्तूरसंभवे ॥ विपचेत्तु ततः पश्चात्सपिंडं मन्दवह्निना ॥ ॥ ११८ ॥ सन्ध्यामारभ्य यत्नेन यावत्सूर्योदयो भवेत् ॥ विषमुष्टिपलं चैकं गुंजाविजययोरपि ॥ ११९ ॥ तैलं जातीफलस्यापि वीरतालस्य चोत्तमम् ॥ पाचयेत्पूर्वयोगेन अन्यथा नैव सिध्यति ॥ १२० ॥ततउद्धृत्य गुटिकां क्षीरमध्ये विनिक्षिपेत् तत्क्षीरं शोषयेत्क्षिप्रमेतत्प्रत्ययकारकम् ॥ १२१ ॥ दृष्ट्वा तां धारयेद्वक्त्रे वीर्यस्तंभकरी नृणाम् क्षीरं पीत्वा रमेद्रामां कामाकुलकलायुताम् ॥ ब्रह्मांडगुटिका ख्याता शोषयन्ती महोदधिम् ॥१२२॥ (र. सुं.)

अर्थ-सिद्ध पारदको पानोंके रससे सात दिवसतक मर्दन कर (तप्त खल्वमें) कांजीसे धो लेवे उस चार

१ तजरुबेसे साबित हुआ कि पानके रसमें घोटनेसे पारा साफ होजाताहै गलीज नहीं होती।

तोले पारदको विषकंदमें भरदेवे फिर विषकन्दके ही छिकलेसे मुखबंदकर पुष्ट सूअरके मांसमें रख सूतसे बांध देवे। और सायंकालको मदिरासहित मुर्गेका बलिदान देवे। फिर कढाईमें धतूरेका तैल भर उस गोलेको सायंकालसे सूर्योदयतक मन्दाग्निसे पकावे। फिर कुचला, चौंटनी, हर्र, जायफल और वीरतालके तैलमें भी पूर्वोक्त रीतिसे पकावे । तदनन्तर गुटिकाको निकाल दूधके घडेमें रख देवे तो गोली उस दूधको शीघ्र ही सुखालेतीहै यह विश्वासहै। ऐसा देख जो मनुष्य उसको मुखमें धरताहै उसका वीर्य थंभ जाताहै । और जो गोलीको मुखमें रख और दूध पी कामसे व्याकुल स्त्रीसे रमण करै यह ब्रह्माण्ड गुटिकासमुद्रको भी सुखानेवाली प्रसिद्धहै ॥ ११५–१२२ ॥

रसबंधन (खगेश्वरीगुटिका) विषबद्ध ।

तुत्थकं मूषया कृत्वा स्थापयेन्मध्यपारदम् अर्कसेहुंडधत्तूररसो द्रोणं च पूरयेत्॥१२३॥ सप्ताहमौषधीभाव्यं सिंहनेत्र्या घनप्रिया पश्चात्तदम्लयोगेन गोलकं शुक्रसन्निभम् ॥ ॥ १२४ ॥ धत्तूरविषतैलेन ज्योतिष्मत्यास्तथैव च ॥ गुंजा च लांगली चैव भल्लातांकोलकौ तथा ॥ १२५ ॥ एतेषां तैलयोगेन गुटिकां विषमध्यगाम् ॥ दोलायंत्रे पचेदेवं चतुष्षष्टिदिनानि च ॥ १२६ ॥ प्रत्येकमौषधीतैले राक्षसी गुटिकोत्तमा ॥ स्वर्णादिद्रव्यलोहानि भक्षयेन्नात्र संशयः १२७ तारमध्ये यदाक्षिप्तं स्वर्णं भवति निश्चितम्॥ वंगमध्ये यदा क्षिप्तं रजतं जायते ध्रुवम् ॥ ॥ १२८ ॥ मुखे क्षिप्त्वा अदृश्यं च नाना कौतुककारकम् ॥ खेचरी जायते सिद्धिर्मनःपवनवेगकृत् ॥ १२९ ॥ जरां मृत्युं हरेद्रोगं विषं स्थावरजंगमम् ॥ नानया सदृशं क्वापि त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् ॥ नाम्ना खगेश्वरी नाम गुटिका सिद्धिसाधनम्॥१३०॥ (र. सुं.)

अर्थ–सिद्ध पारा ऽ। सेर लेकर आधसेर नीलाथोथा आधा नीचे और आधा ऊपर उसके रक्खे और आक, धतूरा, थूहर इन तीनोंका रस चार चार सेर लेकर प्रथम कढाईमें पूर्वोक्त रीतिसे पारेको रख ऊपरसे सब रसको डाल तेज आंचदे। जब रस गाढा होजाय तब कढाईको उतार पारेको पानीसे खूब धोडाले जब पारा गाढा हो खरलमें डाल ७ दिन सिंहनेत्रीके रसमें घोटे और ७ दिन घनप्रियाके रसमें घोटे। पीछे कागजी नींबूके रसमें घोटे पीछे एक विषकी बडी और मोटी गांठ लेकर उसमें एक गढेला इतना बडा खोदे जिसमें ऽ। पावभर पारा समाजावे तब उसमें पारा भरकर विषके टुकडेसे मुख बंद कर और इस विषकी गांठको कच्चे सूतसे लपेटकर दोलायंत्र करके विषको धतूरेके तेलमें राखे विषकी गांठ कढाईके पेंदेसे दो अंगुल ऊँची रहे ६४ दिन पर्यंत इसके नीचे मंदाग्नि जलावे जैसे जैसे तेल घटे वैसे वैसे डालताजाय। इसीप्रकार मालकांगनी, घुंघची, करियारी,भिलावा और अंकोल इन प्रत्येकके तेलमें चौसठ चौसठ दिन पचावे तो राक्षसी पारा हो अर्थात् बहुत भूखा होवे। यह पारा स्वर्णादिकके खानेको समर्थ हो चांदीमें इसको डालनेसे सुवर्ण हो और राँगको चांदी करे मुखमें रखनेसे अदृश्य होवे आकाशमें विचरनेवाला हो। एक क्षणमें हजार कोश पहुंचे बुढापे, मृत्यु और विषका नाश करे इसकी बराबर दूसरी गुटिका नहींहै ॥ १२३–१३० ॥

गुटिका बनानेकी तरकीब (खगेश्वरी गुटिका) (उर्दू)

सबज तूतियाका बुरादा लोहेके बर्तनमें रक्खे फिर पारा आकके दूधमें और थूहरके अर्कमें खरल करके उस मोरतूतिये (मयूरतुत्थ) के बुरादेमें दबादे। फिर आकका दूध और धतूरेका अर्क उसमें डाले और सुखाले सात रोजतक फिर संगपथरी और तिरभत्तःके अर्कमें एक बार डाले और सुखाले। फिर तीनोंके अर्कमें उस पारेकी गोली बनाके वशकंदमें रखकर धतूरा, मालकांगनी, भिलावा, लांगली, गुंजा, अंकोल इनका जुदा जुदा तेल निकाल कर लोहेका डोलजंतर बनाके उस पारद और वशकंदको हर॰ तेलमें जुदाजुदा चौसठ रोजतक आंचदे गुटिका बनगई इसको रागशमशी कहतेहैं। चांदीको गलाकर इसे डाले तो सोना बनजावे। राँगमें डाले तो चांदी होजाय। मुंहमें रक्खे तो गाइब हो जमीनसे ऊंचा चले जैसे हवा। और बुढापा कभी न आवे और सब जहरोंको बदनसे दूर करताहै इसको खगेश्वरी भी कहतेहैं। (सुफहा १४ खजाना कीमियाँ)

बद्धरस फल ।

मुखमध्यगतस्तिष्ठेन्मुखरोगविनाशनः ॥ शरीरे क्रमिते सूते जरापलितजिन्नरः ॥ ॥ १३१ ॥ स्तंभयेच्छस्त्रसंघातं कामोत्पादनकारकः॥ पुनर्नवं वयः कुर्यात्साधकानां न संशयः ॥ १३२ ॥ (यो. र.)

अर्थ–यदि बद्धपारेको मुखमें रक्खे तो मुखरोग दूर होताहै और इस बद्धपारदका शरीरकी नस २ में प्रवेश होनेसे बुढापा और पलित रोग नष्ट होताहै। शस्त्रोंके समूहको थँभा देताहै कामको उत्पन्न करताहै। बद्धपारद बनानेवालोंके शरीरको यह पारद नवीन ही बना देताहै ॥ ॥ १३१ ॥ १३२ ॥

अन्यच्च ।

रसेन बद्धमायातस्त्रोटयत्येव निश्चितम् ॥ घनां लोहमयीं स्थूलां स्पर्शमात्रेण लीलया ॥ १३३ ॥ मृतमुत्थापयेन्मर्त्यं चक्षुषोः क्षेपमात्रतः॥ निहन्ति सकलान् रोगान्मृतः शीघ्रं न संशयः ॥ १३४ ॥ (र. सुं.)

अर्थ-पैरकी बडी भारी बेडी भी लोहेकी इसके स्पर्शमात्रसे टूटजाय और इसको घिस कर मुर्देकी आंखमें लगावे तो जीउठे और इसके सूखनेसे ही सब रोग दूर होवें ॥ १३३ ॥ १३४ ॥

पारदगुटिका मेंहदीभस्म (कमीलेके चोयेसे)

मेहदी, वसमा, कमीला, (एक और याद नहीं) यह दवाई रातको भिगो छोडनी सबेरे जोश देकर पाणी निकालना। उस पाणीका चोया देना पारदकी गुटिका बनजायगी। थोडे भेदसे अग्निस्थायी कहाहै (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

गोली सीमाव बजरियः नीम (उर्दू)

नीमके पत्ते थोडासा पानी मिलाकर पीसो और निचोडो सेर दो सेर अर्क तय्यार करके एक तोला पारा किसी जर्फ गिलीमें आगपर चढावो और उसी अर्कसे चोवादेते रहें जब तक कि पारा वस्ता होकर काबिल गोला बँधनेके न होजावे उस्तादने मिकदार अर्ककी नहीं बतलाई मगर गोली होजानेका वाइदा है यह गोली कायमुल्नार नहीं है इसकी दो तदबीरें आयन्दः हो सक्ती हैं एक नशिस्त देकर कमर बनेगा दोयम शिगुफ्त होकर अकसीर खुर्दनी और काबिल तरहके होगा । (सुफहा ११ अखवार अलकीमियाँ १६ । २ । १९०७)

गोली सीमाव बजरियः चोयासे (उर्दू)

अगर सीमाव मुसफ्फा एक तोलेपर तीन सेर नीमके रसका चोया दिया जावे तो सीमाव गलीज और काबिल अकदके होजाताहै (सुफहा ४ अखबार अलकीमियाँ १६ । २ । १९०७)

गुटिका सीमाव घमोईके चोयासे (उर्दू)

घमोई नीम सोख्तःको पानीमें एक दिन रात तर करके छानले और फिर उसी पानीमें जदीद खाकिस्तर घमोईको डाल कर एक दिन रात भिगो कर छानले लेकिन पानीमें खाकिस्तर घमोईको भिगानेके वक्त पानी मजकूरको लोटेमें भर कर किसी जर्फमें टोंटीसे गिरावे और इस अमलको मुकर्रर सिकर्रर करता रहे जब पानी गाढा होजावे तब उससे सीमाव मुसफ्फाको चोया जर्फ आहनीमें दे मुनअकिद होजायगा मुतरिज्जम-घमोई नीम सोख्तःसे मुराद यहहै कि खाकिस्तर सफेद न हो बल्कि स्याह कोयलोंकी तरह हो रंगरेजोंकी तरह ऊपरसे नीचेकी जानिब पानीको मय खाकिस्तरके गिराना चाहिये चोयाकी मिकदार नहीं लिखी है लेकिन तीन रोजतक चोयादेते देते गाढा हो जाताहै और उसके बाद हवा लगनेसे सख्त होजाताहै । (सुफहा २८५ किताब अलकीमियाँ)

खालिस बूटियोंसे सीमावका उकद यानी गुटिका बनानेकी तरकीब (उर्दू)

घमोई व मूलीके रसमें घोट चूनाके पानीसे भाफ दे घीग्वारमें रखदी तरकीव अव्वल-शीरा बूटी घमोईका निकाल कर सीमाव मुसफ्फाको एक हफ्तेतक खरल करे इस तरहसे कि हर रोज दो पहर दिनतक सहक करे बादहू शामतक धूपमें सुखलादे बादहू एक हफ्तेतक शीरा मूलीमें जिसको पकालिया हो निचोड कर मफल दूर करके उसके शीरा पुख्तःमें बदस्तूर मजकूर खरल करे गाढा होजायगा बाद उसके कपडेमें बांध कर गिरह देकर चूनाके पानीमें इसतरह लटकादे कि पानीके ऊपर पोटली मजकूर चार अंगुल ऊंची रहे और सरपोशको आटा लगाकर हांडीके लवसे वस्त्र करके भाफ दे यहांतक कि सख्त और साफ होजावे निकाल कर थोडी हींग सीमाव मजकूरमें मिलाकर सात दिवसतक शीरः घीग्वारसे सहक करके फिर हींगके हमराह पोटली बांध कर बेख घीग्वारमें सालभरतक रखदे बाद सालभरके तय्यार होजायगा (सुफहा २८२ किताब अलकीमियाँ ।)

गुटिका-जलकुंभी (फारिस अलमाइ अरबी) के रसमें घोट तदरीजी आंचसे ३० पुटमें (उर्दू)

सामावको बदस्तूर मुसफ्फा करके जलकुंभीके शीरेमें चार रोजतक चार पुट आफ्ताबी दे यानी दो पहर खरल और दो पहर खुश्क करे यह एक पुट हुआ बाद उसके दो शकोरोंमें दो सफल बूटी मजकूरको रख कर दर्मियानमें उसके पांच वहलूली (८ तोले ४ माशे) सीमाव रख कर कुछ शीरा बूटी जलकुंभीका ऊपरसे डाल कर अंधमूषा करके मजबूत मुहर करदे बादहू पुटदे अव्वल रोज सेरभर उपला जंगलीका बुरादा करके आगदे इसी तरह दूसरे रोज दो सेर उपलोंकी आगदे और हर रोज सेरभर उपलोंकी आग ज्यादा करताजावे यहांतक कि तीस सेरकी नौबत पहुंचे मुनअकिद होजायगा । मुतरिज्जम जलकुंभीको अरबीमें फारिस अलमाइ कहतेहैं यह बूटी पानीपर बगैर जडके होती है इसकी पत्ती बर्ग बादरजीवयः से जिसको वल्ली लोटन कहते हैं मुशाबः होती है मगर उससे छोटी और पोदीनासे बडी होती है और मशहूर ओ मारूफहै इसका दरख्त अकसर तालावोंमें होताहै करीव दो अंगुलके पत्ती चौडी होती है वीचसे खाली इधर उधरसे उठी हुई गोलाई माइल चार पांच कोनें होतेहैं जड इसकी पानीके अन्दर मगर जमीनके ऊपर होतीहै दो किस्मकी होतीहै एककी पत्ती हुल आलम यानी सदाबहारके पत्तेके मशावः मगर उससे बडी और दूसरी वह जिसका जिकर होचुका यह बूटी खुश्कीमें भी होतीहै (सुफहा २८६ किताब अलकीमियां)

गुटिका सीमाव (उर्दू) ।

(लजालइ रेगी या किवाइ स्याह या बाइतलखके रसमें तश्किया और लुवदीमें तश्विया ११ मर्तवः)

अगर सीमावको बतरीक मजकूर मुसफ्फा करके शिरा लजालइ रेगी या शीरा किवाइ स्याह या शीरः बाइतलखमें जिसको हिन्दीमें कोडकहते हैं खूब सहक करे बादहू

लुवदीमें उसी बूटीके जिससे कियाहै रख कर मजबूत बोतः मुअम्मा करके गिलेहिकमत करके आग दे इसी तरह ११ मर्तबः तश्कीद व तश्विया करे बेशक मुनअक्दि और सख्त होजायगा। मुतरिज्जम लजालूइरेगसि मुराद यहहै कि जो लजालू रेग खुश्कीमें पैदा हो हरसहबूटीकी माहियत ऊपर लिखी गईहै यह सब बूटियां फर्दन फर्दन सीमावको गाढा और दरपा आगपर करतीहैं सहकको मिकदार मुन्दर्ज नहींहै, लेकिन इस कदर पुटआफ्तावी देना चाहिये कि सीमाव मजकूर गाढा होजावे उसके बाद तश्विया उसी बूटीके सफलमें रख कर भूभल यानी कर्सी वे दूधकी आगदे(सुफहा २८४ किताव अलकीमियां)

गुटिका सीमाव अर्क चौलाईमें घोट ११ बार तश्विया (उर्दू)

अगर बाद मुसफ्फा करनेके सीमावको शीरः चौलाईमें सहक करे बादहू वर्ग चौलाई मजकूरके सफलमें सीमावको रख कर बोतः मुअम्मा करके तीन सेर कर्सीकी आगमें जिससे धुआं निकल गया हो ग्यारह वार तश्विया दे गुटिका बंध जायेगी लेकिन हरबार सहक करके रखकर तश्विया देना चाहिये सख्त होजायगा (सुफहा २८३ किताव अलकीमियां)

मुतरिज्जम–अलकीमियां और दीगर हफ्त अहबाब कल्मीमें लिखाहै कि वर्ग चौलाईमें हरवार सहक करनेके बाद ग्यारह अदद अव्वल कन्दकोहीमें डालकर भूभलकी आगदे तो भी गुटका होजातीहै (सुफहा २८३ किताव अलकीमियां)

सीमावपर चौलाईका असर (उर्दू)

चौलाई वहुत कवीउलअमल पत्तीहै इससे सीमाव गाढा और देरपा वनताहै (सुफहा २८४ किताबअलकीमियां)

गुटिका सीमाव शीरा लौनिया खुर्दमें तश्किया व तश्वियासे (उर्दू)

सीमाव मुसफ्फाको शीरा लौनियां ख्वाह चौपत्ती आबीमें जो सितह आबपर होतीहै दो तीन पहरतक तस्किया देनेसे और बाद उस्के उसीके सफलमें तश्विया देनेसे मुनअक्दि होताहै (सुफहा २८५ किताव अलकीमियां)

मुतरज्जिम सीमाव चौपत्तीके अर्कसे वहुत जल्द वस्तः होजाताहै (सुफहा २८५ किताब अलकीमियां)

गुटिका सीमाव रोगन धतूरेमें तसकिया और वर्ग धतूरेमें तश्विया (उर्दू)

तरकीव हफ्तम सीमावको मुसफ्फा करके रोगन तुख्म धतूरामें धूपमें पुट आफ्तावी दे और रातको वर्ग धतूरेकी लुवदीमें रख कर अंधमूषामें बंद करके दो सेरकी कर्सी उपला जंगलीमें जिसमें धुआं न रहाहो आगदे पचीस बार यही अमल करे मुनअक्दि होजायगा अहलफनका कौल है कि सीमाव अगर रोगनकी इमदादसे बजरियः तसकिया व तश्वियाके बस्ता किया जाताहै आम इससे कि तेल अशियाइ मअदनीका हो या नवाती या हैवानीका ख्वाह बैजासे या खूनसे बस्ता हो तो नाकिस होताहै लेकिन यह कौल खिलाफ है इस लिये कि तजरुवेसे अमल करनेके वक्त मालूम हुआ कि अकसर कामिल और दुरुस्त उतरा और बाज हालतमें ठीक नहीं निकला (सुफहा २८५ किताब अलकीमियां)

पारदगुटिका।

(कटेरीके रसमें घोट गोली बना हस्तिशुंडीकी लुगदीमें पुट।)

कंटकारी पंचांग रस ८ तोले पारद एक तोला मर्दन करना जबतक पारद दृश्य होवे गुटिका बनाके ढक्कुलामें गर्त करके मृत्तिका लगाकर हस्ती शुंडी दी नुगदीमें गुटिका रखकर ढक्कुला दूसरा रखणा ऊपरो संधि मुद्रण करके अग्नि देणी गुटिका होजायगी। (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

पारदगुटिका।

(हस्तिशुंडीके रसमें घोट गोली बना धूमलीकी लुगदीमें पुट।)

हस्ति शुंडीमें पारद खरल करना ८ प्रहर फिर गोली बणाके घूमली बूटीके नुगदेकी सम्पुट बणाके उसमें गोली रखके चार सेर पक्के गोहेकी आग देणी पारद स्थिर गोलाकृत हो जायगा। (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

पारदगुटिका।

(धतूरेके रस और दूधकके दूधमें घोट पिट्टीसे लपेट पुट।)

पारद १ तोला ३ तोले साबन पारेमें भिजा रहै ८ दिन धतूरेका रस ९ तोले दोधक छतडीदा दुग्ध १ तोला इसमें खरल कर माषपिष्टमें गोला बणाके कपरौटी गाचनीसे करे फिर सुखाकर कोयलोंमें सुरख करके पानीमें सुटना गोली लेलेवे (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

पारदगुटिका-स्थिर।

(तिमरूकी लकडीके बुरादेमें तीन आंच।)

तिमरुदी लकडीदा बूरा बणालेणा पाव पक्का और आकाश बेलदे रसे बिच उसका नुगदा बणाके उसमें पारा तोला १ रखके अग्नि देना ऐसे तीन आंच देनेसे पारद गुटिका स्थिर होजायगी। (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

पारदगुटिका चित्रेके पानीमें औटा कर।

चित्रेका पानी या पक्का पारा तोला मंदाग्निमें पकाना गुटिका (भवेत्) होवे। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

---

१ मुतरज्जिम–अव्वल कंदकोही एक जिस्म सहराई सूरनकी है इसके पत्ते ज्यादः चौडे और जड सफेदी माइल होतीहै।

१ यह एक वृक्ष कश्मीरमें होता है।

पारदगुटिका वज्रदन्तीसे ।

वज्रदन्ती औषधि तीन पत्ते उसके इकट्ठे होते हैं पत्ता मिर्चके पत्ते सदृश होताहै पुष्प श्वेत वेल होती है इसके पत्र रसमें गर्ममें पारद बन्धन होता है । (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

पारदगुटिका रामपत्रीमें ।

अन्यानुभूतं–यथा रामपत्रीमें जराजरा पानी देकर पारदको खरल करनेसे गुटिका होजायगी उस गुटिकाको दुग्धमें पाकर पीणेसे पुष्टि होवे । (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

पारद गुटिका ।

नियाजवोज तुलसी काले धतूरेके रसमें ३ दिन घोट पारद नियाजवोजमें दिन १ श्याम तुलसीमें दिन १ श्याम धतूरेमें दिन १ 'मर्दनेन गुटिका जायते दुग्धादौ योज्यम्,' (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

पारद गुटिका हुलहलके रसमें घोट पिष्टी ।

दरख्त हुलहुल एक बूटी आम होती है इसमेंसे सख्त किस्मकी बू आया करतीहै यह वही बूटीहै जिसके चन्द कतरे कानमें डालनेसे सख्तसे सख्त कानका दर्द फौरन दूर होताहै, पारेको अगर हुलहुलके रसमें थोडी देरतक खरल करे तो मानिन्द सिक्के होजाता है और गिरह बँध जाती है । (अखबार देशोपकारक)

उकद यानी गुटिका चीलके अंडेसे (उर्दू)

सीमाव अगर चीलके अंडेमें भरकर सेनेके वास्ते उसके घोंसलेमें रक्खे तो यह कहतेहैं कि बस्ता होजाताहै लेकिन इसका तजरुवा नहीं हुआ और न हम अमलमें लाये अलबत्तः ठीक उस वक्त उतरेगा कि तीन रोजतक चोया शीरा कनवाई स्याह यानी मकूका जिसको गीदड दाख कहते हैं दे उसके बाद अंडे मजकूरमें रक्खे लेकिन चूंकि छोटी गुटिका सीमावकी बेखासियत होतीहै इस वास्ते अगर बगैर चोया वूटी मजकूरके सीमाव मुनाकिद हो भी गया तो नाकिस होगा लिहाजा चोया देना जरूरीहै । (सुफहा २८३ किताव अलकीमियाँ)

मुतरज्जिम–सीमाव चीलके अंडेमें रखनेसे इकीस दिनमें गुटिका होजातीहै बशर्ते कि पहली मर्तबः के अंडे दिये हुए हों लेकिन गुटिका छोटा होगा और हुकमाइका कौलहै कि अगर तोलेभरसे ज्यादः गुटिका न हो तो कुछ खास्ता नहीं रखता । (सुफहा २८३ किताब अलकीमियाँ)

गुटिका सीमाव रोहू मछलीमें (उर्दू)

सीमाव मुसफ्फाको रोहू मछलीके मुंहमें डाले और मछलीके जिस्मपर आध सेर स्याह साईदः[1] मिर्चका लेप करके गजपुटकी आगदे इस्तरह तीन अमल करे गुटिका होजायगी ।

[1] स्याह काली मिर्चको पानी या लेमूमें पीसकर जमाद करें ।

मुतरिज्जम–इस तरकीवमें तरद्दुद यह पडता है कि सीमाव मछलीके पेटमें नहीं थमता फौरन उगल आताहै लिहाजा किसी बांसके नलेको उसके मुँहमें ठूंस कर पारा डालदे और मछलीको खडी रक्खे और पतली पतली रेतकी कपरौटी करके बहुत जल्द अवेंमें कुम्हारोंके खडी दुमके बल रखदे क्योंकि यह मछली नाजुक बहुत होती है और इसमें जल्द सडना शुरू होता है इस वास्ते धूपमें नहीं बलकि सायेमें रक्खे और बहुत जल्द तमाम तरकीबको करना चाहिये ।

सय्यदलताफतहुसैन साहब बरेलवीने अपरैल सन् १९०४ ईसवीमें साखी नं० ४३ रिसालः किबिरियत अहमरके तजरुबा करनेके वक्त इसी तरकीबसे सीमाबको कायमुल्नार किया था और बावजूदे कि मछली जलकर राख होगई ताहम सीमाव उडा नहीं हर अमलमें गाढापन बढता जाताहै और बिलाखिर गुटिका कायमुल्नार बनतीहै । (सुफहा २८४ किताब अलकीमियाँ)

सिफत व फवायद गुटिकानिरास (उर्दू)

तनहा सीमाव जब वगैर अआनत किसी जसदके मुनअकिद होताहै उसको गुटिका निरास कहतेहैं गुटिका निरास मजकूर थोडेसे अमलमें यातौ खुद चांदी या सोना हो जाताहै या दूसरी धातुको मिस करनेसे उसको सोना या चांदी बनादेता है या कुश्ता करनेसे अकसीर तिला या अकसीर नुकराका खास्सा जाहर करता है अगर दूधमें डाल कर पिये तो मुकव्वीबाह होताहै व अलहाजुलकयास और भी खवास हैं और जो गुटिका किसी जसदके राहुसे बनताहै उससे अकसीर नवातोमें खुद उसके तिला या नुकरा होनेमें अराकीन अंजुमन अलकीमियाँ को अबतक कामयाबी नहीं हुई जैसा कि जैलके वाकैसे मालूम होगा यह राइ मुजरिज्जमकी है । (सुफहा २८७ किताब अलकीमियाँ)

पारदगुटिका चांदीकी भस्मसे ।

ताँबेदी कटोरीविच ५ तोले पारा पाकर उपरों एरंड तैल ६ तोले पाके लघुबालुका यंत्रमें चार पहर मंदाग्नि देणी फिर तैल हटाकर पारा धोलेणा इस पारे विचों चार तोले पारा १ तोला रूप्यभस्म दोनोंको निंबूरसमें खरल करना चार प्रहर फिर धोंके ताम्रपत्रमें गोली रखके उपरों एरंड तैल और पाके लघु बालुका यंत्रमें चार पहर मंद मंद अग्नि देणी दो लकडीदी तब गोली बहुत दृढ होजायगी । (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

पारेका मसका ताँबेसे ।

सोटेके नीचे एक पैसा जड देणा और पारा और सुहागा बराबर वजन लेकर पहले सुहागेको खूब पीसना फिर पोस्तका पानी पाकर चीनीके प्यालेमें उस सोटेसे खूब पीसना पारा मौमवत होजायगा (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

पारदगुटिका--नीलेथोथेसे औटाकर ।

पारद २ तोला, सुहागा २ तोला, लवण १ तोला, नीला

थोथा १ तोला ले हेठ आधा सुहागा उसपर आधा लवण उसपर आधा नीलाथोथा उसपर कुंडी ऊंधी देकर उसपर पाणी हेठ आग वालणी ऐसे गुटिका होजायगी उसको जरा अग्नि देनेसे दृढ गुटिका होजायगी (जंबूसे प्राप्त पुस्तक.)

पारदगुटिका (स्तंभन) ताम्रसे बना विषमें रख तुषपुट।

अथ शुक्रस्तम्भयोगानाह-
सार्द्धं त्रिनिष्कं हरजं मर्दयेन्मुखवारिणा ॥ तं शुष्कमातपे तीव्रे मर्दयेत्ताम्रमुद्रया ॥ १३५ ॥ अपामार्गरसं दत्त्वा घटिकात्रितयावधि ॥ पुनः कनकनीरेण मर्दयेद्घटिकात्रयम् ॥ १३६ ॥ ततो रसं समादाय हस्ताभ्यां गोलकीकृतम् ॥ कनकस्य रसे मग्नं कृत्वा घर्मे सुरक्षयेत् ॥ १३७ ॥ हस्तोष्माणं पुनर्दत्त्वा स्थापयेत्कनकद्रवम् ॥ एवं दिनद्वयं कुर्यात्साधकस्तदनन्तरम् ॥ १३८ ॥ विषग्रंथिं समुद्धृत्य गुटिकां तत्र निक्षिपेत् ॥ मर्दयेत्तेन वदनं बीजानीमानि मेलयेत् ॥ ॥ १३९ ॥ धत्तूरफलबीजानि जयाबीजानि फेनजम् ॥ एकत्र मेलयेत्तुल्यं मर्दयेदुष्णवारिणा ॥ १४० ॥ अस्य मूषाद्वयं कृत्वा विषग्रंथिं निवेशयेत् ॥ अंधमूषां ततः कृत्वा तुल्यामुपरि निक्षिपेत् ॥ १४१ ॥ दिनाष्टके स्थिते तत्र ततो ग्राह्या वटी शुभा ॥ मुखस्था वीर्यधृक् पुंसां संभोगे सौख्यदा भवेत् ॥ १४२ ॥ (वैद्यकल्पतरु.)

अर्थ—साढे तीन तोले पारदको कांजीसे घोट सुखालेवे फिर एक लकडीके घोटेमें ताँबेका पैसा गाड कर ओंगेका रस देकर तीन घडीतक घोटे फिर धतूरेके रससे दो घडी घोटे फिर पारदको हाथमें लेकर गोली बना लेवे और धतूरेके रसमें रख कर घाममें रक्खे फिर हाथकी गरमी देकर (अर्थात् हाथसे मलकर) धतूरेके रसमें रख देवे इस प्रकार दो दिनतक करनेके बाद सींगियेको निकाल लेवे तदनन्तर धतूरेके बीज भांगके बीज और अफीम इन तीनोंको एकत्र कर उष्ण जलसे घोट दो मूषा बनावे उनमेंसे एकमें गोली सहित सींगियेको रख ऊपरसे दूसरी मूषाको रख मुखबंद करदेवे और उस घरियापर तुषोंको रखदेवे आठ दिवसके पश्चात् घरियाको निकाल गोलीको निकाल लेवे उस गोलीको मुखमें रखनेसे वीर्यको धारण करनेवाली और संभोगकी दशामें सुखदायिनी होतीहै ॥ १३५–१४२ ॥

गुटिका सीमाव बजरियः तिला--अभ्रक–संखिया (उर्दू)

मुस्कक जेरजमीन जिसको हिन्दीमें भदर मोतिया और अरबीमें सुअद हिन्दी कहते हैं और जो बेख काह मरक और दूब की है जोगियोंकी स्लाहमें इवली कहतेहैं दस हिस्से लावे और चौगुना पानी उसमें मिलाकर जोशदे जब एक हिस्सा रहजावे उतार कर बत्तीसे मुकत्तर करके तुख्म धतूरा वारीक पीस कर मिलावे और फिर एक दिन जोशदे जिसमें वह भी हम मिजाज हो जावे बादहू उतार ले और दुबारा फिर बजरियः बत्तीके तकतीर करके साफ करले उसके बाद लावे रक्तसंगीन यानी जर्द संखिया और सीमाव और अभ्रक स्याह और दहनाव और औराक तिला चौंरा मसावीउलवजन लेकर तीन दिनतक आव मजकूरमें बदस्तूर खरल करे इस्तरहसे कि सुबहसे दो पहरतक खरल करे और दो पहरसे शामतक धूपमें सुखलावे जब खूब खुश्क होजावे अंधमूषामें डाल कर गिले हिकमत करके आतिश कुकर पुटकी जो आध सेर जंगली कंडोंकी कसींसे जलकर भूभल होजावें दीजातीहै खुद बखुद सर्द होनेपर निकाल कर फिर बोतः मुअम्मामें रख कर कोयलोंकी आगमें सुनारोंकी फूंकनीसे फूंके गुटिका कायमुल्नार अकसीर होजायगी (सुफहा २८९ किताब अलकीमियाँ ।)

गुटिका सीमाव बजरियः तिला नुकरा अभ्रक संखिया–(उर्दू)

मुश्कक जो कि जडकाह मरक और दूबकी है और हिन्दीमें इसका नाम खल बूटी (भदरमोतिया) है लावे और हमवजन उसके त्रिफला यानी हरड, बहेडा, आँवला पीस कर मिलावे और चौगुने पानीमें कढाई आहनी या देगमें रखकर जोश दे जोगियोंकी स्लाहमें इसको सोपली कहते हैं जब एक हिस्सा पानी रहजावे बत्तीसे मुकत्तर करके छानकर शीशेमें रखदे बादहू सीमाव अबरक स्याह, अबरक सफेद, संखिया सफेद, तिला नुकरा बराबर लेकर आब मजकूरसे खरल जज्जाजीमें सहक बलेग करे और बतरीक मजकूर कुकर पुटकी तरह आग देकर सर्द करे बादहू बोतः मुअम्मामें रख कर फून जंतरमें गुटिका होजायगी । (सुफहा २९० किताब अलकीमियाँ)

मुतरजिम–सहक बलेगसे मुराद यहहै कि तीन दिनतक तीन पुट आफ्ताबी दे फून जंतरसे मुराद यहहै कि बोतःमें अजजाइ नुसखाको रख कर वंकनालसे धोंके सौपली इस वजहसे नामहै कि बहुत जल्द काम देताहै (सुफहा २९० किताब अलकीमियाँ)

गुटिका सीमाव बजरियः संखिया अभ्रक व तिला या नुकरा या आहन या सुर्ब वगैरः (उर्दू)

अगर अमल शमसी मंजूर हो तो अबरक स्याह व तिला या अबरक स्याह व आहन लावे और अगर अमल कमरी मंजूरहै तो अभ्रक सफेद और नुकरा या अभ्रक सफेद और कलई या अभ्रक सफेद और जस्त या अभ्रक सफेद और सुर्बले गर्ज यह है कि जो अमल मंजूर हो उसके दो जुज व शमसी मजकूरहवाला या दो जुज्व कमरी

मुन्दर्जः सदरळे और सीमाव व संखिया जर्द अमल शमसीकी सूरतमें और सीमाव व संखिया सफेद अमल कमरीकी हालतमें लेकर चारोंको शीरह हाइ मजकूर यानी संभालू या संभालू मुश्कक जेर जमीन मजकूरमें खरलमें रखकर जमीर करे लेकिन शीरः मुश्कक यानी मोतिया का होना जरूरी है बादहू बंद बोतःमें रख कर फूंके गुटिका होजायगी बादहू जब मंजूर हो कि उसके पाक करे खुली धरियामें रखकर धोंके और तिला या नुकरासे जैसा अमल हो हम्मिलान करे जब गुदाज हो जाय थोडी २ चुटकी सुर्वके बुरादेकी जिसकी मिकदार निस्फ नुकरेसे हो डालता जावे और धोंकता जावे जिसमें कुल सुर्व सोख्तः होजाइ तिला व नुकरा कामिलुलअयार रहजावेगा अगर फूटक हो तो समझना चाहिये कि सुर्व खाम अबतक उस्में मौजूद है फिर धोंके ताकि सुर्व खाम सोख्त होजाए इन्शाअल्लाहताला आला दर्जेका होजायगा (सुफहा २९१ किताब अलकीमियाँ)

गुटिका सीमाव बजरियः अभ्रक सुर्व (उर्दू)

शारावग तिरसली और सूलीसे जिसको हिन्दीमें संभालू और मरकाह (मोतिया) कहते हैं लावे और सुर्वको अंजन (सुरमा) से कुश्ता करे और सीमाव और अभ्रक धनाव तीनों मसावी लेकर शीरहाइ मजकूरमें जमीर करे और बोतःमें रख कर फूंके गुटका होजायगा और कुल काम मजकूरवालामें आवेगा । (सुफहा २९० किताब अलकीमियां ।)

उकद सीमाव बजरियः संखिया व मुर्दार संगके तांबेके संपुटमें (उर्दू)

सीमाव एक तोले संखिया एक तोला दोनोंको अर्कलैमूं एक अदद्में खरल करके दो कटोरी मसींमें जिसमें एकका वजन पन्द्रह तोले और दूसरीका वजन दस तोले था बँगला पानकी दो तीन तह नीचेकी कटोरीमें रख कर ऊपरसे सीमाव मसहूकाको जो दहीके चक्केकी तरह होगया था रखदिया इस तरहसे कि सीमावका असर पानोंतक रहा कटोरेके ऊपर जरह बराबर भी नहीं पहुंचा क्योंकि कटोरीपर पहुंचनेसे उसको तोड देता है बाद उसके सीमावके ऊपर मुर्दार संग एक माशा पीसाहुआ छिडकदिया और ऊपरसे दो तीन तह पानों(बर्ग तम्बूल)को रख कर दूसरा कटोरा बंद करके आहिस्ता आहिस्ता गिले हिकमत तीन बार मअमूल तौरसे किया ताकि दवा तहववाला न होजाय बाद उसके दस सेर खानगी कंडोंकी आग भडकःकी तरह एक गढा खोद कर दी सर्द होनेपर निकाला तो सीमाव मुनअकिद था यह नुसखा जमीमामें एक कलमी हफ्त अहवावके था जिसमें अजमालन यह भी लिखा था कि यह सीमाव चांदी खाम खालिस होकर निकलताहै और अकसीर तिला और अकसीर अजसाम सब कुछ बनसक्ताहै । (सुफहा २८७ किताब अलकीमियाँ)

गुटिका संखियासे (उर्दू)

सीमाव और सम्मुल फारको सहक करके अर्ककटाई खुर्द चार पहर जक मुतवातिर चोयादे बस्ता व मुनअकिद होजायगा । (सुफहा २८६ किताब अलकीमियाँ)

पारेकी गोलीको कठिन करनेकी क्रिया ।

पारेकी गोली होजावे और उस गोलीको सख्त करना हो तो तालमखाणा बीजबंद दोनोंको पाणीसे पीस कर उसका संपुट बणाना उस संपुटमें गोली रख कंद बंद करके आगमें रख कर संपुटको पकाणा जब पकजावे तब निकाल लेणा सख्त होजायगा (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

बद्धप्रकार अभ्रकस्वर्णसे ।

अभ्रकं हरबीजेन षोडशांशन्तु कांचनम् ॥ ध्मातं गतमंधमूषां गंधकेन समन्वितम् ॥ ॥ १४३ ॥ मुखे क्षिप्त्वा वरारोहे संतिष्ठेत्स यथा खगः ॥ ॥ राजिकां अर्धमात्रेण पर्वतानपि वेधयेत ॥ १४४ ॥ राजिकासर्वमात्रेण तादृशं यदि भक्षयेत ॥ प्रयच्छते खेचरत्वं क्रीडते शंकरो यथा ॥ १४५ ॥ (योगसार.)

अर्थ-अभ्रक पारद और पारदसे षोडशांश सुवर्ण और गंधक इन सबको पीस अंधमूषामें रख धोंके तो पारा बद्ध होगा उसको जो मनुष्य मुखमें रक्खे तो वह पक्षीके समान खडा रहताहै और आधी राईके समान भागसे पर्वतोंको भी बेधताहै और ऐसे पारदकी एक सरसोंके तुल्य मात्रा खालेवे तो खेचर होताहै और श्रीमहादेवजीके समान क्रीडा करताहै ॥ १४३-१४५ ॥

पारदगुटिका अभ्रसत्त्व हेम व तारसे ।

हेमताराभ्रसत्त्वं च रसगंधसमन्वितम् ॥ उष्णोदकेन संघृष्य पुनस्तत्तोदके क्षिपेत ॥ जायते गुटिका दिव्या सिद्धिर्भवति नान्यथा ॥ मासैकेन समुद्धृत्य मुखे प्रक्षिप्य साधकः॥१४७॥वज्रकायो भवेद्देवि वलीपलितवर्जितः॥अथ तां गुटिकां घृष्ट्वा मध्वाज्येन पिबेत्सुधीः ॥१४८॥ मासत्रयप्रयोगेण जीवेच्चन्द्रार्कतारकाः ॥ तस्य मूत्रपुरीषेण शुल्बं भवति कांचनम् ॥ १४९ ॥ (योगसार.)

अर्थ-सुवर्णभस्म एक भाग, चांदीकी भस्म एक भाग, अभ्रक सत्त्व एक भाग, पारद एक भाग और गंधक एक भाग इन सबको उष्णोदकसे पीस गोली बनाय फिर गरम जलमें धरे तो दिव्य सिद्धिकी देनेवाली गोली सिद्ध होगी एक मासतक उष्णजलमें रख और निकाल मुखमें रक्खे तो साधकका शरीर वज्रके तुल्य होजायगा उस गोलीको शहद और घृतमें घिसकर तीन मासतक पीवे तो जबतक सूर्य और चन्द्रमा रहें तब तक जीवित रहताहै

उसके भक्षण करनेवाले मनुष्यके मूत्र और पुरीषके योगसे तॉंबेका सुवर्ण होताहै ॥ १४६-१४९ ॥

खगेश्वरी गुटिका ।

लीलाथोंथाकी कोरिके एक घरिया बनावै तिसमें पारा राखे अथवा लोहेकी बडी कटोरी बनावे तिसके भीतर चारिउ ओर लीलाथोंथाका मोटा लेप करे तिसमें शुद्ध पारद राखे उस कटोरीकूं अंगारा परि राखे एही भांति एक लोहेकी तिखटी बनावे तेह तिखटीके एक अँगीठी राखे अँगीठीके भीतर अंगारा राखे उस तिखटीपर वह कटोरी राखे आक, सेंहुड, धतूरा इन हर एकका रस ले चार चार सेर तेही रस करि चोवा हर घरी दिया करे उस कटोरीके पाराके ऊपर जबताईं सब रज जरि जाइ तेही उपरांत पारा निकासिलेइ तिसकूं सात सात दिन सिंघनेत्रीके रससे और घनपियाके रससे खरलमें घोटे पाछे कागदी नींबूके रससे उस पाराकूं धोइलेइ उस पाराकी गुटिका होइ बहुत चमक होइ उस गुटिकामें जैसी शुक्र नक्षत्रमें पाछे उस गुटिकाकूं सींगिया विषके भीतर राखिके विषके टुकडोंमे ढाँपिके सूतसे मोहकम बांधिके धतूरा कर तैल, मालकांगुनीको तेल, घुँघुचीको तेल, करहारीको तेल, अंकोलको तेल भेला करि सब तेल एकत्र करि इसमें चौसठि दिन पकावे धीमी आंचसे पकावे अथवा हरएकके तेलमें जुदा जुदा चौसठि दिन पकावे इस भांति पकावनेसे बरस एक लागे ताते इकठौरी पकावे इस तेलमें पकायेसे पारा भूखा होताहै रस राखसा होताहै तब इस पारामें सोना रूपादि क्रमते चरावे फेरि बहुत चरावे तिस पाछे अभ्रक सत्त्व चरावे तब यह सूत सिद्ध होइ और गुटिका होइ एके दांइ इसको रूपामें डारे तो सोना करे रांगामें डारे तो रूपा करे मुखमें राखे तो अदृश्य होइ आकाश चारी होइ उतालतासे चले एक घरीमें १०० कोस जाइ बूढा न होइ मृत्यु न होइ सब विषकूं दूरि करै मुखमें राखेसे इसके बराबर कोई गुटिका नहीं (खगेश्वरी गुटिका भाषापुस्तक पं० कुलमणि शास्त्री पत्र १८)

ब्रह्मांडगुटिका ।

सबीज बद्ध पारदको पानके रससे सात दिन घोटिके कांजीके पानीसे धोइके चार टांक वह पारा सींगिया विषमें मकरोइके राखै और विषके टुकडासे मुंहमूंदे फिर सूअरके मांसमें राखै सूतसे लपेटे लोहेकी कढाईमें साठ पैसा भरि धतूराको तेल डारइ तिस तेलमें इह पिंड राखे सांझस लेइ सूर्य उदय ताइं सायं काल एक मुर्ग और शराब बालि देइके कालिकाकूं, भैरवकूं, इह बलिदेइ तब आरंभ करे मंद अग्निसे पकावे प्रातःकाल निकासिके पहिले कुचिलाके तेलमें पकावइ कुचिलाकर तेल पैसा दोइ भरि घुँघुची तेलमें पकावइ भांगके तेलमें पकावइ, जायफलके तेलमें पकावइ, वीरतालके तेलमें पकावइ, हर एकको तेल पैसा दोइ भरि ले पाछे निकासिके दूधमें डारै दूधकूं एक छिनमें सोखे तो जानिये गुटिका सिद्ध भयो तब दूध पीयके मुंहमें राखे स्त्रीके पास जाय बंधेजहोइ जब मुंहमें से अलग करै तब वीर्य पतन होय (भाषा पुस्तक पं० कुलमणि)

पारदगुटिका (स्वर्णगैरिक हिरमिचीसे)

अथ पारदस्य निर्बीजबंधनप्रकारो लिख्यते- पलानि षट् रसस्यात्र गृह्णीयाद्भिषगुत्तमः ॥ सुवर्णगैरिकस्यापि तावन्त्येव पलानि च ॥ ॥ १५० ॥ मर्दयित्वा द्वयं सम्यक् तुलामात्रे जले पचेत् ॥ पादावशिष्टं विज्ञाय वस्त्र पूतं प्रकल्पयेत् ॥ १५१ ॥ रसस्य यो घनो भागो वासस्येव स तिष्ठति ॥ तस्यैव यो द्रवो भागः सोऽधः पतति नीरवत् ॥ ॥ १५२ ॥ इत्थं वारत्रयं कुर्याद्रसो गाढो खिलो भवेत् ॥ प्रतिवारं क्षिपेत्तत्र जलं गैरिकमेव च ॥ १५३ ॥ तावन्मानं ततः सर्वं गाढं सूतं समाहरेत् ॥ दिनानि सप्त धत्तूरस्वरसेन विमर्दयेत् ॥ १५४ ॥ प्रतियामार्द्धकं घृष्ट्वा क्षालयेच्च पुनः पुनः ॥ बृहद्गोक्षुरनीरेण तथा कोलरसेन च॥१५५॥ एवमेव प्रकारेण मर्दयेत्क्षालयेदपि॥क्षुधितः परिशुद्धश्च जायतेऽसौ रसेश्वरः ॥ १५६ ॥ पृष्ठभागं शरावस्य तं सूतं परिलेपयेत् ॥ गाढगोधूमपिष्टेन च्छादयेच्च समंततः १५७ मृत्पात्रे प्रक्षिपेत्पूर्वमजादुग्धं भिषग्वरः ॥ पृष्ठभागं शरावस्य निदध्यात्तन्मुखे ततः१५८ पात्रस्याधः शनैर्वह्निं ज्वालयेत्प्रहरद्वयम् ॥ तत्पृष्ठलग्नं तत्पिष्टं येन स्विन्नं प्रजायते ॥ ॥ १५९ ॥ सूतेन घटितं पात्रं दृढं स्वेदात्प्रजायते ॥ एवमेव प्रकारेण शिवलिंगं प्रकल्पयेत् ॥ १६० ॥ (भाषापुस्तक पं. कुलमणि.)

अर्थ-पारा पैसा बारह भर लइ, हिरमिची पैसा बारह भरि लेइ छिन एक घोटिकै चारि सेर पानी डारिके औटावे जब सेर भरि एक पानी रहे तब तक कपरामें निचोरिके जो पारा गाढा होइ सो लेइ एही भांति तीन बेर करे हर बेर एक पाव हिरमिची डारे और हर बेर चार सेर पानी और हर बेर चुरवे जब सेर एक पानी रहे तव कपरासे पानी निचोरि डारै पारा गाढा निकासि लेइ तेह पारा गाढा कहँ धतूराके रससे दिन सात घोटे चारि घडी घोटे फेरि पाणीसे धोवइ इही भांति हरबेर घोटे और हरबेर धोवइ पाछे बडे गोंखरूके रससे सात दिन घोटे और वही भांति धोवे तव माटीके परईकी चौगिर्द वह गाढा पारा लगावे तेपर तेपर आटा करि रोटी लगावे पाछे एक हांडीमें बकरीका दूध सेर दोइ डारे ताही हांडीके मुँहपर पाराकी परई राखे रोटीकी तरह हांडीके तरे आंच देइ पहर दोइ तीन दूधकी भाफसे वह रोटी जब ताईं उसेही जाइ तब उतारिके आटा दूर करिके पाराका पयाला निकासि लेइ तेही पयालामें दूध पीवे तो वह दूध बहुत गुण करे एही भांति पाराका महादेव बनावे तेही महादेव कूं जो

पूजे पुण्य बहुत होइ ॥ १५०-१६० ॥ इति पारद बीज बन्धन प्रकार समाप्त ।

सीमावकी जडीसे गोली (उर्दू)

अर्क अमरबेल ५ तोले, अर्क बेल पत्र १५ तोले, सीमाव ३ तोले इनके अर्कमें पारा खरल करो बस्ता होजावेगा । (अजवियाज हकीम मुहम्मदफतहयाबखां सोहनपुरी)

मसका सीमाव लजवन्तीसे (उर्दू)

बग छुई मुई जर्द रंग सबज यानी गीली लेकर एक सुराईमें पारा १ तोले चढाकर रोगन कुंजद ३ माशे डाल कर ऊपर बर्ग लजवन्ती रक्खे जब पत्ता जल जावें फूँकसे उडावे मसका होजावेगा मुजर्रिब (अजमकसूद अलीशाह अजवियाज हकीम मुहम्मद फतहयाबखां सोहनपुरी)

मसका सीमाव (उर्दू)

पारा २॥ तोले लेकर एक कढीमें दहीके तोडका पानीका चोवा देवे आग ढाक या बेरकी जलावे पारा मसका होजावेगा (अजवियाज हकीम मुहम्मदफतहयावखां सोहनपुरी)

अकद सीमाव जडीसे (उर्दू)

अर्क पियाज नरगिसमें पारा खरल करनेसे अकद हो जाता है जिस कदर चाहे खरल करे । (अजवियाज मुहम्मदफतहयाबखां सोहनपुरी)

सीमावकी गोली बजरियः जडी हुलहुल स्याहसे (उर्दू)

अर्क हुलहुल स्याहमें पारेको खरल करो जम जावगा ख्वाह कुछही बनालो प्याला वगैरः मगर आगपर कायम नहीं है । (अजवियाज हकीम मुहम्मदफतहयावखां सोहनपुरी ।

सीमावकी कायम गोली जडीसे (हडजुडी कलांसे) (उर्दू)

हडजुडी विलायती तिधारा वेल्दार फूल सुर्ख अकसर अँगरेजोंके बगलोंपर लगा रहताहै उसके शीरमें हवूब पारेकी बंध जाती है और आगमें नहीं जाती । (मियां मकसूद अलीशाह अजवियाज हकीम मुहम्मदफतहयाबखां सोहनपुरी)

नवाततसे बनी गोलीकी तरजीहकी वजह (उर्दू)

पारेकी गोली नवा ततसे बनाई गई हो इलमाइफन करते हैं और धातसे बनी हुई गोलीको नापसंद करते हैं उसकी दलील यह है कि नवाततमें जो फिलजात धातहैं वह तवई महलूल कुदरतने करदी है और महलूल दर्जा अकसीर पर है और खामधातु वैसी नहीं है । (सुफहा ११ अखवार अलकीमियां १६।२।१९०७)

पारद और अभ्रककी पिष्टी बनानेकी क्रिया ।

एरंडसदृशैः पत्रैः फलैश्चैव तु तादृशैः ॥ तस्य योगं प्रवक्ष्यामि सर्वसंशयनाशनम् ॥ ॥ १६१ ॥ तस्य पत्ररसं गृह्य पारदभ्रकमिश्रितम् ॥ एकरात्रं मर्दयेच्च पिंडीभवति तत्क्षणात् ॥ धाम्यमानेतु तत्स्थेन बद्धो भवति सूतकः ॥ १६२ ॥ (औषधिकल्पलता.)

अर्थ-जिसके पत्ते और फल अरंडके समान हैं उसके रससे पारद और अभ्रकको आठ प्रहरतक बराबर घोटे तो पिष्टी होगी उस पिष्टीको कोयलोंमें रखकर धोंके तो पारद बद्ध होगा ॥ १६१ ॥ १६२ ॥

पारदबंधन कृष्ण अंडतैलसे ।

कृष्णगोक्षीरसंयुक्तं मधुना च समायुतम् ॥ तत्तैलपिष्यमाणस्तु बद्धो भवति पारदः ॥ १६३ ॥ तदंगधारणादेव खेचरः स तु जायते ॥ अंजनात्सप्तपातालं पश्येन्मध्याह्नभास्करम् ॥ १६४ ॥ सर्वांजनमिदं ख्यातं सिद्धयोगमुदाहृतम् ॥ अवध्ये देवदैत्यानां विष्णुलोके चरत्यसौ ॥ १६५ ॥ (औषधिकल्पलता.)

अर्थ-काली गायके दूधमें शहद मिलाकर मक्खन निकाले उसके साथ पारदको घोटे तो पारद बद्ध होगा उसको शरीरपर धारण करनेसे मनुष्य खेचर होता है इसका अंजन लगानेसे मध्याह्नके सूर्यको और सात पातालोंको देख लेता है इस अंजनको सिद्धयोग कहते हैं और इसके धारण करनेवाला देव और दैत्योंसे अवध्य होकर विष्णुलोकमें रहता है ॥ १६३-१६५ ॥

पारदबंधन श्वेत अंडतैलसे ।

तत्फलं चैव गृह्णीयाच्छुद्धसूतसमान्वितम् ॥ लिकुचद्रवसंपिष्टमंधमूषागतं धमेत् ॥ १६६ ॥ शाल्मलीखदिरांगारैर्बद्धो भवति पारदः ॥ श्वेतगोक्षीरसंयुक्तं तद्भस्म निष्कमात्रकम् ॥ ॥ १६७ ॥ लिहेद्गोघृतसंयुक्तं क्षीराशी च जितेन्द्रियः ॥ मासमेकप्रयोगेण दिवा पश्यति तारकाः ॥ १६८ ॥ मासद्वयप्रयोगेण चन्द्रवन्निर्मलो भवेत ॥ मासत्रयप्रयोगेण खेचरत्वं लभेन्नरः ॥ १६९ ॥ मासषट्कप्रयोगेण पातालं पश्यति ध्रुवम् ॥ संवत्सरप्रयोगेण जीवेद्ब्रह्मदिनाष्टकम् ॥ १७० ॥ (औ० क० लता.)

अर्थ-ऊपर लिखी हुई एरण्डाकार जडीके फल और

पारदको लकुचके रससे घोट और अन्धमूषामें रख सैंमलके कोयलोंमें धोंके तो पारद बद्ध होता है उस भस्मको गायके दूध या घृतके साथ खावे पथ्यमें दूध भात खावे तो एक मासमें दिनमें एतारोंको देखता है दो मासमें चन्द्रमाके समान निर्मल होता है तीन महीनेमें खेचर होता है छः मासके प्रयोगसे पातालको देखता है और साल भरके प्रयोगसे ब्रह्मके आठ दिवस तक जीवताहै ॥ १६६–१७० ॥

सम्मति–मेरी समझमें जिसके फल और पत्ते एरण्डके समान होते हैं उसको भाषामें अंडसितारा कहते हैं यह प्रायः बाग बगीचोंमें होता है ॥

अथ खेचरी गुटिका जातीफल धत्तूर योग।

जातीफलेऽक्षिपेत्सूतमहिफेनेन लेपयेत् ॥ कृष्णधत्तूरफलके निःक्षिपेत्तत्फलं ततः ॥ मृत्कर्पटैः सप्तकृत्वो लिप्त्वा घर्मे विशोषयेत् ॥ पादप्रस्थमितैः पाच्यं गर्तमध्ये वनोत्पलैः॥१७२॥स्वांगशीतलमुद्धृत्य पक्वं धत्तूरसंभवम् ॥ तदेव निःक्षिपेज्जातीफलं वै सूतसंयुतम् ॥ १७३ ॥ अर्द्धप्रस्थमितैर्वन्यैरुत्पलैः पाचयेत्सुधीः ॥ एवं शतपुटैः पाच्यं पादवृद्ध्यावनोत्पलैः ॥ १७४ ॥ फलं तदेव संस्थाप्य धूर्तजेषु शतेष्वपि ॥ फलेषु यत्नतश्चैव साधकोऽति विचक्षणः ॥ ॥ १७५ ॥ गुटिका जायते सिद्धा सर्वलोहानि वेधयेत् ॥ तस्या धारणमात्रेण खेचरो जायते नरः ॥ १७६ ॥ (काकचंडेश्वरीतंत्र)

अर्थ–जायफलमें छेदकर उसमें पारद भर देवे और उस पर अफीमका लेप कर उस फलको पकेहुए धतूरेके फलमें रख सात कपरौटी करै उस गोलेको सवासेर जंगली कंडोंको गढ्ढेमें रख अग्नि लगावे स्वांग शीतल होनेपर निकाल उसी जायफलको दूसरे पकेहुये धतूरेके फलमें रख पूर्ववत् पुटपाक करै एवं सौ बार पुट पाक करै तो उस फलमें समस्त लोहोंको वेधने वाली गोली सिद्ध होतीहै इसके धारण करनेसे मनुष्य खेचर होजाताहै ॥ १७१–१७६ ॥

पारदबंधन (वेधक) तप्तकुंडमें।

तप्तजलकुंडनिहितं दृढतरवस्त्रेण वेष्टितं सूतम् ॥ बद्धं सद्द्रुतवंगे कुरुते रविभागतस्तारम् ॥ १७७ ॥ (काकचंडेश्वरीतंत्र.

अर्थ–तप्त जलके कुण्डमें वस्त्रसे दृढ लिपटे हुए पारदको रक्खे तो पारा बद्ध होताहै बद्ध हुए पारद १ तोलेको १२तोले गले हुए वंगमें डाले तो चांदी बनजायगी ॥ १७७ ॥

सीमाव मुनअक्किद कायमुल्नार अकसीरी नकछिकनीसे अकद कर सफेद आकके रसमें पकाकर–(उर्दू)

अर्क नकछिकनी सफेदमें पारेको खरल करके गोली बांधले सफेद आक का अर्क जडका डाल कर कढाई आहनीमें पकावे और आतिश दीपक देवे पारा मुनअक्किद होकर कायमुल्नार होजावेगा मिस १ तोलापर एक माशे तरह कुनद शमसख्वाहद बूद। (अजवियाज हकीम मुहम्मदफतहयाबखां सोहनपुरी)

गोली पारा (उर्दू)

बराबर बजन चीनीके फूलके साथ मुसफ्फा पाराको थोडी देर खरल करनेसे गिरह बँधं जातीहै और कुव्वत अजीम बखशती है।

गोली पारा (उर्दू)

तुलसीके रसके साथ यहांतक खरल करे कि मसका बनजावे फिर गोली बांधकर आमचूरके पानीमें सख्त करनेके लिये रक्खे–

मुतअद्दिर अमलसीमाव (बस्ताकर्दन वनीम कायम व कुश्ता (फार्सी)

शीरादिस्तार कांजीके चोआ देनेसे सीमाव संग सख्तकी तरहसे होजाताहै सीमाव रावरोगन जियापोता दवाजदह पास सहक कुनन्द दरसमर धतूरा निहादह दरआब सख्त जोश दिहद सख्त बस्ता गर्दद सीमाव अजरस सैंमल स्याह दवाजदह पास चोवः दिहंद–दवाजदह पास सहक कुनद अगर जोनकियः गर्दद बाज दवाजदह पाल कुनद बस्तद।

तरकीब (उर्दू)

गर्दद सीमाव व खाकिस्तर जवासा व सहदेवी जर्द सहक करें १२ पहर बादहू बआबशोयद नीमकायम शवद। दराकी कोरा सीमावको खरल करें पोटली बांध कर तीन चार घुइयोंको खोकसानमें पकावे अन्दक अन्दक आग लगावे जब नरम हो जावे पकाले नीम कायमः है अव्वलेवख इन्द्राइन बाज अजरस तुलसी बाज अजरस गोभी बाज अजआव सरगनिगाउ अज जुमलै हश्त पास खरल करै मस्काना कायम होगा अजरस कंकोल चार पहर खरल करें मस्का होगा अगर गोली सीमावको इक्कीस रोज रातदिन आवकटाई कलांमें पकावें कामधेनु गुटिका होजातीहै पारा १ तोले शीर मदार ३ माशेमें खरल करके गोली बनाकर दरख्त करीलके कोंपलके बीतमें रख कर दो तीन सेर आग देवे कुश्ता हो जावेगा दो घूँघची वरफीज या तरह दिहद खूब होगा (अज वियाज हकीम मुहम्मदफतहयाबखां सोहनपुरी)

तरकीब कायम नमूदन मसका नाकायम (फार्सी)

तम्माकू सुरतीं गिरफ्तः यकशवानः रोज व आब तरकुनद व शीराओ गिरफ्तः आरद सीमाव मसका नाकायमरा चार पाश चोयादिहद कायम शवद अगर सीमाव जोखिया बाशद नाकायम या मसका बाशद दर तेल कंठी जेरुबाला दादह आतिश वा मिकदारे दिहद अगर तशवद मुकर्रर सिकर्रर कुनद सीमाव पोटली बस्ता अजशीरः हाथीशुंडी ईशरलिंगी कचरिया व चितरकूटी आमे गोयन्द चोया दिहद कायम शवद नाकायम मसकारा बरस कटाई बरसको कनाकदरे दरा नमक पांगा अन्दाख्तः दवाजदह पास चोया दिहद कायम शवद अगर मसका नाकायम बाशद अज रसपथरचटा चोया दिहद चूंसख्त शवद नरकः कदर आमेज दवाज चोया दिहद सख्त शवद हरकदर कि अफजाइद र वा बाशद मस्काना कायमरा दहपाश चोया अजरस वेस पलास दिहद विर्दी गूनः कायमशवद मसका कि बूटी वंद कि मैदा जर्द चोव खामव मैदा कता निस्फ जेरु निस्फ बाला दादह रोगन कुता पुर नुमायद कि चार अंगुश्त बालाब।शदजेर ओ आतिश नरमदिहद चूं खुश्क शवद कायमुल्नार ख्वाहद शवद । मसका नाकायमरा चार पाश चोया अजरस वेंगन वचार पास अजरस प्याज नरगिस वचार पाश अजरस वार इन्दराइन हिदह कायमुल्नार गर्दद कोली कांदा ऽ। रेजा रेजा कर्दह दर दो आसार आब अंदाख्तः मसकारा हर आँ जोश हिदह ताकि हमें आबखुश्क शवद मस्का उफ्तादह बरदाश्तः गर्दानिद मुकर्रर कुनद वेख अन्दरू वसखानः तेज गोयन्द बोता अश मानिन्द कचूरेको जब जरजमीन दरवेख ओ चकर कर्दः न्रो मसका निहद वलाइलेप कुनद दर कर्सी आतिश दिहद शव विमाँद सीमाव मसका कायमुल्नार बरंग सुर्ख वरमआयद । रस अंधाहूली व रस तजालूमें पकावे मसका कायमुल्नार होगा । नौसादर मस अद कि यकीस कर्दः बकलसपोस्त बजैः मुर्ग निगाह दारद बादहू सीमाव दर रस कंघी खिरैटी रस ककरोंदा चार चार पास खरलकर्दः मसालः मजकूरः वाला तहवबाला सीमाव निहादह दरबोतः मौअम्मा दर पाव आसार कर्सी आतिश दिहद हमचुनी सहपुट कुर्स कायमुल्नार ख्वाह बुवद । यककर्स आरद गंदुमवाला इशकर्स शीरवालायश मसकावालायश कर्स शीरवालायश कर्स गंदुम लवबलवकर्दः वरतबः दमपुख्तः पुख्तः कुनद हमचुनीं चन्दबार बिकुनद कायमुल्नार गर्दद कलसबैजामुर्ग दो यक वजन नौसादर दोयक वजन मूएसर इन्सान यकवजन तेजाब कशद पांजदह रोज दमदादह बाद अजां तेजाब सीमावदर दर शीशी तेजाव गर्ककर्दः आतिशचोब पलास दादहआयद कायमुल्नार गर्दद ।

(ऊपरकी क्रियाकी सूची) अजबियाज हकीम मुहम्मदफतहयावखां सोहनपुरी)

१-तरकीः सीमाव जोंक सीमावरा बरस पकावे चार पासे खरल कुनद जोंक अलाशवद ।

२-सीमावरा वशीर आक वा चोव अनार दारचीनी प्यालः सहक वलेगः कुनद बस्तः गर्दद ।

३-तरकीब कुश्ता सीमाव अगर सीमाव कायमुल्नार बाशद बायद कि वेख विन्दालजर्द गुल अगरवेख नबाशद तुख्म ओविगीरद हुलहुलजर्द व एलुआ व तुख्मजमालगोटा हर चहाररा सूदह दरबोतः तहबाला गुजाश्तः वलेपबोतः मजकूरा साख्तः दर आतिश वेदद गुजारद कि चहारपास बाशद बाद अज अजसर्दा वर अगरद अकसीर अस्त ।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मज-
व्यासज्येष्ठमलकृतायां रसराजसंहितायां
भाषाटीकायां गुटिकादिनिरूपणं नाम-
सप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३७ ॥

स्वानुभूतगुटिकाध्यायः ३८

पारदगुटिका अनुभव ।

२३।३ बुधवारसन् १९०४, ५ तोले शिंग्रफके पारेको ५ तोले गोभीके रसमें (गोभीको सबेरे ८ बजे उखाड पानीसे साफ करके कपडेसे पोंछ खरलमें कूट निचोड रस निकाला जो जरमन सिलवरकी कटोरी और चीनीके प्यालेमें रक्खागया) ९ बजे से १२ बजेतक घोटागया तो पारा जडीमें मिलगया और रस गाढा होगया रबडीसा गाढा होजानेपर इकट्ठा कर गोलीबांधीगई, बांधते बांधते ज्यादः गाढा होनेपर ।॥) भर पारा जुदाहोगया, बाँकी ४। तोलेकी गोली बँधगई, इस गोलीपर मलमलके कपडेको गोभीके रसमें भिगोकर ७–८ तह लपेट दियागया, यह गोली छाहमें रखीरही ।

२४।३ को एक नदोरेमें (जो सवा बालिश्त गहरा और डेढ बालिश्त चौडा था) चार अंगुल गंगारज डाल गोली रख ऊपरसे खूब रजभर १। सेर कंडोंकी आंच दीगई, ७ बजे शामको ।

२५।३ आज भी १। सेर कंडोंकी आंच दीगई, ९ बजे सबेरे और १ अंगुलरेत कम करदिया ।

२६।३ आज १॥ सेर कंडोंकी आंच दी, रेतआज १ अंगुल और कम करदिया, १० बजे सबेरेतक गोलीपर आंचका असर कुछ नहीं जानपडा ।

२७।३ आज १॥ सेर कंडोंकी आंच दी, रेतआज १ अंगुल और कम करदिया आंचका असर गोलीतक पहुंचताहै वा नहीं इस लिये गोलीके इधर उधर ४–५ मूंग डालदी गई ।

२८।३ आज १॥ सेर कंडोंकी आंच दीगई, और रेतउतनाहीं रक्खागया, मूंगपर आंचका असर समझ न पडा इस लिये आज कागजके टुकडे रक्खे गये ।

२९।३ आज देखनेसे मालूम हुआ कि, कागजपर कुछ असर नहीं पडा, इस लिये ४ सेर रेत निकाल दियागया, अर्थात् ४ अंगुलरेत नीचे और ४ अंगुल ही ऊपर रहा, और १॥ सेर कंडोंकी आंच दीगई ।

३०।३ को खोला तो मालूम हुआ कि कागजके टुकडोंपर हलका असर आंचका पहुंचा और गोलीकी रंगत पर भी सबजीकी जगह सुर्खी आई, गोली तोलीगई तो ५ तोले १ पैसे २ आने भरहुई ।

३०।३ आज भी उतनाही रेत यानी ४ अंगुल नीचे और ४ अंगुल ऊपर रक्खागया, १॥ सेर कंडोंकी आंच दीगई, सबेरे ९ बजे तोल पूरी उतरी ।

३१।३-० आज भी उपरोक्त रीतिसे कर्मकिया ।

१।४-० ॥ तोलमें =) भर कम हुई आज ऊपरकी तरफकुछ कपडा काला पडगया था गालिबन गोली कुछ ऊंची रहगई ।

२ । ४-+०

३ । ४-+० ५ बजे शामको आंच दीगई ।

४ । ४-+० +०

५ । ४-+० +०

६ । ४-+० +० तोलमें ५) १ पैसे भर ठीक हुई ।

७ । ४ गोलीको १० बजे सबेरेसे आंच दीगई, अब गोलीके ऊपर २ अंगुल रेत रहताहै और इसमें आंच ज्याद: नहीं लगती ।

८ । ४ । १० बजे आंच दीगई, २ अंगुल रेत ऊपरहै ।

९ । ४ । १० बजे आंच दीगई, २ अंगुलरेत आज कुछ स्याही कपडेपर आगई ।

१० । ४ आज गोलीको देखागया तो नीचेकी तरफ कुछ रवे पारदके नजर आये ऊपरकी तरफ कपडा भी खूब काला पडगया था, तोल कीगई तो गोली ५ = भर थी, अर्थात् एक पैसे भर कम होगई, दर असल आंच अधिक लगी और गालिबन ८ अप्रेलकी भी आंच अधिक लगी थी क्योंकि कल भी कुछ रवे जरूर थे खयाल ठीक नहीं हुआथा, आगे आंच कमहोनी चाहिये आज ४ बजे ३॥ अंगुलरेत १॥ सेर कंडोंकी आंच दीगई ।

११ । ४ आजभी देखनेसे गोलीपर पारेके सूक्ष्म परमाणुओंका शुबहा हुआ इसलिये आज ४ बजे ३॥ अंगुल रेत और १। सेर कंडोंकी आंच दीगई ।

१२ । ४ आज देखनेसे कोई रवा पारेका नहीं दीखपडा, न कपडेपर जलनेसे कालोंछ आई । बस ४ अंगुल रेत नीचे ५ अंगुल ऊपर और १। सेरकी आंच यही ठीक है ऊपर रेत इससे ज्याद:ही रहे, ४ बजे मुताबिक आंच दीगई ।

१३ । ४+० +०

१४ । ४ आज देखनेसे मालूम हुआ कि कुछ खफीफ रवे पारेके गोलीके ऊपर मौजूदहैं, मालूम ऐसा होताहै कि ज्योंज्यों गरमी बढती जातीहै त्योंत्यों आंचकी तेजी ज्याद: असर करती है, अत एव आज ६ अंगुल रेत रखकर १। सेरकी आंच दीगई ।

१५ । ४, ६ अंगुल रेत १। सेरकी आंच आज भी रवे पारदके गोलीपर थे मगर यह रवे पेश्तरके ही मालूम होते हैं, और कल भी यही बात होगी ।

१६ । ४ चार पांच अंगुल रेत १। सेर कंडे ।

१७ । ४ +०

१८ । ४ +०

१९ । ४ +०

२० । ४ +०

२१ । ४ +०

२२ । ४ +०

२३ । ४ +० तोल ५ तोले ठीक ।

२४ । ४ आज गोली तोलीगई तो ५ तोले हुई, खोलागया तो कपडा उतारतेमें कपडोंकी तहोंमेंसे पारेकी बूंद निकली जो तोलमें ।) भर हुई, कपडा छुटा देनेपर एक मटैली शकलकी गोली निकली जो इतनी कठिन थी कि हाथसे नहीं टूटी गोली तोलनेपर ।।=) आने कम ५) तोले हुई मोगरीसे तोडनेपर गोली अन्दरसे कंजई रंगकी निकली और इसमें अंदर पारेके रवे भी चमकतेथे । जहांतक खयाल किया जाता है गोलीको कभी कभी आंच अधिक लगगई, आंच अधिक लगनेसे (१) कुछ पारा तो उडगया, (२) कुछ जुदा होगया; (३) कुछ गोलीके अन्दर ही पृथक् रूपसे रहा, यह भी मुमकिन है कि गोलीके अन्दर रवे इस वजहसे रहगये हों कि गोली बांधते समय ही रवे रहगये हों, यानी घुटाई कम हुई रस कम पडाहो. इस ४।=) भर गोलीमेंसे ।।≈) भर गोलीको पीसा गया तो उसमेंसे ।≈) भर पारा जुदा होगया; ≡) भर सफूफ रहा −) भर पीसनेमें छीज गया,) ३।।।) भर गोली बची इससे साबित होता है कि पारा बद्ध नहीं हुआ ।

पारद गुटिका दूसरा अनुभव ।

१२ । ३ । ०५ बाबू प्यारेलालने कहा कि एक साधूने मेरे सामने पारेकी गोली बनाई, उसकी तरकीब यह है कि एक लोहेके कलछेमें २ वा ३ बार रांग गलाकर जमीनपर डाल दियाजावे बादको उस कलछेमें पारा गरम कर कर सांचेमें ढालाजावे और ऊपरसे फौरन गेंदेके फूलका रस डालदियाजावे । आज इसी रीतिसे कर्म कियागया किन्तु कुछ निष्फलहुआ; जरूर उस साधूने धोखेसे रांग मिलाकर गोली बांध दी होगी । आज पारेको लोहेके कलछेमें रख आंचपर खूब गर्म कियागया तो पारा थोडी देरमें हिलनेलगा बादको उडकर गायब होगया; चटका या उछला नहीं ।

पारद गुटिकाका तीसरा अनुभव ।

१६ । ३ । ०५ कबीर बाबाने बाबू प्यारे लालके बागमें जडीसे गोली बांधनेका वादाकर और पारेसे चांदी निकालनेका वादाकर चालाकीसे नाइट्रिट सिलवर पारेमें डाल घोटा तो १ तोला पारा ३० ग्रेन (तखमीनन) नाइट्रेट सिलवरसे कूटते कूटते खरलमें मिलगया थोडा गूलरका दूध पहले खरलमें डाल पारा घोटा था तो पारा १० मिनटमें कुछ रवे रवे हो चला था फिर नाइट्रिट सिलवर डालाथा गोली बँधजानेपर शहद, सुहागा, घी डाल घरियामें गलायागया तो पारा उडगया, ३ माशेके करीब चांदी निकली जो निहायत खालिस थी । इन्हीं कबीर बाबाने केलेमें पारेको भी फूंकाथा पर फुका नहीं, यह

आदमी निहायत झूंठा और चालाक था, बाबू प्यारेलालके कहनेसे इसपर विश्वास कियागया और धोखा निकला।

सम्मति–पारेकी तहकीकातमें साधुओंपर हरगिज विश्वास न करो।

पारदगुटिकाओंके निमित्त पारदका साधारण शोधन।

१।१।०७ कोठीसे सरबंदकेनसे जिसपर (Almaden) लिखाथा (एलमेडेन स्पेनमें है इस लिये अनुमान कियागया कि यह पारा स्पेनका है) ४ सेर पारा १८) रुपयेमें खरीद कियागया, यह पारा खालिस था और श्वेतवर्णका उज्ज्वल था।

१ शुद्धयोगरत्नाकर पत्र ७६ की क्रियासे।

कुमारी त्रिफला व्योषचित्रकं निम्बुकं रसम्॥ दिनैकं मर्दितं धृत्वा शुद्धो भवति पारदः॥

५।१।०७ घीग्वारका गूदा ४ छटांक, चीता १ छटांक, त्रिफला ३ छटांक, त्रिकुटा ३ छटांक, नींबूका रस २ छटांकको ३ सेर पानीमें औटा छान कर १॥ सेर काढा लियागया।

६।१।०७ आज ४ सेर पारदको तप्त खल्वमें डाल उपरोक्त काथसे ९ वजेसे ५ वजेतक ८ घंटे निरंतर मर्दन कियागया।

७।१ आज १२ घंटेतक तप्त खल्वमें मर्दन होनेपर रस सूखकर शहदसा होगया और विशेषभाग पारेका जुदा होगया, पृथक् कर तोलनेपर ऽ३॥।≈॥ सेर पारा जुदा होगया सिरफ $\frac{3}{2}$ छटांक पारा दवामें मिला रहगया, उसको काथकी छूछ सहित औटाये हुए नमकीन गरम जलसे धोकर निकाला गया तो $\frac{3}{2}$ छ० पारा निकल आया सब पारा ४ सेर पूरा होगया, सब पारेको उसी गरम जलसे धो लियागया।

२ शुद्धरसमंजरी पत्र ३ की क्रियासे।

फलत्रयं चित्रकसर्षपाणां कुमारिकन्याबृहतीकषायैः॥ दिनत्रयं मर्दितसूतकस्तु विमुच्यते पंचमलादिदोषैः॥

७।१।०७ घीग्वार ४ छटांक, कटेरी २ छटांक, चीता १ छ०, राई १ छ०, हल्दी १ छ० त्रिफला ३ छटांक,को २॥ सेर पानीमें औटाकर १। सेर काथ लियागया।

८।१ उपरोक्त काथसे तप्त खरलमें ४ सेर पारद पुनः मर्दन कियागया ८॥ वजेसे ५॥ वजेतक ९ घंटे इसमें ४ छ० रस कटेरी और डालागया।

९।१ आज भी तप्त खल्वमें मर्दन हुआ ४ छ० रस घीग्वार डाला गया, ९ वजेसे २ वजेतक मर्दन होनेपर रस सूखकर चीकटसा होगया, और पारा जुदा होगया। तोलनेपर ३॥।≈) सेर पारा निकल आया १ छटाक औषधीमें मिला रहगया, उसको (नमकपडे औषधीकी छूंछ सहित औटाकर छाने) गरमजलसे धोकर निकालागया तो १ छ० पूरा निकल आया।

(१) पारदगुटिकाका अनुभव।

(अलकीमियांके पत्र १६३ के अनुसार)

१५ । १ । ०७ ककर दुधीको पानीसे धो कपडेसे पोंछ खूब बारीक पीस ५ तोलेकी गोल लुगदी बना उसके दो टुकडे कर एक टुकडेके बीचमें काचकी गोलीसे गढा कर उसमें १ तोला पाराभर फिर दोनों टुकडे खूब मिलाकर ता० १६–१७ को धूपमें सुखाया (मगर सूखा नहीं अन्दरकी तरीने सूखने न दिया)

ता० १८ को ढाईपाव कंडोंकी आंच दीगई (बंद मकानमें गढेमें) तो गोला कपरौटीका मिला उसमें लुगदी जलकर राख होगई थी और पारा उडगया था।

उपरोक्त क्रियाका दूसरे प्रकारसे अनुभव।

१५।१।०७ ककरदुधीको पानीमें धो कपडेसे पोंछ खूब बारीक पीस ५॥ तोले की लुगदी बैजावी बना उसमें पैन्सिलसे गढा कर १ तोले पारा भर दुधीकी लुगदीसे ही बंद कर मुलतानीसे एक कपरौटी कर ता० १६–१७ को धूपमें सुखाया (मगर सूखी नहीं अन्दरकी तरीने सूखने न दिया)।

ता० १८ को कुम्हारकी मिट्टीका २ रुपयेकी मुटाईके बराबर लेप चढा दिनभर सुखा शामको आध सेरकी आंच दीगई।

ता० १९ के सबेरे गोलेके अन्दर जली हुई लुगदी काले कोयलोंकी शकलकी मिली और पारा उडगया था।

सम्मति–मिट्टी फट गई थी इसमें नामावगैरः कूट कर और मिलाना चाहिये।

उपरोक्त क्रियाका तीसरे प्रकारसे अनुभव।

१९ । १ । ७ कुकरदुधीको धो पोंछ बारीक पीस ५ तोलेकी लुगदी बना उसके दो हिस्से कर एक हिस्सेमें गडहा कर पारा भर दूसरेको ऊपर रख ज्योंकात्यों लुगदी बना स्याह धतूरेके रससे चिकना मुलतानीकी एक कपरौटी कर एक छटांक कुम्हारकी मिट्टी (जो रुई डाल कर खूब कूटी पीसी गई थी) का २ रुपयेकी मुटाईकी बराबर लेप करके धूपमें सुखादिया, ता १९ के दो पहरसे ता० २० के दिनभर सुखाया, शामको १ कपरौटी मुलतानीकी और करदी गई।

ता० २१ को सूखती रही।

ता० २२ के सबेरे ऽ।≈ डेढ पाव कंडोंकी आंच दीगई, शामको देखा तो गोलेके अन्दर दुधी जल कर कोयला होगई थी पारा उडगया था, राईकी बराबर दो एक रवे रहगयेथे आंच और हलकी होनी चाहिये।

उपरोक्त क्रियाका चौथीबार अनुभव।

२० । १ । ०७–कुकरदुधीको धो पोंछ खूब बारीकपीस ५ तोलेकी गोल लुगदी बना उस्के दो भाग कर १ भागमें गढाकर १ तोले पारा रख दूसरे भागसे बंद कर जैसाका तैसा लुगदीको बना स्याह धतूरेके रससे मली-

भांति चिकना १ कपरौटी मुलतानीकी कर धूपमें सूखनेको रखदिया।

ता० २० को दिनभर सुखाके ता० २१ के सवेरे १।छटांक मिट्टी कुम्हारकी कि जिसको रुई डालकर खूब पीटा-कूटा था लेप करके धूपमें सूखनेको रखदिया।

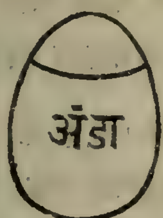
ता० २२ को भी सूखती रही।

ता० २३ को गढेमें ६ अंगुल गहरे रेतमें इस गोलेको इस तरह रक्खा कि१॥ अंगुल नीचे २॥ अंगुल इधर उधर और २ अंगुल ऊपर वालू रही। बादको ८॥ बजे सवेरेसे दो पहरके ११ बजेतक ४ आंच आध आध सेरकी और ११ बजेसे तीन बजेतक ४ आंच तीन तीन पावकी लगीं। इस्तरह ८ आंच दीगई।

ता० २४ को निकालकर देखा तो पारा ॥=) भर मिला और लुगदी जली हुई ॥।) भर मिली। निकालनेपर गोलेके नीचेकी तरफ कुछ रेत चिपटाहुआ मिला जिससे जान पडा कि ऊपरकी आंचके जोरसे लुगदीका रस भाप-हो नीचेकी तरफसे निकल गया इस्तरफ लेपमें कुछ नुकूस भी था।

(२) पारदगुटिकाका अनुभव।

किताब अलजवाहर उर्दूके पत्र १२० के अनुसार १८।१।१९०७–मुरगीके ताजी अंडेका ⅓ भाग ऊपरका उस्तरेसे तराश कर उसकी सफेदी जर्दी दूर कर छिलकेको पानीसे धो साफ कर उसके अन्दर ककरदुधी बारीक पिसी हुईकी लुगदी भर उसमें गढाकर उसमें १ तोले



पारा भर ऊपरसे लुगदीसे बंद कर फिर एक दूसरे अंडेका ⅓ भागका छिलका ऊपरसे ढक एक कपरौटी मुलतानीकी दो पहरको कीगई उसके सूखजानेपर दूसरी कपरौटी शामको कीगई उसके भी सूखजानेपर दूसरे दिन ता० १९ के तीसरे पहर १ लेप मिट्टी कुम्हारकीका कि जिसका वजन १ छटांक था और रुई डालकर जिसको खूब कूटा था कर दिया गया।

ता० २० को दिनभर सूखता रहा शामको १ कपरौटी मुलतानीकी कीगई।

ता० २१ को दिनभर सूखा।

ता० २२ को एक गढेमें ६ अंगुल ऊंचा रेतभर उसमें इस्तरह गोला रक्खा कि १॥ अंगुल नीचे २॥ अंगुल इधर उधर २ अंगुल ऊपर रेत रहा। फिर ८॥ बजे सवेरेसे ४॥ बजे शामतक २ आंच आध आध सेरकी और ६ आंच तीन तीन पावकी लगी।

ता. २३ को सवेरे निकाल कर देखा तो मिट्टी ऊपरकी खूब मजबूत मौजूद थी अन्दर लुगदी दुधीकी जलकर कोयला होगई थी और तोलमें ॥।) भर रहगई थी पारा ॥=) भर निकला =) भर उडगया।

विचार–जानपडता है कि इस दुधीसे पारा बंधना मुमकिन नहीं, दुधी और हो या क्रिया और हो वा पारा और हो। गालिबन क्रिया ठीक नहीं लिखी।

(३) पारदगुटिकाका अनु॰ अपनी बुद्धिके अनुसार।

१९।१।०७ एक अंडा मुर्गीका ले उसमें सुईसे छिद्रकर करीब १ तोलेके उसकी जर्दी निकाल उसमें दो तोले पारा भर अंडेकी ही जर्दीमें चूना पीस उससे उसका मुँह बंद-कर मुलतानीसे १ कपरौटी कर ४ तोले मिट्टी कुम्हारकी (जिसको रुई डालकर खूब कूटा पीसा गया था) का लेप २ रुपयेकी मुटाईकी बराबर कर धूपमें सुखादिया।

ता. १९ के दिनके १० बजेसे ता. २० के दिनभर सूखा शामको १ कपरौटी मुलतानीकी और कीगई। ता. २१ को दिनभर सूखा। शामको ऽ।= कंडोंकी आंच दी तो ता. २२ के सवेरे अंडा आधा मिला और उसमें ६ माशे पारा मिला बाकी उडगया. बाकी अंडेका छिलका और जरदीकी गोली फटकर अलग पडी मिली। इससे सिद्ध हुआ कि पारा जर्दीसे जुदा रहा जर्दीके अन्दर दाखिल नहीं हुआ।

(४) पारद गुटिकाका अनुभव।

(किताब खजानः कीमियाँके सफा १४ के अनुसार)

१९।१।०७–गोल जायफलमें बरमेंसे छिद्र करके १ तोला पारा भर उसका मुख अफीमसे बंद करदिया और स्याह धतूरेके फलमें चाकूसे डंठलकी ओरसे गढा करके जायफलको उसमें रख खाली जगहको थोडेसे धतूरेके ही बीजोंसे भर ऊपर दूसरे फलका डंठल लगा मुँह बंद कर दिया और धतूरेके कांटे छील कर एक कपरौटी करके सुखानेको रख दिया ता. १९ की शामके ४ बजेसे २० के दिन भर सूखा।

ता. २१ के सवेरे १॥ छटांक कुम्हारकी मिट्टीका (जो रुई डाल खूब कूटी पीसी गई थी) १ रुपयेकी मुटाईके बराबर लेपकर धूपमें सुखानेको रखदिया।

ता. २२ के सवेरे ऽ।= की आंच दीगई तो गोलेके अन्दर धतूरा जलगया था और जायफल भी अधजला होगया था। जायफलका मुँह जो अफीमसे बंद था खुल गया था (अफीम नदारद) थोडा पारा धतूरेमें मिला बाकी पारा जायफलमें था सब पारा पूरा तोलमें १ तोले निकल आया।

आंच और कम होनी चाहिये किताबवाला लिखता है कि आंच आधसेरसे आरम्भ करो और बढाते जाओ मगर फिर जायफलका पता भी न रहेगा लेकिन इस क्रियामें भी कुछ गलती है।

(५) पारदगुटिकाका अनुभव।

(किताब अलजवाहर उर्दूके सफे १२२ के अनुसार)

१८।१।०७–विषखपरेको (जो आजकल कम मिलता है और जो पकाहुआ पुराना सुर्ख रंगतका छोटा छोटा

मिला) धो, पोंछ, पीस, बारीक पीस लुगदी कर ४ तोले की कटोरीसी बना (जिसकी पेंदी १ अंगुल मोटी होगी) बहुत छोटी कढाईमें रख-स्प्रिट लैम्पकी आंच देनी आरम्भ की और ऊपर धतूरेके रसका चोया देना आरम्भ किया तो पारा ज्योंकात्यों रक्खा रहा ।

जडीकी घरियामें चोया देनेसे यह लाभ अवश्य है कि पारा चटकता नहीं खाली चोया देनेसे पारा थोडी गरमीसे भी चलदेताहै ।

उपरोक्त क्रियाका दूसरी बार पूरी तौरसे अनुभव ।

२१ । १ । ०७ विष खपरेको पानीमें धो, कपडेसे पोंछ बारीक पीस, ३॥ तोलेकी गोल घरिया बना छोटी कढाईमें घरिया रख १ तोले पारा उसमें रख नीचे पहियेकी पतली लकडियोंकी आँच बालनी आरम्भ करदी और उसी समयसे स्याह धतूरेके रसका चोया देना आरम्भ किया, मगर थोडा ठहर ठहर कर चोया दिया ।

ता०२१ के सवेरे ९ बचे इस कामको आरम्भ किया ५॥ बजेतक चला, पहले मंदाग्नि दी बाद १ बजेके कुछ तेज आंच करदी, आंचकी गर्मीसे घरियाके किनारे खुश्क होकर नीचे होगये और रस भी पहलेकी अपेक्षा जल्द जल्द डालना पडा । ६॥ तोले रसपडा, रातको कढाई गर्म चूल्हेपर ही छोड दी ।

ता० २२ के सवेरे देखा तो पारा घरियामें फैला और मिला हुआ मिला, तोडनेसे सिर्फ ।-) भर हाथ लगा बाकी घरियामें जज्ब होगया या निकल न सका ।

आंच जो पीछे तेज करदी वह ठीक न थी, उससे पारा फैलगया, यदि और भारी और बडी घरिया बनाकर मंदाग्निसे कामलिया जावे तो पाराका एक जगह स्थिर रहना संभवहै और यदि ७ दिनतक यह चोया दियाजावे तो शायद बद्ध होजावे ।

(६) पारद गुटिकाका अनुभव (किताब अलजवाहरके सफे १२१ के अनुसार)

१७।१।०७-ककरदुधीके रस ३ तोले, काले धतूरका रस ६ माशे मिलाकर, २ तोले पारेको थोडा थोडा एक आदमी घोटता रहा तो कुछ चिपकाट पैदा हुआ और पारा कुछ मिला भी था, रस गाढा होतेही पारा जुदा होगया और १॥।-)॥ भर निकल आया बाकी सफूफमें मिला रहगया इस लिये दुबारा आज ता० २९।१ को ५ तोले पारा लियागया और १० तोले रस छोटी दुधीको और १ तोले रस काले धतूरेका लियागया दोनों रस मिलालिये गये ११॥ बजेसे २ बजेतक दो तीन आदमीलगाकर उपरोक्त रस डाल डाल लोहेके खरलमें पारेको निरंतर घुटवाया हाथ बंद न रहने पाया ९॥ तोले रसपडा, पारेके छोटे छोटे रवे होगयेथे और किसी कदर मिलसा गयाथा मगर नष्टपिष्टी नहीं हुआ था इकट्ठा करनेकी गरजसे रस डालना बंद कर जरा गाढा होने दिया तो ज्यों ज्यों गाढा होतागया पारद छुटता चलागया और पाव घंटेके अन्दर गोली बांधते बांधते ४॥ तोले पारा अलग होगया ।

१ गोली बताशे से बडी बंधी जिसकी तोल ।॥) भर हुई मुश्किलसे इसमें ।≈) भर पारा होगा । १ छोटी गोली और बंधी जो ≡) भरकी थी उसमें -) भर पारा होगा, चूंकि पारेकी गोली नहीं बंधी इसलिये इस क्रियाको आगे न चलाया ।

अभीतक कभीं केवल रससे पारेकी गोली बाँधनेका अनुभव नहीं हुआ ।

गंधबद्ध पारदगुटिकाका अनु०

(योगतरंगिणीके सफे ५६ की क्रियाके अनुसार)

३० । १ । ०७-आज ४ तोले पारा लियागया, १ तोले गंधक पिसी हुई लीगई और २ तोले गोभीका रस, २ तोले कांटे दार चौलाईका रस, २ तोले विषखपरेका रस निकालागया और कंधीके पत्तोंको कूटकर और उसमें २ तोले और गोभीका रस डालकर खूब कूट छानकर रस निकाला २ तोले रस निकला इन सब ८ तोले रसोंको मिलालिया गया, फिर पारेको खरलमें डाल थोडा २ गंधक डाल थोडा २ रस डाल पहर भर घोटा गया तो सब खिपगया और पारा मिलगया, किन्तु जब गाढा हुआ तो पारा छुटनेलगा और गोली बांधनेतक १। तोले पारा निकल आया बाकी पिष्टीकी ३ गोलियां बांधलीं जो तोलमें ४॥ तोले हुई अर्थात् इनमें २॥ तोलेके करीब पारा और १० माशे गंधक ओर १४ माशे बूटीका अंश समझना चाहिये ।

आज दूसरे दिन ता० ३१ को यह गोली सुखानेको रखदी गई, दिन भर सूखती रही १ गोलीको तोड कर देखा तो गोलीके बाहरी भागपर चारों तरफ पारेका अंश अधिक चमकता हुआ दिखाई दिया जिसका ठीक कारण समझमें नहीं आया ।

ता० १ । २ तक गोली सूखती रही सूखनेसे जो वह बाहरी भागपर पारेका चमकाहट था सो कम होगया ।

ता० २ कोभी गोली सूखती रही-लेकिन धूप न थी । ता० ३ + ४ कोभी सूखी अब तोलमें ४ तोले ७ रत्तीहै ।

पारा छोड देनेके कारण यह गोली नाकिस समझ रद्दी करदीगई ।

उपरोक्त क्रियाका दूसरे प्रकारसे अनुभव ।

३१ । १ । ०७ आज २ तोले पारदको ६ माशे पिसीहुई गंधक थाडो २ डाल कर धूपमें बैठकर ९ बजेसे निरंतर घोटना आरम्भ किया तो १०॥ बजेतक नष्टपिष्टी कजली होगई, १२ बजेतक और निरंतर घोटागया । गोभी, विषखपरा और काँटेदार चौलाईका एक एक तोले रस निकालागया और उस रसके साथ कंधीके पत्तोंको कूटकर सबका मिश्रित रस लियागया और उस रसको तोला तो २॥ तोले ही हाथ लगा ।

उपरोक्त कजलीको उपरोक्त रस डाल २ एक घंटा घोटा गया १॥ तोले रस खपा तदनन्तर इस पिष्टीकी २ गोली बनाली गई जो तोलमें २॥=)७ रत्ती हुई, जिनमें १ गोली १। भर और दूसरी १।=)७ रत्ती भर थी। इन गोलियोंमें २) भर पारा और ॥) भर गन्धक और =) भर जडीका अंश है। गोली उत्तम बनीं, रसका अंश कम रहा इस विचारसे १ गोलीको जो तोलमें १।) भर थी फिर रस डाल कर घोटा गया तो बाकी तोले भर रस भी घंटे भरमें खप गया फिर उसकी गोली बनाली जो तोलमें १।-) भर ही हुई कुछ छीजनमें भी गई होगी।

ता० १+२ को गोलियां सीरकमें सूखती रहीं, पहली बनी गोलीकी बनिस्वत दूसरी गोली कम चिकनी थी। आज ता० २ को तोला गया तो पहली बनी गोली जो तोलमें १।=)७ रत्ती भर थी १।)७ रत्ती रह गई और दूसरी पीछे बनी गोली जो तोलमें १।-) भर थी आज तोलनेमें १=) ४ रत्ती रहगई अर्थात् दोनों गोलियोंकी तोल इस समय मिलकर २।=) ११ रत्ती अर्थात् २॥) भर हुई, इससे विदित होताहै कि केवल उतना अंश जडीका इसमें मिला, जितनी पारे और गन्धककी छीजन हुई।

ता० २ की शामको १० माशे हींगको पीस बारीक होनेपर १०-१२ माशे दूध गूलरका डाल खूब घोट चीकट सा होजानेपर उपरोक्त दोनों गोलियोंपर थोडा २ लेप किया गया लेकिन चिपककी वजहसे लेप मोटा २ न चढसका हाथोंसे छुटा आता था चढता न था इसलिये इस वक्त इतनाही छोड दिया।

३।२।०७ आज सबेरे १ लेप और चढा दिया गया और दिन भर सायेमें सूखती रहीं।

४।२। आज सबेरे तीसरा लेप बची हुई सब दवाका कर दिया गया और २ बजे तक धूपमें सूखती रही गो धूप बहुत हलकी थी धूपमें सूखनेसे कोई कठिनता लेपमें न पैदा हुई इसलिये फिर सायेमें रख दिया।

५।२ जिस वर्तनमें गोली सुखानेके लिये रक्खी थी उसमें गोलियां नीचेकी तरफ चिपक गई आज छुटानेमें चिपकी हुई जगहका लेप कुछ खराब होगया वह फिर हींग लगाकर दुरुस्त कर दिया गया और गोली सायेमें सूखनेको रख दी आज धूप निकली भी नहीं बादल रहा।

६।२ आज खूब बारिस रही इस वजहसे गोलियां कमरेमें ही रक्खी रहीं।

७।२। आज ८॥ बजेसे गोली धूपमें सूखनेको रख दीं ११॥ बजेतक सूखीं तो गोलियोंका लेप फटने लगा इसलिये धूपमेंसे उठाकर सीरकमेंही रखदीं।

आगेसे हींगका लेप कभी धूपमें न सुखाया जाय।

८।२ आज गोलियां सीरकमेंही सूखती रहीं।

९।२ आज एक गोल ऊंची हांडी जिसमें ७ सेरके करीब पिसा हुआ नमक आसकता था उसमें आवेके करीब लाहोरी लवण भर उसके ऊपर एक छटांकके करीब कैथके फलके सूखे हुए गूदेका चूर्ण रख उसपर उपरोक्त गोलियोंमेंसे एक गोली रख गोलीके चारों तरफ एक कागजका २॥ अंगुल ऊंचा और ४ अंगुल चौडा घेरा रख उसमें २ छ० के करीब कैथका चूर्ण भर चारों तरफ लवण भर दिया गया, फिर उस कागजके घेरेको धीरेसे निकाल लिया फिर बाकी बचा और लवण डाल उसी हांडीको मुँहतक खूब दबादबा कर भर दिया। जो हांडीके मुँहसे ऊपर २ वा ३ अंगुल उठा हुआ रहा अर्थात् ऊपर ढके सकोरेकी गहराई भी नमकसे भरी रही खाली न रही ६ सेर १३॥ छ० नमक हांडीमें समाया।

१०।२ आज सबेरेके ७॥ बजे इस हांडीको चूल्ह पर रख पहियेकी लकडियोंकी मन्द मन्द अग्नि देना आरम्भ किया यह मन्द आंच १२। बजेतक लगी इससे केवल हांडी ही गर्म हुई होगी अन्दर गर्मी कम पहुँची होगी हांडी बीचमें ऊपरकी तरफ चटक गई गालिबन सब जगह नमकसे भर जानेसे और आकाश न रहनेसे ऐसा हुआ उसी समय चूल्हे पर चढे चढेही ऊपरी भाग पर जहां कपरौटी न होनेसे दरज दिखाई देती थी कपरौटी कर दीगई, बाद १२। बजेके एक एक लकडी बेलकी और दो दो पहियेकी मिला मिलाकर पहली अग्निसे कुछ तेज अग्नि दी, इस रीतिकी अग्नि ३ बजे तक लगी बाद ३ बजेके ज्योंज्यों भट्ठी कोयलोंसे भरती गई आंच तेज होती गई, ६॥ बजे जलती लकडियोंको तो निकाल लिया और हांडीको उसी कोयले भरे चूल्हे पर रक्खी छोड दिया।

११।२ आज सबेरे ठंढा होनेपर हांडीको खाला ता हांडी टूटी हुई निकली और नमक अन्दर बिलकुल जमकर एक कठिन ढिम्मा बनगया था नमकके ढिम्मेमें भी एक दरार पडगई थी जो गालिबन हांडी टूट जानेकी वजहसे पडी होगी हांडी टूट जानेका कारण अवश्य लवणका ठूस कर भरा जाना हुआ, नमकके ढिम्मेको इधर उधरसे मुजालीसे छांट मुजालीके जोरसे दरारकी जगहसे दो फांकें की गईं। तो नमकके डेलेके अन्दर कैथका चूर्ण जलाहुआ कोयलेरूपमें निकला. उसके अन्दर गोली ५-४ फांकोंमें खिलीहुई मिली, गोलोके ऊपर हींगका लेप अर्द्धजलित मौजूद था किन्तु गोलोसे छुटगया था, लेपको छुटाकर दीपककी लौपर जाकर देखा तो लौ देता था गोली तोलमें ४ रत्ती कम १) भर थी रंगत काली थी दो गोलियोंमें दो तोले पारद था इस हिसाबसे एक गोलीमें एक तोले पारद हुआ इस समय गोली ४ रत्ती कम१भरकी निकली इससे अनुमान होसकताहै कि पारद सब मौजूद है ४ रत्ती कमी छीजनकी है जबतक गंधक निःशेष नहीं होजाता तबतक पारद क्षय नहीं होसकता इस न्यायसे गोलीकी तोलमें गंधक विद्यमान होनेकी शंका नहीं की जासकती।

इस गोलीको चीनीकी प्यालीमें रख शीशेके ढक्कनसे ढक स्प्रिट लैम्पकी दो पहर अग्नि दीगई तो गोलीका कुछ अंश जल कर भस्म रूप होगया और तोलनेसे ३ रत्ती भस्म ॥।) ४ रत्ती अवशेष गोली मिली बाकी करीब =)। भर पारा उड गया जिसके रवे शीशेके ढक्कनपर पायेगये।

अनुमान-(१) यदि हांडी न टूटती तो नमकका ढेला न टूटता और नमक ढेला न टूटता तो गोली न टूटती।

(२) गोलीको आंच कम लगी अधिक समयतक

अर्थात् ४ प्रहरकी जगह ६ प्रहरतक आंच देनेसे गोलीकी रंगत कुछ उत्तम होनेकी आशा होसकती है ।

उपरोक्त दूसरी गोलीका पुनः अनुभव ।

१५।२।०७-आज उपरोक्त दो लेप कीहुई दूसरी गोली पर पहिला लेप चटक जानेसे पहलेकीही भांति १० बजे सवेरे हींग और गूलरके दूधका लेप चढाकर सीरकमें सूखनेको रखदिया १ बजेतक सीरकमें सूखनेके बाद दूसरा ऐसा ही और एक लेप करदिया। दोनों लेपोंमें ४ माशे हींग थी ।

१६।२ को गोली सीरकमें ही सुखाई । ता० २४ तक गोली रक्खी रही ।

ता० २५ को दो कपरौटी करी एक हांडीमें आधीके करीब वही पहली क्रियाका निकला नोंन लाहौरी भर उसपर बीचमें कैथके गूदेका सूखा चूर्ण आध पाव रख उसके बीचमें गोली रख ऊपरसे फिर नोन हांडीकी गर्दनतक भर और मुंह खुला रख चूल्हेपर रखदिया ।

ता० २६ के सवेरे २: बजेसे ६ बजेतक मंद और मध्य अग्नि दी । हांडीमें सवेरे ही दरार होगई थी पर काम जारी रक्खा । हांडीपर खूब कपरौटी थी पर नमकके जोरसे फटगई ।

ता० २७ के सवेरे खोला तो हांडी बहुत फटी मिली, नमकका एक ढेला निकला इसमें भी दरार पडगई थी। यह नमक नीचे आधी दूरतक आंच खाकर खूब कठिन और सफेद होगया था ऊपरका आधा कम आंच लगनेसे मैला और फुसफुसा रहा था । ढेला तोडकर बीचसे कैथके चूरेकी काली जली लुगदी निकली इसमेंसे गोली साबित १ तोले २ मा० ७ रत्तीकी निकली । गोलीकी रंगत कृष्ण थी ।

मेरी रायमें-(गोलीकी वजन ज्याद: रही, कैथके गूदेकी रंगत काली रही, नमकका ऊपरी भाग नहीं पका इस लिये) आंचकी कमी रही आगेसे और सब क्रिया बदस्तूर रहकर हांडीकी जगह कडाई लीजावे और आंच तेज दी जावै ६ प्रहरकी ।

गंधबद्ध गोलीका तीसरीबार अनुभव ।

१७।३।०७ आज २ तोले साधारण शुद्ध पारा और ।।) भर शुद्ध दानेदार गंधकको लोहेके खरलमें ४ घंटे निरंतर घोटा नष्टपिष्टी कजली होगई ।

१८।३ आज १ छटांक रस विषखपरेका, १ छटांक कांटेदार चौलाईका, १ छ० गोभीका इसतरह ३ छटांक रस निकला और कंधीमेंसे रस न निकल सकनेकी वजहसे कंघीको कूट उसमें उपरोक्त ३ छ० रस डाल थोडा और कूटा ताकि कंघीके भी रसका अंश आजाय कुल निचोडकर तोला तो १३ तोले हाथ लगा ।

उपरोक्त कजलीको इस रसमेंसे थोडा २ रस डाल १०।। बजेसे ११।। बजेतक मामूली तौरसे और २ बजेसे ५ बजेतक निरंतर ५ घंटे घोटा फिर ३ गोलियां बांधली जो १=) १=) भरकी हुई यह गोलियां बांधते समय बहुत कडी न थीं इनमें ८ तोले रस खिपाथा ।

१९।३ आज यह गोलियां सीरकमें ऊपरके बरामदेमें सुखानेको रखदीं इनमेंसे १ गोली फटगई, गालिबन हवा लगनेसे इस लिये फिर इन गोलियोंको कमरेमें रखदिया। टूटी गोलीको तोड गोभीका ४ माशे रस डाल १५ मिनट घोट फिर गोली बना कमरेमें रखदिया ।

२०।३ आज देखा तो तीनों गोलियां बिलकुल तिरकी हुई मिलीं जरा हिलातेही टूटगई ।

२१।३ आज टूटी गोलियां कमरेमें रक्खीरहीं ।

२२।३ आज तोलनेसे तीनों गोलियां २।।। तोले हुई इनको खरलमें डाल घोटागया फिर १ तोले गोभीके रसके साथ ३/४ घंटे घोट २ गोलियां ९-९ माशेकी और तीसरी १ तोले ७ माशेकी बनाली यानी सब तोलमें ३ तोले १ माशेकी हुई। फटजानेका कोई इलाज समझमें न आया लाचार प्रत्येक गोलीको जालीके कपडेमें जुदा जुदा बांध शीशेके सन्दूकमें कमरेमें ही सूखनेको रख दीं। इस खयालसे कि जालीसे कसे रहनेसे फटने न पावेगी और सूखती भी रहेंगी ।

ता० २३। आज इन गोलियोंको देखा तो सूखजानेके कारण जालीका कपडा ढीलासा मालूम हुआ और बडी गोली किंचित तिरकीहुई मालूम हुई अतएव दुबारा उसी तरह डोरेसे कसकर जैसेका तैसा बांध उसी संदूकमें रख दीं ।

२४।३ ता० २४ के सवेरे खोल देखा तो गोली फटी नथी फिर जालीमें कस बकसके बाहर कमरेमें रखदिया।

२५।३ आज देखा तो सब गोली चटक गई थीं और एक गोली बिलकुल खिलगई थी ।

२७।३ आज देखा तो बाकी गोली भी फांक फांकहोगई ।

सम्मति-यदि गोली ही गोलियोंपर हींग गूलरके दुग्धका लेप चढा दियाजाय तो शायद फिर न तिरक सकेंगी ।

उपरोक्त गंधबद्ध गोलीपर पुनःअनुभव ।

३०।८ आज उक्त १ तो० २ माशेकी गोलीपर (जो पारद गंधककी तारीख १६।२।०७में तय्यार हुई थी) हींग और गूलरका मोटा लेपकर छायामें रक्खा ।

३१।८ आज दो लेप हलके और कियेगये (हींग गूलरके लेप बनानेमें हींगको बारीक पीस ऊपरसे गूलरका दूध डाल घोटा तौ चीड होगई और दूध डाल और घोटा तो चीढपन और बढा फिर उसे फेंक और दूध खरलमें डाल ऊपरसे थोडी २ हींग बुरक थोडी देर घोट थोडी हींग और बहुत दूधसे लेप ठीक बना) लेप थोडा सूखने पर हथेलीसे मलनेसे गोलीपर ठीक बैठजाताहै ।

१।९ को एक कडाईको पौसे सैंधव लवणसे आधा भर उस पर १ छ० कैथके चूर्णके मध्यस्थ उक्त गोलीको रख बाकी लवणको कडाईके किनारोंसे ४ अंगुल ऊंचा चोटीदार भरादिया कुल लवण ९।। सेर समाया। सुबहके नव बजेसे रातके ९ बजे तक ४ प्रहर समाप्ति दीगई बादको कडाईको जैसेका तैसा चूल्हेपर रक्खा छोडदिया ।

२।९ को गोलीको निकाला तो उसका ऊपरी आधा भाग जल गया था जले भागकी रंगत भूसडीसी थी और अन्दरका भाग जो बगैर जला था उसकी रंगत काली थी तोलमें गोली इस समय २ रत्ती कम ७ माशे रही—

आंच विशेष लगजानेसे गोली जलगई किन्तु रंगमें सुरखी किसी अंशमें न आई इससे शंका होती है कि गोली ठीक बननेपर भी सुर्ख न होगी।

ताम्रबद्ध पारद गुटिकाका अनुभव

किताब अलजवाहर उर्दूके सफे ११५ व ११७ के अनुसार

६।२।०७– १। तोले पारा लेकर एक तामचीनीकी तश्तरीमें रखलिया फिर ।।≈।। भरके एक शुद्ध ताम्रपत्रको (जो लम्बाईमें ३ अंगुल और चौडाईमें १।। अंगुल था) कोयलोंकी तज आगमें खूब सुर्ख करकर उस पारेमें चिमटे-से पकड रिगडवा और पारेको कपडेमें छानना आरम्भ किया। पहली दफे १ बुझाव, देकर दूसरी दफे २ बुझाव, तीसरी दफे ३, चौथी दफे ८, पांचवीं दफे भी ८ बुझाव देकर छानना। इस्तरह ५ दफेमें कुल २२ बुझाव दिये इन बुझावके देनेसे और कपडेमें छाननेसे पारदमें ऐसी कोई विकृति पैदा न हुई जो प्रगट हो। पुनः यह खयाल करे कि ताम्रपात्र पारेसे भली भाँति रिगड नहीं खाता उस पारेको एक छोटी कढाईमें रख उपरोक्त ताम्रपत्रके ही सदृश दूसरा ताम्रपत्रले परस्पर एकके बाद दूसरा गर्म करकर पारेके ऊपर रख लाठीसे उस ताम्रपत्रको जोरसे दबा ठंढा होनेतक अर्थात् दो दो मिनटतक खूब घोटते रहे इस रीतिसे ३२ बुझाव दिये। प्रथम बार १५ बुझावके अनंतर और द्वितीयवार १७बुझावके अनंतर पारदको कपडेमें छाना इन बुझावके देनेसे भी पारा कपडेमें ठहरने लायक तो नहीं हुआ क्योंकि जब जब हमने छाना तो कपडेमें सिर्फ कढाई और ताम्रपत्रकी रिगडसे उत्पन्न भई काली राखसाही मिली और पारा छन छनगया किन्तु पहलेकी अपेक्षा पारेमें किंचित गाढापन अवश्य आगया क्योंकि उसकी स्वाभाविक चपलतामें अंतर आगया।

१५।२ आज पारेको तोलातो ।।।) १० रत्ती रहगया था।

१६।२ आज पुनः उपरोक्त ।।।) १० रत्ती पारदको लोहेकी छोटी कढाईमें रख उपरोक्त दोनों ताम्रपत्रोंको पहले की ही भांति कोयलोंमें गर्म करकर पारेपर लाठीसे दबा दबा रिगडना और फिर कपडेमें छानना आरम्भ किया।

प्रथम वार ४, द्वितीय वार १६, तृतीय वार १८, चतुर्थ वार२५बुझाव देकर छाना इस्तरह कुल ६३बुझाव दिये और ४ दफे छाना इन बुझावके भी देनेसे पारेमें कोई विशेष और नई बात नहीं पैदा हुई।छानेहुए पारेको तोला गया तो४ रत्ती कम ।।) भर निकला।थोडा पारा उस राखमें जो पारेके छानते समय निकलती थी मिला रहगया। दूसरेदिन जब उस राखको तश्तरीमें डाल पानीसे धोया तो ४ रत्ती पारा औरभी निकला। इस्तरह कुल ।।) भर निकला ≈) १०रत्ती उडगया या छीजगया।

नतीजा–१। तोले पारेको२२बार हलके हलके और९५बार खूब जोरसे रगडा गया कुल ११७ रगडे लगे। किन्तु नाम मात्रको भी ताम्रकासा रंग और किंचित्मात्र घनताके अतिरिक्त कोई नतीजा न निकला। पारेकी तोल आधेसेभी कम रहगई इसलिये आगे और बढना निरर्थक समझ त्यागदिया।

सम्मति–बुभुक्षित पारदपर यह क्रिया ठीक हो तो हो साधारण कदापि सफल नहीं होसकती।

पारदगुटिका अनुभव तुत्थयोगसे।

(किताब अलजवाहरके पत्र ११८के अनुसार)

२७।२।०७।। पारा १ तोला, तूतिया १ ताल सूखा खरलमें घोटा गया तो पारा बहुत जल्दी तूतियेमें मिलकर कजली होगई ।। डेढ घंटे घोटनेके बाद उसको पानीसे धो डाला तो तूतिया घुलकर निकल गया ।।–) भर पारा गाढासा रहगया। मगर कपडेमें छाननेसे गोली नहीं बँधी।शायद ज्यादे देर घोटनेसे काम चले,या ज्यादे तूतिया डालनेसे किन्तु पानीमें औटानेकी क्रिया इससे सुगम और अच्छी है इसमें परिश्रम अधिक है और छीजन पारेकी ज्यादा है और फलमें कोई विशेषता नहीं इस लिये तुत्थ-योगसे बांधनेमें औटानेकीही क्रिया श्रेष्ठ कर्तव्य है।

पारदगुटिकाका अनुभव–तुत्थयोगसे।

(रसमानसपत्र १३ की क्रियासे)

२३।२।०७–आज २ तोले साधारण शुद्ध पारद और २ तोले तूतिया ५ सेर पानी भरी हुई लोहेकी कढाईमें डाल चूल्हेपर रख सबेरेके ८।। बजेसे तेज आंच बालनी और पारेको लोहेकी कलछीसे घोटना आरम्भ किया। १० मिनट बाद आंचकी गर्मीसे पानी खौलने लगा और कढाईके नीले पानीकी रंगत कालीसी होगई जिस कल-छीसे पारा चलाया जाता था उसपर पारेका कुछ अंश चढगया और वह छुटानेसे भली भांति छुट न सका। २ घंटेमें यानी १०।।। बजेतक कढाईका सब: पानी सूखगया गाढा तूतिया और पारा रहगया ठंढा होजानेपर इस तूतिया सहित पारदको पानीसे धो कपडेमें छाना २ बार छाननेमें।≡) भरकी गोली बंध गई और १=) भर पारा छन-गया वह अलग कर लिया बँधीहुई गोली उस वक्त नरम थी और सफेद चमकदार थी दूसरे दिन चमक न रही और कठिन होगई जो हाथसे न टूटती थी गोली खूब कठिन है और उसको रगडनेसे अन्दरसे चमकीली निकलती है।

उपरोक्त क्रियाका दूसरी बार अनुभव।

२४।२।०७ उपरोक्त क्रियासे ३ तोले पारा और ६ तोले तूतिया ऽ५ सेर पानीमें कढाईमें ८। बजेसे औटाना और कलछीसे घोटना आरम्भ किया (जिस कलछीसे घोटा-जाता था उसके कुछ भागको आज दवा खागई) १०। बजेतक कढाईका तीन हिस्सेमें दो हिस्सा पानी जलचुका तभी पारा बहुत गाढा होकर जमगया। कढाईको नीचे उतार लिया और ठंढा होनेपर पहला पानी नितार गर्म

पानीसे धो पारेको निकाल गोली बनाली पारा अधिक गाढा होजानेसे ठीक धुल न सका और छाननेकी आवश्यकता न रही। यह गोली भी गीली रहनेतक चमकती रही किन्तु आध घंटेके अन्दर हीं जस्तकीसी रंगतकी होगई और बहुत कठिन होगई जो हाथ से नहीं टूट सक्ती थी। तोलमें ३।≡) भर हुई और उसका बचाहुआ मैल ॥) भर हुआ इसमें भी पारा मौजूद था परन्तु पृथक् न होसका। इतना अर्थात् द्विगुण तूतिया डालना उचित न हुआ।

उपरोक्त ३।≡) भरकी गोली बहुत कठिन होगई थी और ठीक न धुलनेके कारणसे उसमें मैल रहगया था और बडी भी बहुत थी इस लिये उसे खरलमें डाल तोडकर उसमें १।=) भर वह पारा जो इससे पहली बनी तूतियेकी गोलीके छाननेमें निकला था और ।=) भर वह साधारण शुद्ध पारद जो ताम्रपत्रके घोटनेकी क्रियासे बचा-था और ॥) भर साधारण शुद्ध कोरा पारा सब २।) भर पारा मिला खरलमें घोटा गया तो पिष्टी होगई उसको पानीसे अच्छी तरहसे धो साफ कर कपडेमें निचोडा तो ९ माशे पारा छनगया ४॥) भर गोला बंध गया ।≡) भर छीजन गई) जिसकी तोले तोले भर की ४ गोलियां और ॥) भरकी १ गोली बनाली १ गोलीको १ छटांक नींबूके रसमें डाल रख दी और तीन गोली रकाबीमें खुली रखदीं।

२५।२ आज सवेरे देखा तो चारों गोलियोंमेंसे किसी-मेंसे किसीमें कठिनता उत्पन्न नहीं हुई नींबूके रसमें पडी हुई गोलीको तो उसी तरह रसमें पडा रहनेदिया और बाकी ३ बडी और १ छोटी गोलियोंको कपडेमें और दबाया-गया तो ३ माशे पारा और निकला यानी सब तोले भर पारा निकल आया अब गोलियोंकी तोल इस प्रकार है।

पहली १) भर, दूसरी २ रत्ती कम १) भर, तीसरी ३ रत्ती कम १) भर और चौथी ४ रत्ती कम १) भर, पांचवीं ॥) १ रत्ती भर सब ४।=)॥ भर।

चूंकि ६ तोले तूतियेसे काम लियागया था इस लिये अनुमान होताहै कि पारेसे ड्योढे तूतियेसे गोली ठीक बना करेगी। समान भाग तूतिया कम होताहै और द्विगुण अधिक होजाताहै इसमें यह भी शंकाहै कि यदि अधिक पानीमें अधिक देरतक औटाया जाय तो शायद समान-भाग ही काम देजाय।

२ गोली रकाबीमें रक्खी रही एक बडी एक छोटी।

१ गोलीको २ छटांक वसंतीके रसमें डाल कर रख दियागया।

१ गोलीको १ सेर वसंतीके रसमें १ प्रहर औटाया गया फिर रातभर उसी तरह रक्खी रहने दिया सबेरे निकाल धोकर देखा तो उस गोलीके बनिस्वत जो इसी क्रियासे बनाकर खाली रक्खी रही थी इस गोलीकी चमक कुछ कम होगई और कुछ कठिनता भी अधिक होगई किन्तु पहली क्रियासे बनी गोली किसी मैली रंगतकी न हुई न उतनी कठिनता आई आवश्यकतासे सख्ती कम रही। गालिबन अग्निसंस्कारके पीछे जो पारा मिलाया गया उस कारणसे पूरी सख्ती नहीं आई इन ४ बडी और १ छोटी गोलियोंके प्रकार–

१ छोटी तो खाली ही रक्खी रही और रक्खे रहनेहीसे उसकी सख्तीमें अन्तर पडा इतनी कठिन होगई कि चुटकीसे न दबी। रंगत कुछ मैली सफेद रही।

२ बडी गोली ३ दिन भांगके काढेमें भीगी रही यह ऊपरवालीसे शायद कुछ ज्यादः सख्त हो रंगत भी वैसीही थी।

३ तीसरी बडी गोली ३ दिन नींबूके रसमें भीगी रही रस बदलता रहा। यह भी चुटकीसे न दबती थी शायद यह दूसरीसे भी कुछ ज्यादः कडी होगई।

४ चौथी बडी गोली ३ दिन वसंतीके रसमें भीगती रही रस बदलता रहा यह भी चुटकीसे न टूटती थी और ठीक दूसरी गोलीके समान थी।

५ पांचवीं गोली १ प्रहर वसंतीके रसमें औटाई गई यह भी वैसीही सख्त थी कुछ विशेषता न जान पडी मगर इन पांचों गोलियोंको चुटकीसे रगडनेसे पारेकी सफेदी मिट्टीसी छुटती थी यही दोष था यद्यपि रंगत अच्छी थी इसी तूतियेसे पहली बार बनी गोलीमेंसे कुछ छुटता न था किन्तु रंग खराब था गोली नं. १+२+३+४+५ में कोई भेद न जान पडा किन्तु नं. ३ नींबूवाली कुछ विशेष साफ थी।

उपरोक्त क्रियाका तीसरी बार अनुभव।

११।३।१३ आज २ तोले पारद और १ तोला तूतिया ५ सेर पानीमें कढाईमें चढा औटाना और लकडीके सोटेसे हौले हौले घोटना आरम्भ किया २॥ घंटे औटानेसे जब करीब ३ छटांकके पानी रहगया तब ठंढा कर पानी नितार पारेको अलग कर पानीसे धो कपडेमें छाना तो ३ रत्ती कम ।≈) भरकी गोली बंधी बाकी १॥=३ रत्ती पारेको फिर दुबारा उसी रीतिसे पहले बचे ३ छटांक पानीमें ५ सेर पानी और मिला १ तोले तूतियेके साथ २ बजेसे ५ बजेतक औटाया। करीब पावभरके पानी रहजानेपर पारेको पानीसे पृथक कर धो मय पहली ।=) भरकी गोलीके चूर्णके (जो सबकी १ गोली बनानेकी गरजसे गरम कढाईमें डाल दिया था) कपडेमें छाना गया तो ४ रत्ती कम ॥) भरकी गोली बनी। बनाते समय गोली कम निचोड मुलाइम रक्खी थी परन्तु रातभरमें कडी होगई। जिससे सिद्ध हुआ कि गोलीको कडा निचोडनेकी आवश्यकता नहीं है।

१२।३ दूसरे दिन फिर उस बाकी बचे पारेको पहले दिनके बचे पावभर पानीमें ५ सेर पानी और मिला १ तोला तूतिया डाल ८ वजेसे ११ बजेतक औटाया पावभर पानी रहजानेपर उतार पारेको निकाल पानीसे धो, छान, गोली बना तोली तौ २ रत्ती कम ।≈) भर हुई। इस तरह २ तोले पारेको ३ बारमें २ तोले तूतिया और १५ सेर पानीके साथ करीब ७ घंटे औटानेसे ६ रत्ती कम १≈) भरकी गोली हाथ लगी। और ॥।≈) भर पारा मिला ६ रत्ती छीजन गई। हर बारमें १ तोले तूतियेसे ।≈) भर पारा बँधा।

अनुभव ।

(१) प्रथम बार-समान भाग तूतिया डालनेसे ५ सेर पानीमें प्रति तोला तूतियेसे ≡)॥ भर पारा बचा था उसकी बनिस्बत आधा आधा तूतिया देनेसे अबकी बार विशेष यानी फी तोला तूतियेसे ।≈) भर पारा बँधा ।

(२) दूसरी बार-द्विगुण तूतिया देनेसे (६ तोले तुत्थ ३ तोले पारा ५ सेर पानी) एक दम बहुत सख्त फी तोला ॥) भर पारा बँधा था जो सबमें विशेष रहा ।

(३) तीसरीबार-१½ ड्योढा तूतिया देनेसे(१½ तोले तुत्थ १ तो० पारा ५ सेर पानी) फी तोले तूतियेसे ।≈)॥ भर पारा बंधा किन्तु यह नरम रहगया इस लिये ।=) भरका ही औसत समझना चाहिये ।

उपरोक्त क्रियाका चौथी बार अनुभव।

१२ । ३ आज १ तोले पारेको १॥ तोले तूतियाके साथ उपरोक्त विधिसे ५ सेर पानी में २। घंटे औटाया जब करीब आधसेरके पानी रह गया तब ठंढाकर पारा अलग किया । पारा गाढा दहीसा होगया था छान गोली बनाई तो तोलमें ४ रत्ती कम ॥=) भर कीहुई ।) भर पारा छनगया बाकी करीब =) भर छीजगया। गोली बनाते समय नरम रक्खी गई थी सबेरेतक कडी तो होगई मगर कई दिवस रक्खे रहनेपर भी इसमें पूरी कठिनता न आई । ऊपरसे कुछ छुटता था निचोडनेमें कुछ थोडी कसर रह गई होगी । इस गोलीमें लोहेके तारसे छेद कर तारसमेत रात भर रक्खा रहने दिया सबेरे गोली सख्त होजानेपर तार निकाल लिया और डोरा डालदिया ।

अनुभव ।

(१) बस अबकी बार पारा ठीक गाढा हुआ इतना ही गाढा होना ठीक है विशेष गाढा होनेसे गोली बांधनेमें खराबी होती है इसलिये निश्चय हुआ कि पारेसे डयोढा तूतिया लेना योग्य है ।

(२) यह भी ज्ञात हुआ कि थोडा २ तूतिया डाल विशेष पानीमें औटानेसे कोई विशेष लाभ नहीं होता ।

(३) यह भी ज्ञात हुआ कि फी तोले तूतियेसे।=)भर पारा ठीक बँधता है ।

१३ । ३ आज उपरोक्त गोलीको कडी करनेके लिये १ छ० नींबूके रसमें ता० १८ तक ५ दिवस पडा रहने दिया परन्तु गोलीमें कोई विशेषता उत्पन्न न हुई ।

ता० १९ से २२ । ३ तक गोलीको काले धतूरेके रसमें डाल धूपमें रख दिया ता० २२ को निकाला तो भी गोलीमें कोई प्रत्यक्ष विशेषता दृष्टि न आई ।

२२ । ३ से २४ मार्चतक तुलसीके १॥ छटांक रसमें गोलीको डाल धूपमें रखदिया ।

२४ । ३ आज सबेरे गोलीको तुलसीके रससे निकाल धो देखा तो ऊपरसे पिष्टीका फिसलना बंद न हुआ था । ९ दिन ३ रसोंमें भिगोनेसे कोई प्रत्यक्ष लाभ न हुआ ।

२१ । ५ बहुत दिनतक गोली खाली रक्खी रही, ऊपर कुछ गरदा जम गई थी उसके पोंछ देनेपर अन्दरसे गोली साफ निकली और इसपरसे अब पिष्टीसी फिसलना बंद है. बहुत दिन रक्खे रहनेसे ही कुछ कठिनता बढीहै ।

खास नोट-सुनागया कि जो तूतियेके साथ नमक डालकर औटाया जावे तो कम तूतियेसे भी पारा बँधजावे; इस बातका पता कुछ यूनानी किताबोंसे भी लगता है और अनुभव करनेयोग्यहै ।

३१ । ७ । ०७-अनुभव तूतियेसे बनी गोलीको घरियामें न्यारियेसे गलवाया तो बहुतदेरमें गली, पारा उडगया; तूतिया रहगया ११ माशेकी गोलीमें ३ माशे रहगई ।

उपरोक्त क्रियाका पांचवीं बार अनुभव लवणयुक्त ।

१८ । ८ । ०७ आज ता० १८ को २ तोले साधारण शुद्ध पारद और २ तोले तूतिया और ४ तोले सैंधव लवणको ५ सेर पानीमें औटाया तो ५ घंटेमें सब पानी जलनेपर दही सा जलगया उसको धोकर छाना तो १। तोलेकी शुद्ध गोली बनी और ८ माशे पारा छन गया; और ४ माशे नीचेका पारा जो खुरच कर निकाला था कुछ मैल युक्त रहा वह बे छाना रख दिया, पहर भर बाद देखा तो गोली पत्थरसी कठिन होगई थी और बेछाना ४ माशे पारा भी जम गया था, और काफी कडा था; जिसका औसत फी तोले तूतियेसे ॥।) भर पारा बंधनेका हुआ ।

अनुभव ।

पहले ४ बार विना लवणके केवल तूतियेसे गोली बनाई थी उनका औसत ।=) से ॥) तक था, अबकी बार लवण योगसे ॥।) भर बंधनेका औसत बैठा जो सबसे अधिक है; ज्ञात होता है लवण योगसे पारद तुत्थके ताम्रको भली भांति चरसका ।

१९ । ८ आज सायंकालको गोली पर उस बचे पारेमेंसे थोडा पारा उँगलीसे मला तो गोली ऊपरसे चमकीली तो होगई किन्तु उसने पारेको पीया नहीं; और इसी प्रकार बनी ४ माशेकी डलीको पारेमें रात भर पडी रहने दिया तो उसने भी पारेको नहीं पीया ।

पारदगुटिकाका अनुभव वंगयोगसे ।

(किताब कुश्तैजातहजारी के सफा ६५ के अनुसार, छलवेधसे)

२७ । २ आज १ तोले रांगको लोहेकी कछलीमें हलका पिघला कर चिलमसे ढक चिलमके छेदमेंसे १॥ तोले पारा डाल दिया गया तो न तो चटका न उछला दोनों फौरन मिलगये, २ मिनट बाद साचेमें गोली ढाल ली जो १=) भर तोलमें हुई बाकी बच रांग पारेको जो फुसफुसा सा था फिर गलाया तो बहुत जल्दी गलगया

फिर गोली ढाली तो १=) भर तोलमें हुई कुछ थोडा बचभी रहा । यह दोनों गोलियां एकसी बनीं; खूब चमकदार सफेद थीं, और सख्ती काफी थी मगर हाथमें लेनेसे पारेके रवे छुटते थे और स्याही बहुत देती थीं; एक सप्ताहके पीछे देखा तो गोलीके नीचेकी तरफ थोडा १ बूंद पारा निचुड आयाथा झटका देनेसे छुटपडा । इस क्रियामें चमक बहुत उत्तम रहती है मगर हाथमें लेनेसे पारेके रवे पारद रूपमें ही छुटतेहैं यह बडा दोषहै, और गोली बहुत खर खरी है । कई बरस पहले जो पारे और रांगके (जिसका proportion याद नहीं) छलबेधसे गोली बनाई थी उसको देखा तो बहुत खरखरी न थी खूब चिकनी थी इस लिये अनुमान होताहै कि समान अंश रांगको ज्यादे पिघला कर पारा मिलानेसे गोली उत्तम चिकनी बन सकेगी. किन्तु रक्खी रहनेपर पारा उसमेंसे भी झूलता रहेगा ।

२८ । ७ । ०७ को देखा तो गोलियोंके ऊपर बडे मोटे रवे पायेथे, अब इस गोलीको गोली कहना ठीक नहीं; कुछ पारा छुट भी गया था, जैसे लकडी और कंडेमें भेद है उसी प्रकार इस गोलीको कंडा कहे तो ठीक होगा, दूसरी गोली मर्दन द्वारा बनी ज्योंकी त्यों मौजूद थी जिससे ज्ञात होताहै कि मर्दनसे ही पारा दूसरी धातुमें भली भांति मिलताहै ।

पारदगुटिकाका अनुभव वङ्गयोगसे ।

(किताब कुश्तैजात हजारीके पत्र ६६ के अनुसार, मर्दनद्वारा)

१।३ आज १ तोले पारा ७॥ माशे रांगके चूरेको लोहेके खरलमें खाली घोटा तो बहुत जल्दी पिष्टी होगई, फिर भी घोटते रहे, पीछे नीबूका रस डाल भी घोटा सब २ घंटे घुटा फिर इकट्ठा कर गोली बांधी जो शुरूमें तो बिखरतीसी जानपडी मगर फिर पीछे धीरे २ दबानेसे ठीक बंधगई और नरम मालूम हुई, तब कपडेसे निचोडा तौ ४-५ बारमें ।-) भर पारा छनगया, बाकीकी गोली १ ≡) भर हुई =) भर छीजन गई, यह गोली खूब चमकदार थी मगर कडी न थी चुटकीसे दबानेसे टूट जाती थी और बंधी हालतमें भी इसपरसे पारेकी पिष्टी मक्खन रूपमें बहुत छुटती थी । पारा ठीक नहीं बँधा, रांग कम पडा किताबमें ज्याद: लिखा था ।

उपरोक्त क्रियाका दूसरी बार अनुभव ।

ता० २।३।०७-पुस्तकमें पारे और रांगकी तोल बराबर लिखी थी लेकिन खरलमें डालते समय पारा और रांग बराबर लेनेसे रांग बहुत ज्याद: जानपडा इस लिये उपरोक्त क्रियामें रांग थोडा लिया गया था. अनुभवसे गोली ठीक न बँधनेपर फिर दुबारा पारा और रांग बराबर लेकर लोहेके खरलमें १ छटांक नींबूके रसमें २ घंटे घोटागया (रांग और पारा थोडी देरमें मिलकर कडेपत्रसे बनगये उन्हींको दबादबाकर घोटागया) बादको निकाल कपडेमें दाब खूब जोरसे दबा गोली बनाली यह गोली चमकदार सफेद थी और उपरोक्त न्यूनांश रांगसे बनी गोलीसे अधिक कठिन थी, किन्तु पिष्टीरूप पारा थोडा २ इससे भी छुटता था, और रांगयोगसे ढालकर बनाई गई गोलियोंसे यह गोली बहुत कम सख्त थी मगर चिकनी बहुत ज्याद: थी (और तोलमें ३ रत्ती कम ।।।=) भर थी) । मेरी रायमें छलबेधसे बनी गोलियोंसे यह गोली उत्तमहै ।

नागवंग बद्ध पारद गुटिकाका अनुभव

(रस मानस पत्र ११ के अनुसार)

२ । ३ । ०७ आज २ तोले नाग और २ तोले बंगको मिट्टीके कूंडेमें रख चूल्हेपर चढा तेज आंच बालनी आरम्भकी, पिघल जानेपर समुद्रफलके चूर्णकी चुटकी देदेकर बबूलके सोटेसे घोटना आरम्भ किया, पहरभरमें सबकी भस्म न हुई, शाम होजानेसे अवशेष पतला ।।।) भर रांग और रंग निकाललिया, इसके अनंतर आध घंटे और अग्नि दीगई तदनंतर शकोरेसे ढकभट्टीपर छोड दिया, ५॥ छटांक समुद्रफलका चूर्ण इस क्रियामें पडा ।

ता० ३ । ३ के प्रात:काल कूंडेसे निकाल तोला गया तो ।।।) भर खाकी रंगतकी भस्म निकली इसमें छीजन बहुत हुई । इस ।।।) भर दवाको बारीक करनेके लिये पत्थरके खरलमें घोटागया तो ।।=)५ रत्ती भर हाथ आई और ६ रत्तीके अन्दाज खरलमें लगी रहगई उस खरलमें ।।) भर पारा डाल खाली घोटागया तो कोई नतीजा न निकला, पीछे अंदाजन आधी छटांक नींबूका रस डाल घोटागया तो पारा बिलकुल मूर्छित होगया, पिष्टीरूपमें न था पानीसे धो नितार कर नीबूके रसको दूर कियागया और फिर धूपमें खरलको सुखाया गया तो सूखनेपर कुछ पारा अपने रूपमें दखिपडा थोडी देर घोट कर निकाला तो ।) ३ रत्ती पारा निकल आया और २ रत्ती कम ।।) भर चूर्ण निकल आया, इसमें पत्थरका अंश शामिल होगया, पारेको कपडेमें छान तो सब छनगया कुछ बँधा नहीं ।

११ । ३ आज ।।) भर पारेको ४ रत्ती उपरोक्त भस्म डाल और थोडा २ मकोय रस डाल २ घंटे घोटागया तो पारा रवे रवे होगया किन्तु पूरी रीतिसे मूर्छित न हुआ, फिर ४ रत्ती और भस्म डाल और रस थोडा २ डाल २ घंटे घोटा गया तो पारा भली भांति मूर्छित होगया, पानी डाल, धो, नितार देखा तो भी पारा मूर्छित ही रूपमें था, उसको गोली बांधनेके लिये कपडेमें निचोडा तो पारा छन कर करीब ।=) भरके जुदा होगया बाकी कुछ रेतसा रहगया गोली न बंधी, इससे सिद्ध हुआ कि यह भस्म पारेको मूर्छित करतीहै पर गोली नहीं बांधती।

१२।३ आज थोडे पारेको शकोरेमें गर्म कर ऊपर ८ रत्ती यही भस्म डालथोडी देर चलाया तो भी कोई नतीजा न निकला, यह सब क्रिया निष्फल गई ।

पारद गुटिका अनुभव जसदयोगसे

(देशोपकारक समाचार पत्र ४ । ७ । ०६ के अनुसार)

१२ । ३ आज १ तोले पारेको १॥ तोले जसद चूर्णके साथ १ छटांक मुलहठीके आधपाव काढेमें ४ बजेसे ६

बजेतक घोटा तो पारा मिलकर अदृश्य होगया, दूसरे दिन—

ता० १३ । ३ को फिर उसी तरह ७ बजेसे ११ बजेतक घोटा तो कवढा खुश्क होकर पारेकी कजलीसी होगई ।

ता० १४ । ३ को उस कजलीमें आध पाव काले धतूरेका रस डाल ४ घंटे घोटा जब रस खुश्क होगया और पहले ही जैसा फिर कलजी रूपमें होगया तब खरलसे अलग कर कई बार धोया तो केवल जसद चूर्ण साही दृष्टि आनेलगा और तोलमें ॥) भर हुआ, उस चूर्णको कपडेमें जोरसे दवा गोली बांधी तो बहुत फुसफुसी और कमजोर बंधी जो जरा दबानेसे रेतसी होजाती थी, अर्थात् गोली न बँधी ।

ता० २५ को खरलको खुरचा तो उसमेंसे ।) चार आनेभर जस्त चूर्ण मिश्रित पारा और निकला, यानी सब (१ तोले पारा १॥ तोले जस्त चूर्ण) २॥ तोले वजनमें कुल ॥।) भर दवा हाथ लगी, बाकी पानीसे घुलगई । उपरोक्त ॥।) भर दवाको १ तोले पारेको साथ गोली बनानेकी गरजसे थोडी देर घोट कपडेमें रख जोरसे दवाया तो ।~) भर पारा छनगया और ॥≈) भर उस चूर्णमें मिलगया कुछ छीज गया, अर्थात् जो दवा ॥।) भर थी वह १।–) भर होगई =) भर छीजन गई, परन्तु गोली बनानेके काबिल अब भी न हुई, रेत साही रहा ।

उपरोक्त क्रियाका दूसरी बार अनुभव ।

ता० १५ । ३ आज ।) भर जसद चूर्ण और १) भर पारेको खरलमें १ घंटेतक घोटा तो दोनोंकी पिष्टी होगई पिष्टी हो जानेपर भी १॥ वा २ घंटेतक और घोटा फिर पिष्टीको जो खूब चिकनीपर खूब कडी भी थी इकट्ठा कर गोली बांध कपडेमें दवाया तो ≈) भर पारा छन गया, ॥।≡)॥ भरकी गोली बंधी ~)॥ भर छीजन गई तोलमें गडबडहै ठीक याद नहीं रही थी । यह गोली बहुत फुसफुसी और कमजोर थी इस लिये कपडेमें निचोडनेकी भांति बांध डोरेसे कस कर रख दिया ।

ता० १६ को कपडेसे अलग करदेखा तो गोली पहले दिनसे तो काठिन निकली परन्तु बहुत कम जोर थी झाडनेसे पारा इससे झरजाता था और रक्खी रहनेसे इस्में नीचेकी तरफ पारा इकट्ठा होजाता था इस वास्ते उंगलीसे चिकनानेसे कुछ साफ होगई, बादको इसको सख्त करनेके लिये—

ता० १६।३ को तीन पाव बिनौलों(को कूट ५सेर पानीमें औटा २॥। सेर काढा तय्यार कर छान) के काढेमें गोलीको दोलायंत्रमें २॥ बजेसे ६ बजेतक मंदाग्निसे औटाया गया, ऽ॥ सेर काढा रहजानेपर आंच निकाल ठंडा कर हांडीको उसी तरह चूल्हेपर रक्खी रहनेदिया ।

ता० १७ । ३ को गोलीको निकाला तो ऊपरसे सख्त और चमकीली निकली परन्तु पारेके रवे अब भी हाथसे छूटतेथे और रक्खी रहनेसे पारा नीचेकी तरफ अब भी झुल आता था और कुछ छूटकर जुदा होजाता था ।

१८ । ३ आज उपरोक्त गोलीको काले धतूरेके १ सेर रसमें दोलायंत्र कर २ घंटे औटाया रस सब जलगया तब गोली निकाली, गोलीमें कोई विशेष बात पैदा न हुई थी किन्तु नीचेकी तरफ पारा अधिक इकट्ठा होगया था जिसको झाड कर उंगलीसे चिकना साफ करदिया और गोलीको तोला तो ॥।) भर हुई ।

अनुभव ।

(१) जस्तसे गोली ठीक नहीं बंधती ।

(२) बिनौलेके काथसे औटाना कुछ सख्ती पैद करताहै ।

नं. १ पारदगुटिकाका अनुभव रजत योगसे ।

२६ । ७ । ०७–आज १॥ तोले मध्य शुद्ध पारद (वह पारद जो संस्कारके अनुभवोंमें शुद्ध हुआ और जिसका बोधन संस्कार भी हुआ) में ६ माशे चांदी चूर्ण और ताजी नींबूका थोडा २ रस डाल घोटा, २ घंटे घुटनेके बाद गाढा होना आरम्भ हुआ, ४ घंटे घोटनेसे खूब गाढा होगया बादको रात होजानेसे खरलमें नींबूका रस धो रख दिया इस समय भी गोली बंध सक्ती थीं किन्तु नरम रहती थीं ।

२७ । ७ । को थोडा नींबूका रस और डाल २ घंटे फिर घोटा तो सख्ती आगई और पारा टुकडे टुकडे होनेलगा, अत एव खूब धो गोली बनाली, बनाते समय यह गोली चिकनी और चमकदार थी १० मिनट पीछे ठीक गोल करनेके लिये दबाना चाहा तो दबती न थी, तोलमें २ तोले थी । इस गोलीके बनानेमें ६ घंटे घुटाई की गई और ४ तोले नींबूका रस डालागया, बनाते समय गोलीमें जो चमक थी सो २ प्रहरबाद न रही, भद्दापन और कुछ खुरखुरापन आगया जिससे जानपडा कि चांदीके चूरेके रवे पारेमें भली भांति लीन नहीं हुये ।

नोट–कदाचित् चांदीका भाग चतुर्थांशसे कुछ कम होता और अधिक कालतक घुटता तो यह खुरखुरापन न होता ।

ता० २८ । ७ को इस गोलीको गजभर उछाल कमरेके फरशपर गिराया तो न टूटी किन्तु जब छततक उछाला तो गिरकर टूटगई ।

उपरोक्त क्रियाका दूसरी बार अनुभव ।

२९ । ७ । ०७ पूर्वोक्त फूटी हुई गोलीको (जिसमें १॥ तोले पारद और ६ माशे चांदीका चूर्ण था) खरलमें पीस नींबूका रस और ६ माशे मध्य शुद्ध पारद और डाल घोटना आरम्भ किया, पारा डालते ही फौरन मिलगया, इस समय गोलीमें नरमी थी किन्तु २ घंटे घोटनेसे सख्ती आती गई, और खरलमें रिगडनेसे आवाज देनेलगी, पश्चात् ४ घंटे और घुटाई कर खरलके रसको पानीसे धो गोली बनाली जो तोलमें २ तो० ५ माशे हुई, १ माशे पारा खरलके सूक्ष्म गडहोंमें भरा रह गया. इस बार भी ४ तोले रस डाला गया और ६ घंटे घुटाई कीगई, खरलसे निकालते समय इसकी रंगत फीकी थी, गोली बनाते बनाते खूब

चमक आगई किन्तु रातभर रक्खा रहनेसे फिर पहलासा भद्दापन तो न आया किन्तु पारेकी चमक जाकर चांदीकीसी सफेद रंगत होगई।

नोट-जो खयाल ऊपर किया था वह ठीक हुआ, पारेसे चतुर्थांश चांदी चूर्णसे गोली १२ घंटे घुटाईमें अच्छी बनी।

आज ता० १ अगस्तको एक हांडीमें जिसमें १० सेरके करीब जल आता था, ६॥ सेर भैंसका कच्चा दूध भरदिया और गोलीको बारीक कपडेमें बांध उस पोटलीको डोरेसे बांध उस डोरेको शराब छिद्रसे निकाल एक छोटी लकडीसे बांध दोला कर दिया, इस प्रकार कि गोली हांडीके पेंदेसे २ अंगुल ऊंची रही फिर हांडीके ढकनेकी संधिपर कपरौटी कर दी और सरवेके ऊपरका छिद्र आटेसे बंद कर दिया, बादको १२ घंटे बहुत मंद आंच दी, कभी २ आंचकी कुछ अधिक गर्मी पहुंचनेसे ढके सरवेकी संधिमें ही दूध व भाफका पानी निकल जाता था, बादको जैसेका तैसा हांडीको गर्म चूल्हेपर रक्खा छोडदिया।

२।८ को खोला तो दूध तोलमें ३। सेर रहगया था गोलीको निकाला तो बहुत उज्ज्वल रंगकी निकली जिसमें मुँह दिखलाई देता था, तोलमें २ तोले ५ माशे ही थी विचार किया तो जानपडा कि, कुछ अंश पारेका गोलीपर झूलताहै, जो हाथसे छुटानेसे न छुटा किन्तु झटका देनेसे गिरपडा, गोलीको फिर तोला तो २ तोले ४॥ माशे हुई, जिससे जानपडा कि ४ रत्ती पारा पृथक् होगया, अब गोली में चमक तो है किन्तु इतनी नहीं जो मुख दीखै।

(१) नोट-इस पारेके झूलनेके २ कारण होसक्ते हैं (१) अग्नि कुछ तेज लगी हो, (२) चांदीकाअंश कुछ कमहो, (गालिबन पहलाही कारणहै, नहीं) चांदीका अंश कम होना ही कारण है पश्चात् अनुभवोंसे जानपडा कि चांदी अपनेसे तिगुने पारेको ही पूरा पकड सक्ती है।

(२) नोट-आज ५ अगस्तको गोलीको देखा तो सफाइ और चमक ज्योंकी त्यों थी और कपडेपर रगडकर देखातो कुछ, भी स्याही नहीं दी।

यह गोली बाबू उमरावसिंहके पिता (जिनकी अवस्था ५५ वा ६० वर्षकी होगी) को करीब १ महीने दूधमें इस्तैमाल कराईगई उन्होंने बयान किया कि इस गोलीके पीनेसे मुझको दस्त साफ हुआ, भूख अच्छी लगी, और कुछ ताकत मालूम हुई, वापिसी पर गोलीको देखा तो तोल पूरी थी खरखराहट बिलकुल रफै होगया था और खूब चिकनी होगई थी, मगर कुछ पिष्टी ऊपरसे फिसलने लगी थी।

(३) नोट-सिद्ध हुआ कि चांदीका भाग और अधिक होना चाहिये था ताकि दूधमें वारवार औटानेपर भी पिष्टीकी फिसलन पैदा न होती।

नं० २ पारदगुटिकाका अनुभव रजत योगसे।

३।८।०७-२ तोले मध्य शुद्ध पारदमें (जिसमें २॥ गुणा गंधक भी जारित हुआ था) ६ माशे चांदी चूर्ण और पानका ताजीरस थोडा २ डाल लोह खल्वमें घोटना आरम्भ किया, आज ६ घंटे घुटा और ६ तोले रस पडा, आज ५ घंटेकी घुटाईमें यह गोली बंधनेके काबिल गढा होगया था, किन्तु १ घंटे बाद इतनी सख्ती आगई जो रिगडके साथ आवाज देने लगा बादको ज्योंके त्यों रखदिया।

४।८ आज पारद पिष्टीको खूब धो साफ कर लिया, इस समय यह कठिनथी, और मिट्टीकी तरह टूटतीथी, और गोली नहीं बँध सक्ती थी, अत एव १ तोले पारद और मिला और ताजी पानका रस और डाल ९ घंटे घुटाई की और ९ तोले रस पडा, शामको खूब धो गोली बनाइ तो बँधगई किन्तु नरम रही, और इस गोलीके नीचेकी तरफ पारा झूलता था।

५।८ को ९ घंटे घुटाई की और ७॥ तोला रस पडा बादको खूब धो गोली बना रखदी गोली आजभी नरम बँधी किन्तु इतना अंतर पडा कि कल गोलीसे जो पारा झूल आता था आज नहीं झूलता।

६।८ को तप्त खल्वमें ११ घंटे घुटाई हुई और १२ छटांक रस पडा, शामको धो गोली बनाई आज भी गोली कलकी सीही नरम थी कोई विशेष अंतर न था, तोलमें इस समय ३ तोले ५ माशे थी, इस गोलीको गफ मारकीनमें निचोडा तो ५ माशे पारा छन गया बादको गोली और पारद पृथक् २ रख दिये।

७।८ के सबेरे गोलीको देखा तो कडी होगई थी जो चुटकीसे नहीं टूट सक्ती थी हथेलीके जोरसे दबाकर तोडी अतएव उस गोलीको और उस ५ माशे पारदको शीत खल्वमें डाल थोडे २ पानके रसके साथ घोटना आरम्भ किया शामतक ११ घंटे घुटी ८ तोले रस पडा धोकर गोली बांधी तो कलकी सीही नरम थी, कपडेमें दबाकर छाना तो ६ माशे पारा छुटगया, गोली और पारा जुदा जुदा रखदिये।

८।८ को गोलीको १२ तोले पानके रसके साथ शीत खल्वमें ९ घंटे घोटा (छना पारा अलग रक्खा रहने दिया) शामको धो गोला बनाई तो ६ माशे पारा छन जाने से गोली आज सख्त थी, आज फिर कपडेमें निचोडी गई तो करीब ३ माशेके पारा गोलीसे और अलग होगया, पानी इस समय गोलीकी तोल २ तोले ९ माशे रह गई।

९।८ को शीत खल्वमें ८ घंटे घुटाई हुई (छना पारा अलगही रक्खा रहा) ९ तोले पानका रस पडा, शामको धो गोली बांधली कपडेमें गोलीको निचोडा तो आजभी माशे डेढ मासे और पारा गोलीसे पृथक् होगया, बादको गोली रखदीगई आज गोलीको घुटते ७ दिन पूरे होगये।

१०।८ के सबेरे गोलीको फिर जोरसे निचोडा तो अब की बार भी माशे डेढ माशे पारा पृथक् होगया और गोली तोलमें सिर्फ २ तोले ५ माशे रहगई, सब निचोडा पारा ९ माशे ५ रत्ती हुआ, ३ माशे ३ रत्ती पारा और चांदी प्रति दिनके धोने और खरलके सूक्ष्म गढहोंमें समा-

NIRAÑJANAPRASĀDA GUPTA, Agravāla [1865-1909]

Pāradasaṃhitā. Agravālakulabhūṣaṇa Alīgaḍhanivāsī Bā. Niraṃjanaprasāda Guptena saṃgṛhītā ... VyāsopāhvaJyeṣṭhamallakāvyatīrthena manuṣyabhāṣāyām anūditā. [The Pāradasaṃhitā compiled by Nirañjanaprasāda Gupta, and translated by Jyeṣṭhamalla Vyāsa.] [Sanskrit and Hindī.] port.,illus., 2 ll., pp.32, 693, 3.

34cm. Bombay: Śrīveṅkaṭeśvara Steam Press. 1916.

The Hindī introduction gives a brief biography of the author.

JYESṬHAMALLA VYĀSA, of Jaiselmere see also
ALCHEMY, Texts: India: 19-20 cent.
JI 4
INDIA: Alchemy, Texts: 19-20 cent.

जानेसे छीजगया। आजही यह गोली पत्थरके फर्शपर पौन गज ऊंचेसे गिरकर टूटगई इस लिये टूटी गोलीको खरलमें आध घंटे खाली घोंटा तो नरमी आगई और फिर गोली बनगई जो तोलमें २ तोले ५ माशेही की हुई, ये गोली इस समय चमकदार है।

११। ८ के सवेरे गोलीको देखा तो उंगलीसे पोंछनेसे उपरसे पारा फिसलता था इस लिये जितना पारा उँगलीके जोरसे फिसल सका उस सबको जो १ माशेके करीव होगा एक तरफको इकट्ठाकर चाकूसे पृथक् करालिया फिसलनेवाला थोडा अंश रह भी गया, अन्दरसे गोली सख्त निकल आई।

१२। ८ को फिर गोलीको देखा तो बहुत थोडा अंश उंगलीके जोरसे फिसल सका जो रत्ती दो रत्ती होगा वह भी छुटा लिया गोली चिकनी चमकदार और सख्त है और तोलमें २ तोले ४ माशेहै (पारा छुटा हुआ १० माशे ४ रत्ती है) ३॥ माशेकी बनगई–

नोट–नींबूके रससे २ दिन घोटनेसे ६ माशे चांदीसे २ तोले पारेकी गोली ठीक बनगई थी, पानके रसमें ७ दिन घोंटनेसे ६ माशे चांदीसे केवल १ तोले १० माशे पारेकी गोली बँधी मगर पारा अधिक डाल देनेसे कुछ अंश चांदीका छनेहुये पारेमें भी चलागया इस लिये यही समझना चाहिये कि इस क्रियामें भी यदि आदिमें ही २ तोले पारा डाला जाता तो ६ माशे चांदी चूर्णसे २ तोले पारा बँध जाता। पानके रससे वा ७ दिन घोटनेसे पारा विशेष नहीं बँधा केवल इतना लाभ अवश्य हुआ, कि चांदी चूर्ण और पारा भली भांति मिलकर गोली खूब चिकनी बँधी।

अनुभव।

आगे जब कभी चांदी चूर्णसे गोली बनाओ तो १ भाग चांदीमें ४ भागसे अधिक पारा न दो, अधिक कडा करनेके लिये कुछ कम करसक्ते हो! पानी केवल ३ भाग वा ३॥ भाग पारा दो; और ३ दिनसे कम घुटाई न हो ५ दिन बहुत हैं इससे अधिक घुटाई व्यर्थ है।

ता० १३।८-को इस गोलीको देखा तो इसके ऊपरसे पारा बिलकुल न फिसलता था।

ता० २७।८ आज इस गोलीको ५ सेर दूधमें दोला यंत्रकर ४ प्रहरकी मंदाग्नि दी।

ता० २८।८ के सवेरे खोला तो गोलीने ५ रत्ती पारा छोड दिया था, जो कुछ कपडे पर मिला कुछ गोलीको झटका देनेसे जुदा हुआ, अब गोलीकी तोल २ तो० ३ मा. ३ र. है. और गोलीके ऊपरी भागपर कुछ फिसलन भी पैदा होगई है, (दूध ५ सेरका २॥। सेर रहगया) गोलीकी चिकनाई और फिसलन दूर करनेको गोलीको भांगकी ठंडाईमें डाल रखदिया, सवेरे देखा तो गोलीपरसे पिष्टीका फिसलना वंद होगया था, और जैसी दूधमें औटानेसे पहले सख्त थी वैसी ही फिर होगई।

गोलीका सेवन।

उक्त गोलीको आध सेर बाजारी औटे दूधमें हर रोज दोला कर १ घंटे नरम आंचपर १६ दिनतक शंकर सिपाहीको उसका दूध पिलाया तो उसने बयान किया कि मेरे पसलीके दर्द और कफको इसने फायदा किया, वदनमें कुछ फुर्ती मालूम देती है, भूख कुछ कम होगई, खुश्की भी मालूम होती है, इसने गोली पीनेके दिनोंमें श्राद्धोंमें नोते खाखा कर कुपथ्य किया, अत एव कुछ लाभ प्रतीत न हुआ (गोली हर रोज धो कर या कपडेसे पोंछ कर साफ करली जाती थी, किसी किसी दिन गोलीके कपडेपर कोई पारेका रवा मिलता था सो शायद अधिक गर्मी पहुंचजानेका कारण होगा) तोलमें गोली १ रत्ती कम होगई, इसी भांति–

ता० २।१० से १७।१० सन् ७ तक १६ दिन हरदेव कहारको पिलाया तो उसने कहा कि मुझे इसके सेवनसे दूध जो न पचता था पच गया, दस्त बँधा हुआ आया, स्वप्नमें वीर्यपात होजाना वंद होगया, शरीरमें फुर्ती मालूम होती है, चित्तमें प्रसन्नता रहती है १० दिन बाद जवानीकासा कामोद्दीपन हुआ, वाजीकर भी है किन्तु खुश्की अधिक करती है शिरमें कुछ नशासा रहा और नींद ज्यादः आई, १३ दिन पीनेके बाद खानेकी सब चीजें कडवी मालूम होने लगीं, पीकर छोड देनेके ३ दिन बाद उसने कहा कि गर्मी और नशा हलका पडगया है परन्तु खानेकी चीज अबभी कडवी मालूम होती हैं, किन्तु मुँहका जायका कभी कडवा न हुआ था, इन दिनोंमें कबज भी न हुआ अलबत्ता तर माल खानेको दिल चाहता रहा जो मुझे यथारुचि न मिले रोटी वगैरः खाना मुझे स्वादिष्ट न लगता था इन १६ दिनोंमें भी किसी किसी दिन परमाणुरूप पृथक् हुआ पारद गोलीके कपडेपर मिलता था इसीसे गोली २ रत्ती और कम होकर २ तोले ३ माशेकी रह गई (गोलीसे पारदका पृथक होना केवल तेज आंचका देना निश्चय हुआ)।

ता० २१।११ को इस गोलीपर पारा झूलता नजर पडा झटका देदिया तो १ रत्ती पारा पृथक् होगया, अब गोलीकी तोल १ रत्ती कम २ तोले ३ माशे है।

नं० ३ पारदगुटिकाका अनुभव रजतयोगसे।

१२।८ आज १०॥ माशे पारद (यह ढाई गुण बालजारित और मध्य शुद्ध है पिछली गोलीके निचोडनेसे निकला और जिसमें पूर्वोक्त गोलीके ऊपरी नरम भागको कई बार खुरच २ कर दो दो माशे डालदिया था) और २ माशे ३ रत्ती चांदी चूर्ण दोनोंको लोह खलवमें तुलसीका स्वरस डाल २ घोटा, २॥ घंटेमें पारा बिखरगया पहलीसी पिट्ठी न रही, मगर घोटना जारी रक्खा, शामतक यानी सब ५॥ घंटे घुटनेके बाद धोकर देखा तो गोली न बंधती थी बिखर जाती थी, रंगत मैली जस्तकीसी थी कपडेमें दबा गोलीसी बना रखदी जो तोलमें १ तोले ३ रत्ती थी।

१३।८ के सवेरे देखा तो कडी होगई थी, हाथसे जोरसे दबानेसे भी टूटती न थी, मगर खुरखुरी थी अत एव २

माशे पारद और डाल नींबूके स्वरसके साथ २ घंटे घोटा-गया तो फिर भी कुछ मालूम हुई इस लिये २ माशे पारा पारद और डाल नींबूके स्वरसके साथ २ घंटे घोटागया तो फिर भी कुछ मालूम हुई इस लिये २ माशे पारा और डाल ४ घंटे घोटा शामको धो गोली बनाली, ये गोली इस समय चमकदार किन्तु नरम बनी, तोलमें १ तोले ३ माशे है।

अनुभव।

यदि चांदीमें इतना पारा डाला जाताहै जिससे खल्वमें पिष्टी होजाती है, तो फिर गोली नरम बनती है, कडी गोलीके लिये इतना पारा डालाजावे जिससे पिष्टी नहो किन्तु टूटकसा रहे, टटक तिगुना पारा डालनेसे रहताहै।

१४।८को देखा तो गोलीके ऊपरसे पारद पिष्टी फिसलती थी, इसको जुदा न कर वैसेका वैसा ही रक्खा रहनेदिया।

२१।८आज देखा तो गोली वैसी ही नरम थी अर्थात् पिष्टी ऊपरसे बहुत फिसलती थी इस दोषके दूर करनेके लिये एक छोटा चांदीका वरक गोलीपर चढादिया तो चढगया और तीसरे दिन देखा तो गोलीके ऊपर कोई फिसलनेवाला अंश न रहाथा।

ता० १६।९ को ऽ॥ सेर औटे गर्म दूधमें इस गो-लीको दोलायंत्र कर १॥ घंटेतक भूभलपर रक्खा रहने दिया।

ता० १७ के सवेरे देखा तो कोई २ तो रवा पारेका गोलीसे स्वतः ही पृथक् हुआ कपडेपर पाया और कुछ बडे बाजरेके बराबर झटका देनेसे पृथक् होगया, गोलीमें नरमी आगई पिष्टी ऊपरसे फिसलने लगी इससे ज्ञात हुआ कि गोलीमें चांदीका अंश कम रहा अत एव एक चांदीका वर्क गोलीपर और चढादियागया, गोलीको अब फिर तोला तो ३ रत्ती कम होगई, वरक चढानेसे सूरत तो वन जाती है पर दूधकी गरमीसे चमडी टूट जाती है।

तारीख १६ दिसंबरसे २६ फर्वरी तक ४० दिन यह गोली ईश्वरदासजीके पिताको दूधके साथ इस्तैमाल कराई गई तो इसमें कुछ चमक बढगई थी शायद पीछेके दिनोंमें किसी दिन आंच तेज लगगई हो तोला गया तो २ तोले २ माशे कीहुई, ५ रत्ती घटगई।

नं० ४ पारद गुटिकाका अनुभव रजत योगसे।

१४।८ को २ तोले साधारण शुद्ध पारदको छोटी कढाईमें रख मंदाग्नि दी, और साथ साथ ही पोस्तके पा-नीका चोया (जो पोस्तके सूखे १ छटांक टोडोंको सेर १॥ सेर पानीमें शामको भिगो निकाला गया था) देना और ।।) भर चांदीके पोले जडी नीमकी लकडीसे घोटना आरम्भ किया, ६ घंटेतक इसी तरह कामचला, करीब २ सेरके पोस्तका पानीपडा शामको ठंडाकर धो पारेको नि-काल देखा तो उसमें गाढापन आगया था, जो रत्ती दो रत्ती पारा लकडीके पोलेपर लिपटगया था वह अधिक गाढा होगया था तोल इस पारदको इस समय २ रत्ती कम २तोले थी।

१५।८ के सवेरे इस पारदको छान कर देखा तो गाढे अंशकी चनेके बराबर गोली बनगई, बादको उस गोलीको उसी पारेमें मिला उपरोक्त विधिसे चोयादेना और घोटना आरम्भकिया, ३ घंटे बाद १ छटांक पोस्तका १ सेर २ छटांक पानी पडचुकने पर कढाईको उतार पारदको धो तोला तो १ तोले ९ माशे६ रत्ती हुआ (२ मा० छीजगया) आज पारद कलसे अधिक गाढा होगया था, किन्तु छानने पर गोली ५ माशे ३ रत्ती ही की बँधी १ तोले ४ माशे ३ रत्ती पारा छनगया. ये गोली अलग रखदी।

१६।८ को फिर उपरोक्त बिधिसे ४ घंटे कामचला १ छ० पोस्तका १ सेर १० छ० पानी पडा, दो पहरको धो पारेको तोला तो १ तोले ४ माशे ३ रत्ती हुआ, छानागया तो २ माशे २ रत्तीकी गोली बनगई और १ तोले २ माशे १ रत्ती पारा छनगया दोनों गोली मिला एक गोली ७ माशे ५ रत्तीकी करली, लकडीसे उस ।।) भर चांदीके पोलेको निकाला तो उसमें पारा जज्ब होगया था और चांदी उसकी कमजोरसी होगई थी, तोलमें ६ रत्ती कम होगई थी।

१७।८ को उपरोक्त विधिसे ५ घंटे काम चला १ छटांक पोस्तका २ सेर पानी पडा, शामको कढाई उतार ठंडा कर धो तोला तो १ तोले १ माशे ५ रत्ती पारा मौजूद था छान गोली बनाई तो २ माशेकी गोली बनगई बाकी ३ रत्ती कम १ तोला पारा छनगया, इस गोलीको उपरोक्त ७ माशे ५ रत्तीकी गोलीमें मिला ९ माशे ५ रत्ती की करली, पहली गोली कडी होजाती थी उनपर यह ताजी बंधा पारा चढादिया जाताथा।

१८।८ को फिर चांदीके पोलेको तोला तो ।≈) रत्ती का हुआ किन्तु इसमें पारेका भी अंशथा उसको दूर कर-नेके लिये इस पोलेको गलाकर तोला तो ।) ७ रत्ती चांदी बैठी अर्थात् २ माशे चांदी पारेमें मिलजानेसे घटगई फल यह हुआ कि माशे चांदीसे ९ माशे ५ रत्तीकी गोली बनी यानी पंचमांश चांदी हुई अर्थात् १ भाग चांदीसे ४ भाग पारा बंधा यही औसत मर्दनसे बंधी गोलियोंका पडा है इस गोलीके बनानेमें ४ दिनमें ६ प्रहर कामचला प्रतिप्र-हरमें १॥ माशेसे कुछ अधिक पारा बँधनेका औसत पडा, ये गोली मामूली चमकीली बनी किन्तु ऊपरसे कुछ पारद पिष्टी फिसलती है, और गोलियोंसी चिकनी नहीं है, कुछ खुरखुरी है, खुरखुरे होनेका कारण यह है कि कढाईमें खल्वकासा मर्दन नहीं हुआ पारा मर्दनसे ही ठीक मिलता है।

२२।८ आज गोलीको ऊपरसे कुछ अधिक नरम देख उसपर १ चांदीका वरक चढादिया तो चढगया और तीसरे दिन देखा तो गोलीपर फिसलनेवाला कुछ अंश न रहा।

नं० ५ पारदगुटिकाका अनुभव तारभस्मसे।

१३।३।५–आज १ तोले पारेमें १ माशा कुश्ता

चांदी डालकर घोटा गया तो कोई नतीजा मालूम नहीं हुआ, फिर मकोय (जो रसार्णवमें वद्धक वर्गमें है) का रस डाल घोटा गया तो पारा गाढा होगया, फिर १ माशा कुश्ता चांदी और डालकर घोटा गया तो पारा जमगया धो कर मकोयका रस जुदाकर गोली बांधलीगई गोली नरम चलती हुई, और चमकती हुई बनी, तोलमें १ तोला थी कुछ छीजन भी गई थी।

२० । १० इस गोलीको कपडेमें धरकर दबायागया तो कुछ पारा जुदा होगया फिर उस छने पारेको ४ तहमें छाना तो कुछ लुगदी और निकली जिसको गोलीमें मिलादिया, इसी तरह दो तीन बार कियागया, फिर लुगदी छाननेसे न निकली जिससे ज्ञात हुआ छाननेसे ग्रासित धातु पारेसे जुदा होजातीहै (पातन गालन व्यतिरेकेन) अब यह गोली कुछ कडी बनगई, इसको पहरभर नींबूके रसमें डूबारक्खा तो कुछ सख्ती बढी, तोलमें ॥=) भर है।

नं० ६ पारदगुटिका अनुभव नाइट्रिट सिलवरसे।

२० । १० । ०५–आज २ पैसेभर पारेको ४ रत्ती नाइट्रिट आफ सिलवर डालकर खरलमें घोटागया तो कोई नतीजा जाहर नहीं हुआ, फिर मकोयका रस डाल घोटागया तो पारा और नाइट्रिट मिलकर कुछ गाढापन हुआ, फिर ६ रत्ती नाइट्रिट और डाला रस और डाल घोटा तो पारा पिष्टीरूप होगया. पानीसे धो निकाला गया तो सफेद चमकदार बनगया, इसको एक तह कपडेमें छानागया तो एक पैसेसे बहुत कम गोली बैठी और पारा १ पैसे ४ रत्तीभर हुआ, फिर दो हरे और चौहरे कपडेमें छानागया तो और गोली बैठी, आखिरमें गोली ९ रत्ती कम १ पैसेभर और पारा ५ रत्ती कम १ पैसेभर बैठा, यानी १४ रत्ती पारा और १० रत्ती नाइट्रिटका वजन घटगया यह पानीमें मिलगया पानीको बार बार नितारा और धोया गया कुछ हाथ न आया, यह गोली नाइट्रिटकी चांदीके कुश्तेकी बराबर कडी न बनी।

पारदगुटिकाका अनुभव लोहभस्मसे।

अर्थात् १ अगस्त सन् १९०७ के अखबार अलकीमियांमें छपी हकीम अब्दुलकरीमवाले अकसीरी फौलाद भस्मसे (जो २॥ रुपये माशेपर मगवाई) उनकी पत्रद्वारा बताई क्रियाके अनुसार पारद गुटिकाका अनुभव ।

२४ । ९ । ०७ को १ तोले सामान्य पारद और १ माशे उपरोक्त लोह भस्मको २ नीबूके २॥ तोले रसके साथ ६ घंटे शीत खल्वमें मर्दनकिया, पारा लोहभस्मसे पृथक् रहा, जब रस सूखगया और चिपकाहट पैदा होजानेसे हाथ रुकनेलगा तब पारदको पृथक् करलिया जो ११ माशे ३ रत्ती हुआ, फिर आतिशी घरियामें भूभलपर १५ मिनट रख ठंढाकर कचीकी मारकीनमें छाना तो सब पारद छनगया कपडेमें कुछ न रहा (खरलको सुखा भस्मको पृथक कर तोला तो ४ माशे हुई इस भस्ममें ५ रत्ती पारद और बाकी यानी १॥ माशेके करीब नीबूका अंश समझना चाहिये)।

२८ । ९ को उक्त ४ माशे भस्मको दीवलोंके संपुटमें रख ३ सेर कंडोंकी आंच देदी तो पूरी १ माशे रहगई।

नोट–पारदने लोह भस्मको नहीं चरा और न चरना सुगम है, क्रिया झूंठी रही।

स्वर्णमयी पारद गुटिकाका अनुभव ।

२७ । १२ । ०७ को अष्ट संस्कार युक्त और बिजौरेसे दीपित ४ माशे पारद और १ रत्ती कम ४ माशे स्वर्णका कुंदन जिसको कैंचीसे कतर कर तिलसदृश टुकडे आरम्भ कर लिये गये थे दोनोंका मृदु तप्त खल्वमें जंभीरी रसके साथ ९ बजेसे मर्दन करना आरम्भ किया, १५ मिनटमें पारद और स्वर्ण मिलकर कठिन और चमचोड होगये जो घुटाईमें न आनेलगा, इस कारण आध घंटेबाद ४ माशे पारद और डाल घोटा किन्तु तब भी ठीक काम चलता न समझ ४ माशे और डाल दिया, अर्थात् १ तोला पारा डाल कडे हाथसे घोटना आरम्भ किया, १ घंटे घुटजानेपर स्वर्ण और पारद नरम पिष्टीरूपमें होगये और घुटाई ठीक चलनेलगी, बादके ज्योंज्यों घुटाई होतीगई पिष्टी चिकनी होतीगई, ५ बजे घुटाई बंदकर खरलसे पिष्टीको निकाल धो गोली बनाई तो बहुत ढीली गोली बनी और तोलमें १ तोले ४ माशे हुई रात भर रहनेके बाद सबेरे गोलीको देखा तो गोलीमें कुछ कठिनता न मालूम हुई, अत एव कलकीसी ही तरह रही।

आज ता० २८ । १२ को ८॥ बजेसे मृदु तप्त खल्वमें जंभीरी रसके साथ मर्दन करना आरम्भ किया, ११॥ बजे उस पिष्टीको खरलसे निकाल धो तोला तो १ तोले ४ माशे हुई बादको कैंचीकी मारकीनमें उक्त गोलीको निचोडा तो ४ माशे ३ रत्ती पारा छन गया और ३ रत्ती कम १ तोले पिष्टी रहगई, उक्त ४ माशे ३ रत्ती पारदको फिर दुबारा छाना तो २ रत्ती पिष्टी और निकली जो उसी पिष्टीमें मिलादी गई और बाकी ४ माशे १ रत्ती पारद पृथक् रखदिया सब १ रत्ती कम १ तोले पिष्टीको १२ बजेसे उसी प्रकार फिर घोटना आरम्भ किया, शामके ५ बजे खरलसे पिष्टीको निकाल धो कपडेमें निचोडा तो ९ रत्ती पारा और छनगया, अर्थात् अब केवल १० माशे ६ रत्तीकी पिष्टी रहगई और ४ माशे ७ रत्ती पारा छनगया, ३ रत्ती छीजगया, उक्त पिष्टीकी गोली बनाई तो श्वेत उज्ज्वल और चमकदार चांदीके रंगकी बनी, और कठिन भी अच्छी थी।

२९ । १२ को गोलीके ऊपर उँगली फेरनेसे उसके ऊपरसे पिष्टी फिसलने लगी अत एव उसी प्रकार मृदु तप्त खल्वमें गोलीको डाल जंभीरी रसके साथ८॥बजेसे घोटना आरम्भ किया, १० बजेपर खरलसे रस निकाल –)॥ फी वरकके हिसाबके २२ वरक सोनेके जो तोलमें ४ रत्तीकेथे एक एक कर डालते गये और घोटते गये जिसमें पिष्टीमें कठिनता आती गई, सब वरक पड चुकनेपर फिर जंभीरीका रस डाल घोटा

१२ बजेतक पिष्टीमें अधिक कठिनता आजानेसे दरदरी होगई, और बिखर गई घोटनेसे खरलमें आवाज देनेलगी, शामके ५ बजे चूर्णरूप पिष्टीको धो कपडेमें रख जोर जोरसे दबा गोली बनाली और नखसे घिस घिस कर गोल चिकनी करली, कल नरम पिष्टीकी गोलीमें जैसी चमक थी उतनी इसमें न आई ईटकी चांदीकासा रंग रहा।

३०।१२ को गोलीको तोला तो ११ माशे २ रत्ती हुइ (जिसमें ६ माशे ४ रत्ती पारद और ४ माशे ४ रत्ती स्वर्ण समझना चाहिये) (इस गोलीसे निकला पारा जो तोलमें ४ माशे ७ रत्ती हुआ था स्वर्णग्रासयुक्त पारदमें मिलादिया गया, इस गोलीके बनने बनानेमें ३ दिनमें २४ घंटे घुटाई हुई १ बोतल रस जंभीरी खर्च हुआ)।

३१।१२ को इस गोलीको ३ सेर दूधमें दोला कर १० बजेसे ७ बजेतक ३ प्रहर मंदाग्नि दीगई, बाद ७ बजेके चूल्हेसे उतार तिपाईपर रख २ बजे राततक स्पिटलैम्पकी आंच दी, सबेरे गोलीको निकाला तो गोलीमें बहुत चमक पैदा होगई थी सूर्यके सन्मुख करनेसे सूर्य्यके प्रतिबिंबको देती थी चिकनापन भी विशेष था किन्तु गोलीके ऊपरसे किंचित् पिष्टी फिसलती सी मालूम होती थी, तोल गोलीकी इस समय १ रत्ती कम ११ माशे रही, ३ रत्ती कम होगई।

१।१।०८ को गोलीको भांगकी ठंडाईमें डाल रखदिया, दूसरे दिन रातको ठंडाई समेत ओसमें रखदिया।

३।१ को निकाल धो पोंछ देखा तो गोलीकी चमक बदस्तूर मौजूदथी और गोलीके ऊपरसे पिष्टीका फिसलना कम होगया था,फिर भी बहुत थोडा बाकी था।

२२।१ को इस गोलीको दूधमें औटाकर स्वयं पीना आरम्भ किया तो पहलेही दिन ५ रत्ती पारा गोलीसे छूटकर नीचे पतीलीमें गिरगया, इसका कारण यह जानपडा कि चांदीकी पतीलीमें दूध थोडा होनेसे गोली पेंदेसे बहुतही कम ऊंची रही थी और इसी सबब आंचकी तेजीसे गोलीसे पारा छुटगया, अब गोलीकी तोल १० माशे ४ रत्तीहै और रंगत गोलीकी बिलकुल फीकी सफेद होगई चमक बिलकुल जातीरही, इस गोलीको देरतक हाथसे चिकनाया तो चमक तो न आई किन्तु कुछ उजलापन आगया और कुछ चिकनीभी होगई।

२९।८।०८ को उक्त चांदी सोनेकी सब गोलियोंक देखा तो चांदीकी गोलियोंमें कोई बिकार न था किन्तु इस सोनेकी गोलीके ऊपर कालोंछसी हो रही थी झटका दिया तो बडे बाजरेके बराबर इससे पारा पृथक् होगया फिर उस पृथक् हुये पारदको उसीमें लगा चिकनाया तो बहुत उज्ज्वल और चमकदार होगई।

पारदगुटिकाका अनुभव धतूरतैलसे।

१।०८ को पूर्वोक्त १०॥ माशे पारेमें उसीकच्छपयंत्रका निकला १॥ माशे पारा और मिला।

५।१।०८ को १ तोले पारदको (जो कच्छप यंत्रमें गंधक जारण करते समय गंधकमें मिलगया था और फिर जिसे पातनद्वारा निष्कासित किया था) लोह खल्वमें डाल थोडा २ धत्तूर तैल डाल १ बजेसे मर्दन करना आरम्भकिया, २ घंटे मर्दनसे कुछ पारा मिला, तैलमें जबतक पतलापन रहताथा पारेके रवे विखरसे जातेथे और जब उसमें गाढापन आता था तो पारा इकट्ठा होनेलगता था, ५ बजेपर घुटाई बंद करदीगई, आज ४ घंटे घुटाई हुई (२। तोले तेल पडा)

६।१ के ८ बजेसे धत्तूर तैलके साथ फिर घुटाई आरम्भ हुई, आज पारद कलसे अधिक मिलगयाथा, किन्तु ३ बजे बाद और तैल डालना बंद करदिया तो ४ बजेतक तैल सूखगया और पारद पृथक् होगया, तैल सूखकर ऐसा चमचोड होगया, जो घुटाई न होसकी अत एव घुटाई बंद कर खरलको रखदिया (आज ८ घंटे घुटाई हुई और ४। तोले तैल पडा) . १० माशे ४ रत्ती पारा पृथक् हुआ मिला और ८ माशे ४ रत्तीकी तेलकी चमचोडसी गोली हुई।

नोट–पीछे जानपडा कि ये तेल ठीक न था अधिकांश इसमें पानीका था।

उपरोक्त क्रियाका दूसरी बार अनुभव।

ता० ८।९ को पूर्वोक्त १०॥ माशे पारेमें उसी कच्छपयंत्रका निकला १॥ माशे पारा और मिला पूरा १ तोले कर खरलमें डाल और १ छटांक धतूर तैल जिसमें पानी तथा एक बार मेंही डाल दोनोंको ९॥ बजेसे मर्दन करना आरम्भ किया ½ घंटे घोटनेके बाद तैल गाढा होनेलगा और पारा मिलकर अदृश्य होगया, ११ बजे घुटाई बंद करदी फिर ४॥ बजेसे ५ बजे तक ½ घंटे और घोटा, तेल होकर शहदसा होगया था (आज केवल २ घंटे घुटाई हुई)।

९।१ को ८ बजेसे फिर घोटना आरम्भ किया तैलमें गाढापन और चिपट बढती गई, ११ बजेतक घोटा फिर ४॥ बजेसे ५ बजेतक १ घंटे और घोटागया (आज ३॥ घंटे घुटाई हुई)।

१०।१ को ८ बजेसे घुटाई आरम्भ हुई तैलमें गाढापन और भी बढगया, ५ बजे घुटाई बंद करदी गई (आज ९ घंटे घुटाई हुई)।

११।१ को ८ बजेसे रातके ८ बजेतक १२ घंटे घुटाई हुई, गाढापन विशेष न बढा. ता० १२ और १३ को घुटाई बंद रही।

१४।१ को १० बजेसे घुटाई आरम्भ हुई, गाढपनमें कुछ अंतर न मालूम हुआ ५ बजे घुटाई बंद करदी (आज ७ घंटे घुटाई हुई)।

१५।१ को ८ बजेसे रातके ८ बजेतक (१२ घंटे घुटाई हुई) गाढापन और चिपक और बढगई जिससे घुटाई कुछ कठिन होनेलगी।

१६। १ को २ तोले ३ माशे तैल खरलमें और डाला जिसके डालनेसे पहला सा́ही पतला होगया दिनके ८ बजेसे रातके ८ बजेतक (१२ घंटे घुटाई हुई)।

१७। १ कोभी १२ घंटे घुटाई हुई।

१८। १ को ८ बजेसे १० बजेतक और ४॥ बजेसे ५॥ बजेतक ३ घंटे घुटाई हुई।

१९। १ को ८ घंटे घुटाई हुई।

२०। १ को उसे काफी गाढा होता न समझ पूर्व अनुभवकी निकली ८ माशे ५ रत्तीकी चमचोड गोलीको भी (जिसमें १॥ माशे पारा और ७ माशे धत्तूर तैलका अंशथा) इसीमें मिला ८ बजेसे घोटना आरम्भ किया, इस गोलीके डालनेसे तैलमें कुछ गाढापन आगया था, आज ७ बजे राततक ११ घंटे घुटाईहुई।

२१। १ तक ९१ घंटे घुटाई होचुकनेपर भी और ७ माशेकी गोली डाल देनेपर भी जलौका (जोंक) रूप होता न देख १ छटांक धत्तूर तैलका जल इस वास्ते डाल दिया कि इस जलमें कोई पदार्थ ऐसाहै जो घोटनेसे घनरूप होजाताहै जैसा कि पहले गोली बंधजानेसे सिद्ध है, यह तैल जल शीघ्र न मिला, (आज ८ घंटे घुटाई हुई)।

२२। १ को देखा तो दहीसा गाढा होगया था किन्तु चिपक न थी, जानपडताहै कि धूप न निकलनेसे और शीत अधिक पडनेसे तैल और जल मिलकर जम गयेथे, आज ३ बजेसे ५ बजेतक २ घंटे घुटाई हुई।

२३ को भी २ घंटे घुटाईहुई।

२४ को १० बजेसे घुटाई आरम्भ हुई २ बजेपर १ छटांक धत्तूर तैल जल औरडाल दिया गया जिससे दहीसा फिर होगया, ४ बजेतक ६ घंटे घुटाईहुई।

२५ को ६ घंटे घुटाईहुई।

२६ ×० +०

ता० २७ को १ घंटे घुटाईहुई।

ता० २८ को ४ घंटे घुटाई हुई।

ता० २९ को सवेरे देखा तो कुछ कडा और चमचोड होगया था, घुटाई करनेसे हाथ पर ज्यादः जोर पडताथा, अत एव खरलको शीशेके बकसमें रख धूपमें रखदिया, ३ बजे निकाला तो ये पतला होगया था ३ बजेसे घुटाईकी तो नरम घुटाई होनेलगी (आज २ घंटे घुटाईहुई)।

ता० ३० को ६ घंटे घुटाई हुई फिर रातको शीशेके बकसमें रख ओसमें रखदिया।

ता० ३१ के सवेरे देखा तो इसमें कठिनता मालूम हुई, मूसलीको उसपर जोरसे दबा उठानेसे जितना चिपट खिंच आताथा वह ज्योंका त्यों जोंककी तरह लगारहता था अत एव खरलसे उसको निकालना चाहा तो हाथोंसे कडुआ तेल मल उसकी गोली बनाई तो बनगई, जो तोलमें ५ तोले १ माशे हुई (इसमें १ तोले १॥ माशे पारा और ७ तोले ३ माशे तैल और १६ तोले ६ माशे तेल जलहै और १२८ घंटे अर्थात् ५ दिनरात और ८ घंटे घुटाई हुई है) बादको १/२ छटांकके करीब उर्दके आटेकी कटोरी सी बना उसमें उस गोलीको रख चारों तरफसे बंद कर चिकनादिया और उसके ऊपर इतना दोहरा सूत लपेटदिया जिससे गोला कुल ढकगया।

ता० १। २ को उर्दके पतले आटेका एक लेप करीब २रुपयेभर मोटा उक्त गोलेपर और चढा सीरकमें रखदिया।

ता० २। २ को धूपमें सूखता रहा, जहां कहीं लेप तश्तरीसे चिपटकर खराब होगया वहां और लेप लगा ठीक कर दिया।

३। २ को एक पतला लेप उसीके ऊपर और कर शीशेके बकसमें रख सुखादिया ४+५। २ को सूखता रहा।

६। २ को देखा तो लेप चटक गया था इस वास्ते दरारोंपर लेप कर चिकना शीशेके बकसमें रख धूपमें रखदिया, ४ बजे देखा तो फिर लेप चटक गया था उसकी फिर दरजबंदी करदीगई, ता० ९ तक धूपमें सूखतारहा।

ता० १०। २ को उर्दके आटेका एक पतला लेपकर उसपर थोडा दुहरा सूत लपेट सूतके ऊपर एक पतला लेप और कर शीशेके बकसमें रख धूपमें सूखनेको रखदिया।

ता० ११+१२। २ को धूपमें सूखता रहा।

ता० १३ को शीशेके बकसमें रख धूपमें सूखनेको रख दिया, लेप चटक जानेके कारण शामको दर्ज बंदी करदीगई।

ता० १४ को सीरकमें रक्खा रहा, शामको दर्जबंदी करदी।

ता० १५। २ के सबेरे तडखी हुई जगहपर बहुत हल्का लेप करदिया, बादको कढाईमें जिसमें २० सेरतक तैल आसक्ताथा १० सेर कडुआ तैल भर उसमें उस गोलेको डाल ९ बजेसे भट्टीपर आंच देना आरम्भ किया जिसकी गर्मी निम्न लिखित नकशेके अनुसार दीगई।

नकशा

तारीख	घंटा	दर्जागर्मी	विशेषवार्ता—
१५।२।०८	९ बजे	+	आंचआरम्भकीगई—
	१० बजे	११० नं.	
	११ बजे	१८५ नं.	इसमें पूरी ठीक सिकी इससमय१ मोटी लकडीकी आंचथी।
	१२॥ बजे	१४५ नं.	
	२ बजे	१३५ नं.	
	३ बजे	१५२ नं.	
	५ बजे	१६५ नं.	१पतली लकडीकी आंच।
	५॥बजे शाम	१९० नं.	
	७ बजेरात	९७० नं.	
	८ बजे	१६५ नं.	
	९ बजे	१८७ नं.	
	१०बजे	१८७ नं.	
	१॥बजेरात		थरमेटरन डाला, गोला तेलके ऊपरतैर आयाथा
१६।२।०८—	७बजेप्रातः	१८७ नं.	
	९ बजे	२०८ नं.	
	१०बजे	२०८ नं.	

तारीख	घंटा	दर्जागर्मी	विशेषवार्ता-
	११बजे	२०५ नं.	
	१२॥ बजे	२१४ नं.	इस समय १ पूरी सेकी तो कलसे कुछ जल्दी सिकी अर्थात् पूरी सिकने लायक तैलकी गर्मी काफीथी ।
	२ बजे	२१० नं.	
	३ बजे	२१० नं.	
	४ बजे	२१५ नं.	
	४॥बजे	२१५ नं.	
	५ बजे	२१२ नं.	
	७॥ बजेरात	१८२ नं.	
	९ बजे	२०४ नं.	
	९॥बजे	२०५ नं.	
	१ बजेरात	२२० नं.	
१७।२।०८-	६ बजेदिन	२१० नं.	
	८ बजे	२१६ नं.	
	९ बजे	२१५ नं.	
	१०बजे	२२५ नं.	
	११बजे	२२८ नं.	
	१ बजे	२४० नं.	आज पूरीसेकी तो बहुत जल्दी सिकी ।
	२ बजे	२४० नं.	
	३ बजे	२२० नं.	
	४ बजे	२३० नं.	
	५ बजे	२१५ नं.	
	९ बजे	२२३ नं.	
	९॥बजे	२१२ नं.	
	२ बजेरात	२५० नं.	
१८।२।०८-	८ बजेदिन	२३८ नं.	
	९ बजे	२३० नं.	
	१०बजे	२२० नं.	
	११बजे	२३५ नं.	
	१२बजे	२४० नं.	
	२ बजे	२३७ नं.	
	३ बजे	२३० नं.	
	४॥बजे	२२९ नं.	
	५ बजे	२३५ नं.	
	९ बजे	२२५ नं.	
	२ बजेरात	२५५ नं.	
१९।२।०८	६ बजेप्रातः	२४२ नं.	
	८ बजे	२४२ नं.	
	९ बजे	२४५ नं.	
	१०बजे	२५० नं.	
	११बजे	२४३ नं.	
	१२॥ बजे	२४५ नं.	
	२ बजे	२५५ नं.	
	४ बजे	२४० नं.	
	७ बजे	२४८ नं.	
	२ बजेरात	२५० नं.	आज तैलपर मलाई पडगई थी
१९।२।०८-	६ बजेप्रातः	+	कामबंद करदिया गया।

गोला तैलमें पडते ही नीचे ही बैठगया था, १० बजे तैलमें थरमामेटर डाला तो ११० दर्जेकी गर्मी थी, गोलेपर झाग उठ रहे थे यानी सिक रहा था ११ बजे जब १ मोटी लकडीकी आंच लगरही थी, और तेलमें १८५ नं० की गर्मी थी तब उसमें एक पूरी सेकी तो भली भांति सिकगई, इस समय तैलकी गंध तमाम कोठीमें फैल रही थी, कडाहीमें झाग भी बहुत थे आहिस्ता आहिस्ता ये झाग कम होते गये १२॥ बजे १४५ नं. की गर्मी थी २ बजेपर गर्मी और कम होकर १३५ नं. तक रहगई कारण कि इस समय १ पतली लकडीकी आंच लगरही थी गोला इस समय पेंदेसे अधर मालूम होने लगा था, आंचकी गर्मी बढाई गई शामके ५॥ बजे १९० तक थी रातको भी करीब २ शामकीसी ही आंच लगती रही, १० बजे बाद थरमामेटर न डाला, गोला कुछ और अधर मालूम होनेलगा, रातके १॥ बजेतक गोला बिलकुल तैलके ऊपर पूरीकी तरह सिकनेलगा था, तैल घटा न दीखपडा ।

१६।२ के ९ बजेसे आंचकी गर्मी और बढाकर २०० से कुछ ऊपरतक करदीगई १२॥ बजेपर तैलमें २१४ नं. की गर्मी थी तब एक पूरी सेकी तो कलकी बनिस्वत जल्दसिकी गोला इस समय भी सिकरहा था और कुछ हलका होकर ज्याद: दीखने लगा था और स्वतःही जब तब घूमने लगता था, किन्तु गोलेके नीचेके भागमें बोझ अधिक होनेसे घूम चुककर ऊपरका नीचे न होता था ज्यों का त्यों नीचेका भाग नीचे और ऊपरका ऊपर रहता था, नीचेका भाग पककर काला होगया था और ऊपरका भाग रुपयेके बराबर कुछ सफेदसा दीखता था, रातके ९॥ बजेतक करीब २ ऐसी ही आंच लगी, १ बजे रातके २२० नं. की गर्मी मिली, गोला खूब सिकरहा था, कढाहीमें धूआं खूब निकल रहा था, तैल घटा न मालूम हुआ ।

१७।२।०८ को तैलकी गर्मी और बढाकर २२५ तक करदीगई थी १ बजेपर जब तैलकी गर्मी २४० नं० थी तब पूरीको सेका तो बहुत जल्द सिकी, इस समय भी गोला सिक रहा था, तमाम कडाहीमें धूंआ उठरहा था तैलका रंग काला पडगया था किन्तु घटा न था, रातको आंच ऐसी ही लगती रही, रातके २ बजेपर कुछ गर्मी बढकर २५० तक पहुंचगई थी बादको कुछ कम करदी ।

१८।२ को आंचकी गर्मी २४० तक रक्खीगई, तैलमें खूब धुआं उठता था, गोला अब बहुत कम सिकनेलगा था, गोलेके ऊपरका भाग जो सफेद था वह काला होकर सबका एक रंग होगया था, रातके २ बजेपर २५५ नं. की गर्मी मिली, बादको २५० से नीची रही ।

ता. १९।२ को भी कलकीसी ही तैलमें गर्मी रक्खी गई, ८ बजे देखा तो तैलमें धुआं कुछ अधिक उठता दीखपडा, १२॥ बजे तैलमें जब २४५ नं. की गर्मी थी तब कडाहीमेंसे कलछीसे थोडा तैल निकाल ठंढाकर देखा तो उसमें साधारण तैलकी बनिस्वत गाढापन और चिपक बहुत बढ गई थी, और कढाईमें कुछ घटा भी मालूम

होता था रातके २ बजे देखा तो तेलमें मोटी मलाईसी पडगई थी।

२०।२ के सबेरेके ६ बजेतक ये मलाई और मोटी होगई और तैलमें बहुत झाग उठनेलगे और फिर तैल अग्निको न सहसका अर्थात् आंच देनेसे झाग एक साथ ऊपरको आते थे अत एव तैलके कढाईसे बाहर निकल जानेके भयसे ६ बजे काम बंद कर दिया, और कढाईको गर्म चूल्हेपर रक्खी छोडदिया।

२१।२ को देखा तो तैल और अधिक गाढा शहदसा होगया था, और ऊपरकी मलाई भी और मोटी और चिपकनी होगई थी, गोलेको निकाल खोला तो अन्दर उसके केवल तैल ही निकसा जिसको निकाल रखदिया, न पारद की गोली मिली न पारद पृथक् रूपमें मिला या तो पारद उस तैलमें मिलाहुआ होगा जो गोलेके अन्दरसे निकला या पारद गोलेके अन्दरसे निकल कुल कढाईके तेलमें मिलगया या कढाईके तेलसे भी निकल हवामें उडगया।

(१) नोट–अनुभवसे ज्ञात हुआ कि तैल औटानेसे वडी तीव्र गंध दूरतक फैलती है और २–३ दिनतक जब-तक कि तैल खूब नहीं पकजाता रहती है फिर बंद हो जाती है।

(२) नोट–यह भी ज्ञात हुआ कि सर्षपतैल धीरे २ बढाकर २५० नं. तककी अग्नि सहसक्ता है।

(३) नोट–गोलेपर उर्दके आटेका लेप सूखनेपर फटता ही जाता है इस लिये इसमें कच्चा तागा बारीक और कतरा हुआ मिलालिया जावे तो शायद न फटे।

रसोंमें घोट पारेकी कच्ची गुटिका बनानेके अनुभव (मूषाकर्णीसे)

२५।१०।०५ पारेको मूषाकर्णीके रसमें (और कुछ पत्ते भी डालेगये) घोटा गया तो ३ घंटेमें गाढा होनेपर गोली बंध गई मगर कुछ देर घोटकर खुश्की आनेपर पारा छुट-गया, फिर रस डाल घोट मुलायम गोली बांध लीगई, कुछ पारा फिर भी निकल आया, ये गोलियां धूपमें सुखाई गई तो रोज पारा छूटछूटकर जुदा होता जाता था, इससे पूरी तरह साबित है कि जडीसे गोली बंधना असंभव है सिर्फ बाजी जडी ऐसी हैं जिनके रसमें पारा घोटनेसे मिलजाता है मगर सूखनेसे फिर जुदा होजाता है।

(गेंदेके फूलसे)

७।१२।५ गेंदेके फूलोंके रसमें घोटनेसे पारद बहुत शीघ्र मिला परन्तु इकट्ठा और गाढा होने पर मूषाकर्णी कीसी ही दशाहुई।

बंबूलपुष्पसे।

आज ता० २० । ८।०७ को पारेको बबूलके फूल और कलियोंके साथ लोहेके खरलमें घोटा तो पहले तो पारा मिलजाता था किन्तु घोटतेमें ही खुश्की आजानेपर पारा पृथक् होनेलगता था, अत एव पानीका छींटा देदेकर घोटा और तरीहीकी हालतमें गोली बांधी तो बंधगई ये गोलियां आधी धूपमें और आधी सीरकमें सुखादीं शामको देखा तो इन गोलियोंके ऊपर पारेके रवे दीखते थे वजनमें ये गो-लियां हलकी थीं चूंकि इनमें पारेका अंश कम और फूलोंका अधिक था।

ढाककी जडके रससे।

२६।१०।०७ को ६ माशे पारदको खरलमें डाल ढाककी जडकी छालका रस थोडा २ डाल ४ घंटे घोटा तो जब रसमें कुछ गाढापन आताथा तो पारदके रवे कुछ बिखर जाते थे किन्तु जब और अधिक गाढा होजाता था, तो पारा इकट्ठा होने लगताथा, बस और कोई विशेष बात पैदा न हुई, अन्तमें पारेको धोकर निकाला तो ५ माशे ३ रत्ती पारा निकल आया, ५ रत्ती छीज गया।

नोट–इस क्रियासे पारदका मूर्च्छित होना संभव नहीं जानपडा।

केलेके रससे।

१४।१।०७ आज २ तो० पारेको केलेके रसमें १ प्रहर निरंतर मर्दन कियागया तो बारीक रवे होकर मिल-गया परन्तु रात भर रक्खे रहनेसे रस सूख जानेपर खरल की मूसली चलाते ही पारा फिर इकट्ठा होगया और पूरा २ तोले निकल आया।

पारेको बांधना गंगाराम सुनारकी क्रियासे।

(जो निष्फल हुआ–)

ता० ५।९।८ को १ तोले संखियेको खरलमें डाल बारीक कर २ तोले पारा उसमें डाल थोडी देर घोटा बाहको केलेकी एक गहर पकी हुई डाल तीनों चीजोंको ९॥ बजेसे घोटना आरम्भ किया, संखिया और पारा घोटनेसे न मिला जब उसमें गहर पिस गई तब मिलगया किन्तु २–२– घंटे घुटनेके बाद जब गाढा हुआ तो पारा पृथक् होनेलगा तब फिर आधी गहर और डालदी और २॥ घंटे और घोटा थोडी खुश्की आनेपर थोडा थोडा पारा फिर पृथक् दीख पडा किन्तु वैसेको ही इकट्ठा करलिया।

ता० ६ को ताम्रके छोटे संपुटमें (जो तोलमें २ तोले ४ माशे था) उस दवामेंसे आधी दवा (इस संपुटमें इतनी ही समाई) को रस लोहेके तारसे (जो पहले आंचमें खूब तपालिया था) कस उसको संधिपर केवल मुलतानी लगा सुखा १॥ सेर आरने कंडोंकी आंच गर्तमें देदी, ३ घंटे बाद संपुटको निकाला तो आंचकी तेजीसे संपुट गलगया था एक ओरको एक छिद्र होगया था ऊपरका तार पिघले हुए ताम्रमें गडगया था, चोटसे संपुटको खोला तो कोई सफेदचीज निचले संपु-टमें चिपटी हुई थी जिसका संपुटसे पृथक् करना कठिन हुआ, सुनारने टाकीसे निकाला तो २ माशे निकला तो संपुटको तोला तो १ तोले २ रत्ती रहगया, ५ माशे ६ रत्ती घटा गंगारामने कहा अग्नि तीव्र लग जानेके कारण ठीक अनुभव न होसका अत एव पुनः उक्त अवशेष दवाको

उसी सदृश दूसरे ताम्र संपुटमें जो तोलमें२ तोले ५रत्ती था फिर उसी प्रकार तारसे कस संधिपर मुलतानी लगा १ सेर कंडोंके दहेरकी आंचदी ।१॥ घंटे बाद निकाला तो ये संपुट भी एक ओरको थोडा गलगया था, खोलागया तो कोई श्वेत वस्तु उसमें चिपटी हुई मिली जो पतली पापडी सीथी, संपुटको उलटाकर झाडनेसे सब दवा निकल आई तोला गया ३ मा० ३ र०दवा निकली संपुटको तोला तो १ तोले ९माशे ३ रत्ती हुआ, ३ माशे २ रत्ती घटगया, दोनों बारकी निकली ५ माशे ३ रत्ती वस्तुमेंसे ५ माशेको घरियामें रख सुहागा डाल १/२ घंटे धोंका तौ तैकर उसकी डली बंध गई उतार नीचे रक्खा तो घरियामेंसे धुँआ निकलने लगा बादको पानी डाल ठंढाकर उस डलीको तोला तो ४ माशे २ रत्ती हुई, ६ रत्ती कम होगई ये डली ऊपर पारेकी सी अर्थात् श्वेतरंगकी थी तोडनेसे भीतर भीतर जसदकीसी रंगत थी, इस डलीको चोट दी तो टूटगई उसके ६ रत्तीके टुकडेको पीस परीक्षाके लिये २० फीसदी शोरेके तेजाब और ८० फी सदी पानीसे बने सोल्यूशनमें डाल रखदिया तेजाबका रंग हरा होगया तेजाबके नितारनेपर कोई चीज नीचे न मिली (अर्थात् सब हल होगया)

ता० ८ को उक्त डलीके २ माशेके टुकडेको घरियामें रख १५ मिनट कडा धोंका तो गलगया गलजानेपर भी धोंका तो डलीसी बनगई, उसको ठंढाकर घरियासे पृथक् करना चाहा तो न होसकी अत एव जब फिर सुहागा डाल कडा धोंका तो फिर पिघल गया पिघल जानेपर उतार ठंढाकर घरियासे निकाल तोला तो १ माशे ५ रत्ती रहगई, ३ रत्ती घटगई अब इसकी रंगतमेंसे सफेदी घटगई थी थोडा और धोंकनेसे बिलकुल ताम्र रह जाता अनुमानसे इस २ माशेमें १ माशेसे अधिक ताम्र बैठेगा।

सम्मति-गंगारामने कहा कि मैं संखियेके योगसे पारदको बांध दूंगा जो आंच पर चक्कर खायगा किन्तु फूटक रहेगा, अनुभवसे सिद्ध हुआ कि बहुतसा पारा उडकर केवल थोडा पारा ताम्रयोगसे संपुटमें चिपटा रहजाता है जिसमें ताम्रका आधेसे अधिक अंश रहता है, और उसी को ये गँवार बँधा पारद समझलेते हैं, ये सुनार मालदार था इस लिये इसकी बातपर विश्वास कियागया था, आगेसे शास्त्रहीन पुरुषोंकी बातपर विश्वास नहीं करना चाहिये।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्ज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया भाषाटीकायां स्वानुभूतगुटिकादिनिरूपणं नामाष्टात्रिंशोऽध्यायः ॥ ३८ ॥

रससेवनाख्यसंस्काराध्यायः ३९.

प्रारम्भश्लोक ।

मूर्च्छां गतो यो हरते च रोगान्बद्धो यदा खेचरतामुपैति ॥ लीनो भवेत्सर्वसमृद्धिदायी विराजतेऽसौ नितरां रसेन्द्रः ॥ ॥ १ ॥ (योगरत्नाकर.)

अर्थ-मूर्च्छाको प्राप्त हुआ जो पारद सो रोगोंको नाश करताहै और बंधनको प्राप्त हुआ पारद समस्त समृद्धिका दाता है, उस रस राज पारदकी सदा सर्वदा जय होगी ॥ १ ॥

अन्यच्च ।

मूर्च्छित्वा हरति रुजं बंधनमनुभूय मुक्तिदो भवति । अमरी करोति हि मृतः कोऽन्यः करुणाकरः सूतात्॥२॥(यो. र.)

अर्थ-यह पारद मूर्च्छित होकर रोगको हरताहै और बंधनको पाकर मुक्तिका दाताहै तथा मराहुआ पारा मनुष्यको अमर करताहै इस कारण पारदके सिवाय और कौन दयालु है ॥ २ ॥

रसप्रशंसा ।

नौषधं पारदादन्यन्न देवः केशवात्परः । न वैद्यादपरो बंधुर्न दानादपरो विधिः ॥ ॥ ३ ॥ (र. रत्ना.)

अर्थ-पारदके अतिरिक्त ओर दूसरी कोई औषधि नहींहै और श्रीकृष्णके भिन्न दूसरा देवता नहींहै, वैद्यके सिवाय दूसरा कोई बंधु नहींहै और दानदेनेके सिवाय दूसरी कोई विधि अच्छी नहींहै ॥ ३ ॥

गुणसंख्या ।

तारे गुणाशीति तदर्धकान्ते वंगे चतुष्षष्टि रवौ तदर्धम् । हेम्नः शतैकं गगने सहस्रं वज्रे गुणाः कोटिरनंतसूते ॥ ४ ॥(यो. चिं.)

अर्थ-चांदीमें अस्सी गुण, लोहेमें चालीस, वंगमें चौसठ तांबेमें बत्तीस सुवर्णमें सौ अभ्रकमें हजार, हीरेमें एक करोड और पारदमें अनंत गुण हैं ॥ ४ ॥

पारदगुण ।

असाध्यो यो भवेद्रोगो यस्य नास्ति चिकित्सितम् । रसेन्द्रो हंति तं रोगं नरकुञ्जरवाजिनाम् ॥ ५ ॥ (वा. बृ.)

अर्थ-मनुष्य, हाथी और घोडे प्रभृतिका जो असाध्य रोग है और जिसका कोई इलाज नहीं होसक्ता उसको पारद शीघ्रही नाश करदेताहै ॥ ५ ॥

अन्यच्च ।

शुष्केन्धनमहाराशिं यद्वद्दहति पावकः । तद्वद्दहति सूतोयं रोगान्दोषत्रयोद्भवान् ॥ ॥ ६ ॥ (रसमंजरी.)

अर्थ-जिस प्रकार सूखेहुये इंधनके ढेरको अग्नि जला देती है उसी प्रकार यह पारद तीन दोषोंसे पैदाहुये रोगोंको नाश करदेता है ॥ ६ ॥

अन्यच्च ।

देहस्य शुद्धिं कुरुते च पारदो नानागदानां हरणे समर्थः । करोति पुष्टिं हरते च मृत्युं कल्पायुषं चापि करोति नूनम् ॥ ७ ॥ (योगचिंता., नि. र.)

अर्थ–अनेक रोगोंके नाश करनेमें समर्थ पारद मनुष्योंकी देहकी शुद्धिको करता है, पुष्टिको करता है मृत्युको दूर करता है और एक कल्पतक आयुकी वृद्धि करता है॥७॥

और भी ।

पारद विद्यावंत करि, सिद्धि भयो जो होय । सर्व रोगको जीत तन, पुष्ट, करतहै सोय ॥ तथा भलीविधितें करै, देह लोहकों सिद्ध । पारदको जु प्रताप यह, वरन्यो मुनिन प्रसिद्ध ॥ (वैद्यादर्श.)

पारदके गुण तथा अनुपान ।

पारदः सकलरोगपारदो राजयक्ष्मशरणैकपारदः । सर्वरोगमपहन्ति तत्क्षणात्रागवल्लिरसराजभक्षणात् ॥ ८ ॥ (नि. र.)

अर्थ–समस्त रोगोंसे पारकरनेवाला और राजरोगका एक ही नाशकर्ता पारद पानके साथ भक्षण करनेसे समस्त रोगोंको शीघ्र ही नाश करताहै ॥ ८ ॥

पारदगुणाः ।

पारदः सकलरोगहा स्मृतः षड्रसो निखिलयोगवाहकः । पंचभूतमय एषकीर्तितस्तेन तद्गुणगणैर्विराजते ॥ ९॥ (वै. कल्प., आ. वि., बृ. यो., र. सा. प., श. क., रा. निं., रसामृत.)

अर्थ–सब रोगोंका नाशक जिसमें छहों रस विद्यमानहैं, सब योगोंका चलानेवाला यह पारद पांच महाभूतोंका रूप वर्णन कियागयाहै इस कारण वह पारद उनके गुणोंसे विराजमान होरहाहै ॥ ९ ॥

अन्यच्च ।

पारदः षड्रसः स्निग्धस्त्रिदोषघ्नो रसायनः । योगवाही महावृष्यः सदा दृष्टिबलप्रदः ॥ सर्वामयहरः प्रोक्तो विशेषात्सर्वकुष्ठनुत ॥ ॥ १० ॥ आ. वें. वि., वा. बृ. भि., श.क.)

अर्थ–पारद छहों रसवाला, चिकना, त्रिदोषघ्न, रसायन, समस्त योगोंमें खपनेवाला, महावृष्य, सदा नेत्रोंके बलका दाता, समस्त रोगोंका नाशक और विशेषकर कोढका नाशक कहाहै ॥ १० ॥

पारदके सामान्य गुण–भाषा ।

पारद षट रसजुक्त है, चिकनो हरै त्रिदोष । करै रसायन कर्म अरु, करै पुष्ट तन पोष, । करै दृष्टिको पुष्ट बल, योगवाहि गुन जान । मेल करै सब रसनतें, सर्व कुष्ठ करि हान ॥ (वैद्यादर्श.)

अन्यच्च ।

रसायनं त्रिदोषघ्नं योगवाह्यतिशुक्रलम् । सूतभस्माखिलातंकनाशकं त्वनुपानतः ॥ ॥ ११ ॥ (नि. र.)

अर्थ–पारद भस्म रसायन और त्रिदोष नाश कारक योगवाही वीर्यका बढानेवाला अनेक अनुपानोंसे सम्पूर्ण रोगोंका नाशक है ॥ ११ ॥

अन्यच्च ।

सकलामयजिद्रसायनः स्यात्कृमिकुष्ठाक्षिसमीररोगहारी । रसषट्कयुतोथ योगवाही रसराजो गदितः स पंचबाणकारी ॥ ॥ १२ ॥ (र. प.)

अर्थ–पारा सब रोगोंका जीतनेवाला और रसायनहै, कृमि, कोढ, नेत्ररोग और वातरोगका नाशकर्ताहै । छहों रसोंसे मिलाहुआ योगवाही (जो प्रत्येकयोगमें मिलकर औषधिकी शक्तिको बढावे) तथा कामदेवको उत्पादक है ॥ १२ ॥

अन्यच्च ।

पारदः कृमिकुष्ठघ्नो जयदो दृष्टिकृत्सरः । मृत्युहृच्च महावीर्यो योगवाही जरापहः ॥ ॥१३॥ स्मृत्योजोरूपदो वृष्यो बुद्धिकृद्धातुवर्धनः । षंढत्वनाशनः शूरः खेचरः सिद्धिदः परः॥१४॥ (वैद्यक., आयु. वे. वि.,श क.)

अर्थ–पारद कृमि कोढका नाशक, विजयका दाता, नेत्ररोगोंका नाशक और दस्तावरहै । मृत्युका हरनेवाला, महाताकतवर, योगवाही और बुढापेको दूर करनेवालाहै । स्मृति (याद्दाश्त) ओज (सब शरीरसे धातुको इकट्ठा करनेवाला पदार्थ) और रूपका दाता है, तथा वृष्य, बुद्धि और धातुका बढानेवालाहै, नपुंसकताका नाशक और खेचरी सिद्धिका दाताहै ॥ १३ ॥ १४ ॥

मारित तथा मूर्च्छित पारदका सामान्यगुण ।

कुष्ठ हरै कृमिकों हरै, हरै मृत्युको जोग । जराजोर नाशन करै, दृष्टि देत नैरोग ॥ कह्यो योगवाही तथा, महासुवीर जवान ।

बुद्धि रूप अरु ओजको, वर्द्धित करै निदान॥ रसरक्तादिक धातु सब, तनमें करै हमेश। काम बढावे अरु करै, मोपे देह विशेष॥ शूर वीरताकों करत, हरत षंढतागोत। खेचर गतिकी सिद्धता, प्रगट देहमें होत॥ मारित अथवा मूर्च्छित, पारदके गुन एह। सकल रोग हरिके करै, निर्मल अतिही देह॥ पंच भूतमय जानिये, या पारदको रूप। ध्वस्त करै जयको करै, रणमें सदा अनूप॥ जो औषधि जा रोगकी, हरता ताके संग। दे पारद नर गजतुरंग, रोग कीजिये भंग॥ (वैद्यादर्श.)

रसगुण।

रसो रसगणैर्युक्तः शोधितो भस्मसात्कृतः॥ त्रिदोषशमनः कामवर्द्धनः सर्वरोगहृत्॥ ॥ १५ ॥ कामिनीदर्पदलनः सुधास्पर्धी सुवर्णकृत्॥ चक्षुष्यः स्मृतिदो बल्यो रूपदः कृमिकुष्ठहा ॥ १६ ॥ जरामरणजाड्यघ्नो योगवाही वरांगने ॥ दहत्यग्निस्तृणानीव धातुस्थानामयान्रसः ॥ १७ ॥ (अनु० तरं.)

अर्थ-शुद्ध तथा भस्म कियाहुआ पारद छओं रसोंसे युक्त त्रिदोषको शान्त करनेवालाहै, कामके बढानेवालाहै, समस्त रोग तथा स्त्रीके दर्पको नाश करताहै, अमृतके साथ स्पर्धा करनेवाला और सुवर्णके बनानेवाला होताहै नेत्रोंके लिये हितहै स्मृति रूप और बलके देनेवालाहै कृमि, कोढ, बुढापा, मृत्यु और जडताका नाश करनेवाला है हे पार्वती जिस प्रकार अग्नि घासको जलादेता है उसी प्रकार यह पारद धातुगत दोषोंको नाश करता है१५-१७॥

अन्यच्च।

सूतः षड्रसयुक् त्रिदोषशमनः सर्वामयध्वंसकृत् कान्ताकामविमर्दनोऽतिबलकृत्स्पर्द्धी सुधायाः शिवः। चक्षुष्यः स्मृतिरूपदो मरणहृद्वार्धक्यजिद्बुद्धिकृत् षांढ्यघ्नः कृमिकुष्ठहा कनककृत्संयोगवाही सरः॥ १८॥ र. सा. प.)

अर्थ-इस श्लोकका अर्थ उपरोक्त तीन श्लोकोंके समान समझना चाहिये॥ १८॥

रससेवनफल।

रसवीर्यविपाकेषु विद्यात्सूतं सुधामयम्। सेवितोऽसौ सदा देहे रोगनाशाय कल्पते॥ ॥ १९ ॥ (रसमंजरी.)

अर्थ-जिस प्रकार अमृतमें रस, वीर्य और विपाक आदि गुण विद्यमान हैं उसी प्रकार वे गुण पारदमें भी उपस्थित हैं वह भक्षण कियाहुआ पारद रोगोंके नाश करनेके लिये समर्थ है॥ १९॥

अन्यच्च।

बुद्धिः प्रज्ञा बलं कांतिः प्रभा चैव वयस्तथा वर्धते सर्व एवैते रससेवाविधौ नृणाम्॥ ॥ २० ॥ (रसमञ्जरी., रसेन्द्र. सा. सं., र. रा. सुं.)

अर्थ-रससेवा करनेवाले पुरुषके बुद्धि, स्मृति, बल, कांति और आयु ये सब बढते हैं और बढतेहुए ये सब आपसमें एक दूसरेकी स्पर्धा करते हैं॥ २०॥

अन्यच्च।

देहं जरावलीहीनं कांतियुक्तं महाबलम्॥ सर्वरोगैः परित्यक्तं कुरुते रसनायकः॥ २१ ॥ (र. पा.)

अर्थ-रसनायक अर्थात् पारद मनुष्योंके देहको बुढापेसे रहित, कांतियुक्त, अत्यन्त बलवान् और सब रोगोंसे रहित करता है॥ २१॥

अन्यच्च।

वलीपलितनिर्मुक्तो मृत्युहीनो भवेन्नरः॥ जायते मन्मथाकारो नरोपि प्रमदारतः॥ २२ ॥ रसायने हि निर्दिष्टं प्रायशो रससेवने॥ बुद्धिप्रजाबलं कांतिं प्रभावेण यथा बहिः॥ २३॥ वर्द्धन्ते सर्व एवैते रससेवाविधौ नृणाम्॥ आरोग्यं लघुता सौष्ठवं रुचिर्गुर्वन्नजीर्णता॥ रोगनाशश्च वृष्यश्च सततं रससेवनात्॥ २४॥ (र. रत्ना.)

अर्थ-मनुष्य पारदके सेवन करनेसे वली और पलित करके रहित होता है, मृत्यु करके रहित होता है, स्त्रियोंका प्यारा, कामदेवके समान रूपवाला होता है, प्रायः रस सेवन करनेसे मनुष्योंकी बुद्धि, प्रजाबल, कांति ये सब बढते हैं और वह सूर्यके समान प्रभाववाला होता है और पारदके सेवनसे शरीरकी नीरोगता, फुर्ती, सुन्दरता होती है तथा अन्नपर रुचि, गुरु पदार्थका जीर्ण (हज्म) होना, रोगका नाश और शरीरमें अनंतबल होता है॥२२-२४॥

सदोष पारदसेवन निषेध।

सदोषं सूतकं चैव दापयेन्न कदाचन॥ तैर्युक्तं रोगसंघातं कुरुते मरणादिकम्॥ २५ ॥ (र. पा.)

अर्थ-दोषसंयुक्त पारदको कभी नहीं दिवावे क्योंकि उन

दोषोंसे मिलाहुआ पारद रोगोंके समूह तथा मृत्यु प्रभृतिको भी करता है ॥ २५ ॥

अन्यच्च ।

अशुद्धसूतो न गुणान्विदध्याद्द्याद्विदाहक्रिमिकुष्ठरोगान् ॥ मंदत्वमग्नेररुचिं वमिं च जाड्यं मृतिं तन्वति सेवतां चेत ॥ २६॥ (र. पा.)

अर्थ–अशुद्ध पारद गुण नहीं करता है परन्तु विदाह, कृमि, कोढ, रोगोंको करता है । अग्निकी मंदता, अरुचि, वमन और मृत्युको भी करता है ॥ २६ ॥

अन्यच्च ।

संस्कारहीनं खलु सूतराजं यः सेवते तस्य करोति बाधाम् ॥ देहस्य नाशं विदधाति नूनं कुष्ठान्समग्राञ्जनयेन्नराणाम् ॥ २७ ॥ (यो. चिं., र. रा. सुं., वाच. बृ., नि. र., श. क.)

अर्थ–जो मनुष्य विना संस्कृत (शुद्ध) कियेहुए पारेको भक्षण करते हैं पारद उनके शरीरमें दुःखको करता है, देहको नाश करता है और कुष्ठ आदि समस्त रोगोंको करता है ॥ २७ ॥

किन २ चीजोंसे बद्धपारदको रसायन और कल्पमें त्यागे ।

नागवंगादिभिर्बद्धं विषोपविषबंधितम् ॥ मूत्रशुक्रहठाद्बद्धं त्यजेत्सूतं रसायने ॥२८॥ (र. चिं., नि. र., टो. नं.)

अर्थ–सीसे तथा राँग आदिसे बंधेहुए, विष और उपविषसे बंधे हुए, मूत्र तथा वीर्यसे हठात् (जबरन) बँधे हुए पारदको रसायन कर्ममें त्याग देवे ॥ २८ ॥

शुद्धपारदगुण ।

शुद्धस्सूतस्सर्वरोगापहर्ता संयोगवाही वृषवह्निकर्ता ॥ स शुद्धिमायाति यथा यथायं तथा तथा यात्यमृतत्वमेतत ॥ २९ ॥ (र. प.)

अर्थ–शुद्ध कियाहुआ यह पारद सब रोगोंका नाशक योगवाही और अग्निका कर्ता और वह पारद जितना २ शुद्ध किया, जायगा उतना उतना ही अमृतके समान होता है ॥ २९ ॥

मृत और मूर्छित पारदफल ।

शुद्धः स्यात्सकलामयौघशमनो यो योगवाही मृतः ॥ युक्त्या षड्गुणगंधयुग्गदहरो योगेन धात्वादिभुक् ॥ ३० ॥ (योगरत्ना.)

अर्थ–शुद्ध पारद सम्पूर्ण रोगोंका नाशकर्ता है, मृत पारद योगवाही होताहै और युक्तिसे षड्गुण गंधकजारित पारद बुभुक्षित और मृत्युनाशक होता है ॥ ३० ॥

अन्यच्च ।

जरामरणदारिद्र्यरोगनाशकरो मृतः ॥ मूर्च्छितो हरते व्याधीन् रसो देहे चरन्नपि ॥ ३१ ॥ (र.रत्ना.)

अर्थ–मृत पारद बुढापा, मौत और दरिद्रतारूपी रोगको शीघ्र ही नाश करता है और इस देहमें खायाहुआ मूर्च्छित पारा सब रोगोंको नाश करता है ॥ ३१ ॥

पारदकी मूर्छितादि ३ दशाओंका फल ।

मूर्च्छितो हरते व्याधिं बद्धः खेचरतां व्रजेत्॥ सर्वसिद्धिकरो नीलो निश्चलो मुक्तिदायकः ॥ ३२ ॥ (यो. चिं.)

अर्थ–मूर्च्छित पारद व्याधिको नाश करता है, बद्ध खेचरी गतिको देता है और मृत सर्वसिद्धिका दाता है तथा यही पारद चंचलता रहित हुआ मुक्तिको देता है ॥ ३२ ॥

अन्यच्च ।

मूर्च्छातो गदहृत्तथैव खगतिं दत्ते निबद्धोऽर्थदस्तद्भस्मामयवार्धकादिहरणं दृक्पुष्टिकांतिप्रदम् ॥ वृष्यं मृत्युविनाशनं बलकरं कान्ताजनानन्ददं शार्दूलातुलसत्त्वकृत्क्रमभुजां योगानुसारि स्फुटम् ॥ ३३ ॥ (र. रा. सुं., नि. र., यो. र.,र. रा. सुं.)

अर्थ–मूर्च्छित पारद रोगका नाशक, और बद्ध हुआ पारद आकाश गति तथा अर्थका दाता है और उसी पारदकी भस्म रोग, बुढापेको नाश करनेवाली है तथा नेत्रोंमें पुष्टि और कांतिको देती है तथा यह पारद भस्म वृष्य, मृत्युका नाश करनेवाली, बल कर्ता, स्त्रीजनोंको आनंदकी दाता, शेरके समान पुरुषार्थको देनेवाली और योगवाही है ॥ ३३ ॥

अन्यच्च ।

मारितो देहसिद्ध्यर्थं मूर्च्छितो व्याधिनाशने ॥ रसभस्म क्वचिद्रोगे देहार्थे मूर्छितं क्वचित् ॥ बद्धो द्वाभ्यां प्रयुंजीत शास्त्रदृष्टेन कर्मणा ॥ ३४ ॥ (रसमंजरी, र.सा.प.)

अर्थ–देहसिद्धिके लिये मारित पारदहै, और मूर्च्छित पारद रोगके नाश करनेके लिये है अथवा कहीं रोगनाशके लिये रसभस्मका तथा देहसिद्धिके लिये मूर्च्छित पारदका भी प्रयोग करते हैं और शास्त्रका ज्ञाता वैद्य रोगनाश और

देहसिद्धि इन दोनोंके लिये बद्धका प्रयोग करे तो भी उत्तम है ॥ ३४ ॥

मूर्छितादितीन दशाओंका प्रयोग ।

मूलिकामारितं सूतं सर्वरोगेषु योजयेत ॥ जारितो मारितः सूतो जरादारिद्र्यरोगनुत ॥ ३५॥ मूर्च्छितो व्याधिनाशाय बद्धः सर्वत्र योजयेत ॥ ३६ ॥ (र.रत्नाकर.)

अर्थ-जडी बूटियोंसे मारेहुए पारेको समस्त रोगोंमें देना चाहिये तथा जारित फिर मारित, पारद बुढापे, दरिद्रता और रोगोंको दूर करनेवाला है मूर्च्छित व्याधियोंके नाशके लिये है और बद्ध पारदका सब जगह प्रयोग किय जाताहै ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

कैसा मूर्च्छित व्याधिनाशक और कैसा मृत आयुप्रद है ।

शुद्धः समृद्धाग्निसहो मूर्च्छितो व्याधिनाशनः ॥ निष्कंपवेगस्तीव्राग्निमायुरारोग्यदो मृतः ॥ ३७ ॥ (र. र. स.)

अर्थ--शुद्ध और अग्निको सहन करनेवाला पारद मूर्च्छित होकर व्याधिका नाश करनेवालाहै तेजरहित पारद मृत होकर आयु और आरोग्यको देताहै ॥ ३७ ॥

सम्मति-जब पारदमें अभ्र जीर्ण होताहै तब वह क्या और वेगरहित होताहै यही बात ध.सं. के अभ्रजीर्णके लक्षणमें लिखीहै (निष्कम्पो गतिरहितो विज्ञातव्योऽभ्रजीर्णस्तु)

क्षेत्रीकरणानन्तर जारित पारदसेवन ।

घनहेमादिलोहजीर्णस्य भक्षणं कृतक्षेत्रीकरणानामेव शरीरिणां भक्षणेधिकार इत्यभिहितम् ॥ ३८ ॥ र. चिं., बृ. यो.)

अर्थ-जिन मनुष्योंके शरीरका क्षेत्रीकरण होगयाहै वे ही मनुष्य अभ्रक सुवर्ण और अन्यधातु जारित पारदको भक्षण करसक्तेहैं और नहीं ॥ ३८ ॥

अन्यच्च ।

घनसत्त्वपादजीर्णोऽर्द्धक्रान्तजीर्णश्च तीक्ष्णसमजीर्णः क्षेत्रीकरणाय रसः प्रयुज्यते भूय आरोग्याय ॥ ३९ ॥ योऽग्निसहत्वं प्राप्तः स जातो हेमतारकर्ता च बद्धो रसश्च भुक्तो विधिना सिद्धिप्रदो भवति ॥ ४० ॥ (र. चिं.; र. रा. शं., र. सा. प., नि. र.)

अर्थ-प्रथम क्षेत्रीकरणके लिये आरोट रसको भक्षण करे फिर चौथाई भाग अभ्रक जीर्ण अर्द्धभाग वैक्रान्त जीर्ण और सम भाग तीक्ष्ण (फौलाद) जीर्ण पारदको भक्षण करे और जो अग्निको सहन करनेवाला हो और जो स्वर्ण चांदीको बनाता हो और जो बद्ध हो वही पारद विधिपूर्वक भक्षण कियाहुआ सिद्धिका दाता होताहै ३९॥४०॥

हेमादिजीर्णभेदसे रसभस्मफल ।

हेमजीर्णो भस्मसूतो रुद्रत्वं भक्षितो ददेत ॥ विष्णुत्वं तारजीर्णस्तु ब्रह्मत्वं भास्करेण तु ॥ समान्येन तु तीक्ष्णेन शक्रत्वं प्राप्नुयान्नरः ॥ ॥ ४१ ॥ (र. सा. प.)

अर्थ-स्वर्णजारित पारदकी भस्मके भक्षण करनेसे मनुष्य शिवरूपको प्राप्त होताहै और तारजीर्ण पारदकी भस्म विष्णुरूपको प्राप्त करतीहै, तथा ताम्रजीर्ण पारदकी भस्म ब्रह्माके रूपको देतीहै और सम भाग फौलादसे जारित पारदकी भस्म इन्द्रपनको प्राप्त करदेतीहै ॥ ४१ ॥

स्वर्णजीर्ण पारदभस्मका फल ।

भस्मनो हेमजीर्णस्य लक्षायुः पलभक्षणात॥ विष्णुरुद्रशिवत्वं च द्वित्रिचतुर्भिराप्नुयात ॥ ४२ ॥ (र. चिं., र. रा. शं., नि. र., र. सा. प.)

अर्थ-एक पल स्वर्णजारित पारदके सेवन करनेसे मनुष्य एक लक्षवर्ष जीसक्ताहै, दो पल सेवन करनेसे विष्णुपनको, तीन पल सेवन करनेसे रुद्रपनको और चार पल सेवन करनेसे शिवत्वको प्राप्त होताहै ॥ ४२ ॥

तीक्ष्णजीर्ण पारद भस्मका फल ।

भस्मनस्तीक्ष्णजीर्णस्य लक्षायुः पलभक्षणात ॥ एवं दशपलं भुक्त्वा तीक्ष्णजीर्णस्य मानवः ॥ तदा जीवेन्महाकल्पं प्रलयान्ते शिवं व्रजेत ॥ ४३ ॥ (र. चिं., नि. र. र. सा. प., र. सा. प.)

अर्थ-जो मनुष्य एक पल तीक्ष्णजारित पारद भस्मको सवन करताहै वह एक लक्ष वर्षतक जीता रहताहै फिर दश पल और सेवन करनेसे महाकल्पतक जीवित रहसक्ताहै और वह अंतमें शिवरूपको प्राप्त होताहै ॥ ४३ ॥

ताम्रजीर्णपारदभस्मका फल ।

भस्मनः शुल्बजीर्णस्य लक्षायुः पलभक्षणात । कोट्यायुर्ब्राह्ममायुष्यं वैष्णवं रुद्रजीवितम् ॥ ४४ ॥ द्वित्रिचतुःपंचषष्ठे महाकल्पायुरीश्वरः ॥ ४५ ॥ (र. चिं., र. रा. शं., नि. र., र. सा. प.)

अर्थ-ताम्रजारित पारदभस्मके १ पल सेवनसे मनुष्य लक्षायु होता है दो पल सेवन करनेसे कोटि वर्षकी आयु

---

१ (स्मरणीयम्) कपिलोथ निरुद्वारी विप्लुषभावं स मुंचते सूतः । निष्कम्पो गतिरहितो विज्ञातव्योऽभ्रजीर्णस्तु ॥ (ध. सं.)

होती है और चार पल सेवन करनेसे विष्णुपनको प्राप्त होता है तथा पांच पलके सेवन करनेसे रुद्रपनको छः पलके सेवन करनेसे ईश्वरके समान महाकल्पायु होता है ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

हेमादिजीर्णपारदसेवनमानकी परमावधि।

हेमजीर्णे भस्मसूते त्रिपले भक्षिते क्रमात्। क्षयकुष्ठं प्रमेहार्शोग्रहणीं च जयेत्तथा ॥ ॥ ४६ ॥ ज्वरं च बहुवर्षोत्थं जयेदीर्घायुषं नयेत्। एवं च द्वादश पलं तीक्ष्णजीर्णं च भक्षयेत् ॥ ४७ ॥ चतुष्पलं शुल्बजीर्णं तारजीर्णं तथैव च। वज्रवैक्रान्तजीर्णं च शुक्तिमात्रं च भक्षयेत् ॥ ४८ ॥ (टो. नं.)

अर्थ–सुवर्णजारित पारद भस्मके ३ पल भक्षण करनेसे मनुष्य क्षय, कोढ, प्रमेह, बवासीर और संग्रहणीको तथा बहुत वर्षोंसे उत्पन्न हुए ज्वरको भी जीत लेता है इसी प्रकार तीक्ष्ण जीर्ण पारदको बारह पल भक्षण करे और ताम्रजारित पारदभस्मके चार पल और चार पल ही तारजारित पारद भस्मको खावे वज्र और वैक्रान्त जारित पारद भस्मके दो कर्ष भक्षण करे ॥ ४६–४८ ॥

पारदसेवन।

अथ सेवनकं कर्म पारदस्य निरूप्यते। यत्नेन सेवितः सूतः शास्त्रमार्गेण सिद्धिदः ॥ अन्यथा भक्षितश्चैव विषवज्जायते नृणाम् ॥ ४९ ॥ (ध. सं.)

अर्थ–अब पारदके सेवन कर्मको वर्णन करतेहैं–शास्त्रकी विधिसे यत्नपूर्वक सेवित कियाहुआ पारद सिद्धिका दाता है और शास्त्ररीतिके अतिरिक्त सेवन किया हुआ पारद मनुष्योंके विष तुल्य होता है ॥ ४९ ॥

रसवैद्यलक्षण।

धर्मिष्ठः सत्यवादी स्यात् शिवकेशवपूजकः। सदयः पद्महस्तश्च रसवैद्यः श्रियान्वितः ॥ ॥ ५० ॥ (र. सा. प.)

अर्थ–रसशास्त्रका प्रवर्तक वैद्य लक्ष्मीवान धर्मात्मा सत्यवादी शिवविष्णुका पूजक, दयावान् और कमलहस्त होना चाहिये ॥ ५० ॥

सेवन अयोग्य पुरुष।

न योज्यो मर्मणि च्छिन्ने न च क्षाराग्निदग्धयोः ॥ ५१ ॥ (र. र. स.)

अर्थ–और जिस पुरुषका मर्मस्थान कटगया हो तथा क्षार और अग्निसे जलगया हो उस पुरुषको पारदका सेवन करना मना है ॥ ५१ ॥

किस अवस्थामें रस सेवन करना।

कुमारे तरुणे वृद्धे सदा योज्यं रसायनम्। वृद्धत्वेऽपि बले योज्यमशीत्यूर्ध्वं न कर्हिचित् ॥ ५२ ॥ (र. सा. प.)

अर्थ–कुमार, तरुण और वृद्ध मनुष्य इन सबको रसायन देना चाहिये और बुढापेमें भी अस्सी वर्षके पश्चात् बलके लिये कभी सेवन न करे ॥ ५२ ॥

अन्यच्च।

पूर्वे वयसि मध्ये वा तत्प्रयोज्यं जितात्मनः। दीर्घमायुः स्मृतिर्मेधामारोग्यं तरुणं वयः ॥ ५३ ॥ प्रभावर्णस्वरौदार्यं देहेन्द्रियबलोदयम्। वाक्सिद्धिं निर्वृतिं कान्तिमवाप्नोति रसायनात् ॥ ५४ ॥ (र. सा. प.)

अथ–किस अवस्थामें रसायनको सेवन करना चाहिये इस बातपर वाग्भट्टका प्रमाण देते हैं–पूर्वावस्थामें अथवा युवावस्थामें जितेन्द्रिय मनुष्यको पारदसेवन कराना चाहिये क्योंकि पारदसेवन करनेवाले मनुष्यकी दीर्घायु, स्मृति, मेधा, आरोग्य; तरुणअवस्था, प्रभा, वर्ण, स्वर, उदारता, और देह, इन्द्रिय तथा बलका उदय, वाणीकी सिद्धि इनको प्राप्त होताहै ॥ ५३ ॥ ५४ ॥

पारदको विधिपूर्वक सेवनकरे।

अमृतं च विषं प्रोक्तं शिवेन च रसायनम् ॥ अमृतं विधिसंयुक्तं विधिहीनं तु तद्विषम् ॥ ५५ ॥ (र. चिं., र. रा. शं.)

अर्थ–श्रीमहादेव जीने विष (वत्सनाभ) और अमृत (पारद) इन दोनों पदार्थोंको रसायन कहाहै क्योंकि विषको विधिपूर्वक सेवन करे तो वह अमृतहै और विधिरहित सेवन कियाहुआ अमृत भी विषहै ॥ ५५ ॥

क्षेत्रीकरण की अत्यावश्यकता।

अक्षेत्रीकरणे भुक्तोऽप्यमृतोऽपि विषं भवेत् ॥ फलसिद्धिः कुतस्तस्य सुबीजस्योषरे यथा ॥ ५६ ॥ कर्तव्यं क्षेत्रकरणं सर्वस्मिंश्च रसायने ॥ नाक्षेत्रकरणादेवि किंचित्कुर्याद्रसायनम् ॥ ५७ ॥ (रस. शं., र. सा. प., र. चिं.)

अर्थ–क्षेत्रीकरणके विना भक्षण कियाहुआ यह अमृत (पारद) भी विषके तुल्य होताहै जिस प्रकार ऊसर धरतीमें बोयेहुये बीजका कुछ फल नहीं होताहै इस लिये हेपार्वती सब रसायनोंके सेवन करनेके लिये क्षेत्रीकरण करनेकी आवश्यकता है सो अवश्य करना चाहिये ॥ ५६॥५७ ॥

अन्यच्च ।

रेचनान्त इदं सेव्यं सर्वदोषापनुत्तये ॥ मृताभ्रं भक्षयेन्मासमेकमादौ विचक्षणः ॥ ५८ ॥ (र. चिं., र. रा. शं.

अर्थ-जो मनुष्य अपने समस्त रोगोंको नाश करनेके लिये इच्छा करताहै । वह प्रथम जुलाव लेवे फिर एक मासतक अभ्रकका सेवन कर फिर उस पारदको भक्षण करे इसीको क्षेत्रीकरण कहते हैं ॥ ५८ ॥

क्षेत्रीकरणकेलिये पंचकर्मकीआवश्यकता।

पंचकर्म पुरा कृत्वा पश्चात्सकलदेहिनाम् ॥ योजनीयो रसो दिव्यः शीघ्रं सिद्धिमवाप्नुयात् ॥ ५९ ॥ (र. शं., र. सा. प.)

अर्थ-प्रथम पांच कर्मोंको करके फिर समस्त मनुष्योंको उत्तम रसदे तो शीघ्र ही सिद्धि होती है ॥ ५९ ॥

अन्यच्च ।

पंचकर्म च यत्नस्थैः सुकुमारैर्नरैरिह ॥ रेचनांत इदं सेव्यं सर्वदोषापनुत्तये ॥ ६०॥ (र. रा. शं., र. सा. प.)

अर्थ-जो सुकुमार पंच कर्मोंसे घबडाये हुये हैं वे केवल जुलाब लेकरके ही पारद को सेवन करें तो शरीरके सब दोष दूर होजाते हैं ॥ ६० ॥

पंचकर्मके अयोग्य पुरुष ।

नवज्वरेऽतिसारे च गर्भिणीबालवृद्धयोः ॥ न कुर्यात्पंच कर्माणि रक्तश्रावणदाहनम् ॥ ६१ ॥ (र. शं., र. सा. प.)

अर्थ-नव ज्वरमें, अतीसारमें, गर्भावस्थामें, बाल और वृद्धावस्थामें पंच कर्म तथा रक्त श्रावण (फस्त वगैरः खुलवाना) न करे क्योंकि उससे दाह पैदा होती है ६१॥

क्षेत्रीकरणके लिये पंचकर्मनाम ।

पाचनं स्नेहनं स्वेदं वमनं च विरेचनम् ॥ एतानि पंचकर्माणि ज्ञातव्यानि भिषग्वरैः ॥ ६२ ॥ (र. सा. प., र. रा. शं.)

अर्थ-पाचन, स्नेहन, स्वेदन, वमन और रेचन इनको वैद्यराज पंचकर्म कहते हैं ॥ ६२ ॥

क्षेत्रीकरणके लिये वमनविधि ।

निंबक्वाथं भस्मसूतं वचाचूर्णयुतं पिबेत् ॥ पित्तान्तं वमनं तेन जायते क्लेशवर्जितम् ॥ ॥ ६३ ॥ (र. चिं.)

अर्थ-नीमके क्वाथमें पारद भस्म तथा वचका चूर्ण मिलाकर पावे तो ऐसी वमन होती है कि अंतमें पित्त निकलने लगताहै और वह मनुष्य दुःख रहित होजाताहै ॥६३॥

क्षेत्रीकरण ।

वमनं रेचनं पूर्वं शुद्धदेहः समाचरेत् ॥ ॥ ६४ ॥ (र. सा. प.)

अर्थ-देहको शुद्ध करके प्रथम रेचन (दस्त) करावे फिर वमन करावे तब क्षेत्रीकरण होताहै ॥ ६४ ॥

अन्यच्च ।

आदौ विरेचनं कृत्वा पश्चाद्वमनमाचरेत् । ततोमृताभ्रं भक्षेत पश्चात्सूतस्य सेवनम् ॥ ॥ ६५ ॥ सम्यक् सूतवरं शुद्धं देहलोहकरं मुदा । सेवनः सर्वरोगघ्नः सर्वसिद्धिकरो भवेत् ॥ ६६ ॥ (धं. सं.)

अर्थ-प्रथम विरेचन करावे, फिर वमन करावे, उसके बाद अभ्रकभस्मको भक्षण करे, तदनंतर उस पारदको भक्षण करे जोकि शुद्ध देह और लोहको उत्तम बनानेवाला रोगोंका नाशक और सर्व सिद्धिका दाताहै ॥ ६५ ॥ ६६॥

अन्यच्च ।

प्रथमं मारयेदभ्रं शास्त्रोक्तं सुपरीक्षितम् ॥ पश्चात्तं योजयेद्देहे सूतकं तदनन्तरम् ॥६७॥ गुंजाद्वयं समारभ्य यावन्माषद्वयं भवेत् ॥ क्षेत्रमेवं भवेद्देहे सूतवीर्यप्रसाधकम् ॥६८॥ अक्षेत्रे योजितः सूतो न प्ररोहेत्कदाचन ॥ ॥ ६९ ॥ (टो. नं., र. रा. सुं.)

अर्थ-प्रथम अच्छीतरहसे परीक्षा कियेहुये अभ्रकको शास्त्रोक्त रीतिसे भस्म करे फिर उसको भक्षण करे तदनंतर दो रत्तीसे लेकर एक मासेतक पारद भस्मका सेवन करे इस विधिको क्षेत्रीकरण कहते हैं यह क्षेत्रीकरण पारदकी शक्तीका दाताहै और क्षेत्रीकरणके विना प्रयोग किया हुआ पारद अच्छी प्रकार फल नहीं देताहै॥६७-६९॥

क्षेत्रीकृतका लक्षण ।

स्निग्धं स्निग्धविरिक्तं यन्नीरुजं सिद्धभेषजैः॥ एतत्क्षेत्रं समासेन रसबीजार्पणक्षयम् ॥ ॥७०॥ (र. चिं., र. सा. शं., र. सा., प.)

अर्थ-स्निग्ध (घृत और सैंधवका तीन दिनतक पान करना) फिर स्निग्ध (कपडा या पुटवह्निसे) विरिक्त अर्थात् जो इच्छाभेदी और नाराचादि रसोंसे जुलाव लियाहुआ तथा अन्य औषधियोंसे जो शरीर नीरोग होगयाहै वह क्षेत्रीकरण पारद रूप बीजके बोनेयोग्य होताहै ॥ ७० ॥

क्षेत्रीकरणानन्तर सेवनफल ।

क्षेत्रीकृतनिजदेहः कुर्वीत रसायनं मतिमान्। विधिना (?) पथ्यविधानादमरतुल्यदेहः स्यात् ॥७१॥ (र. सा. प., र. रा. श.)

अर्थ-अपने शरीरका क्षेत्रीकरण करके फिर बुद्धिमान

मनुष्य रसायनका सेवन करे और उसपर विधिपूर्वक पथ्य करे तो देवताओंके समान सुन्दर शरीरवाला होताहै ॥७१॥

विनाक्षेत्रीकरण पारदप्रयोग वर्जन ।

अकृते क्षेत्रीकरणे रसायनं यो नरः प्रयुंजीत ॥ तस्य क्रामति न रसः सर्वांगे दोषकृद्भवति ॥ ७२ ॥ (र. चिं., र. रा. शं., र. सा. प.)

अर्थ—विना क्षेत्रीकरण कियेहुये शरीरमें जो मनुष्य रसायनका प्रयोग करते हैं उनके शरीरमें पारद आक्रमण नहीं करता प्रत्युत दोषकोही पैदा करताहै ॥ ७२ ॥

सेवनप्रकार ।

अथातुरो रसाचार्यं साक्षाद्देवं महेश्वरम् । साधितं च रसं शृङ्गदन्तवेण्वादिधारितम् ॥ ॥ ७३ ॥ अर्चयित्वा यथाशक्ति देवगोब्राह्मणानपि । पर्णखंडे धृतं सूतं जग्ध्वा स्यादनुपानतः ॥७४॥ (र. र. स., र. सा. प.)

अर्थ—अब रोगी साक्षात् श्रीमहादेवजीकी तरह रसाचार्यकी तथा सिद्ध किये सींग; दन्त (दांतके बनेहुये पदार्थ), वेणु (बांसके बनेहुये पदार्थ) इनमें अर्थात् काचके बनेहुये पदार्थोंमें रक्खे हुये पारदकी पूजा करके और यथाशक्ति देवता; गौ और ब्राह्मणोंको पूजनकर फिरके पत्रपर रखेहुये पारदको अनुपानसे खाकर पथ्य करे तो सब रोगोंसे रहित होता है ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

रससेवनमात्रा ।

यावन्मानेन लोहस्य गंद्याणे वेधकृद्रसः ॥ तावन्मानेन देहस्य भक्षितो रोगहा भवेत् ॥ ॥ ७५ ॥ राजिका तिलकंगुश्च सर्षपामुद्गमाषकौ ॥ रक्तिका चणको वाथ वल्लमात्रो भवेद्रसः ॥ एषा मात्रा रसे प्रोक्ता रसकर्मविशारदैः ॥ ७६ ॥ (ध. सं.)

अर्थ—चौसठ रत्ती लोहेमें जितना पारद वेधकारक होताहै उतनेही पारदको भक्षण करनेसे देहका सब रोग नाश होताहै रसकर्मके ज्ञाता वैद्योंने राई, तिल, कंगुनी, सरसों मूंग, उर्द, रत्ती, चना और वल्ल (तीन रत्ती,) इनकी बराबर रसकी मात्रा कहीहै ॥ ७५ ॥ ७६ ॥

अन्यच्च ।

रसेन्द्रं सेवयेन्नित्यं चतुर्गुंजाप्रमाणतः ॥ आज्येन मरिचैः साकं सेवयेच्च रसेश्वरम् ॥ ॥ ७७ ॥ (नि. र.)

अर्थ—रोगी मनुष्य ४ रत्तीके प्रमाणसे घी और मिरचके साथ पारदका सेवन करे ॥ ७७ ॥

१ गंद्याणम्-अष्टचत्वारिंशत् रक्तिका परिमाणम् इति लीलावती । चतुःषष्टिगुंजापरिमाणम्, इति वैद्यकम् ।

रसमात्रामान ।

गुंजैकमात्रं तु नरस्य युज्यते गंद्याणकं प्रोक्तमजादिपुंगवे । गंद्याणसार्द्धं करिपुङ्गवेषु देयं सदा व्याध्यनुपानयोगात् ॥ ७८ ॥ (टो. नं.)

अर्थ—मनुष्यको सिद्ध रसकी एक गुंजा, घोडा आदिको ६४ रत्ती, हाथीको ९२ रत्ती रोगके अनुपानके अनुसार सर्वदा सेवन कराना चाहिये ॥ ७८ ॥

अन्यच्च ।

वल्लमेकं नरेऽश्वे तु गंद्याणैकं गजे द्वयम् । सर्वरोगविनाशार्थं भिषक् सूतं प्रयोजयेत् ॥ ७९ ॥ (र. रा. सं., र. रा. शं., र. सा. प.)

अर्थ—वैद्य समस्त रोगोंके नाश करनेके लिये मनुष्यका ३ रत्ती, घोडेको ६४ रत्ती और हाथीको १२८ रत्ती अर्थात् १ तोले ४ माशे पारदका सेवन करावे ॥ ७९ ॥

भक्षणमात्रा अनुपानआदि ।

गुंजैकमात्रं देवेशि ज्ञात्वा चाग्निबलं निजम् । घृतेन मधुना सार्द्धं ताम्बूलं कामिनीं त्यजेत् ॥ ८० ॥ दिनमेकान्तरं कृत्वा निर्विघ्नं योजयेद्रसम् ॥ ८१ ॥ (टो. नं., र. चिं.)

अर्थ—श्रीमहादेवजी कहते हैं कि हे पार्वती ! मनुष्य अपने अग्निके बलको देखकर घी या शहदके साथ स्वर्ण जीर्ण पारदको सेवन करे, पान तथा स्त्रीका परित्याग करे और एक दिनके अन्तरसे निर्विघ्न पारदका सेवन करना चाहिये ॥ ८० ॥ ८१ ॥

हेमजीर्णरस मात्रामान ।

गुंजामात्रं रसं देवि हेमजीर्णं तु भक्षयेत् ॥ द्विगुंजं तारजीर्णं स्याद्रविजीर्णस्य च त्रयम् ॥ ८२ ॥ तीक्ष्णाभ्रकान्तजीर्णं तु गुंजैकैकंतु भक्षयेत् ॥ वज्रवैक्रान्तजीर्णं तु भक्षयेत्सर्षपोपमम् ॥ ८३ ॥ (नि. र., टो. नं., र. सा. प., र. चिं., र. रा. शं.)

अर्थ—हे पार्वती ! स्वर्ण जीर्णपारदकी एक रत्ती मात्राको भक्षण करे तारजीर्णकी दो रत्ती, ताम्रजीर्णकी तीन रत्ती, तीक्ष्ण (फौलाद) जीर्णका एक मापा प्रायः इस प्रकार पारेकी मात्रा कही है तथा हीरा और वैक्रान्त जीर्ण पारदकी एक सरसोंके समान मात्रा है ॥ ८२ ॥ ८३ ॥

घनसत्त्वादिजीर्ण रसमात्रामान ।

घनसत्त्वकान्तताम्रशंकरतीक्ष्णादिजीर्णस्य।

सूतस्य गुञ्जवृद्ध्या माषकमात्रं परा मात्रा ॥ ८४ ॥ (र.चिं.,र.रा. शं.,र.रा. सुं.)

अर्थ-अभ्रकसत्त्व, कांत, ताम्र, तीक्ष्ण आदि जीर्ण पारदकी साधारण रीतिसे एक रत्तीकी मात्रा है और अधिकसे अधिक एक माशा मात्रा होसकती है ॥ ८४ ॥

रसमात्राका घटाव बढाव ।

मात्रा वृद्धिः कार्या तुल्यायामुपकृतौ क्रमाद्विदुषा । मात्राह्रासः कार्यो वैगुण्ये त्यागसमये च ॥ ८५ ॥ (र. चिं.)

अर्थ-पारेके खानेवालेको ध्यान रखना चाहिये कि जब कुछ विशेष उपकार नहीं होता हो तब एक एक गुंजा मात्राकी वृद्धि करनी चाहिये और जब किसी प्रकारका उपद्रव हो या औषधिके छोडनेका समय हो तब मात्राका ह्रास (घटाना) करना चाहिये ॥ ८५ ॥

पारदसेवनके पथ्यका समय ।

प्रभाते भक्षयेत्सूतं पथ्यं यामद्वयाधिके । न लंघयेत्त्रियामं तु मध्याह्ने नैव भोजयेत् ॥ ॥ ८६ ॥ (र. चिं.,र.रा.शं.,र.रा. सुं., नि. र., र. सा. प., टो. नं.)

अर्थ-रसभक्षणकी इच्छा करनेवाला मनुष्य प्रातःकालही पारेका भक्षण करे पारद भक्षणके पश्चात् दूसरे प्रहरमें पथ्यका सेवन करे अथवा तीसरे प्रहरमें अवश्यही पथ्य करे और तीसरे प्रहरको लंघन न करे तथा मध्याह्नमें भोजन न करे ॥ ८६ ॥

रसभक्षणमें अनुपान ।

अनुपानेन गुंजीत पर्णखण्डेन वा सह ॥ इत्थं संसेविते सूते रोगमांद्याद्विमुच्यते ॥ ॥ ८७ ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तो प्राप्नोति परमां गतिम् ॥ दारिद्र्यनाशनार्थाय वेधकर्म समाचरेत ॥ ८८ ॥ (ध. सं.)

अथ-अनुपानके साथ पारेको पानमें रखकर सेवन करे इस प्रकार सवन करनेसे रोग दूर होजाते हैं और सब पापोंसे छुटाहुआ परम गतिको प्राप्त होताहै और दरिद्रताको दूर करनेके लिये वेध कर्मको करे ॥ ८७ ॥ ८८ ॥

पारद सेवनके अजीर्णका उपाय ।

ताम्बूलांतर्गते सूते किट्टबन्धो न जायते ॥ सकणाममृतां भुक्त्वा मलबन्धे स्वपेन्निशे ॥ ८९ ॥ (र. चिं., र. रा.. शं., र. रा., सुं., नि. र., र. सा. प.)

अर्थ-पारदको पानके भीतर रखकर खावे तो अजीर्ण नहीं होता यदि कोष्ठबद्ध हो तो रात्रिमें पीपल और हर्रको खाकर सोजावे ॥ ८९ ॥

रस जीर्ण होनेपर स्नानविधि ।

सौख्योष्णैः सलिलैर्हितं रसभुजास्नानं तु जीर्णे शते । वातं पित्तकफौ निहन्ति बलकृत्त्वग्वर्णकृद्बृंहणम् ॥ रूपद्योतकरं मनःप्रशमनं कामस्य संवर्द्धनम् । नारीणां च मनोहरं श्रमहरं देहे रसक्रामणम् ॥ ९० ॥ (र. रा. शं.)

अर्थ-पारद सेवन करनेवाला मनुष्य रसके जीर्ण (पचन) होनेपर साधारण गरम जलसे स्नान करे तो शरीरमें रसका क्रामण होताहै वह रसक्रामण वात पित्त और कफको नाश करता है, बल त्वचाके वर्णका बढानेवाला है और बृंहण है रूपका प्रकाश तथा मनका शान्तकारक, कामका बढानेवाला और स्त्रियोंके मनको हरनेवाला तथा देहके श्रमको हरनेवाला है ॥ ९० ॥

स्नान तैल जल निर्णय ।

अभ्यंगमनिले योज्यं तैलैर्नारायणादिभिः॥ अवलाशीततोयेन मस्तके परिषेचयेत् ॥ ॥ ९१ ॥ तृष्णायां नारिकेलाम्बुमुद्गयूषं सशर्करम् ॥ द्राक्षादाडिमखर्जूरकदलीनां फलं भजेत् ॥ ९२ ॥ (यो. र., र. रा. सुं., नि. र.)
उदरे सति दध्यन्नं कृष्णजीरं ससैन्धवम् ॥ ९३ ॥ (र. रा. शं.)

अर्थ-पारद भक्षणके समय यदि वातके क्षोभसे शरीरमें दर्द हो तो नारायण आदि तैलका मर्दन करे और अरति हो तो मस्तकपर शीतल जल डालना चाहिये और प्यास होनेपर नारियलका पानी और खांड सहित मूंगका पानी पीना चाहिये अथवा अंगूर, अनार, खजूर और केलेके फलको खावे यदि उलटी आती होतो काला जीरा सैंधानोंन सहित दही भात खावे ॥ ९१-९३ ॥

रससेवीके लिये जलका निर्णय ।

गव्यं सुदुग्धं सलिलार्द्धकेन शृतं कृतं पानजलं सुशीतलम् ॥ खंडेन वा शर्करया समेतं रसेन्द्रभोक्ता प्रपिबेत्सदैव ॥ ९४ ॥ (नि. र.)

अर्थ-आधा भाग दूध और आधा भाग जल इन दोनोंको उष्ण करके शीतल करलेवे फिर आधा पाव शकर डालदे इसको रसेन्द्र भक्षण करनेवाला मनुष्य सदैव पीता रहे ॥ ९४ ॥

अन्यच्च ।

दिव्यान्तरिक्षध्वनिजं च कौपं स्वयं विशीर्णादिशिलातलोद्भवम् ॥ तडागजं सारस-

मौद्भिदं यत्तोयं मतं त्वष्टविधं मनोरसम् ॥ ॥ ९९ ॥ (र. रा. शं., र. सा. पं.)

अर्थ-दिव्य, आन्तरिक्षज, ध्वनिज (बर्फसे पैदा हुआ), कूएका जल, झरनेका जल, तलावका जल, झीलका जल और औद्भिद अर्थात् जो पृथ्वीको भेदकर बाहर निकला हुआ हो इस प्रकार जल आठ प्रकारका कहा है ॥ ९५ ॥

अन्यच्च ।

अक्षारं स्वादु मृष्टं दिनमणिकिरणैर्वासरे तप्तमादौ रात्रौ शीतांशुरोचिस्त्रिविधसुयवजां दोलितं दोषहीनम् । कर्पूरे राजचंपैरतिशयविमलैः पाटलैलासुपुष्पैस्त्वगुधान्यैर्वासितं यद्वरशिशिरजलं सूतसेवी पिबेत्तत ॥ ९६ ॥ (र. रा. शं., र. सा. प.)

अर्थ-प्रथम मीठे जलको एक मिट्टीकी चपटियामें भर कर सूरजकी किरणोंमें एक दिनभर रक्खे फिर उसीको रात्रिमें चन्द्रमाकी किरणोंसे शीतल और उसी जलको कापूर, चंपेके फूल, इलायची और अनेक सुगंधित पुष्पोंसे सुगंधित कियेहुए शिशिर ऋतुके जलको पारदके सेवन करनेवाला नित्य पीवे ॥ ९६ ॥

तैलमर्दन ।

श्रीनारायणसंज्ञिकेन च बलातैलेन चान्येन वा कार्यं मर्दनकोविदै रसभुजामल्लैः सदा मर्दनम् ॥ चातुर्जातलवंगकुंकुमनिशामुस्ताम्बुमांसीभवैश्चूर्णैश्रेष्टमसूरमुद्गयवजैरुद्वर्तनं कारयेत् ॥ ९७ ॥ (र. रा. शं., र. सा. प.)

अर्थ-वातज दोषको निवृत्तिके लिये नारायण तैल, बलातैल, तथा अन्य वातघ्न तैलोंको लेकर पहलवानोंसे अपने शरीरपर सदा मालिश करावे और चातुर्जात लोंग केसर, हलदी, नागरमोथा, जटामांसी, भुनीहुई मूंग, मसूर और जौ इनके चूर्णको लेकर उबटना करे ॥ ९७ ॥

आहारनिर्णय ।

सततं वर्जयेदेकाहारं च रससेवकः । नश्यत्यग्निरनाहारात्सूतो नैव क्रमेत्ततो ॥ ९८ ॥ रोगशांतिं तथा कर्तुं नैव शक्नोति पारदः। विचित्रैर्भोजनैस्तस्माद्रसं समुपबृंहयेत् ॥ ॥ ९९ ॥ (र. रत्ना.)

अर्थ-रसके सेवन करनेवाला मनुष्य एक वार भोजन न करे अर्थात् दो वार भोजन करे क्योंकि भोजनके न करनेसे मंदाग्नि होती है और शरीरमें पारद अच्छी तरह नहीं रमता है और पारद रोगकी शान्ति भी नहीं करसक्ता है इसलिये अनेक प्रकारके भोजनोंसे पारदके बलको बढावे ॥ ९८ ॥ ९९ ॥

अन्यच्च ।

निषिद्धवर्ज्यं मतिमान् विचित्ररसभोजनं कुर्यात् । स्रवति न यथा रसेन्द्रो न नश्यति जाठरो श्वह्निः ॥१०० ॥ (र. चिं., नि. र.)

अर्थ-बुद्धिमान् निषिद्ध (अपथ्य) रहित सरस भोजनको करे और भोजन भी ऐसा न करे कि जिससे पारा शरीरमेंसे फूट जाय और मंदाग्नि भी होवे ॥ १०० ॥

पारद सेवनमें पथ्य ।

धान्यादीनां च सर्वेषां यवगोधूमषष्टिकाः । नेष्टास्तु बिदलाः सर्वे मुक्ता मुद्गाढकी पुनः॥ ॥ १०१ ॥ आज्यं स्नेहे मधुषु मधुरं चेक्षुजातं हि यत्स्याच्छ्रेष्टं खंडं हतवरसितं क्षारयुक्तं न तत्स्यात् । हिंगु श्रेष्टं सकलसुरभैः सैंधवं सिंधुजेषु रागे यूपाः प्रवररजनीसूरणार्द्रौ च कंदे ॥ १०२ ॥ अशुभानि च मांसानि शाकानि विदलानि च । संस्कृतानि विधानेन न स्युर्दोषकराणि च ॥ १०३ ॥ केशादिजुष्टं कृतसीतपुष्पं शाकावरान्नैर्बकुले महोष्णम् । निसेवितं यल्लवणाधिकं च संत्याज्यमत्र रससेविभिस्तत् ॥ १०४ ॥ तक्रं हितं स्नेहगतं तथा दधिगोक्षीरजातं सकलं हितं स्यात् । मुक्त्वा च पक्वाम्बुसुरारनालं स्यादम्बुपानं न हितं रसायने ॥ ॥ १०५ ॥ तैलं च तैलं गिरिजाभवं यत् सुस्वादुहीनं सठितामदुग्धम् । विनष्टदुग्धं त्वशुभं च सर्वं खादेत्कदाचिन्न रसायनी नरः ॥ १०६ ॥ पुष्पजातं फलं सर्वं मधुरं मांसशर्करम् । पाकयुक्तमशीर्णं च श्रेष्ठमुक्तं रसायने ॥ १०७ ॥ असितायाः विवत्सायाः प्राहुर्दुग्धं जलैः शृतम् ॥ बलवृद्धिकरं वृष्यं श्रेष्ठमुक्तं रसायने ॥ ॥ १०८ ॥ (र. रा. शं., र. सा. प.)

अर्थ—सब प्रकारके धानोंमें जौ, गेहूं और साठी चावल खाना श्रेष्ठ है। मूंग और अरहरकी दालको छोड कर सब दालें वर्जित हैं। चिकने पदार्थोंमें घृत श्रेष्ठ है। मीठी चीजोंमें इक्षु (सांठा या गांडा) से पैदाहुई सब प्रकारकी मिठाई पथ्य हैं। सिन्धुनदीके पास पैदाहुई चीजोंमें सैंधानोन हित है और कंदोंमें जमीकंद और अदरक श्रेष्ठ है। अयोग्य मांस शाक और दाल प्रभृति ये सब विधिसे सिद्ध कियेहुए हों तो दोष रहित होते हैं जिस पदार्थमें बाल पडगया हो ठंडा होगया हो और गरम हो उसको भक्षण न करे और अधिक लवणयुक्त पदार्थोंके खानेको छोडदेवे गायके दूधसे पैदाहुये सब प्रकारके दही

और मठा हित हैं । सब तरहके फूल मीठे मीठे फल और खांडमें पकेहुए पदार्थ श्रेष्ठ हैं । जिसके बछडा न हो ऐसी सफेद गायके दूधको गरम करके ठंडा कर पीना चाहिये और जो जो बलकी वृद्धि करनेवाला और वृष्य पदार्थ खाना श्रेष्ठ हैं ॥ १०१-१०८ ॥

पथ्यवर्ग ।

घृतसैन्धवधान्याकजीरकार्द्रकसंस्कृतम् । तन्दुलीयकधान्याकपटोलालम्बुषादिकम् ॥ ॥१०९॥गोधूमजीर्णशाल्यन्नं गव्यं क्षीरं घृतं दधि । हंसोदकं मुद्गरसः पथ्यवर्गः समासतः ॥ ११० ॥ (नि. र. र., र. स., यो. र., र सा. प., र. रा. शं.,)

अथ-घी, सैंधव, धनियां, जीरा, अदरक इनके छोंक (भकार) दियेहुए चौलाई बेंगन, परवल तूंबी इनके साग, गेहूका चून, साठी चावल, गायका दूध, घृत और दही, हंसोदक, मूंगकी दाल इनको पारद भक्षणमें पथ्य कहा है ॥ १०९॥११० ॥

पारद सेवनमें पथ्य और आहार विहार ।

मुद्गयूषघृतं दुग्धं शाल्यन्नं सैंधवं तथा।नागरं पद्ममूलं च मुस्तकं गिरिमल्लिका ॥ १११ ॥ शाकं पौनर्नवं श्रेष्ठं मेघनादं च वास्तुकम् । अभ्यङ्गं सुखदं स्नानं कोष्णतोयेन नित्यशः ॥ ११२ ॥ रूपयौवनसंपन्नां स्वानुकूलां भजेत्प्रियाम् ॥ तेन बुद्धिर्बलं कांतिर्वर्द्धते रससेविनः॥ ११३ ॥ (अनुपानतरंगिणी)

अर्थ-मूंगका यूष, घी, दूध, साठी चावलका भात, सैंधा नोंन, सोंठ, पद्ममूल (भसूडे कमलकी जड) मोथा, गिरिमल्लिका (कुठाका वृक्ष), सांठ, चौलाई और बथुआ इनका साग, हलका उबटना, नित्यप्रति कोष्ण (नूनुवाए) जलसे स्नान करना अपने अनुकूल सुन्दर स्त्रीसे प्यार करना इनसे रस सेवन करनेवाले मनुष्यकी बुद्धि, बल और कांति बढती है ॥ १११-११३ ॥

अन्यच्च ।

हितं मुद्गाम्बुदुग्धाज्यं शाल्यन्नं च विशेषतः ॥ शाकं पौनर्नवायास्तु मेघनादं च चिल्लिकाम् ॥ सैंधवं नागरं मुस्तं पद्ममूलानि भक्षयेत् ॥ ११४॥(रसमंजरी., र. सा. सं., र. रा. सुं.)

अर्थ-मूंगका यूष, दूध, घी, साठी चावल, ये विशेष कर हित हैं । सांठ, चौलाई, चिल्लिका (एक प्रकारका पत्तेका शाक), सैंधव, सांठ, पीपल, नागरमोथा और पद्मूलको भक्षण करे ॥ ११४ ॥

अन्यच्च ।

हितं मुद्गान्नदुग्धाज्यशाल्यन्नानि सदा ततः॥ शाकं पौनर्नवं देवि मेघनादं सवास्तुकम् ॥ ॥ ११५ ॥ सैंधवं नागरं मुस्ता पद्ममूलानि भक्षयेत् ॥ आत्मज्ञानकथा पूजा शिवस्य च विशेषतः ॥ ११६ ॥ (र. सा. प., र. चिं., र रा. शं., नि., र.)

अर्थ-मूंगका यूष, दूध, घी, साठीचावल ये हित हैं और हे पार्वती ! सांठ चौलाई और बथुआका शाक, सैंधा नोंन, सोंठ, मोथा और पद्ममूलको भक्षण करे तथा आत्मज्ञानकी कथा अर्थात् वेदान्त विषयकी चर्चा और श्रीशिवजीकी पूजा भी विशेष हित है ॥ ११५ ॥ ११६ ॥

सेवनीय विहार ।

उद्भिन्नचूचुका श्यामा सुभोगा सुभगा शुभा ॥ दिव्याभरणसंयुक्ता कामभोगविवर्जिता ॥ ११७ ॥ सन्निधानेषु कर्तव्या वृद्धैश्च परिरक्षिता ॥ ११८ ॥ (टो. नं.)

अर्थ-जिसके स्तन अच्छी तरहसे उठेहुए हों और जिसके भोग और ऐश्वर्य श्रेष्ठ हो उत्तम २ आभूषणोंको धारण करनेवाली हो ऐसी श्यामा (सोलह वर्षकी) स्त्री रस सेवकके पास होनी चाहिये और वह स्त्री कामभोग (मैथुन) से रहित तथा वृद्ध जनोंसे रक्षित हो अर्थात् पारद खानेवाले पुरुषका उस स्त्रीसे मैथुन कदापि न होने पावे ॥ ११७॥११८ ॥

अन्यच्च ।

कस्तूरीसंयुतं नित्यं ताम्बूलं भक्षयेद्वरम् ॥ सुरभीणि च पुष्पाणि चंदनागरुलेपनम् ॥ ॥ ११९ ॥ (टो. नं.)

अर्थ-पानमें कस्तूरी रख कर खावे तथा सुगंधित पुष्पोंको धारण करे, चंदन, अगरका लेपन करे ॥ ११९ ॥

अपथ्य जल ।

अतिपानमपानं च जलक्रीडां च वर्जयेत ॥ ॥ १२० ॥ (टो. नं.)

अर्थ-अत्यन्त जलका पीना तथा पानीका बिलकुल ही नहीं पीना अथवा जलक्रीडाको भी छोड देवे ॥ १२० ॥

अपथ्य आहार ।

निषिद्धं वर्जयेत्सर्वं रससेवाविधौ नरः ॥ रसस्रावकरं वर्ज्यं भोजने चातियत्नतः ॥ ॥ १२१ ॥ अग्निमांद्यकरं तद्वद्वर्ज्यं चापि प्रयत्नतः ॥ १२२ ॥ (र. रत्नाकर.)

अर्थ-बुद्धिमान् मनुष्य रससेवनके समय सम्पूर्ण

निषिद्ध पदार्थोंको छोड देवे भोजन करनेमें उस भोजनको छोड दे कि जो अधिक रक्तका निकालनेवाला अथवा मन्दाग्निका करनेवाला हो ॥ १२१॥१२२ ॥

अपथ्य आहार।

अत्यम्ल कटुतिक्तैश्च सूतः स्रवति सेवितैः॥ अत्यम्ललवणाहारैर्मंदवीर्यो भवेद्रसः॥१२३ (र. रत्नाकर.)

अर्थ-खायेहुये अत्यन्त खट्टे चरपरे कडुवे पदार्थोंसे पारद शरीरमें फूट जाता है और अधिक खट्टे और नमकीन चीजोंके खानेसे पारद मंदवीर्य्य होताहै ॥ १२३ ॥

अन्यच्च।

कुलत्थांश्चातसीतैलं तिलान् माषमसूरकान् ॥ कपोतं कांजिकान्नं च तक्रभक्तं तथैव च ॥ १२४ ॥ वार्ताकं राजिकां बिल्वं वातलानि च वर्जयेत् ॥ तिलतैलं दधि क्षारं द्राक्षाक्षोटपरूषकम् ॥ १२५ ॥ बदरं नारिकेलं च सहकारं सुवर्चलम् ॥ नारंगं कांचनारं च शोभांजनमपि त्यजेत् ॥ १२६ ॥ (टो. नं.)

अर्थ-कुलथी, अलसीका तैल, तिल, उर्द, मसूर, कबूतर, कांजी, मठेसे मिला हुआ भात, वेंगन, राई, बेल तथा वातल पदार्थोंको त्यागदे तिलका तैल, दही (भेंसका), खार (जवाखारप्रभृति),द्राक्षा (खट्टी दाख), आखरोट फालसे, वेर, नारियल, आम, कालानोंन, नारंगी, कचनार, और सेंजना इनका भी परित्यागकरे ॥ १२४-१२६ ॥

अन्यच्च।

कुलत्थानतसीतैलं तिलान् माषान्मसूरकान् ॥ कपोतान् कांजिकं चैव तक्रभक्तं च वर्जयेत् ॥ १२७ ॥ हेमचक्रादयश्चैव कुक्कुटानपि वर्जयेत् ॥ कट्वम्लातिक्तलवणं पित्तलं वातलं च यत् ॥ १२८ ॥ बदरं नारिकेलं च सहकारं सुवर्चलम् ॥ नागरंगं कामरंगं शोभांजनमपि त्यजेत् ॥ १२९ ॥ (र. चिं., र. रा.)

अर्थ-कुलथी, अलसीका तेल, तिल, उर्द, मसूर, कबूतर, कांजी, मठा भात इनके खानेको छोडदेवे हेमचक्रादिक (ग्रंथकार) मुर्गोंके मांसका निषेध करते हैं कटु (मिरचप्रभृति),अम्लतिक्त (निम्बादि), लवण,पित्तके कुपित करनेवाले, वातके कुपित करनेवाले, बेर, नारियल, आम, सोंचर नोंन, नारंगी, कमरख और सेंजनेको भी परित्याग करे ॥ १२७-१२९ ॥

अन्यच्च।

बृहतीबिल्वकूष्माण्डं वेत्राग्रं कारवेल्लकम् ॥ माषं मसूरं निष्पावं कुलित्थं सर्षपं तिलम् ॥ १३० ॥ लंघनोद्वर्तनस्नानताम्रचूडसुरासवान् ॥ आनूपमांसं धान्याम्लं भोजनं कदलीदले ॥ १३१ ॥ कांस्ये च गुरु विष्टम्भि तीक्ष्णोष्णं च भृशं त्यजेत् ॥ १३२ ॥ (र.र.स.,यो.र.,र.सा.प.)

अर्थ-कटेरीका फल, वेल, कूष्मांड (काशीफल), बांसकी पोई, करेला, उर्द, मसूर, कुलथी, सेंम, सरसों, तिल, लंघन, उबटना, स्नान, मुर्गा, शराब, सजल देशके पशु पक्षियोंका मांस, कांजी, कासी और केलेके पत्तेपर भोजन करना, गुरु, विष्टम्भी (अजीर्णकारक पदार्थ), चरपरा और उष्णपदार्थ इनको पारद खानेवाला मनुष्य न खावे ॥१३०-१३२॥

अपथ्य ककारादि निषेध।

यस्मिन् रसे च कंठोक्त्या ककारादिर्निषेधितः ॥ तत्र तत्र निषेध्यस्तु तदौचित्यमतोऽन्यतः ॥ १३३ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-जिस रसमें ककारादि पदार्थोंका खास लेखद्वारा निषेध कियागया है वहांपर वेही निषेध करने योग्य हैं यदि और भी ककारादि पदार्थोंको निषेध योग्य समझा जावे तो उनको भी भक्षण न करे ॥ १३३ ॥

अपथ्य ककारषट्क।

कूष्मांडं कर्कटीं कोलं कलिङ्गं करमर्दकम्॥ करीरं चेति षट्कादीन् रसभुग्वर्जयेज्जनः॥ ॥ १३४ ॥ (यो.र.,र.रा.शं.,नि.र.)

अर्थ-पेठा, ककडी, बेर, तरबूज, करोंदा, टेंटी इन : पदार्थोंको रसके खानेवाला मनुष्य छोडदे ॥ १३४ ॥

ककाराष्टक।

कूष्माण्डं कारवेल्लं च कर्कटा काकमाचिकाम् ॥ कुसुम्भकं कलिंगं च कर्कोटीं कदलीं त्यजेत् ॥ १३५ ॥ (र.मानस.)

अर्थ-पेठा, करेला, ककडी, काकमांची (मकोय+कवैया) कसूम, तरबूज, बांझ ककोडा और केलेके फलका भी परित्याग करे ॥ १३५ ॥

ककाराष्टक वर्ग।

कुष्माण्डं कर्कटश्चैव कलिंगं कारवेल्लकम् ॥ कुसुम्भिकां च कर्कोटीं कलम्बीं काकमाचिकाम् ॥ ककाराष्टकमेतद्धि वर्जयेद्रसभक्षकः ॥ १३६ ॥ (टो. नं.,र. सा. सं., र.मंजरी., र. रा. शं., र.रा.सुं.,र.सा.प., नि. र., र. चिं.)

जराव्याधिविनिर्मुक्तो जीवेद्वर्षशतं सुखी ॥ (अनुपानतरंगिणी.)

अर्थ-पेठा, ककडी, तरबूज, करेला, कसूमका शाक, ककोडा, मकोय, कलम्बी, (कलमीका शाक जो कि जल में पैदा होताहै) यह ककाराष्टक है रससेवन करनेवाला मनुष्य इस ककाराष्टकको छोडदेवे तो बुढापेसे रहित हुआ मनुष्य सौ वर्षतक सुखसे जीताहै ॥ १३६ ॥

ककारादिगण ।

कण्टारीफलकाञ्जिकं च कलमस्तैलं तथा-राजिका निम्बूकं कतकं कलिंगकफलं कूष्माण्डकं कर्कटी । कारीकुक्कुटकारवेल्लकफलं कर्कोटिकायाः फलं वृन्ताकं च कपित्थकं खलु गणः प्रोक्तः ककारादिकः ॥ १३७ ॥ देवीशास्त्रोदितः सोऽयं ककारादिगणो मतः (र. र. स.)

अर्थ-कटेरीका फल, कांजी, कलम (कलमी धान) तैल, राई, निंबू, निर्मलीके बीज, तरबूज, पेठा, ककडी, कारी (आकर्षकारी), मुर्गा, करेला, बांझ ककोडा, बेंगन, कैथ इनको ककारादिगण कहते हैं यह देवीशास्त्रमें कहा हुआ ककारादि गण है ॥ १३७ ॥

अन्यच्च ।

शास्त्रान्तरविनिर्दिष्टः कथ्यतेन्यप्रकारतः ॥ १३८ कंगुः कन्दुककोलकुक्कुटकलक्रोडाः कुलत्थास्तथा कण्टारीकटुतैलकूष्णगलकः कूर्मः कलायः कणा ॥ कर्कारुं च कठिल्लकं च कतकं कर्कोटकं कर्कटी कालीकाञ्जिक-मेषकादिकगणः श्रीकृष्णदेवोदितः ॥१३९॥ (र. र. स.)

अर्थ-कंगनी, बेर, मुर्गा, झरबेर, सूअर, कुलथी, कटेरीकाफल, कडुआ तेल, कछुआ, मटर, पीपल, पेठा, करेला, निर्मलीका फल, बांझककोडा, ककडी, कलिहारी, कांजी और मेढा इत्यादि श्रीकृष्णदेवका कहाहुआ ककारादिगण हमने अन्यप्रकारसे वर्णन कियाहै ॥ १३८॥१३९ ॥

अपथ्य आहार ।

वर्ज्यं चैवातिमधुरमत्यम्लकटुतिक्तकम् । वर्ज्या वृद्धा विरूपा स्त्री वर्जयेल्लवणन्ततः ॥ भूतस्रावः प्रजायेत ज्वरश्चैव प्रजायते ॥ १४० ॥ (टो. नं.)

अर्थ-अत्यन्त मीठा और अत्यन्त खट्टा पदार्थ, कडुआ, चर्परा, बूढी और कुरूपा स्त्री तथा लवण इन पदार्थोंको रसके खानेवाला मनुष्य त्यागदे कारण कि इन पदार्थोंके सेवन करनेसे शरीरके पंच महाभूतोंके ह्रास, पंच महाभूतोंके नाशहोनेसे शरीरका नाश अवश्य होताहै क्योंकि यह शरीर पंचमहाभूतोंसे ही बनाहुआहै ॥ १४० ॥

पारदसेवीको त्याज्य कर्म ।

अतिपानं चात्यशनमतिनिद्रा प्रजागरः ॥ स्त्रीणामतिप्रसंगं च अध्वानं च विवर्ज्जयेत् ॥ १४१ ॥ अतिकोपं चातिहर्षं चातिदुःखमतिस्पृहाम् ॥ शुष्कवादं जलक्रीडामतिचिंतां च वर्जयेत् ॥ १४२ ॥ (र. चिं., र. रा. शं., र. रा. सुं., र. सा. प., नि. र.)

अर्थ-पारदके भक्षण करनेवाला मनुष्य सुरापान, अत्यन्त खाना, पीना, अत्यन्त सोना, अथवा जागना, अति स्त्रीप्रसंग, मार्गका चलना, (अथवा जहां ध्यानं चापि 'ऐसा' पाठहै वहां स्त्रियोंका ध्यान ऐसा अर्थ करना चाहिये) इनको छोडदेवे तथा अधिक क्रोध करना, अधिक खुशी करना, अत्यन्त दुःख, अनेक पदार्थोंकी अत्यन्त इच्छा, शुष्कवाद (निष्फल झगडा करना) जलमें खेलना या तैरना, और अत्यन्त चिंताकरना इनको त्यागदे ॥ १४१ ॥ १४२ ॥

अन्यच्च ।

पातकं च न कर्तव्यं पशुसंगं च वर्जयेत् ॥ चतुष्पथे न गंतव्यं विण्मूत्रं च न लंघयेत् ॥ ॥ १४३ ॥ धीराणां निंदनं देवि स्त्रीणां निंदां च वर्जयेत् ॥ सत्येन वचनं ब्रूयादप्रियं न वदेद्वचः ॥ १४४ ॥ (र. चि., र. रा. शं., र. सा. प., नि. र.)

अर्थ-पाप और पशुओंका संग त्यागदे, चौराहेपर न जाय मल और मूत्रको न फलांगे शूरवीरों और स्त्रियोंकी निंदा न करे झूठ औरकटु वचन न बोले ॥ १४३॥१४४॥

अपथ्य आहार विहार ।

कुंकुमागुरुलेपं च तथा कर्पूरभक्षणम् ॥ भूमिशय्यातिपानं च अध्वानं परिवर्जयेत् ॥ ॥ १४५ ॥ (टो. नं.)

अर्थ-केसर और अगरका लेप, कपूरका भक्षण धरतीका सोना सुरापान, मार्गका चलना, इनको छोडदेवे ॥ १४५ ॥

पारदसेवीको त्याज्य कर्म ।

न वादजल्पनं कुर्यात् दिवा चापि न पर्य्यटेत ॥ नैवेद्यं नैव भुंजीत कर्पूरं वर्जयेत्सदा॥ ॥ १४६ ॥ कुंकुमालेपनं वर्ज्यं न शयेत्कुशलः क्षितौ ॥ न च हन्यात्कुमारीं च वातलानि च वर्जयेत् ॥ १४७ ॥ क्षुधार्तो नैव तिष्ठेत्तु अजीर्णे नैव कारयेत ॥ दिवारात्रं जपेन्मंत्रं नासत्यवचनं वदेत् ॥ १४८ ॥ (र. चिं., र. रा. शं., र. सा. प., नि. र.)

पारदसेवी समयका लंघन न करे ।

एतांस्तु समयान्भद्रे न लंघेद्रसभक्षणे ॥ ॥ १४९ ॥ (र. चिं., र. रा. शं., नि. र.)

अर्थ-वितंडावाद न करे, और दिनमें भ्रमण न करे नैवेद्य अर्थात् मिठाई और कापूर न खाय, केसरका लेप न

करे और धरतीपर न सोवे, बालकोंको न मारे, और बादी करनेवाले पदार्थोंको न खावे, भूखा न रहे, और इतना भी भोजन न करे जिससे अजीर्ण हो, दिनरात भगवद्भजन करे और झूठ न बोले, हे पार्वती पारद सेवनके समय इन बातोंका उल्लंघन न करे ॥ १४६--१४९ ॥

नागदोषयुक्तरसोपद्रवशमन।

अङ्गिनां नागकल्केन भुक्तो यदि भवेद्रसः॥ नागदोषविशुद्ध्यर्थं गोमूत्रेण समन्वितम् ॥ ॥ १५० ॥ पटुयुक्तं पिबेन्मूलं कारवेल्ल्या भवं तथा ॥ एषां नागभवो दोषो नाशमायाति निश्चितम् ॥१५१ ॥ वंध्याककोंटकीपुष्पं गरुडी च ततः परम् ॥ आसामन्यतमं मूलं क्षिप्त्वा गोजलमध्यतः ॥ १५२ ॥ (र. रत्नाकर.)

अर्थ-यदि मनुष्योंने नागयुक्त पारदको खाया हो तो नागदोषकी शुद्धीके लिये सैंधानोंन, और करेलेकी जडको गोमूत्रके साथ पीवे तो नागदोषको शान्ति होती है अथवा वांझ ककोडा, लोंग, और पाताल गरुडी इनमेंसे किसी एककी जडको गोमूत्रके साथ पीवे तो भी नागदोषकी शान्ति होती है॥ १५०--१५२ ॥

नागादियुक्त पारददोषशमनोपाय।

कथमपि यद्यज्ञानान्नागादिकलंकितो रसो भुक्तः। तत्प्रावरणाय विज्ञः पिबेच्छिखां कारवेल्लभवाम् ॥ १५३ ॥ (र. चि., र. रा. शं., र. सा. प., नि. र.)

अर्थ-यदि विना समझे या विना विचारे नागदोष युक्त पारदको खालेवे तो उस दोषको दूर करनेके लिये करेलेकी जडको पीवे ॥ १५३ ॥

नागदोष शमनोपाय।

यदि युक्तं पिबेन्मूलं कारवल्लीभवं तदा। नागदोषः शमं याति पारदस्य न संशयः॥ ॥ १५४ ॥ (टो. नं.)

अर्थ-यदि करेलेकी जडको गोमूत्रके साथ पीवे तो पारदका नागदोष शान्त होता है ॥ १५४ ॥

वंगदोषशान्ति।

वंगदोषप्रशांत्यर्थं शरपुंखां प्रभक्षयेत् ॥ ॥ १५५ ॥ (टो. नं.)

अर्थ-और वंगदोषकी शान्तिके लिये सरफोंखेकी जडको पीवे ॥ १५५ ॥

अशुद्धपारदविकार शान्ति।

विकारो यदि जायेत पारदान्मलसंयुतात्॥ गंधकं सेवयेद्धीमान्पाचितं विधिपूर्वकम् ॥ ॥ १५६ ॥ (यो. चिं., र. रा. सु., नि. र.)

अर्थ-यदि दोषयुक्त पारदके खानेसे विकार पैदा हुआ हो तो उसकी शान्तिके लिये विधिवत् शुद्ध कियेहुए गंधकको खावे ॥ १५६ ॥

अन्यच्च।

गंधकं माषयुग्मं च नागवल्लीदलैः सह। खादेत्पारदसंग्रस्तो दोषशान्तिस्तदा भवेत ॥ १५७ ॥ (यो. चि., नि. र.)

अर्थ-पारददोषसे ग्रस्त मनुष्य अर्थात् जिसने पारा खाया हो पानके साथ दो माशे गंधकको खावे तो दोष अवश्य ही शान्त होगा ॥ १५७ ॥

जो दोष पूर्व कहेहैं उनकी शान्ति कहतेहैं।

गवां दुग्धयुतं पीत्वा गंधकं दिनसप्तकम् ॥ पारदस्य विकारेण मुक्तः सुखमवाप्नुयात्॥ ॥ १५८ ॥ (अनुपानतरंगिणी.)

अर्थ-दोषोंका वर्णन पूर्व करचुके हैं अब उनकी शान्ति कहते हैं। आंवलासार गंधकको गायके दूधके साथ सात दिनतक पीवे तो पारदके विकारसे मुक्त होकर सुखको प्राप्त होता है ॥ १५८ ॥

भिन्न भिन्न विकारशान्ति।

उद्गारे सति दध्यन्नं कृष्णजीरं ससैन्धवम्। अभ्यंगमनिलक्षोभे तैलैर्नारायणादिभिः ॥ ॥ १५९ ॥ अरतौ शीततोयेन मस्तकोपरि सेचनम्। तृष्णायां नारिकेलाम्बुमुद्गयूषं सशर्करम्। द्राक्षादाडिमखर्जूरकदलीनां फलं भजेत् ॥ १६० ॥ (र. र. स.)

अर्थ-पारदके खानेसे यदि वमन हो तो काला जीरा और सैंधानोन खावे, शरीरमें वातका क्षोभ होनेपर नारायण तैल प्रभृतिका अभ्यंग करे, अगर घबराहट होवे तो मस्तकपर ठंडे पानीकी धार गिरवावे, प्यास लगनेपर नारियलका जल या खांड सहित मूंगकी दालका पानी पीवे या अंगूर, अनार, खजूर, और केलेके फलोंको खावे१५९॥१६०॥

पारदविकारशान्ति मर्दनद्वारा।

नागवल्लीरसं प्रस्थं भृंगराजरसं समम्। तुलसीरसं प्रस्थं च च्छागदुग्धं समांशकम् ॥ ॥ १६१ ॥ मर्दयेत्सर्वगात्रेषु यामयुग्मं दिनत्रये ॥ स्नानं शीतलनीरेण सूतदोषप्रशान्तये ॥ १६२ ॥ (यो. चिं., नि. र.)

अर्थ-यदि पारदके खानेसे शरीरमें फोडा फुंसी होगई हों तो १ सेर पानका रस, और १ सेर जलभांगरेका रस, तथा १ सेर ही तुलसीका रस और १ सेर बकरीका

दूध इनको मिलाकर तीन दिवसतक दो दो प्रहर नित्यप्रति समस्त शरीरमें मर्दन करे, फिर शीतल जलसे स्नान करे तो पारदका दोष शान्त होताहै ॥ १६१ ॥ १६२ ॥

रस अजीर्णदोष ।

सूताजीर्णाज्ज्वरस्तंद्रा नाभिमूलेऽतिगौरवम् । अंतर्दाहो जडत्वं च वह्निनाशः प्रजायते ॥ १६३ ॥ मूर्च्छा शोको भ्रमः कंपश्छार्दिर्मोहो ज्वरस्तथा । हिक्कावेपथुशूलानि निद्रालस्यमरोचकम् ॥ १६४ ॥ लिंगस्तंभो ह्यतीसारः कासश्वासविजृंभिका ॥ कर्णाक्षिचक्षुःकुक्षेश्च चरणोदरमूर्द्धनि ॥ ॥ १६५ ॥ मेढ्रदाहोग्निबंधश्च भवेत्सर्वांगवेदना । ये चान्ये च महारोगा रसाजीर्णे भवन्ति हि ॥ १६६ ॥ (टो. नं.)

अर्थ-पारदके अजीर्ण न होनेसे ज्वर, तन्द्रा, नाभीकी जडमें भारापन, अन्तर्दाह, शरीरकी जडता और मंदाग्नि भी होती है या मूर्च्छा, शोक, भ्रम, कांपना, उलटी, बेहोशहोना, ज्वर, हिचकी, शूल, नींद, आलस्य, अरुचि, जननेन्द्रियका जकडना, खांसी, श्वास, दस्त, जँभाईका आना, कान, आंख, पसली, पांव, पेट और शिरमें दर्द वृषणोंमें दाह, मंदाग्नि और जो बडे २ रोग हैं वे भी रसाजीर्णमें होते हैं ॥ १६३-१६६ ॥

रस अजीर्ण लक्षण चिकित्सा

नाभिमूले भवेच्छूलं निद्रालस्यं ज्वरोऽरुचिः॥ जाड्यं मलग्रहो दाहो रसाजीर्णे भवेन्नृणाम् ॥ १६७ ॥ रसाजीर्णमिति ज्ञात्वा कुर्यात्प्रतिक्रियाम् ॥ दिनत्रयं प्रयत्नेन क्रियमाणे रसायने ॥ १६८ ॥ कर्कोटीकंदसंभूतं कषायं त्रिदिनम्पिबेत ॥ रसाजर्णे पिबेद्वापि गोजलं रुचकान्वितम् ॥ १६९ ॥ विश्वसैंधवसंयुक्तं मातुलुंगस्य मूलकम् ॥ ॥१७०॥(र.रत्नाकर.)

अर्थ-पारदभक्षणमें मनुष्योंको जब अजीर्ण होता है तब नाभीके नीचे शूल, नींदका आना, आलस्य, ज्वर, अरुचि, शरीरका जकडना, विडबंध (कब्ज) और दाह ये होते हैं । जब यह पूर्ण रीतिसे ज्ञात होजावे कि रसाजीर्ण होगया तो उसकी चिकित्साही करनी चाहिये । रसायन भक्षण करनेपर यदि अजीर्ण होजावे तो बांझ ककोडेकी जडका काढा बनाकर तीन दिवसतक पीवे अथवा रसाजीर्णमें गोमूत्रमें कालानोंन मिलाकर पीवे या सोंठ सैंधानोंन, और विजोरेकी जडको औटा कर पीवे ॥ ॥ १६७-१७० ॥

रसअजीर्ण चिकित्सा ।

कर्षैकं स्वर्ज्जिकाक्षारं कारवेल्लरसे प्लुतम्॥ सौवर्च्चलसमोपेतं रसे जीर्णे पिबेद्बुधः॥१७१॥ (र.रा. सुं., नि. र.)

अर्थ-रसाजीर्ण होनेपर बुद्धिमान् मनुष्य करेलेके रसमें एक तोला सज्जीक्षार और कालानोंन मिलाकर पीवे॥१७१॥

रसअजीर्णका उपाय ।

ऐवं चैव महाव्याधीन् रसेऽजीर्णे तु लक्षयेत् ॥ कार्षिकं स्वर्ज्जिकं क्षारं कारवेल्लीरसप्लुतम् ॥ गोमूत्रं सैंधवयुतं तस्य संस्रावणं परम् ॥ १७२ ॥ (र.चिं.,र. रा.शं.,र. सा. प., टो. नं.)

अर्थ-इसप्रकार रसाजीर्णमें उत्पन्न हुई महाव्याधियोंको अच्छीतरह समझलेवे और रसाजीर्णमें एक तोला सज्जी खार और करेलेके रसको पीवे अथवा गोमूत्रमें सैंधानोंन घोलकर पीवे ॥ १७२ ॥

रसअजीर्णका उपाय ।

सिंधुकर्कोटकीमूलं कारवेल्लीरसप्लुतम् ॥ सौवर्चलसमोपेतं रसाजीर्णी पिबेद्बुधः ॥ ॥ १७३ ॥(र. चिं.,र. रा. शं., र. सा. प.)

अर्थ-सैंधानोंन, बांझ ककोडेकी जड, और काले नोंनको करेलेके रसमें डाल कर पीवे तो रसाजीर्णसे मुक्त होता है ॥ १७३ ॥

अन्यच्च ।

सौवर्चलं गोजलेन पिबेद्वासुखवांछया ॥ विश्वसैंधवचूर्णं च मातुलुंगाम्लवारिणा ॥ रसाजीर्णविनाशार्थं पिबेद्रोगी दिनत्रयम् ॥ ॥ १७४ ॥ टो. नं.)

अर्थ-गोमूत्रके साथ कालेनोंनको पीवे अथवा सोंठ तथा सैंधवको बिजोरेके रसमें मिलाकर पीवे तो रसाजीर्ण नष्ट होता है ॥ १७४ ॥

रसअजीर्णचिकित्सा ।

मोचकस्य रसं देवि राजकोशातकीरसम् ॥ रसाजीर्णे तु जीर्येत नियतं नात्र संशयः ॥ ॥१७५॥ लंघनं त्रिदिनं कुर्याद्रसं चैव विवर्जयेत्॥कर्कोट्याह्निकषायं च पाययेद्दिवसत्रयम् ॥ १७६ ॥ (टो. नं.)

अर्थ-यदि रसाजीर्णमें सेंजनेके रसको या घी या तोरईके रसको पीवे तो खायाहुआ पदार्थ शीघ्र ही पच जाता है अथवा तीन दिवसतक रसका परित्याग करता हुआ लंघनकरे या बांझ ककोडेके काढेको तीन दिनतक पीवे ॥१७५॥१७६॥

अन्यच्च ।

शरपुंखासुरदालीपटोलबीजं च काकमाची

१ रसाजीर्णे महाव्याधीँल्लक्षयेद्भिषगुत्तमः । (र.रा.,शं.र.सा.प.)

च ॥ एकतमां तु कथितामजीर्णरसायने तु पिबेत् ॥ १७७ ॥ (र. चिं., र. रा. शं., र. सा. प., नि. र.)

अर्थ-बुद्धिमान मनुष्य, शरपुंखा, देवदाली, पटोलके बीज और मकोय इनमेंसे किसी एकका काढा करके रसाजीर्णमें पीवे तो अजीर्ण दूर होता है ॥ १७७ ॥

रसअजीर्णचिकित्सा।

मुनिभृंगराजैश्चतुर्थीसुपिष्टीकृतं रोमतक्रं पिबेत्सप्तरात्रम् ॥ अतिचांतर्दाहं कृतं सूतकेन पतेत्सूतको मूत्रमार्गेण पश्चात् ॥१७८॥ (नि. र.)

अर्थ-अगस्त्य, भांगरासे चार बार अच्छी तरह पीसे हुए रोमतक्रको सात रात तक पीवे तो पारेके कारण हुए हृदयके दाहकी शान्ति होती है और पारा सब मूत्रकी राहसे निकल जाता है ॥ १७८ ॥

रसजीर्णलक्षण।

अनुलोमगतिर्वायुः स्वस्थता सुमनस्कता॥ क्षुत्तृष्णेन्द्रियवैमल्यं रसपाकस्य लक्षणम् ॥ ॥ १७९ ॥ (टो. नं., र. रा. सुं.)

अर्थ-वायुका यथार्थ रीतिसे देहमें सञ्चार होना, स्वास्थ्य, मनका प्रसन्न रहना, भूख, प्यास और इन्द्रियोंका ठीक रीतिसे व्यापार होना रसकी परिपक्वताका लक्षण है ॥ १७९ ॥

रससेवनके एक दोषका निवारण।

एको हि दोषः सूक्ष्मोऽस्ति भक्षिते भस्मसूतके ॥ त्रिसप्ताहाद्धरारोहे कामान्धो जायते नरः ॥ १८० ॥ नारीसंगाद्विना देवि अजीर्णं तस्य जायते ॥ मैथुनाच्चलिते शुक्रे जायते प्राणसंशयः ॥ १८१ ॥ युवत्या जल्पनं कार्य तावत्तु मैथुनं त्यजेत् ॥ लघुतां शेफसो ज्ञात्वा पश्चादच्छसुखी भवेत् ॥ ॥ १८२ ॥ ब्रह्मचर्येण वा योगी सदा सेवेत सूतकम् ॥ समाधिकरणं तस्य क्रामणं परमं मतम् ॥ १८३ ॥ (र. चिं., र. रा. शं., र. रा. सुं., नि. र., र. सा. प.)

अर्थ-पारद भस्मके भक्षण करनेमें एक बडाही दोष यह है कि इकीसदिन तक खानेसे मनुष्य कामान्ध होजाता है उसको स्त्री न मिले तो अजीर्ण पैदा होता है और मैथुन करनेसे यदि वीर्य अपने स्थानसे च्युत हो जाय तो वह मनुष्य मरजाताहै इसलिये सुन्दर स्त्रीके साथ बात चीत या हास्य करे और जबतक पारद भस्म खावे तबतक मैथुन न करे, अथवा योगीराज ब्रह्मचर्य वृत्तिको धारण कर पारदको सेवन करे तो समाधिका लगाना ही उसका क्रामण होताहै और शेफ (जननेन्द्रिय) की लघुता (हलकापन) को जानकर पीछे स्त्रीसंग करे ॥ १८०-१८३ ॥

सूतभक्षणमें दोष और उसका निवारण।

एको हि दोषः सूक्ष्मोयं भक्षिते भस्मसूतके। त्रिसप्ताहाद्धरारोहे कामान्धो जायते नरः॥ ॥ १८४ ॥ मैथुनाच्छुक्रमेहस्य त्रिसप्ताहादधः कृतात् । जायते प्राणसंदेहस्तावत्तन्मैथुनं त्यजेत् ॥ १८५ ॥ युवत्या जल्पनं कार्यं युवत्याश्चांगमर्दनम् । तस्याः स्पर्शनमात्रेण रसः क्राम्यति विग्रहे ॥ १८६ ॥ यथायथाह्लादयति सुस्त्रीरूपनिरीक्षणात् । तथाक्रामति देवेशि सूतकोसौ ततः क्रमात् ॥ १८७ ॥ (टो. नं.)

अर्थ-पारदके भक्षण करनेमें एक यही दोष बडा है कि उसके तीन सप्ताहतक भक्षण करनेसे मनुष्य कामान्ध होजाताहै तीन सप्ताहके भीतर कियेहुये मैथुनसे प्राण नष्ट होते हैं इस लिये जबतक पारदभस्मका सेवन करे तबतक स्त्रीका संग न करे स्त्रियोंके साथ बातचीत करे और उनके कुच मर्दन करे स्त्रियोंके स्पर्श करनेसे ही पारद शरीरमें क्रामण करता है जैसे जैसे सुन्दर स्त्रियोंके रूपके दर्शनसे मनुष्य प्रसन्न होताहै वैसेवैसे हे देवि यह पारद शरीरमें अधिक रमताहै ॥ १८४-१८७ ॥

स्त्रीसेवननिषेध।

लवणाद्विक्रियां याति स्त्रीसंगान्म्रियते नरः ॥ १८८ ॥ (टो. नं.)

अर्थ-लवणके खानेसे शरीरमें विकार पैदा होताहै और स्त्रीके संगसे मनुष्य मरजाताहै ॥ १८८ ॥

रसविकारशान्ति।

रसायनविधिभ्रंशाज्जायेरन् व्याधयो यदि। यथास्वमौषधं तेषां कार्यं मुक्त्वा रसायनम् ॥ १८९ ॥ (र. सा. प.)

अर्थ-रसायनविधिके भ्रष्ट होनेसे यदि रोग पैदा हो तो रसायनविधिको छोडकर रोगानुसार औषधि करना चाहिये ॥ १८९ ॥

इति रससेवनाख्यसंस्कारः समाप्तः ।

नुकसान पारद और उसका इलाज। यूनानी तरीकेसे (उर्दू)

जीवक यानी सीमाव अगर जिन्दः खाये तो अकसर जरर नहीं करता उसी वक्त निकल आताहै मगर जो नसा कि मसअद और मंकसूल होता है उसका खाना बातिन नहीं दर्द और बदनमें वर्म और मगस शदीद और जबानमें गरानी मैदे बूझः और बोलकी बंदिश लाता है । इलाज-माइउल असल और बूरा पकाकर कैकराये और इन्हीसे हुकनः करे और तीन दिरम माइउल असलके हमराह कई मरतबः में दे इसके बाद दूध और बजूरके लुआब और शराबके और मरमुफीद है और दिलकी तकवियत अदविया और अगजिया मुनासिबसे जरूरीहै और जो कुछ

कि मुर्दासंग खानेके बाबमें बयान कियाजायगा नफा करताहै। अगर जिंदा सीमाव कानमें चलाजाय तशंनुज और दर्द शदीद और अखलात अकल और उस जानिबमें बहुत बूझः पैदा होजाता है और अकसर सकृता और सर-अभी होजाए और उसके निकालनेकी तदबीर यह है कि रसास यानी रांगा कानमें लेजाए ताकि सीमाव उसपर चिपट जाए और बाहर निकालले। (सुफहा तिब अकबर उर्दू ७९२)

सफाई सीमाव (फार्सी)

दस्तूर-तसफिया जीवक कि मअमूल अहल सिनात यानी कीमियाँ अस्तआँअस्त कि जीयकरा दर जर्फ मसी बेकलई साफ बेचरक बकुदूरत करदः बर आतिश मुजा-रन्द व बफाल्सः अन्दकी जर्फ नसितः रा बरे आबबिसियार सर्द करदः बालाइआँ बिदारन्द आँचि जीवक खालिस साफी अस्तसऊद कर्दः बरसितः जेरींआँजर्फ पुरआबसर्द मुजतमामे गरदद आँराजमानमूदःबकार बरन्द व अमाव-तरीक मुतअर्रिफ ईअस्त कि जीवकरा दर हावन संईग या दरजर्फ शीस्तः या लुआबदारद व आबवेद अंजीर बिसा-नीद बादअजाँ शीस्तः हिनकाद व मसकाल आँरा वासी मसकाल आब खालिस दरदेग संगी बातिश मलायम बि-जोशानंद व हरचंद आब बह तहलील रदद अन्दक अन्दक आब तायकर तलनीजदाखिल नुमायन्द ता तमाम खुनक गर्दद पस जीवकरा बरदाश्तः दर शीसः निगाह दारन्द बई मुसम्मी अस्त बिलुल अरवाह वास्तलाह अहलासिनात व मुनकी अस्त। (सुफहा २३३ किताब जिल्द दोयम करावादीन कबीर)

कच्चा पारासेवनविधान।

पारा १ तोला, गौका दूध १ सेर दोनोंको मिला आगपर औटावे तीन पाव रहजा-नेपर दूधको छानले ताकि पारा निकल जावे फिर इसका सेवन करे पारा मिला औटाया हुआ दूध पुरुषके अंगअंगको वज्र बनादेताहै और हानि किसी प्रकारकी नहीं करता परन्तु पारा शिग्रफका निकाला हुआ हो। (अखबार भारतरक्षक अप्रैल व मई सन १९०७)

तरीक खुर्दन सीमाव खाम (फार्सी)

गिदर शिकम व माँद व नफा ओ जाहर अस्त बिगीरन्द सीमाव हरमिकदार कि ख्वाहद खुर्द व दरकागज या बर्ग या न हिल्द पस आँरा फर्द बुर्द व कवल अजखुर्द नवीन खसतीन बायद कि बिरंजपुख्तः जौबरात तनावुलकुनद वा रोगन या बी रोगन व मुत्तसिल ओ सीमाब खुरद व तरीकि गुफ्तः शुद व बादअज खुर्दन सीमाव अन्दके दहन बस्तः दारन्द व तकल्लुम न कुनद ता सीमाव अजदहनकुरू नकीतद व दो रोज दार्मियान हम विरीनिसान सीमावरा मेखुर्दः बाशद कानूनी कि गुफ्तः शुद दरहफ्तरोज नफा बोपिदीद आयद व हरकदर मुद्दत कि बिख्वाहद बकार बरन्द मुख्तारस्त व अव्वल अज नीम तोला शुरूकुनद पस चूं बतबै मुवाफिक आयद हरकदरं कि ख्वाहन्द आहिस्तः आहिस्तः बियफजानीद अम्मादर अय्यामे सरमा बायद खुर्द न आँकि दरगर्मा बशर्ते कि मबरूदी व मरतूबी मिजाज बुवद अर्जा मुन्तफः शवद व महरूरीरा सख्तजियां दारद व आफात आरद जबानरा नवायद व नशायद व बद आँकि ता सहरोज ईसीमाव दरशिकम् मीनुमायद व रोज सोयम दरगायत बरमीआयद व बायद कि सीमाव मस्कह व रागन बिसियार मेखुर्दः बाशद मुजर्रितन रसानद व अज तुर्शी व बादी अहतराज जाजिम दानंद ओ अफसूं ईनस्त-(सुफहा ९ किताब मुजरबात अकबरी)

तरकीब खुर्दन सीमाव खाम (फार्सी)

दवाए कि दर आवुर्दन इश्तहा नफा तमाम दारद व बगायत मुवस्सर अस्त व मंजिलः अकसीर अस्त सीमाव यक दाम गुलैनरमा सद अदद सुहागा ४ माशा निखस्तीं सीमावरा दरशीरा बर्ग भटकटाई कि आँरा बाजंजान जंगली गोयन्द दो रोज तर कुनन्द व रोज सोयम सीमाव बैरूं आरन्द व दरापर्चः सुफ्त दो सह मर्तबः साफ नुमायन्द बादहू दरआ-फ्ताब खुश्क साजन्द पस सुहागा व सीमाव दरओंद नारियल या चोवनी महल कुनन्द व गुलहाइ नरमा अन्दक अन्दक मे अफजानीद हलमें कुनन्द ताकि हमेः गुलहा दरूइ हलश-वद मीआद सहक चहार पास अस्त पसमिकदार फिल-फिलकर्द गोलीबंदन्द व अगर गोली न बन्दन्द बकदरे गुलाब दरआँ बियफजानेद व बाद अजतुआम दो गोली फरू बुरन्द व अजतुर्शी व बादी परहेजन्द तुआमहज्म कुनंद बइश्तहा बिसियार आरद गुल नरमा अगरगुंचः बुवद व तमाम शिगुफ्तः बाशद बेहतर अस्त (सुफहा ५२ किताब मुजरबात अकबरी)

सीमावको हमराह कपास स्याह गुल-खानेके फवायद-(उर्दू)

अगर कोई शख्स ढाई पत्ती कपास स्याह गुलकी खाकर सीमाव तोला भर या दो तोला बकदर बरदाश्त तबियतके पीजावे और उसके ऊपर ढाई अदद कपास स्याहगुल मजकूरकी पत्ती खालेवे तो सीमाव मजकूर जब-तक मैदेमें रहेगा इमसाक और कुव्वतवाह इतनी होगी कि जिस कदर चाहे जमाइ करे मादा न होगा और पैदल चलनेसे थकावट न आवेगी जब बराह बराजके सीमाव खारिज होजायगा यह तासीर उससे बातिल होजावेगी (सुफहा अकलीमियां ५८)

मभी-जायफलमें असर सीमाव लियाहै (फार्सी)

कि बगायत अजीबअस्त जोजहिन्दी दुरुस्त मुकश्शर साजन्द व दरूएयक सूराखखुर्द कुनन्द व दहदिरम किब-रियत व दहदिरम जीवकहल करदः दरींअन्दाजन्द व सूराख जोजबन्द कुनन्द पस दरसह अदद सुबूइ शीरगाउ बिजो-शानन्द यक शवानः रोज बाद आजाँ बर आवुर्दः जोजरा

१ अगर यह मुफीदहै तो चन्द्रोदय जायफल वगैरः के साथ किसीकदर मुकव्वी होगा।

पारःकर्दः बअदावियः तमामी दूरसाख्तः मग्ज जौजहिन्दीरा खुश्क साख्तः बिदारन्द व हररोज अजाँ अन्दक अन्दक बिखुरन्द बेजनतावन तवानंद आबुर्द व रोगने कि बालाइ शीर मजकूर बन्दद नीज मुकव्वीस्त (सुफहा १०१ किताब मुजरबात अकबरी)

रोगन सीमाब गायतमभी बंजरिये कबूतर (फार्सी)

बच्चा कबूतर कि कली तमाम नंवरआबुर्दः बाशद बिगीरन्द व यकदाम सीमाव आँरा बिजोशानन्द व रोज दोयम दोदाम व रोज सोयम सह दाम व रोज चहारम चहार दाम व रोज पंजम पंच दाम व मुजर्रद नोशानीदन जिबः कुनन्द बहलक मुकदवी बिदोजन्द चुनांचः सीमाव दरशिकम ओमाँद व नतवानन्द बर आमद पसआँरा दर आब बिजोशानन्द ताकुलिहाइ बाजू जुदा शवद आँकुलिहारा बिगीरन्द व दरशीशः मालुल हिकमत कि बराइ चोबः वरआवुर्दन मेसाजन्द निहादः बतरीक चोबः चकानन्द व अर्क निगाहदारन्द व खुराक ई आनस्त कि वतन यानी तंखदरूइ तरकुनन्द व कतरः अज्व फरूचकद बिखुरन्द यानी यक कतरः खुराक अस्त बापान बायद खुर्द दरतकवियत बाह हुक्म अकसीर दारद (सुफहा ८४ किताब मुजरबात अकबरी)

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया भाषाटीकायां रससेवनादिकथनं नामैकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ३९ ॥

औषधिसेवनाध्यायः ४०.

कज्जलीसेवन ।

यह कज्जली संस्कृत दीपित पारदकी समान अंश गंधक शुद्धसे शीतखल्वमें घोट बनी थी (आगे गंधकजारित पारदकी द्विगुणगंधकसे तप्तखल्वमें बने)

ता० २८ से २ चावल कज्जली, ६ चावल आँवला और १ रत्ती मिश्री सब २ रत्तीको दूधके साथ रातको सेवन करना आरम्भ किया ।

ता० ११ । १ तक १४ पुडिया सेवन की कोई प्रत्यक्ष लाभ न दीखपडा ।

ता० १२ को २ चावल कज्जली १॥ चावल अभ्रभस्म, ४ चावल आंवला, शहद और घीमें मिला दूधके साथ रातको सेवन किया ।

ता० १३ । १४ को यही दवा केवल शहदमें मिला दूधके संग सेवन की ।

ता० १५ से ४ चावल कज्जली, और १२ चावल मिश्री सब २ रत्तीको दूधके साथ रातको सेवन करना आरम्भ किया और भोजनोत्तर दोनों समय १ ड्राम चिरायता पीना आरम्भ किया ।

सम्मति–ता० १० शुक्रवारमें वारिश होने और कोहरा पडनेके कारण शीत अधिक होजानेसे दस्त साफ नहीं होता और भूख ठीक नहीं लगती । ३–४ दिन चिरायता पीया इससे कुछ लाभ न हुआ उलटा ज्यादा कब्ज मालूम हुआ इसलिये छोडदिया । अन्न कम खाया दूध और बादामका सेवन अधिक किया १ दिनरातको कज्जली हडके मुरब्बेके संग खाई तो कब्ज घटकर कुछ तबियत ठीक हुई ।

ता० २०–२१ को कज्जलीका सेवन बंद रहा ।

ता० २२ से प्रातःकालको ४ चावल कज्जली, १ चावल अभ्रक, ५ चावल आंवला, और १० चावल मिश्रीकी पुडियाको १ माशे घी, ३ माशे शहदमें मिला चाट दूधसे सेवन करना आरम्भ किया । और रात्रिको स्वर्णमयी पारदगुटिका दूधमें औटा पीना आरम्भ किया । अब कब्ज दूर होगया क्षुधा सामान्य ठीक होगई ।

ता० ३० जनवरीसे ६ चावल कज्जली, २ चावल अभ्रक, २ चावल शिलाजीत, ६ चावल मुंडीचूर्ण, सब २ रत्तीकी पुडिया, २ माशे घी और ३ माशे शहदके साथ खाना आरम्भ किया और ऊपरसे दूध पीना बदस्तूर जारी रक्खा और रातको गोलीका सेवन निरंतर रहा ।

ता० ३१-१-२ को ३ दिन पुडिया नहीं खाई ।

ता० ३ फर्वरीसे हरपुडियामें २ रत्ती आंवला, ४ रत्ती मिश्री मिला केवल दूधसे खाना आरम्भ किया ।

ता० ८ तक ये पुडिया खाई और गोली भी पीई फिर इस पुडियामें मुंडी और बढा दी किन्तु आगे कुछ मौसम गर्म होजाने और कुछ कब्ज मालूम होनेसे मुंडीयुक्त पुडियाका सेवन न चलसका गोली भी १० ता० के बाद ज्यादः कब्ज होजानेसे कभी कभी बंद रक्खीगई खूब दूध पीनेसे यह कब्ज दूर होगया किन्तु मौसम गर्म होजानेके कारण रात्रिको दूधकी रुचि नहीं होती अत एव ता० १६ से गोली बंद करदीगई ।

कज्जलीसेवनका नक्शा ।

तारीख.	पुडिया.	गोली	विशेषवार्ता.
२८।१२।०७ से ११।१ तक	१४ पुडिया-(जिसमें १ चावल कज्जली ६ चावल आंवला, १ रत्ती मिश्री, सब २ रत्तीकी पुडिया रातको दूधके साथ सेवन कीगई.)		सुबह कसरत और शामको हवा खाना जारी रक्खा.
१२।१।०७	१ पुडिया (जिसमें २ चावल कज्जली, १॥चावल अभ्रकभस्म,४चावल आंवला, शहद और घीमें मिला दूधके साथ.		
१३।१ से १४।१ तक	२ पुडिया (उपरोक्त दवा केवल शहदमें मिला दूधके साथ सेवन)		
१५।१ से १९।१ तक	५ पुडिया (जिसमें ४ चावल कज्जली १२ चावल मिश्री सब २ रत्तीको दूधके साथ और भोजनोत्तर या दोनों समय १ ड्राम चिरायता)		३-४ दिन चिरायता पीया कोई लाभ न मालूम हुआ उलटा कब्ज मालूम होनेसे छोडदिया घी, दूधका सेवन अधिक किया.
२०।१ से २१।१ तक	कज्जलीका सेवन बंद रहा-		
२२।१ से २९।१ तक	८ पुडिया (जिसमें ४ चावल कज्जली, १ चावल अभ्रक, ५ चावल आंवला,१० चावल मिश्री, १ मा० घी, ३ माशे शहदमें मिला दूधसे सेवन की)	रात्रिको स्वर्णमयी गुटिका दूधसे	अब कब्ज नहीं मालूम होता क्षुधा सामान्य ठीक होगई.
३० । १	१ पुडिया (जिसमें ६ चावल कज्जली, २ चावल अभ्रक, २ चावल सिलाजीत, ६ चावल मुंडी चूर्ण सब २ रत्तीकी पुडिया ३ मा० शहदके साथ ऊपरसे दूध पीया)		
३१ । १ । २	३ दिन पुडिया नहीं खाई.		
३।२ से ८।२ तक	५ पुडिया (उपरोक्त पुडियामें २र० आंवला ४ रत्ती मिश्री मिला केवल दूधके साथ		
९ । २	१ पुडिया (उपरोक्त पुडियामें कुछ मुंडी और बढादी)		किन्तु कब्ज मालूम होनेसे मुंडी युक्त पुडियाका सेवन न चलसका-
१० । २	पुडिया बंद		
१६ । २	३८ दिन पुडियाका सेवन हुआ	गोलीबंद २५ दिन गोली सेवन	ज्यादः कब्ज होजानेसे गोली कभी२ बंद रक्खीगई

सम्मति-अनुभवसे ज्ञात हुआ कि ४ चावलसे १ रत्ती तक कज्जलीकी साधारण मात्रा मेरे लिये है इसके सेवन-दूध पीनेमें रुचि होती है और दूध पचता है, मस्तकको ऊष्मा नहीं देती और निद्रामें हानि नहीं करती जाडोंके दिनोंमें कज्जलीका सेवन त्रिफला वा और ऐसीही दस्तावर औषधियोंके साथ होना चाहिये । कज्जलीके सेवनकालमें दूधका सेवन अधिक रखना चाहिये और अन्न कम खाना चाहिये जिससे कब्ज न होने पावे ।

ढाककी जडकी छालके चूर्णका सेवन ।

सोमवार ता० १६ मार्चसे २ रत्ती, ३ रत्ती, या ४ रत्ती ढाककी जडकी छालके चूर्णको समान मिश्री मिला धारोष्ण (तत्कालका कढाहुआ दुग्ध जिसकी गर्मी शांत न होने पाई हो) दुग्धसे प्रातःकाल खाना आरम्भ किया तो दूधके पचनेकी शक्ति उत्पन्न हुई दोपहरको दूध चावल या दूध दलिया और रातको गाजर आदिकी खीर पूरीसे प्रतिदिन खानी पडी। दस्त बँधा हुआ पीला ठीक होनेलगा । ४ रत्ती मात्रा अधिक हो यकृतपर और मस्तिष्कमें शुष्कता करती थी २ वा ३ रत्ती ठीक होती थी ।

ता० ३० मार्चतक १५ दिन खाकर ऋतु बहुत उष्ण होजाने और तृषा बढजाने और मल अधिक कडा आनेके कारण इस औषधिका सेवन उचित न समझ बंद करदिया।

यह औषधि कफनाशक, दूधको पचानेवाली, क्षुधाको जगानेवाली, और कामोत्पादक सिद्धहुई । ग्रीष्म और वर्षाके बीत जानेपर शरद ऋतुमें फिर इसका सेवन आरम्भ

करनेयोग्य है शीतकालमें औटे दूधसे सेवन करना उचित होगा और यह भी विचारा जाय कि क्या घी, शहद मिलाकर शीत ऋतुमें सेवन करना चाहिये।

सहमलपुष्पचूर्णसेवन।

सूखेहुये सहमलके फूल और समान मिश्री मिलाकर ४-४ रत्तीकी पुडिया बाँध लीगई।

ता० ८ को १ पुडिया धारोष्ण दुग्धसे।
ता० ९ को २ पुडिया.
ता० १० को २ पुडिया.
ता० ११ को १ पुडिया.

३-४ दिनके सेवनसेही सहमल पुष्पने पेटमें गुरुता उत्पन्न की और भूख घटादी अतएव छोडदिया इस चूर्णको दीप्त जठराग्नि होनेपर शहदमें मिला और औटे दूधसे सेवन करना शायद हित पडे।

सहसवानवाले हकीमकी मारफत धर्मपुरसे आये श्वेत ढाकपुष्प चूर्णका सेवन।

श्वेतढाकपुष्पचूर्ण और समान मिश्री मिला ४-४ रत्तीकी पुडिया बना लीं।

ता० १६ को	४ रत्ती।
ता० १७ को	८ रत्ती। (८ रत्तीकी मात्रा असह्य होनेसे घटा दीगई)
ता० १८ को	४ रत्ती।
ता० १९ को	४ रत्ती।

२-३ दिन खानेसेही क्षुधा और दुग्धरुचि उत्पन्न हुई और दस्त साफ होनेलगा किन्तु ३ दिन और सेवन करनेसे दस्तमें खुश्की आजानेसे छोडदिया।

सम्मति-घी और शहद मिला चाट ऊपरसे दूध पीना ठीक होगा वा बरसातमें केवल मिश्री मिला दूधसे सेवन करो। (जड और फूलके गुण एकसेही प्रतीत हुये)

चित्रक (चीते) का सेवन।

कार्तिकवदी २ दोजसे ३ माशे जौकुट चीतेको शामको ३ छटांक पानीमें भिगो प्रातःकाल छान पीना आरम्भ किया ७ दिन पीछे २ माशे चीतेकी छालका जल इसीतरह पीया सब १०-१२ दिनतक सेवन हुआ। मध्यमें इसने पट्ठोंको ताकत दी जिससे शरीरमें एक प्रकारका बल जानपडा और मस्तकका बलगम गाढा होगया। कुछ दूध और मीठेकी रुचि भी उत्पन्न हुई और निरन्तर कामोत्तेजन भी हुआ किन्तु अन्तमें खुश्की ज्यादः होजानेसे कब्ज होगया भूख बहुत घटगई और कमजोरी आगई। सरकी रगें खिच सी गई जिसकी शान्ति फ्रूटसौल्ट पीने और दुग्ध पीने, फलखाने और अन्न कम खानेसे हुई।

सम्मति—इस अनुभवसे सिद्ध हुआ कि चित्रकमें कुचलेकीसी शक्ति है। और ये पतले मलको बांधने और रगोंको कसने मस्तिष्कके शीतको दूर करनेको उत्तम औषधि है किन्तु इस समय इसके सेवनका ठीक न था, फागुन, चैत्र ठीक होगा। शायद पानीकी जगह दूधके साथ सेवन करना अधिक हितकारी होता मात्रा ३ माशेकी मेरी प्रकृतिके लिये अधिक थी १ मासा, १॥ मासा होनी चाहिये। "वसंते भ्रमणं पथ्यं पथ्यं च वह्निसेवनम्" इसके सेवनके दिनोंमें थोडी कसरत भी आरम्भ करदी थी और लोहेका बुझा पानी पीता था।

स्वर्णभस्म सेवन।

१ चावल स्वर्णभस्म, १ चावल मुक्ताभस्म, २ रत्ती वंशलोचन, २ रत्ती छोटी इलायचीके दाने इसके चूर्णको ९ माशे शरबत अनारके साथ ता० ३०।१ शनिश्चरवारसे प्रातःकाल कसरतसे पहले सेवन करना आरम्भ किया। ३ दिन इसीप्रकार सेवन रहा पहले और दूसरे दिन भूख अच्छी मालूम हुई तीसरे दिन गाढी खीर खालेनेसे कुछ खराबी पडगई।

ता० २ से उपरोक्त पुडियामें चांदीका १ वर्क और शामिल करदिया गया मौसम ज्यादः ठंडा होजानेसे ता० ५।२ को पुडिया शहदमें खाई। गर्मी खुश्की करनेके कारण ता० ६।२ से फिर अनारके शर्बतसेही खाना आरम्भ किया एक आधदिन बीचमें नागा भी हुई। सब ९ पुडियां खाई फिर ता० ८।२ से नुमाइशके मेलेमें जानेसे नजले और जुकामकीसी शिकायत होगई और शिरमें दर्द रहने लगा लाचार दवा बंद करनी पडी।

सम्मति-जान पडता है कि इस औषधीने थोडी गर्मी और विशेष खुश्की पैदा की जिसमें कसरत और नुमाइशकी खुश्की मिलनेसे विकार पैदाहुआ।

आगे जब कभी फिर सेवन किया जाय तौ मक्खन या मलाईसे सेवन करना चाहिये और उन दिनोंमें कसरत न करनी चाहिये और मस्तिष्कसे काम बहुतही कम लेना चाहिये। रातको काम बिलकुल न करना चाहिये, क्रोध भी छोडना चाहिये, वार्तालाप कम करनी चाहिये, अर्थात् वातजन्य सब कर्मोंसे मस्तककी रक्षा करनी चाहिये और कफवर्द्धक पदार्थ केला, चावल, खीरमखाना, आदिका सेवन करना चाहिये।

औषधिनिर्माण। (सुरमा-सोनेमोतीका)

कोरे सुरमेको कई दिन घोट बारीक करलिया वह सुरमा ३ तोले, मूंगेकी जड १ तोले, ममीरा कश्मीरी ४ माशे, यह तीनों मिला सूखे घोटे।

ता० २२ को ३ घंटे.
ता० २३ को ६ घंटे.
ता० २४ को ४ घंटे.
ता० २५ को १ घंटे.
ता० २६ को २ घंटे.
ता० २७-आज २ माशे छोटे अनबिंधे मोती डाले और हरडका पानी डाल ४-५ घंटे घोटा।
ता० २८ को ६ घंटे घुटा हरडके पानीके साथ.
ता० २९ को घुटाई बंद रही।
ता० १।३ को २ घंटे गुलाबजलमें घुटा.
ता० २ को ३ घंटे ”
ता० ३ को ६ घंटे घुटा ”

ता० ४ आज थोडा गुलाबजल और डाल १ माशे सोनेके वर्क डाल ६ घंटे घुटाई की।

ता० ५ आज ६ रत्ती भीमसेनी काफूर डाल ६ घंटे घुटाई की अबतक ये पतला था।

ता० ६ को ३ घंटे घुटाई की गीला जान शीशेके बक-समें रख धूपमें रख दिया।

ता० ७ को ४ घंटे घुटाई की अब ये बिलकुल सूखगया था सब घुटाई दवा मिलानेपर ५६ घंटे यानी ६ दिनके करीब हुई।

ता० ८ को खरलसे निकाल तोला तो० ५ तोले ३॥ माशे हुआ अर्थात् दवाओंके वजनके हिसाबसे ७ माशे ६ रत्ती बढा।

सम्मति-इस सुरमेको आखोंमें लगाया तो ठंडा मालूम हुआ पानी बहुत निकला भीमसेनी काफूरका प्रमाण अधिक जानपडा इस वास्ते आगेसे इतने सुरमेमें ६ रत्तीकी जगह ३ रत्ती कपूर डालना काफी है।

तैलसाधन (सहमल पुष्पादिसे)

तेल मीठा	१ सेर
भाँगरेका स्वरस	ऽ॥ सेर
कमलकी जडका हिम	ऽ॥≈ (जो ऽ॥≡ जडमेंसे पानीका छीटा दे निकाला)
सहमलके फूलोंका हिम	२॥ सेर (जो १ सेर ताजे फूलोंका पानीके साथ निकाला)
कमलकी जडकी पिष्टी	१ छ०
भांगरेकी पिष्टी	१ छ०
सहमलके फूलोंकी पिष्टी	१ छ०

ये तीनों पिष्टी ऽ॥ सेर पानीमें घोल लीं।

इन सब रसोंको और ऽ॥ सेर पानीमें घुली तीनों पिष्टि-योंके उक्त तैलमें मिला बडे भगोनेमें भर १०॥ बजेसे समाग्नि देना आरम्भ किया ८ बजे रातके तैल अवशेष रहनेपर उतार लिया।

ता० १८ को छान बोतलमें भर लिया १ सेर हुआ रंगत हलकी हरी रही।

त्रिफलारसायन।

अगहन बदी ५ को ३ छटांक त्रिफला (जिसमें हर्र, बहेडा, आँवला समानभाग था) को निम्नलिखित नकशेके अनुसार भांगरेके रसकी ७ भावना दीगई।

नकशा।

तारीख	नंबर भावना	तोलरस	समयघुटाई	समय सूखनेका
१३।११।०८	१	४ छटांक	२ घंटे	५ घंटे
१४	२	३ छटांक	२ घंटे	५ घंटे
१५	३	२ छटांक	३ घंटे	५ घंटे
१६	४	३ छटांक	१॥ घंटे	५ घंटे
१७	५	२॥छटांक	२ घंटे	५ घंटे
१८	६	२ छटांक	२ घंटे	५ घंटे
१९	७	३ छटांक	२ घंटे	५ घंटे
मीजान	मीजान	मीजान	मीजान	मीजान
७	७	१९॥छटांक	१४॥ घंटे	३५ घंटे

ता० २० को सूखता रहा कभी चलदिया।

ता० २१ को खुरच दिया फिर सूखता रहा।

ता० २३ को तोडदिया अर्थात् छोटे २ टुकडेकर बखेर दिया और सूखता रहा।

ता० २८ को पीस चूर्ण बनालिया जो तोलमें १८ तोले हुआ।

सोंठरसायन।

ता० २१ को १ छ० सोंठ चूर्ण, १ छ० घी, १ छ० शहद, १ छ० खांड, सबको मिला शीशीमें भर गेहूंके बोरेमें गाढदिया।

ता० २१ दिसंबरको निकाला तो घृत आदि जमेहुए निकले गेहूंके बोरेमें धान्यराशि (शास्त्रलिखित) के अनु-सार कुछ गर्मी न दी इसकारण इसको २-३ दिन धूपमें रक्खा खानेमें सुस्वादु चरपरी थी।

निर्गुंडीरसायन।

ता० ४ को निर्गुंडीकी जडकी छालका सूखाचूर्ण १ छ० शहद १ छटांक, घृत १। छटांक, खांड १ छटांक और १ चमच दूध सबको मिला शीशीमें बंद करदिया।

ता० ५ को गेहूंके बोरेमें गाढदिया।

ता० २२ दिसंबरको निकाल लिया औषधि न थी जमी-हुई निकली। गेहूंके बोरेमें धान्यराशि समान गर्मी न दी इस कारण इसको धूपमें रक्खा वहां भी न पिघला कारण यह कि निर्गुंडीचूर्ण अधिक फूला और शुष्क होनेके कारण सवाये घृतसेभी भलीभांति आर्द्र न हुआ लाचार भूभलपर गरम कर पिघलाया।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपंडितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठम-ल्लकृतायां रसराजसंहितायां भाषाटीकायामौषधिसे-वनवर्णनं नाम चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४० ॥

चिकित्साध्यायः ४१.

वात, पित्त, कफ-नाशक ३ प्रयोग जडीसे।

अथ वातपित्तकफानां शमने परमौषधसंग्रहः।

रास्ना गुडूचिकैरंडो दशमूलं प्रसारिणी।
क्वाथादिकल्पनं वायोर्नाशनं नाशकरं परम्॥

॥ १ ॥ जीवनीयगणो द्राक्षा खर्जूरं सपरूषकम् ॥ वासा चन्दनमत्युग्रं पित्तस्य परमौषधम् ॥ २ ॥ त्रिकटु त्रिफलामूलं पत्रं धान्यकपुष्करम् ॥ अमृता दीप्यकं नूनं कफरोगे महौषधम् ॥ ३ ॥ (र. सा. प.)

अर्थ–अब वात, पित्त और कफके नाश करनेको परम उत्तम औषधियोंके संग्रहको कहतेहैं। रासनाके पत्ते, गिलोय, एरण्ड, दशमूल, प्रसारिणी (खींप) इनको काथ, चूर्ण और घृत आदि वायुका नाशक है ॥ जीवनीयगण मुनक्का, खजूर, फालसे, अडूसा और चन्दन इनका भी काथादि पित्तका परमौषध है। त्रिकुटा (सोंठ, मिरच, पीपल,) त्रिफला (हर्र, बहेडा, आमला), पीपलामूल, पत्रज, धनिया, पौःकरमूल, गिलोय और अजमायन इनसे बनाहुआ औषध कफका नाशक होताहै ॥ १–३ ॥

दाडिमादिचूर्ण।

दाडिमस्य पलान्यष्टौ पलं सौगन्धिकस्य च ॥ अजाजीनां पलं चार्ध पलार्द्धं धान्यकस्य च॥४॥ पृथक् पलांशकान्भागाँस्त्रि कटु ग्रंथिकस्य च ॥ त्वक्क्षीरी वालकं चैव दद्यात्कर्षसमं भिषक् ॥ ५ ॥ शर्करायाः पलान्यष्टौ तदेकस्थं विचूर्णयेत् ॥ आमातीसारशमनं कासहृत्पार्श्वशूलनुत् ॥ हृद्रोगमरुचिं गुल्मं ग्रहणीमग्निमार्दवम् ॥ ६ ॥ (वैद्यरहस्य.)

अर्थ–अनारदाने एक आठपल, दालचीनी, इलायची छोटी वंशलोचन, पत्रज ये एकपल, दोनों जीरे दो तोले, धनिये दो तोले, सोंठ एकपल (४ तोले), पीपल छोटी एकपल, मिरच एकपल, पीपलामूल एकपल, दालचीनी क्षीरी, नेत्रवालछड ये सब एक २ तोले, खांड आठपल इन सबको पीस चूर्ण करे तो यह दाडिमादिचूर्ण आमातिसार, खाँसी हृदय और पसलीका दर्द, हृदयके रोग, अरुचि, गोला और संग्रहणीको दूर करताहै ॥ ४–६ ॥

दाडिमाष्टचूर्ण।

पलद्वयं दाडिमस्य व्योषस्य च पलद्वयम् ॥ त्रिगंधस्य पलं चैकं खंडस्याष्टपलानि च ॥ ॥ ७ ॥ सर्वमेकीकृतं चूर्णं प्रशस्तं दाडिमाष्टकम् ॥ दीपनं रुचिदं कंठ्यं ग्राहि ग्रहणीहरं परम् ॥ ८ ॥ (वैद्यरहस्य.)

अर्थ–अनारदाने दो पल, सोंठ, मिरच और पीपल. दो पल, दालचीनी, इलायची और तेज पात, मोथा एकपल, खांड आठपल इन सबको पीसकर मिला लेवे तो यह दाडिमाष्टक तयार होगया यह चूर्ण दीपन रुचिके बढानेवाला कण्ठको हित ग्राही और ग्रहणीरोगको नाश करता है॥७॥८॥

नमक सुलेमानी हाजिमतुआम व राफेकब्ज (उर्दू)

नमकस्याह १ तोला, नमकतुआम १ तोला, नमकसैंधा १ तोला, नमक लाहौरी १ तोला, मिर्चस्याह १ तोला, जौहरनौसादर १ तोला इन सब अजजाईको बारीक पीसकर रक्खे जिस वक्त जरूरत हो बहालत कब्ज और दर्द शिकम बकद्र ३ माशे खावे अगर जौहार नौसादर दस्तयाब न हो तो नौसादर पकाकर शरीक करे और यह नमक बर्मतहालको तो निहायत ही मुफीद है। (सुफहा १३ अखबार अलकीमियां १।६।१९०७)

चूरन हाजिम तुआम या जायका खुश (उर्दू)

सूर हजमी खट्टीडकार दर्दशिकमको दफै करता है–हाजिम इसकदर ह कि जिस कदर खावे हजम होजावे तिली व हैजेको मुफीद है।

नमकलाहौरी ऽ।, नमकखुर्दनी ऽ=, शोराकलमी ऽ=, मिर्चस्याह ऽ=, नौसादर मादनी ऽ=, तेजाब अर्क, जामुन बकदर जरूरत सफूफ करके बनालो खुराक ४ रत्ती।(सुफहा ७ व ८ अखबार अलकीमियां १।६।७।१९०७)

शिकंजवीन हाजिम व मुकव्वी (उर्दू)

शिकंजवीन जो निहायत हाजिम और मुकव्वी रूह है इसके स्तैमालसे मादा ताकतवर होजाताहै। आबबर्ग पोदीना ऽ॥सेर आबलैमूं कागजी ऽ॥सेर, आबजंजबील ताजाऽ=, कंद सफेद डेढ सेर, शहदखालिस पावभर जाफरान १ तोला, बतरीक मामूल शिकंजवीन बनाले कवल अजगिजा एक तोला । (सुफहा ४ अखबार अलकीमियां १ । ९ । १९०७)

जवारिश उलवीखां मुकव्वी मेदा व जिगर (फार्सी)

मेदासारा कुव्वत दिहद हरारत जिगर व इसहालमुरारीरा नाफै व इस्तहाआरद शीराआंवलां ४॥ तोला, तबाशीर ४॥ माशे, सन्दल ४॥ माशे, समाक ४॥ माशे, जरिश्क ४॥ माशे, वर्कगुल ४॥ माशे, बादरंजयः ४॥ माशे, पोस्तबैरूपिस्ता ४॥ माशे, कश्तीज खुश्क ९ माशे, मुकश्शर तुख्म खुरफा मुरबारीदनासुफ्तः २। माशे अंबरा शहब १ माशे, बर्क नुकरा ९ सुर्ख, वर्कतिला ९ सुर्ख, नवात ८ तोला, आब बशीरी ९ तोले, शरबत ६ माशे (किताब मुजर्रिबात अकबरी)

हजमशीरका नुसखा (संखियाका उमदा स्तैमाल) (उर्दू)

सम्मुलफार सफेद एकजुज, नमकसंग आठजुज, दोरोज बातहारत जिस मकानमें हाइजा व जनबका गुजर न हो अर्क घीग्वारके साथ सहक करे और बाहिफाजत रखले । जुमला अमराज बलगमी व हजम शीर वगैरःमें एक चावलसे चार चावलतक बे मिसल है हिसाबसे अगर कोई साहब एक चावल रोज तनावल फर्मावे बहत्तर दिनमें असल एक रत्ती तनावुल फर्मायेंगे । मगर बहत्तर दिन कहां दो चार रोजमें शिकायत रफै होजाती है । और हजम शीरका तौ कुछ हिसाब नहीं एक मर्तबः अव्वल तय्यारीपर हकीरने चारचार चावल शक्कर वगैरःमें मिलाकर इस्तैमाल

किये थे । मुद्दतों दो दो तीन तीन सेर शीर पीतारहा जब गोश्त वगैरःमें असली हालत पैदा हुई थी वरनः तमाम बदन सूख गया था और इससे पहले दो छटाँक दूधभी हजम न होता था अब करीब पन्द्रह सोलह साल बीस साल होचुके कि हकीरकर बलाए मौला गया था और राहमें तरह तरहके अवारिज पैदा हुयेथे वह सब भी जाते रहे और जितना दूध चाहूं अब भी पीलूं और रोगन जितना ज्यादः मिले सेहत ज्यादः रहे। (सुफहा १६ अखबारअलकीमियाँ १६ । ८ । १९०७)

रफीकदमाग मुकव्वी दमाग उमदा तरकीब इस्तैमाल मक्खन (उर्दू)

निहायत आसान और लजीज है आजतक इसके मुकाबलेमें मुकव्वी दमाग सरीअउलहज्म एक शै नहीं देखीगई । बाज ऐसी दवा है कि अगर दमागके लिये वर्ते तौ मैदेमें खिकालत होजाती है । मैदेकी जियादः इस्में रिआयत हो तौ दमागमें यवस आजाता है । जरा गरम दवाएं हैं तो महरूर मिजाज इससे हैरान है यह ऐसा अजीब व गरीब आजमूदा बारहाका नुसखा है कि जिस दिन शुरू करो उसी दिनसे भूख लगती है। तरकीबमें मक्खन देकर इन्सान यह जरूर ख्याल कर लेता है कि, देरसे हजम जरूर होगा । मगर सरीउलहज्म है सराफ दमागसे जो आंखें अन्दर घुसती जाती हैं और चहरेका गोश्त और पेशानीका खिचा चलाजाता है इसके वास्ते तो अकसीर आजम है लजीज ऐसा कि सोहन हलवेसे उमदा सुबहको बजाय और निहार अशियाइके कायम मुकाम मुकव्वी कल्ब बदन और दमागकी यबूसतका दाफः दो हफ्तेमें अपने फवायद या हालत मौजूदःको देखलें जब चाहें छोड दें जब देखें कि खास वा इसेस जौफ फिर सख्त होगया है फिर इस्तैमाल करले भिस्ल अकसीर फाइदा बखश है।

नुसखा मौसूफ यह है सुबहको तीन माशे खसखास सफेद, सात अदद मगज बादाम, मुकश्शर शीरीं, एकमाशा दाना इलायची खुर्द, ढाई तोला मिसरी. ५ तोला मक्खन मादः लेकर एक तोला पानीमें इन सब अशियाइको पीसकर जब बसूरत हलवा होजावे हरदोशै मक्खन व मिसरी मिलाकर एक रत्ती नुकरई अकसीर मिलाकर चमचसे खाले और जब हफ्ता अशरा गुजर जावे वजन भिश्री व मक्खन जुमला दवाओंका दुचंद करले बस इससे ज्यादा न बढावे।

नुखसा नुकरई यह है- एक माशा तवासीर, एक माशा दानाइलायची खुर्द, एक माशा मुखारीद, एक माशा वर्क नुकरा १ घंटे पीसकर रख छोडे यह ही नुकरई अकसीर है । सौंफ या कश्नीज या बैजा या और जो मुकव्वियात दमाग हैं वह मुतलक न मिलावे । अगर्चः तीन माशे खसखास इस नुसखेमें काबिज शै है मगर सात अदद बादाम और मक्खन मुकाबलेमें उसको मुतलक कब्ज या खुश्की करने नहीं देते और हजम मसका बवजह मिश्री बराबरके और एक माशा दाने इलायचीके पूरा होताहै । इन अय्याम में परेहज तुर्शी और सकील अशियाओं और तेल और काबिज अशियाइका जरूर चाहिये । और गिजाके वक्त जब दो तीन लुकमा हनोज खानेमें बाकी हो तो छोड देवे और बेहतर है कि बाद गिजाओंके आध घंटे सो ले । और बाद गिजा रातको दमागी काम तहरीर वगैरः का चन्दरोज न ले । चुपडीहुई रोटी, प्याज और अजवाइन और मूली खामको न खावे बलकि दूध भी जिस कदर आदत है आधा पिया करे और दूधपर सफूफ बडी इलायची व मिश्री दो माशे तक खूब हाजिम है । (सुफहा १० व ११ अखबारअलकीमियाँ १६।८।१९०७)

हरीरा मुकव्वी दमाग व बाह व दाफे जिरियान (उर्दू)

निशास्ता गंदुम १ तोला, दाना खसखास सफेद १ तोला, आरद माश मुकश्शर १ तोला, मगज तुख्म कुदू ६ माशे, मगज तुख्म खियारेन ६ माशे, फलखामबरगद २ तोले, मगज बादाम मुकश्शर ७ अदद, जाफरान एक माशे कुल अजजाइको डेढपाव पानीमें बारीक पीसकर बादहू ५ तोले मिसरी मिलाकर ५ तोला रोगन जर्दमें बजरियः इलायची कलांके बघार कर जरा गाढा होनेपर उतारकर इस्तैमाल किया करे । अगर सालमें दो तीनबार दसदस योमतक जो साहब इस्तैमाल करलिया करेंगे उनको दमाग व बाह व जिरियानकी इन्शा अल्लाह ताला फिर कोई शिकायत न होगी । (सुफहा १० अखबारअलकीमियाँ १।८।१९०७)

अदवियः दाफः इफ्तलाजुलकल्ब (उर्दू)

इफ्तलाजुलकल्बके लिये यह सफूफ मुजर्रिबुल मुजर्रिब और और आसान व कम खर्च है-तवाशीर गुलखर्च १ तोला बहमन सुर्ख दसमाशे, बुरादा संदल सफेद, मगजकशनीज, तुख्म रेहा छः छः माशे, आँवला मुकश्शर चारबार, गुलनीलोफर पांच पांच माशे, जरनबा ३ यानी कचूर ४ माशे सबको बारीक करके सफूफ बनावे सुबह के वक्त बकदर ३ माशे सर्दपानीके हमराह इस्तैमाल करै अगर्चः लाहक शुदः बीमारी एकही नुसखेके स्तैमालसे रफ होजावेगी मगर चंद मुद्दततक अगर मुदावेमत इस्तैमाल करे तो इन्शा अल्लाह ताला फिर कभी शिकायत न होगी मुजर्रिब आजमूदा है । (सुफहा १० अखबार अलकीमियाँ)

मौसम गर्मीके स्तैमालके लायक एक उमदा नुसखा (उर्दू)

बजवाब इस्तफसार नं. ३८७-१७ अक्तूबर आपकी तबियत बहुत गर्म खुश्कहै इसपर आपने भांग पीली तो इसका यही असर होता था जो हुआ अब मुन्दर्जः जैल नुसखा खावें-मुरवारीद ना सुप्ताः ६ माशे, वर्कतिला २ माशे, वर्क नुकरा ६ माशे, तवाशीर १ तोला, कबूद, दानः इलायची खुर्द १ तोला, कवलगट्टा १ तोला, भीमसेनीका फूर ३ माशे, कुश्तामूंगा ६ माशे, कुश्तासंगपुश्त ६ माशे, कुश्ता जहरमोहरा ६ माशे, अव्वल मुरवारीदको एकदिन अर्क गुलाबमें खरल करे फिर कुश्ता व वर्क मिलाकर एकदिन खरल करे बादहू सब अदविया मिलाकर खरल करे और रक्खे खुराक ३ रत्ती सुबह व शाम बहमराह दूधके। (सुफहा वैद्योपकारक अखबार ५।१२।१९०६)

कुश्ता मुरवारीद दाफे तमाम जिस्मानी कमजोरी (उर्दू)

मुरवारीद नासुफ्ता ६ माशे बकरी या भैंसके दूधमें दाखिल करके एक कुलियामें मुंह बंदकरके आंच देदे, मुरवारीद कुश्ता होकर बरामद होगा हरसुबह खुराक २ चावल मसकामें रखकर निगल जाया करै । (सुफहा ९ अखबार अलकीमियाँ १६।७।१९०७)

दवाएँ सफूफ जवाहर बराईतकवियत एजाई रईसो व नीज तकवियत मैदा नुमायन्द (फार्सी)

मुरवारीद नासुफ्ता, अकीकसुर्ख, यशवसफेद, शाखमरजाँ, जहरमोहरा असवल, वसद हरवाहदे यकमाशा बिगीरन्द बदरसंग सिमाक या खारा बारीक सहक कर्दः पस बा अर्क केवडा कि सह वजन अदाविया बाशद दो साइत सहक कुनन्द ताअर्क जज्ब शवद व खुश्क गर्दद पस अजखरल बरदारन्द व दोमाशा दानः इलायची सफेद व दो माशा तवासीर व एकमाशा जाफरान व चहारसुर्ख मुश्क खालिस या कदरे अर्क केवडा बहुमां खरल सहक कुनन्द हरगाह अर्क खुश्क शवद अज संग बरदारन्द व या दवाएं अव्वल यकजा कर्दः निगाह दारन्द बवक्तहाजत बकदर यकमाशा अजीं सफूफ बिगीरन्द दरअमराज गर्म बकदरे शरबत अनार शीरीं या तुर्श व या हार्चेमुनासिब हाल मरीज बाशद बियामेजन्द बिखुरानन्द बदर अमराज सर्द दर शहद खालिस दिहन्द न चन्दरोज तकवियत कामिल हासिल शवद। (सुफहा ८५६ किताब शफाएडलअवदान)

खीरद्वारा मुकव्वी व मुसमिन व मुबही-(फार्सी)

शीरगाउ यक आसार, आब खालिस दो आसार, खरमा चहार अदद बिजोशानन्द ता आब बिसोजद बहिंगाम जोशीदन बिकुफ्रः मेगर्दानन्द बाशद पस सर्द कर्दः बिनोशन्द (सुफहा १४ किताब मुजर्रिबात अकबरी)

गोलीमुकव्वी व मुबही व मुफर्रह मुरवारीदसे बराइ मिजाजहार (फार्सी)

हुब मुकव्वी व मुबही मनबियाज हकीम उलवीखां व हारमजा जानरा कीमियां अस्त एजाइ रईसारा नीज कुव्वत बखशद मुरवारीद नासुफ्तो तवाशीर वंशलोचन जहरमोहरा खताई हरसह यकयक तोला बारीक साईदा जुदा जुदा दर खरल समाक दरअर्क वेदमुश्क चन्दान हल नुमायन्द कि खमीर बरखेजद व दिस्ता खरल बसबब गिलजत दवा बंद शवद बादहू हुब्ब बकदर दाना नखूद बस्ता मुवाफिक मिजाज व सब शखस दोसहहुब्ब बिदिहन्द हरसुबाह ब गुलाब व वेदमुश्क अजहलक फरू बुरन्द व शवानः रोगन तुख्म कुदू व बादाम शीरीं मुकश्शर व कमरकाह बजेर हर दो पाई व दमाग व कफ दस्त अन्दक अन्दक बिमालन्द व गिजाकवी मेल फरमायन्द मुजर्रिबे अस्त (सुफहा १० किताब मुजर्बातअकबरी)

माजून पट्टा मुकव्वी वाह (फार्सी)

जिथः तकवियत वाह गिविसियार नाफः अस्त शीर यमनी हदिया यानी पट्टा मग्जनारजील ताजा मुकश्शर कर्दः जाफरान दो माशे गुलाब ३ तोले हमेरा खूब कोफ्तः माजून साजन्द निहार व वजन दो तोले व गुलाब जाकरनवात व आब बिखुरन्द मनबियाज उलवीखां मरहूम जिथ तकवियतवाह अकसीर अस्त। (सुफहा १०२ किताबमुजरबातअकबरी)

नोट-फिर पट्टापाक क्यूं न तय्यार हो।

नुसखा हलवाइगाजर जो तकवियत वाहमें बे मिसाल है (उर्दू)

गजर तराशीदः दोसेर और नखूद बिरियाँ मुकश्शर पाव भर बैजामुर्ग ३२ अदद और शीरगाउ चारसेर, कंदसफेद ढाईसेर, किशमिश पावभर, मगज बादाम और मग्ज चिलगोजा पावभर, रौगनजर्द डेढ सेर, पिस्ता पावभर अव्वल गाजरोंको दूधमें पकावे जब कि गलीज होजावे खूब मालिश करे बादहू रोगन जर्दमें बिरिया करे कि सुर्ख होजावे अजाँबाद जर्दी बैजा और आरद नखूदको अलहदा अलहदा बिरियां करे उसके बाद पानी एकसेरमें कंद सफेदका कवाम करके जुमला अशियाइको उसमें डालकर कफगीरसे खूब घोटे और मगजियात बारीक करके मिलावे मूसली सैमलसफूफ बहिसाब फीपाव हलवाके दो तोला दाखिल करके जाफरान दोमाशे, मुश्क ३ माशे, गुलाब एक छटांक, केवडा एक छटाकमें हल करके मिलावे खुराक २ तोले अलस्सवाह । (सुफहा अखबारअलकीमियाँ १६।१२।१९०६)

मुसमिन व मुबही व मुगल्लिजस्तैमालगोंद बबूल (उर्दू)

सहलुल हुसूल नुसखा जिनको ववजह खलूए बदनकी शिकायत है इसके इस्तैमालसे तौलीद व आयादह कुव्वत और फरबही जुमले बदन बहुत जल्द होतीहै नुस्तः-समागरबो (बबूलका गोंद) जिस कदर मंजूर हो हम वजन रोगन जर्दमें बिरियां करके दोचंद जमा शकर सफेद दाखिल करके मिलाकर बाअहतियात रख छोडें जिस कदर हजम होसके तनावुल फर्मावें और पहलेही दिन कुव्वतका अआदह महसूस फर्मावें दो तीन अमर काबिल लिहाज हैं एक यह कि बिरियानीमें कमी न रहे खूब खील होजावे दूसरे कोई चीज सकील इसके हमराह तनावुल न फर्मावें कि वह खुदही हजम न हो और उसके फाइदेको भी बरबाद करे, तीसरे खूब छिपाया जावे और थोडा थोडा खायाजावे कि मैदेमें बस्ता न पहुंचे कि देरमें महलूल हो एक रिकतके लिये बे मिसल है बशर्ते कि हरारत का गलबा जिस्ममें न हो क्योंकि यह चीजें भी किसीकदर हरारत करती हैं। (सुफहा १६ अखबार अलकीमियां १६।८।१९०७)

नुसखा निर्गुण्डी पाग मुकव्वी वाह (उर्दू)

हाफिजा और बासरा और हाजमा मुवल्लिद खून साले. मुफर्रह मुकव्वीकलब दाफे अखलात फासिद वगैरः निरगुंडी, मुंडी, भांगरा, आंवला, सितावर हरएक आधसेर असगंध नागौरी, मूसली स्याह, तुख्मकोंच, गूगर्दकलां, सूफली,

तालमखाना, सुगन्धवाला, हरएक पावसेर, तज, बल आधपाव सबको नीमकोब करके आठहिस्से पानीमें पकावे जब पंजुम हिस्सा पानी बाकी रहे साफ करके मिश्री एक सेर, शहद आधसेर, रोगन जर्द एक पाव, खोया आधसेर, मिलाकर पकावे जब गाढा होजावे; जाफरान, बताशा, लौंग, मस्तंगी, जाइफल, जोतरसी दारचीनी, सन्दल, अगर, दाना इलायची खुर्द व कलां एकतोला, मुश्कखालिस ३ माशे सफूफ करके मिलावे और मग्जबादाम और मग्ज चिरौंजी भी चारचार तोले शामिल करले खुराक दो ताले सुबह व शाम (सुफहा अखबार अलकीमियाँ १६ । ११ । १९०६)

मुबही खुर्दनी उमदा (फार्सी)

अंबर अशहब, सन्दलसफेद, वर्कतिला यकनीम व आँकि हमैरा सूदः बलुआब समैगरबी जब बवजन नखूद केसरी ज्यादह बन्दन्द यकहुब वक्त हाजत दरदहान गीरन्द (सुफहा ९१ किताब मुजर्रिबात अकबरी)

रोगनढाक--बराइतिला (फार्सी)

रोगनपलास पापडा कि दर इलाज अन्नीबकार आयद पलास पापडा हरकदर कि बाशद दरआब तरकुनद यक साइत पसपोस्त अजवी जुदा साजन्द व मग्जरा खुश्क नुमायन्द व बिगीरन्द देग गिली व दरवसत हकीकी आँ सूराख कुनन्द अजवरमा व सुबूए खुर्द गिली दरजेर आँ सूराख पैवस्त नुमायन्द बतरीके कि अमल पताल जंतर अस्त पस मग्जहा दरदेग अन्दाजन्द व मुहरकर्दः तमामे देगरा लेप नुमायन्द व खुश्क साजन्द व हमचुनाँ सहलेप बिदहन्द यके बाद खुश्क शुदन दीगर व चूँ लेप सोयम नीज खुश्क शवद चकरे मुरव्वा बकदर नीम गुजानद जजमीं कुनन्द व जेर आँचकर कलां व बसत हकीकी बीच करे दीगर मिकदार आँ सुबूए खुर्द कि दरतहदेग मरकूजस्त बिकुनन्द व दरईचकर खुर्द प्याला निहन्द व आब पुरसाख्तः व आँ देगरा दरचकर दरआरन्द चुनाँचः सुबूइ खुर्द दरकर खुर्द बाशद दरप्याला पुरआब व देगादर चकर कलाँ बादहू गिर्दागिर्द देग अजपाचकदस्ती बरसाजन्द तातमाम चकर मम्लूशवद पस आतिश दरविहन्द वचूँ सर्द शवद देगरा बर आरन्द व सुबूए जेरीनए वा अहतियात जुदा कुनन्द तमाम रोगन दरीं सुबूए खुर्द जमा ख्वाहद बुवद विसितानन्द व बर कफे व बिमालन्द व इशका गुजारन्द (सुफहा ६ किताब मुजर्रिबात अकबरी)

रोगनतिला (उर्दू)

सम्मुलफार १ तोला, जहरतेलिया १ तोला, सुहागातेलिया १ तोला, गंधक आँवलासार १ तोला इन चहार अदवियाको बारीक पीस कर बादअजाँ ५ तोले रोगन जर्दमें मिलाकर और उसको एक साफ पार्चेपर मले और उसकी बत्ती बनावे उसे रोगनी करके एकतोला पारा खरलमें डालकर उस बत्तीके नीचे रखदें जो कुछ रोगन टपके उसको चार पहर खरल करके एक कतरा पानपर लगाकर ह. श. फ. ह. छोडकर बांधे निहायत मुजर्रिब है।(सुफहा अखबार अलकीमियाँ १६।११।१९०६)

तिलाका मुरक्कब बेजरर नुसखा जोहमेः सिफत् मौसूफ है (उर्दू)

जोंकखुश्क १ तोला, खरातीन खुश्क १ तोला, बीरबहूटी १ तोला, अकरकरा ३ माशे, सम्मुलफार सफेद २ सुर्ख इन सबको रोगन बैजा मुर्गमें खरल करके शफः और सीवन छोडकर तिला करे बादहू वर्गपान बांधलें एक हफ्तेके इस्तैमालसे कुल खराबियां रफै होजायँगी व जौफ दमागके लिये मिसरी बादाम खिलावें । (सुफहा ९ अखबार अलकीमियाँ १६ । ७ । १९०७)

नुसखा तिला बराइबाह व मुनग्गिज (फार्सी)

जो अव्वल शबमेंही बेकरार कर दे मगर मजलूकको आजतक नहीं दिया गया मामूली सुस्तीका फौरन कलाकुम्मा करदेगा, मन्सिल दो माशे, हरताल तबकी दो माशे, गंधक आंवलासार ६ माशे, संखिया सफेद ३ माशे, मस्तंगीरूमी एकमाशे, हमैरा कोफ्तः बारीक साइदः दररोगन गाड दोले आमेख्तः बरपार्चः यक वजब आलूदह फतीला साख्तः बदस्तूर मारूफ रोगन चकानन्द व अहतियात निगाहदारन्द वक्त हाजत बकदर सुर्ख वर एजाइतनासुल मालीदः व इश्क व सबून बाकी दाश्तः वर्गतंबूल गरम शुदः बालाइश निहादह पट्टी बन्दन्द व ईं अमल वक्त शाम आगाज कुनन्द व सुबह पट्टी अलहदा कर्दः ताजातिला बदस्तूर मारूफ इस्तैमाल कुनन्द हमींतौर सुबह व शाम एकहफ्तः अमल बायद नमूद इन्शाह अल्लाह ताला बहालत असली ख्वाहद शुद व दरीं असना अज जमाज व तररावात वगैरः हजर कुनन्द (सुफहा १० अखबार अलकीमियां १ । ११ । १९०७)

रोगन जर्दी बैजामुर्ग राफै सुस्ती-कजीब व मुकव्वी बाह (फार्सी)

बियारन्द दहअदद बैजा हाइ माकियान दरआब बिजोशानन्द व बाद सर्दशुदन अम्हारा शिकश्तः जर्दीरा कि गोली बस्तः बाशद बिगीरन्द व दर कढाई आहनी अन्दाख्तः व जेर आतिश कुनन्द व जर्दीरा अजचमचा तह व बाला मेनमूदः बाशन्द हरगाह सोख्तः स्याह शवन्द व रोगनअजां जाहर शवद अज सर देगदां फर्द आवुर्दः व फशुर्दः तमाम रोगन बिगीरन्द व अगर हनोज चीजें खामी जर्दी बूदः बाशद बार दीगर कढाई रा बर सर आतिश गुजाश्तः अज चमचा तहवबाला कुनन्द व हरगाह रोगन नमूदार शवद व जेर आवुर्दः खूब फशुर्दः रोगन बिगीरन्द पस आं रोगनरा व अजजाइ मुफस्सिलोउलजल हल कर्दः दरजर्फ चीनी निगाहदारन्द तिलाइ आं बराइसुस्ती कजीब व इस्तहकाम आँ बिसियार नाफै अस्त अजजाई अस्तरोगन बैजा दो तोला, करनफल एक माशे नौज बवा एकमाशा जफ्तरूमी कि समगी अस्तस्याहरंग यकमाशा मूमिया यकमाशा गौलोचन यकमाशा खरातीन खुश्क खाक दूर कर्दः व बारीक साईदः यकमाशे बीरबहूटी यकमाशे बा रोगन-

बैंजा हल करदह निगाह दारन्द ववक्तहाजद कदरे अजां इश्वह गुजाश्तः बरकजीव तिलाकर्दः पारा बर्ग पान नीमगरम वस्तःवक्तशव बजवाब स्वन्द सुबह अज आब गरम विशोयन्द हमवरीं तरीक हफ्त शव व अमल आरन्द (सुफहा ७३९ किताब शफाइउलअवदान)

तिलाए बेनजीर (उर्दू)

निहायत नफीस और मौअस्तर और अपने किस्ममें बेनजीर मिस्ल अकसीर है और बिलाहोने मर्जके भी हरसर्द बशर इसको शौकिया इस्तेमाल करके उमदा फाइदा उठासकता है खास करके जौफ बाह कवरासिनी बयाजलक वगैरःसे नाकारा होगया हो गर्जे कि किसी किस्मका एजावमें नुकस् हो बिलाजरर हदर्जेका फायदा बख्श है अय्याम गर्मीमें इसका स्तैमाल वगैरः अशद जरूरत न करना चाहिये एक डली सम्मुलफार ढाईतोलेकी लेकर सातरोज शीर-आकमें तर रक्खे बादहू निकालकर उसको ५ तोले मसका गाडमें तीन योम बराबर खरल करे अजाँबाद एक चीनीकी रकाबीमें रखकर जरा खमदार करके धूप तेजमें रख दे कि साफ घी बहकर अलग होजावे इसमें कोशिश चाहिये कि घीमें सुम्मियत सम्मुल फार न आजावे जिस कदर घी निकले बहिसाब फी तोले २ रत्ती जाफरान २ रत्ती मुश्क एक माशा जावित्री, एक माशा लौंग, एक माशा अकरकरा, एक माशा जायफल, एक माशा बीरबहूटी मिलाकर एक रोज बराबर खरल करके रख छोडे, निहायत मौअस्तर होताहै मामूली तौरसे हश्फःके नीचेका हिस्सा छोडकर बाकी सब तरफ दो तीन कतरोंसे चुपडकर एक तह भोजपत्र और उसपर पार्चा लपेटकर बाद आठ पहरके फिर जदीद चीजें और बांधे रहें धौना जरूरत नहीं बाजको दो रोजमें और बाजको एक हफ्तःमें बिलादर्दके सुर्ख सुर्ख पित्त निकलेंगे, उस दिन एकही दफे तिला मजकूर लगाकर फिर न लगावे और तासेहत मक्खन या घी लगाया करे और अहतियात चाहिये कि फोतोंमें वहतिला न लगे। हरमरज खुसूसन ४० बरसके बादको तो यह तिला अकसीर आजमका काम देताहै (परहेज) आबसर्द तुर्शी, दालमाष, वर्फ, सर्द अशियाइ, सर्दहवासे परहेज करना चाहिये अगर बाद १५ रोजके फिर वैसाही अमल करे तो सालहा सालतक एसाव मिस्ल जवान २० बरसके कायम रहेंगे। गिजा, घी, दूध, गोश्त, बैजा, बकदर, बरदाश्त खाते रहें इसतिलासे अकसर मरीज जिनका नाम बताना नहीं चाहता अच्छेहुए हैं राकिम हकीम जाहद खां अज महरूंडा जिला मुरादाबाद। (सुफहा ११ अखबार अलकीमियाँ १।९।१९०७)

नोट–यह नुसखा गुलदिस्ता मुजर्रिबातका है एडीटरने इस नुसखेको तय्यार करके अकसर मरीजोंको दिया है जिसकी वह उमदा होनेकी अकसर तसदीक करते हैं।

नुसखातिला (उर्दू)

करनफल ३ तोला, दारचीनी ३ तोला, हब्बुलमल्क ६ तोला, वेखमदार १ तोला, वेख कनेर सफेद १ तोला, तुख्म धतूरा एक तोला इन सबको सिर्फ पानी सादामें खरल करक गोलियाँ बनावे और खुश्क होजानेके बाद बजरियः पातालजंतर रोगन कशीद करे हश्फह और सीवन छोडकर खुफियाको बचाकर महजअब्बके ऊपरवाले हिस्से-पर तिला करके बर्गपान लपेट ले सर्द पानीसे बचावे। सुफहा (अखबार अलकीमियाँ) १६।११।१९०६.

जमाद बेनजीर बराइ कुव्वउवाह (उर्दू)

मग्ज खर खुश्क कर्दः यकदाम शीर आक दर सायः खुश्क कर्दः यकदाम उरूसकयकदाम मग्ज घूंघची सफेद यकदाम सुहागा तेलियाबिरियां कर्दः दोदिरम रोगन कुँजद अनकदर कि दवाजदह पास खरल शवद बादअजाँ यक सुर्खतिला नुमायद जियादती न कुनद फायदा कुलीमें बखशद। (अज गुलशन हिकमत नुसखा कलमी बाबू प्यारेलाल बरौठा)

मजलूकके लिये तिला (उर्दू)

बुराद (फियाजः) खरस ४ तोला, अकरकरा ६ माशे, जाइफल ४ माशे, जावित्री ४ माशे, लौंग ४ तोले, चरबी-शीर ६ माशे, घूँघची सफेद ६ माशे, बीरबहूटी ६ माशे, खरातीन खुश्क ६ माशे सिवाय शहमके दूसरी जुमलै अदवियातको दो आतिशा शराबमें हल करके बाद शहम शीर उसमें मिलाकर बजरियः कुराअंबीक रोगन कशीद करे। फिर तिला करे अगर सात रोजके अन्दर मजलूककी कुल शिकायतें रफे न हों तो हमजिम्मेवार। (सुफहा ३ अखबार अलकीमियाँ १।११।१९०७)

लेप मुबही खरी (फार्सी)

सीमाव यकदाम शदह दो दाम हरदोरा दर आवन्द आहनी वा दिस्तः आइनी हलकुनन्द तायकजात शवद पस बर पार्चः निहादह वर्कजीव पेचन्द व चूं लगूद तमाम शवद दूर कर्दः नजदीकी नुमायन्द (सुफहा ९० किताब (मुजर्रिबात अकबरी)

मुहबी खुरी (उर्दू)

सुहागेको शहदमें मिलाकर अज्ब और नाफ और शानः पर लेप करनेसे ऐसी कुव्वत इन्तशारकी पैदा होतीहै कि वह फरियाद करने लगतीहै। (अखबारअलकीमियाँ) १६।४।१९०७ सुफहा ५)

अथ शिथिललिंगचिकित्सा–

पारद टंकन चीनिया, ले कपूर सम भाग। रस अगस्तमें एक दिन, खरल करै इकलाग॥ फेरि एक दिन शहदमें, घोटे भिषक निदान। लेप कीजिये लिंगपै राखै पहर समान॥ फेरि धोइके नीरसों, करै नारिसों संग। टुंद होइ सुस्ती घटै, द्रवै अंबेर अनंग॥ इति नागार्जुनी वटिका-- (वैद्यादर्श.) पृष्ठ नं. ३३

लेप मुबही खुरी (मुमसिकभी मुमकिनहै) (फार्सी)

शीरा दरख्त व वारधतूरा विसितानंद व पार्चः नौ कि सिफत बुवद दर आँतरकुनन्द व खुश्क साजन्द व हमचुनां आजां शफत करत विकुनन्द व विदानन्द ववक्त हाजत कदरे बलुआव खुद तरकर्दः वर आलत पेचन्द व बाद अज चन्दे

दूर कर्दः मजामहत नुमायन्द- सुफहा ९० किताब (मुजर्रिबातअकबरी)-

लेप मुबही खुरी (फार्सी)

किदर जिल्दे व तुन्दी नजीर नारद पोस्त कनेर सफेद, पोस्तबेख धतूरा, पोस्त बेखवायतं (खनब यानी भंग) पोस्त बेख आकहर चहार बराबर दर सायः खुश्क कर्दः बिकोबन्द व अजशीरः बर्ग धतूरा बिरिशन्द व मानिन्द कनार सहराई गिलोला बन्दन्द बवक्त हाजत अजबोल खुद साईदः बर कफेब तिला कुनन्द चूं खुश्क शवद मजामहत नुमायद अजायब बीनद। (सुफहा ९७ किताब मुजर्रिबातअकबरी)

लेप तुमासेक खुरी (फार्सी)

कुचला पोस्त बेख कनेर सफेद व बर्ग धतूरा स्याह हरसह बराबर दरशराब खरल कर्दः लेप नुमायन्द इमसाक आरद व अगर ख्वाहन्दः जूद नाजिल शवद बाद लेप कर्दन चूं यक घडी बिकुनन्द रूबआंब गर्म बिशोयन्द (सुफहा ११५ किताब मुजर्रिबातअकबरी)

लेप नाफ मुमसिक व मुबही (फार्सी)

कि इमसाक आरद बमुजर्रिद इस्तैमालु लगाज आरद गोमहानवातियत मशहूर तुख्म अजाँ बिगीरन्द व बारीक बिसानीद दरनाफ बिमालन्द फकत बकदर नीमं माशा मुजर्रिब अस्त (सुफहा ११५ किताब (मुजर्रिबातअकबरी)

मुमसिक रोगन तुख्मसिरस बराय मालिश कफ या (उर्दू)

सिर्सके तुख्म जो कोब करके बजरियः पातल जंतरके रोगन निकालना और वक्त कुरबत एक घंटे पहले तीन माशे कफेयामें मलना निहायत उमदा मुमसिक है-सुफहा९ (अखबार अलकीमियां) १।११।१९०७

मुमसिक रोगन जो नाखूनपर तिला किया जाता है (उर्दू)

इमसाक नादिर बिला खुर्दनी, सहुव्वा सुर्ख यकदाम, हुव्वा सफेद यकदाम, तुख्म धतूरा यकदाम, तेल कुंजद पावभर खाम हरसह अदविया जौ कोब करके रोगनकुंजदमें डालकर इक्कीस रोजतक जमीनके नीचे दफन करे, बादहू निकाल कर रोगन टपका दे थोडासा रोगन हाथपाँवके तमाम नाखून पर लगाये तानमकन खुर्दः न शवद मुजर्रिब आजमूदह है सुफहा ६ (अखबारअलकीमियाँ) १।९।१९०७

मुमसिक--कलीबबूल खुर्दनी (फार्सी)

पर्चा सफत व बारीक बिगीरन्द व फली बबूलरा बिशिकुनन्द बदर तरे वही पारचःरा तर कुनन्द हमीसाँ हफ्त लूनत तर कुनन्द व खुश्क साजन्द व बिदारन्द हरगाह ख्वाहन्द कदरे आजा दरशीर बिशोयन्द व अगर शीर न बाशद आब काफीस्त मुजर्रिब अस्त व अगरजन कदरे अर्जी पार्चा बरदारद तंगी आरद (सुफहा ११४ किताब मुजर्रिबात अकबरी)

इमसाक मुजर्रिब (उर्दू)

ढाककी लकडी मोटी बारह गिरहकी लेकर दार्मियानमें उसके सूराख करके जिस कदर उसमें लौंगें आसकें भरदे और उसकी डाट लगाकर उस मुकामको गिले हिकमत करके दोनों सरोंकी जानिबसे आग दे जब आग करीब लौंगोंके पहुँचे सर्द करके लौंग निकालले वक्त जरूरतके एक लौंग पानमें खावे और मजामअत करे बहुत इमसाक होगा(अज गुलशन हिकमत नुसखा कलमी बाबू प्यारे लाल बरौठा)

तरीक साफ कर्दन अफयून (फार्सी)

कि दर खुर्दन कमसुफर्रत व बेबदल मेशवद, बियारद अफयून किस्म अव्वल कि जुदा व आब हलशवद यकसेर शीरगाउ ब चहार सेर शीररा गर्म कर्दः अफयून दराँ हलः कुनन्द बादहू अजपार्चः साफ नुमायन्द वकवाम कुनन्द चूं बहद कवाम रसद रोगन गाउ या रोगन बादाम पाव सेर गर्म कर्दः दाखिल कवाम नमूदः हल कुनन्द ताहमैः रोगन जज्ब शवद बादहू जाफरान यकदाम व ऊदकमारी दो दाम साईदः दाखिल साख्तः खूब बेहतर जनन्द व मिकदार सुर्ख जहावस्तः बिदारद व अगर बजाइ ऊद अंबर अहशब आमेजन्द बेहतर अस्तबायद कि सदमर्तबः आह जादर आब अदरक सलावः कुनन्द दरदवाजदह रोज तमाम मेशवद व पस कर्क साख्तः दरजर्फ गिली निहादह व सरपोश गिली निहादह रोज यक शंबः जेर जमीन दफन कुनन्द व रोज यक शंबः आयन्दः बर जाबुर्दह बकार बुरन्द नफा बिला मजर्रत बखुसद (सुफा १२ किताब मुजर्रिबात अकबरी)

वशे।

अफीम, अभ्रकभस्म, रजतभस्म, लोहभस्म, मूंगाभस्म, बर्कचांदी, बर्कसोना, मोतीकच्चे, इलायची छोटी, इलायची बडी, अजवाइन खुरासानी, वंशलोचन सब समान भाग लेकर अफीममें घोटकर गोली बनावे, मात्रा एक रत्ती। (पंडित ऋषीरामजी जंबूवालेने बताया ।)

सीद्रावकलेप रक्तगुंजाकल्प ।

तमेव मूलं बृहतीफलं च मधुना सह। लिंगे च लेपनं कुर्याद्द्रावणं मोहनं वशम् ॥ ९ ॥

(औषधिकल्पलता)

अर्थ-चौंटनीकी जड और कटेरीके फलको शहदके संग पीस लिंगपर लेप करै तो स्त्रियोंको मोहित करनेवाला और द्रावण है ॥ ९ ॥

रोगन खुर्दनी व तिलाई मुबही मुमासिक व मुलजद (उर्दू)

तकवियत बाह मुमसिक-म-ज-गायत सरीअउल तासीर है लोबान कोडिया, नीमपाव पुख्तः, अकरकरहा एक तोला, दारचीनी १ तोला, जाफरान ६ माशे, बिसवासा १ तोला, करनफल कुलाहदार १ तोला, जौज व बिया एक तोला, मुश्ककाफुर १ तोला, कस्तूरी १ माशे जुमलै अदवियात मरकूमाको अलहदा अलहदा कोफ्तः बेख्तः हमराहजर्दी बैजामुर्ग इक्कीस अदद खरल करके बजरियः

पतालजंतर रोगन कशीद करे । एक कतरा पानके टुकडेमें लगाकर खाए और एक कतरा पर लगाए अजीब तमाशा देखेंगा। (सुफहा ६ अखवारअलकीमियाँ ११।१।१९०७)

पलितकारण ।

क्रोधशोकश्रमकृतः शरीरोष्मा शिरोगतः । पित्तं च केशान्पचति पलितं तेन जायते ॥ ॥ १० ॥ (रसकामधेनु.)

अर्थ–अनेक प्रकारके क्रोध, शोक और श्रमके करनेसे जो शरीरकी ऊष्मा शिरपर जाके पित्तको पैदा करती है और वह केशोंको पकाती है कि जिससे पलितरोग उत्पन्न होता है ॥ १० ॥

केशरंजन ।

त्रिफलायास्तु षड्भागा दाडिमत्वग्जटाद्वयम् । निशात्रयं षष्टिसुण्डाद्विभृंगरसविंशतिः ॥ ११ ॥ केशेषु लग्नं तद्रात्रौ बद्धचित्रप्रवालतः । प्रातर्धौतं सप्तसप्तद्दिने लग्नं त्रिमासकम् ॥ केशाः कालालिसंकाशा यावज्जीवमपि स्मृताः ॥ १२ ॥ (रसकामधेनु.)

अर्थ–त्रिफला छः भाग, अनारके छिलके दोभाग, हलदी तीनभाग, लोहा दो भाग, जलभंगरेका रस बीसभाग इन सबको पीस केशोंपर लेप करै फिर ऊपरसे चीतेके पत्तोंको बांध देवे प्रातःकाल धोलेवे प्रत्येक सप्ताहमें एक बार लगावै इस प्रकार तीनमास करनेसे जीवनपर्यन्त केश कालेही रहते हैं ॥ ११ ॥ १२ ॥

केशरंजक ।

अधःपुष्पीमूलरसात्पञ्चैकं रोचकद्रवात । दशमूलकजद्रावादिक्षुभागाश्च विंशतिः १३॥ लोहसंपुटगं गर्ते सर्वमासद्वयं स्थितम् । त्रिफलाधौतकेशांश्च त्रिमासाँल्लेपयेत्ततः १४ यावत् कृष्णांभवंत्येव मुखस्थाष्षष्टितंडुलाः। यावज्जीवं भवेत्सिद्धिरिति सिद्धैः प्रभाषितम् ॥ १५ ॥ (रसकामधेनु.)

अर्थ–गोजिह्वाकी जडके रसके पांच भाग, केलेके रसका एक भाग, दशमूलके रसके और ईखके रसके बीस भाग यह सब लोहेके सम्पुटमें रखकर खड्डेमें दो महीने तक रखे पीछे त्रिफलासे बालोंको धोकर तीन महीने तक लीपे तो जन्मभर बाल काले रहेंगे । इसका प्रमाण यह है जो साठी चावल मुखमें रखेजावें वे भी काले होजावेंगे, यह सिद्धोंने कहाहै ॥ १३–१५ ॥

खिजाबके लियेतेल (उर्दू)

कीकडसाड (जो काला रस कीकडसे बहा करता है) पाव व समः आधसेर, काले तिलोंका तेल आधसेर, एक बर्तन गिलीमें डाल दे एक कीकडके पाससे जमीन यहांतक खोदे कि जड जाहर होजाय जडको वहांसे काटकर बर्तनमें रखदेवे और बर्तनका मुंह अच्छीतरह बंद करके ऊपर गोबरका ढेर लगादेवे ४० दिन बाद निकाले और इस बर्तनके नीचे सूराख करके बजरियः पतालजंतरके जिसकी तरकीब कईबार दर्ज होचुकी है तेल निकालले यह तेल उमदा खिजाब है । (सुफहा अखबार देशोपकारक ३१ । १० । १९०६)

केशकल्पतैल ।

आँवला सार गंधक, लोटासज्जी, नौसादर, कलमीशोरा, जौकुट करके अठगुने गोमूत्रमें लोहेके बर्तनमें भिगोदे ८ प्रहरबाद नितारकर पानी लेले और लोहेके बर्तनमें पकावे गाढा होनेपर उतारकर चौंडे मुंहके चीनीके बर्तनमें डालदे और धूपमें बर्तनका मुंह टेढा करके रख दे तेल जुदा होता जायगा उसको अलहदा करता जावे–यह तेल बालोंको काला करता है । (पंडित ऋषीरामजी जंबूवालेने बताया)

केशकल्पतैल ।

काकन्यापत्रमूलं सहचरिसहितं केतकीनां च कंदं छायाशुष्कं च भृङ्गं त्रिफलरसयुतं तैलमध्ये निधाय ॥ तत्क्षिप्त्वा लोहभांडे क्षितितलनिहितं मासमेकं च यावत केशाः काशप्रकाशा भ्रमरकुलनिभा मासमेकं भवन्ति ॥ १६ ॥

अर्थ–चौंटनीके पत्ते और जड पीयाबांसा केतकीकी जड और छायामें सुखायाहुआ भाँगरा इनसे चौगुना त्रिफलाका रस और त्रिफलाके रससे चौथाई मीठा तैल इन सबोंको लोहेके पात्रमें एकमासतक गाड धरै फिर मास एकके बाद निकालकर लगावे और उसकी बूंद अन्य स्थानपर न लगे नहीं तो वह स्थान काला होजायगा इस तैलके लगानेसे बाल काले होते हैं ॥ १६ ॥

केशरंजकतैल ।

अंजनं मधुकं कृष्णा तार्क्ष्यजं सारिवोत्पलम्॥त्रिफला नीलिकापत्रं कासीसं मुस्तकं तिलाः ॥ १७॥ आम्रास्थि तालपत्रं च फलं पिण्डीतकस्य च ॥ जम्ब्वाम्रार्जुनपुष्पाणि कूर्मपित्तं सतुत्थकम् ॥ १८ ॥ शिंशपां भूतकेशीं च मार्कवं सन्निकण्टकम् । पृथगक्षसमान्भागांस्तथा लोहरजःसमम् ॥ १९ ॥ तैलप्रस्थमजाक्षीरे धात्रीभृंगरसाढकम् । इक्षुकस्य रसस्यापि लोहपात्रे विपाचयेत ॥ ॥ २० ॥ पक्वं तल्लोहभांडस्थं शिरस्यभ्यंगनस्ययोः । यत्नेन योजयेत्तैलं वरांगेपि न पातयेत् ॥ २१ ॥ पतंति बिंदवो यत्र कृष्णं तत्रोपजायते । भवन्ति कुटिलाः शीघ्रं कचाः षट्पदकोपमाः ॥ २२ ॥ खालित्यं पलितं चैव इन्द्रलुप्तं च नाशयेत ॥ मेध्यं चक्षुष्यमायुष्यं बलवर्णकरं परम् ।नीलबिंद्विति विख्यातं विश्वामित्रेण पूजितम्॥ २३ ॥ (रसकामधेनु.)

१ यहां त्रियामा–रात्रिवाचक शब्द होना योग्य है वा यह अर्थ लेना कि सातसातदिनके अन्तर तीन मासतक यह प्रयोग करे ।

अर्थ-सुरमा, महुआ, पीपल छोटी, तार्क्ष्यज सारिवा, कमल, त्रिफला, नीलके पत्ते, कसीस, नागरमोथा, तिला, आमकी गुठली, तालके पत्ते, पिण्डीतकके फल, जांवन, आम और अर्जुनवृक्षके फूल, कछुएका पित्ता, नीलाथोथा, सीसमकी जड, भूतकेशी, जलभँगरा, सन्निकंटक ये सब एक २ तोले, लोहेका रेत १ तोला, तिलोंका तैल एकसेर आमलेका रस २ दो सेर, जलभंगरेका रस दो सेर. और दोहीसेर ईखका रस इन सबको लोहेकी कढाईमें चढाकर आठ प्रहरतक पकावे तो तैल प्रस्तुत होगा इसका नाम नीलबिन्दुतैल है इसको बडी युक्तिसे लगावे क्योंकि यदि तैलकी बूंद चहरेपर पडगई तो दाग काला पड जायगा यह तैल खालित्य पलित और इन्द्रलुप्तरोगको नष्ट करता है नेत्र आयु और बलके लिये हित है इसके लगानेसे केश भौं रोंके समान काले होते हैं यह विश्वामित्रने कहाहै १७-२३॥

रोगनखिजाब (उर्दू)

गुलेलालाको निचोडकर उसके पानीमें तेल डालकर जोश दे यहांतक कि पानी जलजावे तेलको शीशेमें निगाह रक्खे सर और डाढीको लगावें यह निहायत रंग देगा- (अफलातून) (अखबार अलकीमियाँ १६ । ४ । १९०७ सुफहा ४)

नुसखा खिजाब १० साला (फार्सी)

खिजाब दहसाला बियारन्द हलैला व बलैला व आँवला अजहरेक बिस्त दिरम बेख नीलोफर व पोस्त बेख अन्तर तुर्श हरएक सह दिरम हरेकरा बारीक साईदः व जाम बेज कर्दः दरदेग आहनअन्दाजन्द व बालाइआँ आब फिट-किरी गर्क कुनन्द यकमाह दर अंबारशाली बिनिहन्द बाद-अजाँ बर आवुर्दः दरसरेश बिमालन्द बबर्ग अंजीर बर बन्दन्द व खुस्पद मूए स्याह शवद व दहसाल स्याह बिनु-मायद-(सुफा ५२ जवाहरउलसिनात्)

नुसखा खिजाब ३० साला (फार्सी)

दरसनत खिजाब सीसाला कर्दन मूएबियारन्द पोस्त हलैला व पोस्त बलैला व आँवला व हरीवल्त व हिनाइ स्याह व हिनाइ सुर्ख व खाकिस्तर सुर्ब व बेख नीलोफर व पोस्त व बेख परस्त अनार तुर्श व बर्ग तंबूल अज हरेक बिस्त दिरम तोबाल आहन बराबर ई हमः अजजारा जुदाजुदा बारीक साईदः व यकजा कर्दः दरदहसेर रोगन कुंजद दरआवन्द स्याह अन्दाजन्द व यकरोज दर आफ्ताब बिदारन्द अंगाह लैमूं शीरा भाँगरा स्याह नीमवजन हरा अन्दाख्तः दोरोज दर आफ्ताव दाश्तः यकमन शीरनी शकरदरान अन्दाख्तः दरजबुल अस्यान फरूबुरन्द व गिर्दबरगिर्द आंकरअस्यान रेख्तः बाशद ता चहलरोज बाद बर आवुर्दः निगाह दारन्द चूँ ख्वाहन्द कि मूए स्याह शवद कदरे विरंज व संग मक-नातीस दरदहान गीरन्द व अजीदारद बरसरेश विमालन्द व बरबालाइ आँ बर्गबेद अंजीर बिबन्दन्द व बिखुस्पद चूं बिदानन्द कि विरंज दरदहन स्याह रवद व रोगन कुंजद चर्ब कुनन्द खिजाब तीसाला शवद मूइ बगावत स्याह शवद (सुफहा ५२ किताब जवाहरउलसिनात्)

अकसीर बदनी नुसखा फौलादी या खिजाब खुर्दनी (उर्दू)

नुसखा फौलादी या खिजाब लाजबाब व खातिर नाज-रीनः अलकीमियाँ रवाना खिदमत है जिसके चारमाह छः माह निहायत छः माह इस्तेमाल करनेसे बफज्लखुदा अजसर नौजडसे बाल स्याह पैदा होते हैं नियाजमन्दका बरसोंसे ख्याल था कि कोई ऐसा नुसखा हो जिसके अन्दरूनी इस्तेमालसे बालस्याह होजावें और तेजाबोंके खिजाबकी पबलिकको जरूरत न रहे क्योंकि वह अंगरेजी खिजाब वगैरः बजाइ बाल स्याह करनेके उलटा खराब करदेते हैं शुक्र खुदा कि मेरी बरसोंकी कोशिशसे नुसखा जैल मिला आजकलके खिजाबोंको बांधनेकी जरूरत पडती है इसको सिर्फ लगातार इस्तैमाल करनेसेही बाल हस्ब मनशा स्याह होतेहैं, तजरुबासे नाजरीन साहि-बानको खुद बखुद मालूम होजायगा यह अर्क कुव्वत बाहके लियेभी बमजिलः अकसीर है चालीसरोजके स्तैमालसे नामर्दको काबिल जमाइके करदेता है इमसाक तौ हदसेबढजाता है खूब फासिद सौदाई सोख्ताके लिये मुफीद है रंगजिस्मको मानिन्द अनारके सुर्ख करदेता है हजमकी ताकत बढजातीहै पहलेसे दुगुनी गिजा हजम होसक्ती है मर्जतहालको चंदरोजमें नेस्त नाबूद करदेता है गरज इसीतरह सदहा अमराजके लिये एकसौसे ज्यादः अमराज पर बन्देका तजरुबा होचुकाहै बफज्ल खुदा इसे हरेकजगह मुफीद पाया इस लिये निहायतही मुजर्रिब समझकर पेशखिदमत है नाजरीन साहिबान जरूर व सदजरूर ही तजरुबा करें और मेरी मेहनतकी दाद दें।

नुसखा अकसीर यह है।

बुरादाफौलाद बीस तोलेको कढाईमें डालकर चूल्हेपर रक्खे और नरम आग जलावे और बीसतोले तेजाब गंध-कका उसमें डालकर शीख आहनीसे मिलाता जावे जब कि तेजाब खुश्क हो तो एकसेर हफीरात तुर्शीका डालकर पकावें जब वह खुश्क हो तो दुबारा बीसतोले तेजाब गंधकका डालकर बदस्तूर पकावे और तेजाबको अच्छीतरह खुश्क होने दे जब कि धुआं बंद होजावे तो नीचे उतारकर रक्खे बाद समर जामुन हों अच्छा है वरनः बरनः बर्ग दरख्त जामुनका घोटकर पानी निकालकर बकदर ४ सेर लोहेके बर्तनमें डालकर वह फौलाद उसमें डालदे और आठ रोज तक धूपमें रक्खे, लेकिन दिनमें दो तीन मर्तबः शीख आहनीसे हिलादिया करे बाद चोबचीनी ४ तोले, उन्नाब ४ तोले, कबाबः ४ तो०, तवाशीर २ तोला, इलायची खुर्द २ तोला, बनफशा २ तोले, दारचीनी ४ तोले, कासनी ४ तोले, बेखकासनी ४ तोले, मकोह ४ तोले, बदियान २ तोले, संदल सफेद ५ तोले, संदलसुर्ख ५ तोले, चोबहयात ५ तोले, चिरायता ८ तोले, बुरादाशीशम ८ तोले, बुरादा आबनूस ८ तोले, मिर्च स्याह ४ तोले, कतीरा २ तोले, शाहतरा १२ तोले, सरफोका ४ तो०, पोस्त हलैलाजर्द ४ तोले, बलैला ४ तोले, बर्गमुंडी १२ तोले, बर्गझाऊ १२तोले. आकाशबेल ६ तोले, जवासा ६ तोले, गलेनींब १० तो०,

वर्गचीता ८ तोले, वर्गगिलोइ ६ तोले, वर्गकासनीसवज ६ तोले, समरनीब ६ तोले, उशवा ६ तोले, तुख्महिन्दी १० तोले, मुनक्का १० तो०, अंजीर ४ तोले, आँवला ५ तोले, लहसोडा ५ तोले, खारखुश्क ५ तो०, हलैलास्याह ८ तोले, तरबद मुकश्शर ४ तोले, जब कि ८ रोजतक फौलादका पानी तय्यार होजावे तौ उसी फौलादवाले बर्तनमें सब अदविया डालकर उसमें ६ सेर पानी कुएका भी डालदे तीनरोजके बाद सरा-अंबीकमें डालकर बतरकीब मारूफ अर्क कशीद करें और सर्द होनेपर बोतलमें भर रक्खे खुराक बकदर १ माशे अर्कको एकसे दो तोलेतक गुलाबमें डालकर नोश फर्मावें और कुदरतका भी तमाशा देखें पस अगर आपको कुव्वत बाह और बालस्याह करनेका शौक हो तौ कदरे तकलीफ फर्माकर तय्यार करके देखलेवें। (अलराकिम हकीम सय्यद गुलामअलीशाह मालिक शफाखाना हैदरीकरांची सुफ्हा १४ अखबार अलकीमियां ६६ अगस्त १९०७)

नुसखा सोजाक निहायतही मुजर्रिब(उर्दू)

सतशिलाजीत, सतगिलोइ, सतबैरोजा, दानः इलायची खुर्द, कत्था सफेद, तवाशीर, गंधक आँवला सार,मुसफ्फा गेरू, तमाम दवाओंको बराबर वजन लेकर पीसकर रक्खे और ३ माशे रोजाना शरबत नीलोफरसे खाया करै ७ दिनमेंही आराम होगा। (सुफ्हा १० अखबार वैश्योपकारकलाहोर ५।१२।१९०६)

सोजाकका उमदा इलाज (उर्दू)

हल्दी ५ सेरको एक हँडियामें डालदे और उसमें अढाईसेर दूध दाखिल करके खुश्क करले फिर उस हल्दीका बजरियः पातालजंतर तेल कशीद करके अहतियातसे रख छोडे एक शीख बलाई या मसका में रखकर मरीजको खिलादिया करे चंदहीयौममें मर्जका नमूद न रहेगा, इन्शाअल्लाहताला (अखबार अलकीमियां १।१।१९०७सुफा९)

नुसखा सोजाक कौहना वा जदीद(उर्दू)

शोराकलमी १२ तोले, गंधक आँवला सार ३ तोले, दोनोंको मिला कर मिट्टीके बर्तनमें जो कि बिलकुल नया हो डालकर कोयलोंकी आगपर रक्खे जब दोनों बिलकुल पानी होजावें तो बर्तनको नीचे उतारकर दूसरे कलईदार बर्तनमें उलट दे, सर्द होनेपर सफूफ बनाकर पार्चः पेज करके रखछोडे, बादहू फिटकरी बिरियां एक तोले, गिले अरमनी एकतोले, वंशलोचन एकतोले, समग कतीरा १ तोले शोरा व गंधक मामूली एक तोले, सतसिलाजीत ६ माशे, तमाम अदवियातको कूट छानकर बकदर चारमाशे हमराह शीर मादः गाड इस्तैमाल करायें इन्शाअल्लाह उलअजीज बहुत जल्द फायदा होगा। (सुफ्हा ४ अखबार अलकीमियां १६।११।१९०७)

नोट—अखराज पथरीके लिये भी यह नुसखा इसरार मुखफियासे है

दाफः सोजाक व मुकव्वीबाह (उर्दू)

रससिंदूर १ तोला, गंधक आँवलासार १ तोला, कुश्ताकलई १ ताला, कुश्ताचांदी १ ताला, कुश्ता सोना ३ माशे मुरवारीद ना सुफ्तः ३ माशे, भीमसेनीकापूर १ तोला, कुश्ताअबरखस्याह १ तोला, तमाम अदवियाको भाँगरेके रसमें ४ दिनतक खरल करके गोलियां बनावे, बामिकदार ४ रत्ती गोली होनी चाहिये; हररोज एक गोली बहमराह दूध खावें और बादी व तुर्शीसे परेहज रक्खे और ६ माह मुदावमत करें फिर सब अमराज दुम दबाकर भाग जावेंगे (सुफ्हा १५ वैश्योपकारक लाहौर १२ दिसंबर १९०६)

इलाज सोजाक (उर्दू)

जौहर लोबानमें कुश्ता तूतिया चहारहिस्सा शामिल करके रोगन सन्दलमें खरल करके मिस्ल मरहमके बनारक्खे खुराक दो चावल बलाई या मस्कामें सोजाकको पहली खुराकमें दफै करदेता है।

कुश्ता तूतियाकी तरकीब यह है।

काफूर २ तोलेको तूतिया ६ माशेके जेरबाला देकर किसी कूजेगिली में बंद करके दो तीन पहरकी आंच देदे कुश्ता सफेद होकर निकलेगा लेकिन जिस कूजेमें बंद कियाजावे तमाम कुलियाका मुँह काफूरसे पुर होना बेहतर है अगर खिला होगा तो तूतिया गायब होजायगा। (सुफ्हा नं. १९ अखबारअलकीमियाँ १६।६।१९०७)

रसकपूरका कुश्ता और पुरानेसे पुराने सोजाकका कलाकुम्मा (उर्दू)

पोस्त दरख्त बेरको जलाकर उसके खाकिस्तर एकसेरमें तीन सेर पानी मिलाकर ५ रोजतक भिगो रक्खें बाद उस पानीको वत्ती लगाकर मुकत्तर करलेवें फिर एक कढाई आहनीमें अबरकका टुकडा रखकर उसपर एक तोला रसकपूरको रखदे और नरम आगपर पानीका चोया देवे जबकि तमाम पानी जज्ब होजावे तो फिर एकसेर सिरका अंगूरका लेकर इसीतरह चोया देकर जज्ब करे उसके बाद बिलावा १० तोला कुंजदस्याह १० तोलाको कूटकर नुगदा बनालेवे और रसकपूर तय्यार शुदः उसमें रखकर तीन मर्तबः गिले हिकमत करे जबकि अच्छी तरह खुश्क होजावे तौ ४ सेर पाचक दस्तीमें आग देवे बफज्लहू ताला आला दर्जेका कुश्ता तय्यार होगा; बवक्त सुबह बकदर निस्फ चावल मक्खनमें रखकर खावे कौहनासे कौहना सूजाक के लिये नं ४ अकसीरवस तजरुवा शर्त तय्यार करके देख लैवें (सुफ्हा ७ अखबार अलकीमियां १। ९।१९०६

कहल सोजाक (यानी काजलसे सोजाकका इलाज) (उर्दू)

जोंक खुश्क एक अददको फलीतामें लपेटकर राईके तेलके जरिये काजललें मरीजसोजाककी आखोंमें लगाएँ इन्शा अल्लाह सोजाकका नमूदतक नहीं रहेगा (सुफ्हा ३ अखबार अलकीमियाँ १। ११। १९०७)

रोगन कुचला मुकव्वी व दफे सोजाक (उर्दू)

पावभर कुचलाको पांचसेर रोगन गावीमें भिगोवे जब दूध बिलकुल खुश्क होजावे तब बजरियः पतालजंतर रोगन कशीद करले यह रोगन कुरह सोजाकको दफै करता है

अयसाव सुस्त और कमजोरको ताकतवर बनाता है तिला अन व अकलन दोनों तरह इसका इस्तैमाल मुफीद जायज है-खुराक १ बूंद है । (सुफहा ३ अखबारअलकीमियाँ १६ । ११ । १९०७)

नोट-अगर कुचलेके हमराह आधपाव मीठातेलिया भी शामिल किया जावे तो तपेलरजःके लिये भी मुफीद है।

इलाज आतिशक बजरियः रसकपूर तसईद शुदःनीज अर्क मुसफ्फा (उर्दू)

इस नुसखेको पच्चीस बरससे तजरुबा करता चला आता हूं और न कै व दस्त होते हैं नाजरीन अखबार भी बारबार तजरुबा फर्मा ले बिलादरेग रफाह खलायकके लिये हदिया नाजरीन है ।

नुसखा-रसकपूर एकतोला, दार चिकना, मुलतानीमिट्टी एकतोला कुल दवाओंको बारीक सफूफ करके एक चीनीके प्यालेमें रखकर ऊपरसे दूसरा चीनीके प्याला मुँहसे मुँह मिलाकर कपरोटी करके मोटी फतीलासे जौहर उडाले १२ घंटेमें जौहर उडकर ऊपरवाले प्यालेमें जम जावेगा उसको खुरचकर एक शीशीमें रख लें खुराक मुवाफिक बरदाश्त मिजाज एक चावलसे दो चावल तक है खानेकी तरकीब एक छटांक घी या बालाईमें डालकर खावे और ऊपरसे आधसेर दूध पीवे ७ या ९ यौमतक गिजाए मुर्गन दूध घीकी कसरत परहेज नमक, मिर्च सुर्ख, तुर्शी, बादी और इस दवाके खानेके बाद दोघंटे अर्क जैल पी लिया करें ।

अर्कुलहिपात चोबचीनी ४ तोले, उन्नाव एकतोला, गाउजुबा ४ तोले, कबाबचीनी २ तोले, वंशलोचन १ तोले, इलायची खुर्द नीमकोब ३ तोले, बनफशा एकतोला, दारचीनी ४ तोले, गुलनीलोफर एकतोला, तुख्मकासनी ४ तोले, बेगकासनी ४ तोले, अनवुलसालव ४ तोले, बादियान ४ तोले, बुरादासंदल सुर्ख ५ तोले, बुरादासंदल सफेद ५ तोले, चोबहयात ७ तोले, चिरायता १२ तोले, बुरादाशीशम ७ तोले, बुरादाआबूनस ७ तोले, मिर्च स्याह ४ तो०, कतीरा १ तोले, शाहतरा ४ तोले, पोस्त बेख सरफोखः ४ तोले, पोस्त हलैला जर्द ४ तोले, पोस्त हलैला काबुली, मुंडी खुश्क कर्दः १२ तोले, बर्गझाऊ १२ तोले, तुख्म सरवाली १० तोले, अंबरनूरिया ४ तोले, चौलाई २ तोले, गुर्जसवज १० तोले, बर्गचीता ८ तोले बर्गहिना १० तोले, बर्गकासनी ४ तोले, बर्गमकोह ६ तोले, सपूलनीब ७ तोले, पोस्त बेख नीम ७ तोले, उशवामगरबी एकतोले, तुख्महिना १ तोले, मवीजमुनक्का, अंजीरवलायती ४ तोले, आँवला ४ तोले, सिपिस्तां ४ तोले, गोखरूबडा ४ तोले, सोनामक्खी ६ तोले, हडजगी ८ तोले, तरवदपोटली बस्ता ४ तोले, यह तरकीब मामूलअंबीकसे अर्क खींचें बराबर वजन दवाँ अर्क बहुत तेज होगा और दुचन्द भी उमदा होगा खुराक ३ तोलेसे ५ तोलेतक हमराह शहदसे होवे यह अर्क अमराज जैलकोभी बहुत मुफीद है, आतिशक, सोजाक, खूनफासिदजजामसनवहरी, मर्ज सौदावी, (इसमें ज्यादह दिन इस्तैमाल करना लाजिम है) बुखार, चौथय्या, लरजह, दाफःहाजतखुश्क । (हकमिजाहदखां अजमहरोडा-जिला मुरादाबाद सुफहा ११ अखबार अलकीमियाँ १६ । २ । १९०७)

नुसखा आतिशक (उर्दू)

आतिशकका उमदा मुजर्रिब और बेजरर इलाज नीलाथोथाका कुश्ता है (सुफहा १५ अखबार अलकीमियाँ १६ । ४ । १९०७)

आतिशकका इलाज ।

नीलाथोथा दो तोलेकी दो डली लेकर पावभर रीठेके पोस्तमें रखकर किसी कूजेमें बंद करके ३ सेर उपलोंकी आंचमें देदे बाद सर्द होनेके निकाले नीलाथोथा कुश्ता होकर बरामद होगा मरीज आतिशक ख्वाह कैसाही गल क्यों न गया हो और कितनेही जख्म क्यों न हों कितनाही सख्त दर्द क्यों न होताहो सिर्फ १ रत्ती कुश्तामजकूरःसे बालाई या मसकेमें रखकर मरीज आतिशकको खिलावे और मरीजको अपने रोबरूसे अलहदा न होने दे मरीजको जब प्यास लगे बजाइ पानीके रोगनजर्द नीम गर्म पिलावे इन्शा अल्लाह ६ घंटेके अन्दर जख्म और दर्द आतिशकका नमूद रहेगा मरीज हैरान रहजावेगा कि जो सालहा सालसे जख्म थे वह महज ६ घंटेके अन्दर अन्दर कहां गायब होगये और अगर जख्मोंमें दर्द होगा साथही वह भी काफूर होगा (सुफहा ११ अखबार वैश्योपकारक १२ । ११ । १९०६)

नोट-बारह घंटोंके बाद पानी पीनेकी इजाजत है ।

नुसखा आतिशक ।

नीलाथोथा ६ माशे थोडी रुईमें लपेटकर कोयलोंकी आंचमें देदे १५ मिनटमें निकालकर रुई पृथक कर भस्मको पीसलो जो सफेदी लिये होजायगी इसमें १० तोले बारीक पपरियाकत्था मिलाकर नींबूके रसमें जंगली बेरकी बराबर गोली बांधले, दो गोली रोज सबेरे शाम मलाईके साथ खावे खुराक जो दिल चाहे ७ दिनमें आतिशक जाती रहैगी इस गोलीको पानीमें घिसकर जख्मपर भी लगावे ।

एक आदमीने बजाइ कत्थेके समान कौडीभस्म व समान हड मिलाकर इसीरीतिसे गोली बनाना और पानीके साथ खाना बतलाया मुजर्रिब बतलाया ।

नुसखा आतिशक ।

२ माशे नीलाथोथेको एक छटांक मक्खनके साथ ताँबेके बर्तनमें नीमके सोटेसे जिस्में नीचे पैसा लगा हो २४ घंटे खरल करके रख छोडे पादे पानमें एक माशे खुराक सबेरे रोजाना जो चाहे खावे आतिशक बिला कै दस्त ७ दिनमें जाती रहैगी (बाबा लालदासजीका बताया)

कंघीसे दूधका चूरन बनानेकी क्रिया । (उर्दू)

कंघी जर्दगुलकी हरी शाखोंसे अगर दूध आगपर रखकर चलाया जावे तो बुरादा खुश्क आटेकी तरह होजाताहै और फिर इस कदर गर्म पानी डालनेसे बदस्तूर दूध असली होजाताहै आजमूदा है (सुफहा अकलीमियाँ २२८-२५ नोम्बर सन् १९०४)

(आक) मदार–अशरकेफवायद (उर्दू)

हिन्दुस्तानमें कोई जगह नहीं कि जहां आकका दरख्त न पायाजाता हो खुदावन्द करीमने जिस कदर इसमें मुनाफा रक्खे हैं वैसे कसरतसे भी पैदा करदिया है। नजला मैदेके अमराज और बजअउल मफासिल बवासीर जौफ वाह नीज व बाई अमराज वगैरः गरज बहुतसे अमराजमें यह तीर बहदफ है मेरे तजरुबेमें जितनी तरकीबें आई हैं हदिया माजरीन करताहूं नजला बन्दके लिये यह हुलास निहायत मुफीद है. आरनेउपलोंकी राख ३ मर्तबे आकके दूधमें तर करके खुश्क करे और बवक्त जरूरत थोडासा इस्में से लेकर सूंघे दसमिनटके बाद छींक आकर तबियत साफ होजावेगी इसके बाद एक छटांक जलेबी गर्म गर्म खाले आकके दरख्तकीजड जमीनके अन्दरसे निकाले इसकी छाल साफ करके खूब बारीक पीसकर निस्फ वजन कालीमिर्चका सफूफ मिलाकर पानीमें गोलियां चनेके बराबर बनाले खाँसीके वास्ते अज हद मुफीद हैं, हैजेमें गुलाबके अर्कके साथ देवे तो अकसीर है, इसकी छालका सफूफ एक हिस्सा कंदस्याह तीन हिस्सा दोनों यकजात करके जंगली बेरकी बराबर गोलियां बनाले बलगमी खाँसीके वास्ते मजर्रिब है, मैदेके अकसर अमराजके लिये यह गोलियां मैंने नाफै पाई हैं, आकके फूल १ तोला, कालीमिर्च १ तोला, सोंठ १ तोला, नमकलाहौरी १ तोला, सबको पीसकर अदरखके अर्कमें गोलियाँ बनाए जब कभी पेटमें गिरानी मालूम हो तो एक गोली कदरे पानीके साथ खाएं यह गोलियां बजैउल मुफासिलके लिये भी मुफीद हैं ख्वाह या सूरकि वास्ते भी नाफः है, अकसर देखागया है कि मस्सोंसे खराब रतूबत निकलकर तबियत हलकी होगी, हैजेमें भी मैंने बहुत नाफै पाया है, बजअउलमुफासिलमें इसका रोगन निहायतही मुजर्रिब है, आकके पत्ते ७ अदद भिलावा ७ अदद रोगन कुंजदमें जलाए जब खूब जल जावे तो साफ करके शीशीमें रख छोडे और बवक्त जरूरत धूपमें बैठकर मालिश करे सिर्फ दोतीन मर्तबःकी मालिशसे आराम होजाताहै, इसकी छालका सफूफ एकमाशे हाथ व पाँवकी सर्दी व कमजोरीके वास्ते उमदा चीज है, आयन्दा निस्फ माशा ताजा पानीके साथ फांके इसके बाद एक माशे उमदा तिरियाक है, खाँसी दमाके वास्ते भी नफा देता है इसके पत्तोंसे इस्तंजा करना बवासीरके मस्सोंको तहलील करताहै, अजवाइन देशी आकके दूधमें तर करके आगमें जलाले और सफूफ करके रखछोडे खांसीके वास्ते नाफै है जहरीले जानवरोंके काटनेके लिये इसका दूध फौरन् असर करताहै, हरताल गोदंतीको आकके दूधमें भिगोकर कुश्ता करे तो फालिजके वास्ते बहुतही फायदा देताहै, कुश्ता मजकूर एक रत्ती अदरख दो माशेमें पीसकर मिलाकर खिलाए दिनको गिजाए मुरगन दे और शामको कुछ गिजा न दे चंद योममें आराम होजावेगा, आकके दूधमें संखिया पिलाएँ और रोगन जर्द मिलाकर तिला करे जलकके वास्ते अकसीर आजम है आँवला पडकर रगें साफ होजाती हैं और इसके बाद मसका (मक्खन) लगाने से जलन वगैर सब जाती रहती है। (सुफहा १० अखबार देशोपकारक १६।८।१९०५)

फवायद आक (उर्दू)

अगर पोस्त बेखआक सुर्खगुल और फिलफिलगिर्द हमवजन कूटपीसकर अदरकके पानीमें बकदर दानः फिलफिल स्याह गोलियां बनाले मरीज हैजाको बहालत करीबुलमर्ग एकगोली खिलावे इन्शा अल्लाह ताला शफा होजाती है अगर आककी जड एक दिरम निस्फ दिरम फिलफिलगिर्दके साथ मिलाकर बडके दूधमें रगडकर बकदर दान नखूद गोलियां बनाले एक गोली कबल अजतप मरीजको खिलावे दुबारा लरजाका बुखार न आवेगा।

और अगर किसी कदर आककी जड और पंवांकी जड दोनोंको पानीमें रिगडकर मारगुजीदाको पिलावे फिलफौर बफजलहू ताला शफायाब होजाता है, अगर बेख पंवान मैस्सर आये तो तनहा बेख आकही काफी होसक्ती है।

फवायद नौशादर मुजर्रिबः (उर्दू)

नौशादर हिन्दुस्तानमें एक ऐसी चीज है कि जिसको हरशखसको हरवक्त अपने पास रखना जरूरी है आम तौरपर जो मुश्किलात दरपेश आतीहैं उनमें अमृतकी धार जैसी अदवियाहै उतरकर यह अकेलीही मुश्किल कशाईमें मदद देगा, आमतौरपर जो जौहरात बनाये जाते हैं उनका भी यह खास जुज है सिफत व हरफत और कीमियांमें अकसर स्तैमाल कियाजाताहै अलावा अजीं इसका सफूफ बनाकर एक शीशीमें भरकर रख लीजियेगा, हस्वजैल मौकोंपर अकसीर बल्कि जादू साबित होगा, दर्द डाढ, दर्दसर, दर्ददांत, दर्दकान, दर्दनाक, गरजे कि तमाम अमराज बालाई गर्दनमें सुंघानेसे मुजर्रिबुल मुजर्रिब नसवारही साबित होगी, मेरी अपनी आजमूदा है मिर्गीमें सुंघानेसे फिलफौर होश आजाती है, नीज बिच्छू, ततैया, भिड, डाँस, मच्छड व दीगर कुल हशरातुलारिजके काटेपर लगानेसे उसीवक्त आराम आजाता है, मैंने जहां अजमाया हैरानीसे तीर व हदफ पाया है अगर कदरे चूना भी शामिल करलिया जावे तो बहुत बेहतर वरनः खालिस ही काफी है, सीप या चीपेपर इसको पानीमें घिसकर दिनमें चन्द बार लगानेसे आराम आजाता है, सांपका जहर मिनटोंमें बातिल करता है, मुर्दा मुतसव्विर लाशमें दुबारा जान डालना इसीके अंजनका काम है अर्कगिलोयसे इसका जौहर उडाया जाय तो बुखारके लिये आला सुर्मा है गो आजमानेका मौका नहीं मिला मगर कयास है कि गिलटी प्लेगपर इसकी मालिश जरूर मुफीद साबित होगी लिहाजा नाजरीन अखबार हाजासे मुलतिमस हूं कि इसका सफूफ करके शीशीमें जरूर रख छोडें और आजमाकर हैरान हों कुलअमराजपर मैं मुफीद पाचुका हूं, तब दर्ज करानेको ताकीद है (सुफहा ११ अखबार देशोपकारक १२।१२।१९०६)

अंकोल तैलक्रिया।

सप्ताहं तिलतैलेन भावयेदातपे परम्। अंकोलबीजचूर्णं तु शोष्यं पेष्यं पुनःपुनः ॥ २४ ॥ तत्तैलं ग्राहयेच्चैव तैलकारस्य यत्नतः। अथवा कांस्यपात्रे हि तेन कल्केन लेपयेत् ॥ २५ ॥ उत्थाप्य स्थापयेद्धर्मे

सम्मुखं तु परस्परम् ॥ तयोरधः कांस्यपात्रे पतितं तैलमाहरेत् ॥ इदमेवावली तैलं सर्वयोगेषु योजयेत् ॥२६॥ (इंद्रजाल.)

अर्थ-सात दिवसतक अंकोलके बीजोंको तिलके तैलकी भावना देवे फिर उसको पीसकर सुखालेवे उसका तैल घानीसे निकाल लेवे अथवा बीजोंको पानीसे पीस कांसीके पात्रपर लेप करदेवे और उसको घाममें रखदेवे तो तैल नीचे टपक आवेगा इस तैलको सब कामोंमें लावे ॥ २४-२६ ॥

अंकोलतैलप्रयोग ।

शववक्त्रे बिन्दुमात्रं तत्तैलं निक्षिपेद्यदि ॥ एकयामं सजीवः स्यान्नान्यथा शंकरोदितम् ॥ २७ ॥ ततमंकोलतैलेन मुंडितं तत्क्षणाच्छिरः ॥ पूर्ववत्पूर्य्यते केशैः सद्य एव न संशयः ॥ २८ ॥ तत्तैललिप्तमाभाण्डं शोधितं निर्व्वपेत्क्षणात् ॥ सफलो जायते वृक्षस्तत्क्षणान्नात्र संशयः ॥ २९ ॥ पद्मिनीबीजचूर्णं तु भाव्यमंकोलतैलतः ॥ न्यस्तं जले महाश्चर्यं तत्क्षणात्कमलोद्भवः ॥३०॥ बीजं नीलोत्पलोद्भूतं सिक्तमंकोलतैलतः ॥ न्यस्तं जले महाश्चर्यं तत्क्षणात्पुष्पसम्भवः ॥ ३१ ॥ यानि कानि च बीजानि जलजस्थलजानि च ॥ अंकोलतैललिप्तानि क्षणात्तान्युद्भवंति वै ॥ ३२ ॥ यानि कानि च बीजानि अंकोलतैलमेलनात् ॥ सफलो जायते वृक्षः सिद्धियोगमुदाहृतम् ॥ ३३ ॥ (नागार्जुन-इंद्रजाल.)

अर्थ-मुर्देके मुखमें अंकोलके तैलकी एकबूंद डार देवे तो वह एक प्रहरतक जीवित रहेगा यह श्रीमहादेवजीका वचन है। मिथ्या नहीं होसक्ता है तत्काल मुंडाये हुए मस्तकपर यदि अंकोलका तैल गरम कियाहुआ लगावे तो पूर्वके समानही केश शीघ्र उत्पन्न होते हैं । और उसी तैलमें आमकी गुठलीको तरकर बोवे तो उसी समय फलसहित वृक्ष पैदा होजायगा इसमें सन्देह नहीं है । और कमलनीके बीजके चूर्णको अंकोल तैलसे भावना देकर बोवे तो उसीसमय कमलका फूल पैदा होगा यह आश्चर्य है । इसीप्रकार नीलकमलका भी अनुभव है । और भी जितने बीज जल और स्थलके वृक्षोंके हैं उनके भी बीज इसीप्रकार अंकोल तैलके योगसे उत्पन्न होते हैं यह सिद्धयोग है ॥ २७-३३ ॥

जेबी तबीबका नुसखा ।

रोगन नौसादर व काफूर व पिपरमेन्ट व सतअजवाइन व कार्बालिक एसिड (उर्दू)

नौसादरको अव्वलरोज लैमूंके रसमें खरल करे दूसरे रोज अमरवेलके मुकत्तर पानीमें तीसरेदिन अटसट बूटीके रसमें चौथेदिन केलेके पानीमें पांचवें रोज विसखपरेमें, लेकिन शामको आगके सामने (यकेवाद दीगरे) हररोज बूटीका पानी खुश्क करके आयन्दः अमल करना चाहिये, छठे रोज धूपमें और खुश्क करे जब बिलकुल खुश्क होजावे तब दो प्याले गिलीको जोडकर तसईद करले जौहर नौसादर १ हिस्सा, कारवालिक एसिड एक हिस्सा, काफूर पांच हिस्सा, पिपर्मेन्ट पांच हिस्सा, सत अजवाइन पांच हिस्सा इन सबको एक शीशीमें बंद करके मुंहपर कोई डाट देकर जरा धूपमें रखदे सब अजजा एक लख्त तेल होजायगी आजमूदह मुजर्रिब बस यही जेबीतबीब है। (सुफहा ४ अखबारअलकीमियां १।५।१९०७)

रोगनशफा मयतरकीब इस्तैमाल दाफः हैजा व बुखार (उर्दू)

कारवालिक एसिड एकहिस्सा, काफूर पांच हिस्सा दोनोंको एक शीशीमें बंद करके धूपमें रखदें फौरन तेल होजावेगा । जरूरतके वक्त काममें लावें, हैजेमें तीनतीन चार २ बूंद देनेसे मरीज बफज्लहू ताला शफायात होजाता है और अगर इसी रोगनमें रुईकी बत्ती तरकर नासूरमें रोज देलीजाया करे पुरानेसे पुराना नासूर थोडेही दिनोंमें अच्छा होजाता है अलावः हैजा और नासूरके दूसरे जख्मों पर भी इस तेलको लगाना मुफीद साबित हुआ है मौसमी बुखार पांच बूंद उतार बुखारमें देनेसे दुबारा बुखार नहीं चढता और बारीके बुखारमें भी वे मिसल साबित हुआ है (सुफहा ५ अखबार अलकीमियां १६।१०।१९०६.)

जयावटीविषयोग ।

विषं त्रिकटुकं मुस्ताहरिद्रानिम्बपल्लवाः । विडंगमष्टकं चूर्णं छागमूत्रैः समं समम् ॥ चणकाभा वटी कार्य्या योगवाही जयाभिधा ॥३४॥ इत्यनुपानकल्पनया सर्व्वव्याधिहरी जयावटी ॥ ३५ ॥ (र. सा. प.)

अर्थ-सींगिया, सोंठ, मिरच, पीपल, नागरमोथा, हलदी नीमके पत्ते और बायविडंग इन आठ चीजोंको सूक्ष्मकर बकरीके मूत्रसे घोट चनेकी बराबर गोली बनावे तो यह जयानामकी गोली अपने २ अनुपानके साथ समस्तरोगोंको नाश करनेवाली है ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

इलाजआगसे जलेका (उर्दू)

जब कोई जगह जलजावे तो आकके पत्तोंको आगपर सेंकनेसे इन पत्तोंसे जो पानी निकले उसको उस जगहपर लगा देनेसे फौरन दर्द और जलन मौकूफ होजाता है और चमडा वैसाका वैसा रहता है । (अखबार देशोपकारक १२।१२।१९०६)

इलाज दाफः जहर संखिया (उर्दू)

संखिया जो जौथे दर्जेपर गरम खुश्क है और सम कातिल है लीजिये एक नबात हिन्दी जिसको मछहची (चूनापानी) कहते हैं इसमें खुदाने यह ताकत दी है कि सरभर संखिया अगर खाले तो उसपर मछैछीका अर्क पीजावे, सब भिट्टी होजावेगा । यह दावा तो फकुराका है मगर हमारा दावा तो यकीनी इस कदर है कि संखिया खुर्दःका इलाज इससे बेहतर शायद मालूमात इन्सानिमें न हरगिज न होगा।(सुफहा १२ देशोपकारक१२।१२।१९०६)

इलाज दाफै: सगे दीवाना (फार्सी)

हरकरा कि सगे दीवान: गुजीद: बाशद ईदवा बच: हाइसग बके बरायद व मरीज सेहत यावद व बिगीरन्द कदरेशीरआक व शश माशे खाकिस्तर सरगीन सहराई यकजा कर्द: बकदर कुनार सहराई हुव्वबन्दन्द व निगाह दारन्द हरगाह सग गुजीद: मिस्ल सग आवाज कुन: व बेहोश शवद व बाज बहोश आयद फिल फौर यक हुब बाजराह आबताज: बिखुरानंद बादयक साइत मरीज कैकुनद व बच: हाइसग बकैबरायद व बाद अजाँ अगर बार दीगर आवाज सगकुनद व बेहोश शवद चूं बहोश आयद बारदीगर यक गोली बदस्तूर साबिक दिहन्द हमवरीन तरीक मेदादह बाशन्द ताआंकि असर समबिल्कुल जायल शवद (सुफहा ८५४ किताब शफाइउलअवदान)

इलाज दफै जहर सगे दीवाना (फार्सी)

बकदर शशआहक खुश्क आवनादीद:रा बकदरे आब खूब हलकुनन्द व यकदम बिगुजारन्द कि दर्द तहनशीन शवद पसआब जुलालरा बमरीज बिनोशानन्द व अहकरा व आबसहक कर्द: कि मिस्ल मरहम शवद बरजख्म दंदां सग जमाद कुनन्द व हररोज दोबार व अमल आरन्द तासहरोज असर सम जाइलशवद (सुफहा ८५४ किताब शफाउलआवदान)

कुत्तेके काटेका इलाज।

हाथीशुंडीदे बीज ६ माशे दधिमें मिलाकर "श्वानदष्टं प्रति खादयेत्" हलक उतरै। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

इलाजदफाई जहर कजदम (फार्सी)

अगर कसेरा अकरब नेश जहद बाशद फिलफौर कद्रे अहक बकदरे नौसादर हरदो मसाबी वा चन्द कतरा आब सहक कुनन्द हरगाह बूएतुन्द व तेज अज आंबरायद आंरा मुकाबिल मुनखरीन बीमार कुनन्द व मुजारिद रसीदन बूएआं व दमाग असर जहर जाइल शवद व बीमार ब हाल-खुद आयद (सुफहा ८५३ किताब शफाइउलआवदान)

उपयोगी नश्तर।

युक्तप्रदेशकी सरकारने अपने गजटमें लिखा है कि लाडियर व्रण्टन, नश्तर और, "परमाङ्गनेट आफपोटाश,, सर्प विषको दूर करता है मेरठ जिलेमें २३५ मनुष्योंमें १०१ मनुष्योंकी इस नश्तर और दवासे प्राण रक्षा हुई है। फिर भी नश्तर और दवामें अभी कई अवगुण हैं (अखबार-वङ्गवासी ३१।५।१९७९)

अथ मंडूककल्प।

सर्प विषनाशक मेंडकका मुहरा।

महानद्यां समुद्रे वा देवखाते महाह्रदे। दशपुरुषमध्यस्थो मंडूकानां वसेत्तु यः॥ ॥ ३६॥ सर्पवर्णो ह्यतिस्थूलो दीर्घजीवी बिलेशयः। शरत्काले तु निर्गत्य वसेदन्यत्र सर्वदा॥ ३७॥ तस्य मध्नि महारत्नं कीर्तितं विषनाशनम्। एतत्संगृह्यतां नृणां नास्ति मृत्युदरिद्रता॥३८॥ यत्र स्थले भवेद्रत्नं तत्र सर्पो न तिष्ठति॥ तद्घृष्टोदकसेकात्नश्यते दशधा विषम्॥ ३९॥ वातगुल्मो दरार्तिश्च नेत्रशूलादिका रुजः॥ नश्यंति स्पर्शमात्रेण घृष्ट्वा वा तैलसेवनात्॥ ४०॥ (औषधिकल्पलता.)

अर्थ-गंगादि महानदी, समुद्र, स्वयं बनेहुए तालाब या बडे तालाबोंमें मेंडकोंके दश पुरुषोंके समयसे न मरा हुआ (दीर्घजीवी) जो मेंडक रहता हो, सर्पकासा रंगवाला, बहुत मोटा बहुत दिनतक जीनेवाला बिलनिवासी वह मेंडक शरद ऋतुमें अपने बिलसे निकलकर सदा बाहर रहता है, उसके शिरमें जो बडारत्न रहता है वह विषका नाश करता है। जिसके पास वह मणि हो उसको दारिद्र्य और मृत्यु नहीं होती जहाँ वह रत्न हो वहां कभी सर्प नहीं आता उस रत्नसे घिसे जलको देहमें सींचनेसे दशप्रकारका विष दूर होजाताहै। वायुविकार, गुल्म, जलोटा, आँखदर्द आदिरोग चलेजाते हैं उस मणिके छूने या उसे तेलमें घिस कर लगानेसे उक्तरोग नष्ट होजाते हैं॥ ३६-४७॥

इलाज दफै जहर मारस्याह (फार्सी)

कसेरा कि मारस्याह गुजीद: बाशद फिलफौर बकदर एक सुर्ख नीलथोथा बारीक साईद: बसरनेनिहाद: मुनख-मारगुजीद: बदमन्दद अगर यकबार काफी न शवद बाद यक साइत यार दोम बमिकदार मजकूर बद व बहस्ब: जरूरत बार सोम तेजुल अमल आरन्द इन्शा अल्लाह ताला अगर मार गुजीद: बेहोश शुद: बाशद व होश दरआयद व तन्दुरुस्त शवद व अगर मार गुजीद: रा कफ अजदहाँ जारी शुद: बाशद अजइलाज हेच नफा हासिल न शवद कबल अज जारी शुदन कफअज दहांनफा कुली बखशद-(सुफहा किताब शफाइउलआबदान) ८५३

जहर साँपका इलाज (उर्दू)

हाथीशुंडी मार गुजीद:के लिये तिरियाक है किसी साँप-के काटेहुयेको करीबन ६ माशेके हाथीशुंडी खिला दीजिये सांपका जहर असर नहीं करता-(सुफहा ४ अखबारअ-लकीमियां) १५।५।१९-७

सर्पविषहर।

लज्जामूलं करे बद्ध्वा विलिप्य सकलं वपुः। रमते फणिभिः सार्धं वार्तिको गरुडो यथा॥ ४१॥ (योगरत्नावली.)

अर्थ-खिलाडी लज्जालू (छुईमुई) की जडको हाथमें बांधकर और उसी जडसे शरीरकालेपकर सापोंके साथ गरु-डजीके समान और रमण करे॥ ४१॥

मच्छर न आवेंगे (उर्दू)

दरयाफ्तसे मालूम हुआ है कि मच्छरोंको रंगसे खास उन्स-है अगर मुनासिब रंगके कपडे मुस्तैमिल हों तौ मच्छर पास नहीं फटकते-मस्लन मच्छरको स्याहरंग निहायत मरगूब है अगर कोई शख्स निहायत साफ और सफेद रंगके कपडे रक्खें तो उसको मच्छर बहुतकम सताएँगे-अगर जमीन तर न हो और जूते या कपडे स्याह न हों तो मच्छरोंसे कम ईजा पहुँचेगी बहुतसे आदमी छतमें स्याहरंगका कपडा बाँधकर टांग लेते हैं और फिर उनको मच्छरोंसे कुछ तक-लीफ नहीं होती क्योंकि तमाम मच्छड उस कपडेके गिर्दही

लिपटे रहतेहैं (ब्रह्मप्रचारक) सुफहा १४ (अखबारअल-कीमियां) २६ । १० । १९०७

मच्छर और कीडेका इलाज।

कूट यानी कुस्तको कपडोंके सन्दूकमें रखदेनेसे कपडोंमें कीडा नहीं लगता। कश्मीरी कूटका चूर्ण बिस्तरेपर बजाइ पिस्सूपौडरके छिडकतेहैं

नुसखा धूपका छोटा।

गूगल, तगर, नागरमोथा, छारछबीला, बालछड, चन्दन सफेद, लौंग, इलायची बडी, कपूर, गोला, बूरा ये समानभाग ले धूप बनावे।

नुसखा धूपका बडा।

गूगल, लोबान, अगर, तगर, कपूरकचरी, नागरमोथा, छारछबीला, बालछड, चन्दन सफेद, चन्दन लाल, जायफल, लौंग, इलायची बडी, कपूर, गोला, बूरा समानभाग सबले बनावे।

दशांगधूप।

कूट ६ भाग, नक्ख ५ भाग, हर्डका छिलका १ भाग, गुड १२ भाग, राल १ भाग, छरीला (छारछबीला) ३भाग, छडडंडी (जटामासी) १ भाग, गुग्गुल १ भाग, मुथा (मौथा) ४ भाग इन सबको पृथक् कूट छान ठीक वजनकर जडधूपमें मिला धुँकावे चाहे इसी तरह कोयलोंपर धुंकावे।

इलाज नासूर।

जजुवान सग खुश्क करके जलाकर नासूरपर छिडकना या रोगन सन्दलमें खोपडी इन्सान और सिरसके दरख्तकी छाल घिसकर बजरियः बत्तीके नासूरमें दाखिल करें पहले पिचकारीसे जख्मको धोकर साफ करलें यह हमारा तजुरबा है। (सुफहा नं. १४ अखबारअलकीमियाँ १६ । १० । १९०७)

बदकी दवा।

बदके ऊपर बडके दूधका फोया लगाकर नमककी पोटलीसे सकनेसे बद बैठजातीहै और रीठेको घिसकर लगानेसे बद पकजाती है-(बाबा लालदासका बताया)

नुसखा दादहर किस्म (उर्दू)

रुह इतरोंको तीनचार मर्तबः दादपर मल देना चाहिये हफ्तेके अन्दर अन्दर इन्शाअल्लाह ताला आराम होजाताहै मगर रुहइतर मुनासिब मौसम मलना चाहिये-मस्लन गर्मीमें रुहहिना और मौसम सरमामें रूहअंबर और मुश्क वगैरः। (सुफहा ४ अखबार अलकीमियाँ १५।५।१९०७)

शरीद मुहल्लिक खाँसीका इलाज (उर्दू)

एक सेर दूध गावीमें नमकसाँभर २ तोलेका इस कदर जोश देवे कि दूध बिलकुल खुश्क होजावे और महज नमकही बाकी रहजावे बादहू नमकको निहायत अहतयातसे शीशीमें रख छोडे दो रत्ती हर सुबह यह नमक चाटले खाँसी काफूर होगी। (सुफहा ३ अखबारअलकीमियाँ १।११।१९०७)

दर्द दाढ।

जिस तरफकी डाढमें दर्द हो उसीतरफके हाथके अंगूठे और कलमाकी उँगलीके दर्मियानी हिस्सेमें लहसन कूटकर लुगदी सी बनाकर बांध दे अभी आध घंटा इस अमलको न गुजरेगा कि दर्द डाढको बफज्लहू आराम होजावेगा। (सुफहा ३ व ४ अखबारअलकीमियाँ १।११।१९०७)

दाँतोंका इलाज (उर्दू)

मंजन निहायत मुफीद और मुजर्रिब जो दरद दन्दानको और हिलनेको मुफीद है-अगर गोश्त दांतोंने छोड दिया हो तो गोश्त दांतोंपर चढआता है।

नुसखा यहहै है-त्रिफला २ तोले, त्रिकुटा ६, नमकशोरा ६ माशे, नमक लाहौरी ६ माशे, नमक स्याह ६ माशे, माजू ६ माशे, तूतिया बिरियाँ ६ माशे, फिटकरी सफेद ६ माशे, चोबपतंग ६ माशे, खूब बारीक पीसकर मिलाकर रख छोडे मगर शीशीमें रक्खे उँगलीसे दांतोंपर लगाकर मुंह नीचे करले ताकि पानी निकल जावे चन्द मिनटमें पानी निकल चुकेगा पस उँगलीसे खूब मलकर कुल्ली करदे मेरा तजरुबा कियाहुआ है चन्दरोज इस्तैमाल करे इन्शा अल्लाह दांतोंके मुतअल्लिक कुल शिकायत रफे होजावेंगी राकिम वेनीप्रसाद खरीदार नं० १८६। (सुफहा ९ अखबार अलकीमियाँ १६ । ३ । व १ । ४ १९०७

इलाजदाफै खून दन्दान (उर्दू)

फिटकिरी, अजवाइन खुरासानी, अफयून, नौसादर जरा जरासी पीसकर बतौर मंजन मिलनेसे दांतोंका दर्द खूनजानेवगैरः को बंद करताहै। (सुफहा १२ वैश्योपकारक १२ । १२ । १९०६)

मंजन दांतोंका खून बंद करे।

अगरकी खाक १ तोले, फिटकिरी भुनी १ तोला, नमक लाहौरी ३ माशे, पीसकर मंजन करे, दांतोंके खूनको बंद करताहै। (करावादीन)

हुलास तुख्म सिरस दाफै जुकाम (उर्दू)

मगज तुख्म सिरस बारीक सफूफ करके सूंघना दमागसे रेजिश खूब निकालताहै। (सुफहा ९ अखबार अलकीमियाँ १ । ११ । १९०७)

रोगन दाफै अमराज गोश (उर्द)

एक तेल जो कानके जुमले अमराजमें निहायत मुफीदहै साबित हुआहै अव्वलजख्म व दुम्बल व सबूर वगैरः और दूसरे सकल समाअत तीसरे दर्द गोश जिसकी वजहसे बाज आदमी हिलाक भी होगयेहैं फौरन आराम होताहै चौथे मैल वगैरः अगर इजा देताहो पांचवें पानी या हवासे अगर तकलीफ होगई हो सबको बहम्दल्लाह आराम होताहै, सुफ्त, काफूर रोगन जर्द हमवजन सहक करके पकाके शीशीमें रखछोडे बवक्त जरूरत एक दो कतरा काफीहै दो तीन रोजके इस्तैमालसे सब शिकायतें दफै होतीहैं इन्तहावाफा (सुफहा १७ अखबार अलकीमियां १६।८।१९०७)

तजरुबा गरीब सम्हालूका इस्तैमाल तम्बाकूमें बिसारत बखशहै (फार्सी)

शखस अजआरजः चश्म नाबीना शुदःबूद पस अज अहद वैद अतफाक मुलाकोत उप्ताद आँकदर बिसारत दाश्त कि किताबमें गीरद बचूँ इस्तफसार सबब रफ्त जाहर साख्त कि मुद्दते बर्ग सम्हालू खुश्क साख्त बिलमनाहकः वा तंबाकू बतरीक मुतआरिफ दूदओ मेखुर्दम अज मुवाजवातई बीना शुदम अजींव तअज्जुब अस्त (सुफहा २० किताब मुजर्रिबात अकबरी)

सफूफ मुकव्वी बसर सोंफका इस्तैमाल (फार्सी)

मुजर्रिब साहब दाराशिकोही पैवस्तः हरशव बवक्त रुवाब दो दिरम नवातकोफ्तः व खुरद अज जौफ मामून करदद बफज्ल इलाही हरगिज व इल्लत कूरमी मुब्तलान न शवद (सुफहा २० किताब मुजर्रिबात अकबरी)

सफूफ आँवला मुकव्वी बिसारत (फार्सी)

सफूफ आँवला, पोस्त आमला ताजादरसाया खुश्क कर्दः बदर शीर गाड जोशानीदः खुश्कः कर्दः कोफ्तः पुख्तः सफूफ साख्तः यक हफ्तः यक दिरम वा शहद बिखुरद । (सुफहा २० किताब मुजर्रिबात अकबरी)

सुरमा सीमाव दाफैजुमलै अमराज चश्म (उर्दू)

लईके दरख्त जो अकसर जंगलमें बकसरत होते हैं और कदमें दो फुटसे नौ फुट तक होते हैं इनपर जो शबनम पडती है वह मोतियोंकी तरह जमजाती है और खुश्कहो कर मिठास पकडती है यह शबनम २ बोतल इकट्ठी की जावे एक तोला सीमाव पाक इसमें खरल कियाजावे इसका पानी खुश्क होकर बिलकुल मिस्ल सुरमा होजावेगा–आँखोंके जुमले अमराजके लिये अकसीर साबित हुआहै, मुमकिन है कि इस पानीसे सीमाव आसानीसे कायम होजावे, नाजरीन इसपर क्या राइ कायम करसकते है । (मुहम्मद बखश हेडकलर्क मुलतान) (सुफहा १७ अखबार अलकीमियाँ १।९।१९०७)

औषधिनेत्रोंकी पुनर्नवाक्षारसे ।

विषखपरा २ सेर पक्के, "छायाशुष्कं दग्ध्वा तदंगारान् जले क्षिपेत्" १० सेर जले अर्के "शाखया चालयेज्जलं स्वच्छं गृहीत्वा पाचयेत् तत् क्षारम्" १ तोला १ माशा नीलाथोथा, "उभयोमर्दनं कृत्वा रक्षयेत् शलाकया नेत्रे क्षिपेत् नेत्रसर्वरोगनाशः ।" यदि नेत्रात् जलस्रावः स्यात्तदा" हालयोंके जलमें "पूर्वौषधलेपः नेत्रजलनिरोधकः" इटसिट चिटाफुल हठ ऊपर लेपासे डाली तथा लाल (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

अथ पुनर्नवा मूलकल्पः ।

नेत्ररोग हर पुनर्नवा प्रयोग ।

पुनर्नवायाः शुभ्राया मूलं गोघृतमिश्रितम् ॥ अंजितं हरति क्षिप्रं नेत्रान्तरगतां रुजः ॥ आज्येन पुष्पं मधुनाश्रुपातं भृंग्या च कंडूपटलं च नित्यम् ॥ रात्र्यांध्यमाज्येन निशाप्रयुक्ता पुनर्नवा नेत्ररुजोपहंत्री॥४३॥ (औषधिकल्पलता.)

अर्थ–जो मनुष्य सफेद साँठकी जडको जलमें घिसकर नेत्रोंमें आँजै तो यह सांठकी जड नेत्रोंके भीतरके समस्त रोगोंको नाश करती है । घृतके साथ घिसकर लगानेसे फुल्लीको शहदके साथ जलके बहावको जलभँगरेके साथ नेत्रोंकी खुजलीको और घृतके साथ रातमें लगानेसे रतौंधको नाश करती है इस प्रकार सांठ सबनेत्ररोगोंको नाश करती है ॥ ४२ ॥ ४३ ॥

आँख दुखनेका इलाज (उर्दू)

सत्यानाशीकी टीपयानी दूधजर्द कैसी ही आँख दुखती हो सलाई फेर कर लगानेसे एक रातमें आँखें साफ होजाती हैं । (अखबार अलकीमियां १६।२ व १।४। १९०७)

आखें दुखनेका इलाज पोटलीसे (उर्दू)

काफूर १ माशा, रसोत २ माशा, फिटकिरी बिरियाँ २ माशा, लोध २ माशा, बर्गसिर्स २ माशा इन जुमलै अदवियातको कूट कर पोटली बनाले पानीमें तर करके आखों पर थोडी थोडी देर बाद फेरते रहैं हन्शा अल्लाह एक हीरोजमें आराम कुल्ली होजावेगा ।

आशोव चश्मका इलाज (उर्दू)

जिस आँखपर आशोव हो उसकी सिम्तमुखालिफ पाँवके अँगूठेके नाखूनपर शीर मदारका लेप करे अगर दोनों आखें दुखती हों तो दोनों अगूठोंपर शीर मदारका लेप करे इन्शा अल्लाह फौरन आराम होजावेगा । (सुफहा ३ अखबार अलकीमियां १६।११।१९०७)

रोगन आँवला दाफै दर्दसर(फार्सी)

पदमाख, सन्दल, पीपल, कमलगट्टा, मुलहठी, हर एक यक दिरम शीरा आँवला यक आसारं, रोगन कुंजद शाज दह दाम(या दिरम)अदवियारा कोफ्तः वा शीरा आंवला व रोगन बिजोशानन्द ताकि रोगन बिमाँद व बिदाँकि अगर आँवला तरबाशद आँरा अफशुर्दः आब बिसितानंद व अगर खुश्क बाशद जोश दादह आववीबिगीरन्द व रोगन रावरसर बिमालन्द मुजर्रिब । (सुफहा १४ किताब मुजर्रिबात अकबरी)

नाफैदर्दसर (उर्दू)

सिरसके फूल सूँघना व लगाना नाफै दर्दसर है । (सुफहा ९ अखबार अलकीमियाँ १।११।१९०७)

इलाज ताऊन (उर्दू)

ताऊनके जमानेमें बदनपर नीम गर्म तेलकी मालिश करे और नीमगर्म तेलकी थोडीसी मिकदार हररोज पीता रहे।

नोट–तेल किसी किस्मका हो मगर खालिस हो, एक तोलेसे आठ तोलेतक तेल रोजाना पीना चाहिये हमराह नीमगर्म चाइया यखनी या शोरवाके मालिश करनेके तैलमें बाज डाक्टर थोडा काफूर भी शामिल करते हैं ।

तन्दुरुस्त आदमी इसका रोजाना इस्तेमाल करे तो हरगिज मुब्तलाइ मर्ज ताऊन न होगा और शुरू मर्ज ताऊ-

नमें भी इसका इस्तैमाल बराबर कियाजावे तो जरूर फायदा होगा। मर्ज बढ जानेपर फायदेकी उम्मैद कम है।

इलाज ताऊन (उर्दू)

सम्मुलफार एक तोला, शोरा कल्मी ५ तोला, हरदोको हाथीशुंडके मुकत्तर पानीमें जो करीबन सात तोलेके हो, खरल करे। बादहू गोलासा बनाकर कूज गिलीमें बंद करके मजबूत कपरमिट्टीके बाद चार पांच सेर उपलोंकी आंचमें देदे, जब सर्द होजावे निकालले हवा लगतेही सम्मुल फार व शोरा कलमी मोमिया होजावेगा मुवाफिक मिजाज व उम्र मरीज बकदर निस्फ रत्तीके एक रत्तीतक खिलावे इन्शा अल्लाह मरीज ताऊनमें मुबतला होकर न मरेगा और जल्द शफायात होगा। (सुफहा ४ अखबार अलकीमियाँ १५।५।१९०७)

हाथीशुंडी मारगुजीदःके लिये तिरियाक है किसी सांपके काटेहुएको करीबन छः माशेके हाथीशुंडी खिला दीजिये सांपका जहर असर नहीं करता हाथीशुंडी और सम्मुल-फार दोनों मिलाकर जहरीला मादा हशरातुलआरिजके दफै सुम्मियतके लिये बेनजीर अकसीरका हुक्म रखता है। चूंकि सख्त मुहल्लिक ताऊन आननफाननमें अपना काम करके मरीजको हिलाक करदेता है इसवास्ते शोरा कल-मीका सम्मुलफारके साथ रखना मुकद्दम है ताकि हाथी शुंडी और सम्मुलफारके असरको तमाम बदनमें जल्द मुन्तशिर करके मर्जकी तेजीको रोके और बढने न दे। (सुफहा न. ४ व ५ अखबार अलकीमियाँ १६।५।१९०७)

बुखारसोम व चौथय्याके लिये नुसखा जैल मुजर्रिब है (उर्दू)

हरताल गोदंती एक तोला एक सेर नीमकी पत्तीके नुग-देमें रखकर दस सेरकी आंच दे, जब सर्द होजावे निका-लले कुश्ता मजकूर एक रत्ती फिटकिरीकी खील २ माशे बाहमी मिला कर बालाई या मसकेमें रख कर बुखार चढ-नेसे पहले खाले इन्शा अल्लाह बुखार न होगा। अगर अव्वल दफे हो जावेगा तो दूसरी दफेकी खुराकसे न होगा। (अखबार अलकीमियाँ १६।४।१९०७ सुफा १५)

ज्वरांजन।

निंबबीज, मज्जा, जीरा श्वेत, पीपल, करेलेके रससें २१ बेर खरल करना तापका अंजन है। (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

हबूबदाफै तपेकोहना-मुफीद तपेदिक और बच्चोंकी मर्जलागरी यानी रिढाया झोराके लिये बहुतही मुफीद है (उर्दू)

कछुएकी बालाई हड्डीको अर्क गुलाबमें घिस कर गोंद बबूल कदरे शामिल करके मटरकी बराबर गोलियां बनाले एक गोली सुबह वा एक गोली शाम अर्कवर्ग कदम २ तोलेके साथ इस्तेमाल करनेसे पुराना बुखार और बच्चोंका तपेदिक (यानी जिस मर्जमें बच्चे लॉगर होजाते हैं जिसको अहडा या झूरा कहतेहैं) को अजबस मुफीद है, मैंने पन्द्रह बच्चोंका इस दवासे इलाज किया जिनकी हालत ऐसी थी कि सिर्फ ५ मिनटके महमान मालूम होतेथे और सबकी नजरोंमें ऐसे मालूम होतेथे कि इनका जीना मुश्किल है उस मालिक हकीकीने इस दवासे फाइदा कामिल बख्शा और वह बच्चे अच्छे होगये, बच्चोंको इस गोलीको माके दूधमें देना चाहिये और तीन बरस या इससे ज्यादः उमर वालेको अर्क मज-कूरा बालामें तपे कोहना व लागरीके लिये यह नुसखा अजीब गरीब है नाजरीन इसके तजरुबेसे फायदा उठावें और हरवक्त मौका जरूर तजरुबा फर्मावें।

अर्कबर्ग कदम।

बर्गकदम ताजा मयगुल २ सेर, पानी ५ सेर एक रात दिन भिगोकर हस्बदस्तूर अर्क खींचे।

नोट कदम--कदम दरख्त कलाँ सायेदार होता है। मश-हूर आम है। अर्क मजकूरः बाला दाफे फिसाद खून व सफराई खुराक २ तोलेसे ३ तोलेतक। (सुफहा नं. १२ अखबार अलकीमियाँ १।६।१९०७)

बच्चोंकी पसलीका इलाज (उर्दू)

छोटे बच्चोंको एक मर्ज होताहै जिसमें उनकी पसलीके नीचे गढा पडताहै और नफस व मुश्किल आताहै यह दवा मुझको मेरे एक दोस्त मिस्टर फलप साहब मरहूमने बताई थी एक बडा चमचा (यानी खाना खानेका) प्याजका अर्क और उसी कदर शीरगाउ या शीर मादर मिलाकर नीम गरम बच्चेको पिला दिया जावे इन्शा अल्लाह बहुत जल्द आराम होगा और खुदशबो रोजका तजरुबा है। (अखबार अलकीमियाँ १६।४।१९०७)

नुसखादाफै दर्द गठिया (उर्दू)

सम्मुलफार सफेद चार तोला, रोगन जर्द पांच सेरमें डालकर एक कढाई आहनीमें आगपर चढाकर बत्तीस पहरकी मुतवातिर आतिश खिचडीदेवें बाद बत्तीस पहरके सम्मुल फारको अलहदा करके रोगन जर्दकी दर्दकी जगह मालिश करें दर्दका नमूदतक न रहेगा और कुव्वत बाहके लिये भी इस घीका अज्वपर मालिश करना मुफीद है। (सुफहा ५ अखबार अलकीमियाँ १६।५।१९०७)

नुसखा दाफै जुजाम बजरियः रोगन हरताल (फार्सी)

बियारद जर नेख बुगदादी किस्म अव्वल व गुलताजा तुरई तलख दश्ती जरनेखरा वा गुल मजकूर सहक नुमायद ताऑंकि खुश्क गर्दद जिहाते कोचक बन्दद बादहू बियारद शीशः कोचक आरा चहार कपरौटी कुनद व खुश्क नुमायद व तहेशीशारा सूराख नुमायद हमराह हवाल दोज सूराख कुनद तहशीशःरा गर्म नमूदः सरे कारद सुराख नुमायद गोला मजकूररा दर शीशः पुर नुमायद बादहू यक चकर कुनीदः शीशः दीगर दहन कुशादह बाला वस्ल नमूदह अजगुल साख्तः दफन कुनद व शीशः बालारा अजगिर्दखाक बकदर चहार अंगुश्त दादह व दह आसार पाचक दस्ती निहादह आतिश दिहद वा ईतरीक कुनद कि अव्वल यक पाव पाचक आतिश दिहद वक्ते आतिश खामोश गर्दद बादहू नीम आसार पाचक दादह आतिश दिहद बलकि पावसेर इजाफा कुनद सोख्तः शवद रोगन दरशीशी जेरीन ख्वाहद याफ्त अर्जी रोगन वा मर्ज सफेद बुर्स व जुजामरा शफा बाशद व अगर आजार ताजा बाशद दर यकबार

नफा रसद व अगर कोहना बाशद दर दो मर्तवः फुर्सत शवद। (अज किताव कलमी नुसखे जात बाबू प्यारेलाल वरौठ।)

जुजामका सहल इलाज (उर्दू)

केतूरमें एक हिन्दू फकीर जुजामके इलाजमें बहुत मशहूर था और सिर्फ खिचडी खिलानेसे तीसरे रोजसेहत हो जाती है तीसरे रोज पसीना जर्द गलीज और बदबूदार खारिज होजाताथा इस नुसखेके दरियाफ्त करनेमें बहुत कोशिशकी गई आखिर जोयन्द यावन्दः मालूम हुआ कि वह फकीर एक जिन्दः छपकलीको पकडकर पोटलीमें बांध देता था और देगचीमें रख कर दाल चावल और पानी भर देता था जब दम पुख्त होजाती थी तो उस पोटलीको निकाल कर फेंक देता था इसी तरह तीन रोज मुजबातिर मगर यह हराम चीज थी इस वास्ते इसकी तरफ परवाह नहीं कीगई और इसी तरह इसकी स्लाह करके तजरुबा कियागया और दुरुस्त हुआ कि दो तीन छपकलियोंको पानीमें जोश दिया और साफकरके चनेकी दालको इसमें दस पन्द्रह भिगोया और सुखाया और बाद अजाँ बहुतसे यानी मस्लन तालाब वगैरःमें गोता दिया फिर इस दालका हलवा पकाया और ३ माशेसे ९ माशेतक खिलाया। (सुफहा १९ रिसालेहिकमत लाहौर १५।२।१९०७)

मर्ज मिरगीका एक बेनजीर नुसखा (उर्दू)

ज्योतिषी महाराज साहब हकीम खरीदार अलकीमियां कलकत्तेसे तहरीर फर्माते हैं कि (जरा) एक मशहूर जानवर है (एक किस्मका कीडा) हमारी तरफ बहुत होताहै बरसातके मौसममें जब कि घास करीब एक बालिश्तके होती है और आसमानसे बादलोंकी गुजर होती है तो वह घासमें दिखाई देता है घासके बीचोबीच झाग (कफ) उठे हुए मालूम होते हैं और वह जानवर झागके अन्दर रहताहै अकसर जमीनदार काश्तदार लोग बडी आसानीसे तलाश करलेतेहैं और इस घासके खानेसे अकसर चौपाये मिस्ल गाय, भैंस अकरजातेहैं और चरना छोड देतेहैं, घासको बीचसे पकड कर दबाना शुरूकरें जोंजों दबायेंगे झाग ऊपरको निकलेंगे और फिर उसको टेढा करके बोतलमें मय जानवरके जमा करते जावें जब ऐसा करते करते बोतल भर जावेगी करीब एक सद जगहमें ही बोतल भरजावेगी, बादहू एक सद अदद मिर्च स्याह उमदा शामिल करके आठ सात रोजतक बोतलमें काग लगाकर बंद करके धूपमें रक्खे एकही जगह बोतलको रहने देवे ताकि दिनकी धूप और रातकी ठंडक उसे पहुचती रहे बादहू एक चीनीके वर्तनमें सायेमें खुश्क करले और सफूफ बनाकर रखले मरीज मिरगीको वक्त दौरेके करीब ३ माशे दोनों नथुनोंमें डाल कर जोरसे किसी फकनीसे फूंके ताकि दमागमें पहुच जाय बाद आध घटके बेशुमार छीकें आनी शुरू होंगी जिससे एक किस्म उसके दमागसे बाहर निकल आवेगा जिसका मुँह स्याह बाकी सबजी माइल आठ टांगें होंगी लंबाईमें करीब १½ या १¾ इंचके होगा फिर कभी मिर्गीका रोग न होगा। (सुफहा अखबार अलकीमियां १।८।१९०७)

कुश्तामिरजा दाफैदमा व मुकव्वी (उर्दू)

दमा व खांसीके लिये कुश्तामिरजाँ व तरकीब जैल बारहादफे तजरुबेसे सही साबित हुआ है, शाख मिरजाँको बारीक टुकडे करके शब अर्क लैमूं कागजीमें तर रक्खे बाद इसके निकाल कर एक शकोरे गिलीमें नीचे मिसरी और वर्क गुल बिछाकर टुकडे मजकूरह छिपावें फिर ऊपर उसके दोनों जुज मजकूरःसे पोशीदः करके दूसरा शकोरा ऊपर उसके बंद करके गिले हिकमत करें और सात आसार पाचक दश्तीमें रखकर फूंकदे यह कुश्ता व मिकदार एक सुर्ख पान या शहदमें रखकर खिलावे अलावह दमा सुर्फ, मरतूबी, कुव्वतवाहको भी अकसीर साबित हुआ। (सुफहा १० अखबार अलकीमियाँ १। ११। १९०७)

मुजर्रिब नुसखा दमा (उर्दू)

नजीर हुसैन साहब खरीदार अलकीमियां आमीन कलक्टरी गोरखपुरसे, लिखतेहैं कि बर्गसबजको कनारका अर्क निकाल कर मिस्ल दीगर शरबतोंके उसका शरबत तय्यार रक्खे सुबह शाम एक एक तोला इस्तैमाल करनेसे दमाका नमूदतक नहीं रहता (सुफहा ४ अखबार अलकीमियाँ १। ७। १९०७)

दमेका मुजर्रिब इलाज।

टेसूके फूल, मग्ज बिनौला हम वजन पानीमें पीसकर बेरके बराबर गोलियां बनाले और चालीस दिनतक हर सुबहको एक गोली खावे। (सुफहा १४ अखबार अलकीमियां १६।६।१९०७)

औषधि बवासीर!

भैंस और भैंसा दोनोंका सींग बराबर खूब बारीक पीस कर आगपियालेमें रखकर उसपर एक चुटकी डालकर धूप देनेसे बवासीरके मस्से तीन दिनमें गिरजावेंगे।

बवासीरका मुजर्रिब इलाज (उर्दू)

जो बारहा दफैका आजमूदहहै,कुकडछदी पाव भर पुख्तः नुगदा करके एक पार्चेमें बाँध कर कदरे चिकनी मिट्टी लगाकर उसी वक्त चूल्हेमें खफीफ आगमें पकावे जब भुर्तासा हो जावे और पत्तोंका रंग जर्दसा होजावेगा निकालकर खरलमें डाल कर कत्था एक तोला, नीलाथोथा एक तोला मिलाकर खरल करे आबलैमूं डाल कर आठ रोज तक खरल करता रहे और नीमके सोटेमें पैसा मन्सूरी लगाकर उससे खरल करना चाहिये, तरीक इस्तैमाल यह दवा बतौर मरहमके होजातीहै किसी चीनीके प्यालेमें रखले जरासी उँगलीके साथ बवासरिके मस्सोंपर लगादिया करे, दिनमें एक दफै काफी है चंद रोजके स्तैमालसे मस्से खुश्क होकर जडसे निकल जातेहैं। (सुफहा ४ अखबार अलकीमियाँ १६।१२।१९०७)

नुसखा बवासीर (उर्दू)

कुश्ता सदफ १ तोला नीमके नुगदेमें तय्यार कियाहुआ एक रत्ती,गायत दो रत्ती,एलुआ२सुर्ख,रसौत २सुर्ख इन सबको

मिलाकर गोलीसी करके पानीके साथ निगल जाना बवासीरके लिये मुजर्रिब इलाजहै। (अखबार अलकीमियाँ १६।४।१९०७ सुफहा १९)

बवासीर खूनी बादी (उर्दू)

मग्ज नीम (नीब) तोला, मग्ज पलास तोला, रसौत, जर्द तोला, गिले अरमनी ६ माशे, बारीक पीस कर अर्क गुलाबमें बकदर कनार सहराई हवूब तय्यार करें। एक हुव हमराह अर्क मको अर्कबादियानके रोजाना स्तैमाल करे इन्शा अल्लाह ताला हफ्तेमें बेख व बुनियादसे मुनकिता होगी बाद अंगेज अशियासे अहतिराज गो मामूली अदवियात हैं लेकिन सदहा दफैकी आजमूदः व तजरुबेमेंसे गुजर चुकीहै। राकिम हकीम सय्याद मुहम्मदतकी।(सुफहा १० अखबार अलकीमियाँ १।११।१९०७)

नुसखा बवासीर बादी व खूनी (उर्दू)

रसौत ६ माशे, एलुआ ६ माशे, निबौली नीम ६ माशे, निबौली बकाइन ६ माशे, पोस्तहलैला जर्द ६ माशे, पोस्त हलैला स्याह ६ माशे, मग्ज चाकसू ६ माशे, मकल ६ माशे, पपीता एक तोला मूलीके पानीमें खरल करके नखूदके बराबर गोलियां बनावे और दो गोली सुबह व शाम ताजा पानीसे खावे खुदा चाहे बवासीरका नमूद न रहेगा। (सुफहा ११ अखबार देशोपकारक १४।११।१९०६)

औषधि अर्शकी।

बकायनके बीजोंकी गिरी १ भाग, इन्द्रजौं १ भाग, कहरुवा २ भाग, मूलीके रससे शुद्ध रसौत ४ भाग, २४ प्रहर मूलीके रससे खरलमें घोटे, २ रत्तीकी गोली तक्रसे सर्वार्शनाशक, रक्तार्शपर विशेष। (पंडित ऋषीरामजी जंबूवालेने बताया)

जिस औरतके सिवाय दुख्तरोंके औलाद नरीनः न हो उसका इलाज हस्व जैल है (उर्दू)

औलाद नरीनःका नुसखा शाख मुरवारीद १ तोलाको घीग्वारके आध सेर लुआबमें लतपत करके एक कूजे गिलीमें बंद करके सात सेरकी आंचदे जब सर्द होजावे निकाललें कुश्ता होगा, कुश्ता मिरजाँ एक तोला, मुरवारीद साढे चार माशे दोनोंको अर्ककेवडा और गुलाब में दो रोजतक सिलायाकरे बादहू मुश्क खालिस ३ माशे शामिल करके व कदरदानः मोठ गोलियां बनाले मर्द और औरत दोनों हरवक्त एक एक गोली खाजाया करें जब इक्कीस दिन गोलियां खानेको होजावें तौ जमाइ करे इन्शा अल्लाह औलाद नरीनः होगी यह नुसखा बारहा दफैका आजमूदहहै। (सुफहा १२ अखबार अलकीमियाँ १।११।१९०७)

लडका पैदा होनेका इलाज (उर्दू)

शिवलिंगी २ माशे, हालत हमलमें हर चौथे दिन दूधसे खिलाई जायाकरे और बडके कोपलोंके पानीकी नसवार देदी जायाकरे और ताकतवर अगजिया खिलाई जाया करे तो औलाद नरीनः पैदा होगी आगे खुदा मालिकहै हमारी दवा निआमत अजमाकी एक गोली खिलानेसे खुदा चाहे लडका पैदा होगा। (सुफहा १५ अखबार देशोपकारक १४।११।१९०६)

अकर यानी वंध्याका इलाज (उर्दू)

कंघीघास ७ माशे, नागकेसर ७ माशे, जीरा सफेद ७ माशे, तुख्म कटाईकलां ७ माशे, नवात ७ माशे कूट पीस कर मिला कर खुराक ७ माशे, हमराह एक दाने, मुरवारीद व यक दाना, शिवलिंगी बादहैज व शीरगाउ बवक्त सुबह खिलावे और रातको मजामहत करे सुबह गिजाइ जनान्शीर बिरंज व शाम नान फतीर दाल मूंग (सुफहा ६ अखबार अलकीमियाँ १।२।१९०७)

नुसखा अकसीरुलबदन यानी दाफै जिरियान व नीज आतिशक व नामर्दी (दरअसल कुश्ता शिंजर्फ व नुकराहै) (उर्दू)

एक तोला खालिस चांदी लेकर इसकी छोटीसी प्याली बनाकर उसमें एक डली शिंग्रफ रूमी बकदर एक तोला रक्खे और एक दूसरी आहनी प्याली जिसमें एक सेर पुख्तः रेत आसके लेकर इसमें रेतभर चांदीकी प्याली मयशिंग्रफ हमवार जमाकर नीचे मुलायम आगरोशन करदे और आवबर्ग खटखट इक्कीस तोला एकएक कतरा डालता जावे हत्ता कि तमाम पानी जज्ब होजावे फिर एक बोतल शराब बरॉडीका एक एक कतरा डालता जावे जब वह भी खतम होजावे तो डली मजकूर निकालकर पानी खालिससे साफ करके एक पाव पुख्तः नुगदा बर्ग रेहाँ यानी तुलसी सबजमें बंद करके खूब गिले हिकमत करे और एक सेर पुख्तः उपला खानगीकी आग तपावे जब उसमेंसे धुआँ निकलना मौकूफ होजावे तो उसमें गिलोला मजकूर रखदे बाद सर्द शुदन निकालले इसी तरह दस मर्तबः यही अमल करे फिर ग्यारहवीं दफै शिंग्रफ बारीक पीस कर और प्यालेको भी सोहानसे रगड कर साथ ही मिलाले इन हरदो अजजाद और अरवाहको मिलाकर दो तोले अर्क ब्रह्मदंडीमें खरल करके टिकिया बनाकर धूपमें खुश्क करे और एक पाव पुख्तःबर्ग ब्रह्मदंडीका नुगदा बनाकर दस रुपया सेरपुख्त आतिशदे कुश्ता शिंग्रफ सफेद शिगुफ्तः वा वजन बरामद होगा अगर एक रत्ती भी इसमेंसे कम हो तो हमारा जिम्मा सिर्फ ७ चावल, ७ यौम खानेसे पैदायशी नामर्द मर्द होजाताहै और आतिशक तो इसका नाम सुनकर कोसों भागताहै वजअ मुफासिलके लिये अकसीर है तमाम उम्र किसी दूसरी दवाकी जरूरत नहीं रहती। (आपका नियाज मन्द हकीम अब्दुल करीम अफी उनहू अज मुकाम बाँसवाडा जिला लुधियाना २२।९।१९०७) (सुफहा ६ अखबार अलकीमियाँ १६।१०।१९०७)

नुसखा मुस्हिल दाफैअमराजसौदावी(उर्दू)

नुसखा अकसीरी यह है कि किसी किस्मका मादह हो। वदनमें छोडताही नहीं आतिशक व जुजाम जुमलै अमराज दमागी सरैमें बेमिसल दवाके इस्तेमालके बाद दौरा बिलकुल मौकूफ कवलनुजमें अकसीरका अमल, दर्द पहलू, दर्द

शिकममें बेमिसल कुल मुसलः दवायें जौफ मैदः हैं यह मुकव्वी मैदःहै यानी जिस दिनसे इस्तेमाल फर्मावेंगे. बगैर दो दफै गिजा खाये चैन न पडेगा और वह भी मुर्गन, हो नरम गिजा अकसर खुश्क मुर्गन दूध बूराके साथ इस्तेमाल करे ऐसा ज्यादह न खाजावे कि सूरहजमका खयाल हो पसलीका दर्द, गुर्देका दर्द, पेचिश खूनी वगैरः दर्द, ख्वाह किसी खिल्तसे हो या मैदेसे हो, तप किसी खिल्तसे हो एनतपमें अकसर स्तैमाल किया है उसी वक्त उतरती है सूजाक इस तरह जाता है कि लोग तअज्जुब करते रहजाते हैं वाहमें अगर रतूवत वगैरःके सबबसे कभी होगई हो फौरन दफै होगा, छुप सफेद दाग वगैरःमें भी मुफीद है, गरज कौनसी बीमारीहै जिसमें इसका फाइदा न देखा हो रहम वगैरके अमराजमें बेनजीरहै क्योंकि जिनको अय्याम जियादह होते हैं या कम होते हैं इनके इस्तैमालसे वा फायदा होंगे ख्याल तो यहहै कि मादेहाइ फासिदसे जिनके औलाद नहीं होती उनके औलाद होगी।

नुसखा यहहै–और अतवाको करावादीन वगैरसे मिल सक्ताहै (सुफ्तः) त्रिफला, रोगन बादाम, गुलसुर्ख हरेक दस दस जुज, मग्ज हव्बुल सलातीन मुदव्विर व मुसफ्फ दरशीरयक जुज्व, पस पचास जुज्वमें एक जुज्व हुआ शहद सहचंद जमीअ अजजाइ चालीस रोज बाद सहक व इम_ तजाज धूपमें रक्खे, चालीस रोज गल्लेमें कदरे शरवत इन्तहा एक मश्काल वरक नुकरः या तिलाके साथ इस्तै-माल करे थोडी देर स्तैमालके बाद पानीसे इजतनाव करे कि अच्छीतरह असर करले बादमें जब प्यास लगे स्तैमाल करे ऐसा मुश्हिलहै कि जब चाहे और जिस शिकायतमें चाहे इस्तैमाल करे खुसूसन जो लोग आसीउल मैदा हो उससे जरूर इजाबत होगी, लुत्फ यह है कि संढ वगैरः तहलील होकर इजावत इस तरह होतीहै गोया किसीने एक परनाला खोलदिया सबशिकायतें रफै होगई। (सुफहा १६ अखवार अलकीमियाँ १६।८।१९०७)

औषधि आतिशक।

एक पेड भाँगरे सफेद फूलको मय जड पञ्चाङ्गके पांच काली मिर्चके साथ पावभर पानीमें पीस छान सात दिन बराबर पिलानेसे आतिशक जाती रहैगी। (बाबालाल दासजीका बतलाया)

उपदंशकी औषधि हुक्केमें पीनेसे।

बादफरंग उपदंशमें समुद्रझाग १ तोला, पाषाणभेद १ तोला, मोचरस १ तोला तीनोंको अजामूत्रमें खरल कर उसकी सात भाग सायं प्रातः हुक्केमें पीवे पथ्य कणक चावल मूँगीति। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

वाजीकरणशिवलिंगीप्रयोग।

अथ शिवलिंगीकल्पमंत्रः–ॐश्रीईश्वरि सर्वदानववशकारिणि सर्वजनविमोहिन्यै स्वाहा।

इत्यमुना च मंत्रेण गंधादिभिरनुष्ठिताम्। त्रिधा सूत्रेण संवेष्ट्य गुटिकां संप्रपूजयेत्॥ ॥ ४४॥ पुष्ये वा रेवतीऋक्षे गृहीत्वा गुटिकां पिबेत्। क्षीरशुद्धेन रत्यर्थं रमतेऽथ सहस्रशः॥ ४५॥ (औषधिकल्पलता.)

अर्थ–"ॐश्रीईश्वरि सर्वदानववशकारिणि सर्वजनविमोहिन्यै स्वाहा।" इस मंत्रको पढकर अक्षत और गंध आदिकोंसे मंत्रित किये हुए सूतोंसे शिवलिंगीके बीजको लपेट कर गोली बनावे और उसकी पूजाकर पुष्य या पुनर्वसु नक्षत्र के दिन गोलीको दूधके संग निगलजावे तो हजार स्त्रियोंसे रमण करसकताहै॥ ४४॥ ४५॥

वाजीकरआँवला तिल, घी, शहद।

धात्रीफलानि चूर्णानि तिलचूर्णैः समांशकः॥ घृतमाक्षिकाभ्यामालोड्य त्रिंशद्रात्रिषु भुज्यताम्॥पुरुषो बुद्धिसंयुक्तो वृद्धोपि तरुणायते॥ ४६॥ (औ० क०)

अर्थ–आमलेका चूर्ण और तिलोंके चूर्णको समान भाग लेकर घृत और शहदके संग मिलाय जो पुरुष तीस रात बराबर सेवन करे तो वृद्ध भी बुद्धिमान् होकर जवान होजाताहै॥ ४६॥

स्त्रीद्रावक लांगलीकी जडका हाथपर लेप॥

जलेन लांगलीकंदं पिष्ट्वा हस्ते प्रलेपयेत्॥ हस्तेन स्त्रीकरं स्पृष्ट्वा द्रवेत्सर्पिर्हुतं तथा॥ ॥ ४७॥ (औ० क०)

अर्थ–कलिहारीकी जडको जलके साथ पीस अपने हाथोंपर लेप कर देवे उन हाथोंसे जो स्त्रीके हाथको स्पर्श करे तो अग्निमें घृतके समान द्रव होजायगी॥ ४७॥

सरअ यानी मिरगीका इलाज (उर्दू)

बर्गरेहाँ यानी नियाजबू कूटकर उसका पानी एक तोला निकाले और चीनी या काचके बर्तन या शीशीमें रक्खे हालत मिर्गीसे फरागत पानेके बाद मरीजको चार पाई पर चित्त लिटाकर पानी मजकूर थोडा थोडा करके मरीजकी नाकमें डालदे और मरीज बतौर नसवार दमागको खींचे तीन चार रोजके इस्तैमालसे किरम (कीडे) मिरगी मर-जावेंगे और मिरगीसे खलासी होगी। (सुफहा १५ अखबार अलकीमियाँ ८।३।१९०९)

दादका उमदा इलाज (उर्दू)

दादका मुजर्रिब सहल और अजीब नुसखा दर्ज करता हूं वह यह कि खरबूजेकी गिरियां घोटकर मक्खनमें मिलाले और दादपर लगावे हर रोज ताजा मक्खनसा बनालिया करे चन्दरोजमें बिलकुल आराम। (सुफहा१७ अखबार अलकीमियां ८।४।१९०९)

श्वेतकुष्ठकी औषधि।

मकोयका स्वरस पाव छटांक पीना और उसीका लेप श्वेत कुष्ठनाशक है।

विषूचिका (हैजा) से रक्षा ताम्र-खण्डद्वारा।

पाश्चात्य जगतमें एक नई आलोचना आरम्भ हुई है कि तांबेका टुकडा शरीरपर रहनस हैजा नहीं होता, लंडन और अन्यान्य स्थानोंके डाक्टरोंने इस बातकी पोषकता की

है । खबर है कि तांबेकी खानियोंमें हैजा नहीं होता और रूसके कितनेही देहाती शरीरपर तांबेका टुकडा बांध हैजेसे साफ बचगये, यह भी खबर है कि चायके बागोंमें कुलियों ने भी तांबेका टुकडा बांध हैजेसे आत्मरक्षा की है, कलकत्तेकी लेसली कम्पनीने अपने चायके बागमें कुलियोंके शरीरपर तांबेका टुकडा बंधवा दिया था, पडौसके बागोंमें हैजेने बडा जोर पकडा पर लेसली कम्पनीके बागमें हैजा हुआही नहीं । (बंगवासी २९।४।१९०९)

प्लेगका निर्णय ।

प्लेग भयानक रोग है और इसके मूल सूक्ष्म जंतुका पता सन् १८९४ में डाक्टर यारसीर और किटासाटोने लगाया, यह सूक्ष्म जन्तु सरलतासे अनगिनत संख्यामें बढजाता है । धूपसे और गर्मीसे वह शीघ्र मर जाते हैं । यह ऐसा कोमल जन्तु है कि किसी अन्य जीवके शरीरसे बाहर आकर जी नहीं सकता, फी सदी ३ बीमारोंको छोड कर और सब रोगियोंके शरीरमें यह सूक्ष्म जन्तु चमडेमें होकर प्रवेश पाता है खान पानके द्वारा यह शरीरमें नहीं जाता, शरीरमें पहुंच कर यह लिम्फेटिक नामकी गिल्टियोंमें पहुंचता है तब ये गिल्टियां सूज जाती हैं जिन्हें बद कहते हैं । रुधिरमें ये सूक्ष्म जन्तु बहुत कम पाये जाते हैं अधिकतर ये गिल्टियोंमें ही रहते हैं, मूत्रमें भी बहुत कम किसी बीमारमें ही देखेजाते हैं, मलमें भी कभी पाये जाते हैं, इसी कारण एक मनुष्यसे दूसरेमें रोगका पहुँचना कठिन प्रतीत होता है । यह बात सर्वसाधारण भी जानते हैं कि रोग पहले चूहोंमें फैलता है और फिर मनुष्योंमें आता है, दो प्रकारके चूहे हैं, एक वे हैं जो अस्तबल, गोदाम और मोरियोंमें रहते हैं । घरेलू चूहे मनुष्यके पक्के साथी हैं, देखा गया है कि बाहर रहनेवाले चूहोंमें जब बीमारी फैलतीहै तो उसके १० दिन पीछे घरेलू चूहोंमें आती है, इनके पीछे घरमें बसनेवाले मनुष्य बीमार होनेलगते हैं, यही हाल सब देशोंमें देखागया है । प्लेगके जन्तु पिस्सुओंके शरीरमें रहते हैं और ये पिस्सू चूहोंके शरीरपर इन्ही पिस्सूओंद्वारा ये रोग फैलता है, जहांतक पिस्सू पहुंच सक्ते हैं बहांतक रोग फैलता है, रोगाक्रान्त जीवके साथ आरोग्य जीव रहें सहें परन्तु उनपर कोई पिस्सू न होतो वे बीमार न होंगे । बच्चोंने बीमार माताका दूध पीया था उनको भी कुछ न हुआ परीक्षासे सिद्ध होचुका है कि प्लेगका सूक्ष्म जन्तु बडा कोमल जीव है रोगीके शरीरसे बाहर निकलते ही मरजाता है मिट्टी, धूल या मैल कीचडमें जीता नहीं रहता । हवाद्वारा भी छूत नहीं लगती न हवाद्वारा ये बीमारी फैलती है । यह पूरा निश्चय है कि चूहोंपर रहनेवाले पिस्सूही इस रोगके फैलानेवाले हैं । जहां जितना बीमारीका जोर अधिक था वहां उतने ही अधिक पिस्सू पायेगये । घरोंमें कीडे मारनेवाली दवा छिडकनेसे कोई लाभ नहीं होता क्योंकि दवाईका असर पिस्सुओंपर कुछ नहीं होता । रोग नष्ट करनेका मुख्य उपाय इन पिस्सुओंका नष्टकरना ही है (वेङ्कटेश्वर समाचारपत्र ७।५।१९०९)

संमति-मेरी सम्मतिमें पिस्सू नष्ट करनेके लिये मकानका भली भांति गर्म करना ही सर्वोत्तम उपाय है ।

ताऊनका इलाज (उर्दू)

हकीम मुहम्मद जमशेद अलीखां देहलवी अपना तजरुबा यह बयान करते हैं कि बर्फ ताऊनी गिल्टीके वास्ते निहायत मुफीद साबित हुई है, वह लिखते हैं खुदाका हजार हजार शुकर है कि जिस्तरह बेशकीमती दवा बेख कबीला ताऊनके लिये मुजर्रिब साबित हुई इसी तरह सबसे कम कीमत चीज ताऊनी जुर्मके हिलाक करनेको मेरे तजरुबेमें आई बगरज रिफाह आम पबलिक को आगाह करताहूं कि बर्फ ताऊनी गिल्टीपर बांधनेसे १२ घंटेमें ताऊनी गिल्टी बैठ जातीहै और मरीज दूसरे ही रोज अच्छा होजाताहै । निहायत वसूकसे मैं कहताहूं कि बर्फके बांधनेसे उमदा गिल्टीके लिये कोई दवाई नहीं अगर बेख कबीला एक माशे पानीमें मिलाकर पिलादी जावे तो प्यास और जलन भी नहीं रहती, जिन लोगोंको बेखकबीला मैस्सर न आवे वह सिर्फ गिल्टीपर बरफ बांधे और पानी और दूधमें बर्फ ही पिलावे हुकमी सेहत हासिल होतीहै । (वैश्योपकारक सुफहा ५ अखबार अलकीमियां १६।६।१९०५)

इलाज ताऊन अंकोलसे (उर्दू)

ताऊनकी गिल्टीपर फिलफौर जमाद समर अंकोल मुफीद साबित हुआ चार मरीजान मघियानेमें पर तजरुबा कियागया चारों सेहत याब होगये । (सुफहा १४ किताब अखबार अलकीमियां १।५।१९०५)

सर्पविषनाशक रक्तगुंजामूल ।

पुष्यार्केण समुद्धृत्य तन्मूलं तु विचक्षणः
सर्पदष्टस्तु लेपेन निर्विषो भवति क्षणात्
॥ ४८ ॥ (औषधिकल्पता.)

अर्थ-बुद्धिमान् मनुष्य आदित्यबार और पुष्य नक्षत्रके दिन लाल चौंटनीकी जडको उखाड लेवे जब किसी मनुष्यको सांप काटखावे तो जलमें घिसकर लगादेवे तो विषरहित होजाताहै ॥ ४८ ॥

नुसखा मार गुजीदः (उर्दू)

यह नुसखा एक फकीर साहबसे बडी कोशिशसे हासिल किया गयाहै और इन महात्माओंका बारहाका आजमूदा है इससे हर किस्मके सांपका जहर हुकमन दूर होताहै और लुतफ यह है कि न दवाई खानेकी हाजत न मंत्र तंत्र की जरूरत आनन फानन मरीज गुसल सेहत करता है । जिस शख्सको सांप काटे उसकी जाई नैशपर जिस कदर समासके रोगन भिलावा डालता जावे हत्ताकि छाला पुर होजावे पस असर जहर फौरन जाइल होकर मरीज सेहत याब होगा, यह एक लासानी टोटकः है वह महात्मा दानः हाइ भिलावा हर वक्त जेबमें रखतेहैं । जिस वक्त जरूरत पडे फौरन भिलावेका सरकाटा और उसमेंसे तेल छालेपर डालदिया । मरीज तन्दुरुस्त, आपचलते बने (सुफहा १५ अखबार अलकीमियां ८।३।१९०६)

सर्पकाविषबहुमूल्य औषधि ।

बडे बडे विषैले सर्पोंका विष छूतकी बीमारियों तथा विक्षिप्तता दूर करनेमें बडा उपयोगी होनेके लिये यह पदार्थ बहुमूल्य गिना जाताहै, उपयोगी होताहै इसी लिये यह परमावश्यकहै कि विष जीवित सर्पके दांतोंमेंसे निकाला-

जावे, मृत सर्पका विष किसी कामका नहीं होता, लंदन और न्यूआर्कमें यह विष निकालागया, दोनों जगह विष निकालनेका ढंग एकही था पहले सर्पको चिमटेसे पकडा और एका एक उसे उलटा करदिया फिर उसकी गर्दन किसी चीजसे पकडली जिससे वह सिर इधर उधरको न हिलासके और न काटसके तब एक बहुत सूक्ष्म शीशी जिसके मुंहपर एक बारीक वस्त्र रक्खा था सर्पके मुंहमें दांतोंके तले रखदी, दांत तले शीशी आतेही सर्पने उसे जोरसे काटा जिससे उसके विषके दोनों अगले दांत कपडेमें छेद करके शीशीमें चलेगये इसप्रकार अधिकांश विष तो शीशीमें गिरपडा और कुछ कपडेसे लगा रहगया, इसी प्रकार सर्पने तीन बार दांत मारे तीनों बार कुछ न कुछ विष शीशीमें उसे छोड देना पडा, विषपीले रंगका है तीनों बारमें कुल मिलाकर पौने १८ ग्रेन (१ माशा) विषनिकला था। इसमें प्रत्येक भाग विषके साथ ९९ भाग चीनी मिलाई गई और बहुत दिनोंतक दोनों खरलमें मिश्रित कीगई, अंतमें जब चीनी सफेद सुर्मेकी भांति बारीक होगई तब शीशियोंमें भरके रखदीगई, कहतेहैं कि डाक्टरी कामके लिये इस चीनीके एक ग्रेनका दस लाखवां भाग काफी होताहै इस हिसाबसे समझ लीजिये कि इतना विष कितने दिनोंतक काफीहै। (श्रीवेङ्कटेश्वर समाचार पत्र २२। १। १९०९ पृष्ठ ३)

मारगुजीदःका एक अजीब इलाज (उर्दू)

अगर सांपको काटेहुये तीन दिन भी होगये हों और मारगुजीदः जाहरा मरगया हो तो भी इसके इस्तैमालसे दुबारा जिन्दा होनेकी उम्मीद है शाह साहब फर्मातेथे कि मारगुजीदः दर असलपर नहीं जाता बलकि एक किस्मकी सकतेकी हालत इस पर तारी होतीहै जिसस वह जाहरा मुर्दा मालूम होताहै, वह यह भी बयान करते थे कि यह नुसखा उन्होंने फकत आदमियोंपर ही नहीं आजमाया बलकि जानवरोंपर भी इसका तजरुबा कियाहै नुसखा हस्बजैलहै। अगर मारगुजीदः बेहोश होगया हो तो नौसादरको पीस कर उसकी आंखोंमें डाले, अगर एक दो दफै आँखोंमें डालनेसे होशमें न आवे तो चन्द दफै यही अमल करे जब होशमें आजावे तो पोस्त फन्दक (जिसको पंजाबीमें अरीठा कहतेहैं) पानीमें रगड कर पिलावे, चन्द दफै पिलानेसे कै शुरू होजातीहैं और जहरका असर बातिल होता चला जावेगा, जहर उतरनेकी निशानी यह है कि मरीज को नीमका पत्ता खिलावे अगर वह उसकी तलखीको महसूस करे तो समझे कि जहर उतर गया। वरनः नहीं अगर जहर न उतरे तो बारबार पोस्तफन्दक पानीमें रिगड कर पिलावे और जिस जगह सांपने काटा हो उसपर शीर मदार डालते रहें और जबतक जहर न उतर जावे मरीजको सोनेकी इजाजत नदे। (सुफहा नं० ७ अखबार अलकीमियां १६।६।१९०५)

इलाज सांपका।

ताजी गोबर मुतवातिर बांधना जहर सांपका इलाज निहायत अच्छाहै (ख्याल करो मांदमें दवानेकी खायतको) ऊपरसे घी दूधका सेवन होना चाहिये। (कश्मीर यात्रामें प्राप्त)

अग्निसे न जलनेका उपाय सफेद चिर्मिटी लेपसे।

श्वेतगुंजारसेनैव सर्वाङ्गे लेपमाचरेत्। अंगारराशिमध्यस्थो भ्राम्यमाणो न दह्यते॥ ॥ ४९ ॥ (औ० क०)

अर्थ–सफेद चौंटनीके रससे समस्त शरीरपर लेप करदेवे फिर बहुतसे अंगारोंके बीच चक्कड लगावे तो भी जल नहीं सकता॥ ४९॥

जलस्तंभ सफेद चिर्मिटीसे।

मूलं तु श्वेतगुंजायाः कुसुंभरसपेषितम्। तेनैव रंजयेद्वस्त्रं तद्वस्त्रं स्वांगवेष्टितम्॥५०॥ गंभीरजलमध्ये तु यावदिच्छति तिष्ठति। जलस्तंभमिदं ख्यातं गुंजामंत्रेण मंत्रितम्॥ ॥ ५१ ॥ (औ० क०)

अर्थ–सफेद चौंटनीकी जडको कसूमके रसमें पीस कपडेको रंगलेवे उस वस्त्रको पहन कर गंभीर जलमें घुसजावे और जबतक इच्छाहो बैठाहो रहै यह जलस्तंभकहाहै, चौंटनीकी जडको मंत्रसे मंत्रित करै॥५०॥५१॥[1]

अद्भुत काजल सफेद चिर्मिटीसे।

श्वेतगुंजारसैश्चाह्नि सितसूत्रं विभावयेत॥ तत्सूत्रवर्तिकादीपं प्रगृह्य कज्जलं ततः॥ तेनाञ्जितो नरश्चित्रं दिवा पश्यति तारकम्॥ ५२ ॥ (औ० क०)

अर्थ–दिनमें सफेद चौंटनीके रससे सफेद सूतको भिगो देवे फिर उसकी बत्ती बनाकर दीया जलावे और उससे काजल पाड कर नेत्रोंमें आँजै तो दिनमें तारे दीखने लगजाते हैं॥ ५२॥

खांसीकी गोली।

बिहीदाना १ तोले, वंशलोचन ६ माशे, इलायची छोटी के बीज ६ माशे, पीपल छोटी ३ माशे, मुनक्का ३ तोले, मिर्च काली ३ माशे, नमक काला ६ माशे, नमक सफेद ६ माशे, सबको कूट पीस गोली बनालो। (राय बद्रीप्रसादजी वकील हमारे पिताजीकी पसंद)।

मंजन।

त्रिकुटा ३ तोले, त्रिफला १॥ तोले, माजू ६ माशे, मस्तंगी १ तोले, फिटकिरी १ तोले, तूतिया भुनाहुआ १ माशे, नमक लाहौरी ४ तोले, बादामके छिलकोंके कोयले सबके बराबर सबको पीस मंजन बनालो।

आहार विधान।

आयुःसत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्द्धनाः॥ रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः॥ ५३॥

अर्थ–आयु सत्त्व बल आरोग्य सुख और प्रीतिके बढानेवाले रसदार चिकने स्थिर (देहको स्थिर रखने-

---

१ सारांश यहहै कि ऐसे कपडेसे वेष्टित शरीरतक जल प्रवेश न करेगा।

वाले) हृदयके हित और जो २ सात्त्विक आहारहैं वे सब हितहैं और मिताहार भी हितहै ॥ ५३ ॥

मिताहार-यथा ।

"सुस्निग्धमधुराहारश्चतुर्थांशविवर्जितः ॥ भुज्यते शिवसंप्रीत्यै मिताहारः स उच्यते ॥ ५४ ॥ द्वौ भागौ पूरयेदन्नैस्तोयेनैकं प्रपूरयेत् ॥ वायोः सम्पूरणार्थाय चतुर्थमवशेषयेत् ॥ ५५ ॥ (बंगवासी १०।५।१९०९)।

अर्थ—सुन्दर चिकना मीठा भोजन चतुर्थांश छोडकर शिवजीकी प्रीतिके लिये या कल्याण और स्वास्थ्यके लिये जो खाया जाता है उसको मिताहारः कहते हैं । दो भाग अन्नोंसे, एक भाग जलसे भरे और चौथे भागको वायुके चलने फिरनेके लिये बाकी रखदेना चाहिये ॥ ५४॥ ५५ ॥

जल्दी दही जमानेकी क्रिया ।

पाठाकी जडसे ।

पाठामूलं गले बद्धा क्षीरभांडस्य तद्दधि ॥ जायते तत्क्षणाद् दुग्धं सत्यमेव न संशयः ॥ ५६ ॥ (औ० क०)

अर्थ-पाढलकी जडको दूधके बासनकी नारसे बांध देवे तो शीघ्रही दही जम जायगा इसमें संदेह नहीं है ॥ ५६ ॥

नुसखा स्याही ।

छटांक भर लाखको आध सेर पानीमें जोश दे, एक दो जोश आजानेके बाद छटांक भर सज्जी भी डालदे बारीक करके जब पाव भर पानी रहजावे तब दो माशे सुहागा डालदे । फिर उतार ठंढाकर छानले फिर एक तोले काजलमें एक तोले अर्क डालकर घोटे जज्ब होजानेपर फिर तोला देकर घोटे वह भी जज्ब होजावे तब बाकी सब रस डालकर करीब दो पहर घोटे और देखे कि लिखनेके काबिल ठीक हुआ या नहीं । जब ठीक गाढा होजावे तब रखले तो अच्छी स्याही तय्यार होगी अगर बजाइ पानीके गोमूत्रमें बनावे तो स्याही पक्की । (कश्मीर कापीसे)

रोगन गंधक मय हरतालसंखिया बनाकर उस्में सीमाव मिलाकर खानेकी तरकीब (उर्दू)

गजीका कपडा नीमकोहना आधा गज लेकर भांगरे मुतआरिफके शीरामें इक्कीस पुट दे यानी हरबार तर करके खुश्क करे फिर रोगन मादः गाडमें तर करके सोनामक्खी, गंधक, मुसफ्फा, हरताल, तावकी जहर, बछनाग, मुदव्विर हर एक ढाई ढाई दिरम पीसकर कपडे मजकूरमें मिलाकर शीख आहनीमें लपेटकर उस शीखको दो आहनी शीखोंपर रखकर उसके नीचे चीनीका प्याला रक्खे और कपडेमें बडी शीखकी तरफसे आग लगावे। जिस्में तेल टपककर प्यालेमें गिरे इसको शीशीमें बंद करके रख छोडे और हर रोज एक रत्ती लेकर सीमाव खाम मुसफ्फा जो दो हफ्ते कवलसे रोगन मजकूरमें पडाहो एक रत्ती उसमें मिलाकर पानपर उँगलीसे इतना घिसे कि सीमाव गायब होजावे उस पानको हर रोज दूसरे पानमें डाल कर खावे, खासियत यहहै कि इश्तहा गायब हो, बादफरंग, सीत, झोला, पुरानी गठिया दूर हो । तगलीजमई व इमसाक, व कुव्वतवाह बकसरत हो । फरूह खबाशिया अच्छेहोजावे मुतरिज्जम रोगनमें सीमाव डालनेका तरीका मुख्तलिफ है बाजकलमी हफ्त अहवावमें इस तरह लिखाहै कि रोगनमें पहले रोज एक रत्ती सीमाव डाले, दूसरे रोज दो रत्ती सीमाव डाले, तीसरे रोज तीन रत्ती इसी तरह सातवें रोज सात रत्ती उसमें डाले सीमाव गायब होजावेगा । बादहू सीमाव एक एक रत्ती लेकर बदरका यानी पानमें डाल कर दो आदमी खावें, बाज हफ्त अहवाव कलमीमें इसतरह लिखाहै कि एक हुव्वा सीमावले और उसके ऊपर चंद बार तिनके (खस) से रोगन मजकूरका एक कतरा डाल कर उँगलीसे घिसे और धूपमें रखदे ताकि सीमाव खुश्क होजावे इसी तरह रोजाना अमल करके एक हुव्वा सीमाव धूपमें रखा करे जब रोगन सीमावके ऊपर गायब होजावे तो एक रत्ती रोगन मजकूर पानपर मल कर एक रत्ती सीमाव मजकूर जिस्में रोगन जज्ब हुआहै मिलाकर पानमें खावे यही तरकीब हफ्त अहवाव कलमी मुरसिलः हकीमनूर आलम साहबमें भी हैं चूकि यह हफ्त अहवाव बहुत कदीम और करीब जमानः तसनीफकी लिखीहुई है लिहाजा जियादा तर काबिल एतबार है । (सुफहा २९७ किताब अलकीमियाँ)

कुश्ता पुरानेकी तारीफ (उर्दू)

खानेकी अकसीर ख्वाह कुश्तेमें यह मलहूज रहे कि जितना पुराना कुश्ता होगा वह कवी उलअमल और बेजरर होगा इसवास्ते जिस कुश्तेको कोठी गंदुम या जौ वगैरःमें एक मुद्दतके वास्ते रखछोडते हैं वह मुकव्वी और उमदा होजाताहै । अगर फौरन खानेकी जरूरत हो कमसे कम तीन रोजतक किसी तर जगहमें दफन कर देन चाहिये । (सुफहा २५ किताब अखबार अलकीमियाँ १६।३।१९०५)

कुश्ता खानेकी मुमानियत (उर्दू)

अकसीर या कुश्ता अश्खास जईफ एजाई बलागर अन्दाम जवान हारमिजाज और लडके और जन हामिलाको न खिलाना चाहिये । (सुफहा २५ किताब अखबार अलकीमियां १६।३।१९०५)

इलाज जिरियान बडकी गोली (उर्दू)

(एक नुसखा मौतदिल हर मिजाजके मुवाफिक पचासों- नुसखोंमेंसे जो तीर व हदफ देखा गया और बडी बडी लागतके नुसखे जिरियान इसके मुकाबिलमें हेच हैं)

दरख्त बडके ताजा बर्ग जो रंगमें जर्द हो करीबन एक मन पुख्तःके ले कर दो चार गडहोंमें ठांसकर भरदे और दर्मियानमें पानी डालदे पानीकी तादात कोई नहीं जिस कदर आसके । मगर गढे लगेहुए हों कोरे न हों आठ पहरके बाद एक कढाई आहनीमें बर्ग व पानी मजकूर उलटा कर आगपर रखकर जोश दे जब निस्फ हिस्सा पानी खुश्क हो जावे नीचे उतार कर सर्द करले फिर पोस्तकी तरह खूब मले बादहू किसी कपडेसे छान कर साफ करके नरम नरम आँचपर पकाना शुरू करें जब अफयूनसे किसी कदर कवाम स्याह रंग होजाते तो नीचेसे आग बंद करके

सिर्फ कोयलेंकी आंच देता रहें और किसी चंमच चोवीसे कवामको हिलातारहे जब अच्छीतरह मिस्ल अफयून पूरा कवाम होजावे उसीवक्त भूफली बूटी खुश्क सात तोले मिस्ल सुर्मा के बारीक करके नीचे उतारकर उसमें डालदे और लकडीसे हिलाता रहे फिर छोटे बेरकी बराबर गोलियां बनाले हर सुबह एक गोली निहार पानीके साथ निगल जाया करे।

परहेज, कंद स्याह, तुर्श अशियाइ, तेल, बैंगन, मेथी, जियादती मिर्च सुर्ख।

इस्तैमाल–सोडा वगैरः दीगर जुमले खारहासे भी परहेज होने चाहियें जो साहब इस नुसखेको इस्तैमाल करेंगे वह अजीब अजीब फवायद मुशाहदः करके इस नुसखेकी खुद कदर करेंगे। अलावह दूर होने जिरियानके मुमसिक भी कमाल दर्जेका है अगर कोई साहब मजमूल इस नुसखेको तय्यार करना चाहें उनके लिये मुनासिब है कि तरकीब मजकूरामें एक माशे मुश्क खालिस ५ माशे मुरवारीद एक दफ्तरी वर्क नुकरा एक दफ्तरी वर्क तिला मिलाकर गोलियां बनावें जब तह गोलियां इस्तैमाल करनी शुरू करें तो पहले दिन एक रत्ती दूसरे दिन दो रत्ती इसी तरह एक एक रत्ती बढाकर पूरी गोलीतक नौबत पहुँचावें जिन साहिबानके मिजाजमें यऊस जियादह हो वह एक तोले मसकामें मिलाकर निगल लिया करें भूफली बूटी इस मुल्कमें तमाम जगह होती है अकसर रेगिस्तानी जमीनोंमें बकसरत मिलतीहै। (सुफहा १७–१८ किताब अखबार अलकीमियाँ)

इस्तेमाल कुश्तामें परहेज (उर्दू)

कुश्ताके इस्तैमालके जमानेमें जमाइ व रियाजत शाका तुर्शी व बादी व अशियाइ बाहूसे परहेज लाजिम है–(सुफहा २६ किताब अखबार अलकीमियाँ १६।३। १९०५)

जलकका तिला (उर्दू)

मीठा तेलिया ५ दिरम, घूँघची सफेद १ दिरम, मगजहब्बल मलूक १ दिरम, पोस्तबेख कनेर १ दिरम, वीरबूटी १ दिरम, आधसेर शीर गाउमेशमें मुतवातिर आठ पहर तक खरल करके गोलियां बनाले और सायेमें खुश्क करके बजरियः पताल जंतरसे तेल निकालले रातको तिला करके ऊपर बर्गपान दिया करे चन्द रोजके इस्तेमालसे मजल्क को भी फायदा होता है आजमूदा और मुजर्रिब है (सुफहा ११ किताब अखबार अलकीमियाँ १६।३।१९०५)

इलाज मजलक (उर्दू)

वर्गसंभालू गर्म करके मलनेसे मजल्क हफ्तेमें सेहत पकड जाता है और दराजी और करनही भी लाताहै–(सय्यदहुसेन अलीशाह मुहर्रिर बन्दोबस्त तहसील संचन आबाद इलाका भावलपुर) (सुफहा ३० किताब अखबार अलकीमियां १६।३।१९०५)

दूधका बुरादा बनानेका नुसखा बजरियः कंघी (उर्दू)

पांच छः वार मैंने दूधको इस्तरहसे बुरादा बनाया है कि, दूध खालिस लेकर उसको नरम आगपर चढाया और मरतुल गोलकी जिसको फार्सीमें दरख्त शानः और उर्दूमें कंघी कहते हैं हरीशाख लेकर दूध मजकूरको मुसल्सिल चलाते चलाते खोया करदिया बादहू उतार कर सर्द करलिया और चुटकीसे मलकर बुरादा बनालिया खोयेको जियादह आंचपर न रहने दे बरन हिद्दत आतिशसे इसमें सुर्खी आजावेगी यह बुरादा आटेकी तरह होजाताहै और सेर भर उमदा दूधमें पाव भर बुरादा निकलताहै– रंग बुरादा मजकूरका सफेद खफीफ सी सबजी लिये हुये होताहै–यह सबजी हरी शाखसे चलानेका असरहै निहायत खुशजायका मुकव्वी कलब और भी मस्लह खून नाकिशका है अगर यह बुरादा सेरभर गर्म पानीमें डाल कर लकडी या उंगलीसे चलादिया जाय तो फिर दूध असली हालत पर ऊठ कर आता है (हुसैनुद्दीन अहमदअज जौनपुर) (सुफहा ३० अखबार अलकीमियाँ १६।४।१९०५)

नुसखा पीपलपाक मुकव्वीमैदा-हाजिम मुकव्वी दमाग दाफे जिरियान व मुमसिक (उर्दू)

फिलफिल दराज २५६ टांक घीमें लेकर चहार चन्द दूधमें जोश देवे जब खोया होजावे तब ५१२ टांक घीमें बिरियां करे, फिर १०२४ टांक मिसरीकी चाशनी करके मुन्दर्जः बाला खोया उसमें डालदे और मुन्दर्ज जैल चीजें कूट कर और पीस कर मिलावें मगर याद रहे कि यह चीजें बहुत गरम चाशनीमें न डालनी चाहिये जब जरा ठंढी होजावे तब मिलावे वह यहहैं, इलायची खुर्द १पल, पत्रज १ पल, नागकेसर१ पल, तज १पल, कीकडका गोंद १६ पल, खुराक हस्ब मिजाज १ तोलासे चार तोलातक मुमसिक है, मुकव्वीदिल व दमाग, दमा, दिक्तापतिल्ली, थकान, कमजोरी, हाजमाको दूर करे और घी दूध हजम करे दाफै जिरियान भी है।

नोट–टांक साढे चार माशेका और पल १६ टांकका होताहै । (ठाकुरदत्तशर्मा वैद देशोपकारक लाहौर) (सुफहा ११ अखबार अलकीमियाँ १ । ५ । १९०५)

औषधि बवासीरकी।

नाकेकी हड्डी (चाहे जिस अंगकी हो) लेकर बासी पानीमें घिसकर बवासीरके मस्सोंपर लगावे तीन दिनमें बवासीर जाती रहैगी। (हरदेव कहारने बताया)

औषधि जूडी।

जिस समय जूडीका आना आरम्भ हो यानी हाथ पैर ठंढे होनेलगें उस समय दो बर्तनोंमें गर्म पानीभर (ऐसा गर्म जो सहारा जासके) एक बर्तनमें हाथ और दूसरेमें पैर डुबोदे तो फिर जूडी न आवेगी और नींद आने लगेगी। (हरदव कहारने बताया–)

सुरमा दाफे बुखार (उर्दू)

कुश्ता हरताल मजकूर १ तोला, पारा मुसफ्फा १ तोला अव्वल पारद और गंधकको कजली करे। फिर कुश्ता हरताल मिलाकर अच्छीतरह खरल करके एक रेशमी कपडेमें बाँधकर पोटली बनावे और एक सांपस्याह व मिकदार एक बालिश्तके सरकी तरफसे

काटलेवे और उसके मुँहमें नमक तुआम बिछाकर दर्मियान पोटली मजकूर रखकर मुंहको सींदे कपरौटी मजकूर करें। और एक हंडियामें रेतबालूके दर्मियान रखकर हंडियाके नीचे चार पहर आंच रक्खे। सर्द होनेपर पोटलीको निकालकर अदवियातको खरल कर रक्खे। आँखोंमें एक सलाई डालनेसे तप दूर होजाताहै। एक आँखमें डालनेसे एक तरफका दूसरी आंखमें डालनेसे दूसरी तरफका जातारहता है (ठाकुरदत्तशर्मा एडीटर वैश्योपकारक लाहौर) (सुफहा ४१ व ४२ किताब अखबार अलकीमियां १६। ४। १९०५)

सुरमा दाफै बुखार (उर्दू)

सुर्मा अस्फहाई ६ माशे, सुर्मास्याह १ तोले, सीमाव ६ माशे इन हरसह अदवियाको पित्ताबुजः १, पित्तादरन १, अर्कतूमा १ सेर अव्वल पित्तोंमें खरल करके बादहू तूमा के पानीमें खरल करे जब पानी खुश्क होजावे एक शीशी में डालकर मुँहबंद करके सरगीन अस्प में गढा खोदकर दो हफ्ते तक दफन रक्खे बाद दो हफ्तेके निकाल कर बुखारके लिये इस्तैमाल करे शफा होगी। अगर एक सलाई एक आंखमें डालीजाय और दूसरीमें न डाले। बस निस्फ हिस्सा बदनपर बुखार महसूस होगा निस्फ बिलकुल तन्दुरुस्त जब दूसरी आंखमें सलाई डालेंगे बिलकुल दफै होगा। (सुफहा ४२ किताब अखबार अलकीमियाँ१६।४।१)

सुरमा दाफै बुखार (उर्दू)

सुरमा तमाम अकसाम हुम्मियात जदीदः व मअमुनः खुसूसन सम्पातः व वायःके लिये मुफीद तमाम है। त्रिफला, त्रिकुटा, अंगूजः, सरसफ, मग्जतुख्मसिर्स, कुटकी, नमक लाहौरी, हम वजन कूट छानकर बोलबुजमें खरल करके हवूब। शियाफिया बनाकर रख छोडे। एक हिस्सेकी मिकदार गर्म पानीमें पीसकर एक आंखोंमें डालनेसे एक तरफ का ताप दूरहोगा और दोनों आंखोंमें डालनेसे तमाम बदनका तप दूरहोगा इन्शा अल्लाहताला। (हकीम अबुदुल्लाह मुदर्रिस दोयम तलोंडी चोधरियान)। (सुफहा १७ अखबार अलकीमियां १६।५।१९०५)

दफियः जहरबिच्छू (उर्दू)

मग्ज जमाल गोटाको पानीमें घिसकर मुकाम डंकपर लगावे फौरन आराम होता है अगर डंकगर्दनको ऊपरके हिस्सेमें है तो यह इलाज न करना चाहिये। तेल दारचीनी जो अँगरेजी दूकान्दारानसे आम मिलसक्ताहै लगादेनेसे फौरन आराम होजाताहै (ठाकुरदत्त शर्मा एडीटर देशोपकारक लाहौर) (सुफहा २१ अखबार अलकीमियां १६।५ १९०५)

(उसूलतन्दुरुस्ती वदराजीउम्र)

पानी स्वच्छ करनेका उपाय।

पानी स्वच्छ करनेका उपाय सबसे अच्छा यह है कि पानीको वालूमेंसे छानना ऐसा करनेसे उसके ९९ भाग दोष शून्य होजाते हैं। (श्रीवेंकटेश्वरसमाचारपत्र२६।३।०९ बंबईमें बैठी डाक्टरोंकी सभाकी सम्मति)

बिना कुल्ला किये प्रातःकाल पान करनेका निषेध।

विलायतके चिकित्सा संबंधी सर्वश्रेष्ठ मासिकपत्र लान्सेटने लिखा है, "विना मुंह धोये चाय पीनेसे मुँहके न पचनेवाले पदार्थ पेटमें जाते हैं और इससे तरह तरहकी बीमारियां उत्पन्न होती हैं। (बंगवासी ३।५।१९०९)

गर्म खानेके बाद सर्द पानीकी मुमानियत (उर्दू)

अतवा लिखते हैं कि गर्म खानेके बाद सर्द पानीका पीना मुजिर है। अगर सबर न हो सके तो पानीको थोडी देर मुँहमें रखकर फिर मैदेमें उतारे और कदरे कदरे पिये बल्कि चूंसे तो बेहतर है ताकि एकाएक मैदेमें सर्द पानी न जावे। (सुफहा नं०७ अखबार अलकीमियां १५।८।०७)

लेटमें आराम मिलनेकी वजह तादाद कमी हरकत दिल (उर्दू)

यह कायदा कुदरत है कि जब इन्सान लेटजाता है और जिस्म बेहिस हरकत होजाता है तो दिलको कदरे इतमीनानन और सकून हासिल होता है लिहाजाकल्ब इस हालतमें बमुकाबले बेदारी या चलने फिरनेके फी मिनट दस हरकतें कम करता है। यानी फी घंटे छः सौ हरकते हुई पस जो शखस शबको आठ घंटे आराम करता है उसका कल्ब करीबन पांच हजार हरकतें करनेकी मिहनतसे बचजाता है और चूंकि दिलको हर हरकतके साथ ६॥ ऑन्स खूनका वजन उठाना पडता है इस लिये बमुकाबले दिनके रातके वक्त कलबको तीस हजार ऑन्स वजन कम उठाना पडता है यही वजह है कि किसी मिहनतके कामके बाद इन्सानका दिल खुदबखुद लेटनेको चाहता है जिसके बाद तकान रफै होजाता है। (सुफहा ८ अखबार अखलकीमियां १६।२।१९०९)

फिकर व हविसके नुकसान व सबरके फवायद (उर्दू)

बिल इत्तफाक साबित है कि फिकरों और ख्वाहिशोंकी ज्यादतीका दौरान खून व पर्वरिश दमाग पर खराब असर असर होकर अकसर दमागी व कलबी अमराज पैदा होते हैं और उम्र कम हाजाती है दिली इतमीनान हो तो सेहत अच्छी रहती है उम्रज्यादह होती है पस मजहबी आदमी अपने मालिककी तरफ रिजूअ करते हैं तो कैसीही फिकर क्यों न हो वह दूर होकर दिलको इतमीनान हासिल होता है जो कयाम सेहतके लिये जरूरी है। आबिद व खुदापरस्त लोगोंकी उमर ज्यादह होनेका यही सबब है कि काम व क्रोध, लोभ व मोह व अहंकार वगैरः जजबातको एतदालपर रखते हैं राजी व रजा होनेके ख्यालमें मुनहमिक और हमेशह मुतयैयन रहते हैं। (सुफहा ६ व ७ अखबार अलकीमियां १६।८।१९०७)

सेहतपर हँसनेका असर (उर्दू)

सेहतके लिहाजसे कहकहा मार कर हँसना निहायत मुफीद है इसके सबबसे एक वरकी रू हमारे तमाम जिस्ममें

दौडजाती है इसका असर जिस्मके किसी खास हिस्सेपर नहीं होता बल्कि हर एक रग पट्ठा व रेशा इस विजलीकी रूसे जो कहकहाके साथ दमागसे शुरू होती है मुतास्सर होता और उस विजलीकी रूसे दौरान खूनपर निहायत सेहत वखश असर पडता है डाक्टर वाल्टर हेडूनका कौल है कि हँसो और मोटे हो हँसी एक किस्मकी वर्जिश है जिससे फेंफडोंको तकवियत पहुँचती है और दिलकी सुस्त हरकतको दुरुस्त करती है और दमागमें खूनजानेसे दमागी पट्ठोंको ताकत पहुँचती है । खयालात तेज होते हैं तमाम रंजीदः बातें फरामोश होजाती हैं जो तबीयतको निढाल करनेवाली हैं अखबार जौहर व हवालः डाक्टर कजीन साहब लिखता है कि कहकहा मारकर हँसनेसे कोई बारीकसे बारीक रग भी बाकी नहीं रहती कि जिसके खूनमें मुफीद व मुबारिक तहरीक पैदा न होजाय जब मसर्रतका असर दिलपर पहुँचता है तो इन्सानके लिये खुदबखुद जोरसे हँसनेसे दौरान खूनमें तेजी पैदा होजाती है और खून जिस्मके हरेक हिस्से सरअतसे हरकत करने लगता है जो मूजिब सेहत है पस खिलखिलाकर हँसनेसे इन्सानकी उम्रमें तरक्की और कवाइमें तकवियत हासिल होती है और इससे माल्रम हुआ। कि बुखार बिलकुल फरो होगया और वह बिलकुल तन्दुरुस्त है कहकहा लगाकर हँसना न सिर्फ सेहत बखश है बल्कि मुसफ्फी खून भी है कोई आलासे आला दवा खून साफ करनेमें ऐसी अकसीर नहीं जैसी कि खिलखिलाकर हँसना। गरज हँसी सौ दवाओंकी एक दवा और निहायत मुफीद और फरहत अफजा वर्जिशहै हर एक मशहूर और नामी डाक्टरमें जराफतकी सिफत जरूर पाई जातीहै और यह सिफत उनकी कामयाबीमें एक बडा हिस्सा रखतीहै क्योंकि उनकी जराफत मरीजको हँसनेके लिये बहुत मौका देतीहै जो उनकी दवाके निस्बत बहुत ज्यादह सेहत बखश असर रखतीहै इसके बरखिलाफ उदास और मलाल रहना अपने हाथों बीमारीका खरीदना है उदासी और परेशानीसे खूनकी हरकत सुस्त पडजातीहै और जिस्मके फासिद माद्दे अच्छी तरह खारिज नहीं होने पाते और जिस्म इन्सान तरह तरहकी बीमारियोंका शिकार होताहै इसी तरह जो लोग हरवक्त रंजीदह सूरत बनाय बैठे रहतेहैं और हँसने और कहकहे लगानेको अपनी शान समझतेहैं (नौज्मान)(सुफहा नं ११अखबारअलकीमियाँ१६।७।१९०७)

दराजी उम्रके उसूल (उर्दू)

(१) खाओ जब तुम भूखे हो और किसी दूसरे वक्त न खाओ। (२) सोजाओ जब तुम थके हो । (३) और देखो कि सोनेके वास्ते तुम्हें काफी वक्त मिलता है। (४) जब तुम जागते हो सारा वक्त काम करो। (५) और जैसा कि चाहिये कामको खुशी बनालो । (६) हमेशह खुश रहो। (७) कभी खोफ जदह और गजब नाक न हो। (८) परवाह नहीं कि क्या होता है। (सुफहा ४ अखबार देशोपकारक ३१।१०। १९०६)

दराजी उम्रके उसूल (उर्दू)

(दराजी उम्रके वास्ते हैल्थ नामी अखबारमें चन्द कवायद लिखहै जो नीचे लिखे जातेहैं)

(१) सुबह सवेरे उठो और रातको जल्दी सोजाओ और सारा दिन काम करते रहो। (२) पानी और गिजा जिन्दगीका सहारा है साफ हवा और सूरजकी रोशनीके वास्ते अजहद जरूरी है (३) गजब नाक और खोफजदह नहो और नहीं झुँझलाओ। (४) किफायतशआरी और परहेजगारी दराजी उम्रके वास्ते बडी चीजहैं। (५) सफाई जंगलगनेसे बचातीहै जिन मशीनोंकी बहुत अहतियात कीजातीहै वह बहुत देर काम दिया करतीहैं। (६) काफी नींद सालः ज़ुदःको पूरा करतीहै और ताकतदेती है बहुत ज्यादः नींद नरम करतीहै और कम जोर करतीहै। (७) पोशाक ऐसी होनी चाहिये कि तमाम हरकते आसानीसे होसकें और जिस्म गर्म रहे और मौसमकी अचानक तबदीलियोंको बरदाश्त करसके । (८) एक साफ और खुशगवारा घर बेहतर घरहै । (९) दिल बहलाओ और खुशीके समानसे दिल ताजा होताहै और ताकत हासिल करताहै मगर इनकी जियादतीसे मुहब्बत पैदा करतीहै और जिन्दगीसे मुहब्बत आधी तन्दुरुस्तीहै। बरखिलाफ इसके उदासी और नाउम्मेदी बुढापेको जल्दी लातीहै। (सुफहा ५ व ६ अखबार देशोपकारक ३१।१०।१९०६)

राममूर्तिके उपदेश।

मांस इत्यादि कदापि नहीं भक्षण करना चाहिये । सादी खुराक बहुत लाभदायक होती है । आपने कहा कि मुझे दो साधुओंसे मिलनेका अवसर मिला था दोनों महात्मा बडे आरोग्य और शक्तिशाली थे । भोजनके लिये केवल दूध काममें लाते थे परन्तु प्राणायाममें पूरे दक्ष थे । मनुष्य मस्तिष्क शक्तिके साथ जिस कामको करेगा उसमें सफलता होगी । हर अवस्थाके मनुष्यको किसी न किसी प्रकारकी कसरत करना आवश्यकही नहीं वरन् कर्तव्य कर्म है । यदि व्यायामके पश्चात् थोडीसी ठंढाई पीले तो वह बहुत गुण करतीहै । बादाम १० अदद रातको पानीमें भिगोदे प्रातःकाल उन्हें छील डाले फिर उनके साथ धनियाँ आधा तोला, कालीमिर्च १ नग, छोटी इलायची २ नग, इन सबको पीसकर और थोडी खांड मिलाकर प्रातःकाल पीलेना चाहिये। कसरतके आध घंटे पश्चात् स्नान करना चाहिये । खुली हवामें व्यायाम करना अधिक लाभ दायकहै । (श्रीवेङ्कटेश्वरसमाचार साप्ताहिक पत्र २२ । १ । १९०९) सब ग्रंथों और धर्मशास्त्रोंके अवलोकनसे मुझे यह भली भांति माल्रम होगया कि मानसिक बल ही सब कुछ है इसके विना शारीरिक बल नहीं प्राप्त होसक्ता। तबसे मैंने प्राणायामका अभ्यास करना आरम्भ किया। श्रीवेङ्कटेश्वर समाचार पत्र १९ । २ । १९०९)

राममूर्तिके भोजन।

नित्य १ बजे दिनको मैं चावल दाल और शाक पातका भोजन करताहूं चावल कोई पावभर इससे अधिक नहीं। किन्तु मैं मांस मछली नहीं खाता। भोजनके साथ मैं दूध नहीं पीता हां थोडा घी खाताहूं ९ बजे सवेरे मैं अपनी ठंडाई पीताहूं। बादाम, २ इलायची जीरा, काली मिर्च इन सबको घोट मिश्रीके साथ पी लेताहूं। ये सब चीजें

पानीमें भिगोकर रातभर रक्खी रहतीहैं । ठंढाईके आध घंटेके बाद थोडा मक्खन खाताहूं । चार बजे तीसरे पहर मैं फिर ठंढाई पीताहूं और उसके बाद पाव भर घरकी बनी रबडी, घी, और मधुमें मिलाकर खालेताहूं । १ बजे रातको फिर चावल दाल शाक पातका भोजन होताहै । (श्रीवेङ्कटेश्वर समाचारपत्र १९।२।१९०९)

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपंडितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया भाषाटीकायां चिकित्सानिरूपणं नामैकचत्वारिंशोध्यायः ॥ ४१ ॥

उत्तमोत्तमरसाध्यायः ४२.



सर्वरोगहर पारदयोग ।

पारदं दधिपिष्टं तु अष्टयामेन पूर्ववत् ॥ सघृतं मर्दयेद्देहे सर्वरोगविनाशनम् ॥ १ ॥ (वैद्यभास्करोदयः)

अर्थ-पारदको दहीके साथ आठ प्रहरतक घोटे फिर उसको लेकर सबशरीरपर लगावे तो समस्त रोगों (रक्तविकारसे उत्पन्नहुए) को नाशकरताहै ॥ १ ॥

पूर्णेन्दुरस जो केवल पारद और शाल्मली द्रावसे सिद्ध है ।

शाल्मल्युत्थैर्द्रवैर्मर्द्य पक्षैकं शुद्धसूतकम् ॥ यामद्वयं पचेद्वाज्यैर्वस्त्रैर्बद्ध्वाथ मर्दयेत् ॥ ॥ २ ॥ दिनैकं शाल्मलीद्रावैर्मर्दयित्वा वटीकृतम् ॥ वेष्टयेन्नागवल्ल्याथ निक्षिपेत्काचभाजने ॥ ३ ॥ भाजनं शाल्मलीद्रावैः पूर्णं यामद्वयं पचेत् ॥ वालुकायंत्रमध्ये तु द्रवे जीर्णे समुद्धरेत् ॥ ४ ॥ द्विगुंजं भक्षयेत्प्रातर्नागवल्लीदलान्तरे ॥ मुशलीं ससितां क्षीरं पलैकं पाययेदनु ॥ ५ ॥ रसः पूर्णेन्दुनामायं सम्यग्वीर्यकरः परः ॥ कामिनीनां सहस्रैकं नरः कामयते ध्रुवम् ॥ ६ ॥ (धातुरत्नमाला.)

अथ-समलके मूसलेके रससे पारदको १५ पन्द्रह दिनतक घोटे फिर कपडेमें बांध दो प्रहरतक घृतमें पकावे और फिर सैमल मूसलेके रससे एक दिन घोट गोली बनावे तदनन्तर उस गोलीपर नागरबेलके पान लपेट काचकी शीशीमें रख सैमलका रस भर देवे एवं वालुकायंत्रद्वारा रसके जलजानेपर उतारलेवै । इस रसको दोरत्ती लेकर पानके साथ चबावै इसके पीछे सफेद मूसली और मिश्रीके एकतोले चूर्णको दूधके साथ पिवावै, तो यह पूर्णेन्दुनामका रस वीर्यके बढाने वाला है,और एक मनुष्य हजार स्त्रियोंसे रमण करताहै ॥ २-६॥

राजवीटिका रस (अर्थात्पानपर रक्खे गंधकके तैलमें मिलाकर पारदभक्षणकी क्रिया)

श्यामधत्तूरसुरसाः कासमर्दः पुनर्नवा । बिल्वमार्कवदूर्वाभे पिप्पल्यगुरुवासकाः ॥ ॥ ७ ॥ सोमराजीचक्रमर्दतिलपर्णीदिवाकराः । एतेषां स्वरसैस्त्रिस्त्रिर्भावयेन्निर्मलांबरम् ॥ ८ ॥ परिणाहे च दैर्घ्ये च हस्तमात्रं भिषग्वरः । आतपे शोषयेद्बुद्ध्या प्रतिवारं तृणोत्करे ॥ ९ ॥ ततः पलमितं गंधं पेषयेच्चतुराज्यकम् । तत्पिष्ट्वा लेपयेद्वस्त्रं तद्वर्तिस्तस्यकल्पयेत् ॥ १० ॥ अयः शलाकयाविध्य तस्याः पुच्छं मुखं पुनः । प्रज्वाल्याधः स्थिते पात्रे शाणः सर्पिः स्रवेच्च यत् ॥ ११ ॥ गृहीत्वा काचपात्रे तत्स्थापयेदिष्टमंत्रितम् । नागवल्लीदलतले तच्चतूरक्तिकाभितम् ॥ १२ ॥ गृहीत्वा पारदं वल्लं शुद्धं तत्र च निक्षिपेत् । अंगुल्या मृदु संमर्द्य तयोः कज्जलिकां चरेत् ॥ १३ ॥ खादेत्तद्वीटिकां प्रातः पथ्यं दुग्धौदनं लघु । दिनानि मनुसंख्यानि पश्चान्मुद्गं ससैंधवम् ॥ १४ ॥ त्रिसप्ताहव्यतीतेषु शाकमाषाम्लवर्जितम् । ककारषटकरहितं भोजनं पथ्यमुत्तमम् ॥ १५ ॥ कुष्ठमष्टादशविधं प्रमेहक्षयकामलाः । दुर्नामग्रहणीपाण्डुकासश्वासभगंदराः ॥ १६ ॥ व्रणाश्च विविधाः सर्वे कृमिशूलानिलार्तयः । आमवाताक्षिवदनकर्णस्यातंकसंचयाः ॥ १७ ॥ अग्निमांद्यं च षांढ्यं च रक्तपित्तं भ्रमिस्तृषः । मूर्च्छातंद्रासहृद्रोगा जाठराण्यखिलानि च ॥ १८ ॥ अजीर्णानि च सर्वाणि वलयः पलितानि च । नश्यन्त्यन्येपि योगेन सत्यं शिववचो यदि ॥ १९ ॥ नास्त्यनेन समो योगो वृष्यः कुत्रापि भूतले ॥ २० ॥ (धातुरत्नमाला.)

अर्थ-काला धतूरा, तुलसी, कसौंदी, सांठ, बील, जलभांगरा, दोनों दूब, पीतलछोटी, अगर, अडूसा, सोमराजी, पँवार, तिलपर्णी और आक इनके स्वरससे एक हाथ विस्तीर्ण निर्मल कपडेको तीन २ बार भावना देवै प्रत्येक भावनामें घाँममें स्वच्छ घासपर सुखालेवे फिर एक पल गंधक और घृत चारपलको पीसकर उस कपडेपर लेपकर देवे और उसकी बत्तीबनाकर उसकी नोंकको चीमटेसे पकड दूसरी नोंकपर आगजलावे तो उसमेंसे जो लालवर्णका घृत टपकेगा उसको लेकर शीशीमें भर मन्त्रसे अभिमन्त्रित करै । फिर उस घृतको चाररत्ती लेकर तीनरत्ती शुद्धपारदके साथ पानमें

रखलेवे,तदनन्तर हथेलीमें उस पानकी बीडीको खूब मलकर कजली करलेवे उस बीडीको प्रातःकाल खाकर थोडा दूध चावल पथ्य खावे इस प्रकार१५ पन्द्रह दिनतक खावे इसके पीछे सैंधानोंनके साथ मूंगके पदार्थको खावे और तीन सप्ताहके पीछे खटाई रहित शाक खावै इसके पथ्यमें करैला ककोंडा ककडी ककरोंदा केला और काशीफलको छोडदेवै तो यह रस बवासीर संग्रहणी पाण्डु खांसी श्वास भगंदर फोडे कृमि दर्द वातव्याधि आमवात मुख नेत्र और कानके रोग पेटके रोग सबप्रकारके अजीर्ण मंदाग्नि नपुंसकता रक्तपित्त भ्रम प्यास मूर्च्छा तन्द्रा हृदयके रोग वाळे पलित ये सबरोग इसके सेवनसे नाश होतेंहै यदि श्रीमहादेवजीके सत्यवचन हैं इसके समान पृथ्वीपर और दूसराद्दष्यप्रयोग नहींहै ॥ ७–२० ॥

महाराजवीटिका ।

(अर्थात् पानपर रक्खे गंधकतैलमें मिलाकर पारद भक्षणकी क्रिया)

बीजं ब्रह्मतरोर्विधाय बहुधा खंडान्त्रियामोषितं छागे दुग्धवरेऽथ शुष्कमथ तद्गन्धेन तिथ्यंशिना ॥ मुक्तं काचघटीच्युतं हुतभुजो योगेन कृत्वा ततः सत्त्वं तस्य निगृह्य काच घटिते भांडे सुखं स्थापयेत् ॥ २१ ॥ तत्तैलं वल्लमादाय ताम्बूलीपत्रगं चरेत् ॥ क्षिप्त्वा तत्र रसं वल्लमंगुल्यग्रेण मर्दयेत् ॥ २२ ॥ युक्त्या तां कज्जलीं कृत्वा ताम्बूलं शीलयेदनु ॥ शाकाम्लमाषकट्वादिवर्जितं पथ्यमाचरेत् ॥ २३ ॥ अनेन योगराजेन षंढोऽपि पुरुषायते ॥ अपूर्ववच्छतं गच्छेद्वानितानामदो गुणात् ॥ २४ ॥ पुरुषोऽशीतिवर्षीयोऽप्यन्यस्य किल का कथा ॥ स रोगो नास्ति नानेन यः प्रशाम्यति देहिनः ॥ २५ ॥ वलीपलितविध्वंसी योगोऽयं क्षयकुष्ठजित् ॥ वातपित्तकफातंकं हन्ति पंचाननः परम् ॥ २६ ॥ नास्त्यनेन समं लोके किञ्चिदन्यद्रसायनम् ॥ (धातुरत्नमाला)

अर्थ–ढाकके वीजोंको टुकडे २ कर तीनप्रहरतक उत्तम बकरीके दूधमें भिगोवे फिर उसको सुखाकर उसमें पन्द्रहवाँ भाग गंधक मिलावे इन दोनोंको पीस शीशीमें भरकर पातालयंत्र द्वारा सत्त्व (घृतः या तैलरूप) निकाल शीशीमें रखलेवे फिर उसमेंसे ३ तीन रत्ती तैल और तीन ही रत्ती पारदको पानमें रख अंगुलीसे कज्जली करलेवै उसपानको कजली सहित प्रातः काल खालेवे और शाक, खटाई, उरद और चरपरी चीजोंको छोडदेवै इस योगसे वृद्ध पुरुषभी युवा होताहै अस्सीवरसका भी वृद्ध मनुष्य सौ स्त्रियोंसे रमणकरताहै जवान पुरुषका तो कहना ही क्या है ऐसा कोई रोग नहीं है जिसको यह रस नाश नहीं करताहो और वली पलितका नाश करनेवाला यह योग क्षय और कुष्ठरोगको जीतताहै ॥ २१–२६ ॥

पारदहरीतकी ।

पलमेकं भस्मसूतं गंधकस्य पलानि षट् ॥ पलमेकं च कर्पूरं सर्वमेकत्र मर्दयेत् ॥ २७ ॥ शतमेकं हरीतक्याः छागक्षीरेण पाचयेत् ॥ सुशीताया हरीतक्याः समादाय निरस्यते ॥ २८ ॥ रक्तसूत्रैर्वेष्टयित्वा मधुमध्ये च निक्षिपेत् ॥ मासादूर्ध्वं हरीतक्या एकैकं भक्षयेत्सुधीः ॥ २९ ॥ मासमात्रप्रयोगेण सर्वरोगान्व्यपोहति ॥ षण्मासस्य प्रयोगेण कामरूपी भवेन्नरः ॥ ३० ॥ सततं सेवितो देवि जीवेच्चन्द्रार्कतारकाः ॥ ३१ ॥ (योगसारः)

अर्थ–सौ हर्र बडीको बकरीके दूधमें पकावे पकनेपर ठंढीकर गुठली निकाललवे फिर एकपल पारदभस्म और छः पल गंधक और एकपल कपूर इनको पीस सौ हर्रोंमें भरदेवै और लाल डोरोंसे बांध शहदमें डुबादेवै एकमासके पीछे नित्यप्रति एक २ कर खावे तो एकमासमें यह हर्र समस्तरोगोंको नाश करती है और छःमासके प्रयोगसे मनुष्यकामरूप कामदेवके समान होता है, और जो निरन्तर इसको खाता रहै तो जवतक चन्द्रमा तारे और सूर्य रहैं तबतक जीवित रहता है ॥ २७–३१ ॥

कज्जलीका सेम्हलके फलके साथ प्रयोग ।

गंधकस्य पलं चैकं सूतकस्य पलं तथा । कृत्वा कज्जलिकां सम्यक् शाल्मलीफलमध्यतः ॥ ३२ ॥ माषंमाषं प्रयुंजीत रक्तसूत्रेण वेष्टयेत् । निक्षिपेन्मधुमध्ये तु यावद्विंशद्दिनावधिः ॥ ३३ ॥ ततोद्धृत्यफलं चैकं भक्षयेत्सर्पिषा सह । प्रनष्टवीर्यो बलवाञ्जायते नात्र संशयः ॥ ३४ ॥ मासमेकं प्रयोगेण दृढकामी भवेन्नरः । मासत्रयप्रयोगेण वलीपलितवर्जितः ॥ ३५ ॥ षण्मासस्य प्रयोगेण कामचारी महाबलः । संवत्सरप्रयोगेण आयुर्वृद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ ॥ ३६ ॥ पथ्यं तस्य प्रवक्ष्यामि शृणुष्वैकाग्रमानसा । तिक्ताम्लतैललवणं महिषीक्षीरसर्पिषी ॥ ३७ ॥ अत्युष्णं वा सुशीतं वा वर्जयेत्सर्वदा बुधः । एवं विधिविधानेन सिद्धिर्भवति नान्यथा ॥ ३८ ॥ त्रिवर्षं चैव धान्यं तु अजाक्षीरं घृतं तथा । गोक्षीरं च घृतं चैव त्वन्नं सर्पिर्युतं तथा ॥ ३९ ॥ दधिगव्यं च कथितं भोजनार्थं वरानने । कुपथ्यस्य प्रयोगेण अंगं च स्फुटते सदा ॥ ॥ ४० ॥ (योगसारः)

अर्थ–गंधक एकपल, पारा एकपल इसकी कजली कर एक २ माशे सैमरके फलमें रख, लाल डोरेसे बांध देवे और बीसदिनतक शहदमें रखदेवे फिर इसमेंसे एक पलके

निकाल घृतके साथ सेवन करे तो नष्टवीर्य अर्थात् जिनके बीर्य न रहाहो वे भी बलवान् होते हैं । एक मासके प्रयोगसे सनुष्य कामी होता है छः मासके प्रयोगसे कामनापूर्वक विचरनेवाला महाबली होता है और एक सालके प्रयोगसे दीर्घकालतक जीतारहता है अब उसका पथ्य कहते हैं । चर्परा, खट्टा, तैल, नोंन, भैंसकादूध और घृत अत्यन्त उष्ण या शीतल इन सबको इसका सेवन करनेवाला छोड देवै इस प्रकार सेवन करनेसे सिद्धि होती है, और तरहसे नहीं होती । बकरीका दूध, घृत तथा गायका भी दूध और घी और घृतसे मिलेहुए पदार्थ तिवरषा अन्न गायका दही ये सब पथ्य हैं, हे सुन्दरमुखवाली स्त्री ! यदि इस सेवनके पथ्यमें कुपथ्य करे तो सब शरीरमें पारा फूट जाता है ॥ ३२-४० ॥

पारदसेवनविधि (कज्जलीका त्रिफला भांगरेसे प्रयोग)।

त्रिफलायाः पलशतं चूर्णं भृङ्गरसाम्बुना । भावयेत्सप्तवारांस्तु छायाशुष्कंतु कारयेत ॥ ४१ ॥ पादं गंधकचूर्णस्य तदर्धं पारदं क्षिपेत । लिह्यान्मधुघृताभ्याश्च मात्रया प्रत्यहं पुमान् ॥ ४२ ॥ जीर्णे भोज्ये ह्यनाहारे गुणानेतानवाप्नुयात । प्रसन्नदृष्टिर्व्याधिर्जीवेद्वर्षशतत्रयम् ॥ ४३ ॥ कामदेवप्रतीकाशदेहवीर्यो महाबलः । मेधावी स्मृतिमान्धीरो जितकेशो जितोवपुः ॥ ४४ ॥ सुभगश्चारुरूपश्च स्त्रीशतानंदवर्द्धनः । वाडवानलतुल्योऽसौ भोज्येन्दुपरिहारकः ॥ ४५ ॥ अशीतिर्वातजान्रोगांश्चत्वारिंशच्च पैत्तिकान् । विंशतिः श्लैष्मिकांश्चैव सन्निपातांस्त्रयोदश । सर्वे दृष्ट्वा पलायन्ते वैनतेयमिवोरगाः ॥ ४६ ॥ (रसरत्नाकर.)

अर्थ-त्रिफलाके सौपल चूर्णको जलभँगरेके रससे सात भावना देवै, और छायामें सुखालेवे फिर त्रिफलाके चूर्णसे चौथाई शुद्धगंधक और गंधकसे आधा पारद ले कजलीकर पूर्वोक्त चूर्णके साथ मिलादेवे इसमेंसे मात्रानुसार घृत और शहदके साथ नित्यप्रति सेवन करै, और भोजन जीर्ण होनेपर फिर भोजन करै तो प्रसन्नदृष्टि होकर सौवर्षतक जीवित रहता है, कामदेवके समान देह और वीर्यवाला होता है, और महाबली होता है, बुद्धिमान् स्मृतिमान् धीर उत्तम रूपवाला तथा सौ स्त्रियोंसे रमण करनेवाला अग्निके समान तेजस्वी भोजनका पचानेवाला होता है, और अस्सी वातरोगोंको पित्तके चालीस रोगोंको तथा कफके बीस रोगोंको और तेरह सन्निपात रोगोंको नाश करता है जिसप्रकार गरुडजीसे सर्प भाग जाते हैं इसीप्रकार इस औषधिसे समस्त रोग नष्ट होते है ॥ ४१-४६ ॥

रुद्रवंतीप्रयोग (पारद वा गंधक योगसे)

रुदन्त्याश्चैव पंचागं हेमबद्धं च सूतकम् । दुग्धेन सहितं पीतं केवलं गंधकोऽपि वा ॥ ४७ ॥ जायते स्थविरो देवि नवयौवनगर्वितः । जायते नात्र संदेहो रसगंधकयोगतः ॥ ४८ ॥ (यो. सा.)

अर्थ-रुद्रदन्तीका पञ्चाङ्ग और सुवर्णबद्ध पारदको दूधके साथ सेवन करै, अथवा केवल गंधक ही सेवन करै तो बुड्ढा भी जवान होता है,इसमें सन्देह नहीं है ॥४७-४८

कल्प, रससिन्दूरका ।

सूतकस्य त्रयं देवि चत्वारो गंधकस्य च । वालुकायंत्रसंयुक्तं जायते भस्म सूतकम् ॥ ॥ ४९ ॥ संवत्सरप्रयोगेण मम तुल्यपराक्रमी । तस्य मूत्रपुरीषेण शुल्बं भवति कांचनम् ॥ ५० ॥ (औषधिकल्पलता.)

अर्थ-पारद तीनभाग और गंधक चारभाग इन दोनोंको पीस बालुकायन्त्रसे भस्म करै इस रसका जो एक सालतक प्रयोग करै तो वह श्रीमहादेवजीके समान बलवीर्यवाला होजायगा और उसके मूत्र और मलसे ताँबेका सुवर्ण होता है ॥ ४९ ॥ ५० ॥

रससिंदूर ।

पलमात्रं रसं शुद्धं तावन्मात्रं तु गंधकम् । विधिवत्कज्जलीं कृत्वा न्यग्रोधांकुरवारिभिः ॥ ५१ ॥ भावनात्रितयं दत्त्वा स्थालिमध्ये निधापयेत। विरच्य कवचीयंत्रे वालुकाभिः प्रपूरयेत् ॥ ५२ ॥ दद्यात्तदनु मंदाग्निं भिषग्यामचतुष्टयम् । जायते रससिंदूरं तरुणादित्यसन्निभम् ॥ ५३ ॥ अनुपानविशेषेण करोति विविधान्गुणान् । नागार्जुनेन कथितं योगानां योगमुत्तमम् ॥ ५४ ॥ (यो. सा.)

अर्थ-शुद्ध पारद एक पल और शुद्ध गंधक एक पल इनको विधिपूर्वक कज्जली कर बडकी जटाके काथसे एक दिवसतक घोटे इसप्रकार तीन भावना देवे फिर शीशीमें रख बालुकायन्त्रद्वारा मन्दाग्निसे चार प्रहरतक पकावे तो नवीन सूर्यके समान चमकदार लालवर्णका रससिन्दूरनामका रस प्रस्तुत होजायगा अपने २ अनुपानके साथ अनेक गुणोंको करता है, इस सर्वोत्तम योगको श्रीनागार्जुनने कहा है ॥ ५१-५४ ॥

पर्पटी ।

गंधकं सूतकं चैव कृत्वा कज्जलिकासमम् । गव्येन नवनीतेन लोहपात्रे तु पाचयेत् ॥ ॥ ५५ ॥ षोडशांशं विषं क्षिप्त्वा यावद्द्रवति गंधकः । तत्क्षणे निक्षिपेद्देवि कदलीकंदमध्यतः ॥ ५६ ॥ एषा पर्पटिका नाम रसानां च रसायनम् । निष्कमात्रप्रमाणेन हन्ति कुष्ठं सुदारुणम् ॥ ५७ ॥ मासमात्र

प्रयोगेण सर्वरोगान्व्यपोहति । संवत्सर-प्रयोगेण वलीपलितनाशनम् ॥ ५८ ॥ युक्त्या संसेविता येन जीवेच्चन्द्रार्कतारकम् त्रिमूली च द्विमूली च त्रिफला च चतुःफलम् ॥ ५९ ॥ समांशं योजयेद्योगं वलीपलितनाशनम् ॥ ६० ॥ (योगसार.)

अर्थ—शुद्ध गंधक और शुद्ध पारदको समानभाग लेकर कजली करे उसको गोघृतमें रख लोहेकी कडछीमें तपावै और कजलीसे सोलहवाँ हिस्सा सींगियाको पीसकर मिलादेवे जब गंधक गलजाय सब केलेके पत्तेपर डालदेवे यह पर्पटिका नामका रस समस्त रसोंमें उत्तम है, इस पर्पटीका एक तोला मात्रानुसार खावें तो घोर कुष्ठरोग भी दूर होताहै, और एक मासके प्रयोगसे यह पर्पटिकी सब रोगोंको दूर करतीहै एक वर्षके प्रयोगसे बलीपलितसे रहित होताहै और जो विधिपूर्वक इसका निरंतर सेवन करता रहै तो कल्पपर्यन्त जीवित रहताहै तथा द्विमूली त्रिमूली और त्रिफला ये सब चार पल चार ही पल पर्पटी लेकर मात्रानुसार भक्षण करे ॥ ५५–६० ॥

पर्पटीप्रयोग ।

गंधकस्य पले द्वे च पलैकं शुद्धसूतकम् । कृतं पत्रगतं पक्वं लेहयेन्मधुसर्पिषा ॥ ६१ ॥ मासैकं वा त्रिमासं वा हन्ति कुष्ठं सुदारुणम् । षण्मासस्य प्रयोगेण जीवेच्चन्द्रार्कतारकम् ॥ ६२ ॥ (योगसार.)

अर्थ—शुद्ध गंधक दो पल और शुद्धपारद एक पल इनकी कजली कर आंचमें पचाय पत्तेपर डाललेवे इसमेंसे मात्रानुसार एक मास या तीन मासतक सेवन करे तो घोर कुष्ठरोगको नाश करती है, और छःमासके प्रयोगसे सूर्यचंद्र और तारोंकी स्थिति तक जीवित रहताहै ॥ ॥ ६१ ॥ ६२ ॥

कज्जलीप्रयोग ।

गंधकस्य पलं चैकं सूतकार्धपलं तथा । मर्दयेद्याममेकं च लेहयेन्मधुसर्पिषा । मासमात्रप्रयोगेण जीवेच्चन्द्रार्कतारकम् ॥ ॥ ६३ ॥ (यो. सा.)

अर्थ—आधा पल शुद्ध पारद और एक पल शुद्ध गंधक इन दोनोंको एक प्रहरतक पीस घृत और शहदके साथ तीन मासतक सेवन करे, तो जबतक चन्द्रमा सूर्य और तारागण चमकते हैं, तबतक जीवित रहताहै ॥ ६३ ॥

गंधबद्धरसकल्प (रसगंधकयोग)

गंधकस्य पलं चैकं रसस्यार्द्धपलं तथा । कुमारीरससंघृष्टं दिनैकं गोलकीकृतम् ॥ ॥ ६४ ॥ अंधमूषाकृतं ध्मातं लेहयेन्मधुसर्पिषा । मासमात्रप्रयोगेण जरादारिद्र्यनाशनम् ॥ ६५ ॥ (र. सा. प.)

अर्थ—पारद आधा पल, गंधक एक पल इन दोनोंकी कजली घीगुवारके रसमें घोटलेवे, फिर उसका गोला बनाय अंधमूषामें रखकर धोंके उसमेंसे एकमासका प्रयोग करे तो बुढापारूप दारिद्र्यका नाश होताहै ॥ ६४ ॥ ६५ ॥

आरोटरसभक्षणफल ।

आरोटं भक्षयेद्देवि चन्द्रगन्धं च कारयेत् । पोषयेत्सर्वधातूनां बलपुष्टिप्रदायकः ॥ ॥ ६६ ॥ (यो. सा.)

अर्थ—हे पार्वति ! आरोट रसका भक्षण करे और कपूर सुवर्ण, चाँदी कबीला औषधि चूक आदि किसी भी चीजका गन्ध आनेलगे तो समझना कि वह सभी धातुओंको पुष्ट करेगा और बल तथा पुष्टिका करनेवाला होगा ॥ ६६ ॥

पारदगंधकसेवनफल ।

बहुनात्र किमुक्तेन गंधकं सहसूतकम् । षण्मासं भक्षितो येन जीवेच्चद्रार्कतारकम् ॥ ॥ ६७ ॥ (यो. सा.)

अर्थ—बहुतसी बातोंसे क्या प्रयोजन है कि छःमासतक जो मनुष्य कजलीका सेवन करे तो सूर्य चंद्रमाके रहनेतक जीवित रहताहै ॥ ६७ ॥

अभ्रकसत्त्वप्रयोग।

सूततुल्यं व्योमसत्त्वं तयोस्तुल्यं च गंधकम् । कुमारीस्वरसैर्मर्द्य यंत्रे सैकतके पचेत् ॥ ६८ ॥ दिनद्वयान्ते संग्राह्यं भक्षयेन्मासमात्रकम् । क्षयं शोषं तथा कासं प्रमेहं चापि दुष्करम् ॥ ६९ ॥ पांडुरोगं च कार्श्यं च जयेच्छीघ्रं न संशयः ॥ ७० ॥ (र. रा. सुं., टी. नं.)

अर्थ—पारा और अभ्रकसत्त्व दोनों एक एक भाग दोनोंके समान गंधक सबको घीग्वारके रसमें घोट दो दिन बालुकायंत्रमें अग्निदे तौ अभ्रकसत्त्व मरै पश्चात् शीतल कर रखछोडे इसका एकमहीना सेवन करै तौ क्षयी, खांसी, असाध्यप्रमेह, पांडुरोग, कृशता इनका शीघ्र नाश करै यह काकचंडेश्वर ग्रंथमें लिखाहै ॥ ६८–७० ॥

रसायनाय चूर्णरत्नम् (अभ्रप्रयोग)

वृष्यगणचूर्णतुल्यं तत्पुटपक्वं घनं सिता द्विगुणा । वृष्यात्परमतिवृष्यं रसायनं चूर्णरत्नमिदम् ॥ ७१ ॥ (र. सा. प.)

अर्थ—वृष्यगणोंके रससे सिद्ध कियाहुआ अभ्रक और उसके समान वृष्यगणका चूर्ण इन दोनोंके समान मिश्री

नं० १–चन्द्रगंध पाठ रखनेसे कोई स्पष्ट अर्थ नहीं निकलता खींचकर ऐसा अर्थ करसक्ते हैं कि जो आरोटरसको खावे तो चन्द्र और गंधयुक्तकर पारदका भक्षण करे।

नं० २–गंधबद्धं पा० रखनेसे सर्व संमत अर्थ होताहै कि यदि आरोटका भक्षण करे तौ गंधकसे मूर्छित करले।

नं० ३–कारयेत्की जगह धारयेत् पाठ हो, और चन्द्रगंधकी जगह चन्द्रबद्ध हो तो यह अर्थ होगा कि आरोटका भक्षण करे और चन्द्रबद्धको धारण करे।

इसको मात्रानुसार सेवन करै तो यह चूर्ण अत्यन्त-पुष्टिकारक रसायन और चूर्णोंमें रत्नहै ॥ ७१ ॥

अभ्रकगुण ।

अब गगनगुन सुनिलीजै सोइ । जो पै तनके जाने लोय॥गुनी निचंद्री करै बनाय। पुनि ताको जो प्रानी खाय ॥ जे प्रौढा जोबनमदभरी। ते दिनमान बीस बसकरी॥ जो सतकाढि खाय नर कोइ । ता शरीर बजरंगी होइ ॥ पुनि जो दुरितहोइ ता तनै । ताके गुनको कहँ लौ भनै ॥ जो कहुँ गांठि सूतसौं परै। रत्तीआपदा नृपकी हरै ॥ इनतेहीमें जानों संत । गगनसूत गुनखरे अनंत ॥ धातुसबरी और सबरे दोष । गगनदुरतसम और न कोष ॥ (रससागर.) ॥

गंधकप्रयोग अजीर्णनाशक ।

धात्रीरसेन संयुक्तो ह्यजीर्णं हरते ध्रुवम् ॥ ॥ ७२ ॥ (औषधिकल्पलता.)

अर्थ-गंधकको आँवलेके रसके साथ सेवन करै तो अजीर्ण दूर होगा ॥ ७२ ॥

गंधकके उत्तम अनुपान ।

पुनर्नवान्वितं गंधं त्रिविधं नाशयेद्विषम् । धात्रीरससमायुक्तं अजीर्णं नाशयेद्ध्रुवम् ॥ ॥ ७३ ॥ सूतकेन समायुक्तं चिरायुः पुरुषो भवेत् ॥ ७४ ॥ (यो. सा.)

अर्थ-सांठकी जडसे युक्त गंधकको सेवन करनेसे तीनप्रकारका विष दूर होजाताहै ॥ ७३-७४ ॥

गंधकसेवनमें पथ्यापथ्य ।

वमनं रेचनं कृत्वा रसायनं समाचरेत । शुभे महूर्ते नक्षत्रे अर्चयित्वा जगत्पतिम् ॥ ॥ ७५ ॥ पक्षमात्रप्रयोगेण भक्ष्यं पथ्यादिकानि च । षष्टिकातंडुला भक्ष्यं गोधूमाश्च वरानने ॥ ७६ ॥ बालकानि च मांसानि तित्तिरीछागलानि च । कृष्णमुद्गाश्च सर्पिश्च सिताक्षीरं च तक्रकम् ॥ ७७॥ एतद्देवि सदा पथ्यमपथ्यं परिवर्जयेत । कटुतिक्तकषायाणि तैलं कांजिकराजिकम् ॥ ७८ ॥ स्त्रीसेवारोहणं यानं प्रवातादीनि वर्जयेत। कोद्रवान्नं कुलित्थं च कर्तव्यं पथ्यभोजनम् ॥ ७९ ॥ लवणाम्लविपाकानि द्विदलानि च वर्जयेत् ॥ ८० ॥ (औषधिकल्पलता.) ॥

अर्थ-प्रथम वमन और विरेचन (दस्त) कराकर रसायनका प्रयोग करै शुभमूहूर्त और शुभदिनमें श्रीपरमात्माका पूजनकर १५ पन्द्रह दिवसतक रसायनका प्रयोग करै और इस प्रकार पथ्य करै । सांठी चावल, गेंहू (पुराना), नवीन तीतर और बकरेका मांस छुकलेदारमूंग, घृत, मिश्री, दूध और मट्ठा हे पार्वति ये सदा पथ्य हैं। इनसे अतिरिक्त चर्परा, कडुआ, कषैला, तैल, कांजी, राई, स्त्रीसेवन, सवारीपर चढना और सामनेकी वायुका सेवन करना अपथ्य है । कोदू और कुलथी पथ्यहै, और जिनका विपाक लवण और खट्टा है और दाल सबतरहकी अपथ्य है ॥ ७५-८० ॥

गंधकभक्षणके नियम और पथ्य ।

वमनं रेचनं कृत्वा रसायनमथाचरेत् । मुहूर्ते शुभनक्षत्रे नमस्कृत्वा जगद्गुरुम् ॥ ॥ ८१॥ विधानेन यथा देवि कर्तव्यं गंधकं प्रिये । तथा चैवं प्रवक्ष्यामि प्रयोगान् भक्षणस्य च ॥ ८२ ॥ षाष्टीकमथवा शालिगोधूमांश्चैव सुव्रते । जांगलानि च मांसानि कोमलानि तथैव च ॥ ८३ ॥ कृष्णमुद्गाश्च सर्पिश्च सिता क्षीरं च माक्षिकम् । एतद्धि विहितं पथ्यमपथ्यं परिवर्जयेत् ॥ ८४ ॥ श्रुतावधानसम्पन्नो वाराह इव पुष्टिमान् ॥ ८५ ॥ (यो. सा.)

अर्थ-रसायनका सेवन करनेवाला प्रथम वमन और विरेचनको करके शुभमुहूर्त और शुभनक्षत्रमें रसायनका सेवन करे हे देवि ! जिसप्रकार गंधकके विधान कहेहैं उसी प्रकार भक्षणके प्रयोगोंको भी कहतेहैं । सांठी चावल, एकसालके पुराने गेहूं जँगलीजानवरोंका कोमलमांस, कालेमूंग, घृत, मिश्री, दूध और शहद यह रसायनके भक्षणकरनेमें पथ्यहैं, और इससे अतिरिक्त अपथ्यहैं, इस प्रकार सेवन करनेसे ऐसी बुद्धि तीव्र होतीहै कि केवल श्रवण करनेसेही याद होजाताहै, और वह मनुष्य सूवरके समान पुष्ट होजाताहै ॥ ८१-८५ ॥

गंधकशुद्धि ।

अथातः शोधनं वक्ष्ये गंधकस्य वरानने । गंधकं गालयित्वा तु घृतमध्ये तु पार्वति ॥ ॥ ८६ ॥ तथा वै छागदुग्धे च शोधयेत्सप्तवारकम् । ततो रसोपयोगी च गन्धको भवति ध्रुवम् ॥ ८७ ॥ (योगसार.)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायामुत्तमोत्तमरसादिनिरूपणं नाम द्विचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४२ ॥

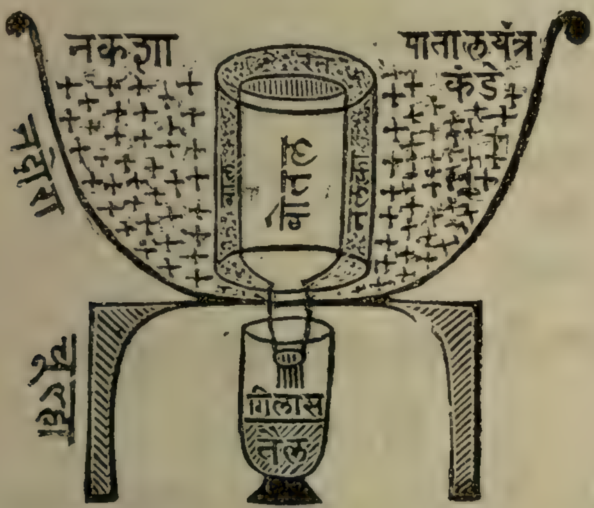
अर्थ-हे सुन्दरमुखवाली स्त्री अब हम गंधककी शुद्धिको कहतेहैं कि प्रथम गंधकको घृतमें गलाकर बकरीके दूधमें सातवार गेरे तो गंधक शुद्ध होकर रसायनके उपयोगी होजायगा ॥ ८६ ॥ ८७ ॥

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया भाषाटीकायामुत्तमोत्तमरसादिनिरूपणं नाम द्विचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४२ ॥

तैलनिष्कासनाध्यायः ४३.

धतूरतैलका अनुभव (पातालयन्त्रसे)

४। २। १९०७ को एक काली बोतलपर २ कपरौटी करके ऽ॥ सेर धतूरेके बीजोंको जौकुट करके बोतलमें भरदिया और पांच पांच अंगुल लंबी सींकोंके टुकडोंके बंडलको उस बोतलके मुखमें डाटकी तरह लगा, सीकें करिब आधी बोतलके बाहर और आधी भीतर रहीं, फिर एक मिट्टीके नदोरेकी पेंदीमें बोतलकी गर्दनके नापकी सूराख कर नदोरेके अन्दरकी ओर बोतलको उलटा रख नदोरेकी सूराखमें हो बोतलका मुख नीचेको निकाल दिया, और नदोरेकी सूराख और बोतलकी गर्दनके मिलानपर थोडी सी चिकनी मिट्टी लगा इस यंत्रको विना आगके चूल्हेपर रखदिया, जिससे बोतलका मुख चूल्हेकी तलीसे ६ अंगुल ऊंचा रहा, बादको एक काचका गिलास जो करीब ९ अंगुल लंबा और २ वा २॥ अंगुल गुलाईमें होगा बोतलके नीचे रखदिया, इस गिलासमें २॥ अंगुल मुख बोतलका अन्दर चला गया, फिर बोतलके पेटके ऊपर एक टीनका नलका (जो बोतलके चारों ओर एक एक अंगुल ढीला रहा) वतौर खोलीके पहना दिया और उस नलकेके अन्दर रेत भरदिया, फिर इस यन्त्रके ऊपर



अर्थात् नदोरेमें प्रथम बार ३ सेर कंडोंकी करसी इस तरहसे चुनकर कि जो बोतलकी पेंदीसे ३ अंगुल ऊँची रही, आंच देदी यह पहली आंच १०। बजेसे ११॥। बजे तक लगी, जब यह पहली आग खूब सिलग गई तभीसे तैल निकलना आरम्भ होगया। पहली आंच जब कदराने लगी तब १ सेर कंडे ऊपर और चुनदिये गये, इस दो दफेकी आंचसे ३॥ तोले तेल निकला। बादको फिर १२॥ बजे २ सेर कंडे और लगा दिये गये, यह आंच २ बजे तक लगी इस आंचसे भी ३॥ तोले तैल निकला मगर पहली दफे जो निकला वह सफेद मटमैली रंगतका पतला पानी सा था जिसमें चिकनाई नहीं थी और खयाल करनेसे तैल नहीं वल्कि पसेव सा प्रतीत होता था, और यह दूसरे तैलमें मिलता भी न था पृथक् होजाता था।

दूसरी वारका तैल दो प्रकारका था, कुछ पीली सी रंगतका था और कुछ काला था, जो काला था उसमें चिकनाई अधिक थी, और पीलेमें जरा कम यह दोनों भी परस्पर मिले नहीं नीचे पीला और ऊपर काला रहा। इस प्रकार ऽ॥ सेर बीजोंमें ६ सेर कंडोंकी आंचसे ४ घंटेमें ७ तोले तैल निकला तैल निकल आनेके बाद इस यन्त्रको जैसेका तैसा छोडदिया।

ता० ५ को बोतल निकाल बीजोंको निकाला तो बिलकुल जलेहुए निकले और तोलमें ३ छटांक हुए।

धत्तूरतैलका दूसरी बार अनुभव (पाताल यन्त्रसे)

ता० ७।२।०७ को उपरोक्त विधिके पातालयन्त्रमें प्रथम बार ३ सेर कंडोंकी द्वितीयबार २ सेरकी तृतीयबार १ सेरकी आंच दी। पहली आंच ८॥ बजे लगाई जब इस आंचके करीब १ सेरके अंगार रहगये तब १० बजेके करीब दूसरी आंच दी, फिर इस दूसरी आंचके जब आधसेरके करीब अँगार रहगये तब १ सेर कंडे और रखदिये, इस्तरह ३ आंच दीगई। पहली दफेकी आंचसे जो तेल निकला वह पहले ही सा पानीकी शकलका १॥। तोले था, और दूसरी आंचसे जो तेल निकला वह काली शकलका जलाहुआ ३ तोले निकला इसमें चिकनाई भी थी (इस आंचसे तैलमें कुछ धुआं भी निकला था) तीसरी आंचसे कुछ तेल न निकला, यन्त्र ठंढा होनेपर बीजोंको बोतलसे निकालकर तोला तौ १४ तोले जले हुए निकले।

	आंच	कंडे	घंटे	तेल	जले बीज
२	३	ऽ६	२	४॥। तो.	३॥। छ.

अनुभव–दूसरी आंच अन्दाजसे अधिक लगी इसलिये बीज एकदम जलकर धुआं देनेलगे और तेल खराब और बहुत कम निकला।

धत्तूरतैलका तीसरी बार अनुभव। (पातालयन्त्रसे)

ता० ७। २। ०७ को उपरोक्त यन्त्रमें उपरोक्तविधिसे नदोरे और बालूके गर्म रहनेके कारण प्रथम बार २॥ सेर टूटेहुए कंडोंकी आंच दी यह आंच १। बजेसे २॥ बजे तक रही, इसमें ३॥। तोले तेल काली रंगतका निकला और बहुत सा धुआं भी नीचे गिलासमें भरगया। अग्निके थोडे बाकी रहनेपर २॥। बजे पर १ सेर कंडोंकी आंच फिर दी, इस आंचसे कुछ तेल न निकला क्योंकि पहली ही आंचसे सब बीज जल गये होंगे। इस आंचके भी ठंढा होनेपर तीसरी आंच १ सेर कंडोंकी ३॥। बजे दी इस आंचसे भी कुछ तैल न निकला। तीन आंचोंमें सिर्फ पहली दफे ३॥। तोले तेल निकला। यन्त्रके ठंढा होनेपर बीजोंको निकालकर तोला तौ १३॥ तोले निकले।

	बीज	आंच	कंडे	घंटे	तेल	जले बीज
३	७॥ छ.	३	ऽ४॥	२॥	३॥। तो.	+

अनुभव–आंच कंडोंकी होनेसे और यन्त्र गर्म रहनेसे एकदम अग्नि तेज होकर अधिक तीव्र होगई जिससे बीज जलनेलगे और धूंएके साथ जलाहुआ गाढा तेल निकला। आंच हलकी और कसींकी होनी चाहिये।

धत्तूरतैलका चौथी बार अनुभव (पातालयन्त्रसे)

ता. ८। २। ०७ यंत्र उपरोक्त विधिसे बनाया किन्तु ऊंचा करनेके लिये चूल्हेकी जगह एक

काठकी तिपाईपर जो करीब १॥ हाथके ऊंचीथी रक्खा, और बोतलके नीचे एक शीशेकी नली करीब बालिश्त भरके लंबी लगाई गई जिसमें बोतलका मुख आगया और इसी नलीके नीचै वही गिलास जो पहले लगायाजाता था लगाया गया, यह नली गिलासके मुँहमें ठीक बैठगई और सांस बंद होगई, नली इस लिये लगाई थी कि गिलासको गर्मी न पहुँचै और भापको भलीभाँति ठंडा होनेका अवसर मिले और उस नदोरेमें बहुत थोडीसी बालू नीचे भी बिछा प्रथमवार ११ बजे ३ सेर आरने कंडोंकी कर्सीकी आंचदी उस पहली आंचमें कुछ तेल न निकला क्योंकि कर्सी बारीक होनेसे आग नीचे तक न बैठी, पहली आंचके थोडेही कंदरानेपर १२॥ बजे दूसरी आंच डेढसेर कंडोंकी, इस दूसरी आंचके सुलग जानेपर थोडा थोडा तेल निकलना आरम्भ होगया, थोडा थोडा तेल निकलनेका यह कारण था कि नदोरेके नीचेकी कर्सीमें ठीक आंच नहीं बैठी, जब उसको कुरेदकर ठीक किया तौ आंच अच्छी तरह निकलने लगी और तेल अच्छी तरह निकलने लगा, बादको २ बजे ऊपरसे थोडीसी राख हटाकर १ सेर कंडोंके टुकडोंकी आंच लगादी, तेल उसीतरह निकलता रहा, ३॥ बजे १ आंच ऽ॥। कंडोंकी और दीगई, इससमय भी तेल निकलनेकी वैसीही दशा रही, पांचवीं आग ४। बजे ऽ॥। तीन पाव कंडोंकी दीगई, इस्तरह ५। घंटेमें सब ५ आंच ३ सेर कर्सी और ४ सेर कंडोंकी दीगई, जिससे कुल तेल ८ तोले निकला। यह तेल पानीसा पीली रंगतका था और इसके ऊपरी भागपर कुछ चिकनाईभी थी। बोतलके अन्दर जलेबीज ऽ। निकले, इस बार अधिक बीज निकलनेका कारण यह हुआ कि थोडे बीज उसमें बगैर जले रहगये थे।

नं.	बीज	आंच	कंडे	घंटे	तेल	बीज
नं.४	७॥ छ.	५	ऽ७ सेर	५।	६ तोले	ऽ।

अबकी बार सबसे अच्छा और अधिक तेल निकला, (आगेके तजरुबेसे यह आंचभी अधिक साबित हुई) किन्तु इतनी कसर रही कि पहली आंच जो केवल कर्सीकी थी सो नीचेतक न सुलगी। आगेसे पहले १ सेर कंडोंके टुकडे डालकर ऊपरसे २ सेर कर्सी देनी चाहिये जिससे आंच नीचेतक पहुँच जाय। कर्सी देनेसे यह मतलब है कि आंच एकदम तीव्र होकर जला न दे। इसकारण निम्नलिखित आंचके अनुसार आंच देनी चाहिये।

नकशा आंचका।

आंच जो दीगई।	आंच जो देनी चाहिये।
१ पहिली ३ सेर कर्सी	२ सेर कर्सी १ सेर कंडे
२ दूसरी, १॥सेर कंडे	१ सेर कंडे–ऽ। कर्सी
३ तीसरी, १ सेर कंडे	ऽ१। सेर कंडे
४ चौथी, ऽ॥। कंडे	ऽ१ सेर कंडे
५ पांचवी, ऽ॥। कंडे	आवश्यकता नहीं

आगेके अनुभवसे यह भी आंच अधिक सिद्ध हुई

धतूरतैलका पांचवींबार अनुभव
(पा. यं.)

ता० १२।२।०७ को उपरोक्त विधिके पाताल यंत्रमें प्रथमबार ३ सेरकी आंच इस्तरहसे दी कि यंत्रकी तलीमें पहले १। सेर कंडोंके छोटेछोटे टुकडे दोदो अंगुलके बिछा दिये गये। बादको ऊपर ऽ१॥। सेर आरने कंडोंकी कर्सी लगादी। यह आंच ८॥ बजे सबेरेसे दीगई ९॥। बजेसे तैल निकलनाँ आरम्भ होगया, और अन्दाजन इस आंचसे २ तोले तेल निकला। आंचको कुरेद कर देखा तौ नीचेके कंडे कम सुलगे हुये निकले इसवास्ते दूसरी आंच १०॥ बजे ऽ। सेर कंडोंके वैसेही टुकडोंकी दी, तैल मामूली तरहसे निकलता रहा, तीसरी आग ११॥ बजे नदोरेमेंसे थोडी राख हटाकर ऽ॥सेरकी दी, तैल ज्योंका त्यों नीली रंगतका निकलता रहा दूसरी और तीसरी आंचमें ५॥ तोले तेल और निकला, चौथी आंच १ बजे ऽ॥। कंडोंके टुकडों की दी, इस आंचसे तो तेल निकला वह काली रंगतका निकला, पांचवीं आंच २ बजे ऽ। सेरकी दी इस आंचमें भी तैल कालीही रंगतका निकलता रहा। छठी आंच ३ बजे ऽ॥ तीन पावकी दी इससे बहुत थोडा तेल निकला, ४ बजे तैल निकलना बंद होगया। चौथी, पांचवीं, छठी आंचसे ३ तोले तेल निकला, सब तेल १०॥ तोले हुआ, बीज ७॥ छटांक थे बोतल खोलनेपर जले बीज ३॥ छटांक निकले।

नं.	बीज	आंच	कंडा	घंटा	तेल	जलेबीज
नं ५	७॥ छ.	६	ऽ६	६	१०॥ तो.	३॥ छ.

सम्मति–आगस आंच न तौ कर्सीकी हो न कंडोंके बडे टुकडोंकी किन्तु कंडोंके दोदो अंगुलके टुकडोंकी होनी चाहिये।

(१) पहिली आंच	२ वा २॥ सेर
(२) दूसरी	ऽ॥ सेर वा $\frac{3}{4}$ सेर
(३) तीसरी	ऽ। सेर वा $\frac{3}{4}$ सेर
(४) चौथी	"
(५) पांचवीं	"

धत्तूरतैलका छठी बार अनुभव
(पा. यं. से)

ता० १६।२।०७ उपरोक्त विधिके यंत्रमें जो बोतलके ऊपर टीनका खोल चढाया जाता था और जिसके चारों तरफ एक एक अंगुल जगह खाली रहती थी आज उसकी जगह दूसरा बडा खोल जिसमें दो दो अंगुलकी चारों ओर गुंजायश थी पहना दियागया और प्रथम बार ८॥। बजे ऽ२ सेर कंडोंके दो दो अंगुलके टुकडोंकी आंच दीगई, आंच देनेसे १॥ घंटे बाद तैल निकलना आरम्भ होगया,दूसरी आंच १०बजे वैसे ही ऽ॥सेर कंडोंके टुकडोंकी दी, तीसरी आंच १०॥। बजे ऽ।= की दी तेल उसी भांति निकलता रहा, चौथी आंच ११॥ बजे ऽ॥। की दी, पांचवीं आंच १२। बजे ऽ॥।तीन पावकी दी, छठी आंच १ बजे ऽ॥। की दी, इन ऽ५= की ६ आंचोंमें ४। घंटेमें ७॥ तोले तेल पतला और पीली रंगतका निकला, २ बजे तेल निकलना बंद होगया था, यद्यपि अबकी बार तेल कम निकला किन्तु रंगतमें स्याही बिलकुल न थी किन्तु चिकनाई भी कम थी, जलेबीजोंकी तोल ३॥ छटांक हुई, अबकी बार आंच कम लगी, कारण यह कि खोल टीनका चौडा था और तोल कंडोंकी कम। पहली आंच ऽ२॥ सेर कंडोंकी होनी चाहिये।

नं. ६ बीज. आंच. कंडे. घंटे. तेल. जले बीज-
७॥ छ. ६ ऽ५= ४। ७॥तो. ३॥ छटांक

धत्तूरतैलका सातवीं बार अनुभव-
(पा. यं. से)

ता० १६।२।०७ को उपरोक्त विधिके पातालयंत्रमें प्रथम आंच २॥ सेर कंडोंके टुकडोंकी ८। बजे दी, दूसरा आँच ऽ॥। की ९। बजे दी, इस दूसरी आंचके लगनेके आध घंटे बाद अर्थात् ९॥। बजेसे तैल निकलना आरम्भ होगया। तीसरी आंच ऽ॥। की १०। बजे, चौथी ऽ॥। की ११। बजे, पांचवीं ऽ॥ सेरकी ११॥ बजे, छठी ऽ॥ सेरकी १२ बजे, ७ सातवीं ऽ१ सेर १२। बजे राख हटाकर, आठवीं ऽ॥ सेरकी ।॥ पौना बजे, नवीं ऽ१ सेरकी १॥ बजे राख हटाकर, दसवीं ऽ१ सेरकी २। बजे दीगई।

छठी आंचतक तेल पीली मटमैली रंगतका पतला ४ तोले निकला, और सातवींसे नवींतक सुर्खी माइल और विशेष चिक्कणतायुक्त ५ तोले निकला, दसवीं आंचसे बिलकुल न निकला।

नं. ७ इसतरह कुल ७॥ छटांक बीजोंमें ऽ९। सेरकी १० आंचोंसे ६ घंटेमें ९ तोले तेल हाथ लगा, जले बीज ३॥ छटांक निकले।

धत्तूरतैलका आठवीं बार अनुभव
(पा. यं. से)

१८।२।०७ को उपरोक्त विधिके पाताल यंत्रमें प्रथम आंच २॥ सेरकी ९॥। बजे द्वितीय ऽ॥ सेर १०॥। बजे, तृतीय ऽ॥ सेरकी ११। बजे दी, तीसरी आंच लगनेसे ५ मिनट बाद तेल निकलना आरम्भ होगया, फिर चौथी आंच १ सेरकी ११॥ बजे पांचवीं ऽ॥ सेरकी १२ बजे, छठी १ सेरकी १२॥ बजे, सातवीं ऽ॥ सेरकी १। बजे, आठवीं १ सेरकी २ बजे, नवीं ऽ॥ सेरकी २॥ बजे, दसवीं १ सेरकी ३। बजे, ग्यारहवीं १ सेरकी ४। बजे दीगई। इन सब आंचोंमें ८॥ तोले तेल पहली ही जैसी रंगतका निकला। अर्थात् कुल ७॥ छटांक बीजोंमें १० दस सेरकी ग्यारह आंचोंसे ६॥ घंटेमें ८॥ तोले तेल निकला, जलेबीज ३॥ छटांक निकले।

सम्मति-धत्तूरतैलके उपरोक्त ८ बारके अनुभवसे ज्ञात हुआ कि एक बोतल धत्तूरबीज जो तोलमें ऽ॥ सेरके करीब होतेहैं उनमें जाडेके मौसममें ६ वा ७ सेर कंडोंकी आंच लगानेसे ६ वा ७ घंटेमें ८ वा दस तोलेतक तेल निकलसकताहै, अवशेष बीज आधे अर्थात् ४ वा ३॥ छटांक बचने चाहिये, अधिक आंच लगजानेसे बीज ३ छटांक और बहुत अधिक लगनेसे २॥ छटांकतक रहजातेहैं, पहले जो कुछ निकलताहै वह पीली मिट्टीकी रंगतका पानी होताहै पीछेसे तैल मिश्रित पानी पीत रक्त रंगतका कुछ श्यामता लियेहुए होताहै, पानीकी रंगत स्वच्छ होती है, किन्तु तैलकी रंगतमें कुछ श्यामता अवश्य होतीहै, तेल वही उत्तमहै, जिसमें रक्तता विशेष और श्यामता कम हो अधिक अग्नि लगजानेसे श्यामता बढकर तैल खराब होजाताहै।

आंचका हिसाब यद्यपि बहुत ठीक तौरपर निश्चय नहीं हुआ किन्तु जहांतक समझमें आया आंच कंडोंके बहुत छोटे २ टुकडोंकी (चूरेकी नहीं क्योंकि वह सुलगती नहीं) इस भांति होनी चाहिये।

बार	तोल
१	ऽ२॥ सेर निश्चयहै
२	२॥ पाव
३	२॥ पाव
४	१। सेर
५	२॥ पाव
६	२॥ पाव
७	ऽ१। सेर

और आंच देनेका समय नियत नहीं होसकता, केवल यह विचार रखना चाहिये कि जबजब आंच झैकर टीनका नलका खुलता जावे तबतक २॥ पावकंडे ऊपरसे चुनेजावें, जब आंच विशेष कदराजावे तब राख निकाल कर १। सेरकी आंच दीजावे। अबतक सब धत्तूर तैल ११ छटांकसे कुछ अधिक निकलाहै। धत्तूरतैल जो पतला और कम श्यामता लिये था वह बोतलमें था और जिसमें गाढापन और श्यामता अधिक थी वह छोटी २ तीन शीशियोंमें था।

तारीख ८।१।०५ को बोतलवाले तेलमें बत्ती भिगो जलाई तो न जली किन्तु जब शीशियोंके तेलमें बत्ती भिगो जलाई तो जलने लगी, इससे ज्ञात हुआ कि बोतलमें पानी था, और शीशियोंमें तैल था।

ढाकतैलका प्रथम बार अनुभव-
(पातालयत्रसे)

ता० १९।२।०७ को उपरोक्त विधिके पातालयंत्रमें प्रथम आंचऽ२॥ सेरकी ९। बजे, दूसरीऽ॥सेरकी १० बजे, तीसरी ऽ१ सेरकी १०॥। बजे दी, इसी तीसरी आंचसे तेल निकलना आरम्भ होगया, चौथी आंचऽ१। सेरकी ११। बजे, पांचवीं ऽ॥। की १२ बजे, छठीं ऽ॥= की १ बजे, सातवीं ऽ॥। की १॥। बजे, आठवीं ऽ॥ सेरकी २॥ बजे, नवीं ऽ॥। की ३॥ बजे दी, चौथी आंचतक तेल कुछ सफेद पतला निकला बादको पीली लाल काली रंगतका निकलने लगा सफेद रंगतका ३॥ तोले और काली रंगतका ५ तोले तेल निकला।

पहले पतले तेलको कागजपर डालकर देखा तो उसमें बहुत कम चिकनाई पाईगई, और काले तेलको कागज पर डाला तो उसमें अधिक चिकनाई पाई, ७॥ छटाँक बीजोंमें ८॥= सेरकी ९ आंचोंसे ६॥ घंटेमें ८॥ तोले तेल निकला जलेबीज ४॥ छटांक निकले।

मेरी सम्मतिसे अब भी आंच तेज लगती है, आगेसे और मंद होनी चाहिये।

ढाकतैलका दूसरी बार अनुभव
(पा. यं. से)

उपरोक्त विधिके पातालयंत्रमें प्रथम आंच २॥ सेरकी ८॥ बजे,दूसरी ऽ॥= की ९॥ बजे दी, इसी दूसरी आंचके ऽ॥ घंटे बाद यानी १० बजेसे तैल निकलना आरम्भ होगया फिर तीसरी आंच ऽ॥= की १०॥ बजे, चौथी १। सेरकी ११। बजे, पांचवीं ऽ॥= की १२। बजे छठी ऽ॥= की १। बजे, सातवीं १। सेरकी २। बजे दी,तीसरी आंचतक सफेद पतला तेल ४॥ तोले निकला चौथी आँच लगते ही पीली लाल काली मिलीहुई रंगतका निकलनेलगा

और ५ तोले निकला, इस प्रकार ७॥ छ० बीजोंमें ऽ७। सेरकी ७ आंचोंसे ६। घंटेमें ९ तोले तेल निकला,जलेबीज ४॥ छटांक निकले ।

मेरी सम्मतिमें आज तेल कलसे अच्छा निकला पर आंच शायद अब भी ज्याद: है । ढाकतैल दोनों बारका ३ छटांक ३ तोले हैं ।

अंकोलतैलका दूसरी बार अनुभव-
(पा. यं. से)

२१।२।०७ उपरोक्त विधिके पाताल यंत्रमें प्रथम आँच ऽ२॥ सेरकी ८॥ बजे, दूसरी ऽ॥= की १० बजे दी, इस आंचके पाव घंटे बाद तेल निकलना आरम्भ होगया फिर तीसरी आंच ऽ॥= की ११ बजे, चौथी ऽ१। सेर १२ बजे, पांचवीं ऽ॥= की १ बजे छठी॥= की २ बजे सातवीं १। सेरकी ३ बजे दी, तीसरी आंचतक तेल सफेद दूधकीसी रंगतका ६ तोले निकला, बादको चौथी आंच लगनेसे तेल कुछ २ रक्तता पीतता श्यामता मिश्रित रंगतका ।॥=) भर और निकला, १२॥ बजे तेल निकलना बंद होगया । इसप्रकार ७॥ छ० बीजोंमें ५ सेरकी ४ आंचोंसे घंटेमें ७ तोले तेल निकला जलेबीज ३॥। छटांक निकले । पीछली ३ आंच व्यर्थ लगीं-

सम्मति-अंकोल धतूरेसे बहुत कोमलहै, अत एव इसमें ये आचें भी तोलमें और तादादमें अधिक रहीं, आगेसे केवल ४ आंच सोभी वजन घटाकर दीजावे ।

अंकोलतैलका दूसरी बार अनुभव-
(पा. यं. से)

२२।२।०७ को उपरोक्त विधिके पाताल यंत्रमें प्रथम आंच ऽ२॥ सेरकी ८॥ बजे दी ९॥। बजेसे तेल निकलना आरम्भ होगया फिर दूसरी आँच ऽ॥~ की १० बजे तीसरी ऽ॥~ की ११ बजे चौथी १। सेरकी १२ बजे दी, तेल १२॥ बजे निकलना बंद होगया, तीसरी आंचतक तेल सफेद रंगतका ६॥ तोले निकला, बादको रक्त पीत श्याम मिश्रित रंगका ३॥ तोले निकला । इस प्रकार ७॥ छटांक बीजोंमें ५ सेरकी ४ आचोंसे ४ घंटेमें १० तोले तेल निकला, जलेबीज ऽ। पावभर रहगये। इस बार अधिक बीज निकलनेका यह कारण हुआ कि बोतलके मुखकी तरफके कुछ बीज वगैर जले रहगये जिसका कारण यह था कि चौथी आंच राख हठाकर दीजाती थी, अबकी बार राख न हटाई थी। आगेसे अंतिम आंच राख हटाकर ही दीजावे मेरी सम्मतिसे अब भी आंचका वजन अधिक है, आगेसे और घटाया जाय ।

अंकोलतैलका तीसरी बार अनुभव-
(पा. यं.)

ता० २३।२।०७ को उपरोक्त विधिके पातालयंत्रमें प्रथम आंच २ सेरकी ७॥ बजे दी, ९ बजेपर तेल निकलना आरम्भ होगया, दूसरी आंच ऽ॥ सेरकी ९ बजे तीसरी ऽ॥ सेरकी १० बजे, चौथी ऽ१ सेरकी ११ बजे राख निकालकर दी तीसरी आंचके सुलगजानेतक सफेदसी रंगतका तेल ७॥ तोले निकला पश्चात् इसी आंचके तीव्र होनेपर रक्त पीत श्याम रंगतका तेल आनेलगा ११॥। बजेतक ४ तोले और निकला फिर निकलना बंद होगया इस तरह ७॥ छटांक बीजोंमें ४ सेरकी ४ आचोंसे ४। घंटेमें ११॥ तोले तेल निकला जलेबीज ३॥ छटांक निकले आज तेल सब दिनसे ज्याद: निकला परन्तु रंगतका बहुत उत्तम नहीं आंच अब भी तेज है, आगे आंचकी तोल और कम कीजाय ।

अंकोलतैलका चौथीबार अनुभव
(पा. यं.)

ता० २४ । २ । ०७ को उपरोक्त विधिके पातालयन्त्रमें प्रथम आंच ऽ१॥ सेरकी ७॥ बजे दी, ८॥ बजे तेल निकलना आरम्भ होगया, दूसरी आंच ऽ॥ सेरकी ९ बजे, तीसरी ऽ॥ सेरकी १० बजे चौथी १ सेरकी ११ बजे दी तीसरी आंचतक तेल सफेदसी रंगतका ७॥ तोले निकला इस तीसरी आंचके तेज होनेपर रक्त पीत श्याम रंगतका निकलनेलगा, १२ बजेतक ४॥ तोले तेल और निकला । इस तरह ७॥ छ० बीजोंमें ३॥ सेरकी ४ आंचोंसे ४॥ घंटेमें १२ तोले तेल निकला, जलेबीज ३॥। छटांक निकले। सब बारसे अबकी बार आंच कम लगी, और सब बारसे अधिक तेल निकला यह आंच इस मौसममें ठीक है ।

१२ बारके अनुभवके अनंतर पाताल यंत्रसे तैलनिष्कासन विषयमें सम्मति ।

मामूली काली बोतल (यदि गोल आतिशी शीशी होती तो अच्छा होता) पर दो कपरौटी कर तैलोपयोगी वस्तुका दलिया बना बोतलमें भर जो करीब ७ छ० के आताहै, सींकके बराबर मोटे लोहेके तारोंसे मुखबंदकर (सींक नहीं क्योंकि वह तेल पी फूल तैल आना बंद करदेतीहै) बोतलको एक छोटे नदोरेमें बीचमें छेदकर-उलटा रख छेदमेंसे गर्दन नीचेको निकालदे और उस नदोरेको एक तिपाईपर जो गजभरके अन्दाज ऊंची हो रखदे (गजभर इस लिये कि नीचे लंबी नली और पात्र आसके) और तिपाई नीचे कोई छोटे मुंहका बडा शीशेका पात्र रख एक बालिश्तभर लंबी शीशेकी नली बोतलके मुख और नीचेके पात्रके मुखके बीच इस भांति लगादे कि सांस न निकले, नली लगाने और बडा पात्र रखनेका यह आशय है कि भाप भली भांति ठंडी होकर एकत्र होसके बोतलके ऊपर एक टीनका खोल इतना चौडा पहनादे कि जिसमें बोतलके चारों तरफ कमसे कम दो (यदि तीन हो तो अच्छा) अंगुल जगह रहै उसमें बालू भर दे और कंडोंके दोदो अंगुलके छोटे छोटे टुकडे कर (बडे टुकडोंसे आग ज्याद: तेज होजाती है और बिलकुल चूरेमें आचँ बैठती नहीं) उस नदोरेमें प्रथम बार १॥ सेरकी आंच लगादे और डेढ घंटेके बाद ऽ॥ सेरकी दूसरी आंच राखके ऊपर लगादे; और फिर घंटेभर बाद आध सेरकी तीसरी आंच भी ऊपर ही लगादे, और फिर घंटेभर बाद राख निकालकर १ सेरकी चौथी आंच दे, बस इतनेमेंही ऽ३॥ सेरकी आंचसे ४॥ घंटेमें अंकोलादि साधारण कठिन चीजोंका तेल निकल आवेगा जो तोलमें १२ तोलेतक होगा । आंचका यह हिसाब फाल्गुनकीसी हल्की सर्दीके मौसमका है और ऐसे टीनके

खोलका है जिसमें बोतलके चारोंतरफ दोदो अंगुल रेत रहता था यदि रेत ३ अंगुल रक्खाजावेगा या अधिक शीत ऋतु होगी तो कंडोंकी तोल थोडी बढादेनी होगी और यदि गर्म ऋतु होगी तो कुछ घटानी होगी और धत्तूरादि कठिन चीजोंमें चार वारसे अधिक ६ वारतक भी अग्नि लगानेकी आवश्यकता होगी, अवतकके अनुभवसे यही निश्चय हुआ कि पाताल यंत्रद्वारा जो कुछ पदार्थ निकलता है उसको तैल न कहकर चोया कहना उचित होगा, क्योंकि आदिमें जो सफेदी माइल उत्तम पदार्थ निकलताहै वह जलरूप होताहै, और उसमें बहुत कम चिकनाई होतीहै, पीछेसे रक्त कृष्णरूप जो कुछ पदार्थ निकलताहै, उसमें तैलका अंश कुछ अधिक अवश्य होताहै किन्तु उसमें थोडी जलायद अवश्य आतीहै, इस लिये सफेदी माइल पहले निकले चोयेको अलग कर लेना चाहिये और जब सुर्खी आनेलगे तबसे उस तैलमिश्रित पदार्थको अलग रखना चाहिये यदि तैलकी ही आवश्यकता हो तो ऊपरसे नितार नितार कर बहुत थोडा अर्थात् १ सेर चोयेमें आधी छटांक वा १ छटांक तैल संग्रह कर सकतेहैं।

(१) भापी यंत्रद्वारा भाप दे और निचोडकर (२) पानीमें औटा और नितारकर(३) अंग्रेजी क्रियाओंद्वारा भी तैल निकालनेका अनुभव करनायोग्य है।

अंकोलतैलका अनुभव औटाकर।

१५।३।०७ को पावभर अंकोलके बीजोंको जौकुट कर ५ सेर पानीमें १ घंटे औटाया करीब १ सेरके पानी जलचुकनेपर ठंढाकर रक्खा रहने दिया।

तारीख १६ के सबेरे देखा तो पानीके ऊपर बिलकुल चिकनाई न पाईगई अत एव क्रिया निष्फल गई।

मूलीक्षार।

१।१९०४ को ७० गड्डी मूलीकी जड और पत्तोंकी कुटी कर सुखाये गये जो तोलमें १॥ मनसे ज्याद: होंगे सूखजानेपर इनकी राख करलीगई, फिर राखको ५ सेर पानीमें घोल रैनी चुआ कईवार उलट पुलट कर पानी जलालिया गया तो ३ छटांकके करीब क्षार निकल आया, इस खयालसे कि पानी कम पडनेसे क्षार राखमें रहगया फिर राखमें पानी डाल रैनी चुआ पानी जलाया गया तो १छटांक नमक और निकला, कुल क्षारमेंसे श्वेत क्षार पृथक् और मैला पृथक् रक्खागया।

मूलीक्षारका दूसरी बार अनुभव।

१२।३।८ दिसंबरके महीनेमें आई हुई १० सेर हरी कच्ची पतली मूलियोंको पत्तों सहित कतर सुखाया तो १३ छटांक रही, और अब मार्चमें आईहुई १ मनपक्की मूलियोंकी जड और २८॥ सेर मूलियोका पंचाङ्ग सबको घो गंडासीसे कतर सुखाया तो १३ सेर रही, कुल १३ सेर १३ छटांक सूखी मूलियोंको जलाया तो २७ छटांक भस्म तय्यार हुई।

ता० १२।३ को उक्त २७ छटांक भस्ममेंसे (जो छान साफ करनेपर २६ छटांक ही रहगई थी) आधी १३ छटांक भस्मको ६ गुने अर्थात् ५ सेर पानीमें घोल रैनीकी तरह २१ बार चुआलिया जो जल तोलमें ४॥ सेर रहा।

ता० १४ को कडाईमें औटा क्षार बनालिया जो श्वेत रंगतका ४ छटांक ३ तोले तय्यार हुआ किन्तु कहीं २ इसमें पीलापन रहा।

ता० १५ को उक्त अवशेष १३ छटांक भस्मको उसी प्रकार ५ सेर पानीमें घोल २१ बार चुआ लिया जो तोलमें ४ सेर २ छ० रहा।

ता० १९ को कडाहीमें औटा क्षार बनालिया जो ३ छटांक ३ तोले सफेद रंगतका और १ छ० काले रंगका तय्यार हुआ। कालारंग नीचे जलजानेसे होगया था, आंच अधिक लगगई थी।

मूलीक्षारका तीसरी बार अनुभव।

१२।४।८-३० सेर खूब पकी मूलियोंकी जड और १७॥ सेर लकडी कुल १ मन ७॥ सेरको सुखा जलाया तो १४ छटांक भस्म तय्यारहुई।

ता० १२।४ को उक्त १४ छ० भस्मको ऽ५। सेर पानीमें घोल क्षारविधिसे २१ बारचुआलिया जो तोलमें ३ सेर रहा।

ता० १८।४ को कडाहीमें औटा क्षार बनालिया जो १६ तोले श्वेत रंगका और ७ तोले कुछ श्यामता लियेहुए अर्थात् कुल ४ छ० ३ तोले क्षार तय्यार हुआ।

सोंठ क्षार।

ता० २४।५।७ को ३ सेर सोंठको (जो धारकी न थी झूंतरे दार थी) लोहेकी कढाईमें रख तेज आंच बालनी आरम्भ कर दी, करीब पौन घंटे बाद कढाईमें स्वतः आँच लगगई और सोंठ फूल फूल कर नीचे गिरने लगी, ऊपर आग लगते ही नीचेकी आग मंदी करदीगई, १५ मिनटबाद ऊपरकी आंच सुंठिग्रंथियोंके कोयलेकर बुझगई, बादको नीचेकी ज्वलित अग्निको अलगकर कोयलेभरे गर्म चूल्हेपर कढाईको रक्खा रहने दिया।

ता० २५ को उक्त भस्मको देखा तो श्वेत श्याम रंगकी बहुत हलकी भस्म तय्यार हुई जो तोलमें ऽ।- सवापाव थी।

पुनः ता० २७।५ को ११। सेर सोंठ बडे देगमें भर ८ बजेसे तीक्ष्णाग्नि बालनी आरम्भ की और थोडी देरतक देगके ऊपर लोहेकी परात ढाँक दी १॥ घंटेबाद देगके अन्दर भी आंच लगादी और नीचेकी आंच कमकर दी, आध घंटे बाद अर्थात् कुल २ घंटेमें सोंठके कोयले होगये, पश्चात् चूल्हेसे बलती आंच अलग कर जैसेका तैसा चूल्हेपर ही देग रक्खा रहने दिया।

ता० २८ को भस्म निकाली तो इसका भी पूर्वोक्त भस्मका साही रूप था, तोलनेमें १ सेर २॥ छटांक हुई, कढाईमें कीगई ३ सेर सोंठकी भस्मका और देगमें कीगई ११। सेर सोंठकी भस्मका औसत एक पडा।

ता० ३० जूनको उक्त १४। सेर सोंठकी १ सेर ६॥ छ० भस्मको ८ सेर गोमूत्रमें घोल तिपाईमें एक टुकरीकी साफी बांध उसमें २१ बारलौटपौट कर क्षारविधिसे रैनीकी भांति दो दिनमें अर्थात् ता० १ तक चुवालिया जो तोलमें ४। सेर रहगया, गोमूत्रसे इसकी रंगत लाल काली रही।

ता० २ जुलाईको लोहेकी कढाईमें औटालिया, इसमें श्वेत रक्त रंगतका ऊपरका ३३ तोले और रक्तकृष्ण रंगतका नीचेका १६ तोले कुल ४९ तोले क्षार निकला, यह क्षार कडाहीको चूल्हेसे उतारनेके समय कुछ गीला था धूपमें सुखाकर ठीक कियागया था, फिर भी कुछ अंश कृष्ण होगया, चखनेसे यह दोनों प्रकारके क्षार काली मिर्चकी तरह तिक्त थे, किन्तु कृष्ण क्षारसे रक्त क्षारमें विशेष तीव्रता थी ।

नोट–मालूम होताहै कि उपरोक्त कारणसे ही अर्थात् कुछ अंश जलकर कमजोर होजानेके दोषोंसेही शास्त्रकारने इस क्षारयुक्तमूत्रकी रैनीका जलही काममें लियाहै, क्षार नहीं बनाया ।

ता० ७।६।०८ में यह क्षार चुकजानेपर दुबारा सोंठके क्षारकी जगह सोंठका जल ही बनाकर बिडमें लियागया, जिसकी क्रिया बिडके अन्तरगत लिखी गईहै ।

नोट–एक बार रैनीचुई भस्मको दुबारा चुआकर क्षार बनाया तो उसमें दरफ बहुत कम था, अत एव दुबारा निकालना योग्य नहीं ।

चीता क्षार ।

ता० २।७।०७ को २० सेर चीतेको जो हाथरससे २॥–) में आया था, और सफेद रंगका था, कढाईमें भर तीक्ष्णाग्निसे भस्म किया जो तोलमें ऽ।॥– तेरह छटांक हुआ ।

ता० ६ को उक्त ऽ।॥– छ० भस्मको ऽ६ सेर गोमूत्रमें घोल तिखटीमें साफी बाँध क्षार विधिसे रैनीकी भांति १८ बार ता० ८ तक चुवा लिया जो तोलमें १॥ सेर रहा अबकी बार अधिक गोमूत्र सूखजानेका कारण ये मालूम होताहै कि कोठेमें कच्छप यंत्रों व गंधक शुद्धिकी आंचकी गर्मी अधिक रही, और लू अधिक चली ।

ता० ८ को इसको लोहेकी कडाहीमें करीब २ घंटे औटाया तो कोमल क्षार बनगया, अधिक गीला जान गर्म चूल्हेपर रातभर रक्खा रहनेदिया ।

ता० ९ को भी किंचित् नर्मी मालूम हुई अत एव धूपमें सुखा कडाहीसे खुरच तोला तो १९ तोले निकला, रंगत अच्छी रही किंचित् श्यामतायुक्त रक्तवर्ण था।

ता० १०।७ को पहली ही चीतेकी राखमें जिसकी रैनी चुआ लीगई थी, यह शंकाकर कि गोमूत्र सूख जानेसे कदाचित् क्षार इसमें रहगया हो, पुनः १॥ सेर गोमूत्र और डाल क्षार विधिसे १३ बार चुआलिया, ता० १२तक।

ता० १२ को तोला तो ऽ॥ सेर रहगया, इस ऽ॥ सेरको कढाईमें औटालिया जो ६॥ तोले खार रक्त कृष्ण रंगतका निकल आया, जो पृथक् नं० २ का कर रखदिया गया ।

चीताक्षार ।

६।४।०८ हाथरससे आयेहुए ५) रुपये मनके भावके २५ सेर चीतेकी (जिसमें हरा और लाल मिलाहुआ था) कढाईमें जलाकर कीहुई ऽ१॥। सेर भस्ममेंसे जो छानने बीननेपर ऽ१॥ सेर ही रहगई थी आधी अर्थात् १२ छटांक भस्मको ऽ४॥ सेर पानीमें घोल २१ बार चुआलिया। वह जल तोलमें २॥ सेर रहा ।

ता० ९ को औटाकर क्षार बनाया जो तोलमें ८ तोले ९ माशे हुआ, रंगत इसकी मैली रही, उक्त अवशेष १२ छ० भस्मको उसी प्रकार ४॥ सेर पानीमें घोल २१ बार चुआलिया वह जलभी तोलमें २॥ सेर रहा ।

ता० ११ को औटा क्षार बनालिया जो पहले क्षारकीसी ही मैली रंगतका १० तोले तय्यार हुआ ।

ता० ११ को दोनों बारकी रैनी चुआई जाचुकी भस्मको २। सेर पानीमें घोल २१ बार चुआलिया जो १॥। सेर रहा ।

ता० १२ को औटा क्षार बनालिया जो तोलमें ४ तोले पहले ही बारके क्षारोंकीसी रंगतका तय्यार हुआ, इसतरह कुल २२ तोले ९ माशे क्षार तय्यार हुआ ।

नोट–कीमती भस्मकी दो बार रैनी चढानी चाहिये बचाहुआ क्षार दूसरी बारमें सब निकल आता है ।

चीताक्षार ।

११ । १० । ७ हाथरससे आये ७) रुपये मनके भावके ९ सेर चीतेको (जिसमें थोडा हरा और बहुत लाल रंगतका मिला हुआ था) कढाईमें जलाकर कीहुई ६ छटांक भस्मको २। सेर पानीमें घोल २१ बार चुआलिया जो तोलमें १॥ सेर रहा ।

ता० १७ को औटा क्षार बनाया जो कुछ ललोईसी रंगतका ६ तोले तय्यार हुआ ।

ओंगाक्षार ।

२ । १२ । ७ को २ बोझ ओंगेके पेड सुखाकर आंच लगाकर राख करली जो २ सेर हुई ।

ता० २१ को १ सेर १० छटांक ओंगेकी भस्मको छः गुने अर्थात् ऽ९॥। सेर पानीमें घोल रैनीकी तरह क्षार विधिसे २१ बार (ता. २३ तक) चुआलिया जो तोलमें ऽ४। सेर रहा ।

ता० २३ को औटाकर क्षार बना लिया जो भारी और सफेद रंगका ३॥ छ० तय्यार हुआ ।

केलाक्षार ।

ता० ३ । १२ । ७ को ८ केलोंकी १ सेर ५॥ छ० भस्मको ७ सेर पानीमें भिगो रैनीकी तरह क्षारविधिसे २१ बार (ता० ६ तक) चुआलिया जो तोलमें जल ४ सेर रहगया, बादको कढाईमें औटाकर क्षार बनालिया ।

ता० ७ को देखा तो कढाईके चारोंतरफ जो पतला क्षार जमा था वह बहुत सफेद रंगका था, और कढाईके पेंदेमें मोटा क्षार जमा था, वह कुछ गीला रहजानेसे भद्दी रंगतका था, इस गीले क्षारको छुटा फिर अग्निपर सुखाया तो कुछ श्वेतता आगई, किन्तु पूरा सफेद न हुआ, यह दोनों प्रकारके क्षार५छ० ४॥ तोले हुए जो नं०१ समझे गये और इनके अलावह २॥ तोले क्षार और निकला जो कुछ मैला था उसको नं० २ कर रक्खागया ।

नोट–आगेसे कढाई बहुत साफ होनी चाहिये और क्षारका पाक होचुकनेपर कढाईको गर्म चूल्हेपर रक्खी-छोड देना चाहिये, जिससे धीरे क्षार भलीभांति शुष्क होकर अच्छा श्वेत होजावे ।

तिलक्षार ।

ता० ८।१२।७ को ३३ सेर तिलकी लकडियोंकी तय्यार

हुई २ सेर १० छ० भस्ममेंसे १ सेर ५ छ० भस्मको ८ सेर पानीमें घोल रैनीकी तरह क्षार बिधिसे २१ बार(ता० १०तक) चुआलिया जो तोलमें ५ सेर हुआ।

ता० ११ को कढाईमें आटा क्षार बनालिया, रातको कढाई गर्म चूल्हेपर ही रक्खी रही।

ता० १२ को कढाईसे निकाला तो बहुत अच्छी सफेद रंगतका ७ छ० क्षार हुआ।

ता० १२ को उक्त अवशेष १ सेर ५ छ० तिलनाल भस्मको उसी प्रकार ८ सेर पानीमें घोल २१ बार (ता० १४तक) चुआलिया जो तौलमें ५। सेर जलहुआ।

ता० १४ को औटा क्षार बना लिया, पाक होनेके अनंतर२ घंटेतक कढाई कोयलेभरे चूल्हेपर रक्खी रही, बादको निकाल तोला तो ७ छटांक खार बहुत श्वेत रंगतका निकला अर्थात् कुल ३३ सेर तिलकी लकडियोंकी २ सेर १० छटांक भस्मसे १४ छटांक क्षार बहुत स्वच्छ तैयार हुआ।

काँटेदार थूहरक्षार।

ता० ८।२।८ थूहरको काट सुखादिया, दूधका वृक्ष होनेसे और जाडेका मौसम होनेसे कई महीनोंमें सूखा।

ता० ८ को ११ सेर ६ छटांक थूहरकी सूखी लकडियोंकी १ सेर ६ छटांक भस्मको ६ सेर पानीमें घोल रैनीकी तरह २१ बार चुआलिया जो तोलमें ४ सेर हुआ बादको कढाईमें औटा क्षार बनालिया जो बहुत श्वेत रंगका २२ तोले हुआ।

यवक्षार।

ता०३१।३।८। १०) रुपयेमें खरीदे कच्चे $\frac{1}{2}$ बीघे जौके खेतको जो गद्दर होगयाथा, और अभी अध पकाथा काट सुखा जलाया तो ३२ सेर भस्म तय्यार हुई, जिसको छाना तो २६॥ सेर रहगई, ५॥ सेर छानन जुदा रहगया।

उक्त २६॥ सेर भस्ममेंसे प्रतिबार १॥ सेर भस्मको छःगुने अर्थात् ९ सेर पानीमें घोल घोल क्षार विधिसे २१ बार चुआ कढाईमें औटा क्षार तय्यार करलिया, प्रति बारमें लगभग ५॥ सेर रैनीका जल और ८॥ छ० क्षार होता था, इसप्रकार १८ बार रैनी चढी और २६॥ सेर भस्ममेंसे ९ सेर १४ छ०१तोले ९ माशे क्षार निकला जिसमें से ८ सेर ७ छ० ३ तोले ९ माशे उत्तम क्षार बहुत श्वेत नं १० और १ सेर ६ छटांक ३ तोले मध्यम क्षार कुछ मैली रंगतका निकला ५॥ सेर राखके छाननको जिसमें कुछ कोयले और कुछ राख थी (कुछ कंकडी भी थी) कंकडी बीन साफ कर ३ घान १ सेर १०॥ छ० के कर उपरोक्त प्रकारसे १० सेर पानीमें चढा क्षार बनाया तो प्रतिबारमें लगभग ६॥। सेर रैनी और ६। छ० क्षार बैठा जो कुल १ सेर ३ छटांक तय्यार हुआ, रंगत इसकी मैली रही कारण यह कि इसकी रैनीका पानी पीत रंगका था, ये क्षार उपरोक्त मध्यम क्षारमें मिलादिया गया, इन तीनों घानोंमेंसे भी पहले घानकी अपेक्षा पिछले दो घान कम मैलेथे क्योंकि इनकी रैनीको मैला समझ एक रात ठहरा नितार साफ कर औटाया और भट्टीपर अधिक न सूखने दिया, रबडीसा होजानेपर ही नीचेसे आंच निकाल कडाहीको भट्टीपर रक्खी छोड दिया, बस फिर अपने आप खुश्क होकर क्षार तय्यार होगया, जो कम मैलारहा। सब क्षार ऽ११ सेर १ छ० १ तोले तय्यार हुआ, जिसमें उत्तम नं. १–८ सेर ७ छटांक ४ तोले, मध्यम नं. १–७ छ० २ तोले, मध्यम नं. २–१० छ० २ तोले, मध्यम नं. ३–९ छ० ३ तोले, मध्यम नं ४–१४ छटांक रैनी चढीहुई भस्ममेंसे अवशेष क्षार निकालनेके लिये पुनः २ सेर भस्मको १० सेर पानीमें चढा २१ बार लौट (५॥। सेर रैनीका जलरहा) क्षार बनाया तो १६ तोले हुआ, अर्थात् दुबारामें पहली बारसे $\frac{1}{3}$ तोल बैठी और रंगत इसकी बहुत मैली रही, और खानेमें भी तेजी न थी, अत एव बाकी भस्ममेंसे क्षार निकलना मुलतवी रक्खा।

(१) अनुभव–जब राख खूब जल जातीहै तो उसमें श्वेतता आजातीहै, और उसकी रैनीका रंग भी श्वेत निर्मल रहताहै, क्षारभी बहुत श्वेत रंगका तैयार होताहै, और जब राख कम जलतीहै तो उसमें कोयले रहजानेके कारण राख काले रंगकी होजातीहै, और उसके रैनीके जलकी रंगत पीली और क्षार मैला बनता है, और तेलमें कम बैठताहै।

(२) अनुभव–क्षार औटाते समय भी इतना ध्यान अवश्य रखना चाहिये कि ग्रीष्म ऋतुमें जब क्षार तय्यार होनेपर आवे और रबडीसा गाढा होजावे तभी आंच बंद कर कढाईको कोयले भरी भट्टीपर रखी छोडदे फिर उसी गर्मीसे सूखकर श्वेत क्षार तय्यार होजावेगा, यदि इसमें अधिक देरतक अग्नि दीजावेगी तो अग्निकी गर्मीसे तलीमें जलकर क्षारमें श्यामता आजायेगी।

(३) अनुभव–एक बारकी चढी रैनीको यदि दुबारा चढाया जावे तो उसमेंसे प्रथमबारकी अपेक्षा $\frac{1}{3}$ क्षार मैला और कम तेज निकलताहै।

सज्जीक्षार।

ता० १९।६।०७ को ।) सेरकी १ सेर सज्जीको पीस आठसेर जलमें घोल एक तिखटीके ऊपर टुकरीकी साफी बांध उसमें २१ बार लौट पौटकर क्षार विधिसे रैनीकी भांति तारीख २१ तक चुआलिया।

ता० २२ को तोला तो ५। सेर जल हुआ, इस पानीको लोहेकी कढाईमें समाग्निसे २॥ वा ३ घंटेमें औटाया तो तीन मेलका क्षार बनगया, ऊपरका जो बहुत हलका था और श्वेत था, वह ११ तोले हुआ, और जो जरा भारीसा पीलकाई लिये था वह ६ तोले था, इससे भी जरा और भारी चूरा जो कडाहीके तलेसे लग कर काला होगया था, १० तोले था, कुछ अंश क्षारका कडाहीमें लगा रहगया, वह जब न छुटसका तब पानीका छीटा दे रातभर रक्खा रहने दिया।

ता० २३ को खुरचा तो पतली पापडीकी शकलका १२ तोले और निकला इसतरह ४ मेलका कुल ३९ तोले क्षार हाथ लगा, तीसरे और चौथे नंबरके २२ तोले क्षारको साफ करनेके लिये तामचीनीके पात्रमें अन्दाजन १ सेरके करीब जल भरकर उसमें उसको डाल रखदिया।

ता० २४ को देखा तो नीचे मैल काली रंगतका जमगया, और ऊपर पीली रंगतका पानी रहगया उस पानीको नितार लिया।

ता० २५ को लोहेकी कडाहीमें औटाया तो १ घंटेमें सब पानी जलगया और क्षार उफन उफन कर खजलाकी

शकलका होगया, इस बार कुछ गीला रक्खागया था, अत एव धूपमें सुखा तौला तो कुल १९ तोले हुआ, इसकी श्यामता दूर होगई और रंग स्वच्छ होगया, इस्तरह १ सेर सज्जीमें कुल ३६ तोले क्षार निकला।

सज्जी शुद्धिका अनुभव।

ता० २३।५।०७ की शामको पावभर काली सज्जी ।≤) सेर वालीको पीसकर पौनके करीब जलसे भरे घडेमें डाल शरावसे ढक संधि बंधकर एकान्तमें रखदिया।

ता० ३०।५ तक यह घडा कई जगह रक्खा रहा, खोल कर देखा तो ऊपर खारा पानी पाया और नीचे सज्जीकी कीचसी जमी पाई, घडेके ऊपर कुछ सज्जीका अंश दिखाई नहीं दिया।

नोट-विदित होता है कि या तो सज्जी कम जोर है,या घडा ज्यादः पकाहुआ है या पुराना है नया चाहिये। घटसे निकले जलको कडाहीमें जलाया तो ४ तोले २ माशे क्षार श्वेत वर्ण था।

नोट-सज्जीको पीस क्षारक्रियावत् रैनी चुआ क्षार सिद्ध करना ही ठीक होगा।

ता० ९ जूनको अर्थात् १७ दिनबाद फिर इस घडेपर नजर पडी तो घडेके ऊपर सफेद रंगका अधिक अंश देख नेमें आया, अत एव निर्वात स्थानमें चिरकालतक घडा रखनेसे सज्जी अवश्य शुद्ध होसक्ती है।

सज्जी शुद्धिका पुनः अनुभव।

ता० १५।६।०७ को ।) सेरवाली ऽ॥ सेर सज्जीको पीस १० सेरके करीब पानी आनेवाली कमोरीको पूरा पानीसे भर उसमें उस सज्जीको घोल सरवेसे ढक रखदिया।

ता० १६ को फिर उसे घोला और कमोरीका मुख सरवेसे बंद कर कपरौटी कर नाँदसे ढक कोठेमें रखदिया

ता० २३ को नाद उठा कमोरीको देखा तो उसके ऊपर सज्जीका अंश प्रत्यक्ष न दृष्टि पडा, किन्तु कमोरीके नीचे पानी रिसतासा अवश्य दीखपडा, अब कमोरीके ऊपरसे नाँद अलग करदी, और कमोरीको जैसेकी तैसी रक्खी रहनेदिया।

ता० २५ को फिर देखा तो अब भी कुछ अंश सज्जीका कमोरीके ऊपर न दीखपडा. १० दिनतक कुछ लाभ न दीखनेसे कमोरीसे जल पृथक् कर नितार औटालिया तो ३ छटांक क्षार बैठा, जिसमेंसे २ छटांक उजला रखलिया, १ छ० जो किंचित् मैला था; गौरीशंकरजीको देदिया।

नोट-यह क्रिया दो बार कीगई फलदाई नहीं हुई यद्यपि असंभव नहीं है, किन्तु झगडा विशेष और लाभ शंकित है, अत एव त्याज्य है, यह हांडी खाली पडी रही, ५ जूनको देखा तो सफेदीसी होगई थी, यदि चिरकालतक इसमें जल भरा रहने दियाजाता तो कुछ सज्जीक्षार हाथ अवश्य आता।

नौसादर शुद्धि- (पातनद्वारा)।

ता० २३।५।०७ को ऽ॥ सेर नौसादर पीस ढाई छटांक जंभीरीका रस डालागया जिस्में वह खडीसा होगया, आज घंटेभर घोटागया, (नौसादर)रस कम चाहता है और मुश्किलसे खुश्क होता है।

ता० २४ को ६॥ बजेसे ९ बजेतक फिर घोटागया, ३॥ घंटेकी घुटाईमें उसमें खुश्की आती गई, परन्तु पूरी खुश्की न आनेके कारण साफीसे ढककर धूपमें रखदिया शामतक सूखता रहा, खूब सूखगया।

ता० २५ को हांडीमें भर दूसरी हांडीसे डमरू यंत्र बना २ कपरौटी कर धूपमें सूखनेको रखदिया, यह दोनों हांडियाँ ऐसी थीं जिनमें चार चार सेर पानी आता था।

ता० २६।५ को यंत्र रक्खा रहा।

ता० २७।५ को यंत्रके ऊपरकी हांडीपर गोबरके लेपका घेरा बना १ प्रहर मन्दाग्नि और तीन प्रहर पहुंचेसी मोटी दोदो लकडियोंकी समाग्नि दी, और गोबरके लेपसे खाली पेंदेपर भीगा कपडा डालते रहे, पश्चात् यंत्रको चूल्हेपर ही रक्खा रहनेदिया।

ता० २८।५ को खोला तो नीचेके हांडीके पेंदके जितने भागपर प्रज्वलित अग्नि लगी उतनेमें नौसादर न था, ऊपर चढगया था, १२ तोले ऊपरकी हांडीमें उड कर जो लगा जो वजनमें बहुत हलका फूलसा बारीक और रंगतमें बेसनीसा था, नीचेकी हांडीके जिस भागपर प्रज्वलित अग्नि न लगी थी उस ऊपरी भागपर १५ तोले नौसादर मिला, उसकी भी रंगत ऊपर उडेहुये फूल जैसी ही थी परन्तु यह भारी कडा और कच्चे ही जैसा दरदरा था इस नीचेकी हांडीमें २ तोले ऊपरकी हांडी कासा अच्छा फूल भी पेंदेमें निकला जो शायद ऊपरकी हांडीमेंसेही झरपडा होगा और इसमें कुछ काली चीजका भी मेल होगया था, जो नीचेकी हांडीका मैल होगा इस तरह ४० तोले नौसादरमेंसे तीन मेलका कुल २९ तोले बजन मिला, ११ तोले छीज गया।

नोट-क्या नौसादरका वर्ण पातनमें पीत होजाना आवश्यक है, या मंदाग्निसे श्वेत भी रहसक्ताहै।

अवशेष नौसादरका पुनःपातन।

ता० ३०।५।०७ को पहली बारके पातनमें नीचेकी हांडीमें मिले १७ तोले नौसादरको साढे पांच पांच सेर पानी आनेवाले चौडे मुँहके तौलोंमें (अर्थात् मिट्टीके खमडे जिनके किनारे घिस लिये गये थे) रख डौरू कर कपरौटी करदीगई।

ता० ३१ को १ प्रहर मन्दाग्नि और ३ प्रहर मोटी लकडियोंकी समाग्नि दीगई, बादको जैसेका तैसा चूल्हेपर रक्खा छोडदिया।

ता० १।६ को खोला तो १० तोले नौसादरका फूल पहलेसाही किन्तु रंगमें कुछ अधिक सुनहरा ऊपर जा लगा नीचेकी हांडीके पेंदेमें करीब ४ माशेके निःसार मैल और गर्दनमें १० माशे नौसादर कुछ उतरीहुई रंगतका दरदरा मिला,६ तोले छीजन गई, अर्थात् ४० तोलेके पातनमें २२ तोले फूल मिला।

नोट-नौसादर पातनमें चौडे मुँहके तौले ही ठीक रहेंगे, और ५ सेर पानी आनेवाले पात्रमें २५ वा ३० तोलेका पातन ठीक होगा, अधिकका पातनकासा उचित नहीं, अग्नि ऐसी हो जो नीचेके पात्रके कुल पेंदेको ढकती रहै, अर्थात् जैसी खिचडीके नीचे दीजाती है। पातनमें आधेसे कुछ ज्यादः फूल मिलता है, पातनसे वर्ण श्वेत रह सक्ता है वा नहीं इसका निश्चय फिर कभी करनेयोग्य है।

नौसादर, सुहागा, फिटकरीका सत्त्व-पातन।

ता० ३।६।०७ तोले नौसादर १० तोले चौकीका सुहागा और १० तोले फिटकरी तीनोंको पीसी किन्तु पीसते २ गीला होगया (गालिबन कमरेमें खसकी टट्टी लगी रहनेसे सील पहुँची होगी) इस लिये धूपमें रखदिया।

ता० ४।६ को भी फुर्सत न होनेसे थोडी देर पीसा और रक्खारहा।

ता० ५ को फिर २ घंटे पीसा किन्तु खूब बारीक न हुआ, तोलमें इस समय २५ तोले हुआ ५ तोले छीजन गई, इस २५ तोलेको ५॥ सेर पानी आनेवाले चौडे मुँहके तोलमें रख दुकरीकी दो कपरौटी कर धूपमें सुखादिया।

ता० ६ को यह डौरू धूपमें सूखता रहा।

ता०७ को भी रक्खा रहा।

ता० ८ को ऊपरकी हांडीपर गोबर लगा भीगा कपडा निचोडा हुआ डाल ७ बजेसे ७ बजेतक १२ घंटे मंद, मृदु, सामान्य अग्नि दीगई तो पहले सत्त्व पातनसे कुछ हलकी थी बादको यंत्र जैसेका तैसा चूल्हेपर रक्खा छोडदिया।

ता० ९ को खोलागया तो ऊपर उडा हुआ ३॥ तोले फूल हलका और बिलकुल सफेद रंगतका मिला, नीचेकी हांडीमें ११ तोले काली रंगतकी खंगरकी शकलकी दवा निकली, जिसके ऊपर २॥ तोले फूलका सफेद रंगतका ढिम्मा कुछ कडा मिला ये ढिम्मा उपरकी हंडीसे गिरपडा था और ऊपरकी हांडीमें उस अंशमें जमा था जिसपर भीगा कपडा पडा था, इस तरह कुल ६ तोले फूल और ११ तोले दवा मिली ८ तोले छीजनगई।

अवशेष नौसादरादिका पुनःपातन।

ता० १० को नीचेकी हांडीका ११ तोले ढिम्मा जो मैली रंगतका था उसे पीस बारीक कर इसमें १। तोले अच्छा फूल भी गलतीसे मिलगया, इस वास्ते १२। तोले वजन होगया, किन्तु हांडीमें भरते समय जो तोला तो ११। तोलेही रहा, ९ माशे खरलमें छीजगया, उक्त ११। तोलेको पहले ही बडे तौलेमें रख डौरू बना दो कपरौटी कर धूपमें सुखादिया।

ता० ११ को यह डौरू रक्खा रहा।

ता० १२ को १२ घंटे मन्द सामान्य आंच दीगई, और ऊपर तीन चार तहका भीगा निचोडा कपडा डालते रहे, बादको जैसेका तैसा रक्खा छोडदिया।

ता० १३ को खोलागया तो ऊपरके तोलेके पेटमें १ तोले ३ माशे रवादार फूल बहुत श्वेत वर्णका मिला और इस तौलेकी गर्दनमें ३–४ अंगुल चौडा जो चिपटा हुआ मिला, वह भी रंगतका सफेद और फूलही था, किन्तु इसमें रवे और चमक न थी और तोलमें १ तोले २ माशे हुआ, और इसीके नीचे३ माशे और निकला जो इससे भी मैली रंगतका था, इसतरह ऊपरके तौलेमें सब २ तोले २ माशे वजन निकला, नीचेके पात्रमें ४ तोले १० माशे निकला, जिसमें १ तोले १० माशे मैले रेतकी शकलका निकला, और ३ तोले सख्त खंगरकी शकलका नीच निकला, इसके अलावा १॥ तो० के अंदाज चिपटा हुआ खंगर रहगया जो छूट न सका, अर्थात् सब २ तोले ८ माशे उडाहुआ हाथ आय ४ तोले १० माशे अवशेष निकला, १॥ तोले छुट न सका कुल ९ तोले हुआ, ३॥ तोले छीजन गई।

नोट–अवशेष वस्तुको दुबारा पातनसे कोई लाभ नहीं हुआ, केवल (२ तो० ८ मा० १ तोले ३ माशे फूल जो इसमें गिरपडा था) १ तोले ५ माशे हाथलगा, फल यह हुआ कि, ३० तोलेमें ७ तोले ५ माशे हाथ आया।

नौसादरादिका तीसरा डौरू।

ता० १५ को नौसादर ११ तोले, फिटकिरी १० तोले, सुहागा १० तोले तीनोंके ३१ तोले वजनको बारीक पीस रखदिया।

ता० १६ को भी थोडी देर पीसा और सील जानेसे धूपमें सुखाया किन्तु थोडा सीला रहा, बादको खरलसे निकाल तोला तो २९ तोले रहा, २ तोले छीजगया, इस २९ तोले वजनको पूर्वोक्त तोलोंमें रख डौरूकर तीन कपरौटी कर सूखने को रखदिया।

ता० १७ को १ प्रहर मंद और ३ प्रहर समाग्नि दे जैसेका तैसा चूल्हेपर रक्खा छोडदिया।

ता० १८ को खोलागया तो ऊपरके पात्रके पेंदेमें २ तोले ९ माशे फूल निकला, यह फूल दानेदार था, किन्तु पहलीसी सफेदी और चमक न थी, और उसी तौलेके पेटे और गर्दनमें ३ तोले निकला वह बारीक सफेद किन्तु वजनदार था, इससे कुछ मैली रंगतका ६॥ माशे और निकला, और नीचेके तौलेके पेटे और गर्दनमें १०॥ माशे तीसरे नंबरका मैली रंगतका नौसादर और पेंदेमें ९ तोले ९ माशे दवा जलीहुईकी राख मिली, इसतरह ७ तोले २ माशे दवा और ९ तोले ९ माशे राख मिलकर १७ तोले ११ माशे वजन मिला, ११ तोले १ माशे छीजनगई।

नोट–अबकी अग्नि अधिक तीव्र लगगई, और पानीका कपडा भी ऊपर न पडा था, जिससे नीचे रही वस्तु जलगई, और उडी वस्तुका रंग और चमक उत्तम न रही।

नौसादरादिका दुबारा पातन (चौथा डौरू)

ता० २०। ६। ०७ को प्रथम बारका ४ तोले ७ माशे और द्वितीय बारका १ तो० २ मा० और तृतीय बार ५ तोले ६ माशे कुल ११ तोले ३ माशे वजनको नये तौलोंमें (जो पहलोंसे हलके थे और जिनके किनारे घिसलिये थे) भर कपरौटी कर धूपमें सुखादिया।

ता० २१ को ४ प्रहर एक मोटी लकडीकी जिसकी झर हांडीके पेंदेसे बाहर नहीं निकलती थी, मंदाग्नि दीगई और ऊपर भीगा निचोडा कपडा डालागया, बादको जैसेका तैसा रक्खा छोडदिया।

ता० २२ को खोलागया तो नौसादरादिका कुल अंश उडकर बहुत बारीक फूल होगया था, और सुनहरी रंगत आगई थी, किन्तु कुल नौसादर ऊपरकेही तौलेमें न था, आधा एक नीचेकी भी हांडीमें गिरगया था, ऊपरकेमें ४ तोले और नीचेकेमें (३ तोले ३ माशे) + (१ तोले ५ माशे) = ४ तोले ८ माशे निकला। नीचे ऊपरकेमें कुछ विशेष अन्तर दृष्टि न पडता था, किन्तु नीचेकेमें कुछ भारीपन था इस वास्ते पृथक् २

रक्खे गये, और उपरोक्त १ तोले ५ माशे नीचे पेंदेकी राखके मिलजानेसे अधिक मैला होगया था, और नीचेके तौलेका पेट खुरचनेसे पतली पापडीसा १ तोले २ माशे और निकला, इसतरह कुल (११ तो० ३ माशेमें) ७ तोले ३ माशे स्वच्छ फूल और २ तोले ७ माशे मैला फूल सब ९ तोले १० माशे वजन मिला, १ तोले ५ माशे छीजन गई।

नौसादरादिका पांचवाँ डौरू।

ता० २३ । ६ । ०७ को नौसादर, सुहागा, फिटकिरी सात सात तोले ले बारीक पीसा सीलजानेसे धूपमें सुखा रखदिया।

ता० २४ को तोला तो २१ तोलेकी जगह छीजकर १७ तोले रहा इसमें ४ तोले पहले पातनोंका मैला फूल मिलादियागया, कुल २१ तोलेको हलके तौलेमें भर डौरू कपरौटीकर धूपमें सुखादिया।

ता० २५-२६ को डौरू रक्खारहा।

ता० २७ को ४ प्रहर मंदाग्नि दीगई, और ऊपर भीगा निचोडा कपडा डाला गया, बादको जैसेका तैसा चूल्हेपर रक्खा छोडदिया।

ता० २८ को खोला और तोला तो ऊपरवाले तौलेमें बिलकुल साफ ९ माशे फूल निकला, और ऊपरका गिरा ढिम्मा और ऊपर नीचेके तौलोंके पेट और गर्दनसे जो छुटाया और जो राखसे छूकर मैला होगया था वह मिलाकर ४ तोले ३ माशे हुआ और जो पोंछनेसे अधिक मैला होगया, वह १ तोले १ माशे हुआ, बाकी खंगरकी शकलकी जली ७ तोले २ माशे राख निकली, इसतरह ३ मेलका कुल ६ तोले १ माशे फूल और ७ तोले २ माशे राख यानी १३ तोले २ माशे वजन निकला, ८ तोले २ माशे छीजन गई।

नोट—इस बार आंच तो मंद दीगई थी, परन्तु तोले हलके होनेके कारण और माल कम होनेके कारण और ७ बजे सायंकालतक अग्नि देनेके कारण अग्नि अधिक समय तक लगनेसे नीचेकी तलझट जलगई।

नौसादरादिका छठा डौरू।

ता० ३०।६।०७ को नौसादर, सुहागा, फिटकिरी आठ आठ तोले ले खरलमें पीस सीलजानेसे धूपमें सुखा तौला तो २४ तोलेका २१ तोले रहा, उस २१ तोलेमें पहले पातनका मैला फूल १ तोले १ माशे डाल २२ तोले १ मासे कर भारे बडे तोलेमें भर कपरौटी कर धूपमें सुखा रखदिया।

ता० १ । ७ को ४ प्रहर मंदाग्नि दीगई, और ऊपर भीगा कपडा डालागया, बादको जैसेका तैसा चूल्हेपर रक्खा छोडदिया।

ता०२ को देखा तो ऊपरके पात्रमें २ तोले ९ माशे सफेद रंगका बारीक फूल मिला और नीचेकी तौलेकी गर्दनमें ९ माशे और पेटमें १ तोले ४ माशे एक दूसरीसे उतरी हुई रंगतका मिला, इस तरह सब चार तोले १० माशे फूल हाथ लगा, और इस फूलके अलावा १ तोले १० माशे और भी फूल नीचे निकला परन्तु यह राखसे छूकर अधिक मैला होगया था, इस वास्ते कामका न समझा नीचे जली राख जो अधिक आंच लग जानेसे काली होगई थी ९ तोले निकली, इसतरह (२२ तोले १ माशेमें) ४ तोले १० मा० फूल और १० तोले १० माशे निःसार पदार्थ हाथ लगा, ६ तोले ८ माशे छीजनगई अबकी बार भी आंच अधिक लगी, जिससे नीचेका पदार्थ जलगया।

नौसादरादिके दुबारा पातनका सातवाँ डौरू।

ता० २।७।०७ को ४ तोले ३ माशे और ९ माशे सब ५ तोले फूल पांचवें डौरूका और २ तोले ९ माशे + १ तोले ४ माशे + ९ माशे सब ४ तोले १० माशे फूल छठे डौरूका कुल ९ तोले १० माशे वजनको हलके तौलोंमें रख कपरौटीकर धूपमें रखदिया।

ता० ३ को ३ प्रहर मंदाग्नि दीगई और ऊपर भीगा निचोडा कपडा डालागया, बादको चूल्हेके नीचेसे कोयले निकाल रक्खा रहने दिया।

ता० ४ को खोला गया तो ऊपरके पात्रमें पीली बेसनी रंगतका फूल २ तोले ३ माशे निकला, और नीचेकेमें पीत श्वेत रंगका ढिम्मा ५ तोले ३ माशेका मिला जो आंच पूर्ण समयतक न लगनेसे बेउडा रहगया था, इसी ढिम्मेके नीचे १ तोले १ माशे मैल निःसार निकला, इससें कुछ अंश इस ढिम्मेका भी मिलगया था, इस तरह २ तोले ३ माशे उडाहुआ और ५ तोले ३ माशे बेउडा और १ तोले ७ माशे जलाहुआ मैल सब मिलाकर ८ तोले ७ माशे वजन हाथ लगा, १ तोले ३ माशे छीजन गई। अबकी बार आंच कमदेरतक लगी इसलिये काम ठीक नहीं हुआ।

नौसादरादिके तिबारा पातनका आठवाँ डौरू।

ता० ४ । ७ । ०७ को सातवें डौरूके कच्चे रहे ५ तोले ३ माशे नौसादरको उन्हीं तौलोंमें भर कपरौटीकर धूपमें सुखादिया।

ता० ५ को ३ प्रहर मंदाग्नि दीगई और ऊपर भीगा निचोडा कपडा डालागया, बादको जैसेका तैसा चूल्हेपर रक्खा छोडदिया।

ता० ६ को देखा तो सब फूल उडगया, और बहुत स्वच्छ सुनहरी रंगत आगई, नीचेके तौलेके पेंदेमें माशे दो माशे काला मैल रहगया—दोनों तौलोंमेंसे ४ तोले स्वच्छ फूल निकला और ३ माशे फूल नीचेके तौलेकी तलीकी राखसे छूकर मैला होगया था, और ७ माशे नीचेके तोलेके पेटसे पोंछकर निकाला था, था, यह कुछ वजनी और रवादार था, इस लिये १० माशे अलग रक्खागया इस बार (५ तोले ३ माशेमें) ४ तोले फूल और १० माशे मैला फूल मिलाकर ४ तोले १० माशे वजनहाथ लगा, ५ माशे छीज गया।

नोट।

(१) पहली बार दुबारा पातन एक बारमें ही ठीक होजानेसे निम्न लिखित फल हुआ।

रक्खागया	निकला
११तोले ३ माशे	उत्तमफूल ७ तो०३ मा०
	मैल २ तो०७ मा०
	छीजन १ तो०५ मा०
	११ तोले३ मा०

(२) अबकी बार दुबारा पातन दो बारमें होनेसे निम्न लिखित फल हुआ।

रक्खागया	निकला
९ तोले १० माशे	उत्तम फूल ६तोले३ मा०
	मैल १तोले११मा०
	छीजन १तोले८ मा०
	९तोले१०मा०

दोनों बारका नतीजा एकसाही हुआ, अर्थात् स्वच्छ फूल ३/५ से कुछ कम हाथ आया।

नौसादरादिके तिबारापातनका नवां डौरू।

ता०६।७।०७ को दो बारका उडाया ६॥ तोले बहुत स्वच्छ बेसनी रंगके नं. २ फूलको हलके तौलोंमें भर कपरौटीकर धूपमें सुखादिया।

ता० ४ को ४ प्रहर मन्दाग्नि दीगई, और ऊपर भीगा कपडा डाला गया बादको जैसेका तैसा चूल्हेपर रक्खा छोडदिया।

ता० ८ को खोलागया तो २ तोले ८ माशे फूल ऊपर नीचेके तौलोंमें उडा हुआ मिला, बाकी ३ तोले २ माशे बे उडा रहगया, इसतरह कुल (६॥ तोलेमें) २ तोले ८ माशे स्वच्छ बेसनी रंगका उडाहुआ और ३ तोले २ माशे बे उडा सब ५ तोले १० माशे माल निकला, ८ माशे छीजन गया।

नोट–इस बार आंच यद्यपि ४ प्रहर लगी, किन्तु बहुत कम लगी इस कारण सब न उडा।

नौसादरादिके तिबारापातनका दशवां डौरू।

ता० ८।७।०७ को दो दफेके उडाये नं. १ के ६ तोले फूलको (जो ६॥ तोले था रक्खा रक्खा घुटकर ६ तोले रहगया था) उन्हीं तौलोंमें भर कपरौटीकर रखदिया।

ता० ९ को ४ प्रहर मंदाग्नि दीगई, किन्तु पहली बारसे कुछ अधिक और ऊपर भीगा निचोडा कपडा डालागया, बादको जैसेका तैसा चूल्हेपर रक्खा छोडदिया।

ता० १० को खोलागया तो सब फूल उडाहुआ मिला, कुछ ऊपरके तौलेमें था, और कुछ नीचेकेमें; नीचे ऊपरके फूलको अलग २ कर तोला तो ऊपरके तौलेमें २ तोले ६ माशे फूल बहुत बारीक और स्वच्छ बेसनी रंगका निकला, नीचेकेमें १० माशे निकला, इन दोनोंके रंग रूपमें कुछ अन्तर न था, किन्तु हाथसे छूनेमें नीचेका किंचित् मोटा मालूम होता था, इस वास्ते इस १० माशेको पहलेके तिबारा उडे २ तोले ८ माशेमें शामिल कर नं० २ का करदिया, और ऊपरवालेको दूसरी शीशीमें भर नं० १ का करलिया, ऊपर नीचेके तौलेके पोंछनेसे ७ माशे भारी दरदरा फूल और निकला इसको पिछले डौरूकी बे उडी दवामें शामिल करदिया इसतरह इस बार (६ तोले वजनमें) २ तोले ६ माशे नं. १ और १० नं. २ का मिलाकर ३ तोले ४ माशे उत्तम फूल और ७ माशे दरदराफूल कुल ३ तोले ११ माशे वजन हाथ लगा, २ तोले १ माशे छीजन गई।

नौसादरादिके तिबारा पातनका ग्यारहवां डौरू।

ता० १०।७।०७ को नवे डौरूका ३ तोले २ माशे बे उडा फूल और दशवें डौरूका ७ माशे दरदरा सब ३ तोले ९ माशे फूलको उन्हीं तौलोंमें रख कपरौटीकर धूपमें सुखादिया।

ता. ११ को ३ प्रहर मन्दाग्नि दीगई, और ऊपर भीगा कपडा डालागया बादको जैसेका तैसा चूल्हेपर रक्खा छोडदिया।

ता. १२ को खोलागया तो सब फूल उडगया ऊपरके तौलेमें १ तोले ६ माशे और नीचेके तौलेमें ५ माशे सब १ तोले ११ माशे फूल बहुत स्वच्छ बेसनी रंगका निकला, ३ माशे फूल नीचेके तौलेके खुरचनेसे जो मैले होजानेसे कामका न समझा इसतरह ३ तोले ९ माशे वजनमें १ तोले ११ माशे उत्तम फूल और ३ माशे मैला फूल कुल २ तोले २ माशे वजन हाथ लगा, १ तोले ७ माशे छीजन गई। १ तोले ६ माशे नं. १ में शामिल कियागया, ५ माशे नं० २ में शामिल कियागया।

फल नौसादरादिके सत्त्व पातनका।

(नं० १) ३६ तोले नौसादर३५तोले सुहागा, ३५ तोले फिटकिरी सब१०६ तोलेको४ दफेमें उडाया तो १ बारका उडा २२ तोले अर्थात् ३/५ से कुछ कम फूल हाथ लगा।

(नं० २) इस २२ तोलेको जो २१ तोलेही रहगया था, फिर ३ बारमें उडाया तो दो बारका उडा १३॥ तोले फूल हाथ लगा अर्थात् ३/५ से कुछ कम हाथ आया।

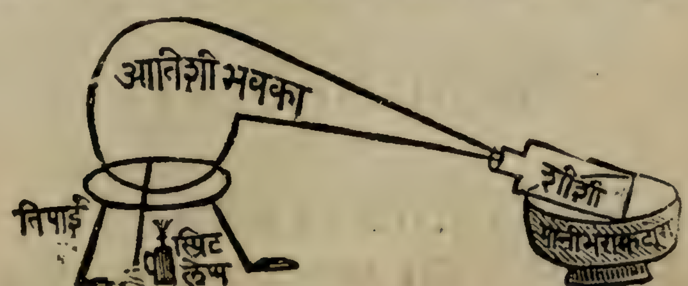
(नं० ३) इस १३॥ तोलेको जो १२॥ तोले ही रहगया था, फिर ३ बारमें उडाया तो ७ तोले ११ माशे फूल तिबाराका उडा हाथ लगा, अर्थात् ३/५ से कुछ कम।

मौजूद तोल तीन बार उडे सत्त्वकी

नं० १	४ तोले
नं० २	३ तोले ११ माशे

द्राव।

ता० १३।१०।०७को५तोले नौसादर,५ तोले,फिटकिरी, और ५तोले जवाखार,अंगरेजी(Carbonate of Potash) कुल १५ तोले, वजनको खरलमें पीस आतिशी शीशेके भबकेमें भरदिया और उक्त भबकेको लोहेकी तिपाईपर रख उसकी नलीको दूसरी चौडे मुंहकी बोतलमें प्रवेशकर इस बोतलको पानी भरे कटोरेमें तिरछा रखदिया। बोतलका नीचेका भाग पानीमें रहा ऊपर चार पांच तहका भीगा कपडा डालदिया। बादको ७॥ बजेसे स्प्रिटकी आंच दी। २॥ बजेपर भबका चटकने लगा इसवास्ते काम बंद करदिया गया। (यह भबका पहलेसेही चटका हुआ था



कपरौटी कर कर काम लिया था) ४ बजे भबकेकी नलीसे

बोतल अलग कर द्रावको तोला तो २ तोले १०॥ माशे स्वच्छ रंगतकाद्राव निकला और भबकेमें १०॥ तोलेको उक्त तीनों चीजोंका ढिम्मासा निकला जिसके ऊपर नीचे सफेदी और बीचमें हलकी कालोंछ थी द्राव चखनेमें बहुत तेज न था और उडे हुए नौसादरकासा स्वाद था ।

सम्मति-थोडेसे द्रावको छोटी प्यालीमें भर उसमें धेलेको डाल रखदिया और रातभर पडा रहनेदिया । सबेरे देखा तो द्राव गाढा होगया था और रंगत तूतियेकीसी होगई थी । इससे ज्ञात हुआ कि यह द्राव ताम्रको चरताहै।

शुकपिच्छकाँजीका अनुभव ।

ता० १ । १ । ०९ को नं० १ की २ सेर कांजीमें सज्जीक्षार, फिटकिरी, कसीस, सुहागा और लवण २-२ तोले पीसकर डाल ताम्रपात्रमें भर रखदिया सब दवाओंके पडचुकनेपर कांजीके ऊपर फैनसा होगया जो कुछ देर बाद करीब २ बैठगया ।

ता० ५। १ को देखा तो झाग न थे कांजीका रंग अभी हरा नहीं हुआ ।

सम्मति-शास्त्रकारने कांजीसे षोडशांश औषधि लिखीहै इस लिये सब औषधियां मिलाकर षोडशांश डालीगई थीं किन्तु जब बहुत दिन रक्खे रहनेपर भी कांजीमें हरियाई नहीं आई तो यह समझा कि प्रत्येक औषधि षोडशांश लेनी चाहिये अत एव । ता० २६ । १ को उक्त औषधि ८-८ तोले और डाल १०-१० तोले कर दीगई और प्रातः काल रोज उसे एक बार लौटपौट करतेरहे ।

ता० १४ । २ तक इसी प्रकार किया किन्तु कांजीमें हरियाली न आई अत एव ता० १५ । २ को गाढी जान थोडा पानी मिला ज्योंकी त्यों रक्खी रहने दी ।

ता० १७ । २ को उक्त कांजीको रैनीकी भांति चुआया तो दो दिन रातमें भी भलीभांति न निचुड कर एक सेर जल नीचे टपका जो पीली मिट्टीके रंगका था और १५ छटांक कांजिक युक्त फोक रहा जो फेंक दिया और १ सेर जलको उसी पात्रमें भरकर रख दियागया कभी २ पात्रको हिलातेरहे और जो हरियाली पात्रमें इधर उधर उत्पन्न होतीरही उसे खुरच उसी जलमें डालतेरहे ।

ता० २। ५ को देखा तो पतीलीमें करीब करीब २ छटांकके जल रहगया था जिसके ऊपर नीला लवण तैररहा था और कुछ किनारोंपर इधर उधर जमरहा था उस सबको उठा खुरच सुखा तोला तो ७ माशे हुआ उसे शीशीमें भर दिया और उस पतीलीमें करीब ४ छटांकके कांजी और डाल रखदी गई ।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मज-व्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया भाषा-टीकायां तैलनिष्कासनादिनिरूपणं नाम त्रि-चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४३ ॥

कल्पाध्यायः ४४.

अंकोलबीजकल्प (शहदसे)

तद्बीजचूर्णं मधुना पक्षमात्रं च सेवितम् । यः कोपि सेवते मर्त्यो जरायुक्तो युवा भवेत् ॥ १ ॥ (औषधिकल्पलता.)

अर्थ-शहदके संग इस अंकोलके बीजके चूर्णको जो एक पक्ष (१५ दिन) तक सेवन करे वह वृद्धावस्थासे युक्त भी मनुष्य युवा होजाता है ॥ १ ॥

सर्पविषनाशक अंकोलबीजप्रयोग (शहदसे)

एकविंशद्दिनं तस्य बीजं क्षौद्रसमन्वितम् । भजंतं मानुषं दष्ट्वा सद्यः सर्पो मृतिं नयेत् ॥ २ ॥ (औषधिकल्पलता)

अर्थ-इक्कीस दिनतक उसके बीजोंको शहदमें मिलाके खातेहुए मनुष्यको काटनेसेही सर्प तत्काल मरजाता है अर्थात् इसके सेवन करनेवाली व्यक्तिको सर्पका विष नहीं चढता है ॥ २ ॥

त्रिफलाकल्प ।

हरीतक्यास्त्रयो भागा धात्र्या द्वादशभागकाः । षड्भागाश्च बिभीतस्य त्रिफलैका प्रकीर्तिता ॥ ३ ॥ खदिरस्य रसे सप्तरात्रं भृंगरसेन वा । बिडंगपयसा सप्त सप्तब्रह्मरसेन वा ॥ ४ ॥ त्रिफलां भावयेदित्थं भक्षयेच्छर्करासमम् । वलीपलितनिर्मुक्तः सर्वरोगैः प्रमुच्यते ॥ ५ ॥ (औ. क.)

अर्थ-हर्ड तीनभाग, आँवला बारहभाग, बहेडा ६ भाग इसप्रकार इनका त्रिफला होताहै । इसको सात रात्रितक खैरके रसमें फिर सात रात्रितक भाँगरे सात दिन बायविडंग और सातदिन ढाकके रसमें भावना दे, इसप्रकार भावित त्रिफलाको बराबरकी खाँडके संग भक्षण करे तो बुढापेकी (सफेद बाल उत्पन्न आदि) व्याधि से छूट जाता है और सब रोग दूर होतेहैं ॥३-५॥

अन्यच्च ।

त्रिनिष्कमात्रा ह्यभया षण्मितं च बिभीतकम् । धात्री द्वादशनिष्काख्या त्रिफलासूक्ष्मचूर्णितम् ॥ ६ ॥ चूर्णं बिडंगखदिरं भृंगराजभवाम्बुभिः । पलेन सप्तधा भाव्यं मासमात्रनिषेवणात् ॥ ७ ॥ बलीपलितनिर्मुक्तः षण्मासाद्दिव्यदेहता। इति संवत्सराभ्यासात्सहस्रायुर्भवेन्नरः॥८ ॥ (औ.क.)

अर्थ-तीन निष्क (१२ माशे) हर्ड, २४ माशे बहेडा, ४८ माशे आँवला ऐसे त्रिफलाका बारीक चूर्ण बनाके फिर बायविडंग, खैर और भाँगरा इनके चार तोले रसमें सात-सातबार इस चूर्णको भावना देके एक महीनातक सेवन करे तो सफेद बाल नहीं आते और छः महीनेमें दिव्यशरीर होजाता है इसी प्रकार वर्षदिनतक अभ्यास करनेसे हजार वर्षतक जीवित रहता है ॥ ६-८ ॥

भांगरेसे भावित त्रिफलाका कल्प ।

तद्रसे त्रिफलाचूर्णं भावितं पलितापहम् ।

१ यह कै लाता है ।

त्रिपक्षमात्रं जंतूनां नात्र कार्या विचारणा ॥ ९ ॥ (औ. क.)

अर्थ–इस भाँगरेके रसमें त्रिफलाके चूर्णको भिजोकर लगावे तो सफेद बालोंको दूर करता है (अर्थात् काले बाल होजाते हैं) तीन पक्ष अर्थात् डेढमहीनेमें निश्चय मनुष्योंके (काले केश होते हैं) ॥ ९ ॥

त्रिफला मकोय भांगरेसे भावित कल्प।

काकमाचीरसो भृङ्गरसेन सह भावितः। द्वादशाहाद्भवेज्जंतोः पलितस्तंभनं परम् ॥ ॥ १० ॥ (औ. क.)

अर्थ–मकोय और भाँगरेसे भावित त्रिफलाचूर्णके सेवनसे सफेद बाल नहीं होते ॥ १० ॥

दुग्धसे मंडूकब्राह्मी कल्प।

मंडूकब्राह्मीं संगृह्य शुक्लपक्षे शुभे दिने। पत्रमूलान्विता शोष्या छायायां कृतचूर्णकम् ॥ भक्षयेत्तु गवां क्षीरे सर्वरोगप्रणाशनम् ॥ ११ ॥ (औ. क.)

अर्थ–मण्डूकब्राह्मीको शुक्लपक्षमें शुभदिन विषे ग्रहण करलावे छायामें सुखाकर चूर्ण बनाके गौके दूधके संग पीवे तो सम्पूर्ण रोग दूर होते हैं ॥ ११ ॥

रुद्रवंती कल्प।

रुदंती जरया दृष्टं नरं दृष्ट्वा वदत्यपि। मयि च विद्यमानायां कथं क्लिश्यन्ति मानवाः ॥ १२ ॥ रुदंती नाम विख्याता जराव्याधिविनाशिनी। चणपत्रोपमैः पत्रैर्युक्तांभोबिंदुवर्षिणी ॥ १३ ॥ चतुर्विधा च सा ज्ञेया पीता रक्ता सिताऽसिता। तामौषधीं समासाद्य शुक्लपक्षे शुभे दिने ॥ १४॥ छायाशुष्कां च तां कृत्वा भक्षयेन्नियतेन्द्रियः। विरेचं वमनं कृत्वा बिडालपद मात्रया ॥ १५ ॥ भक्षयेन्मधुसर्पिर्भ्यां मासमेकं महौषधम्। जीर्णान्ते भोजनं कुर्याद्दुग्धभक्तं नरो यदि ॥ १६ ॥ दृढकायोऽतितेजस्वी सर्वरोगैः प्रमुच्यते। वलीपलितनिर्मुक्तो परमायुस्ततो भवेत् ॥ १७ ॥ सूक्ष्मचूर्णं ततः कृत्वा स्थापयेत्कटुतुंबके। कर्षमात्रप्रमाणेन भक्षयेच्च शुभे दिने॥१८॥ मधुसर्पिर्भिरालोड्य कृष्णगोक्षीरभोजनम्। षण्मासस्य प्रयोगेण वज्रकायो भवेन्नरः ॥ ॥ १९ ॥ पंचाङ्गं भक्षयेद्यस्तु सर्वरोगं निवारयेत। बिडालपदमात्रं तु मधुसर्पिःसमन्वितम ॥ २० ॥ जीवेद्वर्षशतं पंच वलीपलितवर्जितम्। पाने लेपे तथा नस्ये विषं हन्ति च भक्षणात् ॥ रुदंतीमूलचूर्णं तु विडंगेनैव योजितम् ॥ २१ ॥ (औ. क.)

अर्थ–रुदन्तीनामक औषधि बुढापेसे पीडित हुए नरको देखकर कहती है कि मेरे विद्यमान रहते मनुष्य क्यों दुःख पाते हैं। रुदन्ती नामसे प्रसिद्ध बुढापेकी व्याधिको नष्ट करनेवाली चनेके पत्तोंके समान पत्तोंवाली तथा जलकी बिन्दुसदृश बिन्दुवोंवाली होती है, वह रुदन्ती पीली, सफेद, लाल, काली इन भेदोंकरके चार प्रकारकी जाननी चाहिये और उस औषधिको शुक्लपक्ष तथा शुभ दिनमें लावे, छायामें सुखाके जितेन्द्रिय हो उसको नित्य भक्षण करे, विरेचन वमन करके इस महान् औषधिको शहदघृतके संग एक तोला प्रमाण खाय, पाचन होजानेपर दूधचावलका भोजन करे वह नर दृढ शरीरवाला, अत्यन्त तेजस्वी हो और सब रोगोंसे छुटजाता है। सफेद बाल नहीं आते, परम आयु होतीहै फिर इसके चूर्णको बारीक कर कडवी तूंबीमें भरकर धरे एक तोला भरको शहद और घृतमें मिलाके शुभदिनमें खाय पथ्य भोजन करै और कालीगौके दूधका भोजन करै छः महीनेतक प्रयोगको करे तो सब रोगोंसे छूट जाताहै इसके पंचांगको भक्षण करे तो सब रोग दूर होतेहैं। शहद और घृतके संग एक तोला सदैव इसका सेवन करे तो पांचसौ वर्षतक जीवित रहता है और सफेद बाल नहीं होते, पान करनेसे, लेप करनेसे तथा नस्य लेनेसे वा भक्षण करनेसे वायविडंगके संग युक्त कियाहुआ रुदन्तीका चूर्ण विषको दूर करताहै ॥१२--२१॥

दुग्धसे तृणज्योति कल्प।

रात्रौ प्रज्वल्यते नित्यं तृणेन सदृशं भवेत्। तस्य मूलं समादाय क्षीरमध्ये निवेशयेत् ॥ २२ ॥ तत्क्षणाज्जायते रक्तं तत्तु क्षीरं पिबेद्बुधः। सप्तरात्रप्रयोगेण वलीपलितवर्जितः ॥ २३ ॥ क्षीरेण नियताहारो लवणाम्लं च वर्जयेत्। द्विरष्टवर्षाकारोसौ जीवेद्वर्षसहस्रकम् ॥ २४ ॥ (औ. क.)

अर्थ–जो तृणके समान होती है रात्रीमें नित्य अग्निकी तरह प्रकाशित होती रहती है उसकी मूलको लाके (ज्योतिष्मती) मालकांगनीकी जडको लाकर दूधमें भिगोदे उस दूधको पीवे उसी क्षणमें रक्त वढे सातदिनतक इसके प्रयोगके करनेसे सफेद बाल नहीं होते, दूधके संग नियमसे भोजन करे खारी तथा खट्टा भोजन नहीं करे तो सोलह वर्षकी अवस्थावालेके समान सुन्दर होकर हजारवर्षतक जीवित रहता है ॥ २२–२४ ॥

सेंभलके पेडके रसका कल्प।

तद्वृक्षरंध्रे निक्षिप्य सरंध्रां लोहनालिकाम्। विन्यस्य भांडे तस्याधो दहेत्पुटगताग्निना ॥ २५ ॥ तन्निःसृतं रसं यस्तु जनोपि मधुना पिबेत्। अनेककामरूपी स्यान्नानारूपं प्रपश्यति ॥२६॥ (औ.क.)

अर्थ–उस वृक्षमें छिद्रकर उसमें छिद्रवाला लोहेका नल लगाकर उसका मुख वर्तनमें धरकर नीचेसे गजपुट अग्नि करके आँच देवे। उसमें होकर निकलेहुए रसको शहदके संग पीवे तौ अनेक रूपमें प्रवेश होनेवाला हो ॥ २५॥२६॥

सेंभलकी जडके रसका कल्प ।

आदायारुणशाल्मल्यास्तरुणांघ्रिभवं रसम् । सिताक्षौद्रयुतं पीतं कुर्याद्वज्रनिभं वपुः ॥ २७ ॥ (औ. क.)

अर्थ-लाल सालवणकी नवीन जडका रस निकाल मिश्री और शहद डालके पीवे तो वज्रके समान शरीर होताहै२७॥

सेंभलकी जडके रसका कल्प ।

खन्यते शाल्मलीमूलं सरसं तन्निकृष्यते । ऊर्ध्वं पूर्वमधः पश्चाद्दीर्घं नीत्वा च तत्क्षणात् ॥ २८ ॥ निश्चोत्यते शुभे भांडे गंगानीरसमप्रभम् । पुनर्निवृत्यते नीरं मूलं किंचिन्निकृंत्यते ॥ २९ ॥ पुनराश्चोतते मूलं तत्तस्या भाजने भृशम् । अनेन तु प्रकारेण पुनरन्यत्तदा नयेत ॥ ३० ॥ एवं क्रमेण कर्तव्यं शाल्मलीसत्त्वसाधनम् । पलं द्विपलमात्रं वा पीयते सत्त्वमुत्तमम् ॥ ३१ ॥ अतिशीतमतिश्वेतमतिसौम्यकलामयम् । सर्वरोगोपशमनं जरापलितनाशनम् ॥३२॥ खंडशो याति तद्रक्तं रक्तपीतं महोल्बणम्। रक्तरूपाश्च ये मेहा रक्तप्रदरकाणि च॥३३॥ दाहं ज्वरं महाघोरं तत्क्षणाच्च प्रणाशयेत्। यावन्तो रक्तपित्तोत्था रोगास्तानाशु नाशयेत् ॥ ३४ ॥ यौवनस्थं वपुष्कुर्यात्कलाकांतिर्विवर्द्धते । षण्माससेवनाच्च स्यादायुर्वर्षशतत्रयम् ॥ ३५ ॥ (र. सा. प.)

अर्थ-सेमरकी जड खनके गीली उस जडके ऊपरी भागको कुचलकर रस निकालले, पीछे नीचेके भागका रस निकाले इसप्रकार बडी जडका क्रमशः जल निकलनेपर वह कमती होजायगी सुन्दर स्वच्छपात्रमें उस गंगाजलसदृश रसको रखले, जहांतक रस निकलसके इसीप्रकार फिर भी निकालता जावे, इसप्रकार सेमरके सत्त्वका साधन करना चाहिये । तैयार होजानेपर एक वा दो पल वह पिया जाता है वह बहुत ठंढा, अतिसफेद, बहुत सुन्दर कलायुक्त, सब रोगोंका नाशकारी, वृद्धावस्था और बालोंके पकनेको नाश करनेवाला है। लाल या पीले वर्णका कैसा ही रुधिर हो उसके विकार तथा रक्तप्रमेह और रक्तप्रदरोंको तत्काल नाश करता है। दाह भयंकर ज्वरको शीघ्र नाश करता है, रक्तपित्तजन्य सभी रोगोंको नाश करता देहमें नई जवानीका सञ्चार करता सुन्दरताको बढाता है । इसके ६महीने सेवन करनेसे तीन सौ वर्षकी आयु होती है ॥ २८-३५ ॥

सेंभलके फूलके स्वरसका कल्प ।

तत्पुष्पस्य रसं पीतं बालार्ककरसन्निभम् । कलाभिर्निखिलाभिश्च तत्पूर्णः सुभगो भवेत ॥ अनेककालजीवी स्याद्रमते च यथा-सुरः ॥ ३६ ॥ (औ. क.)

अर्थ-उसके पुष्पके रसको पीवे तो उदय होतेहुए सूर्यके समान (लाल) कांतिवाला होताहै । सब कलाओंसे परिपूर्ण ऐश्वर्यवान् हो अनेक वर्ष तक जीवे और देवताओंकी तरह रमण करताहै ॥ ३६ ॥

सेंभलके फूलके चूर्णका कल्प ।

पुष्यार्के मधुना तस्याः प्रसूनजनितं रजः। आज्येन सेवनं कुर्याद्बलं तद्वत्पराक्रमम् ॥ ॥ ३७ ॥ (औ. क.)

अर्थ- जब पुष्य नक्षत्र पर सूर्य आवे उसदिन उसके पुष्पकी रज शहद और घृतके संग सेवन करे तो बल पराक्रमकी वृद्धि होती है ॥ ३७ ॥

बाजीकर पूप (पूये वा गुलगुले) सेंभलीकी जडके ।

तन्मूलवाजिगंधाभ्यां युताभ्यां माषशर्करा । घृतेन शोभितापूपानेकविंशद्दिने भवेत् ॥ ३८ ॥ नवनागबली श्रीमानम्लक्षारं न सेवयेत् । प्रगल्भकामिनीबृन्दमदनिर्मथनक्षमः ॥ ३९ ॥ (औ. क.)

अर्थ-उस(सेंभल)की जड असगंध,खांड,उर्दोंका चून इन सबके साथ घृतमें पकायेहुए मालपूओंको इक्कीस दिनतक भक्षण करे नव हाथियोंके समान बलवान और शोभावान होताहै । खट्टा और खारी पदार्थ खाना नहीं चाहिये ऐसा करनेसे स्त्री समूहके कामदेवका मंथन करनेमें समर्थ होताहै ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

सेंभलके फूलका मर्दनार्थ तैल ।

तत्पुष्पभृंगराजाभ्यां तैलमुत्पलकंदजम् । पाचितं स्वशरीरे च केशपादविलेपितम् ॥ सप्ताहात्पलितं हन्ति कपाले केशरंजनम् ॥ ॥ ४० ॥ (औ. क.)

अर्थ- उस सेंभलके पुष्प, भंगरा, कमलकन्द तेल इन सबको पकाके अपने शरीरमें तथा बाल और पैरोंमें लगानेसे सातदिनमें बुढापेके सफेद बालोंको दूर कर उनको काले करताहै ॥ ४० ॥

दूधसे मूसली कल्प ।

पयसा मुशलीचूर्णं शुद्धकायः पिबेत्सुधीः। शतमायुरवाप्नोति शतस्त्रीगमने पटुः॥४१॥ (औ. क.)

अर्थ-दूधके संग मुसलीके चूर्णको शुद्धशरीरवाला होके पीवे तो सौवर्षकी अवस्थावाला और सौस्त्रियोंके संग रमण करनेवाला होताहै ॥ ४१ ॥

दूधसे पुष्टिकर मूसलीप्रयोग ।

क्षीरेण पीता सा हन्याद्वक्षोरुक् कृष्णकायताम् ॥ ४२ ॥ (औ. क.)

अर्थ-दूधके संग पीहुई यह मूसली छातीका रोग शरीरका कालापन इनको दूर करती है ॥ ४२ ॥

घीशहदसे मूसली कल्प ।

मूलं तस्याः समुद्धृत्य च्छायाशुष्कं सुचू-

णितम् । मधुसर्पिर्युतं भुक्तं देहः शुद्धो शुभे दिने ॥ ४३ ॥ जीर्णे क्षीरेण भोक्तव्यं वातलानि विवर्जयेत् । वलीपलितनिर्मुक्तो मासयोगेन मानवः ॥ ४४ ॥ (औ. क.)

अर्थ–इसकी जडको छायामें सुखाकर चूर्ण बनावे फिर शहद और घृतके संग शुभदिनमें खानेसे कोष्ठकी शुद्धि होतीहै औषधि जरजावे तब दूधके संग भोजन करे और बादी करनेवाले पदार्थोंका भक्षण न करै ॥४३॥४४॥

अन्यच्च ।

अतिश्वेता च मुसली कृष्णापि मुसली स्मृता । तन्मूलं च समुद्धृत्य च्छायाशुष्कं विचूर्णितम् ॥ ४५ ॥ कर्षमध्वाज्यसंयुक्तं प्रातः शुद्धः समुल्लिहेत् । जीर्णे दुग्धान्नभोजी स्यात्क्षारान्नंतु विवर्जयेत् । षष्ठे मासि भवेद्बालो वृद्धोऽपि लभते धियम् ॥ ॥ ४६ ॥ (औ० क०)

अर्थ–प्रातःकाल शौचादिसे शुद्ध होकर शहद अथवा घृतके संग एक तोला खावे औषधिका पाक होनेपर दूधका भोजन करे खारी और चर्चरे भोजनका परित्याग कर देना चाहिये, छठे महीनेमें बालक अथवा वृद्ध हो तोभी बुद्धिमान होजातेहैं ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

घीसे वाजीकरमूसलीप्रयोग ।

घृतेन सहितं तस्य चूर्णं वीर्यविवर्द्धनम् । नारिकेलाम्बुना पीतं शिरोविस्फूर्तिनाशनम् ॥ ४७ ॥ (औ. क.)

अर्थ–घृतके संग इसके चूर्णको भक्षण करे तो वीर्य वृद्धि होतीहै । नारियलके जलके साथ पीवे तो शिरकी भडक दूर होतीहै ॥ ४७ ॥

दुग्धसे मुंडीचूर्ण कल्प ।

छायाशुष्कं च तच्चूर्णं कर्षं गोपयसा सह । वर्षेकेन रुजं हंति जीवेद्वर्षशतत्रयम् ॥ ४८ ॥ (औ० क०)

अर्थ–छायामें सुखाया हुआ मुंडीका चूर्ण १० माशे गौके दूधके साथ एक वर्षतक पीवे तो सब पीडा दूर हो और तीनसौवर्षतक जीवित रहताहै ॥ ४८ ॥

तक्रादिसे मुंडीपञ्चाङ्ग कल्प ।

भिक्षूत्तमांगपरिकल्पितनामधेयं तत्पत्रपुष्पफलदंडसमूलचूर्णम् । तक्रारनाल पयसा मधु वारिणाज्यं षण्माससेवननराजरामरत्वम् ॥ ४९ ॥ (औ० क०)

अर्थ–गोरखमुंडीके पत्र, पुष्प, दंड, मूल और फल इस पंचाङ्गके चूर्णको तक्र, कांजी, दूध, शहद और घृतके संग सेवन करनेवाले जन बुढापेसे रहित होकर अमर होतेहैं ॥ ४९ ॥

ढाकफूलप्रयोग कल्प ।

आतपे शोषितं तस्य प्रसूनजनितं रजः । क्षीरेणार्द्रीकृतं स्निग्धभांडे विन्यस्य संस्थितम् ॥ ५० ॥ एवं विंशदिनादूर्ध्वं सुमुहूर्ते शिवान्तिके । तद्भक्षेत्पयसाहारं कांजिकाम्लादिवर्जितम् ॥ ५१ ॥ एकविंशदिनात्तस्य कल्पेन खेचरो भवेत् । बलेन जायते भीमसेनतुल्यपराक्रमः ॥ ॥ ५२ ॥ जरामरणनिर्मुक्तो न कदाचित्क्षयं व्रजेत् । तद्वच्चूर्णं समादाय पलमात्रं पिबेद्यदि ॥ ५३ ॥ चतुष्पलेन दुग्धेन मासमात्रं न संशयः । तन्मूत्रेण प्रशांतोष्णं ताम्रं स्वर्णत्वमाप्नुयात्। अनेककालं जीवी स्यात्कंदर्प इव मूर्तिमान् ॥५४॥(औ०क०)

अर्थ–ढाकके पुष्पोंको घाममें सुखाकर उनकी रजको दूधमें भिजोकर चिकने बर्तनमें भर धरे इक्कीसदिन पीछे सुन्दर महूर्तमें शिवजीकी मूर्तिके समीप दूधके संग उसको भक्षण करे और काँजी आदि खट्टे पदार्थोंके भोजनका परित्याग करदेना चाहिये इक्कीसदिनतक इस कल्पका सेवन करनेसे आकाशमें उडने (गवनकरने) वाला होजाताहै और बलमें भीमसेनकी बराबर पराक्रमवाला होताहै । वृद्धावस्था और मृत्युसे रहित होकर कभी नष्ट नहीं होता और इसीप्रकारके इसचूर्णको एकपल (४ तोले) ग्रहणकर । चारपल (सोलहतोले) दूधके संग केवल एक महीनेतक पीवे तो उस मनुष्यके मूत्रमें बुझाया हुआ तप्त तांबा सोना होजाताहै और बहुत चिरायु होताहै और कामदेवके समान सुन्दर रूपवान् होताहै ॥५०–५४॥

तक्रसे ढाकपत्र कल्प ।

पत्राणि ब्रह्मवृक्षस्य कोमलानि विशेषतः । छायायां शोषयित्वा तु लोहभांडे विनिक्षिपेत्॥५५॥सूक्ष्मचूर्णं विधायेत्थं ब्रह्मचारी विशेषतः।गृहीत्वा चैव पुण्याहे सुलग्ने सुमुहूर्तके ॥ ५६ ॥ मंगलं च प्रकर्तव्यं प्रारंभे हि विचक्षणैः । पलं चूर्णस्य संगृह्य तक्रेण सह यः पिबेत् ॥ ५७ ॥ जीर्णान्ते भोजनं पथ्यं लवणाम्लविवर्जितम् । तृषितस्तु पिबेत्क्षीरमथवा शीतलं जलम्॥५८॥मासमात्रप्रयोगेण जायते ह्यमरोपमः । षण्मासस्य प्रयोगेण कर्णिकारसमद्युतिः । सहस्रायुर्भवेद्धीमान्वलीपलितवर्जितः ॥ ॥ ५९ ॥ (औ० क०)

अर्थ–ढाकवृक्षके कोमल पत्तोंको छायामें सुखा लोहेके बर्तनमें भरकर विशेष करके जितेन्द्रिय हुआ उनका सूक्ष्म (बारीक) चूर्ण बनावे फिर पवित्र दिन शुभलग्न और अच्छे मुहूर्तमें ग्रहण करे पंडितजनोंने इसके आरम्भमें मंगल करना भी कहा है, इस चूर्णको एकपल ग्रहण करे छाछके संग पीवे पचजानेके बाद पथ्य लवण और खटाईसे वर्जित भोजन करे, जब तृषा लगे तब दूध अथवा शीत जल पीवे, तीन महीनेतक इस प्रयोगके करनेसे देवताओंके समान

होजाता है, छः महीनेतक सेवन करनेसे अमलतास अथवा कन्हेरकी समान लाल पुष्ट शरीर होता और हजार वर्षकी आयुवाला बुद्धिमान् सफेद बालोंसे वर्जित होता है ५५–५९

दुग्धसे ढाकछाल कल्प ।

वल्कलं ब्रह्मवृक्षस्य सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत् । तच्चूर्णं तु शुभं ग्राह्यं गवां क्षीरेण यः पिबेत् ॥ ६० ॥ पयसा सह भुंजीयाल्लघ्वाहारो जितेन्द्रियः । संवत्सरप्रयोगेण चैवं भवति लक्षणम् ॥ ६१ ॥ तस्य मूत्रस्य षण्मासाल्लोहं भवति कांचनम् । शतवर्षसहस्राणि स जीवेन्नात्र संशयः ॥ ६२ ॥ (औ० क०)

अर्थ–ढाक वृक्षकी छालका सूक्ष्मचूर्ण बनाके उस शुभ चूर्णको ग्रहणकर गौके दूधके साथ पान करे और दूधके साथ हलका भोजन करे जितेन्द्रिय रहे तो वर्ष दिनके प्रयोगसे ऐसा लक्षण होताहै कि उसके मूत्रमें छः महीनेतक लोहा सुवर्ण होजाता है और सैकडों हजारों वर्षोंतक वह जीवित रहता है इसमें संदेह नहीं ॥ ६०–६२ ॥

सफेदढाकके पञ्चाङ्गका कल्प ।

श्वेतपालाशपंचाङ्गं चूर्णितं मधुना सह । कर्षकं भक्षयेन्नित्यं व्याधिमृत्युजरापहम् ॥ ब्रह्मायुर्जायते सिद्धिः स्पर्शमात्रे न संशयः ॥ ६३ ॥ (औ० क०)

अर्थ–सफेद ढाकके पंचांगके चूर्णको शहदके संग एक तोला सदैव भक्षण करे तो व्याधि, मृत्यु, बुढापा ये सब दूर होते हैं । ब्रह्माके समान आयु होती है और स्पर्शमात्रसेही निःसंदेह सिद्धि होजाती है ॥ ६३ ॥

ढाकके पत्ते फूल बीजका कल्प ।

पत्रं पुष्पं फलं ग्राह्यं सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत् । कृष्णगोक्षीरसंयुक्तं भक्षयेद्वा समाहितः । द्विरष्टवर्षकायोऽसौ जीवेद्वर्षशतत्रयम् ॥ ॥ ६४ ॥ (औ० क०)

अर्थ–इस ढाकके पत्र, पुष्प, फल ग्रहणकर सूक्ष्म चूर्ण बनावे, काली गौके दूधके संग पीवे अथवा सावधान होकर भक्षण करै तो यह सोलह वर्षकी अवस्था सरीखा होकर तीनसौ वर्षतक जीवित रहता है ॥ ६४ ॥

ढाकबीज एकएकका कल्प ।

एकैकं भक्षयेद्बीजं तिलशर्करया सह । संवत्सरप्रयोगेण शृणु वक्ष्यामि तत्फलम् । पूर्वोक्तानां फलं तत्तु यत्फलं तस्य जायते॥ ॥ ६५ ॥ (औ० क०)

अर्थ–तिल और खांडके संग ढाकके एकएक बीजको वर्षदिनतक भक्षण करै इसके फलको सुनो कहताहूं ॥ ६५ ॥

घीशहदसे ढाकबीज कल्प ।

पलाशबीजचूर्णं समभागाभ्यां मध्वाज्याभ्यां सहितमग्निबलानुसारेण निद्राकाले भुक्त्वा पुरुषो जयति ॥ ६६ ॥ . औ० क०)

अर्थ–बराबर भाग शहद और घीके साथ ढाकके बीजोंके चूर्णको बल औ अग्निके अनुसार सोनेके पहले सेवन करे तो बलकी वृद्धि होती है ॥ ६६ ॥

ढाकबीजप्रयोग कल्प ।

धात्रीरसेन तद्बीजचूर्णं सम्यग्विभावयेत् । सप्ताहं पयसा तद्वच्छोषयित्वा ततः पुनः॥ ॥ ६७ ॥ सप्ताहं सेवनात्तस्य दूरदृष्टिर्भवेन्नरः। तेजसा सूर्यसंकाशो ह्याह्लादे चन्द्रमा इव ॥ ६८ ॥ अतिदारुणवेगेन वायुं बुद्ध्या बृहस्पतिम् । वाचा सरस्वतीं जित्वा जीवेदाचंद्रतारकम् ॥ ६९ ॥ (औ० क०)

अर्थ–इसके बीजोंके चूर्णको आँवलेके रसमें अच्छे प्रकारसे भावना दे फिर उसीतरह सातदिनतक दूधमें भिजोये रक्खे फिर पीछेसे सातदिनतक उसका सेवन करनेसे दूरतक दृष्टि पहुँचानेवाला नर होता है, सूर्यकी समान तेजवाला और चन्द्रमाके समान आनन्ददायी प्रिय शीतल होजाता है । अत्यन्त दारुण वेगके द्वारा पवनको, बुद्धिसे बृहस्पतिको, एवम् वाणी करके सरस्वतीको जीतके चन्द्रमा और तारागणकी विद्यमानतापर्य्यंत जीवित रहता है ॥ ६७–६९ ॥

ढाकबीजसे सिद्ध घीका प्रयोग कल्प ।

पलाशबीजचूर्णंतु प्रथमे चैव गृह्यते । भाद्रे वा श्रावणे वापि द्विगुणं च पचेत्पयः ॥ ७० ॥ विश्राम्य दिनमेकं तु स जातं च भवेदपि । दधिमंथप्रयत्नेन नवनीतं च गृह्यते ॥ ७१ ॥ समुद्धृत्य प्रयत्नेन यवान्नसहिताशनः । भोजनं शालिभक्तेन गवां क्षीरेण संयुतम् ॥ ७२ ॥ मासैकं ब्रह्मचूर्णेन वलीपलितवर्जितः । श्रुतिज्ञः सर्वतत्त्वज्ञो जीवेद्वर्षशतत्रयम् ॥ ७३ ॥ गोक्षीरशालिभोजी स्यात्क्षाराम्लमपि वर्जयेत् । सर्वेषामपि योगानामयं श्रेष्ठः प्रकीर्तितः ॥७४॥ सर्पवृश्चिकदंशोत्थं कीटवानरसंभवम् । स्थावरं जंगमं चापि कृत्रिमं चापि यद्विषम् । अजीर्णं विविधं भूतं सर्वत्र विषनाशनम् ॥ ७५ ॥ (औ० क०)

अर्थ–पहले ढाकवृक्षके बीजोंका चूर्ण श्रावण अथवा भाद्रपद महीनेमें ग्रहण करे उसमें दूने दूधको पकावे फिर एकदिन बासी धर देवे फिर जब वह जम जावे तब दही बिलोनेकी क्रियासे उसमेंसे नैनीघृत निकाले यत्नपूर्वक निकालेहुए घृतको यव (जौ) अन्नके संग भोजन करे और दूधके साथ साठी चावलोंका भोजन करै, एक महीनेतक (पूर्वोक्त) ढाकके चूर्णके साथ सेवन करनेसे सफेद बाल नहीं होते और सेवनकर्ता बलिष्ठ होता है, वेद और सब तत्त्वोंको जाननेवाला, तीनसौ वर्षतक जीवे, गौका दूध

और चावलोंको भोजन करे, नमक और खटाईको त्याग दना चाहिये। सब योगोंमें यह श्रेष्ठ कहा है। सर्प बीछूके डसनेसे उत्पन्न तथा कीडे वानरआदिसे उत्पन्न स्थावर जंगम कृत्रिम विष और अनेक प्रकारका अजीर्ण सब विष इन सबोंको नष्ट करनेवाली है॥ ७०–७५॥

घीसे ढाकतैलप्रयोग कल्प।

ब्रह्मतैलं पलं ग्राह्यं घृतेन सहितं पिबेत्। महायोगी भवेत्प्राज्ञो मूर्खश्चैव प्रजायते॥ क्षीराहारप्रयत्नेन मासमेकं पिबेन्नरः। अदृश्यो जायते सोपि छिद्रं पश्यति मेदिनीम्॥ ७७॥ अग्निना दह्यमानोपि तस्य मृत्युर्न जायते। दशवर्षसहस्राणि वलीपलितवर्जितः॥ ७८॥ (औं० क०)

अर्थ–ढाकका तेल एक पल ग्रहण कर घृतके साथ उसको पान करे वह यदि मूर्ख हो तौभी महायोगी और बुद्धिमान् होजाता है और जो व्यक्ति दूधका आहार करे एक महीनेतक पीताहै वह अदृश्य होजाताहै। पृथ्वीमें छिद्र देखनेकी शक्ति होतीहै और यदि वह अग्निमें भी जलजाय तोभी उसकी मृत्यु नहीं होतीहै दशहजारवर्षतक उसके सफेद बाल नहीं होते॥७६–७८॥

घी व शहदसे पलाशतैलप्रयोग कल्प।

पातालयंत्रमाहृत्य पलाशतरुबीजकम्। निष्कद्वयमितं तैलं मध्वाज्येन समं पिबेत॥ ७९॥ मासमात्रेण योगीन्द्रो नक्षत्राण्यपि पश्यति। अनेककालं जीवी स्यात्प्रियो मान्यः सुरासुरैः॥ ८०॥ (औं० क०)

अर्थ–पलाशके बीजोंको पातालयंत्रमें धारणकर उनका तेल निकाले २ निष्क (९ माशे) प्रमाण उस तेलको शहद और घृतके संग पान करे एकमहीनेतक पीनेसे योगीन्द्र होकर नक्षत्रोंकोभी देखनेकी शक्ति होजातीहै और अनेक वर्षोंतक जीवित रहकर देवता और दैत्योंका प्रिय मान्य होताहै॥७९॥८०॥

घीशहद ब्राह्मीरससे ढाकतैलप्रयोग कल्प।

ब्रह्मतैलं मधु घृतं ब्राह्मीरससमन्वितम्। समभागानि सर्वाणि चोपभुंजीत साधकः॥ ८१॥ मासमात्रप्रयोगेण दिवा पश्यति तारकाः। षण्मासस्य प्रयोगेण सिद्धिर्भवति नान्यथा॥ ८२॥ ब्रह्मकोटिसहस्राणि विष्णुकोटिशतानि च। तैश्च सर्वैः परीवर्त्य तस्य मृत्युर्न जायते॥ ८३॥ सत्यमेतत्समाख्यातं तव स्नेहेन पुत्रक। गुह्याद्गुह्यतरं सारं साधकार्थमनुत्तमम्॥ ८४॥ (औं० क०)

अर्थ–ढाकका तेल, शहद, घृत, ब्राह्मीका रस इन सब को समान भाग लेकर साधक जन इनका सेवन करे, तीन महीनेतक इस प्रयोगके करनेसे दिनमें तारागणको देखनेकी सामर्थ्य होती है, छः महीनेके प्रयोगसे निश्चय सिद्धि होती है और हजारों करोड ब्रह्मा और सैकडों करोड़ विष्णु वर्त जावें तवतकभी उसकी मृत्यु नहीं होती। हे पुत्र! तेरे स्नेहसे मैंने गुप्तसे गुप्त सार साधकजनोंके हितके वास्ते यह कल्प कहाहै॥८१–८४॥

अन्यच्च।

तस्य मूत्रपुरीषाभ्यां लोहं भवति कांचनम्। वर्षाणि त्रीणि द्वे वाऽपि षण्मासमथवाऽपि च॥ ८५॥ अथवा वर्षमेकं तु ब्रह्मतैलं पिबेन्नरः। देहे हेम प्रजायेत स्वयं चैवाक्षयो भवेत्॥ ८६॥ प्रयत्नेन नमस्कृत्य स्वयं देवेन भाषितम्। द्वितीयं कथितं वत्स तृतीयं शृणु षण्मुख॥ ८७॥ तैलाज्यमधु संगृह्य मध्वाज्यकुडवं पिबेत्। तस्य पीतस्य तु फलं शृणु वक्ष्यामि तत्त्वतः॥ ८८॥ संवत्सरप्रयोगेण त्विदं भवति लक्षणम्। अग्निना नोदकेनापि तस्य मृत्युर्न जायते॥ ८९॥ इतिहासपुराणानां श्रोता श्रुतिधरो भवेत्। तस्य मूत्रपूरीषेण शुल्वं भवति कांचनम्॥ ९०॥ यस्त्वनेन विधानेन द्वादशाब्दं करोति वै। स्वेनैव च शरीरेण ब्रह्मलोकं स गच्छति॥ एतत्तु परमं गुह्यं नाख्यातं कस्य चिन्मया॥ ९१॥ (औं० क०)

अर्थ–उसके मलमूत्रसे लोहा सुवर्ण होजाताहै, जो मनुष्य तीन वर्ष, दो वर्ष, अथवा वर्ष किंवा छः महीने तक इस ब्रह्मतैलको पीवे उसके शरीरमें सोना उत्पन्न हो और अक्षय आयुवाला होजावे यत्नसे प्रणाम कर आप शिवजीने कहाहै, हे पुत्र स्वामिकार्तिक! दूसरा यह योग कहा अब तीसरे योगको सुन तेल, घृत, शहद इनको ग्रहण कर शहद और घृत (तेल) इनको कुडव (सोलह तोला) प्रमाण पान करे, उसके पीनेका फल सुनो मैं यत्नसे कहताहूं वर्षदिनका प्रयोग (सेवन) करनेसे वह लक्षण होताहै कि अग्नि अथवा जलसे उसकी मृत्यु नहीं होती और वह इतिहास पुराणोंको सुननेवाला एवं वेदको धारण करनेवाला होताहै उसके मल मूत्रसे ताँवा सुवर्ण होजाताहै, जो इस विधिसे बारह वर्षतक करे वह अपनी उसी देहसे ब्रह्मलोकमें प्राप्त होताहै यह प्रयोग परम गुप्त है मैंने प्रथम यह किसीसे नहीं कहाहै॥ ८५–९१॥

ढाक तैलप्रयोग कल्प।

ब्रह्मवृक्षस्य बीजानि वितुषीकृत्य बुद्धिमान्। अथ धात्रीरसेनैव अजाक्षीरेण भावयेत्॥ ९२॥ सप्ताहं शोषयित्वा च योजयित्वा विचक्षणः। बीजं यंत्रे ततः क्षिप्त्वा तैलं संगृह्य यत्नतः॥ ९३॥ तत्तैलं पलमात्रं तु पाययित्वा विधानतः।

तस्य कर्म प्रवक्ष्यामि मनुष्याणां हिताय च ॥ ९४ ॥ एकमासप्रयोगेण क्षीराहारः प्रयत्नतः । द्विगुणं परिहारोसौ सतैल गुडवर्जितः ॥ ९५ ॥ श्रुतं च धारयेद्वीरः षोडशाब्दः शुभाकृतिः ॥ सुवर्णवर्णसदृशो रूपवांश्च महाद्युतिः ॥ ९६ ॥ षण्मासस्य प्रयोगेण जीवेद्वर्षसहस्रकम् । प्रथमं ते समाख्यातं द्वितीयं शृणु षण्मुख ॥ ९७ ॥ अहं सम्यक् प्रवक्ष्यामि तव स्नेहेन पुत्रक । तैलस्य पलमात्रंतु मधुना सह यः पिबेत ॥ ॥ ९८ ॥ इतिहासपुराणानां श्रोता वक्ता च जायते । निधानमद्भुतं पश्येद्भूमेराकाशगामिनः ॥ ९९ ॥ मेधाविनः सुपुत्राणां सहस्रं लभते नरः । यांयां कामयते नारीं सा भवेन्नवयौवना ॥ १०० ॥ (औ. क.)

अर्थ-बुद्धिमान् जन ढाकवृक्षके बीजोंका तुष (ऊपरका छिलका)उतारकर फिर आँवलेके रसमें और बकरीके दूधमें भावना देवे सात दिनतक उन्हें सुखाके पंडितजन बीजको यन्त्रमें धारण कर यत्नसे उनका तेल निकाले उस तेलको विधिसे एक पल (४ तोले) पिला देवे उसके कर्मको मनुष्योंके हितके लिये कहता हूं, एक महीनेतक प्रयोग करनेसे और यत्नपूर्वक दूधका आहार तथा तेल और गुडका त्याग करनेसे श्रवण करे । विषयको धारण करनेकी शक्ति होती है और सेवन करनेवाला मनुष्य शूर वीर हो सोलह वर्षकी आयुवालेके समान कमनीय सुन्दर रूपवान् और ऐश्वर्यवान् दर्शनीय नवहस्तीके समान बलवाला होता है उसका वर्ण सुवर्णके समान उत्तम होजाता है, कांति अधिक होती है, छः महीनेतक सेवन करनेसे हजार वर्षतक जीवित रहता है, हे स्वामिकार्त्तिक ! एक कल्प तेरे आगे कहा अब दूसरेको सुन हे पुत्र ! मैं तेरे स्नेहसे सब वर्णन करता हूं, जो मनुष्य एक पल इस तेलको शहदके साथ पीता है वह इतिहास पुराणोंका श्रोता और वक्ता (बाँचनेवाला) होता है। उत्तम स्थानको देखे पृथिवी और आकाशमें विचरनेवाला हो, बुद्धिमान् हो तथा सौ पुत्रोंवाला हो वह जिस जिस स्त्रीको चाहे वही नवीन यौवनवाली उसको प्राप्त होजाती है ॥ ९२-१०० ॥

बिल्वबीजतैल कल्प ।

बिल्वबीजानि संगृह्य सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् । त्रिफलाक्वाथतोयेन सप्तवाराणि भावयेत् ॥ १०१ ॥ ततो यंत्रेण निष्पीड्य तैलं गृह्य सुसंयुतः । स्निग्धभांडे विनिक्षिप्य भूमौ तत्तु निधापयेत् ॥ १०२ ॥ मासमेकं ततोद्धृत्य रक्षां कुर्याद्विधानतः । रेचनं वमनं कृत्वा शुद्धकोष्ठे शुभे दिने ॥ ॥ १०३ ॥ कृष्णाष्टम्यां चतुर्दश्यां पुष्ययोगेन बुद्धिमान् । निवासमंदिरे तैलं कर्षमात्रं पिबेन्नरः ॥ १०४ ॥ जीर्णान्ते भोजनं कुर्याच्छाल्योदनपयोयुतम् । दिवसैकेन मेधावी बाधिर्यांध्यविनाशनम् ॥ ॥ १०५ ॥ द्विदिनेन विनश्यन्ति सर्वे रोगा न संशयः । त्रिचतुर्थदिने ग्रंथसहस्राणि च धारयेत् ॥ १०६ ॥ पंचमे दिवसे चैव तथा सारस्वतो भवेत् । षष्ठे च दिवसे प्राज्ञो ब्रह्मतुल्यो भवेन्नरः ॥ १०७ ॥ सप्तमे दिवसे चैव सर्वज्ञः प्रियदर्शनः । श्रुतिज्ञः सुगमः श्रीमान्कर्णिकारसमद्युतिः ॥१०८ ॥ वलीपलितनिर्मुक्तो जीवेद्वर्षसहस्रकम् । सप्ताभिमंत्रितं कृत्वा पश्चात्तैलं पिबेन्नरः ॥ ॥ १०९ ॥ (औ. क.)

अर्थ-बेलफलके बीजोंको ग्रहण कर, बारीक चूर्ण बना, त्रिफलाके काथके जलमें सातबार भावना देवे फिर यन्त्रमें निष्पीडन करके तेल निकाले पीछे चिकने बरतनमें भरकर पृथ्वीमें गाडदेना चाहिये, एक महीनातक गडा रक्खे पीछे विधिसे रक्षा करके दस्त ले और वमन कराके शुद्ध कोष्ठ कर शुभ दिनमें कृष्णपक्षकी अष्टमीको, चतुर्दशीको, पुष्य नक्षत्रके योगमें बुद्धिमान् जन शयन करनेके स्थानमें स्थित हो दशमासपर्य्यंत इस तेलको पान करे औषधिका परिपाक होजानेपर चाँवल और दूधका भोजन करे बुद्धिमान् जन ऐसे एकही दिन करे तो बहिरापन और अन्धापन दूर होजाता है,दो दिन करे तो सब रोग नष्ट होजाते हैं, इसमें सन्देह नहीं है । तीन चार दिनतक सेवन करे तो हजारों ग्रंथोंको धारण करनेकी शक्ति होजाती है, पांच दिनमें सरस्वतीकी समान बुद्धिमान् होता है, छः दिनमें ब्रह्मसदृश प्राज्ञ होजाता है, सातदिनतक सेवन करे तो सर्वत्र प्रियदर्शन वेदको जाननेवाला सुगम श्रीमान् और कमलके समान कांतिवाला होता है, बुढापेके सफेद बालोंसे रहित और हजार वर्षतक जीवनेवाला होता है, सातवार मन्त्र पढके पीछे इस तेलको पीना चाहिये ॥ १०१-१०९ ॥

धात्रीरससे अश्वगंधा कल्प ।

धात्रीरसेन तच्चूर्णं कर्षं पिष्ट्वापि सेवितम् । दिव्यदृष्टिर्भवेज्जंतुर्जरामरणवर्जितः॥११०॥ (औ० क०)

अर्थ-एकतोला भर इस चूर्णको आँवलेके रसमें पीसके सेवन करे तो दिव्यदृष्टिवाला होकर बुढापे तथा मरनेसे बच जाताहै ॥ ११० ॥

तिल घीव शहदसे असगंध कल्प ।

शिशिरर्तौ काले अश्वगंधाचूर्णं तिलचूर्णं समघृतमाक्षिकाभ्यामालोड्य बलहीनो- भुक्त्वा मासेन वृद्धोपि यौवनं व्रजति ॥ ॥ १११ ॥ (औ. क.)

अर्थ-शिशिरऋतु (माघफाल्गुन) में असगन्धके चूर्ण और तिलके चूर्णको बराबर प्रमाणके घी और शहद मिलाकर खानेसे बलरहित मनुष्यभी एक महीनेमें बूढेका जवान होजाताहै ॥ १११ ॥

हल्दी मधुसे कल्प।

निष्कमात्रं निशाचूर्णं मधुना सह लोलितम्। मासाच्छशिककांतिस्स्याद्‌द्विमासात्कमलप्रभः ॥ ११२ ॥ त्रिमासात्पित्तकारं च चतुर्मासाज्ज्वरादिभिः। विमुक्तः पंचमासाच्च स्थिरयौवनवान्भवेत् ॥ ११३ ॥ षण्मासात्सूर्यसंकाशः सप्तमासान्मनोभवः। अष्टमे स्यात्प्रसन्नात्मा दूरश्रवणवान्नरः ॥ ॥ ११४ ॥ नवमासादनायासं स्त्रीशतं चाधिरोहति। अनेकशास्त्रवेदी स्याद्दश मासनिषेवणात् ॥ ११५ ॥ मासादेकादशान्मर्त्यः सर्वज्ञत्वमवाप्नुयात्। इदं तु वत्सरं यस्तु जरामरणवर्जितः ॥ क्षीराहारो भवेन्नित्यं हरिद्राचूर्णलोलुपः ॥ ११६ ॥ (औ. क.)

अर्थ–हल्दीके निष्क (चारमासे) चूर्णको शहदमें मिलाके (उसका सेवन करे) एक महीनेतक भक्षण करै तो चन्द्रमाके समान कांतिवाला हो दो मास सेवन करै तो कमलके समान कान्तिवाला हो, तीन महीनेमें पित्त (बल) बढे चार महीनेमें ज्वर आदिरोगोंसे छूट जाताहै छः महीनेमें सूर्यके सदृश कांतिवाला हो, सात महीनेमें कामदेवकी समान होजाताहै, आठ महीनेतक सेवन करनेसे प्रसन्न आत्मावाला और दूरसे सुननेवाला होताहै, नव महीनेमें विनाही परिश्रमसे सौ स्त्रियोंको भोग सक्ताहै, दस महीने सेवन करनेसे अनेक शास्त्रोंको जाननेवाला हो, ग्यारह महीनेतक सेवन करनेवाला जन सर्वज्ञ होताहै और जो इस प्रयोगको एक वर्षतक सेवन करे वह वृद्धावस्था तथा मृत्युसे बचा रहताहै हल्दीके चूर्णको सेवन करनेवाले व्यक्तिको नित्य दूधहीका आहार करना कर्तव्य है ॥ ११२–११६ ॥

शुंठी कल्प।

उत्तमं नागरं ग्राह्यं चूर्णितं वस्त्रगालितम् ॥ गुडेन मधुना गव्यसर्पिषा मर्दितं भवेत् ॥ ॥ ११७ ॥ सुस्निग्धभांडे निक्षिप्य धान्यराशौ निधापयेत ॥ मासं मासं समुद्धृत्य कृत्वा कायविशोधनम् ॥ ११८ ॥ सुस्निग्धं भक्षयेत्प्राज्ञो बिडालपदमात्रकम्। दिनसप्तप्रयोगेण सर्वरोगं निवारयेत् ॥ ११९ ॥ षण्माससेविताज्जीवेन्नरो वर्षशतत्रयम्। बृहस्पतिसमो बुद्धया सर्वशास्त्रविशारदः नागार्जुनसमाख्यातः कल्पोयममृताधिपः ॥ १२० ॥ (औ० क०)

अर्थ–उत्तम सोंठको लेकर चूर्ण बना वस्त्रमें उसे छानके गुड,शहद,गौका घृत इसमें मिलावे फिर उसे चिकने बर्तनमें भरकर धान्यके कोठेमें धरे एक महीनेमें बाहर निकाल शरीरकी शुद्धि करै उस चिकने पदार्थको सदैव एक तोला प्रमाण खावे सात दिनतक इस प्रयोगके करनेसे संपूर्ण रोग दूर होजातेहैं, छः महीनेतक सेवन करे तो तीन सौ वर्षतक जीवित रहताहै, बुद्धिमें बृहस्पतिके समान हो सम्पूर्ण शास्त्रको जाननेवाला होताहै नागार्जुनके द्वारा कहाहुआ यह कल्प अमृतकाभी अधिपति है ॥ ११७–१२० ॥

दुग्धसे चीतेका कल्प।

क्षीरेण मासमेकन्तु चित्रकं भक्षयेन्नरः। वज्रदेही महाकायो महाबलपराक्रमः ॥ ॥ १२१ ॥ (औ. क.)

अर्थ–जो मनुष्य दूधके संग एक महीने तक चीतेको पीता है वह वज्रसदृश शरीरवाला पराक्रमी होजाता है ॥ १२१ ॥

घी शहदसे कुष्ठ कल्प।

कुष्ठचूर्णं तु मध्वाज्यं नित्यं कर्षं पिबेन्नरः। वत्सरं दिव्यदेहः स्याद्गंधेन शतपत्रवत् ॥ ॥ १२२ ॥ (औ. क.)

अर्थ–कुष्ठके चूर्णको शहद और घृतमें मिलाकर नित्यप्रति दश माशे खावे एक वर्ष दिनमें दिव्यशरीरवाला हो कमलके समान सुगंधिवाला होजाताहै ॥ १२२ ॥

लघुबंदसे कायाकल्प (उर्दू)

जनाब गोपीचन्द साहब महकमः सपलाई व ट्रान्सपोर्ट छावनी फीरोजपुरसे तहरीर फर्मातेहैं कि कायाकल्प बूटीकी अकसर असहाब तलाशमें पाये जाते हैं जिन असहावको कायाकल्पका शौक हो और उम्र चालीस सालसे ज्याद: हो तो मुफस्सिला जैल बिला जरर और सहलुल हुसूल कायाकल्पके नुसखेको आजमाकर फाइदा उठावें नुसखा यह है ककरोंदा बूटीके ताजे पत्तोंके आधसेर पुख्त: अर्क में ६ माशे स्याहमिर्चको खूब बारीक पीसकर मिलालेवे और एक गिलासमें डालकर पीजावे। चालीस योमके अन्दर निहायत उमदा कायाकल्प बिला किसी तकलीफके होजाताहै। न तो किसी तरहकी तकलीफ होतीहै और न यही दीगर कल्पोंकी तरह जिस्मे कि खाल उतरती है। बेशक पेश्तरके तमाम नाकिस खूनको साल्ह पैदा कर देती है। और अगर जिस्मपर किसी किस्मका दाग धब्बा हो तो सब साफ होजाताहै और सफेद बाल इस कल्पके करनेसे स्याह निकलने शुरू होजातेहैं भूख अजहद लगती है घी और दूध इसके हमराह गिजा हैं जमाइ और तेल गुड सुर्ख मिर्च और ज्यादह नमकका परहेज है कम नमक इस्तेमाल करसक्ते हैं (सुफहा अखबार अलकीमियाँ१।१२।१९०६)

घी शहदसे निर्गुंडी मूल कल्प।

निर्गुंडी मूलचूर्णं तु गवां सर्पिः पलाष्टकम्। घृतं चैव तथा क्षौद्रं षोडशं क्षीरकं तथा ॥ १२३ ॥ स्निग्धभांडे समालोड्य धान्यराशौ निधापयेत्। पूर्णे मासे ततो हृत्य सुदिने पुष्यसंयुते ॥ १२४ ॥ बिडालपादिकामात्रं मासमेकं प्रयोजयेत्। वलीपलितनिर्मुक्तो जीवेद्वर्षशतत्रयम् ॥ १२५ ॥ (औ. क.)

अर्थ–निर्गुंडी (सँभालूकी जड) का चूर्ण गौका घृत

यह दोनों बत्तीस तोले । सोलह तोले शहद, सोलह तोले दूध इनको एकत्रकर चिकने बर्तनमें भरकर धरे तिस बर्तनको अन्नके भरे कोठेमें रखदेवे एक महीना पूरा लेवे तब पुष्य नक्षत्रयुक्त शुभ दिनमें बाहर निकाले एक महीनेतक चिकने बर्तनमें भरकरके धानकी राशिमें स्थापित करदे एक मासतक अच्छे दिनमें वा पुष्य नक्षत्रके दिन निकालकर मार्जारी (बिलाई)के पद समान मात्र एक मासतक खावे तो सफेद बाल काले हो जाते हैं और तीन सौ वर्षकी आयु होतीहै ॥ १२३-१२५ ॥

घीसे निर्गुंडी मूल कल्प ।

निर्गुंडीमूलमादाय घृतेन सह भक्षयेत् । मासैकस्य प्रयोगेण नराश्चाकाशगामिनः॥ ॥ १२६ ॥ (औ. क.)

अर्थ-निर्गुंडीके मूलको घृतके साथ भक्षण करे तो एक महीनेके प्रयोगसे मनुष्य आकाशगामी होजाते हैं ॥१२६॥

तक्रसे निर्गुंडी मूल कल्प ।

निर्गुंडीमूलमादाय तक्रेण सह सेवितम् । मासमेकप्रयोगेण वलीपलितवर्जितः ॥ ॥ १२७ ॥ (औ. क.)

अर्थ-निर्गुंडीके मूलको तक्रके साथ सेवन करै मास १ तक तो सफेद बालोंके काले बाल होजाते हैं ॥ १२७ ॥

पुनर्नवा कल्प ।

तच्चूर्णं सितया साकं यद्वा क्षीरेण यः पिबेत् । प्रभातकाले सततं जीवेत्तु शरदां शतम् ॥ १२८ ॥ (औ० क०)

अर्थ-जो मनुष्य उस चूर्णको दूध और मिसरीके संग प्रातःकाल निरन्तर पीता है वह सौ वर्षतक जीवता है१२८

शहद और घीसे कल्प श्वेतार्क ।

पुष्यार्केण गृहीत्वा तु श्वेतार्कः सर्वसिद्धिदः । पंचांगं चूर्णयेद्धीमान्मध्वाज्येन तु भक्षयेत्॥ ॥ १२९ ॥ जीर्णान्ते भोजनं कुर्यात् षष्टिकाक्षीरभोजनम् । वर्जयेत्तैलमम्लं च मासमेकं तु भक्षयेत् । वलीपलितनिर्मुक्तो महाबलपराक्रमः ॥ १३० ॥ (औ. क.)

अर्थ-सब सिद्धियोंके देनेवाले सफेद आकको पंडितजनको चाहिये कि जब पुष्य नक्षत्र पर सूर्यका उदय होय अर्के उसदिन लाकर उसके पंचांगके चूर्णको शहद और घृतके साथ खावे औषधिका परिपाक होजानेपर सट्ठी चावल और दूधका भोजन करे तेल और खटाईको वर्जदेवे एक महीनेतक इसको भक्षण करे तो सफेद बाल नहीं होते महाबली पराक्रमी हो ॥ १२९ ॥ १३० ॥

पारदगंधक-निर्गुंडीरसमर्दित कुष्ठहर ।

गंधकं सूतकं चैव निर्गुंडीरसमर्दितम् । हंत्यष्टादश कुष्ठानि विषं हन्ति जरापहम् ॥ ॥ १३१ ॥ (औषधिकल्पलता.)

अर्थ-शुद्धगंधक और पारद (चन्द्रोदयादि) को समान भाग लेकर निर्गुण्डीके रससे मर्दन करे तो वह रस अठारह प्रकारके कोढ विषरोग और जरावस्था (बुढापे) को नाश करता है ॥ १३१ ॥

पारदगंधकप्रयोग निर्गुण्डीसे भावित ।

गंधकं रससंयुक्तं निर्गुण्डीरसभावितम् । अंधमूषागतं ध्मातं लेहयेन्मधुसर्पिषा । मासस्यैकप्रयोगेण सर्वव्याधिर्विनश्यति ॥ ॥ १३२ ॥ (योगसार.)

अर्थ-गंधक और पारद (बुभुक्षित) को निर्गुण्डीके रससे मर्दन कर अन्धमूषामें रख धोंके उसको शहद और घृतके साथ एकमास तक सेवन करे तो समस्त रोग नाश होते हैं ॥ १३२ ॥

सर्वरोगहर औषधि निर्गुंडीकल्प-(मूत्रपुरीषसे सोना)

निर्गुंडीपंचांग रविपुष्यके दिन छायाशुष्ककर चूर्ण करके एक तोला चूर्ण अप्रसूत काली बकरीके मूत्रमें १ मास खावे सर्वरोग रहित होवे-तस्य मूत्रपुरीषेण सुवर्णं रजतं च भवतीति ॥ (उसके पेशाब और पाखानेसे चांदीका सुवर्ण होता है) ॥ (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक) ॥

अभ्रकपारदप्रयोग निर्गुंडीसे भावित ।

गंधकं रसमाकाशं निर्गुंडीरसभावितम् । अंधमूषागतं ध्मातं लेहयेन्मधुसर्पिषा ॥ ॥ १३३ ॥ मासस्यैकप्रयोगेण हन्ति कुष्ठं सुदारुणम् । षण्मासस्य प्रयोगेण वलीपलितनाशनम् ॥ १३४॥ (योगसार.)

अर्थ-शुद्ध गंधक चन्द्रोदय और अभ्रकभस्म इन तीनोंको समानभाग लेकर निर्गुण्डीके रससे भावना देकर और अंधमूषामें रखकर धोंके उस भस्मको एक मास तक सेवनकरै तो भयानक कोढका रोग नष्ट होताहै और छः मास तक सेवन करनेसे वलीपलितसे रहित होता है अर्थात् नवीन अवस्थावाला होजाता है ॥ १३३ ॥ १३४ ॥

पारदप्रयोग (सुहागेसे)

करालकबरीबीजं[1] समांशं योजयेत्सुधीः । सूतटंकणसहितं वलीपलितनाशनम् ।१३५। (योगसार.)

इति श्री अग्रवालवैश्यावंशवतंस रायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां कल्पोपवर्णनं नाम चतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४४ ॥

---

१ करालकबरीसे आशय काली वनतुलसीसे जानपडता है ।

अर्थ-गंधक और तुलसी (काली) के बीज चन्द्रोदय और सुहागा इनको पीस लघुपुट देवे उसके सेवन करनेसे वलीपलितसे रहित होजाता है॥ १३५॥

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपंडितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहितायां भाषाटीकायां कल्पोपवर्णनं नाम चतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः॥४४॥



धातुवादाध्यायः ४५.

कटोरी नुकराको हजारलैमूके अर्कसे तय्यार करके उससे सीमावकी चांदी। (फार्सी)

नुकरा खालिसरा अजद कटोरी साजद व बरआतिश निहादह शीरा लैमूं दरआँ अन्दाजद बचूं खुश्क शवंद दीगर अन्दाजद ताशीरा हजार लैमूं कागजी दरआँ सोख्तः शवद बादहू हरगाह किरव्वाहद सीमावरा बआब अंदाहूली व ककरौंदा सहक नमूदः दरकटोरः मजकूर कर्दः बर आतिशदिहद फसन गर्ददई अमल कुनद मे शवद मुजर्रिब है अम्मा आमिल लावल्दवूद अगर औलाददाश्तः बाशद हरगिज न कुनन्द। (अजवियाज हकीम मुहम्मद फतहयावखां सोहनपुरी)।

जोडा।

तुत्थकं दरदं कृष्णकंकुष्ठं हेमगैरिकम्। पारदं गंधकं चैव रसकं च मनःशिला॥ ॥ १॥ एतानि समभागानि हंसपाद्या वरानने। सुरदाल्या जलेनैव मूत्रवर्गे पृथक् पृथक्॥ २॥ मासैकेन प्रयत्नेन दोलायंत्रेण पाचयेत। पाचित्वोद्धृत्य यंत्रात्तु वसुपत्राणि लेपयेत॥ ३॥ अग्निं दत्त्वा समासेन चतुर्थांशेन कांचनम्। दत्त्वातिध्मापयेत्सम्यक् तत्सर्वं कांचनं भवेत॥ ॥ ४॥ (योगसार.)

अर्थ-तूतिया, सिंगरफ, कालाकंकुष्ठ, हेम (सुवर्ण), गेरू, पारद, गंधक, रांग और मैनसिल इनको समानभाग लेकर हंसपादी अर्थात् छुईमुईका रस, देवदालीका रस और मूत्रवर्गसे दोलायन्त्रद्वारा स्वेदित करै और फिर यन्त्रसे निकाल घोटकर चांदीके पत्रोंपर लेपकर अग्निमें धोंके तो चांदीका सुवर्ण होगा वह सुवर्ण चार वर्णका कहावेगा और अत्यन्त धोंकनेसे सम्पूर्ण ही सुवर्ण होजाता है॥१-४॥

वेधक।

तारताम्रे तु यः सूतः कुटिलं च समन्वितम्। ध्मापितं चैव मूषायां त्रिवारं कनकं भवेत॥ ॥ ५॥ (योगसार.)

अर्थ-चांदी, तांबा, पारद और सीसा इनको समानभाग लेकर घरियामें रख कोयलोंकी आंचमें धोंके इसप्रकार तीन बार धोंकनेसे सुवर्ण होजाता है॥ ५॥

वेधक।

पीतगंधकसूतेन रक्तचंद्रकपंचकम्। वज्रीक्षीरेण संयुक्तं वंगस्तंभनमुत्तमम्॥ ६॥ (योगसार.)

अर्थ-आमलासारगंधक, पारद और वंगको रक्तपंचक तथा थूहरके दूधसे घोटे तो यह उत्तम वेधक होताहै॥६॥

वेधक जोडा।

पुनरन्यत्प्रवक्ष्यामि द्रव्यस्य करणं महत्। रसगंधकतुत्थं च दरदं माक्षिकं तथा॥ ॥ ७॥ एतत्सर्वोष्णतोयेन याममानं विमर्दयेत्। तेनैव तारपत्राणि लेपयित्वा विचक्षणैः॥ ८॥ एवंविधिविधानेन मंदं मंदेन पाचयेत्। चतुर्दश भवेद्वर्णं दारिद्र्यस्य विनाशनम्॥ ९॥ अनेन लिप्त्वा शौल्बं तु पत्रं विश्राम्य धामयेत्। षोडशवर्णिकं पत्रं भवत्येव न संशयः॥ १०॥ (योगसार.)

अर्थ-अब उत्तम सुवर्ण बनानेकी क्रियाको कहते हैं। पारा, गंधक, नीलाथोथा, सिंगरफ, सोनामक्खी इन सबोंको उष्ण जलसे[१] एक प्रहरतक घोटे उसी पिष्टीसे चांदीके पत्रोंको लीपदेवे इस प्रकार मन्द २ अग्निसे पकावे तो चौदह वर्णवाला सुवर्ण दरिद्रका नाशक सिद्ध होता है, और इसी लेपसे तांबेके पत्रोंपर लेप करै फिर कुछ समयतक ठहरकर धोंके तो सोलह वर्णवाला सुवर्ण होता है इसमें सन्देह नहीं है॥ ७—१०॥

वेधक।

हेमगैरिकसंयुक्तं समांशेन च गंधकम्। देवदारुसमायुक्तं तारमायाति कांचनम्॥ ॥ ११॥ (योगसार.)

अर्थ-एक तोला चांदी, एक तोला सुवर्ण, एक तोला गेरू और एक ही तोला गंधक इनको देवदारुके रससे घोटकर सम्पुटमें भस्म करै तो सुवर्ण होगा॥ ११॥

वेधक रक्तचित्रक भल्लाततैलसे ताम्रका सुवर्णरूप।

रक्तचित्रकभल्लाततैललिप्तं पुटेन तु। तप्तताम्रं च देवेशि जायते हेमरूपवान्॥१२॥ (औषधिकल्पलता.)

अर्थ-हे पार्वति तांबेके पत्रोंको लाल चीता और भिलावेके तैलसे तरकर पुटमें भस्मकरै तो उत्तमरूपवाला सुवर्ण होगा॥ १२॥

वेधक अंकोलतैलसे जोड़ा।

अरुणांकोलबीजस्य तैलं पूर्ववदाहृतम्। तेन प्रलिप्तताम्रस्य पत्राणि पुटपाकके॥

१ उष्णतोयसे ग्रन्थकारने वह जल लिया है जो पर्वतसे स्वयं गरम निकलता हो।

॥ १३ ॥ धृत्वाग्नौ चैव क्षिप्तव्या निष्कमात्रमिता सिता ॥ त्रिनिष्कमात्रस्वर्णेन स्वयं कनकतां व्रजेत ॥ १४ ॥ (औ० क०)

अर्थ–लालअंकोलके बीजोंके तैलसे ताँबेके ऊपर लेप कर घरियामें रख आंचमें तपावे ताव आनेपर एक तोला चांदी डालदेवे और तीन तोले सुवर्ण डालदेवे तो सुवर्ण होजायगा ॥१३॥१४॥

सम्मति–इस क्रियामें तांबेका भाग नहीं लिखागया है इसलिये ताँबा मेरी समझमें १ एक ही तोला ठीक होगा ॥

कलई, सीमाव, और नुकरा मिलाकर चांदी बनानेकी तरकीब बजारियः आक सफेद (उर्दू)

अगर आक सफेद तमाम लेकर कूट पीसकर रक्खे बियारद मिकदार यकजू नुकरा वयक माशा सीमाव व एक तोला कलई यकजा चर्ख देकर कदरे अजीइक सफेद दरगुजार विदहद वंसकरम अल्लाह ताला १०० ३० दानः स्वाहद बूद । (अज वियाज हकीम मुहम्मद फतहया-बखा सोहनपुरी)

रांगकी चांदी बकरीको खिलाकर ।

छागलीं खादयेद्वंगं चणपिष्टेन पक्षकम् । भस्मीकृत्वा मलं तस्या निःसरेत्तारमुत्तमम् ॥ १५ ॥ (काकचंडीश्वरीतंत्र.)

अर्थ–वंगको चनोंके साथ पीसके पन्द्रह दिनतक बकरीको खिलादेवे उसकी मींगनीको जलाकर चांदी निकाले (जिस प्रकार सत्त निकालतेहैं) ॥ १५ ॥

नागसे सोना बनानेकी क्रिया ।

कंकुष्ठं गुडहंसपादिरसकं तारं च गोदन्तिका लाक्षाकुंकुमरोचनामधुनिशा बिल्वं च लज्जालुकम् । एतत्सर्वमिदं च भागसमकं लवणोदके मर्दितं तेनोल्लेपितनागपत्रपुटितं षट्पाचने कांचनम् ॥ १६ ॥ हारं कंकणमुद्रिकां विरचयेन्नागार्जुनैर्भाषितम् ॥ ॥ १७ ॥ (योगसार.)

अर्थ–कंकुष्ट, गुड, हंसपादी, बंग, चांदी, गोदन्तीहरताल, लाख, कसूम, गोरोचन, शहद, हलदी, बेल, छुईमुई, समानभाग लीहुई इन चीजोंको खारे पानीसे घोट सीसेके पत्रोंपर लेपकर छः बार पकावे तो सुवर्ण होगा उस बने हुए सुवर्णसे भूषण बनावे ॥ १६ ॥ १७ ॥

वेधक नाग ।

बर्बुरस्य रसे नागं शोधयेच्छतवारतः । ततः कृत्वा तु चषकमिष्टिकोपरि निक्षिपेत् ॥ ॥ १८ ॥ तन्मध्ये गंधकं स्थाप्य पाकं कुर्यात्त्रियामकम् । गंधकस्य तु तैलेन वेधकं चषकं ततः ॥ १९ ॥ यामत्रयं कृते पाके भवेद्दिव्यं रसायनम् । अयुतावधि शुल्वं च वेधयेन्नात्र संशयः ॥ २० ॥ (काकचंडीश्वरीतंत्र.)

अर्थ–सीसेको गला २ कर बबूरके रसमें सौ बार बुझाव देनेसे शोधलेवे उसका कटोरा बनाकर ईटपर रखदेवे उसमें गंधक रक्खे और तीन प्रहरतक पाककरै तो गंधकके तैलके योगसे वह कटोरा वेधक होता है और वह बंग दशहजार भागसे तांबेको वेधकर सुवर्ण करता है इसमें सन्देह नहीं है ॥ १८–२० ॥

रंजितनागसे चांदीका स्वर्ण बनानेकी क्रिया ।

नीलांजनं तथा तीक्ष्णं समभागेन टंकणम् । गंधचूर्णं समं ध्मातं नागं भवति शोभनम् ॥ २१ ॥ घृततैले तथा क्षिप्तं सर्वदोषं विवर्जयेत । धमेत्तं तारयोगेन हेमं भवति शोभनम् ॥ २२ ॥ (योगसार.)

अर्थ–एकभाग सुरमा, एकभाग तीक्ष्णलोह इन दोनोंके समान सुहागा तथा तीनोंके तुल्य गंधकको लेकर अग्निमें धोंके तो सुन्दर नाग (सीसा) बनजायगा । उसको गिलाकर घी तथा तैलमें बुझावे तो सीसा समस्तदोषोंसे रहित होता है उसको चांदीके साथ धोंकनेसे सुवर्ण होता है ॥ २१ ॥ २२ ॥

वेधक रौप्यकर पारदसारकी कटोरीकी भस्म ।

शुभेऽह्नि रसमादाय गजपिप्पलिकाद्रवैः । मर्दयेत्सप्तदिवसं ततस्तांबूलपर्णजैः ॥ २३ ॥ रसैश्चमर्दयेत्सप्तदिवसं तु विचक्षणः । तोलकद्वयसारेण शोधितेन प्रकारयेत् ॥ २४ ॥ चषकश्चान्तरे चैव तस्य चाम्लरसैस्समम् । रसं विलिंपयेद्धीमांस्तोलकद्वयसंमितम् ॥ ॥ २५ ॥ यावद्रसं क्षयं याति तावद् घर्मे विनिक्षिपेत् । ततः सैंधवमानीय तदधः पूरयेत्सुधीः ॥ २६ ॥ मृत्खर्परे तु संस्थाप्य चषकं तदधोमुखम् । चुल्लिकोपरि संस्थाप्य सरावं चाम्लवेतजैः ॥ २७ ॥ रसैर्मुहुर्विलिंपेत्तच्चषकस्य बहिः पुनः ॥ पचेन्मंदाग्निना धीमान् यामान्षोडश यत्नतः ॥ २८ ॥ स्वांगं शीतलमुद्धृत्य यत्नतः परिरक्षयेत । शुल्वं वंगशरीराणि वेधयेन्नात्र संशयः ॥ ॥ २९ ॥ (काकचंडीश्वरीतंत्र).

अर्थ–उत्तम दिवसमें पारदको लेकर गजपीपलके क्वाथसे सात दिवसतक मर्दन करे । फिर सात ही दिवसतक पानोंके रससे मर्दन करे तदनन्तर दो तोले शुद्ध लोहसारका कटोरा बनाय उसमें घुटे हुए पारदका लेप करदेवे और उसी (लेपकिये हुए) कटोरेमें नीबू अथवा बिजोरे आदिके खट्टे पदार्थका रस भरदेवे और घाममें रसके सूखनेतक सुखावे फिर उसमें पिसे हुए सैंधवको भर खिपरेपर उलट

करदेवे और नीचेसे अग्नि देवे कटोरेके पेंदे पर अम्लवेत (एक प्रकारका नीबू) के रससे तर करता रहै इसप्रकार सोलह प्रहरतक मन्दाग्नि देवे स्वांगशीतल होनेपर निकालकर हिफाजतसे रक्खे तो वह भस्म तांबा और बंगको वेधता है । इसमें संदेह नहीं है ॥२३-२९॥

हरतालकी तलभस्म चांदी शंखिया-योगसे ।

हरिताल आधसेर पक्का, दाल चिकना पावपक्का, रजत पावपक्का तीनोंको ४ प्रहर खरल करना. एरंडबीज मज्जा और एरंडतैल पाकर फिर शीशीमें उडाना फिर ऊर्ध्वस्थ अधस्थ दोनों खरल करना फिर उडाना फिर ऐसे चौदाबार करना फिर ताम्रपर योगकरना यह दृष्टप्रत्यय योगहै । (जंबूसे प्राप्तपुस्तक)

बकरीकी मेंगनीका वेधक तैल हरताल गंधकका ।

चणपिष्टेन मासार्द्धं छागीं तालं च गंधकम् । खादयित्वाऽऽहृतं तैलं तन्मलाच्छुल्बवेधकृत् ॥ ३० ॥ गंधकयोगेन तारपत्राणि तालयोगेन शुल्बपत्राणि वेधयेदिति संप्रदायः ॥ ३१ ॥ (काकचंडीश्वरीतंत्रम्)

अर्थ-बेसनके साथ हरताल अथवा गंधकको खिलाकर उसकी मैंगनियोंसे तैल निकाले तो वह तैल तांबेको वेधने वाला होता है । तात्पर्य यह है कि गंधकके योगसे चांदीको वेधता है । और हरतालके योगसे तांबेके पत्रोंको वेधता है ऐसा संप्रदाय है ॥ ३० ॥ ३१ ॥

हरतालतैलवेधक ।

तालं दर्दुरवक्त्रे तु पक्षमात्रं निधाय च । तत्तैलं भूपुटा धृत्वा कारयेच्छुल्बवेधकम् ॥ ॥ ३२ ॥ (काकचंडीश्वरीतंत्र.)

अर्थ-हरतालको मेंडकके मुंहमें पन्द्रह दिवसतक रखकर पातालयंत्रसे तैल निकाले तो वह तैल तांबेके पत्रोंका वेधक होता है ॥ ३२ ॥

ढाकफूलरससे भावितवेधक हरताल रांगकी चांदी ।

तस्य पुष्पस्य निर्यासे तालकं च सुभावितम् । तस्य तालस्य कल्केन द्वात्रिंशांशेन लेपितम् ॥ वंगं भवति तत्तारं कुंदपुष्पस्य संनिभम् ॥ ३३ ॥ (औषधिकल्पलता.)

अर्थ-ढाकके फूलोंके रससे हरतालको भावनादेवे वह भावित हरताल १ भागको वंग ३२ भाग पर लेपकर पुटदेवे तो कुन्दके समान चांदी होजायगी ॥ ३३ ॥

वेधकपारद गंधक (तृणज्योतिसे)

तस्य मूलं तु संगृह्य रसगंधकतत्समम् । मातुलुंगरसेनैव एकीकृत्य तु मर्दयेत् । लेपयेच्छुल्बपत्राणि त्रिपुटं हेमशोभनम् ॥ ॥ ३४ ॥ (औषधिकल्पलता.)

अर्थ-ढाककी जडके समान पारद गंधकको लेकर और मिलाकर बिजोरेके रससे मर्दन करै फिर उससे तांबेके पत्रोंपर कर पुटदेवे तो इस प्रकार तीन बार पुटदेनेसे उत्तम सुवर्ण होता है ॥ ३४ ॥

वेधक पारदगंधकपिष्टीलेप ।

गंधकं चूर्णसंयुक्तं कृष्णायं लांगलीभवम् । एवं क्रमात्ततो देवि मर्दितं रसगंधकम् ॥ ॥ ३५ ॥ नवनीतसमा पिंडी जायते वरपिष्टिका । दत्त्वा लघुपुटं पश्चाद्धेमपत्राधिलेपयेत् । पुटपाकेन देवेशि वर्द्धते स्वर्णपंचकम् ॥ ३६ ॥ (औ. क.)

अर्थ-गंधक, चूना, लोहसार और कलियारीकी जड इन सबको तप्तखल्वमें खरल कर पिष्टी बनालेवै फिर उसको संपुटमें रख लघुपुट देवै उससे सुवर्णके पत्रोंपर लेप करे तो सुवर्णका रंग उत्तम होता है ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

वेधक गंधक पारदलेप ।

गंधकं रससंयुक्तं सुगंधिरसमर्दितम् । ताम्रपत्रप्रलेपेन दत्ताग्निः कांचनं भवेत् ॥ ३७ ॥ (औ० क०)

अर्थ-पारद और गंधकको कचूरके रससे मर्दन करै और ताँबेके पत्रोंपर लेप कर अग्निदेवे तो सुवर्ण होवे३७॥

वेधकगंधक पारदयोग ।

गंधकं गंधमूलीं च रसबीजेन मर्दयेत् । अग्निस्थं मासमेकेन तारलेपेन कांचनम् ॥ ३८ ॥ (योगसार.)

गंधमूल-	कुलींजन ।
गंधमूलक-	आमियाहल्दी ।
गंधमूला-	कचूर ।
गंधमूली-	छोटा कचूर ।

अर्थ-गंधक, कचूर, सुवर्ण और पारदको बिजोरेके रससे एक मासतक मर्दन कर चांदीके पत्रोंपर लेपकरै तो सुवर्ण होगा ॥ ३८ ॥

वेधक खोटबद्ध ।

शुद्धसूतं पलं चैकं गंधकस्य पलार्धकम् । मधुसंजीवितो येन दिनमेकन्तु मर्दयेत ॥ ॥ ३९ ॥ गुटिकां गुंजयुग्मं तु च्छायाशुष्कन्तु कारयेत । बृहतीफलमध्यस्थं शिवाचूर्णेन लेपयेत् ॥ ४० ॥ ततो गोधूमचूर्णेन मृदा लिप्य विशोषयेत् ।क्षिप्त्वा कर्पूरकोष्टे तु भस्त्रया चैव धम्यते ॥ ४१ ॥ कृत्वा कर्पूरकोष्टे तु हठाग्नौ चैव धामयेत । ततो

१ रससे पारद और बीजसे स्वर्णका ग्रहण करना और मासमेकेनका संबंध मर्दनसे करना ।

सौ जायते खोटं पिष्यते लवणं यथा ॥ ॥ ४२ ॥ शुल्बस्य षोडशांशेन वेधनं बीज-कांचनम् । रसेन सहितं देवि यथा कार्यं रसायनम् ॥ ४३ ॥ (योगसार.)

अर्थ–शुद्ध आमलासार गंधक एक भाग, दो भाग पारद इनको मधुजीवीके रससे एक दिवसतक घोटे और उसकी चौंटनीके समान गोलियां बनाये छांहमें सुखालेवे उनको बडी कटेरीके फलमें भर ऊपरसे एक अंगुल हरैके चूर्णका लेप करे, फिर गेहूंके चूर्णका लेपकरे, तदनन्तर मिट्टीका लेपकर सुखालेवे उस गोलेको कपूरमें रख धौंके तो वह खोट नोंकके समान पिसजाताहै वह सोलहवें भागसे ताम्रको वेधताहै हे पार्वति ! यह रसायन पारदके साथ होताहै ॥ ३९—४३ ॥

सीमाव और ताँबेके मेलसे अकसीर (उर्दू)

हिकायत–तिजारा रियासत अलवरमें एक संन्यासीने एक मास्टर स्कूलसे यह नुसखा बनवाया सीमाव, बाजारी और बुरादा निहास बाजारी हमवजनको अर्क नकछिकनी-से (१०५) पुट देकर २४ प्रहरकी आंच दी । पुटका तरीकः यह था कि ताँबेके कटोरेमें लकडीका दिस्ता उसमें डबल पैसा नसब करके दवाको अर्क नकछिकनी डालकर १०५ मर्तबः लिपवाया पीसनेकी मिकदार इसी कदर कि अर्क सूख जाय इसके बाद ताँबेकी डिबियोंमें बंद करके किसी जर्फमें रेत भरकर डिबिया बीचमें रखकर २४ प्रहर या ७२ घंटेकी आंचदे (नारदमिस) आंच पूरी होनेसे ४ प्रहरके बाद दवा निकालले संन्यासीसाहब कहगये कि एक रत्तीसे तोलाभर सोना बनेगा । मास्टरसाहबने जो खोला डिबियामें राख भरीहुई पाई सुनारसे तरह कराई कुछ भी न हुआ । मगर डिबियाकी दरजमें शायद एक रत्ती सुर्ख दवा रहगई थी उसके तरह करनेसे तोलाभर सोना तय्यार हुआ यानी इनकी मेहनत मजदूरी और खर्चा सब संन्यासी साहब देगये थे ।

मेरे एक दोस्त मुंशी हनुमतसिंह जो स्कूलके हेडमास्टर थे उन्होंने यह किस्सा मुझे लिखा कि अगर आप इस नुसखेको सही समझें और बरादरान अलकीमियाँके वास्ते कार आमद हो तो इसको करके देखें चूंकि नकछिकनी नवातात अकसीरियासे है । मुझे नुसखेकी सचाईपर वसूक हुआ । मगर अर्ककी मिकदार मजहूल थी लिहाजा उसूल कीमियाई मशरकीपर बनाकर हमने ४ तोला सीमाब और ४ तोला मिसके बुरादहको अर्क मजकूरमें इसी तरीकेसे पुट देने शुरू किये एक बोतल अर्क सय्यद सिनाहुसेन साहब रईस दहलिया डाकखाना पहानी जिला हरदोई मुल्क अवधने भेजा जब वह खतम होगया तो गोया ऽ॥ सेर यानी पचास तोला अर्क ८ तोले दवामें खर्च हुआ ५०÷८ =६$\frac{१}{२}$ गुना अर्क दवाको मिला अब हमने इसको १२ प्रहर यानी ३६ घंटेकी आंच डिबियामें दी इसीतरहसे सर्द होनेके बाद एक रत्ती दवा चांदी तोलाभरे पर तरहकी जोडा बनानेकी हदतक रंग आया और सीमाव कायमुलनार होगया । फिर ६ माशे दवाको भडकेकी आंच तेजचन्द मरतबः दी तो आठवाँ हिस्सा दवाका कम हुआ जिससे मालूम हुआ कि अभी सीमाब किसी कदर नाकायम है और दवा बरंग स्याह भी है और ६ माशे इसी तजरुबेसे दवा कम होकर ७॥ तोले रही फिर हमने एक बोतल अर्क और मंगाकर दफै दफै पुट दिलाये और ७२ घंटेकी आंच दी अब दवा सुर्खी माइल और नीम मुशम्मै बरामद हुई यानी तरक्की औसाफमें है । यह भी याद रहे कि दुबारा पुट देनेसे दवाका वजन बजाइ ७॥ तोलेके ११ तोले होगया था हालाँ कि रतूबत न थी और ७२ घंटेकी आंच देनेके बाद फिर वह ही ७॥ तोले बरामद हुई अब ११ तोला सोना हमिलानी जो हमारे दोनों खैर शागिर्दोंने खराब बतलाया था उसको फी तोला एक रत्ती भर अकसीर तरह करनेसे वह सोना ऐसा उमदा होगया जैसे दुचन्द हमिलानसे भी कभी न हुआ था । काट और तोड सब दुरुस्त और सख्ती स्याही बिलकुल नदारद शुकर खुदा । अब हमको हिसाबसे मालूम हुआ कि १२$\frac{१}{२}$ गुना अर्क देनेसे यह दवा इस दर्जेको पहुँची आयन्द: और अर्क देनेसे पूरी अकसीर होजायगी । अकसीरी बूटियोंके अर्कसे पुट देनेकी मिकदार कमसे कम चहारचन्द और ज्याद-हसे जियादह चालीसगुना अर्ककी है लिहाजा हम इस मिकदार तक रफ्त: रफ्त: इसको पहुँचा कर देखेंगे इस वक्त तो यह दवा नीम मुशम्मा है और देरमें पिघलती है और शायद निस्फ फिदाब है इसी वजहसे तिलाये खालिस नहीं बनाती । अटयार अफजाकी हदपर जरूर पहुँचती है याद रहे कि जो दवा अटपार अफजा है ज्याद: तदबीर करनेसे वही दवा अकसीर हकके दर्जेपर पहुँच जाती है । नकछिकनी का शीरा यह बूटी भी किस कदर कम पानी देनेवाली है इसका शीरा भी अगर किसी कदर हरारत पहुँचाकर निकाला जावे तो शायद हर्ज न होगा और यही आसन तरीक है वरन दीगर तरीक: सख्त मुश्किलहै और अगर होसके या कम अज कम ऐसी कोशिश करनी चाहिये कि शीरा बिला हरारत पहुँचाये निकाला जासके ।

पुटदेना–इस जगह पुट देनेसे मुराद यह कि दवाईको अर्कसे तर कर लिया जावे और इस कदर खरल करे कि अर्क खुश्क होजावे (सुफहा ४–५ अखबार अलकीमियाँ २४ । २ । १९०९)

शनाख्त अदविया चहार गानःअजरंग (उर्दू)

(१) अगर रंग अदवियाका हरारतसे पहला यानी बदस्तूर रंग खुद ही रहै तो यकीन जानो कि तवख पूरा ही नहीं व मकसूद नहीं है ।

(२) अगर रंग अदवियाका स्याह होगया । व नअशा (जहांवाँ) बनगई है तो यकीन जानों कि अदविया जायद हरारतसे सोख्त होगई है ।

(३) अगर रंग अदवियाका सुर्ख व जर्द है तो यकीन जानों व मानों कि अदविया मतबूआ दुरुस्त व सही तौर-पर पुख्त: हस्व हस्व मुराद बनगई है । ख्वाह वह हरारत यकबारगी तरीक मुफीद व मुकर्रर: उस्तादानसे है । (ख्वाह वदफआत रफ्त: के है)(अखबार अलकीमियां २४।२।१९०९)

लोहेसे वंग बनानेकी क्रिया ।

कांतिलोहं च सौवीरं टंकणं रक्तगंधकम् ।

अंधमूषागतं ध्मातं वंगः स्याद्रवर्णिनि ॥ ॥ ४४ ॥ (योगसार)

अर्थ–कान्तिसार, लोहा, सुरमा, सुहागा और लाल-रंगका गंधक इनको पीस घरियामें रखकर धोंके तो उससे वंगकी चांदी होती है ॥ ४४ ॥

लोहे सुरमेंसे नाग बनानेकी क्रिया।

नीलांजनं तथा तीक्ष्णं समभागेन टंकणम्। गंधचूर्णं समं ध्मातं नागं भवति शोभनम्॥ ॥ ४५ ॥ (योगसार.)

अर्थ–सुरमा तथा तीक्ष्ण लोह इन दोनोंके समान सुहागा और इन तीनोंके समान गंधकको पीस कोयलेकी अग्निमें धोंके उसके योगसे सीसा सुवर्ण होता है ॥ ४५ ॥

उसूल कीमिया सुर्ख व सफेदके जुदागानः जुज्व आजम (उर्दू)

इस फनके आलिमोंने अकसीर अबेजके वास्ते जीवक, जरेवेख, नौसादर और फजः और अकसीर असमरके वास्ते जीवक, गूगर्द, नौसादर और जौहव मुकर्रर किया है और इन चहार अजजाइको इस्तलाहमें अरकान अरबः और अनासिर अरबःके नामसे मौसूम करते हैं इसकी तशरीह यों है कि जरेवेख व गूगर्द नमीतरलः आग नौसादर नमीतरलः हवा और जीवक नमीतरलः पानी और फजः और जौहव नीमतरलः अजसादके हैं और इन चीजोंमें जो बहालत तरकीब व इम्तजान अजकिस्म मियाह वगैरः शामिल करते हैं वह नीमतरलः नफसके है। और नफस जसद और रूहके दरमियान राबतः है । (सुफहा १० अखबार अलकीमियाँ १६ । ६ । १९०५)

उसूल कीमिया (उर्दू)

जबतक रूह, नफस, जसद, हरसह वा कायदा कायम व शिगुफ्तः होकर तहनशीन न होजाये अकसीर नहीं बनसकती ।

तफसील हरसहकी यह है।

रूह जीवक (पारा) दोयम नौसादर।

(फ) पारा मसअद रूह महज होजाता है कायम होकर जसद बनजाता है।

नौसादर मसअद । रूहमहज और साबित होकर नफस बनता है। नफस एक जौहर जरीनमें दोयम किबिरियत असफर व हमर।

(फ) जरवनमें मसअद रूह महज होजाती है।

किबिरियतें मसअदको नफस महज कहते हैं।

जसद–सोना, चांदी, लोहा, कलई, सिका, तांबा वगैरः

(फ) वाजअहलफनजसदको उडाकर रूह करलेते हैं और इस रूहको फिर जसद । यानी रोगन बना लेते हैं इस दर्जे इसशःके अन्दर जरूर खास्सा अकसीरका पैदा होसक्ता है। (सुफहा१६अखबार अलकीमियाँ१।५।१९०५)

उसूलकीमियां (उर्दू)

कीमियाँ बनानेके लिये तादात तरीकोंमेंसे तीन खास तरीके हैं जो अमूमन इन्होहर सहपर उस्तादानफन कीमिया मगरवीका अमल रहा है तरीका अव्वलवालोंका कौल है कि जब रूह नफस जसदको एक जिस्म और कायम करके शिगुफ्तः करलियाजावे वह अकसीर है । तरीका दोयम वाले इस बातपर है कि जब इन हरसहको तसईद करते करते तहनशीन बनालेवें उसमें खासियत अकसीरकी पैदा होजायगी तरीका सोयमके उस्ताद इसतरफ गये हैं कि जब मजमूई जसद कायम (रूह–नफस–जसद) को रूह बनालियाजावे और उस रूहको फिर जसद यानी तेल कर दियाजावे पस वही अकसीर आजम है ।

नोट–यहां जसदका रूह बनाना जौहरलेनेके मानी हैं और रूहसे फिर जसद करदेना रोगन करदेनेको कहा गया है–रोगन आतिशी ताकि हवाई ऐसा रोगन कि फिर हजार तरद्दुतसे अपने अवायलजसदकी तरफ ऊद न करे (सुफहा १ व २ अखबार अलकीमियाँ १६ । ५। १९०५) ।

उसूलकीमिया (उर्दू)।

वाजः रहे साहिबान फनमगरबीके नजदीक जब तक रूह । नफस जसद यह तीनों वाहमी मखलूत व महलूल न होजावें गोया एक जिस्म न बन जावे इसमें खासियत अकसीर पैदा नहीं होगी । पस चाहिये कि इनहरसह हिस्से जसद, रूह, नफस, को मखसूस पानी या अर्कसे तसकिया और तश्विया नरम यहांतक दें कि एक जिस्म होकर किसी तरह भी अजजाइ जुदेजुदे न होसके बल्कि आगपर डालनेसे तेल होजावें तब खासियत अकसीरकी पैदा होगी । (सुफहा १५ किताब अखबार अलकीमियाँ १ । ५ । १९०५) ।

सीमावको कीमियाई बनानेके लिये इलाज (उर्दू)

सीमावका इलाज यह है कि तसईद और हल मलगमः अजसादसे कियाजावे एमाल शमसीमें उन अजसादसे तलगीम यानी छलबंद करना चाहिये जो तिला बनानेके वास्ते मखसूस हैं और एमाल कमरीम उन अजसादसे जो नुकरा बनानेमें इस्तेमाल कियेजाते हैं। (सुफहा अकलीमियाँ ७९ ।)

सोनेकी कीमियाई जांचका तरीका (उर्दू)

कीमियाई सोना अगर इमतहानात जैलमें पूरा उतरे तो सोनेके नामसे काबिल फरोख्तके शरीअन और कानूनन होसकता है वरनः सोना कहकर फरोख्त करना जुर्म शरई और कानूनी है।

अव्वल–आगमें तपा उदेनेसे लोन तिलाई बरामद हो ।

दोयम–आगमें ताउ देनेसे बिलकुल स्याही न आवे।

सोम--आगमें गर्म करके नौसादरकी चुटकी देनेसे मुतगीरुल लोन न हो यानी चित्तियां सफेद या स्याह न आवें और न रंग उडे ।

चहारम–हुक्माने लिखा है सौमर्तबः भी चर्ख दियाजावे तब भी रंग उस्का बदस्तूर रहे।

पंजम–सिवाइ सोनेके दूसरी तमाम धातें तेजाब फारूकीमें महलूल होजाती हैं और सोना सिर्फ तेजाब नमकमें महलूल होसकता है।

शशम–सोनेका वजन सनकी उसमें पैदा होजावे जिसको

पहचान यह है कि दूसरी धातुमें मिलाकर चर्ख देनेसे हमेशहः पेंदीतिलाई होगी ।

हफ्तम-हथोडी व निहाईके जरियेसे काटनेमें पूरा टुकडा कटजाए दरमियानसे टूट न जाय ।

हश्तम-सोनेको चर्ख देनेसे उसकी टिकिया ऊपरकी जानिब गोल मुहद्दिब और माहीपुश्तहो जिसको इस्तलाहमें सुनारोंके सीना उभारना कहते हैं ।

नहम-चर्ख देनेके बाद जब टिकिया सर्द होजावे नीचेकी सितहमें जालीकी तरह खानः हाइ मुश्बक होजावें और उनमें गोलाई हो ।

दहम-अगर नौसादर एक हिस्सा सोहागा एक हिस्सा शोरा निस्फ हिस्सा पानीमें पीसकर पत्थरपर लगावे और गर्म करे तो मजङ्ग होजावे ।

याजदहम-चर्ख देनेके वक्त दाहनी जानिबसे गर्दिश करे। (सुफहा अकलीमियाँ ३१)

तिलासे करवतमें अजसादका सिलसिला (उर्दू)

नुकरा बमुकाबले कुल अजसादके तिलासे अकरब है और मिस उसके बाद है और बाद उसके सुरब है और कलई व आहन बमुकाबले जुमले अजसादके तिलासे दूर हैं मुतरिज्जम नुकरःकी नजदीकी को वजह यह है कि उसके बातनमें वहियत होती है इसी वजहसे रंग बहुत जल्द कुबूल करलेती है। (सुफहा किताब अकलीमियाँ४९)

वजनकी दुरुस्तगीमें यह ख्याल रखना चाहिये कि रंगतमें जितना जियादह एतदाल आताजाता है बजन खुद बखुद दुरुस्त होता जाता है और चर्ख देते देते समेट पैदा होतीजाती है जिससे हलका जसद वजनी होताजाता है । (सुफहा अकलीमियाँ ५०)

गलानेमें भारी धातुका नीचे रहना(उर्दू)

मुतरिजम वा एतबार ठोस और मुतखल खल होनेकी हरजसदका वजन जुदा जुदा है तजरुबेसे साबित हुआ है कि चन्द अजसाद मुख्तलिफउलवजनकी जब एक साथ गलाई जावेगी हमेशह भारी जसद नीचे होजायगा और उसके बाद तरतीबवार उससे हलका उससे ऊपर होगा । (सुफहा अकलीमियाँ ४९) ।

मखलूत धातोंको अलहदा अलहदा करनेकी तरकीब (उर्दू)

फिलजात मखलूतको बुरादा करके आतिशी शीशीमें रखकर ऊपरसे उसका दोचन्द नौसादरका तेजाब डाले जिसको अंगरेजीमें अकवाफोर्ट्स कहते हैं या शोरेका तेजाब डाले जिसको अंगरेजीमें नेडकएसिड (तेजाब फारूकी) कहते हैं यह तेजाब अंगरेजी दूकानोंमें या न्यारियोंसे मिलसक्ते हैं शीशेमें आठवें हिस्सेसे ज्यादा तेजाब न हो बादहू शीशी मजकूर निस्फ पानीमें या बालूमें रखकर नीचेसे धीमीधीमी आग दे मखलूत धातें महलूल होजायगी बादहू उतारकर तेजाबको दूसरी चीनीके बर्तनमें निथारले और नीचेका तलछट स्याह ठंढे पानीसे दो तीनबार धोकर सफूफ सुहागेका मिलाकर चर्ख दे सोना साफ निकलआवेगा बाद उसके तेजाबमें कुछ तांबेके टुकडे डालदे और बदस्तूर साबिक आगपर रक्खे चांदी रुईके गालेकी तरह तलछट होकर तहनशीन होजावेगी बतरीक मजकूर सुहागा देकर चर्ख दे चांदी साफ निकल आवेगी बादहू सीसा या लोहेका टुकडा डालकर तांबेकी तलछटको निकालकर चर्खदे तांबा साफ निकल आवेगा और सीसा अगर अलहदा करना मंजूर हो तो नमक डाले जब सीसा तहनशीन होजाये चर्ख देकर निकालले तेजाब बहुत तेज (प्यूर) न हो जब तेजाबका जोश और धुआं बंद होजाये उतरना चाहिये । (सुफहा किताब अकलीमियाँ २९) ।

सोना केवल नमकके तेजाबमें लगताहै (उर्दू)

सिवाइ सोनेके दूसरी तमाम धातें तेजाब फारूकी (शोरा) में महलूल होजातीहै और सोना सिर्फ तेजाब नमकमें महलूल होसक्ताहै । (सुफहा किताबअलकीमियाँ ३१)

जडीसे वेध जडीसे ताम्रका सोना ।

सीतीपोई स्यामलता स्यामपातके रसमें ताम्रपत्र लेपि आंच देइ तो सोना होगा ।

जडीसे ताम्रका सोना ।

सर्व गंधाके रसमें-ताम्रपत्र लेपि आंच देइ तो सुवर्ण होगा ।

जडीसे लोहका और ताम्रका सोना ।

कालकेतुके रसमें लोहा लेपै तो सुवर्ण होताहै । ताम्रपत्रपर लेपि आंच देइ तो सोनाकी सिद्धि होइ।

जडीसे ताम्रका सोना ।

शाकवृक्षस्य निर्यासं पलमात्रं समानयेत् । पलेन शिग्रुबीजस्य रसेन परिमर्दयेत् ॥ ॥ ४६ ॥ पलमात्रं च शुल्वस्य पत्रं सूक्ष्मं विधापयेत । बहुशो लेपितं कृत्वा घर्मे दत्त्वा पुनः पुनः । पश्चात्तद्धाम्यते पत्रं शुल्वं हेमापि जायते ॥ ४७ ॥ (बृ. यो., र. रा. शं.)

अर्थ-शाकवृक्षके चारतोले गोंदको पलभर ही सैंजनेकी मूलीके रससे घोटे फिर एक पल ताँबेके टुकडोंको सूक्ष्म अर्थात् कंटकबेधी करावे उन पत्रोंपर ऊपर कहेहुए लेपको कर २ के सुखालेवे फिर उन पत्रोंको आँचपर रखकर धौंके तो ताम्रका सुवर्ण होजायगा ॥४६॥४७॥

जडीसे थूकसे चांदी वा तांबेका सोना ।

बूटी गारहुन । पत्र तीन पीतफूलफल अरुन गोल प्रमान श्रीछबीता १ सब भूमिमें होत हैं तेकर पात मुखमें डारै । कुचै तब ताम्रपत्रकी रूपापत्र अगिनीमें लाल करे तब मुखते रस डारिदेइ तब फेरि आंचदेइ तो सोना होइ ।

गंधक और सोनेसे ताम्रका सोना ।

सुधामुखी । के रसमें गंधक हीरं निषलै । ताम्रपत्रपर लेपि आंचदेइ तो सोना होताहै ।

नोट (१)-क्या कालीपोई-या कडुवी पोई (या गीलीपोई)
नोट २-क्या सूर्य्यमुखीहै ?

बूटी और चन्द्रार्कसे ताम्रका सोना।

बूटी गरवहरता--पातवांसको अस। फूलफल नहीं। सर्व भूमीमें होतहै रससों धातु चन्दा वली खलिताम्रपत्र लेपि आंच देइ तो सोना सिद्ध होगा।

चिलममें ताम्रका सोना (पारदयोग)

हलदी उमदा पीस मिट्टीमें मिला क्यारी बना ढाकफूलके काढेसे सींच तम्बाकू बोवे जब डंडीनिकले तब उन डंडियोंमें ६ माशे फी डंडी पारा छेदकर भरदे ऊपरसे आटेसे बंद करदे। पकजानेपर काटले इस तम्बाकूको चिलममें पीनेसे चिलमका पैसा सोना बनजायगा। (कश्मीर यात्रामें सुना)

बूटी और गोदन्तीसे चिलममें ताम्रका सोना।

कादन्ती छोसे पातमें रस नहीं पांच सात कांटा। पातके किनारे होतहैं भूमिमें पात फैला रहत है। सबजगह पात औ गोदन्ती हरताल, मीजिताम्रपात्रमें लेपि चिलमपर धरि पीवे आंच लागे तो सुवर्ण होता है।

बूटी और गोदंतीहरतालसे ताम्रका सोना।

सेतपुहुपको तीन पतिया (सफेद फूलकी तिपत्ती) के रस तोला ५ रत्ती १ हरताल गोदंती खलि ताम्रपत्रपर लेपि आंच देइ तो सोना होता है। अवटावै तो संशय नहीं।

केवल बूटीसे रांगकी चांदी और पारद भस्मसे तामेका सोना।

बूटीकारवंती-पातवांसकोअस। फूलअरुण त्रीछहस्तप्रमाण परबतपर होत है, माटीतरै तेलअस होतहै, चिकनीसे मासा १की तोला १ पांचसेर रांगामें डारे तो रूपा होताहै। तेके पातके रसमें पारा खलै। तोला १ खलि चौरासी तोला तामामें डारै रत्ती १ तौ सोना सीधि,ते करेलकरीकी माला बनाए जैको जपै सो सिद्धि हो।

रजतक्रिया रांगकी चांदी बकरीके पेटमें।

काली बकरीको घरविचरखणा और आकके पत्रोंके विना और कुछ नहीं उसको खानेदेना। ९ दिन फिर ज्वारदा आटा या पक्का और सूक्ष्म कृतरंग ५ तोले रोटी वणानी तवेऊपर सेकनी हठ नहीं सेकनी वह रोटी बकरीको खिलानी और आकके पत्रों बिना और कुछ नहीं खिलाना और उस बकरी दियांमेंगणा सुखाकर टोयेमें पाकर ऊपर थोडासा नौसादर धूडदेना और होर गोहे लगाकर आग्निदैणी रंग सब पिघलके अधःस्थ लघु गर्तमें पैजायगा उसको कुठालीमें पाकर सुहागा पाकर गालछैणा रंजित है (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

जडीबलसे पारदसे तांबेका सोना होइ पारदलेप।

गजदंतीबूँटी-(क्या हस्तिशुंडी है) के रसमें पारा खलिताम्रपत्र लेपि आंच देइ तौ सोना होगा।

अन्यच्च।

सीलवंतीबूटी-(क्या छुईमुईसे मुरादहै) के रसमें पारा खलि ताम्रपत्र लेपै आंच देइ तो सोना होगा।

पारा और रुद्रवंती जडीसे ताम्रका सोना धातुवेधी रसभस्म पारद लेप।

चणकपत्रोपमैः पत्रैः सदाम्बुकणवर्षिणी। रुदंती नाम सा ज्ञेया तीव्रदारिद्र्यनाशिनी ॥ ४८ ॥ रुदंतीरसमादाय रसेन सह मर्दयेत। रविपत्रप्रलेपात्तु दिव्यं भवति कांचनम् ॥ ४९ ॥ (नि. र.)

अर्थ--जिसके पत्ते चनेके पत्तोंके समान हों और जिसमें नित्य जल झरताहो उसको (रुद्रवंती) कहते हैं वह तीव्र दारिद्र्यके नाश करनेवाली है उस रुदन्तीके रससे पारदको घोट ताँबेके पत्रोंपर लेपकर अग्निमें धोंके तो सुवर्ण होगा ॥ ४८ ॥ ४९ ॥

रुद्रवंतीसे अकसीर बनानेकी तरकीब बजरिये सीमाब। (उर्दू)

अकसीर बनानेका तजरुबा मुहम्मदयसीनखां साहबने भी इसतरह किया है कि पारेको कोडीमें भरकर दरख्त मजकूरके नीचे गाडदिया सुबहको दूसरे रोज निकाला पारा रेगकी तरह होकर अकसीर शमसी होजाता है और एक हुवः तोलेभर चांदीपर तरह होता है (सुफहा अकलीमियाँ २३०)

हेमक्रिया रुद्रवंतीजडीसे और पारेगंधकसे ताम्रका सोना।

बूटी रुद्रवंती--पात चनाको अस। फूल सेत औ लाल होतहै। तेल अस चीकनीसी गीरतहै। नीक त्रीन अत्रर नहीं होत तेके रसमें पारा १ गंधक आंवरासार १ गेरू १ खलि ताम्रपत्रपर लेपि आंच देइ तो सोना सिद्ध होगा।

बूटी और गंधकसे ताम्रका सोना।

बूटीभगदंता--पात श्याम। पुहुप स्याम। छोट त्रीछ सब भूमिमें फैलतहै तैको रस तोला १ गंधक नेनुआ तोला १ खलि ताम्रपत्रपर लेपि। दीपक आंच देइ तो सुवर्ण होताहै।

अभ्रक भस्मसे रांगकी चांदी।

बूटी गरवंती--पात सो आको अस। फूल पीते तेके रस तोला १ पीतअभ्रक मासा १ खली घरी १ जायफरमें डारि कपरौटी कारि सुखाई। आंच देइ घरी ४ मासा १ सोसेर रांगामें अवटिडारै तो चांदी होगी।

और भी।

दुधीके[१] दूधमें। पीत अबरख गरमकारि बुझावे बार २१ तो भस्म होइ रत्ती १ तोला रांगामें डारै रूपा होगा।

पारा और संखिया शोरेको खरलकर उस चूर्णसे रांगकी चांदी।

१ दुधीका दूध निकलना कठिन है। क्या यह जडी अभ्रकके फूकनेमें काम देगी।

बूटी अग्रदंती-पात करोंदाको अस, फूल पीत छोट सर्व भूमिमें होता है । तेके रसमें पारा समूल १, कलमीसोरा १, खलै दीन १, तव रत्ती १ सेर रांगामें डारे पानी सोखे रूपा होइ ।

हेमराजी यानी कमरंग सोनेको तेजरंग करना (उर्दू)

गंधक तीन तोला चार माशे घीमें गलाये और घीग्वारमें डालदे इसीतरह पांच मर्तबः घीमें गलाये और घीग्वारके अर्कमें डालदे फिर तोलेभर नौसादर उसमें मिलाये फिर पांच तोला मिर्चियाकन्द मिर्चें पानीमें खूब पीसकर इस पानीको थोडाथोडा उस गंधकमें डालकर जज्ब करे और चने बराबर गोलियाँ बनावे फिर कमरंग सोना गलावे जब चाशनी होजाय एक एक गोली उसमें डालताजाय जब सब गोलियाँ पडजायँ उसका रंग तांबेकासा होजायगा यह भी हेमराजी होगई फिर तोलेभर कमरंग सोनेमें माशेभर फिर हेमराजी डालकर गलावे चौगुना रंग सोनेका उमदा होजावेगा । (सुफहा खजानः कीमियाँ १९)

सोना बनानेकी तरकीब बजरिये शुर्खा गंधक (उर्दू)

गंधक आठ पल, सांभरनमक आठ पल दोनोंको नागरबेलमें यानी पानके अर्कमें चार प्रहर खरल करे शामको सब दवाको खरलमें इकट्ठी करके जंभीरीके अर्कमें तर करदे इसीतरह चालीस रोज जब पूरे होजावें खरलसे निकालकर रखछोडे अगर एक महीने उसे खावे तो तमाम बीमारियाँ दूर हों अगर चांदीके पत्रोंपर लेप करके दो जंगली छोटे ऊपलोंके बीचमें रखकर आग दे तीन आंचोंके बाद सोना बनजावेगा हर आंच आगसर्द होनेके बाद हो । (सुफहा २३ खजानः कीमियाँ) ।

चांदीको जर्द रंगनेकी तरकीब (उर्दू) ।

अर्कसत्यानासी पुख्तः शुदः तीन बोतलका गंधक आँवलासार दो बोतल परः सफाल नगलीमें रखकर चोयादेवे मगर गंधकको किसी लकडीसे पहले रेजः रेजः करलेवे ताकि चोया देनेके वक्त गंधक गुदाज न होजावे बाद तमाम होने अर्कके गंधकको बारीक पीसकर दोदो माशेकी पुडिया बनाले नुकरह एकसौ तोलेको चर्ख देकर एक पुडिया तरह करतेजावे बारहवें चर्खमें बारहवीं पुडिया तरहकरके चांदीको बाहर निकालले वह चांदी कुश्ता होकर निकलेगी । फिर इस कुश्तेको माइउलहयातसे जिन्दः करले चांदी जर्दरंगीन होजायगी बराबर वजनके सोनेके साथ हमिलान करे मकबूल बाजारहै । (सुफहा २२ अखवार अलकीमियाँ दोस्तमुहम्मदखां एडीटर अख.अल.) ।

गंधकमोमियासे चांदी वा ताम्रका सोना ।

पलाशपुष्परससे खरल करना गंधक दिन सात फिर बुझाणा २१ बार वा अधिक (यावत्सिक्थसमो भवेत् । तद्गंधकम्) रजत १० तोलापर १ रत्ती ताम्रमें योजना करे (जंबूसे प्राप्त पुस्तक) ।

बजरिये रोगनगंधक अयार बढानेकी तरकीब (उर्दू)

गंधक सबज जिसका रंग सहक करनेके बादभी सबज़ रहताहै एक तोला, मालकांगनी एक तोला, सफरतुलबैज यानी जर्दीबैजः मुर्ग दो अददलेमूं कागजी निस्फ आसार पुख्तः सबको यकबारगी मिलाकर खरलकरे कि गोलियां बँधसकें बादहू शीशीमें बतौर पातालयंत्रके रखकर गिलेहिकमत करके दरमियान बालूके रक्खे ऊपरसे बाजारीसख्त कोयलोंकी आगदे रोगन खुशरंग तिलाईसुर्खी माइल टपकेगा । और उससे अयारसोनेका ज्यादा हो सकेगा लेकिन बाज औकात कमी वेशी आगकी वजहसे रोगन बदरंग पीतलके रंगका निकलताहै इससे अयार अफ्ताका काम नहीं निकलता अलबत्ता नकर्स और अर्कउलनिसांके दर्दके वास्ते इस्तमाल करनेसे नफा हुआहै और दर्द बिलकुल जाइल होगयाहै बादहू रोगन मजकूरमें हरताल वर्की तोलेभर और मैन्सिल कनेरी तोलेभर पीसकर मिलावे और कमरंग सोनेपर जमादकरे और सायेमें खुश्क होनेके बाद भूभलकी आंचमें दफन करदे इसीतरह तीन अमलकरे बादहू गलाकर पाचकदस्तीमें गुदाजकरके छोडे और गलानेके वक्त ख्यालरहे कि हरताल या मैन्सिलका कोई जुज सोनेमें न रहजावे बरन सोना फूटक होजाता है और जब ज्यादह चर्ख दियाजावे तब फूटकपना जाइल होताहै ।(सुफहा किताब अकलीमियाँ) ।

तारकृष्टीगंधक तैलद्वाराचन्द्रार्कसे सोनेका जोड़ा ।

कर्पासद्वयबीजानि रविबीजानि च द्वयम् । धत्तूरकस्य बीजानि बृहत्योश्च द्वयोस्तथा॥ करवीरस्य बीजानि समभागानि कारयेत् । पश्चाद्वस्त्रं दृढं शुद्धमर्कदुग्धेन सप्तधा ॥ ५० ॥ भावयेत्सार्षपात्तैलभुक्तं पश्चाच्च ॥ गंधकम् । कृतसूक्ष्मं पुनः पिष्ट्वा वस्त्रलिप्तं प्रयत्नतः ॥ ५१ ॥ औषधानि मया यानि पुरा प्रोक्तानि तानि च॥ क्षेपणीयानि तद्गंधस्योपरि प्रमितानि च ॥ ५२ ॥ वस्त्रं संमार्ज्यते गाढमयःशूलिकया च तत् । निबध्यते ततः पश्चादयसोऽपि शलाकया ॥ ५३ ॥ प्रोतयित्वा भृशमिमामग्निं तत्र च कारयेत् । तदधो भाजनं धृत्वा ज्वलमानात्तदौषधात् ॥ ५४ ॥ तैलं गंधकसंभूतं भाजने निपतत्यधः । तेन चन्द्रार्कपत्राणि परिलिप्तानि वह्निना ॥ ५५ ॥ तावंत्येव पुनस्तप्त्वा पुनरग्नौ परिक्षिपेत् । भवन्ति तानि रम्याणि सुवर्णं सप्तवर्णकम् ॥५६ ॥ अपरं नववर्णं च सुवर्णं तत्र मेलयेत् । अष्टवर्णं भवत्येवमेवं योजनिका क्रमात् ॥ ॥ ५७ ॥ तथा तथा भवेद्वृद्धिर्वर्णकाणां

वरा त्विह । तारकृष्टी निगदिता विपदा-
मपदं भुवि ॥ ५८ ॥ (बृ० योगतरंगिणी.)

अर्थ–दोनों कपासीके बीज, दोनों कनेरोंके बीज, धतूरेके बीज, दोनों कटेहलियोंके बीज, इनको बराबर लेवे। पीछे मजबूत धोयेहुए वस्त्रमें आँकके दूधसे सात भावना दे, फिर सरसोंके तेलसे भिगोकर गन्धकके चूर्णको पीसकर वस्त्रमें लीपदे, और पूर्वोक्त औषध (दोनों कपासीके बीज इत्यादि) गन्धकके बराबर उसमें डाले। लोहेकी शूलीसे अच्छी तरह वस्त्रको शुद्ध करना चाहिये फिर उसको सुईसे सीकर आगपर चढावे, उसके नीचे वर्तन रखदे, जब औषध जलने लगतीहै तो गन्धकका तेल उस वर्तनमें पडता जाता है। उस तेलसे चन्द्रार्कपत्र लीपकर अग्निमें तपावे इस प्रकार फिर फिर करे तो सुन्दर सप्तवर्ण सुवर्ण बनजाता है। दूसरा नववर्णवाला सुवर्ण उसमें मिलावे तो अष्टवर्णवाला सुवर्ण होजावेगा। इसी क्रमसे योजना करे तो वर्णकोंकी वृद्धि और उनमें उत्तमता होती है, यह सब आपत्तियोंकी नाशक तारकृष्टि कही गयी है ॥ ५०–५८ ॥

हरिताल तेलसे ताम्रका सोना।

कृष्णसर्पमें तबकी हरिताल भरकर एक हांडीमें पाकर मुख बंदकर किनारे धरछोडे जब सब कृमि होजाय तो फिर बंद कर छोटे छोटे कीडोंको बडे कीडे खाजायँगे जब थोडे रहजायँ तो पातालयंत्रसे तैल निकाल लेवे वह तैल ताम्रको सुवर्ण करताहै। तैल लगाकर कोयलोंपर भखाणा ताम्र सुवर्ण होगा। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)।

गंधक तेलसे ताम्रका स्वर्ण।

रोहित मत्स्यके तैलको गोमयमें गाडना २१ दिन फिर उसमें उससे आधा गंधक पाकर गोमयमें गाडना २१ दिन सब एकाकार द्रुत होजायगा; उसको फिर खिचडीमें पकाणा ताम्रपत्रपर वा पित्तलपत्रपर लेप करके तपाणा एवं त्रिवारं। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

रोगन गंधकसे अकसीर शोरेका जुज़ (उर्दू)

एक स्कूलमास्टर खादिमुल पुकारा था एक फकीर इसके पास आया और नुसखा मुन्दरजः जैल तय्यार किया आँवलासार, कलईशोरा, लौनियाखार, बराबर वजन लेकर सहक करके गिलीकूजमें (जो इसके पासका था) डालकर मसदूदुल समवमतीन व मुखफ्फिस करके एक शेर पाचक जंगलीकी आग देदे सर्द होनेपर निकाला तो सब दवा नरम मुशम्मै बरामद हुई पैसेपर यह दवा कद्रे डालकर मलकर सुर्ख किया तो खालेस सुर्ख होगयी फकीरने कहा कि हम जाते हैं यह तय्यार शुदः दवा तुम लेलो इसने कहा कि अब मैंने सब तरकीब अपने सामने बनती देखली है मैं खुद बनालूंगा यह आप हो लेजाइये इसके जानेपर मास्टरने चंदबार बनाया तो दवा न बनी बल्कि आग देनेसे उडगयी मैंने भी दो दफे किया तो नाकामयाबी हुई बराह करम इसकी दुरुस्ती फर्मावे जियादः नियाज ॥ (राकिम नरमुहम्मद अजमूकल लाहौर)

संखियेकी भस्मसे चांदी (गालिबन) राँगकी।

सेत पुहुपकी तिपतिआके रसमें संखिया दिन १ खरले तब केराके गाभमें धरि आंच देइ भस्म होइ एक रत्ती अठारह तोलामें डारे रूपाकी सिद्धि हो।

(अखबार अलकीमियाँ १५।३।१९०५)

संखियेकी भस्मसे रांगकी चांदी।

बूटी कोआस–सर्व भूमिमें होतहै धानके खेतमें बहुत होतहै बलुआसंबुल खारमें खलै सुखावे सात पुट देइ, तब कपरौटी कारि सुखाइ चारि कंडाकी आंच देइ घरी १ कच्चा रहे भस्म न होइ, तब मासा १ सेर रांगामें डारि अवाटे तो रूपा होताहै--

संखियाभस्मसे वेधक।

संखिया खरमूत्रमध्य २१ दिन रखणा द्रोणपुष्पीकी भस्म २ सेर हेठ ऊपर देकर १२ प्रहर मंदाग्नि देणी वेधक होय। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

संखिया मोमियासे रांगकी वा ताम्रकी चांदी।

खस्सी (बकरे) दी चरबी सेर पक्का संखिया २१ माशे चरबी लपेट कर ताम्रपात्रमें अग्नि देणी मंद ऊपरों बंद करके सिक्थोपम होजायगा उसको बंगपर पाणा एक रत्ती तोला वंगपर ४ तोला ताम्रोपरि एक रत्ती (नीलवस्त्रेण चालयेत्) (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

संखियातेलसे ताम्रसे चांदी।

संखिया ४ तोला शोरा आधसेर पक्का भिलावा या पक्का शोरा कढाईमें पाकर पकाणा जित्थों आठ उठे ओथे भिलावा पादेणा ऐसे सब भिलावे पाणे जब शोरा निर्धूम होवे तब हेठ शंख रखकर ऊपर शोरा पाणा शंख फूल जायगा शोरा हटाकर शंख पीसकर पारखगा शरद्-जगां रखणेसे नरम होवेगा ताम्रपत्रपर पाणा--(जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

संखियेका तेल (गालिबन) ताम्रसे चांदी।

श्वेत[1] संखिया १ तोला, जमालगोटेकी गिरी २ तोले दोनोंको निंबूरसमें खरल करना ४ दिन फिर अग्निपर पाके देख लेणा जेकर धूमदेवे तो फिर खरल करना जब अग्निपर पायाहुआ बल उठे धूम ना देवे तब सिद्ध भया उसको शीशीमें पाकर लिदमें दवाछोडना रोज ५० फिर चांदी द्रवितपर पाणा रत्तीतोला सुवर्ण होवे--(जंबूसे प्राप्त पुस्तक--)

मनसिलभस्मसे रांगकी चांदी।

अष्टधारासे उडके दूधमें मएनासिल मुलतानी खलै दिन १ तब आंच देइ पहरचारसे भस्म रत्ती १ के मासाभरि आध सेर रांगामें डारे तो रूपा होगा।

शिंग्रफभस्म (वेधक) रूमी मस्तंगी और रेवन्दचीनीकी लुगदीमें आँच।

रूमी मस्तंगी रेवन्दचीनी समभाग दोनों खरल करके

१ श्वेतसंखियासे सोना बनाना असंभव,-ताम्रकी चांदी संभव है ॥

तुगदी बणाके उसमें दोनोंके बराबर सिंग्रफ रखके अग्नि देणी वह सिंग्रफ चांदीपर वा कलीपर पाणा (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

हिंगुलके अग्निस्थायी करनेकी तरकीब ।

बलिदर्दुरपतिलोहताँपं कुरुते हिंगुलखंड-पक्षखंडम् । शशिहेलिहिरण्यलोहमूषा-दिनलब्धेन तुषोश्मना रुणद्धि ॥ ५९ ॥ (र. चिं., र. रा. शं.)

अर्थ-गन्धक, अभ्रक, रोहिषतृण, सब लोहों तथा हिंगुलको भस्म करताहै, परन्तु चूका, अर्कवृक्षके संयोगसे लोहमूषामें दिनभर तुषोंकी आँचसे स्थायी होजाताहै ॥ ५९ ॥

सिद्धमतखोट ।

द्रुतदर्दुरपूतिलोहसेकः कुरुते हिंगुलखंड-पक्षखंडम् । शशिहेलिहिरण्यमूषिकापि ध्रुवमक्षीणधियामनेन लक्ष्मीः ॥ ६० ॥ (वृ. यो.)

अर्थ-गन्धकभस्म और रोहिषतृणका सेक हिंगुलके टुकडे टुकडे करताहै परन्तु चूका कनेर आदिके योगसे सुवर्णमूषामें सिद्ध करनेसे सद्वैद्योंको लक्ष्मीप्राप्ति करताहै ॥ ६० ॥

हिंगुलके अग्निस्थायी करनेकी तरकीब ।

दरदगुटिकाश्चन्द्रक्षौद्रैर्निरन्तरमावृतास्त-रणिकनकैर्बिबागंधाश्मना सह भूरिणा । रचय सिकतायंत्रे पाकं मुहुर्मुहुरित्यसौ हुतभुजि वसन्वस्थेमानं कथं च न मुंचति॥ ॥ ६१ ॥ (र. चिं.)

अर्थ-दरदकी टिकियाओंको चूका और मधुसे घोटके आक वा घीकुँवार और धतूरा, कुंदुरू, खूब गन्धकके साथ वालूयन्त्रमें वारवार गर्म करे तो हिंगुल अग्निस्थायी होताहै ॥ ६१ ॥

नागभस्मसे चांदीका सोना ।

५ तोले सिक्का ढाई तीन तोले मनशिला पीसके सिक्के-ऊपर चुटकियां देजाणा और चोडदी दाडीदी लकडी फेरदे जाणा अथवा वेरीकी लकडी फेरनी सिक्का मरजा-यगा, उस सिक्केको निंबूरसमें सात रोज फिर बालुका-यंत्रमें चार पहर फिर खरल फिर आग ऐसे सात वार आग देणी सिद्ध भया तोले रजतपर १ रत्ती पाणा स्वर्णकरणम् । (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

अक्षय और रंजितनागसे चांदीका सोना ।

पलाश पुष्प रस १६ सेर नाग १ सेर (द्रुते नागे पुष्परसप्रक्षेपः । वस्त्रेण शनैः शनैः अक्षीणं जायते नागं तुर्यांशं चतुःषष्टिमिते तारे भाग एकोस्य दीयते लोहपात्रे)

पारदयुक्त सिक्काभस्मसे ताम्रका सोना ।

सिक्का लोहेकी कडछीमें पाकर गालना और पलाशकी लकडी फेरते जाना सिक्का भस्म होजायगा उस भस्मके बराबर पारा पाकर १२ प्रहर निंबूके रसमें खरल करना, फिर बालुकायंत्रमें पकाणा, १ चावल तोले तांबेद्रावितपर पाणा शुद्ध होवे । (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

रजतकर रांगकी चांदी ।

श्वेताभ्रं श्वेतकाचं च विषसैंधवटंकणम् । स्नुहीक्षीरैर्दिनं मर्द्यं तेन वंगस्य पत्रकम् ॥ ॥ ६२ ॥ लेप्यं पादांशकल्केन चांधमूषागतं धमेत् । यावद्द्रावयते वंगं पूर्वं तैलेन ढाल-येत ॥ ६३ ॥ वार्यादिलेपमेकं च सप्तवा-राणि कारयेत । पुत्रजीवोत्थतैलेन ढाल-येत्सप्तवारकम् । तद्वंगं जायते तारं शंख-कुन्देन्दुसन्निभम् ॥ ६४ ॥ (र. रा. सुं.)

अर्थ-सफेद अभ्रक, सफेद काच, सिंगियाविष, सैंधा-नोंन और सुहागा इनको एक दिन थूहरके दूधमें घोट रांगके पत्रों पर लेपकर अंधमूषामें रख धौंकनीसे धौंके जब जाने कि वंग गलनेलगा तब पहले तेलमें ढालदे फिर पूर्वोक्त लेपकर आंचमें तपाय पुत्रजीव (जीयापोता) के तेलमें ढाले इस प्रकार ७ बारमें वह वंग शंख, कुन्द और चन्द्र-माके समान सफेद चांदीसा होजायगा ॥ ६२-६४ ॥

रांगकी चांदी ।

जस्तको अम्मीमें भस्म बणाना फिर उसको पारा मिला-कर फलीके तुगदेमें आग देणी । (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

ताम्रभस्मसे जसदकी चांदी ।

गजपुटीके रसमें तामा सेत खलै पहर ४ नौसादर खलै दिन १ तब शंखद्राव नीबूमें डार कपरौटीकी आंच देइ तो भस्म होइ तब रत्ती १ चौदह तोला जस्ताकी पारामें डारै तो रूपा होइ ।

ताम्रभस्मसे नागकी चांदी ।

सेतपारिजातके दुग्धमें सेततामा खलै पहर १ तब सूरन (जमींकंद) में डारि आंच देइ भस्म होइ सो रत्ती १सत्र-हतोला सीसामें डारे तो रूपाकी सिद्धि हो ।

ताम्रभस्मसे रांगकी चांदी ।

पीत रक्तबूटी (क्या रक्तपत्ती है वा स्वर्णक्षीरी) के रसमें तामा सेतमें खलि दिन ३, भांटामें डारि कपरौटी माटीमैं करि आंच देइ दिन १ तो भस्म होइ सो भस्म सतोला रांगामें डारै तो रूपा होवे ।

ताम्रभस्म और रजतकर योग ताम्रभ-स्मसे वंगकी चांदी ।

जपोलोटा २ तोले, भिलावा ४ तोले, जवायण १ तोला टका मनसूरी १ पूर्वोक्त पूर्वोक्त तीनोंकी तुगदीमें बणाके दो कटोरी कलीकी बणाके उसमें टिक्की समेत डबोदे रखणी उपरों पंजपा कच्चे चिदियां लीएं लपेट कर खिन्नू बणाके

---

१ अभ्रम् । २ सेकमित्यपि । ३ चन्द्र, चांदी, चूका । ४ सूर्य, ताम्र, आक । ५ मूषिकापि ध्रुवमक्षीणधियामनेन लक्ष्मी-भित्यपि पाठः ।

१-क्या पहेली " एक चंचल दसगंधक खाय" में जो "फिर कागा नागामें वसे " यह पाठ है उसका लक्ष इस क्रियासे होताहै ।

गर्त बीच रखके आगदा कोयला ऊपर रखदेणा गर्त ऊपर छेक करके ठीकरी रखदेणी स्वांगशीतल लेणा भस्म हो-जायगी, ढोये बहुत होणा तो उस बमूजिब सब दवाई बँधा लैणी लीएं पंज पाव कुछ अधिक कर लैणी फिर आकदा दुग्ध पंज पाव और कली पंचपाव शुद्ध लेके एक मिट्टी दी चाटी बिच कलीदे हेठ आकदा दुग्ध आधा पाकर ऊपर कली रखकर कलीपर ६ माशे पूर्वोक्त ताम्रभस्म और १ तोला रस कपूर ६ रत्ती पारा पाकर ऊपरों आकका आधा दुग्ध पादैणा ऊपरों चार बदी गौका दुग्ध वा महिषीका दुग्ध पाकर चाटी ऊपरों बंद करके गोहे वा लिद पाकर टोपेमें चाटी बिशकार रखके टोटे बीच आगदेणी जिससे दुग्ध सब सडजाये तांकली निकाल लैणी, रजत है चरख देलो । (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

जौहर हरताल और कुश्ता तांबा दोनोंसे अकसीर कमरी (उर्दू)

हरताल बरकीको प्याले गिलीमें रखकर दूसरा प्याला बतौर सरपोश लबबलब जोडकर देगदानपर रक्खे नीचे नरम नरम आंच जलावे ऊपरवाले प्याले यानी काँसेपर पोदीना देशीके अर्कका चोया देता रहै जो जौहर ऊपर लगेंगे वह अकसीरका हुक्म रखते हैं अगर इनमेंसे किसी-कदर मिसपर लगाकर आंच दे तो फौरन मिस कुश्ता होजायगा कुश्तामिस तांबा मुसफ्फी ९ माशे रांग ६ माशे हर दोको गलाकर जब एक जिस्म होजाय इसके रेजे रेजे करले; सीमाव दसहिस्सा आँवलासार चहारहिस्सा दोनोंकी कजली करके रेजहा मजकूर दसहिस्सेके नीचे ऊपर देकर किसी बोतेमें खूब बंद करके बाद कपरमिट्टी गजपुट आंच दे कुश्ता होगा यह कुश्ता हमःसिफत मौसूफ है । और अजीबुल खवास है नामर्दको मर्द बनाना तौ इसके बायें हाथका कर्तव्य समझिये फालिज लकवा, अर्धंग, गठिया कुल सातही खुराकमें काफूर होताहै बवासीर खूनीका तौ नमूद नहीं छोडता खुराक एक बिरंज वाजको निस्फ बिरंज। जौहर हरताल व कुश्ता तांबासे चांदी बनानेकी तरकीब । (फ) अगर इस कुश्तेके हमवजन जौहर जरेनख जो पोदीना देशीका चोया देकर हासिल कियेगये हैं । दोनोंको बाहम मिलाकर अर्क ग्वारमें सात रोजतक दिनमें खरल और रातको नरम आंच दीजावै, एक तोला मुश्तरीपर एकतरह करनेसे खालिस कमर करता है (सुफहा ७ व ८ अखबार अलकीमियां) ।

रजतकर तांबेसे चांदी ।

दाल चिकना स्नुही बीच रखणा दिन १५ फिर एक कुज्जेमें रखकर दूसरा कुज्जा उसपर औंधा मारके डमरूयंत्र बनाकर उसके नीचे दो लकडीकी अग्नि बालनी घडी १ दाल चिकणा ऊपर जा लगेगा वह जौहर लेके रखणा फिर चंगा त्रामा लेकर उसको सर्षप जलमें १०० बार बुझाणा फिर समभाग ताम्रके कली लपेटकर ऊपर लीरां लपेटके आग लगा दैणी दोनों एक जान कांस्य सदृश होजावेगा फिर १ तोला (डबलपैसा) त्रामा कुठालीमें पाकर पहले दो रत्ती कांस्य पाकर गालना फिर दो रत्ती जौहर पाकर चरख देकर बेचना रजत शुद्ध है (जंबूसे प्राप्त पुस्तक) ।

चांदीका जोडा तांबेको सफेद करना ।

श्वेत मुर्दासंग और सुहागा दोनोंको खटयायीनाल खूब पीसना फिर तांबेके पत्रपर लेप करके सुखाकर अंधमूषामें देकर चरख दैणा और थोडासा लवण संग श्वेत भी दैणा और आठवाँ हिस्सा जस्त भी पाकर चरख दैणा साफ श्वेत होजायगा, रजत भी रलाना जेकर जोडा दागदार होवे वा चांदी काली होवे तो बहुत बार गालके मुलठीके पाणीमें पाणा तब श्वेत होजायगी (जंबूसे प्राप्त पुस्तक) ।

हेमरक्ती हेमवर्णवर्धकक्रिया ताम्रयोग ।

हेम तोले प्रदातव्यं ताम्रं माषार्द्धकं द्रुते । ताम्रे जीर्णे शुभे शुद्धे द्विगुणे चारणं भवेत्॥ ॥ ६५ ॥ त्रिंशद्गुञ्जासु संख्यासु वर्णहीना सुदीयते । हेम्नो हेम्नोस्य गुंजैका वर्णयुग्मो-पपादिका ॥ ६६ ॥ (बृ. यो.)

अर्थ–एक तोला सुवर्णको गलाकर एक मासे ताँबेको डालदेवे । जब कि ताँवा जलजाय तब पूर्वसे दुगुना रंगत-दार सुवर्ण होगा इस एक तोले सुवर्णको एक २ रत्तीकर गलेहुए खराब सोनेमें डालता जावे उत्तम सुवर्ण होगा ॥ ॥ ६५॥६६ ॥

हेमराजी यानी कमरंग सोनेको तेजरंग करना ताम्रको गंधसे मारकर ३ बार जिलाया है (उर्दू)

साफ तांबेको जंभीरीके रसमें ३ बार बुझाव दे फिर दो हिस्से गंधकमें उसको मारकेभर सादे पानीमें घोलकर धूपमें सुखाले और भिगोते वक्त दूना हिस्सा उसका गंधक उसमें मिलावे फिर दसवाँ हिस्सा इन सब दवाइयोंका पारा साफ और दसवाँ हिस्सा और गंधक मिलाकर खूब खरल करे फिर दो हांडियोंमें डालकर कपरमिट्टी करके सुखावे और बालूयंत्रमें रखकर दोपहर तेज आंच दे जब जंतर ठंढा होजावेगा पारा ऊपरकी हाँडीमें जमजायगा और दवा नीचेकी हांडीमें रहजावेगी पारेको अलग रहने दे और फिर जिन्दा करे यह तीसरे दर्जेकी हेमराजी होजा-वेगी तोलाभर सोनेमें एकरत्ती यह हेमराजी डालकर गलाये तौ पांचगुना रंग होजावेगा (सुफहा खजानः कीमियाँ १८ व १९) ।

सोनेका जोडा तीनबार गंधकसे मारे ताम्रसे हरताल सत्त्वयोग ।

त्रिवारं गंधकहतं ताम्रं हेमद्वयोरिदम् । सत्त्वं तालस्य माषैकं योजयेत्सर्वकामदम्॥ ॥ ६७ ॥ अष्टवर्णं भवेद्धेम ताम्रं गंधक-मारितम् । एतयोर्दीयते रम्यं जायते कांचनं शुभम् ॥ ६८ ॥ (बृ. यो.)

अर्थ—गंधकसे तीन बार माराहुआ ताँबा १ एक तोला सुवर्ण और एक मासा हरताल सत्त इन सबको मिलाकर धोंके तो आठवर्णका सुवर्ण होताहै वह सुवर्ण

१ चारुणमित्यपि ।

एक तोला और गंधक माराहुआ ताँबा एक तोला इन दोनोंको चर्ख देवे तो उत्तम सुवर्ण होगा ॥ ६७ ॥ ६८ ॥

जोडासुर्ख तूतियासे ताँबा निकालकर उससे चाँदी रंगकर उससे हम्मि-लान तिला (उर्दू)

नीलाथोता १० तोले बारीक करके एक कपडेकी पोटलीमें बाँध लेवे फिर उस पोटलीको तेल सरषपमें भिगोवे और लोहेके जर्फमें आठ रोजतक रक्खा रहने दे बाद आठरोजके उसको आग लगावे जब वह जलकर राख होजावे तो बजरिये व्याइउलहियात यानी शहद-सुहागा घी हरसह अजजाइ हम वजन देकर गलाये बाद अजां मिस्ल नियारियोंके साफ करें जिसकदर ताँबा बरामद होगा अहतियातसे रख छोडे बादहू तांबा बरामद शुदःके हमवजन चांदी खालिस अलहदा गलाये और ताँबा मजकूरकी चुटकी देताजावे जब तमाम ताँबा खतम होजावेगा तो चांदीकी रंगत तांबेजैसी होजावेगी इस चांदीके बराबर वजन जरे खालिस हम्मिलातु करके जेवर बनाले यह बहुत उमदा सनदका नुसखा है (सुफहा २ अखबार अलकीमियाँ) ।

हेमकृष्टि ताम्रसे चांदीको रंगा है ।

रसदरदताप्यगंधकमनःशिलाभिः क्रमेण वृद्धाभिः । पुटमृतशूल्वं तारे त्रिव्यूढं हेम-कृष्टिरियम् ॥ ६९ ॥ (र. रा. शं., बृ. यो.)

अर्थ—पारद १ एक भाग, सिंगरफ २ दो भाग, सोना-मक्खी ३ तीन भाग, मैनसिल ४ चार भाग इनको पीस एक तोले ताँबेके पत्तोंपर लेपकर भस्म करै उस ताँबेकी भस्मको गलीहुई चांदीमें तिगुनी प्रक्षेप करै तो चांदी होगी इसको हेमकृष्टी कहतेहैं ॥ ६९ ॥

तारकृष्टी ताम्र और रांगसे चांदीका रंजन ।

भागैकमथ ताम्रस्य तारं भागैकमुत्तमम् । शुद्धनागं भवेदेकं भागमेकन्तु टंकणम् ॥ ॥७०॥ अंधमूषागतध्मातं यावत्क्षीणं भवेत्र-यम् । तारं पीतं भवेदेतद्दलकार्यकरं परम् ॥ ॥ ७१ ॥ एतत्तारं भवेद्भागमेकं हेमत्रयं भवेत् । दशवर्णकमादाय धमनीयं प्रय-त्नतः । हेम तज्जायते रम्यं चम्पपुष्पप्रभं स्फुटम् ॥ ७२ ॥ (बृ. यो.)

अर्थ—एक भाग ताँबा और एक भाग चाँदी एकभाग शुद्ध सीसा और एकभाग सुहागा इन सबको पीस अंध-मूषामें रख धोंके जबतक सुहागा सीसा और ताँबा ये तीनों जल जावें तब यह चांदी पीलेरंगकी दलदार होतीहै इस चांदीका एकभाग सुवर्ण तीनभाग लेकर चर्ख देवे (इसमें जो सुवर्ण हो वह दसवर्णका होना चाहिये) इन दोनोंको घरियामें धरकर धोंके तो चंपेके फूलके समान सुवर्ण होगा ॥ ७०–७२ ॥

१ गन्धतारे, इत्यपि पा० । २ निर्व्यूढम् इत्यपि पा० ।

कमरंग सोनेको तेजरंग बनाना (उर्दू) ॥

साफ़ताँबेको गंधकमें फूंके फिर जिन्दाकरे दोहिस्सा सोना एक हिस्सा ताँबा दोनोंको गलाए और जौके बराबर पत्र बनावे फिर सेंबल और टेसूके अर्कमें सीसाको मारे और पत्रके बराबर इस मरे सीसाको ले और दसवां हिस्सा इन दोनोंका सेमल और जंभीरीका अर्क इस सीसे मरेमें मिलाकर उस सोनेके पत्रपर लेप करके सायेमें सुखलावे फिर खरिया-नमक और आठवाँ हिस्सा इन दोनोंका सज्जीका पानी और तीनोंको सोने तांबे और सीसेसे सौहिस्से जियादह लेकर पीसकर मय उस पत्रके सबको एक हांडीमें करके दूसरी हांडीमें करके दूसरी हांडी उसपर ढांके और कपरमिट्टी सुहागेसे खूब बंद करे और सुखाके तीनबार कपरमिट्टी करे और सुखाकर खूब तेज आंच दे जब आग और हांडी ठंडी होजाय जबनिकलेगा पीसकर रखछोडे जब सोनेका उमदा रंग करना चाहे तो फिर सोना गलाकर द्रुति हेमराजी डाल दे उमदा रंगका सोना होजायगा (सुफहा खजाना कीमियाँ)।

हेमराजी यानी सोनेका तेजरंग बनाना (उर्दू)

गंधकके साथ तांबेको मारे और जिन्दाकरे तीनबार फिर दोहिस्सा सोना तांबेमें मिलाकर गलाए और मरे-सीसेको सेमल और जँभीरीके अर्कमें मिलाकर लेप करके बदस्तूर दो हांडियोंमें रखकर कपरमिट्टी करके सुखाके तेज आँच दे जब हांडियाँ ठंढी होजावें तो उस पत्रको निकालकर सर्द करे हेमराजीसे दोहिस्सा बढकर होजायगी एकतोला कमरंग सोना लेकर एकरत्ती यह हेमराजी डालकर धोंके उमदा रंगका सोना होजायगा (सुफहा खजाना कीमियाँ १८) ।

भंगजटाजूटसे पारेसे चांदी बनानेकी तरकीब (उर्दू)

तरकीबसानी अगर शोराबूटी मजकूरका घरियेमें डालकर सीमावको उसमें डाले इस्तरह कि शोरामें छुपजावे उसके ऊपर दूसरी घरिया रखकर और बोत मुअम्मा गिलेहिकमतसे मोहकिम करके बतरीक मजकूरः बाला आदे कुदरत इलाहीसे आबसीमाव जज्ब होकर कमर होजायगा । (सुफहा अकलीमियाँ २६१)

जुलैनीबूटीसे सीमावकी चांदी बनाना (उर्दू)

अमलकमरी सीमाव मुसफ्फाकमरी जो बुरादाखिश्त कौहना वगैरःमें साफ करके कपडेमें छान लियाहो बोतेमें डाले

मुसनिम——शीन लाम् सीन ये
मुजुरिम——जीम लाम सीन ये

और ऊपरसे शीरा बूटी जुलनीका इतना दे कि सीमावके

१ यह जरूर हरीन तिलाकी खराबी घी लिहाजा दुरुस्त करदीगई ।
२ अलामत यह बूटी सफेदगुल और जर्दगुल दो किस्मकी होतीहै अमलकीमियाईमें जर्द कारामद है ।

ऊपर हो जावे और बारहवांहिस्सा सीमावसे सुहागा उसपर छिडक दे और अंधमूषेमें करके सवासेर करसीको आग एकबालिश्त गहरा गढा खोदकर आग चारों तरफसे दें चांदी खालिस होजावेगी लेकिन बोताको अव्वल आगमें रखकर पुख्त: करके बाद उसके अमल करे। सुफहा अकलीमियाँ २६१)॥

गालिबन सीमावसे चांदी बनानेकी तरकीब (उर्दू)

अकसीरकमरी गोमा एकबूटीहै–
मुरत्तिफ—किः खे स्वाद काना नून
मुतरज्जिम—गिः वाव मीम अलिफ नून

जिसका फूल तीन किस्मका होताहै अव्वल सफेद गुल उसका दरख्त हरजगह मिलता है दोयम सुर्खगुल सोयम स्याहगुल फूल निकलनेके बाद इसकी किस्म पहचानी जातीहै लेकिन अगर फूल न निकले हों तो सफेद फूलवाली से इसतरह तमीज करे कि सुर्खगुलकी पत्तियां सफेदगुलसे ज्यादा छोटी और बारीक होतीहैं सुर्खगुलका दरख्त कीमियाई है इसका शीरा निकालकर पहरभरतक सीमावको उसके शीरेमें खरल करे और अंधमूषेमें रखकर दो सेर कर्सीकी आगदे। (सुफहा अकलीमियाँ २६८)

गुलमहदी जर्दगुलसे अमलकमरीकी तरकीब (उर्दू)

तरकीब नं० १ एक शाख जकूम खारदारकी लाकर चारचार अंगुलके टुकडे करे और एक जानिबसे उसको खाली करके अगर बूटी मजकूर सूखी हो तो जरासा सुहागा मिलाकर और उस टुकडेके मुँहमें पारा डाल दे और दूसरे जकूमके टुकडेसे जोडकर गिलेहिकमत कर दे और अगर बूटी ताजी न मिलसके तो उसको कूटकर दो टिकिया बनावे और थोडासा बतरीक मजकूर देकर दूसरा टुकडा उसमें मिलावे और सेर सवासेर कर्सीकी आग दे जब खुद व खुद सर्द होजाय काममें लावे। (सुफहा अकलीमियाँ २५८)

गुलमहदी जर्दगुलसे अमलकमरीकी तरकीब (उर्दू)

तरकीब नं० २ अर्क या लुबदीमें सीमावको घोटे और दोनोंकी टिकिया बनाकर मूषेमें रक्खे ऊपरसे और कुछ सुहागा डालदे और बोतेको मौअम्मा करके कर्सीकी आगदे और अगर बर्गताजामिले तो शीरा उसका इतना डाले कि सीमाव उससे ढँकजावे यानी शीरा मजकूर बालाइ सीमाव रहे अगर बालाइ पारेके मिसको बतरीक मजकूर रक्खे तौ भी कारगर होगी लेकिन इस सूरतमें तेज आग देना पडेगी (सुफहा अकलीमियाँ २५९)।

सीमावका मसकः बनाना व चांदी बनाना (उर्दू)

शिवलिंग दूसरा नाम सारवेल यह एक बूटी है–जो अमूमन दरख्त थूहरपर होतीहै और इसको फल दराज लगताहै अगर इसके बर्गको मिसपर मलकर मिसको आगमें डालदे वह सफेद होजाताहै इस बूटीके एक तोला अर्कमें अगर सीमाव एक तोलेको हल करें सीमाव मिस्ल मस्कःके होजायगा इस मस्कः शुदः पारेके नीचे ऊपर बावरंतग देकर आंच दे आग सर्द होनेके बाद निकालेंगे आपका सवाल हल होजायगा। (सरजमीन मालीरकोटलेमें बूटी बकसरत है कहो तो भेज दी जावे) इसी तरह अर्क बर्ग नीलमें भी पारा हलकिया जाकर मस्कः होजाता है आगे सब वही तरकीब है जो बयान की गई। (सुफहा १० अखबार अलकीमियाँ)।

सीमावकी चांदी बनानेकी तरकीब(उर्दू)

फरफयून एक तोला, सीमाव एक तोला दोनों कुठालीमें रखकर और फर्श व लिहाफ सुहागेका देकर कोयलेकी आँचमें दें बादहू बाद कशसे धोंके इन्शाअल्लाह कमर खालिस होगा। (अखबार अलकीमियाँ १ । ५ । १९०७)

पारदकी चांदी शोरेसे (उर्दू)

अपामार्गके रसमें शोरा खरल करना फिर दो शिरावमें बंद करके आग देणी चरख खाजायगा उस शोरेको पारेके ऊपर देके बन्दूककी नलीमें आग देणी पारा बैठ जायेगा। (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)।

पारदकी चांदी।

संखिया, पारद समभाग लेके सिरकेसे वा किंबे[1]के जलसे खरल करना फिर अन्धमूषामें देकर चरख देणा संखिया उडजायगा पारद चरख खाजायगा।(जंबूसे प्राप्त पुस्तक।)

पारेकी चांदी हकीकत मिकदारमें (उर्दू)

नौसादर १ माशे, फिटकिरी ६ माशे दोनोंको बारीक पीसकर मिलायें सात आठ टुकडे कुंआरके जो हरटुकडा चार चार अंगुलका हो पोस्त दूर करके किसी चीनीके बर्तनमें एकके बाद दीगरे तहबतह रक्खे और हरटुकडेपर फिटकिरी और नौसादर गिराय बादहू किसी जगह चार पहरतक रखछोडे चार पहरके बाद कौंर सब पानी हो जायगा, इस पानीको तबेआहनीपर डालकर नरम नरम चपर पकावे और दर्मियान एक लकडीके चम्मचसे हरकत देतारहे थोडी ही देरमें नमक बनजावेगा इस नमकको खरलमें डाले दर्मियान इसके सीमाव ३ माशे एक घंटेतक इस तरकीबसे खरल करे कि दिस्ता खरलसे न छूटे बल्कि जिस्म सीमावपर ही फिरता रहे अगर दिस्ता खरलसे घिसेगा तो अमल बातिल होजायगा। बाद खरल एक सादत किसी बोते गिलीमें इसी सीमावके नीचे सब नमक जेरुबाला देकर बाकी हिस्से बोतेको खाकिस्तर कोयला कीकडसे दबाकर भरे फिर कोयलेकी तेज आंचमें बोतेको रखकर धोंके सीमाव नुकरः खालिस बनजावेगा।

नोट–अगर अमल मजकूर बालासे सरमू भी फर्क रहेगा तो अमल सही नहीं उतरेगा। (सुफहा अखबार अलकीमियाँ १६ । ६ । १९०५ ।)

---

१ निम्बू।

कामधेनुकटोरी चांदीकी।

बूटीजलसी, पातमँहदीको अस पुहुसरोवार चीतास्याम कालाचीता लजारुलाल लाललज्जालू पुहुपका वनमधु आलै धातुमह करिसाधै भीनभीन बार ३ तो सब मीलाइ अष्टधातुको पात्र बनावे, तेह्महँ पारा अवटै रूपा होइ वडी बार यों ता पाछे पात्रमों तांबा लोहा, सीसा अवटि भीनभीन तो रूपा सीधि।

सीमावकी चांदी बनानेकी तरकीब (फारसी)

बोतः नुकरः दो तोले सीमाव एक तोला शीरादरख्त वर दो तोला सीमावरा दरीं बोतः निहन्द व बरां शीरः मजकूर अन्दाजन्द बदर जेर आं बोतः चराग चहार फतीलःदार विसोजन्द व रोगन कुंजद बादवपारा बबायद कि बोतः वरसहपाव आहनी बाशद व चराग चुनी बाशद कि आतिश तमाम दर जेर बोतः बुवद व फस्ल दर जुर्म बोतः व शौला फतीला सह अंगुश्त मजमूम बुवद हाजाकमर (सुफहा १० किताब मुजरबात अकबरीफार्सी)

पारेकी चांदी चांदीकी कटोरीमें।

१२ माशे चांदीकी कटोरी बनानी १२ निंबूका रस उसमें देणा फिर १ तोला पारा पाकर १ निंबूका रस पादेवे आगपर देवे चांदी होइ (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

पारेकी चांदीके मेलसे चांदी बनानेकी तरकीब।

सिफत अकद सीमाव किसीम गर्दद व सीमाव १ तोला सम्मुलफार सफेद १ तोला साबून १ तोला बेख विसखपरा १ तोला, सबको वाहम सहक करके कूजः गिलीमें डालकर दहनकूजः पर एक तोला खालिस सीमका मुदब्बिर करस रखकर तीनबार कपरौटी करके खुश्क करे बादहू चार पाचकदस्तीकी आंचदे जब सर्द होजावे तो निकालले सीम व मअबबाहर मुनकिद सीमाव कुठालीमें डालकर चर्ख दें कि सब सीम खालिस होजायगी । (अखबार अलकीमियां १६।३।१९०७)

चांदीयोगसे पारेकी चांदी।

घृत पाव १, शहद आधपाव, भिलावे पाव १, सिंग्रफ १ तोला, घृत कढाईमें पाकर ऊपरसे सिंग्रफकी डली रखकर उपरों भिलावे रखकर मंदीमंदी आग बालनी जब तीनों चीजें सडजांय तो शिंग्रफ लेलेणा फिर डेढ तोला चांदी गलाके जब गलने लगे उस वेळे सिंग्रफ पीसके पादेणो सिंग्रफ और चांदी जब चरख खाजांण तां छोडदेना बोता बणाके उसको सुखा पकाके उसमें वह डली रखकर उपरों पारा पाणाँ फिर बंद करके ४ सेर कच्चे मेंगणा कूटकर उसपर बोता रखणा जितनेतक दबाई आवे उतना मेंगणमें रखणा, बाकी खाली रहे। आग दैणी स्वांगशीतल निकालकर चांदी देखेलेके चरखदेणा पारा तोला ९ (बा नौबारी करै) (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

पारेकी चांदीयोगसे चांदी।

सिंग्रफ १ माशा, हरिताल १ माशा, गंधक १ माशा, मनसिल १ माशा, चांदी १२ माशे चांदीको महीनपत्रा करवा कर उसमें चारों चीज महीन पीसकर रखदैणी पुडी बनाकर कुज्जेमें रखकर उपरों पारा पादैणा फिर (पूर्वौं प्रथमौ चरमे योज्येन जातं) मुखबंद करके आग दैणी फिर कपडेमें छानकर गोली बनाकर कुठालीमें रखकर चरख दैणा रजतं होवे। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

चांदीसे पारेकी गोली बना उसकी बैठक।

रवि दिने चांदी माशे १०, हरिताल रत्ती १, शिंग्रफ रत्ती १, मनशिल रत्ती १, गंधक रत्ती १, मखीर माशा १, चांदीदा पत्रा बणाकर चारों चीजें महीन पीसकर पत्र पर मखीर लेपकर उपरों चारोंका चूर्ण धूड देना फिर पत्रलपेटकर कुठालीमें रखकर गालणा फिर पत्रा बणाना फिर पारा १० तोले लेकर कुज्जेमें पाकर ऊपर पत्रा रखकर मुद्रा करके वही गोहेकी अग्नि दैणी फिर पत्र लग्न और अधस्त दोनोंको कपडेमें छानणा जो गुटिका होवे सो लेके तुलसीके नुगदेमें रखकर गरम भूभल बीच दो तीन अगां देणियां दस तोले पारद जब बज्ज जायगा तब फिर पत्रा कमजोर होजायगा और इस गुटिका पर सिंबधी बूटी तथा श्यामा तुलसीका लेप करके वा इनके नुगदेमें रखकर हेठ ऊपर जस्त चूर्ण देकर लीरां लपेटकर मिट्टी लगाकर स्वल्प अग्नि दैणी फिर कुठाली बीच रखकर चरख दैणा सुवर्ण स्वर्ण भवेदिति । (उत्तम वर्णका सुवर्ण होवै) (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)।

पारेकी चाँदीसे गोली बना उसकी बैठक।

पारा २ माशे, रजत १ माशे, काचके लूणमें सूखा खरल करना, गोली होजायगी। उस गोलीको नकछिकनीके नुगदेमें हलकी आग दैणी रजत होजायेगा। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

पारेकी नशिस्त चांदीसे सीमावकी गोली बना उसकी नशिस्त (उर्दू)।

जुजअव्वल–बजाजको माइउलकली मुकत्तरसे चन्दबार गोतः देकर मुकन्लिस करालिया जावे बादहू हमचंद नौसादर मसअदसे मुशम्मै करके चन्दरोज छोड दियाजावे ता आंकि मिजाज उसका कायम होजावे।

जुज दोयम–जीवक चाँदीके महज बुरादेसे मामूली तरीकेसे गोली बनालीजावे, अब इस गोली या गोलियोंको जितनी भी हो इससे दुचन्द गुडमें लपेटकर हर गोली अलहदा अहलदा रोगन सर्षफ सहचन्दमें पकायाजावे बादहू उसमेंसे निकालकर जुज अव्वलमें (यह जुज अव्वल अगर एक एक पाव तय्यार किया जावेगा, कमसे कम दस सेर गोलियोंको काफी होगा। यानी यह कि यह बहुत जलता है यह मतलब नहीं कि दससेर गोलियां एकदम डालकर पकाई जावें) आधघंटेतक पकायाजावे, बादहू इसमेंसे निकालकर जुज अव्वलमें आधघंटेतक पकायाजावे फिर थोडीसी असल चाँदीको चर्ख देकर एक गोली इसमें डाल दीजावे, जब यह चर्ख

खायाजावे तब दूसरी गोली डाल दीजावे ता आंकि जितनी बनाईहों सब खतम होजायें यह नुकरा बाजारी नुकरेसे कहीं अच्छा होताहै–(राकिम मुहम्मदका जमउर्फ बादशा शार्दन फकीर सैरानी–मुकाम रानीपुर शरीफ–रियासत जैपुर सिन्ध) (सुफहा अखबार अकलीमियाँ १।१०।१९०७)।

रौप्य भस्मसे पारदकी गोली फिर भस्म वा बैठक।

रूपरस, जवायणां, ब्रह्मदंडी दोनोंसे आग देणे वा कुठालीमें जवायण दी चुलकीसे बनानी वा जवायण दे दो ढकुले बडे बनालयणे उसमें टोआकरके ब्रह्मदंडी रखके आग देणेसे फूल होजायगा। रूपरसदी गोली बणाके लोटासज्जीके पाणीमें नालमूलीका सिकड रगडकर गोली पर लेप कर सुखा लैणा हरदल घोटके उसमें गोला रखके आग दैणी जब गोली पुख्तः कायम होजावे तब फुलावट दैणी संखिये दीहूपरसकी गोली लेकर नौसादर, शोरा, सुहागा, संखिया चारों समभाग महीन पीसकर कुज्जेमें पाकर डेढ पाव कबेदी आग देणी फूल होजायगा उस फुलदा दावूदेकी कुठालीमें धवां रजतहीहै। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक।)

चाँदीभस्मसे पारेकी गोली बना उसकी बैठक।

नौसादर २० तोले, लोटासज्जी २० तोले, लोटासज्जी नीकी करके भिगो दैणी और नौसादरको निंबूके रसमें खरल करना १॥ प्रहर और लोटासज्जीदा पाणी चतुर्थांश पादैणा पाकर कुज्जेमें रखछोडना। घडी ४ फिर उसका नालिकायंत्रसे तैल निकाललेणा और निकालकर रख-छोडना। शोरेका तैल, शोरा २० तोले लेके खपरेमें चढाकर आग बालणी, जब अग्नि पवे तब मिलावे ६ तोले क्रमसे पाणे फिर कालीरी ३ तोले क्रमसे सुटणी, इसतरह किये अग्नि सह होजाताहै फिर कूटके कांस्यपात्र-में पाकर शरद जगह रखणा द्रवित होजायगा अवशिष्टमें लोटासज्जीदा पाणि पादैणा उससेभी द्रवित होजायगा। उस तेलको अलग पात्रमें पा रखणा।

कुक्कुटांडका चूणाबनाके अलग रखणा।

रूप्यभस्म, रूप्यको कुआरगंदलदियां पुटां २१ दे-णियां फिर तैलकौडालेकर उसमें लवण पाक ११ पुटां दैणियां, फिर जंबूवृक्ष त्वक् चूर्णों पंजयाकी नुगदी लेके उसमें रूप्य रखके २० सेर गोहेकी भडक दैणी ऐसेइ आग दैणेसे भस्म होजायगी उसको पारा ४ रत्तीको तोला पाके गोली बणाके कुज्जेमें अंडेके चूनेको नौशादरतैल १॥ माशे मलना और लवणको शोरेका तैल मलना हेठ लवैणे आधा ऊपर अंडचूर्ण आधा ऊपर गोली ऊपर अंडचूर्ण ऊपर लवण देकर कुज्जेदा मुखबंद करके भूभलमें घडीभर आग दैणी फिर तेज आग३१ सेर गोहोंकी पैणी रजत होजायगा। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक।)

चांदीसे बनी पारेकी गोलीकी बैठक।

त्रिफला या पक्केदी नुगदी बणाके कुज्जेमें रौप्यरसगुटिका रखकर कोकिलाग्नि वा उपलाग्नि दे या रौप्यकरम। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)।

चांदीसे बनी सीमावकी गोलीकी नशिश्त जस्तके कुश्तेसे (उर्दू)

अव्वल जसत्को गुदाज करके त्रिफलाकी चुटकी देते जाएं और लकडीसे हिलोत रहें थोडी देरमें तमाम जस्त कुश्ता होजायगा सीमावकी चांदीमें लेमूके अर्कसे गोली बांधले, फिर कुश्ता जस्तको शीरेजकूममें समीर करके गोली मजकूरको अन्दर रखकर थाडेसे पाचकदस्तीकी आंच दे नशिश्त खाजावेगा। (सुफहा ४–५ अखबार अलकीमियाँ १६।६।१९०७)

नशिस्त गोली सीमाव जो कुश्ता नुकरा एक आँचसे बनी हो (उर्दू)

नशिस्त--हकीम सय्यद इसरारुल्लाहसाहब २०।८।१९०७ को मालीरकोटला दफ्तर अखबार अलकीमियाँमें तशरीफ लायेथे जुबानी भी इस नशिस्तका जिकर आयाथा हकीम साहब मौसूफने नशिस्तकी तरकीब इसतरह पर फर्माईहै। जस्त आधसेर लेकर कढाईमें गलावे दर्मि-यान उसके सहजनेकी लकडी फेरतेजावें तमाम जसत कुश्ता होजायगा।

कुश्ताजस्त आधसेर, सम्मुलफार सफेद आधसेर, तमामकुश्तेमें सम्मुल फार २ तोला खुश्क खरल करके किसी कूजेमें बंद करे और दोसेरकी आंच दे इसीतरह हरदफा दोदोतोले सम्मुलफार शामिल करके बीस आंचें दोदो सेरकी देदें नशिश्त तय्यार होगी अकद सीमावको इस नशिस्तमें देकर आगदे सीमाव नशिस्त खाजायगा। (सुफहा ६ अखबार अलकीमियाँ १।९।१९०७)

कुश्तानुकरः जाजब सीमाव (उर्दू)

नुकरा १ तोलेका पत्र बनाकर गरम करके अनारदाना तुर्शके पानीमें चालीस मर्तबः गोतः देवें फिर जकूम खार-दार बकदर बसितोलाका नुगदा बनाकर उसमें पत्र मज-कूरको रखकर गिलेहिकमत करके खुश्क होनेके बाद ५ सेरकी आँच दे कुश्ता उमदा तय्यार होगा। अगर किसी गलतीसे खामरहे तो दुबारा आगदे यह कुश्ता अगर हुरन-खुरीके पानीमें खरल करे तो चौदह तोला पारेको जज्ब करता है अर्कलेमूसे ११ तोला। (सुफहा ६ अखबारअ-लकीमियाँ १।९।१९०७)

नुसखा कमरी–तांबेका सफेद कुश्ता बना कर उससे सीमावकी गोली बांधकर नशिस्तदेनेकी तरकीब (उर्दू)

मिस एकदामका पत्रा बनाकर पोस्त वेख पीपलके पानीमें ४० मर्तबः गोतादे बादहू वर्गपीतलकी नरमनरम कोंपल नीम सेरपानीमें दरख्त करीब २० तोलेसे घोटकर नुगदः बनाकर उसमें पत्तरामिसको रखकर गिलेहिकमत करें जब कि खुश्क हो तो २० सेर पाचकदस्तीकी आग देवे बफजलहू खुदा कुश्तावरंग सफेद होगा शायद किसी गलतीसे पहली मर्तबः कुश्ता न हो तो दुबारा बदस्तूर वर्ग पीपलमें रखकर आग देवें तो जरूर होगा बादहू

कुश्ता मिस १ तोला सीमाव मुसफ्फा शुद: २४ तोले खरलमें डालकर हमराह यानी जो नागरजीलमें निकलताहै दो तीन घंटे सहक करनेसे अकद होजायगा बादहू चोपचीनी ३ तोला, कबाबचीनी ३ तोला, रेवंदचीनी ३ तोला दारचीनी ३ तोला अलहदा अलहदा कूटकर खरलमें डालकर हमराह शीरमदार १२ तोला खरल करें जब कि जमाद करनेके लायक हो तो गिरह मजकूर पर जमाद करदेवें बादहू वर्ग मदार ३० तोलेको कूटकर नुगदा बनाकर कूजः गिलीमें गिरहके जेरुवाला देकर बंद करे गिलेहिकमत करनेके बाद खुश्क होनेदे फिर ४ सेर पाचकदश्तीकी अखगर आगमें रखदें जब कि सर्द हो तो गिरह निकालकर दुबारा कुडालीमें डालकर जेरुवाला सुहागा देकर खूब जोरसे फूंक मारें हत्ताकि चर्ख अच्छीतरहसे आजावे सर्द करनेके बाद अपने काममें लावें वफ्जलखुदाआलाकमर तय्यार होगा बश तजुर्बाशर्त है तजरुबा करके देखले ।

नोट–गिरहको चर्ख देरसे आता है इसलिये घबराकर छोड न दे बल्कि बहुतसे कोयले डालकर मुश्क आहनगरानसे धोंके यानी फूंकमारें तो एक घंटेतक जरूर ही चर्ख आजाताहै । अलराकिमहकीम सय्यद गुलाम अली शाह अजकरांची (सुफहा १५ अखबारअलकीमियाँ १।६।१९०७)

नशिस्त देनेकी तरकीब (उर्दू)

ऊँटकटेरेकी पाँचसेर राखमें जो उसके पंचाङ्गकी हो पारःकर्स बँधाहुआ रखकर हाँडीमें भरकर दो घंटे कामिल तदबीजन आंच दें चांदी होजावेगी । (सुफहा अकलीमियाँ १६४) ।

नोट–यह तरकीब मुतरज्जिमने कुश्ता नुकरासे सीमावकी गोली बाँधने बाद लिखी है ।

गिरह सीमावकी नशिश्तकी तरकीब (उर्दू)

नशिस्तकी तरकीब यह है कि सीमावके मुन्दरजः जैलफर्सको लेकर अव्वल गूर्द छांछियाको पानीमें घोलकर १५ मिनटतक उक्त कर्सको पोटलीमें रखकर पकावे ताकि सख्त होजावे बादहू एक तोला शोरा काइमुल्नारको बोतेमें रखकर उँगलीसे गढासा बनावे और उस गढेमें संबुलखार कायमुल्नार दो माशे छिडककर कर्स सीमावको उसके ऊपर रखदे सीमावके ऊपर फिर दो माशे संमुलखार मजकूर छिडककर तोलाभर शोरा काइमुल्नार उसके ऊपरसे ढाँककर बोतःको मुअम्मा करके गिलेहिकमत करदे बाद खुश्क होनेके पावभर धानकी भूसीकी आग दे खेलकी तरह बैठजावेगा सुहागा देकर चर्ख दे और काममें लावे । (सुफहा अकलीमियाँ २६५) ।

कर्स बनानेकी तरकीब रुपया या चांदीके पत्तरको कटाई खुर्दकी लुगदीमें रखकर कपरौटी वगैर: करके फूंक दें निहायत उमदा कुश्ता तय्यार होगा,जो जाजबआव सीमाव है लेमूंके साथ सहक करे तोलातोला भरकी कर्स बनाले ।

नशिस्त या (दाबू) (उर्दू)

सीमावकी गिरह हस्वजैलदाबूमें बिलकुल बैठजाती है, उम्मेद है, कि नाजरीन इससे जरूर मुनफैद होंगे । जस्त शीरीं ३२ तोलेको अव्वल सर्षपके तेलमें सातबार बुझाव देकर साफ करें, बादहू कढाईमें गलाकर दरख्त सहँजनेकी लकडी फेरतेजावें, यहाँतक कि जस्त बिलकुल खाकिस्तर मानिन्द राखके होजावे बादहू दो प्याले गिलीपुख्तःके लेकर एक प्यालेमें निस्फ खाकिस्तर मजकूर बुझाकर उसके ऊपर गिरह सीमाव रख दें बाकी निस्फ खाक जस्तगिरहके ऊपर देकर दूसरा प्याला बतौर सरपोश दें और गिलेहिकमत करके दो अढाई सेर उपलोंकी आंच दें इनशा अल्लाह शर्तिया गिरह जमकर निकलेगी ।

एक खासराज–यह खाकिस्तर जस्त हमेशहके लिये इसीतरहकारामद रहेगी और २१ दफा २१ गोली सीमावकी इस दाबूमें नशिस्त खाजायेगी फिर यह खाकिस्तर जस्त मोतियाबिन्दके लिये अकसीर है । (सुफहा ३–अखबार अलकीमियाँ १।११।१९०७) ।

नशिस्तसीमावकी गिरह (उर्दू)

सम्मुलफार सुहागा, नौसादर फिटकिरी सबको अलहदा अलहदा पीस सम्मुलफारको छोडकर पानीको मिलावे और शकोरेमें निस्फ फर्श करें और इसपर सम्मुलफार फर्श देकर करें और इसपर अकद रक्खें और निस्फसम्मुलफारको लिहाफ बनावें और इसपर निस्फ दूसरी अदवियातका दूसरा लिहाफ बनावें और गिले हिकमत करके आध सेर उपलोंकी आंच दें वाजः रहे कि सब चीजें अकदसे दुगुनी होनी चाहिये । (सुफहा ७० मुजरबात फीरोजी)

मुतल्लिक नशिस्त (उर्दू) ।

वाजः हो कि कुश्ता नुकरासे जो आब सीमाव जज्ब होता है तो वह सीमाव नशिस्तसे नुकरः होता है और कुश्तः मिसवरंग सफेद या कुश्तातिलासे जो कर्स सीमाव बँधता है वह सीमाव नशिस्त देनेसे तिला होजाता है । (सुफहा अकलीमियाँ २६६) ।

हिदायत मुतअल्लिक शिगुफ्त व नशिस्त सीमाव (उर्दू)

शिगुफ्त व नशिस्तके मुतअल्लिक अस्वातको बता देना जरूरी है, कि जो अकद खालिससीमावकी बनाई हो वही काम दे सकतीहै वरनः वे सूद और इस बातके पहचाननेके लिये कि आयागिरह खालिसहै या नहीं यह अमल करना चाहिये, जो मुजर्रिब है कि गिरहको एक कुठालीमें रखकर कोयलोंकी आगपर रक्खें और अवकरी कुलथी और गंधककी चुटकी दें अगर वह गिरह वरंग जर्द नमूदार हो तो वह सुर्बसे गिरह कोहुईहै और स्याह होजावे तो सुरमासे और अगर सफेद बराबर वजन निकले तो दुरुस्त है और इस हालतमें अगर चमकदार न हो तो नौसादरकी चुटकी दें, चमकदार होजायगी । (सुफहा ६९ मुजरबात फीरोजी)

सोना बनानेकी तरकीब (उर्दू)

घरियामें रोगनजैतूनका लेप करके उसमें तोलाभर पारा और कदरे चाँदी डालकर चंद कतरे रोगन मजकूरके टपकाकर कोयलेकी बहुत नरम आँच पर पकाये और माशेभर बच्छनाग पीसकर चुटकीसे डालता जावे जब पारा खूब पकजावे पारचः पत्तरपर डाल दे मस्कः होजायगा जिस कदर चाहे पारेको मस्कः बनाले फिर

अंडेकी सफेदी दूर करके जर्दीमें यह मस्कः डालकर उसी छिलकेमें रखकर सात तह गिलेहिकमत करके पाव-भर जंगली उपलोंकी आंचमें रखदे मस्का सख्त होजायगा फिर(इसके तीन तरीके हैं यामाइउलहयातमें चर्ख दे या) तिरफले या वग अंजीरकी लुगदीमें रखकर कम आँचमें खाक करले फिर एक माशे एक तोले ताँबेपर डालकर चर्ख दे सोना होजायगा(और माइउलहयात यह है शहद, घी, नौसादर बराबर घरियामें रखकर सोना डालदे) (सुफहा खजानः कीमियाँ २६–२७)

नोट–जो इबारत मुश्तबःहै उसपर ब्रेकट बनादियाहै।

नुसखा कीमियाँ नुकरई (उर्दू ।)

शोरेसे सम्मुलफार, सम्मुलफारसे हरताल कायम कर उससे सीमाव व नुकराके अकदको कायम व शिगुफ्त कियाहै । शोराकलई दोहिस्सा, नमक लाहौरी सफेद एकहिस्सा, हरदोको चूनाकलीके तेजाबमें दो पहरतक सहक करें, शोरा कायमुल्नार होजायगा । तरीका तेजा-बकली, चूना आवना रसीदः व कदरख्वाहिश लेकर किसी चीनी या मिट्टीके बर्तनमें डालकर दर्मियानमें पानी इसकदर दाखिल करें कि तीसरे रोजतक चारचार अंगुलपानी ऊंचारहे तीसरे रोजको मुकत्तर लेलें बस इसीका नाम तेजाबकली है, शोरा कायमुल्नार मअमूला दो तोलेको सम्मुलफार एक तोलाके ऊपर नीचे देकर कूजःगिली या किसी ऐसे बोतेमें कि जिसके किनारे बलंद हों बंद करके पांचसेर वजन खाम उपलोंकी आंचमें दें, सम्मुलफार चर्ख खाकर कायम होजायँगा, सम्मुलफार कायम एक हिस्सा हर ताल वरकी एक हिस्सा मगर हडतालके तीन हिस्से करलें हिस्सा अव्वल जरनेखको सम्मुलफार कायमके साथ मिलाकर खूब खरल करलें फिर बतरीक मारूफ शीशी आतिशी या देगगिलीमें डालकर मुह मजबूत बंद करके चार पहरकी आँचसे जौहर उडालेवे इसी तरह हिस्सा दोयम सोयम बारीबारी मिलाकर अमल करनेसे तीसरी दफा जरनेख व सम्मुलफार तहनशनि होजायँगे सीमाय दो हिस्सा बुरादा या वर्क नुकरा एक हिस्सा हरदोको अकद करके हमवजन नौसादरमें खरल करें जब स्याही नमूदारहो पानीसे साफ करें इसी तरह यहांतक अमल करतेजायें कि बिलकुल स्याही बाकी न रहे बादहू अक-सीर तहनशीन शुदःके हमवजन सीमाव व वर्क मुसफ्फी मजकूरा मिलाकर नौसादरके तेलमें तमाम दिन तसकिया और आठपहरका नरम तश्विया दें इसीतरह चारदफे अमल करें मगर एक दूसरे तश्वियाके बाद आंच तश्विया होनी चाहिये चहारमदफेके अमल करनेसे अकसीर शिगुफ्तः होकर तहनशीन होजायगी यकेबर दोसद जौहरा तरह बिखुरेद नौसादरका तेल नौसादर नीमको न १० तोले भांग खुश्क एकसेर पुख्तके दर्मियानी हिस्सेमें देकर बजरिये पताल जंतर दससेरकी आंच देकर तेल निकाललें यह तेल सुर्ख रंगका निकलेगा।

नोट–बतकदीर अगर अकसीर तहनशीनशुदःहस्ब-ख्वाहिश काम न दे तो तिलसफेदको फूंक कर इसकी खाकिस्तर लेलें खाकिस्तर मजकूरमें पानी डालकर आठवें पहर बाद मुकत्तर निथार लें इस मुकत्तरका मगर-बियोंने माइहारहनाम रक्खाहै अकसीर शिगुफ्तः शुदःको इस मुकत्तरमें यहांतक तस्किया और तश्विया दें कि आगपर डालदेनेसे मोमकी तरह पिघलजाये बस फिर वफज्लहूताला अकसीर आजम है। (सुफहा २–३ अख-बार अलकीमियां)

चांदीसे बनी पारद गोलीकी भस्मसे रांगकी चांदीकी भस्म ।

रजतमें ५ तोले पारेकी गिरा करनी उस गिराको८ तोले हरी महदीकी लुगदीमें रखकर (वदी) ४ सेर जमीकंद दी गड्डीमें रखकर ऊपर तीन कपडमिट्टी करनी सुखाकर तोला सेर पक्के गोहेकी आग देणी खिल होजायगी, कलीपर पाणा तोलेमें रत्ती। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

तारक्रिया (राजवती विद्यानाम्नी)

पारदचांदीकी कटोरीकी भस्मसे रांगकी चांदी ।

अथ दारिद्र्यनिर्नाशनं रसचिंतामणौ-पारदो गृह्यते शुद्धष्टंकद्वादशमात्रिकः ॥ ॥ श्वेताश्वमारपुष्पैश्च मर्दयेद्दिनसप्त च ॥ ॥ ७३ ॥ गोमूत्रक्षालनं कुर्यात्संध्यायां प्रतिवासरम् ॥ अथ तारस्य कर्तव्या सूक्ष्मा भद्रा कटोरिका॥७४॥ पारदो दश-टंकः स्यात्तस्यां देयः पुराकृतः ॥ हरी तक्यापुनर्भवादिर्दशटंकमितोऽपि सः॥७५॥ करवीरस्य पुष्पस्य रसश्वेतपरिप्लुतः ॥ हंडिकायामधः कृत्वा शीशिकां संधि-मुद्रिताम्॥७६॥ सराविकां पुनर्दत्त्वा कुरुते संधिरोधनम् ॥ मृदा तस्याः सराव्याश्च गाढं वालुकया पुनः ॥ ७७ ॥ आपूर्य हंडि-कां तत्राप्युपरिष्टाच्च पालिकाम् ॥ दत्त्वाथ मुद्र्यते पश्चाद्धंडिकामुखमप्यति ॥ ७८ ॥ द्वादशप्रहरा यावत्तावद्वह्निः प्रताप्यते ॥ ॥ ७९ ॥ भृशं नाति भृशं मंदं पश्चाच्छी-तांतमुद्धरेत् । टंकषोडशके वंगे एकटं-कोस्य दीप्यते ॥ ८० ॥ एवं वंगं भवेत्तारं महासारं वरं परम् । वंगस्तंभपरं रम्यः क्रियतां तद्यथा सुखम् ॥८१॥एषा राजवती विद्या पुत्रस्यापि न कथ्यते॥८२॥(र. सा.प.)

अथ–शुद्धपारद १२ बारह टंक लेकर श्वेत कन्हेरके फूलोंके रससे सात दिनतक मर्दन करे और प्रत्येक दिन संध्याको गोमूत्रसे धोलेवे, फिर चांदीकी एक कटोरी बनावे जिस पूर्वसिद्ध किये हुए दसटंक पारेको रखदेवे ऊपरसे दस टंक सांठ और हरेका चूर्ण रखदेवे ऊपर दसटंक श्वेत-कन्हेरके फूलोंका रस डाल देवे उस कटोरीको हांडीमें उलटा रख संधिपर मुद्रा करे फिर ऊपर शकोरा रख मुद्रा करे फिर हाँडीमें वालूरेत भर ऊपर परियासे ढांक हँडियाके मुखको अत्यन्त दृढ कपरौटीसे बन्द करदेवे फिर तीक्ष्ण मध्य और मन्द क्रमसे १२ बारह पहरतक अग्नि देवे

स्वांगशीतल होनेपर निकाललेवे यह भस्म एकमाशा और बंग सोलह माशा इन दोनोंको चर्ख देवे तो सर्वोत्तम चाँदी बनेगी और बंग जिस प्रकार स्तंभनकारी होताहै उसीतरह करना चाहिये इस विद्याको अपने पुत्रके लिये भी न कहनी चाहिये (अर्थात् अत्यन्त रहस्य है)॥७३-८२॥

एक अजीब नुसखा तांबेसे गिरहशुदः सीमावको शिगुफ्तकर उससे तांबेको सफेद कियाहै बगरज हम्मिलान नुकरः (उर्दू)

सीमाव खालीस व मुसफ्फा एक तोला, तूतिया सब्ज दो तोले, तूतियेको बारीक करके एक आहनी कडाहीमें निस्फ तूतियां डालकर उसपर सीमाव रखदें और बाकी निस्फ तूतियाको सीमावके ऊपर डालदें और दो सेर पानी उस कडाहीमें डालकर आंच दें एक घंटेके बाद तिनकासे हिलाकर देखें अगर सीमाव तिनकाके साथ लगजावे तो उतारकर पानी सब फेंकदें और बाकी सब चीजें कढाईमें ही रहने दें अब नमक और थोडासा पानी डालकर सीमाव मजकूरको खूब साफ करें, बादहू सीमाव साफ शुदःको एक चीनीके प्यालेमें डालकर एक लेमूं उसपर निचोड दें सीमाव सख्त होजायेगा. एक बूटी सूगंढ (सूरगंढ) जिसके नीचे एक चीज मिस्ल प्याजके है । उस प्याजको सूराख करके मजकूरह गिरह सीमाव उसमें भरदें और जो कुछ सूराख करते वक्त प्याजका बुरादा निकले उसीसे मुह बंद कर दिया जावे जाकर कपरौटी करके खुश्क करें, आठसेर उपलोंकी आँच दे सीमाव कुश्ता होजावेगा एक-तोला तांबेको चर्ख देकर सीमाव कुश्ताशुदके ½ हिस्सा ऊपर चुटकी दें तांबा बिलकुल सफेद होजावेगा यह तांबा सफेद शुदः और चांदी खालिस हम वजन मिलालें मकबूल बाजार होगा । (सुफहा ५ अखबार अलकीमियाँ १६।११।१९०७) ।

गुटका सीमाव बजरिये संखिया दर संपुट ताँबा (उर्दू) ।

मैंने पारेको इसतरह गुटका बनाया था कि तोलेभर सीमाव बाजारी और तोलेभर संखिया सफेद दोनोंको एक अदद लेमूं कागजीमें सहक किया जब गाढा मिस्ल चक्का दहीसा होगया तो दो मिसकी कटोरियोंकी सितःअन्दरूनीको मुतअद्दिदवर्ग तांबूलसे पोशीदः करदिया और उस परशैः ससहूकाको रखकर और सी ३० माशे भर मुर्दारसंग डालकर सद्दो उलरहन और तीनबार मतीनल हिकमतहू करके बाद तखफीफ पांच छः सेर कंडोंकी आग देदी और सर्द होनेके बाद निकाला तो गुटका सख्त बंध हो गया था और चाँदी खाम होगयाथा यह गुटका सुहागेकी इमदादसे गलताहै और उसमें और चांदीमें सिर्फ यह फर्क है कि गुटका मजकूर संकनाल है । (सुफहा ४० किताब अखबार अलकीमियाँ १६।४।१९०५) ।

नोट-इसी किस्मका तजरुबा: बजरिये गंगाराम सुनार कासगंज हुआथा (हसी ुद्दीन अहमदअज जौनपुर) ।

राँगके योगसे बनी पारेकी गोलीकी भस्म वेधक ।

९ माशे कली ६ माशे पारा, कडछमें कली गालके पारा पादैणा दोनोंकी गोली बणाके ४ तोले मोडयांदे पत्तरादी नुगदी बणाके उसमें गोली रखके दो पाथियोंमें बंद करके आग दैणी पारा फुल जायगा । वह पारा १ रत्ती तोला १ ताम्र पर पाणा रजत होवे । (जंबूसे प्राप्त पुस्तक) ।

पारदको प्रथम अग्नि स्थाई तदनंतर राँग युक्त गोली बनाकर उसकी भस्मसे ताम्रकी चाँदी बनानेकी क्रिया ।

पारा १ तोला आरखोर कश्मीर अरखुढके रसमें खरल करना फिर अरखुढकी लकडी ३६ अंगुल लैणी उसमें छेक करके नौ अंगुल उसमें पारा पादैणा ऊपरसे उसीका बुरादा पाकर बंद करके गिलेहिकमत करके हेठले पास्सेसे आगमें दैणी जब हेठों २४ अंगुल लकड सडजावे तब निकाल लैणा फिर उस कायम पारेके साथ १ तोला कली और १ तोला दाल चिकना पाकर तीनोंको अरखुट जलसे एक प्रहर खरल करना फिर उन तीनोंका गोला बनाकर कुज्जेमें पाकर ऊपर तैल पादैणा तीन घडी आग दैणी फिर तैलसे निकालकर महदी १० तोले लेकर उसकी नुगदीमें उस गोलेको रख कपडमिट्टी करके पांच सेर पक्के गोहेकी आग दैणी सर्द होवे तो निकालना तोलेताम्रपर १ रत्ती पारा श्वेतकरम। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक) ।

नोट-क्या इस क्रियासे पारा कायम होताहै ? वा कायम पारा इस योगसे लैना चाहिये ।

पारदकी गोलीकी भस्म ।

तोला पारेदी गोली होवे तो २ तोले पुराणगुड, माजूतोला, १ मायी १ तोला, पीपलामूल १ तोला, चारोचीज महीन पीसकर गोली परदेके, उपरों कपडा लपेटकर कपडमाटी कर दैणी सुखाके आग दैणी १० सेर कचेलोहेकी गोली कायम होजायगी । (जंबूसे प्राप्त पुस्तक) ।

शिगुफ्त वराय अकद सीमाव (उर्दू)

बस अगर ऐसी गिरह मैस्सर होजावे तो इस तरीकेसे इसको शिगुफ्त करें कि सम्मुल, तंकार, नौसादर हमवजन मिलावे और बारीक करें और इस दवासे गिरहके हमवजन लेकर दो पाचकदस्ती खुर्दमें चक्कर करके नीचेऊपर इस गिरहके दें और मामूली गिलेहिकमत करके ऊपरकी तरफसे आग दें और सर्द होनेपर निकालें अगर तमाम शिगुफ्तः होजावे फवहा वरनः शिगुफ्तः उतारलें और बाकीको फिर इसीतरह आँचदें और काममें लावें, मुजर्रिबई शिगुफ्तः सीमाव कलई राहश जज्बमेकुनद व मिस व विरंज ममरुजरा हम सफेद मेकुनंद बतरीक दीगर ब कार तहमीर मिसहममे आयद तरीकशवनीजतरीक अकद सीमाव दर मअदन उलअकासीर जिल्द अव्वल नविश्तः खुदअज आँजा विजोनद । (सुफहा ६९ व ७० मुजरिवात फरीरोजी)

शिगुफ्त अकद सीमाव कायम ।

सम्मुलफार दो हिस्सा, वेश दो हिस्सा, अकद कायम

दो हिस्सा, संखिया और वेशको बारीक करे और एक कूजेमें अव्वल संखियाकी तह दें और दूसरे वंशका फिर अकद कायम रक्खें और इन दोनोंका तरतीववार लिहाफ करें और आंच दें इन्शा अल्लाह शिगुफ्तः होजावेगा। (सुफहा ७० मुजरिबात फीरोजी)

अकसीर कमरीसीमाव कायमकी शिगुफ्त अकसीर कमरी।

शोरा, फिटकरी, नौसादर, हरएक दोदो मश्काल लेकर आठ पहर शीरेजकूममें सहक करके बादहू इसका बोताँ बनायें और सीमाव कायमुल्नार मुन्दर्जः कवाइद या वह सीमाव जिसको बतरीक मगरबी जाजसफेदसे माराहो, सात माशे लेकर बोतः मजकूरमें डाले और सरपोश भी इसी मसहूकका होना चाहिये अब इसका एक गोलासा बनाकर उस गोलेपर दूसरा संपुट चिकनी मिट्टीका करके इसपर गिलेहिकमत करें बादहू खुश्क करके बारह सेर पाचकदस्ती वजन हुक्मा लेकर दर्मियानमें गोला मजकूर रखकर भडकाकी आंच दें बादहू सर्द होनेके निकालें और एक तोला कलईको गुदाज करके एक रत्ती अकसीर हाजा तरह करे खालिस चांदी हो जायगी यह नुसखा बारहोंदफेका मुजर्रिब है और अब हालमें ही तजुरुबा हुआ है यह चाँदी जुमलै एमाल कीमियाईमें पूरी उतरतीहै, सय्यद लताफतहुसेन रसऊई शहदी अकब कोतवाली मुत्तसिल मस्जिद मुम्ताज अलीखाँ बरेली। (सुफहा ११ अखबारअलकीमियाँ।)

शिगुफ्त सीमाव कायम (उर्दू)

हारवखाँसाहब कायम दो माशे जर नेख व फिलाफल गर्द छः छः माशेको चुटकी दें और एक निर्विसीके कितेसे इसको हिलाते रहे जब सब दवा चर्ब होजावे तो राखको फूंकसे उडावें, सीमाव मिस्ल रेगके हो जावेगा मुजर्रिबहै, बहिसाब फी तोला फी हुव्वः तरहकुनन्द। (सुफहा ७० मुजरिबात फीरोजी।)

जडीसे पारेका थाका उससे ताँबेका सोना।

बूटीअगिआ–मदारको असपात दूध नहीं पानी होतहै पांच सातपत्ते जरमें होत हैं तिसके पत्तेका चूरन मासा, तोला १ पारा गरम कारि डारै तो थाका होई सो थाका ओ नौसादर कागदी नेबुआके रसमें खराले रत्ती १ चौरासी तोला ताँबामें डारे तो सोना होताहै (देखो अखबार अलकीमियाँ)

जडीसे पारदका थाका फिर भस्म और पारदभस्मसे ताम्रका सोना।

अस्थलकमल–सब जगह होताहै पानीके निकट कमल असपात लेकर बुकनी मासा अढाई २॥, तोला १ पारोमें डोरे तो थाका औ नौसादर तोला १ पानके रसमें खलै आंच देइ तो भस्म होई, ते भस्म मधुमें खलि धरै, सीसीमें ताम्रपत्र ढाल करै तेहमें बुंद १ डारे अवटै–हीरन होई तोला चारमें बुंदमात्रडारे अवटे तो फिर सुवर्ण होई।

बूटीसर्वतीत–पातलाल, फूललाल, लतास्याम, पातगोल बेरीको अस हस्तप्रमाण वृक्ष नदीके निकट सर्वजगह होता है।

बूटीसे पारेका थाका उससे चांदीकी भस्म उससे रांग सीसा वा जस्तकी चांदी।

बूटी रकत सोहाला, पात चारि तोला, पारेमें डारै तो थाका होइ, सो थाका मासा १, नौसादर तोला १ दोनों खलै दस तोला रूपामें डारै सो भस्म होइ सो भस्म तोला १ नौसे तोला राँगामें डारै जस्तामें, पारामें सीसामें अवटिरू डारे तौ रूपा होइ।

पारेका बंधन फिर भस्म उससे तामेकी चांदी।

पारा ८ तोले, बिरोजा १ सेर, लोहेदी कटोरी बीच पारा पाके उपरों बिरोजा पाके मंदमंद अग्निमें पकाणा जद बिरोजा सडजाय तो पारा निकाल लैणा फिर जपोलोटे (जमालगोटे) दो सेर पक्के लेके पाताल-यंत्रमें उनका तैल निकालकर लोहेदी कटोरी बीच वही पारा पाके उपरों जपोलोटेका तैल पाकर मंदमंद अग्निसे पकाणा जब सब तैल सडजाय तो पारा कठिन होजायगा उसकठिन गोलेपर दो तोले निर्विसी, काकमाचीदे रस नाल घसके लेप करदेणा और सुखालैणा फिर जंगली लसुन लेकर पापक्केदी गुदी करके उसमें डली रखकर बालुका-यंत्रमें अग्नि दैणी एक वा दो वा तीन ऐसे फूल जायगा तोले ताम्र वा कलीपर पाऔ १ रत्ती रजत कर है। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)।

अकसीरकमरी अकसीर सीमावसे सीमाव अकद बनानेकी तरकीब (उर्दू)

कलस पोस्त बेजः मुर्ग ९ तोले, सीमाव मसअद ९ मासे इन दोनोंको सफेदीबेजः मुर्गमें चार पहर किसी अच्छे खरलमें जो घिसनेवाला न हो खरल करे जब एक जान होजावें तौ आतिशी शीशी गिलेहिकमत शुदःमें भरकर शीशीके मुंहको चूना व नमकसे खूब अच्छीतरह बंद करदें वारेम आहन व खरियामिट्टी व पंबःकोहनः वजिगरबुज वगैरःको कूटकर शीशीके दहनपर मुहर करलें ताकि दवाईका बुखार खारिज न होनेपावें फिर तनूरमें दो तीन टुकडे उपला दश्ती डालकर आग लगावें जब उपला जलकर अखग रहजावें और धुआं मुनकता हो तौ किसी चीजसे अंगारोंको हमवार करें जिसवक्त तनूरका ताव कमहो इसमें यह पायःआहनी यानी चूल्हा रखकर इसपर शीशीमजकूरःको रखदें तनूरकी मोरी और मुहको बंद करें कि हवा दाखिल न हो अगर शीशीको तनूरमें शामको रक्खें तौ फजरको निकालें और शीशीको तोडकर दवाईको खरलमें डालकर दूसरी दफा जर्दीबेजः मुर्गमें चार प्रहर खरल करके शीशीमें भरकर तनूरमें बदस्तूर अव्वल आंच दें इसीतरह एकदफे सफेदीबेजःमें दूसरीदफे जर्दीबैजेमें बारीबारी आंच देते जावें जब तीस आंचतक पहुंचें तौ अकसीर तय्यार होगी जिसकी रंगत स्याह व शकल सुर्मा होगी यह अकसीर स्याह १ तोला सीमाव ४० तोला हरदोको जर्दीबैजः मुर्गमें ८ योमतक सहक करके दोशरावःमें या शीशी

आतिशीमें बदस्तूर साबिक तनूरमें आंच दें सीमाव मुनअकिद व कायमुल्नार होगा एकदिरम सीमाव तय्यार शुदः एकसौबीस दिरम नहास मुनक्कीपर तरह करें मिस सीम खालिस होजायगा।

तरकीब तकलीसपोस्तबैजः मुर्ग।

अंडोंके छिलके जिसकदरचाहें लेकर सज्जीवासिरकःव नमक वगैरःके पानीम जोश देकर दौनों हाथोंसे खूब मलमलकर गुस्ल दें कि अन्दरूनी झिल्ली दूर होजाव जव पोस्तवैजः साफ व सुथरा होजावें तौ मिट्टीके बर्तनमें बंद करके लोहारोंकी भट्टीमें हफ्तः अशरेतक तेजआंचमें रक्खें ताकि चूना होजावे या किसी मुतर्मीद आंचमें कईदफा रखकर कलस करलें।

तरकीब तसईद सीमाव।

पारा बाजारी २० तोला, नौसादर २० तोला, फिटकिरीसफेद २० तोला, सिरका अंगूरी २० तोला हरसह अदविया खुश्कहो सिरकेमें खरल करके बाद खुश्क होनेके देगअसालमें निहायत नरमआंचपर तसईद करें तीनप्रहरकी आंच काफी होगी फिर आला और असफल मिलाकर वजन करे कमीवजनको नौसादर जदीदसे पूरा करलें बादहू सिरका मजकूरमें खरल करके बदस्तूर अव्वल जौहर निकालें यही अमलतीनदफै करे जौहरसीमाव तय्यार होजायगा।

यह नुसखा अकसर इल्म अकसीरकी किताबोंमें लिखा हुआ देखा है सबने मुजर्रिब बयान किया है बल्कि एक शख्सके पास जो सय्याह था मैंने तय्यार भी देखा है (अगर डाक्टरसाहब इस नुसखेको तय्यार करना चाहते हैं तो कलस पोस्तबैजा मुर्गमुझसे तलब करलें मुफ्त भेज दूंगा जो मैंने अभी तय्यार किया है।) (हकीम इमामुद्दीनखां हैरानअजचक मुहम्मदमहदीखां डाकखाना अहमदाबाद तहसील पाखटन जिलामंठगमरी) (सुफहा २१ किताव अखबार अलकीमियाँ १।५।१९०५)।

पारदभस्मसे रांगकी चांदी।

बूटी-रकतसोहाला पाततीन दोई छोटा बीचका बड पुहुप पीत सब जगह होता है तेहिके रस पीतगुखुरू, पार खलैदिन १ गोलीके आँच देइ तो भस्म होइ सो भस्म रत्ती १ सोरहतोला रांगामें डारै तो रूपा भवति—(होवै)

सोना बनानेकी तरकीब बजरिये कुश्तासीमाव (उर्दू)।

सूराजमुखीके अर्कमें पारेको २१ बार खरल करके फिर शीशामें भरकर मुखमुद्रा करके कपरौटी करके वकरीकी मेंगनीमें रखकर बारहसेर आग देवे जब खुद ठंढा हो तब निकालकर एकतोला तांबेपर एकरत्ती डाले तो सोना बनजावेगा। (सुफहा खजानः कीमियाँ ३३)

पारदभस्मसे रांग और जस्त और चांदीसे चांदी।

पारा १ मिश कालापोस्त आधसेर पोस्तको पानीमें भेउके रस निकाल लेणा उस रसका पारेको चोया दैणा पारा भस्म होजायगा, यह पारा १ रत्ती जस्त ६ माशे कली ६ माशे दोनोंको जुदाजुदा साफ करके गोली बना लैणी, चांदी १ तोला रलाकर पूर्वोक्त पारा १ रत्ती पाकर चरख दैणा रजत होवे। (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)।

सोना बनानेकी तरकीब बजरिये कुश्ता सीमाव (उर्दू)।

खट्टाका दरख्त, जिसके फूलोंपर कन्यावानीका मेह बरसगया हो उसका अर्क सेरभर और सेरभर अर्क भांगरेका जिसपर भी वह मेह बर्सा हो अलहदा अलहदा दो बोतलोंमें जमा करो और पारा एकतोला कढाईमें डालकर एक लौकी बलती यकसाँ धीमी आगसे उसको औटा और उसपर बारी बारीसे थोडा थोडा अर्क खट्टा व भांगरेका डालते रहो किसी फोयेसे पटकाते रहो इस तरह सारा अर्क दोनों किस्मका खतम करदो पारा उडकर निकलने न पावे इसके लिये यह करो कि जंगारका एकदाइरा कढाईमें पारेसे एक बालिश्तभर ऊंचा बनादो जोजो पारा उडेगा भी वह उससे बाहर न जावेगा लौटकर अपनी जगह आपडेगा मगर यह काम ऐसी जगह करो जहां किसी किस्मका साया छप्पर छत दरख्त या दीवारका न हो बल्कि अपने जिस्मका या किसी परन्दका साया भी उसपर न पडे तब यह पारेका कुश्ता उमदा बनजावेगा इसमेंसे जरासा पैसा पर उसको चर्ख देकर डालो तो खालिस सोना बनजावेगा (सुफहा खजानः कीमियाँ ३५)।

पारदभस्म हरताल वा शंखिया योगसे रांग चांदीकी चांदी।

हरिताल वा श्वेत- संखिया १२ पहर मूलीके पाणीमें खरल करना फिर १२ पहर छायामें सुखाणा फिर १२ प्रहर कलीहुये भांडेमें कुरसको दोनों पासे मूलीदे पाणीदा चोया दैणा फिर उसके ऊपर जो श्यामता आवे उस श्यामताको करदछिल छोडना फिर इस हरितालके ४ माशे और पारा २ माशे दोनोंको खरल करके खाली कुक्कुटांडमें हेठलवणपाके ऊपर दवाई पाके बंद करके कपडमाटी करके सुखाके मन्द मन्द अग्नि देके पकाना छः प्रहरमें भस्म होजायगी फिर दो हिस्से कली और एक हिस्सा चांदी पाके गालना फिर दो रत्ती पूर्वोक्तभस्म पादेणी सब रजत होजायगा। (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)।

रजतकर पारदभस्मशंखियायोगसे ताम्रसंपुट।

पारा १ तोला वा २ तोला, शंखिया २ तोले, सुहागा २ तोले, नवसादर २ तोले, द्रोणपुष्पीरस १० तोलेमें खरल २ दिन टिक्की बणाके धूपमें सुखा लैणी कटोरी हेठकी लोहेकी और ऊपरकी तांबेकी पेचदार और ऐसी होवे कि टिक्की आजावे खाली जगह ना रहे दोनो डिब्बियोंका संपुट बंद करके घुमारमिट्टीसे और गाचनी मिट्टीसे बंद करके पांच कपरौटी करदेणी और उसपर कडकके दानेके बराबर मिट्टी लगादैणी खूब सुखाकर गर्तमें ५ सेर पक्के जंगली गोहोंकी आग देणी स्वांगशीतल ४ प्रहरके बाद निकालौ ताम्रद्रवितपर १ तोला पर माणे रजतकरम। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

पारदभस्मशंखिया या हरतालयोगसे उससे ताम्रकी चांदी ताम्रसंपुट।

पारद २ तोले, शंखिया १ तोला, हरताल १ तोला, श्वेतपलांडु रसेन २ तोले, पारद १२ प्रहर" मर्दयेद् गुटिका भवेत्" होवे १ तोला हरिताल(हरिदुग्धेन मर्दयेत् ८ प्रहरं यावत्तस्यापि गुटिका कार्या एवं गुटिकात्रयं संपाद्य पारद-गुटिकाया उपरि शंखियागुटिका कार्य्या तस्या उपरि हरितालगुटिका देया एवमुपर्य्युपरि गुटिकात्रयं संपाद्य गोलकं विधाय तं गोलं ताम्रसंपुटे पुनर्नवाभस्ममध्ये निधाय चत्वारिंशत्पुटानि देयानि पुटमंत्रस्वल्पं, २ सेर द्विसेरमितवनोपलस्य देयं एवं चत्वारिंशत्पुटैः पक्वं गोलं सुरक्षयेत् द्रवितताम्रोपरि योज्यं मात्रा चास्य स्वल्पा तंडुलमिता (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

अकसीरकमरी बजरिये सीमाव व संबुलकायम (उर्दू)

मुआलम अंजार व खुशमालीमें लिखाहै सीमावकायम संबुलकायम तनकार नौसादर बराबर मसअदान तमामको बारह पहर लेमूंके पानीमें खरल करे बादहू संपुटमें रखकर दससेर पाचकदस्ती भडकेकी आग दें मिसल चूना जवाहरके होजावेगा एक माशा इस अकसीरसे दोतोला मिसपर तरह करे चांदी खालिस होजावेगी । (सुफहा अखबार अलकीमियाँ १६ । १२ । १९०६)

पारद गंधकसे ताम्रका सोना।

पारदं शुद्धभागैकं शुद्धं बलि तथैव च। शतवारं पुटं दत्त्वा वनार्कक्षीरवारिणा८३॥ निक्षिप्य डमरूयंत्रे लोहे कवचशेखरे। यंत्र-रंध्रं मृदा लिप्त्वा शेखरेभ्योः परिन्यसेत८४॥ मासार्द्धं ज्वालयेद्वह्निं स्वांगशीतं समुद्ध-रेत् । जायते सूतकल्कस्थताम्रवेधी रसो भवेत् ॥ ८५ ॥ रसं कुर्य्याच्छुल्बशुद्धं कर्षैकं रक्तिकां ददेत्। निर्मलं जायते हेम कुर्य्या-द्धेम न संशयः ॥ ८६ ॥ (नि. र.)

अर्थ-शुद्धपारद एकभाग, शुद्धगंधक एकभाग इन दोनोंको जंगली आकके दूध या पत्तोंके रससे सौ पुटदेवे उसको डमरूयंत्रमें रख कपरौटी कर १५ पन्द्रह दिवस-तक अग्नि जलावे स्वांगशीतल होनेपर निकाललेवे तो उस पारदकल्कका ताम्रके वेधनेवाला रस होताहै फिर गलाएहुए तोलेभर ताँबेमें एकरत्तीभर गेरनेसे सुवर्ण होजायगा ॥ ८३-८६ ॥

अकसीर यानी सीमावको हमराह गंधक हरताल, सम्मुलफार वगैरःके पांच नाशिस्तोंमें कायम कियाहै (उर्दू)

शिंग्रफरूमी २ तोला सम्मुलफार सुर्ख २ तोला, गंधक आँवलासार दोतोला, हरतालवरकी दोतोला, सोमाव मुसफ्फा दोतोले,काहीसुर्ख दोतोले, नौसादरईरानी दोतोला, नौसादर पैकानी दो तोला, हरएकको जुदाजुदा कूटकर यकजा मिलाकर खरलमें डाल दें और पानी शिगुफ्तः करीरमें जो माह चैतमें होताहै सातरोज सहक करे जब कि खुश्क हो तौ आतिशी शीशीमें डालकर काचके कागसे बंद करें बादहू हांडी गिलेहिकमत शुदःमें एक मन रेत डालकर शीशीको दर्मियानमें रखकर चूल्हापर रखें और चार प्रहरतक नरमनरम आग जलावें जब कि अच्छी-तरह सर्द होजावे तो शीशीसे दवाको निकालकर दुबारा खरलमें डालकर हमराहपानी शिगुफ्तः करीर ७ रोजतक सहक करके बदस्तूर अव्वल ४ पहरकी आग देवे इसीतरह पानी करीरमें सहक करके पांच मर्तबः रेगजंतरमें बदस्तूर आग देना चाहिये बस इस अमलसे सब दवा तहनशीन होजावेगी तो अकसीर तय्यार समझें और बकदर एकसुर्ख एक तोला मिस व एक तोला नुकरापर चर्ख करें और कुदरत खुदाका तमाशा देखें, अब भी मिहनत न करें तो आपकी तकदीर है (राकिम हकीमसय्यदगुलाम अलीशाह मालिक सफाखाना हैदरी करांची) (सुफहा ११ अखबार अलकीमियाँ १।१०।१९०७ ।)

रजतकरयोग पारदको अभ्रक और हरतालयोगसे ३ शीशीमें सिद्ध कियाहै. (उससे रांग वा ताम्रकी चांदी।

अभ्रक श्वेत लेके कपडेमें पाके कौडियां समेत पाणीमें धोणा जब सब पाणी बीच छणजाय पाणी नितारकर अभ्रक लेलेणा फिर बराबर सुहागा और उतना ही हरि-ताल पाके चीनी दे प्याले बिच रखदेणा फिर दोतोले अभ्रक बीच पांचतोले पारा पाके धतूरेके बीज रत्तका मीठा तेलिया कुचले इनका तैल पातालयंत्रद्वारा निकालकर उससे खरल करना चारघडी फिर शीशेमें रखकर बालुकायंत्रमें दोपहर आग देणी फिर उसी तैलमें खरल करना फिर आग देणी एवं तीनबार यह दिवाई रैणी जैसी होजायगी मीठातेलिया ७ तोले दिवाई दे हेठ ऊपर देके आग देणी दिवाई फूलजायगी उसको कलीपर वा त्रामेपर तोलेभर ४ चावलभर पाणा रजत होजायगा। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)।

सूत, टंकण, विष, चित्रकके साथ पारा घोट उस चूर्णसे रांगकी चांदी।

सूतटंकणमेकैकं नृकपालं द्वितीयकम् । सर्वतुल्यं विषं योज्यं पश्चाद्रक्तचित्रकम् ॥ ८७ ॥ विषतुल्यं क्षिपेच्चूर्णं वज्रक्षीरे विभावयेत् । मासमात्रं दिवारात्रौ तद्वाप्यं षोडशांशतः ॥ दत्तं वारत्रयं वंगे तारं भवति शोभनम् ॥ ८८ ॥ (नि. र.)

अर्थ-पारद, सुहागा एक २,भाग नृकपाल २ दो भाग इन सबको बराबर सींगिया और सींगियाकी बराबर लाल चीतेके पंचांगका चूर्ण इन सबको एकमासतक थूहरके दूधसे दिनरात घोटे उसमेंसे एक लेकर सोलहतोले वंगमें तीनबार बुरके तो उसकी चांदी होगी ॥८७॥८८॥

रजतकर पारा गंधक अभ्रचूर्णसे रांगकी चांदी ।

पीताभ्रं गंधकं सूतं रक्तपुष्पं चतुर्थकम् । वज्रीक्षीरेण संयुक्तवंगं तारायते क्षणात् ॥ ॥ ८९ ॥ (र. रा. सुं.)

अर्थ-पीलीअभ्रक, पीलीगंधक, पारा तथा रक्तपुष्प इनका चूर्णकर थूहरके दूधमें घोटे पीछे रांगको गलाकर उसमें डाले तौ रांगकी चांदी हो ॥ ८९ ॥

हेमक्रिया चांदीका सोना पारद गंधक अभ्रक माक्षिक चूर्ण योगसे ।

प्रमाणद्वितयं हेममाक्षिकं तच्चूर्णितम् । पारदं गंधकं खल्वे कृष्णाभ्रं च द्वयं नयेत्॥ ॥ ९० ॥ निंबूरसेन तां पिष्ट्वा बीजपूररसेन च । बीजपूरं तदुत्कीर्य तत्र कल्कत्रयस्य यत् ॥ ९१ ॥ क्षिप्त्वा निखन्य तद्भूमौ मूद्यते भूमिमध्यगम् । एकविंशत्यहान्यस्य तुषाग्निं कुरुते निशम् ॥ ९२ ॥ शनैः शनैर्यथा भूयाच्छूनकैर्यावदुत्तमः । तत्तथा ह्यन्यत्तद्-द्यात्तारे द्वादशभागिके ॥ ९३ ॥ माषमात्र-ममुं दद्याच्छ्लक्ष्णकल्कं च मूषके । एवमुत्प-द्यते तारं सारं हेम न संशयः ॥ ९४ ॥ (बृ. यो.)

अर्थ-दो भाग सुवर्ण, ८ आठभाग सोनामक्खी, पारा गंधक और कृष्णाभ्रक इन तीनोंको नींबूके अथवा विजो-रेके रससे पीसलेवे फिर विजोरेको चीरकर उसमें उस कल्कको भरदेवे फिर धरतीको खोद और उसमें गोलेको रख ऊपरसे रेत ८ आठ २ अंगुल भरदेवे इसपर इक्कीस-दिनतक धीरे २ तुषाग्नि देवे उस सिद्ध रसके एक माशेको बारह तोले चांदीमें गेरै तो सुवर्ण होजायगा ॥ ९०-९४ ॥

सुवर्णकर लेप ताम्रका सोना ।

पारा १,गंधक २,हरिताल ३,मनःशिला ४, सोनामक्खी ५, शंखियासुर्ख ६ काकची हल्दीके रसमें खरल करनी तीनदिन ताम्रपत्रपर लेप करके पुट देणी फिर लेप फिर पुट एवं सातवार लेप और पुट देनेसे सुवर्ण होगा (जंबूसे प्राप्त पुस्तक) ।

तारकृष्टी चांदीसे सोनेका जोडा ।

गंधकं तारमेकं स्यात पारदस्यैकमेव सः । हेममाक्षिकमेवैकं दरदं तालकं तथा ॥९५॥ स्त्रीस्तन्येन तु तद् घृष्ट्वा तारपत्रं प्रलेपयेत् । शरावसंपुटे कृत्वा मंदाग्निस्तत्र दीयते ॥ ॥ ९६ ॥ आरण्यशानकैः पश्चात्तारमादा-य ते च तत। कनकेन समं देयं मूषके प्रकटे च तत ॥ ९७ ॥ आवर्त्य तेन तारेण तार-कृष्टी भविष्यति । अम्लवेतसपानीयं मेल-येच्च पुनःपुनः ॥ ९८ ॥ बीजपूरस्य बी-जानि समभागानि कारयेत् । अथवा मधु-मध्ये च ढालयेद्वारपंचकम् ॥ ९९ ॥ अपूर्व दृश्यते रूपं कांचनं दशवर्णिकम् ॥ १०० ॥ (बृ. यो.)

अर्थ-गंधक एकभाग पारा एकभाग सोनामक्खी एक-भाग सिंगरफ एकभाग हरताल एकभाग इन सबको स्त्रीके दूधसे घोटकर चांदीके पत्रोंपर लेपकर देवे और उनको सकोरामें रख और कपरौटीकर जंगलीकंडोंकी धीरे २ आगदेवे फिर चांदीके पत्रोंको निकाललेवे तदनन्तर उस चांदीके पत्रोंकी बराबर सुवर्ण लेकर दोनोंको घरियामें रख चरखदेवे अर्थात् गलावे और गलेहुएको अम्लवेत अथवा विजोरा अथवा शहदमें ढाले तो दशवर्णका अनोखा सुवर्ण होजायगा ॥ ९५-१०० ॥

तारकृष्टी चांदीसे सोनेका जोडा ।

पारदं दरदं हेममाक्षिकं गंधकं शिला । एतानि समभागानि काकमाची रसेन च ॥ १०१ ॥ मर्दयानि च गाढानि कारित-व्यानि खल्वगे । पीतपित्तलपत्राणि कृत-सूक्ष्माणि तान्यथ ॥ १०२ ॥ लेपितव्यानि चैतेन चूर्णेनाथ प्रयत्नतः । मध्यमस्तु पुटो देयो क्रियते चूर्णमुत्तमम् ॥१०३॥ पुनस्ता-रैकभागैकं चूर्णं भागद्वयं भवेत् । अत ऊर्ध्व-मिदं दत्त्वा धाम्यते चैकतः कृतम् ॥१०४॥ एवं वारद्वयं तारं तत्तैले विनिवेशयेत॥पिं-जराभं भवेत्तारं समं हेमापि मेलयेत्१०५॥ जायते कनकं रम्यं वर्णयुग्मं विहाय तत ॥ १०६ ॥ (रस. शं.)

अर्थ-पारद, सिंगरफ, सुवर्णमाक्षिक (यहां हेममाक्षिक शब्दसे हेमसे सुवर्ण और माक्षिकसे सोनामक्खी ग्रहण है अथवा केवल सुवर्णमाक्षिकका ही ग्रहण हो इन दोनों प्रका-रोंमें हानि नहीं) गंधक और मैनसिल इन सबको समान भाग लेकर मकोयके रससे घोटे तदनन्तर पीले पीतलके सूक्ष्मपत्र बनवाकर उनपै पूर्वोक्त कल्कका लेप करदेवे और मध्यम पुट देकर चूर्ण करदवे फिर एकभाग चांदी और दो भाग चूर्ण इन दोनोंको मिलाकर चरख देवे जब पिघल-जावे तब भिलावेके तैलमें डालदेवे इस प्रकार दोबार कर-नेसे चांदी पीले रंगकी होजाती है वह चांदी और सुवर्णको समान भाग लेकर चरख देवे तो सुवर्ण होगा ॥ १०१-१०६ ॥

सोना बनानेकी तरकीब जरिये सीमाव (उर्दू) ।

सुर्खकमलके फूलकी पत्ती उमदा फौलादके बुरादहमें मिलाकर खूब खरल करके चर्ख दे फिर बुरादा करके उनही फूलोंकी पत्तीमें चर्ख दे इसीतरह तीन चर्ख दे इस फौलादका रंग दो मर्तबेमें मिस्ल तांबा होजायगी उसको घरिया बनाले और उसमें साफ पारा भरदे और पारसपीपलके पत्ते और फूलोंका अर्क डालकर सौ आंच

दे पारा फौलादका रंग सुर्ख होजावेगा फिर एक हिस्सा यह और ९९ हिस्सा चांदी मिलाकर चर्ख दे सोना बनजावेगा। (सुफहा २७ खजाना कीमियाँ)।

रजतकर (रांगकी चांदी)

हरिताल कुमारिकापुष्प नुगदीमें रखकर कपडमाटी करके सुखाकर ऊपर गोहे मिट्टीका पोचा देकर चारसेर कच्चे गोहेकी आग देणी फूल होजायगा इसमें पारा मिलाकर सख्तगोली बनाकर सख्तगोली तोलामें १ माशा नीलाथोथाके हिसाबसे नीलाथोथा और शंखिया तीन तोला गोलीमें २ तोलाके हिसावसे इन तीनोंको खरल करके महीन करके आकके पत्र ८ उपर्य्युपरि देके ऊपर धागा लपेट कर गर्म भूभलमें घडीभर दाबछोडना थोडे प्रसिज्जलके चिक्कण जैसा होजायगा फिर लोहचून तोला गोलीमें ३ माशेके हिसाबसे और गोदन्ती हरिताल और राल दोनों शंखियेके सम समभाग लेकर तीनोंको खरल करके महीनकरके प्रस्वेदित पूर्वोक्त मिलाकर खरल करणा संपुट मिट्टीदा सुखाकर उसमें बंद करके सुखाकर भूभलमें पूर्ववत् प्रस्वेदित करना तात्पर्य्य राल उडकर बाहर न आवे प्रस्वेदित होकर मिलजावे प्रस्वेदसे सिद्ध होती है (सिद्धं वंगं नियोजयेत् ।)(जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)।

वेधक।

हरिताल १॥ तोला कुमारीपुष्प नुगदीमें रखकर कपडमिट्टी करके सुखाकर ४ सेर कच्चे गोहेकी आग देणी फूल श्वेत होजायगी उस्में पारा १॥ तोले नीलाथोथा ३ माशे शंखिया २ तोले (तीनों मिलाकर खरल करके घडीभर रखना फिर निकालकर) पारेकी गोली सख्त होजावे तब दूसरी दो चीज मिला देणी (मिलाके आकके पत्र ८ लपेटकर भूभलमें) गोदन्ती हरताल २ तोले राल २ तोले लोहचूर्ण ७॥ माशे दुगुणी दुगुणी दोनों होन मिलाकर सम्पुटमें रखकर बंद करके भूभलमें रखणा जिससे राल दीवोन आवे और पसीना आजावे। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

पारदवेधक।

पारा १ तोला शंखिया १ तोला नीलाथोथा ३ माशे तीनोंको सुखा खरल करना फिर आकके ८ पत्रोंमें लपेटकर भूभलमें रखणा नरम होजाय तब निकालना लोहचूना ५॥ माशे और नौ नौ माशे रालबरकी और गोदंती इनको खरलकरके पूर्वोक्तसे २ रत्ती पाकर संपुटमें रखकर नरम आग देवे जिससे प्रसिज्जलजाय और वह ना निकले और पूर्वोक्त कारके डंडेमें आगदेणेसे फूल होजायगा और त्रामेपर चलैगा (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)।

सिद्धदल कल्क(शिंग्रफ गंधक, हरताल मैनशिल ताम्रयोग)

तालताम्रशिलागंधसंयुतं दरदं यदि। कूपिकायां मुहुः पक्वं द्रवकारि तदा मतम्१०७ (र. चिं.)

अर्थ-जो हरिताल, ताम्र, मैनशिल, गंधक और सिंगरफ इन सबको इकट्ठा करके कुप्पीके भीतर रखके वारंवार पाक कियाजाय तौ वे द्रवकारी होजाते हैं ॥ १०७ ॥

स्वर्णकर चांदीका सोना।

पारा १ तोला आँवलासार १ तोला दोनोंकी कज्जली बनानी १ तोला जंगाल पाके खरल करना १ तोला किरम पाके खरल करना चारे चीज खरल करके चीनीके प्याले बीच पाके तेजाबसे तर करके धूपमें रखना जब सूखजाय तब तोले चांदीपर १ माशा पाणा।

नोट-ताम्र चारित पारदका पर्य्याय सिद्धकर उससे चांदीका सोना बनाया है। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)।

स्वर्णकर एक प्रकारसे ताम्र पारदका मेल।

शंखिया १ तोला, सज्जीकाली १ सेर, पक्काचूना अनवुज्ज २ सेर, पक्के सज्जी चूना दोनों पानी ८ सेर पक्केमें भिगोवे तीनदिनतक फिर नितारकर उसमें शंखिया पकावे पक्काशंखिया १, गंधक २, हरिताल ३, शिंग्रफ ४, रसकपूर ५, सुहागा ६, संगरासख ७ सातौं समभाग नौशादर फिटकिरी नौ नौ माशे पारा ५ तोले पंचगुणा अंमीका रस वा अनारदानेके पानीमें खरलकर २॥ सेर कच्चे लकडीकी आग देणी ऐसे १५ दिन खरल तथा आग।

नोट-तसकिया व तश्वियासे ताम्र जारण कर पारदको बद्ध कियाहै (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)।

स्वर्णकर तांबेका सोना।

हरिताल गंधक जंगार सिक्का पारा यह पांचौं समभाग लेकर महीन पीसना फिर तेजाबमें पाकर धूपमें रखना ४० रोज जब तेजाब सूखजाय तब छोटी पुट देणी द्रवित ताम्रपर पाणा (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)।

पारा गंधक मैनसिल नागलेपसे चांदीका सोना।

पारदं शीसकं गंधं कुनटी तच्चतुष्टयम्। बीजपूरांभसा पिष्ट्वा बाढं दिनचतुष्टयम् ॥ ॥ १०८ ॥ अथ सूक्ष्माणि पत्राणि तानि तारस्य लेपयेत्। बीजपूररसेनैव तानि मात्रापि तावती ॥ १०९॥ एकाधिका भवत्यत्र भावना चास्य विंशतिः। विशोष्यावर्तितं तारं भवेत्तारस्य कांचनम् ॥ ११०॥ (बृ. यो., र. सा. प., र. रा. शं.)

अर्थ-पारद सीसा गंधक और कुनटी इन चारोंको विजोरेके रससे चार दिवसतक पीसे इस कल्कसे चांदीके सूक्ष्म पत्रोंपर लेप करदेवे (और पुटद्वारा भस्म करलेवे) अब उस चूर्णको विजोरेके रसकी इक्कीस भावना देवे फिर सुखाके सुवर्णके साथ चरखदेवे तो सुवर्ण होगा ॥ १०८-११० ॥

सिद्धमतखोट।

पारा गंधक मैनशिल नाग योग।

अथाष्टांगुलतश्चुल्ल्याः सिध्यंति सिकतावृताः। रसगंधशिलासर्पाः पाकाद्यग्निविपत्क्रियाः ॥ १११ ॥ (बृ.यो., र. रा. शं.)

अर्थ-पारा गंधक मैनसिल और सीसेको पीस (बिजोरेकी भावना देकर) बालुकायंत्रसे पकावे तो पारद खोट होताहै ॥ १११ ॥

रजतकर-(पहेली) पारा शिंग्रफ गंध हरताल मैनशिल शंखिया नाग जस्तसे ताम्रकी चांदी।

दोरत्ते दो पीउले चंदावर्णे चार । खदबद खिचडी रांधकर, चेला भूख ना मार ॥

सिंग्रफ १ मैनशिल २ गंधक ३ हरिताल २ पारा १ शंखिया २ सिक्का ३ जस्त ४ महीन खरलकर अर्कदुग्धमें खिचडीकी तरह रिन्नणा फिर ताम्रपर वा कलीपर पावै शुभ होवे (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

रजतकर (तांबेसे चांदी)।

शंखिया १ तोला पारा हरिताल नौसादर कली रक्तमूल कार गहेल निंबूरस खरल २ प्रहर आग १० सेर कंडे दी संपुट ताम्रपर रजत होय (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

वेधक पारद गंधक तैल।

एरंड-तत्तैलं सूर्य्यवारेण ग्राहयेद्विधिवत्ततः रक्तैरंडस्य तैलेन शुद्धं सूतकगंधकम् ११२॥ मेलयित्वा पचेत्तैलं लोहपात्रे विशेषतः । याममात्रं पचेद्धीमान् गुंजगुंजानिभं भवेत्। तत्तारं नागपत्रेषु सहस्रांशेन वेधयेत् ११३॥ (औषधिकल्पलता.)

अर्थ-आदित्य वारके दिन लाल एरण्डका तैल निकाल और उसमें पारद और गंधकको डाल ४ लोहेके पात्रमें पकावे जब वह चौंटनीके समान लाल होजाय तब उसे उतारलेवे तो वह तैल हजार अंशसे चांदीको बेधता है ॥ ११२ ॥ ११३ ॥

अन्यच्च।

गंधक आँवलासारसे चतुर्गुण, एरंडबीज गंधकसे त्रिगुण, पारद दोनोंसे द्विगुण, एरंडबीज हुये गंधक एक दाम, एरंडबीज ४ दाम पारा ३ माशे इन तीनों चीजोंको खूब पीसकर इनका तैल निकाल लेणा ताम्र द्रवितपर देनेसे स्वर्ण होवेगा। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

अन्यच्च।

रत्तिकाकी जड छिलीहुई २ सेर गंधक, १ पाव पारा, तीनों चीजें कुक्कुटांडकी जडीमें खरल करके गोलियाँ बणां लियाँ सुखाकर शीशेमें पाकर पातालसे तैल निकालना उस तैलको खिचडीमें पाकर सुखालेणा द्रवित ताम्रपर पारा सुवर्णकरम् ॥ (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

गंधक तैल वेधक पारदयोग (जलयंत्रसे)

गंधक १ तोला, पारा ३ माशे, दोनों खरल करने अम्मी बूटीदा रस १ तोला पाके खरल करना, १ तोला फुलेनपाके टिक्की बणानीं टिक्की कडाहीमें रखके जलमुद्रा करके आग देणी तेल होजायगा वह तैल ताम्रपर मलकर आग देणी स्वर्ण होजायगा। (दृष्टप्रत्ययोऽयं बूटारामस्य) (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)।

रसकपूर और गंधककी द्रुति वेधक।

खर्परं कुक्कुटांडस्य गृहीत्वा क्षालयेत्ततः । शोष्य चूर्णं सूक्ष्मतरं कृत्वा संप्लावयेत्ततः ॥ ॥ ११४ ॥ निंबूरसैः सिरकया वा वह्निना शोषयेज्जलम् । पुनः संप्लाव्य संशोष्य सुधा रूपं ततो भवेत् ॥ ११५ ॥ तच्चूर्णं नवसारस्याधश्चोर्ध्वं प्रधारयेत् । मुद्य संधारयेच्चूल्हौ दिनान्यष्टौ दिवानिशम् ॥ ११६ ॥ वह्निं कुर्य्यात्प्रयत्नेन पक्वं काचस्य भाजने। भाजनान्तरकृतमुखं खनेदश्वपुरीषगम् ११७ अधश्च्युतं गृहीत्वा तन्मर्द्य तत्समगंधकम् । तदर्धं रसकर्पूरं सम्यक् संमर्द्य धारयेत् ॥ ॥ ११८ ॥ अश्वपुरीषे सततं यावद्द्रवरूपतां याति । अयं रसः समाख्यातः देहलोहकरः परः ॥ ११९ ॥ (जंबूसे प्राप्त पुस्तक.)

अर्थ-मुर्गेके अंडोंकी सफेदीको धोकर सुखालेवे फिर नींबूका रस अथवा सिरकेसे तरकरके अग्निसे सुखालेवे इसप्रकार दो बार करै तो वह चूनेके समान श्वेत होजायगा। उस चूर्णको नौसादरके ऊपर नीचे देकर हांडीमें रख और कपरौटी कर चूल्हेपर चढावे तदनन्तर आठ दिवसतक रातदिन बराबर अग्नि देता रहै उसमेंसे पक्वपदार्थको निकाल काचकी शीशीमें रखदेवे इस शीशीका मुख एक दूसरी शीशी करदेवे जो खाली शीशीहो उसको नीचे धरै फिर घोडेकी लीदमें एक मासतक रहनेदेवे नीचे टपकेहुए रसमें रसकी बराबर गंधकको घोटे फिर गंधकसे आधा रसकपूरको गेर घोटे इस कजलीको शीशीमें भर घोडेकी लीदमें द्रव(रसहोनेपर दाबदेवे तो यह रस देहको लोहेके तुल्य करताहै और लोहेको बेधताहै) ॥११४-११९॥

सोना बनानेकी तरकीब (उर्दू) पारदगंधक खिलाकर पायखानाके तेलसे।

पारा साफ गंधकसाफ बराबर दूधमें डालकर सातरोज पिये और इक्कीस रोजका पायखाना सुखाकर मिट्टीके बर्तनमें करके कपरौटी करदे और इसके नीचे सूराख करदे और दूसरा बर्तन मिट्टीका जमीनमें गाडदे इसके ऊपर वह बर्तन रखदे और हवा वंदकरदे फिर जंगली उपलें उसके चारों तरफ लगाकर आगदे सुर्ख और जर्द तेल निकलेगा रुपयापर लगाकर मुहकी फूंकसे सुखादे फिर आगपर रखकर निकालले और मुहसे हवादे और वही तेल उसपर लगाकर आगपर रखकर तपाले सोना बनजावेगा फिर पारा गंधक खानेवाला त्रिफला खावे जबतक कि पेट साफ न हो खाता रहे इसका खानेवाला सौबरसतक जिन्दा रहेगा और कोई बीमारी उसको होगी और बाहु बहुत बढजावेगी और सफेदबाल स्याह होजावेंगे और बूढा जवान होजावेगा। (सुफहा खजाना कीमिया २३ व २४)

गंधक और हरतालका रोगन अकसीरी (उर्दू)

गंधक आँवलासार तीनछटांक, हरताल तबकी १ छटांक,

दोनोंको बारीक पीसले चूना आधसेर लोटासज्जी पावभर दोनोंको बारीक करके पानीमें डालदे और दोनोंका मुकत्तर दोसेरके करीब लेकर गंधक व हरतालमें थोडा थोडा दाखिल करके खरल करते चले जावें जब सब पानी जज्ब होजावे तो गंधक व हरितालको थोडासा आगपर रखकर देखलें अगर शौलादे तो और खरल करें अगर शौला न दे तो गोलियाँ बनाकर बजरिये पाताल जंतरतेल कशीद करें यह तेल अकसीरका कामदेगा और अहलफन इसतेलको समझगये होंगे (सुफहा ४ अखबार अलकीमियाँ १६।११।१९०७)

गंधक तेलसे ताम्रका सोना।

१६ तोले गंधक पीतपुष्पवाले गिदड तमाकूके रसमें खरल करना १ मास और पीतसंखिया १ तोला गोहेंमें दाड छोडना ठंडे थोहरके दूधमें १ मास श्रावण महीने फिर दोनोंको खरल करके शीशीमें पाके लिदमें दबा छोडना १ महीनामें तैलरूप होजायगा सूक्ष्म ताम्रपत्रपर लेप करना स्वर्णकरम्। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

गंधकतैल ताम्रवेधक।

१५ सेर पिलछीदी खार निकालकर उस खारपानीमें १२ तोले गंधक ६ तोले शंखिया श्वेत पीसकर दोनों पादेणे और पाणी कडाहीमें पाकर आग बालणी जब थोडासा जल रहजावे तब गंधकका तैल शीशीमें पादेणा तैलको ताम्रपर पाणा और शंखिया नीचे बैठजायगा उसको कलीपर सुटना।

गंधकका तैल खासियत अकसीर व साजिश तूतिया बजरिये पताल जंतर (उर्दू)

आवलहसन वसेरपुख्तः आँवलासार एक तोलापर चोया दे कि, जज्ब करदें नीचे नरम आंच रोशन रक्खें जब तमाम लहसनका पानी जज्ब होजावे तो आँवलासारमें हस्बजैल कुश्ता तूतिया ३ माशे तय्यार करके शामिल करदें और बजरिये पताल जंतर तैल निकाललें यह तेल अकसीरका कामदेगा तरकीब कुश्ता तूतिया मजकूर डंडा थूहर एक बालिश्त लेकर उसमें तूतिया ६ माशेकी डली बंद करके खूब गिलेहिकमत करें फिर पांचसेर उपलोंकी आंच देदें जब सर्द होजावें तो निकाललें तूतिया व रंग सफेद कुश्ता होकर बरामद होगा-(सुफहा ५ अखबार अलकीमियाँ)।

अकसीर शमसी रोगनगंधकमय तांबा (उर्दू)

जनाब एडीटर साहब जादइनायतहू एक नुसखा अकसीर शमसी पेश खिदमतहै उम्मीद है कि नाजरीन साहिबान तजरुबा करेंगे वादहू निहायत खुश होंगे क्योंकि तरकीब सहल और तजरुबा शुदः है गंधक आंवलासार ६ तोलेको करछीमें पीसकर डाल दें और चूल्हेपर रखदें और नरमनरम बेरकी लकडीकी आग जलावें और पानी बूटी पनवाडी जिसको सहराई कसूंबा कहतेहैं चूहचूह डालते जावें जब कि दोसेर पानी जज्ब हो तो नीचे उतारकर खरलमें डालदें बाद लहसन एक पोतह ८० तोला शीरजक ६ तोला पीसकर उसी खरलमें डालकर हरसह अजजाइको खूब सहक करें जो कोई जुज उसका मोटा न रहे जब कि हम जानहोचुके तो सबका एक कर्स बनाकर रखलेवे बाद हांडी गिलेहिकमत शुदःमें ८ सेर पानी चूनाका डालकर उसके मुहपर बारीक मलमलका कपडा बांधकर वह कर्स उसपर रखकर प्याले गिलसि ढांपदें और लबप्यालेका आरद मांशसे बंद करके हांडीको चूल्हेपर रखकर नीचे नरमनरम आग ४ पहरतक जलावें लेकिन जब दोपहर आग होचुके तौ कर्स मजकूरको बदलदेवें यानी ऊपरका जर्फ नीचे और नीचेका जर्फ ऊपर करदें पस जब कि चारपहर पूरेहों तो आगको बंद करें सर्द होनेके बाद मुलाहिजा फर्मावें तो एक टिकिया हांडीसे आंवलासारकी बरामद होगी बडी हिफाजतसे उसको निकालकर खरलमें डालें और उसमें ६ माशे कुश्ता तूतिया बरंग सफेद मिलाकर हमराह पत्तः राहूके दोरोजतक सुबहसे शामतक सहक करें फिर बराबर बेरके गोलियां बनाकर सायेमें खुश्क करें जब कि अच्छीतरहसे खुश्क होजावें तो आतिशी शीशीमें डालकर बतरीक पतालजंतर दोसेर मेंगनी बुजकी आग देकर कशीद करें इन्शा अल्लाहताला बरंगसुर्ख रोगन तय्यार होगया दुबारा दूसरी आतिशी शीशीमें डालकर चांवलोंमें दम देवें और बवक्त जरूरत काममें लावें बस तजरुबा शर्तहै तय्यार करके देखलें।

नोट-वजन चावलोंका यह है चावल ८० तोला कंदस्याह ४० तोला रोगन २० तोला इसी हिसाबसे चावल कंद पकाकर बवक्तदम शीशीको दर्मियानमें रखदें लेकिन यादरहे कि मुह शीशीका चाँवलोंके बाहर रहे वरनः अमल खराब होजायगा (हकीमसय्यद गुलाम अलीशाह अजकरांची) सुफहा नं० ८ व ९ (अखबार अलकीमियाँ १। ८। १९०७)।

गंधकतेलसे तांबेका स्वर्ण।

आवलेसार निर्मलेसार रक्तकाही (सममेतत्त्रयंस्नुह्यर्कदुग्धाभ्यां सह खल्वे मर्दयेत्ततः पातालयंत्रेण तैलं संपातयेत्तस्मिन् तैले सोनसकेश्वरीं ताम्रं द्रुतं निषेचयेदिति)। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)।

स्वर्णकर तैल (ताम्रका सोना)।

शारा नवसादर फिटकिरी श्वेतकाही सुहागा समभागका तेजाब उस तेजाबविच खरल करना शंखिया सुर्ख गंधक हरिताल काहीसुर्ख जर्दीअंडोंकी सब बराबर होवे खरल करके १६ पहर गोली बणाकर सुखालैणी फिर शीशीमें पाकर वालुकायंत्र पातालयंत्रसे तैल निकालना उस तैलको ताम्रपर मलके अग्नि कोयलोंकी देवे (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)।

गंधकादितैल-वेधक।

१॥ सेर कबामूत्र, २ तोले लोटासज्जी, २ तोले शोरा लोटासज्जी महीन पीसकर कालीगौके मूत्रमें पादैणा २ दिन भिजा फिर उसमेंसे आधा लेकर कडाहीमें पाकर नीचे आग बालनी जब रवडीजैसा होवे तांबाकी मूत्रविचों आधा पादैणा फिर आगबाल जब रवडी जैसा होजावे तब फिर सारामूत्र पादैणा फिर आगबालणी जब रवडीजैसा होवे

तब उतार लैणा सडै ना यह शोरा कायम है, २ तोले आँवलेसार, १ तोला सिंग्रफ निका करके थोमसेर कचा लेकर कूटके उसदा नुगदा बणाके ऊपर टाकी लपेटके मिट्टी जरा लगाके सुखाके दोबट्टी गोहे बालके जब अंगार निर्धूम होण तब तप्त जगहपर रखके अंगार देकर रिज्जावे थोम सब ना सडे हरतालबरकी २ तोले निंब दे पत्राविच रखके रिजजाये पकजाये पूर्वोक्त शोरा, गंधक, सिंग्रफ, हरताल, चारों चीजां आतिशी शीशीमें पाकर उसमें ६ माशे नौसादरका तैल पाके (पातालयंत्रद्वारा तैल निकालना) यह तैल ताम्रपर मलना कांचन करम् । (जंबूसे प्राप्त पुस्तक) ।

गंधकादि तैल-वेधक ।

शिंग्रफ, गंधक, हरिताल, समभाग (कुमारीपीतिम्ना १६ प्रहर खल्वे मर्दयेत् ततः लघुगुटिकारूपं निर्माय शोष्य काचकूपिकाद्वयं अधःकूपिकामुखे ऊर्ध्वं कूपीमुखं विधाय ऊर्ध्वकूपिकायां गुटिकां निधाय मुखमुद्रां विधाय बृहज्जलपात्रे १६ प्रहर हठाग्निं कुर्यात् वेधकतैलमधः कूपिकायां पतेत् ।) (जंबूसे प्राप्त पुस्तक) ।

गंधकादि तैल ।

गंधक २॥ हरिताल २॥• पारा २॥ सिंग्रफ १ सिराव ३३ खरलकर नाफिर गोली बणाकर सुखाणी फिर आतिशी शीशीमें पाकर पातालयंत्रसे तैल निकाललैणा आगपहर एक पहले गर्मभस्म पाणी फिर मेंगडा ३ सेर फिर गोहे १० सेर कचेलाणे आग ठंडी ना होवे ऐसे तैल निकाल रखणा (जंबूसे प्राप्त पुस्तक) ।

गंधक हरताल संखिया शिंग्रफका रोगन अकसीरी (उर्दू) ।

सीमावगंधक, आँवलासार, शिंग्रफरूमी, जरनेख सम्मुलफार जर्द, इन सबको बारीक खरल करके मुर्गीके बैजेमें दाखिल करें और एकबैजः मुर्गका पोस्त उसके मुहपर देकर गिलेहिकमत करें बादहू चूना आवनारसीदः बीससेर निस्फबैजेके ऊपर और निस्फचूना नीचे देकर उसके ऊपर पानी छिडकदें चार प्रहरके बाद निहायत आहिस्तगीसे बैजः मुर्गको निकाललें बैजेमेंसे व रंग सुर्ख तेल बरामद होगा कीमियांगरोंके नजदीक यह तेल अकसीरकी खासियत रखताहै । (सुफहा ३ अखबार अलकीमियाँ ।१६।११।१९०७)

रोगनअकसीर खुर्दनी ।

जो गंधक, हरताल, संखिया, व तुकरः वगैरः से बनायाहै (उर्दू) सम्मुलफारसुर्ख एक तोला, सम्मुलफार सफेद एक तोला, शिंग्रफ एक तोला, चांदीका पानी जो तेजाबमें गलाई जातीहै एक तोला इन जुमला इशियायको कूटकर एक कडाही आहनी सूराखशुदःमें दाखिल करें बादहू इनके ऊपर नमक सफेद आधसेरको बारीक पीसकर तहदेदें अजाँबाद कडाहीमें कोयला रोशन करें और कडाहीके नीचे सूराखमें शीशीका मुंह चस्पां करदें दो घंटेतक तेल निकल आवेगा इस तेलको एहतियात पुख्तःशीशीमें रख लें अगर एक सीख दो दाने मुनक्कामें खिलावें तो कमजोर और बलग़ी मिजाज नामर्द ईफुल उम्र जौफुलकवा लोगोंके लिये आबेहियातसे कम नहीं गिजा गोश्त कबाब शीरंगाउ और घी जिस कदर खा पीसके खाना चाहिये अगर चांदी एक तोलेको गलाकर इसतेलका एक कतरा डाल दें तौ अजीब तमाशा नजर आता है । (सुफहा २ अखबारअलकीमियाँ १।१२।१९०७) ।

रोगन अकसीर-अजसादव अजसाम-- (जस्त-सीमाव-गंधक-हरताल-कसी, ससे) (उर्दू) ।

अव्वलजस्त दोतोलेको सीमावके साथ मिलाकर अकद करले और इस अकदको रोगनफिटकिरीमें चारप्रहरतक पकावे दूसरे रोज अकद मजकूर अजखुद तेलकी शकलमें होजावेगा गंधक जोहरबार रोगनमादह गाऊमें चर्ख होकर सौदफे पिघलचुकीहो और हीराकसीस जो रोगन मालकांगनीके जरिये मूमिया कियागयाहो और हरतालबर्की मुसफ्फा यह सम वजन लेकर रोगनमजकूरःमें खरल करके बजरिये शीशी आतिशी बतरीक मअरूफतेल निकले पहले तेल निकालें यह तेल किसकिदर गलीजसुर्खी माईल होगा खुराक १ टंक मरीजजजामको शहदके साथ और मरीज आतिशकको बर्गेतांबूल (यानी पानके पत्ते) के साथ व सुस्त और नामर्दको बालाइके साथ—लकवाराशा फालिज अधरंग व जमाउल मकासिल (जोडोंका दर्द) और मरीज हैजाको हींगके साथ दें मुफीद साबित होगा इस रोगनका कीमियाई फाइदा यह है कि अगर एकतोला शिंग्रफ रूमीको ६ माशे रोगन अकसीर मजकूरःमें खरल करके बकदरदानः नखूदगोलियां बनाकर बजरिये पतालजंतरसे तेल निकाललें तो यह तेल सीमावकेलिये आलादर्जेका नशिस्त होगा और ताँबाळाजिळको तिलाए हस्तअय्यार बनादेगा—(बाकीआइदा) (सुफहा ४ अखबारअलकीमियाँ १६।६।१९०५) ।

रुबाईशमशमगरबी (फार्सी)

खुशगुफ्तशमशमगरबीगूगर्दतूतिया जरनेख सुर्बजीवक ईपंजराविसावाखूनतीरेत्तरःकुनवांगहनियारदरकुन तुकरःनिहासजरकुनईअस्तकीमिया ।

तफसील ।

दोजरने खुदो किबिरी तो दो जीवक । मरा आमदजि उस्तादई मोहक्किक ॥ दो वजन अज सुर्बः वदो अज तूतिया गीर । तोई हरपंज बहर कीमियागीर ॥ बिकुन सीमावरा वा सुर्ब पस अकद । कि गर्दद अजलताफत चूं जरे नकद ॥ बिगीरद शोरओ अजजाकि तेजाब। कि रेजद बर सरेयू हमचुंजर्द आब ॥ उकावे कांमसअद कर्दः बाशद । व जाके जर्द यकजा कर्दः बाशद ॥ जि कशरे बैजः आतिश कर्दः बरगीर । बराबर वा उकावश साज तख-

मीर॥ बिकुन मखलूत वा तेजाबे मजकूर। कि बिनुमायद चूंखूँ तीरः अजदूर ॥ गुदा जिशदः ओरा दर चाह ताफीन मियानः शीशः दरचाह जेर सरगी ॥ चो हलगर्दद पस ओराकु न तो तख्तीर। मियानह कर नवीकश ब तदबीर ॥ चो हल गर्दद हल मुश्कल तजूदन बाशद गैर हल हरगिज तुरासूद ॥ पसा आँगह जेर बरई पंज जौहर। बिकुन तसहीक अज सुबहताब दीगर। बिनें दर शीशः अन्दर जेर रेगश। बिकुन आतिश फरावां जेर देगश ॥ बिकुन तकरार जावो सहक आतिश। कि गर्दद तह नशीं ई जुम्लः बेखश ॥विकुन तरह ओरा बर तुकर ओ मिस।तिलाए नर्म गर्दद जूव तावश ॥ जहरई नुसखा कर्दः अस्त तकरार व काजिव लानते अल्लाहबाद सदहर बादः ॥

(राकिमहकीम नूरआलम अजकोटशीरा डाकखाना टवन तहसील तिला गंगजिलाअटल) (सुफ़हा ६। किताब अखबारअलकीमियाँ १।४।१९०५)

स्वर्णकर तैल।

हरिताल गंधक सिंग्रफ पारा मनशिल पीतशंख रसकपूर सातौ समभाग लेकर अमरबेलके रसमें सातदिन खरलकर मृतपात्रमें ४० दिन गोबरमध्य रखणा तैल होजायगा उसको ताम्रपत्रपर लेपकरके तपावे स्वर्णक्रिया। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

अनुभूतस्वर्णकरयोग (सोना, चांदी, तांबा, जस्ताके मेलसे सोनेका जोडा)

ताम्र १ तोला, जस्त १ तोला, चांदी १ तोला तीनों गालके लोणादे पाणीबिच बुझाणा ७ बार फिर झाडके ६ माशे स्वर्ण मिलादेणा फिर बेचना बराबर भावबिकजायगा दृष्टप्रत्यययोगोयं वक्तुग-(जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

हेमक्रिया।

हेमभागद्वयं तारं तथा ताम्रं चतुष्टयम्। एकतः क्रियते पत्रमतिसूक्ष्मं निरामयम् ॥ ॥ १२० ॥ जंबीरनीरसंपिष्टं खर्परस्याष्टटंककम्। तेन तान्यथ पत्राणि लेपनीयानि वै बहु ॥१२१॥ आवर्तयेत् पुनर्दत्वा मूषके गलितानि च। तदा तानि भवंत्यत्र हेमरूपाणि नान्यथा ॥ १२२ ॥ (बृ. यो.)

अर्थ-दोभाग सोना, दोभाग चांदी और चारभाग ताँबा इन सबको मिलाकर सूक्ष्मपत्र बनावे उनपर जँभीरीके रससे पिसेहुए आठभाग खपरियाका लेप करै उन पत्रोंको घरियामें रख गलावे फिर चरखदेवे तो सुवर्णका वर्ण होजायगा ॥ १२०-१२२ ॥

चांदी रंगनेकी तरकीब।

जस्त और चांदी एकएक तोला दोनोंको चरख देणा पहिले चरख ३ रत्ती ताँबा पादेणा फिर दूसरे चरख २ रत्ती ताँबा पाणा फिर तीसरे चरख तीनरत्ती ऐसे मासा प्रतितोले ताँबा पाणा फिर चौथे चरख खूब देणा यदि जस्त कायम हो तो रंजित होवे। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

स्वर्णक्रिया।

मूलीका रस १॥ सेर पक्का ईट मोटे थलेवाली लेकर उसमें टोपा निकालकर टोपेमें पारा पाकर ऊपर लोहेकी कटोरी देकर हेठ आगबालनी रसका चोया थोडा २ देतेजाना (लोहकटोरिकास्थाने वंगकटोरिकां मूलिकारसस्थाने अमरलतिकाजलं स्वेदनं प्रहरचतुष्टयं तोलावंगे रक्तिकामात्रम्) सज्जी सेर पक्का जस्त पापका जस्तके हेठ ऊपर सज्जी देकर डेढप्रहर आगबालणी जस्तको ढालकर शोरेकी चुटकी देणी फिर कटुतैलमें पादेणा एवं सातबार फिर तोलेका ताम्र संपुट लेकर उसमें ३ माशे चांदी पूर्वोक्त २॥ माशे पारा पाकर संपुटमें रखकर मंदमध्य बृहद्, धमनेन सर्वं द्रावयेत् (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

पारद और जस्तसे ताम्रका सोना।

रसकस्य द्विभागं तु पारदस्य त्रयं तथा। पिष्टिकां कारयेदेवं तप्तखल्वेन कांजिके ॥ ॥ १२३ ॥ पूर्ववन्निगडोपेतां खोटं कृत्वा तु वेधयेत्।दशसंकलिकायोगाद्दव्देधी महारसः ॥ १२४ ॥ (नि. र.)

अर्थ-खपरिया दोभाग और पारा तीनभाग इनको कांजीसे तप्तखल्वद्वारा पिष्टी करै। पूर्वोक्त क्रियाके समान निगड मिलाकर धोंके तो यह महारस दशसंकलिका योगसे बेधताहै ॥ १२३ ॥ १२४ ॥

पारद और जस्तसे ताम्रका सोना।

पारदः पलमेकः स्याद्विपलं पीतखर्परम्। मर्दयेत्सुदृढं तावद्रसो यावद्विलीयते१२५॥ पुनर्जंबीरनीरेण गुडेन च समन्वितम्। शोषयेच्चातपे पिष्ट्वा श्लक्ष्णं कृत्वा च धार्यते ॥१२६॥ अर्कदुग्धस्य दातव्या भावनास्ता यथा तथा। अस्य कल्कस्य सिद्धस्य भाग एकोस्य टंकणः ॥ १२७ ॥ ताम्रं भागत्रयं दत्त्वा धाम्यतामंधमूषया। सुवर्णं दिव्यतेजः स्यात्कुंकुमादतिरिच्यते॥ यद्येतैर्न भवेत्सिद्धिः किमन्यैर्बहुलेखनैः ॥ १२८ ॥ (बृ. यो., र. रा. शं., र. सा. प.)

अर्थ-पारद एकपल और पीलाखपरिया दो पल इन दोनोंको ऐसा मर्दनकरै कि घोटते २ पारा मिलजावे फिर जँभीरी और गुडके साथ घोट और सुखाकर सूक्ष्मचूर्ण बनालेवे फिर इसको आकके दूधकी भावना देवे इस सिद्धकल्कका एकभाग सुहागा और तीनभाग ताम्रको

(१) तांबे और जसदसे पीतल क्यों नहीं।

घरियामें धर धौंके तो उत्तम सुवर्ण होगा जो कि केसरसे भी उत्तम कहाताहै ॥ १२५-१२८ ॥

ताम्रसे सोना ।

पारा १ तोला सुर्खकाही १ तोला जस्त ६ मासे मीठातेलिया ६ माशे चारों चीज खरलकर कुआर वांदलके रसमें दोपहर टिक्की बणाके सुखालैणी फिर तीन तोले ताँबेके सम्पुटमें टिक्की रखकर तीनसेर पक्केगोहेकी पुट दैणी। ताम्रस्वर्ण होजायगा नरम-(जंबूसे प्राप्त पुस्तक ।)

सोना बनानेकी तरकीब-तारकृष्टी। (जसदकी कटोरीकी भस्म पारदयुक्तसे पीतलका सोना)।

तीनपैसाभर जस्तकी कटोरी बनवाकर पैसाभर पारा उसमें रखकर ऊपर उसके गूलरका दूध भरदे किनारेतक फिर हांडीके बीचमें कटोरी रखकर ऊपर ढकना रखकर मुद्राकरे ऊपर बालू भरकर हांडीका किनारा मूंदकर सुखावे फिर चूल्हेपर चारपहर आग देवे पीतल तोला एक जस्त माशे एककी लागजाने-तारकृष्टी होती । (सुफहा खजाना कीमिया ३३)

नोट-तारकृष्टी उसे कहतेहैं जहां चांदीको दुरुस्तकर सोनेका जोडा बनावें इस नुसखेमें चांदी भी है इसलिये इसको तारकृष्टी भी कहसक्तेहैं ।

स्वर्णकर-जसदकी कटोरीभस्मसे ताम्रका सोना ।

पारा, हरितालतबकी, शिंग्रफ, गंधक, मैनशिल, शंखिया सुहागा, जवाखार तीनतीन माशे सब वस्तु लेकर कुमारीरसमें खरल करै १ प्रहर, फिर जस्तकी तोलेतोलेकी दोकटोरी लेकर हेठली कटोरीको पूर्वोक्त खरल कीतियां हुइयां वस्तु लेप करणी सुखाकर फिर लेप करना, एवं सब वस्तु लेप करणी फिर जस्तके संपुटको मिट्टीके संपुटमें रखकर सुखालैणा, हांडी लेकर उसदे तले ४ अंगुल रेतभरके ऊपर सम्पुट रखणा ऊपरसे और रेत पाणी हांडीका मुख बंदकरके हेठ पलाशकी लकडीकी आग बालनी १ पहर स्वांगशीतल निकाललेवे, समेतकटोरी सब पीस रक्खे वह दवाई सिद्धहोगई फिर तांबा द्रवितकर पाके तोलेपर माशा १ दवाई पाके ३ या ४ घडीतक चरख देतारहे (जंबूसे प्राप्त पुस्तक) ।

जसदयोगसे ताम्रभस्म, ताम्रभस्म और जसदकटोरी योगसे पारदभस्म ताम्रवेधी ।

जस्त १६ तोले लेके उसको दोसेर पक्के वज्रीदुग्धमें १०१ पुटदेवे बाकी बचे जस्तकी २ कटोरी बणाके उसमें पुटोंसे बचे दुग्धको पाके उसमें ढौआ रखके ऊपर उसके ४ गज खासा मुलतानी मिट्टी नाल कपडमाटी करके १९ सेर अंगरेजी दी आग दैणी उसमें ढौआ फुल होजायगा फिर कढाई डूंगी लेकर उसमें सोलह तोले पारा पाकर ऊपर ढोआ भोरदेवे उपरों जस्तदी प्याली देदेवे । उपरों सवासेर निंबूदा वा गलगलदा रस पावे ४ प्रहर आग तेजताले फिर जो रस रहजावे सो निकाल लेवे, कढाई विच पाणीना रहे फिर कटोरी उतारके पारद भस्म विल विच पारक्खे तोले तांबेपर रत्ती १ पावे कुठाली मुख बंद करै धूमना निकले हिंगु वा बगुलेकी हड्डी पावे जल्दगलै (जंबूसे प्राप्त पुस्तक) ।

हेमराजी यानी कमरंग सोनेको तेज रंग करना (उर्दू) ।

राजावर्तके बुरादेको सिर्सके फूलोंके अर्कमें सौबार खरल करे और हरबार सुखाले फिर कमरंग सोना लेकर उसीके अस्सी हिस्से करे एकके बराबर सहअदविया ले फिर उस सोनेको चर्खदे जब चर्ख खाजावे यह एक हिस्सा दवा डालदे उमदा रंग सोनेका होजायगा । (सुफहा खजाना कीमिया १९) ।

हेमरक्ती वर्णवर्धक माक्षिकयोग ।

(सततं स्वेदयेत्त्रीणि दिनानि त्वथ माक्षिकम् । यवस्य कांजिके नैवं वासापत्ररसेन च ॥ दिवसं सकलं पश्चात्कुलत्थक्काथ मध्यगम् । स्वेदयेद्दिवसौ पश्चाट्टंकणार्द्रमधुप्लुतम् ॥ ताम्बूलपिष्टया साकं च वटिका माषसंमिताः । कर्तव्याः शोषिताः सर्वा गलिता हेम्नि सुद्रुते ॥ एकैका संप्रदातव्या तस्मिन् हेम्नि शनैः शनैः। एवं दशगुणाहाराद्धेमरक्ती प्रजायते ॥ जायते सुन्दरं साक्षादुदयादित्यसन्निभम् । हीनवर्णे शुभे स्वर्णे त्रिंशद्गुंजाप्रमाणके ॥ गुंजकाद्वितयं दद्याद्वर्णयुग्मोपपादका । हेमरक्ती समाख्याता दारिद्र्यध्वंसनी नृणाम् ॥) ॥ (बृ. यो.)

अर्थ-सौनामक्खीको जौ कांजी तथा अडूसेके पत्तोंके रससे निरन्तर तीन २ दिनतक स्वेदन करे और एक दिन कुलथीके काथसे और दोदिन शहद अदरख और सुहागेके द्रवमें स्वेदन करै तदनन्तर पानके कल्कके साथ उरदके समान गोली बनावे और उनको सुखालेवे इन गोलियोको गलेहुए सुवर्णमें एक २ डालताजावे इस प्रकार दसगुनी गोलियोंको डालनेसे स्वर्णकृष्टि होगी वह प्रातःकालके सूर्यके समान लाल होगी फिर दोरत्ती स्वर्णकृष्टिको तीस रत्ती हीनवर्णवाले सुवर्णमें गेरै तो उत्तम सुवर्ण होगा यह हेमरक्ती मनुष्यके दारिद्र्यको नाश करतीहै ॥

हेमराजी (यानी कमरंगसोनेको तेजरंग करना) (उर्दू) ।

मोरतूतिया और मदार आठ रुपयेभर पारासाफ २५ दाम शिंग्रफ २५ दाम ५॥ दाम सबको निधारे और थूहरके अर्कमें खरल करके पैसा पैसा भरकी गोलियां बनाले फिर आठरंगा सोना गलाए जब चाशनी होजाए, एकएक गोली तोडकर थोडीथोडी डालताजाय और धीमीधीमी

(१) क्या यही धूम्रवेध है ।

आंच देताजाय जब सारीगोली गलजायगी सोना सुर्ख होजावेगा यह भी हेमराजी होगई फिर अठरंगा सोना और उसका दसवां हिस्सा यह हेमराजी यह दोनों गलाए दसगुने रंगका उमदा सोना होजावेगा (सुफहा खजाना कीमिया १९)।

हेमराजी (यानी कमरंग सोनेको तेजरंग करना बजरियेलेप और तपाव (उर्दू)

हिंगुलरूमी सोनामक्खी गंधक सोना गेरू व थोडासा पारा इनको बिजौरेके रसमें खरलकरके फिर कमरंग सोनेके पत्तोंपर इसका लप करके सुखावे और उपलेकी आगमें तपावे तब नौसादर ग्वालवारी गेरूसुर्ख ईटका बुरादा इन सबको पत्थरपर पानीसे पीसकर कमरंग सोनेपर लेप करके सुखाकर उपलेकी आंचमें तपावे अच्छे रंगका सोना होजावेगा । (सुफहा खजाना कीमियाँ २०)

खोटबद्ध ।

भेकभास्करगंधायोवंगस्य क्षारभस्मना । हस्तीव बध्यते वक्रलौहचाक्रिकया रसः ॥ ॥ १२९ ॥ (बृ. यो., र. रा. शं.)

अर्थ–स्याह भोडर, सोना, गंधक, लोहा और रांगा, इनका क्षार और भस्म करके लोहबद्ध मुखवाली चक्रिका-द्वारा पारद ऐसे खोटबद्ध होजाताहै कि जैसे हस्ती ॥१२९॥

खोटबद्ध ।

सालूककुटिलाकाथरंभापामार्गभस्मना । हस्तीव बध्यते वक्रलौहखंडिकया रसः ॥ ॥ १३० ॥ (बृ. यो., र. रा. शं.)

अर्थ–स्याह भोडर, गन्धद्रव्यका काथ, केला और ऊँगेका भस्म इन करके लोहबद्धमुखवाली खंडिकासे पारा ऐसे खोटबद्ध होजाताहै कि जैसे हस्ती ॥ १३० ॥

मंडूकपारदशिलावलयः समानाः सम्मर्दिताः क्षितिबिलेशयकांत्रविद्धाः॥ यन्त्रोत्तमेन गुरुभिः प्रतिपादितेन स्वल्पैर्दिनैरिह पतंति न विस्मयध्वम् ॥ १३१ ॥ (र. चिं. र. रा. शं., बृ. यो.)

अर्थ–स्याह भोडर, पारा, शिलाजीत और गंधक ये सब समान भाग गिंडोए डालकर मर्दन करे फिर गुरुके बतायेहुए यंत्रोत्तम करके सिद्धकरे इसप्रकार करनेसे थोडेही दिनोंमें यह सिद्ध होजाताहै इसमें आश्चर्य नहीं ॥ १३१ ॥

स्वर्णसाधन ।

शिलाचतुष्क गंधेशौ काचकूप्यां सुवर्णकृत् । कीलालायःकृतो योगः खटिकालवणाधिकः॥१३२॥ (र.चिं.,र.रा.शं.,बृ.यो.)

अर्थ–एकभाग गंधक और पारा, चारभाग मैनसिल एक काचकी शीशीमें भरके लोह खडिया और लवणके संयोगसे तिसका मुख बंद करके विधिपूर्वक पाक करनेसे सुवर्ण संजात होताहै ॥ १३२ ॥

जोडा ।

तार्वर्के मर्कटशिवः शिलागंधाश्म चूर्णयेत्। पचेदूयः क्षिपन् गंधं यथा सूतो न गच्छति। पंकतद्धेम पत्रस्थं हेमतां प्रतिपद्यते॥१३३॥ (र. चिं.)

अर्थ–ताँबा, हिंगलू, शिलाजीत और गंधक इन सबका चूर्ण बनाकर फिर गंधक इसप्रकारसे डाले कि पारा निकल न जाय इस प्रकार खूब धोंकनेसे तांबेका सोना होजाता है ॥ १३३ ॥

वेधोपयोगी सूतसाधन क्रिया ।

लोहं गंधं टंकणं ध्मातमेतत्तुल्यैश्चूर्णैर्धातुभेकाद्दिरंगैः । सूतं गंधं सर्वसाम्येन कूप्यामीषत्साध्यं चात्र नो विस्मयध्वम् ॥१३४॥ (र. चिं., र. रा. शं., बृ. यो.)

अर्थ–लोहा, गंधक, सुहागा, कालाअभ्रक, सीसारांगा इन सबको गलाकर इन सबकी बराबर पारा और गंधक ले काचकी शीशीमें भरकर मंदी आंच देनेसे पारा रंजित होताहै इसमें विस्मयका कोई कारण नहीं । १३४ ॥

दोसिद्धबीज ।

लोहं गंधं टंकणं भ्रामयित्वा तेनोग्निमश्नं भेकमावर्तयेच्च । तालं कृत्वा तुर्यवंगान्तराले रूप्यस्यान्तस्तेच सिद्धोक्तबीजे १३५॥ लोहभेकीतारतालकोसिद्धमतबीजद्वयम् ॥ (र. चिं., र. रा. शं.; बृ. यो.)

अर्थ–लोहा, गंधक, सुहागा, इनको प्रथम अग्निमें चक्र दिवाकर पश्चात् स्याहभोडर, हरताल और रांगा इसमें चौथा हिस्साका डाले इसप्रकार करनेसे चांदीसिद्ध होजातीहै ॥ १३५ ॥

सिद्धचूर्णकल्क ।

कर्षाष्टंकणकज्जलीहरिरसैर्गंधस्य च द्वौ रजः सिद्धाख्यं सकलैः कृतं पलमथ द्वित्रैश्चलौहैः श्रितम् ॥ भूयो गंधयुतं चतुर्दशपुटे स्यादिन्द्रगोपारुणं तत्तारे लघुना पुटेन धमनेनार्कच्छवीमीहते ॥ १३६ ॥ (इतिसिद्धचूर्णकल्कः)

कर्षा इति बहुत्वमात्र विश्रांततया तमइति यावत् कर्मस्य त्रिधा पत्रलेपन॥ (र. चिं., र. रा. शं., बृ. यो.)

अर्थ–सुहागाकी कज्जली १६ मासा, कौंचका रस, गंधकका चूर्ण ३२ मासा, इनसबोंको सिद्ध करके ३ अथवा २ भाग लोहासे युक्त कर पश्चात् गंधक और लाल इंद्रगोप उसमें डालकर १४ लघुपुटोंमें धोंके तो स्वच्छ चांदी होजातीहै ॥ १३६ ॥

सिद्धमतखोट ।

गंधतैलयुगलायासि मध्ये पूतिवारिवरामेष्यति पिष्टी । तैकभेकबलिकल्पितपिष्टी संयमः प्लवगपूत्यभिषेकैः ॥१३७॥ (बृ.यो., र. रा. शं.)

अर्थ-गंधकका तेल २ लोहेके वर्तनोंमें डालकर एकमें स्याह भोडर और दूसरीमें गंधक डाले पीछे दोनोंको मिलाकर पीठी बनावे और कौंचके रससे धोवे इसप्रकार करनेसे पारा खोटबद्ध सिद्ध होजाताहै ॥ १३७ ॥

हेमक्रिया ।

चांदी और तांबेका सोना गंध कुनटीयोग ।

तुल्यंतारंताम्रमादायस्वच्छंतावत्ततं गधचूर्णे कुनट्याम् न्यस्तं यावज्जीर्यते खंडशोर्थे प्राज्ञो गंधैः पाचयेत्काचकूप्याम् ॥ खंडाकारं तादृशं टंकणेन स्वर्णान्तःस्थं भस्ममूषांतराले नचैर्यातं साधुः स्यात्सुवर्णं सतारहीने रंजयेन्माक्षिकं च ॥ १३८ ॥ (र. चिं.)

अर्थ-चाँदी, ताँबा, समभाग लेकर उसपर गंधक और मनसिलका चूर्ण डाले और काचकूपीमें पकावे पश्चात मूषायंत्रमें रखकर सिद्धकरे और सोनामाखी डाले सुंदर सुवर्ण सिद्ध होजाता है ॥ १३८ ॥

हेमक्रिया ।

रसो मृतं मानवं हंति वंगं तेनैव तारं द्विगुणं निहन्ति । वंगं चतुःषष्टिप्रकारतारं हेमं करोतीति फणीन्द्रयोगात ॥ १३९ ॥ (नि. र.)

अर्थ-मराहुवापारा बंग (रांगा) को मारताहै और यह रांगा द्विगुण चांदीको मारताहै इसप्रकार ६४ मासा रांगा मृतपारेसे मिला चांदीको सुवर्ण करदेताहै, यह शेषनागका कहाहुआ योगहै ॥ १३९ ॥

हेमराजी यानी कमरंग सोनेको तेजरंग करना बजारिये बुझाव (उर्दू) ।

मजीठ दोनों तरहकी हल्दी, उमदा केसर, मालकांगनीके तेलमें खरल करके सोनेको तपाकर बुझावे या सोनेको चर्ख देकर यह दवा डाले उमदा रंगका सोना होजावेगा । (सुफहा खजाना कीमिया १९)

तारकृष्टी चांदीसे सोनेका जोडा ।

गंधकाद्विंशतितमो भागः शुद्धो भवत्ययम् । त्रयो नौसादरस्यापि पीतं कासीसकं तथा ॥१४०॥ कुक्कुटांडद्रवस्यास्मिश्चूर्णे दत्त्वाथ भावनाम् । एकविंशन्मिताः पिष्ट्वा तारे तोलैकमानके ॥ १४१ ॥ कृतपत्रोपरि प्राज्ञो लेपमात्रं तदौषधम् । दद्यात्तारं च कृष्टीं च माषैकं हेमलेपयेत् १४२॥ वर्णिका सतकं तारं हेम तज्जायते परम् । तारकृष्टी निगदिता सा दारिद्रयप्रणाशिनी ॥ १४३ ॥ अथवा पात्यं भवेद्धेम मेलनीयं च तत्समम् । वर्णायुग्मं मेषभस्यैतत्तारं हेमत्वमाप्नुयात् ॥ १४४ ॥ (बृ. यो.)

अर्थ-शुद्ध गंधक बीसभाग शुद्ध नौसादर तीन भाग, पीलाकसीस ३ तीन भाग इन तीनोंको चूर्णमें मुर्गीके अंडोंके रसकी इक्कीस भावना देवे फिर एक तोले चांदीके सूक्ष्मपत्रोंपर योग्य लेप देवे इस तारकृष्टीमें एकमासा सुवर्ण डाले फिर अग्निमें गलावे तो उस चांदीका सुवर्ण सातवर्णका होगा इसको तारकृष्टी कहतेहैं यह दरिद्रताको नाश करतीहै ॥ १४०-१४४ ॥

सोना बनानेकी तरकीब तारारिष्ट (उर्दू)

सोनामक्खी शिंग्रफ राजावर्त मूंगा बराबर सबका तीसरा हिस्सा रसका सबको चारपहर भेडके दूधमें खरल करके सायामें सुखाकर सबकी बराबर संचरनमक डालकर खरल करे इसको तारारिष्ट कहतेहैं पहलीबार चांदीपर तारारिष्ट बराबर वजन और दूसरी बार आधा-वजन तीसरीबार चौथाई अलहदा अलहदा लेपकरके और हरबार गजपुटमें तीनबार आंचदें सोना बनजायगा- (सुफहा खजाना कीमिया २५) ।

तारक्रिया ।

(तीक्ष्णादिसे चांदीका जोडा)

भागद्वादशकं तीक्ष्णं चूर्णं वंगस्य वै त्रयम् । तथा नागस्य कर्तव्यं त्रयं सत्त्वं च तालकम् ॥ १४५ ॥ तन्दुलीयरसेनैव मर्दनीयं द्रवं यथा । अंधमूषागतं ध्मातं दत्त्वा टंकणकं भृशम् ॥ १४६ ॥ प्रकुर्य्याच्च पुनर्मूषामृतं च दलमेधते । समं तारेण योक्तव्यं रजतं स्यान्मनोहरम् ॥ १४७ ॥ (बृ. यो.)

अर्थ-तीक्ष्णलोह १२ बारहभाग ३ तीनभाग बंगभस्म तीनभाग नागेश्वर और तीन ही भाग हरतालसत इन सबको चौलाईके रससे ऐसा पीसे कि वह पतला होजाय उसको अंधमूषामें रख, अग्निमें धोंके और थोडा २ सुहागा भी डालता जावे फिर दूसरी मूषामें रख धोंके सो भस्मके समान ढेला होगा उसके समान चांदी मिला के मित्रपंचकके साथ गलावे तो चांदी होगी॥ १४५-१४७ ॥

तारक्रिया ।

(राजवती विद्यानाम्नी पीतलसे चांदीका जोडा)

चत्वारः स्वर्जिकाभागाः यवक्षारस्तथा पुनः । क्षारिकं लवणं दद्यात्तत्तथाविधमेव च ॥ १४८ ॥ काकमाची रसस्यान्ते दीयते सर्वमेव तत् । ततपित्तलपत्राणि सूक्ष्माणि पलयोर्द्वयोः ॥ १४९ ॥ तततप्तानि तान्यस्मिन् काकमाचीरसे भृशम् । एकविंशति वाराणि तारतां प्रतियांति च ॥ १५० ॥

एवं शुभ्राणि जायंते रूप्यान्यूनानि किंचन। आरं तारसमं कृत्वा मृतवंगं नियोजयेत् ॥ १५१ ॥ एकादशविभागेन भवेत्तारं न संशयः। एषा राजावती विद्या पुत्रस्यापि न कथ्यते ॥ १५२ ॥ (र. शं., (बृ. यो.)

इति श्री अग्रवालवैश्यवशांवतंस रायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां धातुवादवर्णनं नाम पञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः ॥४५॥

अर्थ–चारभाग सज्जी चारभाग जवाखार और चार ही भाग खारीनोंन इन सबको काकमाची (मकोय) के रसमें घोलदेवे फिर दोतोले पीतलके सूक्ष्म पत्तोंको तपा २ कर उस रसमें २१ इक्कीसबार बुझाव देवे तो वे पीतलके पत्ते चांदीके समान श्वेत होजायँगे फिर पीतल और चांदीको समान भाग लेवे और ११ ग्यारहवां भाग वंगभस्म मिलावे तो चांदी होगी इसमें सन्देह नहीं है इस राजवती विद्याको अपने पुत्रको भी न कहना चाहिये ॥ ॥ १४८–१५२ ॥

सम्मति–अन्तमें सब पदार्थोंको मिलाय मित्रपंचकके साथ अग्निमें धोंके तो अवश्य चांदी होगी।

बिल्लोरके सुर्खरंगनेकी तरकीब (उर्दू)

शिंग्रफ बनानेकी तरकीब इस तरकीबको शिंग्रफ हिन्दी कहतेहैं बिल्लौरके नगीने तराशले कि खूब जिला होजाय जिसकदर नगीना छोटे होंगे सुर्ख खूब होंगे बाद उसके सीमाब खालिस एक हिस्सा साफ करके उसके मसावी गूगर्दको कूटकर आतिशी शीशीमें भरकर गिलेहिकमत करके सीमावपर उसको डालदे और उसमें बिल्लौरके नगीने मिलाकर गिलेहिकमत करके मुंह शीशीका मजबूत बंद करदे और तनूरको खूब गर्म करके और शीशीको एक रातदिन गर्मतनूरमें रक्खे और तनूरके मुहको भी मजबूत बंद करदे कि गर्मी न निकलने पावे अलीउलसुबाह तनूरका मुह खोले खुदा एही व कयूमके हुक्मसे जो हमेशा जिन्दा रहेगा शीशी जब निकालीजावेगी तो नगीना बिल्लौरके याक़ूतकी तरह सुर्खमिलेंगे और शीशीके अन्दर कुल शिंग्रफ रूमी और लतीफ होगा। (सुफहा ८३ किताब अलजवाहर)।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया भाषाटीकायां धातुवादवर्णनं नाम पञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४५ ॥

औषधिपरीक्षाध्यायः ४६.



जडी बूटियोंकी शनाख्त।

करकनाथकी शनाख्त और पतः (उर्दू)

करकनाथ अपर ब्रह्मामें बकसरतसे हैं। जिसके पर व जिल्द व गोश्त व अस्तख्वां तक स्याह होते हैं और इसका गोश्त निहायत तलख खास एमाल अकसीरीके लिये खुदाने पैदा किया है। (खरीदार नं० ५०६)

एजन्। पेशावरमें भी दस्तयाब होजाते हैं (चौधरी हजार खां)

एजन्। हां यहां एकके पास तीन मुरगियां इसी सिफतकी हैं जैसी कि आप चाहते हैं खूनके स्याह होनेका तो कोई हाल मालूम नहीं मगर नाखून खाल पंजा वगैरः सब स्याह हैं (हकीम मुहम्मद चराग) (सुफहा २५ अखबार अलकीमियाँ २४। १। १९०९)

चमकनेवाली जडी।

चौमासेमें एक जडी अलमोडेमें, गुरुडिया, होती है इसकी जड रात्रिमें जुगुनूकी भांति चमकती है (पंडित अनन्तरामशर्मा अध्यापक संस्कृतपाठशालासे पता लगा।)

शवताव बूटी (उर्दू)

यह बूटी रातको मिस्ल चरागके चमकतीहै जिन जिन नाजरीनको इस बूटीके अफहाल बखवास कमाहकः मालूम हों वह दर्ज अलकीमिया कराकर मश्कूर फर्मावें इस बूटीका कश्मीरके बर्फानी पहाडोंपर पता लगगया है चुनाचि किसी कदर एडीटरने मँगवा भी ली है जो इस वक्त मौजूद है। (सुफहा नं० ८ अखबार अलकीमियाँ १६। १०। १९०७)

शवताव (फार्सी)

मेरे मुकर्रम जनाब हकीम साहब रातको चमकनेवाली बूटीके खवास जिसको गयाह कहतेहैं हरजा कि बाशद अजदूर निगाहकुनी शवहम चूरोशनाई चरागबीनी वचू आतिशी किमे शवद दौर हाल पेशहूइ हरचंद कि नजदीक बाशद रोशनाई ओकमतर शव दव चूं नजदीक तर रूइ रोशनाई ओचुना मुनकिता शबद कि बगैर अज शाख ब वर्ग हेच नवीनी ब चूं रेशमाँ दरदेवन्दी ब कदरे बाज पस रूइहुमां रोशनाई पैदा शवद वचूं रेशमान जनवानीआँ रोशनाई नीज दरहहरकत आयद बिदानी कि हमी चराग गयाहेस्त आँरा अजवेख वरकुनी व शाख ओ बिगीरी व वर जमीन बिकुशी हरअलफी किदर आँ हुबावे बाशद बातो दर सखुन आयद व बिगोयद कि चिखासियत दारेम अगर वर्क बा पशक खरगोश दरदहान बिगीरी दरहर गोरस्तान कि बिनशीनी मुर्दः बातो व आवाज दर आयद व इजहार हाल नुमायद व खासियत ई गयाह ज्यादह अज आस्त कि बशरह रास्त आमद अगर मुराद आपकी सराखुल कलबसे है जिसको अवसी उलगई और हिन्दीमें सरफोंका सफेद गुल कहतेहैं तो कीमियाई खासः इसका हस्वजैलहै। इसके पत्ते भी सफेद होतेहैं शीरः निकाल कर मिट्टीमें खूब कूट कर बोतः बनावे लेकिन शीरः बूटीका खूब डाल डाल कर कूटे बोता लांबा हो किसी मावबशीरा दो तोले उसमें आजावे खुश्क होनेके बाद तीन बार बूटी मजकूरका उसमें भरकर सायेमें खुश्क करे बाद अजाँ तोलेभर सीमाब लेकर तोलेभर शीरा उसमें भरकर दूसरा बोता मजकूरा वाला

१ निज इसका पता मुलक ब्रह्मा जिला दृंची। मुकाम लोइयममें लगा है।

उसपर ढांक कर जोड दूसरेसे वसल करदे और १६ दिरम कर्सीकी आग और नीचेसे बराबर दे सीमाव अकसीर होजावेगा बाद रत्ती भर लेकर तोलाभर मिस तरह करे तिल होजावेगा (अजशरह करनव अहम्मद) हुसैनुद्दीन अहमद अज जौनपुर २७ अगस्त सन् १९०७ (सुफहा ११ अखबार अलकीमियाँ १६ । १० । १९०७)

रुद्रदंतीका मुकाम पैदायश, जमाना पुख्तगी फवायद वगैरः (उर्दू)

मुकरमवन्दः जनाब हकीमसर दुरशाहसाहव दाममुज्दकुम बाद सलाम नियाज दस्त वस्तः गुजारिशहै कि मैं आँजनाबके कामको भूल नहीं गया था इस इलाकेके कर्कअमीन साहबसे मुफस्सिल हाल दरियाफ्त करनेके बाद अर्ज करताहूं कि रुदन्ती व रुदन्ता व मुकाम मौजा मझलगावँ परगनह हिगाम तहसील खागा जिला फतहपुर हसुआमें बकसरत पैदा होताहै और गर्मीके मौसममें उसका अर्क शक्कर डालकर बतौर शरबतके पीनेसे बहुतसे अवारिजमिस्ल हौलदिल व खफकान वगैरःको बहुत मुफीदहै दिनभर तबीयत खुश व बश्शाश रहती है लूव गर्मीकी हिद्दत असर नहीं करसक्ती दिलपर खुनकी रहतीहै आलादरजेमें गर्मीके वास्ते फाइदेमंदहै अब रहा असल मकसूद जो आपकाहै उसीके निस्बत वहांके मोतबिर लोग यानी खास मझलगाँवके रहनेवाले मौअज्जिजीन जिनसे कुर्क अमीन साहबने अपने इतमीनानके मुवाफिक तहकीकात की है उनका बयान है कि किमिया बनानेके काममें जो बूटी आतीहै नाम तो उसका भी यहीहै यानी रुदन्ती और उसके नरको रुदन्ता कहतेहैं लेकिन उसकी पैदायशके वास्ते हर साल कुआरके महीनेमें एक योम मुकर्रर है। जबकि वह बाद निस्फ शबके जमीनसे निकलती है और कवल तिलूए आफ्ताबके लेनेवाले उसको हासिल करलिया करतेहैं चुनाचि हरसाल क्वारके महीनेमें इस मौजेमें ज्यादह तर जोगी व बैरागी कौमके लोग आकर मुकीम रहाकरतेहैं और कोई सितारा आस्मानपर है उसको वही लोग पहचानतेहैं जब वह सितारा आस्मानपर देखते हैं पस उसी शबको वह मुबारिक दरख्त जमीनसे निकलताहै और उसीके जानने और पहचाननेवाले उसको लेकर गायब होजातेहैं हर शखस उसको नहीं पासक्ता न किसीको उसकी पैदायशका ठीक वक्त मालूम है बस वह घास जो अमितौरसे उस तालावमें पैदा होतीहै और रुदन्तीके नामसे मशहूरहै वह वहांके लोगोंके घरोंमें मनोरक्खीहै उससे यह काम नहीं निकल सक्ताहै । मुफास्सिल हाल अर्जकिया आयन्दा जो इरशाद हो तामील करूं । (फकत ८।४।१९०७)

अब यह खाकसार हेचमदान ।

जमीअ बिरादरान बना जरी न अलकीमियाकी खिदमत वा बरकतमें अर्ज करताहै कि उस अजीजके खत मुन्दर्ज वालासे अभी आपको यह मालूम न हुआहोगा कि यह बात सच है या जोगियोंकी एक अटकलहै लिहाजा ब गरज इतला आम कमतरीन आरिज है कि यह सरासर जोगी वैरागी लोगोंकी राजदारी और कतमानका एक फरेबहै चूंकि यह अदना दर्जेकी कीमियाई बूटी अकसर मुकामातमें आय और कसरुल बजूद है लिहाजा अगर वह उसकी निस्बत इसी अटकलसे काम न लेते तो यह बडा राज अवाममें अफशा होजाता और उनका मतलब कमाहुकः न निकल सक्ता व कौल जनाब सेक्रेटरी साहब यह जरूरहै कि यह बूटी दो किस्मकी होतीहै । एक वह जिससे रोगन नहीं टपकता दूसरी वह जिससे एन आलम शबाबके वक्त यानी माह कुआर कातिकमें जब इसके पांचों अंग जड, डाली, पत्ते, फूल, फल मौजूद होजातेहैं तो उससे रोगनी रतूबत टपकने लगतीहै । जैसा कि अकलीमियामें उसकी तशरीह मजकूरहै पस अव्वल उल जिकर बूटि किमियाई अलसादहै। लेकिन यह हरगिज सही नहीं कि सिर्फ सालमें एक तारीखकी रातको पैदा भी होती है और उसी रातको कमालपर भी पहुंच जातीहै और जोगी उसको उसी रात उखाड कर रफूचक्कर होजातेहैं। नहीं बल्कि यह अमर नामुमं किनहै अकलसलीम भी उसे नहीं मानसक्ती इस ढकोसलेकी असलियत फिल हकीकत यहहै कि सिर्फ ज्याती तासीरके इसके उखेडनेकी एक तारीख मुकर्रहै जो हर महीनेमें एक मर्तबः आतीहै माह क्वारकी खुसूसियत इस लिये रक्खीगईहै कि इस महीनेमें ही यह बूटी अपनी पूरी हालत शबाब कमालको पहुंच जातीहै लिहाजा इसी महीनेमें जब उस महीनेकी तारीख मौऐयनः पर उसको उखेडा जाताहै तो जिस किस्मकी बूटीहै वह अपने अपने खवासमें बहुत कवीउल असर होजातीहै।अब रही बात यह कि वह तारीख मौअय्यनः कौनसी तारीख है । सो इसका हवालः साहब किताब मखजनुल अदवियाने बाबदहम फसलुलराइ मय उतदाल उलमुलतमिसमें दर बयान रुदन्तीयों तहरीर फर्माया है कि (गोयन्द किचूं हिंगाम वूदन कमर दर मजिल नसरह कि वर बुर्ज सरतान अस्त ववहिन्दी आँरा पुष्य नक्षत्र नामन्द कि दररोज यरुशोबह इत्तफाक उफ्तद आँ गियाहरा व नजूइ कि सायः आँकस वराँ वियुफ्तद अजवेख ववार व वर्ग अजजमीवर कुनद व हेच शव दरजेरे आस्मान तनवुवम नुमायद पसदरसायः खुश्ककर्दः निगाह दारन्द अनह गरज कि इसीके बाद साहब मखजनुल अदवियाने उसके खवासमें बहुतसे अमराजवतक वियत कवाइ जिस्मानी वरूहानी व शहवानीके लिये अकसीरी खासियत और असार अजवा बयान फर्माते हैं । और अखीरमें लिखाहै कि व अगर विदूनशर्त मजबूरा दर औकात दीगर गयाह आँरा अखज नुमायन्द नीज मनुफैत दारद व गोयन्द किचूं एक तोला कलईरा गुदाख्तः चहारबोतः तरोताजा (चार अदद पौदे सवज आँरा मालीदः बरा रेजन्द आँरानुकरासाजन्द फकत) अब नाजरीनपर खूब रोशन हो गया होगा कि माह क्वारमें एक तारीख मौअय्यन इस लिये कीगई है कि उसी तारीखमें उसको उखेडनेसे उसकी तासीर बहुत कवी होजातीहै यह नहीं कि बूटी कीमियाई उघतीही उस रातको है यह सिर्फ जोगियोंका ढकोसला है कि राज छिपानेके लिये अवाममें यही मशहूर कर रक्खाहै । लेकिन सन् १९०७ में जब कि उसका वक्त अनकरीब आगया है लिहाजा सन् हालकी बाबत हस्बजैल इल्तमासहै कि इस साल माहक्वार और कातिकमें यक

शंबःके दिन तौ पुष्य नक्षत्र नहीं होगा लिहाजा किसी कदर वक्त हाजामें औफ जरूर होगा लेकिन ताहम इन्ही तवारीख जैलमें माहताव पुष्य नक्षत्रपर होगा। (१) एकम् अक्तूबर सन् १९०७ शब चहार शंबः नीमशवके बाद जब कि माहताव मशरकसे तिलूअ होने लगे उसी वक्तसे शुरू करके एक घंटे और बीस मिनट बाद जिलूअ माहताव तक बूटी उखेडें। (२) २८ अक्तूबर सन् १९०७ शवसह शंब नीमशवके करीब माहतावके तिलूअसे एक घंटे २० मिनट बादः तिलूअ माहतावतक फकत पहली तारीख माह कुआरमें और दूसरी माह कातिकमें होगी लिहाजा जहांजहां यह बूटी पैदा होतीहै वहांके साहिबान इन्हीं तवारीखोंमें वक्त मजकूरहपर दोनों किस्मकी बूटी यानी कीमियाई अजसादहो या कीमियाई अजसाम उसे उखेडलें और अपना साया उसपर न डालें पस बदली अवारिजके दफैवाली किस्मको तौ यों करें कि उसे रातसे तेजीय शुरू करदें यानी रातको जब बूटी उखेड लें तो खुले मैदानमें जेर आस्मान रखदें ताकि माहतावकी शुआ उसपर बखूबी पडती रहें जब सुबह होनेलगे तो बूटीको उखाड कर सायेदार जगहमें रखदें ताकि खूब खुश्क होजावे फिर बमूजिब तहरीर किताब मखजनउलअदवियाके जिस जिस काममें लावेंगे। इन्शा अल्लाह ताला अकसीरी खासियत पैदा करेंगे बाकी रही कीमियाई रुदन्ती हो उसको उसी पहली राजिस काममें लगानी चाहें लगाऐं या जिस्तरह मन्शा हो और अगर हस्व तहरीर किताब अकलीमियाँके इन्हीं रातोंमें सीमावको कौडीमें डाल कर कीमियाई बूटीके नीचे दफन करेंगे तो इन्शा अल्लाह ताला अगर वह तहरीर सही है तो जरूर सीमावमें वडी जबरदस्त तासीर पैदा होगी। (राकिम हकीम सर बरशाह मुवल्लिफ कीमियाई अज काबिल लाडरका खानपर रियासत भागलपुर) (सुफहा ७ व ८ अखबार अलकीमियाँ १६। १२। १९०७)

जीवकजडीका वर्णन।

अलमोडेमें जीवकको मूड्या कहतेहैं। इसकी बेल होती है जडमें आलूकी बराबर श्वेत कंद होताहै। यह बरसातमें अलमोडेके पास होतीहै। बिकनेभी आतीहै। इसकी तरकारी बीमारोंको खिलाते हैं।

कटेली सफेद गुल (उर्दू)

बादंजान सहराई सफेद गुल दकनमें इसको सफेद डबाला बोलतेहैं मदरास इलाका करीच करनौल खडरियासजवाडा रेलकी राहमें कहम एक तालाबहै बहुत बडा कुबं वजबार सफेद डबाला कसरतसे था सिफत फलभी मानिन्द वैजा कबूतर सफेद और फूल भी सफेद फूलके अन्दर जो जीरे होते हैं वह भी सफेद हों तो हस्बजैल तजरुबा चश्मदीदहै फलके अन्दर मसका पारा कुश्ता होकर रजा तोला मिसव नुकरा तिला करताहै। पञ्चाङ्ग यानी कल्हम पत्ता, डाली, जड, पीड, फल, फूल, वगैरः ख्वाहतर ख्वाह खुश्क खतलीका पानी पूरा जज्ब करताहै तर लुवदीमें ५ तोलेमें तोला नुकरा और ५ सेर पुस्तपुट में कुश्ता होकर २० से ३० तोला पारा गिरफ्त तुरशीसे करतीहै, १० तोला तरलुवदीमें १५ सेर पुस्त तोला मिस सफेद कुश्ता होताहै बहुतसे काम देताहै अगर फूलका जीरा जर्दी माइल रहा तो कोई अमल नहीं होता। फकत फल सफेद मगर फूल नीला यह जात मैसुर इलाका मौजा थमकोरके जंगलमें बहुत हैं बनीज मुल्क सरकार आलीमें जर्द जीरेके झाड औरंगाबाद बरोजामें मिलतेहैं। फकीरको मालूमहै एक तोला सूखी बूटी बीस तोले पारेको अकद व कुश्ता करके ५ तोले मिसको एक रत्ती कुश्ता सौ नंबरका तिला बनाना चश्मदीदहैं मगर पारा अपने पाससे देतेथे अब तमामका मशवराहै कि वह पारा कायमुल्नार बूटीसे था। (सुफहा ८ अखबार अलकीमियाँ २४।२।१९०९)

खवासव शनाख्तरतनजोत बूटी।

एक अजीब खुशनुमा बूटी दरख्त करीर और खवडके नीचे बैसाख जेठमें अकसर इजलाअ पंजाबमें होतीहै शकल उसकी वएनहू मिस्ल पंजे कंजशकके होतेहैं जमीनपर बिछी हुई शाखें सुरखी माइल वर्ग खुर्द खुर्द मुशावः वर्गकाहूके दानेहाई खुर्द एक बालिश्तके अन्दर अन्दर फलतीहै उखाडकर रख छोडो तो तीन माहतक खुश्क नहीं होती मजा फीका लजजदार जिन लोगोंके सरका तालू जलता रहता हो और पगडी न रख सक्ते हों। या जिसको गर्मी सख्तका ढडका हो या पेशाबमें जलन हो या खास सोजाक और किसी तरहसे न जावे इन चारों आरजोंके लिये मेरा खास तजरुबाहै कि इसको ६ माशे आध पाव पानीमें पीस कर और दो तोले मिसरी मिलाकर एक हफ्ते पीनेसे मर्जका कला कुम्भा होजाताहै नाम निशान नहीं रहता और रियाहव रतूवतको तहलील करनेवालीहै। और दस्तोंको बंद करनेवालीहै और हैजको जारी करतीहै और यरकान वतयेकौहनाको दफै करतीहै और पीसकर लगानेसे वरम तहाल बखना जीरको तहलील करतीहै और सिरकाके साथ पीसकर लगानेसे वहककलफदर्द सपरज और नकुर्सको नफा देतीहै और सुर्मामें पीसकर मिला देनेसे मुफीद अमराज चश्म न मुकव्वी बसरहै। फार्सीमें होचूर और अरबीमें अबूफल्सार कहतेहैं। (सुफहा नं० १० अखबार अलकीमियाँ १।८।१९०७)

चमक नमोलीके मानी (उर्दू)

चमक नमोलीके फलसे कटाईखुर्दका फल मकसूदहै। (सुफहा नं० १५ अखबार अलकीमियाँ १६।४।१९०७)

सहदेवीका लक्षण और गुण वेधक।

सहदेवी प्रसिद्धा अधःश्वेता ऊर्ध्वे हरिता निंबपत्रसदृक्पत्रा पीतपुष्पा गुदति प्रसिद्धा पुष्पसदृक्पुष्पा तन्मध्ये रजतं ताम्रं पारदं चैतत्त्रयं भस्मी भवति अंतिमं रजतायते। (जंबूसे प्राप्तपुस्तक)

फवायद बैंगन बलायती (उर्दू)

बलायती बैंगनमें गंधक बहुत होतीहै इस वजहसे जर्मी, साइड (कीडोंको मारनेवालाहै) बहुतसे मुतअद्दी अमराज जैसा कि टाईफाइड क्यूर इसहाल हैजा पेचिश वगैरःसे बचाताहै। मुकव्वी मैदाव मुहसिल व मुसफी खूनहै। (सुफहा ६ अखबार अलकीमियाँ १६।८।१९०७)

बूटीसे तीनिगंदवाडरीके गुण और पता।

लखनौमें प्रसिद्ध पंसारीदी दूकानमेंसेती औषधि वंग

(जलशोषका निर्गंद बाउरी कुष्ठादि रोगहा जलंधर होशियारमें प्रसिद्ध है) (जंबूसे प्राप्त पुस्तक ।)

जहर हल्दियाकी पैदायश ।

जहर हल्दिया हल्दीके खेतसे मिलताहै । (सुफहा १२ अखबार अलकीमियाँ १ । ८ । १९०७)

विषभूमि ।

मलयप्रायद्वीप भारतके पूर्व भगवती भागीरथीकी शाखाओंके आगे अवस्थितहै । कोई साढे सात सौ मील लंबा और एक सौ वीस मील चौडाहै । इसमें उत्तरसे दक्षिण एक बहुत ही लंबी पर्वतमाला पसरी हुई है जिसमें असंख्य नदी नाले बह मलय भूमिको सींच सदाहरीभरी बनाये रहतेहैं इस प्रायद्वीपका कितनाही अंश अंगरेजोंके अधिकारमेंहै और कितना ही वहांके स्वतंत्र नृपतिवर्गके । इसी प्रायद्वीपके प्रायः मध्यभागमें सघन बनके भीतर सकाई नाम्नी एकस्वतंत्र जाति रहतीहै । यह जाति जंगलियोंकी तरह रहती है शिकार मारने और अपने शत्रुओंको पराजित करनेके लिये वनवृक्षोंसे विष संग्रह कियाकरतीहै अजनवी इस जातिके लोगोंसे मिल-जुल नहीं सकता । हाँ तम्माकू, चावल,दाल प्रभृति उपहार देनेसे सहज ही इनका मित्र होसकताहै । सकाई जाति जिस भूमिमें रहतीहै उसे कहें तो विषभूमि कह सकतेहैं । यहां इतना विष है जिसकी हद नहीं जहां ढूँढिये जहां देखिये वहीं विषमिल सकताहै । जिस घासपर चलतेहैं उस घासमें विषाक्त घास रहतीहै जो लताऐं वृक्षोंपर चढी रहतीहैं उनमें विषैली लता रहतीहै जो रंग बरंग फूल खिल कर वनकी शोभा सम्पादन करतेहैं उनमें कितने ही विष इतने तेज और गंध विशिष्टहैं कि उनकी दूरदूरतक फैली बूसे आदमी बीमार होजाताहै, कितने ही विषैले फूल या पत्तियां ऐसीहैं कि उन्हें उंगलियोंसे छूदेनेसे भी देहमें विषका विकार प्रगट होताहै । देह फूल आतीहै नाना-प्रकारके चर्मरोग उत्पन्न होतेहैं, घोर वनमें प्राकृतिक पुष्पित कुंजभवन अपूर्व शोभासम्पन्न होनेपर भी बडे ही भयंकर हैं । सकाई जातिका प्रायः प्रत्येक पुरुष विष-विद्याका पंडितहै ।(अखबार बंगवासी ता०२२।२।१९०९)

नीबकी जडका पानीनिकालनेकी खास तरकीब (उर्दू)

नीबकी जडको काटकर उसके नीचे कोई रोगनदार जर्फ रखदे इसतरह कि जड जर्फके मुंहमें फसजावे और ऊपर मिट्टी डालदे बीस दिनके बाद पानी निकल आवेगा छान कर काममें लावे । (सुफहा २७८ किताब अलकीमियाँ)

नवातातके जौहर बनानेकी अंगरेजी तरकीब । बजरियः स्प्रिट (उर्दू)

जौहर नवातातकी हुसूलके आसान तरकीब यहहै कि जिसने नवातका जौहर लेना मंजूर हो उसके फल फूल पत्ते शाखें वगैरः जिसका जौहर निकालनाहो । उसको कुचल कर एक चीनीके वर्तनमें डाले और उसपर रेक्टी फाइडस्प्रिट (शराब बरांडी) इस कदर डालें कि वह नवात खूब तर होजावे बस चौबीस घंटेतक उसी तरह भीगा रहनेदे फिर कांचकी वह चिमनी जो लैम्पोंपर दीजातीहै लेकर उसके तंग मुँहपर बारीक कपडा बांधे और उसको एक खुले मुँहवाली बोतलमें फसादे बस उस चिमनीकी पेंदीकी तरफसे जो अब ऊपरको होगी वह भीगी हुई दवा डालदें और ऊपरसे ढकदें जब



तमाम अर्क निचुडकर बोतलमें आजावे उसको आगपर रख खुश्क करे शराब मय रतूबात फौरन उडजावेगी जौहर खुश्क बोतलमें रहजावेगा । (सुफहा २० अखबार अलकीमियाँ ८ । २ । १९०९)

जडी बूटी आघी बूटीकी शनाख्त (उर्दू)

आघीको पंजाबमें आकी कहतेहैं इसमेंसे दूध यानी सफेद रतूवत दरख्त आककी तरह नहीं निकलती बल्कि अर्क पानीकी तरह निकलताहै फल फूल भी पैदा होताहै । तनेमें पांच छः पत्तियाँ होतीहैं शाखें नहीं होतीं एक बालिस्तसे लेकर हाथभरतक ऊंचा होताहै रेगिस्तान इसका नवतहै कीमियाई दरख्तहै कलई व सीमावको नुकरा करताहै (हसीनुद्दीन अहमद अज जौनपुर) (सुफहा ८ किताब अखबार अलकीमियाँ १६।३।१९०५)

पपीताके फवायद (उर्दू)

पपीता जो एक दरख्तका तुख्महै । गोल शकल किसी कदर तल अगर इस तुख्मको कोई शख्स पारचेमें बांध कर हाथमें बांधे रक्खे उस शखस पर जादू और सहरका असर नहीं होता । बल्कि वरअक्स जादू करने वाले-पर इसका बद असर पडता है । अगर कोई शखस जहर खागया हो दो सुर्ख पानीमें घिसाकर पिलावे असर जहर वातिल होजायगा और जिसके पास हरवक्त और हमेशह यह फल बतौर तावीजके रहे बद ववाई हवासे बिलकुल महफूज रहताहै और मेदे और पेचिशके लिये सुर्ख यादो सुर्ख पानीमें घिसाकर मरीजको पिलादेनेसे फौरन आराम होगा । फालिजवालेको भी मुफीदहै अगर किसीको किसी वजहसे गशी और बेहोशी हो जाय बदस्तूर इस तुख्मको घिसा कर पिलाऐं और पेशानीके बाल मूंडकर करदे तुख्म मजकूरःका सफूफ गिराऐं फौरन होशमें आजायगा । खुसूसन जहर सांप ओर दूसरे हशरातुलारिज के जहरोंके दफैके लिये तिरियाकहै अगर किसी जख्मसे खून बन्द न होताहो इसी तुख्मका किसी कदर सफूफ जख्मके अन्दर गिरादेनेसे खून कितई बंद होजाताहै और तपेलरजः जिसको होव कदर दो सुर्ख पानीमें घिसाकर तप होनेसे पहले पीलेवे बुखार नहीं होगा अगर होगा तो बहुत कम, दूसरे तीसर दिनतक बिलकुल जातारहेगा और इसी कदर असरुल आदतके लिये बहुत मुफीद है और तकलीफ इस हालके लिये भी नाफैहै अगर इसको सिर्फ मुँहमें ही रक्खा जावे।

नजलेको दफै और सीनेके बलगमसे पाक करताहै । अगर इस तुख्मको तराश कर रोगन कुंजदम विरिया करके फिर रोगनकी मालिश करे खारिश और आतिशक वगैरे सब दफै होजातेहैं । अगर कोई शख्स किसी किस्मके जहर खाकर बेहोश होगयाहो इसी रोगनको चन्द कतरा उस्के मुँहमें डालें कतरा नीचे उतरनेसे फौरन होशमें आजायगा । और जहरका असर काफूर होगा अगर किसी शख्सके हाथ पाँव फालिज जदह होकर नाकारह होगये हों इस रोगनकी मालिशसे कमाल नफा होताहै, अगर किसी औरतका हैज बन्द हो बवजन सातदानः गन्दुमके तुख्म मजकूरहको घिसाद निहायत नाफैहै । अगर किसी शख्सके जख्मसे कोइ रग कटगई हो उन दोनों सरे रगके दर्मियानी हिस्सेको सफूफ तुख्म मजकूरःसे पुरकरे फौरन दुरुस्त होगी । अगर मिस्ल हजार पायः जानवर या कोई और इसी तरहका किसी जगह हिस्सा जिसमें डंक मारे और गोश्तके अन्दर सोजिश होती हो फौरन इसी तुख्मको घिसाकर जमाद कर देनेसे शफा होतीहै और तकवीयतबाहके लिये पचीस दाने रेजः रेजः करके पाव भर शराबमें डाले और पन्द्रह रोजतक गर्मीमें रक्खे बादहू इसमेंसे एक माशा बवक्त शाम रोज खालिया करें निहायत नफा होगा । अगर पानीमें घिसा कर रसौली पर तिला करें रसौली तहलील होजायगी । हैजा और दर्द शिकमके लिये करीबन या इससे कमोवेश गुलाबमें घिसाकर मरीजको पिलावें फौरन सेहत होतीहै कै बन्द करनेमें अजीब सेहै (देखो तालीफशरीफी मुसन्निफः रनइसल हुक्मामुहम्मद शरीफ खाई जाजकउलमुल्क हकीम मुहम्मद अकमलखां ।) (सुफहा १२ व१३ व१४अखबार अलकीमियाँ १६।५।१९०५)

बूटी जंडियाजंडीके मानी (उर्दू)

जंडियाजंडीको संस्कृतमें शमी और अंगरेजीमें पवंजटरी कहतेहैं बाज सफेद कीकर भी कहतेहैं । (सुफहा ९ अखबार अलकीमियाँ १ । ५ । १९०५)

निर्गुंडीके नाम व शनाख्त (उर्दू)

निर्गुंडीके दरख्त जंगलोंमें होतेहैं । पत्ते अरहरकी तरह एक डंडीपर पांच पांच होतेहैं आमके बौरकी तरह गुच्छेदार फल आते हैं जो केसरी रंगके होते हैं । जड ही अकसर काममें आतीहै इसको संस्कृतमें संदुवार कहतेहैं । हिन्दीमें निर्गुंडी सम्हालू जडी । बंगालीमें नशन्दा । मरहठीमें लंगर । गुजरातीमें नागाड। कर्नाटकीमें करटील । तैलंगीमें नरनोंचं । द्राविडीमें काली संवाली । पंजाबीमें बनायालहरी । अंगरेजीमें टोलियूंड जडी । लैटनीमें वाइटीकस नीगंडू । फार्सीमें दुवान । तुख्म फजगश्त और अरबीमें असलक वगैरह कहतेहैं । (ठाकुरदत्त शर्मा वैद्य लाहोर) (सुफहा १२ किताब अखबार अलकीमियाँ १ । ५ । १९०५)

तेलियाकन्दकी शनाख्त (उर्दू) ।

जिस जगहसे वह तेलियाकंद उखाड कर लाया था वह जगह भी देखी तो तमाम मिट्टी भी उसकी वह लेगया। गर्ज दूर दूरकी मिट्टी उसने उठाली एक गजके करीब वह दरख्त था और जड उसकी वजनमें ४ सेरतक होगी और बर्ग उसके आमके मुशाबःथे लेकिन कदरे खुर्द और फूल जर्द रंगका थी उस जमीनको जाकर देखा तो निहायत सख्त और स्याह और चिकनी जैसे तेल गिराहुआहै । (सुफहा ३४ किताब अखबार अलकीमियाँ १६।४।१९०५)

पीतरक्तीकी शनाख्त (उर्दू)

पीतरक्तीको उस जगह भरजल कहतेहैं । अगर उसको खोद करलावे तो सूखती नहीं है और न रंग बदलताहै । बिलकुल दिरमकी शकलपर होतीहै और उसकी जड प्याजकी तरह परत परत और प्याजसे कुछ बडी होतीहै और फूल जर्द रंगका होताहै । दरख्त इसका निस्फ गजसे एक गजतक बलंद होताहै इसकी पैदायशकी जमीन बहुत सख्त होतीहै और पानी पत्तेका जर्द रंगका होताहै । (सुफहा ३३ किताब अखबार अलकीमियाँ १६।४।१९०५)

एक पहाडका जिकर जहां बूटियां मिलती हैं पीतरक्ती और तेलिया कंद (उर्दू)

पीतरक्ती, नीलकंठी, तेलियाकंद, इन बूटियोंका और जगह तो मिलना बहुत मुश्किल है मगर बमुकाम छोटन पहाड जिला जोधपुर मुल्क माडवारमें मौसम बरसातके अन्दर तलाश करनेसे मिलतीहै क्योंकि इस पहाड पर हर एक किस्मकी बूटी मिल जातीहैं गर्जे कि जो बूटी इस पहाडपर होतीहै वह ही आबूके पहाड परसे मिलजायगी जूलाई अगस्तके महीनेमें आप उस जगह पहाड छोटनपर पहुँचें तो जरूर आपको कामयाबी हासिल हो । दोनों जगह अकसर फुकुरा आतेहैं और उन बूटियोंको लातेहैं । शंकरगिरि संन्यासी जोधपुरको पीतरक्ती और तेलियाकंद दोनों हासिल हुयेथे मैंने ब चश्म खुद देखे । (सुफहा ३२ व ३३ अखबार अलकीमियाँ १६।४।१९०५)

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपंडितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया भाषाटीकायामौषधिपरीक्षा नाम षट्चत्वारिंशोध्यायः ॥ ४६ ॥

अभ्राध्यायः ४७.

अष्ट महारस ।

अभ्रवैक्रान्तमाक्षीकविमलाद्रिजसस्यकम् ॥ चपलो रसकश्चेति ज्ञात्वाऽष्टौ संग्रहेद्रसान् ॥ १ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अथ–अभ्रक, वैक्रान्त, (कच्चा हीरा जिसको तर्मरी कहतेहैं) सुवर्णमाक्षिक, रौप्यमाक्षिक, शिलाजीत, चपल (जिसका वर्णन परिभाषाध्यायमें किया गयाहै) रसखपरिया, इन आठों महारसोंकी खूब परीक्षा करके संग्रह करे ॥ १ ॥

अभ्रककी उत्पत्ति ।

कदाचिद्गिरिजा देवी हरं दृष्ट्वा मनोहरम् । मुमोच यत्तदा वीर्यं तज्जातं शुभ्रमभ्रकम् ॥ २ ॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ–एक दिन श्रीपार्वतीजीने श्रीमहादेवजीको अत्यन्त

श्रेष्ठ रूप बनाये हुए देखकर जो अपने वीर्यको छोडा तो वह अभ्रक बनगया ॥ २ ॥

मतान्तरसे उत्पत्ति ।

पुरा वधाय वृत्रस्य वज्रिणा वज्रमुद्धृतम् । विस्फुलिङ्गास्ततस्तस्य गगनं परिसर्पतः ॥ ॥ ३ ॥ निपेतुर्मेघनिर्घोषाच्छिखरेषु महीभृताम् । तेभ्य एव समुत्पन्नं तत्तद्गिरिषु चाभ्रकम् ॥ ४ ॥ तद्वज्रं वज्रजातत्वादभ्रमभ्ररवोद्भवात । गगनच्युतिजातत्वादूचिरे गगनं तदा ॥ ५ ॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ-पूर्व समयमें वृत्रासुरके मारनेके लिये इन्द्रने अपने वज्रको हाथमें लिया उससे जो चिनगारियाँ उडकर आकाशमें फैल गई और वे बादलोंकी गर्जनाहटसे पहाडोंपर गिरपडीं उनसेही पहाडोंकी खानोंमें वह अभ्रक उत्पन्न हुआ इसको वैद्य वज्रसे उत्पन्न होनेके कारण वज्र, अभ्र अर्थात् बादलोंके शब्दसे उत्पन्न होनेके कारण अभ्रक, और गगन अर्थात् बादलोंसे गिरनेके कारण गगन कहतेहैं ॥ ३-५ ॥

उत्तमाभ्रकलक्षण ।

राजहस्तादधस्ताद्यत्समानीतं घनं खनेः । भवेत्तदुक्तफलदं निःसत्त्वं निष्फलं परम् ॥ ६ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-जहां अभ्रककी खान हो वहां राजहस्त अर्थात् इमारती गजभर नीचा खोदकर जो अभ्रक निकाला जाताहै वह उत्तम फलदायक है और दूसरा हलका अभ्रक निष्फल होताहै ॥ ६ ॥

अन्यच्च ।

स्निग्धं पृथुदलं वर्णसंयुक्तं भारतोऽधिकम् । सुखं निर्मोच्य पत्रं तु तदभ्रं शस्तमीरितम् ७

अर्थ-चिकना, मोटे दलवाला, उत्तम वर्णयुक्त, वजनदार जिसके पत्र अनायाससेही पृथक् २ होसकें वह अभ्रक उत्तम माना गयाहै ॥ ७ ॥

अभ्रकभेद और उनके लक्षण ।

पिनाकं दर्दुरं नागं वज्रं चेति चतुर्थकम् । मुञ्चत्यग्नौ विनिक्षिप्तः पिनाको दलसंचयम् ॥ ८ ॥ अज्ञानाद्भक्षणात्तस्य महाकुष्ठं प्रजायते । दर्दुरोऽग्निगतोऽत्यर्थं कुरुते दर्दुरध्वनिम् ॥ ९ ॥ तस्य देहं प्रविष्टस्य भगंदरभयं भवेत् । वह्निप्रविष्टो नागस्तु फूत्कारं प्रविमुंचति ॥ १० ॥ सतूदरं प्रमेहं च प्रकरोति नपुंसकम् । वज्रं तु वज्रवत्तिष्ठे द्याधिवार्द्धक्यमृत्युहा ॥ ११ ॥ (टोडरानन्द., श. क.)

अर्थ-पिनाक, दर्दुर, नाग और वज्र, इन भेदोंसे अभ्रक चार प्रकारका होताहै, उनमेंसे पिनाक नामका अभ्रक अग्निमें तपानेसे पृथक् २ पत्रवाला होताहै उसके खानेसे महाकुष्ठ रोग होताहै, तथा अग्निमें स्थापित किया हुआ दर्दुर नामका अभ्रक मेंडकके समान शब्दको करताहै उसके सेवन करनेसे भगंदरके होनेका भय होताहै, अग्निसन्तापित नाग नामका अभ्रक सर्पके समान फुंकारता है उसके खानेसे उदररोग, प्रमेह और नपुंसकता उत्पन्न होतीहै तथा वज्र नामका अभ्रक अग्निमें तपानेसे किसी प्रकारकी विकृति अर्थात् विकारको नहीं प्राप्त होताहै वह रोग, जरा तथा मृत्युका भी नाशक है ॥ ८-११ ॥

तथाच ।

पिनाकं नागमण्डूकं वज्रमित्यभ्रकं मतम् । श्वेतादिवर्णभेदेन प्रत्येकं तच्चतुर्विधम् ॥ १२ ॥ पिनाकं पावकोत्तप्तं विमुञ्चति दलोच्चयम् । तत्सेवितं मलं बद्धा मारयत्येव मानवम् ॥ ॥ १३ ॥ नागाभ्रं नागवत्कुर्याद् ध्वनिं पावकसंस्थितम् । तद्भक्तं कुरुते कुष्ठं मंडलाख्यं न संशयः ॥ १४ ॥ उत्प्लुत्योत्प्लुत्य मण्डूकं ध्मातं पतति चाभ्रकम् । तत्कुर्याद्श्मरीरोगमसाध्यं शस्त्रतोऽन्यथा ॥ १५ ॥ वज्राभ्रं वह्निसंतप्तं निर्मुक्ताशेषवैकृतम् । देहलोहकरं तच्च सर्वरोगहरं परम् ॥ १६ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-पिनाक, नाग, मण्डूक और वज्र इस प्रकार अभ्रक चार प्रकारका है. सफेद, लाल, पीला और काला इन भेदोंके कारण प्रत्येक अभ्रकके चार २ भेद हैं, अग्निमें तपाया हुआ पिनाक नामका अभ्रक अपने पत्रोंको पृथक् २ कर देता है वह सेवन किया हुआ मलको बंदकर मनुष्यको मारही देताहै, नागाभ्र अग्निमें तपानेसे सर्पके समान शब्दको करताहै उसके सेवन करनेसे मंडलाख्य कुष्ठ रोग होताहै इसमें सन्देह नहीं, मण्डूक नामका अभ्रक अग्निमें धोंकनेसे कूद २ कर गिरजाताहै वह भक्षण करनेसे ऐसी पथरीको करताहै कि जो शस्त्रके विना किसी अन्य औषधिसे नष्ट न हो सके, वज्राभ्र नामका अभ्रक अग्निमें तपानेसे किसी प्रकारकी विकृतिको नहीं प्राप्त होता है वह खाया हुआ देहको वज्रके समान करनेवाला उत्तम सब रोगोंका नाशक है ॥ १२-१६ ॥

अभ्रकके वर्ण तथा उनकी उपयोगिता ।

श्वेतं रक्तं च पीतं च कृष्णमेवं चतुर्विधम् । श्वेतं श्वेतक्रियासूक्तं रक्ताभ्रं रक्तकर्मणि १७ ॥ पीताभ्रमभ्रकं यत्तु श्रेष्ठं यत्पीतकर्मणि । चतुर्विधं वरं व्योम यद्यप्युक्तं रसायने ॥ तथापि कृष्णवर्णाभ्रं कोटिकोटिगुणाधिकम् ॥ १८ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ सफेद, लाल, पीला और काला इस प्रकार अभ्रक चार प्रकारका है, तहां सफेद अभ्रक सफेदीके काममें अर्थात् चांदी बनाना और अबीर बनाने आदि काममें,

---

१ सं । २ कं । ३ कुष्ठप्रदायकम् । ४ रं त्वग्निसंतप्तं । ५ गोलकान्बहुशः कृत्वा सः स्यान्मृत्युप्रदायकः । नागन्तु नागवद्वह्नौ ।

लाल अभ्रक लाल रंगके काममें, पीला अभ्रक सुवर्ण बनानेके कार्यमें उपयोगी है, यद्यपि चार प्रकारका भी अभ्रक रसायनके बनानेमें उपयोगी है तथापि कृष्णाभ्रक सबसे ही करोड २ गुना उत्तम है ॥ १७ ॥ १८ ॥

अन्यच्च।

श्वेतं पीतं तथा कृष्णं रक्तं तद्भूमिसंगमात्। पीतं हेम्नि सितं तारे रक्तं चैव रसायने ॥ कृष्णाभ्रकं च रोगेषु द्रुतिपाते तथैव च।१९। (टोडरानन्द.)

अर्थ—वह अभ्रक सफेद, पीला, काला तथा लाल रंगका होताहै, पीला अभ्रक सुवर्ण बनानेके काममें, सफेद चांदी आदि बनानेके कार्य्यमें, लाल रसायनके बनानेके काममें और काला अभ्रक समस्त रोगोंमें तथा द्रुतिपातनमें भी उपयोगी है ॥ १९ ॥

अभ्रकके वर्ण।

तद्विप्रक्षत्रविट्शूद्रभेदाच्चैव चतुर्विधम् । क्रमेणैव सितं रक्तं पीतं कृष्णं च वर्णतः ॥ ॥ २० ॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ—और वही अभ्रक सफेद रंगका ब्राह्मण,लाल रंगवाला क्षत्रिय, पीत वर्णवाला वैश्य और काले रंगका अभ्रक शूद्र-वर्ण होताहै ॥ २० ॥

दिशा भेदसे अभ्रकके गुण।

तत्र दक्षिणशैलेऽर्कशोषादल्पगुणं हि तत् । अल्पसत्त्वं तदा धत्ते त्वभ्रे सत्त्वं गुणप्रदम् ॥ ॥ २१ ॥ अतश्चोत्तरशैलोत्थं बहुसत्त्वगुणोत्तरम् । शंसन्ति मुनयः सर्वे प्रयोगे कृष्णमभ्रकम् ॥ २२ ॥ (टोडरानन्द)

अर्थ—दक्षिण दिशाके पर्वतोंमें सूर्यकी उष्णतासे अभ्रक अल्प गुणवाला और अल्प सत्त्ववाला भी होताहै, इसलिये उत्तरके पर्वतोंमें उत्पन्न हुये अधिक सत्त्ववाले, गुणवान् कृष्ण अभ्रकको समस्त रोगोंमें प्रशंसनीय कहते हैं ॥ २१ ॥ २२ ॥

अथ अभ्रकके गुण।

रोगान्हत्वा दृढबलचयं वीर्यवृद्धिं विधत्ते तारुण्याद्ये रमयति शतं योषितां नित्यमेव । दीर्घायुष्माञ्जनयति सुतान् सिंहतुल्यप्रभावान्मृत्योर्भीतिं हरति रुचिरं सेव्यमानं मृताभ्रम् ॥ २३॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ—समस्त रोगोंको नाशकर बल और वीर्यकी वृद्धिको करताहै, जवानीकी प्रथमावस्थामें नित्य सौ स्त्रियोंसे रमण करताहै, सिंहके समान दीर्घायु पुत्रोंको उत्पन्न करताहै और सेवन किया हुआ अभ्रक मृत्युके भयको भी नष्ट कर देताहै ॥ २३ ॥

तथा च।

क्षयकुष्ठज्वरहरं प्रमेहव्याधिनाशनम् । जरामरणभीतिघ्नं वातपित्तकफापहम् ॥२४॥ अभ्रकं सेवितं नित्यं कासश्वासहरं परम् । रक्तिकैकं समारभ्य यावट्टंकमितं भवेत् ॥ ॥ २५ ॥(टोडरानन्द.)

अर्थ—एक रत्तीसे लेकर चार माशेतक सेवित किया हुआ अभ्रक क्षय, कोढ, ज्वर तथा प्रमेह रोगको नाश करताहै, जरा (बुढापा) और मृत्युके भयको दूर करताहै, वात, पित्त और कफको नाश करताहै, खाँसी और श्वासके हरनेमें उत्तम है ॥ २४ ॥ २५ ॥

अन्यच्च।

गौरीतेजः परममृतं वातपित्तक्षयघ्नं प्रज्ञोद्बोधि प्रशमितजरं वृष्यमायुष्यमग्र्यम् ॥ बल्यं स्निग्धं रुचिदमकफं दीपनं शीतवीर्यं तत्तद्योगैः सकलगदहृद्व्योम सूतेन्द्रवद्धि॥२६॥ (टोडरानन्द., र. र. स.)

अर्थ—अभ्रक भस्म परम अमृतरूप वात, पित्त और क्षयका नाशक, बुद्धिको बढानेवाला, बल और आयुका कर्ता, चिकना, रुचिकर्ता, कफका नाशक, दीपन, शीतवीर्य है । वह अभ्रक उन २ अनुपानोंके योगसे पारदके तुल्य समस्तरोगोंका नाश करनेवाला है ॥ २६ ॥

अशुद्ध अभ्रकके दोष।

अशुद्धाभ्रं निहन्त्यायुर्वर्द्धयेन्मारुतं कफम्। अहतं छेदयेदन्त्रं मन्दाग्निकृमिवृद्धिकृत् २७ (टोडरानन्द.)

अर्थ—अशुद्ध अभ्रक आयुको नाशकर कफ और वातकी वृद्धि करताहै, विना मरा हुआ अभ्रक आँतोंको काट देताहै तथा मन्दाग्नि और कृमिरोगको बढाता है॥२७॥

अथ अभ्रकशोधनविधि।

आदौ सुतापितं कृत्वा गगनं सप्तधा क्षिपेत् । निर्गुण्डीस्वरसे सम्यक् गिरिदोषप्रशान्तये ॥ २८ ॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ—प्रथम अभ्रकको अग्निमें तपा २ कर निर्गुंडीके रसमें बुझावे तो अभ्रक गिरिदोषसे दूर होजाताहै ॥ २८ ॥

अन्यच्च।

अंगारोपरि विन्यस्तं ध्मातमेकदलीकृतम्। निक्षिपेत्कांजिके कृष्णमभ्रकं वह्निसन्निभम् ॥ ततोऽस्य कांजिकस्थस्य चिरं घर्मविधारणम् ॥ २९ ॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ—अभ्रकका एक २ पत्रकर और उसको अंगारोंपर तपाकर कांजीमें बुझा देवे फिर बुझाये हुए अभ्रकको उसी कांजीमें रख तेज घाममें रख देवे (कुछ दिनके बाद पानीसे धोकर साफ करलेवे) तो अभ्रक शुद्ध होजायगा ॥ २९ ॥

तथा च।

क्षिप्त्वा क्षिप्त्वारनाले वै तप्तं कुर्याच्च खर्परे । त्रिसप्तधा पुटं चैव दत्त्वा शुद्ध्यति चाभ्रकः ॥ ३० ॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ-अभ्रकको खपरेमें तपा २ कर २१ इक्कीस बार कांजीमें पुट देवे तो अभ्रक शुद्ध होगा ॥ ३० ॥

अन्यच्च ।

प्रतप्तं सप्तवाराणि निक्षिप्तं कांजिकेऽभ्रकम्।
निर्दोषं जायते नूनं प्रक्षिप्तं वापि गोजले॥
त्रिफलाक्वथिते चापि गवां दुग्धे विशेषतः
(रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-अभ्रकको तपाकर कांजीमें अथवा गोमूत्रमें या त्रिफलाके काथमें और विशेषकर गायके दूधमें सातबार बुझाय देवे तो अभ्रक शुद्ध होगा ॥ ३१ ॥

अभ्रकको मुसफ्फा करनेकी तरकीब (उर्दू)

अभ्रक स्याह व सफेदके मुसफ्फा करनेकी तरकीब- अभ्रकको गर्म करके सातबार बोलमाद: गाउमें सर्द करे बादहू सातबार रोगन कुंजदमें फिर सातबार दहीतुर्शमें सर्द करे बादहू नमक चिडचिडा यानी ओंगा और नमक खारी लेकर पानीमें अलहदा २ घोलें और एकएक मर्तबः बुझाव दे शिगुफ्तः होजायगी (सुफहा अकलीमियाँ १७५)

अभ्रकके कोमलकरनेकी क्रिया ।

अभ्रकके पत्रोंको लेकर गायके धारोष्ण दूधमें मलना फिर सुखाना फिर धारोष्ण दूधसे मलना और सुखाना इस प्रकार तीनवार मलनेसे अभ्रक नवनीतके समान हो जायगा फिर काममें लाओ ॥ (जम्बूसे प्राप्त भाषापुस्तक)

अथ धान्याभ्रकक्रिया ।

चूर्णाभ्रं शालिसंयुक्तं बद्धा कम्बलके श्लथम्।
त्रिरात्रं कांजिके स्थाप्यं तत्क्लिन्नं मर्दयेदृढम् ॥ कम्बलाद्गलितं श्लक्ष्णं मारणादौ प्रशस्यते ॥ ३२ ॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ-अभ्रकका चूरा कर उसमें धान मिला देव, उसको कम्बलमें ढीला बांध तीन राततक कांजीमें रख फिर जोरसे मले इस प्रकार मलनेसे जो कम्बलमेंसे सूक्ष्म चिकना रेत निकले उसको धान्याभ्रक कहते हैं वह मारण तथा सत्वपातनके योग्य है ॥ ३२ ॥

धान्याभ्र ।

अभ्रक फोरे ऐसे रहैं । वनद्योंल सों कविजन कहैं ॥ पांच सेर ले जोषि जु जानि । तामें तीन सेर दे धान ॥ दो बरगजीकी थैली करै । तामें धान गगनको भरै ॥ मुंहडो सीय अतिगाढो करै । थैली बहुरि नांदमें धरै ॥ नांदहि कलस दोय जल भरै । तामें थैली मर्दन करै ॥ घसि अभ्रक निकसै बाहरो । पुनि वह जल मथनामें करो ॥ नांद बहुरि मथनाजल देय । गाढो मर्दन फेरि करेय ॥ मर्दत जल होई गादरो । पुनि वह जल मथनामें करो ॥ नांदहि और नवो जल देय । गाढो मर्दन अधिक करेय ॥ ऐसे फेर २ मरदेइ । रंच रंचको अभ्रक लेइ ॥ जब वह मथना रहै थिराय । तब वह पानी देय बहाय ॥ सूखेते अति सूछम होय । यह धनाव जानै सब कोय ॥ तव धनाव पायो तिह नाम । शुद्ध भये आवै सब काम ॥ (रससागर.)

धान्याभ्रककी निरुक्ति ।

चूर्णाभ्रं शालिसंयुक्तं वस्त्रबद्धं हि कांजिके।
निर्यातं मर्दनाद्वस्त्राद्धान्याभ्रमिति कथ्यते ॥ ३३ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-चूर्ण किये हुए अभ्रकके साथ धानोंको कपडेमें बांधकर कांजीमें रख देवे फिर उसके मर्दन करनेसे जो वस्त्रद्वारा अभ्रकका रेत निकलताहै उसे धान्याभ्र कहते हैं ॥ ३३ ॥

अथ अभ्रक भस्मविधि ।

ले धनाव जितनी मनमानै । आक छीरसों सानि सुजानै॥ पुनि सरवनमें धरै बनाय । खाली रहै न बाहिर जाय ॥ तब सरवा रस बाढा किये। कंडन गजपुटमें राखिये ॥ इसी भांतिकी दीजै आगि । चार प्रहर जो ज्वाला लागि ॥ आक छीर ऐसी पुट सात । सातों सात सबनकी बात ॥ कनकपान रस ग्वारिजो कीर । पुनि लीजै थूहरको छीर ॥ ता पाछे छयोलीकी छाल । बहुरि औटि विरजरिया घाल । गुड सुहाग अरु लीजै लाख । पुनि त्रिफला पीछैको राख ॥ पीपर बरकी अंतर छाल । लेहु पेंडकी होय न डाल ॥ सात सात पुट सबकी जानि । चौरासी पुट कही बखानि ॥ औटि २ के लीजै छालि । ता पाछै अभ्रकमें घालि ॥ गुड सुहाग पै धोरे नीर । करै गुनी जाकी मतिधीर ॥ होय निचन्दी गुनकै दानि । रसरतनागर कही बखानि ॥ (रससागर., बडा रससागर.)

कुश्ता अवरक त्रिफलाके ७२ पुटसे (उर्दू)

दरसनत कुश्तन तलक वियारन्द तलक सफेद या स्याह व ओरा महलूब साजन्द व खुश्क साख्तः दर काढा हलैला व बलैला खमीर कुनन्द चन्द टुकडे साजन्द व खुश्क साजन्द व दर पाचकदस्ती निहादह गजपुट विदमन्द चूं सर्दन शबद वर आवुर्दः विकोबन्द बाजदरकारह मजकूर टुकडःहा वस्तः बाज आतिश दिहन्द चुनीं हफ्ताद दो पुट तकरार नुमायन्द अगर अजाँरखशन्दगी रफ्त फबहा उलमुराद वल्ला व नोइ मजकूर दर आतिश दिहन्द व इल्ला विनौअ मजकूर ता रखशन्दगी अजाँ नरवद साइद

दरजाइ खूब निगाह दारन्द व हुक्मा आँरा माजून विसाजन्द ब हरनोअ मेखुरन्द अम्मा हकीम मेगोयन्द कि बाँई तरकीब पीर जवान गर्दद ब कुव्वत बाह तमाम आवुर्द चुनाचि अकर चहल हरम बुवद खुशनूद कुनद सुस्तीतन ब गरानी अन्दाम नियारद दायम इश्तहा गालिब आयद तरकीब खुर्दन बियारन्द आककरा ब वह मन ब वसवासा ब खोलीखान मिसरी ब जौजववा ब वेखकौंच ब तुख्मचटंगन व मस्तगी ब तवाशीर व फल व वेख जुमलैरा बराबर कोफ्तः विसानीद ब बजामः वहपजन्द आँकदरे कि हमे दारद बाशद शशम हिस्साओ तलक कुश्ता व बराबर हुमें नवात आसकर्दः बिआमेजन्द ब इमदाद कफे अजां निहार बिखुरन्द खासियत आँ वक्ते कि बिखुरन्द मालूम कुनन्द। (सुफहा ३२ किताब जवाहर उलस्निात)

अथ अभ्रकमारण।

देवदालीरसे गाढं धान्याभ्रं भावयेच्छतम्। कर्पूरधवलं सूक्ष्मं निश्चन्द्रं जायते ध्रुवम्॥ ॥ ३४ ॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ–अभ्रकको देवदाली (बन्दाल) के रसकी भावना दे दे कर सौ वार गजपुट देवे तो अभ्रक कपूरके समान श्वेत वर्णवाला निश्चन्द होजाताहै ॥ ३४ ॥

तथा च।

रसालामूसलीवारिपुटितं च मुहुर्मुहुः॥ निश्चन्द्रं मृत्युमाप्नोति कर्मयोग्यं भवेत्ततः ॥ ३५ ॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ–विदारीकन्द और सफेद मूसली इन दोनोंके रसकी भावना दे दे कर अभ्रकको गजपुट देता रहै तो अभ्रक चमकरहित होगा तदनन्तर वह अभ्रक समस्त प्रयोगोंमें देनेयोग्य हागा ॥ ३५ ॥

सम्मति–इस श्लोकमें पुट देनेकी संख्या नहीं दी गई है इसलिये बनानेवालेको समझना चाहिये कि जबतक अभ्रक चमकराहित न होजावे तबतक पुट देता रहै ॥

तथा च।

पेषणं च विधातव्यं पौनःपुन्येन पण्डितैः। चांगेरीस्वांगनिर्यासैरथेमं विधिमाचरेत् ॥ ३६ ॥ तण्डुलीयकमूलस्य रसेनापि ततः परम्। ततोऽस्मिन्खादिरांगारैर्नीते नीतेऽग्निवर्णताम्। क्षिपेत्पुनःपुनः क्षीरे यथा निश्चन्द्रिकं भवेत् ॥ ३७ ॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ–विद्वान् मनुष्य अभ्रकको चांगेरी (नोनिया) के रससे बार बार घोटे फिर चौलाईकी जडके रससे घोट टिकिया बनावे उन टिकियाओंको खैरसारके कोयलोंमें धोंक २ कर जब अग्निके समान लाल वर्ण होजावे तब गायके दूधमें बुझा देवे इस प्रकार जबतक अभ्रककी चमक जाती न रहै तबतक इस क्रियाको करता रहै तो यह अभ्रककी सर्वोत्तम भस्म होगी ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

तथा च।

पुनर्नवां कुमारीं च चपलां वानरीं तथा। मुसलीं चेक्षुवल्लीं च तथार्द्रामलकीरसैः ॥ ३८ ॥ प्रत्येकैकेन पुटयेत्सप्तवारं पुनः पुनः। अर्कसेहुण्डदुग्धेन प्रदेयाः सप्तभावनाः। एवं तन्म्रियते वज्रं सर्वरोगहरं परम् ॥ ३९ ॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ–सांठ, घीकुवार, भांग, कौंचके बीज, मूसली, विदारीकन्द तथा गीले आमलोंका रस इनमेंसे प्रत्येकको सात सात भावना देकर गजपुट देवे इसी प्रकार आक और थूहरके दूधकी भी सात २ भावना देवे तो अभ्रककी भस्म होगी और वह भस्म सर्वरोग नाशक होतीहै ॥ ३८॥३९ ॥

तथा च।

धान्याभ्रं गुडसंमिश्रं श्रेष्ठाक्षीरेण मादतम्। कुर्यात्सुचक्रिकां शुष्कां सम्यग्गजपुटे पचेत् ॥ ४० ॥ ततो धत्तूरपत्तूरकुमारीशशिवाटिका। प्रत्येकस्वरसेनैव पुटेदाशु मृतिं व्रजेत् ॥ ४१ ॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ–धान्याभ्रकमें गुड मिलाकर स्थलकमलके दूधसे मर्दन करै फिर उसकी गोल २ चकरीसी टिकिया बना लेवे उसको सुखाकर गजपुटमें पका लेवे तदनंतर धतूरेके पत्तोंका रस, घीगुवार और सांठ इनके स्वरससे भावना देकर पुट देवे तो अभ्रककी शीघ्र भस्म होगी ॥ ॥ ४० ॥ ४१ ॥

तथा च।

सपादटंकणं धान्यगगनं धामितं दृढम्। निश्चन्द्रं जायते शीघ्रं बालभृंगरसप्लुतम् ॥ ४२ ॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ–धान्याभ्रकसे चौथाई सुहागा लेकर दोनोंको खरलमें डाल नवीन जलभंगरेके रसमें घोट कोयलोंकी आंचमें धोंके तो अभ्रककी निश्चन्द्र भस्म होगी ॥ ४२ ॥

तथा च।

धान्याभ्रकस्य भागैकं भागार्धं टंकणस्य च। पिष्ट्वा तदन्धमूषायां रुद्ध्वा तीव्राग्निना पचेत् ॥ विचूर्ण्य योजयेद्योगे भेषजानामसंशयम् ॥ ४३ ॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ–धान्याभ्रकका एक भाग और आधाभाग सुहागा इन दोनोंको पीस अन्धमूषामें रख तीव्र अग्निमें पचावे फिर उसको मूषा (घरिया) मेंसे निकाल चूर्णकर समस्त प्रयोगोंमें चलावे इसमें सन्देह नहीं है ॥ ४३ ॥

तथा च।

धान्याभ्रकस्य भागौ द्वौ भागैकं शुद्धगंधकम्। वटक्षीरेण संमर्द्य मूषायां सन्निरोधयेत् ॥ पचेद्गजपुटेनैव वारमेकं मृतो भवेत् ॥ ४४ ॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ-दोभाग धान्याभ्रक और एकभाग शुद्धगंधक इन दोनोंको सूक्ष्म पीसकर बडके दूधकी भावना देकर और अंधमूषामें भर गजपुटमें पचावे तो एकही वारमें अभ्रककी भस्म होगी ॥ ४४ ॥

तथा च ।

ततो धान्याभ्रकं कृत्वा पिष्ट्वा मत्स्याक्षिकारसैः । चक्रिं कृत्वा विशोष्याथ पुटेदर्धेभके पुटे ॥ पुटेदेवं हि षड्वारं पौनर्नवरसैः सह ॥ ४५ ॥ कलांशटंकणेनापि संमर्द्य कृतचक्रिकम् । अर्धेभाख्यपुटैस्तद्वत्सप्तवारं पुटेत्खलु ॥ ४६ ॥ एवं वासारसेनापि तण्डुलीयरसेन च । प्रपुटेत्सप्तवाराणि पूर्वप्रोक्तविधानतः । एवं सिद्धं घनं सर्वयोगेषु विनियोजयेत् ॥ ४७॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-धान्याभ्रक कर मछैछीके रससे पीसकर और टिकिया बनाकर सुखालेवे फिर आधी गजपुटमें छः बार पकावे इसी प्रकार सांठके रससे भी भावना देकर पुट देवे फिर धान्याभ्रकसे चौथाई सुहागा मिलाकर और टिकिया बनाय सातबार पुट देवे इसीप्रकार अडूसेका रस, चौलाईका रस इन दोनों रसोंकी पूर्वोक्त क्रियासे भावना देकर सातसातबार पुट देवे तो अभ्रक सिद्ध होताहै, उसको सब प्रयोगोंमें लावे ॥ ४५-४७ ॥

तथा च ।

धान्याभ्रं कासमर्दस्य रसेन परिमर्दितम् । पुटितं दशवारेण म्रियते नात्र संशयः॥४८॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-धान्याभ्रकको सकसौंदीके रससे खूब मर्दनकर दशबार पुटदेवे तो अभ्रककी निःसन्देह भस्म होगी॥४८॥

अन्यच्च ।

तद्वन्मुस्तारसेनापि तण्डुलीयरसेन च । पीतामलकसौभाग्यपिष्टं चक्रीकृताभ्रकम् ॥ ४९ ॥ पुटितं षष्टिवाराणि सिंदूराभं प्रजायते । क्षयाद्यखिलरोगघ्नं भवेद्रोगानुपानतः ॥ ५० ॥ (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-इसीप्रकार नागरमोथेके रससे तथा चौलाईके रससे अथवा पकेहुए आमलेके रससे पीसकर टिकिया बनाय साठ ६० वार पुट देवे तो अभ्रककी भस्म सिन्दूरके समान लाल होजायगी ॥ ४९ ॥ ५० ॥

अन्यच्च ।

वटमूलत्वचः क्वाथैस्ताम्बूलीपत्रसारतः । वासामत्स्याक्षिकाभ्यां वा मीनाक्ष्या सकठिल्लया ॥ ५१ ॥ पयसा वटवृक्षस्य मर्दितं पुटितं घनम् । भवेद्विंशतिवारेण सिन्दूरसदृशप्रभम् ॥५२ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-बडकी जडकी छालका काथ, पानका रस, अडूसेका और मछेछीका मिला हुआ रस, करेला और मछेछीका मिला हुआ रस, अथवा बडका दूध इनमेंसे किसी एक पदार्थसे धान्याभ्रकको घोट सम्पुटमें रखकर बीस गजपुट देवे तो सिन्दूरके समान लालवर्ण अभ्रककी भस्म होगी ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

तथा च ।

पादांशटंकणोपेतं मुसलीरसमर्दितम् । रुद्ध्वा कोष्ठ्यां दृढं ध्मातं सत्त्वरूपं भवेद्घनम् ५३॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-अभ्रकको चौथाई सुहागेके साथ पीसकर मूसलीके रससे मर्दनकर कोष्ठ्यां यंत्रमें रख खूब धोंके तो अभ्रक सत्वरूप हो जाता है ॥ ५३ ॥

तथा च ।

गन्धर्वपत्रतोयेन गुडेन सह भावितम् । अधोर्ध्वं वटपत्राणि निश्चन्द्रं त्रिपुटैः खगम् ॥ ५४ ॥ क्षुधं करोति चात्यर्थं गुंजार्धमिति सेवया । तत्तद्रोगहरैर्योगैः सर्वरोगहरं परम् ॥ ५५ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-धान्याभ्रकके समभाग गुड मिलाकर एरण्डके पत्तोंके रससे घोट चक्री बनाय और ऊपर नीचे बडके पत्ता लगाय गजपुट देवे इस प्रकार तीन गजपुट देनेसे अभ्रककी भस्म होगी,आधी रत्तीभर सेवन करनेसे अत्यन्त क्षुधा लगतीहै अनेक अनुपानोंके साथ सेवनसे समस्त रोगोंको नाश करताहै ॥ ५४॥५५ ॥

अभ्रककी पुटके गुण ।

अभ्रस्त्वष्टादशपुटाद्वातहा द्विगुणेन च । पित्तघ्नस्त्रिगुणेनैव कफहा मेहशोफहा ॥ ॥ ५६ ॥ अम्लपित्तामवातादिरोगे स्याद्गजकेशरी । अभ्रं शतपुटादूर्ध्वं बीजसंज्ञां लभेद्ध्रुवम् । वीर्योजःकान्तिमूलश्च सबीजो देहधारकः ॥ ५७ ॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ-अठारह पुटका अभ्रक वातनाशक होताहै और छत्तीस पुटका अभ्रक पित्तका नाशकर्ता, तथा चौवन पुटका अभ्रक कफ, प्रमेह, औथका नाशक होताहै । और वही अभ्रक अम्लपित्त, आमवात आदि रोगोंमें गजकेसरी है । सौ पुटसे अधिक पुटवाले अभ्रककी बीजसंज्ञा होतीहै वीर्य, ओज और कान्तिका दाता है और देहका धारक भी है ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

अथ अभ्रकका अमृतीकरण ।

त्रिफलायाः कषायस्य पलान्यादाय षोडश । गोघृतस्य पलान्यष्टौ मृताभ्रस्य पलान् दश ॥ ४८ ॥ एकीकृते लोहपात्रे विपचेन्मृदुवह्निना । द्रवे जीर्णे समादाय योगवाहं प्रयोजयेत् ॥ अन्येषामपि धातूनाममृतीकरणं ह्ययम्॥५९॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ-त्रिफलाके काथके सोलह पल, गायका घृत आठ पल और दस पल अभ्रक भस्म इन सबको लोहेकी कढाईमें

रख मन्दाग्निसे पकावे काथ और घृतके जलनेपर अभ्रकको उतार समस्त योगोंमें वर्ते, इसीप्रकार अन्य धातुओंका भी अमृतीकरण जानना चाहिये ॥५८॥ ५९॥

पत्राभ्रकके सेवनका निषेध ।

निश्चन्द्रिकं मृतं व्योम सेव्यं सर्वगदेषु च । सेवितं चन्द्रिकायुक्तं मेहं मन्दानलं चरेत् ॥ ६० ॥ यैरुक्तं युक्तिनिर्मुक्तैः पत्राभ्रकरसायनम् । तैर्दृष्टं कालकूटाख्यं विषं जीवनहेतवे ॥ ६१ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-चमकरहित अभ्रक भस्मको समस्त रोगोंमें देना उचित है, और चमकदार अभ्रकके सेवन करनेसे प्रमेह और मन्दाग्निको करता है, युक्तिके न जाननेवाले जिन मनुष्योंने पत्राभ्रक रसायनका सेवन बताया है मानो उन्होंने जीवनके लिये कालकूट विषको ही देखाहै, तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार कालकूट विष जीवनको नष्ट करता है उसीप्रकार पत्राभ्रक रसायन भी जीवनको नष्ट करता है ॥ ॥ ६० ॥ ६१ ॥

शुद्ध अभ्रक कहां लेना चाहिये ।

सत्त्वार्थं सेवनार्थं च योजयेच्छोधिताभ्रकम् । अन्यथा त्वगुणं कृत्वा विकारोत्येव निश्चितम् ॥ ६२॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-सत्वपातनके लिये तथा भस्म बनाकर सेवन करनेके लिये शुद्धअभ्रकको काममें लावे, यदि इन दोनों कामोंमें अशुद्ध अभ्रकका प्रयोग करै तो अवगुण करके मनुष्यको निश्चय मार देताहै ॥ ६२ ॥

अभ्रक सेवन फल ।

वेल्लं व्योषसमन्वितं घृतयुतं वल्लोन्मितं सेवितं दिव्याभ्रं क्षयपांडुरुग्ग्रहणिकाशूलामकुष्ठामयम् ॥ जूर्तिं श्वासगदं प्रमेहमरुचिं कासामयं दुर्धरं मन्दाग्निं जठरव्यथां विजयते योगैरशेषामयान् ॥ ६३ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसुनु-बाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायामभ्रकवर्णनं नाम सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४७ ॥

अर्थ-सोंठ, मिरच, पीपल तथा घृतके संग एकरत्ती सेवन किया हुआ अभ्रक क्षय, पांडु, संग्रहणी, शूल, आम, कोढ, ज्वर, श्वास, प्रमेह, अरुचि, कास, मन्दाग्नि और उदररोग तथा अनेक अनुपानोंके साथ समस्तरोगोंको जीतताहै ॥ ६३ ॥

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया भाषाटीकायामभ्रकवर्णनं नाम सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४७ ॥

सत्त्वाध्यायः ४८.



सत्त अवरक स्याहकी पहचान (उर्दू)

इसको हिन्दीमें कृशनावरक और बजरीअवरक कहते हैं यह वजनमें शीशा और पारेकी तरह भारी होताहै और कायमुल्नार और निर्धूम होताहै जब बोतेमें रखकर आग पर गुदाज करे तो सोना चांदी तांबे वगैरः की तरह चक्कर खाताहै और फूटक होताहै मगर सत्त हरतालसे वजनमें हलका होताहै, रंग अभरक सफेदके सत्तका सफेद माइल व स्याही और अवरक स्याहके सत्तका कोयलेकी तरह स्याह होताहै, एक तोला सत्त अवरकका चार तोला सीमाव बाजारीको कायम करताहै । (सुफहा अकलीमियाँ १०९)

अथ अभ्रकसत्त्वपातनकी विधि ।

भावयेदभ्रकं तत्तु दिनैकं कांजिकेन च । रम्भाया मूलजैर्नीरैः सूरणोत्थैश्च मर्दयेत् ॥ ॥ १ ॥ तुर्यांशं टंकणं तत्र क्षुद्रमत्स्यैः समं पुनः । महिषीमलसंमिश्रान्संविधायास्य गोलकान् ॥ खराग्निना धमेद्गाढं सत्त्वं मुंचति कांस्यवत् ॥ २ ॥ (रसमानस.)

अर्थ-धान्याभ्रकको एकदिन तक कांजीमें भिगोवे फिर केलेकी जडके रससे तदनन्तर जमीकन्दके रसमें भिगोय देवे इसके बाद चौथाई सुहागा तथा चौथाई भाग छोटी मच्छलियोंका चूर्ण और चौथाई भाग भैंसका गोबर मिलाकर ऊंटके लैंडासे कुछ छोटे गोले बनाकर तेज आंचमें धोंके तो कांसीके समान अभ्रकका सत्व निकल आताहै ॥ १ ॥ २ ॥

तथा च ।

कासमर्दवनाधान्यवासानां च पुनःपुनः । मत्स्याक्ष्याः काण्डवल्ल्याश्च हंसपाद्या रसैः पृथक् ॥ ३ ॥ पिष्ट्वा पिष्ट्वा प्रयत्नेन शोषयेद्धर्मयोगतः । पलं गोधूमचूर्णस्य क्षुद्रमत्स्याश्च टंकणम् ॥ ४ ॥ प्रत्येकमष्टमांशेन दत्त्वा दत्त्वा विमर्दयेत् । मर्दने मर्दने सम्यक् शोषयेद्रविरश्मिभिः ॥ ५ ॥ पंचाजं पञ्चगव्यं वा पञ्चमाहिषमेव च । क्षिप्त्वा गोलान्प्रकुर्वीत किञ्चित्तिंदुकतोधिकान् ६॥ पयो दधि घृतं मूत्रं सविट्कं चाजमुच्यते । अधःपातनकोष्ठ्यां हि ध्मात्वा सत्त्वं निपातयेत् ॥ ७ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-कसौंदी, नागरमोथा, अडूसा, सांठ, मछेछी, कांडवल्ली, हंसराज इनके रससे पीस २ कर घाममें सुखालेवे फिर एक पल गेहूंका चून अभ्रकसे अष्टमांश क्षुद्रमत्स्य और सुहागा लेकर मर्दन करै प्रत्येक मर्दनके समय सूर्यकी तेजीसे सुखा लेवे । तदनन्तर पंचाज (बकरीकी पांच चीजें, जैसे दूध, दही, घी, मूत्र और मैंगनी) अथवा पंचगव्य तथा पंच माहिष मिलाकर आमलेकी बराबर गोला

बनावे अधःपातन कोठीयंत्रमें धोंककर सत्वपातन कर-लेवे ॥ ३-७ ॥

कीटसे सत्त्वपातनक्रिया ।

कोष्ठ्यां किट्टं समाहृत्य विचूर्ण्य रवकान् हरेत्। तत्किट्टं स्वल्पटंकेन गोमयेन विमर्द्य च॥८॥गोलान्विधाय संशोष्य धमेद् भूयोपि पूर्ववत् । भूयः किट्टं समाहृत्य मृदित्वा सत्त्वमाहरेत् ॥ ९ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ—जिस कोठीमें सत्वपातन किया हो उसमेंसे अभ्रक सत्वके रवोंको निकाल लेवे उसकी कीटमें थोडासा सुहागा और गोबर मिलाकर गोले बनाय और सुखाकर पूर्वके समान धोंके इसीप्रकार फिर कीटको निकालकर सत्वको निकाल लेवे ॥ ८ ॥ ९ ॥

अथाभ्रकसत्त्वपातनविधि।

चूर्णीकृतं गगनसत्त्वमथारनाले धृत्वा दिनैकमथ शोष्य च सूरणस्य । भाव्यं रसैस्तदनुमूलरसैः कदल्या वेदांशटंकणयुतं शफरीसमेतम् ॥ १० ॥ पिण्डीकृतं तु बहुधा महिषीमलेन संशोष्य कोष्ठगतमाशु धमेद्धठाग्नौ । भस्राद्वयेन च ततो वमते हि सत्त्वं पाषाणधातुगतमत्र न संशयोऽस्ति ॥ ११ ॥ (कामरत्न., र. रा. सुं.)

अर्थ--चूरन किये हुए अभ्रकके पत्रोंको एक दिन कांजीमें रख सुखालेवे फिर एकही दिन जमींकन्दके रसकी भावना देवे तदनन्तर केलेकी जडके रसकी भावना देवे फिर उसमें चौथाई भाग सुहागा तथा मछली डाल भैंसके गोबरसे गोला बनालेवे उनको कोठीमें रख हठाग्निसे दो धोंकनियों द्वारा धोंके तो पत्थरमें रहे हुए भी धातुका सत्व पड जाताहै इसमें संदेह नहींहै ॥ १० ॥ ११ ॥

और भी ।

धान्याभ्रकही लीजिये, सेर एक मंगवाय।
केला सूरन रसविषै,एक दिवस खरलाय॥
छोटी मछरी याविषै, एक सेर दे डार ।
लेय सुहागा पावभर, तामें दे निरधार ॥
महिषी गोबर लीजिये, चार सेर परमान।
तामें ये सब सानिके,टिकरी करै सुजान॥
ताको घाम सुखायके, सिघडीमें भरलेय ।
पक्के कोला लेइके, तेइ ऊपर धरदेय ॥
सिघडीके पैंदे विषै, परनाली रखवाय ।
धोंक्यो करै सुधोंकनी,सुन्दर तरे बनाय॥
आंच लगै सिघडी तपै,परनाली मग होय।
कांसेकी उपमा सदृश, सत्व कढैगो जोय॥
ऐसेही हरताल अरु, मनसल दीजे धात ।
तिनके सत्व निकासिये,कही सकल मुनिजात ॥ (वैद्यादर्श.)

औरभी ।

अभ्र जोखि पल साठक लेय । औषधि एक एक पल लेय ॥ ऊन लीजिये उरनातनी । घृत गुड चाह माछरी गनी ॥ गूगल और मुरहठी कही। पुनि सुहाग गुंजाफल सही ॥ साजी नोंन और मधु लेय । एक एक पल तामें देय ॥ अठ्यों भैंसको गोबर आनि । ताको रस ले बस्तर छानि ॥ गोबर रस सब लेय सनाय । छांह सुखावे बरी बंधाय ॥ खूडा (पूडा) यंत्र पचावे सोय । इह विधिके सत पातन होय ॥ यह तो जुगति प्रकटके कही । गुरुप्रसादते जानो सही ॥ सत उज्ज्वल रूपेसो होय । जो यह जुगति न चूके कोय ॥ कोरे अभ्रककी विधि जानो । या विधि सत निकसै पहिचानो ॥ (रससागर.)

तथा च ।

गुडः पुरस्तथा लाक्षा पिण्याकं टंकणं तथा। ऊर्णासर्जरसश्चैव क्षुद्रमीनसमन्वितम्॥१२॥ एतत्सर्वं तु संचूर्ण्य च्छागदुग्धेन पिंडकाः । कृत्वा ध्माताः खरांगारैः सत्त्वं मुंचंति निश्चितम् ॥ पाषाणमृत्तिकादीनां व्योमसत्त्वस्य का कथा ॥१३॥ (रसराजसुन्दर.)

अर्थ–गुड, गूगल,लाख,खल,सुहागा,ऊन राल और छोटी मच्छी इन सबको पीस अभ्रकके साथ मिलाय बकरीके दूधसे गोल २ टिकिया बनावे फिर उनको तेज कोयलोंपर रख धोंके तो पत्थर और मिट्टीका भी सत्त निकल आताहै अभ्रकका सत्त निकल आवे तो इसमें सन्देहही क्या है ॥ १२ ॥ १३ ॥

अभ्रकसत्त्वविधि ।

दश १० सेर मृताभ्रकको सात दिनतक कलाके रसमें घोटे तथा सात दिन जमींकन्दके रसमें घोटे तथा सातही दिवस मोथाके काथकी भावना देवे पीछे धूपमें सुखाय ढाई सेर सुहागा फुलाकर डाले तथा नीचे लिखी औषधियोंको डाल चिरमिठी (चौंटनी), गूगल, लाख, ऊन, सज्जी, राल, छोटी मछली, जवाखार, खल, जमीकन्द, केचुवा, हरड, बहेडा, आमला, चित्रक, चोरकन्द, धतूरेके बीज,कलहारी, पाढ, बलबीज, गंधक, मोंम, गोखरू, सेंधानोंन, संचरनोंन बिडनोन, साम्हरनोंन, शहद, खाखला, शशेकी हड्डी, कबूतरकी बीट, सोंठ, पीपल,मिरच, सरसोंको तेल,जीवन, भैंसका दूध, दही, घृत,मूत्र, गोबर ये समभाग सबको कूट पीसकर टिकरी बांधे तीन २ टंक की, फिर सुखाय कोठीयंत्रमें रख नीचे पक्के कोयलोंकी अग्निदे बकनाल धोंकनोसे धोंके तो पतला सत्व निकल नीचे बैठजाय उसको निकाल खंगरको तोड चुम्बकसे सत्वको निकाल लेवे फिर पूर्वोक्त मसाला डालकर धोंके ऐसा तीन बार करनेसे सब सत्व निकल आवे यह सोनेके समान

लाल निकले कदाचित् मरी अभ्रक न मिले तो धान्याभ्रकका ही सत्व निकाले यह सत्व कांसेके समान निकलेगा ॥ (रसराजसुन्दर.)

सत्त्वके एकत्र करनेकी विधि।

कणशो यद्भवेत्सत्त्वं मूषायां प्रणिधापयेत्। मित्रपंचकयुग्ध्मातमेकी भवति घोषवत् ॥ ॥ १४ ॥ (रसराजसुन्दर.)

अर्थ–अभ्रक सत्वके कणोंको एकत्रकर उनमें मित्रपंचक मिलाय मूषामें रख तीव्राग्नि देनेसे सब सत्वके रवा मिलकर कांसेके समान होजातेहैं ॥ १४ ॥

अथ अभ्रकसत्वशोधन विधि।

अथ सत्त्वकणांस्तांस्तु मुस्ताक्वाथाम्लकांजिकैः । शोधनीयगणोपेतान्मूषामध्ये निरुध्य च ॥ १५ ॥ सम्यक्पक्वं[१] समाहृत्य द्विवारं ध्मयेत्ततः[२]। इति शुद्धं भवेत्सत्त्वं योग्यं रसरसायने ॥ १६ ॥ (रसराजसुंदर., र. र. स.)

अर्थ–अभ्रकके उन शोधन करने योग्य रवोंको नागरमोथेके काढे और मट्ठेसे शुद्धकर मूषामें बन्द करदेवे। अच्छीतरह पकजानेपर निकाललेवे और दोबारा उसे गर्म करे तो अभ्रकसत्त्व शुद्ध होजाता है, उसे रस और रसायन कर्ममें प्रयुक्त करना चाहिये ॥ १५ ॥ १६ ॥

अभ्रकसत्वके कोमल करनेका उपाय।

पट्टचूर्णं विधायाथ गोघृतेन परिप्लुतम्। भर्जयेत्सप्तवाराणि चुल्लीसंस्थितखर्परे ॥ ॥ १७ ॥ अग्निवर्णं भवेद्यावद्वारंवारं विचूर्णयेत्। तृणं क्षिप्त्वा दहेद्यावत्तावद्वा भर्जनं चरेत् ॥ १८ ॥ ततः सगन्धकं पिष्ट्वा वटमूलकषायतः। पुटेद्विंशतिवारेण वाराहेण पुटेन हि ॥ १९ ॥ पुनर्विंशतिवाराणि त्रिफलोत्थकषायतः । त्रिफलामुण्डिकाभृङ्गपत्रपथ्याक्षमूलकैः ॥ २० ॥ भावयित्वा प्रयोक्तव्यं सर्वरोगेषु मात्रया। सत्त्वाभ्रात्किञ्चिदपरं निर्विकारं गुणाधिकम् ॥ २१ ॥ एवं चेच्छतवाराणि पुटपाकेन साधितम्। गुणवज्जायतेत्यर्थं परं पाचनदीपनम् ॥ ॥ २२ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–पूर्वोक्त कही हुई क्रियासे जो अभ्रक सत्व प्रस्तुत किया गयाहै उसको कपडछान कर गायके घृतसे खूब सानकर (अर्थात् पिसे हुए अभ्रक सत्वमें गोघृत मिलाकर) खपरेमें रख चूल्हेपर चढाय सात बार भूंजै अग्नि लगाते २ जब सत्व लाल होजावे तब उतार घोटलेवे फिर घीमें मिलाकर अग्निपर चढावे इसप्रकार सातबार भर्जन करै अथवा जब सत्वमें डालनेसे तृण जलजाय तबतक अग्नि लगावे, तदनन्तर सत्वमें (चतुर्थांश) गंधक डाल बडजटाके काथसे घोट २ बीसबार बारह पुट देनी, प्रत्येक पुटके देनेमें चतुर्थांश गंधक डालता रहै, पश्चात् त्रिफलाके काथकी बीस पुट देनी फिर त्रिफला, गोरखमुण्डी, जलभंगरेके पत्ता, बडीहर्र, बहेडा और मूलीके पत्ते इनमेंसे प्रत्येकके काथ तथा रसकी एक २ भावना देकर समस्त रोगोंमें मात्रानुसार प्रयोग करना चाहिये इसीप्रकार यदि बीस पुटके स्थानमें बडजटा काथ और त्रिफलाके काथकी पचास २ पुट दी जावें तो उत्तमोत्तम गुणवाला अभ्रकसत्व होता जठराग्निका दीपन करनेवाला संग्रहणीके भयंकर दर्दको नष्ट करताहै तथा उत्तम पाचन गुण करता है ॥ १७–२२ ॥

अन्यच्च।

सत्त्वस्य गोलकं ध्मातं सस्यसंयुक्तकांजिके। निर्वाप्य तत्क्षणेनैव कुट्टयेल्लोहपारया २३॥ संप्रताप्य घनस्थूलकणान् क्षिप्त्वाथ कांजिके। तत्क्षणेन समाहृत्य कुट्टयित्वा रजश्चरेत ॥ २४ ॥ गोघृतेन च तच्चूर्णं भर्जयेत्पूर्ववत्त्रिधा। धात्रीफलरसैस्तद्वद्धात्रीपत्ररसेन वा ॥ २५ ॥ भर्जने भर्जने कार्यं शिलापट्टेन पेषणम्। ततः पुनर्नवावासारसैः कांजिकमिश्रितैः ॥ २६ ॥ प्रपुटेद्दशवाराणि दशवाराणि गन्धकैः। एवं संसाधितं व्योम सत्त्वं सर्वगुणोत्तरम् ॥ यथेष्टं विनियोक्तव्यं जारणे च रसायने ॥ २७ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ—अभ्रक सत्वके गोलेको कोयलोंकी अग्निमें तपाकर संडासीसे निकाल विना छनी हुई कांजीमें बुझाय लोहेकी खरलमें डाल सूक्ष्म पीस लेवे पीसते २ जो मोटे २ दाने रह जाते हैं उन्हें फिर आंचमें तपाय पुनः कांजीमें बुझाय लोहेके खरलमें पीसलेवे इस प्रकार चूर्ण किये हुए अभ्रकसत्वको तीनबार गायके घीमें भून लेवे, प्रत्येक भूंजनेके समय खरलमें घोटना चाहिये फिर आंमलेके रससे तथा आमलोंके पत्तोंके रससे भूंज २ कर खरलमें घोटे तदनन्तर सांठ और अडूसेका रस तथा कांजी इन तीनोंको मिलाय अभ्रक सत्वमें भावना देदेकर दस गजपुट देवे और दसपुट अष्टमांश या चतुर्थांश गंधक मिलाकर देनी इससे अभ्रक सत्वकी उत्तम रसायन बनतीहै इस रसायनको रस और रसायनमें यथेष्ट वर्तना चाहिये ॥ २३–२७ ॥

तथा च।

मधुतैलवसाज्येषु द्रावितं भावितं तथा। मृदु स्याद्दशवारेण सत्त्वं लोहादिकं खरम् ॥ ॥ २८॥ (रसराजसुन्दर., र. र. स.)

अर्थ–शहद, तैल, चर्बी और घृत इनमें सत्वको गला २ कर दसबार बुझानेसे सत्त्व और कठोर लोहादि धातु मृदु (नरम) होतेहैं ॥ २८ ॥

अभ्रकसत्वगुण।

सत्त्वसेवी वयस्तम्भं कृतशुद्धिर्लभेत्सुधीः ॥ ॥ २९ ॥ (रसमानस.)

१ क्वाथयित्वा। २ द्रुतम्। ३ द्रुतम् (र० र० स०)

अर्थ-जो मनुष्य अभ्रक सेवनके समान देहकी शुद्धि कर सत्वको सेवन करताहै उसके आयुकी वृद्धि होतीहै ॥२९॥

समस्त प्रकारके सत्वपातनकी क्रियाका वर्णन ।

ऊर्णा सर्ज्जरसश्चैव क्षुद्रमीनसमन्वितः। एतत्सर्वं तु संचूर्ण्य छागदुग्धेन पिण्डिकाः ॥ कृता ध्माताः खरांगारैः सर्वसत्त्वान्निपातयेत्॥ ३० ॥ (टोडरानन्द., र. रा. सुं.)

अर्थ-ऊन, राल, छोटी मच्छी, इन तीनोंको चूर्णकर अभ्रकसे चौथाई भाग लेकर अभ्रकमें मिलाय बकरीके दूधसे छोटे छोटे गोले बनाय तेज अंगारोंमें धोंके तो सब प्रकारके सत्व निकलतेहैं ॥ ३० ॥

द्रुतियोंके वर्णन न करनेका कारण ।

द्रुतयो नैव निर्दिष्टाः शास्त्रे दृष्टा अपि दृढम् । विना शम्भोः प्रसादेन न सिध्यन्ति कदाचन ॥ ३१ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-यद्यपि शास्त्रोंमें द्रुतियोंका वर्णन किया गयाहै परन्तु श्रीमहादेवजीकी कृपाके विना द्रुतियें सिद्ध नहीं होतीहैं ॥ ३१ ॥

अथ वैक्रान्त (तर्मरी) की उत्पत्ति ।

दैत्येन्द्रो माहिषः सिद्धः सहदेवसमुद्भवः । दुर्गा भगवती देवी तं शूलेन व्यमर्दयत ॥ ३२ ॥ तस्य रक्तं तु पतितं यत्र यत्र स्थितं भुवि । तत्र तत्र तु वैक्रान्तं वज्राकारं महारसम् ॥ विन्ध्यस्य दक्षिणे वास्ति ह्युत्तरे वास्ति सर्वतः ॥ ३३ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-सहदेवसे उत्पन्न हुआ माहिष नामका सिद्ध दैत्येन्द्र था उसको श्रीभगवती देवीने अपने त्रिशूलसे मारा उसका रक्त जिस जिस पृथिवीपर गिरा वहां वहां पर वज्रके समान वैक्रान्त (कच्चा हीरा तर्मरी) महारस पैदा हुआ, वह विन्ध्याचल पर्वतके दक्षिणकी तरफ मिलताहै और उत्तरकी तरफ तो सर्वत्र प्राप्त होताहै ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

वैक्रान्तकी व्युत्पत्ती ।

विकृन्तयति लोहानि तेन वैक्रान्तकः स्मृतः ॥ ३४ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-समस्त लोहों (धातुओं) को चीर डालनेकी शक्ति रखताहै इसलिये उसे वैक्रान्त कहतेहैं ॥ ३४ ॥

वैक्रान्त लक्षण ।

अष्टास्रश्चाष्टफलकः षट्कोणो मसृणो गुरुः । शुद्धमिश्रितवर्णैश्च युक्तो वैक्रान्त उच्यते ॥ ३५ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-आठ कौन और आठही फलक अथवा छः कौन वाला वैक्रान्त चिकना भारी और शुद्ध मिश्रितवर्णोंसे युक्त जो वैक्रान्त होताहै वह उत्तम होताहै ॥ ३५ ॥

वैक्रान्तके भेद ।

श्वेतः पीतस्तथा रक्तो नीलः पारावतप्रभः । मयूरकण्ठसदृशश्चान्यो मरकतप्रभः ॥३६॥ देहसिद्धिकरं कृष्णं पीतं पीतं सिते सितम् । सर्वार्थसिद्धिदं रक्तं तथा मरकतप्रभम् ॥ शेषे द्वे निष्फले वर्ज्ये वैक्रान्तमिति सप्तधा॥३७॥(रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-सफेद, पीला, लाल, नीला, कबूतरके रंगवाला, मोरके गलेके समान, आसमानी और पन्नेके रंगके समान, इस प्रकार वैक्रान्त सात तरहका है, काला वैक्रान्त शरीरको अजर अमर करताहै, पीला वैक्रान्त सुवर्ण बनानेमें, सफेद चांदी बनानेके काममें उपयोगी है, लाल और पन्नेके समान वर्णका वैक्रान्त समस्त अर्थ और सिद्धिका दाता है आसमानी तथा कबूतरके रंगवाला ये दोनों निष्फल हैं॥ ३६ ॥ ३७॥

तथा च ।

श्वेतो रक्तस्तथा पीतो नीलो पारावतच्छविः । श्यामलः कृष्णवर्णश्च कर्बुरश्चाष्टधा हि सः ॥ ३८ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-सफेद, लाल, पीला, नीला, कबूतरके रंगकासा, श्यामल, काला और कबरा इस प्रकार वैक्रान्त आठ प्रकारका है ॥ ३८ ॥

अशुद्ध वैक्रान्त दोष ।

पाण्डुरोगं पार्श्वपीडां किलासं दाहसन्ततिम् । अशुद्धवज्रवैक्रान्तौ कुरुतोऽतो विशोधयेत ॥ ३९॥ (बृहद्योगतरङ्गिणी.)

अर्थ-अशुद्ध वैक्रान्त तथा वज्र ये दोनों पांडुरोग, पसलीका दर्द, किलास और दाहरोगको करतेहैं इसलिये शुद्ध करे ॥ ३९ ॥

वैक्रान्त गुण ।

वैक्रान्तो वज्रसदृशो देहलोहकरो मतः । विषघ्नो रसराजश्च ज्वरकुष्ठक्षयप्रणुत् ॥ ॥ ४० ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-वज्रके समान गुणवाला वैक्रान्त भी देहको अजर अमर करताहै यह रसराज विषका नाशक, ज्वर, कोढ़ और क्षयका नाश करताहै ॥ ४० ॥

अथ वैक्रान्तशोधन ।

वैक्रान्तकाः स्युस्त्रिदिनं विशुद्धाः संस्वेदिताः क्षारपटूनि दत्त्वा । अम्लेषु मूत्रेषु कुलत्थरम्भानीरेऽथवा कोद्रववारिपक्वाः ॥ ॥ ४१ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-कांजी और गोमूत्र इन दोनोंको मिलाय उसमें(जवाखार) तथा पांचोंनोंन मिलाकर और उसको दोलायंत्रमें भरकर तीन दिवसतक स्वेदन करे अथवा कुलथी केलेके जलमें अथवा कोद्रवके काथमें स्वेदन करे तो वैक्रान्त शुद्ध होजायगा॥ ४१ ॥

तथा च ।

कुलत्थक्वाथसंस्विन्नो वैक्रान्तः परिशुध्यति ॥ ४२ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–अथवा केवल कुलथीके ही क्वाथमें स्वेदन करनेसे वैक्रान्त अत्यन्त शुद्ध होताहै ॥ ४२ ॥

वैक्रान्त मारण ।

म्रियतेऽष्टपुटैर्गन्धनिम्बुकद्रवसंयुतः ॥ ४३ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–एक सम्पुटमें वैक्रान्तको रख उसके ऊपर नीचे नीबूके रसमें पिसी हुई गंधकको रख गजपुटमें फूंक देवे इसप्रकार गजपुट देवे तो वैक्रान्तकी भस्म होगी ॥ ४३ ॥

तथा च ।

वैक्रान्तेषु च तप्तेषु हयमूत्रं विनिक्षिपेत् । पौनःपुन्येन वा कुर्याद्द्रवं दत्त्वा पुनः पुनः ॥ भस्मीभूतं तु वैक्रान्तं वज्रस्थाने प्रयोजयेत् ॥ ४४ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–वैक्रान्तको तपा तपाकर घोडेके मूत्रमें बुझावे फिर घोडेके मूत्रको सम्पुटमें रख संपुट देवे इसप्रकार भस्म हुआ वैक्रान्त वज्रके स्थानमें देवे तो श्रेष्ठ है ॥ ४४ ॥

सम्मति–मेरी रायमें पूर्वोक्त दोनों क्रियाओंकी ऐक्यता होनी सम्भव है इस लिये इस प्रकार वैक्रान्तभस्म करना उचित है प्रथम आंचमें वैक्रान्त तपाकर घोडेके मूत्रमें बुझावे फिर नींबूके रसमें घोटे हुए गंधकका द्रव देकर गजपुट देवे ऐसी आठ गजपुट देनी ॥

अथ वैक्रान्त सत्वपातनविधि ।

मोक्षमोटरपालाशक्षारं गोमूत्रभावितम् । वज्रकन्दनिशाकल्कफलचूर्णसमन्वितम् ॥ ॥ ४५ ॥ तत्कल्कं टंकणं लाक्षाचूर्णं वैक्रान्तसम्भवम् । नवसारसमायुक्तं मेषशृङ्गीद्रवान्वितम् ॥ ४६ ॥ पिण्डितं मूकमूषस्थं ध्मापितं च हठाग्निना । तत्रैव पतते सत्त्वं वैक्रान्तस्य न संशयः ॥ ४७ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–पाढरका वृक्ष, मोरटका खार, ढाकका खार और गोमूत्रसे वैक्रान्तके चूर्णको अनेक भावना देनी पीछे वज्रकन्द, हलदी, त्रिफला, सुहागा, नौसादर और लाख इनके चूर्णसे चौथाई वैक्रान्त चूर्ण लेकर दोनोंको मेढासींगीके रसमें छोटी २ गोली बनावे उनको अंधमूषामें रख हठाग्निसे धोंके तो उस मूषामेंही वैक्रान्त सत्व निकल जाताहै इसमें सन्देह नहींहै ॥ ४५–४७ ॥

तथा च ।

सत्त्वपातनयोगेन मर्दितश्च वटीकृतः । मूषास्थो घटिकाध्मातो वैक्रान्तः सत्त्वमुत्सृजेत् ॥ ४८ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–अथवा सत्वपातन करनेके लिये जो औषध लिखेहैं उनके साथ वैक्रान्तके चूर्णको घोट गोली बनाय मूषामें रख एक घडीतक धोंके तो सत्व निकल आवेगा ॥ ४८ ॥

वैक्रान्त रसायन ।

भस्मत्वं समुपागतो विकृतको हेम्ना मृतेनान्वितः पादांशेन कणाज्यवेल्लसहितो गुञ्जान्वितः सेवितः ॥ यक्ष्माणं जरणं च पांडुगुदजं श्वासं च कासामयं दुष्टां च ग्रहणीमुरःक्षतमुखान् रोगाञ्जयेद्देहकृत् ॥ ॥ ४९ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–वैक्रान्तभस्म चारभाग, सुवर्णभस्म एकभाग इन दोनोंको मिलाय छोटी पीपल और वायविडङ्ग इन तीनोंको अनुमान एक माशे लेकर उसमें एकरत्ती ऊपर लिखी रसायन डाल घीमें चाट लेवै तो राजरोग, बुढापा, पांडुरोग, बवासीर, श्वास, खांसी, कठिन संग्रहणी, उरःक्षत (सिल) प्रभृति रोगोंको जीतताहै और देहको दृढ करताहै ॥ ४९ ॥

तथा च ।

सूतभस्मार्धसंयुक्तं नीलवैक्रान्तभस्मकम् । मृताभ्रसत्त्वमुभयोस्तुलितं परिमर्दितम् ५० क्षौद्राज्यसंयुतं प्रातर्गुञ्जामात्रं निषेवितम् । निहन्ति सकलान्रोगान्दुर्जयानन्यभेषजैः ॥ त्रिसप्तदिवसैर्नृणां गङ्गाम्भ इव पातकम् ५१ (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–पारद भस्म दो तोले, नीले वैक्रान्तकी भस्म एक तोला और इन दोनोंकी समान अभ्रक सत्वभस्म लेकर सूक्ष्म पीस लेवे उसमेंसे एक रत्ती लेकर घी और सहतके साथ सेवन करे तो जो रोग अन्य औषधियोंसे नहीं नष्ट होतेहैं उनको भी इक्कीसही दिनोंमें ऐसे नाश कर देताहै जैसे कि श्रीगंगाजल पापको नाश कर देताहै ॥५०॥५१ ॥

वैक्रान्तसेवनफल ।

आयुःप्रदश्च बलवर्णकरोऽतिवृष्यः प्रज्ञाप्रदः सकलदोषगदापहारी । दीप्ताग्निकृत्पविसमानगुणस्तरस्वी वैक्रान्तकः खलु वपुर्बललोहकारी ॥ ५२ ॥ रसायनेषु सर्वेषु पूर्वगण्यः प्रतापवान् । वज्रस्थाने नियोक्तव्यो वैक्रान्तः सर्वदोषहा ॥ ५३ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–वैक्रान्त आयु, बल और कान्तिको बढाताहै, अत्यन्त पुष्टिकारक, बुद्धिका बढानेवाला, वात पित्त और कफका नाशक है, जठराग्निको तेज करताहै, तथा हीरेके समान गुणवाला है और इन्द्रियोंमें फुर्ती रखताहै, शरीरको बलिष्ठ तथा लोह सदृश कठिन बना देताहै, यह रसायन सब रसायनोंमें उत्तम है, अपने बडे प्रभावसे अनेक रोगोंको निर्मूल करदेताहै, हीरेके स्थानमें वैक्रान्त प्रयोग हमेशा करना चाहिये ॥ ५२ ॥ ५३ ॥

वैक्रान्तद्रुति ।

श्वेतवर्णं तु वैक्रान्तमम्लवेतसभावितम् ।

सप्ताहान्नात्र सन्देहः खरघर्मे द्रवत्यसौ ५४॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-सफेद वैक्रान्तके चूर्णको सात दिन तक अमलबेतके रसकी भावना देवे फिर तेज घाममें रक्खे अथवा प्रत्येक भावनाके बाद घाममें रक्खे तो वैक्रान्तकी द्रुति होगी ॥ ५४ ॥

अथ सोनामक्खीकी उत्पत्ति ।

कान्यकुब्जाख्यविषये जायते स्वर्णमाक्षिकम् । तपतीतीरतोऽपि स्यादित्येवं तद्द्वियोनिकम् ॥ ५५ ॥ कान्यकुब्जोद्भवं ताप्यं विज्ञेयं स्वर्णवर्णकम् । तपतीतीरगं तत्तु पंचवर्णमुदाहृतम् ॥५६॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-एक तो सोनामक्खी कन्नौजके देशमें उत्पन्न होतीहै और दूसरी तपती नदीके किनारे उत्पन्न होतीहै इस प्रकार सोनामाखीकी जन्मभूमि दो हैं वही कन्नौजकी सोनामक्खी सुवर्णके समान वर्णकी होतीहै और तपतीके किनारेकी सोनामक्खी पांच वर्णकी होतीहै ॥ ५५ ॥ ५६॥

तथा च ।

सुवर्णशैलप्रभवो विष्णुना काञ्चनो रसः । ताप्यां किरातचीनेषु यवनेषु च निर्मितः ॥ ५७ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-मेरुपर्वत पर उत्पन्न हुए सुवर्णके रसको श्रीविष्णुने तापी नदीके आसपासके प्रदेश, सौराष्ट्र, चीन तथा अरबस्थान प्रभृति यवन देशोंमें उत्पन्न किया है ॥ ५७ ॥

स्वर्णमाक्षिककी परीक्षा ।

स्वर्णाभं स्वर्णमाक्षीकं निकोणं गुरुतायुतम् । कान्तिमाविकिरेत्तत्तु करे घृष्टं न संशयः ॥ ५८ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-स्वर्ण माक्षिक सोनेके समान कान्तिवाला गोल और भारी होताहै वह हाथमें रगडनेसे सोनेकी चमकको विखेरताहै ॥ ५८ ॥

स्वर्णमाक्षिकका लक्षण ।

स्वर्णवर्णं गुरु स्निग्धमीषन्नीलच्छविच्छटम् । कषे कनकवद्घृष्टं तद्वरं हेममाक्षिकम् ॥५९॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-जो स्वर्णमाक्षिक सुनहरी, भारी, चिकना तथा कुछ पीली चमक रखताहै उसकी कसौटी पर घिसनेसे सोनेके समान लकीरको करताहै वह स्वर्णमाक्षिक उत्तम है ॥ ५९ ॥

स्वर्णमाक्षिकके भेद ।

माक्षिको द्विविधो हेममाक्षिकस्तारमाक्षिकः । तत्राद्यं माक्षिकं कान्यकुब्जोत्थं स्वर्णसन्निभम् ॥ ६० ॥ तपतीतीरसंभूतं पञ्चवर्णसुवर्णवत् । पाषाणबहलः प्रोक्तस्ताराख्योऽल्पगुणात्मकः ॥ ६१ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-माक्षिक दो प्रकारका है एक स्वर्ण माक्षिक और दूसरा रौप्य माक्षिक तहां स्वर्ण माक्षिक कन्नोजमें उत्पन्न हुआ सुनहरी होताहै और तपती नदीके किनारे उत्पन्न हुआ स्वर्णमाक्षिक पंचरंगी होताहै और रौप्यमाक्षिक अधिक पाषाणवाला अल्पगुणवाला होताहै ॥ ६० ॥ ६१ ॥

स्वर्णमाक्षिकके गुण ।

सुवर्णमाक्षिकं स्वादु तिक्तं वृष्यं रसायनम् । चक्षुष्यं वस्तिहृत्कण्ठपांडुमेहविषोदरम् ॥ ६२ ॥ अर्शः शोथं विषं कण्डूं त्रिदोषमपि नाशयेत् । अनुपानं वराव्योषं वेल्लं साज्यं हि माक्षिके ॥ ६३ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-स्वर्णमाक्षिक मीठा, कडुवा, वृष्य, रसायन और नेत्रोंको हितकर है। मसानेके रोग, हृद्रोग, गलेके रोग, पांडु, प्रमेह, जलन्धर, बवासीर, सूजन, विष, खुजली और त्रिदोषको भी नाश करताहै, त्रिफला, त्रिकुटा, वायविडंग और घृत यह इसका अनुपान है ॥ ६२ ॥ ६३ ॥

तथा च ।

ताप्यः सूर्यांशसंतप्तो माधवे मासि दृश्यते । मधुरः कांचनाभासः साम्लो रजतसन्निभः ॥ ६४ ॥ किंचित्कषायमधुरः शीतः पाके कटुर्लघुः । तत्सेवनाज्जराव्याधिर्विषैर्न परिभूयते ॥ ६५ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-जिस समय वैशाख मासमें सूर्यकी किरनें तीव्र होतीहैं तब यह स्वर्णमाक्षिक दीखताहै, वह स्वर्णमाक्षिक मधुर, खट्टा है, तथा रूपामाखी कुछकषैली, मीठी, शीतल परिपाकमें चरपरी और हलकी है उसको सेवन करनेसे बुढापा,व्याधि और विष इनसे दुःख नहीं होताहै६४॥६५॥

तथा च ।

माक्षीकधातुः सकलामयघ्नः प्राणो रसेन्द्रस्य परं हि वृष्यः । दुर्मेललोहद्वयमेलनश्च गुणोत्तरः सर्वरसायनाग्यः ॥ ६६ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-दोनों प्रकारका माक्षिक धातु समस्त रोगोंका नाशक और पारदका प्राण है, परम पौष्टिक है, जो दो धातु परस्पर नहीं मिलते उनके मिलानेमें यह धातु उपयोगी है, उत्तम गुणवाला होनेके कारण यह माक्षिक रसायनमें उत्तम ही माना गया है ॥ ६६ ॥

माक्षिककी शुद्धि ।

एरण्डतैलं लुङ्गाम्बु सिद्धं शुध्यति माक्षिकम् ॥ ६७ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-अंडीका तैल तथा बिजोराका रस इन दोनोंमें स्वर्णमाक्षिकके चूर्णको मिलाकर कढाईमें डाल नीचे अग्नि जलावै जब लाल वर्ण होजावे तब उतार लेवे तो माक्षिक शुद्ध होताहै ॥ ६७ ॥

तथा च ।

सिद्धं वा कदलीकन्दतोयेन घटिकाद्वयम् । तप्तं तप्तं वराक्वाथे शुद्धिमायाति माक्षिकम् ॥ ६८ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-अथवा केलेके जडके रसमें दो घडी अर्थात् ४८ मिनटतक स्वेदन करै फिर तपा तपाकर त्रिफलाके काथमें बुझावे तो स्वर्णमाक्षिक शुद्ध होगा ॥ ६८ ॥

सुवर्ण माक्षिकभस्म ।

मातुलुङ्गाम्बुगन्धाभ्यां पिष्टं मूषोदरे स्थितम् । पंचक्रोडपुटैर्दग्धं म्रियते माक्षिकं खलु ॥ ६९ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-स्वर्ण माक्षिकको बिजौरा तथा समभाग गन्धकको पीस सम्पुटमें रखकर बराह पुटमें भस्म करै इसप्रकार पांच बाराह पुट लगावे तो स्वर्ण माक्षिक अवश्य भस्म होगा ॥ ६९ ॥

अथ स्वर्ण माक्षिकका मारण ।

एरण्डस्नेहगव्याज्यैर्मातुलुङ्गरसेन वा ॥ खर्परस्थं दृढं पक्कं जायते धातुसन्निभम् ॥७०॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-अथवा शुद्ध स्वर्ण माक्षिकको बिजोराके रसमें पीसकर समभाग अंडीका तेल और घृतमें मिलाय खिपरे पर रख हठाग्नि देवे जब खिपरा लाल होजावे तब उतार लेवे तो स्वर्णमाक्षिककी भस्म गेरूके सदृश होजायगी ॥ ७० ॥

स्वर्णमाक्षिकका प्रयोग ।

एवं मृतं रसे योज्यं रसायनविधावपि ॥ ॥ ७१ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-पूर्वोक्त प्रकारसे भस्म किये हुए स्वर्ण माक्षिकका समस्त रस और रसायनमें प्रयोग करना चाहिये ॥ ७१ ॥

स्वर्ण माक्षिकके सत्त्वपातनकी विधि ।

त्रिंशांशनागसंयुक्तं क्षारैरम्लैश्च मर्दितम् ॥ ध्मातं प्रकटमूषायां सत्त्वं मुञ्चति माक्षिकम् ॥ ७२ ॥ सप्तवारं परिश्राव्य क्षिप्तं निर्गुण्डिकारसे ॥ माक्षीकसत्त्वसंमिश्रं नागं नश्यति निश्चितम् ॥७३॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-स्वर्णमाक्षिकमें तीसवां भाग सीसा मिलाय जवाखार तथा सज्जीखार और अम्लवर्गके साथ घोट खुली मुंहवाली मूषामें रख धोंके तो स्वर्णमाक्षिकका सत्व निकल आवेगा, तदनन्तर उस सत्वको सातबार अग्निमें तपा तपाकर निर्गुंडीके रसमें बुझावे तो सत्वमें मिला हुआ सीसा नष्ट हो कर केवल सत्वमात्रही रह जायगा ॥ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥

तथा च ।

क्षौद्रगन्धर्वतैलाभ्यां गोमूत्रेण घृतेन च ॥ कदलीकन्दसारेण भावितं माक्षिकं मुहुः ॥ ॥ ७४ ॥ मूषायां मुञ्चति ध्मातं सत्त्वं शुल्वनिभं मृदु ॥ गुञ्जाबीजसमच्छायं द्रुतद्रावं च शीतलम् ॥ ताप्यसत्त्वं विशुद्धं तद्देहलोहकरं परम् ॥ ७५ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-स्वर्ण माक्षिकके चूर्णको शहद, अंडीका तेल, गोमूत्र, घी तथा केलेकी जडका रस इनसे अनेक भावना देवे फिर मूषामें रख धोंके तो चौंटनी (गुंजा) के सदृश सत्व निकलताहै यह जल्दी गलनेवाला ठंढा और देहको लोहके समान करनेवाला है ॥ ७४ ॥ ७५ ॥

सत सोनामाखीकी अलामत (उर्दू)

जर्दमाइल व सफेदी वजनमें भारी होताहै और दूसरे सत्तोंकी तरह टिकिया नहीं बंधसक्ती बल्कि रेजारेजा रग दरियाकी तरह होताहै और चांदीको रंगता है इसीतरहसे कि एकमास इसका दोमर्तबः करके एकतोला नुकरा गुदाख्तःपर तरह करे तिलाई हफ्तवान होजाता है और दूसरे चीजोंके सत एक मुद्दततक अगर रक्खे रहें तो उनका रंग मुतगैयर होजाताहै लेकिन इसका रंग नहीं बदलता । (सुफहा अलकीमियाँ ११०)

तथा च ।

एरण्डोत्थेन तैलेन गुञ्जाक्षौद्रं च टंकणम् ॥ मर्दितं तस्य वापेन सत्त्वं माक्षिकजं द्रवेत् ॥ ॥ ७६ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-अंडका तैल चौंटनी तथा सुहागा इन तीनोंको स्वर्णमाक्षिकके सत्वके समान भाग लेकर घोट लेवे उसमेंसे कुछ तो स्वर्णमाक्षिकके सत्वके साथही घोटे और कुछ बाकी रहे उसको रख देवे फिर उस मिश्रित स्वर्णमाक्षिकके सत्वको अग्निमें धोंके और ऊपरसे ऊपर लिखे हुए मसालेको थोडा २ डालता जावे तो सत्वकी द्रुति होगी७६॥

अथ माक्षिक सत्त्वप्रयोग ।

माक्षीकसत्वं च रसेन पिष्टं कृत्वा विलीने च बलिं निधाय॥ संभिश्र्य संमर्द्य च खल्वमध्ये निक्षिप्य सत्त्वं द्रुतिमभ्रकस्य॥ ७७ ॥ विधाय गोलं लवणाख्ययंत्रे पचेद्दिनार्धं मृदुवह्निना च । स्वतः सुशीतं परिचूर्ण्य सम्यग्वल्लोन्मितं व्योषविडङ्गयुक्तम् ॥ ७८॥ संसेवितं क्षौद्रयुतं निहन्ति जरां सरोगां त्वपमृत्युमेव ॥ दुःसाध्यरोगानपि सत्ववासरैर्नैतेन तुल्योस्ति सुधारसोऽपि ॥ ७९ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-माक्षिक सत्व तथा शुद्ध पारदको घोटे जब पारद सत्वमें मिलकर अदृश्य होजाय तब पारदके समान भाग गंधक डाल देवे और घोटे फिर सत्वके समान अभ्रकका सत्व तथा द्रुतिको डाल तथा घोट गोला बना लेवे उस गोलेको लवणयंत्रमें रख मृदु अग्निसे छः घंटे अर्थात् १५ घडीतक पकावे स्वांगशीतल होनेपर खरल कर रख लेना उसमेंसे नित्यप्रति एक २ रत्ती लेकर सोंठ, मिरच, पीपल, बायबिडंग और शहदके साथ चाटे तो जरा (बुढापा),

मृत्यु और असाध्य रोगोंको भी सातही दिनमें नाशकर देताहै इसके समान अमृतभी नहीं है ॥ ७७-७९ ॥

अथ रूपामाखीके भेद ।

विमलस्त्रिविधः प्रोक्तो हेमाद्यस्तारपूर्वकः ॥ तृतीयः कांस्यविमलस्तत्तत्कान्त्या स लक्ष्यते ॥ ८० ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-रौप्यमाक्षिक तीन प्रकारका होताहै, एकमें तो सुवर्णका अंश विशेष होताहै और दूसरेमें चांदीका, और तीसरेमें कांसेका अंश अधिक होताहै उसको कांस्य माक्षिक भी कहतेहैं उनकी परीक्षा इस प्रकार होतीहै जैसे कि जिसमें सोने तथा चांदीकी चमक अधिक हो उसे रौप्य माक्षिक कहतेहैं और जिसमें कांसेकी अधिक चिलकाहट हो उसे कांस्य माक्षिक कहतेहैं ॥ ८० ॥

रौप्यमाक्षिकके गुण ।

वर्तुलः कोणसंयुक्तः स्निग्धश्च फलकान्वितः॥ मरुत्पित्तहरो वृष्यो विमलोतिरसायनः ॥ ८१ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-रूपामाखी गोल और कोनेदार, चिकना, वात पित्तका नाशक, बल कारक और रसायन होताहै ॥ ८१ ॥

रौप्यमाक्षिककी उपयोगिता ।

पूर्वो हेमक्रियासूक्तो द्वितीयो रूप्यकृन्मतः॥ तृतीयो भेषजे तेषु पूर्वपूर्वो गुणोत्तरः ॥ ८२ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-पहिली रूपामाखी सुवर्ण क्रियामें और दूसरा रौप्य बनानेके काममें और तीसरा औषधके काममें उपयोगी है उनमेंसे तीसरेसे दूसरा और दूसरेसे पहिला अधिक गुणकारी है ॥ ८२ ॥

रूपामाखीकी शुद्धि ।

आटरूषजले स्विन्नो विमलो विमलो भवेत ॥ ८३ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-रूपामाखीको अडूसेके रसमें स्वेदन करे तो शुद्ध होगा ॥ ८३ ॥

तथा च ।

जम्बीरस्वरसे स्विन्नो मेषशृङ्गीरसेथवा ॥ आयाति शुद्धिं विमलो धातवश्च यथापरे ॥ ८४ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-रौप्यमाक्षिकके चूर्णको जंभीरीके रसमें अथवा मेढासिंगीके रसमें स्वेदन करे तो रौप्यमाक्षिक अवश्य शुद्ध होगा इसी प्रकार और धातुभी शुद्ध होतेहैं ॥ ८४ ॥

रौप्यमाक्षिकभस्मविधि ।

गन्धाश्मलकुचाम्लैश्च म्रियते दशभिः पुटैः ॥ ८५ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-रूपामाखीसे अर्धभाग गन्धक लेकर बडहर और नींबूके रसमें घोट गजपुटमें देवे इस प्रकार दश बार पुट देनेसे रौप्यमाक्षिककी भस्म होगी ॥ ८५ ॥

तथा च ।

सटङ्कलकुचद्रावैर्मेषशृङ्गयाश्च भस्मना ॥ पिष्टो मूषोदरे लिप्तः संशोष्य च निरुध्य च ॥ ८६ ॥ षट्प्रस्थकोकिलैर्ध्मातो विमलः सीससन्निभः ॥ सत्त्वं मुंचति तद्युक्तो रसः स्यात्सरसायनः ॥८७ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-सुहागा, बिजोराका रस तथा मेढासींगीका काथ इन तीनोंको मिलाकर रौप्य माक्षिकमें भावना देवे और पिसे हुए रौप्य माक्षिकका मूपामें लेपकर और सुखाकर छः सेर कोयलोंकी अग्निमें धोंकनेसे सीसेके समान शुद्ध सत्व निकलताहै वह रसायनके समान गुणकारक है ॥ ८६ ॥ ८७ ॥

तथा च ।

विमलं शिग्रुतोयेन कांक्षीकासीसटंकणम् ॥ वज्रकन्दसमायुक्तं भावितं कदलीरसैः ॥ ८८ ॥ मोक्षकक्षारसंयुक्तं ध्मापितं मूकमूषगम् ॥ सत्त्वं चन्द्रार्कसंकाशं पतते नात्र संशयः ॥ ८९ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-फिटकिरी, कसीस, सुहागा, वज्रकन्द, कठपाडरका खार इनको रौप्य माक्षिकसे दूना लेकर घोटे फिर सैंजनेके रस तथा केलेके रससे भावना देकर गोली बनाय अंधमूषामें रख धोंके तो चंद्रमा तथा सूर्यके समान सत्व निकलता है इसमें सन्देह नहीं है ॥ ८८ ॥ ८९ ॥

रौप्यमाक्षिक सत्वका कोमल करना और गुण ।

तत्सत्त्वं सूतसंयुक्तं पिष्टं कृत्वा सुमर्दितम् ॥ विलीनं गन्धके क्षिप्त्वा जारयेत्त्रिगुणालकम् ॥ ९० ॥ शिलां पंचगुणां चापि बालुकायंत्रके खलु ॥ तारभस्मदशांशेन तावद्वैक्रान्तकं मृतम् ॥ ९१ ॥ सर्वमेकत्र संचूर्ण्य पटेन परिगाल्य च ॥ निक्षिप्य कूपिकामध्ये परिपूर्य प्रयत्नतः ॥ ९२ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-एक तोला रौप्यमाक्षिक सत्व और एकही तोला पारद इन दोनोंको खूब पीसे जब पारद अदृश्य होजाय तब उसमें एक तोला गंधक मिलाकर घोटे और तीन तोले हरताल पांच तोले मैनसिल भी मिलाकर सूक्ष्म पीस और सीसीमें भर बालुका यंत्रमें चार प्रहरकी अग्नि देवे स्वांग शीतल होनेपर निकालकर उसमें दशवाँ हिस्सा चांदीकी भस्म और मृत वैक्रान्त डाल काचकी शीशीमें भर लेवे ॥ ९०-९२ ॥

रौप्यमाक्षिकरसायनके गुण ।

लीढो व्योषवरान्वितो विमलको युक्तो घृतैः सेवितो हन्याद्दुर्भगकृज्ज्वराञ्श्वयथुकं पांडुप्रमेहारुचीः । मूलार्त्ति ग्रहणीं च शूल-

मतुलं यक्ष्मामयं कामलां सर्वान्पित्तमरुद्गदान्क्रिमपरैर्योगैरशेषामयान् ॥ ९३ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-रौप्यमाक्षिकको त्रिकुटा, त्रिफला और घृतके साथ सेवन करनेसे भूतादिसे उत्पन्न हुवा ज्वर, शोथ, पांडुरोग, प्रमेह, अरुचि, ववासीर, संग्रहणी, शूल, राजरोग, कामला आर सब तरहके वात पित्तके रोग नाश होजातेहैं और २ अनुपानोंसे अनेक रोगोंका नाशक है ॥ ९३ ॥

अथ शिलाजीतकी उत्पत्ति और गुण।

ग्रीष्मे तीव्रार्कतप्तेभ्यः पादेभ्यो हिमभूभृतः॥स्वर्णरूप्यार्कगर्भेभ्यःशिलाधातुर्विनिःसरेत् ॥ ९४ ॥ स्वर्णगर्भगिरेर्जातो जपापुष्पनिभो गुरुः ॥ स स्वल्पतिक्तः सुस्वादुः परमं तद्रसायनम् ॥ ९५ ॥ रूप्यगर्भगिरेर्जातं मधुरं पाण्डवं गुरु ॥ शिलाजं पित्तरोगघ्नं विशेषात्पाण्डुरोगहृत् ॥ ९६ ॥ ताम्रगर्भगिरेर्जातं नीलवर्णं घनं गुरु ॥ शिलाजं कफवातघ्नं तिक्तोष्णं क्षयरोगहृत् ॥ ९७ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-ग्रीष्म ऋतुमें जब सूर्यकी किरणोंसे हिमालय पर्वतके सोना, चांदी और ताँबेके पाषाण तप जातेहैं तब उनसे शिलाजीत निकलताहै, जिनमें सुवर्ण पाया जाताहै उन पाषाणोंसे जो शिलाजीत निकलताहै वह जपापुष्पके समान लाल, भारी, कुछ कडुआ, मीठा होताहै और वह रसायन है, जिनमें चांदी रहतीहै उन पाषाणोंमें उत्पन्न हुआ शिलाजीत मीठा, सफेद और भारी होताहै यह शिलाजीत पित्तरोगका नाशक तथा विशेषकर पांडुरोगका नाश करताहै और ताम्रके पाषाणोंसे निकला हुआ शिलाजीत नीली रंगतका कठोर और भारी होताहै ॥ वह कफ और वातका नाशक है कडुआ गरम और राजरोगका नाशक है ॥ ९४-९७ ॥

शिलाजीतके भेद।

शिलाधातुर्द्विधा प्रोक्तो गोमूत्राद्यो रसायनः ॥ कर्पूरपूर्वकश्चान्यस्तत्राद्यो द्विविधः पुनः ॥ ससत्त्वश्चैव निःसत्त्वस्तयोः पूर्वो गुणान्वितः ॥९८॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-शिलाजीत दो प्रकारका है एक गोमूत्रगंधी और दूसरा कर्पूरगन्धी उन दोनोंमें गोमूत्रगन्धी दो प्रकारका है एक सत्ववाला और दूसरा बिना सत्वका इन दोनोंमें सत्ववाला शिलाजीत अधिक गुणवाला होताहै ॥ ९८ ॥

शिलाजीतकी परीक्षा।

वह्नौ क्षिप्तं भवेद्यत्तु लिंगाकारमधूमकम् ॥ सलिलेऽथ विलीनं च तच्छुद्धं हि शिलाजतु ॥ ९९ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-शिलाजीतको अग्निपर डालनेसे लिंगके समान आकार होताहै और धूवांभी नहीं होता और उस भस्मको जलमें गेरनेसे गल जाताहै अर्थात् जलके ऊपर डालनेसे नीचे लाल रंगकी किरनेसी हो जाती हैं ॥ ९९ ॥

शिलाजीतके गुण।

नूनं सज्वरपांडुरोगशमनं मेहाग्निमान्द्यापहं मेदश्छेदकरं च यक्ष्मशमनं शूलामयोन्मूलनम् ॥ गुल्मप्लीहविनाशनं जठरहृच्छूलघ्नमामापहं सर्वत्वग्गदनाशनं किमपरं देहे च लोहे हितम् ॥ १०० ॥ रसोपरससूतेन्द्ररसलोहेषु ये गुणाः॥ वसन्ति ते शिलाधातौ जरामृत्युजिगीषया ॥ १०१ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-शिलाजीत ज्वर, पांडुरोग और सूजनका शान्त करनेवाला, प्रमेह, मन्दाग्निका नाशक, वायगोला, तिल्ली, उदररोग, हृदयका शूल और आमका नाशकारक है। मेदको उखाडनेवाला, राजरोगका नाशक, समस्त त्वचाके रोगोंका नाश करताहै इससे अधिक और कोई पदार्थ देहका हितकारक नहीं है। रस, उपरस, पारद और धातुओंमें जो गुण पाये जातेहैं वे गुण जरा और मृत्युके नाशके लिये इस शिलाजीतमें रहते हैं ॥ १०० ॥ १०१ ॥

शिलाजीतकी शुद्धि।

क्षाराम्लगोजलैर्धौतं शुद्ध्यत्येव शिलाजतु ॥ ॥ १०२ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-जवाखार, कांजी तथा गोमूत्र इन तीनोंको एकत्र करलेवे उससे शिलाजीतको धोवे तो शुद्ध हो जायगा १०२॥

तथा च।

शिलाधातुं च दुग्धेन त्रिफलामार्कवद्रवैः ॥ लोहपात्रे विनिक्षिप्य शोधयेदतियत्नतः ॥ ॥ १०३ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-एक लोहेके पात्रमें दूध, त्रिफलाका काथ और जलभंगरेका रस भरकर उसमें शिलाजीत मिलाय धूपमें रख देवे इस प्रकार करनेसे जो उत्तम शिलाजीत होगा वह ऊपर आ जायगा नीचे उसकी कीट रह जायगी इसतरह तीनबार करनेसे शिलाजीत शुद्ध होताहै ॥ १०३ ॥

तथा च।

क्षाराम्लगुग्गुलोपेतैः स्वेदनीयंत्रमध्यगैः ॥ स्वेदितं घटिकामानाच्छिलाधातुर्विशुध्यति ॥ १०४ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-एक हांडीमें कांजी भरकर उसमें जवाखार नींबूका रस और गूगल मिलाय दोलायंत्र द्वारा एक घडी (२४ मिनट) तक स्वेदन करे तो शिलाजीत शुद्ध होताहै ॥ १०४ ॥

शिलाजीतभस्म।

शिलया गन्धतालाभ्यां मातुलुंगरसेन च ॥ पुटितं हि शिलाधातुर्म्रियतेऽष्टगिरिण्डकैः ॥ १०५ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-मैनसिल, गन्धक और हरताल इन तीनोंको एक तोला लेकर और सोलह तोले शिलाजीतके साथ घोटे फिर आठ कंडोंकी आंचमें फूंक देवे तो शिलाजीतकी भस्म होगी ॥ १०५ ॥

शिलाजीतकी भस्मके गुण ।

भस्मीभूतशिलोद्भवं समतुलं कान्तं च वैक्रान्तकं युक्तं च त्रिफला कटुत्रिकघृतैर्वल्लेन तुल्यं भजेत ॥ पांडौ यक्ष्मगदे तथाग्निसदने मेहेषु मूलामये गुल्मप्लीहमहोदरे बहुविधे शूले च योन्यामये ॥ १०६ ॥ सेवेत यदि षण्मासं रसायनविधानतः ॥ वलीपलितनिर्मुक्तो जीवेद्वर्षशतं सुखी ॥ १०७ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-शिलाजीतकी भस्मके समान कांतिसार और वैक्रान्तभस्मको लेकर घोट शीशीमें भर लेवे उसमेंसे एक रत्तीभर त्रिफला, त्रिकुटा और घृतके साथ पांडु, राजरोग, मन्दाग्नि, प्रमेह, बवासीर, बायगोला, तिल्ली, उदरवृद्धि, अनेक प्रकारके शूल तथा योनिरोगमें सेवन करे, जो मनुष्य रसायन विधिसे शिलाजीतको छःमास तक सेवन करे तो वलीपलितसे रहित होकर सुखसे सौ वर्ष जीवे ॥ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥

शिलाजीतके सत्वपातनकी विधि ।

पिष्टं द्रावणवर्गेण साम्लेन गिरिसम्भवम् ॥ क्षिप्त्वा मूषोदरे रुद्ध्वा पक्वेऽध्मातं हि केवलम्। सत्वं मुञ्चेच्छिलाधातुस्तत्क्षणाल्लोहसन्निभम् ॥ १०८ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-गुड, गूगल, चौंटनी, घृत, शहद, सुहागा और नींबूका रस इनके साथ शिलाजीतको पीसकर मूषामें रख और कपरौटी कर कोयलोंमें पकावे तो लोहके समान सत्व निकलता है ॥ १०८ ॥

कपूरगन्धीशिलाजीतके गुण ।

पांडुरं सिकताकारं कर्पूराद्यं शिलाजतु ॥ मूत्रकृच्छ्राश्मरीमेहकामलापाण्डुनाशनम् ॥ ॥ १०९ ॥ एलातोयेन सम्भिन्नं सिद्धं शुद्धिमुपैति तत् । नैतस्य मारणं सत्त्वपातनं विहितं बुधैः ॥ ११० ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-जिसमें कपूरके समान गन्ध आवे उसको कर्पूरगन्धि कहतेहैं, वह कुछ पीले रंगका और रेतके समान बिखरा हुआ होताहै वह मूत्रकृच्छ्र, पथरी, कामला और पांडुरोगका नाशक है, यह शिलजीत इलायचीके रस तथा काथमें धोनेसे शुद्ध होताहै पण्डितोंने इसका मारण तथा सत्वपातन नहीं कहाहै ॥ १०९ ॥ ११० ॥

सस्यक (नीलाथोथा) की उत्पत्ति ।

पीत्वा हालाहलं वान्तं पीतामृतगरुत्मता । विषेणामृतयुक्तेन गिरौ मरकताह्वये॥१११॥ तद्वान्तं हि घनीभूतं संजातं सस्यकं खलु ॥ मयूरकण्ठसच्छायं भाराढ्यमतिशस्यते ॥ ११२ ॥ द्रव्यं विषयुतं यत्तद्द्रव्याधिकगुणं भवेत् ॥ हालाहलं सुधायुक्तं सुधाधिकगुणं तथा ॥ ११३ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-श्रीगरुडजीने अमृतपान करनेके पीछे हालाहल विष खा लिया उस विषका वमन मरकत नामके पर्वत पर हुआ जब वह वमन गाढा होगया उसको सस्यक कहते हैं। वह नीला, वजनदार अच्छा होताहै, जो पदार्थ विषसे संयुक्त है अर्थात् जिस पदार्थमें विष मिला हुआ है वह पदार्थ अधिक गुणवान् हो जाताहै इसी प्रकार अमृतसे मिला हुआ हालाहल भी अमृतसे अधिक गुणवाला होताहै ॥ १११-११३ ॥

सस्यकगुण ।

निःशेषदोषविषहृद्गदशूलमूलकुष्ठाम्लपैत्तिकविबन्धहरं परं च ॥ रासायनं वमनरेककरं गरघ्नं श्वित्रापहं गदितमत्र मयूरतुत्थम् ॥ ११४ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-नीलाथोथा समस्त दोष और विषको दूर करताहै हृदयके रोग, शूल, बवासीर, कोढ, अम्लपित्त, कब्जको हरनेवाला; वमन (कै) दस्तके करनेवाला, श्वेत कोढका नाशक और रसायन है ॥ ११४ ॥

नीलेथोथेकी शुद्धि ।

सस्यकं शुद्धिमाप्नोति रक्तवर्गेण भावितम्॥ स्नेहवर्गेण संसिक्तं सप्तवारमदूषितम् ॥ ॥ ११५ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-नीलेथोथेको रक्तवर्ग (कसूम, कत्था, लाख, मजीठ, लालचंदन, रतनजोत, (दुपहरियाका फूल) से सातवार भावना देवे और सातही वार स्नेहवर्गसे तर करलेवे अर्थात् घृतको खूब गरमकर नीलेथोथेमें डाल देवे फिर नितार लेवे तदनन्तर कांजीमें ओटाकर काममें लावे यह नीलेथोथेकी शुद्धिका प्रकार है ॥ ११५ ॥

तथा च ।

दोलायंत्रेण सुस्विन्नं सस्यकं प्रहरत्रयम् ॥ गोमहिष्याजमूत्रेषु शुध्यते तुत्थखर्परम् ॥ ११६ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-नीलेथोथेको गाय, भैंस, बकरीके मूत्रमें दोलायंत्र द्वारा तीन प्रहर स्वेदन करे तो नीलाथोथा और रसखपरिया शुद्ध होगा ॥ ११६ ॥

नीलेथोथेकी भस्म ।

लकुचद्रावगन्धाश्मटंकणेन समन्वितम् ॥ निरुध्य मूषिकामध्ये म्रियते कौक्कुटैः पुटैः ॥ ११७ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-दो तोला गन्धक और दोही तोला सुहागा इन दोनोंसे दूना नीलाथोथा लेकर बिजोरेके रससे घोटे और मूषामें रख तीनबार कुक्कुट पुट देता रहै प्रत्येक पुटमें गंधक और सुहागा मिलाता जावे ॥ ११७ ॥

सस्यकके सत्वपातनकी विधि।

सस्यकस्य च चूर्णं तु पादसौभाग्यसंयुतम् ॥ करंजतैलमध्यस्थे दिनमेकं निधापयेत् ॥ ॥ ११८ ॥ अन्धमूषास्यमध्यस्थं ध्मापयेत्कोकिलत्रयम् ॥ इन्द्रगोपाकृतिं चैव सत्त्वं भवति शोभनम् ॥११९॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–नीलेथोथेके चूर्णमें चौथाई सुहागा मिलाकर करंजुएके तैलसे एक दिवस पर्य्यन्त भावना देवे फिर दूसरे दिन अन्धमूषामें रख कोयलोंकी अग्निमें धोंके तो बीरबहूटीके समान लाल सत्व निकलता है ॥ ११८ ॥ ११९ ॥

तथा च।

निम्बुद्रवालपटंकाभ्यां मूषामध्ये निरुध्य च ॥ ताम्ररूपं परिध्मातं सत्त्वं मुंचति सस्यकम् ॥ १२० ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–नीलेथोथेमें कुछ सुहागा डाल नींबूके रससे घोट मूषामें रख कपरोटी कराय कोयलोंकी आंचमें धोंके तो तांबेके समान सत्व निकलेगा ॥ १२० ॥

तथा च।

शुद्धं सस्यं शिखिक्रान्तं पूर्वभेषजसंयुतम् ॥ नानाविधानयोगेन सत्त्वं मुंचति निश्चितम् ॥ १२१ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–नीलाथोथा एकभाग, शिखिक्रान्त एकभाग और चौथाई भाग सुहागा डालकर नीबूके रससे घोटे फिर मूषामें रखकर कोयलोंकी आंचमें रख धोंके तो निश्चय सत्व निकलता है ॥ १२१ ॥

सस्यकसत्त्वकी अंगूठीकी विधि।

सत्त्वमेतत्समादाय खरभूनागसत्त्वयुक् ॥ तन्मुद्रिका कृतस्पर्शा शूलघ्नी तत्क्षणाद्भवेत् ॥ १२२ ॥ चराचरं विषं भूतडाकिनीदृग्गतं जयेत् ॥ मुद्रिकेयं विधातव्या दृष्टप्रत्ययकारिणी ॥ १२३ ॥ "रामवत्सुरसेनानी मुद्रितेपि तथाक्षरम् ॥ हिमालयोत्तरे पार्श्वे अश्वकर्णो महाद्रुमः ॥ १२४ ॥ तत्र शूलं समुत्पन्नं तत्रैव विलयं गतम् ॥" मंत्रेणानेन मुद्राम्भो निपीतं सप्तमंत्रितम् ॥ १२५ ॥ सद्यः शूलहरं प्रोक्तमिति भालुकिभाषितम् ॥ अनया मुद्रया तप्तं तैलमग्नौ सुनिश्चितम् ॥ १२६ ॥ लेपितं हन्ति वेगेन शूलं यत्र क्वचिद्भवेत् ॥ सद्यःसूतिकरं नार्य्याः सद्यो नेत्ररुजापहम् ॥ ॥ १२७ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–नीलेथोथेका सत्व और भूनाग (गिंडोआ) का सत्व इन दोनोंको समान भाग लेकर और गलाय कर अंगूठी बनवा लेवे उस अंगूठीके छूनेसेही नया शूल शीघ्रही नष्ट होजाता है स्थावर जंगम विष चढ गया हो तथा भूत और डाकिनी लगगई हो तो इस अंगूठीको दिखावे छुवावे और इससे जलको अभिमंत्रित कर पिलावे तो विष और भूतादि दूर होजाते हैं जिसका चमत्कार देखा हुआहै ऐसी इस अंगूठीको वैद्य अपने पास अवश्य रक्खे और "रामवत्" इत्यादि मंत्रको सात बार पढकर जलको मंत्रित कर पिलावे तो शीघ्रही शूल दूर होताहै ऐसा भालुकी नामके ऋषिने कहाहै और इस अंगूठीको तपाकर तिलोंके तेलमें गेर देवे उस तैलको जहां शूल हे वहीं लगावे तो शूल नष्ट होगा,जब स्त्रीके बालक उत्पन्न होनेका समय समीप आगया हो और प्रसवमें कष्ट हो तब इस तैलको उदर बस्ति तथा योनि द्वारपर चुपडे और अंगूठीको जलमें धोकर पिलावे तो शीघ्र बालक होगा और नेत्रोंमें पीडा हो तो जलसे आंखोंको धोवे और तैल चुपडे ॥ १२२–१२७ ॥

चपलकी उत्पत्ति।

त्रिंशत्पलमितं नागं भानुदुग्धेन मर्दितम् ॥ विमर्द्य पुटयेत्तावद्यावत्कर्षावशेषितम् ॥ ॥ १२८ ॥ न तत्पुटसहस्रेण क्षयमायाति सर्वथा ॥ चपलोयं समाख्यातो वार्तिकैर्नागसंभवः ॥ १२९॥ इत्थं हि चपलः कार्यो वङ्गस्यापि न संशयः ॥ द्वयोर्मिश्रितयोः पूर्वं चपलः किल वर्णितः ॥ १३० ॥ (रसमानस.)

अर्थ–तीस पल शुद्ध नाग (सीसा) को लेकर आकके दूधमें घोटे फिरी गजपुटमें रखकर फूँक देवे तसी प्रकार फूंकते फूंकते जब एक पलभर रह जाय तब उसको चाहे हजारोंही पुट क्यों न दो तो भी वह घटेगा नहीं इसी बचे हुए नागको शास्त्रकार चपल कहते हैं और यह चपल नागसम्भव कहाताहै, इसी प्रकार वङ्गका भी चपल हो सकताहै, नाग और बंग इन दोनोंको मिलाकर भी चपल बनाया जाता है ऐसा हम पहिले लिख चुके हैं ॥ १२८–१३० ॥

चपलकी व्युत्पत्ति।

वङ्गवद्द्रवते वह्नौ चपलस्तेन कीर्तितः॥ १३१॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–यह चपल अग्निपर रखनेसे रांगके समान पिघल जाताहै इस लिये वैद्य इसको चपल कहते हैं ॥ १३१ ॥

चपलके भेद और उत्तमता।

गौरः श्वेतोऽरुणः कृष्णश्चपलस्तु चतुर्विधः॥ हेमाभश्चैव ताराभो विशेषाद्रसबन्धनः ॥ शेषौ तु मध्यौ लक्षावच्छीघ्रद्रावौ तु निष्फलौ ॥ १३२ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–गोरा, सफेद, लाल और काला इसप्रकार चपल चार रंगका है उनमेंसे गोरा और सफेद चपल विशेषकर पारदका बंधक है, शेष दोनों लाखके समान शीघ्र गलनेवाले होतेहैं इसलिये निष्फल हैं ॥ १३२ ॥

चपलका गुण।

चपलो लेखनः स्निग्धो देहलोहकरो मतः॥

रसराजसहायः स्यात्तिक्तोष्ममधुरो मतः ॥ ॥ १३३ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-चपल कफ और मलका उखाडनेवाला है, चिकना है, देहको लोहेके समान करनेवाला है, कडुआ, गरम और मीठा तथा पारदकी सहायता करता है ॥ १३३ ॥

तथा च ।

चपलः स्फटिकच्छायः षडस्रो स्निग्धको गुरुः ॥ त्रिदोषघ्नोऽतिवृष्यश्च रसबन्धविधायकः ॥ १३४ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-चपल बिल्लोरी पत्थरके समान सफेद चिकना भारी त्रिदोषका नाशक बलकारी और रसका बंधक है ॥ १३४ ॥

चपलकी शुद्धि ।

जम्बीरकर्कोटकशृङ्गवेरैर्विभावनाभिश्चपलस्य शुद्धिः ॥ १३५ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-चपलकी जंभीरी, बांझककोडा और अदरखकी अनेक भांवना (या तीन ३ भावना) देनेसे शुद्धि होती है ॥ १३५ ॥

चपलके सत्वपातनकी विधि ।

शैलं तु चूर्णयित्वा तु धान्याम्लोपविषैर्विषैः ॥ पिण्डं बद्धा तु विधिवत्पातयेच्चपलं तथा ॥ १३६ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-चपलको विष (सींगिया) तथा उपविष इन दोनोंके काथसे घोट विष (वत्सनाग) और उपविष इन दोनोंका काथ और उसकी बराबर कांजी मिलावे उससे चपलको घोट कर गोला बनाय लेवे उस गोलेको मूषामें रख कोयलोंकी आंचमें फूंक देवे तो भस्म होगी उसीको सत्व कहतेहैं ॥ १३६ ॥

महारसोंमें चपलकी संख्या ।

महारसेषु कैश्चिद्धि चपलः परिकीर्तितः ॥ ॥ १३७ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-किसी २ वैद्यने चपलको महारसोंमें माना है ॥ १३७ ॥

खपरियाके भेद और उत्तमता ।

रसको द्विविधः प्रोक्तो दर्दुरः कारवेल्लकः । सदलो दर्दुरः प्रोक्तो निर्दलः कारवेल्लकः॥ सत्त्वपाते शुभः पूर्वो द्वितीयश्चौषधादिषु ॥ ॥ १३८ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-खपरिया दो प्रकारका होताहै एक दर्दुर और दूसरा कारवेल्लक, जो दलदार होताहै उसे दर्दुर कहतेहैं और जो दलदार नहीं होता उसको कारवेल्लक कहतेहैं सत्व पातनमें दर्दुर और औषधादिकोंमें कारवेल्लक उत्तम होता है ॥ १३८ ॥

खपरियाके गुण ।

रसकःसर्वमेहघ्नःकफवातविनाशनःनेत्ररोगक्षयघ्नश्च लोहपारदरंजनः ॥ १३९ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-खपरिया समस्त प्रमेह, कफ और पित्तके रोगोंको नाश करताहै, नेत्ररोग और क्षयका नाशक लोह और पारदका रंगनेवाला है ॥ १३९ ॥

रस और रसककी उत्तमता ।

नागार्जुनेन संदिष्टौ रसश्च रसकोवुभौ ॥ श्रेष्ठौ सिद्धरसौ ख्यातौ देहलोहकरौ परम् ॥ १४० ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-श्रीनागार्जुनसे उपदेश किये हुए रस और रसक ये दोनोंही उत्तम देहको लोहेके समान करनेवाले सिद्ध रस हैं ॥ १४० ॥

अग्निस्थायी रस और रसकी उत्तमता ।

रसश्च रसकश्चोभौ येनाग्निसहनौ कृतौ ॥ देहलोहमयी सिद्धिर्दासी तस्य न संशयः ॥ १४१ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-जिस मनुष्यने रस और रसकको अग्निस्थायी कियाहै उसकी देहको लोहके समान बनानेवाली सिद्धि उसकी दासी होजाती है इसमें सन्देह नहीं है ॥ १४१ ॥

कपरियाकी शुद्धि ।

कटुकालांबुनिर्यासे आलोड्य रसकं पचेत् ॥ शुद्धं दोषविनिर्मुक्तं पीतवर्णं च जायते ॥ १४२ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-रसखपरियाको कडवी तोंबीके रसमें घोलकर पकावे तो सब दोषोंसे रहित होकर खपरिया पीले रंगका शुद्ध होताहै ॥ १४२ ॥

तथा च ।

खर्परः परिसंतप्तः सप्तवारं निमज्जितः ॥ बीजपूररसस्यान्तर्निर्मलत्वं समश्नुते॥१४३॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-रसखपरियाको तपा २ कर बिजोरेके रसमें बुझावे इस प्रकार सातबार बुझानेसे खपरिया शुद्ध होताहै१४३॥

तथा च ।

नृमूत्रे वाऽश्वमूत्रे वा तक्रे वा कांजिकेऽथवा॥ प्रताप्य मज्जितं सम्यक् खर्परं परिशुध्यति ॥ १४४ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-मनुष्यके मूत्रमें, वा घोडेके मूत्रमें, मट्ठामें अथवा कांजीमें खपरियाको तपा २ कर बुझावे तो निश्चयही खपरिया शुद्ध होगा ॥ १४४ ॥

तथा च ।

नरमूत्रे स्थितो मासं रसको रंजयेद्ध्रुवम् ॥ शुद्धं ताम्रं रसं तारं शुद्धवर्णप्रभं यथा ॥ ॥ १४५ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-खपरियाको एकमास तक मनुष्यके मूत्रमें रक्खे तो शुद्ध तांबेको, पारदको और चांदीको सुवर्णके समान रंग देताहै ॥ १४५ ॥

रसखपरियाके सत्वपातनकी विधि।

हरिद्रात्रिफलारालासिन्धुधूमैः सटंकणैः। सारुष्करैश्च पादांशैः साम्लैः संमर्द्य खर्परम् ॥ १४६ ॥ लिप्तं वृन्ताकमूषायां शोषयित्वा निरुध्य च। मूषामुखोपरि न्यस्य खर्परं प्रधमेत्ततः॥१४७॥खर्परे प्रहते ज्वाला भवेन्नीला सिता यदि। तदा संदंशतो मूषां धृत्वा कृत्वा त्वधोमुखीम्॥१४८॥शनैरास्फालयेद्भूमौ यथा नालं न भज्यते। बंगाभं पतितं सत्त्वं समादाय नियोजयेत्॥ एवं त्रिचतुरैर्वारैः सर्वसत्त्वं विनिःसरेत्॥ ॥ १४९ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–हलदी, त्रिफला, राल, सैंधव, धूवां, सुहागा और भिलावा इन सबको खपरियासे चौथाई भाग लेकर नीबूके रसमें डाल घोट लेवे वृन्ताक मूषामें लेपकर सुखालेवे उसके मुखपर खिपरा रख उसमें कोयले जलावे फिर जब खिपरा उठाकर देखे कि ज्वाला नीली या सफेद निकले तब चिमटेसे मूषाको निकाल नीचा मुख कर धीरेसे ठोंक देवे कि जिसप्रकार उसकी नाली टूटने न पावे तो उसमेंसे जो रांगके समान निकले उसे खपरियाका सत्व कहतेहैं उसको लेकर समस्त कामोंमें लावे इसप्रकार तीन चार बारमें ही सब सत्व निकल आवेगा ॥ १४६–१४९ ॥

तथा च।

साभयाजतुभूनागनिशाधूमजटंकणम्। मूकमूषागतं ध्मातं शुद्धं सत्त्वं विमुंचति ॥ ॥ १५० ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–हर्र, लाख, गिंडोआ, हलदी, धूवां और सुहागा इनको चौथाई भाग लेकर और उसमें खपरिया डाल नीबूके रससे घोट मूषामें रख कोयलोंमें धोंके तो सत्व निकलेगा ॥ १५० ॥

तथा च।

लाक्षागुडासुरीपथ्याहरिद्रासर्जटंकणैः। सम्यक् संचूर्ण्य तत्पक्वं गोदुग्धेन घृतेन च॥ ॥ १५१ ॥ वृन्ताकमूषिकामध्ये निरुध्य गुटिकाकृतिम्। कृत्वा ध्मात्वा समाकृष्य ढालयित्वा शिलातले। सत्त्वं वंगाकृति ग्राह्यं रसकस्य मनोहरम् ॥ १५२ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–लाख, गुड, राई, हर्र, हलदी, राल और सुहागा इनके चूर्णसे चौगुना खपरियाका चूरा लेकर गायका घृत तथा दूधमें पकाकर गोला बनाय मूषामें रखकर कोयलोंमें धोंककर नीलीज्वाला निकलने पर पत्थरकी पाटियापर डाल देवे तो वंगके समान सत्व निकलेगा वह खपरियेका उत्तम सत्व होगा ॥ १५१ ॥ १५२ ॥

तथा च।

यद्वा जलयुतां स्थालीं निखनेत्कोष्ठिकोदरे। सच्छिद्रं तन्मुखे मल्लं तन्मुखेऽधोमुखीं क्षिपेत्॥ ॥ १५३ ॥ मूषोपरि शिखित्राश्च प्रक्षिप्य प्रधमेद्दृढम्। पतितं स्थालिकानीरे सत्त्वमादाय योजयेत्॥१५४॥(रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–अनुमान दस अंगुल चौडी और बीस अंगुल ऊंची मिट्टी या लोहेकी नाल बनावे उसके नीचे एक जलका पात्र रखदेवे और उस नालके ऊपर छेदवाला सकोरा रखदेवे और उसपर मूषाको उलटी रखकर ऊपर कोयले रख धोंकनीसे धोंके तो जलके पात्रमें गिरे हुए सत्वको निकाल लेवे ॥ १५३ ॥ १५४ ॥

खर्परसत्वके भस्मकी विधि।

तत्सत्त्वं तालकोपेतं प्रक्षिप्य खलु खर्परे। मर्दयेल्लोहदण्डेन भस्मीभवति निश्चितम् ॥ ॥ १५५ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–उसके सत्वमें चतुर्थांश हरताल मिलाकर खिपरेमें रख लोहेकी कडछीसे घोटे तो खपरियाका सत्व भस्म होगा ॥ १५५ ॥

रसखपरियाके अनुपान।

तद्भस्ममृतकान्तेन समेन सह योजयेत्। अष्टगुंजामितं चूर्णं त्रिफला क्वाथसंयुतम् ॥ ॥ १५६ ॥ कान्तपात्रस्थितं रात्रौ तिलजप्रतिवापितम्। निषेवितं निहन्त्याशु मधुमेहमपि ध्रुवम् ॥ १५७ ॥ पित्तं क्षयं च पांडुं च श्वयथुं गुल्ममेव च। रक्तगुल्मं च नारीणां प्रदरं सोमरोगकम्। योनिरोगानशेषांश्च कासं श्वासं च हिध्मकाम् ॥ १५८ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

इति अग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां सत्त्वरसादीनां वर्णनं नामाष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४८ ॥

अर्थ–ऊपर बनाये हुए सत्वके समान कान्तभस्मको लेकर लोहेके खरलमें घोटे उसमें नित्यप्रति आठ रत्ती सेवन करे ऊपरसे तिलके खरको पानीमें मिलाय लोहेके पात्रमें भर रात्रिभर ढांककर रखदेवे वह जल तथा त्रिफलाका काथ इन दोनोंको मिलाकर पीवे तो मधुमेहकोभी नाश कर देताहै, पित्तके रोग,क्षय, पांडु, सूजन, वायुगोला, रक्तगुल्म, स्त्रियोंका प्रदर, सोमरोग, योनिरोग, कास, श्वास और रजःशूलको[1] नाश करताहै॥१५६–१५८॥

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया भाषाटीकायां सत्त्वरसादीनां वर्णनं नामाष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४८ ॥

१–रजःशूलम् इति पाठः।

अभ्रसत्त्वाध्यायः ४९.

"यहां-पहलेघानकी कापीसे लेकरचौथे घानकी कापीका इस आगे छपा पाठतककी कापी नहीं मिलनेके कारण नहीं छपसकी।"

इस बार अभ्रक ऐसा जिकड गयाथा जो बगैर टूटे न निकल सका, कटोरा भी कुछ टेढा मेढा हो गया था और कहीं पिघल भी गया था, निकालने पर कटोरा कोयलों और काचकेसे खंगरोंसे भरा निकला, कुछ खंगर भट्टीके नीचे भी पडे थे, कटोरेमें १७ तोले खंगर मिले जिनमेंसे सत्त्वके दानोंको बीना १॥ माशे निकले जिन्हें चुंबक पकडताथा, और १ तो० दाने ऐसे निकले जिन्हें चुंबक न पकडता था, भट्टीके नीचेके खंगर २ तोले ८ मा० थे और भट्टी पर लगे खंगर ७॥ तोले हुये, १ तोले दानोंको जिन्हें चुंबक न पकडता था और कटोरे और भट्टीके कुल ऊपर नीचेके खंगरोंको पृथक् पृथक् लोहेके खरलमें बारीक पीस चुंबक द्वारा सत्त्व पृथक् किया तौ १ तोले दानोंमेंसे १ मा० ४ र०, कटोरेके १७ तोले, खंगरोंमेंसे ४ माशे, भट्टीके नीचे पडे मिले २ तोले ८ माशे, खंगरोंमेंसे ५ रत्ती, और भट्टीके ऊपर लगे ७॥ तोले, खंगरोंमेंसे भी ७ रत्ती सत्त्व निकला। अर्थात् कुल ४ छटाक दवामेंसे ८॥ माशे सत्त्व निकला।

सम्मति-इसबार आवश्यकतासे अधिक अग्नि लग गई अर्थात् कोयला कईबारमें बहुत दे दिया गया और ज्याद: देर तक धोंकना जारी रक्खा आगेसे इतने कोयले और इतने समयकी आवश्यकता नहीं।

जाली पिघल जानेका कारण यद्यपि तीव्राग्नि कहा जा सक्ताहै किन्तु दूसरा मुख्य कारण यह भी हुआ कि अग्निकी ज्वाला चिमनीकी रोकसे ऊपरको कम गई और नीचेकी तरफ भट्टी खुली रहनेसे नीचेकी तरफ ज्वाला बहुत निकली, जिससे जालीपर ज्वालाका प्रभाव अधिक पडकर जाली पिघल गई, आगेसे भट्टी नीचेसे बिलकुल बंद रक्खी जावे अर्थात् सत्त्वका ग्रहण करनेवाला पात्र पृथ्वी खोदकर स्थित किया जावे और उसपर जाली रक्खी जावे और जालीके ऊपर लोहेके घेरेमें भरी मिट्टीसे बनी भट्टीमें रख दी जावे, और भट्टी २ फुट ऊंची हो।

सम्मति-आगेसे कोयलोंकी तोल हो, समय घडीसे देखा जावे. भट्टी पहले गर्म करली जावे।

नकशा-अभ्रसत्त्वके पांचवें घानका।

नं० घान	तोलदवा जितनी रक्खीगई.	तोलदवा गलीहुई जितनी निकली.	तोलसत्त्व.
नं० ५	नं० २ की २॥छ० नं० ३ की १॥छ० ४छ०		सत्त्वके दाने १॥माशे
		कटोरेके दाने १तोला	सत्त्वचूर्ण १मा. ४र.
		कटोरेके खंगर १७तोले	सत्त्वचूर्ण ४माशे
		भट्टीके नीचेके खंगर २तोले ८मासे	सत्त्वचूर्ण ५रत्ती
		भट्टीके ऊपर लगे खंगर ७॥ तोले	सत्त्वचूर्ण ७रत्ती
		मीजान छ० तो० मा० ४ १ ३॥	मीजान ८मा. ४रत्ती

अभ्रसत्त्वके पहले घानकी टिकियोंको दूसरी आंच।

ता० १-८-८ को पहले घानकी निकली ४ छ० टिकियोंमेंसे (जो नं० २ की थी) २ छ० टिकियोंको खरियाकी घरियामें भर भिट्टीमें (जिसका नकशा आगेके पत्रपर दिया गया है) रखकर धोंकनियोंसे कडा धोंकना आरम्भ किया, पिसे सुहागे और सामरकी बुरकी देते गये, ½ घंटे बाद धोंकना बंदकर घरियाको निकाल उलटा किया तो घरिया पेंदेमें टूटगई थी जिससे कुछ दवा पिघल कर नीचे भट्टीमें गिर जानेकी शंका हुई, घरियाके उलटा करनेसे कुछ कोयलोंमें मिले हुये रवे मिले जो १ रत्ती थे चुंबक इनको न पकडताथा, कुछ दवाकी राख घरियाहीमें जमी रह गई उसको निकाल तोला तौ ३ माशे हुई, भट्टीके नीचे तैकर गिरे काचकेसे खंगरोंको जो तोलमें ५ तोले ५ माशे थे इस शंकासे कि यह दवा घरियाके पेंदेमें होकर निकल गई होगी, लोहेके खरलमें पीस चुंबकसे सत्त्व निकालना चाहा तौ कुछ न निकला।

सम्मति-सत्त्वपातनके लिये खरियाकी घरिया काम नहीं दे सक्ती कठिन घरिया बनानी चाहिये।

अभ्रसत्त्वपातन-छठा घान भट्टी नं० ३.



ता० ३०-७-७-को उक्त नं० ३ की अवशेष २ सेर १॥ छ० टिकियोंको खरियाकी घरियामें (जिसको पेंदेमें एक छिद्र कर लिया गया था) भर उस घरियाको भट्टीमें जो पृथ्वीके अन्दर खोदकर बनाई गई थी और जिसका आकार ऊपर दियाहै जिसमें चिकनी मिट्टीकी बनी छोटीसी चलनी (जिसमें उंगली समान मोटे ४-५ छिद्र कर लियेथे) लगाई गई थी और बंकनाल चलनीके नीचे लगाई गई थी इस प्रकार रक्खा कि प्रथम चलनी पर कोयले भर लिये कोयलों पर उस दवा युक्त घरियाको रख चारों ओरसे कोयले लगा दिये ऊपर मिट्टीका ढकन ढक दिया और भट्टीके नीचे सत्त्व गिरनेके लिये लोहेका कलछा रख भट्टीके नीचेके द्वारको मिट्टीसे बंदकर दिया गया, ताकि धोंकनियोंकी हवा बाहरको न निकल कर घरियाके पेंदेसे लगे, बादको दो मजबूत धोंकनियोंसे धोंकना आरम्भ किया, ¾ घंटे बाद धोंकना बंद कर नीचेके पात्रको निकाला तौ उसमें पिघल कर दवाकी दो चार बूंदें टपकी थीं जो जमकर चमकदार काचकी शकलको होगई थीं और तोलमें ८ माशे थीं ओर दस पांच दाने भी जो तालेमें २ रत्ती थे निकले जिनको चुंबक न पकडता था, ऊपरके

ढक्कनको उठाया तो आंचकी तेजीसे अन्दरकी तरफ उसकी मिट्टी पिघल कर काच रूप होगई थी, घरियाको निकाला तो उसमें कोयलोंमें मिले हुए १ माशे २ रत्ती दाने निकले इनको भी चुंबक न पकडता था, ३॥ माशे दवाकी राख निकली और घरियाकी तलीमें जमी हुई २॥ माशे राख निकली, ५ माशे खंगर चलनी पर जमा मिला, सब खंगरोंको और राखको अलग २ पीस छान चुंबकसे सत्व पृथक् किया तो नीचेकी कलछीके ८ माशे खंगरोंमेंसे २ रत्ती, कलछीके २ रत्ती, दोनोंमेंसे १ रत्ती, घरियाके ऊपरकी ३॥ माशे राखमेंसे ५ रत्ती, घरियाकी तलीकी २॥ माशे, राखमेंसे भी ५ रत्ती सत्त्व निकला अर्थात् १ माशे २ रत्ती सत्त्वके दाने और १ माशे ४ रत्ती सत्त्व चूर्ण मिलाकर २ माशे ७ रत्ती सत्व निकला, चलनीपर लगे ५ माशे खंगरोंमेंसे बिलकुल न निकला ।

सम्मति–छेददार घरियासे कोई लाभ नहीं छेदसे नीचे सत्व कम टपका और घरियामें आधा बैठा ।

अभ्रसत्त्वपातन, सातवाँ घान ।

ता० २।८।८ को उक्त नं. ३ की अवशेष १ सेर १५॥ छ० टिकियोंमेंसे ३ छ० टिकियोंको अंगरेजी घरियामें (जो नं. २ की थी और ॥।) को आई थी) भर उसी भट्टीमें जिसका आकार कुछ बडा कर लिया गया था रख १० बजकर १० मिनटपर दो मजबूत धोंकनियोंसे कडा धोंकना आरम्भ किया, ११ बजकर १० मिनट पर यानी १ घंटे बाद धोंकना बंदकर घरियाको लोहेकी परातमें उलटा तो टिकिया निजरूपमें जलकर राख होगई थी किन्तु पिघली न थी ३/४ टिकियोंका घरियाके हिलाने झुलानेसे और परातमें गिरनेसे चूर्ण हो गया था उसमें दाने मिले हुयेथे, बडे बडे दानोंको बीन बाकी राखमें पानी डाल कोयलोंको नितार सब दानोंको निकाला तो कुल ६ माशे २ रत्ती दाने निकले जिनमें ४ माशे ५ रत्तीको चुंबक पकडता था और १ माशे ५ रत्तीको न पकडता था,बाकी राखमेंसे जो तोलमें १ तोले १ माशे ६ रत्ती थी-चुंबक द्वारा सत्त्व पृथक् किया तो ७ माशे २ रत्ती चूर्ण निकला अर्थात् कुल १ तोले ५ रत्ती सत्त्व निकला, ६ माशे राख रह गई किन्तु इस चूरेमें परातकी काई खाई हुई बकुलीका लोहा मिल जानेकी शंका है ।

उक्त जली हुई टिकियोंमेंसे जो तोलमें ३ तोले थी दो टिकियोंको पीस चुंबक द्वारा सत्व पृथक् करना चाहा तो कुछ न निकला ।

(१) सम्मति--अबकी बार आंच १ घंटे दीगई इससे पहले आध आध घंटेकी आचोंके नतीजेसे अबकी बार नतीजा अच्छा रहा, सत्व भी अधिक निकला और टिकियोंमें सत्व रहा भी नहीं, आगेसे १ घंटेसे कम आंच न दी जावे ।

(२) सम्मति--अँगरेजी बनी घरियाने अग्निको भली प्रकार सहन किया किन्तु इसमें एक शंका अवश्य हुई कि कदाचित् कोई धातु घरियामें तो नहीं पडाहै कि जिसका अंश सत्वमें मिल जाता हो ।

अभ्रसत्त्वपातन, आठवाँ घान ।

ता० २।८।८ को उक्त नं.३ की अवशेष १ सेर १२॥ छ० टिकियोंमेंसे ३ छ० टिकियोंको उसी अँगरेजी घरियामें भर उसी प्रकार दो धोंकनियोंसे ४॥ बजेसे धोंकना आरम्भ किया, ३/४ घंटे बाद धोंकना बंदकर घरियाको उलटा तो टिकियां निज रूपमें जली हुई निकलीं, टूटी टिकियोंकी राखमें दो चार मोटे मोटे रवे और कुछ मामूली रवे निकले, दोनों रवे तोलमें ३ माशे ३ रत्ती हुए, जिनमें १ माशे २ रत्तीको चुंबक पकडता था और २ मा० १ र०को न पकडता था, राखको पानीमें धो (पानीसे धोनेसे कोयलोंकी हलकी राख नितर जातीहै और भारी राख तलीमें रह जातीहै) चुंबक द्वारा सत्व पृथक् किया तो १ माशे ३ रत्ती सत्त्व चूर्ण निकला और ५ रत्ती राख रह गई, कुल सत्त्व २ माशे ५ रत्ती निकला, जली हुई टिकियोंमेंसे जो तोलमें ५ तोले थी दो टिकियोंको पीस चुंबक द्वारा सत्त्व निकालना चाहा तो उसमेंसे भी अधिक राखको चुंबक पकडने लगा ।

ता०१७ को उक्त जली हुई ५ तोले टिकियोंमेंसे १ तोले टिकियोंको पीस चुंबकसे सत्त्व निकालना चाहा तो चुंबक पृथकीकरणमें समर्थ न हुआ, किन्तु जब उस राखको पानीसे धो सुखा शेष रही २ तोले,राखमें चुंबक लगाया तो प्रायः सभी राखको चुंबक खींचने लगा इसलिये इसको ही रख लिया, इससे सिद्ध हुआ कि जब सत्त्व इतर पदार्थोंमें मिला होताहै तो चुंबक उसे पूरा तौर पर नहीं खींच सक्ता और जब धुलकर अधिकांश अन्य पदार्थ उसमेंसे निकल जाताहै और करीब २ सार भाग ही रह जाताहै तो चुंबक उसी भांति खींच सक्ताहै ।

सम्मति--अबकी बार इस शंकासे कि अधिक समय तक अग्नि देनेसे अधिकांश सत्त्व जल न जाताहो, १ घंटेकी जगह केवल ३/४ घंटे आंच दी गई किन्तु सिद्ध हुआ कि ३/४ घंटेकी आंच सत्व पृथक् करनेको समर्थ नहींहै. १ घंटे ही अग्नि देनी चाहिये ।

अभ्रसत्त्वपातन, नवाँ घान।

ता० २–८–८को उक्त नं० ३ की अवशेष १ सेर ९॥ छटांक टिकियोंमेंसे ३ छटांक टिकियोंको अंगरेजी घरियामें जो खूब सुर्ख होरही थी भर उसी प्रकार दो धोंकनियोंसे कडा धोंकना आरम्भ किया, १५ मिनट बाद ख्याल किया तौ घरियामें ऊपरकी टिकियोंपर रवे दीख पडे, अत एव धोंकना बंद कर टिकियोंको निकाला तौ ऊपरहीकी टिकियोंपर दाने थे नीचेकी पर न थे, ऊपरवाली टिकियों के दानोंको पृथक् कर तोला तौ १॥ माशे हुये जिनको चुंबक पकडता था, टूटी टिकियोंकी राख जो तोलमें २ माशे थी उसमेंसे सत्त्वको पृथक् किया तौ आधी अर्थात् १ माशे राख ऐसी निकली जिसको चुंबक पकडता था और १ माशेको न पकडता था, कुल सत्त्व २ माशे ४ रत्ती निकला, टिकियाँ जो तोलमें ६ तोले थीं उनमेंसे टिकियोंको पीस चुंबक लगाया तो थोडी २ राखको चुंबक पकडता था किन्तु पृथक् करनेको समर्थ न होता-था अत एव–

ता० १७ को उक्त बची हुई ५ तोले टिकियोंको पीस रस राखको पानीमें धो सुखा चुंबकद्वारा सत्व पृथक् करना चाहा तौ प्रायः सभी उस अवशेष १ तोले ५ माशे

राखको चुंबक पकडने लगा, इसलिये सबही रखलिया गया।

सम्मति-इसबार केवल अनुभवके लियेही टिकियोंपर दाने दीखने पर घरियाको निकाल लिया जिससे अनुमान हुआ कि ऊपरकी टिकियों पर अग्निका प्रभाव पहले पडताहै और नीचेकी टिकियों पर पीछे और यह भी सिद्ध हुआ कि टिकियां साबूत ही रहकर ज्वार बाजरे समान कण रूपमें सत्त्वको छोडती हैं जो पहले उनके बाहर निकलकर कण रूपमें दीख पडता है और फिर वह बहकर अधिक शुद्ध होता हुआ नीचेको जाता है।

अभ्रसत्त्वपातन दशवाँ घान।

ता० २ । ९ । ८ को उक्त नं० ३ की अवशेष १ सेर ६॥ छ० टिकियोंमेंसे ३ छटांक टिकियोंको अंगरेजी घरियामें (जो खूब गर्म हो रही थी) रख उसी प्रकार दो धोंकनियोंसे बहुत कडा धोंकना आरम्भ किया (.इसबार बहुतसे कोयले डाल इस भट्टीके निकले सब घानोंसे कडा ताव दिया) पौन घंटे बाद घरिया को निकाल दवाको लोहेकी परातमें ४ जगह अलग २ गिराया (ये बात जाननेके लिये कि घरियाके किस हिस्सेकी दवामें दाने अधिक पडे) तौ जो दवा पहली बार गिरी थी उसमेंसे दानोंको बीना तौ ४ रत्ती हुये जिनको चुंबक पकडता था, टिकियोंकी राख ८ माशे ५ रत्ती थी, दूसरी जगह गिरी टिकियोंमेंसे ९ माशे ४ रत्ती दाने निकले जिनमें १ माशेको चुंबक पकडता था, टिकियोंकी राख ८ माशे हुई, तीसरी जगह गिरी टिकियोंकी राखको धो दानोंको निकाला तौ २ माशे दाने निकले, जिनमें १ मा० ६ र० को चुंबक पकडता था, टिकियोंकी धुली राख ४ रत्ती हुई साबित जली टिकियाँ ३॥ तोले रह गई उनमेंसे दो टिकियोंको पीस चुंबक द्वारा सत्त्व पृथक् किया तौ ५॥ माशे राखमेंसे २ माशेको चुंबक पकडता था, ३॥ मा० को न पकडता था, चौथी जगह गिरे थोडेसे टिकियोंके चूरे और दानोंमेंसे दानोंको पृथक् किया तौ २ मा० ३ रत्ती दाने निकले जिनमेंसे १ मा० को चुंबक पकडता था और १ मा० ३ र० को न पकडता था टिकियों का चूरा १ माशे ४ रत्ती निकला, इस तरह इस घानमें चुंबकसे न पकडे जानेवाले २ माशे १ रत्ती दानोंको छोड ४ माशे २ रत्ती सत्त्वके दाने और २ माशे टिकियोंका चूर्ण मिलाकर कुल ६ माशे २ रत्ती सत्त्व निकला।

ता० १७ को उक्त ३॥ तोले टिकियोंको पीस धो सुखा दिया जो १ तोले रही इसमें चुंबक लगाया तौ प्रायः सभी राखको चुंबक पकडने लगा अत एव उस सबकोही रख लिया।

सम्मति-अबकी बार ये भलीभांति सिद्ध होगया कि गरमागरम घरियामें टिकिया भरे जाने परभी पौन घंटेकी आंच कम है एक घंटेकी ही होनी चाहिये, और ठंडी घरियामें इससे भी कुछ अधिक।

ता० १४ को उक्त सातवें आठवें दसवें घानोंके चुंबकसे न पकडे जानेवाले ५ माशे ५ रत्ती दानोंको और १० वें घानके घरियाकी तलीमें निकले जिनमें घरियाका अंश मिल जानेकी शंका थी १ माशे ३ र० दानोंको और १० वें घानकी टिकियोंके १ माशे ४ रत्ती चूरेको सबको पृथक् २ पीस चुंबकद्वारा सत्त्व निकाला तौ ५ माशे ५ रत्ती दानोंमेंसे १ माशे ५ रत्ती, १ मा० ३ र० दानोंमें से १ रत्ती १, १ माशे ४ र० चूरेमें से ५ रत्ती सत्त्व निकला, सब सत्त्व २ मा० ३ रत्ती निकला।

उक्त ७-८-९-१० नं० के चार घान निकल चुकने पर अगरेजी घरियाको साफ किया तौ उसमेंसे दाने १ माशे २ रत्ती निकले जिनमेंसे २ रत्तीको चुंबक पकडता था, खंगरसा २ मा० २ रत्ती निकला जिसमेंसे पीसने पर २ रत्ती सत्त्व निकला, चूर्ण ७ माशे १ रत्ती निकला जिसमेंसे ४ रत्ती सत्त्व निकला, इसभांति घरियासे सब सत्व १ माशे निकला।

सम्मति-घरियामें न मालूम क्या मसाला पडाहै जो धातु रूप दीखताहै और जिसके सत्वमें मिलजानेकी शंका होती है।

भट्ठी नं० ३ के निकले ६ से १० नं० तकके ५ घानोंका नकशा।

नं० घान	तोल टिकिया जो रक्खी गई.	घरियाका लक्षण.	अग्निका समय	सत्त्वके दाने	सत्त्वका चूर्ण	जोड	तोल टिकिया जो निकली	टिकियोंकी धुली राख जिसको चुंबक पकडता है	चुंबकसे न पकडे जाने वाले दाने	विशेष वार्ता.
नं. ६	नं० ३ की २ छ०	खटियाकी	$\frac{1}{2}$ घंटे	माशे रत्ती १ ४	माशे रत्ती १ ४	माशे रत्ती २ ६	+	+	+	
नं. ७	(नं० ३) ३ छ०	अगरेजी	१ घंटे	४ ५	७ २ शंकित	११ ७	३। तोले	+	साशे रत्ती १ ५	इन ३ तो. टिकियोंको चुंबक न पकडता था इसलिये उन्हें फेंक दिया.
नं. ८	,, ३छ०	,,	$\frac{1}{2}$ घंटे	१ २	१ ३	२ ५	५ तोले	२ तो.	२ १	
नं. ९	,, ३छ०	,,	$\frac{1}{4}$ घंटे	१ ४	१ ०	२ ४	६ तोले	१तो५॥मा	+	
नं. १०	,, ३छ०	,,	$\frac{3}{4}$ घंटे	४ २	२ ०	६ २	३॥ तोले	१ तो.	२ १	इस घानको तीव्राग्नि दी गई.
७से१० तकके जोड	जोड १२ छ०	+	+	जोड माशे रत्ती ११ ५	जोड माशे रती ११ ५	जोड तो. मा. र. १ १० २	१७॥ तोले	४तो५॥मा	५ ७ इनमेंसे १मा ५र. सत्त्व निकसा	

अभ्रसत्त्वके लिये फायरक्लेकी घरिया नं. १

ता०५।८।८ को ऽ।। सेर खरिया मिट्टी ऽ। सेर फायरक्ले जली हुई, ऽ। सेर सेन्ड, ३ माशे नामा चारोंको मिला पानी डाल लोहेके हथोडेसे पत्थर पर कूटना आरम्भ किया, आज ५ घंटे कुटाई हुई, शामको पानीमें भिगो मिट्टीको रख दिया।

ता० ६ को ६ घंटे कुटाई हुई।

ता० ७ को ६ घंटे कुटाई हुई।

ता० ८ को ६ घंटे कुटाई हुई।

ता० ९ को करीब आधी मिट्टीको गिलास पर पाथ एक घरिया बना सीरकमें सुखानेको रख दी।

ता० ११ को देखा तो घरिया सूखी न थी किन्तु ४--५ जगहसे तिरक गई थी अतएव उसे तोड कर फिर बाकी बची मिट्टीमें मिला पानीमें भिगो दिया।

ता० १२ को पत्थर पर २ घंटे पीसा इसलिये कि उसका दरदरापन न रहे पीसनेसे दरदरा पन कम हुआ किन्तु बिलकुल न गया।

ता० १३ को २ घंटे कुटाई हुई।

ता० १४ को काठके सांचे पर दो घरिया पाथ सांचेसे उतार सीरकमें सुखानेको रखदी जो सूखती रहीं और फिर न फटी।

सम्मति–इन दोनों घरियोंमेंसे बडी घरियाको अग्निपर तपाया तो चटक कर उसके पेंदेका परत उचल गया जिससे निकाम हो गई, दूसरीने कुछ काम दिया किन्तु ½ घंटेकी आँचमें ये भी पिघल कर टेढी मेढी हो गई।

फायरक्लेकी घरिया नं. २

ता० १६।८।८ को ऽ।।। फायरक्लेको इमामदस्तेमें कूट कपडेमें छान पानीमें भिगो दिया।

ता० १७ को लोहेके हथोडेसे २ घंटे कुटाई की।

ता० १८ को २ घंटे कुटाई हुई।

ता० १९ को पानीमें भीगती रही।

ता० २० को २ घंटे कुटाई हुई मिट्टी दरदरी रही लोच बिलकुल न था, सांचे पर पाथ घरिया बनानी चाही तो न बनती थी खिली जाती थी अतएव उस फायरक्लेमें ऽ। पावभर खरिया मिट्टी और मिला भिगोदी।

ता० २१ को ६ घंटे कुटाई की।

ता० २२ को सांचे पर पाथ दो घरिया बना सांचेसे उतार सीरकमें सुखानेको रख दी जो सूखती रही और फिर न तिरकी।

सम्मति–ता० ८।९ को उक्त दोनों घरियोंको भट्टीमें रख अग्निपर तपाया तो चटकगई, इनमें नामा वासन आदि कोई वस्तु अवश्य पडनी चाहिये थी।

अभ्रसत्त्वपातन ग्यारहवाँ वान।

ता० ८।९।८ को उक्त नं. ३ की अवशेष १ सेर ३।।छ० टिकियोंमेंसे २ छ० टिकियोंका उक्त नं. १ की छोटीघरियामें रख उपरोक्त भट्टीमें ९।।। बजेसे दो धोंकनियोंसे धोंकना आरम्भ किया, ½ घंटे बाद कोयले डालनेके लिये चिमटेसे घरियाको उठाया तो टूट गई अत एव धोंकना बंद करदिया और घरियाको उसीमें रक्खी छोड दिया, ४ घंटे बाद ठंढा होजाने पर घरियाको निकाला तो घरिया पिघल कर टेढी मेढी हो गई थी टिकियां निजरूपमें जलकर राख होगई थीं, घरियाको उलटा तो कुछ दाने टिकियों पर लगे मिले कुछ टिकियोंसे पृथक् चूरेमें मिले निकले साबित टिकियोंको पृथक् कर बाकी राख मिश्रित दोनोंको धो सुखा दिया।

ता० ९ को राखसे दोनोंको पृथक् किया तो कुल ३ माशे ६ रत्ती दाने निकले जिनमें २ मा० १ र. को चुंबक पकडता था, ३।। माशे धुली राख निकली जिसको चुंबक पकडता था, जली, टिकियां ३ तोले २ माशे रहीं।

ता० ११ को उक्त १ माशे ५ रत्ती चुंबकसे न पकडे जानेवाले दानोंको पीस चुंबक द्वारा सत्त्व निकाला तो ३ रत्ती निकला ६ रत्ती चूर्ण रहगया, ४ रत्ती छीजगया, उक्त २ तो० २ माशे टिकियोंको पीस चुंबक द्वारा सत्त्व पृथक् किया तो ७ रत्ती चूर्णसा निकला जिसे चुंबक पकडता था, अर्थात् चुंबकसे पकडे जानेवाले दाने २ माशे, दानोंका सत्त्व ३ रत्ती, दोनोंके संगका धुला चूर्ण ३।। माशे, टिकियोंकी धुली राख ७ रत्ती निकली।

अभ्रसत्त्वके लिये वज्रमूषा, मसाले।

(१) पुगलानी पोखरकी कुम्हारकी काली मिट्टी पीस कूट चलनीमें छान ली।

(२) सफेद पत्थरके टुकडोंको जो बाँसी या वामौर जातिके थे कूट पीस कपरछान करलिया।

(३) धानोंकी २।। सेर भूसीको कडाहीमें भर ४ घंटे तीव्राग्नि दी तौ ९ छटांक श्वेत भस्म तय्यार हुई।

(४) लुहारकी भट्टीसे एकत्र किये लोह मैलको बीन, फटक, कूट, पीस, कपरछान कर लिया।

(५) आदमीके बालोंको पानीसे धो सुखा कैंचीसे कतर यव (जौ) समान कर लिया।

(६) अच्छे बारीक पुराने सनको गाठ गुडी बीन अंगुल अंगुल बराबर कतर इमाम दस्तेमें कूट जौ समान कर लिया।

(७) घोडेकी लीदको सुखा हाथोंसे मीड मोटी २ अलग कर बारीक रहने दी।

वज्रमूषा नं. १.

ता० ३ को उक्त पुगलानीकी मिट्टी २ छटांक, श्वेत पत्थरका चूर्ण २ छ०, तुष भस्म ४ छ०,लोह मल २ छ०, आदमीके बाल १ छ० (२ छ० लिखेथे किन्तु १ छ० डालनेसे ही मसालेमें बालही बाल दीखने लगे अत एव १ छ० ही डाले) पांचों चीजोंको मिला बकरीके कच्चे दूधमें साना (ऽ।।= दूध काफी न हुआ) तौ बालही बाल दीखते थे जिससे शंका हुई, दूध न होनेसे काम बंद रहा।

ता० ४ को ऽ।।= दूध बकरीका और ला थोडा २ डाल पत्थर पर लोहेके हथोडेसे कूटना आरम्भ किया, शाम तक ४ घंटे कुटाई हुई करीब ऽ।= दूध पडा, बाल कुछ मसालेमें मिलकर मसाला पिष्टीरूप होगया और शंका निवृत्त हुई।

ता० ५ को कलके बचे हुए ऽ। पावभर दूधका छींटा देदेकर २ घंटे पिसाई और २ घंटे कुटाई की।

ता० ६ को ऽ।। सेर बकरीके दूधका छींटा देदे ७ घंटे पिसाई कुटाई की, किन्तु बाल कुछ विशेष मसालेमें मिले

या बारीक हुए न दीख पडे, तब थोडी देर इमाम दस्तेमें कुटाई की।

ता० ७ को ११ बजे तक इमामदस्तेमें कुटाई की किन्तु बाल फिरभी बारीक न हुए लाचार ३ बजे दो घरिया बना सीरकमें सुखानेको रखदीं।

ता० ९ को देखा तौ घरिया फटी तिरकी न थी किन्तु फफूस गई थी सब १।। सेर दूध पक्षा १९ घंटे कुटाई हुई।

उक्त मूषाको अग्निपर तपाया तो थोडी देरतक लौंदेकर जलता रहा बादको उसके ऊपरसे पापडी उचल गई और एक ओरको फट गया, मिट्टी ऐसी फुसफुसी होगई जो जरा छूतेही झर जाती थी।

वज्रमूषा नं. २.

ता० १०।१०।८ को उक्त पुगलानीकी मिट्टी ६ छटांक, श्वेतपत्थरका चूर्ण २ छ०, तुषभस्म २ छ०, लोहमल १ छटाक, लीद १ छ०, सन १ छ०, छओं चीजोंको मिला पानी डाल सान गूंद रख दिया।

ता० ११ को इमामदस्तेमें २ घंटे कुटाई की।

ता० १२ को २ घंटे कुटाई हुई, कुछ लोच बढा।

ता० १३ को २ घंटे कुटाई हुई।

ता० १४ को दूधका छींटा देदेकर ४ घंटे कुटाई की लोच कुछ और बढा (किन्तु पूरा नहीं) बादको सांचे पर ३ घरिया पाथ सीरकमें सुखानेको रखदीं, सब कुटाई इमामदस्तेमें १० घंटे हुई, घरिया बहुत हलकी बनी।

उक्त घरियोंमेंसे एक घरियासे काम लिया तौ २० मिनटकी तेज आंचसे घरिया एक ओरको फटगई थी और गलकर टेढीमेढी होगई थी।

अभ्रसत्त्वके लिये घरिया।

ता० ८–९–८ को फायरक्लेकी उक्त नं० १ और २ की चटकी हुई ३ घरियोंको (जिनमें १ सेर फायरक्ले, ऽ।। सेर सेन्ड, ऽ।।। खरिया मिट्टी और ३ माशे नागपडा था) तोड पीस पानीमें भिगो दिया, ८–१० दिनतक भींगते रहनेके बाद १ तोले सन मिला पत्थरपर २–३ दिन कूट पीस साँचे पर ३ घरियां पाथ सीरकमें सुखानेको रख दीं।

उक्त घरियोंमेंसे एक घरियासे काम लिया तौ १५ मिनटकी तेज आँचसे घरिया पिघल कर नीचे भट्टीपर जा लगी।

अभ्रसत्त्वपातन बारहवाँ घान।

ता० ३० को उक्त नं० ३ की अवशेष १ सेर १।। छ० टिकियोंमेंसे ३ छटांक टिकियोंको उपरोक्त फायरक्लेकी घरियामें भर उक्त भट्टीमें रख भट्टीपर ढक्कन ढक ८ बजकर ३५ मिनटपर दो धोंकनियोंसे धोंकना आरम्भ किया, ८ बजकर ५० मिनटपर अर्थात् १५ मिनट बाद कोयले डालनेके लिये ढकनको उठाया तौ टिकियाँ जिनके ऊपर ज्वार बाजरेसे रवे दीखने लगे थे कोयलोंके ऊपर इकट्ठी दीखने लगी और घरिया गलकर नीचेको चली गई, अत एव धोंकना बंदकर करीब पौनघंटे तक और उसीतरह उस घरिया और दवाको भट्टीमें ही रक्खा रहने दिया, पौनघंट बाद टिकियोंको निकाला तौ सब टिकियाँ परस्पर मिली हुई निकल आईं, एक ओरको कुछ अंश पिघली हुई घरियाका भी लग आया, नीचेकी चलनीको निकाला तौ उसके मोटे मोटे छिद्रोंमें पिघली हुई घरियाका काच भर गया था, टिकियोंसे सत्त्व पृथक् किया तो कुल १ तो० १ मा० ४ र० सत्त्वके दाने निकले जिनमेंसे बडे २ माशे, छोटे ३।। माशे, कुल ५।। माशे गोल दानोंको चुंबक पकडता था और ४ माशे बडे खंगरसे और ४ माशे छोटे चूरेसे ८ माशे दानोंको चुंबक नहीं पकडता था, दोनों दानोंको पृथक् २ पीस चुंबक द्वारा सत्व पृथक् किया तौ खंगरसे ४ माशे दानोंमेंसे २।। माशे, छोटे ४ माशे दानोंमेंसे ३।। माशे सत्त्व और निकला, अर्थात् ५।। माशे दाने और ६ माशे सत्व चूर्ण मिलाकर ११।। माशे सत्व निकला और १ तो० ६ मा० टिकियोंकी धुली राख रही इसको भी चुंबक पकडता था।

सम्मति–आंच तीव्र लगनेसे और घरिया गल जानेसे अग्निका सीधा प्रभाव टिकियों पर पडनेसे शीघ्रही अर्थात् १५ मिनटमें सत्वके दाने ज्वारसे प्रगट होगये इसलिये बिना घरियाके टिकियोंको कोयलोंपर ही रख धोंकनेसे सत्व अच्छा निकलनेकी आशा है।

अभ्रसत्त्वपातन, तेरहवाँ घान।

ता० ३०।१०।८ को उक्त नं० ३ की अवशेष १४।। छ० टिकियोंमेंसे २।। छ० टिकियोंको वज्रमूषा नं० २ में (जिसको १०।१५ मिनट सेक लियाथा) भर भट्टीमें कोयलेभर घरिया रख ११ बजेसे दो धोंकनियोंसे धोंकना आरम्भ किया, २० मिनट बाद देखा तो घरिया एक ओरको फट गईथी और पिघल भी गई थी, टिकियों पर रवे दीखने लगेथे, धोंकना बंद कर घरियाको भट्टीमें ही रक्खा छोड दिया, २ बजे निकाला तो घरिया पिघल कर टेढीमेढी होगई थी, टिकिया निज रूपमें जली हुई सत्व सहित मौजूद थी, सत्वको पृथक् किया तो सब १ तो० १ माशे २ रत्ती दाने निकले, जिनमें ३ माशे ३ रत्ती बडे और ३ माशे २ रत्ती छोटे कुल ६ माशे ५ रत्तीको चुंबक पकडता था, और ६ मा० ५ र० खंगरसे दोनोंको चुंबक नहीं पकडताथा जिनको पीसकर सत्व निकाला तो २ माशे ५ रत्ती निकला, अर्थात् ६ मा० ५ रत्ती दाने और २ माशे ५ रत्ती सत्वचूर्ण मिलाकर ९ माशे २ रत्ती सत्व निकला, टिकियोंकी धुली राख जिसको चुंबक पकडता था, १ तोले ३ माशे निकली।

अभ्रसत्त्वपातन, चौदहवाँ घान।

ता० ३० को उक्त नं० ३ की अवशेष १२ छ० टिकियोंमेंसे ३ छ० टिकियोंको अँगरेजी घरियामें भर उक्त भट्टीमें ४। बजेसे दो धोंकनियोंसे धोंकना आरम्भ किया, ५। बजे यानी १ घंटे बाद धोंकना बंदकर दवाको निकाला तो टिकियाँ निज रूपमें जली हुई मौजूद थीं, किसी किसी टिकियापर कठिन पापडीसी थी सत्वका रवा कोई न था जिसका कारण ये समझ पडा कि आंच घंटे भर तो दीगई किन्तु ताव किसी समयमें न आया, ये ताव पंडित गौरीशंकरजीकी निगरानीमें जगनाने दिया, टिकियोंकी ऊपरकी पापडीको खुरचा तो ७ माशे १ रत्ती चूरा सा निकला जिस्में ४ माशे ५ रत्तीको चुंबक पकडता था, टिकियोंकी धुली राख जिसको चुंबक पकडता था ३ तोले रही।

सम्मति–इसवार निश्चय हुआ कि अग्निमंद लगनेसे १ घंटेमें भी टिकियोंने सत्वको न छोडा।

अभ्रसत्त्वपातन, पन्द्रहवाँ घान।

ता० ६।११।८ को उक्त नं० ३ की अवशेष ९ छ० टिकियोंमेंसे ४ छ० टिकियोंको भट्ठीमें ऊपरतक कोयले भर बिना घरियाके उन कोयलेंपर उन टिकियोंको रख ८ बजकर ५० मिनटपर दो धोंकनियोंसे धोंकना आरम्भ किया, २५ मिनट बाद धोंकना बंदकर पौन घंटे तक और उसी तरह उनको रक्खा छोड दिया, बादको कुछ ठंढा होने पर कोयलोंको निकाल देखा तो सब टिकियाँ पिघल कर नीचेको चली गई, २ बजे जालीपरसे कोयलोंको निकाला तो १॥ माशे दाने सफेद रंगकेसे कोयलोंमें मिले निकले जिनको चुंबक न पकडता था, १ माशे ३ रत्ती दाने चलनी पर पडे मिले उनको भी चुंबक न पकडता था, चलनीको तोड उसपर लगे काचवत् सत्वके गर्भमेंसे चुंबकसे पकडे जानेवाले १ रत्ती दाने और २ माशे चूर्ण निकला नीचे जो काचरूप पिघल कर टपका था उसे तोडा तो उसके गर्भमेंसे १ माशे ५ रत्ती दाने निकले जिनको चुंबक पकडता था और जो सब दानोंमें उत्तम और चमकदार थे और ७ रत्ती चुंबकसे पकडे जानेवाला चूरा निकला, २ माशे ४ रत्ती दाने भट्टीमें नीचे टूटी चलनीके चूरेमें मिले निकले जिनमेंसे ४ रत्तीको चुंबक पकडता था, अर्थात् कुल २ माशे २ रत्ती सत्वके दाने और २ मा० ७ रत्ती सत्व चूर्ण निकला, चलनीसे टपके हुए काचको पीस कर चुंबकसे पृथक् किया तो ४॥ माशे सत्व चूर्ण निकला जिसको चुंबक खूब अच्छी तरह पकडता था अब सब सत्वके २ मा० २ र० दाने और ७ माशे ६ रत्ती चूर्ण निकला।

अभ्रसत्त्वपातन, सोलहवाँ घान।

ता० ६।११।८ को उक्त नं० ३ की शेष बची ३ छ० टिकियोंको अँगरेजी घरियामें भर उक्त भट्टीमें १०॥ बजेसे दो धोंकनियोंसे धोंकना आरम्भ किया, ११॥ बजे अर्थात् १ घंटे बाद धोंकना बंद कर टिकियोंको निकाला तो दो चार टिकियों पर ही दानेथे जिनको पृथक् किया तो १ माशे ५ रत्ती निकले, इनको थोडा थोडा चुंबक पकडता था टिकियोंकी धुली राख २ तोले ५ माशे रही इसको भी थोडा २ चुंबक पकडता था।

सम्मति–समस्त सोलहों घानोंके अनुभवसे सिद्ध हुआ कि अत्यन्त तीव्र अग्निसे ही उत्तम सत्व निकलता है जो उज्ज्वल लोहेके रूपका सफेदी लिये होताहै, और इतनी तीव्राग्नि घरियामें नहीं लग सक्ती अतएव बिना घरियाके भट्ठीमें ही रख तीव्राग्निसे सत्व निकालो तौ भट्ठी बंकनाल, कोष्ठीही ठीक होतीहै।

अभ्रसत्वपातन सत्तरहवाँ घान।

ता० १६–१–९ को उक्त नं०१की ४ छ० टिकियोंको ऊपर तक कोयले भरी भट्ठीमें बिना घरियाके कोयलेंपर ही रख ऊपरले कोयलोंसे ढक १० बजकर ३५मिनट पर दो धोंकनियोंसे धोंकना आरम्भ किया, नीचे पात्र रख दिया गया, ११बजकर २५मिनट पर यानी करीब पौन घंटे बाद धोंकना बंद कर ज्योंका त्यों छोड दिया. २बजे नीचेके पात्रको निकाला तौ उसमें ४तोले काच सा टपका हुआ मिला, जिसमें काचकेसेही तार बनगये थे, ऊपरसे कोयलोंको निकाला तौ उनमें भी कुछ हलके खंगरसे और कुछ दाने निकले, जालीको निकाला तौ उस पर काचवत् पदार्थ जमा हुआ था, जालीके छिद्र बंद हो रहेथे, भट्ठीके खुरचनेसे भी काचवत् खंगर निकले नीचे टपके हुये ४ तोले काचवत् पदार्थको दला तौ उसमें कोई दाना न दीखता था किन्तु चुंबक लगाया तौ खस खससे भी बहुत छोटे नीली झलक युक्त २रत्ती दाने निकले जिनको चुंबक बडी तेजीसे पकडता था, उस काचवत् पदार्थको फिर बारीक पीस चुंबक लगाया तौ १मा० ६रत्ती सत्व चूर्ण और निकला, कोयलोंके साथ निकले खंगरोंमें ४तोले खंगर और ४माशे श्वेत रंगके दानेथे जिनमें २ रत्तीको चुंबक थोडा२ पकडता बाकी ३मा० ६र०को चुंबक न पकडता था उनको पीसा तो २रत्ती सत्व चूर्ण निकला, और खंगरोंमेंसे ५रत्ती सत्व चूर्ण निकला, जालीपर लगे काचवत् सत्वको पृथक् कर दला तौ बहुत सूक्ष्म दाने जिनको चुंबक पकडता था १रत्ती निकले, और पीसने पर १मा० ५र० सत्व चूर्ण निकला, भट्ठीके खंगरोंमेंसे केवल ४रत्ती सत्व चूर्ण निकला, अर्थात् सब ५रत्ती दाने और ४माशे ६रत्ती सत्व चूर्ण मिलाकर ५माशे ३रत्ती सत्व निकला।

(१) सम्मति–अबकी बार भट्ठीका ढक्कन टूट जानेसे भट्ठीका ताउ पूरा न आया और इस कारण सत्वके रवे बहुत थोडे और बहुत छोटे पडे, आगेसे भट्ठी और ढक्कन खूब सुखाकर आँचसे गर्म करलेने चाहिये और गर्मागर्म भट्ठीमें कोयले भर टिकियां रख ढक्कन ढक एकदम वेगसे धोंक तीव्राग्नि पैदा करनी चाहिये, तीव्राग्निसे $\frac{3}{2}$ घंटेमें उत्तम सत्व पातन हो सक्ताहै,धीमी अग्निसे घंटे भरमें भी कुछ लाभ नहीं होता।

(२)–सम्मति-अब ये निश्चय हो गया कि उत्तम सत्व वहीहै जो ठोसकणरूपमें पाया जावे और ये कण पिघले हुए काचवत् पदार्थके ही अंतर्गत मिलते हैं जिसका समर्थन "रसरत्नसमुच्चय"से भी होताहै,अत एव सिद्ध हुआ कि बंकनाल भट्ठीमें कोयलों पर रक्खी टिकियोंको इतनी तीव्राग्नि देनी चाहिये कि सब मसाला पिघल जालीसे नीचे निकल जावे, जितनी अग्नि तीव्र होगी उतनाही पदार्थ अधिक द्रव होकर गिरैगा, जितनी अधिक द्रवता पदार्थमें आवेगी उतनेही अधिक कण बनेंगे।

(३) सम्मति-द्रव पदार्थको तोड उससे केवल रवे ग्रहण करने योग्यहैं, पीसकर चुंबक द्वारा चूर्ण ग्रहण करना उचित नहीं उसमें शुद्ध सत्व नहीं मिलता, इसलिये शेष पिघले हुये पदार्थसे "रसरत्न समुच्चय" में कही क्रिया द्वारा पुनः सत्व पातन कर पुनः कणोंको ही ग्रहण करै।

अभ्रसत्वपातन, अठारहवाँ घान।

ता०१०।२।९ को उक्त नं०१की अवशेष २०छ० टिकियोंमेंसे ६छटांक टिकियोंको कोयलोंसे मुखतक भरी भट्ठीमें जो पहले गर्म कर लीगई थी रख ऊपरसे कोयले ढक भट्ठीका मुख भिट्टीके ढक्कनसे ढक ९।बजेसे दो धोंकनियोंसे धोंकना आरम्भ किया, भट्ठीके नीचे पात्र रख दिया गया, पौन घंटे बाद धोंकना बंद कर ज्योंका त्यों भट्ठीको छोडदिया

२बजे नीचेके पात्रको निकाला तौ उसमें ८तोले पदार्थ टपका हुआ मिला, ७रत्ती दाने कटोरेके इधर उधर जमीन पर पडे मिले जिनको चुंबक न पकडता था, ऊपरसे कोयलोंको निकाला तौ उसमें भी सफेद रंगके दाने निकले जिनमें दो चार चने बराबर थे बाकी बाजरेसे थे इनको भी चुंबक न पकडता था, जालीको तोडा तौ उसपर काच सदृश पदार्थ जमरहा था, एक दो छिद्र खुल रहेथे बाकी बंद हो गयेथे, कटोरेमें गिरे काचवत् पदार्थका दलिया सा किया तौ कोई सत्वका दाना न मिला जब उस दलियाको थोडा और बारीक किया तौ उसके गर्भमें बहुत सूक्ष्म और चमकदार २ रत्ती उत्तम सत्वके दाने निकले, कटोरेके इर्दगिर्द जमीन पर पडे ७रत्ती दानोंमेंसे पीसने पर भी कुछ सत्व हाथ न लगा, चलनीके ऊपर पडे कोयलोंमें मिले जो २ माशे ३रत्ती दान थे इनको पीसने पर दोचार दाने युक्त $\frac{1}{2}$ रत्ती सत्व चूर्ण निकला, जालीको तोड उस परसे काचवत् पदार्थ अलग करते समय १माशे १रत्ती दाने निकले जिनको चुंबक न पकडता था पीसनेपर जिनसे $\frac{1}{2}$ रत्ती सत्व चूर्ण निकला, उस काचवत् पदार्थका दलिया किया तौ उसके गर्भमें २ रत्ती सूक्ष्म और उत्तम सत्वके दाने और १मा० १र० सत्व चूर्ण निकला, ये सत्वके दाने कटोरेके काचसे निकले दानोंसे बडे थे, अर्थात् ४ रत्ती उत्तम सत्वके दाने और १ मा० २ र० सत्व चूर्ण हाथ आया जिस सबको चुंबक बडी तीव्रतासे पकडता था और १८ तोले काचवत् पदार्थ शेष रहा जिससे पुनः सत्व पातन करना उचितहै ।

सम्मति- पन्द्रहवें घानमें २५ मिनट आंच दी गई थी और सत्वके दाने अच्छे पडे, सत्तरहवें और अठारहवें घानमें पौन पौन घंटेकी आंच दी गई और सत्वके दाने कम और छोटे मिले, इससे शंका होती है कि अधिक समय तक आंच लगनेसे भट्टीमें शेष रहा सत्व जल जाताहै अतएव आगेसे अग्नि अधिक तीव्र अर्थात् ४ धोंकनियोंसे दी जावे, किन्तु समय केवल २० मिनट रक्खा जावे और टिकियां भट्टीके मुखपर न रख $\frac{3}{4}$ भाग कोयलोंसे भर रक्खी जावें ।

अभ्रसत्वपातन उन्नीसवाँ घान ।

ता० २७।२।९ को उक्त नं० १ की अवशेष १४ छ० टिकियोंमेंसे ५ छटाँक टिकियोंको $\frac{3}{4}$ भाग कोयलोंसे भरी भट्टीमें रख कोयलोंसे ढक नीचे पात्र रख १० बजकर ५ मिनट पर ४ धोंकनियोंसे धोंकना आरम्भ किया, ३० मिनट बाद धोंकना बंदकर भट्टीको ज्योंका त्यों छोड दिया, २ बजे नीचेके पात्रको निकाला तो उसमें टपका हुआ काचवत् पदार्थ ७। तोले निकला जिसके साथ पृथक् रूपमें कोई दाना न था दलने पीसने पर जिसके गर्भमें उत्तम सूक्ष्म चमकदार २ रत्ती दाने और ३ रत्ती सत्व चूर्ण निकला, काचवत् पदार्थका दलिया ७ तोले रहा, जालीके ऊपरसे कोयलोंको निकाला तो उनमें ७ रत्ती काचकेसे दाने निकले जिनको चुंबक न पकडता था, जालीको तोड उस पर लगे काचवत् पदार्थको पृथक् किया तो १२ तोले निकला और ३ रत्ती काचकेसे दाने निकले जिनको चुंबक न पकडता था, इस १२ तोलेके दलने पीसने पर १ रत्ती उत्तम सूक्ष्म सत्वके दाने और २ रत्ती मोटा और ४॥ रत्ती बारीक सत्व चूर्ण निकला, काचवत् पदार्थका दलिया ७ तोले रहा (५ तोले मिट्टी मिला भाग फेंक दिया) भट्टीके ५ छ० खंगरोंके दलनेसे १ रत्ती सत्व चूर्ण निकला, चुंबकसे न पकडे जानेवाले सब १मा० २र० दानोंको पीस सत्व पृथक् किया तो $\frac{1}{2}$ रत्ती सत्व चूर्ण जिसको चुंबक थोडा २ पकडता था और निकला, अर्थात् सब ३ रत्ती उत्तम सत्वके दाने और १ माशे ३ रत्ती सत्व चूर्ण मिलाकर १ मा० ६ र० सत्व निकला ।

सम्मति-सत्व अबकी बारभी कम निकला, और दानेभी बहुत छोटे छोटेही निकले और अधिक भाग औषधिका, अबकी बार भी जालीपर ही रहगया, अतएव शंका होतीहै कि ४ धोंकनियोंसे भी पूरा ताव न बैठा जिसमें जान पडताहै भट्टी ठीक नहीं, भट्टीकी चौडाईको कमकर ऊँचाई बढानी चाहिये और गुलाईके साथ ढलवांपन दूरकर खडा ढाल देना चाहिये ।

(२) सम्मति-यह भी निश्चय हुआ कि इस क्रियासे अभ्रकी टिकिया पिघल कर जाली परही पहुँचतीहै, भट्टीके किनारोंसे स्पर्श नहीं करती क्योंकि भट्टीके खंगरोंमें सत्व बिलकुल न निकला और अभ्र पिघलनेसे बने काचवत् पदार्थके रूपमें और भट्टीके खंगरोंके रूपमें यह भेद भी होताहै कि भट्टीके खंगर काले और रूखे होतेहैं और काचवत् पदार्थ नीलिमा लिये हुये चिकना होताहै ।

अभ्रसत्वपातन बीसवाँ घान ।

ता० १४।३।९। को उक्त नं० १ की अवशेष ९ छ० टिकियोंमेंसे ४॥ छ० टिकियोंको $\frac{3}{4}$ भाग कोयलोंसे भरी १३ इंच गहरी और ९ इंच चौडी भट्टीमें रख कोयलोंसे ढक ऊपर ढकन ढक ठीक $\frac{1}{2}$ घंटे ४ धोंकनियोंसे धोंका जैसाका तैसा ढका छोड दिया ।

ता० १५ को नीचेके पात्रको निकाला तो उसमें केवल ४ माशे काचवत् पदार्थ टपका हुआ मिला जिसके दलने पीसने पर केवल $\frac{1}{2}$ रत्ती सत्व चूर्ण निकला दाना कोई न निकला । पिसे खंगरोंका चूर्ण ३ माशे रहा, ६ रत्ती काच सदृश दाने जिनको चुंबक न पकडता था कोटेरेके आस पास पृथ्वीपर पडे मिले, जालीके ऊपरसे कोयलोंको निकाला तो २ मा० काचकेसे दाने निकले जिसको भी चुंबक न पकडता था, जालीको जिसके सब छिद्र बंद हो रहेथे और सत्वका अधिक भाग नीचे न टपक जाली परही जम रहा था तोड मिट्टी पृथक् कर तोला तो ११ तोले हुआ, दलने पीसने पर इसके गर्भमें २ रत्ती बडे और १॥ रत्ती छोटे कुल ३॥ रत्ती उत्तम सत्वके दाने और १ माशे सत्व चूर्ण निकला, पिसा खंगर १०॥ तोले रहा, भट्टीके ९॥ तोले खंगरोंको दला पीसा तो १॥ रत्ती सत्व चूर्ण निकला, भट्टीके नीचे कटोरेके आसपास पडे मिले ६ रत्ती दाने और जालीके ऊपर के २ मा० दाने सब २ माशे ६ रत्ती दानोंको पीसा तो $\frac{1}{2}$ रत्ती सत्व चूर्ण और निकला, अर्थात् सब ३॥ रत्ती उत्तम सत्वके दाने और २ मा० २र० सत्व चूर्ण मिलाकर २ मा० ६ र० सत्व निकला ।

सम्मति–(१) इसबार भट्टीकी ऊँचाई बढा देने और चौडाई कम कर देने पर भी ४ धौंकनियोंसे टिकियाँ पिघलकर नीचे न गिरीं किन्तु पहले घानों से भी बहुत अधिक भाग जाली पर ही रह गया, इसका स्पष्ट कारण समझमें नहीं आया, एक कारण हो सक्ताहै कि भट्टीमें बार २ कोयले न दे केवल एक बार कोयले देनेसे भट्टीमें पूरा ताव नहीं आता और जालीके नीचे कुछ भी कोयला न रहनेसे जाली बहुत ठंढी रहती है और उस पर पहुँचते ही अभ्रक जम जाताहै, अतएव अगली बार भट्टीके चतुर्थांश कोयला जालीके नीचे भी दिया जावे और प्रति १० मिनटके अंतर पर कोयला डाल २ भट्टी भर दी जावे।

सम्मति--(२) अबकी बार यद्यपि सब पदार्थ पिघलकर जाली पर ही रह गया फिर भी सत्वके दाने और वारसे अधिक बडे बडे मिले इसका कारण निश्चय करना चाहिये।

अभ्रसत्त्वपातन, इक्कीसवाँ घान।

ता० २२।४।९ को उक्त नं. १ की शेष रही ४॥ छ० टिकियोंको कोयले भरी भट्टीमें जिसमें २। सेर कोयले समाते थे रख ऊपरसे कोयलोंसे ढक ढक्कन ढक दिया और भट्टीके नीचे पात्रके इर्दगिर्द ऽ॥ सेर कोयले बिछा उनपर दहकते कोयले रख नीचे का मुख बंदकर ८ बज कर ५० मिनट पर ४ धौंकनियोंसे धौंकना आरम्भ किया, १०–१० मिनट बाद २--२ सेरके अन्दाज दो बार कोयले भट्टीमें डाले गये, ४० मिनट बाद धौंकना बंद कर भट्टीको ज्योंकी त्यों ढकी छोड दिया, ३ बजे नीचेके पात्रको निकाला तो उसमें ५ तोले काचवत् पदार्थ टपका हुआ मिला, जिसके दलने पीसने पर ३/४ रत्ती उत्तम सत्वके सूक्ष्म दाने और ३ रत्ती सत्व चूर्ण निकला, ४ तो० १० माशे काचवत् पदार्थका चूर्ण रहा, जालीको तोड उसपर जमे २२ तोले काचवत् पदार्थको पृथक् कर दला पीसा तो केवल ६ रत्ती सत्त्व चूर्ण निकला दाना कोई न निकला काचवत् पदार्थका चूर्ण २१ तोले रहा, भट्टीके १४ तोले खंगरोंके दलने पीसने पर ५ रत्ती सत्त्व चूर्ण निकला, अर्थात् सब ३/४ रत्ती सत्त्वके दाने निकले और १ माशे ६ रत्ती सत्व चूर्ण निकला।

सम्मति--२१ घान निकलचुके और अभी तक ये समझमें नहीं आया कि ठीक सत्व किस प्रकार निकले अतएव समस्त घानोंकी क्रियाको पढना और विचारना चाहिये।

अभ्रसत्वके अवशेष काचवतपदार्थसे पुनः सत्व पातनके लिये गोली नं. ४.

कोष्ठयां किट्टं समाहृत्य विचूर्ण्य खका-न्हरेत ॥ तत्किट्टं स्वल्पटंकेन गोमयेन विमर्द्य च ॥ १ ॥ गोलान्विधाय संशोष्य धमेद् भूयोपि पूर्ववत्। भूयः किट्टं समाहृत्य मृदित्वा सत्वमाहरेत् ॥ २ ॥ (र. र. स. ३५ । ३६)

अर्थ–अभ्रसत्वके किट्ट (मल) को भट्टीसे निकालकर उसका चूर्ण करे और खोंको लेलेवे फिर उसमें थोडा सुहागा डालकर गोबरसे मर्दन करे पीछे उसका गोला बनाकर और सुखाकर पहलेकी तरह धमे, तिसके अनंतर फिर किट्टको मर्दन करके सत्व निकाललेवे ॥ १ ॥ २ ॥

ता३।५।९ को अभ्रकसत्वके १७ वें घानसे इक्कीस घान तकके भट्टीसे नीचे टपके ६ छ० २ तो० काचवत् पदार्थको बारीक पीस कपरछान कर अष्टमांश ४ तोले डेलीका पिसा सुहागा और अर्द्धांश ३ छ० १ तोले गोबर मिला काफी गीला न होनेसे ककरोंदेके स्वरसका छींटा दे आटेकी तरह गूंद गूलरकी बराबर गोल गोली बना सुखा दी गई, जो तोलमें सूख कर ७॥ छ० रही। उसी प्रकार १७ वें घानसे २१ वें घानतकके जाली पर जमे ७ छ० काचवत् पदार्थमें अष्टमांश ४ तोले ९ माशे डेलीको पिसा सुहागा और अर्द्धांश ३॥ छ० गोबर मिला ककरोंदेके स्वरसका छींटादे गोली बना सुखा दी गई जो सूखने पर तोलमें ८ छ० हुई।

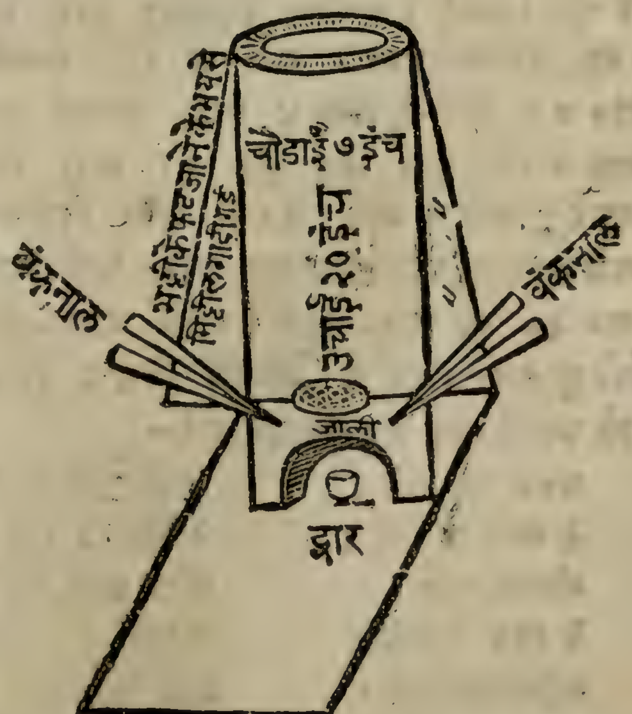
अभ्रसत्वके लिये गोली नं. ५।

ता० ११।५।९ को उत्तम धान्याभ्र (जो ककरोंदेके समान रससे भावित थी) १ सेर अलसीकी खल अर्द्धांश ८ छटाक, डेलीका सुहागा चतुर्थांश ४ छ० सज्जी लोटका अष्टमांश २ छ०, राल, पीपलकी लाख, चिर्मिटी, गुड, गूगल, शहद, घृत, प्रत्येक षोडशांश एक एक १ छ० (सूखी औषधियाँ कूट पीस कपरछान करमिलाई गई गुड, गूगल, शहद, घृत, सबको मिला गर्म कर डाले गये) सबको पीस मिला ककरोंदेके १॥। सेर रसके साथ गूंद १ घंटे घोट गोली बना सुखा दी गई जो सूखने पर तोलमें २ सेर ६ छ० हुई।

अभ्रसत्वपातन, बाईसवाँ घान।

भट्टीका आकार।

राजहस्तसमुत्सेधा तदर्धायामविस्तरा। हस्तप्रमाणं दीर्घारमष्टसंख्यांगुलं तिर्यक् ॥ ३ ॥ शोडशांगुलविस्तीर्णं हस्तमात्रायतं समम्॥वंशखादिरमाधूकबदरीदारुसंभवैः ॥ ४ ॥



अर्थ–यह भट्टी ढाई हाथ ऊंची और सवा हाथ चौडी

हस्तप्रमाण लंबी और आठ अंगुल तिरछी और १६ अंगुल विस्तारवाली बनावे और इसमें बांस, खैर, महुवा, बेरीकी लकडियोंकी आंच देवे ॥ ३ ॥ ४ ॥

अबकी बार भट्टी गाउदुम न बना सीधी गोल बनाई गई जिसकी चौडाई ७ इंच और जालीसे ऊपर ऊपर उँचाई २० इंच थी और जिसमें ३ सेर कोयले समाते थे ।

ता० १९।५।९ को उक्त नं० ५ की गोलियोंमेंसे प्रथम २ छ० गोलियोंको $\frac{३}{४}$ भाग कोयलोंसे भरी उक्त नं० ४ की भट्टीमें (जिसका आकार और नाप ऊपर दिया गया है) रख कोयलोंसे भट्टी ऊपर तक भर ढकनसे ढक दीगई और नीचे पात्र रखनेकी आवश्यकता न समझ पात्र न रख नीचेका मुख बंद कर ८ बजेसे ४धोंकनियोंसे धोंकना आरंभ किया, फिर १०–२०–३०–४५ मिनट पर ४ बारमें दोदो छ० गोलियां और इस रीतिसे डाली गई कि प्रथम गोलियां डाल दी जाती थीं और भट्टी जो करीब तिहाईके खाली होजाती थी तुरंत ही कोयलोंसे ऊपर तक भरदी जाती थी, इस भांतिसे पाँच बार में १० छ० गोलियां डाली गई और पाँच बार ही कोयला डाला गया, ९ बजकर १५ मिनट पर १४। घंटे धोंकचुकने पर जब भट्टीसे अग्निका झर निकलना बंद होगया तब धोंकना बंद कर ढकन उठा देखा तो भट्टी कोयलोंसे जाली तक खाली होगई थी बादको ज्योंकीत्यों भट्टीको छोड दिया ।

ता० २० को भट्टीके नीचेका मुख खोला तौ केवल १ तोले २ मा० काचवत् पदार्थ नीचे टपका हुआ मिला जिसके दलने पीसनेपर ३ रत्ती उत्तम सत्त्वके दाने (जो अबकी बार कुछ बडे और उज्ज्वल थे) निकले ४ रत्ती खंगरसे व दाने निकले और १ माशे ३ रत्ती सत्त्व चूर्ण निकला, काचवत् पदार्थका चूर्ण ९ माशे रहा, जालीको तोड उसपर जमे ३॥ छ० काचवत् पदार्थके दलने पीसने पर १ माशे उत्तम बडे और ४ रत्ती छोटे ४ माशे ४ रत्ती खंगरसे कुल ६ माशे दाने और ४ माशे ४ रत्ती मोटा, १ माशे ५ रत्ती महीन, सब ६ मा० १ र० सत्त्व चूर्ण निकला, काचवत् पदार्थका चूर्ण ३ छ० रहा, भट्टीके १ सेर १२ छ० खंगरोंके दलने पीसने पर २ मा० ४ रत्ती बडे और १ माशे छोटे, ४ माशे ४ रत्ती खंगरसे, सब ८ माशे सत्त्वके दाने और ३ माशे ४ रत्ती सत्त्व चूर्ण निकला । काचवत् पदार्थका चूरा १ सेर १० छ० रहा, इसभांति सब ३ मा० ४ रत्ती सत्त्वके बडे–१ मा० ७ र, छोटे–९ माशे ४ रत्ती, खंगरसे कुल १ तोले २ माशे ७ रत्ती दाने और कुल ११ माशे सत्त्व चूर्ण मिलाकर २ तोले १ माशे ७ रत्ती सत्त्व निकला, ३ छ० ९ माशे काचवत् पदार्थ शेष रहा बाकी फेंक दिया ।

ता० ३० को उक्त सब प्रकारके दाने और सत्त्व चूर्णको पुनः साफ कर ६ भागोंमें विभक्त किया गया, जिससे उसकी तोल अब इस प्रकार है–

उत्तम बडे दाने ।	उत्तम छोटे दाने ।
३ माशे ४ रत्ती ।	२ माशे ४ रत्ती ।
खंगरसे दाने ।	मोटा सत्त्व चूर्ण ।
६ मा० ४ रत्ती ।	५ माशे ।
महीन सत्वचूर्ण ।	मैला सत्वचूर्ण ।
६ मा० ४ र० ।	६ रत्ती ।
कुल ।	२ तोले ७ रत्ती ।

भट्टीसे नीचे टपके हुये पदार्थकी अपेक्षा जालीपर जमे पदार्थसे दाने बडे और उत्तम निकले और जालीकी अपेक्षा भट्टीके खंगरोंसे अधिक सत्वके दाने निकले ।

अभ्रसत्त्वपातन तेईसवाँ घान ।

ता० ३०।५।९ को पहले उक्त भट्टीको ऊपरतक कोयलोंसे भर दिया और १० छ० कोयले जालीके नीचे भी बिछा उनपर आंच रख दी (यह खयाल कर कि कदाचित् बंकनाल द्वारा बाहरसे आया हुआ वायु जालीके नीचेके भागको ठंढा रख कर जाली द्वारा ऊपरसे गिरते हुये सत्त्वको जाली पर ही ठंढा कर देता हो) फिर भट्टीके नीचेका मुख बंद कर धोंका गया, जब करीब आधी भट्टी खाली होगई तब उक्त नं० ५ की २ छ० गोलियां डाल ऊपरसे कोयले भर ८। बजेसे ४ धोंकनियोंसे धोंकना आरम्भ किया, फिर १५–१५ मिनट बाद अर्थात् ८॥+८॥। बजेपर ३–३ छ० गोलियां और कोयले और डाले गये, (१५ मिनटमें भट्टी आधीके अनुमान खाली होजाती थी) चौथीबार ९ बजनेपर देखा तौ $\frac{१}{४}$ के अनुमान भट्टी खाली हुई थी गालिबन जालीके छिद्र रुक जानेसे हवाका वेग घट गया था और जल्दीमें इस बातका विचार न कर ४ छ० गोलियां और डाल दीं और भट्टी कोयलोंसे भरदी गई, ४ बारमें १२ छ० गोलियां पडीं, इसके अनंतर धोंकनेसे भट्टीमेंसे रेलकीसी गूंजका शब्द निकलने लगा, जिससे पूर्ण निश्चय होगया कि जालीके छिद्र अवश्य बंद होगयेहैं तथापि और धोंकते रहे परन्तु झर पूरे वेगसे न निकली और करीब १ घंटे और धोंकनेसे भी कोयले निःशेष न हुये तब लाचार ९ बजकर ४० मिनटपर धोंकना बंद कर भट्टीको ज्योंकीत्यों ढकी छोड दिया ।

ता० ६१ को भट्टीके नीचेका मुख खोला तौ ४ तोले काचवत् पदार्थ टपका हुआ मिला जिसके दलने पीसने पर ६ रत्ती बडे, ४ रत्ती छोटे, ३ रत्ती खंगरसे, सब १ माशे ५ रत्ती दाने, और १ माशे ५ रत्ती सत्व चूर्ण निकला, काचवत् पदार्थ ३ तोले ४ माशे रहा, जालीके ऊपरसे कोयलोंको निकाला तौ बहुतसे कोयले अधजले निकले जिनमें ४–६ अधजली गोलियां जिनमें कुछ सत्व भी पडगया था निकलीं जिनको तोड सत्व पृथक् किया तौ ६ रत्ती बडे, १ रत्ती छोटे, सब ७ रत्ती दाने और ३ माशे ७ रत्ती मोटा और ७ मा० २ र० महीन कुल ११ माशे १ रत्ती सत्वचूर्ण निकला, गोलियोंकी राख ५ तोले ४ माशे रही, जालीको तोड उसपर जमे ३ छ० ३ तोले काचवत् पदार्थके दलने पीसने पर २ मा० ४ र० बडे, ४ रत्ती छोटे, ३ मा० खंगरसे कुल ६ मा० सत्वके दाने और २ मा० ४ रत्ती मोटा सत्व चूर्ण निकला, काचवत् पदार्थका चूर्ण ३ छ० १ तोले रहा, भट्टीके १३ छ० खंगरोंके दलने पीसने पर ६ रत्ती बडे, १ मा० छोटे, ५ रत्ती खंगरसे कुल २ मा० ३ र० सत्वके दाने, और ४ माशे ४ र० मोटा, ३ रत्ती महीन, सब ४ माशे ७ रत्ती सत्व चूर्ण निकला । इसप्रकार कुल ४ माशे ६रत्ती बडे, २ मा० १ र० छोटे, ४ माशे खंगरसे कुल

१० माशे ७ रत्ती सत्वके दाने और १ तोले ४ रत्ती मोटा, ७ माशे ५ र० महीन, सब १ तोले ८ माशे १ रत्ती सत्व चूर्ण मिलाकर २ तोले ७ माशे सत्व निकला।

ता० ५। ६ को उक्त सब प्रकारके सत्त्वके दाने और चूर्णको पुनः साफ कर ५ भागोंमें विभक्त किया गया जिससे अब उसकी तोल इसप्रकार है।

उत्तम बडे दाने।	उत्तम छोटे दाने।
५ माशे २ रत्ती।	२ माशे ३ रत्ती।
खंगरसे दाने।	मोटा सत्व चूर्ण।
३ मा० ३ र०।	१० मा० ४ र०।
महीन सत्व चूर्ण।	सब।
९ मा० ३ र०।	२ तो० ७ मा०

अभ्रसत्त्वपातन चौबीसवाँ घान।

ता० ६-६-९ को उक्त नं० ४ की भट्टीकी चौडाईको जो ७ इंच थी अबकी बार शास्त्रोक्त मापके समान करनेके लिये बढा कर १ बालिश्त अर्थात् ९ इंच करदी गई और इस शंकासे कि मसाला पिघल कर जालीके रंध्रोंमें भर-जाता है और जालीके रंध्र बंद होजानेसे धौंकनियोंकी हवा कोयलों तक नहीं पहुँच सक्ती, अतएव अबकी बार जाली-का रखना मौकूफ रक्खा गया, जालीके न रखनेसे भट्टीकी उँचाई तलीसे २७ इंच होगई थी और जिसमें करीब ९ सेरके कोयले समान लगेथे प्रथम १८ इंच तक ६ सेर कोयले भर नीचेका मुख बंदकर धौंका गया, जब भट्टीमें करीब ८ इंचके कोयले नीचे धसक गये तब प्रथम ३॥ छ० गोलियां और ३ सेर कोयले और डाल भट्टी पर ढक्कन ढक ७ बजकर २० मिनट पर ४ धौंकनियोंसे धौंकना आरम्भ किया, १० मिनट बाद अग्निका वेग अधिक बढ जानेसे बंकनालोंमें हो अग्नि धौंकनियोंके अन्दर प्रवेश कर धौंकनियोंको जलाने लगी अतएव सुम्मों पर पानी डालते रहे और काम जारी रक्खा, ७ बजकर ४० मिनट पर ३॥ छटांक गोलियां और ३ सेर कोयले और डाल दिये गये, कोयले और पडनेसे और अग्निके और अधिक प्रज्वलित होनेसे धौंकनियोंका चर्म जलने लगा लाचार ७ बजकर ५० मिनट पर अर्थात् ३० मिनट धौंक काम बंद करना पडा और भट्टीको ज्योंकी त्यों छोड दी गया।

ता० ७ को खोला तौ भट्टीकी तली पर कोयलोंमें मिला ७ तोले काचवत् पदार्थ निकला जिसके दलने पीसने पर २ रत्ती छोटे, और ६ रत्ती खंगरसे, सब १ माशे सत्त्वके दाने निकले, काचवत् पदार्थका चूर्ण ६ तोले रहा, कोय-लोंमें मिली दो चार अधजली गोलियाँ निकलीं जिनकी पिसी राख २ तोले ३ माशे हुई, कुछ काचवत् पदार्थ पिघल कर भट्टीकी तलीकी ईटोंकी संधिमें समागया था जिसको पृथक् किया तौ ३ तोले ६ माशे हुआ जिसके दलने पीसने पर २ रत्ती सत्त्वके छोटे दाने और १ माशे सत्त्व चूर्ण निकला, काचवत् पदार्थका चूर्ण ३ तो० ३ मा० रहा, भट्टीकी बगलियोंसे तोड निकाले २ छ० १ तोले खंगरोंके दलने पीसने पर २ रत्ती सत्वके छोटे दाने और ३ मा० ४ र० सत्व चूर्ण निकला, अर्थात् सब ६ रत्ती छोटे, ६ रत्ती खंगरसे, कुल १ माशे ४ रत्ती सत्वके दाने और ४ माशे ४ रत्ती सत्व चूर्ण मिलाकर ६ माशे ६ रत्ती सत्व निकला।

सम्मति-इसबारकी क्रियाके अनुभवसे यह बात निश्चय होगई कि ऐसी कडी आंचकी भट्टियोंमें बिना जालीके धौंकनियोंसे हवा नहीं पहुँचाई जा सक्ती क्योंकि धौंकनि-योंके सांस लेते समय अग्नि धौंकनियोंको जलाने लगती है।

अभ्रसत्त्वपातन पच्चीसवाँ घान।

बिना जालीके जब काम ठीक न चल सका और छोटे छिद्रोंकी जालीमें भी यह त्रुटि थी कि पिघली हुई दवासे उसके छिद्र बंद हो जानेसे धौंकनियोंकी फूंक दवा तक न पहुँच ताव ठंढा होने लगता था अतएव इस बार ता० ९ ६-९ को रुपये बराबर छिद्रोंकी जाली लगाई गई (जालीसे ऊपर ऊपर भट्टीकी उँचाई २० इंच रही) और प्रथम ६ सेर कोयले (जिनसे भट्टा ८ अंगुल खाली रही) भर धौंका गया जब अग्नि भली भांति तीव्र होगई और भट्टी कुछ और खाली हो गई तब २। छ० गोलियाँ और २ सेर कोयले डाल ७॥ बजेसे ४ धौंकनियोंसे धौंकना आरम्भ किया, १० मिनट धौंकनेके बाद धौंकनियोंमें आँच आने लगी भट्टीका ढक्कन उठा देखा तौ मालूम हुआ कि कोयले बहुत नीचे धसक गयेहैं, अत एव ७ बज कर ४० मिनट पर अर्थात् १० मिनट बाद धौंकना बंद कर भट्टीको ज्योंकी त्यौं ढकी छोड दिया।

ता० १० को खोला तौ जाली टूटी हुई मिली और कोयलोंमें मिली १०-१२ अधजली गोलियां निकलीं जिनकी पिसी राख जिसको चुंबक थोडा २ पकडता थ ४ तोले हुई।

सम्मति-यद्यपि इसबार जाली टूट जानेसे पूर्ण निश्चय न हुआ किन्तु अनुमान यही होता है कि जालीके बहुत बडे छिद्र न होने चाहिये, बडे छिद्रोंसे कोयले भी निकल कर नीचे गिर सक्तेहैं जो धौंकनियोंको हानि पहुँचाते हैं और गूलरके समान अभ्रकी गोली भी रुपये बराबर छिद्रमें विना पिघले निकल जा सक्तीहै इस लिये पैसेसे छोटाही छिद्र होना चाहिये।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपंडितमनसुखदासात्मजव्यासज्ये-ष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहितायां भाषाटीकायां स्वानुभूताभ्र-सत्वादिपातन वर्णनं नामैकोनपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥४९॥

मयूरपक्षसत्वाध्यायः ५०.

मयूरपक्षसत्व नं० १ छोटे चँदोवाके निमित्त मयूरपक्षभस्म।

ता० ५।६।८ को ७ सेर मयूर पक्षोंके पृथक् किये गये १ सेर ८ छ० १॥ तोले रोम और १५ छ० ३॥ तोले चँदोवे (जो बडे चँदोवोंमें अधिक डढीर रह जानेके कारण पहली वारसे छोटे अर्थात् ३।४ अंगुल लंबे मंडल मात्र ही पृथक् किये गये थे) कुल २ सेर ८ छ० वजनमेंसे ४ छ० रोम और ३ छ० १॥ तोले चँदोवे कुल ७ छ० १॥ तोले वजनको १ सेर भैंसके कच्चे दुग्धमें भिगो सुखा दिया जो सूख कर ९ छटांक हुए।

ता० ७ को उक्त ९ छ० वजनमें नं० २ के दूसरे घानके निकले ५ तोले अधजले मोर पक्षोंको और मिला १० छटांक वजन कर उपरोक्त प्रकारसे हांडीमें बंद कर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० ८ को २ बजेसे भट्टी पर समाग्नि देना आरम्भ किया, शामके ७ बजे आंच बंद कर हांडीको ज्योंकी त्यों रक्खा छोड दी।

ता० ९ को खोला तो खंगरकी शकलकी श्याम रंगकी १८ तोले भस्म निकली।

दूसरा घान।

ता० १२ को उक्त अवशेष २ सेर ३॥ तोले वजनमेंसे ६ छ० ?॥ तोले रोम और ३ छ० ३ तोले चँदोवे कुल ९ छ० ३॥ तोले वजनको १ सेर गायके कच्चे दुग्धमें भिगो सुखा दिया।

ता० १३ को उक्त मोरपंखोंको जो तोलमें इस समय ११ छ० हुए हांडीमें भर उपरोक्त प्रकारसे बंदकर कपरौटी कर सुखादिया।

ता० १५ को खोला तो खंगरकी शकलकी श्याम रंगकी १९ तोले भस्म भारी और चमकदार निकली।

तीसरा घान।

ता० १५।६।८ को उक्त अवशेष १ सेर ७ छ० मयूरपंखोंमेंसे ६ छ० ४ तोले रोम और ४ छ० १ तोले चँदोवे कुल ११ छ० वजनको १ सेर भैंसके कच्चे दुग्धमें भिगो सुखा दिया।

ता० १६ को उक्त मोर पक्षोंको (जो तोलमें इस समय १३ छ० हुए) उपरोक्त प्रकारसे हांडीमें बंद कर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० १७ को २ बजेसे ७ बजेतक तीक्ष्णाग्नि दे हांडीको ज्योंकी त्यों भट्टी पर रक्खा छोड दी।

ता० १८ को खोला तो खंगरकी शकलकी २६ तोले भस्म भारी और श्याम रंगकी निकली।

चौथा घान।

ता० १९।६।८ को उक्त अवशेष ७ छटांक १ तोले रोम और ४ छ० ४ तोले चँदोवे कुल १२ छ० वजनको १ सेर भैंसके कच्चे दुग्धमें भिगो सुखा दिया।

ता० २० को उक्त पक्षोंको जो तोलमें इस समय १४ छ० २ तोले हुए उपरोक्त प्रकारसे हांडीमें बंदकर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० २१ को २ बजेसे ७ बजे तक तीक्ष्णाग्निदे हांडीको ज्योंकी त्यों भट्टी पर रक्खी छोड दिया।

ता० २२ को खोला तो खंगरकी शकलकी २६॥ तोले और १ तोले खुरचनकी कुल २७॥ तोले भस्म भारी और श्यामरंगकी निकली; अर्थात् कुल ७ सेर मयूरपंखोंके २॥ सेर रोम और चंदोवोंकी (जो सब दूधमें भीगे थे) १ सेर २ छ० ६ मा० भस्म तय्यार हुई।

मयूरपक्षसत्व नं० २ के निमित्त मयूरपक्षभस्म।

ता० २५।५।८ को १॥ सेर मयूर पक्ष (अर्थात् मोरकी पूंछकी डढीरों) से रोमोंको और चंदोवोंको (जो ८ वा १० अंगुल लंबे अर्थात् जहांसे डढीर पर श्यामता आरम्भ होतीहै काट लिये गये थे) पृथक् किया तो २ छ० ३ तोले रोम और ६ छ० ३ तो० चंदोवे कुल ९ छ० १ तोले वजन निकला बाकी १४ छ० ४ तोले उनकी निर्रोम डढीरें अलग करली गई।

ता० २६ को उक्त ९ छ० १ तोले रोम और चँदोवोंको कपरौटीकी हुई हांडीमें भर सरवेसे हांडीका मुख ढक कपरौटी कर सुखा भट्टीपर ८ बजेसे मध्यमाग्नि देना आरम्भ किया, घंटे भर बाद सरवेकी संधिमें होकर थोडी देर तक श्याम वाष्प जल (काली भापका पानी) निकला, दुर्गंध भी आती रही, ३ घंटे बाद ११ बजे आंच बंदकर हांडीको ज्योंका त्यों भट्टीपर रक्खी छोड दिया, शामको खोला गया तो हांडीकी तलीमें लगी हुई बहुत हलके चमकदार खंगरोंकी शकल की १८ तो० भस्म निकली।

दूसरा घान दूधका।

ता० २७।५।७ को २॥ सेर मयूरपंखोंके उपरोक्त विधिसे पृथक् किये गये ५ छ० २ तो० रोम और ९ छ० ४॥ तोले चंदोवे कुल १५ छ० १॥ तोले वजनमेंसे ३ छटांक रोम और ३ छ० चँदोवे कुल ६ छटांक वजनको १ सेर भैंसके कच्चे दुग्धमें भिगो सुखा दिया।

ता० २।६ को उक्त मोरपक्षोंको जो तोलमें इससमय ७ छ० थे कपरौटी की हुई हांडीमें भर सरवेसे मुख ढक कपरौटी कर सुखादिया।

ता० ३ को भट्टीपर ३ बजेसे मध्यमाग्नि देना आरम्भ किया, ६ बजे आंच बंद कर हांडीको जैसेकी तैसी रक्खी छोडदिया।

ता० ४ को खोला तो हांडीकी तलीमें जमीहुई खंगरकी शकलकी श्यामरंगकी पहले घानकी भस्मसे कुछ भारी १३ तोले भस्म निकली।

तीसरा घान।

ता०४।६।८ को उक्त अवशेष २ छ० तोले रोम और ६ छ० ४॥तोले चंदोवे कुल ९ छ० १॥तोले वजनको उपरोक्त विधिसे हांडीमें बंदकर कपरौटी कर सुखादिया।

ता०५को ३बजेसे ६॥बजेतक समाग्नि दे हाँडीको जैसी की तैसी रक्खा छोडदिया।

ता०६को खोला तो हांडीमें ऊपर ५तोले मोरपंख अधजले निकले और नीचे १६तोले खंगरकी शकलकी श्याम रंगकी भस्म निकली।

नकशा नं० १–नं० २।

नं०	तोल मोर पक्ष	तोल रोम	तोल चंदोवा	तोल रोम + चँदोवा	दूधके भीगे या वे दूधके	तोल भस्म	विशेषवार्ता.
नं० १	ऽ७ सेर	सेर छ. तो. १ ८ १॥	१५ ३॥	सेर छ० २ ८	दूधके भीगे	सेर छ० माशे १ २ ६	
नं० २	ऽ४ सेर	छ० ८	सेर छ० १ १/२	सेर छ० १ ८॥	दूधके ६छ. ४७तो. वे दूधके १ सेर २॥ छ० ३४ तोले	१३ तोले	
	जोड ११ सेर	जोड २ सेर १॥ तो.	जोड २ सेर १ तो.	जोड ४सेर २॥तो.	जोड +	जोड १से.११छ.२॥तो.	
			(पंखके १/३ से ज्यादः रोम)		(रोमके १/२ से कुछ कम भस्म)		अर्थात् पंखके १/६ से कुछ कम भस्म

मयूरपक्षसत्व नं०३के निमित्त नीरोम डढीरोंकी भस्म।

ता०२८–५–८ को ऽ॥सेर मयूरपक्षोंकी नीरोम (रोमरहित) डढीरोंके ४।४ अंगुलके टुकडे कर हांडीमें भर सरवेसे मुख बंदकर कपरौटी कर सुखा ३ घंटे मध्यमाग्नि दी बादको जैसेका तैसा हांडीको रक्खा छोडदिया, शामको खोला तौ ऊपर झुलसी हुईऽ। पावभर डढीरें निकलीं और नीचे खंगरकी शकलकी बहुत फुसफुसी और हलकी छत्तेसी, चमकदार और श्यामरंगकी ७ तोले भस्म निकली।

ता०१को उक्त पावभर झुलसी डढीरोंको फिर उसीप्रकार हांडीमें बंदकर कपरौटी कर सुखा ४ घंटे तीक्ष्णाग्नि दे हांडीको ज्योंकी त्यों भट्टी पर रक्खी छोडदिया।

ता० २ को खोला तौ पहलीही भस्मके सदृश ९ तोले भस्म और निकली, अर्थात् ८ छ० नीरोम डढीरोंकी सब १६ तोले भस्म तय्यार हुई।

मयूरपक्षसत्वपातन पहला घान।

ता०३०–६–८को उक्त नं०२की ५ तोले मयूरपक्षभस्मको बारीक पीस घरियामें भर कोयलोंपर कडा धोंकना आरंभ किया, और साथ साथ ही घोडेके सुमकी १।तोले मैदा (जो इस रीतिसे बनाईगई कि घरकी बडी घोडीके अगले पैरोंके सुम जो ऊपर चाकूसे खुरच साफकर नीचेसे नरम और नीले रंगके निकाल लियेगयथे और जो तोलमें १तो० १०मा० थे कठिन और चमचोड होनेके कारण इमामदस्तेमें न कूटसके अतएव प्रथम रेतीसे रेत दरदरा चूर्ण होजानेपर इमामदस्तेमें कूट कपडेमें छान १। तोले मैदा तय्यार करली) चुटकीसे बुरकते गये (जिसके डालनेसे घरियाके ऊपर आंच प्रज्वलित होजातीथी) १/२ घंटे बाद धोंकना बंदकर घरियाको ठंढा कर भस्मको निकाला तौ ताउ खाकर भस्मकी फुसफुसी टिकिया बनगईथी और कुछ हलकापन भी आगया था, श्यामता और चमक उसकी फीकी पडगई थी, बाजरा और पोस्त सदृश गोल सत्त्वके दाने उसमें मिलेहुये थे जो पृथक् कर तोलनेसे २ रत्ती हुये जिनमेंसे आधेसे अधिक दानोंको चुंबक पकडता था तोडनेसे अन्दर पोले निकलते थे, राखको तोला तौ २ तोले रहगई थी।

दूसरी आँच।

ता०१।७।८ को इस शंकासे कि भस्ममें अभी और सत्व मौजूद है १ तोले शहद, १तोले घृत, ३ माशे पिसा सुहागा मिला सान लुगदीसी बना घरियामें रख फिर आध घंटे कडा धोंका तौ भस्मकी पहले दिनसे कुछ कडी टिकिया बनगई और ऊपर उसके बहुत हलकी सफेद पापडीसी होगई जिसमें खंगरकी शकलके छोटे छोटे काचकेसे दाने दीखते थे, तोडनसे अन्दर येभी पोले निकलतेथे किन्तु इनको चुंबक न पकडताथा, भस्मकी टिकियाको तोड देखा तौ अन्दर कोई दाना सत्वका न निकला, भस्मको तोला तौ १॥ तोले हुई।

मयूरपंखसत्वपातन, दूसरा घान।

ता०२–७–८ उक्त नं०२की २॥ तोले भस्ममें ७॥माशे सुहागा, १॥।माशे जवाखार, १॥माशे साँभर, ३माशे धुना कतरा ऊन डाल मिला, गुड, शहद, मीठातेल, ९।९ माशे डाल सान लुगदी बना इमामदस्तेमें खूब कूटा जिससे ऊन खूब मिलगई, बादको छिली अंडी ७॥ माशे कुटी छनी अलसी ७॥माशे घंटे भर कूट चिक्नी लुगदी बनाली जो तोलमें ६तोले ९माशे हुई।

सम्मति–लुगदी ज्यादः नरम होगई इसलिये गुड,शहद, तेल ७॥–७॥माशेही डालने चाहिये।

ता०६को उक्त लुगदीको घरियामें रख १/२ घंटे धोंका गया तौ लुगदी जलकर कठिन हो गईथी, तोडकर देखा तौ कोई दाना सत्वका न दीख पडा, अतएव उसे पीस कपडेमें छान देखा तौ कोई दाना न मिला भस्मको तोला तौ२तो० ८माशे रहगई।

सम्मति–शंका रहगई कि ताउ पूरा लगा या नहीं।

मयूरपक्षसत्त्वपातन, तीसरा घान।

ता० ३।७।८ को उक्त नं. २ की २॥ तोले मयूरपक्षभस्ममें ऊन ३ माशे, सुहागा, पीपलकी लाख, गूगल, गुड, शहद, घृत, ७॥–७॥ माशे, खल १। तोले डाल खूब सान इमामदस्तेमें कूट लुगदी बनाली जो तोलमें ७ तोले ९ माशे हुई।

ता० ६ को उक्त लुगदीको घरियामें रख ३/४ घंटे धोंका तो लुगदी जलकर कठिन होगई थी, उसे तोड पीस कपडेमें छाना तो कोई दाना सत्वका न दीख पडा, भस्मको तोला तो २ तोले ९ माशे हुई ।

सम्मति-शंका रहगई कि ताव पूरा लगा या नहीं ।

मयूरपक्षसत्त्वपातन, दूसरे और तीसरे घानकी दूसरी आंच ।

ता० १।८।८ को उक्त मयूर पक्षसत्त्व नं. २ के दूसरे और तीसरे घानकी ५ तोले ५ माशे भस्ममेंसे ४ तोले भस्ममें सुहागा, शहद, घृत, १-१ तोले और गूगल चिर्मिटी लाल, लवण, जवाखार ३-३ माशे मिला (जिसके मिलानेसे दवाकी फुसफुसी टिकियासी बनी) घरियामें रख धोंकना आरम्भ किया, ३/४ घंटे बाद धोंकना बंद कर दवाको निकाला तो लुगदी जलकर कठिन होगई थी तोडकर देखा तो लुगदी ऊपर कुछ श्वेततालिये थी और अन्दर काली थी दाना सत्वका उसमें कोइ न था. तोलमें ५ तोले १ माशे थी ।

ता०१७ को उक्त ५ तोले १ माशेकी टिकियाको बारीक पीस पानीमें डाल रख दिया तीसरे दिन देखा तो उसके ऊपर बहुत पतली मलाईसी पड गई थी नीचे कुलराख बैठ रही थी उस राखका पानी नितार और पानीसे धोया तो उस राखके अतिरिक्त कोई सत्वरूप पदार्थ नीचे न बैठा धुली राख तोलमें ११ माशे २ रत्ती रह गई ।

मयूरपक्षसत्त्वपातनका उद्योग-लाला गंगाराम सुनार सहावर दर्वाजा कासगंज द्वारा ।

ता०५।९।७ मयूर पक्ष भस्म नं. २-४ छटाँक, कैनका साधारण शुद्ध पारद १ छटाँक दोनों को शीत खल्वमें डाल ७ बजेसे घोटना आरम्भ कियां, २० मिनट घोटनेसे पारा राखमें मिलकर अदृश्य होगया, १ घंटे और इसी तरह सूखा घोटा बादको पानीमें डाल थोडीदेर घोटा, पारा राखसे पृथक न हुआ, फिर राखमें बहुतसा पानी डाल तश्तरीमें नितार दिया जिससे खरलकी तलीमें पारेका रेतसा बैठ गया, उसको धो तश्तरीमें कर लिया बादको उसी तरह ८-१० बार पानी डाल नितार तश्तरीमें रख धूपमें सुखा दिया तो सूख कर पारा निज रूपमें दृष्टि आने लगा, अलग कर तोला तो ४ तोले ३ माशे निकला, ९ माशे राखमें मिला रह गया, इस पारेको कपडेमें छाना तो कुछ भी पिष्टी न निकली ।

ता० ६ को इस ४। तोले पारेको घरियामें रख कोयलोंकी आंच दी तो करीब ३/४ घंटेमें सब पारा उड गया, कुछ भी ताम्र न बैठा।

उपरोक्त मयूरपक्षभस्मको पानीके सुखानेसे ३ छ० निकली थी खुले डौरूमें ३ घंटे मध्यमाग्नि दी तो ८ तोले रह गई ।

(१)-सम्मति-गंगारामने कहा था कि इस प्रकार मर्दनसे पारा भस्मसे ताम्रको ग्रहणकर तोलमें बढजायगा किन्तु पारा बढनेकी जगह भस्ममें मिलगया, धोकर निकालने पर कम निकला, छानने पर पिष्टी न दी, उडानेपर सत्त्व न दिया ।

कर्मके पश्चात् गंगारामने कहा कि ये क्रिया मेरी की हुई नहीं है मेरे पिताकी करी हुई थी, इनके बुलानेमें दस रुपये खर्च पड गये और पावभर भस्म जो पाँच रुपयेसे कम लागतकी न थी दूषित होगई ।

(२)-सम्मति-इस क्रियासे यह बात सिद्ध हुई कि मयूरपक्ष भस्म पारदको नष्टपिष्टी कर सक्तीहै, अब ये अनुभव करना चाहिये कि कितने अंशसे पारदकी पिष्टी बन सक्ती है ।

मयूरपक्षसत्त्व पातनके निमित्त भस्म नं. १-२ की टिकियाँ ।

ता० १२।१०।८ को मयूरपक्षभस्म नं. २ की दूधकी भीगी १३ तोले और नं. १ में से १३ तो० सब २६ तोलेमें ऊन, गुड, गूगल, लाख १॥-१॥ तोले, मीन (मछली) चूर्ण ३ तोले । शहद, घृत, सुहागा, अंडीकी मींगी, तिलकी खल, ६-६ तोले (ऊन कतर कर डाला गया । गुड़, गूगल, शहद, घृतमें मिला गर्म कर डाले गये, बाकी सब चीज कूट पीस बारीक कर डाली गई) कुल ३९ तो० मसाले मिला सान १ घंटे इमामदस्तेमें कूटा गया ।

ता० १३ को भी घंटे भर कुटाई हुई (मसाला फुसफुसा रहा टिकिया बांधनेके लायक न था ।)

ता० १४ को २ घंटे कुटाई की तब भी फुसफुसा रहा ।

ता० १५ को करीब १॥ छ० दूध डाल सान छोटी २ टिकियां बना सुखा दीं ।

मयूरपक्षसत्त्वपातन, चौथा घान ।

ता० ३०।१०।८ को उक्त टिकियोंमेंसे ३ छ० टिकियोंको अँगरेजी घरियामें भर नं. ३ की भट्ठीमें (जिसका आकार अभ्रसत्व प्रक्रियामें दिया जा चुका है और जो १ फुट गहरी और ९ इंच चौडी थी) ३ बजेसे धोंकना आरम्भ किया, ४ बजे धोंकना बंद कर टिकियोंको निकाला तो सब टिकियाँ जली हुई निजरूपमें निकलीं, जो टिकियाँ घरियामें ऊपर थीं उनके ऊपर थोडी २ कठिन पापडी सी पडगई थी बाकी टिकियाँ ज्योंकी त्यों थीं, टिकियोंको तोड देखा तो किसीमें कोई दाना सत्वका न दीखा, जली टिकियाँ ५॥ तोले रहीं ।

सम्मति-अभ्रसत्वका घान अँगरेजी घरियामें जो आजही निकाला गया उसमें भी सत्व न पडा, इससे यह निश्चय है कि यद्यपि घंटेभर अग्नि दी गई किन्तु अग्नि मंदी रही जिससे ताव ठीक न आकर सत्वपातन न हुआ।

मयूरपक्ष सत्वपातन पाचवाँ घान ।

ता० ६।११।८ को उक्त टिकियोंमेंसे २॥ छ० टिकियोंको अँगरेजी घरियामें भर ३॥। बजेसे दो धोंकनियोंसे धोंकना आरम्भ किया, पौन घंटेबाद धोंकना बंदकर घरियाको निकाला तो घरियाका पेंदा गलकर भट्ठीमें ही रहगया था, टिकियाँ निजरूपमें जली हुई निकलीं जिनपर कोई रवा न दीखता था, किन्तु घरियाके अन्दर खुरचनेसे २॥ माशे चमकदार दाने निकले जिनको चुंबक पकडता था, टिकिया ३ तोले ३ माशे रहीं ।

सम्मति–ये दाने जहां तक निश्चय होताहै घरियाके अंशसे बने हैं मयूरपक्ष सत्व नहीं। अँगरेजी पृथक् करण द्वारा निश्चय किया जाय कि इन दानोंमें क्या वस्तु है।

मयूरपक्ष सत्वपातन छठा घान।

ता० ६।११।८ को उक्त टिकियोंमेंसे ३ छटांक टिकियोंको भट्ठीमें बिना घरियाके खाली कोयलों पर रख २० मिनट धोंका, जब जाना कि टिकियाँ नीचेको पिघल कर चली गई, धोंकना बंद कर जैसेका तैसा छोड दिया।

ता० ७ को पहले ऊपरके कोयलोंको निकाला तो उनमें २ माशे दाने मिले निकले, चलनीको तोड नीचे टपकी हुई दवाको निकाला तो थोडा सा काच सा निकला जिसके अन्दर कोई दाना न था और टूटी हुई चलनीके चूरेमें मिले २ माशे दाने निकले, पिघली हुई दवाका अधिक अंश चलनी परही रहा सब दाने ४ माशे थे जो राईसे लेकर ज्वारकी बराबर थे बडे दाने विशेष कर काचवत् थे। इन दानोंको न चुंबक पकडता है न इनमें कुछ गुरुत्व है न कोई धातुकी आकृति है और स्पष्ट काच रूप दीखता है, अतएव इनको सत्व न मानकर काचही माना गया और श्वेत और श्याम दो भागोंमें विभक्त कर रख लिये गये, कुछ मैल कूडा छाँट कर फेंक दिया गया।

मयूरपक्ष भस्म नं० १ में भावना।

ता० २८।६।८ को उक्त मयूरपक्ष भस्म नं० १ आठ छटाँक, ऊन भस्म चार छटांक दोनोंको पीस ५ छटाँक केलेकी जडके रसकी भावना दी गई।

ता० २९ को ३ छ० रसकी दूसरी भावना लगी।

ता० ३० को भी ३ छ० रसकी तीसरी भावना दी गई। बादको ता० ३।७ तक सूखती रही, सूख जाने पर हांडीमें भर रख दी।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यास-ज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहितायां भाषाटीकायां स्वानुभूतमयूरपक्षसत्त्वादिवर्णनं नाम पंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५० ॥

दरदाध्यायः ५१.

दरदभेद।

दरदं त्रिविधं प्राहुश्चर्मारं शुकतुण्डकम्। हंसपादं तृतीयं तु गुणवत्तु यथोत्तरम् ॥ ॥ १ ॥ चर्मारः शुकवर्णः स्यात्सुपीतः शुकतुण्डकः। जपाकुसुमसंकाशो हंसपादो महोत्तमः ॥ २ ॥ चर्मारः शुकवर्णः क्लमं भ्रमं मेहमोहौ च। संशोध्यस्तस्मात्सद्वैद्यै रक्तहिंगुलशुद्धितः ॥ ३ ॥ (बृहद्योगतरङ्गिणी., टो. नं.)

अर्थ–सिंगरफ; चर्मार, शुकतुंडक और हंसपाद इस प्रकार तीन तरहका है इनमेंसे एकसे दूसरा यानी चर्मारसे शुकतुंड और शुकतुंडसे हंसपाद उत्तम है। जिस सिंगरफमें हरी झलक हो उसको चर्मार कहते हैं, जो कुछ पीली झलकका हो उसे शुकतुंडक कहते हैं जो जपाकुसुम (गुडहर) के फूलोंके समान लाल वर्णका हो उसे हंसपाद कहते हैं वह हंसपाद सर्वोत्तम है। हरी झलकवाला ग्लानि, भ्रम, प्रमेह और मोहको करताहै इसलिये वैद्य उसको रक्तहिंगुलकी शुद्धिके समानही शुद्ध कर लेवे ॥ ३ ॥

अशुद्ध हिंगुलके दोष।

अशुद्धो दरदः कुर्याद्व्याधिं क्षैण्यं कसं भ्रमम् ॥ ४ ॥ (बृहद्योगतरङ्गिणी.)

अर्थ–अशुद्ध सिंगरफ अनेक प्रकारके रोग, क्षीणता, कास और भ्रमको करताहै ॥ ४ ॥

हिंगुलशोधन।

मेषीक्षीरेण दरदमम्लवर्गैश्च भावितम्। सप्तवारं प्रयत्नेन शुद्धिमायाति निश्चितम् ॥ ५ ॥ (बृहद्योगतरङ्गिणी., भा. प्र.)

अर्थ–हिंगुलको सातवार भेडके दूधकी सात भावना देवे फिर सातही भावना अम्लवर्गकी देवे तो हिंगुल निश्चयही शुद्ध होगा ॥ ५ ॥

अन्यच्च।

शुद्धः स्याद्दरदः सप्त कृत्वा लाक्षाम्बुभावितः। मलदोषादिकं नास्ति सर्वकार्येषु युज्यते ॥ ६ ॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ–हिंगुलको सात बार लाखके रसकी भावना देवे तो वह शुद्ध होताहै और सब कार्योंके उपयोगी है ॥ ६ ॥

शुद्धहिंगुलके गुण।

तिक्तं कषायं कटु हिंगुलं स्यान्नेत्रामयघ्नं कफपित्तहारि। हृल्लासकुष्ठज्वरकामलाघ्नं प्लीहामवातौ च गरं विनाशयेत् ॥ ७ ॥ (बृहद्योगतरङ्गिणी.)

अर्थ–हिंगुल चरपरा, कषैला, कडुआ होताहै, नेत्ररोगोंका नाशक, कफ पित्तका हरनेवाला है, उबकाई, कुष्ठ, ज्वर और कामलाको दूर करताहै तिल्ली, आमवात और विषको नाश करताहै ॥ ७ ॥

उत्तमहिंगुल लक्षण।

जपाकुसुमसंकाशो हंसपादो महोत्तमः। रसायने सर्वलोहानां मारणे रसरंजने ॥ ॥ ८ ॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ–लालरंगका हंसपाद नामका हिंगुल रसायन करनेमें तथा समस्त धातुओंके मारण और रंजन करनेमें अत्यन्त श्रेष्ठ है ॥ ८ ॥

शिंग्रफ मुसफ्फा बनानेकी तरकीब $\frac{1}{18}$ गंधकसे (उर्दू)

सीमाव मसअद अठारह, हिस्सा गूगर्द एक हिस्सा

लेकर बाद कजली करनेके आतिशी शीशीमें जिसको तीनबार गिलेहिकमत करके खुश्क कर लिया हो निस्फ शीशी तक भर कर उसपरसे शीशेकी डाट लगाकर नमक साईदः और सफेदी बैजा मुर्गेसे मुहर करके खुश्क करले और हांडी पराजरेगमें गर्दन तक शीशी दफन करके हांडीको तीन रोज ख्वाह पांच रोज तक हस्ब जरूरत आग दे बाद सर्द होनेके शीशी निकाल ले । बाजे हुकमाने गंधक अठारह हिस्सा सीमाव एक हिस्सा वजन तहरीर किया है ।

शिंग्रफ मुसफ्फा बनानेकी दूसरी तरकीब गंधकसे (उर्दू)

यह है कि दोनों बवजन मजकूरः बाला लेकर आतिशी शीशीमें रखकर गिलेहिकमत करके एक तनूरमें जिससे आग निकाल ली गई हो और शीर गरमहो ईंट रखकर उसके ऊपर शीशी मजकूर रखदे और उतनी देरमें कि एक दो रोटी खातेहैं निकालले शिंग्रफ हो जावेगा । (सुफहा ८३ किताब अलजवाहर)

शिंग्रफ कुदसी बनानेकी तरकीब $\frac{1}{8}$ गंधकसे उमदा करना हो तो खर्फाफ नौसादर भी (उर्दू)

सीमाव खालिस दस दिरम (२ तोले ११ माशे) गूगर्द जर्द एकमुसकाल (४० माशे) लेकर शीशी गर्दन दराजमें रखकर गिलेहिकमत और मुहर बदस्तूर करके चौडे मुँहकी हांडीमें इसतरह रक्खे कि गर्दन शीशेकी निकली रहे और हांडीमें भी गिलेहिकमत करके हांडीमें बालू रखकर शीशेके चारों तरफ भरदे और नीचेसे आग ५ घंटे दे आग इस्तरह दे कि पांच घंटेमें ६ सेर लकडी जले इससे ज्यादह नहो जब छहों सेर लकडियाँ खतम होजावें तो गंधकके बुखारसे सीमाव मुनकिद होकर शिंजर्फ नीचे मुंजमिद हो जावेगी अगर ज्यादह उमदा बनाना मंजूर हो तो दाँग रत्ती नौसादर कानी उसमें मिलावें । (सुफहा ८१ किताब अलजवाहर)

शिंग्रफरूमी बनानेकी तरकीब $\frac{2}{3}$ गंधक और मन्सिलसे (उर्दू)

सीमाव खालिस बारह हिस्सा, गंधक आठ हिस्सा दोनोंको कजली करे बाद मुन्सिल सुर्ख मिलाकर सहक बलेग करके मोटे दलकी आतिशी शीशीमें रखकर गिलेहिकमत करके मुहर नमक और सफेदी बैजा मुर्गकी करके बादहू खुश्क करके हांडीको आग पर चढावे और हांडीके मुंहको भी बंद करके गिले हिकमत करदे और चूल्हे पर हांडीके जोडको भी मिट्टीसे ल्हेस दे कि आगका असर किसी जर्फसे बाहर न जावे, बादहू पहले पहर नरम आंच दूसरे पहर ओसत दर्जेकी आंच, बादहू चार पहर सख्त आंचदे । गर्ज यह है कि रफ्तः रफ्तः आंच तेज करना चाहिये बाद उसके खुद ब खुद सर्द होनेदे बाद अजाँ निकाल कर हांडीसे शीशीको निकालले कुल अजजाइ मुनकिद होकर शिंग्रफ रूमी बन जावेंगे यह अकसर जगह काम आताहै । (सुफहा ८० किताब अलजवाहर)

शिंग्रफरूमीकी दूसरी तरकीब गंधक $\frac{3}{5}$ और मन्सिल $\frac{1}{10}$ से (उर्दू)

सीमाव २० हिस्से गूगर्द बारह हिस्से जरनेख (मन्सिल) सुर्ख दो हिस्सा गुबार की तरह बारीक करके और प्यालेमें रखकर तनूरमें जिससे आग निकाल ली गईहो एक ईंटके ऊपर रखकर दूसरा प्याला बंद करके तनूरका मुंह मजबूत बंद करदे दूसरे दिन तनूर खोल कर प्याला उठाले शिंग्रफ बरंग सुर्ख और उमदा व लतीफ निकलेगा और अगर शीशीमें बनावेगा तो गरेकर्दके धुवेंसे स्याह होजावेगा, इस वजहसे प्यालेमें अमल किया गया है । (सुफहा ८३ किताब अलजवाहर)

शिंग्रफफरंगीबनानेकी तरकीब संग रासखसे (उर्दू)

यह सबसे बेहतर होताहै सीमाव खालिस लेकर उसको मुसफ्फा और पाकीजः करले इसकदर कि उसमें स्याही बाकी न रहे और अगर स्याही रह जावे तो इस्पन्द सोख्तनीके हमराह सहक करके स्याहीको दूर करें बादहू हम वजन उसके संग रासखको लेकर खरलमें महीन पीस कर सीमावको मिलावे ताकि दोनों एक जात होजावें बाद उसके आतिशी शीशीमें भर कर गिलेहिकमत मुँह सारूजसे मजबूत बंद करदे और रात भर गर्म तनूरमें रक्खे सुबहको निकाले शिंग्रफ रमानी निहायत उमदा बरामद होगा बफज्लहूताला । (सुफहा ८४ किताब अलजवाहर)

शिंग्रफकी स्याही दूर करने और मुसफ्फा करनेकी तरकीब (उर्दू)

इसकी छः तरकीबें हैं, तरकीब नं. १ शिंग्रफको लेकर चीनीके बराबर छोटे छोटे टुकडे बनावे और चीनीके प्यालेमें रक्खे और नीचे उसके गिलेहिकमत करदे और बोल सिबियान मुकत्तर उसपर डाले इतना कि चार अंगुल उसके ऊपर रहे बाद उसके नरम आग पर रखदे कि आहिस्ता आहिस्ता जोश खावे जो स्याही होगी ऊपर आती जावेगी उसको फेंकता जावे यहांतक कि स्याही पेशाबमें न रहे बल्कि उसका रंग बदस्तूर रहे जब रंग उसका लाल रमाली की तरह सुर्ख हो जावे बाद उसके धोकर काममें लावे तरकीब नं. २ शिंग्रफको कतानके कपडेकी पोटलीमें बांध कर अव्वल नौसादर कानीको हल करके चीनीके जर्फमें रक्खे और शिंग्रफकी पोटलीको उसमें लटकावे कि डूबी रहे और बतरीक अव्वलके नरम आगदे स्याही दूर होजावेगी ।

तरकीब नं० ३ शवयमानी यानी फिटकिरी हल करके सिंग्रफ पार्चीकतानकी पोटलीमें बांधकर उसमें लटकादे स्याही जाती रहेगी फिटकिरी महलूल इस्तरह करे कि उसको चंद रोज तक सिरका मुकत्तर या शराब खालिसमें डालदे जब हल होजावे काममें लावे ।

तरकीब नं० ४ नौसादर मसका और फिटकिरी दोनों नमक सज्जीके पानीमें हल करे और शिंग्रफको उसके दर्मि-

१ कदाचित् गूगर्द होगा ।

यानमें रखकर डोलायंतरगर्की करे स्याही जाईल हो जावेगी निकाल कर काममें लावे।

तरकीब नं० ५–शिंग्रफका टुकडा लेकर बकरीके घमें छिपा कर मौतदिल आग पर रक्खे और जोश दे स्याही दूर होगी।

तरकीब नं० ६–सिंग्रफको अव्वल सिरका मुकत्तरमें लटकादे जिस्में स्याही दूर होकर सुर्ख होजावे बाद उसके रोगनमें जोश देकर आलादर्जेका सुर्ख करे बादहू काममें लावे इन तरकीब मजकूरः बालासे साफ करके सिंग्रफ मजकूर नक्काशीके काममें लाया जाता है। (सुफहा ८५ किताब अलजवाहर)

कुश्ता शिंजर्फ वरंग सफेद आककी जडसे (उर्दू)

अगर वेख आकको खोद कर उसमें शिंग्रफ ६ माशेकी डली रखकर कपरमिट करके पांच सेरकी आग दें तो शिंग्रफ वरंग सफेद कुश्ता होजावेगा। (सुफहा ४ अखबार अलकीमियाँ १।२।१९०७)

कुश्ताशिंजर्फ कमलनालसे (उर्दू)

शिंग्रफ एक तोला कमलगट्टेकी जडके दर्मियान रखकर रस्सीसे खूब मजबूत बांधकर गिलेहिकमत करके करीब दस सेरके आग देवें कुश्ता हो जावेगा। (सुफहा ८६ किताब कुश्तैजात हजारी)

कुश्ताशिंजर्फ सफेद गुलाबाससे (उर्दू)

वेख गुलाबासका आधसेर लुगदा लेकर आधपाव पार्चा लपेटकर किसी गोशेमें हवासे बचाकर आंच दी जावे। (सुफहा नं० ४ अखबार अलकीमियाँ १५।५।१९०७)

कुश्ताशिंजर्फ लहसनमें (उर्दू)

शिंग्रफ तोलाको लहसन यानी थूम मुकश्शर १५ तोलेके नुगदेमें कपरौटी ५ तोले रश्नःखाम लपेट कर आग बकदर दो सेर महफूज जगहमें देवें इसतरह तीन आग देवें कुश्ता सफेद होजायगा। (सुफहा ८३ किताब कुश्तैजात हजारी)

कुश्ताशिंग्रफ वरंगसफेद कौडगंदलमें (उर्दू)

कोड गंदल एक मशहूर बूटी है जो लुधियानेके कुर्व जवार देहात पवादमें बकसरते पैदा होतीहै इसके आधसेर नुगदेमें शिंग्रफ दो तोलेकी डली रखकर मजबूत कपरौटी करके जब खुश्क होजावे पांच सेरकी मगाकमें बंदहो आंच देवे जब सर्द होजावे निकाललें इसी तरह सात दफे सात नुगदे आध आध सेरमें पांचपांचसेर उपलेकी बंद हवामें आंच देते जायें आखिरी आंचके बाद शिंग्रफ व रंग सफेद कुश्ता होगा। (सुफहा २६ किताब इसरार उलकीमियाँ)

कुश्ताशिंजर्फ केलेकी जडमें (उर्दू)

केलाकी जड करीब सवा हाथके लेवे बादहू उसके दर्मियान दो तोले शिंग्रफकी डली रख कर गिलेहिकमत करके एक गढामें मुनासिब आग दे देवें ताकि केला जल जावे मुजर्रब है। (सुफहा ८५ किताब कुश्तैजात हजारी)

कुश्ताशिंगर्फ रूमी बरंग सफेद शीरमदारका चोया दे तुलसीकी लुबदीमें रख केलेकी जडमें आँच (उर्दू)

शिंग्रफ रूमी १ तोला कर्छी आहनीमें रख कर ४० तोला शीर मदारका चोयादें बादहू दस तोला तुलसी बूटीके नुगदेमें देकर केलेकी जडमें बंद करके जब खुश्क हो १० सेर उपलोंकी आंच देवें इन्शा अल्लाह ताला कुश्ता सफेद रंगतका बरामद होगा। (सुफहा ११ वैशोपकारक १४।११।१९०६)

कुश्ताशिंजर्फ वरंग सफेद अर्कप्याज जंगली व शीर मदारमें पकानेसे (उर्दू)

आव जंगली प्याज दो तोला, शीर मदार १तोला, शिंग्रफ एक तोलाको मिट्टीके कुज्जेमें रखकर नरम नरम आंचपर पकावे मगर आंच जंगली उपलोंकी हो सफेद हो जावेगा, मुजरिब है। सुफहा ८३ किताब कुश्तैजात हजारी)

शिंग्रफभस्म कटेरी तुलसी, गुलाबाँसके रस और भेडके दूधमें ओटा मूषामें बालुकायंत्रमें आँच।

सिंग्रफ कंड्यारी (कटेरी) रसविच उबालना फिर तुलसी वीच फिर गुलाबांसी रस वीच फिर भेडदे दुद्धविच फिर कुज्जेविच रखके वालूयंत्रमें हस्तभर टोपामें अग्नि देवे श्वेत होजायगा (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

कुश्ताशिंजर्फबरंग सफेद खाकिस्तदरख्तसुर्ख मिर्चमें (उर्दू)

पांच या ६सेरें सुर्ख मिर्चकी लकडी जलाकर राख बनालो और हडियांमें डालकर दर्मियानमें शिंगरफकी डला रखकर पांच सेर बेरकी लकडीकी नीचे आग जलाओ मगर आंच दो चोबीहो जिस वक्त तमाम लकडियाँ जल जावें तौ सर्द करके निकाललो तौ शिंग्रफ सफेद होगा मुजर्रिब है। (सुफहा ८२ किताब कुश्तैजात हजारी)

कुश्ताशिंजर्फकी उमदा और आसानतरकीब खास्तर दरख्त सुर्ख मिर्चमें (उर्दू)

मिर्च सुर्खकी लकडियां खुश्क बकदरदोसेर पुख्तः जलाकर उसकी खाक एक हांडी कोरी गिलीमें भरदे एनवसत खाकमें दो तोला डली शिंग्रफकी रक्खें मुंह हांडीका चिप्पी (ढकन) से बंद करके आरद गंदमसे खूब खाम करदें बाद अजां देगदानके ऊपर रक्खे एक पहर काबिल नरम आंच ५ सेर चीन कनारसे दें इन्शा अल्लाह डली मजकूर अन्दरही अन्दर हांडीके शिगुफ्तः होजावेगी निकाल कर कदरे आग पर डालें अगर रंग तबदील न हुआ और धुवाँ न दे इस्तैमालमें लावें यह कुश्ता कुव्वत बाहके लिये नादिरात और मेरे तजरुबातमेंसे है हलवा या मस्कामें बकद्र दो बिरंज (सुफहा ५ अखबार अलकीमिया)

कुश्ताशिंग्रफ वरंग सफेद पोस्त-बैजामुर्ग और शोरमें (उर्दू)

शिंग्रफ एक तोला, पोस्तबैजा मुर्ग दस तोला, शोरा कलमी पांच तोला, अव्वल एक तोला कूजा गिलीमें निस्फ पोस्त बैजा मुर्ग बारीक करके रक्खें उसपर शिंग्रफकी डली रखकर बाकी निस्फ पोस्त शिंग्रफके ऊपर बिछाकर सबके ऊपर शोराकलमी डालदें जाँवाद कप-रौटी करके पाँच सेरकी आंच दें वरंग सफेद कुश्ता होकर बरामद होगा (सुफहा २ अखबार अलकीमियाँ १।११।१९०७)

सिंग्रफभस्म शीशेके चूर्णमें पुट।

चिटे कचेद चूर्णमें सिंग्रफ रखके आग दैणी श्वेत होजा-यगा (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

कुश्ताशिंग्रफ बरंग सफेद तुख्मएरंडमें पकाकर कुंजदकीलुबदीमें आँच (उर्दू)

तुख्म अरंडदो तोले के रसमें निंबू खरल करके शिंग्रफ एक तोलाकी डलीपर जमाद करदें और बादहू मग्ज तुख्म अरण्ड एक सेरका नुगदा बनाकर उसके दर्मियान शिंग्रफ देकर खुले मुंहकी कडाहीमें रखकर नीचे आग जलानी शुरू करदें, बीस मिनटके बाद कडाहीके अन्दर मग्जोंको भी आग लगावें ताकि वह जलने लग जावे जब बिलकुल जलकर कोयला होजावें उस वक्त सर्द करके शिंग्रफको निकाललें, शिंग्रफ कायमुल्नार होकर निकलेगा शिंग्रफ कायमुल्नार मजकूर एक तोलाको एकसेर कुंजद स्याहके नुगदेमें देकर दो पाचकदस्ती कलांके हवासे बचाकर आंचदें इन्शा अल्लाह शिंग्रफ बरंग सफेद बरामद होगा मुजर्रब है, कुव्वतबाहके लिये दो बिरंज खुराक हलवा या मस्कामें। (सुफहा ७ अखबार अलकीमियाँ १।१२।१९०६)

कुश्ता शिंग्रफ बरंग सफेद बैजा-मुर्गमें (उर्दू)।

शिंग्रफ ३ माशेकी सालम डलीको अगर एक खाली बैजामुर्गमें रखकर दूसरा खोल ऊपर देकर गिलेहिक्मत करके चार पांच सेरकी आंच देदीजावें तो शिंग्रफका सफेद रंगका कुश्ता होजाता है कुव्वत वाहके लिये खुराक एक चावल। (सुफहा ५ अखबार अलकीमियाँ १।२।१९०७)

ईंगुरप्रक्रियाविधि शिंग्रफभस्म ७ आँच अंडेमें भर धागा लपेट।

अंडा इक मुरगीको लेइ । ताके नान्हों छेद करेइ ॥ काढि सुपेदी न्यारी धरै। जरदी मांहि जो ईंगुर भरै ॥ ईंगुर कीजै चना समान। तब अंडामें देइ सुजान ॥ ईंगुर लीजै तोरो एक। हंसपाक ले ये जु विवेक ॥ अंडा बैठि मेदा अवधूत । पुनि लपेटि जै चौवरसूत ॥ सूत टंक दशके उनमान । इसी भाँतिकै वेष्टि सुजान ॥ अंडा पीडुरे लहिन धरो। फेरि फेरि पुट सातक करो ॥ मोडे अंडा लीजै सात। सूत पुराने इहही बात ॥ ईंगुर जो बेधिक ह्वै जाय। धातहू रंगे सुनो हो राय ॥ जो यह किरिया मध्यम जानि । जामें होइ जीवकी हानि ॥ (बडा रससागर.)

शिंग्रफभस्म अंडेमें पकाया ९ बार।

शिंग्रफ लेके कुक्कुटांडमें पाकर उपरों फेर बंद करके चावलाँ विच पाके रिनोणे एवं पंचकुक्कुटाण्डमें रिनणें से शिंग्रफ फूल जायगा, अनुपानके साथ देणा। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक.)

कुश्ताशिंग्रफ रोहूमछलीमें।

एक तोला शिंग्रफ रूमीको रोहू मछलीके मुंहमें गिले-हिकमत करके और तीन पहर उपलोंकी आग देवें। (सुफहा ८४ किताब कुश्तैजात हजारी.)

शिंग्रफभस्म (बेधक) लाणाबूटीमें पका बकरेकी कलेजीमें रख शराब डाल आँच।

सिंग्रफकी डली लेकर मिट्टीके भांडेमें रखकर लौणा[1]-बूटीका पाणी सवासेर पाकर धूपमें रखकर सुखाणा अथवा भूभल पर रखकर सुखाणा फिर बकरेकी कलेजी जो ठीककर रेजी रंगदी पखदी हुंदीहै वह लेकर पाडके उसमें डली रखकर सीउके भांडेमें रखकर उपरों देशी शराब चंगा पाकर बंद करके आग देणी फिर वह शिंग्रफ ताम्रपर पाणेसे सुवर्णकर होवेगा सुवर्ण फोटक हो जावेगा। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

कुश्ताशिंगर्फ-धतूरेके रसमें घोट टिकिया बना गूदडकी आँच (उर्दू)

छः माशे शिंग्रफ वर्ग जोजमाइल[2]के पानीमें छः घंटे खरल करके कुर्स बना कर खुश्क करके एक छटांक उमदा पार्चः लपेट कर एक गोशेमें आग लगावें। (सुफहा ८५ किताब कुश्तैजात हजारी)

कुश्ता शिंजर्फ-अर्कलैमूंमें गिलोला बना धतूरेके फलमें रख गूदडकी आँच (उर्दू)।

शिंग्रफ रूमी एक तोला लेकर चीनीके बर्तनमें रक्खें और अर्क लैमूं इस कदर डालें कि तीन अंगुश्त ऊंचा रहे और एक दिन रातके बाद उस अर्कमें उसे खरल करके जज्ब करदें और गिलोला बना कर धतूराके पेटको खाली करके उसमें भरदें और उसके मुंहको अजजाइ मुतखर्जासे बंद करके पार्चा कर पास जिसको कि रोगन बेद अंजीरसे तरकिया हुआहो उसपर इस कदर लपेटें कि एक तरबूजकी मिकदारमें होजावे उसको एकतार आह-

१ क्या लोनियासे मतलब है। २ जोजमाइल धतूरा।

नीसे किसी जगह मौअह्लिक करें और आगदें जब शौला जनी खतम होजावे तो इस गिलोला मौह्लिकाको जमीन पर रक्खें और एक बडेसे वर्तनसे ढापदें एक रोजके बाद उसको निकालें कुश्ता सफेद रंग बरामद होगा खुराक एक रत्ती तक मक्खनके साथ करी बदनीकी तकवियत और बाह व इमसाकके वास्ते जाइदीलहू मुजर्रिब उल मुजर्रिब है । सुफ्हा ५५ किताब मुजर्रिबातफीरोजी)

कुश्ताशिंगर्फ–शीरतिधारामें टिकिया बना पुटकी आँच (उर्दू)

शिंग्रफ एक तोलाको दूध तीन धारी थूहरमें खरल करके टिकी बना कर खुश्क करके बूटी छलटी एक छटांकमें रखकर गिलेहिकमत करके आग करीब ४ सेरके देवें कुश्ता होजावेगा । (सुफ्हा ८५ किताब कुश्तैजात हजारी)

कुश्ताशिंजर्फ–जमीकंदके रसमें टिकिया बना–जमीकंदमें रख पुट (उर्दू)

एक तोला शिंग्रफको दो सेर अर्क जमीकंदमें खरल करके टिक्को बनावें बादहू सायामें टिक्कीको खुश्क करके एक जदीद जमीनमें कंदमें जो बहुत बडाहो डालकर अच्छी तरह छः या सात दफे कपरौटी करके खुश्क करें एक महफूज जगहमें गढा खोद कर करीब एक मनके आग देवें । (सुफ्हा ५५ किताब कुश्तैजात हजारी)

शिंग्रफ भस्मसफेद–दूधमें औटा प्याजके रसमें घोट टिकिया बना प्याजकी लुगदीमें आँच (भाषा)

खिंग्रफ पहले दो सेर गोके दुग्धमें दोलायंत्रसे पकाणा फिर पलांडुके रसमें खरल रस शिंग्रफसे चतुर्गुण होवे फिर पलांडुकी लुगदीमें १६ सेर पक्के गोहेकी आग देणी निर्वात स्थानमें श्वेत होजायगा, तब कमजोरीमें १ रत्ती अनुपानसे देणा । (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

कुश्ताशिंगर्फ–अर्क प्याज व शराब देशी व जर्दी बैजामें घोटकर उपलेकी आँच (उर्दू)

शिंग्रफ एक तोला, प्याजका पानी बकदर एक सेर पुख्तः लेकर थोडा थोडा डालकर खरल करे बादहू एक बोतल देशी शराब किस्म अव्वलमें खरल करके टिकी कूंजा बनावे बाद बहजर्दी तुख्म मुर्गमें खरल करके एक गिलीमें रखकर गिलेहिकमत करें और खुश्क करके दोसेर उपले सहराईकी आग देवें । (सुफ्हा ८४ किताब कुश्तैजातहजारी)

कुश्ताशिंगर्फ–आकके दूधमें टिकिया बना पीपलकी खाकमें (उर्दू)

एकतोला शिंग्रफको आठ पहर शीर मदारमें खरल करके टिकी बनाकर खुश्क करके मगर सायेमें बादहू पोस्त दरख्त पीपलकी सवा पाव राख लेकर एक बर्तनमें डालकर दर्मियान टिकी रखकर गिलेहिकमत करके आग करीब आठ उपलोंकी देदेवें मुजर्रिब है । (सुफ्हा ८५ किताब कुश्तेजात हजारी)

कुश्ताशिंगर्फ–खाकिस्तर ढाक या पीपल या जंगली कंडा (उर्दू)

दरख्त पीपल और बनकंडा और दरख्त ढाककी खाकिस्तरमें भी कुश्ता शिंग्रफका हो जाताहै जिस्तरोकसे हडतालका कुश्ता होजाता है । (सुफ्हा ८२ किताब कुश्तैजात हजारी)

कुश्ताशिंग्रफ(मुकव्वीबाह) बरंग सफेद अर्कघीग्वारमें घोट सिर्सके लुगदमें रख भूधरमें आँच (उर्दू)

हस्ब फर्माइश एडीटर नज्म हाजा हजरत सय्यदुलशौरा जनाब समीम साहब शायर रियासत आलियः मालीर कोटलाने तसनीफ फर्माई है, लुत्फ यह है कि नसरसे ज्यादा बाजै तरकीब समझमें आती है ।

कुश्ता शिंग्रफका बनाना है अगर। रख शिंग्रफे कारको मद्दे नजर ॥ एक तोला शिंग्रफे रूमी है बस। क्या जरूरत है बढानेकी हविस॥ क्वारके पानीमें कर उसको खरल। दूसरे दिन सायेमें रख फिल अमल ॥ और फिर देख सिर्समें कर न देर । बजन जिसका कमसे कम हो एक सेर ॥ बंद करके एक बजन जेरे जमीन । खोदकर फिर दफन कर इसको वहीं ॥ तह जमा ऊपरसे बालू रेतकी । तह मगर काफी है उसको एकही ॥ आंचदे इस एक तहमें पांचसेर । दूसरे दिन आंचका दोना हो सिपहर ॥ तीसरे दिन तीस सेर और आंचदे । रोज चौथे एक मन फिर उसको ले ॥ पांचवें दिन फिर सवा मन लाइये। आंचकी गर्मी उसे पहुँचाइये ॥ बाद उसके सर्द होजाए वह जवा कुश्ता शिंग्रफका निकाले फिर वहतब ॥ रंग आए जब नजर उसका सफेद । बाहकी कुव्वतकी पूरी रख उमीद ॥ है फकत खुराक इसकी दो बिरंज । खाके बालाईसे कर फिर दूर रंज। हो न बालाई तो मस्काही सही। फाइदा दोनोंका है बस एकही ॥ (सुफ्हा ६ अखबार अलकीमियाँ १६।१२।१९०६)

कुश्ताशिंगर्फमयसीमाब अर्कप्याजमें ४० दिन खरल कर टिकिया बना चूनेमें रख चक्रजंतरकी आंच (उर्दू)

शिंग्रफ पांच तोला, सीमाब पांच तोला, हरदोको

मिला कर अर्क प्याजमें चालीस रोज तक बराबर खरल करें और फल्लूसके बराबर टिकिया बनावें और खुश्क करें और जमीनमें एक गढा सूराखकी तरह बकदर डेढ बालिश्त या हस्ब जरूरत खोदें और उस गढेको कलस हिजरी सफेदसे जो बारीक कियां हुआ हो निस्फ तक भरदें और उसपर सब टिकियाँ यकेबाद दीगरे रखकर बाकीको इसी कलससे भरदें और गढा मजकूरसे चार अंगुलके फासिले पर गिर्दा गिर्द खंदककी तरह एक और गढा खोदें और उपला सहराईसे पूर करदे आग इसतरह पर लगावें कि हर चार तरफ एकही मर्तबः आग चमके और इस गर्जके वास्ते रोग न स्याहसे फतीला तर करके गिर्दा गिर्द रखना बहुत मुनासिब है अपने सायेसे परहेज करें कामिल सर्द होनेपर निकालें खुराक एक चावलसे चार चावल तक बदरका मुनासह अमराजसे मख्लन मजजूमको हलैला स्याह, कत्था, कतीरा सरभंगा, शाहतरा, हिनाव वर्ग खुरफाके जो शाँदेसे चालीस रोज तक और नरमलाके वास्ते मवीज मुनक्का मग्ज बादाम या वर्ग पान या रैहाँ या मक्खनमें और और सर्द मिजाजवालों को लौंग जौज बलवा वगैरहके साथ परहेज मुनासिब जरूरी है नजला मुतकर्चाके वास्ते अकसीर है हत्ता कि सदसाला नजला इससे दूर हो जाताहै और जजामके वास्ते बेनजीरं तक वियत वाह और इमसाकके वास्ते बे मिसल हिफाजत करने काविल है मामूल रमर्कमुल हुरूफके बारहा तजरुबेमें आचुका है। (सुफहा ५३ किताब मुजर्बात फीरोजी)

कुश्ता शिंग्रफ मय सीमाव अर्क प्याजमें ४० दिन खरलकर टिकिया बना चूनेमें रख चक्र जंत्रकी आँच (उर्दू)

शिंग्रफ ५ तोला, पारा ५ तोला, दोनोंको चालीस रोज तक अर्क प्याजमें खरल करें और फल्लूसकी वरावर टिकिया बनाकर सायेमें खुश्क करलें, जमीनमें एक सुराख डेढ बालिश्त गहरा खोदें निस्फ सूराख कलस हिजरी सफेद रंगसे भरदें और टिकिया मजकूर रख कर बाकीभी उससे भरदें इस सूराखसे चार अंगुलके फासिले पर गिर्दा-गिर्द खंदककी सूरतमें एक दूसरा गढा खोदें और पन्द्रह सेर उपलोंसे भरदें और आग लगावें मगर हर चहार तरफ एकही बार चमकी पूरी तरह सर्द होनेके बाद जो कम अजकम बीस घंटेमें होगा कुश्ता शुदह शिंग्रफ व पारा हमवजन निकाललें खुराक एक चावलसे दो चाँवल तक मैं इसे इन बदरकोंसे बरना करताहूं यानी आतिशक जजाम वालेको हलैला स्याह, कत्था, कतीरा, सरभंग शाहतरा वर्ग हिनाके जो शाँदेसे और गर्म मिजाज वालोंको वर्ग रेहाँमें सर्द मिजाजवालोंको लोग जोज बवा वगैरःके साथ बीस-साला नजला मुतकरजामें मैंने इसे अकसीर पाया है कुव्वत बाह और इमसाकमें अजीब तमाशा दिखाता है गर्जे कि बे नजीर और काबिल हिफाजत हैं। (सुफहा १६ रिसालः हिकमत लाहौर १५।२।१९०७)

कुश्ता शिंग्रफ अजहद मुकव्वी प्याजकी सह आतिशा शराब तय्यार कर उस्में घोट टिकिया बना सम्पुटमें रख बालू जंतरमें चार पहरआंच (उर्दू)

नाजिरीन मुन्दर्जः जैल कुश्ता शिंग्रफ जो आपकी खातिर आज दर्ज कर रहाहूं सचमुच बेनजीर है कैसा ही सत्व नामर्द हो सातदिनके अन्दर खुदा चाहै मर्द बन जावेगा चहरा सुर्ख होजावेगा इसको सातदिन वा परहेज खाना किसी किसीका काम है यह एक राज है सीना खोल कर नाजरीनके सामने रक्खे जातेहैं जो इसको बनावेगा याद करेगा।

प्याज एक मन लेकर उनका रस निकालें एक मटकेमें डाले और उसमें सेर भर गुड और सेर भर छिलका कीकड डालदें पन्द्रह दिनके अन्दर ही उसमें साड पैदा होजावेगा जैसा कि शराबमें पैदा होताहै अब बजरियः भबका या बजरियः कुरा अबीक इसका अर्क खींचलें इस अर्कका फिर अर्क खींचें तीनबार अर्क खींचनेमें करीब दो बोतल यह तेज अर्क जिसको शराब प्याज कहना बजाहै निकलेगा शिंग्रफ ४ तोले लेकर खरलमें डालकर इस अर्कको डालकर खरल करना शुरू करें, हत्ताकि तमाम पानी उसमें जज्ब हो जावे फिर शिंग्रफकी टिकिया बनाकर दो छोटे प्यालोंके दर्मियान इसको देदें और मिट्टी मुँह पर लगाकर बंद करदें एक बर्तन गिलीमें ५ सेर बालूरेत नीचे ऊपर देकर दार्मियान वह प्याली रखकर नीचे ४ प्रहर दार्मियानी आंच करे शिंग्रफ कुश्ता होजावेगा खुराक इसकी एक चावल है जो बरदाश्त कर सकें चाहे ४ चावल खाजावें मक्खनमें रखकर निगल लेना चाहिये, ७ दिन खाकर फिर जवानीके दिन मुलाहिजा फर्मावें कसरत जमाईसे परहेज करें और लुत्फ जिन्दगानी उठावें न कि इस ताकत अजीबको हासिल करके अय्याशीमें गवांदें और फिर वैसेही कारेके कोरे रह जावें। (सुफहा अखबार वैशोपकारक लाहौर ३१।१०।१९०६)

तरकीबकुश्ताशिंग्रफ शिंग्रफको भिलावा, कुचला, मालकाँगनी, शहद, घीमें पका प्याजका चोयादे शीर आकमें खरलकर बालू जंतरमें आंच (उर्दू)

शिंग्रफ १ तोला, मालकांगनी १ छटांक, कुचला १ छटांक, भिलावा १ छटांक, शहद १ छटांक, घी १ छटांक मालकांगनी भिलावा, कुचलाको बारीक करके शिंग्रफकी डली कडाहीमें रखकर ऊपर बिछाकर दबादेवें और शहद व घी ऊपर डालकर नीचे नरम आंच ४ प्रहर करके ठंढा होनेपर शिंग्रफकी डली निकाललें इस डलीको फिर तवा आहनी या कर्छे पर रक्खें और नरम आंच नीचे शुरू करें और प्याजके रसका चोयादें, ५ सेर रस प्याजका जब खतम होजावे तो डलीको लेकर दूध आगमें एक दिन खरल करें और आकके दो पत्तोंके दर्मियान पांच सेर बालूरेत नीचे ऊपर देकर एक हांडीमें डालकर नीचे दो पहर तक दार्मियानी आंचदें, कुश्ता शिंग्रफ बहुत आला

तय्यार है यह अकेला ही कुव्वतवाहमें बेनजीर है दो चावल मक्खनमें खावें ७ दिनके अन्दर सुर्ख कर देता है। (सुफहा वैद्योपकारक लाहौर १४।११।१९०६)

कुश्ता शिंजर्फ सफेद दाफे फालिज रोगन जमालगोटा व बादाम तलख वगैरःका तय्यार कर उस्में गोतादे सदवार तश्बिया बादहू अस्पन्द व शीर मदारकी लुबदीमें आँच (उर्दू)

तुख्म अलसी २० तोला, तुख्म बादाम तलख २० तोला, तुख्म जमालगोटा २० तोला, तुख्म अस्पन्द २० तोला, सबको मिलाकर शीर जकूमसे तर करके बजरियः पतालजंतर जरूफ गिलोमें कशीद करें तेल बरंग स्याह होगा बाद जजफर दो तोलाकी एक डली लेकर उस तेलमें तर करके बर्ग वेदअंजीर पर रख कर लपेट कर गिलोला बनालेवें और उसपर ५ तोले सख्त मिट्टी तरका गिलाफ देकर कोयलेकी आग पर तश्बिया करें जब कि गिलोलेके ऊपर वाली मिट्टी सुर्ख हो जावे तो आगसे निकाल कर तोडकर और तेलमें भिगो कर बर्ग एरंडमें लपेट कर गिलोला बनाकर मिट्टी ५ तोला लेकर बदस्तूर अव्वल आगमें तश्बिया करें, इस्तरह एक सद मर्तबः तश्बिया देना होगा तुख्म अस्पन्द २० तोला, शीरमदार २० तोलाको घोट कर लुगदा बना लेवें और जंजफर मजकूर इसमें रखकर गिलेहिकमत करें बाद ५ सेर पाचकदस्तीका आग देदें कुश्ता बरंग सफेद हमवजन तय्यार होगा, बकदर निस्फ चाँवल मुनक्कामें खिलाया करें इन्शा अल्लाह अगर तमाम बदनको फालिज होगा तो हमेशाके लिये आराम होजायगा तजरुबा शर्तियाहै। (सुफहा १३ अखबारअलकोमियाँ १६।११।१९०६)

कुश्ता शिंजर्फ या तरकीब कायम करने शिंजर्फ सफेद प्याजमें २१ आंच (उर्दू)

थोडीसी शिंग्रफ लेकर एक बडे सफेद प्याजमें मगर पहले हींगको लेप करके डालकर गर्म भूभलमें कपरौटी करके रक्खें इस्तरह इक्कीस मर्तबः करें (सुफहा ८२ किताब कुस्तैजात हजारी)

कुश्ता शिंजर्फ या तरकीब कायम करने शिंजर्फ फल इन्द्रायनमें १०१ आँच (उर्दू)

शिंग्रफ एक तोलेको हिंजल ताजामें डालकर कपरौटी करके एक गढामें एकसौ एक आग देवें इसी तरह एकसौ एक आंच देदेवें मगर याद रहे कि हरबार हिंजल ताजा चाहिये (सुफहा ८४किताब कुस्तैजात हजारी)

शिंग्रफ कायम करनेकी क्रिया और कायम सिंग्रफसे निकाले पारेको स्थिर करता है।

लोटा सज्जीके सत्वमें सिंगरफको दाबू देनेसे ५ वा ७बार लाल करनेले एवं सुक्ति वा सुधा चूर्णमें (भरबेडका चूर्ण) सबज गिदड तमाकूमें लुगदी बणा सात आग देणेंसे शिंगरफ स्थिर होजाताहै उसको तेजाबमें पारद अलग करै तौ स्वच्छ है (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

शिंग्रफ भस्म वा अग्निस्थाई विषका लेप कर तोबेमें रख सौपुट।

१ तोला तेलिया, मौरा २ तोले जहरा दोनोंको निंबूके रसमें खरल करना फिर शिंग्रफ पर लेप करना फिर तुंबेमें रखकर कपडमाटी करणी एवं सौ तुंममें पुट देणा कुक्कुट पुट पुष्टि ज्वरादावनुपानेन (जंबूसे प्राप्त पुस्तक.)

तरकीब शिंगरफ मूमिया डलीशिंजर्फको सींगियाके गिलोलेमें रख कडमें पकायाहै (फार्सी)

कि बराइ इस्तहा आबुर्दन सहचन्द अज साबिक व दरबाह मुजर्रिब अस्त शिंग्रफ किस्म अव्वल कि हंसपाक गोयन्द दो तोले रायककितै बिगीरन्द व बेश सफेद कि जहर नवाती अस्त पावसेर बस्तानंद व बारिक साजन्द व जमीकुनद विकोवंद व आव विगीरन्द व अर्जा आब बेश मसहूकारा ब सर शंद ब शिंग्रफ रादर बसत आँ निहदह गिलोला बन्दन्द व पार्चा सुफ्र बरआँ गिलोला साफपेचन्द ब दरंद दरंद पसवियारन्द रोगन तुख्म महसफर कि बहिन्दीकड गोयन्द मवानःअनः (बजनी) सहसेर ब दरदेग मिट्टी निहन्द ब गिलोला दरआँ अन्दाजन्द व सरपोश बरआँ कर्दः महकुम गीरन्द व संगे बालाई सरपोश नीज गुजारन्द पस आतिश कुनन्द हनीजी कि शोला ओमिकदार कनूल बालिश्त अजदेगसहचोब आतिश दिहन्द ता यक पास बादहू आतिशतुन्द कुनद चुनाचि ख्वाहन्द ता सह पास कामिल आतिश दिहन्द तुन्द ब बुस्नार बर आमदन न दिहन्द शोर अजीम अजदेग ख्वाहद बरामद ब सवास नकुनन्द व बाद चहार पास फरूद आरन्द तमाम रोगन गलीज शुदः मे मानद कितः शिंग्रफ अर्जा बर आरन्द कदर यक बिंजई शिंग्रफ हमराह पान खाईदः बिखुरन्द इस्तहा अजीममें आरद व रफै फैज हममे नुमायद व वे आफत अस्त ब दरवाह आसर कवीदारद व बदनरा फरवः ब बरकुव्वत मेसाजद ब दोहफ्तः अगर बिखुरन्द यकसाल आसरमे मानद ब रोगन गलीज कि चोह मानिन्द मे शवद आँनीज बराइ इस्तहा व अमराज मुलगमोह मजमनह मुजर्रिब अस्त कदेर बिखुरानन्द बापान। (सुफहा ४किताब मुजर्रिबात अकबरी)

शिंग्रफ मोमिया भिलावे और घीमें औटा फिर दूधमें औटाया है।

भिलावे १० तोले, घृत १५ तोले, शिंग्रफ १ तोला तीनों चीजें आग पर चढा दैणा जब घृत जल जावे तब शिंग्रफ निकालके २सेर पके दुग्धमें पाके काढणा फूलजायगा, अनुमानसे देणा (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

हिंगुल गुण।

कषायतिक्तं कटु हिंगुलं स्यान्नेत्रामयघ्नं गलगंडकुष्ठम्॥हंत्यम्लपित्तं ज्वरशोषशोकशूलातिसारं सुमुखप्रसेकम्॥ ९॥ (टी. नं.)

अर्थ-सिंगरफ कषैला, चर्परा, कडुवा होताहै और नेत्ररोग, गलगंड, कोढ, अम्लपित्त, ज्वर, शोष, सूजन, दर्द, अतिसार और मुखमेंसे लारोंके गिरनेको नाश करताहै ॥९॥

फवायद कुश्ता शिंग्रफ मुखकर (उर्दू)

खुराक १ चाँवलसे तीन चावल तक वास्ते नामर्दी वगैरःके मख्खनमें या मुनक्कामें डाल कर खावें ऊपरसे दूध नीम गर्म घी मिलाकर या वैसेही पीजावें, इस साकके वास्ते पानमें खालें और दूध घी पीलें कोई भी बादी या बलगमी अमराज क्यों न हो मुनक्कामें एक चावल मिला खालें, गठियाकी इस्तहा जौफ एसाब और हनाजीर सफेद दाग नीज आतिशकको भी मुफीद है अगर गर्मी खुश्की मालूम हो तो दूध घी वगैरः पिलावें पानमें खाना भी बहुत ही मुफीदहै, बादी और बलगमी अमराजमें बादी और बलगमी अशियाइ और नामर्दीमें बादी अशियाइ तुर्श अशियाइ और तेलकी अशियासे परहेज लाजिम है। (सुफहा १५ वैशोपकारक लाहौर १२।१२।१९०६)

शिंग्रफमोमिया हुलहुल नीबूके रसमें पकानेसे (भाषा)

सिंग्रफ (हुलहुलके पत्ते कागजी निंबू) हुलहुल नेडलीको कहतेहैं न्योलीका रस १० तोले और निंबूका रस ६ तोलेसे कम न होवे दोनों रस कुज्जेमें पाकर शिंग्रफकी डली एक तोलेकी उस्में पाकर बंद करके कोयलोंके ऊपर कुज्जेको रखकर मंद मंद अग्नि देकर रसको जलाना सिंग्रफ श्वेत वर्ण मोमिया बण जायगा, न्योलीके रसमें फौलाद बणताहै धूपमें । (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

रोगनशिंग्रफ (उर्दू)

दो तोला शिंग्रफ रूमीको पोटलीमें बांधे और जर्फ आहनीमें रख कर रोजाना पावभर शीर मदार डाल कर नरम आगमें पकावें इसी तरहसे सौदिन तक पावभर दूधमें रोजाना पकाया करें ताकि पचीस सेर दूध शिंग्रफ मजकूरमें जज्ब होजावे बाद अजाँ शिंग्रफको जर्फ चीनीमें रखकर रातको शबनममें रखदे सुबहको रोगन होजायगा जोकि मुंजमिद न होगा, यह रोगन एक रत्ती तोले भर चाँदीको सोना बनाता है और एक सींक एक एक हफ्तेके बाद हमराह बालाईके खावे कुव्वत बाह और नामर्दीके वास्ते इससे बढकर नुसखा नहीं है और काबिल तजरुबा है, हकीम गोरदासमल साहब साकिन रावलपिंडीने इसको अखबार अलकीमियाँ मारूजा यकम मई सन् १९०५ में तबअ कराया है और लिखा है कि यह उस जोगीका नुसखाहै जिसने एक मुजामअत परस्त आदमीको दियाथा और हकीम साहब ममदूहने उससे हासिल किया इसमें ठीक नहीं कि यह नुसखा सुर्ख अकसीरका है और उसूलन बेनजीर है और जन गालिबहै कि इससे तिला बन जावे । (सुफहा अकलीमियाँ १९५)

शिंग्रफतैल मूषकपर्णीके रसमें घोट पातालयंत्रसे (भाषा)

मूषापर्णीके रसमें खरल करना सिंग्रफ दिन २१ फिर छोटी छोटी गोली बनाकर सुखा लैणी फिर उनको आतिशी शीशीमें पाकर कपरमिट्टी करके शीशीके मुखमें अश्वकेश रखकर सछिद्र दौरमें मुख हेठ निकाल कर छिद्र पर मिट्टी लगा कर मुखके नीचे काच वा चीनीका पात्र रख कर अधोमुख शीशीके ऊपर सेर पक्का धान्य तुष रख कर अग्नि देवे 'तत्तैलं स्पर्शाद्वेधकम्' । (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

शिंग्रफभस्म तथा तैल (भाषा)

सिंग्रफ लेकर थोम (लहसन) के रसमें गोली बणा लेवे फिर थोमकी लुगदी गोलीके नीचे ऊपर देकर ६ बट्टो गोहेकी आग देणी श्वेत भस्म होजायगी, तप, नाकुव्वती, कफ, वात, रोगोंपर तोला भर दणी अनुपान भिन्न भिन्न, एक तुरी थोमके रसमें खरल करके छोटी गोली बणा कर पातालयंत्रसे तैल निकाल लेवे, यह तैल वेधक है। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

अकसीर उल अकसीर मोम शिंग्रफी शहदमें गोता दे नौसादर पर छिडक आँबा हल्दी लपेट तुख्म अंडीमें रख सदबार भडका (उर्दू)

बफज्ल खुदा इसके चन्द रोजके स्तैमालसे नामर्द जवाँ मर्द हो जाताहै चाहे कैसाही गया गुजरा मरीज क्यों न हो तीन रोज निहायत सातरोजमें अपनी असली हालत पर आजाता है मेरे शफाखानः हैदरीका यह खास नुसखा है अबतक कई मरीज जो वर्षो तक इलाज करते करते थक कर ना उम्मीद होकर इलाजसे तोबा करके बैठ गयेथे वह भी खुदाके फज्लसे कामयाब हुये तजरुबा शर्त है तय्यार करके देख लेवें और कहीं ऐसा न हो कि तूल अमल देख कर घबराकर इस नियामतसे महरूम रहै अगर आपको कुव्वत बाह हासिल करनेका शौक हो तो चन्दरोज जरूर मेहनत करैं जिससे तमामउम्र ऐशो अशरतसे बसर होगी इन्शा अल्लाह इसके स्तैमालके बाद दूसरी किसी दवाकी जरूरत न रहेगी, बस अगर कुदरत खुदाका तमाशा देखना हो तौ जरूर तजरुबा करे हरगिज खता न होगी ।

नुसखा अकसीरी यहहै ।

शिंग्रफ बकदर २ तोला सालम डलीको ७ रोज तक शीर मदारमें भिगो रक्खै बाद उसके निकाल कर शहद खालिसमें डुबोकर उसपर दो रत्ती नौसादर ईरानी बरंग सुर्ख पिसा हुआ सफूफ डालदें यानी छिडकदें और फौरन आँबा हल्दीके सफूफमें वह शहद आलूदह डली रख कर हाथसे इधर उधर करै जिसकदर उसके साथ आँबा हल्दीका सफूफ लगे वह बदस्तूर रहनेदे बाद दो तोले तुख्म बेद अंजीरके नुगदेमें रखकर गिलोला बनाले फिर ६ अदद बर्ग बेद अंजीर नीचे ऊपर देकर रेशा खामसे चन्द पेच मारदें और पुतला जैसा गिलेहिकमत करके गीला गीलाही पाचकदश्तीकी आगमें रखकर तख्मिया करें जबकि बारह मिनट निहायत पन्द्रह मिनट होतो फौरन गिलोला निकाल कर गर्म २ तोड कर शहदमें आलूदह करके उसपर दो रत्ती नौसादर ईरानीका सफूफ छिडक कर आँबा हल्दीके सफूफमें फिराकर दो तोले

तुख्म बेद अंजीरके मुकश्शर नुगदेमें रख कर उस पर ६ अदद वर्ग बेद अंजीर लपेट कर गिलोला बना कर पुतला गिलेहिकमत करलेवें और बदस्तूर अव्वल आगमें रखकर तश्विया करें इसी तरह दो सद मर्तबः तश्विया करें इन्शा अल्लाह बहुक्म खुदा मजकूर आला दर्जेका मोमिया हो जावेगा, हां यह भी याद रहे कि अगर पहिलीसी आग बराबर आती रहैगी तो फिर आपको दो सदमर्तबः की तकलीफ न होगी सिर्फ एक सद पच्चीस तीस तश्वियामें मोमिया हो, जाता है इसलिये बेहतरहै कि एक सद तश्वियेके बाद डलीको सीख आहनी मारमार कर देखता रहे जब कि सीख अन्दर डलीके चली जावे तौ तश्वियेका अमलबंद करदेवे बस तय्यार है वक्त जरूरतके बकदर निस्फ चावलसे एक चावल तक मरीजकी तबियतको समझ कर देवें और इसरार इलाहीका मशाहदा फर्मावै यह भी याद रहै कि रोगन व शीरका इस्तैमाल ज्यादा करना चाहिये बल्कि जिस कदर रोगन खायेंगे वह सब हजम होता जावेगा कोई तकलीफ न होगी परहेज तुर्शी व मछली और जमाइका होना जरूरी है।

एक इसरार और मुखफ्फीराज।

यह भी है कि शिंग्रफ मजकूरको प्याला चीनीमें रख कर वह प्याला पांच सेर रेतके ऊपर रखदे जो पहलेसे तबा आहनी या गिलीमें डाल कर चूल्हे पर रक्खा होगा नीचे नरम नरम आग जला कर अर्क जैलका चोया डालते जावेंगे तौ रंजफर मजकूरका तेल होता जावेगा जबकि तमाम तेल होजावे तो हिफाजतसे उतार कर शीशीमें रखलेवै और ब वक्त जरूरत बकदर एक सुर्ख एक तोला मिसपर तरह करै इन्शा अल्लाह मकबूल बाजार होगा।

अर्क यह है।

कलस बैजा मुर्ग २ जुज, नौसादर २ जुज, आबचूना ३ जुज, बोल सिवियाँ ४ जुज, मूए आदम ६ जुज, तरकीब यहहै कि बालोंको अच्छी तरह चिकनाईसे साफ कर लेवै और मिकराजसे बहुत बारीक कतर लेवै फिर अजजाइको मिलाकर शीशीमें डालकर बंद कर लेवै बाद गज पुटगढा जमीनमें खोद उसमें लीद अस्पताजा भरकर शीशीको दर्मियानमें रखकर गढेको बंद करदे बीस रोजके बाद निकाल कर कुरा अंबीकमें डाल कर जो काचका होगा बतरीक मारूफ अर्क कशीद करै जब तक सफेद अर्क आता रहे तो उसको अलहदा रक्खे या नीचे गिरने देवै जिस वक्त सुर्ख रंगका अर्क निकले वह शीशीमें लेते रहे जब कि स्याह कतरा गिरे तो अमलको फौरन बंद करदे बस सुर्ख रंगका जो अर्क होगा वह ही कारामदहै उसीका चोह देनेसे व फज्ल खुदा जंजद जंजफर शिंग्रफका तेल होजायगा व खातिर नाजरीन यह भी जाहर कर देना मुनासिब है कि बदस्तूर जंजदके बजाइ अगर सीमाव मुसफ्फा शुदःको प्याले चीनीमें डाल कर इसी तरह सफेद रंगका चोया दिया जावेगा तो वह सीमाव आलादर्जेका कायमुल्नार होजाताहै मेरा तजरुवा शुदः, बस अगर आपको तकलीफ न हो तो तजरुबा करके देख लें। (हकीम सय्यद गुलाम अलीमालिक शफा खाना हैदरी करांची। (सुफहा नं० ५ अखबार अलकीमियाँ १६।७।१९०७ ई०)

शिंजर्फमोमिया तूतियाके पानीसे चोया देकर (उर्दू)

एक शखस जो अवाइलकी गलत कारियोंसे बिलकुल नामर्द होचुका था हमने हस्बजैल उसका इलाज किया एक हफ्तेमें पूरा मर्द होगया, इसलिये बगरज रिफाइ आम यह नुसखा नजर नाजरीन है।

तूतिया सबज एक तोला, कोश्निरजर्दकटला (बादंजान सहराई) में तर करके सात रोज तक धूपमें रक्खै, बादहू तूतिया मजकूरको शीर मदार निस्फपावमें दाखिल करके आफ्ताबमें रखदे, वह तमाम तूतिया वगैरः पानी सयालके मिस्ल होजावेगा इस पानीको निहायत अहतियातसे रक्खै शिंग्रफ एक तोला लेकर शकोरा गिलीमें रखकर आग पर धरै और ऊपर उसके आबतूतियाका चोयादें शिंग्रफ मोमिया होजायगा यह शिंग्रफ चांदीको रंगता है नामर्दको मर्द करता है खुराक निस्फ चावल बालाई या मसकामें दौरान अमल दवाईमें तुर्श अशियाइ और जमाइ तेलकी बनी हुई शै और गर्म चीजों मिस्ल बैंगन वगैरःसे परहेज है। (सुफहा नं. ४ अखबार अलकीमियाँ १६।६।१९०७)

हिंगुलभस्म १०१ आँच।

हिंगुलं द्विपलं शुद्धं बद्धा वस्त्रे चतुर्गुणे। षट्पलं कदलीमूलं सम्यक् संकुट्य बुद्धिमान् ॥ १० ॥ तदंतस्तत्परिक्षिप्य गोलमेकं प्रकल्पयेत्। एरंडपत्रैराच्छाद्य मृदा संलेपयेद्दृढम् ॥ ११ ॥ पचेत्तद्गोलकं विद्वानुपलैर्दशभिस्ततः। एवमेव प्रकारेण पुटमेकोत्तरं शतम् ॥ १२ ॥ दत्त्वा प्रतिदिनं खादेल्लवंगस्यानुपानतः। गुंजामात्रं गुणैस्तुल्यं प्रागुक्तस्य रसस्य च ॥ १३ ॥

अर्थ-२ दो पल शुद्ध सिंगरफको चौलर कपडेमें बाँध कर कुटी हुई ६ छः पल केलेकी जडमें रख गोला बनाय लेवे उसपर अंडके पत्तोंको लपेट कपरौटी करदेवै फिर उस गोलेको सुखाकर दस जंगली कंडोंमें रख भस्म करै इसी प्रकार १०१ एकसौ एक पुट देवै इसमेंसे लौंगके साथ एक रत्ती नित्य खावे तो शरीरको पुष्टकर्ता और वात हर्ता होता है ॥ १०-१३ ॥

हिंगुलभस्म।

पैसा चारि भरि सिंग्रफ लेइ पहले हंसपदीके रससे घोटै सातबेर फेर बंद्रालके रससे सातबेर घोटइ फेरि बरोहके रसमें फेर आकके दूधसे फेर सेंहुडके दूधसे सात सातबेर घोटिके एक टिकडी बाँधिके सुखाइके सराब संपुटमें राखिके एकसेर उपलोंके बीचमें राखिके आंचदेइ एकही आंचसे यह भस्म होय रत्ती दो खाय लौंगके साथ भूख होय पुष्ट होय। (भाषापुस्तक पं० कुलमणि)

हिंगुलसे निकलता हुआ पारद गंधक जारितपारदके समान होताहै ।

हिंगुलः सर्वदोषघ्नो दीपनोतिरसायनः । सर्वरोगहरो वृष्यो जारणायातिशस्यते ॥ ॥ १४ ॥ एतस्मादाहृतः सूतो जीर्णगंधसमो गुणैः ॥ १५ ॥ (र. र. समुच्चय.)

अर्थ-हिंगुल समस्त दोषोंका नाशक, अग्निको बढानेवाला, रसायन, समस्त रोगोंका नाशक, बलकारी, जारणके लिये होताहै, इसलिये उस हिंगुलसे निकाला हुआ पारद गंधक जारित पारदके समान होताहै ॥ १४॥१५ ॥

शिंग्रफके भेद और परीक्षा ।

हिंगुलः शुकतुण्डाख्यो हंसपाकस्तथापरः। प्रथमो हिंगुलस्तत्र चर्मारः स निगद्यते । श्वेतरेखः प्रवालाभो हंसपाकः स ईरितः॥ ॥ १६ ॥ (र. र. समु०)

अर्थ-हिंगुल दो प्रकारका होताहै एक शुकतुण्डाख्य और दूसरा हंसपाक अब शुकतुंडको चर्मारभी कहतेहैं, हंसपाक वह सिंगरफ होताहै जिसमें कि श्वेतरेखा हो और मूंगेके समान लाल वर्ण हो ॥ १६ ॥

शिंग्रफकी शुद्धि ।

सप्तकृत्वोऽर्द्रकद्रावैर्लकुचस्याम्बुनापि वा । शोषितो भावयित्वा च निर्दोषो जायते खलु ॥ १७ ॥ (र. र. स.)

अर्थ- सिंगरफको अदरखके रससे अथवा लकुचके रससे[१] भावना देकर सुखावे तो शिंगरफ शुद्ध हो जायगा ॥ १७ ॥

अन्यच्च ।

किमत्र चित्रं दरदः सुभावितः क्षीरेण मेष्या बहुशोम्लवर्गैः । एवं सुवर्णं बहुघर्मतापितं करोति साक्षाद्वरकुंकुमप्रभम् ॥ १८ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-शिंगरफको भेडीके दूधसे या अम्लवर्गसे भावना देकर घाममें सुखावे तो श्रेष्ठ वर्णवाले साक्षात् केसरके समान वर्णवाला होजाता है ॥ १८ ॥

शिंग्रफके सत्त्वपातनकी विधि ।

दरदः पातनायंत्रे पातितश्च जलाश्रये । तत्सत्त्वं सूतसंकाशं पातयेन्नात्र संशयः ॥ १९ ॥ (र. र. र.)

अर्थ-शिंगरफको पातनयंत्रमें रख जलके आधारपात्रमें पातित करै तो वह सत्त्व पारदके समान होगा इसमें सन्देह नहीं है ॥ १९ ॥

हिंगुलभस्म वेधक ।

दरदं दशमांशेन पुटतो जंबीरफलनिकायेषु । रविदुग्धपुटौहितच्छोषितशुक्लो भवतिशतवेधी ॥ २० ॥ (काकचंडीश्वरी तंत्र)

अर्थ-शिंगरफको आकके दूधमें भिगो कर सुखा लेवे फिर जँभीरीके फलमें रख अग्निमें सुखालेवे इसप्रकार दस बार करनेसे श्वेत भस्म होगी यह शतवेधी होगा॥२०॥

शिंग्रफ भस्म ।

बुडरकोन, इसमें शिंग्रफ या शिंग्रफ और चांदी चूर्ण दोनों घोटकर आंच देनेसे भस्म होताहै ।

तरकीब कुश्ताशिंजर्फ (उर्दू)

(अव्वल डलीको गुले मदारकी लुबदीमें बालूमें रख आँच कडाहीमें बादहू ७ बार अर्क सूरजमुखीमें तस्किया व तश्विया.)

दरख्त सूरजमुखी चार सेर मयबर्ग व बेख उखाड कर नौसादर ८ तोले आँवला सार (वजन नदारद) हरसह खूब बारीक कूट कर बजरियः पाताल जंतर अर्क निकाललें शिंग्रफ रूमी दो तोलेको गुले मदारके नुगदेमें रखकर बालूरेत पांचसेरके बसतमें खुले मुंह कडाहीके अन्दर देकर नीचे आंच सख्त जलावें चार प्रहरके बाद आंच बंद करदें शिंग्रफ सालम उलवजन कुश्ता होगी, अर्क सूरज मुखीमें तमाम दिन रगडता रहे और रातको कुलिया गिलीमें मुंह बंद करके नरम आँच इसी तरह सात मर्तबः अमल करनेसे शिंग्रफमें खासियत अकसीरकी पैदा होगी, सुस्त कमताकत सुरअत, रिक्त वगैरः अमराजके लिये बिलखासियत फाइदाबख्श है अहलउलसिनाअ इसीतरह तस्किया व तश्विया देते देते मुशम्मा कर लेते हैं । फिर एक सुर्ख कमरव जौहराको शमसकर दिखलाते हैं लेकिन तरकीब मजकूरह उलसदरको शिंग्रफ बनी हुईका तजरुबा दफै डलअमराजके लिये तो हो चुका है, जौहरा व कमरके शम्सकर देना तजरुबा नहीं किया गया इसवक्त शिंग्रफजेर अमल है, इन्शा अल्लाहताला आयन्दः अलकीमियाँमें बाद तजरुबा जाहर किया जायगा (सुफहा ९ किताब अखबार अलकीमियाँ)

तरकीब कुश्ताशिंजर्फ सफेद अव्वल अर्क खुरफा और अर्क नींबूका चोया बादहू भंग और शीर मदारकी लुबदीमें रख आठ सेरकी आँच (उर्दू)

शिंग्रफ रूमी एक तोला लेकर इसको एक करछीमें रक्खें और बर्ग खुरफाका ताजा पानी एकसेरका चोया देवें जब तमाम पानी खतम होजावे तौ एक तोला नौसादर बीस तोला अर्क लैमूंमें हल करके उसी शिंग्रफ पर चोवा देते रहें जब पानी खतम होजावे तौ शिंग्रफ निकाल कर अलहदा रक्खें फिर बीस तोले भंगको बारीक पीसकर खरलमें डालदें और चालीस तोला शीरमदार डालें और चार पहर खूब खरल करें जबकि मिस्ल मोम होजावे तो उसके दो टिकिया बनाकर अन्दर शिंग्रफ रखदें और हाथसे

१ बुडरकोन आसायमूसा काफिर तम्बाकू जंगली तम्बाकू ।

दबाकर गोला बनावें फिर उसपर तीन गिले हिकमत करके सायेमें खुश्क करलेवें दूसरे रोज गढा खोदकर आठ सेर पाचकदश्तीकी आगदें इन्शा अल्लाहताला शिंग्रफ सफेद नमूदार होगो खुराक निस्फ चाँवल मक्खनमें (अलराकिम सय्यद गुलामअलीशाह हकीम मालिक शफाखाना हैदरी अजकरांची यारकेट) (सुफहा ३०किताब अखबार अलकीमियाँ)

शिंग्रफ मोमिया (उर्दू)

शिंग्रफ मोमिया, साहव महनतकी, चीज है अगर करनेकी हिम्मत है और शौक है तौ लीजिये हाजिर है इसे अगर अमराजके काममें भी लायाजावे तौ यकीनन निस्फ निस्फ रत्ती दो दो सौ रुपये दे देगा जो दूसरे काममें बीस पचीस रुपये दे सक्ताहै, अव्वल शिंग्रफकी डलीपर बारीक लोहेके तार लपेटदें इसवास्ते कि उसके रेजे अलहदा अलहदा होकर जाए न होजावें फिर जार पहर नरम आग पर शीरमदारमें डोलजंतर गर्मीके जरिये पकावें बाद अजाँ रोगन बलादरसे तरकरके सफूफ खिंजल (तमावारीकशुद:) से लतपत करके नकछिकनीके नुकदेमें लपेट और मामूली कपरौटी करके आध पावकी आग देवें यानी शिंग्रफकी डलीको चिमटेसे पकडकर रोगन बलादरमें तार करें फिर इसी चिमटेके जरियेसे सफूफ खिंजलमें जो कागद पर पडा हो इस शिंग्रफकी डलीको फेरें, वह सफूफ इसपर लग जावेगा आध पाव नकछिकनीके नुमदेमें लपेट कर और मिट्टीसे लतपत किये हुये कपडेकी पाँचं छैः तै इसपर लपेट कर आध पाव उपलोंके शौले निकाल कर आग देदेवें सद होनेके बाद निकाल कर बदस्तूर रोगन बलादरसे तर और सफूफ खिंजल लतपत करके नकछिकनीके ताजे नुगदेमें लपेट कर आग आध पाव देदेवें इसी तरह इक्कीस बार आध आध पावकी आग देवें फिर पाव पावकी इक्कीस बार, फिर आधसेरकी ग्यारह बार, फिर सेर भरकी पांच बाद अजाँ बीससेरकी आगदें अगर मोमिया नरम होजावेगा तौ अजीब गरीब काम देगा (सुफहा १७अखबार अलकीमियाँ ८।१।११९०९)

कुश्ताशिंजर्फ (उर्दू)

खोल शिंग्रफ, वंदशोरा १०तोले, संबुल संखिया १ तोले संखियाको अर्क अनरनीमें दोपहर कामिल हलकरके शिंग्रफ पर लिहाफकी तरह लगावें, मावाद ठीकरेमें शोरेके दार्मियान डली मजकूर रख कर आग देवें और एक सुईसे देखता जावे, जब सुई शिंग्रफमें साफ उतर जावे ठंढा कर दबे इन्शा अल्लाह कुश्ता गुलाबी रंगका होगा यह और कुश्ता रंगताहै मुर्जारेब है (किताब अखबार अलकीमियाँ १।४।१९०५)

रोगन शिंजर्फ अकसीर बदन ।

शिंग्रफ रूमी दो तोला की डली, शीरमदार एक पाव शिंग्रफकी डलाकी लोहेके कर्छेमें डालकर ऊपरसे शीर मदार डालकर नीचे आग जलानी शुरू करें यहां तक कि तमाम शीर खतम होजावे,·इसी तरह सद्वार एक एक पावके पुट देते जावें बाद एक सदपुट देनेके शिंग्रफ एक चीनीकेप्यालेमें डालकर रातके वक्त शवनममें रखछोडे सुबह इस शिंग्रफको तेलकी हालतमें पाओगे एक एक तिनका सात सात रोजके बाद इस्तैमाल कराएं, यह उस जोगीका नुसखाहै जिसने एक मजामत परस्त आदमीको दिया था, याद रहे हिम्मते मर्दां मदद खुदा, यह अकसीर है सुर्ख करदेगा (नामः निगार गोरदास मल हकीम शहर रावलपिंडी (सुफहा २८किताव अखबार अलकीमियाँ १।५।१९०५)

शिंजर्फ कायमुलनार लहसनमें ५ मर्तबः पकानेसे (उर्दू)

एक पोतिया लहसन मुकश्शर ५ तोले कूटकर दार्मियान एक तोला शिंग्रफकी डली देकर गोला बनालें और तवा आहनी पर गोली रखकर नीचे इसके नरम आग कोयलेकी रोशन करें यहांतक कि तमाम लहसन जल जावे इसी तरह पांच दफेदें, पच्चीश तोला लहसन खर्च होगा यह तरकीब मेरे एक दोस्त शेखचांदकी आजमूदा है (खाकसार मुहम्मद नूर अली अज औरंगाबाद दकन) (सुफहा नं.११ अखबार अलकीमियाँ १।६।१९०५ ई.)

इति श्रीजैसलमेरनिवासिव्यासमनसुखदासात्मज-ज्येष्ठमलकृतायां रसराजसंहिताया भाषाटीकायां दरदीहिंगुलादिनिरूपणं नामैकपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५१ ॥

गंधाध्यायः ५२

गंधकोत्पत्ति ।

श्वेतद्वीपे पुरा देव्याः क्रीडंत्या रजसाप्लुतम्॥ दुकूलं तेन वस्त्रेण स्नातायाः क्षीरनीरधौ १॥ प्रसृतं यद्रजस्तस्माद्गंधकः समजायत॥२॥ (बृ. यो.)

अर्थ–पहले श्वेतद्वीपमें क्रीडा करती हुई पार्वतीका वस्त्र रजसे प्लुत होगया उस वस्त्रसहित स्नान करतीहुई पार्वतीका रज क्षीरसमुद्रमें फैलगया उससे गंधक पैदा हुआ ॥ १ ॥ २ ॥

गंधकोत्पत्तिः ।

श्वेतद्वीपपुरे देव्याः क्रीडंत्याः प्रसृतं रजाः । क्षीरार्णवे तु स्नाताया दुकूलं रजसान्वितम् ॥ ३ ॥ धौतं यन्मथितं वस्त्रं गंधवद्गंधकं स्मृतम् ॥ ३ ॥ (टो. नं.)

अर्थ–श्वेतद्वीपमें क्रीडा करतीहुई पार्वतीके रजकी प्रवृत्ति हुई अर्थात् मासिकधर्म हुआ तब पार्वतीने उस रजोधर्मसे लिपटे हुए गंधसहित वस्त्रको क्षीरसमुद्रमें मलमलकर धोया इसलिये उसमें पैदाहुए पदार्थको गंधक कहतेहैं ॥ ३ ॥

अन्यच ।

पूर्वं द्वीपवरेसिते गिरिसुता क्षीराब्धितीरे मुदा क्रीडंती सखिभिर्वृता धृतकरा धौतं रजस्तद्गतम् ॥ जातं गंधकमद्भुतं सुरगणे-

स्तन्मंथने चोद्भृतम् तद्गंधैर्मुदिताः सुरासुरगणाः प्रोचुस्तदाख्यामिमाम्॥ गंधाश्मायमिति क्षितौ गदगणध्वस्त्यै चिरं जृंभताम् ॥ ४ ॥ (र. सा. प०)

अर्थ-पूर्व समयमें द्वीपोंमें उत्तम श्वेतद्वीपपर स्थित और क्षीरसमुद्रमें आनंदपूर्वक सखियोंसहित स्नान करतीहुई श्रीपार्वतीका रज समुद्रके जलमें धोगया उससे गंधक उत्पन्न हुआ तदनंतर समुद्रके मथनेमें देवताओंने निकाला तो उसकी सुगंधसे खुश हुए देवता तथा दैत्योंने उसका गंधक नाम रक्खा वह गंधक पृथिवीपर अनेक रोगोंका नाश करेगा ॥ ४ ॥

अन्यच्च ।

श्वेतद्वीपे पुरा देवि सर्वरत्नविभूषिते । सर्वकाममये रम्ये तीरे क्षीरपयोनिधेः ॥ ५ ॥ विद्याधरादिमुख्याभिरङ्गनाभिश्च योगिनाम् । सिद्धाङ्गनाभिः श्रेष्ठाभिस्तथैवाप्सरसां गणैः ॥ ६ ॥ देवाङ्गनाभी रम्याभिः क्रीडिताभिर्मनोहरैः । गीतैर्नृत्यैर्विचित्रैश्च वाद्यैर्नानाविधैस्तथा ॥ ७ ॥ एवं संक्रीडमानायाः प्राभवत्प्रसृतं रजः । तद्रजोतीव सुश्रोणि सुगंधि सुमनोहरम् ॥ ८ ॥ रजसश्चाति बाहुल्याद्वासस्ते रक्ततां ययौ । तत्र त्यक्त्वा तु तद्वस्त्रं सुस्नाता क्षीरसागरे ॥ ९ ॥ वृता देवाङ्गनाभिस्त्वं कैलाशं पुनरागता । ऊर्मिभिस्तद्रजो वस्त्रं नीतं मध्ये पयोनिधेः ॥ १० ॥ एवं ते शोणितं भद्रे प्रविष्टं क्षीरसागरे । क्षीराब्धिमथने चैव अमृतेन सहोत्थितम् ॥ ११ ॥ निजगंधेन तान् सर्वान् हर्षयन् सर्वदानवान् । ततो देवगणैरुक्तं गंधकाख्यो भवत्वयम् ॥ १२ ॥ इति देवगणैः प्रीतैः पुरः प्रोक्तं सुरेश्वरि । तेनायं गंधको नाम विख्यातः क्षितिमंडले ॥ १३ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-हे देवि ! पहले अनेक रत्नोंसे भूषित समस्त कामनाओंके देनेवाले श्वेतद्वीपमें क्षीरसमुद्रके किनारेपर उत्तम २ विद्याधरियों, सिद्धोंकी स्त्रियों, योगिराजोंकी स्त्रियों तथा श्रेष्ठ अप्सराओंके समूह और सुन्दर २ क्रीडा करती हुई देवताओंकी स्त्रियोंके साथ मनोहर गीत नृत्य और अनेक प्रकारके चित्रविचित्र बाजोंसे क्रीडा करतीहुई पार्वतीका रज (मासिकधर्म) प्रवृत्त हुआ हे पार्वती ! वह रज अत्यन्त मनोहर और सुन्दर था और अधिक रक्तके निकलनेसे तेरे वस्त्र उस रक्तमें रंगगये फिर उन कपडोंको छोडकर आपने समुद्रमें स्नान किया और देवताओंकी स्त्रियोंको संग लेकर तुम कैलाशको चलीगई तदनंतर उन कपडोंको लहरोंने समुद्रमें डालदिया इसप्रकार हे पार्वती ! तेरा रक्त क्षीरसमुद्रमें पहुंच गया और यही रज समुद्रके मथनेमें अमृत (पारद) के साथ उत्पन्न हुआ और अपनी सुगंधसे उन देवता और दैत्योंको प्रसन्न करने लगा तो देवताओंने कहा कि इसका नाम गंधक होना चाहिये और पारदके बंधनके लिये तथा जारणके लिये यह गंधक समर्थ होगा जो गुण पारदमें है वही गुण इस गंधकमें होगा । हे पार्वती ! इसप्रकार प्रसन्न हुये देवताओंने पहले ऐसे ऐसे वचन कहेहैं इसकारण भूमंडलमें इसका नाम गंधक प्रसिद्ध होगया ॥ ५-१३ ॥

बलिनाम होनेका कारण ।

बलिना सेवितः पूर्वं प्रभूतबलहेतवे । बासुकिं कर्षतस्तस्य तन्मुखज्वालया द्रुता ॥ १४ ॥ वसागंधकगंधाढ्या सर्वतो निःसृता तनोः । गंधकत्वं च संप्राप्ता गंधोऽभूत्सविषः स्मृतः ॥ १५ ॥ तस्माद्वलिवसेत्युक्तो गंधकोऽतिमनोहरः ॥ १६ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-प्राचीन समयमें राजा बलिने अधिक बलके लिये सेवन किया था फिर समुद्रके मथनेके समय वासुकिके मुखकी ज्वालासे वासुकिको खींचते हुए उसी राजा बलिक शरीरसे जो सुंगधवाली वसा (चर्बी) निकली और वह गंधकके रूपको प्राप्त होगई वह विषनामका गंधक हुआ इस वास्ते उस गंधकको बलिवसा कहतेहैं ॥ १४-१६ ॥

चार प्रकारका गंधक ।

चतुर्धा गंधकः प्रोक्तो रक्तः पीतः सितोऽसितः ॥ रक्तो हेमक्रियासूक्तः पीतश्चैव रसायने ॥ व्रणादिलेपने श्वेतः श्रेष्ठः कृष्णः सुदुर्लभः ॥ १७ ॥ (टो. नं., बृ. यो)

अर्थ-गंधक चार प्रकारका कहागयाहै जैसे लाल, पीला, श्वेत, और काला सुवर्ण बनानेकी क्रियामें लाल, रसायनके लिये पीला, घाव आदिपर लगानेके लिये श्वेत लेना । कालागंधक तो मिलताही नहीं ॥ १७ ॥

अन्यच्च ।

चतुर्धा गंधको ज्ञेयो वर्णैः श्वेतादिभिः खलु । श्वेतोऽत्र खटिका प्रोक्तो लेपने लोहमारणे ॥ १८ ॥ तथा चामलसारः स्याद्यो भवेत्पीतवर्णवान् । शुकपिच्छः स एवस्याच्छ्रेष्ठो रसरसायने ॥ १९ ॥ रक्तश्च शुकतुण्डाख्यो धातुवादविधौ वरः । दुर्लभः कृष्णवर्णश्च सजरामृत्युनाशनः ॥ २० ॥ (र. र. स.)

अर्थ-श्वेत, पीत, रक्त और कृष्ण इन चार वर्णोंसे गंधक चार प्रकारका होताहै इन चार प्रकारके गंधकोंमें श्वेत खडिया नामका गंधक धातुमारणके लिये अथवा मलहम आदिके बनानेमें उपयोगीहै, इसी प्रकार जो पीले रंगका आँवलासार नामका गंधकहै उसीको शुकपिच्छ भी कहतेहैं वह रसायनके लिये श्रेष्ठहै और शुकतुंड नामका लाल रंगका गंधक धातुवादमें (सोना चांदी बनानेमें)

उत्तम मानागयाहै और जो बुढापा तथा मृत्युका नाश करने वाला काला गंधकहै वह दुर्लभहै ॥ १८-२०॥

गंधकके तीन भेद ।

स चापि त्रिविधो देवि शुकचञ्चुनिभो वरः । मध्यमः पीतवर्णः स्याच्छुक्लवर्णोऽधमः प्रिये ॥ २१ ॥ (र.र.स.)

अर्थ-हे पार्वती ! फिर वह गंधक तीन प्रकारका है उनमें तोतेकी चोंचके समान लाल वर्णका गंधक श्रेष्ठ, है, पीत वर्णका आँवलासार गंधक मध्यम है औरहे प्यारी शुक्ल वर्णका गंधक अधमहै ॥ २१ ॥

सम्मति-वाग्भट्टाचार्यने प्रथमतो चार प्रकारका बताया फिर तीन प्रकारका कहा इसका कारण यह है कि कृष्ण वर्णका गंधक मिलना कठिनहै इसी लिये तीन प्रकारका कहाहै ऐसा प्रतीत होताहै ॥

उत्तम गंधक लक्षण ।

शुकपिच्छसमच्छायो नवनीतसमप्रभः ॥ मसृणः कठिनः स्निग्धः श्रेष्ठो गंधक उच्यते ॥ २२ ॥ (रसमानस.)

अर्थ-जो तोतेकी पूंछके समान वर्णवाला, मक्खनके समान महीन कठिन और चिकना गंधक उत्तमहै ॥ २२ ॥

गंधककी किस्में (उर्दू)

गंधक-हुकमाई हिन्दने छः किस्में गंधककी लिखी हैं एक सफेद उसको गूगर्द फारसी भी कहतेहैं यह दाफै अमराज और मुफीद व सबअ मुंफासिलको है और नुकरः व मिसपर जमाद करके जलानेसे कुश्ता करताहै। दो यम आमलासार इसकी रंगत मिस्ल आंवलेके होतीहै । सोयम सब्ज तोतेके परकी तरह जो अन्दरसे भी पीसनेसे सबज निकले यह बहतरीन अकसामसे है चहारम सुर्ख तोतेकी चोंचकी तरह उसको अगर कलईपर तरह करे तो चांदी और अगर मिसपर तरह करे तो सोना बनाते हैं । लेकिन नायावहै पंजम स्याह इसके स्तैमालसे आदमी बूढा नहीं होता मुकामातकदीम और गर्म चश्मोंसे जो ज्वालामुखी कहलाते हैं इत्तफाकिया मिलतेहैं (शशम जर्द जो बारूदमें मुस्तअमिलहै) (सुफहा अकलीमियाँ ६०)

गंधककी किस्में (उर्दू)

गंधककी छः किस्में हैं (१) आँवलासार, (२) नरमलासार, (३) नेनुआसार, (४) धोलिया, (५) छाछिया, (६) सुर्ख जो बजात खुद अकसीरहै ।

मुतरज्जिम-गंधकका तफसीली बयान फसल अव्वलमें होचुकाहै यहां मुख्तसरन कुछ अलामत लिखी जातीहै ।

आँवलासार जर्द सब्जी माइल व रंग आँमला चमकदार होतीहै ।

नरमलासार-जर्द रंगकी होतीहै इसमें चमक बिलकुल नहीं होतीहै और आतिशबाजीमें इस्तैमाल कीजाती है ।

नेनुआसार-सब्ज गंधकको कहते हैं जो पीसनेपर अन्दरसे सब्ज निकले ।

धोंलिया-सफेद तीरह और खाकसे मिलीहुई होती है; इसको गूगर्द सफेदभी कहते हैं नीलापन लियेहुए होतीहै दरअसल यह गंधक पारसी और सफेदकी किस्मसेहै ।

छाछिया-वाजे इसीको नरमलासार कहतेहैं, फर्क यह है कि यह जर्द रोशन होतीहै और बेचमक हो वह नरमलासारहै ।

गंधक सुर्ख-हजरत मुसन्निफने लिखाहै "कि मैंने सुनाहै कि कोहदमावंदपर होतीहै और मिसको सोना और कलईको चांदी बनातीहै मुतरिज्जमने गुलाबी रंगकी गंधक बनारसमें खुद देखी है । (सुफहा अकलीमियाँ १६७)

गंधकका असर (उर्दू)

गंधक अगर गैर मुसफ्फा हो तो अपने अहराककी वजहसे अजसादको सोख्त करदेताहै और तांबेको जिगरगू करताहै और लोहेको सुर्ख और सीमाबको अपनी बदबूसे मुनकिद करताहै और उससे सिंग्रफ बनजाता और चांदी महलूलमें अगर गंधक मिलावे और तेज आंच दे तो गंधक और चांदी जलजावेगी और सोना निकल आवेगा-(सुफहा अकलीमियाँ ६१)

अशुद्धगंधकदोष ।

अशुद्धगंधः कुरुते तु कुष्ठं तापं भ्रमं पित्तरुजं तनोति ॥ रूपं सुखं वीर्यबलं निहंति तस्मात्सुशुद्धं विनियोजनीयम् ॥ २३ ॥ (टो. नं०, र. सा. प.)

अर्थ-अशुद्ध गंधक कोढको करताहै तथा ताप, भ्रम और पित्तके रोगोंको शरीरमें फैलाताहै रूप, वीर्य, सुख और बलको नाश करताहै इसलिये शुद्ध गंधकका ही सेवन करना चाहिये ॥ २३ ॥

गंधकशोधन ।

आदौ गंधकटङ्कणादि क्षालयेज्ज जम्भवारिणा॥ईदृशं लग्नधूल्यादिमलं तेन विशीर्यते ॥ २४ ॥ गंधः सक्षीरभांडस्य वस्त्रे कूर्मपुटाच्छुचि ॥ अथवा कांजिके तद्वत् सघृते शुद्धिमाप्नुयात् ॥ २५ ॥ (र. मा. र. चिं.)

अर्थ-प्रथम गंधक और सुहागा प्रभृतिको जंभीरीके रससे धोडाले कारण कि उस गंधकादिककी रेत मिट्टी वगैरः साफ होजावे, गंधकको दूध भरे हुए बासनके मुखपर रख कच्छपयंत्रसे शुद्ध करे अथवा घी और कांजीमें उसी प्रकार शुद्ध होताहै ॥ २४ ॥ २५ ॥

अन्यच्च ।

सदुग्धभांडस्थपटस्थितोयं शुद्धो भवेत्कूर्मपुटेन गंधः ॥ २६ ॥ (बृ. यो.)

अर्थ-एक बासनमें दूधभर कर मुखपर कपडा बांध देवे और उस कपडेपर गंधकको बिछादेवे फिर उसको कच्छपयंत्रसे शुद्ध करे तो वह गंधक शुद्ध होताहै ॥ २६ ॥

अन्यच्च ।

स्थाल्यां दुग्धं विनिक्षिप्य मुखे वस्त्रं नि-

बध्य च ॥ गंधकं तत्र निक्षिप्य चूर्णितं सिकताकृतिम् ॥ २७ ॥ छादयेत् पृथुदीर्घेण खर्परेणैव गंधकम् । ज्वालयेत्खर्परस्योर्ध्वं वनच्छाणैस्तथोत्पलैः ॥ ॥ २८ ॥ दुग्धे निपतितो गंधो गलितः परिशुध्यति ॥ शतवारं कृतं चैवं निर्गंधो जायते ध्रुवम् ॥ २९ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-एक हांडीमें दूध भरकर मुखपर कपडा बाँध देवे फिर उस कपडेपर रेतके समान चूर्ण किये हुए गंधकको बिछावे और उस गंधकपर एक मोटा खिपडा ढाकदे खिपडेके ऊपर जंगली कंडोंकी अग्नि जलावे तदनंतर गल गलकर दूधमें गिराहुआ गंधक शुद्ध होताहै इस प्रकार सौवार शुद्ध कियाहुआ गंधक गंध रहित होजाताहै ॥ २७-२९ ॥

भाषा ।

छीर निपनिया छेरितनों । सपतगुनों गंधकते भनों । बार तीनि ले तामें ढारि । और जुगति यह कही विचारि (र. सा.)

अन्यच्च ।

क्षीरेण भांडमापूर्य वस्त्रमावेष्ट्य तन्मुखम् । वस्त्रमध्ये क्षिपेद्गंधं मुखं यत्नात्पिधापयेत् ॥ ॥ ३० ॥ शरावेण ततो वह्निं प्रज्वाल्योर्ध्वमवस्थितम् । भांडके निपतेद्यावद्गंधस्तावत्संमिंधयेत ॥ ३१ ॥ कृशानौ तु स्वयं शीते गंधकं तु समुद्धरेत् । एवमेरंडभृंगार धुत्तूरस्य रसेन वै ॥ ३२ ॥ (टो. नं.)

अर्थ-दूधसे बासनको भरकर उसके मुखपर कपडा बांध देवे और उस कपडेपर चूर्णकिये हुये गंधकको रख ऊपरसे शकोरेसे ढकदेवे फिर शकोरेके ऊपर तबतक अग्नि जलावे कि जबतक वह गंधक टपक टपक कर दूधमें चलाजावे और अग्निके शांत होनेपर गंधकको निकाल लेवे । इसी प्रकार एरण्ड और धतूरेके रससे शुद्ध करे ॥ ३०-३२ ॥

अन्यच्च ।

साज्यं भांडे पयः क्षिप्त्वा मुखं वस्त्रेण बंधयेत् । तत्पृष्ठे चूर्णितं गंधं क्षिप्त्वा श्रावेणबोधयेत ॥ ३३ ॥ भांडं निक्षिप्य भूम्यन्तरूर्द्धे देयं पुटं लघु । ततः क्षीरे द्रुतं गंधं शुद्धं योगेषु योजयेत् ॥ ३४ ॥ (र. रत्ना.)

अर्थ-एक बासनमें घी और दूधको डाल कर उसके मुखको कपडेसे बाँधदे उसकी पीठपर पिसेहुये गंधकको बिछाकर शकोरेसे ढकदेवे फिर उस बासनको धरतीमें गाढकर ऊपर लघु पुट देना चाहिये तदनंतर दूधमें गलेहुये शुद्ध गंधकको सब कामोंमें लावे ॥ ३३॥३४ ॥

अन्यच्च ।

पयः स्विन्नो घटीमात्रं वारिधौतो हि गंधकः॥ गव्याज्यविद्रुतो वस्त्राद्गालितः शुद्धिमृच्छति ॥ ३५ ॥ एवं संशोधितः सोयं पाषाणानंबरे त्यजेत् ॥ घृते विषं तुषाकारं स्वयं पिंडत्वमेव च ॥ ३६॥ इति शुद्धो हि गंधाश्मा नापथ्यैर्बिकृतिं व्रजेत् ॥ अपथ्यादन्यथा हन्यात्पीतं हालाहलं यथा ॥ ३७ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-गंधकको एक घडीभर उष्ण जलमें स्वेदन करे फिर गायके घीमें गालकर वस्त्रद्वारा दूधमें छान लेवे तो गंधक शुद्ध होताहै इस प्रकार शुद्ध कियाहुआ गंधक कपडेमें ही पत्थरोंको छोड देताहै उसका विष घृतमें मिलजाताहै और आप चपटे गोलपिंडके आकार होजाताहै (यह बिना कूर्मपुटके होताहै कूर्मपुटमें तो मूंगकी बराबर दाने होते हैं) इस प्रकार शुद्ध कियाहुआ गंधक विकारको नहीं करताहै और बिना शुद्ध किया हुआ गंधक पिये हुए हलाहल विषके समान होता है ॥ ३५-३७ ॥

अन्यच्च ।

कंगुणीसर्षपैरंडतैलं वाथ कुसुंभकम् । मेषीक्षीरं घृतं वाथ गोक्षीरं चारनालकम् ॥ ॥ ३८ ॥ भृंगराजरसं वापि साराक्षीरमथापि वा । एतेष्वेकन्तु भांडान्तः किंचिदूनं प्रपूरयेत् ॥ ३९ ॥ बद्धा वस्त्रेण तद्वक्त्रं गंधचूर्णं ततोपरि । लोहपात्रे निरुध्याथ पृष्ठे स्थाप्यं च खर्परम् ॥ ४० ॥ साग्निमुपलकैः पूर्णमेवं द्राव्य समुद्धरेत । तं धत्तूरद्रवैः पिष्ट्वा शुष्कं द्रावं च पूर्ववत् ॥ ॥ ४१ ॥ पुनरेवं प्रकर्तव्यं, संशुद्धो गंधको भवेत् ॥ ४२ ॥ (र. सा. प.)

अर्थ-कगनी, सरसों, एरण्ड इनका तैल, कसूमका तैल (कर्रकातैल) भेडका दूध या घृत, गायका दूध, कांजी, भांगरेका रस, बकरीका दूध इनमेंसे किसी एकको लेकर बासनको ऊनाभरदेवे और उस बासनके मुखको बाँध कर फिर उसपर गंधकका चूरा रखदेवे फिर उसके मुखको लोहेके पात्रसे ढककर ऊपरसे रक्खे और उस खिपडेमें अग्निको जलावे तो वह गंधक गलकर दूध आदि किसी पदार्थमें टपक जायगी तदनंतर उसको निकाल कर धतूरेके रससे भावना देकर सुखालेवे और फिर इसी प्रकार शुद्ध करे तो गंधक शुद्ध होताहै३८-४२॥

अन्यच्च ।

स्निग्धायां दर्व्यां वह्निसंस्थां गंधं तेन द्रवीकृतम् । क्षीरभांडे विनिक्षिप्तं शुद्धं भवति तत्क्षणात् ॥ ४३ ॥ (टो. नं.)

अर्थ-घीसे चिकनी और अग्निपर रक्खी हुई करछीमें

गंधकको पिघलाकर दूधमें डालदेवे तो उसी क्षण गंधक शुद्ध होजाताहै ॥ ४३ ॥

गंधक मुसफ्फा करनेकी तरकीब (उर्दू)

करछा आहनीकी सतः अन्दरूनीको घीमें चर्ब करके गंधक उसमें डालकर गुदाज करे बादहू गायके दूधमें इस्तज़ाल करे ख्वाह बुझावदे यह बुझाव तीस बार दिये जावें। (सफ़ा अकलीमियाँ ९५)

गंधकमुसफ्फा करनेका तरीका वास्ते खानेके (उर्दू)

घी एक दाम लेकर चमचा आहनी यानी करछीके अन्दर लगाकर उसमें गंधकको गुदाज करे और पाव भर गायके दूधमें सर्द करे इसी तरह तीस बार अमल करे पाक और मुसफ्फा होजावेगा । (सुफ्हा अकलीमियाँ १८२)

अन्यच्च ।

लोहपात्रे विनि क्षिप्य घृतमग्नौ प्रतापयेत् । वस्त्रसंशोधितश्चायं पाषाणानंबरे त्यजेत् ॥ ४४ ॥ घृते विषं तुषाकारं स्वयं पिंडं स्वमेव च॥प्रक्षाल्योष्णजलैः पश्चाद्धर्मशुष्कः शुचिर्भवेत् ॥ ४५ ॥ (र. सा. प.)

अर्थ–लोहेके पात्रमें घी डालकर अग्निपर तपावे फिर उसमें गंधक डालकर कपडेमें छानदेवे तो गंधकके साथ मिलेहुए पत्थरके टुकडे कपडेमें रहजातेहैं गंधकके विषका अंश घीमें मिलजाताहै और गंधकका पिंडा बनजाताहै फिर उसको गर्म जलसे धोकर घाममें सुखालेवे तो गंधक शुद्ध होताहै ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

अन्यच्च।

लोहपात्रे विनिक्षिप्य घृतमग्नौ प्रतापयेत् ॥ तप्ते तप्ते तत्समानं क्षिपेद्गंधकजं रजः ॥ ॥४६॥विद्रुतं गधकं ज्ञात्वा दुग्धमध्ये विनिक्षिपेत् । एवं गंधकशुद्धिः स्यात्सर्वकार्येषु योजयेत ॥ ४७ ॥ (र. चिं., शार्ङ्ग.)

अर्थ–लोहेके पात्रमें घृत डालकर अग्निपर तपावे फिर उसमें घृतके तपने पर घृतके समान गंधकका चूरा डालदेवे फिर गंधकको गला हुआ जान दूधमें डालदेवे तो गंधककी शुद्धि होतीहै और उस गंधकको सब कामोंमें लावे४६।४७॥

अन्यच्च ।

किं वाज्यद्रावितो भृंगरसे क्षिप्तो विशुद्धयति । सप्तधैवं भक्षणार्थं योगार्थं सकृदेव तु ॥ ४८ ॥ (रसमानस.)

अर्थ–अथवा घृतमें गंधकको गलाकर भांगरेके रसमें बुझाव देवे तो गंधकशुद्ध होताहै यदि खानेयोग्य गंधक बनाना हो तो सात बार बुझावदेवे और किसी योगके लिये बनाना हो तो एकबारही बुझाव देवे ॥ ४८ ॥

गंधकनिर्गंधीकरण ।

विचूर्ण्य गंधकं क्षीरे घनीभावावधि पचेत ॥ ततः सूर्यावर्तरसं पुनर्दत्त्वा पचेच्छनैः ॥ ४९ ॥ पश्चाच्च पातयेत्प्राज्ञो जले त्रैफल संभवे॥जहाति गन्धको गंधं निजं नास्तीह संशयः ॥ ५० ॥ (र० सा० प०, र० चिं०)

अर्थ–गंधकका चूर्ण करके फिर दूधमें डालकर पकाते २ गाढा होजावे तब सूर्यावर्तका रस डालकर धीरे २ पाक करे इसके बाद बुद्धिमान वैद्य उस गंधकको त्रिफलाके रसमें कच्छप यंत्रद्वारा पातन करे तो गंधक अपनी सुगंधको छोड देताहै इसमें कोई संदेह नहीं है ॥ ४९ ॥ ५० ॥

अन्यच्च ।

गंधको द्रावितो भृङ्गरसे क्षिप्तो विशुध्यति ॥ तद्रसैः सप्तधा स्विन्नो गंधकः परिशुध्यति ॥ ५१ ॥

अर्थ–पिघलाया हुआ गन्धक भंगराके रसमें डालाजाय तो शुद्ध होजाताहै । जलसे सातबार स्वेद किया हुआ गन्धक अच्छी तरह शुद्ध होजाताहै ॥ ५१ ॥

गंधक मुसफ्फा करनेका तरीका (उर्दू)

अगर अमल शमसी यानी तिला बनाना मंजूर है तो शीरा घीग्वार और अर्कप्याजमें अलहदा अलहदा बीस बीस बार इस्तंजाल करे यानी बतरीक धूमजंतरके अमल करे या चार चार पहर तक डोलजंतरमें पकाये अगर खानेके वास्ते तसफिया मंजूरहै तो बजाय अर्क मजकूरके दूध भैंसका होना चाहिये कि धुआँ न रहे और शोला बंद होजावे (सफा अकलीमियाँ १७१)

अन्यच्च ।

देवदाल्यम्लपर्णी वा नारंगो वाथ दाडिमम् ॥ मातुलुंगमथालाभे द्रवमेकस्य चाहरेत् ॥ ५२ ॥ गंधकस्य तु पादांशं टंकणं द्रवसंयुतम् ॥ अनयोर्गंधकं भाव्यं त्रिभिर्वारं ततः पुनः ॥ ५३ ॥ धुस्तूरस्तुलसी कृष्णा लशुनं देवदालिका ॥ शिग्रुमूलं काकमाची कर्पूरः शंखिनी द्वयम् ॥ ५४ ॥ कृष्णागुरुस्तु कस्तूरी वंध्या कर्कोटकीसमम् ॥ मातुलुंगरसैः पिष्ट्वा क्षिपेदेरण्ड तैलके ॥ ५५ ॥ अनेन लोहपात्रस्थं भावयेत् पूर्व गंधकम् ॥ त्रिवारं गंधतुल्यं तु जायते गंधवर्जितम् ॥ ५६ ॥ (र० चिं०)

अर्थ–देवदाली (बन्दाल), अम्लपर्णी (लोनिया), नारंगी, अनार, बिजौरा इनका रस अथवा इनमेंसे किसी एकका रस लेवे और गंधकका चौथाई सुहागा लेकर तीन भावना देवे फिर धतूरा, काली तुलसी, लहसन, बंदाल, सैंजनेकी जड, (मूली) मकोय, कर्पूर, शंखिनी दोनों, काली अगर, कस्तूरी, बांझककोडा, बिजौरा इनके रसोंसे भावना देदेकर एरण्डके तैलमें गलावे इस प्रकार गलेहुये गंधकको फिर भी भावना देवे तो उस गंधककी सुगंध निकल जातीहै इसमें संदेह नहीं है ॥ ५२–५६॥

गंधकको निर्गंध और श्वेत करना (भाषा)

रसखाटीदायोकोआन । अब दूजी विधि सुनो सुजान ॥ बीज निचोर तासुके देय। गंधकमाह छानिके देय ॥ चार पहर मर्दन करलाय॥ बासु मिटै सुपेद ह्वै जाय ॥ ऐसी भांति खरलिये ताहि। रस अनारको सोखै जाहि ॥ (रससागर.)

गंधकको श्वेत करनेकी क्रिया (भाषा)

अब गंधक जैसे शुध होय । परगट कहों सुनों सबकोय ॥ गंधक सोरा समके लेय। शुद्ध नीरसों खरर करेय ॥ चारि पहर ज्यों मरदन करै । नीर धोरिके कूडे धरै ॥ बहुरि थिराने लेय नितारि । ज्यों सोरा रस दीजै डारि ॥ पुनि दूजी साजी पुटदेय तीजी चूना आछ करेय ॥ गंधक शुद्ध सेत अतिहोय । जो इहि बिधिके जाने कोय ॥ (र० सा०)

इस्लाह गंधक (फारसी)

तस्फिया गंधक, बिसानीद चहल व नहनः रोहू दादः दो नीव्य आसार गंधक राहमी तोर हरकदर ज्यादः बाशद ज्यादः कुनन्द बादहू संहकदर आफ्ताब कुनन्द व दर चमचए, तुकरः गुदाज दिहन्द व बिस्तुयक कुर्त दरशीरए लहसन अन्दाजददर जोश हफ्तम शीरः ताजा कुनद बादहू बिस्तुक कुर्त दर शीरए चीग्वार अन्दाजद व शस्तु चह (चौसठ) पुट सहक करदः अजशीरः अगिया दिहन्द व बिस्तपुट अजशीरए जक्रमई हरदो मुरत्तिब गरदद व सफेद रंग बुवद ! (सफा ११ छोटी किताबियातुसखा सिद्ध रस किताब जवाहरउलसनाअत)

गंधकका कायमुलनार करना (उर्दू)

लहसन उमदः एक पुतियेका अर्क १ सेर निकाल कर साफ करके एक तोला गंधक करछेमें रखकर और अर्क हस्बजरूरत डालें कि सब डूबजाय फिर उसको आग पर रखकर थोड़ा थोड़ा अर्क डालते रहे जब खतम होजावे उतारलें कायम हो जावेगा व सुर्ख़ (सफा खजाना कीमियाँ १६)

कयाम गंधक (उर्दू)

गंधकको एकसौ एक मर्तबः पिघलाकर और इसीके तेलमें डालो कायम हो जावेगी । (सफा १९१ किताब कुश्तेजात हजारी)

गंधककी तसईद (उर्दू)

गंधक दो प्यालोंमें रखकर बाहम् प्यालोंको खूब वस्ल करकेगिले हिकमत करदे और तीन दिनतक आग मिस्ल चरागके दे । (सफा अकलीमियां ९५)

गंधक और हरतालकी तसईद करनेके बाद स्याह रंग होताहै लिहाजा यह याद रखना चाहिये कि बाद रहतसईदके आबशीरींसे धोवे रफ्तः रफ्तः सफेद होताजायगा और बिलाखिर सफेद होकर मोमिया हो जायेगा । (सफा अकलीमियाँ १००)

तसईद गूगर्द व रंगसफेद (उर्दू)

गूगर्दजर्दको लेकर थैलीमें भरदे और थैली मजकूर चूनेके दरमियानमें रखदे इस्तरहसे कि थैली चूनेसे छिपजावे और तनूर जिसमें रोटी पकचुकीहो भूभलमें उसकी एक दिनरात दफ़न रहनेदे जब सर्द होंजावे निकालले गूगर्द व रंग सफेद मुसअद होगा (सफा अकलीमियाँ ९९)

गंधकादिका तैल निकालना जो जम जायगा कपूरयोगसे (भाषा)

तोले प्रतिमासा मुष्कपूरपादैणा और आतिशीशीशे बीच पाकर मुखबंद करके कपडमिट्टी करदैणी और उस्को अग्निपर रखना तैल होजायगा फिर जमजायगा । (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

गंधकतैल पिष्टीकरणार्थ दूधमें औटाकर।

आवर्तमाने पयसि दद्याद्गंधकजं रजः । तज्जाते दधिजं सर्पिर्गंधतैलं नियच्छति ॥५७॥ अनेन पिष्टिका कार्या रसेन्द्रस्योक्तकर्मणि। ॥ ५८ ॥ (र. चिं.)

अर्थ—दूधके उबलनेपर गंधकका चूरा डाल देवे फिर उसका दही जमाकर घी निकाललेवे इसे गंधकका तैल कहतेहैं और इस तैलसे पारद कर्ममें पारदकी पिष्टी बनाना चाहिये ॥ ५७॥५८ ॥

अन्यच्च ।

आवर्तमाने पयसि दद्याद्गंधकजं रजः ॥ तज्जातदधिजं सर्पिर्गंधतैलं नियच्छति॥५९॥ तत्तु तैलं गलत्कुष्ठं हन्ति लेपाच्च भक्षणात् ॥ पूजितं जारणायां च पारदः सविशेषतः ॥ ६० ॥ (रसमानस.)

अथ— औटते हुये दूधमें गंधकका चूरा डालदेवे फिर उसका दही जमा कर घी निकाल लेवे इसको गंधकका तैल कहतेहैं, यह तैल लेपसे और भक्षणसे गलात्कुष्ठको नाश करताहै और जारणामें यह तैल प्रसंशनीयहै ॥५९॥६०॥

गंधकतैल बत्ती बनाकर ।

कलांशव्योषसंयुक्तं गंधकं श्लक्ष्णचूर्णितम् ॥ अरत्निमात्रे वस्त्रे तद्विप्रकीर्य विवेष्ट्य तत ॥ ६१ ॥ सूत्रेण वेष्टयित्वाथ यामं तैले निमज्जयेत्॥ धृत्वा संदंशतो वर्तिमध्ये प्रज्वालयेच्च तम् ॥ द्रुतो निपतितो गंधो बिन्दुशः काकभाजने ॥ ६२ ॥

अर्थ—सोंठ, मिर्च, पीपलसे सोलह गुना गंधक लेकर चूरा करडाले फिर उसको पौन हाथ कपडेमें बिखेरकर बत्ती बनावे और उस बत्तीको सूतसे लपेट कर एक प्रहरतक तैलमें भिगो देवे फिर उस बत्तीको बीचमेंसे पकड

१-कै दौनुकलाय रससागर । २ गंधकसोरासो (रससागर)

(१) क्या घीको गरम करनेसे तैल ऊपर आजावैगा ।

कर जलादेवे तो गंधक टपक टपक कर काचके बासनमें आजावेगा उसे गंधककी द्रुति कहते हैं ॥ ६१ ॥ ६२ ॥

भक्षण प्रकार ।

तां द्रुतिं प्रक्षिपेत्पात्रे नागवल्ल्यास्त्रिबिंदुकाम् ॥ वल्लेन प्रमितं स्वच्छं सूतेन्द्रं च विमर्दयेत् ॥ ६३ ॥ अङ्गुल्याथ स पत्रांतां द्रुतिसूतं च भक्षयेत् ॥ करोति दीपनं तीव्रं भक्षं पांडुंच नाशयेत् ॥ ६४ ॥ कासं श्वासं च शूलार्तिं ग्रहणीमतिदुर्धराम् ॥ आमं विनाशयत्याशु लघुत्वं प्रकरोति च ॥६५॥ (र. र. स.)

अर्थ—तदनंतर तीन बूंद गंधककी द्रुति और तीन रत्ती पारद इनको पानमें रख कर हथेलीसे मलदेवे फिर उस पानसहित पारदको भक्षण करे तो अग्निको तीव्र करताहै क्षय, पाण्डु, कास, श्वास, शूल, घोर ग्रहणी, और आमको नाश करताहै ॥ ६३—६५ ॥

अन्यच्च ।

अर्कक्षीरैः स्नुहीक्षीरैर्वस्त्रं लेप्यन्तु सप्तधा ॥ गंधकं नवनीतेन पिष्ट्वा वस्त्रं विलेपयेत् ॥ ॥ ६६ ॥ तद्वर्तिर्ज्वलिता दण्डे धृता धार्या ह्यधोमुखी ॥ तैलं पतत्यधोभांडे ग्राह्यं योगेन योजयेत् ॥ ६७ ॥ (र. चिं.)

अर्थ—आकके दूधसे तथा थूहरके दूधसे सात सात बार कपडेको भिगोवे फिर मक्खनसे पिसेहुए गंधकसे उस कपडेपर लेपकर देवे और उस बत्तीको जलाकर चिमटेसे नीचामुख करदेवे फिर नीचेके पात्रमें गिरेहुए तैलको ग्रहण करना चाहिये और उसको अनेक योगोंमें लगावे ॥ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥

नुसखः रोगन गंधक शीर आकमें घोट बैजेमें भर रोगनमें पकानेसे (उर्दू)

पांच मर्तबः तजरुबेमें आया और सुर्ख तेल बरामद हुआ मगर वही तरकीब है कि बाजलोगोंसे जर्द और किसीसे मुतलक न बना चांदीपर तरह करनेसे दो मर्तबः तजरुबा हुआ गव्वास नहीं है मगर जर्द करताहै गंधक आँमलासार दो तोले, शीर मदार १० तोले चारपहर खरल करो जब करीब गोली बंधनेके होजावे निस्फ हिस्सा अंडेके छिलकेमें भर कर ऊपरसे दूसरा छिलका रखकर कपरौटी मजबूत करो और खुश्क करो। फिर दूसरी कपरौटीपर तीसरी सेरभर अलसीका तेल किसी कढाई आहनी या और जरूफमें डालकर और गोला मजकूर उसमें नरम आंचसे चार प्रहर पकादो सर्द होनेके बाद कपरौटी दूर करके कज (टेढा) करके किसी प्याले चीनीमें रक्खो खुली हवामें दस तोले ख्वाह कमोबेश हो रोगन सुर्ख बरामद होगा इसके सही होनेमें कोई शक नहीं। (सफा ५ अखबार अलकीमियाँ)

गंधकतैलक्रिया ।

गंधकस्य च पादांशं दत्त्वा च टाङ्कणं पुनः॥ मर्दयेन्मातुलुङ्गाम्ले रुबुतैलेन भावयेत् ॥ ॥ ६८ ॥ चूर्णं पाषाणगं कृत्वा शनैर्गंधं खरातपे ॥ ६९ ॥ (र. चिं.)

अर्थ—गंधकसे चौथाई सुहागा लेकर बिजौरेके रससे घोटे और एरण्डके तैलकी भावना देवे फिर उस गंधकके चूरेको चिकने पत्थरपर बिछाकर तेज घाममें रख देवे तो गंधकका तेल निकल आवेगा ॥ ६८ ॥ ६९ ॥

गंधक तैलक्रिया अग्निपर पाकसे ।

गंधकस्य तु पादांशं दद्याट्टंकणकं पुनः ॥ मर्दयेन्मातुलुंगाम्लैरुरुणतैलेन भावयेत् ॥ ॥ ७० ॥ पुनः खर्परके कृत्वा दीपाग्निं ज्वालयेदधः ॥ न्यसेत्तत्र जलं कोष्णं मानाधिक्यं च यत्नतः ॥ मलेन युक्तं यत्तैलं तत्तैलं रससाधकम् ॥ ७१ ॥ (टो. नंद.)

अर्थ—गंधकसे चौथाई सुहागा लेकर बिजौरेके रससे मर्दन करे फिर एरण्डके तैलसे भावना देवे तदनंतर खिपरेमें रख कर दीपाग्नि देवे और उसमें गरम जल भरदेवे उसमें जो मैला २ तैल निकलता है वह रसका साधक समझना चाहिये ॥ ७० ॥ ७१ ॥

अग्निपर पाक करनेसे कटेलीका असर गंधकपर (उर्दू)

यह बूटी गंधकके वास्ते गिरह कुशा है और इसरारसीहै इससे गंधकका रोगन निकलताहै मुतरिज्जमके सामने एक साधुने इसके अर्कमें पकाते पकाते गंधकको सब्ज कियाहै ताआँकि सफलसे रोगन जुदा होगया। (सुफहा किताब अकलीमियाँ २८)

तरकीब रोगन गंधक बगरजइजाफः अयार (उर्दू)

आँवलासार गंधकसे सब्जी माईल गंधक चुनकर निकाल ले और उसको कटाईकलांके अर्कमें जिसको कटीला और बढटसा कहते हैं तीन रोजतक पकावे जब गंधक मजकूर इस कदर पकजावे कि आगपर रखनेसे धुआँ और बू न दे बल्कि रोगन होकर सफलसे जुदा होजावे ऐसे गंधकका रोगन भी बदस्तूरवाला निकालकर काममें लावे तो भी उससे अयार अफजाका काम निकलताहै। (सुफहा किताब अकलीमियाँ २८)

गंधकके तेलकी तरकीब (उर्दू)

पातालयन्त्रसे आग (आकमें. स.) के पत्तोंके रसका पुट देकर खुश्क करके चुकावे शीशःमें भरकर। (सुफहा खजानः कीमियाँ ३३)

गंधक वगैरःके तेल निकालनेकी तरकीब (उर्दू) पातालयंत्रसे ।

आग (आक) का दूध चौगुना लेकर उसमें कोई उपधातु डालकर गोली बनाकर आतिशीशीशीमें वालूजंतरसे तेल निकाल सक्तेहै। (सुफहा खजानः कीमियाँ ३३)

१ ऊपर कही निर्गंधी करणक्रियासे यह पाठ बहुत मिलताहै।

तेल गंधक (उर्दू)

गंधक आँवलासार आध पाव लेकर अर्क लहसन एक सेर अर्क सत्यानासी एक पावके साथ खरल करें हत्ताकि अर्क खुश्क होजावे तब खुर्द खुर्द गोली बनाकर सायामें अच्छीतरह खुश्क करें और फिर आतशीशीशीमें डालदेवे और शीशीके मुहमें लोहेकी तारे देवे फिर एक मिट्टीकी कनाली लेकर दरमियानसे इस कदर सूराख करें कि मुह शीशाका निकल सके फिर एक चूल्हा खोदकर उसमें एक प्याली उमदा चीनीकी रक्खें यानी पहले कनालको रक्खें और नीचे उसको प्यालेको रक्खें फिर चारों तरफ कनालके आग करीब ५ सेरके देवें तीन चार घंटेमें तेल निकल आवेगा मुजर्रिब है। (सुफहा ९० किताब कुश्तैजात हजारी)

गंधकतैल जंगली प्याजमें २१ दिन घोटकर ।

गंधकको तीन सप्ताह जंगली प्याजके रसमें घोटनेके बाद तेल निकालनेसे अग्निस्थाई तेल निकलताहै ॥ (कश्मीर यात्रामें प्राप्त)

गंधकतैल पाताल यंत्रसे ।

गंधक यथेष्ट लेकर मधु बिच रखना (ककरबिच) दिन चालीस तब पाताल यंत्रसे तेल निकालना ॥ (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

गंधकतैलवेधक पातालयंत्रसे ।

गंधक यथेष्ट लेकर उष्ट्र मूत्र १ पात्रमें पाकर नितारना फिर द्वितीय पात्रमें नितारना फिर तृतीय पात्रमें नितारना फिर चतुर्थ पात्रमें नितार कर उससे खरल करना १८ दिन ॥ (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

अन्यच्च ।

गंधक यथेष्ट कृष्ण खरी दुग्धमें खरल करना दिन १८ फिर ज्योतिष्मती तैलमें खरल करना दिन ५ फिर रेत भांडे दी पाकर ऊपर अरण्योपल देकर तैल निकालना तैल वेधकहै ॥ (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

गंधकतैल पातालयंत्र भेदसे ।

अमलतासके फूल और गंधक दोनों समभाग खरल करके गोला बनाकर सुखाकर शीशीमें पाकर पाताल यंत्र करके ऊपरली शीशीके ऊपर वच्छियोंका गोहा रोज दो सेर पक्का पाणा १० रोज फिर दो सेर पक्के कोयले चंगे लेकर गोहेके ऊपर भरवाके भस्म करदेणे तैल गोहेकी गर्मीसे हो निकल आवेगा, काममें लगाना । (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

तरकीब तेल गंधक (उर्दू)

आँवलासार गंधकको एक शीशीमें डाल कर दूसरी बोतलका मुह बाहम मिला दो और गंधकवाली शीशीको ऊपर और खालीको नीचे करके मौसम बरसातमें एक गढा खोद कर घोडेकी लीदमें दबावे मगर हर हफ्ते लीद बदल दियाकरें बाद गुजरने मौसम बरसातके जिस वक्त बोतलोंको निकालोगे नीचे वाली बोतल पाओगे । (सफा ८९ किताब कुश्तैजातहजारी)

गंधकतैल गोबरमें गाडकर ।

गंधक सूक्ष्मचूर्ण ऊर्ध्वपात्रमें हेठ दूसरा पात्र खाली ऊर्द्ध पात्र मुखमें तृण देकर खूब बंद करके पुरुष प्रमाण गर्त करके उसमें गोमय भरके पात्रद्वय रख कर ऊपर उतनाही गोमय हो रपाकर छोड देना, वैशाख मास करना ६ मासपर निकालना, गंधकतैल अधोपात्रमें जाकर पडेगा उसको योगोंमें योजन करना। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

गंधकतैल ।

अथवा चुल्लकं खंडे गर्ते गंधकजं रजः ॥ देयं पाकविधौ सम्यगअन्यत पूर्ववदीरितम् ॥ ७२ ॥ (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

अर्थ-अथवा चूल्हेकी तरहवाले गढेमें गंधकका चूर्ण पाकके विधिमें देकर पहलेकी समान क्रिया करनेसे गंधकतैल, योगके योग्य होगा ॥ ७२ ॥

गंधकपिष्टिविधि ।

दश पल गंधक सोध्यो ग्वार । लेइ बुझाय तीन ही बार ॥ पुनि गज एक ले चुचोकार । बरके दूध लेपि दशबार ॥ करिदो बरता गंधक बांधि । कठिन गांठि ज्यों रहै न साधि ॥ तब पोटली डोलिका धरै । हांडी रस जुगुनीके धरै ॥ द्वै सै पल दिन प्रतिरसलेय । ऐसी आगि बीस दिन देय तब गंधक पीठी ह्वैजाय । धातै रंगै सुनो हो राय ॥ रतिरिती जो प्रानी खाय । तो नासै चौरासी वाय ॥ सीत दोष अरु मंडल हरै । जो रोगी संजम पथ करै ॥ (रससागर.)

गंधपिष्टी गंधबद्धाय जारणाय च ।

दशनिष्कं शुद्धसूतं निष्कैकं शुद्धगंधकम् । स्तोकंस्तोकं क्षिपेत्खल्वे मर्दकेनाथ कुट्टयेत् । याममात्रंभवेत्पिष्टीगंधपिष्टिर्निगद्यते ॥७३॥ (र. रत्ना. हस्तलिखित. अनूपश०.)

अर्थ-चालीस माशे शुद्ध पारद और चार माशे शुद्ध गंधक लेवे फिर खरल (तप्त खल्व) में पारदको डालकर थोडा २ गंधक डालता जावे और घोटता जावे इस प्रकार एक प्रहर घोटनेसे पिष्टी होतीहै उसको गंधक पिष्टी कहतेहैं ॥ ७३ ॥

अन्यच्च ।

अथवा गंधकं सूतं पूर्वमात्रा यथोदितम् । ताम्रपात्रे विमर्द्याथ अंगुष्ठेन शनैः शनैः ॥ ॥ ७४ ॥ मृद्वंगाराद्यधः क्षिप्या यथाङ्गुष्ठं न दह्यते । पिष्टिकां घटिकामात्रे समुद्धृत्याथ जारयेत् । अथवा तीव्रघर्मेण कार्या गंधकपिष्टिका ॥ ७५ ॥ (र. रत्ना० हस्तलि. अनूप.)

अर्थ-अथवा गंधकसे दसगुना पारद लेकर तांबेके पात्रमें रखदेवे और उस तांबेके पात्रके नीचे थोडी सी अग्नि रख कर अपने हाथके अंगूठेसे धीरे २ मलता जावे और अग्नि भी ऐसी लगावे कि हाथका अंगूठा नहीं जले फिर एक हांडीमें बनी हुई पिष्टिकाको लेकर जारण करे (अथवा तेज घाममें रखकर गंधककी पिष्टी करे॥७४॥७५॥

गंधपिष्टी।

शुद्धसूतपलैकन्तु कर्षकं गंधकस्य च। स्विन्नखल्ले विनिक्षिप्य देवदालिरसप्लुतम् ॥ मर्दयेच्च कराङ्गुल्या जायते गंधपिण्डिका ॥ ७६ ॥

अर्थ-शुद्ध पारद एक पल (चार तोले) और शुद्ध गंधक एक कर्ष (एक तोला) इन दोनोंको तप्त खल्वमें डाल कर बंदालके रसकी भावना देकर हाथके अंगूठेसे मर्दन करे तो पिष्टी उत्तम होगी ॥ ७६ ॥

गंधपिष्टी (उर्दू)

पारा एक पल, गंधक एक कर्स (कर्ष) यानी सवा तोला खरलमें डालकर देवदालीके अर्कमें मिलाकर धूपमें रखकर उंगलीसे खूब रगडे पिष्टी बनजावेगी। (सुफहा खजानः कीमियाँ १५)

गंधपिष्टी (उर्दू)

गंधकको सौ बार मिट्टीके ठकिरेमें कोंचके अर्कमें तर करके सायेमें सुखावे फिर उसमें पारा और यही अर्क डालकर उंगलीसे खूब मिलावे पिष्टी बन जायगी यह तीनों पिष्टी धातुवादके काममें आवेगी बहुत उमदाहै। (सुफहा खजानः कीमियाँ १५)

गंधककी पिष्टी (उर्दू)

साफ गंधकका बुरादा स्याह धतूरेके अर्कमें सात बार तर करे सुखाकर फिर सात बार हेजके खूनमें इसी तरह फिर एक बार आदमीके बीर्जमें तर करके सुखावे फिर मिट्टीके ठीकरेमें रख कर एक पल पारा डाल कर उंगलीसे खूब मिलावे पिष्टी बन जावेगी। (सुफहा खजानः कीमियाँ १५)

गंधक जारणके लिये पिष्टी।

विलोलिते स्वर्णजले विशुष्के वस्त्रेथ दत्त्वा नवनीतगर्भे। चूर्णं शिलातालकगंधकानां सपत्रगानां समभागिकानाम् ॥ ७७ ॥ कर्षप्रमाणं च ततोस्य वर्तिं प्रज्वालयेत्तद्गलितं घृतं स्यात्। अनेन कुर्याद्रसनायकस्य सर्वत्र पिष्टी बलिजारणाय ॥ ७८ ॥ (टो. नं., योगतरंगिणी., ध. सं.)

अर्थ-गंधकके चूर्णको धतूरेके रसकी भावना देकर सुखा लेवे फिर इसमेंसे १ तोला गंधक, मैनसिल १ तोला, हरिताल १ तोला, सीसा १ तोला इन सबको सम भाग लेकर चूर्ण करलेवे उसमेंसे एक तोले चूर्णको मक्खनमें भिगो कर बत्ती बनाकर जलादेवे तो घृत निकलेगा इससे पारदमें गंधक जारणके लिये पिष्टी करे॥ ७७॥७८ ॥

(१) वाद कर्मोपयोगी है क्योंकि नागका मेल है।

गंधक गुण।

शुद्धगंधो हरेद्रोगान् कुष्ठमृत्युजरादिकान्॥ अग्निकारी महानुष्णो वीर्यवृद्धिं करोति च ॥ ७९ ॥ (र० रत्नाकर, र० र० स०.)

अर्थ-शुद्ध गंधक कोढ, मृत्यु, और जरा (बुढापा) आदि रोगोंको नाश करता है अत्यन्त उष्ण अग्नि और वीर्यकी वृद्धिको करताहै ॥ ७९ ॥

अन्यच्च।

गंधाश्मातिरसायनः समधरः : पाकेकटुष्णो मतः कंडूकुष्ठविसर्पदद्रुदलने दीप्तानलः पाचनः ॥ आमोन्मोचनशोषणो विषहरः सूतेन्द्रवीर्यप्रदो यक्ष्मप्लीहकफाचलक्रिमिहरः सत्त्वात्मकः सूतजित्॥८०॥ (र० सा० प०, र० र० स०.)

अर्थ-गंधक रसायन, पाकमें मीठा, कुछ गरमहै, खुजली कोढ, विसर्प और दादका नाशक अग्निको दीप्त करनेवाला और पाचनहै आमको साफ करनेवाला और सुखानेवालाहै विषका नाशक, पारदको बलदेनेवाला यक्ष्मा, प्लीहा, कफ, और कृमिका विध्वंसकारी सत्वरूप और पारदके जीतनेवालाहै ॥ ८० ॥

अन्यच्च।

गंधकः कृमिकुष्ठघ्नो विषनेत्रामयापहः ॥ रसायनश्चातिबल्यो विषमज्वरनाशनः ॥ ॥ ८१ ॥ (टो० नं०.)

अर्थ-शुद्ध गंधक कृमि कुष्ठ और नेत्ररोगका नाश करनेवालाहै रसायन और अत्यन्त बलकारीहै तथा विषमज्वरका नाशकहै ॥ ८१ ॥

अन्यच्च।

गंधकः कटुकस्तिक्तो वीर्योष्णस्तुवरः सरः ॥ पित्तलः कटुकः पाके कंडूवीसर्पजंतुजित् ॥ ८२ ॥ हंति कुष्ठं क्षयप्लीहकफवातान् रसायनम् ॥ अशोधितो गंधं एष कुष्ठसंतापकारकः ॥ ८३ ॥ शुक्रौजः क्षयमावल्यं करोति च रुचिप्रणुत् ॥ ८४॥ (बृ०यो०,)

अर्थ-गंधक चरपरा, कडवा, उष्ण, वीर्य और दस्तावरहै पित्तका पैदाकरनेवाला परिपाकमें चरपरा कंडू, विसर्प, और कृमिरोगका नाशकहै कोढ, क्षय, प्लीहा, कफ और वातरोगोंको नाश करताहै और रसायन है बिना शुद्ध कियाहुआ गंधक कोढ, संताप, करताहै वीर्य तथा ओजका नाशकरनेवाला और अरुचिका कर्ताहै॥ ८२-८४ ॥

गंधक सेवन।

घृताक्ते लोहपात्रे तु विद्रुतं शुद्ध गंधकम् ॥

घृताक्तदर्विकाक्षितं द्विनिष्कप्रमितं भजेत् ॥ ८५ ॥ हन्ति क्षयमुखान् रोगान् कुष्ठरोगं विशेषतः ॥ क्षाराम्लतैलसौवीर विदाहिद्विदलं तथा ॥ ८६ ॥ शुद्धगंधकसेवायां त्यजेद्योगयुतेन हि ॥ ८७ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-घीसे चिकने कियेहुऐ लोहेके पात्रमें गंधकको गलाकर दूधमें डालदेवे फिर उसमेंसे ८ माशे नित्यसेवन करे तो वह गंधक क्षय आदि रोगोंको नष्ट करताहै और कोढको तो अवश्य नाश करताहै और गंधकको खानेवाला मनुष्य खार अम्ल पदार्थ, सुर्मा, दाहजनक पदार्थ, तथा दाल इनके भक्षणको अवश्य छोडदेवे ॥ ८५-८७ ॥

गंधकसेवन कुष्ठ रोगके लिये ।

गंधकस्तुल्यमरिचः षड्गुणत्रिफलान्वितः । घृष्टः शम्याकमूलेन पीतश्चाखिलकुष्ठहा ॥ ॥ ८८ ॥ तन्मूलसलिले पिष्टं लेपयेत्प्रत्यहं तनौ । दृष्टप्रत्यययोगोयं सर्वत्राप्रतिवीर्य्यवान् । श्रीमता सोमदेवेन सम्यगत्र प्रकीर्तितः ॥ ८९ ॥ (र. र. स.)

अर्थ—गंधक एक भाग, तथा मिरच एक भाग और त्रिफला छः भाग इन सबको अमलतासकी जडके रससे पीसकर पान करे तो समस्त कुष्ठ दूरहोतेहैं और उसी अमलतासकी जड़के रससे पिसेहुए गंधकका शरीर पर लेप करे तो कुष्ठरोग दूरहोताहै यह योग श्रीसोमदेवने अपने रस रत्न समुच्चयमें कहाहै ॥ ८८ ॥ ८९ ॥

गंधकलेप विधान ।

द्विनिष्कप्रमितं गंधं पिष्ट्वा तैलेन संयुतम् । अथापामार्गतोयेन सतैलमरिचेन हि ॥ ॥ ९० ॥ विलिप्य सकलं देहं तिष्ठेद्धर्मे ततः परम् । तक्रभक्तं च भुंजीत तृतीये प्रहरे खलु ॥ ९१ ॥ भजेद्रात्रौ तथावह्निं समुत्थाय ततः प्रगे । महिषीछगणं लिप्त्वा स्नायाच्छीतेन वारिणा ॥ ९२ ॥ ततो भ्यज्य घृतैर्देहं स्नायादिष्टोष्णवारिणा । अमुना क्रमयोगेन विनश्यत्यतिवेगतः ॥ ॥ ९३ ॥ दुर्जया बहुकालीना पामा कंडुः सुनिश्चितम् । गंधकस्य प्रयोगाणां शतं तत्र प्रकीर्तितम् । ग्रंथविस्तरभीतेन सोमदेवेन भूभुजा ॥ ९४ ॥ (र. र. स.)

अर्थ—आठ माशे गंधकको तैलमें पीसकर अथवा ओंगाका रस, मिर्च, गंधक इनको तैलमें पीसकर फिर शरीरमें लेपकर घाममें खडा रहे और तीसरे पहरमें मट्ठा, भातका भोजन करे तथा रातमें आंचसे शरीरको सेके और प्रातःकाल भैंसके गोबरसे शरीरकी मालिश कर शीतल जलसे स्नान कर लेवे फिर घीकी मालिश करके सुहाते सुहाते गरम जलसे स्नान करे इस युक्तिसे अत्यन्त कठिन बहुत दिनोंकी पैदा हुई खुजली निश्चय नाश होजाती है इस प्रकार महाराज सोमदेवने सैकडों गंधकके प्रयोग वर्णन कियेहैं उनको ग्रंथके बढनेके भयसे हम नहीं लिखतेहैं ॥ ९०-९४ ॥

गंधककल्प ।

निष्कमात्रं सदुग्धं सेव्यं मासं सौर्यवीर्यप्रवृद्धचै । षण्मासात्स्यात्सर्वरोगप्रणाशो-दिव्या दृष्टिर्दीर्घमायुस्सुरूपः ॥ ९५ ॥ (र. सा. प.)

अर्थ-जो मनुष्य चार माशे गंधकको एक महिनेतक दूधके साथ सेवन करे तो वीर्यकी वृद्धि होतीहै यदि छः महीनेतक दूधके साथ ४ माशे गंधकको खावे तो सब रोग नाश होकर उत्तम दृष्टि और रूपवाला दीर्घायु होताहै ॥ ९५ ॥

अन्यच्च ।

इत्थं विशुद्धं त्रिफलाज्यभृंगवध्वन्वितः शाणमितो हि लीढः। गृध्राक्षि तुल्यं कुरुते क्षियुग्मं करोतिरोगोज्झितदीर्घमायुः९६ ॥ पथ्यं दुग्धौदनम् । (र. सा. प.)

अर्थ-इस प्रकार शुद्ध कियेहुऐ चार माशे गंधकको त्रिफला, घृत, भंगरा और शहदमें मिलाकर चाटे तो उसके नेत्र गीधके नेत्रोंके समान तेज होतेहैं और सब रोगोंसे रहित होकर दीर्घायु होताहै, इसपर दूध तथा भातका पथ्यहै ॥ ९६ ॥

अन्यच्च ।

चूर्णीकृत्य पलानि पंच नितरां गंधाश्मनो यत्नतस्तच्चूर्णं त्रिगुणे तु मार्कवरसे छाया विशुष्कीकृतम् । यत्साच्चूर्णमथाभयामधुघृतं प्रत्येकमेषां पलं वृद्धो यौवनमेति मासयुगलं खादेन्नरः प्रत्यहम् ॥ ९७ ॥ (र. सा. प.)

अर्थ-शुद्ध कियेहुए पांच पल गंधकके चूर्णको तिगुने भांगरेके रससे भावना देकर छायामें सुखाकर चूर्ण करलेवे फिर उसमें एक पल हर्रका चूर्ण, एक पल घृत, और एक पल शहदको मिलादेवे फिर उसको दो मास तक सेवन करे तो वृद्ध मनुष्य भी युवा पुरुष होजाताहै ॥ ९७ ॥

अन्यच्च ।

बलिरेको घृतमरिचनियुक्तः पलितवलिघ्नः प्रातर्भुक्तः ॥ वितरति तरुणसरूपमुदारं वृद्धस्यापि विमोहितदारम् ॥ ९८ ॥ (र.सा.प.)

अर्थ-प्रातःकाल जो मनुष्य घी और मिरचके साथ गंधकको खाताहै वह वलीपलित रहित होताहै और वृद्ध मनुष्यको भी स्त्रियोंको मोहित करनेवाले युवावस्थाके रूपको देताहै ॥ ९८ ॥

अन्यच्च।

वातारितैलसंयुक्तं त्रिफलागुग्गुले न तु। गंधकं रससंयुक्तं मासाद्व्याधिजरापहम् ॥ ९९ ॥ अर्शोभगंदराद्याश्च तथा व्याधि कफोद्भवाः। चला दंता मंददृष्टिर्बलशुक्रादिसंक्षयः ॥ १००॥ नश्यन्ति व्याधयः सर्वे मासेनैकेन गंधकात् ॥ षण्मासस्य प्रयोगेण देवतुल्यो भवेन्नरः ॥ १०१ ॥ हंसवर्णश्च ये केशा वलिश्चापि प्रलम्बिनी ॥ निर्जित्य यौवनं याति भ्रमरा इव मूर्द्धजाः ॥ १०२ ॥ दिव्यदृष्टिर्महाप्राज्ञोवराह इव कर्णयोः ॥ चक्षुषा तार्क्ष्यतुल्योसौ बलेन बल विक्रमः॥ १०३ ॥ दृढदन्तो वज्रकायो द्वितीय इव शंकरः ॥ तस्य मूत्रपुरीषेण शुल्बं भवति कांचनम् ॥ १०४ ॥ लवणाम्लानि शाकानि द्विदलानि तथैव च ॥ स्त्रियाश्चारोहणं यानं गंधसेवी विवर्जयेत् ॥ १०५ ॥ (र.सा.प.)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां गंधकविषयोपवर्णनं नाम-द्विपञ्चाशत्तमोध्यायः ॥ ५२ ॥

अर्थ–एरंडका तेल, त्रिफला, गूगल और पारदके साथ गंधकको जो एक मासतक सेवन करे तो वह जरा (बुढापा) और व्याधि रहित होताहै और उसके अर्श (बवासीर) भगंदर आदि रोग तथा कफसे पैदा होनेवाले रोग दाँतोंका हिलना, दृष्टिकी मंदता, बल और वीर्यका नाश इत्यादि रोग एक मासतक गंधकके सेवनसे नाश होजातेहैं और छः मासतक सेवन करनेसे देवताओंके तुल्य होताहै, सफेद बाल काले होजातेहैं तथा झुर्रियोंका नाश होकर युवावस्थाकासा रूप होजाताहै, वराहकेसे कान होजातेहैं और गरुडकी ऐसी उत्तम दृष्टि होतीहै और पुरुषार्थ श्रीबलदेवजीके समान होताहै, दांत तथा शरीरकी दृढतामें दूसरे श्रीमहादेवजीके तुल्य होताहै और उसके मूत्र तथा मलसे ताँबेका सोना होजाताहै, गंधकका सेवन करनेवाला नोन, अम्ल पदार्थ (खट्टे पदार्थ), दाल, स्त्रीके साथ सहवास सवारी इन सबको छोड देवे ॥९९–१०५ ॥

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया भाषाटीकायां गंधकविषयोपवर्णनं नाम द्विपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५२ ॥

साधारणरसाध्यायः ५३.

साधारण रसोंका वर्णन।

कम्पिल्लश्च परो गौरी पाषाणो नवसारकः॥ कपर्दो वह्निजारश्च गिरिसिंदूरहिंगुलो ॥ ॥ १ ॥ मोदारशृंगमित्यष्टौ साधारणरसाः स्मृताः ॥ रससिद्धिकराः प्रोक्ता नागार्जुनपुरःसरैः ॥ २॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–कबीला, गौरीपाषाण (संखिया), नवसादर, कौडी बह्निजार (अम्बर), गिरिसिंदूर, हिंगुल और मुरदारशिंग यह साधारण रस नागार्जुन प्रभृति सिद्धोंने रसकी सिद्धिके करनेवाले कहेहैं ॥ १ ॥ २ ॥

कबीलेकी उत्पत्ति।

इष्टिकाचूर्णसंकाशश्चन्द्रिकाढ्योतिरेचनः॥ सौराष्ट्रदेशे चोत्पन्नः स हि कम्पिल्लकः स्मृतः ॥ ३ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–कबीला ईटके चूलेके समान चमकीला हो और दस्तावर होता है यह कबीला सौराष्ट्र (सोरठ यानी सूरत) देशमें उत्पन्न होताहै ॥ ३ ॥

कबीलेके गुण।

पित्तव्रणाध्मानविबन्धनिघ्नः श्लेष्मोदरार्तिक्रिमिगुल्मवैरी ॥मूलामशोफज्वरशूलहारी कम्पिल्लको रेच्यगदापहारी ॥ ४ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–पित्त, फोडा, अफरा, मलबंध, कफरोग, उदररोग, कृमिरोग, गुल्मरोग, बवासीर, सूजन, आम, ज्वर इन सबको नाश करता है और जो रोग जुलाब लेनेसे दूर होतेहैं उनके नाश करनेमें कबीला अत्यंत लाभकारक है ॥४॥

गौरी पाषाणके भेद।

गौरीपाषाणकः पीतो विकटो हतचूर्णकः॥ स्फटिकाभश्च शंखाभो हरिद्राभस्त्रयःस्मृताः ॥ ५ ॥ पूर्वपूर्वो गुणैः श्रेष्ठः कारवल्लीफले क्षिपेत् ॥ स्वेदयेद्भंडिकामध्ये शुद्धो भवति मूषकः ॥ ६ ॥ तालवद्ग्राहयेसत्त्वं शुद्धं शुभ्रं प्रयोजयेत् ॥ रसबंधकरः स्निग्धो दोषघ्नो रसवीर्यकृत् ॥७॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–शंखिया तीन जातिका होताहै एक फिटिकिरीके समान होताहै जिसके तोडनेसे चूराचूरा होजाताहै और दूसरा शंखके समान सफेद होताहै और तीसरा हलदीके समान पीला होताहै इनमें एक दूसरेसे उत्तरोत्तर न्यून गुणवाला होताहै इस शंखियेके टुकडेको एक बडे करेलेमें रख और कपडेसे बांध कांजीमें दोलायन्त्र द्वारा पकावै तो शुद्ध होगा। हरतालके समान शुद्ध सफेद सत्व निकालकर काममें लावे यह पदार्थ रसके बांधनेवाला चिकना दोषनाशक रस और वीर्यके करनेवाला है ॥ ५–७ ॥

लोहसादरकी उत्पत्ति।

करीरपीलुकाष्ठेषु पच्यमानेषु चोद्भवः ॥ क्षारोऽसौ नवसारः स्याच्चूलिकासवणाऽभिधः ॥ ८ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

करील (कैर) और पीलू प्रभृतियोंकी लकडाक पचेन-

पर जो क्षार पैदा होताहै उसको नवसादर कहतेहैं और इसको चूलिकालवण भी कहतेहैं ॥ ८ ॥

तथा च ।

इष्टिका दहने जातं पाण्डुरं लवणं लघु ॥ तदुक्तं नवसाराख्यं चूलिकालवणं च तत्॥ ॥ ९ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ—ईटके जलानेमें जो हलका और पीला नोंन पैदा होताहै उस नौसादरको चूलिका लवण कहतेहैं ॥ ९ ॥

सम्मति—करील अथवा पीलू अथवा ईटको जलाकर पानीमें घोल और नितारकर छान लेवे और उसको औटाकर क्षार बनालेवे ॥

नौसादरकी किस्में (उर्दू)

नौसादरकी पांच किस्में हैं। अव्वल—नौसादर उर्फी जिससे बर्तनोंपर कलई होतीहै वह ईटके पजावेसे निकलताहै । दोयम-नौसादर कानी सफेद जिस्में बदबू नहीं होती, सोयम-पैकानी जो किसी कदर जर्दी व सुर्खी माइल होताहै और स्याही और सफेदी उसमें नहीं होती, चहारम-अमली जो लडकेको नानमैदा गन्दुम और शहद और रोगन और जर्दी बैजा मुर्ग खिलाकर बोलत बराजको उसके निगाह रखतेहैं इक्कीस दिनके बाद जब जमा होजाताहै. उसके हमवजन गंधक मिलाकर पाइखाना और गंधक दोनोंको पेशाव मजकूरमें खरल करके हलाव अकद करतेहैं और मुकतर करके तरकीब देतेहैं और अमलकीमियामें यह सबसे अफजल होताहै, पंजुम-फैनियः जो शोरा कलमीकी तरह होताहै) सुफहा अकलीमियाँ १६९)

तरकीब नौसादर महलूल ।

नौसादर महलूलकी तरकीब यह है कि नौसादर एक हिस्सा नमक इन्दरानी निस्फ हिस्सा दोनों मिलाकर सलाया करे बादहू एक हांडीमें डालकर तीन मर्तबः तसईद करें तो नौसादर सफेद और साफ होजावेगा फिर दुबारा हांडी गिलीमें डालदे और गढा दो गज गहरा ओर गजभर चौडा नमनाक जमीनमें खोद कर उस गढेको लीद अस्पसे निस्फ तक चर कर और वह हांडी इसमें रख कर बाकी गढा लीदसे भरदें और मिट्टी डाल कर बंद करदें एक हफ्तेके बाद खोल कर देखे तो नौसादर मिस्ल पानीके होजायगा इस वक्त कपडेमें छान कर शीशेमें बंद कर रक्खे और वक्त जरूरत काममें लावे (सुफहा २९०३० किताब अखबार अलकीमियाँ १६।३।२९)

किस्म नौसादर मुन्दर्जः खुरशैद पिदायत (उर्दू)

रानाख्त हवाई सिनत और इससे मुरादरुह हम्मिलान सुमलिल मुशम्मा है और वह उकाव (नौसादर) है जो कानी हो और वह मलह तवजर्दकी तरह होताहै, सफेद चमकदार और सोजाँ और इसे अमूमन समर कंदसे खुरासानकी तरफ लाया जाता है इसकी दूसरी किस्म जो है कि इसे जवासा बोलतेहैं यह करामद नहीं यह मसनुई है और कारसनतमें काम नहीं देता सिर्फ कलईगरोंके काम आताहै कारआमद सिर्फ कानीहै (सुफहा २१ अखबार अलकीमियाँ ८।३।१९०९)

नवसादरस्थिति प्रकार ।

मृदादिभिः स्थिरा कार्य्या नलिकाततको- परि ॥ तन्मध्ये निक्षिपेच्चूर्णं तुल्यशोर- कयोः समम् ॥ १० ॥ अर्द्धचूर्णोपरि धार्य्यं खंडचुल्लकसम्भवम् ॥ तस्योपरि तथाचूर्णं मर्द्दपूर्ववदेव हि ॥ ११ ॥ मंदानलेन वि- पचेद्यावद्यामचतुष्टयम् ॥ ततो वह्नौ परीक्षेत नैवं चेद्धि पुनः पचेत्॥१२॥ स्थिरः संजायते वह्नौ नवसारस्सुपाचितः ॥(जम्बू- से प्राप्त पुस्तक.)

अर्थ—तवेपर मिट्टी वगैरहसे मिट्टीकी बनीहुई नलिकाको खडी करदेवे उसमें नीलाथोथा ओर शोरेके समान चूना मिलाकर डाल देवे जब आधी नली भरजाइ तब नौसादर रख ऊपरसे नीलाथोथा और शोरा मिलेहुए चूनेको डालदेवे मंदाग्निसे चार प्रहरतक पकावै फिर उसमेंसे निकाल आंचपर रख परीक्षा करे जो उडजाइ तो इसी प्रकार फिर पाचन करे इस प्रकार करनेसे नौसादर अग्निस्थायी होताहै॥ १०–१२ ॥

नौसादर गुण ।

रसेन्द्रजारणं लोहद्रावणं जठराग्निकृत् ॥ गुल्मप्लीहास्यशोषघ्नं भुक्तमांसादिजार- णम् ॥ बिडाख्यं च त्रिदोषघ्नं चूलिका- लवणं मतम् ॥ १३ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ—यह नौसादर पारदके जारण करनेमें तथा धातुओंके जलानेमें अत्यंत उपयोगी है जठराग्निको दीप्तकर मांसादि भारी पदार्थोंको भीं पचाताहै गुल्म प्लीहा और मुख शोषको भी फायदा करता है कुछ विद्वानोंका मत है कि बिडनोनको चूलिकालवण (नौसादर) कहतेहैं वह त्रिदोषघ्न है ॥ १३ ॥

नौसादर तैल कायम ।

सिधीयों आचूना बा गुट्ठल कौडीयोंका चूना नौसादर के हेठ ऊपर चूनादेना नौसादर दरडा करलेणा आग आठ सेर पक्केकी देणी नौसादर कायम हो जायगा उसको शीशीमें पाकर ४१ दिन लिद् (लीद) में दबाना नौसादर तेल होजायगा सब धातुओंको पकडेगा(जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

तथा च ।

मृताश्मनवसारौ च समभागावर्धयाम- कम् ॥ खल्वे संमर्द्य मृत्पात्रे मुद्य मंदाग्नि- पाचनम् ॥ बारंबारं क्रिया ह्येषा स्थिरतैल प्रकाशिका ॥ १४ ॥

अर्थ—चूना और नौसादरको सम भाग लेकर चार घडी खरलमें घोटे मुखपर कपरोटी कर मंदाग्निसे पचावे इस क्रियाको कईबार करे फिर ऊपर कही हुई क्रियासे शीशीमें भर ४१ दिन लीदमें रक्खे तो तैल होगा॥ १४ ॥

तथा च।

एक तोला लवण तीन तोला नौसादर दोनोंको महीन खरल करना कूंजेमें छेद करके और बंद करके आग देणी छिद्रद्वार करके नौसादर तैल हेठ पाताल यंत्रमें पड जायगा। जम्बूसे प्राप्त (पुस्तक)

तथा।

ऊंटके बाल कतरके छेदवाले कूंजेमें बाल तथा नौसादरकी तहवतह देके मुख बंद करके चार सेर मेंगणा तथा धानके तुषोंको आग देणी तैल बनजायगा।

तथा।

भांगमें तह नौसादरकी देके भांडेको कपडमाटी करके कपडमाटी सुखाकर पातालयंत्रसे तैल निकालना (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

तथा।

इन्द्रजौ बराबर या कमती या अधिक हों नौसादर या सज्जी या सुहागा इनमेंसे जिसका तैल निकालना हो उसको इन्द्रजोंके साथ मिलाकर पाताल यंत्रद्वारा तैल निकालले। तथा अमरबेलका स्वरस निकाल कर जो प्रातःकाल निकल सकेगा उसमें नौसादरको ३ या ४ प्रहर खूब खरल करना चाहिये (इस रसके डालनेसे नौसादर उबाल खाताहै) बाद खरल करनेके गोली बनाकर गोलियोंको खुश्क करके उनका पाताल यंत्रसे तेल निकालले लेकिन तेज आंचकी जरूरत होगी वह तेल मिसल शहदके निकलेगा और अग्नि स्थायी होगा। (कश्मीरयात्रामें श्रीनगर निवासी नव्वाब खां)

तथा च।

जलास्पृष्टं सुधाचूर्णं षट्तोलकप्रमाणकम्। जले पंचगुणं देयं दिनानि सप्त धारयेत् ॥ ॥ १५ ॥ त्रिवारं चालयेन्नित्यं सुधाक्षारं जले भवेत्। तोलेकमानं हरितालं मर्दयेत तेन वारिणा ॥ १६ ॥ दशतोलकनवसारे लिप्त्वालिप्त्वा सुशोषयेत्। ततो शीशं भवेत तैले तारामीराक्षकेऽपि वा ॥ १७ ॥ द्वियामं पाचयेल्लिप्तं नवसारं शुशोषितम्। विकाशो जायते तस्मिन् नवसारे सुपाचिते ॥ १८ ॥ ततो नमदवस्त्रेण लग्नं तैलं सुशोषितम्। चूर्णयेन्नवसारं तं सूक्ष्मरूपं यथा भवेत् ॥ १९ ॥ सिंदूरं तोलकं दत्त्वा धार्य्यं पातालयन्त्रके। इत्थं पातालयन्त्रेण तैलं चुल्लकजं भवेत् ॥ २० ॥

अर्थ–नवसादर तोला १०, हरतालतोला ९, चूना बेबुझा हुआ तोले ६, सिंदूर एक तोला ९, तैल अलसीका यातारामीरा आध सेर ऽ॥ पक्का आग पांच घंटे मंद देनी प्रथम चूना ६ तोले लेके पाणीमें भिगो रखना सात दिनतक दिनमें एक वार पानीको चलातारहे फिर निकाल लेना उस पानीमें हरताल एक तोला खरल करना खूब महीन करना उस तोला हरतालको नौसादरकी डली दस तोलेकी लेकर उसपर लेप करना और सुखालेना फिर तैल तारामीरादा वा अलसीदा जितनेमें डलो डूबी रहे आधसेर पक्का वा अधिक कडाही डूंगीमें पाकर दो पहर मद्दी आग बारनी जिससे तैलमें आग ना पडे ऐसे नौसादरको पकानेसे फूलजायगा किंवा गंधककी चुटकी देणी लघु गर्त करके फिर नमदा हेठ ऊपर देकर दो भारी पत्थरोंमें रक्खो उससे तैल शुष्क होजायगा फिर उस नौसादरको महीन पीस कर उसमें एक तोला सिंदूर पाकर पाताल यन्त्रसे तैल निकाल लेना तैल पांच तोला निकलेगा (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक) ॥ १५–२० ॥

तथा च।

सुधासैंधवकाचं च सर्ज्जं टंकणपंचकम्। पृथक् दिष्वा समं कृत्वा चूर्णं संततततके ॥ ॥ २१ ॥ परितः नवसारस्य दत्त्वा यामचतुष्टयम्। पक्वासारं पृथक् कृत्वा देयं काचस्य भाजने ॥ २२ ॥ जले क्लेदात् जले स्वेदात् किंवा पातालयंत्रतः। तैलमादाय योगेषु योज्यं सर्वार्थसिद्धये ॥ २३ ॥

अर्थ–४ तोला लवण सैंधव, ४ तोला शुद्ध चूना, ४ तोला कचनोन ४, ४ तोला लोटका सज्जी और ४ तोला सुहागा इन पांचों चीजोंको पीस मिलादेना फिर तवेपर हेठ ऊपर यह दवाई रख कर बीच आठ तोले नौसादरकी डली रख कर ४ पहर आग बालणी जित्थो धूम निकले उथ्थे पूर्वोक्त दवाई पाणी फिर स्वांगशीतल निकाल कर दवाई हटादेनी फिर शीशे बिच पाकर पाणी बिच स्वेदन करे तैल होजायगा वा पातालयन्त्रमें तैल निकालना ॥ २१–२३ ॥ (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

नवसादर तैल सज्जी और चूनेसे मर्दनसे।

नवसारं सर्जक्षारं सुधांडस्येति च त्रयम्। खल्वे संमर्दनादेव जलाकारं प्रजायते ॥२४॥

अर्थ–नौसादर, सज्जीखार और अंडेका चूना इन तीनोंकी खल्वमें मर्दन करनेसे जलकी आकृतिवाला तैल होताहै ॥ २४ ॥ (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

मुरदासंग और नौसादर तैल कायम।

नौसादर और मुरदासंग देनों सम भाग लेकर खरल करना ४ घड़ी फिर एक कुज्जीमें पाकर बंद करके स्वल्प अग्नि देणी फिर खरल फिर अग्नि फिर खरल बारंबार करनेसे तैल वण जायगा कायम–उसमें सब चीज कायम होवेंगी। (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

तरकीब हल नौसादर खालिसे (उर्दू)

नौसादर महलूल इस्तरह होताहै कि उसको पानीमें पीस कर जर्फ जज्जाजी यानी बोतलमें रखकर पार्चा कितानमें बांध कर दरियाके किनारे दफन करदे ख्वाह ऐसी जगह पर जो हरवक्त पानीसे सड़ती हो दफन करदे पानीकी तरह हो जावेगा या इस तरह हल करे कि नौसादर मजकूरको बकरीकी आंतमें रखकर मुंह सुतलीसे बांध कर

देगमें पानी भर कर बतौर भावीजंतरके (लटकादे हाशि-या सुफा ८८ किताब अलजवाहर)

सफाई नौसादर (उर्दू)

नौसादरको खूब बारीक पीस कर एक बर्तनमें रक्खें बादहू सात हिस्सा पेशाब डाले और बर्तनके मुँहपर कागज रख कर खूब मजबूत बांध कर मौसम गरमीमें ऐसे मौकेपर रक्खें कि तमाम दिन धूप रहे-बकौल भीम-सेन इस तरकीबसे नौसादर उड़ कर बर्तनमें लग जावेगा और वह साफ होगा मगर यह याद रहे कि बर्तन आधा खाली रहे । (सुफहा ९७ किताब कुश्तैजात हजारी ।)

तजरुबाजाती ।

नौसादर थोडे पानीमें हल नहीं होता जब काफी पानीं डाला जाताहै तो नापिदीद होजाताहै-और जब धूपमें रक्खागया तौ बर्तनके उपरी खाली किनारों पर नौसादर जमनेलगा और जब पानी मिकदारसे कम पड़गया तौ अन्दर पानीके भी नौसादरके फूलसे पैदा होने लगते हैं और आखिरकार पानी खुश्क होनेपर सफेद हलका नौसादर कटोरेमें जमगया और नीचे स्याह तलछट रहगई इस तरकीबसे नौसादरका मैल जरूर दूर हो सक्ताहै और हलका सफेद नफीस नौसादर तयार हो सक्ताहै- (३०।५।१९०५)

सफाई नौसादर (उर्दू)

नौसादरको लैमूके अर्कमें खरल करके सायेमें खुश्क करके एक हांडीमें रक्खे फिर उसपर दूसरी हांडीका मुंह ऐसा साफ करके रक्खो कि बाहम मिलजावे फिर मि-स्लडौरू जंतरके दुरुस्त करके जिस हांडीमें नौसादरहै उसे तीन घडी आगपर रक्खें और ऊपरवाली हांडीपर पार्चा भिगोकर रक्खें बल्कि बार बार पार्चा तर करता रहे तो नौसादर उड़कर ऊपरवाली हांडीमें लगजावेगा वह साफ होगा (सुफहा ८८ किताब कुश्तैजात हजारी)

सफाई नौसादर (उर्दू)

नौसादर मुसका करनेका तरीका यह है कि नौसादरको थोडेसे नमक और कांजीमें डालकर खरल करे और डौरू जंतर या दो प्यालोंमें या शीशीके गर्दनमें आठ या नव पहरतक आँच करे जो हँडीके शीशीके गर्दनमें उड कर चिमट जावे वही मुसकाहै (सुफहा अकलीमियाँ १७५)

नौसादर सुहागेकी हल करनेकी तरकीब (उर्दू)

बकरीकी आंतको साफ करके सुहागे और नौसादरको उसमें भरदें और हांडीमें पानीके दर्मियान जोश दे इस तरह कि सिरा उसका हांडीसे बाहर रहे ख्वाह सबजेंं या नरकलके अन्दर जिसके एक तरफ तो गिरह हो और दूसरी तरफ चूना और अंडेकी सफेदीसे मुहर करके जाइनम नाकमें जहां हर वक्त पानीकी तरी रहती हो ख्वाह देग दोतबकामें रख कर दफन करदे यह महलूल निहायत आलादर्जेके खवास रखताहै और हुकमाई मगरबी इससे तमामअखाद और अनफास और अजसादको मुशम्मा करनेके बाद अक-सीरमें मिला कर हल व अकद करतेहैं ताकि लायक तर-हके हो जावे और सीमाव व गंधक इससे कायमुलनार होजातेहैं (सुफहा अकलीमियां १०१ व १०२)

तेल नौसादर (उर्दू)

जिस कदर मुनासिब समझो नौसादर लेकर खरल करो और एक रोगनी बर्तनमें डाल कर मुँह बंद करके मौसम बरसातमें एक गढ़ा करीबन गज मुनः खोद कर गोबर डालकर बर्तन मजकूरमें दर्मियान डालकर और गोबर ऊपरसे डाल कर गढाको भर दो तीन रोजके बाद निकाल लो खुद ब खुद नौसादर तेल होजावगा मुजर्रब है (सुफहा ८७ किताब कुश्तैजात हजारी)

तैल नौसादर (उर्दू)

नौसादर और चूना सदफ एक हांडीमें तह बतह देकर गोहेकी आग देदो जब सर्द हो निकाल कर हांडीको जाइ नमनाकमें रक्खो तेल बरामद होगा । (सुफहा ८८ किताब कुश्तैजातहजारी ।)

रोगननौसादरसे अकसीर उलबैज(फार्सी)

बियारद नौसादर पुख्तः दर हश्त आसार पुख्तः बोल-खर स्याह कोफ्तः दर यक कूंडः गिली अन्दाख्तः रूएकूंडः सहचहारलेप पार्चः ब गिलेहिकमत मोहकिम नमूदःदरजमीन दरसरगीं चार पंच खारी ताजा अस्प मदफून कुनद बाँद अज चहल रोज बिकुशद हर कदर बोल कि बाकी दरकूंडः माँदः बाशदबरः आतिश नर्म खुश्क कुनद चुनांचः जौहर ओ सोख्तः न शबद बाद आजाँ दर जेर कूंडः सूराखः नमूदह बियारद शीशी कलां कि दरां तमामी तेल बिगुजंद दर सूराख कूंडः मजकूर अन्दाख्तः ब आरद माश महकुम नमूदह रूए कूंडः मजकूररा सरपोश दादह हफ्त लेप कुनन्द अज गिज मूनीदादः दरजमीनरा कावीदः शीशः मयकूंडः अस्तबार नुमायद बालाइ कूंडःएक दोचली रेग फर्श नमूदह यक मन सरगीं बर कूंडः अन्दाख्तः अतिशदिहद बाद अज सर्द शुदन ख्वादहबूद सेर वजन अजतेल मजकूर बरयक आसार पुख्तः कलई गुदाफ्तः तमाम नमूदह अन्दा जद कि तमाम कलई शिगुफ्तः ख्वाहद बूद निगाह दारद बियारद यक पाव कलई गुदाख्तः तमाम नमूदह आँरा गुदाख्तः- अशीदः दरआँ कि बकदर दो घुँघची बाशद अज अकसीर मजकूर तरह कुनद नुकरा आला ख्वाहद शुद । (अजोबयाज हकीम फतहयाबखाँ सोहनपुरी ।)

रोगन नौसादर अकसीरी (उर्दू)

तेल नौसादर इस्तरह बनावे नौसादर १ सेरको बोलकर स्याह ८ सेरमें बारीक पीस कर मिला कर एक कूंडे गिलीमें कि खूब मजबूत भर चार पांच खारी लीद अस्पमें दफन करदे चिलःके देखे कि अगर बोल रहगयाहै आग पुज खुश्क करे जेर कूंडेके सूराख करे शीशी दहन फुशादह रखदे और कूंडेमें चाह दरचाहमें मगर एक टोकरी रेग डाल कर यकमन सरगीं अस्प भरकर आग लगादे जब राख होजावे तेल बरामद होगा इस तेलको कलई बराबर पर तरह करे तमाम कलई कुश्ता होजावेगा, यक पाव तेलमें कशीदः वजन अकसीर कलई कुश्ता डाले ।

नौसादर कायम कर उससे रोगन निकालनेकी तरकीब (उर्दू)

जस्तका फूल आध सेर खाम जो अमूमन कसेरोंसे मिलताहै नौसादर ४ तोले कुश्ताजस्तमें देकर किसी कूजे गिलीमें बंद करके ४ पहर बालू जंतरके नीचे आंचदे बाद सर्द होनेके निकालले नौसादर कायमुल्नार निकलेगा इस नौसादर कायमुल्नार जेरुवाला २० तोले भाँग यानी वरक उल इसरार खुश्क बारीक शुदः देकर बजरियः पताल-जंतर तेल कशीद करें यह तेल बरंग सुर्ख निकलेगा और खूब तीरहका काम देगा इस तेलमें उपधातुका कुश्ता मोतिया होजाताहै। (सुफहा२५ अखबार अलकीमियाँ२४।१।१९०९)

रोगन नौसादर (उर्दू)

अंडोंके छिलकोंका चूना एक सेर लेकर एक मिट्टीकी हँडियामें आधा चूना डाल कर ऊपर नौसादरकी एक डली५ या १०तोलेकी रख कर निस्फ चूना ऊपर दे और हँडियाका मुँह बंद करके चूल्हेपर रखकर एक पहरतक नरम और ३ पहर सख्त तेज आंचदे चार पहरके बाद आग बिछादें लेकिन हँडियोंमें रहनेदें सुबहको जब बिलकुल सर्द होजावे तब खोलकर चूनेके अन्दरसे कायम शुदः नौसादर निकाल लें जो हवा लगते ही तेल होजावेगी। (सुफहा२५ अखबार अलकीमियाँ लाहौर २४।१।१९०६)

तरकीब रोगन नौसादर चूनेमें पका चाहहलमें (उर्दू)

नौसादर ८० तोले दर्मियान आहक यानी चूना आब नारसीदः ५ सेर पुख्तःकी डली कर चूल्हेपर रख कर नीचे आग जलाना शुरू करे और चूनेपर महीन लकडी रक्खे जब लकडी जल जावे आग मौकूफ करे बादहू बोतलमें डाल कर लीद अस्पमें चालीस रोजतक दफन रक्खे बादमें निकाले रोगन होजावेगा (अगर अकलीमियाँ जहवी यानी सोना मक्खी, बारीक पीस कर उसमें डालेगा सोना अलहदा और मिट्टी अलहदा होजावेगी।) (अखबार अलकीमियाँ १६।३।१९०७)

नौसादर कायम बरंग सुर्ख सफेदेसे (उर्दू)

नासादर चार तोले लेकर आध सेर पुख्तः (४० तोले सफेदा काशगरीके दर्मियान देकर एक तवा आहनीपर) रखकर चूल्हेपर रखदे नीचे नरम २ आंच रोशन करें जब कहींसे सफेदा शिगाफ दे फौरन और सफेदा उस शिगाफ शुदा जगहपर डाल देना चाहिये जब तमाम सफेदा सुर्ख होजावे आंच बंद करदें और दर्मियानसे नौसादर निकालले यह नौसादर सुर्ख शहाबके मानिन्द कायमुल्नार होकर निकलेगा। (सुफहा ५ अखबार अलकीमियाँ १६।९।१९०७)

नौसादर कायमकी तरकीब (उर्दू)

अगर नौसादरको कायम करना हो तो इसमें जब्दुलजर शामिल करना चाहिये जब्दुलजर कायमी नौसादरके लिये तजरुबेसे बे मिसल साबित हुआहै। (सुफहा अखबार अलकीमियाँ १९।१२।१९०६)

तरकीब कयाम नौसादर सज्जीमें पकानेसे (उर्दू)

सज्जीको सफर नीचे ऊपर रक्खो दर्मियान नौसादर रखकर आग दो नौसादर कायम होजावेगा। (सुफहा ९७ किताब कुश्तैजात हजारी)

नौसादर कायम करनेकी तरकीब।

इस नौसादर कायमके जरियः हरताल और सम्मुलफार भी कायम होजाते हैं नौसादर बीस तोले, लोटा सज्जी तीन सेर पुख्तः, शोरा कलमी एक सेर पुख्तः अवल लोटा सज्जीका खार निकालकर उसमें शोराको पकावे, बादहू शोरामें नौसादरको रख कर कढाईके नीचे आग जलावे, एक रोजतक किसी कदर शोरा अपने पास अलहदा भी रख लेना चाहिये ताकि जहांसे शोरा फटनेपर आवे वहां डाल दिया जाया करे शामतक यह अमल तमाम करदे, पस नौसादर कायम होकर बरामद होगा यां नौसादर हरताल और सम्मुल फारके कायम करनेवालाहै और इस नौसादरके स्तैमालसे मर्ज दमेकाभी नमूदतक नहीं रहता। (सुफहा २ अखबार अलकीमियाँ १।११।१९०७)

तेल नौसादर बेंगनमें रखकर।

अगर मारूबेंगन हो तौ उमदाहै वरनः कोई सा बेंगने हो उसके शिकममें नौसादर भरदो और नमनाक जगहमें रख दो तीन रोजमें तमाम नौसादर तेल होजावेगा (सुफहा ८८ किताब कुश्तैजातहजारी)

तेल नौसादर चूनेमें घोटनेसे (उर्दू)

इसी तरह नौसादर और चूना हम वजन लेकर बाहम खरल करके ब वक्त शब हवादार जगहमें रख दो नौसादर तेल होकर ऊपर होगा और चूना नीचे बैठा होगा, तेल मजकूर निकालले (सुफहा ८७ किताब कुश्तैजात हजारी)

तेल नौसादर समुन्दर झाग पुटदेकर (उर्दू)

नौसादर एक तोला व समुन्दर झाग एक तोला बाहम खूब खरल करें और फिर दो मिट्टीके खुर्द शकोरोंमें रख कर कपरौटी करके गिलेहिकमत करके आग करीब ५ सेरके देदेवे बवक्त सर्द होनेके एक डली बनजावेगी फिर उसको एक चीनीकी रकाबीमें रख कर तिरछी करके रातको बाहर रखदेवे सुबह कुल तेल निकल आवेगा (सुफहा ८८ किताब कुश्तैजातहजारी)

नौसादरके तेल बनानेकी तरकीब (उर्दू)

नासादर पावभर साफकी राख पावभर मिलाकर कुलुआमें भर कर मिट्टी पोतदो रातको ५ सेर कंडोंकी आँच दो सुबहको ठंढा हो तब निकाल कर खरल करना, इससे ऐसा तेल बनजावेगा कि जिस धातुपर उस तेलको डाल कर उसको आग पर रक्खोगे वही कुश्ता होजावेगी खुली हुईहै यह तिल्लीकी दवा भीहै खुराक अजवाइनके बराबर (सुफहा खजाना कीमियाँ ३३)

तरकीब तेल नौसादर तवेपर पुट (उर्दू)

नौसादर-जिस कदर मुनासिब समझो लेकर एक कढा-

ई या तव पर चूना डालकर नौसादर रखदो और फिर उसके ऊपर और चूना डाल कर नीचे आग जलाओ जब तक कि उसका फटना बंद न होजावे मत उतारो हां,अगर किसी जगहसे फटजावे या धुआँ निकले तो और चूना डालते जाओ ववक्त सर्द होनेके चूना अलहदा करके नौसादरको एक चीनीके वासनमें रातको रखदो खुद बखुद तेल होजावेगा (सुफहा ८७ किताब कुश्तैजातहजारी)

कौडियोंकी परीक्षा और गुण ।

पीताभाग्रंथिकापृष्ठे दीर्घवृत्ता वराटिका ॥ रसवैद्यैर्विनिर्दिष्टा सा चराचरसंज्ञिका ॥ २५ ॥ सार्द्धनिष्कभरा श्रेष्ठा निष्कभारा च मध्यमा ॥ पादोननिष्कभारा च कनिष्ठा परिकीर्तिता ॥ २६ ॥ परिणामादिशूलघ्नी ग्रहणीक्षयनाशिनी ॥ कटूष्णा दीपनी वृष्या नेत्र्यावातकफापहा ॥ २७ ॥ रसेन्द्रजारणे प्रोक्ता विड्द्रव्येषु शस्यते ॥ तदन्ये तु वराटास्युर्गुरवः श्लेष्मपित्तलाः ॥ २८ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-ऊम्बी और गोल जिसकी पीठ ऊपर जिसके दाग हो उसको रसवैद्योंने चराचर नाम रक्खा है जिसमें डेढ तोल भार हो वह श्रेष्ठ एक तोले भारवाली मध्यम और पौन तोले भारवाली कौडी कनिष्ठ समझी जातीहै यह कौडी परिणाम आदि शूलोंको नाश करतीहै संग्रहणी तथा क्षयकी नाशकर्त्री कटु उष्ण दीपन बलकारक नेत्रोंको हित पारदजारणके उपयोगी और विड द्रव्योंके बनानेमें उत्तमहै इनसे अन्य कौडियें भारी और कफपित्तको करतीहैं॥२५-२८॥

कौडियोंके भेद और गुण ।

वराटिका त्रिधा प्रोक्ता श्वेता शोणा सितापरा ॥ पीता चेतीह चक्षुष्या श्वेता शोणा हिमा व्रणा ॥ २९ ॥ असिता बिन्दुभिः श्वेतैर्लक्षया लेखयाथवा ॥ बालग्रहहरी नाना कौतुकेषु सुपूजिता ॥ ३० ॥ पीता गुल्मयुता पृष्ठे रसयोगेषु पूजिता ॥ ३१ ॥ सार्धनिष्कप्रमाणासौ श्रेष्ठा योगेषु पूजिता निष्कप्रमाणा मध्यासौ हीना पादोननिष्कका ॥ कपर्दिका हिमा नेत्रहिता स्फोटक्षयापहा ॥ कर्णस्रावाग्निमान्द्यघ्नी पित्तासृक्कफ नाशिनी ॥ ३२ ॥ (बृहद्योगतरङ्गिणी.)

अर्थ-कौडियें चार प्रकारकी होतीहैं सफेद लाल काली और पीली इनमेंसे सफेद कौडी नेत्रोंको हित लाल कौडी ठंढी और व्रणोंको दूर करनेवाली और काली जिसपर सफेद बूंद होतीहै वह बालग्रहका नाश करनेवाली अनेक खेलोंमें आतीहै। और जिन कौडियोंकी पीठपर गांठें होतीहैं वे पीली कौडियें रसयोगमें उत्तमहैं जिसमें डेढ तोला वजन हो वह श्रेष्ठ तोले भरवाली मध्यम और पौन तोलेवाली हीन गुणवाली होतीहैं, कौडी ठंढी नेत्रोंको हित फोडे और क्षयको नाश करतीहै, कानका बहना मन्दाग्नि रक्तपित्तका नाश करनेवाली है ॥ २९-३२ ॥

कौडियोंकी शुद्धि ।

वराटाः कांजिके स्विन्ना यामाच्छुद्धिमवाप्नुयुः ॥ ३३ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-कौडियोंको डमरू यंत्रद्वारा एक प्रहरतक कांजीमें स्वेदन करे तो कौडियें शुद्ध होंगी ॥ ३३ ॥

अग्निजारकी उत्पत्ती और शुद्धि ।

समुद्रेणाग्निनक्रस्य जरायुर्बहिरुज्झितः ॥ संशुष्को भानुतापेन सोग्निजार इति स्मृतः ॥ ३४ ॥ अग्निजारस्त्रिदोषघ्नो धनुर्वातादिवातनुत् ॥ वर्धनो रसवीर्यस्य दीपनो जारणस्तथा ॥ तदब्धिक्षार संशुद्धस्तस्माच्छुद्धिर्नहीष्यते ॥ ३५ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-समुद्रमें अग्निनक्र नामका एक बडा मगर रहताहै उसके जन्मते हुएका नार समुद्रकी तरंगोंमें आकर बाहर समुद्रके आजाताहै और वह सूर्यकी किरणोंसे सूख जाताहै उसको 'अग्निजार इति स्मृतः' अग्निजार त्रिदोषको नाश करताहै धनुर्वात आदि वातोंको दूर करताहै रसवीर्यका बढानेवाला दीपन और जारणहै वह अग्निजार समुद्रके क्षारसे ही भावित होनेसे स्वयं शुद्ध होताहै इसवास्ते शुद्ध होनेकी आवश्यकता नहीं है ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

सिन्दूरकी उत्पत्ति ।

महागिरिषु चाल्पीयःपाषाणान्तःस्थितो रसः ॥ शुष्कशोणः स निर्दिष्टो गिरिसिन्दूर संज्ञया ॥ ३६ ॥(रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-हिमालयप्रभृति बृहत पर्वतोंमें छोटे२पत्थरोंके मध्यमें सूख कर ठहरा हुआ जो लाल रस होताहै उसे गिरिसिन्दूर कहतेहैं ॥ ३६ ॥

सिन्दूरगुण ।

त्रिदोषशमनं भेदि रसबन्धनमग्रिमम् ॥ देहलोहकरं नेत्र्यं गिरिसिन्दूरमीरितम् ॥ ३७ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-गिरिसिन्दूर त्रिदोषका शमनकर्ता दस्तावर रसबन्धन कर्ता पदार्थोंमें सर्वोत्तम देहको वज्रके समान करनेवाला और नेत्रोंको हित है ॥ ३७ ॥

तथा च ।

सिन्दूरमुष्णं वीसर्पकुष्ठकण्डूविषापहम् ॥ भग्नसंधानजननं व्रणशोधनरोपणम् ॥३८॥ (बृहद्योगतरङ्गिणी.)

अर्थ-सिन्दूर उष्ण वीसर्प कोढ खुजली और विषको दूर करताहै टूटी हुई हड्डीको जोडनेवालाहै व्रण (घाव) में

जो मवाद होताहै उसे निकालनेवाला और व्रणको भरनेवालाहै ॥ ३८ ॥

सिन्दूरके शोधनकी विधि ।

सिन्दूरं निम्बुकद्रावैः पिष्ट्वा घर्मे विशोषयेत् ॥ ततस्तण्डुलतोयेन तथाभूतं विशुध्यति ॥ ॥ ३९ ॥ (बृहद्योगतरङ्गिणि.)

अर्थ–सिन्दूरको नीबूके रसमें घोट घाममें सुखाय लेवै फिर चावलोंके धोवनमे घोट सुखाय लेवै तो सिन्दूर शुद्ध होजायगा ॥ ३९ ॥

सिन्दूर (उर्दू)

सुरंज–को हिन्दीमें सिन्दूर कहतेहैं यह इस तरहसे बनताहै कि सुर्बको तेज आगसे इस कदर जलातेहैं कि सुर्ख रंग होजावे आग पर न जल सके और सुर्ख संगीन चर्ब मैदेकी तरह हो (सुफहा अकलीमियाँ)

शिंग्रफ जावली यानी सिंदूर बनानेकी तरकीब (उर्दू)

सुर्ब यानी सीसाको कोरी हांडीमें रखकर आगपर चढावे और पिया बाँसा या हलैलाकी लकडीसे जलाकर राख करले और राख मजकूरको धोडाले जब पानी दहीकी तरह गाढा हो तहनशीन करके सीसेमें डालदे और लकडी हलैला या पियाबाँसासे लावे ताकि लकडी मजकूर जल जल कर उसमें मिलतीजावे नीचेसे मातदिल आंच करे और हर दस सेर सीसेमें सेरभर सिंदूर जदीद मिलाकर एक दिनरात आग जलावे जब सिन्दूरकी तरह कुल सीसा हो जावे उतारलें और काममें लावें (सुफहा ८१ किताब अलजवाहर)

मुरदार संग ।

सदलं पीतवर्णं च भवेद्गुर्जरमण्डले । अर्बुदस्य गिरेः पार्श्वे जातं मृद्दारसंज्ञकम्॥४०॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां साधारणरसोपवर्णनं नाम त्रिपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥५३॥

अर्थ–गुजरातमें अथवा आबूपहाडके आसपास उत्पन्न हुआ दलदार और पीत वर्ण मुरदारसंग होताहै ॥ ४० ॥

कुश्ता मुर्दार संगकी तरकीब भंग सब जकी लुबदीमें (उर्दू)

मुर्दारसंगके कुश्ता करनेकी तरकीब यह है, मुर्दार संग उमदा टुकडा बरंग जर्द लेकर आठ हिस्से भंग सबजके नुगदेमें रखकर आठ सेर पुख्तः उपलोंकी आंच दे । सर्द होनेके बाद निकाल ले मिस्ल तराशियःके शिगुफ्त होकर बरामद होगा ।

नोट–अगर कुश्ता मुर्दारसंगको दो चार सुर्खके करीब मारगुजीदःको खिलायाजावे तो फौरन जहर जाइल होजाताहै । (सुफहा ५ अखबार अलकीमियाँ १।९।१९०७)

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया भाषाटीकायां साधारणरसोपवर्णनं नाम त्रिपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५३ ॥

स्वानुभूतगंधकाध्यायः ५४.

गंधकको पानीमें गलानेका उद्योग ।

ता० १९ । १२ । ७ को १ तोले दानेदार गंधकको झिरझिरे कपडेमें बांध एक छोटी हांडीमें जिसमें १॥ सेर जल और १॥ छटांक पिसी घोलदी थी दोला कर ८॥ बजेसे शामके ६ बजेतक ८॥ घंटे मंदाग्नि दी–१०–१५ ही मिनट बादसे सज्जी खदकने लगी । दो दो घंटे बाद पानी घटजानेपर थोडा २ गर्म पानी डालतेरहे ६ बजे तक १॥ सेरके करीब पानी पडा होगा । बादको हांडी चूल्हेपर ही रक्खी छोडदी ।

ता० २० को गंधकको निकाल देखा तो अपने रूपमें दानेदार ही मौजूद था सुखाकर तोला ११ माशे २ रत्ती हुआ ६ रत्ती घटगया ।

सम्मति–सज्जीके जलमें उबालनेसे गंधकके गलनेकी आशा नहीं ।

जारणके लिये भावितगंधक ।

(गंधक जारणाध्यायमें रखे रसपद्धतिकी क्रियासे)

कशीशं चैव सौराष्ट्री स्वर्जीक्षारोऽजमोदकम् । शिग्रुतोयेन संयुक्तं कृत्वा भाव्यमनेन वै ॥ सप्ताहं चूर्णितं गंधं गौरीयंत्रेण जारयेत् ॥ १ ॥

अर्थ–कसीस, फिटकिरी, सज्जीखार, अजमोद और सहँजनेकी जडका स्वरस इनसे आगे कही क्रियाके अनुसार गंधकको सातदिनोंतक भिगोकर गौरीयंत्रसे जारणा करे ॥ १ ॥

ता० १६ को दो बारकी शुद्ध ऽ१। सेर गंधकको पत्थरके खरलमें डाल थोडा पीस लिया और सहँजनेके छोटे पेटकी जडका स्वरस निकाल उसमें १ तोला हरा कसीस–१ तोला फिटकिरी–१ तोला सज्जीक्षार नं० २ अपने यहांका बना–१ तोला अजमोद यह चारों चीज पीस रसमें रातको भिगोदीं सबेरे छान इस रसको गंधकमें डाल २ घंटे घोट कपडेसे ढक सुखादिया–

सम्मति–सहँजनेके रसको थोडीदेर रखनेसे उसमें गिलोयकासा सत्व नीचे बैठ जाता है जो छनता नहीं स्वादुमें यह सत्व रससे अधिक तीव्र था अतएव इस सत्वको पृथक् ही गंधकमें डालदेतेथे ।

नकशा भावनाविधि ।

तारीख	तोल सेजनेकी जड के स्वरसकी	तोल कसीस	तोल फिटकिरी	तोल सज्जी क्षार	तोल अजमोद	समय घुटनेका	समय सूखनेका	विशेष वार्ता ।
१६।७।०७	छ० ५	तोले १	तोले १	तोले १	तोले १	घंटे २	दिन १	सबेरे भावना दीगई
१८।७।०७	६	१	१	१	१	२	१	सबेरे ,, ,,
१९।७।०७	६	३/४	३/४	३/४	३/४	२	४ १/४	सबेरे ,, ,,
बादल और वृष्टि रहनेसें न सूखनेके कारण ४ दिन भावना बंद रही								
२४।७।०७	छ० ४	३/४	३/४	३/४	३/४	घंटे ६	दिन ५	४ छ० रस काफी हुआ इस वास्ते आगेसे इतनाही डालना उचित है–
२९।७।०७	५	३/४	३/४	३/४	३/४	६	४	न सूखनेके कारण आज ५ दिनबाद भावना दीगई–
३।८।०७	५	३/४	३/४	३/४	३/४	६	६	न सूखनेके कारण ये भावना चौथे दिन दीगई–
मीजान ७ बार	मीजान ७। छ०	मीजान ६ तोले	मीजान ६ तोले	मीजान ६ तोले	मीजान ६ तोले	मीजान +	मीजान +	

फल–१। सेर शुद्ध गंधकको ७ बार भावना दीगई जिसमें ७। छटांक सहँजनेकी जडका स्वरस पडा और ६ तोले कसीस ६ तोले फिटकिरी ६ तोले सज्जीक्षार ६ तोले अजमोद सब मसाला ५ छ० ४ तोले पडा अब भावित गंधककी तोल १ सेर १० छ० है–अर्थात् ६ छटांक बढी जिसका यह अर्थ होताहै कि जिस कदर मसाले पडे उस कदर तोल बढी मसालोंकी छीजनको सहँजनेके स्वरसके सत्वने पूरा करदिया–

बिडकी तय्यारी ।

चित्रकार्द्रकमूलीनां क्षारैः गोमूत्रगालितैः ।
गंधकं शतशो भाव्यं बिडोयं जारणे मतः॥२॥

अर्थ–मूलीका क्षार १८ तोले जो पहला बनारक्खा था जलमें बनाया था और २० सेर चीतेका १९ तोले (+ ६॥ तोले नं० २) क्षार जो अब बनाया गोमूत्रमें भिगोकर और १४ सेर सोंठका ३३ तोले (+ १६॥ तोले नं० २) क्षार जो गोमूत्रमें भिगो अब बनाया और गंधक आँवलासार २ बारकी शुद्ध की हुई यह सब इस प्रकार प्रयोगमें लीगई ॥ २ ॥

पत्थरके बडे खरलमें पावभर गंधक पीसली और ६ माशे सोंठका क्षार ३ माशे चीतेका क्षार ३ माशे मूलीका क्षार इन तीनों क्षारोंको रातको गोमूत्रमें भिगोदिया जाता था और प्रातःकाल छानकर उस क्षार-युक्त गोमूत्रको खल्वस्थित गंधकमें डाल १ घंटे घोट-दिया जाता था फिर वस्त्रसे खरल ढक धूपमें सुखादेतेथे

१–सम्मति–यहां क्षार और गोमूत्रका प्रमाण नहीं कहा अनुभवसे सिद्ध हुआ कि पाव भर गंधककी भावनाको अर्थात् आर्द्रकरनेको ४ वा ५ तोले गोमूत्र चाहिये और उस गोमूत्रमें पंचमांशके क्षार पडनेयोग्यहैं अर्थात् ४तोलेमें ९ माशे-क्यूंकि इससे अधिक क्षार घुलताही नहीं–

बिडकी तय्यारीका दैनिक-नकशा।

तारीख	तोल गोमूत्र	तोल सोंठक्षार	तोल चीताक्षार	तोल मूलीक्षार	समय घूटनेका	समय सूखनेका	विशेष वार्ता.
	तोले	माशे	माशे	माशे	घंटा	दिन	
१४।७।०७	१०	६	३	३	१	१	
१५	५	६	३	३	१	१	ता० १४ को १० तोले गोमूत्रसे गंधक अधिक पतला होगया था इस वास्ते आज ५ तोले डालागया.
१६	६	६	३	३	१	२ प्रहर	५ तोले गोमूत्र कुछ कम समझ ६ तोले कर दिया।
"	६	६	३	३	१	२ प्रहर	चूंकि दो प्रहरतक भावना सूखजातीहै इस लिये आजसे १ दिनमें २ भावना देनी आरंभ की।
१७	६	६	३	३	१	६ प्रहर	दो प्रहरके ३ बजे देखा तो भलीभांति सूखा न था इसलिये दूसरा पुट न दिया।
१८	५	६	३	३	१	४ प्रहर	आज प्रातःकाल देखा तो अच्छीतरह सूखा न था इस लिये दो प्रहरतक सुखी पुट दिया।
१९	४	६	३	३	१	२ प्रहर +३ दिन	आज दो प्रहर पीछे पुट दिया।
२३	४	६	३	३	१		आज ये पुट दो प्रहरके ३ बजे दिया गया बादल+वृष्टि रही इस वास्ते ये ३ दिन बाद लगा अब ४ तोले गोमूत्र काफी होताहै।
मीजान ८वारे	मीजान ९॥ छ०	मीजान ४ तोले	मीजान २ तोले	मीजाने २ तोले	मीजान ८ घंटा	मीजान ८ दिन	

बरसातमें सीलते रहनेसे काम बंद कर दियागया-

फल-बिडकी ८ भावनाका-

४ छ० शुद्ध गंधकको ८ भावना दीगई जिसमें ९॥ छ० गोमूत्र पडा-और ८ तोले क्षार पडे अब तोल बिडकी ६ छटाक हैं अर्थात् २ छ० बढगई जिसका यह अर्थ है कि जितना क्षार पडता है उससे सवाई तोल बढती है अर्थात् क्षार पूरा बढता है और क्षारकी चौथाई गोमूत्रका भी क्षार बढता है-इस हिसाबसे १०० भावनामें २ सेरके करीब तोल होजावेगी-

तारीख	तोल गोमूत्र	तोल सोंठक्षार	तोल चीताक्षार	तोल मूलीक्षार	समय घुटनेका	समय सूखनेका	विशेष वार्ता
	तोले	माशे	माशे	माशे	घंटा	दिन	
२९।९।०७	५	६	३	३	१	१	५ तोले गोमूत्रसे अधिक पतला होजानेके कारण गोमूत्र घटा दियागया किन्तु ३ तोले थोडा रहा अतएव दूसरे दिन ४ तोले किया गया यह ठीक रहा और ३तोले मूत्रमें १ तोला क्षार नहीं घुला इससे क्षार घटा दियागया और यह बात सिद्ध होगई कि ४ तोले मूत्रमें अधिकसे अधिक १ तोला क्षार डाला जासक्ताहै किन्तु इतना भी ठीक नहीं घुलता अत एव ४ तोलेमें ९ माशे ही डालना उचित है।
२०	३	६	३	३	१	१	
२१	४	३	३	३	१	१	
२२	४	३	३	३	१	१	
२३	४	३	३	३	१	१	
२४	४	६	३	३	१	१	
२५	४	६	३	३	१	१	
२६	४	३	३	३	१	१	
२८	४	३	३	३	२	२	अच्छी तरह सूखनेके कारण ता० २७ को पुट न दिया।
२९	४	३	३	३	१	१	
३०	५	६	३	३	१	१	

तारीख	तोल गोमूत्र	तोल सोंठक्षार	तोल चीताक्षार	तोल मूलीक्षार	समय घुटनेका	समय सूखनेका	विशेष वार्ता
	तोले	माशे	माशे	माशे	घंटा	दिन	
१।१०।०७	५	६	३	३	१	१	
२	५	६	३	३	१	१	
३	५	६	३	३	१	१	
४	५	४	४	४	१	१	
५	५	६	४	४	१	१	
६	५	४	४	४	१	२	
८	५	४	४	४	२	१	कल सोमवारको बीडमें पुट न दियां ।
९	५	४	४	४	१	१	
१०	५	४	४	४	१	१	
११	५	४	४	४	१	१	
१३	५	४	४	४	२	२	गीला रहनेके कारण १२ को पुट न दिया ।
१५	५	४	४	४	१	२	गीला रहनेके कारण ता० १४ को पुट न दिया ।
१७	५	४	४	४	१	२	गीला रहनेके कारण ता० १६ को पुट न दिया ।
१९	५	४	४	४	१	२	गीला रहनेके कारण ता० १८ को पुट न दिया ।
मीजान २५ भावना	मीजान ऽ१॥सेर	मीजान तो. मा. ८ ४	मीजान तो. मा. ७ २	मीजान तो. मा. ७ २	मीजान घंटे २८	मीजान दिन ३१	दुबारा १९ सितंबरसे १९ अक्टूबरतक काम चला उसकी यह मीजान है।

फल-उपरोक्त २५ भावनाका-

उपरोक्त ८ भावना दी गयीं ६ छटांक बिडमें २५ भावना और दीगई जिसमें ४ छटांक ३ तोले ८ माशे क्षार पडे और १॥ सेर गोमूत्र पड़ा अब तोल विडकी १०॥ छटाक है अर्थात् ४॥ छटांक बढगई यानी जितना क्षार पड उससे १ तोले १० माशे और अधिक बढी यदि आदिसे अबतक सब ३३ भावनाका हिसाब किया जाय तो यह होता है कि ४ छ० गंधकमें ६ छटांक १ तो० ८ माशे क्षार पडकर (और २ सेर १॥ छटांक गोमूत्र पडा) १० छ० २ तोले ६ माशे विड हुआ अर्थात् गंधक और क्षारोंकी तोलसे १० माशे तोल बढी इस हिसाबसे १०० भावनामें ऽ१॥ सेर बिड बननेकी आशा है-

तारीख	तोल गोमूत्र	तोल सोंठक्षार	तोल चीताक्षार	तोल मूलीक्षार	समय घुटनेका	समय सूखनेका	विशेष वार्ता–
२२।२।०७	तोला ५	माशे ४	माशे ४	माशे ४	घंटे २	दिन १	सब ६ तोले
२३	तो. र. ४–२	मा. र. ३।	३।	३।	२	१	सब ५ तोले
२६	तो. मा. ५–७	मा. र. ५–५	मा. र. ५–५	मा. र. ५–५	२	१	सब ७ तोले
२७	तो. र. ४–२	३।	३।	३।	२	१	सब ५ तोले
२८	तो. र. ४–२	३।	३।	३।	२	१	सब ५ तोले
४।३।०७	तोले ५	माशे ४	माशे ४	माशे ४	घंटा २	दिन १	न सूखनेके कारण ४ दिन पुट न दिया सब ६ तोले
५	५	४	४	४	२	१	सब ६ तोले
७	५	४	४	४	२		न सूखनेके कारण ता० ६ को पुट न दिया सब ६ तोले
८	५	४	४	४	२	१	सब ६ तोले
९	७॥	६	६	६	२	१	"९ तोले
१०	तो. मा. र. ५–९–३	मा. र. ४–७	मा. र. ४–७	मा. र. ४–७	२	१	" ७ तोले
११	तो. मा. र. ५–८–३	मा. र. ४–७	मा. र. ४–७	मा. र. ४–७	२	१	" ८ तोले
१२	तो. मा. र. ६–६–६	मा. र. ५–६	मा. र. ५–६	मा. र. ५–६	२	१	" ८ तोले
१३	तो. मा. र. ६–९–६	मा. र. ५–६	मा. र. ५–६	मा. र. ५–६	२	१	" ८ तोले
१५	८–३–६	६–६	६–६	६–६	२	१	न सूखनेके०
१९	१२॥। तो. १५	९–	९–	९–	३	१½	सब १५ तोले
२०	१२॥। तो. १५	९–	९–	९–	२	४	सब १५ तोले
२४	११॥। तो. १४	८–७	८–७	८–७	२	३	सब १४ तोले अच्छीतरह न सूखनेके कारण २१ से २३ तक पुट बंद
२७	तो. मा. र. ११–९–५ १४ तोले	८–७	८–७	८–७	२	३	सब १४ तो० न सूखनेके कारण २५–२६ को पुट बंद
२९	९–२–५	७–१	७–१	७–१	२	२	सब ११ तो० न सूखनेके कारण २८ को पुट बंद
३१	९–२–५	७–१	७–१	७–१	२	२	सब ११ तो० न सूखनेके कारण ३० पुट बंद

तारीख	तोल गोमूत्र	तोल सोंठक्षार	तोल चीनाक्षार	तोल मूलीक्षार	समय घुटनेका	समय सूखनेका	विशेष वार्ता–
	तोला ५	माशे ४	माशे ४	माशे ४	घंटे २	दिन १	
४।४।०७	१४–२–५	११–१	११–१	११–१	२	३	सब १७ तोले न सूखनेके कारण और अवकाश न मिलनेके कारण १–२–३ को पुट बंद
७	१०	मा. ८	मा. ८	मा. ८	२	२	सब १२ तो० न सूखनेके कारण ५–६ को पुट न दिया
९	तो. मा. र. ८–३–६	मा. र. ६–६	मा. र. ६–६	मा. र. ६–६	२	२	सब १० तोले
११	तो० १०	८	८	८	२	२	सब १२ तोले
१६	तो. मा. र. १३–५–२	मा. र. १०–२	मा. र. १०–२	मा. र. १०–२	२	४	सब १६ तोले वादल रहनेके कारण ४ दिन पुट न लगा
१९	१४–२–५	११–१	११–१	११–१	२	२	सब १७ तो० न सूखनेके कारण २ दिन पुट न दिया
२१	८–३–६	६–६	६–६	६–६	२	२	सब १० तो० न सूखनेके कारण २० को पुट बंद
२२	६–६–६	५–६	५–६	५–६	२	१	सब ८ तो०
२४	तो० १०	मा. ८	मा. ८	मा. ८	२	२	सब १२ तो० न सूखनेके कारण २३ को पुट बंद
२५	तो. मा. र. ९–२–५	मा. र. ७–१	मा. र. ७–१	मा. र. ७–१	२	१	सब ११ तो
२६	६–६–६	५–६	५–६	५–६	२	१	सब ८ तोले
२७	५–९–३	४–७	४–७	४–७	२	१	सब ७ तोले
२९	८–३–६	६–६	६–६	६–६	२	२	सब १० तोले मसाला तैयार न होनेके कारण २८ को पुट न लगा
३०	तो० ५	मा. ४	मा. ४	मा. ४	२	१	सब ६ तोले
१।५।०७	तो० ५	माशे ४	मा. ४	मा. ४	घंटे २	दिन १	सब ६ तोले
२	तो. मा. र. ५–९–३	मा. र. ४–७	मा. र. ४–७	मा. र. ४–७	२	१	सब ६ तोले
३	६–६–६	मा. र. ५–६	५–६	५–६	२	१	सब ८ तोले
४	६–६–६	५–६	५–६	५–६	२	२	सब ८ तोले
६	तो० ७॥	मा. ६	मा. ६	मा. ६	२	१	सब ९ तोले अवकाश न मिलनेके कारण ता. ५ को पुट न लगा
७	तो. मा. र. ५–९–३	मा. र. ४–७	मा. र. ४–७	मा. र. ४–७	२	१	सब ७ तोले

तारीख	तोल गोमूत्र	तोल सोंठक्षार	तोल चीताक्षार	तोल मूलीक्षार	समय पुटनेका	समय सूखनेका	विशेष वर्ता.
	तोले ५	माशे ४	माशे ४	माशे ४	घंटे २	दिन १	
८	५–९–३	४–७	४–७	४–७	२	१	सब ७ तोले
९	तो० ५	४–	४–	४–	२	१	सब ६ तोले
११	८–३–६	६–६	६–६	६–६	२	१	सब १० तोले बादल रहनेके कारण ता. १० को पुट न दिया
१५	६–६–६	५–५	५–५	५–५	१॥	१	८ तोले
१६	५–९–३	४–७	४–७	४–७	१॥	१	७ तोले
१७	५–९–३	४–७	४–७	४–७	१॥	१	७ तोले
१८	५–९–३	४–७	४–७	४–७	१॥	१	७ तोले
१९	७–६–०	६–	६–	६–	२	१	९ तोले
२०	५–९–३	४–७	४–७	४–७	१॥	१	७ तोले
२१	५–९–३	४–७	४–७	४–७	१॥	१	७ तोले
२२	५–९–३	४–७	४–७	४–७	२	१	७ तोले
२३	तो० मा० ७–६	मा. ६–	मा. ६–	मा. ६–	२	१	९ तोले
२४	७–६	६–	६–	६–	२	१	९ तोले
२७	११–९	८–७	८–७	८–७	२	२	१४ तो. अवकाश न मिलनेके कारण ता. २५–२६ को पुट बंद.
२८	तो० ५	मा. ४	मा. ४	मा. ४	२	१	६ तोले
३०	तो० १०	मा. ८	मा. ८	मा. ८	१॥	२	१२ तोले
३१	तो. मा. र. ५–८–३	४–७	४–७	४–७	१॥	१	७ तोले
१।६।०७	तो. र. ४–०–२	३–२	३–२	३–२	३	१	५ तोले
२	तो० मा० ७–६	६–	६–	६–	२	१	९ तोले
३	७–६	६–	६–	६–	३	१	९ तोले

तारीख	तोल गोमूत्र	तोल सोठक्षार	तोल चीनाक्षार	तोल मूलीक्षार	समय घुटनेका	समय सूखनेका	विशेष वर्ता.
	तोले ५	माशे ४	माशे ४	माशे ४	घंटे ३	दिन १	१२ तोले
४	तो. १०	८–	८–	८–	३	१	१३ तोले अवकाश न मिलनेके कारण ता. ५ को पुट न लगा
६	तो. मा. र. १०–१–३	८–७	८–७	८–७	३	२	७ तोले सुंठीक्षार निबटजानेके कारण ता. ७–६–८ को ॥≈) सेरके भावकी २ सेर धारकी सोंठको छोटी कढाईमें भर नीचे तेज आंच बालनी आरम्भ की ½ घंटे बाद कढाईमें ऊपरभी आंच लगगई और थोडी देर हीमें कुल सोंठकी भस्म कर बुझगई बादको कढाईके नीचेकी आंच बंद कर ज्योंकी त्यों कढाईको भट्ठीपर रक्खी छोडदी ता. ८ को उक्त भस्मको जो श्वेत रंगकी २ छ. हुई १॥ सेर गोमूत्रमें घोल रैनी की भांति २१ बार चुआलिया जो तोलमें ७॥ रहा इसमें ४–४ तोले चीतामूलीके क्षार मिला तय्यार करलिया ।
७	५–९–३	४–७	४–७	४–७	३	१	७ तोले
८	५–९–३	४–७	४–७	४–७	३	१	६ तोले
९।६।०७	तोले ५	माशे ४	माशे ४	माशे ४	घंटे ३	दिन १	६ तोले
१०	५	४	४	४	३	१	६ तोले
११	५	४	४	४	३	१	
१२	तो. मा. र. १६–७–४	तो. मा. र. १–१–४	तो. मा. र. १–१–४	तो मा. र. १–१–४	२॥	१	२० तो० आज गोमूत्र अधिक डाल अधिक पतला करदिया कि गंधक भलीभांति फूलसके
१४	१६–७–४	१–१–४	१–१–४	१–१–४	२॥	२	२० तो० न सूखनेके कारण ता० १३ को पुट न दिया आज भी पतला होगया था
१६	११–९	८–७	८–७	७–८	२	२	१४ तो० न सूखनेके कारण १५ को पुट बंद
मीजान ७१	मीजान ६ से छ. तो. मा. १२–४–७	मीजान तो. मा. र. ३४–६–७	मीजान तो. मा. र. ३४–६–७	मीजान तो. मा. र. ३४–६–७	मीजान १५२	मीजान १०१	
मीजान कुल १०४ भावना	मीजान कुल सेर ८ छ१४-१-२	मीजान कुल ९ छ. तो. मा. र. २–१०–७	मीजान कुल ८ छ. तो. मा. र. ३–८–७	मीजान कुल छ. ८ तो. मा. र. ३–८–७	मीजान कुल १८८	मीजान कुल १४०	

मीजान कुलक्षार			
सेर	छ.	मा.	र.
१	११	४	५

भलीभांति सूख जानेपर तोला गया तो बिड २॥ सेर हुआ इसमें ४ छ० शुद्ध गंधक है ऽ१॥। सेरके करीब क्षार और ९ सेरके करीब गोमूत्र पडाहै गंधक और क्षारोंकी तोल २ सेर होताहै और बिड ऽ२॥ सेर बैठा अर्थात् ऽ॥ सेर क्षार गोमूत्रसे बन गया जिसका हिसाब करीब २ यह होताहै ।

गंधक	सोंठक्षार	चीताक्षार	मूलीक्षार	मूत्रक्षार
४ छ०	१० छ०	९ छ०	९ छ०	८ छ०

किन्तु कुछ सोंठ और चीतेके क्षार गोमूत्रसे बने अत एव यह औसत समझना चाहिये ।

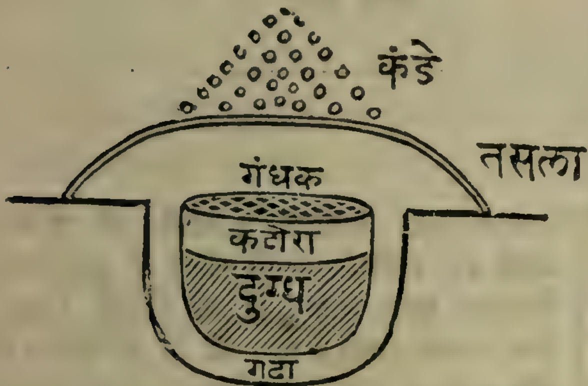
गंधक	सोंठ क्षार	चीताक्षार	मूलीक्षार	मूत्रक्षार
४ छ०	८ छ०	८ छ०	९ छ०	११ छ०

कूर्म पुटद्वारा गंधकजारणके लिये गंधकशोधन।

उत्तम आंवलासार गंधकको (जो देहलीसे कलियान कोठीवालेकी मारफत १।) सेर आई और हाथरससे १।।।) रुपये सेर आई) शुद्ध कियागया-

'सदुग्धभांडस्थपटस्थितोयं शुद्धो भवेत्कूर्मपुटेन गंधः'। (बृ. यो.)

नकशा कूर्मपुट।



तामचीनीके प्यालेमें १।। सेर दूध भर (३ अंगुल खाली रहा) उसके मुंहपर गजीका कपडा बांध ऊपरसे मोटी पिसी गंधक कपडेपर अंगुलभर मोटाईसे कम बिछाकर एक गढेमें रख गढेके ऊपर लोहेका तशला उलटा ढक इस तरह कि कटोरेसे १ अंगुल ऊंची तसलेकी पीठ रही पीठ पर पाव पाव भर कंडोंकी आंच दीगई तो गंधक पिघलकर दूधमें गिरगई निकालनेपर ज्वारकेसे दाने निकले पीले अच्छे रंगके ५ सेर गंधककी शुद्धीमें एक बारमें १० सेर दूध लगा १ सेर गंधकके शोधनमें १ छटांकसे कुछ कम छीजन जाती है।

आंच पहले सेरभरकी दीगई उसमें गंधक जलगया फिर ऽ।।। की दीगई उसमें कुछ जला फिर ऽ।। सेरमें कुछ ठीक रहा उससे अच्छा ऽ।= की आंचसे रहा फिर ऽ। पाव भरसे भी काम ठीक चलता रहा इसीको जारी रक्खा ऽ≡ पौना पावमें नहीं पिघला।

यह क्रिया गंधक शुद्धीकी उत्तम है ५ सेर गंधक शुद्ध होकर ४।। सेर रहा।

३०।३१।३।०६ तीन पाव गंधकको फिर इसी क्रियासे धतूरेके पत्तोंके १। सेर रसमें शुद्ध किया थोडा २ आठ दफेमें डाला गया। ३ छटांक कंडोंकी आंच ठीक रही गंधक छीजा बहुत ९ छटांक बैठा।

१।४ फिर उक्त दोबार शुद्ध गंधकको २।। छटांक सहँजनेके रसकी भावना दीगई।

२।४। ३ छटांककी भावना दीगई।

३।४।३ छटांककी भावना दीगई।

गंधकशोधन कूर्मपुटद्वारा।

ता० ३ को १) रुपये सेरकी ४ सेर गंधक आँवलासार जिसके डेले छोटी हर्रके बराबर थे और रंगमें पीत थी और १।।) सेरकी ऽ१ सेर गंधक जिसके डेले बडी हर्डके बराबर थे और ऽ। पावभर चूरेवाली गंधक जो सबसे उत्तम बतलाई गई थी और रंगतमें पीत हारितसी थी, इसतरह कुल ऽ५। सेर गंधकका दलिया कर तोला तो ५ सेर २। छ० रहा इसको उपरोक्त कूर्मपुटद्वारा ३-३ छ० की आंच देकर ४ दिवसमें अर्थात् ता० ६ तक ७।। सेर दूधके साथ शुद्ध कर धो सुखा तोला तो ऽ४ सेर ६।। छ० रही। दलते समयकी १।।। छटांक और शोधने समयकी ११।।। छटांक सब १३।। छ० छीजन गई। (जिस ऽ। पावभर गंधकको प्रथम अच्छा समझा था उसमें मैलकी कंकडी अधिक निकली और छीजन अधिक गई। शुद्ध होनेपर सबका वर्ण एकसा रहा और दाना भी सबमें एकसा ज्वारकासा पडा) प्रति बार करीब २।। छ० गंधक दूधके कटोरेके ऊपर बँधी गजी पर विछाई जाती थी और ३ छ० आरने कंडोंकी आंच दी जाती थी इस प्रकार ६ वा ८ घान रोज निकालेगये दूध अन्तमें फट जाता था।

नकशा-गंधकशुद्धि प्रथमबार।

तारीख	गंधककी प्रथम तोल	दूधकी तोल	पुटसंख्या	तोल शुद्ध गंधक	छीजन	विशेष वार्ता-
३।७।०७	सेर छ. १-५।।	सेर ऽ२	८	सेर-छ. १-३।।	छ. -२	
४।७।०७	सेर छ. १-६।।	सेर ऽ२	९	१-५	-१।।	
५।७।०७	१-२।।	ऽ२	७	१-१	-१।।	
,,	३।।	,,	१	-३	तोले ३।।	बढियागंधक
६	१-	ऽ१।।	६	१४।।	-१।।	
मीजान ४	मीजान सेर छ. ५-२	मीजान ऽ७।।	मीजान ३१	मीजान सेर छ. ४-११ ४।। छ. छीजन सूख की काटकर ४-६।। छ सब गंधक	मीजान छ. ७।। ४।। छ. छीजन सूखकी कुल छीजन ११।।। छ.	इस शुद्ध गंधककी मीजान लिखे अनुसार ४ सेर ११ छ. होतीहै किन्तु ४।। छ. छीजन सुखानेसे और गई इस वास्ते ४ सेर ६।। छ. रक्खी

गंधककी दुबारा शुद्धि ।

ता० ८ जुलाईको एक बारकी शोधी गंधक ऽ४ सेर ६॥ छ० और पहली एक बारकी ही शोधी रक्खी १३ छटांक सब ५ सेर ३॥ छ० गंधकको पूर्वोक्त विधिसे कूर्मपुटद्वारा दुबारा शोधा गया । जिसका नकशा नीचे दिया गया है । ६ दिनमें ८॥ सेर दूध, पावभर घी, ४ गज धोतर शुद्धिमें खरच हुई ओर ४ सेर २ छ० उत्तम और ६॥ छ० दागखाई गंधक रही । सब ४ सेर ८॥ छ० हुई ११ छटांक छीजन गई अबकी शुद्धिमें १० तारीखको छोड और सब तारीखोंमें घीसे गंधक मलदी गई ।

नकशा ।

तारीख	गंधककी प्रथम तोल	दूधकी तोल	पुट संख्या	तोल शुद्ध गंधक	छीजन	विशेष वार्ता
८।७।०७	छ. १५	सेर ऽ१॥	६	छ. १२	छ. ३	
१०।७।०७	छ. १५	ऽ१॥सेर घी १॥ छ.	६	छ. उत्तम दाग ९ + ४॥ खाई १३॥ छ०	छ. १॥	चूंकि गंधक कुछ कपडेपर रहजाती थी छीजन अधिक जाती थी इसलिये गंधकमें थोडा घी दूसरेदिनसे मिला दियागया पहला घान ३ छ. की आंचसे निकालाथ; वह ठीक निकला किन्तु ८ ता० की सी ही छीजन अधिक राई और कपडेपर कुछ अंश गंधकका रहगया आंच कम समझ दूसरे घानमें ३॥छ.की आंच दी तो गंधक जलगया तीसरे घानमें ३ छ० की आंच दी मगर इस घानकी रंगत भी कुछ खराब होगई चौथे पांचवें छठे घान ३ छ. की आंचसे अच्छे निकले अबकी गंधकके दाने कुछ पोले और फोके निकले ये घीके योगका कारणहै।
१२।७।०७	छ. १५	ऽ१॥ सेर घी १ छटांक	६	छ. १३	छ. तो. १-२॥	
१३।७।०७	छ. १५	ऽ१॥ सेर घी पौन छ.	६	छ. १३तो. १॥ उत्तम दागखाई	छ. तो. १-३॥	
१४।७।०७	छ. १५	ऽ१॥ सेर घी छ.	६	छ. छ. तो. ११ + २ १॥ =१ छ. १॥ तो.	छ. तो. १-३॥	आज सूखा नोकरने काम किया १ घान बिगड गया.
१५।७।०७	छ. ८॥	१ऽ सेर घी $\frac{१}{३}$ छ.	४	छ. तोले ७ १।	तो० ३॥	
मीजान ६	मीजानऽ५ सेर३॥छ.	मीजान ऽ८॥ सेर	मीजान ३४	मीजान सेर ४ छ. १$\frac{२}{४}$तो.+छ.६तो४ उत्तम दागखाई	मीजान छ. तो. १० २	

सेर छ० तोले
सब ४ ८ ३
कुल मीजान सेर छ० तोले
४ १ ४ उत्तम
६ ४ दागखाई
१० २ छीजन
सेर छ०
ऽ५ ३

गंधकशुद्धिका फल ।

(१)प्रथम बार ५ सेर ४ छ० गंधक केवल दूधमें शुद्ध होकर ४ सेर ६॥ छ० रही १३॥ छटांक छीजन गई । अर्थात् फी सेर २॥ छटांक छीजन कुछ तोलमें भी गड-बडी हुई ।

(२) दूसरी बार ५ सेर ३॥ छ० (४ सेर ६॥ छ० अबकी और १३ छ० पहली) घृत योगसे दूधमें शुद्ध होकर ४ सेर ८॥ छ० रही ११ छ० छीजन गई अर्थात् फी सेर २। छ० छीजन ।

दो बारकी शुद्ध गंधककी मौजूद तोल ।

सर्वोत्तम फोके दानेदार	ऊत्तम दानेदार	दागखाई हुई कुल
९ छटांक	ऽ३ सेर ९ छ०	६॥छटांक=ऽ४सेर ८ छ० ३ छ०

जारणके लिये गंधककी विशेष शुद्धि (९ बार शुद्धि) अलकीमियांके पत्र २४४ के अनुसार ।

(१) ता० २५।७। ०७ पूर्वोक्त दो बार शुधी गंधकमेंसे १ सेर गंधकको १ सेर६ छ० ग्वारके पट्ठेके स्वरसमें ६ घा-नोंमें तृतीय बार शोधा तो १४ छटांक रही ।

(२) ता० २६ चतुर्थ बार भी १ सेर ६ छ० ग्वारके नये स्वरसमें ६ घानोंमें शोधा तो १२ छ० रही (छीजन अधिक गई)

(३) ता० २७-पंचम बार कटेरीके १ सेर ६ छटांक स्वरसमें ५ घानोंमें शोधागया तो १०॥ छटांक रही इस बार गंधकके दाने बननेकी जगह कुछ गंधककी धारा ज्यों कीत्यों जमगई थीं ।

(४) ता० २८–छठी बार भी १ सेर ६ छटांक कटेरीके नये स्वरसमें ४ घानोंमें शोधा तो ९॥ छटांक रही।

(५) ता० ३०–सातवीं बार १॥ सेर प्याजके स्वरसमें ४ घानोंमें शोधा तो ७॥ छ० रही (छीजन अधिक गई)

(६) ता० ३१–आठवीं बार १ सेर ७ छटांक प्याजके नये स्वरसमें ३ घानोंमें शोधा तो ६ छटांक ३ तोले हुई।

(७) ता० २–नवीं बार लहसनके १ सेर स्वरसमें ३ घानोंमें शोधा गया तो ६ छ० हुई।

सम्मति–छीजन अधिक जानेका कारण नत्था नोकरसे पूछा तो जवाब दिया कि खानेके लिये जो शुद्धि हुई वह घृत, दुग्ध आदिमें होनेसे उस क्रियामें गंधक नरम और चिकनी रहती थी और कपडेमेंसे साफ निकल जाती थी। इस जारणक्रियामें घी आदिका योग न होनेसे गंधक कडी और रूक्ष रहती थी जिससे कपडोंपर अधिक रहजाती थी इस कारण अधिक छीजन गई।

खानेके लिये गंधककी विशेष शुद्धि ७ बार।

(१) उक्त दो बारकी शोधी गंधकमेंसे ऽ।≈ डेढ पाव गंधकको तृतीय बार ऽ≈ घीयुक्त १२ छटांक दूधमें ३ घानोंमें शोधा तब ५॥ छटांक रही।

(२) चतुर्थ बार १३॥ छटांक घृतमें ३ घानोंमें शोधा तो ५॥ छटांक रही।

(३) पंचम बार उसी १३॥ छटांक घृतमें फिर शोधा ३ घानमें तो ४॥ छटांक रही।

(४) छठी बार १४ छटांक भांगरेके स्वरसमें २ घानमें शोधा तो ४ छटांक रही।

(५) सातवीं बार १४ छटांक नये भांगरेके रसमें फिर २ घानमें शोधा तब ३॥ छ० रही।

सम्मति–(१) ५ बारकी शुद्धिमें ६ छटांक गंधककी ३॥ छ० रही। ७ बारकी शुद्धिमें ८ छ० की ३॥ छ० समझनी चाहिये।

(२) अब इस गंधकमें दुर्गंध नहीं आती।

(३) कूर्मपुटमें २॥ छ० से १॥ छटांक तकके घान निकले आंच सबमें तीन तीन छटांककी ही दीगई।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहितायां भाषाटीकायां स्वानुभूतगंधकविषयोपवर्णनं नाम चतुष्पञ्चाशत्तमोऽध्यायः॥ ५४॥

उपरसाऽध्यायः ५५.

आठ उपरसोंका वर्णन।

गंधाश्मगैरिकाकासीसकांक्षीतालशिलाञ्जनम्॥ कंकुष्ठं चेत्युपरसाश्चाष्टौ पारदकर्मणि॥१॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–गन्धक, गेरू, कसीस, फिटकरी, हरताल, मैनसिल, सुरमा और, कंकुष्ठ पारदकर्मके लिये ये आठ उपरस कहे हैं॥ १॥

गंधकका बयान (उर्दू) जाइपैदाइश।

गंधक मशहूर धातु है जिस्म जर्द रंग वगैर, बे बू, लेकिन रगडनेसे खास किस्मकी बू उसमेंसे निकलतीहै इस्में गर्मी और वर्क कम सराइत करतीहै पानीमें हल नहीं होती और शराबमें कम हल होतीहै हर मुल्कमें कमोबेश मौजूद है ज्यादहतर कोहिस्तानी मुल्कोंमें पैदा होती है। खुसूसन मुल्क आयसलेंड, चीन, सीसली, पैगो, अमरीका, नेपाल, वगैरःमें बहुत पाई जातीहै। उदयपुर और रावलपिंडी (पंजाब) में भी पैदा होतीहै जिला बांदामें वसीत गंधक मिलतीहै। फिलपाइनके टापूसे हिन्दुस्तानमें गंधक बकसरत आतीहै। जर्दरंग, हश्त पहल, फलकी, खादारको आँवलासार गंधक कहतेहैं। (सुफहा १३ किताब अखबार अलकीमियाँ)

नवातात जिस्में गंधक पाई जातीहै (उर्दू)

कहतेहैं कि गंधक नवाततमें भी होतीहै। जैसे प्याज, सरसों, राई, हींग वगैरःमें मौजूदहै। हैवानातमें कई जानवरोंकी बैजोंकी जर्दीमें मौजूद होतीहै।

कानसे गंधक बरामद करनेका तरीका (उर्दू)

कुदरती गंधक जो मुख्तलिफ इशियाइके हमराह मुरकिब मिलतीहै उसको माटोंमें बंजरियः आंच उडाकर जुदा करलेते हैं फिर नरम आंच पर गुदाज करके साचोंमें डालकर मोटी मोटी बत्तियां बना लेते हैं जिसको अंगरेजीमें रूलसिलकर और पंजाबीमें डंडागंधक और बत्तीगंधक कहतेहैं। (सुफहा १४ किताब अखबार अलकीमियाँ)

गंधकके खवास (उर्दू)

गंधकको तसईद करनेसे उसके रवादार जर्दी माइल व सबजी किरकिराहट लियेहुए बेजायका और बे बू सफूफ बनजातीहै जिसको लैटिनमें सिलकर सेलीमीटम और अंगरेजीमें फ्लावर्स आफसलकर अरबीमें किबरियत मसअद, हिन्दीमें गंधकका फूल कहतेहैं। अगर ५२३ दर्जेकी हरारतमें गंधकको गुदाज करके सर्द पानीमें डाले तो रबडके मानिन्द मुलायमसा चमडा बनजाता है मगर यह सूरत बाद चन्द घंटोंके बदल जातीहै गंधक सरीअडल इश्तआलहै हवामें जलानेसे नीलगू शौलेसे जलतीहै।

गंधककी किस्में (उर्दू)

मूलीफ मुहताजके नजदीक गंधककी दो किस्म हैं, सफेद और जर्द और साहबजामअ इसकी तीन किस्म, सुर्ख, सफेद, जर्द बयान करताहै हकीम असहकबिन उमरानके नजदीक इसकी चार किस्मेंहैं। सुर्ख, सफेद, जर्द, स्याह मगर कीमियाई किताब अबुलअजबके तितम्बःमें उसकी छः किस्मेंहैं, किस्म अव्वल किबरियत अहमर, यानी सुर्ख गंधक जो निहायत कामयाब है और कीमियाईगरी एमालमें यह बहुत काम आती है, शौअराने इसको नादिरे उलवजूद तसलीम कियाहै हजरत मौलाना निजामी अलउल रहमतहू फरमाते हैं।

"न गूगर्द सुर्खे न लाले सफेद। न जोईदः अजतो बुवद ता उम्मेद"।

किस्म दोयम जर्द व तीरह रंग मानिन्द मोम ।
किस्म सोयम आजीरंगं ।
किस्म चहारम सब्ज खाकी ।
किस्म पंजुम स्याह ।
किस्म शशम जर्द व साफ जो बेहतर है ।

हकीम जलीनूसने लिखाहै कि गंधकको खोदकर कानसे निकालतेहैं सुर्ख व जर्द वस्याह होती और जर्द माइल व सबजी भी होतीहै इसका नाम मसतकावी और असाबई है, अलगरज सबहुकमाका इत्तफाक है, कि किबारियत अहमर सब अकसामसे उमदा व अजफल है, मगर अजीजउलवजूद व नावेद है इसीके बाद सबज पत्थर जर्द साफ जिसका आँवलासार सब्ज कहते हैं इसीके बाद दूसरी अकसाममेंसे जो साफ और खालिस हो, किबरियत अहमर मादनीके किबारियत अहमर मसनूई भी होतीहै जिसको कीमियागर एमाल कीमियाबीसे बनाते हैं, हम इसकी तय्यारी तरकीब आयन्दा इन्शा अल्लाह ताला लिखेंगे, इल्मकीमियाईकी किताबोंमें किबरियतके इस्माह मुफस्सिलः जैल भी मरकूम है जो अहलफनके नजदीक बतौर सरमफतूम है वह यह है ।

असलमार, अलजकर, उरूस, अकरब,नफस, नफसउलकबरी, ऐनुलकतर, हिजरुलदम, हिजरुलमुल्क, अलहजरुल करम, शुमरवजा, हारअहमर अफसूँ अबियार, असदुलदर्ज, सबूक, मियामल्स, मुन्दरस, अबरून, गन्दुम (राकिम कमतरीन खलायक नूरमुहम्मदमुवकिल जिला लाहौर) (सुफहा १५–१६ किताब अखवार अलकीमियाँ)

गंधककी किस्में (उर्दू)

हिन्दुओंके नजदीक गंधककी चार किस्महैं, अव्वल सफेद जो दफे अमराज व बजअउलमुफासिल और तुकराव मिसपर तिला करके आंच देनेसे इनको कुश्ता कर देती है। दोयम आँवलेके रंगकी जिसको आँवलासार कहते हैं । सोयम सबज बरंग तोता यह सब किस्मोंसे बेहतरहै । चहारम सुर्ख तोतेकी नाक जैसी और इसको अगर कलई पर तरह करें तो चांदी करदेतीहै और मिसपर तरह करे तो सोना करदेतीहै और एक किस्म इसका स्याहहै जिसका मिलना दुस्वार है और इसीके स्तैमालसे इन्सान बूढा नहीं होता, इसकी अलामत यह है कि अगर दूधमें डाले तो उसको जज्ब करलेतीहै और यह किस्म धनत्तर वैद्यको मिलाथा बाद तस्फियाके अकसर इसका स्तैमाल कियाजाताहै तरीकतस्फिया हम आयन्दा इन्शा अल्लाह नीला लिखेंगे (सुफहा१७–१८ किताब अखबार अलकीमियाँ १६।३।१९०५

गंधकशुद्धि ।

पयःस्विन्नो घटीमात्रं वारिधौतो हि गन्धकः ॥ गव्याज्यविद्रुतो वस्त्राद्गालितः शुद्धिमृच्छति ॥ २ ॥ एवं संशोधितः सोयं पाषाणानम्बरा त्यजेत॥ घृते विषं तुषाकारं स्वयं पिण्डत्वमेव च ॥ ३ ॥ इति शुद्धो हि गंधाश्मा ना पथ्यैर्विकृतिं व्रजेत ॥ अपथ्यादन्यथा हन्यात्पीतं हालाहलं यथा ॥ ॥ ४ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–गंधकको एक घडी यानी चौबीस मिनटतक गायके दूधमें स्वेदनकर जलसे धोलेवे फिर गायके घृतमें गलाकर दूधके पात्रके मुखपर कपडा बांधकर उस कपडेपर उस गलेहुए गंधकको डालदेवे इस प्रकार शुद्ध करनेसे गंधकमेंके पत्थर तथा अन्य प्रकारकी कोई भी मैल निकल जाती है । गंधकका विष घृतमें तुषाकार होकर रहजाताहै और गंधक स्वयं पिण्डके आकार होताहै इस प्रकार शुद्ध कियेहुए गंधकको जो कोई मनुष्य सेवन करै और पथ्य न करे तो भी विकार नहीं करता है यदि शुद्ध नहीं कियेहुए गंधकको खालेवे तो अवश्य हालाहल पीयेहुएके समान मारदेताहै ॥ २–४ ॥

तथा च ।

गन्धः सक्षीरभाण्डस्य वस्त्रे कूर्मपुटाच्छुचिः॥ ॥ ५ ॥(एकभाषापुस्तक.)

अर्थ–एक हांडीमें दूध भरे उसके मुंहपर एक लत्ता बांधे तेही लत्तापर गंधक बूकको पैसा एकभर वीगें सानिके बिछावे तापर तांबा राखै तांबापरि अंगारा राखै तांबाको गरमीसे गंधक पिघलि कपडाकी राहसे दूधमें गिरिपरै जो गंधक दूधमें गिराहै वह शुद्ध है ॥ ५ ॥

तरकीब किबारियत मुसफ्फा खुर्दनी मयफवायदस्तैमाल (उर्दू)

जो मुकव्वीबाह व मुमसिक व मुसफ्फः खून फासिद और दाफै खारिश व बहक व सबूर गरीबः व अमराज जिल्दियः है और रंगको दुरुस्त करताहै ५ तोले गंधक ५ तोले रोगन जर्दको आंचपर पिघला कर शीर मादह गाउ या शीर बुजमें डालें इसी तरह इक्कीस बार और कमअजकम सात बार यह अमल करे बादहू बारीक करके बंदशीशीमें रक्खे खुराक दो रत्तीसे चार रत्तीतक है मक्खन या बताशे वगैरःमें अगर हरबार रोगन व शीर ताजा डाले तो बहुत मुफीदहै यह मुस्तैमिल रोगन खारिशके लिये अजहद मुफीद है (सुफहा नं१२ अखबार अलकीमियाँ १।६।१९०५)

गंधकको मुसफ्फा करनेकी तरकीब बजरियः फिटकरी (उर्दू)

५ तोलें गंधक और ५ तोले शवयमानीको मिलाकर बारीक सहक करे और किसी बर्तनमें डाल कर नरम आंच पर रखकर शीर मादा गाउ इस्पर इस कदर डालता रहे कि हर दो अदविया इसमें डूबी रहें जिस कदर स्याही ऊपर आती रहे उसको उतारता रहे इसीतरह तीन बार यह अमल करे फिर दूधकी रतूबतसे खुश्क करके अपने काममें लावे (सुफहा १२ अखबार अलकीमियाँ १।६।१९०५)

गंधक मुसफ्फा करनेकी तरकीब चन्द अरकोंमें (उर्दू)

गंधकको पिघलाकर शीराहाइजैलमें जो मसावी उलवजन मिलाकर रक्खी हों इक्कीस या सात बार ठंढा करे शीरा मुंडी बूटी, शीरा शाहतरा, शीराबर्ग बगुल व समर जोजमाइल (धतूरा) शीर मादा गाउ मसावी उलदजन मिलाकर रक्खे अगर शीराइके एवज हर अशियाइ मजकूरहका अर्ककशीद करके स्तैमाल करे तो कोई मुजायका नहीं (सुफहा नं० १२ अखबार अलकीमियाँ १।६।१९०६)

गंधकछाछिया (उर्दू)

गंधक छाछिया जिसे मूसलीकी गंधक कहतेहैं और जो आम तौरपर बारूदमें स्तैमाल की जातीहै अगर साफ करालिया जावे तो आँवलासार बनजातीहै (सुफहा १५ अखबार अलकोमियां लाहौर २४।२।१९०९)

गंधककी हरारतके दर्जे और उनका असर चाँदीपर (उर्दू)

जो चीज. चांदीको रंगतीहै उसकी हरारतके तीन दर्जे हैं, पहला दर्जा स्याह करनेका और दर्जेमें कुश्ता करतीहै चुना चे गंधकका यही असर है फिर जब इस्की गर्मी अदबिया वारूदामें पीसपीसकर ख्वाह पकानेसे कम की जावे (देखो शेंखुल रईस रिसालः अकसीर अहमद) उस वक्त बशर्ते कि पंड हाजोवे यहा गंधक चांदीको सुर्ख करेगी बरगनहास अहमर इसलिये कि गंधकमें तावा माजूद है इसके निकालनेकी तरकीब रिसाले अलकीमियाँ तर्जुमा हफ्त अहबाबमें देखो पारा इस गंधकके ताँबेको जज्ब करके सुर्ख ब्यकसूद होताहै जिसको फिर लिखेंगे और तवरीदसे जर्द करेगी, यह तोसरा दर्जा है, इल्म मीजानमें सावित कियाहै कि जबतक चांदी बरंग निहास अहमर न होजाइ सोनेमें हरगिज मिलानेके काबिल न होगी हमारा तजरुबाहै कि जर्द चांदीमें खुर्दबीन से देखनेसे सफेद सफेद अजला नजर आतेहैं और मिलानेके बाद सोना फीका होजाताहै और सुर्ख चांदी निहास रंगको अलबत्ता इस्क मेला अच्छा रहताहै बल्कि जहबसालीफ बनताहै यानी ताँबचो सोना जिसको तादीलकी जरूरत होतोहै, और दसवाँ हिस्सा सपेद चांदी पिलानेसे मकबूल बाजारी होताहै यही हाल अकसोरी सोनेका है अगर दवा ज्यादह तरह कजिावे (सुफहा १८ किताब अखबार अलकीमियाँ १।५।१९०५)

गंधकके अर्क बनानेकी क्रिया ।

घटस्य मध्यदेशे प्राक् विशालं छिद्रमाचरेत् ॥ तद्द्वारा तदधः स्थाली काचलिप्ता निधाप्यते ॥ ६ ॥ त्रिकाष्ठीं तत्र संस्थाप्य तदूर्ध्वं लोहनिर्मितम् ॥ चषकं नातिगम्भीरं गन्धकस्य कर्णेर्युतम् ॥ ७ ॥ स्थापयेत्वा क्षिपेत्तत्र ह्यंगारं भिषगुत्तमः ॥ दोलायंत्रविधानेन तस्माद्द्व्यंगुलमानतः ॥ ८ ॥ स्थाल्यन्तरं महत्स्निग्धमूर्ध्वं संस्थापयेत्सुधीः ॥ घटस्य मध्यविवरं मुद्रयित्वाम्बरेण च ॥ ९ ॥निर्वाते विजने देशे विनसद्यत्नपूर्वकम् ॥ ऊर्ध्वपात्रादधः पात्रे स्वेदं पतति निश्चितम् ॥ १० ॥ पर्णखण्डेन तत्स्वेदमत्यम्लं भक्षयेत्सदा ॥ (एक भाषा पुस्तक.)

अर्थ–एक कूंडाके पेटके मध्य लांबा बित्ता डेढ और छः अंगुल चौडा छेद करो । उसके रास्तेसे एक चीनी या चांदीकी रकाबी रख देवे उस रकाबीके बीचमें छोटीसी लोहेकी तिपाई रख उस पर लोहेका ही प्याला रख देवे उसमें पाव भर गंधकके टुकडे. रख ऊपरसे एक अंगार जलताहुआ रख देवे ऊपरसे दोलायंत्रके समान गंधक वाले कटोरेसे बडा चपटा कटोरा लटकादेवे और घडेके छिद्रको कपडेसे ढक देवे इस यंत्रको जहां हवा और आदमी न हों वहां रखना चाहिये इस प्रकार ऊपरके पात्रसे जो नीचेके पात्रमें स्वेद टपकेगा उसको पानके टुकडेके साथ खावे तो क्षुधा बढातीहै यह स्वेद खट्टा होताहै जब कटोरेमें गंधक न रहै तब फिर डालकर पूर्वोक्त क्रियासे स्वेद निकाल लेवे ॥ ६–१० ॥

तथा च ।

घटस्य मध्ये विपुलं द्वारमादौ प्रकल्पयेत् । अधोमुखं तमारोप्य भस्मनार्धं प्रपूरयेत् ॥ ॥ ११ ॥ दीपाधानं त्रिभिः काष्ठैस्तदन्तर्घटितं नयेत् । पलार्धं गन्धकं रम्यं तिलतैलसमन्वितम् ॥ १२ ॥ द्रावयित्वा द्रुतं तूलं क्षिप्त्वा तत्र प्रकल्पयेत् । वर्तीर्दश दृढाः स्थूला दीर्घा द्व्यङ्गुलसंमिताः ॥ ॥ १३ ॥ चतस्रः पंच वा तस्मिन्प्रदीपे स्थापयेत्सुधीः । ज्वालयेत्ताः समस्ताश्च ज्वलद्वर्त्यन्तरेण च ॥१४॥ दोलायंत्रप्रकारेण दीपं पात्रान्तरेण च । तथा पिधापयेत्तस्य शिखाग्रं तद्यथा स्पृशेत् ॥१५॥ ऊर्ध्वपात्रस्य भागार्धमुन्नतं स्थापयेद् बुधः । न तस्यापरभागस्य पात्रं संस्थापयेदधः ॥ १६ ॥ तत्र गंधकजः स्वेदः स्वस्मादागत्य तिष्ठति । अत्यम्लः शुभ्रवर्णः स स्थाप्यः काचस्य भाजने ॥ १७ ॥(एक भाषापुस्तक.)

अथ–घडेके पेटमें रालबालिश्त लंबा छेद करै उसको उलटा कर छेदकी राहसे घडेमें आधे पेटतक राख भरदेवे उस राखके बीच तिखटी रख देवे और उसपर लोहेका दीपक रख उसमें जायफलके समान चार टुकरा गंधकके रक्खे फिर दो तोले गंधकको कुछ थोडेसे तैलमें गलावे जिसमें कि दो २ अंगुल लंबी और कलमके समान मोटी दस बत्ती भीग जावें । उस गंधके तैलमें बाती भिगोकर चार या पांच बाती एक ही बार उस दीपकमें रख देवे ऊपरसे एक चीनीका प्याला जो कि गहरा न हो उसके चारों कोनोंमें सूईकी बरावर छेदकर लोहेके तारसे बांध उस दीपकपर ऐसे लटकावे कि दीपककी जोति (लौ) का अगला भाग कटोरेमें (चीनीवाले प्यालेमें) लगतारहै । दीपकके ऊपरका प्याला ऐसा लटकावे कि उसका एक भाग नीचा और दूसरा भाग ऊंचा जिधर नीचा भाग हो उसके भी नीचे एक और चीनीका प्याला रखदेवे फिर दूसरी बातीसे उन पांच बातियोंको जलावे और घडाको मुह बंद करदेवे छोटे २ छिद्रोंमेंसे जब धूवां न निकसता दीखे तो समझलो कि बाती बुझगई अगर बाती न हो तो बाती डालो यदि गंधक न हो तो गंधक डालो इस प्रकार करनेसे नीचेके

चीनीवाले पात्रमें सफेद अर्क निकलेगा वह खट्टा होगा ॥ ११--१७ ॥

तरकीब रोगन गंधक (उर्दू)

एक कुप्लीमय सरपोश कूजा गरानसे तय्यार कराकर जब वह खुश्क हो जावे नीलाथोथा देशी यक तोला, सुहागा यक तोला, काचसब्ज एक तोला इन हरसहको जुदागानः बारीक करके फिर सबको बाहमी शामिल करे और सादा पानीसे खरल करके कुप्लीमय सरपोशके अन्दरूनी हिस्सेमें पतला पतला जमाद करे बादहू पजावा कुम्हारानमें पकालेवे जब कुप्ली और सरपोश इस्मेंसे बाहर निकल आयेगी एक किस्मकी रोगनी मालूम होगी, गंधक मजकूरः मुसफ्फासे जिसकी तरकीब ऊपर हकीम नूरमुहम्मद साहबने दर्ज फर्माई है, कुप्लीको भरकर ऊपर सरपोश देदे, एक गढा खोदकर सरगीन ताजा अस्पके अन्दर वह कुप्ली देकर ऊपर एक बालिश्त भर मिट्टीकी तह दे अजाँबाद दो अंगुश्त बालूरेग ऊपर बिछाकर करीबन पचीस सेर मेंगन बुजकी सरपर आँच दे जो पुख्तः वजनके हिसाबसे मेंगन दस सेर होंगी, बाद चालीस यौमके जब कुप्लीको निकालेंगे वह रोगन गंधकसे पुरशुदः बरामद होगी, इस रोगनकी खुशनुमाई और दहनियतको देख कर आमिल बेहद खुश होताहै अगर्चः यह तेल मरीज हैजाके लिये एक बूंद भी अकसीरका हुक्म रखताहै लेकिन अफसोस है कि यह अमल अय्याम बरसात सावन भादोंमें करना चाहिये (सुफहा १९-२० किताब अखबार अलकीमियाँ १६।४।१९०५)

रोगन गंधक जुज अर्क अमरबेल और प्याज पतालजंतरसे (उर्दू)

गंधकका एक रोज अकासबेल, दूसरे दिन प्याजके पानीमें खरल करके बकदर दाना माष गोलियां बनाकर बजरियः पतालजंतर तेल निकालले दफिया हैजाके लिये एक शीख काफीहै । (सुफहा ११ किताब अखबार अलकीमियाँ १।५।१९०५)

गन्धकतैल ।

अर्कक्षीरैस्नुहीक्षीरैर्वस्त्रं लेप्यं तु सप्तधा ।
गंधकं नवनीतेन पिष्ट्वा वस्त्रं विलेपयेत् ॥
॥ १८ ॥ तद्वर्तिर्ज्वलिता दण्डे धृता कार्या त्वधोमुखी । तैलं पतत्यधो भाण्डे ग्राह्यं योगेषु योजयेत् ॥ १९ ॥ (एक भाषापुस्तक.)

अर्थ-एक गज कपडा लेकर सात बार आकके दूधसे भावना देवे प्रत्येक भावनामें कपडेको भिगो २ कर सुखावे इसी प्रकार सात ही बार सेहुण्डके दूधसें भावना देवे फिर जितने गन्धकसे कपडेपर लेप होजाय उतना गंधक लेकर माखनमें घोट कपडेपर लेप करदेवे लेप एक जौके समान होना चाहिये फिर उसको बाती बनावे उसको चिमटासे पकडकर बातीको जलावे बातीका जलता हुआ किनारा नीचा रक्खे और उसके नीचे एक पात्र रखदेवे उस पात्रमें जो गंधक अवेगा उसको गंधक तैल कहतेहैं इसको चार रत्ती खानेसे पुष्ट होताहै कासश्वास कोढ कब्ज और मन्दाग्नि दूर होतीहै ॥ १८ ॥ १९ ॥

रोगन गंधक खुर्दनी जुज जमालगोटा पाताल यंत्रसे (उर्दू)

रोगन गूगर्द जो खाने और बतौर तिलाके लगानेके काम आताहै आज उसीका नुसखा लिखताहूं ।

इब्बुलशाफी गंधक आँवलासार ऽ। मग्ज जमालगोटा ऽ। अर्क ककरोंदा (कुकरछेदी) ऽ।=में पीस कर २१ रोज किसी गढे नमनाकमें दफन करदो इस दफनसे गर्ज ताफीन है, हल करना मंजूर नहीं है (ज्यादह मुद्दत इससे जाँबर है) इसके बाद निकालो और पीस कर मखरूती शकलकी गोलियां बनाओ जब सायेमें खुश्क होजावें बतौर मुतआरिफ रोगन कशीद करो यह रोगन सुर्ख निकलता है, मगर दो किस्मका जमालगोटेका नीचे और ऊपर गंधकका, ऊपरका रोगन जुदा करो इसकी एक सींक पान पर लगाकर खिलाई जातीहै, सविनहश्का लगाकर लगाई जातीहै और बाईस रोजसे लगायत चालीसमें सुस्तीको फाइदा करता है, सम्मियत इसमें नहीं है, मुलैयन और दाफैकब्ज है । (सुफहा १७ किताब अखबार अलकीमियाँ १।५।१९०५)

गंधक और फिटकिरीका तेल बगैर आँचके फिटकिरीका तेल बना उससे गंधकका तेल (उर्दू)

१५ अपरैल सन् १९०५ ई. के अखबार अलकीमियाँमें जो तरकीब दर्ज हुई है उसके मुताबिक दो कुलफियां तय्यार करलें पहले एक कुलफीमें फिटकिरी भरकर सरपोशसे लबबंदी करके दो मन पुख्तः रेग जोकदरे पानीसे तर कियागया हो एक बडे घडेमें भरकर कुलफी मजकूर दर्मियानमें रखकर लबबंदी करे बाद गुजरने ४० रोजके मुलाहिजा करे इन्शाअल्लाह तमाम रोगन मिस्ल खूनके होगा, इस रोगनके हम वजन किबरियत हल करके जब खुश्क होजावे और किबरियतकी बूबिल कुल न रहे तो दूसरी कुलफीमें भर कर मुँह बंद करके ताजे रेतमें हस्बतरकीब मजकूरह अमल करे बाद गुजरने ४० रोजके रोगन सुर्ख बरामद होगा फज्लह कुछ बाकी न रहेगा । इसी रोगनसे कुछ और अमल करके शमसुलआला तिला खालिस बनातेथे और उन्होंने यह भी फर्माया था कि रूहतिलाकी शराकतसे इसमें खासियत अकसीरकी पैदा होजातीहै । (सुफहा १३ अखबार अलकीमियाँ १।६।१९०५-१)

दहन उरूस यानी रोगन गंधक बजरियः चोयासीर (उर्दू)

गंधक साफ शफ्फाफ आमलासार पिसी हुईको प्याले गिलेहिकमत शुदःमें नरम आगपर रक्खे और दुचन्द सिचन्द ताजा दूधका चोयादे पस आहनी कर्छीमें जो नलके दार हो रखकर कडछेको नलकेकी तरफ ढलवा करके आगपर रक्खें और नलकेके नीचे दूसरा ओंधा शीशा या चीनीका बर्तन रखदे अब गंधकमें आग लगावें रोगन नलके-

की राहसे दूसरे औदीनमें जमा होगा। (सुफहा २५ अखबार अलकीमियाँ २४।१।१९०९)

दहनउरूल यानी रोगन गंधक व आमेजिशमग्ज जमालगोटा (उर्दू)

गंधक आँवलासार ऽ।, मग्ज जमालगोटा ऽ।, अर्क ककरोंदेमें पीसकर २३ रोज किसी गढे नमनाकमें दफन कर दो इस दफनसे गर्ज तसकीनहै हल करना मजकूर नहीं है ज्यादा मुद्दत इससे जाइज है इसके बाद निकालो और पीसकर मखरूतो शकलकी गोलियां बनाओ जब सब सायेमें खुश्क हाजावें बतौर तआरफ रोगन कशीद करो यह रोगन सुर्ख निकलता है मगर दो किस्मके जमालगोटोंका अलाहदा और गंधकका अलाहदा जमालगोटेका नीचे होगा और गंधकका ऊपर होगा (हकीम मुहम्मदचराग) (सुफहा २५ अखबार अलकीमियां २४।१।१९०९)

दहनउरूस यानी रोगन गंधक बजरिये अकाशबेल व प्याज (उर्दू)

गंधकको एक रोज अकाशबेलके पानीमें और दूसरे प्याजके पानीमें खरल बकद्र दाना माष गोलियां बनाकर बजरियः पताल जंतर तेल निकाले दफिया हैजाके लिये सीख काफीहै और इससे ताँवा लाजिल भी होताहै। (सुफहा २५ अखबार अलकीमियां २४।१।१९०९)

गेरूके भेद और गुण।

पाषाणगैरिकं चैकं द्वितीयं स्वर्णगैरिकम्॥ पाषाणगैरिकं प्रोक्तं कठिनं ताम्रवर्णकम्॥ ॥२०॥ अत्यन्तशोणितं स्निग्धं मसृणं स्वर्णगैरिकम्॥ स्वादुस्निग्धं हिमं नेत्र्यं कषायं रक्तपित्तनुत॥२१॥ हिध्मावमिविषघ्नं च रक्तघ्नं स्वर्णगैरिकम्॥ पाषाणगैरिकं चान्यत्पूर्वस्मादल्पकं गुणैः॥२२॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-पाषाणगैरिक और स्वर्णगैरिक भेदसे गेरू दो प्रकारका है पाषाण गेरू कडा और तांबेके सदृश वर्णवाला होताहै और स्वर्णगैरिक (सोनागेरू) अत्यन्त लाल चिकना और चमकदार होताहै। गेरू मीठा चिकना ठंडा नेत्रोंको हित कषैला और रक्तपित्तका नाशक है हिध्मा वमन विष और दुष्ट रक्तका नाश कर्ताहै स्वर्णगैरिकसे दूसरा गेरू न्यून (कम) गुणवालाहै॥ २०-२२॥

गेरूकी शुद्धि और गुण।

गैरिकं किंचदाज्येन भ्रष्टं शुद्धं प्रजायते॥ (बृहद्योगतरङ्गिणी.)

अर्थ-गेरूको घृतमें सानकर अग्निमें भूनलेवे तो गेरूकी शुद्धि होगी॥ २३॥

तथा च।

गैरिकं तु गवां दुग्धैर्भावितं शुद्धिमृच्छति॥ ॥२४॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-गेरूको गायके दूधकी सात बार भावना देवे तो गेरू अवश्य शुद्ध होगा॥ २४॥

गेरूके गुण।

गैरिकं दाहपित्तास्रकफहिध्माविषापहम्॥ चक्षुष्यं वान्तिकण्डूघ्नं शीतं रूक्षमुदर्दनुत॥ ॥२५॥ (बृहद्योगतरङ्गिणी.)

अर्थ-गेरू दाह रक्तपित्त, कफ, हिध्मा और विषका नाशक है, नेत्रोंका हितकारक वमन और खुजलीका नाश करनेवाला ठंढा रूखा और उदर्द (छपाका) को दूर करताहै॥ २५॥

गेरूके सत्त्वपातनकी विधि।

गैरिकं सत्त्वरूपं हि नन्दिना परिकीर्तितम्। कैश्चिदुक्तं पतेत्सत्त्वं क्षाराम्लक्लिन्नगैरिकात। उपतिष्ठति सूतेन्द्रमेकत्वं गुणवत्तरम्॥ ॥२६॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-महात्मा नन्दीने कहाहै कि गेरूमें सत्त्व नहीं निकलताहै, क्योंकि, वह स्वयं सत्त्वरूप है, और कुछ पण्डितोंका कथन है कि, क्षार (जवाखार) आदि अम्लवर्ग इनसे गेरूको सानकर कोठीयंत्रमें धोंके तो सत्त्व अवश्य निकलेगा, और वह सत्त्व पारदके समान गुणवाला है॥ २६॥

कसीसके भेद और गुण।

कासीसं बालुकाद्येकं पुष्पपूर्वमथापरम्। क्षाराम्लागरुधूमाभं सोष्णवीर्यं विषापहम्। बालुकापुष्पकासीसं श्वित्रघ्नं केशरंजनम्॥ २७॥ पुष्पादिकासीसमतिप्रशस्तं सोष्णं कषायाम्लमतीवनेत्र्यम्। विषानिलश्लेष्मगदव्रणघ्नं श्वित्रक्षयघ्नं कचरंजनं च॥ २८॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-रेतीला, कसीस और हीराकसीस भेदसे कसीस दो प्रकारका होताहै। रेतीला कसीस (बालुकादि) रंगमें खार, खटाई और अगरके समान होतीहै, वह उष्णवीर्य, विषनाशक, सफेद कोढका नाशक और केशोंका रंगनेवाला है। तथा फूलकसीस उष्ण, कषैला, खट्टा और अत्यन्त नेत्रोंको हित, विष, अनिल, कफ, व्रण, श्वित्र और क्षयका नाशक है, और केशोंका रंजक है॥ २७॥ २८॥

कसीसकी किस्में (उर्दू)

जाज-इसको हिन्दीमें कसीस और अंगरेजोमें सल्फेट आफ आइरन कहते हैं, मुख्तलिफ रंगका होताहै, सफेद, सुर्ख, सब्ज, जर्द, स्याह यह तिलाका रंग बढाता है और चांदीको सोख्त करताहै और आबसीमावको खुश्क करता है। (सुफहा अकलीमियाँ ५९)

कसीसकी शनाख्त (उर्दू)

कसीस मादनीको हीराकसीस कहते हैं जो आमबाजारोंमें बिकती है अंगरेजोमें इसका नाम सल्फेट आफआइरन और पंजाबीमें काही या कोकाही कहतेहैं (नूरमुहम्मद

अजमुबकल लाहौर (सुफहा १० किताब अखबार अलकीमियाँ १६।३।१९०५)

दोनों कसीसोंके गुण ।

कासीसो द्वयमम्लोष्णं तिक्तं केश्यं दृशोर्हितम् । हन्ति कण्डूविषश्वित्रमूत्रकृच्छ्रकफामयान् ॥ २९ ॥ (बृहद्योगतरङ्गिणी.)

अर्थ-दोनों प्रकारकी कसीस, खट्टी, गरम, चरपरी, केशोंको तथा नेत्रोंको हित है, खुजली, विष, सफेद कोढ, मूत्रकृच्छ्र और कफके रोगोंको नाश करता है ॥ २९ ॥

कसीसभक्षणके गुण ।

बलिनाहतकासीसं क्रान्तं कासीसमारितम्। उभयं समभागं हि त्रिफलावेल्लसंयुतम्॥३०॥ विषमांशघृतक्षौद्रप्लुतं शाणमितं प्रगे ॥ सेवितं हन्ति वेगेन श्वित्रपाण्डुक्षयामयान् ॥ ३१ ॥ गुल्मप्लीहगदं शूलं मूलरोगं विशेषतः । रसायनविधानेन सेवितं वत्सरावधि ॥३२॥आमसंशोषणं श्रेष्ठं मन्दाग्नि परिदीपनम्। पलितं वलिभिः सार्धं विनाशयति निश्चितम् ॥३३॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-गंधकके साथ माराहुआ कसीस और कसीसके साथ माराहुआ वैक्रान्त इन दोनोंको सम भाग लेकर त्रिफला और बायबिडंग (एक माशा) के साथ विषम भाग घृत तथा शहदमें मिलाकर एक रत्ती सेवन करे तो सफेद कोढ, पांडु, क्षय, गुल्म, प्लीहा शूल और बवासीरको एक वर्षतक रसायनविधिसे सेवन करनेसे नाशकरताहै। और यह आंवको सुखानेवाला अग्निवर्द्धक और वलीपलितको नाश करता है इसमें कुछ भी सदेह नहींहै ॥ ३०-३३॥

कसीसकी शुद्धि ।

कासीसं शुद्धिमाप्नोति पित्तैश्च रजसा स्त्रियः ॥ ३४ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-कसीसको पित्तवर्गकी तथा स्त्रीके रजकी भावना देवे तो कसीस निश्चय शुद्ध होगा ॥ ३४ ॥

तथा च ।

सकृद्भृंगाम्बुना क्लिन्नं कासीसं निर्मलं भवेत् ॥ ३५ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-जलभंगरेके रसकी एक बारही भावना देनेसे कसीस शुद्ध होजाताहै ॥ ३५ ॥

कसीसके सत्त्वपातनकी विधि ।

तुवरीसत्त्ववत्सत्त्वमेतस्यापि समाहरेत् ॥ ॥ ३६ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-जिस प्रकार फिटकरीका सत्त्व निकाला जाताहै, उसी प्रकार कसीसका भी सत्त्व निकालना चाहिये॥३६॥

फिटकिरीका उत्पत्तिभेद और गुण ।

सौराष्ट्र्यश्मनि सम्भूता मृत्सा सा तुवरी मता । वस्त्रेषु लिप्यते यासौ मंजिष्ठारागबन्धिनी ॥ ३७ ॥ फटकी फुल्लिका चेति द्वितीया परिकीर्तिता । ईषत्पीता गुरुः स्निग्धा पीतिका विषनाशिनी ॥ ३८ ॥ व्रणकुष्ठहरा सर्वकुष्ठघ्नी च विशेषतः । निर्भारा शुभ्रवर्णा च स्निग्धा साम्लाऽपरा मता ॥ ३९ ॥ सा फुल्लतुवरी प्रोक्ता लेपात्ताम्रं चरेदियम् । (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-सौरठ देशके पाषाणोंमें उत्पन्न हुई जो एक प्रकारकी मिट्टीहै उसे तुवरी कहतेहैं, कपडोंपर जिसके लगानेसे मजीठका रंग उत्तम होजाताहै, फटिका और फुल्लिका इन भेदोंसे फिटकिरी दो प्रकारकी है, फुल्लिका नामकी फिटकिरी कुछ पीले रंगतकी, भारी चिकनी होतीहै, यह विषफोडे और कुष्ठको विशेषकर नाश करती है, और इससे भिन्न सफेद वर्णवाली हलकी चिकनी और खट्टी होतीहै । फुल्ल (फूल) फिटकरी वह उत्तम होती है,जो कि लेप करनेसे तांबेको खाजातीहै॥३७-३९॥

फिटकिरीके गुण ।

कांक्षी कषाया कट्वम्लकण्ठ्या केश्या व्रणघ्नी विषनाशिनी च । श्वित्रापहा नेत्रहिता त्रिदोषशान्तिप्रदा पारदजारणी च ॥ ४० ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-फिटकिरी, कसैली, कडवी और खट्टी होती है, कंठ और केशनके हितकारी है, व्रण और विषकी और श्वेत कोढकी नाशक नेत्रोंके हित त्रिदोषको शान्त करनेवाली और पारदको रंगनेवाली है ॥ ४० ॥

फिटकिरीकी शुद्धि ।

तुवरी काञ्जिके क्षिप्ता त्रिदिनाच्छुद्धिमृच्छति ॥ ४१ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-फिटकिरीको कांजीमें घोलकर तीन दिवसतक रहनेदेवे फिर पानीको सुखाय लेवे तो फिटकरी शुद्ध होगी ॥ ४१ ॥

सफाई फिटकिरी (उर्दू)

फिटकिरीको मिस्ल पानीके हल करो और एक शीख जस्तकी उस पानीमें डालदो चन्द असेंमें इस शीखपर फिटकिरीकी कलमें जमजावेंगी जो निहायत साफ चमकदार होंगी मुजर्रिब है(सुफहा११०किताब कुदरतैजात हजारी)

तरकीब तेल फिटकरी (उर्दू)

एक कुलफी गिली कूजः गरान यानीं कुम्हरोंसे मय उसके सरपोशके तय्यार करावें उस कुलफीको खुश्क करके, नीलाथोथा देशी एक तोला, सुहागा एक तोला, काच सब्ज एक तोला, इन हरसेको जुदागाना पीसकर फिर शामिल करके खूब सादा पानीमें खरल करें और कुलफी मयसर्पोशके अन्दरूनी हिस्सेमें जमाद करके पजावा कुम्हारान्में पकालेवे जब कुलफी और सरपोश पजावेसे बाहर निकल आयेगी एक किस्मकी रोगनी हुई मालूम देगी जिस कदर चाहे कुलफीमें फिटकरी सफेद भरकर ऊपर सरपोश देदे, एक गढा खोदकर उसमें एक मन ताजा सरगीन अस्प डालकर ऊपर उसके कुलफी

रखदे एक मन सरगोन कुलफीके ऊपर बिछाकर उसके ऊपर एक बालिश्तके करीब मिट्टीकी तह देदे अजाँबाद दो अंगुश्त बालूरेत बिछाकर मेंगन बुजकी सरपर आंच देदे मेंगनबुज तकरीबन पैंतीस सेरके होनी चाहिये इस आंचसे खार्जी हरारत पहुँचाना मकसूदहै बाद चालीस यौमके जब कुलफीको निकालेंगे तेलसे भरीहुई बरामद होगी, तेलकी रंगत मिस्ल खूनके सुर्ख और घीकी तरहसे दौहनियत होगी, फज्लहू कुछ नहीं होगा अगर सोजाक-वालेको एक बूंद खालिस इस तेल फिटकिरीकी बताशेमें रखकर दीजावे ख्वाह कितने ही अर्सेका बयोन सोजाक हो तीन चार खुराकमें बफज्लहूताला शफा होगी। (सुफहा ३२ किताब इसरार अलकीमियां)

फिटकिरीके सत्त्वपातनकी विधि ।

क्षाराम्लैर्मर्दिता ध्माता सत्त्वं मुञ्चति निश्चितम् ॥ ४२ ॥ (रसरत्नाकर.)

अर्थ–फिटकिरीको क्षार (जवाखारादि) और अम्लवर्गसे घोट २ कर गोली बना मूषामें रखकर धोंके तो फिटकिरीका सत्त्व निकलेगा ॥ ४२ ॥

तथा च ।

गोपित्तेन शतं वारान् सौराष्ट्रीं भावयेत्ततः। धमित्वा पातयेत्सत्त्वं क्रामणं चातिगुह्यकम् ॥ ४३ ॥ (रसरत्नाकर.)

अर्थ–फिटकिरीको सौबार गोपित्तकी भावना देकर गोली बनाय मूषा द्वारा धोंके तो फिटकिरीका गुप्त रखनेयोग्य सत्त्व निकलेगा ॥ ४३ ॥

अथ हरितालके भेद और गुण ।

हरितालं द्विधा प्रोक्तं पत्राद्यं पिंडसंज्ञकम् । स्वर्णवर्णं गुरु स्निग्धं तनुपत्रं च भासुरम् ॥ ॥ ४४ ॥ तत्पत्रतालकं प्रोक्तं बहुपत्रं रसायनम् । निष्पत्रं पिण्डसदृशं स्वल्पसत्त्वं तथा गुरु।स्त्रीपुष्पहरणं तत्तु गुणाल्पं पिण्डतालकम् ॥ ४५ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–पत्र हरताल, तथा पिण्डहरतालके भेदसे हरताल दो प्रकारकी है, जिसका रंग सोनेके समान हो, भारी और चिकनी हो जिसके पत्ते छोटे२ चमकदार हों उसको पत्रतालक कहते हैं इसी तरहकी घनेपत्रवाली जो हरतालहै, वह रसायन है । जिसमें पत्र न हों, ढेलेके समान हो भारी और थोडे सत्त्ववाली हो उसको पंडहरताल कहते हैं, वह थोडे गुणवाली हरताल स्त्री पुष्प (रज) को नाश करती है ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

हरतालकी किस्में (उर्दू)

हरतालकी पांच किस्में हैं (१) हरताल उर्की (२) हरतालतबकी (३) हरतालवरकी (४) हरताल बुगदादी सफेद (५) हरताल स्याह हरताल उर्कीसे मुराद हरताल जर्दसे हैं जिसमें पर्त नहीं होते ढेलेकी तरह होती है–

हरताल तबकी व वर्की दोनों पर्तदार और चमकीली होती हैं फर्क यह है कि हरताल तबकीके पर्त दबानेसे टूट जाते हैं और बरकीके पर्त दबानेसे झुकजाते हैं और एमाल कीमियाईमें कारामद हैं ।

हरताल बुगदादी यह सफेद रंगका होता है और गोदंता हरताल कहलाता है आगपर कायम होताहै बाजे इसको संगजराहत और बाजे संबुलफार जानते हैं । लेकिन असल यह है कि गोदंता हरताल अलावह इन दोनोंके है बरखिलाफ संगजराहतके इसमें पर्तपर्त होते हैं और बरखिलाफ संखियाके कायमुलनार होता है रंगत इसकी बिलकुल गायके दांतकी तरह होती है यह खुदही कीमियां है ।

हरताल स्याह, बाज मुहक्कीननें इसको गंधक स्याह लिखा है जो दूधको जज्ब करलेती है और उसका स्तैमाल बूढा नहीं होने देता और कायाकल्प करता है । (सुफहा अकलीमियां १५८)

अशुद्धहरतालके दोष ।

अशुद्धं तालमायुर्घ्नं कफमारुतमेहकृत् । तापस्फोटांगसंकोचं कुरुते तेन शोधयेत् ॥ ॥ ४६ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–अशुद्ध हरताल आयुका नाश करता है, कफ, वात औरप्रमेह को उत्पन्न करता है दाह, शरीरका फटना और संकोचको करता है, इसलिये हरतालको शुद्ध करना चाहिये ॥ ४६ ॥

हरतालका शोधन ।

स्विन्नं कूष्माण्डतोये वा तिलक्षारजलेपि वा । तोये वा चूर्णसंयुक्ते दोलायंत्रेण शुध्यति ॥ ४७ ॥ (रसरत्नाकर.)

अर्थ–हरतालके टुकडे २ कर पोटलीमें बाँध पेठेके रसमें वा तिलके खारके जलमें अथवा चूनेके पानीमें दोलायंत्रद्वारा स्वेदन करे तो हरताल शुद्ध होगा ॥ ४७ ॥

तथा च ।

तालकं कणशः कृत्वा दशांशेन च टंकणम्। जम्बीरोत्थद्रवैः क्षाल्यं कांजिकैः क्षालयेत्ततः ॥ ४८ ॥ वस्त्रे चतुर्गुणे बद्ध्वा दोलायंत्रे दिनं पचेत् । सचूर्णेनारनालेन दिनं कूष्माण्डजे रसे ॥ स्वेद्यं वा शाल्मलीतोयैस्तालकं शुद्धिमाप्नुयात् ॥ ४९ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–हरतालके टुकडे २ कर उसमें दशमांश सुहागा मिला जंभीरीके रसमें कुछ देर रख कांजीसे धोय लेवे फिर उन टुकडोंको चौलर कपडेमें बांध चूनेके पानीसे मिलीहुई कांजीमें एक दिन स्वेदन करे फिर पेठेके रसमें फिर सेमरके रसमें एक दिवसतक स्वेदनकरे तो हरितालकी शुद्धि होगी ॥ ४८ ॥ ४९ ॥

हरतालको पिघलाकर साफ करना या चर्ख देना बेरीके पत्तोंमें (उर्दू)

हरतालको कोरी हांडीमें ऊपर बेरीके पत्ते रख कर चूल्हेपर चढ़ाकर नीचे बेरीकी लकडीकी आग जलावे

तो हरताल पिघल कर साफ होजातीहै (सुफहा ५६ किताब कुश्तैजात हजारी)

सफाई हरताल (उर्दू)

नौआदीगर, हरतालको पांच सेर स्याह गायके पेशाबमें और पांचसेर कांजीमें और पांच सेर दहीमें अलहदा डोलजंतर करें और जब आधसेर पानी रहजाया करे निकालकर दूसरे जंतरमें पकावे बादहू हरताल मजकूरको कपडेमें लपेट करअठारह दिनतक पेठेमें रक्खे बादहू बासी दहीमें सहक करके अमलमें लावे (सुफहा अकलीमियाँ १७४)

सफाई हरताल (उर्दू)

हरताल मुसफ्फा करनेको तरकीब अमल शम्सीके वास्ते अगर आधसेर हरताल हो तो पांचसेर कुरथीमें पानी डाल कर बारह पहरतक डोलजंतर करे और भापदे और आग खेरकी लकडीकी जलावे बाद उसके बारह प्रहर तक सज्जीमें पानी मिलाकर डोल जंतर भापी करे इसी तरह पर दोनों चीजोंके जो शाँदेकी बारह बारह प्रहरतक भाप दे मुसफ्फा होजायगा और अमल कमरीके वास्ते हर एक चीजमें तीन तीन अमल करे साफ होजायगा (सुफहा अकलीमियाँ १७३)

१-नोट-खैरकी आग तेज होतीहै-

हरतालके गुण ।

श्लेष्मरक्तविषवातभूतनुत् केवलं च खलु पुष्पहृत्स्त्रियः ॥ स्निग्धमुष्णकटुकं च दीपनं कुष्ठहारि हरितालमुच्यते ॥ ५० ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-हरताल कफ, रक्तविकार, विष, वात और भूतका दूर करनेवालाहै, केवल स्त्रियोंके रजका नाश करतीहै हरिताल चिकना, उष्ण, कडुआ, दीपन और कोढको दूर करता है ॥ ५० ॥

हरतालभस्मविधि ।

बीस टंक लीजे हरताल।नान्हों फोर खपरिया घाल ॥ जरकी छाल सफोंकातनी । मुखे बांटि चूरन करघनी॥ खपरा चूल्हेपर राखिये । बाखर चूरनसों ढांकिये ॥ तातर आग अलपसी करै । एक पहर जो मन्दी करै ॥ यह बाखर जहां धुवां करेय । तिंह २ ठौर चूरन देय॥ खपरा चार पहर ज्यों तपै । ताके गुनको कौनहि जपै ॥ तब रोगीको दीजे खान । कुष्ठ अठारह जाव निदान ॥ जैते स्रोनित रक्त विकार। कविजन कहै जे जाहि असार ॥ (बडारससागर.)

तथा च ।

अपामार्ग (ओंगा) की भस्म एक सेर पक्का, पीपलछालकी भस्म एक सेर पक्का, इन दोनोंको मिलाय देणा फेर तबकिया (पत्रात्मक) हरताल लेकर हांडीमें रखनी और ऊपर नीचे राख भर देनी और हांडीके मुखपर मुद्रा करनी उस हांडीको चूल्हेपर चढाय आठ पहरतक आग देनी जहां धूवां निकलता हो वहां राखसें दाबदेना तो हरतालकी भस्म होगी यह सन्निपातादिरोगोंका दूर करताहै (जम्बूसे प्राप्तपुस्तक)

तथा च श्वेत भस्म ।

हरताल यथेष्ट लेकर हांडीमें अपामार्गभस्म, पलाशभस्म, वा अश्वत्थ (पीपल) की भस्म पाकर, ऊपर त्रिकटुका चूर्ण पाकर ऊपर हरिताल रखकर, ऊपर चूर्ण, ऊपर बाकी भस्म पाकर, बंद करके चार प्रहर आग देणी तो हरतालकी श्वेत भस्म होगी (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

तथा च ।

हरिताल बीस मासे, फिटकिरी ४० माशे, करंजमज्जा ४० माशे करंजमज्जा और फिटकिरी दोनोंकी तहपर हरिताल रखकर ऊपर भी दोनोंकी तहदेके कुज्जेमें सात सेर पक्के दी आग देणी हरिताल भस्म होगी खुराक आधी रत्तीसे एक रत्तीतक ५० दिनमें कुष्ट हटै ॥ (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

हरिताल शंखियाभस्म ढाककी राखमें ।

पलाशभस्म मध्ये हरिताल और शंखिया बणताहै (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

कुश्ता हरताल वरकी खाकलोधमें चार पहरमें (उर्दू)

लोध पठानी एक सेरको फूंक कर खाकिस्तर बनाली जावे बाद अजां लोध पठानोमें हरतालवरको एक तोला देकर एन वसत खाकिस्तर चूल्हे पर बर्तन सवार कर दिया जावे और नीचे चार प्रहरतक आंच जारी रक्खे हरतालका सफेद रंगका कुश्ता होजावेगा, पुराने बुखारवालेको खुराक दो चावल । (सुफहा ५ अखबार अलकीमियाँ १।२।१९०७)

हरतालको चर्ख देनेकी तरकीब नीमके पानीमें तर रख भूसीकी आँच (उर्दू)

हरताल वरकी एक तोलाकी सालम डली लेकर बर्ग नीमके पानी पच्चीस तोलेमें किसी मिट्टीके बर्तनमें भिगोदे और धूपमें रखदे जब तमाम पानी खुश्क होजावे हडतालको अलहदा करके दो कपडमिट्टी करे जब कपडमिट्टी खुश्क होजावे भूसी चावल चालीस तोलेकी आंचदे मगर हवासे बचाकर जब सर्द होजावे निकालले, हरताल चर्ख खाकर बरंग सुर्ख किसी कदर स्याही माइल बरामद होगी, यह हरताल चर्ख खुर्दह मरीज जिरियानके एक चावल बराबर रोजाना बालाई या मसकामें खिलाना अकसीरका हुक्म रखती है, पुराने बुखार व खाँसीका तीन खुराकमें कलाकुम्भा होजाताहै, मरीज दमेको हलवेमें रख कर देना चार खुराकमें कामिल शफा होती है, अगर एलुवा और कुश्ता सदफ (सीपी) के साथ मिलाकर बवासीरवालेको खिलावे उम्रभर बवासीर नहीं होती । (सुफहा ५ अखबार अलकीमियाँ १६।३।१९०७)

हरतालकी सफेद खाक करनेकी तरकीब (उर्दू)

तुख्म मासफर यानी कडको हरतालके बराबर लेकर नजरून यानी जवाखार मिलाकर रातभर गरम तनूरमें रक्खे दूसरे रोज निकाले सफेद होजायगा। (सुफहा अकलीमियाँ १७४)

फवायद कुश्ता हरताल कायमुलनार (उर्दू)

(१) हरताल कायमुलनार और मुशम्माको यह भी खास्सा है कि फटेहुए दूधको अजसरनौ दुरुस्त करदेतीहै, (२) फटे हुए खूनको जजामीके दुरुस्त करदेतीहै (३) फेफडेका जो मर्ज सिलमें होताहै इसी हरतालसे मुन्दमिल होकर सिलका इलाज हकीकी होजाताहै (४) जितने जख्म और फोडे अन्दरून जिस्म होतेहैं सबका इलाज इस हडतालसे कामिल होताहै (५) पुराना कर्सा सोजाकका इसी हरतालसे दो चार रोजमें अच्छा होजाताहै। (सुफहा नं. १४ अखबार अलकीमियाँ १।६।१९०७)

कुश्ता हरताल बजरिये सत्यानाशी दाफै आतिशक व जजाम(उर्दू)

तरकीब कुश्ता हरताल वर्की, वर्ग सत्यानाशी मय शाखको बारीक पीस कर पांच सेरका नुगदा बनाकर दर्मियानमें एकतोले हरताल वरकी रखकर किसी बर्तनमें ऊपरसे सरपोश ढांककर बीस सेर उपलोंकी आंच दे २४ घंटेके बाद सर्द होनेके निकाललें बफज्ल खुदा उमदा कुश्ता होगा अर्जा जजाम व आतिशकके लिये हुक्म अकसीर रखताहै, खुराक एक चावलसे कम, बालाई या घीमें रख कर खाना चाहिये अर्जः जजाम व आतिशकके लिये हुक्म अकसीर रखताहै खुराक एक चावलसे कम बालाई या घीमें रख कर खाना चाहिये और गिजामें कसरत घीकी करना चाहिये। (सुफहा नं० १२ अखबार अलकीमियाँ १६।६।१९०७)

कुश्ता हरताल वरकीका नुसखा फासफोरसमें तर कर बकायनकी लुब्दीमें ५ सेर कोयलोंकी आँच (उर्दू)

एक साहब संगतरा जिला स्यालकोटसे बयान फर्माते हैं कि अगर हरताल वरकीको फासफोरसमें तर करके दरख्त बकायनके आधसेर नुगदेमें रखकर मजबूत गिलेहिकमत करके पांचसेर कोयलोंकी आंच देदे तो हडताल कुश्ता होजाती है जो साहब इसका तजरुबा करें अखबार अलकीमियाँमें अपने तजरुबेको जरूर दर्ज करादें। (सुफहा अखबार अलकीमियाँ १६।११।१९०६)

कुश्ता हरताल त्रिफला चोयादे शहदमें तर कर बेरकी छाल और थूहरके दूधकी लुबदीमें १० की आँच।

हलैलाकलाँ दस तोले, आँवला दस तोले, बहेडा दस तोले, सबको नीमकोब करके दो सेर पानीमें तीन रोज भिगो कर जोश दे जब कि एक सेर पानी रह तो नीचे उतार कर छान लेवे बाद हरताल वरकी दो तोलेकी एक डली लेकर इसको कडछी आहनीमें रखकर नीचे नरम आग जलाकर पानी मजकूरका चोवा दें जब तमाम पानी जज्ब होजावे तो नीचे उतारले बाद पोस्त दरख्त बेर ताजा २० तोले, शीर जकूम ३० तोले मिलाकर खूब घोट कर नुगदा बनालेवे और हरतालको शहद खालिसमें आलूदह करके नुगदेमें रख कर गिलेहिकमत करे और दो सेर पाचकदस्तीकी आग देवें तो हरताल कुश्ता बरंग सफेद होगा बदकर निस्फ चावल मुनक्का या मसकामें मरीजकी तबियत देखकर खिलावे इन्शा अल्लाह कौहनासे कौहना दमेके लिये निहायतही मुफीदहै ८८ सुफहा१४ अखबार अलकीमियाँ १६।११।१९०६–१)

कुश्ता हरताल वर्किया सफेद रंग नीबूके रसमें घोट टिकिया बना जीरा सफेदमें दो कंडोंकी आँच (उर्दू)

हरताल एक तोलेको २० तोले लैमूंके पानीमें खरल करके टिकिया बनावें और वह खुश्क करके एक पाचकदस्तीमें गढा खोदकर दस तोले जीरा सफेदका फर्श व लिहाफ करे और दूसरा उपला रख करें किसी महफूज मकानमें आगदें और सर्द होनेके बाद निकाले कुश्तासफेद रंगतका बरामद होगा। (सुफहा ११ अखबार वैशोपकारक लाहौर १४।११।१९०६)

तरकीब कुश्ता हरताल घीग्वारमें सात दिन घोट टिकिया बना हरनखुरीकी लुगदीमें दस सेरकी आँच (उर्दू)

हरताल वरकी १ तोला, घीग्वार (कारगन्दल) के रसमें ७ दिन खरल करे फिर टिकियां बना कर सुखालेवे और हरन खुरीके आध सेरके नुगदेके दर्मियान इस टिकियाको रख कर कपरौटी करके दस सेरकी आंच देदे तो कुश्ता हो (सुफहा ९ अखबार देशोपकारक ५।१२।१९०६)

हरितालभस्म।

ब्रह्मनौनियाको रस करै। काढि निपनिया न्यारो धरै॥ तिहि हरिताल खरलि दिन तीन। सुकै २ चौदह दिन कीन॥ बहुरि काचके सम्पुट भरै। गजपुट जुगति भली विधि करै॥ यों हरिताल टंक दश होय। पांच सेर छैनाले कोय॥ गजपुटमें दीजै परजारि। बहुरि सिराने लेय निकारि॥ कुष्ठ जु ग्यारह याते जाय। जो रोगी पथ संजम खाय॥ (रससागर.)

कुश्ता हरताल नीमके पानीमें घोट टिकिया बना खाक पीपलमें चार पहरकी आँच (उर्दू)

अगर नीमके पानीमें जो मुकत्तर करलिया गया हो हरताल वरकीको उसमें खरल करके टिकिया बनाकर सायेमें खुश्क करलें फिर खाकिस्तर पीपलमें देकर नीचे चार पह-

रकी आंच जलाई जावे तो हरताल कुश्ता होजाती है, बुखार, इश्तशकात, दमा, नामर्दी, वगैरह सबके लिये खुराक डेढ चावल (सुफहा ४ अखबार अलकीमियाँ १६ २।१९०७)

तथा च ।

पुनि हरिताल खरलमें देय । दश पलके ग्यारह पल लेय ॥ कारी रायसेनके फूल । रसकाढत जल देय न भूल ॥ इह रस सात द्यौस भरदेय । बहुरि चमेली पानहिं लेय ॥ याहूके रससों दिन सात । सब बूँटिनकी येकै बात ॥ औटे सेतसिरस जर आनि । औटि २ के लीजै छानि ॥ खररि सात दिन कविजन कहै। लोढा ज्यो न एक पल रहै ॥ रस ग्वारिके खररिजै प्रीति । सातों द्योस पाछिली रीति ॥ पुनि गोली कीजिये सुजान।मुनिबल्लभ कैसे फल जान ॥ बहुरि सुखैके सीसी भरै । कपरौटी दश ताकी करै ॥ छैना साठि तीनसै गनै । अतिनीचट लीजै आरनै ॥ तिनमें गजपुट देय बनाय । जो दिन आग एक दहकाय ॥ बहुरि सिराने लेय निकाल । गुरुप्रसादते बैठे ताल ॥ जिते किते मानसके रोग । यह हरताल भयो तिन जोग॥ अरु रुकती तांबेको खाय।देत हि सलु सफेद होजाय॥(रससागर बडा.)

तथा च ।

तबक बीन लेवै हरताल । बारह पहर खररमें घाल ॥ आठ पहरलों खरले गुनी। एक भाप पुट भाषै मुनी॥ऐसी पुट चौदहदे बीर । खररि २ बकरीके छीर ॥ काचढारि जो हांडी होय । तिनको डौरू कीजै लोय ॥ औषधि करिके मुद्रा करो । एक द्यौस जो सूखन धरो ॥ तब चूल्हे पै देय चढाय । द्वै दिन मन्दी आगि बराय॥ पुनि चढती २बारिजै । लकडी खैर बेरकी बारिजै॥चौंसठि पहर दीजिये आग । रात द्यौस ताके ढिग जाग॥शीतल स्वांग दीजिये हौन । तब उतारिके खोले दौन ॥ ऊपरकी हांडी सत होय । तरहर खरलि जानिजै लोय ॥ ता सतसम कपूर रस लेय । शंखद्राव सों सोखन देय ॥ द्वै दिन घालि खरल घसलेय । औषधि पुनि शीशीमें देय ॥ यंत्र खारिका लेय पचाय । शीशी फेर २ के राय ॥ जैसे बैठि तहनसी जाय। ऐसी भांति सिद्धि ह्वै जाय ॥ आधी रत्ती खायगो सोय । जाके होय बहुतसी जोय ॥ तबही करै चन्द्रकी कांति । रोगन दूरकरै बहु भांति ॥ अपसमार मन्दाग्नी जोय । कुष्ठ अठारह छिनमें जाय ॥ सन तेरह चौरासी बात। कास श्वास नासै जा खात॥दन्तरोग मुखरोग नसाय।पीनस और सिरोवर्त जाय ॥ बिंधि जो रोग मानस कीन । ते सब या औषध आधीन ॥ रस कल्यान या रसको नाम। सो आवैहै सबनके काम॥ जैसी जुगति कही जु बखान। जो ऐसी करसकै सुजान ॥ यह निहचैकै जानो सन्त । दुख दारिद्र भाजै छिनमन्त ॥ यह रसरतनागरे कही । कीनी बंगसैनते सही ॥ (रससागरबडा.) ॥

तथा च ।

हरतालको भेडके दूधमें ७ सात दिवसतक खरलमें घोटे फिर जमालगोटेके तैलमें खरल करनी तैल हरितालसे दूना लेना आतशीशोमें भरके अष्ट प्रहर अग्नि देनी फिर तैलमें खरल करनी और बारह प्रहर आग देनी फिर खरल करके १६ सोलह प्रहरकी आग देनी जबतक अधस्थ न होवे तबतक बारंबार अग्नि देणी, जब सब अधस्थ होजावे तब काष्ठोदुम्बरके काथसे कुष्ठोको देणी, १ एक रत्ती ऊपरसे दुग्ध घृत पिलावे इस प्रकार कुष्ठीको सात दिन देणी लवण नहीं देना । (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

तथा च ।

पीरे पान आकके आनि । कूट निचोर लेय रस छानि॥ ले हरताल टंक चालीस। उह रस खरे पुट इकईस ॥ रसरतनागरते मतलह्यो । यंत्रखारिका कविजन कह्यो ॥ मन्दी आग पहर द्वैचारि । चार पहरभर अगिन पजारि ॥ चार पहर ज्यों जठरा कही । गुरुप्रसाद ग्रंथनमें लही ॥ इही भांतिकै सीसी तीन । चंदिया बैठि जाय गुनलीन ॥ गुन अनिताको सकै बखानि । यह हरतार शुद्ध समजाजि ॥ मंडल कोची कुष्ठ न रहै। रकतविकार जाय कवि कहै ॥ (रससागर.)

तथाच ।

रस सैमरि फूलनिको लेहु । सत्तरि पुट हरतारहि देहु ॥ खरल सूत सुख जाय ह्वै छार । जोर सुदीजै सत्तरि बार॥ बारह पहर बालुका आगि । शीशीके नारे उडलागि ॥ पुनि सत खरले वेही रीति । सैमरके रससों करि प्रीति ॥ पहिलीसी

विधि जाने सही। सीसी सात पंच कवि कही॥ तांबो श्वेत करै छिनमात। बंगनीर सोखैगो सात॥ रस रतनाकर कही बखानि। करमतनी गति विधि ना जानि॥ कुष्ठ अठारह रहैं न गात। सनि तेरह चौरासी बात॥ (रससागरबडा.)

तथा च।

ले हरताल सेरभर मीत। जाके तबक होय अतिपीत॥ अंडी कीकर मींगनी पाय। एक सेर जेताके आय॥ पाके पान गोदरी आनि। तिनहिं दोंच रस लीजै छानि॥ ता रस खरलि पंच कविकहै। तीस पहर ज्यों हाथन रहै॥ आध सेर सीसीमें भरै। मुद्रिका करै जु खरिका धरै॥ चढती चढती आगि जु कही। सोरह पहर रैन दिन सही॥ सीतल भये लेहु सब फोरि। खरल मांहि पुनि देय बहोरि॥ बहुरचो रस जु प्याजको लेय। पुनि जु पहर बारह भरदेय॥ जाय सातई सीसी बैठि। ताके रहै लच्छिमी पैठि॥ जापै कृपा धनीकी होय। इह विधिकों कर जाने सोय॥ (रससागर बडा.)

तथा च।

पल पांचक लीजै हरताल। लेहु सिरसकी पलभर छाल॥ खरल करै सुखैके पीस। पुनि सीसी घाले कवि ईस॥ जंत्रबालुकामें सो धरै। तामें मुखहि न मूदे करै॥ पुनि तातर हर देय जराइ। पहरक मांहि नीर होजाइ॥ जब जाने पिघलो हरताल। चार टंक तब सोरा डाल॥ दूरि भयेते सोरा मेलि। परतहि आग्निमें करिहै पेलि जानो निकस गई जब झाँक। तव मुद्रा कर शीशी ढांक। बारह पहर बारि कठफारि। तब नीचे बैठे हरतारि॥ जाके ऊंचै भाग लिलार। ता पाछे बैठे हरतार॥ कुष्ठ हरै सब रक्तविकार। और बात जाने करतार॥ (रससागर.)

तथा च।

सेत काच तबकी हरतार। ग्रंथ देखि कहै सैदपहार॥ तब तेजाब साबुनको आनि। इकईस पुट खरलियो सुजान॥ सीसी आगि दीजिये तिसी। सोरह पहर जानिये जिसी॥ जंत्रबालुकाकी यह बात। सीतल भये फोरिये प्रात॥ पुनि सतु ले खरले उडि नीर। बारह पहर सुनै बलवीर॥ जितने खरल आगिदे तिसी। सीसी आठ जानिजे इसी॥ जो शुभ कर्म होय तातनै। तरहर बैठे कविजन भनै॥ खाये वृद्ध तरुण उनहार। अरु शरीरके जांहि विकार॥ (रससागरबडा.)

तथा च।

समकै ले पारो हरतार। खरल घालि तब करै विचार॥ पुट इकईस नींबके देय। इकइसौ पुट ग्वारिके गनेय॥ जितनौं थूहौ तितनौं आकु। देहु दूध पुट पहिले ताकु॥ घालि कचहरी मुद्रा करै। बारह पहर बालुका धरै॥ ऐसी सीसी तीन चढाय। जौ लौं बैठि तहनसी जाय॥ मानुस देह रोग हैं घनै। याके खाये हैं सब मनै (बडारससागर.)

तथा च।

लै पल पांच तबक हरतार। सूत एक पल यहै विचार॥ घसि कजरीकी बीनुकताय। एक पहर ज्यों अतिखरराय॥ ता पाछे जु नींबके पान। नीर बांटिके बस्तर छान॥ वा रस सौ १०० खरै यह रीति। बारह पहर जाइजो बीति॥ बहुरि सुखाकरि सीसी भरै। मुद्राके पुनि सूखन धरै॥ जंत्र बालुकामें सो धरै। आगि पहर द्वै मन्दी करै॥ पुनि चढती चढती दे आगि। सोरह पहर रैन दिन जागि॥ आठ पहरलों छुवै न कोइ। जैसे सीसी शीतल होइ॥ तब सीसी देखिये उघारि। पारो ताल उडि लागे नारि॥ लीजै तबहिं कचहरी फोरि। वो ही रसखररिये बहोरि॥ खरलि बहुरि पहिली मरजाद। संख्या जैसी कहीहै आदि॥ याको है पन्द्रहको आगि। पुनि औषधि नारै उडि लागि॥ बहुरि खररियो ग्यारह जाम। ग्यारह पहर आगिते ताम॥ पुनि दस खररि दसैंदे आगि। इह विधि पहर करो सब भाग॥ चौदह सीसी बैठे सोय। इह विधि जो तालहि सत होय॥ चौदह दिन तंडुल भरि खाय। नासे कुष्ठ जे बुरी बलाय॥ तीनों जुर तेरह सनिपात। अपसमार छिन लगे न जात॥ और बाय चौरासी जिती। खायेते सब नासैं तिती॥ जो शुभ करम होय ता तनै। सो वैसै करै

कविजन भनै ॥ जो तरहर बैठै हरतार । तौ निहचै तूठे करतार॥ (रससागर बडा.)

तथा च ।

रस हरतार संखिया होय । आना चार चार पल लोय ॥ आक दूधसों बारह पास । खरलत गुनी न होय उदास ॥ पुनि बारह थूहेको छीर । बारह छेरीको बिन नीर ॥ चौथे बहुरि भेडको आनि । यहै बहुरि बारह ज्यों जानि । सुकै सुकैहु चारि पुट देय । तब जु कचहरी मांहि भरेय ॥ अगिन पहर बारहकी कही । ऐसी गुरुग्रंथनमें लही ॥ जैसी जुगति एककी कोन । गुनी करीये सीसी तीन ॥ चांदी बैठि तरहटी जाय । याके गुन पहुमी न अमाय॥ इतनेहीमें जाने जान । रसरतनागर कही बखान ॥ या औषधिको खावे हेत । तांबाको करि जाने सेत ॥ (रससागर बडा.)

कुश्ता हरताल व शिंजर्फ (उर्दू)

हरताल वरकी एक तोलेको अव्वल बरगदकी डाढीके ४ तोले नुगदेमें देकर और इसके ऊपर एक पार्चेका टुकडा लपेटकर रोगन तलखमें दो घंटेतक पकावे बादहू अलहदा करके हुलहुल बूटीके एक सेर नुगदेमें हडताल मजकूर देकर खूब मजबूत कपरौटी करके पांच सेर चीथडे (पार्चा वोसीदह) को आंच दे जब सर्द होजावे निकाललले, निहायत उमदा बरंग सफेद कुश्ता बरामद होगा हुलहुल एक जाडका नामहै कद एक हाथ पत्ते छोटे फली बारीक पैदायश मौसम बरसातमें इसी तरकीबसे शिंजर्फका कुश्ता होसक्ता है आजमूदा है । (सुफहा ७ किताब अखबार अलकीमियाँ १६।३।१९०५)

कुश्ता हरताल चन्द अरकोंमें घोट टिकिया बना ढाककी खाकमें (उर्दू)

हरताल वर्की पावभर पुख्ताको अव्वल शीर मदार १२ तोलेमें खरल करे बादहू शीर जक्कूम (डुंडथूहर) २२ तोलेमें फिर पावभर कुचला लेकर दो सेर पानीमें पकावे, जब सेर भर पानी रहजावे तो बदस्तूर हरतालमें जज्ब करे, अजाँबाद अफयून दो छटांक आध सेर पानीमें हल करके हडतालमें खुश्क करे इस तरह भाँगरेका दो सेर पानीभी इसमें सोख्त करे इस्तरह यकेबाद दीगरे हस्बजैल बूटियोंका पानी हडतालमें जज्ब करके बारीक टिकिया बनालें, अर्क सम्हालू ऽ॥सेर, अर्क हाथीशुंडी ऽ॥सेर अर्क शाह तरह ऽ॥ सेर फिर इन टिकियोंको एक सबूचह गिलीमें खाकिस्तर पलास ४ सेर देकर सबूचहको मजबूतीके साथ गिलेहिकमत करे जब खुश्क होजावे देगदानपर रखकर सोलह पहरतक नीचे तेज आंच दे, बाद सर्द होनेके निकालले हडताल बरंग सफेद कुश्ता बरामद होगी खुराक एक सुर्ख, यह कुश्ता हस्बजैल मर्जोंको फायदा करता है, कुव्वत बाहके लिये बालाईमें रखकर सादापानीके साथ, इमसाकके लिये जायफलके साथ, पुरानी आतिशकके लिये, पानके साथ, जिस औरतका हैज न बंद होता हो शहदके साथ, पुराने तापके लिये सत्त गिलोइके साथ, जिसने कच्ची हरताल खाली हो आकरकराके साथ, धातुजारीके वास्ते मिश्रीके साथ, बवासीरके लिये जौखार ३ माशे कंद स्याह यक तोलाके साथ, आँखके दर्दके लिये रोगन जर्दके साथ, (बाकी आयन्दा) । (सुफहा ४ अखबार अलकीमियां १।६।१९०५ ई०)

कुश्ता हरताल अर्कोंमें घोट टिकिया बना ढाककी खाकमें (उर्दू)

लीजियेहरतालबर्की पावभर,पीसिये उसको खरलमें डालकर । बूटियां जिनका बताएँ हमपता, लीजिये उनसे अरक हर एकका। एक बूटीके अरकमें एक रोज,पीसते रहिये उसे एनेक रोज । करचुको हर एक अर्कमें जब खरल, जर्रा जर्रा इसका हो पानीमें हल । पतली पतली इसकी फिर टिकियां बनाउ, सायेमें इनको हिफाजतसे सुखाउ। इकगिली बर्तनमें लेकर सेर पांच, भरके खाकिस्तर पलास दे दीजै आंच। आंचको जब होचुके सवा पहर, फिर निकाले आग ठंढी देखकर।कुश्ता बनजावेगा भिस्ल सीमे खाम, दर्दमंदोंके बहुत आवेगा काम । बूटियाँ यह हैं बता देतेहैं हम, नज्ममें करदेते हैं इनको रकम । भांगरा; जक्कूम, बिसखपरा, कुँवार; ब्रह्मडंडी, हाथीशुंडी, और मदार । सात यहहैं आठवीं है काच पांच; याद करनेमें न कीजे तीन पांच । निस्फ रत्ती इसका मिकदारे खुराक, सत गिलोके साथ तप होजाइ नाक । हींगसे इसको मिलाकर खाइये,मुखलिसी दर्देशिकमसे पाइये।दर्दसे बेताब हों आंखें अगर, कालो मिच इसमें खाओ डालकर । खाइये परमेहमें हल्दीके साथ, रोकिये फीले रवाँ जल्दीके साथ। मिलके हो जल नीमसे तासीर यह, हो जजामीके लिये अकसीर यह । कुव्वते मर्दी हो वाह हो बेश्तर, तुख्मे उटंगन इससे मिलजावे अगर। (सुफहा नं० १६ अखबार अलकीमियां १६ । ६ । १९०५)

कुश्ता हरताल अकसीरी (उर्दू)

सरगीन गोकसे अर्क टपकाकर उस अर्कको जरेनेखमें लपेटकर दर्मियान एकबैंगनके कपरौटी करके आग नरम देवे सात बैंगनोंमें इसीतरह करनेसे कलई कजा करदेता

है और इकीसबार करनेसे मिसको रंगदेता है। (अजव्याज हकीम मुहम्मदफतहयाबखां सोहनपुरी)

कुश्ता हरताल अर्क घीग्वारमें घोट टिकिया बना पीपलकी राखमें आँच हाँडीमें (उर्दू)

सूर्मा बराइ बुखार हरकिस्म हरताल तबकी २ तोले आब घीग्वारसे खरल करके टिकिया बनाकर सायेमें खुश्क करले और खाकिस्तर पीपल दरख्तको एक हंडियामें भर कर दर्मियानमें टिकिया मजकूरको रखकर सरपोश देकर मुंह गिलेहिकमत करें आठ प्रहर नीचे आंच जलावें कुश्ता होजायगा। (सुफहा ४१ किताब अखबार अलकीमियां १६।४।१९०५)

हरताल भस्म।

मोठे सेवके रसमें हरताल तबकी साबूत भस्म होती है।

हरतालके सत्त्वपातनकी विधि।

कुलित्थक्राथसौभाग्यमहिष्याज्यमधुप्लुतम्। स्थाल्यां क्षिप्त्वा विदध्याच्च मल्लेन छिद्रयोनिना ॥ ५१ ॥ सम्यङ्निरुध्य शिखिनं ज्वालयेत्क्रमवर्द्धितम् । एकप्रहरमात्रं हि रंध्रमाच्छाद्य गोमयैः ॥ ५२ ॥ यामान्ते छिद्रमुद्घाट्य दृष्टे धूमे च पांडुरे । शीतां स्थालीं समुत्तार्य सत्त्वमुत्कृष्य चाहरेत् ॥ ॥ ५३ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-कुलथीका काथ, सुहागा, भैंसका घृत और शहद इनसे हरितालको घोटकर हांडीमें भर देवे, और उस हांडीके मुखपर छेदवाला ढकना ढांक मुद्रा कर देवे, फिर एक प्रहर तक मन्द मध्य और तीक्ष्ण क्रमसे अग्निदेवे और छिद्रपर गोबर रख देवे एक प्रहर अग्नि देनेके बाद गोबरको हटाकर छिद्रद्वारा देखे कि जब सफेद धुआं निकले तब फिर गोबरसे छिद्रको बन्द कर देवे और शीतल होनेपर हांडीको उतार कर सत्वको निकाल लेवें ॥ ५१-५३ ॥

तथा च।

शुद्धचूर्णस्य पादांशं मर्दयेन्नवसादरम् । चूर्णं द्विगुणतोयेन तत्तोयं निर्मलं पचेत् ॥ ॥५४॥ शनैर्लवणपाकेन यावत्तल्लवणं भवेत् । अथ तत्तालकं शुद्धं पादटंकणसंयुतम् ॥५५॥ टंकणार्द्रेन तच्चूर्णं मर्दयेत्कन्यकाद्रवैः । शरपुङ्खाद्रवैरेव शुद्धं तत्कूपिकोदरे । पचेद्यामाष्टकं यावत्सत्त्वरूपेण तिष्ठति ॥ ५६ ॥ (एक वैद्यकी सम्मति.)

अर्थ-विना बुझा हुआ चूना एक सेर नौसादर एक पाव इन दोनोंको २॥ ढाई सेर जलमें घोले इस प्रकार तीन दिवसतक रक्खा रहने देवे फिर उस पानीको छानि लेवे जिसमें चूने और नौसादरका मैला अंश न हो उस निर्मल पानीमें पकावै जब गाढा होजाय तब खार निकास लेवे तब हरताल एक १ सेर, सुहागा आध पाव और तीन पैसाभर पूर्वोक्त बनाया हुवा खार इन तीनोंको घीगुवारिके रससे और सरफोंकाके रससे दो दो पहर घोटि शीशीमें भरै और बालुका यन्त्रसे आठ पहरकी आंच दे सत्व निकासे इसमें सन्देह नहीं ॥ ५४-५६ ॥

तथा च।

जैपालसत्त्ववातारिबीजमिश्रं च तालकम् । कूपीस्थं बालुकायंत्रे सत्त्वं मुंचति यामतः ॥ ॥ ५७ ॥ (एक वैद्यकी सम्मति.)

अर्थ-हरताल आध सेर, जमालगोटाका बीज आध पाव, अण्डीके बीज आध पाव, इनको एक पहर घोटिके सीसीमें भरै, और उसका मुख बन्दकर बालुका यन्त्र द्वारा एक प्रहरकी आंच देवे सीसीके ऊपर जो लगा हो उसको हरतालका सत्त्व समझ कर निकाल लेवे ॥ ५७ ॥

तथा च।

हरतालको सात दिन कागजी नींबूके रससे, सात दिन घीगुवारके रससे, गोमाके रससे सात दिन, गंगातिरियाके रससे सात दिन घोटि पैसा पैसा भर टिकिया करै, और घाममें सुखावै उनको डमरूयंत्रमें रख आठ पहर आंच देदेवे, सत्व उडकर हांडीके गलेमें लगजायगा, उसको चाकूसे खुरच लेवे उस सत्त्वको आकके दूधसे एक दिन घोटि कर टिकरी कर घाममें सुखावै फेर डमरू यन्त्रमें रख कर आठ पहरकी आंच देवे इसी प्रकार बाईस बार आंच देवे प्रत्येक पुटमें आकके दूधसे एक २ दिनतक घोटे जब अधःस्थायी होवे तब उसको भस्म करै उस टिकरीको ढाककी राखमें रख हांडीका मुख बन्द करै, और चौबीस प्रहरकी आंच देवे, इतनी आंच देनेपर यदि टिकरी काले रंगकी नहीं आवे तो फिर एक दिन आकके दूधसे घोटि टिकरी बांधि सुखालेवे फिर उसी राखमें रख पूर्वोक्त रीतिसे मुख मुद्राकर बारह प्रहरकी आंच दे फिर उस टिकरीको शराव संपुटमें रख दो सेर जंगली आरने कंडोंमें अग्नि दे शीतल होनेपर निकाल लेवे दो रत्ती खावे तो रक्त विकार दूर हो, श्वास कास दूर हो, शीत दूर हो, धातु पुष्टि होय, ये दोनों क्रिया कल्याणके अनुभूत हैं इसमें दोष नहीं है।

हरताल भस्म।

मधुतुल्ये घनीभूते कषाये ब्रह्ममूलजे ॥ त्रिवारं तालकं भाव्यं पिष्ट्वा मूत्रेऽथ माहिषे ॥ ५८ ॥ उपलैर्दशभिर्देयं पुटं रुद्ध्वाथ पेषयेत् ॥ एवं द्वादशधा पाच्यं शुद्धं योगेषु योजयेत् ॥ ५९ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-ढाककी जडका काथ बनाकर उसके तुल्य सहत मिलाकर औटावे जब गाढा होजाय तब उतार कर रखलेवे उससे हरतालको तीन बार भावना देवे फिर भैंसके मूत्रसे तीन भावना देवे सुखाकर संपुटमें रख दस उपलोंकी पुट देवे शीतल होनेपर पुटसे निकाल पीसलेवे फिर पूर्वोक्त विधिसे भावना देकर बारह पुट देवे तो हरिताल भस्म होगा इसे समस्त योगोंमें लावे ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

हरतालके सत्त्वपातनकी विधि ।

पलालकं रवेर्दुग्धैर्दिनमेकं विमर्दयेत् ॥ क्षिप्त्वा षोडशिकातैले मिश्रयित्वा ततः पचेत् ॥ ६० ॥ अनावृते प्रदेशे च सप्तयामावधि ध्रुवम्॥ स्वांगशीतमधःस्थं च सत्त्वं श्वेतं समाहरेत् ॥ ६१ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-एक पल हरितालको एक दिवसतक आकके दूधसे घोट एक तोला तिलका तैल मिलावे उसको शीशीमें भर बालुकायंत्रमें सात प्रहरतक बंद हवाके मकानमें पकावे स्वांगशीतल होनेपर नीचे जमेहुए सफेद सत्त्वको निकाल लेवे ॥ ६० ॥ ६१ ॥

तथा च ।

छागलस्याथ बालस्य बलिना च समन्वितम् । तालकं दिवसद्वंद्वं मर्दयित्वातियत्नतः ॥ ६२ ॥ युक्तं द्रावणवर्गेण काचकूप्यां विनिक्षिपेत् । त्रिधा तां च मृदा लिप्त्वा परिशोष्य खरातपे ॥ ६३ ॥ ततः खर्परकच्छिद्रे तामर्धां चैव कूपिकाम्।प्रवेश्य ज्वालयेदग्निं द्वादशप्रहरावधि ॥ कूपीकंठस्थितं शीतं शुद्धं सत्त्वं समाहरेत ॥ ६४ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-हरतालसे चतुर्थांश गंधकको लेकर बाल बकरेके मूत्रसे दो दिवसतक घोटे फिर द्रावणवर्ग (मधु-घृत-सुहागा चरबी, गोमूत्र) से मिश्रितकर काचकी शीशीमें भरदेवे उस शीशीको तीन बार कपरौटीसे लीप और तेज घाममें सुखादेवे फिर उस शीशीको खिपरेके छेदपर रख बालुका यंत्रद्वारा बारह पहरतक आंच लगावे स्वांगशीतल होनेपर शीशीके गलेमें लगे हुए शुद्ध सत्त्वको निकाल लेवे ॥ ६२-६४ ॥

तथा च ।

पलार्द्धप्रमितं तालं बद्धा वस्त्रे सिते दृढे ॥ बलिनालिप्य यत्नेन त्रिवारं परिशोष्य च ॥ ६५ ॥ द्राविते त्रिफले ताम्रे क्षिपेत्तालकपोटलीम् । भस्मनाच्छादयेच्छीघ्रं ताम्रेणाऽऽवेष्टितं सितम् ॥ मृदुलं सत्त्वमादद्यात् प्रोक्तं रसरसायने॥६६॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-आधा पल (दो तोले) हरतालको लेकर छोटे २ टुकडे कर सफेद कपडेमें बांध ऊपरसे सुखा सुखाकर तीन बार गंधकका लेप कर गलेहुए तीन पल तांबेमें उस पोटलीको डालदेवे और शीघ्र ही ऊपरसे राखसे ढक देवे स्वांगशीतल हानेपर निकाल लिपटे हुए तांबेके पत्रोंपर गलेहुए सफेद और कोमल सत्त्वको निकाल लेवे यह हरितालका सत्त्व समस्त रसरसायनोंमें वर्तने योग्य है इसमें सन्देह नहीं ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

तथा च ।

चूना ८ पहर भिगो छोडना फिर निकाल लेणा । उस पाणीसे दरड की हुई हरिताल धोनी और उस चूर्णमें और पाणी छोडना फिर नितारके उससे धोणा ऐसे तीन बार धोणा फिर सुखाकर एरंडबीज हरितालसे आधे पाकर खूब खरल करना खरल करके शीशेमें पाणा । पर शीशेके भिट्टीमें मूंज मिलाकर कूटना उससे लीपना । लेप बराबर एकसा होवे उस शीशेको बालुका यंत्रमेंके आग देणी । पहिले शीशेका मुख बंद नहीं करना जब पीतिमा उडजाय तब बन्द करना बन्द करके आठ पहरकी आग देणी ऊपर लगजायगा सो उतारलेणा आधे सत्व होंगे फिर उन सत्वोंको नीबूके रसमें वा सिरकेमें ८ पहर खरल करके फिर उडाणे ॥ (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक) ॥

हरताल कायमुलनार करनेकी उमदा तरकीब चूनेसे (उर्दू)

हरताल वरकी दो तोलेको ५ सेर चूनाकली आवना रसीदःमें देकर चूनेके ऊपर पानी छिडके धुआँ और गुबारसा बहुत देरतक निकलता रहेगा जब चूना बिलकुल शिगुफ्तः होकर सर्द होजावे हरताल चूनेमेंसे बाहर निकाल ले इसी तरह दस बारा दफा अमल करें और हर बार चूना ताजा लेना चाहिये हरताल कायम होजावेगी । (सुफहा ३१ किताब इसरारुलकीमियाँ)

तथाच ।

ले हरताल टंक चालीस।धात्री गंधक मासे बीस॥ दोऊ बांटि जु एकतधरै। घृतमें सानिके टिकिया करै ॥ चुपर लुहेडा धरिया मांह। घृत मेलिये दश पल तांह ॥ आग धरी छः मन्दी करै। पुनि उतारि सीसीको धरै ॥ जब राती दीसे हरताल। पुनि उतारके पानी घाल॥ता रकेस तारसको नाम। जा खायेते बाढे काम॥तेरह सनि चौरासी वात। अरु सब रक्त विकार बिलात ॥ लघु किरिया दिन दीरघ करै।ते निवरै जे जाते गरै ॥ (रस सागर बडा.)

अथ हरतालका अग्निस्थायी सत्व ।

शुद्धं तालं समादाय द्रोणपुष्पीरसैर्भिषक् ॥ दिनानि सप्त संमर्द्य यंत्रे विद्याधरेपचेत्॥६७ यामानष्टौ पचेदग्नौ स्वांगशीतलमुद्धरेत् । ऊर्ध्वपात्रगतं सत्त्वं गृहीत्वा मर्दयेत्पुनः त्रिदिनं तद्रसैरेव ततो यंत्रे पुनः पचेत् । तदधो ज्वालयेदग्निमष्टयाममतन्द्रितः ॥ ॥ ६९ ॥ एवं पुनः पुनः कुर्याद्यावत्सत्त्वं स्थिरं भवेत । स्थैर्यं सर्वस्य नियतं जायते सप्तमेऽहनि ॥ ७० ॥ अष्टमेर्कस्य दुग्धेन मर्दयित्वैकवासरम् । यामानष्टौ पचेदग्नौ कुर्यादेवं त्रिवारकम् ॥७१ ॥ गलत्कुष्ठे तथा शोथे वातरक्तसमुद्भवे । वातरक्तेषु सर्वेषु योज्यं गुंजाद्वयोन्मितम् ॥ ७२ ॥ चोबची-

नीभवं चूर्णं गृहीत्वा टंकमात्रकम् । गुंजामात्रेण तालेन मिश्रितं मधुना लिहेत् ॥७३॥ तस्य नश्यति मूलेन फिरंगाख्यो महागदः । व्रणाः शुध्यन्ति सर्वेपि फिरंगोत्था न संशयः ॥ शीघ्रं श्लेष्मामयं हन्यादनलं च विवर्धयेत् ॥ ७४ ॥

अर्थ–हरताल शुद्ध कूं खरलमें डारि सात दिनतक द्रोण पुष्पी (गोमा) के रसमें घोटे जब गाढा होजाय तब पैसा पैसा भरिकी टिकरी बांधि घाममें सुखावै डमरू यंत्रमें घालि आठ पहर आंच देय स्वांग शीतल होनेपर हांडोमें जो सत चिपटा उसको चाकूसे निकाल लेवे फिर उस सत्वको गोमाके रससे तीन २ दिन घोट टिकिया बांधे घाममें सुखावे और डमरू यंत्रमें आठ पहर आंच देवे तब हरताल सिद्ध होय इस हरताल भस्मकी दो रत्तीकी मात्रासे लेकर आरम्भ करै अंगुली गलनेवाले वातरक्तमें देवे तो वातरक्त दूर होताहै वातरक्तकी सूजन गांठ घाव दूर होताहै नाककी पपडी दूर होतीहै । चार माशे चोबचीनीका चूरणमें एक रत्ती हरताल मिलाके शहदके साथ खावे तो गरमी दूर हो गरमीका पीब लोहू सूख जाताहै गरमीका बेग रुकजाताहै कफ दूर हो भूख खूब लागे ॥ ॥ ६७–७४ ॥ (एक भाषापुस्तक)

अकसीर शमसी व अकसीर बदनी ।

(अव्वल हरताल मोमियाँ दाफै जजाम व नामर्दी, दोयम रोगन नौसादर कायम हलकुनन्दः अजसाद सोयम हर दोसे रोगन हरताल उर्दू) हरताल वरकी ६ माशेकी सालम डली लेकर ७ रोजतक शीर मदारमें भिगो रक्खे बाद निकाल करके कपडेसे शीर वगैरः साफ करदे जो अच्छी तरह साफ होजावे बाद नौसादर ईरानी, नौसादर पैकानी, नौसादर हैवानी हर सह हम वजन लेकर बारीक सफूफ बनाकर रखले फिर हरतालको शहद खालिसमें आलूदह करके उसपर ४ रत्ती सफूफ मजकूरका छिडक दे और लेमूं कलाँके अन्दर रखकर ऊपरसे गिले हिकमत करलेवे और मेंगन बुजकी अखगर आगमें रखकर२०मिनटसे ३० मिनटतक तसव्वुर करे बाद निकालकर गर्मगर्म नुगदा या गिलोलाको तोड कर दुबारा शहदमें आलूदह करके इसपर ४ रत्ती सफूफ छिडक कर लेमूं कलांमें रखकर गिले हिकमत करके बदस्तूर अखगर आगमें तश्विया करे इसी तरह एक तद सर्तबः तश्विया करना होगा यह भी याद रहे कि ६–६ माशेकी दो डली लेकर बदस्तूर तय्यार करना चाहिये जो पूरा एक तोले वजन हरतालका तय्यार होजावे दो अदद लैमूंमें होगा यानी ६ माशे एकमें और ६ माशे दूसरेमें क्योंकि एक लैमूंमें एक तोला हरतालका होना मुश्किल है इस लिये अलहदा अलहदा तय्यार कर लेना चाहिये बाद असली तुकरा ३ तोले लेकर उसकी कटोरी यानी थाली इस कदर बडी बनावे जिस्में ३ तोले पानी पडसके फिर तवा आहनी या गिलीपर ५ सेर रेत डाल कर वह कटोरी इसपर रखदे इसमें हरताल मजकूर रखदे और चूल्हेपर रखकर नरम २ आग जलावें और अर्कपित्ता रोहूका चोवा डालताजावे जब कि एक सेर पित्ता रोहू जज्ब हो तो आग बंद करके तवा नीचे उतार लेवे सर्द होनेपर मुलाहिजा फर्मावे हरताल मोमिया होगा बकद्र एक सुर्ख मिस या नुकरा एक तोलेपर तरह करोगे तो बहुक्म खुदा हस्बमनशा कामयाबी होगी और शायद अगर हरताल मोमियाँका तेल करना मंजूर हो तो रोगन नौसादरका चोया देकर करलेवे बरंग सुर्ख तेल तय्यार होगा जिसकी तरकीब यह है नौसादर देशी ८० तोला बारीक पीसकरके हांडी गिली गिले हिकमत शुदःमें डालकर उसमें ८ सेर बोल खरस्याहका डालकर बंद करके तीन मन लीद अस्पमें जमीनके अन्दर दफन करलेवे चालीस रोजके बाद निकाल कर हांडीको चूल्हापर रखकर नरम नरम आग जलावे और सरपोशको खोलकर देखताजावे जब बोल खुश्क होकर नौसादर बाकी रहे तो नीचे उतार कर बरतन चीनीमें निकाले बाद सावका हांडी या दूसरी हांडी गिले हिकमत करके उसके नीचे तलीमें सूराख मिस्ल छलनीके करके नौसादरको इसमें डालकर रक्खे बाद गजपुट गढा खोदकर उसके अन्दर एक खुर्द गढा बनावे उस छोटे गढेमें प्याला चीनीका रखकर उसके ऊपर हांडी मजकूरको रखदे जो किनारा थालेसे हांडी मिलजावे और सूराख थालेके अन्दर रहे बाद हांडीके चारों तरफ एक मन रेत डालकर उसपर एक मन लीद अस्प खुश्क डालदे और आग लगावे जब कि आग सर्द हो तो हिफाजतसे हांडीको उठा कर प्याला निकाले इसमें तेल होगा वह तय्यार शुदः तेल कढाईमें डाल कर नरम २ आग जला कर खुश्क करलेवे तो वह नमक सफेद हो जावेगा बस दुबारा नमक तय्यार शुदःको बदस्तूर अव्वल सूराखदार हांडीमें डालकर गिले हिकमत करके गढाके अन्दर प्यालेके ऊपर रखकर और एक मन रेतका डालकर इसपर एक मन लीद अस्पकी आग देवे इसी अमलसे नौसादरका तेल बरंग सुर्ख और मिस्ल शहदके कवाय होगा बस यह हमेशाही तेलकी सूरतमें रहेगा अब हरताल मोमियांको करछी आहनीमें पार्चा अभरकपर रख कर चूल्हापर रखदे नरम आग जलाकर चन्द कतरा तेल नौसादरके डालते जावे तो इस अमलसे तेल हरताल सुर्ख रंगका होजाताहै बस तजरुबा शर्त है तय्यार करके देखे यह भी याद रहे कि हरताल मोमियां शुदः नामर्दको जवांमर्द और जजामवाले मरीजके लिये बमंजिला अकसीर है चन्द रोजमें जजामी अच्छा होजाता है ।

नोट–नौसादर बदस्तूर तय्यार कियाहुआ हरेक धातु कायमुल्नारको मोमियां और तेल करदेता है मेरा तजरुबा शुदः–अलमुश्तहर हकीम सय्यद गुलामअलाशाह मालिक शफा खाना हैदरी करांची । (सुफहा १० व ११ अखबार अलकीमियां १।५।१९०७)

रोगन हरताल शीरमदारका जुज पातालयंत्रसे (उर्दू)

रोगन हडताल किसी गिली कूजेमें जरनेख जर्द दाखिल करके जर्फ मजकूर शीर मदारसे पुर करदेवें फिर सरपोशसे लबबंदी करके जमीनमें ग्यारह रोज दफन रक्खें बादहू उसी दूधमें हडताल पीस कर छोटी गोलियां बनाकर खूब खुश्क होनेके बाद तार आहनीमें पिरोकर सबूचह गिलीमें इसी तरह लटका दे कि तार सटपोशसे पैबन्द हो

और गोलियोंका हिस्सा अन्दरसे और तारका इन्तहाई हिस्सा नीचे रोजनके जरियेसे बाहर निकला रहे और इसके नीचे शीशी रखदे सबूचाके अतराफ और ऊपर ४ सेर (३२० तोले) मामूली पाचक जमा कर आग लगावे इन्शाअल्लाह रोगन निकल आवेगा आजमूदा है (सय्यद अब्दुलकरीम नं. ११ संस्कारबाग तिरचनापली सुफहा ११ अखबार अलकीमियां १।५।१९०५)

पारा शिंग्रफ हरतालादि मोमिया करनेकी क्रिया ।

चूनाकली अनभिज्ञ १ सेर पक्का, लोटा सज्जी आध सेर पक्का, नौसादर पा १, शोरा पा १ सब भिन्न भिन्न बारीक करे गोमूत्र वडा १ चाटी १ में चूना आधा पावे बिछादेवे उसपर और चीजें रखकर आधा चूना ऊपर पावै फिर ऊपर गोमूत्र पाकर जल्दी बंद करे भाप न निकले बाकी मूत्र पीछेसे पावें हिलाकर बंद करे दूसरे दिन नितार कर पहले भांडेमें पावे एवं तीन चार वार उसको पकावे जब चिक्कण जैसा होवे तब उतारकर चीनीकी थालीमें पाकर रक्खे रातको तरेलमें द्रवितको शीशीमें पा रक्खे सारा द्रवित करलेवे इस द्रव बिचो आठ तोले चीनीके प्यालेमें पाकर चार तोले हरताल पाके नरम भूभलमें पकावे जब हरिताल जलरूप होजावे तो उतार लेवे उसको थालीमें पारक्खे रातको तरेलमें रक्खै जल नितार लेवे बाकी हरताल मोमिया रहेगा सो दवाहुई । एवं शिंग्रफ, संखिया पीत, मुश्ककपूर, संखियाश्वेत, जिस्तमीठा, पारा द्रवसे आधी चीज पाणी इसी तरह सब चीजां बनानियां, मोमी सो निर्धूम हो नगियां, पारद जो बणेगा आधा चावल १ तोले ताम्रपर पाणा । (जंबूसे प्राप्तपुस्तक)

अथ मैनसिलके भेद ।

मनः शिला त्रिधा प्रोक्ता श्यामाङ्गीकणवीरका । खंडाख्या चेति तद्रूपं विविच्य परिकथ्यते ॥ ७५ ॥ श्यामा रक्ता सगौरा च भाराढ्या श्यामिका मता । तेजस्विनी च निर्गौरा ताम्राभा कणवीरका ॥ ७६ ॥ चूर्णीभूतातिरक्ताङ्गी सभाराखण्डपूर्विका । उत्तरोत्तरतः श्रेष्ठा भूरिसत्त्वा प्रकीर्तिता ॥ ॥ ७७ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-मैनसिल तीन जातिका होता है श्यामांगी कणवीरका और खंडाख्या काली लाल और गौर वर्णवाली भारी हो उसे श्यामिका कहते हैं जो गौर वर्णसे रहित चमकदार और ताम्रके समान वर्णवाली हो वह कणवीरका तथा रेतके समान लाल रंगतवाली और वजनदार हो उसे खण्ड मैनसिल कहते हैं इनमेंसे उत्तरोत्तर अर्थात् पहलेसे दूसरी और दूसरीसे तीसरी मैनसिल अधिक सत्ववाली होनेके कारण उत्तम है ॥ ७५-७७ ॥

मैनसिलके गुण ।

मनःशिला सर्वरसायनाग्र्या तिक्ता कटूष्णा कफवातहंत्री । सत्त्वात्मिका भूतविषाग्निमान्द्यकंडूतिकासक्षयहारिणी च ॥ ॥ ७८ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-यह मैनसिल समस्त रसायनोंमें श्रेष्ठ है और यह तिक्त कटु उष्ण कफ वातके नाश करनेवाली सत्वरूप भूतविष मन्दाग्नि खुजली कास और क्षयका नाश करनेवाली है ॥ ७८ ॥

मनसिलका बयान (उर्दू)

मनसिल और हरतालका एकही खास्सा है सिर्फ रंगका फर्क है और वा ऐतबार रंगके तीन तरहकी होतीहै, एक कोनलह जो करीलाकी तरह सुर्खी और जर्दी मिलीहुई होतीहै, दूसरी सुर्खी माइल व स्याही होती है, तीसरी सुर्खी रंग गुल अनारकी तरह उसको कन्नेरी कहते हैं, एमालकीमियाईमें यही आला दर्जेकी है । (सुफहा अकलीमियाँ १६८)

अशुद्ध मैनशिलके दोष ।

अश्मरीं मूत्रकृच्छ्रं च अशुद्धा कुरुते शिला । मंदाग्निं मलबन्धं च शुद्धा सर्वरुजापहा ॥ ७९ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-अशुद्ध मैनसिल पथरी मूत्रकृच्छ्र मन्दाग्नि और कब्जको करतीहै और शुद्ध मैनसिल समस्तरोगोंको नाश करतीहै ॥ ७९ ॥

मैनसिलकी शुद्धि ।

अगस्त्यपत्रतोयेन भाविता सप्तवारकम् । शृंगबेररसैर्वापि विशुध्यति मनःशिला ॥ ॥ ८० ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-अगस्ति वृक्षके पत्तोंको कूट रस निकाले उससे सात वार मैनसिलको भावना देवे अथवा अदरखके रसकी सात भावना देवे तो मैनसिल शुद्ध होजायगी॥८०॥

तथा च ।

जयन्तीभृंगराजोत्थरक्तागस्त्यरसैः शिलाम् । दोलायंत्रे पचेद्यामं यामं छागोत्थमूत्रकैः । क्षालयेदारनालेन सर्वरोगेषु योजयेत् ॥ ॥ ८१ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-अरनी भंगरा और लाल अगस्त्य वृक्ष इन तीनोंका रस निकाल हांडीमें भर दोलायंत्रद्वारा एक प्रहरतक स्वेदन करे और इसी प्रकार १ एक प्रहरतक बकरेके मूत्रमें स्वेदन करै फिर कांजीसे धोकर समस्त रागोंमें प्रवर्तित करै ८१

मनसिल मुसफ्फा करनेका तरीका (उर्दू)

अमल शमसीके वास्ते चोता कलांके फूलमें ख्वाह सुर्ख हों या स्याह और चरबीमें और अमल कमरीके वास्ते गुल सफेद चोताकलां और चरबीमें साफ करे । (सुफहा अकलीमियाँ १७२)

मैनसिलके सत्त्वपातनविधि ।

अष्टमांशेन किट्टेन गुडगुग्गुलसर्पिषा । कोष्ठयां रुद्ध्वा दृढं ध्माता सत्त्वं मुंचेन्मनःशिला॥ ८२ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-मैनसिल और उसे आष्टमांश लोहकीट इन दोनोंको गुड गूगल और घृतके साथ घोटकर कोठीमें रखकर धोंके तो मैनसिलका सत्व निकल आवेगा ॥ ८२ ॥

तथा च ।

भूनागधौतसौभाग्यमदनैश्च विमर्दितैः । कारवल्लीदलाम्भोभिर्मूषां कृत्वात्र निक्षिपेत् ॥ ८३ ॥ शिलां क्षाराम्लनिष्पिष्टां प्रधमेत्तदनन्तरम् । कोकिलाद्वयमात्रं हि ध्मानात्सत्त्वंत्यजत्यसौ॥८४॥(रसरत्नसमुच्च.)

अर्थ-कैंचुवाका सत्त, सुहागा और मदन (मैनफल) इन तीनोंको करेलेके पत्तोंके रससे घोट मूषा (घरिया) बनावे उसमें अम्लवर्गसे पिसीहुई मैनसिलको रख सम्पुटदे और सुखाय एक प्रहरतक कोयलोंकी आंचमें धोंके तो सत्व निकलेगा ॥ ८३॥८४ ॥

सुरमाके भेद और गुण ।

सौवीरमंजनं प्रोक्तं रसांजनमतः परम् । स्रोतोंजनं तदन्यच्च पुष्पांजनकमेव च ॥८५ नीलांजनं च तेषां हि स्वरूपमिह वर्ण्यते । सौवीरमञ्जनं धूम्रं रक्तपित्तहरं हिमम् ॥ ॥ ८६ ॥ विषहिध्माक्षिरोगघ्नं व्रणशोधनरोपणम् । रसाञ्जनं च पीताभं विषवक्त्रगदापहम् ॥ ८७ ॥ श्वासहिध्मापहं वर्ण्यं वातपित्तास्रनाशनम् । नेत्र्यं हिध्माविषच्छर्दिकफपित्तास्ररोगनुत् ॥ ८८ ॥ पुष्पांजनं सितं स्निग्धं हिमं सर्वाक्षिरोगनुत् । अतिदुर्धरहिध्माघ्नं विषज्वरगदापहम् ॥ ॥ ८९ ॥ नीलांजनं गुरु स्निग्धं नेत्र्यं दोषगदापहम् । रसायनं सुवर्णघ्नं लोहमार्दवकारकम् ॥ ९० ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-सुरमा पांच प्रकारका होताहै सौवीरांजन, रसांजन, (रसोत), स्रोतोंजन (काला सुरमा), पुष्पाञ्जन (सफेद सुरमा), नीलाञ्जन । अब हम इनके पृथक् २ रूप लिखते है सौवीरनामका अंजन धूवेंकेसे रंगका होताहै और वह सुरमा ठंढा और रक्तपित्तको दूर करनेवाला है विष रोगोंमें उपरागी है श्वास कास हिध्मका नाशक वर्णको उत्तम बनानेवाला वातपित्तका नाशक है ॥ स्रोतोंजन ठंढा चिकना कषैला मीठा और लेखन (साफ करनेवाला) नत्रोंको हित हिध्म विष वमन कफ रक्त पित्त रोगको दूर करताहै ॥ पुष्पांजन सफेद चिकना ठंढा सब नेत्ररोगोंका नाशक होताहै अत्यन्त कठिन हिध्मा रोग विषके खायेसे उत्पन्न ज्वरको दूर करताहै और नीलांजन भारी चिकना नेत्रोंके त्रिदोषज रोगोंको निर्मूल करनेवाला रसायन सुवर्णको भस्म करनेवाला और लोहेको कोमल करनेवाला है ॥ ८५-९० ॥

सुरमेकी परीक्षा ।

वल्मीकशिखराकारं भंगे नीलोत्पलद्युति घृष्टं तु गैरिकच्छायं स्रोतोजं लक्षयेद् बुधः॥ ॥ ९१ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-उत्तम सुरमा वह है जो कि बमईके शिखरके समान हो तोडनेपर नील कमलके समान चमक हो । और घिसनेसे गेरूके तुल्य वर्ण हो उसको पंडित स्रोतोंजन कहते हैं ॥ ९१ ॥

सुरमेकी शुद्धि ।

सूर्यावर्तादियोगेन शुद्धिमेति रसांजनम् ॥ ॥ ९२ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-सुरमेंको सूर्यावर्त (हुलहुल) आदिके रसमें घोटे तो सुरमा शुद्ध होताहै ॥ ९२ ॥

तथा च ।

अंजनानि विशुद्ध्यन्ति भृंगराजनिजद्रवैः॥ ॥ ९३ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-समस्त प्रकारके सुरमें जलभंगरेके रसके साथ घोटनेसे शुद्ध होते हैं ॥ ९३ ॥

सुरमेंके सत्त्वपातनकी विधि ।

राजावर्तकवत्सत्त्वं ग्राह्यं स्रोतोञ्जनादपि । मनोह्वासत्त्ववत्सत्त्वमंजनानां समाहरेत् ॥ ॥ ९४ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-समस्त सुरमोंका राजावर्तक (रेउटी) और मनोह्वा (मैनसिल) के समान सत्वनिकालना चाहिये ॥ ९४ ॥

पारदबंधनयोग्य अंजन ।

गोशकृद्रसमूत्रेषु घृतक्षौद्रवसासु च । भावितं बहुशस्तच्च शीघ्रं बध्नाति सूतकम् ॥ ॥ ९५ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-सुरमेको गायके गोबरका रस गोमूत्र घृत शहद और वसा इनसे बहुत बार भावना देवै तो सुरमा पारेको शीघ्र बांध लेताहै ॥ ९५ ॥

मुरदारसिंगकी उत्पत्ति और भेद ।

हिमवत्पादशिखरे कंकुष्ठमुपजायते । तत्रैकं नालिकाख्यं हि तदन्यद्रेणुकाह्वयम् ॥ ॥ ९६ ॥ पीतप्रभं गुरुस्निग्धं श्रेष्ठं कंकुष्ठमादिमम्। श्यामपीतं लघु त्यक्तं सत्त्वं नेष्टं हि रेणुकम् ॥ ९७ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-हिमालय पर्वतके पास पर्वत शिखरोंपर कंकुष्ठ (मुरदारसिंग) उत्पन्न होताहै उनमें एकका नाम नालिक और दूसरेका नाम रेणुक है, पीली चमकवाला भारी चिकना जो होताहै उसे नालिक कहते हैं यह उत्तम है । दूसरा जो रेणुकनामका है वह काले पीले रंगका हलका सत्वरहित होताहै ॥ ९६ ॥ ९७ ॥

तथा च ।

हिमाचलैकदेशे तु कंकुष्ठमुपजायते । तदेकं नालिकाख्यं स्यादन्यद्रेणुकनामकम् ॥ ॥ ९८ ॥ पीतप्रभं गुरु स्निग्धं कंकुष्ठं शिल-

या समम् । मृद्वतीव शलाकाभं सच्छिद्रं नालिकाभिधम् ॥ ९९ ॥ रेणुकाख्यं तु कंकुष्टं श्यामपीतरजोनिभम् । त्यक्तसत्त्वं लघु प्रायः पूर्वस्माद्धीनवीर्यकम् ॥ १०० ॥ कंकुष्टं रेचनं तिक्तं कटूष्णं वर्णकारकम् ॥ कृमिशोथोदराध्मानगुल्मानाहकफापहम् ॥ ॥ १०१ ॥ (बृहद्योगतरङ्गिणी.)

अर्थ-हिमालय पर्वतके किसी स्थानमें कंकुष्ठ (मुरदारसिंग) नामका उपरस पैदा होताहै वह दो प्रकारका होता है एक नालिक और दूसरा रेणुक जो मैनसिलके समान रंगका हो भारी चिकना अत्यन्त कोमल और लम्बी सींकके आकारवाला हो उसको नालिक मुरदारसिंग कहते हैं और काली पीली रंगका रेत सत्वरहित और पूर्वसे लघु और न्यूनवीर्यका है, कंकुष्ठ दस्तावर चरपरा कडुआ गरम चहरेकी सुन्दरताका करनेवाला कृमि सूजन उदररोग गुल्म और अफरेके रोगको नाश करताहै ॥ ९८-१०१ ॥

कंकुष्ठके विषयमें विद्वानोंका मत ।

कतिचित्तेजिवाहानां नालं कंकुष्ठसंज्ञकम् ॥ वदन्ति श्वेतपीताभं तदतीव विरेचनम् ॥ रसे रसायने श्रेष्ठं निःसत्त्वं बहुवैकृतम् ॥ १०२ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-कुछ विद्वानोंका यह सिद्धान्त है कि तेजचलनेवाले जो घोडे होतेहैं उनके नालको कंकुष्ठ कहतेहैं वह अत्यन्त दस्तावर होताहै यह रस और रसायनमें उपयोगी है और जो अच्छा नहीं होता वह सत्तरहित और बहुत विकारवाला है ॥ १०२ ॥

तथा च ।

केचिद्वदन्ति कंकुष्ठं सद्योजातस्य दन्तिनः। वर्चश्च श्यामपीताभं रेचनं परिकथ्यते ॥ १०३ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-और कुछ विद्वानोंका यह मतहै कि सद्योजात (जो उसी समय उत्पन्न हुआ हो) हाथीके बच्चेकी जे काले पीले रंगकी विष्ठा होतीहै उसको कंकुष्ठ कहते हैं वह दस्तावर कहाता है ॥ १०३ ॥

कंकुष्ठके गुण ।

कंकुष्ठं तिक्तकटुकं वीर्योष्णं चातिरेचनम् ॥ व्रणोदावर्तशूलार्त्तिगुल्मप्लीहगुदार्तिनुत् ॥ ॥ १०४ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-कंकुष्ठ चरपरा कडुआ उष्णवीर्य अत्यन्त दस्तावर व्रण उदावर्त शूल गुल्म प्लीहा और बवासीरको दूर करता है ॥ १०४ ॥

कंकुष्ठकी शुद्धि ।

कंकुष्ठं शुद्धिमायाति त्रिधा शुंठ्याम्बुभावितम्॥ सत्त्वोत्कर्षोस्य न प्रोक्तो यस्मात्सत्त्वमयं हि तत् ॥ १०५ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-कंकुष्ठको सोंठके काथसे तीन बार भावना देवे तो कंकुष्ठ शुद्ध होताहै इसके सत्व खेंचनेकी विधि वर्णन नहीं कीगई क्योंकि यह स्वयं सत्वरूप है ॥ १०५ ॥

विषनाशके लिये कंकुष्ठ सेवन विधि ।

भजेदेनं विरेकार्थं ग्राहिभिर्यवमात्रया ॥ नाशयेदामपूर्त्तिं च विरेच्य क्षणमात्रतः ॥ १०६ ॥ भक्षतः सहताम्बूलैर्विसूच्यासून्विनाशयेत् ॥ बर्बुरीमूलिकाकाथे जीरसौभाग्यकं समम् ॥ कंकुष्ठ विषनाशाय भूयो भूयः पिबेन्नरः ॥१०७॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसुतबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायामुपरसोपवर्णनं नाम पञ्चपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५५ ॥

अर्थ-जिन मनुष्योंको कब्ज हो वह दस्तोंके लिये एक जौकी बराबर कंकुष्ठका सेवन करे तो थोडी देरही में आमको बाहर निकाल देताहै ताम्बूलके साथ भक्षण करनेसे दस्तोंको पैदाकर प्राणोंको नाश करदेताहै जो कंकुष्ठके खानेसे उत्पन्न हुए दस्त बंद न हों तो बेरमूलीके काढमें जीरा और सुहागा बुरकाकर कंकुष्ठके विष दूर करनेके लिये बारंबार पान करे तो दस्त बंद होते हैं ॥ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया भाषाटीकायामुपरसोपवर्णनं नाम पञ्चपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥५५॥

प्रकीर्णोपरसाध्यायः ५६.

उपरस वर्णन ।

गंधको वज्रवैक्रान्तो सिंदूरं बोलगैरिके । समुद्रफेनः खटिका द्वयं शंबूकतार्क्ष्यकम् ॥ १ ॥ कासीसं कांतपाषाणो वराटी शुक्तिहिंगुलौ । कंकुष्ठं शंखभूनागं टंकणं च शिलाजतु ॥ उक्ता उपरसा एते द्रव्यनिर्णयकारिभिः ॥ २ ॥ (बृ० यो०)

अर्थ-गंधक, हीरा, वैक्रान्त, सिन्दूर, बोल, गेरू, समुद्रफेन, खडिया, शम्बूक (घोंघा), तार्क्ष्य, हीराकसीस, कान्तपाषाण, कौडी, सीप, हिंगुल, कंकुष्ठ (मुरदासिंग), शंख, कैंचुआ, सुहागा और सिलाजीत द्रव्यके ज्ञाता मनुष्योंने इनको उपरस कहा है ॥ १ ॥ २ ॥

अन्यच्च ।

गंधो हिंगुलमभ्रतालकशिलाः स्रोतोंजनं टंकणं राजावर्तकचुम्बकौ स्फटिकया शंखः खटीगैरिकम् ॥ कासीसं रसकं कपर्दिसिकताबोलाश्च कंकुष्ठकं सौराष्ट्री च मता

अमी उपरसाः सूतस्य किंचिद्गुणैः ॥ ३ ॥ (र० सा० प०)

अर्थ–गंधक, हिंगुल, अभ्रक, हरताल, मैनसिल, सुरमा, सुहागा, राजावर्त, चुम्बक, फिटकिरी, शंख, खडिया, गेरू, कसीस, रसक, कौडी, रेणुका, बोल, कंकुष्ठ (मुरदासिंग), मुलतानी इनको उपरस कहते हैं, जो कि पारदके कुछ गुणोंसे युक्त हैं ॥ ३ ॥

साधारण रस तथा सम्पूर्ण सत्त्वोंकी शुद्धि।

साधारणरसाः सर्वे मातुलुङ्गार्द्रकाम्बुना। त्रिरात्रं भाविताः शुष्का भवेयुर्दोषवर्जिताः ॥४॥ यानि कानि च सत्त्वानि तानि शुध्यन्त्यशेषतः ॥ ५ ॥ ध्मातानि शुद्धिवर्गेण मिलन्ति च परस्परम् ॥ ६ ॥ (र० र० स०)

अर्थ–समस्त साधारण रसोंको तीन राततक बिजोरे और अदरखके रसकी भावना देकर सुखालेवे तो समस्त साधारण रस शुद्ध होते हैं और जितने सत्त्वहैं वे भी शुद्ध होतेहैं शुद्धिवर्गसे युक्त सत्त्व धोंकनेसे मिलजाते हैं ॥ ४–६ ॥

सम्पूर्ण रस और उपरसोंकी शुद्धि तथा सत्त्वपातनकी क्रिया।

सूर्यावर्तककदली वन्ध्या कोशातकी च सुरदाली। शिग्रुश्च वज्रकंदो नीरकणा काकमाची च ॥ ७ ॥ आसामेकरसेन तु लवणक्षाराम्लभावितं बहुशः[1] ॥ शुध्यन्ति रसोपरसा ध्माता मुञ्चन्ति सत्त्वानि ॥८॥ (र० र० स०)

अर्थ–हुलहुलका पंचांग, केला, बाँझककोडा, तोरई, देवदालि, सहँजना, शकरकंद, सुगंधबाला, और पीपल, इनमेंसे किसी एकके स्वरस करके लवण, क्षार और चूका आदि खटाई समेत बहुत वार भिगोयेहुए रस और उपरस शुद्ध होजाते हैं और ये ही रस और उपरस धोंकेहुए सत्त्वोंको भी छोडदेते हैं ॥ ७ ॥ ८ ॥

सुहागा तेलिया बनाना (उर्दू)

यह दो तरहसे बनाया जाता है, अव्वल सुहागेको बडी खुली कढाईमें डालकर आगपर रखकर खील करलो फिर खरलमें डालकर ४ घंटे तक खूब रगडो फिर कढाईमें डालकर आगपर रखदो वह फिर फूल जावेगा, इसे फिर ४ घंटे खरल करो इसीतरह करते जाओ हत्ताकि इसका फूलना वंद होकर सिमटाउ शुरू होगा, जब अच्छी तरह सिमिट चुके तब बस करे यह आगपर कायमुल्नार होता है लेकिन ज्यादह सख्त ताउसे पिघलकर बिलकुल तेल होजाताहै मगर सर्द होकर काचकी तरह सख्त होजाता है यह अजीब चीज है और बडी कारामद शै है इससे बडे२ काम निकलते हैं मेरे पास तय्यार मौजूद है, दोम मजकूरहवाला सुहागेको किसी नीमकायम शोरेमें बराबरका मिलाकर खूब खरल करो ३ प्रहरकी रगडाईसे मक्खन होजावेगा। (सुफहा ६ अखबार अलकीमियाँ ८।४।१९०९)

टंकणशोधन आवश्यकता (शोधन गुण)

अशुद्धष्टंकणो वान्तिभ्रान्तिकारी प्रयोजितः। अतस्तं शोधयेदेष वह्नावुत्फुलितः शुचिः ॥ ९ ॥ टंकणो वह्निकृत्स्वर्णरूप्ययोः शोधनः सरः। विषदोषहरो हृद्यो वातश्लेष्मविकारनुत् ॥ १० ॥ (बृ. यो.)

अर्थ–अशुद्ध सुहागा वमन और चक्करको करता है इस लिये शुद्ध करे। शुद्धि इसप्रकार है खिपरेको आँचपर रख और उसमें सुहागेको रख फूला करलेवे यह सुहागा अग्निको वढानेवाला, सुवर्ण और चांदीका शुद्ध करनेवाला, दस्तावर विपके दोपका हर्ता, हृदयको हितकारी, वात और कफका नाशक है ॥९॥ १० ॥

सुहागेके भेद (उर्दू)

सुहागेकी तीन किस्में हैं अव्वल सफेद, दोयम नीलकंठी, सोयम् सीसफट मुतरज्जिम दो किस्मका सुहागा बाजारमें मिलता है, पहली सफेद जिसको सुनारी सुहागा कहते हैं और उसको सुनार धातुके गलानेके वास्ते काममें लाते हैं। दूसरी नीलकंठी जिसको तेलिया सुहागा कहते हैं और जो एक एक अंगुलके बराबर कलम होती हैं, सीसफट भी सफेदको कहते हैं लिहाजा हस्त अहबाब मुरासिला हकीम नूर आलम साहबने सुहागेकी दोही किस्में लिखी हैं सफेद, नीला। (सुफहा अकलीमियाँ १६९)

कांतपाषाणगुण।

चुम्बको लेखनः शीतो मेदोविषगदापहः। कंडूदरक्षैण्यहरो मोहमूर्च्छायलोहहृत् ॥ ॥ ११ ॥ (बृ. यो.)

अर्थ–चुम्बक लेखन, ठंढा, मेद और विषके रोगोंको नाश करता है। खुजली, उदररोग, क्षीणता, मोह और मूर्च्छाको दूर करता है ॥ ११ ॥

शंखगुण।

शंखः क्षारो हिमो ग्राही ग्रहणीरोगनाशनः। नेत्रपुष्पहरो वर्ण्यस्तारुण्यपिडिकाप्रणुत्। अशुद्धो गुणदो नैष शुद्धोऽम्लैः स गुणप्रदः ॥ १२ ॥ (बृ. यो.)

अर्थ–शंख खारके समान रसवाला, ठंढा, काबिज, संग्रहणी और अतीसारको नाश करता है नेत्रफुल्लीको हरनेवाला जवानीकी फुन्सियों (मुहासोंको) हरता है और अशुद्ध शंख गुण नहीं करता है। और खटाईसे शुद्ध होता है ॥ १२ ॥

दक्षिणावर्तशंख गुण।

दक्षिणावर्तशंखस्तु त्रिदोषघ्नः शुचिर्निधिः। ग्रहालक्ष्मीक्षयक्ष्वेडक्षामताक्षिक्षयाक्षमी ॥ ॥ १३ ॥ (बृ. यो.)

अर्थ–दक्षिणावर्त (जिसका घुमाव सीधा हो) शंख

[1] भाविता बहुशः।

त्रिदोषको नाश करता है ग्रह, अलक्ष्मी (दरिद्रता), क्षय, विष, कृशता और नेत्ररोगोंको नाश करता है ॥ १३ ॥

शुक्ति (सीप) का गुण ।

शुक्तिका शिशिरा पित्तरक्तज्वरविनाशिनी ॥ १४ ॥ (बृ. यो.)

अर्थ-सीप ठंढी होती है रक्तपित्त और ज्वरको नाश करनेवाली होती है ॥ १४ ॥

रक्तबोलगुण ।

बोलं रक्तहरं शीतं चक्षुष्यं वाय्पनं सरम् । जरापस्मारकुष्ठघ्नं गर्भाशयविशोधनम् ॥ ॥ १५ ॥ (बृ. यो.)

अर्थ-बोल ठंढा, रक्तपित्तको हरनेवाला, नेत्रोंको हित, पुष्टिकारक और दस्तावर होता है । तथा बुढापा, मृगीका रोग और कुष्ठरोगका नाशक है और गर्भाशय (रेहम) को शोधनेवाला है ॥ १५ ॥

श्यामबोलगुण ।

श्यामबोलं तीक्ष्णगंधं दद्रुकंडूविषापहम् । कुष्ठापस्मारबंधार्शोरक्तग्रंथिं च नाशयेत् ॥ ॥ १६ ॥ (बृ. यो.)

अर्थ-श्यामरंगका बोल, तेज गंधवाला, दाद और खुजलीके विषको दूर करता है, कोढ, मृगी, कब्ज और बवासीरके रक्तको नाश करता है ॥ १६ ॥

मानुषबोलगुण ।

अपरं मानुषं बोलं सद्योव्रणरुजापहम् । भग्नास्थिसंधिजननं त्रिदोषशमनं हिमम् ॥ ॥ १७ ॥ धातुकांतिवयःस्थैर्यबलौजोवृद्धिकारकम् । प्रमेहकुष्ठपिडिकासर्वव्रणविषापहम् ॥ १८ ॥ (बृ. यो.)

अर्थ-और तीसरा मानुषबोल नवीन व्रणकी पीडाको दूर करता है, टूटीहुई हड्डीको जोडताहै, त्रिदोषको शान्त करनेवाला और ठंढा है धातु, कान्ति, अवस्था, स्थिरता, बल और ओजको बढानेवाला है तथा प्रमेह, कोढ, फुन्सी और घावकी पीडाको नाश करता है ॥ १७ ॥ १८ ॥

खटिकाद्वयगुण ।

खटी दाहास्रनुच्छीता कफघ्नी चक्षुषोर्हिता। तद्वत्पाषाणखटिका व्रणपित्तास्रजिद्धिमा॥ ॥ १९ ॥ (बृ. यो.)

अर्थ-दोनों प्रकारकी खडिया दाह और रक्तविकारको हरनेवाली ठंढी कफको दूर करनेवाली और नेत्रोंको हित है इसी प्रकार पाषाणखटिका भी घाव पित्त तथा रक्तविकारको जीतती है और ठंढी है ॥ १९ ॥

शम्बूक (शिखले घोंघा) गुण ।

शम्बूकः शीतलो नेत्ररुजाविस्फोटनाशनः। शीतज्वरहरस्तीक्ष्णो ग्राही दीपनपाचनः॥ ॥ २० ॥ (बृ. यो.)

अर्थ-घोंघा ठंढा नेत्ररोग और फोडा फुन्सीको नाश करता है तथा शीतज्वरका हरनेवाला, ग्राही (कब्ज करनेवाला) दीपन और पाचन है ॥ २० ॥

समुद्रफेनगुण ।

समुद्रफेनश्चक्षुष्यो लेखनः शीतलः सरः । कर्णश्रावरुजाग्रंथिहरः पाचनदीपनः ॥ ॥ २१ ॥ अशुद्धः स करोत्यंगभंगं तस्माद्विशोधयेत । समुद्रफेनः संपिष्टो निम्बुतोयेन शुध्यति ॥ २२ ॥ (बृ. यो.)

अर्थ-समुद्रफेन नेत्रोंको हित, ठंढा और दस्तावर होता है तथा कानोंका बहना या पीडाको हरता है एवं दीपन और पाचन है अशुद्ध समुद्रफेन अंगभंगको करता है इसलिये समुद्रफेनको नींबूके रससे घोट शुद्ध करलेवे ॥ २१ ॥ २२ ॥

रसांजन (रसौत) के गुण ।

रसांजनं कटु श्लेष्ममुखनेत्रविकारनुत् । तिक्तोष्णं प्रदरध्वंसि व्रणघ्नं च रसाञ्जनम् ॥ २३ ॥ (बृ. यो.)

अर्थ-रसौत चर्परी, कफरोग, मुखरोग और नेत्रविकारोंको दूर करती है कडवी तथा उष्ण होती है प्रदर और व्रण (घाव) को नष्ट करती है ॥ २३ ॥

सज्जीकी शुद्धि और गुण (भाषा)

सज्जीको बारंबार नितारके पकाणेसे सज्जी बहुत उत्तम बनजाती है और हरितालको कायम करती है और हरितालका रंग लालसिंग्रफ जैसा होजाता है । (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

सफाई सज्जी (उर्दू)

कोरी घडियामें पानी भरकर सज्जीको पीसकर उसमें डालदे और घडियाके मुँहपर प्याली ढककर ऐसी जगह रक्खे जहां हवा न लगे तीन चार दिनतक घडियाके ऊपर निहायत साफ शै बाहर निकलेगी इसे उतारकर काममें लावे । (सुफहा ११२ किताब कुव्वतैजात हजारी)

शोराकायम (भाषा)

निंबूके पत्र शोरेसे चतुर्गुण लेके हांडीमें पत्र और शोरा तहबतह देकर ६ बट्टी गोहेकी आग देनी वा जितनेसे पत्र सडजांय उतनी आग देनी शोरा कायम होजायगा वा आकके पत्र । (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

शोरादामका बूराशोरा कायमुलनार(उर्दू)

मेरा तजरुबा आजमूदः और चीदः अज हमह तरकीब कायमुलनार खवास मुशम्मा जो सम्मुलफारका राह बर कामिल है जैलमें अर्ज करता हूं शोरा हस्ब जरूरत लेकर पास रक्खे और एक जर्फ गिली लेकर अव्वल उसमें वर्ग दरख्त बेरी तुर्शके जो बकदर ३० तोले हो तह बिछावे और उसपर ५ तोले शोरा पोशीदः करे फिर उसपर ३० तोले वर्ग साहांजनहके बिछावे उसपर उसके फिर तोलाभर शोरा बुरबुरा देवे ऊपर उसके ३० तोला वर्गभंग सबज बिछादेवे ऊपर उसके फिर ५ तोला शोरा बुरबुरा देवे ऊपर

उसके फिर बर्ग दरख्त बेरी तुर्श बिछाकर सरपोश देकर चूल्हेपर रखकर अव्वल ३ घंटे आग मौतदिल बाद दो घंटे तेज जलावे इन्शा अल्लाहताला शोरा जर्फमें चर्ख खाकर बैठ जावेगा, इस शोरेको निकालकर खाकिस्तर बर्गहाइसे साफ करके कूटकर बारीक खरल करे और आसार पुख्तः आब चाहमें भिगोकर दो रक्खे और तोले सुहागा भी बारीक खरल करके इसमें डालदे और किसी लकडीसे दोतीन मर्तबः बाद चारचार घंटे हिलादिया करे और ८ पहर बाद इसका नितारह जरा अलफासे लगाकर लेवे और इस मुकत्तरको नरम नरम आंचसे पकाकर पानी सब खुश्क करलेवे और शोरेको जब खुश्क हो जावे कोयलापर या मिस सुर्ख करके डालकर देखे इन्शा अल्लाहताला आला-दर्जेका कायमुल्नार और गव्वास और मुशम्मा होगा इससे जो सम्मुलफार या कुछ और रूह कायम किया जावेगा इसमें भी यही औसाफ होंगे। (सुफहा ९ व १० अखबार अलकीमियाँ २४।२।१९०९)

शोरा कायम (उर्दू)

शोरा बरोके पत्तोंमें तहबतह देकर आग देदो। (सुफहा ८० किताब कुश्तेजात हजारी)

शोरा कायमुलनार करनेकी तरकीब (उर्दू)

मुतरिज्जमने शोरा कायमुल्नार इस्तरह बनाया था कि शोराको कढाईमें रखकर ऊपरसे रोगन सर्षप यानी कडवा तेल मसावी डाल दिया और आगपर रखदिया यहांतक कि तेलमें खुद बखुद आग लगगई और फरो होगई और शोरा कायमुलनार होगया इससे धुआं नहीं निकलता है और सफेद होताहै अर्क चौलाई जंगलीसे भी मिस्ल अर्क आगके अमल करनेके शोरा मजकूर कायमुल्नार होजाता है। (सुफहा अकलीमियाँ २६५ का हाशिया)

शोरा कायम।

लोटा सज्जो १ सेर, चूना १ सेर दोनों चीजों भेडणियां दिनदो तीसरेदिन सुहागा १। पाव पीसके पादैणा शहद ३ तोले घृत ३ तोले पा दैणा नौसादर ½ सेर पादैणा चौथेदिन सब पानी नितार लैणा फिर शोरा आधसेर कढाईमें पाके हेठ कौलयांदी आग तेज करके ऊपरों चोया देणा जब शोरा कायम होजावे तब तुरंत होर भांडे विच पाणा परीक्षा करलैणी। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

कायमशोरा (उर्दू)

उस्तादान फनका कौल है कि शोरेको संगजराहत कायम करता है और कायमी शोराकी तरकीबमें संग जराहतका शामिल करना जरूरी है। (सुफहा ५ अखबार अलकीमियां १।१२।१९०६)

शोरेको कायमुलनार व मोमिया करनेकी तरकीब (उर्दू)

सेरभर शोरा लेकर कढाईमें रखकर आगपर चढादे जब पानीकी तरह होजावे तो अर्क बर्ग जर्द दरख्तमदार जिसको आगमें गर्म करके निकाललिया हो पैसे भर डालदे ताकि फिर वह सख्त होजावे फिर दुबारा पिघलाकर पैसा भर अर्क मजकूर डालदे यहांतक कि आखिर अर्क इसीतरह उसपर जज्बकरे कायमुलनार होजावेगा अब इस शोरेको पीसकर चीनीके बर्तनमें रखकर रातको शबनममें रखदे सुबहको मक्खनकी तरह होजावेगा। (सुफहा अलकीमियाँ २६५)

नमककायम नमूदन (उर्दू)

चूना आबनारसीदः १ सेरके दर्मियानमें डली नमक खुर्द करके रक्खे रकाबीमें और रकाबी ढककर सबसे खूब मजबूत बंद करके ७ सेर उपले जंगलीमें आग देवे फिर निकालकर इसीतरह करे तीन अमलमें नमक कायम होजावेगा और यह नमक आगपर चर्ख खायेगा। (अज बियाज हकीम मुहम्मदफतहयाबखां सोहनपुरी)

सफेदा (उर्दू)

अस्फीदाजको फार्सीमें सफेद आब और हिन्दीमें सफेदह कहते हैं यह सुर्ब और जस्त और कलईमेंसे किसीको जलाकर राख करके सिरका आमेज करके बनाते हैं सीमाबको इसके हमराह अगर तसईद करे तो उसको खुश्क करता है। (सुफहा अलकीमियाँ ६६)

हरकिस्मका सफेदा बनानेकी तरकीब (उर्दू)

(नं० १) सफेदा काशगरी-सुर्बको लेकर मट्टीकी हांडीमें गुदाज करे और आहनी कफीरसे चलावे जिसमें राख होजावे बादहू दूसरी हांडीमें रखकर मुंह बंद करके तनूर रखदे और एक रोज आगदे बादहू सिरका मुकत्तर गिरावे और एक हफ्तेतक रहने दे कुलसफेदा निहायत शफाफ होजायगा काममें लावे।

(नं० २) सफेदा मरहम इसको सफेदा कलमी भी कहते हैं रांगा सेरभर लेकर गर्म करे और सीसा तोलेभर उसमें मिलाकर दो पट्टे घीग्वारके डालदे यहां तक कि पट्टे मजकूर सोख्त होजावें बाद उसके ६ तोले अजवाइन उसमें मिलावे और सोख्त करे बाद उसके तीस पत्ते मदारके डालकर चलावे और अच्छी तरह पकावे और जलावे यह सफेदा मरहमके वास्ते कारामद है।

(नं० ३) सफेदा गुल मोहरा जिसको सफेदा फार्सी भी कहते हैं अकसर काम आताहै कलमी मुसफ्फा एक जुज लेकर हांडीमें रक्खे और थोडा नमक डालकर नरम आगपर पकावे और घिसता जावे बाद उसके किसी कूजमें रखकर गिलेहिकमत करके शीशःगरों या कुम्हारोंकी भट्टीमें रक्खे और जबतक निहायत सफेद न हो भट्टीमें रहने दे यह सफेदा एक तोला दूसरे तीनतोले सफेदेके बराबर काम देताहै जिसको कागजकी तरह लपेट सक्तेहैं और उसकी काट ऐसी होती है कि लोहा और शीशा कटसक्ता है और खराब नहीं होती इसमें दो फसले हैं। (सुफहा ९५ किताब अलजवाहर)

तरकीब कुश्ता तूतिया सफेद जर्द फूलना बूटीमें (उर्दू)

जर्दफूलका नाम जो एक किस्मकी बूटा कुर्व जवारमें पानीके होती है, एक हाथ दो हाथ तूलन उस्तादह होतीहै, पत्ती इमलीके पत्तेसे कुछ बडी और दन्दार होती है एक

डली मुसल्लिम तूतिया दो तोलेकी एक कुल्हियागिली आत्शनारसोदःमें डली तूतियाकी रखकर इसकदर बूटी मजकूरका अर्क डाले कि तूतिया डूब जावे मुहँ कुल्हियाका बंद करके अन्दाजन धीमी आंच कंडोंकी देवे बहुत उमदा अकसीरी खाक होगी। (सुफहा १३ अखबार अलकीमियाँ १६।१०।१९०७)

तरकीब कुश्तातूतिया सफेद नकछिकनीमें (उर्दू)

बर्ग नकछिकनी जर्दगुलके नुगदेमें रखकर कपरमिट्टी करके एकसेर पुख्तः सहराई पाचककी आंच दे कुश्ता सफेद हस्ब मनशा तय्यार होगा। (सुफहा नं० १३ अखबार अलकीमियाँ १६।१०।१९०७)

कुश्तातूतिया बरंगसफेदकी तरकीब थूहरमें (उर्दू)

डंडा थूहर एकबालिश्त लेकर उसमें तूतिया ६ माशेकी डली बंद करके खूब गिलेहिकमत करे फिर पांच सेर उपलोंकी आंच देदे जब सर्द होजावे तो निकाल ले तूतिया बरंग सफेद कुश्ता होकर बरामद होगा। (सुफहा ५ अखबार अलकीमियाँ)

तरकीब कुश्ता तूतिया सफेद काफूरमें (उर्दू)

काफूर दो तोले एककुलिया गिलीमें बंद करके उसके दर्मियान तूतिया सबज ६ माशे एक काफूरके दर्मियानी हिस्सेमें देकर कुलियाका मुहँ गिलेहिकमत करके चारसेर पुख्तःकी आंच देदे बाद सर्द होनेके निकाल ले, तूतिया बरंग सफेद कुश्ता होकर निकलेगा जिसकदर जियादह आंच होगी उतना ही ज्यादह सफेद होकर निकलेगा।

तरकीब कुश्ता तूतिया सफेद अकसीरी जिससे शिंजर्फ तूतिया बनकर अकसीर तिला बनता है जहर सांपसे (उर्दू)

जहरीला सांपके जहरमें तर व खुश्क करनेसे अव्वल नम्बरकी खाक होगी एक जोगीने पहले तूतियाको नारजीलके बिलकुल छोटे खाम फलोंमें बाद खारिज करने अर्कके दमपुख्त तीनबार करलिया बाद उसके सात अदद सांपकी सातअदद जहरीली थैलियां जो उसके मुँहमें रहती हैं लेकर बारीक दस्तपनाहसे यकेबाद दीगरे जहरका अर्क इस डलीपर चढाकर धूपमें खुश्क करालिया यहांतक कि सात अददको खतम करलिया इस तर व खुश्क करनेसे तूतिया खील खील होगया इस खीलकी एकरत्ती दसबारह सेर शीर थूहरमें डालदिया फौरन सारा दूध पानी होगया बाद इस नीरको दस बारह तोलाकी शिंजर्फकी डलीपर चढाया तौ मोमिया होगई, इस मोमियासे एकरत्ती तोलेभर नुकरापर दिया तो तिलाइ कासिल बनगया, जोगीजीका कौल था कि हरहफ्ते तजदीद शीशीकी जिसमें यह खाक रहती है करलिया करे वरनः शीशी शिद्दत हरारतसे टूटकर रेजःरेजः होजावेगी लिहाजा बडी हिफाजतसे रखना चाहिये और इब्तदाइ अमल नुसखासे इन्तहाइ अमलतक निहायत अहतियात चाहिये क्योंकि जहरही जहर है बाइस हिलाकत न हो इसी खयालसे मैंने इस नुसखेको अखफा कर रक्खा था लेकिन अखबार अलकीमियाँकी रिफासइजआसः व बिरादरान अलकीमियाँकी इलूहिम्मतीपर नजर करके इसको पबलिकमें लाना हुआ (सुफहा १३ अखबार अलकीमियाँ १६।१०।१९०७)

जंगार बनानेकी तरकीब (उर्दू)

बुरादा मिस सेरभर लाकर पानीमें धोवे और सुखलावे बाद उसके दो सेर सिरका मुकत्तर और आधपाव नौसादर डालकर बाहम मिलावे और तांबेकी देगचीमें रखकर ऊपरसे सर्पोश ढांक दे और दो पहर कामिल आग दे बाद उसके छानकर पकाले और मुनअकिद करे।

नौआदीगर बुरादा मिसको लेकर चीनीके जर्फमें बिछावे और उसके ऊपर नौसादर मसअद बिछावे और ऊपरसे शराब दो आतिशा इसकदर डाले कि दो अंगुल ऊपर रहे बाद उसके दो तीन दिनतक सख्त धूपमें रक्खे जंगार लतीफ तय्यार होजायगा। (सुफहा ८७ किताब अलजवाहर)

जंगार फरलीसा बनानेकी तरकीब (उर्दू)

बुरादा मिस एकमन लेकर बेकलईके ताँबेके मटकेमें डालकर दसमन सिरका उसमें डाले और मुँह बंद करदे बाद उसके गर्म तनूरमें रखकर मुँह तनूरका मिट्टीसे मजबूत बंद करदे और एक दिन रातके बाद निकाले कुल जंगार होजावेगा। (सुफहा ९२ किताब अलजवाहर)

जंगार तुरसाई बनानेकी तरकीब (उर्दू)

बुरादा मिस दसहिस्सा नौसादर कानी तीनहिस्सा बाहम मिलाकर सिरका अंगूरीमें गर्क करके किसी जर्फ मिसीमें रखकर घोडेकी लीदमें पांचदिनतक दफन करे और हररोज ताजा लीद बदला करे (सुफहा ९० किताब अलजवाहर)

जंगार तुरसाई बनानेकी तरकीब (उर्दू)

यह निहायत लतीफ होता है बुरादा मिस जितना मंजूर हो लाकर कटोरेमें रक्खे और उसके मसावी नौसादर महलूल मिलावे नौसादर इस्तरह महलूल करे कि नौसादर मादनी लाकर बकरीकी आंतमें रखकर हल करे बाद उसके मिसके बुरादेसे चहारम हिस्सा नमक सफेद साईदः मिलाकर धूपमें रक्खे और अर्क लैमूं डालदे और खरल करे फिर धूपमें रखदे और अर्क लैमूं डाल दे और खरल करके फिर धूपमें रखदे यहांतक कि मिस मजकूर लैमूं और नौसादर महलूलमें हल होकर जंगार होजावे और हस्ब जरूरत अर्क लैमूं और नौसादर डाला करे जबतक कुल मिस जंगार न हो। (सुफहा ९० किताब अलजवाहर)

जंगार हमसी वा जंगार फरऊनी बनानेकी तरकीब (उर्दू)

बुरादा मिस पाकीजः जितना मंजूर हो लाकर खरल करे और शीरः अंगूर उसपर डालकर निगाह रक्खे जिसमें खुश्क होजावे फिर सहक करे और शीरामजकूर डाले

इसीतरह सात वार खरल करे और खुश्क करे शीरा अंगूर-का न मिले तो सिरका वएवन शीराके डाले और सवज पानी जो उसपर हरवार पैदा हुआ करे उसको नितार कर आग या धूपमें खुश्क करलिया करे। (सुफहा ८८ किताब अलजवाहर)

जंगारको हल करना (उर्दू)

यह बेनजीर होता है और फीरोजाके रंगनेके काममें आताहै, जंगार इमसी एक हिस्सा सिरका सफेद मुकत्तर एक हिस्सा दोनों मिलाकर रहने दे ताकि सिरकेमें जंगार मजकूर हल होजावे और सिरकेका रंग सब्ज होजावे बाद उसके उसको छानले।

लोह केसर (जाफरानुलहदीद)

लोहचूर्ण वा ताम्रचूर्ण १ तोला (पांच तोला शोरा,पीली काही ३ तोले, फिटकिरी लाल २ तोले ये तीनों चीजोंको दरड करके तेजाब निकालना) उस तेजाबमें ताम्रका बुरादा अथवा लोहेका बुरादा खरल करके सुखालेना लाल-रंग होजायगा। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

धातु बिड।

अब बिड कहों सुनो रे गुनी, ज्यों कहि गये अचारज मुनी। सोवनमाखी सोधी होय, तामेकी बिडजाने लोय। लौन जु आजाभारे तनौ, खपराकौ बिन्दु कवियनु भनौं। सीसेको बिंदु सेधौं कहै, जाकी बासु प्रगटही दहै। बंगहि भस्म करति है कहै, कै सुमलहै सौधी रहै। कै वंगे गिलचा फटकरी, जाके देत जाइ सब जरी॥

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यास-ज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहितायां भाषाटीकायां प्रकीर्णोपरसवर्णनं नाम षट्पञ्चाशत्त-मोऽध्यायः॥ ५६॥

रत्नाध्यायः ५७.

रत्नोंके भेद।

मणयोऽपि च विज्ञेयाः सूतबंधस्य कारकाः॥ वैक्रान्तः सूर्यकान्तश्च हीरकं मौक्तिकं मणिः॥ १॥ चन्द्रकान्तस्तथा चैव राजावर्तश्च सत्तमः॥ गरुडोद्गारकश्चैव ज्ञातव्या मणयस्त्वमी॥ २॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-वैक्रान्त (तर्मरी), सूर्यकान्त, हीरा, मोती, मणि (चन्द्रकान्त), राजावर्त और गरुडोद्गारक (पन्ना) ये आठ रत्न पारदके बद्ध करनेवाले हैं॥ १॥ २॥

अन्यच्च।

पुष्परागं महानीलं पद्मरागं प्रवालकम्॥ वैडूर्यं च तथा नीलमेते च मणयो मताः यत्नतः संग्रहीतव्या रसबंधस्य कारणात॥॥ ३॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-पुखराज, इन्द्रनील, माणिक, मूंगा और लहसनिया और नीलम इनको भी रत्न कहते हैं और रसक्रियाके वास्ते परीक्षा करके लेना चाहिये॥ ३॥

रत्नोंके नाम।

वज्रं गरुत्मतः पुष्परागो माणिक्यमेव च॥ इन्द्रनीलश्च गोमेदस्तथा वैदूर्यमेव च॥ मौक्तिकं विद्रुमश्चेति रत्नान्युक्तानि वै नव॥॥ ४॥ (एकलिखितपुस्तक.)

अर्थ-वज्र (हीरा), गरुत्मत (पन्ना), पुखराज, माणिक, इन्द्रनील, गोमेद, लहसनिया, मोती और मूंगा ये नवरत्न कहेजाते हैं॥ ४॥

पंचरत्नोंके नाम।

पद्मरागेन्द्रनीलाख्यौ तथा मरकतोत्तमः॥ पुष्परागः स वज्राख्यः पंच रत्नावराः स्मृताः॥ ५॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-माणिक, इन्द्रनील, पन्ना, पुखराज और हीरा ये पांच रत्न हैं॥ ५॥

रत्नोंके दोष।

गौरत्रासौ च बिन्दुश्च रेखा च जलगर्भता॥ सर्वरत्नेष्वमी पञ्च दोषाः साधारणा मताः॥क्षेत्रतोयभवा दोषा रत्नेषु न लगन्ति ते॥ ६॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-फिकास, त्रास, छींटे, लकीर और पानीका दाग, यह पांच दोष सभी रत्नोंमें स्वाभाविक हुआ करते हैं। जमीन और पानीके दोष इनमें नहीं गिनेजाते॥ ६॥

नवग्रहोंके क्रमसे नौरत्नोंके नाम।

माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमाणि तार्क्ष्यं च पुष्पं भिदुरं च नीलम्॥ गोमेदकं चाथ विदूरकं च क्रमेण रत्नानि नवग्रहाणाम्॥॥ ७॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-माणिक, मोती, मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा, नीलम, गोमेद, और लहसनिया ये नौरत्न, क्रमसे सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चर, राहु और केतु इन नवग्रहोंके हैं॥ ७॥

अँगूठीमें किन २ रत्नोंका मेल करना।

ग्रहानुमैत्र्या कुरु बिन्दुपुष्पप्रवालमुक्ता-फलतार्क्ष्यवज्रम्॥नीलाख्यगोमेदविदूरकं च क्रमेण मुद्राधृतमिष्टसिद्धौ॥ ८॥ (रस-रत्नसमुच्चय.)

अर्थ-बिंदु (माणक), पुखराज, मूंगा, मोती, पन्ना, हीरा, नीलम, गोमेद और लहसनिया इस क्रमसे अंगूठीमें जडावे तो वांछित कार्यकी सिद्धि होती है॥ ८॥

पारदादि कर्ममें रत्नधारण करनेकी विधि ।

रसे रसायने दाने धारणे देवतार्चने ॥ सुरक्ष्याणि सुजातीनि रत्नान्युक्तानि सिद्धये ॥ ९ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-रसक्रियामें, रसायन, दान, देवताओंका पूजन इनमें अच्छी जातिके रत्न अंगूठीमें धारण करना, सिद्धिके लिये कहे हैं ॥ ९ ॥

रत्नोंके धारण करनेका फल ।

सूर्यादिग्रहनिग्रहापहरणं दीर्घायुरारोग्यदं सौभाग्योदयभाग्यवश्यविभवोत्साहप्रदं धैर्यकृत । दुश्छायाचलधूलिसंगतिभवा लक्ष्मीहरं सर्वदा रत्नानां परिधारणं निगदितं भूतादिनिर्णाशनम् ॥ १० ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-रत्नोंके धारण करनेसे सूर्यादि नवग्रहोंकी पीडा दूर होती है, दीर्घायु (अर्थात् बडी उमर) और आरोग्य होता है, भाग्यका उदय होता है, धन और उत्साह बढता है, धैर्य होता है, दुष्ट पुरुषोंकी छाया और धूरके मेलसे उत्पन्नहुई निर्धनताका नाश होता है और भूतप्रेतादिकोंकी पीडा भी शान्त होती है ॥ १० ॥

माणिककी परीक्षा ।

माणिक्यं पद्मरागाख्यं द्वितीयं नीलगन्धि च । कुशेशयदलच्छायं स्वच्छं स्निग्धं महत्स्फुटम् ॥ ११ ॥ वृत्तायतं समं गात्रं माणिक्यं श्रेष्ठमुच्यते ॥ नीलं गंगाम्बुसम्भूतं नीलगर्भारुणच्छवि ॥ १२ ॥ पूर्वमाणिक्यवच्छ्रेष्ठं माणिक्यं नीलगन्धि तत। रन्ध्रकार्कश्यमालिन्यरौक्ष्याऽवैशद्यसंयुतम् । चिपिटं लघु वक्रं च माणिक्यं दुष्टमष्टधा ॥ ॥ १३ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-पद्मराग और नीलगन्धिके भेदसे माणिक दो प्रकारका है, जो माणिक लालकमलके पुष्पके पत्तेके समान कान्तिवाला, साफ, चिकना, बडा, स्फुट (जिसमें देखनेसे दूसरी तरफका पदार्थ दीखता हो) वृत्तायत(अंडेके समान गोल) और सम कोण हो वह माणिक उत्तम होता है उसको पद्मराग कहते हैं। और जो गंगाजलमें उत्पन्न हुआ हो जिसकी कान्ति नीली झांई लियेहुए लाल वर्णकी हो और शेष लक्षण पद्मरागके समान हों उसको नीलगन्धि (जिसमें कुछ नीलीरंगतकी झांईहो) माणिक कहते हैं यह भी उत्तम होता है। और छेदवाला, खरखरा, मैला, रूखापन, चपटा, छोटा, हलका और टेढा ये माणिकके आठ दोष हैं ॥ ११-१३ ॥

माणिकके गुण ।

माणिक्यं दीपनं वृष्यं क्षयवातकफार्तिनुत। भूतवेतालपापघ्नं कर्मजव्याधिनाशनम् ॥ ॥ १४ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-माणिकके सेवन करनेसे अग्नि तीव्र होती है, शरीर पुष्ट होता है, भूत और वैतालके रोग नष्ट होते हैं और कर्मोंसे उत्पन्न हुए रोग भी मिटजाते हैं ॥ १४ ॥

मोतीकी परीक्षा ।

ह्लादि श्वेतं लघु स्निग्धं रश्मिवन्निर्मलं महत। ख्यातं तोयप्रभं वृत्तं मौक्तिकं नवधा शुभम्॥ ॥ १५ ॥.(रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-केवल दर्शनमात्रसे ही चित्तको प्रसन्न करनेवाला, सफेद, भारमें हलका, चिकना, जिसमें चंद्रमाके समान किरणें निकलती हों, निर्मल हो, बड़ाहो, जलके समान चमकीलाहो, गोलहो इस प्रकार मोती में नौ शुभ लक्षण हैं ॥ १५ ॥

मोतीके गुण ।

मुक्ताफलं लघु हिमं मधुरं च कान्तिदृष्ट्याग्निपुष्टिकरणं विषहारि भेदि । वीर्यप्रदं जलनिधेर्जनिता च शुक्तिर्दीप्ता च पंक्तिरुजमाशु हरेरवश्यम्॥१६॥(रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-मोती-हलका, ठंढा, मीठा और चमकदार होता है, नेत्र और जठराग्निको दीप्यमान करनेवाला है। विषको हरनेवाला दस्तावर और वीर्यका बढानेवाला है । इसी प्रकार समुद्रमें उत्पन्न हुई सीप अग्निको बढानेवाली पंक्तिशूलको अवश्य नाश करती है ॥ १६ ॥

तथा च ।

कफपित्तक्षयध्वंसि कासश्वासाग्निमान्द्यनुत ॥ पुष्टिदं वृष्यमायुष्यं दाहघ्नं मौक्तिकं मतम् ॥ १७ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-मोती कफ, पित्त और क्षयका नाश करनेवाला है, कास श्वास और अग्निमान्द्य (मंदाग्नि) को दूर करता है, शरीरको पुष्ट करनेवाला, बलकारी, आयुका बढानेवाला और दाहका नाशकरता होता है ॥ १७ ॥

मोतीके दोषोंका वर्णन ।

रूक्षाङ्गं निर्जलं श्यावं ताम्राभं लवणोपमम् ॥ अर्द्धशुभ्रं च विकटं ग्रन्थिलं मौक्तिकं त्यजेत ॥ १८ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-रूखा, तेजहीन, श्यामकांति, तांबाकी समान, लवणसदृश, आधा शुभ्र, टेढा और ग्रंथिवाला मोती दोषयुक्त समझा जाता है ॥ १८ ॥

मोतियोंको द्रुतिकरनेकी विधि ।

मुक्ताचूर्णं तु सप्ताहं वेतसाम्लेन मर्दितम् ॥ जंबीरोदरमध्ये तु धान्यराशौ विनिक्षिपेत् ॥ सप्ताहादुद्धृतं चैव पुटे धृत्वा द्रुति भवेत ॥ १९ ॥ (र० र० स०.)

अर्थ-मोतियोंके चूर्णको सात दिवसतक अमलबेतके

रससे घोटे फिर उसकी गोली बनाकर जंभीरीके फलमें रख सात दिनतक धानके ढेरमें रख देवे। तदनन्तर उसमेंसे निकाल किसी पात्रमें रख देवे तो मोतीकी द्युति होगी ॥ १९ ॥

मूँगेकी परीक्षा।

पक्वबिंबफलच्छायं वृत्तायतमवक्रकम् ॥ स्निग्धमव्रणकं स्थूलं प्रवालं सप्तधा शुभम् ॥ २० ॥ पाण्डुरं धूसरं सूक्ष्मं सव्रणं कण्डरान्वितम् ॥ निर्भारं शुल्ब वर्णं च प्रवालं नेष्यतेऽष्टधा ॥ २१ ॥ (र० र० स०)

अर्थ–अत्यन्तलाल, गोल, लम्बा, सीधा, चिकना, जिसमें किसी प्रकारका छेद नहो और मोटा हो इस प्रकार सात गुणवाला प्रवाल (मूंगा) उत्तम होताहै और जो पिलाई लियेहुए हो, धुँवेकासा वर्ण हो, छोटा, हो, छेदवाला हो, टेढा हो सफेद हो और हलका हो ऐसा मूंगा अच्छा नहीं होताहै ॥ २० ॥ २१ ॥

मूँगेके गुण।

क्षयपित्तास्रकासघ्नं दीपनं पाचनं लघु ॥ विषभूतादिशमनं विद्रुमं नेत्ररोगनुत् ॥ २२ ॥ (र० र० स०.)

अर्थ–मूंगा–क्षयरोग, रक्तपित्त, कास विषरोग भूतादि रोग तथा नेत्ररोगको नाश करता है दीपन पाचन तथा हलका है ॥ २२ ॥

तार्क्ष्य परीक्षा।

हरिद्वर्णं गुरु स्निग्धं स्फुरद्रश्मि चयंशुभम् ॥ ॥ मसृणं भासुरं तार्क्ष्यगात्रं सप्तगुणं मतम् ॥ ॥ २३ ॥ कपिलं कर्कशं नीलं पाण्डुकृष्णं च लाघवम् ॥ चिपिटं विकटं कृष्णं रूक्षं तार्क्ष्यं न शस्यते ॥ २४ ॥ (र० र० स०)

अर्थ–हरा, भारी, चिकना, चमकीला और चमकती हुई किरनोंवाला पन्ना उत्तम होता है। तथा कैलई रंगवाला, खरखरा, नीला, पीलाई अथवा स्याही लियेहुए हो, हलका हो, चिपटा हो, टेढा हो और रूखा हो ऐसा पन्ना श्रेष्ठ नहीं है ॥ २३ ॥ २४ ॥

तार्क्ष्य गुण वर्णन।

ज्वरच्छर्दिविषश्वाससन्निपाताग्निमान्द्यनुत् ॥ दुर्नामपाण्डुशोफघ्नं तार्क्ष्यमोजोविवर्धनम् ॥ २५ ॥ (र० र० स०)

अर्थ–अशुद्ध पन्ना-ज्वर उलटी विषरोग, श्वास, सन्निपात मन्दाग्नि, बवासीर और सूजनको नाश करताहै और ओजको बढाताहै ॥ २५ ॥

पुखराज परीक्षा।

पुष्परागं गुरु स्वच्छं स्निग्धं स्थूलं समं मृदु ॥ कर्णिकारप्रसूनाभं मसृणं शुभमष्टधा ॥ ॥ २६ ॥ निष्प्रभं कर्कशं रूक्षं पीतश्यामं नतोन्नतम् ॥ कपिशं कपिलं पाण्डु पुष्परागं परित्यजेत् ॥ २७ ॥ (र० र० स०.)

अर्थ–पुखराज–भारी, साफ, चिकना, मोटा, सीधा, कोमल कन्हेरके फूलके समान हो और खरखरा हो ऐसा पुखराज अच्छा होता है ॥ २६ ॥ २७ ॥

पुखराजके गुण।

पुष्परागं विषच्छर्दिकफवाताग्निमान्द्यनुत् ॥ दाहकुष्ठास्रशमनं दीपनं पाचनं लघु ॥ २८ ॥ (र. र. स.)

अर्थ–पुखराज, विषरोग, उलटी, कफ, वातरोग, मन्दाग्नि, जलन, कोढ, रक्तकी खराबीको नाश करता है। दीपन है, पाचन है और हलका है ॥ २८ ॥

वज्रकी उत्पत्ति।

दधीचोऽस्थ्नः समुत्पन्नः पविस्तस्यकणः क्षितौ ॥ विकीर्णः स तु वज्राख्यां भजते तच्चतुर्विधम् ॥ २९ ॥

अर्थ–दधीच ऋषिकी हड्डियोंसे वज्र उत्पन्न हुआ उसके जो टुकडे धरतीपर गिरे उनका नाम वज्र होगया वह चार प्रकारका होताहै ॥ २९ ॥

हीरेके भेद और परीक्षा।

वज्रं च त्रिविधं प्रोक्तं नरो नारी नपुंसकम् ॥ पूर्वपूर्वमिहश्रेष्ठं रसवीर्यविपाकतः ॥ ॥ ३० ॥ अष्टास्रवाष्टफलकं षट्कोणमतिभासुरम् ॥ अम्बुदेन्द्रधनुर्वारितरं पुंवज्रमुच्यते ॥ ३१ ॥ तदेव चिपिटाकारं स्त्रीवज्रं वर्तुलायुतम् ॥ वर्तुलं कुण्ठकोणाग्रं किंचिद्गुरु नपुंसकम् ॥ ३२ ॥ स्त्रीपुंनपुंसकं वज्रं योज्यं स्त्रीपुंनपुंसके ॥ व्यत्यासान्नैव फलदं पुंवज्रेण विना क्वचित् ॥ ३३ ॥ श्वेतादि वर्णभेदेन तदेकैकं चतुर्विधम् ॥ ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रं स्वस्ववर्णफलप्रदम् ॥ ३४ ॥ उत्तमोत्तमवर्णं हि नीचवर्णफलप्रदम् ॥ न्यायोऽयं भैरवेणोक्तः पदार्थेष्वखिलेष्वपि ॥ ॥ ३५ ॥ (र. र. स.)

अर्थ–स्त्री, पुरुष और नपुंसक भेदसे हीरा तीन प्रकारका है रस, वीर्य और विपाकके बलसे पुरुष हीरा उत्तम उससे स्त्रीसंज्ञक हीरा कनिष्ठ और नपुंसकसंज्ञाका हीरा अधम होता है। आठ कोनेवाला अथवा आठ फलवाला तथा छः कोठेवाला अत्यन्त चमकदार इन्द्रधनुषके समान वर्णवाला हो और जलपर तैरता हो उसको पुरुष हीरा कहते हैं और वही हीरा चपटा और गोल हो तो स्त्रीसंज्ञक हीरा कहाता है तथा गोल हो और जिसके कोने सुकडे हुए हों और कुछ भारी हो उसको नपुंसकहीरा कहते हैं। ये तीन प्रकारका वज्र तीनों प्रकारके (स्त्री पुरुष नपुंसक) जीवोंके योग्य हैं। इन्हींको उलटपलटके दियाजावे तो फलको नहीं करता है और पुरुषनामक हीरा सर्वत्र फलक

दाता है। श्वेतादि वर्णभेदसे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र संज्ञक चार प्रकारका हीरा अपनी २ जातिमें फलदायक है, उत्तम वर्णका हीरा नीच वर्णमें फल करता है भैरवाचार्यने यह न्याय सब पदार्थोंमें माननेयोग्य कहा है ॥ ३०-३५ ॥

वज्रके वर्ण और भेद ।

श्वेतं द्विजाभिधं रक्तं क्षत्रियाख्यं तदीरितम् ॥ पीतं वैश्याख्यमुदितं कृष्णं स्याच्छूद्रसंज्ञकम् ॥ स्त्रीपुंनपुंसकं तत्तु चतुर्विधमपि स्मृतम् ॥ ३६ ॥ (बृ. यो.)

अर्थ-सफेद हीरा ब्राह्मण, लाल हीरा क्षत्रिय, पीला हीरा वैश्य और काला हीरा शूद्रसंज्ञक होता है और वे चारों प्रकारके हीरे स्त्री पुरुष और नपुंसक भेदसे तीन २ प्रकारके हैं ॥ ३६ ॥

पुरुष, स्त्री, नपुंसक वज्रकी परीक्षा ।

वृत्ताः फलकसम्पूर्णास्तेजोवन्तो बृहत्तराः पुरुषा हरिकाः प्रोक्ता रेखाबिन्दुविवर्जिताः ॥ ३७ ॥ रेखाबिन्दुसमायुक्ताः षट्कोणास्ते स्त्रियः स्मृताः ॥ त्रिकोणायतना दीर्घा विज्ञेयास्ते नपुंसकाः ॥३८॥(बृ. यो.)

अर्थ-जो हीरे गोल, कोठेदार, चमकीले, बडे (मोटे) और जिनमें रेखा और बिन्दु न हो, ऐसे हीरेको पुरुष कहते हैं। जिनमें रेखा या बिन्दु हो, छः कौने हों उनको स्त्रीसंज्ञक हीरा कहते हैं। और जो तिकोने हों और लंबे हों उनको नपुंसक कहते हैं ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

पुरुषादिभेदसे वज्रका प्रयोग ।

स्त्री तु स्त्रीणां प्रदातव्या क्लीबं क्लीबे प्रदीयते ॥ सर्वेषां सर्वदा योज्याः पुरुषा बलवत्तराः ३९ ॥ (बृ. यो.)

अर्थ-स्त्रीसंज्ञकहीरा स्त्रियोंको और नपुंसकहीरा नपुंसकको देना चाहिये और पुरुषहीरा सबको देना चाहिये क्योंकि वह सबसे बलिष्ट है ॥ ३९ ॥

पुरुषादिभेदसे वज्रका प्रयोग ।

सर्वेषां पुरुषाः श्रेष्ठा वेधका रसबंधकाः ॥ स्त्रीवज्रं देहसिद्ध्यर्थं क्रामणं स्यान्नपुंसकम् ॥ ४० ॥ (बृ. यो.)

अर्थ-उनमें पुरुष संज्ञक हीरे श्रेष्ठ, वेधक और रसके बंधक होतेहैं, स्त्रीसंज्ञक हीरे देहकी सिद्धिके लिये और नपुंसक हीरा क्रामण होताहै ॥ ४० ॥

विप्रादिभेदसे वज्रका प्रयोग ।

विप्रो रसायने प्रोक्तः क्षत्रियो रोगनाशने॥ बादे तु वैश्यः संप्रोक्तो वयसस्तंभनेऽन्तिमः ॥ ४१ ॥ (बृ. यो.)

अर्थ-ब्राह्मण जातिका हीरा रसायनके लिये, क्षत्रियहीरा रोग नाश करनेके वास्ते, वैश्यजातिका हीरा धातुबादके निमित्त तथा शूद्रजातिका हीरा अवस्थाको रोकनेकेलिये उपयोगी होताहै ॥ ४१ ॥

हीरेके गुण ।

आयुःप्रदं झटिति सद्गुणदं च वृष्यं दोषत्रयप्रशमनं सकलामयघ्नम् । सूतेन्द्रबन्धवधसद्गुणकृत्प्रदीपि मृत्युंजयं तदमृतोपममेव वज्रम् ॥ ४२ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-हीरा आयु तथा सद्गुणोंका दाता है, वृष्य है तीनों दोषोंको शान्त करता है, समस्तरोगोंका नाशक है। पारदको बद्ध और भस्म करनेवाला है तथा पारदमें श्रेष्ठ गुणको करताहै और मृत्युके नाश करनेवाला यह हीरा अमृतके समान है ॥ ४२ ॥

हीरेकी शुद्धि ।

कुलत्थक्वाथके स्विन्नं कोद्रवक्वथितेन वा । एकयामावधि स्विन्नं वज्रं शुद्ध्यति निश्चितम् ॥ ४३ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-कुलथीके काथमें तथा कोदोंके काथमें एक प्रहर पर्यन्त स्वेदन करनेसे हीरा शुद्ध होताहै इसमें सन्देह नहीं है ॥ ४३ ॥

तथा च ।

व्याघ्रीकल्कगतं वज्रं दोलायंत्रे विपाचयेत । त्रिदिनं कोद्रवैः क्वाथैः कोलत्थैश्चामलं भवेत् ॥ ४४ ॥ (भाषापुस्त. पं. कु.म.)

अर्थ-हीरेको कटेरीके फलके कल्कमें रख तीनदिनतक कुलथी तथा कोदोंके काथमें दोलायंत्रद्वारा स्वेदन करै तो हीरा शुद्ध होगा ॥ ४४ ॥

तथा च ।

व्याघ्रीकंदगतं वज्रं दोलायंत्रेण पाचयेत । सप्ताहं कोद्रवक्वाथे कुलिशं विमलं भवेत् ॥ ॥ ४५ ॥ (बृ. यो.)

अर्थ-इसका अर्थ ४४ श्लोकके समान है परन्तु इसका पाठ इसलिये लिखागया है कि (दोलायंत्रेण पाचयेत्) के स्थानमें (मृदालिप्तं पुटे पचेत्) ऐसा पाठ है वह पाठ हमारी समझमें ठीक नहीं है ॥ ४५ ॥

तथा च ।

व्याघ्रीकंदगतं वज्रं मृदालिप्तं पुटे पचेत । अहोरात्रात्समुद्धृत्य हयमूत्रेण सेचयेत् । वज्रीक्षीरेण वा सिंच्यात्कुलिशं निर्मलं भवेत् ॥ ४६ ॥ (बृ. यो.)

अर्थ-कटेरीके फलोंके कल्कमें हीरेको रख और कपरौटी कर गजपुटमें रखदेवे एकदिवसके पीछे निकाल घोडेके मूत्रमें बुझावे अथवा सेहुडके दूधमें बुझावे तौ हीरेकी शुद्धि होजायगी ॥ ४६ ॥

हीरेका मारण और प्रयोग ।

मदनस्य फलोद्भूतरसेन क्षोणिनागकैः । कृतकल्केन संलिप्य पुटेद्विंशतिवारकम् ॥ ॥४७॥ वज्रचूर्णं भवेद्वयं योजयेच्च रसादिषु॥

तद्वज्रं चूर्णयित्वाथ किंचिट्टंकणसंयुतम् ॥ ॥ ४८ ॥ खरभूनागसत्त्वेन विंशेनावर्तते ध्रुवम्। तुल्यस्वर्णेन तद् ध्मातं योजनीयं रसादिषु ॥ ४९ ॥ त्रिगुणेन रसेनैव संमर्द्य गुटिकीकृतम्। मुखे धृतं करोत्याशु चलदंतविबन्धनम् ॥ ५० ॥ (र. र. स.)

अर्थ-मैनफलके रससे कैचुओं (भूनाग) को पीसकर कल्क कर लेवे उससे हीरेपर लेपकर (हमारी समझमें तो हीरेको उस कल्कमें रख देवे) गजपुटमें फूंकदेवे इस प्रकार बीस २० पुट देनेसे हीरेकी भस्म होजायगी। इस भस्मको समस्त रसादिकोंमें वर्ते अथवा पूर्वोक्त भस्ममें १२ बारहवां भाग सुहागा और बीस २० भाग भूनागसत्व (कैचुओंकासत्त) को मिलाकर गजपुट देवे फिर हीरेकी भस्मके समान सुवर्णभस्मको मिलाकर मूषाद्वारा कोयलोंकी आंचमें धोंककर तिगुने शुद्ध पारदके साथ गोली बनाकर मुखमें रक्खे तो हिलतेहुए दांत स्थिर होते हैं ॥ ॥ ४७-५० ॥

वज्रमारण।

मेषशृंगभुजंगास्थि कूर्मपृष्ठाम्लवेतसम् ॥ शशदंतसमं पिष्ट्वा वज्रीक्षीरेण गोलकम् ॥ कृत्वा तन्मध्यगं वज्रं म्रियते ध्मातमेवहि ॥ ॥ ५१ ॥ (भावापुस्त०पं०कुलमणि.)

अर्थ-मेढेका सींग, साँपकी हड्डी, कछुवेकी पीठ, अमलबेत, खरहाके दांत, इन सबको समानभाग लेकर थूहरके दूधसे पीसकर गोला बनावे उसमें हीरेको रख कोयलोंकी अग्निमें धोंके तो हीरा शीघ्र ही भस्म होजायगा ॥ ५१ ॥

वज्रमारण।

हिंगुसैंधवसंयुक्ते क्षिपेत्क्वाथे कुलत्थजे ॥ तप्तंतप्तं पुनर्वज्रं भवेद्भस्म त्रिसप्तधा ॥ ॥ ५२ ॥ (भा. पु०पं०कुल०.)

अर्थ-हींग और सैंधवसे मिलेहुए कुलथींके काथमें हीरेको तपाकर बुझावे तो २१ इक्कीस बारमें हीरा भस्म होजायगा ॥ ५२ ॥

वज्रमारण।

त्रिवर्षरूढकर्पासमूलमादाय पेषयेत् ॥ त्रिवर्षनागवल्ल्या वा निजद्रावैः प्रपेषयेत्॥५३॥ तद्गोलके क्षिपेद्वज्रं रुद्ध्वा गजपुटे पचेत् ॥ एवं सप्तपुटैर्नूनं कुलिशं मृतिमृच्छति ॥

॥ ५४ ॥ (बृ० यो०.)

अर्थ-तिवर्षी कपासके पेडकी जडको लेकर तिवर्षी ही नागरबेलके रससे अथवा अपने ही रससे घोटकर गोला बनावे उसमें हीरेको रख गजपुटमें फूंके इस प्रकार सातबार पुट देनेसे हीरेकी भस्म होगी ॥ ५३ ॥ ५४ ॥

वज्रमारण।

कांस्यपात्रस्थभेकस्य मूत्रे वज्रं समावपेत् ॥ त्रिःसप्तकृत्वः संतप्तं वज्रमेवं मृतं भवेत् ॥ ॥ ५५ ॥ (बृ०यो०.)

अर्थ-कांसीके पात्रमें मेढकको उलटा (चित्त) कर कुछ थोडासा वजन रख देवे तो मेढक मूत्र करेगा उसमें हीरेको तपा २ कर २१ इक्कीसवार बुझावे तो हीरेकी भस्म होगी ॥ ५५ ॥

तथा च।

त्रिःसप्तकृत्वः संतप्तं खरमूत्रेण सेचितम् ॥ मत्कुणैस्तालकं पिष्ट्वा तद्गोले कुलिशं क्षिपेत् ॥ ५६ ॥ प्रध्मातं वाजिमूत्रेण सिक्तं पूर्वक्रमेण वै ॥ भस्मीभवति तद्वज्रं शंखशीतांशुसुन्दरम् ॥ ५७ ॥ (बृ. यो.)

अर्थ-हीरेको तपा २ कर गधेके मूत्रमें बुझावे फिर खटमलोंके संग पिसेहुए हरतालके गोलेमें हीरेको रखकर कोयलोंमें धोंके तदनन्तर घोडेके मूत्रमें बुझावे तो हीरेकी भस्म चंद्रमाके समान श्वेत होजायगी ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

तथा च।

नीलज्योतिर्लताकंदे घृष्टं घर्मे विशोषितम्॥ वज्रं भस्मत्वमायाति कर्मवज्ज्ञानवह्निना ॥ ५८ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-क्षीरकाकोली (नीलज्योतिर्लताकंद) के रसमें हीरेको घिसकर तीव्रघाममें रख देवे तो जिस प्रकार ज्ञानाग्निसे कर्म भस्म होताहै उसी प्रकार हीरेकी भस्म होजायगी ॥ ५८ ॥

तथा च।

विलिप्तं मत्कुणस्यास्रे सप्तवारं विशोषितम्॥ कासमर्दरसापूर्णे लोहपात्रे निवेशितम् ॥ ॥ ५९ ॥ सप्तवारं परिध्मातं वज्रभस्म भवेत्खलु ॥ ब्रह्मज्योतिर्मुनीन्द्रेण क्रमोयं परिकीर्तितः ॥ ६० ॥ (र. र. स.)

अर्थ-हीरेपर खटमलके रक्तको लगाकर सुखावे इसप्रकार सातबार सुखा २ कर लेप करे उसको कोयलोंमें तपाकर लोहेके पात्रमें रक्खे हुए कसौंदीके रसमें बुझावे इस प्रकार सातबार करनेसे हीरेकी भस्म होगी प्रत्येकवार सात २ बार खटमलके रक्तसे सुखा २ कर लेप करना चाहिये ॥ ५९ ॥ ६० ॥

तथा च।

कुलत्थक्वाथसंयुक्तलकुचद्रवपिष्टया। शिलया लिप्तमूषायां वज्रं क्षिप्त्वा निरुध्य च॥ ॥ ६१ ॥ अष्टवारं पुटेत्सम्यग्विशुष्कैश्च वनोपलैः। शतवारं ततोऽध्मात्वा निक्षिप्तं शुद्धपारदे। निश्चितं म्रियते वज्रं भस्मवारितरं भवेत् ॥ ६२ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-मैनसिलको बडहरके रससे अथवा कुलथीके काथसे पीसकर मिट्टीकी घरियामें लेप करदेवे उसमें हीरेको

रखकर गजपुट देवे; इस प्रकार आठ पुट देवे । तदनन्तर उस भस्मको तपा २ कर शुद्ध पारद भरेहुए पात्रमें डालता जावे तो हीरेकी भस्म जलपर तैरनेवाली होगी ॥६१॥६२॥

तथा च ।

वज्रं मत्कुणरक्तेन चतुर्वारं विभावितम् । सुगंधिमूषिकामांसैर्वर्तितैः परिवेष्टयेत ॥ ॥ ६३ ॥ पुटेत्पुटैर्वराहाख्यैस्त्रिंशद्वारं ततः परम् । ध्मात्वा ध्मात्वा शतं वारान् कुलत्थ काथके क्षिपेत्॥६४॥अन्यैरुक्तः शतं वारान् कर्तव्योऽयं विधिक्रमः । सत्यवाक् सोमसेनानीरेतद्वज्रस्य मारणम् ॥ ६५ ॥ दृष्टप्रत्ययसंयुक्तमुक्तवान्रसकौतुकी ॥ ६६ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-हीरेको खटमलोंके रक्तकी चार भावना देवे फिर सुगन्धिमूषिकाके मांससे लपेट बराहपुट देवे इसप्रकार ३० तीस पुट देवे फिर तपा २ कर सौबार कुलथीके काथमें बुझावे अन्य विद्वानोंका यह सिद्धान्त है कि इसी रीतिसे (जो पूर्व कहचुके हैं) सौबार करे तो हीरेकी उत्तम भस्म होगी सत्यभाषण करनेवाले सोमसेनानीने इस विधिको अनुभूत कहा है ॥ ६३-६८ ॥

तथा च ।

काँसेके बासन विषै, मंडूक औंधे स्वाय । तिनके फेरे पेटपै, लोहसलाका लाय ॥ ॥१॥ ज्योंज्यों लगै सुगिलगिली, त्योंत्यों मूततजाय । तामें हीरा तप्तकरि, बारंबार बुझाय ॥ २ ॥ याविधिते हीरा भसम, सुन्दर होय तयार । सब रोगनपै दीजिये, अनूपान अनुसार ॥ ३ ॥ (वैद्यादर्श.)

तथा च ।

खटमलमें हरितालको, पीसि मिहीन बनाय। ऐसी कोमलको तबै, गोला तुरत बँधाय । ॥ १ ॥ ता गोलाके बीचमें, हीराको धरिदेइ । गोला कपरौटीसहित, सम्पुट दृढ करि लेइ ॥ २ ॥ ता गोलाको आँचमें, धौंकि लाल करवाय । तब घोडाके मूतमें, तुरतहि देय बुझाय ॥ ३ ॥ फिर हीरा हरतालके, धरिये गोला माँहि । पूरब बिधिते आँचमें, लाल कीजिये ताहि ॥ ॥ ४ ॥ वैसेही बुझवाइये, याविधि बिरियां सात । करिबेते हीरा भसम, होइ निरुत्थ सुजात ॥ ५ ॥ ताको मिहीं पिसायके, बंटीमें धरि लेय । जथाजोग अनुपानते, सब रोगनपै देय ॥ ६ ॥ (वैद्यादर्श.)

हीरेका कुश्ता (उर्दू)

हीरेको रेजारेजा करके पानकी जडके तुगदेमें रखकर गजपुटकी आंच देताजावे जबतक नरम हाथसे पिसनेके काबिल होजाने वास्ते तकवियत एजाइरीह और भडकाने हरारत गरीजीके अजबसनाफै है खुराक एक खशखश है। तपेदिक वगैरः अमराज सख्तको भी मुफीद है । सुफहा १४ अखबार वैश्योपकारक लाहौर ३१ । १० । १९०६) ।

हीरेकी भस्मका प्रयोग ।

त्रिंशद्भागमितं हि वज्रभसितं स्वर्णं कलाभागिकं तारं चाष्टगुणं सितामृतवरं रुद्रांशकं चाभ्रकम् ॥ पादांशं खलु ताप्यकं बसुगुणं वैक्रान्तकं षड्गुणं भागोऽप्युक्तरसे रसोऽयमुदितः षाड्गुण्यसंसिद्धये ॥ ६७॥ (र. र. स.)

अर्थ-हीरेकी भस्म ३० भाग, सुवर्णभस्म १६ भाग, चांदीकी भस्म ८ भाग, चन्द्रोदय ११ भाग, अभ्रक ४ भाग, सोनामाखी ८ भाग, वैक्रान्त (तमरी) भस्म ६ भाग इन सबको खरलमें पीस सेवन करे तो षाड्गुण्यकी प्राप्ति होती है ॥ ६७ ॥

मृतवज्रसेवनफल ।

वज्रं समीरकफपित्तमदान्निहन्याद्वज्रोपमं च कुरुते बपुरुत्तमश्रि ॥ शोषक्षयज्वर भगंदरमेहदोषपांडूदरश्वयथहारि च षड्साढचम् ॥ ६८ ॥ (बृ. यो.)

अर्थ-हीरा, वात, कफ, पित्त, मदको नाश करता है और शरीरको वज्रके समान दृढ करता है । शोष, क्षय, ज्वर, भगंदर, प्रमेह, पांडु, उदररोग और शोथको नाश करता है ॥ ६८ ॥

वज्रके स्थानमें वैक्रान्तका प्रयोग ।

भस्मीभूतं तु वैक्रान्तं वज्रस्थाने नियोजयेत् ॥ ६९ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-कच्चे हीरेकी भस्मको वज्रकी भस्मके स्थानमें प्रयोग करना चाहिये ॥ ६९ ॥

हीरेकी द्रुति ।

वज्रबल्ल्यंतरस्थं च कृत्वा वज्रं निरोधयेत् ॥ अम्लभांडगतं स्वेद्यं सप्ताहाद्द्रवतां व्रजेत ॥ ७० ॥ (र. र. स.)

अर्थ-हडसंहारीकी लकडीके बीचमें हीरेको रखकर उसीसे मुखको बंद कर देवे और कपडा (महीन) लपेट नींबू अथवा और किसी खट्टे पदार्थमें सात दिनरात स्वेदन करे तो हीरेकी उत्तम द्रुति होगी ॥ ७० ॥

वैक्रान्त तथा अन्यरत्नोंकी द्रुति करनेकी विधि ।

केतकीस्वरसं ग्राह्यं सैन्धवं स्वर्णपुष्पिका ॥ इन्द्रगोपकसंयुक्तं सर्वं भांडे विनिक्षिपेत् ॥ ॥ ७१ ॥ सप्ताहं स्वेदयेत्तस्मिन्वैक्रान्तं द्रवतां व्रजेत ॥ लोहाष्टके तथा वज्रे वापना-

त्स्वेदनाद्द्रुतिः ॥ ७२ ॥ जायते नात्र संदेहो योगस्यास्य प्रभावतः ॥ कुरुते योगराजोऽयं रत्नानां द्रवणं परम् ॥ ७३ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-अर्ककेवडा, सैंधानोन, कलहारी, बीरबहूटी इन सबको हांडीमें भर सातदिवसतक तर्मरीको स्वेदन करे तो वैक्रान्तकी द्रुति होगी। आठ प्रकारके धातुओंमेंसे जिसकी द्रुति करनी हो उसको गलावे और जब गलजावे तब थाडीसी वैक्रान्तकी द्रुति डालदेवे तो उस धातुकी द्रुति होजायगी अथवा इस द्रुतिके साथ स्वेदन करनेसे भी द्रुति होजायगी ॥ ७१-७३ ॥

नीलमके भेद और परीक्षा।

जलनीलेन्द्रनीलं च शक्रनीलं तयोर्वरम् ॥ श्वैत्यगर्भितनीलाभं लघु तज्जलनीलकम् ॥ ॥ ७४ ॥ एकच्छायं गुरु स्निग्धं स्वच्छं पिण्डितविग्रहम् ॥ मृदुमध्ये लसज्ज्योतिः सप्तधा नीलमुत्तमम् ॥ ७५ ॥ कोमलं विहितं रूक्षं निर्भारं रक्तगंधि च ॥ चिपिटाभं ससूक्ष्मं च जलनीलं च सप्तधा ॥७६॥ (र. र. स.)

अर्थ-नीलम दो प्रकारका होता है जलनील और दूसरा इन्द्रनील इन दोनोंमें इन्द्रनील उत्तम है, जो सफेदाई लिये नीलवर्णवाला, और हलका हो उसको जलनील कहते हैं, और केवल नीलवर्णवाला, भारी, चिकना, साफ बीचमें खरखरा न हो, चमकदार हो, इन सात लक्षणोंवाला नीलम उत्तम होता है उसको इन्द्रनील कहते हैं तथा जो नीलम कोमल विहित रूक्ष हलका रक्तगंधि चिपटा सूक्ष्म ऐसे जलनील सात प्रकारका है ॥ ७४-७६ ॥

नीलमके गुण।

श्वासकासहरं वृष्यं त्रिदोषघ्नं सुदीपनम् ॥ विषमज्वरदुर्नामपापघ्नं नीलमारितम्॥७७॥ (र. र. स.)

अर्थ-उत्तम नीलम श्वास, कासका नाश करनेवाला, वृष्य, त्रिदोषका नाशक और अत्यन्त दीपन है, विषमज्वर, बवासीर और पापोंको भी नष्ट करताहै ॥ ७७ ॥

गोमेदकी परीक्षा।

गोमेदः समरागत्वाद्गोमेदं रत्नमुच्यते ॥ सुस्वच्छगोजलच्छायं स्वच्छं स्निग्धं समं गुरु ॥ ७८ ॥ निर्दलं मसृणं दीप्तं गोमेदं शुभमष्टधा ॥ विच्छायं लघु रूक्षाङ्गं चिपिटं पटलान्वितम् ॥ ७९ ॥ निष्प्रभं पीतकाचाभं गोमेदं न शुभावहम् ॥ ८० ॥ (र. र. स.)

अर्थ-बैलकी चरवीके समान वर्णवाला होनेसे इस मणिको गोमेद कहते हैं। स्वच्छगोमूत्रके सदृश वर्णवाला, साफ, चिकना, चौकोर, भारी, दलदार न हो, खरखरा न हो और चमकदार हो इन आठ लक्षणोंवाला गोमेद शुभ है, तथा जो चमकदार न हो, हलका हो, रूखा हो, चिपटा हो और पीले काचके समान हो वह गोमेद शुभकारी नहीं है ॥ ७८-८० ॥

गोमेदके गुण।

गोमेदं कफपित्तघ्नं क्षयपांडुक्षयंकरम् ॥ दीपनं पाचनं रुच्यं त्वच्यं बुद्धिप्रबोधनम् ॥ ॥ ८१ ॥ (र. र. स,)

अर्थ-गोमेद कफ, पित्त, क्षय, पांडुको नष्ट करताहै अग्निको बढाताहै, पाचन है, रुचिकारक, त्वचाको हित और बुद्धिको बढानेवाला है ॥ ८१ ॥

वैदूर्य (लहसनिया) की परीक्षा।

वैदूर्यं श्यामशुभ्राभं समं स्वच्छं गुरु स्फुटम् ॥ अमेच्छुभोत्तरीयेण गर्भितं शुभमीरितम् ॥ ८२ ॥ श्यामतोयसमच्छायं चिपिटं लघु कर्कशम् ॥ रक्तगर्भोत्तरीयं च वैदूर्य्यं नैव शस्यते ॥ ८३ ॥ र. र. स.)

अर्थ-जो वैदूर्य स्वाभाविक श्यामता अथवा सफेदाई लियेहुए हो, चौकोन हो, साफ, भारी और उडतेहुए सफेद दुपट्टेके समान झलकवाला हो वह उत्तम है, तथा जिसमें कालेजलके समान वर्ण हो, चपटा हो हलका और खरखरा हो और बीचमें उडतेहुए लालदुपट्टेकीसी झांई हो ऐसा वैदूर्य त्यागने योग्य है ॥ ८२ ॥ ८३ ॥

रत्नोंकी शुद्धि।

शुध्यत्यम्लेन माणिक्यं जयन्त्या मौक्तिकं तथा॥ विद्रुमं क्षारवर्गेण तार्क्ष्यं गोदुग्धकैस्तथा ॥ ८४ ॥ पुष्परागं च संधानैः कुलत्थक्काथसंयुतैः ॥ तंदुलीयजलैर्वज्रं नीलं नीलीरसेन च ॥ रोचनाभिश्च गोमेदं वैदूर्य्यं त्रिफलाजलैः ॥ ८५ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-खटाईसे माणिक, जयन्तीके रससे मोती, क्षार वर्गसे मूंगा, गायके दूधसे तार्क्ष्य (पन्ना), संधान (कांजी) से पुखराज, कुलथीके काथसे युक्त कांजीसे हीरा, नीलके रससे नीलम, गोपित्तसे गोमेद, और त्रिफलाके काथसे वैदूर्यको स्वेदन करनेसे शुद्ध होता है ॥ ८४ ॥ ८५ ॥

रेवटीका लक्षण।

राजावर्तोऽल्परक्तोरुनीलिकामिश्रितप्रभः ॥ गुरुत्वमसृणः श्रेष्ठस्तदन्यो मध्यमः स्मृतः ॥ ॥ ८६ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-जिसमें कुछ सुर्खी और नीलाई लियेहुए चमक हो भारी तथा चिकना हो वह राजावर्त (रेवटी) उत्तम होता है और उससे अन्य रेवटी मध्यम होता है ॥ ८६ ॥

रेवटीके गुण।

प्रमेहक्षयदुर्नामपांडुश्लेष्मानिलापहः ॥ दीपनः पाचनो वृष्यो राजावर्तो रसायनः ॥ ॥ ८७ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-रेवटी प्रमेह, क्षय, बवासीर, पाण्डु, कफ और

वातरोगको नाश करता है तथा रेवटी दीपन, पाचन, वृष्य और रसायन है ॥ ८७ ॥

रेवटीकी शुद्धि ।

निम्बुद्रवैः सगोमूत्रैः सक्षारैः स्वेदिताः खलु ॥ द्वित्रिर्वारेण शुध्यन्ति राजावर्ता-दिधातवः ॥ ८८ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-नींबूका रस, गोमूत्र, जवाखार और सज्जी इनके द्रवमें दो तीन बार स्वेदन करनेसे रेवटी प्रभृतिकी शुद्धि होती है ॥ ८८ ॥

अन्यच्च ।

शिरीषपुष्पार्द्ररसै राजावर्तं विशोधयेत् ॥ ॥ ८९ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-अथवा रेवटीको तपाकर सिरसके फूलोंके रसमें बुझावे तो शुद्ध होगी ॥ ८९ ॥

राजावर्त (रेवटी) का मारण ।

लुङ्गांबुगन्धकोपेतो राजावर्तो विचूर्णितः । पुटनात्सप्तवारेण राजावर्तो मृतो भवेत ॥ ॥ ९० ॥ (र. र. स.)

अर्थ-रेवटीके समान शुद्धगंधकको खरलमें रख बिजो-रेके रससे घोट टिकिया बनाय गजपुटमें फूंकदेवे इस प्रकार सात पुट देनेसे रेवटीकी भस्म होती है ॥ ९० ॥

रेवटीके सत्त्वपातनकी विधि ।

राजावर्तस्य चूर्णं तु कुनटीघृतमिश्रितम् । विपचेदायसे पात्रे महिषीक्षीरसंयुतम् ॥ ॥ ९१ ॥ सौभाग्यपंचगव्येन पिंडीबद्धन्तु जारयेत । ध्मापितं खदिरांगारैः सत्त्वं मुञ्चति शोभनम् ॥ ९२ ॥ अनेन क्रमयो-गेन गैरिकं विमलं भवेत । क्रमात्पीतं च रक्तं च सत्त्वं पतति शोभनम् ॥ ९३ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-रेवटीका चूर्ण और मैनसिलको समान भाग लेकर घृतमें मिलावे उसको लोहेकी कढाईमें डाल थोडा २ भैंसका दूध गेरता जावे और नीचेसे आंच जलाता जावे तदनन्तर सुहागा और पंचगव्यसे गोले बनाय खैरसारके कोयलोंमें धौंके तो सुन्दर पीला सत्त्व निकलेगा और इसीप्रकार गेरूका लाल सत्त्व निकलता है ॥ ९१-९३ ॥

संगबसरीकी किस्में शनाख्त व फवा-यद (उर्दू)

संगबसरीको अरबीमें हिजरुलकाल और तूतियाई कि-रमानी और खपरिया कहते हैं सबसे बहतर सफेद रंगका बादहू जर्द, बादहू पस्ती होता है । और बाजेकबरसीको अफजल जानते हैं । उमदगीकी पहचान यह है कि अगर उसको सिरकेमें मिलादे तो उससे निहासकी बू निकले इससे जस्त भी निकालते हैं । सुर्मेके वास्ते संगबसरी नरम पिसी हुई और धुईहुई मुस्तैमिल है । अमराज चश्मके वास्ते बहुतरीन दवाई मुकव्वीरूह बासरा हाफिज सेहतचश्म मुजविल कुरहचश्म व दर्दचश्म हकिस्मके और अमराज-चश्मको उसकी तरफ जानेसे रोकती है और रतूबतको उसकी खुश्क करती है । धोनेका तरीका यह है कि पोट-लीमें बांधकर नतल्ककीके अंफशुर्दहमें डोलजंतर गर्की करे यानी पोटलीमें बांधकर हांडीमें शीरा तितल्कोका डालकर इस्तरह लटका दे कि पेंदेमें न लगे और घंटेभर जोश देकर निकालले । (सुफहा ६३ किताब अलजवाहर)

हीरेके सिवाय अन्यरत्नोंकी भस्मकी विधि ।

लकुचद्रावसंपिष्टैः शिलागंधकतालकैः । वज्रं विनान्यरत्नानि म्रियंतेऽष्टपुटैः खलु ॥ ॥ ९४ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-समभाग लियेहुए मैनसिल, गंधक और हरतालको बडहरके रसमें रत्न (जिसकी भस्म करना हो उसको) के पास गजपुट देवे इस प्रकार आठ पुट देनेसे हीरेके विना समस्त रत्नोंकी भस्म होजायगी ॥ ९४ ॥

पारदकर्मोपयोगी रत्नबनानेकी विधि ।

रत्नानि लोहानि वराटशुक्तिपाषाणजातं खुरभृंगतुल्यम् । महारसाद्येषु कठोरदेहं भस्मीकृतं तत्खलु सूतयोग्यम् ॥ ९५ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-रत्न, लोहा, कौडी, सीप, खुर और भौंरेके समान काला गन्धक बहुत कठिन भी हो तो (महारस) पारे आदिमें, भस्म कियाहुआ पारद कर्मोपयोगी बन जाता है ॥ ९५ ॥

द्रुतियोंके चिरस्थाई रखनेकी विधि ।

कुसुम्भतैलमध्ये तु संस्थाप्या द्रुतयः पृथक् ॥ तिष्ठन्ति चिरकालन्तु प्राप्ते कार्ये नियोजयेत् ॥ ९६ ॥ (र. र. स.)

अर्थ-जिन द्रुतियोंको चिरस्थायी रखनी हो उनको युक्तिको कहते हैं, कि कसूमके तैलमें द्रुतियोंको रख देवे और आवश्यकता होनेपर निकाल काममें लावे ॥९६ ॥

रत्नोंकी द्रुति करनेकी विधि ।

रामठं पञ्चलवणं क्षाराणां त्रितयं तथा ॥ मांसद्रवोऽम्लवेतश्च चूलिका लवणं तथा ॥ ॥ ९७ ॥ स्थूलं कुम्भीफलं पक्वं तथा ज्वाला-मुखी शुभा॥ द्रवन्ती च रुदन्ती च पयस्या चित्रमूलकम् ॥ ९८ ॥ दुग्धं स्नुह्यास्तथाऽ-र्कस्य सर्वं संमर्द्य यत्नतः ॥ गोलं विधाय तन्मध्ये प्रक्षिपेतदनंतरम् ॥ ९९ ॥ गुण-वन्त्रवरत्नानि जातिमन्ति शुभानि च ॥ भूर्जे तं गोलकं कृत्वा सूत्रेणाऽऽवेष्ट्य यत्न-तः ॥ १०० ॥ पुनर्वस्त्रेण संवेष्ट्य दोलायंत्रे निधाय च ॥ सर्वाम्लयुक्तसंधानपरिपूर्ण-घटोदरे ॥ १०१ ॥ अहोरात्रत्रयं यावत् स्वेदयेत्तीव्रवह्निना ॥ तस्मादाहृत्य संक्षाल्य

रत्नजां द्रुतिमाहरेत् ॥ रत्नतुल्यप्रभा लघ्वी देहलोहकरी शुभा ॥ १०२ ॥ (र. र. स.)
इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां रत्नवर्णनं नाम सप्तपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ९७ ॥

अर्थ—हींग, पांचों नोंन, सज्जी, सुहागा, जवाखार, अमलवेत, नौसादर, कायफल, ज्वालामुखी, द्रवंती, रुद्रदन्ती, क्षीरकाकोली और चीतेकी जड इनको अर्कदुग्ध, थूहरका दूध और मांसरससे पीस गोला बनावे उस गोलेमें जिस रत्नकी भस्म बनानी हो उस शुद्ध रत्नको रखकर ऊपरसे भोजपत्र लपेटदेवे और भोजपत्रपर कच्चा सूत लपेटदेवे तदनन्तर सूक्ष्म कपडेमें लपेट अनेक अम्ल (खट्टे) रसोंसे युक्त संधानमें तीन दिन तीव्राग्निसे दोलायंत्रद्वारा स्वेदन करे फिर उसमेंसे निकाल और जलसे धोकर रत्नोंकी द्रुतियोंको निकाललेवे ॥ ९७–१०२ ॥

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया भाषाटीकायां रत्नवर्णनं नाम सप्तपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ९७ ॥

धातुभस्माध्यायः ९८.

वैद्य प्रशंसनीय कब होताहै ।

यावत्सूतो न शुद्धो न च मृतममृतं मूर्च्छितं गन्धबद्धं नो वज्रं मारितं स्यान्नच गगनवधो नोपसूताश्च शुद्धाः ॥ स्वर्णाद्यं सर्वलोहं विषमपि न मृतं तैलपाको न जातस्तावद्वैद्यः क्व सिद्धो भवति वसुभुजां मण्डलेश्लाघ्ययोग्यः ॥ १ ॥ (रसरत्नसमुच्चय, र. रा. सुं.)

अर्थ—जबतक पारद शुद्ध न किया हो, पारदकी भस्म, पारदका मूर्च्छन और पारदको गन्धबद्ध न किया हो, वज्रकी भस्म न की हो और अभ्रककी भस्म भी न की हो और उपरसोंकी शुद्धि न की हो, सुवर्णसे आदि लेकर समस्त धातुओंकी भस्म तथा वत्सनाभकी शुद्धि न की हो और तैलका परिपाक भी न किया हो तबतक वैद्य राजाओंकी सभामें किस प्रकार प्रसिद्ध तथा प्रशंसनीय होताहै अर्थात् नहीं होता ॥ १ ॥

धातुओंका वर्णन ।

शुद्धं लोहं कनकरजतं भानुलोहाश्मसारं पूतीलोहं द्वितयमुदितं नागवंगाभिधानम् ॥ मिश्रं लोहं द्वितयमुदितं पिप्पलं कांस्यवर्तं धातुर्लोहे लुह इति मतः सोपि कर्षार्थवाची ॥ २ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ—सोना और चांदी ये दोनों शुद्ध (मेलरहित) धातु हैं, तांबा तथा लोहा ये अश्मलोह (पत्थरोंसे निकाले हुए) धातु हैं नाग तथा बंग ये दोनों पूतीलोह, पीतल तथा कांसा मिश्रलोह कहाता है, लोह शब्दमें लुह धातु मानागया है जिसका अर्थ खैंचना है अर्थात् जिसमें रोगोंको खैंचनेकी शक्ति हो उसको लोह कहतेहैं ॥ २ ॥

धातुमारण किससे उत्तम है ।

लोहानां मारणं श्रेष्ठं सर्वेषां रसभस्मना । मूलीभिर्मध्यमं प्राहुः कनिष्ठं गन्धकादिभिः अरिलोहेन लोहस्य मारणं दुर्गुणप्रदम् ॥ ३ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-समस्त धातुओंका रसभस्मके साथ भस्म करना उत्तम है जडियोंके साथ भस्म करना मध्यम गंधकप्रभृतिके साथ कनिष्ठ और अरिलोहसे लोहका भस्म करना खराब है क्योंकि वह दुर्गुणका दाता है ॥ ३ ॥

ग्रहोंके योगसे धातुओंकी संख्या ।

ताम्रतारारनागाश्च हेमवंगौ च तीक्ष्णकम् । कांस्यकं कान्तलोहं च धातवो नव ये स्मृताः ॥ ४ ॥ सूर्यादीनां ग्रहाणां ते कथिता नामभिः क्रमात् । सूर्याचन्द्रमसौ भौमः शशिजो जीवभार्गवौ ॥ ५ ॥ सूर्यसूनुः सैंहिकेयः केतुश्चेति नव ग्रहाः ॥ ६ ॥ (शार्ङ्गधरसंहिता)

अर्थ—तांबा, चांदी, पीतल सीसा, सुवर्ण, वंग, लोहा, कांसा, कांतलोह ये नव धातु हैं, सूर्यादि नवग्रहोंके नामानुसार अनुक्रमसे इनके नाम जानना । सूर्य, चंद्रमा, मंगल बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु ये नवग्रह कहे जाते हैं ॥ ४–६ ॥

मन्सूबात (उर्दू)

नाम धातु	सुर्ब	कलई	आहन	तिला	मिस	सीमाव नुकरा	जरेनेख	किबरियत
कवाकब मन्सूर	जौहल	मुश्तरी	मरीख	शमस	जौहरा	अतारद कमर	जनब	रास
यौम	शंबः	पंजशंबः	सहशंबः	यकशंबः	जुम्मः	चहारशंबः दोशंबः		

(तुफहा अलकीमियाँ १३५)

सब धातुओंकी उत्पत्ति ।

शिवस्य तेजः प्रथितं रसायां देवीभवं गंधकमभ्रकाख्यम् । शुल्बं च सूर्यस्य सहस्ररश्मेश्चन्द्रस्य रौप्यं परमेश्वरस्य ॥ ७ ॥ स्वर्णं तु विष्णुप्रभवं वदन्ति सीसं तु नागस्य च वासुकेश्च । लोहं यमस्यैव हि कालमूर्तेर्वंगं च शुक्रस्य पुराविदो बुधाः ॥ ८ ॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ-श्रीमहादेवके वीर्यसे पारद, पार्वतीके रजसे गन्धक और अभ्रक, सूर्यसे तांबा, चंद्रमासे चांदी, विष्णुसे सुवर्ण, वासुकिनागसे सीसा, यमराजसे लोहा और शुक्राचार्यसे वंग उत्पन्न हुआ ऐसा पुराने विद्वान् कहते हैं ॥ ७-८ ॥

सम्मति-हमारे विचारमें तो ऐसा आताहै कि ऊपर लिखा हुआ उत्पत्ति प्रकरण केवल रूपक है अर्थात् श्रीमहादेवजीने वैद्यकशास्त्र पढकर अपनी बुद्धिसे पारदका आविर्भाव किया अर्थात् पारा महादेवजीका नया निकाला हुआहै इसीप्रकार जिन २ देवताओंने अपनी २ बुद्धिसे रोगनाशक जो पदार्थ निकाले हैं उनको उन २ देवताओंसे उत्पन्न हुआ कहतेहैं ॥

(छप्पै) तथा

**पारद शिवको तेज शुक्ररूपी पहिचानौ ।
शिवातेज रजरूप अभ्र गंधकको जानौ ॥
है परमेश्वरतेज स्वर्ण सो विष्णुरूप गनि ।
चांदीकी उत्पत्ति चन्द्रमाते सु भई भनि ॥
पुनि ताम्र भयो रवितेजते, वंग उपज भृगुतेसु लहि॥भनि जशत उपाधिक भेदते, सीसक वासुकिते सुलहि ॥
दोहा-कालरूप यमराजते, लोहाकी उत्पत्ति । कही जु मुनि हारीतने, या प्रकार सब सत्ति ॥ (वैद्यादर्श.)**

तथा ।

सातों धात सातही खानि । तिनको कविजन कह्यो बखानि ॥ बडी धात कवि कंचन कियो । ताकी समको और न बियो ॥ कहूं कहूँ शैलनमें खानि । गुनी करै अरु कृत्रिमखानि । यही जुगति रूपेकी कही । दुहूंभांतिके जानौ सही ॥ तांबो परबत खोदे होय । या बातैं जानै सबकोय ॥ उपजै वंग रांग पुनि खानि । अरु सीसो रूपे संगजानि ॥ लोह खानि पृथिवीमें जिती । वरनि सके को कविजन तिती ॥ कांसी पीतर कृत्रिम होय । इनकी जुगति सुनै सबकोय ॥ सो सताइसवों तांबो रांगा । उत्तम होय न परई भांगा ॥ यह कांसेको जानौ अंत । बेला थाली जेवैं सन्त ॥ खपराते ले दूनो नाग । यह जानै तस्टीको भाग ॥ चौथो हिस्सा सीसो परै । तो भरिबेको तोरा करै ॥ (रससागर.)

सातधातुओंकीगुरुताका पारस्परिकसंबन्ध

अब कहिहै तिनकी मरजाद । गरई हरई जैसी खाद ॥ कुन्दन जैसो अंग बखानि । पुनि सीसेकी चौंसठि जानि ॥ कहों तारके चौवन अंश । चार आगरी चालिस कंस ॥ लोह तोल पंचाचारीस । और रांग जानौ अठईस ॥ तस्टी छयाली संगति कही । पैंतालीस सालकी सही ॥ अडतालीस जु खपरसनी । पारो सत्तरमेऊ जु गनी ॥ यहै तोल मरजाद कही । रसरतनाकरते कर सही ॥ (रससागर.)

यंत्र ।

सोना	सीसा	चांदी	लोहा	कांसा	रांग	पारा	जश्त	पीतल	तांबा ४५ वर्षका
१००	६४	५४	४५	४४	२८	७१	४८	४६	४५

वजनमुतनासबः (उर्दू)

पानी	जस्त	आहन	कलई	मिस	नुकरा	सुर्व	सीमाव	तिला
१	७	७ऽ८	८ऽ५	८ऽ९	१०ऽ५	११ऽ४	१३ऽ५९५	३ऽ१९

(सुफहा ६ अखबार अलकीमियाँ १६।१०।१९०७)

वजन मुतनासिबः यानी (स्पेसिफिकग्रेवटी)

तिला	जीवक	नुकरा	असरव	जस्त	मिस	आहन	कलई
१००	७१	५४	४९	४८	४५	४०	३८

(सुफहा किताब अकलीमियाँ ५०)

मादनियातके पिघलानेके वास्ते फाइरनहीट (हरारत खारजी) का दर्जा ।

नामधात	गंधक	चांदीका महलूल	सीसा	जस्त	चाँदी	सोना	ताँबा	लोहा	फौलाद
दर्जा फाइरनहीर	१९४	३८९	६१७	७००	१८७०	२०००	२४००	२८००	३३००

(सुफहा किताब अकलीमियाँ ३९)

अजसादकी नर्मीका सिलसिला (उर्दू)

अजसादमें नर्मी नंबरान जैलकी तरतीबसे होती है (अलिफ) कलई (बे) जस्त (जीम) सुर्ब (दाल) नुकरा (हे) तिला (वाउ) मिस (जे) आहन लिहाजा जब दो या तीन अजसाद बाहम गलाकर बुझादिये जाते हैं तो नर्मीकी तरतीबसे उनकी खाकिस्तर होतीहै। (सुफहा किताब अकलीमियाँ २०)

लोहे व तांबेके शीघ्र गलानेकी क्रिया।

फिटकिरी और सोरा कलसी पीस कर लोहे अथवा तांबेपर लेप करके चरख देणा जल्दी गलजायगा (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

धातुओंके फलका वर्णन।

मृत्यूपमृत्युनाशार्थं पारदं विशदं भजेत ॥ ये गुणाः पारदे देवि गंधकाभ्रे च ते गुणाः ॥ ९ ॥ आरोग्यं भास्करादिच्छेत्सोमो धातुसमृद्धये ॥ रोगेशशान्तये सेव्यं देवदेवेशमुत्तमम् ॥ १० ॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ-मृत्यु और उपमृत्युके नाशार्थ उत्तम पारदका सेवन करै, हे पार्वती! जो गुण पारदमें कहेगये हैं वेही गुण गंधक और अभ्रकमें हैं आरोग्यके अर्थ ताम्रका सेवन करे, धातु वृद्धिके लिये चांदीका सेवन राजरोगकी शान्तिके लिये सुवर्णका सेवन करै ॥ ९ ॥ १० ॥

सात धातुओंके अपगुण।

स्वर्णं सम्यगशोधितं श्रमकरं स्वेदावहं दुःसहं रौप्यं जाठरजाड्यमान्द्यजननं ताम्रं वमिभ्रान्तिदम्॥नागं च त्रपु चांगदोषदमथो गुल्मादिदोषप्रदं तीक्ष्णं शूलकरं च कान्तमुदितं कार्श्यामयास्फोटदम् ॥ ११॥ शुद्धो न चेन्मुण्डकतीक्ष्णकौ यदा क्षुधापहौ गौरवगुल्मदायकौ ॥ कान्तायसं क्लेदकतापकारकं रीत्यौ च संमोहनक्लेशदायिके॥१२॥ (रसराजसुन्दर.)

अर्थ-विना शुद्ध किया या कम शुद्ध किया सुवर्ण श्रम स्वेद और दुःखका देनेवाला है, अशुद्ध चांदी पेटका दर्द और मन्द अग्निको करता है, तांबा वमन तथा शिरोभ्रमको करता है, अशुद्ध रांगा तथा सीसा शरीरका नाश तथा बायगोला रोगको करता है, अशुद्ध फौलाद शूलको करता है, अशुद्ध कान्त शरीरकी कृशता रोग और फोडा फुन्सीको उत्पन्न करता. है, मुण्ड और तीक्ष्ण यदि अशुद्ध हो तो शरीरका अहित करता है क्षुधाका नाश जडता और गोलाको करता है, अशुद्ध कान्त लोह क्लेद और तापको उत्पन्न करता है, अशुद्ध पीतल तथा कांसा मोह और दुःखकारक जानना चाहिये ॥ ११ ॥ १२ ॥

धातुओंका साधारण शोधन।

सर्वाभावे निषेक्तव्यं क्षीरतैलाज्यगोजलैः॥ शुद्धस्य शोधनं ह्येतद्गुणाधिक्याय सम्मतम् ॥ १३ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-जहां सब शोधन पदार्थ नहीं मिलते हों वहां दूध तैल घृत और गोमूत्र इनमें बुझाव देनेसे सब धातु शुद्ध होतेहैं शुद्ध धातुको इनमें बुझाव देनेसे विशेष गुणकारी होता है ॥ १३ ॥

सब धातुओंके शोधनका सुगम उपाय।

सर्वलोहानि तप्तानि कदलीमूलवारिणा ॥ सप्तधाभिनिषिक्तानि शुद्धिमायांत्यथोत्तमम् ॥ १४ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-सब धातुओंको तपा २ कर केलेकी जडके रसमें सात वार बुझाव देवे तो धातुओंकी उत्तम शुद्धि होतीहै१४॥

तमाम अजसादके मुसफ्फा करनेकी तरकीब (उर्दू)

सीमाबके सिवा मजकूरः बाला धातें यानी गंधक व हरताल तिला व नुकरा व सुर्ब व जस्त व कलई अगर गुदाज करके आब केलामें सात वार सर्द कियेजावें तो पाक और मुसफ्फा होजाती हैं। (सुफहा अकलीमियाँ१८१)

किस रोगपर धातुका कैसा शोधन करना।

अथैवं सामान्यं विशेषशोधनपरत्वेन झटिति गुणलब्ध्यर्थं निषेककर्माह-नागार्जुनः।

तत्तद्व्याध्युपयुक्तानामौषधानां जलेषु वै। प्रक्षेपं प्राह तत्त्वज्ञः सिद्धो नागार्जुनः पुनः॥ ॥ १५ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-प्रथम जो धातुओंका शोधन कहा वह सामान्य-शोधन है विशेष शोधन करनेसे गुणकी शीघ्र प्राप्तिके लिये नागार्जुनने निषेक कर्मको कहा है। उन २ रोगोंके उपयोगी औषधियोंके स्वरस या काथमें बुझाव देनेको पदार्थवेत्ता सिद्ध नागार्जुनने प्रक्षेप कहा है ॥ १५ ॥

धातुमारणकी प्रशंसा।

सिद्धलक्ष्मीश्वरप्रोक्तप्रक्रियाकुशलो भिषक्। लोहानां सरसं भस्म सर्वोत्कृष्टं प्रकल्पयेत्॥ ॥ १६ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-सिद्ध लक्ष्मीश्वरकी कही हुई प्रक्रियाओंमें चतुर वैद्य पारदयुक्त धातुओंकी भस्म करे तो वह सर्वोत्कृष्ट होती है ॥ १६ ॥

पारेके विना धातुमारणका दोष।

चपलेन विना लोहं यः करोति पुमानिह॥ उदरे तस्य किट्टानि जायन्ते नात्र संशयः ॥ १७ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-जो वैद्यराज पारदके विना धातुओंकी भस्म करताहै तो उस भस्मसेवन करनेवालेके उदरमें कीडे पैदा होजाते हैं इसमें सन्देह नहीं है ॥ १७ ॥

पारदके विना धातु शरीरमें प्रवेश नहीं करता ।

न रसेन विना लोहं न रसं चाभ्रकं विना । एकत्वेन शरीरस्य वेधो भवति देहिनः ॥ ॥ १८ ॥ (रससारपद्धति ॥)

अर्थ-रस योगके बिना लोह (धातु) को नहीं मारना चाहिये और न उसका सेवन करना योग्य है तथा अभ्रकके बिना पारदका सेवन करना योग्य नहीं है कारण इसका यह है कि पूर्वोक्त विधिसे सेवन कियाहुआ शरीरमें प्रविष्ट होजाता है ॥ १८ ॥

पुटज्ञानकी आवश्यकता ।

रसादिद्रव्यपाकानां प्रमाणज्ञा नवं पुटम् ॥ नेष्टो न्यूनाधिकः पाकः सुपाकं हितमौषधम् ॥१९ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-रसादि द्रव्योंके पाकोंके जाननेवाले नवीन (द्रव्यानुसार) पुटको सिद्ध करलेते हैं पदार्थोंका न्यून और अधिक परिपाक करना योग्य नहीं है क्योंकि अच्छी प्रकार सिद्ध कियाहुआ औषध हित होताहै ॥ १९ ॥

धातुओंकी भस्ममें पुटनिर्णय ।

स्वर्णरूप्यवधे ज्ञेयं पुटं कुक्कुटकादिकम् । ताम्रे काष्ठादिजो वह्निर्लोहे गजपुटानि च॥ ॥ २० ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-सुवर्ण और चांदीकी भस्म करनेके लिये कुक्कुटादिपुट,तांबेकी भस्म करनेके लिये लकडीकी आंच और लोहेकी भस्म करनेके लिये गजपुट हित है ॥ २० ॥

पुटदेनेका फल ।

लोहानामपुनर्भावो यथोक्तगुणकारिका । सलिले तरणं वापि पुटनादेव जायते ॥ ॥ २१ ॥ पुटनात्स्याल्लघुत्वं च शीघ्रव्याप्तिश्च दीपनम् । जारितादपि सूतेन्द्राल्लोहानामधिको गुणः ॥२२॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-लोहों (धातुओं) का अपुनर्भाव अर्थात् अपने स्वरूपमें फिर न आना और शास्त्रोंमें लिखेहुएके समान गुणका करना अथवा जलपर तैरना हलकापन शीघ्रही शरीरमें व्याप्त होना और अग्निको बढाना इत्यादि गुण पुट देनेसे ही उत्पन्न होते हैं पारद भस्म करनेसे भस्म कियेहुए धातुओंका गुण अधिक समझागया है ॥ २१ ॥ २२ ॥

धातुओंकी भस्मका स्वरूप ।

स्वर्णं कपोतकंठाभमारमेवं सदा भवेत् ॥ शुल्बं मयूरकंठाभं तारवंगौ समोज्ज्वलौ ॥ ॥ २३ ॥ कृष्णसर्पनिभं नागं तीक्ष्णं कज्जलसन्निभम् ॥ तदा शुद्धं विजानीयाद्भ्रान्तिभ्रान्तिविवर्जितम् ॥ २४ ॥ (रसराजसुन्दर.)

अर्थ-सुवर्ण तथा पीतलकी भस्म कबूतरके गलेके समान और तांबेकी भस्म मोरके कंठके समान नीले रंगकी, चांदी और बंग दोनों समान रंगके सफेद, सीसेकी भस्म कालेसर्पके समान और लोह भस्म काजलके समान काली होती है इन सब धातुओंकी ऐसी भस्म हो तो समझना चाहिये कि ये वमन तथा शिरोभ्रमको न करेंगी ॥ २३ ॥ २४ ॥

भस्मकी उत्तमता ।

कचकचिति न कुर्वन्ति दन्ताग्रे समानि केतकीरजसा । योज्यानि हि प्रयोगे रसोपरसलोहचूर्णानि ॥ २५ ॥ (रसेन्द्रचिन्तामणि.)

अर्थ-जो रस उपरस और धातुओंके चूर्णके तरीके रजके समान महीन होकर दांतोंके अगाडी खानेमें कचकच नहीं करें तो उनको समस्त कामोंमें लावे ॥ २५ ॥

मृतधातुपरीक्षा ।

मध्वाज्यं मृतलोहं च सरूपं संपुटे क्षिपेत् । रुद्ध्वा ध्माते च संग्राह्यं रूप्यं वै पूर्वमानकम्॥ तदा लोहं मृतं विद्यादन्यथा मारयेत्पुनः॥ ॥ २६ ॥ (रससारपद्धति)

अर्थ-शहद घी और लोह (धातु) को समान भाग लेकर संपुटमें रख बंधक धोके यदि वह धातु अपने पूर्व रूपको प्राप्त होजावे अर्थात् चांदीकी भस्मकी फिर चांदी होजाय तो उसको चांदीकी भस्म समझनी अन्यथा फिर धातुको भस्म करे ॥ २६ ॥

सम्मति-हमारी समझमें तो यह उस धातु भस्मके विषयमें है जो जडी द्वारा सम्पादित होती है और जो रसभस्मके साथ भस्म किया अनुत्थ (अपने रूपमें नहीं प्राप्त होनेवाला) भस्म होता है वह उत्तम होनेके कारण अवश्य सेवनीय है ॥

जुदागाना जांच इस अमरकी कि कुश्ता ठीक होगया या नहीं (उर्दू)

अगर कुश्ता तिलाको आब लैमूंमें खरल करके रक्खे और वह बरंग सुर्ख होजावे तो सही है वरने खाम, कुश्ता नुकराको करनफलसे मिलाकर खरल करें और अगर वह स्याह होजावे तो सही है वरनः खाम, और कुश्ता अवरकको वर्ग मुवर्रिद ताजाके साथ हाथपर मलकर देखे और अगर इसमें चमक पैदा होजावे और असली हालतपर आजावे तो दुरुस्त है वरनः खाम,कुश्ता तांबाको अगर दहीसे मिलाकर रक्खे और उसमें सबजी जाहर न हो तो बिलकुल सही है वरनः कच्चा इस हालतमें इसको हरगिज नहीं खाना चाहिये क्योंकि मुजिर व मुफसिद खून है और कुश्ता सुर्बको आगपर रखनेसे अगर सुर्ख होजावे तो सही है वरनः खाम कुश्ता सीमावको बकरात बलेला यानी भुरफिरा जो कि मौसम बरसातमें जमीन चरकीनपर खेतीकी तरह पैदा होता है उसको हाथमें ले और उसपर कुश्ता सीमाव डाले अगर खाम है तो जिन्दा होजावेगा वरनः कामिल है और ऐसे ही आगपर रखनेसे अगर धूआं न दे तो कामिल है और कुश्ता हरताल खून मंजभिदपर थोडासा डाले अगर वह खून व रंग असली तहलील होकर बहने लगजावे तो दुरुस्त है वरनः नाकिस

और इसीतरह आगपर धुआं न देना कमालियतका सबूत है और कुश्ताशिंग्रफ अगर आगपर धुआं न दे दुरुस्त है मगर महूसेनके वास्ते ऐसा चाहिये और खानेमें तो धुआं देनेवाला भी तजरुबतन बहुत मुफीद है और कुश्ता रूह तूतिया इसके खानेपर अगर इजाबत न हो तो कामिल है। (सुफहा २३ किताब मुजर्रिबात फीरोजी)

धातुओंकी भस्म कैसी खाने योग्यहै।

सर्वमेव मृतं लोहं ध्मातव्यं मित्रपंचकैः। यद्येवं स्यान्निरुत्थं तु सेव्यं वारितरं हि तत ॥ २७ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-समस्त धातुओंकी भस्मको मित्रपंचक (घी, सहत, सुहागा, गूगल और चौंटनीके) के साथ घोटकर कोयलोंकी आंचमें धोंके इस प्रकार करनेसे यदि धातुभस्म अपने स्वरूपको प्राप्त न हो अर्थात् पुनर्जीवित न हो और जो जलपर तैरने लगे उसको सेवन करना चाहिये ॥ २७ ॥

मित्रपंचक ।

घृतमधुगुग्गुलुगुंजाटंकणमेतत्तु पंचकं मित्रम्। मेलयति सप्त धातूनगाराग्नौ तु धमनेन॥ ॥ २८ ॥ (रसराजसुन्दर.)

अर्थ-घृत, सहद, गूगल, चौंटनी और सुहागा इनको मित्रपंचक कहते हैं, धातुओंकी कच्ची या पक्की भस्मकी परीक्षा करनी हो तो भस्ममें ये पांचौं वस्तु मिलाय घरियामें रखकर बंकनालकी धोंकनीसे धोंके तो कच्ची धातु जीउठती है ॥ २८ ॥

तरीक जिंदाकर्दन कुश्तैहाइ अजसाद (फार्सी)

जुजान माइउलहियान खुर्द कि इबारत अजरोगन व सुहागा व शहद अस्त आँकदर दरखाकिस्तर जस्त अन्दाजन्द कि गिलोला बन्दद पस दर चमचा जाहनी निहन्द व बरआतिश गुजारन्द जिन्दाशवद । (सुफहा १२ किताब मुजरबात अकबरी)

धातुओंको जिलानेका उपाय।

हयनखगजदन्तं माहिषं शृंगमूलमजशशनखकं वै मेषशृंगं प्रयुक्तम् । मधुघृतगुडगुंजाटंकणं भेदितैलमिति पटुसमकांगं सर्वलोहामृतित्वम् ॥ २९ ॥ (रसराजसुंदर.)

अर्थ-घोडेके नख, हाथीदांत, भैंसके सींगकी जड,बकरी और शशाके नख, मेढाकी सींग, शहद, घृत, गुड, चौंटनी, सुहागा, तैल और नोंन इन सबको समान भाग लेकर भस्मके साथ घोट घरियामें रख आंच देवे तो समस्त कच्ची भस्म जीवित होती है ॥ २९ ॥

हरधातुके कुश्ते जिन्दा करनेकी तरकीब (उर्दू)

ऊन यानी भेडके वाल, माहीखुर्द, कन्द स्याह, गूगल, राई, एकएक हिस्सा शहद दो हिस्सा कुल अजजाको अव्वल कूट छान ले और शहदमें बकदर जरूरत पानी मिलाकर और धातुका कुश्ता डालकर गोलियां बनावे बादहू मिट्टीकी घरिया जिस्में पुरानी रुई पडी हो बनाकर गोलियां मजकूर उसमें रखकर बंकनालसे फूंके यहांतक कि चर्ख आजावे हर धातु कुश्ता इस अमलसे जिन्दा हो जाती हैं। (सुफहा अकलीमियाँ ११०)

कलई कुश्ताके जिन्दा करनेकी तरकीब (उर्दू)

कुश्ता कलईका पावभर लेकर जर्फ आहनीमें रखकर चूल्हेपर चढादे बादहू रोगन कुंजद दो दाम नौसादर एक सेर शाही उसमें इस तरह डाले कि अव्वल रोगन डालकर नौसादर उसपर छिडक दे फिर तेल डाले फिर उसपर नौसादर छिडके और गुदाजकरे कलई कुश्ता जिन्दा होजावेगी।

मुतरज्जिम-एकदाम बीस माशेका और एक सेर शाही इक्कीस माशेका होता है (सुफहा अकलीमियाँ ११०)

जिन्दाकर्दन कलई कुश्ता (फार्सी)

खाकिस्तर कलई दरचमचः आहनी अन्दाख्तः कद्रेतेल कुंजद या रोगन तलख व अन्दके नौसादर अन्दाजन्द व बरआतिश निहन्द जिन्दाकर्दद। (सुफहा १२ किताब मुजर्रिबात अकबरी फार्सी)

मिस कुस्ताके जिन्दा करनेकी तरकीब (उर्दू)

मिसका कुश्ता पावभर शहद, रोगन जर्द, सुहागा एक एक दाम बोतेमें डालकर कोयलेकी आगपर चर्ख दे जिंदा होजायगा अगर एक बारमें जिंदा न हो फिर मुकर्रर अशियाइ मजकूर मिलाकर चर्खदे इस्तरहसे कि सुहागा निस्फ सेर शाही कुश्ता मजकूरमें मिलाकर शहद सुहागेमें खमीर करके गोला बनाकर चर्खदे। (सुफहा अकलीमियाँ ११०)

फौलाद कुश्ताके जिन्दा करनेकी तरकीब (उर्दू)

कुश्ता फौलाद पावभर सुहागा आध पाव संखिया छटाँकभर जुमले अजजाइको पीस कर पानीके जरियेसे कुश्ता मजकूरमें मिलावे और टिकिया बनाकर बोतेमें रखकर कोयलेकी आगमें चर्खदे पानीकी तरह होकर जिन्दा होजायगा। (सुफहा अकलीमियाँ १११)

जिन्दा कर्दन तिला (फार्सी)

कुश्ता तिला खाक शुदःरा दरबोतः दादः बर आतिश गरम कुनद व बाद गर्म शुद न अगर एक तोला तिला कुश्ता बाशद एक हुव्वा सुर्व अन्दाजन्द तिला जिन्दा शवदं। (सुफहा १२ किताब मुजर्रिबात अकबरी फार्सी)

हर धातुका कुश्ता व इस्तसनाइ आहन गजबेलके कुश्ताके जिन्दा करनेकी तरकीब (उर्दू)

ऊन यानी भेडके वाल, छोटी मछली, गुड, गूगल,राई, घूंघची, सुहागा, रोगन कुंजद, नौसादर कुल हम वजन

पीसकर आमेज करे और इन दवाओंके बराबर धातुका कुश्ता मिलाकर तोता मुअम्मा (अंधमूषा) में रखकर चर्खदे । (सुफहा अकलीमियाँ १११)

समस्त धातुओंका निरुत्थीकरण।

गंधकेन समं लोहं दत्त्वा खल्वे विमर्दयेत् । दिनैकं कन्यकाद्रावे रुद्ध्वा गजपुटे पचेत् । इत्येवं सर्वलोहानां कर्तव्येयं निरुत्थितिः॥ ॥ ३० ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-गंधकके समान लोहभस्मको लेकर खरलमें एक दिन तक घीगुवारके रससे खरल करे फिर संपुटमें रख गजपुटमें पकावे तो लोहका फिर जीवित होना असम्भव है इसी प्रकार समस्त धातुओंका निरुत्थीकरण जानो ॥३०॥

धातुसेवनकी मात्रा ।

एकां गुंजां समारभ्य यावत्स्युर्नवरक्तिकाः। तावल्लोहं समश्नीयाद्यथादोषबलं नरः ॥३१॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-एक चौंटनीसे लेकर नौ चौंटनीतक धातुओंकी भस्मका सेवन करे अथवा दोषोंके बलाबलका विचारकर मनुष्य धातुको सेवन करे ॥ ३१ ॥

तथा च ।

यववृद्ध्या प्रयोक्तव्यं हेम गुंजाष्टकं रविः । तारं तद्द्विगुणं लौहमन्यत्तु त्रिगुणाधिकम् ॥ ॥ ३२ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-एक जौसे लेकर आठ चौंटनीतक सुवर्ण तथा तांबेकी भस्मका सेवन करे इससे दूना चांदीका सेवन और इससे तिगुना अन्य धातुओंका सेवन करना चाहिये॥३२॥

अकसीर और कुश्ता पुराना उमदा होताहै (उर्दू)

खानेकी अकसीर ख्वाह कुश्तामें यह महलूज रहे कि जितना पुराना कुश्ता होगा वह कवीउल अमल और बे जरर होगा इसी वास्ते जिस कुश्तेको कोठी गंदुम या जौ वगैरःमें एक मुद्दतके वास्ते रख छोडतेहैं वह मुकव्वी और उमदा होजाता है और फौरन खानेका खास जरूरत पेश आवे तो कमसे कम तीन रोजतक किसी तर जगहमें दफ्न करदेना चाहिये । (सुफहा अकलीमियाँ २२)

कुश्तेको पेशावके रास्ते खारिज करना (उर्दू)

आव वर्ग मकोइ सवज तोला, आववग रामतुलसी तोला, आध पाव पानी मिलाकर पिलाया करे सात हद दस रोजमें बिलकुल सेहत होजावेगी, इम्तिहान करना हो तो पेशावको किसी वर्तनमें जमा करता जावे अखीरमें नीचे बैठाहुआ नमक निकाललें शहद सुहागा वी यानी माइउलहयातके जरियः चर्ख देकर जिन्दा करके देखलें । (सुफहा १९ रिसालः हिकमत १५।२।१९०७)

हरकिस्मका कुश्ता जिस्मसे खारिज करनेकी तरकीब (उर्दू)

मुजर्रिबः अलामअ हकीम सय्यद गुलामहुसेन साहब कंतूरी प्रसीडेन्ट कैमिकल सोसाइटी जिसके स्तैमालसे सात दिनसे लेकर चौदह दिनके अन्दर कुश्ता सीमाव बीस बरसका खायाहुआ पेशाबके रास्तेसे निकलगया शीरावर्ग मकोय सवज व शीरा वर्ग रामतुलसी हरएक तोला तोला-भर लेकर आध पाव पानीमें मिलाकर रोजाना पिलावे (सवानह उमरी अलमयः मौसूफ सुफहा २७१ मुलाहिज तलब) (सुफहा ३०३ किताब अलकीमियां)

सुवर्ण आदिके अभावमें प्रतिनिधि ।

सुवर्णमथवा रूप्यं मृतं यत्र न विद्यते । कान्तलोहेन कर्माणि तत्र कुर्याद्भिषग्वरः॥ ॥ ३३ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-जहाँ सुवर्ण, अथवा चांदीकी भस्म न मिलती हो वहां वैद्यराज कान्तिसारसे काम चलावें ॥ ३३ ॥

सर्वधातुमारण लाग ।

मीठा मौरा महीन कुतरके कमादके सिरकेमें ४० दिनतक तर रक्खे फिर सुखाके महीन पीसके पास रक्खे जिस धातुको मारना हो उसके हेठ ऊपर दो दो रत्ती देकर दो पाथी (कंडा) में आग देवे फुल होजायगा यह एक लाग है ॥ (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

सुवर्णके भेद ।

प्राकृतं सहजं वह्निसंभूतं खनिसंभवम् । रसेन्द्रवेधसंजातं स्वर्णं पंचविधं स्मृतम् ॥ ॥ ३४ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-प्राकृत सहज अग्निसे उत्पन्न, खानसे पैदाहुआ और पारद से बनाया हुआ इस प्रकार सोनेके पांच भेद हैं ॥ ३४ ॥

अथ पंचविध सुवर्णके लक्षण ।

ब्रह्माण्डं संवृतं येन रजोगुणभुवा खलु । तत्प्राकृतमिति प्रोक्तं देवानामपि दुर्लभम्॥ ॥ ३५ ॥ ब्रह्मा येनावृतो जातः सौवर्णेन जरायुणा। तन्मेरुरूपतां जातं सुवर्णं सहजं हि तत् ॥ ३६ ॥ विसृष्टमाग्निना शैवं तेजः पीतं सुदुःसहम् । अभूत्सर्वं समुद्दिष्टं सुवर्णं वह्निसंभवम् ॥ ३७ ॥ एवं स्वर्णत्रयं दिव्यं वर्णैः षोडशभिर्युतम् । धारणादेव तत्कुर्याच्छरीरमजरामरम् ॥ ३८॥ तत्रतत्र गिरीणां हि जातं खनिषु यद्भवेत् । तच्चतुर्दशवर्णाढ्यं भक्षितं सर्वरोगहृत् ॥ ३९ ॥ रसेन्द्रवेधसम्भूतं तद्वेधजमुदाहृतम् । रसायनं महाश्रेष्ठं पवित्रं वेधजं हि तत् ॥ ४० ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-रजोगुणसे उत्पन्न हुए जिस सुवर्णसे यह समस्त ब्रह्माण्ड व्याप्त होरहा है उसको प्राकृत सुवर्ण कहते हैं वह

देवताओंको भी दुर्लभ है। जिस सुवर्णकी बनीहुई जरायुसे आवृत हुआ ब्रह्मा उत्पन्न हुआ वह जरायु मेरुरूपको प्राप्त होगया उसको सहज सुवर्ण कहते हैं। पहले अग्निने जो श्रीमहादेवजीके वीर्य (पारद) को पीलिया था उसको न पचानेके कारण वमन कर बाहर निकाल दिया उससे उत्पन्न हुए सुवर्णको वह्निसम्भव कहते हैं। इसप्रकार उत्पन्न हुआ जो सुवर्ण दिव्य और सोलह वर्णोंसे युक्त अर्थात् पूर्ण रूपवाला होता है वह धारण करनेसे ही शरीरको अजर अमर करता है। और जो उन २ पर्वतोंकी खानोंमें जो सुवर्ण उत्पन्न होता है उसको खनिज सुवर्ण कहते हैं वह चौदह वर्णवाला होता है उसके खानेसे समस्त रोग नाश होजाते हैं। और जो पारदके वेधसे सुवर्ण उत्पन्न होता है उसको वेधज सुवर्ण कहते हैं अर्थात् वह किमियाई सोना कहाता है वह रसायन गुणवाला पवित्र और महाश्रेष्ठ है ॥ ३५--४० ॥

तिलाकी किस्में (उर्दू)

तिलाकी पांच किस्में हैं अव्वल आबी जो रेग दरियासे हासिल होता है, दोयम कानी मादनसे निकलता है, सोयम रावटी जो संग लाजवर्दसे निकलता है, चहारम नवाती जो एक दरख्तका गोंद है बाजे पहाडों पर होता है और उस गोंदको तांबे पर तरह करनेसे तिला करता है, पंजुम अमला जो एमाल कीमियाईसे हासिल होता है और सबसे ज्यादा खरा होता है-(सुफहा अकलीमियाँ १७०)

अथ अशुद्ध सुवर्णके दोष।

बलं च वीर्यं हरते नराणां रोगव्रजं पोषयतीह काये। मृत्युं विदध्याद्विधिना न शुद्धं स्वर्णं तथा वाऽमृतमप्यसम्यक् ॥ ४१ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-विधिपूर्वक शुद्ध नहीं किया हुआ सुवर्ण मनुष्योंके बल तथा वीर्यको हरता है और इस शरीरमें अनेक प्रकारके रोगोंको पालता है और मृत्युको भी देता है इसी प्रकार सुवर्णकी कच्ची भस्म भी अपगुण करती है ॥ ४१ ॥

तथा च।

सौख्यं वीर्यं बलं हन्ति रोगवर्गं करोति च। अशुद्धममृतं स्वर्णं तस्माच्छुद्धं च मारयेत् ॥ ४२ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-अशुद्ध तथा अपक्व सुवर्ण सुख बल और वीर्यको नाश करता है और अनेक प्रकारके रोगोंको करता है इस लिये शुद्ध सुवर्णको भस्म करे ॥ ४२ ॥

सुवर्णका शोधन।

कर्षप्रमाणं तु सुवर्णपत्रं शरावरुद्धं पटुधातुयुक्तम्। अंगारसंस्थं प्रहरार्धमानं ध्मानेन तत्स्यान्नतु पूर्णवर्णम् ॥ ४३ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-एक तोले सुवर्णके पत्रोंको शरावसम्पुटमें रख ऊपर नीचे लवण तथा गेरूको रख कर डेढ घंटेतक कोयलोंकी आंचमें धोंकनेसे शुद्ध तथा उत्तम वर्णवाला होजाता है ॥ ४३ ॥

सफाइतिला बजरियः सीसा (उर्दू)

१ सोनेमें अगर तांबा, लोहा, रांग, जस्त मिला होता है तो सीसा देकर राख यानी झारीकी घरियामें गलानेसे साफ होजाता है और धातु जल जाती है सीसा झारीमें मिल जाता है।

२ अगर चांदी मिली होगी तो तेजाबसे साफ होगी क्योंकि जलानेमें चांदी जलेगी तो सोना भी जलैगा।

३ तेजाब ३/४ शोरा १ कसीसको खींचा जाया करता था, अब अँगरेजोंसे काम लेते हैं (अब्दुलसमद वल्द करमखां साकिन शहद कोल मुहल्ला बालाइ किला पोर अताउल्लाह नियारिया)

सुवर्णकी विशेष शुद्धि।

वर्णमृत्तिकया लिप्त्वा मुनिशो ध्मापितं वसु। विशुध्यति वरं किंच वर्णवृद्धिश्च जायते ॥ ॥ ४४ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-वर्णमृत्तिका (अर्थात् जिससे कुँभार घडे रंगते हैं) उसे सोनेको लपेटकर सात बार अग्निमें तपावे तो सुवर्ण शुद्ध होता है तथा सर्वोत्तम वर्ण होता है ॥ ४४ ॥

खराब सोनेके मैलको निकाल उत्तम करनेकी विधि।

वल्मीकमृत्तिका धूम्रं गैरिकं चेष्टिका पटुः। इत्येता मृत्तिकाः पंच जम्बीरैश्चारनालकैः॥ ॥ ४५ ॥ पिष्ट्वा कंटकवेध्यानि स्वर्णपत्राणि लेपयेत्। पुटेल्लघुपुटैनैव यावद्वर्णो विवर्धते ॥ ४६ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-बँमईकी मिट्टी, घरका धूँआ, गेरू, ईंटका चूरा और नोंन इन पांचोंको जँभीरीके रससे पीस कंटकवेधी सोनेके पत्रोंपर लेपकर लघुपुटमें रख देवे इस तरह जबतक वह उत्तम वर्णका न हो तबतक पुट देता रहे ॥ ४५॥ ४६॥

तथा च।

इत्थमेव सुवर्णस्य शुद्धिर्नान्या हि विद्यते। तैलतक्रादिके या तु रूप्यादीनामुदाहृता॥ ॥ ४७ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-पूर्वोक्त रीति जो वर्णन की गई है वही सुवर्णकी शुद्धि है और नहीं और तैल मठा आदिमें जो शुद्धि है वह चांदी आदिकोंकी जाननी ॥ ४७ ॥

सम्मति-इन पूर्वोक्त प्रकारोंसे जो सुवर्णकी शुद्धि लिखी है उससे वह सुवर्ण होता है जिसको कि भाषामें कुंदन कहते हैं।

तथा च।

सुवर्णमुत्तमं वह्नौ विद्रुतं निक्षिपेत्त्रिशः। कांचनाररसे शुद्धं कांचनं जायते भृशम् ॥ ॥ ४८ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-उत्तम सुवर्णको आंचमें गलाकर कचनारके रसमें तीन बार बुझावे तो सुवर्ण अत्यन्त शुद्ध होता है ॥ ४८ ॥

सुवर्णके गुण ।

स्वर्णं स्निग्धमथास्ति पीतमधुरं दोषत्रयध्वंसनं शीतं स्वादुरसायनं रुचिकरं चक्षुष्यमायुःप्रदम् ॥ प्रज्ञावीर्यबलस्मृतिस्वरकरं कान्तिं विधत्ते तनोः संधत्ते दुरितक्षयं श्रियमिदं धत्ते नृणां धारणात्॥४९॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-सोना चिकना पीला मीठा और तीनों दोषोंका नाशक है तथा ठंढा स्वादु रसायन रुचिकारक नेत्रोंको हित आयुका दाता बुद्धि वीर्य बल स्मृति (याददास्त) और स्वरका करनेवाला शरीरकी कान्तिको करता है पापोंको नाश करता है और सुवर्णको शरीरपर धारण करनेसे मनुष्योंकी शोभाको बढाता है ॥ ४९ ॥

तथा च ।

आयुर्लक्ष्मीप्रभाधीस्मृतिकरमखिलं व्याधिविध्वंसि पुण्यं भूतावेशप्रशान्तिस्मरभरसुखदं सौख्यपुष्टिप्रकाशि ॥ गाङ्गेयं चाथ रूप्यं गदहरमजराकारि मेहापहारि क्षीणानां पुष्टिकारि स्फुटमतिकरणं वीर्यवृद्धिप्रकारि ॥ ५० ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-सुवर्ण आयु लक्ष्मी कांति बुद्धि तथा स्मरणशक्तिको बढाता है अनेक रोगोंको नाश करता है पुण्यकारक है भूतबाधाको दूर करता है कामदेवके सुखको उत्पन्न करता है शरीरके सुख तथा आनन्दका प्रकाशक है, रोगोंका नाशक बुढापेको दूर करनेवाला प्रमेहका नाशक है दुर्बल मनुष्योंको पुष्ट करता है बुद्धिको प्रफुल्लित करता है और वीर्यकी वृद्धिको करता है ॥ ५० ॥

तथा च ।

स्निग्धं मेध्यं विषगदहरं बृंहणं वृष्यमग्र्यं यक्ष्मोन्मादप्रशमनपरं देहरोगप्रमाथि ॥ मेधाबुद्धिस्मृतिसुखकरं सर्वदोषामयघ्नं रुच्यं दीपि प्रशमितरुजं स्वादुपाकं सुवर्णम् ॥ ५१ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-सुवर्ण चिकना और पवित्र होता है विषजनित रोगोंको दूर करता है बृंहण राजयक्ष्मा उन्माद और देहके अनेक रोगोंको नाश करता है मेधा बुद्धि और स्मरणशक्तिको बढाता है समस्त दोषोंके रोगोंको दूर करता है रुचिकर्ता दीपन और परिपाकमें स्वादु होता है ॥ ५१ ॥

सुवर्णमारणप्रकार ।

स्वर्णस्य द्विगुणं सूतं समं वाम्लेन मर्दयेत् । तद्गोलकसमं गन्धं निदध्यादधरोत्तरम् ॥ ॥ ५२ ॥ मृत्कर्पटैस्ततो रुद्ध्वा शरावदृढसम्पुटे । त्रिंशद्वनोपलैर्दद्यात्पुटान्येवं चतुर्दश ॥ ५३ ॥ निरुत्थं जायते भस्म गन्धो देयः पुनःपुनः । (रससारपद्धति.)

अर्थ-सुवर्णसे दूना अथवा समभाग पारद लेकर अम्लसे अर्थात् बिजोरा या नींबूके रससे एक प्रहरतक घोट गोला बनावे उस गोलेके ऊपर नीचे गंधक देकर मिट्टीके शकोरेमें रख और कपरौटी कर तीस जंगली कंडोंमें रखकर पुट देवे इस प्रकार चौदह पुट देवे प्रत्येक पुटमें पारदके साथ घोट गंधकको ऊपर नीचे देना चाहिये इस क्रियाके करनेसे सुवर्णकी निरुत्थ भस्म होगी ॥ ५२ ॥ ५३ ॥

तथा च ।

सुवर्णेऽग्नौ द्रुते शुद्धं दद्यात्सीसं कलांशकम् । चूर्णयित्वा शनैः खल्वे मर्दयेदम्लयोगतः ॥ ॥ ५४ ॥ पश्चात्तद्गोलकं कृत्वा तुल्यगन्धरजोगतम् । शरावसम्पुटे स्थाप्यं सन्धिरोधं विधाय च ॥ ५५ ॥ त्रिंशद्वनोपलैः पच्यात्सप्तधैवं पुनःपुनः । निरुत्थं जायते भस्म सुवर्णस्य न संशयः ॥ ५६ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-सुवर्णको घरियामें रख गलावे जब गलजावे तब उसमें सोलहवां भाग शुद्ध सीसा मिला देवे फिर दोनोंको चूर्ण कर खरलमें डाल धीरे २ नींबूके रससे घोटे फिर उसका गोला बना ऊपर नीचे सुवर्णके समान भाग लीहुई गंधकका चूरा रखकर शकोरेमें रख और कपरौटी कर तीस जंगली कंडोंमें फूक देवे तो सात पुटमें ही सुवर्णकी निरुत्थ भस्म होजायगी इसमें सन्देह नहीं है ॥ ५४-५६ ॥

तथा च ।

सिलासिन्दूरयोश्चूर्णं समयोरर्कदुग्धकैः । सप्तधा भावयित्वा तु शोषयेच्च पुनःपुनः ॥ ॥ ५७ ॥ ततस्तु गलिते हेम्नि कल्कोऽयं दीयते समः । पुनर्धमेदतितरां यथा कल्को विलीयते ॥ एवं वेलात्रयं दद्यात्कल्कं हेममृतिर्भवेत् ॥ ५८ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-मैनसिल और सिन्दूरके चूर्णको समान भाग लेकर आकके दूधसे सात बार सुखा २ कर भावना देवे फिर सुवर्णके गलने पर उस कल्कको समान भाग लेकर सुवर्णमें डाल देवे फिर गलाकर कल्क डालदेवे एवं तीन बार करनेसे सुवर्णकी भस्म होगी ॥ ५७ ॥ ५८ ॥

तथा च ।

कृत्वा कंटकवेध्यानि स्वर्णपत्राणि लेपयेत् । लुङ्गाम्बुभस्मसूतेन म्रियते दशभिः पुटैः ॥ ॥ ५९ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-सुवर्णके ऐसे पत्र बनावे कि जिनमें कांटा छेदे तो छिदजावे उनपर बिजोरेके रससे घोटीहुई पारदकी भस्मसे लेपकर और शरावसम्पुट (सकोरेमें बंद) में रखकर दस बार गजपुट देवे तो सुवर्णकी भस्म होगी (प्रत्येक पुटमें सुवर्णके समान पारदभस्म लेनी चाहिये) ॥ ५९ ॥

सुवर्णभस्मविधि ।

द्रुते विनिक्षिपेत्स्वर्णे लोहमानं मृतं रसम् । विचूर्ण्य लुङ्गतोयेन दरदेन समन्वितम् ॥

जायते कुंकुमच्छायं स्वर्णं द्वादशभिः पुटैः ॥ ॥ ६० ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-सुवर्णको अग्निमें गलाकर उसमें सुवर्णकी बराबर ही पारदकी भस्मको डालदेवे फिर दोनोंको चूर्णकर खरलमें डाल देवे और उसमें सुवर्णके समान भाग शुद्ध सिंगरफ डाल एक दिवसतक बिजोरेके रससे घोटे और सम्पुट दे गजपुटमें फूके इस तरह बारह पुट देनेसे सुवर्णकी केसरके रंगके समान पीली भस्म होगी ॥ ६० ॥

तथा च ।

हेम्नः पादं मृतं सूतं पिष्टमम्लेन केनचित् । पत्रे लिप्त्वा पुटैः पच्यादष्टभिर्म्रियते ध्रुवम्॥ ॥ ६१ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-सुवर्णसे चौथाई भाग पारदभस्म लेकर नींबू या और किसी खटाईसे घोट सुवर्णके पत्रोंपर लेपकर गजपुट देवे इसी प्रकार आठ पुट देनेसे सुवर्णकी भस्म होगी ६१॥

तरकीब कुश्ता तिला (उर्दू)

(शहंशाह नुसखा व मौसूम अकसीर अहमदी बिला दरेग बाद तजरुबा नाजरीन अलकीमियाँकी नजर है ।) बरसोंकी ताकतमेदा जाइलशुदाको फिलफौर ऊद करनेवाला बाहका मुहर्रिक, एसाब मुर्द:को कामिल फाइदा बखश दूध घी हजम करके रंग बदनको अपने हमरंग करदेनेवाला और बेजरर दिलो दमाग रूहो जिगरको कुव्वत बखश जौफ मसानःका दाफै, मुर्मसिक और जईफोंका असाइ हरारत गरीजीका रखवाला अगर दुनियाँ भरमें है तो इससे बढकर कोई नहीं जो साहब इस सेना मौतकिद हैं वह उसीवक्ततक हैं कि जबतक इस शहंशाह नुसखेके जादू असर फाइदेको उन्होंने मशाहदा नहीं किया जिस रोज इसकी चंद खुराकें स्तैमाल करलेंगे बस फिर इसके गुलाम हैं, अब आपको मुनासिब है कि दिल लगाकर जरा इस इसरार आजमकी तरकीबको मुलाहिजा फर्मावें ।

अव्वल तिला खालिस उमदा तीन माशेका बुरादा करके चहार बूटियोंके दस दस तोले पानीमें तर तीनबार खरल करे, लेकिन यह खयाल रहे कि खरल घिसनेवाला न हो, पहले आब पोस्तनीम दोयम आबबेख गुळ अव्वासी, सोयम आबबर्ग तुलसी, चहारम आब गुलसुर्ख पहाडी आखिर नंबर पर स्याह रंगका बुरादा मजकूर नरम नरम होजायगा, फिर इसका एक गिलोला बनाकर एक खुर्द प्याले गिली कोरेमें रखकर दूसरा प्याला बतौर सरपोश मुँहपर देकर बाद गिलेहिकमत छहसेर उपले नीचे देकर बादहू प्यालेके ऊपर छः सेर और उपले डालकर चारों तरफ आग लगावे जब सर्द होजावें निकाल लै, बेचमक वह गिलोला मिस्ल खाक खिस्त कौहना कदरे रेग माइल व सुर्खी बरामद होगा पार्चाबेज करके शीशीमें निहायत हिफाजतसे रक्खें इसका इश्तहार मुलाहिजा हो सुफहा ३१ पर । (सुफहा १८-१९ किताब अखबार अलकीमियां)

कुश्तातिला पारा और गंधकसे (उर्दू)

सोनेके वर्क २ तोले, पारा मुसफ्फा चार तोले खरलमें डालकर एक सौ अदद अर्कलैमूं कागजीमें सहक करे और फिर इसमें ६ तोले गंधक मुसफ्फा डालकर पचास अदद लैमूंका अर्क और डाले और खूब सहक करे और इसीका गोला बनाकर शकोरोंमें रखकर गिलेहिकमत करके तीस अदद उपलोंमें फूँक दे और फिर ६ तोले गंधक मुसफ्फा डालकर और अर्कलैमूं कागजी बीस अदद सहक करे और तरीक मजकूरसे फूकदे इसी तरह चौदह मर्तबः फूँकनेसे सोनेका कुश्ता तय्यार होजायगा, जौफ बाहमें चार चावलसे एक रत्तीतक हमराह शहद खावे । (सुफहा २४ किताब अखबार अलकीमियाँ १।५।१९०५)

कुश्ता तिला (फार्सी)

वर्क तिलाइ बिरियां चस्पानीदः तहबतह दरजर्फ निहादह बआब बर्गपान यक अदद वाला बाशद कपरौटी साख्तः दर पंज आसार पाचकदस्ती आतिश दिहन्द अगर जरूरत बाशद दुबारा आब पान अन्दाख्तः आतिश दिहन्द । (अजकिताब तजरुबात तुलसीप्रसाद साहब सिकंदराराऊ)

अभ्रस्वर्णभस्म रसायन ।

अभ्रभस्म १००० आंचकी ५ तोले, स्वर्णभस्म १०१ आंचकी ४ तोले, लोहभस्म १०१ आंचकी १ तोला, तीनों औषधियोंको क्रमसे निम्न लिखित औषधियोंमें खरल करके चौदह चौदह आंच दे लेनी प्रत्येक औषधिसे अलग अलग चौदह चौदह आंच देनी चाहियें और हर आंचमें १० तोला पारा खरल करते समय शामिल करना चाहिये हरबार तीन पहर खरल करना चाहिये और हर आंच ढाई सेर कंडोंकी होनी चाहिये ।

तिधारेका दूध, आकका दूध, धतूरेका दूध, तुलसीका रस, घी ग्वारका रस, त्रिफलाका क्वाथ, भांगरेका रस चौलाईका रस बथुआका रस शंखाहूलीका रस, आकाशबेलका रस, अर्क गुलाब, नकछिकनीका रस, गायका दूध (हकीम लाला बलदेवप्रसादजी मुहल्ला नईबस्ती मुरादाबादसे प्राप्त)

इन्होंने कहा कि हकीम महमूदखांके यहां यह अकसीर बहुत पुराने जमानेकी तय्यार रक्खीहुई है कि जिसको एक अस्सी बरसके बुड्ढेको खिलायागया था४० दिन में जिससे उसमें जवानोंकीसी ताकत आगई और तीन सेरकी भूख होगई, सुबहको अकसीरकी एक खुराक देकर ऊपरसे पावभर घी और आध सेर दूध पिलादिया जाताथा, थोडी देर बाद नींद आजाती थी और हालत नींदमें बहुतसा पसीना बदनसे निकल जाता था आँख खुलनेपर फिर भूख मालूम होती थी और फिर घी दूध दियाजाता था इसी तरह दिनमें कईदफे घी दूध पिलाया जाता था ४० दिनमें बहुतसा घी दूध खाकर बहुतसी ताकत आगई, बादको तबरीद खिलाकर मिजाजकी गर्मी रफै करदी गई ।

सब प्रयोगोंमें सुवर्णकी श्रेष्ठता ।

सर्वौषधिप्रयोगेण व्याधयो न गता हि ये। कर्मभिः पंचभिश्चापि सुवर्णं तेषु योजयेत्॥ ॥ ६२ ॥ शिलाजतुप्रयोगैस्तु ताप्यसूतकयोस्तथा । अन्यै रसायनैश्चापि प्रयोगो हेम्न उत्तमः ॥ ६३ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-समस्त औषधियोंके प्रयोगसे अर्थात् अनेक औषधियोंके देनेसे जो रोग नहीं गये हैं और आरोग पंचकर्मोंके करनेसे नहीं गयेहैं उन रोगोंमें सुवर्णको देना चाहिये शिलाजीतके प्रयोगोंसे अथवा सुवर्ण माक्षिक और पारदके प्रयोगोंसे अथवा अनेक रसायनोंसे भी सुवर्ण भस्मका प्रयोग उत्तम है ॥ ६२ ॥ ६३ ॥

विना भस्म कियेहुए सुवर्णके सेवनकी विधि ।

अपक्कं सजलं हेम घृष्टं क्षौद्रयुतं पिबेत् अथवा नवकाख्यन्तु चूर्णितं मधुयुक् भजेत॥ ॥ ६४ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-बिना भस्म कियेहुए शुद्ध सुवर्णके डेलेको पानीमें घिस और शहद मिलाकर पीवे अथवा सोनेके वर्कको शहद मिला करचाटे ॥ ६४ ॥

शुद्ध देह करनेके बाद सुवर्णका प्रयोग करना ।

विषमुक्ताय दद्याच्च शुद्धायोर्ध्वमधस्तथा । सूक्ष्मं ताम्ररजः काले सक्षौद्रं हृद्विशोधनम् ॥ ६५ ॥ शुद्धे हृदि ततः शाणं हेमचूर्णस्य दापयेत । न सज्जते हेमयोगे पद्मपत्रेम्बुवद्विषम् ॥ ६६ ॥ (रससारपद्धति.

अर्थ-जिस मनुष्यने विष खालियाहो उसको नीचे लिखे हुए प्रकारसे सुवर्णभस्म खानेको देना चाहिये प्रथम वमन और विरेचन कराकर सूक्ष्म ताम्रभस्मको प्रातःकाल शहदके साथ देवे जिससे कि वमन और विरेचन होकर हृदय शुद्ध होजावगा उसके बाद ४ मासे सुवर्ण भस्म देनी चाहिये सुवर्णके देनेसे विषका हृदयमें योग नहीं होता ॥ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

सुवर्णभस्मके सेवनकी विधि ।

एतद्भस्मसुवर्णजं कटुघृतोपेतं द्विगुञ्जोन्मितं लीढं हन्ति नृणां क्षयाग्निसदनं श्वासं च कासारुचिम्। ओजोधातुविवर्धनं बलकरं पांड्वामयध्वंसनं पथ्यं सर्वविषापहं गरहरं दुष्टग्रहण्यादिनुत ॥ ६७ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-यह सुवर्णका भस्म दो रत्ती मिर्च और घीके साथ चाटा जावे तो मनुष्योंके क्षयरोग मंदाग्नि श्वास खाँसी और अरुचिको नाश करता है ओज और धातुके बढानेवाला बलकारक पाण्डुरोगका नाशक सब प्रकारके विषोंका नाश करनेवाला और असाध्य संग्रहणीको भी दूर करनेवाला है ॥ ६७ ॥

तथा च ।

बलं च वीर्यं हरते नराणां रोगव्रजं कोपयतीव काये ॥ असौख्यकारं च सदैव हेम पक्कं सदोषं मरणं करोति ॥ ६८ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-कच्चा और अशुद्ध सुवर्ण मनुष्योंके बल और वीर्यको हरता है और शरीरमें अनेक रोगोंको करता है और सुखका नाश करनेवाला होकर मृत्युको करता है ॥ ६८ ॥

सुवर्णके अनुपान ।

मध्वामलकचूर्णं तु सुवर्णं चेति तत्त्रयम् । प्रास्यारिष्टगृहीतोपि मुच्यते प्राणसंकटात् ॥ ६९॥ मेधाकामस्तु वचया श्रीकामः पद्मकेसरैः॥खंडपुष्प्यावयोर्थी च विदार्याथ प्रजार्थकः ॥ ७० ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-शहद और आमलेका चूर्ण और सुवर्णभस्म इन तीनोंको मिलाकर प्रातःकाल चाटे तो रोगोंसे पकडा हुआ भी मनुष्य प्राणसंकटसे छूट जाताहै (अर्थात् बचजाताहै) बुद्धिकी इच्छावाला मनुष्य दूधवचके साथ कांतिकी इच्छावाला कमलकी केसरके साथ आयुवृद्धिइच्छावाला कंदके साथ और संतानकी इच्छवाला मनुष्य विदारीकंदके साथ सुवर्ण भस्मको सेवन करे ॥ ६९ ॥ ७० ॥

सुवर्णभस्मके गुण ।

पक्कं हेमरसायनं विदुरथासद्यंत्रपक्कं विषप्रध्वंसि क्षयिबृंहणं वमिहरं वम्यां ज्वरिभ्यो हितम् । रूप्याद्येषु विमृष्य वादिभिरुपक्षितोस्य पक्के गुणस्ताम्रं कृमिविषार्तिहन्निगदितं वैद्यैरपक्कं ध्रुवम् ॥ ७१ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-पकेहुए सुवर्णको रसायन कहतेहैं क्योंकि पक्क सुवर्णभस्म विष और क्षयको नाश करनेवाला है, बलकारक है, ज्वरमें जो वमन होताहै उसको रोकनेवाला है, विना विचार किये हुए कितनेक वैद्योंने इसके गुण विना भस्म कियेहुए सुवर्णमें लिखे हैं कहीं २ वैद्योंने पक्क ताम्रको भी विषका दूर करनेवाला कहाहै ॥ ७१ ॥

सुवर्णकी द्रुति ।

मण्डूकास्थिवसाटंकहयलालेन्द्रगोपकैः । प्रतिवापेन कनकं सुचिरं तिष्ठति द्रुतम् ॥ ॥ ७२ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-मेंडककी हड्डी और चरबी, सुहागा, घोडेकी लार व बीरबहूटी जो (वर्षातमें लाल मखमलके समान जीव होताहै) इनको पीस कर चूर्ण बनालेवे इसके बाद सुवर्णको आंचमें गलावे और पूर्वोक्त चूर्णका थोडा २ प्रक्षेप करता रहे तो सुवर्ण जलके समान पतला होकर बहुत दिनतक ठहरेगा ॥ ७२ ॥

तथा च ।

चूर्णं सुरेन्द्रगोपानां देवदालीफलद्रवैः । भावितं सप्तशं हेम करोति जलवद्द्रुतम् ॥ ॥ ७३ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-बीरबहूटियोंके चूर्णको देवदालीफलोंके रसकी सात भावना देवे और उस चूर्णको गलेहुए सुवर्णमें सात ही वार डाले तो सुवर्णकी द्रुति होगी ॥ ७३ ॥

चांदीकी उत्पत्ति।

त्रिपुरस्य वधार्थाय निर्निमेषैर्विलोचनैः। निरीक्षयामास शिवः क्रोधेन परिपूरितः॥ ॥ ७४ ॥ ततः शुक्रा समभवत्तस्यैकस्माद्विलोचनात्। परस्मादभवद्रुद्रो गणो वह्निरिव ज्वलन्॥७५॥ तृतीयादश्रुबिंदुस्तु लोचनादपतद्भुवि। तस्माद्रजतमुत्पन्नं नानाभूमिषु संस्थितम्।कृत्रिमं चापि भवति वंगादे सूतयोगतः॥७६॥मारणार्थं लोकसिद्धं ग्राह्यं लक्षणलक्षितम् ॥ ७७ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–महादेवजीने त्रिपुरके मारनेके लिये विना पलक मारेहुये नेत्रोंसे देखा तहां एकनेत्रसे सफेदी पैदा हुई और दूसरी आंखसे वीरभद्र पैदा हुआ और तीसरी आंखसे जो आंसूकी बूंद पृथ्वीपर गिरी उससे अनेक स्थानोंपर चांदी पैदा हुई यह चांदी रांग और शीशा और पारदके योगसे कृत्रिमभी पैदा होतीहै चांदीकी भस्मके लिये लोकप्रसिद्ध चांदीको लेना चाहिये ॥ ७४-७७ ॥

चांदीके भेद और उनके लक्षण।

सहजं खनिसंजातं कृत्रिमं त्रिविधं मतम्। रजतं पूर्वपूर्वं हि स्वगुणैरुत्तरोत्तरम् ॥ ७८ ॥ कैलासाद्यद्रिसंभूतं सहजं रजतं भवेत्। तत्स्पृष्टं हि सकृद्व्याधिनाशनं देहिनां भवेत्॥ ॥ ७९ ॥ हिमाचलादिकूटेषु यद्रूप्यं जायते हि तत्। खनिजं कथ्यते तज्ज्ञैः परमं हि रसायनम् ॥ ८० ॥ श्रीरामपादुकान्यस्तं वंगं यद्रूप्यतां गतम्। तत्पादरूप्यमित्युक्तं कृत्रिमं सर्वरोगनुत् ॥८१॥(रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–सहज खानसे उत्पन्न हुआ और कृत्रिम भेदसे रजत तीन प्रकारका है इनमें पूर्व २ सर्वोत्तम हैं. कैलासादि पहाडोंमें उत्पन्न हुआ रजत सहज कहाताहै उसके एक बार देनेसे जीवोंका रोग नाश होताहै और हिमालयादि पहाडोंपर जो चांदी उत्पन्न होती है वह परम रसायन और खनिज कहातीहै और श्रीरामचंद्रजीकी खडाऊँके लगनेसे जो रांग चांदी होगया है उसको पादरूप्य या कृत्रिम कहते हैं वह सबरोगोंको दूर करनेवाली है ॥ ७८–८१ ॥

नुकराकी किस्में (उर्दू)

नुकराकी सात किस्में हैं क्योंकि सात तरहसे हासिल होती है अव्वल मादनसे, दोयम जस्तसे, सोयम सीसासे, चहारम कलईसे, पंजम हरतालसे, शशम मिससे हफ्तम सीमाबसे (सुफहा अकलीमियां १७०)

खराब चांदीका लक्षण।

कृत्रिमं कठिनं रूक्षं रक्तपीतं दलं लघु। दाहच्छेदघनैर्नष्टं रूप्यं दुष्टं प्रकीर्तितम् ॥ ॥ ८२ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–कृत्रिम चांदी कडी रूखी लाल पीली खिलनेवाली हलकी होती है यह चांदी खराब होती है ॥ ८२ ॥

शुद्ध चांदीके लक्षण।

गुरु स्निग्धं मृदु श्वेतं दाहे छेदे घनक्षमम्। वर्णाढ्यं चन्द्रवत्स्वच्छं रूप्यं नवगुणं भवेत् ॥ ८३ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–भारीपन अर्थात् भारी चिकनी कोमल तपाने और गलानेमें सफेद घन (हथौडे) की चोटको सहनेवाली उत्तम रंगवाली चंद्रमाके समान स्वच्छ ये चांदीके नव गुण हैं ॥ ८३ ॥

तथा च।

घनं स्वच्छं गुरु स्निग्धं दाहे छेदे सितं मृदु। शंखाभं मसृणं स्फोटरहितं रजतं शुभम् ॥ ॥ ८४ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–घना साफ भारी चिकना तपाने तथा काटनेमें सफेद कोमल शंखके समान श्वेत और जो चोट लगानेसे नहीं खिलता हो वह रजत (चांदी) अच्छी होती है॥८४॥

अशुद्धचांदीके दोष।

तारं शरीरस्य करोति तापं बिड्बन्धतां यच्छति शुक्रनाशम्। वीर्यं बलं हन्ति तनोश्च पुष्टिं महागदान्पोषयति ह्यशुद्धम् ॥ ८५ ॥ (रससारपद्धति)

अर्थ–अशुद्ध चांदी शरीरमें ऊष्माको करती है कब्जी तथा वीर्यके नाशको करती है तथा शरीरके बलपुरुषार्थको नष्ट करती है और शरीरको दुर्बल करती है तथा अनेक रोगोंको उत्पन्न करता है ॥ ८५ ॥

शुद्ध चांदीके गुण।

रूप्यं शीतं कषायाम्लं स्वादुपाकरसं सरम्। वयसः स्थापनं स्निग्धं लेखनं वातपित्तजित्॥ ॥ ८६ ॥ प्रमेहादिकरोगांश्च नाशयत्यचिराद् ध्रुवम्।गुटिकास्यं धृता वक्त्रे तृताशोषविनाशिनी ॥८७ ॥ रससारपद्धति.)

अर्थ–चांदी ठंढी, कषैली, खट्टी, परिपाकमें मीठी दस्तावर आयुको स्थिर रखनेवाली, चिकनी और वातपित्तको जीतनेवाली है, प्रमेह आदि रोगोंको शीघ्रही नाश करती है इसकी गोलीको मुखमें रखनेसे मुखशोषको दूर करती है ॥ ८६ ॥ ८७ ॥

तथा च।

रूप्यं विपाकमधुरं तुवराम्लसारं शीतं सरं परमलेखनकं च रुच्यम् ॥ स्निग्धं च वातकफजिज्जठराग्निदीपि बल्यं परं स्थिरवयःकरणं च मेध्यम् ॥ ८८ ॥ रौप्यं शीतं कषायाम्लं स्निग्धं वातहरं गुरु ॥ रसायनविधानेन सर्वरोगापहारकम् ॥ ८९ ॥ रसरत्नसमुच्चय.)

१ स्फुटनशीलम्।

अर्थ-चांदी परिपाकमें मीठी और भीतरसे खट्टे रसवाली ठंढी दस्तावर और अत्यन्त लेखन जठराग्निको दीप्त करती है, रुचिकारक चिकनी वात पित्तको जीतनेवाली पवित्र और आयुको स्थिर रखती है। चांदी ठंढी कषैली खट्टी चिकनी वातहर और भारी होती है और रसायनविधिसे समस्त रोगोंका नाश करनेवाली है ॥ ८८ ॥ ८९ ॥

अशुद्ध चांदीमारनेके दोष ।

आयुः शुक्रं बलं हन्ति तापविड्बन्धरोगकृत्। अशुद्धं च मृतं तारं शुद्धमार्यमतो बुधैः ॥ ॥ ९० ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-अशुद्ध मारीहुई चांदी आयु शुक्र तथा बलको नाश करती है। सन्ताप तथा कब्जियतको करती है इस लिये वैद्यको चाहिये कि चांदीको शुद्ध करकेही भस्म करनी चाहिये ॥ ९० ॥

चांदीकी शुद्धि ।

समसीसं धमेद्वह्नौ रजतं मूषिकोदरे। यावत्सीसक्षयं तावद्रूप्यशुद्धिः परा भवेत ॥ ॥ ९१ ॥ रससारपद्धति)

अर्थ-चांदीमें चांदीके तुल्य सीसा मिलाकर और दोनोंको घरियामें रख आंचमें धोंके जब धोंकते २ सीसा जल जाय तब चांदीकी उत्तम शुद्धि होजायगी ॥ ९१ ॥

तथा च ।

पत्रीकृतं तु रजतं प्रतप्तं जातवेदसि। निर्वापितमगस्त्यस्य रसे वारत्रयं शुचि ॥ ॥ ९२ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-चांदीके पत्र बनाकर और अग्निमें तपातपाकर अगस्त्यके पत्तोंके रसमें तीन बार बुझावे तो चांदी अत्यन्त शुद्ध होगी ॥ ९२ ॥

तथा च ।

तैले तक्रे गवां मूत्रे ह्यारनाले कुलित्थजे। क्रमान्निषेचयेत्तप्तं द्रावेद्रावे तु सप्तधा ॥ स्वर्णादिलोहपत्राणां शुद्धिरेषा प्रशस्यते ॥ ॥ ९३ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-सुवर्ण आदि धातुओंमें जिसको शुद्ध करना हो उसके पत्र बनाकर तैल मठा गोमूत्र कांजी और कुलथीके काढेमें तपातपाकर क्रमसे सात २ बार बुझावे तो स्वर्णादि धातुओंकी उत्तम शुद्धि होगी ॥ ९३ ॥

तथा च ।

नागेन टंकणेनैव वापितं शुद्धमिच्छति ॥ तारं त्रिवारं निक्षिप्तं तैले ज्योतिष्मतीभवे ॥ ९४ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-गलीहुई चांदीमें समभाग शीसा तथा सुहागा डाल कर तेज अग्निमें धोंके फिर मालकांगनीके तैलमें सात बार बुझावे तो चांदी शुद्ध होगी ॥ ९४ ॥

तथा च ।

खर्परे भस्मचूर्णाभ्यां परितः पालिकां चरेत् । तत्र रूप्यं विनिक्षिप्य समसीससमन्वितम् ॥ ९५ ॥ जातसीसमयं यावद्धमेत्तावत्पुनःपुनः । इत्थं संशोधितं रूप्यं योजनीयं रसादिषु ॥ ९६ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-खिपरेमें चूने और राखकी गोल क्यारी बनाकर उसमें सम भाग सीसा और चांदी मिलाकर रखदेवे और कोयलेपर चढा आंच लगावे जब सीसा जलकर चांदीमात्र रहजावे तब उस शुद्ध चांदीको रसादिकोंमें वर्ते॥९५॥९६॥

तथा च रजतभस्म।

विधाय पिंडिं सूतेन रजतस्याथ मेलयेत्॥ तालं गंधसमं शुद्धं तन्मर्द्य निंबुकद्रवैः ९७॥ गोलकीकृत्य संरुद्धं मूषायां स्वर्णवद्दृढम् ॥ द्वित्रैः पुटैर्भवेद्भस्म योज्यते तद्रसादिषु ॥ ॥ ९८ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-चांदी और पारेको समान भाग लेकर खरलमें डाल कर घोटे फिर हरताल और गंधकको समान भाग लेकर खरलमें डाल चारों पदार्थोंको नींबूके रससे घोट गोला बनाय घरियामें रख और ऊपरसे दूसरी घरिया रख मुद्रा करे सुवर्णके समान दो तीन ही पुट देनेसे चांदीकी भस्म होती है रसादिकोंमें उसका प्रयोग करना चाहिये ॥ ९७ ॥ ९८ ॥

तथा च ।

भागैकं तालकं मर्द्य याममम्लेन केनचित् । तेन भागत्रयं तारपत्राणि परिलेपयेत् ॥ ॥ ९९ ॥ धृत्वा मूषापुटे रुद्ध्वा पुटेत्रिंशद्वनोपलैः । समुद्धृत्य पुनस्तालं धृत्वा रुद्ध्वा पुटे पचेत ॥ एवं चतुर्दशपुटैस्तालं हेम प्रजायते ॥ १०० ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-एक भाग हरतालको किसी खटाईसे घोट कर तीन भाग चांदीपर लेप करदे फिर उसको घरियामें रख और कपरौटीकर तीस जंगली कंडोंमें फूंक देवे फिर निकालकर पूर्वोक्त रीतिसे लेप कर चौदह बार फूंके तो चाँदीकी भस्म होगी ॥ ९९ ॥ १०० ॥

तथा च ।

लकुचद्रवसूताभ्यां तारपत्राणि लेपयेत् । ऊर्ध्वाधो गंधकं दत्त्वा मूषामध्ये निरुध्य च ॥ १०१ ॥ स्वेदयेद्वालुकायंत्रे दिनमेकं दृढाग्निना । स्वाङ्गशीतां च तां पिष्टिं साम्लतालेन मर्दिताम् । पुटे द्वादशवाराणि भस्मीभवति रूप्यकम् ॥ १०२ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-पारद और चांदीको नींबूके रसमें घोटे अथवा पारद भस्मको नींबूके रसमें घोट चांदीके पत्रोंपर लेप करे और ऊपर नीचे गंधक देकर घरियामें रख और कपरौटी कर वालुकायन्त्रमें एक दिन तीव्राग्निसे स्वेदन करे स्वांगशीतल होनेपर उस पिट्ठीको खटाई और हरतालके साथ मर्दन करे इस प्रकार १२ पुट देनेसे चांदीकी भस्म होजायगी ॥ १०१ ॥ १०२ ॥

तथा च ।

माक्षीकचूर्णलुङ्गाम्बुमर्दितं पुटितं शनैः । त्रिंशद्वारेण तत्तारं भस्मसाज्जायतेतराम् ॥ ॥ १०३ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-चांदीके रेतसे चौथाई भाग सोनामक्खीका चूर्ण लेकर दोनोंको बिजोरेके रसमें घोट बारह पुट देवे इस प्रकार तीस बार करनेसे चांदीकी भस्म होती है ॥ १०३ ॥

तथा च ।

भाव्यं ताप्यं स्नुहीक्षीरैस्तारपत्राणि लेपयेत् । मारयेत्पुटयोगेन निरुत्थं जायते ध्रुवम् ॥ १०४ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-सोनामक्खीको थूहरके दूधसे भावना देकर चांदीके पत्रोंपर लेप करे फिर संपुटमें रख गजपुटमें फूंक देवे तो चाँदीकी निरुत्थ (पक्की) भस्म होगी ॥ १०४ ॥

तथा च ।

तारपत्रं चतुर्भागं भागैकं शुद्धतालकम् । मर्द्य जम्बीरजद्रावैस्तारपत्राणि लेपयेत् ॥ ॥ १०५ ॥ शोषयेदातपे नूनं त्रिंशदुपलकैः पचेत् । चतुर्दशपुटैरेवं निरुत्थं जायते ध्रुवम् ॥ १०६ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-चांदीके पत्रोंसे चौथाई भाग शुद्ध हरताल लेकर नींबूके रसमें घोट और पत्रोंपर लेप कर सुखालेवे फिर सम्पुटमें रख और कपरौटी कर तीस जंगली कंडोंकी आंचमें फूंके इस प्रकार चौदह पुट देनेसे चांदीकी निरुत्थ भस्म होगी प्रत्येक पुटमें चतुर्थांश हरताल डालनी चाहिये ॥ १०५ ॥ १०६ ॥

तथा च ।

६ तोले लजवंतीकी लुगदीमें रुपया रख कर पक्के पाउभर चीथडोंको लपेट आग लगादे तो भस्म होगी । (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

तथा ।

६ तोले पीपलके छालकी लुगदीमें रुपया रखके कच्चे पावभर कपडा लपेटके ६ सेर पक्के ऊँटकी मींगनोंमें आग देवे भस्म होगी । (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

कुश्ता चांदी एकही आगमें फली बबूलमें (उर्दू)

चांदीका पत्तरा १ तोले, कच्चे तिकले कीकडके ४ तोले लुगदा बनाकर उसमें पत्रे रखकर १५ सेर उपलोंकी आग देवे एकही आगमें कुश्ता होगा मुजर्रिब है । (सुफहा ९ वैशोपकारक लाहौर १६।८।१९०५)

कुश्ता चांदी एक आंचका (उर्दू)

कुश्ता चांदी एक आंचका निहायत अजीब व गरीब इसरारी व सदरी नुसखा जिसको मैंने आजतक मुखफ्फी रखा था इसका अखबार अलकीमियामें दर्ज कराना वजिन्सई यह मसल है मिसरा कागजपै रखदिया है कलेजा निकाल कर, अगर अलकीमियाँकी बिरादरी अब भी एडीटर साहबकी कदर अफजाई न फर्मावे और अलकीमियाँकी खरीदारीसे इसे तकवियत न बख्शे तो निहायत अफसोसका मुकाम होगा, गुलेनीम ४५ तोला, रोगन कुंजद ६ माशे, चांदी बशकल रुपया १ तोले, नीमके फूलोंको घोटकर तेल मिलाकर गोलासा बनाले और रुपया दर्मियान देकर १५ सेर उपलोंकी आंच देदो फूलजावेगा और कौनिनकी तरह मुलाइम कुश्ता होगा । (सुफहा १३ अखबार अलकीमियां २४।२।१९०९)

कुश्ता नुकरा एक आंच-जाफरान व सहँजनेकी लुबदीमें (उर्दू)

खालिस सहँजनेकी जडका पानी निकालकर जाफरान एक तोलेको पीसकर दो टिकिया बनालेवे चांदी तोलाभरका एक पत्र बनाकर हर दो टिकियोंमें देकर फिर सहँजनेकी पोस्त जडके सेरभर नुगदेमें रखकर मजबूत कपरौटी और गिलेहिकमत करके गजपुट आंचदें इन्शा अल्लाह एकही आंचमें कुश्ता होजायगा । (सुफहा १० अखबार अलकीमियां १।५।१९०५)

कुश्ता नुकरा कटाई सफेद फूलमें एक आंच (उर्दू)

चांदीको अगर कटाई खुर्द जिसको अरबीमें हदक और फार्सीमें बादंजानवरी और पंजाबीमें खटली और सत्यानासी कहते हैं बशर्ते कि सफेद गुलकी दस्तयाब हो, इस कदर लुबदीमें कि अच्छीतरह पोशीदा होजावे रखकर दो तीन सेर कंडोंमें सीतल पुटकी तरह आगदे तो निहायत आला किस्मका कुश्ता तय्यार होता है, जो जाजव आब सीमाव भी है क्योंकि तनेतनहा अकसीरी है, और इससे अकसीर कमरी बनाई गई है कई अशखासकी तजरुबा हुआ है। (सुफहा २६ अखबार अलकीमियां १६।५।१९०५)

रुपयेका कुश्ता एक आंचमें (उर्दू)

बर्ग घूंघची स्याह ६ माशे, बर्ग भंगरा सफेद आध पाव पुख्तः सुहागा डेढ माशे बर्ग हाइको पीसकर नुगदा तय्यार करें और अन्दर नुगदेके कदरे सुहागा डालकर रुपया रखदे ऊपरसे किसी कदर सुहागा और डाले, फिर गोलासा बनालें कि रुपया बिलकुल गायब होजाय, एक पार्चा चार पांच अंगुल चौडा पीली मिट्टीमें लतपत करके गोलेपर कपरौटी करे २२ सेर पुख्तः कंडे सहराई यानी आरने जंगलीकी आंच दे, सर्द होनेपर निकाले इन्शा अल्लाह कुश्ता होगा, (सय्यद निजामुद्दीन हकीम भोरावाला जिला अंबाला) (सुफहा १० अखबार अलकीमियां १।७।१९०५)

कुश्ता नुकरा एक आंच (उर्दू)

कुलिया इसका यह है कि अगर चांदीके औराक बाजा-

रीको तोलेभर लेकर शहदमें इस कदर सहक करे कि अच्छीतरह औराक मजकूर हल होजावे, बादहू पानीसे धोडाले ताकि असर शहदका इसमें बाकी न रहे बादहू जिस बूटीके नुगदेमें मंजूर हो और जिनमें धातुके कुश्ता करनेका खास्सा भी हो, मस्लन ब्रह्मीबूटी जिसको जरनब अरबीमें कहते हैं, या दुधी खुर्द उपलादह या बर्गसदाव यानी तितली या मेंढासिंगी वगैरःके लुबदेमें जिसका वजन आधसेर हो खूब बारीक बिला आमेजिश पानीके पीस कर चांदी मसहूका मजकूरको उसमें रखकर ऊपरसे गोला बनाकर गिलेहिकमत करके बाद तखफीफ दस सेर पाचक खानगी ख्वाह सात सेर पाचक दश्तीकी कर्सी यानी बुरादामें रखकर मिस्ल लखपुटके फूंक दे, उमदा किस्मका कुश्ता तय्यार होजायगा, और वजन बदस्तूर रहेगा, ब्रह्मीबूटीसे बतरीक मजकूर कुश्ता मुकर्रमी जनाब मौलवी मुहम्मद अवदुलरहमान साहब डिपटीकलक्टर गोरखपुरने तजरुबा किया है । (सुफहा २५-२६ अखबार अलकीमियाँ १६।५।१९०५)

रूप्यभस्मके सेवनकी विधि ।

भस्मीभूतं रजतममलं तत्समौ व्योमभानू सर्वैस्तुल्यं त्रिकटुसवरं सारवाज्येन युक्तम् ॥ लीढं प्रातः क्षपयतितरां यक्ष्मपाण्डूदरार्शः श्वासं कासं नयनजरुजः पित्तरोगानशेषान् ॥ १०७ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-शुद्ध चांदीका भस्म दो भाग और दो ही भाग अभ्रक भस्म तथा ताम्रभस्म और इन सबकी बराबर त्रिफला और त्रिकुटा इन सबका सूक्ष्म चूर्णकर प्रातःकाल घृत और शहदके साथ खावे तो क्षय पाण्डु उदररोग बवासीर श्वास खांसी नेत्रमें उत्पन्न हुए रोग समस्त पित्तज रोगोंको नाश करता है ॥ १०७ ॥

कुश्ता नुकरा एक आंच (उर्दू)

(१)नुकराका कर्स जिस कदर चाहे लेवे या रुपया कल्दार, अर्क एक सटिया जिसको शागरमिया भी कहते हैं (बागोंके अतराफमें-)

(२) बतौर बाढके लगाया जाता है गर्म करके ग्यारहे दफे बुझाव देनेसे नुकरा कुश्ता बरंग सफेद जो पवलिकके काबिल है होजाता है, अगर बाद गोताके इसके अर्कमें रखकर सात या आठ सेर आग दीजावे सफेद गुलाबी माइल (कुश्ता बरामद होगा) (सुफहा १६ किताब अखबार अलकीमियां १।४।१९०५)

नुकराका ऐसा कुश्ता जो ७० तोला पारेको जज्ब करता है (उर्दू)

गो अमल कदरे दिक्कत तलब है मगर इसकी खूबीके आगे कुछ भी नहीं कीकडकी लकडीका बुरादा १० सेर, गायका गोबर २० सेर दोनोंको मिलाकर १४ अदद थापिया बनालो फिर एक रुपयेको ४१ बार अर्क अदरखमें बुझाव दो तब अढाई तोला मीठा तेलिया बारीक पीसले और पावभर पोस्त सबज जामुनका नुगदा करले, पस नुगदेके अन्दर रुपयेके नीचे ऊपर सफूफ मीठा तेलिया देकर नुगदाकी गोली बनाले, और दो उपलोंमें गढा खोदकर गोला इसके अन्दर देकर लबे बंद करके आग देदे यह एक आग हुई, इसी तरह,सात बार करे यानी सात आंच दें । (सुफहा १३ अखबार अलकीमियां २४।२।१९०९)

कुश्ता चांदी, मुण्डीकी लुगदीमें (उर्दू)

आधसेर मुंडी आब कटहल बूटीमें पोस कर नुगदा करै और दर्मियान एक तोला चांदीका पतरा देकर कपरौटी करके एक मन उपलोंकी आंच देवे कुश्ता होगा ।(सुफहा अखबार वैशोपकारक लाहौर ३१।१०।१९०६)

नुसखा लासानी अआदह जवानी कुश्तासिक्का (उर्दू)

एजुसलै नाजरीन एक दिन खाकसारने अपने उस्ताद जनाब हकीम इमामुद्दीन साहब मरहूम पाकपटनीकी जुबान फैजतरजुमानसे इस्तरह इरशाद पाया कि नुसखा जैल जरूर एक दफे बनाया, फिर उम्मीद है कि इसको हमेशह बनाते रहोगे, इसके फवायद यह हैं कि अगर बापरहेज बनाया और खिलायाजावे तो सफेद बालसे स्याह, रंग सुर्ख लागर बदनका मोटा होजाना कुछ बडी बात नहीं है बलिक और सदहा बीमारियों जौफ मैदा व जिगर गुदह व मसाना और सबुलकीना इस्तस्काइ और जियाबेतस वगैरःको जडसे उखाडदेगा और भूख और हाजमाको पूरी तकवियत बखशता है और बेऔलादोंके औलाद होजाती है गरजे कि कहांतक तारीफ लिखूं असाइफीर-जवानोंका सच्चा दस्तगीर है गोया बाहको तकवियत बखशना इसका अदना करश्मा है सदरी नुसखे जातसे है ।

नुसखा यह है सिफत, सिक्का मुसफ्फा दो सेर पुख्तःको एक चाटी या माट सतीर तीन तह कपरौटी शुदःमें डाल और देगदान कलाँपर जिसका मुँह तंग और अन्दरसे फराख हो (जैसा कि जमीनमें हलवाई बनाया करते हैं) गाड़कर हरतरफ मिट्टीसे लिपाई करदे, ताकि शौला आग बाहर न जासके फिर तेज आग जलावे जब सिक्का पिघलजाय तो बर्ग सवारा ताजाको खार अतराफी दूर करके दरीचांके रास्ते फेरता रहै पस ग्यारह दिन और राततक बिला इनकताअ तहरीकबर्ग बाला तय्यार करे बाद पिघलने सिक्काके मौतदिल आग जलाता रहे और आमिलका बावजू जिकर खुदा करना फर्ज ऐन है, मजीद बरा हिफाजत साया मस्तूरात हाइजः और नापाक जरूरी है और मकान महफूजुल हवायें तय्यार कियाजाय वरनः तमाम उडजायेगा जब मुद्दत मौअय्यनाके बाद शिंग्रफी रंगतपर तय्यार होजाय तो सर्द करके शीशीमें डाल रक्खे खुराक एक बिरंजसे आधी रत्तीतक अनूपान मुनासिबःसे अगर चालीस दिनतक खायगे तो अआदह शवाब पायेंगे, (सिक्केको कमीज (पेशाब) गाडमें ६ बार पिघला कर बिछावे नीज हरबार कमीज जदीद लावे सिक्का मुसफ्फा होजावेगा) (राकिम हकीम अब्दुल्ला अजतिलोंडी चौधरियान) (सुफहा ११ व १२ अखबार अलकीमियाँ मालीरकोटला १६।११।१९०८)

---

१ नोट-तजरुबा किया तो गलत साबित हुआ मुमकिनहै कि चन्द आंचोंमें कुछ नतीजा निकले । (५।१।१९०७)

कुश्ता नुकरा नमक आक और शीर थूहरमें (उर्दू)

अगर आकके नमकको शीरथूहरमें हल करके चांदीके पत्तरेपर जमाद करे तो दो पाच कदस्तीकी आगसे कुश्ता होजाता है। (सुफहा ४ अखबार अलकीमियां १।२।१९०७)

कुश्ता नुकरा दुधीखुर्दकी लुबदीमें ७ आँच (उर्दू)

हजार दाना यानी दुधीखुर्द ५ तोलेके लुगदेमें रुपया रखकर संपुट करे पन्द्रह सेर बडीबडी पाचकदस्तियोंकी आँच दे हर दफे इसी तरह अमल करनेसे सातवीं बार निहायत उमदा कुश्ता होगा, खुराक एक चावलसे दो चावलतक, नामर्दके लिये जायफल, जावित्री, और जाफरानेके साथ, मरीज राशाको फिल फिलगिर्द, सुरंज तलख नडके साथ और मरीज सोजाकको खील फिटकिरीके साथ खिलावें। (सुफहा नं० ४ अखबार अलकीमियाँ १६।६।१९०५)

कुश्ता नुकरा सीमाव शामिलकर चूकाके अर्कमें घोट ७ आँच (उर्दू)

बुरादा सीम एक तोला सीमाव एक तोला हरदा एक पाव अर्क खट्टी बूटी यानी खटकलके पानीमें खरल करे और गिलोला बांधकर कपरौटी करके पांच सेर उपले सहराईकी आगदे बाद सर्द होनेके निकाल लें और दुबारा एक तोले सीमाव मिलाकर एक पाव अर्क मजकूरहमें खरल करे और इसीतरह पांच सेरकी आगदे इसी तरह सात मर्तबः करे और हरमर्तबः एक तोला सीमाव नया मिलाकर बदस्तूर अर्कमें खरल करके पांच सेरकी आंच देताजावे इन सात आंचोंमें सात तोला पारा और ३५ सेर उपला सर्फ होंगे और सात पाव अर्क बूटी खटकल यह कुश्ता एसाहै कि दूसरा कोई कुश्ता इसका मुकाबला नहीं कर सक्ता चालीस सालकी उमरके बाद इसको स्तैमाल करे अकसीर आजमसाबित होगा, खुराक एक चावलसे एक रत्तीतक निहायत मुजरिब और महमूल राकिम अतराफ है। (सुफहा ३० मुजर्रिबात फीरोजी)

कुश्ता नुकरा सीमाव शामिल कर अर्क-लेमूं व अर्क हिनामें घोट नकछिकनीमें आँच (उर्दू)

बुरादा सीम ३ माशे, सीमाव ५ माशे, अव्वल दोनोंको थोडेसे आब लैमूंमें खरल करे इसके बाद चार पहरतक आबहिनामें खरल करे और टिकिया बनाकर सायेमें खुश्क करे आरद नकछिकनी वजनी पाव एक कूजे गिलीमें इन टिकियोंके नीचे ऊपर देकर वोता मुअम्मामें दो सेर उपला जंगलीकी आगदे आगके सर्द होनेपर निकाल कर दो घडी आबदहीसे खरल करके थोडासा भडका देकर हिफाजतसे रक्खे खुराक एक रत्ती कुव्वत बाहमें बेनजीर है और सदहा बारका तजरुबा कियाहुआ है। (सुफहा २८ किताब मुजर्रिबात फीरोजी)

कुश्ता चाँदी सीमाव शामिल कर पोस्त जामुनमें ३ आँच (उर्दू)

बुरादा चांदी १ तोले, पारा १ तोले, सीमाव यानी पारेको बुरादा चांदीमें डालकर खरल करे जब गोली होजावे पोस्त जामुन पावभरमें रखकर जरा कपरौटी करके ५ सेर उपलोंकी आंच देवे इसी तरह २ या ३ आंचमें कुश्ता होजावेगा हर बार पारा ज्यादह करना चाहिये। (सुफहा अखबार वैशोपकारक १४।११।१९०६)

सोने और चांदीकी द्रुति करनेकी विधि।

सप्तधा नरमूत्रेण भावयेद्देवदालिकाम्। तच्चूर्णं वापमात्रेण द्रुतिः स्यात्स्वर्णतारयोः ॥ १०८ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–बंदालको नरमूत्रसे अर्थात् सोरेके जलसे सात वार भावना देवे उसके चूर्णको गलेहुए सुवर्ण तथा चांदीमें डाले तो सोने और चांदी इन दोनोंकी द्रुति होजायगी ॥ १०८ ॥

केवल रौप्य भस्मके सेवनका निषेध।

सर्वेषां मतमेतदेव भिषजां यत्तारसीसोद्भवं पार्थक्येन गुणावहं न भसितं युक्त्यापि संमारितम् ॥१०९॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–युक्तिपूर्वक भस्म कियाहुआ रजत तथा नाग (सीसा) यदि अन्य रसादिकोंके साथ सेवन कियाजाय तो ठीक है परन्तु केवल इनका ही प्रयोग करना योग्य नहींहै ऐसा समस्त वैद्यों (आधुनिक) का मत है ॥ १०९ ॥

ताँबेकी उत्पत्ति।

वीर्यं यत्कार्तिकेयस्य पतितं धरणीतले। तस्मात्ताम्रं समुत्पन्नमिदमाहुः पुराविदः ॥ ॥ ११० ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–पौराणिकोंका कहना है कि स्वामिकार्तिकेयका वीर्य भूमिमें किसी कारणवश गिरगया उससे ताँवा उत्पन्न हो गया ॥ ११० ॥

ताम्रके भेद।

ताम्रं तु द्विविधं चैकं नैपालं म्लेच्छसंज्ञकम् ॥ १११ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–नैपालिया और म्लेच्छक भेदसे ताम्र दो प्रकारका है ॥ १११ ॥

ताम्रके भेद और उनकी परीक्षा।

म्लेच्छं नेपालकं चेति तयोर्नेपालमुत्तमम्। नेपालादन्यखन्युत्थं म्लेच्छमित्यभिधीयते॥ ॥ ११२ ॥ सितकृष्णारुणच्छायमानेबाभि कठोरकम्। क्षालितं च पुनः कृष्णमेतन्म्लेच्छकलक्षणम् ॥ ११३ ॥ सुस्निग्धं मृदुलं शोणं घनघातक्षमं गुरु। निर्विकारं गुणश्रेष्ठं ताम्रं नेपालमुच्यते ॥ ११४ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-म्लेच्छ और नेपाल भेदसे तांबा दो प्रकारका होताहै । इन दोनोंमें नेपाल नामका तांबा उत्तम है नैपाल देशकी खानोंसे अतिरिक्त उत्पन्न हुआ ताम्र म्लेच्छ संज्ञक है जिसमें लाल काला और सफेद रंग मिलाहुआ दीखताहै अत्यन्त वमनकारक हो कठोर हो बार २ धोनेपर भी काला पडजावे उसको म्लेच्छक ताम्र कहते हैं तथा जो चिकना कोमल लाल रंगका घनकी चोटसे जो फटे नहीं भारी हो किसी तरहका जिसमें विकार न हो उसको नेपालका ताम्र कहतेहैं ॥ ११२-११४ ॥

खराब तांबा ।

पाण्डुरं कृष्णशोणं च लघुस्फुटनसंयुतम् ।
रूक्षाङ्गं सदलं ताम्रं नेष्यते रसकर्मणि ॥
॥ ११५ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-जिसमें सफेद लाल और काला ये तीनों रंग मिश्रित हों हलका हो घनकी चोट लगनेपर खिलजावे रूखा हो जिसके पृथक् २ पत्र हों ऐसा ताम्र रसकर्मके उपयोगी नहींहै ॥ ११५ ॥

तांबेकी किस्में (उर्दू)

निहास यानी ताँबा बीस किस्मका होताहै और छः चीजोंसे हासिल होताहै, अव्वल जैलकी उपधातुसे निकलता है और उन्हींके नामसे मंसूबहै (१) संग रासख (२) मिसपीतल (३) मिसकांसा, दोयम मुन्दर्जः जैल पाखरोंसे निकलता है (४) मिसतूतिया सबज (५) मारकशीशा (६) मिस हरताल (७) मिस सुहागा (८) मिसमन्सिल (९) सिसगूगर्द सोयम (१०) जसद आहनसे, चहारम हैवानातसे, (११) मिस सरगीन (१२) मिस खोक यानी सूर (१३) मिस खरातीन यानी केंचुएका (१४) मिस ताऊस (१५) मिसमार (१६) मिसमगस पंचम नबातातसे (१७) मिससंखिया (१८) मिसगुले गुडहल व बडहल (१९) मिस हलैला व बलैला शशम (२०) गिलगेरूसे (सुफहा अकलीमियाँ १७१)

नेपाल लक्षण ।

शुकचञ्चुहिंगुलाभं कोमलं भिद्यते लघु ।
खनिदोषविनिर्मुक्तं शुल्बं कालिकवर्जितम्
॥ ११६ ॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ-तोतेकी चोंचके समान या हिंगुलके समान लाल हो कोमल हो खानके दोषोंसे रहित हो और जिसमें कालिमा न हो उसको शुद्ध ताम्र कहते हैं ॥ ११६ ॥

म्लेच्छसंज्ञक ताम्रलक्षण ।

कृष्णं रूक्षमतिस्तब्धं श्वेतं चापि घनासहम् ।
लोहनागयुतं शुल्बं म्लेच्छं दुष्टं मृतौ त्यजेत् ॥ ११७ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-काला हो रूखा हो अत्यन्त कठिन हो चोटके सहनेवाला न हो और जो ताम्र लोह तथा सीसेसे युक्त हो अर्थात् जिस ताम्रमें लौह और सीसा मिलाहुआ हो उसको म्लेच्छ कहतेहैं यह ताम्र मृत्युको प्राप्त करताहै इसलिये आन्तरिक प्रयोगोंमें इसको न लावे ॥ ११७ ॥

अशुद्ध ताम्रके दोष ।

भ्रमो मूर्च्छा विदाहश्च स्वेदक्लेदनवान्तयः ।
अरुचिश्चित्तसन्ताप एते दोषाविषाधिकाः ॥ ११८ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-चक्करका आना अथवा मस्तकका घूमना जलन पसीनेका आना वमन अरुचि और चित्तमें दुःख ताम्रमें ये दोष विषसे भी अधिक हैं ॥ ११८ ॥

तथा च ।

अशुद्धं ताम्रमायुर्घ्नं कान्तिवीर्यबलापहम् ।
वान्तिमूर्च्छाभ्रमोत्क्लेदं न मृतं कुष्ठशूलकृत्॥
॥ ११९ ॥ उत्क्लेदमोहभ्रमदाहभेदास्ताम्रस्य दोषाः खलु दुर्धरास्ते । विशोधनात्तद्विगतस्वदोषं सुधासमं स्याद्रसवीर्यपाके॥
॥ १२० ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-अशुद्ध अर्थात् विधिपूर्वक नहीं शुद्ध कियाहुआ ताम्र आयु कान्ति वीर्य और बलका नाश करताहै वमन मूर्च्छा (गश) चक्कडका आना और जीके मिचलानेको करताहै अच्छी प्रकार नहीं मराहुरा भी ताम्र पूर्वोक्त दोष तथा कोढ और शूल रोगको करताहै अशुद्ध ताम्रमें पूर्वोक्त दोष अत्यन्त भयानक हैं जब ताम्र इन दोषोंसे शुद्धिद्वारा रहित होजाताहै तब वह अमृतके समान होताहै ॥ ॥ ११९ ॥ १२० ॥

ताम्रशोधनकी आवश्यकता ।

अतः शोध्यं प्रयत्नेन क्षाराम्लकथनैर्मुहुः ।
यावन्निर्मलतामेति तावत्ताम्रं विशोधयेत्॥
॥ १२१ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-अशुद्ध ताँबेमें अनेक अपगुणहैं इस लिये क्षार अम्ल पदार्थोंके साथ ताम्रको बार २ औटावे कि जिससे समस्त कालिमा दूर होजावें यदि कांजी और नींबू प्रभृति अम्ल पदार्थ न मिलें तो अत्यन्त खट्ट तक्र (मठा) में तांबेको बार २ औटावे कि जिससे उसकी कालिमा (स्याही या कट) दूर हो इस प्रक्रियासे ताँबेको शुद्ध करना चाहिये ॥ १२१ ॥

तांबेके गुण ।

ताम्रं कषायं मधुरं च तिक्तमम्लं च पाके कटुसारकं च पित्ताहरं श्लेष्महरं च शीतं तद्रोपणं स्याल्लघुलेखनं च ॥ १२२ ॥ पाण्डूदराशोंज्वरकष्टकासश्वासक्षयान्पीनसमम्लपित्तम्।शोथक्रिमिं शूलमपाकरोति प्राहुःपरं बृंहणमल्पमेतत् ॥ १२३ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-ताँबा कषैला मीठा चरपरा और परिपाकमें खट्टा कडुआ और दस्तावर है तथा पित्तको हरताहै कफनाशक है हलका और लेखन है, पांडु उदररोग अर्थात् पेटके रोग ज्वर कठिन कास श्वास और क्षयको नाश करताहै, पीनस और अम्लपित्तको जडसे उखाड देताहै, सूजन कृमिरोग और पेटके दर्दको दूर करताहै और यह थोडी मात्रामें देनेसे परम बृंहणहै ॥ १२२ ॥ १२३ ॥

तथा च।

ताम्रं तिक्तकषायकं च मधुरं पाकेऽथ वीर्योष्णकं साम्लं पित्तकफापहं जठररुक्कुष्ठामजन्त्वन्तकृत्॥ ऊर्ध्वाधः परिशोधनं विषयकृत्स्थौल्यापहं क्षुत्करं दुर्नामक्षयपाण्डुरोगशमनं नेत्र्यं परं लेखनम् ॥ १२४ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-ताँवा कडुआ कषला मीठा और परिपाकमें उष्ण वीर्य है खट्टाहै कफ पित्तका नाश करता है, उदरके रोग कोढ आम और कृमिरोगको दूर करताहै वमन और विरेचनको करताहै रतिके बढानेवाला स्थौल्य रोग अर्थात् मेदोवृद्धिको हटाताहै और मन्दाग्निको मिटाताहै बवासीर क्षय पांडु और नेत्रके रोगोंको विध्वंस करताहै और लेखन है ॥ १२४ ॥

ताम्रशुद्धि दलकर्मयोग्य।

अर्कापामार्गकदलीक्षारमम्लेन लोडितम् । तेन लिप्तं ताम्रपत्रं ध्मेयमग्नौ गतं पुनः ॥ ॥ १२५ ॥ पत्रं कृत्वा विलिप्याथ तद्वद्ध्मेयं पुनःपुनः । इत्येवं सप्तधा कुर्यात्ताम्रं स्याद्दलयोग्यकम् ॥ १२६ ॥ (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक.)

अर्थ-आक ओंगा और केलेके क्षारको नींबूके रसमें अथवा किसी अन्य अम्ल रसमें घोले उससे ताम्रपत्रोंको लेपकर अग्निमें रखकर तपावे इस प्रकार सात बार तपानेसे ताम्र दलकर्मके योग्य होजायगा ॥ १२५ ॥ १२६ ॥

तथा च।

अथवा ताम्रपत्राणि सुतप्तानि निषेचयेत् । लवणारनालमध्ये तु शतधा पूर्ववद्भवेत् ॥ ॥ १२७॥ (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक.)

अर्थ-अथवा ताँबेके पत्रोंको तपा २ कर लवणमिश्रित कांजीमें सौ बार बुझाव देवे तो पूर्वके समान ताम्र दलकर्म योग्य होजायगा ॥ १२७ ॥

ताम्रका विशेष शोधन।

स्नुह्यर्कक्षीरलवणैस्ताम्रपत्राणि लेपयेत् ॥ अग्नौ प्रताप्य निर्गुण्डीरसे तु सेचयेत्त्रिशः॥ ॥ १२८ ॥ स्नुह्यर्कक्षीरसेकैर्वा शुल्बशुद्धिः प्रजायते ॥ गोमूत्रेण पचेद्यामं ताम्रपत्रं दृढाग्निना ॥ साम्लक्षारेण संशुद्धिं ताम्रमाप्नोति सर्वथा ॥ १२९ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-नोंनको थूहर और आकके दूधसे घोट ताँबेके पत्रोंपर लेपकर और आंचमें तपाय निर्गुंडीके रसमें बुझावे इस प्रकार तीस वार बुझावे अथवा केवल थूहर और आकके दूधमें बत्तीस बार बुझाव देवे अथवा क्षारसहित गोमूत्रमें एक प्रहरतक औटावे तो ताम्र अवश्य शुद्ध होगा ॥ १२८ ॥ १२९ ॥

मिसको मुसफ्फाकरनेकी तरकीब (उर्दू)

मिसके बारीक पत्र बनाकर तुर्शी और नमकमें आलूदह करके आगपर रखदे। मुत्तरजिम तजरुबेसे मालूम हुआ कि इस अमलसे सिर्फ मैलताँबेका छुटजाताहै। (सुफहा अलकीमियाँ ९६)

तांबेकी शुद्धि।

ताम्रं क्षाराम्लसंयुक्तं द्रावितं दत्तगैरिकम्॥ निक्षिप्तं महिषीतक्रे छगणे सप्तवारकम् ॥ पंचदोषविनिर्मुक्तं सप्तवारेण जायते ॥ ॥ १३० ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-जवाखार नीबूका रस और गेरू इन तीनोंका पीस और ताँबेके पत्रोंपर लेप कर गलावे गलनेपर भैंसके मठेमें बुझादेवे इस प्रकार सात बार करनेसे तांबा पांच दोषोंसे रहित होजाताहै ॥ १३० ॥

तथा च।

ताम्रनिर्मलपत्राणि लिप्त्वा निम्ब्वम्बुसिंधुना ॥ ध्मात्वा सौवीरकक्षेण विशुद्ध्यत्यष्टवारतः ॥ १३१ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-तांबेके उत्तम पत्रोंको लेकर नींबूके रसमें घुटेहुए सेंधो नोनसे लीपदे उन पत्रोंको अग्निमें खूब धोंक कर काँजीमें बुझावे इस प्रकार आठ बार बुझानेसे तांबा शुद्ध होताहै ॥ १३१ ॥

तथा च।

निम्ब्वम्बुपटुलिप्तानि तापितान्यष्टवारकंम् ॥ विशुद्ध्यंत्यर्कपत्राणि निर्गुण्डीरसमज्जनात ॥ १३२ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-नींबूके रसमें सेंधानोनको घोटकर उसका ताम्र पत्तोंपर लेप करदेवे और इनको आँचमें तपाकर निर्गुंडीके रसमें बुझावे इस प्रकार आठ बार बुझानेसे ताम्र शुद्ध होताहै ॥ १३२ ॥

तथा च।

गोमूत्रेण पचेद्यामं ताम्रपत्रं दृढाग्निना । शुध्यते नात्र संदेहो मारणं चाप्यथोच्यते ॥ ॥ १३३ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-ताम्रके कंटकवेधी (जिसमें कांटाछिदजावे) पत्र बनाकर गोमूत्रमें डाल फिर तीन घंटेतक उनको तीन आंचसे औटावे तो ताम्र शुद्ध होताहै ॥ १३३ ॥

तांबेकी शुद्धि या तांबे चांदीसे सोनेका जोडा।

लवण सेंधवका ताम्रपत्रोंपर लेपकर आग देनी तांबेकी भस्म होजायगी फिर ताम्रभस्मको जीवित कर उस ताम्रके समभाग चांदी मिलाकर सौ वार चरख देना फिर समभाग सोना मिलावे तो चौदह वर्णका सोना होगा। (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

तथा च।

अथोत्तमस्य ताम्रस्य नागशुद्धस्य कारयेत्।

निर्गुण्डिकारसेनैव पंचाशद्वारढालनम् ॥ कूष्माण्डस्य रसे चैव सप्तवारं तु ढालनम्१३४ निशायुक्तेन तक्रेण सप्तवारं तु ढालनम् ॥ ॥ १३९ ॥ एवं ताम्रं द्रुतं ढाल्यं कालिमारहितं भवेत् । एतत्ताम्रं त्रिभागं स्याद्भागाः पञ्चैव हाटकम् ॥ १३६ ॥ रूप्यं भागद्वयं शुद्धं सर्वमावर्तयेत्तदा । जायते कनकं दिव्यं पुरा नागार्जुनोदितम् ॥ १३७ ॥ (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक.)

अर्थ-ताम्र और शीसेको गला २ कर पचास बार निर्गुंडीके रसमें बुझावै और इसी प्रकार सात बार पेठेके रसमें बुझावै तदनंतर सात ही बार हलदीसे मिलेहुए तक्रमें बुझावे इस प्रकार तांबे और शीशेको कालिमा (यानी स्याही) रहित करदेवे अब पूर्वोक्त प्रकार शुद्ध कियेहुए ताम्रके तीन भाग और सोना पांच भाग चांदी शुद्ध दो भाग इन तीनोंको एकत्र कर गलावे तो सुंदर सुवर्ण होजाताहै ऐसा नागार्जुनने कहाहै ॥ १३४-१३७ ॥

ताम्ररंजन ।

ज्योतिष्मत्यास्तैलमध्ये शतवारं च शोधयेत् । अतसीतैलमध्ये वा शुल्बं भवति कांचनम् ॥ १३८ ॥ (काकचंडीश्वरीतंत्र.)

अर्थ-मालकांगनीके तैलमें तांबेको गलागलाकर सौ बार बुझावे अथवा अलसीके तैलमें सौ बार बुझावे तो ताम्र सुनहरी रंगका होगा ॥ १३८ ॥

ताम्र धोवन विधि ।

चौ०-लीजे साजी अरु हरताल।लीलकंठले टंकणखार॥ तोरझेर तांबेका चूर । मासो मासो तीन्यों मूर ॥ अंधमूसिमें लेइ फिराइ । इह विधिते उत्तम ह्वैजाइ ॥ एक धोवनी यह मैं भनी । याहि सराहैं पंडित गुनी ॥ (रसरत्नाकर, बडारससागर.)

तथा ।

चौ०-तांबेके करि पत्र गढाय । कंटकवेधी करै बनाय ॥ पत्रनीर कांची आमिली । एक द्यौस जौ चरुवागली ॥ पुन लीजे सीरेजल धोइ । रकती जाइ सु उज्वल होइ ॥ पुन सुमूत्र बछियाको लेइ । ताको करके तामें देइ ॥ बार सात यों लेइ बुझाइ । रकती बदल शुद्ध होजाइ ॥ पुनि कांजीमें बिरियाँ सात । एक धोवनेकी यह बात ॥ (रसरत्नाकर बडा रससागर.)

तथा ।

चौ०-तक्र मछेली मांहि बुझाइ । पत्रनि बिरियां तीस बुझाइ ॥ एक धोवनी यह विधि कही । इह भांतिके जाने सही ॥

कुश्ता मिसके चार रंग (उर्दू)

इसके मुतअद्दिद दरजात हैं, आलादर्जा जिसका रंगभी आला होताहै वह सफेद रंगका कुश्ताहै, बाद इसके सुर्ख रंगका बादहू जर्द रंगका फिर स्याह रंगका और यह सबसे अदना दर्जा है इन्हीं चारों रंगकी कमी बेशीपर रंगतिलाईकी कमीबेशीका इनहिसारहै । (अखबार अलकीमियाँ १६।३।१९०७)

ताम्रभस्म करनेकी विधि ।

गन्धाश्मना वा शिलया रविदुग्धेन पेषितम्। जम्भांभसापि पुटनैस्ताम्रं भस्मत्वमाप्नुयात् ॥ १३९ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-ताम्रको गंधकके साथ अथवा मैनसिलके साथ आकके दूधसे घोट गजपुट देवे इस प्रकार तीनपुट या जबतक भस्म न हो तबतक पुट देतारहै ॥ १३९ ॥

सम्मति-हमारी समझमें यह क्रिया भस्म कियेहुए ताम्रके वमनादिकोंकी शान्तिके निमित्तहै परन्तु किसी २ ग्रन्थकारने एक तरहका भस्म प्रकार मानाहै ॥

तथा च ।

जम्बीररससम्पिष्टं रसगंधेन लेपितम् । ताम्रपत्रं शरावस्थं त्रिपुटैर्याति भस्मताम्॥ ॥ १४० ॥ (रससारभस्म, र. र. स०)

अर्थ-ताम्रसे समभाग गंधक लेकर जँभीरीके रससे घोटकर ताम्र पत्रोंपर लेप करदेवे फिर उन पत्रोंको शराब संपुटमें रख गजपुटमें फूंक देवे इस प्रकार तीन पुट देनेसे ताम्रकी भस्म होजायगी ॥ १४० ॥

तथा च ।

ताम्रपत्राणि नागस्य पत्रिका कंटवेधिनी ॥ गंधयुक्तेन सूतेन लेपयेत्तानि सर्वतः॥१४१॥ निम्बुकस्य द्रवं दत्वा सरावकृतसम्पुटे । मारयित्वा कृतं भस्म रसं कार्ये प्रयोजयेत् ॥ १४२ ॥ (रसपारिजात.)

अर्थ-ताँबेके ऐसे पत्र बनवावे कि जो सीसेकी पत्रिकासे विंधजावें फिर पारद गंधककी कजली कर नीबूके रसमें घोट उन पत्रोंपर लेप करदेवे और उनको शराब संपुटमें रख गजपुटमें भस्म करलेवे और उस भस्मको समस्त कामोंमें लावें इसमें कोई सन्देह नहीं है१४१॥१४२

तथा च ।

सूक्ष्माणि ताम्रपत्राणि कृत्वा संशोधयेद्बुधः । वासरत्रयमम्लेन ततः खल्वे विनिक्षिपेत् ॥ १४३ ॥ पादांशं सूतकं दत्वा याममम्लेन मर्दयेत् । भवन्ति तानि रूप्यस्य पत्राणीव यदा पुनः ॥ १४४ ॥ तत उद्धृत्य पत्राणि लेपयेद् द्विगुणानि च । गंधकेनाम्लघृष्टेन तस्य कुर्याच्च गोलकम् ॥ १४९ ॥ ततः पिष्ट्वा च मीनाक्षीं चांगेरीं वा विच-

क्षणः । तत्कल्केन बहिर्गोले लेपयेद्द्व्यङ्गुलोन्मितम् ॥ १४६ ॥ धृत्वा तद्गोलकं भांडे शरावेणावरोधयेत । तद्भाण्डं पटुना पूर्थमाकण्ठं भस्मनोपरि ॥ १४७ ॥ क्रमवृद्धयाग्निना चुल्ल्यां पक्त्वायामचतुष्टयम्।स्वांगशीतं तु संग्राह्यं मृतं ताम्रं गुणावहम् ॥ ॥ १४८ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-ताँबेके कंटकवेधी पत्र बनाकर खटाईमें तीन दिवसतक स्वेदन कर शोधन करलेवे फिर खरलमें डाल चौथाई पारद डाल देवे और खटाईसे घोंटे तो वे पत्र रजत पत्रोंके समान होजातेहैं फिर उन पत्रोंको निकाल नींबूके रससे घुटे हुए पारद गंधकके कल्कसे द्विगुण ताम्रपर लेपकर गोला बनालेवे फिर उनपर मछेछी या चांगेरी (सांठ) के कल्कसे गोले के बाहर दो दो अंगुल लेपकर और उस गोलेको हांडीमें रख और शकोरेसे ढक ऊपरसे पिसाहुआ नोंन भर ऊपरसे राख दबादेवे मन्द मध्य और तीव्र अग्निसे चार प्रहरतक पकावे स्वांगशीतल होनेपर मृत ताम्रको निकाले तो वह भस्म विशेष गुणकारक है ॥ १४३-१४८ ॥

तथा च ।

अथवा मारितं ताम्रमम्लेनैकेन मर्दितम् । तद्गोलं सूरणस्यान्तो रुद्ध्वा सर्वत्र लेपयेत् ॥ ॥ १४९ ॥ शुष्कं गजपुटे पच्यात्सर्वदोषहरं भवेत् । वान्तिं भ्रान्तिं विरेकं च न करोति कदाचन ॥ १५० ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-ताँबेकी भस्मको केवल नींबूके रससे घोटकर और गोला बनाकर जमीकन्दके बीच रख कपरौटीकर और सुखाकर गजपुटमें पकावे तो वह वमन विरेचन शिरोभ्रमण प्रभृतिको नहीं करता है इसमें सन्देह नहींहै ॥ ॥ १४९-१५० ॥

तथा च ।

ताम्रपत्राणि सूक्ष्माणि गोमूत्रे पञ्चयामकम् । क्षिप्त्वा रसेन भाण्डे तद्द्विगुणं देहि गन्धकम्॥१५१॥अम्लपर्णीं प्रपिष्याथ मर्दितं देहि ताम्रके।सम्यङ् निरुध्य भाण्डे तमग्निं ज्वालय यामकम् ॥ १५२ ॥ भस्मीभवति ताम्रं तद्यथेष्टं विनियोजयेत । (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-तांबेके पत्रोंको सूक्ष्म बनवाकर पांच प्रहरतक उनको गोमूत्रमें रख स्वेदन करे फिर निकाल जलसे उनको धोवे उनके समभाग पारदको लेकर खरलमें डाल नींबूके रससे घोटे फिर इन दोनोंसे दूने गंधकको लेकर चूकाके रससे घोट ताम्र और गंधककी कजलीपर लेप करदेवे फिर उस गोलेको लवण यन्त्रमें रखकर एक प्रहरकी आंच देवे तो ताम्रकी अवश्य भस्म होगी और उसको अपनी इच्छानुसार कार्यमें लाना चाहिये ॥ १५१ ॥ १५२ ॥

तथा च ।

सूताच्च द्विगुणं ताम्रपत्रं कन्यारसैः प्लुतम् । पिष्ट्वा तुल्येन बलिना भाण्डमध्ये विनिक्षिपेत् ॥ १५३ ॥ छन्नं शरावकेनैतत् तदूर्ध्वं लवणं त्यजेत् ॥ मुखे शरावकं दत्त्वा वह्निं यामचतुष्टयम् ॥ १५४ ॥ अवचूर्ण्यैव तच्छुल्बं वल्लमात्रं प्रयोजयेत् । पिप्पलीमधुना सार्धं सर्वरोगेषु योजयेत् ॥ १५५ ॥ श्वासं कासं क्षयं पाण्डुमग्निमान्द्यमरोचकम् ॥ गुल्मप्लीहयकृन्मूर्छाशूलपक्त्यर्थमुत्तमम् ॥ ॥ १५६ ॥ दोषत्रयसमुद्भूतानामयाञ्जयति ध्रुवम् । रोगानुपानसहितं जयेद्धातुगतं ज्वरम् ॥१५७ ॥ रसे रसायने चैव योजयेद्युक्तमात्रया (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-पारेसे दूने तामेके पत्रोंको लेकर घीग्वारके रससे पीसे कजली होनेपर दूना गंधक डार और पीसकर गोला बनालेवे उस गोलेको हांडीमें रख ऊपरसे सकोरा ढांक देवे उस सकोरेके ऊपरसे हांडीके मुखतक पिसाहुआ नोन धरदेवे और उस हांडीके मुखको परीयासे ढांक कपरौटी कर देवे चार प्रहरकी तेज आंच लगावे स्वांगशीतल होनेपर हांडीमेंसे ताम्रभस्मको निकाल पीसकर तीन रत्तीकी मात्रा देवे पीपल और शहदके संग तो सब रोग दूर होते हैं श्वास कफ क्षय पाण्डु अग्निमांद्य अरुचि गुल्म (वायुगोला) प्लीहा (यकृत्) मूर्च्छा पेटका दर्द परिणामशूल इनको और त्रिदोषसे पैदाहुए रोगोंको निश्चय नाश करदेता है और अनुपानके साथ देनेसे धातुगत अर्थात् असाध्य ज्वरको भी नाश करदेता है यह रस रसायनमें योग्य मात्रानुसार प्रयोग करने योग्य है ॥ १५३-१५७ ॥

तथा च ।

शोलर बूटीकानरका लुगदा अद्द सेर पक्का लेके उसमें एक डबल पैसा रखकर आठ प्रहर गोहेकी आग देणी श्वेत होजायगा । (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

तथा च ।

मटकण बिच ताम्रेश्वर वणता है मटकणदे फूलांदे लुगदे बिच ढौआ रखकर लीरां लपेटकर मिट्टीके सम्पुटमें रखकर सम्पुट देणी श्वेत भस्म होजायगी । (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

तथा च ।

दुधल भत्तलके नुगदेमें पैसा भस्म होजाता है ५ सेर पक्के कंडेकी आग देनेसे (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

तथा च ।

तामेश्वरको तैलमें बुझाना २१ वार फिर नकछिकनीदा रस८ तो० पाकर भावणा देणी ऐसी चारभावणा फिर काकमाची सर्वांगलेके नुगदी करके उसमें रखके ऊपर रूतूलवाली मिट्टीके संपुटमें रखके सुखाके गजपुट देणी 'भस्म सन्निपातज्वरादौ देयम्' (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

कुश्ता मिस सफेद पीपलसे (फार्सी)

बियारद एक दाम मिस दर आब पोस्त बेख पीपर चहल गोने नमूदह दर पती बर्ग मजकूर नीम आसार आनिशं दिहंद हमचुनीं पंज मर्तबः कुनद कुश्ता सफेद ख्वाहद बुवद एक माशा बरकलई कारगर बूद अगर बकदर यकबिरंज खुरद कुव्वतवाह पैदा शवद (अजवियाज हकीम मुहम्मदफतहयाबखां सोहनपुरी)

कुश्ता तांबा (फार्सी)

दरबेख मदार कलांका वाके नमूदह खरतुह ऽ॥ सेर नकछिकनी ऽ॥ सेर सूदह दरआतिश जेरोबाला निहादह दर्मियां निशफल्लस झाडशाही निहादहदर सहमन उपला आतिश दिहन्द बाद सहरोज बरआरन्द कुश्ता ख्वाहद । बुवद (अजवियाजहकीम मुहम्मदफतहयाबखां सोहनपुरी)

अथातः संप्रवक्ष्यामि लांगलीकल्पमुत्तमम्। लांगली नाम विख्याता औषधी चोत्तमोत्तमा ॥ १५८ ॥ तस्या मूलं तु संग्राह्यं गंधकं च तथैव च । रसेन सहितं चैव ताम्रपत्राणि लेपयेत ॥ १५९ ॥ शुद्धभस्म तदा कुर्यात्प्रशस्तमिदमौषधम् ॥ (औषधिकल्पलता.)

अर्थ-अब उत्तम लांगली कल्पको कहताहूं लांगली नामकी औषधि सर्वोत्तम प्रसिद्ध है उसकी जडको लेकर उसके समान गंधक और गंधके समान पारद इन तीनोंको पीस पारदके समान लियेहुए ताम्रके पत्रोंपर लेप करदेवे उनको शराव सम्पुटमें रख गजपुटमें फूंक देवे तो उत्तम औषधि वनजायगी ॥ १५८ ॥ १५९ ॥

तथा च ।

हजारदाणी दोधक जिसदे हेठ ककियां कीडियां हुंदिय हनैं उसकी नुगदी या कच्चा लेकर उसके बीच ढौआपैसा रख कर ऊपर लीरां लपेटणियां यकचा फिर आगदेणी ऐसे ७ अगां देणियां श्वेत होजायगा और भस्म होजायगी फिर कुचले छटांक भर दडर करके बडा गोहेमें रख कर दो सेर पक्केकी आग देणी इसको पीस कर रख छोडना सब रोग पर अनुपानसे देणा गोहे एरणे । (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

तथा च ।

कुचले आध सेर हलदी आध सेर कच्चा, कौडातैल, मिट्टीदे भांडे बिच कुचले हल्दी समभाग पाके उपरो कटुतैल पाणा जो ऊपर तरजावे दो दो अंगुर फिर लिट्में दाब छोडना उसमें दोनों नरम होजांयगे उबल उबलके फिर नुगदा बनाकर उसमें ढौए चार पांच रख कर गजपुट अग्नि देणी ताम्र शुद्ध होजायगा उसको पारा पिलाना (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

तथा ।

ढोआ (यानी पैसा) एक, कबीला १ तोले, अलसीका तैल आधपाव ऽ=, तिलोंका तैल एक पावऽ।, चिथडे और पोलेबांसकी दो खप्पचे कबीला पीसकर थालीमें रखना उसमें दोनों तैलोंको खूब मिला चिथडोंको सान लेना (यानी भिगो लेना) उसको पैसेपर लपेट खपचमें रख देना और दूसरे बाँसका परदा लेकर रस्सी लपेट देणी जिस्से कि दम बंद होजाय और तमाम तैल बांसमें ही भरदेना और मुखको बांसके टुकडेसे बंद करदेना फिर लकडी चार बडी लेकर हेठ ऊपर रखके आग देणी स्वांगशीतल लेणी श्वेत भस्म होगी। (जंबूसे प्राप्त पुस्तक)

तथा ।

जयपाल गिरी दो तोले सज्जी ४ रत्ती इन दोनोंको कुट्टके दो टिकी बनाके पैसेके हेठ ऊपर रखकर ऊपर सिमार तोले ९ लपेटके नीलेटलियोंसे लपेटके मिट्टी लगाके और सुखाके बीस सेर पक्के गोहेकी आग देवे तो श्वेत होजायगा । (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

तथा ।

पुरानी चोबचीनी किस्म खुरद ४ सेर पक्के लेकर महीन करके ढोएके हेठ ऊपर कुज्जीमें रख कर ऊपरों कपरौटी करके १० सेर पक्के गोहेकी आग देनी ऐसे १०० अग्नि देनी फिर द्रवित ताम्रपर पाव रत्ती पाणी एक आगेमें ढो एसे द्विगुण चोबचीनीका चूर्ण होवे । (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

तथा ।

कतीरागुंद १ तोला, सिंगरफ १ तोला, गुंद हेठ रखक ऊपर सिंगरफ रख फिर पैसा फिर सिंगरफ फिर गुंद ऐसे कुज्जीमें रख ५ सेर गोहेकी आग देनी फूल होजायगा सन्निपातपर देना । (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

सोमनाथी ताम्रभस्म ।

शुल्बतुल्येन सूतेन बलिना तत्समेन च । तदर्धांशेन तालेन शिलया च तदर्धया ॥ ॥ १६० ॥ विधाय कज्जलीं स्निग्धां भिन्नकज्जलसंनिभाम् ॥ यंत्राध्यायविनिर्दिष्टं गर्भयंत्रोदरांतरे ॥ १६१ ॥ कज्जलीं ताम्रपत्राणि पर्यायेण विनिक्षिपेत् । अथ चेद्यामपर्यंतं स्वांगशीतं समुद्धरेत ॥ १६२ ॥ तत्तद्रोगहरानुपानसहितं ताम्रं द्विवल्लोन्मितं स्वल्लीढं परिणामशूलमुदरशूलं च पाण्डुज्वरम्॥ गुल्मप्लीहयकृत क्षयाग्निसदनं मेहं च शूलामयं दुष्टां च ग्रहणीं हरेद्ध्रुवमिदं श्रीसोमनाथाभिधम् ॥ १६३ ॥ (रससारपद्धति,) (र. र. स.)

अर्थ-तामां १ तोले,पारद १ तोले, गंधक१ तोले,हरताल ६ माशे, मैनसिल ३ माशे इनमेंसे तांबेके पत्रोंको छोड सब पदार्थोंकी कजली करलेवे एक कपडेपर दो अंगुल कजली बिछावे फिर ताँबेके पत्र रक्खे फिर कजली बिछावे इस प्रकार क्रमसे कजली और पत्रोंको रख कर टिकिया बनालेवे उसको यन्त्राध्यायमें कहे हुए गर्भयन्त्रमें रख चार प्रहरतक पकावे स्वांग शीतल होनेपर निकाल और चूर्ण करलेवे तो वह सोमनाथी नामका ताम्र उन उन रोगनाशक अनुपानोंके साथ ६ रत्ती देनेसे परिणामशूल उदरशूल पाण्डुज्वर गुल्म प्लीहा यकृत् क्षय मंदाग्नि प्रमेह बवासीर कष्टसाध्य संग्रहणी इनको नाश करता है इसमें सन्देह नहीं इस ताम्र भस्मका नाम सोमनाथी ताम्र है१६०-१६३

कुश्ता ताँबा (उर्दू)

बर्ग जमालगोटाको१छ०पानी यानी बौंडा अरंडको१छ० अर्कमें खूब खरल करे यहांतक कि लुगदी बनजावे बादहू उस लुगदीके अन्दर मंसूरी एक पैसा रख कर मिट्टीके कुलाआमें रखदेवे और गिलेहिकमत करके आगमें १० सेर पाचकदश्तीमें आग लगावे, आठ पहरके बाद निहायत सफेद रंगका कुश्ता तय्यार होजावेगा, इस कुश्तेको दो तोले रांगमें गलाकर बकदर दो सुर्ख डालनेसे चांदी तय्यार होजातीहै मगर यह नुकस है कि चोट लगनेसे फूट जातीहै। (अजकिताब तजरुबात लाला तुलसीप्रसादसाहब)

कुश्ता ताँबा बरंग शिंजर्फ स्याह तुलसीसे (उर्दू)

स्याह तुलसीका अर्क निकाल ले एक पैसा आगमें गर्म कर कर १०१ बार बुझाले फिर इसी तुलसीके फोकेमें यानी नुगदेमें रखकर १२ सेर आग गढेमें दे पैसा शिंग्रफके मानिंद सुर्ख रंग कुश्ता होजावेगा, लेकिन बुझाव देनेसे इस बातकी अहतियात रक्खे कि थोड़ासा अर्क अलहदा बर्तनमें डालकर इसमें बुझाव दिया करे जब वह खर्च होचुके तब और डालकर इसी तरह अमल करे (सुफहा ९ अखबार अलकीमियाँ ८।२।१९०९)

कुश्ता ताँबा बरंग सफेद (उर्दू)

डबल पैसेको एकसौ पुट अर्क बेलपत्तरीमें दो उसीके नुगदेमें रखकर जंगली उपलोंकी गजपुट देकर सर्द होनेपर निकाल लो सफेद रंगका कुश्ता सालिमुल हुरूफ होजावेगा, अगर कुश्ता करनेसे पहले ताँबेको शुद्ध कर लिया जावे तो निहायत बेहतर है, सहदेईके नुगदेमें भी यह अमल होसक्ता है (जोतीसरूप शर्मा एकौन्टेन्ट तहसील काशीपुर जिला नेनीताल) (सुफहा नं० २३ अखबार अलकीमियाँ १६।५।१९०५)

तरकीब कुश्तामिस सफेद अंकोलमें (फार्सी)

मिस कि सपेद हमचूं कागज शवद बियारन्द पोस्त दरख्त अंकोल बखुश्क साजन्द व नीज बेख सतीर ओअजजमीन वरआरन्द बअजमियान कावाक नुमायन्द बकदरे अजपोस्त खुश्क ओदरो अन्दाजन्द व बालाइ ओफल्लूस मिस या वर्क हाइमिस पुरकुनंद बालाइ आँदीगर पोस्त मजकूर अन्दाजन्द व जुमलैरा व गिलेहिकमत दरगीरन्द व बआतिश पुश्क बुजनर गजपुट दिहन्द तमाम मिस शिगुफ्तः ख्वाहद मांद बर आवुरन्द व बराइ हरमर्ज वा नूपान ओदिहन्द।

बायद दानिश्त कि अंकोल दरख्तकलां अस्त व दो किस्म मेवाशद यके कांटहा अंकोल यानी खारदार व मकसूद हमीअस्त दोयम बेखारमें बाशद व ओबकार नियायद व नख्तीन बायद कि मिसरा साफ नुमायन्द व साफ कर्दन मिस मशहूर अस्त अम्भा बहतर आँनस्त कि मिसरा मानिन्द कलई साफ कुनन्द यानी बिगुजारन्द बसह किरतदर दोग बतेल सर्द नुमायन्द व आज आंकिमिस जोर नमेगुदाजद अगर कदरे सम्मुलफार व पारह आबगीनह आमेजन्द वाजूद गुदाख्त शवद। (सुफहा ७ किताब मुजर्रिबात अकबरी)

कुश्तामिस सफेद, सफेद कनेरकी जडमें (उर्दू)

सफेद कनेरकी जड तकरीबन आधपावके लेकर और पांचसेर पर्चा लपेटकर आग दीजावे मिस बरंग सफेद होकर कुश्ता निकलेगा। (सुफहा ४ अखबार अलकीमियाँ १५।५।१९०७)

ताँबा लाजिल करनेकी तरकीब (उर्दू)

अगर ताँबेको बजरियः गंधकके कुश्ता करे और कुश्ताको माइउलहयातसे जिन्दा करे और जिन्दा मिसको फिर उसके हम वजन गंधकसे कुश्ता करे और फिर माइउलहयातसे जिन्दा करे तो अठारह अमलमें ताँबा लाजिल होजाताहै तजरुबा होचुकाहै यह ताँबा भी रंगताहै। (सुफहा २३७ अलकीमियाँका हाशिया)

तांबा लाजिलकी तरकीब (उर्दू)

तांबा लाजिलकी तरकीब यह है फिटकिरी सफेद, शोरा कलमी, सुहागा सफेद, साबून इन सबको हम वजन पानीमें पीसकर एक जान करके तांबेके पत्रे पर जमाद करे और इसको आगमें डालदे जब सुर्ख होजावे चूनेके तेजाबमें बुझावे, इसी तरह पचीस दफे अमल करे बस यहां तांबा लाजिल है।

मिस लाजिलकी उमदा तरकीब गंधकसे कुश्ताकर फिर जिन्दाकर नमकसे स्लाह (उर्दू)

एक तोला पत्तर नहासलें और एक तोला गंधक आंवलासार पत्तरके ऊपर नीचे रखकर किसी जर्फमें खूब मजबूत गिलेहिकमत करके कि खुल न जावे पांचसेर उपलोंमें फूंक दीजिये कुश्ता होजावेगा यह सिर्फ एक दिन या आधे दिनका काम है, इस कुश्तेको माइउलहयूत देकर दो मनफहूनसे या न्यारियासे खूब चर्ख दिलवाले एक माशेकी एक टिकिया बरामद होगी इसे पत्तर करके चन्द मर्तबः नमक लगाइये लाजिल है यह एक माशा ऐसा लाजिल होगा कि बाद इम्तजाज भी स्याही न देगा। (सुफहा ४ अखबार अलकीमियां)

तांबा लाजिलके कुश्तेसे जोडा तिलाई (उर्दू)

जबें तांबा लाजिल हो जावे और उसको दुचन्द गंधकसे चर्ख देकर खाक करलो उसी खाकसे तोशक व

१ असलीमिस लाजिलकी पहँचान यह है कि सर्द होने और हवा लगनेसे उसपर स्याही न दौडे।

२ गालिबन मुराद चूनेके बुझेहुये पानीसे है।

३ देखो रविणा वाताप्य गंधकहतेन।

४ क्या इस क्रियासे कुछ रसेन्द्रचिंतामणिके बीजका लक्ष होताहै रविणा वा ताप्य गंधकहतेन।

लिहाफ देकर दुचन्द वजन चांदीको लंबा चर्ख दो चांदी-जर्द मिस्ल सोनेके होगी और बराबरका हम्मिलान होगा और तपाउ और काट सब दुरुस्त होगा। (सुफहा ९ अखबार अलकीमियां १।२।१९०७)

मिस लाजिलकी सलीस तरकीब,नमकसे स्लाह (उर्दू)

एक तरीका बहुतही आसान कि गलानेका झगडा भी न करना पडे किसी कदर पत्तर निहास लेकर और नमक लाहौरी एक जुज और खिश्त पुख्त: दो जुज खूब बारीक पीसकर मिला रक्खिये कुछ मुकद्दरकी जरूरत नहीं एक पाचक लेकर उसपर खिश्त व नमक मसहूका कद्रे बिछाकर उसपर पत्तर रक्खिये उसपर और नमक डालकर दूसरा पाचक रखकर आंच दीजिये और इसी तरह नये पाचक और नये नमकसे चन्द दफे रक्खिये लाजिल है। (सुफहा ४ अखबार अलकीमियां)

मिस लाजिलके मुआनी शरह (उर्दू)

अगर नहासको लाजिल करलो उसके माने यह हैं कि चर्ख देनेमें जो जंगार है लौ उठनेसे न रहे और चर्खके बाद जो स्याही टिकियापर आती है न रहे और इसीको उस्ताद कहता है कि जिल्ल अल्लाह व सवाद मगर यह सिफत तो सोनेमें भी नहीं होती इसलिये कि जिल सोनेमें भी है वही जिल और लो ऐसी चीज है कि जीरक चर्खसे पहचान लेते हैं कि सोना चर्ख खारहा है हां तांबा करीव लाजिलके होसक्ता है सिनात मीजान (जोडा) में इस कदर काफी है और लाजिल हकीकी बिदून अकसीरोंके नहीं होता है। (सुफहा ९ अखबार अलकीमियां १।२।१९०७)

ताम्रके अनुपान।

कृष्णापथ्यामधुमिश्रमनुपानं रवेर्मतम्। रससिंदूरवद्वापि युक्तियुक्तमतः परम्॥ ॥ १६४ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-पीपल हरड शहद इन तीनोंके साथ ताम्रभस्मको सेवन करे यही इसका अनुपान है अथवा रससिंदूरके समान भी अनुपान समझ लेना इसके अतिरिक्त वैद्य उक्तिपर और भी अनुपान उचित समझकर देवे॥ १६४ ॥

केचुओंसे ताम्र निकालनेकी विधि।

ताम्रभूभवभूनागान्नि शिपिष्टे[1] संमेत्य तान्॥ गुडगुग्गुलुलाक्षोर्णा मत्स्यपिण्याकटंकणैः॥ ॥ १६५ ॥ दृढमेतांश्च संयोज्य मर्दयित्वा धमेत्सुखम् ॥ मुंचंति ताम्रवत्सत्त्वं तद्वत्पक्षोपि बर्हिणाम् ॥ १६६ ॥ (रसराजसुंदर, बृ. यो.)

अर्थ-तामेंकी धरतीमें उत्पन्न हुए भूनाग (केंचूओं) को लेकर हलदी गुड गूगल लाख ऊन छोटी मछली खल और सुहागेको समान भाग मिलाकर घोटे पीछे बंकनालमें रखकर धोंके तो तांबेके समान सत्त्व निकले इसी प्रकार मोरपंखसे भी तांबा निकले॥ १६५ ॥ १६६ ॥

[1] निशि पिष्ट्वा समेन तान इत्यपि।

तथा च।

वर्षासु वृष्टिसंक्लिन्ने भूगर्भे संभवंति हि॥ जन्तवःकृमिरूपा ये ते भूनाग इति स्मृताः॥ १६७ ॥ चतुर्विधास्तु भूगाना स्वर्णादि खनिसंभवाः ॥ स्वर्णादिभूमिसंभूता दुर्लभास्ते प्रकीर्तिताः ॥ ताम्रभूमिभवाः प्रायः सुलभा गुणवत्तराः ॥ १६८ ॥ (रसराजसुंदर.)

अर्थ-वर्षामें जमीनमें कीचड होनेसे जो सर्पाकार जानवर पैदा होतेहैं वे केंचुए कहातेहैं वह स्वर्णादि पृथ्वीके भेदसे चार प्रकारके हैं उनमें सुवर्णकी खानिसे प्रकट केंचुए दुर्लभ हैं विशेषकर तांबेकी धरतीमें उत्पन्न हुए केंचुए मिलतेहैं वे अधिक गुणवान् हैं॥ १६७॥१६८ ॥

तथा च।

सद्यो भूनागमादाय क्षालयेच्छिथिलं बुधः॥ अथवा कुक्कुटं वीरं कृत्वा मंदिरमाश्रितम्॥ ॥ १६९ ॥ मलमूत्रं गृहीतेन सदम्बुप्रथमांशकम्॥ आलोड्य टंकं मध्वाज्यैर्धमेत्सर्वार्थमादरात्॥ मुंचेत्तु ताम्रवत्सत्त्वमेतद्भूनागसत्त्वकम्॥ १७० ॥ (कामरत्न.)

अर्थ-केंचुओंको लेकर उसी समय धीरे धीरे उनको निचोर ले अथवा मुर्गेको खिलादेवे उस मुर्गेके मलमूत्रको इकट्ठाकर समान भाग सुहागा घी शहद इन तीनोंके साथ पीस कोयलोंकी अग्निमें धोंके तो तांबेके समान सत्त्व निकलेगा इसीको भूनाग सत्त्व कहतेहैं॥ १६९॥ १७० ॥

भूनाग सत्त्वके गुण।

भूनागसत्त्वं शिशिरं सर्वकुष्ठव्रणप्रणुत्॥ तत्स्पृष्टजलपानेन स्थावरं चापि जंगमम्॥ ॥ १७१ ॥ विषं नश्यति तत्पात्रंगतः सूतोग्नितो दृढः ॥ एवं मयूरपक्षोत्थसत्त्वस्यापि गुणो मतः॥ १७२ ॥ (बृ. यो.)

अर्थ-भूनागसत्त्व ठंढा और सब प्रकारके कोढ और व्रणोंको नाश करताहै और भूनागसत्वको पानीमें घिसकर पीवे तो स्थावर जंगम विष दूर होताहै और भूनागसत्वके पात्रमें रक्खेहुए पारदको अग्नि भी नहीं उड़ासक्ती है इसी प्रकार मयूरपंखके सत्त्वके गुण भी उत्तम हैं॥ १७१॥ १७२॥

खरातीन पैदा करनेकी तरकीब (उर्दू)

खिलाफ मौसममें अगर खरातीन पैदा करना मंजूर हो तो नारियलके पत्तोंको गढा खोदकर दफन करदे वहां चन्दरोजमें खरातीन पैदा होजावेंगे। (सुफहा किताब अलजवाहर १२९)

खरातीनकी किस्में (उर्दू)

सुर्खरंगकी जमीनसे जो खरातीन निकलतेहैं उनसे तांबा और स्याह रंगकी जमीनसे जो निकलतेहैं उनसे लोहा निकलताहै (सुफहा अलजवाहर १२९)

मिस खरातीनकी तरकीब तय्यारी व इस्तैमाल अकसीरी (फार्सी)

बियारद पंजआसार खरातीन दर गोवद मखलूत कर्दः दरयक सफाल आतिश दिहद कि खाकिस्तर गर्दद सुहागा यक दाम, शहद खालिस दस दाम, रोगन मादागाउ १० दाम अन्दाख्त कदरे, नार नमूदह बआबगोलीहा बस्तः दर बोतः गिली व मेदागुदाज नुमायन्द, यक तोला मिस अन्दाजन पैदा शवद प्याली दुरुस्त कर्दः बवक्त ख्वाहिश प्याली मजकूरमें सीमाब भरकर से सद कतरा अर्क सहँजना अन्दाख्त बर आतिश बिदारद कि खुश्क शवद चांदी शवद अगर मिस मजकूरसे यक माशा लेकर सीमावमें गोली बनाकर दो उपलोंमें रखकर कुश्ता करे यक सुर्खपर यक तोला तरह करे शमस आला ख्वाहद बूद (अजबियाज मुहम्मद फतहयाबखां सोहनपुरा)

मिस खरातीनसे ताँबा निकालनेकी तरकीब (उर्दू)

तरकीब यह है कि घडाभर केंचुए सुर्ख रंगकी जमीनसे लेकर दूधमें मिलाकर जलावे और राख करे बादहू गूगल सुहागा घूंगची सुर्ख, सरसों, कंद, कत्था, शहद, तिरफला, ऊंटके बाल, सुममेष, गायका घी सब दवाएँ आध सेर लेकर राख मजकूरमें मिलाकर गायके गोबरमें कंडे पाथे और बदस्तूर मुन्दर्जः किताब हाजा आगदे। (सुफहा किताब अलजवाहर १२९)

खरातीनसे मिस निकालनेकी तरकीब जिसको नागताम्र कहते हैं (उर्दू)

जिस जमीनका रंग लाल हो वहांसे खरातीनको निकाले और घडेमें रक्खे और उसमें बकरीका दूधभर कर आग पर रखदे ताकिं कुल जलकर राख होजावे बादहू सुहागा व शहद व ऊंट या भेडके बाल व रोगन व हलैला व बलैला व आँवला व गूगल व सहद हरेक साढेतीन तोला, सज्जी दो तोला साढेसात माशे पीसकर खाक खरातीन मजकूरमें मिलादे और उसमें गायका गोबर मिलाकर कंडे पाथे और सुखलाकर एक गढा लंबा खोदकर फोक या सेंभल या धामनकी लकडी उसमें भरदे और कंडोंको लकडीके चारों तरफ रखकर आग दे और सर्द करे बाद उसके सबको इकट्ठा करके पानीसे धोवे और रेजैहाइ मिस खरातीनको उससे निकाल ले और नगीना या छल्ला बनावे। (सुफहा किताब अलजवाहर १२८–१२९)

खरातीनसे मिस निकालनेकी तरकीब मयफवायद (उर्दू)

एक मन खरातीन लावे और बकरीके घीमें खमीर करे और दो सेर चूना और दो सेर सुहागा और मवीज और सेरभर गायका पित्ता और ६ सेर शहद उसमें मिलावे और गूंधे और उससे चंद रोटियां पकावे और भट्टीमें कोयला रखकर चौदह पहरतक खूब धोंके ताँबेके रेजे गिरकर राखमें मिलजावेंगे सर्द होनेके बाद बाहर निकाल कर धोवे और गुदाज करके नगीना बनाले तासीर यह है कि अगर सांपको पकडले तो कुछ गुजन्द नहीं पहुँचा सक्ता, जब तक मुँहमें नगीना मजकूर है, अकसर बादशाहोंके पास अंगूठीमें इसका नगीना होताहै और भी हर किस्मके जहरोंके वास्ते अकसीर है असर नहीं करते अहल व साहब बसीरतसे इसके मजीद फवायद पोशीदह नहीं होंगे। (सुफहा किताब अलजवाहर १२७–१२८)

नीले थोथेसे ताम्र निकालनेकी विधि।

नीलाथोथा महीन पीसकर कढाईमें बिछा देवो और उसपर महीन टांकी बिछादो चारों कोणपर चार गीटी बिछादो उसपर त्रिफला पीसके बिछादो उसपर धीरेसे पाणी पादो किनारे रखदो ताँबा बैठ जायगा, लीला थोथाबिच ताँबा निकालकर उसको फिटकिरीकी चुटकी देणी साफ होजायगी। (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

तूतियासे मिस निकालनेकी तरकीब (उर्दू)

तूतिया सबजको मैदा करके शीरा वर्ग खाज्तमें तर करे बादहू बोतामें सुहागा देकर चर्खदे मिस निकल आवेगा (सुफहा अकलीमियाँ १९०)

तूतिया सबजसे मिस निकालनेकी तरकीब (उर्दू)

नीला थोथा लेकर रोगन कुंजदमें तीन चार रातदिन तर करके रक्खे सुबहको दुचन्द मूएसर आदम लपेटकर खूब तेज धोंके बादहू सुहागा मिलाकर ऊपर नीचे कोयला रखकर चर्ख दे। (सुफहा अकलीमियाँ१८९)

खरातीनसे मिस निकालनेकी तरकीब (उर्दू)

खरातीनसे मिस निकालना खरातीन एक मनको बकरीके घीमें खमीर करके फिर उसमें चूना दो सेर, सुहागा दो सेर, मवीज एक सेर और रोगन जर्द मादागाउ एक सेर और सेर भर पित्ता बकरा, शहद ६ सेर सबको मिलाकर चन्द रोटियां पकावे और भट्टी कोयलोंमें रख कर चौदह पहरतक धोंके ताँबेके रेजा गिरकर राखमें मिल जावेंगे सर्द होनेके बाद निकाल लें और गुदाज करके ताँबा बरामद करलेवे अगर सांपको पकडले तो इस तांबेके असरसे काट नहीं सक्ता और हर किस्मके जहरोंके वास्ते अकसीर है। (सुफहा १३ अखबार अलकीमियां १ व १६।११।१९०६)

फवायद मिस खरातीन (उर्दू)

मिस खरातीन अफयून, बछनाग, वगैरः की सुम्मियत दफै करनेमें बेनजीर है और अमूमन मादनी जहरोंके वास्ते तिरियाक आजम है चाहिये कि दो रत्ती पानीमें घिसकर पिलावे अगर जहरदार खानेमें डाले तो जोश खाकर असर जहरका बातिल करता है और मुंहमें रखनेसे सांपका जहर उतर जाता है अगर किसी शखसने कुश्ता मिस खामका खाया हो और किसी दवासे सेहत न होती हो तो स्तैमाल निहायत मुफीद और मुजर्रिब है। (सुफहा किताब अलजवाहर १२९)

मिस ताऊस निकालनेकी तरकीब (उर्दू)

मोरके परोंको जलावे जो खाकिस्तर संगरेजाकी तरह रहे उसको आगपर रखकर मैदापुरस्प छिडकता जावे तांबा निकल आवेगा मुतरज्जिम मिस ताऊस अमूमन परोंसे निकलता है पुरस्पसे अगले पैरोंका सुम मुराद है मिस ताऊससे तिला बनता है मगर तजरुबा नहीं हुआ है । (सुफहा अकलीमियां १९४)

मिस ताऊस व मिस खरातीन निकालनेकी तरकीब (उर्दू)

अव्वल दूधमें डालकर जलावे बाद मूषाकर्नी और जो शांदह चोक जिसको कागठुठी भी कहते हैं ख्वाह शीराकानाकौआमें आठ आठ पुट आफ्तावी दे बाद उसके बकदर निस्फके उससे खाकिस्तर मूए सर आदमीके मिलावे और गुदाज करे ताकि कुल राख होजावे बादहू शीरा केला और शीरा सूरन यानी जमीकन्दमें तीन तीन पुट दे और खुश्क करे बादहू उस खाकिस्तरका चहारम हिस्सा सुहागा और सोल्हवां हिस्सा जवाखार और सोल्हवां हिस्सा नमक सांभर और गुड शहद और रोगन तीनों चीजें हमवजन इस कदर कि उसमें खमीर होजावें और तुख्म लबेद अंजीर गैर मुकश्शर यानी बगैर छिलीहुई रेंडी चौथाई हिस्सा डालकर सबको खूब कूटे जिसमें लोंदा बंधजावे और नरम होजावे बादहू अलसीकी खली पीसकर इस कदर मिलावे और पीसे कि टिकिया या गोला बनासके और जब बिलकुल सूख जावे तब तक नालसे जिसको दमी कहते हैं फूंके मिस आला और नफीस और नरम और सुर्ख निकलेगा । (सुफहा अकलीमियां १९३)

नोट–गुलेगुडहल व बडहल हुलैला व बलैला सूअरके बाल वमगस व मार इनसे भी मिस व तरकीब बाला निकलता है ।

मिस ताऊस किस कदर निकलताहै और उसके फवायद (उर्दू)

जोदम ताऊसके कूजेमें रखकर जलावे सो मिसकाल उसमेंसे करीब एक मिसकालके फिलज मुशाव: सोनेके हासिल होताहै तिला और सुर्मा उसका वास्ते रफै होने सफेदी आंखके और अमराज आंखके मुजर्रिबातसे है । (सुफहा ६ किताब मखजनुल अदविया जिल्द दोयम)

लोहकल्पकी उत्तमता ।

सम्यगौषधकल्पानां लोहकल्पः प्रशस्यते ।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन लोहमादौ विमारयेत् ॥
॥ १७३ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–जितने कल्प हैं उन समस्त कल्पोंसे लोहका कल्प उत्तम मानागया है इस लिये विद्वान् वैद्यको उचित है कि प्रथम सब प्रकारके उपायोंसे लोहके भस्म करनेका पूर्णरूपसे उपाय करे ॥ १७३ ॥

लोहेकी उत्पत्ति ।

पुरा लोमिलदैत्यस्य निहतस्य सुरैर्युधि । उत्पन्नानि शरीरेभ्यो लोहानि विविधानि वै ॥ १७४ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–प्राचीन कालमें जब देवता और दैत्योंमें युद्ध हुआ तब देवताओंसे मारेहुए लोमिल दैत्यके शरीरसे लोहे उत्पन्न हुए ॥ १७४ ॥

लोहेके १८ भेदोंका वर्णन दोहा ।

नागार्जुनने लोहके, कहे अठारह भेद ।
तिन्हें परिखबेमें सुअति, होत बुद्धिको खेद॥

अठारह भेदोंके नाम ।

१ मण्डूर, २ सारलोह, ३ मध्यसारलोह, ४ स्थूल सारलोह, ५ चक्रमर्दलोहा, ६ बधलोहा, ७ वज्रार्कलोहा, ८ वज्रपाट्यलोहा, ९ निरबलोह, १० अम्बुदकलोह, ११ सुराजस, १२ कलिंग, १३ भद्रलोह, १४ कुलिपलोह, १५ मुंडलोह, १६ तीक्ष्णलोह, १७ गरलस्थलोह, १८ कान्तलोह यह अठारह भेद हैं इन सबमें कान्तलोह श्रेष्ठ है तीक्ष्णलोह भी श्रेष्ठ है ॥

अठारह प्रकारके लोहोंमें आठ श्रेष्ठहैं–दोहा।

इन अष्टादशके विषे, केचितमत अनुसार।
अष्ट जातिहैं लोहकी, अतिउत्कृष्ट बिचार॥
॥ २ ॥ इन आठनहूंके विषे, मुख्य तीन पहिचान । मुंड लोह तीक्षण तथा, कान्त अधिक गुनवान ॥ ३ ॥ (वैद्यादर्श.)

तथा च ।

मुण्डं तीक्ष्णं च कान्तं च त्रिप्रकारमयः स्मृतम् ॥ १७५ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–मुंड तीक्ष्ण और कान्त इन भेदोंसे लोह तीन प्रकारका होगा है ॥ १७५ ॥

कटाई खुर्दमें ताँबेकी मौजूदगी और वजन (उर्दू)

कटाई खुर्द हमने १८ सेर अर्क कटाई खुर्दमें ९ तोले ताँबा पाया एक फकीरने हमारे दोस्तसे कहा कि तोला बुरादा निहासको सेर सेरभर अर्क कटाई खुर्दमें पीस कर १८ आँच दो जब १८ तोला होजावे एक माशा महखाक तोलाभर चांदीको काबिल हम्मिलान जहब करेगी, चुनाँच: बमुकाम जैपूर यह अमल हमारे सामने हुआ। और पूराहुआ और बेदाग जोडा अदना दर्जेका था न स्याही न सख्ती ए बिरादरान तुमको लाजिम है कि उसूलसे काम करो और इस्तकलाल और पामर्दीसे और गुलामहुसेनको बुरा भला कहलो मगर मनहूसीको छोडदो वरन: व जुजतबाहीके कोई नतीजा न होगा वस्लाम । (सुफहा १२ अखबार अलकीमियाँ १६।२।१९०७)

पीतलसे मिस निकालनेकी तरकीब (उर्दू)

मिस और जस्तसे मुरक्किब पीतल होताहै इससे मिस अलहदा करनेका यह तरीका है कि २१ मर्तब: गुदाज करके लाख और लोद उसमें डाले जिसतरह ऊपर तस्फिया निहासमें बयान हुआहै बाद उसके आबशोरा व सज्जीके

पानीमें इक्कीस वार पिघला कर बुझावे जस्त जल जावेगा और ताँवा निकल आवेगा । (सुफहा अकलीमियाँ १८९)

लोहेके भेद तथा उनके गुणोंकी संख्या ।

मुण्डं तीक्ष्णं तथा कान्तमिति लोहं त्रिधा मतम् । मुण्डाच्छताधिकं तीक्ष्णं तीक्ष्णात्कान्तं शताधिकम् ॥१७६॥(रससारपद्धति.)

अर्थ–मुंड, तीक्ष्ण और कान्त भेदसे लोह तीन प्रकारका है और मुंडसे शतगुणाधिक तीक्ष्ण तथा तीक्ष्णसे शतगुणाधिक कान्त होताहै ॥ १७६ ॥

लोहेके भेदोंका लक्षण ।

मुंडात्कटाहपात्रादि जायते तीक्ष्णलोहतः । खड्गादिशस्त्रभेदाः स्युः कान्तलोहं तु दुर्लभम् ॥ १७७ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–मुंडनामके लोहेसे कडाई और पात्र प्रभृति बनाये जातेहैं और तीक्ष्णलोहसे तलवार आदि शस्त्र बनतेहैं इन दोनोंसे भिन्न जो कान्त लोह है उसका मिलना कठिन है ॥ १७७ ॥

मुंड और तीक्ष्णके नाम ।

खेडी लोह सकेला दोऊ । मुंड लोह कहियो सब कोऊ ॥ तीक्षण लोहा दोउ बताय।गजबेली पोलाद कहाय॥ (वैद्यादर्श.)

शनाख्त फौलाद व आहन (उर्दू)

अलामत लोहे और फौलादकी यह है कि लोहेपर तेजाब शोराको डालकर देखे अगर स्याह दाग पडे तो फौलाद है और अगर सफेद दाग पडे तो आहनखाम है । (सुफहा अकलीमियाँ ५४)

मुण्डका लक्षण ।

मुण्डं मृदु च निःसारं समलं गुरुतायुतम् । अस्निग्धमल्पगुणदं मृत्यवे तद्विवर्जितम् ॥ ॥ १७८ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–मुण्ड (खेडीलोह) कोमल, हलका, मैला, रूखा अल्पगुणवान् और मृत्युकारकहै ॥ १७८ ॥

मुंडके भेद और परीक्षा ।

मृदु कुण्ठं कडारं च त्रिविधं मुंडमुच्यते । द्रुतद्रावमविस्फोटं चिक्कणं मृदु तच्छुभम् ॥ ॥ १७९ ॥ हतं यत्प्रसरेद् दुःखात्तत्कुण्ठं मध्यमं स्मृतम्।यद्धतं भज्यते भङ्गे कृष्णं स्यात्तत्कडारकम् ॥ १८०॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–मृदु, कुण्ठ और कडारभेदसे मुण्डलोह तीन प्रकारका है मृदुलोहको तपानेसे शीघ्र ही गलजाताहै धनको चोट लगनेसे फटता नहीं और चिकना होताहै वह लोह उत्तम है, कुंठ लोह अत्यन्त कूटनेपर भी वहुत कम वढताहै वह मध्यम गुणकारी होताहै और कडार नामका लोहा वह है जो कि तोडनेपर या चोट लगनेपर काली रंगतका होताहै वह लोहा खराव होताहै ॥ १७९ ॥ १८० ॥

तीक्ष्णके लक्षण ।

कासीसामलकल्काक्ते लोहगं दृश्यते मुखम् । तीक्ष्णलोहं तदुद्दिष्टं मारणोयोत्तमं विदुः॥ ॥ १८१ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–कसीस और आमलेके कल्कसे चुपडे हुए लोहेमें मुख दीखताहै उसको तीक्ष्णलोह कहतेहैं यह भस्म करनेमें अत्यन्त उपयोगी है ॥ १८१ ॥

तथा च ।

खरं सारं च हृन्नालं तारावट्टं च वाजिरम् । काललोहाभिधानं च षड्विधं तीक्ष्णमुच्यते ॥ १८२ ॥ परुषं पोगरोन्मुक्तं भङ्गे पारदवच्छवि । नमने भङ्गुरं यत्तत्खरलोहमुदाहृतम् ॥ १८३ ॥ अङ्कक्षया च वङ्कं च पोगरस्याभिधात्रयम् । चिकुरं भङ्गुरं लोहात्पोगरं तत्परं मतम् ॥ १८४॥ वेगवं गुरुधारं यत्सारलोहं तदीरितम् । पोगराभासकं पाण्डु भूमिजं सारमीरितम् ॥ १८५ ॥ कृष्णपाण्डुवपुश्चञ्चुबीजतुल्योरुपोगरम् । छेदने चाति परुषं हृन्नालमिति कथ्यते ॥ १८६ ॥ पोगरैर्वज्रसंकाशैः सूक्ष्मरेखैश्च सान्द्रकैः । निचितं श्यामलाङ्गं च वाजिरं तत्प्रकीर्त्यते ॥ १८७ ॥ नीलकृष्णप्रभं सान्द्रं मसृणं गुरुभासुरम् । लोहाघातेष्वभंगात्मधारं कालायसं मतम् ॥

अर्थ–खर, सार, हृन्नाल, तारावट्ट, वाजिर और काललोह इन नामोंसे तीक्ष्ण नामका लोहा छः प्रकारका होताहै उनमेंसे खरलोह उसको कहते हैं जो कडा हो तोडनेमें पारदके समान चमकीला हो और दुहर करनेसे टूटनेवाला हो । नित्यप्रति काममें लानेसे अथवा जोरसे किसीपर घाव करनेसे जिसकी धार टूट जातीहो और जो पीली धरतीपर उत्पन्न हुआ हो उसे सार लोह कहते हैं काले पीले वर्णके समान रंगवाला अथवा इमलीके बीजके समान वर्णवाला काटनेमें अत्यन्त कठोर हो उसको हृन्नाल लोह कहतेहैं और जो हीरेके तुल्य चमकीला तथा अत्यन्त सूक्ष्म चमकीली और मिलीहुई रेखाओंसे युक्त हो और अत्यन्त श्याम हो उसको वाजिरलोह कहते हैं । जिसका रंग नीला और काला मिलाहुआ हो चिकना, भारी और चमकदार हो और जिसकी धार अत्यन्त लोहपर मारनेसे टूटे नहीं उसको काल लोह कहते हैं ॥ १८२–१८८ ॥

कान्तलोहका लक्षण ।

यत्पात्रे न प्रसरति जले तैलबिन्दुः प्रतप्ते हिंगुर्गन्धं त्यजति च निजं तिक्ततां निम्बकल्कः । तप्तं दुग्धं भवति शिखराकारकं नैति भूमिं कृष्णांगः स्यात्सजलचणकः कान्तलोहं तदुक्तम्॥१८९॥(रससारपद्धति.)

(१) कान्तं लोहं तदिदमुदितं लक्षणोक्तं न चान्यत् । इत्यपि ।

अर्थ-जिसके पात्रमें तप्तजलको भर तैलकी बूंद रखदेवे तो फैलती नहीं है और हींगको पानीमें घिस पात्रपर लगावे तो उसकी गंध नहीं रहती, नींबका कल्क पात्रपर चुपडे तो कडुआहट जातीरहतीहै और जिसमें तपायाहुआ दूध शिखरके आकारवाला होकर धरतीपर नहीं गिरताहै और जिसकी रंगत चमकदार काली हो उसको कान्तलोह कहते हैं ॥ १८९ ॥

कान्त लोहेके चार भेद ।

कान्तलोह चौविधि पहिचानो । भ्रामक पहिलो भेद बखानो ॥ शकट दूसरो चुंबक तीजो । द्रावकको चौथो गनलीजो ॥ (वैद्यादर्श.)

कान्तलोह परीक्षा-चौपाई ।

कांतीलोह कढाई नीर। भरिके तेल बिन्दु दे थीर ॥ वहै बिंदु फैलत नाहिं होय । ज्योंकी त्यों ही रहै सुजोय ॥ अथवा हींग धरै तामांहि । ताकी गंध न आवै ताहि॥ अथवा नीम पीसके धरै । तामें कटुता रंच न रहै ॥ ए लच्छन जामें लखिपावै । ताही कांती लोह बतावै ॥ (वैद्यादर्श.)

कान्तलोह ग्रहणकरनेका उपाय ।

मदोन्मत्तगजः सूतः कान्तमंकुशमुच्यते । क्षेत्रं खात्वा ग्रहीतव्यं तत्प्रयत्नेन धीमता मारुतातपविक्षिप्तं वर्जयेन्नात्र संशयः ॥ ॥ २९० ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-पारद मस्तहाथीके समान है और कान्तलोह अंकुशके तुल्य है अर्थात् पारदको नियममें रखनेके लिये कान्त ही समर्थ है इस लिये अच्छी खान देखकर अत्यंत परिश्रमके साथ कांतलोहेको निकाले इस लोहेको वायु घाम और पानीमें न रखना चाहिये ॥ २९० ॥

कान्तलोहके भेद और परीक्षा ।

भ्रामकं चुम्बकं चैव कर्षकं द्रावकं तथा ॥ एकं चतुर्विधं कान्तं रोमकान्तं च पञ्चमम्॥ ॥ १९१ ॥ एकद्वित्रिचतुष्पञ्च सर्वतो मुखमेव तत । पीतं रक्तं तथा कृष्णं त्रिवर्णं स्यात् पृथक्पृथक् ॥ १९२ ॥ क्रमेण देवतास्तत्र ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः । भ्रामकं तु कनिष्ठं स्याच्चुम्बकं मध्यमं तथा ॥ १९३ ॥ उत्तमं कर्षकं चैव द्रावकं चोत्तमोत्तमम् । भ्रामयेल्लोहजातं तु तत्कान्तं भ्रामकं मतम् ॥ १९४॥ चुम्बयेच्चुम्बकं कान्तं कर्षयेत्कर्षकं तथा । साक्षाद्यद्द्रावयेल्लोहं तत्कान्तं द्रावकं भवेत् ॥ १९५ ॥ तद्रोमकान्तं स्फुटिताद्यतो रोमोद्गमो भवेत् । भ्रामकं चुम्बकं चैव व्याधिनाशे प्रशस्यते ॥ १९६॥ रसे रसायने चैव कर्षकं द्रावकं हितम् । कनिष्ठं स्यादेकमुखं मध्यं द्वित्रिमुखं भवेत् ॥ १९७ ॥ चतुष्पञ्चमुखं श्रेष्ठ मुत्तमं सर्वतोमुखम् । स्पर्शवेधी भवेत्पीतं कृष्णं श्रेष्ठं रसायने॥१९८॥रक्तवर्णं तथा वापि रसबंधे प्रशस्यते ॥ १९९ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-भ्रामक, चुम्बक, कर्षक और द्रावक इन भेदोंसे कान्तलोह चार प्रकारकाहै और पांचवाँ भेद रोमकान्त भी है और वह एकमुख, दोमुख, तीनमुख, चारमुख, पांचमुख और चारों तरफ मुखवाला होताहै और प्रत्येक कान्तलोहके पीला, काला और लाल रंग होताहै इनके क्रमसे ब्रह्मा, विष्णु और महादेव देवता हैं भ्रामक, कनिष्ठ,चुम्बक,मध्यम, कर्षक, उत्तम और द्रावक सबसे उत्तम होताहै जो समस्त लोहोंको चक्कड खिलावे उसको भ्रामक कहतेहैं । अन्य किसी लोहेके साथ लगानेसे जो चिपट जावे उसको चुम्बक कहतेहैं । तथा दूरस्थित लोहेको अपनी तरफ खींचलेवे उसको कर्षक कहतेहैं । और द्रावक लोह उसको कहतेहैं जो अपने पास रक्खेहुएको गलादेताहै और जिसके तोडनेसे केशके समान खीलें होजावें उसको रोमकान्त कहतेहैं । इन लोहोंमें रोगनाश करनेवाले भ्रामक और चुम्बक लोह हैं । रसादिक रसायनके काममें कर्षक और द्रावक लोह हितहै, एक मुखवाला कान्तलोह कनिष्ठ (हलका) होताहै दो तथा तीन मुखवाला लोह मध्यम होताहै और चारमुखवाला उत्तम और चौरफा मुखवाला लोह सर्वोत्तम होताहै । पीला लोह स्पर्श वेधी होताहै और काला लोह रसायनके लिये श्रेष्ठ है ॥ १९१-१९९ ॥

चरखसे निकाले हुए लोहचूर्णकी परीक्षा ।

शाणाकृष्टस्य सारस्य चूर्णं सूक्ष्मं प्रजायते। स्थूलमन्यस्य लोहस्येत्येवं ज्ञेयं परीक्षणम् ॥ ॥ २०० ॥ (र. र. स.)

अर्थ-यदि शानसे निकले हुए लोह चूर्णकी परीक्षा करनी हो तो इस प्रकार करनी चाहिये कि जो रेत महीन अर्थात् सूक्ष्म हो तो उसको कान्तलोहका रेत समझना चाहिये और यदि मोटा हो तो किसी अन्य लोहका रेत समझना चाहिये ॥ २०० ॥

अशुद्ध लोहके अपगुण ।

षंढत्वकुष्ठामयमृत्युदं भवेद्धृद्रोगमेवं कुरुते श्मरीं च ॥ नानारुजानां च तथा प्रकोपं करोति हृल्लासमशुद्धलोहम् ॥ २०१ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-नहीं शुद्ध कियाहुआ लोहा नपुंसकता, कोढ, मृत्युको देताहै हृदयके रोग और अश्मरी (पथरी) को करताहै हृल्लास और अनेक प्रकारके रोगोंको करताहै ॥ २०१ ॥

अशुद्धलोहेके दोष ।

अशुद्धलोहं न हितं निषेवणादायुर्बलं का-

न्तिविनाशि निश्चितम् । हृदि प्रपीडां तनुते ह्यपाटवं रुजं करोत्येव विशुध्य मारयेत् ॥ २०२ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–सेवन कियाहुआ अशुद्ध लोहा हितकारी नहीं होताहै, आयु बल और कान्तिका निश्चय नाश करता है, हृदयमें पीडा और अनेक प्रकारके रोगोंको करता है इस लिये लोहेको शोध करके भस्म करना ठीक है ॥ २०२ ॥

लोहेके गुण ।

लोहं तिक्तं सरं शीतं मधुरं तुवरं गुरु । रूक्ष्यं वयस्यं चक्षुष्यं लेखनं वातलं च यत् ॥ ॥ २०३ ॥ पित्तं कफं गरं शूलं शोथार्शः-प्लीहपाण्डुताम् । मेदोमेहं क्रुमीन्कुष्ठं तत्किट्टं तद्गुणं स्मृतम् ॥ २०४ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–लोहा-कडुआ, दस्तावर, ठंढा, मीठा, कसैला और भारी होताहै, तथा रूखा आयुको बढानेवाला नेत्रोंको हित कोष्ठको शुद्ध करनेवाला और बातल है कफ, पित्त, विष, शूल, सूजन, बवासीर, प्लीहा, पांडु मेद (चर्बीका बढना), प्रमेह, कृमिरोग और कुष्ठरोगको नाश करता है जिस लोहेका कीटहो उसमें भी उसी लोहे केसे गुण होते हैं ॥ २०३ ॥ २०४ ॥

लोहसारके गुण ।

लोहसाराह्वयं हन्यादग्रहणीमतिसारकम् । अर्द्धसर्वांगजं वातं शूलं च परिणामजम्२०५ छर्दिं च पीनसं पित्तं श्वासमाशु व्यपोहति ॥ २०६ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–लोहसार–संग्रहणी, अतीसार, अर्द्धांग अथवा सर्वांग कुपित वातरोग, परिणामशूल वमन, पीनसका रोग पित्तके रोग और श्वासको नाश करताहै ॥ २०५ ॥२०६॥

मुण्डलोहके गुण ।

मुण्डं परं मृदुलकं कफवातशूलमेहाममूलगदकामलपाण्डुहारि । गुल्मामवातजठरार्तिहरं प्रदीपि शोफापहं रुधिरकृत्खलु कोष्ठशोधि ॥ २०७ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–मुंडलोह–अत्यन्त कोमल, कफ, वात, दर्द, प्रमेह, आम, बवासीर, कामला और पांडुरोगको नाश करता है वायगोला, आमवात और पेटके रोगोंको हरनेवाला है अग्निको दीप्त करनेवाला सूजनका नाशक रक्तका बनानेवाला और कोष्ठको शोधनेवाला है ॥ २०७ ॥

कान्तिसारके गुण ।

कान्तायः कामलाशोथकुष्ठानि क्षयगुल्मकौ। शूलोदरार्शप्लीहानामामवातं भगंदरम् ॥ ॥ २०८ ॥ अम्लपित्तं यकृच्चापि शिरोरोगं हरेद्ध्रुवम् । बलं वीर्यं वपुःपुष्टिं कुरुतेऽग्निविवर्द्धयेत ॥ २०९ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–कान्तिसार–कामला, शोथ, कोढ, क्षयरोग, वायगोला, दर्द, पेटके रोग बवासीर, प्लीहा, आमवात, भगंदर, अम्लपित्त, यकृत् और मस्तकके रोगोंको हरता है बल, वीर्य और शरीरकी पुष्टिको करता है तथा अग्निको बढाता है ॥ २०८ ॥ २०९ ॥

अन्यच्च ।

कान्तायोऽतिरसायनोत्तरतरं स्वस्थे चिरायुःप्रदं स्निग्धं मेहहरं त्रिदोषशमनं शूलाममूलापहम् ॥ गुल्मप्लीहयकृत्क्षयामयहरं पाण्डूदरव्याधिनुत्तिक्तोष्णं हिमवीर्यकं किमपरं योगेन सर्वार्तिनुत् ॥ २१० ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–कान्तिसार सर्वोत्तम रसायन है और सावधान शरीरमें आयुको बढाता है चिकना, प्रमेहका हरनेवाला, त्रिदोषका नाशक, शूल आमके रोगोंका नाश करता है, वायगोला, यकृत्, क्षयरोग, पाण्डुरोग और उदररोगोंको नाश करता है, तथा कान्त लोह, कडुआ, गरम वीर्यमें ठंढा है. इसके गुणोंको कहांतक कहैं कि यह लोह अनुपानके द्वारा समस्त रोगोंका नाशकर्ता है ॥ २१० ॥

लोहेकी शुद्धि ।

नाधःपंचपलात्त्रयोदशपलादूर्ध्वं न लोहं पचेत्त्रायःपलपंचकस्य पचने निर्वापनादिक्रमे ॥ उद्दिश्य त्रिफलाफलानि शनकैर्निःक्वाथयेत्षोडश प्रक्षिप्याष्टगुणं जलं परिमितं पादेन तच्चोद्धरेत् ॥ २११ ॥ एवं प्रकुर्यादसकृन्मारणे शोधने तथा । न कर्मणि विधिं कुर्याद्विधिज्ञोप्यलसो भिषक् ॥ ॥ २१२ ॥ (टोडरानन्द.)

अर्थ–पांच पलसे कमती और तेरह पलसे अधिक लोहेकी भस्म न करै और जहां बुझाव देनेके समय पांच पल लोहा लायाजाता है वहांपर सोलह पल त्रिफला ले और कूटकर आठ गुने जलमें औटावे और चतुर्थांश शेष रहनेपर उतारकर छानलेवे, यदि शोधना होवे तो लोहेको तपा २ कर बुझावे और भस्म करना हो तो क्वाथमें घोट कर गजपुटमें फूंके और विधिके जाननेवाला वैद्य यदि इस क्रियाको आलससे न करै तो अपगुण अवश्य करेगा ॥ ॥ २११ ॥ २१२ ॥

अन्य प्रकारका शोधन ।

त्रिफलाष्टगुणे तोये त्रिफलाषोडशं पलम् । तत्क्वाथे पादशेषे तु लोहस्य पलपंचकम् ॥ ॥ २१३ ॥ कृत्वा पत्राणि तप्तानि सप्तवारं निषेचयेत्।एवं प्रलीयते दोषो गिरिजो लोहसम्भवः॥२१४॥(रससारपद्धति.,र.र.स.)

अर्थ–सोलह पल त्रिफलामें त्रिफलासे आठ गुने अर्थात् १२८ एक सौ अट्ठाईस पल जल गेरकर औटावे जब चतुर्थांश शेष रह तब उतार कर छानलेवै तदनन्तर पांच पल लोहेके पत्रोंको तपा २ कर पूर्वोक्त त्रिफलाके क्वाथमें बुझावे इस प्रकार सात बार बुझावे तो लोहेका गिरिज दोष नष्ट होजायगा ॥ २१३ ॥ २१४ ॥

तीसरा प्रकार ।

शशक्षतजसंलितं त्रिवारं परितापितम् । मुण्डादिसकलं लोहं सर्वदोषान्विमुञ्चति ॥ ॥ २१५ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-लोहेको खरहेके रक्तसे लीपकर अग्निमें तपावे इस प्रकार तीन बार करनेसे मुण्डादि समस्त प्रकारके लोह सम्पूर्ण दोषोंसे छूटजाते हैं ॥ २१५ ॥

चौथा प्रकार ।

सामुद्रलवणोपेतं तप्तं निर्वापितं खलु । त्रिफलाक्वथिते नूनं गिरिदोषमयस्त्यजेत् ॥ ॥ २१६ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-लोहेके पत्रोंको समुद्र नोंनका लेपकर अग्निमें तपावे फिर तपेहुए पत्रोंको सात बार त्रिफलाके काथमें बुझावे तो लोहेका गिरिज दोष नष्ट होगा ॥ २१६ ॥

पाँचवाँ प्रकार ।

चिञ्चाफलजलक्काथाद्योदोषमुदस्यति । यद्वा फलत्रयोपेतं गोमूत्रे क्वथितं क्षणम् ॥ ॥ २१७ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-इमलीके फलोंके काथके साथ औटानेसे अथव गोमूत्रमें त्रिफलाका काथ बनाकर उसमें लोहको औटावे तो शीघ्रही लोहा शुद्ध होजायगा ॥ २१७ ॥

कान्तलोहका विशेष शोधन ।

शशरक्तेन संलिप्तं बिम्बार्कपयसायसः॥२१८॥ पत्रं हुताशने ध्मातं सिक्तं त्रैफलवारिणा ॥ त्रिशः कान्तस्य संशुद्धिरित्येवं परमा भवेत् ॥ २१९ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-कान्तलोहके पत्रोंको खरहाके रक्तसे लीपकर बिम्बा (कन्दूरी अगर चिंचा पाठ हो तो इमलीके फलोंका काथ) काथ आकका दूध अथवा त्रिफलाके काथमें तीन बार बुझावै तो कान्त लोहकी शुद्धि होगी ॥ २१८ ॥ २१९॥

दूसरा प्रकार ।

तप्तं क्षाराम्लसंलिप्तं शशरक्तेन दापितम् । कान्तलोहं भवेच्छुद्धं सर्वदोषविवर्जितम् ॥ ॥ २२० ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-कान्तलोहके पत्रोंपर नींबू या जंभीरीके रससे घुटे हुए जवाखारका लेपकर और अग्निमें तपाकर तीन बार खरहाके रक्तमें बुझावे तो कान्तकी विशेष शुद्धि होगी ॥ २२० ॥

लोह भस्मकरनेकी अवधि ।

नायः पचेत्पञ्चपलादर्वागूर्ध्वं त्रयोदशात् ॥ ॥ २२१ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-लोहेको कमसेकम पांचपल और अधिकसे अधिक तेरह १३ पल लेकर भस्म करे ॥ २२१ ॥

लोहेके गुणोंकी संख्या ।

लक्षोत्तरगुणं सर्वं लोहं स्यादुत्तरोत्तरम् । कान्तं कोटिगुणं तत्र तदप्येवं गुणोत्तरम् ॥ ॥ २२२ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-समस्त प्रकारके लोहोंमें एक २ लक्ष गुणहैं और मुण्डादि लोहोंके भेदोंमें भी उत्तरोत्तर अधिक गुण होता है यथा मुण्डके तीन भेद हैं मृदु कुण्ठ और कडार इनमें मृदुसे कुंठ और कुंठसे कडार उत्तम गुणवालाहै इसी प्रकार तीक्ष्ण लोहमें भी खर, सार, हृन्नाल, तारावट्ट, वाजिर और काललोह उत्तरोत्तर अधिक गुणवान् हैं पूर्वोक्त लोहेकी अपेक्षा कान्त लोहमें गुण कोटिगुना अधिक है तथा कान्त लोहेके भेदोंमें भी गुण उत्तरोत्तर अधिक है यथा भ्रामक, चुम्बक, कर्षक, द्रावक और रोमकान्त इनमें भ्रामकसे चुम्बक, चुम्बकसे कर्षक कर्षकसे द्रावक और द्रावकसे रोमकान्त उत्तम है ॥ २२२ ॥

लोह भस्मके गुणोंकी तारतम्यता ।

किट्टाद्दशगुणं मुण्डं मुण्डात्तीक्ष्णं शतोन्मितम् । तीक्ष्णाल्लक्षगुणं कान्तं भक्षणात्कुरुते नृणाम्॥२२३॥तस्मात्कान्तं सदा सेव्यं जरामृत्युहरं नृणाम्॥२२४॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-लोहेकी कीटसे मुण्ड लोह दशगुना अधिक गुणवान् है मुण्डसे तीक्ष्ण लोह सौ गुना अधिक गुणवाला है और तीक्ष्णसे कान्तलोह लाखगुना उत्तमहै इस लिये मनुष्य जरा और मृत्युके नाश करनेवाले कान्त लोहको नित्यप्रति सेवन करे ॥ २२३ ॥ २२४ ॥

लोह भस्मकी विधि ।

सूतकाद्द्विगुणं गन्धं दत्त्वा कुर्याच्च कज्जलिम् ॥ द्वयोः समं लोहचूर्णं मर्दयेत्कन्यकाद्रवैः ॥ ॥ २२५ ॥ यामयुग्मं ततः पिण्डं कृत्वा ताम्रस्य पात्रके । घर्मे कृत्वा रुबूकस्य-पत्रैराच्छादयेद्बुधः ॥ २२६ ॥ यामद्वयाद्भवे दुष्णं धान्यराशौ न्यसेत्ततः । दत्त्वोपरि शरावं तु त्रिदिनान्ते समुद्धरेत ॥ २२७ ॥ पिष्ट्वा च गालयेद्वस्त्राल्लोहं वारितरं भवेत् । एवं लोहानि सर्वाणि स्वर्णादीन्यपि मारयेत् ॥ २२८ ॥ तद्रजो वस्त्रगलितं नीरे तरति हंसवत् । सोमामृताभिधमिदं लोहभस्म प्रकीर्तितम् ॥ २२९ ॥ (रस. सारपद्धति.)

अर्थ-पारदसे दूना गंधक लेकर कजली करलेवे और कजलीके समान लोहेके चूरेको खरलमें गेरकर घीगुवारके रससे दो प्रहरतक मर्दन करे । फिर उसका गोला बनाय अंडके पत्तोंसे ढक और उसको तांबेके पात्रमें रख घाममें रखदेवे इस प्रकार दो प्रहरतक रखनेसे जब वह (गोला) उष्ण होजाय तब उसको सकोरेसे ढक तीन दिवसतक अन्नके ढेरमें गाड देवै । तदनन्तर उस गोलेको निकालकर और खरल (लोहेकी) में पीसकर कपडेमें छानलेवे तो वह लोहसार वारितर (जलमें तैरनेवाला) होजायगा । इस प्रकार समस्त धातुओंको विशेषकर सुवर्णादिकोंको भी

भस्म करै । जिन २ धातुओंको भस्म करना हो ऊपर लिखीहुई विधिसे भस्म कर कपडेसे छानलेवे तो वारितर भस्म होगी इस भस्मको सोमामृत लोहभस्म कहते हैं ॥ २२५-२२९ ॥

सूर्यतापी लोहभस्म।

शाणोद्भ्रान्तमयस्तु कान्तमथवा क्षिप्त्वा-र्द्धलोलीतकं दत्त्वाद्ध्यंशरसं विमर्द्य सलिलै-र्भृङ्गाद्रिकर्णीरसैः ॥ पक्कं सूर्यपुटैश्चतुर्दश-दिनैरेरण्डपत्रावृतं भस्म स्याद्गृहधूमधूसर-रुचि प्राग्धान्यराशिस्थितम् ॥ २३० ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-सान (जिसपर चाकू वगैरह तेज कियेजाते हैं) पर घिसनेसे जो लोहसारका अथवा कान्तिसारका चूरा मिट्टीमें मिलजाता है उसको चुम्बक पत्थरसे निकाललेवे, उससे आधा गंधक और चौथाई पारा डालकर सूखा ही घोटे फिर जलभंगरा और गिरिकर्णी (कोयल) के रससे यथाक्रम घोट गोला बनावे उसको एरंडोंके पत्तोंसे लपेट तांबेके पात्रमें रख घाममें रखदेवे इस प्रकार चौदह दिवस तक सूर्यपुटमें पकावे (प्रत्येक पुटमें दोनों ही रसोंकी भावना देना आवश्यक है) फिर तीन दिनतक अन्नके ढेरमें रक्खे तदनन्तर अन्नके ढेरमेंसे निकाल लोहेके खरलमें अथवा पत्थरकी सिलपर पीसकर छानलेवे (मोटे गढवार कपडेमें छानना चाहिये) तो घरके धूवेंके समान रंगवाला लोहभस्म होगा ॥ २३० ॥

सम्मति-इस क्रियामें चौदह दिनको चौदह पुट समझना चाहिये और उन पुटोंका प्रकार इस तरह जानना चाहिये कि रात्रिके समय लोहके चूरेको तर करदेवे और प्रातःकालसे ही सूर्यके तापमें घोटे और प्रातःकालसे कुछ भी रस न डाले तात्पर्य इसका यह है कि घाममें सूखा मर्दन करना ही सूर्यपुट है ॥

लोहभस्म।

अब जो सार आगि बिन होय । ऐसी जुगत सुनो रे लोय ॥ पारा गंधक समके लेय । सूकी कजरी बांटि करेय ॥ लोहा बहुरि दुहूँसम लेय । रस ग्वारिके खररि करेय ॥ गोला करि तमेडमें धरै । सरवा मूंदै मुद्रा करै॥तम हड धरै मांहिले धान। बडी बुखारी होय सुजान ॥ तीन द्यौस लौं तामें रहै।तम हडकाढि पंच कवि कहै॥ तमहडतें कूंडेमें धरै । लागत वायु सार-पर जरै ॥ सो जारि भसम होय छिनमान। एक जुगत यह सुनो सुजान॥(रससागर बडा.)

लोहभस्म।

खाटीदारचों लेय मँगाय । पारौ तोला मेले आय । तीन द्यौसलौं तामें रहै । पुनि ले काढि पंच कवि कहै ॥ पारो लुहँडा देय चढाइ । अलप आगि ता तरै जराइ॥मानसके बारनको तेल । वा पारेमें चोवा मेल ॥ एक द्यौस ज्यों चोवा देव । ऐसी जुगति सिद्धिकै लेय ॥ पत्र लोह काचेके करै । पारौ चुपरि मूसमें धरै ॥ अंध मूसकै धौंके गुनी । एक जुगति यह गुरुपै सुनी ॥ नाम याहि काठडंडको लोय । मूसि उघारे चेटक होय ॥ (रस-सागर, बडारससागर.)

लोहभस्म।

लोहचूर्णपलं खल्वे सोरकस्य पलं तथा । अच्छगंधपलं चापि सर्वमेकत्र मर्दयेत ॥ ॥ २३१ ॥ कुमार्यद्भिर्दिनं कुर्याद्गोलकं रुचिपत्रकैः।संवेष्ट्य च मृदा लिप्त्वा पुटेद्गजपुटे भिषक् ॥ २३२ ॥ स्वांगशीतं समुद्धृत्य सिन्दूराभमयो रजः ॥ मृतं वारितरं ग्राह्यं सर्वकार्यकरं परम् ॥ २३३॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-लोहेका बुरादा और सोरा एक २ पल और शुद्ध आमलासार गंधक एक पल इन तीनोंको खरलमें डालकर घीगुवारके रसमें एक दिनतक घोट गोला बनावे उसको एरंडके पत्तोंसे लपेट कर मिट्टीसे लीपदेवै फिर गजपुटमें भस्म करै स्वांगशीतल होनेपर निकास लेवै तो सिन्दूरके समान लोहेकी भस्म होगी यह जलपर तैरनेवाली लोहभस्म समस्त कामोंमें लानेयोग्य है ॥ २३१-२३३ ॥

शतपुटी और सहस्रपुटी लोहभस्म।

शाणाकृष्टरजोयसस्त्रिदिवसं पिष्टं वरा-वारिणा यद्वा रक्तपुनर्नवादलरसैर्यद्वाद्रि-कर्णीरसैः चांगेरीसलिलैस्तथैव सलिलै-र्वानीरजैरौषधैस्त्रिशदन्तिपुटैर्वरं जलतरं स्याद्भस्म जम्बूप्रभम्॥२३४॥(रससारपद्धति.)

अर्थ-शाण (जिसपर कैंची चाकू प्रभृतिकी धार चढाई जातीहै) पर जो लोहा घिसा जाताहै उस (सार या कान्त) को चुम्बकसे संग्रहकर तीन दिनतक त्रिफलाके काथकी भावना देनी (यहांपर तीन दिनका अर्थ तीन भावना लेना चाहिये) फिर गजपुटमें भस्म करना उचित है इसीतरह लाल सांठके पत्तोंका रस, अद्रिकर्णी (जिसे कोयल कहते हैं) का रस, चांगेरी (खट्टी लोनिया) का रस और जलबेतके रसकी तीन २ भावना देकर पुटदेवे तो तीस पुटमें जाँमनके सदृश वर्णवाला लोह भस्म होगा ॥ २३४ ॥

सम्मति-यदि तीसही पुटका भस्म बनाना हो तो प्रत्येक रसकी छः २ पुट देवे और प्रत्येक पुटमें तीन भावना देना योग्य है, अथवा शतपुटी बनाना हो तो बीस २ पुटदेवे और यदि हजार पुटका लोह बनाना हो तो दो २ सौ पुट देना चाहिये । प्रत्येक पुटमें तीन २ भावना देना योग्य है, रोगनाश करनेके लिये लोह भस्म बनाना हो

तो तीस पुट अथवा शतपुटका लोह भस्म बनाना चाहिये और यदि रसायनके लिये बनावे तो हजार पुटका बनाना ही उत्तम है यह सिद्धान्त हमारे पूर्वज वैद्योंका है इसमें संदेह नहीं है ॥

सारमारणविधि ।

सुच्छम करै लोहको रेत । लेह गुनी मन-भावे तेत ॥ चूरन समकी अभ्रकसार । एक पहर ज्यों खरिरे ग्वार ॥ सुर्फे सराई संपुट भरै । कपरौटीकै गजपुट धरै ॥ सो मीर लोह भस्म अति होय । पुनि त्रिफला रस खरलै सोय ॥ एक पहर ज्यों है मरजाद । खरलत गुनीनकी ज्यों दाद॥ त्रिफलाकी ऐसी पुट तीस । तब निश्चन्द्र करै जगदीस ॥ नीर बाँटि दारचोंके पात । पुनि याकी पुट दीजै सात । तब सो सार वारितर होय । जो इह विधिकै जाने कोय ॥ भली जुगति यह कही बखानि । तब कहिजै राजनिके खानि ॥ बिन शोध्यो जो कहिये सोय । तो ताको गुन नहिं रंचक होय ॥ (रससागर बडा । रससागर छोटा.)

तथा च ।

रेतितं घृतसंयुक्तं क्षिप्त्वायः खर्परे पचेत । चालयेल्लोहदंडेन यावत्क्षिप्तं तृणं दहेत ॥ ॥ २३५ ॥ पिष्ट्वा पिष्ट्वा पचेदेवं पंचवारमतः परम् ॥२३६॥ धात्रीफलरसैर्यद्वा त्रिफलाक-थितोदकैः पुटेल्लोहं चतुर्वारं भवेद्वारितरं खलु ॥ २३७ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-शुद्ध किये हुए लोहको रितवाकर मिट्टीके खिपरेमें रख और घृतसे भिगोकर आंचपर चढावे और लोहेके ही घोटासे तवतक खूब घोटता जावे जबतक कि उसमें घासका तिनखा जलजावे फिर उसको पीस कर पूर्वोक्त विधिसे घृतयुक्त करके चूल्हेपर पचावे इसप्रकार पांच बार करे फिर आमले और त्रिफलाके काथकी भावना देकर चार गजपुट देवे तो लोहेकी भस्म जलपर तैरनेवाली होजायगी इसमें संदेह नहीं ॥ २३५-२३७ ॥

सम्मति-मेरी रायमें तो प्रत्येक रसकी चार २ भावना देकर आठ पुट देवे तो ठीक होगा ।

तथा च ।

स्नुहार्क्कं लोहरजो मूत्रे स्वरसेपि रात्रि-धात्रीणाम् । पृथगेवं सप्त कृत्वा भर्जितम-खिलामये योज्यम् ॥२३८॥(रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-प्रथम शुद्ध लोहको गोमूत्रकी भावना देकर सुखालेवे फिर घृतमें मिलाय चूल्हेपर भस्म करलेवे इसप्रकार सात पुट देवे तथा हलदी और आमलेके रसकी भी सात २ भावना देकर चूल्हेपर भूनलेवे तो लोहकी भस्म होगी और उसको समस्त रोगोंमें वर्तना चाहिये ॥ २३८ ॥

तथा च ।

हिङ्गुलस्य पलान्यश्च नारीस्तन्येन पेष-येत् । तेन लोहस्य पत्राणि लेपयेत्पलपंच-कम् ॥ २३९ ॥ रुद्ध्वा गजपुटे पच्यात्क-षायैस्त्रिफलैः पुनः । जम्बीरैरारनालैर्वा विंशत्यंशेन हिंगुलम् ॥ २४० ॥ पिष्ट्वा रुद्ध्वा पचेल्लोहं तद्द्रवैः पाचयेत्पुनः । चत्वारिंशत्पुटैरेवं कान्तं तीक्ष्णं च मुंड-कम् ॥ २४१॥ म्रियते नात्र संदेहो दत्त्वा दत्त्वैव हिंगुलम् ॥ २४२ ॥(रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-सिंगरफको पांच पल लेकर स्त्रीके दूधसे घोटलेवे फिर पांच ही पल लोहेके पत्रोंपर लेपकर गजपुटमें पकावे तदनन्तर उस लोहभस्मसे बीसवाँ हिस्सा सिंगरफ डालकर त्रिफलाका काथ, जंभीरीका रस और कांजी इनमेंसे किसी एकके साथ पीस कर गजपुटमें पकावे इस प्रकार चालीस पुट देनेसे लोहेकी भस्म होगी चाहे वह लोहा कान्त, तीक्ष्ण अथवा मुंड इनमेंसे कोईसा क्यों न हो भस्म होजाताहै इसमें सन्देह नहीं है । और प्रत्येक पुटमें (सिंगरफ) जो कि लोहेसे बीसवाँ हिस्सा हो देकर भावना की औषधिके साथ घोट गजपुट देनी चाहिये ॥ ॥ २३९-२४२ ॥

तथा च ।

अथ पूर्वोदितं तीक्ष्णं वसुभल्लकवासयोः । पुटितं पत्रतोयेन त्रिंशद्वाराणि यत्नतः । शोणितं जायते भस्म कृतसिन्दूरविभ्रमम्॥ ॥ २४३ ॥ २४४ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-अथवा हिंगुलके साथ भस्म कियेहुए लोहको मौलसरी, भिलावे और अडूसेके पत्तोंके रसकी पुट देकर गजपुटमें भस्म करै अर्थात् प्रत्येक औषधिके पत्तोंके रसकी दस२ पुट देवे इस प्रकार तीस पुट देनेसे सिन्दूरके समान लाल वर्णकी लोहभस्म होगी ॥ २४३ ॥ २४४ ॥

तथा च ।

यद्वा तीक्ष्णदलोद्भूतं रजश्च त्रिफलाजलैः । पिष्ट्वा दत्त्वौदनं किंचिच्चक्रिकां प्रविधाय च ॥ २४५ ॥ शोषयित्वातियत्नेन प्रपचे-त्पंचभिः पुटैः । रक्तवर्णं हि तद्भस्म योज-नीयं यथायथम् ॥ २४६ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-अथवा तीक्ष्ण (फौलाद) लोहके पत्रोंका चूरा करके त्रिफलाके जलसे घोटै फिर थोडासा रंधाहुआ भात मिलाकर टिकिया बांधलेवे उस टिकियाको अच्छी तरह सुखाकर भस्म करै तो पांच पुटमें लाल वर्णकी भस्म होगी उसको अनेक योगोंके संग देना चाहिये२४५॥२४६॥

तथा च ।

मत्स्याक्षीगंधवाह्लीकैर्लकुचद्रवपेषितैः ।

विलिप्य सकलं लोहं मत्स्याक्षीकल्कपेषितम् ॥ २४७ ॥ भस्त्राभ्यां सुदृढं ध्मात्वा त्रिशूलीनिर्गमावधि । अथोद्धृत्य क्षिपेत्क्काथे त्रिफलागोजलात्मके ॥ २४८ ॥ तस्मादाहृत्य संताड्य मृतमादाय लोहकम् । ततश्च पूर्ववद् ध्मात्वा मारयेदखिलायसम् ॥ २४९ ॥ खण्डयित्वा ततो गंधं त्रिफलागुडवारिणा । पुटेत्रिंशद्वाराणि निरुत्थं भस्म जायते ॥ २५० ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ—मत्स्याक्षी (मछेछी) और हींगको समान भाग लेकर बडहर अथवा मछेछीके रससे घोटे फिर लोहेके पत्रोंपर लेप कर और सुखाय धोंकनियोंसे खूब धोंके तदनन्तर आधा त्रिफलाका काथ और आधा ही गोमूत्र मिलाकर रखदेवे उसमें उन तपेहुए पत्रोंको बुझावे फिर उसमेंसे निकाल हथोडेसे कूट मृत लोहको लेलेवे और इसी प्रकार लेपकर तपाय बुझादेवे जबतक समस्त लोहेका भस्म न हो तबतक यही क्रिया करता जावे फिर पूर्वोक्त रीतिसे जलेहुए लोहेके समान गंधक और गुड (दोनों मिलाकर) लेकर त्रिफलाके काथसे घोटकर गजपुट देवे इस प्रकार तीस पुट देनेसे लोहेकी निरुत्थ भस्म होजायगी ॥ २४७–२५० ॥

तथा च।

समगन्धमयश्चूर्णं कुमारीवारिमर्दितम् । पुञ्जीकृतं कियत्कालमवश्यं म्रियते ह्ययः॥ ॥ २५१ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ—शुद्ध लोहचूर्ण एक भाग और शुद्ध गंधक एक भाग इन दोनोंको घीगुवारके रसमें पीसकर गोला बनाकर कुछ समयतक अन्नकी ऊष्मामें धररक्खे तो उसकी भस्म होजायगी इसमें सन्देह नहीं है ॥ २५१ ॥

तथा च।

जम्बीररससंयुक्ते दरदे तप्तमायसम् । बहुवारं विनिक्षिप्तं म्रियते नात्र संशयः॥२५२॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ—सिंगरफको नींबूके रसमें घोटकर रखलेवे फिर लोहेके पत्रोंको अग्निमें तपातपाकर उस पूर्वोक्त घोटेहुए सिंगरफमें बार २ बुझावे तो लोहेकी भस्म होगी इसमें सन्देह नहीं ॥ २५२ ॥

तथा च।

गोमूत्रैस्त्रिफला क्वाथ्या तत्कषायेण भावयेत् । त्रिःसप्ताहं प्रयत्नेन दिनैकं मर्दयेत्पुनः ॥ २५३ ॥ रुद्ध्वा गजपुटे पच्यादिनं क्वाथेन मर्दयेत् । दिवा मर्द्य पुटेद्रात्रावेकविंशदिनावधि ॥ एकविंशपुटैश्चैव म्रियते त्रिविधं ह्ययः ॥ २५४॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ—गोमूत्रमें त्रिफलाका काथ बनालेवे उससे लोहचूर्णको इक्कीस दिनतक भावना देवे फिर एक दिन मर्दन कर गजपुटमें पकावे फिर एक दिनतक मर्दन करे इस प्रकार दिनमें घोटे और रात्रिमें पुट लगावे इस प्रकार इक्कीस दिवसतक बीस पुट लगावे तो तीनों प्रकारके ही लोहेकी भस्म होगी इसमें सन्देह नहींहै॥२५३॥२५४॥

सम्मति–प्रथम १ सेर त्रिफलामें १६ सोलह सेर गोमूत्र भरकर औटावे तदनन्तर उससे लोहचूर्णको इक्कीस दिनतक भिगोवे फिर घोटकर पुट देवे प्रत्येक पुटमें इस बातका ध्यान रखना चाहिये कि लोहा सूखाहुआ हो नहीं तो श्यामवर्ण होगा इस क्रियाको गरमोके दिनोंमें करना चाहिये ॥ २५३ ॥ २५४ ॥

तथा च।

अयसामुत्तमं सिंचेत्तप्ततप्तं वरे रसे । एवं शुद्धानि लोहानि पिष्टान्यम्लेन केनचित्॥ ॥ २५५ ॥ मृतसूतस्य पादेन प्रलिप्तानि पुटानले । पचेत्तुल्यस्य वा ताप्यगन्धाश्महरतेजसः ॥ २५६ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ—समस्त लोहोंमें उत्तम अर्थात् कान्तलोहको लेवे और उसके सूक्ष्मपत्र बनवाय और अग्निमें तपाकर त्रिफलाके काढेमें २१ इक्कीस बार बुझावे तो वह कांत लोह शुद्ध होगा, उस शुद्ध किये हुए लोहेके पत्रोंपर नीबू या अन्य किसी खट्टे पदार्थके रससे पारद भस्म (जो कि लोहेसे चौथाई हो) को घोट लेप कर देवे अथवा सोनामाखी, गंधक और पारा इनमेंसे किसी एकको लोहेके समान लेकर घीगुवारके रसमें घोट गजपुटमें फूँकदेवे तो लोहकी भस्म होगी ॥ २५५ ॥ २५६ ॥

तथा च।

शुद्धं सूतं द्विधा गंधं खल्वे कृत्वा च कज्जलीम् । द्वयोः समं लोहचूर्णं मर्दयेत्कन्यकाद्रवैः ॥ २५७ ॥ यामद्वयात्समुद्धृत्य तद्गोलं कांस्यपात्रके । आच्छाद्यैरण्डपत्रैश्च यामार्द्धेत्युष्णतां व्रजेत् ॥ २५८ ॥ धान्यराशौ न्यसेत्पश्चात्त्रिदिनांते समुद्धरेत् । संपेष्य गालयेद्वस्त्रे सत्यं वारितरं भवेत् ॥ ॥ २५९॥ कान्तं तीक्ष्णं च मुण्डं च निरुत्थं जायते ध्रुवम् । स्वर्णादीन्मारयेदेवं चूर्णं कृत्वा च लोहवत् ॥ २६० ॥ सिद्धयोगो ह्ययं ख्यातः सिद्धानां सुमुखागतः । अनुभूतं मया सत्यं सर्वरोगजरापहम् ॥ त्रिफलामधुसंयुक्तं सर्वरोगेषु योजयेत् ॥ ॥ २६१ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ—शुद्ध पारद १ भाग, शुद्ध गंधक २ दो भाग इन दोनोंको खरलमें डालकर कज्जली बनालेवे और इन दोनोंके समान लोहेका चूरा मिलाय घीगुवारके रससे २ दो प्रहरतक घोटे फिर उसका गोला बनाय कांसीके पात्रमें रख एरंडके पत्तोंसे ढकदेवे तो दोही पहरमें वह गोला अत्यन्त उष्ण होजायगा तदनन्तर उस गोलेको धानके ढेरमें तीन दिवसतक रख निकाल लेवे और पीसकर छान लेवे तो

लोहेकी जलपर तैरनेवाली भस्म होगी इस क्रियासे तीन प्रकारके लोहोंकी निरुत्थ भस्म होगी इसमें सन्देह नहीं जिस प्रकार लोहेकी भस्म होतीहै उसी प्रकार अन्य सुवर्ण आदि धातुओंकी भी भस्म हो जायगी यह सिद्धयोग सिद्धजनोंके मुखसे कहागयाहै और ग्रंथकार कहताहै कि मैंने भी इसका अनुभव कियाहै यह लोहभस्म समस्त रोगोंका नाश कर्ताहै । सब रोगोंमें इस लोहभस्मको त्रिफला और शहदके साथ देना चाहिये ॥ २५७–२६१ ॥

कान्तिसारकी विधि ।

तीक्ष्णलोहस्य पत्राणि निर्दलानि दृढेऽनले। ध्मात्वा क्षिप्त्वा जले सद्यः पाषाणोलूखलोदरे ॥ २६२ ॥ खण्डयेद्गाढनिर्घातैः स्थूलया लोहपारया । तन्मध्ये स्थूलखण्डानि रुध्वा मल्लद्वयान्तरे ॥ २६३ ॥ ध्मात्वा क्षिप्त्वा जले सम्यक् पूर्ववत्खंडयेत्खलु । तच्चूर्णं सूतगंधाभ्यां पुटेद्विंशति वारकम् ॥ २६४ ॥ पुटेपुटे विधातव्यं पेषणं दृढवत्तरम् । एवं भस्मीकृतं लोहं तत्तद्रोगेषु योजयेत् ॥ २६५ ॥ (रस. रत्नसमुच्चय.)

अर्थ–तीक्ष्ण लोहके पतले पत्र बनवाकर तीक्ष्ण अग्निमें तपाय जलमें बुझावे और उसी समय उनको (लोहेके पत्रोंको) पत्थर तथा लोहेकी ऊखलीमें गेरकर लोहेके मूसलोंस कूटे उनमेंसे छोटे २ टुकडोंको छोड बडे टुकडोंको सकोरामें रख और अग्निमें तपाय जलमें बुझावे और पहिलेकी तरह लोहेके इमामदस्तेमें कूटे उस लोहचूर्णके समान कजली मिलाय घीगुवारके रसमें घोट गजपुट देवे इस प्रकार २१ इक्कीस पुट देवे प्रत्येक पुटमें खूब घुटाई करै तो लोह भस्म, सिद्ध होगी इसको समस्त रोगोंमें बर्तना चाहिये ॥ २६२–२६५ ॥

तथा च ।

तेंदू गुठली भांडेमेलि । जंत्रपताल काढिजे तेल ॥ तब लीजै गजबेलिको रेत । पारेके सम जानो जेत ॥ सोलह पहर खरलिये तेल । सोले पिठी नारियल मेल ॥ ऐसो छेद जुगतसे करै । औषधि माहिं फुरहरी धरै ॥ भिगीनारियर बैठे एक । हंडी दीजै भलै विवेक॥ऊपर कपरौटी कर सात। सुकै सुकैके नीकी बात ॥ तब सुनारियर हांडी धरै । हाँडी पर कपरौटी करै॥तब गजपुटमें धरै बनाय । ऊपर तरै आरने छाय॥सीतल भये लीजिये वीर । सोखे सही बंगको नीर ॥ खाये बल पौरुख अतिकरै । मन्दागिनी अरोचक हरै ॥ कान्तीरसहै याको नाम । सो साधे जाके बहुकाम ॥ बल बीरज अरु थंभन होइ । सो नर खावत जाके जोय ॥ (रससागर बडा.)

लोहभस्मके अमृतीकरणकी विधि ।

द्विगुणे त्रिफलाक्काथे तुल्ये पिष्ठाप्ययोरजः विपचेन्मध्यपाकेन सर्वव्याधिजरापहम् ॥ ॥ २६६॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–दुगने त्रिफलाके काथमें लोह भस्मका गेरि और पीसकर साधारण अग्निसे पकावे जब उसमेंसे धूवाँ निकलना बंद होजाय तब उतार लेवे स्वांगशीतल होनेपर घोटकर रखलेवे तो यह भस्म बुढापेरूप रोगको नाश करताहै ॥ २६६ ॥

लोहभस्मकी परीक्षा ।

अङ्गुष्ठतर्जनीहृष्टं यत्तद्रेखान्तरं विशेत् । भस्म वारितरं वा स्यात्तल्लोहं मृतमुच्यते॥ ॥ २६७ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–अँगूठा और उसके पासवाली अंगुलीसे लोह भस्मको लेकर मलनेसे लोहभस्म अँगूठे अंगुलीकी रेखाओंमें धंसजाय अथवा जलमें डूबे नहीं तो लोहेको भस्म हुआ समझना चाहिये ॥ २६७ ॥

तथा च ।

पक्वजम्बुफलच्छायं कान्तलोहं तदुत्तरम् ॥ ॥ २६८ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–जिस कान्तिसार लोहेकी भस्म वर्ण (रंग) पकी हुई जांवनके समान हो अर्थात् ललाई लिये हुए कुछ कालापन हो तो उत्तम समझनी चाहिये ॥ २६८ ॥

लोहानुपान ।

त्रिफलामधुसंयुक्तं सर्वरोगेषु योजयेत् । पथ्याशिनां लोहभस्म यथोक्तगुणदं भवेत् ॥ ॥ २६९ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–लोहभस्मको त्रिफला और शहदके साथ सबरोगोंमें देवे, जो मनुष्य लोहभस्मके सेवन करनेके समय पथ्य (हित) भोजन करनेवाले हैं उनको लोहभस्म ठीक गुण देता है ॥ २६९ ॥

लोहभस्मसेवनका गुण ।

एतस्यादपुनर्भवं हि भसितं लोहस्य दिव्यामृतं सम्यक् सिद्धरसायनं त्रिकटुकी वेल्लाज्यमध्वन्वितम् ॥ हन्यान्निष्कमितं जरामरणजव्याधींश्च सत्पुत्रदं दिष्टं श्रीगिरिशेन कालयवनोद्भूत्यै पुरा तत्पितुः॥२७०॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–सिद्धरसायन अमृतरूप इस निरुत्थ लोहभस्मको त्रिकुटा, वायविडंग घृत और शहदके साथ सेवन करे तो उसके जरा और मृत्युरूप व्याधियोंका नाश होता है और सत्पात्र पुत्र उत्पन्न होगा । पहले श्रीमहादेवजीने कालयवनके पैदा होनेके लिये उसके पिताको इस लोहभस्मका सेवन कहाथा ॥ २७० ॥

तथा च ।

लोहं जन्तुविकारपाण्डुपवनक्षीणत्वपित्ताम-

यस्थौल्यार्शोग्रहणीज्वरार्तिकफजिच्छोफ - प्रमेहप्रणुत ॥ गुल्मप्लीहविषापहं बलकरं कुष्ठाग्निमान्द्यप्रणुत्सौख्यालम्बिरसायनं मृतिहरं किट्टं च कान्तादिवत् ॥ २७१ ॥ मृतानि लोहानि रसीभवन्ति निघ्नन्ति युक्तानि महामयांश्च ॥अभ्यासयोगाद् दृढदेहसिद्धिं कुर्वन्ति रुग्जन्मजराविनाशम् ॥ ॥ २७२ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–लोहभस्म कृमिविकार, पाण्डुरोग, वातव्याधि,धातुक्षीणता, पित्तरोग, स्थौल्य (मेदोवृद्धि), बवासीर, ग्रहणी, ज्वर, कफके रोग, सूजन, प्रमेह, वायगोला, तापतिल्ली, विषविकार, कोढ, मन्दाग्नि और मृत्युको नाश करता है। बलका बढानेवाला, सुखका दाता और रसायन है कान्तादि लोहोंकी कीट भी उन्हींके समान गुणवाली होती है। लोह भस्म रसायन होता है इसका निरन्तर सेवन करनेसे असाध्य रोग भी नाशको प्राप्त होते हैं शरीर लोहेके समान दृढ होता है और रोगोंका उत्पन्न होना तथा बुढापेको नाश करता है इसमें सन्देह नहीं है ॥ २७१ ॥ २७२ ॥

तथा च।

कान्तायः कमनीयकान्तिजननं पांड्वामयोन्मूलनं यक्ष्मव्याधिनिबर्हणं गरहरं दोषत्रयोन्मूलनम् । नानाकुष्ठनिबर्हणं बलकरं वृष्यं वयःस्तंभनं सर्वव्याधिहरं रसायनवरं भौमामृतं नापरम् ॥ २७३ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–कान्तलोहके सेवन करनेसे मनुष्य सुन्दर रूपवान् होताहै तथा लोहभस्म-पांडुरोग, राजयक्ष्मा, विषविकार, वातरोग, पित्तरोग और कफके रोग और अनेक प्रकारके कोढको नाश करताहै। बलको बढाताहै पुष्टिकारक है और बुढापेको आने नहीं देताहै और समस्त रोगोंको नाश करता है, रसायन है और यह लोहभस्म इस संसारमें अमृतके समान है ॥ २७३ ॥

तथा च।

आयुःप्रदाता बलवीर्यकर्ता रोगप्रहर्ता मदनस्य कर्ता ॥ अयःसमानं नहि किंचिदन्यद्रसायनं श्रेष्ठतमं हि जन्तोः ॥ २७४ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–लोहभस्म आयुका दाता बल और वीर्यका करनेवाला, रोगनाशक और कामदेवका उत्पादक है जीवमात्रके लिये लोहेके समान और कोई श्रेष्ठ रसायन नहींहै ॥२७४॥

अशुद्ध भस्मके दोष।

अशुद्धलोहं न हितं निषेवणादायुर्बलं कान्तिविनाशि निश्चितम् । हृदि प्रपीडां तनुते ह्यपाटवं रुजं करोत्येव विशोध्य मारयेत् ॥ २७५ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–अशुद्ध अथवा विधिपूर्वक भस्म नहीं किये हुए लोहके सेवनसे आयु, बल और कान्ति नाश होतीहै हृदयमें पीडा करताहै, शरीरको तेज रहित तथा अनेक रोगोंको कर्ताहै इसलिये लोहेको शुद्ध कर विधिपूर्वक भस्म करना चाहिये ॥ २७५ ॥

तथा च।

जीवहारि मदकारि चायसं देहशुद्धिमदसंस्कृतं ध्रुवम् । पाटवं न तनुते शरीरके दारुणं हृदि रुजां च यच्छति ॥ २७६ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–अशुद्ध लोह जीवका नाश करनेवाला, मदका कर्ता, रेचक शरीरके तेजका नाशक है और हृदयमें पीडाको उत्पन्न करताहै ॥ २७६ ॥

लोहसेवनमें परहेज।

कूष्माण्डं तिलतैलं च माषान्नं राजिका तथा । मद्यमम्लमसूरांश्च त्यजेल्लोहस्य सेवकः ॥ २७७ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–पेठा, तिल, तैल, उरद, राई, शराब, खटाई और मसूर इन पदार्थोंको लोहभस्मका सेवन करनेवाला कभी न खावे ॥ २७७ ॥

मण्डूरका लक्षण।

ध्मायमानस्य लोहस्य मलमंडूरमुच्यते । स किट्टसंज्ञां लभते त्रिविधं तत्प्रजायते ॥ यस्य लोहस्य यत्किट्टं तत्किट्टमपि तद्गुणम् ॥ २७८ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–लोहेको धोंकनेसे जो मैल निकलता है उसको मंडूर कहतेहैं और उसीको किट्ट कहतेहैं, वह तीन प्रकारका है, जिस लोहका जो किट्ट है उसमें उसी लोहेके समान गुण होतेहैं ॥ २७८ ॥

तीक्ष्णलोहेकी किट्टका लक्षण।

भिन्नांजनप्रभं किट्टं विशेषाद्गुरुनिर्व्रणम् । निःकोटरं च विज्ञेयं तीक्ष्णं किट्टं मनीषिभिः ॥ २७९ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–जो किट्ट पिसेहुए सुरमेके समान हो अधिकतर भारी हो और ठोस हो उसको विद्वान् तीक्ष्ण किट्ट कहते हैं ॥ २७९ ॥

कांतकिट्टके लक्षण।

पिंगं रूक्षं गुरुतरं मन्दं दीर्घमकोटरम् । छिन्नेत्र रजतच्छायः स्यात्तत्किट्टं तु कान्तजम् ॥ २८० ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–जो किट्ट ठोस, लम्बा, छोटा, अत्यन्तभारी, रूखा और पिलाई लिएहुए हो और जिसके तोडनेपर चांदीके समान कान्ति हो उसको कान्तिसार लोहकी किट्ट कहते हैं ॥ २८० ॥

कितनेवर्षकी कीट ग्रहण करनी चाहिये।

शताब्दचमुत्तमं किट्टं मध्यं चाशीतिवार्षि-

कम् । अधमं षष्टिवर्षीयं ततो हीनं विषोपमम् ॥ २८१ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-एकसौ वर्षकी कीट सबसे उत्तम है ८० अस्सी वर्षकी मध्यम और साठ ६० वर्षकी कीट निकृष्ट होती है इससे कम वर्षोंकी कीट विषके समान होती है अर्थात् साठ बरससे जितनी पुरानी कीट हो उतनी उत्तम होगी और जितनी नवीन हो उतनी ही हानिकारक होगी २८१॥

लोहकिट्टमारणकी विधि ।

अक्षाङ्गारैर्धमेत्किट्टमक्षपात्रस्थिते जले । निर्वापयेदष्टवारं ततः सूक्ष्मं विचूर्णयेत् ॥ ॥ २८२ ॥ तच्चूर्णं मधुना लीढं पाण्डुं हन्ति सकामलम्॥२८३॥लोहवन्मारणं प्रोक्तं बोध्यं तद्गुणवृद्धिदम्॥२८४॥(रसराजपद्धति.)

अर्थ-लोहेकी कीटको बहेडेके कोयलोमें तपाकर बहेडेकी लकडीके बनाएहुए पात्रमें जलभरकर आठ बार बुझावे फिर उसका सूक्ष्म चूरन करलेवे इस कीटके भस्म करनेकी विधि लोहभस्मके समान जानना चाहिये इसको शहदके साथ. सेवन करनेसे कामला और पांडुरोग नष्ट होते हैं ॥ २८२-२८४ ॥

किट्टसे लेकर कान्तभस्म पर्यन्तके गुणोंका तारतम्य ।

किट्टादशगुणं मुण्डं मुण्डात्तीक्ष्णं शताधिकम् । तीक्ष्णाल्लक्षगुणं कान्तं भक्षणात्कुरुते नृणाम् ॥ २८५ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-कीटसे मुण्डलोहा दशगुना अधिक गुणवान् और मुंडसे तीक्ष्णलोह सौगुना अधिक गुणवान् तथा तीक्ष्णसे कान्तलोहमें गुण लाखगुना अधिक है ॥ २८५ ॥

मण्डूरके बनानेकी विधि ।

अक्षाङ्गारैर्धमेत्किट्टं लोहजं तद्द्रवां जलैः । सेचयेदक्षपात्रान्तः सप्तवारं पुनः पुनः॥२८६॥ मण्डूरोयं समाख्यातश्चूर्णं श्लक्ष्णं नियोजयेत् ॥ २८७ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-बहेडेके कोयलोंमें लोहेकी कीटको तपाकर बहेडेके पात्रमें रक्खेहुए गोमूत्रमें सात बार बुझावे तो यह मण्डूर सिद्ध होगा इसको पीसकर सब कामोंमें लावे२८६॥२८७॥

तथा च ।

गोमूत्रैस्त्रिफला क्वाथ्या तत्क्वाथे सेचयेच्छनैः॥ लोहकिट्टं तु संततं यावज्जीर्यति तत्स्वयम्२८८ तच्चूर्णं जायते पेष्यं मण्डूरोयं प्रयोजयेत् ॥ ॥ २८९ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-गोमूत्रमें त्रिफलाका काथ करना चाहिये फिर लोहेकी कीटको तपाकर उस काथमें बुझाताजावे कि जिससे कीटकी भस्म होजावे फिर उसको पीसकर रखलेवे इस मण्डूरको समस्त कामोंमें लावे ॥ २८८ ॥ २८९ ॥

मुण्डकिट्टके गुण ।

ये गुणा मारिते मुण्डे ते गुणा मुण्डकिट्टके। तस्मात्सर्वत्र मण्डूरं रोगशान्त्यै प्रयोजयेत्॥ ॥ २९० ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-जो गुण मुण्डनामकी भस्ममें हैं वे गुण मुण्डकी किट्ट (मण्डूर) में भी हैं इस कारण रोगशान्तिके लिये मण्डूरका सर्वत्र प्रयागे करै ॥ २९० ॥

लोहद्रुति करनेकी क्रिया ।

त्रिःसप्तकृत्वो गोमूत्रे जालिनी भस्मभावितम् । शोषयेत्तस्य वापेन तीक्ष्णं मूषागतं द्रवेत ॥ २९१ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-कडवी तोरईको जलाकर गोमूत्रकी इक्कीस २१ भावना देकर सुखालेवे फिर लोहेको मूषामें रख अग्निमें तपावे और जब वह गलजावे तब ऊपरसे उसकी भुरकी देवे तो लोहकी द्रुति होगी अर्थात् लोहा द्रवरूप होकर रहेगा ॥ २९१ ॥

तथा च ।

सुरदालीभस्मगलितं त्रिःसप्तकृत्वोथ गोजले शुष्कम् । वापेन सलिलसदृशं करोति मूषागतं तीक्ष्णम् ॥ २९२ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-बंदालकी भस्मको२१ इक्कीस बार गोमूत्रमें भावना देकर सुखालेवे फिर लोहेको मूषामें रख तपावे जब गलजावे तब ऊपरसे उस भस्मको चुटकीभर डालदेवे तो लोहेकी द्रुति होगी ॥ २९२ ॥

तथा च ।

गन्धकं कान्तपाषाणं चूर्णयित्वा समंसमम्। द्रुते लोहे प्रतीवापो देयो लोहाष्टकं द्रवेत्॥ ॥ २९३ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-गन्धक और कान्तपाषाणको समान भाग लेकर पीस लेवे फिर लोहेको घरियामें रखकर गलावे जब लोह गलजावे तब उस चूर्णको डाल देवे तो लोहकी द्रुति होगी ॥ २९३ ॥

तथा च ।

देवदाल्या द्रवैर्भाव्यं गंधकं दिनसप्तकम् ॥ तेन प्रवापमात्रेण लोहं तिष्ठति सूतवत् ॥ ॥ २९४ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-बंदालके रसकी गन्धकको सात दिन भावना देवे फिर तपेहुए लोहेमें उस गंधकको डालदेवे तो लोहा पारदके समान द्रव होकर स्थायी रहेगा ॥ २९४ ॥

तथा च ।

सुरदालिभवं भस्म नरमूत्रेण गालितम् । त्रिःसप्तवारं तत्क्षारवापात् कान्तद्रुतिर्भवेत् ॥ २९५ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-बंदालकी भस्मको २१ इक्कीस बार नरमूत्रकी भावना देवे फिर तपेहुए लोहेमें उसको डाले तो लोहेकी द्रुति होजायगी ॥ २९५ ॥

अथ बंगभेद ।

वंगन्तु द्विविधं प्रोक्तं खुरकं मिश्रकाभिधम् ॥ खुरकं श्रेष्ठमुद्दिष्टं मिश्रकं त्ववरं मतम् ॥ ॥ २९६ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–खुरक और मिश्रक भेदसे बंग दो प्रकारका है उन दोनोंमें खुरक नामका बंग उत्तम होता है मिश्रक नामका बंग हीनगुणवाला होता है ॥ २९६ ॥

कलईकी किस्में (उर्दू)

कलई चार तरहकी होती है अव्वल मादनी, दोयम तलकी जो अवरक सफेदसे निकलतीहै, सोयम सदफी, चहारम आहनी जो लोहेसे हासिल होती है । (सुफहा अकलीमियाँ १७०)

तथा च ।

खुरकं मिश्रकं चेति द्विविधं बंगमुच्यते । खुरं तत्र गुणैः श्रेष्ठं मिश्रकं न हितं मतम् ॥ ॥ २९७ ॥ धवलं मृदुलं स्निग्धं द्रुतद्रावं सगौरवम् । निःशब्दं खुरवंगं स्यान्मिश्रकं श्यामशुभ्रकम्॥२९८॥(रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–खुरक और मिश्रक भेदसे बंग दो प्रकारके हैं उन दोनोंमें मिश्रक बंगकी अपेक्षा खुरक बंगमें गुण अधिक है जो बंग सफेद कोमल, चिकना, शीघ्र गलनेवाला भारी और पत्थरपर बजानेसे शब्द न करता हो उसको खुरक बंग कहते हैं और मिश्रक नामके बंगमें स्वाभाविक कालिमा लीहुई सफेदी होती है ॥ २९७ ॥ २९८ ॥

अथ खुरक और मिश्रकका लक्षण ।

खुरकं रूप्यचंद्राभं खुराकारं च कीर्त्यते । एतल्लक्षणभिन्नन्तु वंगं मिश्रकनामकम् ॥ ॥ २९९ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–खुरक नामका बंग चांदी और चंद्रमाके समान सफेद होता है । इससे भिन्नलक्षण मिश्रकबंगमें होतेहैं २९९

अथ बंगके गुण ।

वंगं तिक्तोष्णकं रूक्षमीषद्वातप्रकोपनम् । मेहश्लेष्मामयघ्नं च मेदोघ्नं कृमिनाशनम् ॥ ॥ ३०० ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–बंग कडुवा उष्ण रूखा और कुछ वातको कुपित करनेवालाहै, प्रमेह कफ मेदोरोग और कृमिरोगको नाश करताहै ॥ ३०० ॥

तथा च ।

वङ्गं तिक्तोष्णरूक्षं कफकृमिवमिजिन्मेहमेदोऽनिलघ्नं कासश्वासक्षयारिप्रशमितहुतभुङ्मांद्यमाध्मानदारि ॥ बल्यं वृष्यं प्रभाकृन्मनसिजजनकं स्वप्नमेहप्रणाशि प्रज्ञाकृद्व्रण्यमुच्चैरलघु रतिरसस्यास्पदं बृंहणं तत् ॥ ३०१ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–बंग-कडुआ उष्ण रूखा कफ कृमिरोग और वमनको जीतनेवाला, प्रमेह मेदोवृद्धि (चर्बीका बढना) और वातरोगका नाश कर्ताहै, कास श्वास क्षय मन्दाग्नि और अफरेको दूर करनेवालाहै ॥ बल और वीर्यका कर्ता कान्ति और कामदेवके उत्पन्न करनेवाला तथा स्वप्न प्रमेहको नष्ट करनेवालाहै, बुद्धिका बढानेवाला व्रणके लिये हित भारी रसका बढानेवाला और बृंहण है ॥ ३०१ ॥

तथा च ।

बल्यं दीपनपाचनं रुचिकरं प्रज्ञाकरं शीतलं सौन्दर्यैकविवर्द्धनं हितकरं नीरोगताकारकम् ॥ धातुस्थौल्यकरं क्षयक्षयकरं सर्वप्रमेहापहं वंगं भक्षयतो नरस्य न भवेत्स्वप्नेपि वीर्यक्षयः॥३०२॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–बलकारी दीपन और पाचन रुचिकर्ता बुद्धिवर्द्धक ठंढा शरीरकी सुन्दरताका एक ही बढानेवाला हितकारी मनुष्यकी तन्दुरस्तीका करनेवाला वीर्यको पुष्ट करनेवाला क्षयनाशक समस्त प्रमेहोंको उखाडनेवाला जो बंग है उसके खानेवाले मनुष्यका स्वप्नमें भी वीर्यपात नहीं होताहै अर्थात् इससे अधिक वीर्यको पुष्ट करनेवाली औषधि और दूसरी कोई नहीं है ॥ ३०२ ॥

तथा च ।

सिंहो यथा हस्तिगणं निहन्ति तथैव वङ्गो खिलमेहवर्गम् । देहस्य सौख्यं प्रबलेन्द्रियत्वं नरस्य पुष्टिं विदधाति नूनम् ॥३०३॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–जिस प्रकार सिंह हाथियोंके झुंडको मारता है इसी प्रकार बंग भी समस्त प्रमेहोंको नाश करता है और मनुष्यके शरीरको सुख इन्द्रियोंकी प्रबलता और शरीरकी पुष्टताको करता है ॥ ३०३ ॥

कलईके खवास (उर्दू)

कलई यह निहासमें मिलानेसे मिलजाती है और इसको सफेद करती है मगर निहास शिकनां होजाता है बशर्तेकि ज्यादह मिला दीजावे क्योंकि कलई मिलानेसे तांबेकी यबूसत बढजाती है तांबे और कलई मिलीहुईको कांसा कहते हैं इसकी बूसे सीमाव बस्ता होजाता है और चांदीको भी शिकनां और सोख्त करदेती है बजुज इसके कि थोडी हो यानी दस तोले चांदी हो तो एक तोला कलई हो लोहा इसके साथ जल्द पिघलता है और साफ होजाता है और बाहम मिलाहुआ तांबा व कलई सख्त आंचसे अगर जुदा कियाजावे तो जलजाते हैं । (सुफहा अकलीमियां६०)

अशुद्धबंगके दोष ।

अशुद्धममृतं वंगं प्रमेहादिगदप्रदम् । गुल्महृद्रोगशूलार्शःकासश्वासवमिप्रदम् ॥३०४॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–अशुद्ध भस्म कियाहुआ बंग प्रमेहादि रोगोंको करता है बायगोला हृदयरोग दर्द बवासीर कास श्वास और उलटीको करता है ॥ ३०४ ॥

बंगकी शुद्धि।

द्रावयित्वा निशायुक्ते क्षिप्तं निर्गुण्डिकारसे । विशुध्यति त्रिवारेण खुरवंगं न संशयः ॥ ३०५ ॥ अम्लतक्रविनिक्षिप्तं वर्षाभूविषतिन्दुभिः । कटूलाम्बुगतं वंगं द्वितीयं परिशुध्यति॥३०६॥(रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-वंगको अग्निमें गलाकर हलदीयुक्त निरगुण्डीके रसमें बुझावे इस प्रकार तीनबार करनेसे खरबंग शुद्ध होता है।खट्टे मठेमें तथा सांठके क्वाथमें अथवा विष तिंदुमें अथवा कडवी तोंबीके रसमें मिश्रक बंग शुद्ध होता है ३०५॥३०६

तथा च ।

शुध्यति नागो वंगो घोषो रविरातपेऽपि मुनिसंख्यैः निर्गुण्डीरससेकैस्तन्मूलरजः प्रवापैश्च ॥ ३०७ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-नाग (सीसे) और बंगको गलाकर तथा सीसा, कलई, कांसा, तथा तांवा इनमेंसे जिसको शुद्ध करना हो उसके सुक्ष्मपत्र बनवाकर तेज घाममें तपावे फिर उन पत्रोंपर निर्गुण्डीकी जडको उसीके रससे पीस तपेहुए पत्रोंपर छिडके इस प्रकार सात बार करनेसे सीसा कलई कांसा और तांवा शुद्ध होता है ॥ ३०७ ॥

नाग और बंगकी शुद्धि ।

नागवङ्गौ प्रतप्तौ च गालितौ तौ निषेचयेत । सच्छिद्रोपलपिहिते हिण्डिकास्थे द्रवे शनैः ॥ ३०८ ॥ सप्तधैवं विशुद्धिः स्याद्रविदुग्धे च सप्तधा॥ अर्कपर्णादिपयसि स भवेत्तद्रसोत्तमः॥३०९॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-एक हांडीमें आकका दूध अथवा आकके पत्तोंका रस भर देवे ऊपरसे छेदवाला पत्थर (घट्टी या चक्कीके ऊपरका पाट) रखदेवे फिर सीसेको तथा बंगको गलाकर धीरे २ उस पत्थरके छेदमेंसे डालदेवे इस प्रकार सात बार करनेसे नाग और वंग शुद्ध होजाँयगे ॥ ३०८॥३०९ ॥

अथ बंगभस्मकी विधि ।

सतालेनार्कदुग्धेन लिप्त्वा वंगदलानि च । बोधिचिञ्चात्वचः क्षारैर्दद्याल्लघुपुटानि च॥ मर्दयित्वा चरेद्भस्म तद्रसादिषु कीर्तितम् ॥ ३१० ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-वंगके समान भाग हरतालको आकके दूधमें पीसकर बंगके सूक्ष्म पत्रों पर लेप करदेवे फिर एक सकोरेमें रख ऊपर नीचे पीपल और इमलीका खार रख लघुपुट देनी चाहिये इस प्रकार सात बार करनेसे बंगकी भस्म होगी और उस भस्मको पीस समस्त रसादिकोंके काममें लावे ॥ ३१० ॥

तथा च ।

प्रद्राव्य खर्परे वङ्गं षोडशांशं रसं क्षिपेत् । स्वल्पस्वल्पालकं[1] दत्त्वा भारद्वाजस्य काष्ठतः मर्दयित्वा चरेद्भस्म तद्रसादिषु कीर्तितम्॥ ॥ ३११ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-वंगको चूल्हेपर चढायेहुए खिपरेमें गलाकर सोलह १६ तोलेमें १एकतोला पारा डाल देवे फिर थोडी २हरताल गेरकर बहेडेकी लकडीसे हिलाता रहै तदनन्तर सबको पीसकर भस्म बनालेवे और उसको समस्त रसादिकोंके काममें लावे ॥ ३११ ॥

तथा च ।

पलाशद्रवयुक्तेन वङ्गपत्राणि लेपयेत् । तालेन पुटितं पश्चान्म्रियते नात्र संशयः ॥ ॥ ३१२ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-ढाकके पत्तोंके रसमें घुटीहुई हरतालसे बंगके पत्रोंपर लेप करदेवे फिर गजपुटमें रखकर फूंकदेवे तो बंगकी भस्म होगी इसमें संदेह नहींहै ॥ ३१२ ॥

तथा च ।

भल्लाततैलसंलिप्तं वंगं वस्त्रेण वेष्टितम् ॥ चिंचापिप्पलपालाशकाष्ठाग्नौ याति पञ्चताम् ॥ ३१३ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-वंगके पत्रोंको भिलावेके तैलसे लेप कर ऊपरसे कपडा लपेटदेवे फिर इमली पीपल अथवा ढाक इनमेंसे किसी एकके कोयलोंमें भस्म करै तो वंगभस्म होगा ॥ ३१३ ॥

तथा च ।

मृत्पात्रे द्राविते वङ्गे चिञ्चाश्वत्थत्वचो रजः। क्षिप्त्वा वंगचतुर्थांशमयोदर्व्या प्रचालयेत ॥ ३१४ ॥ ततो द्वियाममात्रेण वंगभस्म प्रजायते । अथ भस्मसमं तालं क्षिप्त्वाम्लेन विमर्दयेत्॥३१५॥ ततो गजपुटेपक्त्वापुनरम्लेन मर्दयेत॥ तालेन दशमांशेन याममेकं ततः पुटेत् ॥ एवं दशपुटैः पक्कं वंगभस्म प्रजायते ॥ ३१६ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-बीस तोले शुद्ध वंगको खिपरेमें रखकर गलावे फिर वंगसे चौथाई इमली और पीपलकी छालके चूरेको थोडा २ डालता जावे और लोहेकी कडछीसे घोटता जावे इस प्रकार करनेसे २ दो प्रहरमें ही बंगकी भस्म होगी अब भस्मके समान शुद्ध हरतालको खरलमें घोट नींबू या अन्य किसी खट्टे पदार्थके रससे घोट गजपुट देवे फिर दशमांश हरताल मिलाकर नीबूके रससे घोट गजपुटमें फूंक देवे इस प्रकार १० दश बार करनेसे वंगकी श्रेष्ठ भस्म होगी ॥ ३१५-३१६ ॥

तथा च ।

मृत्पात्रे द्राविते वंगे यवानीरजनीरजः । अपामार्गरजो वापि चतुर्थांशं मुहुः क्षिपेत्॥ ॥ ३१७ ॥ पूर्ववद्भस्म संपाद्य सोरकं तत्र मेलयेत् । वंगतूर्यांशमथ तच्छरावेण पिधापयेत ॥ ॥३१८॥ मन्दमग्निं घटीमेकां दत्त्वा

[1] कट्फलाम्बित्यपि।

थ स्वांगशीतलम् । कुन्देन्दुधवलं वङ्गभस्म ग्राह्यं स्वकार्यकृत् ॥ ३१९ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–खिपरेमें बंगको गलावे फिर बंगसे चौथाई अजवायन हलदी और ओंगाके चूरेको थोडा २ गेरता जावे और लोहेकी कडछीसे हलाताजावे भस्म होनेपर खिपरेसे निकाल लेवे और उसमें समान भाग सोरा मिलाय सकोरेमें रख एक घडीतक मन्दाग्नि देवे और स्वांगशीतल होनेपर निकाले तो कुन्दके फूलके समान अथवा चन्द्रमाके समान श्वेत बंगकी भस्म होगी ॥ ३१७–३१९ ॥

तथा च ।

यद्वा वङ्गदलानि विंशतिगुणे पिण्याकचूर्णेऽतसीसम्भूते शणपट्टवर्तिनि पुनस्तद्वद्यवानीमपि ॥ कीर्णानि क्रमशो निबद्धसुदृढं रज्वा गजाह्वे पुटे स्युर्भस्म त्रपुणि स्थिते तु पुटतोऽपक्केऽयमेव क्रमः ॥३२०॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–बंगसे बीसगुनी अलसीकी खलका चूरा तथा अजवायन लेवे प्रथम सनके टाटपर अलसीकी खलका चूरा बिछावे फिर अजवायनका चूरा और उसपर बंगके सूक्ष्म पत्र उन पत्रोंपर फिर अजवायनका चूरा और उसपर अलसीका चूरा इस प्रकार जितना बंग हो उसकी तह लगाकर और बिछानेके समान लंबा लपेटकर सूतलीसे बांधलेवे और मिट्टीसे लपेट गजपुटमें फूंक देवे स्वांगशीतल होनेपर निकाल लेवे उसमें जो बंग कचा रहजावे उसको इसी क्रियासे भस्म करलेवे तो यह बंगभस्म प्रस्तुत होजायगा ॥ ३२० ॥

तथा च ।

वन्योपलोपरिस्थे तु गोणीखंडे क्षिपेद्रजः । तिन्तिडीवल्कलस्याथ तिलास्तत्र विनिक्षिपेत् ॥ ३२१ ॥ अंगुल्यार्धप्रमाणेन तत्र वंगदलं न्यसेत् । खण्डीकृतं पुनस्तेन क्रमेणैवात्र विन्यसेत्॥३२२॥वायुना रहिते स्थाने सर्वांस्तानग्निना दहेत्।स्वांगशीतं ततो ग्राह्यं युक्तं वंगस्य भस्म तत् । श्वेतं लाजकणाभासं सुसूक्ष्मं सर्वकार्यकृत् ॥ ३२३ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–निर्वात स्थानमें एक हाथ लम्बे चौडे जंगली कंडोंको बिछाकर ऊपरसे मिट्टीसे लिपटेहुए गोन (बोरी) के टुकडेको बिछादेवे उसपर तिल और इमलीकी छालके चूर्णको आध अंगुल बिछादेवे फिर बंगके सूक्ष्म पत्रोंको बिछादेवे और ऊपरसे आधअंगुल तिल और इमलीके छालका चूर्ण बिछादेवे इस प्रकार ५ तथा ४ परत लगाकर ऊपरसे जंगली कंडोंको लगाकर अग्नि लगादेवे स्वांग शीतल होनेपर उस बंग भस्मको निकाल लेवे यह भस्म चावलोंकी खीलोंके टुकडोंके समान श्वेत होजावेगी उसको पीसकर रखलेवे तो वह भस्म समस्तकार्योंपयोगी होजायगी ॥३२१–३२३॥

विशेष द्रष्टव्य ।

ऊपर लिखी हुई तीनों क्रियाओंसे सिद्ध की हुई बंगभस्मको मित्रपंचकके साथ घोटकर अग्निमें गलावे यदि इसमेंसे वंग फिर पूर्वावस्थाको प्राप्त होजावे तो उसको सजीव समझनी चाहिये इस लिये उसको निर्जीव अर्थात् निरुत्थ करनेके लिये बंगके समान हरतालको मिलाकर आकके दूधसे घोट और सुखाकर टिकिया बनावे फिर सकोरेमें ऊपर नीचे सूकीहुई पीपलकी छालके चूर्णको रखकर लघुपुट देवे फिर दूसरी बार वंगसे दशमांश हरताल मिलाकर और आकके दूधसे घोट पूर्वोक्त रीतिसे भस्म करे इस प्रकार सात बार करनेसे निरुत्थ बंग भस्म होगी इसमें सन्देह नहीं यह वृद्ध वैद्योंका सिद्धान्त है ॥

जश्ताको बंगके समान समझना ।

यशदं वंगसदृशं तस्य हेतुरयं स्मृतः । गिरिजं तद्भवेत्तस्य दोषाः शोधनमारणे । वंगस्येव हि बोद्धव्या गुणांस्तु प्रवदाम्यहम् ॥ ३२४ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–जश्ता बंगके समान होताहै उसका यह कारण है कि जश्ता पर्वतोंसे उत्पन्न होताहै इस लिये दोष तथा शोधन मारण बंगके समान ही होने चाहिये क्योंकि बंग भी पर्वतोंसे उत्पन्न हुआहै अब उसके गुणोंको लिखते हैं ॥ ३२४ ॥

जस्तकी किस्में (उर्दू)

जस्त दोतरहसे हासिल होताहै अव्वल रसमी कानी, दोयम संगवसरीसे निकलताहै। (सुफहा अकलीमियाँ१७१)

अथ जस्तके गुण ।

यशदं तु वरं तिक्तं शीतलं कफपित्तहृत् । चक्षुष्यं परमं मेहान् पांडुश्वासं च नाशयेत् ॥ ॥ ३२५ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ–जश्ता कडुआ ठंढा और कफ पित्तका नाशक है नेत्रोंके लिये परम हितकारी तथा प्रमेह पांडु और श्वासको नाश करताहै ॥ ३२५ ॥

जस्तके खवास (उर्दू)

(इसको रूएतूतिया और शह भी कहतेहैं) ताँबा इसके हमराह जल्द पिघलताहै और जर्द होजाताहै अगर निस्फा निस्फ दोनों मिलाए जावें तो पीतल बनजाताहै । (सुफहा अकलीमियाँ ५६)

सफाई जस्त बुझावसे (उर्दू)

जस्तको पहले आब इतरीफलमें सात दफै फिर आब भुंगरामें साठ दफे फिर आबमिर्च स्याह, आबसोंठ, पीपल दराज आबसकोई, आब वर्ग बकायन, रोगन कुंजद, वगैरः पिघलाकर बुझाते जावे साफ होजावेगा (सुफहा ९६ किताब नुसखेजातहजारी)

जस्तके कायम करनेकी रीति ।

१ एक तोला जश्त १॥ डेढ पाव हरमलदा पानी वा इन्द्राणीदा पाणी अथवा दोनों चोआ देणा चोआ देकर

कुठाली (घरिया) में गालकर एक माशा पाणी मरुवेदा पादेणा तो जश्ता कायम होगा । (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

दूसरी रीति।

हरताल बारीक पीसकर सीपीके अनबुझे चूनेकी तह बतह जश्तको देकर उसपर भी जश्तके तहवतह देकर अंधमूषामें ४० सेर अर्थात् १ मन गोहे (कंडे) की आग देणी जश्त कायम होजायगा । फिर चाँदीमें गालनेसे शुद्ध रंजित होवेगा । (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

ब्रह्मखपरेश्वर रसविधि ।

अव्यो भैंसको गोबर आनि । ताको रस ले बस्तर छानि॥खपरा औटि औटिके ढारि। गोबरकेरस इकइस बार॥बेली तीस टंककी करै । तामें इम पारो ले धरै ॥ इकइस टंक जोख भरदिये । निबुवा रससों बेली लेपिये ॥ हरद टंक नौ निंबुवा सानि । मांझ लेप करि ताहि सुजान ॥ खपरामें लै औंधी धरै । गेरू पाखरि मुद्रा करै ॥ लै सौ टंक आमला सार । अरु कसीस लै तासम भार ॥ ढोकी यंत्र चुवावै गुनी । शंखद्राव जो काढै दुनी ॥ पंच टंक लै न्यारो धरै । और द्राव बासों पोतन करै ॥ जब सुपोत रस सारो लेय।तो बेलीके बैठन देय ॥ बैठिगये रस राखे मेलि । बहुरि मेलिके छार सकेलि ॥ तासु उतारि खररमें धरै । सहदेवी जु तीन पुट करै ॥ संखाहूली और बादरी।तीन तीन पुट येऊ करी ॥ बहुरि किलस ताकी समलेय । देऊ बांटि जु एक करेय ॥ पुनि माटीके सरवा भरै । पुनि मुद्राकै खारिक करै ॥ हांडी लोन बांटिके भरै । उलटोके हांडीमें धरै ॥ अगिन पहर दस दीपक देय । बहुरि दशों भाँति अगिनि करेय ॥ पुनि बारह हठाग्नि करै । ऐसे पहर बत्तीसक करै ॥ बहुरि द्वौ सधौं सीतल होय । तबै उतारि लीजिये सोय ॥ ब्रह्मखपरेसुर याको नाम । या खाये बाढै अति काम ॥ जेते कुष्ठ जिते सनिपात । अनिल जाय चौरासी बात ॥ कास श्वास परमेह नसाय । अपस्मार छिनमें सब जाय ॥ उदर रोग संग्रहणी आदि । गुल्म शूल सो जैहै बादि ॥ मंडल व्योंची अरु गलगंड । जाय भगंदर अति बलबंड॥ पक्षावात जाय कवि कहै । जो प्राणी संयम पथ रहै ॥ शुल्बवेधिके कुंदन करै । सब आपदा गुनीकी हरै ॥ जो विधि बंगसेनमें आई । गुरु प्रसादते कवि जन गाई ॥ यह निहचैकै जानो सही । आगे कृपा धनीकी रही॥ (रससागर । बडा रससागर.)

कुश्ता स्तज अर्कलैमूंमें बिला आँच(उर्दू)

दो तोले बुरादा बारीक प्याले चीनीमें रखकर एकलैमूं सुबह और एक तीसरे पहर निचोडे और काचकी सींकसे हिलाते रहै इस तौर सात यौम करे फूल फूल कर सफेद बुर्राक होजावेगा इससे उमदा कुश्ता वाजून मयकुव्वत जौहरियः शायद ही होगा मुजर्रिबहै । (सुफहा ९५किताब कुश्तैजातहजारी)

कुश्ता जस्त बजरियः सीमाव और गोभी (उर्दू)

एक तोला सीमाव और एक तोला जस्तको बाहम बूटी भजकल्यानी गोभीके पानीमें आठ पहर खरल करनेसे गिलोला बनाकर उसपर सात तोला सूत खिदर लपेटकर हवासे बचाकर आग देनेसे उमदा कुश्ता होजाता है(सु० ९५ किताब कुश्तैजातहजारी)

नाग (सीसे) की उत्पत्ति ।

दृष्ट्वा भोगिसुतां रम्यां वासुकिर्यन्मुमोच वै । वीर्यं जातस्ततो नागः सर्वरोगापहो नृणाम् ॥ ३२६ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-वासुकि नामके सर्पने सुन्दर किसी नागकन्याको देखकर अपने वीर्यको छोडा उस वीर्यसे मनुष्योंके समस्त रोगोंका नाशक नाग (सीसा) उत्पन्न हुआ ॥ ३२६ ॥

सीसेकी परीक्षा ।

द्रुतद्रावं महाभारं छेदे कृष्णं समुज्ज्वलम् । पूतिगंधं बहिःकृष्णं शुद्धं सीसमतोन्यथा ॥ ॥ ३२७ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-अग्निमें शीघ्र पिघलनेवाला,अत्यंत भारी, काटनेपर काला, चमकीला और बाहरसे काले वर्णका जो हो उसको शुद्धसीसा कहते हैं ॥ ३२७ ॥

सीसेके गुण ।

नागः समीरकफपित्तविकारहन्ता सर्वप्रमेहवनराजिकृपीटयोनिः । उष्णः सरो रजतरंजनकृद्दशार्णो गुल्मग्रहण्यतिसृतिक्षणदांशुमाली ॥ ३२८ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-सीसा वात, पित्त और कफके विकार, समस्त प्रकारके प्रमेह, वायगोला, संग्रहणी और अतिसारको नाशकर्ता है तथा सीसा उष्ण दस्तावर और चांदीको रंगनेवाला है ॥ ३२८ ॥

तथा ।

नागस्तु नागशततुल्यबलं ददाति व्याधिंविनाशयति जीवनमातनोति । वह्निं प्रदीपयति कामबलं करोति मृत्युं च नाश-

यति संततसेवितः सः ॥ ३२९ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-सीसा सौ हाथीके समान बलको देता है, रोगको नाश करता है, जीवनको देता है, अग्नि तथा कामको बढाता है और निरंतर सेवन किया हुआ नाग (सीसा) मृत्युको भी नाश करता है ॥ ३२९ ॥

तथा च।

अत्युष्णं सीसकं स्निग्धं तिक्तं वातकफापहम्। प्रमेहतोयदोषघ्नं दीपनं चामवातनुत् ॥ ३३० ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-सीसा गरम, कडुआ, चिकना, वात और कफका नाशक है, प्रमेह और आमवातको नाश करनेवाला है और दीपन है ॥ ३३० ॥

अशुद्ध नागके दोष।

अशुद्धः कुरुते नागः प्रमेहक्षयकामलान्। तस्मात्संशुद्ध एवासौ मारणीयो भिषग्वरैः ॥ ३३१ ॥ पाकेन हीनौ किल नागवंगौ कुष्ठानि गुल्मांश्च तथातिकष्टान्। पाण्डुप्रमेहानलसादयोपि भगंदरादीन्कुरुतः प्रभुक्तौ ॥ ३३२ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-अशुद्ध सीसा प्रमेह, क्षय तथा कामला रोगको उत्पन्न करता है, इस लिये वैद्यराज सीसेको शुद्ध करके मारै। अपक सीसा और बंग कोढ, वायगोला तथा अन्य भी कष्टकारी पांडु प्रमेह मन्दाग्नि और भगंदर रूप रोगोंको नष्ट करता है ॥ ३३१ ॥ ३३२ ॥

सीसेका शोधन।

सिन्धुवारजटाकौन्तीहरिद्राचूर्णकं क्षिपेत्। द्रुते नागेऽथ निर्गुण्डयास्त्रिवारं निक्षिपेद्रसे॥ नागः शुद्धो भवेदेवं मूर्च्छास्फोटादि नाचरेत् ॥ ३३३ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-प्रथम निर्गुण्डीके रसमें निर्गुंडीकी जड, रेणुका और पिसीहुई हलदी मिलाकर एक घडेमें भरदेवे फिर सीसेको गलाकर तीन वार बुझावे, तो सीसा शुद्ध होजायगा मूर्छा और फोडा वगैरह नहीं करेगा ॥ ३३३ ॥

नागभस्मविधि।

त्रिभिः कुंभीपुटैर्नागो वासारसविमर्दितः। सशिलो भस्मतामेति तद्रजः सर्वमेहनुत् ॥ ॥ ३३४ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-सीसा और मैनसिलको अडूसेके पत्तोंके रसमें घोट गजपुटमें फूंक देवे इस प्रकार तीन पुट देनेसे सीसेकी भस्म होजायगी और वह भस्म समस्त प्रमेहोंका नाश करतीहै ॥ ३३४ ॥

सम्मति-प्रथम सीसेको इमलीकी छालके चूर्णके साथ खिपरेमें भस्मकर फिर नागके तुल्य मैनसिल मिलाय अडूसेके रससे घोटना चाहिये, नहीं तो क्रिया सफल न होगी॥

तथा च।

ताम्बूलरससंपिष्टशिलालेपात्पुनःपुनः। द्वात्रिंशद्भिः पुटैर्नागो निरुत्थं भस्म जायते॥ ॥ ३३५ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-मैनसिलको पानके रससे पीसकर सीसेके पत्रों पर लेप करदेवे फिर शरावसंपुटमें रख गजपुटमें रोक देवे, इस प्रकार ३२ बत्तीस पुट देनेसे नाग (सीसे) की निरुत्थ भस्म होगी ॥ ३३५ ॥

तथा च।

अश्वत्थचिंचात्वक्चूर्णं चतुर्थांशेन निक्षिपेत्। मृत्पात्रे विद्रुते वंगे लोहदर्व्या प्रचालयेत् ॥ ३३६ ॥ यामैकेन भवेद्भस्म तत्तुल्या स्यान्मनःशिला। कांजिकेन द्वयं पिष्ट्वा पुटेद्गजपुटेन च ॥ ३३७ ॥ स्वांगशीतं पुनः पिष्ट्वा शिलया कांजिकेन च। पुनः पचेच्छरावाभ्यामेवं षष्टिपुटैर्मृतिः ॥ ३३८ ॥ (रससारपद्धति.)

अर्थ-मिट्टीके पात्रमें सीसेको गलावे, फिर सीसेसे चौथा-भाग इमली और पीपलकी छालके चूर्णको थोडा २ डालता जावै और हलातारहै, इस प्रकार करनेसे एक प्रहरमें भस्म सिद्ध होगी, तदनन्तर उस भस्मके समान मैनसिलको लेकर कांजीसे घोट टिकिया बनालेवे फिर शरावसंपुटमें रख गजपुटमें फूंक देवै इस प्रकार ६० साठ बार करनेसे सीसेकी भस्म होगी ॥ ३३६-३३८ ॥

तथा च।

भूभुजंगागस्तिभ्यां वै लोहपात्रं विलेपयेत्। तत्र संविद्रुते नागे वासापामार्गसम्भवम् ॥ ३३९ ॥ क्षारं विमिश्रयेन्नागाच्चतुर्थांशं शनैःशनैः। प्रहरं पाचयेच्चुल्ल्यां वासादर्व्या विघट्टयन् ॥ ३४० ॥ तत उद्धृत्य तच्चूर्णं वासानीरैर्विमर्दयेत्। एवं सप्तपुटैर्नागः सिंदूराभो भवेद्ध्रुवम् ॥ ॥ ३४१ ॥ तारस्य रंजनः सोऽसौ वातपित्तकफापहः। ग्रहणीकुष्ठगुल्मार्शोव्रणशोथविषापहः ॥ ३४२ ॥ (रसमानस.)

अर्थ-लोहेकी कढाईको कैंचुओंके रससे अथवा अगस्तिके पत्रोंके रससे लेप देवै उसमें सीसेको गलाकर अडूसे अथवा अपामार्ग (ओंगा) के खारको चौथाई भाग लेकर धीरे २ मिलाता जावै और अडूसेकी लकडीसे घोटताजावे, इस प्रकार एक प्रहरभर करनेसे भस्म होगी उस भस्मको अडूसेके रससे घोट गजपुटमें फूंक देवे इस प्रकार ७ सात बार करनेसे सीसेकी सिन्दूरके समान लाल भस्म होगी यह भस्म चांदीको रंगनेवाली वात, पित्त और कफके रोग, संग्रहणी, कोढ, वायगोला, बवासीर, व्रण, सूजन और विषरोगको नाश करती है ॥ ३३९-३४२ ॥

नागअखैकी विधि ।

मल भूनागतणो ले आय । उहि घरिया ताको औटाय ॥ जब सुनाग नीको होय फिरै । तब घरिया सीरीके धरै ॥ घरियामेंही नाग सिराय । पुनि दूजी घरिया औटाय ॥ इह विधि शत घरियानमें करै। ऐसे नाग अखैको धरै ॥ बहुरि ताहि देखिये राय । अखै होय सेर के तीन पाय॥ (रससागर.)

सम्मति-मेरी समझमें यह एक प्रकार नाग चपल सिद्ध होजायगा देखो उपरसाध्याय पृष्ठ० श्लोक ।

तथा च ।

तिर्यगाकारचुल्ल्यां तु तिर्यग्वक्त्रं घटं न्यसेत्। तं च वक्त्रं विना सर्वं गोपयेद्यत्नतो मृदा ॥ ॥ ३४३ ॥ भ्राष्ट्रयन्त्राभिधे तस्मिन्यन्त्रे सीसं विनिक्षिपेत् । पलविंशतिकं नागमधस्तीव्रानलं क्षिपेत ॥ ३४४ ॥ द्रुते नागे क्षिपेत्सूतं शुद्धं कर्षमितं शुभम् । घर्षयित्वा क्षिपेत्क्षारमेकैकं हि पलंपलम् ॥ ३४५ ॥ अर्जुनस्याक्षवृक्षस्य महाराजगिरेरपि । दाडिमस्य मयूरस्य क्षिप्त्वा क्षारं पृथक् पृथक् ॥ ३४६ ॥ एवं विंशतिरात्राणि पचेत्तीव्रेण वह्निना । विघट्टयन्दृढं दोर्भ्यां लोहदर्व्या प्रयत्नतः ॥ ३४७ ॥ रक्तं तज्जायते भस्म कपोतच्छायमेव वा । नागो दोषविनिर्मुक्तो जायतेतिरसायनः ॥ ३४८ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-तिरछे आकारवाले चूल्हेपर एक घडेको तिरछा धरै उस घडेके मुखको छोड कर चारों तरफ मिट्टी लगा देवे तो यह भ्राष्ट्र (भाड) नामका यंत्र बनजायगा । उस यन्त्रमें २० बीस पल शुद्ध सीसा डालकर नीचेसे अग्नि लगावे सीसेके गलनेपर एक तोला शुद्ध पारा मिलादेवे फिर लोहेकी कडछीसे हिलाता जावे और नीचे लिखेहुए क्षारोंमेंसे थोडा २ डालता जावे, अर्जुन वृक्ष (कोह) का खार, बहेडेका खार, हरंका खार, अनारका खार और अपामार्ग (ओंगा आधाझाडा) का खार इन क्षारोंको पृथक् २ एक २ पललेवे इस प्रकार २० बीस दिनरात तीव्राग्निसे पकावै और लोहेकी कडछीको दोनों हाथोंसे पकड कर खूब हिलावे तो सीसेकी लाल तथा कबूतरके समान रंगवाली भस्म होगी इस प्रकार भस्म करनेसे नाग समस्त दोषोंसे मुक्त होकर अर्थात् निर्दोष होकर अत्यन्त रसायन होताहै३४३-३४८॥

तथा च ।

हतमुत्थापितं सीसं दशवारेण सिध्यति । तन्मृतं सीसकं सर्वदोषमुक्तं रसायनम् ॥ ॥ ३४९ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-सीसेको कढाईमें डाल नीचेसे तीव्राग्नि देवे फिर पीपल और इमलीकी छालका चूरा सीसेसे चौथाई लेकर थोडा २ डालता जावे और हिलाताजावे इस प्रकार एक प्रहरमें सीसेकी भस्म होजायगी उस भस्मको मित्रपंचक (गुड,गूगल, घी, शहद, सुहागा) के साथ मर्दन कर अग्निमें चरख देवे तो सीसा फिर अपने रूपको प्राप्त होताहै, उस सीसेको पूर्वोक्त रीतिसे भस्मकर फिर जीवित करे अर्थात् मित्रपंचकसे जिवावे, इस प्रकार दस बार करनेसे सीसा शुद्ध होजायगा, उस सीसेकी कीहुई भस्म समस्त दोषोंसे रहित और रसायन होतीहै ॥ ३४९ ॥

तथा च ।

अश्वत्थचिंचात्वग्भस्म नागस्य चतुरंशतः । क्षिपेन्नागं पचेत्पात्रे लोहदर्व्या च चालयेत्॥ ॥ ३५० ॥ यामाद्भस्म तदुद्धृत्य भस्मतुल्या मनःशिला । जम्बीरैरारनालैर्वा पिष्ट्वा रुद्ध्वा पुटे पचेत् ॥ ३५१ ॥ स्वाङ्गशीतं पुनः पिष्ट्वा विंशत्यंशशिलायुतम् । अम्लेनैव तु यामैकं पूर्ववत्पाचयेत्पुटे ॥ एवं षष्टिपुटैः पक्को नागः स्यात्सुनिरुत्थितः ॥ ३५२ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-सीसेसे चौथाई पीपल और इमलीकी छालकी राख लेनी चाहिये, फिर सीसेको खिपरेमें गलाकर लोहेकी कडछीसे चलाताजावे और थोडी २ पीपल तथा इमलीकी राखको डालताजावे इस प्रकार एक प्रहरमें भस्म होजायगी इस भस्मके समान शुद्ध मैनशिलको मिलाकर जंभीरीके रससे अथवा कांजीसे घोट टिकिया बनाय और शरावसंपुटमें रखकर गजपुटमें फूंकदेवे स्वांगशीतल होनेपर निकाल उसमें २० बीसवाँ भाग मैनशिल मिलाकर १ एक प्रहरतक जँभीरीके रससे अथवा कांजीसे घोटे फिर गजपुटमें फूंकदेवे,इस प्रकार ६० साठ बार करनेसे सीसेकी निरुत्थ भस्म होगी इसमें संदेह नहीं है ॥ ३५०-३५२ ॥

तथा च ।

शिलया रविदुग्धेन नागपत्राणि लेपयेत् । मारयेत्पुटयोगेन निरुत्थं भस्म जायते ॥ ॥ ३५३ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-सीसेके समान मैनशिलको आकके दूधसे पीस सीसेके पत्रोंपर लेप करदेवे, फिर शरावसंपुटमें रख गजपुटमें फूंकदेवे, इस प्रकार सातबार करनेसे सीसेको निरुत्थ भस्म होगी ॥ ३५३ ॥

सुर्बका कुश्ता अकसीरी बजरियः मन्सिल (उर्दू)

एक शाहसाहबका नुसखा हमजामें जिनका एक नुसखा खालिसका मकबूल बाजार है, मगर इसका इम्तहान नहीं हुआ जब वह सहीहै तो जरूर यह भी सही होगा । सिफत सुर्बमुसफ्फा कि अस्सी मर्तबः गलाकर रोगन कुंजदमें डाला जावे । पावआस्तर मन्सिल कनेरी अव्वल मन्सिलको नारंगी तुर्शके अर्कमें खूब सहक किया जावे और दुचन्द सहचन्दमें तस्किया करदिया जावे और सहकहीमें तस्किया

हो उसको हमवजन राखपीपलमें आमेज करके सुर्बके पत्तर बारीक करके उसपर इसी अर्कके जरियः तिला करे और खुश्क करके किसी जर्फ गिलीमें रखकर गजपुटकी आंच दे कुश्ता होजावेगा । शायद रंगगुलाबी रहेगा एक सुर्ख एक तोला कमरको वरंग जौहर करेगा (सु. १६ व १७ अखबार अलकीमियां १६ । ८ । १९०७)

पीतलकी उत्पत्ति ।

रीतिर्हि चोपधातुः स्यात्ताम्रस्य यशदस्य च । पित्तलस्य गुणाः प्रोक्ताः स्वयोनिसदृशा बुधैः ॥ ३५४ ॥ (रसराजसुन्दर.)

अर्थ-पीतलको ताम्र तथा जस्तकी उपधातु जाननी क्योंकि पीतल तांबा और जस्तसे बनाहुआ है इस लिये विद्वानोंको पीतलमें ताम्र और जस्तके समान गुण समझने चाहिये ॥ ३५४ ॥

पीतलके भेद ।

रीतिका द्विविधा प्रोक्ता तत्राद्या राजरीतिका । काकतुण्डी द्वितीया स्यात्तयोराद्या गुणाधिका॥३५५॥ (रसराजसुन्दर.)

अर्थ-राजरीति और काकमुण्डीके भेदसे पीतल दो प्रकारकी होतीहै, इन दोनोंमें राजरीति नामकी पीतल अधिक गुणवान होतीहै ॥ ३५५ ॥

पीतलकी परीक्षा ।

संतप्ता काञ्जिके क्षिप्त्वा ताम्रा स्याद्राजरीतिका । काकमुण्डी तु कृष्णा स्यात्रासौ सेव्यास्ति रीतिका ॥ ३५६ ॥ (रसराजसुन्दर.)

अर्थ-पीतलको तपाकर कांजीमें बुझानेसे ताँबेकासा जिसका रंग निकले उसको राजरीति कहतेहैं और जिसका रंग काला निकले उसको काकमुण्डी कहतेहैं, काकमुण्डीका सेवन वर्जितहै ॥ ३५६ ॥

पीतलके गुण ।

रीतिस्तिक्तरसा रूक्षा जन्तुघ्नी सास्रपित्तनुत् । कृमिकुष्ठहरा योगात्सोष्णवीर्या च शीतला ॥ ३५७ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-पीतल (जिसको राजरीति कहतेहैं) स्वाभाविक कडुवा, रूखा, कृमिनाशक और रक्तपित्तको दूर करतीहै, कोढको नष्टकरती है यह पीतल परिपाकमें उष्ण अर्थात् खानेमें गरम है और बाह्यप्रयोग करनेमें शीतल है ॥३५७॥

काकतुण्डीके गुण ।

काकतुण्डी गतस्नेहा तिक्तोष्णा कफपित्तनुत् । यकृत्प्लीहहरा शीतवीर्या च परिकीर्तिता ॥ ३५८ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-काकतुण्डी नामकी पीतल विशेष रूखीहै, गरम, कडवी, कफ पित्तको दूर करतीहै, जिगर और तिल्लीको नष्ट करतीहै और बाह्य प्रयागमें शीतलहै ॥ ३५८ ॥

भस्मोपयोगी पीतल ।

गुर्वी मृद्वी च पीताभा साराङ्गी ताडनक्षमा । सुस्निग्धा मसृणाङ्गी च रीतिरेतादृशी शुभा ॥ ३५९ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-वजनमें भारी चिकनी तथा पीली हथोडेकी चोटसे जो फटे नहीं और जो खरखरी न हो वह पीतल उत्तम होती है इसको राजरीति कहते हैं ॥ ३५९ ॥

भस्मके अयोग्य पीतल ।

पाण्डुपीता खरा रूक्षा बर्बुरा ताडनाक्षमा। पूतिगंधा तथा लघ्वी रीतिर्नेष्टा रसादिषु ॥ ॥ ३६० ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-जो पीतल हरयाई (सब्जी) लिये हुए पीले रंगकी हो, खरखरी हो, रूखी हो, शब्द मन्द वाली हो और चोटसे फटनेवाली हो, तथा हलकी हो वह रसादिकोंमें लेनेयोग्य नहीं है ॥ ३६० ॥

पीतलकी शुद्धि ।

तप्ता क्षिप्ता च निर्गुण्डीरसे श्यामारजोन्विते । पंचवारेण संशुद्धिं रीतिरायाति निश्चितम् ॥ ३६१ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-निर्गुडीके रसमें हलदीको मिलाकर एक मिट्टीके पात्रमें भरदेवे फिर पीतलके पत्तोंको तपाकर उस रसमें बुझादेवे इस प्रकार पांच बार बुझानेसे पीतल शुद्ध होजायगी ॥ ३६१ ॥

पीतलके भस्मकी विधि ।

निम्बूरसशिलागन्धवेष्टिता पुटिताऽष्टधा । रीतिरायाति भस्मत्वं ततो योज्या यथायथम् ॥ ३६२ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-पीतलके समान मैनसिल और शुद्ध गंधकको मिला कर नींबूके रससे घोटे फिर पीतलके पत्रोंपर लेप कर शरावसंपुटमें रख गजपुटदेवे इस प्रकार ८ आठ बार पुट देनेसे पीतलकी भस्म होगी उस भस्मको यथायोग्य देना चाहिये ॥ ३६२ ॥

पीतलकी भस्म ताम्रभस्मके समान करनेका उपदेश ।

ताम्रवन्मारणं तस्याः कृत्वा सर्वत्र योजयेत ॥ ३६३ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-जिस प्रकार तांबेकी भस्म की जाती है उसी प्रकार पीतलकी भी भस्म करनी चाहिये, और उसको सर्वत्र काममें लावे ॥ ३६३ ॥

पीतलभस्मका प्रयोग ।

मृतारकूटकं कान्तं व्योमसत्त्वं च मारितम् ॥ त्र्यं समांशकं तुल्यं व्योषजन्तुघ्नसंयुतम् ॥ ॥ ३६४ ॥ ब्रह्मबीजाजमोदाग्निभल्लाततिलसंयुतम् । सेवितं निष्कमात्रं हि जन्तुघ्नं कुष्ठनाशनम् । विशेषाच्छ्वेतकुष्ठघ्नं दीपनं पाचनं हितम् ॥ ३६५ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-पीतलभस्म, कान्तिसार, अभ्रसत्त्वकी भस्म इन तीनोंको समानभाग लेकर पीसे फिर इनके समान भाग अर्थात् ये तीनों धातु एक २ तोला हो तो सोंठ, मिरच, पीपल, वायविडंग, ढाकके बीज, अजमोद, चित्रक, भिलावा और तिल इन सबको मिलाकर ३ तीनही तोला चूर्ण किया हुआ लेना चाहिये इन सबको मिलाकर काचके पात्रमें रखदेवे फिर इसमेंसे ३ तीन माशे नित्यप्रति प्रातःकाल सेवन करे तो उदरमें जितने प्रकारके कृमि हैं, वे सब नाशको प्राप्त होते हैं, तथा कुष्ठभी दूर होता है और विशेष कर यह श्वेतकुष्ठको नाश करता है. यह प्रयोग दीपन अर्थात् भूख लगानेवाला तथा खायेहुए पदार्थको पचानेवाला है, और हित है ॥ ३६४ ॥ ३६५ ॥

पीतलको द्रुति करनेकी विधि ।

सुवर्णरीतिकाचूर्णं भक्षितं विष्ठितं पुनः । छागेन कृष्णवर्णेन मत्तेन तरुणेन च ॥ ॥ ३६६ ॥ तल्लिप्तं खर्प्परे दग्धं द्रुतिं मुंचति शोभनाम् । चतुर्दशलसद्वर्णसुवर्णसदृशच्छविः । देहलोहकरी प्रोक्ता युक्ता रसरसायने ॥ ३६७ ॥ (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-उत्तम पीतलके चूर्णको कृष्णवर्ण, उन्मत्त, जवान बकरेको खिलावे, फिर उसकी मेंगनीको पानीमें मैंदेके समान सूक्ष्म पीसकर एक कूंडेमें लेपकर सुखादेवे फिर उस कूंडेपर दूसरा कूंडा रख कपरौटी करदेवे जिसमें दवाई लगाई हो उसको ऊपर रख देवे और दूसरेको नीचे रक्खै, तदनन्तर कंडोंकी आंच लगादेवे तो नीचेके कूंडेमें पीतलकी द्रुति होजायगी और उसका रंग सुवर्णके समान होगा इसको रस तथा रसायनमें मिलाकर सेवन करना चाहिये ॥ ३६६ ॥ ३६७ ॥

कांसेकी उत्पत्तिका वर्णन ।

अष्टभागेन ताम्रेण द्विभागकुटिलेन च । विद्रुतेन भवेत्कांस्यं तत्सौराष्ट्रभवं शुभम् ॥ ॥ ३६८ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ--आठ भाग ताँबा और दो भाग सीसा इन दोनोंको मिलाकर गलावे तो कांसा बनजायगा सौराष्ट्र (सूरत) देशका बनाहुआ कांसा उत्तम गिनाजाताहै ॥ ३६८ ॥

सम्मति-इस श्लोकमें कुटिलेन इस पदके स्थानमें खुरकेण ऐसा भी किसी पुस्तकमें पाठ है इस लिये यह सन्देह होताहै कि कांसा, ताम्र और सीसेको गलानेसे होताहै । अथवा तांबा और रांगको साथ गलानेसे होताहै परन्तु शास्त्रकारोंके प्रमाणसे यह सिद्ध होचुकाहै कि कांसा दोनों प्रकारसे बन सकताहै इस लिये दोनों पाठ संगत (ठीक) हैं यथा रसराजसुन्दरे-"अष्टभागेन ताम्रेण द्विभागकुटिलेन च । एकत्र द्रावितं तस्मात्कांस्यं स्याद्भोजने शुभम् ॥" इस श्लोकसे ताम्र और सीसेको साथ गलानेसे कांसेका बनना बतायाहै और "ताम्रत्रपुजमाख्यातं कांस्यं घोषं च कंसकम् । उपधातुभवेत्कांस्यं द्वयोस्तरणिरंगयोः ॥" ताम्र तथा रांगसे कांसा बनताहै इसको घोष और कंसक भी कहते हैं. यह ताम्र और रांगका उपधातु है । इसी कारण कांसेके दो भेद शास्त्रकारोंने कहे हैं जो आगे वर्णन करते हैं ।

कांसेके भेद ।

कांस्यं च द्विविधं प्रोक्तं पुष्पकं तैलकभेदतः। पुष्पं श्वेततमं तत्र तैलकं तु कफप्रदम् ॥ ॥ ३६९ ॥ (रसराजसुंदर.)

अर्थ-पुष्प (फूल) और तैलक (तैलिया) भेदसे कांसा दो प्रकार का होताहै, उनमें पुष्पनामका कांसा अत्यंत श्वेत होताहै और तैलक कफको उत्पन्न करताहै ॥ ३६९ ॥

सम्मति-इससे स्पष्ट विदित होताहै कि, पुष्पनामका कांसा, ताम्र और रांगका उपधातु है, तैलक नामका कांसा ताम्र और सीसेका उपधातु है ॥

कांसेकी परीक्षा ।

तीक्ष्णशब्दं मृदुस्निग्धमीषच्छ्यामलशुभ्रकम् । निर्मलं दाहरक्तं च षोढा कांस्यं प्रशस्यते ॥ ३७० ॥ तत्पीतं दहने ताम्रं खरं रूक्षं घनासहम् । मर्दनादागतज्योतिः सप्तधा कांस्यमुत्सृजेत् ॥ ॥ ३७१ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ--तेजशब्दवाला, कोमल, चिकना और कुछ स्याही लिये हुए सफेद हो, साफ हो, और तपानपर लाल वर्णका हो इस प्रकार छः ६ गुणवाला कांसा उत्तम कहाताहै ॥ अथवा जो कांसा पीत वर्णका हो तपानेपर ताम्र वर्ण हो खरखरा हो रूखा हो चोटको न सहताहो मर्दन करनेसे चमकने लगे इन सात गुणोंसे युक्त कांसा छोडनेयोग्य होताहै ॥ ३७० ॥ ३७१ ॥

कांसेके गुण ।

कांस्यं लघु च तिक्तोष्णं लेखनं दृक्प्रसादनम् । कृमिकुष्ठहरं वातपित्तघ्नं दीपनं हितम् ॥ ३७२ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ--कांसा हलका, कडुआ, गरम, लेखन, नेत्रोंको हितकारी, कृमि, कोढ, वात तथा पित्तके रोगोंको नाश करताहै और दीपन है ॥ ३७२ ॥

कांसेकी शुद्धि ।

तप्तं कांस्यं गवां मूत्रे वापितं परिशुध्यति ॥ ॥ ३७३ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-कांसेको तपा २ कर गोमूत्रमें बुझावे तो कांसा शुद्ध होजायगा ॥ ३७३ ॥

कांसेकी भस्म ।

म्रियते गन्धतालाभ्यां निरुत्थं पंचभिः पुटैः ॥ ३७४ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ-कांसेके समान गंधक और हरतालको नीबूके रसमें पीस कांसेके पत्रोंपर लेप करदेवे और शरावसम्पुटमें रख गजपुटमें फूंक देवे इस प्रकार पांच पुटदेनेसे कांसेकी निरुत्थ भस्म होगी ॥ ३७४ ॥

तथा च ।

त्रिक्षारं पञ्चलवणं सप्तधाम्लेन भावयेत् । कांस्यारघोषपत्राणि तेन कल्केन लेपयेत् ।

रुद्धा गजपुटे पक्कं शुद्धिमायाति नान्यथा ॥ ॥ ३७५ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–जवाखार, सज्जीखार, सुहागा और पांचों नोंन इन सबको नीबूके रस की सात भावना देवे फिर कांसा तथा तांबेके पत्रोंपर लेपकर गजपुट देवे तो शुद्ध होगा, अन्यथा नहीं अर्थात् ताम्र और कांसेकी यह विशेष शुद्धि है ॥ ३७५ ॥

सम्मति–किसी २ पुस्तकमें (शुद्धभस्मत्वमाप्नुयात्) ऐसाभी पाठ है वहां ऐसा समझना चाहिये कि जवतक भस्म न हो तबतक पुट देता ही जाय परंतु वास्तवमें यह विशेष शुद्धिका उदाहरण है।

कांस्यपात्रमें घृतके भोजनका निषेध।

घृतमेकं विना चान्यत्सर्वं कांस्यगतं नृणाम्। शुक्रमारोग्यसुखदं हितं सात्म्यकरं तथा॥ ३७६ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–केवल घृतको छोडकर अन्य सब पदार्थ कांसेके पात्रमें खाये हुए मनुष्योंको आरोग्य तथा सुखके दाता हितकारी और अपनी अपनी आत्माके अनुकूल होतेहैं ३७६

पंचलोह (भर्त) निर्माणविधि।

कांस्यरीतिस्तथा ताम्रं नागो वंगश्च पंचमम्। एकत्र द्रावितैरेतैः पंचलोहं प्रजायते॥ ॥ ३७७ ॥ (रसराजसुंदर.)

अर्थ–कांसा, राजरीति (पीतल), ताम्र, सीसा और बंग इन सबको समान भाग लेकर गलावे तो पंचलोह नामका उपधातु सिद्ध होजायगा ॥ ३७७ ॥

तथा च।

कांस्यार्करीतिलोहाहिजातं तद्वर्तलोहकम्। तदेव पंचलोहाख्यं लोहविद्भिरुदाहृतम्॥ ३७८ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–कांसा, ताम्र, पीतल, लोहा और सीसा इन पांचोंसे बनेहुए धातुको वर्तलोह कहते हैं और उसीको पांचलोह कहते हैं ॥ ३७८ ॥

वर्तलोहके पात्रकी उपयोगिता।

तद्भाण्डे साधितं सर्वमन्नव्यंजनसूपकम्। अम्लेन वर्जितं चातिदीपनं पाचनं हितम्॥ ॥ ३७९ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–वर्तलोहके पात्रमें सिद्ध कियाहुआ खटाईको छोडकर सब प्रकारका अन्न और दाल अत्यन्त दीपन तथा पाचन होता है ॥ ३७९ ॥

वर्तलोहकी शुद्धि।

द्रुतमश्वजले क्षिप्तं वर्तलोहं विशुध्यति ॥ ॥ ३८० ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–वर्तलोहको तपा २ कर घोडेके मूत्रमें बुझावे तो वर्तलोह (भर्त्त) शुद्ध होजायगा ॥ ३८० ॥

वर्तलोहकी भस्म।

म्रियते गंधतालाभ्यां पुटितं वर्तलोहकम्। तेषु तेष्विह योगेषु योजनीयं यथाविधि ॥ ॥ ३८१ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

अर्थ–एक तोले गंधक और हरतालको नीबूके रससे घोट एक तोले वर्तलोहके पत्रोंपर लेप करदेवे, फिर शरावसम्पुटमें रख गजपुटमें फूंक देवे इस प्रकार निरुत्थ भस्म होनेपर पुटदेना समाप्तकरै और उसको यथाविधि सेवन करै ३८१॥

वर्तलोहके गुण।

हिमाम्लं कटुकं रूक्षं कफपित्तविनाशनम्। रुच्यं त्वच्यं कृमिघ्नं च नेत्र्यं मलविशोधनम् ॥ ३८२ ॥ (रसरत्नसमुच्चय.)

इति श्रीपारदसंहितायां धातुभस्मवर्णनं नाम सप्तपंचाशतमोऽध्यायः ॥ ५८ ॥

अर्थ–वर्तलोह चर्परा रूखा कफपित्तका नाशक है, रुचिको उत्पन्न करनेवाला चार्मके लिये उपयोगी, कृमिविकारका नाशक, नेत्रोंका हितकारी तथा मलको शुद्ध करने वाला है ॥ ३८२ ॥

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्ज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया भाषाटीकायां धातुभस्मवर्णनं नामाष्टपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५८ ॥

स्वानुभूतधातुभस्माध्यायः ५९.

अनुभव रजत भस्म।

(देशोपकारक ३१ । १० । ०६ की क्रियासे)

हरी मुंडीको पहले कुटवाकर बसंताके रसके छीटे देदेकर पिसवाया और गोला बनाया, जो वजनमें करीब ढाई पावके था उसमें ।॥) भर चांदीका पत्र जो रुपयेसे बडा था रखदिया और उसपर मोटी कपरौटी करके गजपुटमें १मन कंडोंकी आग देदी, ठंडा होजानेपर चाँदीको निकाला ते कुछ ऐंठसी गई, आँचकी गर्मीसे कुछ एक तरफको तै भी गई और कहीं कालापन और कहीं गुलाबी भी आगई,मगर न तो उसका आकार घटा बढा और न उसकी राख ही हुई। पत्र मुश्किलसे टूटता था।

सम्मति–मेरी समझमें यह तमाम यूनानी तरकीब एक आँचमें जडीसे चांदी वा सोनेके भस्म करनेकी गलत है, १० वा २० आँचमें होसक्ताहै ॥

अनुभव रजतभस्म।

(अलकीमियाँ १ । २ । ०७ की क्रियासे)

ता० २० । २ । ०७ को ।॥) भरके तीन अंगुल चौडे गोल चाँदीके पत्र (जिसको पहले १ आँच जोडतोड बूटीमें लगचुकी थी) ।=) भर अर्क क्षारको ।॥) भर थूहर दुग्धमें खूब घोटे बारीक कर सुबह ९ बजे लेप करके धूपमें सूखनेको रखदिया ३ बजेतक सूखता रहा, बादको फिर एक दूसरा लेप ।॥) कर अर्कक्षारको ।॥=) भर थूहर दुग्धमें घोटकर ४ बजेके करीब करदिया और सुखानेको रखदिया।

ता० २१ के दिनभर सूखा, शामको ५ बजे तीसरा लेप ॥=) भर अर्कक्षारको ।॥।) भर थूहर दुग्धमें घोटकर करदिया।

ता०२२को पत्र दिनभर सूखा किया बादको कंडे न मिलनेसे पत्र कई दिन सूखा और फिर रक्खा रहा ।

ता०६।३को लेप समेत २ रुपये भर पत्रको २ कंडेमें जो तोलमें ८।सेर थे रख नीचे ऊपर १॥सेर कंडे और लगा आँच दीगई शामके३बजे ।

ता०७के सवेरे देखा तो पत्र ज्योंका त्यों मौजूद था सख्ती भी थी, मगर बीचमें उसमें कहीं २ छिद्र होगये थे और तोलमें २-१रत्ती कम होगया था ।

सम्मति–पीसक हरगिज न था, पर कुछ कम जोर जरूर होगया था, तोडनेसे टूट सकता था एक आँचमें जडीसे तो कुश्ता होना पहलेही असंभव मान लियागया था अब क्षारसे भी १आँचमें असंभव सिद्ध हुआ ।

अनुभव रजतभस्म ।

(सींगियासे)

ता०४।२।०८को पूर्वोक्त २ रत्ती कम ६ माशेके रजत पत्रोंपर ९ माशे सींगियाकी पिष्टीका (जो सींगियेको सिरकेमें ४०–५० दिन भिगो तय्यार किया गया था) लेपकर धूपमें सुखा छोटे दीवलोंको संपुटमें बंद कर सुखादिया।

ता० ५ को सूखता रहा ।

ता० ६ को गढेमें ३सेर की आँच दी गई ।

ता० ७ को निकाला तो चाँदीके ऊपरके लेपकी बिलकुल काली राख होगई थी चाँदीके पत्रको निकाला तो ज्यों के त्यों मौजूदथे,तोडनेपर पहलेसे ही चमचोड थे,तोलमें ५ माशे ४ रत्ती थे २ रत्ती छीजन गई।

दूसरी आँच ।

ता० ७ को उक्त ५ माशे४रत्तीके रजत पत्रोंपर उसी सींगियेकी ८॥माशे पिष्टीका फिर लेपकर उन्हीं दीवलोंके संपुटमें रख कपरौटी कर सुखा गढेमें५सेर कंडोंकी आँच दीगई

ता०८को निकाल खोल चाँदीको देखा तो ज्योंकी त्यों चमचोड ही रही, किसी प्रकारका अंतर न मालूम हुआ, तोलनेपर५मा०३रत्ती रही, १ रत्ती छीजनगई ।

अनुभव रजतभस्म ।

(पारदभस्मयोगसे)

ता०१३।२।०८को ७माशे ६ रत्ती चाँदी चूर्ण और ७ माशे ६ रत्ती घरका बना मरक्युरक औव वसाइड दोनों-को खरलमें डाल जँभीरीके रसके साथ १ घंटे घोट टिकिया बनाली, जो तोलमें १ तोले ३ माशे हुई इसको दीवलोंके संपुटमें बंद कर कपरौटी कर सुखादिया ।

ता०१४को गढेमें ३सेरकी आँच दीगई ।

ता०१५को निकाल खोल देखा तो चाँदीकी पिघलकर डली बनगई थी, तोलनेपर ७ माशे ६ रत्ती थी ।

सम्मति–पारेके कुश्तेके साथ चाँदीका चूर्ण ३ सेरकी आँचमें ही पिघलगया हालां कि अभी सींगियेके साथ ५ सेरकी आँच अधजले पत्रोंको दीजाचुकीहै ।

अनुभव ताम्रभस्म ।

ता०२५।२।०७ नैपाली असली शुद्ध ४ रत्ती कम॥) भरके ताम्रपत्रको आकके वृक्षमें पटासीसे शिगाफदे रख आकका दूसरा वक्कुल उसपर लगा सुतलीसे खूब बाँधदिया।

ता०२४मार्चको यानी एक मासके बाद पेडकी शाखा काटा, वाञ्छित भरसे कुछ अधिकका टुकडा कर उसपर मिट्टी नामा पडीका लेप चढा ता० २४ व २६ दो दिन सुखाया मिट्टी चटक गई इस लिये २७ को थोडी मिट्टी और लगा दरज बंद कर दीगई दिनभर सूखा ।

ता० २७ की शामको महागजपुटमें आँच देदीगई निकालनेपर पत्र ज्योंका त्यों निकला केवल ऊपरी भागसे एक अंश जलकर कोयलासा होगया था अर्थात् एकतह यानी ऊपरकी जिल्द कोयला होगई थी ।

सम्मति–पहले भी ताम्रजारण अनुभवमें एक तह ही जली थी, इस क्रियासे कोई विशेष लाभ नहीं ज्ञात हुआ ।

अनुभव ताम्रभस्म ।

(पं० कुलमणि शास्त्रीकी क्रियासे)

ता०९।११।०७को एक पैसा झाड साई लिया, जो तोलमें १ तोले, ५ माशे, ३रत्ती था, ३ छ० रांगके ढक्कनदार सम्पुटमें ३छटाँक भिलावेंके चूर्णको ठसाठस भर बीचमें पैसेको रख संपुट बंद कर २ सेर ३ छटाँक गूदड ऊपर लपेट गोला बनालिया ।

ता० १० को उक्त गोलेको निर्वात स्थानमें रख उसके चारों तरफ दा चार आरने कंडे रख ४ बजे शामके आँच लगा दी ।

ता० ११ को ४ बजे शामके देखा तो इसमें अबतक तीक्ष्णगर्मी मौजूद थी (क्योंकि राँग अबतक पिघलता मिला) कटोरी पिघल कर ढिम्मा रूप होगई थी और कुछ हिस्सा उसका फूलकर श्वेत होगया था जो ज्यादः फूलगया था वह खिलकर राखमें मिलगया था और जो कम फूला था वह कच्चे राँगसे चिपट रहा था पैसा कटोरीके बीचमें रक्खा मिला किन्तु एक तरफसे कुछ हिस्सा इसका गलकर रांगमें मिलगया था, रंग इसका जस्तकासा होगया था, लोहेके मूसलेसे तोडा तो पिचक कर बढगया और फटकर टूटगया अंदर भी ऊपर कासा ही रंग निकला तोलमें यह १ तोले ४ रत्ती हुआ राँगका फूलाहुआ हिस्सा तोलमें ४ तोले ४ माशे मिला और कच्चाहिस्सा ११ तो० ३ माशे हाथ लगा (जिसमें ९ तोले ६ माशेका कटोरीका ढिम्मा और १ तोले ९ माशे वह जो तै कर राखमें मिलगया था इसतरह कुल वजन १६ तोले ७माशे ४ रत्ती मिला अर्थात २ माशे १ रत्ती बढा, या यह तोलका अंतर होगा, या यह आक्सिजन मिलनेसे बढती हुई है ।

अनुभव ताम्रभस्म ।

(पारदभस्म योगसे)

ता०१।२।०८को १ तोले ताम्रचूर्ण और १ तोले अँगरेजी पीली पारद भस्म दोनोंको खरलमें डाल करीब ६ माशेके नीबूका रस डाल १ घंटे घोट टिकिया बनाली जो तोलमें २ तोले ३ मा० थी इसको छोटे दीवलोंके संपुटमें रख कपरौटी कर सुखादिया ।

ता० २ को सूखता रहा ।

ता० ३ को सवा हाथ चौडे और सवा हाथ गहरे गजपुटमें आँच दी ।

ता० ४ को निकाल खोल देखा तो टिकियाकी रंगत काली होगई थी टूटनेमें कठिन थी तोडागया तो अन्दर भी ऊपरकी सी ही रंगत थी किन्तु बहुत थोडी ताम्रकी सी झलक मारती थी तोला गया तो १ तोले ६ रत्ती हुई, १ तोले २ माशे २ रत्ती कम होगई, इसको फिर पीसा तो

खरखरा चूर्ण बनगया उसको दहीपर डाल थोडी देर रख देखा तो रंगत हरी पैदा न हुई।

दूसरी आँच।

ता०५को इस चूर्णमें फिर १ तोले पूर्वोक्त पारद भस्म मिला सुखा कुटवाया तो तोलमें ३ तोले २ र० रहा ३ रत्ती छीजन गयी। बादको इस चूर्णको उन्हीं दीवलोंके संपुटमें रख कपरौटी कर सुखा पौन गजपुटमें आंच लगादी।

ता० ६ को निकाल खोल देखा तो उक्त चूर्णका ढिम्मासा बनगया था। रंग पहली आंच लगकर जैसा रहा था वैसा ही रहा तोलनेपर १ तोले ६ रत्ती रहा। ११ माशे ५ र. घटगया। बादको खरलमें डाल ६ घंटे पीसा तो बहुत चिकना चूर्ण बैंगनी रंगका बनगया। इसको रेखापूर्ण कहते हैं।

ता० ७ को खट्टे दहीपर डाल देखा तो प्रहरभरतक रक्खा रहनेपर भी नाममात्रको हरियाली उत्पन्न नहीं हुई, किन्तु ८ प्रहर रक्खे रहनेके बाद बहुत थोडी हरियालीकी झलक कहीं २ दीखपडी।

तीसरी आँच।

ता० ११ को उक्त १ तोले ६ रत्ती ताम्रभस्म और १ तोले ६ रत्ती ही मरक्यूरिक औक्साइड (जो घर बनाया गया था) दोनोंको १ घंटे खरलमें पीस दीवलोंके संपुटमें बंद कर सुखादिया।

ता० १२ को गढेमें ११ सेरकी आंच दीगई।

ता० १३ को निकाला तो रंगत इसकी करीब २ पहले कीसी ही थी किन्तु पीसनेसे नरम पिसा और बारीक होगया।

ता० १४ को इसमेंसे थोडीसी भस्मको खट्टे दहीपर डाल देखा तो शामतक रक्खे रहनेपर उसमें हरियाई न मालूम हुई, किन्तु दूसरे दिन—

ता० १५ को जब देखा तो भस्मके आसपास बहुत थोडी हरी झलक मारती थी आज इसपर दो चार बूंद नींबूका रस और डालदिया।

ता० १६ को देखा तो कुछ नीली हरियाई और बढगईथी जिससे सिद्ध हुआ कि ताम्रभस्म हुआ तो अवश्य किन्तु पूर्ण रीतिसे नहीं।

संगरासख अर्थात् ताम्रकी कच्ची भस्म।

ता० २०।६।०८ को ४। तोले ताम्रके छोटे छोटे टुकडोंपर लेखानुसार ताम्रसे ² अर्थात् १ तोले ६ रत्ती पारा उँगलियोंसे मल मल कर चढाया तो पत्रोंपर सफेदी आगई किन्तु पत्रोंके दुबारा तोलनेपर उतनी ही तोल रही बढी नहीं जिससे सिद्ध हुआ कि ताम्रमें पारेका अंश बहुत ही कम आया। अत एव उक्त पारेको (जो छीज कर १० माशे रहगया था) और ताम्रके समान ४। तोले गंधकको (जो बेशुधी आँवलासार तुलायंत्रकी निकली हुई थी) दोनोंको खरलमें पीस बारीक कजली होजानेपर नींबूके रससे लेहीसी कर उसमें उन पत्रोंको खूब लपेट बची दवा नीचे ऊपर रख शरावसंपुटमें बंदकर कपरौटी कर सुखा गजपुटमें आरने कंडोंकी आंच देदी।

ता० २१ को निकाल खोल देखा तो पत्र जलकर श्याम रंगतके होगये थे अर्थात् संगरासख बनगया था, किन्तु पत्थरपर घिसनेसे काली लकीर बनती थी (सुरख लकीर जिससे बने वह अच्छा समझाजाताहै) अत एव इस शंकासे कि इसमें गंधकका अंश रहगया हो उसी प्रकार फिर संपुट कर गजपुटमें एक आंच और दी किन्तु कुछ अंतर न पडा तोल इसकी इस समय ५, तोले ४ माशे है।

प्रश्न—यह तोल ओक्सिजन मिलजानेसे बढी या गंधक पारेके अंश रहजानेसे।

संगरासख (उपरोक्त क्रियाका पुनः उद्योग)

ता० २३।१०।०८ को ५ तोले ताँबेकी चद्दर (जो रुपयेकी बराबर मोटी होगी) के टुकडोंपर १। तोले पारा और ३॥। तोले गंधकको नींबूके रसमें घोट लेपकर संपुट कर कुछ कम गजपुटकी आंच दीगई। निकालनेपर मालूम हुआ कि गंधक पूरा नहीं जला इस लिये दुबारा फिर उतनी ही आंच दीगई तब भी कुछ गंधक जलीहुई अवशेष मिली और पत्र जलकर काले रंगके पीसक होगये लकीर काली देते थे।

सम्मति—अबकी बार भी पारे गंधकका प्रमाण अधिक और अग्निका प्रमाण कम रहा। आगे ऐसे ही मोटे१छटांक पत्रोंपर ६ माशे पारा और २ तोले गंधककी पिष्टीका लेप कर पूरे गजपुट अर्थात् १। हाथ लंबे चौडे गजपुटमें आंच दीजावे।

संगरासख (उपरोक्त क्रियाका तीसरी बार उद्योग)

ता० ३।११।०९ को ५ तोले ताम्रकी चद्दरके टुकडोंपर २ तोले गंधक आँवलासार और ६ मा० पारदकी जंभीरी रसयुक्त बनी पिष्टीका लेपकर बाकी पिष्टी नीचे रख शरावसंपुटमें बंद कर १। हाथ लंबे चौडे गजपुटमें आंच देदी।

ता० ४ को निकाला तो ताम्रके टुकडे पीसक होगयेथे और कोई कोई फूलकर पोले भी हो गयेथे रंग काला रहा किन्तु किसी पत्रपर थोडी २ ताम्र कीसी रंगत भी थी इस कारण लकीर किसी पत्रसे ललाई लिये और किसीसे काली बनती थी।

सम्मति—इस संगरासखने खिजाबमें काम दिया। आगेसे आँवलासार गंधककी जगह लौनिया लीजाय जो दामोंमें सस्ती हो और तेजीमें कम हो जिससे अबकी बारसे कुछ अधिक कचाई रहकर अधिक ललामी रहे।

ताम्रभस्मके अनुभव।

ताम्रको जो नैपाली बतलायागया और बनारससे आया तोलमें ५ छटांक था।

शुद्धि।

शुद्धिकेलिये नीचेकी चीजोंमें ७-७ बुझाव दियेगये न्यारियेसे धोंकवाकर पक्के कोयलोंमें तपाकर ताम्रको बढवाकर पत्र करालिये गयेथे, जो अठन्नी वा चवन्नीकी बराबर मोटे और १॥ अंगुल चौडे और ४ अंगुल लंबे थे।

एक दफे तेज आंच लगनेसे पिघलकर ३-४ पत्र कुछ आपसमें चिपट भी गये थे वह छुटादिये। इस लिये बहुत तेज आंच भी न होनी चाहिये।

एक बातका ध्यान और रखना चाहिये कि जब एक चीजमें बुझाव लगचुके तो पत्र धो डाले जाया करें जिससे जो मैल ऊपर लगजाताहै वह छूटजाया करे शुद्धिकी चीजें यह हैं–

१ गोमूत्र, २ तैल, ३ आकका दूध, ४ नींबू और जंभीरीका रस, ५ इमलीके पत्तोंका रस, ६ ग्वारके पट्ठेका रस, ७ मठा, ८शहद, ९दूध और घी मिलाहुआ सब चीजें आध आध सेर थीं । सबमें ७–७बुझाव लगे अर्थात् कुल ६३ बुझाव १ दिनमें लगे ।

ताम्रभस्म ।

(१) मुजर्रिबात फीरोजीकी पत्र ४३ वाली क्रियासे-- ३।३।०६--६ माशेके ताम्रके पत्रको १ छटांक पतीसकी लुगदीमें रख संपुट कर १५ सेरकी आंच दीगई तो कोई नतीजा नहीं हुआ (गजपुटकी आंचसे कदाचित् कुछ फल होता)

(२) ४ । ३ । ०६–कीमियाई मशरककी २५ पत्रकी क्रियासे–

६ माशेके ताम्रपत्रको २॥ तोले जमालगोटे और २॥ तोले भिलावेकी लुगदीमें रख संपुट कर २० सेरकी आंच दीगई तो कोई नतीजा नहीं निकला (गजपुटकी आंचसे कदाचित् कुछ फल होता)

(३) ५।३।०६--मुजर्रिबात फीरोजीकी पत्र४३वाली क्रियासे-

६ माशेके ताम्रपत्रको ३ दिनतक थूहरके दूधमें भिगोकर (फिर थूहरके दूधके खुश्क होनेसे जो मलाईसी पडगई थी उसको घोटा तो चमचौडसी होगई उसको पत्रपर लपेटकर) ३ छटांक प्याजकी लुगदीमें रख २ कपरौटी कर ३५ सेरकी आंच दीगई तो तांबेके पत्रके दोनों तरफसे कागजकी बराबर मोटा काला पत्र जलाहुआ मिला, लेकिन् यह समझकर कि यह लेप कीहुई दवा है उसे फेंकदिया किन्तु वास्तवमें एक अंश ताम्रका फुकाहुआ था अर्थात् इस क्रियासे $\frac{1}{4}$ भाग ताम्रको श्यामरंगकी भस्म किया । यदि लुगदीका वजन और आंचका वजन अधिक हो तो अधिक काम निकलनेकी उम्मीद है ।

(४) ६।३।०६–किताब मजहूलुल इस्मकी ३४ नं० वाली तरकीबसे--

सेरभर गुलावासकी जडकी लुगदीमें २ पत्र बराबर बराबर तांबेके रख कपरौटी कर मनभरकी आंच दीगई तो दोनों पत्रोंके दोनों तरफसे मोटे कागजकी बराबर पत्र जलकर स्याह भस्म होकर जुदा होगये तोलनेसे ६ माशे भस्म और ६ माशे तांबेका पत्र निकला यह तांबेका पत्र भी इतना निर्बल होगया था जो हाथसे टूटजाताथा । (ऊपरकी क्रियासे यह क्रिया अच्छी रही)

(५) ७।३।०६ किताब मशरकी २१ पत्रवाली क्रियासे-

६ माशेके पत्रपर १ तोला फिटकिरी आकके दूधमें पीस लेपकर दोनों तरफ आकके पत्र दे कपरौटी कर मनभरकी आंच दी तो कुछ अंशकी श्याम भस्म होगई मगर फिटकिरीसे चिपकगया और कोई विशेषता इस क्रियामें न थी।

(६) ८।३।०६ किताब मजहूलउल इस्मकी २७ नं० वाली क्रियासे--

एक सेर आकके फूलोंको कूट हांडीमें तांबेके पत्रोंके नीचे ऊपर रख ऽ।= दूध आकका डाल ३ प्रहर वनकी लेंडोंकी आंच लगी तो जितना असर नं० ३ की क्रियासे हुआथा उतना भी नहीं हुआ यह तरकीब संखियेके लिये ठीक हो सक्तीहै ताम्रके लिये नहीं ।

(७)१२।३।०६ पंडित श्रीनारायणजी काशीवालेकी तरकीबसे-

तांबेके पैसेको और तांबेके पत्रोंको और चांदीके टुकडोंको तीन जगह जुदा जुदा एक ढाककी लकडीमें जो ७–अंगुल मोटीथी और जिसमें ३ जगह डाटदार छिद्र किये उन छिद्रोमें घीग्वारका गूदा और दुधी रख यह चीजें रक्खी गई और महागजपुटकी आंच दीगई तो कुछ भी फल न हुआ पैसेका कुछ हिस्सा कालासा होगया कुछ टेढामेढा होगया चांदी पिघल कर रवे बनगई । पत्र अलबत्ता कुछ ऊपर नीचे फुके जैसे कि गुलावास (गुले अव्वास) में फूकेथे । (निश्चय एक आंचमें ताम्रके पैसेका फुकना असंभव है--कंटकवेधी पत्र फुकें तो फुकें)

(८) १५ । ३ । ०६ अबतक जो शुद्ध ताम्रके पत्रोंको आंच देनेसे भस्म हाथ लगीथी और जो काली रंगतका था उस सब ।॥) भरको खरलमें पीसागया तो सुरख रंगत निकली फिर उसको आक और सैहुंड कांटेदारके दूधमें घोट कर टिकिया बना सुखा गुलवासकी जडके बीच रख कपरौटी कर १ मनकी आंच दीगई तो टिकिया बडी कडी होगई । (उम्मीद नहीं कि जडीसे कभी भी ताम्र एक आंचमें फुकजावे)

१८।३।०६ आज फिर उपरोक्त टिकियाको आकके पत्रोंके रसमें घोट टिकिया बना सुखा २ पत्तोंमें ही लपेट थोडी कपरौटी कर १० सेरकी आंच दीगई तो भी बहुत कडी टिकिया निकली । (ताम्र बडी काठिन चीज है)

मुक्ताभस्म ।

ता० ३०।९।०८ को ६ माशे अनबिंधे मोतियोंको छोटीसी कुलियामें भर उसमें करीब १ तोले गायका कच्चा दूध डाल (कुलिया आधी खाली रक्खी) खपरेके गोल घिसे ढकनसे कुलियाका मुख बंद कर कपरौटी कर सुखा ४॥ बजे गर्तमें ७॥ सेर आरने कंडोंकी आँच देदी ।

ता० १। १० को खोला तो कुल मोतियोंकी रंगत श्वेत साबूदानेकीसी होगई थी और कुछ नीचे चूर्ण सा था, वैसेही कुलियामें बंद रक्खे रहे ।

ता० २ को देखा तो मोती बिलकुल फूल गयेथे और बहुतसे चूर्ण होगयेथे ।

सम्मति–ठीक फुके ।

लोह भस्म ।

तीक्ष्ण लोहेको अर्थात् एक तलवारको जो इतनी सख्त थी जो हाथके नवानेसे टूटगई और जिसको किसी लोहारने फौलाद और किसीने अच्छा खेडीबतलाया शोधागया।

शुद्धि ।

ऽ॥ = तलवारके टुकडेके लोहेको सात सात बुझाव मोठे तेल, गोमूत्र, कांजी, कुलथीमें एक एक बुझाव सेहुँड और थूहरके दुग्धमें एक बुझाव आकके दूधका लेप कर त्रिफलाके काढेमें, और तीन बुझाव इमलीकी खटाईका लेपकर त्रिफलाके काढेमें तीन बुझाव, इमली और लींबूके रसमें तीन,और तीन तीन बुझाव सम्हालू और केलाकी जडके रसमें, और तीन तीन बुझाव घीग्वार आक और शहदमें और पाँच बुझाव घी, दूध मिले हुएमें दिये गये तो करीब ऽ।के तय्यार रहा पश्चात् उसका रेतसे चूर्ण करदियागया तो १८ तोले तय्यार रहा इस १८ तोले बुरादेमें ६ गुना गोमूत्र जलादिया तो २० ॥ तोले वजन रहा ।

सिंग्रफकी शुद्धि ।

ऽ। ≡ सिंग्रफ रूमीको दोलायंत्रसे करीब दोपहर जयंतीके रसमें औटाया गया तो ऽ। ≡ मौजूद रहा ।

नकशा लोहभस्म।

तादात आंच	किस औषधिमें	आंचका प्रमाण	वजन जो रक्खा गया	वजन जो निकला	विशेष वार्ता
३	घीग्वार	गजपुट	तो० मा० २० ६	तो० मा० २२ ६	टिकिया बना संपुटकर आंच दीगई
६	वनतुलसा	गजपुट	तो० मा० २२ ६	तोले २५	नौ आंच लगनेके बाद टिकियामें कुछ खस्तगी आगई और लेहा पीसक होगया।
३	पतालग डोडी यानी गरुड दूवी	गजपुट	तो० २५	तो० २४॥।	इस वार आंचके खतम होनेपर अर्थात् एक तरकीब खतम होनेपर लोहा वारीक फुसफुसा जाहरा भस्मकी सूरतमें तय्यार होगया।
८	घीग्वार प्रतिपुट १॥। तोले सिंग्रफ	गजपुट	तो० २४॥	तो० २३॥।	हरपुटमें १। तोला सिंग्रफ मिलाकर घीग्वारके रसमें घोटकर ८ आंचें दीगई वजन हर आंचमें बरावर ही निकलताथा १ वार संपुट फटजानेसे १ तोला लोहा छीजगया टिकिया
२	मूशलीका काढा	ऽ५ सेरकंडे ऽ७ सेरकंडे	तो० २३॥।	तो० २३।'।	खस्ता रंगत सुखीमाइल मामली रीतिकी भस्म तय्यार होगई जड़ियोंका गुण पैदा करनेके लिये और पुट दियेगये। टिकिया बहुत फुसफुसी रंगत उत्तम अरुण।
३	त्रिकुटाका क्राथ	ऽ७ सेरकंडे	तो० २३॥।	तो० २३॥।	
३	त्रिफला क्राथ	७ सेर+७ सेर १० सेर	तो० २३॥।	तो० २३॥	त्रिफलाके पुटसे स्याही आगई।
३	हरिद्रा क्राथ	१० सेर	तो० २३॥	तो० २३॥	
३	भांगरेका स्वरस	१० सेर+१० सेर गजपुट	तो० २३॥	तो० २३।	वनिस्बत हलकी आंचोंके गजपुटकी आंचसे खस्तगी और सुरखी जियादा पैदा हुई अत एव जड़ियोंके पुटमें भी लोहेको गजपुटकी आंच देना मुनासिब मालूम होती है।
४	वडकी जटा	गजपुट	तो० २३।	तो० २३॥।	इसके पुट देनेसे सुर्खी पैदा होतीहै।
३	शतावर क्राथ	गजपुट	तो० २३॥।	तो० २२॥।	इससे सख्ती और स्याही पैदा होतीहै।
३	असगंध क्राथ	आधा गजपुट	तो० २२॥।	तो० २२॥।	आखिरी दो आंचमें टिकिया सुखाकर दीगई जिससे फुसफुसाहट और टिकिया अधिक मालूम हुई।
३	मुलहडी क्राथ	गजपुट	तो० २२॥।	तो० २२॥।	
३	हरे गोखरूका रस	गजपुट	तो० २२॥।	तो० २६॥	इसके पुटसे वजन बढजाताहै।
३	गिलोयक्राथ	गजपुट	तो० २६॥	तो० २६।	
३	खिरैटी यानी वलाका रस	गजपुट	तो० २६।	तो० २५॥	
३	पुनर्नवा यानी साठ	गजपुट	तो० २५॥	तो० २६	
३	वेरकी जडकी छालका क्राथ	गजपुट	तो० २६	तो० २५॥	
१	हरे आँवलेका रस	गजपुट	तो० २५॥	तो० २५	इस पुटसे लोहा लोहेके खरलमें घोटा गया।
२	सहमलकी जडकी छालका क्राथ	गजपुट	तो० २५	तो० २५	

तादात आंच	किस औषधिमें	आंचका प्रमाण	वजन जो रक्खा गया	वजन जो निकला	विशेष वार्ता
२	गायका दूध	३/४ गजपुट	तो. २५	तो. २५	
३	मुनक्काका क्वाथ	गजपुट+गजपुट १/२ गजपुट	तो. २५	तो. २४॥।	मुनक्काके पुटमें लोहा खरलमें चिमट जाता है
१	दही	१/२ गजपुट	तो. २४॥।	तो. २४॥	
१	त्रिफला क्वाथ	१/२ गजपुट	तो. २४॥	तो. २४॥	
१	दही	१/२ गजपुट	तो. २४॥	तो. २४॥	
१	त्रिफला क्वाथ	१ मनकंडे	तो. २४॥	तो. र. २४--५	
१	दही	१५० कंडे	तो. र. २४-५	तो. मा. २४--३	
१	त्रिफला क्वाथ	१७५ कंडे	तो. मा. २५-३	तो. आने २४--।≈)	
१	+	+	तो. आने २४--।≈)	तो. मा. २४--७॥	बारीक करनेके कारण दो दिन घोट खाली आंच दीगई
१	त्रिफला क्वाथ	गजपुट	तो. मा. २४—७॥	तो. २४॥।	लोहा पहले सिंग्रफके पुट देनेसे वारितर होगया था लेकिन जडियोंके पुट देनेसे फिर वह खूबी जातीरही अब शायद वारितरयोगसे ३/४ वारितर होगा.
३	जामुनका रस	गजपुट	तो. २४॥।	तो. २४॥	
३	ग्वारके पट्ठेका गूदा	१०० कंडे	तो. २४॥	तो. २६॥	इसकी आंचसे लोहेमें चिकनाहट पैदा होता है
१	गोंदीकी छालका रस	१०० कंडे	तो. २६॥	तो. मा. २६--११	
२	असगंध क्वाथ	१०० कंडे	तो. मा. २६-११	तो. मा. २७—६	
२	बेल्दार खिरैटीका रस	१०० कंडे १२५ कंडे	तो. मा. २७-६	तो. मा. २८--९	
२	असगंध,मूसलीसतावर, गिलोइगोखरूका क्वाथ	१५० कंडे	तो. मा. २८-९	तो. मा. २९—२कम	
१	कंघीका रस	१५० कंडे	तो. मा. २८-१०	तो. मा. २९--३	
१	बडी खिरैटीका रस	१५० कंडे	तो. मा. २९-३	तो. मा. २९--९	
१	छोटी खिरैटीका रस	१५० कंडे	तो. मां. २९—९	तो. ३०	
३	बडकी जटाका क्वाथ	१५० कंडे	तो. ३०	तो. ३०	
१	घीग्वार	१५० कंडे	३०	तो. ३०	
जोड ९८ आंच	१२।९।१९०२ को खतम हुआ				

अनुभव।

(१) लोहेको खरलमें घोटना जरूरहै नहीं तो पत्थरके खरलमें घोटनेसे बहुतसा पत्थरका अंश मिलजाताहै ।

(२) सदैव भस्मको जिस रसमें घोटना हो उसमें यहां तक घोटे कि वह रस सूख कर फिर चूर्ण होजाय और उस चूर्णको संपुट कर पुट दे टिकिया बनाकर गीली टिकियाको संपुट कर पुट देनेसे कठिनता भली भांति विद्यमान रहती है, और टिकियाको सुखा लेनेसे भी कठिनता बिलकुल नहीं जाती रहती कुछ कम होजातीहै ।

(३)–संपुटपर एक या दो कपरौटी मुलतानीकी होनी चाहिये पश्चात् मोटी कपरौटी मिट्टीकी होनी चाहिये भारी कपरौटीसे शकोरे आंच सहसक्तेहैं बरनः फटजातेहैं ।

(४) बाजारी हलके सौ कंडोंकी आंचके लिये एक कपरौटी मुलतानी और एक चिकनी मिट्टीकी काफी होतीहै । और दो सौ कंडोंके लिये दो कपरौटीकी आवश्यकता है ।

(५) लोहेको जडियोंके पुटमें भी गजपुटकी आंचकी आवश्यकता है ।

(६) पुस्तकमें पहले पातालगरुडके पुट देना लिखाथा उस समय उसके न मिलनेके कारण बादको उसके पुट दियेगये । लेकिन् उसके पुट आदिहीमें दिये जाने चाहियेथे क्योंकि, उसके पुटोंमें वजन भी नहीं बढा और रंगतभी किसी कदर श्यामता लिये होगई । बनतुलसाके पुट जो बीचमें दिये गये वह अंतमें ही चाहिये क्योंकि बनतुलसाका कोई अंश उसमें बाकी रहजाता था इस लिये उसमें वजन बढ जाताथा और टिकियामें फुसफुसाहट और रंगतमें सुरखी भी पैदा होती थी ।

(७) लोहेमें घीग्वार, बनतुलसा, मूसली, बडकी जटा, हरे गोखरू, असगंधके अधिक पुट देने चाहिये ।

(८) इस लोहेकी भस्मकी विधिमें यदि कुछ त्रुटि रही हो तो यह हुआ कि किसी समय कपरौटी हलकी होनेसे संपुट टूटगये और लोहा तेज आंच लगजानेसे कहीं कहीं कठिन होजाता था।

वंगभस्म रांगकी शुद्धि।

१ सेर रांगको तेल, गोमूत्र, मठा, आकके दूधमें, तीन तीन बुझाव दिये गये जिसमेंसे (असावधानी और सामान दुरुस्त न होनेके कारण) छीजकर १) भर शेष रहा, लेकिन् कांजी और कुलथी न मिलनेसे ये दोनों चीजें रहगईं (वैद्यकल्पद्रुम पत्र ३९ के अनुसार)

हरतालकी शुद्धि ।

ऽ॥सेर हरतालके पृथक् पृथक् पत्र करके दोलायंत्रसे प्रथम कांजी फिर तिलके तेल फिर त्रिफलाके काथमें फिर पेठेके रसमें एक एक प्रहर औटाया गया पहले रंगत सुनहरी थी औटानेसे भर मैली पीली होगई (वैद्यकल्पद्रुम पृष्ठ ५९ के अनुसार)

रांगभस्म।

उपरोक्त शुधे हुये रांगमेंसे १४॥) भरको मिट्टीके कूंडेमें इमली और पीपलकी छाल डालकर (वैद्यकल्पद्रुम पत्र ३२ के अनुसार) भस्म किया उसमेंसे १२॥) भर तय्यार हुआ बाकी रांगके रवे रहगये ।

नकशा वंगभस्म ।

तादात आंच	किस औषधिमें	किस रसमें	कितनी आंच	वजन जो रक्खा	वजन जो निकाला गया	विशेष वार्ता–
३	हरताल ३॥ü	नीबूका रस	गाउदुम गढा	७ü भर	६ü भर	दूसरी और तीसरी आंचमें खराबी पड जानेके कारण १ü भर कम निकली यदि सावधानीसे आंच दी जावे तो बराबर वजन निकलेगा
२	७ माशे हरताल	,,	,,	६ü भर	५ü भर	
१	६ माशे हरताल	,,	,,	५ü भर	४॥ü भर	
१	५ माशे हरताल	,,	,,	४॥ü भर	४।ü भर	
२	+	,,	,,	४।ü भर	३॥ü भर	हरतालके समाजानेके कारण केवल नीबूके रसमें घोटागया।
१	+	,,	गजपुट	३॥ü भर	३।ü भर	
१ तादात आंच	३।ü भरको नीबूके रसमें घोट टिकिया बना वैसेही (विना संपुटके) भांग ऊपर नीचे रख कंडोंमें रख दिया । इस बार आधी स्याही रहगई और हरतालका बहुतही न्यूनांश बाकी रहा।					

१–फिर इसको नींबूके रसमें घोटकर एक आंच भांगमें रखकर दीगई । स्याही दूर होकर खाकी रंगत रहगई और हरताल बहुत उडगई केवल संदेह बाकी रहगया ।

१–फिर नींबूके रसमें घोट कर गजपुटकी आंच दीगई इस बार यह सफेद होगई और तोलमें ३। तोले तय्यार रहा ।

१–उक्त ३। तोलेकी रंगत खाकी होनेसे सफेद करनेकी कांक्षासे नींबूके रसमें घोट टिकिया बना नीमके पत्तोंकी लुगदीमें रख २० सेर कंडोंकी एक आंच और दीगई इससे अब यह और कुछ सफेद होगई ।

मीजान १४ आंच ।

अनुभव ।

२४॥) भर रांगकी भस्मको हरताल शोधीहुईमें घोटकर साधारण संपुटमें बंदकर कपरौटी कर गजपुटमें फूंकागया तो संपुट निर्बल होनेके कारण या कपरौटी ठीक न होवे या आंच अधिक लगजानेसे हरतालके जोरसे सब रांग उडगया, आगेसे आंच और कपरौटी सावधानीसे भली भांति कीजावे ।

अभ्रभस्म ।

शुधी हुई अभ्रक १ । ७ । १८९३ से १ । २ । ९६ तकऽ४॥ सेर वज्राभ्रक (जो मुम्बईसे आया था) मेंसेऽ१। सेर अभ्रक जो श्वेततायुक्त कच्चा था छांट कर अलग कर दियागया शेष ऽ३। सेर उत्तम अभ्रकके जिसकी रंगत श्वेतता और श्यामता लिये थी पृथक् २ पत्र कर धो स्वच्छ कर लियागया उसमें २ सेर साबित पत्र और शेष चूर्ण रहा चूर्णमें रेतका अंश अधिक समझ और बुझाव भी ठीक न लग सकनेके कारण चूर्ण अलग कर केवल २ सेरकी शुद्धि की गई ।

उपरोक्त २ सेर अभ्रकको कढाईमें भरकर और ढक कर गर्म करकर निम्नलिखित औषधियोंमें बुझाव दियेगये-

२ बुझाव सम्हालूके रसमें, २ बुझाव गायके दूधमें २ बुझाव त्रिफलाके काढेमें, २ बुझाव गोमूत्रमें, दिये गये । फिर एक रात गोमूत्रमें और एक रात चूकाके रसमें भिगोकर पानीसे धो डालागया । पश्चात् उक्त अभ्रकको बेरकी जडके काथमें २ बुझाव दियेगये, इस बुझावसे अभ्रकमें सफाई और सुरखी आगई । बेरके बुझाव सदा अंतमें देने चाहिये क्योंकि इसका काढा अरुण होताहै जिससे अभ्रककी रंगत प्यारी होजातीहै । पश्चात् हाथोंसे मीड चलनीसे छान मोटेमोटे पत्र पृथक् कर उनको फिर उपरोक्त बेरके काढेमें दो बुझाव दिये-गये । करीब ऽ।॥-के बारीक निकला और इतना ही मोटा पृथक् रहगया ।

संक्षिप्त--सब अभ्रक ऽ४॥ सेर जिसमेंसे १। सेर कच्चा अलग करदियागया । बाकीके पत्र खोलेगये उसमेंसे १। सेर चूर्णरेत मिला होनेसे अलग करदियागया शेष २ सेरको शुद्ध कियागया जिसमेंसे ऽ।॥-मोटा अलग है और ऽ।॥--बारीक चूर्ण भस्मयोग्य अलग है ।

अभ्रभस्मके लिये सावधानी ।

मिट्टीके गोलसंपुट ढकनेदार बनवाकर अभ्रक भरा-गया और उसपर प्रथम मुलतानी और कपडेसे कपरौटी करदी । फिर सन और चिकनी मिट्टीसे कपरौटी कर १। हाथ लंबे चौडे गढेमें आरने कंडोंकी आंच दीगई । इतनी आंचसे कभी कभी कपरौटी या संपुटमें किसी किसी जगह खंगर होजाताथा (अच्छा हो आगे इससे कम आंच दीजावे और अंतमें तय्यारीके समय केवल १ हाथ लंबे चौडे गढेकी आंच देनी ठीक होगी) और उसकी वजहसे अभ्रक उस तरफ स्याह और कठिन पडजाता था और कम आंचमें अभ्रकी रंगत प्रायःअरुण रहतीथी ।

अभ्रक अधिक होनेकी वजहसे पांच आंचतक एक भागमें बादको ८४ आंचतक दो भागोंमें रक्खागया । मिट्टीके संपुटोंमें रखनेसे मिट्टीका मेल और तेज चमक-दार परिमाणुओंका मेल जो संपुटोंमें होतेहैं अवश्य होजाते हैं अत एव और किसी प्रकारके संपुट मिलसकें तो वह काममें लायेजावें ।

नकशा अभ्रभस्म ।

तादात आंच	चीज जिस्में पुट दिये गये	वजन जो रक्खागया	वजन जो निकला	विशेष वार्ता ।
५	आकका दूध	तोले ६५	तोला ७३	चूंकि आदिमें फूलाहुआ था और खरलमें न आसक्ता था इस कारणसे आधा २ दोभागोंमें विभक्त कर पृथक् २ घोट पृथक् २ आंच दे परस्पर मिलादियागया
५	कटेरी काथ	तोले ७३	तोला ६८	रंगत अरुणतायुक्त
५	कुटकी काथ	तो० ६८	तो. ६६॥	
५	अरंडकी जडका काथ	तो० ६६॥	तो. ६६॥	रंगत अरुणतायुक्त
५	प्याजका रस	तो० ६६॥	तो. ६६॥	श्यामतायुक्त
५	गोमूत्र	तो० ३६॥	तो. ६७	
५	सांठका रस	तो० ६७	तो. मा. ६८–२	
५	लहसनका रस	तो० मा० ६८–२	तो. मा. ७२–३	रंगत श्यामतायुक्त
५	बिंदालफलका काथ	तो० मा० ७२–३	तो. मा. ६९–११	सुरखी माइल
५	केलेका रस	तो० मा० ६९–११	तो. ६९	
५	वसंती अर्थात् चूकाका रस	तो० ६९	तो. मा. ६८–१०	
६	कपित्थकाथ	तो० मा० ६८–१०	तो. मा. ७०–८	
४	नागरमोथेका रस	तो० मा० ७०–८	तो. मा. ७०–५	श्वेततायुक्त
५	ककरोंदेका रस	तो० मा० ७०–५	तो. मा. ६०–१०	श्वेततायुक्त
५	अमरवेलका रस	तो० मा० ६०–१०	तो. मा. ६९–७	
५	मछैछीका रस	तो० मा० ६९–७	तो. मा. ६९–३	
३	मकोयका रस	तो० मा० ६९–३	तो. मा. ६९–३	
३	चौलाईका रस	तो० मा० ६९–३	तो. मा. ६९–४॥	
४	चमेलीके पत्तोंका रस	तो० मा० ६९-४॥	तो. ६९	
३	अडूसेका रस	तो० ६९	तो. मा. ६८–११	
३	लोधपठानीका काथ	तो० मा० ६८–११	तो. ६९	
३	काकडाशृंगीका काथ	तो० ६९	तो. मा. ६८–११	
३	भारंगी काथ	तो० मा० ६८–११	तो. मा. ६८–१०	
३	मजीठ काथ	तो० मा० ६८–१०	तो. मा. ६८–९॥	अरुणतायुक्त
३	सौंफका काथ	तो० मा० ६८–९॥	तो. मा. ६८–९॥	
३	शीतलचीनीका काथ	तो० मा० ६८–९॥	तो. मा. ६८–९॥	
३	तगरका काथ	तो० मा० ६८–९॥	तो. मा. ६८–९॥	श्यामतायुक्त
३	मकोयका रस	तो० मा० ६८–९	तो. मा. ६८–१०	
३	हरिद्रा काथ	तो० मा० ६८–१०	तो. मा. ६८–१०॥	अरुणतायुक्त
३	चित्रक काथ	तो० मा० ६८–१०॥	तो० मा. ६८–९	

तादात आंक	औषधि जिस्में पुट दिये गये	वजन जो रक्खागया	वजन जो निकला	विशेष वार्ता ।
३	त्रिकुटा क्वाथ	तो. मा. ६८–९	तो. मा. ६८–७॥	
३	सब प्रकारकी हर्रोंका क्वाथ	तो मा. ६८–८	तो. मा. ६८–७॥	श्याम रंगत
३	वचका क्वाथ	तो मा. ६८–७॥	तो. मा. ६८–९	अरुणतायुक्त
२	इन्द्रायनके फलोंका रस	तो.–मा. ६८–९	तो. मा. ६८–१०	
४	इमलीके पत्रोंका रस	तो. मा. ६८–१०	तो. ६९	श्यामतायुक्त
२	हरिद्रा क्वाथ	तो. ६९	तो. मा. ६८–१०॥	
२	चीतेका क्वाथ	तो. मा. ६८–१०॥	तो. मा. ६८–११॥	अरुणतायुक्त
३	फरफेंदुआका फल क्वाथ	तो. मा. ६८–११॥	तो. मा. ६९–२	
२	त्रिकुटा क्वाथ	तो. मा. ६९–२	तो. मा. ६९–९	
२	सब प्रकारकी हर्रोंका क्वाथ	तो. मा. ६९–१	तो. ६९	
५	तुलसीपत्रका क्वाथ	तो. ६९	तो. मा. ६८–११	सुरखी माइल
५	गोभीका रस	तो. मा. ६८–११	तो. मा. ६८–१०	
५	नीबूका रस	तो. मा. ६८–१०	तो. मा. ६८–८	
१	इमलीका पत्ता	तो. मा. ६८–८	तो. मा. ६८–८	
५	काली दूबका रस	तो. मा. ६८–८	तो. मा. ६८–८	रंगत फीकी
५	जवासेका क्वाथ	तो. मा. ६८–८	तो. मा. ६८–१०	अरुणतायुक्त
५	पदमाखका क्वाथ	तो. मा. ६८–१०	तो. ६९	अरुणतायुक्त
४	खट्टे अनारका रस	तो. ६९	तो० मा० ६८–११	श्यामतायुक्त
५	ओंगेका रस	तो. मा. ६८–११	तो. मा. ६८–१०	उत्तम अरुणता
४	पानका रस	तो. मा. ६८–१०	तो. ६९	
५	भंगका रस	तो. ६९	तो. मा. ६८–११	अरुणतायुक्त
३	खालिस कोयलेका रस	तो. मा. ६८–११	तो. मा. ६८–११	विष्णुक्रान्ता अर्थात् कोयल
३	ढाककी जडकी छालका क्वाथ	तो.–११ ६८–११	तो. ६९	
१	पट्ठाघीग्वार	तो. ६९	तो. मा. ६९–२	
२	ढाककी जडकी छालका क्वाथ	तो. मा. ६९–२	तो. मा. ६९–३	
२	पट्ठा घीग्वार	तो. मा. ६९–३	तो. मा. ६९–५	
१	गोरखमुंडीका क्वाथ	तो. मा. ६९–५	तो. मा. ६९–४॥	
५	त्रिफला क्वाथ	तो. मा. ६९–४॥	तो. मा. ६९–८	रंगत स्याह
५	भांगरेका रस	तो. मा. ६९–८	तो. मा. ६९–६	
४	ब्राह्मीका रस	तो. मा. ६९–६	तो. मा. ६९–६	
५	आंवलेका रस	तो. मा. ६९–६	तो. मा. ६९–६	

तादात आंच	औषधि जिसमें पुट दिये गये	वजन जो रक्खागया	वजन जो निकला	विशेष वार्ता।
३	पेठेका रस	तो. मा. ६९–६	तो. मा. ६९–६॥	
१	ग्वारपठेका रस	तो. मा. ६९–६॥	तो. मा. ६९–७	
६	मुंडीका रस	तो. मा. ६९–७	तो. मा. ६९–८॥	
४	बेलकी जडकी छालका काढा	तो. मा. ६९–८॥	तो. मा. ६९–८	
१	घीग्वारके पट्ठेका रस	तो. मा. ६९–८	तो. मा. ६९–७	
२	बेलकी जडकी छालका क्राथ	तो. मा. ६९–७	तो. मा. ६९–७	
५	वालछडका क्राथ	तो. मा. ६९–७	तो. मा. ६९–६॥	
१	पातालगरुडी क्राथ	तो. मा. ६९–६॥	तो. मा. ६९–७॥	
४	असगंध क्राथ	तो. मा. ६९–७॥	तो. मा. ६९–७	
३	पृष्ठपर्णी	तो. मा. ६९–७	तो. मा. ६९–६	
४	शालपर्णी	तो. मा. ६९–६	तो. मा. ३९–७	
२	पट्ठा घीग्वार	तो. मा. ६९–७	तो. मा. ६९–८	
४	असगंध क्राथ	तो. मा. ६९–८	तो. मा. ६९–७	
७	मेथीका क्राथ	तो. मा. ६९–७	तो. मा. ६९–७	
८	गाजरका रस	तो. मा. ६९–७	तो. मा. ६९–६	
५	पीपलकी जडकी छाल का क्राथ	तो. मा. ६९–६	तो. मा. ९९–५	
९	गिलोयका रस	तो. मा. ६९–५	तो. मा. ६९–४	अवतक ३०४ आंच लगचुकी किन्तु अबतक चमक बाकी है।
७	बडकी जटाका क्राथ	तो. मा. ६९–४	तो. ६९	
७	कौंचके बीजकीमीगका क्राथ	तो. ६९	तो. मा. ६८–११	
६	काढा चिरवा उटंगन	तो. मा. ६८–११	तो. मा. ६९–१	
१	नारियलका पानी	तो. मा. ६९–१	तो. मा. ६९–१	
५	विदारीकंदका क्राथ	तो. मा. ६९–१	तो. मा. ६९–३	
१	काढा चिरवा उटंगन	तो. मा. ६९–३	तो. मा. ६९–३	
२	तालमखानेका रस	तो. मा. ६९–३	तो. मा. ६९–२	तालमखाना भिगोकर त्याब अलग नहीं निकलसक्ता।
९	मूशलीक्राथ	तो. मा. ६९–२	तो. मा. ६९–४	
७	शंखाहूलीका रस	तो. मा. ६९–४	तो. मा. ६९–४	
५	मूषाकर्णीका रस	तो. मा. ६९–४	तो. मा. ६९–५	
१	वलाका रस	तो. मा. ६९–५	तो. मा. ६९–५॥	
२	पातालगरुडीका रस	तो. मा. ६९–५	तो. मा. ६९–५	
९	सहमलकी जडकी छालका क्राथ	तो. मा. ६९–५	तो. मा. ६९–८	
७	छोटी खरैंटीका रस	तो. मा. ६९–८	तो. मा. ६९–८	

तदाद आंच	औषधि जिस्में पुट दिये गये	वजन जो रक्खागया	वजन जो निकला	विशेष वार्ता-
४	घीग्वारका रस	तोले-माशे ६९-८	तो. मा. ६९-७॥	
१	१ तो. सुहागा पानीमें घोलकर	तो. मा. ६९-७॥	तो. मा. ६९-६	चूंकि इस वक्ततक ३७ आंच लगचुकीं और चमक अभी बाकी है इस वास्ते चमक दूर करनेके लिये सुहागेका पुट दियागया लेकिन,
२	घीग्वारका रस	तो. मा. ६९-६	तो. मा. ६९-८	
२	कंगनीका रस	तो. मा. ६९-८	तो. मा. ६९-८॥	
१	घीग्वारका रस	तो. मा. ६९-८॥	तो. मा. ६९-८	
६	कंघीका रस	तो. मा. ६९-८	तो. मा. ६९-७॥	अरुणतायुक्त
१	बडी खिरैटीका रस	तो. मा. ६९-७॥	तो. मा. ६९-६॥	बडी खिरैटी अर्थात् जिसका पत्ता कुछ भारी होता है-
४	आकका दुग्ध	तो. मा. ६९-६॥	तो. ६९	यद्यपि ३९१ आंच लगचुकीं और अवतक चमक बाकीहै इस लिये इस खयालसे कि आक थूहर और सेहुंडके अतिरिक्त और कोई जडा मारक नहीं है और आदिमें यह ध्यान न था इसलिये अबके पुटोंमें कमी रहगईहै फिर आकके पुट देना आरम्भ कियागया बडे संपुटमें आंच कम लगनेके खयालसे दो संपुट रक्खेगये मौसम गर्मीका था दो जगह संपुट रखनेसे आंच जियादा तेज होगई इस कारण कोठरी जिसमें कर्म होता था उसकी सोटोंमें उरांच पडगई और छत गिरकर १ संपुट टूटगया साबित संपुटमें ३५ तो. ४ माशे अभ्रक निकला और टूटे संपुटसे जो अच्छी और बडी डेलियां निकलीं और बाकी थोडा थोडा तीन शीशियोंमें नं. २ व ३ व ४ डालकर राख मिली होनेके कारण अलग २ रक्खा गया बाकी राखमें मिलजानेसे हाथ न लगसका-
१	घीग्वारका रस	तो. मा. ४३-१	तो. मा. ४४-५	
३	आकका दूध	तो. मा. ४४-५	तो. मा. ४३-७	
२	चौलाईका रस *	तो. मा. ४३-७	तो. मा. ४३-७	*मारक समझ कर चौलाईके पुटदिये-
१	छोटे गोखरूका रस	तो. मा. ४३-७	तो. मा. ४३-५	
२	थूहरका दूध	तो. मा. ४३-५	तो. मा. ४३-५॥	
१	ककरौंदेका रस	तो. मा. ४३-५॥	तो. मा. ४३-५	
७	बड़े हरे गोखरूकारस	तो. मा. ४३-५	तो. मा. ४३-६	अरुणतायुक्त.
३	गिलोइका रस	तो. मा. ४३-६	तो. मा. ४३-७	
७	कंघी छोटी जिसका खुरखुरा पत्ता होताहै	तो. मा. ४३-७	तो. मा. ४५-६	रंगत लाल.
७	वेलखिरैटीका रस	तो. मा. ४५-६	तो. ४५	रंगत लाल महापुट दियेगये निश्चन्द्र करनेकी कांक्षासे यह सातोंपुट महापुटकी आंचके दियेगये लेकिन अकसर तीक्ष्णाग्निके लगने संपुट और अभ्रकको हानि पहुंचनेके कारण आगेसे गजपुट ही देना मुनासिब समझा-
७	ककरौंदेका रस	तोले ४५	तो. मा. ४५-१०	
८	शतावरका क्वाथ	तो. मा. ४५-१०	तो. मा. ४४-८	
१	शिवलिंगीके पचांगका रस	तो. मा. ४४-८	तो. मा. ४४-७	
३	काढा शतावर	तो. मा. ४४-७	तो. मा. ४३-६	
२	घीग्वार	तो. मा. ४३-६	तो. मा. ४४-२	रंगत निहायत लाल.
२	लहसनका रस	तो. मा. ४४-२	तो. मा. ४४-६	रंगतकाली तोलमें कुछ गडबड होगई.
२	प्याजका रस	तो. मा. ४४-६	तो. मा. ४३-१०	
३	आंवलेका रस	तो. मा. ४३-१०	तो. मा. ४३-७॥	
२	भांगरेका रस	तो. मा. ४३-७॥	तो. मा. ४३-७॥	
४	भांगका क्वाथ	तो. मा. ४३-७॥	तो. मा. ४४-३	

तादाद आंच	औषधि जिस्में पुट दिये गये	वजन जो रक्खागया	वजन जो निकला	विशेष वार्ता–
१	विदारीकंदका रस	तो. मा. ४४–३	तो. मा. ४३–१०	
२	सालिब मिश्री रस	तो. मा. ४४–१०	तो. मा. ४३–१०	
५	भंगका काथ	तो. मा. ४३–१०	तो. मा. ४४–१०	
१	किशमिसका रस	तो. मा. ४४–१०	तो. मा. ४२–६	
२	कंगका काथ	तो. मा. ४२–६	तो. मा. ४३–२	

४७४ जोड आंच तय्यार होगया.

स्वर्णभस्मका नकशा ।

तादात आंच	नाम औषधि जिस्में घोटागया	तोलकंडा	वजन जो रक्खागया	वजन जो निकला	शकल जो निकली	विशेष वार्ता–
१	गुलाबका अर्क	५ सेर	२ तो० वर्क		खस्ता	
२	गुलाबका अरक	५ सेर			,,	गुलाबके फूलोंकी लुगदीमें रखकर संपुट कियागयाथा इस वास्ते लुगदीकी राख मुश्किलसे अलगहुई कुछ फूकसे उडाईगई कुछ पानीसे धो दीगई वजनी होनेसे सोनेकी राख नीचे बैठ गई थी–
३	गुले अब्बासकी जडका रस	१० सेर			कठिन	
४	किसी औषधिमें न घोटा गया	१० सेर			अतिकठिन	नोट–ऐसा समझ कि आंच कमलगी बिना किसी औषधिमें घोटे फिर आंच दीगई तो आंच और कठिनता और बढगई और कम आंच लगनेका खयाल गलतरहा
५	गुलाबका अर्क	५ सेर			फुसफुसी	
६	गुलाबका अर्क	६ सेर	२ तो.वरक और मिला दियेगये		थोडी फुसफुसी	
७	गुले अब्बासकी जडका रस	६ सेर	३।।तो०	तो०३।।	थोडा कठिन	दो दिन घोटागया दो दिन सुखायागया–
८	गुलाबके अर्कमें भिगोये हुये गुलाबके फूलोंका रस	६ सेर				३ दिन घोटागया और १ दिन खुश्क कियागया
९	नीमकी जडकी छालका रस	६ सेर	तो.३।।–०	तो०३।।	थोडा कठिन औरस्याहीयुक्त	दो दिन खूब घोटागया फिर सुखाया गया–
१०	गुलाबका अर्क	६ सेर	तो०३।।	तो०३।।	अति फुसफुसी	
११	कचनारकी छालका काथ	६ सेर	तो०३।।	तो०३।।।	थोडा कठिन श्यामतायुक्त	ऽ।।सेर काथमें कुछ दिन घोटकर खूब सुखा कर आंच दीगई–
१२	गुलाबका अर्क	६ सेर	तो०३।।।	तो०३।।	श्यामता जाती रही	
१३	,,	,,	,,	,,		
१४	गुलाबके अर्कमें भिगोये गुलाबके फूलोंका रस	६ सेर	,,	,,	,,	
१५	,,	६ सेर	,,	,,	,,	
१६	तुलसीका रस और गुलाबका अरक	६ सेर	,,	तो०३।।		कुछ दिन घोटागया–
१७	गुलेअब्बासकी जडका रस १० तो० नीमकी जडका रस १० तो०	८ सेर			श्यामता युक्त	
१८	कचनारकी जडकाकाथ	९ सेर	३।।≈)		किंचित श्यामता	
१९	तुलसीका रस	१० सेर	तो०३।।।		श्यामता जाती रही	१० सेरसे कम आंच देना अनुभवसे ठीक नहीं मालूम हुआ–

तादाद आंच	नाम औषधि जिस्में घोटागया	तोलकंडा	वजन जो रक्खागया	वजन जो निकला	शकल जो निकली	विशेष वार्ता-
२०	गुलाबके फूलोंका रस	१० सेर	३॥-)		पीलीमिट्टीका रंग	
२१	,,	१० सेर	३॥=)		रंगत उत्तम गुलाबी	
२२	,,	१० सेर	३॥≡)			
२३	,,	१० सेर	३॥=)			
२४	गुलाबके माजी फूलोंका रस	१० सेर				
२५	,,	१० सेर	३॥)			
२६	गुलाबके अर्कके योगसे निकाला गुलाबके फूलोंका रस	१० सेर	तो० ३॥	३॥-)	अरुणतायुक्त	५-७ दिन लगातार घोटकर सुखायागया परन्तु गुलाबके फूलके योग होनेसे ठीक न सूखसका बल्कि चीठसा रहगया लाचार आंच देदीगई-
२७	गुलाबका अरक	१० सेर	३॥-)	३॥-)	फुसफुसी अरुणतायुक्त	खतम

अनुभव।

(१) गुलाबके अरकमें घोटनेसे फुसफुसी भस्म निकलती थी, गुलाबके फूलोंके रसमें घोटनेसे एक प्रकारकी चिपक पैदा होतीथी और आंचके बाद थोडी कठिनता रहतीथी गुलेअव्वासकी जडके रसमें घोटनेसे भी चिपक पैदा होतीथी और अधिक कठिनताके साथ निकलता था नींबूके रसमें थोडी कठिनतार रहतीथी और गुलाबके अरक और तुलसीके रसमें फुसफुसी रहतीथी।

(२)-आंच १० सेरसे कम देना ठीक नहीं इसके कम देनेसे स्याही बाकी रहतीथी १० सेर आँच देनेसे जडी का अंश जलकर उत्तम रंगका निकलताहै।

(३)-यह भस्म यूनानी विधिसे कीगई जो गुलदिस्ते तिजारवमें दीहै और अखबार अलकीमियामें दो बार जिकर आयाहै यूनानी इस भस्मको पुनः जीवित होनेवाली मानतेहैं और मेरी समझमें तौ यह भस्म नहीं बल्कि जीवित हीहै क्योंकि निर्मल रसमें खरल करते समय अधिक पतला कर देनेपर सोनेके रंगके परिमाणु खरलकी तहमें २५ आंच तक नजर आतेरहे इस भस्मके अनुभवसे यह बात अवश्य सिद्ध होगई कि पूरी अशर्फी या रुपयेकी भस्म जडीसे एक आंचमें कदापि नहीं होसक्ता।

स्वर्णभस्मके पुटके निमित्त तुलायंत्रके १४ वें अनुभवसे निकले पारदकी विशेषशुद्धि।

"गृहधूमेष्टिकाचूर्णं तथा दधिगुडान्वितम्।
लवणासुरिसंयुक्तं क्षिप्त्वा सूतं विमर्दयेत्॥
षोडशांशं तु तद्द्रव्यं सूतमानान्नियोजयेत्।
सूतं क्षिप्त्वा समं तेन दिनानि त्रीणि मर्दयेत्॥ "

अर्थ-घरका धूँआँ, ईटका चूर्ण, दही, गुड, सेंधा नमक, राई, ये औषधियें डालकर पारेको तीनदिनपर्यंत खरलमें मर्दन करे और ये औषधियें पारेसे १६ गुनी डाले पीछे नीचे लिखी क्रियाएँ करे॥

ता० २४ को १३ तोले ७ माशे ४ रत्ती पारदको (जिसमें कुछ कैनका साधारण शुद्ध था औरकुछ चक्रवृती औषधालयसे आया हिंगुलोत्थ था और जिसपर तुलायंत्रके १४ अनुभव होचुके थे) मृदु तप्तखल्वमें डाल १ तोला ईटा खोया, १ तोला राई, १ तोला लवण, १ तोला गुड, (जो दहीमें घोल डालागया था) और थोडा २ दही डाल ८ बजेसे निरंतर मर्दन करना आरम्भ किया। दवाके गाढे होजानेपर थोडा २ दही और डालतेगये जबतक दवा पतली रही तबतक पारद पृथक् रहा जब दवा गाढी और खुश्क होनेलगी पारद दवामें मिलने लगा। शामके ७ बजेतक ११ घंटे घुटाई होचुकने और ११ छ० दही पडचुकनेके बाद घुटाई बंद करखरलका ज्योंका त्यों उठा रखदिया।

ता० २५ को जो पारद दवासे पृथक् था उसे निकाल लिया जो तोलमें ९ तोले १० माशे हुआ। बाकी पारेको जिसके दवामें बडे २ रवे दीखते थे उसी प्रकार मृदु तप्त खल्वमें ७ बजेसे घोटना आरम्भ किया। ११ बजेतक दवा और खुश्क होगई और चिकनापन आगया जिससे पारा और मिलगया। अत एव घुटाई बंद कर गर्म जलसे सब दवाको धो पारदको निकाला तो २ तोले ८ माशे पारा और निकला अर्थात् सब १२ तोले ६ मा. निकल आया बाकी १ तोले १॥ माशे दवामें मिला रहगया। उस पारद मिश्रित दवाका पानी नितार धूपमें सुखादिया। सूखजानेपर ५ तोले ५ माशे चूर्ण हाथ आया किन्तु पारद कुछ भी पृथक् न हुआ। पातनसे कुछ पारद निकले तो निकले।

ता० १८। ८ को उक्त ५ तो० ५ माशे चूर्णको जौनपुरी छोटे डौरूमें भर भस्ममुद्रासे संधि बंद कर सुखादिया।

ता० १९ को ७ बजेसे ७ बजे सायंकालतक १२ घंटे मध्यमाग्नि दीगई ऊपर भीगा कपडा डालागया, बादको जैसेका तैसा रक्खा छोडदिया।

ता० २० को खोला तो पारद ऊपरके डौरूमें मौजूद था नीचेकी दवा जलकर संगरसी होगई थी, पारद ६ माशे ४ रत्ती निकला। राख २॥ तोले रहगई।

सम्मति-उपरोक्त श्लोकमें पारदसे षोडशांश दधि लिखाहै

किन्तु इस बार हमने ११ छटांक दही डाला जिससे दवा पतली कढीसी घुटती रही। इतना दही डालना ठीक नहीं हुआ क्योंकि एक तो जबतक दवा पतली रही पारद दवामें कम मिला और जब कडी हुई तब अधिक मिला। दूसरी बात यह कि अधिक दही पडनेसे चिकनाईका अधिक अंश आगया जो मर्दनके लिये किसी तरह लाभदाई नहीं समझा जासक्ता। इससे ज्ञात होताहै कि शास्त्रकारका आशय षोडशांश दही डालनेसे केवल थोडी आर्द्रता उत्पन्न करनेका है। आगेसे इस प्रकारके मर्दनमें और वस्तुओंके समान ही दही डालाजाय किन्तु इस श्लोकमें, 'सूतं क्षिप्त्वा समं तेन' के पाठसे ऐसा अर्थ निकलताहै कि मर्दनकी सब चीजोंके समान पारद लेना और मर्दनकी चीजें सब ६ हैं अत एव षोडशांश पाठकी जगह षष्ठांश पाठ रक्खा जाना चाहिये और सब चीजें पारेसे छठा छठा हिस्सा लेनी चाहिये।

छठा हिस्सा ही लेना चाहिये इसका समाधान इस बारके अनुभवसे भी इस प्रकार होताहै कि अबकी बार दहीको छोड ४ तोले दवा थी और उसमें ४ तोले ही पारा लीन हुआ अत एव उत्तम मर्दनके लिये पारेके समान ही औषधी होनी चाहिये कि जिससे समस्त पारा लीनप्राय होजावे।

स्वर्णभस्म।

(यूनानीविधिसे बनाई हुई उक्त भस्मको कच्चा समझ निम्न लिखित प्रकारसे पुनः पुट दियेगये)

पहला पुट।

ता० २७। ७। ०८ को २ तोले उपरोक्त स्वर्णभस्म और ६ माशे उपरोक्त विधिसे शुद्ध पारद दोनोंको शीत लोहखल्वमें डाल थोडा थोडा रस कांटेदार चौलाईका डाल ५ बजे शामसे घोटना आरम्भ किया। प्रथम थोडी थोडी भस्म डाली तो पारा न मिला जब करीब १ तोलेके भस्म पडगई तब पारा मिलगया ½ घंटे बाद बाकी भस्मको भी डाल दिया और करीब १ घंटे और घोटा ६॥ बजे खरलको उठा ज्योंकात्यों रखदिया। आज १॥ घंटे घुटाई हुई और करीब १ तोले चौलाईका रस पडा।

ता० २९ को ७ बजे से ११बजेतक और २॥ से ७ तक ८॥ घंटे घुटाई हुई। २ तोले रस पडा।

ता० ३० को ६॥ से १०॥ तक और २॥ से ७ तक ८॥ घंटे घुटाई हुई १॥ तोले रस पडा।

ता० ३१ को ६॥ से ११ तक और २॥ से ५ तक मृदु तप्तखल्वमें ७ घंटे घुटाई हुई ५॥ तोले रस पडा अर्थात् कुल १० तोले रस पडचुकनेपर दवाकी टिकिया बना सुखादी सूख जानेपर--

ता० ६ को तोला तो ३ तोले २ माशे हुई उसको गेरूसे रंगे दोवलोंके संपुटमें रख कपरौटी कर सुखा २॥ सेर कंडोंकी आंच गर्तमें दे दी।

ता० ७ को निकाल रख लिया।

ता० ९ को खोला तो टिकियाकी रंगत ऊपरसे कत्थई रंगकी थी किन्तु तोडनेपर अन्दरसे काली थी कारण यह कि टिकिया मोटी थी इस वास्ते टिकियाके ऊपरकी अपेक्षा अन्दर अग्निका प्रभाव कम पडा और कुछ टिकिया गीली भी रहगई थी, तोलमें इस समय २ तोले २ माशे ३रत्ती थी।

दूसरा पुट।

ता० १०। ८। ०८ को उक्त टिकियाको लोहेके शीत खल्वमें डाल बारीक पीस उसमें उक्त विधिसे शुद्ध ६ माशे पारद डाल दोनोंको ८ बजेसे सूखा घोटना आरम्भ किया। पहले पारद दवासे पृथक् रहा १ घंटे घोटनेसे भस्ममें मिलगया दोनों चीजोंके मिल जानेपर फिर चौलाईका रस डाल घोटना आरम्भ किया। ११ बजेतक ३ घंटे घुटाई हुई १ तो० रस पडा।

ता० ११ को १ घंटे शीत खल्वमें और ४ घंटे मृदु तप्त खल्वमें कुल ५ घंटे घुटाई हुई--३ तोले रस पडा अर्थात् कुल ४ तोले रस पड चुकनेके बाद गाढी होजानेपर पहली बारसे बडी टिकिया बना सुखा दी।

ता० १९ को सूखी टिकियाको तोला तो २ तोले ११ माशे थी उसको छोटी चिपियोंके संपुटमें रख कपरौटी कर सुखा २॥ सेरकी आंच गर्तमें देदी।

ता० २० को खोला तो टिकियाका रंग कत्थई था तोड कर देखा तो अन्दर भी वैसीही रंगत थी अर्थात् इस बार अग्नि ठीक लगी टिकियाका रंग अन्दर बाहर एकसा रहा तोलमें २ तोले ५ मा० रही।

तीसरा पुट।

ता० २१। ८। ०८ को उक्त२ तोले ५ माशेकी टिकियाको शीत लोह खल्वमें पीस उक्त शुद्ध ६ माशे पारद डाल ७ बजेसे घोटना आरम्भ किया पहले पारद दवासे पृथक् रहा ½ घंटे घोटनेसे दवामें मिला। पारदके मिलजानेपर थोडा २ रस चौलाई डाल घोटते रहे शामके ६ बजे घुटाई बंद कर दी। आज ६ घंटे घुटाई हुई ३ तोले रस पडा।

ता० २२ को ४ घंटे घुटाई हुई१ तोले रस पडा बादको टिकिया बना शीशेके बकसमें सुखानेको रखदी।

ता० ३१ को टिकियाको सूखजानेपर तोला तो ३ तोले १॥ माशे हुई। बादको उन्हीं छोटी चिपियोंके संपुटमें रख कपरौटी कर सुखादिया।

ता० १। ९ को ऽ२॥ कंडोंकी आंच गर्तमें दे दीगई।

ता० २ को निकाला तो टिकियाकी रंगत इस बार और भी उत्तम कत्थई रंगकी ऊपर भीतर एकसी निकली तोलमें २ तो० ६ मा० २ र० हुई।

चौथा पुट।

ता० २। ९। ०८ को उक्त २ तोले ६ माशे रत्तीकी टिकियाको शीत लोहखल्वमें पीस उक्त शुद्ध ६ माशे पारद डाल घोटना आरम्भ किया १५ वा २० मिनट घोटनेसे पारद दवामें मिला दोनोंके मिलजानेपर चौलाईका रस डाल घोटतेरहे आज ३ घंटे घुटाई हुई १ तो० रस पडा।

ता० ३ को ७॥ घंटे घुटाई हुई २॥ तोले रस पडा।

ता० ४ को ५ घंटे घुटाई हुई ६ माशे रस पड़ा कुल४तोले रस पडचुकनेपर घुटाई बंद कर खरलको रखदिया। अवकाश न मिलनेसे टिकिया न बनसकी।

ता० ६ को देखा तो दवा खुश्क होगई थी अत एव उसमें करीब ६ माशेके चौलाईका रस और डाल टिकिया बना सुखादी।

ता० १० को सूखी टिकियाको तोला तो ३ तोले ७माशे हुई। इसे उन्हीं चिपियोंके संपुटमें बंदकर कपरौटी कर सुखादिया।

ता० ११ को २॥ सेर आरने कंडोंकी आंच गर्तमें दे दीगई।

ता० १२ को निकाला तो टिकियाकी रंगत ऊपर भीतर एकसी निकली तोलमें २ तो० ९ मा० ६ रत्ती हुई किन्तु टिकिया कड़ी निकलती है खास्ता नहीं।

पाँचवां पुट ।

ता० १६।९।०८ को उक्त २ तोले ९ माशे ६ रत्तीकी टिकियाको पत्थरके खरलमें पीस ६ माशे पारा डाल घोटा थोड़ी देरमें पारा मिल जानेपर काँटेदार चौलाईका रस डाल घोटा आज १½ घंटे घुटाई हुई।

ता० १७ को फिर चौलाईका रस डाल घोटते रहे ४ तोले रस पड चुकने और गाढा होनेपर शामको टिकिया बनाली आज ६ घंटे घुटाई हुई।

ता० १८ को और १९ के ३ बजेतक सूखती रही।

ता० १९ के ३ बजे तोला तो ३ तोले ८ माशे हुई संपुटमें बंद कर सुखादिया।

ता० २० को ९ बजे दिनके गढेमें २॥ सेरकी आंच देदी शामको निकाल लिया।

ता० २१ को खोल तोला तो २ तोले १० माशे हुई अबकी बार तोल सिर्फ २ रत्ती बढी कुछ पत्थरके खरलमें पहलीही दफै घुटी थी उसमें लगी रहगई होगी फिर भी तोल उतनी न बढी जितनी लोहेके खरलमें बढती थी इससे सिद्ध हुआ कि लोहेके खल्वसे काहीरूपमें लोहा स्वर्णमें मिलजाता था और ४ बारमें लगभग ६ माशे लोहा मिलगया होगा। अबकी बार टिकिया कुछ फूल भी गई थी जिसके कारण अन्दर परतसे दिखलाई पडे।

छठा पुट ।

ता० २२।९।०८ को ४ बजे उक्त २ तोले १० माशेकी टिकियाको खल्वमें डाल पीसा तो टिकिया पहलेसे नरम पिसी १५ मिनट पीस ६ माशे उपरोक्त पारा डाल घोटा तो ठीक २५ मिनटमें पूरा अदृश्य होगया फिर चौलाईका रस डाल घंटेभर और घोटा।

ता० २३ को रस डाल घोटा ६ घंटे ४ तोले रस पड चुकनेपर।

ता० २५ के सबेरे टिकिया बना सुखादी।

ता० २६ की शामको सूख जानेपर तोला तो ३ तोले ९ माशे हुई संपुट करदिया।

ता० २७ को १० बजे २॥ सेरकी आंच देदी।

ता० २८ को खोला तो २ तोले ११ माशे हुई १ माशे बढी।

सातवाँ पुट ।

ता० २८।९।०८ को ८ बजे उक्त २ तोले ११ माशेकी टिकियाको खल्वमें डाल पीस ६ माशे उपरोक्त पारा डाल १० मिनट घोटा तो करीब आधा पारा दवामें मिलगया फिर चौलाईकारस डाल ५घंटे और घुटाई की२तोले रस पडा।

ता० २९ को रस डाल ७ घंटे घुटाई की १॥ तोले रस पडा।

ता० ३० को ३ माशे रस डाल १ घंटे घोट टिकिया बना सुखादी सब ३॥। तोले रस पडा और १३ घंटे घुटाई हुई।

ता० १+२।१०के दो पहरतक सूखती रही३बजे सूखी टिकियाको तोला तो३तोले ९ माशे हुई बादको संपुट कर दिया।

ता० ३के११बजे२॥सेरकी आंच दे७बजे संपुट निकाल लिया।

ता० ४को खोल तोला तो २तोले ११माशे४रत्ती हुई४रत्ती बढी।

आठवाँ पुट ।

ता० ७।१०।०८ को उक्त २ तोले ११ माशे ४ रत्तीकी टिकियाको खल्वमें पीस बारीक होजानेपर ६ माशे उपरोक्त पारा डाल थोडी देर घोटा बादको चौलाईका रस डाल ९॥ बजेसे घोटना आरम्भ किया ११ बजे खरलको शीशेके बकसमें रख धूपमें रखदिया २॥ बजेतक उसका पहला पडा करीब २ तोलेके सब रस सूख गया बादको फिर रस डाल ५॥ बजेतक घुटाई और की अर्थात् आज ४॥ घंटे घुटाई हुई ४ तोले रस पडा पतला रहनेके कारण टिकिया न बनसकी।

ता० ८ को देखा तो दवा खुश्क होगई थी अत एव १ तोले रस और डाल ३ घंटे घोट टिकिया बना सुखादी सब ५ तोले रस पडा ७॥ घंटे घुटाई हुई।

ता० १० तक सूखती रही सूखजानेपर तोला तो ३ तो० ८ मा० ६ र० हुई संपुट कर धूपमें सुखादिया।

ता० ११ को १० बजे २॥ सेरकी आंच दे ६ बजे संपुटको निकाल लिया।

ता० १२ को खोल टिकियाको निकाल तोड देखा तो अब इसमें किसी प्रकारकी चमक नहीं दीखती तोलमें ३ तोले हुई ४ रत्ती बढी।

नववाँ पुट ।

ता० १२।१०।०८ को उक्त ३ तोलेको खल्वमें पीस उपरोक्त ६ माशे पारा डाल घोट श्यामा तुलसीका रस डाल ९ बजेसे घोटना आरम्भ किया शामतक ५ घंटे घुटाई हुई ३ तोले रस पडा।

ता० १३ को १ तोले रस डाल ४॥ घंटे घोट ४ बजे टिकिया बना सुखादी।

ता० १४–१५ को सूखती रही सूखजानेपर तोला तो ३ तो० ८ मा० ४ र० हुई।

ता० १६ को कपरौटी कर सुखादिया।

ता० १७ को खोल टिकियाको तोड देखा तो टिकियाके गर्भमें कुछ श्यामता थी सूर्य्यके सम्मुख देखनेसे उसमें कहीं २ स्वर्णके परमाणु स्पष्ट चमकते थे तोलमें ३ तोले ४ रत्ती हुई ४ रत्ती बढी।

दशवांपुट ।

ता० १८।१०।०८ को उक्त ३ तोले ४ रत्तीको खल्वमें पीस उपरोक्त ६ माशे पारा डाल थोडी देर घोट श्यामा तुलसीका रस डाल ३ बजेसे घोटना आरम्भ किया शामतक २॥ घंटे घुटाई हुई २ तोले रस पडा।

ता० १९ को रस डाल ५ घंटे घुटाई की २ तोले रसपडा।

ता० २० को दवामें थोडी खुश्की आगई अत एव ६माशे रस और डाल टिकिया बना सुखा दी सब ४॥ तोले रस पडा ७॥ घंटे घुटाई हुई।

ता० २१।२२ को सूखनेपर ३ तो० १० माशे ४ रत्ती हुई।

ता० २३ को और सूखनेपर ३ तोले १० माशे २ रत्ती रहगई संपुट करदियागया।

ता० २४ को ८२॥ सेर कंडोंकी आंच दे दी।

ता० २५ को निकाल देखा तो टिकियाकी रंगत बहुत उत्तम ऊपर नीचे एकसी अरुण निकली तोलमें ३ तोले १ माशे हुई।

नेकशा स्वर्णभस्म पुट । २८।७।०८

नं. पुट	तारीख	तोल स्वर्ण भस्म	तोल पारद	नाम जडी	तोल रस	खल्व प्रकार	समय घुटाई शीतखल्व	समय घुटाई शीतखल्व	तोल टिकिया सूखी	पुटकी अग्निका प्रमाण	तोल पुटान्तर	तोलकी अधिकता	विशेष वार्ता ।
१	२८।७	२ तोले	६ मा.	चौलाई	१० तो.	लोहखल्व	१८॥ घंटे	७ घंटे	तो. मा. ३ २	ऽ२॥ सेर	तो. मा. र. २ २ ३	मा. र. २ ३	टिकिया भीतर कुछ कांली रहगई कारण यह कि पूरी तौरपर सूखी न थी
२	१०।८	तो. मा. र. २ २ ३	६ मा.	चौलाई	४ तो.	लोहखल्व	४ घंटे	४ घंटे	तो. मा. २ ११	ऽ२॥ सेर	तो. मा. २ ५ ०	मा. र २ ५	टिकियाकी रंगत उत्तम ऊपर भीतर एकसी
३	२१।८	तो. मा. २ ५	६ मा.	चौलाई	४ तो.	लोहखल्व	१० घंटे	+	तो. मा. र. ३ १ ४	ऽ२॥ सेर	तो. मा. र. २ ६ २	मा. र. १ २	इस बार टिकियाकी रंगत और भी उत्तम रही
४	२।९	तो. मा. र. २ ६ २	६ मा.	चौलाई	४॥ तो.	लोहखल्व	१५॥ घंटे	+	तो मा. ३ ७	ऽ२॥ सेर	तो. मा. र. २ ९ ६	मा. र. ३ ४	इस बार सूखी टिकियाकी तोल अधिक बैठी शंका स्पष्ट अवश्य लोहखल्वसे लोह मिलतागया
५	१६।९	तो. मा. र. २ ९ ६	६ मा.	चौलाई	४ तो.	पाषाणखल्व	७॥ घंटे	+	तो. मा ३ ८	ऽ२॥ सेर	तो, मा. २ १०	र, २	टिकिया खस्ता (फुसफुसी)
६	२२।९	तो. मा. २ १०	६ मा	चौलाई	४ तो.	पाषाणखल्व	१०॥ घंटे	+	तो. मा. ३ ९	ऽ२॥ सेर	तो. मा. २ ११	मा. ० १ ०	
७	२८।९	तो. मा. २ ११	६ मा.	चौलाई	३॥। तो.	पाषाणखल्व	१३ घंटे	+	तो. मा. ३ ९	ऽ२॥ सेर	तो. मा. र. २ ११ ४	र. ४	
८	७।१०	तो. मा. र. २ ११ ४	६ मा.	चौलाई (८ पुट)	५ तो.	पाषाणखल्व	७॥ घंटे	+	तो. मा. र. ३ ८ ६	ऽ२॥ सेर	तो. ३ ० ०	र. ४	अब इस टिकियाको तोडकर देखनेसे किसी प्रकारकी चमक नहीं मालूम होती
९	१२।१०	तो. ३ ० ०	६ मा.	तुलसी	४ तो.	पाषाणखल्व	९॥ घंटे	+	तो. मा. र. ३ ८ ४	ऽ२॥ सेर	तो. र. ३ ० ४	र ४	आज देखा तो चमकदार जैर स्वर्णके स्पष्ट दिखतेथे
१०	१८।१०	तो. ३	६ मा.	तुलसी	४॥ तो.	पाषाणखल्व	७॥ घंटे	+	तो मा. र. ३ १० २	ऽ२॥ सेर	तो. मा. ३ १	र. ४	टिकियाकी रंगत बहुत उत्तम रही
११	२६।१०	तो. मा. ३ १	६ मा.	तुलसी	४॥ तो.	पाषाणखल्व	९॥ घंटे	+	तो. ४	ऽ२॥ सेर	तो. मा. र. ३ १ ६	र. ६	

नं. पुट	तारीख	तोल स्वर्ण भस्म	तोल पारद	नाम जडी	तोल रस	खल्व प्रकार	समय घुटाई शीतखल्व	समय घुटाई शीतखल्व	तोल टिकिया सूखी	पुटकी अग्निका प्रमाण	तोल पुटान्तर	तोलकी अधिकता	विशेष वार्ता ।
१२	१।११	तो. मा. र. ३ १ ६	६ मा.	तुलसी	४ तो.	पाषाणखल्व	६॥ घंटे	+	तो. मा. र. ३ ११ २	ऽ२॥ सेर	तो. मा. र ३ २ ३	र. ५	
१३	७।११	तो. मा. र. ३ २ ३	६ मा.	कचनार क्वाथ	५ तो.	पाषाणखल्व	१०॥ घंटे	+	तो. मा. ३ १०	ऽ२॥ सेर	तो. मा. र. ३ २ २ (६ र.कमो.)		
१४	१३।११	तो. मा. र. ३ २ २	६ मा.	,,	३ तो.	,,	५ घंटे	+	तो. मा. ३ ११	ऽ२॥ सेर	तो. मा. र. ३ १ ५ (५ र. कमी.)		
१५	१९।११	तो. मा. र. ३ १ ५	६ मा.	,,	४॥ तो.	,,	+	+	तो. मा. र. ३ १० ४	ऽ२॥ सेर	तो. मा. र. ३ १ ६	र. १	
१६	२५।११	तो. मा. र. ३ १ ६	६ मा.	,,	५ तो.	,,	७ घंटे	+	+	ऽ२॥ सेर	तो. मा. ३ २	र. २	अबभी धूपमें देखनेसे टिकियाके नीचे भागमें स्वर्णरंगके रवे दीखते थे ।
१७	१।१२	तो. मा. ३ २	६ मा.	तुलसी(५पुट)	४ तो.	,,	७ घंटे	+	तो. मा. ४ ३	ऽ२॥ सेर	तो. मा. र. ३ २ ५	र. ५	
१८	८।१२	तो. मा. र. ३ २ ५	६ मा.	कचनार क्वाथ	६ तो.	,,	+	+	तो. मा. ४ १	ऽ२॥ सेर	तो. मा. र. ३ २ ३ (२ र. कमी)		अवकी बार घुटनेके मध्यमें रातको रक्खे रहनेपर सबेरे देखातो मूसलीपर जो दवा सूखगई थी उसमें क्रिस्टल बनगये थे और टिकियाके सूखनेपर धूपमें
१९	१६।१२	तो. मा. र. ३ २ ३	६ मा.	(६ पुट)	८ तो.	,,	१॥ घंटे	+	तो. र. ४ ० ७	ऽ२॥ सेर	तो. मा. र. ३ २ ३		देखनेसे काचकेसे कण चमकते थे जिससे जानपड़ताहै कि अब इस सोनेका सालवन चला ।
२०	२२।१२	तो. मा. र. ३ २ ३	६ मा.	कचनार और तुलसी	१०+५	,,	१७ घंटे	+	तो. मा. र. ४ ७ ७	ऽ५ सेर	तो. मा. ३ ३	मा. र. १ ५	टिकियाकी रंगत अवकी बार कत्थई निकली ५। १ को सूखी टिकियाको धूपमें देखा तो उसमें बहुत बारीक परमाणु काचकेसे क्या यह कोई साल्ट है
२१	३१।१०९	तो. मा. ३ ३	+	अर्क गुलाब	१॥ तो.	,,	८ घंटे	+	तो. मा. र. ३ ३ ४	ऽ२ सेर	तो. मा. ३ ३		टिकियाकी रंगत पुटान्तरसे अच्छी मिकली ।

सम्मति–मेरे विचारमें अब ये स्वर्णभस्म ठीक बनगई सोनेके कण अब इसमें चमकते दिखाई नहीं देते किसी रसकी भावनाके अनंतर सूखनेपर सफेद चमकदार परमाणु चमकने लगते हैं जो किसी प्रकारका साल्ट होसक्ताहैं रंगत भी अच्छीहै जिसको कत्थई कह सक्तेहैं।

तोल ३ तो० ३ मा० है जिसमें २ तो० स्वर्ण ६ मा० कांतीसार जो खल्वसे मिलगया ९ मा० जडी और पारदका अंश समझना चाहिये–

अभ्रपारद पातनसे अवशेष अभ्रभस्मको गजपुटकी आंच।

ता० १३। २। ०९ को अभ्रपारद पातनसे अवशेष भस्म ३५॥ तोले (जिसमें दूसरे और तीसरे पातनकी अवशेष १६॥ तोले और चौथे और पांचवें पातनकी ११ तोले और छठे और सातवें पातनकी ९ तोले [जो कांजीमें घोट एकबार गजपुटकी आंच देनेसे ८ तोले रहगई) भस्म थी] को श्वेत अर्कपत्रके ८ छटांक स्वरससे लोह खल्वमें घोट टिकिया बना सुखादी।

ता० २७ को सूखी टिकियाको तोला तो ४० तोले हुई बादको मुलतानीसे सने मोटे कपडे पर आकके पत्ते बिछा पत्रसहित उस कपडेको टिकियापर लपेट सुखादिया।

ता० २८ को उसपर दो रुपये बराबर मोटा मिट्टीका एक लेप और कर सुखादिया।

ता० २८ को उसपर दो रुपये बराबर मोटा मिट्टीका एक लेप और भी कर सुखादिया।

ता० ३। ३ को गजपुटकी आंच देदीगई।

ता० ४ को निकाला ता ऊपरसे और भीतरसे उत्तम कत्थई रंगकी निकली बीचमें बहुत थोडे भागमें खाकी रंग था तोलमें टिकिया ३२ तोले थी।

सम्मति–यह क्रिया उत्तम रही आगेसे इसी प्रकार पुट दिये जायँ, किन्तु गजपुटका प्रमाण कुछ बढादिया जाय।

सर्वधातुमारक उद्योग।

ता० ५।१२।० ७ को २ तोले ९॥ माशे मीठे तेलियेको सरोतेसे कतर सुपारियोंकेसे टुकडे कर काचके गिलासमें १ छटांक सिरकेमें (जिसमें आधी छटांक सेरके हिसाबसे बढिया चाँवल डाल औटा छान ४० दिनतक धूपमें रक्खा था) भिगो रखदिया, ये हररोज धूपमें रक्खा जाताहै और जब सिरका कम होजाताहै तब और डालदिया जाताहै जिसका नकशा नीचे दियागया है।

नक्शा।

तारीख	तोल सिरका	विशेष वार्ता–
५।१२।०७	५ तोले	
६।१२	२ तो० ६ माशे	
९।१२	१ तो० ५ माशे	
११।१२	२ तो० ६ माशे	
१५।१२	२ तो० ६ मा०	
१८।१२	२ तो० ६ मा०	
२३।१२	२ तो० ६ मा०	
२६।१२	२ तो० ६ मा०	
३१।१२	२ तो० ६ मा०	अब यह गाढा कढीसा होगया है और शीत अधिक होनेसे सूखता नहीं।
३।१	३ तो० ७ मा०	
१९।१	५ तो०	
	जोड ६॥ छटांक	

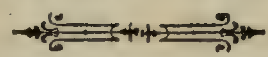
ता० १५। जनवरीतक ४० दिन होगये, एक सप्ताहसे बादल रहनेके कारण यह सूखता नहीं है धूप निकलनेपर निरंतर धूपमें रक्खाजावे।

ता० १६ अभीतक खूब तर गाढा है आज उक्त तेलियेके दोचार टुकडोंको खरलमें डाल पीसा तो उनमें कुछ सख्ती और अन्दरसे कुछ सफेदी मालूम हुई अत एव उसमें कुछ कच्चापन समझ सबको खरलमें पीस १ छ० सिरका उसमें और डाल उसी गिलासमें भर धूपमें रखना आरम्भ किया।

ता० १७ को इसके योगसे चांदीको अग्नि दीगई (देखो रजतभस्म) किन्तु कोई नतीजा न निकला।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया भाषाटीकायां स्वानुभूतधातुभस्मवर्णनं नामैकोनषष्टितमोऽध्यायः ॥ ५९ ॥

अवशिष्टाऽध्यायः ६०.



अंगरेजी क्रियाओंद्वारा पारदकी शुद्धीके अनुभव।

उस पारेपर जो सरवंदकनका (बाजारी शुद्ध) था और ३ मर्दनकी क्रियासे साधारण प्रकारसे शुद्ध भी होचुका था यह पारा यद्यपि चीनीकी रकाबीमें चक्कर देनेसे पूँछ न छोड़ता था किन्तु कागजकी रकाबीमें चक्कर देनेसे खूब पूंछ छोडता था जो रंगमें मैली होती थी।

शोरेके तेजाबसे शुद्धि नं० १

ता० १८। १। ०८ को $\frac{1}{2}$ छटांक शोरेके तेजाबके हलके सोल्यूशनमें (जिसमें $\frac{1}{10}$ तेजाब और $\frac{9}{10}$ पानी था) १२ तोलेके करीब पारा डाल रख दिया और कभी २ हिलाते रहे ता० २० तक ऐसा ही किया।

ता० २० के २ बजे पारेको निकाल धो चक्कर दे देखा तो खासी पूंछ छोडता था दुबारा फिर $\frac{1}{2}$ छटांक सोल्यूशनमें (जिसमें $\frac{1}{4}$ शोरेका तेजाब और $\frac{3}{4}$ पानी था) डाल रखदिया और कभी कभी हिलाते रहे।

ता० २१ के २ बजे देखा तो सोल्यूशन थोडा सफेद होगया था पारेको निकाल धो चक्कर दे देखा तो खासी पूंछ छोडता था तोला गया तो ५ रत्ती कम ११$\frac{1}{2}$ तोले हुआ। बादको फिर वैसे ही नये सोल्यूशनमें डाल रख दिया।

ता० २२ को ४ घंटे हिलाया २ बजे पारेको तेजाबसे निकाल धो तोला तो १० तोले १० माशे २ रत्ती हुआ। (७ मा० १ रत्ती घटा)

सम्मति–अब इस पारेको भलीभांति धो सुखा छान चीनीकी रकाबी और कागजकी रकाबीमें चक्कर दे देखा

तो बहुत ज्यादा और मोटी मोटी पूछ छोडता था जिससे सिद्ध हुआ कि यह क्रिया शुद्धिकी ठीक नहीं, पूंछ छोडना भी कम नहीं हुआ और पारद क्षय भी होगया।

फेरिक क्लोराइडसे शुद्धि नं० २

ता० २० को ऽ= नमकके तेजाबमें ६ माशेका लोहेका पत्र डाल रखदिया इसके डालनेसे तेजाबमेंसे बबूले उठते रहे।

ता० २१ को १३ तोले २ मा० पारेको उक्त बने फेरिक क्लोराइडके तेजाबमें डाल थोडा २ हिला रखदिया।

ता० २२ को ४ घंटे हिलाया, २ बजे पारेको पृथक् कर धो तोला तो १३ तो० १ मा. ३ र. हुआ ५ रत्ती घटगया।

सम्मति-यह पारा भी चीनीकी रकाबीमें दौडानेसे कम और कागजकी रकाबीमें दौडानेसे ज्याद: पूँछ छोडता था, कोई उत्तमता इस शुद्धिमें नहीं पाईगई।

बूहलसे शुद्धि नं० ३

ता० १८।१।०८ को ऽ॥ सेर पानीमें २॥ माशे पुटेशियम बाईक्रोमेट मिलाकर अनकरीब ३० बूंद गंधकके तेजाबकी डालदीं और ये सोल्यूशन बना रख लिया जिसका रंग गेंदई हुआ १५-१६ तोले पारा लेकर उसमें उतना ही (नापमें समान) सोल्यूशन डालकर १२॥ बजेसे निरंतर हिलायागया करीब २ मिनटमें उस सोल्यूशनका रंग भद्दा-मैला सुर्ख होगया इसको कभी २ हिलाते रहे कुछ देर बाद-से इसकी यह हालत हुई कि जब इसको रखदेते थे तो ऊपर हरासा पानी नितर आता था और नीचे पीली गाद पारेपर बैठ जातीथी।

ता० १९ को भी कभी २ हिलाया और रक्खा रहने-दिया आज पानीकी रंगतमें कुछ हरियाई बढगई थी लेकिन गादका रंग पीला ही होता था।

ता० २० को २ बजेतक रक्खा रहा आज पानीकी हरिआई तो न बढी किन्तु गादका रंग भद्दमैला होगया था। २ बजेपर इसको साफ पानीसे धो डाला फिर और सोल्यूशन मिला हिलाना आरम्भ किया थोडा हिलाकर आज रखदिया।

ता० २१ को २ घंटे खूब हिलाया बादको ठहराया तो ऊपर हरा पानी और नीचे पीली गाद ता० १९ को सी ही बैठी। २ बजे पारेको सोल्यूशनसे निकाल तोला तो १५॥ तोले हुआ बादको नया सोल्यूशन डाल थोडी देर हिला रखदिया।

ता० २२ को ८ बजेसे १२ बजेतक ४ घंटे हिलाया फिर ठहरानेपर सोल्यूशनकी रंगत पहलीसीही हरी और गादीरंगत पहलीहीसी पीली होगई २ बजे पारेको निकाल धो तोला तो पूरा १५॥ तोले हुआ।

१ सम्मति-इस पारेको धो सुखा छान चक्कर दे देखा तो चीनीकी रकाबीमें थोडी, और कागजकी रकाबीमें बहुत पूंछ छोडता था इस क्रियामें भी कुछ उत्तमता न दीखपडी।

२ सम्मति-इस सोल्यूशनमें रांग, सीसे और जस्तके टुकडे पृथक् २ डाल २ दिन रक्खे तो रांग और सीसेपर इनका नाममात्रको भी असर न हुआ जसदपर अलबत्ता बहुत थोडा असर दीखपड़ा।

गंधकके तेजाबसे शुद्धि नं० ४

ता० १८ को १८ तोलेके करीब पारेको एक शीशीमें भर नापमें समान गंधकका खालिस तेजाब डाल रखदिया। कभी २ थोडा हिला भी दिया, ता० २१ तक रक्खारहा।

ता० २१ को निकाल तोला तो ५ रत्ती कम १८ तोले हुआ उसे फिर नये तेजाबमें डाल थोडा हिला रखदिया।

ता० २२ को पारेको ४ घंटे हिलाया २ बजे तेजाबसे पारेको निकाल धो तोला तो ६ रत्ती कम १८ तोले हुआ (१ रत्ती घटगया)

सम्मति-इस पारेको चीनीकी रकाबीमें चक्कर दे देखा तो पूंछ न थी किन्तु कागजकी रकाबीमें दौडानेसे पूंछ यह भी छोडता था।

दूषित पारदकी शुद्धि शोरेके तेजाबसे।

ता० २०।१।०८ को दूषित पारदको जो बगैर छना ११ तोले ८ माशे था और ६ बार छन कर जो ११ तोले ६ माशे रहगया था शीशीमें भर १ औंस शोरेके तेजाबके सोल्यूशनमें जिसमें $\frac{1}{4}$ तेजाब और $\frac{3}{4}$ पानी था डालकर हिलाया और रखदिया।

ता० २१ को २ घंटेके करीब खूब हिलाया बादको निकाल धो तोला तो ११ तो० ५ माशे ४ रत्ती हुआ कुछ पारा इसमेंसे गिरगया अब ११ तो० ३ माशे ६ रत्ती है इसको फिर वैसेही ($\frac{1}{4}$ तेजाब और $\frac{3}{4}$ पानीसे बने) सोल्यूशनमें डाल रखदिया।

ता० २२ को ४ घंटे हिला रखदिया २ बजे पारेको निकाल धो तोला तो १० तोले ११ मा० ३ रत्ती हुआ (४ माशे ३ रत्ती घटगया)

१ सम्मति-इस पारेको सुखा छान दौडाकर देखा तो चीनीकी रकाबीमें बारीक और कागजकी रकाबीमें मोटी पूंछ छोडता था किन्तु शोरेके तेजाबसे शुद्ध हुये साधारण शुद्ध पारद और इस पारदकी पूंछमें कुछ विशेष अंतर न था।

२ सम्मति-यह भी जानपडा कि पटसारनसे भी बहुत सा मैल पारदका पृथक् होजाताहै।

मरक्यूरिकसलफेट।

ता० २७।१।०८ को २ तोले पारेको $\frac{1}{2}$ औंस गंधकके तेज तेजाबमें डाल आतिशी गिलासमें भर हलकी गर्मी स्प्रिट लैम्पसे देते रहे और दो बार आधा आधा औंस तेजाब और डाला और गिलासको ढका रक्खा और हिलाते रहे तो सल्फेट बनता रहा सफेद रंग चूनासा करीब ५ घंटेतक आंच लगी बादको जैसेका तैसा रक्खा छोडदिया।

ता० २८ को सुबह देखनेसे मालूम हुआ कि ऊपर कुछ कलमें हैं और नीचे कुछ बुरादासा है सबसे नीचे थोडासा पारा भी बाकी है इन सफेद कलमों और बुरा-देको निकालकर बाकी पारा उसी बचेहुये तेजाबमें डाल-करके वालूभरे तवेपर रख नीचे हलकी आंच दी। तो पारा बुलबुलानेलगा और फिर सफेद चूनासा बननेलगा। १॥ बजेतक सब पारा खतम होगया फिर ठंढा होनेको रखदिया।

ता० २९ को देखा तो ऊपर पानी था और नीचे सफेद चूनासा बैठगया था। ऊपरके पानीको नितार दिया और नीचेके सल्फेडको पानीसे धोया। इस धोवनको नितरे हुये तेजाबमें मिलादिया, इसके मिलानेसे तेजाबमें जो सल्फेड था सो भी सफेद बुरादासा बनगया और थोडी देर ठहरानेसे नीचे बैठगया, ऊपरके पानीको फेंक नीचे बैठेहुये सल्फेडको असली सल्फेडमें मिलाकर सुखादिया। धूपमें रखनेसे ऊपरकी रंगत मटैलीसी होती जाती थी, इस लिये उठा सायामें सूखनेको रखदिया।

ता० ३० और ३१ को सायेमें सूखतारहा।

ता० १। २ को देखा तो फिर अधिक गीला मालूम हुआ, इसका कारण यह होगा कि आज बादल होनेसे हवाकी सीलसे गीला होगया था।

ता० २ को इसको सोख्तेसे सुखालिया।

ता० ३ को चीनीकी थालीमें रख बालू भरे तवेपर रख अँगीठीपर रक्खा जब धुआं निकलना बंद होगया उतार पुडियामें बांध रखलिया।

परीक्षा।

इसमेंसे थोडीसी कलमें लेकर प्लेटीनम (एक सफेद धातुका नाम) की घरियामें रख स्प्रिट लैम्पकी आंच दी तो कुछ असर न हुआ, जब ब्लोपाइपसे फूंका तो किसी कदर कहीं २ सुर्खी आगई थी लेकिन इससे आगे और कुछ न हुआ। फिर कौलोंके अंगारोंपर रक्खा तो उससे भी कुछ न हुआ, मगर जरा धोंकनीसे धोंकते तेलसा होकर खटकने लगा और स्याही माइल सुर्ख होकर उडनेलगा। बीचमें निकाल कर ठंढाकिया तो पीला होकर जमगया। फिर आगपर रखनेसे पहले कीही तरह खटक कर उडना आरम्भ होगया और अखीरतक सब उडगया जरासी राख रहगई।

मरक्यूरससलफेट।

सम्मति–गंधकके तेजाबमें पानी मिलानेसे बहुत बडी गर्मी पैदा होतीहै यहांतक कि शीशेके बर्तनको तोडदेताहै अत एवं बहुत थोडा २ पानी मिलाना चाहिये।

ता० २७ को २ तोले पारेको $\frac{1}{2}$ औंस हलके (२५ फी सदीके) गंधकके तेजाब सहित आतिशी गिलासमें भर बालूभरे तवेपर रख नीचे आंच दी तो पारा तेजाबमें हल होतागया। ३ घंटे बाद १ औंस हलका (२५ फी सदीका) तेजाब और डालदिया और उसी तरह आंच-देते रहे। शामके ६ बजेतक आंच दी बादको ज्योंकात्यों रक्खा छोडदिया। इस समय इसमें कुछ सफेद कलमें बननी शुरू होगई थीं।

ता० २८ को भी १० बजेसे बालूभरे तवेपर आंच दीगई तो कलमें बढती गई ३ बजेपर इसमेंसे बचा पारा जुदाकर उसको बाकी रहे तेजाबमें डाल थोडा पानी और मिला गरम करना आरम्भ किया शामके ६ बजेतक गर्म-किया मगर कुल हल नहीं हुआ।

ता० २९ उसमेंसे थोडा पानी और मिला फिर गर्म करनेको रखदिया मगर और ज्यादा हल न हुआ।

ता० ३० को ऐसे ही रक्खा रहा।

ता० ३१ को सोल्यूशनको नितार कर फेंकदिया औ तहनशीन (नीचे बैठे हुए) हुए सल्फेटको अलग कर लिया और बचे पारेको अलग कर लिया, इस सल्फेटमें पहली बनी कलमें मिला सायेमें सूखने रखदिया।

ता० १ को खुश्क नहीं हुआ था इसलिये सोख्तेसे सुखालिया।

ता० ३ को चीनीकी प्यालीमें बालूभरे तवेपर रख अँगीठीपर रखदिया जब धुआँ देना बंद होगया उतार पुडिया बांध रख दिया।

सम्मति–इसको फिर आंच तवेपर रख दी तो रंगका-मैलापन दूर होकर सफेद होगया।

परीक्षा।

९ माशे ५ रत्ती मरक्यूरस सल्फेटको तामचीनीकी तश्तरीमें रख शीशेके ढक्कनसे ढक स्प्रिटलैम्पकी हलकी आंच दी तौ१०-१५मिनटमें ऊपरके ढक्कनका रंग कालासा पडगया किन्तु खोल देखा तो कलमें जैसीकी तैसी रक्खी थी $\frac{1}{2}$ घंटेतक और अग्नि दी तौ शीशेके ढक्कन पर उडकर थोडा जम गया था जिसे खुरचा तौ १ रत्तीके करीब पारा निज रूपमें निकल आया मरक्यूरस सल्फेटको तोला तो ९ मा० १ र० हुआ।

पुनः परीक्षा।

६ माशे मरक्यूरस सल्फेटको लोहेकी रकाबीसे ढके जौनपुरी डौरूयंत्रमें रख १ प्रहर मृदु, मध्य, तीव्राग्नि दी तो बिना किसी विकृतीके २ भाग उडकर १ भाग अर्थात् २ माशे रहगया जो लोहेकी रकाबी ऊपर ढकी थी उसपर कुछ कालीसी राख दीखपडती थी उसको धोया तौ माशे भरके करीब पारा निकल आया इससे सिद्ध हुआ कि ये पातन होसक्ताहै।

मरक्यूरिक नाइट्रेट।

ता० २७। ११। ०८ को २ तोले पारेको १ औन्स तेज शोरेके तेजाब (जो बाजारसे खरीदा) सहित आति-शी गिलासमें भर वाटरबाथपर गर्म किया तो बहुत तेजीसे तेजाब पारेको खानेलगा अर्थात् पारेपर उबाल आतेरहे और गिलासमेंसे पीला धुआं (नाइट्रस फ्यूमस) निक-लता रहा $\frac{1}{2}$ घंटेके करीबमें सब पारा तेजाबमें हल होगया थोडेमें नमकका पानी डाल देखा तो तहनशीन होने लगा जिससे जानागया कि यह मरक्यूरस है अतएव $\frac{1}{2}$ औन्स तेजाब और डाल $\frac{1}{2}$ घंटे स्प्रिटलैम्पपर और उबाला बादको उपरोक्त प्रकारसे जाचा तो कुछ भी तहनशीन न हुआ जिससे सिद्ध हुआ कि यह मरक्यूरिक होगया फिर रखदिया।

ता० २८ को देखा तो उसमें नीचे कुछ सफेद कलमें बनकर जमा होगई थीं जिनको निकाललिया।

ता० २९–३० को यह कलमें रक्खी रहीं।

ता० ३१ को इनकी तरीको सोख्ते कागजसे सुखा सायेमें सूखनेको रखदिया पानीमें डालदेखा तो मरक्यूरस बना जो पानी बाकी था उसको गरमी देकर उडाया यहांतक कि उसमें बिलकुल पानी न रहा रंग उसका पीला पडगया पानी डालनेसे मालूम हुआ कि यह पीला साल्टपानीमें न घुलनेवाला मरक्यूरस नाइट्रेट बनगया इसलिये तेज शोरेके तेजाबमें उबाला और फिर वाटरबाथ, (यह कढाईनुमा

एक ताम्रका यंत्र होताहै इसमें पानी भर ऊपर औषधिका पात्र रखदेते हैं और नीचे स्पिटलैम्प वा गर्भरेतकी (गर्मी दी जातीहै) पर सुखाया तो जब पानी घटगया तो फिर मरक्यूरस ही बना इसलियेः मरक्यूरिक बनानेकी कोशिश छोडदी ।

मरक्यूरस नाइट्रेट ।

ता० २६ ।१। ०८को शामको ३ तोले पारेमें २ औन्स हलका (२० फीसदीका शोरे) शोरेका तेजाब डाल रखदिया ।

ता० २७ को अकसर हिलाते रहे ।

ता० २८ को १० बजे बालूभरे तवेपर रख नीचे आंच दी तो थोडी देरके बादसे बबूले उठने शुरू होगये तेजाबका रंग साफ रहा बहुत सा पारा बाकी देख २॥ बजे ½ औन्स तेज तेजाब और डालदिया और उसको ठंढा शामतक हिलवाते रहे तो बहुतसी कलमें बनगई ।

ता० २९ को जितनी सफेद कलमें उसमें बनगई वह सब निकाललीं बाकी पारेको उसी तेजाबमें डाल हिलाना आरम्भ किया ३ बजेके करीब देखा तो बहुत थोडी कलमें बनी थीं पारा करीब २ सब मौजूद था, इसलिये सोल्युशनको नितार कर अलग करलिया और बचा पारा भी निकाल लिया सोल्यूशनमें ८।१० गुना पानी मिलाया तो उसमें सफेद तलछट बैठगई पानी नितार उस तलछटको दुबारा बनीहुई कलमोंमें जिनको धो लिया था मिलादिया इनका रंग उन कलमोंसे जो पहले ता० २८ को बनी थी और निहायत सफेद थी बहुत मैलारहा (पानीसे धोने और तलछट मिलानेसे रंग खराब हुआ)

ता २० को यह सायेमें सूखते रहे ।

ता० ३१ को रंग साफ करनेके लिये इसका ½ औन्स हलके (¼ तेजाब ¾ पानी) तेजाबमें गर्मी देकर हलकिया चूंकि इसमें तेजाब और मिलगया था इस लिये कलमें बनानेमें देर होती इसलिये इस सोल्यूशनको मरक्यूरिक औक्साइट बनानेके काममें लेलिया और कुश्तेजात बनानेके लिये, जो मरक्मूरस नाइट्रेट, बनाया था उसमेंसे थोडी कलमें निकाल लीं और सोख्तेसे सुखा इसकी जगह रख ली इनका रंग पहले सफेद था फिर बसंती होगया फिर वाटरबाथ पर सुखाया तो पिघलनेका डरलगा इसलिये फिर धूपमें प्रहरभर बाद सूखजानेपर हाथसे तोडकर बुरादा करदिया तो अन्दरसे सफेद निकला थोडा और सुखा पुडिया बांध रखदिया ।

परीक्षा ।

इन कलमोंमेंसे थोडेसे कोप्लेटीनमकी घरियामें रखकर स्प्रिट लैम्पकी गर्मी दी और ब्लोपाइपसे फूंका भी मगर कुछ असर न हुआ फिर कोयलोंकी आंचके ऊपर रक्खा तो खूब खदका और थोडी देरके बाद सुर्ख धूआं निकलने लगा, जब धुआं निकल चुका तो सुर्खी माइल काले रंगका चूर्ण दीखपडा आंचसे उतारा तो रंग उसका सुर्खी माइल पीला होगया जो फिर आंचपर रखनेसे काला होजाता था और आगसे उतारनेसे पीला होजाता था, इसको पारेका कुश्ता बताया गया ।

मरक्यूरसक्लोराइड ।

ता० ३० । १ । ०८ को १ औन्स शोरेके तेजाबमें २तोले ११ माशे पारा डाल कर रखदिया, पारेके डालते ही तेजाब उसे खाने लगा और सुर्ख धुआं बहुत जोरसे निकलने लगा ४–५ मिनटमें सब पारा खाचुकनेपर १ तोला पारा और डाला तो इसके डालनेसे धूआं तो निकला किन्तु बहुत हलका, ये पिछला डाला हुआ १ तोला पारा भी करीब १५ मिनटमें हल होगया । इसके बाद ७ माशे पारा और डाल दिया, थोडी देरके बाद इसमें कुछ सफेद तलछट बनना आरम्भ हुआ इससे मालूम हुआ कि साल्यूशनसे च्युरेटेडसे जियादा होगया, मगर अवशेष पारा अब भी बुलबुलाता था, बादको स्प्रिटलैम्पकी आंच दी तो इसमें कुछ सफेद चूनासा नीचे बैठगया इसको अलग कर लिया, इस चूनेमेंसे थोडासा तेज तेजाब और डाल उबाला तो सब चूना मिलगया और अवशेष पारा भी मिलगया जिससे सिद्ध हुआ कि जब तेजाब बहुतसा पारा खालेताहै तो तलछट छोडता है, इस पारेके मिलजानेके बाद ६ माशे पारा और डालदिया जिसके डालते ही पारा बुलबुलाने लगा और पहलासाही लाल रंगका धुआं देने लगा जिससे जान पडा कि तेजाबमें खादक शक्ति विद्यमान है गिलासको उतार थोडी देर ठंढाकर देखा तो करीब ४ रत्तीके पारा हल होनेसे बचरहा था उसको निकाल लिया और पहले निकले तेजाबको भी इसीमें मिलादिया और गर्म करनेको रखदिया तो १०–१५ मिनट बादसे फिर चूनासा बननेलगा इसमें थोडासा तेजाब डाला मगर कोई खास असर नहीं दिखाई दिया तब ६ माशे पारा और डाल दिया तो एकदम पारा बुलबुलाने लगा और नीचे कुछ सुर्खसा बैठगया जो कि पारेका कुश्ता मालूम हुआ, इससे सिद्ध होताहै कि जो सफेद चूनासा बनना शुरू हुआ था– वह तेजाबकी कमीके कारण नहीं था बल्कि और न घुलने वाले, सब नाइट्रेट, बनगये थे जब नया पारा डाले हुएका घुलना बंद होगया तो इस सोल्यूशनको उबलते हुए दूसरे सोल्यूशनमें (जो ५॥ तो. नमक और ९ छ. पानी और १०–१५ बूंदें नमकके तेजाबकी डाल छानकर तय्यार कियागया था)आहिस्ता२कुल डालदिया और बराबर चलाते रहे इससे मरक्यूरस क्लोराइड, बनगया इसको उठाकर एक जगह आध घंटेतक रखदिया जिससे पानी नितर आया और चूनासा नीचे बैठगया, इस पानीको नितार छान फेंकदिया और पानी डाल गर्म किया और आध घंटे ठहरा नितार छान यह पानी भी फेंकदिया ।

ता० ३१ को फिर करीब १ सेर पानीमें खूब उबालकर छान लिया और सुखानेको रखदिया ।

ता० १ को सायेमें सूखता रहा ।

ता०२को सोख्तेको निकाल तामचीनीकी तश्तरीमें सूखनेको धूपमें रखदिया ।

ता० ३–४ को धूपमें सूखता रहा ।

ता० ५ को देखा तो करीब २ सूखगया था लेकिन और भी सूखता रहा ।

ता० ७ को खूब सूखजानेपर पुडियाँ बांध हवाले करदिया ।

परीक्षा।

३ माशे मरक्यूरस क्लोराइडको तामचीनीकी तश्तरीमें रख स्प्रिटलैम्पकी आंच दी तो शीघ्र ही तश्तरीपर ढकेहुए शीशेके ढक्कनपर रसकपूर अपने ही रूपमें उडकर जमने-लगा। जिसके खुरचनेसे अच्छा श्वेतचूर्ण मिला।

मरक्यूरिक क्लोराइड।

ता० २। २। ०८ को १ हिस्सा शोरेका तेजाब और ३ हिस्से नमकका तेजाब मिलाकर बनेहुए १½ औन्स तेजा-बमें २ तोले पारा डालदिया डालनेके बाद पारा स्याह होगया और कुछ चिकटसागया बाद इसके गर्म करनेसे आहिस्ता आहिस्ता २ घंटेमें सब पारा हल होकर तेजाबमें गायब होगया।

ता० ३ को बालू भरे तवेपर चीनीकी प्यालीमें रख गर्म किया तो धीरे २ उसका पानी उडनेलगा, यहां तक कि खुश्क होकर पीला सफूफ बनगया फिर भी गर्मी देना जारी रक्खा यहांतक कि तमाम तेजाब निकलगया और सफूफ सफेद रहगया।

ता० ४ को कलमें बनानेकी गरजसे करीब १॥ छ. पानीमें डाल गर्मी दे हल होनेपर चीनीकी प्यालीमें कलमें बननेको रखदिया। रातको कुछ कलमें बनगई थीं उनको ता० ५ को अलग करनेके लिये उनके ऊपरसे सब पानी नितार लिया और कलमोंको बदस्तूर प्यालीमें सूख-नेको रखदिया और नितरेहुए पानीको दूसरे प्यालेमें भर स्प्रिट लैम्पपर करीब ½ घंटे गर्मकर कलमें बननेको फिर रखदिया शामको देखा तो कलमें बनकर नीचे बैठगई थीं और ऊपर पानी नितर आयाथा।

ता० ६ को ऊपरसे पानी नितार दूसरी थालीमें कर लिया और नीचेकी कलमोंको धूपमें सुखालिया। इसके ऊपरके नितरेहुए पानीको स्प्रिटलैम्पकी गर्मी दे आधा रह-जानेपर उतार ठंढाकर रखदिया, थोडी देरबाद इसमें भी कुछ लाल रंगकीसी कलमें बनकर नीचे बैठगई और ऊपर जरासा पानी रहगया।

ता० ७ को इनके ऊपरका पानी फेंकदिया और कलमें सुखानेको रखदीं कलमें सूख जानेपर सफेद मैले रंगकी थीं इनको तामचीनीकी रकाबीमें रख और ऊपर शीशेका ढक्कन ढक स्प्रिटलैम्पकी हलकी आंच दी तो १०–१५ मिनटमें ही उडकर बहुत सफेद बालबालसी पतली कलमें बनकर ढक्कन भरगया था, जितने पारेके साल्टबने उनमें यह सबसे जल्द उडता है।

परीक्षा।

१ माशे मरक्यूरिक क्लोराइडकी कलमोंको जो बहुत ही मैली थीं तामचीनीकी प्यालीमें रख शीशेके ढक्कनसे ढक स्प्रिटलैम्पकी हलकी आंच दी तो १५ मिनटमें ही यह अपनी जगहसे उडकर बहुत थोडा ऊपर ढके शीशेके ढक्कनसे और बहुत ज्यादः शीशेके ढक्कनके सहारे तश्तरीमें ही घेरा बांधकर जमा होगया था और इसकी असली जगहपर काले रंगका मैल रहगया था। ये निहा-यत सफेद और निहायत बारीक कलमें बनी थीं और तोलमें ५ रत्ती रहगईथीं।

मरक्यूरिक औक्साइड।

३१।१।०८ को ८ तोले पारेको १½ औन्स शोरेके तेजाबमें २ बजे डालदिया पारा पडते ही खूब बुलबुलाने-लगा और सुर्ख रंगका धुआं उठनेलगा शामतक कुछ थोडा पारा रहगया बाकी सब घुलगया।

ता० १।२ के सुबहको सफेद कलमें मरक्यूरस नाइट्रे-टकी बनगई थीं और नीचेका पारा ज्योंकात्यों मौजूद था उसके ऊपर कुछ पीलापन आगया था (साफ २ कल-मोंको निकाल कर सोख्तेसे सुखा अलग रख दिया और पहले मरक्यूरस नाइट्रेट बनानेके कर्ममें वें पत्रपर बना मरक्यूरस नाइट्रेट साल्ट जिसका रंग भदमैला होगया था थोडेसे तेज शोरेके तेजाबमें हल करके बाकी बची कलमोंमें मिलादिया और सबको उबाला अब भी पारा थोडासा और बाकी रहगया)

ता० २ को देखा तो तमामकी कलमें बनगई थीं इन कलमोंको निकाल चीनीकी रकाबीमें रख बालूभरे तवेपर गर्म किया तो थोडी देरबाद सब पिघलगया और सुर्ख धूआं निकलनेलगा, थोडीदेरमें तमाम खुश्क होगया और रंग बसंती होगया, इस तमामको खुर्च निकाल लिया फिर बारीक पीसकर चीनीकी रकाबीमें रख बालूभर तवेपर रख गर्म करनेको रख दिया तो रंग स्याह होता गया ३ बजे उतार लिया तो कुछ जर्रे पीले पीले मौजूद थे और बाकीका रंग गेंदई होगया था इसको खरलमें घुटवाया और फिर बालूभरे तवेपर गर्म किया यहांतक कि तमाम काले रंगका होगया, उतारनेपर सबका गेंदई रंग होगया, इसको पुडिया बांध रखदिया, अनुभव हुआ कि बसंती रंगके कुश्तेको किसी प्रकारसे आंच देनेपर रंग गेंदई सुर्ख होजाताहै।

मरक्यूरस और मरक्यूरिक औक्साइड।

३ छटांक पारेको ३ औन्स शोरेके तेजाबमें हल कर-नेको रखदिया, पारा डालते ही खूब जोरसे बुलबुलाने-लगा। ½ घंटे बाद मालूम हुआ कि पारेका बुलबुलाना बंद होगया थोडीसी स्प्रिटको गर्मीदी उस वक्त थोडी देर बुलबुला कर बंद होगया, इस बचे पारेको निकाल लिया जो तोलमें ९॥ माशे था, इसतरहसे बने मरक्यूरस साल्यू-शनमेंसे थोडा निकाल लिया और इसमें सोडियम हाई-ड्रेटका साल्यूशन जिसके बनानेकी विधि दूसरी जगह लिखी है डाला तो काली तलछट बनना शुरू हुई सोल्यू-शन उस वक्ततक थोडा २ डालते रहे जबतक कि तल-छटका बनना बंद होगया। यह तलछट थोडी देर रख-नेसे सब नीचे बैठगई और ऊपरका पानी नितर आया पानीको नितार फेंकदिया तलछटको दूसरे साफ पानीसे खूब अच्छीतरह धो डाला और फिर पानीको नितार फेंक-दिया और तलछटको सोख्तेमें छान सुखालिया तो भद्दी काली रंगत होगई यह मरक्यूरस औक्साइड बनगया उक्त बचेहुए साल्यूशनको मरक्यूरिक बनानेके लिये उसमें अन-करीब १। औंस शोरेका तेजाब और डाल कर स्प्रिटलैम्प-पर उबाला यहांतक कि इस साल्यूशनकी १ बूंद पानीमें डालनेसे सब हल होजाती थी सफेद रंग जरा भी न देती थी जिससे सिद्ध हुआ कि यह मरक्यूरिक बनगया था,

इस वक्त, सोडियम हाइड्रेट, डाला जिससे पीली तलछट बनना शुरू हुई इस सोडियम हाइड्रेटको उस वक्ततक डालते रहे कि और तलछट बनना बंद होगया, थोडी देर ठहरानेके बाद तलछट तमाम नीचे बैठगई इसको गर्म पानीसे धोडाला और सोख्ते कागजेमें छान सुखानेको रखदिया (यह मरक्यूरिक ऑक्साइड पीले रंगका बना) जब थोडा सूखगया तब बाल्भरे तवेपर चीनीकी रकाबीमें रख गर्म किया जब खूब अच्छीतरह सूखगया तब पुडिया बांधकर रखदिया।

परीक्षा।

६ माशे मरक्यूरिक ऑक्साइडको तामचीनीकी तश्तरीमें रख शीशेके ढक्कनसे ढक १ घंटे स्प्रिटलैम्पकी आंचदी तो शीशेके ढक्कनपर बहुत थोडी बसंती रंगत छागईथी और मरक्यूरिक ऑक्साइडकी रंगत गहरी पीली होगई थी, तोलमें ३ रत्ती कम होगई।

पुनः परीक्षा।

ता०९।२।०८ को१ तोले मरक्यूरिक ऑक्साइडको लोहेकी रकाबीसे ढके जौनपुरी डौरूमें रख १ घंटे मृदु मध्य अग्नि दी तो इसका रंग गहरा पीला होगया था निकाल तोला तो ९.माशे ४ रत्ती रहगया, ऊपर ढकी हुई तश्तरीमें सफेदी छागई थी उसे खुरचा तो करीब ४ रत्तीके पारा निकला।

ता० १० को उक्त ९ माशे ४ रत्ती मरक्यूरिक औक्साइडको उसी प्रकार जौनपुरी डौरूमें रख पुनः ४ घंटे आंच दी तो पीलाई कुछ और बढगई और तोलमें केवल ३ माशे रहगया ऊपर ढकी हुई लोहेकी रकाबीपर जो सफेदी जमगई थी उसको पोंछागया तो ३ माशे पारा और कुछ राखसी निकली।

सम्मति–यद्यपि यह औरोंसे अधिक अग्नि चाहता है परन्तु डौरूमें पातन होताहै अत एव इसको कहांतक भस्म कहसक्ते हैं इस्में शंकाहै।

पारदसिन्दूर।

ता० ३।२।०८ को ५ तोले पारद और २ तोले गंधक बगैर शुधीको थोडा थोडा चुटकीसे डाल मृदु तप्त खल्वमें ११ बजेसे २ बजेतक मर्दन किया। २ बजेसे शीत खल्वमें ५ बजेतक घोटा सब पारेकी कज्जली होगई अब रवे नहीं दीखते थे।

ता० ४ को २ तोले अंगरेजी जवाखारको ३ छटांक पानीमें घोललिया और २ तोले बे बुझे नये चूनेको २ छ० पानीमें घोललिया और दोनों पानियोंको मिलालिया मिलातेही कुछ सफेद तलछट बनी जो थोडी देर ठहरानेके बाद नीचे बैठगई इसको सोख्ते कागजमें बतौर रैनीके चुआ साफ पानी नितार लिया जो पोटेशियम हाइड्रेट बनगया, इसमेंसे ३ छ० शीशेके गिलासमें डाल उसमें उपरोक्त कज्जली डाल घोलदी और उसको वाटरबाथपर रख १॥ बजेसे ५०–५५ नं० की गर्मी देना आरम्भ किया और कभी २ शीशेकी कलमसे चलाते रहे इसीतरह ५ बजेतक आंच दी जिस वक्त उसका हिलाना बंद करदेते थे और पानी नितर आता था तो पानीका रंग सुर्खी माइल पीला होजाता था ता० ५ को ११ बजेसे फिर उसी तरह आंच पर गर्मी देना और चलाना आरम्भ किया ३बजेपर पानीका रंग सुर्ख होगया था ५ बजेतक गर्मी थी बादको उतार रखदिया।

ता० ६ को ८ बजेसे फिर उसीतरह वाटरबाथपर गर्मी देना शुरू किया, घंटे दो घंटे बाद गिलासमें पानी जब अन्दाजसे कम होजाता था तब १०–२० बूंद पानी और डालदेते थे और जबतब शीशेकी कलमसे चलादेते थे शामके ५ बजेतक इसी तरह किया बादको उतार रखदिया।

ता० ६ को ८ बजेसे फिर उसीतरह वाटरबाथपर गर्मी देना शुरू किया,घंटे दो घंटे बाद गिलासमें पानी जब अन्दाजसे कम होजाता था तब १०–२० बूंद पानी और डालदेते थे और जबतब शीशेकी कलमसे चलादेते थे शामके ५ बजेतक इसी तरह किया बादको उतार रखदिया।

ता० ७ को वाटरबाथपर ९ घंटे आंच दीगई।

ता० ८ को रक्खारहा।

ता० ९ को सबेरे ऊपरका पानी नितार परीक्षाके लिये शीशेमें भरलिया और २ छ० नया बना पुटेशियम हाईड्रेट डाल ४ घंटे ४०–५० दर्जेकी आंच दी।

ता० १० को भी ११ बजेसे शामके ५ बजेतक आंच दी किन्तु नीचे बैठी कज्जलीका रंग सुर्ख न हुआ, लाचार छोडदिया और ऊपरका पानी फेंक कज्जलीको ३–४ दिन धूपमें रख सुखालिया, अब कज्जलीका रंग काला कत्थई है और तोल ५ तोले ९ माशे है।

ता० ९ में नितरेहुए पानीको जो पाव भरके करीब होगा तामचीनीके कटोरेमें भर चूल्हेपर १ घंटे मंदाग्नि दी खुश्क होजानेपर कटोरेसे खुरच तोला तो ३ रत्ती कम ११ माशे गंधक पीले रंगका निकला जो आगपर डालनेसे गंधककी ही तरह पिघलकर जलता था, बादको फिर इसे लोहेके खरलमें बारीक पीस कर करीब पाव भरके पानी डाल रख दिया, रातभर रक्खे रहनेके बाद सबेरे देखा तो पानीके ऊपर सफेद मलाईसी जमरही थी, अन्दर पीला पानी था, नितारनेपर नीचे कोई चीज बैठी न दीखपडी. जिससे सिद्धहुआ कि, पुटेशियम हाइड्रेटमें औटानेसे गंधक घुलजाता है और फिर पानीको जलानेसे गंधक और पुटेशियमका साल्ट बनजाता है जो ठंडेही पानीमें घुलजाताहै।

बाबू ईश्वरदासके चलेजानेके बाद उपरोक्त क्रियाका पुनः उद्योग।

ता० २२।२।०८ को पूर्वोक्त ५ तोले ९ माशे कज्जलीको (जिसमें ५ तोले पारा था) ४ छ० पुटेशियम हाईड्रेटमें घोल तामचीनीके कटोरेमें भर बालूभरे तवेपर ८ बजेसे १० बजेतक २ घंटे गर्मीदी, बादको ३ बजेतक धूपमें रक्खा रहा फिर १॥ घंटे आंचपर गर्मी और दी और रखदिया।

ता० २३ के सबेरे देखा तो कुछ सुर्खीकी झलक दीखपडी और पानी जल कर तिहाई रहगया होगा उसमें ऽ= आध पाव पुटेशियम हाईड्रेट और ऽ– पानी डाल तवेपर फिर ८ बजेसे गर्मी देना आरम्भ किया, इतनी गर्मी दी जिससे बबूलेसे उठते थे, १० बजे १ छ० पानी और डाल दिया, ११ बजे देखा तो रंग खूब सुर्ख होगया फिर धूपमें रखदिया, शामको नितारनेको रखदिया।

ता० २४ के सबेरे देखा तो ऊपर गाढा पानी जो करीब आध पावके होगा नितर आया था और सुर्ख गाद नीचे बैठगई थी, पानी फेंकदिया और, और पानी डाल घोल विठाल नितार फेंकदिया, इसी तरह दूसरा पानी दोपहरको बदलदिया।

ता०२५ को भी दो पानी बदले, अभी पानीमें थोडा चिकनाहट था।

ता० २६ को भी दो पानी बदले।

ता० २७ को पानीमें चिकनाहट, न पायागया इस वास्ते पानीको नितार धूपमें सूखनेको रखदिया।

ता० १। ३ तक सूखा।

ता० ४ को कटोरेसे निकाल चीनीके खरलमें पीस तोला तो ५ तोले ५ माशे ४ रत्ती रससिंदूर लाल रंगका तय्यार हुआ।

सोडियम हाइड्रेट बनानेकी क्रिया।

ता० ५। २। ०८ को ऽ॥ सेर सोडेको १॥ सेर पानीमें डाल उबाला तो घंटे भरमें घुलगया और करीब ऽ॥ सेर बेबुझे चूनेको २ सेरके करीब पानीमें भिगो घोल छानलिया। ऊपर बने सोडेके पानीको और इस चूनेके दूधको दोनोंको मिलादिया, पानी थोडा समझ करीब १॥ सेरके पानी और डाल ½ घंटे औटाया इस पानीमेंसे करीब ६ माशे पानीले उसमें दो चार बूंद नमकके तेजाब की डालीं तो बबूले न दिये अत एव उसे ठीक समझ अँगीठीसे उतार रख दिया, रातभर रक्खे रहनेके बाद–

ता० ६ को उतार नितरे हुये पानीको सोख्ते कागजमें छान डाला और तामचीनीके बडे कटोरेमें उबाल आधा रहजानेपर दो बोतलोंमें भर रखदिया।

सम्मति–इस तय्यार हुये सोडियम हाइड्रेटमेंसे ६ माशेमें दो एक बूंद शोरेके तेजाबकी (चाहे गंधक या नमकके तेजाबकी डालते) डाल देखा तो अपने आप बबूले न उठे (किन्तु हिलानेसे कुछ बबूले बहुत छोटे छोटे अन्दर दीख पडे इसलिये समझागया कि यह ठीक बनगया (जो बबूले देता तो ठीक न होता और उसको और चूना डाल ठीक करना पडता)

पुटेशियम हाईड्रेट बनानेकी क्रिया।

ता० ९। २। ०८ को ५ ½ छ० अंगरेजी जवाखारको ४ सेर पानीमें घोल चीनीके ताशमें भर कौलोंकी आंच दी जब खूब गर्म होगया और जवाखार पानीमें घुलगया तब ५॥ छ०चूना बगैर बुझा डालदिया और थोडी देर और उबाला इसमेंसे थोडासा पानी ले उसमें दो चार बूंद गंधकके तेजाबकी डाली तो बबूले न उठे अत एव उसे ठीक समझ उतार लिया और थोडीदेर ठहरा ऊपर नितरेहुये पानीको सोख्तेमें छान तामचीनीके कटोरेमें उबाल पौन बोतल यानी करीब ऽ॥। के रहजानेपर उतार बोतलमें भर रखदिया।

तूतियेसे बनी पारद गुटिकासे ताम्रके पृथक् करनेका उद्योग शोरेके तेजाबसे।

ता० २३। २। ०८को १० बजेके करीब ८ माशे २ रत्तीकी ताम्रसे बनी पारदकी गोलीको पीस २० फीसदी तेज शोरेके तेजाब और ८० फीसदी पानीसे बने २ औंस साल्यूशनमें भिगोदी और धूपमें रखदी. ३ बजे देखा तो पारा जिसपर जालीसी पडी थी दीखपडा और तेजाबका रंग नीला और हरा होगया था तेजाबको निकाल लिया और नया १ औंस तेजाब और डालदिया।

ता० २४ के सबेरे देखा तो यह भी कुछ हलकी रंगतका हरा नीला होगया था और पारा कुछ ज्यादा साफ होगया था। इसको भी बदल दिया और पारेको जमीनपर गिरपडा था धो डाला। ९ बजे और नया १ औन्स तजाब डाल धूपमें रखदिया ३ बजे देखा तो यह भी ज्यादा हलके रंगका हरा होगया था, इसे भी निकाल पारेको धोया तो पारा खूब चमकदार था पर कुछ घटगया था और उसमें हाथसे दबानेसे करकराट जान पडता था और पीठीसी जुदा होती थी जिससे सिद्ध हुआ कि अभी ताम्रका अंश विद्यमान है, ४ बजे इसमें और नया १॥ औन्स साल्यूशन डालदिया।

ता० २५ को यह सोल्यूशन भी बहुत हलका हरा होगया था, इसे भी निकाल पारा धो डाला (तेजाब और न होनेसे काम बंदरहा)

ता० २६ को उपरोक्त पारेमें जो ४ माशे ५ रत्ती इस वक्त रहगया था २० फीसदीका ही १ औन्स सोल्यूशन और डाल १ घंटे हिलाया रंग हरा न हुआ।

ता० २७आज कुछ हिलाया कुछ धूपमें रक्खा तो बहुत हलका हरा रंग फिर होगया,शामको निकाल धो तोला तो३ माशे, ३ रत्ती हुआ। अब इसमें उँगलीसे दबानेसे करकराट नहीं दीखता, कपडेमें छाननेसे भी कुछ पृथक् न हुआ।

सम्मति–यद्यपि इस क्रियासे ताम्रका पृथक् होन संभव सिद्ध हुआ परन्तु पारेका अधिक अंश क्षय होगया अत एव इस क्रियामें दुबारा अनुभव करनेके समय १० फी सदीके सोल्यूशनसे या इससे भी और हलके सोल्यूशनसे काम लियाजाय।

पारदगुटिकाका अनुभव सोडियमसे।

ता० ८। ३। ०८ को २॥ तोले शंकित पारदको तप्त खल्वमें करीब १५ मिनट मर्दन कर ४ रत्ती सोडियम धातु (जो नागढके डी. बालडीकी दूकानसे आई थी और जो कोशीशीकी डाटदार बोतलमें स्प्रिटके अन्दर डूबी हुई थी। इसके मटैली रंगतके हलके टुकडेथे जो स्प्रिटपर तैरतेथे, ऊपरसे चाकूके छीलनेसे मौमसी मुलाइम रोगकीसी रंगतकी धातु निकलती थी। गीले हाथसे छूनेसे हाथमें गर्म मालूम होती थी, पानीपर डालनेसे इधर उधर दौडता और अंतमें जलजाती थी और पानीकी सोडियम हाइड्रेट बनादेती थी, हवामें रखनेसे ऊपरकी रंगत मटैली होतीजाती थी अन्तमें सोडियम औक्साइड बनजाती थी)के चाकूसे चांवल से टुकडे कर एक एक टुकडा डाल घोटना आरम्भ किया तो दो एक दफै पारेमें चिनगारी और ५–७ दफे फुसफुसकीसी आवाज हुई पहले पारेमें कुछ गाँठेंसी पडगई फिर घंटेभर घोटनेसे ३ रत्ती कम २॥ तोले पारा रहगया. और ७ रत्ती राखसी रहगई पारेकी गोली नहीं बंधी।

सम्मति–आगेसे पारेको अधिक गर्म करकर सोडियम मिलाईजाय।

पारदगुटिकाका अनुभव पुटशियमसे ।

ता० १४।३।०८ को १ तोले शंकित पारदको शीत खल्वमें डाल २ रत्ती पुटेशियम धातु (जो कौनागढके डी. वालडी. की दूकानसे आई थी और जो शीशेकी डाटदार बोतलमें स्प्रिटके अन्दर डूबीहुई थी, इसके मटैली रंगतके गोल टुकडे थे ऊपरसे छीलनेसे यह भी सोडियमके माफिक मोमसी मुलायम थी छीलनेपर अन्दरसे रांगकीसी रंगत निकलती थी किन्तु सोडियमसे अधिक चमकदार थी, हाथसे छूनेके गर्म नहीं मालूम होती थी । पानीमें डालनेसे तुरंत गुलाबी रंगकी लौ देकर जलने लगती थी और इधर उधर दौडती थी और पानीको पोटेशियम हाईडेट बनादेती थी, हवामें रखनेसे इसपर हवाका असर जल्द होता था, ऊपरकी रंगतकी चमक दूर होकर सफेद होजाती थी और अंतमें पोटेशियम औक्साइड बनजाती थी) के चाकूसे छोटे छोटे टुकडे कर एक एक टुकडा खरलमें डाल घोटना आरम्भकिया सोडियमकी तरह इससे भी एक दफे पारेमेंसे चिनगारी और फुसकी आवाज हुई थोडी देर घोटनेके बाद पोटेशियम बारीक होकर खरलमें और मूसलीसे चिपटगई । घोटनेसे हाथ रुकनेलगा (इसको चाकूसे खुरचनेसे चिनगारी निकली और कुछ धुआंसा मालम हुआ) और पारा पृथक् रहा १५ मिनट और घोटनेके बाद करीब १ रत्तीके पुटेशियमका टुकडा और डालदिया जिससे पारा खरलमें फैलगया और १५ मिनट घुटनेके बाद फिर इकट्ठा होगया, थोडीदेर और घोटनेके बाद खरलमेंकी खुश्क दवा तर होगई जिससे घुटाई ठीक होनेलगी १ घंटे बाद फिर खुश्क होजानेपर पारद और दवाको पृथक् कर तोला तो २ रत्ती कम १ तोले पारा और २ रत्ती दवाकी राखसी रहगई पारेकी गोली न बंधी ।

अजवियाहकीमहुम्मदफतहयाबखा कयाम सीमाव (उर्दू)

अब हम इस मजमूनको यहां छोडकर उसके कायमुल्नार मुतहरिक लरजाँ करनेका तरीका जो हमारे हम असर दोस्त कीमियागरका और अपना अम्बी मुशाहदा है (जो बिलकुल किताबी नहीं) बियान करतेहैं शायकीन बेधडक इसको अमलमें लाएं आधसेर सीमाव बाजारी हो या शिंग्रफी हो क्योंकि खोवा खिश्त पुख्तःके हमराह खरलमें डालकर खरल करें जब खोवा खिश्त स्याह होजावे पारा साफ करे और खोवाखिश्त दीगर डालकर खरल करे गरज सात आठ बार इसी तरह साफ करें और सौदके नीले रंगके गाढे कपडेमें छानलें बादहू एक कूंडे (जर्फ गिली कलामें पारा डाल कर सफेद और शफाफ रुईसे पारा हाथसे इसतरह साफ करे (जैसे कोई जख्म धोताहै) जब रुई स्याह न होवे पारा साफ उठाकर एक गफ कपडेमें मुतखल्लिल (ढीली) पोटली बांधनी चाहिये बाद अजां पांच सेर दही (जुगरात) मादह गाउ किसी जर्फ आतिशआशनामें गरकीजंतर करके नरम नरम आगपर पकावे जब दही बिलकुल खुश्क होजावे और सुर्ख होनेलगे तो पोटली पारेकी बा आहतियात अलहदा करें (पारा नीमकायम तो अभी होजायगा) फिर एक बडी कडाही (टटदी) जैसी कि हलवाइयोंकी होतीहै जिसमें चार पांच मुश्क पानी आजावे और पारेमें दो तोला रोगन कुंजद डालकर खूब मिलावें बाद अजाँ कढाईके वसतमें रखकर आध पाव बर्ग छुईमुई यानी शरमलगीन (लजालू आबी) नीमकोब करके ऊपर पारेके रखदे और एक कटोरा आहनी इतनी बडा कि, पारेको मयबर्ग छुईमुई ढकलेवे व अजगूं रखकर गंधावैजोरा लगाकर तीनपाव सीसा (असरब) पकाकर जलमुद्रा बनावे गोया टांका लगावे (हालवहाइ कटोरा और वसत कडाही हमवारहो) खूब लिहाज रखना चाहिये कि सूराख न रह जावे । अब इस कडाहीमें दोचार घडी लोहेकी कीलें छोटीमोटी डालकर पानी छोडदे कि, कडाही खूब लबालब पूर होजावे और मट्टी कलांपर यह कडाही सवार करके चार पहर नीचे आग नरम नरम जलानी चाहिये अजाँ खूब तेज आंच जलानी चाहिये बाद अजाँ खूब तेज आग जलाई जावे गरज तीन शबानः रोजतक जलातेरहें बाद सर्द होजाने भट्ठीके सत आहनीमेके दूर करे जलमुद्रा खोल कर पारा निकाल ले और कुठालीमें रख कर बतौर जर गराँ चार घंटेतक धोंके पारा मानिन्द अंगारेकी तरह होजावेगा और आगसे नहीं उडेगा अगर अहतियातन जुंबिश पाइजावे तो दही (जुगरात) में फिरसे पकाकर काममें लाना चाहिये यह पारा किसीकदर गलीज भी होजाता है कफेदस्तपर मिस्ल चक्का दहीके उठआताहै जिस जरूरतेह नुखसंमें काममें लाना चाहिये वाफिककार इसको हरतरह इस्तैमालमें लासक्ताहै यह अकसीर शमसीमें करामद है अब हम पारेका अकद वराशीव वा बूटी कायमुल्नार हदियाना जरीन करेंगे जो खुद अपना आप मुजर्रिब है । सुफहा ८ अखबार अलकीमियाँ ८ । ४ १९०९ अजजनाब मौलवी मुहम्मदफतहयाबखाँ साहब इदराक सोहनपुरा डाकखाना गुलावटी जिला बुलंदशहर)

पारेको गुर्सिना कर्दन (उर्दू)

गुर्सिना कर्दन नौसादर कहमिल बराबर सीमाव बराबर करले चन्दवार ऐसाही करें गुर्सिना होजावेगा (अजमियाज हकीम मुहम्मद फतहयाबखां)

पारा कायम् (उर्दू)

पारा एक तोला अर्क बिछुआ बूटी सेर भरका चोया स्याह खरल और नरम तशवियासे ७०० हफ्तेतक कायम होजाताहै ।

सिफत अकद सीमाव कायमुल्नार (उर्दू)

चूना आवना रसीदः, नौसादर, आवलाखार, जाज यानी फिटकिरी (जिसको मुसन्निफ नेजाज व सनत मलल्वी लिखाहै) मूए इन्सान जवान हर एक बराबर वजन और इन सबके हम वजन साबूत मगरबी और साबूनके बराबर उमदा जैत (जिसको अंगरेजीमें ओलियो आइल और पंजाबीमें कोडकातेल कहतेहैं) इन सबको मिलाकर मुकत्तिर करें और इस मुकत्तिरसे सीमावको आहनी बरतन (करछी) में ढाँककर दो दिन और दो रात सोलह पहर या अडतालीस घंटे नरम आंचपर रक्खें तो अकद सीमाव सावित यानी कायम

होगा । सवात व कयामकी यह अलामत है कि इसको आंचपर चर्ख देकर फिर वजन करें । अगर बराबर निकला तो साबित व कायम है वरनः फिर करछीमें डालकर आंचपर रखकर उसपर मूए इन्सान मिलाकर डालता रहे यहांतक कि वह कायमुल्नार होजावे यह तो खुलासा तरकीब अव्वलका है ।

हिजर ४ दिरम, जाज ४ दिरम, मलख इन्दरानी ४ दिरम, नसरमशवी (नौसादर विरियाँकर्दः सहूकातिबसे नून रह गयाहै।४ दिरम, कराज ४ दिरम यह सब बीस दिरम अदविया है इनको बारीक सहक करके बोतेमें रखकर उतार कर सर्द करके निकाल ले तो सीमाव मकसूद साबेत व कायमुल्नार मिलेगा असल मनकूल अनःका बयान है कि यह मुजर्रिब सही है। एजनमें रातहरीर कर्दः तरकीबसे सिर्फ सफेद सम्मुलफार शुद्ध होताहै सुर्ख नहीं । सुहागा तेलिया आगपर रखनेसे तेलके मानिन्द नरम होजाताहै और फूलता बिलकुल नहीं यह कीमियाई तरकीबसे बनाया जाताहै । (गुलाम नबी सफरी डाकखाना लाहौर)

एक मुफीद मतलब नुसखा (उर्दू)

बिरादरान अलकीमियाके वास्ते केलेके बहुतसे फूलोंको रेजः रेजः करके सायेमें खुश्क करले फिर इसको जलाकर खाक करले कमसे कम खाक एक सेर पुख्तः हो फिर इस खाकको किसी गीली हांडी आबखुर्दःमें रखकर दस सेर पानी डालदे और हर रोज दस पांच मर्तबः किसी हेजमसे जुंबिश देदिया करे । बाद एक हफ्तेके साफ मुकतिर करले बल्कि चन्द मर्तबः मुकतिर करे कि खूब साफ होजावे । फिर किसी कलईदार देगमें देगदानपर रखकर नीचे नरम आंच जलावे जब सब पानी खुश्क होजावेगा नमक तहनशीन होजावेगा । अगर नमक साफ सफेद न हो तो फिर थोडे पानीमें नमकको हल करके व साफ मुकत्तर लेकर बदस्तूर नमक मुंजमिद करले। यह नमक मिसको गुदाज करनेमें ब अकील है । मिसको सुर्ख करके खटाईमें इस नमककी चुटकी देनेसे फौरान मिस गुदाज होजाताहै। अगर कुठालीको आगसे अलहदा करले जब भी दो मिनटतक मिस गुदाज रहताहै जब इसको तय्यार करके इस कदर काम लेंगे तो फिर बाकी औसाफ तहरीर होंगे चूंकि यहांतक मेरा तजरुबा है।

गंधकके मुतअल्लिक और मालूमात (उर्दू)

गंधक चांदी और ताँबेको खाती है यानी अगर ताँबेको आगपर गलाकर गंधककी चुटकियाँ दे तो ताँबा सडजाताहै लेकिन जस्तको कायम करताहै, नौसादरको पकाताहै और लहसनके शीरेमें खुद कायम होजाती है शहद भी इसको कायम करताहै । खजूरका अर्क और गधेका पेशाब इसकी स्लाह करताहै कूजा मिसरी और काफूर इसका छोड है।

गंधकको कीचडकी तरह मसका बनालेना (उर्दू)

तुख्म अस्पन्द जलाकर राख करले और राखको पानीमें हल करके जुलाल लेले इस मुकत्तरका चोया गंधकपर आग पै दे वह सब मक्खनकी तरह होजावेगी । आजमूदह है।

गंधकको (द्रव) पतला करना (उर्दू)

मुर्गेके अंडोंके छिलके सवासेर लेकर नमकके पानीसे खूब धोवे कि अन्दरकी झिल्ली दूर होजावे फिर बारीक करके इनमें पावभर नौसादर मिलाकर पीसकर हांडीमें बंद करके चूनेके भट्ठेमें रखदे जब आग सर्द हो तब निकाल कर दो बार १५ तोले नौसादर मिलाकर आग देवे फिर सरके बाल स्याह पावभर लेकर सज्जीके पानीसे धोकर कतरकर मिलाकर मय ५ तोले नौसादरके मिलाकर आग देवे फिर निकालकर एक तोला आँवलासार गंधक गलाकर अर्क लैमूंमें बुझाकर उसमें मिलाकर आग देवे तो यह तमाम गंधक तेल होजावेगी और गव्वास होगी ।

गंधकके तेलकी तरकीब (उर्दू)

गंधक आँवलासारके हम वजन शीरा सफेद गुलपलास मिलाकर खरल करे और खुश्क करके कर्छीमें एक तरफ रखकर नरम आगपर रखदे तेल अकसीरी निकल आवेगा ।

गंधकको सफेद करनेकी तरकीब (उर्दू)

सज्जी एक हिस्सा, चूना दो हिस्सा, पानी एक हिस्सा मिला कर तीन रोजके बाद मुकत्तर करले इस मुकत्तरसे गंधक खरल करके नितारते जावे चन्दवारके अमलसे गंधक सफेद होजावेगी, आजमूदह है।

गंधक सफेद करनेकी तरकीब (उर्दू)

लाहौरी नमक बारीक पीसकर गंधकके हमवजन खरलमें डालकर सिरकेसे दिन भर खरल करे और रातको लटका कर सुबह तमाम पानी ऊपरसे गिरादे फिर सादा पानी डालकर इस कदर खरल करे और नितारे कि नमककी शोरियत बिलकुल जाइल होजावे फिर और नमक मिलाकर खरल करे और पानी डालकर हल करे और रातको लटका कर सुबह पानी नितारदे इसी तरह यह अमल करते जावें हत्ता कि चन्दरोजमें गूगर्द सफेद होजावेगी अगर यह अमल कुछ जियादह मुद्दततक करे तो गंधकका शोला बिलकुल बंद होजावेगा । अगर बजाइ सादा पानीके हरवार नमकके साथ सिरका डालकर खरल करे तो बहतरहै कि जल्द साफ और सफेद होजातीहै आजमूदः है । दीगर गंधक और अबरक महलूब हरदो हम वजन खरलमें सिरका डालकर खरल करे और तीन पहरके बाद सिरका ऊपरसे नितार डाले फिर खुश्क करके बर्तनमें बंद करके जौहर उडावे जो गंधक उडकर ऊपर जा लगे और हमवजन तलक धनावसे मिलाकर सिरकेके साथ खरल करे और फिर तीन प्रहरके बाद मुकत्तर करके तसईद करे इसी तरह चन्दवार करनेसे सफेद होजावेगी, दीगर ।

गंधक बारीक पीसकर खरलमें डाले और हड्डियोंका चूना बराबर वजन मिलाकर नमकके पानीसे तीन पहर खरल करे फिर निकाल कर ऊपरसे पानी मुकत्तर कर डाले और सफूफको खुश्क करके तसईद करले गंधक ऊपर जालगेगी और चन्दवारके अमलसे सफेद होजावेगी ।

गंधक गलानेकी तरकीब (उर्दू)

गंधकको घीसे चिकना कर करछीमें गलावे गंधक उम्दः

तरहसे हल होजावेगी और जलने न पावेगी नीज जल्द पिघल भी जावेगी आजमूदह है ।

दीगर (उर्दू)

बजाइ दूधके अगर अलसीके तेलमें बुझावे और ११ बार ऐसा करे तो यही साफ होजातीहै ।

गंधकका बयान (उर्दू)

रूफ़ेद गंधक जो चंद तदबीरसे सफेद और मुशम्मा (बहतीहुई) करली जावे वह पारेको बस्ता करदेतीहै सफेद और मसअद गंधक धातोंको खराब नहीं करती । गंधकका वजूद कानों और चश्मोंमें बकसरत मौजूद ही है और वहींसे निकाल कर तिजारतमें लाईजातीहै मगर अलावह अजी मुख्तलिफ हैवानात नबातात और जमादातमें भी मौजूद है । मस्लन (हैवानात) अंडेकी जर्दी, मोरका गोश्त, रोहू मछली और हरकिस्मकी मछली (जौहरा हैवानात), जुगनू, घोडेकी साकका मगज, फार्स फोरस तरके बाल, गिरगट, चिमगादर, (नबातात), कंघी, नकछिकनी, ढाकका फूल, गुले अब्बासीकी जड और फूल,करीर केला अमरबेल, प्याज, बैंगन, तेलियाकंद, जलपीपल,ब्रह्मदंडी जहर हल्दिया, धतूरा स्याह, थूहर, सूरजमुखी, रामपत्रीजाबित्री, घीग्वारका गूदा, भिलावा, हल्दी, आकका दूध (जमादात) हरताल, मन्सिल, हसनधूप, सुरमा, पत्थरका कोइला, सोनामक्खी, तांबा, सुहागा, चूना ।

गन्धककी मुख्तलिफ तदबीर ।

गन्धकका मुदब्बिर करना किसी बर्तनमें गायका दूध निस्फतक भरकर इसके मुहपर बारीक कपडा बांधदे और गन्धक आगपर गलाकर इसपर डालदे ताकि कपडेके अन्दरसे छनकर दूधमें जाकर सर्द होजावे । ३ बार ऐसा करनेसे गन्धक साफ होजाती है अगर कपडा न बांधे और योंही दूधमें डाल दिया करे तो भी एक ही बात है आजमूदा है ।

लैमूंको अर्सेदराजतक महफूज रखनेकी तरकीब (उर्दू)

कायदा यह है कि एक संदूकमें रेतकी तह जमाकर फासिला फासिला पर लैमूं जमाते जातेहैं और फिर इनपर बालिश्त बालिश्तभर रेत डाल देतेहैं इसी तरह तीन चार तह जमाकर सन्दूकको रेतसे भरदेतेहैं और वक्तनफवक्तन इसपर पानी छिडकते रहतेहैं जिससे वह लैमूं खुश्क नहीं होते जब जरूरत हो निकाल कर इसका रस निकाल कर इस्तैमाल करतेहैं दूसरा तरीका यह है कि जिस कदर लैमूं अर्सेदराजतक महफूज रखते हों, इनको खालिस शहदमें डालकर रक्खें जब निकालोगे मिस्लताजा लैमूंके होंगे ।

अर्कलैमूंको दुरुस्त रखनेकी तरकीब (उर्दू)

अर्कलैमूंको साफ बोतलमें भर ऊपरसे मोमको गुदाख्त करके डालनेसे उसकी उमदा हिफाजत होजातीहै बल्कि रोगन सरशफ व रोगन गाड या दीगर रोगन डालनेसे यह अमल बहतर है ।

इसकी सिफत ।

जौहर रसकपूर एक तोला सीमाव एक तोला दोनोंको पानकी जड ताजाके पानीमें जो एक पावके मुवाफिक हों इसमें अदविया मौसूफ खरल करें हत्ता कि गोली बँधसके गोली बांधे फिर तहाम (काली तुलशी) के पत्तोंके डेढ पाव लुगदेमें गोली मजकूरको देकर कपरौटी करके खुश्क करे फिर पांच सेर पाचक दस्तोंमें आग लगावे जिससे रक्त ठंढा होजावे निकाल कर बारीक करके एक सेर दूधमें एक रत्ती दवाई (अकसीर) डाले दूध खुश्क होकर चांदी बनजावेगा (वल्लाह अलम बिलसवाब)

जनाब शाह अहमदहुसेनसाहब मुकाम बुढनपुरा मिनजुमलाज जिला तिरहुत मुजफ्फरपुर तहरीर फर्मातेहैं—

गयाह जर्रीन-एवरुजुलसनम इस अतराफमें बकसरत हैं इल्लादरख्त कोहना दस्तयाब नहीं सहराई व बस्तानी दोनों किस्म हैं और दोनों हम सिफतहैं । अहल हिनूद इसको तरकारियां बहुत शौकसे खातेहैं और काश्त करतेहैं मगर दो चार सालके बाद खोदकर फेंक देतेहैं । ज्यादा कोहना होना मनहूस समझतेहैं । और इस सिफतसे हर अवाम वाकिफ हैं । कि बाद दवाजदह साल इसका खोदनेवाला हलाक होजाताहै । इस वजहसे दो चार सालसे जियादा नहीं रखतेहैं । बाज जगह ऐसा इत्तफाक हुआ कि रऊसाइके बागोंमें कहीं रहगयाहै और कोहना होगयाहै बाइस ताबा कैफियत मालीने खोदा और फौरन हिलाक होगया । अर्सा कई सालका हुआ एक बागमें दरख्त कोहना था बागवानने ब वजह ना वाकैफियत उसको उखाड डाला फौरन हिलाक होगया । इसीके जेर जमीन दो सूरतें इन्सानकी पैदाहोगई थीं ।

अगर मुसफ्फा और कायम व मुकल्लिस अजजाइसे इप्तदा अनअमल कियाहै तो पहले ही मर्तवः मुतवसत आग देनी जरूरी है जैसा कि साइलवाले अकसीरमें ईरानी सय्याहने दी । हकीम सरवरशाह मुकाम काबिललाड डाकखाना खानपुर रियासत भावलपुर तहरीर फर्मातेहैं कि—उसूली तरीका यह है ।

अकसीर सुर्ख हो, ख्वाह सफेद दोनोंके लिये रूह, नफस, हवद और एक मुखमिर स्याल (तेजाब या रूह वगैरः) की जरूरत है पस सब मादनियात अबीतमेंसे जिस चीजपर रूह होनेका तलाक किया जासक्ताहै वह सिर्फ एक ही चीज यानी सीमाव ही है । लिहाजा अकसीर अहमर व अबीज दोनोंके लिये इसकी सख्त जरूरत है बाकी रहे जसद और नफस सो वह सुर्खके लिये अलहदा हैं । और सफेदके लिये अलहदा मगर जसद हो । ख्वाह नफस दोनों तरीकोंमें इनकी तादात हिन्दमिया बाहदतक महशूर नहींहै यानी वह एकसे जायद हैं अगर्चः इनमेंसे बाज अफजल व अकमल और बाज अदना व नाकिसही क्यों न हों इल्ला जरूरतन अगर एकका बदल दूसरा लेलियाजावे तो भी काम चलसक्ताहै । मस्लन सुर्खके लिये अजसादेमेंसे जौहब और अनफासमेंसे किबरियत अहमर अजजा कामला व तामः हैं । और सफेदके लिये जसद फजः और नुकस सम्मुलफार अकमल हैं इल्ला अगर अमदन ख्वाह जरूरत न तरीका सुर्खमें

जहबके एवज दूसरे अजसाद शमसी नाकिस मिस्ल निहास या मुरक्किबात निहासी (जंगार, धनियां, संगरासख तूतिया वगैरः) या सीसा या आहन खाम और किबरियतके एवज दूसरे अनफास शमसी मिस्ल सुम जर्द व सुर्ख व स्याह, व मन्सिल व जंजफर, व नमक सुर्ख वगैरः मुबदिल करदिये जावें और ऐसाही तरीका सफेदमें फजःके एवज कलई, फौलाद वगैरः अजसाद फजी और सम्मुलफारके एवज जरनेख नमक सपेदः वगैरः अनफासफजीमेंसे कोई तबदील करलिया जावे तो भी काम चलजावेगा गो बवजह अजजाइ नाकिसः कमकुव्वतके मर्तबः तरहका कमीपर आजावे ! इल्लामायूसी नहीं होगी। बाकी रहे मखमरात जिनका खास्सा इमजाज अरकान सुल्सः बजरियः तहनशीनी व सबात व मुशम्मा और गवासी और नफूज वगैरः है, सो इनमें बाज कवी हैं मिस्ल दहन लायहर्क व दहन उलअशार वगैरः और बाज अजौफ हैं मिस्ल मियाह बारदह यानी सिरका, आबअनार तुर्श, आबलैमूं वगैरः लिहाजा इनकी तकवियतके लिये अमलाहया शहवतमेंसे कोई जुज व मिस्ल नौसादर वगैरः मिलानेकी जरूरत होतीहै और नीज इनमेंसे बाज अकासीर शमसीके लिये मखसूस हैं मिस्ल दहन मुकत्तिर अहमर व असफर बैजा या शैर और बाज अकासीर कमरीके लिये खास हैं मिस्लन मुकत्तर अबीज मुशम्मा और बाज दोनों तरीकों सुर्ख व सपेदमें यकसा मुफीद हैं, मिस्ल दहन लायजर्क और रोगन बैजा अहराकी तरकीब अखज अज जाइ अकसीर–

अब हम अकसीर सुर्ख बनाना चाहें ख्वाह सफेद–बहतरहै कि इरकान् सुल्सः और मखमरातमेंसे जो अकवी व अकमल हो व बेखलल हो इसीको अख्तियार करे ताकि कोई रुकावट पेश न आवे वरनः जिसको लेंगे उसीसे कामयाबी मुमकिन है कि अगरपस हम अकसीर सपेदके लिये मस्लनरूहु (सीमाब) और जसद अकमल यानी चांदी और नफस अकमल यानी सम्मुलफार ख्वाह हडताल ख्वाह नमक लाहौरी लें या अगर अकसीर सुर्ख बनाना चाहते हैं तो रूह (सीमाब) और जसद अकमल यानी (सोना) और नफस अकमल (किबरियत) लें और दोनोंके लिये मुखमरातमेंसे ऐसा स्याल कवीब अकमललैन जो दोनोंमें मुस्तैमिल और यकसां हो,मस्लन रोगन नौसादर कायमुल्नार, ख्वाह रोगन जर्दा बैजा अहराकी और तस्कियाका अमल जारा करके मिनजुमलै कवाइद अरबातकमील अकासीरके एक तरीकेपर कारबंदहूं तो इन्शाअल्लाहताला कामयाबी होगी, तशरीह कवाइद अरबातकमील अकासीर कायदा अव्वल अरकान अकासीरको माइ महरका तसकिया तमाम दिन या कमसे कम एक घंटेतक दीगर रातको या कमसेकम एक घंटे नरम भूभलका तश्विया दे और यह ही अमल मुकर्रर करता रहे हत्ताकि अकसीर मूमिया बेदूद होजाए तो यह खुद गवास व सवाग होगा । कायदा दोम अरकानको मुखमिरकाका तस्किया देकर सहक बलेग करे फिर इसका जौहर उडावे फिर आला वासफलको मिलाकर तख्म मजकूरका तश्किया दे और सहक बाद तसहीक करे, इसी अमलको यहांतक मुकर्रर बारबार करे कि सब अकसीर तहनशीन और साबित बेदूद होजाय यह भी खुदगवास व सयाग होगा। कायदा सोम–बमूजिब कायदा अव्वल या दोयम मूमिया ख्वाह तहनशीन करके हल व अकद करे तो इसवक्त मर्तबः तरहका साबिकसे बढजायगा फिर हल व अकद करे अलहाजुलकयास हत्ताकि मर्तबः रफीअपर पहुंचे । कायदा चहारम अरकानको तस्किया मुखमिर व सहक बलेगके बाद शीशी आतिशीमें बंद और गिलेहिकमत करके बालू जंतरकी आगदे तो काबिल तरह होजायगा, फिर दुबारा सिबारा तस्किया व सहकके बाद बालू जंतरका तकरार तो मर्तबा तरहका बढता जाइ और चन्द मर्तबःके बाद मुगलग आलापर फातिर होगा इन्शा अल्लाहताला यही चार कायदे आला तरी हैं अकासीर हककी तकमील है कि अब रहा ताकत अकसीर और मर्तबः तरहका इल्म पहले आगमें पस अगर अजजाइ नासाफ बाजारी और अजसाद गैर मुकल्लस हैं तो पहले आगमें हम्मलान ही तक मर्तबा तरहका महदूद होगा या शायद कि कुछ भी असर पैदा न करसके इल्ला चन्द मर्तबः तकरार अमलके बाद और अगर अजजाइ मुसफ्फा गैर कायम और अजसाद गैर मुकल्लिस होंगे तो अदना दरजेकी अकसीर या जहां आला हासिल होसक्ता है, अगर रूह व नफस मुसफ्फा मसअद और हवद मुकल्लिस ख्वाह गैर मुकल्लिससे तय्यार करेंगे तो अकसीरका मर्तबा किसी कदर जियादा होगा, अम्मा अगर रूह व नफसको कायम व गवास और जसदको मुकल्लस जाजब करके इफ्तदाइ अमल करेंगे तो अकसीरकी ताकत कवी और मर्तबः तरहका बहुत बढाहुआ होगा, यह तो पहली आगका हालहै खुसूसन कायदा सोम व चहारमकी रूसे फिर अकसीर मामूलापर जितनी मर्तबः अआदह अमलका करते जायंगे, उसी कदर दर्जा बदर्जा ताकत बढती जावेगी,अब मीजानुलनार मालूम करना यही अशद जरूरी है, सब एमालसे ज्यादह अहतियात आगके वजनकी है पस मिनजुमलतन इसका बयान यह है कि अव्वल अव्वल नरम आग देनी चाहिये और रफ्तः तदरीजन और मर्तबः बाद आखरी ज्यादह करता जावे लेकिन किसी कदर मुफस्सिलन इसका बयान यह है कि अगर इम्तदाई अमल ना साफ और गैर कायम और हारब व जाइब अजजाइसे है तो आग इम्तदाई बहुत नरम होनी चाहियें ।

जनाब गुलामहुसेन साहब कंतूरीसे दरियाफ्त तलब (उर्दू)

दूसरा मसला व मंजिला होलेके हैं जिस धातुकी राइहःसे पारा बस्ता और कायमुल्नार किया जाए वही धातु बनजाता है इस मसलेका तजरुबा हमने और हमारे तलान्दहने करलिया है ताँबा और पीतल (शदादीयूना) और लोहा और चाँदी मगर फूटक यह सब पारेसे बनचुके अब फूटक दूर करनेका तजरुबा होरहा है उसके बाद सोना भी उसी काइदेसे बनाया जायगा (राकिम गुलामहुसेन कंतूरी) (सुफहा ११ किताब अखबार अलकीमियाँ १६।४।१९०५)

शनाख्त काजीदिस्तार (जो कश्मीरमें बकसरत देखी गई (उर्दू)

काजीदिस्तार मारूफ दूधकबूटी छतरीवाली फार्सी शीरक

इसको जुमला बूटी भी कहतेहैं जमीनसे हाथभर तक ऊंची होतीहै नीचेसे एक शाख टोपी बतौर नाली ऊपरसे तीन चार शाख सरपर बर्ग बहुत ज्यादह और जर्दानः फूल छातेकी तरह वर्ग या शाखको तोडो तो दूध सफेद निकल-ताहै, कभी एक बालिश्तभर जमीनसे ऊंचा होताहै कभी कमोबेश हो बेख व शाख व बर्ग इसके मदाव्विर होते हैं और शाखका रंग सुर्ख और दूधसे पूर होताहै और जब बदन पर उसका शीर लगजावे तो आबला पडजाताहै यह दादको और चंबलको जो किसी दवासे न जाती हो जडसे उखेड देतीहै और कुश्ता चांदी भी इससे बहुत उमदा होताहै (सुफहा १७ अखबार अलकीमियां ८ । ४ । १९०९)

अज खुर शैद हिदायत (उर्दू)
कैफियत अतारद यानी सीमाव ।

(मौअल्लिफ किताब खुरशैद हिदायत लिखताहै) कि मैं एकबार जजीरा खलकानमें था जिस जगह मैं खडा हुआ था, इस जगह दरख्तोंकी बहुत कसरत थी (गरजे कि एक अजीब व गरीब बागका नकशा खींचकर दिया गया है) वगैरः वगैरः इस जगह आदमी भी कसरतसे थे इतनेमें एक गिरोह एक मेज लाया जो कमरुल बैजसे बना हुआ था इसे रक्खा गया बाद अजाँ एक माशूक सिफत मियानः कद आदमी आया जिसकी कमरमें जिन्नार सुर्ख रंगका था और शवस अहमरका ताज सरपर रक्खा-हुआ था आकर मेजपर बैठ गया, अव्वल खुदावन्द तालाकी हम्दकही और फिर अतारदकी तारीफ करके हाजरीनको इस तरह मुखातिब हुआ कि एमुआशर हुक-माइ तुममेंसे कोई भी मेरी बुजुर्गी कुदरत और कुव्वत रुहानीसे मुनकिर नहीं हैं, जो मुझमें खुसूसन अजसाद एजाज और अशखारके पिघलानेकी है मैं वह वजूद हूं जोकि परदोंको फाड कर तमाम चीजोंसे गुजर जाता हूं और दुश्वार गुजार रास्ता भी मेरे वास्ते मामूली बात है और मेरे सिवाइ और कोई भी इस सिफतका वजूद नहीं होसक्ता मैं जिस्मानी लिहाजसे बेशक जईफ हूं मगर मेरे कवाइ बहुत कवी हैं और अपने फेलमें पुरतासीर हैं और यह सब ताकत सय्यारह अतारदकी अताशुदः है जो मेरा खुदावन्द और बुजुर्ग है जिसका मददगार और जिस पर अहसान करनेवाला खुद आफ्ताब हैं क्योंकि वह आ-फ्ताबका एक चमकीला सितारह है और उसपर इसका अहसान करना इस अमरपर दलालत करना है कि अतारद आफ्ताबका फर्माबरदार है, अतारद हरनातिक और साहब तमीजका खुदावन्द है और मैं इसका पिसर हूं बल्कि उसका बन्दा खिदमतगार, दोस्त फर्माबरदार वगैरः वगैरः अतारद हमेशह मेरी मदद करताहै जिस्तरह कि आफ्ताब आलमताब इसकी क्योंकि हरेकको खासियत अख्तियार करलेता है, गरमके हमराह गरम है और सर्दके साथ सर्द, बकस अलहाजा हत्ताकि सुर्ख, जर्द, सबज स्याह जिस किसीके साथ मिलताहै ऐसाही बनजाता है चुनाचः वह हरेकरंग अख्तियार करसक्ता है और हर तबियत और शकल पर तसर्रुफ रखता है बेशक मैं इसका फरजन्द हूं, इस वास्ते कि मेरी तबियत खूबी तसर्रुफ वगैर इसीके मुशाबः है चुनांचः जो शखस मुझे खुश्कीके वास्ते चाहता तो मैं खुश्कीकी सिफतही पैदः करदेता हूं और जो तरीके वास्ते चाहता है तो तर कर दिया, जो चाहता है कि मुझे अशियाइके साथ मिलावे तो मैं हरचीजसे मिलजाता हूं और इसीकी शकल सूरत वगैरः अख्तियार करलेता हूं, एमआशर हुकमाइ मेरे इसरार इतबार वगैरःसे आपको वाकैफियत हासिल करना जरूरियातसे है, मैं वनफसा दोफनून हूं और मुख्तलिफ रंगोंका मालिक हूं, चुनांचः जिस शखसने मेरे इसरारसे वाकफियत हासिल करनी चाहिये और मेरे इतबारपर मुतलै होगया और विरहानी एमालसे वाकिफ होगया और मेरी रतूबतको यबूस्तसे बदल दिया, (जैसे कि कंजनार हायलमें मश-रूहन मजकूर है) मुझे सचाईकी किस्म कि मैं आमिलके लिये इसकी तवंगरी और बहतरीका वसीला बनजाता हूं और अबसे वाइकबाल बना देताहूं, एमआशर हुकमाइ, मुझे हककी किस्म मैं सचीबात बताता हूं और मुबालगा नहीं करता कि जो शखस चाहे कि मेरे बजूदसे फायदा उठावे उन्हें चाहिये मुझसे सख्तीसे न पेश आवें बल्कि रफक और मुलाइमतको काममें लावें और मेरे साथ हकी-माने और सनती तदबीरसे मुआमिला करना चाहिये, मेरे इसरार नरमीमें मरकूज हैं, मेरे इतबार हिकमतमें और वरहान सनतमें सचाईकी किस्म अगर हकीमानः तदबीरसे मुझे मेरी मादरसे मिलाया जावे तो बेशुमार अजायबात नजर आते हैं जो मुझमें मुखको हैं और मेरे गुस्सेसे सख्त परहेज करना चाहिये, इसवास्ते कि जब मैं गुस्सेमें आजाता हूं तो यकीनन मैं आमिलके लिये बला बनजाता हूं और फिर मुझे कोई हासिल नहीं करसक्ता, मेरे साथ हमेशह रफक और नरमीसे पेश आना चाहिये कि मैं साबित होजाऊं, ऐसा करनेवालेके लिये बहतरीन काबिल है क्योंकि जो कोई शखस मेरे करामद सरार व इतबारसे कमाहुका वाकिफ होगया और मेरे और मेरे माई कमर और मेरे आका शमससे मुझे दो बजन करनेके तरीकेसे मुझे मिलादिया (जैसे कि कबजे मुफ्ताह राजमें मुफस्सिलन मजकूर है) और उरूस असकर मुदव्विर को वास्ता बनावे । (जैसे कि कंजनार हायलमें मशरह है) और उकाब मसअद मौहमिर महलूल तस्मीअ करे (जैसे कि कनज हवाई राकदमें मजकूर है) मैं यकीनन उस शखसके लिये जखीरा बन जाता हूं और उसे ताज और लिबास सलतनत पहना देताहूं और उसे सबसे बुजुर्ग बना देता हूं, एम आशर हुकमा, जो शखस चाहता है कि मेरे अजाइबात देखे उसे चाहिये कि कमर, जौहरा, अरज मुश्तरी, जौहलमें मीजान हकसे मुझे मिलावे मगर एमाल हकीमानःके जरियः (जैसे कि आयन्दः तज-करा होगा) इस तरह कि मैं इनमेंसे हरएकके साथ (जिससे मिलाया जावे) पूरी तरह मिलजाऊं क्योंकि वह मुझपर आशक है तो यकीनन इससे ऐसी चीज पैदा होगी कि इनके दिल खुश होजावेंगे और आँखें रोशन (अखबार अलकीमियाँ ८ । ४ । १९०९)

उसूलकैमिस्टी (उर्दू)

खालिस अनसर यानी मुफरिद चीजें दुनियाँमें यह हैं, आक्सिजन, हाईड्रोजन, नाइटोजन, कारबन, क्लोराइन,

गंधक, फासफर्स, सलीका, लोहा, एलोनियम्, कैलसियम्, मेगेनिसम, सोडियम, पोटासियम, ताँबा, जस्ता, राँग, सीसा, पारा, चाँदी, सोना, वगैरः ।

क्लोराइन नमकमें होता है, नाइट्रोजन शोरामें, फासफरस हड्डियोंमें होता है, जिसको दियासलाईकी नोकपर लगातेहैं सलीका ईट, रेत, व काचमें होता है, एलोनियम चिकनी मिट्टी और चट्टानोंमेंसे निकलता है और फिटकिरीमें होता है, कैल्सियम संगमरमर खरिया और चूनामें होता है, मेगनीसमका तार होता है जिसको जलानेसे वरकी रोशनी होती है, सोडियम खारी चीजोंमें होता है हवामें खुला रखनेसे उसमें आग लग जाती है इस लिये हरवक्त पानीमें (पानीमें डालनेसे आग लगजाती है किन्तु स्प्रिटमें पडा रखनेसे कायम रहता है अनुभवसे सिद्ध है) पुटाशियम राखमें होताहै और मिस्ल सोडियमके जलता है (पानीमें डालनेसे जलता है) लोहेपर जस्त लगानेसे मोरचः नहीं लगता, जस्ता ताँबा मिलानेसे पीतल बनती है । (सुफहा ९८ किताब इल्ममौजूदात)

वजन मखसूस यानी हरेक चीजका वजन।

(जो उस निस्वतसे होता है जब कि मुसावी उलहज्म मुकत्तर पानीका वजन एक फर्ज कियाजावे इससे यह मालूम होताहै कि हरेक चीज पानीके बनिस्वत इस कदर भारी है) (उर्दू)

प्लाटीनम	२२३७,	लोहा	७३७८,	लकडी	३४०,
सोना	१९३३६,	हीरा	३३५३,	काग	३२४,
पारा	१३३६,	शीशा	२३४८,	दूध	१३३,
चाँदी	१०३४७,	कोइला	१३३२,	आबमुकत्तर	१३

(सुफहा ५२ व ५३ किताब इल्ममौजूदात्)

हरारत मखसूस (उर्दू)

आलिमोंने पानीमें एक दर्जेकी गर्मी फर्ज करके फिर दूसरे अजसामकी गर्मी जो मालूम की है वह हरारत मखसूस कहलाती है–

पारा, सोना, व सीसा ३३,	जस्त व तांबा ३८,	गंधक३२०
चाँदी	३५, लोहा	३११, कोइला३२४
	हीरा	३१४, तारपीन३२२

(सुफहा ६० किताब इल्ममौजूदात्)

उबलनेकी हरारतके दर्जे (उर्दू)

एक दर्जे हवाके दबाउमें हरचीजके उबलनेके लिये जितनी गर्मी दर्कार है वह नीचे लिखते हैं–

तेजाब	१०	तारपीन	१६०,	गंधक	४४७,
आबमुकत्तर	१००	पारा,	३५०,	जस्त	१०४०

३६० गजकी बलंदीपर हरारतमें एकदर्जेका फर्क पडजाता है पहाडपर थोडी गर्मीसे पानी उबलने लगता है मगर कानके अन्दर ज्यादहसे पहाड पर दाल वगैरः उबालनेमें इस लिये ज्यादह दिकत होती है कि पानी थोडी हरारतसे उबलने लगता है पस उसकी हरारत कायम हो जाती है ज्यादह नहीं बढसक्ती । (सुफहा ६१ किताब इल्ममौजूदात्)

दर्जे हरारत जिस्पर अशियाइ जैल पिघल जाती है (उर्दू)

बर्फ	०,	मोम	६५,	सुरमा	४५०,
पारा	३३८,	गंधक	११४,	चांदी	१०००,
मक्खन	३३,	सीसा	३३५,	सोना	१२५०,
फासफरस	४४,	जस्त	४२२,	लोहा	१५००,

प्लाटीनम अबतक नहीं पिघला सके । (सुफहा ६१ किताब इल्ममौजूदात्)

गैसोंका बयान (उर्दू)

इनकी न कोई सूरत होती है न जिसामत जैसे बर्तनमें रक्खी जावें वैसीही सूरत और ख्वाह कितनीही कमगैस कितनेही बडे बर्तनमें रक्खी जावे सारेमें भरजावेगी रकीककी तरह यह न होगा कि आधा गिलास पानीसे भर गया आधा खाली रहा उनके दरूनमें कशिश अतसाली बिलकुल नहीं होती वह एक दूसरेकोठा कर फैलना चाहते हैं । (सुफहा ५५ किताब इल्ममौजूदात्)

गैसोंका बयान ।

घडेका पानी नीचेसे गर्म करे तो सारा गर्म होजावेगा, ऊपरसे करे तो सिर्फ थोडेसेपर असर पहुंचेगा । (सुफहा ११३ किताब इल्ममौजूदात्)

और भी ।

पानी अपने वजनसे $\frac{२}{३}$ नमकको जज्ब कर सक्ता है ज्यादह नहीं चूना अपने वजनसे $\frac{१}{३}$ पानी मिलानेसे भीगेगा (सुफहा ११२ किताब इल्ममौजूदात्)

हवाको दबा उसे पारा तीन इंच बलंद चढता है और पानी तीसफुटसे भी ज्यादह । (सुफहा ११२ किताब इल्ममौजूदात्)

मसनूई मकनातीस (उर्दू)

मसनूई मकनातीस लोहेसे बनाया जाताहै, पहले उसको खूब गर्म करके दफ़तन ठंढे पानीमें बुझाते हैं जिससे वह सख्त होजाता है तब उसको किसी मजबूत मकनातीससे छुलनेसे वह भी मकनातीसकी खासियत हासिल करता है बल्कि उससे भी ज्यादा कवी होजाता है, मकनातीसमें यह कुव्वत दोनों सरोंपर ज्यादह होती है, बीचमें दर्जे दर्जे कम होता है जिस्तरह मकनातीस लोहेको खींचता है उसी तरह लोहा भी मकनातीसको खींचता है अगर ज्यादह मिकदारमें हो नरम लोहा भी मकनातीससे छूनेपर मकनातीस बनजाता है, मगर ठानेसे फिर नहीं रहता अगर मकनातीससे लोहा रिगडा जावे तो यह असर कायम रहता है, बिजलीकी बैटरीसे भी मकनातीसी कुव्वत पैदा होती है मगर आरजी और जमीनके असरसे भी मगर निहायत सुस्त ढलाहुआ लोहा भी मकनातीसी कुव्वत हासिल करसक्ता है । (सुफहा ९१ किताब इल्ममौजूदात्)

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमलकृतायां रसराजसंहितायां भाषाटीकायामवशिष्टवर्णनं नाम षष्टितमोऽध्यायः ॥ ६० ॥

॥ इति पारदसंहिता भाषाटीकासमेता समाप्ता ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस–बंबई.

५४२ नंबरमें कापी न मिलनेसे जो पाठ न छपाथा वह अब कापी मिलनेसे छापागया।

अभ्रसत्त्वक्रिया नं० १

ता० १४।११।०७ को १ सेर धान्याभ्रक २ सेर कांजीमें भिगो छायामें रख दिया, २ दिन रक्खा रहा (अभ्रक कांजीमें मिलाते समय गाढा रहा) रक्खा रहनेसे कांजी ऊपर आगई और अभ्रक नीचे बैठ गया।

ता० १६ को सुखानेके लिये कांजीसहित धूपमें रख दिया गया किन्तु सूखा नहीं।

ता० १७ को कांजीसे पृथक् कर कपडे पर डाल धूपमें सुखा दिया।

ता० १८ को २।। सेर जमीकंदके १ सेर ३ छ० स्वरसकी १ भावना दी गई, अर्थात् दो बडे स्याह पत्थरके खरलोंमें अभ्रकको डाल और रस डाल २ घंटे घोट सुखा दिया।

ता० १९ को २।। सेर जमीकंदके १ सेर रसकी दूसरी भावना दे २ घंटे घोट सुखा दिया।

ता० २० को सूखता रहा।

ता० २१ को केलेकी जडके १०।। छटांक स्वरसकी १ भावना दे घंटे भर घोट सुखा दिया।

ता० २२ को केलेकी जडके ऽ।।। स्वरसकी दूसरी भावना दे घंटे भर घोट सुखा दिया।

ता० २३ को केलेकी जडके ऽ।।।स्वरसकी तीसरी भावना घंटे भर घोट सुखा दिया।

ता० २४ को सूखता रहा ता० २९ तक सूखा।

ता० २९ को खरलसे निकाल हाथोंसे मीड तारोंकी चलनीमें छान तोला तो १ सेर २।। छ० हुआ।

ता० ७।१२ को उक्त १ सेर २।। छ० अभ्रकमेंसे ९ छ० अभ्रक और ९ छ० मछलियोंका चूर्ण (जो १। सेर छोटी मछलियोंको सुखा कूट चलनीमें छान ९ छ० ही तैय्यार हुआ था) २। छ० सुहागा पिसा चौकीका और २८ छ० भैंसका गोवर सबको मिला टिकिया बनानी चाही तौ ठीक न बनती थी इसवास्ते उसमें ऽ।।= के करीब कच्चा दूध मिला आटेकी तरह गूंद बडे गूलरकी बरावर गोलीसी बना धूपमें सुखादीं।

ता० २ जनवरी तक सूखती रहीं सूखजाने पर तोला तौ १।। सेर हुई (१। सेर औषधि चूर्ण और ऽ१= सेर गोवरका सूखकर १।। सेर रहा)

अभ्रसत्त्वक्रिया। नं २

ता० १३।१२।०७ को उक्त अवशेष ९।। छ० अभ्रकमें ९।। छ० कुटी छनी तिलकी खल, २। छ० पिसा सुहागा मिला ककरोंदा और खरतुआका आध आधसेर रस डाल खूब मलकर सान टिकिया बना सुखादीं।

ता० २।१ तक टिकिया सूखती रहीं, सूख जानेके बाद तोला तौ १ सेर ३।। छ० हुई (१। सेरका सूखकर १ सेर ३।। छ० रहा)

अभ्रसत्त्वक्रिया। नं० ३

ता० २३-११-७-१० छटांक ४ तोले अभ्रकको जिस पर द्रुति उद्योग किया गया था, अर्थात् जिसको पहली बार ४। सेर सिरकेमें घोल शीशेमें भर ४० दिनतक लीदसे पूरित गढेमें गाड दिया था और दूसरी बार ३ सेर सिरकेमें घोल ४० दिन गोवरमें गाडा गया था) केलेकी जडके १। सेर रससे भावित कर घोट धूपमें सुखा दिया, ता० २८ तक सूखा।

ता० २९ को हाथोंसे मीड तारोंकी चलनीसे छान तोला तौ ११।। छ० हुआ।

ता० १६ दिसंबरको उक्त ११।। छटांक अभ्रकमें १२ छ० तिलकी खल, ३ छ० सुहागा, १।। छ० सज्जी, १।। छ० सामर, राल, पीपलकी लाख, चिर्मिटी, गूगल, गुड, शहद, घी, सब पौन पौन छटांक, ऊन $\frac{1}{2}$ छ०, दूध १।। सेर डाल खूब गूंद छोटी छोटी टिकिया बना सुखादीं।

(नोट-सूखी चीजें बारीक कर डालीगई। गुड, शहद, घी, गरम दूधमें मिलाडाले गये ऊन बारीक कतर धुनवा कर डाला फिर भी मुश्किलसे मिला)

ता० २ जनवरी तक टिकियोंको सूख जाने पर तोला तो २ सेर ३।। छ० हुई (२ सेर ३।। छ० चूर्णका सूखकर २ सेर ३।। छ० ही रहा)

अभ्रसत्त्वके लिये चलनी।

ता० ९।२।८ को ऽ।। सेर खरिया मिट्टीको इमामदस्तेम थोडा पानी डाल कूटा, २ घंटे बाद उसमें ऽ। पावभर फायरक्ले (आगकी मिट्टी, अर्थात् एक प्रकारकी श्वेत मृत्तिका जो आँचमें पिघल न सके) जली हुई (अर्थात् सिकंदरेकी ग्लासफेक्टरीमें काचकी भट्टियोंमें काममें आचुकी थी) मिला दोनोंको खूब कूटतेरहे।

ता० १० को इमामदस्तेमें ठीक न कुटनेके कारण पत्थर पर लोहेके हथोडेसे कूटा और १ तोले नामेको खूब विचूर कर थोडा २ कर उसमें डालदिया और करीब ७-८ घंटे कूटा।

ता० १२ को लोहेकी रकाबियों पर पाथ कर चलनी बानालीं।

अभ्रसत्त्वपातन भट्टी नं० १



ता० १०।३।८ को उक्त न० २ की १ सेर ३।। छ० टिकियोंमेंसे प्रथम १०। छ० टिकियोंको उक्त भट्ठीमें जिसका नकशा ऊपर दिया गया है चलनी पर रख ऊपर इतने कोयले लगाये कि भट्ठीके दोनों खाने ऊपर तक भर गये, नीचे कटोरा रख दिया गया, बाद को ३ धोंकनियोंसे कडा धोंकना आरम्भ किया, १ घंटे तीव्राग्नि लगनेके बाद धोंकना बंदकर नीचेके मिट्टीके कटोरेको निकाला तो उसमें सिवाय कोयलोंके थोडे चूरेके कुछ न निकला, ऊपरके कोयलोंको निकाल दवाको निकाला तो ऊपरकी करीब आधी टिकियोंका गलकर काली हरी रंगतका खंगरसा बन गयाथा और कुछ दानेसे भी बन गयेथे, और बाकी नीचेकी

टिकियां भी आंच खाकर हलकी तो होगईथीं किन्तु पिघली न थी कारण यह हुआ कि भट्टीके दोनों खाने कोयलोंसे भर देनेसे और धोंकनियोंके नाल ऊंचे रहनेसे नीचेके खानेमें ऊपरकी बनिबस्त आंच कम बैठी ।

दूसरा घान ।

दूसरी बार ५ छटांक टिकियोंको उसी तरहसे चलनीपर रक्खा और नं० १ पालिकामें खांचा देकर धोंकनियोंके नाल इतने नीचे करदिये कि उनके मुह नं० २ पालिका तक पहुँच गये और कोयलें भी उसी नं० २ पालिकामें भरे गये, बादको २॥ बजेसे कडा धोंकना आरंभ किया, पौन घंटे बाद कोयले सम्हालनेमें लोहेके गजसे चलनी टेढी होगई जिससे कुछ दवा नीचे गिर गई और कुछ चलनी पर रह गई अतएव काम बंदकर ऊपर नीचेकी सब दवाको निकाल तौ इसबार आंच अधिक लगनेसे टिकियोंका काले रंगका खंगरसा बन गयाथा जिसमें पहले घानसे चमक अधिक थी, और कुछ दानेसे भी निकलतेथे ।

तीसरा घान ।

तीसरीबार २॥ छ० टिकियोंको उसी प्रकार चलनी पर रख ३ धोंकनियोंसे कडा धोंकना आरम्भ किया कोयले कम होजाने पर और डालते गये, २ घंटे बाद जब चलनी पर दवा न दीख पडी तब धोंकना बंद कर दिया, नीचेके पात्रको निकाला तो उसमें कोई चीज न गिरी थी, कोयलोंको अलग कर चलनीको निकाला तो कुल दवा पिघल कर चलनीके ऊपर फैलकर कठिन रूप होगई थी और कुछ चलनीके छिद्रोंमें भर गईथी जिससे छिद्र बंद होगये थे चलनीसे इस दवाको अलग करना चाहा तो चलनी टूट गई किन्तु दवाका पृथक् होना कठिन हुआ, छिद्रोंमें समाये हुये कुछ दानोंको निकाला तौ ये बहुत चमकदार काले रंगके निकले ।

(१) सम्मति–जहांतक समझमें आताहै भट्टीकी पालिका चौडी होनेके कारण और धोंकनियोंका मुह ऊंचा रहनेके कारण आंच तीव्र न हुई, और इसकी वजहसे ये सब खंगर ही बने सत्त्व न निकला ।

(२) सम्मति–जो दाने ज्वार बाजरे, मकासे इन तीनों घानोंमेंसे निकले उनको चुंबक नहीं पकडता था, किन्तु उन दानोंको पीस कर उसमें चुंबक लगानेसे कुछ बारीक रेवे लोहेके चिपट आतेथे, इससे भी जान पडता है कि सत्व पृथक् नहीं हुआ चुंबककी सहायतासे सत्व पृथक् किया तो निम्न लिखित फल हुआ ।

अभ्रसत्त्वके ३ घानोंका नकशा ।

नं० घान	तोलदवा जितनी रक्खीगई	तोलदवा गलीहुई जितनी निकली	तोलसत्व	विशेष वार्ता
१ घान	१०। छटांक	टिकियां ३ छटांक	+	इस दवामें २४ तोले अभ्रक था ।
		अधजली टिकियां १ छ०		
		छोटे खंगर ३ तोले	२ रत्ती	
		बड़े दाने ९ माशे	१ रत्ती	
		छोटे दाने ११ माशे	२ रत्ती	
		दूसरे छोटे दाने खूब सूरत ४ माशे	२ रत्ती	
		मीजान ५ छटांक	मीजान ७ रत्ती	दवाकी तोल आधी रहगई ।
२ घान	५ छटांक	कम चमकदार जलेसे खंगर ६ तो. ७ मा.	५ रत्ती	इस दवामें १२ तोले अभ्रक था ।
		चमकदार खंगर ५ तो० ३ मा०	४ रत्ती	
		छोटे दाने ६ रत्ती	$\frac{1}{2}$ रत्ती	
		मीजान तो० मा० रत्ती ११—१०–६	मीजान १मा०१॥र०	
३ घान	२॥ छटांक	बड़े खंगर १ तो० ६ मा० ४ र०	२ रत्ती	इस दवामें ६ तोले अभ्रक था ।
		खंगरसे दाने ६मा० ६ र०	$\frac{1}{2}$ रत्ती	
		छोटे दाने १ मा०	$\frac{1}{2}$ रत्ती	
		चलनीपर जमा हुआ १२ तोले	$\frac{1}{2}$ रत्ती	
		मीजान १४तो०२मा०२र०	मीजान ३ रत्ती	चलनीकी मिट्टी मिलजानेसे सत्त्व ।
			मीजान कुलसत्व २मा.३॥र.	

अभ्रसत्त्वपातन, चौथाघान भट्टी नं० २



ता० ५ को उक्त नं० ३ की २ सेर ३॥ छ० टिकियोंमेंसे ३ छटांक टिकियोंको दूसरी भांतिकी बनी हुई भट्ठीमें (जिसका नकशा ऊपर दिया गयाहै और जिसकी चौडाई ६ इंच और लंबाई १४ इंच थी) चलनी पर इस तरह रक्खा कि प्रथम चलनी पर करीब ६ अंगुल कोयले भर लिये और कोयलों पर दवा रखदी और दवाके ऊपर फिर कोयले भट्टीके मुंहतक भर दिये, भट्टीके नीचे मिट्टीका पात्र रख दिया गया, बादको ४ धोंकनियोंसे कडा धोंकना आरम्भ किया ३/४ घंटे बाद धोंकना बंद कर नीचेके पात्रको निकाला तो उसमें कोयलोंकी राखमें मिले हुये दो चार दाने ज्वार बाजरासे निकले, चलनी परके कोयलोंको निकाला तो उसमें भी कुछ दाने निकले और कुछ खंगर निकले, जिन दानोंको चुंबकने पकडा वह २ माशे ५ रत्ती हुये उनको अलग रख दिया,बाकी दानोंको और खंगरोंको जो तोलमें ५ तोले ११ माशे २ रत्ती थे लोहेके खरलमें दरदरा पीस लिया फिर उसमें बार २ चुंबक फिरानेसे जितना चूर्ण चुंबक पर चिपटता गया अलग रखते गये, इसतरह ३ माशे २ रत्ती सत्व और हाथ लगा, अर्थात् अबतक ५ माशे ७ रत्ती सत्त्व निकला और ५ तोले ८ माशे खंगरोंका चूर्ण रहगया । भट्टीके तोडने पर १७ तोले मटैले खंगर भट्टीसे चिपटे हुये निकले और ११ तो० चमकदार खंगर भट्टीसे जुडे किन्तु छज्जेकी तरह निकले हुये मिले और ३॥। तोले खंगर चमकदार जालीके ऊपर चिपटा और छिद्रोंमें भरा मिला, १॥ तोले दाने भट्टीके नीचे बिखरे हुये मिले, भट्टी तोडने पर निकले, सब खंगरोंको और दानोंको पृथक्‌पृथक् खरलमें पीस चुंबक द्वारा सत्त्व पृथक् किया तो १७ तोले ६ माशे मटैले खंगरोंमेंसे ५ रत्ती और ११ तोले चमकदारोंमेंसे १ माशे ७ रत्ती, चलनीके ऊपरवाले ३॥। तोलेमेंसे ५ माशे ५ रत्ती और भट्टीके नीचेके १॥ तोले दानोंमेंसे १ माशे ३ रत्ती सत्त्व निकला, अर्थात् इन पिछले खंगरोंमेंसे ९ माशे ४ रत्ती सत्त्व और निकला खंगरोंका चूर्ण ३२ तोले रह गया । ३ छटांक औषधिमेंसे कुल सत्व १ तोला ३ माशे ३ रत्ती निकला और ७ छ० ४ तोले खंगरोंका चूर्ण रह गया, सब मिलाकर ८ छटांक ३॥ माशे वजन हुआ, अर्थात् ५ छटांक बढा जिससे सिद्ध हुआ कि हुट्टीकी मृत्तिकाभी पिघल कर मिल गईथी ।

अभ्रसत्त्वके चौथे घानका नकशा ।

नं० घान	तोलदवा जितनी रक्खीगई	तोलदवा गलीहुई जितनी निकली	तोलसत्त्व
४ घान	३ छ० नं० ३की	+	सत्वके दाने ३मा० ५र०
		खंगर ५तोले ८माशे	३मा० ५र०
		भट्टीके नीचेके दाने १ तो० ४ माशे	१मा० ३र०
		चलनीपर लगे खंगर ३॥। तोले	५मा० ५र०
		भट्टीके चमकदार खंगर १२ तो०	१मा० ७र०
		भट्टीके कम चमकदार खंगर १७ तो०	५ रत्ती
		मीजान ७छ० ३तो० ९मा०	मीजान तो०मा०र० १–३—३

सम्मति–चलनीके नीचे निकले और चलनीके ऊपर रहे खंगर और दानोंमेंसे सामान्य सत्व निकला और चलनी पर स्थित खंगरमें सबसे अधिक सत्त्व निकला और भट्टीमें लगे वा चिपटे खंगरोंमें सबसे कम निकला ।

अभ्रसत्त्वके लिये चलनी ।

ता० ९ । ४ । ०८ को ऽ॥ सेर खरिया मिट्टी और ऽ। पावभर फायरक्ले जली हुई दोनोंको मिला पानी डाल पत्थर पर हथोडेसे १ घंटे कूटा, बादको १ तोले नामा बिचूर कर उसमें डाल कूँटते रहे, आज २ घंटे कुटाई हुई ।

ता० १० को ४ घंटे और कूट. लोहेकी रकाबियों पर पाथ दो चलनी बनालीं ।

सम्मति–१ तोले नामा डालनेसे छिद्र ठीक नहीं होसक्ते अत एव आगेसे ६ माशे नामा डाला जाय ।

अभ्रसत्वपातन, पाँचवाँ घान ।

ता० ५ । ७ । ०७को उक्त नं० २ की अवशेष २॥ छ० टिकियोंमें नं० ३ की १॥छ०टिकिया और मिला ४ छटांक वजन कर भट्टीमें (जो १३ इंच गहरी ५ इंच चौडी नं० २ की भट्टीके आकार सदृश बनाई गई थी) चलनीपर (जिसके बनानेकी विधि ऊपर लिखीहै) इस प्रकार रक्खा कि प्रथम चलनी पर ५–६ अंगुल कोयले भर दवा रख दवा की चारों बगल कोयले लगा दिये, अर्थात् दवाको कोयलोंके गर्भमें रक्खा और फिर ऊपर भट्टीके मुँह तक कोयले भर दिये, चलनीके नीचे मिट्टीका पात्र लगा दिया गया, बादको चार नई धोंकनियोंसे ८॥ बजेसे कडा धोंकना आरम्भ किया, ऊपरसे कोयले और डालते गये, अग्निकी झर भट्टीके ऊपर और नीचेसे निकलती रही, ऊपरकी झर रोकनेके लिये भट्टीपर लंबा मोटा नल लगा दिया, पौन घंटे बाद धोंकना बंद कर कटोरेको निकालना चाहा तो कटोरा भट्टीके पेंदेसे चिपट गया था भट्टी तोडा गया तौ जाली पिघलकर कटोरेमें पडी मिली भट्टीके अन्दरकी खरिया मिट्टी पिघल कर काचरूप हुई कुछ तो जहांकी तहां जम गई थी और कुछ नीचेको बहकर कटोरेके अन्दर औरकिनारोंसे जा लगी थी जिससे कटोरा

[इससे आगे ५४२ नं० पत्र पढना]